Second Edition
1979

Also can be had of

समर्पणम्

दिवङ्गतां जननीं

सीतां

प्रति

नमस्कृत्य वदामि त्वां यदि पुण्यं मया कृतम् ।
अन्यस्यामपि जात्यां मे त्वमेव जननी भव ॥

प्राक्कथन

प्रोफ़ेसर विश्वबन्धु शास्त्री

M. A., M. O. L., d' A. Kt. C. T.

आदरणीय संचालक, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान

संस्कृत भाषा का विशाल, सर्वतोमुख साहित्य ही, निःसंदेह, वह सर्वोत्तम बपौती है, जो प्राचीन भारत से नवभारत को मिली है। संस्कृत-भाषा अतीव चिरंजीविनी है; वस्तुतः, अमिट और अमर है। सहस्रों वर्ष पूर्व के हमारे पुरखा इसी देववाणी के द्वारा अपना सब वाग्व्यवहार चलाते थे। धीरे-धीरे फिर वह समय आया, जब शिक्षित जन ही इसका शुद्ध प्रयोग कर पाते थे और शेष-सर्व-साधारण लोग इसके अनेक विकृत रूपों का प्रयोग करने लगे थे। वही विकृत रूप, पीछे—पाली, प्राकृत तथा अपभ्रंश कहलाए और बोल-चाल एवं साहित्य-सृष्टि के समुन्नत माध्यम भी बने। परन्तु, उस समय भी, साधारण जनता भले ही शुद्ध संस्कृत न बोल सकती हो, वह, अवश्य, उसे समझ लेती थी। संस्कृत की वही अनिट छाप हमारी आधुनिक भारतीय भाषाओं पर भी पड़ी हुई है, जिसके कारण, हमारे आज के विभिन्न प्रादेशिक वाग्व्यवहार के अन्दर ४०-५० से लेकर ८०-९० प्रतिशत तक, स्वयं संस्कृत-भाषा ही बोली और लिखी जा रही है। शुद्ध संस्कृत के माध्यम से होने वाली साहित्य-सृष्टि तो कभी रुकी ही नहीं। प्राचीन तथा मध्यकालीन युगों की बात तो अलग रही, आज के युग में भी संस्कृत-भाषा के सभी प्रकार के साहित्य की सृष्टि बराबर चालू है। आशा प्रतीत होती है कि देश की स्वतन्त्रता के साक्षात् फलस्वरूप राष्ट्रीय चेतना इस ओर प्रतिदिन अधिकाधिक जागरूक होती जायेगी।

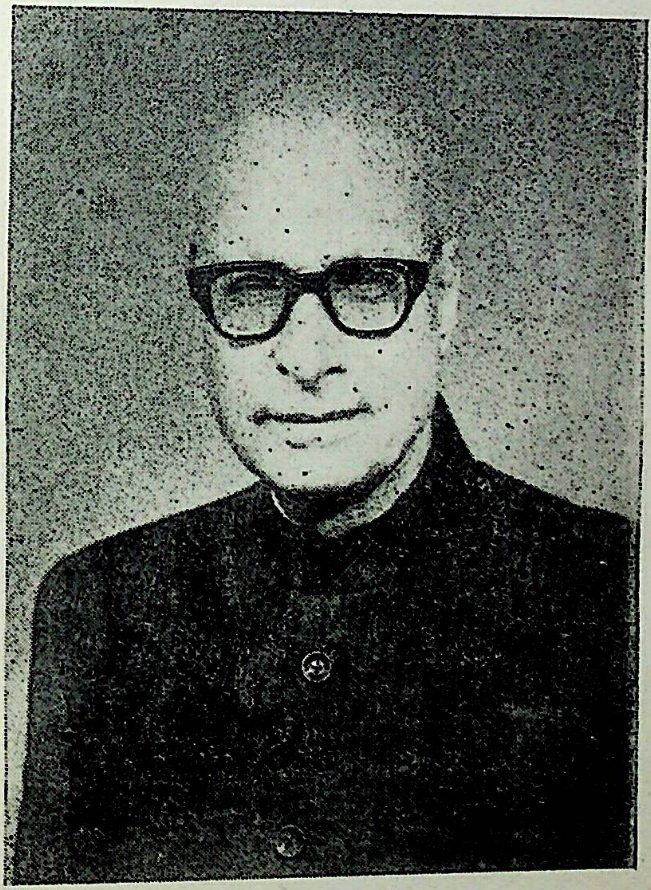
यह प्रसन्नता की बात है कि देश-भर में जहाँ-तहाँ अभियुक्त जन इस समय संस्कृताध्ययन के रङ्ग-ढङ्ग को सरलतर बनाने के प्रयत्न में लग रहे हैं। एतदर्थ कई प्रकार के अभिनव शिक्षण-क्रमों का आविष्कार तथा साधन-भूत सहायक साहित्य का निर्माण किया जा रहा है। प्रस्तुत 'आदर्श-हिन्दी-संस्कृत-कोश' उक्त सहायक साहित्य के ही अन्तर्गत एक उत्तम रचना है। इसके सुयोग्य लेखक ने इसे सब प्रकार से उपयोगी बनाने के लिए सफल प्रयास किया है।

एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना सुकर नहीं होता। जब तक दोनों भाषाओं के प्रयोग-स्वारस्य का अच्छा बोध प्राप्त न किया हो, तब तक मक्खी पर मक्खी मारने के अतिरिक्त और कुछ सिद्ध नहीं किया जा सकता। एतदर्थ छात्रों को चाहिए कि दोनों भाषाओं के सत्साहित्य के सागर में स्वतन्त्र रूप से खुला अवगाहन करें। कोई भी व्याकरण या कोश का ग्रन्थ इस प्रधान साधन का स्थान नहीं ले सकता। परन्तु उक्त विस्तृत पठन के साथ-साथ, प्रतिदिन के कार्याभ्यास में प्रस्तुत कोश ऐसे सहायक ग्रन्थों का निश्चय ही अपना स्थान एवम् उपयोग है।

इस कोश में जिन सुविपुल विशेषताओं का आधान करते हुए इसे गुणवत्तर बनाया गया है, इसकी 'प्रस्तावना' में उनका विवरण भली प्रकार से कर दिया गया है। छात्रों को चाहिए कि इसकी 'प्रस्तावना' के पाठ द्वारा उन विशेषताओं का परिज्ञान प्राप्त करते हुए इसका सदुपयोग करते रहें, जिससे उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त हो सके।

साधु आश्रम, होशियारपुर
१९-६-५७

—विश्वबन्धु



डॉ० राम सरूप 'रसिकेश'

प्रस्तावना

(द्वितीय संस्करण)

'आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश' की उपयोगिता व लोकप्रियता इसी से प्रमाणित है कि इसका प्रथम संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गया और इसकी माँग, शुक्ल-पक्ष के चाँद के समान, निरन्तर बढ़ती ही गई। संस्कृत-प्रेमियों, पुस्तक-विक्रेताओं, प्रकाशक व लेखक सभी की उत्कट इच्छा थी कि द्वितीय संस्करण यथाशीघ्र प्रकाशित हो, जिससे देव-वाणी की अधिकाधिक उन्नति हो। परन्तु, इस संसार में परिस्थितियाँ कभी-कभार ऐसा प्रतिकूल रूप धारण कर लेती हैं कि उन पर विजय पाना दुष्कर हो जाता है। यही कारण है कि संस्कृत-प्रेमियों को सुदीर्घकाल तक अप्रत्याशित प्रतीक्षा करनी पड़ी, जिसके लिए हम क्षमा-प्रार्थी हैं। अस्तु।

सभी भाषा-शास्त्री जानते हैं कि कोई भी जीवन्त भाषा वर्षों तक एक ही रूप में नहीं रहती। उसके शब्द-भंडार आदि में परिवर्तन होता ही रहता है। इसी नियमानुसार दो दशाब्दियों में हिन्दी-शब्द-भंडार का पर्याप्त विस्तार हुआ और परिणामतः हमने भी कोश का परिवर्द्धित संस्करण ही प्रकाशित करना समीचीन समझा। प्रथम संस्करण में कुछ अशुद्धियाँ भी रह गई थीं। उनका संशोधन भी अपना पवित्र कर्तव्य था। इस कार्य में हमें अपने मित्र प्रो० गोपालदत्त पाण्डेय, पूर्व-उपनिदेशक, शिक्षाविभाग, उत्तर प्रदेश, ने स्तुत्य सहयोग दिया है, जिसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने 'संस्कृत-कोशों का उद्भव और विकास' शीर्षक अनुसन्धानात्मक निबन्ध भी लिखा है, जिससे संस्कृत-प्रेमियों को इस विषय की रोचक व मूल्यवती जानकारी भी उपलब्ध होगी। कोश के सम्बन्ध में जिन विश्रुत विद्वानों ने स्वामूल्य सम्मतियाँ प्रदान की हैं उनके प्रति हम हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। साथ ही कृतज्ञ हैं चौखम्बा विद्याभवन के संचालक श्री वल्लभदास गुप्त के जिन्होंने विषम परिस्थितियों में भी कोश को प्रस्तुत सुन्दर रूप में प्रकाशित किया है। हमें विश्वास है कि प्रस्तुत संस्करण पूर्व की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

पाठकों से निवेदन है कि प्रथम संस्करण की प्रस्तावना को भी सावधानता से पढ़ने की कृपा करें, क्योंकि इसके बिना वे कोश से यथेष्ट लाभ न उठा सकेंगे।

अन्त में, विद्वज्जनों व अध्यापक-वर्ग से सादर निवेदन है कि प्रस्तुत संस्करण की त्रुटियों की ओर हमारा ध्यान अवश्य आकर्षित करें ताकि कोश के आगामी संस्करण शुद्धतर रूप में प्रकाशित हो सकें। धन्यवाद।

डी–१४१
नया राजेन्द्रनगर
नई दिल्ली—११००७०
वैशाखी—२०३६ वि०

विनीत,
रामसरूप

प्रस्तावना

(प्रथम संस्करण)

संस्कृत का अध्ययनाध्यापन करते समय और कभी हिन्दी-शब्दों के संस्कृत-पर्यायों की जिज्ञासा के समय अनेक बार हिन्दी-संस्कृत-कोश की आवश्यकता प्रतीत होती थी। बाजार में कोई भी ऐसा कोश प्राप्य न था जो स्कूलों, कालेजों, गुरुकुलों, ऋषिकुलों आदि की उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों तथा संस्कृताध्ययन के इच्छुक प्रौढ़ सज्जनों और अध्यापकों की आवश्यकताएँ पूर्ण कर सके। यह देखकर दुःख भी होता था और आश्चर्य भी कि सात समुद्र पार से आई हुई अँग्रेजी भाषा के कुछ लाख ज्ञाताओं के लिए तो अँग्रेजी-संस्कृत-कोश प्रकाशित हो चुके हैं परन्तु करोड़ों हिन्दी-प्रेमियों के पास ऐसा कोई कोश नहीं जिससे वे संस्कृताध्ययन में सहायता प्राप्त कर सकें। संस्कृतानुराग और उक्त अभाव की प्रबल प्रेरणा से मैं १९४३ ई. में कोश-संकलन में लग गया और लगभग चार वर्ष के परिश्रम से इस बृहत्कार्य को सम्पन्न कर पाया। देश का विभाजन न होता तो सम्भवतः यह कोश दस वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हो जाता, परन्तु परिस्थितियों की प्रतिकूलता के कारण यह अब प्रकाशित हो रहा है—'दैवी विचित्रा गतिः'।

जिन दिनों मैं कोश का संकलन आरम्भ करने को था उन दिनों हिन्दी-उर्दू हिन्दुस्तानी का प्रश्न ज़ोर-शोर से छिड़ा हुआ था। प्रत्येक भाषा के प्रेमी स्व-स्व पक्ष की पुष्टि के लिए अनेक युक्तायुक्त युक्तियाँ प्रस्तुत करते थे। तब मेरे संमुख प्रश्न यह उठा कि मूल (अनूद्य) शब्दों में विशुद्ध हिन्दी के ही शब्द रखे जाएँ या विदेशी शब्द भी। सोच-विचार के पश्चात् मैंने यही उचित समझा कि इसके मूल-शब्दों में फ़ारसी, अरबी, तुर्की, अँग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं के भी प्रचलित शब्द अवश्य रखने चाहिए। उसी निश्चय का परिणाम यह है कि कोश के प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर पाँच-सात विदेशी शब्द, जो शताब्दियों के प्रयोग से स्वदेशी बन गये हैं, आपको मिल ही जाएँगे। इसका सुफल यह होगा कि हिन्दी के राष्ट्रभाषा बन जाने और परिणामतः प्रत्येक भारतीय के हिन्दी से परिचित हो जाने के कारण उन अन्यमतावलम्बियों को भी संस्कृत सीखने में अधिक सुविधा हो जाएगी, जिनकी भाषाओं के प्रचलित शब्द इस कोश में संगृहीत कर लिये गये हैं। मूल शब्दों के चुनाव के समय दूसरी समस्या पारिभाषिक शब्दों की थी। प्रत्येक कला और विज्ञान से सम्बन्धित सहस्रों पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग प्रायः उन्हीं विषयों के विद्यार्थियों और अध्यापकों तक ही सीमित रहता है। प्रस्तुत कोश में उन सबका संकलन न सम्भव था, न वांछनीय। इसीलिए मैंने भौतिकी, रसायन, भूगोल, गणित, ज्योतिष, वैद्यक आदि के उन्हीं अत्यन्त प्रसिद्ध शब्दों को संगृहीत किया है जो जन-सामान्य या सामान्य शिक्षित जनों द्वारा प्रतिदिन प्रयुक्त होते हैं। कोश के मूल शब्दों की सख्या लगभग ३०००० है जिनमें ४००० के लगभग तथाकथित विदेशी शब्द, पारिभाषिक शब्द तथा मुहावरे भी सम्मिलित हैं।

कई कोशों में सम-रूप विभिन्न शब्द एक ही शब्द के नीचे मुद्रित रहते हैं। प्रस्तुत कोश में वैसा नहीं किया गया। कारण, जब स्रोत (आकर-भाषा) और व्युत्पत्ति पृथक्-पृथक् हो तो शब्दों के पार्थक्य में सन्देह नहीं रहता। ऐसी दशा में उन्हें, केवल रूपसाम्य के कारण, एक ही शब्द के अन्तर्गत रखना मुझे उचित नहीं जँचा। ऐसे समरूप शब्दों के ऊपर १, २, ३, ४ आदि के चिह्न लगा दिये गये हैं जिससे उनमें से किसी की ओर निर्देश करते समय कठिनता न हो; उदाहरणार्थ 'आम' और 'आया' शब्द देखिये। इस कोश में प्रत्येक मूल शब्द को तो स्वतंत्र स्थान दिया गया है परन्तु उससे बने हुए समस्त शब्दों वा मुहावरों को अधिकतर मूल शब्दों के नीचे ही

रखा गया है। जैसे, 'जाति' शब्द के नीचे—(= जाति) से खारिज करना,-च्युत,-पाँति-स्वभाव आदि शब्द दिये गये हैं। इसी प्रकार 'जाब्ता दीवानी', 'जाब्ता फ़ौजदारी' आदि शब्द 'जाब्ता' के नीचे और 'जलाने योग्य', 'जलाने वाला', 'जलाया हुआ' आदि संयुक्त शब्द 'जलाना' के नीचे मिलेंगे।

कोश में मूल शब्द वर्णमाला के क्रम से मुद्रित हैं परन्तु विसर्गान्त और अनुस्वार-युक्त शब्द, हिंदी-कोशों के समान, पहले रखे गये हैं। जैसे 'आः' और 'आंतरिक' शब्द 'आक' से पूर्व मिलेंगे।

मूल शब्दों के रूपों, पदपरिचय तथा व्युत्पत्ति के विषय में मेरा मुख्य आधार 'हिन्दी शब्द-सागर' रहा है। उसमें जहाँ सन्देह हुआ वहाँ मैंने श्रीरामशंकर शुक्ल 'रसाल' के 'भाषा शब्दकोश' और श्रीरामचन्द्र वर्मा के 'प्रामाणिक हिन्दी कोश' से भी सहायता ली है। जहाँ उपलब्ध व्युत्पत्तियों से संतोष नहीं हुआ, वहाँ, कहीं-कहीं, यथागति अपनी ओर से भी व्युत्पत्तियाँ दी हैं। जहाँ किसी प्रकार भी संतुष्टि नहीं हुई, वहाँ प्रश्नचिह्न (?) लगा दिया है, जिससे विद्वद्वर्ग उन पर और विचार कर सके। व्युत्पत्ति के कोष्ठक में संस्कृत शब्दों के आगे कहीं-कहीं > चिह्न मिलेगा। इसका आशय यह है कि मूलशब्द, कोष्ठकान्तर्वर्त्ती संस्कृत-शब्द से उद्भूत तो हुआ है परन्तु उसका अर्थ भिन्न है। जैसे, 'तरुणाई' संस्कृत के 'तरुण' से निकला है परन्तु अर्थ में भेद है। इसलिए व्युत्पत्तिकोष्ठक में 'तरुण' के आगे > चिह्न लगाया गया है। सच बात तो यह कि हिन्दी के अनेक शब्दों की व्युत्पत्तियाँ अभी तक चिन्त्य हैं और व्युत्पत्तिशास्त्र-विशेषज्ञों के परिश्रम का बाट जोह रही हैं।

मूल शब्द, पदपरिचय तथा स्रोत या व्युत्पत्ति के अनन्तर मूल शब्दों के अनेक संस्कृत-पर्याय दिये गये हैं। प्रत्येक भाषा में शब्दों के एकाधिक और कभी-कभी तो दर्जनों अर्थ होते हैं। कोशकार को कृति के कलेवर और पाठकों के विशिष्ट वर्ग का ध्यान रखते हुए उनमें से कुछ एक ही का ग्रहण और शेष का परित्याग करना पड़ता है। उन अनेक अर्थों में से जो अर्थ परस्पर पर्याप्त पृथक् प्रतीत हुए, उनके साथ तो २, ३ आदि अंक लगा दिये गये हैं और जिनमें छाया-मात्र का वैशिष्ट्य दिखाई दिया है, उन्हें एक ही अंक में रहने दिया गया है। स्वतः स्पष्ट होने से एक का अंक नहीं दिया गया। कहीं-कहीं स्थान की बचत के विचार से (१-४) इकट्ठा लिख दिया गया है। जैसे 'जालंधर' के पर्यायों में 'नगर-नृप-मुनि-दैत्य,-विशेषः'। आशय नगरविशेषः, नृपविशेषः आदि है। जातिवाचक शब्दों के साथ 'भेदः' और व्यक्तिवाचक के साथ 'विशेषः' का प्रयोग किया गया है।

संस्कृत के प्रत्येक संज्ञा-शब्द का लिंगनिर्देश आवश्यक था। इसलिए संस्कृत-पर्याय प्रायः प्रथमा-विभक्ति के एकवचन में दिये गये हैं। लिंग-ज्ञान के लिए निम्नांकित कुछ नियमों को ध्यान में रखना चाहिए—

१. विसर्गान्त अकारान्त शब्द (रामः, नरः, नरेशः आदि) पुंल्लिंग हैं।

२. प्रभुः, रविः आदि शब्दों के आगे कोष्ठक में यदि स्त्री. या न. नहीं लिखा गया तो वे पुंल्लिंग हैं।

३. स्वामिन्, राजन्, पितृ आदि जिन शब्दों के प्रथमा एकवचन के रूप स्वामी, राजा, पिता आदि बनते हैं, उनके प्रथमा एकवचन के रूप नहीं दिये गये, जिससे वे नदी, लता आदि के समान स्त्रीलिंग न समझे जाएँ।

४. विद्या, शाला, लता आदि सब आकारान्त शब्द, नदी, विदुषी, बुद्धिमती आदि सब ईकारान्त शब्द तथा वधूः, श्वश्रूः आदि ऊकारान्त शब्द स्त्रीलिंग हैं।

५. ज्ञानं (ज्ञानम्), फलं (फलम्) आदि अनुस्वारान्त या मकारान्त शब्द नपुंसकलिंग हैं।

६. यदि व्युत्पत्ति-कोष्ठक में केवल (सं.) अर्थात् संस्कृत लिखा है तो समझ लेना चाहिए कि संस्कृत में भी उसका लिंग मूल हिन्दी-शब्द के समान है। यदि (सं. पुं. स्त्री. वा न.) लिखा

हो तो समझ लेना चाहिए कि मूल शब्द में उसका लिंग संस्कृत से भिन्न है। उदाहरणार्थ, 'अवरोध' और 'अवरोधन' शब्द देखिये।

७. विशेषण शब्दों के संस्कृत-पर्याय प्रातिपदिक (विभक्तिरहित) रूप में दिये गये हैं और आवश्यकतानुसार विशिष्ट लिंग में प्रयोक्तव्य हैं। देखें 'अनपढ़', 'अनमोल' आदि।

८. अव्ययों, क्रियाविशेषणों आदि के पर्याय प्रायः नपुंसक-लिंग व एकवचन में होते हैं या अपने अपरिवर्तनशील रूप में। इसलिए उनका लिंगनिर्देश नहीं किया गया।

९. मित्र, दार, शत, सहस्र आदि उन सब शब्दों के साथ लिंग का निर्देश कर दिया गया है जिनके विषय में कोई विशिष्ट नियम लागू होता है या लिंगविषयक तनिक भी संदेह उत्पन्न होता है।

१०. जहाँ योजक-चिह्न (–) से युक्त अनेक शब्दों के अन्त में लिंगनिर्देश किया गया है वहाँ उन सभी शब्दों का वही एक लिंग समझना चाहिए। जैसे, 'अनुपपत्ति' शब्द के संस्कृत-पर्याय 'असंगतिः-असिद्धिः-अप्राप्तिः (स्त्री.)' दिये हैं। इसका भाव यह है कि असंगति आदि तीनों शब्द स्त्रीलिंग हैं।

क्रियापदों के पर्याय-धातुओं के गण और पद तथा सेट् आदि का भी उल्लेख किया गया है। आरम्भ में तो भू, कृ और दो धातुओं के गणादि निर्दिष्ट किये गये हैं परन्तु इन धातुओं के अत्यन्त प्रसिद्ध होने के कारण तथा स्थान बचाने के उद्देश्य से आगे इनके गणादि निर्दिष्ट नहीं किये गये। चुरादि गण के अधिकतर धातु उभयपदी सेट् हैं, इसलिए उनका प्रायः गणादिनिर्देश ही किया गया है। जहाँ क्रियापद एकाधिक अर्थों का वाचक है, वहाँ उनके पर्यायों के साथ २, ३ आदि अंक लगा दिये गये हैं परन्तु नीचे ही उनके भाव-वाचक रूपों में पुनः अंक लगाना आवश्यक नहीं समझा। जहाँ किसी धातु से पूर्व अनेक उपसर्ग योजक-चिह्न से युक्त दिखाये गये हैं वहाँ उनमें से कोई एक उपसर्ग प्रयुक्त करना अभीष्ट है। जहाँ एकाधिक उपसर्ग इकट्ठे लिखे गये हैं, वहाँ वे सभी धातु के पूर्व प्रयोक्तव्य हैं। जैसे 'देखना' शब्द के नीचे अव-आ-वि-लोक् लिखा है। इसका तात्पर्य यह है कि अवलोक्, आलोक्, विलोक् तीनों ही देखने के अर्थ में प्रयुक्त हो सकते हैं।

कहीं-कहीं विवश होकर मुझे नव शब्दनिर्माण का साहसापेक्षी कार्य भी करना पड़ा है। परन्तु वह किया तभी गया है जब प्रचलित शब्दों से यथेष्ट संतोष नहीं हुआ। उदाहरणार्थ, 'जलूस' के लिए 'मेला', 'यात्रा' और 'श्रेणी' शब्द एक कोश में उपलब्ध थे परन्तु 'मेला' और 'श्रेणी' तो मुझे सर्वथा अनुपयुक्त जँचे और 'यात्रा' शब्द भी प्रायः धर्म और तीर्थों से सम्बन्धित हो गया है। इसलिए मैंने इसके लिए 'संप्रचलनम्' शब्द प्रस्तुत किया है, क्योंकि सं = इकट्ठा प्र = आगे, चलनम् = चलना के वाचक होकर जलूस (Procession) का अर्थ व्यक्त कर देते हैं। 'बर्फ़ी' प्रसिद्ध मिठाई का नाम है जो कदाचित् उसकी श्वेतता और श्यानता के कारण रखा गया है। उसके लिये मैंने 'हैमी' शब्द निर्मित किया है जो 'बर्फ़ी' की टुकड़ियों के समान ही छोटा और ईकारान्त है। 'गुड्डी' या 'पतंग' के लिए अंग्रेजी-संस्कृत कोशों में 'पत्रचिल्लः-ला', 'चिल्लाभासं', 'उड्डीनक्रीडनकम्' आदि कुछ शब्द मिलते हैं जिनके अर्थ कागज़ की चील, चील-सा और उड़ा खिलौना है। जिन्होंने सर्वप्रथम इन शब्दों का निर्माण किया वे भी हमारे धन्यवाद के पात्र हैं, परन्तु मैं पतंग के लिए 'पतंगः' के ही प्रयोग का पक्षपाती हूँ। कारण, व्युत्पत्ति (पतन् गच्छतीति पतङ्गः) की दृष्टि से यह प्राचीन शब्द गुड्डी या पतंग के लिए भी उतना ही उपयुक्त है जितना 'पतंग' के अन्य प्राचीन अर्थों के लिए। कोशों में प्रायः 'पतंगः' के ये अर्थ प्राप्त होते हैं—पक्षी, सूर्य, टिड्डी, पतंगा, भ्रमर, गेंद, चिनगारी, शैतान, पारा। ये सभी पदार्थ ऊर्ध्वगामी हैं। आदि में तो पतंग शब्द एक ही अर्थ के लिए निर्मित किया गया होगा। क्रमशः अन्य अर्थ भी भावसाम्य के कारण साथ जुड़ते गये होंगे। यदि अपने समय की आवश्यकता के अनुसार एक अर्थ मैंने भी जोड़ दिया तो क्या हानि? जहाँ प्रसंग आदि के बल से पतंग के पूर्वोक्त अनेक अर्थों में से कोई एक ले लिया जाता है, वहाँ बच्चों की गुड्डी के प्रसंग में 'पतंग' पतंग का वाचक बन जायगा। देववाणी के अधिकाधिक प्रसार के लिए इतना औदार्य तो स्वीकार्य ही है।

कोश के अन्त में सात परिशिष्ट दिये गये हैं। प्रथम में संस्कृत सुभाषितों के हिन्दी-रूपान्तर, द्वितीय में हिन्दी लोकोक्तियों के संस्कृत-पर्याय, तृतीय में अंग्रेजी-संस्कृत शब्दावली, चतुर्थ में छन्द-परिचय, पंचम में संस्कृत-साहित्यकार-परिचय, षष्ठ में सोदाहरण लौकिकन्याय और सप्तम में भौगोलिक परिचय है। इनकी उपयोगिता के विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। इन पर किया हुआ क्षणिक दृष्टिपात स्वयं ही इनकी उपादेयता का समर्थन करेगा। केवल अँग्रेजी संस्कृत-शब्दावली के सम्बन्ध में कुछ शब्द अवश्य अपेक्षित हैं। जब से देश स्वतन्त्र हुआ है, संविधान, राजनीति, प्रशासन आदि विषयों के अँग्रेजी शब्दों के हिन्दी पर्याय बताने के लिए अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं—कुछ सरकारों की ओर से, कुछ संस्थाओं की ओर से और कुछ पुस्तकविक्रेताओं की ओर से। अनुवादक महानुभावों ने कुछ विशिष्ट सिद्धान्तों के अनुसार उन शब्दों के हिन्दी-अनुवाद प्रस्तुत किये हैं। इस प्रकार इस संक्रमणकाल में जनता के समक्ष एक-एक अँग्रेजी-शब्द के लिए अनेक हिन्दी-पर्याय उपस्थित हो गये हैं। उक्त परिशिष्ट में मैंने यत्न किया है कि अनूदित शब्दों में से, उपयुक्ततम शब्द को संस्कृत में स्वीकृत कर लिया जाए, परन्तु जहाँ उनसे सन्तोष नहीं हुआ, वहाँ स्वनिर्मित शब्द देने में भी संकोच नहीं किया। ऐसे शब्दों के साथ मैंने (*) चिह्न लगा दिया है और उनकी सदोषता-निर्दोषता का दायित्व मुझी पर है। जैसे—Gazette के लिए सूचनापत्र, वार्तायन, राजपत्र आदि शब्दों की रचना हुई है; मैंने इनमें से केवल 'राजपत्र' को ग्रहण किया है। Provident Fund के लिए भविष्यनिधि, संभरणनिधि, संचितनिधि, संचितकोष और निर्वाहनिधि शब्द चल रहे हैं, मुझे उनमें से 'भविष्यनिधि' ही उपादेयतम प्रतीत हुआ है। Affiliation के लिए 'संबद्धीकरण' भी लिखा गया है और 'सम्बद्धन' भी। मुझे संस्कृत का 'सम्बन्धनम्' प्रियतम लगा और मैंने उसे ले लिया। District Board के लिए जिलामंडली, मंडलपरिषद्, जिलापालिका, जिलाबोर्ड, मांडलिक-समिति, मंडलपरिषद् शब्द प्रस्तुत किये जा चुके हैं। परन्तु जब संविधान में 'बोर्ड' के लिए 'मंडली' और 'डिस्ट्रिक्ट' के लिए जिला का वैकल्पिक रूप मंडल स्वीकृत किया है तो मुझे District Board के लिए संस्कृत में मंडल-मंडली अपना लेने में कोई अड़चन नहीं हुई। इसी प्रकार 'टिकट' जैसे व्यापक और सर्वविदित शब्द के लिए कोई विकट शब्द बनाना मुझे अच्छा नहीं लगा और मैंने Booking office के लिए 'टिकटगृहम्' को ही उचित समझा। जो विदेशी शब्द हमारे देश के कोने-कोने में समझे जाते हैं और आकार-प्रकार की दृष्टि से भी संस्कृत में समा सकते हैं उन्हें अपनाने में संकोच न करना ही उचित प्रतीत होता है।

कहीं-कहीं पाठकों के सुखबोधार्थ सन्धि-नियमों की जानबूझ कर उपेक्षा की गई है और मुद्रण-सौकर्यार्थ अनुनासिक वर्णों (ङ्, ञ्, ण् न्, म्) के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया गया है।

इस कोश के संकलन में किन-किन महानुभावों की कौन-कौन-सी कृतियों से सहायता ली गई है, यह ठीक-ठीक बताना मेरे लिए असम्भव है। यदि दुर्भाग्यवश देश-विभाजन न हुआ होता और पंजाब विश्वविद्यालय तथा डी. ए. वी. कालेज लाहौर पुस्तकालयों की पुस्तकें मेरे समक्ष होतीं तो मैं इस कार्य को यथावत् कर देता। फिर भी जिन ग्रंथों का मुझे निश्चयपूर्वक स्मरण है, उनका उल्लेख कोश के अंत में ग्रंथसूची में कर दिया है। अस्तु, स्मृत वा विस्मृत उन सभी पुस्तकों के लेखकों वा सम्पादकों का मैं कृतज्ञ हूँ जिनकी सहायता से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। मैं विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोधसंस्थान, होशियारपुर, के संचालक, गुरुवर, आचार्य विश्वबन्धुजी शास्त्री, एम. ए., एम. ओ. एल., ओ. डी.' ए (फ्रांस) के.टी. सी. टी. (इटली), सदस्य संस्कृत आयोग, का हार्दिक आभारी हूँ, जिन्होंने इस कोश का प्राक्कथन लिखकर मुझे उपकृत किया है। वस्तुतः उन्हीं के उत्साहमय जीवन से प्रेरणा पाकर मैं इस बृहत्कार्य को एकाकी करने में प्रवृत्त हुआ; अन्यथा मेरी अवस्था तो—

तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्। (रघुवंश १।२)

नन्हीं सी नौका से समुद्र पार करने के इच्छुक मूढ़जन की-सी ही थी।

१९४७ की मई में जब साम्प्रदायिक दंगों के कारण डी. ए. वी. कालेज, लाहौर, पूर्व वर्षों की अपेक्षा कुछ शीघ्र ही बन्द हो गया तब कालेज के छात्रावास को अपने घर से अधिक सुरक्षित समझ मैं कोश की पांडुलिपि को एक बक्स में बन्द कर वहीं छोड़ बैजनाथ (पूर्वी पंजाब) चला आया। बाद में वहाँ जो लूट-मार हुई, उसके वृत्त सुन-सुनकर यही विचार आता था कि मेरा 'कोश' भी लुट ही गया होगा। मैं इसकी खोज में, जान जोखिम में डालकर, सितम्बर १९४७ में लाहौर गया परन्तु कुछ पता न चला। दूसरी बार जब दिसम्बर १९४७ में फिर गया तो सौभाग्यवश यह सुरक्षित मिल गया। उन दिनों लाहौर का डी. ए. वी. कालेज और उसका छात्रावास शरणार्थी-कैम्प बना हुआ था। किसी शरणार्थी भाई ने बक्स को तो छोड़ा न था, परन्तु कोश को छेड़ा न था। कैम्प के स्वयंसेवकों ने इसे कोई काम की वस्तु समझ, सँभाल रखा था। इस अवसर पर मैं उस अज्ञात शरणार्थी भाई को जिसने इसे ज्यों-का-त्यों रहने दिया और उन अपरिचित स्वयंसेवकों को जिन्होंने इसे कई मास तक सँभाले रखा, हार्दिक धन्यवाद देना अपना पवित्र कर्तव्य समझता हूँ।

कोश के प्रूफ, मेरे मित्र श्री हरिवंशलाल शास्त्री यदि परिश्रमपूर्वक न देखते तो इस सूक्ष्म-बृहत्कार्य में बहुत त्रुटियाँ रह जातीं। दो परिशिष्टों के सम्पादन में मेरे मित्र प्रो० लाजपतराय एम. ए. ने मेरा हाथ बँटाया है। इन दोनों सज्जनों के प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। अन्त में कोश के प्रकाशकों के प्रति भी अपना आभार प्रदर्शित करता हूँ जिन्होंने इसे सुन्दर रूप में थोड़े ही समय में प्रकाशित कर दिया है।

मनुष्य को अपनी तथा अपनी कृतियों की त्रुटियाँ स्वभावतः ही कम दिखाई देती हैं। इसी नियम के अनुसार मैं भी प्रस्तुत पुस्तक की न्यूनताओं और भ्रान्तियों से अंशतः ही परिचित हूँ। अतः सब ज्ञाताज्ञात भूलों के लिए क्षमा-याचना करता हुआ मैं विद्वद्वृन्द से निवेदन करता हूँ कि वे कृष्णकवि की निम्नांकित सूक्ति—

दोषान्निरस्य गृह्णन्तु गुणमस्या मनीषिणः।
पांसूनपास्य मञ्जर्या मकरन्दमिवालयः॥

के अनुसार मिलिन्दवत् अरविन्द के मकरन्द का पान और पराग का परित्याग कर मुझे मेरी त्रुटियों से परिचित करायें तथा ऐसे अमूल्य सुझाव भेजें जिनसे कोश का आगामी संस्करण अधिक निर्दोष और उपयोगी हो सके। प्रभु से प्रार्थना है कि उस देववाणी संस्कृत का भूतल पर अधिकाधिक प्रसार हो जिसकी साहित्य-सुधा का आनन्द आज भारतभूमि के भी इने-गिने ही लोग ले रहे हैं।

डी–२४१,
शारदानिकेतन,
राजेन्द्र नगर, दिल्ली
दीपावली, सं० २०१४

विनीत,
रामसरूप

विद्वत्सम्मतिसार

M. ANANTHASAYANAM AYYANGAR

(SPEAKER LOK SABHA)

I went through a portion of the Hindi-Sanskrit Dictionary prepared by Prof. Ram Saroop, Prof. of Hindi and Sanskrit, Hans Raj College, Delhi. The pages have been taken at random from the middle of the book. Almost every word in Hindi in ordinary use and even those that are rarely used has been noticed in this book.

There are many Sanskrit-Hindi Dictionaries, but correspondingly there is practically no Hindi-Sanskrit Dictionary. Sanskrit is the mother of Hindi and all the northern Indian Languages. Any new expressions have to be coined from Sanskrit source. It is therefore necessary that any body who desires to have a proficiency in Hindi should have equally good knowledge of Sanskrit. All Hindi writers and those in regional languages have been great Sanskrit scholars. In fact they did not read regional language by itself at any time. After acquiring proficiency in Sanskrit they automatically and without any special attempt, and with little or no effort, became proficient in their own respective language.

I welcome such a book and I hope and trust that it will be found useful not only by scholars but also by laymen who ought to have a working knowledge of Sanskrit if they want to acquire a good knowledge of Hindi. A Dictionary of this type is worth having in every library.

Prof. VISHVA BANDHU, M. A., M. O. L.

(Director, V. V. R. Institute, Hoshiarpur.)

It has given me real satisfaction to find that he has taken pains in this behalf and succeded in producing a handy work which should be of great help to those who may be learning the somewhat difficult art of translating modern Hindi originals into the ancient language of gods.

Dr. SURYA KANT SHASTRI, D. Litt., D. Phil.

(Hindu University, Varanasi)

In my opinion this dictionary will prove of great help to the students of Hindi and Sanskrit, since a dictionary of this type and size is not available in the market.

Dr. N. N. CHOWDHURI, M. A., D. Litt.

(Reader in Sanskrit, University of Delhi.)

I have read with great interest a part of the manuscript copy of your Hindi-Sanskrit dictionary. A book of this type is urgently needed in these days. I congratulate you on this excellent work you have under-taken.

श्री एन. बी. गाडगिल, एम. पी.

श्री रामसरूप शास्त्री द्वारा सम्पादित 'हिन्दी-संस्कृत-कोश' के कुछ मुद्रित पृष्ठ पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। सूक्ष्म दृष्टि से उन पन्नों को देखकर इस बात से प्रसन्नता हुई कि प्रियवर शास्त्रीजी ने इतना सुन्दर, सुव्यवस्थित और उपयुक्त कार्य किया है कि इस कार्य से वे समाज के ऋण से उऋण ही नहीं हुए, वरन् उन्होंने समाज को उपकृत भी किया है।

लेखक महोदय को इस महत्त्वपूर्ण स्तुत्य कार्य के लिए बधाई देता हूँ।

केदारनाथ शर्मा, सारस्वत

सम्पादक—'संस्कृतरत्नाकर'

मंत्री, अखिलभारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

श्रीयुत रामसरूप शास्त्री एम. ए., एम. ओ. एल., विद्यावाचस्पति, प्रोफेसर, हंसराज कालेज, देहली द्वारा सम्पादित हिन्दी-संस्कृत कोश का कुछ भाग देखने का अवसर मिला है। मैं जो कुछ देख सका उसके आधार पर कह सकता हूँ कि यह इस युग के अनुकूल और आवश्यक प्रयत्न है।

इस समय ऐसे प्रामाणिक कोश का अभाव जबकि देश का ध्यान संस्कृत की ओर आकृष्ट हो रहा हो, बहुत खटक रहा था। मुझे विश्वास है—इस अभाव की बहुत कुछ पूर्त्ति इस कोश से हो सकेगी।......सम्पादक महोदय का यह प्रयत्न सर्वथा स्तुत्य और श्लाघ्य है। इसके अधिकाधिक प्रयोग और प्रचार की कामना करता हूँ।

महामहोपाध्याय श्री पं० परमेश्वरानन्द शास्त्री, विद्याभास्कर

(ओरिएण्टल कालेज, जालंधर; पूर्व प्रिंसिपल, सनातनधर्म संस्कृत कालेज, लाहौर)

प्रोफेसर श्रीरामसरूप शास्त्री, एम. ए., एम. ओ. एल., विद्यावाचस्पति विरचित 'हिन्दी-संस्कृत कोश' को देखकर मेरा हृदय अत्यन्त प्रसन्न हुआ। मूल हिन्दी-शब्दों के संस्कृत में पर्याय देने वाला कोश मेरी दृष्टि में यह पहला ही है। ऐसे कोश की बहुत समय से बड़ी भारी आवश्यकता समझी जा रही थी। संस्कृत के विद्वान् अपने छात्रों को अनुवाद की शिक्षा देते हुए बड़ी कठिनाई अनुभव करते थे और करते हैं। संस्कृत भाषा का व्यवहार में प्रचलन न होने के कारण हिन्दी शब्दों के संस्कृत पर्याय ढूँढ़ने में उन्हें बड़ी मुश्किल पड़ती है। इस मुश्किल को विद्यावाचस्पति श्रीरामसरूप शास्त्रीजी ने हिन्दी-संस्कृत कोश की रचना करके बहुत अंशों में हल कर दिया है। इस उपकार के लिए संस्कृत के अध्यापक और उनके शिष्य प्रोफ़ेसर महोदय के अत्यन्त आभारी होंगे, ऐसी आशा है।

हिन्दी माध्यम के द्वारा संस्कृत शिक्षार्थियों के लिये तथा हिन्दी मार्ग में अग्रसर होने के लिए संस्कृत के विद्वानों के लिए भी—यह कोश अत्यन्त उपयोगी है। स्कूल कालेजों में, संस्कृत

पाठशालाओं में संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के लिए हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने में यह कोश अच्छा सहायक सिद्ध होगा—ऐसी मुझे पूर्ण आशा है।

इस कोश ने केवल हिन्दी की ही नहीं, अपितु संस्कृत की भी श्रीवृद्धि की है, अतः दोनों भाषाओं के प्रेमियों की ओर से विद्वान् ग्रन्थकार धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति एम. पी.

(चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली)

हंसराज कालेज, दिल्ली के प्रो. रामसरूप एम. ए., एम. ओ. एल. ने अपने आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश का कुछ भाग मुझे दिखाया है। कोश में हिन्दी के तीस हजार शब्दों के व्युत्पत्ति-सहित संस्कृत-पर्याय दिये गये हैं। अभी तक ऐसे कोश का अभाव था। प्रो. रामसरूपजी का यह प्रयत्न उस अभाव की पूर्ति कर देगा।...इसमें सन्देह नहीं कि इतनी ज्ञातव्य बातों से यह कोश अत्यन्त उपयोगी होगा।

श्री० दा० सातवलेकर

(अध्यक्ष, स्वाध्याय मंडल, पारडी जि० सूरत)

आपका यह कोश संस्कृत सीखने वालों के लिए तथा संस्कृत-शिक्षकों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगा, इसमें सन्देह नहीं है।

पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

(मोतीझील, वाराणसी)

'यह ग्रन्थ संस्कृत के छात्रों तथा अध्यापकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। हिन्दी से संस्कृत बनाने वालों को बहुत लाभ होगा। इस विषय पर आगे काम करने वालों को भी इससे बहुत सहायता मिलेगी। इससे इस विषय में उत्तरोत्तर उन्नति का मार्ग खुलेगा। इस दृष्टि से इस ग्रन्थ की उपादेयता और बढ़ जाती है।'

प्रो० चारुदेव शास्त्री

एम. ए., एम. ओ. एल.

(पूर्व प्राध्यापक, डी. ए. वी. कालेज, लाहौर)

प्राध्यापकेन श्रीरामसरूपशास्त्रिणा प्रणीतो हिन्दी-संस्कृतकोशो मया केषुचित्स्थलेष्वालोचितः। इदम्प्रथमः प्रयास इति प्रशस्यः। महानत्र शब्दराशिः संगृहीतः। प्रतिहिन्दीशब्दमनेकं संस्कृतमभिधानमुपन्यस्तम्। तत्रोपन्यासेऽपि प्रसिद्धमपेक्ष्य विशिष्टानुपूर्वीं समाश्रिता येनैतदुपयोक्तारः परपरतराञ्छब्दान् विहाय पूर्वपूर्वतरान् प्रयोक्ष्यन्ते प्रसिद्धिं च नातिक्रमिष्यन्ति। सर्वस्मिन् भारते व्यवहारमवतीर्णायां हिन्द्यामीदृक्षः कोषोऽत्यन्तमपेक्षितोऽभूदिति स्थाने प्रयत्तं शास्त्रिवर्येण विदांवरेण।

वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

(सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय, वाराणसी)

प्रो० रामसरूप शास्त्री द्वारा संकलित एवं सम्पादित "आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश" के द्वितीय संस्करण को देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। हिन्दी-संस्कृत कोश के क्षेत्र में यही एक ऐसा कोश था जो आकार, शब्दसंख्या एवं उपयोगिता की दृष्टि से सर्वोत्तम था और इसीलिये इसका अभाव बहुत दिनों तक खटक रहा था। सैकड़ों जिज्ञासुओं को तो मैंने ही इस कोश की सूचना दी होगी पर जब उन्हें यह मालूम हो जाता था कि यह कोश सम्प्रति उपलब्ध नहीं है तो वे हार्दिक दुःख प्रकट करते थे और चाहते थे कि यह कोश किसी प्रकार उन्हें उपलब्ध हो जाय। आज माननीय शास्त्रीजी ने इसका पुनः सम्पादन तथा चौखम्बा विद्याभवन ने इसका प्रकाशन कर जो असंख्य लोगों की आकांक्षाओं की पूर्ति की है इसके लिये ये दोनों हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हिन्दी-संस्कृत कोश का सम्पादन संस्कृत-हिन्दी कोश के सम्पादन की अपेक्षा एक कठिन कार्य है। कारण कि आज की हिन्दी में अरबी, फारसी एवं अंग्रेजी के भी बहुत से शब्द प्रचलित हो गये हैं। इसके अतिरिक्त देशी तथा लोकभाषाओं के शब्दों की भी संख्या कुछ कम नहीं है। फारसी, अरबी तथा अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों का एक विशाल भण्डार अलग ही है। इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द पुरानी संस्कृत में नहीं मिलते अतः उनके लिये नये संस्कृत शब्दों का निर्माण करना पड़ता है जो साधारण विद्वान से संभव नहीं है।

यही स्थिति उन सभी शब्दकोशों में पाई जाती है जो अंग्रेजी, बँगला, मराठी, गुजराती, तमिल एवं तेलगू आदि भाषाओं से संस्कृत में लिखे गये हैं। मेरे कार्यालय में ऐसे अनेक कोश हैं। इन शब्दकोशों में भी पर्याप्त संख्या में नये संस्कृत शब्द बनाये गये हैं।

अब कठिनाई यह है कि विभिन्न कोशों में जो नये शब्द बनाये गये हैं उनमें एकरूपता नहीं है। लेखकों ने अपने अपने ज्ञान एवं रुचि के अनुरूप शब्दों का निर्माण किया है। किन्हीं-किन्हीं कोशों में उत्तर एवं दक्षिण भारत की प्रादेशिकता का भी प्रभाव परलक्षित होता है। ऐसी स्थिति में नवीन संस्कृत शब्दों से अन्य भाषाओं के तत्तत् शब्दों के तत्तत् अर्थों का सहज बोध होना या कराना वक्ता एवं श्रोता दोनों के लिये असंभव या कठिन होता है। संस्कृत के आधुनिक लेखकों एवं वक्ताओं के लिये यह एक समस्या है जिसका समाधान होना परम आवश्यक है।

प्रस्तुत कोश में शास्त्रीजी ने उक्त कठिनाइयों के निवारण के लिये भी पर्याप्त प्रयत्न किया है जो उनकी भूमिका पढ़ने से अच्छी तरह विदित होता है। यदि कोई संस्था या शब्द निर्माण-समिति विभिन्न कोशकारों द्वारा नवनिर्मित संस्कृत शब्दों के अखिल भारतीय विद्वत्समाज की दृष्टि से सर्वसामान्य और सर्वत्र समानरूप से प्रचलित करने की योजना बनाये तो उसकी सफलता में इस कोश से बड़ी सहायता मिल सकती है। परन्तु जब तक इस प्रकार की कोई योजना नहीं बनती, और जिसके बनने की संभावना भी कम ही दीखती है, तब तक इसी कोश को आदर्श कोश माना जा सकता है। इस दृष्टि से इसका "आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश" नाम मैं सर्वथा यथार्थ मानता हूँ।

संस्कृत का प्रत्येक विद्वान् एवं विद्यार्थी इस कोश की एक प्रति अपने पास रखकर और इससे सहायता लेकर संस्कृत बोलने एवं लिखने में अबाधगति से आगे बढ़ सकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

संकेत-सूची

(क) पदपरिचयसंबंधी संकेत

अ०, अव्य.—अव्यय ।
उप.—उपसर्ग ।
क्रि. अ.—क्रिया, अकर्मक ।
क्रि. प्रे.—क्रिया, प्रेरणार्थक ।
क्रि. वि.—क्रिया-विशेषण ।
क्रि. सं.—क्रिया, संयुक्त ।
क्रि. स.—क्रिया, सकर्मक ।
प्रत्य.—प्रत्यय ।
मु.—मुहावरा ।
वि.—विशेषण ।
सं. पुं.—संज्ञा पुंलिंग ।
संबो.—संबोधन ।
सं. स्त्री.—संज्ञा स्त्रीलिंग ।
सर्व.—सर्वनाम ।

(ख) स्रोतसंबंधी संकेत

(अं. = अँग्रेजी)
(अ. = अरबी)
(अनु. – अनुकरणात्मक)
(अप. = अपभ्रंश)
(अल्प. = अल्पार्थक)
(गु. = गुजराती)
(ग्रा. = ग्रामीण)
(ता. = तातारी)
(तु. = तुर्की)
(देश. = देशीय)
(पं. = पंजाबी)
(पा. = पालि)
(पुर्त. = पुर्त्तगाली)
(पु. हिं. = पुरानी हिंदी
(पूर्व. = निर्वचन पूर्ववत्)
(प्रा. = प्राकृत)
(फ़ा. = फ़ारसी)
(फ्रां. = फ्रांसीसी)
(बं. = बंगाली)
(यू. = यूनानी)
(ले. = लेटिन)
(सं. = संस्कृत)
(स्पे. = स्पेनिश)
(हिं. = हिंदी)
(सं. रिन् = ब्रह्मचारिन् इ.)

(ग) धातुसंबंधी संकेत

(अ. प. से. = अदादि परस्मैपदी सेट्)
(क्र्. आ. अ. = क्र्यादि आत्मनेपदी अनिट्)
(चु. उ. वे. = चुरादि उभयपदी वेट्)
(जु. – – = जुहोत्यादि – –)
(त. – – = तनादि – –)
(तु. – – = तुदादि – –)
(दि. – – = दिवादि – –)
(भ्वा. – – = भ्वादि – –)
(रु. – – = रुधादि – –)
(स्वा. – – = स्वादि – –)
(कर्तृ. = कर्तृवाच्य)
(कर्म. = कर्मवाच्य)
(ना.धा. = नामधातु)
(प्रे. = प्रेरणार्थक रूप)
(भाव. = भाववाच्य)
(सन्न. = सन्नन्त रूप)

(घ) शास्त्रीय संकेत

(ज्यो. = ज्योतिश्शास्त्र)
(धर्म. = धर्मशास्त्र
(न्या. = न्यायशास्त्र)
(मी. = मीमांसाशास्त्र)
(योग. = योगशास्त्र)
(रा. नी. = राजनीतिशास्त्र)
(वे. = वेदान्तशास्त्र)
(वै. = वैशेषिकशास्त्र)
(व्या. = व्याकरणशास्त्र)
(संग. संगीतशास्त्र)
(सां. = सांख्यशास्त्र)
(सा. = साहित्यशास्त्र)

(ङ) सामान्य संकेत

अ(ना)वर्षणम् = अवर्षणम्, अनावर्षणम् ।
अप्रचरि(लि)त = अप्रचरित, अप्रचलित ।
अनु,-गमनं-करणं-सरणम् = अनुगमनं, अनुकरणं, अनुसरणम् ।
क्रोड:-डं-डा = क्रोड:, क्रोडं, क्रोडा ।
स्पष्टी-विशदी कृ = स्पष्टीकृ, विशदीकृ ।
वि-, लेपनं / वि,-लेपनं } विलेपनम्, लेपनम् ।
राज— = समास का अन्तिम पद अपेक्षित है ।
—परायण = समास का पूर्वपद अपेक्षित है ।
इ. = इत्यादि ।
उ. = उदाहरण ।
एक. = एकवचन ।
दे. = देखिए ।
द्वि. = द्विवचन ।
ब. = बनाइए ।
बहु. = बहुवचन ।
मि. = मिलाइए ।
+ = योगचिह्न ।
= = समानतासूचक ।
* = स्वरचित शब्द ।

(च) सप्तम परिशिष्ट की संकेत-सूची

(विंशति) अवदान ।
(ज़ेन्द) अवस्ता ।
अश्वघोष (बुद्धचरित) ।
उत्तर (काण्ड, रामायण)
उदयगिरि (चन्द्र तथा स्कन्दगुप्त के शिलालेख)
कालिका (पुराण)
किराता(र्जुनीय)
कूर्म (पुराण)
गरुड़ (पुराण)
जातक (माला)
त्रिकाण्ड (शेष)
दशकुमार (चरित)
देवी (पुराण)
देवीभा(गवत)
पद्म (पुराण)
पाणिनि (अष्टाध्यायी)
प्रबोध (चन्द्रोदय)
बदरी विशाल (यात्रा)
बृहत्क(था)
बृहत्सं(हिता)
ब्रह्म (पुराण)
ब्रह्मवै (वर्तपुराण)
ब्रह्माण्ड (पुराण)
भवभूति (उत्तररामचरित)
भविष्य (पुराण)
भागवत (पुराण)
मत्स्य (पुराण)
मनुसं(हिता)
मनु(स्मृति)
महा(भारत)
(चन्द्रका) महरौली (अभिलेख)
मेघ(दूत)
रघु(वंश)
राजत(रंगिणी)
रामा(यण)
ललितविस्तर
लिंग (पुराण)
वराह (पुराण)
वामन (पुराण)
विक्रमांक (देवचरित)
विष्णु (पुराण)
शतपथ (ब्राह्मण)
शिव (पुराण)
स्कन्द (पुराण)
स्वयम्भू (पुराण)
हरिवंश (पुराण)
(समुद्रगुप्त की) हरिषेण (प्रशस्ति)

संस्कृत-कोषग्रन्थों का उद्भव एवं विकास

संस्कृत-वाङ्मय की अन्य शाखाओं के समान 'कोषविद्या' का भी अपना विशेष महत्त्व है। वैदिक युग से लेकर अद्यावधि कोषग्रन्थों की रचना होते रहना ही इसका ज्वलन्त प्रमाण है। आरम्भ में कोषग्रन्थों का निर्माण विशेष उद्देश्य को अभिलक्षित कर प्रारम्भ हुआ था। यह उद्देश्य भी व्यावहारिक था। इस कारण शब्दों के समाकलन की इस विधा में कोषकारों को सफलता मिलती चली आ रही है। जनसाधारण की शब्दज्ञानसम्बन्धी पिपासा को शान्त करने में कोषग्रन्थों ने सुमधुर स्रोतस्विनी के समान अपनी सार्थकता सिद्ध की है। कोषकारों ने 'शब्द' की इयत्ता निर्धारित करने के अनेक प्रयत्न किये किन्तु वे इसका अन्त न पासके। 'शब्द' 'वस्तुतः नित्य है। नित्य शब्द का अन्त कहाँ ? 'शब्द' की व्यापकता का एक मात्र कारण उसके विस्तृत प्रयोग का होना है। इस सम्बन्ध में महाभाष्यकार पतञ्जलि ने इस ओर संकेत भी किया है कि शब्दों के प्रयोग का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। सात द्वीपों से युक्त विशाल भूखण्ड में भारतीय वाङ्मय का विस्तार कुछ कम नहीं है। वेदों की ही कई शाखायें हैं। इनमें से यजुर्वेद की १०१ शाखायें हैं। सामवेद की एक हजार शाखाएँ हैं। ऋग्वेद के इक्कीस प्रकार हैं। अथर्ववेद नौ शाखाओं का है। इसके अतिरिक्त इतिहास, पुराण, वैद्यक इत्यादि सभी विषयों में शब्दों के प्रयोग का ही क्षेत्र है—"महान् हि शब्दस्य प्रयोगविषयः। सप्तद्वीपा वसुमती। त्रयो लोकाः। चत्वारो वेदाः साङ्गाः सरहस्याः बहुधा विभिन्नाः। एकशतमध्वर्युशाखाः, सहस्रवर्त्मा सामवेदः, एकविंशतिधा बाह्वृच्यं, नवधाऽथर्वणो वेदः, वाको वाक्यम्, इतिहासः, पुराणम्, वैद्यकम्—इत्येतावान् शब्दस्य प्रयोगविषयः" (महाभाष्य पस्पशाह्निक)। यह जानते हुए भी प्राचीन समय में शब्द की इयत्ता निर्धारित करने का प्रयत्न अवश्य किया गया होगा। इसी को पतञ्जलि ने इस अर्थवाद-गर्भित वाक्य के द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया है कि शब्द का प्रतिपद-पाठ सम्भव नहीं है। तदनुसार उन्होंनें इस आख्यान की ओर ध्यान आकृष्ट किया कि 'बृहस्पति ने इन्द्र को देवों के एक हजार वर्ष तक प्रत्येक शब्द का उच्चारण कर शब्दशास्त्र पढ़ाया, फिर भी शब्द समाप्त नहीं हुए'। इस प्रसङ्ग में भाष्यकार ने दूसरा आख्यानक प्रस्तुत करते हुए यह बताया है कि जब बृहस्पति-सदृश ख्यातनामा व्याख्याता, इन्द्र जैसा विज्ञ शिष्य, देवों के एक सहस्र वर्ष की अवधि अध्ययन-काल नियत किया गया तो भी शब्दों का अन्त ज्ञात नहीं हुआ। फिर आजकल की बात ही क्या ? जो सब तरह निरोगी रहकर चिरायु होता है,

अधिक से अधिक वह सौ वर्ष तक जीता है। इसके अतिरिक्त आगे निरूपण करते हुए उन्होंने कहा कि विद्या की सार्थकता चार प्रकार से होती है—(१) गुरुमुख से समझ लेते समय, (२) मनन के समय, (३) दूसरों को सिखाते समय और (४) व्यवहार करने में—"एवं हि श्रूयते। बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपारायणं प्रोवाच, नान्तं जगाम। बृहस्पतिश्च प्रवक्ता, इन्द्रश्च अध्येता, दिव्यं वर्षसहस्रमध्ययनकालः, न च अन्तं जगाम। किं पुनरद्यत्वे? यः सर्वथा चिरं जीवति स वर्षशतं जीवति। चतुर्भिश्च प्रकारैर्विद्योपयुक्ता भवति आगमकालेन, स्वाध्यायकालेन, प्रवचनकालेन, व्यवहारकालेनेति।" अतः प्रायोगिक शब्दों के समाकलन को व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी समझ कोषकारों ने उन्हें ग्रन्थों के रूप में प्रस्तुत कर संस्कृत वाङ्मय के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा है। इस प्रकार शब्दों के संग्रह करने में 'कोष' शब्द रूढ़ हो गया है।

वैदिक काल में कोष 'निघण्टु' के नाम से विख्यात रहे। 'निघण्टु' से अभिप्राय उन वैदिक शब्दों के संग्रह से है, जिनमें संज्ञाशब्दों के साथ क्रियापदों को भी एकत्र कर लिया गया था। निघण्टु का उद्देश्य वैदिक शब्दों के अर्थ समझने में सहायता पहुँचाना भी रहा है। इसके विपरीत लौकिक 'कोषों' में अधिकतर संज्ञाशब्दों का समाकलन हुआ है। नामसंग्रह के अनन्तर परिशिष्ट-रूप में अव्ययों के अर्थ का संग्रह भी इन कोषग्रन्थों में उपलब्ध होता है। लौकिक कोष पद्यमय होने के कारण कविजनों के परिश्रम को कम करने में उपयोगी सिद्ध हुए हैं। फलतः कण्ठस्थ करने में सरलता होने के कारण इनका प्रचार होने में बड़ी सुविधा हुई है। अतः विद्यार्थियों को काव्यशिक्षा देने के साथ ही 'कोष' कण्ठस्थ कराने की परिपाटी रही है। अर्थ की दृष्टि से प्राचीन काल में कोषों का विभाजन दो प्रकार से किया गया था—(१) समानार्थक कोष तथा (२) नानार्थक कोष। लिङ्ग-निर्धारण करने की समस्या को कोषकार ने बड़ी बुद्धिमत्ता से सुलझाया है। इसके लिये उन्होंने कई विधियाँ अपना हैं। कहीं-कहीं तो शब्दों के प्रथमान्त प्रयोग से उनका लिङ्ग-निर्देश कि और कहीं 'पुं' 'स्त्री' 'क्लीब' आदि लिङ्गद्योतक शब्दों का प्रयोग कर इ विशिष्टता का परिचय दिया है। शब्दचयन के भी अनेक सिद्धान्त हैं। समार्थक कोषों में विषयों के अनुसार शब्दों का संकलन कर पूरे कोषग्रन्थ को अने वर्गों में विभक्त कर दिया है। नानार्थ-कोषों में अन्तिम वर्णों के अनुसार श का संकलन कर कान्त, खान्त, गान्त आदि शब्दों का चयन किया गया है कहीं आदिम वर्णों को भी महत्त्व दिया गया है। कहीं आदिम तथा अन्तिम दोनों वर्णों को दृष्टि में रखकर शब्द-चयन की प्रक्रिया सम्पन्न की गई है।

निघण्टु—यह 'निघण्टु' ग्रन्थ यास्क से प्राचीन है, क्योंकि इसी के आधार पर यास्क ने 'निरुक्त' लिखा है। महाभारत से अनुसार प्रजापति कश्यप इस निघण्टु के रचयिता हैं। इसमें पाँच अध्याय हैं। आदि के तीन अध्यायों में 'पृथ्वी' आदि के बोधक समानार्थ शब्दों का संकलन है। इस प्रकरण को 'नैघण्टु-काण्ड' कहा जाता है। चतुर्थ अध्याय में अव्युत्पन्न तथा गूढार्थक शब्दों का चयन किया गया है। इसे 'नैगम-काण्ड' की संज्ञा दी गई है। पाँचवें अध्याय (दैवतकाण्ड) में भिन्न-भिन्न देवताओं के रूप तथा स्थान का विस्तृत निरूपण है। 'निघण्टु' के प्रमुख व्याख्याता देवराज यज्वा हैं। ये सायण से प्राचीन अवश्य हैं, क्योंकि सायण के ऋग्वेद-भाष्य में एक स्थान पर निघण्टुभाष्य के वचनों का उद्धरण मिलता है। देवराज ने अपने भाष्य में क्षीरस्वामी को अपने पूर्ववर्ती भाष्यकार के रूप में स्मरण किया है। क्षीरस्वामी 'अमरकोष' के सुप्रसिद्ध टीकाकार हैं। अतः देवराज यज्वा का समय १२ वीं तथा १३ वीं शताब्दी के मध्य प्रमाणित होता है।

वैदिक कोष—प्राचीन परिपाटी के अनुसार भास्कर राय ने वैदिक-कोष की रचना लौकिक कोषों के ढंग पर की है। इस कोष के संकलित शब्द तो वे ही हैं जो निघण्टु में हैं, किन्तु उन शब्दों का अर्थ 'अनुष्टुप् छन्द' द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। इस कोष का रचना-काल १७७५ ई० है। भास्कर राय ने अपनी गुप्तवती टीका में अनेक स्थलों पर नागेश की सप्तशती-टीका का खण्डन किया है। अतः ये नागेश के समकालीन अथवा उनसे कुछ ही समय के अनन्तर हुए होंगे।

पुरुषोत्तम देव ने अपने लौकिक-संस्कृत के पुराने कोषकारों का उल्लेख 'हारावली' कोष के अन्त में वाचस्पति, व्याडि तथा विक्रमादित्य का नाम लेकर किया है। तदनन्तर केशव ने कात्य, व्याडि, वाचस्पति, भागुरि, अमर, मङ्गल, साहसाङ्क, महेश तथा हेमचन्द्र का नामोल्लेख किया है। इनके अतिरिक्त किसी हस्तलेख के आधार पर १८ प्रसिद्ध कोषों के विषय में परिज्ञान होता है। इस प्रकार अमर-कोष को केन्द्रबिन्दु मानकर संस्कृत वाङ्मय के कोषग्रन्थों को आचार्य प॰ [illegible]देव उपाध्याय जी ने तीन कालों में विभक्त किया है—(१) अमरपूर्व-काल, (२) अमरकाल तथा (३) अमरोत्तर-काल।

अमर-पूर्व-कोषकार—अमर-पूर्व कोषकारों में व्याडि सर्वप्राचीन कोषकार हैं। व्याडि के कोषग्रन्थ का नाम 'उत्पलिनी' था। पुरुषोत्तम ने अपने हारावली कोष के अन्त में इसका उल्लेख किया है। इस कोष में समानार्थ शब्दों की प्रधानता थी। इन्होंने व्युत्पत्ति के द्वारा अर्थानुसन्धान की प्रक्रिया का दिग्दर्शन कराया है। जैसे 'निघण्टु' की व्याख्या इन्होंने इस तरह की है—"अर्थान् निघण्टयत्यस्मात् निघण्टुः परिकीर्तितः"। ये व्याडि कदाचित् पाणिनि के समकालीन सुप्रसिद्ध 'संग्रह' नामक ग्रन्थ के कर्ता ही हों।

कात्य—इनके कोषग्रन्थ का नाम 'नाममाला' था। क्षीरस्वामी, हेमचन्द्र आदि ने इनका उल्लेख किया है। इनके कोष की विशेषता यह थी कि इन्होंने कहीं-कहीं अर्थ का वर्णनात्मक परिचय भी दिया है—"क्षुद्रच्छिद्रसमुपेतं चालनं तितउ पुमान्"। इनका निश्चित समय ज्ञात नहीं हो सका।

भागुरि—यह त्रिकाण्ड-कोष के रचयिता हैं। अमरसिंह ने 'त्रिकाण्ड' की प्रेरणा इन्हीं से प्राप्त की होगी। इन्होंने केवल समानार्थं शब्दों का ही उल्लेख किया है। व्याकरण के प्रसिद्ध ग्रन्थों में भागुरि के मत का अनेक स्थलों पर उल्लेख मिलता है। विशेषतः हलन्त वाच्, निश्, दिश् आदि शब्दों को आकारान्त बनाने में इनके नाम का उल्लेख मिलता है "वष्टि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः। आपं चैव हलन्तानां यथा वाचा निशा दिशा"। सायण आदि वेदभाष्य-कर्ताओं ने इनके कोष-ग्रन्थ से पर्याप्त सहायता ली है।

रत्नमाला के अज्ञात-नामा लेखक का उल्लेख सर्वानन्द ने अपनी "अमरकोष" की टीका में किया है। तदनुसार इस कोष के परिच्छेदों का वर्गीकरण लिङ्ग के आधार पर था। इसमें समानार्थ-शब्दों का चयन था।

अमरदत्त—इन्होंने 'अमरमाला' नामक कोषग्रन्थ की रचना की। हलायुध ने अपने कोषग्रन्थ का उपजीव्य 'अमरमाला' को माना है। सर्वानन्द ने इस कोष से अनेक उद्धरण अपनी अमर-टीका में दिये हैं। इनका समय भी अनिश्चित ही है।

वाचस्पति—यह सुप्रसिद्ध 'शब्दार्णव' कोष के रचयिता थे। यह 'अनुष्टुप्-छन्द' में विरचित विशाल कोष था। इसकी विशेषता यह थी कि एक शब्द के विभिन्न रूपों का तथा वर्तनी का भी इसमें उल्लेख है। हेमचन्द्र ने इनके कोष से पर्याप्त सहायता ली है। इनका वास्तविक समय भी अज्ञात है।

धन्वन्तरि—यह वैद्यक-निघण्टु के रचयिता हैं। वैद्यक निघण्टुओं में यह कोष सब से प्राचीन है। क्षीरस्वामी ने अपनी अमर-टीका में यह उल्लेख किया है कि अमरसिंह के 'अमरकोष' के वनौषधि-वर्ग का उपजीव्य यही कोष रहा है। विक्रम के नवरत्नों में इनका भी उल्लेख है। उस दृष्टि से तो यह भी अधिक प्राचीन है।

महाक्षपणक—इनके नाम से दो कोष-ग्रन्थ हस्तग्रन्थों में उल्लिखित मिलते हैं। ये दोनों अनेकार्थ-ध्वनिमञ्जरी तथा अनिकार्थमञ्जरी नाम से प्रसिद्ध हैं। ये दोनों ग्रन्थ एक ही होंगे, क्योंकि अधिकतर टीकाकर्ताओं ने 'अनेकार्थमञ्जरी' नाम का ही उल्लेख किया है। 'रघुवंश' की टीका में वल्लभदेव ने 'अनेकार्थमञ्जरी' का अवतरण उद्धृत किया है। महाक्षपणक काश्मीरी थे। इनके समय का भी कोई निर्णय नहीं हो सका है। यदि यह भी विक्रम के नवरत्नों में से एक हों तो विक्रमादित्य अथवा चन्द्रगुप्त द्वितीय के राज्यकाल के आसपास इनकी स्थिति के विषय में अनुमान किया जा सकता है।

अमरसिंह—सुप्रसिद्ध "नामलिङ्गानुशासन" कोष के रचयिता अमरसिंह की ख्याति कोषकर्ता के रूप में सबसे अधिक है। इनके नाम से ही यह ग्रन्थ अमरकोष प्रसिद्ध हो गया। इनसे पूर्व प्राचीन कोषकारों ने दो प्रकार की शैलियाँ अपनायी थीं। कतिपय कोष केवल नामों का ही निर्देश करते थे और कुछ कोष लिङ्गों के ही विवेचन को अपना मुख्य विषय मानते थे। अमरसिंह ने दोनों का समन्वय कर अपने कोष को सर्वाङ्गपूर्ण बनाया। तीन काण्डों में विभक्त कर इस ग्रन्थ को 'त्रिकाण्ड' संज्ञा भी दी गई। इसका उपविभाग 'वर्गों' के नाम से किया गया है। 'अमरकोष' पद्यबद्ध रचना है। 'अनुष्टुप्' छन्द के १५३३ श्लोकों में यह रचना सम्पूर्ण हुई है। ग्रन्थ का छठा भाग नानार्थ के वर्णन में है। शेष भाग में समानार्थ शब्दों का निरूपण किया गया है। समानार्थ-भाग में एक विषय के वाचक नामों का एकत्र संकलन है। नानार्थ-खण्ड में अन्तिम वर्ण के अनुसार पदों का संग्रह है। अव्ययों का वर्णन एक स्वतन्त्र वर्ग में किया गया है तथा ग्रन्थ के अन्त में लिङ्गों के साधक-नियमों का उल्लेख किया गया है।

अमरसिंह के समय का निर्णय भी एक समस्या बना हुआ है। इतना तो अवश्य निश्चय है कि यह ग्रन्थ छठी शताब्दी से पहले ही रचा गया था। गुणरात द्वारा चीनी भाषा में इसका अनुवाद किया जाना उस समय की पश्चिम (अन्तिम) अवधि है। इसकी लोकप्रसिद्धि का सबसे अधिक प्रमाण यह है कि इस पर लगभग ४० टीकायें लिखी गई हैं। इनमें क्षीरस्वामी और रामाश्रम (भानुदीक्षित) द्वारा लिखित टीकायें बहुत उपयोगी सिद्ध हुई हैं। इन दोनों में से रामाश्रमी का पदव्युत्पत्ति-प्रदर्शन अधिक सूक्ष्म तथा परिनिष्ठित है। अमरसिंह बौद्ध थे। इनके समय की पूर्वसीमा २२५ ई० के आसपास निर्धारित की जाती है।

कोष ग्रन्थों में अमरकोष का प्रचलन अद्यावधि सर्वाधिक है। संस्कृत के विद्यार्थियों को बाल्यावस्था में ही इसे कण्ठस्थ कराया जाता रहा। यह परम्परा अब भी थोड़ी-बहुत दिखाई पड़ती है। सरल भाषा एवम् अनुष्टुप्-छन्द में विरचित होने के कारण इसे हृदयङ्गम करने में कठिनाई नहीं होती। अमरकोष के अतिरिक्त शब्द-ज्ञान का लघुभूत उपाय दूसरा कोई नहीं है। इस प्रकार अमरसिंह अपने पश्चाद्वर्ती कोषकारों के प्रेरणा-स्रोत बन गए। इसी कारण उनकी सरणि को अधिक प्रशस्त बनाने में आगे के कोषकार तत्पर होते हुए दिखाई पड़ते हैं।

अमरसिंह के पश्चाद्वर्ती कोषकार—बाद के कोषकार शब्दों के वैशिष्ट्य का निदर्शन कराने में बड़े सिद्धहस्त प्रतीत होते हैं। उनके प्रकरण भले ही सीमित हों किन्तु उनका क्षेत्र अधिक विस्तृत है। कतिपय कोषकारों ने केवल नानार्थ-कोषग्रन्थों की ही रचना स्वतन्त्र रूप में की है, किन्तु उन्होंने शब्दों की सूक्ष्म

समीक्षा कर अपने पाण्डित्य तथा अर्थ-निर्णय करने की क्षमता का परिचय दिया है। इस दृष्टि से निम्नलिखित विद्वान् प्रसिद्ध कोषकारों के रूप में सर्वमान्य हैं।

शाश्वत—इनका समय भी छठी शताब्दी के आस-पास माना जाता है। इन्होंने स्वयम् अपने विषय में यह लिखा है कि मैंने तीन व्याकरणों को देखा तथा पाँच लिङ्गानुशासनों का अध्ययन किया। केवल इतना ही नहीं किन्तु शिष्ट-प्रयोगों के देखने में भी कोई कमी नहीं होने दी।[1] इनका विरचित कोष अनेकार्थ-समुच्चय है। इस कोष में केवल अनेकार्थ शब्दों का विस्तृत चयन है। शब्दों के चयन में अमरकोष की अपेक्षा अधिक विस्तार तथा प्रौढता दृष्टिगोचर होती है। प्रकृत कोष के अन्तिम पद्य से यह संकेत मिलता है कि ग्रन्थकार ने कवि महाबल तथा वराह से भी इस सम्बन्ध में परामर्श किया था[2]। अनेक विद्वानों के सहयोग से इस कोष की रचना होने के कारण इसमें व्यापकता होना स्वाभाविक है।

धनञ्जय—शाश्वत के लगभग दो शताब्दी पश्चात् धनञ्जय ने 'नाममाला' कोष की रचना की। यह कोष व्यवहार में आने वाले लोकप्रचलित संस्कृत शब्दों का उपयोगी कोष है। इसे लघुकोष कहना ही उचित है। इसमें केवल २०० श्लोक हैं। विशेषता इस बात में है कि ग्रन्थकार ने शब्दों की रचना के सुन्दर उपाय बताये हैं। उदाहरणार्थ पृथ्वीवाचक शब्दों में 'धर' लगा देने से पर्वतवाची शब्दों का बोध होता है (मही + धर, पृथ्वी + धर आदि)। इसी प्रकार मनुष्यवाची शब्दों में 'पति' शब्द जोड़ देने से राजा के नाम (नर + पति, नृ + पति) तथा वृक्षवाची शब्दों में 'चर' शब्द जोड़ने में बन्दर के समानार्थक शब्द बन जाते है (द्रुम + चर, वृक्ष + चर आदि)। इस कोष की यही विशेषता है कि शब्दों के चयन में लोकव्यवहार को विशेष महत्त्व दिया गया है। 'अनेकार्थनाममाला' इसका पूरक अङ्ग है। कोषकार के अतिरिक्त धनञ्जय कवि भी हैं। इनका 'द्विसन्धान' काव्य द्व्याश्रय-काव्यों में बड़ा प्रसिद्ध है। इस काव्य में श्लिष्ट पदों के द्वारा रामायण और महाभारत के कथानकों का विशद वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इनका समय आठवीं शताब्दी का उत्तरार्ध निश्चित-प्राय है। इस विषय में वीरसेन स्वामी द्वारा 'षट्खण्डागम' की धवला नामक टीका में 'अनेकार्थनाममाला' का उद्धृत एक श्लोक ही पर्याप्त प्रमाण माना जा

---

१. दृष्टशिष्टप्रयोगोऽहं दृष्टव्याकरणत्रयः।
अधीती सदुपाध्यायात् लिङ्गशास्त्रेषु पञ्चसु ॥
—शाश्वतकोष—आरम्भ का ६ श्लोक

२. महाबलेन कविना वराहेण च धीमता।
सह सम्यक् परामृश्य निर्मितोऽयं प्रयत्नतः ॥

सकता है। धवला टीका ८७३ विक्रमी संवत् (=८१६ ई०) में लिखी गई थी। अतः धनञ्जय ७४०–७९० ई० के मध्य अवश्य रहें होंगे।

पुरुषोत्तमदेव—धनञ्जय के लगभग ४०० वर्षों के उपरान्त पुरुषोत्तमदेव ने तीन कोष-ग्रन्थों की रचना की। ये ग्रन्थ हैं—(१) त्रिकाण्ड-कोष, (२) हारावली तथा (३) वर्णदेशना। इनमें से प्रथम तो 'अमरकोष' का पूरक ग्रन्थ है। इसका क्रम 'अमरकोष' के समान है। तदनुसार इसमें भी तीन काण्ड तथा पच्चीस वर्ग हैं। इसमें भी लोकव्यवहार में प्रयुक्त शब्दों के साथ ही 'अमरकोष' में अनुपलब्ध शब्दों का भी संग्रह किया गया है। हारावली में अप्रचलित तथा असामान्य शब्दों का समाकलन किया गया है। २७० पद्यात्मक 'लघुकोष' होने पर भी यह दो भागों में विभक्त है—(क) समानार्थक तथा (ख) नानार्थक। समानार्थक भाग के तीन अंश हैं—पहले में पूरे श्लोक में समानार्थक शब्द हैं, दूसरे में अर्थ-श्लोक में तथा तीसरे में एक चरण में ही। नानार्थक खण्ड की भी यही सरणि है। वर्तनी अर्थात् शब्दों की शुद्धता बतलाना वर्णदेशना का मुख्य ध्येय है। इस ग्रन्थ की उपादेयता इस कारण सुविदित है। स्वयं ग्रन्थकार ने यह उल्लेख किया है कि गौड-लिपि में भिन्नता होने के फलस्वरूप शब्दों के रूपों में भ्रान्ति होना सम्भव है। इसके निराकरण-हेतु 'वर्णदेशना' की उपयोगिता है। अमरसिंह की भाँति पुरुषोत्तमदेव भी बौद्ध थे। इन्होंने सर्वप्रथम बुद्ध को 'मुनीन्द्र' रूप में नमन किया है। इस कार्य में यह अमरसिंह से और आगे बढ़े। देवताओं के सम्बन्ध में इन्होंने बुद्ध के बाद बुद्ध के पुत्र राहुल का, अनुज देवदत्त का, मायादेवी का तथा प्रत्येक बुद्ध का क्रमशः उल्लेख किया है। यह बंगाल के शासक राजा लक्ष्मणसेन ११७०–१२०० के समकालिक थे। इन्हीं के आदेश से पुरुषोत्तम देव ने पाणिनि की अष्टाध्यायी पर 'भाषावृत्ति' नामक वृत्ति लिखी। अतः इनका समय बारहवीं शती का उत्तरार्ध मानना युक्तिसंगत है।

हलायुध—इनकी रचना अभिधान-रत्नमाला के नाम से प्रसिद्ध है। इस कोष में पाँच काण्ड हैं—स्वर्, भूमि, पाताल, सामान्य तथा अनेकार्थ। इनमें से प्रथम चार काण्डों में समानार्थक शब्दों का वर्णन है तथा अन्तिम काण्ड में नानार्थ एवं अव्ययों का। इन्होंने अमरसिंह को ही अपना आदर्श माना है। यह मान्यखेट के राजा कृष्णराज तृतीय ९५० ई० के समकालिक थे। अतः इनका समय दशम शती का उत्तरार्ध माना गया है।

यादवप्रकाश द्वारा विरचित **वैजयन्ती कोष** बड़ी महत्त्वपूर्ण रचना है। यह दो खण्डों में विभक्त है—**समानार्थ** तथा **नानार्थ**। समानार्थ-खण्ड में पाँच भाग हैं—स्वर्ग, अन्तरिक्ष, भूमि, पाताल तथा सामान्य। नानार्थ-खण्ड में तीन भाग हैं, जिनमें ग्रन्थकार द्वारा शब्दों का चयन अक्षरक्रम से किया गया है।

वर्णक्रम से शब्दसंग्रह किया जाना इसकी नवीनता है। दूसरी विशेषता यह है कि इसमें वैदिक शब्दों का संकलन भी किया गया है। रामानुजाचार्य (१०५५–११३७ ई०) के यह गुरु थे। अतः इनका स्थितिकाल ११ वीं शती का उत्तरार्ध निश्चितप्राय है।

महेश्वर—इनका **विश्वप्रकाश-कोष** नानार्थ-शब्दों का संकलनात्मक ग्रन्थ है। इस कोष में शब्दों का चयन अन्तिम वर्ण के आधार पर किया गया है। रूपभेद का निर्देश भी इसमें किया गया है। ग्रन्थान्त में अव्ययों का संकलन विद्यमान है। ग्रन्थकार ने स्वयम् अपना परिचय इस कोष के अन्त में दिया है। तदनुसार इस कोष की रचना सन् ११११ ई० में हुई थी। मल्लिनाथ ने इस कोष का उपयोग अपनी टीकाओं में विशेषतया किया है।

अजयपाल—यह बौद्धमतावलम्बी थे। इनकी रचना **नानार्थसंग्रह** नाम से प्रसिद्ध है। इस कोष में १७३० शब्द हैं। इस कोष में भी वर्णक्रमानुसार शब्दों का चयन किया गया है। इनके मत का उल्लेख अमरकोष के टीकाकार सर्वानन्द ने टीकासर्वस्व (११५९ ई०) में बहुधा किया है। इसके अतिरिक्त वर्धमान ने अपने व्याकरण-ग्रन्थ '**गणरत्नमहोदधि** (रचना ११४० ई०) में इनका बहुशः उल्लेख किया है। फलतः यह बारहवीं शती से कुछ पहले हुए होंगे। इन्होंने 'ब' तथा 'व' में अन्तर नहीं माना है। इस कारण इनके वंगदेशीय होने का अनुमान किया जाता है।

मेदिनिकर—इनका ग्रन्थ '**मेदिनीकोष**' के नाम से प्रसिद्ध है। यह भी नानार्थ-कोष है। मेदिनिकर ने शब्दों के चयन में दो प्रकार अपनाये हैं—ककारादि वर्णक्रम तथा अन्तिम वर्णक्रम। मेदिनी ने विश्वप्रकाश को 'बहुदोष' वतला कर अपना महत्त्व सूचित किया है। मेदिनीकोष शब्दों की संख्या में तथा चयन की व्यवस्था में विश्वप्रकाश की अपेक्षा अधिक विशद एवं सुव्यवस्थित है। कविशेखराचार्य (लगभग १३०० ई०) के मैथिली भाषा में लिखित वर्णरत्नाकर ग्रन्थ में मेदिनीकर का उल्लेख होने से डा० गोडे ने इन्हें १२००–१२७५ ई० के मध्य माना है।

मङ्ख—इन्होंने भी अन्तिम व्यञ्जनों के आधार पर **अनेकार्थ-कोष** की रचना की है। इसमें १००७ पद्य हैं। इसका विभाजन परिच्छेदों में नहीं किया गया है। इनका स्थितिकाल ११२८–११४९ के मध्य माना गया है। यह काश्मीर के राजा जयसिंह के राज्यकाल में विद्यमान थे। इस कोष मे प्रायः काश्मीर के कवियों द्वारा प्रयुक्त शब्दों का चयन किया गया है।

हेमचन्द्र—कोषग्रन्थों के इतिहास में यह सर्वाग्रणी हैं। इन्होंने चार कोषग्रन्थ लिखे हैं—**अभिधानचिन्तामणि** (समानार्थकोष), **अनेकार्थसंग्रह** (नानार्थ-

कोष), निघण्टुकोष (वैद्यक) तथा देशीनाममाला (प्राकृतकोष)। इनमें से अभिधानचिन्तामणि को छह काण्डों में विभक्त किया गया है—देवाधिदेव, देव, मर्त्य, भूमि, नरक तथा सामान्य। यह कोश नानावृत्तों में निबद्ध १५४२ पद्यों में समाप्त हुआ है। इस पर स्वयं ग्रन्थकार ने ही टीका लिखी है। अनेकार्थसंग्रह भी छह काण्डों में विभक्त है। इसमें १८२९ श्लोक हैं। शब्दों का संग्रह दो प्रकार से है—अन्तिम अक्षरों द्वारा तथा आदिम अक्षरों द्वारा। इन्होंने व्यवहार मे आने वाले संस्कृत शब्दों को यथावत् संगृहीत कर उनके प्रति निष्ठा व्यक्त की है। यह ग्रन्थ महाराष्ट्र के राजा सोमदेव के ग्रन्थ मानसोल्लास (रचना ११३० ई०) का समकालिक प्रतीत होता है। हेमचन्द्र का प्रभाव अवान्तरकालीन कोषकारों पर विशेष रूप से पड़ा है।

केशव स्वामी—इनके द्वारा विरचित नानार्णव-संक्षेप नानार्थ शब्दों का सबसे बड़ा कोष है। इसमें लगभग ५८०० श्लोक हैं। अक्षरों की गणना के आधार पर यह कोष भी छह काण्डों में विभक्त है तथा प्रत्येक काण्ड लिङ्ग के अनुसार पाँच भागों में विभक्त है। इसमें वैदिक शब्दों का संकलन भी विद्यमान है। यह ग्रन्थ चोलवंशी नरेश राजराज चोल के आश्रय में रहकर लिखा गया है। इनका समय १२०० ई० के आस पास माना जाता है। इस ग्रन्थ के छह काण्डों में प्रति-काण्ड पाँच अध्याय हैं। काण्डों का विभाजन एकाक्षर से लेकर षडक्षर तक है। अध्यायों का विभाजन लिङ्ग के अनुसार किया गया है—स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग, वाच्यलिङ्ग तथा संकीर्णलिङ्ग। प्रत्येक अध्याय में शब्दों का चयन अक्षरक्रम से किया गया है। आधुनिक कोश-ग्रन्थों में यही क्रम स्वीकृत है।

केशव—अद्यावधि ज्ञात समानार्थ कोषों में केशव का कल्पद्रुकोष सबसे विशाल है। इसमें लगभग ४०० श्लोक हैं। इसके तीन स्कन्ध हैं—भूमि, भुवः तथा स्वर्ग। प्रत्येक स्कन्ध प्रकाण्डों में विभक्त है। ग्रन्थकार के अनुसार इसकी रचना १६६० में हुई। इस कोष के शब्दचयन में बड़ी विविधता है। अनेक ज्ञातव्य तथ्यों के संग्रह ने इसे विश्वकोष का रूप दिया है। इसमें समानार्थ शब्दों के साथ प्रयुक्त विषयों का विस्तृत वर्णन भी विद्यमान है।

शाहजी—यह विश्वविख्यात छत्रपति शिवाजी के भतीजे थे। तंजौर के इतिहास के अनुसार शाहजी का राज्य-समय (१६८४–१७१२ ई०) विद्योन्नति के लिये प्रसिद्ध रहा है। इनकी सभा में ४७ विद्वान् रहते थे। इनका विरचित शब्दरत्नसमन्वय–कोष शब्दचयन की दृष्टि से बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इस कोष में प्रत्येक वर्ग के भीतर अक्षर-क्रम से शब्दों का विन्यास किया गया है। शब्दों का अवान्तर क्रम भी अकारादि क्रम के अनुसार विद्यमान है। यह विशेषता संस्कृत के बहुत कम कोशों में पाई जाती है। इन्होंने 'क्ष' को अलग वर्ण के रूप में

स्वीकार किया हैं। उससे आरम्भ होने वाले शब्दों को अन्त में रखा है। इस कोश में लगभग ३५०० श्लोक हैं। इस कोश का दूसरा नाम राजकोश भी है।

हर्षकीर्ति— इन्होंने समानार्थक शब्दों के शारदीयाभिधानमाला नामक कोश की रचना की। यह तीन काण्डों में विभक्त है तथा प्रत्येक काण्ड को भी वर्गों में विभक्त किया गया है। प्रथम काण्ड के तीन वर्ग हैं—देववर्ग, व्योमवर्ग तथा धरावर्ग। द्वितीय काण्ड चार वर्गों में विभक्त किया गया है—अङ्गवर्ग, संयोगादिवर्ग, संगीतवर्ग तथा पण्डितवर्ग। तृतीय काण्ड के पाँच वर्ग हैं—ब्रह्म, राज, वैश्य, शूद्र तथा संकीर्ण। पूरे ग्रन्थ में केवल ४३५ श्लोक हैं। कोश के अतिरिक्त हर्षकीर्ति ने अनेक (शास्त्रीय विषयों पर) ग्रन्थों की रचना की। यह जैनधर्मावलम्बी थे। इनके गुरु चन्द्रकीर्ति रहे, जिन्होंने जहाँगीर (१७ वीं शती) से विशेष सम्मान प्राप्त किया। इन्होंने एक दूसरे कोश की भी रचना की। उस कोश का नाम है—शब्दानेकार्थ। इण्डिया आफिस लाइब्रेरी में इस पुस्तक का रचनाकाल वि० सं० १६६५ लिखा है। अत: इनका समय सत्रहवीं शती का आरम्भिक चरण मानना युक्तिसंगत प्रतीत होता है।

नवीन ढंग के कोष

विदेशी भाषाओं के सम्पर्क में आने पर कुछ विद्वानों ने विशिष्ट कोशों का संस्कृत में संकलन किया। इस पद्धति का सर्वप्रथम प्रयोग शब्दकल्पद्रुम नामक प्रख्यात कोष में किया गया। इस कोष को सुप्रसिद्ध मनीषी राजा राधाकान्तदेव ने मान्य पण्डितों की सहायता से अनेक खण्डों में १८२२ तथा १८५८ ई० के बीच प्रकाशित किया। इसमें शब्दों का चयन वर्णक्रम से है तथा पुराण, धर्मशास्त्र आदि प्रमाण-ग्रन्थों के उद्धरणों का समावेश होने से इसकी प्रामाणिकता वहुत बढ़ गई है। वस्तुत: यह संस्कृत का विश्वकोष है। इसमें वैदिक शब्दों का प्राय: अभाव है। शब्दों की व्युत्पत्ति देने से इस कोष की उपादेयता वढ़ गई है। प्रस्तुत कोष में रचना-क्रम से आये हुए शास्त्रोपयोगी शब्दों के प्रसङ्ग में प्रमाणों के अतिरिक्त उनकी प्रायोगिक उपयोगिता को भी वतलाया गया है। उन पदार्थों के लक्षण, स्वरूप तथा चित्रादि देकर कोष को सर्वाङ्गपूर्ण बनाया है। इन सब विषयों का समावेश सात काण्डों में किया गया है। राजा राधाकान्तदेव ने कोष के आरम्भ में 'मुखबन्धन' (भूमिका) लिखते हुए प्रसङ्गवश यह सूचित किया है कि लौकिक कोषों का आदिम स्वरूप 'अग्नि-पुराण' में वर्णित कोष-प्रकरण है। इस प्रकरण का क्रम इस प्रकार है—स्वर्ग-पातालादिवर्ग, अव्ययवर्ग, नानार्थवर्ग, भूवर्ग, पुर-वर्ग, अद्रि-वर्ग, वनौषधिवर्ग, सिंहादिवर्ग, मनुष्यवर्ग, ब्रह्मवर्ग, क्षत्रियवर्ग, वैश्यवर्ग तथा शूद्रवर्ग। इसके अतिरिक्त शेष-भाग में सामान्य नामलिङ्गों का वर्णन है। राधाकान्त देव के

अनुसार अमरकोषकार ने अधिकतर अग्निपुराणोक्तक्रम ही अपनाया है। थोड़ा-बहुत परिवर्तन कर 'अमरकोष' की पूर्ति की है। जटाधर ने भी अमरकोष का अनुसरण किया है। शब्दकल्पद्रुम में २९ कोषों का उपयोग किया गया है।

शब्दकल्पद्रुम के ढंग पर आगे चलकर दो कोष और बनाये गये। इनमें प्रथम शब्दार्थचिन्तामणि तो उतना विशाल नहीं है। उसमें केवल चार भाग हैं। उसके रचयिता सुखानन्दनाथ रहे। कोष की रचना १८६४-१८८५ तक हुई। दूसरा कोष वाचस्पत्यम् बड़ा विशाल है। सर्वप्रथम यह कलकत्ता से २० भागों में प्रकाशित हुआ (१८७३-१८८४ ई०)। इसके संकलनकर्ता तारानाथ तर्कवाचस्पति थे। इसमें वैदिक शब्दों का भी समावेश है, किन्तु उनकी व्युत्पत्ति अधिकतर कल्पनाप्रसूत है।

इसी समय राथ तथा बोथलिंक नामक जर्मन विद्वानों द्वारा महान् संस्कृत कोष को प्रणयन हुआ, जिसमें वैदिक शब्दों का भी पूर्ण समावेश है। इसकी रचना भाषावैज्ञानिक रीति पर की गई है। जर्मन विद्वानों ने अनेक पण्डितों की सहायता से शब्दों के प्रयोगस्थलों का भी निर्देश किया है। इसके साथ ही शब्दों के अर्थविकास को अङ्कित करने का भी श्लाघ्य प्रयास किया है। उस समय तक प्रकाशित तथा अप्रकाशित समस्त संस्कृत ग्रन्थों का विधिवत् अनुशीलन कर इस विशाल कोष की रचना की गई है। आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार डा० राथ ने वैदिक शब्दों का तथा डा० बोथलिंक ने वैदिकेतर शब्दों का विवरण भाषाशास्त्रीय पद्धति पर प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। डा० बोथलिंक ने इसका एक संक्षिप्त संस्करण भी जर्मन भाषा में प्रकाशित किया था।

इसी क्रम में डा० मोनियर विलियम्स ने एक संस्कृत-अंग्रेजी कोष की रचना की। इनका परिश्रम श्लाघनीय है। शब्दों के चयन तथा अर्थनिर्देश में बड़ा परिश्रम किया गया है। केवल कमी इस बात की है कि प्रयोगस्थलों का निर्देश नहीं किया गया है। इस कोष की रचना उपर्युक्त जर्मन कोषों के आधार पर हुई है। यह कोष समानार्थक शब्दों के सम्बन्ध में बड़ा प्रामाणिक माना जाता है। इसका दूसरा स्वरूप अंग्रेजी से संस्कृत में भी है।

इस प्रकार के कोषों की रचना में आगे चलकर भारतीय विद्वान् भी अग्रसर हुए, जिनमें वामन सदाशिव आप्टे का नाम विशेषतया उल्लेखनीय है। इन्होंने भी संस्कृत-अंग्रेजी तथा अंग्रेजी-संस्कृत कोषों की रचना की। यह कोष विद्वानों तथा छात्रों के लिये समान रूप से उपकारक है। इस कोष में वर्णक्रमानुसार शब्दों का चयन किया गया है। प्रयोगस्थलों के निर्देश में पुराण तथा काव्यादि के उद्धरणों का उपयोग किया गया है। शास्त्रीय परिभाषाओं, छन्दों, प्राचीन

भौगोलिक एवं ऐतिहासिक स्थलों का विवेचन भी यथास्थान किया गया है। हाल में इसका नवीन संस्करण तीन खण्डों में पुणे से प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त छात्रोपयोगी संस्कृत-हिन्दी लघु संस्करण भी प्रकाशित हुआ है। नवीन संस्करण में शब्दों के चयन में सम्पादकों ने वृद्धि की है।

शब्दपरायण की प्रक्रिया को अभिनव रूप देने वालों में महामहोपाध्याय पण्डित रामावतार शर्मा प्रमुख रहे हैं। उन्होंने एक विशाल कोष की रचना की। इस कोष का नाम है—वाङ्मयार्णव। शर्माजी (१८७७–१९२९ ई०) ने इस कोश का प्रारम्भ १९११ ई० में किया। जीवन भर वे इसमें परिवर्तन-परिवर्धन करते रहे। आचार्य बलदेव उपाध्यायजी के अनुसार यह कोष नामलिङ्गानुशासन की परम्परा का सार्वभौम ग्रन्थ है। यह नानार्थक कोष है। इसमें शब्दों का चयन वैज्ञानिक वर्णक्रमानुसार किया गया है[1]। वैदिक तथा लौकिक दोनों प्रकार के शब्दों का इसमें समावेश है। इस कोष में प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति के साथ उसके प्रयोगस्थलों का भी समुचित निर्देश किया गया है। इसमें २०,००० शब्द उपन्यस्त हैं। साथ ही इस कोष की रचना पद्यमयी है तथा ६७९६ अनुष्टुपों में समाप्त हुआ है। ग्रन्थ के आरम्भ में १६ पद्यों का उपक्रम है एवम् अन्त में ६ श्लोकों में समापन किया गया है। ग्रन्थकार के निधन के ३८ वर्षों के सुदीर्घ काल के पश्चात् सन् १९६७ ई० में ज्ञानमण्डल प्रकाशन द्वारा यह प्रकाशित किया गया है।

वर्तमान काल की कोष निर्माण प्रवृत्ति :

जर्मन-संस्कृत कोष के प्रकाशन के लगभग एक शतक के बाद नवीन वैदिक कोष की आवश्यकता प्रतीत होने पर होशियारपुरस्थ विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान से अनेक विद्वानों के सहयोग से एक वृहद् वैदिक कोष का प्रकाशन हुआ है। इस कोष ने वैदिक संहिताओं के सम्बन्ध में ऋचाओं के सन्दर्भ की समस्या हल कर दी है। यद्यपि इसे शब्दपारायण की दृष्टि से कोष के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता है तथापि इसमें वैदिक शब्दों की सूची विद्यमान होने से वैदिक मूल-शब्दों का परिचय सुलभ हो जाता है। इसके १६ खण्ड प्रकाशित हुए हैं। इसके

---

१. वर्णानुक्रमविन्यस्तैर्लोकवेदोभयोद्धृतैः।
पद्यबद्धैः सपर्यायैर्नानार्थैर्घटितो महान्॥
विशेषशास्त्रायुर्वेदप्रभृतीनां पदैर्युतः।
सोपयुक्तोदाहृतिभिष्टिप्पणैः समलंकृतः॥
सचित्रः प्रचुरार्वाच्यवैज्ञानिकपदोच्चयः।
परिशिष्टैश्च बहुभिः कोष एष परिष्कृतः॥
(उपक्रम श्लोक ७,८,९)

अतिरिक्त "संस्कृत का वृहत्तम कोष" प्रकाशन करने की योजना डेक्कन कालेज, पुणें के शोध-विभाग के निदेशक सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० एस० एम० कात्रे ने भी प्रस्तुत की है। उनके साथ अनेक विज्ञ सहयोगी भी इस कार्य में संलग्न हैं। अब तक इस कोश के ३ खण्ड प्रकाशित हुए हैं। इसके समग्र भाग प्रकाशित होने पर कोश-साहित्य का क्षेत्र अधिक विस्तृत हो जायगा। इसकी विशेषता यह है कि शब्दों का अर्थ देने में भाषा-वैज्ञानिक पद्धति का आश्रय लिया जा रहा है तथा यह प्रयत्न किया जा रहा है कि अधिकाधिक प्रचलित शब्दों का विधिवत् समाकलन हो जाय।

शब्दराशि को समाकलित करने में विद्वानों की प्रवृत्ति आज भी देखी जाती है। इस प्रवृत्ति में शब्दों का प्रयोग एवं प्रचलन ही मुख्य कारण है। शब्दों के प्रचलन एवं प्रयोग होने में देश-काल की परिस्थिति मुख्य रूप से साधक होती है। अतः कोष-रचना की प्रक्रिया बराबर चलती रहती है। इसके फलस्वरूप वाराणसी से श्रीगोपालचन्द्र वेदान्तशास्त्री ने भी बृहत् संस्कृतकोष के प्रकाशन की योजना बनाई है। उसका एक खण्ड प्रकाशित हुआ है। इसके सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर हिन्दी-जगत् को संस्कृत-वाङ्मय में अवगाहन करने के लिए अच्छा अवसर मिलेगा। वर्तमान समय के कोषकारों में सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० सूर्यकान्त का योगदान भी प्रशंसनीय है। उन्होंने संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी कोश की रचना की है। इसके पूर्व चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा का संस्कृतशब्दार्थकौस्तुभ (संस्कृत-हिन्दी) का अच्छा प्रचार हुआ है। इन्होंने कोष लिखकर अनेक विद्वानों को कोष-रचना करने के लिए प्रेरित किया है।

विविध कोश

(क) इस प्रसङ्ग में संस्कृत के समानान्तर पालि-प्रकृत कोशों पर भी विचार करना आवश्यक है। रचना-क्रम में पालि-कोश अधिकतर वैदिक-निघण्टुओं के समान परिलक्षित होते हैं। ये कोश श्लोकबद्ध नहीं हैं। पालिकोशों में सर्वप्रसिद्ध कोष महाव्युत्पत्तिकोश है, जो २८४ प्रकरणों में विभक्त है। इसमें लगभग ९०० शब्द संकलित हैं, जिनमें समानार्थक शब्दों के अतिरिक्त धातुरूप भी संगृहीत हैं। इसके अतिरिक्त पालिकोशों में मोगलान की अभिधानप्पदीपिका नामक कोश अत्यधिक लोकप्रिय है। यह बारहवीं शती की रचना है तथा अमरकोष की शैली में लिखा गया है।

प्राकृत कोषों में सबसे प्राचीन कोष पायिउ-लच्छिनाममाला है। इसके रचयिता धनपाल हैं। इसे ग्रन्थकार ने ९७२ ई० में लिखा था। इसमें २७९ गाथायें हैं। हेमचन्द्र ने इस कोष का उपयोग अपने देशी नाममाला में किया है।

हेमचन्द्र का देशीनाममाला प्राकृत-कोश बड़ा सुन्दर तथ... आठ अध्याय (वर्ग) हैं। इन अध्यायों में शब्दों का संग्रह ... अभिलक्षित कर किया गया है। पर्यायवाची शब्द के अनन्तर उ... आरम्भ होने वाले नानार्थ शब्द भी रखे गए हैं। इस ग्रन्थ में ... प्रधानता होने से प्राकृत शब्दों के ज्ञान में बड़ी सहायता मिलती ... अनुशीलन से उस युग (१२वीं शती) के रीति-रिवाजों का भी ...

इस बीच दो प्राकृत कोशों का प्रकाशन बड़ा उपयोगी सिद्ध हु... कोश हैं—(१) अभिधान-राजेन्द्र-कोश तथा (२) प्राकृत-शब्दमह... से प्रथम ग्रन्थ तो जैनधर्म का विश्वकोष ही है, जिसमें जैनधर्म, जैन... साहित्य के विषयों को अभिलक्षित कर प्राचीन ग्रन्थों के उद्धरणों ... साङ्गोपाङ्ग विवेचन है। यह ग्रन्थ विशालकाय है, सात खण्डों में ... इसकी पृष्ठ संख्या १०,००० है। प्राकृतशब्दमहार्णव इसकी अपेक्षा लघु... इसका आयाम लगभग १५०० पृष्ठों में सीमित है। यह नवीन शैली ... है। इसमें प्रयोगस्थलों का निर्देश बड़ी सुन्दरता के साथ किया गया ...

(ख) मुगलकाल में फारसी का प्राधान्य होने के कारण फारसी-कोषों की आवश्यकता प्रतीत हुई। इसके फलस्वरूप अकबर बादशाह के ... से विहारी कृष्णदास मिश्र ने पारसीकप्रकाश ग्रन्थ की रचना की। इस ... दो भाग हैं—कोश तथा व्याकरण। २६९ अनुष्टुप्-श्लोकों में ग्यारह ... का समावेश किया गया है। प्रकरणों का शीर्षक अधिकतर अमरकोष ... है। इसमें फारसी शब्दों के संस्कृत पर्याय दिये गए हैं। इसी प्रकार का ... ग्रन्थ वेदाङ्गराय द्वारा विरचित पारसी-प्रकाश (१६४७ ई०) है। इसमें फा... तथा अरबी के शब्दों का संस्कृत में अर्थ दिया गया है। तीसरा ग्रन्थ पा... विनोद भी इसी समय लिखा गया। इसके रचयिता व्रजभूषण थे। ... क्षेमेन्द्र का लोकप्रकाश भी इस दृष्टि से उपयोगी है। इसमें भी फारसी शब्दों का प्रयोग हुआ है। इस ग्रन्थ में शाहजहाँ का भी उल्लेख होने ... विदित होता है कि इसमें कुछ अंश सत्रहवीं शती में जोड़ दिया गया हो।

विशिष्ट-कोष

संस्कृत वाङ्मय के विशिष्ट विषयों को अभिलक्षित कर भी विद्वानों ने अ... कोष-ग्रन्थ बनाये। संगीत में संगीतराज नामक विशालकाय ग्रन्थ का एक ... कोष के रूप में प्रख्यात है। उस अंश को नृत्यरत्नकोष कहा गया है। इस... लेखक महाराणा कुम्भकर्ण हैं। किसी अज्ञात लेखक ने वस्तुरत्नकोश की रचना ... की है। इसमें सामान्य विषयों की जानकारी दी गई है। यह ग्रन्थ दो भागों ...

अतिरिक्त "
पुणें के
प्रस्तुत
तक इ
पर कोश
शब्दों का
यह प्रयत्न
कलन हो

|| श्रीः ||

आदर्श-हिन्दी-संस्कृत-कोशः

अ

, देवनागरीवर्णमालायाः प्रथमः स्वरवर्णः, अकारः ।

अ–, (= नञ्), अव्य० (सं.) तत्सादृश्यमभावश्च अन्यत्वं तदल्पता । अप्राशस्त्यं विरोधश्च नञर्थाः षट् प्रकीर्तिताः । उदाहरणानि— (सादृश्ये) अब्राह्मणः = ब्राह्मणसदृशः; (अभावे) अभोजनम् = भोजनाभावः; (अन्यत्वे) पटोऽघटः = घटभिन्नः; (अल्पत्वे) अनुदरी कन्या = अल्पोदरी; (अप्राशस्त्ये) अधनं कर्मधनम् = अप्रशस्तधनम्; (विरोधे) अधर्मः परापकारः = धर्मविरोधी ।

अंक, सं. पुं. (सं.) चिह्नं अभिज्ञानं, लक्षणम् २. संख्याचिह्नम् (१, २, ३ आदि) ३. लेखः ४. भाग्यम् ५. रूपकभागः ६. क्रोडम् ७. शरीरम् ।

—गणित, सं. पुं. (सं. न.) गणितभेदः, अङ्कविद्या ।

—गत, वि., गृहीत, निरुद्ध ।

—पाली, सं. स्त्री, परिचारिका ।

—शायिनी, सं. स्त्री., पत्नी, जाया ।

—देना, भरना वा लगाना, मु., आलिंग् (भ्वा, प. से.), आश्लिष् (दि, प. अ.) ।

अंकन, सं. पुं. (सं. न.) चिह्न-लक्षण,-दानम् २. लेखनम् , ३. गणनम् ।

अंकित, वि. (सं.) चिह्नित, लाञ्छित, २. लिखित ।

अंकुर, सं. पुं. (सं.) अंकूरः, प्ररोहः, उद्भिद (पुं.) ।

अंकुरित, वि. (सं.) स्फुटित, सांकुर, उद्भिन्न ।

अंकुश, सं. पुं. (सं.)सृ(श्)णिः (स्त्री.), अंकूषः ।

अँकोर, (अँकवार), सं. पुं. (सं. अंकः) क्रोडः–डं–डा, उत्संगः २. उत्कोचः, उपायनम् ।

अँखुआ, सं. पुं, दे. 'अंकुर' ।

अंग, सं. पुं. (सं. न.) शरीरं, देहः, कायः, २. अवयवः, प्रतीकः, अंगकं, अपघनः ३. अंशः, भागः ४. वेदांगशास्त्राणि [= शिक्षा, कल्पः, व्याकरणं, निरुक्तं, ज्यौतिषं, छन्दस् (न.) ।

—ज, सं. पुं. (सं.) पुत्रः ।

—जा, सं. स्त्री. (सं.) पुत्री, तनया ।

—खिंचना, सं. पुं., आक्षेपकः (रोगभेदः) ।

—फड़कना, सं. पुं., ताण्डव-नर्तन,-रोगः २. अंगस्फुरणं (शकुनभेदः) ।

—रखा, सं. पुं. (सं. अंगरक्षकः >) अंगरक्षणी ।
—राग, सं. पुं. (सं.) गात्ररञ्जनं, विलेपनम् ।
अँगरेज, सं. पुं. (पुर्त. इंगलेज़) आंग्लदेशीयः ।
अँगरेजी, सं. स्त्री. (हिं. अँगरेज़) आंग्लभाषा ।
अंगार (-रा,) सं. पुं. (सं.) अंगारः रं, दग्धकाष्ठखण्डं अलातं, उल्मूकम् , निर्धूमाग्निः ।
अँगिया, सं. स्त्री. (सं. अंगिका) कञ्चुलिका, कंचुली, कंचूलम् , आंगिकः- कं, चेलिका, कु (कू) र्पासः-सकः ।
अंगी, वि. (सं.-गिन्) शरीरिन् , देहिन् २. अवयविन् ३. प्रधान, मुख्य ४. दे 'अँगिया' ।
अंगीकार, सं. पुं. (सं.) अंगीकरणं, स्वीकारः, प्रतिग्रहः, प्रतिपत्तिः (स्त्री.) आदानम् ।
—करना, क्रि, स., अंगी-स्वी,-कृ (त. उ. अ.), आ-दा (जु॰ आ. अ.), प्रतिपद् (दि. आ. अ.) प्रति-इष् (तु. प. से.) ।
अंगीकृत, वि. (सं.) स्वी-उरी-उररी, कृत, आ-सं-उप,-श्रुत, उपगत ।
अंगीठी, सं. स्त्री. (हिं. अंगीठा) अंगार,-धानिका-शकटी, हसनी, हसन्ती ।
अंगीय, वि. (सं.) अंगदेशीय, २ शारीरिक, कायिक।
अंगुल, सं. पुं. (सं.) अष्टयवपरिमाणम् ।
अंगुली, सं. स्त्री. (सं.) अंगुलिः (स्त्री.), अंगुरीरिः (स्त्री.), करशाखा ।
—काटना, मु., वि-स्मि (भ्वा. आ. अ.) चकित (वि.)+भू ।
—चटखाना, मु. अंगुली,-मोटनं॰ स्फोटनम् ।
अंगुश्ताना, सं. पुं. (फ़ा.) अंगुलित्राणम् , अङ्गुष्ठत्राणम् ।
अंगुष्ठ, सं. पुं. (सं.) वृद्धाङ्गुलिः (स्त्री.) ।
अंगूठा, सं. पुं. (सं. अंगुष्ठः) वृद्धाङ्गुलिः (स्त्री.) ।
—चूमना, मु., चाटुभिः तुष् (प्रे.), अधीन (वि.)+भू ।
—दिखाना, मु., सावमानं प्रत्यादिश् (तु.प.अ.) ।
अँगूठी, सं. स्त्री. (हि. अँगूठा) अङ्गुरी (ली) यं, अङ्गुरी (ली) यकं, मुद्रा, ऊर्मिका ।
अंगूर, सं. पुं. (फ़ा.), (बेल) द्राक्षा, स्वाद्वी, मधुरसा, गोस्तना-नी २. (फल) द्राक्षाफलम् आदि ।
अंगूरी, वि. (फा.) द्राक्षामय २ द्राक्षावर्ण ।
अंगोछा,(पुं. सं. हिं. अंग+पोंछना) अंगप्रोञ्छनम् ।

अंघ्रि सं. पुं. (सं.) चरणं, पादः २. वृक्षमूलम् ३. छन्दश्चरणम् ।
अंचल सं. पुं. दे. आँचल ।
अंजन, सं. पुं. (सं. न.) कज्जलं, नेत्ररंजनम् ।
अंजर-पंजर, सं. पुं. (सं. पंजरः-रम्) (पसली) पर्शुका, पार्श्वकं, पार्श्वास्थि (न.) २. कंकालः-लम्, पंजरः-रम् ।
अंजली, सं. स्त्री. (सं.) अंजलिः, कर-हस्त-, सम्पुटः ।
अंजस, वि. (सं.) सरल अवक्र २. निष्कपट निर्व्याज । (अंजसी स्त्री०) ।
अंजाम, सं. पु. (फ़ा) परिणामः, फलम् , अन्तः, पाकः ।
अंजित, वि. (सं.) सांजन, कज्जलकलित ।
अंजीर, सं. पुं. (फ़ा.) (वृक्ष) अंजीरः, उदुम्बर-जातीयो वृक्षः २. (फल) अंजीरम् ।
अंजुमन, सं. स्त्री. (फ़ा.) सभा, परिषद् (स्त्री.) ।
अंझा, सं. पुं. (सं. अनध्यायः) अनध्यायदिवसः २. अवकाशः, क्षणः, कार्यनिवृत्तिः (स्त्री.) ।
अंटिया, सं. स्त्री. (हिं. अंटी) गुच्छः, संघातः, लघुभारः ।
अँटियाना, क्रि. स. (हिं. अंटी) छलेन आत्म-सात् कृ । सं. पुं., छलेन अपहारः, ग्रसनम् ।
अंटी, सं. स्त्री. (सं. अष्ठिः >) ग्रन्थिः, शाटिकायाः कटिलग्नं कुञ्चनं मोटनं वा २. अंगुलीनां मध्यस्थमन्तरम् ।
अंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मुष्कः, वृषणः, शुक्र-ग्रन्थिः २. दे. 'अंडा' ३. विश्वम् , लोक-मण्डलम् ४. वीर्यं, शुक्रम् ।
—कोश, सं, पुं. (सं.) दे. 'अंड' ।
—कोश बढ़ना, सं. पुं., मुष्क-वृषण-कोश,-वृद्धिः (स्त्री.)-शोफः ।
—ज, सं. पुं., खगसर्पमीनादयो जीवाः ।
अंड-बंड, सं. पुं. (अनु०) प्रलापः, अनर्थकं वचनम् २. वि., व्यर्थ, अव्यवस्थित ।
अंडा, सं. पुं. (सं. अण्डम्) कोषः-शः, डिम्बः, पेशी-शिः (स्त्री.) ।
—देना, क्रि. स., अण्डानि प्र-सू (अ. आ. अ.) ।
—सेना, क्रि. स., अण्डेभ्यः प्रजोत्पत्तिं कृ ।
अंडाकार, वि. (सं.) अण्डाकृति ।
अंडी, सं. स्त्री. (सं. एरण्डः) रुचकः, चित्रकः, मंडः २. एरंडफलस्य बीजम् ३. वस्त्रभेदः ।

अंत, सं. पुं. (सं.) समाप्तिः (स्त्री.), परि-, अवसानं, विरामः २. अन्त्य-अन्तिम-पाश्चात्य,-भागः ३. सीमा, प्रान्तः ४. मृत्युः, नाशः ५. परिणामः, फलम् ।

—काल, सं. पुं. (सं.) मृत्युसमयः ।

अंतड़ी, सं. स्त्री. (सं. अंत्रम्) पुरीतत् (न.) ।

अंतरंग, वि. (सं. अन्तर् + अंग) अन्तर्गत, अन्तःस्थ, आभ्यन्तर २. निकटवर्तिन् ।

३. हार्दिक । सं. पु., परममित्रम्, अभिन्न हृदयः सखि (पुं.) ।

अंतर, सं. पुं. (सं. न.) भेदः, विशेषः, पार्थक्यम्, २. दूरता, अध्वन्, अन्तरालं, विप्रकर्षः ३. मध्यवर्तिकालः ४. व्यवधानम् ५. हृदयम् । वि०, अपर, अन्य ।

अंतरण, सं. पुं. (सं. न.) अन्तरे-मध्ये-करणं-स्थापनम् २. व्यवधापनम् ।

अँतरा, सं. पुं. (सं. अंतरम्) भेदः, विशेषः २. अवकाशः, अनुपस्थितिः (स्त्री.) ३. तृतीयकः (बारी का बुखार) ।

अंतरागार, सं. पु. (सं. नं.) गृह-गेह-अन्तरं-गर्भः ।

अंतरात्मा, सं. स्त्री. (सं. पुं.) आत्मन्, देहिन्, शरीरिन् २. मानसं, चित्तं, मनस् (न.) ।

अंतराय, सं. पुं. (सं.) अंतरायः, विघ्नः, प्रत्यूहः, व्याघातः ।

अंतराल, सं. पुं. (सं. न.) मध्यप्रदेशः, अभ्यन्तरं २. परिवेष्टितस्थानम् ।

अंतरिंद्रिय, सं. स्त्री. (सं. न.) मनस्-चेतस् (न.), चित्तम् ।

अंतरिक्ष, सं. पुं. (सं. न.) खं, गगनं, आकाशः-शं, अंबरम् २. स्वर्गः ।

अंतरित, वि. (सं.) दे. 'अन्तर्गत' १ ।

अंतरीप, सं. पुं. (सं. पुं. न.) भूशिरस् (न.) ।

अंतरीय, सं. पुं. (सं. न.) अन्तर्,-वसनं-वस्त्रं-वासस् (न.) ।

अंतर्गत, वि. (सं.) अन्तःस्थ, अन्तर्भूत, समाविष्ट, सम्मिलित २. हृदयस्थ, मानसिक ।

अंतर्द्धान, सं. पुं. (सं. न.) लोपः, अदर्शनं, तिरोधानम् । वि. अदृश्य, गुप्त ।

अंतर्यामी, वि. (सं. मिन्) अन्तःकरणनियामक २. मनोभावज्ञ । सं. पुं. परमेश्वरः २. आत्मन् ।

अंतर्राष्ट्रीय, वि. ((हिं.) अन्ताराष्ट्रि (ष्ट्री) य) ।

अंतिम, वि. (सं.) चरम, अन्त्य, पश्चिम, अवम ।

अंतःकरण, सं. पुं. (सं. न.) अन्तरिन्द्रियं, मनस् (न.), मानसं, चित्तम् ।

अंतःपुर, सं. पुं. (सं. न.) अवरोधः, अवरोधनम्, शुद्धान्तः ।

अंत्यज, सं. पुं. (सं.) शूद्रः, अन्त्यजन्मन्, चतुर्थवर्णः (रजकश्चर्मकारश्च नटो वरुड एव च । कैवर्तमेदभिल्लश्च सप्तैते अन्त्यजाः स्मृताः-यमवचनम्) ।

अंत्येष्टि, सं. स्त्री. (सं.) शवदाहः, प्रेतकर्मन् (न.), अन्तिमसंस्कारः ।

अंत्रवृद्धि, सं. स्त्री. (सं.) अंत्रस्रंसः, नाभिवर्द्धनम् ।

अंदर, क्रि. वि. (फ़ा.) अन्तरे, मध्ये, गर्भे, अभ्यन्तरे (सब सप्तम्यन्त), अंतः (अव्य०) ।

अंदरसा, सं. पुं. (सं. इन्द्राशः) पिष्टिकः, मिष्टान्नभेदः ।

अंदरूनी, वि. (फ़ा.) आन्तर, अन्तर्गत, आभ्यन्तर ।

अंदलीब, सं. उ. (अ.) बुल्बुलः, प्रियगीतः ।

अंदाज़, सं. पुं. (फ़ा.) विधिः, रीतिः (स्त्री.), २. भावः ३. अनुमानम् ।

अंदाज़न, क्रि. वि. (फ़ा.) अनुमानेन ।

अंदाज़ा, सं. पुं. (फ़ा.) अनुमानं, ऊहा ।

अंदेशा, सं. पुं. (फ़ा.) चिन्ता, आशंका, त्रासः ।

अंध, वि. (सं.) नेत्र-नयन-लोचन,-हीन-रहित २. अज्ञानिन्, अविवेकिन्, मूर्ख ३. प्रमादिन् ४. उन्मत्त ।

सं. पुं. (सं.) अन्धः, अन्धकः, अनयनः, विलोचनः २. अन्धकारः, तमस् (न.) ।

—कार, सं. पुं. (सं.) तमस् (न.), तमिस्रं-स्रा, ध्वान्तं, तिमिरम् ।

—कूप, सं. पुं. (सं.) शुष्ककूपः २. नरकविशेषः ।

—ड़, सं. पुं., वात्या, प्रभंजनः, चण्ड-महा-अति, वातः, प्रकंपनः ।

—तमस, सं. पुं. (सं. न.) अन्धतामिस्रः-श्रः (स्रं, -श्रं), अन्धतामसम् ।

—ता, सं. स्त्री. (सं.) अंधत्वं, दृष्टिहीनता २. अज्ञानं, मोहः ।

—परंपरा, सं. स्त्री. (सं.) गतानुगतिकता, विवेकशून्यानुसरणम् ।

—विश्वास, सं. पुं. (सं.) निर्विवेक-तर्कशून्य,-विश्वासः-प्रत्ययः-विश्रम्भः ।

अंधा, सं. पुं. (सं. अन्धः) अनयनः, अनेत्रः, नेत्रहीनजीवः।वि०,विवेकःविचार,-शून्य-रहित।

—धुंध, सं. स्त्री., घोरान्धकारः, अन्धन्तमस् (न.) (२) कुप्रबन्धः, अन्यायः । वि० विचार-न्याय,-शून्य-रहित । क्रि. वि., निश्शङ्कं, अन्धवत् , रभसा, साहसेन, असमीक्ष्य ।

अंधेर, सं. पुं. (सं. अन्धकारः >) अन्यायः, उपद्रवः, अत्याचारः, कुव्यवस्था ।

—खाता, सं. पुं. अव्यवस्था, अन्यथाचारः, कुव्यवस्था ।

—करना, मु., अन्याय्यं आचर् (भ्वा. प. से.)।

अँधेरा, सं. पुं. (सं. अन्धकारः) ध्वान्तं, तमिस्रं, तिमिरं, तमस् (न.); वि. निरालोक, निष्प्रभ, तमो,-वृत-मय ।

घना–, अन्धतमसम् ।

थोड़ा–,अवतमसम् ।

व्यापक–, सन्तमसम् ।

अँधेरे घर का उजाला, मु., एकलः सुतः, एकाकिपुत्रः ।

अँधेरी, सं. स्त्री. (हिं. अँधेरा) प्रकम्पनः, वात्या, झञ्झावातः २. कृष्णा रात्री, निश्चन्द्रा रजनी ।

—कोठरी, सं. स्त्री., निरालोकः कोष्ठः, २. गर्भः ३. रहस्यम् ।

अंध्र, सं. पुं. (सं. बहु०) अन्ध्रराज्यम् २. अन्ध्रजनाः ३. वंश–विशेषः ।

अंब, सं. पुं. (सं. आम्रम्) आम्र-रसाल,-फलम् २. रसालः, आम्रः (वृक्ष) ।

अंबक, सं. पुं. (सं. न.) नेत्रम् , नयनम् (सं. पुं.) पितृ, जनकः ।

अंबर, सं. पुं. (सं. न) आकाशः-शं, गगनम् । २. वस्त्रं, वसनम् । ३. मेघः, जलदः ४. सुगन्धिद्रव्यभेदः ।

अंबरीष सं. पुं. (सं.) अयोध्याया वैष्णवनृप-विशेषः २. विष्णुः ३. शिवः ।

अंबा, सं. स्त्री. (सं.) मातृ (स्त्री.), जननी २. पार्वती, दुर्गा ।

अंबार, सं. पुं. (फ़ा.) निकरः,राशिः, संभारः ।

अंबारी, सं. स्त्री. (अ. अमारी) परिस्तो (ष्टो) मः, प्रवेणी, सज्जना, कल्पना ।

अंबालिका, सं. स्त्री. (सं.) मातृ (स्त्री.),जननी २. सम्राज्ञी ३. विचित्रवीर्यपत्नी ।

अंबिका, सं. स्त्री. (सं.) मातृ (स्त्री.) २. पार्वती ३. विचित्रवीर्यजाया ।

अंबु, सं. पुं. (सं. न.) जलं, पानीयम् ।

—ज, सं. पुं. (सं. न.) कमलम् ।

—द, सं. पुं. (सं.) मेघः, जलदः ।

—धि,-निधि,-पति,-राशि, सं. पुं. (सं.) सागरः।

अंभ, सं. पुं. [सं. अम्भस् (न.)] जलं, वारि (न.) ।

अंभोज, सं. पुं. (सं. न.) कमलम् ।

अंभोद, सं. पुं. (सं.) मेघः, अम्बुदः ।

अंभोधि, सं. पुं. (सं.) अंभो,-निधिः,-राशिः, समुद्रः ।

अंश, सं. पुं. (सं.) वि-, भागः, खण्डः-डं, शकलः-लं, प्र-, देशः. अवयवः, अङ्गम् २. वृत्तस्य षष्ट्यधिकत्रिशततमो भागः ३. लाभांशः ४. भाज्यांकः ५. रिक्थांशः ।

अक्ष–,सं. पुं. (सं.) (=Degree of latitude)

देशान्तर-, सं. पुं. (सं.) लंबांशः (= Degree of longitude)

अंशु, सं. पुं. (सं.) किरणः, रश्मिः ।

—माली, सं. पुं. (सं.-लिन्) अंशुमत् , सूर्यः ।

अकंटक, वि. (सं.) निष्कण्टक,कण्टक-शल्य, शून्य २. निर्विघ्न, निरन्तराय ३. शत्रुशून्य ।

अकड़[१], सं. स्त्री. (सं. आ × कड्=गर्व करना) गर्वः, दर्पः २. धृष्टता ३. आग्रहः ।

—बाज़, वि. (हिं × फ़ा.) दृप्त, गर्वित २. धृष्ट ३. आग्रहिन् ।

—बाज़ी, सं. स्त्री, अभिमानित्वं, दृप्तत्वम् ।

अकड़[२], सं. स्त्री. (सं. आ + कड्ड=कड़ा होना) प्रस (सा) रः, आतानः, आततिः (स्त्री.) २. दृढता, अनम्यता ३. वक्रता ।

—बाई, सं. स्त्री., गात्रोपघातः; आक्षेपः, उद्वेष्टनम् ।

अकड़ना[१], क्रि. अ. (सं. आकडनम्) गर्व्, आ-कड् (दोनों भ्वा. प. से.) ।

अकड़ना[२], क्रि. अ. (सं. आकड्डनम्) आकड्ड् (भ्वा. प. से.), दृढ़ी-वक्री,-भू ।

अकथ, वि. (सं. अकथ्य) अकथनीय, वर्णनातीत,अनाख्येय ।

अकबक, सं. स्त्री. (अनु०) प्रलापः २. चिन्ता ३. चैतन्यम् । वि. चकित, अवाक् ।

अकरणीय, वि. (सं.) अविधेय, अकार्य ।

अकर्म, सं. पुं. (सं. अकर्मन् न.) कुकार्यम् २. पापम् ।

अकर्मक, वि. (सं) कर्मरहित (क्रिया, धातु आदि) ।

अकसर, क्रि. वि. (अ.) प्रायः, प्रायशः, बहुशः, सामान्यतः (सब अव्य०) ।

अकसीर, सं. स्त्री. (अ.) रसायनं, ईदृशो रसभेदो यो धातून् सुवर्णीकरोति २. सञ्जीवनौषधम् । वि., अमोघ, सिद्धिकर ।

अकस्मात्, क्रि. वि. (सं) सहसा, एकपदे, अकाण्डं-ण्डे, अतर्कितं, दैवात् , हठात् (सब अव्य०) ।

अकाज, सं. पुं. (सं. अकार्यम्) कार्यहानिः (स्त्री.), विघ्नः, अन्तरायः २. कुकार्यम् । क्रि. वि., व्यर्थं, निष्प्रयोजनम् ।

अकाट्य, वि. (सं. अ + हिं. काटना) अखण्डनीय, अप्रत्याख्येय, अबाध्य ।

अकाय, वि. (सं.) विदेह, अशरीरिन् ।

अकारण, वि. (सं.) निष्कारण, अहेतुक, निर्निमित्त २. स्वयम्भू । क्रि. वि., निष्प्रयोजनं, निष्कारणम् ।

अकारथ, वि. (सं. अकार्यार्थं) निष्फल, मोघ । क्रि. वि., वृथा, व्यर्थम् ।

अकारांत, वि. (सं.) अदन्त, अवर्णान्त ।

अकारादि, अवर्णा वि. (सं.) अवर्ण,–आरम्भ उपक्रम ।

अकार्य, वि. (सं.) अकर्तव्य, अकरणीय २. अनुचित । सं. पुं. (सं. न.) कु–निन्दित,–कार्य-कर्मन् (न.) ।

अकाल, सं. पुं. (सं.) दुर्भिक्षं, दुष्कालः, नीवाकः, आहाराभावः २. कुसमयः ।

—मृत्यु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) असामयिको मृत्युः ।

अकालिक, वि. (सं.) अनवसर, अप्राप्तकाल, असमयोचित ।

अकाली, सं. पुं. (सं. लिन्) गुरुनानकमतानुयायिभेदः ।

अकासी, दे० 'चील' ।

अकिंचन, वि. (सं.) निर्धन, निःस्व, दरिद्र, दुर्गत ।

अकिंचनता, सं. स्त्री. (सं.) दारिद्र्यं, निर्धनता, दीनता ।

अकिंचित्कर, वि. (सं.) अशक्त, असमर्थ, अक्षम ।

अकिल, सं. स्त्री. दे. 'अक्ल ।'

अकिल्विष, वि. (सं.) निष्पाप, अनघ, निर्दोष ।

अकीदत, सं. स्त्री. (अ.) श्रद्धा, निष्ठा ।

—मंद, वि., श्रद्धालु, सनिष्ठ, निष्ठावत् ।

अकीदः, सं. पुं. (अ.) विश्वासः, मतम् ।

अकीर्ति, सं. स्त्री. (सं.) अ-अप,-यशस् (न.), वाच्यता ।

अकुलाना, क्रि. अ. (सं. आकुल >) त्वर् (भ्वा. आ. से.), आशु कृ २. आकुली भू , उद्विज् (तु. आ. अ.) ।

अकूत, वि. (सं. अ + हिं. कूतना) अमित, अगणित ।

अकृतज्ञ, वि. (सं.) कृतघ्न (कृतघ्नी स्त्री.), अकृतवेदिन् ।

अकृत्रिम, वि. (सं.) नैसर्गिक, स्वाभाविक २. यथार्थ, वास्तविक ३. हार्दिक ।

अकेला, वि. (सं.एकल) एकाकिन् (-नी स्त्री.), असहाय २. अनुपम, अप्रतिम ।

अकेले, क्रि. वि. (हिं. अकेला) असहायमेव, –मात्र ।

अकोतर सौ, वि. (सं. एकोत्तरशतम्) एकाधिकशतम् ।

अक्खड़, वि. (सं. अक्षर >) उग्र, उद्धत, उच्छृङ्खल २. कलह-कलि,-प्रिय, युयुत्सु ३. निर्भय ४. अशिष्ट ५. जड़ ६. स्पष्टवादिन् ।

—पन, सं. पुं., उग्रता; कलहप्रियता; निर्भयता; असभ्यता; जाड्यम् ; स्पष्टवादिता ।

अक्टोबर, सं. पुं. (अं.) आंग्लवर्षस्य दशमो मासः ।

अक्ल, सं. स्त्री. (अ.) बुद्धिः - मतिः (स्त्री.), प्रज्ञा ।

—मंद, वि., बुद्धिमत् , प्राज्ञ ।

—मंदी, सं. स्त्री., बुद्धिमत्ता, प्राज्ञता ।

अक्ष, सं. पुं. (सं.) देवनः, पाशकः (हिं-पाँसा) २. अक्षरेखा ३. द्यूत-पाशक-क्रीडा ४. रुद्राक्षः ५. व्यवहारः (हिं. मुक़दमा) ६. आत्मन् ७. इन्द्रियम् ८. नयनम् ।

—क्रीड़ा, सं. स्त्री. (सं.) द्यूत-पाशक,-क्रीडा ।

—माला, सं. स्त्री. (सं) जपमाला, अक्षसूत्रम् ।

अक्षत, वि. (सं.) अव्रण, अखण्डित, समग्र । सं. पुं. (सं. नित्य बहु.) देवपूजायै व्रीहयः (बहु०) २. यवाः ।

—योनि, वि. स्त्री. (सं.) पुरुषसंसर्गरहिता (कन्या नारी वा), ब्रह्मचारिणी ।

—वीर्य, वि. पुं. (सं.) स्त्रीसंसर्गरहितः (पुरुषः), ब्रह्मचारिन् ।

अक्षम, वि. (सं.) असहिष्णु, क्षमाशून्य, अतितिक्षु २. अशक्त, असमर्थ ।

अक्षमता, सं. स्त्री. (सं.) असहिष्णुता २. अशक्तत्वम् ।

अक्षय, वि. (सं.) नित्य, अक्षय्य, अव्यय, अक्षर, अनश्वर २. कल्पान्तस्थायिन् ।

अक्षय्य, वि. (सं.) दे. 'अक्षय' ।

अक्षर, वि. (सं.) अच्युत, स्थिर, नित्य । सं. पुं., अकारादयो वर्णाः, ध्वनिचिह्नानि ।

—न्यास, सं. पुं. (सं.) लेखः, लेख्यम् ।

—शः, क्रि. वि. (सं.) प्रत्यक्षरं, सामस्त्येन ।

अक्षि, सं. स्त्री. (सं. न.) नेत्रं, नयनं, चक्षुस् (न.), लोचनम् ।

—गोलक, सं. पुं. (सं.) अक्षिमण्डलम् ।

—तारा, सं. स्त्री. (सं.) कनीनिका, तारका ।

—पटल, सं. पुं. (सं. न.) नेत्र-नयन,-च्छदः (हिं. पलक) ।

अक्षुण, वि. (सं. अक्षुण्ण) अभग्न, समग्र, अच्छिन्न ।

अक्षोनि, सं. स्त्री. (सं. अक्षौहिणी) संख्याविशेषयुक्ता सेना, सम्पूर्णा चतुरंगिणी सेना (=१०९३५० पैदल, ६५६१० घोड़े, २१८७० रथ, २१८७० गज) ।

अक्स, सं. पुं. (अ.) प्रति,-छाया,प्रति,-बिंब-रूपम् ।

अक्सर, दे. 'अकसर' ।

अखंड, वि. (सं.) सम्पूर्ण, समग्र २. सतत, निरन्तर ३. निर्विघ्न, निर्बाध ।

अखंडनीय, वि. (सं) अभेद्य, अविभाज्य २. पुष्ट, दृढ ।

अखंडित, वि. (सं.) दे. 'अखंड' ।

अखड़ैत, सं. पुं. (हिं. अखाड़ा) मल्लः, बाहुयोधः ।

अख़बार, सं. पुं (अ.) समाचार-वृत्त-संवाद,-पत्रम् ।

—नवीस, सं. पुं. सम्पादकः, समाचार-वृत्त,-लेखकः ।

अखरना, क्रि. अ. (सं. अ + हिं खरा) अप्रीतिं जन् (प्रे.), अपरंज् (प्रे.), न रुच् (भ्वा. आ. से.) ।

अखरावट (-टी), सं. स्त्री. (सं. अक्षर >) वर्णमाला २. वर्णमालाक्रमानुसारी पद्यसमूहः ।

अख़रोट, सं. पुं. (सं. अक्षोटः), (वृक्ष) अक्षोटः २. (फल) अक्षोटम् ।

अख़लाक़, सं. पुं. (अ.) चरित्रम्, सदाचारः । सभ्यता, शिष्टता ।

अखाड़ा, सं. पुं. (सं. अक्षवाटः) मल्लभूमिः-नियुद्धभूः (स्त्री.) २. साधुमण्डलम् ३. साधुनिवासः ४. गायकसमुदायः ५. रंगभूमिः, नृत्यशाला ६. अंगनम्, अजिरम् ।

अखाद्य, वि. (सं.) अभक्ष्य, अनशनार्ह ।

अखिल, वि. (सं) समग्र, समस्त, निखिल ।

अखिलात्मा, सं. पुं. (सं—त्मन्) परमात्मन्, विश्वात्मन् ।

अखख़ाह, अव्य. (अनु.) अहह ।

अगड़धत्ता, वि. (सं. अग्रोद्धत >) दीर्घ, आयत २. लंब, उच्च ।

अगड़बगड़, वि. (अनु.) अक्रम, असङ्गत । सं. पुं., प्रलापः २. व्यर्थं कार्यम् ।

अगणनीय, वि. (सं.) सामान्य, साधारण २. असंख्य, गणनातीत ।

अगण्य, वि. (सं) तुच्छ, प्राकृत २. असंख्येय, संख्यातीत ।

अगतिक, वि. (सं.) अशरण, निराश्रय, अनाथ ।

अगद, वि. (सं) नीरोग, निरामय, स्वस्थ । सं. पुं. (सं.) औषधं, भेषजं, भैषज्यम् ।

अगदंकार, सं. पुं. (सं.) वैद्यः, जीवदः ।

अगम, वि. (सं अगम्य) दुर्गम, गहन २. विकट, कठिन ३. दुर्लभ, दुष्प्राप ४. अज्ञेय, दुर्बोध ५. अगाध, गम्भीर ।

अगम्य, वि. (सं.) दे. 'अगम' ।

अगर¹, सं. पुं. (सं. अगुरु न.) वंशिकं, राजार्हं, कृष्णम् । —बत्ती, सं. स्त्री., (सं. अगुरुवर्त्ती) ।

अगर², अव्य. (फ़ा) यदि, चेत् ।

—चे, अव्य. (फ़ा) यद्यपि, अपि ।

अगल-बगल, क्रि. वि. (फ़ा.) इतस्ततः, उभयतः, उभयत्र ।

अगला, वि. (सं. अग्र >) पूर्व, पौरस्त्य २. पूर्ववर्तिन्, प्रथम ३. प्राचीन, पुराण ४. आगामिन् ५. अपर, द्वितीय । सं. पुं., प्रधानः, २. प्राज्ञः ३. पूर्वजः ।

अगवाई, सं. स्त्री. (सं. अग्रे + गमनं >) प्रत्युद्गमनं, प्रत्युद्व्रजनम् । सं. पुं., नेतृ, अग्रणीः (पुं.) ।

अगवाड़ा, सं. पुं. (सं. अग्रवाटः >) गृहद्वारस्य पुरोवर्तिनी भूमिः (स्त्री.) २. गृहस्याग्रिमो भागः ।

अगवानी, सं. स्त्री. दे. 'अगवाई' ।

अगस्त, सं. पु. (अं. आगस्ट) आंग्लवर्षस्याष्टमो मासः ।

अगस्त्य, सं. पुं. (सं.) ऋषिविशेषः २. नक्षत्रविशेषः ३. वृक्षभेदः ।

अगहन, सं. पुं. (सं. अग्रहायनः-णः) मार्गशीर्षः ।

अगाऊ, सं. पुं. (सं. अग्र >) अग्रिमं, पूर्वदत्तमूल्यांशः । वि. अग्रिम, अग्र्य ।

अगाड़ी, क्रि. वि. (सं. अग्रे) पुरतः, पुरस्तात् २. अनागतवेला, भविष्यत्कालः । सं. स्त्री., अश्वस्याग्रिमा रज्जुः (स्त्री.) ।

अगिनबोट, सं. पुं. (सं. अग्नि + अं) अग्निपोतः, वाष्पीयनौः (स्त्री.) ।

अगुआ, सं. पुं. (सं. अग्र >) अग्रसरः, अग्रणीः (पुं.) २. मुख्यः, नायकः, ३. पथप्रदर्शकः ४. विवाहसम्पादकः ।

अगुण, वि. (सं.) निर्गुण, मूर्ख । सं. पुं., दोषः, दूषणम् ।

—ज्ञ, वि. (सं) अनभिज्ञ, अपरीक्षक ।

अगुरु, वि. (सं.) सुवाह्य २. अशिष्ट । सं. पुं. (सं.) लघु-ह्रस्व,-वर्णः. ३ दे. 'अगर' सं पुं. ।

अगोचर, वि. (सं.) इन्द्रियातीत, अतीन्द्रिय, अप्रकट, अव्यक्त, अप्रत्यक्ष ।

अग्नि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) अनलः, पावकः ज्वलनः, वह्निः, दहनः, हुताशनः, वैश्वानरः, कृशानुः, हुतवहः, हव्यवाहनः, चित्रभानुः, विभावसुः, शुक्रः, शुचिः ।

—कर्म, सं. पुं. (सं. न.) देवयज्ञः, अग्निहोत्रम् । २. शवदाहः, अन्त्येष्टिसंस्कारः, अग्निक्रिया ।

—क्रीडा, सं स्त्री. (सं) दे. 'आतशबाज़ी' ।

—ज्वाला, सं. स्त्री. (सं.) अग्नि,-जिह्वा-शिखा, अर्चिस् (स्त्री., न.), कीलः-ला ।

—दाह, सं पुं. (सं.) प्लोषः, तापः, ज्वलनं २. शवदाहः ।

—परीक्षा, सं. स्त्री. (सं.) तप्तदिव्यम् २. अग्नौ सुवर्णादिपरीक्षणम् ।

—बाण, सं. पुं. (सं.) अनल-दहन,-शरः-सायकः ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) अग्निहोत्रविधिः ।

—शुद्धिः, सं. स्त्री. (सं.) अग्निना शोधनम् २. दे. 'अग्निपरीक्षा' ।

—संस्कार, सं. पुं. (सं.) दाहकर्मन् (न.), शवदाहः २. अग्निना शोधनम् ।

—सखा, सं. पुं. (सं.-खि) वायुः, पवनः ।

—सेवन, सं. पुं. (सं. न.) वह्निनिषेवणम् ।

—होत्र, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञभेदः, होमः, हवनम् ।

—होत्री, सं. पुं. (सं.,त्रिन्) आहिताग्निः, याजकः, याज्ञिकः ।

अग्न्यस्त्र, सं. पुं. (सं. न.) आग्नेयास्त्रम् ।

अग्न्याधान, सं. पुं. (सं.न.) विधिपूर्वमग्निस्थापनं २. अग्निहोत्रम् ।

अग्र, सं.पुं. (सं. न.) अग्रभागः, शिखरं, प्रान्तः, मुखं, अणिः, (पुं., स्त्री.) । वि. अग्रसर, उत्तम, प्रधान ।

—गण्य, वि. (सं.) ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, मान्य ।

—गामी, सं. पुं. (सं.-मिन्) पुरोगः, नायकः ।

—ज, सं. पुं. (सं.) अग्रजन्मन्, ज्यायान् भ्रातृ (पुं.) ।

—णी, सं. पुं. (सं.-णीः, पुं.) नायकः, नेतृ, पुरोगः ।

—भाग, सं. पुं. (सं.) पूर्व-पुरो,-भागः-खण्डः ।

—यायी, सं. पुं. (सं.-यिन्) अग्रसरः, पुरोगामिन् ।

—वर्ती, वि. (सं.-वर्तिन्) अग्रस्थ, पुरःस्थित ।

—सर, सं. पुं. (सं.) नायकः, अग्रणीः (पुं.), नेतृ ।

—अग्रह, सं. पुं. (सं.) अग्रहणम्, त्यागः ।

—अग्रानीक, सं. पुं. (सं. न.) सेना,-मुखं, अग्रम् ।

—अग्राम्य, वि. (सं.)

अग्रामीण, नागरिक २. वन्य, अगृह्य ।

अग्राशन, सं. पुं. (सं. न.) देवादिदेयो भक्ष्याग्रांशः ।

अग्रासन, सं. पुं. (सं. न.) संमान—श्रेष्ठ—आसनं-स्थानम् ।

अग्राह्य, वि. (सं) त्याज्य, परिहार्य, हेय ।

अग्रिम, वि. (सं.) भाविन्, आगामिन् २. प्रधान, अग्र्य ।

अघ, सं. पुं. (सं. न.) पापं, पातकं, दुरितम् , एनस् (न.) २. दुःखम् ३. व्यसनम् ।

अघट, वि. (सं. अ+घट्) अशक्य, असम्भव २. दुर्घट, दुष्कर ।

अघट, वि. (हिं. घटना.) अक्षय, अक्षय्य, अव्यय ।

अघटित, वि. (सं.) अभूत २. असम्भव ३. कठिन ४. अयोग्य ।

अघमर्षण, वि. (सं.) अघ-पाप,-हारिन्-नाशक। सं. पुं., ऋग्वेदस्य पापनाशकः सूक्तविशेषः ।

अघारि, वि. (सं.) पापनाशक २. अघदैत्यस्य नाशकः कृष्णो विष्णुर्वा ।

अघोर, वि. (सं.) सौम्य, शोभन, प्रियदर्शन ।

—नाथ, सं. पुं. (सं.) शिवः, भूतनाथः ।

—पंथ, सं. पुं. (सं. –पथः) शैवानां सम्प्रदायविशेषः ।

अघोरी, सं. पुं. (सं. अघोरः >) अघोरमतानुयायिन् २. सर्वभक्षकः ३. दुर्दर्शनः ।

अघोष, वि. (सं.) नीरव, निश्शब्द २. अल्पध्वनियुत ३. गोपहीन । सं. पुं., वर्णमालायाः 'क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्, श्, ष्, स्' वर्णाः ।

अचंभा, सं. पुं. (सं. असम्भव >) आश्चर्य्यं, विस्मयः २. चमत्कारः, कौतुकम् ३. अद्भुत-वस्तु (न.) ।

अचंभित, वि. (हिं. अचम्भा) चकित, विस्मित ।

अचकन, सं. पुं. (सं. कञ्चुकः) ।

अचक्षु, वि. (सं.-क्षुस्) अंध २. निरिन्द्रिय ३. अतीन्द्रिय ।

अचर, वि. (सं.) स्थावर, अचल ।

अचरज, सं. पुं. (सं. आश्चर्य्यम्) विस्मयः, चमत्कारः ।

अचल, वि. (सं.) निश्चल, स्थिर २. चिरस्थायिन् , नित्य । सं. पुं. (सं.) पर्वतः, गिरिः २. कीलः, शंकुः ३. सप्तसंख्या ४. ब्रह्मन् (न.) ५. शिवः ६. आत्मन् ।

अचला, वि. (सं.) स्थिरा, गतिशून्या । सं. स्त्री (सं.) पृथिवी ।

अचानक, क्रि. वि. (सं. अज्ञानक >) अकस्मात्, सहसा, एकपदे, अकाण्डे । (सब अव्य.)

अचार, सं. पुं. (फ़ा.) सन्धितं, सन्धानं, तेमनं, निष्ठानम् ।

अचिंतनीय, वि. (सं.) अतर्क्य, अचिन्त्य, अज्ञेय ।

अचिंतित, वि. (सं.) अतर्कित, अविचारित, आकस्मिक २. निश्चिन्त ।

अचिंत्य, वि. (सं.) अज्ञेय, अतर्क्य, कल्पनातीत २. अतुल ३. आशातीत ४. आकस्मिक ।

—आत्मा, सं. पुं. (सं.—त्मन्) परमात्मन्, अतर्क्यस्वरूपः ।

अचिकित्स्य, वि. (सं.) अनुपचार, असाध्य (रोगादि)

अचित्ति, सं. स्त्री. (सं.) अज्ञानम् , अबोधः ।

अचिर, अव्य, (सं.) शीघ्रं-सपदि (अव्य)' २. वर्तमाने ३. किंचित् पूर्वम् । वि. क्षणिक, नश्वर २. वर्तमान,—विषयक सम्बन्धिन् ।

अचीती, वि. (सं. अचिन्तित) आकस्मिक २. अचिन्त्य ।

अचूक, वि. (सं. अ. + हिं. चूकना) अमोघ, सफल । क्रि. वि., अवश्यं, ध्रुवम् ।

अचेत, वि. (सं.-तस्) अचेतन, निष्प्राण, निर्जीव २. व्याकुल ३. अनवहित ४. मूढ ।

अचेतन, वि. (सं.) विचेतन, जड, निष्प्राण, स्थावर २. निःसंज्ञ, मूर्च्छित । सं. पुं. जडद्रव्यम् ।

अचैतन्य, वि. (सं.) अचेतन, स्थावर । सं. पुं. (सं. न.) निर्जीवता, निष्प्राणता ।

अच्छा, वि. (सं. अच्छ = स्वच्छ >) उत्तम , भद्र, श्रेष्ठ २. निर्मल ।

अच्छाई, सं. स्त्री. (हिं. अच्छा) भद्रता, सौजन्यम् ।

अच्छिन्न, वि. (सं.) निश्छिद्र २. पूर्ण, अखण्डित ।

अच्छेद्य, वि. (सं.)अभेद्य, अलाव्य, अविनाशिन् ।

अच्युत, वि. (सं.) अपतित २. दृढ, नित्य ३. अमोघ ।

अछूत-ता, वि. (सं. अच्छुप्त) अस्पृष्ट २. नव, पवित्र ।

अजंट, सं. पुं. (अं. एजेंट) प्रति,-निधिः-हस्तः ।

अजंसी, सं. स्त्री. (अं. एजेंसी) प्रतिनिधि,—कार्यालयः-निवासः ।

अज, वि. (सं.) स्वयम्भू , जन्महीन । सं. पुं. ब्रह्मन् (पुं.) २. विष्णुः ३. शिवः ४. कामदेवः ५. छागः ६. मेषः ।
अजगर, सं. पुं. शयुः, वाहसः ।
अजगरी, सं. स्त्री. (सं. अजगरः >) आलस्यम् ।
अज़दहा, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'अजगर' ।
अजनबी, वि. (फ़ा.) आगन्तुक, विदेशीय, अपरिचित ।
अजन्मा, वि. (सं.-न्मन्) अज, स्वयम्भू , अनादि ।
अजब, वि. (अ.) अद्भुत, विचित्र, विलक्षण ।
अज़मत, सं. स्त्री. (अ.) प्रतापः, प्रभुत्वं, महत्त्वम् ।
अजय्य, वि. (सं.) अधृष्य, अदम्य, अजेय ।
अजर, वि. (सं.) जराहीन, वार्द्धक्यरहित ।
अजवायन, सं. स्त्री. (सं. यवानिका) शूलहन्त्री ।
अजस्त्र, क्रि. वि. (सं. न.) सदा, अनवरतं, नित्यम् ।
अज़हद, क्रि. वि. (फा.) असीम, अत्यधिक ।
अजा, वि. स्त्री. (सं.) जन्महीना । सं. स्त्री. छागी २. प्रकृतिः (स्त्री.) ।
अजात, वि. (सं.) असृष्ट, अनुत्पन्न, जन्महीन ।
—शत्रु, वि. (सं.) शत्रुहीन, सर्वमित्रम् । सं. पुं. युधिष्ठिरः २. शिवः ३. मगधराजविशेषः ।
अजान, वि. (सं. अज्ञान) मूर्ख, मन्द २. अज्ञात, अपरिचित । सं. पुं., अज्ञानिता, अज्ञता ।
अज़ाब, सं. पुं. (अ.) यातना, पीडा ।
अजामिल, सं. पुं. (सं.) कश्चित् पापी ब्राह्मणो यो मृत्युकाले नारायणनामकस्य निजसुतस्य नामोच्चार्य मुक्तिं लेभे ।
अजायब, सं. पुं. (अ. 'अजब' का बहु०) अद्भूतवस्तूनि, विलक्षणा व्यापाराः ।
—घर, सं. पुं. अद्भुतालयः, संग्रहालयः ।
अजित, वि. (सं.) अपराजित, स्वतन्त्र । सं. पुं., विष्णुः २. शिवः ३. बुद्धः ।
—इन्द्रिय, वि. (सं.) इन्द्रियलोलुप, विषयासक्त ।
अजिन, सं. पुं. (सं. न.) मृग-,चर्मन् (न.), दृतिः (पुं. स्त्री.), कृत्तिः (स्त्री.) ।
अजिर, सं. पुं. (सं. न.) अंगनं-णं, प्राङ्गणं, चत्वरः- रम् ।
अजी, अव्य. (सं. अयि !) भोः, आर्य्य, अङ्ग (संबो.) ।
अज़ीज़, वि. (अ.) प्रिय, तात, वत्स ।
अजीत, वि. (सं. अजित) अजेय, अजय्य, अधृष्य ।
अजीब, वि. (अ.) अद्भुत, विलक्षण, विचित्र ।
अजीर्ण, सं. पुं (सं. न.) अजीर्णिः (स्त्री.), मन्दाग्निः, अन्नविकारः, अपाकः २. आधिक्यम् । वि., नव, नूतन ।
अजीवन, वि. (सं.) आजीविका-उपजीविका ,-रहित-हीन सं. पुं. (सं. न.) मृत्युः ।
अजूबा, सं. पुं. (अ.) अद्भुतं वस्तु (न.), विचित्रवार्त्ता ।
अजेय, वि. (सं.) दे. 'अजय्य' ।
अजैकपाद, सं. पुं. (सं.) रुद्रविशेषः २. विष्णुः ।
अजैव, वि. (सं.) जीवन,-हीन-विरहित (इन-आर्गेनिक)
अज्ञ, वि. (सं.) मूर्ख, मूढ, अज्ञानिन् ।
अज्ञता, सं. स्त्री. (सं.) जाड्यं, मौर्ख्यं, मूढता ।
अज्ञात, वि. (सं.) अविदित, अबुद्ध, अपरिचित ।
—वास, सं. पुं. (सं.) गुप्तवासः ।
अज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) अविद्या, जाड्यं, मूर्खता ।
अज्ञानता, सं. स्त्री. (सं.) जडता, अबोधता ।
अज्ञानी, वि. (सं. -निन्) मूढ, मूर्ख, अबोध ।
अज्ञेय, वि. (सं.) अतर्क्य, बोधागम्य, ज्ञानातीत ।
अटंबर, सं. पुं. (सं. अट्ट + फ़ा. अंबार) राशिः (पुं.),संभारः, निचयः ।
अटक, सं. स्त्री. (हि. अटकना) विघ्नः, बाधः-धा २. सङ्कोचः ३. सिन्धुनदी ४. नगरविशेषः ५. हानिः (स्त्री.) ।
अटकना-क्रि. अ. (हिं.अ + टिकना) १. प्र-उप-,-शम् (दि. प. से.), विरम् (भ्वा. प. अ.) निवृत् (भ्वा. आ. से.), स्था (भ्वा. प. अ.), निश्चल (वि.) + भू । २. पाशे पत् (भ्वा. प. से.), जालबद्ध (वि.) + भू , निरत-आसक्त (वि.) + भू ३. स्निह (दि. प. से.), अनुरञ्ज् (कर्म०), भावं-अभिलाषं + बन्ध् (क्र्. प. अ.) ४. विवद् (भ्वा. आ. से.), विप्रलप् (भ्वा. प. से.), वैरायते (ना. धा.) ।
अटकल, सं. स्त्री. (सं. अट् + कल>) अनुमानं, वि-,तर्कः, ऊहा, अनुमितिः (स्त्री.) ।
—पच्चू, सं. पुं. कपोलकल्पना, अनुमानम् । वि. काल्पनिक ।

—बाज़, वि., अनुमातृ ।

अटकाना, क्रि. स. (हिं. अटकना) अव-स्था (प्रे.), रुध् (रु. उ. अ.) २. पाशेन बन्ध् (क्र्. प. अ.) जाले धृ (चु.) ३. स्नेह-पाशैः बन्ध् ।

अटकाव, सं. पुं (हिं. अटकना) विघ्नः, बाधः । २. विलम्बः ।

अटन, सं. पुं. (सं. न.) भ्रमणं, चलनं, विचरणम् ।

अटपट, वि. (अनु०) कठिन, कुटिल, विकट २. जटिल, गूढ ३. असम्बद्ध, असंगत ४. प्रस्खलत्-विचलत् (शतृ) ।

अटपटाना, क्रि. अ. (हिं. अटपट) आकुली भू, मुह (दि. प. से.) २. विकल्प्-विलंब्-व्याशंक् (भ्वा. आ. से.) ।

अटपटी, सं. स्त्री. (हिं. अटपट) संभ्रमः, व्यामोहः. विकल्पः, वितर्कः ।

अटब्बर, सं. पुं. (सं. आडम्बरः >) अहंकारः, गर्वः ।

अटल, वि. (सं. अ + हिं. टलना) अचल, स्थिर, नित्य, ध्रुव, अवश्यंभाविन् ।

अटलस, सं. पुं (अं.) मानचित्र-देशालेख्य,-ग्रन्थः।

अटारी, सं. स्त्री. (सं. अट्टाली) अट्टः-ट्टं, अट्टालः-लिका, शिरोगेहं, चन्द्रशाला, तलिनी ।

अटाला, सं. पुं. (सं. अट्टालः >) राशिः, निचयः २. परिच्छदः, यात्रासामग्री ३. मांसिक सैनिक,-वसतिः (स्त्री.) ।

अटूट, वि. (सं. अ + हिं. टूटना) अच्छेद्य, अखण्डनीय २. अजेय, अजय्य ३. निरन्तर ४. अत्यधिक ।

अटेरन, सं. पुं. (सं. अति + ईरण >) सूत्रवलयनिर्माणार्थं लघुकाष्ठयन्त्रम्, आवापनम् ।

अटेरना, क्रि. स. (हिं. अटेरन) आवापनेन पञ्चीः रच् (चु.) ।

अट्टहास, सं. पुं. (सं.) अति-प्र-उच्चैः, हासः ।

अट्टी, सं. स्त्री. (हिं. अटेरना) पञ्ची ।

अट्टालिका, सं. स्त्री., (सं.) दे. 'अटारी' ।

अट्टा, सं. पुं. (सं. अष्टन् >) अष्टचिह्नयुक्तं क्रीडापत्रम् ।

अट्ठाईस, वि. (सं. अष्टाविंशतिः स्त्री.) ।

—वाँ (-वीं), अष्टाविंशः (-शी), अष्टाविंशतितमः (-मी) ।

अट्ठानवे, वि. (सं. अष्ट (ा) नवतिः स्त्री.) ।

—वाँ, (वीं) वि., अष्ट (ा) नवतितमः (-मी), अष्ट (ा) नव तः (-ती) ।

अट्ठावन, वि. (सं. अष्ट (ा) पञ्चाशत् स्त्री.) ।

—वाँ, (-वीं), वि. अष्ट (ा) पञ्चाशत्तमः (-मी), अष्ट (ा) पञ्चाशः (-शी) ।

अट्ठासी, वि. (सं. अष्टाशीतिः स्त्री.) ।

अट्ठासिवाँ (-वीं), अष्टाशीतितमः (-मी), अष्टाशीतः (-ती) ।

अठकौसल, सं.पुं. (सं. अष्टन् + अं. कौंसिल) सभा, संसद्-परिषद् (स्त्री.), गोष्ठी-ष्ठिः (स्त्री.) २. मन्त्रणा-णम् ।

अठखेली, सं. स्त्री. (सं. अष्टकेलिः >) चपलता, चाञ्चल्यं, कल्लोलः । २. मत्तगतिः (स्त्री.), मदोद्धतगमनम् ।

अठन्नी, सं. स्त्री. (सं. अष्टन् + आणः >) अष्टाणी, अष्टाणकी ।

अठपहला, वि. (सं. अष्टन् + फ़ा. पहलू) अष्ट,-कोण-पार्श्व ।

अठपाव, सं. पुं. दे 'ऊधम' ।

अठवाँसा, वि. (सं. अष्टमास) आष्टमासिकः (शिशुः) २. सीमन्तोन्नयनसंस्कारः ।

अठवारा, सं. पुं. (हिं. आठ + सं. वार) * अष्टवारः, अष्टाहः, दिनाष्टकम् । २. सप्ताहः, दिनसप्तकम् ।

अठहत्तर, वि. (सं. अष्ट (ा) सप्ततिः स्त्री.) ।

—वाँ (-वीं), वि., अष्ट (ा) सप्ततितमः (-मी), अष्ट (ा) सप्ततः (-ती) ।

अठारह, वि. (सं. अष्टादश) । -वाँ (-वीं) अष्टादशः (-शी) ।

अड़ंगा, सं. पुं. (हिं. अड़ाना + टांग) विघ्नः, हस्तक्षेपः, बाधः-धा ।

अड़चन, सं. स्त्री. (हिं. अड़ना + चलना) विघ्नः, कठिनता, आपत्तिः (स्त्री.) ।

अड़तालीस, वि. (सं. अष्ट (ा) चत्वारिंशत् स्त्री.)

—वाँ (-वीं) वि., अष्ट (ा) चत्वारिंशत्तमः (-मी), अष्ट (ा) चत्वारिंशः (-शी) ।

अड़तीस, वि. (सं. अष्टात्रिंशत् स्त्री.) ।

—वाँ (वीं), वि., अष्टात्रिंशत्तमः (-मी), अष्टात्रिंशः (-शी) ।

अड़ना, क्रि. अ. (सं. अल् = रोकना >) दे. 'अटकना' २. आग्रहं न मुच् (तु. उ. अ.) निर्बन्धेन कथ् (चु.) ।

अड़वंग, वि. (हिं. अड़ना + सं. वक्र) वक्र, विषम, नतोन्नत २. विकट, दुर्गम ३. विलक्षण ।

अडवोकेट, सं. पुं. (अं. एड्वोकेट) पक्षसमर्थकः, दे. 'वकील' ।

अड़सठ, वि. (सं. अष्ट (ा) षष्टिः स्त्री.) ।

—वाँ (-वीं), वि, अष्ट (ा) षष्टितमः (-मी), अष्ट (ा) षष्टः (-ष्टी) ।

अड़ाना, क्रि.स., दे. 'अटकाना' ।

अडिग, वि. (सं. अ + हिं. डिगना) निश्चल, स्थिर, दृढ ।

अड़ियल, वि. (हिं. अड़ना) उद्धत, दुर्दम, दुर्विनीत २. अलस, तन्द्रालु ३. अविनेय, स्वैरिन्, दुराग्रह ।

अड़ी, सं. स्त्री. (हिं. अड़ना) दुराग्रहः, हठः, निर्बन्धः, प्रतिनिवेशः ।

अडीठ, वि. (सं. अदृष्ट) अदृश्य, लोचनागोचर २. गुप्त, अन्तर्हित ।

अडोल, वि. (सं. अ + हिं. डोलना) अचल, निष्कम्प, स्थिर ।

अड़ोस-पड़ोस, सं. पुं. (हिं. पड़ोस)सन्निधिः, उपकण्ठः, सामीप्यं, प्रतिवेशः ।

अड़ोसी-पड़ोसी, सं. पुं (हिं, अड़ोस-पड़ोस) प्रति,-वेशः-वेश्यः-वेशिन्-वासिन्, निकट-समी-प,-स्थः-वासिन् ।

अड्डा, सं. पुं. (सं. अट्टा >) निवेशस्थानं, लंगनं २. आस्थानं (-नी) ३. संकेत,-गृहं- स्थलं, समागम-संकेत,-स्थानम् ४. चतुष्काष्ठम् ।

अड्रेस, सं, पुं. (अं. एड्रेस) अभिनन्दनपत्रम् २. पत्रसंज्ञा, निवाससंकेतः ।

अणि, सं. स्त्री. (सं.) अणी, धारा,अग्रं, कोटिः (स्त्री.), सीमा, प्रान्तः ।

अणिमा, सं. स्त्री. (सं. अणिमन् पुं.) अणुता, सूक्ष्मता २. योगस्याष्टसिद्धिषु प्रथमा, यया यो-गिनोऽदृश्या भवन्ति ।

अणिमादिक, सं. स्त्री. (सं.) योगस्याष्टसिद्धयः, (= अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्तिः, प्राकाम्यं, ईशित्वम्, वशित्वम्) ।

अणु, सं. पुं. (सं.) लवः, लेशः, षष्टिपरमाणु-मात्रः कणः, धूलिकणः । वि., अतिसूक्ष्म, क्षुद्र ।

—वीक्षण,सं. पुं. (सं. न.) सूक्ष्मदर्शकयन्त्रम् । २. छिद्रान्वेषणम् ।

अतः, क्रि. वि. (सं.) अस्माद् कारणात्, अनेन कारणेन-हेतुना, इति हेतोः ।

अत एव, क्रि. वि. (सं.) अस्मादेव कारणात्, अनेनैव हेतुना ।

अतर, सं. पुं. (अ. इत्र) निर्यासः, पुष्पसारः ।

—दान, सं.पुं. (अ. + फ़ा) पुष्पसारपात्रम् ।

अतरसों, क्रि. वि. (सं. इतर + श्वः >) आगामी गतो वा तृतीयो दिवसः ।

अतर्कित, वि. (सं.) अविचारित, आकस्मिक (-की स्त्री.), अचिन्तित ।

अतर्क्य, वि. (सं.) अचिन्त्य, अचिन्तनीय, अविवेच्य, अनिर्वचनीय ।

अतल, वि. (सं.) तलहीन, अतिगम्भीर । सं. पुं. (सं. न.) सप्तसु पातालेषु प्रथमम् ।

—स्पर्शी, वि. अतिगम्भीर, अतलस्पृश् ।

अतलस, सं. स्त्री. (अ.) अतिचिक्कणः कौशेय-पटभेदः ।

अतलांतक, सं. पुं. (अं. एटलांटिक) अन्धमहा-सागरः, समुद्रविशेषः ।

अता, सं. पुं. (फ़ा.) दानं, त्यागः विसर्जनम् ।

—करना, —फ़रमाना, मु., दे० 'देना' ।

अति, वि. (सं. अव्य.) अत्यन्त, अत्यर्थ अधिक । सं. स्त्री., आधिक्यं, अतिशयः, सीमोल्लंघनम् ।

अतिकथा, सं. स्त्री. (सं.) अतिरंजित,—कथा— —आख्यायिका—*गल्पः । २. निरर्थक-व्यर्थ,— भाषणम् ।

अतिकाल, सं. पुं. (सं.) विलम्बः, कालातिपातः ।

अतिक्रमण, सं. पुं. (सं. न.) नियम-मर्य्यादा-सीमा,-उल्लंघनं, अतिक्रमः ।

अतिथि, सं. पुं. (सं.) अभ्यागतः, प्राघुणः, प्राघुण (णि) कः, गृहागतः २. संन्यासिन् ।

—पूजा, सं. स्त्री., आतिथ्यं, अतिथि,-सत्कारः-सेवा-क्रिया ।

—यज्ञ, सं. पुं. (सं.) अतिथिपूजा ।

अतिरिक्त, क्रि. वि. (सं.) विना, ऋते, अति-रिच्य, विहाय (सब अव्य.) । वि. (सं.) अवशिष्ट २. भिन्न, पृथक् ।

अतिवेला, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अतिकाल' ।

अतिशय, वि. (सं.) बहु, अधिक ।

अतिसार, सं. पुं. (सं.) प्रवाहिका ।

अतीन्द्रिय, वि. (सं.) अगोचर, इन्द्रियातीत, अव्यक्त, परोक्ष ।

अतीत, वि. (सं.) गत, व्यतीत २. विरक्त, निर्लेप ३. मृत, दिवंगत ।

अतीव, वि. (सं. अव्य.) अधिक, बहु, प्रभूत।

अतुल, वि. (सं.) अतुल्य, अतुलित, अनुपम २. अमेय, अत्यधिक।

अत्तार, सं. पुं. (अ.) गन्धोपजीविन्, गान्धिकः, गन्ध,-विक्रयिन्-वणिज् २. औषधविक्रेतृ ३ भेषजकारः।

अत्यन्त, वि. (सं.) अत्यर्थ, अमित, अत्यधिक।

अत्याचार, सं. पुं. (सं.) निष्ठुर-क्रूर-निर्दय,-कर्मन् (न.) कार्यम् २. पापं, दुरितम् ३. पाषण्डः-डं, आडम्बरः।

अत्याचारी, वि. (सं.-रिन्) पाप, दुराचारिन् २. निष्ठुर, क्रूरकर्मन् ३. पाषण्डिन्, धर्मध्वज।

अत्युक्ति, सं. स्त्री. (सं.) वागुपचयः, सत्यातिक्रमः २. अलंकारभेदः (सा.)।

अथ, अव्य. (सं.) मंगलसूचकशब्दः २. आरम्भः ३. अनन्तरम्। **—च**, अव्य. (सं.) अन्यच्च, अपरं च, अपि च, किंच।

अथर्व, सं. पुं. (सं. अथर्वन्) चतुर्थवेदः।

अथर्वणि, सं. पुं. (सं.) अथर्ववेदज्ञः २. पुरोहितः।

अथवा, अव्य. (सं.) वा, किं वा, यद् वा।

अथाह, वि. (सं. अ + हिं. थाह) अगाध, अतलस्पृश्, अंतिग (गं) भीर २. अत्यधिक, अतीव ३. गूढ, दुर्बोध।

अदंत, वि. (सं.) दशन-दन्त,-विहीन- रहित २. अजात-दन्त-दशन।

अदद, सं. पुं. (अ.) संख्या २. संख्यायाश्चिह्नं संकेतो वा।

अदना, वि. (अ.) तुच्छ, क्षुद्र २. साधारण, प्राकृत।

अदब, सं.पुं. (अ.) शिष्टाचारः, शिष्टता, विनयः।

अदम्य, वि. (सं.) प्रचण्ड, अजेय, दुर्दम।

अदरक, सं. पुं. (सं. आर्द्रकं) शृङ्गवेरम्।

अदल, सं. पुं. (अ.) न्यायः, धर्मः, नयः।

अदलबदल, सं. पुं. (अ.) परि,-वर्तः-वर्तनं वृत्तिः (स्त्री.), विपर्ययः।

अदा, वि. (अ.) दत्त, शोधित। सं. स्त्री., लीला, विभ्रमः २. प्रकारः, विधिः।

अदालत, सं. स्त्री. (अ.) न्यायालयः, अधिकरणं, व्यवहारमण्डपः, न्याय-धर्म,-सभा।

अदालती, वि. (अ. अदालत) आधिकरणिक, न्यायालयसम्बन्धिन्।

अदावत, सं. स्त्री. (अ.) शत्रुता, वैरम्।

अदूरदर्शी, वि. (सं.-र्शिन्) स्थूलबुद्धि, अज्ञ।

अदृश्य, वि. (सं.) परोक्ष, अगोचर, अलक्ष्य।

अदृष्ट, वि. (सं.) अन्तर्हित, लुप्त, अलक्षित।
—पूर्व, वि. अद्भुत, अभूतपूर्व, विलक्षण।

अदेह, वि. (सं.) अकाय, अशरीर। सं. पुं., कामदेवः, मदनः।

अदोष, वि. (सं.) निर्दोष, निष्पाप, निरपराध।

अद्भुत, वि. (सं.) विस्मय-आश्चर्य,-जनक, अपूर्व, अलौकिक।

अतद्भुालय, सं. पुं. (सं.) संग्रहालयः।

अद्वितीय, वि. (सं.) एकल, एकाकिन्, एक २. अनुपम, अतुल्य ३. प्रधान।

अद्वैत, वि. (सं.) दे. 'अद्वितीय' (१, २)।
—वाद, सं. पुं. (सं.) 'ब्रह्मैव सत्यं, अन्यत सर्वं मिथ्या' इति सिद्धान्तः।

अधः, अव्य. (सं.) नीचैः, अधस्तात् (दोनों अव्य.)।
—पतन, सं. पुं. (सं. न.) नीचैः पतनं २. अवनतिः (स्त्री.) ३. दुर्दशा, दुर्गतिः (स्त्री.) ४. विनाशः, क्षयः।

अध, वि. (सं. अर्द्ध) सामि-(समास में ही)।
—कचरा, वि., अपरिपक्व, अपूर्ण २. अदक्ष, अकुशल।
—कपारी, सं. स्त्री., अर्द्धशिरोवेदना, अर्द्धावभेदकः।
—खिला, वि., अर्द्धविकसित, सामिविकच।
—खुला, वि., अर्द्धविवृत, अर्द्धापावृत २. अर्द्धोन्मीलित।
—पई, सं. स्त्री., अर्द्धपादः, पादार्द्धम्।
—मरा, **—मुआ** } मृत,-प्राय-कल्प, अर्द्ध-सामि,-मृत।
—सेरा सं. पुं., अर्द्धसेरः, सेरार्द्धम्।

अधन, वि. (सं.) निर्धन, दरिद्र।

अधन्नी, सं. स्त्री. (सं. अर्द्धाणी) अर्द्धाणकी, अर्द्धाणः-णकः।

अधन्य, वि. (सं.) मन्दभाग्य, गर्ह्य।

अधम, वि. (सं.) नीच, निकृष्ट २. पापिन्, दुष्ट।
—अधम, वि. (सं.) पापिष्ठ, महानीच।

अधमर्ण, वि. (सं.) ऋणिन्, धारक, ऋणग्रस्त।

अधमांग, (सं. पुं. (सं. न.) पादः, पदः, पदम्।

अधमा सं. स्त्री. (सं.) नायिका भेदः २-३. कर्कशा-अन्त्यजा,-नारी।

अधमाई, सं. स्त्री. (सं. अधम >) नीचता, अधमता।

अधर१, सं. पुं. (सं.) अधस्तनः ओष्ठः (२) (ऊपर का) ओष्ठः, रद-रदन-दन्त-दशन,-च्छदः।

—अधर, सं. पुं. (सं.) अधस्तनः ओष्ठः।

—बिंब, सं. पुं. (सं. न.) रक्तौष्ठः।

अधर२, सं. पुं. (सं. अ + हिं. धरना) आकाशः-शं, अन्तरिक्षम्। वि. हेय २. नीच।

अधर्म, सं. पुं. (सं.) पापं, पातकं, अन्यायः, कुकर्मन् (न.)।

अधर्मी, वि. (सं.-र्मिन्) पाप, पापिन्, पातकिन्।

अधार्मिक, वि. (सं.) दे. 'अधर्मी'।

अधिक, वि. (सं.) बहु, प्रभूत २. अतिरिक्त, शेष। **—तर**, क्रि. वि., प्रायः, प्रायशः, बहुशः।

—ता, सं. स्त्री. (सं.) बहुत्वं, आधिक्यं, बाहुल्यम्।

—मास, सं. पुं (सं.) पुरुषोत्तम-मल-असंक्रान्त,-मासः।

अधिकरण, सं. पुं. (सं. न.) आधारः, आश्रयः २. कारकविशेषः (व्या.) ३.प्रकरणं, शीर्षकम्।

अधिकांश, सं. पुं. (सं.) अधिकभारः। वि. बहु। क्रि. वि. प्रायः, बहुशः।

अधिकाधिक, वि. (सं.) अधिकतम, भूयिष्ठ।

अधिकार, सं. पु. (सं.) प्रभुत्वं, स्वत्वं, २. स्वामित्वं, आधिपत्यम् ३. क्षमता, योग्यता ४. प्रकरणं, शीर्षकम्।

अधिकारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) प्रभुः, स्वामिन् २. स्वत्ववत् ३. योग्य, क्षम। (स्त्री. अधिकारिणी, सं.)।

अधिकृत, वि. (सं.) हस्तगत, उपलब्ध। सं. पुं., अध्यक्षः, अधिकारिन्।

अधिकृति, सं. स्त्री. (सं.) स्वत्वम् , अधिकारः।

अधिक्रमण, सं. पुं. (सं. न.) आरोहणम् २. आक्रमणम्।

अधिक्षिप्त, वि. (सं.) तिरस्कृत, अपमानित २. क्षिप्त ३. प्रेषित।

अधित्यका, सं. स्त्री (सं.) पर्वतस्योर्ध्वा भूमिः (स्त्री.)।

अधिदेव, सं. पुं. (सं.) इष्ट-कुल,-देवः।

अधिनायक, सं. पुं. (सं.) अधिकृतः, अधिकारिन् , आधिकारिकः, कार्यवीक्षकः २. प्रभुः, स्वामिन्।

अधिप, सं. पुं. (सं.) स्वामिन् २. अधिकारिन् ३. नृपः।

अधिपति, सं. पुं. (सं.) दे. 'अधिप'।

अधिवास, सं. पुं. (सं.) निवास,-स्थलं-स्थानं २. परगृहेऽधिको वासः।

अधिवेशन, सं. पुं. (सं. न.) संगः, संगमः, गोष्ठी, समागमः।

अधिष्ठाता, सं. पुं. (सं.-तृ) अध्यक्षः, निर्वाहकः, प्रणेतृ, व्यवस्थापकः, अवेक्षकः, प्रवर्तकः, चालकः, अधिकृतः।

अधीन, वि. (सं.) आश्रित, वशीभूत, आज्ञानुवर्तिन् , विवश, परवश।

अधीनता, सं. स्त्री. (सं.) परवशता, परतन्त्रता।

अधीर, वि. (सं.) धैर्यरहित, उद्विग्न, व्याकुल, विह्वल २. चंचल ३. संतोषशून्य।

अधीश / **अधीश्वर** } सं. पुं. (सं.) स्वामिन् २. नायकः ३. नृपः।

अधूरा, वि. (हिं. अध + पूरा) अपूर्ण, अर्द्ध, खण्डित, असमाप्त।

अधेड़, वि. (हिं. अध) गतयौवन, मध्यमवयस्क।

अधेला, सं. पुं. (हिं. अध) अर्द्धपणः।

अधोगति, सं. स्त्री. (सं.) पतनं, अवपातः, विनिपातः। २. अवनतिः (स्त्री.), क्षयः, दुर्दशा।

अध्यक्ष, सं. पुं. (सं.) स्वामिन्, प्रभुः २. नायकः, अधिकारिन् ३. अधिष्ठातृ।

अध्ययन, सं. पुं. (सं. न.) पठनं, पाठः, अधीतिः (स्त्री.), वाचनं, अध्यायः।

अध्ययनीय, वि. (सं.) अध्येतव्य, पठितव्य।

अध्यर्द्ध, वि. (सं.) सार्द्धैक।

अध्यवसान, सं. पुं. (सं. न.) निश्चयः २. प्रयत्नः ३. अध्यवसायः।

अध्यवसाय, सं. पुं. (सं.) सततोद्योगः, निरन्तरपरिश्रमः २. उत्साहः ३. निश्चयः।

अध्यवसायी, वि. (सं.-यिन्) उद्योगिन्, उद्यमिन्, उत्साहिन्, उद्युक्त।

अध्यापक, सं. पुं. (सं.) शिक्षकः, गुरुः, उपदेष्टृ, शास्तृ। (स्त्री., अध्यापिका)।

अध्यापकी, सं. स्त्री. (सं.अध्यापकः >)शिक्षणं, अध्यापनं, पाठनम्, अध्यापक-व्यवसायः।

अध्यापन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'अध्यापकी'।

अध्याय, सं. पुं. (सं.) पाठः, सर्गः, परिच्छेदः, ग्रन्थविभागः ।
अध्येतव्य, वि. (सं.) पठनीय, पठितव्य, अध्ययनार्ह, पाठ्य, अध्येय ।
अध्येता, सं. पुं. (सं. अध्येतृ) पाठकः, विद्यार्थिन् ।
अध्व, सं. पुं. (सं.-ध्वन्) मार्गः, पथिन् ।
—ग, सं. पुं. (सं.) पान्थः, पथिकः, यात्रिकः ।
अध्वर, सं. पुं. (सं.) यज्ञः, यागः, मखः, सवः, क्रतुः ।
अध्वर्यु, सं. पुं. (सं.) ऋत्विग्भेदः, यज्ञे यजुर्वेद-मन्त्रपाठी ब्राह्मणः ।
अनंग, वि. (सं.) अकाय, देहहीन । सं. पुं. कामः, मदनः ।
अनंत, वि. (सं.) अपार, अशेष, निरवधि २. सतत, अविरत, निरन्तर ३. नित्य, अनश्वर । सं. पुं., विष्णुः २. शेषनागः ३. आकाशः-शं ४. बाहुभूषणभेदः ।
अनंतर, क्रि. वि. (सं.-रं अव्य.) पश्चात्, ऊर्ध्वं, परं (पंचमी के साथ, उ. ततः परं इ.) २. सततं । वि., अव्यवहित, सन्निहित, आसन्न ।
अनगिनत, वि. (सं. अगणित) असंख्य, संख्यातीत, बहु ।
अनग्नि, वि. (सं.) अनग्निहोत्रिन् २. अधार्मिक ३. अग्निमान्द्य-ग्रस्त ४. अविवाहित ।
अनघ, वि. (सं.) निष्पाप, निर्दोष २. शुद्ध, पवित्र । सं. पुं. (सं. न.) पुण्यं, सुकृतम् ।
अनचीता, वि. (सं. * हिं. अन + सं. चिन्तित) अचिन्तित, अकल्पित २. अनिष्ट, अवांछित ।
अनजान, वि. (सं. अन् + हिं. जानना) अज्ञ, अज्ञानिन्, मूर्ख २. अज्ञात, अबुद्ध ।
अनड्वान्, सं. पुं. (सं. अनडुह) वृषः, वृषभः, बलदः । (स्त्री० अनडुही, अनड्वाही = गौ)
अनदेखा, वि. (सं. अन् + हिं. देखना) अदृष्ट, अनीक्षित ।
अनधिकार, सं. पुं. (सं.) अशक्तिः (स्त्री.), असामर्थ्यम् ।
अनधिकारी, वि. (सं.-रिन्) अधिकार-प्रभुत्व-रहित, अशक्त । सं. पुं., अपात्रम् ।
अनध्याय, सं. पुं. (सं.) अवकाशदिनम् ।
अनन्नास, सं. पुं. (ब्राज़ीलियन, नानस) क्षुपभेदः तत्फलं च ।

अनन्य, वि. (सं.) एकनिष्ठ २. अनुपम, अद्वितीय ।
—गति, वि. (सं.) एक, आश्रित-गतिक-निष्ठ ।
—चित्त, वि. (सं.) एकाग्र, एकाग्रचित्त, अनन्य,-वृत्ति-मनस् ।
अनपढ, वि. (सं. अन् + हिं. पढ़ना) निरक्षर, अनक्षर, विद्या-ज्ञान,-शून्य, अशिक्षित ।
अनबन, सं. स्त्री. (सं. अन् + हिं. बनना) विरोधः, वैपरीत्यं, विसंवादः, मतभेदः ।
अनभिज्ञ, वि. (सं.) अज्ञ, अबोध (अनभिज्ञा स्त्री.) ।
अनभिज्ञता, सं. स्त्री. (सं.) अज्ञता, मौर्ख्यं, अपरिचयः ।
अनमना, वि. (सं. अन्यमनस्-स्क >) खिन्न, म्लान, विषण्ण, उद्विग्न, अवसन्न २. रुग्ण, रोगिन् ।
—पन, सं पुं., खिन्नता, म्लानता २. अन्य-मनस्कता ।
अनमिल, वि. (सं. अन् + हिं. मिलना) असंगत, असंबद्ध २. भिन्न, अलग्न ।
अनमेल, वि (सं. अन् + मेलः >) असम्बद्ध २. विशुद्ध ।
अनमोल, वि. (सं. अन् + हिं. मोल) अमूल्य, महार्घ, बहुमूल्य २. श्रेष्ठ, उत्तम ।
अनर्गल, वि. (सं.) निरङ्कुश, उच्छृङ्खल, उद्दाम २. विचार,-विवेक,-शून्य ३. निरन्तर ।
अनर्घ, वि. (सं.) दुष्क्रेय, बहुमूल्य २. सुख-क्रेय, अल्पमूल्य ।
अनर्घ्य, वि. (सं.) अपूज्य, अवन्द्य २. बहुमूल्य ।
अनर्जित, वि. (सं.) अनुपार्जित, अश्रमेण प्राप्त २. अप्राप्त, अलब्ध ।
अनर्थ, सं. पुं. (सं.) विपरीत-अयुक्त,-अर्थः २. कार्यहानिः (स्त्री.), विकारः, उपद्रवः, अनिष्टं, आपद् (स्त्री.) ३. अन्यायार्जितं धनम् ।
अनर्थक, वि. (सं.) निरर्थक, अर्थहीन २. मोघ, व्यर्थ ।
अनर्ह, वि. (सं.) अपात्रं, अनधिकारिन्, अयोग्य ।
अनल, सं. पुं. (सं.) दे. 'अग्नि' ।
—चूर्ण, सं. पुं. (सं. न.) आग्नेयचूर्णम् (= बारूद) ।
अनलस, वि. (सं.) उद्यमिन्, उद्योगिन्, उद्युक्त ।

अनलहक़, सं. पुं. (अ.) अहं ब्रह्मास्मि ।

अनल्प, वि. (सं.) बहु, अधिक ।

अनवगाह, वि. (सं.) अगाध, अतलस्पर्श ।

अनवद्य, वि. (सं.) अनिन्द्य, अवाच्य ।

अनवधान, सं. पुं. (सं. न.) प्रमादः, चित्तविक्षेपः ।

अनवरत, क्रि. वि. (सं. न.) निरन्तरं, सततं, सदा ।

अनवस्था, सं. स्त्री. (सं.) अव्यवस्था २. व्याकुलता ३. दोषभेदः (न्याय०) ।

अनशन, सं. पुं. (सं. न.) उपवासः, अन्नत्यागः, निराहारव्रतम् ।

अनश्वर, वि. (सं.) नित्य, अविनाशिन् ।

अनसुनी, वि. स्त्री. (सं. अन् + हिं. सुनना) अश्रुत, अनाकर्णित ।

अनस्तित्व, सं. पुं. (सं. न.) अभावः, अविद्यमानता ।

अनहद नाद, सं. पुं. (सं. अनाहतनादः) पिहितकर्णैः योगिभिः श्रूयमाणः शब्दभेदः (योग०)

अनहोनी, सं. स्त्री. (सं. अन् + हिं. होना) अलौकिकघटना, असम्भववार्ता ।

अनागत, वि. (सं.) आगामिन् , भाविन् २. अनुपस्थित ३. अज्ञात ४. अज ५. अद्भुत ।

अनाचार, सं. पुं. (सं.) कदाचारः, दुराचारः २. कुप्रथा, कुरीतिः (स्त्री.) ।

अनाचारी, वि. (सं.-रिन्) दुराचारिन्, भ्रष्ट ।

अनाज, सं. पुं. (सं. अन्नाद्यम्) अन्नं, धान्यं, शस्यं, आहारः ।

अनाड़ी, वि. (सं. अनार्य > ?) मूर्ख, अज्ञ २. नैपुण्यहीन ।

—पन, सं. पुं., मूर्खता २. नैपुण्याभावः ।

अनाढ्य, वि. (सं.) दरिद्र, निर्धन, अधन ।

अनातप, वि. (सं.) आतपरहित, छायायुत २ शीतल ।

अनाथ, वि. (सं.) नाथ-प्रभु, हीन २. मातृपितृहीन ३. असहाय, निराश्रय ४. दीन, परवश ।

अनाथालय, सं. पुं. (सं.) अनाथाश्रमः ।

अनादर, सं. पुं. (सं.) अवज्ञा, तिरस्कारः, अवधीरणा, अव-अप,-मानः, मानभङ्गः ।

अनादि, वि. (सं.) आदि-जन्म-आरम्भ, शून्य, (उ., ईश्वरः, जीवः, प्रकृतिश्च) ।

अनादित्व, सं. पुं. (सं. नं.) अनादिता, आरम्भशून्यता, नित्यत्वम् ।

अनादेय, वि. (सं.) अग्राह्य, अग्रहणीय, अपरिग्राह्य ।

अनाप-शनाप, सं. पुं. (सं.अनाप्त > + अनु.) प्रलापः, निस्सार-निरर्थक,-वचनम् ।

अनामिका, सं. स्त्री. (सं.) उपकनिष्ठिका, अनामन् (पुं.) ।

अनायास, क्रि. वि. (सं. न.) परिश्रमं विना, सहसा, अकस्मात् ।

अनार, सं. पुं. (फ़ा.) (वृक्ष) कुचफलः, करकः, शुकवल्लभः, दाडि(लि)मः–मा, दाडिबः २. (फल) कुचफलं, रक्तबीजं, दाड़ि (लि)मम् ४. (आतशबाज़ीका) अग्नि-क्रीडादाडिमम् ।

—दाना, सं. पुं. (फ़ा.) दाडिमबीजम् ।

अनार्य, सं. पुं. (सं.) दुष्टः, खलः, क्षुद्राशयः, अधमः, जघन्यः २. म्लेच्छः ।

अनावश्यक, वि. (सं.) निष्प्रयोजन, अनपेक्षित २. असार, क्षुद्र, उपेक्षणीय ।

अनावृष्टि, सं. स्त्री. (सं.) अ(ना)वर्षणं । अवग्र (ग्रा) हः, जलशोषः, वृष्टिविघातः ।

अनाहदवाणी, सं. स्त्री. (सं. अनाहत- >) आकाश-देव-गगन,-गिरा-वाणी ।

अनाहार, सं. पुं. (सं.)भोजनत्यागः (२) भोजनाभावः । २. अनशनव्रतिन् ।

अनाहूत, वि. (सं.) अनिमन्त्रित, अनाकारित ।

अनित्य, वि.(सं.) नश्वर, विनाशिन् ३. भंगुर, अस्थायिन्, २. मिथ्या, असत्य ।

अनित्यता, सं. स्त्री. (सं.) नश्वरता, भङ्गुरता, अस्थिरता ।

अनिमि(मे)ष, वि. (सं.) निर्निमेष, स्थिरदृष्टि, निमेषरहित । क्रि. वि., निर्निमेषं, स्थिरदृष्ट्या । सं. पुं. (सं.) देवः २. मत्स्यः ।

अनियत, वि. (सं.) अनिश्चित, अनिर्दिष्ट, अनिर्धारित २. अस्थिर, अदृढ ३. अपरिमित ४. विशिष्ट ।

अनियतात्मा, वि. (सं-त्मन्) अजितेन्द्रिय, लोलचित्त ।

अनियम, सं. पुं. (सं.) नियमाभावः, व्यतिक्रमः ।

अनियमित, वि. (सं.) व्यवस्थारहित, अव्यवस्थित, विधिविरुद्ध २. अनिश्चित, अनियत।

अनियारा, वि., दे. 'पैना'।

अनिरुद्ध, वि. (सं.) अरुद्ध २. निर्बाध ३. स्वतंत्र।

अनिर्दिष्ट, वि. (सं.) अकृतनिर्देश, असंकेतित २. अकथित, अनुक्त ३. अनादिष्ट, अनाज्ञापित।

अनिर्वचनीय, वि. (सं.) अकथनीय, अवर्णनीय, अनिर्वाच्य।

अनिल, सं. पुं. (सं.) वायुः, पवनः, वातः।

अनिवार्य, वि. (सं.) अवश्यंभाविन्, अपरिहार्य, ध्रुव, परमावश्यक।

अनिश्चित, वि. (सं.) अनियत, अनिर्द्धारित, अनिर्दिष्ट।

अनिष्ट वि. (सं.) अनपेक्षित- अवाञ्छित, अनभिलषित। सं. पुं. (सं. न.) अमंगलं, अहितं, हानिः (स्त्री)।

अनी, सं. स्त्री. (सं. अणी-णिः) पूर्व-अग्र,-प्रान्तः भागः।

अनीक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सेना, सैन्यं २. समूहः ३. युद्धम्।

अनीकिनी, सं. स्त्री. (सं.) सेना, सैन्यं २. पूर्णसेनायाः दशमो भागः ३. नलिनी, कमलिनी।

अनीति, सं. स्त्री. (सं.) अन्यायः, पक्षपातः २. उपद्रवः, उत्पातः; ३. अत्याचारः।

अनु, उपसर्ग (सं.) सामीप्यसादृश्यादिद्योतक उपसर्गः।

अनुकंपा, सं. स्त्री. (सं.) दया, कृपा, अनुग्रहः २. सहानुभूतिः (स्त्री.), समवेदना।

अनुकरण, सं. पुं. (सं. न.) अनुकारः, अनुकृतिः-अनुवृत्तिः (स्त्री.), अनुसरणं २. विडम्बनम्।

अनुकरणीय, वि. (सं.) अनुकरणार्ह, अनुसरणीय।

अनुकूल, वि. (सं.) हितकर, उपकारक २. सहाय ३. प्रसन्न।

अनुकूलता, सं. स्त्री. (सं.) अनुग्रहः, कृपा २. सहायता ३. प्रसादः।

अनुकृत, वि. (सं.) अनुसृत २. विडम्बित।

अनुकृति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अनुकरण'।

अनुक्त, वि. (सं.) अकथित, अनुदित, अभाषित।

अनुक्रम, स. पुं. (सं.) अन्वयः, आनुपूर्व्यं, परंपरा।

अनुक्रमण, सं. पुं. (सं. न.) अनु,-गमनं-सरणं-चलनम्।

अनुक्रमणिका, सं. स्त्री. (सं.) अनु,-क्रमः, परंपरा, सूची-चिः (स्त्री.) २. ग्रन्थभेदः।

अनुक्रोश, सं. पुं. (सं.) अनुकम्पा, दया।

अनुक्षण, क्रि. वि. (सं. नं.) प्रतिक्षणं २. सततम्।

अनुगमन, सं. पुं. (सं. नं.) अनु,-सरणं- गतिः (स्त्री.) २. अनुकरणं ३. सम्भोगः, सहवासः।

अनुगामी, वि. (सं. मिन्) अनु,-यायिन्-वर्तिन् २. अनु,कर्तृ-कारिन् ३. आज्ञापालक ४. सम्भोगिन्।

अनुगृहीत, वि. (सं.) उपकृत २. कृतज्ञ।

अनुग्रह, सं. पुं. (सं.) कृपा, दया, अनुकम्पा।

अनुग्राहक, वि. (सं.) कृपालु, दयालु, सहायक, उपकारक।

अनुचर, सं. पु. (सं.) सेवकः, किङ्करः, दासः १. वयस्यः, सहरः।

अनुचित, वि. (सं.) अयुक्त, अनर्ह, अयोग्य।

अनुज, वि. (सं.) पश्चादुत्पन्न। सं. पुं. (सं.) कनीयान् भ्रातृ २. स्थलपद्मम्। (अनुजा स्त्री.)।

अनुजीवी, बि. (सं.-विन्) अधीन, आयत्त, आश्रित। सं. पुं. सेवकः, दासः।

अनुज्ञा, सं. स्त्री. (सं.) अनुमतिः (स्त्री.) अनुमतम्। २. आज्ञा, आदेशः।

अनुताप, सं. पुं. (सं.) पश्चात्तापः, अनुशयः, अनुशोकः २. तपनं. दाहः ३. खेदः, दुःखम्।

अनुत्तर, वि. (सं.) निरुत्तर, प्रतिवचनरहित।

अनुदात्त, वि. (सं.) लघु, तुच्छ २. स्वर- भेदः (व्या.)।

अनुदिन, क्रि. वि. (सं. न.) प्रतिदिनम्।

अनुनय, सं. पुं. (सं.) विनयः, प्रार्थना, आवेदनं, याचना, याच्ञा २. प्रसादनं, आराधनं, अनुरञ्जनम्।

अनुनाद, सं. पुं. (सं.) 'गूँज'।

अनुनासिक, वि. (सं.) मुखनासिकाभ्यामुच्चारणीया वर्णाः (ङ, ञ्, ण्, न्, म् तथा अनुस्वार)।

अनुनीत, वि. (सं) सान्त्वित, प्रसादित २. प्रार्थित, याचित।

अनुपद, क्रि. वि. (सं. न.) अन्वक्, सद्यः, पश्चात्, अव्यवहितोत्तरकालम्।

अनुपदिष्ट, वि. (सं.) अशिक्षित, उपदेश-शिक्षा,—वंचित।

अनुपपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) समाधानाभावः, असंगतिः-असिद्धिः-अप्राप्तिः (स्त्री.)।

अनुपपन्न, वि. (सं.) असिद्ध, असंपन्न।

अनुपम, वि. (सं.) अप्रतिम, निरुपम, अतुल, अतुल्य, असदृश, अप्रतिरूप, अद्वितीय, अनुपमेय।

अनुपयोगी, वि. (सं.-गिन्) निष्प्रयोजन, निरर्थक, निर्गुण, व्यर्थ।

अनुपयोगिता, सं. स्त्री (सं.) निरर्थकता, व्यर्थता।

अनुपस्थित, वि. (सं.) अविद्यमान, अवर्तमान, दूरस्थ, स्थानान्तरगत।

अनुपस्थिति, सं. स्त्री. (सं.) असन्निधिः, परोक्षता।

अनुपात, सं. पुं. (सं.) सम्बन्धसाम्यं, आनुगुण्यं २. गणिते त्रैराशिकक्रिया।

अनुपान, सं. पुं. (सं. न.) औषधेन सह सेव्यं वस्तु (न.)।

अनुप्रास, सं. पुं. (सं.) वर्णसाम्यम्, शब्दालंकारभेदः (सा., उ. कोकिलकुलकलकूजितम् इ.)।

अनुबंध, सं. पुं. (सं.) सम्बन्धः, सम्पर्कः २. आरम्भपरिणामौ ३. मित्रं, सुहृद् ४. इत्संज्ञका वर्णाः (व्या.) ५. अनुसरणं ६. भाविशुभाशुभे।

अनुभव, सं. पुं. (सं.) साक्षात् उपलब्धं ज्ञानम् २. परीक्षया प्राप्तो बोधः, परीक्षणम्।

अनुभवी, वि. (सं.-विन्) परिणतप्रज्ञ, बहुदर्शिन्, सानुभव।

अनुभाव, सं. पुं. (सं.) महत्त्वं, प्रभावः, महिमन् २. रोमाञ्चकटाक्षादिचेष्टाः (सा.)।

अनुभावी, वि. (सं.-विन्) अनुभाववत्, प्रभावशालिन्। सं. पुं. प्रत्यक्षसाक्षिन् २. मृतस्य निकटसम्बन्धिन्।

अनुभूत, वि. (सं.) साक्षाज्ज्ञात, परीक्षित।

अनुभूति, सं. स्त्री. (सं.) अनुभवः, परिज्ञानं, बोधः।

अनुमति, सं. स्त्री. (सं.) अनुज्ञा, अनुमतं २. आज्ञा ३. चतुर्दशीयुक्ता पूर्णिमा।

अनुमत्त, वि. (सं.) हर्षोन्मत्त, अत्यानन्दित।

अनुमरण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सती होना'।

अनुमाता, वि. (सं. — तृ) तर्कयितृ, ऊहितृ।

अनुमान, सं. पुं. (सं. न.) वि,-तर्कः, ऊहः, अभ्यूहः, अभ्यूहनं, अनुमितिः (स्त्री.)।

—करना, क्रि. स., ऊह् (भ्वा. आ. से.), अनुमा (जु. आ. अ., अ. प. अ.), तर्क् (चु.), उन्नी (भ्वा. प. अ.) अनुमानं कृ।

—सिद्ध, वि., तर्क-अपोह,-साधित-दृढीकृत।

अनुमिति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अनुमान'।

अनुमेय, वि. (सं.) तर्कणीय, अभ्यूहनीय, उन्नेय।

अनुमोदन, सं. पुं. (सं. न.) समर्थनं, दृढीकरणं, उपोद्बलनं २. हर्षप्रकाशनं, मोदानुभवः।

अनुयायी, वि, (सं.-यिन्) अनु,-गामिन्-कारिन्।

अनुरक्त, वि. (सं.) अनुरागिन्, बद्धानुराग, कृतप्रणय, आसक्तचित्त २. लीन, मग्न।

अनुराग, सं. पुं. (सं.) रागः, प्रेमन् (पुं. न.), स्नेहः, प्रणयः, भावः, प्रीतिः-आसक्तिः (स्त्री.)।

अनुरागी, वि. (सं.-गिन्) दे. 'अनुरक्त'।

अनुरूप, वि. (सं.) सदृश, समान, तुल्य २. योग्य, उपयुक्त, अनुकूल।

अनुरूपता, सं. स्त्री. (सं.) सादृश्यं, सामान्यं २. अनुकूलता, उपयुक्तता।

अनुरोध, सं. पुं. (सं.) आग्रहः, निर्बन्धः, अभिनिवेशः २. प्रेरणा ३. विघ्नः।

अनुलेपन, सं. पुं. (सं. न.) वि,-लेपनं, अभ्यञ्जनं, समालम्भः, उद्वर्तनम्।

अनुलोम, सं. पुं. (सं.) निम्नग-अवतरण,-क्रमः, अवरोहः।

—विवाह, सं. पुं. (सं.) उच्चवर्णपुरुषस्य हीनवर्णया स्त्रिया विवाहः।

अनुवर्तन, सं पुं. (सं. न.) अनु,-गमनं-करणं-सरणम्।

अनुवर्ती, वि. (सं.-र्तिन्) अनु,-गामिन्-कारिन्-सारिन्। (अनुवर्तिनी स्त्री.)।

अनुवाद, सं. पुं. (सं.) भाषान्तरम् २. पुनरुक्तिः (स्त्री.), पुनर्वचनम्।

अनुवादक, सं. पुं. (सं.) भाषान्तरकारः।

अनुवादित, वि. (सं.) भाषान्तरित, अनूदित, कृतानुवाद ।

अनुवृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) उपजीविका, सेवा-मार्गः २. पूर्ववर्तिवाक्यांशस्य अर्थस्पष्टतायै अग्रे योजनम् ।

अनुशासक, वि. (सं.) अनुशासिन् नियन्तृ, अनुशास्तृ,-अनुशासितृ २. शिक्षक, उपदेशक ३. दंडद ।

अनुशासन, सं. पुं. (सं. न.) आदेशः, आज्ञा २. उपदेशः, शिक्षा ३. व्याख्यानं, विवरणम् ।

अनुशासित, वि. (सं.) अनुशिष्ट, नियमित २. उपदिष्ट ३. दण्डित ।

अनुशीलन, सं. पुं (सं. न.) चिन्तनं, मननं, आलोचनं २. आवृत्तिः (स्त्री.), पुनरभ्यासः ।

अनुशोक, सं. पुं. (सं.) अनु,-तापः-शयः, पश्चात्तापः ।

अनुषंग, सं. पुं. (सं.) सम्बन्धः, संसर्गः २. करुणा, दया ।

अनुष्ठान, सं. पुं. (सं. न.) कार्यारम्भः २. सविधिसम्पादनं ३. फलविशेषाय देवताराधनं, पुरश्चरणम् ।

अनुसन्धान, सं. पुं. (सं. न.) अन्वेषणं-णा, निरूपणं, मार्गणम् २. प्रयासः, प्रयत्नः ।

अनुसरण, सं. पुं. (सं. न.) अनुगमनं, सहगमनं २. अनुकरणं ३. अनुकूलाचरणम् ।

अनुसार, क्रि. वि. (सं. न.) अनुकूलं, सदृशं, समानं (सब अव्य०) ।

अनूचान, सं. पुं. (सं.) साङ्गवेदाध्येता, स्नातकः २. विद्यारसिकः ३. चरित्रवत् ।

अनुस्वार, सं. पुं. (सं.) स्वरानन्तरमुच्चार्यमाणोऽनुनासिको वर्णविशेषः २. अनुनासिक चिह्नं (ं) ।

अनूठा, वि. (सं. अनुत्थ >) अपूर्व, विलक्षण, विचित्र २. सुन्दर, श्रेष्ठ ।

—पन, सं. पुं., वैचित्र्यम् , वैलक्षण्यं ।

अनूदित, वि. (सं.) पुनः कथित-वर्णित २. अनुवादित, भाषान्तरित ।

अनूप[1], वि. (सं.) जल,-प्राय-बहुल । सं. पुं, जलप्रायदेशः, जलबहुलः ।

अनूप[2], वि. (सं. अनुपम) अतुल्य, अद्वितीय २. सुन्दर, स्वच्छ ।

अनेक, वि. (सं.) एकाधिक, बहु, असंख्येय ।

अनोखा, वि. (सं. अन् + वीक्ष > ?) अद्भुत, विलक्षण २. नूतन, नव ३. सुन्दर, सरूप ।

—पन, सं. पुं, विलक्षणता; नूतनता; सुन्दरता ।

अन्न, सं. पुं. (सं. न.) भक्ष्यपदार्थः २. दे. 'अनाज' ३. पक्वमन्नं, भक्तम् ।

—जल, सं. पुं. (सं. न.) भोजनपानं २. जीविका, वृत्तिः (स्त्री.) ३. दैवं, दैव,-योगः-घटना-गतिः (स्त्री.) ।

—दाता, सं. पुं. (सं.- तृ.) अन्नदः, भक्ष्य-दायकः २. पोषकः । (-दात्री स्त्री.) ।

—पूर्णा, सं. स्त्री. (सं.) अन्नाधिष्ठात्री देवी ।

—प्राशन, सं. पुं. (सं. न.) शिशूनां संस्कारभेदः ।

—मयकोश, सं. पुं. (सं.) स्थूलशरीरम् ।

अन्ना, सं. स्त्री. (सं. अंबा > ?) धात्री, उपमातृ (स्त्री.), मातृका, अङ्कपाली ।

अन्नाद, सं. पुं. (सं.) अन्नभक्षकः २. ईश्वरः ३. विष्णुः ।

अन्य, सर्व. (सं.) अपर, द्वितीय, अनात्मीय, पर, भिन्न ।

—देशीय, वि. (सं.) पर-वि,-देशीय ।

—पुरुष, सं. पुं. (सं.) भिन्न-पर-अपर, पुरुषः २. प्रथमपुरुषः (व्या.) ।

—पुष्ट, सं. पुं. (सं.) पिकः, कोकिलः ।

—मनस्क, वि. (सं.) चिन्तित, विषण्ण, खिन्न ।

अन्यतः, अव्य. (सं.) अन्यस्मात् जनात् स्थानात् वा ।

अन्यत्र, अव्य. (सं.) अपरत्र, अन्यस्मिन् स्थाने ।

अन्यथा, अव्य. (सं.) इतरथा, २ विपरीतं, विरुद्धं ३ असत्यम् ।

अन्यापदेश, सं. पुं. (सं) दे. 'अन्योक्ति' ।

अन्याय, सं. पुं. (सं.) अधर्मः, अनयः, अनीतिः (स्त्री.) ।

अन्यायी, वि. (सं.-यिन्) अन्यायवर्तिन्, अन्यथाचारिन् , क्रूर, पाप, धर्मविमुख ।

अन्याय्य, वि. (सं.) न्याय-धर्म,-रहित-विपरीत-विरुद्ध ।

अन्योक्ति, सं. स्त्री. (सं.) अन्यापदेशः, अलंकारभेदः (सा.) ।

अन्योन्य, क्रि. वि. (सं. नं.) परस्परं, मिथः, इतरेतरं २. वि. परस्पर ।

—आश्रय, सं. पुं. (सं.) अन्योऽन्यापेक्षा, परस्पराश्रयः २. सापेक्षज्ञानम् ।

अन्वय, सं. पुं. (सं.) परस्परसम्बन्धः २. संयोगः, संसर्गः ३. पद्यपदानां गद्यवाक्यवत् स्थापनम् ४. अवकाशः, शून्यस्थानं ५. कार्य-कारणसम्बन्धः ६. वंशः, कुलम् ।

अन्वर्थ, वि. (सं.) अर्थानुसारिन्, सार्थक ।

अन्वित, वि. (सं.) युक्त, सहित, संगत ।

अन्वीक्षण, सं. पुं. (सं. न.) ध्यानं, भावनं, विमर्शः २. दे. 'अनुसन्धान' ।

अन्वेषण, सं. पुं. (सं. नं.) दे. 'अनुसन्धान' ।

अन्वेषी, वि. (सं.-षिन्) अन्वेषक, अन्वेष्टृ (पुं.), गवेषक, अनुसन्धातृ ।

अन्वेष्टव्य, वि. (सं.) अन्वेषणीय, अनुसन्धेय, विचेय ।

अपंग, वि. (सं. अपांग) हीनांग, व्यंग, न्यूनांग २. पङ्गु, अशक्त (हीनांगी, पंगूः स्त्री.) ।

अपंडित, वि. (सं.) अज्ञ, मूर्ख, निरक्षर ।

अप, उप. (सं.) वैपरीत्यविरोधविकारवियोग-वर्जनादिद्योतक उपसर्गः ।

अपकर्ता, वि. (सं.-र्तृ) अनिष्ट-हानि-अहित,-कर्तृ-कर-कारक ।

अपकर्ष, सं. पुं. (सं.) नीचैः कर्षणं, पातनं २. अवनतिः (स्त्री.), क्षयः ३. अपमानं, अनादरः ।

अपकार, सं. पुं. (सं.) अभद्रं, अहितं, अनिष्ट-साधनं, हानिः-अपकृतिः (स्त्री.) ।

अपकारक, वि. (सं.) अपकारिन्, हानिकारक ।

अपकीर्ति, सं. स्त्री. (सं.) दुष्कीर्तिः, अपयशस् (न.), वाच्यता, कलंकः, निन्दा ।

अपकृष्ट, वि. (सं.) पतित, भ्रष्ट २. अधम, निन्द्य ३. घृणित ।

अपच, सं. पुं. (सं.>) अपाकः, अजीर्णं, अजीर्णिः (स्त्री.), मन्दाग्निः, अन्नविकारः ।

अपचय, सं. पुं. (सं.) क्षतिः-हानिः (स्त्री.) २. व्ययः, नाशः ।

अपढ़, वि. (सं. अपठ) निरक्षर, अशिक्षित, पठनलेखनासमर्थ २ मूर्ख ।

अपत्य, सं. पुं. (सं. न.) सन्तानः, सन्ततिः-प्रसूतिः (स्त्री.), प्रजा, प्रसवः, तोकम् ।

अपथ, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कु-विकट,-मार्गः, कुपथः ।

अपथ्य, वि. (सं.)कुपथ्य, रोगजनक, स्वास्थ्य-नाशक २. अहितकर ।

अपना, वि. (सं. आत्मनः) स्वीय, स्वकीय, स्वक, आत्मीय, निज, स्व, आत्मन् ।

—पन, सं. पुं., आत्मीयता, ममता २. आत्माभिमानः ।

अपनाना, क्रि. स. (हिं. अपना) आत्मसात् कृ, स्वाधीन-स्वायत्त (वि.)+कृ २. स्वीकृ, अंगीकृ, प्रतिपद् (दि. आ. अ.), अभ्युपगम् ३. ग्रह् (क्र्. प. से.) ।

अपभ्रंश, सं. पुं. (सं.) पतनं, अवनतिः (स्त्री.) २. विकारः ३. विकृतशब्दः ४. प्राकृतभाषा-भेदः । वि. विकृत ।

अपमान, सं. पुं. (सं.) अनादरः, अवमानः, अवज्ञा, अवधीरणं-णा, उपेक्षा, तिरस्कारः, परिभवः ।

—करना, क्रि, स., अवमन् (दि. आ. अ.), उपेक्ष् (भ्वा. आ. से.), अवज्ञा (क्र्. उ.अ.), अवगण् (चु.), तुच्छी-लघू,-कृ ।

अपमानित, वि. (सं.) अनादृत, अवमानित, अवज्ञात, अवधीरित, अवगणित ।

अपमानी, वि. (सं.-निन् >) तिरस्कर्तृ, अव-ज्ञातृ, अवगणयितृ ।

अपमृत्यु, सं. पुं. (सं.) कुमृत्युः २. अकाल-असमय,-मृत्युः ।

अपयश, सं. पुं. (सं.-शस् न.) दे. 'अपकीर्ति' ।

अपरं च, अव्य. (सं.) अन्यच्च २. पुनः, पुनरपि ।

अपरंपार, वि. (सं. अपरपार >) अनन्त, असीम, अमित, निरवधि ।

अपर, वि. सर्व. (सं.) प्रथम, अग्रिम २. अन्तिम, अन्त्य ३. अन्य, भिन्न ४. आत्मीय, स्वकीय ।

—पक्ष, सं. पुं. (सं.) असित-कृष्ण,-पक्षः २. प्रतिवादिन् ।

अपरा, सं. स्त्री. (सं.) लौकिक-पदार्थ,-विद्या २. पश्चिमदिशा । वि. अन्या ।

अपराग, सं. पुं. (सं.) द्वेषः, वैरम् २. अरुचिः (स्त्री.) ३. असन्तोषः ।

अपराजित, वि. (सं.) अजित, दे. 'अजीत' ।

अपराजेय, वि. (सं.) अजेय, दे. 'अजय्य' ।

अपराध, सं. पुं. (सं.) दोषः, प्रमादः, स्खलितं, छिद्रं, पापं, वाच्यम् ।

—करना, क्रि. अ., विभ्रम् (भ्वा. दि, प. से), अपराध् (दि. स्वा. प. अ.), उत्पथं या (अ. प. अ.), स्खल्-विचल्-व्यतिचर् (भ्वा. प. से.), प्रमद् (दि. प. से. प्रमाद्यति)।

—हीन, वि. (सं.) अ-निर्,-दोष, अनघ, अनवद्य।

अपराधी, वि. (सं.-धिन्) सापराध, दोषिन्, दोषवत्, वाच्य, निन्द्य, सावद्य।(अपराधिनी स्त्री.)

अपराह्न सं. पुं. (सं. अपराह्णः,) पराह्णः, विकालः, दिनस्य तृतीयो यामः।

अपरिग्रह, सं. पुं. (सं.) अस्वी-अनंगी,-कारः, दानत्यागः २. विरागः, संगत्यागः।

अपरिचित, वि. (सं.) अज्ञात, पर, पारक्य, अन्यजनः २. परिचयरहित, अज्ञ।

अपरिमित, वि. (सं,) असीम, अमित, अनन्त २. असंख्य, अगणित।

अपरिमेय, वि. (सं.) अमेय, अपरिमाण, दुर्मेय, महत्, बहु।

अपरिवर्तनीय, वि. (सं.) स्थिर, ध्रुव २. अपरिहार्य, अवश्यभाविन् ३. अविनिमेय।

अपरिवर्तित, वि. (सं.) अविकृत, परिवर्तन-रहित।

अपरीक्षित, वि. (सं.) अकृतपरीक्ष, अननुयुक्त, अप्रश्नित।

अपरेशन, सं. पुं. (अं.ऑपरेशन्) शस्त्र,-क्रिया-कर्मन् (न.),उपायः-उपचारः-चिकित्सा।

अपर्याप्त, वि. (सं.) न्यून, अल्प, हीन, क्षीण।

अपवर्ग, सं. पुं. (सं.) मोक्षः, वि,-मुक्तिः (स्त्री.) निस्तारः, निर्वाणं २. त्यागः, दानम्।

अपवाद, सं पुं (सं.) विरोधः, प्रतिवादः २. निन्दा, अपकीर्तिः (स्त्री.) ३. दोषः, पापं ४. बाधकशास्त्रं, विशेषः।

अपवादी, वि. (सं.-दिन्) अपवादकः, निन्दकः २. बाधकः, विरोधिन्।

अपवित्र, वि. (सं.) पाप, अधार्मिक २. अशुद्ध, मलिन, दूषित, अशुचि।

अपवित्रता, सं. स्त्री. (सं.) धर्महीनता, पाप-शीलता २. मलिनता, अशुचिता।

अपव्यय, सं. पुं. (सं.) मुक्तहस्तत्वं, अति-बहु-अमित,-व्ययः, अर्थोत्सर्गः।

अपव्ययी, सं. पुं. (सं.-यिन्) मुक्तहस्त, उत्सर्गिन्, व्ययपरः।

अपशकुन, सं. पुं (सं. पुं. न.) कु-अशुभ दुर्, लक्षणं, अजन्यं, दुश्चिह्नम्।

अपशब्द, सं. पुं (सं.) गाली, अपवादः २. अशुद्धपदं ३. निरर्थकशब्दः ४. अपान-अन्त्र,-वातः-वायुः।

अपसव्य, वि. (सं.) दक्षिण, सव्येतर २. विप-रीत ३. दक्षिणस्कन्धेन यज्ञोपवीतधारणम्।

अपस्मार, सं. पुं. (सं.) भ्रामरं, अंगविकृतिः (स्त्री.), भूतविक्रिया। दे. 'मिरगी'।

अपहरण, सं. पुं. (सं. न.) अपहारः, मोषणं, विलुण्ठनम् २. संगोपनं, लोप्त्रम्।

अपहृत, वि. (सं.) चोरितं, बलात् नीतम्।

अपह्नुति, सं. स्त्री. (सं.) अपह्नवः, गोपनं, प्रच्छादनं, तिरोधानम्। २. व्याजः, कपटं, छलं, अपदेशः।

अपांग, सं. पुं. (सं. पुं. न.) नेत्रकोणः, नयनो-पान्तः २. कटाक्षः। वि. व्यङ्ग, अंगहीन।

अपात्र, वि. (सं. न.) गुणहीन, अनर्ह, अयोग्य २. कुभाण्डं, कुपात्रम्।

अपादान, सं. पुं. (सं. न.) पृथक्-अपा,-करणम् २. पञ्चमं कारकम् (व्या.)।

अपान, सं. पुं. (सं.) नासिकया बहिः क्षिप्य-माणो वायुः २. अन्त्र-गुदस्थ,-वायुः ३. गुदं, मलद्वारम्। वि. दुःखनाशक (ईश्वर)।

—वायु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) पंचप्राणेषु अन्य-तमः २. अन्त्र-गुदस्थ,-वायुः।

अपाप, सं. पुं. (सं. न.) पुण्यम्। वि. निष्पाप, धार्मिक।

अपाय, सं. पुं. (सं.) प्रस्थानम् २. पार्थक्यम् ३. लोपः ४. नाशः ५. विपत्तिः (स्त्री.) ६. हानिः (स्त्री.)

अपार, वि. (सं.) असीम, अनन्त २. असंख्य, बहु।

अपार्थिव, वि. (सं.) अमार्तिक, अमृन्मय २. अभौम ३. दिव्य, अलौकिक।

अपावन, वि. (सं) अशुद्ध, अपवित्र, मलिन।

अपावरण, सं. पुं. (सं. न.) अपावृतिः (स्त्री.), उद्घाटनम् २. आ-प्रा-समाच्छा-दनम् ३. परिवेष्टनम , परिवारणम्।

अपाहिज, वि. (सं अपभंज् >) विकलांग (-गी स्त्री.) विकल, व्यंग, हीनाङ्ग।

अपि, अव्य. (सं.) १. (= भी) च. अपि च, पुनश्च, अपरं च । २. (= ही) केवलं, एव,-मात्र ।

—च, अन्यच्च, पुनश्च ।

—तु, किन्तु, परन्तु २. प्रत्युत ।

अपील, सं. स्त्री, (अं. एप्पील) पुनर्विचार-प्रार्थना २. निवेदनं ३. प्रार्थनापत्रम् ।

अपीलांट, सं. पुं. (अं.) निवेदकः, विचारार्थं प्रार्थिन् ।

अपुत्र, वि. (सं.) निरपत्य, निस्सन्तान २. पुत्रहीन ।

अपूत[1], वि. (सं.) अपवित्र, अशुद्ध ।

अपूत[2], वि. (सं. अपुत्र दे.) । सं. पुं., कुपुत्रः ।

अपूप, सं. पुं. (सं.) पूपः, पिष्टकः ।

अपूर्ण, वि. (सं.) असमाप्त, सावशेष २. न्यून ।

अपूर्व, वि. (सं.) अभूत-अदृष्ट,-पूर्व २. अद्भुत, अलौकिक ३. अनुपम, श्रेष्ठ ।

अपूर्वता, सं. स्त्री. (सं.) विलक्षणता, लोकोत्तरता ।

अपेक्षा, सं. स्त्री. (सं.) आकांक्षा, इच्छा, अभिलाषः २. आवश्यकता ३. तुलनया, अपेक्षया (दोनों तृतीयान्त) ।

अपेक्षित, वि. (सं.) अभीष्ट, आवश्यक ।

अप्रचरि(लि)त, वि. (सं.) अप्रयुक्त, अव्यवहृत ।

अप्रतिपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) बोधासामर्थ्यं २. निश्चयाभावः ।

अप्रतिभ, वि. (सं.) अप्रगल्भ, प्रतिभा-स्फूर्ति,-शून्य २. निर्बुद्धि ३. अलस ४. लज्जावत्, सलज्ज ।

अप्रतिम, वि. (सं) अतुल्य, अप्रतिरूप, दे. 'अतुल' ।

अप्रतिरथ, वि. (सं.) अनुपम-अतुल्य-वीर २. अनुपम, अप्रतिम ।

अप्रतिष्ठ, वि. (सं.) कुख्यात, अपमानित २. अस्थिर, चंचल ।

अप्रतिष्ठा, सं. स्त्री (सं.) अपमानः, अवमानः, तिरस्कारः २. अस्थैर्यं, चांचल्यम् ।

अप्रत्यक्ष, वि. (सं.) परोक्ष, गुप्त, इन्द्रियातीत ।

अप्रयुक्त, वि. (सं) अव्यवहृत, अप्रचरि(लि)त ।

अप्रसन्न, वि. (सं.) कुपित, क्रुद्ध २. अप्रीत, अतुष्ट ३. खिन्न, शोकाकुल ।

अप्रसन्नता, सं. स्त्री. (सं.) प्रीति-प्रसाद,-अभावः २. रोषः ३. खेदः, विमनस्कता ।

अप्रसिद्ध, वि. (सं.) अविश्रुत, अविख्यात २. गुप्त ।

अप्रस्तुत, वि. (सं.) अनुपस्थित, अविद्यमान २. अप्रासंगिक ३. अनुद्यत ४. गौण ।

—प्रशंसा, सं. स्त्री. (सं.) अलंकारभेदः (सा.) ।

अप्राप्त, वि. (सं) अलब्ध, २. अनधिगत २. दुर्लभ ३. अप्रस्तुत ४. अनागत ।

अप्राप्य, वि. (सं.) अलभ्य, अनधिगम्य, अप्राप्तव्य ।

अप्रामाणिक, वि. (सं.) अवैध, प्रमाणशून्य २. अविश्वसनीय ।

अप्रासंगिक, वि. (सं.) असम्बद्ध, अप्रस्तुत, प्रकरणासंगत ।

अप्रिय, वि. (सं.) अनिष्ट, अरुचिकर, अनभिमत । सं. पुं., शत्रुः ।

अप्रेंटिस, सं. पुं. (एप्प्रेंटिस) अन्तेवासिन्, शिष्यः, शिल्पविद्यार्थिन् ।

अप्रैल, सं. पुं. (अं. एप्रिल) आंग्लवर्षस्य चतुर्थमासः ।

—फूल, सं. पुं. चैत्रोपहास्यः, मधुमासमूर्खः ।

अप्सरा, सं. स्त्री. (सं.) अप्सरसः (स्त्री. बहु.), स्वर्-स्वर्ग,-वेश्या, नाकनर्तकी ।

अफ़यून, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'अफ़ीम' ।

अफरना, क्रि. अ. (मं. स्फार = प्रचुर >) सं-परि,-तृप्-तुष् (दि. प. अ.) २. स्फाय् (भ्वा. आ. से.), प्र-उप्,-चि (भा. वा. प्रचीयते इ.) ३. दे. 'ऊबना' ।

अफरा, सं. पुं. (सं. स्फारः) उदर, स्फीतिः (स्त्री.)-उपचयः २. अजीर्णवातादिभिः उदरवृद्धिः (स्त्री.) ।

अफ़रातफ़री, सं. स्त्री. (अ. अफ़रात तफ़रीत) संक्षोभः, अव्यवस्था २. संभ्रमः, आकुलत्वम् ।

अफ़रीका, सं. पुं. (अं. एफ्रिका) कालद्वीपम् ।

अफल, वि. (सं.) निष्फल, मोघ, व्यर्थ ।

अफ़वाह, सं. स्त्री. (फ़ा.) जन,-प्रवादः, जनश्रुतिः (स्त्री.), किंवदन्ती, लोक,-वादः-वार्ता ।

अफ़सर, सं. पुं. (अं. ऑफ़िसर) दे. 'अधिकारी' ।

अफ़सरी, सं. स्त्री. (हिं. अफ़सर) अधिकारिता २. शासनं ।

अफ़साना, सं. पुं. (फ़ा) कथा, आख्यायिका ।

अफ़सोस, सं. पुं. (फ़ा) दुःख, क्लेशः २. पश्चात्तापः, अनुशयः, अनुशोकः, खेदः ।

अफारा, सं. पुं. (हिं. अफरना) आध्मानम् (उदररोगः)।

अ(ए)फ़ीडेविट, सं. पुं. (अं.) शपथ-पत्रम्।

अफीम, सं. स्त्री. (यू. ओपियन, अं. ओपियम) अहिफेनं, अफेनम्।

अफ़ीमी | **अफ़ीमची** | सं. पुं (हिं. अफ़ीम) अफेन-अहि-फेन,-भक्षकः-व्यसनिन्।

अब, क्रि. वि. (सं. अथ, अद्य ?) अधुना, इदानीं, सम्प्रति, साम्प्रतं, वर्तमाने।

—का, वि, आधुनिक, साम्प्रतिक।

अबज़रवेटरी, सं. स्त्री. (अं. ऑबज़र्वेटरी) मानमन्दिरं, वेधशाला।

अबतर, वि. (फ़ा.) निन्दित, गर्ह्य २. विकृत।

अबतरी, सं. स्त्री. (फ़ा) विकारः, विकृतिः (स्त्री.)।

अबरक, (-ख) सं. पुं. (सं. अभ्रकं) गिरिजा-मलं, शुभ्रं, बहुपत्रम्।

अबरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) चिक्कणपत्रभेदः २. पीतपाषाणभेदः।

अबरू, सं. स्त्री. (फ़ा.) भ्रूः (स्त्री.), भ्रूलता।

अबला, सं. स्त्री. (सं.) नारी, रमणी।

अबाघ, वि. (सं.) निर्विघ्न, निर्बाध २. असीम।

अबाध्य, वि. (सं.) उच्छृङ्खल, उद्दाम २. अनि-वार्य, अप्रतिकार्य, दुर्निवार।

अबाबील, सं. स्त्री. (फ़ा.) कृष्णा, कृष्ण-चटकभेदः।

अबीर, सं. पुं. (अ.) दे. 'गुलाल'।

अबूझ, वि. (सं. अबुद्ध) मूर्ख, अज्ञ, अबुध।

अबे, अव्य, (सं. अयि ?) अरे, हे।

अबोध, सं. पुं. (सं.) अज्ञानं, मौर्ख्यम्। वि., मूर्ख, अज्ञ।

अब्ज, सं. पुं. (सं. न.) कमलं, पद्मम् २. जलजातः पदार्थः ३. शंखः ४. चन्द्रः ५. धन्वन्तरिः ६. कर्पूरः-रं ७. शतं कोटयः।

अब्जा, सं. स्त्री. (सं.) लक्ष्मीः (स्त्री.), रमा।

अब्द, सं. पुं. (सं) वर्षः-र्षं, हायनः, वत्सरः २. मेघः ३. कर्पूरः-रं ४. आकाशः-शम्।

अब्धि, सं. पुं. (सं.) समुद्रः २. तडागः ३. सप्तेति संख्या।

अब्बा, सं. पुं. (फ़ा) पितृ, जनकः।

अब्र, सं. पुं. (फ़ा., सं. अभ्रम्) मेघः, घनः।

अब्रह्मण्यं सं. पुं. (सं. न.) अब्राह्मणोचितं कर्मन् (न.) २. हिंसादिकर्मन्।

अब्राह्मण, सं. पुं. (सं.) अविप्रः, अभूसुरः, ब्राह्मण-विप्र-इतरः। वि. ब्राह्मणरहित।

अभंग, वि. (सं.) पूर्ण, सकल २. नित्य, अनश्वर ३. अनवरत, निरन्तर।

अभंगुर | **अभंजन** | वि. (सं.) दृढ, अखण्ड २. अनश्वर।

अभक्त, वि. (सं.) भक्ति-श्रद्धा,-हीन-रहित २. अखण्ड, सम्पूर्ण।

अभचय, वि. (सं.) अखाद्य, अभोज्य।

अभद्र, वि. (सं) अशुभ, अमांगलिक २. तुच्छ।

अभय, वि. (सं.) निर्भय, अभीत। सं. पुं. (सं. न.), भय-त्रास,-अभावः।

—दान, सं. पुं. (सं. न) रक्षा-त्राण,-वचनं-प्रतिज्ञा २. रक्षणं, शरणदानम्।

—पद, सं. पुं, (सं. न.) मुक्तिः (स्त्री.)।

अभर्तृका, सं. स्त्री. (सं.) विधवा, रंडा २. कुमारी, कन्या।

अभव्य, वि. (सं.) अशुभ, अमांगलिक २. कुदर्शन, कुरूप ३. अभवितव्य ४. अद्भुत ५. अशिष्ट।

अभागा, वि. (सं. अभाग) अ-मन्द,-भाग्य, प्रारब्ध-भाग्य,-हीन।

अभागी, वि. (सं-गिन्) भाग्यहीन २. भाग-हीन, अदायाद।

अभाग्य, सं. पुं. (सं. न.) दुर्दैवं, मन्द-दौर्-, भाग्यम्।

अभाजन, सं पुं. (सं. न.) अपात्रं, कुपात्रं, दुष्टः।

अभाव, सं. पुं. (सं) सत्ताऽभावः, अविद्यमानता।

अभावनीय, वि. (सं.) अचिन्तनीय।

अभि, उप. (सं.) सामीप्यदूरताऽभिमुख्य-वीप्सादिद्योतक उपसर्गः।

अभिक्रमण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'आक्रमण'।

अभिख्या, सं. स्त्री. (सं.) शोभा, श्रीः. (स्त्री.) २. यशस् (न.) कीर्तिः (स्त्री.)।

अभिगमन, सं. पुं. (सं. न.) उपसर्पणं २. मैथुनम्।

अभिगामी, वि. (सं.-मिन्) उपसर्पक २. संभोगकर्तृ।

अभिचार, सं. पुं.(सं.) मंत्रैर्मारणोच्चाटनादिक्रिया।

अभिचारक, वि. (सं.) अभिचारिन्।

अभिजन, सं. पुं. (सं.) कुलं, वंशः, २. जन्मभूमिः (स्त्री.) ३. कुले वृद्धतमः पुरुषः ४. ख्यातिः (स्त्री.) ।

अभिजात, वि. (सं.) कुलीन, सुकुलोत्पन्न २. बुध, पंडित, ३. योग्य ४. मान्य ५. सुन्दर ।

अभिज्ञ, वि. (सं.)ज्ञातृ, विज्ञ २. निपुण, कुशल ।

अभिज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) स्मृतिः (स्त्री.), अनुबोधः २. लक्षणं, स्मारकचिह्नम् ।

अभिताप, सं. पुं. (सं.) अतिशय-अत्यधिक,-तापः-दाहः २. पीडा, वेदना ।

अभिधा, सं. स्त्री. (सं.) शब्दस्य वाच्यार्थ-प्रकाशिका शक्तिः (स्त्री., सा.) ।

अभिधान, सं. पुं. (सं. न.) संज्ञा, नामन् (न.) २. कथनं, ३. शब्दकोशः(-शं)षः (षम्) ।

अभिधायक, वि. (सं.) नामकारक २. वक्तृ ३. परिचायक ।

अभिधावन, सं. पुं. (सं. न.) आक्रमणम्, अभिद्रवः ।

अभिधेय, वि. (सं.) वाच्य, प्रतिपाद्य । सं. पुं. (सं. न.) नामन् (न.), संज्ञा ।

अभिध्यान, सं. पुं. (सं. न.) इच्छा, वांछा २. लोभः ३. चिन्तनम् ।

अभिनंदन, सं, पुं. (सं. न.) प्रशंसा २. आनन्दः ३. सन्तोषः ४. प्रोत्साहनं ५. प्रार्थना ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) प्रशंसा-प्रतिष्ठा,-पत्रम् ।

अभिनंदनीय, वि. (सं.) स्तुत्य, वन्दनीय ।

अभिनय, सं. पुं. (सं.) नाट्यं, अंगविक्षेपः २. अवस्थानुकृतिः (स्त्री.) ३. नाटकक्रीडा ।

—करना, क्रि. सं, नट्-निरूप् (चु.), अभिनी (भ्वा. प. अ.), प्रयुज् (चु.) ।

अभिनव, वि. (सं.) नव, प्रत्यग्र ।

अभिनिविष्ट, वि. (सं.) प्रविष्ट २. उपविष्ट ३. मग्न, लीन ।

अभिनिवेश, सं. पुं. (सं.) प्रवेशः २. मनोयोगः, एकाग्रचिन्तनम् ३. दृढसंकल्पः ४. मृत्युभयक्लेशः ।

अभिनीत, वि. (सं.) उपनीत २. अलंकृत ३. रूपित, नाटित ४. उचित ।

अभिनेता, सं. पुं (सं.-नेतृ) नटः, नर्तकः, कुशीलवः, शैलूषः (अभिनेत्री, नटी, नर्तकी स्त्री.)

अभिनेय, वि. (सं.) नाटयितव्य, रूपणीय, अभिनयार्ह ।

अभिन्न, वि. (सं.) अविभक्त, संलग्न, संसृष्ट ।

अभिप्राय, सं. पुं. (सं.) आशयः, भावः अर्थः, तात्पर्यं, प्रयोजनम् ।

अभिप्रेत, वि. (सं) इष्ट, अभिलषित ।

अभिभव, सं, पुं. (सं.) पराजयः २, अवज्ञा, तिरस्कारः ।

अभिभावक, वि. (सं.) अभिभाविन्, पराजेतृ तिरस्कर्तृ (२) वशिन् (३) संरक्षक ।

अभिभाषण, सं. पुं, (सं. न.) सभापति-(लिखित)भाषणम् २. व्याख्यानम् ३. कथनम् ।

अभिभूत, वि. (सं.) पराजित, विजित २. पीडित ३. वशीभूत ४. व्याकुल ।

अभिमंत्रण, सं. पुं. (सं. न.) मंत्रैः पवित्रीकरणं-संस्करणम् २. आवाहनम् ।

अभिमत, वि. (सं.) इष्ट, मनोनीत, वाञ्छित २. सम्मत । सं. पुं., मतं, मतिः (स्त्री.) २. विचारः ३. अभीष्टपदार्थः ।

अभिमन्यु, सं. पुं. (सं.) अर्जुनसुतः ।

अभिमान, सं. पुं. (सं.) अहंकारः, गर्वः, मदः, दर्पः, उत्सेकः, अवलेपः, मानः, अहंमानः ।

अभिमानी, वि. (सं.-निन्) गर्वित, दृप्त, मत्त, उत्सिक्त, अहंकारिन्, मानिन्, अवलिप्त ।

अभिमुख, क्रि. वि. (सं.) अभि-सं,-मुखं-मुखे, पुरः, पुरतः, पुरस्तात्, समक्षं, अग्रे ।

अभियुक्त, वि. (सं.) प्रत्यर्थिन्, प्रतिवादिन् ।

अभियोक्ता, वि. पुं. (सं.-क्तृ) अर्थिन्, वादिन्, अभियोगिन् ।

अभियोग, सं. पुं, (सं.) व्यवहारः, कार्यं, अक्षः २. आक्रमणं ३. उद्योगः ४. मनोयोगः ।

अभिराम, वि. (सं.) आह्लादक, मनोहर, सुन्दर, रम्य ।

अभिरुचि, सं. स्त्री. (सं.) रुचिः-प्रवृत्तिः (स्त्री.), कामः, अभिलाषः, छन्दः, इच्छा ।

अभिरूप, वि. (सं.) मनोहर, रमणीय ।

अभिलषित, वि. (सं.) वाञ्छित, ईप्सित, इष्ट ।

अभिलाषा, सं. स्त्री. (सं.-षः) वाञ्छा, काङ्क्षा, स्पृहा, ईहा ।

अभिलाषी, वि. (सं.-षिन्) इच्छु, ईप्सु, अभिलाष(पु)क, वाञ्छक।

अभिवादन, सं. पुं. (सं. न.) प्रणामः, नमस्कारः २. स्तुतिः (स्त्री.)।

अभिव्यंजक, वि. (सं.) प्रकाशक, सूचक, बोधक।

अभिव्यक्त, वि. (सं.) प्रकटित, दर्शित, स्पष्टीकृत।

अभिव्यक्ति, सं. स्त्री. (सं.) प्रकाशनं, आविष्कारः, साक्षात्कारः।

अभिव्याप्ति. सं. स्त्री. (सं.) सर्व,-व्यापकता-व्यापिता २. समावेशः।

अभिशप्त, वि. (सं.) आक्रुष्ट, शापग्रस्त, अभिशस्त २. मिथ्यादूषित।

अभिशस्ति, सं. स्त्री. (सं.) अभि-, शापः, आक्रोशः २. विपत्तिः-आपत्तिः (स्त्री.)।

अभिशाप, सं. पुं. (सं.) शापः, आक्रोशः २. दोषारोपः, मिथ्याभियोगः।

अभिशापित, वि. (सं.) दे. 'अभिशप्त'।

अभिषंग, सं. पुं. (सं.) पराजयः २. निन्दा ३. मिथ्यापवादः ४. आलिंगनं ५. शपथः ६. दुःखम् ७. भूतावेशः।

अभिषव, सं. पुं. (सं.), सोमस्य निष्पीडनम् २. सोमपानम् ३. यज्ञः ४. यज्ञस्नानम्।

अभिषिक्त, वि. (सं.) स्न(स्ना)पित, प्रक्षालित २. सिंहासने उपवेशित ३. यथाविधि नियुक्त।

अभिषेक, सं. पुं. (सं.) अभिषेचनं, प्रोक्षणं, आ-अव,-सेकः २. मार्जनं ३. सिंहासने स्थापनं ४. यज्ञानन्तरं शान्तये स्नानम्।

अभिष्यंद, सं. पुं. (सं) स्रवः, क्षरणं, प्रवाहः २. नेत्ररोगभेदः।

अभिसंधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) अभिसंधानं, प्रतारणं-णा, वञ्चनं-ना २. कुचक्रं, षड्यंत्रम्।

अभिसार, सं. पुं. (सं.) अभिसरणं, नायकनायिकयोः निश्चितस्थाने गमनं २. आश्रयः, साहाय्यं ३. युद्धम।

अभिसारिका, सं. स्त्री. (सं.) अभिसारिणी।

अभिसारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) अभिसारकः।

अभिहित, वि. (सं.) उक्त, कथित, उदित।

अभी, क्रि. वि. (हिं. अब+ही) साम्प्रतमेव, अधुनैव, अचिरात्।

अभीर, सं. पुं. (सं. आभीरः) गोपः गोपालः।

अभीष्ट, वि. (सं.) वाञ्छित, अभिलषित २. अभिप्रेत ३. मनोनीत। सं. पुं., मनोरथः।

अभूत, वि. (सं.) अघटित २. वर्तमान ३. विलक्षण।

—पूर्व, वि. (सं) अघटितपूर्व २. अपूर्व, अद्भुत।

अभेद, सं. पुं. (सं.) भेदाभावः, एकत्वं, अभिन्नता २. समानता। वि., भेदरहित, समान।

अभेद्य, वि. (सं) अच्छेद्य, अखण्डनीय, अभेदनीय।

अभोज्य, वि. (सं.) दे. अभक्ष्य।

अभौतिक, वि. (सं.) अप्राकृतिक २. अगोचर।

अभौम, वि. (सं.) अपार्थिव, अभूमिज।

अभ्यंग, सं. पुं. (सं.) लेपः, लेपनं २. तैलमर्दनं, स्नेहनम्।

अभ्यंजन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'अभ्यंग' २. नेत्रयोः कज्जलनिक्षेपः ३. अंगरागः।

अभ्यंतर, सं. पुं. (सं. न.) मध्यं, मध्य,-भागः-देशः,-गर्भः २. हृदयम्।

अभ्यर्थना, सं. स्त्री. (सं.) प्रार्थना, याचना २. प्रत्युद्गमनम्।

अभ्यर्थनीय, वि. (सं.) याचितव्य २. प्रत्युद्गमनीय।

अभ्यर्दन, सं. पुं. (सं. न.) उत्पीडनम् दे.।

अभ्यसित, अभ्यस्त, वि. (सं. अभ्यस्त) नित्य,-अनुष्ठित-आचरित, असंकृत्-पौनःपुन्येन,-व्यावर्तित-सेवित-कृत।

अभ्यागत, वि. (सं.) उपस्थित। सं. पुं., अतिथिः।

अभ्यास, सं. पुं. (सं.) अभ्यसनं, आवृत्तिः (स्त्री.), अनुशीलनम् २. (=आदत) शीलं, नित्यव्यवहारः, वृत्तिः (स्त्री.)।

—करना, क्रि. स., अभ्यस् (दि. प. से.), पुनः पुनः विधा (जु. उ. अ.)-कृ, सततं अनुष्ठा (भ्वा. प. अ.), असकृत् सेव् (भ्वा. आ. से.)।

अभ्यासी, वि. (सं.-सिन्) साधक, अभ्यास-आवृत्ति,-कर-कारक।

अभ्युत्थान, सं. पुं. (सं. न.) उत्थानम् २. प्रत्युद्गमः ३. समृद्धिः-उन्नतिः (स्त्री.) ४. आरम्भः, उदयः।

अभ्युदय, सं. पुं. (सं.) सूर्यादीनामुदयः २. प्रादुर्भावः ३. मनोरथसिद्धिः (स्त्री.) ४. शुभावसरः ५. उन्नतिः (स्त्री.)।

अभ्युपगम, सं. पुं. (सं.) समीपगमनं, प्राप्तिः (स्त्री.) २. स्वी-अङ्गी,-कारः।

अभ्र, सं. पुं. (सं. न.) मेघः, जलदः २. आकाशः-शं ३. अभ्रकं ४. सुवर्णम्।

अमंगल, वि. (सं.) अशुभ, अभद्र, अशिव। सं. पुं. (सं. न.) अशुभं, अभद्रं, दौर्भाग्यं, अनिष्टम्।

अमचूर, सं. पुं. (सं. आम्रचूर्णं) आम्रक्षोदः।

अमन, सं. पुं. (अ.) शान्तिः (स्त्री.), उपप्लवाभावः।

—अमान, —चैन, सं. पुं., सुखशान्ति, मंगलं, भद्रम्।

अमर, वि. (सं.) अमर्त्य, नित्य। सं. पुं., देवः, देवता (स्त्री.) २. पारदः, रसः ३. अमरसिंहः (कोशकारः)।

—बेल, सं. स्त्री., अमरवल्ली, आकाशवल्लरी।

अमरत्व, सं. पुं. (सं. न.) मुक्तिः (स्त्री.) २. देवत्वं ३. चिरजीवनम्।

अमरस, सं. पुं. (सं. आम्ररसः) रसालद्रवः २. आम्र,-पर्पटः-पट्टी (हिं. अमपापड़)।

अमरांगना, सं. स्त्री. (सं.) देवांगना, देवी, अमरी।

अमरा, सं. स्त्री. (सं.) अमरावती, दे.।

अमराई, सं. स्त्री. (सं. आम्रराजी) आम्र,-वनं-वाटिका।

अमरावती, सं. स्त्री. (सं.) इन्द्रपुरी, स्वर्गः।

अमरीका, सं. पुं. (अमेरिका) महाद्वीपविशेषः।

अमरूत (द), सं. पुं. (सं. अमृतं >) पेरुकं, दृढबीजं, मांसलम्।

अमरेश-श्वर, सं. पुं. (सं.) दे. 'इन्द्र'।

अमर्ष, सं. पुं. (सं.) क्रोधः, रोषः २. क्षमाऽभावः, असहिष्णुता।

अमल¹, वि. (सं.) स्वच्छ, निर्मल २. निर्दोष। सं.पुं., (सं.न.) अभ्रकं, गिरिजामलम्।

अमल², सं. पुं. (अ.) व्यवहारः, आचरणं, चरितम् २. अधिकारः, शासनं ३. मदः, मादः, शौण्डता ४. शीलं, वृत्तिः (स्त्री.), स्वभावः ५. प्रभावः ६. समयः।

—करना, क्रि. स., व्यवहृ (भ्वा. प. अ.), आचर् (भ्वा. प. से.), विधा (जु. उ. अ.),कृ।

—में आना, क्रि.अ., वृत् (भ्वा. आ. से.), भू।

—दारी, सं.स्त्री. (अ.+फ़ा.) शासनं, राज्यम्।

अमलतास, सं. पुं. (सं. अम्ल) वृक्षप्रकारः।

अमलवेत, सं. पुं. [सं. अ (आ) अम्लवेतसः] वेतसाम्लः, वीर-राज-रस,-आम्लः।

अमला, सं. स्त्री. (सं.) लक्ष्मीः (स्त्री.) २. सातलावृक्षः।

अमला, सं. पुं. (अ.) कार्याध्यक्षः।

—फैला, सं. पुं., न्यायालयकर्मचारिगणः।

अमली, वि. (अ.) व्यवहारविषयक २. कर्मण्य ३. मद्यप, पानासक्त, मादकद्रव्यसेविन्।

अमहर, सं. स्त्री. (सं.आम्र >) शुष्काम्रशल्कम्।

अमा, सं. स्त्री. (सं.) अमावस्या २. गृहं ३. इहलोकः।

अमात्य, सं. पुं. (सं.) सचिवः, मन्त्रिन्।

अमान, सं. पुं. (अ.) रक्षा, त्राणं २. शरणं, आश्रयः।

अमानत, सं. स्त्री. (अ.) स्थाप्यं, निक्षेपः, न्यासः, उपनिधिः।

—रखना, क्रि. स, निधा (जु. उ. अ.), निक्षिप् (तु. प. अ.), न्यस् (दि. प. से.), आधी कृ।

—दार, वि., न्यासधारिन्, निक्षेपग्राहक।

—दारी, सं. स्त्री., प्रत्ययः, विश्वासः।

—में ख़यानत, सं. स्त्री., स्थाप्यापहरणं दुर्विनियोगः।

अमानिता, सं. स्त्री. (सं.) अमानित्वम्, नम्रत्वं, नम्रता।

अमानी, वि. (सं-निन्) नम्र, विनीत, निरभिमान।

अमानुष, वि. (सं.) अपौरुषेय, अमानवीय, अतिमर्त्य २. पाशव, पैशाचिक। सं. पुं., मनुष्येतरो जीवः २. राक्षसः ३. देवः। (अमानुषी = अपौरुषेयी स्त्री.)।

अमारी, सं. स्त्री. (अ.) वरंडकः।

अमावट, सं. स्त्री. (हिं. आम >) दे. 'अमरस'।

अमावस, सं. स्त्री. [सं. अमाव (ा) स्या] अमावासी, कृष्णपक्षस्यान्तिमतिथिः (पुं. स्त्री.), दर्शः, सूर्येन्दुसमागमः।

अमिट, वि. (सं. अ + हिं. मिटना) अनाश्य, अमार्ष्टव्य, शाश्वत (-ती स्त्री.)।

अमित, वि. (सं.) असीम, अपरिमित २. अत्यधिक।

अमित्र, सं. पुं. (सं.) शत्रुः। वि. मित्रहीन।

अमीन, सं. पुं. (अ.) अधिकरणस्य कर्मचारिभेदः।
अमीर, सं. पुं. (अ.) अधिकारिन् २. धनिकः ३. उदारः।
अमीरी, सं. स्त्री. (अ.) धनाढ्यता, समृद्धिः (स्त्री.)।
अमुक, वि. (सं.) सङ्केतित, निर्दिष्ट।
अमूर्त, वि. (सं.) मूर्त्ति-प्रतिमा,-रहित,निराकार, निरवयव।
अमूल्य, वि. (सं.) अनर्घ, अनर्घ्य, २. बहुमूल्य, महार्घ्य।
अमृत, सं. पुं. (सं. न.) सुधा, पी (पे) यूषं, निर्जरं, समुद्रनवनीतकं २. जलं ३. घृतं ४. अन्नं ५. मोक्षः ६. दुग्धं ७. विषं ८. सुवर्णं ९. हृद्यपदार्थः १०. मधुरद्रव्यम्।
—कर, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः।
—फल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) पारावत-पटोल,-वृक्षः-फलं।
—वान, सं.पुं., श्लक्ष्णीकृतं मृद्भाण्डं, चिक्कणः कुटः।
—सार, सं. पुं.,नवनीतं, घृतम्।
अमृतत्व, सं. पुं. (सं.न.) मोक्षः, मुक्तिः (स्त्री.)।
अमृतांशु, सं. पुं. (सं.) शीतांशुः, चन्द्रः, सोमः।
अमृता, सं. स्त्री. (सं.) मद्यं, सुरा २. आमलकी ३. हरीतकी ४. तुलसी।
अमृत्यु, वि. (सं.) अमर, अमरण। स्त्री. अमरत्वम्। पु. विष्णुः।
अमेध्य, वि. सं. अपवित्र, अयज्ञार्ह, निन्द्य।
अमेय, वि. (सं.) असीम २. अज्ञेय।
अमोघ, वि. (सं.) सफल, सार्थक, फलवत्।
अमोनिया, सं. पुं. (अं.) तिक्तातिः (स्त्री.)।
अमोल, अमोलक, वि. (सं. अमूल्य दे०)।
अमौलिक, वि. (सं.) निर्मूल, वितथ, मिथ्या।
अम्माँ, सं. स्त्री. (सं. अम्बा) माता, जननी।
अम्मामा, सं. पुं. (अ.) महोष्णीषः-षम्।
अम्ल, सं. पुं. (सं.) रसभेदः। वि. अम्ल शुक्त।
अम्लता, सं. स्त्री. (सं.) अम्लत्वं, शुक्तत्वम्।
अम्हौरी, सं. स्त्री. (सं. अम्भस् >) घर्मकण्टकः-कम्।
अयन, सं. पुं. (सं. न.) गतिः (स्त्री.) २. सूर्य-चन्द्रयोर्गतिभेदः ३. ज्योतिःशास्त्रम् ३. सेना-गतिः ५. मार्गः ६ आश्रमः ७. स्थानं ८. गृहं ९. कालः १०. अंशः ११. यज्ञभेदः १२. अधस्(न.)।
अयश, सं. पुं. (सं.-शस् न.) अपकीर्तिः (स्त्री.)।
अयस, सं. पुं. (सं. अयस् न.) दे. 'लोहा'।
अयस्कान्त, सं. पुं. (सं.) कान्तायसं, कान्तं, कान्तलोहं।
अयाँ, वि. (अ.) प्रकट २. स्पष्ट।
अयान, वि. (हिं. अजान) अज्ञ, मूर्ख।
अयाल[1], सं. पुं. स्त्री. (तु० याल) केश (स) रः, सटा।
अयाल[2], सं. पुं. (अ.) संततिः (स्त्री.)।
—दार, वि., गृहिन्, गृहस्थ।
अयि, अव्य. (सं.) हे, अरे, भोः।
अयुक्त, वि. (सं) अनुचित २. अमिश्रित, भिन्न ३. युक्तिशून्य।
अयुग, वि. (सं.) विषम, अयुग्म।
अयुग्म, वि. (सं.) अयुग, विषम २. एकल, एकाकिन्।
अयुत, वि. (सं. न.) सहस्रदशकम्।
अयोग, वि. (सं. अयोग्य) अनुचित, अयुक्त।
अयोग्य, वि. (सं.) अनर्ह, अनुपयुक्त। २. पाटवशून्य ३. अशक्त ४. अपात्रम् ५. दे. 'अयोग'।
अयोध्या, सं. स्त्री. (सं.) साकेतं, नगरीविशेषः।
अयोनि, वि. (सं.) अज, नित्य।
अयोनिज, वि. (सं.) अगर्भज २. स्वयम्भू ३. अदेह, अकाय।
अयौक्तिक, वि. (सं.) युक्तिविरुद्ध, अनुपपन्न, असंगत।
अयौगिक, वि. (सं.) अव्युत्पन्न, रूढ़ (व्या.)।
अरंड, सं. पुं., दे. 'एरंड'।
अर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) चक्राङ्गं २. कोणः ३. शैवालः।
अरक सं. पुं. (अ.) आसवः २. रसः ३. प्रस्वेदः।
—निकालना, क्रि. स. सु-स्यन्द् (प्रे.), आ-अभि,-सु (स्वा. उ. अ.)।
—अरक होना, मु., (प्र-) स्विद् (दि. प. अ.)।
अरक्षित, वि. (सं.) अत्राण, अत्रात, अपात।
अरगजा, सं. पुं. (सं. अगरु + जा >) पीत-वर्णः सुगन्धिद्रव्यभेदः।
अरगनी, सं. स्त्री. (सं. आलग्न >) वसना-लम्बनी, वस्त्रालम्बनाय रज्जुः (स्त्री.) वंशो वा।

अरगल, सं. पुं. (सं. न.) अरगला, कपाटावष्टम्भकमुसलम् ।

अरग़वानी, सं. पुं. (फ़ा.) रक्तवर्णः, लोहितरंगः । वि. रक्त-लोहित,-वर्ण २. नीललोहित, धूमवर्ण ।

अरघा, सं. पुं. (सं.) ताम्रमयोऽर्घ्यपात्रभेदः २. शिवलिङ्गाधारपात्रम् ।

अरणि,-णी सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) निर्मन्थ्यदारु (न.), अग्निमन्थनकाष्ठम् ।

अरण्य, सं. पुं. (सं. न.) वनं, जङ्गलम् ।

—गान, सं. पुं. (सं. न.) सामवेदस्य गानविशेषः ।

—रोदन, सं. पुं. (सं. न.) अरण्यरुदितं, व्यर्थविलापः काननक्रन्दनम् २. व्यर्थवचनम् ।

अरत्नि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) कूर्परः, कफ (फो) णिः (पुं. स्त्री.), २. मुष्टिः (पुं. स्त्री.), मुष्टी ३. बाहुः ४. कूर्परात् मध्यमाङ्गुलीपर्यन्तं मानम् ।

अरथी, सं. स्त्री. (सं. रथः >) शवयानं, खाटः, खाटी ।

अरदल[1], सं. पुं (देश०) वृक्षभेदः ।

अरदल[2], सं स्त्री. (अं. ऑर्डर) आज्ञा, नियोगः ।

अरदली, सं. पुं. (अं. ऑर्डरली) परिचारकः, किंकरः, प्रेष्यः ।

अरदास, सं. स्त्री. (फ़ा अर्ज़दाश्त) उपहारः, प्रीतिदानं २. उपासना, आराधना, प्रार्थना ।

अरधंग, दे० 'अर्द्धांग' ।

अरधं (धाँ) गी, सं. स्त्री. (सं. अर्द्धांगिनी) पत्नी, भार्या, अर्द्धांगम् ।

अरना, सं पुं. (सं. अरण्यं >) वन्यमहिषः, वन्यसैरिभः ।

अरनी, सं. स्त्री., दे. 'अरणि' ।

अरब[1], सं. पुं. (सं. अर्बुदः-दं) शतकोटिसंख्या ।

अरब[2], सं. पुं. (सं. अर्वन्) घोटकः २. इन्द्रः ।

अरब[3], सं. पुं. (अ.) मरुदेशविशेषः, अरबदेशः २. अरबदेशीयोऽश्वो जनो वा ।

अरबी, वि. (फ़ा.) अरबदेशीय । सं. पुं. १—३. अरबदेशीयोऽश्व उष्ट्रो वाद्यभेदो वा । सं. स्त्री., अरबदेशस्य भाषा ।

अरमान, सं. पुं. (तु.) लालसा, आकांक्षा ।

अरर, अव्य. (सं. अररे) आश्चर्यघृणादिसूचकशब्दः ।

अरराना, क्रि. अ. (अनु.) पुरुषं ध्वन्-स्वन् (भ्वा. प. से.) २, सहसा पत् (भ्वा. प. से.)

अरविंद, सं. पुं. (सं. न.) कमलं, पद्मम् ।

अरविंदिनी, सं. स्त्री. (सं.) नलिनी, कमलिनी २. कमलसमूहः ३. पद्माकरः ।

अरवी, सं. स्त्री., दे. 'कचालू' ।

अरस, वि. (सं.) नीरस, विरस २. असभ्य ३. अलस ४. निर्बल ५. अयोग्य ।

अरसा, सं. पुं. (अ.) समयः २. विलम्बः ।

अरहट, सं. पुं. (सं. अरघट्टः) अरघट्टकः ।

अरहर, सं. स्त्री. (सं. आढकी) तुवरी, तवरिका, वृत्तबीजा ।

अराजक, वि, (सं.) राजहीन, शासकरहित ।

अराजकता, सं. स्त्री. (सं.) राजहीनता । २. शासनाभावः ३. उपद्रवः, अशान्तिः (स्त्री.) ।

अराति, सं. पुं. (सं.) शत्रुः २. कामक्रोधलोभमोहमदमात्सर्य्याणि (न. बहु.) ३. ज्योतिःशास्त्रे कुण्डल्याः षष्ठं स्थानम् ।

अरारूट, सं. पुं. (सं. (अं. एरोरूट) अरारूटं, कन्दभेदः २. अरारूटचूर्णम् ।

अरिंदम, वि. (सं.) शत्रुघ्न, अमित्रघातिन् २. विजयिन् ।

अरि, सं. पुं. (सं.) शत्रुः, वैरिन् ।

—मर्दन, वि (सं.) रिपु-सूदन-दमन, शत्रुघ्न ।

अरित्र, सं. पुं. (सं. न.) क्षि (क्षे) पणी-णिः (स्त्री.), नौ-नौका,-दण्डः,केनिपातकः ।

अरिष्ट, सं. पुं. (सं. न.) क्लेशः २, विपद् (स्त्री.) ३. दुर्भाग्यं ४. अपशकुनं ५. लशुनं ७. निम्बः ८. काकः ९. गृध्रः १०. फेनिलः ११. मद्यभेदः १२. क्वाथः १३. भूकम्पादय उत्पाताः १४. मथितं १५. प्रसूतिगृहं । वि. अनश्वर २. शुभ ३. अशुभ ।

अरिष्टक, सं. पुं. (सं.) फेनिलवृक्षः । (सं. न.) फेनिलबीजम् (रीठा) ।

अरिहा, वि. (सं -हन्) रिपुदमन, रिपुंजय । सं. पुं. शत्रुघ्नः ।

अरी, अव्य. (सं. अरे) अयि ।

अरुंतुद, वि. (सं.) मर्म,-भेदिन्-स्पृश् २. दुःखदायक ३. कटुभाषिन् । (सं. पुं.) शत्रुः ।

अरुंधती, सं. स्त्री. (सं.) वसिष्ठपत्नी २. दक्षपुत्री ३. नक्षत्रविशेषः ।

अरु, अव्य., दे. 'और' ।

अरुई, सं. स्त्री. दे. 'कचालू' ।

अरुचि, सं. स्त्री. (सं.) इच्छाऽभावः २. अग्निमान्द्य ३. घृणा ।

—कर, वि. बीभत्स, गर्ह्य, उद्वेगकर ।

अरुचिर, वि. (सं.) अप्रिय, अरुचिकर, अरुच्य, बीभत्स ।

अरुज, वि. (सं.-ज्) नीरोग, स्वस्थ ।

अरुण, वि. (सं.) रक्त, लोहित । सं. पुं. सूर्यः २. सूर्यसारथिः ३. सन्धिप्रकाशः ४. प्रभातं ५. कुंकुमं ६, गुडः ।

—उदधि, सं. पुं. (सं.) समुद्रविशेषः ।

—उदयः, सं. पुं. (सं.) प्रभातं, दिनमुखम् ।

—उपल, सं. पुं. (सं.) पद्मरागः, शोणरत्नम् ।

—चूड, सं.पुं. (सं.) कुक्कुटः ।

अरुणा, सं, स्त्री. (सं.) मञ्जिष्ठा २. कदन्नं ३. रक्तवर्णा गौः ४. उषस् (स्त्री.) ।

अरुणाई, सं. स्त्री. (सं.अरुण >) रक्तता, अरुणिमन् ।

अरुणात्मज, सं. पुं. (सं.) शनिः, शनैश्चरः, सौरिः २. यमः ३. सुग्रीवः ४. कर्णः ५. जटायुः ।

अरुणिमा, सं. स्त्री. (सं.-णिमन् पुं.) रक्तिमन् , लौहित्यम् ।

अरूप, वि. (सं.) अमूर्त्त, निराकार ।

अरे, अव्य. (सं.) हे, अयि, अये, भोः २. अहो (सब अव्य०) ।

अरोड़ा, सं. पुं. (सं. आरूढ >) पंचनदप्रान्तीयजातिविशेषः ।

अर्क[1], सं.पुं. (सं.) सूर्यः २. इन्द्रः ३. स्फटिकः ४. विष्णुः ५. मन्दारः ६. अग्रजः ७. रविवारः ८. उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रम् ९. द्वादश इति संख्या १०. पण्डितः । वि. (सं-) पूज्य, अर्चनीय ।

—मंडल, सं. पुं. (सं. न.) सूर्यबिंबः-बम् ।

अर्क[2], सं. पुं. (अ.) दे. 'अरक' ।

अर्कज, सं. पुं. (सं.) सूर्यपुत्राः [१ः यमः २. शनैश्चरः ३. अश्विनौ (द्वि.) ४. सुग्रीवः ५, कर्णः]

अर्कजा, सं. स्त्री. (सं.) सूर्यपुत्र्यौ (यमुना तापी च नद्यौ) ।

अर्गल, सं. पुं. (सं. न.) अर्गला, कपाटावष्टम्भकमुसलं २. कपाटः-टं ३. अवरोधः ४. कल्लोलः ५. सन्ध्या घनाः ।

अर्गला, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अर्गल' २. (चिटकनी) कीलः-लं ३. गजबन्धनशृङ्खला ४. अवरोधः ।

अर्घ, सं. पुं. (सं.) पूजाविधिभेदः २. पूजासामग्री ३. हस्तधावनाय जलं, तद्दानं वा ४. मूल्यं ५. उपहारः ६, सम्मानार्थं जलेन सेकः ।

—देना, उदकादिदानेन तृप् (प्रे०), निषिच् (तु. प. अ.)

—पात्र, सं.पुं. (सं. न.) शंखाकारं ताम्रपात्रम् ।

अर्घट, सं. पुं. दे. 'राख' ।

अर्घा,सं.पुं. (सं अर्घः >) दे. 'अर्घपात्र' ।

अर्घ्य, त्रि. (सं.) पूज्य २. बहुमूल्य । सं. पुं. (सं. न.) पूजाद्रव्यम् २. मधुभेदः ।

अर्चक, वि. (सं.) पूजक, उपासक ।

अर्चा, सं. स्त्री. (सं.) पूजा २. प्रतिमा, मूर्त्तिः (स्त्री.) ।

अर्चि, सं. स्त्री. (सं.) अर्चिस् (न., स्त्री.) शिखा २. तेजस् (न.) ३. किरणः ।

अर्चित, वि. (सं.) पूजित २. सत्कृत ।

अर्चन, सं. पुं. (सं. न.) पूजा, अर्चा, अर्चना २. सत्कारः ।

अर्चनीय, वि. (सं.) पूजनीय २. सत्कार्य ।

अर्चिष्मान् , वि. (सं.-ष्मत्) भास्वर, कान्तिमत् शिखा-ज्वाला,-युत-अन्वित । सं. पुं. (सं.) अग्निः २. सूर्यः ३. विष्णुः ।

अर्ज़, सं. स्त्री. (अ.) प्रार्थना, याचना २. विस्तारः, परिणाहः ।

—करना, क्रि. स, याच् (भ्वा. उ. से.) सविनयं निविद् (प्रे.) ।

अर्जन, सं. पुं. (सं. न.) उपार्जनं, संचयः, संग्रहः, उपादानम् ।

—करना, क्रि. स., उप-,अर्ज् (चु.), संग्रह् (क्र. प. से.)

अर्जित, वि. (सं.) उपार्जित, संगृहीत, संचित ।

अर्ज़ी, सं. स्त्री, (अ.) प्रार्थना-निवेदन,-पत्रम् ।

अर्जी—दावा, सं. पुं. (अ.) अभियोग-भाषा, पत्रम् ।

अर्जुन, सं. पुं. (सं.) धनंजयः, पार्थः, कपिध्वजः, गुडाकेशः, गाण्डीविन् २. सहस्रार्जुनः ३. वृक्षभेदः ४. मयूरः । वि. श्वेत २. स्वच्छ ।

अर्जुनी, सं. स्त्री. (सं.) शुक्ला गौः (स्त्री.) २. ऊषा ३. कुट्टनी

अर्णव, सं. पुं. (सं.) समुद्रः २. सूर्यः ३. अन्तरिक्षं ४. चतुर् इति संख्या ।

अर्तिका, सं. स्त्री. (सं) अग्रजा, (अत्तिका) ज्येष्ठभगिनी ।

अर्ति, सं. स्त्री. (सं.) पीडा, व्यथा २. चापाग्रम् ।

अर्थ, सं. पुं. (सं.) शब्दाशयः २. प्रयोजनं ३. कर्मन् (न.) ४. इन्द्रियविषयः ५. धनम् ।

—देना, क्रि. स. अभि-धा (जु. उ. अ.) सूच् (चु.), बुध् (प्रे.) ।

—बताना, क्रि. स., व्या-ख्या (अ. प. अ.), विवृ (स्वा. उ. से.), व्याचक्ष् (अ. आ. से.) अर्थं प्रकाश् (प्रे.) ।

—कर, वि. (सं) लाभप्रद, फलावह । (-करी स्त्री.) ।

—दंड, सं. पुं. (सं.) धनदण्डः ।

—पति, सं. पुं. (सं.) कुबेरः २. नृपः ।

—पिशाच, वि. (सं.) कृपण, लोभिन् ।

—वाद, सं. पुं. (सं.) त्रिविधवाक्येषु अन्यतमम् (न्या.) ।

—वेद, सं. पुं. (सं.) शिल्पशास्त्रम् ।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) धनप्राप्तिरक्षावृद्ध्याद्युपायदर्शकं शास्त्रम् ।

—सचिव, सं. पुं. (सं.) अर्थमन्त्रिन् ।

अर्थात्, अ० (सं.) अयं आशयः, दे 'यानीने' ।

अर्थान्तर, सं. पुं. (सं. न.) अन्य-भिन्न-द्वितीय,-अर्थः ।

—न्यास, सं. पुं. (सं.) अर्थालंकारभेदः (सा.) ।

अर्थापत्ति, सं. स्त्री. (सं.) प्रमाणभेदः (न्या.) २. अलंकारभेदः (सा.) ।

अर्थालंकार, सं. पुं. (सं.) अर्थचमत्कारयुतोऽलंकारः (सा.) ।

अर्थी, वि. (सं.-र्थिन्) इच्छु, इच्छुक, इच्छक, अभिलाषिन् २. कार्यार्थिन् । (अर्थिनी स्त्री.) सं. पुं., वादिन्, अभियोक्तृ २. सेवकः ३. धनिकः ।

अर्दन, सं. पुं. (सं. न.) पीडनं, हिंसा २. याचनम् ।

अर्दित, वि. (सं.) पीडित २. हत ३. याचित ४. गत ।

अर्द्ध, वि. (सं) सामि—। सं. पुं., अर्द्धः-र्द्धं, अर्द्ध,-भागः-अंशः ।

—चंद्र, सं. पुं. (सं.) अष्टम्याश्चन्द्रः २. चन्द्रकः, मयूरपक्षस्थचन्द्रचिह्नं ३. नखक्षतं ४. चन्द्रबिन्दुः (ँ) ५. बहिष्काराय ग्रीवातो ग्रहणम् ६. त्रिपुंड्रभेदः ।

—भाग, सं. पुं. (सं.) अर्द्धः – र्द्धं, अर्द्धांशः ।

—मागधी, सं. स्त्री. (सं) प्राकृतभाषाभेदः (यह कभी मथुरा से पटना तक बोली जाती थी) ।

—वृत्त, सं. पुं. (सं. न.) वृत्तार्द्धं, अर्द्धमंडलम् २. वृत्तपरिधेरर्द्धभागः ।

—समवृत्त, सं. पुं. (सं. न.) छन्दोभेदः ।

अर्द्धांग, सं. पुं (सं. न.) अर्द्ध,-भागः-अंशः २. पक्ष,-आघातः-वायुः ३. शिवः ।

अर्द्धांगिनी, सं. स्त्री. (स.) पत्नी, भार्या ।

अर्द्धांगी, सं. पुं. (सं.-गिन्.) शिवः । वि., अर्द्धांगरोगग्रस्त,पक्षवायुपीडित ।

अर्पण, सं. पुं. (सं. न.) उपहरणं, उपनयनं, दानं २. उपायनं, उपहारः ३. स्थापनम् ।

—करना, क्रि. सं., उपहृ-उपनी (स्वा. प. अ.) उपस्था (प्रे.) ऋ (प्रे. अर्पयति) ।

अर्पित, वि. (सं.) दत्त, उत्-वि,-सृष्ट ।

अर्बुद, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दशकोटिसंख्या २. अरावलीपर्वतः ३. मेघः ४. मांसकीलरोगः ५. द्वैमासिको गर्भः ।

अर्बा, वि. (अ०) चतुर् ।

अर्भक, वि. (सं.) अल्प, लघु, २. मूर्ख ३. कृश । सं. पुं., बालकः, वटुः ।

अर्य्य, सं. पुं. (सं.) स्वामिन् २. ईश्वरः ३. वैश्यः । वि. श्रेष्ठ । (अर्या, अर्याणी,अर्यी स्त्री.) ।

अर्य्यमा, सं. पुं. (सं.-मन्) सूर्यः २. आदित्यविशेषः ३. विशिष्टाः पितरः (बहु०) ४. उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रम् ।

अर्वाक्, अव्य. (सं.) पश्चात्, इदानींतने काले, नातिचिरात् प्राक्, अचिरं २. समीपं-पे, निकटं-टे।

अर्वाचीन, वि. (सं.) नूतन नातिपुराण, आधुनिक (—की स्त्री.), अभिनव।

अर्श, सं. पुं. (सं.—र्शस् न.) गुदकीलकः, गुदांकुरः।

अर्श, सं. पुं. (अ.) आकाशः-शं २ स्वर्गः।

अर्हत, सं. पुं. (सं.) जिनः २. बुद्धः ३. शिवः वि. मान्य।

अर्ह, वि. (सं.) पूज्य २. योग्य।

अर्हणीय, वि. (सं.) पूज्य, संमान्य, पूजनीय।

अर्हत्, वि (सं.) मान्य, अर्चनीय।

अर्हित, वि. (सं.) पूजित, संमानित।

अल, अव्य., दे. 'अलम्'।

अलंकार, सं. पुं. (सं.) आभरणं, मण्डनं, वि-,भूषणं २. शब्दार्थयोश्चमत्कारविशेषः (सा०)।

अलंकृत, वि. (सं.) वि-,भूषित, मंडित, धृताभरण २. संस्कृत, परिष्कृत।

—करना, क्रि. स., वि-, भूष् (चु०), अलंकृ, परिष्कृ, संस्कृ, मण्ड् (चु०), प्रसाध् (प्रे०)।

अलंघनीय, वि. (सं.) अलंघ्य, दुरतिक्रम, दुस्तर।

अल, सं. पुं. (सं. न.) (=बिच्छू का डंक) लूमं, अ(आ)लिदंशः, द्रु(द्रो)ण-, कण्टकः-शंकुः। २. हरितालकं २. विषः, विषम्।

अलक, सं. पुं. (सं.) कुरलः, चूर्णकुन्तलः २. केश,-पाशः-कलापः।

अलकतरा, सं. पुं.. दे 'कोलटार'।

अलकनंदा, सं. स्त्री. (सं) नदीविशेषः।

अलकली, सं. स्त्री. (अं.) विक्षारः।

अलका, सं. स्त्री. (सं.) कुबेरनगरी, यक्षपुरम्।

—पति, सं. पुं. (सं.) कुबेरः।

अलकावलि, सं. स्त्री. (सं.) केशकलापः।

अलकोहल, सं. पुं. (अं.) सुषवः।

अलक्त, अलक्तक, सं. पुं. (सं.) ला (रा) क्षा, जतु (न.), यावः, रक्ता, द्रुमामयः २. लाक्षानिर्मितरंगभेदः।

अलक्षित, वि. (सं.) अदृष्ट, अवीक्षित २. अदृश्य ३. अज्ञात ४. गुप्त।

अलक्ष्य, वि. (सं.) अदृश्य २. अतीन्द्रिय।

अलख, वि. (सं. अलक्ष्य) दे. 'अलक्ष्य'।

—धारी, सं. पुं. (सं. अलक्ष्यधारिन्) गोरक्षनाथानुयायिनः साधवः (बहु०)

—जगाना, मु., भिक्षायाचनम्।

अलग, वि. (सं. अलग्न) पृथक् (अव्य.) वि-, भिन्न, वियुक्त, विच्छिन्न, असंलग्न।

—करना, क्रि. स., पृथक् कृ, विघट्-विश्लिष् (प्रे.), वियुज् (चु०)।

—होना, क्रि. अ., पृथक् भू, वियुज् (भा० वा.) विश्लिष् (दि. प. अ.)।

अलगनी, सं. स्त्री. (सं. आलग्न >) वसनालंबनी।

अलग़ोज़ा, सं. पुं. (अ.) मुरली-वंश-वेणु,-भेदः।

अलज्ज, वि. (सं.) निर्लज्ज, धृष्ट, वियात।

अलपाका, सं. पुं. (स्पे० एलपाका) जन्तुभेदः २. तस्य ऊर्णा ३. तदूर्णानिर्मितः सूक्ष्मवस्त्रभेदः।

अलफ़, सं. पुं. (अ. अलिफ़) अरबीवर्णमालायाः प्रथमवर्णः।

अलबत्ता, अव्य. (अ.) निस्सन्देहं, निस्संशयम् २. आम्, सत्यम् ३. किन्तु, परन्तु।

अलबम, सं. पुं. (अं) चित्रपञ्जिका।

अलबेला, वि. (सं. अलभ्य > ?) वेषाभिमानिन्, छेक, रूपगर्वित, दर्शनीयमानिन् २. अद्भुत ३. कामचारिन्, अनवहित।

अलब्ध, वि. (सं.) अप्राप्त, अनधिगत, अहस्तगत।

अलभ्य, वि. (सं.) अप्राप्य २. दुर्लभ ३. अमूल्य।

अलम्, अव्य. (सं.) यथेष्टं, पर्याप्तं, प्रचुरम्।

अलम, सं. पुं. (अ.) शोकः, दुखं २. ध्वजः।

अलमनक, सं. पुं. (अं) पंचांगं, पंजिका।

अलमस्त, वि. (फ़ा.) मत्त, क्षीब २. निश्चिन्त।

अलमारी, सं. स्त्री. (पुर्त० अलमारियो) उत्थितपिटकः।

अलमास, सं. पुं. (फ़ा) हीरकः, वज्रः-ज्रम्।

अललटप्पू, वि. (देश०) दैवाधीन, आकस्मिक।

अलवान, सं. पुं. (अ.) और्णप्रावारः ।

अलस, वि. (सं.) मन्द, मन्थर, आलस्य-शील ।

अलसान-नि; सं. स्त्री. (सं. आलस्यम्) मान्द्यम्, तन्द्रिका ।

अलसाना, क्रि. अ., (हि. अलसान) शिथिलायते (ना. धा.), शिथिली-श्लथी-मन्दी,-भू ।

अलसी, सं. स्त्री. (सं. अतसी) उमा, क्षुमा । (बीज) उमा-अतसी,-बीजम् ।

अलहदगी, सं. स्त्री. (अ०) पृथक्ता पार्थक्यम्

अलहदा, वि. (अ.) अन्य, भिन्न, पृथक् ।

अलात, सं. पुं. (सं. न.) अङ्गारः २. ज्वलत्-काष्ठं, उल्का ।

—चक्र, सं. पुं. (सं. न.) उल्काघूर्णनजं चक्रम् ।

अलान, सं. पुं. (सं. आलानं) गजबन्धनस्तम्भः २. हस्तिबन्धनशृंखला ३. बन्धनं, निगडः ।

अलानिया, अ० (अ०) प्रकटं, निर्भयं, निःशंकम् ।

अलाप, सं. पुं., दे. 'आलाप' ।

अलापना, क्रि. सं. (सं. आलापनम्) आलप् (भ्वा. प. से.), स्वरलयम् उत्पद् (प्रे०) २. गै (भ्वा. प. अ. गायति) ।

अलामत, सं. स्त्री. (अ.) लक्षणं, चिह्नं, अभिज्ञानम् ।

अलार्म घड़ी, सं. स्त्री. (अं. एलार्म + सं. घटी) प्रबोधन,-घटी-घटिका ।

अलाव, सं. पुं. (सं. अलातं >) अग्निराशिः, अङ्गारनिकरः ।

अलावा, क्रि. वि. (अ.) विना, ऋते २. दे. 'अतिरिक्त' ।

अलिंग, वि. (सं.) लिंग-लक्षण-चिह्न,-रहित-हीन । सं. पुं., ईश्वरः २. चिह्नाभावः ।

अलिंजर, सं. पुं. (सं.) (बड़ा घड़ा) अलजरः, मणिकः २. (झज्झर) कर्करी, गलन्तिका, आलुः (स्त्री.) ।

अलिंद[1] सं. पुं (सं. अलीन्द्रः) भ्रमरः द्विरेफः ।

अलिंद[2], सं. पुं. (सं.) आलीन्दः प्रघ (घा) णः, प्रघ (घा) नः, २. बहिर्द्वारप्रकोष्ठः ।

अलि, सं. पुं. (सं.) भ्रमरः, शिलीमुखः २. पिकः ३. काकः ४. वृश्चिकः ५. कुक्कुरः ६. दे. 'अली' ।

अली[1], सं. स्त्री. (सं. आलिः) सखी, सहचरी २. श्रेणी, पंक्तिः (स्त्री.) ।

अली[2], सं. पुं. (सं. अलि) षट्पदः, भ्रमरः ।

अलीक, वि. (सं.) असत्य, अनृत, वितथ ।

अलील, वि, (अ.) रोगिन्, रुग्ण ।

अलुमीनम, सं. पुं. (अं. एलुमीनियम) स्फटधातु (न.) ।

अलूचा, सं. पुं. (फ़ा. आलूचः) अलुचम् ।

अलेख[1], वि. (सं.) अज्ञेय २. अगणित ।

अलेख[2], वि. (सं. अलक्ष्य) अदृश्य ।

अलेख्य, वि. (सं) लेखानर्ह ।

अलोन-ना, वि. (सं. अलवण) लवणहीन २. नीरस. (अलोनी स्त्री.) ।

अलोल-कलोल, सं. स्त्री. (सं. लोल-कल्लोलः) क्रीडा, लीला, खेला ।

अलौकिक, वि. (सं.) लोकोत्तर, लोकबाह्य २. अपूर्व, अद्भुत, ३. अति,-मर्त्य-मानुष, अमानुषिक ।

अल्टिमेटम, सं. पुं. (अं.) अन्तिमेत्थम्, अन्तिम,-उपन्यासः-अभिसन्धिः (पुं.) ।

अल्ट्रावायोलेट रे, सं. स्त्री. (अं.) अतिनीला-रुणरश्मिः ।

अल्प, वि. (सं.) स्वल्प, स्तोक, दभ्र, न्यून, क्षुद्र-अल्प-लघु,-परिमाण २. ह्रस्व, खर्व, वामन ।

—आहार, सं. पुं. (सं.) मितभोजनम् ।

—आहारी, वि. (सं.-रिन्) मितभुज्, अल्पाशन ।

—आयु, वि. (सं.-युस्) अचिर,-जीवन-जीविन् । सं. पुं., अजः, छागः ।

—जीवी, वि. (सं. विन्). अचिरायुष्य ।

—ज्ञ, वि. (सं.) स्तोकज्ञ, अल्पविद् २. मंद-बुद्धि ।

—ज्ञता, सं. स्त्री. (सं.) स्तोकज्ञता २. अज्ञता ।

—प्राण, सं. पुं. (सं.) अल्पप्राणोच्चार्या वर्णाः (क्, ग्, ङ्, च्, ज्, ञ्, आदि ।)

—बुद्धि, वि. (सं.) मूर्ख, मूढ, दुर्मति, जड ।

—वयस्क, वि. (सं.) अप्राप्त,-व्यवहारः-वयस्कः, बालः ।

अल्पता, सं. स्त्री. (सं.) न्यूनता-त्वं, अल्पत्वं २. लघुता-त्वं ।

अल्पशः, अव्य. (सं.) स्तोकशः, अल्पाल्पं २. शनैः शनैः, क्रमशः (सब अव्य.)

अल्ल, सं. पुं. (अ. आल) वंशनामन् (न.), उपगोत्रनामन् (दुब्बे, चौबे आदि)।

अल्लम-गल्लम, सं. पुं. (अनु.) प्रलापः, दे. 'अंडवंड'।

अल्लाह, सं. पुं. (अ.) ईश्वरः।

—ओ अकबर, वाक्य (अ.) ईश्वरो हि महान्।

अल्हड़, वि. (सं. अल् = बहुत + लल् = खेलना >) विलासिन्, विनोदिन् २. अनवधान ३. अल्पवयस्क ४. उद्धत ५. अज्ञ। सं. पुं. नवजातवत्सः।

—पन, सं. पुं., विनोदिता २. अनवधानता ३. अल्पवयस्कता ४. उद्धतता ५. अज्ञता।

अवंति-ती, अवन्तिका, सं. स्त्री. (सं.) उज्जयिनी नगरी।

अव, उप. (सं.) निश्चयानादरन्यूनतानिम्नताव्याप्तिसूचक उपसर्गः।

अवकलन, सं. पुं. (सं. न.) दर्शनं, ईक्षणं, वीक्षणम् २. अवगमनं, ज्ञानम् ३. ग्रहणम्।

अवकाश, सं. पुं. (सं.) स्थानं, स्थलं, प्र-, देशः २. गगनं ३. दूरता ४. अवसरः ५. विश्रामः।

अवकिरण, सं. पुं. (सं. न.) विकिरणं,विक्षेपणं, प्रासनम्।

अवकीर्ण, वि. (सं.) प्र-वि-आ,-कीर्ण, प्र-वि-अस्त, विक्षिप्त २. ध्वस्त, नाशित ३. सं,-चूर्णित।

अवकीर्णी, वि. (सं.-र्णिन्) क्षतव्रत, नष्टवीर्य।

अवकुंचन, सं. पुं. (सं. न.) मोटनं, वक्रीकरणं, व्यावर्तनं, आकुञ्चनम्।

अवकुंठित, वि. (सं.) कातर, क्लीब, भीरु।

अवकृष्ट, वि. (सं.) बहिष्कृत २. निगलित ३. नीच। सं. पुं. दासः।

अवकेशी, वि. (सं.-शिन्) निष्फल २. निस्सन्तान।

अवक्रय, सं. पुं. (सं.) मूल्यं, अर्घः २. (किराया) तार्यं, तारिकं, आतरः ४. करः।

अवक्रोश, सं. पुं. (सं.) आक्रोशः, शापः, गर्हा।

अवगत, वि. (सं.) विदित, ज्ञात, बुद्ध, परिचित २. निगत, पतित।

अवगति, सं. स्त्री. (सं.) ज्ञानं, बोधः, अवगमनं २. कुगतिः-निगतिः (स्त्री.)।

अवगाढ, वि. (सं.) निबिड, गुप्त २. निमग्न, प्रविष्ट।

अवगाहन, सं. पुं. (सं. न.) जले प्रविश्य स्नानं, निमज्जनं २. प्रवेशः ३. मथनं, विलोडनं ४. अनुसन्धानं ५. मननं, विचारणा।

अवगीत, वि. (सं.) निन्दित, लाञ्छित। सं. पुं. (सं. न.) निन्दा, अपवचनम्।

अवगुंठन, सं. पुं. (सं. न.) आवरणं, व्यवधानं, आच्छादनं, संवरणं २. (घूँघट) आवरकः-कम्।

अवगुंफन, सं. पुं. (सं. नं.) सं-ग्रन्थनं, वि-, रचनं, तन्त्रीभिर्गुणैर्वा बन्धनम्।

अवगुण, सं. पुं. (सं.) दोषः, व्यसनं २. अपराधः, स्खलितम्।

अवग्रह, सं. पुं. (सं.) विघ्नः, प्रतिबन्धः २. अनावृष्टिः (स्त्री.) ३. सेतु-वप्र,-बन्धः, वप्रः ४. सन्धिविच्छेदः (व्या०) ५. शापः।

अवघट, वि. (सं.अव + घट्ट >) विकट, दुर्गम।

अवघर्षण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'रगड़ना' तथा 'पीसना'।

अवचन, सं. पुं. (सं. न.) निःशब्दता, तूष्णींभावः। २. निन्दा।

अवचनीय, वि. (सं.) अकथनीय, अश्लील २. अनिन्द्य, अगर्ह्य।

अवचय, सं. पुं. (सं.) उत्पाटनं, उद्धरणं, उल्लुंचनम्।

अवच्छिन्न, वि. (सं.) पृथक्कृत, विश्लेषित २. ससीम, ३. सविशेषण, विशिष्ट।

अवच्छेद, सं. पुं. (सं.) भेदः, पृथग्भावः २. इयत्ता ३. अवधारणं, निश्चयः ४. परिच्छेदः, विभागः।

अवच्छेदक, वि. (सं.) विभाजक, भेदक २. इयत्ताकारक ३ अवधारक ४. निश्चायक। सं. पुं., विशेषणम्।

अवज्ञा, सं. स्त्री. (सं.) अव-अप,-मानः, अनादरः, अवधीरणं-णा २. आज्ञोल्लंघनं ३. पराजयः ४. अलंकारभेदः (सा.)।

अवज्ञात, वि. (सं.) अवधीरित, अपमानित, तिरस्कृत।

अवतंस, सं. पुं. (सं. पुं. न.) भूषणं, अलंकारः २. शिरोभूषणं ३. कर्णभूषणं ४. मुकुटं ५. श्रेष्ठजनः ६. माला, हारः ७. भ्रातृव्यः ८. पाणिग्राहकः।

अवतरण, सं. पुं. (सं. न.) अवरोहणं, अधोगमनं २. पारगमनं ३. शरीरधारणं, जन्मग्रहणं ४. प्रतिलेखः, प्रतिलिपि-प्रतिकृतिः (स्त्री.), ५. प्रादुर्भावः ६. घट्ट-,सोपानं ७. घट्टः।

अवतरणी-णिका, सं. स्त्री. (सं.) ग्रन्थ-पुस्तक,-प्रस्तावना-भूमिका-उपोद्घातः २. रीतिः (स्त्री.)।

अवतार, सं. पुं. (सं.) पुराणमतानुसारं देवविशेषस्य जीवविशेषस्य वा शरीरधारणम्। (विष्णु जी के २४ अवतार—ब्रह्मा, वाराह, नारद, नरनारायण, कपिल, दत्तात्रेय, यज्ञ, ऋषभ, पृथु, मत्स्य, कूर्म, धन्वन्तरि, मोहिनी, नृसिंह, वामन, परशुराम, वेदव्यास, राम, बलराम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि, हंस, हयग्रीव)।

—लेना, क्रि, अ., अवतॄ (भ्वा. प. से.), अवरुह् (भ्वा. प. अ.), शरीरं धृ (प्रे.)।

अवतारण, सं. पुं. (सं. न.) नीचैर्नयनं २. अनुकरणं ३. उद्धरणम्।

अवतारी, वि. (सं.-रिन्). अवरोहिन्, अधोगामिन् २. देवांशधारिन्, अलौकिक।

अवदात, वि. (सं.) श्वेत, शुभ्र २. शुद्ध ३. गौर ४. पीत।

अवदान, सं. पुं. (सं. न.) सुकर्मन् (न.) २. त्रोटनं ३, पराक्रमः ४. शोधनं ६. उशीरः-रम्।

अवदारण, सं. पुं. (सं.) क्रकचेन छेदनं-पाटनम् २. विभाजन ३. खदानम् ४. दे. 'कुशल'।

अवदीर्ण, वि. (सं.) क्रकचेन पाटित २. विभाजित ३. खात।

अवद्य, वि. (सं.) अधम, पाप, २. निन्द्य, कुत्सित।

अवध, सं, पुं. (सं. अयोध्या >) कोश (स) लाः (बहु) २. अयोध्या।

अवध, वि. (सं. अवध्य) रक्ष्य, त्राणार्ह।

अवधान, सं. पुं. (सं. न.) मनोयोगः, अवेक्षा, सतर्कता।

अवधार, सं. पुं. (सं.) निश्चयः, निश्चितता २. सीमा, अवधिः (पुं.)।

अवधारण, सं. पुं. (सं. न.) निर्धारणं, निश्चयः।

अवधारित, वि. (सं.) निर्धारित, निश्चित।

अवधार्य, वि. (सं.) निर्धारणीय, निश्चेतव्य।

अवधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) सीमा, पराकाष्ठा, पर्यन्तः २. नियत,-कालः-समयः ३. मृत्युकालः। अव्य. (सं.) यावत् (उ. अद्यावधि = अद्य यावत् = आज तक)।

अवधी, वि. (हि. अवध) कोश (स) लसम्बन्धिन् २. कोस (श) लप्रान्तस्य भाषा।

अवधीरणा, सं. स्त्री. (सं.) दे, 'अवज्ञा'।

अवधीरित, वि. (सं.) अवज्ञात, तिरस्कृत।

अवधूत, सं. पुं. (सं.) सन्न्यासिन्, योगिन् साधुः। वि. (सं.) कंपित २. विनष्ट।

अवधेय, वि. (सं.) विचारणीय, ध्येय २. श्रद्धेय ३. ज्ञातव्य।

अवनत, वि. (सं.) नीच, निम्न, नत, नीचस्थ २. पतित ३. न्यून।

अवनति, सं. स्त्री. (सं.) ह्रासः, क्षयः, हानिः (स्त्री.) २. अधोगतिः (स्त्री) ३. नम्रता।

अवनि-नी, सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी, भूमिः (स्त्री.)।

—इन्द्र, ईश, सं. पुं. (सं.) नृपः।

—तल, सं. पुं. (सं. न.) भू,-पृष्ठं तलम्।

—पति,-पाल, सं. पुं. (सं.) भूपः।

अवबोध, सं. पुं. (सं.) जागरणं २. ज्ञानम्।

अवभृथ, सं. पुं. (सं.) यज्ञशेषकर्मन् (न.) २. यज्ञान्तस्नानम्।

अवम, वि. (सं.) अधम, अन्तिम २. रक्षक, परित्रातृ २. नीच, निन्दित। सं. पुं. (सं.) पितृगणविशेषः २. मलमासः।

अवमत, वि. (सं.) अवधीरित, तिरस्कृत।

अवमति, सं. स्त्री. (सं.) अपमानः तिरस्कारः।

अवमर्दन, सं. पुं. (सं. न.) पीडनं, अर्दनं, उपमर्दः।

अवमर्श, सं. पुं. (सं.) स्पर्शः २, सम्पर्कः ३. सन्धिविशेषः (सा०)।

अवमर्ष, सं. पुं. (सं.) सम्-, आलोचनं-ना २. सन्धिविशेषः (सा०) ३. आक्रमणम्।

अवमर्षण, सं. पुं. (सं. न.) असहिष्णुता, दे, 'असहनशीलता' २. अपमार्जनं, विलोपनम्।

अवमान, सं. पुं. (सं.) दे. 'अवमति'।

अवमानना, सं. स्त्री. (सं.) अवधीरणं-णा, तिरस्कारः।

अवयव, सं. पुं. (सं.) अंशः, भागः २. अंगं, गात्रं, शरीरैकदेशः ३. न्याये पञ्च दश वा

वाक्यांश (=प्रतिज्ञा, हेतुः, उदाहरणं, उप... नं, जिज्ञासा, संशयः, शक्य-प्राप्तिः प्रयोजनं, संशय-व्युदासः)।

अवयवी, वि. (सं.-विन्) अङ्गिन्, सावयव २. पूर्ण, समग्र। सं. पुं., सावयवः पदार्थः ३. देहः।

अवर, वि. (सं) अन्य, अपर २, अधम, नीच।

अवराधक, वि. (सं. आराधक) पूजक।

अवराधन, सं. पुं. (सं. आराधनं) पूजा, अर्चा।

अवरुद्ध, वि. (सं.) उप-प्रति,-रुद्ध, प्रतिहत, प्रतिबाधित २. आच्छादित, गूढ।

अवरूढ, वि. (सं.) अवतीर्ण, अधोगत।

अवरेव, सं. पुं. (सं. अव+रेव् >) वक्र-तिर्यग्,-गतिः (स्त्री.)२.वस्त्रस्य तिर्यक् कर्तनम्।

—दार, वि., तिर्यक्कृत।

अवरोध, सं. पुं. (सं.) विघ्नः, व्याघातः २. अवरोधः ३. निरोधः ४. अनुरोधः ५. अन्तःपुरम्।

अवरोधन, सं. पुं. (सं. न.) निवारणं २. अन्तःपुरम्।

अवरोपण, सं. पुं. (सं. न.) उन्मूलनं, उत्पाटनम्।

अवरोह, सं. पुं. (सं.) अवतारः, पतनम् २. अवनतिः (स्त्री.) अलंकारभेदः (सा.) स्वरावतारः (संगीत)।

अवरोहण, सं. पुं. (सं. न.) अवतरणं, नीचैर्गमनम्।

अवर्ण, वि. (सं.) रंगरहित, वर्णविहीन २. कुवर्ण, कुरंग ३. वर्णधर्मशून्य। सं. पुं., अष्टादशविधोऽकारः (व्या.)।

अवर्ण्य, वि. (सं.) अवर्णनीय, अनिर्वाच्य, अकथनीय, वर्णनाविषय। सं. पुं., उपमानम्।

अवलंब, सं. पुं. (सं.) आश्रयः, शरणं, आधारः, अवष्टम्भः।

अवलंबन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'अवलंब'। २. धारणं, ग्रहणम्।

अवलंबित, वि. (सं.) आश्रित, अधीन, आयत्तः-विघ्न,-तंत्र (समासान्त में)।

अवलंबी, वि. (सं.-विन्) दे. 'अवलंबित' २. आश्रयद (अवलंबिनी=आश्रिता स्त्री.)।

अवलक्ष, वि. (सं.) श्वेत-सितः,-रंग-वर्णः। सं. पुं. (सं.) श्वेत,-रंगः-वर्णः।

अवलिप्त, वि. (सं.) गर्वित, दृप्त २. अ... दिग्ध ३. लीन।

अवली, सं. स्त्री. (सं. आवली-लिः स्त्री. ...) २. ततिः, राजी-जिः (सब स्त्री.) २. राशिः।

अवलीढ, वि. (सं.) आ,-परि-सं-लीढ। भक्षित, भुक्त, जग्ध।

अवलेप, सं. पुं. (सं.) दर्पः, गर्वः २. वि-अनु,-लेपः।

अवलेपन, सं. पुं. (सं. न.) अभ्यंजनं, विलेपनं २. उद्वर्तनं, गात्रानुलेपनी ३. अहंकारः ४. दूषणम्।

अवलेह, सं. पुं. (सं.) लेह्यः पदार्थः २. लेह्य-मौषधम्।

अवलेहन, सं. पुं. (सं. न.) जिह्वाग्रेण स्पृष्ट्वा खादनम्।

अवलोकन, सं. पुं. (सं. न.) वि.-ईक्षणं, दर्शनं, निरूपणं २. निरीक्षणं, अवेक्षणम्।

—करना, क्रि. सं., अव-वि-आ,-लोक् (भ्वा आ. से., चु.) प्र-वि-अव,-ईक्ष् (भ्वा. आ. से.)।

अवलोकनीय, वि. (सं.) दर्शनीय, ईक्षणीय।

अवलोकित, वि. (सं.) ईक्षित, दृष्ट, निरूपित।

अवश, वि. (सं.) वि-पर,-वश, अशक्त।

अवशिष्ट, वि. (सं.) अवशेष, उद्वृत्त।

अवशेष, वि. (सं.) अवशिष्ट, उद्वृत्त २. समाप्त। सं. पुं. (सं.) अवशिष्टं, शेषभागः २. अन्त समाप्तिः (स्त्री.)।

अवश्यंभावी, वि. (सं.-विन्) अपरिहार्य अनिवार्य।

अवश्य, क्रि. वि. (सं. अवश्यम्) नियतं, ध्रुवं, असंशयं, नूनं, नाम, खलु (सब अव्य.)।

अवश्य[2], वि. (सं.) उच्छृङ्खल, दुर्दमनीय, दुर्निग्रह, अविधेय, दुर्निवार। (अवश्या = दुर्दमनीया स्त्री.)।

अवश्यमेव, क्रि. वि., दे. 'अवश्य'।

अवश्याय, सं. पुं. (सं.) तुषारः, प्रालेयं, हिमजलम् २. अभिमानः, गर्वः।

अवष्टंभ, सं. पुं. (सं.) आश्रयः २. स्तम्भः ३. धृष्टता।

अवसन्न, वि. (सं.) विषण्ण, म्लान, खिन्न, शोकार्त्त २. विनाशोन्मुख २. अलस।

अवसर, सं. पुं. (सं.) समयः, कालः २. अवकाशः, क्षणः ३. दैवं, दैवगतिः (स्त्री.) ।

[illegible]र्जन, सं. पुं. (सं. न.) वि-उत्-सर्जनम् [illegible]झनं, त्यजनम् ।

[illegible]सर्पण, सं. पुं. (सं. न.) अवरोहणं, अधोगमनम् ।

अवसाद, सं. पुं. (सं.) नाशः, क्षयः २. विषादः ३. दैन्यं ४. श्रान्तिः (स्त्री.) ५. निर्बलता ।

अवसान, सं. पुं. (सं. न.) विरामः, याननिवृत्तिः (स्त्री.), विष्टम्भः २. समाप्तिः (स्त्री.), अन्तः ३. मृत्युः ४. सीमा ५. सायंकालः ।

अवसाय, सं. पुं. (सं.) अन्तः समाप्तिः (स्त्री.) २. अवशिष्टं ३. पूर्तिः (स्त्री.) ४. संकल्पः ५. निर्णयः ।

अवसित, वि. (सं.) समाप्त २. ऋद्ध ३. परिपक्व ४. निश्चित ५. सम्बद्ध ।

अवसृष्ट, वि. (सं.) त्यक्त २. दत्त ३. निष्कासित ।

अवसेचन, सं. पुं. (सं. न.) प्रोक्षणं, जलेनाप्लावनं २. प्र-, स्वेदनं ३. जलूकादिभिः रक्तनिष्कासनम् ।

अवस्कन्द, सं. पुं. (सं.) सैन्यावासः, शिविरम् २. जनवासः, वरयात्रावासः ।

अवस्कर, सं. पुं. (सं) विष्ठा, गूथः-थम् । २. [गुह्यांगम् , लिंगम् , योनिः (क्रमशः न. स्त्री.) गुदम्] ३. उच्छिष्टम् , निस्सारवस्तुसमूहः ।

अवस्था, सं. स्त्री. (सं.) दशा, गतिः (स्त्री.) २. समयः ३. वयस्-आयुस् (न.) ४. स्थितिः (स्त्री.) ।

अवस्थान्तर, सं. पुं. (सं. न.) अन्यावस्था, दशापरिवर्तनम् ।

अवहित, वि. (सं.) सावधान, एकाग्र, अनन्यवृत्ति ।

अवहित्था, सं. स्त्री. (सं.) आकारगुप्तिः (स्त्री.) लज्जादिवशात् चातुर्येण हर्षादेः गोपनं, भावभेदः (सा.)

अवहेलन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'अवहेलना' ।

अवहेलना, सं स्त्री. (सं.) अवज्ञा, अपमानः २. आज्ञोल्लंघनं ३. उपेक्षा ।

—करना, क्रि सं., तिरस्कृ, अव-अप,-मन् (प्रे.), अवज्ञा (क्र्. उ. अ.) २. आज्ञाम् अतिक्रम् (भ्वा. प. से.) ३. उपेक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।

अवहेलित, वि. (सं.) तिरस्[illegible]उपेक्षित ।

अवान्तर, वि. (सं.) [illegible] मध्यवर्तिन् । सं. पुं. (सं. न.) अन्तरं, अभ्यन्तरं, उदरं, गर्भः ।

—दिशा, सं. स्त्री, (सं.) विदिशा, मध्यमदिशा ।

—भेद, सं. पुं. (सं.) भागस्य भागः, अन्तर्गतभेदः ।

अवाक् , वि. (सं. अवाच्) मौनिन् , तूष्णीक, निःशब्द २. स्तब्ध, चकित ।

—रहना,—होना, क्रि. अ., तूर्ष्णी-जोषं,-आस् (अ. आ. से.), वाचं यम् (भ्वा. प. अ.) ।

अवाङ्मनसगोचर, वि. (सं. अवाङ्मनोगोचर) अवर्णनीय, अचिन्त्य (ईश्वर) ।

अवाङ्मुख, वि. (सं.) अधो-नत,-मुख । (-खी. स्त्री.) २. लज्जित ।

अवाची, सं. स्त्री. (सं.) दक्षिणा, दक्षिणदिशा ।

अवाच्य, वि. (सं.) विशुद्ध, निर्दोष २. निन्द्य, गर्ह्य । सं. पुं. (सं. न.) गाली, दुर्वचनम् ।

अवात, वि. (सं.) निर्वात, वायु-पवन,-रहित ।

अवाप्त, वि. (सं.) प्राप्त, अधिगत, लब्ध ।

अवार, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अर्वाक् ,-तीर-तटम् ।

—पार, सं. पुं. (सं.) सागरः, अब्धिः ।

अवारणीय, वि. (सं.) अनिवार्य अपरिहार्य, अवश्यंभाविन् ।

अवि, सं. पुं. (सं.) मेषः, एडकः २. छागः ३. सूर्यः ४. मन्दारः ५. पर्वतः ६. मूषिकः । सं. स्त्री., मेषी, एडका, उरणी ।

—पाल, सं. पुं. (सं.) मेषपालकः ।

अविकल, वि. (सं.) अक्षीण, अनपचित २. समग्र, पूर्ण ३. निश्चल ।

अविकल्प, वि. (सं.) निश्चित २. असंदिग्ध ।

अविकारी, वि. (सं.-रिन्) निर्विकार २. अपरिणत ।

अविकृत, वि. (सं.) शुद्ध २. अपरिणत ।

अविगत, वि. (सं.) अज्ञात २. अज्ञेय ३. विद्यमान ।

अविचल, वि. (सं.) ध्रुव, स्थिर ।

अविच्छिन्न, वि. (सं.) निरन्तर, अविरत, सतत ।

अवितथ, वि. (सं.) सत्य, यथार्थ, तथ्य । सं. पुं. (सं. न.) सत्यं, ऋतम् ।

अविद्यमान, वि. (सं.) अनुपस्थित २. असत् ३. असत्य ।

अविद्य, वि. (सं.) निरक्षर, अज्ञ ।

अविद्या, सं. स्त्री. (सं.) अज्ञानं, अबोधः २. माया (वे.) ३. कर्मकाण्डं ४. प्रथमः क्लेश (योग.) । -जन्य, वि. (सं.) मोहज, अज्ञानजनित ।

अविनाशी, वि. (सं.) अनश्वर, अक्षय, अक्षर, अव्यय, चिरस्थायिन् २. नित्य, शाश्वत ।

अविनीत, वि. (सं.) उद्धत २. दुर्दान्त ३. धृष्ट ।

अविभाज्य, वि. (सं.) अनंशनीय, अवंटनीय ।

अवियुक्त, वि. (सं.) संयुक्त, संश्लिष्ट ।

अविरत, वि. (सं.) सतत, विरामरहित २. आसक्त, अनिवृत्त । क्रि. वि. (सं. न.) सततं, अनवरतम् ।

अविरल, वि. (सं.) संलग्न २. निबिड, घन ।

अविराम, वि. (सं.) सतत, अनवरत २. अविश्रान्त ।

अविवक्षित, वि. (सं.) अनभिप्रेत, अनुद्दिष्ट २. वक्तुमनिष्ट, अनिष्टकथन ।

अविवाहित, वि. (सं.) अनूढ, कुमार, अकृत, -पाणिग्रह-उपयाम-उद्वाह, अपरिणीत ।

अविवेक, सं. पुं. (सं.) सदसद्विवेचनराहित्यं, विचाराभावः २. अज्ञानं ३. अन्यायः ४. मिथ्याज्ञानम् (सां.) ।

अविवेकी, वि. (सं.-किन्) विवेकशून्य, अज्ञानिन्, अतत्त्वज्ञ २. विचारशून्य ३. मूर्ख ४. अन्यायकारिन् ।

अविश्रान्त, वि. (सं.) विश्रान्तिशून्य २. सतत, अविराम ।

अविश्वसनीय, **अविश्वस्त** } वि. (सं.) विश्वासानर्ह, प्रत्ययायोग्य ।

अविश्वास, सं. पुं. (सं.) अप्रत्ययः, विश्वासाभाव ।

अविश्वासी, वि. (सं.-सिन्) शंका-संशय,-शील-बुद्धि, आ-,शंकिन् २. दे. 'अविश्वस्त' ।

अवेक्षण, सं. पुं. (सं. न.) दर्शनं, अवलोकनं २. निरीक्षणं, परीक्षणम् ।

अवेक्षणीय, वि. (सं.) दर्शनीय २. निरीक्षितव्य, परीक्षितव्य ।

अवेद्य, वि. (सं.) अज्ञेय २. अलभ्य ।

अवेद्या, वि. स्त्री. (सं.) अवोढव्या, विवाहानर्हा ।

अवैतनिक, वि. (सं.) निर्वेतन, भृतित्यागिन्, आदरवृत्ति ।

अवैदिक, वि. (सं.) वेदविरुद्ध, वेदाविहित ।

अव्यक्त, वि. (सं.) परोक्ष, अतीन्द्रिय, गोचर, अज्ञात, अनिर्वचनीय । सं. पुं. (सं.) विष्णुः २ शिवः ३. मदनः ४. प्रकृतिः (स्त्री.), ५. आत्मन् ६. परमेश्वरः ७. मायोपाधिकं ब्रह्मन् (न.) ।

अव्यपदेश्य, वि. (सं.) अकथनीय २. अनिर्देश्य ३. निर्विकल्प (न्या०) ।

अव्यय, वि. (सं.) निर्विकार, अक्षय, नित्य, व्ययशून्य । सं. पुं. (सं.) परब्रह्मन् (न.) २. विष्णुः ३. शिवः । (सं. न.) सर्वविभक्तिलिंगवचनेषु एकरूपः शब्दः (उ० सदा, अद्य आदि, व्या०) ।

अव्ययीभाव, सं. पुं. (सं.) समासभेदः (उ० प्रतिदिनं व्या.) ।

अव्यलीक, वि (सं.) सत्य, यथार्थ २. प्रिय इष्ट ।

अव्यवस्था सं. स्त्री. (सं.) अक्रमः क्रमभंगः, व्यतिक्रम, व्यस्तता, संक्षोभः २. अवधिः ३. दुर्निर्वाहः, दुर्णयः ।

अव्यवस्थित, वि. (सं.) अक्रम, क्रमशून्य, २. निर्मर्याद ३. अनियतरूप ४. चंचल ।

—चित्त, वि. (सं.) चंचल,-चित्त-मानस ।

अव्यवहार्य, वि. (सं.) व्यवहारायोग्य, उपयोगानर्ह २. पतित, पंक्तिच्युत ।

अव्यवहित, वि. (सं.) संलग्न, संसक्त, व्यवधानशून्य ।

अव्यवहृत, वि. (सं.) अप्रयुक्त, अप्रचरि-(लि) त ।

अव्याकृत, वि. (सं.) अस्पष्ट, अविकसित सं. पुं. (सं. न.) आदिम-तत्त्वम् ।

अव्याप्ति, सं. स्त्री. (सं.) अनभिव्यापनं, व्याप्त्यभावः २. लक्षणस्य दोषभेदः (न्या०) ।

अव्याहत, वि. (सं.) व्याघातशून्य, अप्रतिरुद्ध २. सत्य ।

अव्युत्पन्न, वि. (सं.) जड, मन्दमति २. व्याकरणानभिज्ञ ३. व्युत्पत्तिरहित (शब्द) ।

अव्वल, वि. (अ.) प्रथम, आदिम २. उत्तम, श्रेष्ठ । सं. पुं. प्रारम्भः, उप-प्र-प्र-, क्रमः ।

अशंक, वि. (सं.) निर्भय, निःशङ्क । क्रि. वि. (सं. न.) निःशंकम् ।

अशकुन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अपशकुनः नं, अजन्यं, अव-अशुभ-दुर्-लक्षणम् ।

अशक्त, वि. (सं.) निर्बल, अबल, २. अक्षम ।

अशक्य, वि. (सं.) असाध्य, अनिष्पाद्य, असम्भव ।

अशन, सं. पुं. (सं. न.) भोजनं, अन्नं, २. भक्षणं, खादनम् ।

अशरण, वि. (सं.) अनाथ, निराश्रय ।

अशरफ़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) स्वर्णमुद्रा २. पुष्पभेदः ।

अशराफ़, सं. पुं. (फ़ा. शरीफ का बहु०) सज्जनाः आर्याः महानुभावा (सब पुं. बहु०)

अशरीरी, वि. (सं.-रिन्) अकाय, अशरीर, अदेह २. अपार्थिव । सं. पुं. देवः ।

अशांत, वि. (सं.) व्याकुल, व्यग्र, विह्वल, उद्विग्न, चपल, चंचल ।

अशांति, सं. स्त्री. (सं.) अशमः, उद्वेगः, व्याकुलता, क्षोभः, व्यग्रता, सन्तोषाभावः ।

अशास्त्रीय, वि. (सं.) शास्त्रविरुद्ध २. शास्त्रबाह्य ।

अशिक्षित, वि. (सं.) अनक्षर, निरक्षर, अविद्य अज्ञ, अव्युत्पन्न ।

अशिर, सं. पुं. (सं.) अग्निः २. सूर्यः ३. वायुः । (सं. न.) हीरः, वज्रः-ज्रम् ।

अशिर[२], वि. (सं.-रस्) शीर्ष-मस्तक,-रहित सं. पुं. कबन्धः, रुण्डः-डम् ।

अशिष्ट, वि. (सं.) असभ्य, अविनीत, अभद्र, अनार्य ।

अशिष्टता, सं. स्त्री. (सं.) असभ्यता, धृष्टता दुःशीलता, विनयाभावः ।

अशुद्ध, वि. (सं.) अशुचि, अपवित्र २. अशोधित, असंस्कृत ३. भ्रान्त, वितथ ।

अशुद्धता, सं. स्त्री. (सं.) अपवित्रता, अशुचिता, २. मलिनता ३. त्रुटिः-भ्रान्तिः (स्त्री.) ।

अशुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अशुद्धता' ।

अशुभ, सं. पुं. (सं. न.) अमंगलं, अहितं, अशिवं २. पापं, अपराधः । वि. अमंगल, अभद्र, अशिव ।

—सूचक, वि. (सं.) उत्पात-अनिष्ट,-शंसिन् ।

अशेष, वि. (सं.) निःशेष, सर्व, समग्र, सकल, संपूर्ण, २. अनन्त, असीम, अगणित, बहु, ३. समाप्त, अवसित ।

अशोक, वि. (सं.) दुःख-शोक,-रहित । सं. पुं. (सं.) विशोकः, रक्तपल्लवः (वृक्ष) २. पारदः ३. शोकाभावः ४. नृपविशेषः ।

—वाटिका, सं. स्त्री. (सं.) विशोकवाटः २. रावणस्य विशोकोद्यानम् ।

अशौच, सं. पुं. (सं. न.) अमेध्यता, अपवित्रता, अशुद्धता ।

अश्क, सं. पुं. (फा.) अश्रु (न.), नेत्रजलम् ।

अश्रद्धा, सं. स्त्री. (सं.) अविश्वासः, अप्रत्ययः, भक्ति-निष्ठा-अभावः ।

अश्रान्त, वि. (सं.) स्वस्थ, अक्लान्त । क्रि. वि. (सं. न.) सततम् ।

अश्रु, सं. पुं. (सं. न.) अस्रु (न.) वाष्पं, नयनाम्बु (न.) ।

—पात, सं. पुं. (सं.) रुदितं, रोदनम् ।

—मुख, वि. (सं.) सास्र. अश्रुलोचन, सबाष्प ।

अश्रुत, वि. (सं.) अनिशान्त, अनाकर्णित २. अनुभवशून्य ।

—पूर्व, वि. (सं.) अनाकर्णितपूर्व २. अद्भुत ।

अश्रौत, वि. (सं.) अवेदोक्त, अवैदिक ।

अश्लिष्ट, वि. (सं.) श्लेषरहित, एकार्थक २. असंयुक्त ३. असंगत ।

अश्लील, वि. (सं.) व्रीडावह, ग्राम्य, कुत्सित, बीभत्स, अश्राव्य, अवाच्य ।

अश्लीलता, सं. स्त्री. (सं.) ग्राम्यता, अवाच्यता ।

अश्व, सं. पुं. (सं.) तुरगः, घोटकः ।

—आरोहण, सं. पुं. (सं. न.) अश्वेन विहरणं, घोटकारोहणम् ।

—आरोही, वि. (सं.-हिन्) सादिन्, तुरगिन्, ।

—गंधा, सं. स्त्री. (सं.) हय-वाजि,-गन्धा ।

—तर, सं. पुं. (सं.) वेगसरः (खच्चर) । (-तरी = वेगसरी स्त्री.)

—पति, सं. पुं. (सं.) तुरगराजः २. सादिन् २. भरतमातुलः ३. नृपविशेषः ।

—पाल, सं. पुं. (सं.) घोटकरक्षकः ।

—मेध, सं. पुं. (सं.) वाजिमेधः, क्रतुभेदः ।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) मन्दुरा, वाजिशाला ।

अश्वत्थ, सं. पुं. (सं.) चलदलः पिप्पलः ।

अश्वत्थामा, सं. पुं. (सं.-मन्) द्रौणिः, द्रोणायनः, कृपीसुतः, द्रोणाचार्यपुत्रः ।

अश्वस्तन, वि. (सं.) अश्वस्तनिक अद्यतन अद्यतनीय २. दरिद्र ।

अश्विनी, सं. स्त्री. (सं.) घोटिकी, वडवा २. प्रथमनक्षत्रं, दाक्षायणी ।

—कुमार, सं. पुं. (सं.–रौ द्वि०) अश्विनीसुतौ-देवचिकित्सकौ, दस्रौ, स्ववैद्यौ ।

अषाढ़, सं. पुं., दे. 'अषाढ़' ।

अषाढ़ी, सं. स्त्री. (सं. आषाढ़ी) आषाढ़मासस्य पूर्णिमा ।

अष्ट, वि. तथा सं. पुं. (सं. अष्टन्) दे. 'आठ'

—अंग, सं. पुं. (सं. न.) योगस्याष्टांगानि (= यमः, नियमः, आसनं, प्राणायामः, प्रत्याहारः, धारणा, ध्यानं, समाधिः) २. आयुर्वेदस्य अष्टविभागाः (शल्य इ०) ३. शरीरस्याष्टांगानि यैः प्रणामो विहितः (= जानुपादहस्तवक्षःशिरोवचनदृष्टिबुद्धयः) ४. अष्टद्रव्यघटितपूजोपकरणभेदः । वि. (सं.) अष्टावयव २. अष्ट-भुज-पार्श्व ।

—अध्यायी, सं. स्त्री. (सं.) पाणिनीयं व्याकरणम् ।

—कोण, सं. पुं. (सं.) अष्टास्रं, अष्टकोणाकृतिः (स्त्री.) २. कुण्डलभेदः । वि. अष्टास्र, अष्टास्रिय ।

—धातु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) धात्वष्टकम् (= सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जसता, सीसा, लोहा, पारा) ।

—पदी, सं. स्त्री. (सं.) अष्टपदसमूहः २. छन्दोभेदः ।

—पहर, सं. पुं. (सं.-प्रहराः) दिनस्याष्टयामाः । क्रि. वि., अहर्निशं दिवानिशम् ।

—भुजा, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा, विन्ध्याचलवासिनी देवी ।

—मूर्ति, सं. पुं. (सं.) शिवः २. शिवस्य अष्ट मूर्तयः (= पृथिवी, जलं, अग्निः, वायुः, आकाशः, यजमानः, सूर्यः, चन्द्रः अथवा शर्वः, भवः, रुद्रः, उग्रः, भीमः, पशुपतिः, ईशानः, महादेवः) ।

—वर्ग, सं. पुं. (सं.) औषधविशेषाष्टकम् (= ऋषभः, जीवकः, मेदः, महादेवः, ऋद्धिः, वृद्धिः, काकोली, क्षीरकाकोली) ।

अष्टक, सं. पुं. (सं. न.) अष्टवस्तुसमुदायः (उ० हिंग्वष्टकं) २. अष्टपद्यात्मककाव्यम् ३. ऋग्वेदस्याष्टमो भागः ४ अष्टाध्यायी ।

अष्टमी, सं. स्त्री. (सं.) तिथिभेदः । वि. स्त्री. (सं.) ।

अष्टादश, वि. तथा सं. पुं. (सं.-शन्) उक्ता संख्या तद्बोधकावंकौ (१८) च ।

असंख्य, वि. (सं.) असंख्येय, असंख्यात, अगणित, संख्या-गणना,-अतीत, अगण्य ।

असंग, वि. (सं.) एकल, एकाकिन् २. निर्लिप्त ३. भिन्न ।

असंगत, वि. (सं.) पूर्वापरविरुद्ध, असम्बद्ध, अप्रासंगिक २. अन्याय्य, अनुचित, अयुक्त ।

असंगति, सं. स्त्री. (सं.) अनन्वयः, सम्बन्धाभावः २. अनौचित्यम् ३. अलंकारभेद, (सा०) ।

असंतुष्ट, वि. (सं.) संतोषरहित २. अतृप्त ३. खिन्न ।

असंतोष, सं. पुं. (सं.) असंतुष्टिः (स्त्री.), संतोषाभावः २. अतृप्तिः (स्त्री.) ३. खेदः, ग्लानिः (स्त्री.) ।

असंबद्ध, वि. (सं.) सम्बन्धरहित, अनन्वित २. स्वतन्त्र ३. असंगत, पूर्वापरसम्बन्धरहित ।

असंबाध, वि. (सं.) विस्तीर्ण, असंकीर्ण २. शून्य, निर्जन ३. सावकाश ४. निर्बाध ।

असंभव, वि. (सं.) असाध्य, अशक्य, अकरणीय । सं. पुं., अलंकारभेदः (सा०) ।

असंभावित, वि. (सं.) आकस्मिक, अतर्कित ।

असंभाव्य, वि. (सं.) अतर्क्य, अविचार्य, २. दुष्ट ।

असंभाव्य, वि. (सं.) अकथ्य, अवाच्य २, वार्तालापायोग्य (सं. न.) कुवचनम् ।

असंयत, वि. (सं.) अनर्गल, निरंकुश, उच्छृङ्खल २. नियमरहित, अनियत ३. अक्रम ।

असंशय, वि. (सं.) निर्विवाद, सन्देह-संशयरहित २. सत्य । क्रि. वि. (सं. न.) निस्सन्देहम् ।

असंस्कृत, वि. (सं.) अशिष्ट, असभ्य, अविनीत, अपरिष्कृत ।

असगंध, सं. स्त्री. (सं. अश्वगन्धा) हयतुरंग-गन्धा, बलदा, प्रियकारी, रसायनी, कुष्ठघातिनी ।

असती, सं. स्त्री. (सं.) कुलटा, पुंश्चली ।

असत्, वि. (सं.) मिथ्या (अव्य,), असत्य २. अविद्यमान, सत्ता-अस्तितत्व,-हीन ३. अभद्र, दुष्ट ।

असत्य, वि. (सं.) अनृत, वितथ, अतथ्य, अयतार्थ, अलीक, मृषा–, मिथ्या—।

—वादी, वि. (सं.–दिन्) मिथ्या-मृषा-अनृत,-वादिन्-भाषिन् ।

असत्यता, सं. स्त्री. (सं.) अनृतत्वं, असत्यत्वं, वितथता ।

असन, सं. पुं. (सं. अशनं दे०) ।

असबाब, सं. पुं. (अ.) परिच्छदः उपस्करः, वस्तुजातं, यात्रासामग्री, वस्त्र-पात्र,-सम्भारः ।

असभ्य, वि. (सं.) अशिष्ट, असंस्कृत, ग्रामीण २. असभासद् , असदस्य ।

असभ्यता सं. स्त्री. (सं.) अशिष्टता, असंस्कृतिः (स्त्री.) ग्रामीणता ।

असमंजस, सं. पुं. (सं. न.) सन्देहः, संशयः, द्वैधीभावः, निश्चयाभावः २. विघ्नः ३. (सं. पुं.) सगरपुत्रः । वि., असंगत, अनुपयुक्त ।

—में पड़ना, क्रि. अ., आशंक्-विशंक्-विक्लृप् (भ्वा. आ. से.), संशी (अ. आ. से.), मनसा दोलायते (ना. धा.) ।

असम, वि. (सं.) अतुल्य, असदृश, असदृक्ष २. अयुग्म, विषम ३. उन्नतानत, असमरेख । (सं. पुं.) अलंकार–भेदः (सा०) ।

असमत, सं. स्त्री. (अ.) सतीत्वम् , पातिव्रत्यम्

—फ़रोश, वि. कुलटा, व्यभिचारिणी ।

फ़रोशी, सं. स्त्री. व्यभिचारः, सतीत्व–विक्रयः ।

असमय, सं. पुं. (सं.) अकालः, कुसमयः, विपत्कालः । क्रि. वि. अकाले, अस्थाने, अयथाकालम् । वि. अनवसर, अ (आ) कालिक, असमयोचित ।

असमर्थ, वि. (सं.) बल-शक्ति,-हीन, अशक्त, दुर्बल, २. अक्षम, अयोग्य ।

असमर्थता, सं. स्त्री. (सं.) अशक्तता, अक्षमता ।

असम्मत, वि.(सं.) विमत, विरुद्ध २. अस्वीकृत।

असम्मति, सं. स्त्री. (सं.) वैमत्यं, विमति (स्त्री.) मतभेदः, विरोधः ।

असमान, वि. (सं.) विजातीय, अतुल्य ।

असमाप्त, वि. (सं) असंपन्न, अनवसित, अपूर्ण ।

असमाहित, वि. (सं.) चलचित्त, लोलबुद्धि, अधीर ।

असर, सं. पुं. (अ.) प्रभावः, प्रतापः, प्रतिष्ठा २. फलं, गुणः, परिणामः ।

—करना, क्रि. सं., प्रभावं जन् (प्रे०), फलं उत्पद् (प्रे०) ।

—होना, क्रि. अ., परिणामः जन् (दि. आ. से.) फलं निष्पद् (दि. आ, अ)

असल, वि. (अ.) अकृतक, अकृत्रिम, निष्कपट २. उत्कृष्ट ३. शुद्ध, अमिश्रित । सं. पुं., मूलं, तत्त्वम् ४. मूल-धनं-द्रव्यम् ।

असलह, सं. पुं. (अ० 'सिलाह' का बहु०) शस्त्रास्त्रम् २. कवचः-चम् ।

असलियत, सं. स्त्री. (अ.) सत्यता, वास्तविकता २. मूलं, तत्त्वं, सारः ।

असली, वि. (अ.) दे. 'असल' वि० ।

असह, वि. (सं. असह्य दे०) ।

असहन, वि. (सं.) दे. 'असहनशील' ।

—शील, वि. (सं.) अमर्षण, अक्षमिन् , असहिष्णु, असहन, अक्षम ।

—शीलता, सं. स्त्री. (सं.) असहिष्णुता, क्षमा-मर्षण-तितिक्षा,-अभावः ।

असहनीय, वि. (सं.) दे. 'असह्य' ।

असहयोग, सं. पुं. (सं.) असहकारिता, असाहाय्यं, असहोद्योगः ।

—आंदोलन, सं. पुं. (सं. न.) असहकारिता-व्यापारः ।

असह्य, वि. (सं.) असहनीय, असोढव्य, सहनायोग्य, दुःसह, दुर्विषह ।

असहाय, वि. (सं.) निराश्रय, निरावलम्ब, अगतिक, अशरण ।

असहिष्णु, वि. (सं.) दे. 'असहनशील' ।

असहिष्णुता, सं. स्त्री. (सं.) दे. असहनशीलता ।

असांप्रत, वि. सं. (सं.) अशोभन, अनुचित २. असामयिक ३. वर्तमानासम्बद्ध ।

असांप्रदायिक, वि. (सं.) अमतवादिन् , उदार २. परम्पराविरुद्ध ।

असा, सं. पुं. (अ.) दण्डः, लगुडः, यष्टिः (पुं. स्त्री.) ।

असाढ़, सं. पुं. (सं. आषाढ़ः)वर्षस्य चतुर्थमासः।

असाढ़ी, वि. (हिं. असाढ़) आषाढसम्बन्धिन् । सं. स्त्री. आषाढोप्तं शस्यं २. आषाढपूर्णिमा ।

असाधन, वि. (सं.) साधन-उपाय,-हीन-रहित, निरुपाय, निस्साधन ।

असाधारण, वि. (सं.) विशेष, विलक्षण, अद्भुत (—णी स्त्री.) ।

असाध्य, वि. (सं.) अशक्य, अनिष्पाद्य २. दुस्साध्य, दुष्कर ३. अचिकित्स्य, दुरुपचार, निरुपाय, अप्रतिकार्य ।

असामयिक, वि. (सं.) अनवसर, असमयोचित, अ(आ)कालिक (—की स्त्री.) अप्राप्तकाल, अस्थान ।

असामर्थ्य, सं. स्त्री. (सं. न.) दे. 'असमर्थता' ।

असामी, सं. पुं. (अ. आसामी) जनः, पुरुषः २. कृषकः ३. प्रत्यर्थिन्, प्रतिवादिन् ४. अपराधिन्, दण्ड्यः ५. मित्रं सखि (पुं.) । सं. स्त्री., परकीया २. वेश्या ३. दासवृत्तिः (स्त्री.) ४. रिक्तस्थानम् ।

खरा—, सं. पुं., ऋणशोधकः ।

डूबा—, सं., पुं., ऋणशोधाक्षमः ।

मोटा—, सं. पुं., धनाढ्यः ।

लीचड़—, सं. पुं. बद्धमुष्टिः, अदित्सुः ।

असार, वि. (सं.) निस्सार, फल्गु, निष्फल २. रिक्त ३. तुच्छ । सं. पुं., एरण्डः २. अगरुः ।

असारता, सं. स्त्री. (सं.) निस्सारता, तत्त्वराहित्यम् २. मिथ्यात्वं ३. तुच्छता ।

असालत, सं. स्त्री. (अ) कुलीनता २. सत्यता ।

असालतन्, क्रि. वि. (अ) स्वयं, स्वतः (दोनों अव्यय) ।

असावधान , वि. (सं.) प्रमत्त, प्रमादिन् , मन्दादर, अनवधान, अनवहित ।

असावधानता, सं. स्त्री. (सं.) प्रमादः, मनोयोगाभावः, अनवधानं, उपेक्षा ।

असावधानी, सं. स्त्री. दे. 'असावधानता' ।

असावरी, सं. स्त्री. (सं. अ (आ) शावरी) रागिणीभेदः ।

असासा, सं. पुं. (अ.) सम्पत्तिः (स्त्री.), विभवः ।

असि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) खड्गः २. नदीविशेषः ।

असिक, सं. पुं. (सं. न.) चिबुकाधरयोर्मध्यभागः ।

असिक्नी, सं. स्त्री. (सं.) नदीविशेषः (चना) २. अन्तःपुरचारिणी अवृद्धा दासी ।

असित, वि. (सं.) कृष्ण, नील, श्याम, मेचक २. दुष्ट ३. वक्र ।

असितांग, सं. पुं. (सं.) शिवः । वि., कृष्ण, = अंग-रूप-देह ।

असिता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'यमुना' ।

असिद्ध, वि. (सं.) अनिष्पन्न २. अपक्व ३. अपूर्ण ४. निष्फल ५. अप्रमाणित ।

असिद्धि, सं., स्त्री. (सं.) निष्फलता, विफलता २. अपुष्टता, अपक्वता ।

असिस्टेंट, वि. (अं) सहायक, सहाय, उप- ।

—**एडिटर**, सं. पुं., उपसम्पादकः ।

असी, सं. स्त्री. (सं. असिः पुं.; असी) काशीदक्षिणवर्तिनी नदी ।

असीम, वि. (सं.) निस्सीम, निरवधि २. अमित ३. अपार ४. अगाध ।

असील, वि. (अ. असल) दे. 'असल' ।

असीर, सं. पुं. (अ.) ग्रहकः, कारागुप्तः ।

असीरी, सं. स्त्री. (फा.) कारावासः, आसेधः, निरोधः ।

असीस, सं. स्त्री. (सं. आशिस् स्त्री.) आशीर्-, वादः-वचनं, मंगलशब्दः ।

असु, सं. पुं. (सं.) प्राणाः असवः (दोनों बहुवचन) ।

असुविधा, सं. स्त्री. (सं.>) कठिनता, सौकर्याभावः २. विघ्नः ।

असुर, सं. पुं. (सं.) दैत्यः, राक्षसः २. रात्रिः, ३. दुर्जनः ४. पृथिवी ५. सूर्यः ६ मेघः ७. राहुः ८. उन्मादभेदः ।

—**अरि**, सं. पुं. (सं.) विष्णुः २ देवता ।

—**गुरु**, सं. पुं. (सं.) शुक्राचार्य्यः ।

असूया, सं. स्त्री. (सं.) परगुणेषु दोषारोपः २. संचारिभावभेदः (सा.) ।

असूर्यंपश्या, वि. स्त्री. (सं.) अवरोध-अन्तःपुर-, वर्तिनी, अवगुण्ठनवती, अतिलज्जावती ।

असूल, सं. पुं., दे. 'उसूल' २. दे. 'वसूल' ।

असेसर, सं. पुं. (अं. एसेसर) सभ्यः, सभासद् ।

असोज, सं. पुं. (सं. अश्वयु > ज्) आश्विनमासः ।

असोसियेशन, सं. स्त्री. (अं.) सभा, समाजः ।

असौम्य, वि. (सं.) कुरूप, कुदर्शन २. अप्रिय, अरुचिर ।

असौष्ठव, सं. पुं. (सं. न.) कुरूपता, सौन्दर्याभावः । वि., कुरूप, असुन्दर ।

अस्त, वि. (सं.) गुप्त, तिरोहित, २. अदृष्ट, लुप्त ३. नष्ट, ध्वस्त । सं. पुं., तिरोधानं, लोपः, अदर्शनम् ।

—गत, वि, (सं. अस्तंगत) लुप्त, अस्तमित, अदर्शनंगत ।

अस्तबल, सं. पुं. (अ.) मन्दुरा, अश्व-वाजि-घोटक,-शाला ।

अस्तमन, सं. पुं. (सं. न.) अदर्शनं, तिरोधानं २. सूर्यादीनामस्तोऽस्तमयो वा ।

—वेला, सायं, सायंकालः, दिनावसानं, प्रदोषः ।

अस्तमित, वि. (सं.) अस्तंगत, अदृष्ट, तिरोहित २. नष्ट, मृत ।

अस्तर, सं. पुं. (फ़ा) अन्तराच्छादनं,अन्तःपटः ।

—कारी, सं. स्त्री. (फ़ा) सुधालेपः २. (पलस्तर) उपनाहः उपदेहः ।

अस्त-व्यस्त, वि. (सं.) सं.-प्र-वि-आ,-कीर्ण, संकुल, अव्यवस्थित ।

अस्ताचल, सं. पुं. (सं.) अस्त-पश्चिम,-गिरिः-पर्वतः ।

अस्तित्व, सं. पुं. (सं. न.) भावः, सत्ता, विद्यमानता ।

अस्तु, अव्य. (सं.) यद् भवि तद् भवतु २. बाढं, भवतु, भद्रम् (सब अव्य.) ।

अस्तेय, सं. पुं. (सं. न.) स्तेय-मोष-चौर्य-स्तैन्य,-त्यागः ।

अस्त्र, सं. पुं. (सं. न.) प्रहरणं, आयुधं, क्षिपणी-णिः (स्त्री.) २. शस्त्रम् ।

—चिकित्सक, सं. पुं. (सं.) शल्यशास्त्रज्ञः, शस्त्रवैद्यः, शल्यतंत्रविद् ।

—चिकित्सा, सं. स्त्री. (सं.) शल्यं, शस्त्रवैद्यकं, शल्यशास्त्रम् ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) युद्धशास्त्रं, सांग्रामिकं, आयुध-रण,-विद्या ।

—वेद, सं. पुं. (सं.) धनुर्वेदः ।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) अस्त्र-आयुध,-आगारं, शस्त्रगृहम् ।

अस्थि, सं. स्त्री. (सं. न.) कीकसं,कुल्यं, मेदोजम् ।

—पंजर, सं. पुं. (सं.) कंकालः, करंकः, देहास्थिसमूहः ।

अस्थिर, वि. (सं.) चपल, चंचल, तरल २. चलचित्त, लोलमति ।

अस्थिरता, सं. स्त्री. (सं.) चाञ्चल्यं, तारल्यं, अस्थैर्यम् २. चलचित्तता, मनोलौल्यम् ।

अस्पताल, सं. पुं. (अं. हॉस्पिटल) आतुरालयः, चिकित्सालयः, रुग्णागारः आरोग्यशाला २. औषधालयः ।

अस्पष्ट, वि. (सं.) अप्रकट, अस्फुट, अविशद २. दुर्बोध, संदिग्ध ।

अस्पृश्य, वि. (सं.) स्पर्शायोग्य २. अस्पर्शनीय, अन्त्यज, हीनवर्ण, दुष्कुलीन ।

अस्पृह, वि.(सं.) निस्स्पृह, लोभरहित, अलोलुप।

अस्फुट, वि. (सं.) अस्पष्ट, अव्यक्त, गुप्त, परोक्ष ।

अस्बाब, सं. पुं. दे. 'असबाब' ।

अस्मार्त, वि. (सं.) स्मरणातीत २. अवैध, आर्यशास्त्रविरुद्ध ।

अस्मिता, सं. स्त्री. (सं.) क्लेशभेदः (यो.) २. अहंकारः ।

अस्र, सं. पुं. (सं.) कोणः २. केशः ।

अस्र[२], सं. पुं. (सं. न.) रक्तं, रुधिरं २. अश्रु (न.), नयनजलम् ।

अस्ल, दे. 'असल'

अस्वस्थ, वि. (सं.) रुग्ण, व्याधित, रोगिन् २. व्यथित ।

अस्वाभाविक, वि. (सं.) अनैसर्गिक, निसर्ग-प्रकृति-सृष्टक्रम,-विरुद्ध २. कृत्रिम, कृतक ।

अस्वास्थ्य, सं. पुं. (सं. न.) रोगः, व्याधिः, गदः, आमयः ।

अस्सी, वि. (सं. अशीतिः स्त्री.) । सं. पुं. उक्ता संख्या, तद्बोधकावंकौ (८०) च ।

अहं, सर्व (सं०) । सं. पुं. अहं,-कारः-कृतिः (स्त्री.)-भावः-पूर्विका, आ त्मभिमानः ।

अहंकार सं. पुं. (सं.) गर्वः, दर्पः, मदः, मादः, आटोपः, मानः, उत्सेकः अहं,-मानः-भावः-कृतिः (स्त्री.) २. अन्तःकरणस्य भेदविशेषः (वे.) १. महत्तत्त्वजातो द्रव्यविशेषः (सां.) ४. अस्मिता ५. ममत्वम् ।

अहंकारी, वि. (सं.-रिन्) दृप्त, गर्वित, अवलिप्त, उद्धत, मत्त, उत्सेकिन् , अभिमानिन् ।

अहंवाद, सं. पुं. (सं.) आत्मश्लाघा, अहंकारोक्तिः (स्त्री.), विकत्थनम् ।

अह¹, सं. पुं. (सं., अहन् न.) दिनं, दिवसः २. सूर्यः ३. विष्णुः ।

अहं², अव्य. (सं. अहह अव्य.) आश्चर्यखेदक्लेशादिबोधकमव्ययम् ।

अहद, सं. पुं. (अ.) प्रतिज्ञा, सं-प्रति,-श्रव- ५. संकल्पः ३. शासनकालः ।

—नामा, सं. पुं., प्रतिज्ञा-समय, पत्रं-लेख्यम् १. सन्धिपत्रम् ।

—शिकन, सं. पुं., प्रतिज्ञालंघिन्, असत्यसन्ध ।

—शिकनी, सं. स्त्री., प्रतिज्ञाभंगः, असत्यसन्धत्वम् ।

अहन्, सं. पुं. (सं. न.) दिनं, दिवसः ।

अहनिसि, अव्य. दे. 'अहर्निश' ।

अहवाब, सं. पुं. (अ., 'हबीब' का बहु०)

अहम, वि. (अ.) महत्त्वपूर्ण, अत्यावश्यक ।

अहमक, वि. (अ.) जड, मूढ, मूर्ख ।

अहमहमिका, सं. स्त्री. (सं.) अहमग्रिका,-प्रति-, स्पर्द्धा ।

अहम्मति, सं. स्त्री. (सं.) अहंकारः २. अविद्या ।

अहर, सं. पुं. (सं. आहर >) जलाशयः ।

अहरन, सं. स्त्री. (सं. आ+धरणं <) शूर्मः, शूर्मी, शूर्मिका, स्थूणा, शूर्मिः (पुं. स्त्री.) ।

अहरहः, अव्य. (सं.) प्रति-अनु,-दिनं, प्रत्यहं, दिने दिने ।

अहरा, सं. पुं. (सं. आहर >) गोमयपिंडराशिः २. गोमयाग्निः ३. पथिकाश्रमः ४. प्रपा ।

अहरी, सं. स्त्री. (हिं. अहरा) प्रपा २, जलाधारः ।

अहर्निश, क्रि. वि. (सं.शं) दिवानिशं, रात्रिंदिवम् २. नित्यम् (सब अव्य.) ।

अहलकार, सं. पुं. (फ़ा.) राज,-पुरुषः-भृत्यः २. प्रतिनिधिः, प्रतिहस्तः ।

अहलमद, सं. पुं. (फ़ा.) अधिकरणलेखकः ।

अहल्या, वि. (सं.) कर्षणायोग्या (भूमिः) । सं. स्त्री. गौतमपत्नी ।

अहसान, सं. पुं. (अ.) उपकारः, हितं २. कृपा ३. कृतज्ञता ।

—फरामोश, वि. (फ़ा) कृतघ्न (-घ्नी स्त्री.), अकृत,-ज्ञ-वेदिन् ।

—फरामोशी, सं. स्त्री. (फ़ा.) कृतघ्नता, उपकारविस्मरणं, अकृतवेदिता ।

—मंद, वि. (फ़ा.) कृतज्ञ, कृतवेदिन् ।

—मंदी, सं. स्त्री. (फ़ा) कृतज्ञता, उपकारज्ञता ।

अहह, अव्य. (सं.) आश्चर्यखेदक्लेशशोकादिसूचकमव्ययम् ।

अहाँ, अव्य. (अनु.) मा, नो, न ।

अहा, अव्य. (सं. अहह) हर्षप्रशंसादिसूचकमव्ययम् ।

अहाता, सं. पुं. (अ.) परिसरभूमिः (स्त्री.), प्रागणं (-नं) २. प्राकारः, प्राचीरम् ।

अहार, सं. पुं., दे. 'आहार' ।

अहार्य, वि. (सं.) अचोरणीय, अमोषणीय । २. धनच्छलादिभिः अवश्य-अदम्य ।

अहाहा, अव्य. (सं. अहह) हर्षसूचकाव्ययम् ।

अहिंसक, वि. (सं.) अहिंस्र, अघातुक (-की स्त्री.) २. अदुःखद ।

अहिंसा, सं. स्त्री. (सं.) हिंसा-अपकार-द्रोह-वैर,-त्यागः ।

अहिंस्र, वि. (सं.) दे. 'अहिंसक' ।

अहि, सं. पुं. (सं.) सर्पः २. वृत्रासुरः ३. भूमिः (स्त्री.) ४. सूर्यः ५. राहुः ६ खलः ।

अहित, वि. (सं.) वैरिन्, द्रोहिन् २. हानिकर (-री स्त्री.) । सं. पुं. (सं. न.) अमंगलं, अभद्रम् ।

अहिफेन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सर्पविषं, सर्पमुखलाला २. (अफ़ीम) अफेनं, अहिफेनम् ।

अहिम, वि. (सं.) तप्त, उष्ण ।

—कर, सं. पुं. (सं.) सूर्यः ।

अहिवात, सं. पुं. (सं. अभिवाद्य >?) सौभाग्यं, सधवात्वं, सर्तृकात्वं, पतिमत्ता ।

अहिवातिन,-ती, (हिं. अहिवात) सौभाग्यवती, सधवा, सभर्तृका ।

अहीर, सं. पुं. (सं. आभीरः) गोपः गोपालः, गोपालकः गोसंख्यः, वल्लवः ।

अहीरिन,-री, सं. स्त्री. (सं. आभीरी) गोपी, गोपिका, दोहिनी, गोदोहिनी ।

अहीश, सं. पुं. (सं.) शेषनागः, सर्पराजः २. शेषावतारा: (लक्ष्मणबलरामादयः) ।

अहुत, सं. पुं. (सं.) जपः, ब्रह्मयज्ञः, वेदपाठः ।

अहे, अव्य. (सं.) हे, अयि, भोः ।

अहेतु-तुक, वि. (सं.) अकारण, निष्कारण, निर्निमित्त, २. व्यर्थं, निष्फल।

अहेर, सं. पुं. (सं. आखेटः) मृगया, मृगव्यम् २. वन्यजन्तवः, (बहु०)।

अहेरिया, अहेरी, सं. पुं. (हिं. अहेर) व्याधः, लुब्धकः मृगयुः आखेटकः।

अहो, अव्य. (सं.) हे, अरे २. करुणाखेदहर्ष-प्रशंसासूचकमव्ययम्।

अहोभाग्य, सं. पुं. (सं. न.) सौभाग्यं, पुण्योदयः, भाग्योपचयः।

अहोर-बहोर, क्रि. वि. (हिं. बहुरना) भूयोभूयः, वारं वारं (दोनों अव्य०)।

अहोरात्र, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दिवानिशं, अहर्निशं, दिवारात्रं, नक्तंदिवम् (सब अव्य.)।

आ

आ, देवनागरीवर्णमालाया द्वितीयः स्वरवर्णः, आकारः।

आः, अव्य. (सं.) स्वीकृत्यनुकंपाकोपशोकस्मृत्यादिसूचकमव्ययम्।

आँक, सं. पुं. (सं. अंकः) चिह्नं, अभिज्ञानम् २. संख्याचिह्नं, अंकः ३. वर्णः, अक्षरम् ४. सिद्धान्तः ५. अंशः, भागः, ६. वंश ७. उत्संगः, क्रोडम् ८. रेखा ९. मूल्यसंकेतः।

आँकड़ा, सं. पुं. (हिं. आँक) संख्याचिह्नम्, अंकः २. व्यावर्तनकीलः (पेंच)।

आँकड़े, पुं. (हिं. आँक) अंकाः।

आँकना, क्रि. सं. (सं. अंकनम्) अंक् (चु., (भ्वा. आ. से.), चिह्नयति-मुद्रयति (ना. धा.) लांछ् (भ्वा. प. से.), २. ऊह् (भ्वा. आ. से.), तर्क् (चु.)।

आँकुस, सं. पुं., दे. 'अंकुश'।

आँख, सं. स्त्री. (सं. अक्षि न.) चक्षुस् (न.), वि.-लोचनं, नेत्रं, नयनं, ईक्षणं, दृश्-दृष्टिः (दोनों स्त्री.) २. नयनाकारं चिह्नम् ३. सूचीछिद्रम् ४. कृपा ५. विवेकः ६. निरीक्षणम्।

—**अंजनी**, सं. स्त्री. (सं. अक्षि + अंजनम् >) पक्ष्मपिटिका।

—**का गोला** सं. पुं., अक्षिगोलकम्।

—**का पर्दा**, सं. पुं, अक्षिपटलम्।

—**मिचौली**, सं. स्त्री., अक्षिमेषणी, बालक्रीडाभेदः।

—**लगी**, सं. स्त्री., उपपत्नी, भुजिष्या।

—**आना**, मु., नेत्रपाकः।

—**उठाकर न देखना**, मु., आवगण्-अवधीर् (चु.)।

—**उठाना**, मु., दृश् (भ्वा. प. अ.) २. अपकर्तुं यत् (भ्वा. आ. से.)।

—**का काजल चुराना**, मु. चौर्यपाटवम्।

—**का तारा**, मु., तारका, कनीनिका २, स्नेहभाजनम् २. एकलः पुत्रः।

—**की मैल**, सं. स्त्री., दूषिका, अक्षिमलम्।

आँखें चार करना, मु., परस्परावलोकनम्।

—**चुराना वा छिपाना**, मु., निली (दि. आ. अ.) २. परदर्शनं परिहृ (भ्वा. प. अ.)।

—**झपकना**, मु., निद्रावश (वि.) भू २. निमिष् (तु. प. से.), निमील् (भ्वा. प. से.)।

—**ठंढी करना**, मु., दर्शनेन प्रसद् (भ्वा.प.अ.)।

—**डबडबाना**, मु., साश्रुनयन (वि.) भू।

—**दिखाना**, मु., सरोषं वीक्ष् (भ्वा. आ. से.) २. भी-त्रस् (प्रे.)।

—**नीची होना**, मु., लस्ज् त्रप् (भ्वा आ. से.)।

—**नीली पीली करना**, मु., अत्यन्तं कुप् (दि. प. से.)।

—**पर पर्दा पड़ना**, मु., विमुह् (दि. प. से.)।

—**पर बैठाना**, मु. अत्यन्तं संमन् (प्रे.)।

—**फड़कना**, मु., नेत्रं स्फुर् (तु. प. से.)।

—**फेर लेना**, मु., अवमन् (दि. आ. से.) २. प्रतिकूल (वि.) जन् (हि. आ. स.)।

—**बंद करलेना**, मु. मृ (तु. आ. अ.)।

—**बिछाना**, मु., प्रेम्णा प्रविश् (प्रे.) २. सस्नेहं प्रतीक्ष (भ्वा. आ. से.)।

—**भर आना**, मु., साश्रुनेत्र (वि.) जन्।

—**मटकाना**, मु., सहावं वीक्ष् (भ्वा. आ. से.)।

—**मारना**, मु., निमेषेण सूच् (चु.)।

—**मिंच जाना**, मु., मृ (तु. आ. अ.) २. दे. 'झपकना'।

—**मिलाना**, मु., सहावं दृश् (भ्वा. प. अ.)।

—**मीचना**, नेत्रे निमील् (भ्वा. प. से.)।

—**में घर करना**, मु., हृदये वस् (भ्वा. प. अ.)।

—**में चरबी छाना**, मु., दर्पान्ध (वि.) जन् (दि. आ. से.)।

—**में धूल झोंकना**, मु., प्रतॄ (प्रे.)।

—**लगना**, मु., स्वप् (अ. प. अ.) २. बद्धभाव (वि.) भू।

—सेंकना, मु., सौन्दर्यदर्शनेन प्रसद् (भ्वा. प. अ.)।
—से गिरना, मु., अवगण्-अवमन् (कर्म.) ।
आंग, वि. (सं.) शारीरिक, दैहिक २. अंगिन्, अवयविन् ३. अंगदेशज ।
आँगन, सं. पुं. (सं. अंगनं-णम्) अजिरं, प्रांगणम् ।
आंगिक, वि. (सं.) शारीरिक, दैहिक, कायिक (-की स्त्री.) सं. पुं., अभिनयभेदः ।
आँच, सं. स्त्री. (सं. अर्चिस् स्त्री., न०) तापः, दाहः, उष्णता, ऊष्मः २. अग्नि,-ज्वाला-शिखा-जिह्वा ३. अग्निः अनलः ४. हानिः (स्त्री.) ५. विपत्तिः (स्त्री.) ।
—आना वा खाना वा पहुँचना वा लगना, क्रि. अ., तप् (दि. आ. अ.), उष्णी भू ।
—देना, क्रि. स. तप् (प्रे.) ।
—न आने देना, मु., कष्टात् त्रै (भ्वा. आ.अ.)।
आँचल, सं. पुं. (सं. अंचलः-लम) पटान्तः, वस्त्रप्रान्तः २. प्रान्तभागः ।
—देना, मु. स्तन्यं दा (जु. उ. अ.)।
—में बाँधना, मु., स्मरणार्थं पटप्रान्ते ग्रंथिदानम् २. नित्यं पार्श्वे स्थापनम् ।
—आँजन, सं. पुं., दे. 'अंजन'।
आंजनेय, सं. पुं. (सं.) हनुमत् , मारुतिः पवनपुत्रः ।
आँट सं. स्त्री. (हिं. अंटी) करतले अंगुष्ठतर्जन्योर्मध्यस्थानम् २. पणः, कलहः (दाँव) ३. विरोधः ४. नीवी, बंधनम् ५. पोटलिका ।
—साँट, सं. स्त्री., सहकारिता २. संश्लेषः ३. कुमंत्रणा ।
आँटी, सं. स्त्री. (आँटना) लंबतृणपोटलिका २. सूत्र,-पंजी-पंजिका ३. बालक्रीडोपयोगी काष्ठखंडभेदः ४. शाटीग्रन्थिः (पुं.) ।
आँठी, सं. स्त्री. (सं. अष्ठिः स्त्री.) फल,-बीजं-गर्भः २. ग्रन्थिः ३. नवोढास्तनः ।
आंड, वि. (सं.) अण्ड,-ज-उद्भव । सं. पुं. (सं.) हिरण्यगर्भः,
आँत, सं. स्त्री. (सं. अन्त्रम्) पुरीतत् (पु. न.) परितत् (पुं. न.) ।
—उतरना, मु., अंत्रस्रंसेन अंत्रवृद्ध्या वा पीड् (कर्म.) ।
—छोटी, क्षुद्रान्त्रम् ।
—बड़ी, बृहदन्त्रम् ।
आंतर, वि. (सं.) आभ्यन्तर, अन्तर्गत, अंतरंग ।
आंतरिक, वि. (सं.) अन्तर्गत, अन्तःस्थ, आन्तर, आभ्यन्तर (-री स्त्री.), अन्तः (उ. अन्तर्वेदना) २. मानसिक, हार्दिक, आत्मिक ।
आंदोलन, सं. पुं. (सं. न.) चेष्टा, प्रवृत्तिः (स्त्री) २. असकृत्कंपनम् ३. क्षोभः, विप्लवः, प्रकोपः।
आँधी, सं. स्त्री. (सं. अंधम् >) वात्या, चंड महा-अति,-वातः, प्रभंजनः, प्रकंपनः ।
आँध्र, सं. पुं. (सं. आन्ध्राः) दक्षिणापथे प्रान्तविशेषः २. आन्ध्रवासिन् ।
आँय-बाँय, सं. स्त्री. (अनु०) प्रलापः, जल्पितम्।
आँव, सं. स्त्री. (सं. आम >) श्लेष्मन् (पुं.)।
—गिरना, क्रि. अ. आमातिसारेण पीड् (कर्म)।
आँवल, सं. पुं. (सं. उल्वम्) कजल (पुं., न.), जरायु (न.) ।
नाल, सं. स्त्री., नाभि,-नालं-नाडी ।
आँवलगट्टा, सं. पुं. (हिं. आँवला + गांठ) शुष्कामलकम् ।
आँवला, सं. पुं. (सं. आमलकः-कम्-की) अमृता, शिवा, शान्ता, धात्री, श्रीफला ।
आँवाँ सं. पुं. (सं. आपाकः) कुम्भकारपात्रपाकस्थानम् ।
आंशिक, वि. (सं.) आंगिक, भागिक, खाण्डिक।
आँसू , सं. पुं. (सं. अश्रु न.) वाष्पः, अस्त्रं, नेत्र-नयन,-जलं-वारि-उदकम् ।
—गिराना, क्रि. स., रुद् (अ. प. से.) ।
—पी जाना, मु, अश्रूणि अव-सं-नि, रुध् (रु. उ. अ.) ।
—पोंछना, मु., आ-समा,-श्वस् (प्रे.)
आँहाँ, अ. (अनु.) न, नो, मा (सब अव्य.) ।
आइसक्रीम, सं. स्त्री. (अं.) हिम ,-सत्तानी-शरः ।
आई, सं. स्त्री. (हिं. आना) मृत्युः । क्रि. अ. आगता ।
आईन, सं. पुं. (अ.) विधिः, विधानम् , नियमः २. संविधानम् ।
आईना, सं. पुं. (फ़ा.) मुकुरः, दर्पणः ।
आक, सं. पुं. (सं. अर्कः) मन्दारः, क्षीरदलः, तूलफलः, सूर्याह्वः, सदापुष्पः ।
—की बुढ़िया, मु., मन्दारपुष्पम् २. अतिवृद्धा नारी ।

आकर, सं. पुं. (सं.) ख(खा)नि-निः (स्त्री.) उत्पत्तिस्थानम् २. निधिः, भाण्डागारम् ३. प्रकारः, भेदः ।

—भाषा, सं. स्त्री. मूलप्राचीनभाषा (उ०) हिन्दी की आकरभाषा संस्कृत, उर्दू की फ़ारसी ।

आकर्षक, वि. (सं.) आकर्षणकर २. मनोहर ।

आकर्षण, सं. पुं. (सं. न.) आकर्षः, आवर्जनम्, अनुकर्षः, अनुकर्षः, अनुकर्षणम् ।

—करना, क्रि. स., आ–समा, कृष् (भ्वा. प. आ.), आवृज् (चु.) २. विमुह् (प्रे०) ।

आकर्षित, वि. (सं.) कृताकर्षण २. प्रलोभित ।

आकलन, सं. पुं. (सं. न.) ग्रहणम् २. संचयः ३. गणनम् ४. अनुष्ठानम् ५. निरीक्षणम् ।

आकस्मिक, वि. (सं.) अकाण्ड, अचिन्तितपूर्व, हठाज्जात ।

आकांक्षा, सं. स्त्री. (सं.) इच्छा, अभिलाषः, स्पृहा, वाञ्छा २. अपेक्षा ३. अनुसंधानम् ४. वाक्ये शब्दस्य शब्दान्तराश्रितत्वम् ।

आकांक्षी, वि. (सं.-क्षिन्) इच्छुक, अभिलाषिन्, ईप्सु, सस्पृह ।

आकार, सं पुं. (सं.) आकृतिः-मूर्त्तिः (स्त्री.), रूपम् २. कायपरिमाणम् ३. अवयवसंस्थानम् ४. चिह्नम् ५. चेष्टा ६. 'आ' इति वर्णः ७. आह्वानम् ।

—गुप्ति, सं. स्त्री. (सं.) अवहित्था ।

आकारण, सं. पुं. (सं. न.) आह्वानम्, आमंत्रणम् २. दे. 'चुनौती' ।

आकारवान् वि. (सं.–वत्) साकार, मूर्तिमत् विग्रहिन् ।

आकालिक, वि. (सं.) असामयिक ।

आकालिकी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'बिजली'

आकाश, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गगनं, नभस्, वियत्, व्योमन् (सब न.), अंबरं, अन्तरिक्षं, खं, नाकः, दिव्, द्यो (दोनों स्त्री.), विहायस् (पुं. न.), विहायसः, अभ्रं, पुष्करं, अनन्तं, विष्णुपदं, तारापथः ।

—कुसुम, सं. पुं. (सं. न.) खपुष्पं, शश,-विषाण–शृङ्गम्, असंभवं वस्तु (न.) ।

—गंगा, सं. स्त्री. (सं.) मन्दाकिनी, स्वर्णदी ।

—चारी, वि. (सं.-रिन्) खेचर, नभश्चर (–चरी स्त्री.) । सं. पुं. सूर्यादिग्रहाः २. वायुः ३. खगः ४. देवः ५. राक्षसः ।

—बेल, सं. स्त्री. (संरी–वल्ली) अमरवल्ली, खवल्ली, व्योमलतिका ।

—भाषित, सं. पुं. (सं. न.) गगनलपितम्, नाट्ये भाषणभेदः ।

—वाणी, सं. स्त्री. (सं.) देववाणी, अशरीरिणी वाक् (स्त्री.) ।

—वृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) अनियतो धनागमः ।

—चूमना, मु., अभ्रंलिह् (अ० प. अ.), गगनं चुम्ब् (भ्वा. प. से.) ।

—पाताल एक करना, मु., अत्यर्थं प्रयत् (भ्वा. आ. से.) ।

—पाताल का अन्तर, मु., महदन्तरं, महान् भेदः ।

आकुञ्चन, सं. पुं. (सं. न.), संकोचनं, समाकर्षः, संकोचनं, प्रसृतस्य संक्षेपणं, वक्रत्वसम्पादनम् ।

आकुंचित, वि. (सं.) संकोचित २. वक्र ।

आकुल, वि (सं.) व्याकुल, उद्विग्न, व्यग्र, क्षुब्ध, अशान्त, व्यस्त, विह्वल, कातर २. समाकीर्ण, संकुल ।

आकुलता, सं. स्त्री. (सं.) उद्वेग, क्षोभः, अशान्तिः (स्त्री.) ।

आकूति, सं. स्त्री. (सं.) अभिप्रायः, आशयः २. उत्साहः ३. सदाचारः ।

आकृति, सं. स्त्री. (सं.) आकारः, रूपं, मूर्त्तिः (स्त्री.) २. मुखं, आननम् ३. अवयवसंस्थानं, शरीररचना ४. मुद्रा, चेष्टा ५. जातिः । (स्त्री. न्या.) ।

आकृष्ट, वि. (सं.) आकर्षित, कृताकर्षण ।

आक्रंद, सं. पुं. (सं.) रोदनं, रुदितम्, चीत्कारः २. युद्धघोषः ३. तुमुलयुद्धम् ।

आक्रमण, सं. पुं. (सं. न.) आक्रमः, अवस्कन्दः, अभिद्रवः, अभिप्रयाणं, आपातः २. रोधनं, अव–उप,–रोधः ३. आक्षेपणं, निन्दनम् ।

आक्रांत, वि. (सं.) अभिद्रुत, अभिप्रयात, २. अभि–परा–वशी,–भूत ३. परिवेष्टित ४. व्याप्त, आकीर्ण ।

आक्रामक, सं. पुं. (सं.) अभियातृ, अभियायिन्, आक्रमणकारिन् ।

आक्रोश, सं. पुं. (सं.) शापः, आक्षेपः, गालीदानम् ।

आक्षेप, सं. पुं. (सं.) अपवादः, दोषारोपः २. पातनं, प्रासनम् ३. कटूक्तिः (स्त्री.) ४. अंगकंपयुतो वातरोगभेदः ।

आक्साइड, सं. पुं. (अं.) जारेयम् ।

आक्सिजन, सं. पुं. (अं.) जारकं, ओषजनम् ।

आखंडल, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः ।

—सूनु, सं. पुं. (सं.) अर्जुनः ।

आखत, सं. पुं. (सं. अक्षताः) अखंडितव्रीहयः । वि., अखंडित ।

आखर, सं. पुं. दे. अक्षर ।

आखिर, वि. (अ.) अन्तिम अन्त्य २. समाप्त । सं. पुं. अन्तः, अवसानम् ३. परिणामः, फलम् । क्रि. वि., अन्ततः २. विवश (वि.) भूत्वा ३. अवश्यम् ४. कथंचित् ।

—कार, क्रि. वि., अन्ते, अन्ततः ।

आखिरी, वि. (फ़ा.) अन्तिम, अन्त्य, चरम ।

आखेट, सं. पुं. (सं.) मृगया, दे. 'शिकार' ।

आखेटक, सं. पुं. (सं.) व्याधः, आखेटिन् ।

आख्या, सं. स्त्री. (सं.) नामन् (न.), संज्ञा २. यशस् (न.), कीर्तिः (स्त्री.) ३. विवरणं, व्याख्या, ।

आख्यात, वि. (सं.) विख्यात, प्रसिद्ध २. कथित ३. तिङन्तक्रिया ।

आख्यान, सं. पुं. (सं. न.) कथा, आख्यायिका २. वर्णनं, वृत्तान्तः ।

आख्यायिका, सं. स्त्री. (सं.) कथा, वृत्तान्तः, आख्यानम् २. आख्यानभेदः ।

आगन्तुक, वि. (सं.) आयात, आगन्तृ २. २. अतिथि, अभ्यागत ।

आग, सं. स्त्री. (सं. अग्निः) अनलः, पावकः, दहनः, ज्वलनः, वह्निः, कृशानुः, हुताशनः, हुतवहः, उषर्बुधः, हव्यवाहनः, चित्रभानुः, शुक्रः, शुचिः २. तापः ३. कामाग्निः ४. वात्सल्यम् ५, ईर्ष्या । वि., अत्युष्ण १. क्रुद्ध ।

—का पुतला, मु., कोधिन् २. चपल ३. निपुण ।

—खाना अँगार हगना, मु., दुष्कृतस्य फलं विपद् (स्त्री.), यो यत् वपति बीजं हि सोपि तल्लभते फलम् ।

—पानी (फूस) का वैर, मु., सहजं वैरम्, शाश्वतिको विरोधः ।

—बबूला (बगूला) होना, मु., नितरां कुप् (दि. प. से.) ।

—भड़काना, मु., वैरोद्दीपनं, क्रोधोद्दीपनम् ।

—लगना, मु., ज्वलनम् २. कुप् ३. ईर्ष्य् (भ्वा. प. से.) ४. वस्तूनां बहुमूल्यता ।

—लगाना, मु., आवेशवर्धनम्, क्रोधोत्पादनम् २. नाशनम् ।

—लगा कर पानी को दौड़ना, मु., कलिमुत्पाद्य शान्तये प्रयत्नः ।

—लगने पर कूआँ खोदना, मु., संदीप्ते भवने कूपखननम् ।

—लगा कर तमाशा देखाना, मु., कलिमुत्पाद्य मनोविनोदनम् ।

—होना, मु., अत्यर्थं कुप् ।

पानी में आग लगाना, मु., अशक्यकरणं, खपुष्पत्रोटनम् । पेट की आग, मु., क्षुधा, बुभुक्षा ।

आगत, वि. (सं.) प्राप्त, उपस्थित २. अतिथि ।

—स्वागत, सं. पुं. (न.) आतिथ्यं, सत्कारः ।

आगम, सं. पुं. (सं.) आगमनं, प्राप्तिः (स्त्री.) २. भावि-आगामि,-कालः ३. भाग्यं, दैवम् ४. संगमः, समागमः ५. आयः ६. प्रकृतिप्रत्ययानुपघाती आगन्तुको वर्णः (व्या.) ७. उत्पत्तिः (स्त्री.) ८. शब्दप्रमाणम् (यो.) ९. वेदः, शास्त्रम् १०. तन्त्रशास्त्रम् ११. नीतिशास्त्रम् ।

—ज्ञानी, वि. (सं.-ज्ञानिन्) पूर्ववादिन्, अग्रनिरूपक, सिद्ध, आदे (ष्+ट्+) =ष्टृ ।

आगमन, सं. पुं. (सं. न.) आगतिः (स्त्री.), आगमः २. आयः, लाभः ।

आगमापायी, वि. (सं.-यिन्) अनित्य, अध्रुव, जन्ममरणशील ।

आगर[1], सं. पुं. (सं. आकरः) ख (खा) नी-निः (स्त्री.) २. समूहः ३. निधिः ४. लवणगर्तः ।

आगर[2], सं. पुं. (सं. अर्गलं-ला) द्वारविष्कंभः ।

आगर[3], सं. पुं. (सं. आगारम्) गृहं, सदनम्

आगर[4], वि. (सं. अग्रय) श्रेष्ठ, उत्तम २. दक्ष ।

आगस्ती, सं. स्त्री. (सं.) दक्षिणदिशा, दक्षिणा, यामी ।

आगा, सं. पुं. (सं. अग्रम्) अग्र-पुरो,-भागः २. उरस्, वक्षस् (दोनों न.) ३. मुखम् ४. मस्तकम् ५. जननेन्द्रियम् ६. कंचुकादीनामग्रभागः ७. सेनाग्रम् ८. नौकाग्रभागः ९. गृहाग्रवर्ति अंगनम् १०. अंचलः-लम् ११. आगामिकालः १२. परिणामः ।

—पीछा, सं. पुं. (पुं. अग्र+पश्च>) संशयः, विमर्शः २. परिणामः ३. अग्रपश्चभागौ ।

—पीछा करना, मु., दोलायते (ना. ध्या.) ।

—पीछा सोचना, मु., परिणामचिन्तनम् ।

आग़ाज़, सं. पुं. (फा.) आरम्भः, उपक्रमः, आदिः ।

आगामी, वि. (सं.–मिन्) भाविन्, भविष्यत् ।

आगार, सं. पुं. (सं. न.) अगारं, गृहं, गेहम् स्थानम् २. कोषः ।

आगाह, वि. (फ़ा.) ज्ञातृ, नोद्धृ, अभिज्ञ ।

आगे, क्रि. वि. (सं. अग्रे) अग्रतः,पुरतः,पुरस्तात् (सब अव्य.) २. समक्षं, अभिमुखम्, मुखम्, सम्मुखम् (सब अव्य.) ३. जीवनकाले, उपस्थितौ ४. आगामिसमये ५. अनन्तरं, तदनु ६. पूर्वं ७. क्रोडे ।

—आना, मु., प्रत्युद्गम् (भ्वा. प. अ.) ।

—निकलना, मु., अतिशी (अ. आ. से.) ।

—पीछे, मु., आनुपूर्व्येण, अनुपूर्वशः २. प्रत्यक्षं परोक्षं च (वा) ३. पूर्वं पश्चाद् वा ४. यथावकाशम् ५. अक्रमम् ।

आग्नेय, वि. (सं.) अग्नि,–मय–संबंधिन् २. अग्निदेवताक ३. दाहक । सं. पुं., (सं. न.) सुवर्णं २. रुधिर ३. घृतं ४. दीपनौषधम् । सं. पुं. (सं. पुं.) कार्तिकेयः २. अगस्त्यः ३. देशविशेषः ४. अग्निपूजकः ५. ब्राह्मणः ६. अग्निकोणः ७. ज्वालामुखः ।

—अस्त्र, सं. पुं. (सं. न.) अग्निवर्षकोऽस्त्रभेदः ।

आग्नेयी, सं. स्त्री. (सं.) अग्नेः पत्नी २. अग्निदीपनमौषधम् ३. दक्षिणपूर्वा दिशा ।

आग्रह, सं. पुं. (सं.) अति–,निर्बन्धः, अति,–याचना–प्रार्थना २. तत्परता, परायणता ३. बलं, आवेशः ।

आग्रहायण, सं. पुं. (सं.) मार्गशीर्षमासः ।

आग्रहणयी, सं. स्त्री. (सं.) आग्रहायन-मार्गशीर्षः,– पूर्णिमा ।

आग्रही, वि. (सं.–हिन्) अविनेय, निर्बन्धवत्, दुराग्रह, स्वैरिन् ।

आघर्षण, सं. पुं. (सं. न.) आघर्ष, मर्दनं, संघर्षणं, चूर्णनम् ।

आघात, सं. पुं. (सं.) प्रहारः, आक्रमणम् २. प्रसारणं, प्रक्षेपः ३. वधस्थानम् ।

आघ्राण, सं. पुं. (सं. न.) गन्धग्रहणम् २. अतितृप्तिः (स्त्री.), पूर्णकामता ।

आचमन, सं. पुं. (सं. न.) उपस्पर्शः, आंच (चा) मः, जलपानम् ।

—करना, क्रि. सं., आचम् (भ्वा. प. से.,) आचामति ।

आचमनी, सं. स्त्री. (सं. आचमनीय>) आचमनोपयोगी चमसभेदः ।

आचरण, सं. पुं. (सं. न.) अनुष्ठानं २. आचारः, व्यवहारः ३. स्वच्छता ४. रथः ।

आचरणीय, वि. (सं.) अनुष्ठातव्य २. कर्तव्य ।

आचरित, वि. (सं-) कृत, विहित, अनुष्ठित ।

आचार, सं. पुं. (सं.) व्यवहारः २. चरितं, चरित्रं, चरित्रं, वृत्तं, शीलम् ३. शौचं, शुद्धिः (स्त्री.) ४. स्नानम् ५. आचमनम् ।

—भ्रष्ट, वि. (सं.) दुर्वृत्त, चरित्रहीन, अनाचार ।

—विचार, सं. पुं. (सं.–रौ) चरित्रं मनोभावश्च २. चारित्रम्, दे. 'आचार' ।

आचार्य, सं. पुं. (सं.) उपनेतृ, गुरुः २. वेदाध्यापकः ३. यज्ञे कर्मोपदेशकः ४. पुरोहितः ५. उपाध्यायः, अध्यापकः ६. ब्रह्मसूत्राणां चत्वारः प्रधानभाष्यकाराः सर्वश्रीशंकररामानुजमध्ववल्लभाचार्याः ६. वेदभाष्यकृत् ७. प्रकाण्डपण्डितः ।

—कुल, सं. पुं. (सं. न.) गुरुकुलम् ।

आचार्या, सं. स्त्री. (सं.) मंत्रोपदेष्ट्री, वेदभाष्यकर्त्री, वेदाध्यापिका ।

आचार्यानी, वि. स्त्री. (सं.–नी) आचार्यपत्नी ।

आचार्यी, वि. स्त्री. (सं.) आचार्यसंबंधिनी ।

आच्छन्न, वि. (सं.) आच्छादित, आवृत २. गुप्त, तिरोहित ।

आच्छादक, वि, (सं.) आवरक, पिधायक, वेष्टक ।

आच्छादन, सं. पुं. (सं. न.) आवरणं, पुटं, वेष्टनं, अवगुंठनं, पिधानं २. प्रच्छदपटः ३. ३. आवरणक्रिया ।

आच्छादित, वि. (सं.) आवृत, पिहित, तिरोहित ।

आच्छोटन, सं. पुं. (सं. न.) अंगुली,-मोटनं-स्फोटनम् ।

आज, क्रि. वि. (सं. अद्य अव्य.) वर्तमाने दिने २. अद्यत्वे, अस्मिन् काले । सं. पुं., वर्तमानो दिवसः २. संप्रति, साम्प्रतम् ।

—कल, क्रि, वि. (सं. अद्यकल्यम्) एतेषु दिनेषु २. अद्यत्वे, अद्य श्वो (कल्यं), वा।

—तक, क्रि. वि. अद्य,-यावत्-पर्यन्तम्, अधुना-इदानीं,-यावत्-पर्यन्तम्।

—कल करना, मु., व्याक्षिप् (तु. उ. अ.)।

—कल का मेहमान, मु., मरणासन्न, आसन्न-निधन, मुमूर्षु।

आजन्म, क्रि. वि. (सं.) यावज्जीवम् २. जन्मनः प्रभृति।

आज़माइश, सं. स्त्री. (फ़ा.)परीक्षा, अनुयोगः २. परीक्षार्थं प्रयोगः।

आजा, सं. पुं. (सं. आर्यः >) पितामहः।

आजाद, वि. (फा.) दे. 'स्वतंत्र'।

आजादी, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'स्वतंत्रता'।

आजानु, वि. (सं.) जानु-अष्ठीवत्,-पर्यन्त।

—बाहु, वि. (सं.) जानुस्पृग्बाहु २. दीर्घबाहु ३. वीर, शूर।

आजीवन, क्रि. वि. (सं. न.) दे. 'आजन्म'।

आजीविका, सं. स्त्री. (सं.) आजीवः, वृत्तिः (स्त्री.), उप-,जीविका।

आज्ञा, सं. स्त्री. (सं.) आ-नि,-देशः, शासनं, नियोगः २. स्वीकृतिः-अनुमतिः (स्त्री.)।

—देना, क्रि. स., आ-नि-समा,-दिश् (तु. उ. अ.), आज्ञा (प्रे. आज्ञापयति)।

—मानना, क्रि. स., आज्ञां अनुवृत् (भ्वा. आ. से.)-पा, (प्रे. पालयति)।

—कारी, वि. (सं.-रिन्) आज्ञा-वचन,-अनुवर्तिन्-ग्राहिन्-सेविन्-पालक।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) निदेश-आदेश,-पत्रम्।

पालक, वि. (सं.) दे. 'आज्ञाकारी'।

—पालन, सं. पुं. (सं. न.) आज्ञा,-अनुवर्तनं-कारिता।

—भंग, सं. पुं. (सं.) आज्ञातिक्रमः, आज्ञोल्लंघनम्।

आज्य, सं. पुं. (सं. न.) घृतम्।

आटविक, सं. पुं. (सं.) अरण्य-वन्-वासिन्, आरण्यकः २. मार्गः दर्शकः।

आटा, सं. पुं. (सं. अट्टम् वा अट् >) गोधूम-चूर्णं, अन्न-, चूर्णं, क्षोदः, पिष्टान्नं, गुंडिकः।

—गीला होना, (गरीबी में), मु., दारिद्र्ये कष्टान्तरापातः।

आटे दाल की फिक्र, मु., आजीविकाचिन्ता।

आटे दाल का भाव मालूम होना, मु., व्यवहारज्ञानम्।

आटोक्रैट, सं. पुं. (अं.) निरंकुश,-नृपः-शासकः २. स्वेच्छाचारि-स्वैरि,-मानवः ३. असीमाधिकारसम्पन्नो जनः।

आटोक्रैसी, सं. स्त्री. (सं.) निरंकुश नृप शासनम् २. निरंकुशता, स्वेच्छाचारिता।

आटोप, सं. पुं. (सं.) आच्छादनम् २. आडंबरः ३. दर्पः ४. उदरगुडगुडाशब्दः।

आठ, वि. (सं. अष्टन्)। सं. पुं., उक्ता संख्या, तद्बोधकोऽङ्कः (८) च।

—आठ आँसू रोना, मु., अश्रुधारापातनम्।

आठों प्रहर, मु.,अहर्निशं, दिवानिशम् (अव्य.)

आठवाँ, वि. (हिं. आठ) अष्टम (-मी स्त्री.)।

आडंबर, सं. पुं. (सं.) गंभीरशब्दः २. तूर्यरवः ३. गजगर्जनम् ४. कपटवेषः, दंभः, मिथ्यायोजनम् ५. आच्छादनम् ६.पटमंडपः ७. पटहः।

आड़, सं. स्त्री. (सं. अल् = रोकना >) व्यवधानं, तिरस्करिणी, प्रतिसीरा, ज(य)वनिका २. आश्रयः, शरणम् ३. प्रतिबन्धः, विघ्नः ४. इष्टकाखण्डः ५. स्थूणा, उपस्तम्भः।

आड़ा, सं. पुं. (सं. आली >) रेखायुतो वस्त्रभेदः २. (पोतस्य) स्थूल-बृहद्,-काष्ठम्। वि., अनुप्रस्थ, दिगन्तसम, समस्थ २.तिर्यच्, जिह्म।

आड़े आना, मु., बाध् (भ्वा. आ. से.) २. विपत्तौ साहाय्यं दा (जु. उ. अ.) ३. द्विष् (अ. उ. अ.)।

आड़े हाथों लेना, मु., निर्भर्त्स् (चु.)।

आढ़, सं. पुं. (सं. आढकः-कम्) चतुःप्रस्थपरिमाणम्, द्रोणचतुर्थांशः।

आढ़त, सं. स्त्री. (हि. आड़ना = जमानत देना) परार्थविक्रयः २. परार्थविक्रयभृतिः (स्त्री.)।

आढ़ती, सं. पुं. (हिं. आढ़त) परार्थविक्रेतृ।

आढ्य, वि. (सं.) सम्पन्न, धनिन् २. युक्त।

आतंक, सं. पुं. (सं.) भयं, त्रासः २. प्रतापः, गौरवम् ३. रोगः, ज्वरः ४. मुरजध्वनिः।

आततायी, सं.पुं. (सं.-यिन्) अग्निदः २.गरदः, विषदः ३. शस्त्रपाणिः ४. धनापहः ५. क्षेत्रहारिन् ५. दारापहारिन्। (-यिनी स्त्री.)।

आतप, सं. पुं. (सं.) दिनज्योतिस् (न.), सूर्यालोकः तापनः २. उष्णता ३. ज्वरः ।

आतपत्र, सं. पुं. (सं. न.) छत्रं, आतप-घर्म,-वारणम् ।

आतपोदक, सं. पुं. (सं. न.) मरीचिका, मृग,-जलं-तृष्णा ।

आतिश, सं. स्त्री. (फ़ा.) अग्निः ।

—बाजी, सं. स्त्री. (फ़ा.) अग्निक्रीडनकानि, (न. बहु.), अग्निक्रीडा ।

आतशक, सं. पुं. (फ़ा.) उपदंशः, मेढ्ररोगभेदः ।

आतशी, वि.(फ़ा.) आग्निक, आग्नेय, २.अग्निज ३. अग्निजनकः ।

—शीशा, सं. पुं. अग्नि,-काचः-स्फटिकः ।

आतिथेय, वि. (सं.) अतिथि,-सेवक-पूजक ।

आतिथ्य, सं. पुं. (सं. न.) अतिथिसेवा २. अतिथ्यर्थवस्तु (न.) ।

आतिशय्य, सं. पुं. (सं. न.) अतिशयत्वं, आधिक्यं, बहुत्वम् ।

आतुर, वि. (सं.) आकुल, व्याकुल, व्यग्र, उद्विग्न, अधीर २. उत्सुक, उत्कण्ठित ३. दुःखित ४. रोगिन् ।

आतुरता, सं. स्त्री. (सं.) व्याकुलता, व्यग्रता २. त्वरा, संभ्रमः ।

आतुरालय, सं. पुं. (सं.) चिकित्सालयः, दे० 'अस्पताल' ।

आत्म, वि. (सं. आत्मन् >) स्व, निज, स्वीय, स्वकीय ।

—अभिमान, सं. पुं. (सं. न.) स्वप्रतिष्ठा, स्वगौरवम् ।

—अवलंबी, वि. (सं.-बिन्) आत्मविश्वासिन् , स्वाश्रित ।

—उद्धार, सं. पुं. (सं.) मुक्तिः (स्त्री.), मोक्षः ।

—उन्नति, सं. स्त्री. (सं.) आत्मकल्याणम् २. स्वाभ्युदयः ।

—घात, सं. पुं. (सं.) आत्म-स्व-निज,-हत्या-घातः-वधः, प्राण-जीवित,-त्यागः-उत्सर्गः ।

—घात करना, क्रि. सं., आत्मानं हन् (अ. प. अ.) ।

—घाती, वि. (सं.) आत्म,-घातक-घातिन्-नाशिन्-हन् ।

—ज, सं. पुं. (सं.) पुत्रः २. कामदेवः ३. रुधिरम् ।

—ज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) ईश-जीव,-ज्ञानम् २. ब्रह्मसाक्षात्कारः ।

—त्याग, सं. पुं. (सं.) परहिताय स्वार्थत्यागः ।

—दर्शन, सं. पुं. (सं. न.) समाधिना जीवेश्वरदर्शनम् ।

—निवेदन, सं. पुं. (सं. न.) आत्मसमर्पणं, सर्वस्वार्पणम् २.स्वविषये कथनम् ३. भक्तिभेदः ।

—प्रशंसा, सं. स्त्री. (सं.) आत्मश्लाघा, स्वस्तुतिः, निजनुतिः (दोनों स्त्री.) ।

—भू, वि. (सं.) निजशरीरज २. स्वयंभू । सं. पुं., पुत्रः २. कामदेवः ३. ब्रह्मन् (पुं.) ४. विष्णुः ५. शिवः ।

—विश्वास, सं. पुं. (सं.) स्व-निज,-प्रत्ययः-विश्रम्भः ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) ब्रह्मविद्या, अध्यात्म-विद्या, आत्मज्ञानम् २. मोहनविद्या (=मेसमरिजम) ।

—हत्या, सं. स्त्री. दे. 'आत्मघात' ।

—आत्मक, वि. (सं.)-अन्वित,-रूप,-युक्त,-मय (उ. गद्यात्मक = गद्य,-रूप-मय) ।

आत्मा, सं. स्त्री. (सं. आत्मन् पुं.) जीवः,-चेतनः, जीवात्मन् २. चित्तम् ३. बुद्धिः (स्त्री.) ४. अहङ्कारः ५. मनस् (न.) ६. ब्रह्मन् (न.), परमात्मन् (पुं.) ७. देहः ८. धृतिः (स्त्री.). ९. स्वभावः, धर्मः १०. सूर्यः ११. अग्निः १२. वायुः ।

आत्मिक, वि. (सं.) अध्यात्म-(समास में) आत्म,-विषयक-सम्बधिन् २.स्वीय ३.मानसिक ।

आत्मीय, वि. (सं.) स्वीय, स्वकीय । सं. पुं., स्वजनः, बन्धुः, मित्रम् ।

आत्मीयता, सं. स्त्री. (सं.) बन्धुत्वं-सौहार्दम् ।

आत्यन्तिक, वि. (सं.) अनन्त, असीम, अत्यधिक ।

आत्रेय, वि. (सं.) अत्रिगोत्र, अत्रिसंबन्धिन् । सं. पुं. अत्रिपुत्रः ।

आत्रेयी, सं. स्त्री. (सं.) अत्रिपत्नी २. अत्रिपुत्री ३. अत्रिगोत्रजनारी ४. रजस्वला नारी ।

आथर्वण, सं. पुं. (सं.) अथर्ववेदज्ञो ब्राह्मणः, पुरोहितः २. अथर्वपुत्रः ३. अथर्ववेदे विहितं कर्मन् (न.) ।

आदत, सं. स्त्री. (अ.) शीलं स्वभावः, प्रकृतिः (स्त्री.)२.अभ्यासः, नित्यप्रवृत्तिः (स्त्री.) ।

आदम, सं. पुं. (अ.) आदिमः, प्रजापतिः (इस्लाम) २. मनुष्यः ।
आदमियत, सं. स्त्री. (अ.) मानवता, मनुष्यत्वं २. सभ्यता, शिष्टता ।
आदमी, सं. पुं. (अ.) मनुष्यः, मनुष्यजातिः (स्त्री.) २. दासः ।
—बनना, मु., सभ्यता शिक्ष् (भ्वा. आ. से.)।
फ़ी–, क्रि. वि., प्रतिमनुष्यम् , प्रतिजनम् ।
आदर, सं. पुं. (सं.) संमानः, सत्कारः, सत्क्रिया, प्रतिष्ठा, अर्हणा, अर्चा ।
—करना, क्रि. सं., आदृ-(द् + ऋ)(तु.आ. अ.), सत्कृ, पूज्-अर्च् (चु.), संमन्,संभू (प्रे.) ।
—पाना, क्रि. अ., सत्-पुरस् ,-कृ (कर्म.), आदृ-(द् + ऋ) पूज्-सेव् (कर्म.) ।
—से, क्रि. वि., सादरं, सप्रश्रयम् , आदरेण ।
आदरणीय, वि. (सं.) मान्य, माननीय, पूज्य, सत्कार्य, पूजनीय ।
आदर्श, सं. पुं. (सं.) मुकुरः, दर्पणः, आत्मदर्शः २. प्रतिरूपं, प्रतिमा, प्रतिमानम् ३. टीका, भाष्यं, व्याख्या ४. अतुल्य, अनुपम ।
आदात, सं. स्त्री. (अ० 'आदत' का बहु०) दे. 'आदत' ।
आदाता, वि. (सं.–तृ) ग्रहीतृ, ग्राहक, प्रापक ।
आदान, सं. पुं. (सं. न.) ग्रहणं, स्वीकारः, स्वीकरणम् ।
—प्रदान, सं. पुं. (सं. न.) ग्रहणवितरणं, दानादानं २. परस्परतितिक्षा, न्याय्याचरणम् ।
आदाब, सं. पुं. (फ़ा. 'अदब' का बहु०) दे. 'अदब' ।
आदि, वि. (सं.) प्रथम, अग्रिम, आदिम, आद्य । सं. पुं., उपक्रमः, आरंभः २. मूलं, उत्पत्तिहेतुः । अव्य.–प्रभृति,–आद्य (समासान्त में) ।
—कवि, सं. पुं. (सं.) वाल्मीकिः ।
—कारण, सं. पुं. (सं. न.) मूलकारणम् (प्रकृतिः ईश्वरो वा)
—से अन्त तक, क्रि. वि., आद्यन्तम् , आदितोऽन्तं यावत् ।
आदिक, अव्य. (सं. वि.)–आदि,–आद्य, –प्रभृति (सब समासान्त में) ।
आदित्य, सं. पुं. (सं.) अदितिपुत्रः २. देवः ३. सूर्यः ४. इन्द्रः ५. वामनः ६. वसुः ७. विश्वेदेवाः ८. मन्दारवृक्षः ।
—वार, सं. पुं. (सं.) रवि-भानु,-वारः-वासरः
आदिम, वि. (सं.) प्रथम, आद्य, आदि ।
—निवासी, सं. पुं., (सं.-सिन्) आदिवासिन् ।
आदिष्ट, वि. (सं.) आज्ञप्त, आज्ञापित, लब्धाज्ञ, प्राप्तादेश ।
आदी, वि. (अ.) अभ्यस्त, अभ्यासिन् ।
आदृत, वि. (सं.) सत्कृत, संमानित, पूजित ।
आदेय, वि. (सं.) ग्रहणीय, परि–प्रति, –ग्राह्य ।
आदेश, सं. पुं. (सं.) आज्ञा, निदेशः, शासनं, नियोगः, देशना २. उपदेशः ३. प्रणामः ४. ग्रहफलम् ५. वर्णस्य वर्णान्तरोत्पत्तिः (स्त्री., व्या.) ।
आदेशक, वि. (सं.) आज्ञापक, निदेशक, नियोजक, शासक ।
आदेशी, वि. (सं.–शिन्) दे० 'आदेशक' २. दैवज्ञः, ज्योतिर्विद् ।
आद्यंत, क्रि. वि. (सं. न.) दे. 'आदि से अन्त तक' ।
आद्य, वि. (सं.) प्रथम, आदिम, आदि २. अग्र्य, प्रधान ।
आद्या, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा २. प्रतिपदा ।
आद्योपांत, क्रि. वि., दे. 'आदि से अन्त तक' ।
आध, वि. (सं. अर्द्ध) सामि–(अव्य. उ. सामिभुक्तं) ।
—आना, सं. पुं., अर्द्धाणः ।
आधा, वि. (सं. अर्द्ध) सामि । सं. पुं., अर्द्धः, अर्द्धम् , अर्द्ध,–भागः–अंशः ।
—आना, सं. पुं., अर्द्धाणः–णकः ।
—सीसी, सं. स्त्री., अर्द्धावभेदकः, सूर्यावर्त्तः, अर्द्धशिरोवेदना ।
—तीतर आधा बटेर, मु. चित्रविचित्र असंगत ।
आधान, सं. पुं. (सं. न.) स्थापनं २. न्यसनम् ।
आधार, सं. पुं. (सं.) आश्रयः, अवलंबनम् २. आलवालम् ३. पात्रम् ४. गृह-भित्ति,-मूलं, वेश्मभूः (स्त्री.) ५. आश्रयदायकः, पालकः ।
—आधेय संबंध, सं. पुं. (सं.) आश्रयाश्रयिसंबंधः (उ. घृतपात्रयोः) ।
—होना, मु., स्तोका तृप्तिः (स्त्री.) भू ।
आधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) मानसी व्यथा, चिन्ता २. बन्धकः, न्यासः, निक्षेपः ।

आधिकारिक, सं. पुं. (सं. न.) मूलकथावस्तु (न.) २. कर्मचारिन्। वि., अधिकारयुक्त।

आधिक्य, सं. पुं. (सं. न.) बाहुल्यं, प्राचुर्यं, अतिशयः।

आधिदैविक, वि. (सं.) देवप्रेरित, देवताकृत (उ. अतिवृष्टिः)।

आधिपत्य, सं. पुं. (सं. न.) स्वामित्वं, प्रभुत्वं, अधिकारः, शासनम्।

आधिभौतिक, वि. (सं.) मनुष्यपश्वादिप्रेरित (उ. सर्पदंशदुःखम्)।

आधीन, वि., दे. 'अधीन'।

आधी रात, सं. स्त्री. (सं. अर्द्धरात्रः) मध्यरात्रः, निशीथः, रात्रिमध्यम्।

आधुनिक, वि. (सं.) नूतन, नवीन, अधुनातन, इदानींतन, अर्वाचीन, सांप्रतिक।

आधृत, वि. (सं.) आश्रित, अवलंबित।

आधेय, सं. पुं. (सं. न.) आधारस्थं वस्तु (न.), आश्रितः पदार्थः। वि., स्थापनीय, न्यसनीय।

आधोरण, सं. पुं. (सं.) हस्तिपकः, हास्तिकः।

आध्मान वि. (सं.) उच्छून, वातपूरित २. दृप्त, गर्वित ३. दग्ध ४. ध्वनित।

आध्यात्मिक, वि. (सं.) ब्रह्मजीवविषयक, देहचित्तजीवसंबंधिन् (उ. ज्वरमोहशोकादयः)।

आनंद, सं. पुं. (सं.) आह्लादः, मुदा, आ–प्र, –मोदः, संमदः, हर्षः, प्रमदः, शान्तिः (स्त्री.), सुखम्, प्रसन्नता। वि., आनन्दित, प्रसन्न।

—करना, क्रि. अ., नन्द् (भ्वा. प. से.), मुद् (भ्वा. प. से.)।

—देना, क्रि. स., आह्लाद्–नंद्–प्रमुद् (प्रे.)।

—बधाई, सं. स्त्री., अभिनन्दनम् २. मंगलोत्सवः।

—मंगल, सं. पुं. (सं. न.) आनन्दः, मोदः, कुशलम्।

आनन्दित, वि. (सं.) प्रमुदित, सानन्द, सुखिन्।

आन[1], सं. स्त्री. (सं. आणिः पुं., स्त्री.) सीमा, मर्यादा २. शपथः, समयः ३. विजयघोषणा ४. प्रतिज्ञा, सं–प्रति,–श्रवः।

—रखना, मु., प्रतिज्ञां पा (प्रे. पालयति)।

आन[2], सं. स्त्री. (फ़ा.) छविः (स्त्री.), सौन्दर्यम् २. अभि–, मानः ३. लज्जा, संकोच।

—बान, सं. स्त्री., वैभवं, शोभा, हावभावाः।

—बान वाला, वि., सुवसन, सुप्रभ।

आन[3], सं. स्त्री. (अ.) क्षणः, पलं, निमेषः।

—की आन में, मु., सद्यः, झटिति, आशु (सब अव्यय)।

आनक, सं. पुं. (सं.) पटहः, भेरी, मृदंगः २. स्तनयित्नुर्मेघः।

आनन, सं. पुं. (सं. न.) आस्यं, मुखं, वदनम्।

आनन–फानन, क्रि. वि. (अ.) क्षणेन, क्षणात्।

आनरेबल, वि. (अं.) मान्य।

आनरेरी, वि. (अं.) अवैतनिक, आदरवृत्ति।

—मैजिस्ट्रेट, सं. पुं. (अं.) अवैतनिको दण्डाध्यक्षः।

आना[1], सं. पुं. (सं. आणकः) रूप्यकस्य षोडशोंऽशः २. कस्यचिद् वस्तुनः षोडशो भागः।

आना[2], क्रि. अ. (सं. आगमनम्) आगम् (भ्वा. प. अ.) आया (अ. प. अ.) आव्रज् (भ्वा. प. से.) सं. पुं., आयानं, उपस्थानं, आगमनम्।

आई-गई, (बात) वि., अतीता, विस्मृता (वार्ता)।

आए दिन, क्रि. वि., अन्वहं, प्रतिदिनम्।

आ धमकना, क्रि. अ., अकस्मात् आगम।

आनाकानी, सं. स्त्री., अप-व्यप,-देशः छलेन परिहरणम् २. अनवधानम् ३. कर्णे जपनम्।

आनाकानी करना, क्रि. अ., अप-व्यप,-दिश (तु. उ. अ.), छलेन परिहृ (भ्वा. उ. अ.)।

—जाना, सं. पुं., गतागतम् २. पुनर्जन्मन् (न.)।

आनीत, वि. (सं.) आ-उपा-हृत, उपस्थापित, उपनीत।

आनुकूल्य, सं. पुं., (सं. न.) 'अनुकूलता' दे.।

आनुपूर्वी, सं. स्त्री. (सं.) अनुक्रमः, आनुपूर्व्यं, परंपरा।

आनुमानिक, वि. (सं.) अनुमान-तर्क,-सिद्ध, संभाव्य, काल्पनिक।

आनुषंगिक, वि. (सं.) प्रासंगिक, गौण।

आन्वीक्षिकी, सं. स्त्री. (सं.) तर्कविद्या, न्यायः २. आत्मविद्या।

आप, सर्व. (सं. आत्मन् >) स्वयं-स्वतः (अव्य.), २. भवत् (भवती स्त्री.)।

—बीती, सं. स्त्री. स्वानुभूत, प्रत्यक्षीकृत।

आप, सं. पुं. (सं. आपः स्त्री. बहु.) पानीयं, जलम्।

आपगा, सं- स्त्री. (सं-) नदी, तटिनी ।
आपत्काल, सं. पुं. (सं-) दुष्कालः दुस्समयः २. विपत्तिः (स्त्री.) ।
आपत्ति, सं- स्त्री. (सं-) दुःखं, क्लेशः २. विपत्तिः, विपद्, आपद् (सब स्त्री.) ३. कुसमयः ४. दोषारोपणम् ५. आक्षेपः, अपवादः ।
आपद्, सं- स्त्री. (सं-) दे. 'आपत्तिः' ।
—ग्रस्त, वि., आ-वि,-पन्न, आर्त्त, दुर्गत ।
—धर्म, सं- पुं. (सं-) विपन्नकर्तव्यं, कुसमय-धर्मः ।
आपदा, सं- स्त्री., दे. 'आपत्ति' ।
आपन्न, वि. (सं-) आपद्ग्रस्त २. प्राप्त ।
आपस, सं- पुं. (हिं. आप+से) सम्बन्धः । भ्रातृत्वं, बन्धुत्वम् ।
—का, वि., आत्मीयानां, बन्धूनाम् २. परस्परस्य, अन्योऽन्यस्य, मिथः (.अव्य.), इतरेतरस्य ।
—में, क्रि. वि., परस्परं, अन्योन्यं, मिथः ।
आपसी, वि. (हिं. आपस) पारस्परिक ।
आपा, सं- पुं. (हिं. आप) आत्मत्वं, स्वसत्ता २. गर्वः ३. चैतन्यं, चेतना ।
—धापी, सं- स्त्री., स्वार्थपरता, स्वस्वहितचिंता २. संघर्षः,अहमहमिका, अहं,-पूर्विका-प्रथमिका ।
—पंथी, वि. कुमार्गिन्, कुपथगामिन् ।
आपे में आना, मु., चैतन्यलाभः ।
आपे में न रहना, मु., क्रोधादिभिः बुद्धि-मति,-नाशः ।
आपात, सं- पुं. (सं-) पतनं, अवनतिः (स्त्री.) २. अकस्मात् उपागमः ३. आरम्भः ४. अन्तः ।
आपाततः, क्रि. वि. (सं-) अकस्मात्, सहसा, अकाण्डे २. अन्ते, अन्ततः ।
आपाती, वि. (सं.-निद्) पतन-अवतरण,-उन्मुख २. आक्रामक ३. भाविन् ।
आपाद, सं- पुं. (सं-) प्राप्तिः-अवाप्तिः (स्त्री.) २. पुरस्कारः ३. पारिश्रमिकम् । अव्य., आचरणम्, पादपर्यन्तम् ।
आपेक्षिक, वि. (सं-) सापेक्ष २. पराश्रित, परावलंबिन् ।
आप्त, वि. (सं-) अधिगत, प्राप्त, लब्ध २. कुशल, दक्ष ३. साक्षात्कृतधर्मन्, भ्रान्तिशून्य । सं. पुं., ऋषिः २. शब्दप्रमाणम् ।
—काम, वि. (सं.) पूर्णकाम, तृप्त, संतुष्ट ।
आप्ति, सं- स्त्री. (सं-) लाभः, प्राप्तिः (स्त्री.)
आप्लुत, वि. (सं-) स्नात, कृतस्नान २. सिक्त, उक्षित, आर्द्र २. सं. पुं., स्नातकः, गृहिन् ।
आफत, सं- स्त्री. (अ.) दे. 'आपत्तिः' (१-३) ।
—का परकाला, सं- पुं., लोककंटकः, कुचेष्टकः २. क्षिप्रकारिन् ।
आफिस, सं- पुं. (अं.) कार्यालयः ।
आब, सं- स्त्री. (फ़ा.) कान्तिः-द्युतिः (स्त्री.), २. उत्कर्षः ३. शोभा, श्रीः (स्त्री.) । सं- पुं., आपः (स्त्री. बहु.) जलम् ।
—कारी, सं- स्त्री. (फ़ा.) मद्यनिष्कर्षशाला, शुंडा, संधानी २. मादकद्रव्यनिरीक्षको शासन-विभागविशेषः ।
—ताब, सं- स्त्री. (फ़ा.) शोभा, विभूतिः (स्त्री.) ।
—दाना, सं- पुं., (फ़ा.) आ-उप,-जीविका २. जलान्नं, अन्नजलम् ।
—पाशी, सं- स्त्री. (फ़ा.) जलसेकः, प्लावनम् ।
—शार, सं- पुं. (फ़ा.) निर्झरः, जलप्रपातः ।
आबेहयात, सं- पुं. (फ़ा.) अमृतं, सुधा ।
आबोहवा, सं- स्त्री. (फ़ा.) जलवायु (न.) ।
आबद्ध, वि. (सं-) निगृहीत, नियंत्रित ।
आबनूस, सं- पुं. (फ़ा.) कोविदारः, युगपत्रकः ।
—का कुन्दा, मु. अतिकृष्णो मनुष्यः ।
आबाद, वि. (फ़ा.) लोकाध्युषित, जनाकीर्ण २. उर्वर, बहुशस्यद ३. संपन्न ।
आबादी, सं- स्त्री. (फ़ा.) जनाकीर्णस्थानम् २. जनसंख्या ३. शस्यदा भूमिः (स्त्री.) ।
आबाध, सं- पुं. (सं-) कष्टं, वेदना २. क्षतिः-हानिः (स्त्री.) ।
आबी, वि. (फ़ा.) जलीय, जलमय २. जल-वर्ण, ईषन्नील ।
आब्दिक, वि. (सं-) वार्षिक-सांवत्सरिक (-की स्त्री.) ।
आभरण, सं. पुं. (सं- न.) अलंकारः, मंडनं, भूषणम् २. पोषणं, संवर्द्धनम् ।
आभा, सं- स्त्री. (सं-) कान्तिः-दीप्तिः (स्त्री.) २. प्रति,-बिंब-च्छाया ।
आभाणक, सं. पुं. (सं-) लोकोक्तिः (स्त्री.) ।
आभार, सं- पुं. (सं-) उपकारः २. गार्हस्थ्य-भारः ३. भारः, भरः ।
आभारी, वि. (सं-रिन्) कृतज्ञ, कृतवेदिन् ।

आभास, सं. पुं. (सं.) प्रति,-बिंबं-च्छाया २. संकेतः ३. मिथ्याज्ञानम् ।

आभिचारिक, वि. (सं.) ऐन्द्रजालिक, मायात्मक, मायामय, मायिक ।

आभीर, सं. पुं. (सं.) गोपः ।

आभूषण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'आभरण' ।

आभ्यंतर, वि. (सं.) अन्तःस्थ, आन्तर, गर्भस्थ, अन्तर्गत, आभ्यन्तरिक ।

आभ्युदयिक, वि. (सं.) मांगलिक, शंकर, शुभ ।

आमंत्रण, सं. पुं. (सं. न.) आह्वानम् २. निमंत्रणम् ।

आमंत्रित, वि. (सं.) आकारित, आहूत २. निमंत्रित ।

आम[1], सं. पुं. (सं. आम्रः-म्रं) १. (वृक्ष) आम्रः, रसालः, सहकारः, कामशरः, वसन्तदूतः, कोकिलोत्सवः २. (फल) आम्रं, अम्र-रसाल-सहकार,-फलम् ।

—के आम, गुठली के दाम, मु., उभयतो लाभः ।

—खाने से काम या पेड़ गिनने से, मु., आम्रैः प्रयोजनं न तु वृक्षगणनया ।

आम[2], वि. (सं.) अपक्व, दे. 'कच्चा' ।

आम[3], सं. पुं. (सं. न.) अन्नश्लेष्मन् (पुं.) २. अजीर्णरोगभेदः ।

—अतिसार, सं. पुं. (सं.) अतिसारभेदः, संग्रहणी ।

आम[4], वि. (अ.) सामान्य, प्राकृत, अवर, २. विख्यात, प्रसिद्ध ।

—फ़हम, वि. (अ.) सुबोध, सुविज्ञेय ।

आमद, सं. स्त्री. (फ़ा.) आगमनं २. आयः ।

आमदनी, सं. स्त्री. (फ़ा.) आयः, धनागमः ।

आम (मा) नस्य, सं. पुं. (सं. न.) शोकः, खेदः २. दुःखं, वेदना ।

आमना-सामना, सं. पुं. (हिं. सामना) समागमः ।

आमने-सामने, क्रि. वि. (हिं. सामना) । परस्परस्य पुरतः, अन्योऽन्यस्य सम्मुखम् ।

आमय, सं. पुं. (सं.) रोगः, व्याधिः ।

आमयावी, वि. (सं.-विन्) रुग्ण, रोगिन् २. अजीर्ण-अपचन,-ग्रस्त ।

आमरण, क्रि. वि. (सं. न.) मृत्युं यावत्, निधनावधि, आमृत्योः ।

आमलकी, सं. स्त्री. (सं.) लघु-क्षुद्र,-आमलकः ।

आमला, सं. पुं. दे. 'आँवला' ।

आमाशय, सं. पुं. (सं.) अन्नाशयः, जठरः-रम् ।

आमिष, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मांसं २. भोग्य-पदार्थः ३. लोभः ४. उत्कोचः ।

आमी, सं. स्त्री. (हिं.-आम) आम्रकम् ।

आमुख, सं. पुं. (सं. न.) रूपकप्रस्तावना ।

आमोद, सं. पुं. (सं.) आनन्दः, मनोविनोदः २. सुगन्धः ।

—प्रमोद, सं. पुं., आह्लादः, हर्षः २. हास्य-विनोदौ, नर्मालापः ।

आम्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'आम' ।

आयँती-पायँती, सं. स्त्री. (अनु.+फ़ा पाय-ताना) खट्वायाः शीर्षपादभागौ ।

आय, सं. स्त्री. (सं. पुं.) धन-अर्थ,-आगमः-लाभः ।

—व्यय, सं. पुं. (सं.-व्ययौ) आगमोत्सर्गे ।

—व्ययिक, सं. पुं. (सं. न.) व्याकल्पः (=बजट) ।

आयत[1], वि. (सं.) विस्तृत, विशाल ।

आयत[2], सं. स्त्री. (अ.) इंजील-कुरान,-वाक्यम् ।

आयसु, सं. स्त्री. (सं. आदेशः) आज्ञा ।

आया[1], क्रि. अ. (हिं. आना) आगतः ।

—गया, सं. पुं., अतिथिः ।

आया[2], सं. स्त्री. (पुर्त.) धात्री, मातृका ।

आया[3], अव्य. (फ़ा.) किम्, यत् ।

आयात, सं. पुं. (सं. न.) विदेशादानयनम् २. विदेशादानीतः पण्यसमूहः ।

आयास, सं. पुं. (सं.) प्रयत्नः २. श्रमः ।

आयासक, वि. (सं.) श्रम,-जनक-उत्पादक । कष्ट-क्लेश,-प्रद ।

आयु, सं. स्त्री. (सं.-आयुस् न.) वयस् (न.), जीवितकालः, नित्यगः, विजीविनम् ।

आयुक्त, वि. (सं.) नियुक्त २. संयुक्त ।

आयुध, सं. पुं. (सं. न.) अस्त्रं, शस्त्रं, प्रहरणं, हेतिः (स्त्री.) ।

आयुधागार, सं. पुं. (सं. न.) शस्त्र-अस्त्र,-आगारं-गृहम् ।

आयुर्वेद, सं. पुं. (सं.) वैद्यकं, वैद्यशास्त्रं, चिकित्साशास्त्रम् ।

आयुष्मान्, वि. (सं.) (सं.-मत्) चीर-दीर्घ,-जीविन् । (आयुष्मती स्त्री.) ।

आयुष्य, वि. (सं.) पथ्य । सं. पुं., वयस् (न.) ।

आयोजन, सं. पुं. (सं. न.) द्रव्यासादनं, सामग्रीसंपादनम् २. नियुक्तिः (स्त्री.) ३. उद्योगः ४. सामग्री ।

आयोडीन, सं. स्त्री. (अं.) जम्बुकी, नीलीनम् ।

आरंभ, सं. पुं. (सं.) उपक्रमः, प्रारंभः, आदिः २. उत्पत्तिः (स्त्री.) ।

—करना, क्रि: स., आ-प्रा,-रभ्, प्र-उप,-क्रम् (सब भ्वा. आ. अ.) ।

आर¹, सं. पुं. (सं. न.) मुंड,-लोहं आयसम् २. पित्तलम् ३. तटः-टं-टी-टा ४. कोणः ५ अरः, अरम् ।

आर², सं. स्त्री. (सं. अलम् = डंक) वृश्चिकादीनां दंशः, दंशचंचुः २. अंकुशः ३. कीलः ।

आर³, सं. स्त्री. (सं. आरा) चर्मप्रभेदिका ।

आर⁴, सं. पुं. (हिं. अड़) आग्रहः, निर्बन्धः ।

आर⁵ सं. स्त्री. (अ.) संकोचः, लज्जा ।

आरक्त, वि. (सं.) ईषद्रक्त २. लोहित ।

आरण्य, वि. (सं.) वन्य, वनजात, वनसंबंधिन् ।

आरण्यक, वि. (सं.) दे. आरण्य । सं. पुं. (सं. न.) ग्रन्थभेदः ।

आरती, सं. स्त्री. (सं. आरात्रिकम्) नीराजनानम्, देवमूर्तिपरितो दीपचालनम् २. नीराजनापात्रम् ३. नीराजनास्तोत्रम् ।

आरपार, सं. पुं. (सं. आरपारम् >) तटद्वयंयी, पारावारं-रौ-रे । क्रि. वि., आवारपारम्, अवारात् पारं यावत् ; आद्यन्तं, समग्रम् ।

आरब्ध, वि. (सं.) उपक्रान्त, कृतारम्भ ।

आरभटी, सं. स्त्री. (सं.) क्रोधाद्युग्रभावानां चेष्टा २. रूपके यमकबहुलो वृत्तिभेदः ।

आरसी, सं. स्त्री. (सं. आदर्शः) दर्पणः, मुकुरः २. दक्षिणहस्तांगुष्ठभूषणभेदः ।

आरा, सं. पुं. (सं. आरा >) क्रकचः-चम् । करपत्रं, पत्रदारणः २. चर्मप्रभेदिका ३. अरः, अरम् ।

—कश, सं. पुं. (फ़ा.) क्राकचिकः, दारुदारणः ।

—कशी, सं. स्त्री., क्रकचेन काष्ठविपाटनम् ।

आराइश, सं. स्त्री. (फ़ा.) परिष्कृतिः (स्त्री.), अलंक्रिया, परिष्क्रिया, सज्जा ।

आराधक, वि. (सं.) उपासक, पूजक ।

आराधन, सं. पुं. (सं. न.) भक्ति (स्त्री.), सेवा, परिचर्या २. तर्पणं, तोषणं, प्रसादनम् ।

आराधना, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'आराधन' ।

—करना, क्रि. स., पूज् (चु.), उपास् (अ. आ. से.), अभि-, अर्च् (भ्वा. प. से.), आराध् (प्रे.) ।

आराधनीय, वि. (सं.) आराध्य, सेवनीय, पूजनीय, अर्चनीय ।

आराम¹, सं. पुं. (सं.) उपवनं, उद्यानं, पुष्पवाटिका ।

आरामाधिपति, सं. प्र. (सं.) उपवन-उद्यान,-अधिकारिन्-आधिकारिकः ।

आराम², सं. पुं. (फ़ा.) सुखम् २. विश्रामः ३. स्वास्थ्यम् ।

—करना, क्रि. अ., १. कार्यात् निवृत् (भ्वा. आ. से.) २. विश्राम (दि. प. से.) ३. शी (अ. आ. से.) ।

—कुरसी, सं. स्त्री., विश्रामासन्दी ।

—तलब, वि., अलस, सुखेच्छुक ।

आरास्ता, वि. (फ़ा.) अलंकृत, परिष्कृत, सज्ज ।

आरी, सं. स्त्री. (हिं. आरा) लघुक्रकचः, क्रकचकं, करपत्रकम् २. दंडाग्रलग्नो लोहकीलः ३. आरा, चर्मप्रभेदिका ।

आरूढ, वि. (सं.) अधिरूढ, अध्यासीन, कृतारोहण २. दृढ, स्थिर ।

—होना, क्रि. अ., आ-अधि,-रुह् (भ्वा. प. अ.), अध्यास् (अ. आ. से.) ।

—करना, क्रि. स., आ-अधि,-रुह् (प्रे. आरोपयति) ।

आरोग्य, वि. (सं. आरोग्यम् >) नीरोग, स्वस्थ । सं. पुं. (सं. न.) दे. 'अरोगता' ।

आरोग्यता, सं. स्त्री. (सं. आरोग्यम्) स्वास्थ्यं, नीरोगता, अनामयम् ।

आरोप, सं. पुं. (सं.) आरोपणं, संस्थापनं, स्थिरीकरणम् २ स्थानान्तरे आरोपणं स्थापनं वा ३. भ्रमः ४. वस्तुनि वस्त्वन्तरधर्मकल्पनम् ।

आरोपना, क्रि. सं. (सं. आरोपणम्) (स्थानान्तरे) आरुह् (प्रे., आरोपयति), निविश् (प्रे.), सं-प्रति,-स्था (प्रे.).

आरोपित, वि. (सं.) स्थापित, निहित, निवेशित ।

आरोह, सं. पुं. (सं.) उद्गमः, उदयः, अधिरोहणम् २. आक्रमणम् ३. गजादिपृष्ठेऽधिरोहणम् ४. उत्तमयोनिप्राप्तिः (स्त्री.) ५. कारणात् कार्यप्रादुर्भावः ६. विकासः ७. स्वरोत्कर्षः ८. नितम्बः।

आरोहण, सं. पुं. (सं. न.) उद्गमनं, अधिरोहणम् २. अंकुरप्ररोहणम् ३. सोपानं, निःश्रेणी ।

आरोही, वि. (सं.-हिन्) आरोहक, उद्गामी २. उन्नतिशील । सं. पुं., उत्कर्षोन्मुखः स्वरः २. आरूढः, अश्वादिपृष्ठस्थः।

आर्जव, सं. पुं. (सं. न.) ऋजुता, सरलता, निष्कपटता २. सुकरता ३. व्यवहारशुद्धिः (स्त्री.)।

आर्जुनि, सं. पुं. (सं.) अर्जुनपुत्रः अभिमन्युः।

आर्ट, सं. पुं. (अं.) कला, शिल्पं, २. कौशलं, नैपुण्यम्।

आर्टिकल, सं. पुं. (अं.) निबन्धः, लेखः २. धारा, नियमः।

आर्टिस्ट, सं. पुं. (अं.) कलाकारः, कलाविद् २. चित्रकारः।

आर्डर, सं. पुं. (अं.) आदेशः, आज्ञा २. वस्तुनिर्माण-पदार्थप्रेषण,-आदेशः ।

आर्डिनैंस, सं. पुं. (अं.) अध्यादेशः २. युद्धास्त्राणि (न. बहु.)।

आर्त्त, वि. (सं.) व्यथित, पीडित २. दुर्गत ३. रुग्ण।

—नाद, सं. पुं., आर्त्तध्वनिः, आर्त्तस्वरः।

आर्ति सं. स्त्री. (सं.) पीडा, व्यथा २. आपद्-विपद् (स्त्री.)।

आर्थिक, वि. (सं.) धन-द्रव्य-वित्त,-विषयक, मौद्रिक।

आर्द्र, वि. (सं.) क्लिन्न, उन्न, उत्त, सिक्त।

आर्द्रता, सं. स्त्री. (सं.) क्लिन्नता, सरसता।

आर्द्रा, सं. स्त्री. (सं.) षष्ठनक्षत्रम् २. आषाढारम्भः ३. आर्द्रकम्।

आर्य, वि. (सं.) श्रेष्ठ, भद्र २. मान्य, पूज्य ३. कुलीन. सत्कुलज (आर्या स्त्री.)। सं. पुं. (सं.) सज्जनः, कुलीनमानवः २. पूज्यमनुष्यः ३. स्वामिन् ४. श्वशुरः ५. जातिविशेषः ६. आर्यजातीयः ७. गुरुः ८. मित्रम्।

—आवर्त सं. पुं. (सं.) विन्ध्यहिमाचलयोर्मध्यदेशः २. भारतवर्षम्।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) श्रेष्ठस्य पुत्रः २. पतिः।

—समाज, सं. पुं. (सं.) महर्षिदयानन्द-संस्थापितः समाजविशेषः।

आर्या, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती २. श्वश्रूः (स्त्री.) ३. पितामही ४. छन्दोभेदः।

आर्ष, वि. (सं.) १-३. ऋषि,-संबंधिन्-प्रणीत-सेवित ४. वैदिक।

—प्रयोग सं. पुं. (सं.) प्राचीनग्रंथानामर्वाचीनव्याकरणविरुद्धाः प्रयोगाः।

आलंकरिक, वि. (सं.) अलंकारविषयक २. अलंकारयुत ३. अलंकारविद्।

आलंब, सं. पुं. (सं.) अवलंब, आश्रयः २. गतिः (स्त्री.), शरणम्।

आलंबन, सं. पुं. (सं. न.) अवलंबः, आश्रयः २. रसोत्पत्तौ विभावभेदः (सा.) ३. कारणं, साधनम्।

आलन, सं. पुं. (?). लेपनाय कर्दममिश्रितं तृणादिकम् २. शाकादिमिश्रितं चणकादिचूर्णम्।

आलमारी, सं. स्त्री., दे. 'अलमारी'।

आलय, सं. पुं. (सं.) गृहम् २. स्थानम्।

आलवाल, सं. पुं. (सं. न.) आवालं, आवापः।

आलस, सं. पुं., दे. 'आलस्य'।

आलसी, वि. (हिं. आलस) अलस, तन्द्रिल, तन्द्रालु, शीतक, तुंदपरिमृज, उद्योगविमुख।

आलस्य, सं. पुं. (सं. न.) मान्द्यं, तन्द्रिका, जाड्यं, कार्यद्वेषः ।

आला, सं. पुं. (सं. आलयः >) भित्तिस्तंभादिषु दीपकाद्यर्थं स्थानम् २. काष्ठफलकः।

आला, वि. (अ.) उत्तम, श्रेष्ठ।

आलान, सं. पुं. (सं. न.) गजबंधन,-स्तम्भः-रज्जुः (स्त्री.) २. बंधनं, रज्जुः।

आलाप, सं. पुं. (सं.) संलापः, संभाषणं, कथोपकथनं, वार्त्तालापः २. तानः, सप्तस्वर-साधनम् (संगीत)।

आलापना, क्रि. स. (सं. आलपनं >) गै (भ्वा. प. अ.)।

आलिंगन, सं. पुं. (सं. न.) परि (री) रंभः, परिष्वंगः, संश्लेषः, उपगूहनं, श्लिषा।

—करना, क्रि. स., आलिंग् (भ्वा. प. से.), आश्लिष् (दि. प. अ.)., उपगुह् (भ्वा. उ. से., उपगूहति)।

आलि, सं. स्त्री. (सं.) वयस्या, सखी, सहचरी २. पंक्तिः (स्त्री.) ३. सेतुः ४. रेखा।
आलि, सं. पुं. (सं.) वृश्चिकः २. भ्रमः।
आलिखित, वि. (सं.) लिखित २. अंकित ३. चित्रित।
आलिप्त, वि. (सं.) प्र-वि,-लिप्त, दिग्ध, अक्त।
आलिम, वि. (अ.) पंडित, विद्वस्, बहुश्रुत, बह्वधीत।
आली, सं. स्त्री. (सं.) सखी, वयस्या २. पंक्तिः, ततिः (स्त्री.)।
आलू, सं. पुं. (सं. आलुः.) सुकन्दं, शुभ्रालुः, शुक्लकन्दः-न्दम्।
—बुखारा, सं. पुं., आलूकं, आलुकं, रक्तफलं-भल्लूकम्।
आलूचा, सं. पुं. (फ़ा.)*आलूचः, वृक्षभेदः २. *आलूचम्, फलभेदः।
आलेख, सं. पुं. (सं.) लेखः, लेख्यं, लिखितम् २. लिपी, लिपिः (स्त्री.)।
आलेख्य, सं. पुं. (सं. न.) चित्रं, प्रतिरूपं। वि. लेखार्ह।
आलोक, सं. पुं. (सं.) भा, आभा, प्रभा, प्रकाशः २. त्विष्, दीप्तिः, कान्तिः (सब स्त्री.)।
आलोचक, वि. (सं.) समालोचक समीक्षक २. दर्शक।
आलोचन, सं. पुं. (सं. न.) गुणदोष,-परीक्षणं-निरूपणं-परीक्षा, सम्-, आलोचना २. दर्शनम्।
आलोचना, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'आलोचन'।
आलोडन, सं. पुं. (सं. न.) मंथनं, मंथः २. प्रगाढविचारः।
आलोडित, वि. (सं.) मथित २. संक्षोभित ३. विचारित।
आल्हा, सं. पुं. (देश.) वीरच्छन्दस् (न.) २. महोबावासी प्राचीनो वीरविशेषः ३.विस्तृत-वर्णनम्।
आवभगत, सं. स्त्री. (हिं. आना + सं. भक्तिः) सत्कारः, उपचारः, सेवा, पूजा।
आवरण, सं. पुं. (सं. न.) आच्छादनं, पुटं २. आच्छादनवस्त्रं, प्रच्छदपटः ३.तिरस्करिणी, व्यवधानं ४. कोशः, कोषः, वेष्टनम् ५. चर्मन् (न.) फलकम् (हिं. ढाल)।
—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) मुख,- पृष्ठं-पत्रम्।
आवर्त्त, सं. पुं. (सं.) जलभ्रमः, भ्रमरकः. भ्रमिः (स्त्री.) २. अवृष्टजलो मेघः ३. राजावर्त्तः, रत्नभेदः।
आवर्तक, वि. (सं.) आ-परि-वर्तमान, घूर्णायमान।
आवर्तन, सं. पुं. (सं. न.) परि-, भ्रामणं, व्या-परि,-वर्तनम् २. विलोडनम् ३. पुनः पुनर्भावः, आवृत्तिः (सब स्त्री.)।
आवर्तनी, सं. स्त्री. (सं.) वुषा, २. दर्वी, मुषा ३. चमसः-सम।
आवलित, वि. (सं.) ईषद्वक्र, वक्रीभूत।
आवली, सं. स्त्री. (सं.) आवलिः, पंक्तिः, ततिः (सब स्त्री.)।
आवश्य, सं. पुं. (सं. न.) आवश्यकता २-३. अनिवार्य,-कार्य-फलम्।
आवश्यक, वि. (सं.) अवश्यकर्तव्य, शीघ्रकार्य, गुर्वर्थ २. अनिवार्य।
आवश्यकता, सं. स्त्री. (सं.) आवश्यकत्वं, अपेक्षा ३. प्रयोजनम्।
आवश्यकीय, वि., दे. 'आवश्यक'।
आवा, सं. पुं., दे. 'आँवा'।
आवागमन, सं. पुं. (हिं. आना + सं. गमनम्) पुनरुत्पत्तिः (स्त्री.), पुनर्जन्मन् (न०), प्रेत्यभावः, देहान्तरप्राप्तिः (स्त्री.)।
आवाज, सं. स्त्री. (फ़ा.) शब्दः, नादः, स्वनः, ध्वनिः घोषः २. गानस्वरः ३. उच्चस्वरः।
—उठाना, मु., विपरीतं वद् (भ्वा. प. से.)।
—बैठना, मु., स्वरभंगः जन् (दि. आ. से.)।
आवारा, वि. स्त्री. (फ़ा.) परिभ्रमक, अकर्मण्य २. अज्ञातनिवास ३. दुर्वृत्त, जाल्म।
आवास, सं. पुं. (सं.) गृहं, गेहं, सदनम्।
आवाहन, सं. पुं. (सं. न.) मंत्रैर्देवताह्वानम्, आमंत्रणम् २. निमंत्रणम्।
आविर्भाव, सं. पुं. (सं.) प्रकाशनं प्राकट्यं, विवृतिः (स्त्री.) २. उत्पत्तिः (स्त्री.)।
आविर्भूत, वि. (सं.) प्रकटित, प्रकाशित २. उत्पन्न।
आविष्कर्ता, वि. (सं. कर्तृ) आविष्कारक, प्रकटयितृ, प्रकाशक, कल्पक।
आविष्कार, सं. पुं. (सं.) अज्ञाततत्त्वप्रकाशनम् २. अपूर्ववस्तुनिर्माणम् ३. प्रकाशः, प्राकट्यम्।
आविष्कारक, वि. (सं.) दे. 'आविष्कर्ता'।
आविष्कृत, वि. (सं.) प्रकटित, प्रकाशित २. प्रथमं निर्मित-रचित।

आविष्ट, वि. (सं.) भूतप्रेतादिपीडित २. अभिभूत ।

आवृत, वि. (सं.) प्र-समा-आ,-च्छादित, संवृत, पिहित २. परिवृत, वलयित ।

आवृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) अभ्यासः, क्रिया,-सातत्यं-प्रवन्धः २. अध्ययनम् ।

आवेग, सं. पुं. (सं.) आवेशः, चित्तोद्वेगः, उत्तेजनं, उद्दीपनम् २. त्वरा ३. संचारिभाव-भेदः (सा.) ।

आवेज़ा, सं. पुं. (फ़ा.) प्रालम्बः, लोलकः ।

आवेदक, वि. (सं.) निवेदक, प्रार्थिन् । (सं. पुं.) अभियोगिन् , वादिन् ।

आवेदन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'निवेदन' ।

आवेश, सं. पुं. (सं.) आवेगः, आतुरता २. व्याप्तिः (स्त्री.), संचारः ३. प्रवेशः ४. भूतबाधा ५. अपस्माररोगः ।

आवेष्टन, सं. पुं. (सं. न.) गोपनं, निगूहनम् २. अवगुंठनं, पिधानं, पुटः, कोशः ।

आवेष्टित, वि (सं.) अवगुंठित, आवृत ।

आशंका, सं. स्त्री. (सं.) संदेहः, संशयः २. अनिष्टभावना ३. भयं, त्रासः ।

आशंकित, वि. (सं.) भीत, त्रस्त ३. संदेहात्मक ।

आशंसा, सं. स्त्री. (सं.) अपेक्षा, आशा २. इच्छा, वाञ्छा ३. कथनम्, चर्चा ।

आशंसित, वि. (सं.) अपेक्षित, आकाङ्क्षित, इष्ट २. कथित, वर्णित ।

आशंसी, वि. (सं.-सिन्) आशंसु, अपेक्षी, आकांक्षक, प्रत्याशिन् ।

आशना, वि. (फ़ा.) परिचित, अभिज्ञ । सं.पुं. जारः,प्रणयिन् । सं.स्त्री. प्रेयसी, कान्ता ।

आशनाई, सं. स्त्री. (फ़ा.) मैत्री, सख्यम् । २. प्रणयः, अनु-रागः ।

आशय, सं. पुं. (सं.) तात्पर्यं, अभिप्रायः, अर्थः २. वासना ३. स्थानं, आधारः ४. गर्तः ।

आशा, सं. स्त्री. (सं.) आशंसा, आकांक्षा, अपेक्षा २. स्पृहा, वाञ्छा, मनोरथः ३. दिशा ४. दक्षप्रजापतेः पुत्री ५. रागभेदः ।

—करना, क्रि. अ., आशंस् (भ्वा. आ. से.) उत्-प्रति अप,-ईक्ष् (भ्वा. आ. से.), आशास् (अ. आ. से.) ।

—अतीत, वि. (सं.) आशंसाधिक ।

—वाद, सं. पुं. (सं.) सदाशावत्तासिद्धान्तः ।

—वान्, वि. (सं.) साश, आशान्वित ।

आशिक, वि. (अ.) प्रणयिन् , अनुरागिन् , आसक्त, अनुरक्त ।

आशिष, सं. स्त्री. (सं. आशिस्) दे. 'आशीर्वाद'।

आशीर्वाद, सं. पुं. (सं.) आशिस् (स्त्री.) आशीर्वचनं, हिताशंसनं, मंगलप्रार्थना, आशास्यं, शुभकामना ।

—देना, क्रि. स., आशिषं दा (जु. उ. अ.), टि.-प्रायः लोट् व आशीर्लिङ् के रूपों से (उ. पुत्रं आप्नुहि आप्याः वा) ।

आशु, क्रि. वि. (सं.) शीघ्रं, द्रुतं, सत्वरं (सब अव्य.) ।

—कवि, सं. पुं. (सं.) सद्यः काव्यकारः ।

—तोष, सं. पुं. (सं.) शिवः ।

आशुग, वि (सं.) शीघ्र-द्रुत-तीव्र,-गामिन् । सं. पुं. (सं.) वायुः २. बाणः ।

आश्चर्य, सं. पुं. (सं. न.) विस्मयः, कौतुकं, चमत्कारः, चित्रं, अद्भुतम ।

—करना, क्रि. अ., विस्मि (भ्वा. आ. अ.) ।

—जनक, वि. (सं.) विस्मापक, अद्भुत, विचित्र ।

आश्रम, सं. पुं. (सं.) तपोवनं, मुनिवसतिः (स्त्री.) २. मठः, विहारः ३. विश्रामशाला ४. मनुष्यायुषः चत्वारो विभागाः (ब्रह्मचर्य-गृहस्थवानप्रस्थसंन्यासाश्रमाः) ।

आश्रय, सं. पुं. (सं.) अव-आ,-लंबः आधारः २. अवष्टम्भः, उपघ्नः ३. शरणं, गतिः (स्त्री.) गृहं, सदनम् ।

—दाता, वि. (सं.-तृ) रक्षक, रक्षितृ, त्रातृ ।

आश्रित, वि. (सं.) आश्रयप्राप्त, अवलंबित २. अधीन, शरणागत । सं. पुं., सेवकः, दासः ।

आश्वासन, सं. पुं. (सं. न.) सान्त्वनं, आशा-प्रदानं, समाश्वासनं, प्रोत्साहनं, उत्तेजनम् ।

आश्विन, सं. पुं. (सं.) आश्वयुजः शारदः, इषः ।

आषाढ, सं. पुं. (सं.) अषाढः, शुचिः ।

आस, सं. स्त्री. (सं. आशा) आशंसा २. लालसा ३. आश्रयः ४. दिशा ।

आसक्त, वि. (सं.) तत्पर, लीन, मग्न, प्रसित २. अनुरक्त, बद्धराग, प्राणयिन् ।

आसक्ति, सं. स्त्री. (सं.) तत्परता, लीनता, मग्नता २. अनुरागः, प्रेमन् , कामः ।

आसन, सं. पुं. (सं. न.) उपवेशनप्रकारः

२. स्थितिः (स्त्री.) ३. अष्टांगयोगस्य तृतीयमंगम् ४. उपवेशनाधारः, पीठं ५. साधुवसतिः ६. नितम्बः ७. शत्रुदुर्गादीनवरुध्य स्थितिः।
—डोलना, मु., चेतो विकृ (कर्म.)।
आसन्न, वि. (सं.) समीप, निकट, निकटस्थ।
—प्रसवा, वि. स्त्री. (सं.) निकटप्रसूतिः (स्त्री.)
—भूत, सं. पुं., वर्तमानसंपृक्तो भूतकालः।
आस-पास, क्रि. वि. (अनु. आस+सं. पार्श्वः) परितः, अभितः (दोनों द्वितीया के साथ), समंततः, समंतात्, विष्वक्, सर्वतः (सब अव्य.)।
आसमान, सं. पुं. (फ़ा., सं. अश्मानः >) गगनं, दे. 'आकाश' २. स्वर्गः।
—के तारे तोड़ना, मु., असंभवानि कार्याणि कृ।
—को चूमना, |मु., गगनं चुम्ब् (भ्वा. प. से.),
—से बातें करना| अभ्रं कष् (भ्वा. प. से)।
आसमानी, वि. (फ़ा.) आकाशीय २. ईषन्नील।
आसरा, सं. पुं. (सं. आश्रयः) अवलंबः, आधारः २. भरणपोषणाशा ३. आश्रयदः ४. शरणं, गतिः (स्त्री.) ५. प्रतीक्षा ६. आशा।
—देना, क्रि. स., रक्ष् (भ्वा. प. से.)।
—लेना, क्रि. अ., आश्रि (भ्वा. उ. से.), शरणं गम्।
आसव, सं. पुं. (सं.) मद्यभेदः २. सुरा, मदिरा ३. औषधप्रकारः ४. दे. 'अरक'।
आसा, सं. स्त्री., दे० 'आशा'।
आसा, सं. पुं. (अ. असा) सुवर्णदंडः, रजतयष्टिः (पुं. स्त्री.)।
आसाइश, सं. स्त्री. (फ़ा.) सुखं, सौख्यम्।
आषाढ़, सं. पुं. दे. 'आषाढ'।
आसादन, सं. पुं. (सं. न.) प्राप्तिः-उपलब्धिः (स्त्री.) २. निधानम् ३. आक्रमणम् ४. पश्चादागम्य प्रापणम्।
आसादित, वि. (सं.) प्राप्त, लब्ध २. निहित, स्थापित ३. आक्रान्त ४. पश्चादागम्य गृहीत।
आसान, वि. (फ़ा.) सुकर, सुगम, सुखसाध्य।
आसानी, सं. स्त्री. (फ़ा.) सुकरता, सुगमता।
आसाम, सं. पुं. (सं. असम >) कामरूपाः, असमप्रान्तः, भारतस्य प्रान्तविशेषः।
आसामी, वि. (हिं. आसाम) असमप्रदेश,-विषयक-सम्बन्धिन्। सं. पुं., असम-कामरूप,-वासिन्-वास्तव्य। सं. स्त्री असमीया भाषा, असमी।

आसावरी, सं. स्त्री. (सं. आशावरी) श्रीरागस्य रागिणीभेदः।
आसीन, वि. (सं.) निषण्ण, उपविष्ट।
आसीस, सं. स्त्री., दे. 'आशीर्वाद'।
आसुर, वि. (सं.) राक्षस, पैशाच, असुरसंबंधिन्। सं. पुं. (सं.) असुरः।
आसुरी, वि. स्त्री. (सं.) असुरसंबंधिनी, राक्षसी, पैशाची।
—चिकित्सा, सं. स्त्री., शल्यचिकित्सा।
—माया, सं. स्त्री. पैशाचं छलम्।
—संपत्, सं. स्त्री. (सं-द्) पैशाची वृत्तिः (स्त्री.)।
आसोज, सं. पुं. (सं. आश्वयुजः) दे. 'आश्विन'।
आस्तरण, सं. पुं. (सं. न.) कुथः, गजपृष्ठस्थं चित्रकंबलम् २. शय्या, कुशासनम्।
आस्तिक, वि. (सं.) ईशवेदपरलोकविश्वासिन्। २. ईश्वरसत्तावादिन् ३. श्रद्धालु।
आस्तिकता, सं. स्त्री. (सं.) ईशवेदपरलोकेषु विश्वासः २. ईश्वरप्रत्ययः।
आस्तनी, सं. स्त्री. (फ़ा.) पिप्पलः, कोशनालिका, चोलादीनां बाहुभागः।
—का साँप, मु. गूढशत्रुः, गुप्तवैरिन्।
आस्था, सं. स्त्री. (सं.) श्रद्धा, भक्तिः (स्त्री.), अर्हणा, आदरः २. सभा, आस्थानम् ३. आलंबनं, अपेक्षा।
आस्थान, सं. पुं. (सं. न.) उपवेशनस्थलं, समामंडपः २. सभा।
आस्थित, वि. (सं.) उषित, कृतवास २. आश्रित ३. लब्ध ४. वेष्टित।
आस्पद, सं. पुं. (सं. न.) स्थानम् २. कार्यम् ३. प्रतिष्ठा ४. वंशः कुलम्।
आस्य, सं. पुं. (सं. न.) वदनं, तुंडम् २. मुखमंडलं, मुखम्।
आस्वादन, सं. पुं. (सं. न.) स्वादनं, रसनम्।
आह, अव्य. (सं. अहह) कष्टं, हा; हन्त, आः, हा, अहो (सब अव्य.)।
आह, सं. स्त्री. (फ़ा) निःश्वासः, उच्छ्वासः, दीर्घश्वासः।
—भरना, क्रि. अ., दीर्घं उत्-नि,-श्वस् (अ. प. से.)।
आहट, सं. स्त्री. (हिं. आना+हट प्रत्य.) पादशब्दः, चरणनिक्षेपध्वनिः २. विद्यमानतासूचकध्वनिः।

आहत, वि. (सं.) क्षत, व्रणित, विद्ध, भिन्नदेह २. गुण्यसंख्या ३. परस्परविरुद्ध (वाक्य) ४. सद्यःक्षालित ५. जीर्ण ६. कंपित। सं. पुं., पटहः।

आहरण, सं. पुं. (सं. न.) आच्छेदनं, सहसा आकलनम् २. अपनयनम् ३. आनयनम् ४. ग्रहणम्।

आहरन, सं. पुं. (सं. आहननम् >) शूर्मिः (स्त्री.), शूर्मी, स्थूणा।

आहाँ, अव्य. (अनु.) मा, न, नो, नहि।

आहा, अव्य, (सं. अहह) अहो, ही, आः।

आहार, सं. पुं. (सं.) भक्षणं, भोजनं, जेमनं, जग्धिः (स्त्री.) २. खाद्य-भक्ष्य,-सामग्री।

—विहार, सं. पुं. (–रौ) चर्या, वर्तनं, वृत्तं, आचारव्यवहारौ।

आहार्य, वि. (सं.) भक्ष्य, खाद्य २. ग्रहीतव्य ३. आहरणीय ४. कृत्रिम। सं. पुं., चतुर्थोऽनुभावः (सा.)।

अभिनय, सं. पुं. (सं.) वचनचेष्टारहितोऽभिनयः (सा.)।

आहिस्ता, क्रि. वि. (फ़ा.-तः) शनैः, मन्दम्।

—आहिस्ता, क्रि. वि., शनैः शनैः, मन्दं मन्दम्।

आहुति, सं. स्त्री. (सं.) हवनं, देवयज्ञः होमः, होत्रम् २. हवनसामग्री ३. सामग्र्याः सकृद होतव्या मात्रा।

—देना, क्रि. स., हु (जु. उ. अ.), यज् (भ्वा. उ. अ.)।

आहू, सं. पुं. (फ़ा.) मृगः, हरिणः।

आहूत, वि. (सं.) आकारित, आ-नि,-मंत्रित।

आहूति, सं. स्त्री. (सं.) आकारणं, आमंत्रणम्।

आह्निक, वि. (सं.) दैनिक, दैनंदिन, प्रात्यहिक। क्रि. वि. अहरहः, अनु-प्रति,-दिनम्। सं. पुं., दिनस्य कार्यम् २. महाभाष्यखण्डः ३. अध्यापकः ४. दैनिकी भृतिः (स्त्री.)।

आह्लाद, सं. पुं. (सं.) आनंदः, हर्षः, मोदः।

आह्लादक, वि. (सं.) आह्लादप्रद, हर्षजनक, आनन्ददायक।

आह्लादित, वि. (सं.) प्रसन्न, मुदित।

आह्वान, सं. पुं. (सं. न.) आहूतिः (स्त्री.), आकारणं, आमंत्रणम् २. आह्वानपत्रम् (= सम्मन) ३. यज्ञे देवताकारणम्।

—करना, क्रि. स., आह्वे (भ्वा. उ. अ.) आकृ (प्रे.) २. देवतां आवह् (प्रे.)।

इ

इ, देवनागरीवर्णमालायाः तृतीयः स्वरः, इकारः।

इंक, सं. स्त्री. (अं.) मशी, मषी, मसी।

इंगला, सं. स्त्री. (सं. इडा) मानवशरीरे वामपार्श्वस्था वक्रा नाडी।

इंगलिश, वि. (अं.) आंग्लदेशीय। सं. स्त्री. आंग्लभाषा।

इंगलिस्तान, सं. पुं. (अं. इंगलिश + फ़ा. स्तान) आंग्लदेशः।

इंगित, सं. पुं. (सं. न.) इङ्गः, संकेतः आकारः, दैहिकचेष्टा। वि. संकेतित।

इंगुदी, सं. स्त्री. (सं.) तापसतरुः, शूलारिः।

इंच, सं. पुं. (अं.) अंगुलः २. अत्यल्पं, रेखामात्रम्।

इंजन, सं. पुं. (अं. एंजिन) यंत्रम् २. वाष्पशकटीकर्षकयन्त्रम्।

इंजीनियर, सं. पुं. (एंजीनियर) यंत्रकारः, यंत्रकलाभिज्ञः, वास्तुविद्याविशारदः।

इंजेक्शन, सं. पुं. (अं.) सूचीभरणम्।

इंट्रैंस, सं. पुं. (अं.) (एंट्रैंस) द्वारं २. प्रवेशः ३. आंग्लविद्यालयस्य नवमदशमकक्षे (द्वि.)।

—परीक्षा, सं. स्त्री., प्रवेशिका परीक्षा।

इंडुवा, सं. पुं. (सं. गेण्डुकः >) घटाद्याधारभूतं शीर्षस्थं वर्तुलवस्त्रम्।

इंतज़ाम, सं. पुं. (अ.) संविधा, प्रबन्धः।

इंदिरा, सं. स्त्री. (सं.) पद्मा, कमला दे. 'लक्ष्मी'।

इंदीवर, सं. पुं. (सं. न.) नील,-कमलं-उत्पलम् २. कमलम्।

इंदु, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः २. कर्पूरः-रम्।

इंद्र, वि. (सं.) संपन्न २. श्रेष्ठ। सं. पुं., देवराजः, पाकशासनः, पुरंदरः, शक्रः, वज्रिन्, सुरपतिः, शचीपतिः, आखंडलः, सहस्राक्षः, नाकनाथः वज्रपाणिः २. सूर्यः ३. विद्युत् (स्त्री. ४. नृपः ५. ज्येष्ठानक्षत्रम् ६. चतुर्दशसंख्या ७. व्याकरणस्य आदिम आचार्यः ८. जीवः, प्राणाः।

—का अखाड़ा, सं. पुं. इन्द्रसभा २. संगीतसभा।

—जाल, सं. पुं. (सं. न.) मायाकर्मन् (न.), कुहकम्।

—जाली, वि. (सं.-लिन्) मायाविन्, कुहुककारिन्।
—जीत, सं. पुं. (सं.-जित्) मेघनादः।
—जौ, सं. पुं. (सं.-यवः) कुटज-शक्र,-बीजम्।
—धनुष, सं. पुं. (सं.-धनुस् न.) इन्द्रचापं. सुरधनुस्।
—नील, सं. पुं. (सं.) नील,-उपलः-मणिः (= नीलम)।
—नीलक, सं. पुं. (सं.) मरकतं, अश्मगर्भः, हरिन्मणिः (= ज़मुर्रद)।
—प्रस्थ, सं. पुं. (सं. न.) युधिष्ठिरनिर्मापितं दिल्लीसमीपवर्ति नगरम्।
—लोक, सं. पुं. (सं.) नाकः, स्वर्गः।
इंद्रा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'इन्द्राणी'।
इंद्राणी, सं. स्त्री. (सं.) शची, ऐन्द्री, पौलोमी, माहेन्द्री, पुलोमजा २. स्थूलैला ३. सूक्ष्मैला ४. निर्गुण्डी।
इंद्रानुज, सं. पु (सं.) विष्णुः।
इंद्रायन, सं. पुं. (सं. इन्द्राणी) सुरसा, निर्गुण्डी, सिंदुवारः।
—का फल, मु., बही रम्योऽन्तर्दुष्टः।
इंद्रायुध, सं. पुं. (सं. पुं. न.) इन्द्रचापः २. वज्र, पविः।
इंद्रिय, सं. स्त्री. (सं. न.) करणं, अक्षं, हृषीकं, ग्रहणं, विषयिन् (न.) २. जननेन्द्रियम् ३. वीर्यम् ४. 'पंच' इति संख्या।
—अर्थ, सं. पुं. (सं.) इंद्रियविषयः (रूपरसादि)।
—जित्, वि. (सं.) जितेन्द्रिय, हृषीकेशः।
—निग्रह, सं. पुं. (सं.) इन्द्रिय,-दमनं-जयः, दमः।
—वश, वि. (सं.) विषयिन्, विषयवशः।
इंधन, सं. पुं. (सं. न.) इध्मं. एधं, एधस् (न.)।
इं(एं)पायर, सं. पुं. (अं.) साम्राज्यम्, आधिराज्यम्।
इंपीरियलिज़्म, सं. पुं. (अं.) साम्राज्यवादः २. सम्राट्शासनम्।
इंपोर्ट, सं. पुं. (अं.) दे. 'आयात'।
इंसाफ, सं. पुं. (अ.) न्यायः, धर्मः २. निर्णयः विवेकः।
इन्स्टिट्यूट, सं. स्त्री. (अं.) संस्थानम्।
इन्स्टिट्यूशन, सं. स्त्री. (अं.) शिक्षालयः, विद्यालयः २. धर्मशाला ३. रीतिः (स्त्री.)

इन्स्ट्रूमेंट, सं. प्र. (अं.) उपकरणं, यन्त्रम् २. साधनम्।
इन्स्पेक्टर, सं. पुं. (अं.) निरीक्षकः, द्रष्टृ।
इक, वि., दे. एक।
इकट्ठा, वि, (सं. एकस्थ) एकीकृत, समवेत, गणीभूत।
—करना, क्रि. सं., एकत्र कृ; सं-नि,-चि (स्व. उ. अ.)।
इकट्ठे, क्रि. वि. (हिं. इकट्ठा) एकीभूय, संभूय, मिलित्वा।
इकतार, क्रि. वि. (सं. एकतारः >) सततं, निरन्तरम्।
इकतारा, सं. पुं. (सं. एकतारः >) एक,-तारः-तंत्रीकः. वाद्यभेदः।
इकतीस, वि. (सं. एकत्रिंशत् स्त्री. एक.) सं. पुं., उक्ता संख्या, तद्बोधकावंकौ (३१) च।
इकरार, सं. पुं. (अ.) प्रतिज्ञा, संगरः. प्रति-सं,-श्रवः २. अंगी-स्वी,-कारः।
—नामा, सं. पुं. (फ़ा.) प्रतिज्ञा-समय,-पत्रं-लेख्यम्।
इकलौता, सं. पुं. (सं. एकल >) भगिनी-भ्रातृ-हीनः, पित्रोः एकलः पुत्रः।
इकसठ, वि. (सं. एकषष्टिः स्त्री. एक.), सं. पुं. उक्ता संख्या, तद्बोधकावंकौ (६१) च।
इकसार, वि. (सं. एकसार >) समान, सदृश।
इकहत्तर, वि. (हिं. इक + सत्तर) एकसप्ततिः (स्त्री. एक.), सं. पुं. उक्ता संख्या तद्बोधकावंकौ (७१) च।
इकहरा, वि. (सं. एकस्तर) दे. 'एकहरा'।
इकाई, सं. स्त्री. (हिं. इक) एका व्यक्तिः (स्त्री.) २. एकांकः ३. त्रैराशिकम् (= इकाई का कायदा)।
इकानवे, वि. (हिं. इक + नवे) एकनवतिः (स्त्री. एक.), सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकावंकौ (९१) च।
इकावन, वि. (सं. एकपंचाशत् स्त्री. एक.) सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकावंकौ (५१) च।
इकासी, वि. (हिं. इक + अस्सी) एकाशीतिः (स्त्री. एक.) सं. पुं.- उक्ता संख्या तद्बोधकावंकौ (८१) च।
इकोतर, वि. (सं. एकोत्तर) एकाधिक।
इक्का, वि. (सं. एक) एकाकिन्, एकल।

२. अतुल्य, असम। सं. पुं., वाहन-यान-प्रवहण,-भेदः २. एकांकयुतं क्रीडापत्रम् ३. एकाकी योधः।

—दुक्का, वि. विरल २. मार्गभ्रष्ट ३. यूथभ्रष्ट।

इक्षु, सं. पुं. (सं.) मधु-गुड,-तृणः, महारसः, रसालः, पयोधरः।

—रस, सं. पुं. (सं.) मधुतृण,-सारः-द्रवः-निर्यासः।

—सार, सं. पुं. (सं.) गुडः।

इक्ष्वाकु, सं. पुं. (सं.) वैवस्वतमनोः पुत्रः सूर्यवंशीयः प्रथमनृपः।

—नंदन, सं. पुं. (सं.) श्रीरामचन्द्रः।

इख्तियार, सं. पुं. (अ.) प्रभावः, अधिकारः २. अधिकारक्षेत्रम् ३. सामर्थ्यम् ४. स्वामित्वम्।

इच्छा, सं. स्त्री. (सं.) स्पृहा, आकांक्षा, ईहा, वाञ्छा, अभिलाषः, मनोरथः, इष्टं, अभीष्टं, ईप्सितं, कामना।

—करना, क्रि. स. इष् (तु. प. से.), अभिलष्, वांछ् (दोनों भ्वा. प. से.) कम् (भ्वा. आ. से., कामयते), स्पृह् (चु., चतुर्थी के साथ), (सन्नंत रूपों से भी, उ. पढ़ने की इच्छा करता है=पिपठिषति)।

—अनुकूल, क्रि. वि. (सं. न.) यथारुचि, यथेच्छं, यथेष्टं, यथाकामम्।

—भेदी, सं. पुं. (सं.—दिन्) यथेष्टविरेचकमौषधम्।

इच्छित, वि. (सं.) अभीष्ट. वांछित, अभिलषित।

इच्छुक, वि. (सं.) इच्छु, अभिलाषिन्, आकांक्षिन्। (टि. सन्नंत रूपों से भी, उ० पढ़ने का इच्छुक=पिपठिषुः। तुमुन्नन्त रूप के बाद 'काम' वा 'मनस्' लगाकर भी, उ० जाने का इच्छुक=गन्तु,-कामः-मनाः)।

इजराय, सं. पुं. (अ.) प्रचालनं २. अनुष्ठानम्।

—डिगरी, सं. पुं. (अ.+अं. डिकरी) राजाज्ञासंपादनम्।

इजलास, सं. पुं. (अ.) अधिवेशनम् २. न्यायालयः।

इज़हार, सं. पुं. (अ.) प्रकाशनम् २. साक्ष्यम्।

इजाज़त, सं. स्त्री. (अ.) अनुमतिः (स्त्री.), अनुज्ञा २. आज्ञा, आदेशः।

इज़ाफ़ा, सं. पुं. (अ.) वृद्धिः (स्त्री.), दे.।

इजार, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'पाजामा'।

—बंद, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) दे. 'नाड़ा'

इजारा, सं. पुं. (अ.) पणः, समयः २. पट्टः, पट्टोलिका ३. स्वत्वम्।

इजारे (र) दार, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) पणकर्तृ, नियमकृत्।

इज्जत, सं. स्त्री. (अ.) सं-,मानः, आदरः।

—उतारना, मु., लघू-नि,-कृ।

—रखना, मु., अपमानात् रक्ष् (भ्वा. प. से.)।

इज्या, सं. स्त्री. (सं.) यज्ञः, यागः, होमः २.पूजा, अर्चा।

इटा(टै)लिकूस, सं. पुं. (अ.) वक्रमुद्राक्षराणि (न. बहु.)

इटालियन, सं. पुं. (अं.) इटलीवासिन् २. इटलीतः, आगतः वस्त्रभेदः ३. इटलीभाषा। वि. इटलीसम्बन्धिन्।

इठलाना, क्रि. अ. (हिं. ऐंठ) सगर्वं चेष्ट् (भ्वा. आ. से.) २. हावं दृश् (प्रे.) ३. परक्लेशाय अज्ञवत् आचर् (भ्वा. प. से.)।

इठलाहट, सं. स्त्री. (हिं. इठलाना) आटोपः, गर्वः २. हावभावः।

इडा, सं. स्त्री. (सं.) भूमिः (स्त्री.) २. गौः (स्त्री.) ३. वाणी ४. स्तुतिः (स्त्री.) ५-७ यज्ञपात्रदेवता-आहुति,-विशेषः ८. अन्नं, हविस् (न.) ९. नभोदेवता १०. दुर्गा ११. पार्वती १२. कश्यपपत्नी १३. वसुदेवपत्नी १४. बुधपत्नी १५. स्वर्गः १६. नाडीभेदः।

इतना, वि. [सं. एतावत् वा हिं. ई (यह)+तना (प्रत्य.)] एतावत्, एतन्मात्र, इयत् (स्त्री., एतावती, इयती)।

इतने में, क्रि. वि. एतावन्मध्ये; अत्रान्तरे २. अस्मिन्नेव समये।

इतमीनान, सं. पुं. (अ.) तोषः सं, शान्तिः (स्त्री.)।

इतमीनानी, वि. (अ.) विश्वसनीय, विश्वास्य।

इतर्, सं. पुं. (अ. इत्र) दे. 'अतर'।

इतर, वि. (सं) अन्य, अपर, पर २. नीच ३. सामान्य, साधारण।

—इतर, क्रि. वि., परस्परं; अन्योन्यं, मिथः (सब अव्य.)।

इतराश्रय, सं. पुं. (सं.) अन्योन्याश्रयः।

इतराना, क्रि. अ. (सं. उत्तरणं >) गर्व् (भ्वा. प. से.), प्रगल्भ् (भ्वा. आ. से.) ।

इतवार, सं. पुं. (सं. आदित्यवारः) रवि आदित्य भानु,-वारः-वासरः ।

इति, अव्य. (सं.) इति शम् , इत्योम् , समाप्तिसूचकमव्ययम् । सं. स्त्री., अवसानं, अन्तः, समाप्तिः (स्त्री.) ।

—कर्तव्यता, सं. स्त्री. (सं.) कर्मानुष्ठानविधिः (पुं.) ।

—वृत्त, सं. पुं. (सं. न.) पुरावृत्तं, (पुरातनी) कथा ।

—श्री, सं. स्त्री. (सं.) अन्तः, समाप्तिः (स्त्री.)

इतिहास, सं. पुं. (सं.) पुरावृत्तं, पूर्ववृत्तान्तः, पुराभूतम् ।

इत्तफ़ाक, सं. पुं. (अ.) संघटनं-ना, संघट्टनं-ना २. सौहार्दम् , साम्मत्यम् ३. अवसरः, अवकाशः ।

इत्तला, सं. स्त्री. (अ.) विज्ञापनं, ख्यापनं, सूचना, बोधनम् ।

इत्थं, क्रि. वि. (सं.) एवं, अनेन प्रकारेण ।

इत्थंभूत, वि. (सं.) ईदृश, एतादृश ।

इत्यादि, अव्य. (सं.) आदि, प्रभृति, आद्य (सब समासान्त में; उ. पिककाकादयः) ।

इत्यादिक, वि (सं.) दे. 'इत्यादि' ।

इत्र, सं. पुं. (अ.) दे. 'अतर' ।

इधर, क्रि. वि. (सं. अत्र) इतः, एतत्स्थानं प्रति २. अत्र, इह, अस्मिन् स्थाने ।

—उधर, क्रि. वि., इतस्ततः, अत्र-तत्र, अनियतस्थले २. उभयतः, उभयत्र ३. अभितः, परितः. (दोनों के साथ द्वितीया), सर्वतः, विश्वतः, समंततः, समन्तात् ।

—उधर की बात, मु., जन,-प्रवादः-श्रुतिः (स्त्री.) ।

—की उधर लगाना, मु., कलहं उद्दी (प्रे.) ।

—की दुनिया उधर होना, मु., असंभवं भवेत् चेत् ।

इन, सर्व., (हिं. इस) एतद् , इदम् ।

—दिनों, क्रि. वि., वर्तमाने, अद्यत्वे ।

इन, सं. पुं. (सं.) सूर्यः २. स्वामिन् ।

इनकमटैक्स, सं. पुं. (अं.) आयकरः ।

इनक़लाब, सं. पुं. (अ.) बृहत्परिवर्तनं, परिवर्तः । २. राज्यविप्लवः, प्रजाक्षोभः ।

इनकार, सं. पुं. (अ.) प्रत्याख्यानं, प्रति-नि,-षेधः ।

—करना, क्रि. सं., प्रति-नि,-षिध् (भ्वा. प. वे.)

इनकिशाफ़, सं. पुं. (अ०) आविर्भावः, प्राकाश्यं, प्राकट्यम् ।

इनकिसार, सं. पुं. (अ०) विनयः, नम्रत्वं-ता ।

इनफ्लुएंजा, सं. पुं. (अं) शीतज्वरः ।

इनसान, सं. पुं. (अ.) मनुष्यः ।

इनसानियत, सं. स्त्री. (अ.) मनुष्यत्वम् २. सज्जनता, शिष्टता ।

इनहिसार, सं. पुं. (अ.) अवलंबः, आश्रयः ।

इनाम, सं. पुं. (अ. इनआम) पुरस्कारः, पारितोषिकम् ।

इनायत, सं. स्त्री. (अ.) कृपा २. उपकारः ।

इने-गिने, वि. (अनु० इन+हिं. गिनना) कतिचन, स्तोकाः २. अल्पसंख्याकाः ।

इबारत, सं. स्त्री. (अ.) लेखः २. लेखशैली ।

इमरती, सं. स्त्री. (सं० अमृतम् >) कंकणी, मिष्टान्नभेदः ।

इमली, सं. स्त्री. (सं. अम्लिका) आम्लि (ली)-का,-चिंचा, तिंतिडि (डी) का २. अम्लिका-चिंचा,-फलम् ।

इमाम, सं. पुं. (अ.) पुरोहितः २. नेतृ ।

—बाड़ा, सं. पुं. (अ.+हिं.) मुहर्रमपर्वानुष्ठानवाटः ।

इमारत, सं. स्त्री. (अ.) भवनं, गृहम् ।

इम्तहान, सं. पुं. (अ.) परीक्षा ।

इम्ला, सं. स्त्री. (अ.) श्रुतलेखः २. अक्षर-वर्ण,-विन्यासः ।

इयत्ता, सं. स्त्री. (सं.) सीमा, परिमाणम् ।

इरादा, सं. पुं. (अ.) संकल्पः, निश्चयः ।

इरावती, सं. स्त्री. (सं.) कश्यपसुता २. नदी-विशेषः (=रावी) ३. ओषधिभेदः (=पत्थरचट) ।

इर्द-गिर्द, क्रि. वि. (अनु० इर्द+फ़ा. गिर्द) परितः, अभितः, सर्वतः २. उभयतः, इतस्ततः ।

इलज़ाम, सं. पुं. (अ.) अभियोगः, दोष-, आरोपः ।

इलहाम, सं. पुं. (अ.) देववाणी ।

इला, सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी २. पार्वती ३. वाणी ४. बुद्धिमती नारी ५. गौः (स्त्री.) ।

इलाका, सं. पुं. (अ.) प्रदेशः, भूभागः । २. संबंधः ।

इलाज, सं. पुं. (अ.) चिकित्सा, उपचारः २. औषधं, औषधिः (स्त्री.) ३. युक्तिः (स्त्री.) प्रती (ति) कारः।

इलायची, सं. स्त्री. (सं. एला) (बड़ी) एला, चंद्रवाला, बहुला, त्रिदिवा २. (छोटी) कुंतिः- त्रुटिः (स्त्री.). नंदिनी।

—दाना, सं. पुं., (हिं+फ़ा) एलाबीजम् २. कुंतिबीजम् २. तद्बीजयुक्तो मिष्टान्नभेदः।

इलाही, वि. (अ.) दैव, ईश्वरीय। सं. पुं., ईश्वरः।

इल्म, सं. पुं. (अ.) विद्या, ज्ञानम्।

इल्लत, सं. स्त्री. (अ.) रोगः २. बाधा ३. अपराधः ४. व्यसनम्।

इव, अव्य. (सं.) यथा, तुल्य, सदृश, समान,-वत्।

इशारा, सं. पुं. (अ.) संकेतः, इंगितम् २. संक्षिप्तकथनम् ३. गुप्तप्रेरणा।

इश्क, सं. पुं. (अ.) अनुरागः, प्रणयः।

इश्तहार, सं. पुं. (अ.) विज्ञापनं, विज्ञप्तिः (स्त्री.) २. घोषणा, ख्यापनम्।

इषु, सं. पुं. (सं.) बाणः, सायकः।

इषुधी, सं. पुं. (सं.-धिः) तूणीरः, तूणी।

इष्ट, वि. (सं.) वांछित, अभिलषित, आकांक्षित २. अभिप्रेत ३. पूजित। सं. पुं, (सं. न.) धर्मकृत्यं, अग्निहोत्रादिकर्माणि २. कुलदेवः ३. मित्रम् ४. अरिंडः ५. इष्टका।

—देव, सं. पुं. (सं.) कुलदेवता।

—देवता, सं. स्त्री. (सं.) आराध्यदेवः।

इष्टापूर्त, सं.पुं. (सं.न.) यज्ञखातादिकर्मन्(न.)।

इष्टि, सं. स्त्री. (सं.) अभिलाषः २. यज्ञः ३. पतंजलिकृतो व्याकरणनियमः।

इस, सर्व. (सं. एषः) एतद्, इदम्।

इसपंज, सं. पुं. (अं. स्पंज) शुषिरदेहपिंडः २. परान्नपुष्टः।

इसबगोल, सं. पुं. (फ़ा. यशबगोल) श्लक्ष्ण-स्निग्ध,-जीरकः।

इसरार, सं. पुं. (अ.) आग्रहः, दे०।

इसलाम, सं. पुं. (अ.) मोहम्मदीयधर्मः। २. ईश्वरेच्छा-,स्वीकारः।

इसलामी, मोहम्मदीयधर्मसम्बधिन्।

इसे, सर्व. (हिं. इस) १. (इसको) एतं (पुं.), एतां (स्त्री.), एतद् (न.), इमं (पुं.), इमां (स्त्री.), इदम् (न.) २. (इसके लिए) एतस्मै (पुं. न.), एतस्यै (स्त्री.) अस्मै (पुं. न.), अस्यै (स्त्री.)।

इस्तरी, सं. स्त्री. (सं. स्तरी >) स्तरणी, रजकलोहः-हम्।

इस्तिक़बाल, सं. पुं. (अ.)प्रत्युद्गमनं, प्रत्युद्व्रजनम्। स्वागतम्, सत्कारः।

इस्तिग़ासा, अभियोगः, भाषापादः।

इस्तीफ़ा, सं. पुं. (अ. इस्तैफा) त्यागपत्रम्।

इस्तेमाल, सं. पुं. (अ.) उपयोगः, व्यवहारः, प्रयोगः।

इह, क्रि. वि. (सं.) अत्र २. भूलोके। सं. पुं., भूलोकः।

—लीला, सं. स्त्री. (सं.) जीवनम्।

इहाता, सं. पुं. (अ.) वाटः-टी, प्रांगणं-नं, परिसरभूमिः (स्त्री.)।

ई

ई, देवनागरीवर्णमालायाः चतुर्थः स्वरवर्णः, ईकारः।

ईंगुर, सं. पुं. (सं. हिंगुलः-लम्) हिंगुलिः, हिंगुलु (पुं. न.), सिन्दूरम्।

ईंट, सं. स्त्री. (सं. इष्टका) इष्टिका। (पक्की) झरका, पक्वेष्टका, अमृतेष्टका २. इष्टकाकारो धातुखंडः।

—से ईंट बजाना, मु., ध्वंस्-उन्मूल्-विनश्-निपत् (सब प्रे.)।

—पत्थर, मु., नं किमपि, न किंचित्।

डेढ़ वा ढाई ईंट की मस्जिद अलग बनाना, मु., असामान्यं आचर(स्वा. प. से.)।

ईंधन, सं. पुं., दे. 'इंधन'।

ईक्षक, सं. पुं. (सं.) दर्शकः, वीक्षकः २. चिन्तकः।

ईक्षण, सं. पुं. (सं. न.) अवलोकनं, दर्शनम् २. नेत्रम् ३. विवेचनम्।

ईक्षा, सं. स्त्री. (सं.) दर्शनं, वीक्षणम्। विवेचनं, पर्यालोचनम्।

ईख, सं स्त्री. दे. 'इक्षु'।

ईज़ा, सं. स्त्री. (अ.) कष्टं, क्लेशः।

ईजाद, सं. स्त्री., दे. 'आविष्कार'।

ईठि, सं. स्त्री. (सं. इष्टिः) सख्यं, सौहार्दम् २. प्रयत्नः।

ईति, सं. स्त्री. (सं.) कृषेः षट् उपद्रवाः (यथा-अतिवृष्टिः, अनावृष्टिः, शलभाः, मूषिकाः, खगाः, शत्रोराक्रमणम्) २. विघ्नः ३. दुःखम् ।

ईथर, सं. पुं. (अं.) दक्षु (न.), आष्ट्रम् ।

ईद, सं. स्त्री. (अ.) यवनोत्सवभेदः ।

—का चाँद, मु., दिवाप्रदीपः, दुर्लभदर्शनः ।

ईदृश, क्रि. वि. (सं. न.) इत्थं अनेन प्रकारेण । वि., दे. 'ऐसा' ।

ईप्सा, सं. स्त्री. (सं.) इच्छा, अभिलाषः ।

ईप्सित, वि. (सं.) अभिलषित, इष्ट ।

ईमान, सं. पुं. (अ.) धर्मः २. सत्यम् । ३. आस्तिक्यबुद्धिः (स्त्री.) ४. श्रद्धा ।

—दार, वि. (अ.+फ़ा.) धार्मिक, न्यायवर्तिन् २. निष्कपट ३. आस्तिक ४. विश्वसनीय ।

ईरान, सं. पुं. (फ़ा.) पारसीकः ।

ईरानी, वि. पारस (—सी स्त्री.) । सं. स्त्री., पारसी, पारसीकभाषा । सं. पुं., पारसीकाः, पारसीकवासिनः (बहु.) ।

ईर्ष्या, सं. स्त्री. (सं.) मत्सरः, मात्सर्यं, परोत्कर्षासहिष्णुता, असूया ।

ईर्ष्यालु, वि. (सं.) मत्सरिन्, असूयक, ईर्ष्यिन्, परोत्कर्षासहन ।

ईश, सं. पुं. (सं.) प्रभुः, पतिः, स्वामिन् २. परमेश्वरः ३. नृपः ४. शिवः ५. 'एकादश' इति संख्या ।

ईशान, सं. पुं. (सं.) स्वामिन्, प्रभुः २. महादेवः, ३. पूर्वोत्तरदिक्कोणः ।

ईश्वर, सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः, परमात्मन्, जगदीश्वरः, परमेशः २. स्वामिन् ३. शिवः । वि., आढ्य ।

—प्रणिधान, सं. पुं. (सं. न.) ईश्वरे श्रद्धातिशयः, स्वकर्मणामीश्वरार्पणम् ।

ईश्वरीय, वि. (सं.) दिव्य, दैव, ईशसंबंधिन् ।

ईषत्, अव्य. (सं.) अल्पं, स्तोकं, न्यूनम् ।

ईसबगोल, सं. पुं., दे. 'इसबगोल' ।

ईसवी, वि. (फ़ा.) खिस्तसंबंधिन् ।

—सन्, सं. पुं. (फ़ा+अ.) खिस्ताब्दः ।

ईसा, सं. पुं. (अ.) खिस्तः, जीसुः ।

ईसाई, वि. (फ़ा.) खिस्तानुयायिन् ।

ईहा, सं. स्त्री. (सं.) चेष्टा २. उद्योगः ३. अभिलाषः ४. लोभः (डि.) ।

उ

उ, देवनागरीवर्णमालायाः पंचमः स्वरवर्णः, उकारः ।

उंकुण, सं. पुं. (सं.) मत्कुणः, तल्पकीटः ओकणः ।

उँगली, सं. स्त्री. (सं. अंगुली), अंगुलः, अंगुरी, करशाखा (उँगलियों के क्रमशः नाम—अंगुष्ठः, तर्जनी, मध्यमा. अनामिका, कनिष्ठा) ।

—का पटाखा, सं. पुं., अंगुलीमोटनं, मुचुटी ।

उँगलियों पर नचाना, मु., यथेच्छं कृ (प्रे.) ।

—उठाना, मु., निन्द् (भ्वा. प. से.), अधिक्षिप् (तु. प. अ.) २. मनागपि अपकृ ।

कानी—, सं. स्त्री., कनिष्ठा ।

कानों में उँगली देना, मु., औदासीन्येन परवचनानि न श्रु (भ्वा. प. अ.) ।

दाँतों तले उँगली दबाना, मु., अत्यर्थं विस्मि (भ्वा. आ. अ.), चकितचकित (वि.) भू ।

पाँचों उँगलियाँ घी में होना, मु., सर्वथा समृध् (दि. प. से.) ।

उँचन, सं. स्त्री. (सं. उदंचनम् >) खट्वायाः पादभागस्था रज्जुः (स्त्री.) ।

उंचास, वि., दे. 'उनचास' ।

उंछ, सं. स्त्री. (सं. पुं.) उपात्तशस्यात् क्षेत्रात् शेषावचयनम्, उञ्छनम् ।

—वृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) उञ्छेन जीवननिर्वाहः । वि., उञ्छशील ।

उँजियारी, उँज्यारी, सं. स्त्री. (हिं. उजारा) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना । वि. स्त्री., चन्द्रिकाप्रकाश,-युता ।

उँजेरा, उँजेला, सं. पुं., दे. 'उजाला' ।

उँडेलना, क्रि. स. (सं. अव+हिं. डालना ?) प्र-, स्रु (प्रे.) निर्गल् (प्रे.), प्रस्यंद् (प्रे.), च्युत् (प्रे.) ।

उंदन, सं. पुं. (सं. न.) क्लेदनं, आर्द्रीकरणम् ।

उंदुर, सं. पुं. (सं. उंदरुः) मूष (षि) कः ।

उँह, अव्य. (अनु.) घृणोपेक्षानिषेधपीडादिसूचकमव्ययम्, धिक्, न, नहि, आः, हा इ० ।

उऋण, वि. (सं. उत्+ऋण) अनृण, ऋणमुक्त ।

उकड़ूँ, सं. पुं. (सं. उत्कुतोरु) उपवेशनप्रकारविशेषः ।

—बैठना, क्रि. अ., अवनतसक्थि आस् (अ. आ. से.) ।

उकताना, क्रि. अ. (सं. उत्क>) खिद्—निर्विद् (दि. आ. अ.) उद्विज् (तु. आ. अ.)।

उकताया हुआ, वि. खिन्न, निर्विण्ण।

उकसना, क्रि. अ. (सं. उत्कर्पणं>) सं-वि,-क्षुभ् (दि. प. से.), उत्-सं.,-तप् (दि. आ. अ.) २. उद्गम्, उन्नम् (भ्वा. प. अ.) ३. प्ररुह् (भ्वा. प. अ.) ४. विश्लिष् (दि. प. अ.)। सं. पुं., संक्षोभः, संतापः, उद्गमः, प्ररोहः, विश्लेषः।

उकसाना, क्रि. स. (हिं. उकसना) उत्तिज्, उद्दीप्, प्रोत्सह्, सं-वि,-क्षुभ्, प्रचुद् (सब प्रे.) २. उत्था-उद्गम् (प्रे.) ३. अपसृ (प्रे.)। सं. पुं., उत्तेजनं, उद्दीपनं, उत्थापनं, अपसारणम्।

उक्त, वि. (सं.) कथित, उदित, भाषित, लपित, व्याहृत, उदीरित।

उक्ति, सं. स्त्री. (सं.) कथनं, वचनम् २. अद्भुत-वाक्यम् ३. संमतिः (स्त्री.)।

उक्थ, सं. पुं. (सं. न.) सामवेदः २. स्तोत्रं ३. प्राणः।

उक्षा, सं. पुं. (सं. उक्षन्) वृषभः २. सूर्यः।

उखड़ना, क्रि. अ. (सं. उत्खननम्) उन्मूल्, उत्खन्, समूलं उद्वह् (सब कर्म.) २. (दृढ-स्थितेः) पृथक् भू ३. संधेः चल् (भ्वा. प. से.) वा त्रुट् (दि. प. से.) ४. स्वर-ताल,-च्युत (वि.) भू (संगीत) ५. अपसृ (भ्वा. प. अ.), विद्रु (भ्वा. प. अ.) ६. सीवनं त्रुट् सं. पुं., उन्मूलनं, उत्खननं; संधेश्चलनं; स्वर-ताल,-भंग; अपसरणं, सीवनत्रोटनम्।

दम—, मु., स्वरभंगः २. प्राणनिष्क्रमणम्।

पैर—, मु., विद्रवणं, पलायनम्।

उखड़वाना, क्रि. प्रे. (हिं. उखड़ना) अन्येन उन्मूल्—उत्पट्—उत्खन्—व्यपरुह्—उच्छिद् (सब प्रे.)।

उखली, सं. स्त्री. (सं. उलूखलम्) उदूखलम्।

उखा, सं. स्त्री., (सं.) स्थाली. दे. 'देग'।

उखाड़, सं. स्त्री. (हिं. उखाड़ना) उन्मूलनं, उत्पाटनं, उत्खननम्।

उखाड़ना, क्रि. स. (हिं. उखड़ना) उन्मूल्—उत्पट्—उत्खन्—व्यपरुह्—उच्छिद् (सब प्रे.) २. सन्धि चल् (प्रे.) ३. वि-परा,-जि (भ्वा. आ. अ.) ४. अपसृ (प्रे.) ५. विनश् (प्रे.)

गड़े मुर्दे—मु. विस्मृतकलहान् पुनः उद्दीप् (प्रे.)।

उगना, क्रि. अ. (सं. उद्गमनम्) उद्गम् (भ्वा. प. अ.), उदि (= उत्+इ; अ. प. अ.), उदय् (= उत्+अय्, भ्वा. आ. से.) २. स्फुट् (तु. प. से.), उद्भिद् (कर्म.) प्ररुह् (भ्वा. प. अ.) ३. उत्पद् (दि. आ. अ.), जन् (दि. आ. से.)। सं. पुं. उद्गमः, उदयः, उद्भेदः, प्ररोहः, प्र-, स्फुटनम्, उत्पत्तिः (स्त्री.)।

उगा हुआ, वि., उद्गत, उदित; उद्भिन्न, प्ररूढ; प्र-, स्फुटित, उत्पन्न।

उगलना, क्रि. स. (सं. उद्गिरणम्) उद्गॄ (तु. प. से.), वम् (भ्वा. प. से.), छर्द् (चु.)। २. अन्यायप्राप्तधनं प्रतिदा (जु. उ. अ.) ३. गोपनीयं प्रकाश् (प्रे.) ४. बहिष्कृ (तं. उ. अ.)।

ज़हर—, मु., अरुंतुदं वचनं वद् (भ्वा. प. से.)

उगलवाना, क्रि. प्रे. (हिं. उगलना) वम्-उद्गॄ (प्रे.) २. अपराधं स्वीकृ (प्रे.) ३. अन्यालब्धं धनं प्रतिदा (प्रे. प्रतिदापयति)।

उगाना, क्रि. स., (हिं. उगना) प्ररुह् (प्रे.), (अन्नादिकं) उत्पद् (प्रे.) ३. प्रहाराय शस्त्रादिकं उन्नम् (प्रे.)।

उगार, सं. पुं. (सं. उद्गार>) निपीडित-निर्गलित-निर्गालित्,-जलम्।

उगाल, सं. पुं. (सं. उद्गारः) मुखस्रावः, लाला २. कफः, श्लेष्मन् (पुं.) ३. जीर्ण-वस्त्रम्।

—दान, सं. पुं., प्रतिग्राहः, पतद्ग्रहः।

उगालना, क्रि. स. (हिं. उगलना) उद्गॄ (तु. प. से.) २. रोमंथायते (ना. धा.)।

उगाहना, क्रि. स. (सं. उद्ग्रहणम्>) (करं ऋणं वा) समाहृ (भ्वा. उ. अ.), संभृ (जु. उ. अ.), अव-वि-सं-नि,-चि (स्वा. उ. अ.)।

उगाही, सं. स्त्री. (हिं. उगाहना) (धनस्य) समाहारः, संभरणं, संग्रहणं, समुच्चयनम् २. संभृतं धनम् ३. भूमिकरः ४. ऋणादिकस्य अंशशः संग्रहणम् ५. कुसीदं, वार्द्धुष्यवृत्तिः (स्त्री.)।

उग्र, वि. (सं.) प्रचंड, तीव्र, प्रबल, घोर, रौद्र। सं. पुं. (सं.) शिवः २. विष्णुः ३. सूर्यः।

उग्रता, सं. स्त्री. (सं.) प्रचण्डता, भयंकरता, निर्दयता, उद्दण्डता ।
उग्रसेन, सं. पुं. (सं.) कंसजनकः ।
उग्रा, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा, महाकाली २. कर्कशा नारी ३. वचा ४. छिक्किकौषधम् ।
उघड़ना, क्रि. अ. (सं. उद्घटनम्) उद्घट् (कर्म.) अपा-वि,-वृ (कर्म.) २. नग्नी-विवस्त्री,-भू ३. प्रकाश् (भ्वा. आ. से.) ४. रहस्यं भिद् (कर्म.) ।
उघाड़ना, क्रि. स. (हिं. उघड़ना) उद्घट् (प्रे.) अपा-वि,-वृ (स्वा. उ. से.) २. नग्नी-विवस्त्री,-कृ ३. प्रकट् (प्रे.) ४. रहस्यं भिद् (प्रे.) ।
उघाड़ा, वि. (हिं. उघाड़ना) विवस्त्र, नग्न २. प्रत्यक्ष ३. प्रकाशित ।
उचकन, सं. पुं. (हिं. उचकना) आधारः, अवलंबः, पात्रादिकस्याधारभूतः प्रस्तरखंडः ।
उचकना, क्रि. अ. (सं. उच्चकरणं >) प्रपदेन उत्स्था (भ्वा. प. अ.), पादाग्रेण कायं उन्नम् (प्रे.) २. उत्प्लु (भ्वा. आ. अ.) ।
उचकाना, क्रि. स. (हिं. उचकना) उचकना के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप ।
उचक्का, सं. पुं. (हिं. उचकना) वंचकः, प्रतारकः, धूर्त्तः २. ग्रंथि,-छेदकः-चौरः ।
उचटना, क्रि. अ. (सं. उच्चटनम् >) विश्लिष् (दि. प. अ.), विघट् (भ्वा. आ. से.), वियुज् (कर्म.) २. विरज् (कर्म.), उपेक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।
उचरना, क्रि. स., दे. 'बोलना' ।
उचटाना, क्रि. स. (सं. उच्चाटनम् >) विश्लिष्-विघट्-विच्छिद् (प्रे.) ।
उचाट, सं. पुं. (सं. उच्चाटः >) विरक्तिः (स्त्री.), वैराग्यं, औदासीन्यं, अन्यमनस्कता । वि., उदासीन, विरक्त ।
—होना, क्रि. अ. निर्विद्-खिद् (दि. आ. अ.) ।
उचंड, वि. (सं.) प्रचण्ड, अत्युग्र २. क्रुद्ध, कुपित ३. अधीर ।
उचित, वि. (सं.), युक्त, संगत, उपपन्न ।
उच्च, वि. (सं.) उन्नत, उच्छ्रित, उत्,-तुंग, उद्गत २. उत्तम, श्रेष्ठ ।
उच्चय, सं. पुं. (सं.) निचयः, निकरः २. चयनम् ३. अभ्युदयः ।
उच्चता, सं. स्त्री. (सं.) उच्छ्र (च्छ्रा) यः, आरोहः, उत्सेधः, तुङ्गता २. श्रेष्ठत्वं, महत्त्वम् ।
उच्चाटन, सं. पुं. (सं. न.) विश्लेषणं, पृथक् करणम् २. उत्पाटनं, उन्मूलनम् ३. तांत्रिकाभिचारभेदः ४. विरक्तिः (स्त्री.) ।
उच्चार, सं. पुं. (सं.) भाषणं २. पुरीषम् ।
उच्चारण, सं. पुं. (सं. न.) उदीरणं, भाषणम् २. भाषणविधिः ।
—करना, क्रि. स., उच्चर्-उदीर् (प्रे.), व्याहृ (भ्वा. प. अ.), गद्-वद् (भ्वा. प. से.) ।
उच्चारित, वि. (सं.) उदीरित, उदित, भाषित, व्याहृत ।
उच्चावच, वि. (सं.) उत्तमाधम, उत्कृष्टापकृष्ट, उत्तराधर, उन्नतावनत ।
उच्चित, वि. (सं.) संगृहीत, संचित ।
उच्चैःश्रवा, सं. पुं. (सं.-श्रवस्) समुद्रमंथनजः श्वेतघोटकः २. एड, ईषद्-, वधिरः ।
उच्छलन, सं. पुं. (सं. न.) उत्,-पतनं-प्लवनं, वल्गनम् ।
उच्छिन्न, वि. (सं.) खण्डित, लून २. उन्मूलित ३. नष्ट ।
उच्छिष्ट, वि. (सं.) भुक्तावशिष्ट, जुष्ट २. व्यवहृतचर । सं. पुं. भुक्तावशिष्टवस्तु (न.), जुष्टं २. मधु (न.) ।
उच्छू, सं. पुं. (अनु.) जलादिरोधजः कासभेदः ।
उच्छृंखल, वि. (सं.) निरंकुश, स्वैरिन्, उद्दाम, उद्दण्ड, अशिष्ट, अविनीत २. उत्सूत्र, विधि-क्रम-नियम,-विरुद्ध ।
उच्छेद, सं. पुं. (सं.) उन्मूलनं, उत्पाटनं, विश्लेषणं, खण्डनम् २. नाशः, ध्वंसः ।
—करना, क्रि. स., उन्मूल्-उत्पट्-विश्लिष्-नश् (प्रे.) ।
उच्छेदन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'उच्छेद' ।
उच्छ्वास, सं. पुं. (सं.) आहरः, आनः २. श्वासः ३. ग्रन्थपरिच्छेदः ।
उछंग, सं. पुं. (सं. उत्संगः) क्रोडम् २. हृदयम् ।
उछल-कूद, सं. स्त्री. (हिं. उछलना-कूदना) क्रीडा, खेला, विहारः, कूर्दनं, क्रीडाकूर्दनम् २. चांचल्यं, अधीरता ।
उछलना, क्रि. अ. (सं. उच्छलनम्) उच्छल्-वल्ग् (भ्वा. उ. से.) उत्प्लु (भ्वा. आ. अ.), उत्पत् (भ्वा. प. से.) २. अत्यन्तं प्रसद्

(भ्वा. प. अ.) ३. तॄ (भ्वा. प. से.)। सं. पुं., उच्छलनं, उत्पतनं, उत्-, प्लवनं, वल्गितं, प्लवः, झंपः-पा।

उछाल, सं. स्त्री. (सं. पुं.) दे. 'उछलना' सं. पुं.। २. प्लवनावधिः, प्लुतिसीमा ३. वमनम्।

उछालना, क्रि. स. (सं. उच्छालनम्) उच्छल् (प्रे.), उत्क्षिप् (तु. प. अ.) २. प्रकट् (प्रे.)।

उछाह, सं. पुं. (सं. उत्साहः) उत्सुकता, व्यग्रता २. हर्षः, आनन्दः ३. उत्सवः ४. रथयात्रा।

उजड़ना, क्रि. अ. (सं. अवजटनम् >) विजन-निर्जन (वि.) भू २. नि-अव,-पत् (भ्वा. प. से.), स्रंस्-भ्रंश् (भ्वा. आ. से.) ३. क्षयं या (अ. प. अ.)।

उजड्ड, वि. (सं. उत्+जड >) जड, मूढ़, अज्ञ २. असभ्य, अशिष्ट ३. उद्दंड, निरंकुश।

उजवक, सं. पुं. (तु.) जातिविशेषः २. मूर्खः।

उजरत, सं. स्त्री. (अ.) भृतिः (स्त्री.), वेतनम् २. कर्मण्या, निष्क्रयः।

उजलत, सं. स्त्री. (अ.) शीघ्रता, त्वरा।

उजला, वि. (सं. उज्ज्वल) श्वेत, शुक्ल, शुभ्र, धवल, सित, धौत, गौर २. स्वच्छ, निर्मल ३. दीप्त, दिव्य, प्रकाशमान।

उजागर, वि. (सं. उत्+जागरित >) प्रकाशमान २. प्रसिद्ध।

उजाड़, सं. पुं. (हिं. उजड़ना) जीर्ण-शीर्ण,-स्थानम् २. निर्जन-विजन,-स्थानम् ३. वनम्, अरण्यम्। वि., जर्जर, जीर्ण २. शून्य, विजन ३. एकान्त, निभृत।

उजाड़ना, क्रि. स. (हिं. उजड़ना) निर्जनी-शून्यी,-कृ, अवसद् (प्रे.) २. नि-अव,-पत् (प्रे.) वि-प्र,-नश् (प्रे.), प्र-वि,-ध्वंस् (प्रे.), उन्मूल्-उत्पट् (चु.)।

उजाड़ू, वि. (हिं. उजाड़ना) अतिव्ययिन् २. मुक्तहस्त।

उजाला, सं. पुं. (सं. उज्ज्वालः) प्रकाशः, आलोकः, द्युतिः-दीप्तिः (स्त्री.)। वि., उज्ज्वल, प्रकाशमान।

उजाली, सं. स्त्री. (हिं. उजाला) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना। वि. उज्ज्वला, दीप्ता।

उजास, सं. पुं. (हिं. उजाला) आलोकः, प्रकाशः।

उजियारी, सं. स्त्री. (हिं. उजारा) चन्द्रिका २. प्रकाशः ३. सती नारी।

उज्जयिनी, सं. स्त्री. (सं.) अवन्ती, विशाला, मालवराजधानी।

उज्ज्वल, वि. (सं.) देदीप्यमान, प्रदीप्त, रुचिर, भासुर २. विशद, निर्मल ३. श्वेत, सित ४. निष्कलंक, अकलुष।

उज्ज्वलता, सं. स्त्री. (सं.) दीप्तिः-कान्तिः (स्त्री.) २. स्वच्छता ३. धवलता ४. निष्कलंकता।

उटंग, वि. (सं. उत्तुंग >) क्षुद्रपरिमाण (वस्त्र)।

उटज, सं. पुं. (सं. पुं. न.) पर्ण,-शाला-कुटी, कुटीरः।

उठना, क्रि. अ. (सं. उत्थानम्) उत्था-समुत्था (भ्वा. प. अ.) २. उदय् (भ्वा. आ. से.), उद्-इ (अ. प. अ.), ३. उच्छल् (भ्वा. उ. से.) ४. जागृ (अ. प. से.) ५. उत्पद् (दि. आ. अ.) ६. सहसा आरभ् (भ्वा. आ. अ.) ७. सज्जीभू, उद्यत् (भ्वा. आ. से.) ८. परिस्फुट (वि.) भू ९. फेनायते (ना. धा.) १०. निष्पद्-समाप् (कर्म.) ११. (रीति आदि) विलुप् (दि. प. से.) १२. व्यय्-विनियुज् (कर्म.) १३. विक्री (कर्म.) १४. भित्त्यादयः क्रमशः निर्मा (कर्म.) १५. गोमहिष्यादीनां गर्भधारणेच्छा। सं. पुं. उत्थानं, उदयः, उत्पातः, उद्गमः, ऊर्ध्वगमनं, अधिरोहणं, उच्छलनं, जागरणं, सहसा आरंभः, सिद्धता, सज्जता, स्फुटनं, उत्सेकः, समाप्तिः (स्त्री.), पिधानं, विलोपः, व्ययः, विक्रयः, भाटकेन नियोगः।

उठती जवानी, सं. स्त्री., यौवनारंभः।

उठते-बैठते, क्रि. वि., प्रतिक्षणं, सर्वदा।

उठना-बैठना, मु., आचारः, व्यवहारः, शीलम्।

उठवाना, क्रि. प्रे. (हिं. उठना) अन्येन उत्था-उद्गम्-उन्नम् (प्रे.)।

उठाईगीरा, सं. पुं. (हिं. उठाना+फ़ा. गीर >) चौरः, मोषकः २. धूर्तः, कितवः।

उठान, सं. स्त्री. (सं. उत्थानम्) समुत्थानं, उद्गमनम् २. वृद्धिः (स्त्री.) ३. आरम्भः ४. व्ययः।

उठाना, क्रि. स. (हिं. उठना) उठना के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप बनाएँ ।

उठाव, सं. पुं. (हिं. उठाना) व्ययः २. उन्नतांशः ।

उठौनी, सं. स्त्री. (हिं. उठाना) उन्नयनं, उत्क्षेपणम् २. उत्थापनमूल्यम् ३. प्राग्दत्तं मूल्यम् ४. वणिग्भिः उद्धारः ५. देवपूजार्थं पृथग्धृतं धनम् ६. मृतस्यास्थिचयनरीतिः (स्त्री.) ६. मृत्योर्द्वितीये तृतीये वा दिने संबंधिपुरुषस्य उष्णीषपरिधापनरीतिः (स्त्री.) ।

उड़ंकू, वि. (हिं. उड़ना) गगनगामिन् २. चल ।

उड़द, सं. पुं. (सं. ऋद्ध >) दे. 'उरद' ।

उड़नखटोला, सं. पुं. (हिं उड़ना + खटोला) विमानम्, वायुयानम् ।

उड़नछू, वि. (हिं. उड़ना) लुप्त, अदृष्ट ।

उड़ना, क्रि अ. (सं. उड्डयनम्) उद्-, डी (भ्वा. तथा दि. आ. से.), उत्पत् (भ्वा. प. से.), खे विसृप् (भ्वा. प. अ.) २. सत्वरं गम् ३. तिरोभू, अन्तर्धा (कर्म.) ४. (सुरुङ्गादि) महाशब्देन विभिद् (कर्म.) ५. वि-प्र,-सृप् (भ्वा. प. अ.) ६. प्रचल्-प्रचर् (भ्वा. प. से.) ७. अभिमन् (दि. आ. अ.) ८. उत्-वि,-सृज् (कर्म.) ९. मलिनी भू १०. वायौ इतस्ततः स्फुर् (तु. प. से.) ११. सहसा विच्छिद् (कर्म.) १२. वंच् (चु.) १३. वल्ग् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., दे. 'उड़ान' ।

उड़ती खबर, सं. स्त्री. (हिं + अ.) किंवदंती ।

उड़ाऊ, वि. (हिं. उड़ाना) दे, 'उड़ंकू' २. अतिव्ययिन्, अतिमुक्तहस्त ।

उड़ाका, वि. (हिं. उड़ना) दे, 'उड़ंकू' २. वायुयानचालकः ।

उड़ान, सं. स्त्री. (सं. उड्डयनम्) डयनं, उत्पतनं, खे विसर्पणम् २. प्लुतिः (स्त्री.) ३. पलायनम् ४. प्रकोष्ठः ।

उड़ाना, क्रि. स. (हिं. उड़ना) 'उड़ना' के धातुओं के प्रे. रूप । २. चुर् (चु.) ३. अपसृ (प्रे.) ४. अपव्यय् (चु.) ५. तड् (चु.) ६. वाक्छलं कृ ७. ध्मा (भ्वा. प. अ.) ८. विलुभ् (प्रे.) ।

उड़िया, वि. (हिं. उड़ीसा) उत्कलः २. उत्कलप्रान्तवासिन् ३. उत्कलभाषा ।

उड़ीसा, सं. पुं. (सं. ओड्रदेशः) उत्कलः, उत्कलप्रान्तः ।

उडुंबर, सं. पुं. (सं.) दे. 'गूलर' २. देहली, गृहावग्रहणी ३. क्लीवः, नपुंसकः ४. कुष्ठरोगभेदः ।

उडु, सं. पुं. (सं. स्त्री. न.) नक्षत्रं, तारका २. तारासमूहः, राशिः ३. पक्षिन् ४. नाविकः ५. जलम् ।

—गण, सं. पुं. (सं.) तारासमूहः ।

—पति,—राज, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः, इन्दुः ।

उड़प, सं. पुं. (सं. उडुपः-पम्) प्लवः, तरणः, तारणः, तारकः २. नौका ३. चन्द्रः ।

उड़ेलना, क्रि, स. दे. 'उँडेलना' ।

उड्डयन, सं. पुं. (सं. न.) नभोगतिः (स्त्री.), दे. 'उड़ान' ।

उड्डीयमान, वि. (सं.) उड्डयनविशिष्ट, खे विसर्पत् (शतृ) ।

उतंग, वि. (सं. उत्तुंग) उच्छ्रित २. श्रेष्ठ ।

उतना, वि. (हिं. उस >) तावत् (-ती स्त्री.) । क्रि. वि., तावत् (न.), तावन्मात्रम् ।

—भी, तावदपि, तावन्मात्रमपि ।

उतरन, सं. स्त्री. (सं. अवतरणं >) जीर्ण-अवतारित,-वस्त्रम् ।

उतरना, क्रि. अ. (सं. अवतरणम्) अवतॄ-अवपत् (भ्वा. प. से.), अधोगम्-अवरुह् (भ्वा. प. अ.) २. परिक्षि (कर्म०), ह्रस् (भ्वा. प. से.) ३. (नस आदि का) संधेः चल् (भ्वा. प. से.), विसंधा (कर्म०) ४. (रंग) विवर्णी भू, म्लै (भ्वा. प. अ.) ५. (क्रोधादि) शम् (दि. प. से.), व्यपगम् ६. (डेरा करना) वस्-स्था (भ्वा. प. अ.), ७. (तस्वीर) आलोकलेख्यं अंक् (कर्म०) ८. सहसा विश्लिष् (दि. प. अ.) ९. (वस्त्रादि) उन्मुच्-अवतॄ-अपनी (कर्म.) १०. जन् (दि. आ. से.), अवतारं धृ (प्रे.) ११. (पकना) पच् (कर्म.) । क्रि. स., (सं. उत्तरणम्) स-उत्-, तॄ; उत्-, लंघ् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं., अवतारः, अवतरणं; अधोगमनं; ह्रासः; विसंधानं; विवर्णीभावः; ग्लानिः (स्त्री.); उपशमः; आलोकलेख्यांकनं; सहसा विश्लेषः अपनयनं; देहधारणं; पचनं, सम्-उत्,-तरणं उल्लंघनम् ।

उतरकर ;मु. ;हीन ;क्न ।

चित्त से—, मु. विस्मृ (कर्म.) २. अप्रिय (वि.) भू ।

चेहरा—, मु. म्लानमुख (वि.) भू ।

उतरा, वि. (हिं. उतरना) अवतीर्ण २. म्लान ३. खिन्न ४. धृतत्यक्त (वस्त्र) ।

उतराई, सं. स्त्री. (हिं. उतरना) अवतरणं, अधोगमनं २. उत्तरणम् ३. आतारः, तरपण्यम् ४. अवसर्पिणी भूमिः (स्त्री.) ५. गिरिनितम्बः ।

उतराना, क्रि. अ. (सं. उत्तरणम्) प्लु (भ्वा. आ. अ.), तॄ (भ्वा. प. से.) २. क्वथ्-तप्-पच् (कर्म.) ३. निरन्तरं अनुगम् ४. भास् (भ्वा. आ. से.) ५. अन्येन + अवत आदि के प्रे. रूप ।

उतरायल, वि. (हिं. उतारना) अवतारित, त्यक्त, जीर्ण (वस्त्रादि) ।

उतान, वि. (सं. उत्तान) ऊर्ध्वमुख (–खी स्त्री), अवपृष्ठशायिन् , उत्तानशय ।

उतार, सं. पुं. (सं. अवतारः) अवतरणं, नीचैर्गमनम् २. प्रावण्यं, अवसर्पिणी भूः (स्त्री.) ३. अवतरणोचितं स्थानम् ४. क्रमशः क्षयः ५. तीर्थम् ६. क्षीयमाणा वेला ७. निकृष्ट ८. शान्तिकरः उपहारः ९. प्रतिविषम् ।

—चढ़ाव, सं. पुं., आरोहावरोहौ २. लाभालाभौ ३. पातोत्पातौ ४. अस्थैर्यम् ।

उतारन, सं. पुं. (हिं. उतारना) दे. 'उतरायल' २. निकृष्ट–तुच्छ–त्याज्य,–वस्तु–पदार्थः ।

उतारना, क्रि. स. (हिं. उतरना) 'उतरना' के धातुओं के प्रे. रूप ।

उतारा, सं. पुं. (सं. अवतारः) निवेशः, समावासः २. अव-सं,-स्थितिः (स्त्री.) ३. उत्-, लंघनं ४. अवतरण-निवेश,-स्थानम् ५. प्रेतबाधानाशकः उपचारभेदः, तदर्थं वस्तुजातं वा ।

उतारू, वि. (हिं. उतरना) सन्नद्ध, सज्ज, सिद्ध ।

उतावला, वि. (सं. उत्त्वर) आशुकारिन् , सत्वर, अविलंबिन् , २. अविमृश्यकारिन् ३. उत्सुक ।

उतावली, सं. स्त्री. (सं. उत्त्वरा) त्वरा, तूर्णिः (स्त्री.), शीघ्रता, क्षिप्रता, वेगः २. व्यग्रता, चांचल्यम् । वि, स्त्री., सत्वरा, आशुकारिणी २. असमीक्ष्यकारिणी ३. उत्सुका ।

उतृण, वि., दे. 'उऋण' ।

उत्कंठा, सं. स्त्री. (सं.) उत्कलिका, लालसा, तीव्राभिलाषः २. संचारिभावभेदः (सा.) ।

उत्कंठित, वि. (सं.) उत्क, उन्मनस् , उत्सुक ।

उत्कंठिता, सं. स्त्री. (सं.) प्रियमिलनोत्सुकनायिका ।

उत्कंधर, वि. (सं.) उत्कण्ठ, उद्ग्रीव ।

उत्कट, वि. (सं.) तीव्र, प्रचंड, उग्र, दुःसह ।

उत्कर्ष, सं. पुं. (सं.) महिमन् (पुं.), महत्त्वं, २. श्रेष्ठता ३. समृद्धिः (स्त्री.) ४. व्याक्षेपः विलंबः, ५. अतिशयः ।

उत्कल, सं. पुं. (सं.) दे. 'उड़ीसा' २. व्याधः ।

उत्कीर्ण, वि. (सं.) उत्-, लिखित २. छिन्न, विद्ध ३. पाषाणकाष्ठादिषु लिखित ।

उत्कृष्ट, वि. (सं.) प्रकृष्ट, प्रशस्त, उत्तम, श्रेष्ठ ।

उत्कृष्टता, सं. स्त्री. (सं.) महत्त्वं, श्रेष्ठता, प्रकर्षः ।

उत्कोच, सं. पुं. (सं.) दे. 'घूँस' ।

उत्तप्त, वि. (सं.) परि-प्र-सं,-तप्त, अत्युष्णीकृत २. क्षुब्ध, दुःखित ३. क्रुद्ध ।

उत्तम, वि. (सं.) श्रेष्ठ, विशिष्ट, वरेण्य, प्रवर (टि. इसी अर्थ में समासान्त में पुंगव, ऋषभ, व्याघ्र, सिंह, शार्दूल, इन्द्र आदि; जैसे—नरों में उत्तम = नर,-पुंगवः-शार्दूलः इ.) ।

उत्तमता, सं. स्त्री. (सं.) श्रेष्ठता, उत्कृष्टता, गुणातिशयः, विशिष्टता ।

उत्तमर्ण, सं. पुं. (सं.) ऋणदः, ऋणदातृ ।

उत्तमा, वि. स्त्री. (सं.) भद्रा, साध्वी, श्रेष्ठा । सं. स्त्री. (सं.) १–२. नायिका–दूती,–भेदः ।

उत्तमांग, सं. पुं. (सं. न.) शिरस् (न.) दे. 'सिर' ।

उत्तमार्द्ध,-र्ध, सं. पुं. (सं. पुं. न.) उत्कृष्ट,–अर्द्धः–अर्द्धम् २. उत्तर,–अर्द्धः–अर्द्धम् ।

उत्तमोत्तम, वि. (सं.) सर्वोत्तम, महत्तम ।

उत्तर[1], सं. पुं. (सं. उत्तरा) उदीची, उत्तर,-दिशा-आशा, कौबेरी ।

—अयनं, (= उत्तरायणम्) सं. पुं. (सं. न.) माघादिषण्मासात्मकः सूर्यस्योत्तरदिग्गमनकालः २. कर्कसंक्रान्तिः (स्त्री.) ।

—की ओर, क्रि. वि., उत्तराभिमुखं, उत्तरेण, उत्तरदिशि; उत्तरतः (षष्ठी के साथ), उत्तरं (पंचमी के साथ) ।

—की ओर मुखवाला, वि., उदङ्मुख (–खी स्त्री.)।

—पश्चिम, सं. पुं., उत्तरपश्चिमा, वायवी (दिशा)।

—पश्चिमी, वि., वायव, वायुदिक्स्थ।

—पूर्व, सं. पुं., उत्तरपूर्वा, पूर्वोत्तरा, प्रागुत्तरा, प्रागुदीची, ऐशानी।

—पूर्वी, वि. पूर्वोत्तर, प्रागुत्तर, प्रागुदीचीन, पूर्वोत्तरस्थ।

—संबंधी, वि. उदीच्य, उदीचीन, उत्तरस्थ।

उत्तर[1], सं. पुं. (सं. न.) प्रतिवचनं, प्रतिवाक्यं, प्रत्युक्तिः-प्रतिवाच् (स्त्री.) २. प्रत्युत्तरम् ३. प्रति (ती) कारः ४. अलंकारभेदः (सा.)।

—दायित्व, सं. पुं. (सं. न.) प्रतिवाच्यता, प्रष्टव्यता, भारः, अनुयोज्यता।

—दायी, वि. (सं.-यिन्) प्रष्टव्य, अभियोक्तव्य अनुयोज्य, प्रतिवाच्य, उत्तरदातृ।

उत्तर[2], वि. (सं. सर्व.) पर, अपर, अवर, अन्य २. अन्तिम, चरम ३. उक्तरोक्त ४. गरीयस्, ज्यायस्।

—अधिकार, सं. पुं. (सं.) अंशित्वं, दायादत्वं, रिक्थहरत्वम्।

—अधिकारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) दायादः, रिक्थ,-हरः-भागिन्, रिक्थिन्, अंशहरः, अंशिन्। (स्त्री. दायादा, अंशहरी)।

—अर्द्ध, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अपर-पर अवर,-अर्द्धः-अर्द्धम्।

—उत्तर, क्रि. वि. (सं. न.) अधिकाधिकं, २. अग्रेऽग्रे ३. अनुपूर्वशः, आनुपूर्व्येण ४. क्रमशः ५. निरन्तरम् ६. प्रतिदिनम्।

—पक्ष, सं. पुं. (सं.) सिद्धान्तः, समाधिः।

—मीमांसा, सं. स्त्री. (सं.) वेदान्तदर्शनम्।

उत्तरण, सं. पुं. (सं. न.) संतरणम्, उल्लंघनम्, समुत्तरणम्, पारायणम्।

उत्तरा, सं. स्त्री. (सं.) उत्तरा दिक् (स्त्री.), कौवेरी, उदीची, २. अभिमन्युपत्नी।

—खंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) हिमालयसमीपवर्ती भारतवर्षस्योत्तरभागः।

उत्तराभास, सं. पुं. (सं.) असत्योत्तरं, मिथ्याप्रतिवचनम्। २. व्याजः, मिषं, छलम्।

उत्तरीय, सं. पुं. (सं. न.) बृहतिका, संव्यानं, प्रावा(व)रः। वि., उपरिस्थ, ऊर्ध्व, उपरितन २. दे. 'उत्तरसंबंधी'।

उत्तान, वि. (सं.) दे. 'उतान' २. गांभीर्यरहित ३. ऊर्ध्वतल।

—पाद, सं. पुं. (सं.) ध्रुवपितृ।

उत्तीर्ण, वि. (सं.) पारंगत २. मुक्त ३. परीक्षायां सफल।

उत्तुंग, वि. (सं.) अत्युच्च, अतीवोन्नत, प्रांशु, अत्युच्छ्रित।

उत्तेजक, वि. (सं.) उद्दीपक, प्रोत्साहक, प्रवर्तक, प्रेरक २. विकारोत्पादक ३. संक्षोभक।

उत्तेजन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'उत्तेजना'।

उत्तेजना, सं. स्त्री. (सं.) प्रेरणा, प्रोत्साहः, उद्दीपनं २. संक्षोभणम् ३. मनोवेगोत्पादनम्।

उत्तोलन, सं. पुं. (सं. न.) उत्थापनं, उत्कर्षणम् २. तोलनं, तुलया भारबोधनम्।

उत्थान, सं. पुं. (सं. न.) उद्गमनं, उत्पतनम् २. आरम्भः ३. उन्नतिः (स्त्री.) ४. सैन्यम् ५. युद्धम् ६. पौरुषम् ७. हर्षः।

उत्थापन, सं. पुं. (सं. न.) उत्तोलनं, उन्नयनम् २. विधूननम्, वेल्लनम् ३. वि-प्र,-बोधनम्।

उत्थित, वि. (सं.) कृतोत्थान, उद्गत २. उत्पन्न ३. प्रोद्यत ४. वृद्धिमत् ५. जागरित।

उत्पत्ति, सं. स्त्री. (सं.) उद्गमः, उद्भवः, जन्मन् (न.) २. संसार ३. आरम्भः।

उत्पन्न, वि. (सं.) जात, उद्भूत।

उत्पल, सं. पुं. (सं. न.) कमलम् २. नीलकमलं, कुवलयं, कुवलं, कुवेलं, रात्रिपुष्पं ३. जलजपुष्पमात्रम् ४. पुष्पम्।

उत्पलिनी, सं. स्त्री. (सं.) कमल–उत्पल,–निकरः–समूहः २. कमलिनी।

उत्पाटन, सं. पुं. (सं. न.) उन्मूलनम्।

उत्पाटित, वि. (सं.) उन्मूलित २. अपनीत ३. सिंहासनात् अवपातित।

उत्पात, सं. पुं. (सं.) अजन्यं, उपद्रवः, आपद् (स्त्री.) २. कोलाहलः, डमरः ३. विप्लवः।

उत्पाती, सं. पुं. (सं.-तिन्) उत्पात-उपद्रव-संक्षोभ,-करः-कारिन्, कुचेष्टकः, लोककण्टकः।

उत्पादक, वि. (सं.) जनक, उत्पादयितृ।

उत्पादन, सं. पुं. (सं. न.) जननं, प्रसवः, प्रसूतिः (स्त्री.)।

उत्पीड़न, सं. पुं. (सं. न.) पीडनं, अर्दनं, बाधनं, निकारः।

उत्प्रेक्षा, सं. स्त्री. (सं.) आरोपः उद्भावना २. अर्थालंकारभेदः (सा.) ३. अनवधानम्।

उत्फुल्ल, वि. (सं.) विकसित २. प्रसन्न।

उत्स, सं. पुं. (सं.) प्रस्रवणं, दे. 'झरना'।

उत्संग, सं. पुं. (सं.) अंकः, क्रोडम् २. मध्य-भागः ३. सानुः ४. सौधादीनामुपरिभागः ५. विरक्तः।

उत्सर्ग, सं. पुं. (सं.) परि-, त्यागः, विसर्जनम् २. दानं, वितरणम् ३. समाप्तिः (स्त्री.) ४. व्यापकनियमः।

उत्सर्जन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'उत्सर्ग'।

उत्सव, सं. पुं. (सं.) महः, क्षणः, उद्धवः, यात्रा, पर्वन् (न.)।

उत्साह सं. पुं. (सं.) कियदेतिका, औत्सुक्यं, व्यग्रता २. उद्यमः, अध्यवसायः ३. साहसं, वीर्यम्।

उत्साही, वि. (सं.,-हिन्) सोत्साह, उत्साहवत्, अत्युत्सुक २. उद्यमिन्, अध्यवसायिन् ३. शूर, वीर।

उत्सुक, वि. (सं.) उत्कंठ, सोत्कंठ, लालस, सोत्साह, विलंबासहिष्णु।

उत्सुकता, सं. स्त्री. (सं.) औत्सुक्यं, कुतूहलं, व्यग्रता, लालसा, कौतुकम्।

उत्सृष्ट, वि. (सं.) त्यक्त, समुज्झित।

उथल-पुथल, सं. स्त्री. (हिं. उथलना) क्रम-भंगः, व्यतिक्रमः, व्यस्तता, विपर्ययः, अव्य-वस्था। वि., क्रम-व्यवस्था,-हीन, अव्यवस्थित, विपर्यस्त।

उथला, वि. (सं. उत्स्थल) गाध, उत्तान, अल्प-गाध,-जल-तोय।

उदंत, सं. पुं. (सं.) समाचारः, वृत्तान्तः, वार्ता २. सज्जनः।

उदक, सं. पुं. (सं. न.) जलं, पानीयम्।

—क्रिया, सं. स्त्री. (सं.) तिलांजलिः २. तर्प-णम्।

उदकांत, सं. पुं. (सं.) तीरं, तटम्।

उदधि, सं. पुं. (सं.) समुद्रः, सागरः २. घटः ३. मेघः।

—सुत, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः २. अमृतम् ३. शंखः ४. कमलम् ५. सागरजः (पदार्थः)।

—सुता, सं. स्त्री. (सं.) लक्ष्मीः २. शुक्तिका।

उदय, सं. पुं. (सं.) ऊर्ध्वगमनं, उद्गमः, उदय-नम्, उत्थानम्।

—होना, क्रि. अ., उद्‌या-उद् इ (अ. प. अ.), उद् अय् (भ्वा. आ. से.), उद्गम्।

—अचल, सं. पुं. (सं.) उदय, गिरिः-अद्रिः, पूर्व,-पर्वतः-अचलः।

उदयास्त, सं. पुं. (सं. स्तौ) अस्तोदयौ, उद-यास्तमने। क्रि. वि. प्रातरारभ्य सायं यावत्, सर्वं दिनम्।

उदर, सं. पुं. (सं. न.) तुन्दं, कुक्षः, कुक्षिः, पिचिंडः २. आमाशयः, पक्वाशयः, ३. मध्य,-भागः देशः, अन्तरं, गर्भः।

—ज्वाला, सं. स्त्री. (सं.) जठर,-अनलः-अग्निः २. क्षुधा, बुभुक्षा।

उदात्त, वि. (सं.) उच्चैरुच्चारित (स्वर) २. सदय, कृपालु ३. दातृ, उदार ४. श्रेष्ठ ५. विशद, स्पष्ट ६. समर्थ। सं. पुं. (सं.) वेदमंत्रोच्चारणे उच्चस्वरः २. अलंकारभेदः (सा.)।

उदार, वि. (सं.) दान,-शील-शौंड, बहुप्रद, वदान्य, त्यागशील २. श्रेष्ठ ३. महाशय ४. सरल।

उदारता, सं. स्त्री. (सं.) वदान्यता, त्यागिता, औदार्यं, त्यागः २. माहात्म्यम् ३. सुशीलं, ऋजुता।

उदास, वि. (सं.) खिन्न, अवसन्न, म्लान, विषण्ण २. उदासीन, विरक्त ३. तटस्थ, निष्पक्ष।

—होना, क्रि. अ., विषद् (भ्वा. प. अ.), दुर्म-नायते (ना. धा.)।

उदासी, सं. स्त्री. (सं. उदास >) अवसादः, म्लानिः-ग्लानिः (स्त्री.) खेदः, दौर्मनस्यम् २. विरागः, वैराग्यम् ३. निष्पक्षता, तटस्थता। सं. पुं., सन्न्यासिन्, विरक्तः, साधुसंप्रदाय-भेदः।

उदासीन, वि. (सं.) विरक्त, निस्स्पृह, प्रपंच-रहित २. मध्यस्थ, तटस्थ, समभाव ३. रूक्ष, निस्स्नेह।

उदासीनता, सं. स्त्री. (सं.) विरक्तिः (स्त्री.) २. तटस्थता ३. खेदः, अवसादः।

उदाहरण, सं. पुं. (सं. न.) निदर्शनं, दृष्टान्तः।

उदाहृत, वि. (सं.) वर्णित, कथित २. दत्त-दृष्टान्त ।

उदित, वि. (सं.) उद्गत, उत्थित, उदयित २. प्रकट, स्पष्ट ३. उज्ज्वल, विशद ४. कथित, उक्त ।

उदीक्षण, सं. पुं. (सं. न.) ऊर्ध्वावलोकनम्, २. वीक्षणम् ।

उदीची, सं. स्त्री. (सं.) उत्तरदिशा ।

उदीच्य, वि. (सं.) उत्तरदिग्वासिन् २. दे. उत्तरसंबंधिन् ।

उदीप, सं. पुं. (सं.) संप्लवः, जलविप्लवः ।

उदीयमान, वि. (सं.) उद्गच्छत्, उन्नमत् ।

उदुंबर, सं. पुं. (सं.) क्षीरवृक्षः, सदाफलः, जन्तुफलः, दे. 'गूलर' २. क्षीरवृक्षफलम् ३. देहली ४. नपुंसकः ५. कुष्ठभेदः ।

उद्गत, वि. (सं.) उदित, उत्थित २. प्रकट ३. व्याप्त ४ वान्त ५. लब्ध ।

उद्गम, सं. पुं. (सं.) उदयः, उत्थानं, उद्गमनं, आविर्भावः, ऊर्ध्वगमनं २. उद्गमस्थानं, प्रभव, योनिः (स्त्री.) ।

उद्गाता, सं. पुं. (सं.-तृ) सामवेदगः, सामगायकः ३. सामवेदज्ञः ।

उद्गार, सं. पुं. (सं.) तरलपदार्थस्य सहसा निस्सरणं, उद्गमनं, स्रावो वा । २. वमनं, प्रच्छर्दिका ३. सवेगं निःसृतः तरलपदार्थः, वान्तवस्तु (न.) ५. लाला, मुखस्रावः ६ उद्वमः, उत्क्षेपः, ७. आधिक्यम् ८. घोर-तुमुल,-शब्दः ९. रुद्धभावानां उच्चंडं प्रकाशनम् १०. इत्थं प्रकाशिता भावाः ।

उद्गीथ, सं. पुं. (सं.) सामगानविशेषः २. ओंकारः ३. सामवेदः ।

उद्घाटन, सं. पुं. (सं. न.) अपा-वि,-वरणम्, उन्मुद्रणं, निरर्गलीकरणम् २. प्रकाशनं, प्रकटीकरणम् ।

उद्दंड, वि. (सं.) उद्धत, दुःशील, अविनीत, साहसिक, तीक्ष्णकर्मन् २. कलहप्रिय ।

उद्दाम, वि. (सं.) बंध-बंधन-पाश,-रहित २. निरंकुश, अनर्गल, उच्छृंखल ३. स्वतंत्र ।

उद्दालक, सं. पुं. (सं.) ऋषिविशेषः २. व्रतप्रकारः ।

उद्दिष्ट, वि. (सं.) निर्दिष्ट, संकेतित २. लक्ष्य, अभिप्रेत ।

उद्दीपक, वि. (सं.) उत्तेजक, प्रेरक, संक्षोभक २. दाहक, तापक, दीपन ।

उद्दीपन, सं. पुं. (सं. न.) उत्तेजनं, प्रोत्साहनं, प्रकोपनं, प्रेरणम् २. उत्तेजकपदार्थः ३. विभावभेदः (सा.) ४. तापनं, दहनम् ।

उद्दीप्र, वि. (सं.) भासुर, भास्वर २. प्रज्वलित । सं. पुं., गुग्गुलुः, देवधूपः ।

उद्देश, सं. पुं. (सं.) इच्छा, अभिलाषः २. आशयः, अभिप्रायः ३. कारणं, हेतुः ४. प्रतिज्ञा (न्या.) ।

उद्देश्य, वि. (सं.) लक्ष्य, काम्य, स्पृहणीय । सं. पुं. (सं. न.) प्रयोजनं, अभिप्रेतोऽर्थः २. यदुद्दिश्य विधेयप्रवृत्तिः भवति, तत् (न्या.) ।

उद्धत, वि. (सं.) उग्र, चंड, दे. 'उद्दंड' । २. प्रगल्भ, विशिष्ट ।

उद्धरण, सं. पुं. (सं. न.) उत्थानं, उद्गमनम् २. मुक्तिः (स्त्री.) ३. उन्नतिः (स्त्री.) ४. पाठस्यावृत्तिः (स्त्री.) ५. उद्धृतवाक्यम् ६. उन्मूलनम् ७. उत्थापनम् ८. वमनम् ।

उद्धव, सं. पुं. (सं.) दे. 'उत्सव' २ श्रीकृष्णमित्रम् ।

उद्धार, सं. पुं. (सं.) निर्वाणं, मुक्तिः (स्त्री.) २. दुःखनिवृत्तिः (स्त्री.) ३. उन्नतिः (स्त्री.) ४. ऋणमुक्तिः ५. दायस्यांशविशेषः (मनु.) ६. ऋणम् ७. युद्धे लुंठितद्रव्यस्य राजग्राह्यः षष्ठोऽशः ८. चुल्ली ।

—करना, क्रि. स., उद् हृ (भ्वा. प. अ.), मोक्ष् (चु.), निस्तॄ (प्रे.), उन्नी (भ्वा. उ. अ.) ।

—होना, क्रि. अ., मुच् (कर्म.) ।

उद्धृत, वि. (सं.) अवतारित, उपन्यस्त, उपनीत, उदाहृत २. उन्नीत, उत्थापित ३. उद्गीर्ण ।

—करना, क्रि. स. उपन्यस् (दि. प. से.), उद्-हृ (भ्वा. प. अ.) ।

उद्बुद्ध, वि. (सं.) विकसित, प्रफुल्ल २. ज्ञानिन् ३. जागरित ।

उद्बोधन, सं. पुं. (सं. न.) ज्ञापनम् २. प्रकाशनम् ३. उत्तेजनम् ४. जागरणम् ।

उद्भट, वि. (सं.) प्रबल, उग्र २. श्रेष्ठ ३. महात्मन् ।

उद्भव, सं. पुं. (सं.) उत्पत्तिः-सृष्टिः (स्त्री.) जन्मन् (न.) २. वृद्धिः-स्फीतिः (स्त्री.)।

—स्थान, सं. पुं. (सं. न.) योनिः (स्त्री.), प्रभवः।

उद्भाव, सं. पुं. (सं.) उद्भवः २. कल्पना ३. औदार्यम्।

उद्भावना, सं. स्त्री. (सं.) उद्भावनं, कल्पनं, कल्पितं, उद्भावितं, कल्पना २. उत्पत्तिः (स्त्री.)।

उद्भास, सं. पुं. (सं.) कान्ति-दीप्तिः (स्त्री.) २. प्रकाशः, आलोकः।

उद्भिज्ज, सं. पुं. (सं.) तरुगुल्मादिः, उद्भिद् (पाँच प्रकार के उद्भिज्ज-तरुः, गुल्मः, लता, वल्ली, तृणम्)।

उद्भिद्, (सं. पुं.) अंकुरः, प्ररोहः २.ओषधिः-धी (स्त्री.), वृक्षकः ३. जलप्रपातः, निर्झरः ४. जलयन्त्रम्।

उद्भूत, वि. (सं.) जात, उत्पन्न।

उद्भेदन, सं. पुं. (सं. न.) त्रोटनं, भंजनम् २. उद्भिद्य निर्गमनम्।

उद्यत, वि. (सं.) सज्ज, उद्युक्त, सिद्ध, उपक्लृप्त, सन्नद्ध २. उत्थापित।

उद्यम, सं. पुं. (सं.) उद्योगः, उत्साहः, अध्यवसायः, प्रयत्नः, आयासः २. आ-उप,-जीविका।

—करना, क्रि. स., चेष्ट्-प्रयत् (भ्वा. आ. से.) उद्यम् (भ्वा. प. अ.), व्यवस् (दि. प. अ.)।

उद्यमी, वि. (सं.-मिन्) उद्योगिन्, उद्युक्त, व्यवसायिन्।

उद्यान, सं. पुं. (सं. न.) उपवनं, आरामः।

उद्योग, सं. पुं., (सं.) दे. 'उद्यम'।

उद्योगी, वि. (सं.-गिन्) दे. 'उद्यमी'।

उद्योत, सं. पुं. (सं. उद्द्योतः) आलोकः २. द्युतिः (स्त्री.)।

उद्रेक, सं. पुं. (सं.) वृद्धिः-उन्नतिः (स्त्री.) २. आधिक्यं, बहुत्वम् ३. अलंकारभेदः (सा.)।

उद्वाह, सं. पुं. (सं.) विवाहः।

उद्विग्न, वि. (सं.) आ-व्या,-कुल, संभ्रांत, अधीर, व्यस्त-विक्षिप्त,-चित्त, व्यग्र, कातर।

उद्वेग, सं. पुं. (सं.) उद्विग्नता, व्याकुलता २. मनोवेगः, आवेगः ३. विरहजं दुःखम्।

उधड़ना, क्रि. अ. (सं. उद्धरणम् >) स्फुट् (तु. प. से.), भिद्-विद् (कर्म.) २. सीवनं भिद् (कर्म.)।

उधर, क्रि. वि. (सं. अमुत्र ?) तत्र, तत्स्थाने २. तत्स्थानं प्रति।

उधार, सं. पुं. (सं. उद्धारः) ऋणं, धनप्रयोगः २. आविहितकालात् द्रव्यप्रयोगः ३. मुक्तिः (स्त्री.)।

—चुकाना, क्रि. स. ऋणं शुध् (प्रे.), आनृण्यं गम्।

—लेना, क्रि. स., ऋणं कृ अथवा ग्रह् (क्र. उ. से.)।

उधेड़ना, क्रि. स., (हिं. उधड़ना) स्तरं निर्हृ (भ्वा. उ. अ.) २. सीवनं भिद् (र. उ. अ.) २. विकॄ (तु. प. से.)।

उधेड़-बुन, सं. स्त्री. (हिं. उधेड़ना + बुनना) चिन्ता, विमर्शः, ऊहापोहः २. उपायकल्पना।

उन, सर्व. (हिं. उस) तद्-अदस् (सर्व)।

उनचास, वि. (सं. ऊनपञ्चाशत् स्त्री. एक.) एकोनपंचाशत्-एकान्नपंचाशत्-नवचत्वारिंशत् (स्त्री. एक.)। सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकावंकौ (४९) च।

उनतालीस, वि. (सं. ऊनचत्वारिंशत् स्त्री. एक.) एकोनचत्वारिंशत्-नवत्रिंशत् (स्त्री.)। सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकांकौ (३९) च।

उनतीस, वि. (सं. ऊनत्रिंशत् स्त्री. एक.) एकोनत्रिंशत्-नवविंशतिः (स्त्री.)। सं. पुं., उक्ता संख्या तदंकौ (२९) च।

उनसठ, वि. (सं. ऊनषष्टिः स्त्री. एक.) एकोनषष्टिः नवपंचाशत् (स्त्री. एक.)। सं. पुं., उक्ता संख्या तदंकौ (५९) च।

उनहत्तर, वि. (सं. ऊनसप्ततिः स्त्री. एक.) एकोन (एकान्न)-सप्ततिः-नवषष्टिः (स्त्री. एक.)। सं. पुं., उक्ता संख्या तदंकौ (६९) च।

उनासी, वि. दे. 'उन्नासी'।

उनींदा, वि. (सं. उन्निद्र) निद्रा-, आकुल-वश-अभिभूत।

उन्न, वि. (सं.) आर्द्र, क्लिन्न, जलसिक्त २. दयार्द्र, दयालु।

उन्नत, वि. (सं.) उद्गत, उच्छ्रित, उच्च, तुंग २. समृद्ध ३. श्रेष्ठ।

उन्नति, सं. स्त्री. (सं.) उच्छ्रयः, तुंगता २. समृद्धिः (स्त्री.), अभ्युदयः।

उन्नाव, सं॰ पुं॰ (अ.) कोलं, कुवलं, सौवीरम् ।

उन्नायक, वि. (सं.) उन्नेतृ, उत्कर्षक २. वर्द्धक, अभ्युदयकारक ।

उन्नासी, वि. (सं. ऊनाशीतिः स्त्री. एक.) एकोनाशीतिः नवसप्ततिः (स्त्री. एक.)। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (७९) च ।

उन्निद्र, वि. (सं.) निद्रारहित २. विकसित, प्रफुल्ल ।

उन्नीस, वि. (सं. ऊनविंशतिः स्त्री. एक.) एकोनविंशतिः, नवदशन् (बहु.) । सं. पुं., उक्ता संख्या तदंकौ (१९) च ।

—बिस्वे, मु., प्रायः, प्रायशः, प्रायेण (सब अव्य.)।

उन्मज्जक, वि. (सं.) जलाद् बहिरागन्तृ ।

उन्मज्जन, सं. पुं., (सं. न.) जलाद् बहिः आगमनम् ।

उन्मत्त, वि. (सं.) उन्मादिन् , वातुल, विक्षिप्त-चित्त २. क्षीव, मदोन्मत्त, मदोद्धत ३. संज्ञा-रहित, नष्टसंज्ञ, विचेतन ।

—प्रलाप, सं. पुं., निरर्थकवचनानि (न. बहु.)।

उन्मन, वि. (सं. अन्यमनस्) अन्यमनस्क, अन्यत्रचित्त, अनवधान ।

उन्मयूख, वि. (सं.) प्रकाशमान, भासुर, भास्वर ।

उन्माद, सं. पुं. (सं.) मतिभ्रंशः, चित्तविभ्रमः, मानसरोगभेदः २. संचारिभावभेदः (सा.)।

उन्मादी, वि. (सं.-दिन्) उन्मत्त, वातुल ।

उन्मार्ग, सं. पुं. (सं.) उत्-का-कु-वि,-पथः-मार्गः ।

उन्मीलन, सं. पुं. (सं. न.) उन्मेषः, उन्मेषणं २. विकसनं, विकासः ।

उन्मीलित, वि. (सं.) विवृत, उन्मिषित, उद्घाटित २. विकसित, प्रफुल्ल ।

उन्मुख, वि. (सं.) उदङ्-ऊर्ध्व, मुख २. उत्कं-ठित, उत्सुक ३. उद्यत ।

उन्मूलन, सं. पुं. (सं. न.) निर्मूलनं, उत्पाटनं, उत्खननम् २. विध्वंसनं, विनाशनम् ।

उन्मूलित, वि. (सं.) उत्खात, उत्पाटित २. विनाशित ।

उन्मेष, सं. पुं. (सं.) उन्मीलनम् २. विकासः ३. अल्पप्रकाशः ।

उप, उप. (सं.) अनुगत्याधिक्यन्यूनतासामी-प्यव्याप्त्यादिबोधकः उपसर्गः ।

उपकंठ, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सामीप्यम् । वि., निकट । क्रि. वि., निकटे ।

उपकरण, सं. पुं. (सं. न.) साधनं, सामग्री, परिच्छदः, यंत्रं, साधकद्रव्यम् २. छत्रचामरा-दीनि राजचिह्नानि ।

उपकार, सं. पुं. (सं.) हितं, दया, कृपा, परोप-कारः, उपकृतिः (स्त्री.) २. लाभः ।

—करना, क्रि. स., उपकृ, अनुग्रह् (क्र. उ. से.), हितं कृ ।

—मानना, क्रि. स., उपकृतं स्मृ (भ्वा. प. अ.) कृतं विद् (अ. प. से.)।

उपकारी, वि. (सं.-रिन्) उपकारक, उपकर्तृ, परोपकारपर, परहितेच्छुक, जगन्मित्रम् , दान-शील ।

उपकार्या, सं. स्त्री. (सं.) (राजकीय-) पट,-मंडपः-गृहम् २. राज,-भवनं-प्रासादः ।

उपकुल्या, सं. स्त्री. (सं.) उप,-सरणी-प्रणाली, २. परिखा, खातम् ।

उपकूप, सं. पुं. (सं.) कूपकः, लघुकूपः, उपखातः ।

उपकृत, वि, (सं.) अनुगृहीत, कृतवेदिन् ।

उपक्रम, सं. पुं. (सं.) उपायज्ञानपूर्वकारम्भः २. प्रथमारम्भः ३. भूमिका ४. चिकित्सा ।

उपक्रमणिका, सं. स्त्री. (सं.) भूमिका, प्रस्ता-वना, वाङ्मुखम् २. विषयसूची ।

उपगत, वि. (सं.) उपस्थित, पुरःस्थित २. विदित ३. स्वीकृत ।

उपग्रह, सं. पुं. (सं.) ग्रहणं, धरणं, निरोधः २. कारा,-वासः-निरोधः-प्रवेशः ३. कारागुप्त,-रुद्ध ४. लघुग्रहः ।

उपघात, सं. पुं. (सं.) विध्वंसः, विनाशः २. रोगः ३. इन्द्रियवैकल्यम् ४. पातकसमूहः ५. अपकारः ।

उपचय, सं. पुं. (सं.) वृद्धिः-उन्नतिः (स्त्री.) २. संचयः, संग्रहः ।

उपचर्या, सं. स्त्री. (सं.) सेवा २. चिकित्सा ।

उपचार, सं. पुं. (सं.) रोगप्रतिकारः, चिकित्सा, उपचर्या २. रोगिपरिचर्या ३. प्रयोगः, विधानम् ४. धर्मानुष्ठानम् ।

५. धूपदीपादीनि पूजांगानि (न. ब.) ६. चाटूक्तिः (स्त्री.) ७. उत्कोचः ।

उपचारक, वि. (सं.) चिकित्सक २. सेवक ३. विधायक ।

उपज, सं. पुं. (हिं. उपजना) उत्पन्नं फलं शस्यं वा २. उद्भावना, नवकल्पना ३. कल्पित-वार्ता ।

उपजना, क्रि. अ. (सं. उपजननम् >) उपजन् (दि. आ. से.), उत्पद् (दि. आ. अ.), प्ररुह् (भ्वा. प. अ.) २. मनसि स्फुर् (तु. प. से.) ।

उपजाऊ, वि. (हिं. उपज) उर्वर, शस्यप्रद, बहुफलप्रद ।

उपजाना, क्रि. स. (हिं. उपजना) उपजन्-उत्पद्-प्ररुह् (प्रे.) ।

उपजीवी, वि. (सं.-विन्) पराश्रित, अनुजीविन्, पराधीनवृत्ति ।

उपताप, सं. पुं. (सं.) रोगः, व्याधिः २. त्वरा, संभ्रमः ३. उत्तापः, उष्मन् (पुं.) ४. पीड़ा ५. दौर्भाग्यम् ।

उपत्यका, सं. स्त्री. (सं.) पर्वतनिकटभूमिः (स्त्री.) अचलासन्ना भूः (स्त्री.) ।

उपदंश, सं. पुं. (सं.) मेढ्ररोगभेदः ।

उपदर्शक, सं. पुं. (सं.) पथ-मार्ग,-दर्शक २. द्वारपालः ३. साक्षिन् ।

उपदर्शन, सं. पुं. (सं. न.) टीका, टिप्पणी-नी ।

उपदा, सं. स्त्री. (सं.) उपायनं, दे. 'भेंट' ।

उपदिशा, सं. स्त्री. (सं.) उप,-आशा-काष्ठा-ककुभ् (सब स्त्री.) [टि. चार उपदिशाएँ ये हैं-ऐशानी, आग्नेयी, नैऋती, वायवी] ।

उपदिष्ट, वि. (सं.) शिक्षित, अध्यापित, २. निर्देशित ३. दीक्षित ।

उपदेश, सं. पुं. (सं.) अनुशासनं, बोधनं, शिक्षा २. दीक्षा, गुरुमंत्रः ३. धर्मव्याख्यानम् ।

—देना, क्रि. स. उपदिश् (तु. प. अ.) अनुशास् (अ. प. से.), शिक्ष्-बुध्-ज्ञा (प्रे.), २. दीक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।

उपदेशक, सं. पुं. (सं.) उपदेष्टृ, धर्मप्रचारकः, प्रवक्तृ ।

उपद्रव, सं. पुं. (सं.) दे. 'उत्पात' (१-३) ४. रोगेऽवान्तरविकारः ।

—करना, क्रि. स., उत्पातम् उत्था (प्रे.) ।

उपद्रवी, वि. (सं.-विन्) दे. 'उत्पाती' ।

उपधा, सं. स्त्री. (सं.) कपटम् २. उपान्त्याक्षरम् ३. उपाधिः ।

उपधान, सं. पुं. (सं. न.) शिरोधानम्, उपबर्हः २. अवलंबनम् ।

उपनयन, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञोपवीतसंस्कारः २. समीपे नयनम् ३. शिष्यस्य गुरुनिकटे नयनम् ।

उपनाम, सं. पुं. (सं.-मन् न.) प्रचलित-अन्य-उपाधि,-नामन् (न.) २. उपाधिः, मानपदम्, पदवी ।

उपनिधि, सं. स्त्री. (सं.) न्यासः, उपन्यस्तं वस्तु (न.) ।

उपनिवेश, सं. पुं. (सं.) अधिनिवेशः, वासितः प्रदेशः ।

उपनिषद्, सं. स्त्री. (सं.) ब्रह्मविद्यानिरूपकाः ग्रंथाः २. (गुरोः) समीपे उपवेशनम् ।

उपनीत, वि. (सं.) कृतोपनयन २. आसन्न, उपागत ।

उपनेता, सं. पुं. (सं.-तृ) उपनयनसंस्कारकर्तृ, आचार्यः, गुरुः २. निकटे प्रापकः ।

उपन्यास, सं. पुं. (सं.) कल्पित-, कथा, कथा-प्रबन्धः, प्रबन्धकल्पना २. वाक्योपक्रमः ३. निक्षेपः, न्यासः ।

उपपति, सं. पुं. (सं.) जारः, दे. 'यार' ।

उपपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) हेतुना वस्तुस्थिति-निश्चयः २. सिद्धिः (स्त्री.), प्रतिपादनम् ३. संगतिः (स्त्री.) ४. युक्तिः (स्त्री.), हेतुः ।

उपपत्नी, सं. स्त्री. (सं.) उप,-भार्या-जाया-कलत्रम् ।

उपपद, सं. पुं. (सं. न.) पूर्वोक्त-पूर्वलिखित,-पदं-शब्दः २. समासस्य पूर्वशब्दः ३. उपाधिः (पुं.), पदवी ।

उपपन्न, वि. (सं.) प्राप्त, उपागत ३, शरणागत ४. लब्ध, अधिगत ५. युक्त ६. उपयुक्त ।

उपपादन, सं. पुं. (सं. न.) साधनं, प्रतिपादनं युक्तिभिः समर्थनम् २. संपादनं, निष्पादनम् ।

उपपुराण, सं. पुं. (सं. न.) लघुपुराण (ये अठारह हैं) ।

उपप्लव, सं. पुं. (सं.) जल,-विप्लवः-प्रलयः २. उत्पातः ३. भूकंपादिघटना ४. भयम् ५. विघ्नः ६. राहुः ७. झंझावातः ।

उपभुक्त, वि. (सं.) प्रयुक्त २. उच्छिष्ट ।

उपभोग, सं. पुं. (सं.) सुख,-आस्वादः, आस्वादनम् २. प्रयोगः, व्यवहारः ३. सुखसामग्री ।

उपमंत्री, सं. पुं. (सं.-त्रिन्) उपलेखनसचिवः २. उपामात्यः, अमात्यसहायः ।

उपमा, सं. स्त्री. (सं.) सादृश्यं, साम्यम् २. अर्थालंकारभेदः (सा.)।

—देना, क्रि. स. उपमा (जु. आ. अ.), समी कृ ।

उपमाता, सं. स्त्री. (सं.-मातृ) धात्री, दे. 'धाय' ।

उपमान, सं. पुं. (सं. न.) सादृश्यज्ञानसाधनं, साम्यप्रतियोगिन्, अप्रस्तुतं, उपवर्ण्यम् २. प्रमाणभेदः ।

उपमित, वि. (सं.) समी-सदृशी,-कृत ।

उपमिति, सं. स्त्री. (सं.) उपमा २. सादृश्यजनितं ज्ञानम् ।

उपमेय, वि. (सं.) वर्ण्य, वर्णनीय, उपमातव्य, प्रस्तुत ।

—उपमा, सं. स्त्री. (सं.) अर्थालंकारभेदः (सा.)।

उपयुक्त, वि. (सं.) उचित, उपपन्न, संगत, युक्त, योग्य, यथायोग्य, यथार्ह ।

उपयुक्तता, सं. स्त्री. (सं.) औचित्यं, औचिती, युक्तत्वं, योग्यता ।

उपयोग, सं. पुं. (सं.) प्रयोगः, व्यवहारः २. लाभः, फलम् ३. प्रयोजनं, आवश्यकता ४. योग्यता ।

उपयोगिता, सं. स्त्री. (सं.) व्यवहार्यता, लाभकारिता, उपकारकता ।

उपयोगी, वि. (सं.-गिन्) प्रयोजनीय, हितसाधन २. उपकारक, लाभदायक ३. अनुकूल ।

उपरक्त, वि. (सं.) विपद्ग्रस्त, दुःखित २. ग्रहणयुक्त, उपप्लुत (सूर्यादि) ३. विषयासक्त ।

उपरत, वि. (सं.) विरक्त, उदासीन २. मृत ।

उपरति, सं. स्त्री. (सं.) विरतिः (स्त्री.) वैराग्यं, औदासीन्यम् २. मृत्युः ।

उपरना, सं. पुं. (हिं. ऊपर) चेलं, चेलकः २. उत्तरीयं, आच्छादनम् ।

उपरम, सं. पुं. (सं.) विरक्तिः (स्त्री.), वैराग्यम् २. निवृत्तिः विश्रान्तः (स्त्री.) ३. मृत्युः ।

उपरांत, क्रि. वि. (सं. उपरि + अन्तः >) परं, ततः परं, तदनन्तरं, तदनु ।

उपराग, सं. पुं. (सं.) सूर्य-चन्द्र,-ग्रहणं, ग्रहपीडनं, २. आपत्तिः (स्त्री.) ३. वर्णः, रंगः ४. प्रतिच्छाया ५. विषयानुरागः ।

उपराज, सं. पुं. (सं.) राजप्रतिनिधिः, उप,-भूपः-नृपः ।

उपराम, सं. पुं. (सं.) निवृत्तिः-विरतिः (स्त्री.), वैराग्यम् २. विश्रामः, कार्यनिवृत्तिः (स्त्री.) ३. मोक्षः ।

उपरि, क्रि. वि. (सं.) दे. 'ऊपर' ।

उपरूपक, सं. पुं. (सं. न.) त्रोटकसट्टकादयो रूपकभेदाः ।

उपरोक्त, वि. (हिं ऊपर + सं. उक्त) दे. 'उपर्युक्त' ।

उपर्युक्त, वि. (सं.) प्रागुक्त, पूर्वोक्त, प्राक्-पूर्व,-वर्णित- निर्दिष्ट ।

उपल, सं. पुं. (सं.) पाषाणः, प्रस्तरः २. रत्नम् ३. मेघः ४. करका ५. वालुका ६. सिता, शर्करा ।

उपलक्षण, सं. पुं. (सं. न.) स्वस्यान्यस्य च वोधकः शब्दः २. संकेतः ३. शब्दशक्तिभेदः (सा.)।

उपलक्ष्य, सं. पुं. (सं. न.) संकेतः, चिह्नं, अभिज्ञानम् २. दृष्टिः (स्त्री.) उद्देश्यम् ।

—में, विचारेण, उद्दिश्य, निमित्तीकृत्य ।

उपलब्ध, वि. (सं.) अधिगत, प्राप्त, गृहीत २. ज्ञात ।

उपलब्धि, सं. स्त्री. (सं.) प्राप्तिः (स्त्री.) अधिगमः २. ज्ञानम् ।

उपलभ्य, वि. (सं.) प्राप्य, प्राप्तव्य २. संमान्य, पूज्य ।

उपला, सं. पुं. (सं. उपलः >) गोमयं, गोमयपिण्डम् ।

उपलालिका, सं. स्त्री. (सं.) तृषा, पिपासा ।

उपल्ला, सं. पुं. (हिं. ऊपर) उपरितनः स्तरः, ऊर्ध्वभागः ।

उपवन, सं. पुं. (सं. न.) आरामः २. लघुवनम् ।

उपवास, सं. पुं. (सं.) लंघनं, अनाहारः उपोषणं, आक्षपणं, अनशनं, उपोषितम् ।

—करना, क्रि. अ., उपवस् (भ्वा. प. अ.) ।

उपविष, सं. पुं. (सं. न.) चारं, गरः, फलविपम् ।

उपविष्ट, वि. (सं.) आसीन, कृतोपवेशन ।

उपवीत, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञसूत्रं, यज्ञोपवीतं २. उपनयनसंस्कारः ।

उपवेद, सं. पुं. (सं.) प्रधानवेदातिरिक्ताः चत्वारः गौणवेदाः (= धनुर्वेद, आयुर्वेद, गंधर्ववेद, स्थापत्यवेद) ।

उपवेशन, सं. पुं. (सं. न.) निषदनं, आसनं, स्थितिः (स्त्री.) ।

उपशम, सं. पुं. (सं.) शमः, शान्तिः (स्त्री.) २. तृष्णाक्षयः ३. इन्द्रियनिग्रहः ४. प्रतिकारः, उपचारः ।

उपशमन, सं. पुं. (सं. न.) सान्त्वनं २. प्रतिविधानम् ।

उपशिष्य, सं. पुं. (सं.) शिष्यस्य शिष्यः ।

उपसंपादक, सं. पुं. (सं.) संपादकसहायः, सहायकसंपादकः ।

उपसंहार, सं. पुं. (सं.) परि,-अवसानं, समाप्तिः (स्त्री.) २. ग्रन्थादिकस्य अन्तिमं प्रकरणम् ३. सारांशः ४. शस्त्रादीनां वारणम् ।

उपसर्ग, सं. पुं. (सं.) क्रियायोगे प्रादयः निपाताः (प्र, परा, अप, सम् , इ०) । २. अपशकुनम् ३. आधिदैविकः उत्पातः ।

उपसागर, सं. पुं. (सं.) लघुसमुद्रः २. वंकः, खातम् ।

उपस्थ, सं. पुं. (सं.) लिंगं, मेढ्रः २. भगः, योनिः (स्त्री.) (३-४) अधो,-मध्य,-भागः ५. क्रोडम् ६. वक्षस् (न.) । वि. समीपोपविष्ट ।

उपस्थान, सं. पुं. (सं. न.) समीपागमनम् २. पूजायै उपागमनम् ३. उत्थाय पूजनम् ४. पूजास्थानम् ५. समाजः ।

उपस्थापक, वि. (सं.) उपनायक, उपनिधायक २. स्मारक ।

उपस्थापन, सं. पुं. (सं. न.) समीपे-पुरतः-उपनिधानम् , उपानयनम् २. उपस्थितिः (स्त्री.) ३. परिचर्या ४. स्मारणम् ।

उपस्थित, वि. (सं.) निकटस्थ, उपसन्न, उपागत, सन्निहित ।

—करना, क्रि. स., पुरस्कृ, समक्षं नी (भ्वा. उ. अ.) ।

—होना, क्रि. अ., उपस्था (भ्वा. प. अ.), प्रविश् (तु. प. अ.) ।

उपस्थिति, सं. स्त्री. (सं.) संनिधानं, सान्निध्यं, वर्तमानता, विद्यमानता ।

उपस्वेद, सं. पुं. (सं.) प्रस्वेदः, धर्मं,-उदकं-जलम् २. वाष्प,-पम् ३. आर्द्रता, उन्नता ।

उपहत, वि. (सं.) नाशित, ध्वस्त २. दूषित ३. पीड़ित ४. अपवित्र ।

उपहार, सं. पुं. (सं.) उपायनं, उपदा ।

उपहास, सं. पुं. (सं.) परि (री) हासः, प्रहसनं, नर्मन् (न.), क्रीडाकौतुकम् २. निन्दा, आक्षेपः ।

—आस्पद, वि. (सं. न.) उपहास्य, उपहासार्ह २. निंदनीय ।

उपांग, सं. पुं. (सं. न.) अवयवः, अंगभागः । २. अंगपूरकं वस्तु (न.) । (वेद के चार उपांग= पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र) ।

उपांत, सं. पुं. (सं.) अन्तसमीपभागः २. प्रान्तभागः ३. लघुतटम् ।

उपांत्य, वि. (सं.) अन्त्यात् पूर्ववर्तिन् ।

उपाकर्म, सं. पुं. (सं.-र्मन् न.) संस्कारपूर्वको वेदाध्ययनारम्भः ।

उपाख्यान, सं. पुं. (सं. न.) प्राचीनकथा, आख्यानम् २. कथान्तर्गतकथा ३. वृत्तान्तः, उदन्तः ।

उपादान, सं. पुं. (सं. न.) प्राप्तिः-उपलब्धिः (स्त्री.) २. बोधः ३. प्रत्याहारः ४. समवायिकारणम् ।

उपादेय, वि. (सं.) ग्राह्य, ग्रहीतव्य, स्वीकार्य २. श्रेष्ठ, उत्तम ।

उपाधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) छलं, कपटम् २. स्वधर्मस्यान्यगततयावभासकं वस्तु (न.) ३. उपद्रवः ४. कर्तव्यचिन्ता ५. प्रतिष्ठासूचकं पदम् ।

उपाध्याय, सं. पुं. (सं.) वेदवेदांगाध्यापकः २. शिक्षकः, अध्यापकः ३. ब्राह्मणोपजातिः (स्त्री.) ।

उपाध्याया, सं. स्त्री. (सं.) अध्यापिका, विद्योपदेशिका ।

उपाध्यायानी, सं. स्त्री. (सं.) उपाध्याय-शिक्षक-गुरु,-पत्नी ।

उपाध्यायी, सं. स्त्री. (सं.) अध्यापिका २. उपाध्यायपत्नी।

उपानत् ,-नह् , सं. पुं. (सं. उपानह् स्त्री.) पादत्राणम् २. पादुका।

उपाय, सं. पुं. (सं.) साधनं, उपकरणं, करणं, सामग्री, युक्तिः (स्त्री.) २. शत्रुविजययुक्तिः (= साम, दान, भेद, दंड)।

उपायन, सं. पुं. (सं. न.) उपदा, उपहारः।

उपार्जन, सं. पुं. (सं. न.) धनादिकस्याहरणम् , अर्जनम् , लाभः।

—करना, क्रि. स., उप-,अर्ज् (चु.), उपादा (जु. आ. अ.)।

उपार्जित, वि. (सं.) संगृहीत, अर्जित।

उपावर्तन, सं. पुं. (सं. न.) प्रत्या,-वर्तनं-व्रजनं-गमनम् २. उपा-गमनं-यानम् ३. भ्रामणम्।

उपालंभ, सं.पुं. (सं.) आ-अधि,-क्षेपः, भर्त्सनं-ना, गर्हा, परिवादः २. दुःखनिवेदनम्।

उपासक, वि. पुं. (सं.) पूजक, सेवक, आराधक, अर्चक।

उपासना, सं. स्त्री. (सं.) समीपे उपवेशनम् २. आराधना, अर्चा।

—करना, क्रि. स., उपास् (अ. आ. से.), पूज् (चु.) उपस्था (भ्वा. आ. अ.)।

उपास्य, वि. (सं.) उपासनीय, आराध्य, पूज्य, भजनीय।

उपेंद्र, सं. पुं. (सं.) विष्णुः, वामनः, कृष्णः।

उपेक्षणीय, वि. (सं.) उपेक्ष्य, त्याज्य २. गर्ह्य, घृणार्ह।

उपेक्षा, सं. स्त्री. (सं.) औदासीन्यं, निःस्पृहता, निःसंगता, विरक्तिः (स्त्री.) २. घृणा, गर्हा।

उपेक्षित, वि. (सं.) अवगणित, अवधीरित, त्यक्त, तिरस्कृत।

उपोद्घात, सं. पुं. (सं.) भूमिका, प्रस्तावना।

उफ़, अव्य. (अ.) हा, अहह, हंत, कष्टम्।

—ओह, अव्य., अहो, ही।

उफनना, क्रि. अ. (सं. उत्+फेन >) उत्फण् (भ्वा. प. से.), क्वथ्-तप्-पच् (कर्म.) २. फेनायते-मंडायते (ना. धा.) ३. उत्सिच् (कर्म.), अंतः क्षुभ् (दि. प. से.)।

उफान, सं. पुं. (सं. उत्+फेन >) उत्सेकः, फेनोद्गमः, उद्रेकः।

उबकना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'क़ै करना'।

उबकाई, सं. स्त्री. दे. 'क़ै'।

उबटन, सं. पुं. (सं. उद्वर्तनम्) अभ्यंगः, अभ्यंजनं, उत्सादनं, अनु-वि,-लेपः, समालंभः।

उबरना, क्रि. अ. (सं. उद्वारणम् >) मुच्-मोक्ष्-उद्धृ (कर्म.) २. अव-परि-उत्,-शिष् (कर्म.)।

उबलना, क्रि. अ. (सं. उद्वलनम् >) फेनायते (ना. धा.) क्वथ्-तप् (कर्म.) २. वेगात् निस्सृ (भ्वा. प. अ.)।

उबार, सं. पुं. (हिं. उबरना) निस्तारः, मोक्षः, त्राणं, रक्षा।

उबारना, क्रि. स., (हिं. उबरना) वि-निर् ,-मुच् (प्रे.) निस्तॄ (प्रे.), रक्ष् (भ्वा. प. से.)।

उबाल, सं. पुं. (हिं. उबलना) दे. 'उफान' २. उद्वेगः, आवेशः।

—आना, क्रि. अ., दे. 'उफनना'।

—विंदु, सं. पुं., बुद्बुदांकः।

उबालना, क्रि. स. (हिं. उबलना) उत्क्वथ् (भ्वा. प. से.), श्रा (अ. प. अ.)।

उबासी, सं. स्त्री. (सं. उत्+श्वासः >) जृम्भः, जृम्भा।

उभरना, क्रि. अ. (सं. उद्भरणम् >) श्वि (भ्वा. प. से.), स्फाय्-वृध् (भ्वा. आ. से.) आध्मा-विस्तॄ (कर्म.) २. दे. 'उठना' ३. परिवह् (भ्वा. उ. अ.) ४. गर्व् (भ्वा. प. से.) ५. उत्पद् (दि. आ. अ.) ६. अपा-वि,-वृ. (कर्म.) ७. समृध् (दि. प. से.) ८. अपगम् ९. यौवनं आप् (स्वा. उ. अ.) १०. बहिर्लंव् (भ्वा. आ. से.) ११. भार-मुक्त (वि.) भू।

उभरा, वि. (हिं. उभरना) स्फीत, शून २. विगतभार।

उभारना, क्रि. स. (हिं. उभरना) उत्तेजनं, उद्दीपनम् २. उत्थापनम् ३. प्रोत्साहनं, प्रेरणम्।

उभार, सं. पुं. (हिं. उभरना) उच्चता, उच्छ्रायः २. वृद्धिः उन्नतिः (स्त्री.) ३. शोफः, शोथः ४. स्फीतिः (स्त्री.) पीनता ५. प्रलंबता।

उमंग, सं. स्त्री. (हिं. उमगना) उल्लासः, आनन्दः २. चित्ततरंगः, लहरी ३. आधिक्यम् ४. उत्साहः, औत्सुक्यम्।

उमगना, क्रि. अ. (सं. उन्मंगनम् >) दे. 'उभरना', 'उमड़ना' २. उल्लस् (भ्वा. प. से.), प्री (कर्म.)।

उमड़ना, क्रि. अ. (सं. उन्मंडनम् >) परिवृह् (भ्वा. उ. अ.), प्रवृध् (भ्वा. आ. से.) २. वेगात् प्रवृत् (भ्वा. आ. से.) ३. जनसंबाध (वि.) भू ५. क्षुभ् (दि. प. से.)।

—घुमड़ना, परिभ्रम्य तन् (कर्म.)।

उमदा, वि. (अ.) उत्तम, श्रेष्ठ।

उमर, सं. स्त्री. (अ. उम्र) वयस् (न.), बाल्याद्यवस्था २. जीवितकालः, आयुस् (न.)।

उमरा, सं. पुं. (अ०, 'अमीर' का बहु०) धनिकाः २. पुरोगाः, नायकाः ३. सामन्ताः (सब बहु०)।

उमस, सं. स्त्री. (सं. उष्मन् पुं.) उष्मः, निर्वाततता, घर्मः।

उमा, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती २. दुर्गा ३. कीर्तिः (स्त्री.) ४. कान्तिः (स्त्री.) ५. ब्रह्मविद्या।

उमाहना, क्रि. अ., दे. 'उमड़ना'।

उमेठना, क्रि. स. (सं. उद्वेष्टनम् >) मुट्-मुड् (चु.), आकुंच् (प्रे.), पर्यावृत् (प्रे.), संपुटी-पिंडी,-कृ।

उमेठवाँ, वि. (हिं. उमेठना) कुञ्चित, अराल।

उम्मेद, सं. स्त्री. (फ़ा.) आशा, आशंसा २. प्रतीक्षा, उदीक्षा, ३. आश्रयः, अवलंबः ४. विश्वासः, विश्रंभः।

—वार, सं. पुं. (फ़ा) आशान्वित, आशावत् २. याचकः, पदान्वेषिन्, प्रत्याशिन्।

—होना, मु., प्रसवः प्रतीक्ष् (कर्म.)।

उम्र, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'उमर'।

उर, सं. पुं. (सं. उरस न.) हृदयं, चित्तम्, मनस् (न.) २. क्रोडं, वक्षस् (न.), वक्षःस्थलम्।

—लाना, मु., आलिंग् (भ्वा. प. से.) २. विचर् (प्रे.)।

उरग, सं. पुं. (सं.) सर्पः।

उरगारि, सं. पुं. (सं.) गरुडः।

उरज, उरजात, सं. पुं., दे. 'उरोज'।

उरद, सं. पुं. (सं. ऋद्ध >) माषः, कुरुविंदः, मांसलः, धान्यवीरः, वृषांकुरः, बलाढ्यः, पितृभोजनः।

उरला, वि. (सं. अपर >) अपर, अवर २. पृष्ठस्थ, पश्चिम ३. उत्तर, अपरोक्त।

उरश्छद, सं. पुं. (सं.) उरस्त्राणम्, वक्षस्त्राणम्।

उरसिज, सं. पुं. (सं.) स्तनः, उरोजः।

उरसिल, वि. (सं.) विशाल-कपाट,-वक्षस्-उरस्।

उरु[1], वि. (सं.) आयत, विस्तीर्ण, विशाल, विपुल।

उरु[2], सं. पुं. (सं. ऊरुः) सक्थि (न.)।

—क्रम, वि. (सं.) बलवत् २. द्रुतगति। सं. पुं., वामनावतारः २. सूर्यः।

उरोज, सं. पुं. (सं.) कुचः, स्तनः।

उर्दू, सं. स्त्री. (तु. ओर्दू) अरबीपारसीतुरुष्क-भाषाशब्दैः मिश्रिता पारसीलिप्यां लिखिता हिंदीभाषा, उर्दूः (स्त्री.) २. शिविरहट्टः।

उर्फ़, सं. पुं. (अ.) उपनामन् (न.), उपाख्या।

उर्वरा, सं. स्त्री. (सं.) बहुफलदा भूमिः (स्त्री.) २. पृथिवी। वि. स्त्री., फलदा, शस्यप्रदा।

उर्वी, सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी, धरणी।

उलझन, सं. स्त्री. (हिं. उलझना) विघ्नः, प्रतिबंधः, बाधा २. समस्या, चिन्ता-विवाद,-विषयः।

उलझना, क्रि. अ. (सं. अवरुध् >) संश्लिष्-संग्रन्थ् (कर्म.), जटिली भू २. सम्बन्ध् संमिश्र् (कर्म.) ३. दे. 'लिपटना' ४. व्यापृत (वि.) भू ५. स्निह् (दि. प. वे.) ६. विवद् (भ्वा. आ. से.), वैरायते-कलहायते (ना. धा.) ७. संकटे पत् (भ्वा. प. से.) ८. वक्री-कुटिली,-भू।

उलझाना, क्रि. स. (हिं. उलझना) संश्लिष् (प्रे.), संग्रन्थ् (चु.) २. व्यापृ-प्रयुज्-विनियुज् (प्रे.) ३. वक्रीकृ।

उलटना, क्रि. अ. (सं. उल्लुठनम् >) परि-परा,-वृत् (भ्वा. आ. से.), विपर्यस् व्यत्यस् (कर्म.) अधोमुखी भू २. परि-,भ्रम् (भ्वा. दि. प. से.), घूर्ण (तु. प. से.) ३. दे. 'उमड़ना' ४. संकरी-संकुली,-भू ५. विपरीत-विरुद्ध (वि.) भू ६. क्रुध् (दि. प. अ.) ७. मृ (तु. आ. अ.), मूर्छ् (भ्वा. प. से.) ८. पत् (भ्वा. प. से.)। क्रि. स., परि-परा,-वृत्

(प्रे.) अधोमुखी कृ २. निपत् (प्रे.) ३. क्षिप् (तु. उ. अ.) ४. संकरी-संकुली,-कृ ५. विपरीतं कृ ६. उत्तरप्रत्युत्तरं दा (जु. उ. अ.) ७. निःसंज्ञ मूर्च्छित (वि.) कृ. ८. दे. 'ऊँडेलना' ९. ध्वंस्-नश् (प्रे.)।

उलट-प (पु) लट, सं. स्त्री. (हिं. उलटना-पुलटना) विपर्यासः, व्यत्यासः, परिवर्तनम् २. व्यतिहारः, विनिमयः ३. क्रमभंगः, व्यतिक्रमः। वि., विपर्यस्त, अव्यवस्थित, अक्रम, अस्तव्यस्त।

उलटफेर, सं. पुं., दे. 'उलट-पुलट' सं. स्त्री.।

उलटा, वि. (हिं. उलटना) व्यत्यस्त, विपर्यस्त, अधरोत्तर, अधोमुख २. क्रमरहित, अव्यवस्थित ३. विरुद्ध, विपरीत ४. अनुचित, असंगत। क्रि. वि., व्यतिक्रमेण, विपर्ययेण, असंगतम् २. अनुचितं, अयुक्तम्।

—ज़माना, मु., विपरीतकालः, न्यायरहितः समयः।

—तवा, मु., अति,-कृष्ण-श्याम-नील।

उलटी खोपड़ी का, मु., मूढ, जड।

—गंगा बहाना, मु., असाध्यं साध् (स्वा. प. अ.)।

—पट्टी पढ़ाना, मु., कुपथे प्रवृत् (प्रे.)।

—माला फेरना, मु., अमंगलं कम् (भ्वा. आ. से.)।

—सांस चलना, मु., मरणासन्न (वि.) जन् (दि. आ. से.)।

—सीधी सुनाना, मु., निर्भर्त्स् (चु. आ. से.)।

—पाँव फिरना, मु., झटिति प्रतिनिवृत् (भ्वा. आ. से.)।

—छुरे से मूँड़ना, मु., अतिसंधाय स्वप्रयोजनं साध् (स्वा. प. अ.)।

उलटाना, क्रि. स. (हिं. उलटना) दे. 'उलटना' क्रि. स.। २. प्रति ऋ (प्रे. प्रत्यर्पयति) ३. अयन्था कृ।

उलटापुलटा-टी, वि., दे. 'उलटपलट'।

उलटी, सं. स्त्री. (हिं. उलटना) वमः, वमनं, वमिः (स्त्री.), छर्दिका।

उलटे, क्रि. वि. (हिं. उलटना) विपरीततया, विपर्ययेण।

उलथा, सं. पुं. (सं. उत्स्थलम् >) नृत्यभेदः २. विपर्यस्तप्लुतम्।

उलफ़त, सं. स्त्री. (अ.) अनुरागः, प्रेमन् (न.)।

उलार, वि. (हिं. ओलरना = लेटना) पृष्ठभागे भारवत् (शकटादि)।

उलाहना, सं. पुं. (सं. उपालंभनम्) उपालंभः, दुःखनिवेदनम्, आ-अधि,-क्षेपः, (सविलापा) विज्ञापना।

—देना, क्रि. स., उपालभ् (भ्वा. आ. अ.), निन्द् (भ्वा. प. से.)।

उलीचना, क्रि. स. (सं. उलुंचनम्) उलुंच् (भ्वा. प. से.), हस्तादिभिः जलं बहिः क्षिप् (तु. उ. अ.)।

उलूक, सं. पुं. (सं.) घूकः, दे. 'उल्लू' २. इंद्रः ३. कणादः।

उलूखल, सं. पुं. (सं. न.) उदूखलम् २. गुग्गुलुः।

उल्का, सं. स्त्री. (सं.) खोल्का, उत्पातः, पतन्नक्षत्रं २. प्रकाशः ३. अग्निशिखा ४. अग्निः ५. दीपिका ६. प्र-,दीपः, दीपकः ७. अग्निकाष्ठं, अलातम्।

—पात, सं. पुं. (सं.) तारा-तारका-नक्षत्र-उडु,-पातः-पतनम्।

उल्था, सं. पुं. (हिं. उलथना) अनुवादः, दे.।

उल्मुक, सं. पुं. (सं.) ज्वलत्काष्ठम्, उल्का।

उल्लंघन, सं. पुं. (सं. न.) व्यतिक्रमः, अति-,क्रमः-क्रमणम्, भंगः, अतिपातः २. आज्ञालंघनं, प्रतीपाचरणम् ३. उत्प्लवः।

उल्लंघित, वि. (सं.) दे० 'खड़ा'।

उल्लास, सं. पुं. (सं.) हर्षः, आनंदः २. प्रकाशः ३. अलंकारभेदः (सा.) ४. ग्रन्थपरिच्छेदः।

उल्लिखित, वि. (सं.) उत्कीर्ण, पाषाणादिषु अभिलिखित २. चक्रेण तष्ट ३. लिखित ४. उपरिलिखित, उपर्युक्त ५. चित्रित, आलिखित।

उल्लू, सं. पुं. (सं. उलूकः) पेचकः, काकारिः, कौशिकः, दिवान्धः, दिवाभीतः, घूकः, निशाटनः २. मूर्खः।

—का पट्ठा, सं. पुं., जडः, बालिशः।

—बनाना, मु., व्यामुह् (प्रे.)।

—बोलना, मु., निर्जनी भू।

उल्लेख, सं. पुं. (सं.) लेखः, लिखितम्, लेख्यम् २. वर्णनं, निरूपणम् ३. अलंकारभेदः (सा.)।

उल्लेखनीय, वि. (सं.) लेखार्ह, उत्-, लेख्य २. वर्णनीय, निरूपणीय ३. अद्भुत।

उल्व, सं. पुं. (सं. न.) जरायुः २. गर्भाशयः।

उल्व (ल्व) ण, वि. (सं.) स्पष्ट, विशद २. प्रवल, दृढ़ ३. अधिक, अतिशय।

उशना, सं. पुं. (सं.-नस्) शुक्राचार्यः।

उशबा, सं. पुं. (अ.) वृक्षभेदः।

उशीनर, सं. पुं. (सं.-राः) गांधारदेशः २. गांधारवासिन् ३. शिविजनकः।

उशीर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) वीरणमूलं, अभयं, नलदं, सेव्यम्।

उषा, सं. स्त्री. (सं.) उषस् (स्त्री. न.), प्रभातं, अरुणोदयः, दिनमुखं, रात्रिशेषः, ब्राह्मवेला। २. अरुणोदयलालिमन् (पुं.) ३. बाणासुर-कन्या, अनिरुद्धपत्नी।

उष्ट्र, सं. पुं. (सं.) क्रमेलकः, दे. 'ऊँट'।

उष्ण, वि. (सं.) सं.-उत्-, तप्त २. उद्योगिन्, सोद्योग, परिश्रमिन्, क्षिप्रकारिन्, दक्ष ३. उष्णप्रकृति।

सं. पुं., ग्रीष्मः २. नरकविशेषः ३. पलांडुः।

—कटिबंध, सं. पुं. (सं.) भूमेः उष्णतमः मध्यप्रदेशः।

उष्णता, सं. स्त्री. (सं.) सं-उत्-परि,-तापः, तापः, उ (ऊ)ष्मन् (पुं.), उष्णत्वम्।

उष्णीष, सं. पुं. (सं. पुं. न.) शिरोवेष्टनं २. मुकुटं, किरीटम्।

उष्म, सं. पुं. (सं.) दे. 'उष्णता' २. आतपः, सूर्यालोकः ३. ग्रीष्मः।

उष्मा, सं. स्त्री. (सं.-ष्मन् पुं.) दे. 'उष्णता' २. आतपः ३. क्रोधः।

उस, सर्व. (हिं. वह) तद्, अदस्।

उसाँस, सं. स्त्री. (सं. उच्छ्वासः) दीर्घश्वासः, उच्छ्वसितम् २. श्वासः, निश्वासः ३. (दुःखा-दिसूचकः) दीर्घनिश्वासः।

उसार, सं. पुं. (सं. अवसारः) विस्तारः।

उसूल, सं. पुं. (अ.) नियमः, सिद्धान्तः।

उस्तरा, सं. पुं. (फ़ा. उस्तुरा) क्षुरः, नापि-तास्त्रम्।

उस्ताद, सं. पुं. (फ़ा.) अध्यापकः, गुरुः। वि., कपटिन् २. चतुर।

उस्तादी, सं. स्त्री. (फ़ा.) अध्यापकत्वम् २. नैपुण्यम् ३. वञ्चनं, विप्रलंभः।

उस्तानी, सं. स्त्री. (फ़ा.) अध्यापिका २. गुरु-पत्नी ३. मायाविनी।

ऊ

ऊ, वर्णमालायाः षष्ठः स्वरवर्णः, ऊकारः।

ऊः, अव्य. (अनु.) आः, हा, कष्टम्।

ऊँघ, सं. स्त्री. (सं. अवाङ्>) तंद्रा, ईषत्-स्वल्प,-निद्रा।

ऊँघना, क्रि. अ. (हिं. ऊँघ) ईषत् स्वप्-निद्रा (अ. प. अ.), स्वप् के सन्नन्त रूप (सुषुप्सति आदि)।

ऊँच, वि. (सं. उच्च) उच्छ्रित २. श्रेष्ठ ३. कुलीन।

—नीच, वि., कुलीनाकुलीन, उच्चावच। सं. पुं., हानिलाभौ, भद्राभद्रे (द्वि.)।

ऊँचा, वि. (सं. उच्च) सम्-, उच्छ्रित, उद्गत, प्रांशु, ऊर्ध्व, तुंग, उदग्र, सोच्छ्राय २. श्रेष्ठ, मुख्य, अग्र्य, परम, महा-, प्रधान, ३. प्रवल, तीव्र।

—नीचा, वि., विषम, असम, नतोन्नत। सं. पुं., हानिलाभौ २. भद्राभद्रे।

—बोल बोलना, मु., विकत्थ् (भ्वा. आ. से.)।

—सुनना, मु., किंचिद् बधिरत्वम्।

ऊँचाई ऊँचान, सं. स्त्री. (हिं. ऊँचा) उच्छ्र (च्छ्रा) यः, आरोहः, उत्सेधः, उत्-, तुंगता, उच्चता, उत्कर्षः, उन्नतिः (स्त्री.) २. महत्त्वं, गौरवम्।

ऊँचे, क्रि. वि. (हिं. ऊँचा) उच्चैः, उपरि, ऊर्ध्वं, उच्चम्।

ऊँट, सं. पुं. (सं. उष्ट्रः) क्रमेलकः, महांगः, मयः, दीर्घगतिः, दासेरकः, धूसरः, लंबोष्ठः, दीर्घजंघः, दीर्घः, महापृष्ठः, महाग्रीवः।

—कटा (टी) रा, सं. पुं. (सं. उष्ट्रकंटकः-कम्) उष्ट्रप्रियः कंटकितो गुल्मभेदः, कंटालुः, उत्कंटकः।

ऊँटनी, सं. स्त्री. (हिं. ऊँट) उष्ट्री, लंबोष्ठी, महांगी।

ऊँहूँ, अव्य (अनु.) न, नो, नो-नो, न कदापि।

ऊ, सं. पुं. (सं.) शिवः २. चन्द्रः ३. रक्षकः।

ऋषभ, सं. पुं. (सं.) वृषः, दे. 'बैल' २. संगीते द्वितीयस्वरः ३. समासान्ते श्रेष्ठतावाचकः (उ. नरर्षभः)।

—देव, सं. पुं. (सं.) विष्णोरवतारो नाभिराजपुत्रः २. प्रथमः तीर्थंकरः (जैन.)।

—ध्वज, सं. पुं. (सं.) शिवः।

ऋषि, सं. पुं. (सं.) सत्यवचस्, शापास्त्रः, मंत्रद्रष्टृ, मुनिः, तत्त्वविद्, सिद्धः, ब्रह्मज्ञः।

—ऋण, सं. पुं. (सं. न.) मुन्युद्धारः (टि. यह वेदों के पठनपाठन से उतरता है)।

ए

ए, हिन्दीवर्णमालाया अष्टमः स्वरवर्णः, एकारः।

एँच-पेंच, सं. पुं. (अनु.+फ़ा. पेच) वक्रता, कुटिलता।

एंडी, सं. स्त्री., कौशेय-कोश,-भेदः २. तस्य कीटः ३. कौशिकवस्त्रभेदः।

एंपरर, सं. पुं. (अं.) सम्राज्, महाराजः, राजाधिराजः, अधिराजः।

एंपायर, सं. पुं. (अं.) अ(आ)धिराज्यम्, साम्राज्यम्।

एंप्रेस, सं. स्त्री. (अं.) सम्राज्ञी, राजाधिराजमहाराज,-पत्नी, अधीश्वरी।

एंबुलेंस, सं. स्त्री. (अं.) चलच्चिकित्सालयः २. क्षत-रुग्ण,-वाहनं-शकटी।

एकंगा, वि. (सं. एकांग) एक,-पक्षीय देशीय २. असमभारः।

एक, वि. (सं. सर्व.) एकः, एका, एकम् २. अतुल्य, अनुपम ३. कश्चन, कश्चित्, काचन, किंचन ४. तुल्य, समान।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकः (१) च।

—करना, क्रि. स., संगम् (प्रे.)।

—होना, क्रि. अ., संघट् (भ्वा. आ. से.)।

—तरफा, वि., एक,-पक्षीय देशीय।

—बार, क्रि. वि., सकृत् २. एकदा ३. पूर्वं, पुरा, प्राक्।

—बारगी, क्रि. वि., युगपत्, समम् ३. साकल्येन।

—मत, वि., एक-सम,-चित्त २. सधर्मः।

—मत होकर, क्रि. वि., साम्मत्येन ऐकमत्येन।

—आँख देखना, मु., समं दृश् (भ्वा. प. अ.)।

—एक, मु., सर्व, सकल २. पृथक्-पृथक् ३. क्रमशः।

—एक करके, मु., आनुपूर्व्या, आनुपूर्व्येण।

—और एक ग्यारह होना, मु., संघेन वर्द्धते बलम्।

—टक, मु., निर्निमेषम्, अनिमिषम्।

—तो, मु., प्रथमं तावत्।

—दम, मु., निरन्तरम् २. झटिति, सपदि ३. सकृदेव ४. सर्वथा।

—दूसरे को, मु., अन्योऽन्यं, परस्परं, इतरेतरम्। वि. मिथः (अव्य.), परस्पर, इतरेतर।

—पेट के, मु., सोदर, सहोदर, सोदर्य।

—बात, मु., सत्य प्रतिज्ञा २. यथार्थवचनम्।

—सा, मु., तुल्य, सदृश, सम।

—स्वर से कहना, मु., ऐकमत्येन वद् (भ्वा. प. से.)।

केवल—, वि., असहाय, अद्वितीय।

कोई—, कश्चित्, काचित्, किंचित्।

दो में से—, वि., अन्यतर, एकतर, अन्यतरा, अन्यतरत् (न.)।

बहुतों में से—, अन्यतम, एकतम, एकतमा, एकतमत् (न.)।

एकचित्त, वि. (सं.) अवहित, स्थिरचित्त २. अभिन्नहृदय।

एकचित्तता, सं. स्त्री. (सं.) अवधानं, मनोयोगः २. ऐकमत्यं, संमतिः (स्त्री.)।

एकछत्र, वि. (सं.) एकशासकाधीन। क्रि. वि. ऐकाधिपत्येन।

एकड़, सं. पुं. (अं.) क्षेत्रफलमानभेदः, एकड़म् (१⅗ बीघा=४८४० वर्गगज)।

एकतरफ़ा, वि. (फ़ा. यकतरफः) एकपक्षीय २. सपक्षपात ३. एकपार्श्वसंबंधिन्।

—डिगरी सं. स्त्री. (फ़ा+अं.) एकपक्ष्यनिर्देशः।

एकता, सं. स्त्री. (सं.) संघटनं, ऐक्यम्, संहतिः (स्त्री.), संगमः, समवायः २. साम्यं, तुल्यता।

एकतान, वि. (सं.) एकाग्रचित्त, मग्न, लीन ।
एकतारा, सं. पुं. (हिं. एक+तार) एकतारः, वाद्यभेदः ।
एकत्र, क्रि वि. (सं.) एक,-स्थले-स्थाने ।
—करना, क्रि. स., संग्रह् (क्र्. उ. से.) ।
—होना, क्रि. अ., संमिल् (भ्वा. प. से.) ।
एकत्रित, वि. (सं. एकत्र >) संघीभूत, संचित, संगृहीत ।
एकत्व, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'एकता' ।
एकदंत, सं. पुं. (सं.) गणेशः, लंबोदर ।
एकदा, अव्य. (सं.) सकृत् (अव्य.) २. पूर्वं, पुरा, प्राक् (सब अव्य.) ।
एकदेशीय, वि. (सं.) एकदेश्य, एकस्थानीय ।
एकनिष्ठ, वि. (सं.) एकोपासक ।
एकरंग , वि. (सं.) समान, सवर्ण २. शुद्धात्मन् ।
एकरस, वि. (सं.) तुल्य, सदृश २. अव्यय, अपरिणामिन्, परिवर्तनरहित ।
एकरूप, वि. (सं.) स-सम-समान,-रूप, तुल्य, समान ।
एकवचन, सं. पुं. (सं. न.) एकवाचकं वचनम् (व्या.) ।
एकवाक्यता, सं. स्त्री. (सं.) सांमत्यं, ऐकमत्यम् ।
एकसर, अ., आद्यन्तम्, आपादमस्तकम् । २. सकृत् (अव्य.) वि. एकाकिन् , असहाय ।
एकहरा, वि. (सं. एकस्तर) एकास्तर, एकफलक, २. एक,-सूत्र-गुण ३. तनु, सूक्ष्म ।
—बदन, सं. पुं., कृशदेहः ।
एकांकी, सं. पुं. (सं.-किन्) रूपकभेदः २. एकांकयुक्तं रूपकम् ।
एकांग, वि. (सं.) एकावयव, एकभाग २. विकलांग । सं. पुं. अंगरक्षकः २. विष्णुः ३. बुधग्रहः ४. चन्दनः-नम् ५. शिरस् (न.) ।
एकांगी, वि. (सं.-गिन्) एकपक्षीय २. दुर्दम ।
एकांत, वि. (सं.) अत्यन्त २. एकाकिन् , पृथक्स्थित । सं. पुं. (सं.) विजनं, विविक्तम् ।
—वास, सं. पुं. (सं.) संसर्गाभावः ।
—वासी, वि. (सं.-सिन्) निर्जन-विजन,-वासिन् ।
एका, सं. पुं. (हिं. एक) संहतिः (स्त्री.), ऐक्यम् , संघटनम् ।

एकाएक, क्रि. वि. (सं. एक+एक >) अकस्मात्, एकपदे, सहसा, अकांडे ।
एकाकार, सं. पुं. (सं.) सारूप्यं, साम्यम् वि., सरूप, सम, समान ।
एकाकी, वि. (सं.-किन्) एकल, दे. 'अकेला' ।
एकाक्ष, वि. (सं.) काण, चन्द्रलोचन । सं. पुं., काकः २. शुक्राचार्यः ।
एकाक्षर,- वि. (सं.) एक-अक्षरिन्-वर्ण । सं. पुं. (सं. न.) ओंकारः ।
एकाग्र, वि. (सं.) स्थिरबुद्धि, धीर २. अनन्यचित्त, एकतान, एकाग्रवृत्ति ।
—चित्त, वि., दे. 'एकाग्र' २ ।
एकाग्रता, सं. स्त्री. (सं.) अनन्य,-चित्तता-मनस्कता, एकतानता ।
एकात्मता, सं. स्त्री. (सं.) एकत्वं, एकता, एकरूपता, ऐक्यं, भेदाभावः ।
एकादशी, सं. स्त्री. (सं.) हरि,-दिनं-दिवसः-वासरः ।
एकाधिक, वि. (सं.) बहु, बहुल, अनेक, बहुसंख्यक, भूरि ।
एकाधिकार, सं. पुं. (सं.) एक,-व्यापारः-व्यवसायः २. अनन्यसाधारणोऽधिकारः ।
एकाधिपति, सं. पुं. (सं.) अधीश्वरः, अधिराजः, सम्राज्, महाराजः ।
एकाधिपत्य, सं. पुं. (सं. न.) एक,-प्रभुत्वं-स्वामित्वम् , पूर्णप्रभुत्वम् ।
एकार्थक, वि. (सं.) सम-समान-तुल्य,-अर्थक । सं. पुं., पर्यायशब्दः ।
एकावली, सं. स्त्री. (सं.) अलंकारभेदः (सा.) २. एकयष्टिका, एकतारो हारः ।
एकीकरण, सं. पुं. (सं. न.) एकतासाधनं, एकत्वसंपादनम् ।
एकीभाव, सं. पुं. (सं.) संघटनं, संयोगः, संश्लेषः ।
एकीभूत, वि. (सं.) संयुक्त, मिश्रित, संहत ।
एक्का, वि. (सं. एक >) एक,-विषयक-संबंधिन् २. एकाकिन् , एकल । सं. पुं. यूथभ्रष्टः प्राणिन् २. एकपशुवाह्यो द्विचक्रो वाहनभेदः ३. सैनिकभेदः ४. एकचिह्नयुक्तं क्रीडापत्रम् ।
एक्कावान, सं. पुं. (हि. एक्का) सारथिः, सूतः, हयंकषः ।

एक्की, सं. स्त्री. (हिं. एक्का) एकवृषभवाह्यं शकटम्, वृषवहनम्।
एक्ज़ामिनर सं. पुं. (अं.) दे. 'परीक्षक'।
एक्ज़ामिनेशन, सं. पुं. (अं.) दे. 'परीक्षा'।
एक्सरे, सं. स्त्री. (अं.) एक्सरश्मिः।
एजेंट, सं. पुं. (अं.) प्रतिनिधिः, प्रतिहस्तः २. दे. 'अढ़तिया' ३. कारकः।
एजेंसी, सं. स्त्री. (अं.) परद्रव्यक्रयविक्रयस्थानम् २. प्रातिनिध्यम् ३. कारकत्वम्।
एटम, सं. पुं. (अं.) अणुः।
—बम, सं. पुं., अणुबंबम्।
एटर्नी, सं. पुं. (अं.) परकार्य,-साधकः-संपादकः, प्रति,-पुरुषः-हस्तः।
एड़, सं. स्त्री. [सं. एडु (डू) कम्] पार्ष्णिः (पुं. स्त्री.) पाद,-मूलं-तलम्, गोहिरम्।
—लगाना, मु., घोटकादीन् पार्ष्णिना प्रचुद् (प्रे.) २. उत्तिज् (प्रे.) ३. बाध् (भ्वा. आ. से.)।
एडवोकेट, सं. पुं. (अं.) दे. 'ऍडवोकेट' तथा 'वकील'।
एडिटर, सं. पुं. (अं.) संपादकः।
एडिटरी, सं. स्त्री. (अं. एडिटर >) संपादकता।
एड़ी, सं. स्त्री. [सं. एडु (डू) कं] दे. 'एड़'।
—रगड़ना, मु., सुदीर्घकालं कष्टं सह् (भ्वा. आ. से.) २. चिररोगेण पीड् (कर्म)।
—से चोटी तक, मु., आपादशीर्षम्, आद्यन्तम्।
एतबार, सं. पुं. (अ.) विश्वासः, प्रत्ययः।
एतराज, सं. पुं. (अ.) आपत्तिः (स्त्री.), बाधः, विरोधः, आक्षेपः, प्रत्यवायः।
एरंड, सं. पुं. (सं.) चित्रकः, पंचांगुलः दीर्घपत्रकः, गन्धर्वहस्तकः।
एलची, सं. पुं. (तु.) राज-,दूतः, संदेशहरः।
एला, सं. स्त्री. (सं.) बाला, हिमा, चंद्रिका, बहुलगंधा, ऐन्द्री, द्राविड़ी।
एलान, सं. पुं. (अ.) घोषणा, विज्ञप्तिः (स्त्री.)।
एलेक्टरेट, सं. पुं. (अं.) निर्वाचकसमूहः २. निर्वाचनक्षेत्रम्।
एवं, क्रि. वि. (सं.) इत्थं, अनया रीत्या २. अपि, च।
एव, अव्य. (सं.) केवलम्,-मात्र २. अपि, च, अपि च।
एवज, सं. पुं. (फ़ा.) प्रति (ती) कारः, प्रति,-क्रिया-अपकारः २. क्षति,-निष्कृतिः (स्त्री.)-पूरणम् ३. प्रतिनिधिः।
एशिया, सं. पुं. (यू. इव. अशु = पूर्वदिशा >) पंचमहाद्वीपेषु अन्यतमः।
एशियाई, वि. (अं. एशिया >) एशियासंबंधिन्।
एषणा, सं. स्त्री. (सं.) आकांक्षा, स्पृहा, वांछा, इच्छा।
एहतियात, सं. स्त्री. (अ.) अवधानं, अवेक्षा २. अल्पाहारः।
एहसान, सं. पुं. (अ.) कृपा, उपकारः २. कृतज्ञता।
—मंद, वि., कृतज्ञ कृतवेदिन्।

ऐ

ऐ, हिन्दीवर्णमालाया नवमः स्वरवर्णः, ऐकारः।
ऐं, अव्य. (अनु.) किं, कथं, ननु २. अहो, अद्भुतं, आश्चर्यम्।
ऐंग्लो-, वि. (अं. समास के आरंभ में) आंग्ल-।
—इंडियन, सं. (अं.) आंग्लभारतीयः।
—वर्नाक्यूलर, वि. (अं.) आंग्ल-(विद्यालय) स्वदेशीय।
ऐंच, सं. स्त्री. (हिं. ऐंचना) आ-समा,-कर्षः-कर्षणम्, प्रसारः, आयामः, विततिः (स्त्री.)।
ऐंचना, क्रि. स. (हिं. खींचना) कृष् (भ्वा. प. अ.) २. विस्तॄ (प्रे.), वितन् (त. उ. से.) ३. अप-अव,-कृष्।
ऐंचाताना, वि. (हिं. ऐंचना + तानना) वक्रदृष्टि, केकर, केदर, वलिर।
ऐंचातानी, सं. स्त्री. (पूर्व.) उभयतः कर्षणं २. संघर्षः, स्पर्द्धा, अहमहमिका।
ऐंठ, सं. स्त्री. (हिं. ऐंठना) गर्वः, दर्पः आटोपः २. सगर्वगतिः ३. द्वेषः, मात्सर्यम् ४. दे. 'ऐंठन'।
ऐंठन, सं. स्त्री. (पूर्व.) व्यावर्तनं, आ-, कुञ्चनं, वक्रता २. चूर्णः, वस्त्रभंगः ३. आकर्षणम् ४. गात्रोपघातः, उद्वेष्टनम्।
ऐंठना, क्रि. स. (सं. आवेष्टनम्) व्या-परि,-वृत् (प्रे.), मुट्-मुड् (चु.), आकुंच् (भ्वा. प. से.) २. पीडयित्वा आदा (जु. आ. अ.), बलेन निष्कृष् (भ्वा. प. अ.) ३. छलेन आदा। क्रि. अ., आकुंच् (कर्म.), व्यावृत् (भ्वा. आ. से.) २. प्र-वि,-तन् (कर्म.) ३. गर्व् (भ्वा.

प. से.) ४. प्रलप् (भ्वा. प. से.) ५. दे. 'मरना'।

ऐंठू, वि. (हिं. ऐंठना) गर्वित, दृप्त।

ऐंड़, सं. पुं. (हिं. ऐंठ) दे. 'ऐंठ' (१)। २. आवर्तः, भ्रमः। वि., निर्गुण, अकिंचित्कर।

—दार, वि. (हिं.+फ़ा.) सगर्व, अहंमानिन् २. उज्ज्वल।

—ऐंड़ना, क्रि. अ. (हिं. ऐंठना) व्यावृत् (भ्वा. आ. से.) अंगानि आतन् (त. उ. से.) ३. गर्व् (भ्वा. प. से.)। क्रि. स., दे. 'ऐंठना' क्रि. सं. (१)।

ऐंड़ाना, क्रि. अ. (ऐंड़ना) अंगानि आतन् (त. उ. से.) २. सगर्व चल् (भ्वा. प. से.)।

ऐंदव, वि. (सं.) चान्द्र, चान्द्रिक, चान्द्रमस, सौमिक। सं. पुं. चान्द्रमासः।

ऐंद्र, वि. (सं.) इन्द्र-शक्र,-विपयक, पौरन्दर। सं. पुं., ऐन्द्रिः, इन्द्रपुत्रः।

ऐंद्रजालिक, सं. पुं. (सं.) मायिन्, मायिकः, कुहुकजीविन्।

ऐंद्रि, सं. पुं. (सं.) इन्द्रपुत्रो जयन्तः २. अर्जुनः ३. बालिः ४. काकः।

ऐंद्रिय, वि. (सं.) ऐन्द्रियक, इन्द्रिय,-विपयक, ग्राह्य-संबंधिन्।

ऐ, अव्य. (सं. अयि) भोः, हे, अरे।

ऐक, वि. (सं.) एक,-विषयक-सम्बधिन्।

—पत्य, सं. पुं. (सं. न.) एकतंत्रशासनम् २. पूर्ण,-प्रभुत्वं-स्वामित्वम्।

—भाव्य, सं.पुं. (सं. न.) १-२. स्वभाव-उद्देश्य,-ऐक्यम्।

—मत्य, सं. पुं. (सं. न.) मतैक्यम्, साम्मत्यम्।

—राज्य, सं. पुं. (सं. न.) एकतंत्रशासनम्।

ऐकांतिक, वि. (सं.) सिद्ध, सम्पन्न २. संपूर्ण ३. निर्दोष ४. अनन्यसम्बद्ध।

ऐक्ट, सं. पुं. (अं.) अधिनियमः २. रूपक-नाटक, अंकः ३. कृतिः (स्त्री.)।

—करना, क्रि. स., अभि नी (भ्वा. प. अ.), नट् (चु.)।

ऐक्टर, सं. पुं. (अं.) नर्तकः, नटः, शैलूषः, कुशीलवः, अभिनेतृ।

ऐक्ट्रेस, सं. स्त्री. (अं.) नटी, नर्तकी, अभिनेत्री।

ऐक्य, सं. पुं. (सं. न.) एकता, एकत्वम् २. दे. 'एका'।

ऐच्छिक, वि. (सं.) वैकल्पिक (-की स्त्री.), स्वेच्छातंत्र, रुच्यधीन, सविकल्प।

ऐड्वोकेट, सं. पुं. (अं.) पक्षसमर्थकः, परार्थ वक्तृ।

ऐतिहासिक, वि. (सं.) इतिहास,-विषयक-संबंधिन् २. इतिहासज्ञ, पुरावृत्तवेत्तृ।

ऐतिह्य, सं. पुं. (सं. न.) पारंपर्योपदेशः, प्रमाण-भेदः (न्या.)।

ऐन[1], सं. पुं., दे. 'अयन'।

ऐन[2], वि. (अ.) न्याय्य, उचित २. संपूर्ण। सं. स्त्री. नेत्रं, नयनम्।

ऐनक, सं. स्त्री. (अ. ऐन >) उपनेत्रं-त्रे, नेत्रकाचौ।

ऐब, सं. पुं. (अ.) दोषः, विकारः, २. व्यसनं, अवगुणः।

ऐबी, वि. (अ.) दोषिन्, व्यसनिन् २. कुचेष्टकः।

ऐयार, सं. पुं. (अ.) मायाविन्, धूर्तः, छलिन्।

ऐयारी, सं. स्त्री. (अ.) कपटित्वं, धूर्तता, मायाविता।

ऐयाश, वि. (अ.) भोगिन्, विलासिन् २. कामुक, लंपट।

ऐयाशी, सं. स्त्री. (अ.) विलासिता २. कामुकता।

ऐरागैरा, सं. पुं. (अ. गैर+अनु. ऐर) परः, अपरिचितः २. तुच्छजनः।

ऐरावत, सं. पुं. (सं.) इन्द्रगजः चतुर्दन्तः, सदादानः, अभ्रमातंगः २. विद्युद्युक्तो मेघः ३. इन्द्रचापः।

ऐरावती, सं. स्त्री. (सं.) ऐरावतभार्या २. विद्युत् (स्त्री.) ३. पंचनदप्रान्ते नदीविशेषः (=रावी)।

ऐश, सं. पुं. (अ.) विलासः, सुखं, भोगः २. सुखसाधनम्।

—व आराम, सं. पुं., सुखभोगौ, आमोद-प्रमोदौ।

ऐश्वर्य, सं. पुं. (सं. न.) धनं, अर्थः, द्रव्यं, वित्तं, विभवः, संपत्तिः (स्त्री.) २. अणिमादयो योगसिद्धयः (स्त्री. बहु.) ३. प्रभुत्वं, आधिपत्यम्।

ऐश्वर्यशाली, वि. (सं. लिन्) ऐश्वर्यवत्, धनिक, धनाढ्य, सम्पन्न ।

ऐसा, वि. (सं. ईदृश) एवंविध, एतत्तुल्य, एतादृश । (स्त्री., ईदृशी, एतादृशी) ।

—वैसा, मु., तुच्छ, साधारण ।

ऐसे, क्रि. वि. (हिं. ऐसा) इत्थं, एवं, अनेन प्रकारेण ।

ऐहिक, वि. (सं.) सांसारिक, व्यावहारिक, लौकिक ।

ओ

ओ, हिंदीवर्णमालाया दशमः स्वरवर्णः, ओकारः ।

ओं[1], अव्य. (सं.) आ, एवं, एवमेव, बाढम्, अथ किं, तथा, तथास्तु, अस्तु ।

ओं[2], सं. पुं. (सं. अव्य.) प्रणवः, ओंकारः ।

ओंकार, सं. पुं. (सं.) ओम् इति शब्दः, प्रणवः ।

ओंठ, सं. पुं. (ओष्ठः) दंत-रदन-दशन-रद,-छदः-पटः । (ऊपर का) ऊर्ध्वौष्ठः । (नीचे का) अधरः ।

—चबाना, मु., कुप् (दि. प. से) ।

ओंडा, वि., ग(गं)भीर, अगाध । सं. पुं. गर्तः, गर्तम्, अवटः ।

ओ, अव्य. (अनु) भोः, अयि, हे, अरे २. च, अपि च ३. अहो, ही ४. स्मरणानुकंपादि-सूचकमव्ययम् ।

ओक[1], सं. पुं. (सं. ओकस् न.) गृहं, आलयः २ शरणं, आश्रयः ।

ओक[2], सं. स्त्री. (अनु.) वमनेच्छा, विवमिषा ।

ओकण, सं. पुं. (सं.) मत्कुणः दे. 'खटमल' ।

ओकना, क्रि. अ. (हिं. ओक[1]) उद्-,वम् (भ्वा. प. से.) २. महिषीव रेम् (भ्वा. आ. से.) ।

ओकाई, सं. स्त्री. (हिं. ओकना) वमनं २. वमनेच्छा ।

ओखल, सं. पुं., दे. 'ओखली' ।

ओखली, सं. स्त्री. (सं. उलूखलम्) काष्ठमयं पाषाणमयं वा उदू (लू) खलम् ।

ओघ, सं. पुं. (सं.) समूहः, राशिः २. घनत्वं, सान्द्रता ३. प्रवाहः, धारा ।

ओछा, वि. (सं. तुच्छ) क्षुद्र, अधम, लघुचेतस्, कापुरुष २. गाध, अल्पजल ३. लघु, सुसह्य ४. अपर्याप्तलंब ।

—पन, सं. पुं., तुच्छता, क्षुद्रता, नीचता ।

ओज, सं. पुं. (सं. ओजस् न.) तेजस्, प्रतापः, मुखकान्तिः (स्त्री.) २. प्रकाशः ३. गुणभेदः (सा.) ४. देहस्थरसानां सारांशः ।

ओजस्विता, सं. स्त्री. (सं.) कान्तिः (स्त्री.) । तेजस् (न.) ।

ओजस्वी, वि. (सं.-विन्) तेजस्विन्, कान्तिमत्, प्रभावशालिन्, शक्तिमत् ।

ओजोन, सं. पुं. (अं.) प्रजारकं, दाहनम्, वातिभेदः ।

ओझरी, सं. स्त्री. (सं. जठरम्) कुक्षिः, तुंदं, फंडः २. आमाशयः, अन्नाशयः, जठरम् ।

ओझल, सं. पुं. (सं. अवरुन्धनम् >) आवरणं, आच्छादनम् । वि., अदृश्य, अन्तरित ।

ओझा, सं. पुं. (सं. उपाध्यायः >) ब्राह्मण-जातिभेदः २. भूतबाधाहरः, कुहकः ।

ओट, सं. स्त्री. (सं. उटम्=घास फूस >) व्यवधानं, तिरस्करिणी, प्रतिसीरा, जवनिका २. संश्रयः, आश्रयः ।

ओटना, क्रि. सं. (सं. आवर्तनम् >) यंत्रेण कार्पासबीजानि पृथक् कृ २. पुनः पुनः वद् (भ्वा. प. से.) ।

ओटनी, सं. स्त्री. (हिं. ओटना) कार्पास-बीजपृथक्करणयंत्रम्, *बेलनी ।

ओठ, सं. पुं., दे. 'ओंठ' ।

ओड़, सं. पुं., गर्दभवाहकः, जातिभेदः ।

ओड़ा, सं. पुं. (?) करंडः, कंडोलः २. दुर्भिक्षं, आहाराभावः ।

ओड्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'उड़ीसा' २. ओड्र-उत्कल,-वासिन् ।

ओढ़ना, क्रि. स. (सं. आ+ऊढ़ >) परिधा (जु. उ. अ.) प्रा-आ,-वृ (स्वा. उ. से.) । सं. पुं., आवरणं, प्रावारः, वेष्टनं, पुटम्, २. उत्तरच्छदः, प्रच्छदः ।

ओढ़नी, सं. स्त्री. (हिं. ओढ़ना) नारीणां उत्तर,-वेष्टन-प्रावारकः ।

—बदलना, मु., सखीत्वं भगिनीत्वं वा स्था (प्रे.) ।

ओढ़ाना, क्रि. स. (हिं. ओढ़ना) 'ओढ़ना' के धातुओं के प्रे. रूप।

ओत, वि. (सं.) गुम्फित, ग्रथित।

—प्रोत, वि. (सं.) सुमिश्रित, सुसंपृक्त, संसृष्ट, परस्परं सुग्रथित। सं. पुं., तंत्रवाणी (द्वि.), तंत्रप्रतितंत्रे (द्वि.)।

ओथ, सं. स्त्री. (अं.) शपथः, दिव्यं, समयः, प्रत्ययः।

—कमिशनर, सं. पुं. (अं.) शपथ-दिव्य,-आयुक्त।

ओदन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) भक्तं, अन्नं, पक्वव्रीहिः।

ओदा, वि. (सं. उदन् >) उन्न, उत्त, आर्द्र।

ओप, सं. स्त्री. (हिं. ओपना) कान्तिः-द्युतिः-दीप्तिः (स्त्री.), सुषमा, सौन्दर्यम्।

ओफ, अव्य. (अनु.) पीडाशोकाश्चर्यखेदसूचकमव्ययम्, आः, हा, अहह, अहो।

ओम्, सं. पुं. (सं. अव्य.) प्रणवः, ओंकारः, ईशसंज्ञा २. ईश्वरः।

ओर, सं. स्त्री. (सं. अवारं >) दिशा, दिश् (स्त्री.), काष्ठा, आशा २. पक्षः, पार्श्वः। सं.पुं., अंतः, प्रांतः, तटम् २. आरंभः, आदिः।

इस—, क्रि. वि., इतः, अस्यां दिशि, अत्र।

उस—, क्रि. वि., ततः, तत्र, तस्यां दिशायाम्।

चारों—, क्रि. वि. सर्वतः, समंतात्, समंततः, अभितः, परितः।

ओल, सं. पुं. (सं.) शूरणः, दे. 'जिमींकन्द'।

ओला, सं. पुं. (सं. उपलः) इन्द्रोपलः पयोघनः, करका, घनकफः, वर्षशिला २. शर्करोपलः। वि., उपलशीतल।

सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े, मु., प्रथमे ग्रासे मक्षिकापातः।

ओवरकोट, सं. पुं. (अं.) लंबकंचुकः।

ओवरसियर, सं. पुं. (अं.) अधिदर्शकः।

ओषधि-धी, सं. स्त्री. (सं.) हरितकं, शाकः-कं, शिग्रुः २. अगदः, औषधं, भेषजम्, भैषज्यम्।

—ईश, सं. पुं. (सं.) चद्रः, सोमः।

ओष्ठ, सं. पुं. (सं.) दे. 'ओंठ'।

ओष्ठ्य, वि. (सं.) ओष्ठसम्बधिन् २. ओष्ठोच्चार्य (प, फ आदि वर्ण)।

ओस, सं. स्त्री. (सं. अवश्यायः) तुषारः, प्रालेयं, हिम-रात्रि—ख,-जलम्, नीहारः, तुहिनम्।

—पड़ जाना, मु., म्लै-ग्लै-सद् (भ्वा. प. अ.) २. लज्ज् (तु. आ. से.)।

ओसार, सं. पुं., विस्तारः प्रसारः २. दे. 'औसारा'। वि. विस्तृत, विस्तीर्ण।

ओसारा, सं. पुं., प्रघ (घा) णः, अलिंदः।

ओह, अव्य. (अनु.) (आश्चर्य) अहो, ही। (दुःख) अहह, हा. आः।

ओहदा, सं. पुं. (अ.) पदं, पदवी, अधिकारः।

ओहदेदार, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) पदाधिकारिन्, अधिकृतः।

ओहो, अव्य, (अनु.) अहो, ही, हंहो।

औ

औ, हिन्दीवर्णमालाया एकादशः स्वरवर्णः औकारः।

औंधा, वि. (सं. अधोमुख) अवाङ्मुख, अधोमुख, विपर्यस्त, विलोम।

औंधी खोपड़ी का, मु., मूर्ख, जड़।

औंस, सं. पुं. (अं.) (सपादतोलयुग्मात्मकः) तोलविशेषः, * औंसम्।

औ, अव्य. (हिं. और) च। दे. 'और'।

औकात सं. स्त्री. एक. (अ. वक्त का बहु.) शक्तिः (स्त्री.), सामर्थ्यम्। सं. पुं., कालाः, समयाः।

औगुन, सं. पुं., दे. 'अवगुण'।

औघड़, सं. पुं. (सं. अघोरः) अघोरमतानुयायी पुरुषः २. असमीक्ष्यकारी मनुष्यः ३. अपशकुनः। वि., (सं. अव+हिं. घड़ना) विवेकहीन २. असंबद्ध।

औचक, क्रि. वि., दे. 'अचानक'।

औचित्य, सं. पुं. (सं. न.) औचिती, उपयुक्तता, नैयमिकत्वम्, सामंजस्यम्।

औज़ार सं. पुं. (अ. वज्र का बहु.) यंत्राणि, उपकरणानि, साधनानि (सब न. बहु.)।

औटना, क्रि. अ., दे. 'उबलना'।

औटाना, क्रि. स., 'उबलना' के धातुओं के प्रे. रूप।

औत्सुक्य, सं. पुं. (सं. न.) उत्सुकता, दे० ।
औदरिक, वि. (सं.) उदर-जठर,-विषयक २. अत्याहारिन् , बहुभुज् , घस्मर ।
औदार्य, सं. पुं. (सं. न.) उदारता, दे. ।
औद्धत्य, सं. पुं. (सं. न.) उद्धतता, अशिष्टता, ग्राम्यता २. अनार्यता, धृष्टता ।
औद्योगिक, वि. (सं.) उद्योग-व्यवसाय,-संबंधिन् ।
औद्वाहिक, वि. (सं.) वैवाहिक, उद्वाह-उपयम-परिणय,-विषयक ।
औना-पौना वि. (सं. ऊन-पादोन) न्यूनाधिक, ईषद्बहु । क्रि. वि., न्यूनाधिकतया ।
औने-पौने करना, मु., हान्या लाभेन वा यथा कथंचिद् विक्रयणम् ।
औपचारिक, वि. (सं.) लाक्षणिक, गौण, उपचारविषयक ।
औपनिवेशिक, वि. (सं.) आधिनिवेशिक, उपनिवेश-अधिनिवेश,-संबंधिन् ।
—स्वराज्य, सं. पुं. (सं. न.) आधिनिवेशिकं स्वातंत्र्यम् ।
औपन्यासिक, वि. (सं.) उपन्यास-कल्पित-कथा,-संबंधिन् २. उपन्यासे वर्णनीय ३. अद्भुत, विलक्षण । सं. पुं. उपन्यास,-कारः-लेखकः ।
औपपत्तिक, वि. (सं.) तर्क-युक्ति,-साध्य ।
और, अव्य. (सं. अपर >) च, अपि च, अन्यच्च, किंच, अपरं च । वि., अन्य, अपर, भिन्न २. अधिक, भूयस् ।
—का और, मु., विपरीत, विरुद्ध, असंगत ।
औरत, सं. स्त्री. (अ.) नारी, रामा २. पत्नी, भार्या ।
—की ज़ात, सं. स्त्री., स्त्री-नारी,-जातिः (स्त्री.) ।
औरस, सं. पुं. (सं.) धर्मपत्नीजः पुत्रः ।
औरेब, सं. पुं. (सं. अव + रेव >) वक्र-तिर्यग्-,गतिः (स्त्री.) २. वस्त्रस्य तिर्यक्कर्तनम् २. जटिलत्वं, संश्लिष्टता ३. छलं, कपटम् ।
—दार, वि., कितव; वंचक ।
औलाद, सं. स्त्री. (अ.) प्रजा, संततिः- प्रसूतिः (स्त्री.), संतानः, तोकं, अपत्यम् ।
औलिया, सं. पुं. (अ. 'वली' का बहु.) सिद्धाः, पुण्यजनाः ।
औवल, वि. (अ.) प्रथम, आदिम २. प्रमुख, प्रधान ३. सर्वोत्तम । सं. पुं. आरंभः, उपक्रमः ।
औषध, सं. पुं. (सं. न.) भेषजं, भैषज्यं, अगदः २. हरितकं, शाकः, ओषधिः (स्त्री.) ।
औषधालय, सं. पुं. (सं.) भेषजालयः, औषधशाला ।
औसत, सं. पुं. (अ.) *मध्यमा, मध्यप्रमाणम् । वि. मध्यम, सामान्य ।
औसान, सं. पुं. (फ़ा.) चेतना, चैतन्यं, संज्ञा, बोधः ।
—खता होना, मु., मतिभ्रमः, धैर्यनाशः, संभ्रमः ।

क

क, देवनागरीवर्णमालायाः प्रथमव्यंजनवर्णः, ककारः ।
कंक, सं. पुं. (सं.) आमिषप्रियः, क्रूरः, दीर्घपादः, खगभेदः ।
कंकड़, सं. पुं., दे. 'कंकर' ।
कंकण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कटकः-कं, वलयः-यं, आवापकः-कं, पारिहार्यः-र्यम् ।
कंकणी,-णीका, सं. स्त्री. (सं. किंकणी) किंकिणी, किंकि(क)णीका २. क्षुद्रघंटिका ।
कंकत, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कंकतिका, कंकती ।
कंकती, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कंकत' तथा 'कंघी' ।
कंकर, सं. पुं. (सं. कर्करम्) उपलखंडः, शर्करा, अश्मगुटिका, अष्ठीलाः (बहु.) ।
कंकरीट, सं. स्त्री. (अं. कांक्रीट) लोष्ठलेपः ।
कंकरीला, वि. (हिं. कंकर) शर्करावृत, कर्करमय ।
कंकाल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अस्थिपंजरः, करंकः ।
कंगन, सं. पुं., दे. 'कंकण' ।
कंगनी, सं. स्त्री. (सं. कंगुनी) प्रियंगुः, पीततंडुलः, कंगुः-गूः (स्त्री.) ।
कँगला, वि. (सं. कंकालः >) दरिद्र, अकिंचन, निर्धन, दीन ।
कंगाल, वि., दे. 'कँगला' ।
कंगाली, सं. स्त्री. (हिं. कंगाल) दरिद्रता, निर्धनता, दारिद्र्यम् ।

कँगूरा, सं. पुं. (फ़ा. कुँगरा) शिखरं, शृङ्गम्।
कंघा, सं. पुं. (सं. कंकतः) कंकतम्।
कंघी, सं. स्त्री. सं. (सं. कंकती) कंकतिका, केशमार्जनी, प्रसाधनी।
कंचन, सं. पुं. (सं. कांचनम्) सुवर्णम् २. संपत्तिः (स्त्री.)।
कंचनी, सं. स्त्री. (हिं. कंचन) वेश्या, नर्तकी।
कंचुक, सं. पुं. (सं.) लंब,-निचोल-प्रावारकः २. अंगिका, कंचुलिका ३. कवचः-चम् ४. वस्त्रम् ५. दे. 'केंचली'।
कंचुकी, सं. पुं. (सं.,-किन्) अन्तःपुरचारी वृद्धब्राह्मणः, सौविदल्लः, सौविदः २. द्वारपालः ३. सर्पः ४. दे. 'केंचली'। सं. स्त्री., अंगिका, कंचुलिका।
कँचेरा, सं. पुं. (हिं. काँच) काच,-कारः-धमकः।
कंज, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मन् (पुं.) २. केशः। (सं. न.) कमलम् २. अमृतम्।
कंजई, वि. (हिं. कंजा) धूम्र, धूमल।
कंजड़ (र), सं. पुं. (देश. या कालिंजर) जातिविशेषः।
कंजन, सं. पुं. कामदेवः, मदनः २. खगभेदः।
कंजा, सं. पुं. (सं. करंजः) कंटकिनीवृक्षः २. तस्य बीजम्। वि., करंजवर्ण, धूमल २. धूम्र-नयन।
कंजूस, वि. (सं. कणः+हिं. चूसना) कृपण, कदर्य, अमुक्तहस्त, किंपचान।
कंजूसी, सं. स्त्री. (हिं. कंजूस) कार्पण्यं, कदर्यता, अमुक्तहस्तत्वम्।
कंटक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) शल्यम् २. विघ्नः ३. विघ्नकरः ४. सूच्यग्रम् ५. शत्रुः ६. रोमाञ्चः ७. कवचः-चम्।
—अशन, सं. पुं. (सं.) उष्ट्रः, क्रमेलकः।
कंटकित, वि. (सं.) सकंटक, कंटकपूर्ण २. सविघ्न ३. रोमाञ्चित।
कँटिया, सं. स्त्री. (हिं. काँटी) कीलः, शंकुः २. ग्रहणी, धरणी ३. भूषणभेदः।
कँटीला, वि. (हि. काँटा) कंटकित २. सविघ्न।
कंठ, सं. पुं. (सं.) गलः, गरः, निगरणः २. स्वरः ३. शुकादीनां कंठरेखा ४. दे. 'कंठा'।
—अग्र, वि. (सं.) दे. 'कंठस्थ'।
—गत, वि. (सं.) निर्गमनोन्मुख (प्राण)।
—माला, सं. स्त्री. (सं.) गण्डमाला, कंठरोग-भेदः।
कंठस्थ, वि. (सं.) कंठाग्र, कंठगत, मुखाग्र, मुखस्थ।
कंठा, सं. पुं. (सं. कंठः>) कंठी, सुवर्णगुटिका-निर्मितः कंठालंकारः २. शुकादीनां गलरेखा।
कंठी, सं. स्त्री. (सं.) कंठः, गलः २. अश्वकंठ-रश्मिः (पुं.) ३. लघुगुटिका-कंठी। ४. तुलसी-बीजमाला।
कंठ्य, वि. (सं.) कंठोच्चार्य २. कंठजात ३. कंठोपकारक।
कंडा, सं. पुं. (सं. स्कंदनं>) दे. 'उपला'।
कंडी, सं. स्त्री. (हिं. कंडा) लघुगोमयम् २. मलगुटिका।
कंडील, सं. स्त्री. (अ. कंदील) कर्गलादि-निर्मितो दीपकोषः।
कंडु, कंडू, सं. स्त्री. (सं.) कंडूतिः (स्त्री.), दे. 'खुजली'।
कंत, सं. पुं. (सं. कान्तः) प्रियः, वल्लभः, रमणः २. पतिः, धवः ३. ईश्वरः।
कंथा, सं. स्त्री. (सं.) भिक्षुकर्पटः, दे. 'गुदड़ी'।
कंथी, सं. पुं. (सं. कंथा>) भिक्षुकः, कंथा-धारिन्।
कंद[1], सं. पुं. (सं. पुं. न.) गोलमूलं, खाद्य-मूलम् २. लशुनम् ३. मेघः ४. शूरणः।
कंद[2], सं. पुं. (फ़ा.) सिताखंडः खंडमोदकः।
कंदर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गह्वरं, गुहा, दरी।
कंदरा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कंदर'।
कंदर्प, सं. पुं. (सं.) मदनः, कामदेवः।
कंदा, वि. (फ़ा.) उत्कीर्ण, तष्ट।
कंदुक, सं. पुं. (सं.) गेन्दुः, गेण्डुः २. उपधानं, गण्डुः ३. पूगफलम्।
कंधा, सं. पुं. (सं. स्कन्धः) अंसः, भुजमूलं, दोःशिखरं, कत्सवरम्।
कंधार, सं. पुं. (सं. गांधारः) नगर-प्रदेश,-विशेषः।
कंप, सं. पुं. (सं.) दे. 'कँपकँपी'।
कँपकँपी, सं. स्त्री. (हि. काँपना) प्र,-कंपः, वेपनं, वेपथुः, एजनं, कायकंपः।
कंपनी, सं. स्त्री. (अं.) समवायः, समन्व्यवसायि-संघः २. सैन्यगुल्मः ३. गणः ४. साहचर्य्यम्।

कंपाउंडर, सं. पुं. (अं.) *संमिश्रकः, योगविद्, वैद्यसहायः ।

कंपाउंडरी, सं. स्त्री., संमिश्रक,-व्यवसायः-कर्मन् (न.)।

कँपाना क्रि. स. (हिं. कांपना) कंप्, वेप्, वेल्, स्पंद्, एज् के प्रे. रूप ।

कंपायमान, वि. (सं. कंपमान) एजमान, कंपन, कंप्र, स्पंदमान ।

कंपास, सं. पुं. (अं.) दिग्दर्शकयंत्रम् ।

कंपित, वि. (सं.) कंपमान, चंचल २. भीत, त्रस्त ।

कंपू, सं. पुं. (अं. कैंप) शिविरं, स्कन्धावारः २. सेना ३. दे. 'खेमा' ।

कंबख्त, वि. (फ़ा. कमबख़्त) भाग्यहीन, दुर्दैव ।

कंबल, सं. पुं. (सं.) रल्लकः, आविकः, ऊर्णायुः, औरभ्रः, नीशारः।

कंबु, सं. पुं. (सं.) दे. 'शंख' ।

कंस, सं. पुं. (सं.) कृष्णमातुलः । (सं. न.) कांस्यं, ताम्रार्द्धम् २. पानभाजनं, कंशम् ।

—ताल, सं. पुं. दे. 'झाँझ' ।

क, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मन् (पुं.) २. सूर्यः ३. अग्निः ४. विष्णुः ५. यमः ६. वायुः ७. मदनः ।

कई, वि. (सं. कति) कतिपय, एकाधिक, अनेक, बहु, प्रभूत ।

—वार, क्रि. वि., बहुधा, पुनः पुनः, मुहुर्मुहुः, भूयोभूयः, बहुवारम् ।

ककड़ी-री, सं. स्त्री. (सं. कर्कटी) लोमशा, स्थूला, तोयफला, गजदंतफला, चिर्भटी, मूत्रला ।

ककहरा, सं. पुं. [क+क—ह+रा (प्रत्य.)] प्राथमिकज्ञानम् २. वर्णमाला ३. पूर्वकार्य-समूहः ।

ककुद, सं. पुं. (सं. ककुद् स्त्री.) ककुदः-दं, अंसकूटः, गडुः, स्थगुः २. राजचिह्नम् (छत्रादि)।

ककुभ, सं. पुं. (सं.) अर्जुनवृक्षः २. दे. 'दिशा' ।

कच्छ, सं. पुं. (सं.) बाहुमूलम्, दे. 'बगल' २. दे. 'लाँग' ३. कच्छः, दे. 'कछार' ४. तृणम् ५. शुष्क–, वनम् ६. भूमिः (स्त्री.) ७. भित्तिः (स्त्री.) ८. कोष्ठः ९. दोषः १०. दे. 'कछराली' ११. श्रेणी, कक्षा १२. दे. 'आँचल' ।

कक्षा, सं. स्त्री. (सं.) परिधिः, परिवेशः-षः २. ग्रहमार्गः ३. साम्यम् ४. वर्गः, श्रेणी ५. दे. 'ड्योढ़ी' ६. बाहुमूलम् ७. दे. 'कछराली' ८. गृह,–भित्तिः (स्त्री.)–पक्षः ९. दे. 'लाँग' १०. हस्तिरज्जुः (स्त्री.) ।

कगर, सं. पुं. [सं. कं (=जल)+अग्र >] उच्छ्रित,–तीरं–तटम् २. सीमा ३. प्राकार-शृंगम् ।

कगार, सं. पुं. (हिं. कगर) उन्नताग्रम् २. उच्छ्रित,–कूलं–तीरम् ।

कच, सं. पुं. (सं.) केशाः, कुंतलाः, कचाः, शिरसिजाः, शिरोरुहाः (सब बहु.) २. समूहः ।

कचकच, सं. स्त्री. (अनु.) प्रलापः २. वाग्युद्धम् ।

कचनार, सं. पुं. (सं. कांचनालः) कोविदारः, पाकारिः, स्वल्पकेसरः ।

कचपच, सं. पुं. (अनु.) संबाधः, संमर्दः २. दे. 'कचकच' ।

कचपचिया, कचपची, सं. स्त्री. (हिं. कचपच) कृत्तिकानक्षत्रम् २. मस्तकतारा, भूषणभेदः ।

कचर कचर, सं. स्त्री. (अनु.) आमफलचर्वण-ध्वनिः २. दे० 'कचकच' ।

कचरा, सं. पुं. (हिं. कच्चा) अपक्व,-खर्बूजं-दशांगुलम् २. अपक्वचित्रवल्ली ३. चर्भटः । दे. 'कूड़ाकरकट' ।

कचहरी, सं. स्त्री. (हिं. कचकच) धर्म–न्याय,–सभा, व्यवहारामंडपः, न्यायालयः, धर्म–, अधिकरणम् २. राजसभा ।

कचाई, सं. स्त्री. (हिं. कच्चा) आमता, अपक्वता, २. पाटव–दाक्ष्य–अनुभव,–हीनता ।

कचायँध, सं. स्त्री. (हिं. कच्चा + गंध) आम–अपक्व,–गन्धः ।

कचालू, सं. पुं. (हिं. कच्चा + आलू) आलुकी, कचुः (स्त्री.) कच्वी, तीक्ष्णकन्दः, गजकर्णः ।

कचीची, सं. स्त्री. (अनु. कच) हनुः (पुं. स्त्री.), हनूः (स्त्री.) ।

कचूमर, सं. पुं. (हिं. कुचलना) निष्पिष्ट-पदार्थः, चूर्णितवस्तु २. मृदुसारः, मज्जा ।

कचूर, सं. पुं. (सं. कर्चूरः) दुर्लभः, गंधमूलकः, गंधसारः, जटालः ।

कचौरी, सं. स्त्री. (हिं. कचरी) माषगर्भा, सुपिष्टिका, कर्चरिका ।

कच्चा, वि. (सं. कषण) अपक्व, हरितनीरस (फलादि) २. अश्रृत, अश्राण, असिद्ध (भोजनादि) ३. अपरिणत, अपूर्णकाल, अप्राप्तकाल,

अपरिपुष्ट (आयु आदि) ४. विकारिन्, अस्थिर ५. निस्सार, अप्रामाणिक (वात इ०) ५. प्रचलितमानात् न्यून ६. संस्कार-संशोधन,-अपेक्षिन् (वही इ.) ७. नियम-विधि,-विरुद्ध (दस्तावेज इ.) ८, पंकनिर्मित (घर आदि) ९. अव्युत्पन्न (व्यक्ति) १०. कुलिखित, असंस्कृत (अक्षर इ.)।

—चिट्ठा, सं. पुं. संशोधनापेक्षिगणना २. सत्य-यथार्थ,-वृत्तान्तः ३. गुप्त-गोप्य,-वार्ता ४. गर्ह्य-पक्षः ५. पापसंकल्पाः।

—पक्का, वि., अर्द्ध-सामि,-पक्व-श्रृत-श्राण।

—बच्चा, सं. पुं., शिशवः (बहु.) २. गर्भः।

—माल, सं. पुं., सामग्री।

कच्ची, वि. स्त्री. (हिं. कच्चा) 'कच्चा' के शब्दों के स्त्रीलिंग के रूप, जैसे-अपक्वा, अश्रृता इ.।

—ईंट, सं. स्त्री., अपक्व-, इष्टका।

—उमर, सं. स्त्री., अवयस्कता, अप्राप्तव्यवहारता २. बाल्यम् ३. शैशवम्।

—रसोई, सं. स्त्री., जलपक्वमन्नम्।

—सड़क, सं. स्त्री., मृण्मयो मार्गः।

—सिलाई, सं. स्त्री., स्थूलस्यूतिः (स्त्री.)।

कच्छ, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अनूपः-पं, जलप्रायदेशः २. नद्याः सरसो वा प्रांतभागः ३. प्रदेशविशेषः।

कच्छप, सं. पुं. (सं.) कूर्मः, दे. 'कछुआ' २. अवतारविशेषः।

कच्छा, सं. पुं. (सं. कच्छः>) नौकाभेदः २. दे. 'कछनी'।

कच्छी[1], वि. (सं. कच्छ>) कच्छीय, कच्छ,-विषयक-सम्बन्धिन्। सं. पुं., कच्छवासिन् २. कच्छाश्वः।

कच्छी[2], सं. स्त्री., दे. 'कछनी'।

कच्छू, सं. पुं., दे. 'कछुआ'।

कछनी, सं. स्त्री. (हिं. काछना) जानुलंबिकटिवसनम्।

कछरा(ड़ा)ली, सं. स्त्री. (सं. कक्षः>) कक्षा।

कछार, सं. पुं. (सं. कच्छः) दे. 'कच्छ' (१,२)।

कछुआ, सं. पुं. (सं. कच्छपः) कमठः, कूर्मः, चतुर्गतिः (पुं.), पंचगूढः, स्तूपपृष्ठः। (स्त्री. कमठी, दुली, कूर्मी, द्रुणी)।

कछौटा, सं. पुं. (हिं. काछ) लघुशाटिका २. दे. 'कछनी'।

कजरारा, वि. (हिं. कजरा) सांजन, अंजनयुत, सकज्जल २. काल, श्याम।

कजली, सं. स्त्री. (सं. कज्जलं>) कालिमन्, कालुष्यं, कलंकः २. पर्वविशेषः ३. कृष्णाक्षी गौः (स्त्री.) ४. वर्षासु गेयो गीतभेदः।

कज़ा, सं. स्त्री. (अ.) मृत्युः, निधनम्।

कजाक, सं. पुं. (तु. कज़्ज़ाक) दस्युः, लुंटाकः।

कजाकी, सं. स्त्री. (तु. कज़्ज़ाकी) लुंठनं, अपहरणम्।

कजावा, पुं. (फ़ा) उष्ट्रपर्याणम्।

कजिया, सं. पुं. (अ.) कलहः, विग्रहः।

कजी, सं. स्त्री. (फ़ा.) वक्रता २. दोषः।

कज्जल, सं. पुं. (सं. न.) अंजनं, नेत्ररंजनं, लोचकः २. यामुनं, सौवीरं, दे. 'सुरमा' ३. कालिमन्।

क़ज़्ज़ाक, सं. पुं. (तु.) तुरुष्कजातिभेदः। २. दस्युः, लुण्ठकः।

कट, सं. पुं. (सं.) गजगंडः २. कपोलः ३. देवस्थूल,-नालः, घासभेदः ४. देवनालनिर्मित-, कटः, कलिंजं, आस्तरणम् ५. उशीरकाशादिघासाः ६. शवः ७. शवयानं, खाटः-टी ८. श्मशानं ९. अक्षगतिभेदः १०. काष्ठफलकः-कम् ११. समयः, अवसरः १२. दे. 'टट्टी'। वि. बहु, भूयस् २. उत्कट, उग्र।

कटक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) शिवि (वि) रं, निवेशः, सैन्यनिवासः २. सेना २. कंकणः-णम् ४. पर्वतमध्यभागः ५. पादकटकः ६. चक्रम् ७. नगरविशेषः ८. समूहः।

कटकट, सं. स्त्री. (अनु.) दंतघर्षणशब्दः, कटकटायितम् २. कलहः।

कटकटाना, क्रि. स. (हिं. कटकट) दंतान् घृष् (भ्वा. प. से.)।

कटना, क्रि. अ. (सं. कर्तनं) अवछिद्-कृत्-लू-व्रश्च् (कर्म.) २. व्ययं या (अ. प. अ.) ३. क्षम्-मृष् (कर्म.) ४. लज्ज् (तु. आ. से.) ही (जु. प. अ.) ५. उपरुध् (कर्म.) ६. युद्धे हन् (कर्म.) ७. ईर्ष्य् (भ्वा. प. से.) ८. मुह् (दि. प. वे.) ९. घृष् (कर्म.)।

कटनाँस, सं. पुं. (देश.) दे. 'नीलकंठ' (पक्षी)।

कटनी, सं. स्त्री. (हिं. कटना) विक्रयः २. शस्यकर्तनम्।

कर, सं. पुं. (सं.) हस्तः, शयः, पंचशाखः, पाणिः २. शुंडः-डा, शुंडारः ३. किरणः, अंशुः ४. राजस्वं, शुल्कः-कं ।

करक, सं. स्त्री. (हिं. कड़क) पीडा, वेदना २. मूत्रकृच्छ्रम् ३. क्षतांकः, क्षतचिह्नम् ।

करकट, सं. पुं. (हिं. खर + सं. कटः >) अवस्करः, अवकरः, अपस्करः, मलं, उच्छिष्टम् ।

करकरा, सं. पुं. (सं. कर्करेटुः) सारसभेदः । २. दे. 'खुरदरा' ।

करका, सं. पुं. (सं. स्त्री.) दे. 'ओला' ।

करघा, सं. पुं., दे. 'कर्घा' ।

करछा, सं. पुं. (सं. कररक्षकः >) 'करछी' के वाचक शब्दों के पूर्व 'बृहत्' लगाएँ ।

करछी, सं. स्त्री. (हिं. करछा) कंबी-विः (स्त्री.), खजि (जा) का, खजाजिका, दर्वी, दर्विका, तर्दुः-र्दूः (स्त्री.), पाणिका, दारुहस्तकः ।

करज, सं. पुं. (सं.) १ नखः २. अंगुली ३. करंजः ।

करट, सं. पुं. (सं.) काकः, वायसः २. गजगण्डः ३ नास्तिकः ४. निन्द्यजीवनम् ।

करटक, सं. पुं. (सं.) वायसः, काकः २. चौर्यविज्ञानप्रवर्तकः आचार्यविशेषः ।

करटी, सं. पुं. (सं.-टिन्) द्विपः, गजः, हस्तिन् (पुं.) ।

करण, सं. पुं. (सं. न.) यंत्रं, उपस्करः, साधनम् २. कारकभेदः (व्या.) ३. अस्त्रं, शस्त्रं ४. इन्द्रियम् ५. देहः ६. क्रिया, कार्यम् ७. स्थानम् ।

करणीय, वि. (सं.) कर्तव्य, अनुष्ठेय, निष्पाद्य, विधेय, संपादनीय ।

करतब, सं. पुं. (सं. कर्तव्यम्) कर्मन् (न.), कार्यं कृत्यम् २. कला, कौशलं, शिल्पम् ।

करतबी, वि, (हिं. करतब) कुशल, दक्ष, युक्तिमत् २. कर्मठ ३. ऐन्द्रजालिक ।

करतल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'हथेली' ।

करताल, सं. पुं. (सं. न.) वाद्यभेदः, करताली २. करतलध्वनिः (पुं.) ३. दे. 'झाँझ' ।

करती, सं. स्त्री. (सं. कृत्तिः >) तृणपूर्णकृत्रिमवत्सः, तृणतर्णकः ।

करतूत, सं. स्त्री. (सं. कर्तृत्वम्) कृत्यं, कर्मन् (न.) २. गुणः, कला ३. कुकर्मन् ।

करद, वि. (सं.) कर-बलि-राजस्व-शुल्क,-द-प्रद-दायक-दातृ २. अधीन, परवश ३. शरणदायक ।

करधनी, सं. स्त्री. (सं. कटिधानी >) मेखला, रशना, कांची, सारसनम् ।

करनफूल, सं. पुं. (सं. कर्णफुल्लम् >) कर्णिका, तालपत्रं, उत्तंसः, कर्णावतंसः ।

करना[1], सं. पुं. (सं. कर्णः) सुदर्शनः, श्वेतपुष्पो वृक्षभेदः ।

करना[2], सं. पुं. (सं. करुणः) बृहज्जंबीरभेदः, पर्वतजंबीरः । (फल) पर्वतजंबीरम् ।

करना[3], क्रि. सं. (सं. करणम्) कृ (त. उ. अ.), निष्पद्-निर्वह्-निर्वृत्-साध् (प्रे.), विधा (जु. उ. अ.), अनुष्ठा-प्रणी (भ्वा. प. अ.), आचर् (भ्वा. प. से.) ।

सं. पुं. तथा भाव, करणं, निष्पादनं, संपादनं, निर्वर्तनं, साधनं, विधानं, अनुष्ठानं, आचरणम् ।

—योग्य, वि. निष्पाद्य, विधेय, संपाद्य, कार्य, कर्तव्य, आचरणीय ।

—वाला, सं. पुं. कर्तृ, कारक, विधातृ, संपादक, निष्पादक, अनुष्ठातृ ।

किया हुआ, वि., कृत, अनुष्ठित, निष्पादित, विहित ।

करनाटकी, सं. पुं. (हिं. करनाटक) कर्णाटप्रान्तवास्तव्यः २. ऐन्द्रजालिक ।

करनी, सं. स्त्री. (हिं. करना) कृतिः (स्त्री.), कर्मन् (न.), कार्यं, कृत्यम् २ अन्त्येष्टिक्रिया ।

करनैल, सं. पुं. (अं. कालोनल) व्यूह-गुल्म, पति-अध्यक्षः ।

करभ, सं. पुं. (सं.) मणिबन्धात् कनिष्ठापर्यन्तं करस्य बहिर्भागः २. गजशावकः ३. उष्ट्रशावकः ४. कटी-टिः (स्त्री.) ।

करभोरु, सं. पुं. (सं.) गजशुण्डोरुः । वि., वामोरुः (पुं.), वामोरू (स्त्री.) ।

करम, सं. पुं. (सं. कर्मन् न.) कार्य, चेष्टा २. भाग्यं, दैवम् ।

करमकल्ला, सं. पुं. (अ. करम + हिं. कल्ला) दे. 'बंद गोभी' ।

करमाली, सं. पुं. (सं.-लिन्) सूर्यः, भानुः ।

करवट, सं. स्त्री. (सं. करवर्तः) पार्श्वः, पार्श्वं, भागः, पक्षः २. वामपार्श्वतो दक्षिणपार्श्वतो वा शयनम् ।

करवट[२], सं. पुं. (सं. करपत्रम्) क्रकचः, पत्रदारकः ।

—लेना, मु., मोक्षलाभाय क्रकचेन स्वशीर्षच्छेदनम् ।

करवाल, सं. स्त्री. (सं. पुं.) खड्गः, असिः ।

करश्मा, सं. पुं. (फ़ा.) चमत्कारः, कौतुकं, आश्चर्यं ।

करहाट-टक, सं. पुं. (सं.) कमलमूलम् २. कमलातःस्थं छत्रम् ३. मदनवृक्षः ।

कराना, क्रि. प्रे. (हिं. करना) 'करना' के धातुओं के प्रे. रूप ।

करामात, सं. स्त्री. (अ. 'करामत' का बहु.) दे. करश्मा ।

करामाती, वि. (अ. करामात >) लोकोत्तर, चमत्कारिन्, अद्भुत ।

करार[१], सं. पुं. (अ.) शान्तिः (स्त्री.), शमः २. धैर्य, स्थैर्यम् ।

करार[२], सं. पुं., (अ. इकरार) दे. 'प्रतिज्ञा' ।

करारा[१], सं. पुं. (सं. कराल >) नद्याः उच्चं पातुकं वा तटम् २. उच्छ्रिततीरम् ३. क्षुद्रपर्वतः ।

करारा[२], वि. (सं. कराल) दृढ़, घन, संहत २. क्रूर, दारुण ३. सुपक्व, सुभृष्ट ४. तीक्ष्ण, उग्र ५ दृढांग, वज्रदेह ६, भंगुर, भिदुर ।

कराल, वि. (सं.) भीषण, भयंकर, घोर, दारुण ।

कराला, सं. स्त्री. (सं.) भीषणाकारा दुर्गा ।

कराह, सं. स्त्री. (दे. कराहना) आर्त्ति-पीड़ा, ध्वनिः (पुं.)-शब्दः-स्वरः ।

कराहत, सं. स्त्री. (अ.) घृणा, जुगुप्सा ।

कराहना, क्रि. अ. (हिं. करना + आह) आर्तरवं कृ, दुःखेन स्वन् (भ्वा. प. से.) ।

करिणी, सं. स्त्री. (सं.) हस्तिनी ।

करी, सं. पुं. (सं. करिन्) गजः, हस्तिन् ।

करीना, सं. पुं. (अ.) सुव्यवस्था, पद्धतिः (स्त्री.), सौष्ठवम् ।

करीब, क्रि. वि. (अ.) समीपे, निकटे २. प्रायः, प्रायेण ।

करीर, सं. पुं. (सं.-रः) तीक्ष्णकंटकः, क्रकरः, गूढपत्रः, क्रकचः ।

करुण, वि. (सं.) दयार्द्र, कृपालु २. दुःखजनक । सं. पुं. रसविशेषः (सा.) २. परमेश्वरः ३. करुणा, अनुकंपा ।

करुणा, सं. स्त्री. (सं.) अनुकंपा, दया, कृपा, २. प्रियवियोगजं दुःखम् ।

—निधान, वि. (सं.) करुणामय, दयामय, कृपा-करुणा-दया,-निधिः-सागरः ।

करेणु, सं. पुं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) हस्तिन् २. हस्तिनी ।

करेला, सं. पुं. (सं. कारवेल्लः) कंदुरः, कांडकटुकः, कठिल्लकः ।

करैत, सं. पुं. (हि. काला) मालुधानः, मातुलाहिः, कृष्णसर्पभेदः ।

करोड़, वि. (सं. कोटी-टिः स्त्री.) शतलक्ष । सं. पुं., उक्ता संख्या तदंकाश्च (१०००००००) ।

करौली, सं. स्त्री. (सं. करवाली) छुरी, छुरिका, असिपुत्रिका ।

कर्क, सं. पुं. (सं.) कर्कटः, कुलीरः २ राशिविशेषः ३. अग्निः ४. मुकुरः ।

कर्कश, वि. (सं.) कठोर, रूक्ष । २, तीव्र, प्रचंड ३. सकंटक ।

कर्कशा, वि. सं. (सं.) कलह-विवाद,-प्रिया (नारी) ।

कर्घा, सं. पुं. (फ़ा कारगाह = कार्यस्थान >) तन्तुवायानां गर्तः २. पटकाराणां वेमः-वापदंडः-तंत्रवापः ३. पटनिर्माणगृहम् ।

कर्ज़, सं. पुं. (अ.) दे. 'ऋण' ।

कर्ण, सं. पुं. (सं.) श्रवणः-णं, श्रवः, श्रोत्रं, श्रवस् (न.) श्रुतिः (स्त्री.), शब्दग्रहः । २. अंगराजः, वासुसेनः, कानीनः ३. दे. 'पतवार' ।

—कटु, वि. (सं.) विस्वर, कर्कश, दुःश्राव्य ।

—धार, सं. पुं. (सं.) नाविकः, पोतवाहः २. कर्णिन्, मुख्यनाविकः ।

—परंपरा, सं. स्त्री. (सं.) श्रुतिपरंपरा ।

—पुट, सं. पुं. (सं. न.) श्रुतिमंडलम् ।

—पुर, सं. पुं. (सं. न.) चम्पानगरी (=भागलपुर) ।

—पूर, सं. पुं. (सं.) अवतंसः २. नीलोत्पलम् ।

—फूल, सं. पुं. (सं.-फुल्लम् >) कर्णिका, उत्तंसः, तालपत्रं, कर्णभूषणम् ।

—वेध, सं. पुं. (सं.) संस्कारभेदः ।

कर्णाट, सं. पुं. (सं.) दक्षिणभारते प्रान्तविशेषः ।

कर्णाटी, सं. स्त्री. (सं.) रागिणीभेदः २. कर्णाटदेशस्य भाषा नारी वा।

कर्णिका, सं. स्त्री. (सं.) ताटंकः, दंतपत्रं, कर्णाभूषणभेदः २. करमध्यांगुली ३. लेखनी।

कर्त्तन, सं. पुं. (सं. न.) (कतंन्या) छेदनं, लवनं, कृन्तनम् २. तन्तुसर्जनम्।

कर्त्तनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कतरनी'।

कर्त्तरी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कतरनी' २. दे. 'छुरा'।

कर्त्तव्य, सं. पुं. (सं. न.) धर्मः, विधेयं, अनुष्ठेयम् २. दे. 'करणीय'।

—विमूढ़, वि. (सं.) कर्तव्यसंभ्रान्त।

कर्त्ता, सं. पुं. (सं. कर्तृ) विधातृ, स्रष्टृ, अनुष्ठातृ २. प्रभुः, ईश्वरः।

कर्त्तार, सं. पुं. (सं. कर्त्तारः>) परमेश्वरः, विधातृ, विश्वसृज्।

कर्तृत्व, सं. पुं. (सं. न.) कारकत्वम् २. कर्तृधर्मः।

कर्दम, सं. पुं. (सं.) चिकिलः, पंकः २. पापं ३. छाया।

कर्पट, सं. पुं. (सं. पुं. न.) चीरं, पटखण्डः, पटच्चरं जीर्णवस्त्रम्।

कर्पूर, सं. पुं. (सं.) दे. 'कपूर'।

कर्बुर, सं. पुं. (सं. न.) स्वर्णम् २. धुस्तूरवृक्षः ३. जलम्। (सं. पुं.) राक्षसः २. पापं ३. कर्चूरः। वि. नानावर्ण, चित्र, कल्माष, शबल।

कर्म, सं. पुं. (सं. कर्मन् न.) कार्यं, कर्तव्यं, क्रिया, कृतिः (स्त्री.), प्रवृत्तिः (स्त्री.) २. दैवं, भाग्यम् ३. द्वितीयं कारकम् (व्या.)।

—कांड, सं. पुं. (सं. न.) धर्मकृत्यं, यज्ञादि कार्यम् २. कर्मविधायकं शास्त्रम्।

—कार, सं. पुं. (सं.) लोहकारः २. स्वर्णकारः ३. सेवकः।

—चारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) राज,-भृत्यः-पुरुषः, अधिकारिन् २. कार्यकर्तृ।

—भोग, सं. पुं. (सं.) कर्मफलम् २. पूर्वकर्मणां परिणामः।

—योग, सं. पुं. (सं.) चित्तशुद्धिकरं वैदिककर्मन् (न.) २. निष्कामकर्मणाऽऽत्मज्ञानम्।

—रेख, सं. स्त्री. (सं.-रेखा) भाग्यांकाः २. भाग्यं, दैवम्।

—विपाक, सं. पुं. (सं.) पूर्वकर्मणां फलं, कर्मपरिणामः।

—शील, वि. (सं.) कर्मवत् २. उद्योगिन्, उद्यमिन्।

—संन्यास, सं. पुं. (सं.) कर्मत्यागः २. कर्मफलत्यागः।

—हीन, वि. (सं.) मंद-हत,-भाग्य, दुर्दैव २. शास्त्रोक्तकर्मणाम् अकर्तृ।

—जागना, मु., भाग्य-पुण्य,-उदयः।

—फूटना, मु. कर्मदुर्विपाकः, भाग्यविपर्ययः।

कर्मठ, वि. (सं.) कर्मण्य, कर्मशील, उद्यमिन्।

कर्मण्य, वि. (सं.) दे. 'कर्मठ'।

कर्मधारय, सं. पुं. (सं.) समानाधिकरणः तत्पुरुषसमासः।

कर्मिष्ठ, वि. (सं.) कार्यकुशल २. क्रियावत्।

कर्मी, वि. (सं. कर्मिन्) कार्यकर्तृ २. फलेच्छया कर्मसंपादक।

कर्मेन्द्रिय, सं. स्त्री. (सं. न.) क्रियासाधकं करणम्। (हाथ, पाँव आदि)।

कर्षक, सं. पुं. (सं.) कर्षणकरः २. क्षेत्रिन्, क्षेत्राजीवः।

कर्षण, सं. पुं. (सं. न.) आकर्षः, आकर्षणम् २. भूमिदारणम् ३. कृषिः (स्त्री.)।

कर्षणी, दे. 'खिरनी'

कर्षी, वि. (सं.) आ,-कर्षक-कार्षिन्। सं. पुं., हालिकः, हल,-वाहः,-हकः, लांगलिन् (पुं.)।

कलंक, सं. पुं. (सं.) दोषः, दूषणं, छिद्रम् २. लांछनं, अपवादः ३. लक्षणं, चिह्नम्।

कलंकित, त्रि. (सं.) दूषित, निंदित, आक्षिप्त, लांछित।

कलंकी[1], वि. (सं.-किन्) दे. 'कलंकित'।

कलंकी[2], सं. पुं. (सं. कल्किः) विष्णोर्दशमावतारः।

कलंडर, सं. पुं. (अं. केलेंडर) पचांगं, तिथिपत्रम्।

कलंदर, सं. पुं. (अ.) यवनभिक्षुभेदः २. वानरादिनर्तयितृ।

कल[1], सं. पुं. (सं.) मधुरास्फुटध्वनिः। वि., मनोज्ञ, अभिराम २. मधुर, कोमल।

कल[2], सं. स्त्री. (सं. कल्य>) स्वास्थ्यम् २. सुखम् ३. संतोषः।

कल[3], सं. स्त्री. (सं. कला) उपायः, युक्तिः (स्त्री.) २. यंत्रं, उपकरणम् ३. यंत्रावयवः।

कल[४], क्रि. वि. (सं. कल्यम्) श्वः (अव्य.), आगामिदिनम् । २. आगामिकाले ३. ह्यः (अव्य.), गतदिनम् ।

—का, वि., श्वस्तन (–नी स्त्री.), श्वस्त्य (–त्या स्त्री.) २. ह्यस्तन, ह्यस्त्य ।

कलई, सं. स्त्री. (अ.) रंगं, वंगं, कस्तीरम् २. रंग–वंग,–लेपः ३. स्वर्णादिधातुभिर्लेपः ४. कान्तिकरो लेपः ५. सुधालेपः ६. आडंबरः ।

—गर, सं. पुं. (फ़ा,) धातु–सुधा,–लेपकः ।

—खुलना, मु., गोप्यं रहस्यं वा आविर्भू ।

कलकंठ, वि. (सं.) प्रियंवद, सुस्वर, मधुरभाषिन् सं. पुं. कोकिलः २. कपोतः ३. हंसः ।

क़लक़, सं. पुं. (अ.) दुःखं, शोकः ।

कलकल, सं. पुं. (सं.) निर्झरादीनां शब्दः २. कोलाहलः ३. विवादः ।

कलग़ी, सं. स्त्री. (तु.) पक्षः, पिच्छम् २. चूडालंकारभेदः ३. मुकुटस्थाः सुपक्षाः ४. भवन-शृंगम् ।

कलत्र, सं. पुं. (सं. न.) पत्नी, भार्या ।

कलदार, सं. पुं. (हिं. कल) यंत्ररचितं रूप्यकम् २. यंत्रयुक्त ।

कलधौत, सं. पुं. (सं. न.) सुवर्णम् २. रजतम् ।

कलन, सं. पुं. (सं. न.) उत्पादनं, रचनं, जननम् २. ग्रहणम् ३. धारणं, परिधानम् ४. आचरणम् ५. संबंधः ६. ग्रासः, कवलः ७. गणितक्रिया ८. वेतसः, वेत्रः ।

कलप, सं. पुं. (सं. कल्पः >) मंडः, मंडम् २. केश,–रागः–रंगः ३. दे. 'कल्प' ।

कलपना, क्रि. अ. (सं. कल्पनम् >) शुच् (भ्वा. प. से.), पीड्–खिद–तप्–दु–क्लिश् (कर्म.) व्यथ्–उत्कंठ् (भ्वा. आ. से.), दुर्मनायते (ना. धा.) उत्सुक (वि.)+भू ।

कलपाना, क्रि. प्रे., 'कलपना' के धातुओं के प्रे. रूप ।

कलफ़, सं. पुं. (सं. कल्पः >) मंडः, मंडम् ।

—लगाना, क्रि. सं., मंडेन लिप् (तु. प. अ.) ।

कलबल[१], सं. पुं. (सं. कलावलम्) उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ।

कलबल[२], सं. पुं. (अनु.) कोलाहलः, कलकलः ।

कलबूत, सं. पुं. (फ़ा. कालबुद) आकार-साधनम् २. आधारः, उपष्टम्भः ।

कलभ, सं. पुं. (सं.) गजशावकः, उष्ट्रशावकः ।

क़लम, सं. पुं. स्त्री. (सं. पुं.) लेखनी, अक्षर-तूलिका, वर्णिका, वर्णमातृ (स्त्री.) २. अन्यत्रा-रोपणाय कृत्ता शाखा ३. अन्यवृक्षे निवेशिता शाखा ४. गंडरोमाणि (न. बहु.) ५. तूलिका, वर्तिका ६. तक्षणसाधनम् ।

—दान, सं. पुं., क़लम–लेखनी,–धानम् ।

—लगाना, मु., वृक्षान्तरे देहान्तरे वा निविश् (प्रे.) ।

कलमलाना, क्रि. अ., दे० 'कुलबुलाना' ।

कलमा, सं. पुं. (अ.) यवनधर्ममूलमंत्रः २. वाक्यम् ३. शब्दः ।

—पढ़ना, मु., यवनी भू ।

क़लमी, वि. (फ़ा.) हस्त–,लिखित २. वृक्षान्तरे आरोपित ३. स्फटिकरूपेण घनीभूत ।

—आम, सं. पुं. (पेड़) राजाम्रः, नृपवल्लभः । (फल) राजाम्रम् ।

—शोरा, सं. पुं., घनीकृतो यवक्षारः ।

कलमुहाँ, वि. (सं. कालमुख >) कृष्ण,–वदन–आस्य २. लांछित, कलुषित ।

कलरव, सं. पुं. (सं.) मधुरमंदध्वनिः, कल,–स्वनः–रुतम् । २. कपोतः ३. कोकिलः ।

कलल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) भ्रूणः, गर्भः, पुखनः, गर्भस्थशिशोः प्रथमावयवः । २. गर्भाशयः ।

कलवरिया, सं. स्त्री. (हिं. कलवार) सुरालयः, मदिरालयः, गंजा ।

कलवार, सं. पुं. (सं. कल्यपालः) शौंडिकः, सुराजीविन्, सुराकारः २. सुराविक्रत्री उप-जातिः (स्त्री.) ।

कलविंक, सं. पुं. (सं.) गृहनीडः, चित्रपृष्ठः, चटकः २. चिह्नम् ।

कलश, सं. पुं. (सं.) कलशं–शी, कलसः–सी–सम्, घटः, कुटः, निपः २. शिखा, शृंगम् ।

कलसा, सं. पुं., दे. 'कलश' ।

कलहंस, सं. पुं. (सं.) राजहंसः, कादंबः, कलनादः, मरालः २. नृपोत्तमः ३. परमेश्वरः ।

कलह, सं. पुं. (सं.) कलिः, विवादः, द्वन्द्वं, वाग्युद्धम्, विसंवादः ।

—प्रिय, वि. (सं.) विवादप्रिय, कलहकारिन्, कलहिन् ।

कला, सं. स्त्री. (सं.) अंशः, भागः २. चन्द्रस्य षोडशांशः ३. सूर्यस्य द्वादशांशः ४. अग्नि-मंडलस्य दशमांशः ५. त्रिंशत्काष्ठात्मकः समय-

विभागः ६. शिल्पं, शिल्पविद्या ७. कौशलं, निपुणता ८. शरीरस्य षोडशाध्यात्मविभागः (=५ ज्ञानेन्द्रियाँ, ६ कर्मेन्द्रिय, ५ प्राण, मन) ९. नृत्यभेदः १०. मात्रा (छन्द.) ११. विभूतिः (स्त्री.) १२. शोभा, प्रभा १३. कौतुकं, लीला १४. छल, कपटम् १५. मिष, व्याजः १६. युक्तिः (स्त्री.), उपायः १७. नटलीलाभेदः १८. यंत्रम् १९. प्रकृतिः (स्त्री., जैन.), २०. वर्णवृत्तभेदः ।

—कंद, सं. पुं. (फ़ा.) मिष्टान्नभेदः ।

—कौशल, सं. पुं. (सं. न.) कला, शिल्पम् २. कलापाटवम् ।

—निधि, सं. पुं. (सं.) कलाधरः, चन्द्रः ।

—बाजी, सं. स्त्री. (सं.+फ़ा.) विपर्यस्तप्लुतिः (स्त्री.) ।

—वंत, सं. पुं. (सं. कलावत्) संगीतकुशलः, गायकः २. रज्जुनर्तकः । वि., कलाकुशल ।

कलाई, सं. स्त्री. (सं. कलाची) कलाचिका, प्रकोष्ठः, मणिबंधः ।

कलाप, सं. पुं. (सं.) समूहः, गणः, निकरः २. जनसंघः, लोकनिवहः ३. इषुधिः ४. चन्द्रः ५. कटिबंधः, मेखला ६. गुच्छः ७. मयूरपिच्छम् ८. आभूषणम् ।

कलापिनी, सं. स्त्री. (सं.) मयूरी २. रात्रिः (स्त्री.) ।

कलापी, सं. पुं. (सं.-पिन्) मयूरः, बर्हिन् २. कोकिलः । वि., तूणपृष्ठ ।

कलाबत्तू, सं. पुं. (तु. कलाबतून) कौशेयतंतौ व्यावर्तितः सुवर्ण-रजत,-तारः ।

कलाम, सं. पुं. (अ.) वचनं, उक्तिः (स्त्री.) २. वार्तालापः ३. प्रतिज्ञा ४. आक्षेपः ।

कलार-ल, सं. पुं., दे. 'कलवार' ।

कलारिन, सं. स्त्री. (हिं. कलार) शौण्डिकी, मद्यविक्रेत्री ।

कलावती, वि. (सं.) कला-शिल्प,-ज्ञा-वेत्री, शिल्पिनी २. सुन्दरी ।

कलिंग, सं. पुं. (सं.-गाः) प्रान्तविशेषः (=उड़ीसा) २. इन्द्रयव-कुटज,-वृक्षः ३. दे. 'तरबूज' । वि. चतुर, धूर्त ।

कलिंगड़ा, सं. पुं. रागभेदः ।

कलिंद, सं. पुं. (सं.) पर्वतविशेषः २. सूर्यः ।

कलिंदजा, सं. स्त्री. (सं.) यमुना, कालिंदी ।

कलि, सं. पुं. (सं.) चतुर्थ-तुरीय-अन्त्य,-युगम् (यह ४३२००० वर्षों का होता है) २. कलहः, विवादः ३. युद्धम् ४. शूरः ५ क्लेशः ६. पापम् ७. शिवः ८. इषुधिः ।

—कर्म, सं. पुं. (सं.-कर्मन् न.) संग्रामः ।

—काल, सं. पुं. (सं.) कलियुगम् ।

कलिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कली' ।

कलित, वि. (सं.) ज्ञात, विदित २. प्रसिद्ध ३. प्राप्त ४. शोभित ५. सुन्दर ।

कलियाना, क्रि. अ. (सं. कली >) स्फुट् (तु.प.से.) विकस्-फुल्ल् (भ्वा. प. से.) ।

कली¹, सं. स्त्री. (सं.) कलिका, कोरकः-कं, मुकुलः-लं, कुड्मलः, कोशः-षः २. त्रिकोणो वस्त्रखंडः ३. धूमपानयंत्राधोभागः ।

दिल की कली खिलना, मु., मुद् (भ्वा.आ.से.) ।

कली², सं. स्त्री. (अ. कलई) चूर्णजलम् २. तप्तचूर्णम् ।

क़लील, वि. (अ.) न्यून, स्तोक २. लघु, ह्रस्व ।

कलुष, सं. पुं. (सं. न.) मलं, मालिन्यम् २. पापं, दोषः ३. क्रोधः ४. महिषः ।

वि., मलिन, पंकिल २. निंदित ३. पापिन् ।

कलुषित, वि. (सं.) पंकिल, मलीमस २. अपवित्र, अमेध्य ३. आतुर ४. कृष्ण, काल ।

कलूटा, वि. (हिं. काला) काल, कृष्ण, श्याम ।

काला—, वि. अति,-कृष्ण-काल ।

कलेजा, सं. पुं. (सं. कालेयम्) यकृत् (न.), कालखण्डं, कालकम् २. हृदयं, हृद् (न.), ३. उरस्, वक्षस्, क्रोडं (सब न.) ४. साहसं, उत्साहः, वीर्यम् ।

—काँपना, मु., भी (जु. प. अ.), उद्विज् (तु. आ. से.) सं-वि,-त्रस् (दि. प. से) ।

—चलनी होना, मु., हृदयं व्यध् (कर्म.) ।

—टूक टूक होना, मु., हृदय स्फुट् (तु.प.से.) ।

—थाम कर रह जाना, मु., संतापं सं-नि,-यम् (भ्वा. प. अ.) ।

—धड़कना, मु., (भयादिभिः) हृदयं कंप् (भ्वा. आ. से.) ।

—फटना, मु., (शोकमात्सर्यादिभिः) हृदयं विद् (कर्म.) ।

—से लगाना, मु., आलिंग् (भ्वा. प. से.) ।

कलेवर, सं. पुं. (सं. न.) शरीरं, देहः ।

—बदलना, क्रि. अ., पुनः जन् (दि. आ. से.) २. नववस्त्राणि परिधा (जु. उ. अ.)।

कलेवा, सं. पुं. (सं. कल्यवर्तः) प्रातराशः, प्रातर्भोजन, कल्यजग्धिः (स्त्री.), जलपानम्।

कलोल, सं. स्त्री. (सं. कल्लोलः >) क्रीडा, खेला, केलिः (पुं. स्त्री.), लीला, विलासः।

कलौंजी, सं. स्त्री. (सं. कालाजाजी) पृथुका, दित्या, काला।

कल्क, सं. पुं. (सं. पुं. न.) घृततैलादिशेषः २. दंभः ३. विष्ठा ४. किट्टम् ५. पापम् ६. वस्तुनः चूर्णम् ७. अवलेहः।

कल्कि, सं. पुं. (सं.) विष्णोर्दशमावतारः।

कल्प, सं. पुं. (सं.) धर्मकृत्यविधायको वेदांग-भेदः २. ब्रह्मदिनम्, दैवसहस्रयुगम् (= ४३२०००००० वर्ष) ३. महाप्रलयः, सृष्टि-संहारः ४. विधानं, कृत्यम् ५. प्रातःकालः ६. रोगनिवृत्तियुक्तिः (स्त्री.) ७. प्रकरणं, विभागः ८. विकल्पः, पक्षः ९. संदेशः १०. निश्चयः ११. उद्देशः। वि., तुल्य, सदृश।

—तरु, सं. पुं. (सं.) कल्प,-वृक्षः-पादपः-द्रुमः।

कल्पना, सं. स्त्री. (सं.) उद्भावना-नं, कल्पनं, मनः कल्पना २. रचना, विधानम् ३. प्रसाधनं, मंडनम् ४. तर्कः, ऊहा ५. अध्यारोपः ६. गज-सज्जीकरणं।

—करना, क्रि. अ., उत्प्रेक्ष्-ऊह् (भ्वा. आ. से.), तर्क् (चु.), मनसा क्लृप् (प्रे.), संभू (प्रे.)।

कल्पित, वि, (सं.) रचित, विहित २. सुव्यव-स्थित ३. वि-सं,-भावित ४. उद्भावित, वासना,-भावना,-सृष्ट, मानस, काल्पनिक ५. असत्य, निर्मूल ६. कृत्रिम, कृतक।

कल्मष, सं. पुं. (सं. न.) अघं, पापम् २. मलं मालिन्यम्।

कल्य, सं. पुं. (सं. न.) प्रत्यूषः, प्रभातम् २. मधु (न.) ३. सुरा ४. श्वः (अव्य.), आगामिदिनम्। वि., स्वस्थ, निरामय २. मूक-बधिर।

कल्या, सं. स्त्री. (सं.) मद्यम्, सुरा २. कल्याण-स्वस्ति,-वचनं-वचः (न.), अभिनन्दनम्।

कल्याण, सं. पुं. (सं. न.) सुखं, मंगलं, हितं, शिवं, कुशलं, क्षेमं, भद्रं, सुस्थितिः (स्त्री.) २. सुवर्णम् ३. रागभेदः। वि. शिव, मंगल, शंकर।

—कारी, वि. (सं.-रिन्) सुख-मंगल-हित-, कारक।

कल्याणी, वि. स्त्री. (सं.) मंगलकारिणी, सुन्दरी। सं. स्त्री. (सं.) गौः (स्त्री.) २. माषपर्णी।

कल्याश, सं. पुं. (सं.) प्रातराशः, कल्यवर्तः, जलपानम्।

कल्ल, वि. (सं.) बधिर, अकर्ण।

कल्लर, सं. पुं. (देश.) ऊषरः-रं, वंध्या भूमिः (स्त्री.)।

कल्लाँच, वि. दुर्वृत्त, दुराचारिन् २. दरिद्र, निर्धन।

कल्ला, सं. पुं. (सं. करीरः-रं >) प्ररोहः, किसलयः, उद्भिद्।

कल्लोल, सं. पुं. (सं.) महातरंगः, उल्लोलः, महोर्मिः २. दे. 'कलोल'।

कल्लोलिनी, सं. स्त्री. (सं.) नदी, तटिनी।

कवच, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सन्नाहः, कंचुकः, वर्मन् (न.), तनु,-वारं-त्राणं-त्रम् २. भेरी, दुंदुभिः ३. रक्षाकरंडः।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) भूर्जपत्रम्।

कवर, सं. पुं. (सं. पुं. स्त्री. न.) केश,-बंधः-पाशः २. ग्रासः, कवलः, पिण्डः।

कवरी, सं. स्त्री. (सं.) केशविन्यासः, वेणी-णिः (स्त्री.), धमिल्लः २. वनतुलसी।

कवर्ग, सं. पुं. (सं.) ककारादिवर्णपंचकम्।

कवल, सं. पुं. (सं.) ग्रासः, पिंडः-डम्।

कवलगट्टा, सं. पुं. (सं. कमलग्रंथिः >) कमलाक्षः, पद्मबीजम्।

कवलित, वि. (सं.) भक्षित, निगीर्ण, भुक्त २. गृहीत, आदत्त।

कवायद, सं. पुं. (अ. 'क़ायदा' का बहु.) नियमाः-विधयः (बहु.) २. व्यायामः ३. सेना-व्यायामः ४. व्याकरणनियमाः।

कवि, सं. पुं. (सं.) काव्यकरः, सूरिः, सत्सारः २. ऋषिः ३. सूर्यः ४. ब्रह्मन् (पुं.)।

—राज, सं. पुं. (सं.) कवीन्द्रः, महाकविः २. वैतालिकः ३. वैद्योपाधिः।

कविता, सं. स्त्री. (सं.) काव्यं, काव्यप्रबन्धः,

काव्यबंधः २. काव्यरचना, कवित्वं, कविता-कला।

कवित्त, सं. पुं. (सं. कवित्वम् >) काव्यं, कविता २. हिन्दीछन्दोभेदः।

कवित्व, सं. पुं. (सं. न.) काव्यरचनाशक्तिः (स्त्री.) २. काव्यगुणः।

कवींदु, सं. पुं. (सं.) वाल्मीकिः, प्राचेतसः, कविज्येष्ठः।

कवींद्र, विं. (सं.) कविश्रेष्ठः, श्रेष्ठकविः, कविराजः।

कश, सं. पुं., दे. 'कशा'।

कशमकश, सं. स्त्री. (फ़ा) संघर्षः, प्रतिस्पर्द्धा २. जनौघः ३. संशयः।

कशा, सं. स्त्री. (सं.) कषा, प्रतोदः, प्रतिष्कशः-षः।

कशिश, सं. स्त्री. (फ़ा) दे. 'आकर्षण'।

कशीदा, सं. पुं. (फ़ा.) सूची, शिल्पं-कर्मन् (न.)।

—काढ़ना, क्रि. स., सूच्या पुष्पादिकं चित्र् (चु.)।

[illegible]ती, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'नौका'।

कश्मल, सं. पुं. (सं. न.) मोहः, मूर्च्छा २. पापं, अघम्। वि. मलिन, आविल।

कश्मीर, सं. पुं. (सं.) काश्मीरदेशः, शास्त्र-शिल्पिन्।

कष, सं. पुं. (सं.) कषपट्टिका, निकषः, निकष,-उपलः-पाषाणः २. शाणः-णी ३. परीक्षणं, परीक्षा।

कषण, सं. पुं. (सं. न.) निकषेण स्वर्णादिकस्य परीक्षणम्।

कषाय, वि. (सं.) तुवर, कुवर २. सुवास, सुगंधि ३. रंजित, रंगवत् ४. गैरिकवर्ण, रक्तश्याम। सं. पुं. क्रोधः २. क्वाथः ३. कुवरः, रसभेदः।

कष्ट, सं. पुं. (सं. न.) दुःखं, क्लेशः, पीडा, व्यथा २. आपद्, विपद्, आपत्तिः, विपत्तिः (सब स्त्री.)।

—साध्य, वि. (सं.) दुस्साध्य, दुष्कर, कष्ट।

कस[1], सं. पुं. (सं. कषः) निकषः, कषपट्टिका २. परीक्षणम् २. खड्गकुंचनीयता।

कस[2], सं. पुं. (हिं. कसना) बलं, शक्तिः (स्त्री.) २. निग्रहः, निरोध : ३. विघ्नः।

कस[3], सं. पुं. (फ़ा.) नरः, जनः, व्यक्तिः (स्त्री.)।

फ़ी—, क्रि. वि., प्रतिपुरुषं, प्रतिजनम्।

बे—, वि., असहाय, अनाथ।

कसक, सं. स्त्री. (सं. कष् = हिंसा >) वेदना, पीडा, व्यथा २. चिर,-वैरं-विरोधः ३. अभिलाषः ४. सहानुभूतिः (स्त्री.)।

—निकालना, क्रि. स., चिरवैरं शुध् (प्रे.)।

कसकना, क्रि. अ. (हिं. कसक) व्यथ् (भ्वा. आ. से.), पीड् (कर्म.)।

कसकुट, सं. पुं. दे. 'काँसा'।

कसना, क्रि. स. (सं. कर्षणम्) दृढीकृ, नियम् (भ्वा. प. अ.), द्रढयति (न. धा.), २. बंध् (क्र्. प. अ.) ३. पीड् (चु.) ४. परीक्ष् (भ्वा. आ. से.) ५. सज्जीकृ ६. मूल्यं वृध् (प्रे.)।

क्रि. अ. दृढीभू, नियम् (कर्म) २. बंध्, नियंत्र् (कर्म.) ३. पिंडीभू।

सं. पुं., दृढीकरणं, नियमनम् २. बंधनम् ३. पीडनम् ४. परीक्षणम् ५. सज्जीकरणम्।

कसनी, सं. स्त्री. (हिं. कसना) दृढ़ीकरण-नियमन,-रज्जुः (स्त्री.) २. अंगिका ३. निकषः ४. परीक्षा ५. दे. 'हथौड़ी'।

कसब, सं. पुं. (अ.) व्यवसायः, वृत्तिः (स्त्री.) २. गणिकावृत्तिः (स्त्री.)।

कसबी, सं. स्त्री. (अ. कसब >) वेश्या, गणिका २. कुलटा, पुंश्चली।

कसम, सं. स्त्री. (अ.) शपथः, प्रतिज्ञा, समयः।

—खाना, क्रि. अ., शप् (भ्वा. दि. उ. अ.)।

कसमसाना, क्रि. अ., (अनु०) दे. 'कुलबुलाना'।

कसमसाहट, सं. स्त्री., शनैः सर्पणम् २. व्याकुलता।

कसमि (मी) या, अ. (अ०) सशपथं, ससमयं, शपथपूर्वम्।

कसर, सं. स्त्री. (अ.) न्यूनता, अल्पता २. अभावः, हीनता ३. दोषः ४. वैरम् ५. हानिः (स्त्री.)।

—निकालना, मु., क्षतिं पूर् (चु.), प्रतिफलं दा (जु. उ. अ.)।

कसरत, सं. स्त्री. (अ.) बाहुल्यं, प्रचुरता, आधिक्यम् २. बहुतरभागः, अधिकसंख्या।

—राय, सं. स्त्री., बहुमतं, मताधिक्यम्।
कसरत, सं. स्त्री. (अ.) व्यायामः, परिश्रमः २. अभ्यासः, आवृत्तिः (स्त्री.)।
कसरती, वि. (अ. कसरत >) व्यायामिन्, दृढांग।
कसा, वि. (हिं. कसना) गाढ, दृढ, सुसंहत २. दृढबद्ध।
क़साई, सं. पुं. (अ. क़स्साब) सौ (शौ) निकः २. मांसिकः, घातकः, विशसितृ। वि., क्रूर, निर्दय।
कसाना, क्रि. अ. (हिं. काँसा) कषाय-विकृत-स्वाद (वि.) भू।
कसाला, सं. पुं. (सं. कषः=पीड़ा >) दुःखं, कष्टम् २. आयासः, परि-,श्रमः।
कसाव, सं. पुं. (सं. कषायः >) कषायता, रूक्षता।
कसी, सं. स्त्री. (सं. कषणम् >) खनित्रं, टंगः-गम्।
कसीदा, सं. पुं., दे. 'कशीदा'।
कसीस, सं. पुं. (सं. कासीसम्) शोधनं, शुभ्रं, धातुशेखरम्, खेचरम्।
क़सूर, सं. पुं. (अ.) अपराधः, दोषः, स्खलितम्।
—वार, वि., अपराधिन्, दोषिन्।
कसेरा, सं. पुं. (हिं. काँसा) कांस्यकारः, पीतलोहकारः।
कसैला, वि. (हिं. कसाव) कषाय, तुवर, कुवर।
कसैली, सं. स्त्री. (हिं. कसैला) दे. 'सुपारी'। वि. स्त्री. कषाया, रूक्षा।
कसोरा, सं. पुं. (हिं. काँसा) (कांस्य-) चषकः शरावः-भाजनं-पात्रम्। २. मृण्मय-मार्त्तिक,-चषकः।
कसौटी, सं. स्त्री. (सं. कषपट्टी) नि-, कषः, कषपट्टिका, निकषोपलः २. परीक्षा, प्रमाणम्।
—पर कसना, मु., परीक्ष् (भ्वा. आ. से.)।
कस्टम, सं. पुं. (अं.) रीतिः (स्त्री.), व्यवहारः, अभ्यासः, नियमः।
कस्टमर, सं. पुं. (अं.) ग्राहकः, क्रेतृ (पुं.)।
कस्टम्स, सं. पुं. (अं.) शुल्कः-कं, करः, राजस्वम्।
कस्तूरी, सं. स्त्री. (सं.) कस्तूरिका, मृग,-नाभिः-मदः, अंडजा, वातामोदा, गंधधूलिः (स्त्री.)।

—मृग, सं. पुं. (सं.) गंधमृगः।
क़स्बा, सं. पुं. (अ.-बः) बृहद्-महा,-ग्रामः, लघु,-नगरं-पुरम्।
क़हक़हा सं. पुं. (अ. अनु.) अट्टहासः, उच्चैर्हासः, अति-प्र-,हासः।
क़हत, सं. पुं. (अ.) दुर्भिक्षं, नीवाकः, आहाराभावः, अकालः।
कहना, क्रि. स. (सं. कथनम्) गद्-वद्-भण् (भ्वा. प. से.), ब्रू (अ. उ.), वच् (अ. प. अ.) उच्चर्-उदीर् (प्रे.), उदा-व्या,-हृ (भ्वा. प. अ.) २. कथ् (चु.), शंस् (भ्वा. प. से.), आचक्ष् (अ. आ.), नि-आ,-विद् (प्रे.), आ-, ख्या (अ. प. अ.), वर्ण-निरूप (चु.), अभिधा (जु. उ. अ.) ३. आज्ञा (प्रे. आज्ञापयति) ४. श्लाघ् (भ्वा. आ. से.) ५. प्रकाश् (प्रे.) ६. उपदिश् (तु. प. अ.)। सं. पुं., वचनं, भाषणं, कथनं, व्याहरणं, उदीरणम् २. आज्ञा, आदेशः ३. उपदेशः, अनुशासनम् ४. दे. 'कहावत'।
—योग्य, वि. गदनीय, वदनीय, कथनीय भणितव्य, वक्तव्य।
—वाला, सं. पुं., वाचकः, वक्तृ, वा... व्याहर्तृ, अभिधातृ।
—हुआ, वि., गदित, उदित, भणित, उक्त, कथित, उच्चारित, उदीरित।
कहने को, मु., नाममात्रम्।
क़हर, सं. पुं. (अ.) विपत्तिः (स्त्री.)।
कहरवा, सं. पुं. (हिं. कहार) (१-३) ताल-गीत-नृत्य,-भेदः।
कहरी, वि. (अ० क़हर >) क्रूर, निर्दय, अत्याचारिन्।
कहलाना, क्रि. प्रे., 'कहना' के धातुओं के प्रे. रूप।
कहवा, सं. पुं. (अ.) वृक्षभेदः २. तस्य बीजानि (बहु.) ३. तेषां पेयम्।
कहाँ, क्रि. वि. (सं. कुह) क्व, कुत्र, कस्मिन् स्थाने।
—का, वि., क्वत्य, कुत्रत्य, किंदेशीय।
—तक, क्रि. वि., कियद्दूरं-रे, कियतांऽशेन, किंपर्यन्तम्।
कहा, सं. पुं. (हिं. कहना) कथनं, वचनं, उक्तिः (स्त्री.), आज्ञा, उपदेशः।

कहानी, सं. स्त्री. (सं. कथानिका) कथा, आ-उपा,-ख्यानम् , आख्यायिका, वृत्तान्तः ।

कहार, सं. पुं. [सं. कं (=जल)+हारः] कहारः, जल-उद,-वाहः, दृतिहारः । २. शिविका-नरयान,-वाहः ३. पात्र,-क्षालकः-मार्जकः ।

कहावत, सं. स्त्री. (हिं. कहना) आभाणकः, लोकवादः, जनप्रवादः, जनोक्तिः-लोकोक्तिः (स्त्री.)।

कहासुनी, सं. स्त्री. (हिं. कहना+सुनना) कलहः, विवादः, वाग्युद्धम् ।

कहीं, क्रि. वि. (हिं. कहाँ) क्वापि, क्वचित् , कुत्रापि, कुत्रचित् , यत्रकुत्रचित् । २. न, न कदापि ३. यदि, चेत् ४. अत्यन्तम् ।

—कहीं, क्रि. वि., क्वचित् क्वचित् , यत्र कुत्र-चिदेव ।

—न कहीं, क्रि. वि., अत्र अन्यत्र वा ।

काँइयाँ, वि. (अनु. काँव) धूर्त्त, कितव ।

काँ काँ, सं. स्त्री. (अनु.) काका,-शब्दः-ध्वनिः, २. काकरुतम् ।

काँक्षा, सं. स्त्री. (सं.) अभिलाषः, कामना ।

काँख, सं. स्त्री. (सं. कक्षः) कक्षा, बाहुमूलं, भुजकोटरः-रं, दोर्मूलम् ।

काँखना, क्रि. अ., (अनु.) भारवहनमलत्या-गणादिकाले आर्तनादं कृ ।

काँगड़ी, सं. स्त्री.,* गल,-हसनी-हसन्ती, अंगार-धानिका प्रकारः ।

कांग्रेस, सं. स्त्री. (अं.) महासभा, प्रतिनिधि सभा, समाजः ।

काँच[1], सं. स्त्री. (सं. कक्षः) कच्छः-च्छं, कच्छा, टी-टिका २. गुदावर्तः, गुदचक्रम् ।

काँच[2], सं. पुं. (सं. काचः) स्फटिकः ।

कांचन, सं. पुं. (सं. न.) स्वर्णम् , सुवर्णं, कनकम् २. धनं, संपत्तिः (स्त्री.) । (सं. पुं.) धुस्तूरः २. चंपकः ३. कोविदारः ४. कांच-नालः ।

—मय, वि. सुवर्णमय, हैम (-मी स्त्री.) ।

कांची, सं. स्त्री. (सं.) रसना, मेखला २. कांजिवरम् ।

कांजिव (वा) रम् , सं. पुं., (सं. कांची) कांची,-पुरी-नगरी ।

काँजी, सं. स्त्री. (सं.) गृहाम्लं, रक्षोघ्नं, सुवी-राम्लं, काञ्जि(ञ्जी)कम् ।

काँजी हौद, सं. पुं. (अं. काइन हाउस) पशु,-शाला गुप्तिः (स्त्री.), गोगृहं, अवरोधः ।

काँटा, सं. पुं. (सं. कंटकः-कम्) तरु-द्रुम-, नखः, शिताग्रः, शल्यम् २. पृष्ठवंशः, कशेरुका ३. नखः-खं, नखरः-रम् ४. लघु,-तुला-धटः ५. शूलः-लम् ६. मयूरकुक्कुटादीनां नखः । ७. तुला,-जिह्वा-सूची ८. बडिशं, मत्स्यवेध-नम् ९. मत्स्यास्थि (न.) १०. जिह्वोद्भेदः ११. शलं, शललम् १२. घटीसूची १३. कूप-कंटकः १४. रोमांचः ।

—खटकना, मु, (हृदयं) कंटकमिव व्यध् (दि. प. अ.)

—होना, मु., अतिकृश (वि.) भू ।

काँटे बोना, मु., पीड् (चु.) ।

काँटों में घसीटना, मु., मिथ्यास्तु (अ. प. अ.) ।

रास्ते में काँटे बिखेरना, मु., विघ्नयति (ना. धा.) ।

काँटी, सं. स्त्री. (हिं. काँटा) क्षुद्रकंटकः २. लघु-क्षुद्र,-धरणी-आकर्षणी ३. क्षुद्रतुला ४. क्षुद्रकीलः ५. कार्पासमलम् ।

कांड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अध्यायः, उच्छ्वासः, प्रकरणं, परिच्छेदः, स्कंधः २. वि-, भागः, खंडः-डम् ३. दण्डः, यष्टिः (स्त्री.) ४. बाणः ५. शरवृक्षः ६. अवसरः ७. तृणादिगुच्छः ८. तरुस्कन्धः ९. समूहः १०. वंशादेः पर्वन् (न.) ११. शाखा १२. व्यापारः, घटना १३. नालम् ।

कांडी, सं. स्त्री. (सं. कांडः >) दीर्घ,-स्थूणा-काष्ठम् , गृहस्थूणा, तुला ।

कांत, सं. पुं. (सं.) पतिः, भर्तृ २. अयस्-लोह,-कान्त, चुंबकः ३. चन्द्रः ४. वसन्तः ५. श्रीकृष्णः । वि., मनोरम, शोभन ।

कांता, सं. स्त्री. (सं.) पत्नी, भार्या २. दयिता, प्रिया ३. सर्वांगसुन्दरी नारी ।

कांतार, सं. पुं. (सं. पुं. न.) महावनं, बृहद्-गहनं, अरण्यानी २. वेणुः, वंशः ३. बिलं, छिद्रम् ।

कांति, सं. स्त्री. (सं.) द्युतिः-दीप्तिः-छविः (स्त्री.), भा, अभिख्या २. सौन्दर्यं, लावण्यम् ।

कांदव, सं. पुं. (सं. न.) कटाहीभृष्ट-कन्दुभर्जित, वस्तु (न.)-पदार्थः।

कांदिशीक, वि. (सं.) भय-त्रास,-पलायित-अपद्रुत-धावित।

काँप, सं. स्त्री. (सं. कंपा) (१-२) गज-वराह,-दन्तः २. वंशकाशादीनां शलाका ३. कर्णभूषणभेदः।

काँपना, क्रि. अ. (सं. कम्पनम्) कप्-स्पंद्-वेप् (भ्वा. आ. से.) स्फुर् (तु. प. से.) २. विचल्-वेल्ल् (भ्वा. प. से.) ३. दे. 'डरना'।

कांबोज, वि. (सं.) कम्बोजदेश,-विषयक-सम्ब-धिन्। सं.पुं. कम्बोजवासिन्। २. कम्बोजाश्वः।

काँव-काँव, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'काँ-काँ' २. प्रजल्पः, विप्रलापः।

काँवर, सं. स्त्री. दे. 'बहँगी'

काँस, सं. पुं. (सं. काशः) अमरपुष्पकः, वन-हासकः, काशा-शी २. कलहः।

काँसा, सं. पुं. (सं. कांस्यम्) कंसं, कंसास्थि (न.) ताम्रार्द्धम्, दीप्ति-पीत,-लोहम्, घोषम्।

कांस्यकार, सं. पुं. (सं.) कंसकारः दे. 'कसेरा'।

का, प्रत्य. (सं. प्रत्य. 'कः') षष्ठी वा समास द्वारा। (उ० राम की पुस्तक = रामस्य पुस्तकं, रामपुस्तकम्)।

काई, सं. स्त्री. (सं. कावारम्) शैव (वा) लः, शेव (वा) लः-लं, जलनीली २. अयोमलम् ३. मलम्।

काक[१], सं. पुं. (सं.) वायसः, ध्वांक्षः।

—तालीय, वि. (सं.) आकस्मिक-याद्दच्छिक (-की स्त्री.), अतर्कित।

—पक्ष, सं. पुं. (सं.) शिखंडः-डकः, अलकः, चूर्णकुन्तलः केशकलापः।

—पद, सं. पुं. (सं. न.) हस्तलेखेषु उज्झित-वर्णद्योतकचिह्नम् (= ^)।

—वन्ध्या, सं. स्त्री. (सं.) एकापत्यजननी।

काक[२], सं. पुं. (अं. कार्क) पिधानं, कूपी-छिद्रपिधानम् २. रोधनी, स्तम्भनी।

काकली, सं. स्त्री. (सं.) सूक्ष्ममधुरास्फुटध्वनिः।

काका, सं. पुं. (फ़ा. काका = बड़ा भाई >) पितृव्यः, पितुः भ्रातृ २. (पं.) बालः, शिशुः।

काकी, सं. स्त्री. (फ़ा. काका >) पितृव्या, पितृव्यपत्नी २. (पं.) कन्यका, बालिका।

काकु, सं. पुं. (सं.) भिन्नकण्ठध्वनिः २. आक्षेपः, व्यंग्यवचनं. आ-अधि,-क्षेपः ३. अलङ्कारभेदः (सा.) ४. जिह्वा।

काकुत्स्थ, सं. पुं. (सं.) श्रीरामचन्द्रः।

काकुल, सं. पुं. (फ़ा.) काकपक्षः शिखंडकः।

काग, सं. पुं. दे. 'काक' १, २.

काग़ज़, सं. पुं. (अ.) कागदः-दं, पत्रं, कर्गलम्।

—पत्र, सं. पुं. (अ.+सं.) लेख्यपत्राणि, पत्र-काणि, लेख्यानि (सब बहु.)।

—की नाव, मु. क्षणभंगुर, विनश्वर।

काग़ज़ी, वि. (अ. काग़ज़ >) कागद-पत्र,-मय. २. सूक्ष्मत्वच् ३. प्रतनु। सं. पुं., पत्रवि-क्रयिन् २. श्वेतकपोतः।

—घोड़े दौड़ाना, मु., पत्रैः व्यवहृ (भ्वा. प. अ.)।

काच, सं. पुं. (सं.) स्फटिकः २. नेत्ररोगभेदः (सं. न.) काचलवणम् २. सिक्थकम्।

काछ, सं. स्त्री. (सं. कक्षा >) कटी-जघन,-वस्त्रम्।

काछना[१], क्रि सं. (सं. कक्षा >) धौताप्रान्तं पृष्ठे निविश् (प्रे.)।

काछना[२], क्रि. स. (सं. कषणम्) फेनं अपनी (भ्वा. उ. अ.)।

काछनी, सं. स्त्री. (हिं. काछना) ऊरुवसनं, सक्थिवस्त्रम्।

काछा, सं. पुं., दे. 'काछनी'।

काछी, सं. पुं. (सं. कच्छः >) शाक,-उत्पादक-विक्रेतृ २. जातिभेदः।

काज[१], सं. पुं. (सं. कार्यम्) कृत्यं, कार्यं, कर्मन् (न.), कृतिः (स्त्री.) २. वृत्तिः (स्त्री.), आजीविका ३.उद्देश्यं, प्रयोजनम् ४. विवाहः।

काज[२], सं. पुं. (अ. कायजा >) गण्डाधारः, कुड्मपाधारः (= बटन का छेद)।

काजल, सं. पुं. (सं. कज्जलम्) लोचकः, दीप-किट्टं, अंजनम्।

—की कोठरी, मु., निन्द्यस्थानम्।

काज़ी, सं. पुं. (अ.) न्यायाधीशः, धर्माध्यक्षः (इस्लाम)।

काट, सं. स्त्री. (हिं काटना) छेदनं, कर्तनं, लवनं, कृन्तनं, व्रश्चनम् २. कर्तनरीतिः (स्त्री.) ३. व्रणः, क्षतम् ४. खण्डः-ण्डं, लवः ५. छलं, कपटम्।

—छाँट, सं. स्त्री., संक्षेपणं २. शोधनम्।

काटन, सं॰ पुं॰ (अं॰) कार्पासः, तूलः-लम् २. कार्पासं, तूलाम्बरम्, बादरम् ।

काटना, क्रि॰ स॰ (सं॰ कर्तनम्) कृत् (तु॰ प॰ से॰) लू (क्र्॰ उ॰ से॰), छिद् (रु॰ प॰ अ॰), व्रश्च् (तु॰ प॰ वे॰) २. तुद् (तु॰ प॰ अ॰), व्रण् (चु॰) ३. ऊन् (चु॰), संक्षिप् (तु॰ प॰ अ॰) ४. हन् (अ॰ प॰ अ॰) व्यापद् (प्रे॰) ५. दे॰ 'कतरना' ६. संधिं त्रुट् (प्रे॰) ७. विफलीकृ ८. दंश् (भ्वा॰ प॰ अ॰) ९. अल्पांशं उद्धृ (भ्वा॰ प॰ अ॰) १०. अतिक्रम् (भ्वा॰ प॰ से॰) ।

सं॰ पुं॰ तथा भाव, दे॰ 'काट' ।

—योग्य, वि॰, कर्तनीय, छेदनीय, छेत्तव्य, लवनीय ।

—वाला, सं॰ पुं॰ छेदकः, लावकः, कर्तनकरः ।

काटा हुआ, वि॰, कृत्त, लून, वृक्ण, छिन्न ।

काटने दौड़ना, मु॰ निर्जन (वि॰) दृश् (कर्म॰) ।

काटो तो खून नहीं, मु॰, सं–, स्तब्ध ।

काठ, सं॰ पुं॰ (सं॰ काष्ठम्) दारु (न॰) २. इध्मं, इंधनं ३. काष्ठनिगडः-डम् ४. दे॰ 'शहतीर' । वि॰ क्रूर २. मूर्ख ।

—का उल्लू, सं॰ पुं॰ जड़धीः, मूढः, अज्ञः ।

—की हाँडी, सं॰, आपातरमणीयं वस्तु ।

—मारना, मु॰, काष्ठनिगडेन बंध् (क्र्॰ प॰ अ॰) ।

काठड़ा, सं॰ पुं॰, दे॰ 'कठौता' ।

काठिन्य, सं॰ पुं॰ (सं॰ न॰) दे॰ 'कठिनता' ।

काठी, सं॰ स्त्री॰ (हिं॰ काठ) पर्याणं, पर्ययणं, पल्ययनम् २. शरीर,-रचना-संस्थानम् ३. असिकोषः ।

काढ़ना, क्रि॰ स॰ (सं॰ कर्षणम्) निष्-आ, कृष् (भ्वा॰ प॰ अ॰), निष्-सं,-पीड् (चु॰), निर्-उद्,-हृ (भ्वा॰ प॰ अ॰) २. सूच्या पुष्पादिकं सिव् (दि॰ प॰ से॰) ३. काष्ठपाषाणादिषु पुष्पादिकं उल्लिख्-उत्कॄ (तु॰ प॰ से॰) ४. पृथक् कृ, वियुज-विश्लिष् (प्रे॰) ५. कथ् (भ्वा॰ आ॰ से॰) ।

काढ़ा, सं॰ पुं॰ (हिं॰ काढ़ना) क्वाथः, कषायः, निर्यासः ।

काणेली, सं॰ स्त्री॰ (सं॰) कुलटा, व्यभिचारिणी, पुंश्चली २. अनूढा, अविवाहिता ।

कातना, क्रि॰ स॰ (सं॰ कर्तनम्) तन्तून् सृज् (तु॰ प॰ अ॰), कृत् (रु॰ प॰ से॰) ।

सं॰ पुं॰ तथा भाव, कर्तनं, तन्तुनिर्माणम् ।

—योग्य, वि॰, कर्तनीय, कर्तनार्ह ।

—वाला, सं॰ पुं॰, कर्तकः, तन्तुकारः ।

काता हुआ, वि॰, कृत्त ।

कातर, वि॰ (सं॰) व्याकुल, विह्वल २. भीत, त्रस्त ३. भीरु ४. आर्त्त ।

कातरता, सं॰ स्त्री॰ (सं॰) व्याकुलता, धैर्याभावः २. भयं, त्रासः ३. भीरुता, कातर्यम् ४. अवसादः विषादः ।

क़ातिब, सं॰ पुं॰ (अ॰) लेखकः २. अक्षरचंचुः ।

क़ातिल, सं॰ पुं॰ (अ॰) घातकः, हन्तृ ।

कादम्ब, सं॰ पुं॰ (सं॰) (१–३) कदंब,-वृक्षः-पुष्पं-फलम् ४. कलहंसः ५. इक्षुः ६. बाणः ७ कदंबसुरा ।

कादंबरी, सं॰ स्त्री॰ (सं॰) कोकिला २. मदिरा ३. सरस्वती ४. बाणरचितो गद्यकाव्यविशेषः ।

कादंबिनी, सं॰ स्त्री॰ (सं॰) मेघमाला, जलदावली ।

कान, सं॰ पुं॰ (सं॰ कर्णः) श्रोत्रं, श्रवणं, श्रुतिः (स्त्री॰), श्रावः, शब्दग्रहः ।

—में कहना, क्रि॰, स॰, कर्णे जप् (भ्वा॰ प॰ से॰) ।

—का परदा, सं॰ पुं॰, कर्ण,-पटहः-दुन्दुभिः ।

—का बहना, सं॰ पुं॰, कर्णस्रावः ।

—का मैल, सं॰ पुं॰, कर्ण,-मलं-गूथं, पिंजूषः ।

—की शांय-शांय, सं॰ स्त्री॰, कर्णप्रणादः ।

—उमेठना, मु॰, दंडरूपेण कर्णौ मुट् (चु॰) ।

—का कच्चा, मु॰, विश्वासिन् ।

—काटना, मु॰, अतिशी (अ॰ आ॰ से॰), अतिरिच् (कर्म॰) ।

—खड़े होना, मु॰, विस्मि (भ्वा॰ आ॰ अ॰) ।

—खा जाना, मु॰, कोलाहलं कृ ।

—पकड़ना, मु॰, पश्चात्तापेन कर्णौ स्पृश् (तु॰ प॰ अ॰) ।

—पर जूँ न रेंगना, मु॰, नितान्तं अनवहित (वि॰) स्था (भ्वा॰ प॰ अ॰) ।

—फूकना, मु॰, कलहं उद्दीप् (प्रे॰) ।

—भरना, मु॰, पृष्ठतो द्वेषं जन् (प्रे॰) ।

—में उँगली दिये रहना, मु॰, दे॰ 'कान पर जूँ न रेंगना' ।

कानन, सं॰ पुं॰ (सं॰ न॰) वनम् २. गृहम् ।

कानफरेंस, सं. स्त्री. (अं.) सम्मेलनम् ।
कानस्टेबिल, सं. पुं. (अं.) रक्षिन्, शान्तिरक्षकः, रक्षापुरुषः ।
काना, वि. पुं. (सं. काणः) एकाक्षः, चन्द्रचक्षुः ।
कानाकानी, सं. स्त्री., (सं. कर्णः >) कर्णेजपनं, उपांशुवादः २. वार्ता, जनप्रवादः ।
कानाफूसी, सं. स्त्री., (सं.+अनु.) दे. 'कानाकानी' ।
कानि, सं. स्त्री. (देश.) लोकलज्जा, मर्यादा ।
कानी, वि. स्त्री. (सं.) काणा, एकाक्षा, एकनेत्रा, काणेयी, काणेरी ।
—उँगली, सं. स्त्री. कनिष्ठा, कनिष्ठिका, कनीनिका, दुर्बलाङ्गुली-लिः (स्त्री.) ।
—कौड़ी, मु., दे. 'कौड़ी' के नीचे ।
कानी हाउस, दे. 'काँजी हौद' ।
कानीन, सं. पुं. (सं.) कन्यापुत्रः, कुमारीतनयः ।
क़ानून, सं. पुं. (अ.) अधिनियमः २. राज-, नियमः, विधिः ३. आचारः, व्यवहारः ।
—गो, सं. पुं. ग्रामगणकाध्यक्षः ।
—दाँ, सं. पुं., व्यवहारनिपुणः, विधिज्ञः ।
क़ानूनी, वि. (अ. क़ानून >) वैध, राजनियमविषयक २. विधिज्ञ ३. धर्म्य, शास्त्रविहित ४. कुतर्किन् ।
कान्ह, सं. पुं. (सं. कृष्णः) श्रीकृष्णचन्द्रः २. पतिः ।
कापालिक, सं. पुं. (सं.) शैवतांत्रिकसाधुः २. वर्णसंकरजातिभेदः ।
कापुरुष, सं. पुं. (सं.) कु-निंद्य-कातर,-जनः ।
काफ़िया, सं. पुं. (अ.) अन्त्यानुप्रासः ।
—तंग करना, मु., अतीव संतप्-उद्विज्-अर्द् (प्रे.) ।
काफ़िर, सं. पुं. (अ.) अयवनः (इस्लाम.) २. नास्तिकः, अनीश्वरवादिन् ३. क्रूर ४. दुष्ट ।
काफ़िला, सं. पुं. (अ.-लः) सार्थः, यात्रिकसमूहः ।
काफ़ी, वि. (अ.) पर्याप्त, अन्यूनाधिक, समर्थ, उचित, अलम् (अव्य. चतुर्थी के साथ) ।
काफ़ी, सं. स्त्री. (अं.) दे. 'कहवा' ।
काफूर, सं. पुं. (फ़ा.) कर्पूरः-रं, घनसारः ।
—होना, मु., तिरो भू ।
काबिज़, वि. (अ.) अधिकारिन्, प्रभु २. मलावरोधक, गरिष्ठ ।
काबिल, वि. (अ.) योग्य, समर्थ ।
क़ाबू, सं. पुं. (तु.) अधिकारः, प्रभुत्वं, वशः ।
—करना, क्रि. स., वशं नी (भ्वा. उ. अ.) ।
काम[1], सं. पुं. (सं.) इच्छा, अभिलाषः, मनोरथः, आकांक्षा २. शिवः ३. मदनः, कामदेवः ४. मैथुनेच्छा ५. इन्द्रियाणां विषयप्रवृत्तिः (स्त्री.) ६. चतुर्वर्गेऽन्यतमः ।
—आतुर, वि. (सं.) कामार्त्त, अनंगतप्त, विधुर ।
—केलि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) कामक्रीडा, विहारः, विलासः ।
—तरु, सं. पुं. (सं.) कल्पवृक्षः ।
—देव, सं. पुं. (सं.) कामः, मदनः, स्मरः, कंदर्पः, अनंगः, मन्मथः, मनसिजः, मनोजः, कुसुमवाणः, पंचशरः, मारः, मीनकेतनः, मकरध्वजः, पुष्पधन्वन्, आत्मभूः ।
—धेनु, सं. स्त्री. (सं.) कामदुघा, कामदा ।
—रिपु, सं. पुं. (सं.) कामारिः, शिवः ।
—रूप, सं. पुं. (सं.) प्रान्तविशेषः, असमप्रान्तः । वि., स्वेच्छारूप २. सुरूप ।
—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) वात्स्यायनप्रणीतो ग्रंथविशेषः २. कामविज्ञानम् ।
काम[2], सं. पुं. (सं. कर्म्मन् न.) कार्यं, कृत्यं, क्रिया २. व्यापारः, व्यवसायः ३. उद्यमः, उद्योगः ४. प्रयोजनम्, उद्देश्यम् ५. उपयोगः, व्यवहारः ।
—आना, क्रि. अ., प्र-उप,-युज् (कर्म.), व्यवहृ-व्यापृ (कर्म.) । मु., वीरगतिं प्राप् (स्वा. उ. अ.) ।
—काज, सं. पुं., कार्यं, अर्थः, व्यवसायः ।
—काजी, वि., उद्यमिन्, उद्योगिन् ।
—चलाऊ, वि., उपयुक्त, उपयोगिन् ।
—चोर, वि., अलस, कर्तव्यविमुख ।
—तमाम करना, मु., मृ-निषूद्-नश्-व्यापद् (प्रे.), हन् (अ. प. अ.) ।
कामना, सं. स्त्री. (सं.) इच्छा, आकांक्षा ।
कामयाब, वि. (फ़ा.) सफल, कृतकार्य ।
कामयाबी, सं. स्त्री. (फ़ा.) सफलता, कृतकार्यता ।
कामरी, सं. स्त्री., दे. 'कबंल' ।

कामला, सं. पुं. (सं. कामलः) पाण्डुः, पाण्डुरोगः ।

कामिनी, सं. स्त्री. (सं.) सुन्दरी, नारी २. सुरा ३. कामबहुला नारी ।

कामिल, वि. (फ़ा.) सं.-पूर्ण २. दक्ष, योग्य ।

कामी, वि (सं. कामिन्) लंपट, कामासक्त, कामांध, कामन, अभीक, कामातुर, कामुक २. अनुरक्त, आसक्त, सस्नेह,-सेविन् (समासान्त में) ४. इच्छुक, ईप्सु, सस्पृह ।
सं. पुं., अभि (मी) कः, क (का) मनः, कम्रः, कामुकः २. चन्द्रः ३. कपोतः ४. चक्रवाकः ५. चटकः ।

कामुक, वि. (सं.) दे. 'कामी' वि., 'कामी' सं. पुं. (१) ।

कामेडियन, सं. पुं. (अं.) हास्यरसाभिनेतृ (पुं.), वैहासिकः ।

कामेडी, सं. स्त्री. (अं.) सुखान्त-संयोगान्त,-रूपकं-नाटकम्, प्रहसनम्, भाणिका, दुर्मल्लिका ।

कामोद, सं. पुं. (सं.) रागभेदः ।

कामोद्दीपक, वि. (सं.) वाजीकर, कामाग्निदीपन ।

काम्य, वि. (सं.) स्पृहणीय, वांछनीय २. सुन्दर, मनोज्ञ ।

काम्या, सं. स्त्री. (सं.) इच्छा, कामना, वाञ्छा ।

काय, सं. स्त्री. (सं. पुं.) शरीरं, देहः २. समुदायः ।

क़ायदा, सं. पुं. (अ.) नियमः, व्यवस्था, रीतिः (स्त्री.), शिष्टाचारः ।

कायम, वि. (अ.) निश्चल, स्थिर, नैश्चेष्ट २. स्थापित ३. निर्धारित ।

—मुक़ाम, सं. पुं. (अ.) प्रतिनिधिः, प्रतिपुरुषः २. उत्तराधिकारिन् । वि., स्थानापन्न ।

कायर, वि., दे. 'कातर' ।

कायल, वि. (अ.) छिन्नसंशय, जातप्रत्यय ।

कायस्थ, सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः २. जीवः ३. जातिभेदः । वि., शरीरस्थ ।

काया, सं. स्त्री. (सं. कायः पुं.) शरीरं, देहः, विग्रहः, कलेवरम् ।

—कल्प, सं. पुं. (सं.) पुनर्यौवनोत्पादनम् २. पुनर्यौवनोत्पादनचिकित्सा ।

—पलट, सं. पुं., बृहत्परिवर्तनं, महापरिवर्तः २. शरीररूपरेखापरिवर्तनम् ।

कायिक, वि. (सं.) शारीर (-री स्त्री.), शारीरिक-दैहिक (-की स्त्री.) ।

कार[1], सं. पुं. (सं.) कार्यं, क्रिया २. कर्तृ, अनुष्ठातृ ३. अक्षरवाचकप्रत्ययः (उ. च=चकारः) ४. ध्वनिवाचकप्रत्ययः (उ. फूत्कारः) ।

कार[2], सं. पुं. (फ़ा.) कार्यं, व्यवसायः ।

—करना, क्रि. स., नियोगं अनुस्था (भ्वा. प. अ.) ।

—खाना, सं. पुं., शिल्प,-शाला-गृहम्, पण्यनिर्माणस्थानम् ।

—बार, सं. पुं., व्यवसायः, व्यापारः ।

—रवाई, सं. स्त्री., क्रिया, कार्यम् २. गुप्तचेष्टा-क्रिया ।

—साज़, वि., कुशल, दक्ष ।

कारक, वि. (सं.) कर्तृ, अनुष्ठातृ, विधातृ २. क्रियया संबंधसूचकः शब्दरूपभेदः (उ. कर्तृकारक इ. व्या.) ।

कारचोब, सं. पुं. (फ़ा.) सूचीकर्मोपजीविन् २. सूचीकर्माधारः ।

कारचोबी, वि. (फ़ा.) सूचीकर्म युक्त । (सं. पुं.) सूचीकर्मन् (न.), शिल्पम् ।

कारटून, सं. पुं. (अं) हासकरमालेख्यम्, हास्यजनकं चित्रं, उपहासचित्रम् ।

कारण, सं. पुं. (सं. न.) हेतुः, निमित्तं, मूलं, बीजं, योनिः (स्त्री.), निदानम् २. साधनम् ३. कर्मन् (न.) ४. प्रमाणम् ५. विष्णुः ६. शिवः ७. पूजान्ते मद्यपानम् (तांत्रिक) ।

कारतूस, सं. पुं. (पुर्त. कारटूस) गुलिः (स्त्री.), गुलिका, आग्नेयचूर्णनाडी-डिः (स्त्री.) ।

कारनिस, सं. स्त्री. (अं.) भित्तिदन्तकः, कुड्यशृंगम् ।

कारा, सं. स्त्री. (सं.) निरोधः, निरोधनम्, बन्धनं, आसेधः, प्रग्रहः २. क्लेशः, पीडा ।

कारागार, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कारा, बंधनालयः, बंदि,-शाला-गृहम्, कारागृहं, चारः, चारकः, गुप्तिस्थानम् ।

कारावास, सं. पुं. (सं.) दे. 'कारागार' ।

कारिंदा, सं. पुं. (फ़ा.) कारकरः, परकार्यसाधकः, प्रति,-हस्तः-निधिः २. कर्मचारिन्, राजपुरुषः, अधिकारिन् ।

कारी[1], सं. पुं. (सं-रिन्) कारकः, कर्तृ ।

कारी[2], वि. (फ़ा.) घातक, प्राणहर ।

कारीगर, सं. पुं. (फ़ा.) शिल्पिन् , कारुः, शिल्पकारः । वि., शिल्पकुशल ।

कारीगरी, सं. स्त्री. (फ़ा) कारुता, शिल्पकौशलं, दक्षता २. मनोहररचना ।

कारुणिक, वि. (सं.) दे. 'करुणामय' ।

कारूँ, सं. पुं. (अ.) मूसानामकस्य सिद्धस्य धनाढ्यकृपणः पितृव्यपुत्रः । वि., कृपणः, कदर्यः ।

—का ख़ज़ाना, सं. पुं., असीमधनं, अमितसंपद् (स्त्री.) ।

कारूरा, सं. पुं. (अ.) मूत्रम् २. मूत्रपात्रम् ।

कारोबार, सं. पुं., दे. 'कारबार' ।

कार्क, सं. पुं. (अं.) कूपी–, पिधानम् ।

कार्कस्य, सं. पुं. (सं. न.) कर्कशता, कठोरता २. दृढता, दृढत्वम् ३. निर्दयता, क्रूरता ।

कार्ड, सं. पुं. (अं.) पत्रम् २. स्थूलकर्गलम् ।

कार्तवीर्य, सं. पुं. (सं.) कृतवीर्यपुत्रः सहस्रबाहुः, अर्जुनः ।

कार्तस्वर, सं. पुं. (सं. न.) कनक, सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्यम् ।

कार्तिक, सं. पुं. (सं.) बाहुलः, ऊर्जः, कौमुदः ।

कार्तिकेय, सं. पुं. (सं.) स्कन्दः, कुमारः, शिखिवाहनः, द्वादशलोचनः ।

—प्रसू, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, गिरिजा ।

कार्बन, सं. पुं. (अं.) प्रांगारः, कार्बनम् ।

कार्बोनिक, वि. (अं.) प्रांगारिक, कार्बनिक ।

—एसिड गैस, सं. स्त्री., कार्बनिकाम्लवातिः (स्त्री.) ।

कार्मुक, सं. पुं. (सं. न.) चापः, दे. 'धनुष' ।

कार्य, सं. पुं. (सं. न.) कर्मन् (न.) कृत्यं, क्रिया २. व्यवसायः ३. परिणामः ४. प्रयोजनम् ।

—अध्यक्ष, सं. पुं. (सं.) अधिकारिन् २. कर्मविक्षकः ।

—कर्ता, सं. पुं. (सं.—र्तृ) कर्मकारिन् २. राजभृत्यः ।

कार्रवाई, सं. स्त्री., दे. 'काररवाई' ।

काल, सं. पुं. (सं.) समयः, वेला, दिष्टः, अनेहस् (पुं.) २. मृत्युः ३. यमः, यमदूतः ४. अवसरः, प्रसंगः ५. दुर्भिक्षं, दुष्कालः ६. कृष्णसर्पः ७. शनैश्चरः ८. शिवः ९. लोहः १०. ऋतुः ।

—कूट, सं. पुं. (सं. पुं. न.) घोरविषं, प्राणहहरगरलम् ।

—कोठरी, सं. स्त्री., कालकोष्ठः ।

—क्षेप, सं. पुं. (सं.) समयातिपातः, व्याक्षेपः २. निर्वाहः ।

—चक्र, सं. पुं. (सं. न.) समयपरिवर्तः २. भाग्यचक्रम् ३. अस्त्रभेदः ।

—ज्ञ, सं. पुं., (सं.) कालविद्, २. दैवज्ञः ३. कुक्कटः ।

—यापन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'कालक्षेप' ।

—रात्रि, सं. स्त्री. (सं.) भीमा कृष्णा च निशा २. प्रलयरात्रिः ३. मृत्युनिशा ४. दीपावलीनिशा ५. मनुष्यजीवने सप्तसप्ततिवर्षसप्तमाससप्तदिनानन्तरभवा रात्रिः ।

—सर्प, सं. पुं. (सं.) महाविषः, अलगर्दः, कृष्णसर्पविशेषः ।

काला, वि. (सं. काल) कृष्ण, श्याम, असित, नील २. अन्धकारमय, तिमिरावृत, ३. दूषित ४. घोर ५. भयंकर ।

—आजार, सं. पुं., कालज्वरः ।

—कलूटा, वि. अतिकृष्ण ।

—चोर, सं. पुं., सतततस्करः २. अतिदुष्टपुरुषः ।

—जीरा, सं. पुं., कृष्णजीरकः, काला, कृष्णा ।

—नमक, सं. पुं., कृष्णलवणम्, सौवर्चलम् ।

—नाग, सं. पुं., कृष्ण-नागः-सर्पः २. प्राणहरः शत्रुः ।

—पानी, सं. पुं., द्वीपान्तरे निर्वासनम् २. अंडमानादयो द्वीपविशेषाः ।

कालेकोसों, क्रि. वि., अतिदूरं-रे ।

—मुँह होना, मु., निंद्-अधिक्षिप् (कर्म०) ।

कालातीत, वि. (सं.) अनवसर, असमयोचित ।

कालापन, सं. पुं. (हिं. काला) कृष्णता, श्यामता, मेचकता ।

कालिंदी, सं. स्त्री. (सं.) यमुना, कलिन्दतनया ।

कालिक, वि. (सं.) सामयिक, कालविषयक २. समयोचित, प्राप्तकाल ३. अनुकाल, नियतकाल ।

कालिका, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा, चण्डी २. मसी–षी ३. कनीनिका ४. श्यामघनघटा ।

कालिख, सं. स्त्री. (सं. कालिका) कज्जलं,

मषिः-सिः (स्त्री.) २. कलंकः, लांछनं, दोषः ।

कालिदास, सं. पुं. (सं.) संस्कृतकविशिरोमणिः, रघुकारः, विक्रमसभायाः सप्तमरत्नम् ।

कालिमा, सं. स्त्री. (सं. कालिमन् पुं.) कृष्णिमन् (पुं.), कालता, श्यामता २. मसी ३. लांछनं, दोषः ४. अंधकारः ।

कालिय, सं. पुं. (सं.) यमुनावर्तिकृष्णसर्पविशेषः ।

—मर्दन, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः ।

काली, सं. स्त्री. (सं.) चण्डी, दुर्गा २. पार्वती, गिरिजा ३. मसी । सं. पुं. दे. 'कालिय' । वि. स्त्री., कृष्णा, श्यामा ।

—खाँसी, सं. स्त्री., कालकासः ।

—घटा, सं. स्त्री., (सं.) कादंविनी, श्यामघनश्रेणिः (स्त्री.) ।

—दह, सं. पुं. (सं.+हिं.) यमुनायां जलावर्तविशेषः ।

—मिर्च, सं. स्त्री. (सं. कालमरि (री) चम्) कृष्णं, ऊषणं, कालकं, वेल्लजम् ।

—कालीन, वि. (सं.) समय-वेला-काल,-संबंधिन् २. सामयिक, प्रास्ताविक । (टि. यह शब्द समासान्त में ही प्रयुक्त होता है) ।

कालौंछ, सं. स्त्री. (हिं. काला) कृष्णता, श्यामता २. मसी ३. कज्जलम् ।

काल्पनिक, वि. (सं.) संकल्पज, मनःकल्पित, उद्भावित, कृत्रिम, कृतक ।

काल्य, वि. (सं.) काल-समय-अवसर,-उचित-योग्य-अनुकूल, सामयिक । सं. पुं., प्रभातं, विभाजं, प्रत्यूषः ।

काल्या, सं. स्त्री. (सं.) १-२ गर्भाधानार्हा नारी-धेनुः (स्त्री.) ।

कावा, सं. पुं. (फ़ा.) वृत्ते अश्वभ्रामणम् २. मण्डलं, वृत्तम् ।

कावेरी, सं. स्त्री. (सं.) दक्षिणभारतस्य प्रसिद्धनदी २. वेश्या ३. हरिद्रा, पीतिका ।

काव्य, सं. पुं. (सं. न.) कविता, कविकृतिः (स्त्री.), सरसप्रबन्धः २. रसात्मकं वाक्यम् ३. कविताग्रन्थः ।

काश[1], अव्य. (अ.) अपि नाम, प्रार्थये, कामये ।

काश[2], सं. पुं. (सं. पुं. न.) काशः, अमरपुष्पकः, वनहासकः २. कासः, क्षवथुः ।

—श्वास, सं. पुं., दे. 'दमा' ।

काशिका, वि. (सं.) प्रकाशिका । सं. स्त्री. (सं.) काशी २. अष्टाध्यायीवृत्तिः (स्त्री.) ।

काशी, सं. स्त्री. (सं.) शिवपुरी, वाराणसी, तपःस्थली ।

—फल, सं. पुं. (सं. न.) कूष्मांडः-डकः, पीत, पुष्पा-फला ।

काश्त, सं. स्त्री. (फ़ा.) कृषिः (स्त्री.), कर्षणं, कृषिकर्मन् (न.) ।

—कार, सं. पुं. (फ़ा.) कर्षकः, कृषाणः ।

काषाय, वि. (सं.) गैरिक-रक्तधातु,-वर्ण । सं. पुं., गैरिकरंजितवस्त्रम् ।

काष्ठ, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'काठ' ।

—कीट, सं. पुं. (सं.) घुणः ।

काष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) दिशा, दिश् (स्त्री.) २. सीमा ३. शिखरः-रं ४. चन्द्रकला ५. अष्टादशनिमेषात्मकः कालः ।

कास, सं. पुं. (सं.) क्षवथुः २. काशः, वनहासकः ।

कासनी, सं. स्त्री. (फ़ा.) गुल्मभेदः २. तस्य बीजम् ३. नील-श्याम,-वर्णः ।

कासार, सं. पुं. (सं.) सरोवरः, महाजलाशयः ।

कासीस, सं. पुं. (सं. न.) धातुशेखरं, शोधनम् ।

कास्टिक, वि. (अं.) दाहक ।

—सोडा, सं. पुं. (अं.) दाहकविक्षारः ।

कास्मिक रे, सं. स्त्री. (अं) सृष्टिरश्मिः ।

काहिल, वि. (अ.) अलस, मंद ।

किंकर, सं. पुं. (सं.) भृत्यः, सेवकः, प्रेष्यः, चेटः २. क्रीतदासः ।

किंकर्तव्यविमूढ, वि. (सं.) संभ्रान्तमनस्, व्याकुलचित्त ।

किंकिणी, सं. स्त्री. (सं.) क्षुद्र,-घंटी-घंटिका २. कांची-चिः (स्त्री.), रशना ।

किंचित, वि. (सं.) स्तोक, अल्प ।

किंजल्क, सं. पुं. (सं.) पद्म-कमल,-केसरः २. पद्मपरागः, जलजरजस् (न.) ३. नागकेसरः ।

किंतु, अव्य. (सं.) परन्तु, तु, पुनः २. अपि तु, प्रत्युत, पुनः, परन्तु ।

किंनर, सं. पुं. (सं.) किंपुरुषः, तुरंगवदनः, अश्वमुखः ।

किंपुरुष, सं. पुं. (सं.) किन्नरः २. दुष्कुलीनः ३. वर्णसंकरः ।

किंवदंती, सं. स्त्री. (सं.) जन,-प्रवादः-श्रुतिः (स्त्री.), कर्णोपकर्णिका।
किंवा, अव्य. (सं.) वा, अथवा, यद्वा, किमुत।
किंशुक, सं. पुं. (सं.) पलाशः, दे. 'ढाक'।
किं, कि, वि. (सं. किम्) कथं, केन प्रकारेण।
कि, अव्य, (फ़ा.) यत्, यथा, इति।
किचकिच, सं. स्त्री. (अनु.) प्रलापः, प्रजल्पनम् २. कलहः।
किचकिचाना, क्रि. अ. (अनु.) दंतैर्दंतान् निष्पीड् (चु.)-घृष् (भ्वा. प. से.)।
किट्ट, सं. पुं. (सं. न.) धातुमलम् २. तैलादीनां मलम् ३. कल्कं, मलं, शेषम्।
कितना, वि. (सं. कियत्) किंपरिमाण, किंमात्र २. अधिक, बहु।
कितने, वि. पुं. (सं. कति) किंसंख्याकाः।
कितव, सं. पुं. (सं.) द्यूतकारः, अक्षदेविन् २. वंचकः ३. दुष्टः।
किताब, सं. स्त्री. (अ.) पुस्तकं. ग्रन्थः २. पत्रिका, पंजिका।
—का (किताबी) कीड़ा, सं. पुं., ग्रंथ-पुस्तक,-कीटः। २. सदापाठिन्।
किताबत, सं. स्त्री. (अ.) लेखः, लेखनम्।
ख़त व—, सं. स्त्री., पत्रव्यवहारः।
किधर, क्रि. वि, (सं. कुत्र) क्व, कस्मिन् स्थाने २. कां दिशां प्रति, कस्यां दिशि।
किन, सर्व. ('किस' का बहु.) के (पुं.), काः (स्त्री.), कानि (न.)।
किनका, सं. पुं. (सं. कणिका) कणी, कणा, क्षत,-तंडुलः-धान्यम्।
किनारा, सं. पुं. (फ़ा.) तीरं, तटम् २. उपांतः, प्रांतः ३. वस्त्रप्रान्तः, अंचलः ४. पार्श्वः, पक्षः ५. सीमा ६. अन्तः।
—करना, मु. दूरे स्था (भ्वा. प. अ.), परित्यज् (भ्वा. प. अ.)।
किनारी, सं. स्त्री. (फ़ा. किनारा >) स्वर्ण-रजत-, जालाभरणम्।
किनारे, क्रि. वि. (फ़ा. किनारा) तीरे, तटे २. सीमायाम् ३. पृथक्, दूरे।
—किनारे, अनु,-कूलं-तटं-तीरम् २. सीमाम् अनु।
—लगाना, मु., समाप्-संपद् (प्रे.)।
किन्नर, सं. पुं. (सं.) किंपुरुषः, देवयोनिभेदः।
किन्नरी, सं. स्त्री. (सं.) किन्नरजातेर्नारी।
किफ़ायत, सं. स्त्री. (अ.) मितव्ययः, अमुक्तहस्तत्वम्।
किबला, सं. पुं. (अ.) प्रतीची २. मक्कानगरी ३. पूज्यजनः ४. पितृ।
—नुमा, सं. पुं. (अ+फ़ा.) दिग्दर्शकयंत्रम्, दिग्घटी, दिग्घटिका।
किरकिरा, वि. (सं. कर्करम् >) शार्करिल, सिकतिल।
किरकिरी, सं. स्त्री. (सं. कर्करम् >) नेत्रपतितो धूल्यादिकणः २. त्रसरेणुः, अणुरेणुः।
किरच, सं. स्त्री. (सं. कृतिः >) अजिह्मखड्गः, अग्न्यस्त्रसंसक्ता छुरिका २. काष्ठकाचादीनां तीक्ष्णाग्रं शकलम्।
किरण, सं. स्त्री. (सं. पुं.) रश्मिः, मरीचिः, दीधितिः, मयूखः, करः, अंशुः, अभीशुः।
—माली, सं. पुं. (सं.-लिन्) सूर्यः।
किरमिच, सं. पुं. (अं. कैन्वस) शाणं, शणपटः, स्थूलवस्त्रभेदः।
किरांची, सं. स्त्री. (अं. कैरेज >) वहनं, शकटः-टम्।
किरात, सं. पुं. (सं.) अशिष्ट-असभ्य,-जनः २. वन्यजातिभेदः।
—पति, सं. पुं. (सं.) शिवः।
किरातार्जुनीय, सं. पुं. (सं. न.) भारविप्रणीतं महाकाव्यम्।
किराना, सं. पुं. (सं. क्रयणम् अथवा कीर्ण >) वाणिज्यं, वणिक्कर्मन् (न.) २. गंधद्रव्याणि।
किराया, सं. पुं. (अ.) वहनमूल्यं, तार्यं, आत- (ता) रः २. भाटं, भाटकम् ३. भृतिः (स्त्री.), भृत्या।
—नामा, सं. पुं., भाटकपत्रम्।
किराये का टट्टू, सं. पुं., वैतनिकः, सवेतनो दासेरः।
किरायेदार, सं. पुं. (फ़ा.-यादार) भाटकवासिन्।
किरीट, सं. पुं. (सं.) दे. 'मुकुट'।
किलक, सं. स्त्री. (हिं. किलकना) हर्ष,-ध्वनिः-नादः-स्वनः, किलकिला २. कलम,-नडः-नलः।
किलकना, क्रि. अ. (सं. किलकिला >) किलकिला-रावं कृ, हर्षध्वनिं कृ।

किलकारना, क्रि. अ., दे. 'किलकना'।
किलकिलाना, क्रि. अ. (सं. किलकिला >) १. दे. 'किलकना' २. कोलाहलं कृ ३. वाक्-कलहं कृ।
किलनी, सं. स्त्री. (हिं. कीड़ा)। कुक्कुर,-यूकः यूका।
किला, सं. पुं. (अ.) दुर्गं, कोटः।
—दार, सं. पुं. दुर्गाध्यक्षः, कोटपालः।
—बंदी, सं. स्त्री., दुर्गनिर्माणम् २. व्यूहरचना।
किलकारी, सं. स्त्री. (हिं. किलकना) किल-किला, हर्षनादः २. कलकलः ३. चीत्कारः।
किल्लत, सं. स्त्री. (अ.) न्यूनता।
किल्ला, सं. पुं. (सं. कीलः >) बृहत्-स्थूल,-कीलः-शंकुः २. बृहत् , शूलः-स्थूणा-शलाका।
किल्ली, सं. स्त्री. (हिं. किल्ला) अर्गलं,अर्गलाबंधः २. कीलः, कीलम् ३. शूलः, स्थूणा।
किल्विष, सं. पुं. (सं. न.) पापम् २. अपराधः ३. रोगः।
किवाड़, सं. पुं. (सं. कपाटः) कपाटं-टी, अर-रम् २. द्वारं, द्वार् (स्त्री.)।
—खटखटाना, क्रि. स., कपाटम् अभिहन् (अ. प. अ.)।
किशमिश, सं. स्त्री. (फ़ा) शुष्क,-द्राक्षा-गोस्तनी।
किशलय, सं. पुं. (सं. पुं. न.) किसलयः-यं, पल्लवः-वं, अंकुरः, प्ररोहः २. मंजरी।
किशोर, सं. पुं. (सं.) एकादशावधिपंचदशवर्ष-पर्यन्तवयस्को बालः २. बालकः ३. पुत्रः।
किशोरी, सं. स्त्री. (सं.) तरुणी, बाला, बालिका, कन्या, युवती-तिः (स्त्री.)।
किश्ती, सं. स्त्री. (फ़ा.) नौका २. दीर्घचतुर-स्रपात्रम् ३. मञ्जा, क्षुद्रकोषः।
किस, सर्व. (सं. कस्य >) 'किम्' के रूपों से।
—तरह, क्रि. वि., कथं, केन प्रकारेण, कया रीत्या।
किसलय, सं. पुं., दे. 'किशलय'।
किसान, सं. पुं. (सं. कृपाणः) कर्षकः, कृषिकः, कृषीवलः, क्षेत्रिकः, क्षेत्राजीवः, क्षेत्रिन्।
किसानी, सं. स्त्री. (हिं. किसान) कृषिः (स्त्री.), कृषिकर्मन् (न.)।
किसी, सर्व (हिं. किस) 'किम्' के रूपों के साथ चित् , चन वा अपि लगाकर। [उ० किसी ने = कश्चित् , कोऽपि, कश्चन (पुं.); काचित् (स्त्री.); किंचित् (न.) इ.।]
—तरह, क्रि. वि. येन केन प्रकारेण, कथंचित्।
किसे, सर्व. (हिं. किस) कं, कां, किम् (द्वितीया); कस्मै, कस्यै, कस्मै (चतुर्थी)।
किस्त, सं. स्त्री. (अ.) देयभागः, ऋणांशः, खण्डिका।
—करना, क्रि. स., अंशांशतः ऋणं परिशुध् (प्रे.)।
—वार, क्रि. वि., अंशशः, अंशांशतः।
क़िस्म, सं. स्त्री. (अ.) प्रकारः, भेदः, जातिः (स्त्री.) २. प्रकृतिः (स्त्री.), स्वभावः।
क़िस्मत, सं. स्त्री. (अ.) भाग्यं, भागधेयं, दिष्टं, दैवम् २. प्रान्त,-भागः-खण्डः।
खुश—, वि., धन्य, पुण्यवत्।
बद—, वि., अधन्य, दैवहतक।
—आज़माना, मु., भाग्यं परीक्ष् (भ्वा. आ. से.)।
क़िस्सा, सं. पुं. (अ.) कथा २. वृत्तान्तः ३. कलहः।
की, प्रत्य. ('का' का स्त्री.) दे. 'का'।
कीक, सं. स्त्री. (अनु.) चीत्कारः, उत्क्रोशः।
कीकट, सं. पुं. (सं. कीकटाः) मगधप्रदेशः २. तत्रत्यानार्यजातिः (स्त्री.) वि०, निर्धन २. कृपण।
कीकर, सं. पुं. (सं. किंकिरातः) दीर्घकण्टकः।
कीकस, सं. पुं. (सं. न.) अस्थि (न.), हड्डुम् २. कीटभेदः। वि., दृढ, कठिन।
—मुख, सं. पुं. (सं.) खगः, पक्षिन्।
कीचक, सं. पुं. (सं.) सरंध्रो वंशः, सच्छिद्रो वेणुः। २. विराटराजस्य श्यालः।
कीचड़, सं. पुं. (सं. चिकिलः) पंकः-कं, जंबालः-लं, अवकीलः, कर्दमः, शादः, निषद्वरः।
कीट[१], सं. पुं. (सं.) कीटकः, कृमिः, क्रिमिः, नीलंगुः।
कीट[२], सं. स्त्री. (सं. किट्टम्) घृततैलादीनां मलम्।
कीड़ा, सं. पुं. (सं. कीटः) दे. 'कीट'[१]। २. सर्पणशीलः, सरीसृपः ३. सर्पः, अहिः (पुं.) ४. रक्तपा, जलौका।
—लगना, क्रि. अ., कीटैः भक्ष् (कर्म.)।

कीड़ी, सं. स्त्री. (हिं. कीड़ा) क्षुद्रकीटः २. पिपीलिका ३. जलूका ।

कीना, सं. पुं. (फ़ा.) द्वेषः वैरं, द्रोहः ।

कीप, सं. स्त्री. (अ. कीफ़) निवापः ।

क़ीमत, सं. स्त्री. (अ.) मूल्यं, अर्घः ।

कीमती, वि. (अ.) महार्घ, बहुमूल्य ।

क़ीमा, सं. पुं. (अ.) कृत्तमांसम् ।

कीमिया, सं. स्त्री. (फ़ा.) रसायनम् , रस,-विद्या शास्त्रं-तंत्रम् ।

कोर, सं. पुं. (सं.) शुकः, दे. 'तोता' ।

कीर्तन, सं. पुं. (सं. न.) गुणकथनम् २. ईश-गुणगानम् ।

कीर्ति, सं. स्त्री. (सं.) यशस् (न.), विख्यातिः-विश्रुतिः (स्त्री.), अभिख्या, समाख्या ।

—मान् , वि. (सं.-मत्) यशस्विन् , विश्रुत, विख्यात ।

कील, सं. स्त्री. (सं. पुं.) कीलकः, शंकुः, लोह,-कीलः-शंकुः २. लवंगनामकं नासिकाभूषणम् ३. मुखस्फोटकः.।

कीलक, सं. पुं. (सं.) कीलः, कीला २. नाग-दांतः, भारयष्टिः (स्त्री.) ३. महाकीलः, शूलः ४. स्थाणुः, स्थूणा ५. अन्यमंत्रप्रभावनाशको मंत्रः ।

कीलना, क्रि. स. (सं. कीलनम्) कील् (चु.) कीलैः बंध् (क्र्. प. अ.) २. अभिचारप्रभावं नाश् (प्रे.) ३. (सर्पादिकं) वशीकृ ।

कीला, सं. पुं. (सं.) दे. 'किल्ला' ।

कीलाल, सं. पुं. (सं. न.) अमृतम् २. जलम् ३. रक्तम् ४. मधु (न.) ।

कीलित, वि. (सं.) (कीलैः) बद्ध, दृढीकृत, पिनद्ध ।

किली, सं. स्त्री. (सं. कीलः >) कर्षणी, व्या-वर्तनकीलः, वलयकीलकः २. कुञ्चिका, उद्-घाटकम् ३. विवर्तनकीलः ४. कीलः ५. अक्ष-रेखा, अक्षः ।

कीश, सं. पुं. (सं.) कपिः २. खगः ३. सूर्यः ।

कुंअर, सं. पुं. (सं. कुमारः) पुत्रः, सूनुः (पुं.) २. बालकः ३. राजकुमारः ४. युवराजः ।

कुंआरा, वि. पुं. (सं. कुमार) अकृतविवाहः ।
[-री (स्त्री.) =अपरिणीता, अनूढा, कुमारी ।]

कुंइ, सं. स्त्री., दे. 'कुमुदिनी' ।

कुंकुम, सं. पुं. (सं. न.) काश्मीरजं, दे. 'केसर' २. दे. 'रोली' ।

कुंचन, सं. पुं. (सं. न.) संकोचः, संकोचनम् , संक्षेपणम् ।

कुंचिका, सं. स्त्री. (सं.) ताली, तालिका, साधारणी ।

कुंचित, वि. (सं.) दे. 'आकुंचित' ।

कुंज, सं. पुं. (सं. पुं. न.) निकुंजः-जं, लता,-गृहं-मंडपः ।

—कुटीर, सं. स्त्री. (सं. पुं.) लतागृहं, पर्ण-शाला, कुंजगृहम् ।

—विहारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) श्रीकृष्णः ।

कुंजड़ा, सं. पुं. (सं. कुंज >) हरितकविक्रेतृ-जातिविशेषः २. शाकविक्रयिन् ।

कुंजर, सं. पुं. (सं.) गजः, द्विपः २. केशः । (टि. समासान्त में 'कुंजर' श्रेष्ठतावाचक है— नरकुंजर = श्रेष्ठपुरुषः) ।

कुंजी, सं. स्त्री. (सं. कुंचिका) ताली, उद्घा-टकः-कं, अंकुटः, साधारणी । २. टीका, व्याख्या ।

कुंठ, वि. (सं.) कुंठित, धाराहीन, तीक्ष्णता-रहित २. मूर्ख ।

कुंठित, वि. (सं.) कुंठीकृत, हृततैक्ष्ण्य २. निष्प्र-भीकृत ३. अनुपयोगिन् ।

कुंड, सं. पुं. (सं. कुण्डः–डं–डी) पल्वलः–लं, अल्पसरस् (न.), वेशंतः, क्षुद्रजलाशयः २. अग्नि-यज्ञ-हवन,-कुण्डम् ३. स्थाली ४. विशा-लमुखमतिगंभीरपात्रम् (हिं. मटका) ५. सध-वाया जारजपुत्रः ६. लौहशिरस्त्रम् ७. मानभेदः ।

कुंडल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कर्ण-श्रवण,-वेष्टनं, कर्णभूषणभेदः २. वलयः ३. परिवेशः-षः, तेजोमंडलम् ४. आवेष्टनम् , व्यावर्तनम् ।

—करना वा मारना, क्रि. स., वर्तुली-पुटी,-कृ, व्यावृत्-परिवेष्ट् (प्रे.) ।

कुँडलिया, सं. स्त्री. (सं. कुण्डलिका) मात्रिक-छन्दोभेदः ।

कुंडली, सं. स्त्री. (सं.) मिष्टान्नभेदः (हिं. जलेबी) २. कुरलः, चूर्णकुन्तलः ३. जन्म-पत्रं,-पत्रिका ४. सर्पस्य वर्तुलाकारस्थितिः (स्त्री.) ।

कुंडा[1], सं. पुं. (सं. कुण्डः) जीवति भर्तरि जारजः ।

कुंडा[२], सं. पुं. (सं. कुण्डलम् >) लोह,-ग्रहणी-धरणी २. अर्गलः-लं-ला-ली ।

कुंडा[३], सं. पुं. (सं. कुण्डः-डम्) विशालमुख-मतिगम्भीरपात्रम् (हिं. मटका) ।

कुंडिन, सं. पुं. (सं. न.) विदर्भराजधानी ।

कुंडी[१], सं. स्त्री. (सं.) कुण्डी, खल्लः ।

—डंडा, सं. पुं., कुण्डीदण्डं-डौ ।

कुंडी[२], सं. स्त्री. (हिं. कुण्डा) द्वारशृंखला २. अर्गलः-लं-ला-ली ३, शृङ्खला,-संधिः-ग्रंथि ।

कुंत, सं. पुं. (सं.) प्रासः, तोमरः ।

कुंतल, सं. पुं. (सं.) केशः, शिरोरुहः ।

कुंतिभोज, सं. पुं. (सं.) भोजप्रदेशशासकः, कुन्त्याः पालकपितृ (पुं.) ।

कुंती, सं. स्त्री. (सं.) पृथा, पाण्डुपत्नी, युधिष्ठिर-जननी ।

कुंद[१], सं. पुं. (सं. पुं. न.) सदापुष्पः, वन-हासः २. कमलम् ।

कुंद[२], वि. (फ़ा.) कुण्ठ, तीक्ष्णतारहित २. मन्द, जड ।

—ज़हन, वि. (फ़ा.) मन्दमति, मूर्ख ।

कुंदन, सं. पुं. (सं. कुन्दः >) विशुद्धं सुवर्णम् वि. भास्वर २. पवित्र ३. नीरोग ।

कुंदा, सं. पुं. (फ़ा.) बृहत्-स्थूल,-काष्ठम् २. अग्न्यस्त्रस्य काष्ठमयोऽपरभागः ३. काष्ठनिगडः ४. मुष्टिः (स्त्री.), वारंगः ।

कुंदी, सं. स्त्री. (फ़ा. कुन्दा >) मुद्गरैर्वस्त्रता-डनम् २. ताडनम् ।

कुंभ, सं. पुं. (सं.) घटः, घटी, कलशः-शो-शम् २. गजकुम्भः, हस्तिशिरसः पिण्डद्वयम् ३. कुम्भकप्राणायामः ४. द्वादशवार्षिकः पर्व-विशेषः ५. राशिविशेषः (ज्यो.) ।

—कर्ण, सं. पुं. (सं.) रावणानुजः ।

—योनि, सं. पुं. (सं.) अगस्त्यो मुनिः ।

कुंभक, सं. पुं. (सं.) कुम्भः, प्राणायामे वायु-स्तम्भनम् ।

कुंभी, सं. स्त्री. (सं.) क्षुद्र-लघु,-कुम्भः-घटः ।

—पाक, सं. पुं. (सं.) नरकविशेषः ।

कुंभी, सं. पुं. (सं. कुम्भिन्) गजः २. नक्रः ३. विषकीटभेदः ।

कुंवर, सं. पुं., दे. 'कुँअर' ।

कु, अव्य. (सं.) पापकुत्साऽल्पत्वादिद्योतक-मव्ययम् (उ. कुकर्म = पापकर्म इ.) ।

कुआँ, सं. पुं. (सं. कूपः) अंधुः, प्रहिः, अवटः, खातः, अवतः, केवटः ।

—खोदना, मु., परान् पीड् (चु.) ।

कुआर, सं. पुं. (सं. कुमारः >) आश्विनः, इषः, आश्वयुजः ।

कुइयाँ, सं. स्त्री. (हिं. कुआँ) कूपी, कूपकः, खातकः, अन्धुकः ।

कुई, सं. स्त्री., दे. 'कुमुदिनी' ।

कुक, सं. पुं. (अं.) पाचकः, सूदः, बल्लवः, रन्धकः ।

कुकड़ी सं. स्त्री. (सं. कुक्कुटी) ताम्रचूडी २. शस्यम् ३. सूत्रपंजी, तंतुगुच्छः ।

कुकर, सं. पुं. (अं.) पचन-पाक,-यन्त्रभेदः, *कुकरम् ।

कुकर्म, सं. पुं. (सं. न.) कु,-कार्य-कृत्यं-कृतिः (स्त्री.), दुराचारः, पापं, दुष्टता ।

कुकर्मी, वि. (सं.–र्मिन्) दुर्वृत्त, पापिन् , पाप, दुरात्मन् ।

कुकुरमुत्ता, सं. पुं. (सं. कुकुरमूत्रम् >) कुछत्रकः ।

कुक्कुट, सं. पुं. (सं.) ताम्रचूडः, चरणायुधः, कालज्ञः, उषाकरः, शिखण्डिकः ।

कुक्कुर, सं. पुं. (सं.) श्वन् , दे. 'कुत्ता' ।

कुक्षि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) उदरं, जठरं, तुंदम् २. गर्भाशयः, गर्भस्थानम् ३. पदार्थान्तर्भागः ४. गुहा ।

कुगति, सं. स्त्री. (सं.) दुर्दशा, दुर्गतिः (स्त्री.) ।

कुच, सं. पुं. (सं.) स्तनः, उरोजः २. चूचुकः–कं, स्तनाग्रम् ।

कुचकुचाना, क्रि. स. (अनु. कुचकुच) व्यध् (दि. प. अ.), छिद्रं कृ ।

कुचक्र, सं. पुं. (सं. न.) कूट-कपट, उपायः, उपजापः, कपट,-संकल्पः-प्रयोगः ।

कुचक्री, वि. (सं.–क्रिन्) उपजापकः, कपट-प्रबन्धयोजकः ।

कुचलना, क्रि. स. (अनु.) क्षण् (त. प. से.) २. मृद् (क्र्. प. से.), पिष् (रु. प. अ.) ३. भूरि तड् (चु.) ४. पादतलेन आहन् (अ. प. अ.) ।

कुचला, सं. पुं. (सं. कचीरः) किंपाकः, विष-तिंदुः, रम्यफलः, कुपीलुः, कालकूटः ।

कुचाल, सं. पुं. (सं. कु + हिं. चाल) दुराचारः, कुचर्य्या, कदाचरणम् ।

कुचाली, वि (हिं. कुचाल) दुराचारिन्, दुर्वृत्त ।

कुचेष्टा, सं. स्त्री. (सं.) दुश्चेष्टा, हानिकरोयत्नः ।

कुचैला, वि. (सं. कुचेल) मलिनवेष, कुवसन ।

कुछ, वि. (सं. किंचित्) (मात्रा) अल्प, स्वल्प, स्तोक, ईषत्, २. (संख्या) कतिचित्, कतिपय, ३. किमपि, यत्किंचन, ४. 'किम्' के तीनों लिंगों के रूपों के साथ चित्, चन, अपि लगाते हैं, उ. केचित्, काश्चित्, कानिचित् इ. ।

—कर देना, मु., मंत्रैः वशीकृ ।

कुज, सं. पुं. (सं.) मंगलग्रहः २. वृक्षः ।

कुजाति, सं. स्त्री. (सं.) हीन-नीच-निकृष्ट,-जातिः-वर्णः । सं. पुं., दुष्कुलीनः, अन्त्यजः, नीचः ।

कुट[1], सं. पुं. (सं. कुष्ठम्) गदाह्वं, कौवेरम् ।

कुट[2], सं. पुं. (सं.) दुर्गं, कोटः २. गृहम् ३. पर्वतः ४. कलशः ।

कुटकी, सं. स्त्री. (सं. कटुकीटः) दंशः, मशकः, प्राचिका, वनमक्षिका ।

कुटनपन, सं. पुं. (सं. कुट्टनी >) दूतीवृत्तिः (स्त्री.) २. उपजापः, भेदवर्द्धनम् ।

कुटना, सं. पुं. (हिं. कुटनी) भगभक्षकः, संचारकः, कुंडाशिन् २. पिशुनः ।

कुटनी, सं. स्त्री. (सं. कुट्टनी) कुट्टिनी, दूती, दूतिका, संचारिका, शंभली, रतताली ।

कुटिया, सं. स्त्री. (सं. कुटी) उटजः-जं, पर्णशाला, पर्णकुटी-टिः (स्त्री.) कुटीरः ।

कुटिल, वि. (सं.) वक्र, जिह्म, अराल, भुग्न, न्युब्ज २. वञ्चक, प्रतारक, कपटिन्, छलिन् ।

कुटिलता, सं. स्त्री. (सं.) कौटिल्यं, वक्रता, जिह्मता २. छलं, कपटं, प्रतारणा ।

कुटी, सं. स्त्री. (सं.) } क्षुद्रगृहम्,
कुटीर, सं. पुं. (सं.) } दे. 'कुटिया' ।

कुटुम्ब, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गृहजनः, पुत्रकलत्रादयः, ज्ञातिः (स्त्री.), बान्धवाः, संततिः (स्त्री.) २. कुलं, वंशः, जातिः (स्त्री.) ।

कुटुंबी, सं. पुं. (सं.-बिन्) गृहस्थः, गृहपतिः, गेहिन् २. ज्ञातिः (स्त्री.), बन्धुः, बांधवः ।

कुटुम्बिनी, सं. स्त्री. (सं.) गृहिणी, गेहिनी, आर्या, सुतिनी, पुरन्ध्री ।

कुटेव, सं. स्त्री. (सं. कु + हिं. टेव) कुप्रवृत्तिः (स्त्री.), व्यसनं, दुर्गुणः ।

कुट्टनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कुटनी' ।

कुट्टी, सं. स्त्री. (हिं. काटना) यवसखण्डाः २. बालकेषु मैत्रीविच्छेदः ।

कुठला, सं. पुं. (सं. कोष्ठः >) क्षुद्रधान्यकोष्ठः, मृन्मयं लघुधान्यागारम् ।

कुठार, सं. पुं. (सं.) परशुः, द्रुघणः, वृक्षादनी, वृक्षभेदिन्, परश्वधः ।

कुठाराघात, सं. पुं. (सं.) परशुप्रहारः २. तीव्रप्रहारः ।

कुठाली, सं. स्त्री. (सं. कु + स्थाली >) तैजसावर्तनी, मु (मू)षा-षी ।

कुठौर, सं. पुं. (सं. कु + हिं. ठौर) कुस्थानम् २. अनवसरः, असमयः ।

कुड़कुड़ी, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'गुड़गुड़ाना' ।

कुड़बुड़ाना, क्रि. अ., दे. 'कुढ़ना' ।

कुड़ल, सं. पुं., (रक्ताल्पतया) अंग,-व्यावर्तनं-आकुंचनम् ।

कुड़क, सं. स्त्री. (फ़ा. कुरक) कुक्कुटीरुतम् २. अनंडदा कुक्कुटी । वि., व्यर्थ, निरर्थक ।

कुडौल, वि. (सं. कु + हिं. डौल) दुर्दर्शन, कदाकार, कुरूप ।

कुढंगा, वि. पुं. (सं. कु + हिं. ढंग) अशिष्ट, असभ्य, दुःशील ।

कुढ़न, सं. स्त्री. (हिं. कुढ़ना) मनस्तापः, चित्तव्यथा ।

कुढ़ना, क्रि. अ. (सं. क्रुद्ध >) दुर्मनायते (ना. धा.), क्षुभ् (दि. प. से.), अन्तः परितप् (दि. आ. अ.) ।

कुढब, वि. (सं. कु + हिं. ढब) कुरूप, दुर्दर्शन २. अशिष्ट ३. कठिन ।

कुढ़ाना, क्रि. स. (हिं. कुढ़ना) संतप्-उद्विज् (प्रे.) २. प्रकुप्-क्षुभ् (प्रे.) ।

कुतरना, क्रि. स. (सं. कर्तनम्) चर्वणेन कृत् (तु. प. से.), दन्तैः खण्ड् (चु.) ।

कुतर्क, सं. पुं. (सं.) हेत्वाभासः, मिथ्याहेतुः, वितंडा, प्रजल्पः, विवादः ।

कुतर्की, वि. (सं.-र्किन्) वितण्डावादिन्, मिथ्याहेतुवादिन् २. वाचालः, वावदूकः ।

कुतिया, सं. स्त्री. (हिं कुत्ती) सरमा, कुक्कुरी, शुनी, सारमेयी, भषी ।

कुतुब, सं. पुं. (अ.) ध्रुवः, ध्रुवतारा ।

—नुमा, सं. पुं., दे. 'किबलानुमा' ।

कुतूहल, सं. पुं. (सं. न.) उत्कण्ठा, कौतूहलं, कुतुकं, कौतुकं, जिज्ञासा २. अपूर्व-दुर्लभ-अदृष्ट,-वस्तु (न.) ३. विनोदः ४. आश्चर्यम् ।

कुत्ता, सं. पुं. (देश.) कुक्कुरः, श्वन्, शुनकः, कौलेयकः, भषकः, सारमेयः, मृगदंशकः, भषणः, वक्रलांगूलः, वृकारिः, शयालुः ।

कुत्ते की हड़(ल)क, सं. स्त्री., आलर्कं, जलसंत्रासः, अलर्काभिभवः ।

कुत्ती, सं. स्त्री. (हिं. कुत्ता) दे. 'कुतिया' ।

कुत्सित, वि. (सं.) अधम, अवम, गर्ह्य, निन्दित ।

कुदरत, सं. स्त्री. (अ.) प्रकृतिः (स्त्री.), माया, ईश्वरशक्तिः (स्त्री.) २. अधिकारः, प्रभुत्वम् ३. संसारः, जगत् (न.) ४. रचना ।

कुदरती, वि. (अ.) नैसर्गिक, प्राकृतिक, मायामय २. स्वाभाविक, सहज ३. दिव्य, ऐश्वर (-री स्त्री.) ।

कुदाँव, सं. पुं. (सं. कु+हिं. दाँव) छलं, विश्वासघातः २. कुस्थितिः (स्त्री.) ३. कुस्थानम् ।

कुदान[1], सं. पुं. (सं. न.) गर्ह्यदानम् २. कुपात्राय दानम् ।

कुदान[2], सं. स्त्री. (हिं. कूदना) कूर्दनं, झंपः-पा २. कूर्दनभूमिः (स्त्री.), झंपान्तरालम् ।

कुदाना, क्रि. स., 'कूदना' के धातुओं के प्रे. रूप ।

कुदाल, सं. पुं. (सं. कुद्दालः) कुद्दारः, अवदारणः, स्तम्बघ्नः, खनित्रम् २. टंकः, पाषाणदारणः ।

कुदिन, सं. पुं. (सं. न.) आपत्कालः, विपत्तिसमयः २. दुर्दिनम्, ऋतुविपरीतं दिनम् ।

कुदृष्टि, सं. स्त्री. (सं.) पापदृष्टिः (स्त्री.) २. अमंगलदृष्टिः ।

कुधर, सं. पुं. (सं.) पर्वतः २. शेषनागः ।

कुनकुना, वि. (सं. कदुष्ण) ईषदुष्ण, कोष्ण, कवोष्ण, मन्दोष्ण ।

कुनबा, सं. पुं., दे. 'कुटुम्ब' ।

कुनाम, सं. पुं. (सं.-मन् न.) अप, ख्यातिः कीर्तिः (स्त्री.) ।

कुपन्थ, सं. पुं. (सं. कुपथः) कापथः, कुमार्गः २. निषिद्धाचरणम् ३. कुत्सितसंप्रदायः ।

कुपन्थी, वि. (हिं. कुपन्थ) कुपथिन्, कुमार्गिन्, कदाचारिन् ।

कुपथ, सं. पुं. (सं.) दे. 'कुपन्थ' ।

—गामी, वि. (सं.-मिन्) दे. 'कुपन्थी' ।

कुपथ्य, सं. पुं. (सं. न.) रोगजनकौ आहारविहारौ ।

कुपात्र, वि. (सं. न.) अयोग्य, अनर्ह, निर्गुण, अनधिकारिन् ।

कुपित, वि. (सं.) क्रुद्ध, रुष्ट ।

कुपुत्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'कपूत' ।

कुप्पा, सं. पुं. (सं. कुतुपः) कूपकः, कुतूः (स्त्री.) चर्ममयं स्नेहपात्रम् ।

—होना, मु. आप्याम्-स्फाय् (भ्वा. आ. से.) पीनीभू० ।

कुप्पी, सं. स्त्री. (हिं. कुप्पा) चर्मकूपी, लघुकुतुपः-कुतूः (स्त्री.))

कुफ़र, सं. पुं. (अ. कुफ्र) यवनेतरसंप्रदायः २. यवनमतविरोधिवाक्यम् ।

कुफ़ल, सं. पुं. (अ.) तालः, द्वारयंत्रम् ।

कुब, सं. पुं. (सं. कुब्जः >) ककुदः-दं, कुद् (स्त्री.) ।

कुबड़ा, वि. (सं. कुब्ज) कुब्जक, न्युब्ज, वक्रपृष्ठ, गडुल-र, गडु । सं. पुं. कुब्जः इ. ।

कुबड़ी, सं. स्त्री. (हिं. कुबड़ा) नतशीर्षा यष्टिः (स्त्री.) २. दे. 'कुब्जा' ।

कुबानि, सं. स्त्री., दे. 'कुटेव' ।

कुबुद्धि, वि. (सं.) मूर्ख, मन्दमति । सं. स्त्री., मौर्ख्यं, मूढता ।

कुबेर, सं. पुं. (सं. कुवेरः) धनदः, यक्षराज,ः वैश्रवणः, राजराजः, इच्छावसुः, नरवाहन,ः निधीश्वरः ।

कुबेला, सं. स्त्री. (सं. कुवेला) कु,-समयः-कालः २. अनवसरः, अयोग्यकालः ।

कुब्ज, वि. (सं.) दे. 'कुबड़ा' ।

कुब्जा, सं. स्त्री. (सं.) कंसदासी २. मंथरानाम्नी कैकेयीदासी । वि. वक्रपृष्ठा, कुब्जा ।

कुभा, सं. स्त्री. (सं.) काबुलनदी २. भूमिच्छाया ।

कुमक, सं. स्त्री. (तु.) सैन्य-, सहायता ।

कुमकुम, सं. पुं. (सं. कुंकमम्) केसरः-रम्, काश्मीरजम् ।

कुमुकुमा, सं. पुं. (तु०-मः) लाक्षा,-गोलः-वर्तुलः २. अलंकरणोपयुक्तः काचगोलः ३. संकीर्णमुख-कमंडलुः-करंकः ।

क़ुमाच, सं. पुं. (अ. क़ुमाश) कौशेयवस्त्रभेदः ।
कुमार, सं. पुं. (सं.) बालः, बालकः २. पुत्रः ३. राजपुत्रः ४. युवराजः ५. कार्त्तिकेयः ६. अप्राप्तयौवनः ८. सनकादयः ऋषयः ७, भारतवर्षः-र्षम् । वि., दे. 'कुआरा' ।
कुमारबाज़, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) द्यूतकारः, कितवः ।
कुमारी, सं. स्त्री. (सं.) बाला, बालिका, कन्या २. पुत्री, ३. राजपुत्री ४. द्वादशवर्षा कन्या ५. सहा, घृतकुमारी ६. सीता ७. पार्वती । वि. दे. 'कुँआरी' ।
कुमार्ग, सं. पुं. (सं.) दे. 'कुपंथ' ।
कुमुद, सं. पुं. (सं. न.) कैरवं, चन्द्रकान्तं, कल्हारं, शीतलकं, इन्दुकमलं, चन्द्रिकांबुजं, गन्धसोमं, कुवलयम् २. कर्पूरः-रं ३. रूप्यम् ।
—बंधु, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः २. कर्पूरः-रम् ।
कुमुदिनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कुमुद' २. कुमुदवत् सरस् (न.) ।
—पति, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः ।
कुमेरु, सं. पुं. (सं.) दक्षिणध्रुवः ।
कुमोदिनी, सं. स्त्री., दे. 'कुमुदिनी' ।
कुम्मैत, सं. पुं. (तु.) पिंग,-वर्णः-रंगः २. पिंगाश्वः ।
कुम्हड़ा, सं. पुं. (सं. कूष्मांडः) दे. 'काशीफल' ।
कुम्हलाना, क्रि. अ. (सं. कुम्लानं) म्लै-ग्लै (भ्वा. प. अ.), विशॄ (कर्म.), विवर्णी भू ।
कुम्हार, सं. पुं. (सं. कुंभकारः) कुलालः, चक्रिन् ।
कुम्हारिन , सं. स्त्री. (हिं. कुम्हार) कुलाली, कुंभकारी, चक्रिणी ।
कुरंग¹, सं. पुं. (सं.) हरिणः, मृगः २. कृष्णसारः ।
कुरंग², वि. कुवर्ण, निन्द्यरंग ।
कुरंगी, सं. स्त्री. (सं.) मृगी, हरिणी ।
कुरंड, सं. पुं. (सं. कुरुविंदम्) काचलवणम् २. माणिक्यम् ।
कुरकुरा, वि. (अनु. कुरकुर) भंगुर, भिदुर ।
क़ुरबान, वि. (अ.) इष्ट, हुत, बलित्वेन दत्त ।
क़ुरबानी, सं. स्त्री. (अ.) यज्ञः, यागः २. बलिः, उत्सर्गः, आलंभः ३. समर्पणं, परित्यागः ।
कुरसी, सं. स्त्री. (अ.) आसंदी, पीठं, आसनम् २-४. स्तम्भ-प्राकार-भवन,-मूलम् ५. वंशपरंपरा ।

—नामा, सं. पुं. (अ+फ़ा.) वंश,-वृक्षः-परंपरा ।
आराम—, सं. स्त्री. (फ़ा.+अ.) विश्रामासंदी ।
क़ुरा, सं. पुं. (अ.) दे. 'पाँसा' ।
क़ुरान, सं. पुं. (अ.) यवनधर्मपुस्तकम् ।
कुराह, सं. स्त्री. (सं. कु + फ़ा. राह) दे. 'कुपंथ' ।
कुरीति, सं. स्त्री. (सं.) कुप्रथा, कदाचारः, कुव्यवहारः ।
कुरु, सं. पुं. (सं.) नृपविशेषः २. प्रान्तविशेषः ३. कुरुवंशजः ।
—क्षेत्र, सं. पुं. (सं. न.) महाभारतसंग्राम-भूमिः (स्त्री.) ।
कुरूप, वि. (सं.) विरूप, कदाकार, दुर्दर्शन । सं. पुं. (सं. न.) वैरूप्यं, कदाकारः ।
कुरूपता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कुरूप' सं. पुं. ।
कुरेद (ल) ना, क्रि. स. (सं. कर्तनम् ?) उत्-वि, लिख् (तु. प. से.), तक्ष् (भ्वा. प. से.), खुर् (तु. प. से.), घृष् (भ्वा. प. से.) त्वक्ष् (भ्वा. प. वे.) उत्खन् (भ्वा. प. से) ।
क़ुर्क़, वि. (तु.) ऋणहेतोः अपहृत ।
—करना; क्रि. स.. ऋणहेतोः अपहृ (भ्वा. उ. अ.) ।
—अमीन, सं. पुं. (तु.+फ़ा) ऋणादिहेतोः द्रव्यापहर्ता, राजकर्मचारिन् ।
क़ुर्क़ी, सं. स्त्री. (तु क़ुर्क़ >) (राजाज्ञया) सम्पत्तिहरणम् ।
कुर्ता, सं. पुं. (तु.) चोलः, उरोवस्त्रम् ।
कुर्ती, सं स्त्री. (तु, कुर्ता >) आंगिकः-कं, कूर्पासकः-कम् ।
कुर्पर, सं. पुं. [सं. कु (कू) र्परः] जानु (न.) चक्रिका २. कफोणिः (पुं. स्त्री.) कफणी ।
क़ुर्बानी, दे. 'क़ुरबानी' ।
कूर्री, सं स्त्री. (देश.) कोमलास्थि (न.) ।
क़ुर्स, सं. पुं. (अ.), गुटिका, गुलिका, वटिका ।
कुर्सी, दे. 'कुरसी' ।
कुलंग, सं. पुं. (अ.) रक्तशीर्षो धूसरः खगभेदः । २. कुक्कुटः ३. दीर्घजंघो मनुष्यः ।
कुलंजन, सं. पुं. (सं.) कुलंजः, कुर्णजः, गंध-मूलः २. तांबूली-नागलता,-मूलम् ।
कुल, सं. पुं. (सं. न.) वंशः, अन्वयः, वंशावली-लिः (स्त्री.) २, जातिः (स्त्री.) ३. समूहः ४. गृहम् ५. वाममार्गः ।

—कलंक, सं. पुं. (सं.) कुलांगारः, कुलपांसलः।

—कानि, सं. स्त्री. (सं.+हिं.) कुल, गौरवं-मर्यादा।

—तारण, सं. पुं. (सं.) वंशोद्धारकः।

—पति, सं. पुं. (सं.) गृहस्वामिन् २. दश-सहस्रच्छात्राणां पोषकोऽध्यापकश्च ३. विश्वविद्यालयस्य उपप्रधानाधिकारिन् (अं० वाइस-चान्सलर)।

—वंती, सं. स्त्री. (सं. कुलवती) कुलीना, सद्वंशजा, आर्या।

कुल, वि. (अ.) सकल, समस्त, निखिल।

कुलकलाना, क्रि. अ. (अनु.) कुलकुलध्वनिं कृ।

आँतें—, मु., अतीव क्षुध् (दि. प. अ.)।

कुलच्छण, सं. पुं. (सं. न.) अपशकुनः, दुश्चिह्नं २. कदाचारः, गर्ह्याचरणम्। वि., दुराचारिन्।

कुलचा, सं. पुं. (फा. कलीचा) सकिण्वोऽपूपः २. दे. 'पूँजी'।

कुलटा, सं. स्त्री. (सं.) व्यभिचारिणी, पुंश्चली, बंधकी, भ्रष्टा, स्वैरिणी, निशाचरी, त्रपारण्डा।

कुलत्थ, सं. पुं. (सं. कुलत्था) चक्षुष्या, लोचनहिता, दृक्प्रसादा।

कुलथी, सं. स्त्री. (सं. कुलत्थः) कालवृन्तः (शस्यभेदः)।

कुलफ, सं. पुं. (अ. कुफ़्ल) दे. 'ताला'।

कुलफा, सं. पुं. (फ़ा. खुर्फ़ः) बृहल्लोणी, घोलिका, शाकभेदः। २. दे. 'कुलफी'।

कुलफ़ी, सं. स्त्री. (हिं. कुलफ) धूमपान-यंत्रस्य भुग्ननाली २. हिमसन्तानीनिर्माण-पात्रम् ३. हिमसन्तानी, घनमधुरदुग्धम्।

कुलबुलाना, क्रि. अ. (अनु. कुलबुल) दुःखात् अंगानि आकृष् (भ्वा प. अ.) २. अंत्राणि गंभीरं स्वन् (भ्वा. प. से.) ३. वि-सं-प्र,-सृप् (भ्वा. प. अ.) ४. व्याकुल (वि.) भू ५. दे. 'खुजलाना'।

कुलबुलाहट, सं. स्त्री. (पूर्व.) शनैः सर्पणं, कृमिसदृशी चेष्टा २. कंडूलता, कच्छुरता।

कुलहा, सं. पुं. (फ़ा. कुलाह) शंकाकारं शिरस्कम्।

कुलही, सं. स्त्री. (हिं. कुलहा) शिशुशिर-स्कम्, दे. 'कनटोप'।

कुलाँच, सं. स्त्री. (तु. कुलाच) दे. 'छलाँग'।

कुलाबा, सं. पुं. (अ.) लोहपुटः २. वडिशं, मत्स्यवेधनम् ३. द्वारसंधिः (पुं.) ४. शृङ्खलांगं, अंदूः-दुः (स्त्री.) ५. अर्गलः-लम् ६. जलमार्गः, नाली।

कुलाल, सं. पुं. (सं.) कुम्भकारः २. वन-कुक्कुटः ३. उलूकः।

कुलिक, सं. पुं. (सं.) कलाविद् (पुं.) २. शिल्पिन् ३. कुलीनः ४. कुलपतिः।

कुलिश, सं. पुं. (सं.) वज्रः-ज्रं, पविः २. विद्युत् (स्त्री.) ३. कुठारः।

कुली, सं. पुं. (तु.) भार,-वाहः-हरः, भारिकः २. कर्मक (का) रः, श्रमजीविन्।

कुलीन, वि. (सं.) महाकुल, अभिजात, आर्य, सभ्य, सत्कुलज।

कुलीनता, सं. स्त्री. (सं.) आभिजात्यं आर्यता।

कुलेल, सं. स्त्री. (सं. कल्लोलः >) क्रीडा, खेला, विहारः, केलिः (पुं. स्त्री.), विलासः, लीला।

कुल्या, सं. स्त्री. (सं.) क्षुद्रकृत्रिमनदी २. क्षुद्रनदी ३. पयःप्रणाली ४. कुलस्त्री।

कुल्ला, सं. पुं. (सं. कवलः >) चलुः, चलुकः, चुलुकः।

कुल्हड़, सं. पुं. (सं. कुल्हरिका) करकः, क्षुद्र-मृत्पात्रम्।

कुल्हाड़ा, सं. पुं. (सं. कुठारः, दे.)।

कुल्हिया, सं. स्त्री. (हिं. कुल्हड़) क्षुद्रकरकः, अतिक्षुद्रमृत्पात्रम्।

कुवलय, सं. पुं. (सं. न.) नील,-कुमुदं-कैरवं-शशिकान्तम् २. नील,-कमलं-उत्पलम् ३. भू-मण्डलम्।

कुवाच्य, वि. (सं.) अश्लील, अशिष्ट, अवाच्य। सं. पुं. (सं. न.) गाली, कुवचनं अपशब्दः।

कुवेणी, सं. स्त्री. (सं.) मत्स्यकरंडी २. कुग्रथितवेणी।

कुवेर, सं. पुं. (सं.) कुवेरः, दे.।

कुश, सं. पुं. (सं.) कुथः, दर्भः पवित्रम् २. जलम् ३. रामपुत्रः ४. कालः।

कुशन, सं. पुं. (अं.) उपधानं, उपबर्हं, उपबर्हणम्।

कुशल, वि. (सं.) दक्ष, चतुर, प्रवीण, निपुण, विशारद, विचक्षण २. श्रेष्ठ, भद्र। सं. पुं. (सं. न.) सुखं, क्षेमं, मंगलम्, भद्रं, शिवम् २. कुशग्राहिन् ३. शिवः।

—क्षेम, सं. पुं. (सं. न.) सुखं, क्षेमं। मंगलम्।
कुशलता, सं. स्त्री. (सं.) पाटवं, चातुर्यं, निपुणता।
कुशा, सं. स्त्री. (सं. कुशः-शम्) दर्भः, कुथः, पवित्रं, याज्ञिकः ह्रस्वगर्भः, बर्हिस् (पुं. न.)।
कुशाग्र, वि. (सं.) तीक्ष्ण, सूक्ष्म, तीव्र प्रखर।
—बुद्धि, वि. (सं.) तीक्ष्णमति। सं. स्त्री., तीव्र,-मतिः (स्त्री.)।
कुशादगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) विशालता २. विस्तारः, विस्तृतिः (स्त्री.)।
कुशादा, सं. पुं. (फ़ा.) विस्तृत २. आवरण-रहित।
कुशासन[१], सं. पुं. (सं. कुश+आसनम्) कुथ-विष्टरः, दर्भासनम्।
कुशासन[२], सं. पुं. (सं. कु+शासनम्) दुःशा-सनम्, कुत्सितराज्यव्यवस्था।
कुशील, वि. (सं.) दुःशील, दुर्वृत्त, दुःस्वभाव।
कुश्ता, सं. पुं. (फ़ा.-तः) धातुभस्मन् (न.)।
कुश्ती, सं. स्त्री. (फ़ा.) नियुद्धं, मल्ल-बाहु-, युद्धम्।
कुष्ठ, सं. पुं. (सं. न.) श्वित्रं, श्वेतं-त्रं, मंडलकं, दुश्चर्मन् (न.) २. दे. 'कुट'[१]।
—नाशन, सं. पुं. (सं.) वाराहीकन्दः २. गौर-सर्षपः ३. क्षीरीशवृक्षः।
कुष्ठी, वि. (सं. कुष्ठिन्) श्वित्रिन्।
कुष्माण्ड, सं. पुं. (सं.) दे. 'कुम्हड़ा'।
कुसंग, सं. पुं. (सं.)कु-दुस्,-संगतिः (स्त्री.)।
कुसमय, सं. पुं. (सं.) कुकालः, अशुभसमयः २. अनवसरः, असमयः ३. विपत्कालः।
कुसाइत, सं. स्त्री. (सं. कु+अ. सायत) अशुभमुहूर्तं, अनवसरः, कुसमयः।
कुसीद, सं. पुं. (सं. न.) वार्द्धुष्यं, वृद्धिः (स्त्री.)।
—जीवी, दे. 'सूदखोर'।
—पथ, दे. 'सूदखोरी'।
कुसुम्भ, सं. पुं. (सं. न.) वस्त्ररंजनं, महा-रंजनम् २. दे. 'केसर'।
कुसुम्भा, सं. पुं. (सं. कुसुम्भम् >) कुसुम्भ-रागः २. अहिफेनभंगानिर्मितं मादकद्रव्यम्।
कुसुम, सं. पुं. (सं. न.) पुष्पं, प्रसूनं, सुमं, सूनं, मणीवकं, सुमनसः (स्त्री., केवल बहु.) २. लघुवाक्यमयं गद्यम् ३. स्त्रीरजस् (न.)।
—पुर, सं. पुं. (सं. न.) पाटलिपुत्रम्।
—बाण, सं. पुं. (सं.) कामदेवः।
कुसुमांजलि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) पुष्पांजलिः।
कुसुमित, वि. (सं.) पुष्पित, उत्फुल्ल, फुल्लित।
कुसूर, सं. पुं. (अ.) अपराधः, स्खलितम्।
—वार, वि. अपराधिन्, दोषिन्।
कुहक, सं. पुं. (सं. न.) माया, अभिचारः, इन्द्रजालम् २. ऐन्द्रजालिकः ३. वंचकः।
कुहकना, क्रि. अ. (अनु. कुहू) कुहूरवं कृ, कूज् (भ्वा. प. से.)।
कुहनी, सं. स्त्री. (सं. कफोणिः पुं.) कफणिः (पुं. स्त्री.), कफणी, कु (कू) पर्रः।
कुहर, सं. पुं. (सं. न.) छिद्रं, विवरं, बिलं, रन्ध्रम्।
कुहरा, सं. पुं. (सं. कुहेडी) तुषारः, खवाष्पः, धूमिका, कुहेडिका, कुज्झटिका।
कुहराम, सं. पुं. (अ. क़हर+आम) विलापः, आक्रन्दनं, परिवेदना २. संकुलं, तुमुलम्।
कुही, सं. स्त्री. (सं. कुधिः) श्येनः, खगान्तकः, शशादनः, कपोतारिः।
कुहुक, पुं., दे. कुहू (२)।
कुहुकना, क्रि. अ., दे. 'कुहकना'।
कुहू, सं. स्त्री. (सं.) अमावस्या २. कोकिल-मयूर,-आलापः।
कूँचा, सं. पुं. (सं. कूर्चम्) शोधनी, संमार्जनी, कूर्चकम्।
कूँची, सं. स्त्री. (हिं. कूँचा) लघु-क्षुद्र,-शोधनी-कूर्चम् २. लोममयी मार्जनी ३. तूलिका, वर्ण,-तूली-तूलिका।
कूँज, सं. पुं. (सं. क्रुंचः-चा) क्रौंचः-चा, कलिकः, कालिकः।
कूँड, सं. पुं. (सं. कुंडम्) सेचनं-नी २. सीता, हलरेखा ३. 'खोद'।
कूँड़ा, सं. पुं. (सं. कुंडम्), (जलार्थं) बृह-न्मृत्पात्रम् २. द्रोणी-णिः (स्त्री.) ३. कुसुम-पात्रम्।
कूँड़ी, सं. स्त्री. (हिं. कूँड़ा) लघुपाषाणद्रोणी-णिः (स्त्री.) २. पाषाणचषकः-कम्।
कूक, सं. स्त्री. (अनु.) कोकिलकूजितम् २. केका, मयूरध्वनिः ३. दीर्घमधुरध्वनिः।
कूकना, क्रि. अ. (हिं. कूक) कूज् (भ्वा. प. से.), कुहूरवं कृ, केकां कृ।

कूकर, सं. पुं. (सं. कुक्कुरः दे.)।

कूच, सं. पुं. (तु.) प्रस्थानं, प्रयाणं, अपक्रमः २. कटकत्यागः ३. यात्रा।

—करना, क्रि. अ., प्रस्था (भ्वा. आ. अ.). प्रया (अ. प. अ.)।

कूचा, सं. पुं. (फ़ा. चः) वीथी, दे. 'गली'।

कूजन, सं. पुं. (सं. न.) कूजितं, कलरवः, खगध्वनिः, विरुतं, गुंजनम्।

कूजना, क्रि. अ. (सं. कूजनम्) कूज् (भ्वा. प. से.), कु (अ. प. अ.), वि,–रु (अ. प. से.) २. गुंज् (भ्वा. प. से.), हुं कृ।

कूजा, सं. पुं. (फ़ा.) सनालीकः करकः।

—मिसरी, सं. स्त्री., अर्द्धगोलाकारा घनीकृता सिता।

कूजित, वि. (सं.) ध्वनित, स्वनित, गुञ्जित, झंकृत, कलरवपूर्ण।

कूट¹, सं. पुं. (सं. न.) छलं, कपटः–टं, माया, वञ्चना, प्रतारणा २. असत्यं ३. शृंगं. विषाणम् ४. उच्चशिखरम् ५. राशिः ६. गूढार्थवार्ता, सनिंद उपालम्भः ७. प्रहेलिका, गूढप्रश्नः ८. लोहमुद्गरः ९. हरिणजालम् १०. प्रच्छन्नवैरम् ११. नगरद्वारम् १२. भग्नशृंगो वृषभः।

वि., असत्यवादिन् २. प्रवञ्चक ३. कृत्रिम ४. श्रेष्ठ ५. निश्चल।

—नीति, सं. स्त्री. (सं.) दौत्यकर्मन् (न.)

—युद्ध, सं. पुं. (सं. न.) कपटसंग्रामः।

—योजना, सं. स्त्री. (सं.) कुचक्रम्।

—साक्षी, सं. पुं. (सं.–क्षिन्) मिथ्यासाक्षिन्।

कूट², सं. स्त्री. (हिं. काटना वा कूटना) कर्तनं, कृन्तनम् २. ताडनं, कुट्टनम्।

कूटक, सं. पुं. (सं. न.) छलं, कपटम् २. उत्सेधः, उत्तुंगता ३. फालः–लं, कुशिकम्।

कूटना, क्रि. स. (सं. कुट्टनम्) कुट्ट–चूर्ण्–खंड् (चु.), पिष् (रु. प. अ.) २. प्रवलं तड् (चु.)।

सं. पुं. तथा भाव, कुट्टनं, चूर्णनं, खण्डनम्, पेषणम् २. ताडनं, प्रहरणम्।

—योग्य, वि., कुट्टनीय, चूर्णयितव्य।

—वाला, सं. पुं. कुट्टकः, पेषकः, ताडयितृ।

कूटा हुआ, वि., कुट्टित, पिष्ट, ताडित।

कूटस्थ, वि. (सं.) शिखरस्थ २. निश्चल ३. नित्य ४. गूढ।

कूटाक्ष, सं. पुं. (सं.) कूट–कपट–,अक्षः–देवनः–सारः।

कूटाख्यान, सं. पुं. (सं. न.) गुप्तार्थ–गूढार्थ,–कथा–उपाख्यानम्।

कूड़ा, सं. पुं. (सं. कूटः = राशि >) अवस्करः, उच्छिष्टं, मलं, निस्सारवस्तुसमूहः।

—करकट, सं. पुं., दे. 'कूड़ा'।

कूद, सं. स्त्री. (हिं. 'कूदना') प्लवः, उत्–, प्लुतिः (स्त्री.), प्लवनं, झंपः–पा, वल्गनं, उत्प्लवः।

—फाँद, सं. स्त्री. कूर्दनप्लवनं, झंपवल्गितम्।

कूदना, क्रि. अ. (सं. कूर्दनम्) कुर्द् (भ्वा. आ. से.), उत्प्लु (भ्व. आ. अ.), वल्ग् (भ्वा. प. से.) २. प्र-मुद् (भ्वा. आ. से.)। सं. पुं., दे. 'कूद'।

—फाँदना, क्रि. अ., इतस्ततः वल्ग्। २. व्यायाम कृ।

कूप, सं. पुं. (सं.) दे. 'कुआँ' २. छिद्रं, रन्ध्रम्।

—मंडूक, सं. पुं. (सं.) व्यवहारानभिज्ञः, अपक्वबुद्धिः, अल्पदर्शिन्। २. अंधुभेकः।

कूपन, सं. पुं. (अं.) पर्णिका, *कूपनम्।

कूपी, सं. स्त्री. (सं.) कूपकः, खातकः २. दे. 'कुप्पी' ३. नाभिः (पुं. स्त्री.), नाभी, तुंदिका।

कूबड़, सं. पुं. (सं. कूबरः >) ककुदः–दम्।

कूर, वि. (स. क्रूर) निर्दय, निर्घृण, नृशंस २. भयंकर २. दुष्ट ४. अलस ५. मूर्ख ६. कुलक्षण।

कूर्म, सं. पुं. (सं.) कच्छपः, दे. 'कछुआ' २. विष्णोः कच्छपावतारः ३. पृथिवी ४-७. ऋषि-प्राण-नाडी-आसन,-विशेषः।

कूल, सं. पुं. (सं. न.) तटः–टी–टं, तीरम् २. समीपे, निकटे ३. कुल्या ४. सरस् (न.)।

कूल्हा, सं. पुं. (सं. क्रोडम् >) नितंबास्थि (न.)।

कूष्मांड, सं. पुं. (सं.) दे. 'कुम्हड़ा')।

कृच्छ्र, सं. पुं. (सं. न.) दुःखं, कष्टम् २. पापम् ३. मूत्रकृच्छ्ररोगः ४. व्रतभेदः। वि., दुष्कर, दुस्साध्य।

कृत, वि. (सं.) विहित, अनुष्ठित, रचित, संपादित, निर्मित। सं. पुं. सत्ययुगम् २. चतुर् इति संख्या।
—कार्य, वि. (सं.) सफल, सिद्धार्थ।
—कृत्य, आप्तकाम, सफलमनोरथ।
—युग, सं. पुं. (सं. न.) सत्ययुगम्।
—विद्य, वि. (सं.) विद्वस्, पंडित, बहुश्रुत।
कृतक, वि. (सं.) कृत्रिम, अनैसर्गिक, अस्वाभाविक, २. अनित्य (न्याय०)।
—पुत्र, सं. पुं. (सं.) दत्तकः, द्त्रिमः सुतः।
कृतघ्न, वि. (सं.) कृतज्ञतारहित, अकृतवेदिन्।
कृतघ्नता, सं. स्त्री. (सं.) अकृतवेदिता, उपकारविस्मरणन्, कृतज्ञताराहित्यम्।
कृतज्ञ, वि. (सं.) उपकारज्ञ, कृतविद्, कृतवेदिन्।
कृतज्ञता, सं. स्त्री. (सं.) उपकारज्ञता, उपकारस्मरणं, कृतवेदित्वम्।
कृतांक, वि. (सं.) सचिह्न, चिह्नित, अंकित, सांक।
कृतांजलि, वि. (सं.) बद्धांजलि, बद्धकर।
कृतांत, सं. पुं. (सं.) मृत्युः २. यमः ३. पापम् ४. देवता ५. पूर्वजन्मकर्मफलम् ६. सिद्धान्तः ७, शनैश्चरवारः।
कृतार्थ, वि. (सं.) पूर्णकाम, दे. 'कृतकार्य' २. संतुष्ट ३. निपुण ४. मुक्त।
कृतास्त्र, वि. (सं.) सशस्त्र, सास्त्र, सन्नद्ध २. अस्त्रविद्, शस्त्रनिपुण।
कृति, सं. स्त्री. (सं.) चेष्टा, क्रिया २. कर्मन् (न.) कार्यम् ३. इन्द्रजालम्, माया ४. रचना, ग्रंथः ७. प्रहारः ८. क्षतिः (स्त्री.)।
कृती, वि. (सं. कृतिन्) कुशल, दक्ष, पटु २. पुण्यात्मन्, शुचिव्रत।
कृतोदक, वि. (सं.) स्नात, कृतस्नान, कृताभिषेक
कृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) मृगचर्मन् (न.) २. त्वच् (स्त्री.) ३. भूर्जः ४. दे. 'कृत्तिका'।
—वासा, सं. पुं. (सं.-वासस्) शिवः।
कृत्तिका, सं. स्त्री. (सं.) बहुला, अग्निदेवा, नक्षत्रविशेषः।
कृत्य, सं. पुं. (सं. न.) अनुष्ठेयं, कर्तव्यं, विधेयं धर्मः, आवश्यकं कार्यम् २. कर्मन् (न.)।
कृत्रिम, वि. (सं.) कृतक, अनैसर्गिक।

कृदन्त, सं. पुं. (सं.) कृत्प्रत्ययान्तशब्दः (उ. पाचक, भोक्तृ इ.) २. कृत्प्रत्ययविषयकं व्याकरणप्रकरणम्।
कृपण, त्रि. (सं.) कदर्य, दे. 'कंजूस' २. क्षुद्र।
कृपणता, सं. स्त्री. (सं.) कदर्यता, दे. 'कंजूसी'।
कृपया, क्रि. वि. (सं.) सदयं, सकृपं, सानुकंपं, सानुग्रहम्।
कृपा, सं. स्त्री. (सं.) करुणा, दया, अनुग्रहः, प्रसादः, उपकारः, अनुकंपा २. क्षमा, मर्षणम्।
—निधान, सं. पुं. (सं. न.) दयानिधिः। वि. अत्यन्तकृपालु।
—पात्र, सं. पुं. (सं. न.) प्रसादभाजनं, अनुग्राह्यः, दयार्हः।
—सिंधु, सं. पुं. (सं.) दयासागरः, अतिदयालुः।
कृपाण, सं. पुं. (सं.) खड्गः असिः २. दे. 'कटार' ३. दंडकवृत्तभेदः (छन्द.)।
कृपालु, वि. (सं.) दयालु, कारुणिक, कृपामय।
कृपालुता, सं. स्त्री. (सं.) दयालुता, कारुणिकता।
कृमि, सं. पुं. (सं.) कीटः, नीलांगः, क्रिमिः (पुं.) २. लाक्षा।
—कोश, सं. पुं. (सं.) पट्टकीट,-कोषः-गृहं।
—नाशक, वि. (सं.) कृमिघ्न, कृमिहर।
कृमिक, सं. पुं. (सं.) कीटकः, लघु,-कृमिः-क्रिमिः।
कृमिज, सं. पुं. (सं. न.) अगुरु (न.), राजार्ह २. कौशेयं ३. दे. 'हिरमिज़ी'।
कृमिजा, सं. स्त्री. (सं.) कीटजा, लाक्षा।
कृमिल, वि. (सं.) कृमिकुल,-चित-पूर्ण, कृमिमय।
कृमिला, सं. स्त्री. (सं.) बहुप्रसूः (स्त्री.), बहुप्रजा।
कृश, वि. (सं.) क्षीण, क्षाम, तन्वंग-कृशांग (-गी स्त्री.), प्र-,तनु, दुर्बल २. अल्प, स्तोक, क्षुद्र, सूक्ष्म, अणु, लघु।
कृशता, सं. स्त्री. (सं.) क्षीणता, क्षामता, दुर्बलता २. अल्पता, सूक्ष्मता।
कृशांगी, सं. स्त्री. (सं.) तन्वंगी, क्षीणांगी, तन्वी।
कृशानु, सं. पुं. (सं.) अनलः, अग्नि (पुं.) २. चित्रकः।

कृशोदरी, वि. स्त्री. (सं.) तनु-क्षीण,-मध्या-मध्यमा।

कृषक, सं. पुं. (सं.) कृषीवलः, कृषिकः, कृषाणः।

कृषि, सं. स्त्री. (सं.) कर्षणं, हलभृतिः (स्त्री.)।

कृष्ण, सं. पुं. (सं.) वासुदेवः, केशवः, चक्रपाणिः (पुं.) चक्रिन् (पुं.), जनार्दनः, पीतांबरः, माधवः, मधुसूदनः, हृषीकेशः, गोपालः, गोवर्धनधारिन् (पुं.), गोविंदः, दामोदरः, मुरारिः (पुं.), राधारमणः। २. कोकिलः ३. काकः ४. कृष्णपक्षः। वि., काल, असित, २. नील, मेचक, श्याम ३. तिमिर, निष्प्रभ।

—जटा, सं. स्त्री. (सं.) जटामांसी, सुगन्धितमूलभेदः।

—जीरक, सं. पुं. (सं.) कृष्णा, काला, बहुगन्धा।

—द्वैपायन, सं. पुं. (सं.) वेदव्यासः, महाभारतकारः।

—पक्ष, सं. पुं. (सं.) असितपक्षः, प्रतिपदाद्यमावस्यान्तानि पंचदश दिनानि।

—लवण, सं. पुं. (सं. न.) रुचकं, अक्षं, सौवर्चलं।

—लोह, सं. पुं. (सं. न.) अयस्कांतः, चुंबकः।

—शार, —सारंग, —सार, सं. पुं. (सं.) मृगभेदः।

कृष्णता, सं. स्त्री. (सं.) कृष्णिमन् (पुं.), कालिमन् (पुं.), नीलत्वं, श्यामत्वं।

कृष्णा, सं. स्त्री. (सं.) द्रौपदी, पांचाली २. कालीदेवी ३. दक्षिणदेशे नदीविशेषः ४. कृष्णजीरकः ५. कृष्णद्राक्षा ६. नयनतारा।

कृष्णाष्टमी, सं. स्त्री. (सं.) श्रीकृष्णजन्मदिवसः, जन्माष्टमी, भाद्रमासस्य कृष्णपक्षस्याष्टमी तिथिः।

कृष्णी, सं. स्त्री. (सं.) कृष्ण,-रजनी-रात्रिः (स्त्री.)।

कृष्य, वि. (सं.) कर्षणीय, कृषियोग्य।

केंचुआ, सं. पुं. (सं. किंचुलुकः) महीलता, गंडूपदः, किञ्चिलिकः।

केंचुल, सं. स्त्री. (सं. कंचुकः) निर्मोकः, अहि-भुजंग-सर्प,-त्वच् (स्त्री.)।

केंचुली, वि. (हिं. केंचुल) कंचुक,-सदृश-तुल्य। सं. स्त्री. दे. 'केंचुल'।

केंद्र, सं. पुं. (सं. न.) मध्यः-ध्यं, मध्यभागः २. उदरं, गर्भः ३. मुख्य-प्रमुख,-स्थानम्।

केंद्री, वि. (सं. केन्द्रं >) मध्यम, मध्यस्थ, मध्य,-गत-वर्तिन्, मध्य, केन्द्रीय।

—करण, सं. पुं. (सं. न.) मध्यवर्तिनं कृ:, एकतंत्री कृ।

केंसर, सं. पुं. (अं.) कर्कट-कर्कटिका,-रोगः, कर्कस्फोटः।

के, प्रत्य., (हिं. का) दे. 'का'।

केकड़ा, सं. पुं. (सं. कर्कटः) कर्कटकः, कुलीरः।

केकय, सं. पुं. (सं.) १. वर्तमानकाश्मीरांतर्गतप्रदेशविशेषः २. दशरथश्वशुरः।

केकयी, सं. स्त्री. (सं. कैकेयी)।

केका, सं. स्त्री. (सं.) मयूरवाणी।

केकी, सं. पुं. (सं.-किन्) मयूरः, शिखिन्।

केत, सं. पुं. (सं.) भवनं, गृहं २. स्थानं ३. ध्वजः, केतनं ४. बुद्धिः (स्त्री.) ५. संकल्प ६. मंत्रणा ७. अन्नम्।

केतक[1], सं. पुं. (सं.) केतकीवृक्षः २. तत्पुष्पं।

केतक[2], वि. (सं. कति+एक) दे. 'कितने', 'कितना', बहुत'।

केतकी, सं. स्त्री. (सं.) सूचीपुष्पः, केतकः, क्रकचच्छदः, विफला, क्रकचा, गंधपुष्पा।

केतन, सं. पुं. (सं. न.) भवनं, गृहम् २. स्थानं ३. चिन्ह ४. ध्वजः ५. निमंत्रणं, आह्वानम्।

केतली, सं. स्त्री. (अं. केटल) उखा, स्थाली, लौहा, लौहभूः (स्त्री.)।

केतित, वि. (सं.) आमंत्रित, आहूत, आकारित २. जनाकीर्ण, लोकाध्युषित।

केतु, सं. पुं. (सं.) ग्रहविशेषः २. उल्का, उत्पातः ३. ज्ञानं ४. दीप्तिः (स्त्री.) ५. ध्वजः ६. चिह्नम् ७. राक्षसविशेषस्य कबंधः।

—तारा, सं. पुं. (सं. स्त्री.) धूमकेतुः (पुं.), उल्का।

—मान्, वि. (सं.-मत्) तेजस्विन् २. ध्वजिन् ३. बुधः।

—माल, सं. पुं. (सं. न.) जंबुद्वीपस्य नवखंडांतर्गतखंडविशेषः।

—रत्न, सं. पुं. (सं. न.) वैदूर्यमणिः (पुं.)।

केथीटर, सं. पुं. (अं.) मूत्रशलाका।

केलसियम, सं. पुं. (अं.) चूर्णातु (न.), खटिकम्।

केदार, सं. पुं. (सं.) व्रीहिक्षेत्रं २. हिमालये

तीर्थविशेषः ३. आलवालं ४. मेघरागपुत्रः ५. सपुष्पः क्षेत्रभागः।

केन, सं. पुं. (सं., 'किं' का तृतीया एकवचन) उपनिषद्विशेषः।

केमरा, सं. पुं. (अं.) छायाचित्रपेटिका।

केमिस्ट्री, सं. स्त्री. (अं.) रसायनम्।

केयूर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अंगदः-दं, वलयः-यं।

केराना, सं. पुं. दे. 'किराना'।

केराना, सं. पुं. (अं. क्रिश्चियन >) भारोपीयः २. लेखकः, कायस्थः, लिपिकारः।

केराया, सं. पुं. दे. 'किराया'।

किराये की गाड़ी, सं. स्त्री., पण्य-साधारण,-वाहनं-रथः।

केला, सं. पुं. (सं. कदलः), (वृक्ष) कदली, रंभा, मोचा, काष्ठीला, सकृत्फला, गुच्छफला, निःसारा, ऊरुस्तभा, मो(रो, लो)चकः, वारणवल्लभा। (फल) कदलीफलं, मोचं इ.।

केलि, सं. स्त्री. (सं.) क्रीडा, खेला २. रतिः (स्त्री.), मैथुनं ३. नर्मन् (न.), परि (री) हासः ४. पृथिवी।

—**कला**, सं. स्त्री. शारदावीणा २. रतिविज्ञानं।

केलोरी, सं. स्त्री. (अं.) उपम्।

केवट, सं. पुं. (सं. केवतः) नाविकः, पोतवाहः, औडुपिकः २. धीवरः, कैवर्तः, जालिकः, मत्स्याजीवः।

केवटी, सं. स्त्री. (हिं. केवट) मिश्रद्विद्वलं, वैदलसंकरः।

केवड़ा, सं. पुं. (सं. केविका) केवी, कविका, भृङ्गारिः (पुं.), महागंधा, नृपवल्लभा २. केवीपुष्पं इ. ३. महागंधासवः।

केवल, वि. (सं.) एक, अद्वितीय २. विशुद्ध ३. श्रेष्ठ। क्रि. वि.,-एव, केवलं,-मात्र (समासांत में) २. सामस्त्येन, संपूर्णतया।

केवलात्मा, सं. पुं. (सं.-त्मन्) परमेश्वरः, जगदीश्वरः २. शुद्धसत्त्वमनुष्यः, पूतात्मन्।

केवली, सं. पुं. (सं.-लिन्) मोक्षाधिकारी साधुः २. तीर्थंकरः (जैन.)।

केवाँच, सं. स्त्री. (सं. कच्छु >), (लता) कपिकच्छूः (स्त्री.) स्व-आत्म-,गुप्ता, कंडूरा, मर्कटी २. (फली)कपिकच्छू,-बीजकोशः-शिंबी।

केवाड़, सं. पुं., दे. 'किवाड़'।

केश, सं. पुं. (सं.) वालः, कचः, कुन्तलः, चिकुरः, शिरोरुहः, शिरसिजः, मूर्द्धजः, वृजिनः २. किरणः ३. वरुणः ४. विष्णुः ५. सूर्यः ६. विश्वं (७-८) अश्व-सिंह,-स्कंधकेशः।

—**कर्म** सं. पुं., केशकर्मन् (न.), केश,-विन्यासः-प्रसाधनम्।

—**कलाप,-पाश**, सं. पुं. (सं.) प्रसाधितकेशाः, अलकः, कुरलः।

—**प्रसाधनी**, सं. स्त्री. }
—**मार्जक**, सं. पुं. } कंकतिका, दे. 'कंघी'।

—**विन्यास**, सं. पुं. (सं.) दे. 'केशकर्म'।

केशक, वि. (सं.) केशकर्म-केशविन्यास,-कुशल, केशप्रसाधक।

केशरी, सं. पुं. (सं.-रिन्) सिंहः, मृगेन्द्रः २. घोटकः (३-४) पुन्नाग-नागकेशर,-वृक्षः।

केशाकेशी, सं. स्त्री. [सं.-शि(न.)] अन्योऽन्यकेशग्रहणपूर्वकप्रवृत्तं युद्धं।

केशिनी, सं. स्त्री. (सं.) सुकेशी-शा, सुकचीचा।

केशी, सं. पुं. (सं. केशिन्) सिंहः २. घोटकः २. सुकेशः (पुरुषः) ३. राक्षसविशेषः।

केस¹, सं. पुं., दे. 'केश'।

केस², सं. पुं. (अं.) व्यवहारपदं, कार्यं २. दुर्घटना ३. कोषः, पुटः।

केसर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) काश्मीर्यं, काश्मीरजं, कुंकुमं, अग्निशिखं, वरं, वाह्नि (ह्री) कं, पीतनं, गौरं, रक्तं, लोहितचन्दनं, वर्ण्यं, संकोचं, धीरं, घस्रं, घुसृणं, घोरम् २. नागकेशरवृक्षः ३. अश्व-सिंह,-स्कन्धवालाः ४. स्वर्गः।

केसराचल, सं. पुं. (सं.) मेरुः, सुमेरुः, हेमाद्रिः।

केसरिया, वि. (सं. केसरं >) घनपीत, कुंकुमवर्ण।

—**बाना**, सं. पुं., कुंकुमवर्ण-घनपीत,-वेशः-वेषः।

केसरी, सं. पुं. (सं.-रिन्) दे. 'केशरी'।

केसू, सं. पुं. (सं. किंशुकः) पलाशः, रक्तपुष्पकः।

केहा, सं. पुं. (सं. केका >) मयूरः, दे. 'मोर'।

केहरी, सं. पुं. (सं. केशरिन्) सिंहः २. अश्वः।

कैंची, सं. स्त्री. (तु.) दे. 'कतरनी'।

—**करना**, मु., अग्राणि निकृत् (तु. प. से.)-लू (क्र्. उ. से.)-अवच्छिद् (रु. प. अ.)।

—सी जबान चलना, मु., शीघ्रं-सत्वरं-वेगेन भद् (भ्वा. प. से.)-भाष् (भ्वा. आ. से.)।
कैंचुली, सं- स्त्री., दे. 'केंचुली'।
कै, वि. (सं. कति) दे. 'कितने', 'कितनी'। अव्य., वा, अथवा, यद्वा २. अन्यतर।
—दफा,—वार,—वेर, कतिकृत्वः (अव्य.), कतिवारं।
कैंप, सं. पुं. (अ.) दे. 'कंपू'।
कै, सं. स्त्री. (अं.) वांतं, वमनोद्गारः २. वमनं, वमः, वमिः (स्त्री.), प्रच्छर्दिका, वमथुः (पुं.)।
—आना, क्रि. अ., वमनेच्छयां पीड् (कर्म.), विवमिषति (सन्नन्त.)।
—करना, क्रि. स. उद्,-वम् (भ्वा. प. से.) छर्द् (चु.), उत्क्षिप् (तु. प. अ.), उद्गॄ (तु. प. से.)।
कैतव, सं. पुं. (सं. न.) छलं, कपटं, वंचनं २. द्यूतं ३. वैदूर्यमणिः (पुं.) ४. धुस्तूरः। वि., छलिन्, कापटिक २. शठ, धूर्त्त ३. अक्ष-देविन्, कितव, (-वी. स्त्री.)।
कैथ-था, सं. पुं. (सं. कपित्थः) दधित्थः, मन्मथः, दधि-पुष्प-कुच-गन्ध-दन्त,-फलः।
कैद, सं. स्त्री. (अ.) बन्धनं, निग्रहः, निरोधः २. कारा,-निरोधः-बन्धनं-प्रवेशः-वासः, बंदी-करणं, प्रग्रहः, आसेधः ३. नियमः, समयः, प्रतिज्ञा, संकेतः।
—करना, क्रि. स., कारागृहे निक्षिप् (तु. प. अ.)-बन्ध् (क्र्. प. अ.)-निरुध् (रु. उ. अ.), बन्दीग्राहं ग्रह् (क्र. प. से.), बंदीकृ।
—होना, क्रि. अ., करायां निक्षिप्-बन्ध् निरुध्-वन्दीकृ (सब कर्म.)।
—खाना, सं. पुं. (फ़ा.) कारा, कारागारः-रं, कारावासः, बन्दि,-शाला-गृहं, बन्धनालयः, चारः, चारकः, गुप्तिस्थानं।
—तनहाई, सं. स्त्री. (अ+फ़ा) एकांत-विजन-निभृत,-आसेधः।
—महज, सं. स्त्री. (अ.) सरल सुगम-,प्रग्रहः-आसेधः।
—सख्त, सं. स्त्री. (अ. + फ़ा.) विषम-दुःसह,-आसेधः, इ.।
कैदी, सं. पुं. (अ.) बंदी-दिः (स्त्री.), बन्दिन् (पुं.), कारागुप्तः, ग्रहकः, प्रग्रहः, रुद्धः।
कैप, सं. पुं. (अं.) दे. 'टोपी'।

कैपिटल, पुं. (अं.) मूल-धनं-द्रव्यम्, २. धन,-पुंजः-राशिः, पुंजिः (स्त्री.) ३. राजधानी।
कैपिटलिस्ट, सं. पुं. (अं.) धनिकः, कोटीश्वरः, पुंजिपतिः।
कैबिनेट, सं. पुं. (अं.) मंत्रिमंडलम् २. कोष्ठकः ३. मंत्रणागृहम्।
कैफ़ियत, सं. स्त्री. (अ.) अवस्था, स्थितिः (स्त्री.), दशा २, विवरणं, वर्णनं ३. आश्चर्यो-त्पादकघटना।
कैरव, सं. पुं. (सं. न.) कुमुदं २. सितोत्पलं, श्वेतकमलं। (सं. पुं.) कितवः २. शत्रुः।
कैरी, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'अँबिया'।
—आंख, सं. स्त्री., कपिल-पिंगल,-नयनं-नेत्रं।
कैलास, सं. पुं. (सं.) पर्वतविशेषः, शिव-कुबेर,-निवासः।
—नाथ, पति, सं. पुं. (सं.) शिवः।
—वास, सं. पुं. (सं.) मृत्युः।
कैवर्त, सं. पुं. (सं.) दे. 'केवट'।
कैवल्य, सं. पुं. (सं. न.) एकत्वं, असंसृष्टता २. अपवर्गः, मुक्तिः (स्त्री.) ३. उपनिषद्विशेषः।
कैसर, सं. पुं. (लै० सीज़र) सम्राज्, राजाधि-राजः, अधिराजः, अधीश्वरः।
कैसा, वि. (सं. कीदृश) कीदृक्ष, किंरूप, किंविध, किमाकार।
कैसी, वि. स्त्री. (सं. कीदृशी) कीदृक्षी, किंरूपा, किमाकारा, किंविधा।
कैसे, क्रि. वि. (हिं. कैसा) कथं, केन प्रकारेण, कया रीत्या।
कोंकण, सं. पुं. (सं.) दक्षिणदिशि प्रान्तविशेषः।
कोंपल, सं. स्त्री. (सं. कोमल >) पल्लवः-वं, अंकुरः, प्ररोहः, किस (श) लयः-यं, उद्भिद् (पुं.), उद्भिज्जः।
—निकलना या फूटना, क्रि. अ., प्ररुह् (भ्वा. प. अ.), स्फुट् (तु. प. से.) उद्भिद् (कर्म.) फुल्ल्-विकस् (भ्वा. प. से.)।
को, प्रत्य. (यह कर्म और संप्रदान कारक का प्रत्यय है, इसका अनुवाद प्रायः द्वितीया और चतुर्थी के रूपों से होता है। (राम को कह = उ., रामं ब्रूहि, ब्राह्मण को दे = विप्राय देहि)।
कोआ, सं. पुं. (सं. कोशः-षः), (पट्टकीट-) कोशः-षः २. दे. 'कोया'। ३. पनसखंडः-डं ४. दे. 'महुआ' (फल)।

कोई, सर्व (सं. कोऽपि) कश्चन, कश्चित् (पुं.), का,-अपि-चन-चित् (स्त्री.) किं,-अपि-चन-चित् (न.)।

—कोई, वि. स्तोकाः, कतिपयाः, परिमिताः।

—चीज़, सं. स्त्री., किमपि (वस्तु)।

—दम में, क्रि. वि., सपद्येव, तत्काले, झटिति, द्राक् (सब अव्य.)।

—दम का मेहमान, सं. पुं., मुमूर्षु, आसन्न,-मरण-मृत्यु, मरणाभिमुख, मरणोन्मुख।

—न कोई, एष वा परो वा, यः कश्चिदपि, कश्चित्तु।

—नहीं, न कोपि-कापि किंचिदपि इ.।

कोक[1], सं. पुं. (सं.) चक्रवाकः, द्वन्द्वचरः, रथांगः, चक्रः २. मंडूकः ३. विष्णुः (पुं.) ४. वृकः ५. खजरीवृक्षः। [कोकी (स्त्री.), चक्रवाकी, रथांगी इ.]।

कोक[2], सं. पुं. (अं.) न्यङ्गारः।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) कोकपंडितरचितो रतिविज्ञानग्रन्थः।

साफ़्ट-, सं. पुं., मृदुन्यङ्गारः।

हार्ड-, सं. पुं. दृढन्यङ्गारः।

कोकनद, सं. पुं. (सं. न.) रक्तोत्पलं २. रक्त-कुमुदम्।

कोकनी, वि. (देश.) क्षुद्र, लघु।

कोका, सं. पुं. (अं.) वृक्षभेदः।

कोका, सं. पुं. स्त्री. (तु.) धात्री-उपमातृ,-पुत्रः-पुत्री, धात्रेयः-यी।

—बेली,-बेरी, सं. स्त्री. (सं. कोकनदं + हिं. बेला) नीलकुमुदं।

कोकाह, सं. पुं. (सं.) कर्कः, श्वेतघोटकः।

कोकिल, सं. स्त्री. (सं. पुं.) पिकः, पर,-भृतः-पुष्टः, कालः, गन्धर्वः, मधुगायनः, कलकंठः, कुहूरवः, काकलीरवः, वसन्तदूतः, वनप्रियः, ताम्राक्षः। दे. 'कोकिला'।

—बैनी, वि. स्त्री. (सं.+हिं.) सुकंठी, मधुर-भाषिणी।

कोकिला, सं. स्त्री. (सं.) मदनशलाका, पर,-भृता-पुष्टा, वनप्रिया, कलकंठी, ताम्राक्षी, वसंत-दूती।

कोकिलावास, सं. पुं. (सं.) कोकिलोत्सवः, आम्रः, रसालः।

कोकी, सं. स्त्री. (सं.) चक्रवाकी, चक्री, रथांगनाम्नी।

कोकीन, सं. स्त्री. (अं. कोकेन) कोकापत्र-निर्मितमादकपदार्थः * कोकीनम्।

कोको, सं. स्त्री. (अनु.) काकः, वायसः २. काल्पनिकभयहेतुः (पुं.)।

कोख, सं. स्त्री. (सं. कुक्षिः) गर्भाशयः, गर्भ-कोशः-षः।

—जली,-बन्द, वि., वंध्या, सन्तानहीना।

—की आँच, सं. स्त्री., अपत्यप्रेमन् (पुं.), वात्सल्यं, सन्ततिस्नेहः।

—मारी जाना, मु., च्युतगर्भा भू, गर्भः पत् (भ्वा. प. से.) च्यु (भ्वा. आ. अ.)।

—खुलना, मु. सन्तानः उत्पद् (दि. आ. अ.)।

कोचना, क्रि. स., दे. 'चुभाना', 'धँसाना'।

कोचबकस, सं. पुं. (अं. कोचबॉक्स) सूतासनं।

कोचवान, सं. पुं. (अं. कोच>) सारथिः (पुं.), सूतः, वाहकः।

कोजागर, सं. पुं. (सं.) आश्विनी-द्यूत,-पूर्णिमा, कौमुदी, शारदी, शरत्पर्वन् (न.)।

कोट[1], सं. पुं. (सं.) दुर्गं २. प्राचीरं ३. राज-प्रासादः।

—वाल, सं. पुं., कोटपालः, दुर्गाध्यक्षः।

कोट[2], सं. पुं. (अं.) प्रावारः-रकः, कंचुकः।

कोटर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) निष्कुहः, तरु-विवरं, प्रान्तरं २. कोटरावणं, रक्षार्थं कृत्रि-मवनं।

कोटि, सं. स्त्री. (सं.) शतलक्षसंख्या, दे. 'करोड़' २. धनुरग्रं ३. अस्त्रादेः कोणः ४. वर्गः, श्रेणी।

कोटिक, वि. (सं. कोटिः स्त्री.) कोटी-टिः (स्त्री.) लक्षशतकं २. असंख्य, अगणित। सं. स्त्री., उक्ता संख्या तदंकाश्च।

कोटिशः, क्रि. वि. (सं.) बहुधा,-बहुधा २. अनेक-कोटिवारं। वि., बहुसंख्याक, अनेक।

कोटीश्वर, सं. पुं. (सं.) कोट्यधीशः, अति-धनाढ्यः।

कोठरी-ड़ी, सं. स्त्री. (हिं. कोठा) लघु-क्षुद्र,-कोष्ठः-शाला, अन्तःकोष्ठः, गर्भागारं।

कोठा, सं. पुं. (सं. कोष्ठः) गृहं, सदनं, आ-नि,-वासः, वेश्मन्-सद्मन् (न.) २. प्र-,कोष्ठः, शाला ३. पण्यागारं, पण्याधानं ४. धान्यागार, कुशूलः

कोसों दूर, क्रि. वि., अति,-दूरं-दूरे-दूरतः, सुदूरं ।

कोसों दूर रहना, मु., सुदूरं-पृथक् स्था (भ्वा. प. अ.)।

कोसना, क्रि. स., (सं. क्रोशनं >) आक्रुश् (भ्वा. प. अ.), गर्ह् (भ्वा. आ. से.), अभिशंस् (भ्वा. प. से.), शप् (भ्वा. उ. अ.)।

पानी पी पी कर कोसना, मु., अत्यतं आक्रुश् इ. ।

कोह, सं. पुं. (फ़ा.) पर्वतः, गिरिः ।

—नूर, सं. पुं. (फ़ा + अ.) हीरकविशेषः ।

कोहनी, सं. स्त्री., दे 'कुहनी' ।

कोहरा, सं. पुं., दे. 'कुहरा' ।

कोहान, सं. पुं. (फ़ा.) उष्ट्र-क्रमेलक,-ककुद्-ककुदम् ।

कोहिस्तान, सं. पुं. (फ़ा.) पर्वतीयप्रदेशः, शैली स्थली ।

कोहिस्तानी, वि. (फ़ा.) पर्वतीय, शैल (-ली स्त्री.), पर्वतमय (-यी स्त्री.), नगप्राय, सपर्वत । सं. पुं., पर्वत-गिरि-अद्रि,-वासिन् , शैलाटः ।

कौंच, सं. स्त्री. [सं. कच्छुः (स्त्री.) >] रोमवल्ली, शूकशिंबी, वृष्या, २. तस्याः बीजकोषः ।

कौंची, सं. स्त्री. (सं. कंचिका) वेणुशाखा, कुंचिका।

कौंध, सं. स्त्री. (हिं कौंधना >) विद्युद्विलासः, तडिद्द्युतिः, (स्त्री.) चंचलास्फुरणं ।

कौंधना, क्रि. अ. (सं. कननं = चमकना + अंध >) विद्युत् (भ्वा. आ. से.) विद्युत् विलस् (भ्वा. प. से.),-सहसा प्रकाश् (भ्वा.-आ. से.)-स्फुर् (तु. प. से.)।

कौंधा, सं. पुं., दे. 'कौंध'।

कौंसिल, सं. स्त्री. (अं.) सभा, संसद्, सदस् (सब स्त्री.) ।

कौआ, सं. पुं. दे. 'कौवा' ।

कौच, सं. पुं. (अं.) खट्टिका, सन्दी, निषद्या, पेचकः ।

कौटिल्य, सं. पुं. (सं.) चाणक्यः, चंद्रगुप्तमौर्यस्य महामंत्रिन् । (सं. न.) वक्रता, कुटिलता २. दुष्टता, छलं, कपटम् ।

कौटुंबिक, वि. (सं.) कुटुंब-गृहजन-परिवार,-संबंधिन्-विषयक, कौल, पारिवारिक, गृह्य ।

कौड़ा, सं. पुं. (सं. कपर्दकः) वराटः, बालक्रीडकः ।

कौड़ी, सं. स्त्री. (सं. कपर्दिका) वराटिका, काकिनी-णी । २. द्रव्यं, धनं ३. अक्षि-नयन,-गोलः-गोलं ४. मांसग्रंथिः (पुं.) ५. कृपाणाग्रं ६. अधीननृपतिभ्यो ग्राह्यः करः ७. उरोऽस्थि (न.) ।

(दो)—का,—काम का नहीं, मु. अल्पमूल्य, तृणप्राय, निरर्थक, असार ।

—भर, मु., अत्यल्प, किंचिद् , स्वल्प ।

——को मुहताज या तंग होना, मु., अकिंचनत्वं, अत्यंतदारिद्र्यं, नितान्तनिर्धनता ।

——चुकाना, मु., ऋणं निःशेषं परिशुध् (प्रे.)-अपाकृ ।

——जोड़ना, मु., धनं संचि (स्वा. प. अ.)-संग्रह् (क्र्. प. से.) ।

कानी या फूटी कौड़ी, मु. अत्यल्प,-वित्तं-द्रव्यम् ।

कौडियों के मोल, मु., अत्यल्पमूल्येन ।

कौतुक, सं. पुं. (सं. न.) कु(कौ)तूहलं, कुतुकं, जिज्ञासा २. आश्चर्यं ३. विनोदः, नर्मन् (न.) ४. हर्षः ५. खेला, क्रीडा ।

कौतुकी, वि. (सं.-किन्) सलील, सोल्लास, क्रीडाप्रिय, विनोदप्रिय, नर्मगर्भ ।

कौतूहल, सं. पुं., दे. 'कुतूहल' ।

कौन, सर्व. (सं. को नु) 'किं' के तीनों लिंगों के रूप (कः, का, किं इ.) ।

—कौन, कः कः इ. । दो में से—,कतरः, कतरा, कतरत् (पुं. सं. न.) बहुतों में से—, कतमः, कतमा, कतमत् (पुं. स्त्री. न.) ।

कौप, वि. (सं.) कूप-अवट,-विषयक-सम्बन्धिन् ।

कौपीन, सं. पुं. (सं. न.) मलमल्लकः, धटी, धटिका; कच्छा, कच्छटिका, २. गुदलिंगे, गुह्यांगानि ३. पापं ४. अकार्यम् ।

कौबेरी, सं. स्त्री. (सं.) उत्तरदिशा, उदीची ।

क़ौम, सं. स्त्री. (अ.) वर्णः, जातिः (स्त्री.) २. कुलं, वंशः ३. देशः, राष्ट्रं, विषयः ।

कौमार, सं. पुं. (सं. न.) कुमारावस्था (५ अथवा १६ वर्ष पर्यंत), बालत्वम् ।

कौमारिक, वि. (सं.) कुमार,-विषयक-सम्बन्धिन् । सं. पुं., कन्यानामेव जनकः ।

कौमारिकेय, सं. पुं. (सं.) अनूढा-कुमारी-कन्या,-पुत्रः-तनयः ।

क़ौमियत, सं. स्त्री. (अ.) राष्ट्रियता, जातीयता ।

क़ौमी, वि. (अ.) राष्ट्रि(ष्ट्री)य, देशीय, जातीय ।

—हुकूमत, सं. स्त्री., राष्ट्रियशासनं, स्वराज्यं ।

कौमुदी, सं. स्त्री. (सं.) ज्योत्स्ना, दे. 'चाँदनी' ।

कौर, सं. पुं. (सं. कवलः) ग्रासः, गुडकः, पिंडः ।

कौरव, सं. पुं. (सं.) कुरुराजसंतानः ।

—पति, सं. पुं., दुर्योधनः ।

कौल, वि. (सं.) दे. 'कुलीन' ।

कौल, सं. पुं., दे. 'कौर' ।

क़ौल, सं. पुं. (अ.) प्रतिज्ञा, समयः २. उक्तिः (स्त्री.) ।

कौवा, सं. पुं. (सं. काकः) वायसः, ध्वांक्षः, मौकुलिः (पुं.), एकाक्षः उलूकारिः (पुं.), करटः, कुणः, द्रोणः २. अलिजिह्वा, शुंडिका, लंबिका ३. धूर्तः ४. वंचकः ।

—परी, सं. स्त्री., अतिकुरूपिणी नारी ।

—उठाना, मु. वालशुंडिकां उत्स्था (प्रे.) ।

कौशल, सं. पुं. (सं. न.) चातुर्यं, दाक्ष्यं, नैपुण्यं २. कुशलं, मंगलम् ।

कौशलिक, सं. पुं. (सं. न.) उत्कोचः, ढौकनं लम्वा ।

कौशिक, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः २. गाधिनृपः ३. विश्वामित्रः ४. कोषाध्यक्षः ५. कोशकारः ६. उलूकः ७. नकुलः ८. कौशेयवस्त्रं ९. मज्जा १०. उपपुराणविशेषः ।

कौशे(षे)य, वि. (सं.) कौश(ष), कौशि(षि)क । सं. पुं. (सं. न) क्षौमं, चीनांशुकं, पट्टः-ट्टं, पट्टांशुकं, दुकूलं, चीनवासस् (न.) ।

कौस्तुभ, सं. पुं. (सं.) विष्णुवक्षःस्थो मणिः (पुं.) ।

क्या, सर्व. (सं. किम्) ।

वि., कियत् , २. अत्यधिक ३. कीदृश, विचित्र ४. अत्युत्तम ।

अव्य. किम् ।

—कहना है या—बात है, मु., साधु, साधु-साधु, सुष्ठु, उत्तमं (सब अव्य.) ।

—खूब, मु., साधु, सुष्ठु इ. ।

क्यारी, सं. स्त्री. (सं. केदारः) राजिका ।

क्यों, क्रि. वि. (सं. किम्) किं, केन हेतुना-कारणेन, किन्निमित्तं, किमर्थं, कुतः, कस्मात् २. कया रीत्या, कथम् ।

—कर, कथं, केन प्रकारेण २. किमर्थं, किम् ।

—कि,—यतः, यत् , यस्मात् ।

—नहीं, निःसंदेहं, निःसंशयं, अवश्यं, ध्रुवम् ।

क्रंदन, सं. पुं. (सं. न.) रोदनं, रुदितं, अश्रु-पातः २. परिदेवना-नं, आ-वि,-क्रोशः ।

क्रतु, सं. पुं. (सं.) यज्ञः, यागः २. संकल्पः ३. अभिलाषः ४. विवेकः ५. इन्द्रियं ६. जीवः ७. विष्णुः ८. आषाढः ९. श्रीकृष्णपुत्रः ।

क्रम, सं. पुं. (सं.) अनुक्रमः, आनुपूर्वी-र्व्यं, पारंपर्यं, परंपरा, विन्यासः, व्यवस्था, संविधानं, विरचनं २. प्रकार, विधिः (पुं.) रीतिः (स्त्री.) ३. पादविन्यासः ४ काव्यालंकारभेदः ।

——करके या से, क्रि. वि., अनुक्रमं, यथाक्रमं, अनुपूर्वशः. आनुपूर्व्येण २. शनैः शनैः, अल्पाल्पशः, उत्तरोत्तरम् ।

क्रमण, सं. पुं. (सं.) पादः, चरणः २. अश्वः, घोटः । (सं. न.) गमनं, चलनम् २. उल्लंघनम्, अतिक्रमणम् ।

क्रमशः क्रि. वि. (सं.) दे. 'क्रम क्रम करके' ।

क्रमांक, सं. पुं. (सं.) क्रम,-संख्या-गणना ।

क्रमागत, वि. (सं.) क्रम-आनुपूर्व्येण,-आगत-प्राप्त २. आनुवंशिक, परंपरा-प्राप्त ।

क्रमानुसार, क्रि. वि. (सं.-रम्) क्रमशः, यथाक्रमं, आनुपूर्व्येण, अनुपूर्वशः (सब अव्य.) ।

क्रमिक, वि. (सं.) क्रम-परम्परा,-आगत-आयात, अनुपूर्व, क्रमबद्ध, आनुक्रमिक (-की स्त्री.) २. परम्परीय-ण, पैतृक (-की स्त्री.), पित्र्य ।

क्रमुक, सं. पुं. (सं.) दे. 'सुपारी' ।

क्रय, सं. पुं. (सं.) दे. 'ख़रीद' ।

—विक्रय, सं. पुं., दे. 'ख़रीद-फ़रोख़्त' ।

क्रव्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मांस' ।

क्रव्याद, सं. पुं. (सं.) राक्षसः, पिशाचः २. सिंहः ३. श्येनः ४. मांसाशिन् (पुं.) ।

क्रान्ति सं. स्त्री. (सं.) महत्परिवर्तनं, परिवर्तः, २. चरणन्यसनं ३. सूर्यभ्रमणमार्गः ४. राज,-द्रोहः-विरोधः, राज्यविप्लवः, प्रजाक्षोभः ।

क्रिकेट, सं. पुं. (अं.) पट्टगेन्दुकम् ।

क्रिया, सं. स्त्री. (सं.) कर्मन् (न.), कार्यं, व्यापारः २. चेष्टा ३. आरम्भः ४. व्यापार-निर्देशकः शब्दः (व्या.) ५. नित्यकर्मन् (न.) ६. श्राद्धादिकर्मन् ७. चिकित्सा ।

—कर्म, सं. पुं. (सं. न.) अन्त्येष्टि-मृतक-, क्रिया-कर्मन् ।

—विशेषण, सं. पुं. (सं. न.) क्रियाया भाव-कालरीत्यादिद्योतकः शब्दः (व्या.) ।

—इन्द्रिय, सं. स्त्री. (सं. न.) दे. 'कर्मेन्द्रिय'

क्रिस्टल, सं. पुं. (अं.) स्फटम् ।

क्रिस्ता(स्टा)न, सं. पुं. (अं. क्रिश्चियन्), खिस्तानुयायिन् ।

क्रीडा, सं. स्त्री. (सं.) खेला, लीला, कूर्दनं, खेलनं, विहारः २. कौतुकं, विनोदः विलासः ।

क्रीत, वि. (सं.) कृतक्रय, मूल्येन लब्ध ।

क्रीतक, सं. पुं. (सं.) क्रीतपुत्रः ।

क्रुद्ध, वि. (सं.) कुपित, रुष्ट, कोपिन्, सामर्ष, सकोप, सरोष, समन्यु, क्रोध-कोप,-युक्त ।

क्रूर, वि. (सं.) निर्दय, कठोर, नृशंस, पाषाण-कठिन,-हृदय, निर्घृण, क्रूरकर्मन्, निष्करुण २. परपीडक ३. कठिन ४. तीक्ष्ण ५. उष्ण ६. नीच ७. घोर ।

—कर्मा, वि. (सं.-र्मन्) घोर, निर्दय, दारुण ।

क्रूरता, सं. स्त्री. (सं.) निर्दयता, कठोरता, नृशंसता इ. । २. रौद्रता, तीक्ष्णता ३. दुष्टता ।

क्रोड, सं. पुं. (सं. न.) वाह्वोर्मध्यं, भुजांतरं, उपस्थः, उत्संगः, भोगः, अंकः २. उरस्-वक्षस् (न.), उत्तसम् ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) परिशिष्टं, अंकपत्रं, पूरकपत्रम् ।

क्रोध, सं. पुं. (सं.) कोपः, रोषः, अमर्षः, मन्युः (पुं.), प्रतिघः, भीमः, क्रुधा, रुषा, रुष्-क्रुध् (स्त्री.) दे. 'गुस्सा' ।

—करना, क्रि. अ., क्रुध् (दि. प. अ.), कुप् (दि. प. से.) ।

क्रोधित, वि. (सं.) दे. 'क्रुद्ध' ।

क्रोधी, वि. (सं.-धिन्) कोपिन्, रोषिन्, अमर्षिन्, दे. 'क्रुद्ध' ।

क्रोश, सं. पुं. (सं.) दे. कोस' ।

क्रौंच, सं. पुं. (सं.) क्रुंचः-न्चा, क्रौंचा, क्रुंच् (पुं.), कलिकः, कालि(ली)कः ।

क्लब, सं. पुं. (अं.) गोष्ठीगृहम् ।

क्लर्क, सं. पुं. (अं.) लिपि-पंजी,-कारः, लेखकः, कायस्थः, वोर(ल)कः ।

क्लांत, वि. (सं.) म्लान, खिन्न, परि,-श्रांत, जातखेद, आयस्त ।

—मना, वि. (सं.-नस्) दुर्मनस्क, विमनस्क, खिन्न ।

क्लांति, सं. स्त्री. (सं.) श्रमः क्लमः, आयासः, श्रान्तिः (स्त्री.), खेदः अवसादः ।

क्लाक, सं. पुं. (अं.) कुड्य-भित्ति,-घटी ।

—टावर, सं. पुं., घंटा,-आलयः-गृहम् ।

क्लिष्ट, वि. (सं.) दुःखित, क्लेशित, आर्त, पीडित २. दुष्कर, कठिन, दुस्साध्य ।

क्लीव, सं. पुं. (सं.) षं (शं) ढः, संडः, शंढः, नपुंसकः, पुरुषत्वहीन २. दे. 'कायर' ।

क्लीवता, सं. स्त्री. (सं.) शं(षं)ढता, नपुंसकता २. कातरता ।

क्लेद, सं. पुं. (सं.) आर्द्रता, स्तेमः, तेमः । २. प्रस्वेदः ।

क्लेश, सं. पुं. (सं.) दुःखं, कष्टं, पीडा, व्यथा, वेदना, चिंता, आस्रवः, आदीनवः ।

क्लेशित, वि. (सं.) दे. 'क्लिष्ट' (१) ।

क्लैव्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'क्लीवता' ।

क्लोम, सं. पुं. (सं. न.) कोमं, क्लोमन् (न.), तिलकं, फुप्फुसं, दे. 'फेफड़ा' ।

क्लोरीन, सं. स्त्री. (अं.) नीरजी, हरिनम् ।

क्लोरोफार्म, सं. पुं. (अं.) मूर्च्छकम्, संज्ञालोपकम् (औषधभेदः) ।

क्वणित, वि. (सं.) ध्वनित, सरव, सशब्द । सं. पुं. (सं. न.) शब्दः, स्वनः ।

क्वथित, वि. (सं.) श्राण, श्रृत, श्रपित ।

क्वाथ, सं. पुं. (सं.) दे. 'काढा' ।

क्वारंटाइन, सं. पुं. (अं.) निषिद्धसंसर्गगृहं, २. संसर्गप्रतिबन्धः, गमनागमननिषेधः ।

क्वारा, वि. (सं. कुमार) दे. 'कुंवारा' ।

क्वार्टर, सं. पुं. (अं) (राज्यसंस्थादिनिर्मितं) गृहं, गेहं, सदनं, भवनम् । २. पादः, चतुर्थांशः ३. त्रिमासम्, वर्षपादः ।

क्वीन, सं. स्त्री. (अं.) राज्ञी, राजपत्नी ।

क्षंतव्य, वि. (सं.) क्षमार्ह, मर्षणीय, सोढव्य ।

क्षण, सं. पुं. (सं.) अत्यल्पसमयः, मुहूर्तः, निमेषः, पलं, त्रिंशत्कलापरिमितकालः २. समयः ३. अवसरः ४. उत्सवः ।

—प्रभा, सं. स्त्री., विद्युत् (स्त्री.), चंचला ।
—भंगुर, वि., विनश्वर, क्षणिक, अस्थिर ।
—भर, क्रि. वि., क्षणमात्रं, मुहूर्त-पल,-मात्रम् ।
क्षणिक, वि. (सं.) क्षणस्थायिन्, अनित्य, अस्थिर, वि-नश्वर, निस्सार, अस्थायिन् ।
क्षत, वि. (सं.) व्रणित, भिन्नदेह, ताडित, क्षतियुक्त, आहत ।
सं. पुं. (सं. न.) व्रणः, क्षतिः (स्त्री.), अरुस् (न.), आघातः, ईर्मं २. स्फोटः, पिटकः ।
—योनि, वि. स्त्री. (सं.) संभुक्ता, कृतसहवासा ।
—विक्षत, वि. (सं.) अतीव व्रणित-विद्ध-आहत ।
क्षति, सं. स्त्री. (सं.) क्षयः, नाशः २. अपचयः, हानिः (स्त्री.) ३. व्रणः, ईर्मम् ।
क्षत्र, सं. पुं. (सं. न.) बलं, शक्तिः (स्त्री.) २. राष्ट्र ३. धनं ४. शरीरं ५. जलं ६. तगर-वृक्षः । (सं. पुं.) क्षत्रियः ।
—पति, सं. पुं., नृपः ।
क्षत्राणी, सं. स्त्री. (सं. क्षत्रियाणी) (क्षत्रिय जाति की स्त्री) क्षत्रिया, क्षत्रिय(यि)का, क्षत्रि-याणी २.(क्षत्रिय की पत्नी) क्षत्रियाणी, क्षत्रियी ।
क्षत्रिय, सं. पुं. (सं.) वर्णविशेषः २. राजन्यः, बाहुजः, मूर्द्धाभिषिक्त, क्षत्रः ३. योधः, भटः, वीरः ।
क्षत्री, सं. पुं. दे. 'क्षत्रिय' ।
क्षपणक, सं. पुं. (सं.) दिगम्बरयतिः २. बौद्ध-भिक्षुः ३. कविविशेषः । वि., निर्लज्ज ।
क्षपा, सं. स्त्री. (सं.) रात्रिः (स्त्री.), निशा, यामिनी ।
—कर,-नाथ, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः, सोमः ।
क्षम, वि. (सं.) शक्त, समर्थ, उपयुक्त, योग्य ।
क्षमता, सं. स्त्री. (सं.) योग्यता, सामर्थ्यं, शक्तिः (स्त्री.) ।
क्षमा, सं. स्त्री. (सं.) क्षांतिः (स्त्री.), तितिक्षा, सहिष्णुता, मर्षणं, सहनशीलता २. पृथिवी ३. खदिरवृक्षः, ४. दक्षकन्या ५. दुर्गा ६. वेत्र-वती नदी ७. राधिकासखी ८. वर्णवृत्तभेदः ।
—करना, क्रि. स., क्षम् (भ्वा. आ. वे; दि. प. वे.), सह् (भ्वा. आ. से.), मृष् (दि. उ. से.) ।
—शील, वि. (सं.) क्षमिन्, क्षमावत, क्षमितृ, सहिष्णु, सहन, क्षन्तृ, तितिक्षु, क्षमायुक्त ।
क्षमावान, वि. (सं.-वत्) दे. 'क्षमाशील' ।
क्षम्य, वि. (सं.) क्षन्तव्य, क्षमार्ह, क्षमोचित, मर्षणीय, सोढव्य ।
क्षय, सं. पुं. (सं.) अपचयः, ह्रासः २. कल्पांतः प्रलयः ३. नाशः, प्रध्वंसः ४. गृहं ५. यक्ष्मः, यक्ष्मन् (पुं.), राजयक्ष्मन् (पुं.) ६. रोगः ७. अंतः, अवसानं, क्षयरोगः, शोषः, रोगराजः, गदाग्रणीः (पुं.), अतिरोगः, रोगाधीशः नृपामयः ।
—कास, सं. पुं. (सं.) क्षयथुः, यक्ष्मकासः(पुं.) ।
—मास, सं. पुं. (सं.) मलिम्लुचः, मल-अधिक,-मासः ।
—रोग, सं. पुं., दे. 'क्षय' (५) ।
—रोगी, सं. पुं. (सं.-गिन्) क्षयिन्, यक्ष्मिन्, रोगराज-शोष,-ग्रस्तः ।
क्षयी, वि. (सं.-यिन्) अपचयिन्, ह्रासिन् २. शोषिन्, यक्ष्मिन्, रोगराजपीडित ।
—रोग, सं. पुं., दे, 'क्षय' (५) ।
क्षर, वि. (सं.) नश्वर, अनित्य ।
क्षरण, सं. पुं. (सं. न.) शनैः शनैः-बिंदुशः-विप्रुट्क्रमेण गलनं-स्यंदनं-स्रवणम् ।
क्षांत, वि. (सं.) क्षमाशील, क्षमावत्, क्षमिन् २. सहिष्णु, सहनशील ।
क्षांति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'क्षमा' (१) ।
क्षार, सं. पुं. (सं.) सर्जिका, विडलवणं २. लवणं ३. दे. 'शोरा' ४. दे. 'सुहागा' ५. भस्मन् (न.) ।
क्षिति, सं. स्त्री. (सं.) भूमिः (स्त्री.), पृथिवी २. क्षयः, ह्रासः, नाशः ।
—पाल, सं. पुं. (सं.) नृपः ।
क्षितिज, सं. पुं. (सं. न.) दिक्-चक्रं-तटं, दिगंतः, दिङ्मंडलं, अंबरांतः, आकाशकक्षा । २. मंगलग्रहः, कुजः ३. वृक्षः ४. दे. 'केंचुआ' ।
क्षिप्त, वि. (सं.) त्यक्त, विसृष्ट, प्रास्त २. विकीर्ण ३. अवज्ञात ४. पतित ५. वातरोगग्रस्त ।
क्षिप्र, क्रि. वि. (सं. न.) द्रुतं, सपदि, द्राक्, दे. 'शीघ्र' ।
वि., त्वरित, सत्वर, जवन, वेगवत्, शीघ्र ।
—हस्त, वि. (सं.) शीघ्रकारिन्, आशुकर्तृ ।
क्षीण, वि. (सं.) सूक्ष्म, प्र-,तनु, श्लक्ष्ण २. कृशांग, कृश, क्षाम, क्षीण-शुष्क,-मांस ३. नष्ट, ध्वस्त, क्षयंगत ।

क्षीणता, सं॰ स्त्री॰ (सं॰) दुर्बलता, निःशक्तता २. सूक्ष्मता, तनुता ३. कृशता, क्षामता ४. ह्रासः, अपचयः, नाशः ।

क्षीर, सं॰ पुं॰ (सं॰ न॰) दुग्धं, पयस् (न॰) २. जलं ३. पायसं-सः ।

—निधि, सं॰ पुं॰ (सं॰) सागरः ।

—नीर, सं॰ पुं॰ आलिंगनं २. मिश्रणम् ।

—सागर, सं॰ पुं॰ (सं॰) क्षीराब्धिः (पुं॰) दुग्ध,-सागरः-समुद्रः, क्षीरोदः ।

—सार, सं॰ पुं॰, दे॰ 'मक्खन' ।

क्षीरज, सं॰ पुं॰ (सं॰) चंद्रः २. शंखः ३. कमलं ४. दधि (न॰) ।

क्षीरजा, सं॰ स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'लक्ष्मी' ।

क्षीरधि, सं॰ पुं॰ (सं॰) सागरः, समुद्रः ।

क्षीरोद, सं॰ पुं॰ (सं॰) दे॰ 'क्षीरसागर' ।

क्षीव, वि॰ (सं॰) उन्मद, समद, मदोन्मत्त ।

क्षुण्ण, वि॰ (सं॰) प्रहृत, चूर्णीकृत, खंडशो भिन्न ।

क्षुद्र, वि॰ (सं॰) अधम, निकृष्ट, नीच २. अल्प, स्तोक ३. कृपण ४. कुटिल ५. दरिद्र ।

क्षुद्रता, सं॰ स्त्री॰ (सं॰) तुच्छता, निकृष्टता २. कुटिलता ३. दरिद्रता ।

क्षुधा, सं॰ स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'भूख' ।

क्षुधातुर, **क्षुधार्त**, **क्षुधित** } वि॰ (सं॰) दे॰ 'भूखा' ।

क्षुप, सं॰ पुं॰ (सं॰) क्षुपकः, क्षुद्रवृक्षः गुल्मः-मं ।

क्षुब्ध, वि॰ (सं॰) व्याकुल, विह्वल, आतुर, उद्विग्न २. चंचल ३. भीत, त्रस्त ४. क्रुद्ध ।

क्षुर, सं॰ पुं॰ (सं॰) नापितस्य लोमछेदकशस्त्रं, क्षौरी, क्षुरी, खुरः २. शफं-फः, गवादीनां पादाग्रम् ।

क्षुरी, सं॰ पुं॰ (सं॰-रिन्) नापितः, क्षौरिकः, मुंडः, मुंडिन् ।

क्षुल्लक, वि॰ (सं॰) स्वल्प, स्तोक २. दुष्ट, दुर्वृत्त ३. निर्धन, दरिद्र । सं॰ पुं॰, वालः, बालकः ।

क्षेत्र, सं॰ पुं॰ (सं॰ न॰) केद (दा) रः, भूमिः (स्त्री॰), वप्रः-प्रं । २. समभूमिः ३. उत्पत्ति-स्थानं, उद्भवः, उद्गमः ४. प्रदेशः ५. तीर्थस्थानं ६. राशिः (पुं॰, मेषादि) ७. पत्नी ८. शरीरं ९. अंतःकरणं १०. रेखावेष्टितं स्थानम् ।

—गणित, सं॰ पुं॰ (सं॰) गणितशाखाभेदः ।

—फल, सं॰ पुं॰ (सं॰ न॰) वर्गपरिमाणम् ।

क्षेत्रज, सं॰ पुं॰ (सं॰) नियोगजपुत्रः (धर्मशास्त्र) ।

क्षेत्रज्ञ, सं॰ पुं॰ (सं॰) जीवः २. ईश्वरः ३. कृपाणः । वि॰, ज्ञातृ, दक्ष, निपुण ।

क्षेप, सं॰ पुं॰ (सं॰) क्षेपणं, प्रेरणं, प्रासनं, विसर्जनं २. निन्दा ३. यापनं ४. दूरता ।

क्षेपक, वि॰ (सं॰) क्षेप्तृ, प्रासक, प्रेरक २. मिश्रित ३. निन्दनीय । सं॰ पुं॰, नाविकः २. प्रक्षिप्त-निवेशित,-लेखः ।

क्षेपण, सं॰ पुं॰ (सं॰ न॰) दे॰ 'क्षेप' (१-३) ।

क्षेपणी, सं॰ स्त्री॰ (सं॰) अस्त्रविशेषः २. नौका-दंडः, क्षेपणिः (स्त्री॰) ।

क्षेम, सं॰ पुं॰ (सं॰ पुं॰ न॰) लब्धरक्षणं प्राप्तरक्षा २. मंगलं, कुशलं ३. अभ्युदयः ४. आनंदः ५. मुक्तिः (स्त्री॰) ।

क्षोणि, सं॰ स्त्री॰ (सं॰) क्षोणी पृथिवी ।

—पति, —पाल, सं॰ पुं॰ (सं॰) नृपः, भूपः ।

क्षोद, सं॰ पुं॰ (सं॰) चूर्णं, पिष्टं २. पेषणं ३. जलं ।

क्षोभ, सं॰ पुं॰ (सं॰) अशांतिः-अनिर्वृतिः (स्त्री॰), चित्तचांचल्यं व्यग्रता, उद्वेगः, व्याकुलता २. भयं ३. शोकः ४. क्रोधः ।

क्षोभित, वि॰ (सं॰) दे॰ 'क्षुब्ध' ।

क्षोणी, सं॰ स्त्री॰ (सं॰) क्षोणिः (स्त्री॰), पृथिवी ।

क्षौद्र, सं॰ पुं॰ (सं॰ न॰) मधु (न॰) २. जलं ३. क्षुद्रता । (सं॰ पुं॰) चंपकवृक्षः ४. वर्णसंकरविशेषः ।

क्षौम, सं॰ पुं॰ (सं॰ पुं॰ न॰) अट्टः, अट्टालिका (२-४) पट्ट-अतसी-शणज,-वस्त्रं ।

क्षौर, सं॰ पुं॰ (सं॰ न॰) } दे॰ 'हजामत' ।
—कर्म, सं॰ पुं॰ (सं॰-र्मन् न॰) } दे॰ 'हजामत' ।

क्षौरिक, सं॰ पुं॰ (सं॰) दे॰ 'नाई' ।

क्ष्मा, सं॰ पुं॰ (सं॰) पृथिवी, अवनी ।

क्ष्वेड, सं॰ पुं॰ (सं॰) ध्वनिः, शब्दः २. विषं ३. कर्णरोगभेदः ।

ख

ख, देवनागरीवर्णमालाया द्वितीयव्यंजनवर्णः, खकारः ।

खं, सं॰ पुं॰ (सं॰ न॰) शून्यस्थानं २. छिद्रं ३. आकाशं ४. इंद्रियं ५. विंदुः (पुं॰), शून्यं ६. स्वर्गः ७. सुखं ८. ब्रह्मन् (न॰) ।

खंख, वि॰ (सं॰) रिक्त, शून्य २. निर्जन, वन्य ।

खँखरा, वि॰, दे॰ 'खाँखर' ।

खँखार, सं॰ पुं॰, दे॰ 'खखार' ।

खंगर, सं॰ पुं॰ (देश॰) एकीभूतोऽतिपक्वेष्टकाचयः । वि॰, अतिशुष्क ।

खँगालना, क्रि. स., (सं. क्षालनं) ईषत् धाव् (भ्वा., चु. उ. से.)-प्रक्षल् (चु.) ।

खंज, सं. पुं. (सं.) खोरः, खोलः, खोटः, खोडः, विकलगतिः २. पादरोगभेदः ।

खंजन, सं. पुं. (सं.) खंजरीटः, खंजखेलः, मुनिपुत्रकः, रत्ननिधिः (पुं.), गूढनीडः ।

खंजर, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'कटार' ।

खंजरी, सं. स्त्री. (सं. खंजरीट = एक ताल >) लघु, डमरुः-डिंडिमः ।

खंजरीट, सं. पुं. (सं.) दे. 'खंजन' ।

खँड, सं. पुं. (सं. खंडम्) दे. 'खाँड़' ।

खंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) लवः, शकलः-लं, अंशः, विभागः. वि-,दलं, भिन्नं २. देशः ३. नवसंख्या ४. रत्नदोषभेदः ५. अध्यायः ६. पाक्यः, कृष्णलवणं ७. दिशा । वि., अल्प, लघु, अपूर्ण ।

—करना, क्रि. सं. खंडशः-लवशः छिद् (रु. प. अ.)-लू (क्र. उ. से.)—कृत् (तु. प. से.) ।

—काव्य, सं. पुं. (सं. न.) लघुप्रबन्धकाव्यम् ।

—प्रलय, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मांडस्य एकदेशीय-आंशिक,-नाशः-विध्वंसः-क्षयः ।

खंडन, सं. पुं. (सं. न.) भंजनं, भेदनं, छेदनं, कर्तनं, त्रोटनम् २. प्रत्याख्यानं, निराकरणं, निरसनम् ।

खंडनीय, वि. (सं.) भेत्तव्य, छेत्तव्य २. प्रत्याख्येय, निरसनीय ।

खंडर, सं. पुं. (सं. खंडः + हिं. घर) ध्वंसावशेषः, जर्जर-जीर्ण-शीर्ण,-गृहं-नगरम् ।

खंडरिच, सं. पुं., दे. 'खंजन' ।

खंडशः, अ. (सं.) विभागशः, अंशशः, अवयवशः (सव अव्य.) ।

खंडहर, सं. पुं., दे. 'खंडर' ।

खंडित, वि. (सं.) भग्न, त्रुटित, लून, छिन्न २. असमग्र, अपूर्ण ।

खंदक़, सं. स्त्री. (अ.) परिखा, खेयं, राजधान्यादिवेष्टनखातं, २. बृहत्,-श्वभ्रं-गर्तः-अवटः ।

ख़ंदा, वि. (फ़ा.) सहास, हासक । सं. पुं., हासः, हास्यम् ।

—पेशानी, वि. स्मेरानन, हास्यमुख ।

खंबा, खंभ, खंभा, सं. पुं. (सं. स्कंभः) उप-, स्तंभः, अवष्टंभः, स्थाणुः (पुं.), स्थूणा ।

ख, सं. पुं. (सं. न.) गर्तः-र्ता, अवटः २. रिक्तस्थानं ३. निर्गमः ४. बिलं, विवरं ५. इन्द्रियं ६. कूपः ७. इषुव्रणः ८. शकटचक्रनाभिच्छिद्रं ९. आकाशं १०. स्वर्गः ११. बिंदुः (पुं.), शून्यं १२. ब्रह्मन् (न.) १३. शब्दः १४. कंण्ठस्थ प्राणनाडी १५. सुखं १६. क्षेत्रं १७. पुरं । (सं. पुं.) सूर्यः ।

खक्खा[1], सं. पुं. (अनु.) अट्टहासः, उच्चैर्हासः, प्र-अति,-हासः ।

खक्खा[2], सं. पुं. (हिं. खत्री का 'ख') पांचनदः क्षत्रियः २. अनुभवी पुरुषः ३. महागजः ।

खखार, सं. पुं. (अनु.) कफः, श्लेष्मन् (पुं.), संघातः, सौम्यधातुः (पुं.), घनः ।

खखारना, क्रि. अ. (अनु.) कफं निःसृ (प्रे.)-उद्गॄ (तु. प. से.), निष्ठिव् (भ्वा. दि. प. से.) ।

खखोंडर, सं. पुं. (सं. खं + कोटरः >) तरुकोटरस्थः स्थं खगनीडः-डं २. उलूक,-निलयः-कुलायः ।

खग, सं. पुं. (सं.) पक्षिन् (पुं.), अंडजः, नीडजः २. गंधर्वः ३. देवः ४. बाणः ५. ग्रहः ६. मेघः ७. सूर्यः ८. चंद्रः ९. वायुः (पुं.) ।

—पति, सं. पुं. (सं.) खगेशः, वैनतेयः, गरुडः, खगकेतुः (पुं.), खगराजः ।

खगोल, सं. पुं. (सं.) आकाश-गगन,-मंडलं, गगनाभोगः ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) ज्योतिःशास्त्रं, ज्योतिषं ।

खचखच, सं. स्त्री. (अनु.) पंके चलनध्वनिः(पुं.) ।

खचना, क्रि. अ. (सं. खचनं) खच्-निवेश्-प्रतिवप् (कर्म.) ३. अंकित-चित्रित (वि.) + भू ।

खचर, सं. पुं. (सं.) सूर्यः २. मेघः ३. ग्रहः ४. नक्षत्रं ५. वायुः ६. पक्षिन् (पुं.) ७. बाणः ८. राक्षसः । वि. नभश्चर, गगनचारिन् ।

खचरा, वि. (हिं खचर) वर्णसंकर, मिश्रज २. दुष्ट, खल ।

खचाखच, क्रि. वि. (अनु.) निबिडं, गाढं, अविरलं, निरंतरं । वि. जनाकीर्ण, जनसंकुल ।

—भरना, क्रि. अ., सं-आ-कॄ (कर्म.), परिपॄ (कर्म.), संकुल-समाकुल (वि.) + भू ।

खचित, वि. (सं.) निवेशित, प्रत्युप्त २. लिखित, चित्रित ।

ख़च्चर, सं. पुं. (देश.) वेगसरः, वेस (श) रः, अश्वतरः (स्त्री. अश्वतरी)।

खज, सं. पुं. (सं.) खजकः, मंथनः, तक्राटः २. मंथनं, मंथः ३. युद्धं, संग्रामः ४. कंवी-विः (स्त्री.)।

ख़ज़ानची, सं. पुं. (फ़ा.) कोष-धन,-अध्यक्षः-अधीशः, अर्थाधिकारिन् ।

ख़ज़ाना, सं. पुं. (अ.) कोशः-षः, निधानं, निधिः (पुं.), द्रव्य,-राशिः (पुं.)-संग्रहः २. वित्तं, द्रविणं ३. कोशागारं, भांडागारं, कोश (ष) गृहम् ।

खजिल, वि. (फ़ा.) लज्जित, व्रीडित, त्रपित ।

खजुली, सं. स्त्री. (सं. खर्ज्जूः स्त्री.) दे. 'खुजली'।

खजूर, सं. पुं. स्त्री. (सं. खर्जूरः) (वृक्ष) खर्जूरी, दुष्प्रधर्षा, दुरारोहा, यवनेष्टा, हरिप्रिया २. (फल) खर्जूरं, खर्जूरीफलम् । ३. मिष्टान्न-भेदः, खर्जूरिका ।

खजूरी, वि. (हिं खजूर) खर्जूर,-विषयक-संबं-धिन्, खार्जूर २. वेणीरूपेणग्रथित, व्यावर्तित ।

खटक, सं. स्त्री. (अनु.) भय, त्रासः २. चिंता ।

खट[1] वि. (सं. षट्) दे. 'छः'।

खट[2], सं. पुं. (अनु.) संघट्टजो ध्वनिः (पुं.), खटितिशब्दः, खटाखटशब्दः ।

—से, क्रि. वि., सपदि, झटिति, क्षणेन ।

खटकना, क्रि. अ. (अनु.) खटखटायते (ना. धा.), खटखटा-शब्दं कृ २. मुहुः मुहुः पीड् (कर्म.)-उद्दीप् (दि. आ. से.) ३. अयुक्त-असमीचीन-अनुचित (वि.)+प्रति-इ (कर्म.) ४. भी (जु. प. अ.), त्रस् (दि. प. से.) ५. वैरायते-कलहायते (ना. धा.), विवद् (भ्वा. आ. से.) ६. अनिष्ट-अपकारं आशंक् (भ्वा. आ. से.)।

खटका, सं. पुं. (हिं. खटकना) खटखटा,-शब्दः-नादः-ध्वनिः २. भयं, त्रासः, आशंका ३. चिंता ४. कीलः-लं ५. अर्गलं, तीलकं ६. पादशब्दः ।

—लगना, क्रि. अ., त्रस् (दि. प. से.), चिंतित-व्यग्र (वि.)+भू ।

खटकाना, क्रि. स., दे. 'खटखटाना'।

खटकीड़ा, सं.पुं.(सं. खट्वाकीटः) दे. 'खटमल'।

खटखट, सं. स्त्री. (अनु.) खटखटा,-शब्दः-ध्वनिः (पुं.) नादः २. कलहः, विवादः ३. दे. 'झंझट'।

खटखटाना, क्रि. स. (अनु.) तीव्रं अभिहन् (अ. प. अ.)-तड् (चु.) प्रहृ (भ्वा. प. अ.) खटखटाशब्दं कृ २. स्मृ (प्रे.)।

खटगीर, सं. पुं., दे. 'खटमल'।

छटछप्पर, सं. पुं., दे. 'मसहरी'।

खटना, क्रि. स., दे. 'कमाना'।

खटपट, सं. स्त्री. (अनु.) कलहः, विवादः २. खटखटाशब्दः, शस्त्र,-घोषः-शिंजितम् ।

खटबुना, सं. पुं. (हिं. खाट+बुनना) खट्वा, वायः-वापः, मंच-पर्यंक,-वायः-वापः ।

खटमल, सं. पुं. (सं. खट्वामलं>) उद्दंशः, मत्कुणः, ओकणः, ओकोदनी ।

खटमीठा, वि. (हिं. खट्टा+मीठा) अम्ल-मधुर, शुक्तमिष्ट ।

खटराग, सं. पुं. (सं. षड्रागाः) मेघदीपकादयः षड्रागाः २. कलहः ३. विस्वरता, विसंवादः ३. व्यर्थवस्तुजातम् ।

खटाई, सं. स्त्री. (हिं. खट्टा) अम्लता, शुक्तता २. अम्लः, द्रावकं ३. अम्ल-शुक्त,-पदार्थः ।

—वढ़ना, सं. पुं., अम्लरोगः (अजीर्णभेदः)।

—में पड़ना, मु., चिरायते-मन्दायते (ना. धा.), व्याक्षिप् (कर्म.), अनिर्णीत (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.)।

खटाका, सं. पुं. (अनु.) खट्कारः, खटिति शब्दः, महा,-शब्दः-रवः ।

खटखटा, सं. पुं. (अनु.) दे. 'खटखट' १. शिंजितं, क्वणितं । क्रि. वि., सखटखटाशब्दं २. अनवरतं, सपदि ।

खटापटी, सं. स्त्री. दे. 'खटपट' १. ।

खटाव[1], सं. पुं. (देश.) नौकाबन्धनकीलः-लम् ।

खटाव[2], सं. पुं., दे. 'निर्वाह'।

खटास[1], सं. पुं. (सं. खट्टासः-शः) गंधमार्जारः, वनेवासनः ।

खटास, सं. स्त्री. (हिं. खट्टा) अम्लता, शुक्तता ।

खटिक, सं. पुं., फलशाकविक्रेतृजातिभेदः, *खटिकः ।

खटिया, सं. स्त्री. (हिं. खाट) लघु,-खट्वा-पर्यंकः-मंचः, खट्विका, खट्वाका ।

खटीक, सं. पुं. (सं. खट्टिकः) सौनिकः, शौनिकः २. व्याधः, लुब्धकः, जालिकः ३. दे. 'खटिक'।

खटोलना, सं. पुं., दे. 'खटिया'।

खटोला, सं. पुं. (हिं. खाट) दे. 'खटिया'।

खट्टा, वि. (सं. कटु >) अम्ल, शुक्त।

सं. पुं., बीज-फल,-पूरः, दंतशठः, जम्भकः, जम्भलः छोलंगः।

—चूक, वि., अति-अत्यन्त,-अम्ल-शुक्त।

—मीठा, वि., दे, 'खटमीठा'।

—सा, वि., ईषदम्ल, आशुक्त।

जी—होना; मु., गतस्पृह-निर्विण्ण-वितृष्ण (वि.)+भू।

खट्टास, सं. स्त्री. (हिं. खट्टा) दे. 'खटास' (२)।

खट्टू, सं. पुं. (पं. खटना) धनार्जकः, वित्तोपार्जकः २. कर्म,-करः-कारः।

खट्वा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'खाट'।

खड, सं. (सं. खातं) गर्तः-र्ता, अवटः, बिलं, विवरं २. दरी, उपत्यका।

खड़कना, क्रि, अ. (अनु.) खड़खड़ा शब्दं कृ। दे. 'खटकना'।

खड़का, सं. पुं., दे. 'खटका'।

खड़काना, क्रि. स. } दे. 'खटखटाना'।
खड़खड़ना, क्रि. स. }

खड़खड़ाहट, सं. स्त्री. (हिं. खड़खड़) खड़खड़ा,-शब्दः-रवः-ध्वानः २. तुमुलरवः ३. कटु-कर्कश-परुष,-ध्वनिः (पुं.)।

खड़खड़िया, सं. स्त्री. (हिं. खड़खड़) दे. 'पालकी'।

खड़ग, सं. पुं. (सं. खड्गः) असिः, दे. 'तलवार'।

खड़गी, वि. (सं. खड्गिन्) आसिकः, खड्गधरः २. खड्गमृगः, दे. 'गैंडा'।

खड़बड़ाहट, सं. स्त्री. दे. 'गड़बड़ाहट'।

खड़बड़ी, सं. स्त्री. दे. 'गड़बड़ी'।

खड़मंडल, सं. पुं. दे. 'गड़बड़ी'।

खड़सान, सं. पुं. दे. 'खरसान'।

खड़ा, वि. (सं. खडक=खम्भा >) (दंडवत्) स्थित, उत्थित २. उच्छ्रित, उन्नत, उत्तान, ऊर्ध्व, लम्बरूप, खमध्य,-वर्तिन्-वेधिन् ३. स्थिर, अचल, स्तब्ध, निश्चल, निश्चेष्ट ४. उपस्थित, प्रस्तुत ५. सज्ज, संनद्ध, उद्यत ६. निर्मित, रचित ७. अपक्व, असिद्ध ८. अनुत्खात, अलून ९. समस्त, समग्र [खड़ी (स्त्री.) = स्थिता इ.]।

—करना, क्रि. सं., 'खड़ा होना' के प्रे. रूप।

—रहना, क्रि. अ., अचल-रुद्धगति (वि.)+स्था इ.)।

—होना, क्रि. अ. (पद्भ्यां) स्था (भ्वा. प. अ.), उत्-स्था, २. विरम् (भ्वा. प. अ.), निवृत् (भ्वा. आ. से.), स्तंभ् (कर्म.), स्थिरी-निश्चली,-भू ३. उपकृ, सहाय्यं कृ ४. उच्छ्रित-उन्नत-उत्तान (वि.)+भू ५. निर्मा-विरच् (कर्म.) ६. निधा-निवेश् (कर्म.)।

खड़े-खड़े, क्रि. वि., स्थित एव २. झटिति, सपदि, सद्यः (सब अव्य.)।

खड़ाऊँ खड़ाँव, सं. स्त्री. (अनु. खड़+हिं.+पाँव) कोशी-पी, (काष्ठ-) पादुका।

खड़ाका, सं. पुं. (अनु.) खडखडा,-शब्दः-ध्वानः।

खड़िया, सं. स्त्री. (सं. खडिका) खडी, कठिनी दे. 'चाक'[२]।

खड़ी, सं. स्त्री. (सं. खडी) दे. 'खड़िया'।

खड्ग, सं. पुं. (सं.) दे. 'खड़ग'।

खड्गी, सं. पुं. तथा वि., (सं. खड्गिन्) दे. 'खड़गी'।

खड्ड, खड्ढा, सं. पुं. (सं. खातं) दे. 'खड'[१]।

खड्डी, सं. स्त्री. (सं. खात >) तन्त्रवापः-पं, वाय(प) दण्डः, वेमः, वेमन् (पुं. न.), वानदण्डकः, वाणिः (स्त्री.)।

ख़त, सं. पुं. (अ.) संदेश,-पत्रं,-लेख्यं,-लेखः २. हस्तलेखः, स्वहस्ताक्षरं ३. अक्षरसंस्थानं, लिखितं, लिपिः-विः (स्त्री.) ४. रेखा, लेखा, रेषा ५. मुखरोमन् (न.), श्मश्रु (न.), कूर्चं ६. क्षौरं मुण्डनम्।

—आना, क्रि. अ., प्रथमतः मुखरोमाणि उद्भू।

—खींचना, क्रि. स., रेखां आ-अभि-लिख् (तु. प. से.)।

—बनाना, क्रि. स., मुंड् (भ्वा. प. से., चु.) क्षुरेण कृत् (तु. प. से.)-छिद् (रु. प. अ.)-लू (क्र्. उ. से.)।

—किताबत, सं. स्त्री., (अ.) पत्र,-व्यवहारः-विनिमयः।

—शिकस्ता, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) वक्रलेखः।

ख़तना, सं. पुं. (अ.) शिश्नत्वक्छेदः (इस्लाम)।
ख़तम, वि. (अ. खत्म) समाप्त, पूर्ण।
—करना मु., मृ (प्रे.), हन् (अ. प. अ.)।
—होना, मु., मृ (तु. आ. अ.)।
ख़तर, सं. पुं. (अ.) दे. भयं, त्रासः।
—नाक, वि. भयानक, भयङ्कर।
ख़तरा, सं. पुं. (अ.) भयं, भीतिः (स्त्री.), दे. 'भय' २. संशयः, संदेहः।
खतरानी, सं. स्त्री., दे. 'क्षत्राणी'।
ख़ता, सं. स्त्री. (अ.) अपराधः, दोषः २. छलं वञ्चना ३. प्रमादः, स्खलितम्।
—वार, वि. (अ.+फ़ा.) अपराधिन्, दोषिन्।
खतियाना, क्रि. स. (हिं. खाता) आयव्यय-पञ्जिकायां यथास्थानं लिख् (तु. प. से.)।
खतियौनी, सं. स्त्री. (हिं. खतियाना) (वृहत्) आयव्ययपञ्जिका २. तत्र यथास्थानं लेखः ३. क्षेत्रपतिसूचीपत्रम्।
खत्ता, सं. पुं. (सं. खातं) अवटः, गर्तः २. धान्यागारं-रः ३. निधिः (पुं.) ४. राशिः (पुं.)।
ख़त्म, वि., दे. 'खतम'।
खत्री, सं. पुं. (सं. क्षत्रियः) पंचनदप्रांते आर्याणामुपजातिविशेषः २. दे. 'क्षत्रिय'।
खदबदाना, क्रि. अ. (अनु.) बुद्बुदायते (ना. धा.) मन्दं क्वथ् (कर्म.) दे. 'उबलना'।
ख़दशा, सं. पुं. (अ.) भयं, आशंका।
खदान, सं. स्त्री., दे. 'खान'।
खदिर, सं. पुं. (सं.) सारद्रुमः, कुष्ठारिः (पुं.), गायत्री, दंतधावनं, बाल,-तनयः-पत्रः, यज्ञांगः, सुशल्यः, वक्रकंटः। २. दे. 'कत्था' ३. चन्द्रः ४. इन्द्रः।
खदेड़, सं. स्त्री. (हिं. खेदना) अनुधावनं, खेटनं, आच्छोदनम्।
खदेड़(र)ना, क्रि. स. (हिं. खेदना) निः-अप-सृ (प्रे.), बहिष्कृ, निष्कस्-निर्वस् (प्रे.) २. अनुगम्, अनुधाव् (भ्वा. प. से.), मृग् (चु. आ. से.)।
खद्दर, दे० 'खादी'।
खद्योत, सं. पुं. (सं.) प्रभाकीटः, दे. 'जुगनूँ' २. सूर्यः
खनक, सं. पुं. (सं.) उंदुरुः (पुं.), मूष(षि)कः २. संधितस्करः ३. अवदारकः, खातकः ४. आकरः, ख(खा)निः-नी (स्त्री.) ५. भूतत्त्ववेत्तृ (पुं.)। सं. स्त्री. (अनु.), क्वणितं, शिंजितम्।
खनकना, क्रि. अ. (अनु.) शिंज् (अ. आ. से., चु.), क्वण् (भ्वा. प. से.), झणझणायते-खणखणायते (ना. धा.)।
खनकाना, क्रि. स., 'खनकना' के प्रे. रूप।
खनखनाना, क्रि. अ. तथा क्रि. स., दे. 'खनकना' तथा 'खनकाना'।
खनना, दे. 'खोदना'।
खनिज, वि. (सं.) धातुः (पुं.), आकरजः पदार्थः।
खनित्र, सं. पुं. (सं. न.) अवदारणम्।
खपची, सं. स्त्री., दे. 'खपाच'।
खपड़ा(रा), सं. पुं. (सं. खर्परः) १. कर्परः २. मृत्पट्टिका ३. भिक्षापात्रम्।
खपड़ी(री), सं. स्त्री. (सं. खर्परः) धान्यभर्जनार्थं मृत्पात्रम्।
खपत, खपती, सं. स्त्री. (हिं. खपना) समावेशः, व्याप्तिः (स्त्री.) २. विक्रयः, पणनं ३. व्ययः, विनियोगः।
खपना, क्रि. अ. (सं. क्षपणं >) प्र-उप,-युज् (कर्म.), व्यवहृ-व्यापृ (कर्म.) २. क्षि-परिहा (कर्म.), नश् (दि. प. से.) ३. क्लिश्-संतप्-पीड् (कर्म.)
खपरै(ड़ै)ल, सं. स्त्री. (हिं. खपड़ा) मृत्पट्टिकाभिः खर्परैः वा आच्छादितं पटलं ३. तादृशपटलयुक्तं गृहम्।
खपाच, सं. स्त्री. (तु. कमची) (काष्ठ-) खंडः-डं, वंशस्य शकलः-लं, २. अतिकृशः पुरुषः।
खपाना, क्रि. स. (हिं. खपना) प्र-उप,-युज् (रु. आ. अ., चु.), उपयुज्य-उपभुज्य निरवशेषीकृ, व्यवहृ-व्यापृ (प्रे.) २. व्यय्-विनियुज् (चु.) ३. वि,-नश् (प्रे.) ४. संतप्-पीड् (प्रे.)।
खपुर, सं. पुं. (सं. न.) गगनस्थो दैत्यनगरविशेषः २. गगनस्था हरिश्चन्द्रनगरी।
खपुष्प, सं. पुं. (सं. न.) गगनकुसुमं, असंभवं-असाध्यं वस्तु (न.), शश,-विषाणं-शृंगम्।
खप्पर(ड़), सं. पुं. (सं. खर्परः) मृत्पात्रभेदः

२. काल्याः रुधिरपानपात्रं ३. भिक्षाभाजनं ४. कपालः-लम् ।

खफ़क़ान, सं. पुं. (अ.) हृत्कम्पनं २. (हिस्टीरिया) गर्भाशयोन्मादः, वातोन्मादः, हर्षमोहः ।

खफ़गी, सं. स्त्री. (अ.) प्रसाद-प्रीति,-अभावः २. कोपः, क्रोधः ।

खफ़ा, वि. (अ.) रुष्ट, कुपित, क्रुद्ध २. विषण्ण ।

खफ़ीफ़, वि. (अ.) अल्प, न्यून २. लघु ३. क्षुद्र ४. लज्जित ।

खफ़ीफ़ा, सं. स्त्री. (फ़ा.) लघु,-न्यायालयः-धर्माधिकरणम् २. कुलटा, व्यभिचारिणी ।

ख़बर, सं. स्त्री. (अ.) समाचारः, उदंतः, वृत्तांतः वृत्तं, वार्ता, प्रवृत्तिः (स्त्री.) २. ज्ञानं, बोधः ३. संदेशः ४. संज्ञा, चैतन्यं ५. जनप्रवादः ।

—करना, देना या पहुँचाना, क्रि. सं., विज्ञा (प्रे.), नि-आ-विद् (प्रे.), संदिश् (तु. प. अ.), बुध्-अवगम् (प्रे.) ।

—लगाना, क्रि. सं., दे. 'ढूंढ़ना' ।

—देने वाला, सं. पुं., विज्ञापकः, आवेदकः, सूचकः ।

—ले जाने वाला, सं. पुं. दूतः, वार्ता-संदेश,-हरः ।

ख़बरगीरी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) अवेक्षा, रक्षणं, चिंता २. सहानुभूतिः (स्त्री.), सहायता ।

ख़बरदार, वि. (अ.+फ़ा.) दे. 'सावधान' ।

ख़बरदारी, सं. स्त्री. (अ+फ़ा.) दे. 'सावधानता' ।

ख़बीस, सं. पुं. (अ.) भयंकरः, खलः ।

ख़ब्त, सं. पुं. (अ.) उन्मादः, चित्त,-विप्लवः-भ्रमः २. उत्सूत्रता, सामान्यविरोधः ।

ख़ब्ती, वि. (अ.) उन्मादिन् २. उत्सूत्र, लोकबाह्य ।

खब्बा, वि. (पं., सं. खर्व>) वाम, सव्य, दक्षिणेतर २. वामहस्त, सव्यसाचिन् ।

ख़म, सं. पुं. (फ़ा) वक्रता, जिह्मता, आभुग्नता कुटिलता ।

—दम, सं. पुं., शौर्यं, विक्रमः ।

—दार, वि., आनमित, आभुग्न, कुञ्चित ।

ख़मसा, वि. (अ.) पंच,-विषयक-सम्बन्धिन् । सं. पुं., पंचकम् २. पद्यभेदः ३. अंगुली-पंचकम् ।

ख़मियाज़ा, सं. पुं. (फ़ा.) प्रतिफलं २. दण्डः ३. कष्टम् ४. हानिः (स्त्री.) ।

ख़मीदा, वि. (फ़ा.) वक्र, जिह्म, अराल ।

ख़मीर, सं. पुं. (अ.) किण्वः, जगलः, मासरः, मेदकः, कारोत्तरः, नग्नहूः (पुं.) ।

—उठाना, क्रि. सं. किण्वेन संमिश्र् (चु.) । सं. पुं. किण्वनं, किण्वीकरणं ।

ख़मीरा, वि. (अ.) किण्व-जगल,-मिश्रित २. घनमधुक्वाथः ३. तमाखुभेदः ।

ख़यानत, सं. स्त्री. (अ.) सकपटाहरणं, दुर्विनियोगः २. चौर्यं, वंचना ।

—करना, क्रि. स. कपटेन आत्मसात् कृ अथवा विनियुज् (रु. आ. अ.) ।

ख़याल, सं. पुं. दे. 'ख्याल' ।

ख़याली, वि., दे. 'ख्याली' ।

खर, सं. पुं. (सं.) गर्दभः, रासभः २. अश्वतरः, वेसरः ३. वकः ४. काकः ५. रावणभ्रातृ (पुं.) ६. तृणं, घासः ।

वि., कठोर, कक्खट, कीकस २. तीक्ष्ण ३. स्थूल ४. अमंगल, अमांगलिक ५. निशित ६. प्रवण, तिर्यंच् ।

ख़र, सं. पुं. (फ़ा.) गर्दभः, रासभः ।

—दिमाग़, वि., जड, अज्ञ, खरमति ।

ख़रख़र, सं. स्त्री. (अनु.) घर्घरः, घर्घर,-रवः-शब्दः ।

—करना, क्रि. स., घर्घरायते (ना. धा.), घर्घरध्वनिं कृ ।

खरखरा, वि. दे. 'खुरखुरा' ।

ख़रगोश, सं. पुं. (फ़ा.) शशः, शशकः, शूलिकः मृदुरोमन् (पुं.), रोमकर्णः ।

खरच, सं. पुं., दे. 'खर्च' ।

ख़रचना, क्रि. सं. (फ़ा. खर्च) व्यय् (चु.), उत्-वि,-सृज् (तु. प. अ.), विनियुज् (रु. आ. अ., चु.), क्षयं-व्ययं,-कृ ।

खरचा, सं. पुं. दे. 'ख़र्चा' ।

खरज, सं. पुं. दे. 'षड्ज' ।

खरब, वि. (सं. खर्वम्) सं. पुं., अर्बशतकम् (१००००००००००००) २. अर्बदशकम् (१०००००००००००) ।

ख़रबूज़ा, सं. पुं. (सं. खर्बूजं) दशांगुलं, षड्-भुजा-भुजं-रेखा-मुखा, वृत्तकर्कटी ।

ख़रमस्ती, सं. स्त्री. (फ़ा.) दुष्टता, कुचेष्टा ।

खरमास, सं. पुं., दे. 'खरवाँस' ।

खरल, सं. पुं. (सं. खल्लः) उदू (लू) खलं, औषधमर्दनभाजनम् ।

—करना, क्रि. सं. चूर्ण् (चु.), चूर्णीकृ, पिष् (रु. प. अ.), क्षुद् (रु. उ. अ.) ।

खरवाँस, सं. पुं. (सं. खरमासः >) पौषचैत्रौ । (इनमें मांगलिक कार्य वर्जित हैं) ।

खरसान, सं. स्त्री. (सं. खरशाणः) शाण-शाणी,-भेदः ।

खरहरा, सं. पुं. (हिं. खर = तिनका + हरना) अश्वमार्जनी ।

—करना, क्रि. स., अश्वं मृज् (अ. प. वे.) ।

खरहा, सं. पुं., दे. 'खरगोश' ।

खरही, सं. स्त्री. (हिं. खर = घास) (घासादेः) राशिः (पुं.) २. घासभेदः ।

खरा, वि. (सं. खर = तीक्ष्ण) तिग्म, तीक्ष्ण २. अमिश्रित, अविकृत, स्वच्छ, विशुद्ध, पवित्र, उत्तम ३. भंगुर, भिदुर ४. निष्कपट, निश्छल ५. स्पष्ट-यथार्थ,-वादिन्-वक्तृ ६. भूरि, बहु ६. कठिन, कीकस । खरी (स्त्री.), विशुद्धा इ. ।

—खेल, सं.पुं. निष्कपटव्यवहारः, सरलाचरणं ।

—पन, सं. पुं. विशुद्धता, पवित्रता, उत्तमता, ऋजुता, निष्कपटता इ. ।

खराई, सं. स्त्री. दे. 'खरापन' ।

ख़राद, सं. पुं. (अ. खर्रात से फ़ा. खर्राद) भ्रमयंत्रं, कुंदः-दं, भ्रमः, भ्रमिः (स्त्री.), चक्रं, यंत्रकम् ।

ख़रादना, क्रि. स. कुन्देन संस्कृ. ।

ख़रादी, सं. पुं. (फ़ा. ख़र्राद) कुंदिन् , चक्रिन् ।

ख़राब, वि. (अ.) निकृष्ट, गर्ह्य, निंद्य, हीन २. दीन, दुर्गत ३. पतित, च्युत ४. दुष्ट, पापिन् ।

—करना, क्रि. स. मलिनी-कलुषी-आविली,-कृ २. सत्पथात् भ्रंश् (प्रे.), कुमार्गे प्रवृत् (प्रे.) ।

ख़राबात, सं. पुं. (अ.) मदिरालयः २. द्यूतगृहम् ३. वेश्यावीथी ।

ख़राबाती, सं. पुं. (अ.) मद्यपः २. द्यूत कितवः ४. वेश्यागामिन् ।

ख़राबी, सं. स्त्री. (अ.) दोषः, अ... २. दुष्टता, नीचता ३. दुर्दशा, दुर्गतिः (...

खरारि(री), सं. पुं. (सं.-रिः पुं.) र... २. श्रीकृष्णः ३. विष्णुः ।

ख़राश, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'खरोंच' ।

खरिया, सं. स्त्री., दे. 'खड़िया' ।

खरिहान, सं. पुं. दे. 'खलियान' ।

खरी, सं. स्त्री. (सं.) गर्दभी, रासभी ।

ख़रीद, सं. स्त्री. (फ़ा.) क्रयः, मूल्येन ग्रहणं २. क्रीतपदार्थः ।

—व फ़रोख़्त, सं. स्त्री. (फ़ा.) क्रयविक्रयौ (द्वि.) ।

ख़रीदना, क्रि. स. (फ़ा. ख़रीदन) क्री (क्र्. उ. अ.), मूल्येन अधिगम् अथवा लभ् (भ्वा. आ. अ.) ।

ख़रीदार, सं. पुं. (फ़ा.) क्रयिकः, क्रेतृ (पुं.), ग्राहकः २. इच्छुकः, अभिलाषिन् (पुं.) ।

ख़रीदारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) क्रयः, मूल्येनादानं ।

खरीफ़, सं. स्त्री. (अ.) शारदं-शारदीयं-शर-त्कालीनं शस्यं ।

खरोंच, सं. स्त्री. (सं. क्षुर् = खुरचना >) ईषत्क्षतं, त्वग्व्रणः ।

खरोंचना, क्रि. स. (पूर्व.) खुर-क्षुर् (तु. प. से.) वि-अव-दॄ (प्रे.), (नखेन) क्षण् (त. उ. से.) अंक् (चु.)-लिख् (तु. प. से.) ।

खरोट, सं. स्त्री., दे. 'खरोंच' ।

खरोटना, क्रि, स. दे. 'खरोंचना' ।

ख़र्च, सं. पुं. (अ. ख़र्ज) व्ययः, धन,-त्यागः-व्ययः-उत्सर्गः, विनियोगः २. मूल्यं, अर्घः, अर्हा ।

—करना, क्रि, स. दे. 'ख़रचना' ।

—होना, क्रि, अ., व्यय्-विसृज्-विनियुज् (सब कर्म.) क्षयं-व्ययं या (अ. प. अ.) ।

ख़र्चना, क्रि. स. दे. 'ख़रचना' ।

ख़र्चा, सं. पुं. (अ. ख़र्ज) दे. 'ख़र्च' २. अभि-योग-कार्य-व्यवहारपद,-व्ययः ।

ख़र्चीला, वि. (हिं ख़र्च) व्ययशील, अति-व्ययिन् , अमितव्यय ।

खर्जूर, सं. पुं. (सं.) दे. 'खजूर' २. वृश्चिकः, द्रोणः । (सं. न.) रजतं २. दे. 'हरताल' ।

. पुं. (सं.) दे. 'खप्पर'।
पुं., दे. 'खरब २. दे. 'खर्व'।
. पुं., दे. 'ख़रबूज़ा'।
. पुं. (अनु.) घर्घरः।
मरना या लेना, क्रि. अ., घर्घरायते, घर्घरशब्दं कृ, प्रगाढं स्वप् (अ. प. अ.)।

ख़ल, वि, (सं.) क्रूर, नृशंस २. अधम, नीच ३. दुष्ट, दुर्वृत्त ४. पिशुन ५. निर्लज्ज ६. छलिन्।
सं. पुं., दुर्जनः २. सूर्यः ३. तमालवृक्षः ४. पृथिवी ५. स्थानं ६. उलू (दू) खलं ७.-८. दे. 'खलियान' तथा 'तलछट'।

ख़लक़, सं. पुं. (अ.) जीवाः-प्राणिनः (बहु.) २. जगत् (न.), संसारः।

ख़लक़त, सं. स्त्री. (अ.) सृष्टिः (स्त्री.), संसारः २. जनौघः, जनसंमर्दः।

खलड़ी, सं. स्त्री. (हिं. खाल) त्वच् (स्त्री.), त्वचा, त्वचं, त्वचस् (न.), छदिस् (स्त्री.), संछादनी, असृग्धरा २. (पशुओं की) चर्मन् (न.) ३. (मरे पशुओं की) अजिनं, दृतिः, कृत्तिः (स्त्री.) ४. शिश्नाग्रचर्मन् (न.)।

खलता, सं. स्त्री. (सं.) कुचेष्टा, दुष्टता, दुर्वृत्तता, खलत्वम्।

खलना, क्रि. अ. (सं. खर = तीक्ष्ण >) अनुचित-अयुक्त-अयोग्य-अनुपपन्न (वि.) प्रतिभा (अ. प. अ.)-दृश् (कर्म.)।

खलबल, सं. स्त्री. (अनु.) क्षोभः विप्लवः, अशांतिः-अनिर्वृतिः (स्त्री.), प्रकोपः, कलहः, २. कोलाहलः, उत्क्रोशः ३. दे. 'कुलबुलाहट'।

खलबलाना, क्रि. अ. (हिं खलबल) बुदबुदायते (ना. धा.), दे. 'उबलना' २. क्षुभ् (दि. प. से., क्र्. प. से.), क्षुब्ध-विह्वल- (वि.) + भू ३. दे. 'कुलबुलाना'।

खलबली, सं. स्त्री., दे. 'खलबल'।

ख़लल, सं. पुं. (अ.) विघ्नः, अंतरायः, बाधा।

ख़लास, सं. पुं. (अ.) मोक्षः, मुक्तिः (स्त्री.), उद्धारः। वि., मुक्त, उद्धृत, निस्तीर्ण २. अवसित, समाप्त।

ख़लासी, सं. स्त्री. (अ.) उद्धारः, निस्तारः, मोक्षः। सं. पुं., पटमंडपरोपकः २. भारवाहः ३. पोतभृत्यः।

खलियान, सं. पुं. (सं. खल + स्थान) खलाधानं, खलः-लं २. धान्यागारं, कुशूलः ३. राशिः (पुं.) चयः।

खलियाना[1], क्रि. स. (हिं. खाल) निस्त्वचयति (ना. धा.) निस्त्वचीकृ, चर्मन् (न.) अपनी-निर्हृ (दोनों भ्वा. उ. अ.)।

खलियाना[2], क्रि. स. (हिं. खाली) शून्यी-रिक्ती,-कृ, रिच् (रु. उ. अ.)।

ख़लिश, सं. स्त्री. (फ़ा.) वेदना, पीडा २. वैरं, द्वेषः।

खलिहान, सं. पुं., दे. 'खलियान'।

खली-ल्ली, सं. स्त्री. (सं. खली) तैलकिट्टं, तिलकल्कं, पिण्याकः, खलिः (पुं.)।

ख़लीज, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'खाड़ी'।

ख़लीफ़ा, सं. पुं. (अ.) अध्यक्षः, अधिकारिन् २. यवननृपवंशविशेषः ३. वृद्धजनः ४. सूदः, पाचकः ५. सौचिकः सूचिकः ६. नापितः।

खलु, अव्य. (सं.) निश्चयनिषेधजिज्ञासाऽनुनयादिबोधकमव्ययम्।

खलेल, सं. पुं. (सं. खलितैलं) सुगन्धतैल-किट्टम्।

ख़ल्क़, सं. स्त्री., दे. 'खलक'।

ख़ल्त-मल्त, दे. 'गडबड्ड'।

खल्ल, सं. पुं. (सं.) दे. 'खरल' २. चर्मन् (न.) ३. गर्तः ४. चातकः ५. दृतिः (स्त्री.)।

खल्लड़, सं. पुं. (सं.) चर्मन् (न.) २. अजिनं जलभस्त्रा ३. वृद्धः, जरठः, स्थविरः।

खल्ला, सं. पुं. (सं. खल्लः=चमड़ा >) जीर्णोपानह् (स्त्री.), पुराणपादत्रम्।

खल्लि (ल्ली)ट,-खल्वाट, वि. (सं.) दे. 'गंजा'। सं. पुं., दे. 'गंजापन'।

खवा, सं. पुं., दे. 'कंधा'।

खवैया, सं. पुं. (हिं. खाना) भक्षकः, खादकः, भोक्तृ (पुं.)।

खश, सं. पुं. दे., 'ख़स'।

ख़शख़(ख़ा)श, सं. पुं. दे. 'खसखस'।

खस, सं. स्त्री. (फ़ा. खस) उशीरः-रं, नलदं, जलवासं, वीरणमूलं, सेव्यं, शीत-सुगन्धि,-मूलकं, वीरं, वीरभद्रं, हरिप्रियम्।

खसकना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'खिसकना'।

खसकाना, क्रि. स., दे. 'खिसकाना'।

खसखस, सं. स्त्री. (सं. खस्खसः) खसतिलः, सूक्ष्म,-तंडुलः-बीजः, सुबीजः।
—रस, सं. पुं. (सं.) दे. 'अफ़ीम'।
खसखसा, वि. (अनु.) शुष्कचूर्णरूप, सिकतिल, शर्करिल।
खसखास, सं. स्त्री., दे. 'खसखस'।
ख़सम, सं. पुं. (अ.) पतिः (पुं.), भर्तृ (पुं.) २. स्वामिन् (पुं.), सेव्यः, नाथः।
ख़सरा[1], सं. पुं. (अ.) क्षेत्रसूची, केदारलेख्यम्।
ख़सरा[2], सं. पुं. (फ़ा. ख़ारिश) रोमान्तिका, त्वग्रोगभेदः २. खर्जू-कंडूति,-भेदः।
खसलत, सं. स्त्री. (अ.) प्रकृतिः (स्त्री.), स्वभावः, २. दे. 'आदत'।
ख़सारा, सं. पुं. (अ.) हानिः-क्षतिः (स्त्री.), दे. 'घाटा'।
खसिया, वि. (अ. ख़स्सी) लुप्तवृषण, छिन्नमुष्क। सं. पुं., क्लीवः, पंढः २. अजः।
खसोट, सं. स्त्री. (हिं. खसोटना) बलात्-अकस्मात्-सहसा ग्रहणं-अपहरणं-आच्छेदनं २. बलात् उत्पाटनं-उन्मूलनम्।
खसोटना, क्रि, स. (सं. कृष्ट>) असम्यक् उन्मूल्-उत्पट् (चु.)-कृष् (भ्वा. प. अ.) २. बलात्-सहसा अपहृ (भ्वा. उ. अ.)-आच्छिद् (रु. प. अ.)-ग्रह् (क्र. उ. से.)।
खसोटी, सं. स्त्री., दे. 'खसोट'।
ख़स्ता, वि. (फ़ा. ख़स्तः) भिदुर, भंगुर, भिदेलिम २. क्षत, त्रुटित।
—कचौड़ी, सं. स्त्री., भिदुर-स्निग्ध,-सुपिष्टिका-शष्कुली।
—दिल, वि. भग्न,-चित्त-हृदय।
—हाल, वि., दुर्गत, दरिद्र, दुःखित।
ख़स्सी, सं. पुं. (अ.) छिन्नमुष्कः अजः-छागः २. पंढः, क्लीवः। वि., लुप्तवृषण, छिन्नमुष्क।
—करना, क्रि. स., वृषणौ छिद् (रु. प. अ.) उत्पट् (चु.)।
ख़ाँ, सं. पुं. (तातारी, काङ्=सरदार) स्वामिन् (पुं.), अधीशः २. पठानजातेः उपाधिः (पुं.)।
—साहब,-बहादुर, सं. पुं., उपाधिभेदौ।
खांखर, वि. (सं. खं=छिद्र>) सच्छिद्र, सरंध्र २. रिक्त-शून्य,-गर्भ, अंतःशून्य।
खांगड़-ड़ा, वि. (सं. खड्गः>) शृंगिन्, विषाणिन् २. सशस्त्र ३. सबल ४. उद्दण्ड।
खाँचा, सं. पुं. (सं. कर्षणम्>) महा-,पेटकः-करंडः-कंडोलः २. बृहद्,- जरः-पंजरम्।
खांड़, सं. स्त्री. (सं. खण्डम्) अशोधित-असंस्कृत,-सिता-शर्करा।
खांडव, सं. पुं. (सं. न.) कुरुक्षेत्रप्रदेशे वनविशेषः।
—प्रस्थ, सं. पुं. (सं.) प्राचीननगरविशेषः।
खाँड़ा[1], सं. पुं. (सं. खड्गः>) द्विधार-, खडगः-असिः-निस्त्रिंशः-कृपाणः।
खांडा[2], सं. पुं. (सं. खंडः-डं) भागः, अंशः।
खाँसना, क्रि. अ. (सं. कासनं) कास् (भ्वा. प. से.), क्षु (अ. प. से.)।
खाँसी, सं. स्त्री. (सं. कासः) काशः, उत्कासः, क्षवथुः (पुं.)।
खाई, सं. स्त्री. (सं. खानिः>) परिखा, खातं, खातकम्।
खाऊ, वि. (हिं. खाना) अत्याहारिन्, बहुभोजिन्, अद्मर, घस्मर।
—उड़ाऊ, वि., मुक्तहस्त, अर्थनाशिन्।
ख़ाक, सं. स्त्री. (फ़ा.) धूलिः (पुं. स्त्री.), धूली, पांशुः सुः, रजस् (न.), रेणुः २. भस्मन् (न.), भसितं, भूतिः (स्त्री.)।
—रोब, सं. पुं., खलपूः (पुं.), संमार्जकः।
—सार, वि., नम्र, विनीत।
—सारी, सं. स्त्री., नम्रता, विनयः।
ख़ाका, सं. पुं. (फ़ा.) बाह्यरे(ले)खा, बाह्याकारः २. अपरिष्कृतालेख्यं, पांडुलेख्यं ३. प्रतिरूपं, प्रतिमानं ४. संकलनं, संख्यानम्।
—उड़ाना, मु., उप-अव,-हस् (भ्वा. प. से.)।
ख़ाकी, वि. (फ़ा.) मार्तिक, मृण्मय २. धूलिरजो,-वर्ण-रंग ३. सं. स्त्री., जलहीन-अनासिक्त,-भूमिः (स्त्री.)।
खाज, सं. स्त्री. [सं. खर्जुः (पुं.)] खर्जूः (स्त्री.), कंडूः-कंडूतिः (स्त्री.), खसः, पामा, विचर्चिका।
—होना, क्रि. अ., कंडूतिं-खसं अनुभू।
कोढ़ की खाज, मु., क्षते क्षारं, गंडे स्फोटकः।
खाजा, सं. पुं. (सं. खाद्यं) भक्ष्य-भोज्य-खाद्य,-वस्तु (न.)-पदार्थः २. भोजनं ३. मिष्टान्नभेदः।
खाट, सं. स्त्री. (खाटः>) खट्वा, शयनम्।

—खटोला, सं. पुं. गृह,-उपस्करः-परिच्छदः, पारिणाह्यम् ।

खाड़ी, सं. स्त्री. (सं. खातं >) समुद्रः, वंकः, अखातः-तम् ।

खात, सं. पुं. (सं. न.) खननं, अवदारणं २. परिखा, खातं, खातकं ३. गर्तः ४. कूपः ५. कासारः ६. पुरीषादिगर्तः ।

ख़ातमा, सं. पुं. (फ़ा.) समाप्तिः (स्त्री.) २. मृत्युः ।

खाता¹, सं. पुं. (अ. ख़त >) गणना-संख्यान,-पञ्जिका २. विषयः, विभागः ।

खाता², सं. पुं. (सं. खातं >) कुशू (सू) लः, धान्यकोषः, कंडोलः ।

ख़ातिर, सं. स्त्री. (अ.) संमानः, आदरः । क्रि. वि., कृते, अर्थे, हेतोः ।

—ख़्वाह, क्रि. वि. (अ.+फ़ा.) यथोचित, यथेच्छ, यथेष्टम् ।

—जमा, सं. स्त्री. (अ.) संतोषः, सांत्वनम् ।

—दारी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) आदरः, अतिथिसेवा ।

खाती, सं. पुं. (सं. खातं >) तक्षकः, त्वष्टृ (पुं.) २. रथकारः, वर्धकिः ।

ख़ातून, सं. स्त्री. (तु.) कुलीना, आर्या, कुलांगना ।

खादक, वि. (सं.) भक्षक, भोजक । सं. पुं. (सं.) अधमर्णः, ऋणग्रस्तः ।

खादन, सं. पुं. (सं.) दन्तः, दशनः, रदः । (सं. न.) भक्षणं, चर्वणम् २. भोजनं, भक्ष्यम् ।

खाद, सं. स्त्री. (सं. खाद्यं >) भूमिलेपः, सारः, पुरीषादि (न.) ।

खादर, सं. स्त्री. (सं. खातं >) आर्द्र-उन्न-उत्त,-भूमिः, दे. 'कछार' । २. गोप्रचारः, शाद्वलः ।

खादित, वि. (सं.) भुक्त, भक्षित, जग्ध ।

ख़ादिम, सं. पुं. (अ.) सेवकः, अनुचरः ।

ख़ादिमा, सं. स्त्री. (सं.) सेविका, दासी, परिचारिका, प्रेष्या ।

खादी, सं. स्त्री. (देश.) स्वदेशीयं घनवस्त्रं, हस्तनिर्मितवासस् (न.) ।

खाद्य, वि. (सं.) भक्ष्य, भोज्य, अदनीय । सं. पुं. (सं. न.) भोजनं, भक्ष्यपदार्थः ।

खान¹, सं. पुं. (हिं. खाना) भक्षणं, भोजनं, २. खाद्यं ३. भोजनविधिः (पुं.) ।

खान², सं. स्त्री. [सं. खानिः (स्त्री.)] आकरः, ख(खा)नी-निः (स्त्री.) २. उत्पत्तिस्थानं ३. कोषः ।

ख़ान, सं. पुं., दे. 'ख़ाँ' ।

खानक, सं. पुं. (सं.) खातकः, खनकः, खनितृ (पुं.), आखनिकः २. सुरुंगाकारः ३. गृह,-कारकः-संवेशकः, पलगंडः, लेपकारः ।

ख़ानकाह, सं. स्त्री. (अ.) यवनभिक्षुविहारः ।

ख़ानगी, वि. (फ़ा.) गृह्य, कौटुम्बिक ।

ख़ानदान, सं. पुं. (फ़ा.) वंशः, अन्वयः, कुलम् ।

ख़ानदानी, वि. (फ़ा.) सत्कुल-उच्चवंश,-संबंधिन् २. पित्र्य, पैतृक ।

खानपान, सं. पुं. (सं. न.) अन्नजलं, भक्ष्य-पेयं २. खादनपानं भुक्तिपीति (न.) ३. भुक्ति-पीतिविधिः (पुं.) ३. परस्परभोजनं, सग्धिः (स्त्री.) ।

ख़ानसामाँ, सं. पुं. (फ़ा.) (यवनादीनां) पाचकः-सूदः-बल्लवः ।

खाना, क्रि. स. (सं. खादनं) खाद् (भ्वा. प. से.), घस् (भ्वा. प. अ.), भक्ष् (चु.), अद् (अ. प. अ.). अश् (क्र. प. से.), जक्ष् (अ. प. से.), भुज् (रु. आ. अ.), ग्रस्-ग्लस्-आस्वाद् (भ्वा. आ. से.), अभ्यवहृ (भ्वा. प. अ.), गॄ (तु. प. से.) २. व्यथ्-अर्द्-संतप् (प्रे.) ३. चर्व् (भ्वा. प. से.) ४. नस् (प्रे.) ५. छलेन आत्मसात्कृ ६. उत्कोचं-उपायनं ग्रह् (क्र्. उ. से) ७. सह् (भ्वा. आ. से.) ।

सं. पुं., खादनं, अस्वादनं, भक्षणं, अशनं इ. ।

खाने योग्य, वि., खाद्य, भक्ष्य, आस्वादनीय इ. ।

खाने वाला, सं. पुं., भक्षकः, खादकः, भोक्तृ (पुं.),-अशनं,-भुज् ,-अद्,-अद (सब समासांत में, उ. शाकाशनः इ.) ।

खाया हुआ, वि., भक्षित, खादित, भुक्त, जग्ध इ. ।

खाता-पीता, मु., सुखिन् , समृद्ध, संपन्न ।

खाना-पीना, मु., खादनपानं, भुक्तिपीति (न.), खादताचामता ।

खाना पीना मजे उड़ाना, मु., खादतमोदता, अश्नीतपिबता ।

खाया पिया निकालना, मु., तीव्रं-परुषं तड् (चु.)-प्रहृ (भ्वा. प. अ.)-अभिहन् (अ. प. अ.)।
मुँह की खाना, मु., पूर्णतया पराजि-परिभू (कर्म.)।
ख़ाना, सं. पुं. (फ़ा.) गृहं, सद्मन् (न.), आलयः २. (मेज़ आदि का) संपुटः, निष्कर्षणी, चलसमुद्गकः ३. कोषः. पुटः-टं ४. कोष्ठकं, सारणी-चक्र,-विभागः।
—ख़राब, वि. (फ़ा.) विनाशक, अनिष्टोत्पादक, क्षयकर (-री स्त्री.)।
—जंगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) पारस्परिकविग्रहः, गृहयुद्धम्।
—तलाशी, सं. स्त्री. (फ़ा.) गृहान्वेषणम्।
—दारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) गार्हस्थ्यम्।
—पुरी, सं. स्त्री. (फ़ा.+हिं. पूरना.) कोष्ठकपूरणम्।
—बदोश, वि. (फ़ा.) अस्थिर-अनियत-वास, य(या)यावर। सं. पुं., अस्थानिन्, नित्यविहारिन्।
—शुमारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) जनसंख्यानम्।
खानि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'खान'[२] २. प्राचुर्यं ३. राशिः (पुं.) ४. कोषः ५. प्रकारः ६. दिशा।
खानिक, सं. स्त्री., दे. 'खान'[२]।
खाबड़-खूबड़, वि. (अनु०) विषम, नतोन्नत।
ख़ाम वि. (फ़ा.) अपक्व, आम २. अपुष्ट, अदृढ ३. अनुभवशून्य।
ख़ामख़ाह, क्रि. वि. (फ़ा. ख़्वाह-म-ख़्वाह) बलात्, हठात् २. अवश्यं, ध्रुवम्।
ख़ामी, सं. स्त्री. (फ़ा) आमता, अपक्वता २. अनुभवहीनता ३. न्यूनता।
ख़ामोश, वि. (फ़ा.) निःशब्द, नीरव।
ख़ामोशी, सं. स्त्री. (फ़ा.) नीरवता, मौनम्।
खार, सं. पुं. (सं. क्षारः) १. दे. 'क्षार' २. दे. 'सज्जी' ३. दे. 'कल्लर' ४. धूलिः (स्त्री.) ५. गुल्मभेदः।
ख़ार, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'काँटा' २. ईर्ष्या, असूया, द्वेषः।
—दार, वि., कंटकिन्, सकंकट।
—खाना, मु., ईर्ष्य्-ईक्ष्य् (भ्वा. प. से.), असूय् (ना. धा.), स्पर्ध् (भ्वा. आ. से.)।

खारा[१], वि. पुं. (सं. क्षार) क्षार,-विशिष्ट-युक्त २. ईषल्लवण, ३. लवण, लवणगुणविशिष्ट ४. कटु, अरुचिकर (-री स्त्री.)।
खारा[२], सं. पुं. (सं. क्षारकः) करंडः, कंडोलः, पेटकः २. घासादिबंधनजालं ३. विवाहसंस्कारोपयुक्तासनभेदः।
खारि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'खारी'।
ख़ारिज, वि. (अ.) बहिष्कृत, अपास्त २. निराकृत, प्रत्याख्यात।
—करना, क्रि. स., बहिष्कृ, अपास् (दि. प. से.) २. निराकृ, प्रत्याख्या (अ. प. अ.)।
—होना, क्रि. अ., बहिष्कृ-अपास् (कर्म.) प्रतिक्षिप्-प्रत्याख्या (कर्म.)।
ख़ारिजा वि. (अ.) बाह्य, वाहीक, बहिस्थ, विदेशीय।
ख़ारिश, ख़ारिश्त, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'खुजली'।
खारी[१], सं. स्त्री. (सं.) षोडश-चतुर्, -द्रोण-परिमाणम्।
खारी[२], सं. स्त्री. (हिं. खारा) ऊपरजं, ऊपरलवणं, क्षारलवणं। वि. स्त्री., दे. 'खारा'[२] के स्त्री. रूप।
—पानी, सं. पुं., क्षार,-पानीयं-जलम्।
खाल[१], सं. स्त्री. (सं. क्षालः >) दे. 'खलड़ी' (१-३) २. आवरण ३. शवः ४. भस्त्रा-स्त्री.।
—उड़ाना, मु०, निर्दयं-परुषं-चंडं-निष्ठुरं-तड् (चु.)-प्रहृ (भ्वा. प. अ.)।
—उधेड़ना या खींचना, मु. त्वचं अपनी (भ्वा. प. अ.)-निर्हृ-निष्कृष् (भ्वा. प. अ.), निस्त्वचयति (ना. धा.)।
खाल[२], सं. स्त्री. (सं. खातं) निम्नभूः (स्त्री.) २. रिक्तस्थानं, अवकाशः ३. दे. 'खाड़ी' ४. गाम्भीर्यम्।
ख़ाल, सं. पुं. (अ.) तिलः, तिलकः, तिल-, कालकः, जटुलः।
ख़ालसा, वि. (अ. ख़ालिस) एकाधिकृत, एकाधिष्ठित २. राजकीय। सं. पुं., शिष्य- (सिक्ख) जातिविशेषः।
खाला, वि. (हिं. खाली) निम्न, अवनत, अवच।
—ऊँचा, ः उच्चावच, नतोन्नत, विषम।

ख़ाला, सं. स्त्री. (अ.) मातृस्व(ष्व)सृ (स्त्री.), मातृभगिनी ।
—ज़ाद, वि. पुं., मातृष्वसीय, मातृष्वसेय (स्त्री,–सीया,–सेयी) ।
—जी का घर, मु., सुकरं कर्मन् (न.) ।
ख़ालिक, सं. पुं. (अ.) स्रष्टृ-विधातृ-सृष्टि-कर्तृ (पुं.) ।
ख़ालिस, वि, (अ.) दे. 'खरा' (२) ।
ख़ाली, वि. (अ.) रिक्त, शून्य २. अनधिष्ठित ३. रहित, हीन ४. अव्यापृत, निष्क्रिय ५. अधिक, उद्वृत्त ६. निष्फल, व्यर्थ । क्रि. वि., केवलम् ।
—करना, क्रि. स., रिच् (रु. प. अ.), परित्यज् (भ्वा. प. अ.), उत्सृज् (तु. प. अ.) ।
—होना, क्रि. अ. रिच्-परित्यज्-उत्सृज् (कर्म.) ।
—हाथ, मु., अकिंचन, दरिद्र २. निःशस्त्र ।
ख़ालू, सं. पुं. (अ.) मातृष्वसृधवः ।
ख़ाविंद, सं. पुं. (फ़ा.) पतिः, भर्तृ २. स्वामिन्-प्रभुः (पुं.) ।
—करना, मु., अपरं पतिं विद् (तु. प. वे.) वृ (स्वा. उ. से.), द्वितीयं विवाहं कृ ।
ख़ास, वि. (अ.) स-, विशेष, विशिष्ट, विलक्षण, असाधारण २. रहस्य, संवरणीय, गोप्य ३. स्वकीय, आत्मीय ४. पवित्र ५. प्रधान, मुख्य ।
—कर, क्रि. वि., विशेषतः, विशेषेण ।
—व आम, सं. पुं., जनता, लोकः ।
ख़ासा[1], वि. (अ. ख़ास) उत्तम, उत्कृष्ट २. स्वस्थ ३. मध्यवर्गीय ४. सुंदर ५. परिपूर्ण ।
ख़ासा[2], सं. पुं. (अ.) नृपभोजनं, भूपाहारः २. राज्ञो गजोऽश्वो वा । ३. श्वेतवस्त्रभेदः ४. पूरिकाभेदः ।
ख़ासि(सी)यत, सं. स्त्री. (अ.) प्रकृतिः (स्त्री.), स्वभावः २. गुणः, धर्मः ।
ख़ास्सा, सं. पुं. (अ.) दे. 'ख़ासियत' ।
खिंचना, क्रि. अ. (सं. कर्षणं >) आ-सं-, कृष् (कर्म.), २. दृढीकृ-नियम् (कर्म.) ३. वह्-नी (कर्म.) ४. (चित्रादि) वर्ण्-आलिख् (कर्म.) ५. उत्-शुष् (दि. प. अ.), नि-आ-पा (कर्म.) ६. स्रु (भ्वा. प. अ.), क्षर् (भ्वा. प. से.) ।
खिंचवाना, क्रि. प्रे. } व. 'खींचना' के प्रे.
खिंचाना, क्रि. प्रे. } रूप ।

खिंचाई, सं. स्त्री., } १. आकर्षणं,
खिंचाव, सं. पुं., } २. आकर्षः
खिंचावट, खिंचाहट, सं. स्त्री. } ३. दृढीकरणं, ४. नियमनं ५. घनता, सुसंसक्तिः (स्त्री.) आ-, ततिः (स्त्री.) इ. ।
खिडना, क्रि. अ., दे. 'बिखरना' ।
खिचड़ी, सं. स्त्री. (सं. कृसरः) कृशरः, मिश्रौदनः-नं, कृसरा, वैदलोदनः-नं, खेचरान्नं । २. मिश्रितद्रव्यं, प्रकीर्णकं विविधवस्तुमिश्रणम् ।
—करना, मु., एकीकृ, सं., मिश्र (चु.) ।
—होना, मु., संसृज्-संपृच् (कर्म.), एकीभू ।
खिजना, क्रि. अ. (सं. खिद्) दे. 'चिढ़ना' ।
खिज़र, खिज़्र, सं. पुं. (अ.) देवदूत-विशेषः (इस्लाम), २. पथप्रदर्शकः, मार्ग-दर्शकः ।
खिजलाना, क्रि. स. तथा क्रि. अ., दे. 'चिढ़ाना' तथा 'चिढ़ना' ।
खिज़ाँ, सं. स्त्री. (फ़ा) शिशिरः, दे. 'पतझड़' २. अवनतिकालः ।
ख़िज़ाब, सं. पुं. (अ.) केश-बाल-मूर्धज,-लेपः रंगः-रागः-वर्णः ।
—करना या लगाना, क्रि. स., केशान् रंज्-वर्ण् (चु.) ।
ख़िजालत, सं. स्त्री. (अ.). लज्जा, त्रपा, व्रीडा ।
खिझना, क्रि. अ. (सं. खिद्) दे. 'चिढ़ना' ।
खिझाना, क्रि. स., दे. 'चिढ़ाना' ।
खिड़की, सं. स्त्री. (सं. खट(ड)क्किका) । वातायनं, लघुद्वारं, गवाक्षः । २. अररी, कपाटः-टम् ।
ख़िताब, सं. पुं. (अ.) उपाधिः (पुं.), मानपदम् ।
ख़ित्ता, सं. पुं. (अ.) प्रदेशः, भूभागः ।
ख़िदमत, सं. स्त्री. (अ.) सेवा, परिचर्या ।
—गार, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) सेवकः, परिचारकः ।
—गारी,–गुज़ारी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) सेवा, परिचर्य्या ।
खिन, सं. पुं., दे. 'क्षण' ।
खिन्न, वि. (सं.) दुःखित, पीडित २. सचिंत, चिंतित ३. विषण्ण, शोकमग्न, ३. दीन, निराश्रय । ४. श्रांत, क्लांत ।
खियानत, सं. स्त्री., दे. 'ख़यानत' ।
खिरनी, सं. स्त्री. (सं. क्षीरिणी) हैमी, हिमजा, हिमदुग्धा (वृक्षभेदः) २ तरुफलम् ।
ख़िराज, सं. पुं. (अ.) दे. 'कर' (टैक्स) ।

खिल, सं॰ पुं॰ (सं॰ पुं॰ न॰) ऊषरः-रं २. रिक्त,-स्थानं-स्थलम् ३. परिशिष्टं ४. शेषांशः ५. विष्णुः ६. ब्रह्मन् (पुं॰)।

ख़िलअत, सं॰ स्त्री॰ (अ॰) संमानवेशः-षः।

ख़िलकत, सं॰ स्त्री॰, दे॰ 'ख़लकत'।

खिलखिल, सं॰ स्त्री॰ (अनु॰) हासः, हसितं हसनम्।

खिलखिलाना, क्रि॰ अ॰ (अनु॰) उच्चैः सशब्दं हस् (भ्वा॰ प॰ से॰), अट्टहासं कृ।

ख़िलना, क्रि॰ अ॰ (सं॰ स्खलनं अथवा किरणं ?) विकस्-प्रफुल्ल (भ्वा॰ प॰ से॰), स्फुट् (तु॰ (प॰ से॰), भिद् (कर्म॰) २. प्रसद् (भ्वा॰ प॰ अ॰) ३. शुभ् (भ्वा॰ आ॰ से॰) ४. पृथक् भू। सं॰ पुं॰, विकसनं, फुल्लनं, प्रस्फुटनं-इ॰।

खिला हुआ, वि॰, विकसित, उन्निद्र, प्रस्फुटित।

ख़िलवत, सं॰ स्त्री॰ (अ॰) निर्जन-विजन,-स्थानम्।

खिलवाड़, सं॰ पुं॰ (हिं॰ खेलना) खेला, लीला, क्रीडा, मनोविनोदः, विहारः।

खिलवाड़ी, वि॰, दे॰ 'खिलाड़ी'।

खिलवाना, क्रि॰ प्रे॰, अन्येन + 'खाना' धातुओं के प्रे॰ रूप।

ख़िला, सं॰ स्त्री॰ (अ॰) शून्यकम्।

खिलाई[1], सं॰ स्त्री॰ (हिं॰ खिलाना) अन्नदानं, पोषणं २. भक्षणं, खादनम्।

—पिलाई, सं॰ स्त्री॰, भुक्तपीतं, खादनपानं, खानपानं २. अन्नपानदानं, पोषणं २. पोषणार्घः।

खिलाई[2], सं॰ स्त्री॰ (हिं॰ खेलाना) अंकपाली, शिशुपालिका।

खिलाड़, खिलाड़ी, वि॰ (हिं॰ खेलना) क्रीडा-खेला-लीला,-पर-शील। सं॰ पुं॰, क्रीडकः, खेलकः २. ऐन्द्रजालिकः, मायाविन् (पुं॰) ३. धूर्त्तः।

खिलाना[1], क्रि॰ प्रे॰ 'खेलना' के प्रे॰ रूप।

खिलाना[2], क्रि॰ प्रे॰, 'खाना' के प्रे॰ रूप।

खिलाना[3], क्रि॰ प्रे॰, 'खिलना' के प्रे॰ रूप।

खिलाफ़, वि॰ (अ॰) विरुद्ध, विपरीत।

ख़िलाफ़त, सं॰ स्त्री॰ (अ॰) देवदूत-नृप,-प्रतिनिधित्वं-उत्तराधिकारित्वम्।

खिलौना, सं॰ पुं॰ (हिं॰ खेलना) क्रीडाद्रव्यं, क्रीडनकं, क्रीडनीयकं २. क्षुद्रालंकारः।

खिल्य, वि॰ (सं॰) परिशिष्टे वर्णित-लिखित।

खिल्ली, सं॰ स्त्री॰ (हिं॰ खिलना) क्ष्वेला, नर्मन् (न), विनोदः।

—बाज़, वि॰, विनोदशील, नर्मप्रिय।

—बाज़ी, सं॰ स्त्री॰, विनोदशीलता, नर्मप्रियता।

ख़िश्त, सं॰ स्त्री॰, (फ़ा॰) दे॰ 'ईंट'।

खिसकना, क्रि॰ अ॰ (अनु॰) शनैः सृप् (भ्वा॰ प॰ अ॰) चल् (भ्वा॰ प॰ से॰) २. प्र-,स्खल् (भ्वा॰ प॰ से॰) ३. सत्वरं-अलक्षितं-निभृतं अपया (अ॰ प॰ अ॰)-अपसृ (भ्वा॰ प॰ अ॰) गम्। सं॰ पुं॰, शनैः-मृदु,-सर्पणं, स्खलनं, अलक्षितं गमनं-अपसरणं इ॰।

खिसकाना, क्रि॰ स॰, 'खिसकना' के प्रे॰ रूप।

खिसलना, क्रि॰ अ॰, दे॰ 'फिसलना'।

खिसलाव, सं॰ पुं॰ } दे॰ 'फिसलाव' तथा
खिसलाहट, सं॰ स्त्री॰ } 'फिसलाहट'।

ख़िसारा, सं॰ पुं॰ (अ॰) हानिः-क्षतिः (स्त्री॰)।

खिसिआ(या)ना, क्रि॰ अ॰ (हिं॰ खीस=दाँत) लज्ज् (तु॰ आ॰ से॰), त्रप् (भ्वा॰ आ॰ वे॰), व्रीड् (दि॰ प॰ से॰) २. क्रुध् (दि॰ प॰ अ॰), कुप् (दि॰ प॰ से॰)। वि॰, लज्जित, ह्रीण, ह्रीत।

खींच, सं॰ स्त्री॰ (हिं॰ खींचना) कर्षः, कर्षणम्।

—तान, सं॰ स्त्री॰, प्रतिस्पर्द्धा, विजिगीषा २. अर्थांतरकल्पना।

खिसियाहट, सं॰ स्त्री॰, दे॰ 'खीस'।

खींचना, क्रि॰ स॰ (सं॰ कर्षणं) आ-सं-, कृष् (भ्वा, प॰ अ॰), बलात् दिशाविशेषे प्रेर् (प्रे॰)-नी (भ्वा॰ उ॰ अ॰)-प्रवृत् (प्रे॰) २. हृ (भ्वा॰ उ॰ अ॰) दे॰ 'घसीटना' ३. निष्कस् (प्रे॰), बहिर्-अप,-नी। ४. उद्-अंच् (भ्वा॰ उ॰ से॰), पर्युदंच्। ५. शुष् (प्रे॰) ६. स्नु-स्यंद् (प्रे॰) ७. वर्ण् (चु॰), आ-अभि-लिख् (तु॰ प॰ से॰) ८. रुध् (रु॰ उ॰ अ॰)। सं॰ पुं॰, आकर्षः, आकर्षणं, नयनं, हरणं, निष्कासनं, उदंचनं, शोषणं, स्रावणं, आलेखन, रोधः।

खींचने योग्य, वि॰,आ-,कर्षणीय, नेय, हर्तव्य, इ॰।

खींचाखींची, }
खींचातान, } सं॰ स्त्री॰, दे॰ 'खींचतान'।
खींचातानी, }

खीज, खीझ, सं॰ स्त्री॰ (हिं खीजना) दे॰ 'चिढ़'।

खीज(झ)ना, क्रि॰ अ॰ (सं॰ खिद्) दे॰ 'चिढ़ना'।

खीमा, सं. पुं. (अ.) दे. 'खेमा'।
खीर, सं. स्त्री. (सं. क्षीरं-रा >) पायसं, परमान्नं, क्षीरिका २. दुग्धं, पयस् (न.), क्षीरं, स्तन्यम्।
—चटाई, सं. स्त्री. अन्नप्राशनसंस्कारः (धर्म.)।
खीरा, सं. पुं. (सं. क्षीरकः) (लता) पीतपुष्पा, त्रपुककर्कटी, बहु-कोष-तुंदिल,-फला, कंटकिलता। (फल) त्रपुषं, कंटकिफलं, सुशीतलं, सुधावासम्।
—ककड़ी, मु., तुच्छवस्तु (न.)।
खीरी, सं. स्त्री. (सं. क्षीरः-रं >) उधस्-ऊधस्-ओधस् (न.), आपीनम्।
खील, सं. स्त्री. (हिं. खिलना) धानाः (स्त्री., बहु.), लाजाः (पुं., स्त्री., बहु.)।
खीली, सं. स्त्री. (हिं खील) वीटी-टिः (स्त्री.), वीटिका, तांबूलम्।
खीस, सं. स्त्री. (हि खीज) प्रीति-प्रसाद,-अभावः २. क्रोधः, रोषः ३. लज्जा, त्रपा। ४. कुस्मितं, कुहसः।
खीसा, सं. पुं. (फ़ा. कीसा) पुटः-टं, प्रसेवः, लघुसंपुटः २. गुसि-, कोषः-श।
खुक्ख, खुख, वि. (सं. शुष्क >) रिक्तहस्त, अकिंचन।
खुखड़ी, सं. स्त्री. (देश.) सूत्र-ऊर्णा,-पिंडः-पिंडं (२) असि-खड्ग,-धेनुका-पुत्रिका।
खुगीर, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'जीन'।
खुच (चु) र, सं. स्त्री. (सं. कुचर >) दोषः, न्यूनता २. छिद्रान्वेषिता, पुरोभागि(ग)ता।
खुजलाना, क्रि. स. (सं. खर्जनं >) नखैः त्वचं घृष् (भ्वा. प. से.)। क्रि. अ., कण्डूं-खसं-खर्जूं अनुभू। कण्डूयति-ते (ना. धा.)।
खुजलाहट, सं. स्त्री. (हिं. खुजलाना) दे. 'खुजली'।
खुजली, सं. स्त्री. (हिं. खुजलाना) (सुरसुरी) कंडुः (पुं., स्त्री.), कंडूः-कंडूतिः (स्त्री.), कंडूयनं, कण्डूया, खर्जुः-र्जूः (स्त्री.) २. (रोग) कच्छुः-च्छू (स्त्री.), पामा, पामन् (पुं.), विचर्चिका।
—उठना या चलना, क्रि. अ., दे. 'खुजलाना' (क्रि. अ.)।
खुजाना, क्रि. स., क्रि. अ., दे. 'खुजलाना'।
खुटका, सं. पुं., दे. 'खटका'।
खुटपन-ना, सं. पुं. (हिं. खोटा) दोषः, अवगुणः, क्षुद्रता, दुष्टता।
खुटाई, सं. स्त्री., दे. 'खुटपन'।
खुट्टी, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'रेवड़ी' २. (पं. = वटन का सूराख़) गंड-कुडुप,-आधारः।
खुट्टी, सं. स्त्री., दे. 'खुरण्ड'।
खुड़ला, सं. पुं. (देश.) कुक्कुटालयः २. चटकालयः।
खुड्डी, खुडढी, सं. स्त्री. (सं. खुड् >) शौच-कूपगर्तः २ शौचकूपे पादाधानम्।
ख़ुतबा, सं. पुं. (अ.) प्रशंसा, स्तुतिः (स्त्री.), प्रशस्तिः (स्त्री.)।
ख़ुद, अव्य. (फ़ा.) स्वयं, स्वतः, स्वेच्छया (समास के आदि में 'स्व' तथा 'आत्मन्' भी प्रयुक्त होते हैं। उ. स्वार्थः, आत्महत्या)।
—कुशी, सं. स्त्री. (फ़ा.) आत्म-स्व-निज,-घातः-हत्या-वधः।
—ग़र्ज़, वि. (फ़ा.) स्वार्थ,-पर-परायण।
—ग़र्ज़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) स्वार्थ,-परता-परायणता।
—मुख़्तार, वि. (फ़ा.) स्वतंत्र, स्वच्छन्द।
—मुख़्तारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) स्वातंत्र्यं, स्वाधीनता।
खुदना, क्रि. अ. (हिं. खोदना) खन्-उत्कॄ-तक्ष् (कर्म.), अवदॄ-भिद् (कर्म.)।
खुदरा, सं. पुं. (सं. क्षुद्र >) क्षुद्र-साधारण,-वस्तु (न.)। वि., दे. 'खुरदरा'।
खुदवाई, सं. स्त्री. (हिं. खुदवाना) अन्यकृत,-खननं-खातिः (स्त्री.) २. खनन,-भृत्या-भृतिः (स्त्री.)।
खुदवाना, खुदाना, क्रि. प्रे., 'खोदना' के प्रे. रूप।
ख़ुदा, सं. पुं. (फ़ा.) स्वयंभूः (पुं.), दे. 'ईश्वर'।
—न ख़्वास्ता, मु., ईशो न कुर्यात्।
—परस्त, वि., ईश्वरपूजक, आस्तिक।
—ख़ुदा कर के, मु., येन केन प्रकारेण, अति,-कष्टेन कृच्छ्रेण, यथाकथञ्चित्।
—की मार, मु., ईश्वर-दैव,-प्रकोपः।
ख़ुदाई, सं. स्त्री. (फ़ा.) ईश्वरत्वं २. सृष्टिः(स्त्री.)।
खुदाई, सं. स्त्री. (हिं. खोदना) खातिः (स्त्री.) २. खननक्रिया ३. खननभृतिः (स्त्री.)।
ख़ुदाताला, सं. पुं. (अ.) परमेश्वरः, परमेशः।

ख़ुदावंद, सं. पुं. (फ़ा.) ईश्वरः २. स्वामिन्(पुं.) ३. भगवत्-श्रीमत् (पुं.), आर्यः, मिश्रः (सब सम्मानसूचक शब्द) ।

ख़ुदी, सं. स्त्री. (फ़ा.) अहम्भावः, अहङ्कारः २. अभिमानः, दर्पः ।

खुद्दी, सं. स्त्री. (सं. क्षुद्र >) वैदलतण्डुलादीनां कणः ।

ख़ुनक, वि. (फ़ा.) शीत, शीतल, हिम ।

ख़ुनकी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शैत्यम् ।

खुनखुना, सं. पुं. (अनु.) झणझणः, खणखणः, क्रीडनकभेदः ।

खुनस, सं. स्त्री. (सं. खिन्नमनस् >) कोपः, क्रोधः ।

खुनसाना, क्रि. अ., दे. 'क्रोध करना' ।

खुनसी, वि., (हि. खुनस) कोपन, क्रोधन, रोषण ।

खुनाक, सं. पुं. दे. 'डिफथीरिया' ।

ख़ुफ़िया, वि. (फ़ा.) गूढ़, गुप्त, निभृत ।

—पुलिस, सं. स्त्री. (फ़ा + अं.) प्रच्छन्न-गुप्त-गूढ़, रक्षिणः (बहु.), अपसर्पाः, चराः, स्पशाः ।

खुब(भ)ना, क्रि. अ. (अनु.) आ-प्र-विश् (तु. प. अ.), व्यध् (दि. प. अ.), छिद् (रु. प. अ.), छिद्रं-प्रवेशं कृ ।

ख़ुमार, सं. पुं. (अ.) म(मा)दः, क्षीवता, शौंडता २. तन्द्रा, निद्रालुत्वं ३. निशाजागरजं शैथिल्यम् ।

ख़ुमारी, सं. स्त्री., दे. 'ख़ुमार' ।

खुरंड, सं. पुं. (सं. खुर् = खुरचना >) शुष्कव्रणत्वच् (स्त्री.), ईर्मझिल्ली २. किलासं, सिध्मम् ।

खुर, सं. पुं. (सं.) शफः-फं, विखः, निघृष्वः, क्षुरः २. खट्वादीनां पादुकम् ।

—दार, वि., खुरिन् , शफिन् ।

खुरखुर, सं. स्त्री. (अनु.) खुरखुर-घरघर, शब्दः-नादः ।

खुरखुरा, वि. (सं. खुर्=खुरचना >),दुःस्पर्श, असम, विषम, श्लक्ष्णताशून्य ।

खुरचन, सं. स्त्री. (हिं. खुरचना)* खुरितं, पयःपात्रखुरितं २. खुरितं, मिष्टान्न-कांदव,-भेदः ।

खुरचना, क्रि. स. (सं. खुरणं) खुर्-क्षुर् (तु. प. से.), उत्-वि,-लिख् (तु. प. से.) २. अपघ्या,-मृज् (अ. प. वे.), विलुप् (प्रे.) ।

खुरचनी, सं. स्त्री. (हिं. खुरचना) उल्लेखनी, निर्घर्षणी २. काष्ठकुद्दालः, खनित्रं ३. दुग्धपात्रखुरितम् ।

खुरजी, सं. स्त्री. (फ़ा) दे. 'थैला' ।

खुरदरा, वि. नतोन्नत २. असम, विषम, पिण्डकावृत, श्लक्ष्णता-स्निग्धता-परिष्कार,-शून्य ।

खुरपा, सं. पुं. (सं. क्षुरप्रः) घासछेदनशस्त्रं, लघु-,टंगः-टंगं-खनित्रं २. चर्मकारोपकरणभेदः ।

ख़ुरमा, सं. पुं. (फ़ा) खर्जूरं, खर्जूरी-फलम् २. दे. 'छुहारा' ३. मिष्टान्नभेदः ।

खुरली,सं. स्त्री. (सं.) शस्त्राभ्यासः २. शस्त्राभ्यासस्थलम् ।

खुरौंट, वि., दे. 'खुर्रांट' ।

ख़ुराक, सं. स्त्री. (फ़ा.) भोज्यं, भक्ष्यं, खाद्यं, आहारः, भोजनं २. (औषध-) मात्रा, भागः ।

ख़ुराकी, वि. (फ़ा.) औदरिक, अद्मर, घस्मर । सं. स्त्री., (दैनिक-) भोजनव्य ।

ख़ुराफ़ात, सं. स्त्री. (अ.) अश्लील-ग्राम्य-अशिष्ट,-वचनानि (बहु.) २. गाल्यः-दुर्वचनानि (बहु.) ३. कलहः ।

खुरी, सं. स्त्री. (सं. खुरः >) शफ-विख,-चिह्नं २. दे. 'एड़ी' ।

—करना, मु., अतिक्षिप्रं चल् (भ्वा. प. से.) ।

ख़ुर्द, वि. (फ़ा.) लघु, अल्प, सूक्ष्म ।

—बीन, सं. स्त्री. (फ़ा.) सूक्ष्मदर्शकयंत्र, अण्वीक्षणयंत्रम् ।

—बुर्द, वि., (फ़ा.) नष्टभ्रष्ट २. समाप्त ।

खुर्रांट, वि. (देश.) धूर्त, कुटिल, शठ २. वृद्ध ३. अनुभविन् ।

खुलना, क्रि. अ. (सं. खुड्=तोड़ना >) (द्वारादि) वि-अपा-वृ (कर्म.), निरर्गली भू, असंवृत-उद्घाटित (वि.)+भू २. (कली आदि) विकस्-दल-फुल्ल् (भ्वा. प. से.), भिद् (कर्म.) ३. (आँख) उन्मिष् (तु. प. से.), उन्मील् (भ्वा. प. से.) ४. (हाथ) प्रसृ (भ्वा. प. अ.), वितन् (कर्म.) ५. (मुख) व्यादा (कर्म.), विजृम्भ् (भ्वा. आ. से.) ६. (रहस्यादि) प्रकटी-व्यक्ती-आविर्+भू, प्रकाश् (भ्वा. आ. से.) ७. प्रारभ्-प्रस्तु (कर्म.) ८. उद्ग्रंथ् (कर्म.), शिथिलीभू, उन्मुच् (कर्म.) ९. (भूमि आदि विद-भिद् (कर्म.) ।

खुल खेलना, मु., व्यक्तं प्रकाशं-अनिभृतं निर्भयं (किञ्चित् कार्यं) कृ अथवा विषयासक्त (वि.)+भू ।

खुलवाना, क्रि. प्रे., 'खोलना' के प्रे. रूप ।

खुला, वि. (हिं खुलना) उद्दाम, उद्ग्रथित, उत्सूत्र, मुक्त, बन्धनहीन २. शिथिल, प्रश्लथ, विगलित ३. शिथिलसन्धि, विरल ४. स्पष्ट, प्रकट, व्यक्त ५. अपावृत, व्यावृत, असंवृत ६. विस्तृत, विस्तीर्ण, विशाल । 'खुलना' के धातुओं के क्तांत रूप ।

खुले आम | **खुले खज़ाने** | **खुले मैदान** | **खुल्लम खुल्ला** } क्रि. वि., प्रत्यक्षं, प्रकटं प्रकाशं, व्यक्तं, निर्भयं, निःशङ्कम् ।

खुलना, क्रि. प्रे., 'खोलना' के प्रे. रूप ।

खुलासा, सं. पुं. (फ़ा) सारांशः, संक्षेपः ।

खुश, वि. (फ़ा.) प्रसन्न, प्रमुदित, प्रहृष्ट ।

—होना, क्रि. अ., आनन्द् (भ्वा. प. से.), मुद् (भ्वा. आ. से.), हृष् (दि. प. से.), परि-सं-तुष् (दि. प. अ.), दे. 'प्रसन्न होना' ।

—क़िस्मत, वि. (फ़ा.) सौभाग्यशालिन् ।

—क़िस्मती, सं. स्त्री. (फ़ा.) सौभाग्यम् ।

—ख़त, वि. (फ़ा.) लिपिज्ञ, सुलेखक ।

—ख़ती, सं. स्त्री. (फ़ा.) सुलेखन,-कौशलं-नैपुण्यं-विद्या ।

—ख़बरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शुभ-सु,-समाचारः-वार्ता-वृत्तं-उदन्तः ।

—गवार, वि. (फ़ा.) रुचिर, सुखद, आ-,नंदक ।

—दिल, वि. (फ़ा.) प्रसन्नमनस्, संतोषिन् ।

—नसीब, वि. (फ़ा.) सौभाग्यवत्, धन्य ।

—नसीबी, सं. स्त्री. (फ़ा.) सौभाग्यवत्ता ।

—नुमा, वि. (फ़ा.) सुदर्शन, मनोहर, सुन्दर ।

—बू, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'सुगंध', सुवासः ।

—बूदार, वि. (फ़ा.) सुगन्धित, सुगन्धि ।

—रंग, वि. (फ़ा.) सुरंग, सुवर्ण ।

—हाल, वि. (फ़ा.) समृद्ध, संपन्न ।

—हाली, सं. स्त्री. (फ़ा.) अभ्युदयः, समृद्धिः (स्त्री.) ।

खुशामद, सं. स्त्री. (फ़ा.) चाटु (पुं. न.), चाटूक्तिः (स्त्री.), अति-मिथ्या,-स्तुतिः (स्त्री.), प्रशंसा, चाटुवादः ।

—करना, क्रि. स., मिथ्या-अतिमात्रं-अतीव प्रशंस् (भ्वा. प. से)-स्तु (अ. प. अ.)-नु (अ. प. से.), अभि-परि-सं-स्तु, चाटूक्तिभिः सांत्व-उपलल्-उपछंद (चु.), चाटूनि वद् (भ्वा. प. से.) ।

खुशामदी, वि. (फ़ा. खुशामद) मिथ्या-प्रशंसक, चाटुकार, प्रियंवद, चाटुवादिन् (पुं.) ।

—टट्टू, सं. पुं., अत्यनुरोधिन्, चाटुपटुः ।

खुशी, सं. स्त्री. (फ़ा.) हर्षः, प्रसन्नता, मोदः, आनन्द-प्रमोदः, आह्लादः, सन्तोषः, उल्लासः, चित्तप्रसादः, प्रीतिः-तुष्टिः (स्त्री.) ।

—मनाना, क्रि. अ. दे. 'खुश होना' ।

खुश्क, वि. (फ़ा., सं. शुष्क,) शुष्क, अजल, निर्जल, वान, नीरस २. रूक्ष, स्नेहशून्य, अशिष्ट ३. ग्लान, म्लान, विशीर्ण ।

—साली, सं. स्त्री. (फ़ा.) अनावृष्टिः (स्त्री.), २. दुर्भिक्षम् ।

खुश्का, सं. पुं. (फ़ा.) जलपक्वौदनः-नम् ।

खुश्की, सं. स्त्री. (फ़ा.) शुष्कता, निर्जलता, २. रूक्षता ३. स्थलं ४. दे. 'पलेथन' ।

खुसरफुसर, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'कानाफूसी' ।

ख़ुसिया, सं. पुं. (अ.) मुष्कः, वृषणः, शुक्र-ग्रंथिः ।

—बरदार, वि., चाटु,-कार-वादिन् ।

ख़ुसूसियत, सं. स्त्री. (अ.) विशेषता, विशिष्टता, विलक्षणता ।

खूँखार, वि. (फ़ा.) रक्त-रुधिर,-प्रिय, जिघांसु, हिंस्र । २. भीषण ३. निर्दय ।

खूँट, सं. पुं. (सं. खंडः-डं) अंशः, भागः । २. अस्रः, कोणः ३. अन्तः ४. पार्श्वः-र्श्वं ५. कर्णमलम् ।

खूँटा, सं. पुं. (सं. क्षोडः) शंकुः, कीलः कीलकः पुष्पलः २. नागदन्तः भारयष्टिः (स्त्री.) ३. काष्ठस्थूणा ।

खूँटी, सं. स्त्री. (हिं. खूँटा) लघु,-कीलः-कीलकः, २. नागदन्तः-तकः ३. तनुरुह-लोम,-मूलं ४. शस्यलवनानंतरं क्षेत्रस्थं कांडमूलम् ।

खूँद, सं. स्त्री. (हिं. खूँदना) अश्वादीनां खुरेण भूमिलेखनम् ।

खूँदना, क्रि. स. (खुण्ड्=तोड़ना >) (अश्वादयः) खुरेण पृथिवीं आहन् (अ. प. अ.)-घृष् (भ्वा. प. से.)-लिख् (तु. प. से.) ।

खुद, खूदड़, खूदर, सं. स्त्री. (सं. क्षुद्र >) दे. 'कूड़ा'।

खून, सं. पुं. (फ़ा.) रुधिरं, रक्तं, लोहितं शोणितं, असृज् (न.), अस्रं २. वधः, हत्या।

—करना, क्रि. स., वधं-घातं-हत्यां कृ, हन् (अ. प. अ.), मृ-व्यापद् (प्रे.) २. प्रमादेन नश्-अवसद् (प्रे.)।

—होना, क्रि. अ., द्वेषात् हन्-मार्-व्यापद् (कर्म.)।

—ख़राबा, सं. पुं., (फ़ा.) नृ-नर,-वधः-हत्या, रक्त,-पातः-स्रावः।

—ख़्वार, वि. दे. 'खूँख़ार'।

—थूकना, सं. पुं., रक्तष्ठीवनम्।

—आँखों में उतर आना, मु., कोपारुणनयन (वि.)+भू।

—उबलना या खौलना, मु., अतीव कुप् (दि. प. से.)।

—का प्यासा, मु., जिघांसु, वधोद्यत।

सवार होना या चढ़ना, मु., वधाय-हत्यायै सज्ज-उद्यत (वि.)+भू।

खूनी, सं. पुं. (फ़ा.) घातकः, हंतृ (पुं.)। वि., हंतुकाम, वधैषिन्, जिघांसु।

खूब, वि. (फ़ा) अच्छ, भद्र, उत्तम, श्रेष्ठ। क्रि. वि., सम्यक्, साधु, शोभनम्।

—रू, वि. (फ़ा) सुमुख (सुमुखी स्त्री.)।

—सूरत, वि. (फ़ा.) सुन्दर, सुरूप।

—सूरती, सं. स्त्री. (फ़ा.) सुंदरता, सुरूपता।

खूबी, सं. स्त्री. (फ़ा) अच्छता, उत्तमता २. गुणः, विशेषः, विलक्षणता।

खूसट, सं. पुं. (सं. कौशिक) दे. 'उल्लू' २. जरठः, स्थविरः। वि., रसिकताशून्य, शुष्क-हृदय २. जड ३. कुदर्शन।

खेचर, सं. पुं. (सं.) गगनविहारिन्, व्योमगः २. ग्रहः, नक्षत्रं ३. वायुः (पुं.) ४. देवः ५. विमानः-नं ६. खगः ७ मेघः ८. भूतप्रेताः ९. राक्षसः १०. विद्याधरः ११. शिवः १२-१३ दे. 'पारा' तथा 'कसीस'।

खेचरान्न, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'खिचड़ी'।

खेटक, सं. पुं. (सं.) मृगया, आखेटः २. कर्षक-ग्रामः ३. नक्षत्रं ४. बलदेवगदा ५. यष्टिः (स्त्री.) ६. ढालं, फलकम्।

खेटकी, सं. पुं., दे. 'शिकारी'।

खेड़ा[1], सं. पुं. (सं. खेटः) लघुग्रामः, ग्रामटिका।

—पति, सं. पुं. ग्रामणीः (पुं.)।

खेड़ा[2], सं पुं. (देश.) विविधान्नयोगः।

खेत, सं. पुं. (सं. क्षेत्रं) केदारः, भूमिः (स्त्री.), वप्रः-प्रं, वलजं, निष्कुटः, राजिका, पाटीरः २. शस्यं, कृषिफलं ३. रण-युद्ध-समर,-भूमिः ४. खड्ग,-फलं-पत्रं। ५. उत्पत्तिस्थानं ६. (पशूनां) जातिः (स्त्री.)।

—आना या रहना, मु., वीरगतिं, आप् (स्वा. उ. अ.), युद्धे हन् (कर्म.)।

—छोड़ना, मु., युद्धात् पलाय् (भ्वा. आ. से.)

खेतिहर, सं. पुं., दे. 'किसान'।

खेती, सं. स्त्री. (हिं. खेत) दे. 'कृषि' २. शस्यं, कृषिफलम्।

—बारी, सं. स्त्री., दे. 'कृषि'।

खेद, सं. पुं. (सं.) अनुशोकः, अनुपातः, २. दुःखं, शोकः, आधिः (पुं.), आ(अ)र्तिः (स्त्री.), क्लेशः ३. ग्लानिः-क्लांतिः-श्रांतिः (स्त्री.)।

—जनक, वि. (सं.) अनुशोकप्रद, दुःखदायक, क्लेशकर, श्रांतिजनक।

खेदना, क्रि. सं सं. (खेटः >) दे. 'खदेरना'।

खेदा, सं. पुं. (हिं. खेदना) गजादिबंधनपंजरम्। २. दे. 'शिकार'।

खेदित, वि. (सं.) खिन्न, अनुतप्त २. श्रांत, क्लांत।

खेना, क्रि. स., (सं. क्षेपणं >) नौदंडेन संचल्-प्रेर्-प्रचुद्-प्रणुद् (प्रे.)। २. नौकां वह्-प्रेर् (प्रे.) इ. ३. दे. 'विताना'।

खेप, सं. स्त्री. (सं. क्षेपः >) सकृद्वाह्यो भारः २. पोतस्थं द्रव्यं ३. नौकादीनां सकृत् यात्रा।

खेपना, क्रि. स. (सं. क्षेपणं) दे. 'विताना'।

खेम, सं. पुं., दे. 'क्षेम'।

ख़ेमा, सं. पुं. (अ.) पट-वस्त्र,-मंडपः-गृहं-वेश्मन् (न.), दूष्यं-श्यम्।

—गाड़ना, क्रि. स., दूश्यं रच् (चु.)-उप-क्लृप् (प्रे.)।

खेल, सं. पुं. (सं. खेला) क्रीडा, केलिः (स्त्री.), खेलनं, लीला २. वृत्तं, उदंतः ३. सुकर-क्षुद्र,-कार्यं ४. कामक्रीडा, संभोगः ५. अभिनयः, नाटकं ६. कौतुकं, विचित्रकार्यं ७. (पशुओं के लिए) जलद्रोणिः (स्त्री.)-णी।

—समझना, मु., सुकरं मन् (दि. आ. अ.)।

खेलना, क्रि. अ. (सं. खेलनं) खेल् विलस् क्रीड् (भ्वा. प. से.), विहृ (भ्वा. प. अ.) २. संभोगं-रतिक्रियां कृ ३. विचर्-चल् (भ्वा. प. से.) ४. भूताविष्टः अंगानि चल् (प्रे.) क्रि. स., नट्-रूप् (चु.), अभिनी (भ्वा. प. अ.)। (जूआ आदि) दिव् (दि. प. से.), ग्लह् (चु. उ. से.)।

खेलनी, सं. स्त्री. (सं.) चातुरंगक्रीडापटः २. शारः, शारिः (पुं.)।

खेलवाड़, सं. पुं., दे. 'खिलवाड़'।

खेलवाड़ी, वि., दे. 'खिलाड़ी'।

खेलवाना, क्रि. प्रे., 'खेलना' के प्रे. रूप।

खेला, सं. स्त्री. (सं.) क्रीडा, लीला।

खेलाड़ी, वि., दे. 'खिलाड़ी'।

खेलाना, क्रि. प्रे., 'खेलना' के प्रे. रूप।

खेलि, सं. स्त्री. (सं.) क्रीडा, लीला। सं. पुं., पशुः २. खगः ३. सूर्यः ४. शरः ५ गीतम्।

खेवक, सं. पुं.
खेवट, सं. पुं. } (हिं. खेना) दे. 'केवट'।

खेवट, सं. पुं. (हिं. खेत + वट प्रत्य.) क्षेत्रपतिलेखः।

खेवना, क्रि. स., दे. 'खेना'।

खेवा, सं. पुं. (हिं. खेना) तार्यं, तरपण्यं, आतरः तारिकं २. नौकया नदीलंघनं ३. वारः, अवसरः, पर्यायः ४. भाराक्रांता नौः (स्त्री.)।

खेवैया, सं. पुं. (हिं. खेवना) दे. 'केवट'।

खेस, सं. पुं. (देश.) अवस्तरः, आस्तरपटः।

खेसारी, सं. स्त्री. (सं. कृशरः >) कलायभेदः।

खेह (र), सं. स्त्री. (सं. क्षारः) रजस् (न.), धूलिः (स्त्री.) २. भस्मन् (न.), मसितम्।

खैंचना, क्रि. स., दे. 'खींचना'।

खचवाना, क्रि. प्रे., 'खींचना' के प्रे. रूप।

खैंचाखैंच-ची
खैंचातान-नी } सं. स्त्री., दे. 'खींचतान'।

खैर, सं. पुं. (सं. खदिरः) सारद्रुमः, यज्ञांगः कुष्ठारिः (पुं.), दंतधावनः २. (हिं. कत्था) खादिरः, खदिरसारः ३. खगभेदः।

ख़ैर, क्रि. वि. (अ.) अस्तु, एवं, साधु, भद्रं, सुष्ठु (सब अव्य.) २. का चिंता। सं. स्त्री., कुशलं, मंगलम्।

—आफ़ियत, सं. स्त्री. (अ.) कुशलक्षेमम्।

—ख़्वाह, वि. (अ. + फ़ा.) शुभचिंतक, हितैषिन्।

—ख़्वाही, सं. स्त्री. (अ + फ़ा.) शुभचिंतकता, हितैषिता।

खैरा, वि. (हिं. खैर) खदिरवर्ण। सं. पुं., खादिरवर्णः कपोतो अश्वो वको वा २. नलतल,-मीनः।

ख़ैरात, सं. स्त्री. (अ.) दानं, त्यागः।

ख़ैराती, वि (अ.) धर्मार्थं, पुण्यार्थं २. वदान्य, उदार।

ख़ैरियत, सं. स्त्री. (अ.) मंगलम्, कुशलम्।

खों (खुं) गाह, सं. पुं. (सं. खांगाहः तथा खोंकाहः) श्वेतपिंगलाश्वः।

खों खों, सं. स्त्री. (अनु.) कास-क्षवथु,-शब्दः।

खोंच, सं. स्त्री. (सं. कुच्=लकीर डालना >) कीलादिभिः वस्त्र,-विदरः-विदलः-रंध्रम् २. दे. 'खरोंच'।

—आना या लगना, क्रि. अ., कीलादिभिः दॄ (कर्म., दीर्यते)।

खोंचना, क्रि. स., दे. 'खरोंचना'।

खोंचा, सं. पुं. (सं. कुच्=जोड़ना >) खगबंधनवंशः २. दे. खोंच' ३. दे. 'खरोंच' ४. आघातः, प्रहारः ५. पूरणम्।

—खोंची, सं. स्त्री., परस्परकलहः, मिथःप्रहारः।

खोंची, सं. स्त्री. (सं. कुच् >) पूरणं २. पदार्थान्तरनिवेशितवस्तु (न.) ३. क्षुद्रवस्तुक्रयः।

खोंटना, क्रि. स. (सं. खुंड्=तोड़ना >) अंगुलाभिः पत्रपुष्पं त्रुट् (प्रे.), उद्धृ-उत्कृष् (भ्वा. प. अ.)।

खोंटा, वि., दे. 'खोटा'।

खोंडर, सं. पुं. (सं. कोटरः-रं) निष्कुहः।

खोंड़ा, वि. (सं. खोड) विकलांग, विकल, खंज, पंगु २. दंतहीन।

खोंता, खोंथा, सं. पुं. दे. 'घोंसला'।

खोंपा, सं. पुं. दे. 'खोपा'।

खोंसना, क्रि. स. (सं. कोशः >) पूरणं, निआ,-वेशनं, निधानम्।

खोआ, सं. पुं., दे. 'खोया'।

खोखला, वि. (हिं खुक्ख) शून्य-रिक्त,-गर्भ-उदर-मध्य।

खोखा, सं- पुं. (हिं. खुक्ख) धनार्पणादेशपत्रं । (वं.) बालः [खोखी (स्त्री.) = बालिका] ।

खोज, सं. स्त्री. (हिं. खोजना) अन्वेषणं-णा, गवेषणं-णा, मार्गणं-णा, अनुसंधानं, शोधः २. चिह्नं, लक्षणं ३. चक्र-पाद,-चिह्नम् ।

—करना, क्रि. स. दे. 'खोजना' ।

—खाज, सं- स्त्री., पृच्छा, अनुयोगः २. अनुसंधान, विचारः-रणं-रणा ३. अन्वेषणम् ।

खोजना, क्रि. स. (सं- खुज्=चुराना >) अन्विष् (दि. प. से.), निरूप्-मार्ग् (चु०), मृग् (चु. आ. से.), अनुसंधा (जु. उ. अ.) विचि (स्वा. उ. अ.), अव्-निर्-ईक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।

खोजवाना, खोजाना, क्रि. प्रे. 'खोजना' के प्रे. रूप ।

खोजा, सं- पुं. (फ़ा. ख्वाजः) सौविदः, सौविदल्लः, कंचुकिन् , २. सेवकः ३. आर्यः, महाशयः, मिश्रः, नायकः ।

खो जाना, क्रि. अ., दे. 'खोना' (क्रि. अ.) ।

खोजी, खोजिया, सं- पुं. (हिं. खोजना) अन्वेषकः, निरूपकः, निरीक्षक, अनुसंधायकः, २. चरः, चारः, अपसर्पः ।

खोट, सं- स्त्री. (सं. क्षोट् >) दोषः, वैकल्यं, वैगुण्यं, दूषणं २. मिश्रणं, ३. मिश्रधातुः (पुं.), कुप्यं, अपद्रव्यम् ।

—मिलाना, क्रि. स., अपद्रव्येण मिश्र् (चु.) ।

खोटा, वि. (सं. क्षोट् >) दूषित, सदोषः, दोषिन् , विकल २. (अपद्रव्येण) मिश्रित, कूट, कृत्रिम् ३. दुष्ट, खल ४. छलिन् , अधार्मिक ।

खोटा खरी सुनाना, मु., निर्भर्त्स्-तर्ज् (चु.), अविक्षिप् (तु. प. अ.), निंद् (भ्वा. प. से.) ।

खोटाई, सं. स्त्री., दे. 'खोटापन' ।

खोटापन, सं- पुं. (हिं. खोटा) दुष्टता, क्षुद्रत्वं २. छलं, कपटं ३. दोषः, वैगुण्यं ४. अपद्रव्यमिश्रणम् ।

खोड, वि. (सं-) विकलांग, अंगहीन, विकलेन्द्रिय, पोगंड ।

खोड़, सं. स्त्री. (हिं. खोट) देव-भूत-प्रेत,-कोपः २. रोगः ३. कुमुहूर्तं-र्तः ४. दोषः, विकलता ५. चंदनकाष्ठखंडः-डम् ।

खोड़रा, सं. पुं., दे. 'कोटर' ।

खोढ़ा, सं. पुं. दे. 'हथकड़ी' ।

खोद[1], सं. पुं. (फा. खोद) खोलकः, लौहधातुमय,-शिरस्त्राणं-शीर्षण्यं शिरस्कम् ।

खोद[2], सं. पुं. (हिं. खोदना) पृच्छा २. निरीक्षणम् ।

—विनोद, सं. पुं., अतीव अनुयोगः-अवेक्षणं-विचारणम् ।

—कर पूछना, मु., निभृतं-रहस्यं-गूढं प्रच्छ् (तु. प. अ.)-अनुयज् (रु. आ. अ.) ।

खोदना, क्रि. स. (सं. खुड्=तोड़ना >) खन् (भ्वा. उ. से.), (भूमिं) अवदॄ (प्रे.), भिद् (रु. प. अ.) । २. उत्पट्-उन्मूल् (चु.) ३. उत्कॄ (तु. प. से), तक्ष्-त्वक्ष् (भ्वा. प. से.), मुद्र (चु.) ४. उत्खन् , निर्भिद् (रु. प. अ.) ५. यष्ट्यादिभिः सं-आ-पीड् (चु.) ६. उद्दीप्-उत्तिज् (प्रे.) । सं. पुं., खननं, खातिः (स्त्री.), अवदारणं, भेदनं, उत्पाटनं, उन्मूलनं, उत्किरणं, तक्षणं इ. ।

—योग्य, वि., खननीय, खेय, अवदारयितव्य, उत्पाटनीय, उन्मूलयितव्य ।

—वाला, सं. पुं. खनकः(-की स्त्री.), अवदारकः, उन्मूलकः उत्पाटकः ।

खोदा हुआ, वि., खात, अवदीर्ण, उन्मूलित, उत्पाटित इ. ।

खोदनी, सं. स्त्री., (हिं. खोदना) लघु,-खनित्रं-टंगः ।

कन—,सं. स्त्री., श्रवणशोधनी, कर्णकंडूयनी ।

दंत—, सं. स्त्री., रदनशोधनी, दंतोल्लेखनी ।

खोदवाना, क्रि. प्रे., 'खोदना' के प्रे. रूप ।

खोदाई, सं. स्त्री., दे. 'खुदाई' ।

खोन्चा, सं. पुं. (फ़ा. ख्वान्चः) भांडवाहभाजनं, क्षुद्रवस्तुविक्रेतुः पात्रम् ।

खोना, क्रि. स. (सं. क्षेपणं >) हा (जु. प. अ.), त्यज् (भ्वा. प. अ.) २. अपव्यय् (चु.) वृथा क्षै-ह्रस् (प्रे.) । ३. विप्रकृ, नश् (प्रे.) । क्रि. अ., मार्गात् भ्रंश्-भ्रंस् (भ्वा. आ. से.), संभ्रम् (दि. प. से.) २. नश् (दि. प. से.), च्यु (भ्वा. आ. अ.) ।

खोपड़ा, खोपरा, सं. पुं. (सं. खर्परः) कपालः-लं, कर्परः २. शीर्षं, शिरस् (न.) ३. अप्फलं, नारिकेरः-लः, कौशिलफलं ४. अप्फल-नारिकेर,-बीजं-गर्भः ५. भिक्षापात्रम् ।

खोपड़ी, सं. स्त्री. (हिं. खोपड़ा) दे. 'खोपड़ा' (१, २)।
अंधी या औंधी–का, मु. जड, अज्ञ, मंदमति।
—खाना या चाट जाना, मु., वाचालतया उद्विज्-संतप्-अर्द् (प्रे.)।
—गंजी करना, मु. अत्यधिकं तड् (प्रे.)।
खोपा, सं. पुं. (सं. खर्परः) नारिकेल,-बीजं-गर्भः २. तृणपटलकोणः ३. मार्गाभिमुखो गृहकोणः ४. ब्रह्मरंध्रस्थः त्रिकोणः केशविन्यासः। ५. वेणी-कबरी-कच,-बंधः, जूटः-टकम्।
खोया¹, सं. पुं. (सं. क्षोदः >) घनी-श्यानी-सांद्री,-कृतं, दुग्धं, किलाटः २. इक्षु,-शेषः-शेपं, हृतरसः इक्षुः ३. इष्टकालेपः।
खोया², वि. (हिं. खोना) नष्ट., भ्रष्ट, संभ्रांत।
खोर, वि. (सं.) पंगु, खंज, श्रोण, खोड, खोल।
खोरा, सं. पुं. (सं. खोलकः या फ़ा. आबखोरः) चषकः-कं, पात्रम्। दे. 'कटोरा'।
खोरी, सं. स्त्री., दे. 'कूचा'।
खोल, सं. पुं. (सं. खोलं >) कोषः-शः, वेष्टनं, आवरणं २. कीटत्वच् (स्त्री.) ३. पुटः-टं ४. उत्तरीयं, चेलम्।
खोलक, सं. पुं., (सं.) शिरस्त्राणम् २. कपालः-लं ३. क्रमुक-पूग-त्वच् (स्त्री.) ४. वल्मीकः-कं ५. सर्पविलम्।
खोलना, क्रि. स., (सं. खुड्=भेदन >) (द्वारादि) उद्घट् (प्रे.), वि-अपा-वृ (स्वा. उ. से.), निरर्गलीकृ। (आँखें) उन्मील्, उन्मिष्-उत्फल् (प्रे.)। (मुख) व्यादा (जु. प. अ.), उत्-वि-। जृंभ् (प्रे.), (रहस्यादि) आविष्-व्यक्ती-प्रकटी,-कृ। २. शिथिलयति (ना. धा.), मोक्ष् (चु.), उन्मुच् (प्र.) ३. विस्तॄ-विस्तृ (प्रे.) ४. अपा-वि-वृ, उच्छिद् (प्रे.) ५. विवरणं कृ ६. व्याकृ, व्याख्या (अ. प. अ.)। सं. पुं., उद्घाटनं, विवरणं, उन्मीलनं, विकासः, स्फुटनं, विजृंभणं, आविष्करणं, उन्मोचनं इ.।
खोलने योग्य, वि., उद्घाटनीय, उन्मीलितव्य, उज्जृंभणीय इ.।
खोवा, सं. पुं., दे. 'खोया'।
ख़ोशा, सं. पुं. (फ़ा.) गुच्छः, गुत्सः, स्तवकः।
खोसना, क्रि. स., दे. 'छीनना'।
खोह, सं. स्त्री. (सं. गोहः) कंदरः-रा, गुहा, गह्वरं, दरी २. विवरः-रं, विलं, कुहरम्।
खौं, सं. स्त्री. (सं. खन् >) गर्तः, अवटः, विलम् २. कुशूलः, धान्यकोष्ठः।
खौंचा, सं. पुं. (सं. षट्+च) सार्द्धषड्भिः गुणनतालिका।
खौंसड़ा, सं. पुं. (पं० खुसना >) जीर्ण,-उपानह् (स्त्री.)-पादत्रम्।
ख़ौफ़, सं. पुं. (अ.) भयं, भीतिः (स्त्री.), त्रासः।
—नाक, वि. (अ.+फ़ा) भयंकर, भीतिजनक।
खौर, सं. स्त्री. (सं. क्षुर्=लकीर डालना >) अर्द्धचंद्राकारं चंदनादेस्तिलकं २. स्त्रीमस्तक-भूषणभेदः।
खौरहा, वि. (हिं. खौरा) (पशु) पामा-सिध्म,-पीडित, पामन।
खौरा, (पशुओं का खुजली-रोग) सं. पुं. (सं. क्षौरं या फ़ा. बालखोरः >) पामन्-सिध्मन् (पुं.), पामा। वि. दे. 'खौरहा'।
खौरू, सं. पुं. (देश.) वृषभ,-गर्जना-निनादः २. कलहः।
खौलना, क्रि. अ., दे. 'उबलना' २. बुद्बुदायते-फेनायते (ना. धा.) ३. प्रकुप् (दि. प. से.), सं-वि-क्षुभ् (भ्वा. आ. से.)।
खौलाना, क्रि. प्रे., 'खौलना' के प्रे. रूप।
खौहा, वि. (हिं. खाना) औदरिक, अद्मर, घस्मर, बहुभक्षिन्।
ख्यात, वि. (सं.) प्रसिद्ध, विश्रुत।
ख्याति, सं. स्त्री. (सं.) प्रसिद्धिः-कीर्तिः (स्त्री.)।
ख्यापन, सं. पुं. (सं. न.) प्रकाशनं, घोषणं, प्रचारणम्।
ख़्याल, सं. पुं. (अ.) विचारः-रणा. मतं, सं-, मतिः (स्त्री.) २. सं.-स्मृतिः (स्त्री.), स्मरणं, धारणा ३. अनुमानं, वि-,तर्कः, अभ्यूहः-हनं ४. आदरः, संमानः ५. गीतिभेदः।
—से उतरना, मु., विस्मृ (कर्म.), स्मृतिपथात् भ्रंश् (भ्वा. आ. से.)।
ख़याली, वि. (अ. ख़्याल) काल्पनिक, कल्पित, कल्पनात्मक, अवास्तविक, वितथ।
—पुलाव पकाना, मु., गगनकुसुमानि-खपुष्पाणि वा चि (स्वा. उ. अ.)।
ख्रिष्टान, सं. पुं. (हिं. खीष्ट) दे. 'ईसाई'।

ख्रीष्ट, सं. पुं. (अं. क्राइस्ट) दे. 'ईसामसीह' ।

ख़्वाजा, सं. पुं. (फ़ा.) स्वामिन् , प्रभुः २. अध्यक्षः, नायकः ३. सौविदः-दल्लः ४. श्रेष्ठ-यवनभिक्षुः (पुं.) ५. आर्यः, मिश्रः ।

ख़्वाब, सं. पुं. (फ़ा.) निद्रा २. स्वप्नः ।

ख़्वार, वि. (फ़ा.) नष्ट, ध्वस्त, क्षीण २. अनादृत, अपमानित ।

ख़्वारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) विध्वंसः, विनाशः २. अनादरः, तिरस्कारः ।

ख़्वाह, अव्य, (फ़ा.) वा., अथवा, आहोस्वित् (सब अव्य.) ।

—म ख़्वाह, क्रि. वि., मताग्रहेण, मताभिमानेन २. अवश्यं, निर्विकल्पम् ।

ख़्वाहिश, सं. स्त्री. (फ़ा.) अभिलाषः, आकांक्षा, इच्छा ।

—मंद, वि. (फ़ा.) आकांक्षिन् , इच्छुक ।

—करना या रखना, क्रि. स., इष् (तु. प से.), वांछ्-आकांक्ष्-अभिलष् (भ्वा. प. से.) ।

ग

ग, देवनागरीवर्णमालायाः तृतीयव्यंजनवर्णः, गकारः ।

गंगाम्बु सं. पुं. (सं. न.) जाह्नवी, गंगा,-जलं-वारि (न.), २. वृष्टेः स्वच्छजलम् ।

गंग, गंगा, सं. स्त्री. (सं. गंगा) जाह्नवी, त्रिपथगा, भागीरथी, मंदाकिनी, सुरसरित् (स्त्री.), विष्णुपदी, खापगा, हरशेखरा ।

—जमनी, वि. (सं. गंगा + हिं. जमुना >) मिश्रित, संकर, द्विवर्ण २. स्वर्णरजतमय ३. शुक्ल-कृष्ण, सितासित ।

—जल, सं. पुं. (सं. न.) भागीरथीतोयं २. श्वेत-सूक्ष्मवस्त्रभेदः ।

—जली, सं. स्त्री. (सं. गंगाजल >) गंगाजल-पात्रम् ।

—जली उठाना, मु. गंगोदकेन शप् (भ्वा. उ. अ.) ।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) भीष्मः, गांगेयः २. प्रेत-वाहो जातिविशेषः ३. तीर्थवासी विप्रभेदः ।

—सागर, सं. पुं. (सं.) गंगामुखं २. कलशः, उदकपात्रभेदः ३. वंगेषु तीर्थविशेषः ।

गंगाल, सं. पुं. (सं. गंगालयः >) बृहज्जलपात्रं ।

गंगोदक, सं. पुं. (सं. न.) गंगा-भागीरथी,-जलं-तोयम् ।

गंज[1], सं. पुं. (फ़ा., सं.) कोशः-षः २. राशिः (पुं.) ३. निषद्या, वाणिज्यस्थानं ४. समूहः ।

गंज[2], सं. पुं. (सं. कंजः=केश >) खालित्यं, खल्वाटता, विकेशता ।

गंजन, सं. पुं. (सं. न.) अवज्ञा, तिरस्कारः २. नाशः, ध्वंसः ३. पीडा, व्यथा ।

गंजा, वि. (सं. कंजः=केश >) खल्वाट, विकेश (-शी, स्त्री.), खलति, खल्लोट ।

गंजी, सं. स्त्री. (सं. गंजः), राशिः (पुं.), निकरः, समूहः २. दे. 'शकरकंद' ३. दे. 'बनियायन' ।

गंजीफ़ा, सं. पुं. (फ़ा) पत्रखेलाभेदः । २. क्रीडापत्रचयः ।

गंजेड़ी, गंजल, वि. (हिं. गांजा) गंजापायिन्, गंजापः ।

गँठकटा, सं. पुं. (हिं. गाँठ + काटना) ग्रंथि-भेदकः, चौरः ।

गँठजोड़ा, सं. पुं. (हि. गाँठ + जोड़ना) दे. 'गँठबंधन' ।

गँठबंधन, सं. पुं. (सं. ग्रंथिबंधनं) ग्रंथि-ग्रंथिका,-बंधनं-योजनं-संश्लेषणं । (वैवाहिकरीतिभेदः) ।

गंड, सं. पुं. (सं.) गल्लः, कपोलः २. हस्ति-कपोलः, कटः, करटः ३. दे. 'कनपटी' ४. स्फोटकः, पिटकः ५. रेखा, चिह्नं ६. ग्रंथिः (पुं.) ७. खड्गिन्, गंडकः ८. रक्षाकरंडः ९. गडुः (पुं.) ।

—माला, सं. स्त्री. (सं.) गलगंडः, कंठमाला, गलरोगभेदः ।

—स्थल, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'कनपटी' ।

गंडक, सं. पुं. (सं.) कंठधार्यो रक्षाकरंडः २. ग्रंथिः (पुं.) ३. स्फोटकरोगभेदः ४. खड्गिन् (पुं.) ५. चिह्न ६. देशविशेषः ।

गंडकी, सं. स्त्री. (सं.) नदीविशेषः २. खड्गिनी, खड्गमृगी, तुंगमुखी ।

गंडा, सं. पुं. (सं. गंडकः=गांठ) १. कंठधार्यो रक्षाकरंडः २. चतुष्कं, चतुष्टयं ३. कपर्दिका-पण,-चतुष्टयं ४. वलयः, चक्रं ५. हयकंठभूषणं ६. इक्षुः (पुं.)।

—तावीज़, सं. पुं., मंत्रयंत्रम् ।

—तावीज़ करना, क्रि. स., रक्षाकरंडैः भूतप्रेतान् निष्कस् (प्रे.) दूरी कृ ।

गँड़ा(डा)सा, सं. पुं. (हिं. गेड़ी + सं. असिः >) यवस-घास,-छेदनी २. लघु,-परशुः (पुं.) परश्वधः ।

गंडूष, सं. पुं. (सं.) गंडूषा, चुलुकः. चुलकः । २. शुंडाग्रं, शुंडाराग्रम् ।

गँडेरी, सं. स्त्री. (हिं. गंडा) इक्षु,-खण्डकः-कम् ।

गंदगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) मलः-लं, अव (प) स्करः, कल्कं-ल्कः, किट्टं, कर्दमः २. मालिन्यं. कालुष्यं ३. अपवित्रता, अशुचिता ।

गँदला, वि., दे. 'गंदा' ।

गंदा, वि. (फ़ा.) मलिन, मलीमस, समल, कलुष, आविल २. अशुद्ध, अपवित्र ३. कुत्सित, गर्ह्य, अश्लील ।

—करना, क्रि. स., कलुषयति-मलिनयति (ना. धा.), दुष् (प्रे. दूषयति), कलुषी-आविली,-कृ । [गंदी (स्त्री.)=मलिना इ.]

गंदी बातें, अश्लील,-ग्राम्य-अवाच्य-वचनानि ।

गंदा बिरोज़ा, सं. पुं. (सं. गंध + दे. विरोज़ा) कुंदः-दुः, कुंदुरः-रुः, पालंकी, बहु-तीक्ष्ण,-गंधः, श्रीवत्सः-सकः, सरल,-द्रवः-निर्यासः ।

गंदुम, सं पुं. (फ़ा., सं. गोधूमः), सुमनः, म्लेच्छभोज्यः, प्रवटः ।

गंदुमी, वि. (फ़ा. गंदुम) गोधूम (समास में), गोधूम-सुमन,-वर्ण, प्रवटमय ।

गंध, सं. स्त्री. (सं. पुं.) आमोदः, वासः २. घ्राणग्राह्यः पृथिवीगुणः (वै.) ३. सुगंधः, सुवासः ।

—बिलाव, सं. पुं. (सं. गंधबिडालः) गंध-मार्जारः, खट्टासः ।

—राज,—सार, सं. पुं. (सं.) चंदनम् ।

गंधक, सं. स्त्री. (सं. पुं.) गंधि(ध)कः, गंधाश्मन्, सौगंधिकः ।

—का तेज़ाब, सं. पुं., गन्धकाम्लः ।

गंधकी, वि. (सं. गंधकः >) गंधकः,-गर्भ-युक्त २. ईषत्पीत ।

गंधन, सं. पुं. (सं. न.) गन्धप्रसारणम् २. व्रीहिभेदः ३. अध्यवसायः ४. आघातः प्रहारः ५. दोषप्रदर्शनम् ६. ससूचनम् ।

गंधर्व, सं. पुं. (सं.) स्वर्गगायकः, दिव्यगायनः, गातुः (पुं.), देवभेदः २. गायकः । [-र्वी स्त्री.]

—नगर, सं. पुं. (सं. न.) खे स्थले वा ग्राम-नगरादीनां मिथ्याभासः, गातु-गंधर्व,-पुरं २. माया, प्रपंचः, इन्द्रजालम् ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) संगीतं, संगीत-वाद्य,-विद्या-शास्त्रम् ।

—विवाह, सं. पुं. (सं.) विवाहभेदः (धर्म.) पित्रोरनुमतिं विना स्वेच्छातो विवाहः ।

गंधवती, सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी, धरणी । २. व्यास जननी, सत्यवती ३. सुरा ४. जातीभेदः ।

गंधार, सं. पुं. (सं. गांधारः) भारतवर्षस्यो-त्तरस्यां दिशि देशविशेषः २. तृतीयस्वरः (संगीत.) ।

गंधी, सं. पुं. (सं. गंधिन् >) गांधिकः, गंध,-विक्रयिन्-उपजीविन्-वणिज् २. ३. घास-कीट,-भेदः ।

गंधारी, सं. स्त्री., दे. 'गांधारी' ।

गंभीर, वि. (सं.) ग (गं) भीर,-रकं, अगाध, निम्न २. गहन, निविड ३. दुर्बोध, निगूढार्थ ४. मंद्र, घन (शब्द) ५. शांत, सौम्य ।

गंभीरता, सं. स्त्री. (सं.) गांभीर्य; गौरवं; धीरता; निम्नता; गहनता; दुर्बोधता; सौम्यता इ. ।

गँवाऊ, वि. (हिं. गँवाना) अपव्ययिन्, विक्षेपिन्, दे. 'उजाड़ू' ।

गँवाना, क्रि. स. (सं. गमनं >) अपव्यय् (चु.) वृथा क्षै ह्रस् (प्रे.) २. हा (जु. प. अ.), त्यज् (भ्वा. प. अ.) ३. (समयं) या-अतिवह् (प्रे.) ।

गँवार, वि. (हिं. गाँव) ग्रामीण, ग्रामिक, ग्रामिन् (पुं.), ग्राम्य २. मूर्ख, जड ३. अनार्य, असभ्य ।

—पन, सं. पुं., ग्रामीणता, मूर्खता, अस-भ्यता इ. ।

गँवारू, वि. (हिं. गँवार) ग्रामीय, असंस्कृत, प्राकृत २. अशिष्ट, असभ्य ।

गँसीला, वि. (हिं. गाँसी) ग्रंथिल, ग्रंथि-पर्व,-मय २. वेधक, छेदक।
गऊ, सं. स्त्री., दे. 'गौ'।
गगन, सं. पुं. (सं. न.) आकाशः-शम्।
—भेदी, वि. (सं.-दिन्) आकाश-व्योम,-वेधक-वेधिन्-भेदिन् (शब्दादि) २. (भवनादि) गगन-व्योम, स्पृश् चुंबिन्, अभ्रंलिह्, नभोलिह्।
गगरा, सं. पुं. (सं. गर्गरः=दधिमंथनभाण्ड>) धातु,-कुंभः-कलशः-घटः, गर्गरः।
गगरी, सं. स्त्री. (सं. गर्गरी=दधिमंथनपात्र>) धातुमयलघु,-कलशः-घटः-कुंभः, गर्गरी।
गच, सं. पुं. (अनु.) पंके चलनजः-शब्दः २. खड्गादिवेधनोत्थः शब्दः ३. लेपः, सुधा, ४. गृहभूमिः-भूः (स्त्री.) ५. सुधालिप्ततलं, कुट्टिमः-मम्।
—कारी, सं. स्त्री. (हिं गच+फ़ा. कारी>) सुधा-लेप,-कार्य-कर्मन् (न.)।
गचपच, वि. दे. 'गिचपिच'।
गजंद, सं. पुं. (फ़ा.) आघातः, प्रहारः २. हानिः-क्षतिः (स्त्री.) ३. कष्टम्, क्लेशः।
गज, सं. पुं. (सं.) हस्तिन्, कुंभिन्, करिन्, कुंथिन्, दंतिन्, रदिन्, शुंडिन् (सब पुं.), दे. 'हाथी'।
—आनन, सं. पुं. (सं.) गजमुखः, गणेशः, गजवदनः।
—कुंभ, सं. पुं. (सं.) करिकुंभः, गजशिरःपिंडः।
—गति, सं. स्त्री. (सं.) गज-कुंजर,-गमनं-गतिः।
—गामिनी, वि. स्त्री. (सं.) इभ-वारण,-गामिनी-चारिणी (सुंदरी)।
—दंत, सं. पुं. (सं.) हस्ति-करि,-दंतः-रदः-रदनः २. गणेशः।
—दान, सं. पुं. (सं. न.) गजमदः २. करि-वितरणम्।
—पति, सं. पुं. (सं.) करीन्द्रः (यूथनाथः, यूथपः)।
—पाल, सं. पुं. (सं.) हस्तिपः-पकः, आधोरणः, निषादिन् (पुं.), महामात्रः।
—मोती, सं. पुं. (सं. गजमौक्तिकं) गजमुक्ता, गजमणिः (पुं.)।
—मुख, सं. पुं. (सं.) दे. 'गजानन'।
—राज, सं. पुं. (सं.) दे. 'गजपति'।
—वदन, सं. पुं. (सं.) दे. '-आनन'।
—वान, सं. पुं. (सं. गजः>) दे. 'गजपाल'।
—शाला, सं. स्त्री. (सं.) द्विप-हस्ति,-शाला-गृहम्।
गज़, सं. पुं. (फ़ा.) गजः (माप) २, आग्नेय-चूर्ण-प्रणोदनी यष्टिः (स्त्री.) ३. सारंगवादन-यष्टिः, वादन-[illegible]-वादित्र,-दण्डः ४. इषुभेदः।
गज़क, [illegible] स्त्री. (फ़ा. कज़क) व्यंजनं, उपस्करः, उप-अव,-दंशः २. तिलशर्करा (मिठाई) ३. उपाहारः ४. प्रातराशः।
गज़ट, सं. पुं. (अं.) राजपत्रम्।
गजनी, सं. स्त्री. (सं. गंजः>) मृत्तिका-मृद्,-भेद।
ग़ज़ब, सं. पुं. (अ.) रोषः, क्रोधः २. विपद्-विपत्तिः (स्त्री.) ३. अन्यायः, अत्याचारः ४. विलक्षणवृत्तांतः।
—करना, क्रि. स., अन्यायेन अधिष्ठा (भ्वा. प. अ.) शास् (अ. प. से.) २. विस्मयंजन्(प्रे.)।
—का, वि. अद्भुत, आश्चर्य।
—नाक, वि., रुष्ट, क्रुद्ध, कुपित।
गजर, सं. पुं. (सं. गर्जः, हिं. गरज) चतुरष्ट-द्वादशवादनसमयेघंटानादः २. प्रातः घंटानादः। सं. स्त्री., श्वेतरक्तगोधूममिश्रणम्।
—दम, क्रि. वि., प्रातः, प्रभाते, महति-प्रत्यूषे।
—बजर, सं. पुं. (अनु.) अनुचितमिश्रणम्। २. खाद्याखाद्यं, भक्ष्याभक्ष्यम्।
गजरा, सं. पुं. (सं. गंजः=ढेर>) माला, माल्यं, स्रज् (स्त्री.) २. वलयः, कटकः-कं, करभूषणं ३. कौशेयवस्त्रभेदः।
गजरी[1], सं. स्त्री. (हिं. गजरा) कलाची-मणि-बन्ध,-भूषणं-आभरणम्।
गजरी, सं. स्त्री. (हिं. गाजर) लघु-क्षुद्र,-गाजरं-गर्जरम्।
ग़ज़ल, सं. स्त्री. (फ़ा.) श्रृंगारकविता।
गज़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) स्थूलसौत्रवस्त्रभेदः।
गजी, सं. स्त्री. (सं.) हस्तिनी, करिणी।
गजेन्द्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'गजपति'।
गटकना, क्रि. स. (अनु. गट) खाद् (भ्वा. प. से.) २. निगॄ (तु. प. से.), ग्रस् (चु.) ३. अन्यायेन अपहृ(भ्वा. प. अ.)।
गटगट, सं. पुं. (अनु.) गटगटा,-शब्दः-ध्वनिः (पुं.), गटगटायितम्। क्रि. वि., सगटगटा-शब्दम्।
गटपट, सं. स्त्री. (अनु.) रतिः (स्त्री.), मैथुनं, सहवासः २. घनमैत्री। (वि.) मैथुनासक्त।

गटरगूं, सं. स्त्री. (अनु.) कपोत,-शब्दः-रुतं-कूजितं. घूत्कारः।

गट्ट, सं. पुं. (अनु.) निगरणध्वनिः (पुं.)।

गट्टा, सं. पुं. (सं. ग्रंथ>) मणिबंधः-धनं, पाणिमूलं २. गुल्फः, घुंटः ३. जानु (पुं. न.), नलकीलः ४. रोधनी, अवष्टंभः ५. ग्रंथिः (पुं.), ग्रन्थिका ६. संधिः (पुं.) पर्वन् (न.), अस्थिसंधिः (पुं.) ७. बीजं ८. मिष्टान्नभेदः।

गट्टी, सं. स्त्री. (हिं. गट्टा) आवापनं, तंतुकीलः।

गट्ठर, सं. पुं. (हिं. गाँठ) पोटलिका, भारः, कूर्चः,-संघातः, गुच्छः।

गट्ठा, सं. पुं. (हिं. गाँठ) काष्ठादीनां भारः २. दे. 'गट्ठर' (३-४) पलांडु-लशुन,-ग्रंथिः(पुं.)।

गट्ठी, सं. स्त्री. (हिं. गट्ठा) दे. 'गठरी'।

गठ, सं. स्त्री. (हिं. गाँठ, दे.)।

—कटा, वि. पुं., दे. 'गँठकटा'।

—जोड़ा, सं. पुं., दे. 'गँठबन्धन'।

गठन, सं. स्त्री. (सं. ग्रंथनं) घटना, रचना, विधानं, निर्माणम्।

गठना, क्रि. अ. (सं. ग्रन्थनं) संग्रंथ्-गुफ् (कर्म.), गुणैः-तंतुभिः बंध् (कर्म.) २. सम्यक् रच्-निर्मा (कर्म.) ३. स्नेहातिशयो विद् (दि. आ. अ.) ४. षड्यंत्रे संसृज् (कर्म.)।

गठरा, सं. पुं., दे. 'गट्ठर'।

गठरी, सं. स्त्री. (हिं. गठरा) लघु,-पोटलिका-भारः-कूर्चः २. संचितधनम्।

—जोड़, सं. पुं., कृपणः, कदर्यः।

गठवाना, } क्रि. प्रे., 'गाँठना' के प्रे. रूप।
गठाना,

गठाव, सं. पुं. (हिं. गठना) संबन्धः, संश्लेषः २. दे. 'गठन'।

गठित, वि. [सं. ग्र(ग्रं)थित] गुंफित, बद्ध २. रचित, निर्मित।

गठिया, सं. स्त्री. (हिं. गाँठ) दे. 'गठरी' २. वात,-रक्तं-शोणितं, ग्रन्थिवातः, दे. 'वातरोग'।

—वात, —बाव, सं. स्त्री. (हिं.+सं. वातः तथा वायुः) संधि,-वातः-वायुः २. वातः, वायुः, वातरोगः।

गठीला, वि. (हिं. गाँठ) ग्रन्थि-पर्व-संधि,-मय (-मयी स्त्री.) ग्रन्थिल, पर्ववत्-ग्रन्थिमत् (-ती स्त्री.)।

गठल [illegible] वि. (हिं. गठना)-वज्र दृढ़,-देह-[illegible]ग, स्फूर्तिमत् (-ती स्त्री.) २. दृढ़ ३. सबल [illegible]ली (स्त्री.) = दृढांगी, सबला इ.]।

गठौत-ती, सं. स्त्री. (हिं. गठना) मैत्री, सौहार्दं २. कुमंत्रणा, उपजापः, कूटः-टम्।

गड़ंत, सं. स्त्री. (हिं. गाड़ना) अभिचाराय निखात-निहित,-वस्तु (न.), *निखातम्।

गड़कना, क्रि. अ. (अनु.) गडगडायते (ना. धा.), गडगडा,-शब्दं-नादं-रावं कृ।

गड़गज, सं. पुं., दे. 'गरगज'।

गड़गड़, सं. स्त्री. (अनु.) गर्जितं, स्तनितं, गडगडायितं २. कर्दनं, आन्त्रशब्दः, शूलशब्दः ३. धूम्रपानयंत्रशब्दः।

गड़गड़ा, सं. पुं. (अनु.) धूम्रपानयंत्रभेदः, *गड़गड़ः।

गड़गड़ाना, क्रि. अ. (अनु.) गज्-गर्ज्-स्तन् (भ्वा. प. से.), गडगडायते (ना. धा.) २. नद्-रस् (भ्वा. प. से.)।

गड़गड़ाहट, सं. स्त्री, (हिं. गड़गड़ाना) दे. 'गड़गड़'।

गड़गूदड़, सं. पुं. (अनु. गड़ + हिं. गूथन >) जीर्ण-शीर्ण-जर्जरित,-वस्त्र-पटः, चीरं, कर्पटः। २. असारः, मलम्।

गड़ना, क्रि. अ. (सं. गर्तः >) आ-प्र-विश् (तु. प. अ.), विध् (तु. प. से.), निर्-, भिद् (रु. प. अ.) २. (भूमौ) निधा-निक्षिप् (कर्म.) ३. पीड् (कर्म.), व्यथ् (भ्वा. आ. से.) ४. नि-, मस्ज् (तु. प. अ.), अव-नि-सद् (भ्वा. प. अ.)।

गड़ जाना, मु., लज्ज् (तु. आ. से.), त्रप् (भ्वा. आ. वे.)।

गड़प, सं. स्त्री. (अनु.) निगरणं, ग्रसनम्।

गड़पना, क्रि. स., (अनु. गड़प >) सत्वरं निगॄ (तु. प. से.)-पा(भ्वा. प. अ.) २. अन्यायेन आत्मसात् कृ।

गड़प्पा, सं. पुं. (अनु.) बृहद्,-गर्तः-गर्तं-अवटः।

गड़बड़, वि. (हिं. गड़ = गड्ढा + बड़=ऊँचा) असम, विषम्, नतोन्नत २. अस्तव्यस्त, अक्रम। सं. पुं. अव्यवस्था, क्रमभंगः २. विप्लवः, संक्षोभः, कोलाहलः ३. रोगः, आमयः।

—अध्याय, सं. पुं. } दे. 'गड़बड़' सं. पुं.।
—झाला, सं. पुं.

गड़बड़ाना, क्रि. अ. (हिं. गड़बड़) आकुली भू, मुह् (दि. प. वे.), भ्रांत्या मन् (दि.

आ. अ.)। क्रि. स., वि-सं.,-भ्रम्-क्षुभ् (प्रे.), मुह् (प्रे.), आकुली कृ।

गड़बड़ाहट, गड़बड़ी, सं. स्त्री., दे. 'गड़बड़' सं. पुं.।

गड़बड़िया, वि. (हिं. गड़बड़) मोहक, मोहन २. क्रम-व्यवस्था,-भंजक-नाशक, उपद्रविन्।

गडमड, वि. (अनु.) संकुल, संकीर्ण, व्यत्यस्त, अव्यवस्थित।

—करना, क्रि. स., संकरी-संकुली कृ, क्रमं भंज् (रु. प. अ.)।

गडरिया, सं. पुं. (सं. गड्डरिका >) अवि-गड्डर-मेष,-पालः।

गड़वा, सं. पुं. (सं. गडुकः) गडुः (पुं.), गडुकः, गड्डूकः २. पुष्पपात्रभेदः।

गड़वाना, क्रि. प्रे., 'गड़ना' के प्रे. रूप।

गड़हा, सं. पुं. (सं. गर्तः-र्तं) गर्ता, अवटः, बिलं, विवरं, खातं, पतेरः।

गड़ाना, क्रि. स. 'गड़ना' के प्रे. रूप।

गड़ारी, सं. स्त्री. (अनु.) उच्छ्रायणचक्रं २. मंडलं, वृत्तं, चक्रम् ३. मंडलाकार-गोल,-रेखा।

गड़ि (रि) यार, वि. (हिं. गड़ना) धृष्ट, दुर्दांत २. मंथर।

गडु, वि. (सं.) कुब्ज, वक्रपृष्ठ। सं. पुं. (सं.) ककुदः, ककुदम् २. गडुकः, जलपात्रभेदः ३. किंचुलुकः, गंडूपदः।

गडुआ, सं. पुं. (सं. गडुकः) सनालीकं लघु-पानपात्रम्।

गड़ेरिया, सं. पुं., दे. 'गडरिया'।

गड्ड, सं. पुं. (सं. गणः) नि-सं,-चयः, निकरः, स्तोमः, ओघः।

गड्डबड्ड, गड्डमड्ड, सं. पुं. (अनु.) संकरः, अक्रमः, क्रमभंगः। वि., विपर्यस्त, व्यत्यस्त, भग्नक्रमः।

गड्डा, सं. पुं. (सं. शकटः) शकटं-टिका, वाहनं, प्रवहणम्।

गड्डाम, वि. (अं. गाड + ड्याम) नीच, अधम, जघन्य।

गड्डी, सं. स्त्री. (हिं. गड्ड) (एक ही वस्तु का) सं-नि,-चयः, संघातः २. राशिः, समूहः।

गड्ढा, सं. पुं. दे. 'गड़हा'।

गढंत, वि. (हिं. गढ़ना) कृत्रिम, कल्पित २. दे. 'गठन'।

मन—, वि. कपोल-मनः,-कल्पित, मानसोद्-भावित, काल्पनिक, कल्पनात्मक।

गढ़, सं. पुं. (सं. गडः) परिखा, खातं, गर्तः-र्ता २. दुर्गं, कोटः।

—पति, सं. पुं. (सं.) दुर्गपालः।

गढ़न, सं. स्त्री. (हिं. गढ़ना) दे. 'गठन'।

गढ़ना, क्रि. स. (सं. घटनं) घट् (चु.), वट्ट्-रच् (चु.), निर्मा (अ. प. अ., जु. आ अ.), क्लृप्-साध्-संपद्(प्रे.), २. तड् (चु.) ३. मिथ्या क्लृप् (प्रे.), मनसा सृज् (तु. प. अ.)।

गढ़ा, सं. पुं., दे. 'गड़हा'।

गढ़ाई, सं. स्त्री. (हिं. गढ़ना) घटनं, निर्माणं, रचनम् २. घटन-रचन,-मूल्यं-भृतिः (स्त्री.)-निर्वेशः।

गढ़ाना, क्रि. प्रे. 'गढ़ना' के प्रे. रूप।

गढ़ी, सं. स्त्री. (हिं. गढ़) लघु,-दुर्गः-कोटः २. कोटाकारं दृढभवनम्।

गण, सं. पुं. (सं.) समूहः, वर्गः, समुदायः, वृंदम् २. श्रेणी, कोटिः (स्त्री.) ३. त्रिगुल्मात्मकः सेना-विभागः (= २७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोड़े, १३५ पैदल) ४. परिचारकः परिजनः ५. पक्ष-पाति-अनुयायि,-वर्गः ६. सभा, समाजः ७. गणेशाधिष्ठिताः शिवसेवकाः ८. मगण-टगणाद्यः वर्णमात्रासमूहाः(छंद.) ९-१०. धातु-शब्द,-समूहः (व्या.) ११. नक्षत्रसमूहविशेषाः (ज्यो.)।

—अधिप—नाथ,—नायक,—पति, सं. पुं. दे. 'गणेश'।

—द्रव्य, सं. पुं. (सं. न) सर्वजनीनः पदार्थः २. द्रव्यसमूहः।

गणक, सं. पुं. (सं.) दैवज्ञः, ज्योतिर्विद् २. गणितज्ञः।

गणकी, सं. स्त्री. (सं.) १. २. गणितज्ञ-दैवज्ञ-, पत्नी।

गणन, सं. पुं. (सं. न.) संख्यानं, गणना।

गणना, सं. स्त्री. (सं.) गणनं, संख्यानं २. संख्या ३. अलंकारभेदः (सा.)।

—करना, क्रि. स., दे. 'गिनना'।

गणनीय, वि. (सं.) संख्येय, गण्य २. दे. 'प्रसिद्ध'।

गणिका, सं. स्त्री. (सं.) वेश्या, भोग्या, पण्यस्त्री।

गणित, सं. पुं. (सं. न.) गणित,-शास्त्रं-विद्या, गणना-मात्रा-संख्या-परिमाण,-विद्या-शास्त्रम् २.

अंक,-विद्या-गणितं-शास्त्रम् । वि., संख्यात, संकलित ३. चिंतित, निरूपित ।
—कार, सं. पुं. (सं.) गणितज्ञ २. ज्योतिर्विद् (पुं.) ।
—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गणित' (१-२) ।
अंक—, सं. पुं. (सं. न.) अंक,-विद्या-शास्त्रम् ।
वीज—, सं. पुं. (सं. न.) गणितविद्याभेदः ।
रेखा—, सं. पुं. (सं. न.) रेखागणना, भू-ज्या,-मितिः (स्त्री.) ।
गणेश, सं. पुं. (सं.) गज,-आस्यः-मुखः-वदनः-आननः, लंबोदरः, गणाधिपः, विनायकः, आखुगः, शूर्पकर्णः, विघ्नेशः, परशुपाणिः (पुं.) ।
गोबर—, सं. पुं., जडः, मूढः ।
गण्य, वि. (सं.) संख्येय, गणनार्ह, गणनीय २. प्रतिष्ठित, पूज्य, मान्य ।
—मान्य, वि. (सं.) दे. 'गण्य' ।
गत, वि. (सं.) अतीत, अतिक्रांत, व्यतीत, २. मृत ३. हीन, रहित ४. लब्ध, प्राप्त । सं. स्त्री. (सं. गतिः स्त्री.), दशा, अवस्था २. रूपं, आकृतिः (स्त्री.) ३. उपयोगः व्यवहारः ४. दुर्दशा, नाशः ५. नृत्यभेदः ६. प्रेतक्रिया ।
गतका, सं. पुं. (सं. गदा) चर्मावृतयष्टिः (स्त्री.) २. क्रीड़ा-खेला,-भेदः ।
गतांक, सं. पुं. (सं.) पत्रपत्रिकादीनाम् इतांकः-अतीतांकः अव्यवहितपूर्वांकः ।
गताक्ष, वि. (सं.) अन्ध, अनयन, अनेत्र ।
गतागत, सं. पुं. (सं. न.) गमनागमनम् २. पुनर्जन्मन् (न.), जन्ममरणम् ।
गतानुगतिक, वि. (सं.) अन्धानुयायिन्, अन्धविश्वासिन् ।
गति, सं. स्त्री. (सं.) गमनं, चलनं, व्रजनं, अयनं, यानं, सरणं २. स्फुरणं, कंपनं, स्पंदनं ३. चेष्टा, व्यापारः ४. दशा, अवस्था ५. प्रवेशः ६. प्रयत्नसीमा ७. अवलंबः ८. माया, लीला ९. रीतिः (स्त्री.), विधिः (पुं.) १०. देहांतर-प्राप्तिः (स्त्री.) ११. मुक्तिः (स्त्री.) १२. ताल-स्वरानुसारमंगचालनं (संगीत) १३. प्रेत-कर्मन् ।
—बनाना, मु., निर्दयं तड् (चु.)-प्रहृ (भ्वा. प. अ.) ।
—होना, मु., प्र-उप-युज् (कर्म.) २. निर्दयं ताड् (कर्म.) २. मुक्तिं लभ् (भ्वा. आ. अ.) ।
गत्ता, सं. पुं. (देश.) संसृष्टपत्रं, गुरुपत्रम् ।

गद, सं. पुं. (सं.) रोगः, आमयः २. श्रीकृष्णानुजः ३.-४. वानर-असुर,-विशेषः । (सं. न.) विष-षः, गरलम् ।
गदका, सं. पुं., दे. 'गतका' ।
गदगद, वि, दे. 'गद्गद' ।
ग़दर, सं. पुं. (अ.) प्रजा-प्रकृति,-कोपः-क्षोभः, २. सैन्य-सेना,-द्रोहः क्षोभः प्रकोपः ३. विप्लवः, संप्लवः, संमर्दः ।
—करना या मचाना क्रि. अ. (राज्ञे) द्रुह् (दि. प. वे.), राजशासनं लंघ् (भ्वा. आ. से.) इ. ।
गदला, वि. (फ़ा. गंदा) सपंक, सकर्दम, समल, पंकिल, मलिन ।
—करना, क्रि. स., कलुषयति-पंकिलयति-आविलयति (ना. धा.), मलिनी कृ ।
—पन, सं. पुं., मालिन्यं, पंकिलत्वं आविलता ।
गदहपचीसी, सं. स्त्री. (हिं. गदहा + पचीस) आषोडशात् आपंचविंशतेः आयुषो भागः । २. अनुभवहीनता, मांद्यं, मौर्ख्यम् ।
गदहा, सं. पुं. (सं. गर्दभः) रासभः, खरः, वालेयः, भारगः, धूसरः, ग्राम्याश्वः २. मूर्खः, अज्ञः [गदही (स्त्री.) = रासभी, खरी, गर्दभी] ।
—पन, सं. पुं., मौर्ख्यं, जडता ।
गदा, सं. स्त्री. (सं.) लोहमयशस्त्रभेदः ।
—धर, सं. पुं. (सं.) कृष्णः २. विष्णुः । वि., गदाधारिन् ।
गदेला, सं. पुं., दे. 'गद्दा' ।
गद्गद, वि. (सं.) प्रहृष्ट, आनंदपुलकित, परम-मुदित, सुप्रसन्न २. अस्पष्ट, असंबद्ध, अस्फुट (अक्षरस्वरादि) ।
गद्दा, सं. पुं. (हिं. गद् से अनु.) तूलसंस्तरः, तूला ।
गद्दी, सं. स्त्री. (हिं. गद्दा) (तूल-) आसनं, तूलिका २. पिचुलविष्टरः ३. उपधानं, उपबर्हः ४. पर्याणं, पल्यानं ५. सिंहासनं, नृपासनं ५. अधिकारपदं ६. ७. कर-चरण,-तलम् ।
—पर बैठना, क्रि. अ., सिंहासनं आरुह् (भ्वा. प. अ.), राज्येऽभिषिच् (कर्म.) ।
—पर बैठाना, क्रि. स., अभिषिच् (तु. प. अ.), सिंहासने उपविश् (प्रे.)
—से उतारना, क्रि. स., सिंहासनात् च्यु-अव-रुह्-भ्रंश्-अवपत् (प्रे.) ।

—नशीन, वि. (हिं + फ़ा.) सिंहासन,-आसीन-आरूढ़ २. उत्तराधिकारिन् ।

—नशीनी, सं. स्त्री., अभिषेकः, राज्याभिषेकः ।

गद्य, सं. पुं. (सं. न.) छन्दोहीनरचना, अपादः पदसन्तानः ।

गधा, सं. पुं., दे. 'गदहा' ।

गधी, गधैया, सं. स्त्री., दे. 'गदही, ('गदहा' के नीचे) ।

ग़नीम, सं. पुं. (अ.) शत्रुः, रिपुः २. दस्युः (पुं.), लुंठकः ।

ग़नीमत, सं. स्त्री. (अ.) लोत्रं, लोप्त्रं, अपहृतधनं २. अयत्नलब्धं धनं ३. संतोषविषयः, धन्यत्वम् ।

गन्ना, सं. पुं. (सं. कांडः-डं >) रसालः, इक्षुः-कांडः-दंडः, दे. 'ईख' ।

गप[1], सं. स्त्री. (सं. कल्पः अथवा अनु.) किंवदंती, लोक-जन,-श्रुतिः (स्त्री.)-प्रवादः-वार्त्ता २. जल्पः, प्रलापः ३. मिथ्या-असत्य,-वृत्तांतः-वृत्तं-समाचारः ४. विकत्थनं, गर्वोक्तिः (स्त्री.) ।

—मारना,—हाँकना, क्रि. अ., प्रलप्-जल्प् (भ्वा. प. से.) ।

—शप, सं. स्त्री., वृथा,-कथा-संलापः ।

गप[2], सं. पुं. (अनु.) निगरण-ग्रसन,-ध्वनिः (पुं.) ।

गपागप, क्रि. वि., सत्वरं, झटिति, शीघ्रम् ।

गपकना, क्रि. सं., दे. 'निगलना' ।

गपड़चौथ, सं. स्त्री. (हिं. गपोड़ा + चौथा) वृथा-निरर्थक,-संलापः-आलापः-संवादः २. दे. 'गड़बड़ी' ।

गपड़शपड़, सं. स्त्री., दे. 'गपड़चौथ' ।

गपागप, अव्य (अनु.) सत्वरं, शीघ्रं, आशु, झटिति (सब अव्य.) ।

गपोड़ा, सं. पुं. दे. 'गप' ।

गप्प, सं. स्त्री., दे. 'गप' ।

गप्पी, सं. पुं. (हिं. गप) वावदूकः, जल्प-(पा)कः २. मिथ्याभाषिन्, अनृतवादिन् (पुं.) ३. आत्मश्लाघिन् (पुं.) ।

गप्फा, सं. पुं. (अनु. गप >) बृहत्,-कवलः-ग्रासः-पिंडः २. लाभः ।

गफ़, वि. (सं. ग्रप्स = गुच्छा अथवा गुफ् = बुनना >), अविरल, घन, सांद्र, सूत ।

ग़फ़लत, सं. स्त्री. (अ.) अनवधानता, प्रमादः २. स्खलितं, अपराधः ।

ग़बन, सं. पुं. (अ.) कपटेन आत्मसात्करणं-अपहरणं-उपयोगः ।

—करना, क्रि. सं., कपटेन आत्मसात्कृ ।

गबरू, सं. पुं. (फ़ा. खूबरू) (नव-) युवकः, युवन् (पुं.), तरुणः २. पतिः (पुं.), वरः । वि., सरल, अमाय ।

गभस्ति, सं. पुं. । (सं.) किरणः, रश्मिः (पुं.) २. सूर्यः ३. बाहुः (पुं.) ४. हस्तः ।

—पाणि—मान्—हस्त, सं. पुं. (सं.) सूर्यः ।

गभीर, वि. (सं.) दे. 'गम्भीर' ।

ग़म, सं. पुं. (अ.) शोकः, विषादः, दुःखं २. चिन्ता, रणरणकः-कम् ।

—गीन, वि. (अ. + फ़ा.) विषण्ण, सचिन्त ।

—खाना, मु., क्षम्, (भ्वा. आ. वे.), क्षम् (दि. प. वे., क्षाम्यति) ।

गमक[1], वि. (सं.) गंतृ, यातृ, २. सूचक, बोधक ।

गमक[2], सं. स्त्री. (अनु.) पटह-भेरी,-नादः २. सुगन्धः ।

गमन, सं. पुं. (सं. न.) यानं, व्रजनं, चलनं, प्रस्थानं २. मैथुनम् ।

—आगमन, सं. पुं. (सं. न.) यातायातं, यानायानं, गतागतम् ।

गमला, सं. पुं. (पुर्त. गैमेलो) प्रसून-पुष्प,-पात्रं-भाजनं २. पुरीष,-उच्चार,-पात्रम् ।

ग़मी, सं. स्त्री. (अ. ग़म) शोकः, विलापः २. मृत्युः ।

गम्य, वि. (सं.) प्राप्य, लभ्य २. यातव्य, अयनीय ३. साध्य, शक्य ४. सम्भोगार्ह ।

गयंद, सं. पुं. (सं. गजेन्द्रः) गज,-पतिः (पुं.) -राजः ।

गय, सं. पुं. (सं. गजः) द्विरदः, द्विपः, करिन्, कुम्भिन् ।

गया[1], सं. स्त्री. (सं.) मगधेषु गयराजर्षिपुरी, तीर्थविशेषः ।

गया[2], वि. (सं. गत) यात, प्रस्थित ।

—गुज़रा,—बीता, वि., नष्ट, मृत, २. निकृष्ट, तृणप्राय ।

गर, सं. पुं. (सं.) विषं, उपविषं २. रोगः ।

ग़रक़, वि., दे. ग़र्क़ ।

ग़रक़ाब, वि., दे. 'ग़र्क़ाब' ।

ग़रक़ी, सं. स्त्री., दे. 'ग़र्की'।

गरगज, सं. पुं. (हिं. गढ़+सं. गर्ज्) दुर्ग-प्राचीरशृंगं। २. उद्बन्धनयंत्रं, घातशिला।

गरगरा, सं. पुं., दे. 'गराड़ी'।

गरज, सं. स्त्री. (सं. गर्जः) गर्जनं-ना, गर्जितं, स्तनितं, महा-दीर्घ-गम्भीर, शब्दः-नादः।

ग़रज़, सं. स्त्री. (अ.) आशयः, प्रयोजनं, अर्थः, स्वार्थ. २. आवश्यकता ३. अभिलापः।

क्रि. वि., अंते, अन्ततः, अन्ततो गत्वा २. अस्तु, एवं (अव्य.)।

—मन्द, वि. (अ.+फ़ा) स्वार्थलिप्सु, स्वलाभापेक्ष। २. इच्छुक, ईप्सु।

—मन्दी, सं. स्त्री., स्वार्थलिप्सा, स्पृहा, अपेक्षा।

बे—, वि. (फ़ा+अ.) निष्काम, निःस्पृह, निःसंग।

गरजना, क्रि. अ. (सं. गर्जनं), गज्, गर्ज्-विस्फूर्ज्-नद्-नर्द्-स्तन्-रस् (भ्वा. प. से.), महा-दीर्घ-गम्भीर,-नादं कृ।

सं. पुं. दे. 'गरज'।

ग़रज़ी, वि. (अ. ग़रज़) दे. 'ग़रज़मन्द'।

खुद—सं. स्त्री. (फ़ा+अ.) स्वार्थपरता, स्वहितनिष्ठा।

गरण, सं. पुं. (सं. न.) निगरणं, निगलनम्, ग्रसनं २. अवसेचनं, प्रोक्षणं ३. विषम्।

गरदन, दे. 'गर्दन'।

गरदनिया, सं. पुं. (हिं. गरदन) ग्रीवा-कण्ठ,-ग्रहणं,-ग्रहः, *अर्द्धचन्द्रः।

गरदा, सं. पुं., दे. 'गर्द'।

गरदान, सं. पुं. (फ़ा) शब्द-धातु,-रूपसाधनं (व्या.)।

—करना, क्रि. सं. शब्दरूपाणि वद् (भ्वा. प. से.)।

गरनाल, सं. स्त्री. (हिं. गर+सं. नालः) उरुवदनी शीतघ्नी।

गरम, वि., (फ़ा. गर्म, सं. घर्म) उष्ण, तप्त, सं-उत्-, आतपाक्रान्त, सोष्ण। २. उग्र, प्रचंड, क्रोधिन् ३. तीक्ष्ण, तीव्र ४. उत्साहिन्, सोत्साह।

—करना, क्रि. सं., परि-प्र-सं,-तप् (प्रे.), उद्-, दीप् (प्रे.), उष्णीकृ। मु., उत्तिज् (प्रे.)।

—होना, क्रि. अ., उष्णीभू, तप् (भ्वा. प. अ.; दि. आ. अ.) २. क्रुध् (दि. प. अ.)।

—कपड़ा, सं. पुं., और्ण-ऊर्णामय,-वस्त्रम्।

—ख़बर, सं. स्त्री. अभिनव-इदानींतन-समाचारः।

—मिज़ाज, वि., संरंभिन्, क्रोधिन्।

—सर्द, वि., कोष्ण, कवोष्ण, कदुष्ण।

गरमागरम, वि. (हिं. गरम+गरम) अत्युष्ण, सुतप्त, २. अभिनव, प्रत्यग्र।

गरमाना, क्रि. अ. क्रि. स. (हिं. गरम) दे. 'गरम होना' तथा 'गरम करना'।

गरमी, सं. स्त्री. (फ़ा., सं. घर्मः) सं-उत्-परि,-तापः, उष्णता, दाहः, उ(ऊ)ष्मन् (पुं.), उष्मः। २. उग्रता, चण्डता ३. कोपः ४. उत्साहः ५. ग्रीष्मः, ग्रीष्म,-समयः-कालः, निदाघः ६. उपदंशः।

—दाना, सं. पुं., दे. 'पित्' (पं.)।

गरल, सं. पुं. (सं. नं) गरः, विषं २. सर्पविषं ३. तृणपूलकम्।

गराँ, वि. (फ़ा.) भारिक, भारवत्, गुरु २. बहुमूल्य, महार्घ।

गराड़ी (री), सं. स्त्री. (अनु. गरर) दे. 'गड़ारी'।

ग़रारा, सं. पुं. (अनु. अथवा अ. ग़रग़रा) चलुः, च (चु) लुकः। २. चुलुकौषधम्।

—करना, क्रि. स. जलेन कंठं (गलं) धाव् (भ्वा. प. से.)-मृज् (अ. प. वे.)।

गरिमा, सं. स्त्री. (सं.-मन् पुं.) गुरुत्वं, भारवत्त्वं २. महिमन् (पुं.), गौरवं, महत्वं ३. अहंकारः ४. आत्मश्लाघा ५. सिद्धिविशेषः (योग.)।

गरिष्ठ, वि. (सं.) गुरुतम, भारवत्तम, अतिभारवत् २. मलावरोधक, मलाबष्टम्भक।

गरी, सं. स्त्री. (सं=गुलिका>) नारिकेल (र),-सारः-गोलः।

ग़रीब, वि. (अ.) अकिंचन, दरिद्र, निर्धन २. नम्र, विनत।

—ख़ाना, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) कुटी, कुटीरः २. दरिद्र-अनाथ,-आलयः-गृहम्।

—नि(ने) वाज, **—परवर** } वि. (अ.+फ़ा) दीन,-बंधु-दयालु-वत्सल-नाथ-पालक-पोषक।

ग़रीबी, सं. स्त्री. (अ. ग़रीब) दारिद्र्यं, निर्धनत्वं, अकिंचनता २. नम्रता ।
गरुड़, सं. पुं. (सं.) वैनतेयः, खगेशः-श्वरः, सुपर्णः, विष्णुरथः, नागांतकः ।
—आसन,-केतु,-ध्वज, सं. पुं. (सं.) विष्णुः ।
—पुराण, सं. पुं. (सं. न.) पुराणविशेषः ।
ग़रूर, सं. पुं. (अ.) अभिमानः, दर्पः, गर्वः ।
गरेबान, सं. पुं. (फ़ा.) निचोलगलः ।
गरोह, सं. पुं. (फ़ा.) समुदायः, समूहः ।
गर्क़, वि. (अ.) जलमग्न, सं.-परि,-प्लुत, जले तिरोहित २. नष्ट, ध्वस्त ३. कार्ये व्यापृत-लीन-मग्न ।
ग़र्क़ाब, वि. (अ.+फ़ा. आव) जलमग्न, आ-सं.परि,-प्लुत २. अति,-लीन-निरत-व्यापृत आसक्त ।
ग़र्क़ी, सं. स्त्री. (अ.) संप्लवः, आप्लावः । २. निमज्जनं, जले तिरोधानं ३. दे. 'लँगोटी' ।
गर्ग, सं. पुं. (सं.) ऋषिविशेषः २. वृषभः ।
गर्गर, सं. पुं. (सं.) दे. 'गगरा' २. ३. वाद्य-मत्स्य,-भेदः ।
गर्गरी, सं. स्त्री. (सं.) मंथनी, मंथनपात्रम् २. दे. 'गगरी' ।
गर्ज[1], सं. स्त्री., दे. 'गरज' ।
गर्ज़[2], सं. स्त्री., दे. 'ग़रज़' ।
गर्जन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'गरज' ।
गर्त्त, सं. पुं. (सं.) दे. 'गड़हा' २. दे. 'दरार' ३. जलाशयः ४. नरकविशेषः ।
गर्द, सं. स्त्री. (फ़ा.) धूली-लिः (स्त्री.), रेणुः, पांशुः, पांसुः, क्षोदः, रजस् (न.) ।
गर्दन, सं. स्त्री. (फ़ा.) ग्रीवा, कंधरः-रा, शिरोधरा, शिरोधिः, कंविः (पुं.) २. पात्रकंठः ।
—की अकड़न, सं. स्त्री., ग्रीवावातः ।
—तोड़ बुखार, सं. पुं. शीर्षावरणप्रदाहः, मस्तिष्ककशेरुकज्वरः ।
—हिलाना, क्रि. स., शिरः-मस्तकं चल्-कंप् (प्रे.) ।
—उठाना, मु., अभिद्रुह् (दि. प. अ., द्वितीया के साथ), व्युत्था (भ्वा. आ. अ.) द्रुह् (चतुर्थी के साथ) ।
—उड़ाना या काटना, मु., शिरः कृत् (तु. प. से.)-छिद् (रु. प. अ.) ।
—झुकाना, मु., वशं या-इ (दोनों अ. प. अ.) ।
—पर सवार होना, मु., दे. 'विवश करना' ।
—मरोड़ना, मु. गलहस्तयति (ना. धा.), गलनिष्पीडनेन व्यापद् (प्रे.) गलं निष्पीड् (चु.) ।
—मारना, मु., दे. '-उड़ाना या काटना' ।
—में हाथ देना या डालना, मु., अर्धचंद्रं दत्त्वा निष्कस् (प्रे.) ।
गर्दभ, सं. पुं. (सं.) दे. 'गदहा' (सं. न.) श्वेतकुमुदम् ।
गर्दभी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गदही' ।
गर्दा, सं. पुं., दे. 'गर्द' ।
गर्दिश, सं. स्त्री. (फ़ा.) परिवर्तः-र्तनं, घूर्णनं, परिभ्रमणं, चक्रं २. आपद्-विपद् (स्त्री.) ।
—करना, क्रि. अ. परिवृत् (भ्वा. आ. से.), दे. 'घूमना' ।
गर्भ, सं. पुं. (सं.) भ्रूणः, पिंडः, कललं-लं, उदरस्थशिशुः (पुं.) २. दे. 'गर्भाशय' ३. अभ्यन्तरं, अंतर्भागः ।
—गिरना, क्रि. अ., गर्भः स्रु (भ्वा. प. अ.)-पत् (भ्वा. प. से.) ।
—रहना या होना, क्रि. स., गर्भं धृ (चु.)-आधा (जु. उ. अ.), गर्भवती अंतर्वत्नी भू ।
—पात,-स्राव, सं. पुं. (सं.) गर्भ-भ्रूण,-स्रुतिः (स्त्री.)-पतनम् ।
—दास, सं. पुं. (सं.) दासी-चेटी-भुजिष्या,-पुत्रः ।
गर्भवती, सं. स्त्री. (सं.), गर्भिणी, सगर्भा, ससत्त्वा ।
गर्भस्थ, वि. (सं.) गर्भाशयस्थ, उदरस्थ ।
गर्भांक, सं. पुं. (सं.) अंकस्थांकः (सा.), दृश्यम् ।
गर्भागार, सं. पुं. (सं. न.) गर्भ,-आशयः-कोषः २. प्रसूतिगृहम् ३. गर्भगृहम्, ४. शयनागारम् ।
गर्भाधान, सं. पुं. (सं. न.) संस्कारभेदः, निषेकसंस्कारः २. सेकः, निषेकः ३. गर्भधारणम् ।
गर्भाशय, सं. पुं. (सं.) गर्भकोशः-षः, योनिः (पुं. स्त्री.) ।
गर्भिणी, सं. स्त्री. (सं.) गर्भवती, अन्तर्वत्नी, सगर्भा, ससत्त्वा, धृत-रूढ-गृहीत,-गर्भा ।
गर्भित, वि. (सं.) सगर्भ, गर्भयुक्त २. पूर्ण, पूरित, व्याप्त ।

गर्म, दे. 'गरम'।

गर्माहट, सं. स्त्री., दे. 'गरमी'।

गर्व, सं. पुं. (सं.) (उचित) अभिमानः २. (अनुचित) अहंकारः, दर्पः, मदः, मादः, आटोपः, अहं-,मानः, औद्धत्यं, अवलेपः, उत्सेकः, स्मयः।

—करना, क्रि. अ. गर्व् (भ्वा. प. से.), प्रगल्भ् (भ्वा. आ. से.), दृप् (दि. प. वे.)। २. अभिमन् (दि. आ. अ.)।

गर्वित, वि. (सं.) (उचित) अभिमानिन् २. (अनुचित) दृप्त, सदर्प, सगर्व, अवलिप्त, उत्सिक्त, उद्धत, उत्सेकिन्, साटोपः, साहंकारः।

गर्वी, वि. (सं. गर्विन्) } दे. 'गर्वित'।
गर्वीला, वि. (सं. गर्वः >) }

गर्हणीय, वि. (सं.) गर्ह्य, निंद्य, अधम।

गर्हा, सं. स्त्री. (सं.) निंदा, गर्हणं, आक्षेपः, निर्भर्त्सना।

गर्हित, वि. (सं.) निंदित, आक्षिप्त, उपालब्ध।

गर्ह्य, वि. (सं.) दे. 'गर्हणीय'।

गल, सं. सं. (सं.) कंठः, कृकः, निगरणः २. दे. 'ग्रीवा' ३-४. मत्स्य-वाद्य,-भेदः।

—गंडः, सं. पुं. (सं.) कंठपिंड,-श्वयथुः-शोथः। २. गडुः (पुं.)।

—बांही, सं. स्त्री. (सं. गलः + हिं. बांह) आलिंगनं, परिरंभः, परिष्वंगः।

—माला, सं. स्त्री. (सं.) माला, माल्यं, शेखरः, हारः, स्रज् (स्त्री.)।

—शुंडी, सं. स्त्री. (सं.) गलशुंडिका, घंटिका, गलरोगभेदः।

गलतकिया, सं. पुं. (सं. गल्लः + फ़ा.) गल्लोपधानं, कपोलोपबर्हः।

गलफड़ा, सं. पुं. (सं. गल्लः + हिं. फटना) जलजन्तूनां श्वासेन्द्रियम्।

गलफूला, वि. (सं. गल्ल + हिं. फूलना) स्थूलास्य, पीनवदन।

गलमुच्छें, सं. स्त्री. [सं. गल्लश्मश्रूणि (न. बहु.)] गंडलोमानि (न. बहु.)।

गलगल, सं. स्त्री. (देश.) बृहत् ,-जंबी(भी)रं-जंभफलम्। २, ३. पक्षि-चूर्णलेप,-भेदः।

ग़लत, वि. (अ.) अशुद्ध, भ्रांत, सदोष, वितथ। २. असत्य, अनृत, मिथ्या।

—फ़हमी, सं. स्त्री. (अ. + फ़ा.) भ्रमः, भ्रांतिः (स्त्री.), मिथ्याबोधः।

गलतंस, सं. पुं. (सं. गलितवंश) संतान-अपत्य,-हीन-रहित, निस्संतान, निरपत्य।

गलतान, वि. (* फ़ा.) वि-,आकुल, व्यग्र, उद्विग्न।

ग़लती, सं. स्त्री. (अ.) स्खलितं, दोषः, प्रमादः, अपराधः २. भ्रमः, भ्रांतिः (स्त्री.), व्याः-,मोहः।

—करना, क्रि. अ., अपराध् (दि. स्वा. प. अ.), विभ्रम् (भ्वा. दि. प. से.) स्खल् (भ्वा. प. से.), प्रमद् (दि. प. से.)।

ग़लतुलआम, सं. पुं. (अ.) अशुद्धोऽपि प्रचलितः प्रयोगः (व्या.)।

गलना, क्रि. अ. (सं. गलनं) वि-, द्रु (भ्वा. प. अ.), विली (क्र्. प. अ.; दि. आ. अ.) गल्-क्षर् (भ्वा. प. से.), द्रवी-आर्द्री-भू। २. पच् (कर्म.), सिध् (दि. प. अ.) ३. पूतीभू, विगल्, ४. परिक्षि परिहा अपचि (कर्म.)। सं. पुं., गलनं, विद्रवः-वणं, विलयनं, क्षरणं; पचनं; परिक्षयः इ.।

गलने योग्य, गलितव्य, विद्रवणीय, पचनीय इ.।

गलने वाला, वि-द्राव्य, विलेय, विलाप्य, द्रवार्ह।

गला हुआ, वि., वि-,द्रुत, गलित, द्रवीभूत इ.।

ग़लबा, सं. पुं. (अ.) वि-,जयः २. प्राबल्यम्, प्रभुत्वम्।

गला, सं. पुं. (सं. गलः) कंठः, कृकः, निगरणः २. ग्रीवा, कंधरा, शिरोधिः, कंधिः।

—की सोजिश, सं. स्त्री. कण्ठ,-प्रदाहः-शोथः।

—काटना, मु., कंधरां कृत् (तु. प. से.) २. अतीव पीड् (चु.)।

—घोंटना, मु., गलं निष्पीड् (चु.), गलहस्तयति (ना. धा.)।

दबाना, मु., कंठं निपीड्य अथवा श्वासं निरुध्य मृ. (प्रे.)।

—बैठना, मु., कंठः रूक्षः अथवा कर्कशः भू।

गले पड़ना, मु. अपरिहार्य (वि.) भू।

गले लगाना, मु., आलिंग् (भ्वा. प. से.), आश्लिष् (दि. प. अ.), परिष्वंज् (भ्वा. आ. अ.), उपगुह् (भ्वा. उ. वे.)।

गलाऊ, वि. (हिं. गलना) वि-,द्राव्य, विलाप्य।

गलाना, क्रि. स., 'गलना' के प्रे. रूप।
गलाव, सं. पुं. } (हिं. गलना) दे. 'गलना'।
गलावट, सं. पुं. } सं. पुं. २. द्रावकः, द्रावणः।
गलित, वि. (सं.) द्रवीभूत, वि-, द्रुत, २ जीर्ण, शीर्ण ३. नष्ट, भ्रष्ट, ४. परि,-पक्व-पुष्ट ५. पतित, च्युत।
—कुष्ठ, सं. पुं. (सं. न.) गलत्कुष्ठम्।
—यौवना, सं. स्त्री. (सं.) क्षीण-विगत,-यौवना।
गली, सं. स्त्री. (सं. गलः >) वीथी-थिः (स्त्री.), संकट-संबाध,-पथः-मार्गः।
—कूचा, सं. पुं., (हिं. + फ़ा.) संकीर्णमार्गः।
—गली मारे मारे फिरना, मु. व्यर्थमितस्ततः परिभ्रम् (भ्वा. दि. प. से.) २. आजीविकान्वेषणाय सर्वत्र पर्यट् (भ्वा. प. से.) ३. सर्वत्र उपलभ् (कर्म.)।
ग़लीचा, सं. पुं. (फ़ा. ग़ालीचा, तु. कालीन से) तौरुष्क, कुथः-आस्तरणम्।
ग़लीज़, वि. (अ.) मलिन, आविल २. अपवित्र।
गल्प, सं. स्त्री. (सं. कल्पः >) आख्यायिका, उपाख्यानं, उपकथा।
गल्ल, सं. पुं. (सं.) कपोलः, गंडः।
गल्ला[1], सं. पुं. (फ़ा.) व्रजः, निवहः, यूथं, वृंदं, पाशवम्। (यह शब्द पशुओं के लिए ही प्रयुक्त होता है)।
—बान, सं. पुं. (फ़ा.) अवि,-मेष,-पालः; गोपालः।
ग़ल्ला[2], सं. पुं. (अ.) अन्नं, धान्यं २. शस्यम्।
—फ़रोश, सं. पुं. (अ. + फ़ा.) अन्न-धान्य,-विक्रेतृ (पुं.)।
गवय, सं. पुं. (सं.) गवाल्कः, बलभद्रः, महागंधः, वनगौः (पुं.)।
गवयी, सं. स्त्री. (सं.) वनधेनुः (स्त्री.) भिल्लगवी।
गवर्नमेंट, सं. स्त्री. (अं.) शासन-,पद्धतिः (स्त्री.)-प्रणाली २. शासक,-मण्डलं-वर्गः।
गवर्नर, सं. पुं. (अं.) भोगपतिः (पुं.) प्रान्ताध्यक्षः, राज्यपालः २. शासकः, शासितृ।
—जनरल, सं. पुं. (अं.) राष्ट्राध्यक्षः।
गवर्नरी, सं. स्त्री. (अं. गवर्नर >) प्रान्ताध्यक्षता, राज्यपालत्वम्। वि. राज्यपाल-प्रान्ताध्यक्ष,-सम्बधिन्।
गवाक्ष, सं. पुं. (सं.) वातायनं, जालं-लकम्।

गवाना, क्रि. स., 'गाना' के प्रे. रूप।
गवारा, वि. (फ़ा.) अनुकूल, अभीष्ट।
—करना, क्रि. स., सह् (भ्वा. आ. से.)।
गवाह, सं. पुं. (फ़ा.) साक्षिन् (पुं.)।
चश्मदीद—, सं. पुं. (फ़ा.) प्रत्यक्ष-साक्षिन् दर्शनः-दर्शिन्, देश्यः। प्रत्यक्षिन्।
गवाही, सं. स्त्री. (फ़ा. गवाह) साक्ष्यं, प्रमाणं, प्रामाण्यं, निदर्शनम्।
—देना, क्रि. स., साक्षी भू, साक्ष्यं दा २. क्रियापादः (धर्म.)।
गवीश, सं. पुं. (सं.) गो,-पतिः-स्वामिन् २. गोपः,-पालः-पालकः, आभीरः ३. वृषभः, वृषन्।
गवेषणा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'खोज'।
गवैया, सं. पुं. (पू. हिं. गावना) गायकः, गायनः, गातृ (पुं.), गाथकः, गेष्णुः, गेयः।
गव्य, वि. (सं.) गोसंबंधिन् (दुग्धगोमयादि)।
गव्यूति, सं. स्त्री. (सं.) क्रोशयुगलं, द्विसहस्र-धनुस् (न.)।
ग़श, सं. पुं. (अ. ग़शी) मूर्च्छा, मोहः।
—आना, क्रि. अ., मूर्छ् (भ्वा. प. से.), मुह् (दि. प. वे.), प्र-वि-न्या-.।
ग़शी, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'ग़श'।
गश्त, सं. पुं. (फ़ा.) भ्रमणं, पर्यटनम्।
—लगाना, क्रि. अ., रक्षार्थं परिभ्रम् (भ्वा. दि. प. से.)।
गश्ती, वि. (फ़ा.) पर्यटन-परिभ्रमण-,शील। सं. स्त्री., कुलटा, व्यभिचारिणी, स्वैरिणी।
गहगहाना, क्रि. अ. (अनु. गहगह) प्रसद् (भ्वा. प. अ.), प्रहृष् (दि. प. से.) २. दे. 'लहलहाना'।
गहन[1], वि. (सं.) गं (ग) भीर, अगाध, दे. 'गहरा' २. दुर्गम, दुर्भेद्य ३. दुर्बोध, कठिन ४. घन, निवि(वि)ड। सं. पुं. (सं. न.) गांभीर्यं २. दुर्गमस्थानं ३. वनं ४. गह्वरं ५. दुःखं ६. जलम्।
गहन[2], सं. पुं. (सं. ग्रहणं) आदानं २. उपरागः, ग्रहपीडनं ३. कलंकः ४. विपत्तिः (स्त्री.) ५. न्यासः, बंधकः।
गहना, सं. पुं. (सं. ग्रहणं >) अलंकारः, वि-आ-, भूषणं, आभरणं, मंडनम् २. न्यासः, निक्षेपः। क्रि. स., दे. 'पकड़ना'।

गहरा, वि. (सं. गभीर) गंभीर, निम्न, अगाध, अतलस्पर्श २. अत्यधिक, घोर (नींदादि) ३. दृढ, कठिन ४. गाढ, घन।

—असामी, सं. पुं. (हिं+अ.) संपन्नः, धनिन् (पुं.)।

गहरे लोग, सं. पुं. (बहु.) विचक्षणाः, विदग्धाः।

गहराई, सं. स्त्री.} (हिं. गहरा) गांभीर्यं, **गहराव**, सं. पुं.} निम्नत्वं, अगाधता।

गहवारा, सं. पुं. (फ़ा.) (शिशु-) प्रेखा-दोला।

गह्वर, सं. पुं. (सं. न.) गुहा, (अकृत्रिम) बिलं, देवखातं; (कृत्रिम) दरी, कंदरः-रा २. तमःपूर्ण गूढस्थानं ३. छिद्रं, विवरं ४. दुर्भेद्य-विषम,-स्थानं ५. गुल्मः-मं, क्षुपः ६. वनं ७. दंभः ८. रोदनं ९. अनेकार्थं वाक्यं १०. जटिलविषयः ११. जलं। (सं-पुं.) लतागृहं, निकुंजः। वि. दुर्गम २. गुप्त।

गांग, वि. (सं.) गंगा,-सम्बन्धिन्-विषयक। सं. पुं., भीष्मः २. कार्तिकेयः ३. सुवर्णं, हिरण्यम् ४. धत्तूरः, शिवप्रियः।

गांगेय, सं. पुं. (सं.) भीष्मः।

गाँजा, गाँझा, सं. पुं. (सं. गंजा) मादिनी, मोहिनी, हर्षिणी।

गांठ, सं. स्त्री. (सं. ग्रंथिः पुं.) ग्रंथिका, बंधः-धनं, गंडः २. संधिः (पुं.), पर्वन् (न.), अस्थि,-ग्रंथिः-संधिः ३. पोटलिका, भारः ४. आर्द्रक,-खंडः-डं ५. विघ्नः ६. भ्रांतिः (स्त्री.) ७. कूर्परभूषणभेदः।

—खोलना, क्रि. स., ग्रंथि-बंधं उन्मुच् (प्रे.) मोक्ष् (चु.), उद्ग्रंथ् (क्र्. प. से.)। (मु.) धन,-कोष-भस्त्रिकां शिथिलयति (ना. धा.), द्वेषं दूरी कृ।

—देना, बाँधना या लगाना, क्रि. सं., ग्रंथिं दा अथवा बंध् (क्र्. प. अ.)। (मु.) स्मृ (भ्वा. प. अ.)।

—पड़ना, क्रि. अ., संश्लिष् (दि. प. अ.), ग्रंथ् (कर्म. ग्रथ्यते)। (मु.) विद्वेषः उत्पद् (कर्म.)।

—कट, सं. पुं., ग्रंथिछेदकः, चौरः।

—गोभी, सं. स्त्री., दे. 'गोभी' के नीचे।

—दार, वि. ग्रंथिल, ग्रंथि-पर्व,-मय (-मयी स्त्री.)।

—काटना, मु., ग्रंथिं छित्त्वा अपहृ (भ्वा. प. अ.), ग्रंथिं छिद् (रु. प. अ.)।

—का पूरा, मु., संपन्नः, धनाढ्यः।

—जोड़ना, मु., वैवाहिक-औद्वाहिक-ग्रंथिं बंध् (क्र्. प. अ.)।

—से, मु., स्वीय-स्वकीय-, धनात्।

गाँठना, क्रि. स. (सं. ग्रंथनं) ग्रंथ् (क्र्. प. से.), ग्रंथिं बंध् (क्र्. प. अ.)-दा २. संयुज् (रु. उ. अ., चु.), संधा-समाधा (जु. उ. अ.), संश्लिष् (प्रे.) ३. संसिव् (दि. प. से.) ४. अनुकूलयति (ना. धा.), स्वपक्षपातिनं विधा (जु. उ. अ.) ५. आत्मसात् कृ, वंशनी (भ्वा. उ. अ.)।

गांडीव, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गांडि (डी) वः-वं, अर्जुनधनुस् (न.)।

गांडीवी, सं. पुं. (सं.-विन् पुं.) अर्जुनः, गांडीवधरः २. अर्जुनवृक्षः।

गांधर्व, वि. (सं.) गंधर्व,-विषयक-संबंधिन्-जातीय। सं. पुं., (सं. न.) गानं। (सं. पुं.) दे. 'गंधर्व'।

—वेद, सं. पुं. (सं.) सामवेदस्योपवेदः २. संगीतम्।

गांधार, सं. पुं. (सं.) भारतवर्षस्योत्तरदिशि देशविशेषः २. तृतीयस्वरः (संगीत)। (सं. न.) गंधरसः।

गांधारि, सं. पुं. (सं.) दुर्योधनमातुलः शकुनिः, सौबलकः।

गांधारी, सं. स्त्री. (सं.) दुर्योधनजननी।

गांधारेय, सं. पुं. (सं.) दुर्योधनः, धृतराष्ट्र-ज्येष्ठपुत्रः।

गांधी, सं. पुं. (सं. गांधिन्) गंधवणिज्, गंध,-विक्रयिन्-उपजीविन्-वणिज्-आजीवः २. गुर्जरप्रान्ते वैश्योपजातिविशेषः ३. महात्मा गांधिन्।

गांभीर्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'गंभीरता'।

गाँव, सं. पुं. (सं. ग्रामः) नि-सं,-वसथः, हट्टादि-शून्यवसतिः (स्त्री.)।

गांस, सं. स्त्री. (हिं. गाँसना) नियंत्रणं, बन्धनं, प्रतिरोधः २. द्वेषः, मनोमालिन्यं ३. रहस्यं, गुप्तवार्ता ४. ग्रन्थिः (पुं.) ५. शस्त्राग्रं ६. अवेक्षा, पर्यवेक्षणम्।

गाँसना, क्रि. स. (सं. ग्रन्थनं > ?) व्यध् (दि. प. अ.), निर्भिद् (रु. प. अ.) २. सं-नि-यम् (भ्वा. प. अ.), दम्, (प्रे. दमयति) ३. वशीकृ ४. अतिशयेन-अत्यधिकं पूर् (प्रे.)।

गाइड, सं. पुं. (अं.) पथ-मार्ग-अध्व,-प्रदर्शकः-

प्रदर्शिन् (पुं.)-उपदेशकः २. नायकः, नेतृ (पुं.) ३. निर्देशकग्रन्थः ।

गाउन, सं. पुं. (अं.) कञ्चुकः ।

गागर, सं. स्त्री. (सं. गर्गरः >) दे. 'गगरा' ।

गागरी, सं. स्त्री. (सं. गर्गरी >) दे. 'गगरी' ।

गाज, सं. स्त्री. (सं. गर्जः) दे. 'गरज' २. वज्रपातध्वनिः (पुं.), वज्रनिर्घोषः ३. वज्रः-ज्रं, अशनिः (पुं. स्त्री.), ह्रादिनी ।

—मारा, वि., वज्राहत, अशनिताडित ।

गाजर, सं. स्त्री. (सं. न.) गर्जरं, पीतकंदं, पीतमूलकं, सुपीतं, सुमूलकम् ।

—मूली, सं. स्त्री., गाजरमूलकं, तुच्छवस्तु (न.) ।

ग़ाज़ी, सं. पुं. (अ.) धर्मवीरः (इस्लाम), वीरः, योधः ।

गाड़ना, क्रि. स. (हिं. गाड़ = गड़हा) निखन् (भ्वा. प. से.), (श्मशाने=पृथिव्यां) निधा (जु. उ. अ.), निगुह् (भ्वा. उ. वे.) २. रुह् (प्रे. रोपयति)-स्था (प्रे. स्थापयति)-निविश् (प्रे.) ३. गुप् (भ्वा. प. वे. गोपायति), तिरोधा-अन्तर्धा (जु. उ. अ.) ।

सं. पुं., निखननं, श्मशाने स्थापनं, रोपणं, निवेशनं; गोपनम् ।

गॉड, सं. पुं. (अं.) ईश्वरः, परमात्मन् २. देवः, सुरः ।

गाडर, सं. स्त्री. (सं. गड्डुरी) मेषी, एडका ।

गाड़ी, सं. स्त्री. (सं. गार्त = रथ) शकटः-टं, शकटिका, यानं, वाहनं, प्रवहणं, रथः २. वाष्पशकटी, लोहाध्वगंत्री ।

—जोतना, क्रि. स., शकटे अश्वं-वृषभं युज् (प्रे.)।

—वान, सं. पुं. (हिं. गाड़ी) सारथिः (पुं.), सूतः, यंतृ (पुं.), शाकटिकः ।

गाढ़, वि. (सं.) अधिक, प्रचुर, बहु २. दृढ, प्रबल ३. गम्भीर, अगाध ४. दुर्गम, विकट ।

सं. पुं., (सं. न.) आपत्तिः (स्त्री.) ।

गाढ़ा, वि. (सं. गाढ) कठिन, स्थूल, संघातवत्, सु-,संहत २. घन ३. (मित्रादि) अभिन्नहृदय, दृढ ४. सबल ५. कठिन ।

सं. पुं., स्थूलवस्त्रभेदः ।

गाढ़े की कमाई, मु., घोरपरिश्रमोपार्जितं धनम् ।

गाढ़े दिन, मु., दुर्दिनानि, कुसमयः ।

गाणपत्य, सं. पुं. (सं.) गणपति-गणेश,-पूजकः-भक्तः २. गणेश,-पूजा-भक्तिः (स्त्री.) ३. गणनायकत्वम् ।

गाणेश, सं. पुं. (सं.) गणेश,-भक्तः-पूजकः ।

गात, सं. पुं., दे. 'गात्र' ।

गातव्य, वि. (सं.) गेय, गानार्ह ।

गाता, सं. पुं. (सं.-तृ) गायकः, गायनः, गेष्णुः ।

गाती, सं. स्त्री. (सं. गात्रं >) गात्रीयं, गलवस्त्रभेदः ।

गात्र, सं. पुं. (सं. न.), तनुः-नूः (स्त्री.), देहः, कायः, दे. 'शरीर' २. अंगं, अवयवः ।

गाथक, सं. पुं. (सं.) गातृ (पुं.), गायकः २. पुराणकथकः । (गाथिका स्त्री.) ।

गाथा, सं. स्त्री. (सं.) स्तुतिः-नुतिः (स्त्री.) २. श्लोकः, पद्यं ३. पालिमिश्रितसंस्कृतभाषा ४. गीतं ५. कथा, वृत्तान्तः ६. पारसीकधर्मग्रन्थभेदः ।

गाद, सं. स्त्री. (सं. गाधं >) दे. 'तलछट' ।

गाध, वि. (सं.) सुखोत्तरणीय, गांभीर्यरहित, उत्तान २. न्यून, अल्प ।

सं. पुं. (सं. न.) स्थानं, २. गाम्भीर्यशून्यो जलप्रदेशः ३. लिप्सा, लोभः ४. कूलं ५. तलं, अधोभागः ।

गान, सं. पुं. (सं. न.) गीतं, गीतिका, गेयं २. सस्वर,-पठनं-उच्चारणं, कीर्तनम् ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) संगीतं, संगीत-वाद्य,-शास्त्रं-विद्या ।

गाना, क्रि. अ. (सं. गानं) गै (भ्वा. प. अ.), सस्वरं उच्चर् (प्रे), सुमधुरं आलप् (भ्वा. प. से.) २. (पक्षियों का) कूज् (भ्वा. प. से.) ३. वर्ण् (चु.) ४. स्तु (अ. प. अ.), नु (अ. प. से.) ।

सं. पुं., गीतं, गीतिः-तिका (स्त्री.). गानं २. सस्वर,-आलपनं-उच्चारणम् ।

गानेवाला, सं. पुं., गेष्णः-ष्णुः, गायकः, गायनः, गातृ (पुं.) । (-वाली=गायिका, गात्री, गायनी) ।

—बजाना, सं. पुं., गानवादनं, संगीत, संगीतविद्या,-शास्त्रम् ।

ग़ाफ़िल, वि. (अ.) अनवधान, अनवहित, प्रमादिन्, उपेक्षक ।

गाभ, सं. स्त्री. (सं. गर्भः) पशुगर्भः २. अङ्कुरः, प्ररोहः ।
गाभा, सं. पुं. (सं. गर्भः >) किस(श)लयः-यं, पल्लवः-वं, प्ररोहः २. शस्यम् ।
गाभिन, सं. स्त्री. (सं. गर्भिणी) गर्भवती, (केवल पशुओं के लिए) ।
गामिनी, वि. स्त्री. (सं.) चलित्री, गंत्री ।
गामी, वि. (सं. गामिन्) गंतृ, यातृ ।
गाय, सं. स्त्री. (सं. गौः स्त्री.) धेनुः (स्त्री.), मातृ (स्त्री.), शृङ्गिणी, अघ्न्या-दोग्ध्री, भद्रा, अनडुही, अनड्वाही, कल्याणी, पावनी, गौरी, सुरभिः (स्त्री.) २, सरल-ऋजु,-मनुष्यः ।
गायक, सं. पुं. (सं.) दे. 'गाने वाला' ।
गायत्री, सं. स्त्री.(सं.) वैदिकछंदोभेदः २. वैदिकमंत्रविशेषः (तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् । ऋग्. ३।६२।१०), सावित्री ३. गंगा ४. दुर्गा ।
गायन, सं. पुं. (सं.) दे. 'गानेवाला' २. गानं, सस्वरालपनं ३. गीतं, गीतिका ।
ग़ायब, वि. (अ.) लुप्त, अन्तर्-तिरो,-हित, २. अदृष्ट, भाविन् , भविष्यत् ।
—करना, क्रि. स., चुर् (चु.), तिरो धा (जु. उ. अ.) ।
—होना, क्रि. अ., तिरोभू , अदृश्य (वि.)+भू, अन्तर्-तिरो,-धा (कर्म.) ।
गायिका, सं. स्त्री. (सं.) गायनी, गात्री ।
ग़ार, सं. पुं. (अ.) गुहा, कंदरा २. विवरम् ।
ग़ारत, वि. (अ.) नष्ट, ध्वस्त ।
गारद, सं. स्त्री. (अं. गार्ड) रक्षक-रक्षि,-वर्गः-गणः २. अंगरक्षकः ३. रक्षा, गुप्तिः (स्त्री.) ।
गारना, क्रि. स., (सं.गालनं >)दे.'निचोड़ना'।
गारा, सं. पुं. (हिं. गारना) कर्दमः, पङ्कः, उत्त-उन्न,-मृद् (स्त्री.)-मृत्तिका, लेपः ।
गारुड़, सं. पुं. (सं. न.) विषमंत्रः २. सुवर्णं ३. गरुडपुराणम् ।
गारुड़ी, सं. पुं. (सं.-डिन्) विषवैद्यः, गारुडिकः जांगुलिकः २. मोहिन् (पुं.), कुहककारः ३. प्रतिविषविक्रेतृ (पुं.) ।
गार्गी, सं. स्त्री. (सं.) काचित् ब्रह्मवादिनी विदुषी नारी (उपनिषद्) ।
गार्ड, सं. पुं. (अं.) रक्षकः, रक्षिन् (पुं.) २. वाष्पशकटयाः रक्षकः ।
बाडी—, सं. पुं. (अं.) शरीर-अंग,-रक्षकः ।
गार्डेन, सं. पुं. (अं.) उद्यानं, आरामः ।
—पार्टी, सं. स्त्री. (अं.) उद्यान-आराम,-भोजः ।
गार्हपत्य, सं. पुं. (सं. न.) गृहपति-,पदं-प्रतिष्ठा ।
—अग्नि, सं. पुं. (सं.) यज्ञाग्निभेदः ।
गार्हमेध, सं. पुं. (सं.) पंचमहायज्ञाः (ब्रह्मयज्ञः, देवयज्ञः, पितृयज्ञः, अतिथियज्ञः, भूतयज्ञः) ।
गार्हस्थ्य, सं. पुं. (सं. न.) गृहस्थाश्रमः २. गृहस्थकृत्यानि ३. पञ्चमहायज्ञाः ।
गाल, सं. पुं. (सं. गल्लः) कपोलः गंडः २. मुखम् ।
—पर गाल चढ़ना, मु., पनीभू , आप्यै (भ्वा. आ. से.) ।
—पिचकना, मु., कृशीभू, विशृ-क्षि (कर्म.) ।
—फुलाना, मु., कुप् (दि. प. से.), क्रुध् (दि. प. अ.) ।
—बजाना या मारना, मु., आत्मानं श्लाघ्-विकत्थ् (भ्वा. आ. से.) ।
गालव, सं. पुं. (सं.) गलवमुनिपुत्रः (विश्वामित्रशिष्यविशेषः) २. लोधः, लोध्रः ३. पाणिनिपूर्ववर्ती वैयाकरणविशेषः ।
गाला, सं. पुं. (हि. गाल) धूतकर्पासपिंडंडः, २. हिमतूलम् , हिम-तुषार,-पिण्डम् ३. चक्रीक्षिप्तं मुष्टिमात्रमन्नम् ४. ग्रासः, कवलः ।
ग़ालिबन, क्रि. वि. (अ.) संभवतः, प्रायः, प्रायेण, प्रायशः, स्यात्, किल, नाम (सब अव्य.) ।
गाली, सं. स्त्री. (सं. गालिः स्त्री.) आक्रोशः, अपवादः, अपभाषणं, अधिक्षेपः, परुषोक्तिः (स्त्री.) ।
—खाना, क्रि, अ., आ-अधि-क्षिप् (कर्म.), अपभाष-अभिशप्-अपवद् (कर्म.) ।
—देना, क्रि. स., अधि-आ-क्षिप् (तु. प. अ.), अभिशप् (भ्वा. उ. अ.), अभिशंस्-अपवद् (भ्वा. प. से.) ।
—गलौज, सं. स्त्री., परस्पर,-अधिक्षेपः-अपभाषणं-गालिदानम् ।
ग़ालीचा, सं. पुं., दे. 'गलीचा' ।
गाव, सं. पुं. (गौः, पुं. स्त्री., फ़ा.-गाव) दे. 'गाय' २. दे 'बैल' ।

—कुशी, सं. स्त्री. (फ़ा.) गो,-घातः-वधः-हत्या ।

—घप, सं. स्त्री., छलेन अपहारः उपयोगः, ग्रसनम् ।

—घप करना, क्रि. स., कपटेन आत्मसात् कृ ।

—ज़बान, सं. स्त्री. (फ़ा.) गोजिह्वा, अधः-पुष्पी, खरपत्री ।

—तकिया, सं. पुं. (फ़ा.) महोपबर्हः, बृहदुपधानम् ।

—दी, सं. पुं. (फ़ा.-+सं. धीः >) जडः, मूर्खः ।

—दुम, वि (फ़ा.) गोपुच्छाकार, शुंडाकृति । सूच्याकार, शंक्वाकृति ।

गाहक, सं. पुं. (सं. ग्राहकः) क्रेतृ, क्रयिन् २. गुणग्रहीतृ (पुं.), गुणज्ञः ।

गाहकी, सं. स्त्री. (हिं. गाहक) ग्राहकत्वं, क्रेतृत्वं २. गुणज्ञता ।

गाहन, सं. पुं. (सं. न.) वि-अव,-गाहनम्, निमज्जनं, स्नानं २. विलोडनम् ।

गाहना, क्रि. स. (सं. गाहनं) अव-वि-गाह् (भ्वा. आ. से.), निमस्ज् (तु. प. अ.) २. मथ्, मंथ् (भ्वा. प. से.), विलोड् (प्रे.) २. निस्तुषीकृ, पू (क्र्. उ. से.) २. पादाभ्यां पीड् (चु.)-मृद् (क्र्. प. से.) ४. दे. 'खोजना'। सं. पुं. (सं. न.) अव-वि-गाहनं, विलोडनं, मर्दनं, निस्तुषीकरणं: अन्वेषणम् ।

गिंडुरी, सं. स्त्री., दे. 'इंडुरी'।

गिचपिच, गिचिरपिचिर, वि. (अनु.) अवाच्य, अव्यक्ताक्षर २. अस्पष्ट, अविशद ३. अक्रम, अस्तव्यस्त ।

ग़िज़ा, सं. स्त्री. (अ.) खाद्यं, भक्ष्यं, अन्नं, भोजनम् ।

गिटपिट, सं. स्त्री. (अनु.) अपार्थक-निरर्थक-व्यर्थ,-वचनं-शब्दः ।

—करना, क्रि. स., आंग्लभाषायां वद् (भ्वा. प. से.)।

गिड़गिड़ाना, क्रि अ. (अनु.) अतिनम्रतया अभि-प्र-अर्थ् (चु. आ. से.), कृपणतया-क्षुद्रतया याच् (भ्वा. उ. से.)।

गिड़गिड़ाहट, सं. स्त्री. (हिं. गिड़गिड़ाना) अतिनम्रप्रार्थना, दीनवत् याचनम् ।

गिद्ध, सं. पुं. (सं. गृध्रः) दूरदर्शनः, वज्रतुंडः, दाक्षाय्यः ।

गिनती, सं. स्त्री. (हिं. गिनना) गणनं, संख्यानं २. संख्या, गणना ३. अंकमाला ।

—के, मु., कतिचित्, स्तोकाः ।

गिनना, क्रि. स. (सं. गणनं) गण्-संकल् (चु.), परि-,संख्या (अ. प. अ.) २. मन् (दि. आ. अ.), गण् । सं. पुं., गणनं संख्यानं, संकलनम् ।

गिननेयोग्य, वि., गणनीय, संख्येय ।

गिनने वाला, वि., गणक, संख्यातृ ।

गिना हुआ, वि., गणित, संख्यात ।

दिन—, मु., यथाकथंचित् कालं या (प्रे. यापयति)।

गिनवाना, गिनाना, क्रि. प्रे., व. 'गिनना' के धातुओं के प्रे. रूप ।

गिनी, सं. स्त्री. (अं.) आंग्लदेशीया स्वर्णमुद्रा; गिनी ।

गिरगिट, सं. पुं. (देश. अथवा सं. गलगति > ?) सरटः-टुः, कृक (कु) लाशः,-सः, प्रतिसूर्यः-र्यकः ।

—की तरह रंग बदलना, मु., सत्वरं स्वसिद्धांतान् परिवृत् (प्रे.)।

गिरजा, सं. पुं. (पुर्त. इग्रिजिया) खिस्टधर्ममंदिरम् ।

गिरना, क्रि. अ. (सं. गलनं) नि-अव-;पत् (भ्वा. प. से.), स्खल्-गल् (भ्वा. प. से.), स्रंस् (भ्वा. आ. से.), च्यु (भ्वा. आ. अ.) २. क्षिशॄ (कर्म.), ह्रस् (भ्वा. प. से.) क्षयं-लयं,-इ-या (अ. प. अ.) ३. अधिकारात् अपकृष् (कर्म.), अवरुह् (भ्वा. प. अ.), लघूभू । ४. युद्धे हन् (कर्म.) ५. अकस्मात्-यदृच्छया घट् (भ्वा. आ. से.) अथवा आ-सं-पत् । सं. पुं., पतनं, च्यवनं, गलनं, अवरोहणं, पद,-भ्रंशः-च्युतिः (स्त्री.)।

—वाला, वि., पतयालु, पतन-पात,-उन्मुख, पातिन्, पातुक, पिपतिषु ।

गिरा हुआ, वि., पतित, च्युत, स्रस्त, गलित ।

गिरते-पड़ते, मु., यथाकथंचित्, येन केन प्रकारेण ।

गिरफ़्त, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'पकड़'।

गिरफ़्तार, वि. (फ़ा.) गृहीत, धृत, बद्ध, निरुद्ध ।

—करना, क्रि. सं., निरुध् (रु. उ. अ.), आसिध् (भ्वा. प. वे.), ग्रह् (क्र्. प. से.)।
—होना, क्रि. अ. निग्रह्-धृ-बंध्-निरुध् (कर्म.)।
गिरफ़्तारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) आसेधः, बंधनं, निग्रहणं, धरणं, निरोधः।
गिरमिट, सं. पुं. (अं. एग्रीमेंट), दे. 'इकरारनामा'।
गिरमिटिया, सं. पुं. (अं. एग्रिमेंट >) प्रतिज्ञाबद्ध-अनुबद्ध, कर्मकरः-श्रमिकः।
गिरवाना, क्रि. प्रे., व. 'गिरना' के प्रे. रूप।
गिरवी, वि. (फ़ा.) आधी-न्यासी,-कृत, निक्षिप्त, आहित।
—रखना, क्रि. स., न्यस (दि. प. से.), निक्षिप् (तु. प. अ.), न्यासी-आधी,-कृ।
—दार, सं. पुं. (फ़ा.) आधि-न्यास-बंधक,-ग्राहिन् (पुं.)-ग्राहकः।
—रखने वाला, सं. पुं., निक्षेप्तृ, आधातृ।
गिरह, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'गाँठ' (१-३) २. दे. 'जेब' ३. दे. 'उलटबाजी' ४. गज़ाख्यमानस्य षोडशांशः।
—बाँधना, क्रि. स., दे. 'गाँठ देना'।
—कट, सं. पुं., दे. 'गाँठकट'।
—दार, वि., दे. 'गांठदार'।
गिरा, सं. स्त्री. (सं.) वाक्शक्तिः-गिर्-वाच् (स्त्री.), वाणी २. सरस्वती, भारती, वाग्देवी ३. जिह्वा, रसना ४. वचनं, उक्तिः (स्त्री.)।
गिराना, क्रि. स., व. 'गिरना' के प्रे. रूप।
गिरानी, सं. स्त्री. (फ़ा.) महार्घता, बहुमूल्यता २. दुर्भिक्षं, दुष्कालः ३. गुरुत्वं, भारवत्त्वं ४. अजीर्णम्।
गिरावट, सं. स्त्री. (हिं. गिरना) पतनं, च्यवनं-अवरोहणं, अवनतिः (स्त्री.)।
गिरि, सं. पुं. (सं.) पर्वतः, शैलः, अचलः, नगः २. परिव्राजकोपाधिः (पुं.)।
—धर, सं. पुं. (सं.) } श्रीकृष्णचन्द्रः।
—धारी, सं. पुं. (सं.-धारिन्) }
—नन्दिनी, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, उमा।
—नाथ, सं. पुं. (सं.) शिवः, शङ्करः।
—राज, सं. पुं. (सं.) हिमालयः २. गोवर्धनपर्वतः।
—सुता, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती।
गिरिजा, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, गौरी।
गिरींद्र, सं. पुं. (सं.) महापर्वतः २. हिमालयः ३. शिवः।
गिरी, सं. स्त्री. (हिं. गरी) अष्ठिः (स्त्री.), अष्ठीला, बीजं, गर्भः, फल-बीज-,गर्भः। (२-३) दे. 'गिरि' तथा 'गिरी'।
गिरीश, सं. पुं. (सं.) शिवः, महेशः २. हिमालयः ३. कैलाशः ४. महापर्वतः।
गिरो, वि. (फ़ा.) दे. 'गिरवी'।
गिर्द, अव्य. (फ़ा.) अभितः, परितः, सर्वतः, समन्ततः, समन्तात् (सब अव्य.)।
इर्द—गिर्दागिर्द, } अव्य. (फ़ा.) दे. 'गिर्द'।
गिर्दावर, सं. पुं. (फ़ा.) पर्यटकः, परिभ्रामकः।
गिल, सं. स्त्री. (फ़ा.) मृत्तिः (स्त्री.), मृत्तिका, मृदा, मृद् (स्त्री.) २. उत्त-उन्न,-मृत्तिः।
—कार, सं. पुं., मृल्लेपकः, लेपकरः, सुधाजीविन्।
—कारी, सं. स्त्री., मृल्लेपः।
गिलगिला, वि. (फ़ा. गिल = गारा) पंकिल, श्यान।
गिलट, सं. पुं. (अं. गिल्ड) सुवर्णरंजनं, हेमच्छदः २. गिलटाख्यो धातुविशेषः।
—करना, क्रि. स., सुवर्णयति (ना. धा.), हेम,-रसेन-द्रवेण लिप् (तु. प. अ.)।
गिलटी, सं. स्त्री. (सं. ग्रन्थिः पुं.) मांस-, पिंडः, अधिमांसं २. वि-, स्फोटः-टकः, शोथः, श्वयथुः, व्रणः-णं, मांसार्बुदम्।
गिलना, क्रि. स. (सं. गिरणं) दे. 'निगलना'।
गिलबिलाना, क्रि. स. (अनु.) अस्पष्टं-गद्गदवाचा वद् (भ्वा. प. से.)।
गिलहरी, सं. स्त्री. (सं. गिरिः (स्त्री.) = चुहिया) काष्ठ-बिडालः-मार्जारः, चरमपुच्छः, वृक्षशायिका।
गिला-ला, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'उपालम्भ'।
गिलाई, गिलाय, सं. स्त्री., दे. 'गिलहरी'।
ग़िलाफ़, सं. पुं. (अ.) उपधान-उपबर्ह,-कोषः-शः २. तूला-तूलिका-,कोषः ३. कोषः, पुटः, आवेष्टनं ४. असिकोषः।
गिलास, सं. पुं. (अं. ग्लास) कंसः, कुन्तलः, गल्वर्कः, पानपात्रम्। २. बदराकारं आङ्गलफलम्।
गिली-ड्डी, सं. स्त्री., दे. 'गुल्ली'।

गिलो, गिलोय, सं. स्त्री. (फ़ा.) गुडू(ड)ची, अमृता, अमृत-सोम-,वल्ली-लता-वल्लरी, रसायनी।

गिलोला, सं. पुं. (फ़ा. गुलेला) मृद् ,-वटिका-गुटि(लि)का।

गिलौरी, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'पान का बीड़ा'।

गिल्टी, सं. स्त्री. दे. 'गिलटी'।

गिल्लड़, सं. पुं. (सं. गलः >) गलगण्डः, गण्डुः।

गीत, सं. पुं. (सं. न.) गीतिः (स्त्री.), गीतिका, गानं, गेयं २. यशस् (न.), महिमन् (पुं.)।

—गाना, मु., प्रशंस् (भ्वा. प. से.) स्तु (अ. प. अ.)।

गीता, सं. स्त्री. (सं.) श्रीमद्भगवद्गीता २. ज्ञानमयोपदेशः २. वृत्तान्तः ३. छन्दोभेदः।

गीती, सं. स्त्री. (सं.) } दे. 'गीत' २. छन्दो-
गीतिका, सं. स्त्री. (सं.) } भेदः।

गीदड़, सं. पुं. (सं. गृध्रः=लालची अथवा फ़ा. गीदी=भीरु) क्रोष्टा, फेरुः, शिवालुः, गोमायुः (पुं.), शृ(सृ)गालः, जम्बु(बू)-कः, फेरवः, मृगधूर्तकः, भूरिमायः, वंच(चु)-कः। वि., कातर, भीरु।

—भवकी, सं. स्त्री., विभीषिका।

—बोलना, मु., अपशकुनः-नं भू २. निर्जनीभू।

गीदड़ी, सं. स्त्री. (हिं गीदड़) शिवा, शृगाली, क्रोष्ट्री।

गीध, सं. पुं., दे. 'गिद्ध'।

गीला, वि. (फ़ा. गिल् = गारा) आर्द्र, उत्त, उन्न, क्लिन्न, स्तिमित, जलसिक्त। (गीली (स्त्री.) = आर्द्रा इ.)।

—करना, क्रि. स., उंद् (रु. प. से.), क्लिद् (प्रे.), आर्द्रीकृ।

—पन, सं. पुं. (हिं. गीला) आर्द्रता, उन्नता।

गुंचा, सं. पुं. (अ.) मुकुलः-लं, कोरकः-कं, कलिका २. विहारः, ३. संगीतम्।

गुंज, सं. स्त्री. (सं. गुंजः) गुञ्जनं, गुञ्जितं, गुन्गुन्ध्वनिः (पुं.) झंकारः, कलरवः। 'आनन्दध्वनिः (पुं.) ३. दे. 'गुंजा' ४. दे. 'गूंज'।

गुंजन, सं. पुं. (सं. न.), दे. 'गुंज'(१)।

गुंजना, क्रि. अ. (सं. गुंजनं), गुंज् , मधुरं ध्वन् , अस्पष्टं निस्वन् (सब भ्वा. प. से.)।

गुंजरना, क्रि. अ., दे. 'गुंजना' २. दे. 'गरजना'।

गुंजा, सं. स्त्री. (सं.) रक्तिका, रक्ता, वन्या, २. गुंजाबीजं इ.।

गुंजाइश, सं. स्त्री. (फ़ा.) अवकाशः, स्थानं, धारण-ग्रहण,-शक्तिः (स्त्री.)-सामर्थ्यं २. लाभः ३. योग्यता।

गुंजान, वि. (फ़ा.) घन, निविड, गाढ।

गुंजायमान, वि. (सं. गुञ्ज् >) गुंजत् , मधुरं ध्वनत् (शत्रंत)।

गुंजार, सं. पुं. दे. 'गुंज'(१)।

गुंजारना, क्रि. अ., दे. 'गुंजना'।

गुंडा, वि. (सं. गुण्डकः = मैला >) दुर्वृत्त, दुराचारिन् (पुं.), व्यसनिन् , लंपट २. रूप-गर्वित, छेकः, वेषाभिमानिन्। (गुंडी स्त्री.)।

—पन, सं. पुं., दुराचारः, स्वैरिता, लंपटता।

गुँथना, क्रि. अ. (हिं. गूँथना) ग्रन्थ्-संदृभ्-सूत्र्-गुं (गु) फ् (कर्म.)।

गुँथवाना, क्रि. प्रे., व. 'गूंथना' के प्रे. रूप।

गुँधना, क्रि. अ. (सं. गुध् = क्रीडा करना >) (हस्ताभ्यां) मृद्-संपीड् (कर्म.) २. दे 'गुँथना'।

गुँधवाना, क्रि. प्रे., व. 'गूंधना' के प्रे. रूप।

गुँधाई, गुँधावट, सं. स्त्री. (हिं. गूँधना) १. कराभ्यां मर्दनं २. मर्दनवेतनं ३. ग्रंथनं ४. ग्रंथन,-भृतिः-(स्त्री.)-भृत्या।

गुंफ, सं. पुं. (सं.) संकुलता, व्यतिकरः, संकरः २. गुच्छः-च्छकः ३. श्मश्रु (न.), ओष्ठलोमन् (न.) ४. कूर्चम्।

गुंफन, सं. पुं. (सं. न.) संग्रंथनम्, संदर्भणम्, संसूत्रणम्।

गुंफित, वि. (सं.) सं-परि-आ-श्लिष्ट, सं-आसक्त २. ग्रथित, सूत्रित ३. उत, उप्त।

गुंबज, सं. पुं. दे. 'गुंबद'।

गुंबद, सं. पुं. (फ़ा.) गोल,-पटलं-छदिः (स्त्री.)।

गुइयां, सं. पुं. तथा स्त्री. (हिं. गोहन=साथ >)। १. सहचरः, संगिन् (पुं.), सखि (पुं.) २. सहचरी, सखी।

गुग्गुल, सं. (सं.) गुग्गुलुः, कालनिर्यासः, देवधूपः, रूक्षगंधकः।

गुच्ची, सं. स्त्री. (अनु.) गुलीदंड-क्रीडार्थं भूविवरं, *खातिः (स्त्री.)।

गुच्छ, गुच्छक, सं. पुं. (सं.) स्तंबः, स्तबकः गुत्सः-सकः २. मयूरपुच्छं ३. द्वात्रिंशद्-यष्टिकहारः।

गुच्छा, सं. पुं. (सं. गुच्छः दे.) २. आभूषण-भेदः।

गुच्छेदार, वि. (हिं + फ़ा.) गुच्छिन् ,सगुच्छ।

गुच्छी, सं. स्त्री. (सं. गुच्छः >) अरिष्टः, मांगल्यः, गुच्छफलः २. व्यंजनोपयुक्तपुष्पभेदः, *गुच्छी।

गुज़र, सं. पुं. (फ़ा.) उप-अभि-गमः, उपसर्पणं, प्रवेशः २. निर्गमः, गतिः (स्त्री.) ३. निर्वाहः, जीवनम्।

—जाना, मु., दे. 'मरना'।

गुज़रना, क्रि. अ. (फ़ा. गुज़र) इ-या (अ. प. अ.), गम् २. अति-व्यति,-इ. अति-क्रम् (भ्वा. प. से.) ३. भू, घट् (भ्वा. आ. से.) ४. मृ (तु. आ. अ.), प्राणान् मुच् (तु. उ. अ.)।

गुजरात, सं. पुं. (सं. गुर्जरराष्ट्रं) भारत-वर्षस्य प्रांतविशेषः, गुर्जराटप्रान्तः।

गुजराती, वि. (हिं. गुजरात) गुर्जरराष्ट्रीय, गुर्जरराष्ट्र,-वासिन्-संबंधिन् २. गुर्जरराष्ट्रीय-भाषा।

गुज़रान, सं. पुं. (फ़ा. गुज़र) निर्वाहः, कालक्षेपः।

गुजश्ता, वि. (फ़ा.) व्यतीत, गत, अतिक्रांत।

गुज़ारना, क्रि. सं. (हिं. गुज़रना) गम्-या (प्रे.)।

गुज़ारा, सं. पुं. (फ़ा.) निर्वाहः, कालक्षेपः २. जीवनं, प्राणधारणं ३. वृत्तिः-भृतिः (स्त्री.) ४. तार्यं, तरपण्यम्।

गुज़ारिश, सं. स्त्री. (फ़ा.) निवेदनं, प्रार्थना।

गुटकना, क्रि. अ. (अनु.) कपोतवत् कूज् (भ्वा. प. से.) २. दे. 'निगलना'।

गुटका, सं. पुं. (सं. गुटिका >) लघु,-ग्रंथः-पुस्तकम् २. दे. 'गुटिका'।

गुटरगूँ, सं. स्त्री. (अनु.) कपोतकूजितं, पारावतरुतम्।

गुटिका, सं. स्त्री. (सं.) गुलिका, वटिका, वटिः (स्त्री.)।

गुट्ट, सं. पुं. (सं. गोष्ठः >) समूहः, दलम्।

गुट्टा, सं. पुं. (देश.) खर्वः, वामनः २. दे. 'गोटी'।

गुट्ठल, वि. (हिं. गुठली) स्थूलाष्ठि,-युत-वत् २. मंदमति, जड ३. अष्ठीलाकारः। सं. पुं. ग्रंथिः (पुं.) २. मांसपिंडः-डम्।

गुठली, सं. स्त्री. (सं. गुटिका >) अष्ठिः (स्त्री.), अष्ठीला, फलबीजम्।

गुड़ंबा, सं. पुं. (सं. गुडाम्रं)।

गुड़, सं. पुं. (सं.) इक्षुसारः, रसजः, खंडजः, मधुरः; मोदकः, शिशुप्रियः, गुलः, स्वादुः।

गुड़गुड़, सं. स्त्री. (अनु.) गुडगुड,-शब्दः-ध्वनिः (पुं.) धूमपानयंत्रशब्दः।

गुड़गुड़ाना, क्रि. अ. (अनु.) गुडगुडायते (ना. धा.) गुड्गुड,-ध्वनि-शब्दं कृ।

गुड़गुड़ी, सं. स्त्री. (हिं. गुड़गुड़ाना) लघु-धूमपानयंत्रम्।

गुड़च, सं. स्त्री. (सं. गुडूची) दे. 'गिलो'।

गुड़धनिया, **गुड़धानी**, (सं. गुड़धानाः स्त्री. बहु.)।

गुड़ाकू-खू, सं. पुं. (सं. गुड़ + तमाखू >) गुडतमाखुः।

गुड़ाकेश, सं. पुं. (सं.) शिवः २. अर्जुनः।

गुड़िया, सं. स्त्री. (सं. गुडिका) पुत्तलिका, पुत्रिका, कुरुंटी, पांचालिका।

गुड़ियों का खेल, मु., सुकरं कार्यम्।

गुड़्च, सं. स्त्री., दे. 'गिलो'।

गुडूची, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गिलो'।

गुड्डा, सं. पुं. (सं. गुडः) गुडकः पुत्रकः, पुत्तलः।

गुड्डी, सं. स्त्री. (गुडिका >) चिल्लासदृशं पत्रक्रीडनकं, चिल्लाभासः २ दे. 'गुड़िया'।

गुण, सं. पुं. (सं.) धर्मः, स्वभावः, विशेषः २. सत्त्वं, रजस् (न.), तमस् (न.), गुण-त्रयी ३. रूपरसगंधस्पर्शादयः द्रव्यधर्माः (वै.) ४. चातुर्यं, दक्षता ५. प्रभावः, फलं ६. शीलं, सत्स्वभावः ७. लक्षणं, विशेषता ८. 'त्रि' इति संख्या ९. संधिविग्रहयानासनसंश्रयद्वैधीभावाः (राजनीतिः) १०. प्रकृतिः (स्त्री.) (छान्दोग्य) ११. 'अ, ए, ओ'-वर्णाः (व्या.) १२. सूत्रं, रज्जुः (स्त्री.) १३. ज्या, मौर्वी १४. माधु-र्यौजःप्रसादाः (काव्य.) १५. आवृत्तिसूचकः प्रत्ययः (उ. द्विगुणः इ.)।

—कर, वि. (सं.) हितकर, उपयोगिन् (गुण-करी स्त्री.)।

—कारक, वि. (सं.) हित, उपकर्तृ। (-कारिका स्त्री.)।

—कारी, वि. (सं.,-रिन्) उपयुक्त, उपकारिन् (-कारिणी स्त्री.)।

—खान, वि., (सं.-खानी) बहुगुण,-उपेत-अन्वित-संपन्न।

—गान, सं. पुं. (सं. न.) स्तुतिः-नुतिः (स्त्री.) प्रशंसा।

—गौरी, सं. स्त्री. (सं.) पतिव्रता, सती, एकपत्नी २. सधवा, सभर्तृका।

—ग्राहक, वि. (सं.) गुणन्वेषिन्, गुणग्राहिन् २. दे. 'गुणज्ञ'।

—दायक, वि. (सं.) दे. 'गुणकर'।

—दोष, सं. पुं. (सं.) गुणावगुणौ-हानि-लाभौ (द्वि.)।

—निधान, वि. (सं.) } गुण,-राशिः-निधिः
—सागर, वि. (सं.) } (पुं.)।

—हीन, वि. (सं.) अगुण, निर्गुण, सामान्य, साधारण।

गुणक, सं. पुं. (सं.) गुणकांकः।

गुणज्ञ, वि. (सं.) गुण,-ग्राहिन्-ग्राहक, मर्मज्ञ।

गुणज्ञता, सं. स्त्री. (सं.) गुणग्राहकत्वं, मर्मज्ञता।

गुणन, सं. पुं. (सं. न.) आघातः, हननं, अभ्यासः २. गणनं, संख्यानम्।

गुणमय, वि. (सं.) } दे० 'गुणी'
गुणवंत, वि. (सं.-वत्) }
गुणवान, वि. (सं.-वत्) } गुण,-मयी-वती स्त्री।

गुणांक, सं. पुं. (सं.) गुण्यः- गुण्यांकः।

गुणा, सं. पुं. (सं. गुणः) (समासान्त में, उ. दो गुणा=द्विगुण इ.)। दे. 'गुणन'।

—करना, गुणयति (ना. धा.), आ-नि-, हन् (अ. प. अ. अथवा प्रे. घातयति), पूर् (चु.)।

गुणातीत, वि (सं.) सत्त्वादिगुणप्रभावशून्य, निर्लिप्त, शुद्ध। सं. पुं., ईश्वरः।

गुणानुवाद, सं. पुं. (सं.) प्रशंसा, स्तुतिः (स्त्री.)।

गुणित्त, वि. (सं.) गुणीकृत, आहत, पूरित।

गुणी, वि. (सं. गुणिन्) गुणवत्, गुण,-संपन्न-उपेत-आढ्य-युक्त-निधि-सागर। २. दक्ष, कुशल ३. पुण्य,-शील-आत्मन्।

गुणीभूत, वि. (सं.) मुख्यार्थरहित २. गौणी-भूत।

—व्यंग्य, सं. पुं. (सं. न.) अप्रधानव्यंग्यार्थः काव्यभेदः।

गुणेश्वर, सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः २. चित्रकूट-पर्वतः।

गुण्य, सं. पुं. (सं.) गुण्यांकः, गुणांकः।

गुत्थमगुत्था, सं. पुं. (हिं. गुथना) संश्लिष्टताः, संकुलता २. बाहु-बाहूबाहवि,-युद्धं, द्वंद्वम्।

गुत्थी, सं. स्त्री. (हिं. गुथना) दे. 'उलझन'।

गुथना, क्रि. अ., (सं. गुध्=परिवेष्टन अथवा ग्रंथ्) (वेणीरूपेणं–) ग्रंथ् (कर्म.), वेणीकृ (कर्म.) । २. गु(गुं)फ्-संदृभ् (कर्म.)-सं-ग्रंथ् (कर्म.) ३. बाहूबाहवि युध् (दि.आ अ.)।

गुथवाना, क्रि. प्रे., व. 'गुथना' के प्रे. रूप।

गुथ(थु)वाँ, वि. (हिं. गुथना >) (वेणी-रूपेण-) ग्रथित-गुंफित।

गुद, सं. स्त्री. (सं. न.) अपानं, पायुः (पुं.), गुह्यम्।

—अंकुर,—कील, सं. पुं. (सं.) दे. 'बवासीर'।

—ग्रह, सं. पुं. (सं.) दे. 'क़ब्ज़'।

गुदगुदा, वि. (हिं. गूदा) मांसल, मेदस्विन् ३. मृदु, सुखस्पर्श, कोमल।

गुदगुदाना, क्रि. सं. (हिं. गुदगुदा) कुत-कूतयति कंडूयति (ना. धा.), कंडूं जन् (प्रे.), मनोविनोदाय क्षुभ् (प्रे.)।

गुदगुदाहट, गुदगुदी, सं. स्त्री. (हिं गुद-गुदाना) कुतकूतं, कंडूतिः (स्त्री.)।

गुदड़ी, सं. स्त्री. (हिं. गूंथना) कंथा, स्यूतकर्पटः, ३. जीर्ण-शीर्ण,-वस्त्रम्।

—में लाल, मु., चीरे रत्नं (मु.)।

—का लाल, मु., चीररत्नं (मु.)।

गुदा, सं. स्त्री. दे. 'गुद'।

गुदाज़ वि. (फ़ा.) मृदु, कोमल, सुखस्पर्श।

—दिल, वि., हृदयद्रावक, मार्मिक, मर्म-स्पर्शिन्।

गुनगुना, वि. (अनु.) कोष्ण, कदुष्ण, कवोष्ण २. नासावादिन्।

गुनगुनाना, क्रि, अ. (अनु.) गुणगुणायते (ना. धा.) २.नासिकया वद् (भ्वा. प. से.) ३. अस्फुटं गै (भ्वा. प. अ.) ४. असंतोषात् परिदेव् (चु. आ. से.) ५. दे. 'गुंजना'।

गुन(ना)हगार, वि. (फ़ा.) पापिन्, पातकिन् २. अपराधिन्, दोषिन्।

गुना, सं. पुं., दे. 'गुणा'।

गुनाह, सं. पुं. (फ़ा.) पापं २. अपराधः।

गुनिया, सं. पुं. (सं. कोणः >) कौणिकं, साधनं, तक्षकोपकरणभेदः (।)।

गुपचुप, क्रि. वि. (सं. गुप्त+चुप् >) निभृतं, सुगूढं, रहसि, मौनं (सब अव्य.)। सं. स्त्री., (१-३) मिष्टान्न-बालक्रीडा-क्रीडनक,-भेदः।

गुप्त, वि. (सं.) गूढ, निभृत, निलीन, प्रच्छन्न, अव्यक्त, अप्रकट २. दुर्बोध ३. रक्षित ४. अदृश्य। सं. पुं., वैश्योपाधिः २. प्राचीन-राजवंशविशेषः।

—होना, क्रि. अ., अंतर्धा-निली (कर्म.)।

—चर, सं. पुं. (सं.) अपसर्पः, च(चा)रः, प्रणिधिः।

—दान, सं. पुं. (सं. न.) दातृनामनिर्देशं विना दानं।

गुप्ता, सं. स्त्री. (सं.) परकीयाभेदः २. उप,-पत्नी-भार्या ३. वर्णसूचकोपाधिः (पुं.), गुप्तः।

गुप्ति, सं. स्त्री. (सं.) गूहनं, गोपनं, संवरणं, प्रच्छादनं २. रक्षणं ३. कारागारं ४. गुहा ५. यमाः (योग.)।

गुप्ती, सं. स्त्री. (सं. गुप्त >) गुप्तासिः (पुं.), खड्गयष्टिः (स्त्री.), *गुप्तिः (स्त्री.)।

गुफा, सं. स्त्री. (सं. गुहा) कंदरः-रा, गह्वरं, दरी, विवरः-रम्।

गुफ्तगू, सं. स्त्री. (फ़ा.) वार्तालापः, आलापः, संलापः।

गुबरैला, सं. पुं. (हिं. गोबर) गोमयलः, गोमयकीटः।

गुबार, सं. पुं. (अ.) धूलिः (स्त्री.), २. प्रच्छन्न-वैरादिकम्।

गुब्बारा, सं. पुं. (हिं. कुप्पा) विमानं, ख-व्योम,-यानं २. विमानाकारं, अग्निक्रीडनकम्।

गुम, वि. (फ़ा.) लुप्त, भ्रष्ट, नष्ट, च्युत २. गुप्त, छन्न ३. अविख्यात।

—करना, क्रि. स., वियुज्-विहा-परिहा (कर्म., तृतीया के साथ) २. दे. 'छिपाना'।

—होना, क्रि. अ., नश् (दि. प. वे.), प्रभ्रंश् (भ्वा. आ. से.; दि. प. से.)।

—नाम, वि. (फ़ा.) अप्रसिद्ध, अविदित।

—राह, वि. (फ़ा.) प्रभ्रष्ट-नष्ट,-पथ, विपथ-उन्मार्ग,-गामिन्, पथभ्रष्ट, भ्रान्त।

—राही, सं. स्त्री. (फ़ा.) भ्रान्तिः (स्त्री.), भ्रमः २. कुमार्गः।

गुमटी, सं. स्त्री. (फ़ा. गुंबद) (सोपानादीनां) उच्छदिः (स्त्री.)।

गुमड़ा, सं. पुं. (फ़ा. गुंबद) गंडः शोथः, शोफः।

गुमरी, सं. स्त्री., दे. 'घुमरी'।

गुमान, सं. पुं. (फ़ा.) अनुमानं २. दर्पः।

गुमानी, वि. (फ़ा.) दृप्त, गर्वित, सदर्प।

गुमाश्ता, सं. पुं. (फ़ा.) प्रतिनिधिः (पुं.) प्रतिहस्तः-स्तकः, नियोगिन् (पुं.), नियुक्तः, प्रतिपुरुषः।

—गीरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) नियोगि-प्रतिनिधि,-पदं-कार्यं २. प्रतिनिध्यं, नियुक्तत्वम्।

गुम्मट, सं. पुं. (फ़ा. गुंबद दे.)।

गुर, सं. पुं. (सं. गुरुमन्त्रः >) सूत्रं, मूलमन्त्रः, सारः, संक्षिप्तविधिः (पुं.)।

गुरगा, सं. पुं. (सं. गुरुगः) शिष्यः २. सेवकः ३. गुप्त-,चरः।

गुरगाबी, दे. 'गुर्गावी'।

गुरिया, सं. स्त्री. (सं. गुलिका) गुली, गुटिका।

गुरु, सं. पुं. (सं.) बृहस्पतिः, देवगुरुः २. बृह-स्पतिग्रहः ३. पुष्यनक्षत्र ४. मंत्रोपदेशकः ५. आचार्यः ६. अध्यापकः, शिक्षकः ७. पुरो-हितः ८. द्विमात्रिकवर्णः (छन्द.) ९. बल-विद्यादिषु स्वतोऽधिकः।

वि., बृहत्, महत्, विशाल, विपुल, विस्तीर्ण, २. भारवत् ३. दुर्जर, दुष्पच, गरिष्ठ ४. पूज्य, मान्य।

—आई, सं. स्त्री., गुरुता, गुरुधर्मः २. गुरुकृत्यं, मंत्रोपदेशः ३. धूर्तता।

—कुल, सं. पुं. (सं. न.) आचार्यकुलं, विद्यालयः, शिक्षालयः।

—घंटाल, सं. पुं., धूर्त-वंचक-शठ-कितव,-राजः।

—जन, सं. पुं. (सं.) पूज्य वृद्ध,-जनः।

—दक्षिणा, सं. स्त्री. (सं.) आचार्योपायनम्।

—द्वारा, सं. पुं. (सं. गुरुद्वारं >) शिष्यमत मंदिरं, गुरुद्वारम्।

—भाई, सं. पुं. (—+हिं. भाई) सतीर्थ्यः, सगुरुकः, सह,-पाठिन्-अध्यायिन्।

—मुख, वि. (सं. >) दीक्षित।

—मुखी, सं. स्त्री. लिपिविशेषः, गुरुमुखी।

—वार, सं. पुं. (सं.) गुरु-बृहस्पति,-वारः-वासरः।

गुरुच, सं. स्त्री., दे. 'गिलो'।
गुरुतर, वि. (सं.) महत्तर, आवश्यकतर २. भारवत्तर, गरीयस् ३. पूज्यतर।
गुरुता, सं. स्त्री. (सं.) }
गुरुत्व, सं. पुं. (सं. न.) } भारः, तोलः, मानं २. महत्ता, गौरवं, गरिमन् (पुं.)।
—आकर्षण-सं. पुं. (सं. न.) भारवत्त्व,-आकृष्टिः-पातुकत्वम्।
गुरुवाइन, सं. स्त्री. (सं. गुरु >) गुरु,-आचार्य,-पत्नी, आचार्यानी, गुर्वी २. उपाध्यायानी, उपाध्यायी ३. उपदेशिका, अध्यापिका, शिक्षिका।
गुरू, सं. पुं., दे. 'गुरु'।
गुर्गा, सं. पुं. (सं. गुरुगः) शिष्यः, अनुगामिन् २. सेवकः, अनुगः ३. गुप्तचरः।
गुर्गाबी, सं. स्त्री. (फ़ा.) पादूः (स्त्री.), पादुका।
गुर्ज, सं. पुं. (फ़ा.) गदा, शस्त्रभेदः।
गुर्जर, सं. पुं. (सं.) गुर्जरराष्ट्रं, गुर्जरप्रान्तः २. गुर्जरवासिन् ३. जातिविशेषः।
गुर्दा, सं. पुं. (फ़ा.) वृक्कः-का-कं, बुक्कः-का-कं गुडः, गुर्दः, वृक्यः। २. शौर्यं, साहसम्।
—का दर्द, सं. पुं. वृक्कशूलम्।
—की पथरी, सं. स्त्री. वृक्काश्मरी।
गुर्राना, क्रि. अ. (अनु.) घुर्घुरायते (ना. धा.), घुर्घुरध्वनिं कृ २. गर्ज् (भ्वा प. से.)।
गुर्विणी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गर्भिणी'।
गुर्वी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गर्भिणी' २. गुरुपत्नी, आचार्यानी ३. गौरवयुक्ता ४. गायत्री।
गुल, सं. पुं. (फ़ा.) ओड्र-जपा-जवा,-पुष्पं २. पुष्पं ३. दग्धवर्ती-र्तिः (स्त्री.) ४. शुक्लं, नेत्ररोगभेदः ५. तप्तलोहाङ्कः।
—अब्बास, सं. पुं., कृष्ण,-कलिः (स्त्री.)-केलिः (स्त्री.)।
—कंद, सं. पुं. (फ़ा.) *फुल्ल—जपा,-खंडः।
—कारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) फुल्ल-कार्यं,-कर्मन्।
—तुर्रा, सं. पुं., सिद्ध,-आख्यः-नाथः-ईश्वरः।
—दस्ता, सं. पुं. (फ़ा.) फुल्लगुत्सः, कुसुम-पुष्प,-गुच्छः-स्तवकः।
—दान, सं. पुं. (फ़ा.) फुल्ल,-धानं-धानी।
—दुपहरिया, सं. पुं., सूर्यभक्तकः, अर्कवल्लभः, माध्याह्निकः, बन्धुजीवकः।
—परी, सं. स्त्री. सुपुष्पा, शंखोदरी, बर्हपुष्पा।
—बदन, सं. पुं. (फ़ा.) कौशेयवस्त्रभेदः।
—बूटा, सं. पुं., दे. 'गुलकारी'।
—मखमल, सं. पुं., स्थूलपुष्पा, झण्डूकः।
—करना, मु., दे. 'बुझाना'।
—होना, मु., दे. 'बुझना'।
—खिलना, मु., अतर्कितं-अद्भुतं घट् (भ्वा. आ. से.) अथवा आ-सं-पत् (भ्वा. प. से.) २. उपद्रवः उत्पद् (दि. आ. अ.)।
—खिलाना, मु., व. 'गुलखिलना' के प्रे. रूप।
गुल, सं. पुं. (फ़ा.) कोलाहलः, कलकल-ध्वनिः (पुं.)।
—गपाड़ा, सं. पुं., दे. 'गुल'।
गुलगुला[१], वि. (हिं. गुदगुदा) कोमल, मृदुल।
गुलगुला[२], सं. पुं. (हिं. गोल+गोल) गोल-गोलः मिष्टान्न-पक्वान्न,-भेदः २. गंडः, कर्णपट्टी।
गुलचला, सं. पुं. (हिं. गोला+चलाना) दे. 'तोपची'।
गुलछर्रा, सं. पुं. (फ़ा. गुल+अनु.) आनन्दः, मोदः, २. विलासः, भोगः।
—(रें) उड़ाना, मु., स्वच्छन्दं रम् (भ्वा. आ. अ.)।
गुलज़ार, सं. पुं. (फ़ा.) उद्यानं, वाटिका। वि., शोभन, अभिराम।
गुलझट-टी-ड़ी, सं. स्त्री. (सं. गोल+झट्= उलझना) सूत्रसंश्लेषः, *गोलझटम्। २. वली-कि: (स्त्री.)।
गुलशन, सं. पुं. (फ़ा.) उद्यानं, वाटिका।
गुलाब, सं. (फ़ा.) चारुकेसरा, लाक्षापुष्पा, तरुणी, शतपत्री, भृङ्गेष्टा, गन्धाढ्या, जपा, जवा २. जपाजलम्।
—जल, सं. पुं., जपा-जवा,-जलम्।
—जामुन, सं. पुं., किलाट,-जंबु (न.)-जांववं। २. वृक्षभेदः। ३. तत्फलम्।
—दानी, सं. स्त्री., *जपाधानी।
गुलाबी, वि. (फ़ा.) पाटल, जपावर्ण २. लघु, अत्यल्प ३. कौब्जक, औड्र। सं. स्त्री., (१-३) पानपात्र-खग-मिष्टान्न,-भेदः। ४. जपारंगः।
गुलाम, सं. पुं. (अ.) क्रीत,- दासः २. सेवकः ३. दासाकारयुतं क्रीडापत्रं, दासः।

गुलामी, सं. स्त्री. (अ. गुलाम) दासत्वं २. सेवा ३. परतन्त्रता ।

गुलाल, सं. पुं. } (फ़ा. गुल्लालः) दे. 'अबीर' ।
गुलाली, वि. }

गुलिस्ताँ, सं. पुं. (फ़ा.) उद्यानं, उपवनम् ।

गुलूबंद, सं. पुं. (फ़ा.) गलबन्धः २. ग्रैवेयं-यकम् ।

गुले(लै)ल, सं. स्त्री. (फ़ा. गिलूल) वटिका-क्षेपणी, गुलिकासः ।

गुलेला, सं. पुं. (फ़ा. गुलूला) गुलिका, वटिका २. दे. 'गुलेल' ।

गुल्फ, सं. पुं. (सं.) घुटिकः, घुंटः, घुंटकः, चरणग्रंथिः (पुं.) ।

गुल्म, सं. पुं. (सं.) उदररोगभेदः २. सेना-विभागभेदः (= ९ हाथी, ९ रथ, २७ घोड़े, ४५ पैदल) ३. प्लीहा ४. नाडी-धमनी-शोथः, ४. स्तम्बः, क्षुपः, गुल्मः-मम् ।

गुल्मी वि. (सं.-मिन्) गुल्मरोगपीडित ।

गुल्ला, सं. पुं. (सं. गोलः >, दे. 'गुलेला' ।

गुल्लाल्ला, सं. पुं. (फ़ा. गुलेलालः) रक्तपुष्प-भेदः, लालाफुल्लम् ।

गुल्ली, सं. स्त्री. (सं. गुली >) फल,-गर्भ-बीजं, २. गुलीदंडक्रीडायां लघुकाष्ठखण्डः, *गुली, वीटा ३. शाणः-णी ४. सारिकापक्षिभेद, ५. इक्षुखण्डः ६. अक्षः, पाशकः ।

गुसल, सं. पुं., दे. 'गुस्ल' ।

गुसाईं, सं. पुं. दे. 'गोस्वामी' ।

गुस्ताख़, वि. (फ़ा.) धृष्ट, वियात, अशिष्ट ।

गुस्ताख़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) धाष्टर्य, वैयात्यं, अशिष्टता ।

—करना, क्रि, अ., धाष्टर्य दृश् (प्रे.) अशिष्ट-वत् व्यवहृ (भ्वा. उ. अ.) ।

गुस्ल, सं. पुं. (अ.) स्नानं, अवगाहनम् ।

—करना, क्रि. अ., स्ना (अ. प. अ.) ।

—ख़ाना, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) स्नानागारं, अवगाहनस्थानम् ।

गुस्सा, सं. पुं. (अ.) कोपः, रोषः, दे. 'क्रोध' ।

—आना, करना चढ़ना या होना, क्रि. अ., रुष्-कुप् (दि. प. से.), क्रुध् (दि. प. अ.) ।

—उतरना, मु., कोपः शम् (दि. प. से., शाम्यति) ।

गुस्सीला, गुस्सैल, वि. (अ. गुस्सा) कोपन, क्रोधन, रोषण, अमर्षण ।

गुह[1], सं. पुं. (सं.) कार्तिकेयः २. अश्वः ३. गुहा ४. रामसुहृद् (पुं.) ५. हृदयम् ।

गुह[2], सं. पुं. (सं. गूथं) दे. 'गूह' ।

गुहाँजनी, सं. स्त्री. (सं. गुह्य+अञ्जनं>) पक्ष्म,-पिटिका-चंचिका ।

गुहा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गुफ़ा' ।

गुहार, सं. स्त्री., दे. 'गोहार' ।

गुहिन, सं. पुं. (सं. न.) वनं, काननम्, अरण्यम् ।

गुह्य, वि. (सं.) गुप्त, अन्तर्हित २. गोपनीय, संवरणीय ३. दुर्बोध, गूढ ।

सं. पुं., छलं २. कूर्मः ३. गुह्यांगं ४. विष्णुः ५. शिवः ।

गुह्यक, सं. पुं. (सं.) यक्षभेदः ।

—पति, सं. पुं. (सं.) कुबेरः ।

गूँगा, वि. (फ़ा. गुंग) मूकः, वाग्,-रहित-हीनः, अवाच् ।

गूँगे का गुड़, मु., अवर्ण्यवार्ता ।

गूँज, सं. स्त्री. (सं. गुंजः) दे. 'गुंज' (१) २. प्रति,-नादः-ध्वनिः (पुं.)-शब्दः-रवः-गर्जनं-श्रुतिः (स्त्री.) ३. अनु-रसितं,-नादः ।

गूँजना, क्रि. अ. (सं. गुंजनं) दे. 'गुंजना' २. प्रति,-नद्-ध्वन्-स्वन्-रस् (सब भ्वा. प. से.) ३. अनु,-नद्-रस्, प्रतिशब्दं कृ इ. ।

गूँथना, क्रि. सं. (सं. ग्रथनं) वेणीरूपेण ग्रंथ् (क्र्. प. से.) वेणी कृ २. संग्रंथ्, संदृभ् (चु. उ. से.), गु(गुं)फ्-दृभ् (तु. प. से.), सूत्र् (चु.) ३. सिव् (दि. प. से,), (सूच्या) संश्लिष् (प्रे.) ।

गूँधना, क्रि. स. (सं. गोधनं=क्रीडा करना>) (जलेन मिश्रयित्वा हस्ताभ्यां) मृद् (क्र्. प. से. अथवा प्रे.)-सम्पीड् (चु.) २-३. दे. 'गूँथना' (१, २.) ।

गूग(गु)ल, सं. पुं., दे. 'गुग्गुल' ।

गूजर, सं. पुं. (सं. गुर्जरः) गोपः, गोपालः, आभीरः २. जातिविशेषः ।

गूजरी, सं. स्त्री. (सं. गुर्जरी) गोपी, गोपपत्नी २. चरणाभरणभेदः ३. रागिणीविशेषः ।

गूढ़, वि. (सं.) दुर्बोध, कठिन २. गुप्त, प्रच्छन्न ३. गम्भीर, सारगर्भित ।

—पुरुष, सं. पुं. (सं.) दे. 'गुप्तचर'

गूढ़ता, सं. स्त्री. (सं.) दुर्बोधता, गम्भीरता, प्रच्छन्नता ।
गूढांग, सं. पुं. (सं.) कच्छपः, कमठः, कूर्मः ।
गूढांघ्रि, सं. पुं. (सं.) अहिः, सर्पः, उरगः, पन्नगः ।
गूथ, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'गूह' ।
गूथना, क्रि. स., दे. 'गूँथना' ।
गूदड़, सं. पुं. (हिं. गूँथना) कर्पटः, जीर्णवसनं २. अवस्करः, मलं ३. तूला, तूलिका ।
गूदड़ी, सं. स्त्री. (हिं. गूदड़) (भिक्षुकस्य) तूला २. पोट्टली-लिका ।
गूदा, सं. पुं. (सं. गोर्दः) मस्तिष्कं, गोर्दं, मस्तकस्नेहः २. फल,-सारः-मज्जा-वसा ३. बीज,-सारः-गर्भः ४. सारभागः ।
गूधना, क्रि. स. दे. 'गूँधना' ।
गून, सं. स्त्री. (सं. गुणः) नौकर्षणरज्जुः (स्त्री.) ।
गूमड़ा, सं. पुं. (सं. गुल्मः-मं >) वि-,स्फोटः, पिटकः २. शोथः, शोफः ।
गूमड़ी सं. स्त्री. (हिं. गूमड़ा) पिटिका, क्षुद्रव्रणः, रक्तवटी ।
गूलर, सं. पुं., उदुम्बरः, यज्ञांगः, जंतुफलः, हेमदुग्धकः, पुष्पशून्यः ।
—का कीड़ा, मु. कूपमंडूकः अनुभवहीनः ।
—का फूल, मु., दुर्लभवस्तु (न.) ।
गूह, सं. पुं. (सं. गूथः-थं) पुरीषं, मलं, उच्चारः, विष्ठा, अप(व)स्करः, विष् (स्त्री.) ।
गृध्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'गिद्ध' ।
गृह, सं. पुं. (सं. न.) गृहाः (पुं. बहु.), गेहं-, हः, वेश्मन्-सद्मन् (न.), निकेतः-तनं, सदनं, भवनं, अ(आ)गारं, मंदिरं, निलयः, आलयः, शाला, सं-आ-नि-अधि-,वासः, आवसथः, उदवसितं, निकाय्यः २. *परिवारः, कुटुम्बं, गृहाः ।
—पति, सं. पुं. (सं.) गृहिन् , गेहिन् , कुटुम्बिन् २. कुक्कुरः ३. अग्निः ।
—पत्नी, सं. स्त्री. (सं.) शालिनी, गृहिणी, गेहिनी, कुटुम्बिनी ।
—युद्ध, सं. पुं. (सं. न.) जनप्रकोपः, प्रकृतिक्षोभः, २. कौटुम्बिककलहः ।
—लक्ष्मी, सं. स्त्री. (सं.) सुगृहिणी, सुशील-गृहपत्नी ।

गृहस्थ, सं. पुं. (सं.) गृहमेधिन् , ज्येष्ठाश्रमिन् , दे. 'गृहपति' ।
—आश्रम, सं. पुं. (सं.) वैवाहिकजीवनं २. द्वितीयाश्रमः ।
गृहस्थी, सं. स्त्री. (सं. गृहस्थ >) गृहस्थ,-आश्रमः-कर्तव्यानि (न. बहु.) २. गृहव्यवस्था ३. कुटुम्बं, परिवारः ४. गृह,-उपस्कारः-सामग्री ५. गृहकार्यकुशलता ।
गृहिणी, सं. स्त्री. (सं.) शालिनी, दे. 'गृहपत्नी' ।
गृही, सं. पुं. (सं. गृहिन्) गृहस्थः, दे. 'गृहपति' ।
गेंडली, सं. स्त्री. (सं. कुंडली >) मंडलं, आवेष्टनं, व्यावर्तनम् ।
—मारना, क्रि. स., मंडली-पुटी-वर्तुली, कृ, व्यावृत् (प्रे.) ।
गेंडुरी, सं. स्त्री., दे. 'इंडुरी' ।
गेंद, सं. पुं. (सं. गेंदुकः) कंदुकः, गेण्डु (डू) कः, गोलकः, गोलः-ला-लं २. मंडलं, वर्तुलं, गोलःलम् ।
—बल्ला, सं. पुं., गेंदुकपट्टं, पट्टगेन्दुकम् , आगङ्लीयक्रीडाभेदः ।
गेंडुआ, सं. पुं. (सं. गेंडुकः >) (गोल-) उपबर्हः-उपधानम् ।
गेंदा, सं. पुं. (सं. गेंडुकः) बृहत् ,-कंदुकः गोलकः २. पुष्पभेदः ।
गेरना, क्रि. स., दे. 'गिराना' तथा 'उँड़ेलना' ।
गेरू, सं. स्त्री. (सं. गवेरुकं) गैरिकं, रक्त-गिरि,-धातुः (पुं.), रक्तोपलं, गिरिजं, गिरि-लोहित,-मृत्तिका, वनालक्तम् ।
गेरुआ, वि. (हिं. गेरू) गवेरुकरंजित २. गिरिजवर्ण ।
गेह, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'गृह' ।
गेहुँअन, सं. पुं. (हिं. गेहूँ) गोधूमकः, फणिभेदः ।
गेहूँ, सं. पुं. (सं. गोधूमः) सुमनस् (पुं.), बहुदुग्धः, यवनः, म्लेच्छभोजनः, सितशिंबिकः, निस्तुषः, क्षीरिन् , अपूपः, रसालः २. नागरंगः ।
गेहुँआ, वि. (हिं. गेहूं) गोधूम,-वर्ण-रंग, २. गोधूममय, गोधूम-(समास में) २. घासभेदः ।

गैंड़ा, सं. पुं. (सं. गंडः) गंडकः, खड्गिन्, वज्रचर्मन् (पुं.), तुंग-क्रोडी,-मुखः, वार्ध्री-(ध्री)णसः, खड्गमृगः ।

गैंत-ती, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'कुदाल' ।

ग़ैज़, सं. पुं. (अ.) अति,-कोपः-क्रोध,-रोषः ।

ग़ैब, सं. पुं. (अ.) परोक्ष-तिरोहित,-पदार्थः । वि., गुप्त, तिरोहित ।

—दाँ, वि., परोक्षविद्, सर्वज्ञ ।

गैवर, सं. पुं. (सं. गजवरः) गजोत्तमः, गजेन्द्रः, करीन्द्रः ।

ग़ैबी, वि. (अ. गैब) गुप्त, प्रच्छन्न, अज्ञात ।

गैया, सं. स्त्री. दे. 'गाय' ।

ग़ैर, वि. (अ.) अन्य, इतर, पर, अपर २. भिन्न, व्यतिरिक्त । सं. पुं. आगंतुकः, अभ्यागतः ।

—आबाद, वि., निर्जन, वसतिशून्य ।

—मनक़ूला, वि., स्थिर, स्थावर, अचर-ल ।

—मामूली, वि., विशिष्ट, असाधारण, विशेष ।

—मुनासिब,-वाजिब, वि., अनुचित, अयोग्य ।

—मुमकिन, वि., असंभव, अशक्य ।

—शख़्स, सं. पुं., परः, अनात्मीयः ।

—हाज़िर, वि., अनुपस्थित, अविद्यमान ।

—हाज़िरी, वि., अनुपस्थितिः. (स्त्री.) अविद्यमानता ।

गैरत, सं. स्त्री. (अ.) लज्जा, त्रपा ।

गैरिक, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'गेरू' ।

ग़ैरीयत, सं. स्त्री. (अ.) अन्यता, परता, इतरता, अपरता ।

गैल, सं. स्त्री., दे. 'गली' ।

गैलन, सं. पुं. (अ.) *गैलनम्, द्रवद्रव्यपरिमाणभेदः, अर्द्ध प्रस्थः ।

गैस, सं. स्त्री. (अं.) वातिः (स्त्री.), वाष्पः ।

गोंड़ा, सं. पुं. (सं. गोष्ठं) व्रजः, अवरोधः, शाला २. ग्रामः ३. विस्तीर्णमार्गः ४. अजिरम् ।

गोंद, सं. पुं. (सं. कुंदः >, अथवा हिं. गूदा) निर्यासः ।

—दानी, सं. स्त्री. निर्यासधानी ।

गोंदीला, वि. (हिं. गोंद) निर्यास,-मय-तुल्य, सांद्र, स्यान ।

गो', सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गाय' २. किरणः ३. इंद्रियं ४. वाच् (स्त्री.) ५. सरस्वती ६. नेत्रं ७. विद्युत् (स्त्री.) ८. पृथ्वी ९. दिशा १०. जननी ११. जिह्वा । सं. पुं. (सं.) वृषभः २. नंदीगणः ३. घोटकः ४. सूर्यः ५. चंद्रः ६. बाणः ७. गायकः ८. आकाशः-शं ९. स्वर्गः १०. जलं ११. लोमन् (न.) १२. शब्द १३. नवांकः ।

—कर्ण, सं. पुं. (सं.) धेनुश्रवणं २. शैवतीर्थविशेषः । ३. अश्वतरः ४. सर्पभेदः ५. किष्कुः-वितस्तिः (पुं. स्त्री.) (हिं. बित्ता) ५. मृगभेदः । वि., लंबकर्ण ।

—कुल, सं. पुं. (सं. न.) गोसमुदायः २. गोष्ठं ३. ग्रामविशेषः ।

—ग्रास, सं. पुं. (सं.) गो,-कवलः-(-लं)-पिंडः ।

—घात, सं. पुं. (सं.) गो,-हत्या-वधः-मारणम् ।

—घातक, सं. पुं. (सं.) गोघातिन्, गोघ्नः ।

—चर, वि. (सं.) इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रियगम्य । सं. पुं., रूपादिविषयाः २. शाद्वलं, तृणावृतभूमिः (स्त्री.) ३. प्रांतः, देशः ।

—चरी, सं. स्त्री. (सं. गोचर >) भिक्षावृत्तिः (स्त्री.) ।

—ऽतीत, वि., अगोचर, अतींद्रिय, इन्द्रियातीत, इंद्रियागोचर ।

—दान, सं. पुं. (सं. न.) धेनु-गो,-विसर्जनं-त्यागः ।

—धू(ली)लि, सं. स्त्री. (सं.) संध्या-सायं,-कालः-समयः-वेला ।

—धेनु, सं. स्त्री. (सं.) दुग्धवती गौः (स्त्री.) ।

—पाल, सं. पुं. (सं.) गोपः, गोपालकः । २. श्रीकृष्णः ।

—मय, सं. पुं. (सं. न.) गो,-मलं-पुरीषं-विष्ठा।

—मुख, सं. पुं. (सं. न.) धेनुवदनं २. शंखभेदः । ३. दे. 'नरसिंहा' ४. गोमुखी, जपमालाकोषः । ५. चौरकृतं कुड्यरंध्रम् ।

—मूत्र सं. पुं. (सं. न.) गो,-जलं-प्रस्रावः-द्रवः-निष्यंदः ।

—मेद,-मेदक, सं. पुं. (सं.) राहुरत्नं, पुष्परागः, पीताश्मन् (पुं.) ।

—मेध, सं. पुं. (सं.) यज्ञभेदः ।

—रस, सं. पुं. (सं.) दुग्धं २. दधि (न.) ३. तक्रं ४. इन्द्रियसुखम् ।

—रोचन, सं. पुं. (सं.-चना) शुभा, शोभा, शोभना, रोचनी, शिवा, मंगला, पीता, रोचना ।

—लोक, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णस्य नित्यधामन् (न.)।
—वर्द्धन, सं. पुं. (सं.) व्रजभूमौ पर्वतविशेषः।
—वर्द्धनधर, सं. पुं. (सं.) गोवर्धनधारिन् श्रीकृष्णः।
—विंद, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः।
—शाला, सं. स्त्री. (सं.) गोष्ठं, गोगृहं, व्रजः।
—साईं, सं. पुं., दे. 'गोस्वामी'।
—स्वामी, सं. पुं. (सं.-मिन्) गोपतिः २. प्रभुः।
—हत्या, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गोघात'।
गो[2], गो कि, अव्य. (फ़ा) अपि, यद्यपि।
गोका, सं. स्त्री. (सं.) लघु,-गौः-धेनुः (दोनों स्त्री.) २. वनधेनुः (स्त्री.), भिल्लगवी।
गोखरु, सं. पुं. (सं. गोक्षुरः) त्रिकंटः-टकः, गोकंटः-टकः (क्षुपविशेषः) २. तस्य कंटकः-कं ३. कटक-वलय,-प्रकारः।
गोचना, गोचनी, सं. पुं. सं. स्त्री. (हिं. गोहूँ + चना) गोधूमचणः-णम्, *गोचणः-णं-णी।
गोज़, सं. पुं. (फ़ा.) अपानवायुः, पर्दः।
गोजर, सं. पुं. दे. 'कनखजूरा'।
गोजरा, सं. पुं. (हिं. गेहूँ + जव) गोधूमयवाः।
गोझा, सं. पुं. (सं. गुह्यकः) १. पक्वान्नभेदः। २. वंश-काष्ठ,-कीलः ३. दे. 'जेब' ४. घासभेदः।
गोट[1], सं. स्त्री. (गोष्ठ > ?) वस्तयः-दशाः (स्त्री. बहु.), वसनप्रान्तः।
गोट[2], सं. स्त्री. (सं. गुटिका) शारः, शारिः (पुं.), खेलनी।
गोटा, सं. पुं. (हिं. गोट) सुवर्ण-रजत,-जाला-भरणं-वस्त्राभरणम्।
गोटी, सं. स्त्री. (गुटिका) पाषाणखंडः-डं, शर्करा २. दे. 'गोट[2]' ३. मसूरी-रिका, शीतलारोगः।
गोठ, सं. स्त्री. (सं. गोष्ठं) गोशाला २. पर्यटनं, भ्रमणं ३. श्राद्धभेदः।
गोड़ना, क्रि. स. दे. 'खोदना'।
गोड़ा, सं. पुं. दे. 'घुटना'।
गोणी, सं. स्त्री. (सं.) शाण,-कोषः-पुटः, स्यू-(स्यो)तः, प्रसेवः २. द्रोणीपरिमाणम्।
गोत, सं. पुं. (सं. गोत्रं) दे. 'गोत्र' २. गणः, समूहः।
ग़ोता, सं. पुं. (अ.) निमज्जनं, अवगाहः।
—देना, क्रि. स., व. 'गोता मारना' के प्रे. रूप।
—मारना, क्रि. अ. वि-अव-गाह् (भ्वा. आ. वे.) निमज्ज् (तु. प. अ.)।
—ख़ोर, सं. पुं. (अ. + फ़ा.) अवगाहकः, निमंक्तृ (पुं.)।
गोत्र, सं. पुं. (सं. न.) कुलं, वंशः, अन्वयः २. समूहः ३. संपत्तिः (स्त्री.) ४. बन्धुः ५. जातिविभागः।
—भिद्, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः, देवराजः।
गोदंत, सं. पुं. (सं. न.) हरितालम्।
गोद, सं. स्त्री. (सं. क्रोडं) अंकः, उत्संगः।
—लेना, मु., पुत्रीकृ, (पुत्रत्वेन) परिग्रह् (क्र्. प. से.)।
गोदना, क्रि. स. (हिं. खोदना) सूच्या त्वचं रंज् (प्रे.), त्वचमनुविध्य पत्ररेखां निविश् (प्रे.) २. गोबीजं निविश् (प्रे.) ३. सूच्यग्रेण व्यध् (दि. प. अ.) ४. असकृत् प्रणुद्-प्रवृत् (प्रे.)। सं. पुं., त्वचि सूचीखातम् कृष्णचिह्नम्।
गोदनी, सं. स्त्री. (हिं. गोदन) वेधनी, सूचिः-ची (स्त्री.)।
गोदाम, सं. पुं. (अं. गोडाउन) पण्य-अगारं-आधानं, भाण्डागारम्।
गोदावरी, सं. स्त्री. (सं.) गोदा, गौतमी।
गोदी, सं. स्त्री., दे. 'गोद'।
गोधा, सं. स्त्री. (सं.) तला, तलं, ज्याघातवारणा २. गोधिका, निहाका।
गोधुम, गोधूम, सं. पुं. (सं.) दे. 'गेहूं' २. नागरंगः।
गोन, सं. स्त्री., दे. 'गोणी'।
गोनिया, सं. पुं., दे. 'गुनिया'।
गोप, सं. पुं. (सं.) आभीरः, गोपालः, २. नृपः ३. उपकारकः।
गोपन, सं. पुं. (सं. न.) गूहनं, गोहनं, प्रच्छादनं, संवरणम्।
गोपनीय, वि. (स.) गुह्य, संवरणीय, रहस्य, गोप्य।
गोपिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. गोपी।
गोपी, सं. स्त्री. (सं.) गोपिका, गोपपत्नी, आभीरी, गोपालिका।
गोफन-ना, सं. पुं. (सं. गोफणा) सृगः, भिंदि(द)पालः।

गोबर, सं. पुं. (सं. गोमयं) दे. 'गोमय'।

—गणे(ने)श, वि., कुदर्शन, कुरूप। सं. पुं., मूर्खः, जडः।

गोबरी, सं. स्त्री. (हिं. गोबर) गोमयलेपः।

—करना, क्रि. स., गोमयेन लिप् (तु. प. अ.)।

गोबरैला, | **गोबरौंदा,** | सं. पुं. (हिं. गोबर) दे. 'गुबरैला'।

गोभी, सं. स्त्री. (सं. गोभी = घासविशेष >) गोभी।

गांठ—, ग्रंथिगोभी।

पात—, बंद—, } मुकुल-पत्र,-गोभी।

फूल—, मध्यपुष्पा, बृहद्दला, फुल्लगोभी।

गोया, क्रि, वि. (फ़ा.) इव, यथा, मन्ये (दि. आ. अ.)।

गोरखधंधा, सं. पुं. (हिं. गोरख + धंधा) गहन-जटिल,-कार्यं २. कूटं, प्रहेलिका ३. अशक्यनिर्गमः प्रदेशः।

गोरखा, सं. पुं. (सं. गोरक्षकः) नयपालदेशे प्रांतविशेषः २. तत्प्रान्तवासिन्।

गोरखाली, सं. स्त्री. (सं. हिं. गोरखा) नयपालदेशस्य जातिविशेषः, *गोरक्षाली २. गोरक्षालीजातेर्भाषा, *गोरक्षाली।

गोरा, वि. (सं. गौर) शुक्ल, श्वेत, सित, विशुद्ध। सं. पुं., गौरः, शुक्लः, श्वेतः, सितः, २. युरोपादिवासिन्, गौरः।

गोराई, सं. स्त्री. (हिं. गोरा) गौरता, शुक्लता, श्वेतता, सितता।

गोरिल्ला, सं. पुं. (अफ्री.) वानरभेदः, वनमानुषप्रकारः।

गोरी, सं. स्त्री. (सं. गौरी) गौरा, शुक्ला, श्वेता, सुरूपिणी, सुन्दरी।

गोलंदाज, सं. पुं. (फ़ा.) शतघ्नीचालकः, गोलक्षेपकः।

गोल[1], वि. (सं.) वर्तुल, निस्तल, वृत्त, वृत्त-मंडल-चक्र-वलय,-आकार-आकृति-रूप २. अस्पष्ट, संदिग्ध, अनिश्चित। सं. पुं., घटः २. मूर्खः।

—गप्पा, सं. पुं. (-+अनु. गप) *गोलगप्पः।

—मटोल, वि., पीनवामन, खर्वस्थूल।

—मिर्च, सं. स्त्री. [सं. गोलमरि(री)चं] मरिचं, कोलं, कोलकम्।

—माल, मु., अस्तव्यस्तता, क्रमभंगः।

—माल करना, मु., छलेन आत्मसात् कृ २. व्यवस्थां नश् (प्रे.)।

गोल[2], सं. पुं. (अ.) गणः, समुदायः।

गोलक, सं. पुं. (सं.) पिटक-संपुट-मंजूषा,-प्रकारः-भेदः २. निष्कर्षणी (हिं. दराज़) ३. पत्यौ मृते जारजपुत्रः ४. कंदुकः ५. महन्मृत्पात्रं ६. कनीनिका ७. नेत्रगोलः ८. निधिः, राशिः ९. टंकपेटिका।

गोला, सं. पुं. (सं. गोलः) गोला-लं, वर्तुलः-लं २. चक्रं, मंडलं, वृत्तं ३. अग्न्यस्त्रं, गोलः, बंबः-बं ४. नारिकेलः-रः ५. वायुगोलः, उदर-रोगभेदः ६. धान्य,-हट्टः-विपणी ७. पशुवृंदं ८. सेतुबंधः ९. धान्यकुंभः।

—मारना, क्रि. स. गोलैः-बंबैः ध्वंस् (प्रे.)-चूर्ण् (चु.)।

गोलाई, सं. स्त्री. (सं. गोल >) वृत्तता, वर्तुलता, गोलत्वं, मंडलत्वम्।

गोलाकार, वि. (सं.) दे. 'गोल'[1]।

गोलार्द्ध, सं. पुं. (सं. न.) अर्द्धगोलः।

गोली, सं. स्त्री. (हिं. गोला) लघुगोलः, गोलकः २. सीसकगुलिका ३. गुटिका, वटिका, गुलिका ४. काच-मर्मरोपल,-गुलिका।

—मारना, क्रि. स., गुलिकाक्षेपेण हन् (अ. प. अ.)-क्षण् (त. उ. से.)।

गोल्ड, सं. पुं. (अं.) सुवर्णं, स्वर्णं, कनकम्।

गोल्डन, वि. (अं.) दे. 'सुनहला'।

गोविंद, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः।

गोशा, सं. पुं. (फ़ा.) कोणः २. दिशा ३. रहः-स्थानं, विविक्तम्।

गोश्त, सं. पुं. (फ़ा.) मांसं, आमिषम्।

—खोर, सं. पुं., मांस-आमिष,-भक्षिन्-आदः-भक्षकः।

गोष्ठ, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गो,-स्थानं-शाला-गृहं, व्रजः २. वृंदं, समूहः ३. विमर्शः, मंत्रणा।

गोष्ठी, सं. स्त्री. (सं.) गोष्ठिः-समितिः (स्त्री.), सभा, समाजः, २. वार्तालापः ३. विमर्शः।

गोस्तना—नी, (सं.) द्राक्षा, मृद्वीका।

गोह, सं. स्त्री. (सं. गोधा) गोधिका, निहाका २. (गोह का बच्चा) गौधारः, गौधेरः, गौधेयः।

गोहरा, सं. पुं. (सं. गोहल्लं >) दे. 'उपला'।

गोहूँ, सं. पुं., दे. 'गेहूँ'।

गोक्षुर, सं. पुं. दे. 'गोखरू'।

गौं, सं. स्त्री. (सं. गमः >) प्रयोजनं, अर्थः, कार्यं २. अवसरः, कार्यकालः, अवकाशः।

गौ, सं. स्त्री., दे. 'गाय' तथा 'गो'।

ग़ौग़ा, सं. पुं. (अ.) कोलाहलः २. जनश्रुतिः (स्त्री.)।

गौड़, सं. पुं. (सं.) वंगप्रांतस्य भागविशेषः २.-३. ब्राह्मण-कायस्थ,-भेदः ४. गौडवासिन्।

गौण, वि. (सं.) अप्रधान, द्वितीय, अवर २. सहायक। (गौणी स्त्री.)।

गौतम, सं. पुं. (सं.) ऋषिविशेषः २ बुद्धः।

गौतमी, सं. स्त्री. (सं.) अहल्या २. कृपाचार्य-पत्नी ३. गोदावारी ४. दुर्गा।

गौनहार, सं. स्त्री. (हिं. गौन) नवोढ़ासहगा-मिनी।

गौनहारी, सं. स्त्री. (हिं. गाना) गात्री, गायनी, गायिका, गायकी।

गौना, सं. पुं. (सं. गमनं >) द्विरागमनं, वध्वाः पतिगृहे गमनम्।

गौर, वि. (सं.) दे. 'गोरा' (वि.)। सं. पुं. १.-२. रक्त-पीत,-रंगः ३. चंद्रः ४. सुवर्णं ५. कुंकुमम्।

ग़ौर, सं. पुं. (अ.) विचारः, चिंतनं, ध्यानम्।

—करना, क्रि. स., विचार् (प्रे.), चिंत् (चु.)

गौरव, सं. पुं. (सं. न.) महत्वं, महिमन् (पुं.) २. गुरुता, भारवत्त्वं ३. आदरः, सम्मानः ४. अभ्युत्थानम्।

गौरवान्वित, वि. (सं.) गौरवित, सगौरव, सम्मानित, आदृत।

गौरांग, सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. कृष्णः ३. चैतन्यदेवः। वि. सित, श्वेत, शुक्ल २. यूरोपीय।

—महाप्रभु, सं. पुं. (सं.) चैतन्यदेवः।

गौरी, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, गौरा, गिरिजा २. ३. शुक्ला (नारी अथवा गौ)।

—शंकर, सं. पुं. (सं.) शिवः २. हिमालयस्य उच्चतमं शिखरम्।

गौहर, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'मोती'।

ग्यान, सं. पुं., दे. 'ज्ञान'।

ग्यारह, वि. (सं. एकादशन्)। सं. पुं., उक्ता संख्या तदंकौ (११) च।

ग्यारहवां, वि., एकादशः (पुं.), एकादशं (न.) (-वीं (स्त्री.) = एकादशी)।

ग्रंथ, सं. पुं. (सं.) पुस्तकं, शास्त्रं २. ग्रंथनं ३ धनम्।

—चुंबन, सं. पुं. (सं. न.) क्षिप्र-त्वरित-, पठनं-अध्ययनं, शीघ्रपाठः।

—संधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) अध्यायः, परिच्छेदः।

—साहब, सं. पुं., शिष्यमतधर्मग्रंथः।

—कार, सं. पुं. (सं.) पुस्तक-ग्रंथ,-लेखकः-संपादकः-कर्तृ-प्रणेतृ।

ग्रंथन, सं. पुं. (सं. न.) ग्रथनं, गुंफनं, २. प्रणयनं, निबंधनम्।

ग्रंथि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) दे. 'गाँठ'।

—बंधन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'गाँठ जोड़ना'

ग्रंथित, वि. (सं.) ग्रथित, गु(गुं)फित २. ग्रंथिमत्, ग्रंथिल।

ग्रसन, सं. पुं. (सं. न.) भक्षणं, निगलनं, २. ग्रहणं, धरणं ३. सूर्यादेः ग्रहणं, उपरागः।

ग्रसना, क्रि. स. (सं. ग्रसनं) (हस्तेन) धृ (भ्वा. उ. अ., चु.)-ग्रस्-अवलंब् (भ्वा. आ. से.) ग्रह् (क्र्. प. से.)।

ग्रसित, } **ग्रस्त**, } वि. (सं. ग्रस्त) धृत, गृहीत, उपात्त २. पीडित ३. भक्षित, निगीर्ण।

ग्रह, सं. पुं. (सं.) नक्षत्रभेदः।

ग्रहण, सं. पुं. (सं. न.) उपरागः, ग्रहः, ग्रासः, ग्रहपीडनं २. आदानं, अंगीकरणम्।

ग्राफ़, सं. पुं. (अं.) बिन्दुरेखाचित्रम्।

ग्राम, सं. पुं. (सं.) दे. 'गांव'।

ग्रामीण, सं. पुं. (सं.) ग्रामिकः, ग्रामिन्, ग्रामवासिन्।

ग्रामोफोन, सं. पुं. (अं.) ध्वनिलेखनवाद्यम्।

ग्राम्य, वि. (सं.) ग्रामीण, ग्रामिक, ग्रामीय २. असभ्य, अशिष्ट।

ग्रास, सं. पुं. (सं.) कवलः, पिंडः।

ग्राह, सं. पुं. (सं.) अवहारः, जलहस्तिन्।

ग्राहक, सं. पुं. (सं.) क्रेतृ (पुं.), क्रयिन्, क्रयिकः।

ग्राह्य, वि. (सं.) उपादेय, स्वीकार्य, २. ज्ञेय।

ग्रीवा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गर्दन'।

ग्रीष्म, सं. पुं. (सं.) ग्रीष्म,-समयः-कालः, निदाघः, उष्णः-णकः, तपः, तापनः, उष्णा,-उप-गमः-आगमः-कालः।

ग्रीस सं. पुं. (अं.) यवनदेशः।

ग्रेटब्रिटेन, सं. पुं. (अं.) आंग्लद्वीपसमूहः ।
ग्रेविटी, सं. स्त्री. (अं.) भ्वाकृष्टिः (स्त्री.) ।
स्पेसिफिक—, आपेक्षिकभारः ।
ग्रेविटेशन, सं. पुं. (अं.) गुरुत्वाकर्षणम् ।
ग्रेजुएट, सं. पुं. (अं.) स्नातकः ।
ग्लाईकोजन, सं. पुं. (अं.) शर्कराजनम् ।
ग्लानि, सं. स्त्री. (सं.) विषादः, अवसादः, ग्लानिः (स्त्री.) खेदः ।
ग्लूकोज़ सं. पुं. (अं.) द्राक्षौजम् ।
ग्लोब, सं. पुं. (अं.) गोलम् ।
ग्वाल-ग्वाला, सं. पुं. (सं. गोपालः) गोपः, आभीरः ।
ग्वालिन, सं. स्त्री. (हिं. ग्वाला) गोपी, गोपिका, आभीरी ।

घ

घ, देवनागरीवर्णमालायाश्चतुर्थो व्यंजनवर्णः, घकारः ।
घंगोलना, घंघोरना, घंघोलना, क्रि. स., (हिं. घना + घोलना) विली (प्रे. विलापयति-ते), विद्रु (प्रे.) २. आविली-कलुषी,-कृ ।
घंट, सं. पुं. (सं. घटः) कुम्भः ।
घंट, घंटा, सं. पुं. (सं. घण्टा) कांस्यनिर्मितवाद्यभेदः २. घंटा,-शब्दः-रवः ३. होरा, नाडिका, अहोरात्रस्य चतुर्विंशतितमो भागः ४. महाघटी ।
—घर, सं. पुं., घंटालयः, घंटागृहम् ।
घंटिका, सं. स्त्री. (सं.) क्षुद्रघंटा २. किंकि(क)णी ।
घंटी, सं. स्त्री. (हिं. घंटा) घर्घरा, घर्घरिका, क्षुद्रघंटा, घंटिका, २. घंटिकाशब्दः ३. किंकिणीणीका ४. नूपुरं ५. कृकाग्रं, स्वरयन्त्रम् ६. अलिजिह्वा, लम्बिका ।
घंट्ठु, सं. पुं. (सं.) तापः, दाहः, २. प्रकाशः, आलोकः, ३. गजघंटा ।
घघरा, सं. पुं. (अनु.) बृहच्चंडातकः-कम् ।
घघर , सं. स्त्री. (हिं. घघरा) चलनी, क्षुद्र,-चंडातकः-कं, घर्घरी ।
घचाघच, सं. स्त्री. (अनु.) घचघच,-शब्दः-ध्वनिः (पुं.) । वि., स्थूल, पीन ।
घट[1], सं. पुं. (सं.) कुंभः, कलशः-शं (-सः-सी), पुटग्रीवः, घटी, कलशी, कुटः-टं, ...नपः २. शरीरं ३. हृदयम् ।
घट[2], सं. स्त्री. (हिं. घटना) न्यूनता, अल्पता ।
—बढ़, सं. स्त्री., न्यूनताधिकता ।
घटक, सं. पुं. (सं.) मध्यस्थः, माध्यमिकः, मध्यवर्तिन् २. कुलाचार्यः २. योजकः ४. घटः ५. परविवाहसाधकः ।
घटका, सं. पुं. (अनु.) मरणोन्मुखस्य कृच्छ्र,-श्वासः-श्वसितं-श्वासप्रश्वासम् ।
घटती, सं. स्त्री. (हिं. घटना) न्यूनता, अवनतिः (स्त्री.), क्षीणता २. अनादरः, मानहानिः (स्त्री.) ।
घटन, सं. पुं (सं. नं.) उपस्थितिः (स्त्री.), उपागमः २. रचनं, निर्माणम् ।
घटना[1], क्रि. अ. (सं. घटनं) घट्-वृत् (भ्वा. आ. से.), उपस्था (भ्वा. उ. अ.), समापद् (दि. आ. अ.), उपनम् (भ्वा. प. अ.) २. युज् (कर्म.), उपपद् (दि. आ. अ.) । सं. स्त्री. (सं.) प्रसंगः, वृत्तं, वृत्तांतः, व्यतिकरः । ३. दुर्घटना ।
घटना[2], क्रि. अ. (हिं कटना) परिक्षि-अपचि (कर्म.),ह्रस् (भ्वा. प. से.), न्यूनी-अल्पी,-भू ।
घटनावली, सं. स्त्री. (सं.) वृत्तावली, घटनासमूह ।
घटबढ़, सं. स्त्री. (हिं घटना + बढ़ना) न्यूनताधिकते, अपचयोपचयौ, हानिलाभौ (सब द्वि.) । वि. न्यूनाधिक, हीनातिरिक्त ।
घटवार-ल, सं. पुं. (हिं. घाटवाला) तरपण्यतार्य,-ग्राहिन् २. नाविकः, औडुपिकः, घट्टजीविन् ।
घटा, सं. स्त्री. (सं. >) कादंबिनी, मेघमाला, घटपटली २. समूहः, वृंदम् ।
घटाटोप, सं. पुं. (सं. >) दे. 'घटा' (१) २. शिविकाच्छादनं ३. शकटावरणम् ।
घटाना, क्रि. स., (हिं. घटना) न्यूनी-अल्पी,-कृ, ऊन् (चु.), ह्रस् (प्रे.), लघूकृ, अपचि (स्वा. उ. अ.) २. वियुज्-विवृज्-व्यवकल् (चु.) ३. गर्वं हृ-(भ्वा. प. अ.), अपकृष् (भ्वा. प. अ.) ।
घटाव, सं. पुं. (हिं. घटना) न्यूनता, अल्पता, हीनता ३. अवनतिः (स्त्री.), अपचयः ।

घटवाना, क्रि. प्रे. (हिं. घटना) व. 'घटना' के प्रे. रूप ।

घटिका, सं. स्त्री. (सं.) क्षुद्र-लघु,-कुंभः-घटः । २. कालमानयंत्रं, यामनाली, घटी ३. चतुर्विंशतिकलात्मकः कालः, मुहूर्तार्द्धम् ।

घटित, वि. (सं.) निर्मित, रचित, संपादित ।

घटिया, वि. (हिं. घटना) अवर, अधर नि-अप,-कृष्ट, जघन्य २. सुलभ, अल्पमूल्य ।

घटी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'घटिका' १-३ ।

घड़त, सं. स्त्री., दे. 'गठन' ।

घड़ना, क्रि. स., दे. 'गढ़ना'

घड़ा, सं. पुं. (सं. घटः) दे. 'घट' (१) ।

घड़ाई, सं. स्त्री. दे. 'गढ़ाई' ।

घड़ाना, क्रि. प्रे. दे. 'गढ़ाना' ।

घड़िया, (सं. घटिका >) तैजसावर्तनी, मू-(मु)षा-षी २. मधुकोशः, करंडः ३. गर्भाशयः ४. मृच्छावकः ।

घड़ियाल, सं. पुं., दे. 'घंटा' (१) ।

घड़ियाल, सं. पुं., दे. 'ग्राह' ।

घड़ी, सं. स्त्री. (सं. घटी) घटिकायामनाली, कालमानयन्त्रं २. दे. 'घटिका' (३) ३. दे. 'घटिका' (१) ४. समयः ।

—घड़ी, क्रि. वि. मुहुर्मुहुः, पुनः पुनः, असकृत् (सब अव्य.) ।

—दिआ, सं. पुं. (हिं. घड़ी + दिआ) *घटीदीपः, मृतक-रीतिविशेषः ।

—भर, क्रि. वि., मुहूर्तं, क्षणं, क्षण-मुहूर्त,-मात्रम् ।

—साज़, सं. पुं. (हिं. + फ़ा.) घटी-घटिका,-कारः ।

घतिया, सं. पुं. (सं. घातः >) दे. 'घाती[२]' ।

घन, सं. पुं. (सं.) मेघः, जलदः, पयोदः २. लोहमुद्गरः, अयोघनः, ३. दे. 'घंटा' (१) ४. सजातीयांकत्रयस्य पूरणं (गणित, उ. २×२×२ = ८ घन) ५. समूहः ६. शरीरम् । वि. सान्द्र, निविड २. कठिन, संहत, स्थूल, ३. अधिक, प्रचुर ।

—गरज, सं. स्त्री. (- + हिं) गर्जितं, स्तनितं २. शतघ्नी-तोप,-भेदः ।

—घोर, वि. (सं.) अति,-सान्द्र-निविड २. भीषण, भयावह । सं. पुं. भीषण,-रवः-ध्वनिः २. स्तनितं, गर्जितम् ।

—घोर घटा, सं. स्त्री. (सं.) अविरलजलदावली, नीरन्ध्रकादम्बिनी ।

—चक्कर, सं. पुं. (सं. घनचक्रं >) चंचल-अस्थिर, मतिः-बुद्धिः २. मूर्खः ३. परिभ्रमिन्, यथेच्छविहारिन् ४. कृच्छ्रं, संकटम् ।

—नाद, सं. पुं. (सं.) दे. 'घनगरज' ।

—फल, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'घन' (४) ।

—मूल, सं. पुं. (सं. न.) पूरितसजातीयांकत्रयस्याद्याङ्कः, घनपदं (उ. आठ का घनमूल दो) ।

—श्याम, वि. (सं.) जलदनील, मेघमेचक । सं. पुं., श्रीकृष्णः ।

—सार, सं. पुं. (सं.) कर्पूरं २. पारदः ।

घनता, सं. स्त्री. (सं.) सांद्रता, निबिडता ।

घनत्व, सं. पुं. (सं. न.) स्थूलता, संहतिः (स्त्री.) ३. पदार्थस्य आयामविस्तारस्थूलत्वानि (बहु.) ।

घना, वि. (सं. घन) सांद्र, निविड, संहत, नीरन्ध्र २. गाढ, निकटवर्तिन् ३. अत्यधिक, अतिशय ।

घनाक्षरी, सं. स्त्री. (सं.) दंडकवृत्तं, कवित्ताख्यं छंदः (छंद.) ।

घनिष्ठ, वि. (सं.) अत्यंत-अति,-सांद्र-निविड-घन २. प्रगाढ, अतिनिकटस्थ ३. अत्यधिक, अतिशय ।

घनेरा, वि. (हिं. घना) अत्यधिक, अतिशय (बहु., घनेरे = असंख्य, अनेक) ।

घनोदय, सं. पुं. (सं.) मेघागमः, वर्षाकालारम्भः ।

घनोपल, दे. 'ओला' ।

घपला, सं. पुं. (अनु.) छलं, कपटं २. (संख्याने) स्खलितं, भ्रांतिः (स्त्री.) ३. क्रमभंगः ४. संकुलं, प्र-सं,-कीर्णकम् ।

घबरा(ड़ा)ना, क्रि. अ. तथा क्रि. स. दे. 'गड़बड़ाना' ।

घबराहट, सं. स्त्री. (हिं. घबराना) व्या-आ,-कुलता, अशांतिः (स्त्री.), उद्वेगः २. व्यामोहः, किंकर्तव्यमूढता, चित्तविक्षेपः ३. त्वरा, तूर्णिः (स्त्री.), तरस् (न.) संभ्रमः ।

घमंड, सं. पुं. (सं. गर्वः ?) अहंकारः, गर्वः, दर्पः, आटोपः, मदः, अवलेपः ।

—करना, क्रि. अ., गर्व् (भ्वा. प. से.), प्रगल्भ् (भ्वा. आ. से.), दृप् (दि. प. वे.) ।

घमंडी, वि. (हिं. घमंड) अवलिप्त, दृप्त, गर्वित, अहंमानिन्, अहंकारिन्, उत्सिक्त ।

घमघमाना, क्रि. अ. (अनु.) घमघमायते (ना. धा.), गंभीरं स्वन् (भ्वा. प. से.) । क्रि. स. (मुष्टिभिः) तड् (चु०) ।

घमस, सं. स्त्री. } **घमसा**, सं. पुं. } (सं. घर्मः >) दे. 'उमस' ।

घमसान, सं. पुं. (अनु.) घोर-दारुण-क्रूर, युद्धं संग्रामः-रणः-समरः ।

घमाका, सं. पुं. (अनु. घम) घमिति,-शब्दः-ध्वनिः (पुं.), प्रहारजः शब्दः ।

घमाघम, सं. पुं. (अनु.) घमघमध्वनिः (पुं.), घमघमायितं, घमघमाशब्दः २. लोहमुद्गर-घन,-शब्दः ३. आडंबरः, श्रीः (स्त्री.), शोभा ।

घमासान, सं. पुं. दे. 'घमसान' ।

घर, सं. पुं. (सं. गृहं) दे. 'गृह' २. जन्म,-भूमिः (स्त्री.)-स्थानं ३. कुलं, वंशः ४. कार्यालयः ५. कोष्ठः, आगारं ६. कोषः, आवेष्टनं ७. मूलं, कारणं ८. गृहपरिच्छदः ९. छिद्रं, विलम् ।

—आवाद करना, मु, वि-उद्-वह् (भ्वा.उ.अ.), परिणी (भ्वा. प. अ.) ।

—करना, मु., वस् (भ्वा. प. अ.) २. स्थिरीभू ।

—का आदमी, मु., विश्वसनीयमनुष्यः २. संबंधिन् ।

—का न घाट का, मु., निर्गुण, निरर्थक, कुत्सित, अधम २. अस्थिरवास ।

—फूक तमाशा देखना, मु. आमोदप्रमोदेषु स्वधनं अपव्यय् (चु.) ।

—फोड़ना, मु., गृहकलहं जन् (प्रे.) ।

—बसाना, मु., दे. 'आवाद करना' ।

—बारी, मु., गृहस्थः, गृहिन् ।

—में डालना, मु., उपपत्नीत्वेन परिग्रह् (रु. उ. से.) ।

—में पड़ना, मु., उपपत्नी भू ।

—वाला, मु., पतिः २. गृहिन् ।

—वाली, मु., पत्नी २. गृहिणी ।

—सिर पर उठाना, मु., कोलाहलं कृ ।

ऊँचा—, मु., उच्च-सु,-कुलं, सद्वंशः ।

बड़ा—, मु., समृद्ध-संपन्न-आढ्य,-कुलं २. कारागारम् ।

घरट्ट, सं. पुं. (सं.) घरट्टकः २. पेषणी-चक्री ।

घरणी,-नी, सं. स्त्री. (सं. गृहिणी) गृहपत्नी, भार्या, कलत्रम् ।

घरफोरी, सं. स्त्री. (हिं. घर+फोड़ना) गृहभेदिनी, वंशविनाशिनी ।

घराट, सं. पुं., दे. 'घरट्ट' ।

घराती, सं. पुं. (हिं. घर) 'बराती' का अनुकरण)(विवाहे) वधू-कन्या,-पक्षीयः-सम्बधिन् ।

घराना, सं. पुं. (हिं. घर) वंशः, कुलं, अन्वयः ।

घरेलू, वि. (हिं. घर) गृह्य, गृह,-निर्मित-संबंधिन् २. नैज, आत्मीय २. दे. 'पालतू' ।

घर्घर, (सं. पुं.) गद्गद-घर्घर,-शब्दः-स्वनः ।

घर्घराना, क्रि. अ. (सं. घर्घरः >) घर्घररवं कृ, गद्गदं नद् (भ्वा प. से.), घर्घरायते (ना. धा.) ।

घर्घराहट, सं. स्त्री. (हिं. घर्घराना) दे. 'घर्घर' ।

घर्म सं. पुं. (सं.) सूर्य,-आतपः-आलोकः २. उष्णता, दाहः, तापः ३. ग्रीष्मः ४. प्रस्वेदः । वि., तप्त, उष्ण ।

घर्राटा, सं. पुं. (अनु.) घर्घरः, घर्घररवः ।

घर्षण, सं. पुं. (सं. न.), अभ्यंजनं, संवाहनं २. संघट्टः, समाघातः ।

घसना, क्रि. अ. तथा क्रि. स., दे. 'घिसना' ।

घसियारा, सं. पुं. (सं. घासः >) घास-हारः-रिन् , घासविक्रेतृ (पुं.) २. घास-तृण, छेदकः-लावकः । (-रिन (स्त्री.) = घासहारी-रिणी इ.) ।

घसीट, सं. स्त्री. (हिं. घसीटना) शीघ्र-द्रुत-त्वरित,-ले(लि)खनं ३. द्रुत-शीघ्र-त्वरित-लेख-लेख्यं २. (भूमौ) कर्षणम् ।

घसीटना, क्रि. स. (सं. घृष्ट) आ-वि-कृष् (भ्वा. प. अ.) बलात् हृ (भ्वा. उ. अ.) २. शीघ्रं-सत्वरं,-लिख् (तु. प. से.) ६. बलात् समाविश् (प्रे.) ।

घस्सा, सं. पुं., दे. 'घिस्सा' ।

घहर(रा)ना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'गरजना' ।

घाई[1], सं. स्त्री. (सं. गभस्तिः >) अंगुली-संधिः, गभस्तिकोणः २. कांडशाखासंधिः ।

घाई[2] सं. स्त्री. (हिं. घाव) आघातः, प्रहारः २. छलं, कपटम् ।

घाऊघप, वि. (हिं. खाऊ+अनु) औदरिक, घस्मर, गृध्नु २. गूढचित्त, गुप्तभाव ।
घाग, घाघ, वि. (एक प्रसिद्ध अनुभवी पुरुष था) बहुदर्शिन्-अत्यनुभविन् (-नी स्त्री.), बहुदृश्वन् (-वरी स्त्री.) २. मायाविन् , कापटिक (-की स्त्री.) । सं. पुं., जरठः, वृद्धः ।
घाघरा, सं. पुं., (सं. घर्घरः) १. सरयूनदी २. दे. 'घघरा' ।
घाट, सं. पुं. (सं. घाटः) घट्टः, घट्टी, तरः, तर-तरण,-स्थानं २. तीर्थं, अवतारः ४. पर्वतः ५. दिशा ६. विधिः(पुं.) प्रकार ७. असिधारा ।
—घाट का पानी पीना, मु. आजीविकार्थं इतस्ततः भ्रम् (भ्वा. प. से.) ६. अनुभवातिशयं प्राप् (स्वा. प. अ.) ।
—मारना, मु., प्रतिषिद्धभांडानि आ,-नी-हृ (भ्वा. उ. अ.) ।
घाटा, सं. पुं. (हिं. घटना) हानिः-क्षतिः (स्त्री.), क्षयः, अपचयः, अत्ययः ।
—उठाना या पड़ना, मु., वियुज्-विहा-परिहा (कर्म.) ।
—भरना, क्षतिं समा-प्रतिसमा,-धा (जु.उ.अ.), हानिं सं-वि-परि-शुध् (प्रे.) ।
घाटिया, सं. पुं. (हिं घाट) गंगापुत्रः, तीर्थपुरोहितः ।
घाटी, सं. स्त्री. (हिं. घाट) संकट-संबाध,-पथ-मार्गः २. दरी, द्रोणी, उपत्यका ।
घात, सं. पुं. (सं.) आ-अभि-निर्,-घातः, प्रहारः २. वधः, हत्या ३. अहितं, अमंगलं ४. गुणनफलं (गणित) । सं. स्त्री., सुयोगः, सदवसरः, सुवेला २. निभृतावस्थितिः (स्त्री.) ३. छलं कूटोपायः ।
—में बैठना, मु., (वधाय लुंठनाय वा) मार्गे निभृतं प्रतीक्ष् (भ्वा. आ. से.), पथि अवस्कंद् (भ्वा. प. अ.) ।
घातक, सं. पुं. (सं.) वधकारिन्, मारकः, मारयितृ-हंतृ (पुं.) २. शत्रुः, अरिः, ३. वधकः, दंडपाशिकः । वि., प्राणहर, अंतकर ।
घातिनी, सं. स्त्री. (सं.) हंत्री, घातिका, मारयित्री ।
घाती[1], सं. पुं. (सं. घातिन्) दे. 'घातक' ।
घाती[2], वि. (हिं. घात) विश्वासघातिन्, असत्यसंध २. मायाविन् ।

घातुक, वि. (सं.) नाशक, हिंसक, मारक । (घातुकी स्त्री.) ।
घात्य, वि. (सं.) हननीय, हन्तव्य, मारणीय, वधार्ह ।
घान, सं. पुं. (सं. घनः) ।
घानी, सं. स्त्री. स्थालीचक्र्यादिषु सकृत्क्षेपणीया मात्रा ।
घाम, सं. पुं. (सं. घर्मः) सूर्य,-आतपः-आलोकः २. सूर्य,-तापः-दाहः ।
घामड़, वि. (हिं. घाम) मूर्ख, अज्ञ, मूढ, २. अलस, कर्मविमुख ३. घर्म-आतप,-पीड़ित (पशु) ।
घायल, वि. (सं. घातः >) क्षत, व्रणित, विद्ध, भिन्नदेह, आहत, प्रहृत ।
—करना, क्रि. सं., व्रण् (चु०), आ-अभिहन् (अ. प. अ.), क्षण् (त. उ. से.), तुद् (तु. उ. अ.) ।
—होना, क्रि. अ., व. उपर्युक्त धातुओं के कर्म. रूप ।
घार, सं. पुं. (सं.) आसेकः प्रोक्षणम्, कणविकरणम् ।
घाल, सं. पुं. (सं. घारः >) *घारः, ग्राहकाय मूल्यं विना दत्तं वस्तु (न.) ।
घालक, सं. पुं. (हिंः घालना) घातकः, मारकः; २. नाशकः, ध्वंसकः ।
घाव, सं. पुं. (सं. घातः) क्षतं-तिः (स्त्री.), व्रणः, आघातः, प्रहारः, ईर्मं, अरुस् (न.) ।
—करना, क्रि. स., दे. 'घायल करना' ।
—खाना, क्रि. अ., दे. 'घायल होना' ।
—भरना, क्रि. अ., व्रण; रुह् (भ्वा. प. अ.) ।
घास, सं. स्त्री. (सं. पुं.) य(ज)वसः, यव (वा)-सं, शादः, तृणम् ।
—पात, सं. पुं. (सं. घासपत्रं) तृणपत्रं २. दे. 'कूड़ा-करकट' ।
—फूस, सं. पुं., पलालः-लं २. दे. 'कूड़ाकरकट' ।
—काटना या खोदना, मु., व्यर्थ-क्षुद्र-तुच्छ,-कार्यं कृ ।
घिग्घी, सं. स्त्री. (अनु.) हिक्का, हिध्मा २. गद्गदवाच् (स्त्री.), स्खलद्वाक्यं, स्वरभंगः ।
—बंध जाना, क्रि. अ., (भयशोकादिभिः) हिक्क् (भ्वा. उ. से.), सगद्गदं वद् (भ्वा. प. से.) ।
घिघियाना, क्रि. अ. (हिं. घिग्घी) करुणं

प्रार्थ् (चु. आ. से.), सवाष्पं निविद् (प्रे.), दे. 'गिड़गिड़ाना'।

घिचपिच, सं. स्त्री. (सं. घृष्टपिष्ट अथवा अनु०) स्थानसंकीर्णता, अवकाशाल्पत्वम्। वि०, संकुल, वैशद्यशून्य, अस्पष्ट।

घिन, सं. स्त्री., (सं. घृणा दे.)।

घिनाना, क्रि. अ., दे. 'घृणा करना'।

घिनावना, घिनौना, वि. (हिं. घिन) घृणार्ह, गर्हित, गर्हणीय, वीभत्स, अरुचिकर, कुत्सित, उद्वेगकरः (–री स्त्री.)।

घिया, सं. पुं.. दे. 'कद्दू'।

—कश, सं. पुं. दे. 'कद्दूकश'।

—तोरी, सं. स्त्री., महाकोशातकी, हस्तिघोषा महाफला, घोषकः, हस्तिपर्णा।

घिरना, क्रि. अ. (सं. ग्रहणं >) परि,-वृ-क्षिप् गम्-वेष्ट्-सृ (कर्म.) २. एकत्र मिल् (तु. प. से.), संनिपत् (भ्वा. प. से.)।

घिरनी, सं. स्त्री. (सं. घूर्णिः) १. घूर्णिः (स्त्री:), घूर्णनं, भ्र(-भ्रा)मरं २. परिभ्रमणं, परिवर्तः ३. रज्जुव्यावर्तनचक्रं ४. दे. 'गड़ारी'।

घिसघिस, सं. स्त्री. (हिं. घिसना) मांद्य, दीर्घसूत्रता, कार्यजडता, कालक्षेपः।

घिसना, क्रि. अ. (सं. घर्षणं) जर्जरीभू, जॄ (दि. प. से.), (संघर्षणेन) अपचि-क्षि (कर्म.), संघृष् (भ्वा. प. से.), संघट् (भ्वा. आ. से.)। क्रि. सं., घृ (प्रे.), मृद् (क्र्. प. से. या प्रे.) अभि-,अंज् (रु. प. वे.), लिप् (तु. प. अ.)। सं. पुं., घर्षणं, मर्दनं, अभ्यंजनम्।

घिसवाना, घिसाना, क्रि. प्रे.. व. 'घिसना' (क्रि. स.) के प्रे. रूप।

घिसाई, सं. स्त्री. (हिं. घिसना) घर्षणं, मर्दनं २. घर्षण-मर्दन,-भृत्या-भृतिः (स्त्री.)।

घिसाव, सं. पुं. | **घिसावट**, सं. स्त्री. | (हिं. घिसना) संघर्षः, परस्पर,-घर्षणं-मर्दनं, संमर्दः, संघट्टः।

घिस्सा, सं. पुं. (हिं. घिसना) घर्षः, संघट्टः, संमर्दः २. प्रसारणं, प्रचोदना ३. बालक्रीडाभेदः।

घी, सं. पुं. (सं. घृतः-तं) आज्यं, आजं, आयुस्-सर्पिस् (न.), पवित्रं, अमृतं, अभिघारः; होम्यं, तैजसं, नवनीतकम्।

—के चिराग़ या दिये जलना, मु., सफलमनोरथ-पूर्णकाम-कृतकृत्य, (वि.)+भू।

—खिचड़ी होना, मु., प्रगाढ-घनिष्ठ,-मैत्री-अनुरागः भू।

पाँचों उँगलियाँ घी में होना, मु., उत्सन्नः वृत् (भ्वा. आ. से.), सर्वथा समृद्ध (वि.) अस् (अ. प.)।

घीकुवाँर, सं. पुं. (सं. घृतकुमारी) कुमारी, तरुणी, गृह,-कन्या-कन्यका, अजरा, अमरा।

घुँइयाँ, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'कचालू'।

घुँघ(ग)ची, सं. स्त्री., (सं. गुंजा) गुञ्जिका, रक्तिका, रक्ता, कृष्णला, काक,-चिंचिका-जंघा-तिक्ता। २. गुञ्जा-रक्ता,-बीजं इ.।

घुँघनी, सं. स्त्री. (अनु.) भर्जितार्द्रचणकादि।

घुँघरारे-ले, वि., दे. 'घूँघरवाले'।

घुँघरू, सं. पुं. (अनु. घुन) घर्घरा-रिका, क्षुद्र,-घंटा-घंटिका, क्षुद्रिका, कंकणी,-णीका, किंकिणी २. मंजीरः-रं, पुनूरं-रः। ३. मरणासन्नस्य कंठे घर्घरशब्दः।

घुंडी, सं. स्त्री. (सं. ग्रंथिः पुं.) १. दे. 'गांठ'। २. वस्त्रमय,-गंडः-कुडुपः।

घुग्घी, सं. स्त्री. (देश.). दे. 'पंडुक' २. त्रिकोणरूपेण व्यावर्तितः कंबलः।

घुग्घू, घुघुआ, सं. पुं. (सं. घूकः) दे. 'उल्लू'।

घुघुआना, क्रि. अ. (अनु.) घूघू-शब्दं कृ। उलूकवत्-घूकवत् रु (अ. प. से.)-क्रुश् (भ्वा. प. अ.)।

घुटकना, क्रि. स. (अनु.) अल्पशः पा (भ्वा. प. अ.) २. दे. 'निगलना'।

घुटना[1], सं. पुं. (सं. घुंटः-रखना >) जानु (न.), ऊरु,-पर्वन् (न.) संधिः (पुं.), अष्ठीवत् (पुं. न.), चक्रिका।

घुटना[2], क्रि. अ. (हिं. घूँटना) कंठः-श्वासः रुध् (कर्म.)।

घुटना[3], क्रि. अ. (हिं. घोटना) चूर्ण्-पिष् (कर्म.) २. सम्यक् पच् (कर्म.) ३. श्लक्ष्णी भू ४. सख्यं जन् (दि. आ. से.) ५. स्निग्धालापे व्याप् (तु. आ. अ.) ६. केशाः मूलतः मुंड्-क्षुर् (कर्म.) ७. अभ्यस् (कर्म.)।

घुटा हुआ, मु. धूर्त्त, दक्ष, विचक्षण।

घुटन्ना, सं. पुं. (सं. घुटः >). घुटानाहः, पादायामः।

घुटाई, सं. स्त्री. (हिं. घोटना) चूर्णनं, पेषणं, मर्दनं २. श्लक्ष्णीकरणं ३. चूर्णन-श्लक्ष्णीकरण,-भृत्या ४. क्षौरं, मुंडनं ५. आवर्तनं, अभ्यासः ।

घुट्टी, सं. स्त्री., दे. 'घूँटी' ।

घुड़, सं. पुं. (सं. घोटः) घोटकः ।

—चढ़ा, सं. पुं., दे. 'घुड़सवार' ।

—चढ़ी, सं. स्त्री., अश्वारूढा (नारी) २. अश्वारोहणं, वैवाहिकरीतिभेदः ३. शतघ्नीभेदः ।

—दौड़, सं. स्त्री., अश्व-घोटक,-चर्या-धावनं २. जवाश्व-जवन,-धावनं, द्यूतभेदः ३. चर्याभूमिः (स्त्री.) ।

—वहल, सं. पुं., घोटक,-रथः-स्यंदनः ।

—सवार, सं. पुं., सादिन्, तुरगिन्, हय-तुरग-अश्व,-आरूढः-रथः ।

—सवारी, सं. स्त्री., अश्वारोहण,-कौशलं-विद्या ।

—साल, सं. स्त्री. (सं. घोटशाला) मंदुरा, वाजि-अश्व,-शाला ।

घुड़कना, क्रि. स. (सं. घुर्) भर्त्स् (चु. आ. से.), वाचा दंड् (चु.), अव-अधि-क्षिप् (तु. उ. अ.) ।

घुड़की, सं. स्त्री. (हिं. घुड़कना) अधिअव,-क्षेपः, वाग्दण्डः, भर्त्सनं-ना ।

घुणाक्षर, सं. पुं. (सं.) घुणलिपिः (स्त्री.), घुणवल्मीकादिभिः पत्रकाष्ठादिषु कृता रेखा ।

घुन, सं. पुं. (सं. घुणः) काष्ठ,-वेधकः-कीटः-लेखकः

—लगना, क्रि. अ., घुणैः अद् (कर्म.) ।

घुनघुना, सं. पुं. (अनु.) दे. 'झुनझुना' ।

घुन्ना, वि. (अनु. घुनघुनाना) तूष्णीक, गूढ-संवृत,-भाव (घुन्नी स्त्री.) ।

घुप, वि. (सं. कूपः >) निबिडः-सूचीभेद्यः (अंधकारः) ।

घुमड़ना, क्रि. अ. (हिं घूम + सं. अटनं >) मेघा आकाशं आच्छद् (चु.) ।

घुमरी, सं. स्त्री. (हिं. घूमना) भ्र(भ्रा)मरं, भ्रमिः घूर्णि; (स्त्री.) ।

घुमाना, क्रि. स. (हिं. घूमना) व. 'घूमना' के प्रे. रूप ।

घुमाव, सं. पुं. (हिं. (घूमना) परि-,भ्रमः, घूर्णिः (स्त्री.), व्या-परि-आ,-वर्तः ।

घुरघुराना, क्रि. अ. (अनु.) घुरघुरायते (ना. धा.), घुर् (तु. प. से.) ।

घुलना, क्रि. अ. (सं. घूर्णनं >) वि-प्र-, ली (दि. आ. अ.), द्रवीभू, क्षर्-गल् (भ्वा. प. से.), विद्रु (भ्वा. प. अ.) २. पूतीभू, दुर्गंध-(वि.) भू, विगल् ३. कृश-क्षीणमांस-(वि.) भू, अंगैः परिहा (कर्म.) । सं. पुं., विलयनं, द्रवीभावः, पूतीभवनं, क्षयः इ. ।

घुलने योग्य, वि., विलेय, क्षरण-विलयन,-शील, विद्राव्य ।

घुलवाना, क्रि. प्रे. / **घुलाना**, क्रि. स. } व. 'घुलना' के प्रे. रूप ।

घुलाव, सं. पुं. / **घुलावट**, सं. स्त्री. } दे. 'घुलना' सं. पुं. ।

घुषित, घुष्ट, वि. (सं.) प्रकाशित, प्रकटीकृत, आ-उद्-वि,-घोषित, प्रख्यापित ।

घुसड़ना, क्रि. अ., दे. 'घुसना' ।

घुसना, क्रि. अ. (सं. कोसनं या घर्षणं > ?) (बलात्) आ-प्र-, विश् (तु. प. अ.), (अंतः) पदं कृ अथवा निधा (जु. उ. अ.), आगम् २. निर्, भिद् (रु. प. अ.), व्यध् (दि. प. अ.) । सं. पुं., प्रवेशः, आगमनं, निर्भेदनं इ. ।

घुसाना, / **घुसेड़ना**, } क्रि. स., व. 'घुसना' के प्रे. रूप ।

घूँघट, सं. पुं. (सं. गुंठनं >) अवगुंठनं-ठिका, मुखावरकः-कम् ।

—काढ़ना, या मारना, क्रि. स., अवगुंठ् (चु.), मुखमाच्छद् (चु.) ।

—वाली, सं. स्त्री., अवगुंठनवती ।

घूँघर, सं. पुं. (हिं. घुमरना) अलकः, कुरलः, चूर्णकुतलः ।

—वाले, वि. आकुंचित, जिह्मी-वक्री,-भूत, कुंतलाकीर्ण, कुरलिन् (प्रायः केशों के लिए) ।

घूँट, सं. पुं. (अनु. घुट घुट) गंडूषमात्रं पेयं, चलुः, च(चु)लुकः ।

—लेना या पीना, क्रि. स., आचम् (भ्वा. प. से.), उपस्पृश् (तु, प. अ.), अल्पशः-इषत् पा (भ्वा. प. अ.) ।

घूँटना, क्रि. स., दे. 'घूँट लेना' ।

घूँटी, सं. स्त्री. (हिं. घूँट) शिशुभेषजं, बालौषधम् ।

घूँस, सं. स्त्री., दे. 'घूस' ।

घूँसमघूँसा, सं. पुं. (हिं. घूँसा) मुष्टीमुष्टि (अव्य.), मुष्टियुद्धं, बाहूबाहवि (अव्य.) ।

घूसा, सं. पुं. (हिं. घिस्सा) मुष्टिः (पुं. स्त्री.), मुष्टी, बद्धमुष्टिः २. मुष्टि,-घातः-प्रहारः।

—लगाना या मारना, क्रि. स., मुष्टिना प्रह (भ्वा. उ. अ.)-तड् (चु.)।

घूआ, सं. पुं. (देश.) काशशरकाण्डादीनां पुष्पम् २. कर्दमस्थकीटभेदः ३. खट्वाछिद्रम्।

घूक, सं. पुं. (सं.) दे. 'उल्लू'। (घूकी स्त्री.)

घूघ, सं. पुं., दे. 'खोद'।

घूघू, सं. पुं. (सं. घूकः) दे. 'उल्लू' २. जडः, मंदमतिः।

घूम, सं. स्त्री., दे. 'घुमाव'।

घूमना, क्रि. अ. (सं. घूर्णनं) परि-,भ्रम्-अट् (भ्वा. प. से.), सं-वि-चर् (भ्वा. प. से.) २. वि-धा-आ-परि-वृत् (भ्वा. आ. से.), चक्रवत् भ्रम्, वि-परि-,घूर्ण् (तु. प. से.) ३. नि-प्रतिनि-प्रत्या-वृत्, पुनर्-, या-इ (अ. प. अ.)। सं. पुं., परि-,भ्रमणं-अटनं, परिवर्तनं, घूर्णनं, प्रतिनिवर्तनं, चक्र,-आवर्तः-गतिः (स्त्री.)।

घूमने वाला, वि., पर्यटन-भ्रमण,-शील, चक्रावर्तिन्, चक्रगतिः, परिवर्तिन्, परिभ्रमिन्।

घूमघूमेला, वि. (हिं. घूम घूम) दे. 'घूमनेवाला'।

घूरना, क्रि. स. (सं. घूर्णनं>) कटाक्षेण-तिर्यक्-साचि,-ईक्ष् (भ्वा. आ. से.)-दृश् (भ्वा. प. अ.) २. सकोपं-निर्निमेषं अवलोक् (भ्वा. आ. से.; चु.)।

घूराघारी, सं. स्त्री. (हिं. घूरना) कटाक्षः, कटाक्ष,-अवेक्षणं-, दर्शनम्, अपांग,-वीक्षणम्-अवलोकनम्।

घूस, सं. स्त्री. (हिं. घुसना या घूँसा) उत्कोचः, उपायनम्।

—खोर, सं. पुं. (हिं.+फ़ा.) उत्कोचग्राहिन्।

घृणा, सं. स्त्री. (सं.) अरुचिः, कुत्सा, गर्हा, जुगुप्सा, वि-,द्वेषः, निर्वेदः।

घृणित, वि. (सं.) अरुचिकर-उद्वेगकर (—करी स्त्री.) २. कुत्सित, गर्ह्य, बीभत्स।

घृत, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'घी'।

घेरना, क्रि. स. (ग्रहणं>) परिवेष्ट् (भ्वा. आ. से., प्रे.), परिवृ (स्वा. उ. से.; प्रे.), परि-इ (अ. प. अ.) २. अव-उप,-रुध् (रु. उ. अ.)। सं. पुं., परिवेष्टनं, परिवारणं, उपरोधः इ.।

घेरने वाला, सं. पुं., परिवेष्टकः, उपरोधकः।

घेरा, सं. पुं. (हिं. घेरना) परिधिः (पुं.), परि,-वेषः-वेशः-णाहः, मण्डलं २. प्राचीरं, प्राकारः, वेष्टनं, वरणः ३. परिवृतस्थानं ४. मण्डलं ५. अव उप,-रोधः।

—डालना, मु., परिवेष्ट् (प्रे.), दे. 'घेरना' (२)।

घेवर, सं. पुं. (सं. घृतवरः) घृतपूरः, घार्तिकः।

घैया, सं. स्त्री. (हिं. घी) स्तननिर्गत-दुग्धधारा २. प्रत्यग्र-दुग्धनवनीतम्।

घोंघा, सं. पुं. (देश.) शंबु(बू)कः, कोष-कवच,-स्थः, कीटभेदः २. शुक्तिः (स्त्री.)। वि., जड, स्थूलबुद्धि।

घोंटना, क्रि. स., दे. 'घोटना'।

घोंपना, क्रि. स. (अनु. घुप) प्र-नि-विश् (प्रे.), निर्भिद्-व्यध् (प्रे.)।

घोंसला, सं. पुं. (सं. कुशालयः अथवा हिं. घुसना) कुलायः, नीडः-डं, खगालयः, पक्षिगृहम्।

घोख(क)ना, क्रि. स. (सं. घोषणं>) कंठस्थ-(वि.) कृ, स्मृतिपथं नी (भ्वा. उ. अ.), अभ्यस् (दि. उ. से.)।

घोट, घोटक, सं. पुं. (सं.) दे. 'घोड़ा'।

घोटना, क्रि. स. (सं. घोटनं>) क्षुद्-पिष् (रु. प. अ.), चूर्ण्-खण्ड् (चु.), मृदू (क्र. प. से.) २. मुंड् (चु.), क्षुर् (तु. प. से.) ३. घर्षणेन श्लक्ष्णीकृ ४. गलहस्तयति (ना. धा.), गलं निष्पीड्य व्यापद् (प्रे.), कंठं निष्पीड् (चु.) ५. दे. 'घोखना'। सं. पुं. पेषणं, मर्दनं, मुण्डनं, श्लक्ष्णीकरणं इ.। २. मुस(श)लः-लं, (पेषण-) दंडः।

घोटनी, सं. स्त्री. (हिं. घोटना) मर्दनी, मुसलकम्।

घोटवाना, क्रि. प्रे., व, 'घोटना' के प्रे. रूप।

घोटा, सं. पुं. (हिं. घोटना) मार्जकः, घर्षकः २. मार्जितवस्त्रं ३. घर्षणं ४. मुसलः, दंडः ५. पेषणं ६. क्षौरं, केशवपनम्।

घोटाला, सं. पुं. (देश.) दे. 'गड़बड़' सं. पुं.।

घोड़साल, सं. पुं. (सं. घोटशाला) दे. 'घुड़' के नीचे 'घुड़साल'।

घोड़ा, सं. पुं. (सं. घोटः) घोटकः, तुरगः, तुरंगः,-गमः, अश्वः, वाहः, हयः, वजिन्, अर्वन् (पुं.),

सैंधवः, सप्तिः (पुं.), गन्धर्वः, जवनः । २. चतुरंग,-शारःशारिः (पुं.) ३. अश्वचक्रघोटः ।
—गाड़ी, सं. स्त्री., अश्व-हय,-रथः-शकटः ।
घोड़े बेच कर सोना, मु., गाढं निद्रा-स्वप् (अ. प. अ.)-शी (अ. आ, से,)-संविश् (तु. प. अ.) ।
घोड़िया, सं. स्त्री. (हिं. घोड़ा) घोटकः, अश्वकः, लघु,-अश्वः-घोटः २. नागदन्तः,-न्तकः ।
घोड़ी, सं. स्त्री. (सं. घोटी) अश्वा, वडवा, तुरगी, वाजिनी वामिनी, घोटिका २. वडवारोहणं, वैवाहिकरीतिभेदः ३. विवाहगीतिका ।
—चढ़ना, मु., वरो वडवामारुह्य वधूगृहं गम् ।
—टप्पा, सं. पुं., बालखेलाभेदः, घोटीलंघनम् ।
घोणा, सं. स्त्री. (सं.) नासा, नासिका, गन्धवहा । २. शूकर-अश्व,-प्रलंबमुखं-लाम्बास्यम् । ३. छिक्का-क्षुत,-आवहः बालतरुभेदः ।
घोणी, सं. पुं. (सं.-णिन्) शूकरः, वराहः, रोमशः ।
घोर, वि. (सं.) भयंकर, भीषण, भीम २. दुर्गम, गहन, निविड ३. परुष, कर्कश, ४. गाढ़, दृढ ५. निकृष्ट, अधम ६. अत्यन्त, अत्यधिक ।
—निद्रा, सं. स्त्री. (सं.) गाढ़निद्रा, सुनिद्रा ।
घोलघुमाव, सं. पुं., दे. 'टालमटोल' ।
घोलना, क्रि. सं. (हि. घुलना) विद्रु-विलीगल् (प्रे.) ।
घोलमेल, सं. पुं. (हिं. घुलना + सं. मेलः >) मिश्रणं, संसर्गः, सम्पर्कः ।
घोष, सं. पुं. (सं.) शब्दः, नादः, रवः, स्वनः, ध्वनिः (पुं.) २. गर्जितं, स्तनितं ३. आभीरवसतिः (स्त्री.) ४. आभीरः, गोपः ५. गोष्ठं, गोशाला ६. तटः-टं-टी ७. वाह्यप्रयत्नभेदः (व्या.) ।
घोषणा, सं. स्त्री. (सं.) प्रख्यापनं, ज्ञापनं, प्रकाशनं २. घोषः,-षणं, उत्कीर्तनं ३. नादः, ध्वनिः, शब्दः ।
—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) विज्ञप्तिः (स्त्री.), सूचनापत्रम् ।
घोसी, सं. पुं. (सं. घोषः >) यवन,-गोपः-आभीरः ।
घ्राण, सं. पुं. (सं. न.) नासिका, नासा, नसा २. आघ्राणं, गन्धग्रहणं ३. आघ्राणशक्तिः (स्त्री.) ।
—इन्द्रिय, सं. स्त्री. (सं. न.) दे, 'घ्राण' (१-३)

ङ

ङ, देवनागरीवर्णमालायाः पञ्चमो व्यञ्जनवर्णः ङकारः ।

च

च, देवनागरीवर्णमालायाः षष्ठो व्यञ्जनवर्णः, चकारः ।
चंक्रमण, सं. पुं. (सं. न.) चंक्रमः-मा, परि,-भ्रमणं-अटनम्, विहरणम्, विचरणम् । शनैः शनैः मन्दगत्या वा गमनम् ।
चंग[1], सं. स्त्री. (फ़ा.) डिंडिमप्रकारः, *चंग २. नखः-खं, नखरः-रं ३. गंजीफ़ा-क्रीडायां रंगभेदः ।
चंग[2], सं. स्त्री. (सं. चः=चाँद + गम् >) दे. 'गुड्डी' (१) ।
—पर चढ़ाना, मु., अनुकूलयति (ना. धा.) २. अभिमानिनं विधा (जु. उ. अ.) ।
चंगा, वि. (सं. चंग) सुस्थ, स्वस्थ, नीरोग, निरामय २. शोभन, सुन्दर ३. निर्मल, शुद्ध ।
—करना, क्रि. स., व्याधेः मुच् (प्रे.), शम् (प्रे. शमयति) ।
भला,-वि., कुशलिन्, नीरुज-ज् २. भद्र, अच्छ ।
चंगुल, सं. पुं. (हिं. चौ = चार + अंगुल) नखः-खं. नखरः-रं, २. धरणं, ग्रहणं, हस्तग्राहः ।
चंगेर-री, सं. स्त्री. (सं. चंगेरिका) स्थालाकारः करण्डः २. फुल्लकण्डोलः, पुष्पकरंडः ३. भाजनं, आधारः ४. चर्मपुटः, दृतिः (पुं.) ५. हिंदोलः, दोला ।
चंगोली, सं. स्त्री., दे. 'चंगेरी' ।
चंचरीक, सं. पुं. (सं.) भ्रमरः, षट्पदः ।
चंचल, वि. (सं.) चल, चलाचल, चपल, तरल, लोल, प(पा)रिप्लव, चटुल, २. व्या-पर्यासमा,-कुल, अशान्त, अनिर्वृत ३. अधीर, अस्थिर, चलचित्त, लोलबुद्धि ४. विनोदिन्, लीलापर । सं. पुं., वायुः २. कामुकः ।
चंचलता, सं. स्त्री. (सं.) चापल्यं, चांचल्यं,

लौल्यं, चटुलता, तरलता २. कुचेष्टा-ष्टितं, सलीलत्वं, लीलापरता ।

चंचला, सं. स्त्री. (सं.) लक्ष्मीः (स्त्री.), इन्दिरा २. विद्युत् (स्त्री.), सौदामिनी । वि., स्त्री., अशांता, चलचित्ता ।

चंचलाहट, सं. स्त्री., दे. 'चंचलता' ।

चंचु, सं. स्त्री. (सं.) चन्चुका, चन्चूः (स्त्री.), त्रोटी ।

चंट, वि. (सं. चण्ड >) चतुर, दक्ष २. धूर्त, मायाविन् ।

चंड, वि. (सं.) क्रूर, रौद्र (-द्री स्त्री.), दारुण, भैरव, (-वी स्त्री.), भीषण, उग्र २. कोपिन् क्रोधिन्, संरभिन्, अमर्षिन् ३. परुष, प्रखर, तीव्र, तीक्ष्ण, घोर ४. बलवत्, दुर्दमनीय ५. कठिन, कठोर ।

—क्रर, सं. पुं. (सं.) सूर्यः, चण्डांशुः ।

—कौशिक, सं. पुं. (सं.) (१-३) मुनि-नाटक-सर्प-,विशेषः ।

चंडता, सं. स्त्री. (सं.) उग्रता, भीषणता, क्रूरता २. तीक्ष्णता, प्रखरता, तीव्रता ।

चंडा, सं. स्त्री. (सं.) रुद्राणी, चंडी, दुर्गा, २. नायिकाभेदः ३. शतपुष्पा, मधुरा । वि. स्त्री. (सं.) निष्ठुरा, कर्कशा, उग्रा, कठोरा ।

चंडाल, सं. पुं. (सं.) चांडालः, मातंगः, दिवाकीर्तिः (पुं.) निषादः, श्वपचः-च् (पुं.), पुक्कसः-शः-पः । वि. क्रूर-पाप,-कर्मन् २. दुष्कुलीन, हीन,-जाति-वर्ण ।

—चौकड़ी, सं. स्त्री., चंडालचतुष्कं दुष्ट-चतुष्टयम् ।

चंडालिन, चंडालिनी, चंडाली, सं. स्त्री. (सं. चंडाली) चांडाली, मातंगी, निषादी २. पापिनी, दुष्टा ।

चंडिका, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा २. विवादशीला नारी ३. गायत्रीदेवी ।

चंडी, चंडा, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती २. क्रोधिनी नारी ३. कलहप्रिया कामिनी ।

चंडू, सं. पुं. (सं. चंडः तीक्ष्ण >) अहिफेन-निर्मितमादकद्रव्यभेदः, *चंडूः (पुं.) ।

—ख़ाना, सं. पुं. (हिं + फ़ा.) चंडू,-गृहं-शाला ।

—बाज़, सं. पुं. (हिं. + फ़ा.) चंडूपः, चंडू,-पायिन्-सेविन् ।

चंडूल, सं. पुं. (देश.) भ(भा)रद्वाजः, मारयः, व्याघ्राटः ।

चंद[1], सं. पुं. (सं. चंद्रः) दे. 'चंद्र' । २. हिंदीकविविशेषः ।

—मुखी, सं. स्त्री. (सं. चंद्रमुखी) शशिवदनी, चंद्रानना ।

चंद[2], वि. (फ़ा.) दे. 'कुछ' ।

चंदन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मलयजः, श्रीखंडं, गंधसारः, सुगंधं, सर्पावासं, शीतलं, गंधाढ्यं, शीतगंधः । २. चंदनकाष्ठं ३. चंदनलेपः ।

—लाल, रक्त-कु,चंदनं, रंजनं पत्रांगम् ।

—सफ़ेद, तैलपर्णिकं, श्वेतचंदनम् ।

चंदला, वि. पुं. (हिं. चांद = खोपड़ी) खल्वाटः, विकेशः (-शी स्त्री.) ।

चँदवा[1], सं. पुं. (हिं. चंद) उल्लोचः, वितानं, आच्छादनं, पिधानम् ।

चंदवा[2] सं. पुं. (सं. चंद्रकः) बर्हनेत्रं, मेचकः २. वर्तुलवस्त्रखंडः-डं ३. मत्स्यभेदः ।

चंदा सं. पुं. (फ़ा. चंद) धनसहायता, आर्थिकसाहाय्यं २. धनभागः. अर्थांशः । २. स्वांशः, उद्धारः ।

—करना, क्रि. स., अर्थांशं संग्रह (क्र्. प. से.) ।

—देना, स्वस्वांशं दा (जु. उ. अ.) ।

चँदिया, सं. स्त्री. (हिं. चांद) शीर्ष-शिरो-मस्तक,-अग्रं, मुंडं २. कपालः-लं, शिरोऽस्थि (न.) ३. (अंत्य-) रोटिका ।

चंदिर, सं. पुं. (सं.) चद्रः सुधांशुः २. गजः द्विप ३. कर्पूरः-रं, घनसारः ।

चंद्र, सं. पुं. (सं.) सोमः, शशांकः, शशिन्, विधुः, रजनी-निशा-शर्वरी-क्षपा,-करः-नाथः-पतिः, मृगांकः, कलानिधिः (पुं.), ग्लौः (पुं.), हिम-शीत-शुभ्र-सुधा,-अंशुः-दीधितिः (पुं.), इंदुः (पुं.), चंदमस् (पुं.), शशधरः । २. जलं ३. सुवर्णं ४. कर्पूरं ५. 'एक' इति संख्या ६. चंद्रकः, बर्हनेत्रम् ।

वि., आह्लादक, आनंदप्रद २. सुंदर ।

—आनन, वि. (सं.) दे. 'चंद्रमुख' ।

—कला, सं. स्त्री. (सं.) चंद्र,-रेखा-लेखा ।

—कांत, सं. पुं. (सं.) चंद्र,-मणिः (पुं.)-रत्नं-उपलः ।

—किरण, सं. पुं. (सं.) चंद्रपादः, शशिकरः ।

—ग्रहण, सं. पुं. (सं. न.), विधु-इन्दु-चंद्र,-ग्रहणं-ग्रहः-ग्रासः-उपरागः ।

—प्रभा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चंद्रिका' ।

—बिंदु, सं. पुं. (सं.) अनुनासिकचिह्नम् (ँ) ।

—भागा, पुं. स्त्री. (सं.) चंद्रभागी, चंद्रिका, पंचनदप्रांते नदीविशेषः ।

—मुख, वि. (सं.) चंद्रानन, विधु-शशि,-वदन । (-मुखी (स्त्री.) = चंद्रमुखा, चंद्र-शशि-विधु,-वदना-वदनी-आनना-आननी) ।

—रे(ले)खा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चंद्रकला' ।

—वंश, सं. पुं. (सं.) सोमकुलम् ।

—शाला, सं. स्त्री., शिरोगृहं, वडभी ।

—शेखर, सं. पुं. (सं.) चंद्र,-मौलिः (पुं.)-भूषणः-धरः, शिवः ।

—हार, सं. पुं. (सं.) वर्तुलस्वर्णखंडहारः ।

चंद्रक, सं. पुं. (सं.) १. 'चंद्र' २. चंद्रिका, कौमुदी ३. कर्पूरः-रं ४. बर्हनेत्रं, चंद्रिका ५. नखः-खम् ।

चंद्रमा, सं. पुं. [सं. चंद्रमस् (पुं.)] दे. 'चंद्र' ।

चंद्रहास, सं. पुं. (सं.) असिः, खड्गः २. रावणखड्गः ।

चंद्रातप, सं. पुं. (सं.) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, कौमुदी २. दे. 'चँदवा[१]'

चंद्रिका, सं. स्त्री. (सं.) ज्योत्स्ना, शशि-चंद्र,-प्रभा-कांतिः (स्त्री.) कौमुदी, चंद्र,-आलोकः-प्रकाशः २. चंद्रकः, बर्हनेत्रं (३-४) स्थूल-सूक्ष्म,-एला ।

—उत्सव, सं. पुं. (सं.) शरत्पूर्णिमोत्सवः ।

चंद्रोदय, सं. पुं. (सं.) चंद्र-सोम,-उदयः-उद्गमः-उद्गमनम् ।

चंपई, वि. (हिं. चंपा) चंपक-पीत,-वर्ण-रंग ।

चंपक, सं. पुं. (सं.) (पौधा) चांपेयः, दीप-स्वर्ण-स्थिर-पीत,-पुष्पः-पुष्पकः, शीतलः, सुभगः, भृङ्गमोहिन् वनदीपः । (फूल) हेमपुष्पं, चंपकं इ. । (सं. न.) कदलीफलभेदः ।

चंपा, सं. पुं. (सं. 'चंपक' दे.) ।

—कली, सं. स्त्री., सं. चंपककलिका, चंपक कोरकः २. कंठाभरणभेदः, चंपककली ।

चंपत, वि. (सं. चंप्) तिरो-अंतर्,-हित, लुप्त, गूढं अपसृत ।

चंपू, सं. पुं. (सं. स्त्री.) गद्यपद्यमयं काव्यम् ।

चंबेली, सं. स्त्री., दे. 'चमेली' ।

चंमच, सं. पुं., दे. 'चमचा' ।

चँवर, सं. पुं. (सं. चमरं) चामरम् ।

चक, सं. पुं. (सं. चक्रं) बृहत्क्षेत्रं, महाभूखंडः-डं २. ग्रामटिका, लघुग्रामः ३. रथांगं, मंडलं, चक्रं ४. पट्टः, पट्टोलिका, भूमिकरग्रहणव्यवस्थापकः पत्रभेदः ।

चकई[१], सं. स्त्री., दे. 'चकवी' ।

चकई[२], सं. स्त्री. (हिं, चक) *चक्रकी, क्रीडनकभेदः । वि., गोल, वर्तुल ।

चकचौंध, सं. स्त्री., दे. 'चकाचौंध' ।

चकचौंधना, क्रि. अ., दे. 'चुँधियाना' ।

चकछूँदी, सं. स्त्री., दे. 'छछूँदर' ।

चकती, सं. स्त्री. (सं. चक्रवती >) वस्त्र-चर्म,-खंडः-खंडं-शकलः-शकलम् ।

बादल में–लगाना मु., असंभवं साध् (स्वा. प. अ.) ।

चकत्ता, सं. पुं. (सं. चक्रवर्तः >) त्वक्तिलकः-कं, चर्म,-लांछनं-चिह्नं । २. दंतक्षतम् ।

—भरना या मारना, मु., दंश् (भ्वा. प. अ.) ।

चकनाचूर, वि., (हिं. चिकना + सं.चूर्णः-र्णं <) सुचूर्णित, शकली-चूर्णी, कृत-भूत, सूक्ष्मखंडशः कृत २. भूरिश्रांत, अति,-क्लांत-आयस्त ।

—करना, क्रि. स., चूर्ण् (चु.), खंडशः भंज् (रु. प, अ.)-त्रुट् (चु. आ. से.) ।

—होना, क्रि, अ., अणुशः त्रुट्-चूर्ण्-भंज् (कर्म.) ।

चकपक, वि. (सं. चक् >) चकित, विस्मित २. संभ्रान्त, व्यामूढ ।

चकपकाना, क्रि. अ.(हिं. चकपक) दे.'चौकना' ।

चकम(मा)क, सं. पुं. (तु.) अग्निग्रावन् (पुं.), पावकप्रस्तरः ।

चकमा, सं. पुं., दे. 'धोखा' ।

चकराना, क्रि. अ., (सं. चक्रं>) (शीर्षं) भ्रम् (भ्वा. दि. प. से.), घूर्ण् (भ्वा. आ. से.; तु. प. से,) २. व्यामुह् (दि. प. वे.), आकुली भू ३. चकित (वि.) + भू । क्रि. स., चकित (वि.) + कृ ।

चकरानी, सं. स्त्री. (फ़ा. चाकर) सेविका, परिचारिका ।

चकरी, सं. स्त्री. (सं. चक्री) पेषणी, पेषण,-यन्त्रं-चक्रं २. चक्री,-पट्टः-पट्टं ३. दे. 'चकई' ।

चकला, सं. पुं. (सं. चक्रं>) चक्रकः

वेश्यावीथी, गणिकाहट्टः ३. दे. 'जिला'। वि., विस्तीर्ण, परिणाहवत्।

चकलाना, क्रि-सं. प्रष्ट-विस्तृ (प्रे०), प्रथ् (चु.)।

चकली, सं. स्त्री. (हिं. चकला) चक्री. दे. 'गराड़ी' २. चक्री, चक्रिका, गोलपट्टिका, घर्षणी।

चकल्लस, सं. स्त्री. (अनु० चक) कलहः, विवादः २. परिहासः, विनोदः, कौतुकम्।

चकवा, सं. पुं. (सं. चक्रवाकः) कोकः, चक्रः, रथांग-आह्वय-नामकः, द्वंद्वचारिन्, कामिन्, कामुकः।

चकवी, सं. स्त्री. (हिं. चकवा) चक्रवाकी, कोकी, चक्री, रथांगनाम्नी इ.।

चकाचक, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'घचाघच' वि., (सं. चक् = तृप्तिः) सम्यक् सिक्त, परिपूर्ण। क्रि. वि., भृशं, भूरिः प्रचुरं (सब अव्य.)।

चकाचौंध, सं. स्त्री. (सं. चक् = चमकना, चौं = चारों तरफ, अंध >) चाकचक्येन नेत्रतेजःप्रतिघातः, अतिशयदीप्त्या दृष्टेरस्थैर्यम्।

चकित, वि. (सं.) विस्मित, आश्चर्यान्वित, विस्मयाकुल, साश्चर्य, विस्मय,-उपहत-अन्वित। २. संभ्रांत, व्यामूढ, व्याकुल, ३. सशंक, त्रस्त।

चकोटना, क्रि. स., (हिं. चिकोटी) अङ्गुल्यग्रेण पीड् (चु.)।

चकोतरा-त्रा, सं. पुं. (सं. चक्र >) (वृक्ष) मधुकर्कटी, मातुलुङ्गः, सुगंधा, सदाफलः, महाजंभीरः। (फल) मधुकर्कटिकं, मातुलुंगम् इ.।

चकोर, सं. पुं. (सं.) कौमुदीजीवनः, चंद्रिकापायिन्।

चकोरी, सं. स्त्री. (सं.) चंद्रिकापायिनी।

चक्कर, सं. पुं. (सं. चक्रं) रथांगं, मंडलं २. गोलः-लं वृत्तं वलयः-यं ३. वात,-आवर्त्तः-भ्रमः, वात्या ४. जल-,आवर्त्तः, जलगुल्मः। ५. उभयसंभवः, विकल्पः ६. संभ्रमः, व्यामोहः ७. कृच्छ्रं, संकटं ८. कौटिल्यं, वक्रत्वं ९. पर्यटनं, वि-आ-वर्तः १०. भ्रमिः-घूर्णिः (स्त्री.), भ्रामरम्।

—खाना, मु., परिभ्रम् (भ्वा. दि. प. से.), घूर्ण् (तु. प. से.)।

—मारना, मु., विचर्-पर्यट् (भ्वा. प. से.)।

—में आना, मु., कृच्छ्रे पत् (भ्वा. प. से), संकटे मस्ज् (तु. प. अ.)।

—में डालना, मु., कृच्छ्रे-संकटे,-पत्-मस्ज् (प्रे.)।

चक्का, सं. पुं. (सं. चक्रं) दे. 'चक्कर' (१, २)। ३. बृहद्वर्तुलखंडः-डं ४. इष्टक-प्रस्तर,-राशिः (पुं.)।

चक्की, सं. स्त्री. (सं. चक्री) यन्त्रपेषणी, दे. 'चकरी' (१-२) ३. जानुफलकम्।

—पीसना, क्रि. स., चक्र्या पिष् (रु. प. अ.)-क्षुद् (रु. उ. अ.) चूर्ण् (चु.)। मु., घोरं-अत्यधिकं परिश्रम् (दि. प. से.)-उद्यम् (भ्वा. प. अ.)।

चक्कू, सं. पुं. दे. 'चाकू'।

चक्र, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'चक्कर' (१-४)। ५. तैलपेषणी ६. कुलाल-कुम्भकार,-चक्रं-पट्टः ७. अस्त्रभेदः ८. गणः, समूहः।

—धर, सं. पुं. (सं.)
—धारी सं. पुं. (सं.-रिन्)
—पाणि, सं. पुं. (सं.)
} विष्णुः, चक्रभृत्।

—वर्ती,—सं. पुं. (सं.-र्तिन्) राजाधिराजः, मंडलेश्वरः, सम्राज् (पुं.), अधि;-राजः-ईश्वरः।

—वाक, सं. पुं. (सं.) दे. 'चकवा'।

—वृद्धि, सं. स्त्री. (सं.) चक्रवार्द्धुष्यम्।

—व्यूह, सं. सं. (सं.) मंडलाकारः सैन्य-संनिवेशः।

—हस्त, सं. पुं. (सं.) विष्णुः।

चक्रांक सं. पुं. (सं.) (भुजादिषु) चक्र,-चिह्नं-लक्षणम्-अभिज्ञानम्।

चक्रांकित, वि. (सं.) चक्रचिह्नयुक्त, सचक्र-चिह्न। सं. पुं. वैष्णवसम्प्रदायभेदः।

चक्राकार, सं. पुं. (सं.) गोल, मंडलाकृति।

चक्री, सं. पुं. (सं.-क्रिन्) चक्र,-धर-धारिन् २. विष्णुः ३. कुलालः ४. गुप्तचरः ५. तैलिकः, तैलिन् ६. सर्पः ७. चक्रवाकः ८. चक्रवर्तिन्।

चक्षु, सं. पुं. [सं. चक्षुस् (न.)] नेत्रं, नयनम्।

चखना, क्रि. स. (सं. चषणं) आ-,स्वाद् (भ्वा. आ. से.), चष् (भ्वा. उ. से.), रस् (चु.), रसं परीक्ष् (भ्वा. आ. से.), रसनया स्पृश् (तु. प. अ.)।
सं. पुं., आस्वादनं, चषणं, रसनं, ईषदशनम्।

चखाना, क्रि. प्रे., ब. 'चखना' के प्रे. रूप ।

चगलना, क्रि. स. (अनु. चग > अथवा चर्वणं + गिलनं >) क्षुधां विना भक्ष् (चु.) ।

चचा, सं. पुं. दे. 'चाचा' ।

चची, सं. स्त्री., दे. 'चाची' ।

चचेरा, वि. (हिं. चचा) पितृव्यसंबंधिन् ।

—भाई, सं. पुं., पितृव्यपुत्रः, पितृव्यजः ।

चचेरी बहिन, सं. स्त्री., पितृव्यपुत्री, पितृव्यजा ।

चचोड़ना, क्रि. स. (अनु.) दंतैः निपीड्य आ,-चूष् (भ्वा. प. से.), बलवत् स्तन्यं धे (भ्वा. प. अ.) ।

चट, क्रि. वि.
चटपट, „
चटसे „
} (सं. झटिति) क्षणेन, क्षण-निमेष,-मात्रेण, सपदि, द्राक्, अंजसा, क्षणात्-सद्यः,-एव, तत्क्षणं-णे-णेन ।

—करना, मु., अशेषं निगल् (भ्वा. प. से.) २. परद्रव्यमात्मसात् कृ ।

—पट करना, क्रि. अ., त्वर् (भ्वा. प. से.), आशु कृ ।

चटक, सं. स्त्री. (सं. चटुल >) शोभा, श्रीः-कांतिः-द्युतिः-दीप्तिः (स्त्री.) ।

—मटक, सं. स्त्री., प्रसाधनं, अलंकरणं, मंडनं २. हावभावाः, विलसितं, विलासः ।

चटक(ख)ना, क्रि. अ. (अनु. चट) स्फुट् (तु. प. से.), दॄ-भंज्-भिद् (कर्म.), वि-,दल् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., चपेटः-टिका ।

चटकनी, सं. स्त्री. (अनु. चट) कीलः-लं, अर्गलं, तीलकम् ।

चटकाना, क्रि. स. (हिं चटकना) ब. 'चटकना' के प्रे. रूप २. अंगुलीः स्फुट् (प्रे.) ।

जूतियां—' मु., व्यर्थं दारिद्र्येण वा भ्रम् (भ्वा. दि. प. से.) ।

चटकारा वि. दे. 'चटकीला' २. चपल, चंचल ।

चटकीला, वि. (हिं चटक) भासुर, उज्ज्वल, प्रभावत् २. चित्र, नानावर्ण ३. दे. 'चटपटा' ।

चटनी, सं. स्त्री. (हिं. चाटना) अवलेहः, उप-अव,-दंशः, व्यंजनं, उपस्करः ।

चटपटा, वि. (हिं. चाट) स्वादु, सुरस, सरस, रुच्य, रुचिकर २. तीक्ष्ण, तिक्त ।

चट(टा)पटी, सं. स्त्री. (हिं. चटपट) त्वरा, तूर्णिः (स्त्री.), शीघ्रता, क्षिप्रता । २. उत्सुकता आकुलता ।

चटरजी, सं. पुं. (बं.) चट्टोपाध्यायः, वंगप्रांतीयब्राह्मणभेदः ।

चटवाना, क्रि. प्रे., ब. 'चाटना' के प्रे. रूप ।

चटशाल, चटसार-ल, सं. स्त्री., (हिं. चट्टा = चेता + सं. शाला) पाठशाला, विद्यालयः ।

चटाई, सं. स्त्री. (सं. कटः ?) किलिंजकः, किलंजं, तृणपूली, पादपाशी, आस्तरः ।

चटाक, चटाका-खा, सं. पुं. (अनु.) विरावः, सशब्द,-भंगः-स्फोटनं, परुषस्वनः, चटाक,-शब्दः-ध्वनिः (पुं.) ।

चटाचट, सं. स्त्री. (अनु.) चटपटा,-शब्दः-नादः, चटचटायितं, चटचटात् ,-कारः-कृतिः (स्त्री.)-कृतम् ।

चटाना, क्रि. प्रे., ब. 'चाटना' के प्रे. रूप ।

चटुल, वि. (सं.) चंचल, चपल, लोल २. सुंदर ।

चटोर-रा, वि. (हिं. चाटना) अद्मर, घस्मर, अत्याहारिन् , बहुभोजिन् २. स्वादरस,-प्रिय-लोलुप, जिह्वालोल ।

चटोरपन, सं. पुं. (हिं. चटोर) घस्मरता, औदरिकता २. स्वादलोलुपता, जिह्वालौल्यम् ।

चट्टा, सं. पुं. (सं. चेटः >) छात्रः, शिष्यः ।

—बट्टा, सं. पुं. (हिं. चटटू + बट्टा) क्रीडनकसमूहः ।

एक ही थैली के चट्टे बट्टे, मु. समस्वभावाः-तुल्यशीलाः मानवाः ।

चट्टान, सं. स्त्री. (हिं चट्टा = चकत्ता) शिलोच्चयः, स्थूलशिलाः, शैलः, महाप्रस्तरः ।

चट्टी[1], सं. स्त्री. (अनु. चटचट) पादत्रं, पादुका, पादूः (स्त्री.) ।

चट्टी[2], सं. स्त्री. (हिं. चाँटा) हानिः-क्षतिः (स्त्री.) २. दंडः, अपकारशुद्धिः-क्षतिनिष्कृतिः (स्त्री.) ।

चट्टू, सं. पुं. (हिं. अनु. चट) पाषाणमयं बृहदुदू(लू)खलम् ।

चड्डा, सं. पुं. (देश.) जंघामूलं, ऊरुसंधिः (पुं.); विदूषकः । वि. मंदबुद्धि, मूर्ख ।

चढ़ना, क्रि, अ. (सं. उच्चलनं) उदि-उद्या (अ. प. अ.), उपरि-उद् , गम् , अधि-आ-रुह् (भ्वा. प. अ.), अधिक्रम् (भ्वा. प. से., भ्वा. आ. अ.) २. उत्था (भ्वा. प. अ.), समुत्था (भ्वा. आ. अ.) ३. सं-,ऋध् (दि.

प. से.), उप-प्र-ची (कर्म.) ४. आक्रम् , अभिद्रु-अवस्कंद् (भ्वा. प. अ.) ५. उत्पत् (भ्वा. प. से.), उड्डी (भ्वा. आ. से.) ६. उपहारी-उपायनी,-कृ (कर्म.),उपहृ-निवप्- (कर्म.) ७. प्रवृत् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं. उदयनं, उद्गमनं, अधिरोहणं; उत्थानं, आक्रमणं, उड्डयनं इ. ।

चढ़ने योग्य, वि. उदेतव्य, आरोहणीय; आक्रमणीय ।

चढ़ने वाला, सं. पुं. उदेतृ-अधिरोढृ-अभिद्रावक ।

चढ़ा हुआ, वि., उदित, उद्गत, अधिरूढ, आक्रांत ।

चढ़वाना, क्रि. प्रे., व. 'चढ़ना' के प्रे. रूप ।

चढ़ाई, सं. स्त्री. (हिं. चढ़ना) उद्गमनं, आरोहणं २. उद्गमः, उदयः ३. आरोहः ४. आक्रमः, अवस्कंदः ।

चढ़ाउतरी, सं. स्त्री. (हिं. चढ़ना + उतरना) असकृत् आरोहणावरोहणं-णे ।

चढ़ाउपरी, सं. स्त्री. (हिं. चढ़ना + ऊपर) प्रतिस्पर्द्धा, अहंपूर्विका ।

चढ़ा-चढ़ी, सं. स्त्री. (हिं. चढ़ना) दे. 'चढ़ा-उपरी' ।

चढ़ाना, क्रि. स., व. 'चढ़ना' के प्रे. रूप ।

चढ़ाव, सं. पुं. (हिं. चढ़ना) आरोहः, उद्गमः, उत्थानं २. वृद्धिः (स्त्री.), उपचयः ।

—उतार, सं. पुं.. आरोहावरोहौ, उद्गमावगमौ ।

चढ़ावा, सं. पुं. (हिं. चढ़ाना) उपहारः, उपायनं, उत्सर्गः, बलिः (पुं.) २. दे. 'बढ़ावा' ।

चढ़ैत, सं. पुं. (हिं. चढ़ना) आ-अधि.-रोहिन्-रोहक-रोढृ ।

चढ़ैता, सं. पुं., (हिं. चढ़ना) हय-अश्व-आरोहः-आरोहिन् , सादिन् , तुरगिन् ।

चणक, सं. पुं. (सं.) दे. 'चना' ।

चतुःशाख, सं. पुं. (सं. न.) शरीरं, देहः, कायः, तनुः-नूः (स्त्री.)

चतुरंग, सं. पुं. (सं. न.) अक्षक्रीडाभेदः २. चत्वारि सेनांगानि (हस्त्यश्वरथपदातय) इति ३. चतुरंगिणी सेना । वि., अंगचतुष्टययत् ।

चतुरंगिणी, सं. स्त्री. (सं.) हस्त्यश्वरथपदातिरूपिणी सेना । वि. स्त्री., अंगचतुष्टयवती ।

चतुर, वि. (सं.) निपुण, दक्ष, प्रवीण, कुशल, विचक्षण, विशारद २. धीमत् , बुद्धिमत् , प्रज्ञ, प्राज्ञ ३. कापटिक-छाद्मिक [-की (स्त्री.)], कितव, धूर्त्त ।

चतुरता, सं. स्त्री. (सं.) नैपुण्यं, दाक्ष्यं, कौशलं, प्रावीण्यं २. बुद्धिमत्त्वं, प्राज्ञता ३. कैतवं, कापट्यं इ० ।

चतुराई, सं. स्त्री., दे. 'चतुरता' ।

चतुरानन, सं. पुं. (सं.) चतुर्मुखः, ब्रह्मन् (पुं.) ।

चतुर्थ, वि. (सं.) तुर्य, तुरीय ।

चतुर्थी, वि. स्त्री. (सं.) तुर्या, तुरीया २. पक्षस्य तुरीया तिथिः ३. दे. 'चौथा' ।

चतुर्दिक् , सं. पुं., दे. 'चतुर्दिश' ।

चतुर्दिश, सं. पुं. (सं. न.) दिक्चतुष्टयम् , चतुर्दिक्समूहः । क्रि. वि., चतुर्दिक्षु, सर्वतः, समंततः, विश्वतः, समंतात्, सर्वत्र (सब अव्य.) ।

चतुर्भुज, वि. (सं.) चतुर्बाहु, चतुर्हस्त २. चतुष्कोण, चतुरस्र । सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. चतुष्कोणः, चतुरश्रः-स्रः ३. चतुर्भुजं, वर्गः, सम, चतुर्भुजः-चतुरस्रः ।

चतुर्मुख, सं. पुं. (सं.) दे. 'चतुरानन' । क्रि. वि., सर्वतः, परितः, समंतात् (सब अव्य.) ।

चतुर्युग, सं. पुं. (सं. न.) युग,-चतुष्कं-चतुष्टयम् ।

चतुर्युगी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चतुर्युग' ।

चतुर्वर्ग, सं. पुं. (सं.) धर्मार्थकाममोक्षाः ।

चतुर्वर्ण, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राः, चातुर्वर्ण्यं, वर्ण,-चतुष्टयं-चतुष्कम् ।

चतुष्कोण, वि. (सं.) चतुरस्र, चतुरश्र, चतुर्भुज २. सम, चतुर्भुज-चतुरश्र । सं. पुं. (सम–) चतुर्भुजः-चतुरश्रः ।

चतुष्टय, सं. पुं. (सं. न.) चतुःसंख्या, चतुष्कं, चतुर्वस्तुसमूहः, चतुष्कम् ।

चतुष्पथ, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'चौराहा' ।

चतुष्पद, सं. पुं. तथा वि. (सं.) दे. 'चौपाया' ।

चद्दर, सं. स्त्री. (फ़ा. चादर) शयनास्तरणं शय्याच्छादनं, प्रच्छद,-पटः-वस्त्रं, प्रच्छदः उत्तरच्छदः २. (धातकी) फलकः-कं, पत्रम् ।

चना, सं. पुं. (सं. चणः) हरि,-मंथः-मंथकः-मंथजः, सुगंधः, बालभोज्यः, वाजिभक्ष्यः, कंचुकिन् , कृष्णचंचुकः ।

नाकों चने चबवाना, मु., अत्यंतं सं-परि-तप् (प्रे.) ।

लोहे का चना, मु., दुष्करं कर्मन् (न.) ।

चनाव, सं. स्त्री. (सं. चन्द्रभागा) चान्द्र चन्द्र-भागा-भागी ।

चपकन, सं. पुं. (हिं. चिपकना) कंचुक-उत्तरीय,-भेदः ।

चपकना, दे. 'चिपकना' ।

चपकलश, सं. स्त्री. (तु.) खड्ग-असि-कृपाण,-युद्धम् २. कलहः, उपद्रवः ।

चपटा, वि., दे. 'चिपटा' ।

चपड़चपड़, सं. स्त्री. (अनु.) चपड़चपड़-ध्वनिः (पुं.) ।

चपड़ा, सं. पुं. (हिं. चपटा) अलक्तः-क्तकः, रा(ला)क्षा २. लाक्षा-अलक्त,-पत्रं ३. रक्तकीट-भेदः ।

चपत, सं. पुं. (सं. चपटः)चपेटः-टिका, चपट-करतल,-आघातः प्रहारः २. क्षतिः-हानिः (स्त्री.)।

चपनी, सं. स्त्री. (सं. चपनं = दबाना >) पुटः-टं-टी, छदः, छदनं, पिधानं २. शरावः, वर्धमानकः ३. जानुफलकम् ।

चपरास, सं. स्त्री. (फ़ा. चप = वायाँ + रास्त = दायाँ) * प्रेष्य,-पट्टः-पट्टकः ।

चपरासी, सं. पुं. (हिं. चपरास) प्रेष्यः, भृत्यः, नियोज्यः, किंकरः, चोलकिन् ।

चपल, वि. (सं.) दे. 'चंचल' (१-४)५. क्षणिक, अचिरस्थायिन् ६. शीघ्र-आशु,-कारिन् , अवि-लंबिन् ७. शीघ्र, तूर्ण, क्षिप्र,द्रुत ८. मायाविन् , समाय ९. चतुर, अवसरज्ञ १०. धृष्ट, निर्लज्ज ।

चपलता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चंचलता' (१-२) ३. धृष्टता, धाष्टर्य, वैयात्यम् ।

चपला, सं. स्त्री. (सं.) लक्ष्मीः (स्त्री.), कमला २. विद्युत (स्त्री.), चंचला ३. जिह्वा ४. पुंश्चली, कुलटा । वि. स्त्री., चंचला २. शीघ्रकारिणी ।

चपली, सं. स्त्री. (हिं० चपटी) पन्नद्धा, पन्नध्री ।

चपाती, सं. स्त्री. (सं. चर्पटी) पोली, पोलिका, रोटी(ट)का ।

चपेट, सं. स्त्री. (सं. चपेटः) दे. 'चपत' (१-२) ३. आघातः, प्रहारः ।

चप्पन, सं. पुं.. दे. 'चपनी'(१) ।

चप्पल, सं. पुं. (हिं. चपटा) पादूः (स्त्री.), पादुका, कोशी-षी ।

चप्पा, सं. पुं. (सं. चतुष्पाद्-द >) चतुर्थांशः तुर्य-तुरीय,-भागः, २. अंगुलीचतुष्टयपरिमाणं ३. किष्कुः (पुं. स्त्री.), वितस्तिः (पुं.) ४. अल्पांशः ।

चप्पी, सं. स्त्री. (सं. चप् = दबाना >) सं,-वाहः-वाहनं-वाहना, चरणसेवा ।

चप्पू, सं. पुं. (हिं. चाँपना) नौका-नौ,-दंडः, क्षेपणी-णिः (स्त्री.) ।

—मारना, क्रि. स., क्षेपण्या चल्-वह् (प्रे.) ।

चबवाना, क्रि. प्रे. व. 'चबाना' के प्रे. रूप ।

चबाना, क्रि. सं. (सं. चर्वणं) चर्व् (भ्वा. प. से.), संदंश् (भ्वा. प. अ.), दंतैः निष्पिष् (रु. प. अ.) । सं. पुं., चर्वणं, दंतैः निष्पेषणं, संदंशनम् ।

चबा चबा कर बात करना, मु., मंदं सस्वरं च वद् (भ्वा. प. से.) ।

चबे को चबाना, मु., पिष्टपेषणं, चर्वितचर्वणम् ।

चबूतरा, सं. पुं. (सं. चत्वरम् >) वेदिः (स्त्री.)-दिका, वितर्दिः(स्त्री.)र्दी-र्दिका, उन्नत-स्थली २. दे. 'कोतवाली' ।

चबेना, सं. पुं. (हिं. चबाना), भृष्ट-भ्रष्ट,-अन्न-धान्यं, चर्वणम् ।

चबेनी, सं. स्त्री. (हिं० चबेना) भृष्टान्नोप-हारः २. जलपानसामग्री ।

चभक, सं. पुं. (अनु.) निमज्जन-ध्वनिः,-शब्दः ।

चमक, सं. स्त्री. (हिं. चमकना) कांतिः-दीप्तिः-द्युतिः-रुचिः (स्त्री.), आभा, प्रभा २. आलोकः, प्रकाशः ३. कटि-श्रोणी,-पीडा ।

—दमक, सं. स्त्री., अतिशय,-शोभा-श्रीः-कांतिः-दीप्तिः-द्युतिः- विभूतिः (स्त्री.) ।

—दार, वि. उज्ज्वल, भासुर, भास्वर, अति-महा,-तैजस-शोभन-दीप्तिमत्-प्रभ ।

चमकना, क्रि. अ. (सं. चमत्करणं) प्रकाश्-विद्युत्-भास्-शुभ्-भ्राज्-भ्राश्-भ्लाश् (भ्वा. आ. से.), प्र-, भा (अ. प. अ.), चकास् (अ. प. से.), दीप् (दि. आ. से.), विलस् (भ्वा. प. से.) २. समृद्धि-वृद्धिं या (अ. प. अ.), सं-,ऋध् (दि. तथा स्वा. प. से.) ३. अक-स्मात् कंप्-स्पंद् (भ्वा. आ. से.), संत्रस्त-भयचकित (वि.) भू ।

सं. पुं., प्रकाशनं, विद्योतनं, विलसनं, समृद्धिः (स्त्री.), प्र-उप,-चयः, सहसा स्पंदनं-कंपनम् ।

चमकाना, क्रि. प्रे., व.. 'चमकना' के प्रे. रूप ।

चमकारा, सं. पुं. (हिं. चमक) कान्तिः-दीप्तिः-

द्युतिः (स्त्री.) २. चाकचक्यं, तीव्र,-आलोकः-प्रकाशः ।

चमकी, सं. स्त्री. (हिं. चमक) आपातरमणीयं वस्तु (न.) ।

चमकीला, वि. (हिं. चमक) दे. 'चमकदार' ।

चमक्को, सं. स्त्री. (हिं. चमकना) कुलटा, पुंश्चली २. कलह-कलि-कारी-कारिणी-प्रिया ।

चमचिड़ी, सं. स्त्री.
चमगा(गी)दड़, सं. पुं.
चमगिदड़ी, सं. स्त्री.
} (सं. चर्मचटी) चर्मचट(टि)का, चतु(तू)का, जतु, नी, चर्मपत्रा, अजिनपत्रिका, चार्म्मिः (स्त्री.) ।

चमचम, सं. स्त्री. (देश.) चमचमाख्यः मिष्टान्नभेदः । वि., दे. 'चमकदार' ।

चमचमाना, क्रि. अ., दे. 'चमकना' (१) ।

चमचमाहट, सं. स्त्री., दे. 'चमक' (१-२) ।

चमाच, सं. पुं. (सं. चमसः-सं) कंवा-विः (स्त्री.), खजः, खजाका । (लकड़ी का) दारुहस्तकः, तर्दुः- तर्दूः (स्त्री.) ।

—भर, क्रि. वि., चमस,-मात्रं-परिमाणम् ।

चमचिचड़, वि. (हिं. चाम + चिचड़ी) अत्याग्रहिन् , प्रतिनिविष्ट, अत्याग्रहशील ।

चमड़ा, सं. पुं. [सं. चर्मन् (न.)] त्वच्-रोमभूमिः (स्त्री.), त्वचं-चा, असृग्,-धरा-वरा, छली-ल्ली । (मृत प्राणी का) अजिनं, कृत्तिः-दृतिः (स्त्री.) ।

—उधेड़ना, क्रि. स., निस्त्वचीकृ, त्वचं-चर्म अपनी-निर्हृ (भ्वा. प. अ.) ।

चमड़ी, सं. स्त्री. (हिं. चमड़ा) दे. 'चमड़ा' ।

चमत्कार, सं. पुं. (सं.) विस्मयः, आश्चर्यं, अद्भुतं, चमत्कृतिः (स्त्री.) २. अलौकिक-अतिमानुष-लोकोत्तर-कर्मन् (न.) ।

चमत्कारक, वि. (सं.) आश्चर्य-विस्मय,-जनक-उत्पादक, अतिमानुष (-षी स्त्री.), दिव्य, विलक्षण, अद्भुत, आश्चर्य, चमत्कारिन् ।

चमत्कृत, वि. (सं.) आश्चर्य-विस्मय,-अन्वित-आपन्न-उपहृत, विस्मित ।

चमन, सं. पुं. (फ़ा.) कुसुमाकरः, पुष्प-,वनं-वाटः-वाटिका ।

चमर, सं. पुं. (सं.) चमरगौः (पुं.) धेनुगः, बालधिप्रियः, वन्यः, व्यजनिन् २. च(चा)मरम् ।

चमरस, सं. पुं. (सं. चर्मरसः >) चर्मपादुका-जनितं चरणव्रणं, *चर्मरसः ।

चमरी, सं. स्त्री. (सं.) चमरगवी, गिरिप्रिया, दीर्घबाला २. च(चा)मरं ३. मञ्जरी ।

चमरौट, सं. पुं. (हिं. चमार) शस्ये चर्मकारभागः ।

चमस, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'चमचा' ।

चमार, सं. पुं. (सं. चर्म्मकारः) चर्मकृत् , चर्मरुः (पुं.) २. पादू-पादुका,-कृत्-कारः ३. पादुकासंधातृ (पुं.) । [चमारी-रिन (स्त्री.) = चर्मकारी इ.]

चमेली, सं. स्त्री. [सं. चम्पकवेल्लिः (स्त्री.)] (पौधा) मनोहरा, मनोज्ञा, जाती, मालती, सुकुमारा, सुरभि-हृद्य,-गंधा २. (फूल) जाती-मालती,-पुष्पम् ।

चमोटा, सं. पुं.
चमोटी, सं. स्त्री.
} (हिं. चाम) क्षुरतेजनी, चर्मपट्टी ।

चय, सं. पुं. (सं.) समूहः, गणः, राशिः (पुं.) २. मृत्तिकाचयः, क्षुद्रपर्वतः ३. दुर्गं ४.प्राकारः, वप्रः-प्रं ५. वेदी-दिका ६. चरण-पाद,-पीठः-पीठं ७. गृह-भित्ति-,मूलं, पोटः ।

चयन, सं. पुं. (सं. न.) संग्रहणं, समाहरणं, राशी-एकत्र,-करणम् ।

चर[1], सं. पुं. (सं.) चारः, स्पशः, प्रणिधिः (पुं.) गूढपुरुषः २. मंगलग्रहः, कुजः ३. खञ्जनः ४. कपर्दकः ।
वि. अस्थिर, जंगम, चल २. प्राणिन् , चेतन, सजीव ।

—अचर, वि., चलाचल, जडजंगम, स्थावरजंगम २. जडचेतन, सजीवनिर्जीव , सप्राणनिष्प्राण ।

चर[2], सं. पुं. (अनु.) वस्त्रादिविदरणध्वनिः (पुं.) चरितिशब्दः ।

चरक, सं. पुं. (सं.) मुनिविशेषः २. तत्कृत-वैद्यकग्रन्थः ३. दे. 'चर' (१) । ४. अध्वगः, यात्रिन् ५. भिक्षुकः ।

चरकटा, सं. पुं. (हिं. चारा + काटना) यवस-घास,-कर्तकः-छेदकः । २. क्षुद्रः, नीचः, जाल्मः ।

चरका, सं. पुं. (फ़ा. चरकः) ईषत्क्षतं, क्षुद्र,-व्रणः-व्रणं २. हानिः (स्त्री.) ३. छलम् ।

चरख़ा, सं. पुं. (फ़ा चर्ख) तांतवचक्रं, चक्रं २. आवापनम् ।

—कातना, क्रि. स., तंतून् कृत (रु. प. से)-सृज् (तु. प. अ.), तांतवचक्रं चल्-भ्रम् (प्रे.)।

चरख़ी, सं. स्त्री. (हिं. चरखा) लघुचक्रं, चक्री, चक्रिका ३-४. दे. 'गड़ारी' तथा 'बेलन'।

चरचर, सं. (स्त्री.) चरचराशब्दः, चरचरायितं २. व्यर्थ-अनर्थक,-आलापः, प्रजल्पः-पनम्।

चरचराहट, सं. स्त्री., दे. 'चरचर'।

चरट, दे. 'खंजन'।

चरण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) पादः, पदः-दं, पद्-पाद् (पुं.), वि,-क्रमः, क्रमणः, चलनः, अंघ्रिः (पुं.)। २. चरणः, पदं (छन्द.) ३. चतुर्थांशः ४. गमनं, चलनं ५. आचारः ६. (तृण-) भक्षणं ७. अनुष्ठानं ८. विहरण-स्थलं ९. सूर्यादेः किरणः १०. क्रमः।

—चिह्न, सं. पुं. (सं. न.) पाद-पद,-मुद्रा-चिह्नं-लक्षणम्।

—दासी, सं. स्त्री. (सं.) भार्या, पत्नी २. उपानह् (स्त्री.), पादुका।

—सेवा, सं. स्त्री. (सं.) परि-उप,-चर्या, शुश्रूषा।

—छूना, मु., पादयोः पत् (भ्वा. प. से.). चरणौ स्पृश् (तु. प. अ.)।

चरणामृत, सं. पुं. (सं. न.) चरणोदकं, पादोदकम्।

—लेना, मु., चरणामृतं आचम् [भ्वा. प. से., आच(चा)मति]।

चरना, क्रि. स. (सं. चरणं) यवसं-तृणं खाद् (भ्वा. प. से.)=भक्ष् (चु.)-भुज् (रु. आ. अ.), चर् (भ्वा. प. से.)। २. पर्यट्-भ्रम् (भ्वा. प. से.)।

चरनी, सं. स्त्री. (हिं. चरना) दे. 'नाँद' (२) २. गो,-चरः-प्रचारः।

चरपट, सं. पुं. दे. 'चपत'।

चरपरा, वि. (अनु.) तिक्त, उष्ण, तीव्र, तीक्ष्ण।

चरबी, सं. स्त्री. (फ़ा.) मांस,-सारः-स्नेहः, वपा, वशा-सा, मेदस् (न.)।

—की झिल्ली, सं. स्त्री., (१-२) गर्भ-अंत्र,-आवेष्टनम्।

—चढ़ना, मु., दे. 'मोटा होना'।

—छाना, मु., मदांध-अतिगर्वित (वि.) भू।

चरम, वि. (सं.) अन्तिम, अन्त्य, पश्चिम, अवम।

—काल, सं. पुं. (सं.) निधन-मृत्यु,-समयः-कालः।

—सीमा, सं. स्त्री. (सं.) परिनिष्ठा, परमावधिः (पुं.)।

चरवाई, सं. स्त्री. (हिं. चरवाना) पशुचारण,-भृत्या-वेतनं २. पशुचारणं, गोपालनम्।

चरवाना, क्रि. प्रे., ब. 'चरना' के प्रे. रूप।

चरवाहा, सं. पुं. (हिं. चरना) पशु-गो,-चारकः-पालकः-पालः-रक्षकः।

चरस, सं. पुं. (सं. चर्मन् >) १. चर्म,-द्रोणी-सेचनी २. चर्ममयः महा,-पुटः-कोषः ३. गंजा-निर्यासः, मादकद्रव्यभेदः।

चरसा, सं. पुं. (हिं. चरस) गोमहिषादेः चर्मन् (न.), २-३. दे. 'चरस' (१-२)।

चरसी, सं. पुं. (हिं. चरस) चरस,- पः-पायिन् २. चर्म,-सेचकः-सेक्तृ (पुं.)।

चराई, सं. स्त्री. (हिं. चरना) चरणं, यवस-तृण,-भक्षणं २-३. दे 'चरवाई' (१-२)।

चराग़, दे. 'चिराग'।

चराग़ान, सं. पुं. (फ़ा.) दीपोत्सवः।

चरागाह, सं. स्त्री. (फ़ा) गोप्रच(चा)रः, यवसक्षेत्रं, शाद्वलं, तृणावृतभूमिः (स्त्री.)।

चराचर, वि. (सं.) दे. 'चर' के नीचे।

चराना, क्रि, प्रे. (हिं. चरना) ब. 'चरना' के प्रे. रूप २. मुह्-वंच् (प्रे.), प्र-वि-लुभ् (प्रे.)।

चरिंदा, सं. पुं. (फ़ा.) तृणभक्षक-यवसाद,-पशुः।

चरित, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'चरित्र'।

चरितार्थ, वि. (सं.) कृतार्थ, कृतकृत्य, पूर्णमनोरथ, सफल २. उचित, योग्य, अनुरूप।

चरित्र, सं. पुं. (सं. न.) आचारः, आचरणं, चरितं, वृत्तं, वृत्तिः (स्त्री.) चारित्र्यं, शीलं, सौजन्यं २. स्वभावः, प्रकृतिः (स्त्री.) ३. कार्य, कर्मन् (न.), चेष्टितं ४. जीवन,-चरितं-चरित्रं, जीवनी।

—नायक, सं. पुं. (सं.) प्रधानपुरुषः, चरितनायकः।

चरित्रवान्, वि. (सं.-,वत्) सदाचारः,-रिन् , आचारवत् ।

चरी, सं. स्त्री. (हिं. चरना) घासः, यवसः,-सं., जवसः-सं, तृणादिकम् ।

चर्च, सं. पुं. (अं.) दे. 'गिरजा' २. संप्रदायः ।

चर्चरी, सं. स्त्री. (सं.) गीति-भेदः २. होलिकोत्सवः ३. करतलध्वनिः (पुं.) ४. आमोद-प्रमोदाः ५. वाद्यभेदः ।

चर्चा, सं. स्त्री. (सं.) चर्चः, अभिधानं, आख्यानं, कथनं, कीर्तनं, निर्देशः, वर्णनं २. वार्ता,-आलापः, सं,-भाषणं-कथा, कथाप्रसंगः ३. किंवदन्ती, जनप्रवादः, ४. लेपनं, अभ्यंजनम् ।

—करना, क्रि. स., संभाष् (भ्वा. आ. से.), संवद् (भ्वा. प. से.)

चर्चित, वि. (सं.) अभ्यक्त, लिप्त २. विचारित ।

चर्म, सं. पुं. (सं. चर्मन्) दे. 'चमड़ा' ।

—कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'चमार' ।

—दंड पुं. पुं. (सं.) दे. 'चाबुक' ।

चर्मी, वि. (सं. चर्मिन्) चर्म,-मय-निर्मित-संबंधिन् , चर्मण्य । सं. पुं. चर्मधारि-फलकभृद्-योधः ।

चर्य, वि. (सं.) गमनीय, गन्तव्य (स्थानादि) २. आचरणीय, करणीय ।

चर्या, सं. स्त्री. (सं.) कृत्यानुष्ठानं, कर्तव्यपालनं २. चलनं, गमनं, ३. आचारः, आचरणं ४. सेवा ५. आजीविका, वृत्तिः (स्त्री.) ।

चर्राना, क्रि. अ. (अनु.) चरचरायते (ना. धा.) चरचरशब्द कृ २. तप् (कर्म.), व्यथ् (भ्वा. आ. से.) ३. अत्यन्तं अभिलष् (भ्वा. उ. से.) ।

चर्वण, सं. पुं. (सं. न.) संदंशनं, दंतैः निष्पेषणं २. चर्व्यपदार्थः ३. दे. 'चबेना' ।

चर्वणा, सं. स्त्री. (सं.) चर्वणं, दन्तैः निष्पेषणं, संदंशनम् २. रसास्वादनं, रसानुभूतिः (स्त्री.) ३. चर्वण,-दन्तः-रदः ।

चर्वित, वि. (सं.) दंतनिष्पिष्ट, संदष्ट ।

चर्व्य, वि. (सं.) चर्वणीय, दन्तैः निष्पेषणीय । सं. पुं. (सं. न.) भृष्ट,-अन्नं-धान्यम् ।

चर्स, सं. पुं., दे. 'चरस' ।

चल, वि. (सं.) चर, चरिष्णु, जंगम, गमनशील २. चंचल, अस्थिर, अधीर । सं. पुं., शिवः २. विष्णुः ३. पारदः, रसः ।

—चलाव, सं. पुं., यात्रा, प्रस्थानं, २. महाप्रस्थानं, मृत्युः (पुं.) ।

—चित्त, वि. (सं.) लोल-अस्थिर-चंचल,-मति-बुद्धि-चित्त ।

—विचल, वि. (सं.) अव्यवस्थित, अक्रम ।

चलता, वि. (हिं. चलना) चलत्-गच्छत्-चरत् (शत्रंत), गतिमत् २. प्रचलित, सर्वसंमत ३. समर्थ, शक्तिमत् ४. व्यवहारकुशल, कार्यपटु । [चलती (स्त्री.) = चलंती, प्रचलित इ.] ।

चलती, सं. स्त्री. (हिं. चलना) प्रभावः, अधिकारः ।

चलन, सं. पुं. (सं. चलनं) गतिः (स्त्री.), गमनं, यानं, प्रस्थानं २. रीतिः (स्त्री.), क्रमः, अनुसारः ३. व्यवहारः, उपयोगः, प्रचारः ।

—सार, वि. चिर-,स्थायिन् , दीर्घ-चिर,-काल-स्थायिन् २. प्रचलि(रि)त ।

चलना, क्रि. अ. (सं. चलनं) चल्-चर्-व्रज् (भ्वा. प. से.), या-इ (अ. प. अ.), गम् , २. सक्रिय-सचेष्ट-सगतिक (वि.) भू , स्फुर् (तु. प. से.), कंप् (भ्वा. आ. से.) ३. सृ-सृप् (भ्वा. प. अ.) ४. (पद्भ्यां-पादाभ्यां) चल्-चर्-गम्-या, परि-,क्रम् (भ्वा. प. से., भ्वा. आ. अ.) ५. प्र-,वह् (भ्वा. उ. अ.), प्र-,स्रु (भ्वा. प. अ.) ६. वा (अ. प. अ.). वह् ७. प्रवृत् (भ्वा. आ. से.), स्था (भ्वा. प. अ.) ८. उपयुज्-व्यवहृ (कर्म.) ९. कलहायते (ना. धा.), विवद् (भ्वा. आ. से.) १०. सफलीभू , कृतार्थ-कृतकृत्य(वि.)भू । सं. पुं., चलनं, चरणं, गमनं, प्रस्थानं, स्फुरणं; वहनं इ. ।

चलने वाला, सं. पुं., चलितृ-गंतृ-यातृ (पुं.) इ. ।

चल पड़ना, मु., प्र-,स्था (भ्वा. आ. अ.), चल्-या ।

चल बसना, मु., मृ (तु. आ. अ.), पंचत्वं या ।

चले चलना, मु. चल्-गम् ।

चलनी, सं. स्त्री., दे. 'छलनी' ।

चलवाना, क्रि. प्रे., व. 'चलना' के प्रे. रूप ।

चला, सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी २. दामिनी ३. लक्ष्मीः (स्त्री.) ।

चलाऊ, वि. (हिं. चलना) दीर्घ-चिर,-कालस्थायिन् , दृढ़, स्थिर ।

चलाचल, वि. (सं.) चपल, चंचल, लोल २. जडचेतन ३. स्थावरजंगम ।
चलाचली, सं. स्त्री. (हिं, चलना) प्रस्थान-प्रयाण--त्वरा-संभ्रमः २. प्रस्थानं, प्रयाणं, अप,-यानं-गमः ३. प्रस्थान,-कालः-समयः ४. प्रयाणोपकल्पनम् ।
च(चा)लान, सं. स्त्री. पुं. (हिं. चलना) प्रचलनं, प्रस्थानं, प्रयाणं, अप,-यानं-गमः-गमनं २. प्रचालनं, प्रस्थापनं, प्रेषणं-णा, प्रयापणं-नं ३. अभियोजनं, अभियुज्य अधिकरणे प्रेषणम् ।
चलाना, क्रि. स., व. 'चलना' के प्रे. रूप । २. (गोली आदि) लोह,-गोलान्-गुलिकाःप्रक्षिप्-विसृज् (तु. प. अ.) ३. प्रारम्भ् (भ्वा. आ. अ.), प्रवृत् (प्रे.) ।
चलायमान, वि. (हिं. चलना) चलत्-गच्छत्-सर्पत् (शत्रंत) २. चंचल, अस्थिर ।
चलाव, सं. पुं. (हिं. चलना) प्रस्थानं, प्रयाणं २. यात्रा ३. रीतिः (स्त्री.), क्रमः ।
चलित, वि. (सं.) दे. 'चलायमान' (१-२) ३. प्रचलित ।
चवन्नी, सं. स्त्री. [हिं. चौ (= चार)+आना] चतुराणी, रुच्यः ।
चवर्ग, सं. पुं. (सं.) चकारादयः पंचवर्णाः ।
चवाई, सं. पुं. (हिं. औ+वाई = हवा) निंदकः, अप-परि,-वादकः २. पिशुनः, कर्णेजपः ।
चवालीस, वि. (सं. चतुश्चत्वारिंशत्) । सं. पुं. उक्ता संख्या, तदङ्कौ (४४) च ।
चवालिसवां, वि., (हिं. चवालीस) चतुश्चत्वारिंशत्तमः (मी-मम्) ।
चश्म, सं. स्त्री. (फ़ा.) नेत्रं, नयनम् ।
—दीद, वि. (फ़ा.) दृष्ट, अवलोकित, प्रत्यक्ष ।
—दीद गवाह, सं. पुं. (फ़ा.) प्रत्यक्ष,-साक्षिन्-दर्शिन्-प्रत्यक्षिन्-देश्यः ।
चश्मा, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'ऐनक' २. उत्सः, निर्झरः, प्रस्रवणं, स्रोतस् (न.) ३. कु-क्षुद्र,-नदी-सरित् (स्त्री.) ।
चषक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मद्यपानपात्रम्, अनुतर्षणं, सरकः, गल्वर्कः २. मधु (न.) ।
चषण, सं. पुं. (सं. न.) भक्षणं, खादनम् २. हननं, मारणम् ।
चसक, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'कसक' ।
चसकना, क्रि. अ. दे. 'कसकना' ।
चसका, सं. पुं. (सं. चषकः >) आ-,स्वादः, रसः, प्रवृत्तिः (स्त्री.) अभि-,रुचिः (स्त्री.) । बुरा—,व्यसनम् ।
चस्पाँ, वि. (फ़ा.) लग्न, संश्लिष्ट ।
चहक, सं. स्त्री. (हिं. चहकना) कूजनं, कूजितं, कलरवः, चुंकारः, खग,-विरुतं-विरावः ।
चहकना, क्रि. अ. (अनु.) कूज् (भ्वा. प. से.), विरु (अ. प. से.) ।
चहचहा, सं. पुं., दे. 'चहक' ।
चहचहाना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'चहकना' ।
चहचहाहट, सं. स्त्री. दे. 'चहक' ।
चहबच्चा, सं. पुं. (फ़ा. चाह = कूप + हिं. बच्चा) कूपकः, जल,-कुंडं-आशयः ।
चहल, सं. स्त्री. (अनु. चहचह) आनन्दोत्सवः ।
चहलकदमी, सं. स्त्री. (हिं. चहल+फा. क़दम) विचरणं, विहारः, परि,-क्रमणं-भ्रमणं-अटनम् ।
चहल-पहल, सं. स्त्री. (अनु.) आनन्दः, उत्सवः, उल्लासः, प्र,-मोदः हर्षः ।
चहारदीवारी, सं. स्त्री. दे. 'चारदीवारी' ।
चाँई, वि. (देश. चई = डाकू जाति) अपहरणशील, चौर्यवृत्ति । धूर्त्त, छलिन् ।
चाँचल्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'चंचलता' ।
चाँटा, सं. पुं. (अनु. चट) दे. 'चपत' ।
चाँडाल, सं. पुं. (सं.) दे. 'चंडाल' ।
चाँडाली, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चंडाली' ।
चाँद, सं. पुं. (सं. चंद्रः) दे. 'चंद्र' २. चन्द्रकलाकारः आभूषणभेदः, *चन्द्रः ३. मासः ४. लक्ष्यं-क्षं, शरव्यं । सं. स्त्री., शिरोऽग्रं, कपालशिखरं २. शिरोऽस्थि (न.), कपालः-लम् ।
—मारी, सं. पुं., लक्ष्यवेधः, शरव्यनिर्भेदः ।
चाँदना, सं. पुं. (हिं. चाँद) आलोकः, प्रकाशः २. दे. 'चंद्रिका' ।
—पाख, सं. पुं. पूर्व-शुक्ल-शुद्ध-सित,-पक्षः ।
चाँदनी, सं. पुं. (हिं. चाँदना) दे. 'चंद्रिका' २. श्वेत-सित,-प्रच्छदः । ३. शुक्लोल्लोचः ४. तगराख्यं पुष्पम् ।
—चौक, सं. पुं. (हिं.+सं. चतुष्कं) मुख्यमार्गः, प्रधानहट्टः, २. दिल्लीनगरस्य प्रधानहट्टः,* चन्द्रिकाचतुष्कम् ।

—रात, सं. स्त्री., ज्योतिष्मती, ज्योत्स्नी ।

चाँदी, सं. स्त्री., (हिं. चाँद) रजतं, रूप्यं, दुर्वर्णं, श्वेतं, कलधौतम् । २. धनं, वित्तं ३. आर्थिकलाभः ४. दे. 'चाँद', (सं. स्त्री.) ।

—का, वि, राज-रौप्य [-ती,-प्यी (स्त्री.)], रजत-रूप्य,-निर्मित-रचित, रजत ।

—सा, वि., रूप्योपम, रजतवर्ण, अतिधवल ।

—का जूता, मु., दे. 'घूँस' ।

चाँद्र, वि. (सं.) चाँद्रमस [-सी(स्त्री.)] ऐंदव [-वी (स्त्री.)] चंद्र,-सोम- ।

—मास, सं. पुं. (सं.) चंद्र-सोम-विधु,-मासः ।

—वत्सर, सं. पुं. (सं.) सौम्य-चान्द्रिक- चान्द्रमस,-वर्षः-अब्दः-हायनः ।

चांद्रमस, वि. (सं.) चान्द्र, चान्द्रिक, सौम्य, सौमिक (स्त्री. चांद्री, चान्द्रिकी, सौम्या, सौमिकी) ।

चांद्रायण, सं. पुं. (सं. न.) व्रतभेदः, इंदुव्रतम् ।

चाँप, सं. स्त्री. (हिं. चँपना) नि-, पीडनं, निर्बंधः, अतिभारः २. प्रेरणं-णा, प्रचोदना ३. लोहनाडी-अग्न्यस्त्र,-तालकं ४. चरण-पाद,-शब्दः ।

चाँपना, क्रि. स. दे. 'दबाना' ।

चाँयँ-चायँ चाँवँ-चाँवँ, सं. स्त्री. (अनु.) प्रलापः, प्रलपितं, प्रजल्पः-पितं, बाल, आलापः भाषणम् ।

चाक[1], सं. पुं. (फ़ा.) विदरः, रंध्रं, भेदः ।

—करना, क्रि. स., विदॄ (प्रे.), छिद् (रु. प. अ.) ।

चाक[2], सं. पुं. (अं.) खटी, खटिका, कठिनी ।

चाक[3], वि. (तु.) सबल, स्वस्थ, दृढतनु ।

—चौबंद, वि., हृष्टपुष्ट, पुष्टांग [-गी (स्त्री.)] २. अतंद्र, क्षिप्रकारिन् , लघु ।

चाक[4] सं. पुं. (सं. चक्रं) कुलाल-कुम्भकार-चक्रि,-चक्रं २. रथांगं, मंडलं ३. दे. 'गड़ारी' ४. पेषणचक्रं, पेषणीपाषाणः ५. शाणः-णी ।

चाकचक, वि. (तु. चाक) सुदृढ, सुरक्षित, दुर्गम ।

चाकचक्य, सं. स्त्री. (सं. न.) आभा, प्रभा, द्युतिः-कान्तिः(स्त्री.) २. सौन्दर्यं, शोभा ।

चाकना, क्रि. सं. (हिं. चाक) रेखाभिः परिवृ-परिवेष्ट् (प्रे.)

चाकर, सं. पुं. (फ़ा.) किंकरः, दासः, सेवकः ।

चाकरानी, सं. स्त्री. (फ़ा. चाकर) दासी, सेविका ।

चाकरी, सं. स्त्री. (फ़ा. चाकर) सेवा, परिचर्या ।

चाकसू, सं. पुं. (सं. चक्षुष्या) कुलाली, (अरण्य-) कुलत्थिका, लोचनहिता, दृक्-प्रसादा । २. चक्षुष्याबीजम् ।

चाकी, सं. स्त्री. (हिं. चाक) दे. 'चक्की' ।

चाक़ू, सं. पुं. (फ़ा.) छुरिका, कृपाणिका, असि,-पुत्रिका, धेनुका, शस्त्री, शस्त्रिका ।

चाक्षुष, वि. (सं.) नेत्र,-संबंधिन्-विषयक, २. चक्षुर्-नेत्र,-ग्राह्य ।

चाचर, सं. पुं. / चाचरि, सं. स्त्री. (सं. चर्चरी) चर्चरिका, राग-गीति,-भेदः २. होलिकोत्सवः ३. आमोदप्रमोदाः ४. उपद्रवः, क्षोभः, कलहः ।

चाचा, सं. पुं. (सं. तातः >) पितृव्यः, पितृसोदरः २. (छोटा) खुल्लतातः ।

चाची, सं. स्त्री (हिं. चाचा) पितृव्या, पितृव्यपत्नी ।

चाट, सं. स्त्री. (हिं. चाटना) स्वादलोलुपता, रसलालसा २. दे. 'चसका' ३. लालसा, उत्कटाभिलाषः ४. दे. 'आदत' ५. अव-उप,-दंशः, व्यंजनम् ।

—लेना, दे. 'चाटना' ।

चाटना, क्रि. स. (अनु. चटपट) अव-आ-परि-सं.-, लिह् (अ. उ. अ.) २. ग्रस्-ग्लस् (भ्वा. आ. से.) ।

चाटी, सं. स्त्री. (देश.) मंथनी, गर्गरी, दधि-मंथनपात्रम् ।

चाटु, सं. पुं. (सं. पुं. न,) चाटूक्तिः (स्त्री.), चाटुवादः, प्रिय-मधुर,-वचनं, मिथ्या,-प्रशंसा-संस्तावः-स्तवः-स्तुतिः (स्त्री.), उपलालनम् ।

—कार, सं. पुं. (सं.) मिथ्याप्रशंसकः, चाटुवादिन् ।

—कारी, सं. स्त्री. (सं. चाटुकारः >) चाटुवादित्वं, सांत्ववादित्वं, दे. 'चाटु' ।

चाणक्य, सं. पुं. (सं.) कौटिल्यः, विष्णुगुप्तः, द्रोमिणः, अंशुलः, चंद्रगुप्तमौर्यस्यामात्यः, चणकात्मजः ।

चातक, सं. पुं. (सं.) मेघजीवनः, तोककः, स्तोककः, सा(शा)रंगः ।

चातकानन्दन, सं. पुं. (सं.) मेघः, जलदः, वारिदः २. प्रावृष् (स्त्री.), मेघागमः, वर्षाकालः ।

चातुरी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चतुरता' ।

चातुर्य्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'चतुरता' ।

चादर, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'चद्दर' ।

चाप[1], सं. पुं. (सं.) धनुष् (न.), इष्वासः २. अर्द्धवृत्तम् (गणित) ।

चाप[2], सं. स्त्री. दे. 'चाप' (१, ४) ।

चापड़, सं. स्त्री. (सं. चर्पटः >) कठिन-कीकस,-भूमिः (स्त्री.) । वि., समतल, सपाट ।

चापना, क्रि. स., दे. 'दबाना' ।

चापलूस, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'चाटुकार' ।

चापलूसी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'चाटुकारी' ।

चाबना, क्रि. स., दे. 'चबाना' ।

चाबी-भी, सं. स्त्री. (हिं. चाप = दबाव) साधारणी, कूचिका, तालिका, ताली, कुंचिका, अंकुटः, उद्धाटकः ।

—देना, क्रि. स., कुंचिकां आ-परि-वृत् (प्रे.), कुच्-कुंच् (भ्वा. प. से.) ।

चाबुक, सं. पुं. (फा.) अश्वताडनी, कशा-षा, प्रतिष्कशः-षः, प्रतोदः ।

—मारना, क्रि. स., कशया तड्-तुद्-दंड्(चु.) ।

—सवार, सं. पुं., वाजिविनेतृ (पुं.), अश्वशिक्षकः ।

चाम, सं. पुं. [सं. चर्मन् (न.)] दे. 'चमड़ा' ।

चामर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) चमरं, चामरा-री ।

चामीकर, सं. पुं. (सं. न.) सुवर्णं २. धुस्तूरः ।

चाय, सं. स्त्री. (चीनी, चा), चा, चविका ।

—पानी, पुं. स्त्री., जलपानं, *चापानं, अल्प-स्तोक,-आहारः; कल्यवर्त्तः ।

चार, वि. (सं. चतुर्) [सदा बहु. ; चत्वारः (पुं.); चतस्रः (स्त्री.); चत्वारि (न.)] । २. अनेक, बहु ३. कतिपय । सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधको अंकः (४) च ।

—का समूह, चतुष्टयं-यी, चतुष्कम् ।

—कोना, वि. चतुष्कोण, चतुरस्र-श्र ।

—खाना, वि. चित्र, वर्गित । सं. पुं., वर्गित-चित्रित,-वस्त्रम् ।

—गुना, वि., चतुर्गुण-णित ।

—दीवारी, सं. स्त्री., वप्रः-प्रं, वरणः, प्राकारः ।

—प्रकार से, क्रि. वि., चतुर्धा, प्रकारचतुष्टयेन ।

—बार, क्रि. वि., चतुः (अव्य), चतुर्वारम् ।

—आँख, मु. समागमः, संमिलनम् ।

—आदमी, मु., जनः-नाः, लोकः-काः ।

—दिन की चाँदनी, मु. क्षणिकसुखम्, नश्वरानन्दः ।

चारज, सं. पुं. (अं. चार्ज) कार्यभारः, उत्तरदायित्वं, २. रक्षणं, अवेक्षा ।

चारजामा, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'ज़ीन' ।

चारण, सं. पुं. (सं.) बं(वं)दिन्, मागधः, वैतालिकः, स्तुतिपाठकः, संस्तावकः ।

चारपाई, सं. स्त्री. (सं. चतुष्पाद् >) खट्वा, मंचिका, पर्यंकिका ।

—पर पड़ना, मु., व्याधित-रोगग्रस्त(वि.) भू ।

चारवाक, सं. पुं. (सं. चार्वाकः) अनीश्वरवादी आचार्यविशेषः ।

चारा, सं. पुं. (हिं. चरना) दे. 'चरी' ।

चारा, सं. पुं. (फ़ा.) उपचारः, उपायः, प्रति-(ती)कारः ।

—जोई, सं. स्त्री. (फ़ा) अभियोगः, व्यवहारः ।

—जोई करना, कि. स., राजकुले निविद् (प्रे.), अभियुज् (रु. आ. अ.; चु.) ।

चारित्र, सं. पुं. (सं. न.) चारित्र्यम्, चरित्रम्, वृत्तं, चरितम्, दे. 'चरित्र' ।

चारु, वि. (सं.) सुंदर, मनो,-हर-रम, रुचिकर ।

चारों तरफ़, क्रि. वि., चतुर्दिशं, समंतात्, समंततः, परितः, सर्वत्र ।

चाल, सं. स्त्री. (सं. चालः >). गमनं, चलनं, स्पन्दनं, स्फुरणं, सरणं, २. प्र-,गतिः (स्त्री.), चारः, गमनप्रकारः ३. आचारः, व्यवहारः ४. उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ५. छलं, कपटं ६. विधिः (पुं.), प्रकारः ७. रीतिः (स्त्री.), संप्रदायः ८. पर्यायः, वारः, परिवृत्तिः (स्त्री.) ।

—चलन, सं. पुं., चरित्रं, आचरणं, वृत्तं, आचारः ।

—ढाल, सं. स्त्री., आचारः, चरितम् ।

—बाज़, वि. (हिं.+फ़ा.) मायाविन्, कापटिक ।

—बाज़ी, सं. स्त्री., कपटं, माया, वंचनं-ना ।

—चलना, मु., वंच् (चु.), व्यामुह् (प्रे.) ।

—में आना, मु., वंच्-व्यामुह्-विप्रलभ् (कर्म.) ।

चालना, क्रि. स., दे. 'छानना' ।

चालनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'छलनी'।

चाला, सं. पुं. (सं. चालः >) प्रस्थानं, गमनं २. यात्रामुहूर्ते नवोढायाः प्रथमवारं पतिगृहे ततः पितृगृहे वा गमनम्।

चालाक, वि. (फ़ा.) धूर्त, मायिक २. निपुण, दक्ष।

चालाकी, सं. स्त्री. (फ़ा.) धूर्तता, कापट्यं २. नैपुण्यं, चातुर्यम्।

चालान, सं. पुं. दे., 'चलान'।

चालीस, वि. (सं. चत्वारिंशत्)। सं. पुं., उक्ता संख्या, तद्बोधकावंकौ (४०) च।

चालीसवां, वि. (हिं. चालीस) चत्वारिंश [-शी. (स्त्री.)] चत्वारिंशत्तम [-मी. (स्त्री.)]।

चालीसा, सं. पुं. (हिं. चालीस) चत्वारिंशत्पदार्थसमूहः २. चत्वारिंशद् दिवसाः वर्षाणि वा ३. चत्वारिंशत्पद्यात्मकग्रन्थः।

चाव, सं. पुं. (हिं. चाह) अभिलाषः, लालसा, उत्कटेच्छा २. अनुरागः, प्रेमन् (पुं. न.) ३. अभिरुचिः (स्त्री.) ४. उत्साहः ५. लालनम्।

—चोचला, सं. पुं., उप-,लालनं, परिष्वंगः।

—निकालना, मु., अभिलाषं-इच्छां पूर् (चु.)-निवृत् (प्रे.)

चावड़ी, सं. स्त्री. दे. 'पड़ाव'।

चावल, सं. पुं. (सं. तंडुलः) धान्यास्थि (न.), धान्य-शालि,-सारः दे. 'धान', 'भात' २. गुञ्जायाः अष्टमभागमितः तोलः।

—का धोवन, सं. पुं., तण्डुलोदकम्, तण्डुलोत्थम्।

चाशनी, सं. स्त्री. (फ़ा.) गुड-सिता-शर्करा,-रसः २. दे. 'चसका'।

चाह, सं. स्त्री. (सं. इच्छा) दे. 'चाव' (१-२)। ३. आदरः, प्रतिष्ठा ४. आवश्यकता, प्रयोजनम्।

चाहता, वि. (हिं. चाह) दयित, प्रिय, कांत।

चाहना, क्रि. स. (हिं. चाह) अभिलष् (भ्वा. दि. प. से.), इष् (तु. प. से.), रुच्-कम् (भ्वा. आ. से., कामयते), (सन्नंत या '-काम' से भी अनुवाद करते हैं; उ. वह जाना चाहता है = स गंतुकामः अथवा जिगमिषति) २. स्निह् (दि. प. वे.), अनुरंज् (कर्म.), अनुरागवत्-मोहित (वि.) भू ३. प्र,-यत् (भ्वा. आ. से.,) ४. दे. 'ढूँढ़ना'। सं. स्त्री., अभिलापः, इच्छा; अनुरागः, स्नेहः; आवश्यकता इ.।

चाहनेयोग्य, वि., अभिलषितव्य, एषणीय; दयित, प्रिय इ.।

चाहनेवाला, वि., इच्छु-च्छुक, अभिलाषिन्; अनुरागिन्, स्नेहिन्।

चाहिए, अव्य. (हिं.-चाहना) उचितं, उपयुक्तं, न्याय्यं। (-तव्य,-अनीय, ण्यत् आदि से भी इसका अनुवाद करते हैं; उ. करना चाहिए=कर्तव्यं करणीयं, कार्यं इ.)।

चाही, वि. (फ़ा. चाह) कूप,-सिक्त-संबंधिन्।

चाहे, अव्य. (हिं. चाहना) यथाकामं, यथाभिलाषं, स्वैरं, स्वच्छंदं २. वा, अथवा, यद्वा।

चिउँटा, सं. पुं. (हिं चिमटना) पिपीलकः, पीलकः।

चिउँटी, सं. स्त्री. (हिं चिउँटा) (पुं.) पिपीलः, पीलुकः, पिपीलिकः। [पिपीली, पिपीलका (स्त्री.)]।

—की चाल, मु., मंद-मंथर,-गतिः (स्त्री.)।

—के पर निकलना, मु., आसन्नमृत्यु, निधनोन्मुख।

चिंघाड़, सं. स्त्री. (सं. चीत्कारः) बृंहितं २. महानादः, तुमुलध्वनिः (पुं.)।

चिंघाड़ना, क्रि. अ. (हिं. चिंघाड़) बृंह् (भ्वा. प. से.,) २. उच्चैः नद् (भ्वा. प. से.)।

चिंचा, सं. स्त्री. (सं.) अम्लिका, तिंतिडि(डी)-का २. अम्लिका-चिंचा,-फलम् ३. रक्ता, गुंजा।

चिंतक, वि. (सं.) विचारक, विवेचक, ध्यातृ। सं. पुं. (सं.) तत्त्वज्ञः, दार्शनिकः।

चिंतन, सं. पुं. (सं. न.) चिंतना, ध्यानं, स्मरणं २. विचारणं, विवेचनम्।

चिंतनीय, वि. (हिं.) चिंताप्रद, उद्वेगकर (-री स्त्री.), २. ध्येय, भावनीय ३. विचार्य, विवेचनीय।

चिंता, सं. स्त्री. (सं.) उद्वेगः, औत्सुक्यं, व्यग्रता, रणरणकः, आकुलता, उत्कलिका, मनस्तापः २. आ-,ध्यानं- चिंतनम्।

—आतुर, वि. (सं.) सचिंत, चिंतित, चिंतामग्न, उद्विग्न, व्याकुल।

—जनक, वि., चिन्ता-आकुलता,-प्रद-उद्भावक।

—मणि, सं. पुं. (सं.) स्पर्शमणिः।

चिंतित, वि. (सं.) दे. 'चिंतातुर' २. विचारित, ध्यात।

चिंत्य, वि. (सं.) दे. 'चिंतनीय' (२-३)

चिंदी, सं. स्त्री. (देश.) खंडः, लवः।

चिंपाज़ी, सं. पुं. (अं.) अफ्रीकामहाद्वीपस्य वनमानुषभेदः।

चिक, सं. स्त्री. (तु. चिक) तिरस्करिणी, प्रतिसीरा, व्यवधा, व्यवधानं, आवरणं, मांसिकः, विशसितृ, शौ (सौ) निकः।

चिक[२], सं. पुं. (अं. चेक) देयादेशः।

चिक[३], सं. स्त्री. (अनु.) आकस्मिकी कटिव्यथा।

चिकन, सं. पुं. (फ़ा.) कार्मिकवस्त्रभेदः, *चिक्कणम्।

चिकना, वि. (सं. चिक्कण) तैलमय (-यी स्त्री.), तैलाक्त, तैल,-युक्त-वत् २. स्निग्ध, मसृण, श्लक्ष्ण ३. परिष्कृत, संस्कृत ४. पिच्छिल, मेदुर ५. सम, सपाट। [चिकनी (स्त्री.) चिक्कणा इ.]।

—घड़ा, सं. पुं., निर्लज्ज-अपत्रप,-मनुष्यः।

—मिट्टी, सं. स्त्री., मृत्तिका, मृद् (स्त्री.)।

—चुपड़ी बातें करना, मु., चाटुवादैः वंच् (चु.)-प्रतृ (प्रे.)।

चिकनाई, सं. स्त्री. (हिं. चिकना) चिक्कणता, स्निग्धता, श्लक्ष्णता २. समता, सपाटता ३. घृतादयः स्निग्धपदार्थाः।

चिकनापन, सं. पुं. } (हिं. चिकना) दे.
चिकनाहट सं. स्त्री. } चिकनाई (१-२)।

चिकित्सक, सं. पुं. (सं.) वैद्यः,-द्यकः, रोग,-हृत-हारिन् (पुं.), अगदंकारः, भिषज् (पुं.)।

चिकित्सा, सं. स्त्री. (सं.) औषध-,उपचारः, उपक्रमः, रोगप्रतीकारः २. वैद्यकं ३. औषधं, भेषजम्।

चिकित्सालय, सं. पुं. (सं.) आतुरालयः।

चिकुटी, सं. स्त्री., दे. 'चुटकी'।

चिकुर, सं. पुं. (सं.) केशः, मूर्धजः, शिरसिजः २. पर्वतः ३. काष्ठमार्जारः, दे. 'गिलहरी'।

चिक्कण, वि. (सं.) दे. 'चिकना'।

चिखुरी, सं. स्त्री. (सं. चिकुरः >), 'गिलहरी'।

चिचड़ी, सं. स्त्री. (देश.) पशुयूका, कीटभेदः।

चिचिंडा, सं. स्त्री. (सं. चिर्चिंडः) अहिफला, दीर्घफला, सुदीर्घः, गृहकूलकः।

चिट, सं. स्त्री. (सं. चित्र >) पत्रखंडः-डं २. वस्त्रशकलः-लम्।

—नवीस, सं. पुं. (हिं. + फ़ा.) लेखकः, कायस्थः, लिपिकरः।

चिटकना, क्रि. अ. (अनु.) स्फुट् (तु. प. सु.) दॄ-भंज-भिद् (कर्म.) २. सचिटचिटशब्दं ज्वल् (भ्वा. प. से.) ३. दे. 'खीझना'।

चिटकाना, क्रि. स., व. 'चिटकना' के प्रे. रूप।

चिट्टा, वि. (सं. सित) श्वेत, शुक्ल, धवल २. दे. 'रुपया'।

चिट्ठा, सं. पुं. (हिं. चिट) आयव्यय-देयादेय, पंजिः (स्त्री.)-पंजी-पंजिका, दे. 'वही-खाता' २. व्ययसूची ३. सूची ४. लाभालाभ-हानिलाभ,-पत्रम्।

कच्चा—, सं. पुं., गुह्य-गुप्त,-वृत्तांतः।

चिट्ठी, सं. स्त्री. (हिं. चिट्ठा), (संदेश-) पत्रं, लेखः-ख्यं २. लिखितः पत्रखंडः ३. प्रमाणपत्रं ४-५ आज्ञा-निमंत्रण,-पत्रम्।

—पत्री, सं. स्त्री., पत्रव्यहारः, पत्र-,विनिमयः-संवादः।

—रसाँ, सं. पुं. (हिं. + फ़ा.) पत्रवाह-हकः, लेखहारः-रकः।

चिड़, सं. स्त्री.. दे. 'चिढ़'।

चिड़चिड़ा, वि. (हिं. चिडचिड़ाना) शीघ्रकोपिन् , सुलभकोप, क्रोधन, कोपन।

चिड़चिड़ाना, क्रि. अ. (अनु.) ईषत् कुप्-रुष् (दि. प. से.)-क्रुध् (दि. प. अ.), संतप्-क्लिश् (कर्म.)।

चिड़चिड़ाहट, सं. स्त्री. (हिं. चिड़चिड़ाना) सुलभकोपता, दुर्मनायितं, कोपनता।

चिड़वा, सं. पुं. (सं. चिपिटः) चिपटः, पृथुकः, चिपि(पु)टः-टकः।

चिड़ा, सं. पुं. (सं. चटकः) कलविंकः-गः, गृहनीडः, चित्रपृष्ठः, कामुकः।

चिड़िया, सं. स्त्री. (हिं. चिड़ा) पक्षिन्, खगः, २. क्रीडापत्ररंगभेदः ३. दे. 'चिड़ी'।

—घर, सं. पुं., जन्त्वागारं, प्राणिशाला २. पक्षिशाला, पंजरम्।

चिड़ी, सं. स्त्री. (हिं. चिड़ा) चट(टि)का, चटकका, कलविंकी-गी २-३. दे. 'चिड़िया' (१-२)।

—का बच्चा, सं. पुं., चाटकैरः।

—की बच्ची, सं. स्त्री., चटका।

—मार, सं. पुं., जालिकः, शाकुनिकः, लुब्धकः, पक्षिग्राहकः।

चिढ़, सं. स्त्री. (हिं. चिड़चिड़ाना) घृणा, अरुचिः (स्त्री.), जुगुप्सा, विद्वेषः।

चिढ़ना, क्रि. अ., दे. 'चिड़चिड़ाना'।

चिढ़ाना, क्रि. स., व. 'चिड़चिड़ाना' के प्रे. रूप।

चित[1], सं. पुं. (सं. चित्तं) मानसम्।

—चोर, सं. पुं., मनोहरः, चित्ताकर्षकः २. प्रियः, दयितः, कांतः।

—देना या लगाना, मु., अवहित (वि.) भू, अवधा (जु. उ. अ.)।

—से उतरना, मु., विस्मृ (कर्म), दे. 'भूलना'।

चित[2], वि. (सं. चित >) उत्तान, उत्तान-अवपृष्ठ,-शय-शायिन्।

—करना, मु., (शत्रुं मल्लयुद्धे) अवपृष्ठशायिनं कृ; विजि (भ्वा. आ. अ.)।

—होना, मु., मूर्च्छ् (भ्वा. प. से.)।

चित, वि: (सं.>) उत्तान, ऊर्ध्वास्यशयित।

चितकवरा, वि. (सं. चित+कर्बुर >) चित्र, कर्बुर, चित्रविचित्र, कर्बुरित, चित्रित, शवल, चित्रांग (-गी स्त्री.)।

चितला, वि. दे. 'चितकवरा'।

चितवन, सं. स्त्री. (हिं. चेतना) दृक् नयन-दृष्टि,-पातः, आलोकितं, वीक्षितं, २. कटाक्षः, अपांगदृष्टिः (स्त्री.), नयनोपांत-साचि,-विलोकितम्।

चिता, सं. स्त्री. (सं.) चित्या, चिती-तिः (स्त्री.), चित्यं, चैत्यं, चिताचूडकं, काष्ठमठी।

—भूमि, सं. स्त्री. (सं.) श्मशानं, पितृ,-वनं काननम्।

—साधन, सं. पुं. (सं. न.) श्मशाने मंत्रानुष्ठानम्।

चिताना, क्रि स. (हिं. चेतना) (पूर्व-प्राक्) प्रबुध् (प्रे.)-अनुशास् (अ. प. से.), उपदिश् (तु. प. अ.) २. अनु-,स्मृ (प्रे.), उद्-अनु-बुध् (प्रे.)।

चितावनी, सं. स्त्री., दे. 'चेतावनी'।

चितेरा, सं. पुं. [सं. चित्रक(का)रः] चित्रकः, रङ्गजीवकः, रंजकः, सत्सारः, चित्र,-लेखकः-कृत् (पुं.), आलेखकः, तौलिकः।

चितेरी-रिन, सं. स्त्री. (हिं. चितेरा) चित्र,-करी-लेखिका, तौलिकी २. चित्रकारपत्नी।

चित्त, सं. पुं. (सं. न.) अंतःकरणं, चेतम्-मनस्-हृद् (न.), हृदयं, मानसं २. धीः-बुद्धिः-मति (स्त्री.), प्रज्ञा, शेमुषी ३. अवधानं, मनोयोगः, अवेक्षा ४. स्मृतिः (स्त्री.), धारणा।

—उद्रेक, सं. पुं. (सं.) गर्वः, दर्पः, मदः, अहंकारः, अहंमानः।

—विक्षेप, सं. पुं (सं.)मनश्चांचल्यं, मनःक्षोभः।

—विभ्रम, सं. पुं. (सं.) चित्तव्यामोहः, मनोभ्रांतिः (स्त्री.) २. उन्मादः।

—वृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) मनो,-गतिः-वृत्तिः (स्त्री.), चित्तावस्था।

—करना, मु., अभिलष् (भ्वा. प. से.), इष् (तु. प. से.)।

चित्ति, सं. स्त्री. (सं.) बुद्धिः (स्त्री.), प्रज्ञा २. चिन्तनम् ३. ख्यातिः (स्त्री.) ४. कर्मन् (न.) ५. भक्तिः (स्त्री.) ६. प्रयोजनम्।

चित्ती, सं. स्त्री. (सं. चित्रं <)विंदुः (पुं.), अंकः, चिह्नं २. चित्रा, चित्रसर्पः ३. क्षत,-चिह्नं-अंकः।

—दार, वि. (हिं.+फ़ा.) विंदुचिह्नित, चित्र।

चित्र, सं. पुं. (सं. न.) प्रति,-कृतिः (स्त्री.)-छंदकं-च्छाया-रूपं, आलेख्यं, प्रतिमा। वि., कर्बुर, शवल, विविधवर्ण।

—कला, सं. स्त्री. दे. 'चित्रकारी'।

—कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'चितेरा'।

—कारी, सं. स्त्री. (सं. चित्रकार <) चित्र,-कला-क्रिया-कर्मन् (न.)-विद्या २. आ-चित्र,-लेखनम्।

—मय, वि. (सं.) सचित्र, चित्रबहुल, चित्रांकित।

—वत्, वि. (सं.) चित्र-आलेख्य,-तुल्य-सम-सदृश २. निश्चल, स्तब्ध, स्थिर।

—विचित्र, वि. (सं.) शवल, कर्बुर, बहुरंग।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) आलेख्य,-शाला-भवनम्।

चित्रक, सं. पुं. (सं.) चित्र,-कायः,-व्याघ्रः, मृगांतकः, क्षुद्रशार्दूलः, उपव्याघ्रः, २. दे. 'चितेरा'।

चित्रकूट, सं. पुं. (सं.) पर्वतविशेषः।

चित्रगुप्त, सं. पुं. (सं.) यमलेखकः ।

चित्रा, सं. स्त्री. (सं.) चतुर्दशनक्षत्रं । वि., कर्बुर, शबल ।

चिथड़ा, सं. पुं. (हिं. चीथना) चीरं, चीवरं, कर्पटः, नक्तकः ।

चिनक, सं. स्त्री. (हि. चिनगी) सदाहा पीडा २. मूत्रनाड्याः पीडा ।

चिनगारी, सं. स्त्री. (सं. चूर्ण+अंगारः >) क्षुद्रांगारः-रं २. अग्नि-ज्वलन,-कणः-कणिका, वि-,स्फुलिंगः-गं-गा ।

चिनगी, सं. स्त्री. (हिं. चिनगारी) दे. 'चिनगारी' चपलबालः ।

चिनाई, सं. स्त्री. (हिं. चिनना) इष्टका-चयनं । २-३. भित्ति-गृह,- निर्माणम् ।

चिन्मय, वि. (सं.) ज्ञानमय । सं. पुं. परमेश्वरः ।

चिन्ह, सं. पुं. दे. 'चिह्न' ।

चिन्हित, वि., दे. 'चिह्नित' ।

चिपकना, क्रि. अ. (अनु. चिपचिप) संश्लिष् (दि. प. अ.), संलग् (भ्वा. प. से.) अनु-आ-सं.-संज् (कर्म.) ।

चिपकाना, क्रि. स., व, 'चिपकना' के प्रे. रूप ।

चिपचिप, सं. स्त्री. (अनु.) चिपचिपशब्दः ।

चिपचिपा, वि. (अनु.) श्यान, सांद्र, संलग्नशील ।

चिपचिपाना, क्रि. अ. (अनु. चिपचिप) संलग्नशील-सांद्र(वि.)भू २. दे. 'चिपकना' ।

चिपचिपाहट, सं. स्त्री. (हिं. चिपचिपाना) संलग्नशीलता, श्यानता, सांद्रता ।

चिपटना, क्रि. अ. (सं. चिपिट) दे, 'चिपकना' २. आलिंग् (भ्वा. प. से.), परिस्वंज् (भ्वा. आ. अ.) ।

चिपटा, वि. (सं. चिपिट<) अभुग्न, समरेख, सम, समस्थ, सपाट ।

चिपटाना, क्रि. स., ब. 'चिपटना' के प्रे. रूप ।

चिबुक, सं. पुं. (सं. चिबु(बु)कं) दे. 'ठोड़ी' ।

चिमटना, क्रि. अ. (हिं. चिपटना) दे. 'चिपटना' (१-२) ।

चिमटा, सं. पुं. (हिं. चिमटना) संदंशः-शकः, कंक,-मुखं-वदनम् ।

चिमटाना, क्रि. स., ब. 'चिपटना' के प्रे. रूप ।

चिमटी, सं. स्त्री. (हिं. चिमटा) संदंशिका, लघु-,कंकमुखः-खम् ।

चिमड़ा, वि., दे. 'लचीला' ।

चिमनी, सं. स्त्री. (अं.) धूम,-नाली-रंध्रं २. अग्निकुण्डं, चुल्ली-ल्लिः (स्त्री.) ।

चिरंजीव, वि. (सं.) दीर्घ-चिर-,-जीविन्-आयुस् २. दीर्घायुः भव ।

चिरंतन, वि. (सं.) चिरत्न [–त्नी (स्त्री.)], पुरातन [–नी (स्त्री.)], प्राचीन, प्राक्तन [–नी (स्त्री.)] ।

चिर, वि. (सं.) दीर्घ-चिर,-कालिक-कालीन २. चिरकाल-दीर्घकाल,-स्थायिन् ३. दे. 'चिरंतन' ।

—काल, सं. पुं. (सं.) दीर्घसमयः, महान् कालः ।

—कालिक,—कालीन, वि. (सं.) दे. 'चिरंतन' । (रोग) अविसर्गिन्, कालिक, दीर्घस्थायिन् ।

—जीवी, वि. (सं.-विन्) दे. 'चिरंजीव' ।

—स्थायी, वि. (सं.-विन्) दीर्घकाल, ध्रुव, स्थिर, अशीघ्रनाशिन् ।

चिरकना, क्रि. अ. (अनु०) अल्प-स्तोकं हद् (भ्वा. आ. अ.) २. असकृत् अल्पमलं उत्सृज् (तु. प. अ.) ।

चिरकुट, (सं. चीरम्) दे. 'चिथड़ा' ।

चिरचिरा, वि., दे. 'चिड़चिड़ा' ।

चिरत्न, वि. (सं.) पुराण, पुरातन, प्रतन, प्रत्न ।

चिरना, क्रि. अ. (सं. चीर्ण >) स्फुट् (तु. प. से.), विद्-विभिद्-भंज् (कर्म.) ।

चिरवाई, सं. स्त्री. (हिं. चिरवाना) विदलनं, विदारणं, विपाटनं, २. विदारण,-वेतनं-भृत्या ।

चिरवाना, क्रि. प्रे., ब. 'चीरना' के प्रे. रूप ।

चिराइता, सं. पुं., दे. 'चिरायता' ।

चिराई, सं. स्त्री. (हिं. चिराना) दे. 'चिरवाई' ।

चिराग़, सं. पुं. (फ़ा. चराग़) दीपः, दीपकः ।

—दान, सं. पुं., दीप,-आधारः-वृक्षः ।

चिराना, क्रि. प्रे., ब. 'चीरना' के प्रे. रूप ।

चिरायँध, सं. स्त्री. (सं. चर्मगंधः) चर्मवसादि-ज्वलनगंधः, दुर्-पूति,-गंधः ।

चिरायता, सं. पुं. (सं. चिरतिक्तः) भूर्निबः, सु,-तिक्तकः, किरातकः ।

चिरायु, वि. (सं. चिरायुस्) दे. 'चिरंजीव' (१)।

चिरौंजी, सं. स्त्री. (सं. चारबीजं >) (वृक्ष) चारः, चारकः, खरस्कंधः, बहुवल्कलः, प्रियालः २. तस्य फलं ३. तद्बीजगर्भः।

चिलक, सं. स्त्री., दे. १. 'चमक' २. 'टीस'।

चिलकना, क्रि. आ., दे. 'चमकना' २. दे. 'टीस मारना'।

चिलग़ोज़ा, सं. पुं. (फ़ा.) जलगोजकं, निकोचकं, चारुफलं, संकोचम्।

चिलम, सं. स्त्री. (फ़ा.) धूमपानचषकः।

चिलमची, सं. स्त्री. (फ़ा.) हस्तधावनी, करक्षालनी।

चिलमन, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'चिक' (१)।

चिल्लपों, सं. स्त्री. (हिं. चिल्लाना + अनु.) कोलाहलः, उत्क्रोशः, वि,-रावः, कलकलः।

चिल्ला[१], सं. पुं. (फ़ा.) चत्वारिंशद्दिवसात्मकः कालः २. चत्वारिंशद्दिनव्रतम्

चिल्ला[२], सं. पुं. (देश.) ज्या, मौर्वी, प्रत्यंचा, धनुर्गुणः।

—चढ़ाना, क्रि. स., चापं अधिज्यं कृ, धनुषि मौर्वीं आरुह् (प्रे. आरोपयति)।

चिल्लाना, क्रि. अ. (अनु. चिलचिल) कलकलं-कोलाहलं कृ, वि-, रु (अ. प. से.), उत्क्रुश् (भ्वा. प. से.) २. चीत्कारं कृ, उच्चैः आक्रन्द् (भ्वा. आ. से.) ३. दे. 'रोना'।

चिल्लाहट, सं. स्त्री. (हिं. चिल्लाना) दे. 'चिल्लपों'।

चिल्लिका, सं. स्त्री. (सं.) चिल्ली, झिल्ली, भृङ्गारी २. शाकराजः, राजशाकः ३. विद्युत्-तड़ित् (स्त्री.)।

चिह्न, सं. पुं. (सं. न,) लक्षणं, लाञ्छनं, लिंगं, अभिज्ञानं, अंकः।

चिह्नित, वि. (सं.) अंकित, स,-चिह्न-लक्षण-लांछन।

चींटा, सं. पुं., दे. 'चिउंटा'।

चींटी, सं. स्त्री., दे. 'चिउंटी'।

चीकट, सं. स्त्री. (हिं. कीचड़) तैलमलं, दे. 'तलछट'। वि., तैलमय [-यी (स्त्री.)]।

चीख़, सं. स्त्री. (सं. चीत्कारः) उत्क्रोशः, आक्रंदितं, उच्च-कर्कश,-रवः-रावः।

चीखना, क्रि. स. (सं. चषणं) दे. 'चखना'।

चीख़ना, क्रि.अ.(सं. ची.करणं) दे. 'चिल्लाना'। (२) उच्चैः वद्-लप (भ्वा. प. से.)।

चीज़, सं. स्त्री. (फ़ा.) वस्तु (न.), द्रव्यं, पदार्थः।

—वस्तु, सं. स्त्री. (फ़ा.+सं.) वस्तुजातं, सामग्री २. गृहोपस्करः २. आभूषणादिकम्।

चीड़-ढ़, सं. पुं. (सं. चीड़ा) दारुगंधा, मङ्गल्या, भूतमारी, गन्धद्रव्यभेदः २. चीरपर्णः शालः, सर्जः, दीर्घशाखः (वृक्ष)।

चीतल, वि., (सं. चित्रल) दे. 'चितकबरा'। सं. पुं., चित्रमृगः २. चित्रसर्पः, अजगरभेदः।

चीता[१], सं. पुं. (सं. चित्रकः) दे. 'चित्रक'।

चीता[२], वि. (हिं. चेतना) विचारित, चिंतित।

चीत्कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'चीख़' २. दे. 'चिल्लपों'।

चीथड़ा, सं. पुं., दे. 'चिथड़ा'।

चीथना, क्रि. स. (सं. चोर्ण >) दे. 'फाड़ना' तथा 'पीसना'।

चीन, सं. पुं. (सं.) देशविशेषः २. अंकुशभेदः ३. मृगभेदः।

चीनी, वि. (सं. चीनः) चीन,-वासिन्-संबंधिन्, चैन। सं. स्त्री., सिता, शुक्ला।

चीपड़, सं. पुं. (अनु. चिप) दूषी-षिः (स्त्री.), दूषिका, पिंचोडकं, पिंज(जे)टः, नेत्रमलम्।

चीफ़, सं. पुं. (अं.) पुरोगः, प्रधानपुरुषः, नायकः, अध्यक्षः। वि., प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, विशिष्ट।

—एडिटर, सं. पुं. (अं) मुख्य-प्रधान,-सम्पादकः।

—कमिश्नर, सं. पुं. (अं) मुख्यायुक्तः।

—कोर्ट, सं. पुं. (अं) मुख्यन्यायालयः।

—जज, सं. पुं. (अं) मुख्यन्यायाधीशः।

—जस्टिस, सं. पुं. (अं) मुख्यन्यायाधिपतिः।

चीमड़, वि. (हिं. चमड़ा) दे. 'लचीला'।

चीर[१], सं. पुं. (सं. न.) जीर्णवस्त्रखंडः-डं, कर्पटः, नक्तकः, चीवरं २. वसनं, वस्त्रं ३. वृक्ष-त्वच् (स्त्री.) ४. मुनि,-भिक्षु-वस्त्रम्।

चीर[२], सं. पुं. (हिं. चीरना) दीर्घ,-छेदः-भेदः-स्फोटः-भिदा।

—फाड़, सं. स्त्री., अंगच्छेदः, व्यवच्छेदः।

चीरना, क्रि. स. (सं. चीर्ण) क्रकचेन छिद् (रु. प. अ.)-दॄ (क्र. प. से., प्रे.)-पट् (चु) २. विशॄ (क्र. प. से.), खंड् (चु.), भिद् (रु. प. अ.)। सं. पुं., विदारणं, छेदनं, भेदनं, स्फोटनम्।

चीरने वाला, सं. पुं., विदारकः, छेदकः इ.।

चीरा हुआ, वि., विदारित, छेदित, भेदित, चीर्ण, विदीर्ण।

—फाड़ना, सं. पुं., अंगच्छेदनं, व्यवच्छेदनम्।

चीरा[1], सं. पुं. (हिं. चीरना) शस्त्र,-उपचारः-उपायः-कर्मन् (न.)-क्रिया २. व्रणः,-णम्।

—देना, क्रि. स., शस्त्रेण उपचर् (भ्वा. प. से.)-साध् (प्रे.)।

चीरा[2], सं. पुं. (सं. चीरं >) चित्रोष्णीषः-षं, चीरम्।

चीर्ण, वि. (सं.) विदारित, छेदित, दीर्ण २. अनुष्ठित-कृत, सम्पादित।

—पर्ण, सं. पुं. (सं.) खर्जूरः, दुरारोहा, यवनेष्टा २. निम्बः, अरिष्टः, तिक्तकः।

चील, सं. स्त्री. (सं. चिल्लः) चिल्ला, आतापिन्, शकुनिः (पुं.), कंठनीडकः, चिरंभण, सत्काण्डः।

—का मूत, मु., दुर्लभ-अप्राप्य,-वस्तु (न.)।

चीवर, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'चीर' (१, २. ४)।

चीस, सं. स्त्री., दे. 'टीस'।

चुंगल, सं. पुं. दे. 'चंगुल'।

चुंगी, सं. स्त्री. (हिं. चुंगल) नगर,-करः-शुल्कः-कं २. किंचिन्मात्रं-अल्पपरिमाणं वस्तु (न.)।

—खाना, सं. पुं., शुल्कशाला।

चुंचुना, सं. पुं., दे. 'चुनचुना'।

चुंधला, सं. पुं. (हिं. चुँधलना) निमेषकः, निमीलकः।

चुंधलाना, क्रि. अ. (हिं. चौ=चार + सं. अंध >) चाकचक्येन अस्पष्टं-मंदं-ईषत् दृश् (भ्वा. प. अ.),-ईक्ष् (भ्वा. आ. से.), नेत्रतेजः प्रतिहन् (कर्म.)।

चुंधा, वि. (हिं. चौ + सं. अंध >) ईषदंध, मंददृष्टि २. चिल्ल, पिल्ल ३. दे. 'चुँधला' ४. क्षुद्रनयन।

चुंधियाना, क्रि. अ., दे. 'चुँधलाना'।

चुंबक, सं. पुं. (सं.) निंसकः, चुंबितृ-निंसितृ [-त्री (स्त्री.)] २. कामुकः, लंपटः ३. धूर्तः ४. चुंबक,-प्रस्तरः-मणिः (पुं.), लोह,-कांतः-चुम्बकः, अयस्कांतः, अयोमणिः।

चुंबन, सं. पुं. (सं. न.) चुम्बः-बा २. निंसनं, अधरपानम्।

चुंबा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चुम्बन'।

चुंबित, वि. (सं.) निंसित, ओष्ठस्पृष्ट २. लालित ३. स्पृष्ट।

चुंबी, वि. (सं. चुंबिन्) चुम्बक, निंसक २. स्पर्शक, स्पर्शिन्। (प्रायः समासांत में; उ. गगनचुम्बी इ.)।

चुकंदर, सं. पुं. (फ़ा.) कन्दभेदः।

चुकता, वि. (हिं. चुकना) समाप्त, निःशेष।

चुकती, सं. स्त्री. (हिं. चुकना) समाप्तिः-अवसितिः (स्त्री.)।

चुकना, क्रि. अ. (सं. च्युत + कृ >) पूर्-समाप् अवसो (कर्म. अवसीयते), अंतं-समाप्तिं गम्, निष्-सं-पद् (दि. आ. अ.)। २. दे. 'चूकना'।

चुकाना, क्रि. स. (हिं. चुकना) ऋणं दा-शुध् (प्रे.) २. (विवादं) प्र,-शम् (प्रे., शमयति), सं-समा-धा (जु. उ. अ.) ३. सं-निष्-पद (प्रे.), संपूर् (चु), अवसो (प्रे., अवसाययति)।

चुकौता, सं. पुं. (हिं. चुकना) ऋण,-परिशोधः-शुद्धिः (स्त्री.) २. सं-समा.-धानं, ३. निर्धारणं-,णा, निश्चयः।

चुक्र, सं. पुं. (सं. न.) तिंतड़ीकं, वृक्षाम्लं, महाम्लं, चुक्रकं २. दे. 'कांजी' ३. अम्लता।

चुगना, क्रि. स. (सं. चयनं) चंच्वा आदा (जु. आ. अ.)-ग्रह् (क्र. प. से.)-भक्ष् (चु.) २. चंच्वा प्रह् (भ्वा. प. अ.)-अभिहन् (अ. प. अ.)। सं. पुं., चंच्वा आदानं-ग्रहणं,-तुंडेन प्रहरणम्।

चुग़लखोर, सं. पुं. (फ़ा) पिशुनः, पृष्ठमांसादः, परोक्षे निंदकः-परिवादपरः, कर्णेजपः।

चुग़लखोरी, सं. स्त्री. (फ़ा) चुग़लखोर) पैशुन्यं, पिशुनता, परोक्ष,-निंदा-परिवादः, उपजापः।

चुग़ली, सं. स्त्री. (फ़ा) दे. 'चुगलखोरी'।

करना या खाना, क्रि. स., परोक्षे-पृष्ठतः निंद् अथवा अप-परि-वद् (दोनों भ्वा. प. से.)-अवि-आ-क्षिप् (तु. प. अ.)।

चुगवाना, क्रि. प्रे., व. 'चुगना' के प्रे. रूप ।

चुगा, चुग्गा, सं. पुं. (हिं. चुगना) खग,-पक्षि,-भक्ष्यं-खाद्यम् ।

चुगाई, सं. स्त्री. (हिं. चुगाना) चंच्वा आदापनं-आग्राहः २. तस्य भृत्या वेतनं वा ।

चुगाना, क्रि. सं., व. 'चुगना' के प्रे. रूप । पक्षिभ्यः अन्नकणान् विकॄ (तु. प. से.) ।

चुचाना, क्रि. अ., दे. 'टपकना' ।

चुटकला, सं. पुं. दे. 'चुटकला' ।

चुटकी, सं. स्त्री. (अनु. चुट चुट) छोटिका, मु(कु)चुटी २. अंगुलीपीडनं ३. चरणांगुलीयकम् ।

—बजाना, मु., छोटिकां कृ अथवा दा ।

—बजाते, मु., आशु, द्राक्, सपदि, सद्यः (सव अव्य.) ।

—भर, मु., अत्यल्पं, किंचिन्मात्रम् ।

—भरना, मु., छोटिकया पीड् (चु.) ।

चुटकियों में उड़ाना, मु., सुकरं-साधारणं-परिहासमिव मन् (दि. आ. अ.) ।

—लेना, मु., अव-उप-हस् (भ्वा. प. से.) ।

चुटकुला, सं. पुं. (हिं. चुटकी) नर्मन् (न.), परिहास-नर्म,-वाक्यं-उक्तिः (स्त्री.)-आलापः-भाषणं २. अमोघ-विशिष्ट,-योगः-कल्पः ।

चुटिया, सं. स्त्री., दे. 'चोटी' ।

चुटीला, चुटैला, } वि. (हिं. चोट) आहत, व्रणित, क्षत ।

चुड़िहारा, सं. पुं. (हिं. चूड़ी) चूड़ाहारः, वलयविक्रयिन् २. चूड़ा-कंकण,-कारः ।

चुड़ैल. सं. स्त्री. (सं. चूड़ा >) पिशाची-चिका, डाकिनी, शाकिनी, भूतभार्या, प्रेतपत्नी, २. कुरूपिणी, जरती, स्थविरा ३. चंडी, कोपनी, क्रूरा (नारी) ।

चुनचुना, सं. पुं. | (हिं. चुनचुनाना) विट्-
चुनचुनी, सं. स्त्री. | उदर,-कृमिः,गुदकीटकः ।

चुनचुनाना, क्रि. अ. (अनु.) तीक्ष्णव्यथां अनुभू, व्यथ् (भ्वा. आ. से.), तप (कर्म.) ।

चुनट-त, } सं. स्त्री. (सं. चून् >) वस्त्र,-भंगः-पुटः-
चुनन, } भंगी-गिः (स्त्री.), ऊर्मिः (स्त्री.) ।

चुनना, क्रि. स. (सं. चुण् तथा चि) (फूलादि) चुण् (तु. प. से.), चि (स्वा. उ. अ.), आदा (जु. आ. अ.), उद्धृ-समाहृ (भ्वा. प. अ.), छिद् (रु. प. अ.) २. पृथक् कृ, उद्ग्रह् (क्र्. प. से.) उद्धृ । ३. वृ. (स्वा. उ. से.), नियुज् (रु. आ. अ.; चु.), निरूप् (चु.), निधृ ४. यथाक्रमं रच् (चु.)-स्था (चु. स्थापयन्ति) ५. अलंकृ, मंड् (चु.) ६. (दीवारादि) निर्मा (जु. आ. अ.; प्रे. निर्मापयति), विरच् (चु.) । सं. पुं., चयनं, उद्धरणं; पृथक्करणं, वरणं, यथास्थानं स्थापनं; अलंकरणं; निर्माणं इ. । दे. 'चुनाई' ।

चुनने योग्य, वि., चेय, समाहार्य; उद्ग्राह्य; वरणीय; स्थाप्य; अलंकार्य; निर्मेय इ. ।

चुनने वाला, सं. पुं., चेतृ, समाहर्तृ, वरितृ, पृथक्कर्तृ इ. (सव पुं.) ।

चुना हुआ, वि., चित, समाहृत; वृत; रचित २. श्रेष्ठ, उत्तम ।

चुनरी, सं. स्त्री. (सं. चूण >) चित्र-शबल-कर्बुर,-वस्त्रम् ।

चुनवाँ, वि. (हिं. चुनना) वृतः, अभीष्ट चित २. उत्तम, श्रेष्ठ ।

चुनवाना, चुनाना, क्रि. प्रे., व. 'चुनना' के प्रे. रूप ।

चुनाई, सं. स्त्री. (हिं. चुनना) दे. 'चुनना' सं. पुं. २. कुड्य-भित्ति,-निर्माणं ३. चयन, वेतनं-भृत्या ।

चुनाव, सं. पुं. (हिं. चुनना) चितिः-समाहृतिः (स्त्री.), उद्ग्राहः, उद्धारः (२) वृतिः-पृथक्कृतिः (स्त्री.), निर्धारणम् ।

चुनावट, सं. स्त्री., दे. 'चुनट' ।

चुनिंदा, वि. (फ़ा. चुनीदा) दे. 'चुनवाँ' ।

चुनौटी, सं. स्त्री. (हिं. चूना) चूर्णपुटः ।

चुनौती, सं. स्त्री. (हिं. चुनना) समर-, आह्वानं, अभिग्रहः २. उत्तेजनं, उद्दीपनं, उत्थापनम् ।

चुन्नट-त-न, सं. स्त्री., दे. 'चुनट' ।

चुन्नी[1], सं. स्त्री. (सं. चूर्ण >)क्षुद्र-, माणिक्यं-पद्मरागः २. रत्न,-खंडः-लवः, रत्नकं ३. अन्न,-कणः-कणिका ४. काष्ठचूर्णम् ।

चुन्नी[2], सं. स्त्री., दे. 'चुनरी' ।

चुप, वि. (सं. चुप्=निःशब्द गमन >) अवाक्, निःशब्द, नीरव, मौनिन्, तूष्णीक, अनालापिन् । सं. स्त्री., नीरवता, दे. 'चुप्पी' २. निस्तब्धता ।

—करना या होना, क्रि. अ., वाचं यम् (भ्वा. प. अ.)-निरुध् (रु. उ. अ.), मौनं आकल् (चु.)-भज् (भ्वा. उ. अ.)।
—रहना, क्रि. अ., मौनं-तूष्णीं-जोषं आस् (अ. आ. से.)-स्था (भ्वा. प. अ.)।
—चाप, क्रि, वि., जोषं, तूष्णीं, निशब्दं, मौनं २. गुप्तं, गूढं, निभृतं, प्रच्छन्नम्।
चुपका, वि. (हिं. चुप) दे. 'चुप' (वि.)।
चुपके से, क्रि. वि., दे. 'चुपचाप'।
चुपकी, सं. स्त्री. (हिं. चुप) दे. 'चुप्पी'।
चुपड़ना, क्रि. स. (अनु. चिपचिप) अंज् (रु. प. से.), उप-, दिह् (ज. प. अ.). लिप् (तु. प. अ.), अनु-आ-वि २. दोषं गुह् (भ्वा. उ. से.)-प्रच्छद् (चु.) ३. दे. 'खुशामद करना'। सं. पुं., अंजनं, उपदेहनं, लेपनम् इ.।
चुपड़ा, वि. (हिं. चुपड़ना) (घृतादिभिः) उपलिप्त, अभ्यक्त, दिग्ध।
चुप्पा, वि. (हिं. चुप) वाचंयम, अल्प-मित,-भाषिन, वाग्यत।
चुप्पी, सं. स्त्री. (हिं. चुप) निःशब्दता, नीरवता, मौनं, तूष्णींभावः २. निःस्तब्धता, निश्चलता, निश्चेष्टता।
चुभकी, सं. स्त्री. दे. 'डुबकी'।
चुभना, क्रि. अ. (अनु.) संलग् (भ्वा. प. से.), संज् (कर्म.), अनु-आ-सं.; सलग्नी-संसक्तीभू, व्यध्-निर्भिद् (कर्म.)।
चुभना, चुभोना, क्रि. स. (हिं. चुभना) व्यध् (दि. प. अ.), निर्भिद् (रु. प. अ.), तुद् (तु. प. अ.), नि-प्र-विश् (प्रे.)। सं. पुं., वेधः-धनं, छेदः-दनं, निर्भेदः-दनम्।
चुभानेवाला, सं. पुं., वेधकः, छेदकः, निर्भेदकः इ.।
चुमकार, सं. स्त्री. (हिं. चूमना + सं. कारः >) चुचुत्कारः, चुंबनध्वनिः (पुं.)।
चुमकारना, क्रि. स. (हिं. चुमकार) सचुचुत्कारं उपलल्-उपच्छंद् (चु.)।
चुरचुरा, वि. दे. 'चुरमुरा'।
चुर(रु)ट, सं. पुं., दे. 'सिगार'।
चुरमुर, सं. पुं. (अनु.) चुरमुरशब्दः।
चुरमुरा, वि. (हिं. चुरमुर) भंगुर, भिदुर, भिदेलिम।
चुरवाना, क्रि. प्रे., (१-२) व. 'चुराना' तथा 'पकाना' के प्रे. रूप।
चुराना, क्रि. स. (सं. चोरणं) चुर्-स्तेन् (चु.), अपहृ (भ्वा. प. अ.), मुष् (क्र्. प. से.) २. गुह् (भ्वा. उ. से.), प्रच्छद् (चु.)। सं. पुं., चोरण, मोषणं, अपहरणं; गूहनं, प्रच्छदनं, दे. 'चोरी'।
चुराने योग्य, वि., चोरयितव्य, मोषणीय।
चुराने वाला, सं. पुं., दे. 'चोर'।
चित्त चुराना, मु., मनो हृ (भ्वा. प. अ.), वि-परि-मुह् (प्रे.)।
चुरि, चुरी, सं. स्त्री. (सं.) कूपकः, खातकः, लघु,-कूपः-अवटः।
चुल, सं. स्त्री., दे. 'खुजली'।
चुलबुल, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'चंचलता'।
चुलबुला, वि. (पूर्व.) दे. 'चंचल' तथा 'नटखट'।
चुलबुलाना, क्रि. अ. (पूर्व.) चपल-चञ्चल (वि.) भू।
चुलबुलापन, सं. पुं. } दे. 'चंचलता'।
चुलबुलाहट, सं. स्त्री. }
चुलाना, क्रि. स., व. 'टपकना' के प्रे. रूप।
चुलाव, सं. पुं., अमांस-निर्मांस,-ओदनः-नम्।
चुल्ली, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चूल्हा' २. चिता।
चुल्लू, सं. पुं. (सं. चुलुकः) चुल्लकः, अंजलिः (पुं.), चलुकः, गंडूषः-षा।
—भर, वि. चुल्लक-चुलुक,-मात्र, अंजलि-गंडूष,-मात्र (जलादि)।
—भर पानी में डूब मरना, मु., अत्यंतं लज्ज् (तु. आ. से.)-त्रप् (भ्वा. आ. वे.)।
चुवाना, क्रि, स., व. 'टपकना' के प्रे रूप।
चुसकी, सं. स्त्री. (हिं. चूसना) गंडूषः, चुलुकः, चुल्लकः २. ईषत्-शनैःशनैः,-पानं ३. तमाखुधूमकर्षः।
चुसनी, सं. स्त्री., दे. 'चूसनी'।
चुसवाना, क्रि. प्रे., } व. 'चूसना' के प्रे. रूप।
चुसाना, क्रि. प्रे. }
चुस्त, वि. (फ़ा.) उद्यमिन्, उद्योगिन्, क्षिप्रकारिन्, स्फूर्तिमत् २. जागरूक, दक्ष ३. आलस्य-शैथिल्य,-शून्य, सुसंहत ३. दृढांग, सबल।
—चालाक, वि., दक्षानलस, चतुरातन्द्र।
चुस्ता, सं. पुं. (फ़ा.) अजमेषशावकानां आमाशयः २. मलाशयः ३. दे. 'सिलवट'।

चुस्ती, सं. स्त्री. (फ़ा. चुस्त) क्षिप्रकारिता, स्फूर्ति (स्त्री.), उद्यमः, उद्योगः १. शैथिल्याभावः, सुसंहतिः (स्त्री.) ३. दृढता, सबलता ।

चुहचुहाना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'चहचहाना' २. रंगवत् दीप् (दि. आ. से.)-प्रकाश् (भ्वा. आ. से.)।

चुहचुही, सं. स्त्री. (अनु.) फुल्लचुही, *चुहचुही, कृष्णचटकाभेदः, फुल्लशिंधिनी ।

चुहल, सं. स्त्री. (अनु. चुहचुह >) हास्यं, परिहासः, विनोदः, कौतुकं, प्रमोदः, विलासः, मनोरंजनम् ।

चुहिया, सं. स्त्री. (हिं. चूहा) गरिका, बालमूषिका, क्षुद्र,-मूषकः-आखुः (पुं.) २. दे. 'चूही' ।

चुहुटना, क्रि. अ., तथा वि. दे. 'चिपकना' तथा 'चिपचिपा' ।

चूँ, सं. पुं. (अनु.) चुंकारः, चुंकृतिः (स्त्री.)।

—चां, सं. पुं.- दे. 'चूँचरा' ।

—करना, मु., किमपि वद् (भ्वा. प. से.) २. विरुद्धं वद् अथवा प्रतिवद् ।

चूँकी, अव्य. (फ़ा.) यत्, यतः, यस्मात्, हि ।

चूँगी, सं. स्त्री., दे. 'चुंगी' ।

चूँचरा, सं. पुं. (फ़ा.) प्रतिवादः. प्रत्याख्यानं, विरोधः २. आपत्तिः (स्त्री.), अपवादः ३. व्याजः, मिषम् ।

चूँचूँ, सं. स्त्री., (अनु.) चुंकारः, चुंकृतिः (स्त्री.), चाटकेरशब्दः २. कलरवः, विरुतं ३. चूँ-चूँ-शब्दः ४. क्रीडनकभेदः ।

चूक[१], सं. स्त्री. (हिं. चूकना) अपराधः, स्खलितं, दोषः, प्रमादः २. मार्गभ्रंशः, व्यतिक्रमः ।

चूक[२], सं. पुं. (सं. चुक्रः) अम्लः २. अम्लद्रव्यभेदः ३. चुक्रकं, चुक्रिका, अम्लशाकभेदः । वि, अत्यम्ल, अतिशुक्त ।

चूकना, क्रि. अ. (सं. च्युत् कृ >) अपराध् (दि., स्व. प. अ.), स्खल् (भ्वा. प. से.), प्रमद् (दि. प. से., प्रमाद्यति) २. लक्ष्यात्-सत्पथात् भ्रंश् (भ्वा. आ. से.)-भ्रश् (दि. प. से.) ३. सदवसरं या (प्रे. यापयति)-अतिवह् (प्रे.)।

चूका, सं. पुं., दे. 'चूक' (३) ।

चूची, सं. स्त्री. (सं. चूचुकं) चूचुकं, चुचूकं, कुचाग्रं, कुचाननं, स्तनवृंतं २. स्तनः, कुचः, पयोधरः ।

—पीना, मु., स्तनं-स्तन्यं पा (भ्वा. प. से.) ।

चूज़ा, सं. पुं. (फ़ा.) कुक्कुटशावः-वकः । वि., अल्पवयस्क ।

चूडांत, सं. पुं. (सं.) चरम,-सीमा-अवधिः (पुं.) अ., अत्यधिकं, अत्यन्तं वि., परम, गाढ, उत्कट ।

चूडा, सं. स्त्री. (सं.) शिखा, जु(जू)टिका, केशपाशी २. मयूरशिखा ३. शिखरं, अग्रं ४. कूप, ५.चूडाकरणसंस्कारः । सं.पुं. (सं.स्त्री.) वलयः-यं, कंकणं २. वलयावली, चूडावली ।

—करण, सं. पुं. (सं. न.) चूडाकर्म-मुंडन,-संस्कारः ।

—मणि, सं. पुं. (सं.) शिरोरत्नं, शीर्षफुल्लम् । २. प्रधानः, अग्रगण्यः ३. गुंजा ।

चूडी, सं. स्त्री. (सं. चूडा) वलयः-यं, करभूषणं, कौशुकम् ।

—दार, वि., (हिं.+फ़ा.) पुटीकृत, वलीयुत, संकुचित ।

चूडियां पहनना, मु., स्त्रीवत् आचर् (भ्वा. प. से.) ।

चूत, सं. पुं. (सं.) रसालः, आम्रः, कोकिलोत्सवः २. (सं. न.) अपानः-नं, गुदं, च्युतिः-बुलिः (स्त्री.) । (हिं.) योनिः (स्त्री.) भगं, नारीगुह्यम् ।

चूतड़, सं. पुं. (सं. चूतं >) नितंबः, कटि(टी)-प्रोथः, स्फिच्-चा (स्त्री.), पूलः, पूलकः, स्थिकः ।

चून, सं. पुं. (सं. चूर्ण) दे. 'आटा' तथा 'चूना' ।

चूनर-री, सं. स्त्री., दे. 'चुनरी' ।

चूना[१], सं. पुं. (सं. चूर्णः-र्णं) चूर्णकम् ।

चूने का पानी, सं. पुं. चूर्णकजलं, चूर्णोदकम् ।

—दानी, सं. स्त्री., चूर्णाधानी, चूर्णपुटकः ।

अनबुझा—, अशान्तचूर्णकम् ।

बुझा—, शान्तचूर्णकम् ।

चूने की भट्ठी, सं. स्त्री., चूर्ण,-आपाकः-पाकपुटी।

चूना[२], क्रि. अ. (सं. च्यवनं) दे. 'टपकना' । वि., सच्छिद्र, स्फुटित, सरंध्र ।

चूनी, सं. स्त्री. (सं. चूर्णिका) धान्य-अन्न,-कणः-णी-णिका २. रत्न-मणि,-कणः-कणिका ।

चूमना, क्रि स. (सं. चुंबनं) (मुख) चुंब् (भ्वा. प. से.), निंस् (अ. आ. से.) २. ओष्ठा-

भ्यां स्पृश् (तु. प. अ.) ३. (ओठ) अधरं-अधररसं पा (भ्वा. प. अ.) ४. (सिर) शिरः आ-उपा-समा-घ्रा (भ्वा. प. अ.)। सं. पुं., चुंबनं, निंसनं, अधरपानं, शीर्षाघ्राणम्।

चूमने योग्य, वि., चुंबनीय, निसितव्य।

चूमने वाला, सं. पुं., चुंबकः, चुंबिन्, निंसकः, निंसितृ (पुं.)।

चूमा हुआ, वि. दे. 'चुम्बित।

—चाटना, मु., उप-,लल् (चु.) चुंब्।

चूमा, सं. पुं., चुंबनं, चुंबः-बा।

—चाटी, सं. स्त्री., विलासः, विहारः, क्रीडा।

चूर, सं. पुं. (सं. चूर्णः-र्णं) क्षोदः, पिष्टं, रजस् (न.), कणाः-कणिकाः-अणवः-लवाः (बहु.)। वि., मग्न-,लीन,-परायण, अभिनि-नि,-विष्ट २. मत्त, क्षीव, मदोन्मत्त ३. श्रांत, खिन्न, क्लांत।

—चूर, वि., चूर्णित, पिष्ट, क्षुण्ण।

चूरन, सं. पुं. (सं. चूर्णः-र्णं) दे. 'चूर्ण' २. चूर्णं, अग्निवर्द्धक-पाचक,-चूर्णम्।

चूरमा, सं. पुं. (सं. चूर्णः-र्णं) मिष्टान्नभेदः, मिष्टचूर्णः।

चूरा, सं. पुं. (सं. चूर्णः-र्णं) क्षोदः, पिष्टं। दे. 'चूर' (सं. पुं.)।

—करना, क्रि. सं., चूर्ण् (चु.), चूर्णीकृ, पिष् क्षुद् (रु. प. अ.)।

चूर्ण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) क्षोदः, पिष्टं २. दे. 'चूरन' ३. रजस् (न.), धूलिः (स्त्री.)।

—कुंतल, सं. पुं. (सं.) अलकः, कुरलः।

चूर्णक, सं. पुं. (सं.) भृष्टपिष्टान्नम् २. सक्तुकः, भृष्टयवचूर्णम्। (सं. न.) सुगन्धि-सुगन्धित,-चूर्णम् २. कटुवर्णरहितम् अल्पसमासयुक्तं गद्यम्।

—चूर्णन सं. पुं. (सं. न.) पेषणं, मर्दनं, खंडनम्।

चूर्णित, वि. (सं.) पिष्ट, क्षुण्ण, चूर्णीभूत।

चूल[१], सं. पुं. (सं. चूलः) केशः, शिखा।

चूल[२], सं. स्त्री. (देश.) विवर्तनकीलः २. काष्ठाग्रम्।

चूलें ढीली होना, मु., अत्यंतं क्लम्-आयस्-(भ्वा. दि. प. से.)-खिद् (दि. आ. अ.)-श्रम् (दि. प. से.)।

चूल्हा, सं. पुं. / **चूल्ही**, सं. स्त्री. } [सं. -चुल्ली-ल्लिः (स्त्री.)] अंति(दि)का, अधिश्रयणी, उद्धानं, उध्मानं, अश्मंतं, अश्मंतकः-कम्।

चूसना, क्रि. स. (सं. चूषणं) आ-, चूष (भ्वा. प. से.), पा (भ्वा. प. अ.) २. उच्छुष् (प्रे.), आ-नी-पा (भ्वा. प. अ.)। सं. पुं., चोषणं, चोषः, उच्छोषणम्।

चूसने योग्य, वि., चूष्य, चोष्य, उच्छोष्य।

चूसनी, सं. स्त्री. (हिं चूसना) चोषणी, क्रीडनकभेदः २. चूचुकवती काचकूपी २. चोषणयष्टिः (स्त्री.)।

चूहड़ा, सं. पुं., दे. 'भंगी'।

चूहड़ी, सं. स्त्री., दे. 'भंगन'।

चूहा, सं. पुं. (अनु. चू) आखुः-उंद(दु)रुः (पुं.), खनकः, बिलेशयः, मूष(षि, षी)कः, मूषः, मूषिकारः।

—दन्ती, सं. स्त्री., कंकणभेदः, *मूषदंती।

—दान,—दानी, सं. पुं., सं. स्त्री., मूषपिंजरं, मूषकपंजरः-रम्।

—मार, सं. पुं., मूषमारः ५. श्येनः, खगांतकः।

चूही, सं. स्त्री. (हिं. चूहा) मूषा, मूषिका। २. दे. 'चुहिया'।

चेंचला, सं. पुं. (अनु. चेंचें) पक्षिशावः-वकः।

चें-चें, सं. स्त्री., दे. (अनु.) चुंकारः, चुंकृतिः (स्त्री.) २. प्र-,जल्पः-जल्पितम्।

चेंबर, सं. पुं. (अं.) कोष्ठः, कक्षा, शाला २. सभागृहम् २. परिषद् (स्त्री.)।

चेयर, सं. स्त्री. (अं.) दे. 'कुर्सी'।

—मेन-मैन, सं. पुं. (अं.) प्रधानः, सभा,-पतिः-अध्यक्षः।

चेक, सं. पुं. (अं.) देयादेशः २. दे. 'चारख़ाना'।

चेचक, सं. स्त्री. (फ़ा.) मसूरी-रिका, वसंतरोगः, शीतला-ली।

चेट, सं. पुं. (सं.) दासः, सेवकः २, पतिः, भर्तृ। २. भंडः. विदूषकः।

चेटक, सं. सं. (सं.) चेटः, दासः २. जारः, उपपतिः ३. इन्द्रजालं, माया २. संदेशहरः, दूतः ५. दे. 'चसका'।

चेटी, सं. स्त्री. (सं.) दासी, सेविका, परिचारिका।

चेत, सं. पुं. [सं. चेतस् (न.)] चेतना, चैतन्यं, संज्ञावेदनं २. ज्ञानं, बोधः ३. अवधानं, सावधानता ४. स्मरणं, स्मृतिः (स्त्री.) ५. चित्तम्।

चेतन, सं. पुं. (सं.) आत्मन् (पुं.), जीवः २. मनुष्यः ३. प्राणिन् , जीवधारिन् ४. परमेश्वरः ५. मनस् (न.), चित्तम् । वि., चेतनावत्, चेतोमत्, प्राण,-धारिन्-भृत्, जीविन्, सजीव ।

चेतनता, सं. स्त्री., (सं.) सजीवता, चेतोमत्ता, दे. 'चेतना' ।

चेतना, सं. स्त्री. (सं.) संज्ञा, चैतन्यं २. ज्ञानं, बोधः ३. स्मृतिः (स्त्री.) ४. मनोवृत्तिः (स्त्री.) । क्रि. अ., संज्ञां-चेतनां लभ् (भ्वा. आ. अ.) आ-प्रति-पद् (दि. आ. अ.), प्रकृतिं आपद्, प्रकृतिस्थ (वि.) भू २. सावधान-अवहित (वि.) भू ।

चेतावनी, सं. स्त्री. (हिं चेतना) प्राक्-पूर्व-, सूचना-प्रतिबोधः- उपदेशः ।

चेप, सं. पुं. (अनु. चिपचिप) निर्यासः, रसः २. श्यान-सांद्र,-वस्तु (न.) ३. दूष्यं, पूयः-यं, पूयरक्तं, कुणपम् ।

—दार, वि. (हिं. + फ़ा.) निर्यासमय [-यी (स्त्री.)] २. श्यान, सांद्र ३. सपूय ।

चेला, सं. पु (सं. चेटकः >) शिष्यः, अन्तेवासिन्, छात्रः, विद्यार्थिन् २. अनुयायिन् ।

—मूँड़ना, मु., उपनी (भ्वा. प. अ.), दीक्ष् (भ्वा. आ. से.) दीक्षां दा (जु. उ. अ.) ।

चेलिन, चेली, सं. स्त्री. (हिं. चेला) शिष्या, अन्तेवासिनी, छात्रा, विद्यार्थिनी २. अनुयायिनी ।

चेष्टा, सं. स्त्री. (सं.) कायिकव्यापारः, चेष्टितं, हस्तादिचालनं, इंगितं, अंगविक्षेपः २. उद्योगः, प्रयत्नः ३. कार्यं, कर्मन् (न.) ४. परिश्रमः ।

चेस, सं. पुं. (अं.) दे. 'शतरंज' ।

चेहरा, सं. पुं. (फ़ा.) आननं, मुखं, वदनं २. पुरो-अग्र,-भागः ३. कपट-छद्म,-मुखं-वदनम् ।

—मोहरा, सं. पुं., आकारः, आकृतिः (स्त्री.), रूपम् ।

—उतरना, मु., मुख-वदन,-मलानिः (स्त्री.)-म्लानता-कान्तिक्षयः-विवर्णता ।

—बिगाड़ना, मु., अत्यधिकं तड् (चु.)-प्रहृ (भ्वा. प. अ.) ।

—(रे) पर हवाइयाँ उड़ना, मु. भयादिभिः वैवर्ण्यं-विवर्णता ।

चैक, सं. पुं., दे. 'चेक' ।

चैत, सं. पुं. (सं. चैत्रः) चैत्र(त्रि)कः, चैत्रिः (पुं.). चैत्रिन्, मधुः (पुं.) २. चैत्रशस्यम् ।

चैतन्य, सं. पुं. (सं. न.) आत्मन् (पुं.), जीवात्मन् २. ज्ञानं, बोधः ३. परमेश्वरः ४. प्रकृतिः (स्त्री.) । वि., चेतनावत्, सजीव ५. सावधान, अवहित ।

चैत्य, सं. पुं. (सं. न.) गृहं, भवनं, सद्मन् (न.) २. मंदिरं ३. यज्ञशाला । (सं. पुं.) बुद्धः २. बुद्धमूर्तिः (स्त्री.) ३. अश्वत्थवृक्षः ४. बौद्धभिक्षुः (पुं.) ५. भिक्षुविहारः ।

चैत्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'चैत' २. बौद्धभिक्षुकः ३. यज्ञभूमिः (स्त्री.) ४. मंदिरम् । वि., चित्रा,-संबंधिन्-विषयकः ।

चैन, सं. पुं. (सं. शयनं >) सुखं, सौख्यं, सुस्थता, आनंदः, मोदः, विश्रामः, निर्वृतिः (स्त्री.) ।

—उड़ाना या करना, मु, सानंदं-सुखं जीव् (भ्वा. प. से.), मुद् (भ्वा. आ. से.), नंद् (भ्वा. प. से.) ।

—पड़ना, मु., सुखं-निर्वृतिं लभ् (भ्वा. आ. अ.) ।

चोंच, सं. स्त्री. [सं. चंचु-चूः (स्त्री.)] त्रोटी-टिः (स्त्री.), तुंडं, चंचुका, सृपाटिका । २. मुखम् ।

चोंचला, सं. पुं., दे. 'चोचला' ।

चोआ, सं. पुं. (हिं. चुआना) गंधः, गांधिकं, गंधद्रव्यम् ।

चोकर, सं. पुं. (हिं. चून = आटा + कराई = छिलका) कडंगरः, तुषः, धान्यत्वच् (स्त्री.), बुसम् ।

चोखा, वि. (सं. चोक्ष) शुद्ध, केवल, पवित्र २. शुचि-शुद्धात्मन् ३. तीक्ष्ण, निशित ४. दे. 'भरता' ५. उत्कृष्ट, उत्तम ।

चोगा, सं. पुं. (हिं. चुगना) खगखाद्यं, पक्षिभक्ष्यं, विहगाशनम् ।

चोग़ा, सं. पुं. (तु.) कंचुकः, प्रावारः-रकः ।

चोचला, सं. पुं. (हिं. चोंच) विभ्रमः, विलासः, ललिताभिनयः, लीला, हावः ।

चोज, सं. पुं. (हिं. चोंच) सुभाषितं, वैदग्ध्यं, नर्मालापः २. हास्यं, परिहासः ।

चोट, सं. स्त्री. (सं. चुट् = काटना >) अभि-आ-निर्,-घातः, प्रहारः, आहतिः (स्त्री.), ताडनं पातः । २. व्रणः-णं, क्षतं ३. हानिः-क्षतिः

(स्त्री.) ४. वेदना, मनोव्यथा ५. विश्रंभ-विश्वास,-घातः-भंगः ६. संव्यग्यो विवादः।
—करना, क्रि. सं., प्रहृ (भ्वा. प. अ.), क्षि (स्वा. प. अ.), तुद् (तु. प अ.) आहन् (अ. प. अ.)।
—खाना, क्रि. अ., आहन्-प्रहृ-तुद् (कर्म.)।
—पर चोट, मु., सतताघाताः, प्रहारपरंपरा, २. कष्ट-विपत्,-परंपरा।
चोटा, सं. पुं. (हिं. चोआ) मत्स्यंडीरसः।
चोटी, सं. स्त्री. (सं. चूडा) जु(जू)टिका, शिखा, शिखंडः-डकः २. शिखरं, शृंगं, सानु (पुं., न.), अग्रं शिखा, मूर्धन् (पुं.) ३. शिखंडः, शेखरः ४. वेणीबंधनसूत्रं ५. वेणी, रज्जुः (स्त्री.)।
—का, मु., अग्र्य, अग्रगण्य, उत्तम, श्रेष्ठ।
चोटीदार, वि. (हिं.+फ़ा.) शिखावत्, सानुमत् २. सूच्याकार, शंकाकृति।
चोट्टा, सं. पुं., दे. 'चोर'।
चोब, सं. स्त्री. (फ़ा.) पटमंडप,-स्थाणुः-स्थूणा २. यष्टिः (स्त्री.), दंडः।
—चीनी, सं. स्त्री., काष्ठौषधभेदः।
—दार, सं. पुं. (फ़ा.) वेत्र-दंड-यष्टि-धरः-पाणिः (पुं.)-हस्तः २. दौवारिकः,-दंडपांशुलः ३. रक्षा-दंड,-पुरुषः।
चोया, सं. पुं., दे. 'चोआ'।
चोर, सं. पुं. (सं.) चौरः, कुंभीर(ल)कः, कुंभीलः, ऐकागारिकः, तस्करः, दस्युः, प(पा)टच्चरः, परास्कंदिः (पुं.), मोषकः, स्तेनः।
—खिड़की, सं. स्त्री., पक्षद्वारं, पक्षकम्।
—चकार, सं. पुं., दे. 'चोर'।
दरवाज़ा, सं. पुं., प्रच्छन्न-अंतर-गुप्त-गुढ,-द्वारम्।
—सीढ़ी, सं. स्त्री., उप-प्रच्छन्न-गूढ,-सोपानम्।
चोरटा, सं. पुं., दे. 'चोर' (चोरटी, स्त्री.)।
चोरी, सं. स्त्री. (हिं. चोर), मोषणं, अपहरणं २. चौर्यं, चो(चौ)रिका, चोरणं, स्तेयं स्तैन्यं, मोषः।
—करना, क्रि. स., दे. 'चुराना'।
—का माल, सं. पुं., चोरित-अपहृत-लुंठित,-द्रव्यम्।
—चोरी, क्रि. वि., अप्रकाशं, निभृतं, रहसि (सब अव्य.)।
—यारी, सं. स्त्री., निंदितकर्मन् (न.), पापम्।
—से, क्रि. वि., अलक्षितं, प्रच्छन्नम्।
चोल, सं. पुं. (सं.) दक्षिणपथे प्रांतविशेषः, चोलाः २. तत्रत्यः जनः ३. ४. दे. 'चोला', 'चोली' ५. कवचं ६. वल्कलम्।
चोला, सं. पुं. (सं. चोलः) लंब,-कुर्पासकं-युतकं २. दे. 'चोली' ३. कंचुकः, प्रावारः-रकः ४. तांबूलकरंकः ५. शरीरम्।
—छोड़ना, मु., तनुं त्यज् (भ्वा. प. अ.)।
—बदलना, मु., देहांतरं प्राप् (स्वा. उ. अ.), प्रेत्य भू।
चोली, सं. स्त्री. (सं.) चोलकः, चोडः-डी, कं(कु)चुली-लिका, कंचूकः, कुर्पासकः-कम्। २. दे. 'चोला' (१)।
—दामन का साथ, मु., प्रगाढ़,-सख्यं-सौहार्दं-मित्रता-प्रणयः।
चोषण, सं. पुं. (सं. न.) चूषणं, चूषा, चोषः २. स्तन-स्तन्य-क्षीर,-पानम्।
चोष्य, वि. (सं.) चूषणीय, चूष्य।
चौंक, सं. स्त्री. (हिं. चौ + सं. कंप), (आकस्मिक-) कंपः-पनं, साध्वसोत्कंपः, सहसा स्फुरणम्।
—उठना या पड़ना, क्रि. अ., सहसा कंप्-स्पंद् (भ्वा. आ. से.)-स्फुर् (तु. प. से.)।
चौंकना, क्रि. अ. (हिं. चौंक) दे. 'चौंक उठना' २. सहसा अवबुध् (दि. आ. अ.)-जागृ (अ. प. से.) ३. वि-स्मि (भ्वा. आ. अ.)-आश्चर्यचकित (वि.) भू।
चौंकाना, क्रि. स., ब. 'चौंकना' के प्रे. रूप।
चौंतरा, सं. पुं., दे. 'चबूतरा'।
चौंतीस, वि. (सं. चतुस्त्रिंशत्) सं. पुं., उक्ता-संख्या, तद्बोधकांकौ (३४) च।
चौंती(ति)सवाँ, वि., (हिं. चौंतीस) चतुस्त्रिंशत्तमः-मी-मं, चतुस्त्रिंशः-शी-शम्।
चौंध, सं. स्त्री., दे. 'चकाचौंध'।
चौंधियाना, क्रि. अ., दे. 'चुँधलाना'।
चौंर, सं. पुं. (सं. चामरं) चमरम्।
चौंरी, सं. स्त्री. (हिं. चौंर) अवचूलकः-कं रोमगुच्छः २. दे. 'चमरी'।
चौंसठ, वि. (सं. चतुःषष्टिः स्त्री.) सं. पुं., उक्ता संख्या, तद्बोधकांकौ (६४) च।
चौंसठवाँ, वि. (हिं. चौंसठ) चतुःषष्टितमः-मी-मं, चतुष्षष्टः-ष्टी-ष्टं (पुं. स्त्री. न.)।

चौ—, वि. (सं. चतुर्-) केवल समास के आदि में।

—कोना—कोर, वि., दे. 'चारकोना'।

—खूँट, सं. पुं., चतुर्दिशं, दिक्चतुष्टयं-यी २. भूमंडलं, पृथिवी। क्रि. वि., दे. 'चारों तरफ'।

—खूँटा, वि., दे. 'चारकोना'।

—गिर्द, क्रि. वि., दे. 'चारों तरफ'।

—गुना, वि., चतुर्गुणः-णा-णं, चतुर्गुणितः-ता-तम्।

—पर्त, वि., चतुष्पुट, चतुर्,-आवृत्त-आवर्तित।

—पहल, वि., चतुर्भुज, चतुष्पार्श्व, चतुर्बाहु।

—पहिया, वि., चतुश्चक्र। सं. स्त्री., चतुश्चक्रं वाहनम्।

—मासा, सं. पुं., चतुर्मासं, वर्षाः (स्त्री. बहु.), प्रावृष् (स्त्री.)।

—मुखा, वि., चतुर्मुख, चतुरानन। सं. पुं., ब्रह्मन् (पुं.)।

—राहा सं. पुं., चतुष्पथः-थं, चतुष्कम्।

—हद्दी, सं. स्त्री., सीमाचतुष्टयं-यी।

चौक, सं. पुं. (सं. चतुष्कं) प्रवणः, चतुष्पथः-थं, शृंगाटकं, संस्थानं। २. मुख्य-प्रधान,-आपणः-निगमः-हट्टः ३. अजिरं, अंगनं-णं, चत्वरः-रं ४. चतुरस्रवेदिः(स्त्री.) ५. पुरोवर्तिदंतचतुष्टयम्।

चौकड़ी, सं. स्त्री. (हिं. चौ=चार+सं. कला =अंग >) प्लुतं-तिः (स्त्री.), वल्गनम्। २. नरचतुष्टयं-यी ३. चतुरश्वं वाहनम्।

—भरना, क्रि. अ., वल्ग् (भ्वा. प. से.), उत्प्लु (भ्वा. आ. अ.)।

चंडाल—, सं. स्त्री., चंडाल-दुष्ट,-चतुष्टयी, धूर्त,-मंडलं-मंडली।

भूलना, मु., किंकर्तव्यविमूढ (वि.), जन् (दि. आ. से.), आकुली भू।

चौकन्ना, वि. (हिं. चौ=चार+सं. कर्णः >) अवहित, सावधान, जागरूक, प्रमादशून्य।

—रहना, क्रि. अ., अवहित-जागरूक (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.)।

चौकस, वि. (हिं. चौ=चार+कस=कसा हुआ >) दे. 'चौकन्ना' २. उद्यमिन्, उद्योगिन् ३. यथार्थ, यथातथ।

—रहना, क्रि. अ., सावधान-अप्रमत्त (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.)।

चौकसी, सं. स्त्री. (हिं. चौकस) जागरूकता, सावधानता, दक्षता।

चौका, सं. पुं. (सं. चतुष्कं) चतुष्टयं, वस्तु-चतुष्टयी २. पाक,-शाला-गृहं, महानसं, रसवती ३. भोजन,-शाला-गृहं-अगारं ४. अग्रथं दंतचतुष्टयं ५. अंगनं-णं ६. चतुरस्रशिला ७. शीर्षफुल्लं (गहना)।

चौकी, सं. स्त्री. (सं. चतुष्की >) आसनं, चरण-पाद,-पीठः-पीठं, *चतुष्की २. दे. 'कुर्सी' ३. निवेशस्थानं, दे. 'पड़ाव' ४. हविस् (न.) ५. रक्षिनिवासः, प्रहरिशाला ६. ग्रैवेयकं, कंठाभूषणभेदः ७ जागरूकत्वं, सावधानता।

—देना, क्रि. अ., आसंद्यां उपविश् (प्रे.) २. रक्ष् (भ्वा. प. से.)।

—दार, सं. पुं. (हिं.+फ़ा.) गृह,-पः-पालः, प्रहरिन्, रक्षकः २. वैतालिकः, वैबोधिकः।

—दारी, सं. स्त्री., रक्षा, गुप्तिः (स्त्री.), अवेक्षणं, प्रहरित्वं २. रक्षा-प्रहरित्व,-वेतनं-शुल्कम्।

चौखट, सं. स्त्री. (हिं. चौ=चार+काठ >), *कपाटलवनं, चतुष्काष्ठं २. देहली-लिः (स्त्री.), द्वारापिंडी, गृहावग्रहणी ३. द्वारम्।

चौखटा, सं. पुं. (हिं. चौखट) *चतुष्काष्ठकः, *चित्र-दर्पण,-परिवेष्टनं-वलनम्।

चौगान, सं. पुं. (फ़ा.) पतन्नामकः खेलाभेदः २. सादिदण्डक्रीडाक्षेत्रम्।

चौड़ा, वि. (हिं. चौ+पाट) उरु, परिणाह-वत् [-ती (स्त्री.)], पृथु, विशाल, विस्तृत, वितत, विस्तीर्ण।

—करना, क्रि. स., प्र-वि-, तन् (त. उ. से.), प्रसृ (प्रे.), विस्तॄ (क्र्. उ. से. था प्रे.), प्रथ् (चु.)।

चौड़ाई, चौड़ान, सं. स्त्री. (हिं. चौड़ा) तर्यक्ता-त्वं, विस्तारः, विशालता, पृथुता, पार्थवं, परिणाहः, विस्तीर्णता।

चौतरा, सं. पुं., दे. 'चबूतरा'।

चौताला, वि., (हिं. चौ+सं. तालः >) चतुस्ताल। सं. पुं., होलिकागीतिः (स्त्री.) २. चतुस्तालः।

चौथ, सं. स्त्री. (सं. चतुर्थी) शुक्ला चतुर्थी २. कृष्णा चतुर्थी ३. चतुर्थांशः ४. करभेदः।

चौथा, वि. (सं. चतुर्थ) तुर्य, तुरीय । सं. पुं., चतुर्थकः, मृतकरीतिभेदः ।

चौथाई, सं. स्त्री. (हिं. चौथा) चतुर्थ-तुर्य-तुरीयां, अंशः-भागः,पादः, तुर्य, तुरीयं,चतुर्थम् ।

चौथिया, (हिं. चौथ) चतुर्थकज्वरः २. चतुर्थांशाधिकारिन् ।

चौथी, वि. स्त्री. (सं. चतुर्थी) तुर्या, तुरीया । सं. स्त्री., वैवाहिकरीतिभेदः, *चतुर्थी ।

चौथे, क्रि. वि. (हिं. चौथा) चतुर्थस्थाने ।

चौदस, सं. स्त्री. (सं. चतुर्दशी) १. २. शुक्ल-कृष्ण,-चतुर्दशी ।

चौदह, वि. (सं. चतुर्दशन्) सं. पुं., उक्ता संख्या, तद्बोधकांकौ (१४) च ।

चौदहवाँ, वि. (हिं. चौदह) चतुर्दशः:-शी शम् ।

चौधराई, सं. स्त्री. (हिं. चौधरी) मुख्यत्वं, नेतृत्वं प्रधानत्वम् ।

चौधरानी, सं. स्त्री. (हिं. चौधरी) मुख्या, प्रधाना, नेत्री ।

चौधरी, सं. पुं. (सं. चतुर्धुरीणः > अथवा सं. चतुरः=तकिया + धारिन् >) अग्रणीः (पुं.), नायकः, पुरोगः, धुरीणः ।

चौपई, सं. स्त्री. (सं. चतुष्पदी) छन्दोभेदः ।

चौपट[1], वि. (हिं. चौ = चार + पट=किवाड़ा) अरक्षित, आवरण-आच्छादन,-हीन, प्रकट, अपावृत ।

चौपट[2], वि. (हिं. चौ = चार + सं. पाटः चौड़ाई) नष्ट, वि-, ध्वस्त, क्षीण, उच्छिन्न, नाशित ।

—**करना,** क्रि. स., उच्छिद् (रु. प. अ.), विध्वंस्-नाश् (प्रे.), उत्सद् (प्रे.) ।

चौपड़, सं. स्त्री. (सं. चतुष्पटः-टं >) चतुष्पटं, अक्षक्रीडाभेदः २. तस्य पटः अक्षाः च ।

चौपाई, सं. स्त्री. (सं. चतुष्पादी >) छंदोभेदः ।

चौपाड़, सं. पुं., दे. 'चौपाल' ।

चौपाया, सं. पुं. (सं. चतुष्पादः) चतुष्पदः, चतुष्पाद् (पुं.) २. पशुः (पुं.) ।

चौपार-ल, सं. पुं. (हिं. चौवार-रा) गोष्ठी-सभा,-गृहं, आस्थानं-नी ।

चौबच्चा, सं. पुं, दे. 'चहबच्चा' ।

चौबा, सं. पुं. (सं. चतुर्वेदः) ब्राह्मणजातिभेदः २. मथुरावासी पुरोहितः ।

चौबाइन, सं. स्त्री. (हिं. चौबा) चतुर्वेद,-भार्या-पत्नी ।

चौबारा,[1] सं. पुं. (हिं. चौ + बार = द्वार) अट्टः, अट्टालः, चंद्रशाला, शिरोगृहं, चूला । २. दे. 'चौपार' ।

चौबारा,[2] क्रि. वि. (हिं. चौ + वारः—वार) चतुर्थवारम् ।

चौबीस, वि. [सं. चतुर्विंशतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या तदंकौ (२४) च ।

चौबीसवाँ, वि. (हिं. चौबीस) चतुर्विंशतितमः-मी-मं, चतुर्विंशः-शी-शम् ।

चौबे, सं. पुं.- दे. 'चौबा' ।

चौबोला, सं. पुं. (हिं. चौ + बोल) मात्रिक-छन्दोभेदः ।

चौभड़, सं. पुं., (हिं. चौ—दाढ़) चर्वण-दन्तः, दंष्ट्रा, दाढ़ा ।

चौमंजिला, वि. (हिं. चौ—फ़ा. मंजिल) चतुर्भूमिक ।

चौमुहानी, सं. स्त्री., दे. 'चौक' (१) ।

चौर, सं. पुं. (सं.) दे. 'चोर' ।

चौरस, वि. (हिं. चौ + (एक) रस—तुल्य) सम, समस्थ, समरेख, सपाट २. चतुर्भुज, वर्गाकार ।

चौरा, सं. पुं., दे. 'चबूतरा' ।

चौरानवे, वि. [सं. चतुर्नवतिः (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं., उक्ता संख्या तदंकौ (९४) च ।

चौरासी, वि. [सं. चतुरशीतिः (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (८४) च । सं. स्त्री., चतुरशीतिलक्षयोनयः (बहु.) ।

चौरेठा, सं. पुं. ह (हिं. चावल + पीढा) पिष्ट-चूर्णित,-तंडुलः-धान्यास्थि (न.) ।

चौर्य, सं. पुं. (सं. न.) स्तेयं, स्तैन्यं, चोरिका, चोरणम् ।

—**रत,** सं. पुं. (सं. न.) गुप्त,-मैथुनं-रतिः (स्त्री.) ।

चौलकर्म, सं. पुं. (सं.-र्मन् न.) चौडं, चौलं, मुण्डन-चूडाकरण,-संस्कारः ।

चौलड़ा, वि. (हिं. चौ + लड़) चतुःसूत्र, चतुर्गुण (हार इ.) ।

चौला, सं. पुं., दे. 'लोबिया' ।

चौला(रा)ई, सं. स्त्री., तंडुलीयः,सु-पथ्य,-शाकः, बहुवीर्यः, मेघनादः ।

चौवन, वि. [सं. चतुःपंचाशत् (नित्य स्त्री.)]। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (५४) च।

चौसठ, वि. [सं. चतुःषष्टिः (नित्य स्त्री.)]। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (६४) च।

चौसर, सं. पुं. (सं. चतुस्सारिः) दे. 'चौपड़'।

चौहट्टा, सं. पुं. (हिं. चौ+सं. हट्टः) दे. 'चौक' (१-२)।

चौहत्तर, वि. [सं. चतुःसप्ततिः (नित्य स्त्री.)]। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (७४) च।

चौहरा, वि. (हिं. चौ) चतुर्गुण-णित २. चतुष्पुट, चतुरावृत्त, चतुरावर्तित।

च्यवन, सं. पुं. (सं.) ऋषिविशेषः। (सं. न.) क्षरणं, स्रवणम्।

—प्राश, सं. पुं. (सं.) अवलेहभेदः (आयुर्वेद)।

च्युत, वि. (सं.) स्रुत, क्षरित २. पतित, भ्रष्ट ३. विमुख, पराङ्मुख ४. पदभ्रष्ट, अधिकारभ्रष्ट।

च्युति, सं. स्त्री. (सं.) पतनं, स्खलनं २. अधिकारभ्रंशः, पदहानिः (स्त्री.) ३. दोषः, स्खलितम्।

छ

छ, देवनागरीवर्णमालायाः सप्तमो व्यंजनवर्णः, चकारः।

छंगा, छंगुरा, वि. (हिं. छः+अंगुरी) षडंगुल, षडंगुरि।

छँगुलिया, छँगुली, सं. स्त्री., दे. 'छिगुनी'।

छँटना, क्रि. अ. (हिं. छाँटना) वृ-उद्ग्रह्-चि-उद्ग्रह (कर्म.), २. चट्-छिद् (कर्म.) ३. अप-इ (अ. प. अ.), पृथग् भू ४. क्षि-विशॄ (कर्म.), कृशी भू।

छँटा हुआ, मु., धूर्त, चतुर, दक्ष, निपुण।

छँटवाना, क्रि. प्रे., व. 'छाँटना' के प्रे. रूप।

छँटाई, सं. स्त्री. (हिं. छाँटना) वरणं, उद्ग्रहणं, चयनं २. अवच्छेदः, निकृन्तनं ३. पृथक्करणं ४. अवच्छेदन-पृथक्करण,-वेतनं-भृतिः (स्त्री.)।

छन्द, सं. पुं. [सं. छंदस् (न.)] वृत्तं २. वेदः, श्रुतिः (स्त्री.) ३. छंदःशास्त्रं ४. अभिलाषः, कामना ५. स्वच्छंदता, स्वैरिता ६. कपटं, छलं ७. युक्तिः (स्त्री.), उपायः ८. अभिप्रायः ९. पद्यं, श्लोकः।

—शास्त्र, सं. पुं., छंदःशास्त्रं, वृत्तविज्ञानम्।

छ, छः, वि. [सं. षट् (त्रि.)]। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकः (६) च।

छई, सं. स्त्री., दे. 'क्षयी'।

छकड़ा, सं. पुं. (सं. शकटः-टं) प्रवहणं, यानं, वाहनं, शकटिका २. वृषभवाहनं, बलीवर्दशकटं, गन्त्री।

छकना[1], क्रि. अ. (सं. चकनं) चक् (भ्वा. उ. से.), तुष् (दि. प. अ.), परि-सं-तृप् (दि. प. अ.) २. क्षीव् (भ्वा. दि. प. से.), मद् (दि. प. से., माद्यति)।

छकना[2] क्रि. अ. (सं. चक्रं>) विस्मि (भ्वा. आ. अ.), चकित-विस्मित (वि.) भू २. वंच्-प्रतार् (कर्म.)।

छकाछक, वि. (हिं. छकना) तृप्त, तुष्ट २. परिपूर्ण ३. क्षीब, मत्त।

छकाना, क्रि, स., व. 'छकना' (१, २.) के प्रे. रूप।

छक्का, सं. पुं. (सं. षट्कं) विंदुषट्कयुतं क्रीडापत्रं २. षड्वस्तुसमूहः ३-४. अक्ष-कपर्द,-भेदः ५. द्यूतं, अक्षक्रीडा, देवनं ६. संज्ञा, चैतन्यम्।

—पंजा, मु., कूटोपायाः, कपटप्रबन्धाः।

—पंजा करना, मु. प्रतॄ (प्रे.), वंच् (चु.)।

छक्के छूटना, मु., धैर्यं मुच् (तु. उ. अ.), अधीर-भग्नोत्साह (वि.) भू।

छगड़ा, सं. पुं. (सं. छागलः) अजः, शुभः।

छगन, सं. पुं. (सं. छगट>) शिशुः, स्तनंधयः।

—मगन, सं. पुं. (बहु.) स्तनन्धयाः, शिशवः (दोनों बहु.)।

छगुनी, सं. स्त्री., दे. 'छिगुनी'।

छछुन्दर, सं. स्त्री. (सं. छुछुन्दरः-री) गंधमुखी, दिवांधिका, दीर्घतुंडी २. अग्निक्रीडनकभेदः।

छजना, क्रि. अ., दे. 'फबना'।

छज्जा, सं. पुं. (हिं. छाजन) नीध्रं, पटलप्रांतः पटं, चालं, नीव्रं, वलीकः-कं २. प्रग्रीवः, वरंडः, वितर्दी-र्दिः (स्त्री.)।

छटपटाना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'तड़फड़ाना' २. अनिर्वृत-अशांत-व्याकुल (वि.) भू ३. अत्यंतं अभिलष् (भ्वा. उ. से.)।

छटपटी, सं. स्त्री. (हिं. छटपटाना) अधीरता, आकुलता २. लालसा, तीव्रोत्कंठा।

छटाँक, सं. स्त्री. (सं. षट्टंक) सेटक-सेर,-षोडशांशः।

छटा[1], सं. स्त्री. (सं.) कांतिः-दीप्तिः-द्युतिः (स्त्री.), प्रभा २. चारुता, शोभा, सौन्दर्यं, रूपं ३. दामिनी, विद्युत् (स्त्री.)।

छटा[2], वि., दे. 'छठा'।

छठा, वि. (सं. षष्ठः-ष्ठी-ष्ठम्)।

छठी, सं. स्त्री. (सं. षष्ठी) जन्मतः षष्ठे दिवसे षष्ठीदेवीपूजा।

—का दूध याद दिलाना, मु., अनुशास् (अ. प. से.), दंड् (चु.)।

छड़, सं. स्त्री. पुं., (सं. शरः >) (१-२) धातु-काष्ठ,-दंडः ३. लंब,-यष्टिः (स्त्री.)-लगुडः।

छड़ा[1], सं. पुं. (हिं. छड़) पादभूषणभेदः।

छड़ा[2], वि. (हिं. छाँड़ना) एक, एकाकिन्, असहाय, अद्वितीय, एकल।

छड़िया, सं. पुं. (हिं. छड़ी) द्वारपालः, दौवारिकः।

छड़ी, सं. स्त्री. (हिं. छड़) यष्टिः (स्त्री.), दण्डः २. वेत्रं, वेत्रयष्टिः।

छत, सं. स्त्री. (सं. छत्रं >) छदिस् (न.), छदिः (स्त्री.), पटलं २. अंतःपटलं, अंतश्छादनं, पटलं ३. वितानं, उल्लोचः।

छतरी, सं. स्त्री. (सं. छत्रं) शतशलाका, आतपत्रं, आतपवारणं, छायामित्रं, पटोटजं २. मंडपः-पं ३. कपोतानां वेणुच्छत्रम्।

छतीसा, वि. (हिं. छत्तीस) धूर्त, मायिक, मायिन्, छलिन्, कापटिक।

छतीसी वि. स्त्री. (हिं. छतीसा) छलिनी, मायिन्, कापटिकी, २. कुलटा, पुंश्चली।

छत्ता, सं. पुं. (सं. छत्रं) करंडः, मधुकोशः, चषालः, छत्रकः २. गणः, समूहः ३. छत्रं, आतपत्रम्।

छत्तीस, वि. [सं. षट्त्रिंशत् (नित्य स्त्री.)] सं. पुं. उक्ता संख्या, तदंकौ (३६) च।

छत्तीसवाँ, वि. (हिं. छत्तीस) षट्त्रिंशत्तमः-मी-मं, षट्त्रिंशः-शी-शम्।

छत्र, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'छतरी' २. राजच्छत्रं ३. बृहच्छत्रं ४. (खुमी) छत्रकः-कम्।

—छाँह, सं. स्त्री., छत्रच्छाया, शरणं, आश्रयः।

—धारी,—पति, सं. पुं., नृपः, भूपः।

छत्री, सं. पुं., दे, 'क्षत्रिय', २. दे. 'छतरी'।

छदाम, सं. पुं. (हिं. छ+दाम) पणचतुर्थं, दे. 'दमड़ी'।

छद्म, सं. पुं. [सं. छद्मन् (न.)] छलं, कपटं २. गोपनं, गूहनं ३. व्याजः, मिषम्।

छन, सं. पुं. (अनु.) छणिति,-शब्दः-ध्वनिः (पुं.), सीत्कारः २. क्वणितं, शिंजितम्।

छन, सं. पुं., दे. 'क्षण'।

छनक, सं. स्त्री. (अनु.) छणछण-झणझण,-शब्दः-निनदः, छणछणायितं, झणझणायितं, दे. 'छन्' (१-२)।

छनकना, क्रि. अ. (अनु. छनछन) छणछणायते-झणझणायते (ना. धा.), छणछण-शब्दं कृ, क्वण् (भ्वा. प. से.), शिंज् (अ. आ. से.) २. सीत्कारं कृ।

छनकमनक, सं. स्त्री. (अनु.) शिंजितं, रणितं २. दे. 'साजबाज'।

छनकाना, क्रि. स., ब. 'छनकना' के प्रे. रूप।

छनछनाना, क्रि. अ. स., दे. 'छनकना', 'छनकाना'।

छनना, क्रि. अ. (सं. क्षरणं) तितउना शुध् (दि. प. अ.), निर्गल्-क्षर् (भ्वा. प. से.) २. क्षतविक्षत (वि.) भू।

छनवाना, **छनाना**, क्रि. प्रे., ब. 'छानना' के प्रे. रूप।

छनाक-का, सं. पुं. (अनु.) दे. 'छनक'।

छन्न, वि. (सं.) आ-प्र-समा,-छन्न, आ-प्र-सं,-वृत, निगूढ, पिहित २. लुप्त, तिरोहित, अदृष्ट।

छप, सं. स्त्री. (अनु.) आस्फालन,-ध्वनिः (पुं.)-शब्दः २. आस्फालनं, विक्षेपः।

छपका, सं. पुं. (अनु.) जल,-आस्फालः-विक्षेपः २. पिटकपिधानम्।

छपछपाना, क्रि. अ. (अनु.) छपछपायते (ना. धा.), छपछपशब्दं कृ २. ईषत् तॄ (भ्वा. प. से.)।

छपना, क्रि अ. (हिं. चपना = दबना) अंक्-लांछ् (कर्म.), मुद्रांकित-चिह्नित (वि.) भू २. मुद् (कर्म.), मुद्राक्षरैः अंक् (कर्म.)।

छपरख(खा)ट, सं. स्त्री. (हिं. छप्पर + खाट) *मशहरीखट्वा।

छपवाना, क्रि. प्रे., व. 'छापना' के प्रे. रूप।

छपाई, सं. स्त्री. (हिं. छापना) (मुद्राक्षरैः) अंकनं, मुद्रणं २. अंकन-मुद्रण,-प्रकारः।

छपाका, सं. पुं. (अनु.) जलास्फालनशब्दः २. तोयास्फालः।

छप्पन, वि. [सं. षट्पंचाशत् (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (५६) च।

छप्पय, सं. पुं. (सं. षट्पदः) हिंद्यां छन्दोभेदः।

छप्पर, सं. पुं. (हिं. छोपना) तृण,-छदिः (स्त्री.)-पटलं २. उटजः-जं, कुटीरः।

—खट, सं. स्त्री., दे. 'छपरखाट'।

—छाना या डालना, क्रि. स., तृणादिभिः आ-, छद् (चु.)।

छबड़ा,-ड़ी सं. पुं. स्त्री. (देश.) दे. 'टोकरा-री'।

छब-वि, सं. स्त्री., दे. 'छवि'।

छबीला, वि. (हिं. छब) सुंदर [-री (स्त्री.)] शोभन [-नी (स्त्री.)], रूपवत्-कांतिमत् [-ती (स्त्री.)]।

छब्बीस, वि. [सं. षड्विंशतिः (नित्य स्त्री.)]। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (२६) च।

छब्बीसवाँ, वि. (हिं. छब्बीस) षड्विंशति-तमः-मी-मम्, षड्विंशः-शी-शम्।

छमंड, सं. पुं. (सं.) मातृपितृ-जनक,-हीनः बालकः, अनाथः।

छमक, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'ठसक'।

छमकना, क्रि. अ., (अनु० छम) दे. छम-छमाना।

छमछम, सं. स्त्री. (अनु.) धारासार-धारासंपात,-शब्दः २. छमछम,-रणितं-निनदः, छमछमा-यितं, छणत्कारः, झणत्कारः। क्रि. वि., सछण-(म)त्कारम्।

छमछमाना, क्रि. अ. (अनु.) छमछमायते (ना.धा.),छमछमनिनदं कृ २.दे. 'चमचमाना'।

छमा, दे. 'क्षमा'।

छमाछम, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'छमछम'।

छरकना, क्रि. अ. (अनु. छर) सछरछरशब्दं विक्षिप्-विकृ (कर्म.), छरछरायते (ना.धा.)।

छरना, क्रि. अ. (सं. क्षरणं) दे. 'टपकना'।

छरहरा, वि. (हिं. छड़) कृश, तनु, कृशांग [-गी (स्त्री.)] २. उद्यमिन्, उद्योगिन्।

छर्दन, सं. पुं. (सं. न.) प्र-, छर्दि(दी) का, वमः-मि. (स्त्री.), वमनं, वमथुः (पुं.), वांतिः (स्त्री.), उद्गारः, उत्कासिका।

छर्रा, सं. पुं. (अनु. छर) लोह-सीसक,-गुलिका २. दे. 'कंकड़ी' ३. वेगक्षिप्तः जलकण-समूहः।

छल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कूटं, कपटं, कैतवं, छद्मन् (न.), प्रतारणा, प्र-,वंचना, अतिसंधानं २. व्याजः, मिषं ३. चतुर्दशःपदार्थः(न्या.)।

—बल, सं. पुं., कूट,-उपायः-कल्पना-प्रबंधः।

—कपट, सं. पुं., दे. 'छल' (१-२)।

—छिद्र, सं. पुं., दे. छल (१)।

छलक, सं. स्त्री. (हिं. छलकना) परिवाहः, उपरिस्रावः।

छलकना, क्रि. अ. (अनु. छल) उपरि स्रु-परिवह् (भ्वा. प. अ.), उत्सिच् (कर्म.), प्रवृध् (भ्वा. आ. से.), स्फीत-वृद्ध,-जल (वि.) भू।

छलकाना, क्रि. स., व. 'छलकना' के प्रे. रूप।

छलछलाना, क्रि. अ. (अनु.) छलछलायते, (ना. धा.), सछलछलशब्दं स्रु (भ्वा. प. अ.)।

छलना, क्रि. स. (सं. छलनं) छलयति(ना.धा.), अति-अभि,-संधा (जु. उ. अ.), प्रतॄ-मुह् (प्रे.), वंच् (चु.)। सं. स्त्री., दे. 'छल' १.।

छलनी, सं. स्त्री. (स्त्री. चालनी) तितउः।

—करना, मु.; अनेकत्रछिद्-निर्भिद् (रु. प. अ.)-व्यध् (दि. प. अ.)।

छलाँग, सं. स्त्री. (हिं. उछल + सं. अंग) प्लवः, प्लवनं, प्लुतं-तिः (स्त्री.), झंपः-झंपा, वल्गितम्।

ऊँची—, सं. स्त्री., उत्,-प्लवः-प्लुतिः (स्त्री)-पतनं इ.।

लंबी—, सं. स्त्री., प्र-, प्लवः-प्लुतिः इ.।

—मारना, क्रि. स., (ऊँची)उत्पत्(भ्वा. प. स.), उत्प्लु (भ्वा. आ. अ.)। आगे(आगे) वल्ग् (भ्वा. प. से.), प्लु। (नीचे) अवप्लु।

छलावा, सं. पुं. (सं. छलं >) मिथ्या,-अनलः-अग्निः (पुं.)-दीप्तिः (स्त्री.), दीप्त्याभासः २. मायादृश्यं, इंद्रजालम्।

छलित, वि. (सं.) विप्रलब्धः, वंचित, प्रतारितः।

छलिया, वि. दे. 'छली'।

छली, वि. (सं. छलिन्) कपटिन्, मायिन्, कापटिक, प्रतारक, छाद्मिक, शठ, धूर्त, कितव, वंचक । सं. पुं., शठः, धूर्तः, इ. ।

छल्ला, सं. पुं. (सं. छल्ली–लता >) अंगुली-(री)य-यकं, ऊर्मिका, मुद्रा ।

छल्लि, सं. स्त्री., दे. 'छल्ली' १–३ ।

छल्ली, सं. स्त्री. (सं.) लता, वल्ली २. वल्कः, कं, त्वच् (स्त्री.) ३. संतानः ४. पुष्पभेदः ।

छल्लेदार, वि. (हिं. छल्ला + फ़ा. दार) सवलय, सचक्र २. गोल-वर्तुल,-चिह्नवत् ।

छवाई, सं. स्त्री., (हिं. छाना) आ-समा-प्र-परि-सं-अव,-छादनं, आ–समा-नि-सं-,वरणम् । आच्छादन-संवरण,-भृत्या–भृतिः (स्त्री.) ।

छवि, सं. स्त्री. (सं.) सौंदर्यं, शोभा, लावण्यं, रूपं, चारुता २. कांतिः (स्त्री.), प्रभा ।

छाँ, सं. स्त्री., दे. 'छाँह' ।

छाँगुर, सं. पुं., दे. 'छंगा' ।

छाँट, सं. स्त्री. (हिं. छाँटना) अवच्छेदनं, निकृंतनं २. विदलानि-शकलाः-शकलानि (बहु.) ३. शेषः-षं, निस्सारद्रव्यम् ।

छाँटन, सं. स्त्री. (हिं. छाँटना) अवशिष्टं, उच्छिष्टं,शेषः-षं । २.विदलानि-शकलानि(बहु.) ।

छाँटना, क्रि. स. (सं. छेदनं) अग्राणि अवछिद् (रु. प. अ.)-निकृत् (तु. प. से.)-लू (क्र्. उ. से.) २. वृ. (स्वा. उ.से.; चु.) उद्ग्रह् (क्र्. प. से.), विशिष् (प्रे.) ३. विभज् (भ्वा. उ. अ.), पृथक् कृ । ४. शुध् (प्रे.), निर्मली कृ ।

छांदस, वि. (सं.) वैदिक, श्रौत, २. वेदज्ञ, वेदाधायिन् ३. पद्यमय छन्दोबद्ध । स पुं. (सं.) वेदज्ञ,–ब्राह्मणः–विप्रः ।

छांदोग्य, सं. पुं. (सं. न.) सामवेदब्राह्मणम् (ग्रंथविशेषः) २. छांदोग्योपनिषद् (स्त्री.) ।

छाँव, छाँह } सं. स्त्री. (सं. छाया) प्रकाश-आतप,-अभावः, श्यामा, भावानुगा २. प्रति,-च्छाया-बिंब-मूर्तिः (स्त्री.)-रूपं ३. निरातपस्थानं ४. आश्रयः, शरणम् ।

—गीर, सं. पुं. (हिं + फ़ा.) राज-, छत्रं २. दर्पणः, मुकुरः ।

छाक, सं. स्त्री. (हिं. छकना) तुष्टिः-तृप्तिः-इच्छापूर्तिः (स्त्री.) २. प्रातराशः, कल्यवर्तः ३. माध्यंदिनं भोजनं ४. क्षीवता ।

छाग, सं. पुं. (सं.) अजः, छागलः ।

छागल, सं. पुं. (सं.) दे. 'छाग' । सं. स्त्री., भस्त्रा, भस्त्रका, भस्त्रिः (स्त्री.) ।

छागी, सं. स्त्री. (सं.) अजा, दे. 'बकरी' ।

छाछ, सं. स्त्री. (सं. छच्छिका) सारहीनं प्रचुर-जलं तक्रम् २. घृत-नवनीत, शेषः ।

छाज, पुं. पुं. (सं. छादः >) प्रस्फोटनं, शूर्पः-र्पं, सूर्पः-र्पम् ।

छाजन, सं. पुं. (सं. छादनं) वस्त्रं, वसनम्, आच्छादनं २. दे. 'छप्पर' ।

—भोजन, सं. सं., भोजनवस्त्रं, अशनवसनं ।

छाता, सं. पुं. (सं. छत्रं) वृहत्,-छत्रं-आतपत्रम् ।

छाती, सं. स्त्री. (सं. छादिन् >) उरस्-वक्षस् (न.), उरस्-वक्षस्,-स्थलं, वत्सम् । २. हृदयं, मनस् (न.) ३. वीर्य्यं, शौर्य्यम् ।

—कड़ी करना, मु., धैर्यं दृश् (प्रे.), विक्रमं प्रकाश् (प्रे.) ।

—जलना, मु., अम्लपित्तेन पीड् (कर्म.) २. ईर्ष्यया दह् (कर्म.) ।

—ठंडी होना, मु., संतुष् (दि. प. अ.), सुखं स्था (भ्वा. प. अ.) ।

—निकाल कर चलना, मु., साटोपं-सगर्वं चल् (भ्वा. प. से.) ।

—पर पत्थर रखना, मु.-सह्-क्षम् (भ्वा. आ. से.) ।

—पर मूंग दलना, मु., प्रत्यक्षं अपकृ ।

—पर सांप लोटना, मु.,मात्सर्येण दह् (कर्म.) ।

—पीटना, मु., परिदेव् (भ्वा. आ. से.), अनु-, शुच् (भ्वा. प. से.) ।

—फटना, मु., चित्तं विदॄ (कर्म.), हृदयं भिद् (कर्म.) ।

—से लगाना, मु., आलिंग् (भ्वा. प. से.), आश्लिष् (दि. प. अ.), उपगुह् (भ्वा. उ. से.; उपगूहति-ते) ।

छात्र, सं. पुं. (सं.) अध्येतृ (पुं.), अधीयानः, विद्यार्थिन् २. शिष्यः, अंतेवासिन् ।

—वृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) शिष्यभृतिः (स्त्री.) ।

छात्रक, सं. पुं. (सं.) छात्रः, विद्यार्थिन् । (सं. न.) २. मधु (न.); माक्षिकं, सारघम् ।

छात्रालय, सं. पुं. (सं.) छात्रावासः, विद्यार्थि-निवासः ।

छादक, वि. (सं.) आच्छादक, आवरक, पिधायक ।

छादन, सं. पुं. (सं. न.) आच्छादनं, आवरणं पुटं, वेष्टनं २. तिरस्करिणी, व्यवधानं ३. वसनानि-वस्त्राणि (बहु.) ।

छादित, वि. (सं.) आच्छादित, आवृत, आवेष्टित ।

छादिनी, सं. स्त्री. (सं.) त्वच्-रोमभूमिः (स्त्री.), त्वचं, त्वचा, छली-ल्ली ।

छाद्मिक, वि. (सं.) कपटिन्, छलिन्, मायिन । सं. पुं. (सं.) धूर्तः, वंचकः, प्रतारकः ।

छान, सं. स्त्री. (सं. छादनं >) छादं, तृण,-पटलं-छदिः (स्त्री.) २. दे. 'छानस' ।

छानना, क्रि. स. (सं. क्षारणं) तितउना-वस्त्रेण निर्गल्-विशुध् (प्रे.) २. (रसादि) निष्कुष् (भ्वा. प. अ.), निपीड् (चु.) ३. बिंदुशः-लवशः स्रु-क्षर्-गल् (प्रे.) ४. दे. 'खोजना' । सं. पुं., तितउना निर्गालनं-, विशोधनं, बिंदुशः क्षारणं; अन्वेषणं इ. ।

छानबीन, सं. स्त्री. (हिं. छानना + बीनना) सूक्ष्म-सम्यग्,-अनुसंधानं-अन्वेषणं २. नैपुण्येन निरूपणं-परीक्षणं-पर्यालोचनम् ।

छानवे, वि. [सं. षण्णवतिः (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (९६) च ।

छानस, सं. स्त्री. (हिं. छानना) कडंगरः, तुषः, बुषं-सम् ।

छाना, क्रि. स. (सं. छादनं) आच्छद् (चु.), आवृ (स्वा. उ. से.), आस्तॄ (क्र्. उ. से.) २. तृणादिभिः आच्छद् (चु.), तृणछर्दि निर्मा (जु. आ. अ.) ।

छा जाना, क्रि. अ., वितन्-विस्तृ-विस्तॄ (कर्म.), प्र-वि,-सृ-सृप् (दोनों भ्वा. प. अ.) २. छायया आवृ (स्वा. उ. से.) ।

छा लेना, क्रि. स., दे. 'छाना' १.; २. तिमिरेण आच्छद् (चु.), तिमिराच्छन्नं कृ ।

छाप, सं. स्त्री. (हिं. छापना) अंकः, चिह्नं, न्यासः, मुद्रा २. मुद्रा, मुद्रिका, मुद्रिकायंत्रं ३. अंगुली(री)यकं, ऊर्मिका ।

—लगाना, क्रि. सं., अंक् (चु.), लांछ् (भ्वा. प. से.), चिह्नयति-मुद्रयति (ना. धा.) ।

छापना, क्रि. स. (सं. चपनं >) मुद्रयति (ना. धा.), मुद्राक्षरैः अंक् (चु.), दे. 'छाप लगाना' । सं. पुं., मुद्रणं, मुद्राक्षरैः अंकनम् ।

छापने योग्य, वि., मुद्रयितव्य, मुद्राक्षरैः अंकनीय ।

छापनेवाला, सं. पुं., मुद्रकः, मुद्रयितृ-मुद्रण-कृत् (पुं.) ।

छापा हुआ, वि., मुद्रित, मुद्रांकित, मुद्राक्षरांकित ।

छापा, सं. पुं. (हिं. छापना) दे. 'छाप' (१-२) ३. सौप्तिकं, सौप्तिकाक्रमः ४. मुद्रण-यंत्रम् ।

—मारना, क्रि. स., नक्तं अवस्कंद् (भ्वा. प. अ.), रात्रौ सहसा अभियुज् (रु. आ. अ.) ।

—लगाना, क्रि. स., दे. 'छाप लगाना' ।

—खाना, सं. पुं. (हिं + फ़ा.) मुद्रणालयः ।

—विद्या, सं. स्त्री., मुद्रण,-कला-विद्या ।

छाया, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'छाँह' (१-४) । प्रति, लेखः-लिपिः (स्त्री.) ६. प्रतिकृतिः (स्त्री.) अनुकरणं, सदृशवस्तु (न.) ७. कांतिः-द्युतिः (स्त्री.) ८. तिमिरं, तमस् (न.) ९. भूत-प्रेत,-प्रभावः ।

—पथ, सं. पुं. (सं.) आकाश-स्वर्-वियद्-गंगा, सुर,-धुनी-नदी २. आकाशः-शम् ।

छार, सं. पुं., दे. 'क्षार' ।

छाल, सं. स्त्री. (सं. छालः-लं), वृक्षत्वच् (स्त्री.), वल्कं, वल्कलः-लं २. शल्कं, त्वच् (स्त्री.) ।

—उतारना, क्रि. स., त्वचयति (ना. धा.), निस्त्वची कृ, त्वचं अपनी (भ्वा. प. अ.) ।

छाला, सं. पुं. (स. छालः-लं >) त्वक्स्फोटः, शोफः, पिटिका २. रक्त,-स्फोटः-गंडः २. चर्मन् (न.), अजिनम् ।

छालिया, सं. पुं. (हि. छाला) पूगं, ताबूलं २. पूग,-शकलः-खंडः ।

छावनी, सं. स्त्री. (हिं. छाना) स्कन्धावारः, शिविरं, सैन्यावासः, निवेशः, सेना,-वासः-स्थानं २. दे. 'छप्पर' ।

छिंगुली, सं. स्त्री., दे. 'छिगुनी' ।

छि, अव्य. (अनु.) धिक्, धिग् धिक् ।

छिगुनी, सं. स्त्री. (सं. क्षुद्र + अँगुली) कनिष्ठा-छिका, कनीनिका, दुर्बलांगुली-लिः (स्त्री.) ।

छिच(छ)ड़, सं. स्त्री., न्यर्थमांसखण्डः

अज्ञता ३. अचलता, स्तब्धता, ४. हिमग्रस्तता, शीतलता ।

जड़ना, क्रि. स. (सं. जटनं) जट् (प्रे.), अनुव्यध् (दि. प. अ.), उत्खच् (चु.), प्रणिधा (जु. उ. अ.), प्रतिबंध् (क्र्. प. अ.) २. आ-नि-धा, अवरुह्-निविश् (प्रे.) ३. प्रहृ (भ्वा. प. अ.), आहन् (अ. प. अ.) ३. परोक्षे आ-अधि-क्षिप् (तु. प. अ.) । सं. पुं., जटनं, उत्खचनं; अवरोपणं; प्रहरणं इ. ।

जड़ने योग्य, वि. जाटयितव्य, उत्खचनीय इ. ।

जड़नेवाला, सं. पुं., रत्न,-अनुवेधकः, मणि-, प्रणिधायकः, जाटयितृ ।

जड़वाना, जड़ाना, क्रि. प्रे., व. 'जड़ना' के प्रे. रूप ।

जड़ाई, सं. स्त्री. (हिं. जड़ना) जटन,-वेतनं-भृतिः (स्त्री.) २. दे. 'जड़ना' सं. पुं. ।

जड़ाऊ, वि. (हिं. जड़ना) रत्न,-खचित-जटित-अनुविद्ध ।

जड़ावर, सं. पुं. (हिं. जाड़ा) उष्ण-ऊर्णामय-और्ण,-वस्त्राणि-वासांसि (न. बहु.) ।

जड़िमा, सं. स्त्री. (सं.-मन् पुं.) दे. 'जड़ता' ।

जड़िया, सं. पुं. (हिं. जड़ना) २. रत्न-मणि,-कारः १. रत्न,-जाटकः-खचकः । दे. 'जड़ने वाला' ।

जड़ी, सं. स्त्री. (हिं. जड़ >) ओषधी-औषध,-मूलं, काष्ठौषधम् ।

—बूटी, सं. स्त्री., ओषधी-धिः (स्त्री.), रोगहरं हरितकं, आरण्यौषधम् ।

जतन, सं. पुं., दे. 'यत्न' ।

जतलाना, जताना, क्रि. स. (सं. ज्ञात >) वि-, ज्ञा (प्रे. ज्ञापयति), बुध्-अवगम् (प्रे.) २. (पूर्वं) अनु-प्र-बुध् (प्रे.), उपदिश् (तु. प. अ.) ।

जती, सं. पुं. (सं. यतिन्) यतिः, जितेन्द्रियः, संन्यासिन् ।

जतु, सं. पुं. (सं. न.) जतुकं-का, रा(ला)क्षा ।

जत्था, सं. पुं. (सं. यूथं) गणः, संघः, समूहः ।

जत्रु, सं. पुं. (सं. न.) जत्रुकं, ग्रीवास्थि (न.) ।

जदीद, वि. (अ.) नव, नवीन ।

जन, सं. पुं. (सं.) मानवः, मनुष्यः २. लोकाः, जनाः ३. प्रजाः ४. सेवकः ५. समूहः ६. भवनं ७. ८. लोक-व्याहृति,-विशेषः ।

जनक, सं. पुं. (सं.) जन्मदः, जनयितृ, उत्पादकः २. पितृ-जनितृ, (पुं), तातः, बीजिन्, वप्तृ (पुं.) ३. मिथिलाराजवंशोपाधिः (पुं.) ४. सीरध्वजो जनकः ।

—पुर, सं. पुं. (सं. न.) मिथिलाया राजधानी ।

—नंदिनी, सं. स्त्री. (सं.) सीता, वैदेही ।

जनता, सं. स्त्री. (सं.) जनः-नाः, लोकः-काः, प्रजा-जाः, प्रकृतयः (बहु.) ।

—वाद, सं. पुं. (सं.) किंवदंती, जन-,प्रवादः ।

—वासा, सं. पुं. (सं.-सः) वरयात्रागृहम् ।

—श्रुति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'जनवाद' ।

—संख्या, सं. स्त्री. (सं.) मनुष्य-प्रजा-लोक,-संख्या ।

जनना, क्रि. स. (सं. जननं) प्रसू (अ. आ. से.), उत्पद् (प्रे.), जन् (प्रे. जनयति) ।

जननी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'माता' २. उत्पादिका ।

जननेन्द्रिय, सं. स्त्री. (सं. न.) लिंगं, मेढ़् २. योनिः (स्त्री.), भगः ।

जनपद, सं. पुं. (सं.) देशः २. लोकाः ।

जनम, सं. पुं., दे. 'जन्म' ।

जनमना, क्रि. अ., दे. 'जन्म लेना' ।

जनयिता, वि. (सं.-तृ) जन्मद, उत्पादक । सं. पुं. (सं.) तातः, पितृ, बीजिन् , जनकः ।

जनयित्री, सं. स्त्री. (सं.) जननी, मातृ (स्त्री.), दे. 'माता' ।

जनरल, सं. पुं. (अं.) सेनानायकः । वि., सामान्य, साधारण ।

जनवरी, सं. स्त्री. (अं. जेनुअरी) पौषमाघं, आंग्लवर्षस्य प्रथममासः ।

जनांतिक, अव्य, (सं.-कम्) रंगमंचे अभिनेतुरन्यस्य कर्णे कथनम् (सा०), अपवार्य (अव्य.) ।

जनाई, सं. स्त्री. (हिं. जनाना) साविका, दे. 'दाई' २. गर्भमोचनभृतिः (स्त्री.) ।

जनाज़ा, सं. पुं. (अ.) दे. 'अरथी' २. शवः ।

ज़नानख़ाना, सं. पुं. (फ़ा.) अंतःपुरं, अवरोधः ।

जनाना, क्रि. स. (हिं. जानना) दे. 'जतलाना' ।

जनाना, क्रि. प्रे. (हिं. जनना) व. 'जनना' के प्रे. रूप ।

ज़नाना, वि. (फ़ा) स्त्रैण, स्त्रीजातीय। सं. पुं., अंतःपुरं २. नारी ३. पत्नी।

ज़नानी, वि. स्त्री. (फ़ा.) स्त्रैणी, स्त्रीसदृशी। सं. स्त्री., नारी २. पत्नी।

जनाब, सं. पुं. (अ.) महाशयः, महोदयः, श्रीमत् (पुं.)।

—आली, सं. पुं. (अ.) मान्यवर,-महाशय-महोदय!

—मन, सं. पुं. (अ + फ़ा.) प्रियमहाशय!

जनित, वि. (सं.) उत्पादित २. जात, उत्पन्न।

जनिता, सं. पुं. (सं. जनितृ) जनयितृ, जनकः, पितृ (पुं.)।

जनित्री, सं. स्त्री. (सं.) जनयित्री, जननी।

जनी[1]-नि, सं. स्त्री. (सं.) नारी २. मातृ (स्त्री.) ३. पुत्रवधूः (स्त्री.) ४. जननम्।

जनी[2], सं. स्त्री. (सं. जनः) दासी, सेविका २. पुत्री। वि. स्त्री., जनिता, उत्पादिता।

जनेउ, सं. पुं., दे. 'यज्ञोपवीत'।

जनेत, सं. स्त्री. (सं. जनः) वरयात्रा।

जन्म, सं. पुं. [सं. जन्मन् (न.)] उद्-संभवः, जनिः (स्त्री.), जनी, जनिका, उत्पत्तिः-प्रसूतिः (स्त्री.), जनूः-नुः (स्त्री.)। २. जीवनम्।

—अंतर, सं. पुं. (सं. न.) अन्य-अपर-पुनर्,-जन्मन् (न.)।

—अंध, वि. (सं.) जात्यंध, जनुषांध।

—अष्टमी, सं. स्त्री. (सं.) श्रीकृष्णजन्मदिवसः, भाद्रपदमासस्य कृष्णाष्टमी तिथिः (स्त्री.)।

—दाता, सं. पुं. (सं.-दातृ) पितृ (पुं.) २. ईश्वरः।

—दिन, सं. पुं. (सं. न.) जन्म-जनि-जनु,-दिवसः।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) } **—पत्री**, सं. स्त्री. (सं.) } जन्म,-पत्रिका-योगपत्रम्।

—भूमि, सं. स्त्री. (सं.) जन्मदेशः, स्व,-देशः-राष्ट्रं-विषयः।

—रोगी, वि., (सं.-गिन्) सदारोगिन्।

—स्थान, सं. पुं. (सं. न.) जन्म-जनि,-भूमिः (स्त्री.)।

जन्मी, सं. पुं. (सं.-मिन्) प्राणिन्, जीवः।

जन्मी, वि. (सं. जन्मन् >) सहज, स्वभावज, स्वाभाविक-नैसर्गिक [-की (स्त्री.)]।

जन्मेजय, सं. पुं. (सं. जनमेजयः) विष्णुः २. ३. नृप-नाग,-विशेषः।

जन्मोत्सव, सं. पुं. (सं.) जनि-जनु,-पर्वन् (न.)-क्षणः।

जन्य, सं. पुं. (सं.) पितृ (पुं.), जनकः २. वरपक्षीयः ३. साधारणो जनः ४. किंवदंती। (सं. न.) जन्मन् (न.) २. उत्पन्नवस्तु (न.) ३. देहः ४. हट्टः ५. युद्धं ६. निंदा ७. राष्ट्रं ८. जातिः (स्त्री.) ९. लोकाः, प्रजाः। वि., जात, उद्भूत, उत्पन्न २. जनविषयक, लौकिक ३. देशीय, राष्ट्री(ष्ट्रि)य, जातीय ४. जनयिष्यमाण।

जन्या, सं. स्त्री. (सं.) जननीसखी २. वधूसखी ३. आनन्दः, मोदः ४. प्रीतिः (स्त्री.), स्नेहः।

जप, सं. पुं. (सं.) मुहुर्मुहुर्मंत्रोच्चारणम्।

—तप, सं. पुं. [सं. जपतपस् (न.)] धर्मक्रिया, उपासनं-ना, संध्यावंदनम्।

जपना, क्रि. स. (सं. जपनं) जप् (भ्वा. प. से.), जापं कृ, मुहुर्मुहुर्मंत्रं उच्चर् (प्रे.)।

जपनी, सं. स्त्री. (हिं. जपना) जपमाला, *जपनी २. *जपनीकोषः, गोमुखी।

जपी, सं. पुं. (सं. जपिन्) जापकः, जपितृ (पुं.)।

—तपी, सं. पुं. (सं. जपतपस् >) उपासकः, भक्तः, पूजकः।

जफ़ा, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'अत्याचार'।

—कश, वि. (फ़ा.) सहिष्णु, सहनशील २. परिश्रमिन्।

जब, क्रि. वि. (सं. यावत् >) यदा, यस्मिन् काले।

—कभी, यदाकदाचित्, यदापि।

—कि, यदा, यावत्।

—जब, यदा यदा।

—तक,-तलक, यावत्, यदापर्यन्तम्।

—तक···**तब तक**, यावत्···तावत्।

—तब, यदा तदा, काले काले, कदापि, कदाचित्।

—देखो तब, सदा, सर्वदा।

—से, यदा प्रभृति, यस्मात् कालात्।

—होता है तब, प्रायः, प्रायशः, प्रायेण।

जब(भ)ड़ा, सं. पुं. (सं. जंभः) हनुः (पुं. स्त्री.), हनूः (स्त्री.)।

निचला—, कुंजः, चिबुः (पुं.), पीचम् ।
ज़बर, वि. (फ़ा.) बलिन्, शक्तिमत् २. दृढ ।
—दस्त, वि. (फ़ा.) दे. 'जबर' ।
—दस्ती, सं. स्त्री. (फ़ा.) अत्याचारः, अन्यायः । क्रि. वि., बलात्, हठात्, प्रसभं, प्रसह्य ।
—दस्ती करना, क्रि. स., पीड् (चु.), अर्द् (प्रे.), बाध् (भ्वा. आ. से.) ।
ज़बरन्, क्रि. वि. (अ. जब्रन्) दे. 'जबरदस्ती' क्रि. वि. ।
ज़बह, सं. पुं. (अ.) हिंसा, हत्या, घातः ।
—करना, क्रि. स., विशस् (भ्वा. प. से.), हन् (अ. प. अ.), व्यापद् (प्रे.) ।
ज़बान, सं. स्त्री. (फ़ा.) जिह्वा, रसज्ञा, रसना २. शब्दः, वाक्यं ३. प्रतिज्ञा ४. भाषा ।
—दराज़, वि., जल्प(पा)कः, वावदूकः ।
—दराज़ी, सं. स्त्री., जल्पकता, वावदूकता ।
—बंदी, सं. स्त्री., मौनं, वाग्यमः २. भाषण-निरोधः ३. जिह्वास्तम्भः (रोगभेदः) ।
—का मीठा, मु., मधुरभाषिन्, मधुजिह्व ।
—को मुँह में रखना, मु., जोषं-तूष्णीं स्था (भ्वा. प. अ.), मौनं भज् (भ्वा. उ. अ.) ।
—देना या हारना, मु., दे. 'प्रतिज्ञा करना' ।
—पकड़ना, मु. भाषणात् निवृत् (प्रे.)-नि-विनि-वृ (प्रे.) ।
—बंद करना, मु., मौनं लभ् (प्रे., लंभयति) २. निरुत्तरी कृ ।
—बंद होना, वक्तुं न पार् (चु.), तूष्णीं स्था ।
ज़बानी, वि. (फ़ा. ज़बान) शाब्द [-ब्दी (स्त्री.)], शाब्दिक [-की (स्त्री.)], वाचिक-वाचनिक-मौखिक [-की (स्त्री.)] । क्रि. वि., स्मृत्या-वाचा (तृ. एक.), शब्दतः, अलिखितम् ।
—पढ़ना, क्रि. स., स्मृत्या पठ् (भ्वा. प. से.) उच्चर् (प्रे.) ।
—जमा खर्च, मु., प्र-,जल्पः-पनं, निरर्थक-वचनानि (बहु.) ।
ज़बून, वि. (फ़ा.) निकृष्ट, गर्ह्य, निन्द्य २. अबल, निर्बल ।
ज़ब्त, सं. पुं. (अ.) निग्रहः, निरोधः, संयमः २. दंडरूपेण अपहरणं ३. राजसात्करणम् ।
—करना, क्रि. स., राजसात् कृ, दंडरूपेण अपहृ (भ्वा. प. अ.) ।
—होना, क्रि. अ., राजसात् भू, दंडरूपेण अपहृ (कर्म.) ।
ज़ब्ती, सं. स्त्री. (अ. ज़ब्त) सर्वस्व,-अपहारः-दंडः, दे. 'ज़ब्त' (२) ।
जब्र, सं. पुं. (अ.) क्रौर्यं, नैष्ठुर्यं, अत्याचारः ।
—करना, क्रि. स., अर्द् (प्रे.), पीड् (चु.) ।
जब्रन, जब्रिया, क्रि. वि., दे. 'जबरन्' ।
जब्री, वि. (अ.) बलात् कारित, अनिवार्य ।
जम, सं. पुं., दे. 'यम' ।
जमघट, सं. पुं. (हिं. जमना + घट्ट) जनौघः, जनसंमर्दः, संकुलं, लोकसंघः ।
जम-जम, अव्य. (सं. जन्मन् >) सदा, सर्वदा, नित्यम् ।
ज़म-ज़म, सं. पुं. (अ.) काबासमीपस्थः कूप-विशेषः ।
जमना[१], क्रि. अ. [सं. जन्मन् (न.) >] प्ररुह् (भ्वा. प. अ.), उद्भिद् (कर्म.) २. जन् (दि. आ. से.), उत्पद् (दि. आ. अ.) ।
जमना[२], क्रि. अ. (सं. यमनं=जकड़ना >) घनी-पिंडी-शीती,-भू, संहन् (कर्म.), श्यै (भ्वा. आ. अ.) २. संमिल् (तु. प. से.), समागम् (भ्वा. प. अ.) ३. अनुषक्त-ससक्त-(वि.) भू, संलग् (भ्वा. प. से.) ४. स्थरभू, निवासं स्थिरीकृ ५. प्रतिष्ठित-बद्ध-मूल-(वि.) भू ६. उपपद्-युज् (कर्म.), सुसंगत वि.) भू ७. निर्बंधेन वद् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., घनी-शीती-पिंडी,-भावः; सम्मेलनं; संसक्तिः (स्त्री.); स्थिरीभावः इ. ।
जमना[३], सं. स्त्री. (सं. यमुना) कालिन्दी ।
जमराज, सं. पुं., दे. 'यमराज' ।
जमा, वि. (अ.) संगृहीत, संचित, समाहृत २. निक्षिप्त, न्यस्त, निहित । सं. स्त्री., मूलं, मूल,-द्रव्यं-धनं २. धनं, संपद् (स्त्री.) ३. भूमि-करः ४. योगः, पिंडः, संकलः-लनं (गणि०) ४. बहुवचनं (व्या.) ।
—करना, क्रि. स., संचि (स्वा, उ. अ.), संग्रह् (क्र्. प. से.) २. निधा (जु. उ. अ.), निक्षिप् (तु. प. अ.) ३. दे. 'जोड़ना' (२) ।
—होना, क्रि. अ., संचि-संग्रह् (कर्म.) २. निधा-निक्षिप्-न्यस् (कर्म.) ।
—खर्च, सं. पुं. (फ़ा.) आयव्ययौ २. आय-व्ययलेखः ।

—जथा, सं. स्त्री., संचित,-धनं-द्रव्यम् ।
—जमाई, सं. पुं. [सं. जामातृ (पुं.)] दुहितृ-पुत्री,-पतिः ।
जमात, सं. स्त्री. (अ. जमाअत) कक्षा, श्रेणी २. जनौघः, जनसंमर्दः ३. गणः, संघः ।
जमादार, सं. पुं. (फ़ा.) नायकः, रक्षिमुख्यः ।
ज़मानत, सं. स्त्री. (अ.) (द्रव्य) आधिः (पुं.), निक्षेपः, न्यासः, प्रातिभाव्यं । (पुरुष) प्रतिभूः (पुं.), बंधकः, लग्नकः ।
—देना, क्रि. सं., निक्षेपं-लग्नकं दा अथवा दत्त्वा मुच (प्रे.) ।
—नामा, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) प्रातिभाव्यपत्रम् ।
ज़मानती, वि (अ. ज़मानत >) निक्षेपार्हः, प्रातिभाव्यार्हः २. प्रतिभूः (पुं.) लग्नकः, बन्धकः ।
ज़माना, सं. पु. (फ़ा.-नः) समयः, कालः २. चिरकालः, सुदीर्घसमयः ३. जगत् (न.) ।
—साज़, वि. (फ़ा.) कालानुवर्तिन् , समयानुरोधिन् ।
—साज़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) कालानुवर्तनं, स्वार्थपरता ।
जमाना, क्रि. स., व. 'जमना' के प्रे. रूप ।
जमाल, सं. पुं. (अं.) सौन्दर्यं, सुषमा, मनोज्ञता, लावण्यन् ।
जमालगोटा, सं. पुं. (सं. जयपालः+गोटा >) (वृक्ष) जयपालः, सारकः, रेचकः २. (बीज) जयपाल-कुंभी-घंटा-शोधनी,-बीजं, बीजरेचनम् ।
जमाव, सं. पुं. (हिं. जमना) जनौघः, जनसंमर्दः २. दे. 'जमना' सं. पुं. ।
ज़मींदार, सं. पुं. (फ़ा) क्षेत्रपतिः (पुं.), भूस्वामिन् ।
ज़मींदारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) भूमिः (स्त्री.), भूमिरिक्थं, क्षेत्रं २. क्षेत्रपतित्वं, भूस्वामित्वम् ।
ज़मींदोज़, वि. (फ़ा.) आंतर्भौम (-मी स्त्री.), भूगर्भवर्तिन् , भूगूढ ।
ज़मीन, सं. स्त्री. (फ़ा.) भूमिः (स्त्री.), पृथिवी-थ्वी २. भू-पृथ्वी,-तलं ३. वस्त्रपत्रादेः तलं २. क्षेत्रं, भूरिक्थम् ।
—आसमान एक करना, मु., अत्यधिकं परिश्रम् (दि. प. से.) ।
—आसमान का फ़र्क़, मु. महदंतरं, महद्वैषम्यं. खभूभेदः ।
—आसमान के क़ुलाबे मिलाना, मु., अत्युक्त्या वर्ण् (चु.)-प्रतिपद् (प्रे.) ।
जमुना, सं. स्त्री., दे. 'यमुना' ।
ज़मीमा, सं. पुं. (अ.) अतिरिक्त-क्रोड,-पत्रम् ।
ज़मुर्रद, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'पन्ना' ।
जमैयत, सं. स्त्री. (अ.) जन,-समुदायः-समूहः २. परिषद् (स्त्री.), सभा ।
जयंत, सं. पुं. (सं.) इंद्रपुत्रः २. कार्तिकेयः । वि. [सं. जयत् (शत्रंत)] विजयिन्, जैत्र (-त्री सं.), जिष्णु, जेतृ, जित्वर [-री स्त्री.)] २. दे. 'बहुरूपिया' ।
जयंती, सं. स्त्री. (सं.) केतनं, केतुः (पुं.), ध्वजः २. दुर्गा ३. जन्मोत्सवः ४. स्थापना-दिवसोत्सवः ।
जय, सं. स्त्री. (सं. पुं.) वि-, जयः, वि-जितिः (स्त्री.) ।
जय(जय जय)कार, सं. पुं. (सं.) जय-, ध्वनिः (पुं.) नादः-स्वनः-शब्दः ।
जयजयकार करना, क्रि. सं. जयध्वनिं कृ., जयजयेति नद् (भ्वा. प. से.) ।
—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) विजत,-पत्रं-लेखः २. आधिकरणिकस्य मुद्रितनिर्णयपत्रम् (धर्म.) ।
—माल, सं. स्त्री. (सं.-ला) जय-विजय,-माला-स्रज् (स्त्री.)-माल्यम् ।
—स्तंभ, सं. पुं. (सं.) विजयस्थूणा ।
जयमा(वा)न, जयवंत, जयी, वि., दे. 'जयंत' वि. ।
ज़र, सं. पुं. (फ़ा.) सुवर्णं, कांचनं, २. धनं, वित्तम् ।
—खरीद, वि. (फ़ा.) वित्तक्रीत ।
—खेज़, वि. (फ़ा.) उर्वर, शस्यद, फलप्रद ।
—खेज़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) उर्वरता, फलप्रदता ।
—दार, वि. (फ़ा.) धनिक, धनाढ्य ।
—दोज़, सं. पुं. (फ़ा.) कार्मिकवस्त्रकृत् (पुं.), सूचीकर्मोपजीविन् ।
—दोज़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शिल्पं: सूचीकर्मन्(न.)।
जरनल, सं. पुं. (अं.) दैनिक,-वृत्तपत्रं-समाचारपत्रम् २. पत्रिका ३. आयव्यय-पंजी-पंजि(स्त्री.) ।
जरनलिज़्म, सं. पुं. (अं.) पत्रकारिता, पत्रकार-व्यवसायः ।
जरनलिस्ट, सं. पुं. (अं.) पत्रकारः ।
जरनैल, सं. पुं., दे. 'जनरल' सं. पुं. ।

ज़रब, सं. स्त्री. (अ.) आघातः, प्रहारः, २. व्रणःणं ३. अभ्यासः, आघातः, गुणनं, हननं ४. अंकः, मुद्राचिह्नम्।

—देना, क्रि. स., गुणयति (ना. धा.); आ-नि-, हन् (अ. प. अ., या प्रे, घातयति), पुर् (चु.)। मु., प्रह्व (स्वा. प. अ.) तड् (चु)।

ज़रर, सं. पुं. (अ.) क्षतिः-हानिः (स्त्री.) २. प्रहारः ३. आपत्तिः (स्त्री.)।

जरस, सं. पुं. (अ.) घंटा, घनम्।

ज़रा, वि. (अ. जर्रः) अल्प, न्यून। क्रि. वि., किंचित्, ईषत्।

जरा, सं. स्त्री. (सं.) दे. वार्द्धकं-क्यम्।

—ग्रस्त,-जीर्ण, वि. (सं.) वृद्ध, जरठ।

ज़राअत, सं. स्त्री. (अ.) कृषिः (स्त्री.) कर्षणं, हलभृतिः (स्त्री.)।

—पेशा, वि., कर्षक, कृषिजीविन्, क्षेत्रिक।

जरातुर, वि. (सं.) वृद्ध, जरठ, स्थविर, पलित, जीर्ण।

जरायु, सं.पुं. (सं.) उल्वं, कललः, २. गर्भाशयः।

जरायुज, वि. (सं.) गर्भाशयजातः (मनुष्य, गौ आदि)।

जरासंध, सं. पुं. (सं.) चंद्रवंशीयनृपविशेषः, कंसश्वशुरः।

ज़रिया, सं. पुं. (अ.) दे. 'साधन'।

ज़री, सं. स्त्री. (फ़ा.) ताशाख्यं वस्त्रं २. सौवर्णं कार्मिकवस्त्रम्।

ज़रीफ़ वि. (अ.) विनोद-परिहास,-शील,-प्रिय।

जरीब, सं. स्त्री. (फ़ा.) पंचपंचाशद्गजात्मकः क्षेत्रमानभेदः, जरीबं २. यष्टिः (स्त्री.)।

—कश, सं. पुं. (फ़ा) भू-क्षेत्र,-मापकः।

—कशी, सं. स्त्री. भू-क्षेत्र,-मापनम्।

ज़रूर, क्रि. वि. (अ.) अवश्य, अपरिहार्यतया, निश्चयेन, निःसंदेहं, निःसंशयम्।

ज़रूरत, सं. स्त्री. (अ.) आवश्यकता, प्रयोजनम्।

ज़रूरी, वि. (फ़ा.) अपेक्षित, आकांक्षित २. आवश्यक [-की (स्त्री.)], अपरिहार्य, अनिवार्य, अवश्यकरणीय।

ज़र्क़ बर्क़, वि. (फ़ा.) उज्ज्वल, भासुर, भासमान।

जर्जर, जर्जरित, वि. (सं.) जीर्ण. शीर्ण, सच्छिद्र २. भग्न, खंडित ३. वृद्ध।

ज़र्द, वि. (फ़ा.) पीत, दे. 'पीला'।

ज़र्दी, सं. स्त्री. (फ़ा.) पीतिमन् (पुं.) दे. 'पीलाई' २. अंडपीतिमन् (पुं.)।

जर्म, सं. पुं. (अं.) जीवाणुः, रोगकीटाणुः।

ज़र्रा, सं. पुं. (अ.) अणुः, परमाणुः २. द्व्यणुकं, त्र्यणुकं ३, कणः-णी-णिका, लवः।

जर्राह, सं. पुं. (अ.) शल्यचिकित्सकः, शस्त्रवैद्यः।

जर्राही, सं. स्त्री. (अ.) शल्य,-शास्त्रं-चिकित्सा।

जलंधर, सं. पुं., दे. 'जलोदर'।

जल, सं. पुं. (सं. न.) पानीयं, आपः (स्त्री., नित्य बहु.)। पयस्-अंभस्-अंबु-वारि (न.), सलिलं, अमृतं, जीवनं, उदकं, तोयं, नीरं, घनरसः।

—कूपी, सं. स्त्री. (सं.) कूपगर्तः, पुष्करिणी।

—क्रीडा, सं. स्त्री. (सं.) कर,-पात्रं,-पत्रिका, व्यात्युक्षी, जलविहारः।

—चर, वि. (सं.) वारिचर, जलचारिन्।

—जंतु, सं. पुं. (सं.) यादस् (न.), जलजीवः।

—जात, सं. पुं. (सं. न.) कमलं, पद्मम्।

—तरंग, सं. पुं. (सं.) वाद्यभेदः २, लहरी।

—धर, सं. पुं. (सं.) मेघः, जलदः २. समुद्रः।

—धारा, सं. स्त्री. (सं.) वारिप्रवाहः।

—पक्षी, सं. पुं. (सं.-क्षिन्) जलशकुनः।

—पान, सं. पुं. (सं. न.) उपाहारः, लघुभोजनम्।

—प्रपात, सं. पुं. (सं.) निर्झरः।

—प्लावन, सं. पुं., (सं. न,) जलोपप्लवः, तोयविप्लवः।

—मार्जार, सं. पुं. (सं.) उद्रः, जलनकुलः, जलबिडालः।

—यान, सं. पुं. (सं. न.) नौका, पोतः, वाष्पपोतः।

—शायी, सं. पुं. (सं.-यिन्) वरुणः।

—सेना, सं. स्त्री. (सं.) नौ-समुद्र,-सेना-सैन्यम्।

जलज, सं. पुं. (सं. न.) कमलं, वारिजम्।

ज़लज़ला, सं. पुं. (फ़ा.) भूकम्पः, भूचालः।

जलडमरूमध्य, सं. पुं. (सं. न.) सामुद्रधुनी।

जजद, सं. पुं. (सं.) मेघः, वारिदः।

जलधि, सं. पुं. (सं.) अब्धिः (पुं.), सागरः।

जलन, सं. स्त्री. (सं. ज्वलनं) तापः, दाहः, २. पाकः (चिकित्सा, उ. नेत्रपाकः), ३. ईर्ष्या-

ष्या, सापत्न्यं, मात्सर्यं ४. गात्रदाहः (रोग-भेदः)।

जलना, क्रि. अ. (सं. ज्वलनं) ज्वल् (भ्वा. प. से.) तप-दह् (कर्म.) दीप् (दि. आ. से.) २. असूयति (ना. धा.) ईर्ष्य् (भ्वा. प. से). परोत्कर्षं न सह् (भ्वा. आ. से.) मृष् (दि. प. से; चु.)। सं. पुं., तापः, ज्वलनं, दहनं, दाहः, प्लोपः इ.।

जले पर नोन छिड़कना, मु. क्षते क्षारं क्षिप् (तु. प. अ.)।

जलरुह, सं. पुं. (सं. न.) जलरुह् (पुं.), कमलम्।

जलवा, सं. पुं. (फ़ा.) श्रीः (स्त्री.), प्रभा, शोभा।

जलसा, सं. पुं. (अ.) उत्सवः, महोत्सवः, संमेलनं, बृहदधिवेशनं २. संगीतोत्सवः २. संभोजनम्।

जलांजलि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) अंजलि-करपुट-मात्रं जलम् २, तर्पणम्, प्रेततर्पणजलम्।

जलाकर, सं. पुं. (सं.) समुद्रः, सागरः २. जल-तोय,-राशिः ३. कूपः ४. निर्झरः, उत्सः।

जलाखु, सं. पुं. (सं.) दे. 'ऊदबिलाव'।

जलातंक, सं. पुं. (सं.) अलर्काभिभवः, आलर्कं, जलत्रासाख्यो रोगः (हिं. हलक)।

जलात्यय, सं. पुं. (सं.) शरद्ऋतुः, वर्षा-वसानः, मेघान्तः।

जलाना, क्रि. स. (हिं. जलना) उष् (भ्वा. प. से.), ज्वल् (प्रे. ज्वलयति), तप् (भ्वा. प. अ., प्रे.)। दह् (भ्वा. प. अ.), दीप् (प्रे.), प्लुष् (भ्वा. प. से.) २. ईर्ष्या-असूयां-मात्सर्यं जन् (प्रे.), ३. पीड् (प्रे.), तुद् (तु. प. अ.)। सं. पुं., दहनं, तापनं, प्लोषणं, दीपनं इ.।

जलाने योग्य, वि., ज्वलयितव्य, दग्धव्य, दीप-नीय, तपनीय।

जलानेवाला, सं. पुं., तापकः, दाहकः इ.।

जलाया हुआ, दग्ध, ज्वलित, दीपित।

जला भुना, वि., कुपित, क्रुद्ध, कु-दुः,-शील, दुष्प्रकृति।

जलार्द्र, वि. (सं.) क्लिन्न, उत्त, उन्न।

जलावतन, वि. (अ.) निर्वासित, विवासित।

जलावतनी, सं. स्त्री. (अ.) निर्-वि,-वासनम्।

जलाशय, सं. पुं. (सं.) जल-तोय,-आधारः, तडागः-गं, वापी।

ज़लील, वि. (अ.) नीच, क्षुद्र, जघन्य। (२) अपमानित, तिरस्कृत।

—करना, क्रि. स., अपकृष् (भ्वा, प. अ.), लघूकृ।

जलूस, सं. पुं. (अ.) उत्सव-,यात्रा, *संप्र-चलनम्।

जलेबी, सं. स्त्री. (देश.) कुण्डली, मिष्टान्नभेदः।

जलोका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'जौंक'।

जलोदर, सं. पुं. (सं. न.) जठरामयः।

जल्द, क्रि. वि. (अ.) अचिरात्, अचिरेण, झटिति, द्राक्, अविलंबं, आशु, शीघ्रं २. जवेन, वेगेन, सत्वरम्।

—बाज़, वि. (अ.+फ़ा.) अविमृश्य-असमीक्ष्य-क्षिप्र,-कारिन्, साहसिन्।

—बाज़ी, सं. स्त्री., अविमृश्य-असमीक्ष्य,-कारिता-कारित्वं, साहसम्।

जल्दी, सं. स्त्री. (अ.) शीघ्रता, त्वरा, क्षिप्रता।

—करना, क्रि. अ., त्वर् (भ्वा. आ. से.), आशु-शीघ्रं त्वरितं कृ अथवा चल् (भ्वा. प. से.)।

जल्प, सं. पुं. (सं.) कथनं, वदनं २. प्रजल्पः, प्र-,जल्पितं, वृथा,-आलापः-कथा, व्यर्थवार्ता ३. वादभेदः (न्या०)।

जल्पक, वि. (सं) जल्पाकः, वाचाटः, वाचालः, वावदूकः।

जल्लाद, सं. पुं. (अ.) घातकः, दंडपाशिकः, मातंगः, वधाधिकृतः। वि., क्रूर, निर्दय।

जल्सा, सं. पुं., दे. 'जलसा'।

जव, सं. पुं. (सं.) वेगः, त्वरा रंहस् (न.)।

जवन, सं. पुं., दे. 'यवन'।

जवनिका, सं. स्त्री., दे. 'यवनिका'।

जवाँमर्द, वि. (फ़ा.) वीर, शूर, पराक्रमिन्।

जवाँमर्दी, सं. स्त्री. (फ़ा.) वीरता, शूरता।

जवाखार, सं. पुं. (सं. यवक्षारः) यवाह्वः, यवनालजः।

जवान, वि. (फ़ा.) युवन्, तरुण, अभिनव-वयस्क, कुमार २. वीर, शूर। सं. पुं., पुरुषः, मनुष्यः सैनिकः ३. वीरः।

जवानी, सं. स्त्री. (फ़ा.) कौमारं, तारुण्यं, यौवनं, अभिनव-पूर्व-प्रथम,-वयस् (न.) ।

जवाब, सं. पुं. (अ.) उत्तरं, प्रति,-वचनं-वाच् (स्त्री.), प्रत्युक्तिः (स्त्री.), प्रत्युत्तरं २. प्रतिक्रिया, प्रतीकारः, ३. कारभ्रंशादेश, ४. पदच्युतिः (स्त्री.), अधिकारभ्रंशः ।

—दावा, सं. पुं. (अ.) उत्तरम् , उत्तर,-पक्षः-पादः ।

—देह, वि. (अ.+फ़ा.) उत्तर,-दातृ-दायिन् , अनुयोज्य, प्रष्टव्य ।

—देही, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) उत्तरादायित्वं, प्रष्टव्यता, भारः ।

—सवाल, सं. पुं. प्रश्नोत्तराणि (बहु.), वादविवादौ (द्वि.) ।

—देना, मु., पदात् अवरुह् -च्यु (प्रे.) । क्रि. स., दे. 'उत्तर देना' ।

—मिलना, मु., अधिकारात् च्यु (भ्वा. आ. अ.), पदभ्रष्ट (वि.) भू ।

जवाबी, वि. (अ.) उत्तरापेक्षिन् ।

—कार्ड, सं. पुं., उत्तरापेक्षि-उत्तरणीय,-पत्रम् ।

—तार, सं. पुं., उत्तरापेक्षी तडित्संदेशः ।

जवार, सं. पुं., दे. 'ज्वार' ।

जवारा, सं. पुं. (हिं. जव) यव,-अंकुरः-प्ररोहः ।

ज़वाल, सं. पुं. (अ.) क्षयः, ह्रासः २. विपद् (स्त्री.) ।

जवास-सा, सं. पुं. (सं. यवासः) यासः, दुःस्पर्शः, रोदनी, दुरालभा ।

जवाह(हि)र, सं. पुं. (अ.) रत्नं, मणिः ।

जवाह(हि)रात, सं. पुं. (अ., बहु.) रत्नानि-मणयः (बहु.) ।

जशन, सं. पुं. (फ़ा.) धार्मिकोत्सवः २. उत्सवः, क्षणः ३. आनंदः, हर्षः ४. संगीतोत्सवः ।

जसामत, सं. स्त्री. (अ.) स्थूलता, पीनता, पीवरता ।

जसीम, वि. (अ.) पीन, पीवर, स्थूल ।

जस्टिस, सं. पुं. (अं.) उच्चन्यायालयस्य धर्म,-अधिकारिन्-अध्यक्षः, २. न्यायः, दंडयोगः ।

जस्त, जस्ता, सं. पुं. (सं. यशदं) कुधातु (न.) ।

जहन्नुम, सं. पुं. (अ.) नरकः, निरयः २. तीव्रपीडास्थानम् ।

ज़हमत, सं. स्त्री. (अ.) कष्टं, अपाद् (स्त्री.), २. व्यामोहः, चित्तविक्षेपः ।

ज़हर, सं. पुं. (फ़ा. जह्र) गरलं, विषः-षम् । वि., घातक, प्राणहर २. अतिहानिकर [-री (स्त्री.)] ।

ज़हरदार, वि. (फ़ा.) विषाक्त, गरलदिग्ध ।

ज़हरबाद, सं. पुं. (फ़ा.) विसर्पः ।

ज़हरमोहरा, सं. पुं. (फ़ा. जहरमुहरा) विषघ्नः प्रस्तरभेदः ।

ज़हरीला, वि. (फ़ा. ज़हर) दे. 'ज़हरदार' ।

जहाँ[1], क्रि. वि. (सं. यत्) यस्मिन् देशे-स्थाने ।

—कहीं, क्रि. वि., यत्रकुत्र,-चित्-अपि, यत्र यत्र ।

—का तहाँ, क्रि. वि., तत्रैव, पूर्वस्मिन्नेव स्थले ।

—तक, क्रि. वि., यावत् ।

—तहाँ, क्रि. वि., इतस्ततः, अत्र तत्र २. सर्वत्र ।

—से, क्रि. वि., यतः, यस्मात् स्थानात् ।

जहाँ[2], सं. पुं. (फ़ा.) जगत् , संसारः ।

—दीद,—दीदा, वि. (फ़ा.) अनुभविन् ।

—पनाह, सं. पुं. (फ़ा.) जगद्रक्षकः, प्रभुः २. प्रभुचरणाः, देवपादाः ।

जहाज, सं. पुं. (अ.) तरांधु (पुं.) बृहन्नौका, पोतः-थः, होडः ।

जहाज़ी, वि. (अ. जहाज) । सं. पुं., नाविकः, नौ-पोत,-वाहः, समुद्रगः ।

—डाकू, सं. पुं., सागरतस्करः, समुद्रदस्युः (पुं.) ।

—बेड़ा, सं. पुं. (रण-) पोतगणः ।

जहान, सं. पुं. (फ़ा.) जगत् (न.), सृष्टिः (स्त्री.) ।

जहालत, सं. स्त्री. (अ.) अज्ञानम् , मूर्खता ।

ज़हीन, वि. (अ.) कुशाग्रबुद्धि २. मेधाविन् ।

जहूर, सं. पुं. (अ.) आविर्भावः, प्रकाशः ।

जहेज़, सं. पुं. (अ.) युतकं, यौतकं, वाहनिकं; स्त्रीधनम् ।

जह्नु, सं. पुं. (सं.) नृपविशेषः, सुहोत्रपुत्रः ।

—कन्या—तनया, सं. स्त्री. (सं.) गंगा ।

जांगलू-ली, वि. (सं. जांगल) आरण्यक, वन्य, २. अशिष्ट, क्रूर ।

जाँघ, सं. स्त्री. (सं. जंघा) ऊरु (पुं.), सक्थि (न.) ।

जाँघिया, सं. पुं. (हिं. जाँघ) *जांघिकः, *ऊरुच्छदः दे. 'काछा' ।

जाँच, सं. स्त्री. (हिं. जाँचना) परीक्षणं-क्षा, विचारणं-णा २. अनुसंधानं, गवेषणा।

जाँचना, क्रि. स. (सं. याचनं >) परीक्ष् (भ्वा. आ. से.), विमृश् (तु. प. अ.), आ-पर्या लोच् (चु.), अनुसंधा (जु. उ. अ.), निरूप् (चु.), विचर् (प्रे.)।

जांबूनद, सं. पुं. (सं. न.) सुवर्णं, काञ्चनं, हिरण्यम्।

जा, सं. स्त्री. (फ़ा.) स्थानं, प्रदेशः। वि., उचित, योग्य, संगत।

—बजा, क्रि. वि., सर्वत्र।

—बेजा, वि., उचितानुचित, तथ्यातथ्य।

जाई, सं. स्त्री. (सं. जा = जाता) पुत्री, दुहितृ (स्त्री.)।

जाग, सं. पुं., (सं. यज्ञः) मखः, क्रतुः।

जाग, सं. स्त्री. (हिं. जागना) जागरणं, प्ररात्रि,-जागरः।

जागना, क्रि. अ. (सं. जागरणं) जागृ (अ. प. से.), प्र-वि-बुध् (दि. आ. अ.) सं. पुं., दे. 'जागरण'।

जागनेवाला, सं. पुं., जागरकः, जागरितृ (पुं.)। अवहितः; जागरूकः।

जागरण, सं. पुं. (सं. न.) प्र-,जागरः, प्र-, बोधः-धनं, निद्रा-स्वाप,-अभावः २. अवधानं दक्षता।

जागरित, वि. (सं.) उन्निद्र, विनिद्र, प्रबुद्ध। २. जागरूक, सावधान। सं. पुं., (सं. न.) दे. 'जागरण'।

जागरूक, वि. (सं.) जागरितृ, जागरक, जागरिन् २. अवहित, दक्ष, सावधान।

जागर्ति, सं. स्त्री. (सं.) जागर्या, जाग्रिया, निद्राऽभावः, प्रबोधः २. दक्षता।

जागीर, सं. स्त्री. (फ़ा.) अग्रहारः २. भूसंपद् (स्त्री.)।

—दार, सं. पुं. (फ़ा.) अग्रहारिन् २. भूस्वामिन्।

जाग्रत, वि. (सं. जाग्रत) दे. 'जागरूक'।

जाग्रति, जागृति, सं. स्त्री., दे. 'जागर्ति'।

जाज़रुर, सं. पुं. (फ़ा. जा + अ.) दे. 'पाखाना'।

जाजिम, सं. स्त्री. (तु. जाजम) चित्रितास्तरणं, तलाच्छादनम्।

जाज्वल्यमान, वि. (सं.) प्रज्वलत्, दह्यमान २. तेजस्विन्, कांतिमत्।

जाट, सं. पुं. (सं. जर्टः) आर्येषु जातिविशेषः २. जडः, मूढः ३. ग्रामीणः, ग्रामीयः, ग्रामिन्।

जाठ, सं. पुं. [सं. यष्टिः (स्त्री.)] तैल-इक्षु,-पेषणीयष्टिः।

जाठर, वि. (सं.) जठर-उदर,-सम्बधिन्-विषयक, औदर, जठर,-ज-स्थित-वर्तिन्। सं. पुं., जठराग्निः २, बालः।

—अग्नि, सं. पुं. (सं.) जठरानलः, जठराग्निः।

जाड़ा, सं. पुं. (सं. जाड्यं) शीतता, शीतलता, शैत्यं २. शिशिरः, शीतकालः, हिमागमः, शीततुः (पुं.)।

जाड्य, सं. पुं. (सं. न.) जडता, मूर्खता, मूढता २. मंदता, मंथरता।

जात[1], वि. (सं.) उत्पन्न, प्रसूत, संभूत २. प्रकट, व्यक्त ३. अच्छ, प्रशस्त ४. नवजात।

जात[2], सं. स्त्री., दे. 'जाति'।

ज़ात, सं. स्त्री. (अ.) प्रकृतिः (स्त्री.), स्वभावः २. देहः ३. व्यक्तिः (स्त्री.)।

जातक, सं. पुं. (सं.) वत्सः, बालः २. शिशुः नवजातः (पुं.) ३. भिक्षुः (पुं.), याचकः ४. बुद्धस्य पूर्वजन्मकथाः (स्त्री. बहु.)।

जातकर्म, सं. पुं. (सं.-र्मन् न.) जातक्रिया, संस्कारभेदः (धर्म.)।

जातपाँत, सं. स्त्री., दे. 'जातिपाँति'।

जाता, सं. स्त्री. (सं.) बाला, कन्या, कुमारी २. पुत्री, सुता, तनुजा।

जाति, सं. स्त्री. (सं.) वर्णः २. कुलं, वंशः ३. वंशावली, गोत्रं ४. भेदः, प्रकारः ५. वर्गः, श्रेणी ६.-७. समाजः, जनसमूहः ८. सामान्यं ९. जातिफलं १०. मालती।

—से खारिज करना, क्रि. स., जातेः-समाजात्-बहिष्कृ या च्यु-भ्रंश् (प्रे.)।

—च्युत, वि. (सं.) जातिहीन, अपांक्तेय, बहिष्कृत।

—पांति, सं. स्त्री., जात्युपजाती (स्त्री. द्वि.)।

—स्वभाव, सं. पुं. (सं.) सहज,-प्रकृतिः (स्त्री.)-स्वभावः।

ज़ाती, वि. (अ. ज़ात) वैयक्तिक २. स्वीय, नैज ।

जाती, सं. स्त्री. (सं.) सुरभिगंधा, सुरप्रिया, चेतकी, मालती ।

—पत्री, सं. स्त्री. (सं.) जातिकोषी, मालती-पत्रिका ।

—फल, सं. पुं. (सं. न.) जाति(ती)कोशः-शं-षः-षम् ।

—रस, सं. पुं. (सं. न.) वोलः ।

जातीय, वि. (सं.) जातिभव, जातिसंबंधिन् २. राष्ट्रीय, देशीय ३. सामाजिक ।

जातीयता, सं. स्त्री. (सं.) जाति,-प्रेमन् (पुं.)-अनुरागः २. राष्ट्रीयता ३. सामजिकता ।

जातुधान, सं. पुं. (सं.) निशाचारः, राक्षसः।

जादू, सं. पुं. (फ़ा.) अभिचारः, इन्द्रजालं, कार्मणं, कुसृतिः (स्त्री.) कुहकः-कं, माया, मोहः, मंत्रयोगः ।

—करना, क्रि. स., अभिचर् (प्रे.), मंत्रैः वशीकृ वा मुह् (प्रे.), मायां कृ ।

जादूगर, सं. पुं. (मा.) कौसृतिकः सौभिकः, ऐं(इं)द्रजालिकः, कुहकाजीविन्, मायाकारः।

जादूगरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) ऐन्द्रजालिकता, दे. 'जादू'।

जान, सं. स्त्री. (सं. ज्ञानं) बोधः, उपलब्धिः (स्त्री.), विचारः २. अनुमानं, ऊहः, तर्कः ।

—कार, वि., ज्ञातृ, ज्ञानिन्, वेत्तृ;-ज्ञ,-अभिज्ञ (समासांत में) २. दक्ष, कुशल ।

—कारी, सं. स्त्री., परिचय, अभिज्ञता २. नैपुण्यं, दाक्ष्यम् ।

—बूझ कर, क्रि. वि., कामतः, ज्ञान-बुद्धि-विचार,-पूर्वकम् ।

—पहिचान, सं. स्त्री., परिचयः परिचितिः (स्त्री.) ।

ज़ान, सं. स्त्री. (फ़ा.) प्राणः, जीवः-वनं, श्वासः २. बलं, सामर्थ्यं ३. सारः, उत्तमांशः ४. प्रियः, प्रिया ।

—जोखों, सं. स्त्री., प्राण,-संकटं-संशयः-भयम् ।

—दार, वि. (फ़ा.) प्राणिन्, सप्राण ।

—फ़िशानी, सं. स्त्री. (फ़ा.) परमोद्योगः, घोरपरिश्रमः ।

—किसी पर देना, मु., अत्यंतं स्निह् (दि. प. से.; सप्तमी के योग में) ।

—खाना, मु., दु (स्वा. प. अ.), बाध् (भ्वा. आ. से.) ।

—छुड़ाना, मु., अपसृ-अपसृप् (भ्वा. प. अ.) ।

—में जान आना, मु., आ-समा-श्वस् (अ. प. से.), सुस्थ-निर्वृत-(वि.) भू ।

जानकी, सं. स्त्री. (सं.) सीता, वैदेही, जनकतनया ।

जानना, क्रि. स. (सं. ज्ञानं) ज्ञा (क्र्. उ. अ.), अव-इ (अ. प. से.) अवगम्, बुध् (भ्वा. उ. से.), विद् (अ. प. से.) २. मन् (दि. आ. अ.), ऊह् (भ्वा. आ. से.), वितर्क् (चु.) । सं. पुं., दे. 'ज्ञान' ।

जानने योग्य, वि., दे. 'ज्ञातव्य' ।

जाननेवाला, सं. पुं., दे. 'ज्ञाता' ।

जानपद, सं. पुं. (सं.) ग्रामवासिन्, ग्रामिन, ग्रामीणः, ग्राम्यजनः २. जनपदप्राप्तकरः वि. जनपदग्राम,-सम्बन्धिन् ।

जानवर, सं. पुं. (फ़ा.) जीवः, प्राणिन्, चरः, चेतनः २. पशुः,-जंतुः (पुं.) । वि., जड, मूर्ख ।

जानशीन, सं. पुं. (फ़ा.) उत्तराधिकारिन् ।

जाना, क्रि. अ. (सं. यानं) या-इ (अ. प. अ.), गम् (भ्वा. प. अ.), चर्-चल्-व्रज् (भ्वा. प. से.) पद् (दि. आ. अ.), ऋ (भ्वा. जु. प. अ.) २. प्रस्था (भ्वा. आ. अ.), प्रया, प्रचल्, निर्गम् । सं. पुं., गमनं, यानं, व्रजनं, प्रस्थानं, प्रचलनं इ. ।

जाने योग्य, वि., गंतव्य, यातव्य ।

जानेवाला, सं. पुं., गंतृ-यातृ,चलितृ (पुं.) इ. ।

गया हुआ, वि., गत, यात, हृत, चलित इ. ।

जाने देना, मु., दे. 'क्षमा करना' ।

जानी, वि. (फ़ा. जान) प्राणसंबंधिन् । सं. स्त्री., प्रिया, दयिता ।

—दोस्त, सं. पुं., अभिन्नहृदयः सुहृद् (पुं.) ।

—दुश्मन, सं. पुं., अंतकरः-प्राणहरः शत्रुः (पुं.) ।

जानु, सं. पुं. (सं. न.) ऊरुपर्वन् (न.), अष्ठीवत् (पुं. न.), जानुसंधिः (पुं.), चक्रिका ।

जाने अनजाने, क्रि. वि. (हिं. जानना) ज्ञानतोऽज्ञानतो वा, कामतोऽकामतो वा, बुद्धिपूर्वमबुद्धिपूर्वं वा ।

ज़ानो, अव्य., दे, 'मानो'।
जाप, सं. पुं. (सं.) दे. 'जप'।
जापक, सं. पुं. (सं.) दे. 'जपी'।
ज़ाफ़त, सं. स्त्री. (अ. ज़ियाफ़त) सह-सं,-भोजनम्।
ज़ाफ़रान, सं. पुं. (अ.) दे. 'केसर'।
ज़ाफ़रानी, वि. (अ.) दे. 'केसरिया'।
जॉब, सं. पुं. (अं.) कर्मन् (न.), कार्यम् २. वैतनिक,-कार्यम्-कर्मन्।
ज़ाब्ता, सं. पुं. (अ.) नियमः, व्यवस्था, विधिः (पुं.)।
—दीवानी, सं. पुं., व्यवहारसंहिता।
—फ़ौजदारी, सं. पुं., दण्डसंहिता।
बेज़ाब्ता, वि. नियम-विधि, विरुद्ध, अवैध।
बेज़ाब्तगी, सं. स्त्री., अनिमयः, उत्सूत्रता।
जाम[1], सं. पुं. (सं. यामः) दे. 'पहर'।
जाम[2], सं. पुं. (फ़ा.) चषकः-कम्।
जामदग्न्य, सं. पुं. (सं.) जमदग्निपुत्रः परशुरामः।
ज़ामन, सं. पुं. (हिं. जमाना) द्र(द्रा)प्सं, त्र(द्र)प्स्यम्।
जामन, सं. पुं. दे. 'जामुन'।
जामा, सं. पुं. (फ़ा.) वसनं, वस्त्रं २. कंचुकः, प्रावारकः।
जामे से बाहर होना, मु., अत्यंतं क्रुध् (दि. प. अ.)।
जामे में फूला न समाना, मु., भृशं हृष् (दि. प. से.)।
जामाता, सं. पुं. दे. 'जमाई'।
ज़ामिन, सं. पुं. (अ.) प्रतिभूः (पुं.), वंधकः, लग्नकः।
ज़ामिनी, सं. स्त्री., दे. 'ज़मानत' (द्रव्य)।
जामिनी, सं. स्त्री., (सं. यामिनी) दे. रात्री-त्रिः (स्त्री.), निशा।
जामुन, सं. पुं. (सं. जम्बुः) (वृक्ष) जम्बूः-बुः (स्त्री.)। (फल) जम्बु (न.), जम्बुः-जम्बूः (स्त्री.), जंबुफलं, जाम्बवम्।
ज़ायक़ा, सं. पुं. (अ.) आ-,स्वादः, रसः।
ज़ायकेदार, वि. (अ.+फ़ा.) स्वादु, सरस, रसवत्।
जायज़, वि. (अ.) उचित, युक्त, संगत।

जायदाद, सं. स्त्री. (फ़ा.) रिक्थं, दायः, भूमिः-संपत्तिः (स्त्री.)।
जायफल, सं. पुं. [सं. जाति(ती)फलं] जाति-कोषं-सारं-शस्यं, कोश(ष)म्, पपुटम्।
जाया[1], सं. स्त्री. (सं.) पत्नी, भार्या, पाणिगृहीती।
—पती, सं. पुं. (सं.) दम्पती-जम्पती, (पुं. द्वि.)।
जाया[2], सं. पुं. (सं. जातः) पुत्रः, सुतः। वि., उत्पन्न, जात।
ज़ाया, वि. (फ़ा.) नष्ट, निरर्थक।
जार, सं. पुं. (सं.) उपपतिः, परदारलंपटः।
—ज, सं. पुं. (सं.) उपपतिसंतानः।
जारिणी, सं. स्त्री. (सं.) कुलटाः पुंश्चली, जघनचपला।
जारी, वि. (अ.) प्रवहत्, प्रवाहित २. वर्तमान, प्रचलत्, प्रचलित।
जालंधर, सं. पुं. (सं.) (१-४) नगर-नृप-मुनि-दैत्य,-विशेषः।
जाल[1], सं. पुं. (सं. न.) जालकं, पाशः, आनायः, वागुरा २. समूहः, निकरः ३. लूता-लूतिका,-जालम्।
जाल[2], सं. पुं. (अ. जअल) छलं, कपटं, माया।
—साज़, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) धूर्तः, शठः, मायिकः।
—साज़ी, सं. स्त्री., धूर्तता, कापट्यं, शाठ्यम्।
जाला, सं. पुं. (सं. जालं) लूता-लूतिका,-जालं २. जालदृष्टिः (स्त्री.) नेत्ररोगभेदः ३. घासादिबन्धनार्थं जालम्।
जालिक, सं. पुं. (सं.) धीवरः केवर्त्तः २. ऐन्द्र-जालिकः, कुहककारः ३. उर्ण-तंतु,-नाभः।
ज़ालिम, वि. (अ.) घोर, क्रूरकर्मन्, आततायिन्, पापिष्ठ।
जालिया, दे. 'जालसाज़'।
जाली[1], सं. स्त्री. (सं. जालं >) छिद्रप्रायं वस्त्रं, जालिका २. काष्ठादिपट्टेषु छिद्रसमूहः ३. सूचीकर्मभेदः जालिकाकर्मन्।
जाली[2], वि. (अ. जअल) कृत्रिम, कृतक।
जावा, सं. पुं. (सं. यवद्वीपः-पं) द्वीपविशेषः।

जीवंत, वि. (सं. जीवत्) सप्राण, जीवित, सजीव, जीवोपेत ।

जीव, सं. पुं. (सं.) । जीव-, आत्मन् (पुं.), शरीरिन् , देहिन् ।

—दान, सं. पुं. (सं. न.) प्राणदानं, जीवन-रक्षणम् ।

—दण्ड, सं. पुं. (सं.) प्राणदण्डः, मृत्युदण्डः २. वधः, मारणं, हननम् ।

जीवक, सं. पुं. (सं.) प्राणिन् , जीवधारिन् २. सेवकः, दासः ३. अ(आ)हितुंडिकः, कालग्राहिन् ४. कुसीदः-दकः, वार्द्धुषिकः, कुसीदिन् ।

जीवन, सं. पुं. (सं. न.) प्राणधारणं, चैतन्यं, सप्राणता ।

—चरित, सं. पुं. (सं. न.) जीवन,-चर्या-वृत्तान्तः-चरित्रम् ।

जीवन वृत्त,-वृत्तान्त, सं. पुं. (सं.) दे. 'जीवन चरित' ।

जीवनवृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) आजीविका, व्यवसायः, उपजीविका, जीवनोपायः, जीवन-साधनम् ।

जीवात्मा, सं. पुं. (सं.-त्मन्) दे. 'जीव' ।

जीविका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'जीवनवृत्ति' ।

जीवित, वि. (सं.) दे. 'जीता' ।

जुआ, सं. पुं. (सं. द्यूतं) पणः,पणनं-देवनं-ना, द्यूत-अक्ष,-क्रीडा ।

—खेलना, क्रि. अ., दिव् (दि. प. से.) (अक्षैः) क्रीड् (भ्वा. प. से.) ।

जुआरी, सं. पुं. (हिं, जुआ) द्यूतकारः, कितवः, अक्षदेविन् , देवितृ ।

ज़ुकाम, सं. पुं. (अ.) प्रतिश्यायः, श्लेष्म-स्रावः ।

जुग, सं. पुं. (सं. युगं) कालमानभेदः २. युगलं, द्वन्द्वम् ।

जुगनू, सं. पुं. (हिं. जुगजुगाना) खद्योतः, ज्योति-रिङ्गणः, दृष्टिबन्धुः प्रभाकीटः, उप-सूर्यकः, तमोमणिः ।

जुगल, सं. पुं. (सं. युगलं) दे. 'युगलं' या 'जुग' (२) ।

जुगालना, क्रि. अ. (सं. उद्गिलनम् >) रोमन्थं कृ, रोमन्थायते (ना. धा.) ।

जुगाली, सं. स्त्री. (हिं. जुगालना) रोमन्थः, पुनश्चर्वणम् ।

जुगुप्सा, सं. स्त्री. (सं.) बीभत्सः, घृणा, गर्हा, अरुचिः (स्त्री.) ।

जुटना, जुड़ना, क्रि. अ. (सं. युक्त) सं-,युज (कर्म.); संश्लिष् (दि. प. अ.); संमिल् (तु. प. से.) ।

जुटाना, जुड़ाना, क्रि. प्रे., व. 'जुड़ना' के प्रे. रूप ।

जुतना, क्रि. अ. (सं. युक्त >) युगं-योक्त्रं वह् (भ्वा. उ. अ.) ।

जुदा, वि. (फ़ा.) पृथक् , भिन्न ।

—करना, क्रि. स. वियुज (रुध् उ. अ.) पृथक्-कृ ।

—होना, क्रि. अ., पृथग्भू , विश्लिष् (दि. प. अ.) ।

जुदाई, सं. स्त्री. (फ़ा.) वियोगः, पार्थक्यम् ।

जुद्ध, सं. पुं. (सं. युद्धं) संग्रामः ।

जुमा, सं. पुं. (अ.) शुक्र-भृगु-,वारः-वासरः ।

जुरअत, सं. स्त्री. (फ़ा.) साहसिक्यं, साहसं, उत्साहः ।

जुरमाना, सं. पुं. (फ़ा.) दमः, अर्थदण्डः ।

जुर्म, सं. पुं. (अ.) अपराधः, दोषः ।

जुर्माना, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'जुरमाना' ।

—करना, क्रि. अ., दण्ड् (चु. द्विकर्मक) ।

—देना, क्रि. स., दण्डं-दमं दद् (भ्वा. उ. अ.) ।

—मुआफ करना, क्रि. स., दण्डं-दमं क्षम् (भ्वा. आ. से.) ।

जुलाब, सं. पुं. (अ. जुल्लाब) रेचनं, विरेचनं उदरशोधनं २. रेचकः-कं, विरेचकः-कम् ।

—देना, क्रि. स., विरिच् (प्रे.) ।

—लेना, क्रि. अ. (उदरं) विरिच् (रु. प. अ.) ।

जुलाहा, सं. पुं. (फ़ा. जौलाह) तन्तुवायः, वयः, कुविन्दः, तंत्रवापः, पटकारः ।

जुलूस, सं. पुं. (अ.) दे. 'जलूस' ।

ज़ुल्फ, सं. स्त्री. (फ़ा.) कुटिल-चूर्ण,-कुन्तलः, अलकः २. द्विफालबद्धाः चिकुराः ।

ज़ुल्म, सं. पुं. (अ.) अत्यचारः, क्रूर-घोर-, कर्मन् (न.) ।

ज़ुल्मत, सं. स्त्री. (अ.), अन्धकारः, तिमिरं, तमस् (न.) २. तिमिर-अन्धकार,-कालिमन् (पुं.)-कृष्णिमन् (पुं.)-श्यामता ।

ज़ुल्मी, वि. (अ. ज़ुल्म >) पापिष्ठ, आततायिन्, अत्याचारिन्, क्रूर ।
जुवा, सं. पुं. (हिं. जुआ) दे. 'जुआ' ।
जुवारी, वि. (हिं. जुआरी) दे० 'जुआरी' ।
जुष्ट, वि. (सं.) भुक्तशिष्ट, उच्छिष्ट २. प्रिय, इष्ट, प्रीत, प्रेष्ठ ३. युक्त, अन्वित, युत ४. सेवित ।
जुस्तजू, सं. स्त्री. (फ़ा.) अन्वेषणा, गवेषणा, मार्गणा ।
जुही, सं. स्त्री. (सं. यूथी) (सफ़ेद) यूथिका, बालपुष्पी, वासन्ती, (पीली) पीत-सुवर्ण, यूथी, हेमयूथिका, कनकप्रभा, हेमपुष्पिका ।
जू, सं स्त्री. (सं. यूका) केशटः, केशकीटः, स्वेदसंभवा, यूकः-का, षट्पदः-दी ।
जूआ, सं. पुं. (सं. युगं-गः) योक्त्रं, धुर्वी, प्रासंगः, ईषान्तबंधनं, धुर् (स्त्री.) ।
जूआ, सं. पुं., दे. 'जुआ' ।
जूठ-जूठन, सं. स्त्री. (हि. जूठा) भुक्तशेषः, उच्छिष्टं, अवशिष्टम् ।
जूठा, वि. (सं. जुष्ट) उच्छिष्ट, भुक्तशेष ।
जूड़ा, सं. पुं. (सं. जूटः) जूटकं, केशबन्धः, जटाग्रन्थिः ।
जूत-जूता, सं. पुं. (सं. युक्त >) पादत्राणं, उपानह् (स्त्री.) ।
—मारना, मु., पादत्राणेन तड् (चु.) २. तिरस्कृत ।
—खाना, मु., तिरस्कारं लभ् (भ्वा. आ. अ.) ।
जूती, सं. स्त्री., दे. 'जूता' ।
जूथ, सं. पुं., दे. 'यूथ' ।
जूनियर, वि. (इं.) अवर, अधर, अवरपदभाज् ।
जूही, सं. स्त्री., दे. 'जुही' ।
जृम्भा, सं. स्त्री (सं.) जृम्भः, जृम्भणं, जृम्भिका, जंभा, जंभका ।
जेठ, सं. पुं., दे. 'ज्येष्ठ' ।
जेठा, सं. पुं. (सं. ज्येष्ठः) प्रथमजः, अग्रजः ।
जेठानी, सं. स्त्री., दे. 'जिठानी' ।
जेब, सं. पुं. (फ़ा.) (चोलकञ्चुकादीनां)कोशः-षः ।
—कतरा, सं. पुं., चिल्लाभः, ग्रंथिच्छेदकः ।
जेर, सं. स्त्री. (सं. जरायुः) उल्वं, कललः ।
जेल, स. पुं. (अं.) कारा,-गृहं-आगारं, वन्दि,-गृहं-शाला ।
—ख़ाना, सं. पुं. (अ. फ़ा.) दे. 'जेल' ।
जेवर, सं. पुं. (फ़ा.) वि-आ-, भूषणं, आभरणं, अलंकारः, अलंकरणम् ।
जेहन, सं. पुं. (अ.) दे. 'ज़िहन' ।
जैन, सं. पुं. (सं.) जैनमतावलम्बिन् २. जैन,-मतं-सम्प्रदायः ।
जैनी, सं. पुं. (सं. जैन) दे. 'जैन' (१) ।
जैसा, वि. (सं. यादृश) यादृश्(श), यत्प्रकारक [जैसी (स्त्री.)=यादृशी] ।
—का तैसा, मु., पूर्ववत् , यथापूर्वम् ।
—चाहिए, मु., यथोचितं, यथार्हं, यथायोग्यम् ।
जो, सर्व. (सं. यः) यः (पुं.) या (स्त्री.), यत् (न.) ।
—कुछ, यत्किञ्चित् ।
—कोई, यः कश्चित्-कश्चन-कोऽपि ।
जोक, जोंक, सं. स्त्री. (सं. जलौका) जलुका, रक्त,-पा-पायिनी, जलाका, जलजन्तुका ।
ज़ोखों, सं. स्त्री., संकटं, विपद् (स्त्री.) ।
जोग, सं. पुं. (सं. योगक्षेम ?) दे. 'योग' ।
जोगिया, वि. (हि. जोगी) परिव्राजक, योगिसम्बन्धिन्, २. गैरिकरागयुक्त, गैरिकाक्त, गैरिकवर्ण ।
जोगी, सं. पुं. (सं. योगिन्) दे. 'योगी' ।
जोगिन, सं. स्त्री., दे. 'योगिनी' ।
जोजन, सं. पुं. (सं. योजनं) दे. 'योजन' ।
जोड़, सं. पुं. (सं. जोडः) बन्धनं, मेलनं २. योगः, संकलः, परिसंख्या, पिंडः । ३. अंग-सन्धिः, अंगग्रन्थिः ।
जोड़ना, क्रि. स. (सं. जोड़नं) एकत्र कृ, संमिल् (प्रे.) जुड् (भ्वा. तु. प. से.) युज् (रुध. उ. अ.), संश्लिष् (प्रे.) २. संकल् (चु.), परिसंख्या (अ. प. अ.) ।
जोड़ा, सं. पुं. (हिं. जोड़ना) युगलं, युग्मं २. द्वन्द्वं, मिथुनं ३. उपानद्युगलं ४. वेषः-शः ।
जोड़ी, सं. स्त्री. (हिं. जोड़ा) दे. 'जोड़ा' (१-२) ।
जोत[1], सं. स्त्री. [सं. ज्योतिस् (न.)] प्रकाशः, आभा, द्युतिः ।
जोत[2], सं. स्त्री. (हिं. जोतना) चर्मपट्टः, वरत्रा, वध्री ।
जोतना, क्रि. स. (सं. युक्त >) योक्त्रयति (ना. धा.), युज् (चु.) २. कृष् (भ्वा. प. अ.), हल् (भ्वा. प. से.) ।
जोतिष, सं. पुं., दे. 'ज्योतिष' ।

जोतिषी, सं. पुं., दे. 'ज्योतिषी'।

जोधा, सं. पुं. (सं. योद्धृ) योधः, भटः।

ज़ोफ़, सं. पुं. (अ.) दुर्बलता, निर्बलता।

जोबन, सं. पुं. (सं. यौवनं) तारुण्यम्।

ज़ोम, सं. पुं. (अ.) गर्वः, दर्पः, अहंमानः, अहंकारः।

ज़ोर, सं. पुं. (फ़ा.) बलं, शक्तिः २. वशः, अधिकारः ३. वृद्धिः-समृद्धिः (स्त्री.) ४. वेगः, आवेशः ५. आश्रयः ६. परिश्रमः ७. व्यायामः।

ज़ोरावर, वि. (फ़ा.) बलिष्ठ, शक्तिशालिन्।

ज़ोरदार, वि. (फ़ा) प्रबल, बलवत् २. अकाट्य, अखण्ड्य।

ज़ोराज़ोरी, अव्य. (फ़ा. ज़ोर >) बलात्, हठात्, प्रसभं, प्रसह्य (सब अव्य०)।

जोरू, सं. स्त्री. (हिं. जोड़ा) भार्या, पत्नी, गेहिनी।

जोलाहा, सं. पुं., दे. 'जुलाहा'।

जोश, सं. पुं. (फ़ा.) उत्तेजनं-ना, उत्साहः, व्यग्रता, चण्डता, मनोवेगः, आवेशः।

—देना, क्रि. स, प्रोत्सह् (प्रे.), उत्तिज् (प्रे.) २. पच् (भ्वा. प. अ.), क्वथ् (भ्वा. प. से.)।

जोशांदा, सं. पुं. (फ़ा.) क्वाथः, कषायः, निर्यासः।

जोशीला, वि., व्यग्र, उग्र, उत्साहिन्, उत्साहवत्, प्रचण्ड।

जोहड़, सं. पुं. (देश.) जलाशयः,ह्रदः,पल्वलम्।

जौ, सं. पुं. (सं. यवः) प्रवेटः,दीर्घ-सित,-शूकः, अश्वप्रियः, महाबुसः।

जौहर, सं. पुं. (अ.) रत्नं, मणिः (पुं., कमी स्त्री.) २. सारः, तत्त्वम्।

जौहरी, सं. पुं. (फ़ा.) मणिकारः, रत्नकारः २. रत्नपरीक्षकः।

ज्ञातव्य, वि. (सं.) ज्ञेय, अवगन्तव्य, बोद्धव्य।

ज्ञाता, वि. (सं. ज्ञातृ) वेत्तृ, ज्ञानिन्, बोद्धृ।

ज्ञाति, सं. पुं. (सं.) सगोत्रः, बन्धुः, बान्धवः, स्वः, स्वजनः, सकुल्यः, अंशकः, दायादः।

ज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) बोधः, प्रतीतिः (स्त्री.)।

ज्या, सं. स्त्री. (सं.) मौर्वी, शिञ्जिनी, गुणः।

ज्यादती, सं. स्त्री. (फ़ा.) आधिक्यं, प्राचुर्यं, अधिकता २, अत्याचारः।

ज्यादा, वि. (फ़ा.) अधिक, महत्, बहु।

—तर, वि. बहुसंख्याक, अधिकतर, भूयस्।

ज्येष्ठ, सं. पुं. (सं.) अग्रजः, प्रथमजः २. भर्तुः ज्यायान् भ्रातृ ३. ज्येष्ठः (मासः)। वि., वृद्ध २. श्रेष्ठ।

ज्यों, क्रि. वि. (सं.यः+इव यथा,) येन प्रकारेण।

—का त्यों, मु., यथापूर्वम्।

—त्यों, मु., यथा तथा।

ज्योति, सं. स्त्री. [सं. ज्योतिस् (न.)] प्रकाशः, प्रभा, द्युतिः (स्त्री.)।

ज्योतिष, सं. पुं. (सं. न.) ज्योतिर्विद्या, ज्योतिःशास्त्रं, नक्षत्रविद्या।

ज्योतिषी, सं. पुं. (सं. ज्योतिषिन्) दैवज्ञः, ज्योतिर्विद्, ज्योतिषिकः।

ज्योत्स्ना, सं. स्त्री. (सं.) चन्द्रिका, कौमुदी।

ज्वर, सं. पुं. (सं.) ज्वरिः, ज्वरा. जूर्तिः (स्त्री.), महागदः, तापकः।

थोड़ी थोड़ी देर बाद होनेवाला—, स्वल्पविरामज्वरः।

दौरेवाला—, पौनःपुनिकज्वरः।

प्रतिदिन होनेवाला—, अन्येद्युष्कज्वरः।

रुक रुककर होनेवाला—, सविरामज्वरः।

सड़ा—, रक्तदुष्टिः (स्त्री.)।

हर तीसरे दिन होनेवाला—, तृतीयकज्वरः।

हर चौथे दिन होनेवाला—, चतुर्थकज्वरः।

ज्वलंत, वि. (सं. ज्वलत्) उद्दीप्त, प्रकाशित।

ज्वलन, सं. पुं. (सं. न.) दाहः, तापः २, अग्निः ३. ज्वाला।

ज्वार[1], सं. स्त्री. (सं. यावनालः) अन्नविशेषः, वृत्ततण्डुलः, क्षेत्रेक्षुः।

ज्वार[2], सं. पुं. (देश.) वेलावृद्धिः (स्त्री.)।

—भाटा, सं. पुं., वेलाया वृद्धिक्षयौ (द्वि.)।

ज्वाला, सं. स्त्री. (सं.) शिखा, अर्चिः (न.)।

—मुखी, सं. पुं. (सं.) अग्निपर्वतः।

झ

झ, देवनागरीवर्णमालाया नवमो व्यञ्जनवर्णः, झकारः।

झं, झंकार, सं. पुं. स्त्री. (अनु.) झणत्कारः, झणझणध्वनिः, शिञ्जितम्।

झंखाड़, सं. पुं. (हिं. 'झाड़' का अनु.) कंटगुल्मः-मं, कंटस्तम्बः।

झंझट, सं. स्त्री., (अनु.) कृच्छ्रम्, आयासः. क्लेशः, वैषम्यम्।

झंझनाना, क्रि. अ. (अनु.) झणझणायते (ना. धा.), झणझणध्वनिं उत्पद् (प्रे.)।

झंझनाहट, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'झंकार'।

झंझा, सं. स्त्री. (सं.) झंझावातः, सवृष्टिको वातः।

झंझोड़ना, क्रि. स. (सं. झर्झनम्) क्षुभ् (प्रे.), सरमसं कंप् (प्रे.)।

झंड, सं. पुं. (हिं. झंडा) शिशोः अमुंडिताः केशाः, सहज-जन्मज,-केशाः-कचाः (पुं. बहु.)।

झंडा, सं. पुं. (हिं. झण्डी) ध्वजः, केतुः, केतनम्।

—बरदार, सं. पुं. पताकिन्, ध्वजिन्, वैजयन्तिकः, ध्वजपताका,- धारिन्-वाहिन्।

—गाड़ना, मु., स्वायत्ती-आत्मसात् कृ, अभि-परा,-भू।

झंडी, सं. स्त्री. (सं. जयन्ती) वैजयन्ती, पताका, दे. 'झंडा'।

झंडूला, वि. (हिं. झंड) असुंडित, अनुप्त-अकृत्त अच्छिन्न,-केश-मूर्द्धज।

झंप, सं. पुं. (सं.) झंपा, प्लुतं-तिः (स्त्री.) २. अश्वगलभूषणम्।

झक, सं. स्त्री. (अनु.) आवेशः, अभिनिवेशः, आग्रहः, निर्बन्धः २. प्रलापः, असंबद्धभाषणं, प्रजल्पः।

—मारना, क्रि. स., प्रलप्-प्रजल्प् (भ्वा. प. से.), निर्विवेकं भाष् (भ्वा. आ. से.)।

झकझक, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'झक'।

झकना, क्रि. अ., प्रलप्-प्रजल्प् (भ्वा. प. से.), विवद् (भ्वा. आ. से.)।

झक्की, सं. पुं. (हिं. झक) वावदूकः, प्र-, जल्पकः, वाचालः २. दृढाग्रहिन्।

झख, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'झक'।

झगड़ना, क्रि. अ. (हिं. झकझक) विवद् (भ्वा. आ. से.), विप्रलप् (भ्वा. प. से.), कलहं कृ, कलहायते (ना. धा.)।

झगड़ा, सं. पुं. (हिं. झगड़ना) वाग्युद्धं, कलिः, कलहः, विवादः।

झगड़ालु-लू, वि. (हिं. झगड़ा) विवादिन्, कलहप्रिय।

झट, क्रि. वि. (सं. झटिति) तत्क्षणं, अनुपदं, शीघ्रम्।

—पट, क्रि. वि., तत्कालमेव, सत्वरम्।

झटकना, क्रि. स. (हिं. झट) (सहसा) वेप्-कंप् (प्रे.) २. छलेन बलेन वा अपहृ (भ्वा. प. अ.)।

झटका, सं. पुं. (हिं. झटकना) हस्तादिकेन प्रचालनं-प्रेरणं-प्रणोदनं, ईषत्,-आघातः-प्रहारः २. सहसा वधः-हननम्।

झड़, सं. स्त्री. (हिं. झड़ना) दे. 'झड़ी'।

झड़झड़ाना, क्रि. स. (अनु.) दे. 'झंझोड़ना'।

झड़ना, क्रि. अ. (सं. झरणम् >) पत्-क्षर् (भ्वा. प. से.), शॄ (कर्म.) २. धाव्-निर्णिज् (कर्म.)।

झड़प, सं. स्त्री. (अनु.) कलहः २. क्रोधः ३. आवेशः।

झड़बेरी, सं. स्त्री. (हिं. झाड़ + बेरी), (फल) वन्यबदरम् (वृक्ष) भूबदरी, वन्यबदरः, शबराहारः।

झड़ी, सं. स्त्री. (हिं. झड़ना) सतत,-क्षरणं-पतनं २. सततवृष्टिः (स्त्री.)।

झड़वाना, क्रि. स. (झाड़ना) शुध्-मृज् (प्रे.) २. अपवह् (प्रे.) ३. 'झाड़ना' के (प्रे.) रूप।

झड़ाना, क्रि. स. (झाड़ना) दे. 'झड़वाना'।

झपक, सं. स्त्री. (हिं. झपकना) नेत्रनिमीलनं, पक्ष्मसंकोचः, निमेषः, तन्द्रा, ईषन्निद्रा २. पलं, क्षणः-णम्।

झपकना, क्रि. स. (अनु. झप्) निमील् (भ्वा. प. से.) नेत्रं संकुच् (भ्वा. प. से.), निमिष् (तु. प. से.)। क्रि. अ., निमील्, निमिष्

२. अल्पं निद्रा (अ. प. अ.)-स्वप् (अ. प. अ.)।

झपकाना, क्रि. स., दे. 'झपकना' क्रि. स.।

झपट, सं. स्त्री. (हिं. झपटना) आच्छेदः आकस्मिकग्रहणं २. सहसाक्रमणं, आकस्मिकः प्रहारः।

झपटना, क्रि. स. अ. (सं. झंपः >) आच्छिद् (रु. प. अ.), सहसा आ-कृष् (भ्वा. प. अ.) २. आक्रम् (दि. प. से.)।

झपट्टा, सं. पुं., **झपेट**, सं. स्त्री., } दे. 'झपट'।

झबरा, वि. (अनु.) सघनकेश, लोमश, दीर्घलोमन्।

झबरीला, वि., दे. 'झबरा'।

झमक, सं. स्त्री. (हिं. चमक) द्युतिः (स्त्री.), आभा, कान्तिः (स्त्री.)।

झमझम, **झमाझम** } सं. स्त्री. (अनु.) धारासारः, धारापातः, झंझा २. झणत्कारः, झणझणशब्दः।

झमेला, सं. पुं. (अनु. झांव) दे. 'झंझट'।

झरना, क्रि. अ. (सं. झरणं >) क्षर् (भ्वा. प. से.), स्रु (भ्वा. प. अ.), प्रपत् (भ्वा. प. से.)। सं. पुं., प्रपातः, स्रोतस् (न.), निर्झरः, उत्सः।

झरोखा, सं. पुं. (अनु. झरझर + हिं. गोखा) गवाक्षः, वातायनम्।

झलक, सं. स्त्री. (सं. झल्लिका) आभा, द्युतिः (स्त्री.), प्रकाशः २. प्रतिबिम्बः-बं, प्रतिच्छाया, प्रतिफलम्।

झलकना, क्रि. अ. (हिं. झलक) प्रकाश-विद्युत् (भ्वा. आ. से.) २. प्रतिफल् (भ्वा. प. से.) संक्रान्त-प्रतिबिंबित-प्रतिफलित (वि.) भू, प्रतिभा (अ. प. अ.)।

झलकाना, क्रि. स., व. 'झलकाना' के प्रे. रूप।

झलझलाना, क्रि. अ., दे. 'चमकना' क्रि. स., दे. 'चमकाना'।

झलझलाहट, सं. स्त्री., दे. 'चमक'।

झलना, क्रि. स. (हिं झलझल) वीज् (चु.), व्यंजनं घूर्ण् (प्रे.)।

झलमलाना, क्रि. अ. (अनु. झलमल) सकम्पं प्रकाश (भ्वा. आ. से.)।

झलवाना, क्रि. प्रे., व. 'झलना' के प्रे. रूप।

झल्लाना, क्रि. अ. (हिं झल = क्रोध) प्रकुप् (दि. प. से.), क्रुध् (दि. प. अ.)। क्रि. स., व. उक्त धातुओं के प्रे. रूप।

झष, सं. पुं. (सं.) मत्स्यः, मीनः।

—केतु, सं. पुं. (सं.) कामः, मारः, रतिपतिः, मनोजः।

झांई, सं. स्त्री. (सं. छाया) प्रतिबिम्बः-बं, प्रति,-च्छाया-फलं-रूपं २. अंधकारः २. छलम्।

झांकना, क्रि. अ. (सं. झष् अथवा अध्यक्ष) जालमार्गेण दृश् (भ्वा. प. अ.) २. निगूढं निरूप् (चु.)।

झांकी, सं. स्त्री. (हिं. झांकना) ईषद् अभिव्यक्तिः (स्त्री.) २. ईक्षणं, निरूपणं ३. दृश्यं ४. गवाक्षः।

झांझ, सं. स्त्री. (अनु. झनझन) झल्लकं, झल्लरी, कांस्यकरतालकम्।

झाँझन, सं. स्त्री. (अनु.) नूपुरः-रम्।

झाँझरी, सं. स्त्री., दे. 'झाँझ' तथा 'झाँझन'।

झांवां, सं. पुं. (सं. झामकम्) दग्धेष्टका २. क्रोधः ३. कुचेष्टा।

झांसा, सं. पुं. (सं. अध्यासः >) छलं, कपटं, प्रतारणा।

—देना, झांसना, क्रि. स., वंच् (चु.), प्रतॄ (प्रे.), छलयति (ना. धा.)।

झाऊ, सं. पुं. (सं. झावूः) पिचुलः, झावुः, क्षुपभेदः।

झाग, सं. पुं. (हिं. गाज) फेनः, डिंडीरः, अम्बुकफः, मंडः-डम्।

झाड़, सं. पुं. (सं. झाटः >) कंटगुल्मः-मं, कंटस्तम्बः। (झाड़ी स्त्री.)।

—झंखाड़, सं. पुं., गोक्षुरः, शुष्कगुल्मः।

झूंड़, सं. पुं., गुल्मगहनं, निविडस्तम्बः।

—पोंछ, सं. स्त्री., मार्जनं, शोधनम्।

—फानूस, सं. पुं., काचदीपिका।

—फूँक, सं. स्त्री. यंत्रमंत्रम्, मंत्रयोगः।

झाड़न, सं. पुं. (हिं. झाड़ना) नक्तकः, मार्जनपटः।

झाड़ना, क्रि. स. (हिं. झड़ना) रेणुं अपमृज् (अ. प. वे.), निर्धूलीकृ।

—पोंछना, क्रि. स., प्रोंछ् (भ्वा. प. से.)।

झाड़ा, सं. पुं. (हिं. झाड़ना) वस्त्र-वसन-, अन्वेषणा-निरीक्षा २. गूथः-थं, मलं, पुरीषम्।

झाड़ू, सं. स्त्री. (हिं. झाड़ना) संमार्जनी, शोधनी ।
—देना, क्रि. स., संमृज् (अ. प. वे.), शुध् (प्रे.) ।
झामा, सं. पुं. (सं. झामकं) दग्धेष्टका ।
झालर, सं. स्त्री. (सं. झल्लरी) दशाः (स्त्री. बहु.), वस्तयः (स्त्री.पुं.बहु.), वस्त्रप्रान्तः ।
—दार, वि., झल्लरीयुक्त, प्रान्तोपेत ।
झिझक, सं. स्त्री. (हिं. झिझकना) आशंका, विकल्पः, सन्देहः ।
झिझकना, क्रि. अ. (अनु.) आशंक्-विकल्प् (भ्वा. प. से.), दोलायते-चिरायते (ना. धा.), संशी (अ. आ. से.) ।
झिड़क, सं. स्त्री. (हिं. झिड़कना) भर्त्सनं, आक्रोशः, अधिक्षेपः ।
झिड़कना, क्रि. स. (अनु.) आक्रुश् (भ्वा. प. अ.), अधिक्षिप् (तु. प. अ.), निर्भर्त्स् (चु. आ. से.) ।
झिड़की, सं. स्त्री. (हिं. झिड़कना) दे. 'झिड़क' ।
झिलमिल, सं. स्त्री. (अनु.) प्रकम्पमानः प्रकाशः ।
झिल्ली[1], सं. स्त्री. (सं.) चिल्ली, झिरी, झिरिका, झिल्लिका, भृङ्गारी ।
झिल्ली[2], सं. स्त्री.(सं. चैलं >) सूक्ष्म-त्वच् (स्त्री.)-चर्मन् (न.) २. जरायुः, उल्वम् ।
झींकना, झींखना, क्रि. अ. (हिं. खीजना) अनुशुच् (भ्वा. प. से.), अनुतप् (दि. आ. अ.), पश्चातापं कृ । सं. पुं., पश्चातापः, विप्रतीसारः, अनुतापः, अनुशयः ।
झींगुर, सं. पुं. (अनु.झीं-झीं) दे. 'झिल्ली'(१) ।
झीना, वि. (सं.झीर्ण >) सूक्ष्म, विरल, तनु ।
झील, सं. स्त्री. (सं. क्षीरं >) सरोवरः, जलाशयः, सरसी, सरस् (न.) ।
झीवर, सं. पुं. (सं. धीवरः) नाविकः, औडुपिकः २. कैवर्तः, मत्स्याजीवः ।
झुंझलाना, क्रि. अ. (अनु.) कुप् (दि. प. से.), क्रुध् (दि. प. अ.) ।
झुंझलाहट, सं. स्त्री. (हिं. झुंझलाना) कोपः, क्रोधः, रोषः, अमर्षः ।
झुंट, सं. पुं. (सं.) अस्कन्धवृक्षः, अप्रकाण्डतरुः ।
झुंड, सं. पुं. (सं. झुण्टः >) समुदायः, समूहः, गणः, वृन्दः, कदम्बकम् ।

झुकना, क्रि. अ. (सं. युज् >) अव-, नम् (भ्वा. प. अ.), नम्रीभू २. वक्रीभू ।
झुकाना, क्रि. स. (हिं. झुकना) नम् (प्रे.), वक्री कृ ।
झुकवाना, क्रि. प्रे. (हिं. झुकना) दे. 'झुकाना' ।
झुकाव, सं. पुं. (हिं. झुकना) प्रवणता, नतिः (स्त्री.) २. वक्रता ३. प्रवृत्तिः (स्त्री.) ।
झुकावट, सं. स्त्री. (हिं. झुकना) दे. 'झुकाव' ।
झुटपुटा, सं. पुं. (अनु. झुटपुट) संधिकालः, अहोरात्रसंयोगसमयः, संध्या ।
झुटलाना, झुठलाना, झुठाना, } क्रि. स. (हिं. झूठ) मिथ्यावादित्वं प्रमाणयति (ना. धा.), निराकृ, प्रत्याख्या (अ. प. अ.) ।
झुठाई, सं. स्त्री. (हिं. झूठ) असत्यता, अनृतत्वं, अलीकता, मिथ्यात्वम् ।
झुनझुन, सं. स्त्री. (अनु.) छणत्कारः, झणत्कारः, झणझणध्वनिः (पुं.) ।
झुनझुना, सं. पुं. (अनु.)* झुणझुणकः ।
झुनझुनी, सं. स्त्री. (अनु.) *झुणझुणी, अंगेषु जाड्यानुभूतिः (स्त्री.) ।
झुमका, सं. पुं. (हिं. झूमना) तालपत्रम् ।
झुरमट, झुरमुट, } सं. पुं. (सं. झुंटः >) समुदायः, समूहः २. स्तम्बः, गुल्मः ।
झुर्री, (हिं. झुरना) वली-लिः (स्त्री.), चर्मसंकोचः २. पुटः, भंगः ।
झुलसना, क्रि. अ. (सं. ज्वलनं) ईषत् दह्-प्लुष् (कर्म.) ।
झुलसाना, क्रि. स., ईषत् दह् (भ्वा. प. अ.), प्लुष् (भ्वा. प. से.) ।
झुलाना, क्रि. स. (हिं झूलना) प्रेंख् (प्रे.) इतस्ततः चल् (प्रे.) ।
झूट, झूठ, } सं. पुं. (सं. अयुक्तं) असत्यं, अनृतं, अलीकं, मिथ्यावचनं, असत्यभाषणं । वि., मिथ्या-मृषा-(समासके आदिमें) असत्य, अतथ्य, वितथ ।
झूटा, झूठा, } वि. (हिं. झूट-ठ) मिथ्या असत्य, असत्यवादिन्-मिथ्याभाषिन् ।
झूम, सं. स्त्री. (हिं. झूमना) तन्द्रा, आलस्यं २. आन्दोलनं, प्रेंखणम् ।
झूमना, क्रि. अ. (सं. झंपः) अथवा 'घूम'का (अनु.) इतस्ततः चल् (भ्वा. प. से.) ।
झूल, सं. स्त्री. (हिं. झूलना) कुथः-थं-था, प्रवेणी-णिः (स्त्री.), परिस्तोमः, सज्जना ।

झूलना, क्रि. अ. (सं. दोलनं)दोलायते(ना.धा.), प्रेंख् (भ्वा. प. से.)।

झूला, सं. पुं. (सं. दोला-लः-लिका) प्रेंखा, हिंदोलः, आन्दोलः।

झेलना, क्रि. स. (सं. क्ष्वेलनं >) सह् (भ्वा. आ. से.), मृष् (दि. उ. से.)।

झोंकना, क्रि. स. (हिं. झुकना) अग्नौ क्षिप् (तु. उ. अ.) २. प्रेर् (चु.) प्रणुद् (प्रे.)।

झोंक देना, क्रि. स., दे. 'झोंकना' (२)।

झोंका, सं. पुं. (हिं. झोंकना,) वायुवेगः, पवनप्रहारः, वातगुल्मः।

झोंपड़ा, सं. पुं. (हिं. छोपना ?) उटजः-जं, कुटीरः-रं. कुटी, कुटीरकः, पर्णशाला।

झोल, सं. पुं. (हिं. झूलना) शैथिल्यं, संकोचः २. संवरणं, व्यवधानं ३. रञ्जनं, लेपनम्।

—फेरना, लिप् (तु. उ. अ.), रंज् (प्रे.)।

झोला, सं. पुं. (हिं. झूलना) पुटः-टं, प्रसेवः.. कोषः (झोली स्त्री. = लघुपुटः इ.)।

ञ

ञ, देवनागरीवर्णमालाया दशमो व्यञ्जनवर्णः, ञकारः।

ट

ट, देवनागरीवर्णमालाया एकादशो व्यञ्जनवर्णः, टकारः।

टंक, सं. पुं. (सं.) ग्रावदारणः, पाषाणभेदनः २. व्रश्चनः, तक्षणी ३. परशुः, कुठारः ४. खड्गः ५.चतुर्माषकात्मकः चतुर्विंशतिरक्तिकात्मको वा तोलभेदः ६. क्रोधः ७. अभिमानः ८. जंघा ९. खनित्रं १०. कोषः, निधिः ११. मुद्रा, नाणकम्।

टँकना, क्रि. अ. (सं. टंकणं) ब. 'टाँकना' के कर्म. के रूप।

टंकवाई, सं. स्त्री. (हिं. टंकवाना) १-३. टंकन-सीवन-लेखन,-भृत्या-भृतिः (स्त्री.)।

टंकवाना, क्रि. प्रे., ब. 'टाँकना' के प्रे. रूप।

टंका, सं. स्त्री. (सं.) जंघा, प्रसृता।

टँकाई, सं. स्त्री. (हिं. टाँकना) दे. 'टंकवाई'।

टँकाना, क्रि. प्रे., दे. 'टंकवाना'।

टंकार, सं. स्त्री. (सं. पुं.) ज्या-मौर्वी,-घोषः-शब्दः, शिंजिनीशिंजितं २. टणत्कारः, रणितिः ३. झण-झण,रणितं-निनदः।

टंकारना, क्रि. स. (सं. टंकारः >) ज्यां घुष् (चु.), मौर्वीं आस्फल् (प्रे.) टंकारयति (ना. धा.)।

टंकी, सं. स्त्री. (अं. टैंक) तोयाधारः, वापिका २. द्रोणी-णिः (स्त्री.)।

टंग, सं. पुं. (सं. पुं. न.) ग्रावदारणः, पाषाणभेदनः २. परशुः ३. चतुर्माशात्मकः तोलभेदः ४. दे. 'टाँग'।

टंगना, क्रि. अ., दे. 'लटकना'।

टंटा, सं. पुं. (अनु. टन टन) उपद्रवः, कलहः २. प्रपंचः, आडंबरः।

टक, सं. स्त्री. (सं. टक् = बाँधना >) अनिमेषबद्ध-स्थिर,-दृष्टिः (स्त्री.)।

—बाँधना, मु., अनिमि(मे)षनयन (वि.) दृश् (भ्वा. प. अ.)।

—लगाना, मु. प्रतीक्ष् (भ्वा. आ. से.)।

टकटकी, सं. स्त्री., दे. 'टक'।

—बाँधना, मु., बद्ध-स्थिर,-दृष्ट्या अवलोक् (चु.)।

टकराना, क्रि. अ. (हिं. टक्कर) संघट्ट् (भ्वा. आ. से.), अभि-आ-प्रति,-हन् (अ. प. अ.), अभि-सं-पत् (भ्वा. प. से.) क्रि. स., उक्त धातुओं के प्रे. रूप।

टकसाल, सं. स्त्री. (सं. टंकशाला), मुद्रांकणशाला।

टकसाली-लिया, सं. पुं. (हिं. टकसाल) टंक,-अध्यक्षः-पतिः (पुं.), नैष्किकः। वि., टंकशालासंबन्धिन् २. शुद्ध, निर्दोष ३. सर्वसम्मत ४. प्रामाणिक, परीक्षित।

टका, सं. पुं. (सं. टंकः >) अर्द्धाणी, पणयुगलं २. रूप्य-प्यकं, कार्षिकः, टंकः ३. धनम्।

—सा जवाब देना, मु., झटिति नि-प्रति-षिध् (भ्वा. प. से.)-प्रत्याख्या (अ. प. अ.)।

—सा मुँह लेकर रह जाना, मु., त्रप् (भ्वा. आ. से.), लज्ज् (तु. आ. से.)।

टकोर, सं. स्त्री. (सं. टङ्कारः) दे. 'टङ्कार' (२), २. आघातः, प्रहारः ३. पटहप्रहारः ४. दुंदुभि-

पटह,-ध्वनिः (पुं.) ५. प्र-,स्वेदनं, (उष्ण-जलादिना) सेकः ।

टकोरना, क्रि. स. (हिं. टकोर) भेरीं आहन् (अ. प. अ.) २. प्रहृ (भ्वा. प. अ.) ३. (उष्णजलादिभिः) सिच् (तु. प. अ.), लिप् (तु. प. अ.), प्र-,स्विद् (प्रे.) ।

टक्कर, सं. स्त्री. (अनु. टक) संघट्टः, संमर्दः, समा-प्रति,-घातः २. विग्रहः, संग्रामः, संप्रहारः ३. हानिः (स्त्री.) ४. मस्तक-शीर्ष,-आघातः ।

—का, मु., सम, समान, तुल्य ।

—खाना, मु., दे. 'टकराना' क्रि. अ. ।

—मारना, मु., ब. 'टकराना' के प्रे. रूप २. विरुध् (रु. उ. अ.) ३. यत् (भ्वा. आ. से.) ।

टख़ना, सं. पुं. (सं. टंकः = टांग >) गुल्फः, घुटिकः, घुटी, घुण्टः, खुडकः ।

टटोल, सं. स्त्री. (हिं. टटोलना) स्पर्शः, सम्पर्कः, परामर्शः, स्पर्शजो बोधः ।

टटोलना, क्रि. स. (सं. त्वक् + तोलनं >) स्पर्शेन परीक्ष् (भ्वा. आ. से.) निरूप् (चु.), स्पृश्-परामृश् (तु. प. अ.) २. अंधकारे अन्विष् (दि. प. से.)-निरूप्-परामृश् ।

टट्टी, सं. स्त्री. (सं. स्थात्री ?) (वंशतृणादि-रचित) कपा(वा)टः-टं-टी, २. प्रतिसीरा, तिरस्करिणी ३. सूक्ष्मभित्ति (स्त्री.) ४. शौच-कूपं, मलालयः ५. मलं, उच्चारः ।

—जाना, मु., पुरीषोत्सर्गाय गम् ।

—की आड़ (या. ओट) से शिकार खेलना, मु., प्रच्छन्नं प्रहृ (भ्वा. प. अ.), निभृतं पाप-माचर् (भ्वा. प. से.) ।

टट्टू, सं. पुं. (अनु.) क्षुद्रघोटकः अश्वशावकः ।

टन, सं. पुं. (अनु.) घंटाध्वनिः (पुं.), टण-त्कारः, टणिति ।

—टन, सं. पुं., टणटण,-निनदः-रणितं, टणटण-त्कारः क्वतिः (स्त्री.) ।

टन, सं. पुं. (अं.) अष्टाविंशतिमणकल्पः, तोल-भेदः, *टनम् ।

टनकना, क्रि. अ. (अनु.) टणटणायते (ना. धा.), टणत्कारं कृ २. घर्मेण शिरःपीड् (कर्म.) ।

टनटनाना, क्रि. स. (अनु.) घंटां नद्-वद् (प्रे.) । क्रि. अ., दे. 'टनकना' ।

टनाटन, सं. स्त्री. (अनु.) निरन्तरः टणटण-त्कारः ।

टप[1], सं. पुं. (हिं. तोपना = ढांकना) प्रवहणा-दीनाम् आच्छादनं-आवरणं-छत्रम् ।

टप[2], सं. पुं. (अं. टब) द्रोणी-णिः (स्त्री.) ।

टप[3], सं. स्त्री. (अनु.) विंदुपातध्वनिः (पुं.), टप् इति शब्दः ।

—से, मु. झटिति, आशु, शीघ्रम् ।

टपक, सं. स्त्री., दे. 'टपकाव' ।

टपकना, क्रि. अ. (अनु. टप) कणशः-विंदु-क्रमेण क्षर्-गल् (भ्वा. प. से.)-स्रु (भ्वा. प. अ.)-स्यन्द् (भ्वा. आ. से.) २. (फलादि) झटिति नि-अव-पत् (भ्वा. प. से.) ३. परिस्रु, क्षर् ४. दे. 'टीसना' ।

टपका, सं. पुं. (हिं. टपकना) स्वयं पतितं पक्वफलम् ।

—टपकी, सं. स्त्री., शीकर,-वर्ष-पातः २. सतत-फलपातः ।

टपकाना, क्रि. स., ब. 'टपकना' के प्रे. रूप ।

टपकाव, सं. पुं. (हिं. टपकना), (कणशः) क्षरणं-गलनं-स्यन्दनं-स्रावः ।

टपना, क्रि, अ., दे. 'कूदना' ।

टपाटप, क्रि. वि. (अनु.) सततं, निरंतरं, अविरतम् ।

टप्पा, सं. पुं. (अनु.) प्लवः, प्लवनं, प्लुतं-तिः (स्त्री.), झंपः-पा २. गीतिकाभेदः ।

—खाना, क्रि. अ., उत्पत् (भ्वा. प. से.), उत्प्लु (भ्वा. आ. अ.) ।

टब, सं. पुं. (अं.) दे. 'टप'[2] ।

टब्बर, सं. पुं., दे. 'कुटुम्ब' ।

टमकी, सं. स्त्री. (अनु० टमक) डिंडिमः, लघुपटहः ।

टमटम, सं. स्त्री. (अं. टैंडम) अश्वयानभेदः, *टमटमम् ।

टमाटर, सं. पुं. (अं. टमैटो) आंग्लीय-रक्त-वृन्ताकम् ।

टर, सं. स्त्री. (अनु.) टरशब्दः, अप्रिय-कर्कश-कर्णकटु,-शब्दः २. भेकरवः ३. दर्पोक्तिः (स्त्री.) ४. दुराग्रहः, प्रतीपता ५. तुच्छवचनम् ।

—टर, सं. स्त्री., वृथालापः, प्र-,जल्पः-पितं २. भेकरुतम् ।

—टर करना, क्रि. अ., दे. 'टरटराना' ।

टरकना, क्रि. अ., दे. 'टलना' तथा 'टरटराना'।

टरकाना, क्रि. सं., दे. 'टालना'।

टरटराना, क्रि. अ. (अनु. टरटर) प्रलप्-प्रजल्प् (भ्वा. प. से.) २. अविनयेन ब्रू (अ. उ. से.) टरटरायते (ना. धा.)।

टर्रा, वि. (अनु. टरटर) वावदूक, वाचाल इ. २. धृष्ट, निर्व्रीड।

टर्राना, क्रि. अ. (अनु. टर) साभिमानं वद् (भ्वा. प. से.) धार्ष्ट्येन ब्रू (अ. उ. से.), कटु वद्।

टलना, क्रि. अ. (सं. टलनं >) विचल् (भ्वा. प. से.), अपसृ (भ्वा. प. अ.) २. स्थानान्तरं या (अ. प. अ.). प्रस्था (भ्वा. आ. अ.) ३. वि-,नश् (दि. प. वे.), लुप् (दि. प. अ.) ४. व्याक्षिप् (कर्म.), विलंब् (भ्वा. आ. से.) ५. अन्यथा भू ६. (समयः) व्यति-इ (अ. प. अ.), गम्।

टस, सं. स्त्री. (अनु.) गुरुद्रव्यसरणशब्दः, टस् इति शब्दः।

—से मस न होना, मु., ईषदपि न विचल्।

टसक, सं. स्त्री. (हिं. टसकना) दे. 'टीस'।

टसकना, क्रि. अ. (हिं. टस) अप,-गम्-सृ (भ्वा. प. अ.), अपया (अ. प. अ.) २. दे. 'टीसना'।

टसकाना, क्रि. स., व. 'टसकना' के प्रे. रूप।

टसर, सं. पुं. (सं. त्रसरः >) क्षौमभेदः, *टसरम्।

टसर-मसर, सं. पुं. (हिं. टस + मस) विलंबः, व्याक्षेपः।

टसुआ, सं. पुं. (हिं. अँसुआ) मिथ्याश्रु (न.), वितथबाष्पः।

टहना, सं. पुं. (सं. तनुः >) विटपः, शाखा।

टहनी, सं. स्त्री. (हिं. टहना) तनु-सूक्ष्म, विटपः-शाखा।

टहल, सं. स्त्री., दे. 'सेवा'।

टहलना, क्रि. अ. (सं. तत् + चलनं ?) परि,-अट्-भ्रम् (भ्वा. प. से.), विहृ (भ्वा. प. अ.), इतस्ततः चर् (भ्वा. प. से.), परिक्रम् (भ्वा. प. से; भ्वा. आ. अ.)।

टहलनी, सं. स्त्री., दे. 'नौकरानी'।

टहलाना, क्रि. स., व. 'टहलना' के प्रे. रूप।

टहलुआ-वा, टहलू, } सं. पुं., दे. 'नौकर'।

टहलुई, सं. स्त्री., दे. 'नौकरानी'।

टाँक[1], सं. स्त्री. (सं. टंकः) चतुर्माषकात्मकः तोलभेदः २. अर्घगणना, मूल्यनिरूपणम्।

टाँक[2], सं. स्त्री. (हिं. टाँकना) लेखः, लिखनं, लिपिः (स्त्री.) २. दे. 'निब'।

टाँकना, क्रि. स. (सं. टंकनं) टंक् (भ्वा. प. से; चु.), कीलादिभिः संधा (जु. उ. अ.)-संयुज् (रु. उ. अ.) २. सिव् (दि. प. से.), वे (भ्वा. उ. अ.) ३. पादुकाः संधा ४. संक्षिप् (प्रे.) संयुज् ५. पंजिकादिषु लिख (तु. प. से.) ६. शिलादीनि दंतुरयति (ना. धा.)।

टाँका, सं. पुं. (हिं. टाँकना) संधायक-संयोजक,-कीलः-शंकुः २. सी(से)वन,-अंशः-भागः ३. सी(से)वनं, स्यूतिः (स्त्री.) ४. पट-वस्त्र,-खंडः ५. टंकन, संधायक,-धातुः ६. व्रणसेवनम्।

टाँकी, सं. स्त्री. (सं. टंकः) तक्षणी, व्रश्चनः २. खर्बूजादिषु कृतं छिद्रं ३. दे. 'टाँका'।

टांग, सं. स्त्री. (सं. टंगा) टंकः-कं-का, जंघा, प्रसृता, पादः।

—अड़ाना, मु., परकार्याणि चंच् (तु. प. से; चु. आ. से.)-निरूप् (चु.)।

—तले से निकलना, मु., स्वपराजयं स्वीकृ।

—पसार कर सोना, मु., निःशंकं-निर्भयं स्वप् (अ. प. अ.)-शी (अ. आ. से.) २. सानन्दं जीवनं या (प्रे.)।

टाँगना, क्रि. स., दे, 'लटकाना'।

टांगा, सं. पुं. (हिं. टँगना) अश्ववाहनभेदः।

टांगी, सं. स्त्री., दे. 'कुल्हाड़ी'।

टाँच, सं. स्त्री. (हिं. टाँकी) कार्यबाधक,-उक्तिः (स्त्री.)-कथनम्।

टाँचना, क्रि. स., दे. 'टाँकना'।

टाँड, सं. स्त्री. [सं. स्थाणुः (पुं.) >] मंचः २. दे. 'परछत्ती'।

टाँयटाँय, सं. स्त्री. (अनु.) कर्कश कटु,-शब्दः-ध्वनिः (पुं.) २. प्रलापः, प्र-,जल्पः।

—फिस, मु., निष्फलः आडंबरः, व्यर्थः प्रयासः।

टाइप, सं. पुं. (अं.) मुद्राक्षरं २. टंकणयन्त्रम्।

टाइफ़स बुखार, सं. पुं. (अं+अ.) मोहज्वरः, *यूकाज्वरः ।

टाट, सं. पुं. (सं. तंतुः >) शाण,-पटः-वस्त्रं, शाणं, वराशिः-सिः (पुं.) ।

टाप, सं. स्त्री. (अनु.) अश्व,-खुरः-क्षुरः-शफः-शफम् २. अश्वपादशब्दः ।

टापना, क्रि. अ. (हिं. टाप) खुरेण अभिहन् (अ. प. अ.)-विलिख् (तु. प. से.) २. अधीर-व्यग्र (वि.) भू ३. व्यर्थं परिभ्रम् (भ्वा. प. से.) ४. दे. 'कूदना' ।

टापू, सं. पुं., दे. 'द्वीप' ।

टारना, क्रि. स., दे. 'टालना' ।

टारपीडो, सं. पुं. (अं.) अन्तर्जलाग्निनालिका, अस्त्रभेदः, *तारपीडुः ।

टार्च, सं. स्त्री. (अं.) वियुज्झिज्झिनी ।

टाल[1], सं. स्त्री. (सं. अट्टालः >) चयः, राशिः (पुं.), उत्किरः, चितिः (स्त्री.) २. (काष्ठा-दीनां) बृहद्,-आपणः-विपणिः (स्त्री.) ।

टाल[2], सं. स्त्री. (हिं. टालना) अप-व्यप,-देशः, छलेन परिहरणं, निह्नवः ।

—टूल, —मटा(टू, टो)ल, } सं. स्त्री., अप-नि,-ह्नवः, अप-व्यप,-देशः, विलंबः, व्याक्षेपः ।

—करना, क्रि. अ., अतिपत् (प्रे.), विलंब् (तु. प. अ.) व्याक्षिप् (तु. प. अ.) ।

टालना, क्रि. स. (हिं. टलना) वक्रोक्त्या-शाठ्येन परिहृ (भ्वा. प. अ.), अप-व्यप्,-दिश् (तु. प. अ.), अप-नि-ह्नु (अ. आ. अ.) २. ब. 'टलना' (१-६) के प्रे. रूप ।

टायर, सं. पुं. (अं.) (चक्र—) वलयः-यम् ।

टिंचर, सं. पुं. (अं. टिंकचर) कषायः, निर्यासः, फांटः ।

टिंडा, सं. पुं. (सं. टिंडिशः) रोमशफलः, तिंदिशः, डिंडिशः ।

टिकट, सं. पुं. (अं.) अनुज्ञा-निर्देश-प्रवेश,-पत्रकम् ।

टिकटिकी[1], सं. स्त्री., दे. 'टकटकी' ।

टिकटिकी[2], सं. स्त्री., दे. 'टिकठी' ।

टिकठी, सं. स्त्री. (हिं. तीन+काठ) त्रिकाष्ठी, २. त्रिपादी ।

टिकना, क्रि. अ. (सं. स्थित+कृ >) वस्-स्था (भ्वा. प. अ.), वृत् (भ्वा. आ. से.) २. विरम् (भ्वा. प. अ.), अवस्था (भ्वा. आ. अ.) ।

टिकली, सं. स्त्री. (हिं. टीका) धातुतारा, चक्रकम् ।

टिकस, सं. पुं. (अं. टैक्स) करः, राजस्वं, शुल्कः-कं, बलिः (पुं.) ।

टिकस, सं. पुं., दे. 'टिकट' ।

टिकाऊ, वि. (हिं. टिकना) चिर-, स्थायिन्, दृढ, ध्रुव, स्थिर, अक्षय ।

टिकाना, क्रि. स., व. टिकना' के प्रे. रूप ।

टिकाव, सं. पुं. (हिं. टिकना) स्थिरता, चिरस्थायिता २. स्थितिः (स्त्री.), विरामः ३. दे. 'पड़ाव' ।

टिकिया, सं. स्त्री. (सं. वटिका) चक्रिका, वटी, २. अपूपः, पूपः, पिष्टकः ।

टिकुली, सं. स्त्री., दे. 'टिकली' ।

टिकैत, सं. पुं. (हिं. टीका) दे. 'युवराज' ।

टिक्कड़, सं. पुं. (हिं. टिकिया) स्थूल-बृहत्,-पूपः ।

टिक्का, सं. पुं. (देश.) दे. 'टीका' ।

टिक्की, सं. स्त्री., दे. 'टिकिया' ।

टिघलना, क्रि. अ., दे. 'पिघलना' ।

टिचन, वि. (अं. अटेन्शन) सज्ज, सन्नद्ध, उद्युक्त २. सिद्ध, उपक्लृप्त, आयोजित ।

टिटकारना, क्रि. स. (अनु.) (अश्वादीन्) सटिकटिकशब्दं प्रोत्सह्-प्रणुद् (प्रे.) ।

टिटिह,-हा,-हरा, सं. पुं. (सं. टिट्टिभः) टिट्टिभकः, टीटिभकः, टिटिभः ।

टिटिहरी, सं. स्त्री. (हिं. टिटिहरा) टिटि(ट्टि)-भी, टिट्टिभकी ।

टिड्डा, सं. पुं. (सं. टिट्टिभः >) शर(ल)भः, पतंगः ।

टिड्डी, सं. स्त्री. (हिं. टिड्डा) शिरिः (पुं.), शर(ल)भः ।

—दल, मु., विपुलवृंदं, असंख्यसमूहः ।

टिपटिप, सं. स्त्री. (अनु.) बिंदुपातध्वनिः (पुं.), टिपटिपशब्दः ।

टिप्पणी-नी, सं. स्त्री. (सं.) टीका, भाष्यं, वृत्तिः (स्त्री.), व्याख्या ।

टिप्पस, सं. स्त्री. (देश.) उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ।

टिब्बा, सं. पुं., दे. 'टीला' ।

टिमटिमाना, क्रि. अ. (सं. तिम्=ठंडा होना >) स्फुर् (तु. प. से.) तरलं-मंदं-सकंपं दीप् (दि. आ. से.) द्युत्-प्रकाश् (भ्वा. आ. से.) प्रभा (अ. प. अ.) २. आसन्नमृत्यु (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से.)।

टिमटिमाहट, सं. स्त्री. (हिं. टिमटिमाना) तरल,-प्रभा,-ज्योतिस् (न.), स्फुरणं-रितम्।

टीका[1], सं. पुं. (सं. तिलकः-कं) चित्रकं, विशेषकः-कं, पुण्ड्रः-ड्रकः, तमालपत्रं २. तिलकं, औद्वाहिकरीतिविशेषः ३. अन्तः,-स्रावणं-प्रवेशनं ४. (रोगनिवारणाय) रोगद्रव्यनिवेशनं ५. गव्यद्रव्यसंक्रामणं ६. प्रधानः, मुख्यः, ७. युवराजः ८. राजत्व,-चिह्नं-लक्षणं ९. राज्य-,अभिषेकः १०. बिंदुः (पुं.), लाञ्छनं, चिह्नम् ११. ललाटिका, मस्तकभूषणभेदः।

—करना, क्रि. स., (रोगनिवारणार्थं) रोगद्रव्यं निविश्-संक्रम् (प्रे.) २. गव्यद्रव्यं निविश्-संक्रम् (प्रे)।

—करनेवाला, सं. पुं., गव्य-रोग,-द्रव्य-निवेशकः।

—भेजना, क्रि. स., औद्वाहिकोपहारान् प्रेष् (प्रे.)।

—लगाना, क्रि. स., तिलकं कृ अथवा विधा (जु. उ. अ.)।

टीका[2], सं. स्त्री. (सं.) व्याख्या, वृत्तिः (स्त्री.), भाष्यं, टिप्पणी-नी।

—कार, सं. पुं. (सं.) टीका-भाष्य-व्याख्या-वृत्तिः,-कारः-कृत् (पुं.)।

टीन, सं. पुं. (अं. टिन) रंगं, वंगं, कस्तीरं, त्रपु (न.) रंगलिप्तं लौहतनुफलकम्।

टीप, सं. स्त्री. (हिं. टीपना), (हस्तेन) आपीडनं २. शनैः प्रहरणं ३. इष्टकासंधिषु सुधापूर्ति-रेखाः ४. (समय-) लेखः-पत्रं ५. जन्म,-पत्रं-पत्रिका।

—करना, क्रि. स., इष्टकादिसंधिषु सुधां पूर् (चु.)।

—टाप, सं. स्त्री., आडंबरः वैभवं २. संस्कारः, परिष्कारः, भूषा, अलंकरणम्।

—टाप करना, क्रि. स., अलं-परिष्,-कृ, मंड् (चु.)।

टीपना, क्रि. स. (सं. टेपनं = फेंकना) आपीड् (चु.), संकोच् (भ्वा. प. से.) २. लिख् (तु. प. से.) ३. शनैः प्रहृ (भ्वा. प. अ.) ४. उच्चैः गै (भ्वा. प. अ.)।

टीम, सं. स्त्री. (अं.) क्रीडकसंघः २. गणः, वर्गः।

टीमटाम, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'टीपटाप'।

टीरा, सं. पुं. (सं. टेरः) टेरकः, केकरः, केदरः, टगरः, वलिरः।

टीला, सं. पुं. (सं. अष्ठीला >) उन्नतभूभागः २. क्षुद्रपर्वतः ३. मृत्तिकाचयः, वल्मीकः-कम्।

टीस, सं. स्त्री. (अनु.) विध्यद्-स्फुरद् ,-व्यथा-वेदना-यातना।

टीसना, क्रि. अ., (हिं. टीस) मुहुर्मुहुः व्यथ (भ्वा. आ. से.), सस्पंदं पीड् (कर्म.)।

टुंच, वि., दे. 'टुच्चा'।

टुंड, सं. पुं. (सं. तुंड >) छिन्नो हस्तः २. छिन्न-शाखः तरुः, स्थाणु (पुं. न.), ध्रुवः, शंकुः (पुं.)।

टुंडा, वि. (हिं. टुंड) अहस्त, छिन्नहस्त २. शाखाहीन ३. एकशृंग।

टुंडी, सं. स्त्री. [सं. तुंडिः (स्त्री.)], नाभिः (स्त्री.)।

टुक, क्रि. वि. (सं. स्तोकं) क्षणं, कंचित्कालम्। वि., किंचित्, अल्प, क्षुद्र।

टुकड़ा, सं. पुं. (हिं. टुक) खंडः-डं, शकलः-लं, लवः, वि-,भागः, अंशः,वि-, दलं २. ग्रासः, कवलः, पिंडः।

टुकड़े करना, क्रि. स., भंज् (रु. प. अ.), खंड् (चु.), शकली कृ २. विच्छिद्-विभिद् (रु. प. अ.), विभज् (भ्वा. उ. अ.)।

टुकड़े-टुकड़े करना, मु., चूर्ण् (चु.), खंडशः भंज्, मृद् (क्र्. प. से.)।

टुकड़े माँगना, मु., भिक्ष् (भ्वा. आ. से.), भिक्षां याच् (भ्वा. आ. से.)।

टुकड़ी, सं. स्त्री. (हिं. टुकड़ा) दे. 'टुकड़ा'(१) २. समूहः, गणः ३. सैन्यदलं, गुल्मः-मम्।

टुच्चा, वि. (सं. तुच्छ) क्षुद्र, नीच, हीनजाति।

टुटपुँजिया, वि. (हिं. टूटी + पूंजी) परि-क्षीण, निर्धन, अल्प,-धन-मूल, दरिद्र।

टूँडी, सं. स्त्री., दे. 'टुंडी'।

टूक-का, सं. पुं., दे. 'टुकड़ा'।

टूटना, क्रि. अ. (सं. त्रुट्) दृ-भंज्-भिद् (कर्म.), त्रुट् (दि. तथा तु. प. से.), दल् (भ्वा. प. से.), स्फुट् (तु. प. से.)

२. विरम् (भ्वा. प. अ.), विच्छिद् (कर्म.), निवृत् (भ्वा. आ. से.) ३. वियुज् (कर्म.), पृथक् भू ४. निर्बली-भू ५. दरिद्र (वि.) जन् (दि. आ. से.) ६. आक्रम् (भ्वा. प. से.), अभिद्रु (भ्वा. प. अ.)। सं. पुं., भंजनं, भंगः; विरामः, विच्छेदः, निवृत्तिः (स्त्री.)।

टूटनेवाला, सं. पुं., भिदुर, भंगुर, सुभंग।

टूटा, वि., भग्न, दीर्ण, त्रुटित, स्फुटित; विच्छिन्न, निवृत्त इ.।

—फूटा, वि., शकली-खंडशः,-कृत, खंडित, विदीर्ण।

टूर्नामेंट, सं. स्त्री. (अं.) पुरस्कारान्विता क्रीडा-खेला, क्रीडाप्रतियोगिता।

टूल, सं. पुं. (अं.) उपकरणं, साधनम्।

टेंट-टी, सं. स्त्री. (देश.) शाटीपुटः-टं,शाटिका-व्यावृत्तिः (स्त्री.) २. दे. 'करील' (वृक्ष तथा फल)।

टेंटुआ, सं. पुं.(देश.)श्वासनालिका, कंठः, गलः।

टेंटें, सं. स्त्री. (अनु.) शुकशब्दः, कीररावः, टेंटें इति ध्वनिः (पुं.) २. प्रलापः, व्यर्थ-वचनम्।

—करना, निर्विवेकं भाष् (भ्वा. आ. से.), जल्प् (भ्वा. प. से.)।

टेंप्रेचर, सं. पुं. (अं.) तापः, ऊष्मन् (पुं.)।

टेक, सं. स्त्री. (हिं. टिकना) स्थूणा, उपस्तंभः, उत्तंभः, अवष्टंभः, उपघ्नः २. आश्रयः, अवलंबः ३. वेदी ४. आग्रहः, अभिनिवेशः ५. क्षुद्रपर्वतः ६. प्रतिज्ञा ७. स्थायिन् (संगीत) ८. अभ्यासः, नित्यव्यवहारः।

टेकन, सं. पुं., दे. 'टेक' १. २.।

टेकना, क्रि. स. (हिं. टेक) अव-आ,-लंब् (भ्वा. आ. से.), अवष्टंभ् (क्र्. प. से.), धृ (भ्वा. प. अ; चु.)।

माथा—, क्रि. स., प्रणम् (भ्वा. प. अ.), पादयोः पत् (भ्वा. प. से.), वंद् (भ्वा. आ. से.)।

टेकी, वि. (हिं. टेक) सत्यसन्ध, दृढप्रतिज्ञ २. आग्रहिन्, अभिनिवेशिन्।

टेटेनस, सं. पुं. (अं.) धनुर्वातः, प्रतानः (भयंकररोगः)।

टेढ़ा, वि. (सं. तिरस् >) अराल, कुटिल, जिह्म, वक्र, आ-,न(ना)मित, आभुग्न, न्युब्ज, आकुञ्चित, विषम, तिर्यंच् २. कठिन, दुष्कर ३. उद्धत, अशिष्ट, दुःशील।

—करना, क्रि. स., आवृज् (चु.), वक्री-कुटिली-कृ, अव-आ-,नम् [प्रे. न(ना)मयति], आ-वि-,भुज् (तु. प. से)।

—मेढा, वि., वक्र, कदाकार, कुटिल।

—होना, मु., क्रुद्ध-रुष्ट (वि.) भू।

टेढ़ापन, सं. पुं. (हिं. टेढ़ा) कुटिलता, जिह्मता, वक्रता, अरालता इ.।

टेढ़ी, वि. स्त्री. (हिं. टेढ़ा) वक्रा, कुटिला, जिह्मा इ.।

—खीर, मु., दुष्करं कार्यम्।

—चितवन, मु., कटाक्षः, साचिविलोकितं, अपांगदृष्टिः (स्त्री.)।

टेढ़े, क्रि. वि. (हिं. टेढा) तिरः, तिर्यक्, वक्रं साचि (सब अव्य.)।

टेना, क्रि. स. (देश.), दे. 'सान देना' २. दे. 'मूँछ पर ताव देना'।

टेनिस, सं. सं. (अं.) कंदुकक्रीडाभेदः।

टेब(बु)ल, सं. पुं. (अं.) पादफलकः-कम्।

—क्लाथ, सं. पुं. (अं.) पादफलक,-वसनं,-आच्छादनम्।

टेर, सं. स्त्री. (सं. तारः) तारध्वनिः, उच्चस्वरः २. आह्वानं, संबोधनं, आह्वानशब्दः।

टेरना, क्रि. स. (हिं. टेर) उच्चैः गै (भ्वा. प. अ.) २. आहृ (प्रे.), आह्वे (भ्वा. प. अ.)।

टेराकोटा, सं. पुं. (अं.) पक्वमृन्मूर्तिः (स्त्री.), तप्तमृत्प्रतिमा २. पक्व-तप्त,-मृत्तिका-मृद् (स्त्री.)।

टेलीग्राम, सं. पुं. (अं.) तड़ित्-विद्युत,-संदेशः।

टेलीपैथी, सं. स्त्री. (अं.) अन्यचित्त-ज्ञानम्, भाव-विचार,-संक्रान्तिः (स्त्री.)।

टेलीप्रिंटर, सं. पुं. (अं.) * दूरमुद्रकम्।

टेलीफ़ोटोग्राफ़ी, सं. स्त्री. (अं.) *दूरच्छायाचित्रणम्।

टेलीफोन, पुं. पुं. (अं.) दूर,-भाष-ध्वनम्।

टेलीविज़न, सं. पुं. (अं.) *दूरदर्शनम्।

टेलीस्कोप, सं. पुं. (अं.) दे. 'दूरबीन'।

टेव, सं. स्त्री. (हिं. टेक) दे. 'आदत'।

टेवा, सं. पुं. (सं. टिप्पनं >) जन्मपत्रिका।

टेसू, सं. पुं. (हिं. केसू) किंशुकः, पलाशः, रक्तपुष्पकः, यज्ञियः २. किंशुककुसुमम् ।

टेस्टट्यूब, सं. स्त्री. (अं.) परीक्षणनालिका ।

टोंटी, सं. स्त्री. (सं. तुंडं >) नाली, नालिका ।

टोक, सं. स्त्री. (हिं. 'रोक' का अनु.) अंतराय-उपरोध-विघ्न,-वचनं-वाक्यं २. कुदृष्टिः (स्त्री.) ३. कुदृष्टिप्रभावः ।

—टाक या टोका टाकी, सं. स्त्री., निषेध-पृच्छा-व्याघात,-वचनानि (न. बहु.) ।

टोकना, क्रि. स. (हिं. टोक), नि-विनि,-वृ (प्रे.), अव-नि-प्रति-, रुध् (क्र. प. अ.), (प्रश्नैः) बाध् (भ्वा. आ. से.),-निषिध् (भ्वा. प. से.) ।

टोकनेवाला, सं. पुं., विघ्नकरः, निवारकः, प्रतिबंधकः ।

टोकरा, सं. पुं. (?) कंडोलः, करंडः ।

टोकरी, सं. स्त्री. (हिं. टोकरा) करंडी, कंडोलकः ।

टोटका, सं. पुं. (सं. त्रोटकः >) गारुडं, मंत्रः २. रक्षाकरंडः ।

टोटल, सं. पुं. (अं.) योगः, पिंडः, संकलः, परिसंख्या ।

टोटा, सं. पुं. (हिं. टूटना) हानिः-क्षतिः (स्त्री.) २. अभावः, न्यूनता ३. खंडः-डं, शकल-लम् ।

टोडी, सं. स्त्री. (सं. त्रोटकी) रागिणीभेदः ।

टोडी, सं. पुं. (अं.) श्ववृत्तिः, चाटुपटुः, प्रजा-स्वदेश,-शत्रुः-द्रोहिन् ।

टोना, सं. पुं. (सं. तंत्रं) अभिचार,-मंत्रः, अभिचारः; कुहकं, वशक्रिया, मोहः, योगः २. गीतिभेदः ।

टोनेवाज़, सं. पुं., कुहकः, अभिचारिन्, कौसृतिकः ।

टोप, सं. पुं. (हिं. तोपना = ढाँकना) *टोपं, आंग्लीय-गुरुंड,-शिरस्कं २. शिरस्त्राणं । ३. कोशः-षः, वेष्टनम् ।

टोपी, सं. स्त्री. (हिं. टोप) । शीर्षण्यं, शिरस्कं. *टोपी ।

टोला, सं. पुं. (सं. प्रतोलिका) नगर-पुर,-विभागः २. वर्गः, गणः ।

टोली, सं. स्त्री. (हिं. टोला) गणः, संघः, वर्गः, समूहः ।

टोह, सं. स्त्री., दे. 'खोज' ।

टोहना, क्रि. स., दे. 'खोजना' तथा 'टटोलना' ।

ट्रंक, सं. पुं. (अं.) लौह-आयस,-पिटक-पेटिका-समुद्गकः ।

ट्राम, सं. स्त्री. (अं.) विद्युच्छकटिका, ट्रामाख्यं यानम् ।

ट्रेडमार्क, सं. पुं. (अं.) पण्यमुद्रा ।

ट्रेन, सं. स्त्री. (अं.) वाष्पशकटी ।

ठ

ठ, देवनागरीवर्णमालाया द्वादशो व्यंजनवर्णः, ठकारः ।

ठंठ, वि., दे. 'ठूँठ' ।

ठंड-ढ, सं. स्त्री. (हिं. ठंढा) शीतं, शीतता, शैत्यं, हिमं, हिमता, शीतलता ।

ठंड(ढ)क, सं. स्त्री. (हिं. ठंढा) दे. 'ठंड' २. तृप्तिः (स्त्री.), संतोषः ३. उपद्रव-रोग,-शांतिः (स्त्री.) ।

ठंढा, वि. (सं. स्तब्ध) शीत, शीतल, उष्णता-रहित, आर्द्र, हिम, शिशिर २. धीर, प्रशांत ३. तृप्त, संतुष्ट ४. मृत, दिवंगत ५. निर्वाण, निर्वापित ।

—करना, क्रि. स., आर्द्री-शीती,-कृ, आर्द्रयति (ना. धा.), तापं हृ (भ्वा. प. अ.) । मु., तुष्-प्रसद्-प्रशम् (प्रे.), सांत्व् (चु.) २. निर्वा (प्रे. निर्वापयति) ।

—होना, क्रि. अ., शीती-शीतली-भू, शीतलायते (ना. धा.) । मु., दे. 'मरना' ।

ठंढी सांस, सं. स्त्री., दीर्घ,-श्वासः-निश्वासः, नि(निः)श्वासः, उच्छ्वासः ।

—पड़ना, मु., उप-प्र-शम् (दि. प. से.), ह्रस् (भ्वा. प. से.), क्षि (कर्म.) ।

कलेजा—होना, मु., वैर,-निर्यातनं-साधनं-शुद्धिः (स्त्री.) जन् (दि. आ. से.) २. प्रसद् (भ्वा. प. अ.) ।

ठंढा (डा) ई, सं. स्त्री. (हिं. ठंढा) शीतपेयं, तापहरपानं २. भंगापेयम् ।

ठंढे-ठंढे, अव्य० (हिं. ठंढा) प्रातः सायं वा, आतपाभावे २. ससुखम् , सानन्दम् ३. शान्तं, समौनम् (दोनों अव्य०) ।

ठक, सं. स्त्री. (अनु.) अभिघात-पात-प्रहार,-शब्दः, ठक् इतिध्वनिः (पुं.) ।

—ठक, सं. स्त्री. (अनु.) ठकठकायितं, ठकठकध्वनिः २. कलहः, कलिः । वि., स्तब्ध, चकित, निश्चेष्ट ।

ठकठकाना, क्रि. स. (अनु.) ठकठकायते (ना. धा.), मंदं अभि आ-हन् (अ. प. अ.) अथवा प्रहृ (भ्वा. प. अ.) २. लघु प्रहृ या तड् (चु.) ।

ठकठकिया, वि. (अनु. ठकठक) विवादिन् , कलह,-कलि-प्रिय ।

ठकुरसुहाती, सं. स्त्री. (हिं. ठाकुर + सुहाना) दे. 'खुशामद' ।

ठाकुराइ(य)न, सं. स्त्री. (हिं. ठाकुर) ठक्कुरी, ठक्कुरभार्या (२) नापिती, क्षुरिणी २. स्वामिनी, ईश्वरी ।

ठकुराई, सं. स्त्री. (हिं. ठाकुर) प्रभुत्वं, आधिपत्यं, स्वामित्वं २. अधिकारः, शासनं ३. महत्त्वम्

ठकुरायत, सं. स्त्री. (हिं. ठाकुर) दे. 'ठकुराई'।

ठग, सं. पुं. (सं. स्थगः) कितवः, दांभिकः, धूर्तः, प्रतारकः, वंचकः ।

—बाज़ी, सं. स्त्री., कैतवं, कपटं, दंभः, प्रतारणं, स्थगत्वं अति-अभि,-संधानं, वंचनम् ।

ठगना, क्रि. स. (सं. स्थगनं) अति-अभि,-संधा (जु. उ. अ.), प्रतृ-मुह् (प्रे.), वंच्-शठ् (चु), विप्रलभ् (भ्वा. आ. अ.)। सं. पुं., दे. 'ठगबाज़ी' ।

ठग(गि)नी, सं. स्त्री. (हिं. ठग) वंचिका, प्रतारिका, दांभिकी, कपटिनी ।

ठगी, सं. स्त्री., दे. 'ठगबाज़ी' ।

ठगाना, क्रि. प्रे., व. 'ठगना' के प्रे. रूप ।

ठट, सं. पुं., दे. 'ठठ' ।

ठट(ठ)री, सं. स्त्री. (हिं. ठाट) शवयानं, खाटः-टी २. कंकालः, अस्थिपंजरः ३. घास-पलाल,-जालं ४. कृशमनुष्यः ।

ठट्ठा, सं. पुं. (पुं. अट्टहासः या अनु.) हास्यं, परि(री)हासः, क्ष्वेला-लिका प्रहसनं, नर्मन् (न.), नर्म-विनोद-परिहास,-आलापः-उक्तिः (स्त्री.) वचनं २. उपहासः ।

—करना, क्रि. स., परिहस् (भ्वा. प. से.), विनोदवचनं उदीर् (प्रे.) २. अव-उप-वि,-हस् , उपहासास्पदी कृ, अवज्ञा (क्र. उ. अ.) ।

ठट्ठेबाज़, सं. पुं., (हिं. + फ़ा.) विनोदशीलः, हास्यप्रियः, वैहासिकः, भंडः ।

ठट्ठेबाज़ी, सं. स्त्री.. विनोद,-कारिता-शीलता, वैहासिकता ।

ठठ, सं. पुं. (सं. स्थित >) समूहः, समुदायः, जन-,संमर्दः-ओघः ।

ठठेरा-री, सं. पुं. (अनु. ठन ठन) कांस्य-ताम्र,-कारः ।

ठठेरिन, सं. स्त्री. (हिं. ठठेरा) कांस्य-ताम्र,-कारी ।

ठठोल, सं. पुं. (हिं. ठट्ठा) दे. 'ठट्ठेबाज़' ।

ठठोली, सं. स्त्री. (हिं. ठठोल) दे. 'ठट्ठेबाजी' ।

ठनक, सं. स्त्री. (हिं. ठनकना) ठणिति, ठणत्कारः, शिंजा, क्वणनं, झणत्कारः, मृदंगादीनां ध्वनिः (पुं.) २. दे. 'टीस' ।

ठनकना, क्रि. अ. (अनु. ठन ठन) क्वण् (भ्वा. प. से.), शिंज् (अ. आ. से.) । ठणठणायते (ना. धा.), ठणिति कृ ।

ठनकाना, क्रि. स., व. 'ठनकना' के प्रे. रूप ।

ठनठन, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'ठनक' ।

—गोपाल, सं. पुं., दरिद्रः, निर्धनः २. निस्सारं वस्तु ।

ठनना, क्रि. अ., (हिं. ठानना) निर्णी-निश्चि-अध्यवसो (कर्म.) ।

ठनाका, सं. पुं., दे. 'ठनक' ।

ठनाठन, क्रि. वि. (अनु. ठनठन) सठणत्कारं, सझणत्कारम् ।

ठप्पा, सं. पुं. (सं. स्थापनं) मुद्रा, मुद्रायंत्रं, २. आकर-संस्कार,-साधनं ३. अंकः, चिह्नं, मुद्रा, न्यासः ।

—लगाना, क्रि. स., मुद्रयति-चिह्नयति (ना. धा.), अंक् (चु०), लांछ् (भ्वा. प. से.) ।

ठरना, क्रि. अ., दे. 'ठिठुरना' ।

ठर्रा, सं. पुं. (देश.) निकृष्टसुरा २. स्थूलसूत्रं ३. अर्द्धपक्वेष्टका ।

ठस, वि. (सं. स्थास्नु >) घन, दृढसंधि, सुदृढ, कठिन, स्थूल, सुसंहत २. दे. 'गफ' ३. गुरु,

भारवत् ४. अलस, मंथर ५. (सिक्का.) कूट-कपट-कृत्रिम-(समासारंभ में) ६. धनाढ्य ७. कृपण ८. अत्याग्रहिन् ९. ठसिति शब्दः, वस्तुभंगध्वनिः (पुं.) ।

ठसक, सं. स्त्री. (हिं. ठस) हावः, भावः, विभ्रमः २. दर्पः, गर्वः ।

ठसका, सं. पुं. (अनु. ठस) शुष्क-अकफ,-कासः-क्षवथुः २. आघातः, संमर्दः ३. पाशः, वागुरा ।

ठसनी, सं. स्त्री. (हिं. ठस) अयोघनः, मुद्गरः ।

ठसाठस, वि. (हिं. ठस) परि-सं-पूर्ण, आ-सं-कीर्ण, आकुल, संकुल, समाकुल ।

ठस्सा, सं. पुं. (देश.) अहंकारः, दर्पः २. हाव-भावाः ३. आडंबरः ।

ठहरना, क्रि. अ. (सं. स्थिर) स्था (भ्वा. प. अ.), अवस्था (भ्वा. आ. अ.), निश्चल-रुद्धगति-स्थिर-स्तब्ध (वि.) भू २. वस् (भ्वा. प. अ.) ३. निविश् (तु. प. अ.), प्रयाणभंगं कृ ४. विश्रम् (दि. प. से.), विरम् (भ्वा. प. अ.) ५. निश्चि-निर्णी (कर्म.) ६. प्रतीक्ष् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं अव-,स्थितिः (स्त्री.)-स्थानं, निश्चलता, स्तब्धता, वासः; विश्रामः इ. ।

ठहरनेवाला, सं. पुं., अव-,स्थातृ (पुं.) ।

ठहराना, क्रि, स., ब. 'ठहरना' के प्रे. रूप ।

ठहराव, सं. पुं. (हिं. ठहरना) अव-,स्थितिः (स्त्री.), निवेशः २. निर्धारणं, निश्चयः ।

ठहरौनी, सं. स्त्री. (हिं. ठहराना) विवाहे युतकादिनिश्चयः ।

ठहाका, सं. पुं. (अनु.) सशब्द,-स्फोटनं-भंगः २. अति-प्र-अट्ट-उच्चैर्,-हासः ।

ठाँव, सं. पुं. (सं. स्थानं) स्थलं, प्रदेशः २. निवासः, वसतिः (स्त्री.) ।

ठाँसना, क्रि. स., दे. 'ठोंसना' ।

ठाकुर, सं. पुं. (सं. ठक्कुरः) परमेश्वरः, जगदीशः २. पूज्यः, मान्यः (मानवः) ३. नायकः, अधिष्ठातृ (पुं.) ४. ग्रामेशः, भूस्वामिन् ५. क्षत्रियोपाधिः (पुं.) ६. प्रभुः, स्वामिन् ७. नापितः ८. देवः, देवता ९. देवप्रतिमा ।

—द्वारा, सं. पुं. } देव,-मंदिरं-स्थानं-आलयः,
—वाड़ी, सं. स्त्री. } मंदिरम् ।

ठाकुरी, सं. स्त्री., दे. 'ठकुराई' ।

ठाट, सं. पुं. (सं. स्थातृ) तृण,-पटलं-छदिः (स्त्री.) २. दे. 'ढाँचा' ३. अलंक्रिया, वेशः ४. आडंबरः, शोभा, वैभवं ५. सुखं, मोदः ६. रीतिः (स्त्री.), शैली ७. आयोजनं समारंभः ८. सामग्री, परिच्छदः ९. युक्तिः (स्त्री.), उपायः १०. आधिक्यं, प्राचुर्यं ११. समूहः, वृंदम् ।

—बाट, सं. पुं., आडंबरः, श्रीः (स्त्री.), शोभा, ऐश्वर्यं, वैभवं, प्रतापः ।

—बदलना, मु., आकारं-भावं परिवृत् (प्रे.) ।

ठाठ, सं. पुं., दे. 'ठाट' ।

ठाढ़ा, वि. (सं. स्थातृ) उच्छ्रित, उन्नत, ऊर्ध्व, दंडवत् उत्थित, उत्तान २. जात, उत्पन्न ३. समस्त, समग्र, अपिष्ट ।

ठानना, क्रि. स. (सं. अनुष्ठानं) अध्यव-व्यव,-सो (दि. प. अ., अध्यवस्यति), निश्चि (स्वा. उ. अ.), संक्लृप् (प्रे.), निर्णी (भ्वा. प. अ.) २. साग्रहं प्रारभ् (भ्वा. आ. अ.), अध्यवसायेन अनुस्था (भ्वा. प. अ.) ।

ठार, सं. पुं. (सं.) हिमं, तुहिनं, तुषारः २. अतिशीतं, शैत्यातिशयः ।

ठाला, सं. पुं. (हिं. निठल्ला) कार्य-जीविका-व्यवसाय,-अभावः ।

ठाली, वि., दे. 'निठल्ला' ।

ठिंगना, वि. (हिं. हेठ+अंग) खर्व, ह्रस्व, वामन, ह्रस्वकाय ।

ठिकाना, सं. पुं. (हिं. टिकान) स्थलं-ली, स्थानं, प्र-,देशः, भूः-भूमिः (स्त्री.) २. आ-नि,-वासः, आ-नि,-लयः ३. आश्रय-निर्वाह,-स्थानं ४. याथार्थ्यं, प्रामाण्यं ५. आयोजनं, संविधा, प्रबन्धः ६. अंतः, सीमा ७. नामधाम-परिचयः ८. निर्दिष्ट-गंतव्य,-स्थानम् ।

ठिकाने लगना, मु., हन्-हिंस् (कर्म.) २. समाप् (कर्म.) ।

ठिकाने लगाना, मु., हन् (अ. उ. अ.), हिंस् (रु. प. से.) २. निर्दिष्टस्थानं नी (भ्वा. प. अ.) ३. सम्यक् उपयुज् (रु. उ. अ.) ४. कार्यं समाप् (स्वा. उ. अ.) ५. सफली कृ ।

ठिठकाना, क्रि. अ. (सं. स्थित+करणं >) अकस्मात्-अकांडे विरम् (भ्वा. प. अ.)-रुध् (कर्म.) स्तब्ध-निश्चेष्ट-रुद्धगति (वि.) भू ।

ठिठ(ठु)रना, क्रि. अ. (सं. ठारः >) शीती-जडी-भू , स्तंभ् (कर्म.) २. शीतेन कंप् (भ्वा. आ. से.)।

ठि (ठु)नक, सं. स्त्री. (अनु.) गद्‌गदः, फु-(फू)त्कारः।

ठि(ठु)नकना, क्रि. अ. (अनु.) सगद्‌गदं क्रंद् (भ्वा. प. से.)-रुद् (अ. प. से.), शिशुवत् रुद् ।

ठिरना, क्रि. अ., दे. 'ठिठरना'।

ठीक, वि. (हिं. ठिकाना) अवितथ, तथ्य, सत्य, यथार्थ २. उचित, न्याय्य, धर्म्य, समंजस ३. शुद्ध, निर्भ्रांत, निर्दोष ४. सुस्थ, अविकृत ५. यथार्ह, यथायोग्य, अनुरूप ६. नम्र, विनीत ७. अन्यूनाधिक, निर्दिष्ट ८. नियत, ९. पूर्ण, समाप्त। क्रि. वि., यथावत्, याथातथं, सम्यक्, साधु, तत्त्वतः, पूर्णतया।

—बैठना, क्रि. अ., उपपद्-युज्-श्लिष् (कर्म.), सुश्लिष्ट-सुसंगत (वि.) भू २. तुल्य-अनुरूप (वि.) भू।

—करना, क्रि. स., निर्दोषी-कृ, परि-वि-सं-शुध् (प्रे.) २. सुश्लिष्टं-सुसंगतं कृ।

—ठाक, वि., सिद्ध, सज्ज, उपस्थित, उपक्लृप्त।

—ठीक, क्रि. वि., दे. 'ठाक' क्रि. वि.।

ठीकरा, सं. पुं. (हिं. टुकड़ा) घट,-शकलं-खंडं, भिन्नमृत्पात्रं, क(ख)र्परः, २. भिक्षा,-भाजनं-पात्रं ३. जीर्णपात्रम्।

ठीकरी, सं. स्त्री. (हिं. ठीकरा) क्षुद्रघटखंडं २. तुच्छ-निरर्थक,-वस्तु (न.)।

ठीका, सं. पुं. (हिं. ठीक) अभ्युपगमः, नियमः, पणः, समयः, संविद् (स्त्री.) २. पट्टोलिका।

—देना, क्रि. स., पणं-संविदं कृ,-प्रतिपद् (दोनों प्रे.)।

—लेना, क्रि. स., पणं-संविदं-समयं कृ, प्रतिपद् (दि. आ. अ.), संविद् (अ. आ. से.)।

ठीकेदार, सं. पुं. पणकर्तृ, कृतसमयः, नियम-कृत् (पुं.)।

ठीठी, सं. स्त्री. (अनु.) हास्यध्वनिः (पुं.), अट्टहासः।

ठीहा, सं. पुं. (सं. स्थितः >) भूनिखातकाष्ठ-खंडः-डम् २. उच्चस्थानम् ३. वेदिका-वेदिः (स्त्री.) ४. आसनम् ५. सीमा।

ठुंठ, सं. पुं., दे. 'ठूँठ'।

ठुकना, क्रि. अ. (अनु. ठुक ठुक) आहन्-ताड्-प्रहृ (कर्म) २. अयोघनेन-विघनेन आहन्-ताड् (कर्म.) ३. परा,-भू-जि (कर्म.)

ठुकराना, क्रि. स. (हिं. ठोकर) पादेन प्रहृ (भ्वा. प. अ.)-तड् (चु.)-आहन् (अ. प. अ.) २. प्रत्याख्या (अ. प. अ.), अवमन् (दि. आ. अ.) धिक्कृ।

ठुकवाना, क्रि. प्रे., व. 'ठोकना' के. प्रे. रूप।

ठुड्डी, सं. स्त्री., दे. 'ठोड़ी'।

ठुनकाना, क्रि. स. (अनु.) अंगुल्या हस्तेन वा मन्दं-मन्दं आहन् (अ. प. अ.)।

ठुन ठुन, सं. स्त्री. (अनु.) ठुणठुणत्कारः, ठुणठुणायितं, धातुपात्रक्वणितं २. शिशुक्रंदन-ध्वनिः (पुं.), ठुणठुणशब्दः।

ठुमक, सं. स्त्री. (अनु.) खेल-विलास,,गतिः (स्त्री.)।

—ठुमक, क्रि. वि., खेल विलास,-गत्या, सखेलं सविलासं (शिशु-चलनम्)।

ठुमकना, क्रि. अ., (हिं, ठुमक) सखेलं-सवि-लासं चल् (भ्वा. प. से.)।

ठुमका, वि. (हिं. ठुमक) वामन, खर्व, ह्रस्व।

ठुमरी, सं. स्त्री. (देश.) गीतकं-तिका।

ठुसकना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'ठिनकना'।

ठुसना, क्रि. अ- (ठूंसना) अत्यंतं पूर् (सर्म.), २, बलात् निविश् (तु. प. अ.)।

ठुसवाना, ठुसाना, क्रि. प्रे., व. 'ठूसना' के. प्रे. रूप।

ठूँग, सं. स्त्री. | (सं. तुंडं) चंचुः-चूः [दोनों
ठूँगा, सं. पुं. | (स्त्री.)] २. चंचुप्रहारः।

—मारना, क्रि. स., चंच्वा प्रहृ (भ्वा. प. अ.)। मु., न्यून तुल् (चु.)।

ठूँठ, सं. पुं. (सं. स्थाणुः) शुष्कवृक्षः, पत्र-विटप,-हीनतरुः (पुं.) २. छिन्नो हस्तः, निकृत्तः करः।

ठूँठा, वि. (हिं. ठूँठ) अपत्र, अशाख, शुष्क (वृक्ष) २. छिन्नहस्त, निकृत्तकर।

ठू(ठूँ)सना, क्रि. स. (हिं. ठस) अत्यधिकं पूर् (चु.), भृशं पृ (प्रे.) २. बलाद् नि-प्र-विश् (प्रे.) ३. अतिमात्रं खाद् (भ्वा. प. से.)।

ठेंगना, वि., दे. 'ठिंगना'।

ठेंगा, सं. पुं. (हिं. अँगूठा) अंगुष्ठः २. दंडः, यष्टिः (स्त्री.), लगुडः ३ मेढ्रम्।

ठेका, सं. पुं., दे. 'ठीका'।

ठेका,[२] सं. पुं. (हिं. टेक) अव-आ, लंबः-लंबनं, अवष्टंभः, उपघ्नः २. निवेशस्थानं, विश्रामस्थलं ३. पटहवादनप्रकारभेदः ४. कौवालीनामकस्तालभेदः ५. स्खलनं ६. वाममृदंगः ७. दे. 'टीका'।

ठेठ, वि. (दे.) विशुद्ध, मिश्रणरहित, स्वच्छ २. केवल,-मात्र (समासांत में)।

ठेलना, क्रि. स., दे. 'धकेलना'।

ठेला, सं. पु. (हिं. ठेलना) दे. 'धक्का'। २. जनौघः,जनसंमर्दः ३.हस्त,-शकटः-शकटम्।

ठेस, सं. स्त्री. (हिं, ठस), प्रहारः, आ-अभि,-घातः, ताडनं, पातः, आहतिः (स्त्री.)।

ठेसना, क्रि. स. दे. 'ठूसना'।

ठोंकना, क्रि. स. (अनु. ठक-ठक) अयोघनेन-मुद्गरेण तड् (चु.)-प्रहृ (भ्वा. प. अ.) २. बलेन-ताडनेन प्रविश् (प्रे.) ३. अभि-आ-हन् (अ. प. अ.), तड् (चु.), प्रहृ। ४. अभियुज् (रु. आ. अ.) राजकुले निविद् (प्रे.) ५.हस्तेन लघुप्रहृ-आहन्, करेण स्पृश् परामृश् (तु. प. अ.)।

ठोंक बजाकर, मु., निपुणं परीक्ष्य, सम्यक् पर्यालोच्य-निरूप्य।

ठोंग, सं. स्त्री. (सं. तुंडम्) चंचूः-चुः (स्त्री.) २. चंचु-प्रहारः ३. अंगुलीप्रहारः।

ठोंसना, क्रि. स. (सं. तुंडं >) तुंडेन,चंचुपुटेन अभिहन् (अ. प. अ.)-प्रहृ (भ्वा. प. अ.), चंचूप्रहारं कृ।

ठोंगा, सं. पुं. (हिं. ठोंग) पत्र,-पुटः-पुटिका-कोषः।

ठोंसना, क्रि. स., दे. 'ठूँसना'।

ठोकना, क्रि. स., दे. 'ठोंकना'।

ठोकर, सं. स्त्री. (हिं. ठोकना) स्खलनं, स्खलितं, आघातः, आहतिः (स्त्री.) २. पाद-लत्ता,-आघातः, प्रहारः ३. कष्टानुभवः।

—खाना, क्रि. अ., प्र-,स्खल् (भ्वा. प. से.), पदं विषमी-भू। मु., हानिं-क्षतिं-कष्टं सह् (भ्वा. आ. से.) ३. वंच्-प्रतार् (कर्म.) ४. जीविकार्थमितस्ततः भ्रम् (भ्वा. प. से.)।

—मारना, क्रि. स., लत्तया-पादेन प्रहृ (भ्वा. प. अ.)-आहन् (अ. प. अ.)-तड् (चु.), पादप्रहारं कृ।

—लगना, क्रि. अ., दे. 'ठोकर खाना'।

ठोड़ी-ढ़ी, सं. स्त्री. (सं. तुंडं >) चिबुकं, हनुः (पुं. स्त्री.)।

ठोर, सं. पुं. (देश.) पक्वान्नभेदः, ठोरं। २. चंचुः, चूः (स्त्री.)।

ठोला सं. पुं. (देश.) खगाहारशरावः २. अंगुलि,-संधिः-ग्रंथिः-पर्वन् (न.)।

—मारना, क्रि. स., अंगुलिपर्वणा प्रहृ (भ्वा. प. अ.)।

—रखना, मु., हन् (अ. प. अ.), मृ. (प्रे.)।

ठोस, वि. (हिं. ठस) सान्द्र, सु-, संहत, कठिन, संघातवत्, घन २. पूर्णगर्भ, छिद्ररहित, सगर्भ।

ठोसाई, सं. स्त्री. (हिं. ठोस) घनता, काठिन्यं, निश्छिद्रता।

ठौर, सं. सं. (हि. ठाँव) स्थानं, स्थली, प्रदेशः २. अवसरः, सुयोगः, योग्यकालः।

कुठौर, मु., दुःखद-अनिष्ट,- स्थाने-स्थले।

ठिकाना, सं. पुं., वासस्थानं, आ-नि.-वासः।

ड

ड, देवनागरीवर्णमालायास्त्रयोदशो व्यञ्जनवर्णः, डकारः।

डंक, सं. पुं. (सं. दंशः) कंटकः, दंशचंचूः (स्त्री.), शंकुः (पुं.), (बिच्छू का) अलं २. दंशव्रणः-णं ३. दे, 'निब'।

—मारना, क्रि. स., दंश् (भ्वा. प. अ.) २. मर्माणि भिद् (रु. प. अ.)।

—वाला, वि. सदंश, दंशिन्-दंशक।

डंका, सं. पुं. (सं. ढक्का) यशःपटहः, विजय-मद्दलः, दुन्दुभिः, डिंडिमः।

—बजाना, मु., प्र-,शास् (अ. प. से.), तंत्र् (चु.)।

—बजाना, मु., विश्रुत-विख्यात (वि.) भू।

डंके की चोट कहना, मु., प्रकाशं उद्घुष् (चु.)।

डंगर, सं. पुं. (सं. कडंग(क)रीयः) पशुः, मृगः, चतुष्पदः, चतुष्पाद् (पुं.)।

डंठल, सं. पुं. (सं. दंडः) कांडः,डं, नालः-लीलं २. वृंतं, प्रसव-बंधनम्।

डंड, सं. पुं. (सं. दण्डः) लगुडः, यष्टिः(स्त्री.) २. बाहु (पुं.), भुजः-जा ३. अर्थ-धन,-दंडः

४. निग्रहः,शासनं ५. हानिः क्षतिः (स्त्री.) ६. व्यायामप्रकारः, साष्टाङ्ग-दंड,-व्यायामः ।

—देना, क्रि. स., दंड् (चु.)-शास् (अ. प. से., दोनों द्विकर्मक), दम् (प्रे. दमयति), निग्रह् (क्र्. प. से.) ।

—पेलना, क्रि. अ., (दंडवत्) व्यायाम् (भ्वा. प. अ.)-व्यायामं कृ ।

—भरना, क्रि. अ., अर्थदंडं परि-,शुध् (प्रे.) ।

—लेना, क्रि. स., अर्थदंडं दा (प्रे. दापयति) ।

—पेल, सं. पुं. मल्लः, मल्लयोद्धृ (पुं.), व्यायामिन् , दृढांगः, वज्रदेहः ।

डंडवत्, सं. स्त्री. दे. 'दंडवत्' ।

डंडा, सं. पुं. (सं. दंडः) काष्ठं, काष्ठखंडः, लगुडः, यष्टिः (स्त्री.); वेत्रं, वेत्रयष्टिः । २. प्राचीरं, प्राकारः, वरणः ।

डंडिया, सं. पुं. (हिं. डांड) करोद्ग्राहकः, शुल्कसंग्राहकः ।

डंडी, सं. स्त्री. (हिं. डंडा) सूक्ष्म-तनु,-दंडः-यष्टिः (स्त्री) २. तुलायष्टी ३. मुष्टिः (स्त्री.), वारंगः ४. कांडः-डं, नालः-लं ५. पर्वतीय-वाहनभेदः । सं. पुं., दंडधारिन् , सन्न्यासिन् ।

पग—, सं. स्त्री., चरण-पाद,-पथः, पद्धतिः (स्त्री.), पद्या, पदवी ।

डंडौत, सं. पुं. स्त्री., दे. 'दंडवत्' ।

डकरना, क्रि. अ. (अनु.) हंभारवं कृ, रेभ् (भ्वा. आ. से.), नि-,नद् (भ्वा. प. से.) ।

डकराना, क्रि. अ., दे. 'डकरना' ।

डकार, सं. पुं. (सं. उद्गारः) उद्‌गिरणं, उद्वमः, उद्वमनं २. गर्जनं, गर्जितं, निनादः ।

—लेना, क्रि. अ., दे. 'डकारना' ।

—जाना या—बठना, मु., छलेन आत्मसात् कृ, ग्रस् (भ्वा. आ. से.) ।

डकारना, क्रि. अ. (हिं. डकार) उद्गॄ (तु. प. से.), उद्वम् (भ्वा. प. से.) २. दे. 'डकरना' ३. दे. 'डकार जाना' ।

डकैत, सं. पुं., दे. 'डाकू' ।

डकैती, सं. स्त्री., दे. 'डाका' ।

डकौत-तिया, सं. पुं. (देश.) मिथ्यामौहूर्तिकः, ज्योतिर्विदाभासः २. जातिविशेषः ।

डग, सं. पुं. (हिं. डाँकना) दीर्घ,-विक्रमः, पादन्यासः ।

—भरना, क्रि. अ., विक्रम् (भ्वा. प. से., भ्वा. आ. अ.) दीर्घपादान् विन्यस् (दि. प. से.)-निक्षिप् (तु. प. अ.) ।

डगमग, वि. (हिं.डग+मग) प्रस्खलत्, विचलत् कंपमान, वेपमान । अव्य०, सकम्पम्, सवेपथु ।

डगमगाना, क्रि. अ. (हिं. डग+मग) प्र-, कंप्-वेप् (भ्वा. आ. से.) वेल्ल् (भ्वा. प. से.) २. प्रस्खल्-विचल् (भ्वा. प. से.) ३. विशंक्-विकल्प् (भ्वा. आ. से.), चित्तं दोलायते (ना. धा.) ।

डगमगाहट, सं. स्त्री. (हिं. डगमगाना) प्रकंपः, वेपथुः २. प्रस्खलनं, विचलनं ३. विक्षोभः, चित्तवैकल्यं, धृतिनाशः ।

डगर, सं. स्त्री. (हिं. डग) दे. 'मार्ग' ।

डटना, क्रि. अ. (हिं. ठाढा) दृढं-स्थिरं-निश्चलं स्था (भ्वा. प. अ.), अवस्था (भ्वा. आ. अ.), वृत् (भ्वा. आ. से.) ।

डट्टा, सं. पुं. (हिं. डाटना) कूपीछिद्र-,पिधानं, अवष्टंभः, रोधः ।

—लगाना, क्रि. स., रोधेन-अवष्टम्भेन अपि-पि,-धा (जु. उ. अ.)-सं-आ-वृ (स्वा. उ. से.) ।

डढ़ियल, वि. (हिं. डाढ़ी) कूर्चधर, लंबकूर्च, श्मश्रुल, सश्मश्रु ।

डपट, सं. स्त्री. (सं. दर्पः) निर्भर्त्सना, वाग्दंडः ।

डपटना, क्रि. स. (हिं. डपट) तर्ज् (भ्वा. प. से; चु. आ. से.), वाचा दंड् (चु.), निर्भर्त्स् (चु. आ. से.) ।

डपोरसंख, सं. पुं. (अनु. डपोर=बड़ा+सं. शंखः) आत्मश्लाघिन् , विकत्थनशीलः २. बालबुद्धिः (पुं.) ।

डफ, डफला, सं. पुं. (अ. दफ़.) डिंडिमभेदः *डफम् ।

डफली, सं. स्त्री. (हिं. डफला) लघु,-डिंडिमः-डफम् ।

डफाली, सं. पुं. (हिं डफला) डफ-डिंडिम,-वादकः ।

डबडबाना, क्रि. अ. (अनु.) सास्र-सवाष्प-सजलनयन-साश्रु (वि.) भू ।

डबडबाई आँखों से, क्रि. वि., सास्रं, साश्रु, सवाष्पं, पर्यश्रु ।

डबोना, क्रि. स., दे. 'डुबोना'

डब्बा, सं. पुं. (सं. डिंबः >) संपुटः, संपुटकः, करंडकः, समुद्गकः । २. (रेलगाड़ी का) शकटः-टम् ।

डमरू, सं. पुं. (सं.-रुः) क्षीणमध्यो गुटिका-द्वययुक्तो वाद्यभेदः ।

—मध्य, सं. पुं. (सं. न.) विशालभूभागद्वय-योजकः संबाधभूखंडः ।

जलडमरूमध्य, सं. पुं. (सं. न.) सामुद्रधुनी ।

डर, सं. पुं. (सं. दरः-रं) सं-, त्रासः, भीः-भीतिः (स्त्री.), भयं, साध्वसं २. शंका, चिंता ।

डरना, क्रि. अ. (हिं. डर) भी (जु. प. अ.), वि-सं-त्रस् (भ्वा. दि. प. से.), उद्विज् (तु. प. अ.), भयार्त्त-त्रस्त (वि.) भू २. आ-वि-, शंक् (भ्वा. आ. से.) ।

डरपोक, वि. (हिं. डरना + पोंकना) भीत, भीरु, सभय, ससाध्वस २. साशंक, शंकिल ।

डराना, क्रि. स., व. 'डरना' के प्रे. रूप ।

डरावना, वि. (हिं. डर) भीम, भीषण, भयंकर ।

डल, सं. स्त्री. (सं. तल्लः) तटाकः-कं (-गः, गं), सरोवरः ।

डलना, क्रि. अ. (हिं. डालना) न्यस्-निक्षिप् (कर्म. २. नि-, सिच् (कर्म.); स्रु (भ्वा प. अ.) ।

डलवाना, क्रि. प्रे., व. 'डालना' के प्रे. रूप ।

डला, सं. पुं. (सं. दलः-लं) खंडः-डं, स्थूल,-अंशः-भागः २. पिंडः-डं, घनः, गंडः, गुल्मः ।

डला², सं. पुं. [सं. डल(ल्ल)कं] दे. 'टोकरा' ।

डलिया, सं. स्त्री. (हिं. डला) दे. 'टोकरी' ।

डली, सं. स्त्री. (हिं. डला) पिंडकः-कं, क्षुद्रगंडः २. शकलः-लं,खंडः-डं ३. दे.'सुपारी' ।

डसन, सं. पुं. (सं. दंशनम्) दंशः २. दंश-दंशन, रीतिः (स्त्री.) ।

डसना, क्रि. स. (सं. दंशनं) दंश् (भ्वा. प. अ.), कंटकेन व्यध् (दि. प. अ.) २. मर्माणि भिद् (रु. प. अ.) ।

डसनेवाला, सं. पुं., दंशकः २. अरुंतुदः, मर्मस्पृश् ।

डहडहा, वि. (अनु.) हरित, रसवत् , सरस, विकसित, विकच २. अभिनव, प्रत्यग्र २. प्रसन्न, आनंदित ।

डहडहाना, क्रि. अ. (हिं. डहडह) प्रफुल्ल्-विकस् (भ्वा. प. से.), हरिती भू २. सम्-ऋध् (दि. प. से.) सं-वि-वृध् (भ्वा. आ. से.) ३. मुद् (भ्वा. आ. से.) ।

डाँकना, क्रि. स., दे. 'लाँघना' क्रि. अ., दे. 'कै करना'

डाँग, सं. स्त्री. (सं. दंडकः) लगुडः-रः लः, स्थूल- बृहद्,-दंडः ।

डाँट, सं. स्त्री. (सं. दांतिः >) तर्जनं, तर्जितं, निर्-, भर्त्सनं-ना, वाग्दंडः ।

—डपट, सं. स्त्री. भ्रूभंगेन तर्जनं, आक्रोशः, विभीषिका, भयदर्शनं, अपकारगिर् (स्त्री.) ।

डाँटना, क्रि. स. (हिं. डाँट) विर्, भर्त्स् (चु. आ. से.), भयं दृश् (प्रे.), भी (प्रे.), तर्ज् (भ्वा. से.; चु. आ. से.) ।

डाँटने योग्य, वि., तर्जनीय, निर्भर्त्सनीय-वाग्दंडार्ह ।

डाँटनेवाला, सं. पुं., तर्जकः, निर्भर्त्सकः ।

डाँड, सं. पुं. (सं. दंडः) यष्टिः (स्त्री.), लगुडः २. क्षेपणी, नौदंडः ३.पृष्ठवंशः, कशेरुका ४. धन-अर्थ,-दंडः निग्रहः, शासनं, दंडः ६. सम-सरल, रेखा ७. सीमा ।

डाँड़ना, क्रि. स. (सं. दंडनं) अर्थ-धनं दंड् (चु.) ।

डाँड़ा, सं. पुं. (हिं. डाँड़) दे. 'मेंड़' ।

डाँड़ी, सं. स्त्री. (हि. डाँड़) दे. 'डंडी' (१-४) ।

डाँवाँडोल, वि. (हिं. डोलना) अस्थिर, चंचल, तरल, लोल, कम्पमान । (मनुष्य) अस्थिरबुद्धि, चलचित्त, चंचलमानस ।

डाँस¹, सं. पुं. (सं. दंशः) दंशकः, अरण्य-गो-वन,-मक्षिका, पांशुरः, क्षुद्रिका ।

डाँस², सं. पुं. (अं.) नृत्यम्, दे. 'नाच' ।

डाइन, सं. स्त्री., (सं. डाकिनी) दे. 'डाकिन' ।

डाइनामाइट, सं. पुं. (अं.) विध्वंसकम् , * विस्फोटकम् ।

डाक, सं. स्त्री. (हिं. डाँकना=फाँदना) । प्रेष्य,-पत्राणि-पत्रिकाः (बहु.) २. पत्रवाहन,-व्यवस्था- संस्था ।

—खाना, सं. पुं. (हिं. + फा.) (प्रेष्य) पत्र,-स्थानं-गृहं-कार्यालयः ।

—गाड़ी, सं. स्त्री., पत्रशकटी ।

—घर, सं. पुं., दे॰ 'डाकखाना'।

—बँगला, सं. पुं. (हिं.+अं.) विश्राम-विश्रांति,-गृहम्।

—महसूल, सं. पुं. (हिं.+अ.) } पत्रवाहन-
—व्यय, सं. पुं. (हिं.+सं.) } शुल्कम्।

डाका, सं. पुं. (हिं. डाकना) प्रसह्य चौर्यम्, लुंठिः (स्त्री.)-टी, लुंठनम्।

—जनी, सं. स्त्री. (हिं.+फा.) दे. 'डाका'।

—डालना, या मारना, क्रि. स., लुंट्-लुंठ् (भ्वा. प. से., चु.), प्रसह्य अपहृ (भ्वा. प. अ.)।

—पड़ना, क्रि. अ., लुंठकैः अवस्कंद्-आक्रम् (कर्म.)।

डाकिन,-नी, सं. स्त्री. (सं.-नी) कुहकिनी, अभिचारिणी, योगिनी, मायाविनी, कालीगण-भेदः। २. स्थविरा, वृद्धा ३. कुरूपा नारी।

डाकिया, सं. पुं. (हिं. डाक) पत्रवाहकः।

डाकू, सं. पुं. (हिं. डाकना=कूदना) दस्युः, महासाहसिकः, लुंठकः, लुंटा(ठा)कः, माचलः, प्रसह्यचौरः, चिल्लाभः।

डाट, सं. स्त्री. (सं. दांति >) तोरणः-णं २. दे-'डट्टा' ३. दे. 'डाँट'।

—लगाना, क्रि. स., वृत्तखंडाकृत्या-तोरण-रूपेण निर्मा॰ (जु. आ. अ.)।

डाटना, क्रि. स. (हिं. डाट) अत्यन्तं पूर् (चु.) २. अत्यधिकं भक्ष् (चु.) ३. सावलेपं वस्त्रादिकं परिधा (जु. उ. अ.) ४. दे. 'डाँटना'।

डाढ़, सं. स्त्री. (सं. दाढ़ा) चर्वणदंतः, जंभः, दंष्ट्रा।

डाढ़ी, सं. स्त्री. दे. 'दाढ़ी'।

डाब, सं. स्त्री., दे. 'डाभ'।

डाबर, सं. पुं. (सं. दभ्रः=सागर >) अनूप-कच्छ, भूः (स्त्री.) देशः २. पल्वलः-लं ३. आविलजलं ४. दे. 'चिलमची'।

डाभ, सं. पुं. (दर्भः) कुशः-शं २. आम्र-मंजरी ३. अपक्वनारिकेलः-रः।

डामर, वि. (सं.) भीषण, भयावह २. उपद्र-विन्, कलि-कलह,-प्रिय ३. सरूप, अनुरूप, सदृश। सं. पुं. (सं.) उपद्रवः, कलहः २. उल्लासः, प्रमोदः।

डामल, सं. पुं. (अ॰ दायमुल हब्स) यावज्जी-विकः कारावासः, आमरणान्तिक-रोधः-निरोधः-आसेधः-प्रग्रहः।

डायन, सं. स्त्री. (दे. डाकिनी)।

डायनामो, सं. पुं. (अं.) विद्युज्जनकं लघुयंत्रम्।

डायरी, सं. स्त्री. (अं. दैनंदिनी दैनिकी।

डायरेक्ट स्पीच, सं. स्त्री. (अं.) प्रत्यक्षवर्णनम्।

डायर्की, सं. स्त्री. (अं.) दे॰ 'दुराज'।

डायल, सं. पुं. (अं.) घटीमुखं २. सूर्यघटी।

डायस, सं. पुं. (अं.) उच्चासनं, मंचः।

डार, सं. स्त्री. [सं. दारु (न.)] विटपः, शाखा, २. पंक्तिः-ततिः (स्त्री.), श्रेणी।

डाल, सं. स्त्री. [सं. दारु (न.)] विटप,: शाखा २. असि,-धारा-पत्रं-फलम्।

डालना, क्रि. स. (सं. तलनं) प्र-, अस् (दि. प. से.), प्र-, क्षिप् (तु. प. अ.), पत् (प्रे.) २. प्र-, स्रु (प्रे.), नि-, सिच् (तु. प. अ.) ३. परिधा (जु. उ. अ.), वस् (अ. आ. अ.), धृ (चु.) ४. नि.प्र-विश् (प्रे.), निधा (जु. उ. अ.) ५. विस्मृपरित्यज् (भ्वा. प. अ.) ६. मिश्र् (चु.), संमिल् (प्रे.) ७. उप-पत्नीत्वेन अवरुध् (रु. उ. अ.)।

डालर, सं. पुं. (अं.). रौप्यमुद्राभेदः, डालरम्।

डाली,[1] सं. स्त्री. (हि. डाल) शाखा, विटपः।

डाली,[2] सं. स्त्री. (हिं. डाला) दे. 'टोकरी' २. उपहारः, उपायनम्।

डाह, सं. पुं. (सं. दाहः) ईर्ष्या, अभि-, असूया, मत्सरः, मात्सर्य्यं, परोत्कर्षद्वेष, २. द्वेषः, द्रोहः।

डिंगल, वि. (सं. डिंगर) दुष्ट, दुर्वृत्त २. क्षुद्र, नीच। सं. स्त्री, राजस्थानस्य भाषाविशेषः।

डिंडिम, सं. पुं. (सं.) लघु,-पटहः-दुंदुभिः (पुं.)।

डिंभ, सं. पुं. (सं.) डिंबः, शिशुः, पृथुकः, कलभः, पोतः-तकः, शावः-वकः, अर्भकः, अपत्यं, पृथुकः २. मूर्खः- जडः।

डिक्टेटर, सं. पुं. (अं.) एक—अधिपतिः—सर्वाधिकारसम्पन्न,-शासकः—शासितृ।

डिक्टेशन, सं. स्त्री. (अं.) दे. 'इम्ला'।

डिक्शनरी, सं. स्त्री. (अं.) (शब्द)-कोशः-षः, अभिधानम्।

डिगना, क्रि. अ. (हिं. डग) अप,-स-चम् (भ्वा. प. अ.), प्र-वि-सृप् (भ्वा. प. अ.) २. विचल् (भ्वा. प. से.), पराङ्मुखी-विमुखी

भू, अति-व्यति-इ (अ. प. अ.), अति-व्यभि-चर् (भ्वा. प. से.) ३. दे. 'गिरना' ।

डिगरी[1], सं. स्त्री. [अं. उपाधिः (पुं.)], उपपदं २. अंशः, कला, मात्रा, समकोणस्य नवतो (१/९० भागः ।

डिगरी[2], सं. स्त्री. (अं. डिक्री) स्वत्वप्रापकः, आधिकरणिकनिर्णयः, राजाज्ञा, व्यवस्था ।

—देना, क्रि. स., स्वत्वप्रापणात्मकं निर्णयं कृ, व्यवस्था (प्रे.) ।

डिठौना, सं. पुं. (हिं. डीठ) कुदृष्टिनिवारकं कज्जलतिलकम् ।

डिपटी, सं. पुं. (अ. डिपुटि) प्रति,-निधिः-पुरुषः-हस्तः-हस्तकः, नियोगिन्, नियुक्तः ।

—कमिश्नर, सं. पुं. (अ.) उपायुक्तः ।

डिपार्टमेन्ट, सं. पुं. (अ.) विभागः, शाखा ।

डिपो, सं. पुं. (अ.) भांडागारं, आलयः, शाला ।

डिप्लोमा, सं. पुं. (अ.) प्रमाणपत्रं, अधिकारपत्रम् ।

डिफथीरिया, सं. पुं. (अ.) रोहिणी ।

डिबिया, सं. स्त्री. (हिं. डिब्बा) कोषकः, संपुटकः ।

डिब्बा, सं. पुं., दे. 'डब्बा' ।

डिसमिस, वि. (अ.) अधिकारच्युत, भ्रष्टाधिकार ।

—करना, क्रि. स., अधिकारात्-पदात् च्यु-भ्रंश्-अवरुह (प्रे.) ।

डिसिनफेक्टेंट, वि. (अ.) रोगाणुनाशक ।

डिस्टिल्लेशन, सं. पुं. (अ.) आसवनम् ।

डींग, सं. स्त्री. (सं. डीनं<) आत्मश्लाघा, स्व-प्रशंसा, विकत्थनम् ।

—मारना या हाँकना, आत्मानं श्लाघ्-विकत्थ (भ्वा. आ. से) ।

डींगिया, वि. (हिं. डींग) आत्मश्लाघिन्, विकत्थनशील, पिंडीशूर ।

डीठ, सं. स्त्री., दे. 'दृष्टि' ।

डील, सं. पुं. (देश.) (देह-) प्र-परि,-माणं, आकारः, आकृतिः (स्त्री.), कायमानम् ।

—डौल, सं. पुं., मूर्तिः (स्त्री.), संस्थानं, आकारमानम् ।

डुगडुगी, सं. स्त्री. (अनु.) डिंडिमः, लघुपटहः ।

—पीटना, मु., (सडिंडिमनादं) उद्-वि-घुष् (चु.), प्रख्या प्रख्यापयति) ।

डुग्गी, सं. स्त्री., दे. 'डुगडुगी' ।

डुबकी, सं. स्त्री. (हिं. डूबना) अवगाहः, आप्लवः, निमज्जथुः (पुं.) ।

—लगाना, क्रि. अ., वाङ्-अवगाह् (भ्वा, आ. से.), आप्लु (भ्वा. आ. अ.), निमस्ज् (तु. प. अ.) ।

डुबाना, क्रि. स., व. 'डूबना' के प्रे. रूप ।

डुबाव, सं. पुं. (हिं. डूबना) अगाधता, गांभीर्यम् ।

डुबोना, क्रि. स., व. 'डूबना' के प्रे. रूप ।

डुलाना, क्रि. स., व. 'डोलना' के प्रे. रूप ।

डूँगर, सं. पुं., (सं. तुंग >) पर्वतकः, क्षुद्रपर्वतः २. उच्चभूः (स्त्री.) मृच्चयः ।

डूँगरी, सं. स्त्री. (हिं. डूँगर) अतिक्षुद्रपर्वतः २. क्षुद्रमृच्चयः ।

डूँडा, वि. (देश०) एक.-शृंग-विषाण-कूणिक । सं. पुं. एकशृंग-एकविषाण,-वृषः-वृषभः ।

डूबना, क्रि. अ., (हिं. बूड़ना का विपर्यय; अथवा अनु. डुब-डुब) निमस्ज् (तु. प. अ.), निमज्जनेन मृ (तु. आ. अ.)-व्यापद् (दि. आ. अ.) २. अस्तं इ-या (अ. प. अ.), अस्ताचलं-अस्तशिखरं अवलंब् (भ्वा. आ. से), प्राप् (स्वा. प. अ.) ३. नष्ट-ध्वस्त-निर्मूल (वि.) भू, नश् (दि. प. वे.), ध्वंस् (भ्वा. आ. से.), परिक्षि (कर्म.), प्र-वि-ली(दि.आ.अ.) ४. निध्यै (भ्वा. प. अ.), सततं आलोच्-चित् (चु.), चिंताकुल (वि.) भू ५. निमग्न-निरत-आसक्त-व्यापृत (वि.) भू । सं. पुं., निमज्जनं, आप्लावः, प्लावनं, निमज्जनेन मरणं, अस्तः, अस्तमनं; नाशः, ध्वंसः; सततचिंतनं, कार्यासक्तिः (स्त्री.) ।

डूश, सं. पुं. (अं.) योनिक्षालनम् ।

डेंगू बुखार, सं. पुं. (अं.+अ.) दण्डक-अस्थि-भंजन,-ज्वरः ।

डेढ़, वि. (सं. अध्यर्द्ध) सार्द्धैक ।

—ईंट की मसजिद जुदी बनाना, मु. (दर्पादितः) कार्यमसंभूयैव कृ ।

डेपुटेशन, सं. पुं. (अ.) प्रतिनिधिवर्गः, शिष्ट-मंडलं, नियुक्तजनाः ।

डेरा, सं. पुं. (हिं. ठहरना) पट-वस्त्र,-गृहं-कुटी-मंडपः-वेश्मन् (न.), दूष्यं-श्यं २, गृहं, आलयः, आवासः ३. विश्रामः, अस्थिरवासः ४. शिविरं, निवेशः ।

—डालना, मु., सैन्यं निविश् (तु. प. अ.) समावस् (भ्वा. प. अ.)।

डेल्टा, सं. पुं. (यू., अ.) नदीमुखपुलिनः-नम्।

डेलिगेट, सं. पुं. (अ.) नियोगिन्, प्रतिनिधिः(पुं.)।

डेवढ़ा, वि. (हिं. डेढ़) अध्यर्द्धगुण। सं. पुं. अध्यर्द्धगुणनसूची।

डेवढ़ी, सं. स्त्री., दे. 'ड्योढ़ी'।

डेसिमल, सं. पुं. (अ.) दशमलवः २. दशसंख्यक।

डेस्क, सं. पुं. (अ.) लेखन-पीठिका-फलकम्।

डोंगा, सं. पुं. (सं. द्रोणं <) वेडा, वारिरथः-नौः (स्त्री..), तरी।

डोंगी, सं. स्त्री. (सं. द्रोणी) उडुपः, नौका, वेटी, वेडा, तारिका।

डोंडी-ढ़ी, सं. स्त्री., दे. 'डौंडी'।

डोडी, सं. स्त्री. (सं. तुंडं) बीजकोषः, पुटः-टम्।

डोबा, सं. पुं. (हिं, डूबना) निमज्जथुः (पुं.), निमज्जनं, अवगाहः-हनं, आप्लवः।

—देना, क्रि. स., (रंगे) नि-, मिस्ज (प्रे. मज्जयति), अवगाह् (प्रे.) २. क्लिद् (प्रे.), आर्द्री कृ।

डोम, सं. पुं. (सं.) डोंबः, अस्पृश्यजातिभेदः १. दे. 'मीरासी'।

डोर, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) शुल्वं-ल्वं, शुल्वा-ल्वी, वराटः-टकः, रज्जुः (स्त्री.), गुणः, वटः-टं-टी।

डोरा, सं. पुं. (सं. डोरः-रं) डोरकः-कं, सूत्रं, तंतुः (पुं.), गुणः २. रेखा-षा, लेखा ३. असि-, धारा ४. चमसभेदः ५. स्नेहसूत्र, प्रेमबंधन ६. कज्जलरेखा ७. नृत्ये ग्रीवागतिभेदः।

—डालना, मु. अनुरंज्-मुह् (प्रे.)।

डोरिया सं. पुं. (हिं. डोरा) *डोरीयः, सरेखोंऽशुकभेदः।

डोरी, सं. स्त्री., दे, 'डोर'।

डोल, सं. पुं. (सं. दोलः <)*दोलं, लौहसेचनम्। वि., अस्थिर, लोल।

डोलची, सं. स्त्री. (हिं. डोल) *दोलकं, लघुसेचनी।

डोलना, क्रि. अ. (सं. दोलनं) सृ-सृप् (भ्वा. प. अ.), चल् (भ्वा. प. से.) २. भ्रम्-पर्यट् (भ्वा. प. से.) ३. अप,-इया (अ. प. अ.) ४. (चित्तं) विचल्, चंचलं भू ५. दोलायते (ना. धा.), प्रेंख् (भ्वा. प. से.)। सं. पुं, दोलनं, प्रेंखणं इ.।

डोलनेवाला, सं. पुं., सर्पणशीलः पर्यटकः, अपयातृ (पुं.), चलचित्तः, प्रेंखकः।

डोला, सं. पुं. (सं. दोला) डयनं, दोलिका, शिविका।

—देना, मु., नृपादिभ्यः स्वकन्यामुपहृ (भ्वा. प. अ.)

डोली, सं. स्त्री. (हिं. डोला) दे. 'डोला'।

डौंड़ी-ढी, सं. स्त्री. (सं. डिंडिमः) पटहः, दुंदुभिः २. (सडिंडिमनादं) घोषः-षणा ३. ख्यापनं, उत्कीर्तनम्।

—देना या पीटना, क्रि. स., दे. 'डुगडुगी पीटना'।

डौल, सं. पुं. (हिं. डील) आकारः, संस्थानं, आकृतिः (स्त्री.), रूपं २. प्रकारः,-विधा (समासांत में) ३. युक्तिः (स्त्री.), उपायः ४. लक्षणं, चिह्नम्।

डाल, सं. पुं., उपायः, युक्तिः (स्त्री.)।

—दार, वि., सुन्दर, रम्य २. पुष्ट, स्वस्थ।

ड्यूटी, सं. स्त्री. (अं.) कर्तव्यं, कार्यं, कृत्यम्, न्याय्य-स्व,-कर्मन्-कार्यम्।

ड्योढ़ा, वि. तथा सं. पुं., दे. 'डेवढ़ा'।

ड्योढ़ी, सं. स्त्री. (सं. देहली) गृहावग्रहण, द्वार,-पिंडी-पिंडिका २. उपशाला, द्वारांगणं, द्वारकोष्ठः।

—दार, —वान, } सं. पुं., दौवारिकः, द्वारपालः।

ड्राइङ्ग, सं. स्त्री. (अं.) *रेखाचित्रणम्।

—रूम, दर्शन-उपवेशन,-कोष्ठः-शाला-कक्षः, चित्रशाला।

ड्राइवर, सं. पुं. (अं.) वाहकः, चालकः।

ड्रापर, सं. पुं. (अं.) बिन्दुपातकम्।

ड्राफ़्ट, सं. पुं. (अ.) प्रारूपम् २. धनार्पणा-देशः, ड्राफ्टम्।

—टेबल, सं. पुं. (अं.) श्रृंगारफलकम्।

ड्राफ़्ट्समैन, सं. पुं. (अं.) आलेख्य-चित्र,-करः-कारः-कृत्।

ड्राम, सं. पुं. (अं.) ड्राममानं, माषत्रयात्म-कस्तोलभेदः।

ड्रामा, सं. पुं. (अं.) रूपकं, नाटकम्।

ड्राअर, सं. पुं. (अं.) चल-,कोष्ठः-संपुटः ।
ड्रेस, सं. स्त्री. (अं.) वेशः-षः, परिधानम् ।
ड्रेसिंग, सं. स्त्री. लेपः, उप,-नाहः- देहः । अं. २. श्रृंगारः, मण्डनम् ।
ड्रिल, सं. स्त्री. (अं.) व्यायामः, अस्त्र-शस्त्र,-शिक्षा-अभ्यासः ।
—मास्टर, सं. पुं. (अं.) व्यायाम,-शस्त्र,-शिक्षकः ।

ढ

ढ, देवनागरीवर्णमालायाश्चतुर्दशो व्यञ्जनवर्णः, ढकारः ।
ढंग, सं. पुं. (सं. तंग् = गति > ?) शैली, रीतिः-पद्धतिः (स्त्री.) प्रणाली २. प्रकारः, जातिः (स्त्री.), भेदः,-विधा (समासांत में) ३. रचना, घटनं, निर्माणं ४. युक्तिः (स्त्री.), उपायः ५. व्यवहारः, आचरणं ६. व्याजः, मिषं ७. लक्षणं, चिह्नं ८. स्थितिः (स्त्री.), दशा ।
ढंगी, वि. (हिं. ढंग) चतुर, विदग्ध, धूर्त्त ।
ढंढोरा, सं. पुं. (अनु. ढंढं) दे. 'डौंडी' ।
ढँढोरिया, सं. पुं. (हि. ढँढोरा) उद्-,घोषकः, प्रख्यापकः ।
ढई, सं. स्त्री. (हिं. ढहना) दे. 'धरना' सं. पुं. ।
ढकना, सं. पुं., दे. 'ढक्कन' । क्रि. स., दे. 'ढाँकना' । क्रि. अ., आच्छाद्-आवृ-पिधा (कर्म.) ।
ढकनी, सं. स्त्री., दे. 'ढक्कन' ।
ढकवाना, क्रि. प्रे., व. 'ढाँकना' के प्रे. रूप ।
ढकेल, सं. पुं. दे. 'धकेल' ।
ढकेलना, क्रि. स., दे. 'धकेलना' ।
ढकोसला, सं. पुं. (हिं. ढंग + सं. कौशलम्) दंभः, आडंबरः, पाखंडः-डं, कापट्यं, छाद्मिकता ।
ढक्कन, सं. पुं. (सं. ढक्क = छिपना) पिधानं, पुटः-टम्-टी, छदः, छदनं, आवरणम् ।
ढचर, सं. पुं. (हिं. ढाँचा) परिच्छदः, उपकरणसामग्री २. आधारः, उपष्टंभः ३. कलहः, विवादः ४. व्यवसायः, वृत्तिः (स्त्री.) ५. आडम्बरः ६. जरठः ।
ढप, सं. पुं., दे. 'डफ' ।
ढपना, सं. पुं. (हिं. ढाँपना) दे. 'ढक्कन' । क्रि. अ., दे. 'ढकना' क्रि. अ. ।
ढब, सं. पुं., दे. 'ढङ्ग' ।
ढमढम, सं. पुं. (अनु.) पटह-भेरी,-नादः, ढमढमध्वनिः (पुं.), ढमढमायितम् ।
ढरका, सं. पुं. [हिं. ढर(ल)कना] चि(च)ल्लता, पिल्लता, नेत्रस्रावः, अभिस्यं(ष्यं)दः २. पशूनामौषधपाननलः ।
ढरकी, सं. स्त्री. [हिं. ढर(ल)कना] त(त्र)सरः, मल्लिकः ।
ढर्रा, सं. पुं. (हिं. ढरना) मार्गः, पथिन् २. शैली, पद्धतिः (स्त्री.) ३. उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ४. आचारः, आचरणम् ।
ढलकना, क्रि. अ. (हिं. ढाल) प्र-परि,-स्रु (भ्वा. प. अ.), पत् (भ्वा. प. से.) प्रस्यंद्-श्च्युत् (भ्वा. आ. से.) २. 'लुढकना' । सं. पुं., स्र(स्रा) वः, श्च्योतः, अवपातः ।
ढलका, सं. पुं., दे. 'ढरका' (१) ।
ढलकाना, क्रि. स., व. 'ढलकना' के प्रे. रूप ।
ढलना, क्रि. अ. (हिं. ढाल) विलाप्य संधा-घट्-रच्-क्लृप् (कर्म.) २. दे. 'ढलकना' । ३. व्यति-अति,-इ (अ. प. अ.), व्यतिक्रम् (भ्वा. प. से.) ४. दे. 'लुढ़कना' ५. प्री (दि. आ. अ.), अनुकूली भू ५. अस्तं गम् ।
साँचे में ढला, मु., अति,-सुन्दर-सुभग-शोभन ।
ढलमल, वि., दे. 'ढीला' ।
ढलवाँ, वि. (हिं. ढालना) विलाप्य घटित-रचित-क्लृप्त २. अवसर्पिन, प्रवण ।
ढलवाना, क्रि. प्रे., व. 'ढालना' के प्रे. रूप ।
ढलाई, सं. स्त्री. (हिं. ढालना) विलाप्य घटनं-रचनं-कल्पनं २. द्रावण-विलापन,-भृतिः (स्त्री.) ।
ढहना, क्रि. अ. (सं. ध्वंसनं) ध्वंस्-अवस्रंस् (भ्वा. आ. से.), अवपत् (भ्वा. प. से.) २. वि-,नश् (दि. प. वे.) ।
ढहवाना, क्रि. प्रे., व. 'ढहाना' के प्रे. रूप ।
ढहाना, क्रि. स. (सं. ध्वंसनं) अवस्रंस्-ध्वंस्-अवपत्-उन्मूल्-उत्पट्-उच्छिद्-उत्सद् (प्रे.) २. विनश् (प्रे.) । सं. पुं., प्र-वि-ध्वंसः, उत्पाटनं, उन्मूलनं, उत्सादनं इ. ।
ढहाने योग्य, वि., विध्वंसनीय, उन्मूलयितव्य इ. ।

ढहानेवाला, सं. पुं., विध्वंसकः, उत्पाटकः ।

ढाँकना, क्रि. स. (सं. ढक्क = छिपाना) आ-प्र-समा-च्छद् (चु.), आ-प्र-सं-वृ (स्वा उ. से.), व्यव-पि,-धा (जु. उ. अ.), अवगुंठ् (चु.), निगुह् (भ्वा. उ. से., निगूहति-ते) २. आ-,स्तृ (स्वा. उ. अ.) स्तृ (क्र्. उ. से.) । सं. पुं., आ-प्र-समा,-च्छादनं, आ-सं-वरणं, पिधानं, अवगुंठनं, वेष्टनं; आस्तरणं इ. ।

ढाँकनेवाला, सं. पुं., आच्छादकः, आवरकः, पिधायकः ।

ढाँका हुआ, वि., आच्छादित, आवृत, पिहित इ. ।

ढाँचा, सं. पुं. (सं. स्थाता >) आकारः, आधारः, उपष्टंभः, संस्थानं, प्रारम्भिक,-रूपं-आधारः ।

ढाँपना, क्रि. स., दे. 'ढाँकना' ।

ढाई, वि. (सं. अर्द्धद्वितीय >) सार्द्धद्वि ।

ढाक, सं. पुं. (सं. आषाढकः) पलाशः, किंशुकः, पर्णः, यज्ञियः, रक्तपुष्पकः, वातहरः, समिद्वरः ।

—के तीन पात, मु., सदादरिद्रता, निरन्तर-निर्धनता ।

ढाड़, सं. स्त्री. (अनु.) चीत्कारः, आक्रन्दः, उत्क्रोशः २. गर्जितं, गर्जनं-ना, महा-गंभीर,-नादः ।

—मारना, मु., सचीत्कारं-साक्रंदं रुद् (अ. प. से.) ।

ढाढस, सं. पुं. (सं. दृढ़ >) धीरता, धैर्यं, चित्त-स्थैर्यं, शांतिः (स्त्री.) २. सम्-, आश्वासः-सनं, सांत्वनं-ना ३. साहसं, चित्तदार्ढ्यम् ।

—देना या बँधाना, मु., आ-समा-श्वस् (प्रे.) शां (सां)त्व् (चु.), विनुद् (प्रे.) २. प्रोत्सह् (प्रे.) ।

ढाना, क्रि. स., दे. 'ढहाना' ।

ढाबा, सं. पुं. (देश.) भोजन,-गृहं-शाला २. दे. 'परछत्ती' । ३. कुक्कुट,-कंडोलः- करंडः ३. जालम् , पाशः ।

ढारस, सं. पुं., दे. 'ढाढस' ।

ढाल[1], सं. स्त्री. (सं. न.) चर्मन् (न.), फलकः-कं, फलम् ।

ढाल[2], सं. स्त्री. (सं. धारः >) क्रमशः निम्नता, प्रावण्यं, प्रवणता-त्वं २. निम्नं, प्रवणं, प्रवण-अवसर्पि,-भूमिः (स्त्री.) ३. पर्वत-, उत्संगः, कटकः-कं, नितंबः ४. प्रकारः, विधिः (पुं.), गतिः (स्त्री.) ।

ढालना, क्रि. स. (हिं. ढाल) विलाप्य रच्-घट्-क्लृप (प्रे.) निर्मा० (जु. आ. अ.) २. (मद्यं) पा (भ्वा. प. अ.) ३. दे. 'उँडेलना' ।

ढालवाँ, वि. (हिं. ढाल) दे. 'ढलवाँ' (१-२) ।

ढालिया, सं. पुं. (हिं. ढालना) पात्रकारः २. सुवर्णकारः ।

ढाली, सं. पुं. (सं.-लिन्) ढाल-चर्म-फलक,-धारिन् २. सैनिकः, योधः ।

ढासना, सं. पुं. (सं. धा=धारण+आसनं >) पृष्ठासनं (पृष्ठ-) अवष्टंभः-अवलम्बनं-आधारः २. उपधानं, उपबर्हः ।

ढिंढोरा, सं. पुं. (अनु. ढम+सं. ढोलः >) दे. 'डौंडी' (१-२) ।

ढिग, क्रि. वि. (सं. दिश् >) समीपं-पे । सं. स्त्री., सामीप्यं, नैकट्यं २. अंतः, प्रांतः ।

ढिठाई, सं. स्त्री. (हिं. ढीठ) धार्ष्ट्यं, प्रागल्भ्यं, वैयात्यं, अविनयः, अशिष्टता, धृष्टता ।

ढिबरी[1], सं. स्त्री. (हिं. डिब्बी)मृत्तैलदीपः-पिका ।

ढिबरी[2], सं. स्त्री. (हिं. ढपना) *वलयकील-करोधनी ।

ढिमका, सर्व. (हि. अमका का अनु.) अमुक ।

ढिलढिला, वि. (सं. शिथिल) कोमल, स्निग्ध-मेदुर, अकठिन ।

ढिल्लड़, वि. (हिं. ढीला) मंद, मंथर, अलस ।

ढीठ, वि. (सं. धृष्ट) अशिष्ट, प्रगल्भ, वियात, कु-दुः,-शील, विनयविहीन ।

ढील, सं. स्त्री. (हिं ढीला) काल,-अतिपातः-क्षेपः-यापनं-हरणं, विलम्बः, व्याक्षेपः २. आलस्यं, मंथरता ३. शिथिलता, शैथिल्यं, श्लथता ।

—करना, क्रि. अ., कालं क्षिप् (तु. प. अ.), विलम्ब् (भ्वा. आ. से.) ।

—देना, मु., यथेष्टमाचरितुं अनुमन् (दि. आ. अ.) अनुज्ञा (क्र्. उ. अ.) २. शिथिली कृ, श्लथ् (चु.) ।

ढीला, वि. (सं. शिथिल) प्र-,श्लथ, विगलित, स्रस्त, अदृढ, असंसक्त, २. अलस, तंद्रिल, तंद्रालु, मंद, मंथर ३. काल,-अतिपातिन्-क्षेपकः ।

ढीलापन, सं. पुं., दे, 'ढील' ।

ढीह, सं. पुं., दे. 'टीला'।

ढुँढवाना, क्रि. प्रे., व. 'ढूँढना' के प्रे. रूप।

ढुंढि, पुं. (सं.) गणेशः, गणपतिः।

ढुंढी, सं. स्त्री., (सं. तुंदी) १. तुंदः-दिः (स्त्री.), नाभिः (पुं. स्त्री.) २. वाहुः, भुजः-जी।

ढुकना, क्रि. अ. (देश.) प्रविश् (तु. प. अ.) २. सहसा अभिद्रु (भ्वा. प. अ.)-आक्रम् (भ्वा. प. से.; भ्वा. आ. अ.)।

ढुलकना, क्रि. अ., दे. 'लुढ़कना'।

ढुलकाना, क्रि. स., दे. 'लुढ़काना'।

ढुलना, क्रि. अ., दे. 'ढलकना' २. दे. लुढ़कना' ३. प्री (दि. आ. अ.) अनुग्रह् (क्र्. प. से.), दय्-अनुकंप (भ्वा. आ. से.)।

ढुलवाई, ढुलाई, सं. स्त्री. (हिं. ढुलवाना) वाहनं, नयनं, हरणं, भरणं २. वाहनवेतनं, प्रापणनिर्वेशः।

ढुलवाना, क्रि. प्रे., व. 'ढोना' तथा 'ढुलना' के प्रे. रूप।

ढुलाना, क्रि. प्रे., व. 'ढुलना' तथा 'ढोना' के प्रे. रूप।

ढूँढ, सं. स्त्री. (हिं. ढूँढ़ना) दे. 'खोज'।

ढूँढ़ना, क्रि. क. (सं. ढुंढनं) दे. खोजना'।

ढूह-हा, सं. पुं. (सं. स्तूपः) राशिः (पु.). चयः २. वामलूरः, क्षुद्रपर्वतः।

ढेंकली, सं. स्त्री. (हिं. ढेंक) जलकर्षणयंत्रं २. धान्यकुट्टनी ३. वक्रतुंडयंत्रं (अर्क उतारने का यंत्र) ४. दे. 'कलावाजी'।

ढेर, सं. पुं. (हिं. धरना > ?) राशिः (पुं.), निकरः, चितिः (स्त्री.), नि-सं-, चयः, स्तोमः, पुंजः, संभारः। वि., प्रचुर. प्रभूत, बहुल, भूरि, विपुल, पर्याप्त।

—लगाना, क्रि. स., राशी कृ, संचि (स्वा. उ. अ.)।

—करना, मु., व्यापद् मृ (प्रे.)।

ढेरी, सं. स्त्री. (हिं. ढेर) क्षुद्रराशिः (पुं.), दे. 'ढेर'।

ढेला, सं. पुं. (हिं. डला) लोगः, मृत्,-खंडः-पिंडः, लोष्टः-ष्टं, दरिणिः (पुं. स्त्री.) लोष्टुः, २. पिंडः, खंडः-डं ३. धान्यभेदः।

ढैया, सं. पुं. (हिं. ढाई) सार्द्धद्विसेरकात्मक-तोलः २. सार्द्धद्विगुणनसूची।

ढोंग, सं. पुं. (हिं. ढंग) आडंबरः, दंभः, पाषंडः-डं, कपटं, छद्मन् (न.), वंचना, प्रतारणा।

ढोंगी-गिया, वि. (हिं. ढोंग) दांभिक, वंचक, प्रतारक, कापटिक, छाद्मिक, पाषंडिन्।

ढोटा, सं. पुं. (हिं. ढोटी) पुत्रः २. बालकः।

ढोटा, सं. स्त्री. (सं. दुहितृ) पुत्री २. बालिका।

ढोना, क्रि. स. (सं. वोढ वा ऊढ, विपर्यय से ढोव) वह्-नी (भ्वा. उ.अ.), (उत्थाप्य) हृ (भ्वा. उ. अ.)। सं. पुं., वहनं, नयनं, हरणम्।

ढोनेवाला, सं. पुं., भार,-वाहकः-हारः।

ढोर, सं. पुं., दे, 'पशु'।

ढोल, सं. पुं. (सं.) आनकः, पटहः-हं, ढक्का २. कर्णदुंदुभिः (पुं.)।

ढोलक-की, सं. स्त्री. (सं. ढोलकं) भेरी-रिः (स्त्री.), दुंदुभिः (पुं.)।

ढोलकिया, सं. पुं. (सं. ढोलकं >) ढोलक-वादकः, पटहताडकः।

ढौंचा, सं. पुं. (सं. अर्द्ध + हिं. चार) सार्द्धचतुर्गुणनसूची।

ण

ण, देवनागरीवर्णमालायाः पंचदशो व्यंजनवर्णः, णकारः।

त

त, देवनागरीवर्णमालायाः षोडशो व्यंजनवर्णः, तकारः।

तंक, सं. पुं. (सं.) भयं, भीतिः (स्त्री.), त्रासः २. कष्टमय-क्लेशमय,-जीवनम् ३. वियोगदुःखम् ४. टंकः, तक्षणी।

तंग, वि. (फ़ा.) दृढ, शैथिल्यशून्य, संसक्त, सुसंहत, गाढ २. अर्दित, उद्विग्न, संतप्त, पीडित, विकल ३. विस्तारविरहित, संबाध, संकट, संकु-(को)चित, संकीर्ण। सं. पुं., कक्ष्या, नध्री, वरत्रा।

—दस्त, वि. (फ़ा.) निर्धन, दरिद्र।

—दस्ती, सं. स्त्री. (फ़ा.) अकिंचनता, दारिद्र्यम् ।
—दिल, वि. (फ़ा.) कदर्य, कृपण, मितंपच ।
—आना, या होना, मु., खिद् (दि. रु. आ. अ.), संतप् (कर्म.) ।
—करना, मु., खिद्-व्यथ्-संतप् (प्रे.) ।
हाथ तंग होना, मु., दरिद्रा (अ. प. से.), निर्धन (वि.) भू ।
तंगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) संकोचः, संकीर्णता, विस्ताराभावः, संबाधता २. दृढता, संहतिः-सुसंसक्तिः (स्त्री.), गाढता ३. क्लेशः, दुःखं ४. निर्धनता, दरिद्रता ५. न्यूनता ।
तंडुल, सं. पुं. (सं.) दे. 'चावल' ।
तंति, सं. स्त्री. (सं.) रज्जुः (स्त्री.), गुणः, वटी, रशना २. पंक्तिः (स्त्री.), श्रेणी-णिः (स्त्री.) ।
—पाल, सं. पुं., गोरक्षकः (२) अज्ञातवासे सहदेवस्य संज्ञा (महा०) ।
तंतु, सं. पुं. (सं.) सूत्र, तंत्रं, गुणः २. संतानः ।
—वाय, सं. पुं., दे. 'जुलाहा' ।
तंत्र, सं. पुं. (सं. न.) तंतुः (पुं.), सूत्रं २. तंतु,-वायः-वापः, कुविंदः, पटकारः ३. पट-निर्माणपरिच्छदः ४. संपत्तिः (स्त्री.) ५. अधीनता, पराश्रयः ६. शासनं, शासनपद्धतिः (स्त्री.) ७. कारणं ८. कार्यं ९. परिवारः १०. सेना ११. गारुडं, मंत्रः १२. औषधं १३. राज्यं १४. शास्त्रभेदः ।
तंत्री, सं. स्त्री. (सं.) तंत्रिः (स्त्री.), वीणादीनां गुणः २. गुणः, रज्जुः (स्त्री.) ३. वीणा, सतंत्रीकं वाद्यं ४. देहशिरा । सं. पुं. (सं. तंत्रिन्) वीणावादकः २. गायकः ३. सैनिकः ।
तंदुरुस्त, वि. (फ़ा.) स्वस्थ, नीरोग ।
तंदुरुस्ती, सं. स्त्री. (फ़ा.) स्वास्थ्यं, नीरोगता ।
तंदूर, सं. पुं. (फ़ा. तनूर) आपाकः, उरवा, कंदुः (पुं. स्त्री.) ।
तंदेही, सं. स्त्री. (फ़ा. तंदिही) परिश्रमः, प्रयत्नः ।
तंद्रा, सं. स्त्री. (सं.) निद्रा, आलस्यं, निद्रालुता, शयालुता, तंद्रालुता ।
तंद्रालु, वि. (सं.) तंद्रिल, निद्रालु, निद्रा,-पर-वश, सुषुप्सु, शयालु ।
तंबाकू, सं. पुं., दे. 'तमाकू' ।
तंबीह, सं. स्त्री. (अ.) शिक्षा, अनुशासनं, उपदेशः ।
तंबू, सं. पुं. (हिं तनना) पट,-कुटी-मंडपः-गृह, दूश्यं-ष्यं, केणिका, मलनः, स्थूलम् ।
शाही—, सं. पुं., उपकार्या ।
तंबूर, सं. पुं. (फ़ा.) पटहः, पणवः, मुरजः ।
तंबूरा, सं. पुं. (सं. तुंबरं) *तानपूरकः, वीणाभेदः ।
तंबोल, सं. पुं. (सं. तांबूलं >) *तांबूलं, *वर-शुल्कः-कं (पंजाब) २. *वरयात्रिव्ययः *तांबूलं (बुंदेलखंड) ।
तंबोली, सं. पुं. (हिं. तंबोल) तांबूलिकः, तांबूलविक्रेतृ (पुं.) ।
तअज्जुब, सं. पुं. (अ.) आश्चर्यं, विस्मयः ।
तअम्मुल, सं. पुं. (अ.) धैर्यं, शांतिः (स्त्री.) ।
तअल्लुक़ः, सं. पुं. (अ.) भूमिः (स्त्री.), क्षेत्रं २. प्रदेशः, प्रांतभागः, मंडलम् ।
—दार, सं. पुं., भू-क्षेत्र,-स्वामिन्, क्षेत्रपतिः ।
तअल्लुक, सं. पुं. (अ.) संबंधः, संसर्गः ।
तअस्सुब, सं. पुं. (अ.) धार्मिक-जातीय,-पक्षपातः ।
तई, प्रत्य. (प्रा. हुंतो) प्रति,-अर्थम् ।
(इसका अनुवाद प्रायः द्वितीया या चतुर्थी के रूपों से करते हैं) ।
तक, अव्य. (सं. अंत + हिं. क) यावत्,-पर्यन्तं-आ- (समास में या पंचमीयुक्त) । आमरणं, आमरणात्, मरणं यावत्, मरणपर्यन्तम् इ. ।
तकड़ा, वि. (हिं. तन + कड़ा) बलवत्, सबल, पुष्ट [तकड़ी (स्त्री.)-बलवती, सबला] ।
तकड़ी, सं. स्त्री. (देश.) तुला, मापनः, धटः, तौलम् ।
तक़दीर, सं. स्त्री., (अ.) भाग्यं, दैवम् ।
तकरार सं. स्त्री. (अ.) कलहः, विवादः ।
तक़रीर, सं. स्त्री. (अ.) भाषणं, व्याख्यानम् ।
तकला, सं. पुं. [सं. तर्कुः (पुं. स्त्री.)] तर्कुटं, कार्पासनासिका ।
तकली, सं. स्त्री. (हिं. तकला) तर्कुटी. क्षुद्रतर्कुः (पुं. स्त्री.) २. आवापनं, तंतुकीलः ।
तकलीफ़, सं. स्त्री. (अ.) कष्टं, क्लेशः, आपद् (स्त्री.) ।
तकल्लुफ़, सं. पुं. (अ.) शिष्टाचारः, नैयमिकता ।
—करना, शिष्टवत् आचर् (भ्वा. प. से.), शिष्टाचारं दृश् (प्र.) ।

बेतकल्लुफ़, वि., सरल, ऋजु ।

तक़वीयत, सं. स्त्री. (अ०) पुष्टिः-शक्तिः (स्त्री.) बलम् । २. सान्त्वनं-ना, आश्वासः, आश्वासनम् ।

तक़सीम, सं. स्त्री. (अ.) अंशनं, विभागः, विभागपरिकल्पनं २. वंटनं, संप्रविभागः ।

—करना, क्रि. स., भज्-विभज् (भ्वा. उ. अ.) २. वंट्-व्यंश् (चु.) ।

तक़सीर, सं. स्त्री. (अ.) अपराधः, दोषः ।

तक़ाज़ा, सं. पुं. (अ.) (ऋणशोधनार्थं) अनुरोधः, प्रेरणा ।

—करना, ऋणशोधनार्थं सनिर्बंधं प्रार्थ् (चु. आ. से.) २. अनुरुध् (रु. प. अ.) ।

तक़ावी, सं. स्त्री. (अ.) कृषकेभ्यो बीजाद्यर्थं दत्तमृणम् ।

तकिया, सं. पुं. (फ़ा.) उपधानं, उपबर्हः २. आश्रयः, अवलंबः ३. यवनभिक्षुककुटी ।

—कलाम, सं. पुं. (फ़ा+अ.) *वागाश्रयः, *सहजवाक्यम् ।

तकुआ, सं. पुं., दे. 'तकला' ।

तक्र, सं. पुं. (सं. न.) पादांबुसंयुतं दधि (न.), मथितम् ।

तक्षक, सं. पुं (सं. न.) त्वक्षणं, तनूकरणं, काष्ठस्य समीकरणं २. उत्किरणं, उत्कीर्य मूर्तिनिर्माणम् ।

तक्षण, सं. पुं. (सं.) पातालस्थो नागविशेषः २. सर्पः, अहिः (पुं.) ।

तख़मीना, सं. पुं. (अ.) अनुमानं २. मूल्य-निरूपणम् ।

तख़्त, सं. पुं. (फ़ा.) नृपासनं, सिंहासनं ; भद्रासनं २. फलकः-कं, मंचः ।

—नशीन, वि. (फ़ा) सिंहासन,-आसीन-आरूढ़ ।

—पोश, सं. पुं. (फ़ा.) मंचाच्छादनं, फलक-प्रच्छदः २. फलकः-कं, मंचः ३. दे. 'चौकी' ।

तख़्ता, सं. पुं. (फ़ा.) काष्ठ-दारु,-फलकः-फलकं २. पट्टः-टं ३. पीठं, मंचः ४. शव,-फलकं-यानं ५. दे. 'क्यारी' ।

तख़्ती, सं. स्त्री. (फ़ा. तख़्ता) क्षुद्रफलकं, पीठिका २. (काष्ठ-) पट्टी-पट्टिका ।

तगड़ा, वि., दे. 'तकड़ा' ।

तगण, सं. पुं. (सं.) छन्दः शास्त्रे गणभेदः, अन्तलघुर्गणः । (उ० तूफ़ान, तैंतीस)

तगर, सं. पुं. (सं. न.) वक्रं, कुटिलं, जिह्मं, दीपनम् ।

तगाड़, सं. पुं. (सं. तडागः-गम् >) सुधाकर्द-मादिमिश्रणार्थं कुंडम्, तडागः ।

तगादा, सं. पुं., दे. 'तक़ाज़ा' ।

तज, सं. पुं. (सं. त्वचं) बहुगंधं, मुखशोधनं, उत्कट, गंधवल्कं, सिंहलम् ।

तज़किरा, सं. पुं. (अ.) वर्णनं, चर्चा २. जीव-नचरितम् ।

तजर(रु)बा, सं. पुं. (अ.) संपरीक्षा, प्रयोगः, परीक्षा-क्षणं, २. अनुभवः, परीक्षालब्ध-अनुभव-जनित,-ज्ञानं, बुद्धिपरिपाकः ।

—कार, सं. पुं. (फ़ा.) अनुभविन् , बहुदर्शिन् ।

—करना, क्रि. स,. अनुभू २. परीक्ष् (भ्वा. आ. से.), प्रयुज् (चु.) ।

तजवीज़, सं. स्त्री. (अ.) मतं, मतिः (स्त्री.), तर्कः २. निर्णयः ३. उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ।

तट, सं. पुं. (सं. तटः-टं) तटी-टा, कूलं, तीरं, रोधस् (न.) । क्रि. वि., समीपं-पे ।

तटस्थ, वि (सं.) तीरस्थ, कूलस्थ २. निष्प-क्षपात, उदासीन, उभयसामान्य, सम,-भाव-दृष्टि ।

तड़[1], सं. पुं. (सं. तटः >) पक्षः, दलः-लम् ।

तड़[2], सं. पुं. (अनु.)प्रहारजः शब्दः, तड़त्कारः ।

तड़कना, क्रि. अ. (अनु. तड़) वि-, दल् (भ्वा. प. से.), स्फुट् (तु. प. से.) दॄ-भंज्-भिद् (कर्म.) २. क्रुध् (दि. प. अ.) ।

तड़का, सं. पुं. (हिं. तड़कना) प्रभातं, विभातं, उषस् (स्त्री. न.), प्रत्यूषः, अहर्मुखम् ।

तड़के, क्रि. वि., प्रत्यूषे, प्रभाते ।

तड़प, सं. स्त्री. (हिं. तड़पना) कंपः, स्पंदः, स्फुरितं २. संक्षोभः, उपप्लवः, आकुलत्वम् ।

तड़पना, क्रि. अ (अनु.) क्षुभ् (दि., क्र्. प. से., भ्वा. आ. से.) आकुली-क्षुब्धी-विह्वली भू २. अत्यधिकं अभिलष् (भ्वा. उ. से.) ।

तड़पाना, क्रि. स., उद्विज् (प्रे.) प्र-वि-सं-क्षुभ् (प्रे.), आकुली कृ ।

तड़फड़ाना, } **तड़फना**, } क्रि. अ., दे. 'तड़पना' ।

तड़ाक-का, सं. पुं. (अनु.) ताडनध्वनिः (पुं.) २. त्रोटन-भंग,-शब्दः-विरावः ।

तडाक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'तालाब' ।

तड़ातड़, क्रि. वि., (अनु.) सतडतडशब्दम् ।
तडित्, सं. स्त्री. (सं.) विद्युत् (स्त्री.) चपला, चंचला, शंपा ।
—पति, सं. पुं. (सं.) मेघः, नीरदः ।
तड़ी, सं. स्त्री. (अनु०) चपेटः, चपेटिका, चपेट-करतल,-प्रहारः ।
तति, सं. स्त्री. (सं.) पंक्तिः-श्रेणी (स्त्री.), २. समूहः ३. विस्तारः ।
ततैया, सं. स्त्री. (सं. तप्त >) वरटः-टा-टी, इडाचिका, गंधोली, वरलः, वरोलः, विष,-शूकः-श्रृंगी ।
तत्काल, क्रि. वि. (सं.-लं.) तत्क्षणात्, अचिरादेव, सद्य एव, आशु, द्राक्, झटिति, तत्काले।
तत्कालीन, वि. (सं.) तात्कालिक [-की (स्त्री.)], तदानींतन [-नी (स्त्री.)] ।
तत्क्षण, क्रि. वि. (सं. तत्क्षणं) दे. 'तत्काल' ।
तत्त्व, सं. पुं. (सं. न.) तथ्यं, याथार्थ्यं, सत्यं, सत्यता, वास्तविकता २. पंचभूतानि ३. मूलकारणं ४. सारः, सार,-अंशः-वस्तु (न.) ५. ब्रह्मन् (न.) ।
—अवधान, सं. पुं. (सं. न.) निरीक्षणं अवेक्षणम् ।
—ज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) परमार्थ-ब्रह्म,-ज्ञानम् ।
—ज्ञानी, सं. पुं. (सं.-निन्) } तत्त्वज्ञः २.
—दर्शी, सं. पुं. (सं.-र्शिन्) } दार्शनिकः ।
—वादी, सं. पुं. (सं.-दिन्) तत्त्ववक्तृ (पुं.) २. यथार्थ,-स्पष्ट-वादिन् ।
वित्, सं. पुं. (सं.-विद्) दे. 'तत्त्वज्ञानी' ।
—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) दर्शनशास्त्रम् ।
—वेत्ता, सं. पुं. (सं.-वेत्तृ) दे. 'तत्त्वज्ञानी' ।
तत्पर, वि. (सं.) आसक्त, निरत, व्यापृत, समाहित, अभिनि-नि,-विष्ट, व्यग्र २. एकाग्र, सुसमाहित, सावधान ३. संनद्ध, सज्ज, सज्जीभूत, उपक्लृप्त ।
तत्परता, सं. स्त्री. (सं.) अभिनिवेशः, आसक्तिः (स्त्री.), मनोयोगः, एकाग्रता, एकनिष्ठता, अनन्यचित्तता ।
तत्पुरुष, सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः २. समासभेदः (व्या.) ।
तत्र, अव्य. (सं.) तस्मिन् स्थले-स्थाने ।
तथा, अव्य. (सं.) च, (द्वन्द्व समास से भी; उ. राम तथा श्याम = रामश्यामौ इ.) २. तादृश, तत्सम, तत्तुल्य ।
तथापि, अव्य (सं.) तदपि, तत्रापि, एवं सत्यपि ।
तथास्तु, अव्य. (सं.) एवं अस्तु-भवतु ।
तथ्य, सं. पुं. (सं. न.) यथार्थता, सत्यं, सत्यता ।
तदंतर } क्रि. वि. (सं. तदनंतरं) तदनु,
तदनंतर } तत्पश्चात्, ततः, अथ, अनन्तरम् ।
तदनुरूप, वि. (सं.) तत्सदृश, तत्तुल्य, तदाकार ।
तदनुसार, वि. (सं.) तदनुकूल, तदनुरूप ।
तदबीर, सं. स्त्री. (अ.) साधनं, उपायः-युक्तिः (स्त्री.) ।
तदा, क्रि. वि. (सं.) तस्मिन् काले-समये ।
तदाकार, वि. (सं.) तद्रूप २. तन्मय ।
तदीय, सर्व. (सं.) तत्संबंधिन्, तस्य ।
तदुपरांत, क्रि. वि., दे. 'तदनंतर' ।
तद्धित, सं. पुं. (सं.) प्रत्ययभेदः (व्या.) २. तद्धितांतशब्दः ।
तद्रूप, वि. (सं.) सदृश-क्ष [शी-क्षी (स्त्री.)], तदाकार ।
तद्वत्, अव्य. (स.) तत्सदृशं, तत्तुल्यम् ।
तन, सं. पुं. [फा. । मि., सं. तनुः (स्त्री.)] देहः, शरीरं, वपुस् (न.), गात्रम् ।
—मन, सं. पुं., तनुमनसी-देहदेहिनौ (द्वि.) ।
—मन मारना, मु., कामान् अव-नि-सं-रुध् (रु. उ. अ.)
—मन से, मु., सावधानं, अनन्यवृत्त्या-सर्वात्मना एकाग्रचित्तेन (तृ. एक) ।
तनख्वाह, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'वेतन' ।
तनना, क्रि. अ. (सं. तननं >) प्र-वि-तन् (कर्म.), प्र-, लंब् (भ्वा. आ. से.), प्रसृ (भ्वा. प. अ.), विस्तॄ (कर्म.) २. उच्छ्रित-उत्तान-उन्नत (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.) ३. रुष् (दि. प. से; चु.) ।
तनय, सं. पुं. (सं.) पुत्रः, सूनुः (पुं.), आत्मजः ।
तनया, सं. स्त्री. (सं.) पुत्री, दुहितृ (स्त्री.), आत्मजा ।
तनहा, वि. (फा.) एकल, एकाकिन्, असहाय । क्रि. वि., एव, केवलम् ।

तनहाई, सं. स्त्री. (फा.) विजनता, विविक्तता २. विजनं, विविक्तं ३. एकाकिता, असहायता।

तनाज़ा, सं. पुं. (अ.) कलहः, कलिः (पुं.) २. वैमनस्यं, शत्रुता।

तनिक, वि. (सं. तनुक) अल्प, स्तोक, अणु। क्रि. वि., किंचित्, स्तोकं, ईषत्, मनाक् (सब अव्य.)।

तनी, सं. स्त्री. (हिं. तानना) बंधः, बंधनं, बंधनी।

तनु, सं. स्त्री. (सं.) तनूः (स्त्री.), देहः, कायः, वपुस् (न.) २. त्वच् (स्त्री.) ३. नारी। वि., कृश, दुर्बल, क्षीणकाय २. अल्प, दभ्र ३. कोमल, पेलव ४. सुंदर, उत्कृष्ट।

—कूप, सं. पुं. (सं.) रो (लो)म,-कूपः-रंध्रम्।

—धारी, वि. (सं.-रिन्) देहिन्, शरीरिन्, प्राणिन्।

तनुज, सं. पुं. (सं.) पुत्रः, आत्मजः, सूनुः।

तनुजा, सं. स्त्री. (सं.) पुत्री, आत्मजा, तनया।

तनू, सं. पुं. (सं. स्त्री.) देहः, कायः।

—उद्भव, सं. पुं. (सं.) पुत्रः, तनुजः।

—उद्भवा, सं. स्त्री. (सं.) पुत्री, तनुजा।

तनूर, दे. 'तंदूर'।

तन्मनस्क, वि. (सं.) तल्लीन, तन्मय।

तन्मात्रा, सं. स्त्री. (सं.-त्रम्) सूक्ष्ममूलतत्त्वम् (उ. शब्दः, स्पर्शः, रूपं, रसः, गंधः)।

तन्मय, वि. (सं.) लि-, मग्न, दत्तचित्त, अवहित, आसक्त, लीन, निरत,-पर,-परायण।

तन्वी, सं. स्त्री. (सं.) तन्वंगी, कोमलांगी, कृशांगी।

तप¹, सं. पुं. [सं. तपस् (न.)] तपस्या, तपः, व्रतादानं, नियमस्थितिः (स्त्री.), परिव्रज्या, व्रतचर्या।

—करना, क्रि. अ., तपस्यति (ना. धा.), तपः तप् (दि. आ. आ.) या आचर् (भ्वा. प. से.)।

तप², सं. पुं. (सं.) तापः, दाहः, उष्मः, ऊष्मन् (पुं.) २. ग्रीष्मः ३. ज्वरः।

तपक, सं. स्त्री. (हिं. तपकना) आकस्मिक,-प्रकंपः-स्फुरणं-आकर्षः।

तपकना, क्रि. अ. (हिं. तमकना) स्फुर् (तु. प. अ.), अकस्मात् कंप्-स्पंद् (भ्वा आ. से.)।

तपन, सं. पुं. (सं. न.) तापः, उष्मन् (पुं.), दाहः, तपः २. सूर्यः ३. सूर्यकांतरत्नं ४. ग्रीष्मः।

तपना, क्रि. अ. (सं. तपनं) तप् (भ्वा. प. अ.), दीप् (दि. आ. से.), उष्णी भू २. संतप्-क्लिश्-पीड् (कर्म.), व्यथ् (भ्वा. आ. से.)।

तपश्चर्या, **तपस्या**, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'तप¹'।

तपस्विनी, सं. स्त्री. (सं.) तापसी, तपोधना २. प्रतिव्रता ३. दीना।

तपस्वी, सं. पुं. (सं.,स्विन्) तापसः, तपोधनः, पारि (र) कांक्षिन्, पारिकांक्षकः, यतिः (पुं.) २. दीनः, दरिद्रः।

तपाक, सं. पुं. (फा.) आवेशः, आवेगः, २. शीघ्रता।

तपाना, क्रि. स., व. 'तपना' के प्रे. रूप।

तपी, सं. पुं. (हिं. तप) दे. 'तपस्वी'।

तपेदिक, सं. पुं. (फ़ा. तप+अ. दिक़) क्षयरोगः, राजयक्ष्मन् (पुं.)।

तपोधन, सं. पुं. (सं.) तपो,-निष्ठः-निधिः-राशिः (पुं.), तपस्विन्।

तपोबल, सं. पुं. (सं. न.) तपस्याशक्तिः (स्त्री.)।

तपोभूमि, सं. स्त्री. (सं.) तपस्यास्थानम्।

तपोवन, सं. पुं. (सं. न.) तपस्यारण्यम्।

तप्त, वि. (सं.) उष्ण, तापित, दे. 'गरम' २. दुःखित, पीडित, क्लेशित।

तफरीक, सं. स्त्री. (अ.) व्यवकलनं, विवर्जनं, उद्धारः।

—करना क्रि. स., व्यवकल्-विवृज्-ऊन् (चु.), उद्धृ (भ्वा. प. अ.)।

तफरीह, सं. स्त्री. (अ.) प्रसन्नता, मोदः २. विनोदः, परिहासः ३. भ्रमणम्।

तफ़सील, सं. स्त्री. (अ.) विवरणं, विस्तारः २. विस्तृतवर्णनं ३. टीका, व्याख्या ४. सूची।

तब, क्रि. वि. (सं. तदा) तदानीं, तस्मिन् काले २. ततः, तत्पश्चात्, तदनु, तदनन्तरं, ततः परं ३. अतः, अनेन कारणेन, इति हेतोः।

—तक, क्रि. वि., तावत्, तावत्,-कालं-पर्यन्तम्।

—भी, क्रि. वि., तदापि २. तथापि, तदपि, एवं सत्यपि।

—से, क्रि. वि., ततः-तदा,-प्रभृति-आरभ्य।

—ही, क्रि. वि., तदैव, तत्कालं, तत्क्षणं, द्राक्।

तबदील, वि. (अ.) परिवर्तित, अन्यथाकृत ।
—करना, क्रि. स., परिवृत् (प्रे.) ।
तबदीली, सं. स्त्री. (अ.) परिवर्तः,-र्तनं, परिवृत्तिः (स्त्री.), विपर्ययः २. विकारः, विकृतिः (स्त्री.) ।
तबलची, सं. पुं. (अ. तबलः)*तबलकवादकः ।
तबला, सं. पुं. (अ. तबलः)* तबलकौ (द्वि.), वाद्यभेदः ।
तबाशी(खी)र, सं. पुं. (सं. तवक्षीरं) यवजं, यवजोद्भवं, पयःक्षीरं, गोधूमजं २. वंशरोचना, त्वक्क्षीरा-री, वंशी, वैणवी ।
तबाह, वि. (फ़ा.) ध्वस्त, नष्ट, उत्सन्न ।
तबाही, सं. स्त्री. (फ़ा.)प्र-वि,-ध्वंसः, वि-,नाशः ।
तबि(बी)अत, सं. स्त्री. (अ.) चित्तं, मानसं, चेतस्-मनस् (न.) अन्तःकरणं, हृदयं, स्वान्तं २. प्रकृतिः (स्त्री.), स्वभावः ।
—आना, मु. स्निह् (दि. प. से.), अनुरंज् (कर्म.) ।
—बिगड़ना, मु., रुग्ण् (वि.) भू; विवमिषति (सन्नंत) ।
तबीब, सं.पुं. (अ.) वैद्यः, चिकित्सकः, भिषज्(पुं.)।
तबेला, सं. पुं. (अ.) मंदुरा, अश्व-वाजि,-शाला ।
तभी, क्रि. वि. (हिं. तब + ही) तत्क्षणं, तत्कालं, तदैव २. तेनैव कारणेन, इति हेतोः ।
—से, क्रि. वि., तदारभ्य, ततः प्रभृति ।
तमंचा, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'पिस्तौल' ।
तम, सं. पुं. [सं. तमस् (न.)] अन्धकारः, तिमिरं, ध्वान्तं, तमिस्रं-स्रा २. प्रकृतेस्तृतीयो गुणः (सांख्य) ३. क्रोधः ४. अज्ञानं, अविद्या ५. कालिमन् (पुं.), श्यामता ६. मोहः ७. पापं ८. नरकः-कम् ।
तमअ, स्त्री. (अ.) इच्छा २. लोभः ।
तमक, सं. स्त्री. (हिं. तमकना) आवेशः, उद्वेगः २. क्षिप्रता, त्वरा ३. क्रोधः, कोपः ४. दर्पः, अभिमानः ५. (कोपादिभ्यः) अरुणाननता ।
तमकना, क्रि. अ.(अनु.)(कोपादिभ्यः) अरुणानन-लोहितवदन (वि.) भू २. अत्यन्तं कुप् (दि. प. से.) ।
तमग़ा, सं. पुं. (तु.) पदक, कीर्ति-प्रतिष्ठा,-मुद्रा ।
तमचर, पुं. (सं. तमीचरः) राक्षसः, निशाचरः, पिशाचः २. उलूकः, घूकः, कौशिकः ।
तमचुर-,चूर-चोर, सं. पुं. (सं. ताम्रचूडः) कुक्कुटः, कालज्ञः, चरणायुधः ।
तमतमाना, क्रि. अ. (सं. ताम्रं >) (क्रोधातपादिभ्यो मुखं) अरुणी-रक्ती भू , अरुणानन-लोहितमुख (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।
तमतमाहट, सं. स्त्री. (हिं. तमतमाना) (क्रोधादिजा) अरुणवदनता, लोहिताननता ।
तमन्ना, सं. स्त्री. (फ़ा.) अभिलाषः, आकांक्षा ।
तमस, सं. पुं., दे. 'तम' ।
तमस्सुक, सं. पुं. (अ.) ऋणपत्रं, समयलेखः, आधिकरणिकपत्रम् ।
तमा, सं. स्त्री. (अ. तमअ) लोभः, वित्तेहा ।
तमाकू-खू, सं. पुं. (पुर्त. टबैको) ताम्रकूटः, तमाखुः. वज्रभृंगी, कृमिघ्नी, धूम्रपत्रिका, क्षारपत्रा, सुरती ।
—पीना, क्रि. स., धूमं पा (भ्वा. प. अ.), धूमपानं कृ ।
तमाचा, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'चपत' ।
तमाम, वि. (अ.) समस्त, समग्र, सम्पूर्ण २. समाप्त, अवसित ।
काम तमाम करना, मु., व्यापद्-मृ (प्रे.) ।
तमाल, सं. पुं. (सं.) कालस्कन्धः, काल-नील,-तालः, महाबलः ।
तमाशबीन, सं. पुं. (अ. तमाशः + फ़ा बीन) दर्शकः, प्रेक्षकः २. पार्श्व-समीप,-स्थः ३. सामाजिकः, पारिषद्यः ४. वेश्यागामिन् ।
तमाशबीनी, सं. स्त्री. (अ. + फ़ा.) वेश्यागामित्वम् ।
तमाशा, सं. पुं. (अ.) नाटकं २. रूपकं कौतुकं, चमत्कारः, दृश्यं ३. अद्भुत-विलक्षण-, व्यापारः ।
—करना, क्रि. स., नट्-निरूप्-प्रयुज् (चु.), अभिनी (भ्वा. प. अ.) ।
—करनेवाला, सं. पुं., नटः, अभिनेतृ (पुं.) ।
—गाह, सं. स्त्री., रंग,-शाला-भूमिः (स्त्री.), नाटकगृहम् ।
तमाशाई, दे. 'तमाशबीन' ।
तमीज, सं. स्त्री. (अ.) विवेकः, परिच्छेदः, विवेचनशक्तिः (स्त्री.) २. ज्ञानं, बोधः ३. सभ्यता, शिष्टाचारः, विनयः ।
तमोगुण, सं. पुं. (सं.) प्रकृतेस्तृतीयः (अधमः) गुणः ।

तमोगुणी, वि. (सं.-णिन्) अधमवृत्तिक, तमोगुणप्रधान ।

तमोली, सं. पुं. दे. 'तम्बोली' ।

तय, वि. (अ.) समाप्त, अवसित २. निश्चित, नियत ३. निर्णीत ।

तरंग, सं. स्त्री. (सं. पुं.) भंगः, भंगी-गिः(स्त्री.) वीची-चिः (स्त्री.), ऊर्मी-र्मिः (स्त्री.). लहरी-रिः (स्त्री.) कल्लोलः, जललता, उत्कलिका २. स्वरलहरी, ३. मानसलहरी, चित्ततरंगः, छन्दः, छन्दस् (न.) ।

तरंगित, वि. (सं.) कल्लोलमय [यी (स्त्री.)], नतोन्नत- भंगिमत् [ती (स्त्री.)] ।

तरंगी, वि. (सं.—गिन्) सभंग, ऊर्मिमत्, कल्लोलवत् २. स्वैर, स्वैरिन्, कामचारिन्, स्वच्छन्द ।

तर, वि. (फ़ा.) आर्द्र, क्लिन्न २. शीतल ३. हरित, सरस ४. स्निग्ध, चिक्कण ५. समृद्ध, धनाढ्य ।

तरकश, सं. पुं. (फ़ा.) इषुधिः (पुं.), निषंगः, तूणीरः-रम् ।

तरकारी, सं. स्त्री. (फ़ा. तरः=शाक) शाकः-कं, शिग्रुः (पुं.), हरितकं २. पक्वशाकः-कं, व्यञ्जनं ३. मांसम् (पंजाब) ।

तरकी, सं. स्त्री. [सं. ताटं(ङ)कः] कर्ण,-दर्पणः-मुकुरः, कर्णिका, कर्णभूषणभेदः ।

तरकीब, सं. स्त्री. (अ.) युक्तिः (स्त्री.), उपायः, प्रयोगः २. रचनाप्रणाली, निर्माण-विधिः (पुं.) ।

तरक्की, सं. स्त्री. (अ.) उन्नतिः-वृद्धिः (स्त्री.) ।

तरखान, सं. पुं. (सं. तक्षन्) वर्द्धकिनः-किन् तक्षकः, त्वष्टृ, छादः ।

तरग़ीब, सं. स्त्री. (अ.) प्रेरणा, उत्तेजना, प्रोत्साहनम् ।

—देना, क्रि. स., प्रेर्-प्रोत्सह् उत्तिज् प्रवृत् (प्रे.) ।

तरजीह, स्त्री. (अ.) अधिमानं, अधिक,-रुचिः (स्त्री.)-अनुरागः-मानं, वृतिः (स्त्री.) वरता ।

तरजुमा, सं. पुं. (अ.) दे. 'अनुवाद' ।

तरजुमान, सं. पुं. (अ.) अनुवादकः, भाषान्तरकारः ।

तरण, सं. पुं. (सं. न.) पारगमनं, प्लवनपूर्वक-देशान्तरगमनं, सन्तरणम् ।

तरणि, सं. स्त्री. (सं.) तरणी, नौका । सं. पुं., सूर्यः २. किरणः ।

—तनूजा, सं. स्त्री. (सं.) यमुना ।

तरणी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नाव' ।

तरतीब, सं. स्त्री. (अ.) अनु-,क्रमः, विन्यासः, व्यवस्था, यथास्थानं स्थितिः (स्त्री.) ।

—वार, क्रि. वि., यथाक्रमं, क्रमशः, क्रमेण ।

तरदीद, सं. स्त्री. (अ.) प्रत्याख्यानं, खण्डनं, निरासः, निराकरणम् ।

तरना, क्रि. स. (सं. तरणं) दे. 'तैरना' (२.), मोक्षं-मुक्ति-निःश्रेयसं अधिगम् ।

तरफ़, सं. स्त्री. (अ.) दिश् ([illegible]), दिशा, आशा, काष्ठा, ककुभ्-हरित् (स्त्री.) २. पार्श्वः-र्श्वं, पक्षः । क्रि. वि., अभि, प्रति, अभिमुखं, उद्दिश्य, दिशि, दिशायाम् ।

—दार, सं. पुं., पक्षपातिन्, पक्ष्यः, पक्षीयः, पार्श्व(र्श्विं)कः ।

—दारी, सं. स्त्री., पक्ष,-पातः-अवलम्बनं-ग्रहणम् ।

—दारी करना, क्रि. स., पक्षं अवलम्ब् (भ्वा. आ. से.)-ग्रह् (क्र्. प. से.) ।

दोनों—क्रि. वि., उभयतः, उभयत्र ।

सब—या चारों—, क्रि., वि., समन्तात्, समन्ततः, चतुर्दिक्षु, सर्वत्र, विश्वतः, परितः, अभितः ।

तरफ़ैन, सं. पुं. (अ.) उभौ पक्षौ, अर्थिप्रत्यर्थिनौ ।

तरबूज़, सं. पुं. (सं. तरंबुजं । मि. फ़ा. तर्बुज़) कालिंगं, गोडुंबं, सेट्ठु, (न.), मांसफलम् ।

तरमीम, सं. स्त्री. (अ.) संशोधनं, विशुद्धिः (स्त्री.) ।

तरल, वि. (सं.) चंचल, कम्प्र, कंपन २. अनित्य, क्षणिक ३. द्रव, प्रवाहिन् ४. भासुर, भास्वर ।

तरला, सं. स्त्री. (सं.) यवागूः, श्राणा, उष्णिका २. सुरा ३. मधुमक्षिका ।

तरवन, सं. पुं., दे, 'तरकी' २. दे. 'कर्णफूल' ।

तरवर, सं. पुं. (सं. तरुवरः) महावृक्षः २. पादपः ।

तरस, सं. पुं. (सं. त्रसः >) कृपा, अनुकम्पा, करुणा ।

—खाना, क्रि. स., दय् (भ्वा. आ. से; षष्ठी के साथ), अनुकम्प् (भ्वा. आ. से.), दयां कृ (सप्तमी के साथ) ।

तरसना, क्रि. अ. (सं. तर्षणं) तृष् (दि. प.

से,), अत्यन्तं अभिलष् (भ्वा. दि. प. से.)-स्पृह् (चु., चतुर्थी के साथ)-कांक्ष-वांछ् (दोनों भ्वा. प. से.), लब्धुं आकुलीभू ।

तरसाना, क्रि. स., व. 'तरसना' के प्रे. रूप ।

तरसों, क्रि. वि. (सं. तृतीय + श्वस्) तृतीयो गत आगामी वा दिवसः; *इतरश्वः (अव्य.) ।

तरह, सं. स्त्री. (अ.) जातिः (स्त्री.), प्रकारः, भेदः,-विधा (समासांत में) २. रचनाप्रकारः, घटनं ३. शैली, रीतिः (स्त्री.) प्रणाली ४. युक्तिः (स्त्री.), उपायः ५. वत्-इव तुल्य,-उपम ।

अच्छी—, क्रि. वि., सम्यक्, साधु, सुष्ठु (सब व्य), सु-(समासादि में) ।

इस—,क्रि. वि., इत्थं, एवं, अनया रीत्या ।

उस—, क्रि. वि., तथा, तया रीत्या ।

किस—, क्रि. वि., कथं, केन प्रकारेण ।

जिस—, क्रि. वि., यथा, येन प्रकारेण ।

बुरी—, क्रि. वि., कु-,दुर्-,असम्यक् इ. ।

हर—,क्रि. वि.- सर्वथा, सर्वप्रकारेण ।

—देना, मु. उपेक्ष-क्षम् (भ्वा. आ. से.) ।

तराई, सं. स्त्री. (सं. तलं >) उपत्यका, पर्वतासन्नभूः (स्त्री.) ।

तराज़, सं. पुं. स्त्री. (फा.) तुला, मापनः, धटः, तुलायंत्रं, तौलम् ।

—की रस्सी, सं. स्त्री., शिक्या ।

तराबोर, वि. (फ़ा. तर + हि. बोरना) अति,-सिक्त-क्लिन्न ।

तरावट, सं. स्त्री. (फ़ा. तर) आर्द्रता, क्लिन्नता २. शीतलता ३. क्लांतिहरः पदार्थः ४. स्निग्धभोजनम् ।

तराशना, क्रि. स. (फा.) दे. 'काटना', 'कतरना' ।

तरी, सं. स्त्री. (सं.) तरिः (स्त्री.), नौका ।

तरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) आर्द्रता, क्लिन्नता २. शीतलता ३. उपत्यका ४. कच्छः-च्छम् ।

तरीका, सं. पुं. (अ.) रीतिः (स्त्री.), प्रकारः, शैली २. आचारः, व्यवहारः, अनुसारः ३. उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ।

तरु, सं. पुं. (सं.) पादपः, द्रुमः, दे. 'वृक्ष' ।

तरुण, वि. तथा सं. पुं. (सं.) युवकः, दे. 'जवान' ।

तरुणाई, सं. स्त्री. (सं. तरुण >) यौवनम्, दे. 'जवानी'

तरुणी, वि. स्त्री. तथा सं. स्त्री. (सं.) युवतिः (स्त्री.) दे. 'युवती' ।

तरेरना, क्रि. स., (सं. तिर्यक् + हि. हेरना) तिर्यक्-वक्रं-साचि (सब अव्य०) दृश् (भ्वा. प. अ.) २. तर्जनवर्जनार्थं वक्रं ईक्ष् (भ्वा. आ. से.)

तरोई, सं. स्त्री., दे. 'तुरई' ।

तरौना, सं. पुं., दे. 'तरकी' २. दे. 'कर्णफूल'

तर्क, सं. पुं. (सं.) हेतुः (पुं.), युक्तिः-उपपत्तिः (स्त्री.) २. आन्वीक्षिकी, न्यायः, ऊहापोहः ३. विदग्धोक्तिः (स्त्री.) ४. व्यंग्यम् ।

—वितर्क, सं. पुं. (सं.) वादविवादः, वाद-प्रतिवादः, हेतुवादः २. संशयः, संदेहः, विकल्पः, आ-परि-वि-शंका ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) तर्क-न्याय,-शास्त्र-विद्या, तर्कः, न्यायः ।

तर्क, सं. पुं. (अ.) त्यागः, विसर्जनम् ।

तर्कश, सं. पुं., दे. 'तरकश' ।

तर्ज़, सं. स्त्री. (अ.) रीतिः (स्त्री.), शैली, प्रकारः २. रचनाप्रकारः, घटनम् ।

तर्जन, सं. पुं. (सं. न.) तर्जना, भयप्रदर्शनं, भर्त्सनम्, दे. 'डाँटडपट' ।

तर्जना, क्रि. स. (सं. तर्जनं) दे. 'डाँटना' ।

तर्जनी, सं. स्त्री. (सं.) प्रदेशिनी, अंगुष्ठ-समीपांगुली ।

तर्पण, सं. पुं. (सं. न.) तृप्तिः (स्त्री.), प्रीणनं, संतापणं २. पित्रादिभ्यो जलदानं (धर्म.) ।

तल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मूलं, अधोभागः, २. बुध्नः, उपष्टम्भः ३. पाद-चरण,-तलं ४. करतलः-लं, प्रहस्तः । ४. चपेटः, चर्पटः नरक-पाताल,-विशेषः ।

तलक, अव्य., दे. 'तक' ।

तलख़, वि. (फ़ा.) कटु, कटुक २. अप्रिय, अनिष्ट ।

तलछट, सं. स्त्री. (सं. तलं + हिं. छँटना) तलमलं, किल्कं, किट्टं, खलं, मलः-लं, शेषः-षं, उच्छिष्टं, अव-सं,-करः, असारः ।

तलना, क्रि. सं. (सं. तलनं), (घृततैलादिषु) भ्रस्ज् (तु. उ. अ. भृज्जति, चु. भर्जयति)-पच् (भ्वा. प. अ.)-भृज् (भ्वा. आ. से., भर्जते), तल् (भ्वा, प. से., पाकराजेश्वर) ।

सं. पुं., (घृतादिपु) भर्जनं-पचनम् ।
तला हुआ, वि., भ्रष्ट, भर्जित, घृतपक्व इ. ।
तलफना, क्रि. अ., दे. 'तड़पना' ।
तलफी, सं. स्त्री. (फ़ा.), ध्वंसः, विनाशः २. क्षतिः-हानिः (स्त्री.) ।
तलफ़्फ़ुज, सं. पुं. (अ.) उच्चारणम्, भाषण-विधिः (पुं.) ।
तलब, सं. स्त्री. (अ.) वेतनं, भृतिः (स्त्री.) २. आकारणं, आह्वानं ३. लिप्सा ।
तलबगार, वि. (फ़ा.) इच्छुक २. प्रार्थिन् ।
तलबाना, सं. पुं. (फ़ा.) *आकारण-आह्वान,-शुल्कः-कं २. साक्ष्यशुल्कः-कम् ।
तलबी, सं. स्त्री. (अ.) आकारणं-णा, आह्वानम् ।
तलवा, सं. पुं. (पुं. तलः-लं) चरण-पाद,-तलम् ।
—चाटना,
—तले हाथ रखना, } मु, दे. 'खुशामद करना'।
—सहलाना,
—तलवार, सं. स्त्री. [सं. तरवारिः (पुं.)] खड्गः, असिः. निस्त्रिंशः, चंद्रहासः, कौक्षेयकः, करवा(पा)लः, कृपाणः-णी, ऋ(रि)ष्टि. (पुं.), श्रीगर्भः, विजयः, दुरासदः, धर्मपालः ।
—खींचना, क्रि. स., असिं कोशात् उद्धृ-निष्कृष् (भ्वा. प. अ.) ।
—चलाना, क्रि. स., खड्गं चल् (प्रे.), असिना प्रहृ (भ्वा. प. अ.) ।
—चलानेवाला, सं. पुं., आसिकः, खड्गधरः, खड्गिन् ।
तला, सं. पुं. (सं. तलः-लं) अधोभागः, बुध्नः २. उपानत्तलम् ।
तलाक, सं. पुं. (अ.) विवाह-दांपत्य-उच्छेदः-निराकरणं, त्यागः ।
तलाश, सं. स्त्री. (तु.) अन्वेषणं, मार्गणम् ।
तलाशी, सं. स्त्री. (फ़ा.) देह-गेह-परिच्छद,-अन्वेषणा-निरीक्षा ।
—लेना, क्रि. स., देहं-गेहं-परिच्छदं अन्विष् (दि. प. से.)-निरूप् (चु.)-निरीक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।
तली, सं. स्त्री., दे. 'तल' तथा 'तला' ।
तलुआ, सं. पुं., दे. 'तलवा' ।
तले, क्रि. वि. (सं. तलं >) अधः, अधस्तात्, नीचैः (सब अव्य.) ।
—ऊपर या ऊपर तले, क्रि. वि., अन्योन्यस्य अधः, अधस्तात्, उपरि, उपरिष्टात् वा २. अक्रमं, विपर्यस्तं, संकीर्णं, अव्यवस्थितम् ।
तलैया, सं. स्त्री. (हिं. ताल) क्षुद्र-लघु,-तडागः-कासारः-सरस् (न.),
तल्प, सं. पुं. (सं. पुं. न.) आस्तरः, आस्तरणम् *विस्तरः २. पत्नी, भार्या ।
—कीट, सं. पुं. (सं.) ओकणः, मत्कुणः, उद्दंशः ।
—ज, सं. पुं. (सं.) नियोगज,-पुत्रः-सुतः, क्षेत्रजः ।
तल्ला, सं. पुं. (सं. तलः-लम्) उपानत्तलम् । २. दे. 'मंज़िल' ।
तवर्ग, सं. पुं. (सं.) तकारादिवर्णपंचकम् ।
तवा, सं. पुं. (हिं. तवना) तप्तकम् ।
तवाज़ा, सं. स्त्री. (अ.) सत् ,-कारः-कृतिः-(स्त्री.)-क्रिया, अतिथि,-सेवा-सत्कारः, आतिथ्यं २. निमंत्रणम् ।
तवारीख़, सं. स्त्री. (अ., तारीख का बहु.) दे. 'इतिहास' ।
तवी, सं. स्त्री. (हिं. तवा) ऋची(जी)षम् ।
तशख़ीस, सं. स्त्री. (अ.) रोग,-निर्णयः-निदानम् ।
तशरीफ़, सं. स्त्री. (अ.) महत्त्वं, गुरुत्वं, प्रतिष्ठा ।
—रखना, मु. उपविश् (तु. प. अ.), विराज् (भ्वा. आ. से.)
—लाना, मु., आगम् , आया (अ. प. अ.) ।
—ले जाना, मु., प्रस्था (भ्वा. आ. अ.), प्रया (उक्त दोनों मुहावरों में आदरार्थ बहुवचन का प्रयोग करना चाहिए । उ. आप तशरीफ़ रखिए = उपविशन्तु श्रीमंतः इ.) ।
तश्तरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शराविका, *स्थालकम् ।
तसकीन, सं. स्त्री. (अ.) आ-समा,-श्वासः-श्वासनं, धैर्यम् ।
तसदीक़, सं. स्त्री. (अ.) सत्यापनं, सत्याकारः ।
—करना, क्रि. स., सत्यापयति (ना. धा.), प्रमाणी कृ ।
तसबीह, सं. स्त्री. (अ.) जपमाला, माला ।
तसमा, सं. पुं. (फ़ा) चर्म,पट्टः-बंधः, वध्री, नध्री २. उपानद्बंधः ।
तसला, सं. पुं. (फ़ा. तश्त) ऋचीकम् ।
तसलीम, सं. स्त्री. (अ.) नमस्ते, नमस्कारः, प्रामणः २. अभ्युपगमः, अंगी-स्वी,-कारः ।

तसल्ली, सं. स्त्री. (अ.) सांत्वना, आश्वासनं २. शांतिः (स्त्री.), धैर्यम्।

तसवीर, सं. स्त्री. (अ.) चित्रं, आलेख्यम्।

तस्कर, सं. पु. (सं.) चौरः २. दस्युः।

तस्सू, सं. पुं. (सं. त्रिशूकः>) पञ्चाङ्गुलमानम्।

तह, सं. स्त्री. (फ़ा.) तलं, अधस्तलं, अधोभागः, मूलं २. बुध्नः, उपष्टंभः ३. तलं, पृष्ठं, पृष्ठभागः ४. स्तरः ५. व्यावृत्तिः (स्त्री.), व्यावर्तनं, पुटः-टं, भंगः ६. तत्त्वं, सारः।

—करना, क्रि. स., पुटयति (ना. धा.), व्यावृत् (प्रे.), गुणी-पुटी कृ।

—तक पहुँचना, मु., तत्त्वं अवगम्, रहस्यं विद् (अ. प. से.)।

तहक़ीक़ात, सं. स्त्री. (अ. तहक़ीक़ का बहु.) अनुसंधानं, अन्वेषणं, गवेषणा।

तहख़ाना, सं. पुं. (फ़ा.) भूमिगृहं, तलगृहं, गुप्तिः (स्त्री.), आंतर्भौमकोष्ठः।

तहज़ीब, सं. स्त्री. (अ.) सभ्यता, शिष्टाचारः।

तहमत, सं. स्त्री. (फ़ा. तहबंद) *पुटबंधः, *धौतिका।

तहरीर, सं. स्त्री. (अ.) लेखः, लिखितं २. लेखशैली ३. नि-प्र,-बंधः ४. प्रमाणपत्रम्।

तहलका, सं. पुं. (अ.) दे. 'खलबली'।

तहस-नहस, वि. (देश.) वि-, नष्ट,प्र-वि-,ध्वस्त।

तहसील, सं. स्त्री. (अ.) करोद्ग्राहः, राजस्वसंग्रहः, समाहरणं २. राजस्वं, आयः, आगमः, उदयः ३. उपमंडलं ४. उपमंडलेश्वरकार्यालयः।

—दार, सं. पुं., उपमंडलेशः-श्वरः।

—दारी, सं. स्त्री. उपमंडलेश्वर,-कार्य-पदम्।

नायब तहसीलदार, सं. पुं. (फ़ा.+अ.+फ़ा.) उपमंडलेश्वरसहायकः।

तहाँ, क्रि. वि. (सं. तद्>) तत्र, तस्मिन् स्थाने, तत्स्थाने।

ताँगा, सं. पुं., दे. 'टाँगा'।

तांडव, सं. पुं. (सं. न.) पुरुषनृत्यं २. उद्धतनृत्यं ३. शिवनृत्यं ४. तृणभेदः।

ताँत, सं. स्त्री. (सं. तंतुः) आंत्र,-सूत्रं-गुणः २. मौर्वी, प्रत्यञ्चा, धनुर्गुणः ३. सूत्रं, गुणः ४. वीणातंत्रं-त्री।

ताँता, सं. पुं. [सं. ततिः [(स्त्री.)] पंक्तिः (स्त्री.), श्रेणी-णिः (स्त्री.)।

ताँती, सं. स्त्री. (हिं ताँता) आवली-लिः (स्त्री.), पंक्तिः (स्त्री.) २. संततिः (स्त्री.)।

ताँती, सं. पुं. (हिं. ताँत) तंतुवायः-पः, पटकारः।

तांत्रिक, सं. पुं. (सं.) तंत्रशास्त्रविद् (पुं.), २. मोहिन्, कुहककारः। वि. तंत्रसंबंधिन्।

ताँबा, सं. पुं. (सं. ताम्रं) ताम्रकं, म्लेच्छमुखं, रवि,-लोहं-प्रियं, मुनिपित्तलं, लोहितायसम्।

तांबूल, सं. पुं. (सं. न.) पर्णं, नागवल्लीदलं, दे. 'पान' २. पर्णवीटी-टिका-टिः (स्त्री.) ३. पूगं, पूगफलम्।

ताई[1], सं. स्त्री. (हिं. ताया) ज्येष्ठपितृव्या।

ताई[2], सं. स्त्री., दे. 'तवी'।

ताईद, सं. स्त्री. (अ.) समर्थनं, अनुमोदनं, पुष्टिः (स्त्री.), दृढी,-करणं-कारः, उपोद्बलनम्।

ताऊ, सं. पुं., दे. 'ताया'।

बछिया के ताऊ, मु., बलीवर्दः २. मूर्खः।

ताऊन, सं. पुं. (अ.) दे. 'प्लेग'।

ताऊस, सं. पुं. (अ.) मयूरः शिखंडिन् २. मयूराकारो वाद्यभेदः।

तख्त ताऊस, सं. पुं., मयूरासनं २. शाहजहानस्य मयूरसिंहासनम्।

ताक[1], सं. पुं. (अ.) कुडयविवरं, भित्तिगर्तः-र्तं, आलयः २. कुडय,-फलकः-कं ३. असमः विषम,-संख्या-अंकः। वि. अनुपम, अद्वितीय, निपुण।

—जुफ़्त, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) समविषमक्रीडा, द्यूतभेदः।

—पर रखना, मु., परित्यज् (भ्वा. प. अ.), उज्झ् (तु. प. से.)।

ताक[2], सं. स्त्री. (हिं. ताकना) अवलोकनं, ईक्षणं, दर्शनम् २. अनिमिषदृष्टिः (स्त्री.) ३. अवसरप्रतीक्षा ४. अन्वेषणम्।

—झाँक, सं. स्त्री., असकृदवलोकनं २. निभृतं वीक्षणं ३. निरीक्षणं ४. अन्वेषणम्।

ताकत, सं. स्त्री. (अ.) बलं, शक्तिः (स्त्री.)।

—वर, वि. (अ.+फ़ा.) बलवत्, शक्तिमत्।

ताकना, क्रि. स. (सं. तर्कणं>) अनिमि(मे)षं दृश् (भ्वा. प. अ.)-अवलोक् (चु.) २. निभृतं (छिद्रेण) ईक्ष् (भ्वा. आ. से.) ३. अव-निर्,-ईक्ष् ४. हंतुं निभृतं स्था (भ्वा. प. अ.)।

ताकि, अव्य. (फ़ा.) तथा…यथा, यथा।
ताकीद, सं. स्त्री. (अ.) प्रबलानुरोधः, दृढादेशः, पुनः स्मारणम्।
—करना, क्रि. स., सानुरोधं आदिश् (तु. प. अ.),-पुनः-दृढं स्मृ (प्रे.)।
ताग-गा, सं. पुं. (सं. तार्कव>) तंतुः (पुं.), डोरः, गुणः, शुल्वम्।
तागड़ी, सं. स्त्री., दे. 'करधनी'।
ताज, सं. पुं. (अ.) राज-म(मु)कुटं, किरीटः-टम्।
—पोशी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) राज्याभिषेकः, मुकुटपरिधापनम्।
ताज़गी, सं. स्त्री. (फ़ा.) हरितत्वं २. प्रफुल्लता ३. नवीनता।
ताज़ा, वि. (फ़ा.) हरित, सरस, २. नव, नूतन, प्रत्यग्र ३. श्रान्तिशून्य, सज्ज।
मोटा—, वि., दृढांग, बलिष्ठ, सबल।
ताज़ियाना, सं. पुं. (फ़ा.) अश्वताडनी, कशा-षा, प्रतोदः।
ताज़ी, सं. पुं. (फ़ा.) *अरबाश्वः २. मृगयाकुक्कुरः, विश्वकद्रुः (पुं.)। वि., अरबदेशीय।
ताज़ीम, सं. स्त्री. (अ.) सत्कारः संमानना।
ताज़ीर, सं. स्त्री. (अ.) दंडः, अर्थदंडः, निग्रहः।
ताज़ीराते-हिंद, सं. स्त्री., भारतीयदण्डसंहिता।
ताज्जुब, सं. पुं., (अ. तअज्जुब) आश्चर्य; विस्मयः।
ताड़, सं. पुं. (सं. तालः) दीर्घस्कन्धः, ध्वजद्रुमः, तरुराजः, महोन्नतः, लेख्यपत्रः २. ताडनं, प्रहारः ३. महा,-रवः-ध्वनिः (पुं.)।
ताड़का, सं. स्त्री. (सं.) राक्षसीविशेषः, सुकेतुकन्या।
ताड़न, सं. पुं. (सं. न.) प्रहरणं, आहननं, आघातः, प्रहारः २. तर्जनं ३. दण्डः, शासनं ४. गुणनम्।
ताड़ना[1], क्रि. स. (सं. ताडनं) तड् (चु.), अभिहन् (अ. प. अ.), आहन् (अ. प. अ.), तुद् (तु. उ. अ.), प्रहृ (भ्वा. प. अ.), २. दंड् (चु.), शास् (अ. प. से.) ३. तर्ज्-निर्भर्त्स् (चु. आ. से.)। सं. स्त्री., दे. 'ताड़न' (१-३)।
ताड़ने योग्य, वि., ताडनीय, आहन्तव्य, दंड्य, तर्जनीयं इ.।
ताड़नेवाला, सं. स्त्री., ताडकः, दंडयितृ, तर्जकः।
ताड़ा हुआ, वि., ताडित, अभिहत, दंडित, तर्जित।
ताड़ना[2], क्रि. स. (सं. तर्कणं) तर्क् (चु.), अनु-मा (जु. आ. अ.), ऊह् (भ्वा. आ. से.)।
ताड़ी, सं. स्त्री. (सं. ताली) तालकी, ताल,-रसः-आसवः-मद्यं, तारिका।
तात, सं. पुं. (सं.) पितृ (पुं.), जनकः २. पूज्यः, गुरुः (पुं.) ३. (प्रायः छोटों के लिए संबोधन में) वत्स, प्रिय, अंग।
तातार, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'तूरान'।
तातील, सं. स्त्री. (अ.) अवकाशः, अनध्याय-विश्राम,-दिवसः।
तात्कालिक, वि. (सं.) तत्कालभव २. समकालीन, यौगपदिक।
तात्त्विक, वि. (सं.) वास्तविक, यथार्थ, परमार्थ।
तात्पर्य, सं. पुं. (सं. न.) अर्थः, आशयः अभिप्रायः, भावः २. तत्परता, तत्परायणता।
तादात्म्य, सं. पुं. (सं. न.) अभेदः, अभिन्नता, सायुज्यम्, तद्रूपता।
तादाद, सं. स्त्री. (अ. तअदाद) संख्या, गणना।
तादृश, वि. (सं.) तादृक्ष, तत्,-सदृश-तुल्य-समान, तथाविध।
तान, सं. स्त्री. (सं.) गानांगविशेषः, आलापः, लयविस्तारः २. विस्तृतिः-ततिः (स्त्री.), विस्तारः।
—पूरा, सं.पुं. (सं. तुंबरं) *तानपूरः, वीणाभेदः।
तानना, क्रि. स. (सं. तननं) प्र-वि-तन् (त. उ. से.), आयम् (भ्वा. प. अ.) दीर्घी कृ. विस्तृ-विस्तॄ (प्रे.) लंब्-प्रसृ (प्रे.)।
तानकर, मु., बलेन, पूर्णशक्त्या।
तानकर सोना, मु., निश्चितं स्वप् (अ. प. अ.)।
ताना[1], सं. पुं. (हिं. तानना) तान्तवम्, अन्वानाहतंतवः (पुं. बहु.)।
—बाना, अन्वानाहतिर्यक्तंतवः (पुं. बहु.), तान्तवौतू (पुं. द्वि.)।
ताना,[2] सं. पुं. (अ.), व्यंग्य-वक्र-छेक-भंगि,-वचनं-वाक्यं-उक्तिः (स्त्री.), कटाक्षाक्षेपः।
ताना,[3] क्रि. स. (सं. तापनं) दे. 'तपाना'।
—मारना, क्रि. स., भंग्या-व्यंग्येन आक्षिप् (तु. प. अ.), वक्रोक्त्या-कटाक्षेण उपन्यस (दि. प. से.)-व्याहृ (भ्वा. प. अ.)।

तानाशाह, सं. पुं. (हिं+फ़ा.) एक,-अधिपतिः-शासकः, अधिनायकः ।

तानाशाही, सं. स्त्री. अधिनायकत्वं, ऐकाधिपत्यम् ।

ताप, सं. पुं. (सं.) उ(ऊ)ष्मन् (पुं.), उष्णता, उष्मः, उत्-परि-सं,-तापः, दाहः २. ज्वरः ३. दुःखं, कष्टं ४. वेदना, मानसक्लेशः ।

—तिल्ली, सं. स्त्री., प्लीहाभिवृद्धिः (स्त्री.), प्लीहोदरम् ।

तापना, क्रि. अ. (सं. तापनं) पावकं-सूर्यातपं आ-नि-सेव् (भ्वा. आ. से.) । क्रि. स., दे. 'तपाना' ।

तापमान, सं. पुं. (सं. न.) ऊष्ममानम् ।

—यंत्र, सं. पुं. (सं. न.) १-२. ताप-ज्वर,-मापकम् ।

तापस, सं. पुं. (सं.) दे. 'तपस्वी' ।

ताब, सं. स्त्री. (फा. । मि. सं. तापः) ऊष्मः, उष्णता २. दीप्तिः (स्त्री.), आभा ३. सामर्थ्यं, साहसम् ।

ताबड़तोड़, क्रि. वि. (अनु.) अनवरतं, अविश्रान्तं, सततं, अनवच्छिन्नम् ।

ताबूत, सं. पुं. (अ.) शव,-पेटकः-संपुटः ।

ताबे, वि. (अ.) अधीन, वशवर्तिन् ।

ताबेदार, वि. (अ.+फ़ा.) आज्ञा,-पालकः-कारिन् ।

तामजान, सं. पुं. (हिं. थामना+सं. यानं) शिविकाभेदः ।

तामरस, सं. पुं. (सं. न.) रक्तोत्पलं, कोकनदं, २. सुवर्णं ३. ताम्रम् ।

तामस, वि. (सं.) तमोगुणिन्, तमोगुणयुक्त २. काल, कृष्ण ३. अज्ञ ४. दुष्ट । सं. पुं., सर्पः २. उलूकः ३. क्रोधः ४. अंधकारः ।

तामसिक, वि. दे. 'तामस' वि. ।

तामिल, सं. स्त्री. (देश.) द्रविडजातिभेदः २. भाषाविशेषः ।

तामिस्र, सं. पुं. (सं.) नरकविशेषः २. कृष्ण-पक्षः ३. क्रोधः ४. द्वेषः ।

तामील, सं. स्त्री. (अ.) आज्ञापालनं २. निष्पत्तिः-सिद्धिः (स्त्री.) ।

ताम्र, सं. पुं. (सं. न.) ताम्रकं, मुनिपित्तलम् ।

—कार, सं. पुं. (सं.) ताम्र,-कुट्टः-उपजीविन् ।

—चूड़, सं. पुं. (सं.) कुक्कुटः ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) ताम्रपट्टः-ट्टं २. ताम्रफलकः-कम् ।

ताया, सं. पुं. (सं. तातः>) ज्येष्ठःतातः, ज्येष्ठ-पितृव्यः, पितुरग्रजः ।

तार, सं. पुं. (सं. न.) रूप्यं, रजतं २. तारः, धातु,-तंतुः-(पुं.)-सूत्रं ३. तड़ित्-विद्युत्,-संदेशः-वार्त्ता ४. सूत्रं, गुणः, तंतुः (पुं.) ५. सततक्रमः, परंपरा ६. नक्षत्रं, तारा, ग्रहः ७. सप्तकभेदः (संगीत) । वि., उच्च, महत् (ध्वनि आदि) २. भासुर ३. निर्मल, स्वच्छ ।

—देना, क्रि. स., विद्युत्संदेशं प्रेष् (प्रे.)-प्रहि (स्वा. प. अ.) ।

—कश, सं. पुं. (हिं+फ़ा.) तारकर्षः-र्षकः ।

—घर, सं. पुं., तारगृहम् ।

—तार, वि., जीर्ण, विदीर्ण ।

—बर्की, सं. स्त्री., तड़ित्-विद्युत्,-तारः ।

—तार करना, मु., (वस्त्रादिकं) तन्तुशः विद्ध (प्रे.)-खंड् (चु.) ।

—टूटना, मु., क्रमः-परम्परा त्रुट् (दि. प. से.) ।

—बाँधना, मु., निरन्तरं विधा(जु.उ.अ.)-कृ ।

तारक, सं. पुं. (सं.) तारः-रं-रा, भं., नक्षत्रं २. नेत्रं ३. कनीनिका, नयनतारा ४. मोचकः, मुक्तिदः ५. कर्णधारः ।

तारका, सं. स्त्री. (सं.) नक्षत्रं, उडुः २. कनी-निका, बिंबिनी ३. वालिपत्नी ।

तारकेश्वर, सं. पुं. (सं.) शिवः, महेशः ।

तारकोल, सं. पुं. (अं. कोलटार दे.)

तारण, सं. पुं. (सं. न.) पारनयनं, उत्तारणं, संतारणं २. मोचनं, उद्धारणं, निस्तारणम् । सं. पुं., तारकः उद्धारकः, भवभयमोचकः २.विष्णुः ।

तारतम्य, सं. पुं. (सं. न.) न्यूनाधिकता, उत्कर्षापकर्षौ २. अन्तरं, भेदः ।

तारना, क्रि. स. (हिं तरना) पारं नी (भ्वा. प. अ.), उत्-सं-, तॄ (प्रे.) उत्-, लंघ् (प्रे.) २. मोक्ष् (चु.), निस्तॄ (प्रे.), उद्-,हृ-धृ (भ्वा. प. अ.), (पापेभ्यः, भवभयात्) मुच् (प्रे.) ।

तारनेवाला, सं. पुं., मोक्षकः, मोचकः, निस्तारकः, उद्धारकः, मुक्तिदः ।

तारपीन, सं. पुं. (अं. टरपेंटाइन) सरल-चीरपर्ण,-तैलं,सरल,-द्रवः-रसः-स्यन्दः, शीतलः, श्री,-वासः-वेष्टः ।

तारल्य, सं. पुं. (सं. न.) तरलत्वं, तरलता, द्रवत्वं, प्रवाहिता २. कामुकता, लंपटता, कामान्धता।

तारा, सं. पुं. (सं. स्त्री.) तारः-रं, तारका, उडुः (पुं.), नक्षत्रं, ऋक्षं, भं, ज्योतिस् (न.) २. कनीनिका, बिंबिनी ३. भाग्यं, नियतिः (स्त्री.)। सं. स्त्री., बालिपत्नी २. बृहस्पति-भार्या।

—टूटना, क्रि. अ., नक्षत्र-उल्का पत् (भ्वा. प. से.)।

—अधिप, सं. पुं. (सं.) चंद्रः २. बालिः(पुं.)।

—मंडल, सं. पुं. (सं. न.) उडु-भ-नक्षत्र,-गणः।

—होना, मु., नभः चुंब् (भ्वा. प. से.), गगनं स्पृश् (तु. प. अ.)।

तारीक, वि. (फ़ा.) काल, कृष्ण २. सतिमिर, निष्प्रभ।

तारीकी, सं. स्त्री. (फ़ा.) कृष्णता २. अंधकारः, तिमिरम्।

तारीख़, सं. स्त्री. (फ़ा.) तिथिः (पुं. स्त्री.), दिवसः २. नियततिथिः।

तारीफ़, सं. स्त्री. (अ.) लक्षणं, परिभाषा २. स्तुतिः-नुतिः (स्त्री.) ३. वर्णनं ४. गुणः, विशिष्टता।

तारुण्य, सं. पुं. (सं. न.) यौवनं, कौमारम्।

तारेश, सं. पुं. (सं.) विधुः, सुधांशुः, चन्द्रः।

तार्किक, सं. पुं. (सं.) तर्कशास्त्रविद् (पुं.) २. तत्त्वज्ञः, दार्शनिकः।

तार्क्ष्य, सं. पुं. (सं.) गरुड़, वैनतेयः, विष्णु-रथः २. अरुणः ३. अश्वः ४. सर्पः ५. खगः।

ताल[1], सं. पुं. (सं. तल्लः) दे. 'तालाब'। २. करतलः-लं, प्रहस्तः ३. ताली, करतलध्वनिः (पुं.), करतालः-लकं ४. संगीते काल-क्रिया,-मानं ५. मल्लयुद्धे करतलेन बाहुजंघयोरास्फा-लनं ६. दे. 'झाँझ'।

ताल[2], सं. पुं. (सं.) तृणराजः, मधुरसः, आसवद्रुः (पुं.)।

—से बेताल होना, मु., विताल (वि.) भू।

तालमखाना, सं. पुं. (हिं. ताल+मक्खन) कोकिलाक्षः, काकेक्षुः, कांडेक्षुः, इक्षुरः।

तालव्य, वि. (सं.) काकुद-तालु,-संबंधिन्।

—वर्ण, सं. पुं. (सं.) तालूच्चार्यवर्णाः। (इ, ई, चवर्ग, य्, श्)।

ताला, सं. पुं. (सं. तालकं) तालः, ताल-द्वार,-यंत्रम्।

—लगाना, क्रि. स., तालकेन निरुध (रु. उ. अ.)-पिधा (जु. उ. अ.)-बंध् (क्र्. प. अ.)।

तालाब, सं. पुं. (हिं. ताल+फ़ा. आब.) तडा(टा) गः-गं, कासारः-रं, सरस् (न.), पुष्करिणी।

तालिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'ताली' २. सूची-चिः (स्त्री.), अनुक्रमणी-णिका, नामावली-लिः (स्त्री.)।

तालिब, सं. पुं. (अ.) अन्वेषकः, अनुसंधातृ (पुं.) २. इच्छुकः, अभिलाषिन्।

—इल्म, सं. पुं. (अ.) विद्यार्थिन्, छात्रः।

ताली[1], सं. स्त्री. (सं.) तालिका, कुंचिका, कूचिका, अंकुटः, उद्घाटनी, साधारणी।

ताली[2], सं. स्त्री. (सं. तालिका) करतालः-लकं, करतल,-शब्दः-ध्वनिः (पुं.)।

—बजाना, क्रि. स., करतालं वद् (प्रे.)-दा, करतलध्वनिं जन् (प्रे.)।

तालीम, सं. स्त्री. (अ.) शिक्षा, विद्या।

तालीशपत्र, सं. पुं. (सं. न.) तालीशं, नीलं, धात्रीपत्रम्।

तालु, सं. पुं. [सं. तालु (न.)] काकुदं, तालुकम्।

—मूल, सं. पुं. (सं. तालुमूलम्) काकुदमूलम् २. गलग्रन्थिः।

ताल्लुक, सं. पुं. (अ. तअल्लुक़) सम्बन्धः, संसर्गः।

ताव, सं. पुं. (सं. तापः) दाहः, उ(ऊ)ष्मः-ष्मन् (पुं.), उष्णः-ष्णं २. अन्तर्वेगः, आवेशः ३. त्वरा ४. व्यावर्तनं, मोटनं, आकुञ्चनम्।

तावान, सं. पुं. (फ़ा.) दण्डः, अर्थ-धन,-दण्डः, निष्कृतिः (स्त्री.), निस्तारः।

—देना, क्रि, स., निष्कृतिं दा., निस्तॄ (प्रे.)।

तावीज़, सं. पुं. (अ. तअवीज़) यंत्रं, कवचः, क्षारः २. यंत्रसंपुटः।

ताश, सं. पुं. (अ. तास) क्रीडापत्राणि (न. बहु.), क्रीडापत्रावली २. पत्र,-क्रीडा-खेला ३. दे. 'जरबफ्त'।

तासीर, सं. स्त्री. (अ.) गुणः, प्रभावः।

तास्सुब, सं. पुं. (अ. तअस्सुब) धार्मिक-जातीय,-पक्षपातः, २. पक्षपातः ३. मतान्धता ।

ताहम, अव्य. (फ़ा.) दे. 'तथापि' ।

तिकोन, सं. पुं. (त्रिकोणः) त्रिभुजः, त्र्यस्रम् ।

तिकोना-निया, वि. (हिं. तिकोन) त्रिकोण, त्र्यस्र, त्रिकोण-त्रिभुज,-आकार ।

तिक्त, सं. पुं. (सं.) रसभेदः । वि., तिक्त,-रसस्वाद, तीक्ष्ण, तीव्र ।

तिखूँट, सं. स्त्री. (हिं. तीन+खूँट) दे. 'तिकोन' ।

—नाप, सं. स्त्री., त्रिकोणमितिः (स्त्री.) ।

तिखूँटा, वि., दे. 'तिकोना' ।

तिगुना, वि. (सं. त्रिगुण) त्रिगुणित, त्रिरावृत्त, त्रिगुणीकृत ।

—करना, क्रि. स., त्रिगुणीकृ, त्रिः आवृत्(प्रे.) ।

तिजारत, सं. स्त्री. (अ.) वाणिज्यं, क्रयविक्रयौ (द्वि.) ।

तिजारी, सं. स्त्री. (सं. त्रि+ज्वरः) तृतीयकज्वरः ।

तितरबितर, वि. (हिं. तिथर+अनु.) आ-प्र-वि,-कीर्ण, विक्षिप्त २. अव्यवस्थित, क्रमशून्य, अस्तव्यस्त ।

तितली, सं. स्त्री. (हिं. तीतर अथवा सं. तिल) चित्रपतंगः, *तित्तिरी ।

तितिक्षा, सं. स्त्री. (सं.) सहिष्णुता, सहनं २. क्षमा, क्षांतिः (स्त्री.) ।

तितिक्षु, वि. (सं.) सहनशील, सहिष्णु २. क्षांत, क्षमाशील ।

तिथि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) मितिः (स्त्री.), मास-पक्ष,-दिनं-दिवसः, चांद्रदिवसः ।

तिनकना, क्रि. अ., दे. 'चिड़चिड़ाना' ।

तिनका, सं. पुं. (सं. तृणं), नालः-लं, पलः, पलालः-लं, त्रिणं, खटं, खेट्टं, हरितं, तांडवं, अर्जुनम् ।

—दाँतों में दबाना या लेना, मु., दे. 'गिड़गिड़ाना' ।

तिनके का सहारा, मु., ईषत् साहाय्यम् ।

तिनके को पहाड़ समझना, मु., तिले तालं पश्यति ।

तिपाई, सं. स्त्री. (सं. त्रिपादिका) त्रिपदिका, त्रिपदम् ।

तिबारा, क्रि. वि. (सं. त्रिवारं) त्रिः (अव्य.) ।

तिब्ब, स्त्री. (अ.) चिकित्साविज्ञानम्, २. यवनचिकित्साशास्त्रम् ।

तिब्बत, सं. पुं. (सं. त्रिवि (पि) ष्टपं >) त्रिविष्टपम् ।

तिब्बती, वि. त्रैविष्टप, त्रिविष्टप,-सम्बन्धि-विषयक । सं. पुं., त्रिविष्टपीयः, त्रिविष्टप,-वासिन्-वास्तव्यः । सं. स्त्री. त्रिविष्टपभाषा, *त्रिविष्टपी ।

तिमंज़िला, वि. (सं. त्रि + अ. मंज़िल) त्रिभूमिक ।

तिमिर, सं. पुं. (सं. न.) अंधकारः, तमस् (न.) ।

तिरछा, वि. (सं. तिर्यंच्) अवसर्पिन्, प्रवण, तिरश्चीन, वक्र, कुटिल, २. वेषाभिमानिन् ।

—देखना, क्रि. अ., तिर्यक्-वक्रं वीक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।

तिरछी चितवन या नज़र, मु., तिर्यग्-वक्र,-दृष्टिः (स्त्री.) २. कटाक्ष-अपांग-नयनोपांत,-वीक्षणं-वीक्षितं, कटाक्षः, भ्रूविलासः ।

तिरछापन, सं. पुं. (हिं. तिरछा) प्रवणता, तिरश्चीनता, वक्रता, कुटिलता ।

तिरछे, क्रि. वि. (हिं. तिरछा) तिरः, साचि, जिह्मं (सब अव्य.) ।

तिरपन, वि. [सं. त्रिपंचाशत् (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (५३) च ।

तिरपाई, सं. स्त्री. (सं. त्रिपादिका) त्रिपदिका, त्रिपदम् ।

तिरपाल, सं. पुं. (अं. टारपालिन) तिंदुलिप्तपटः ।

तिरसठ, वि. [सं. त्रिषष्टिः (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (६३) च ।

तिरस्कार, सं. पुं. (सं.) अनादरः, अपमानः, निकृतिः (स्त्री.), न्यक्कारः, अवज्ञा, अवमानना, तिरस्क्रिया, मानभंगः २. भर्त्सना, तर्जनं ३. सापमानं त्यागः ।

तिरस्कृत, वि. (सं.) न्यक्कृत, अनादृत, अप-अव,-मत-मानित, अवज्ञात इ. २. सापमानं त्यक्त ३. आच्छादित ।

तिरहुत, सं. पुं. (सं. तीरभुक्तिः>) मिथिला-प्रदेशः ।

तिरहुतिया, वि. (हिं. तिरहुत) मैथिल, मिथिला-सम्बन्धिन् । सं. पुं., मैथिलः, मिथिला-वासिन् । सं. स्त्री., मिथिलाभाषा, मैथिली ।

तिरानवे, वि. [सं. त्रिणवतिः (नित्य स्त्री.)]। त्रयोणवतिः । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (९३) च ।

तिरासी, वि. [सं. त्र्यशीतिः (नित्य स्त्री.)]। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (८३) च।

तिराहा, सं. पुं. (सं. त्रि + फ़ा. राह) त्रिपथम्।

तिरिया, सं. स्त्री. (सं. स्त्री) नारी, रामा।

—चरित्तर, सं. पुं. (सं. स्त्रीचरित्रं) रामारहस्यं, वामावैदग्ध्यं, नारीचरितम्।

तिरोधान, सं. पुं. (सं. न.) अदर्शनं, अंतर्धानं, गोपनं, गूहनं, संवरणम्।

तिरोभाव, सं. पुं. (सं.) दे. 'तिरोधान'।

तिरोभूत, वि. (सं.) अदृष्ट, अंतर्हित, लुप्त।

तिरोहित, वि. (सं.) गूढ, निलीन, आच्छादित, संवृत, निभृत, गुप्त।

तिर्यंची, सं. स्त्री. (सं.) तिरश्री, पशु-खग,-योषा–अंगना–वधूः (स्त्री.)।

तिर्यक्, अव्य. (सं.) वक्रं, कुटिलं, तिरस्, जिह्मं, असरलम् (सब अव्य.)।

तिलंगाना, सं. पुं. (सं. तैलंगः) प्रदेशविशेषः।

तिलंगी, वि. (सं. तिलंगाना>) तैलंगदेशीय।

तिल, सं. पुं. (सं.) पवित्रः पितृतर्पणः, पूत-होम,-धान्यं, पापघ्नः, स्नेहफलः। २. तिलकः, कालकः, जड्ड (डु), लः, पिप्लुः (पुं.)। ३. क्षणः-णं, पलं ४. तारा-रकं, कनीनिका।

—का तेल, सं. पुं., तिल,-तैलं-रसः-स्नेहः।

—किट्ट, सं. पुं. (सं. न.) तिल,-खली-चूर्णम्।

—कुट, सं. स्त्री., तिलकुट्टम्।

—चटा, सं. पुं., रक्तवर्णकीटभेदः।

—भुग्गा, सं. पुं., तिलभुक्तम्।

—पपड़ी-शकरी, सं. स्त्री., तिलपट्टी, *तिलशर्करी। तिल की ओट पहाड़, मु.,* विन्दौ सिन्धुः, *तिले गिरिः।

तिल का ताड़ करना, मु., तिले तालं पश्यति।

तिल-तिल, मु., अल्पाल्प, किंचित्किंचित्।

तिल धरने की जगह न होना, मु., स्थानाभावः।

तिलभर, मु., ईषदिव, किंचिदिव।

तिलक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'टीका'' (१. २ ६. ८. ९. ११.)।

—लगाना, क्रि. स., दे. 'टीका' लगाना'।

तिलड़ा, सं. पुं. } (सं.त्रि+हिं. लड़) त्रिसूत्रो
तिलड़ी, सं. स्त्री. } हारः।

तिलवा, सं. पुं. (सं. तिल>) *तिलमोदकः।

तिलहन, (हिं तेल + धान्य) सं. पुं. तैल-स्नेह,-बीजं-बीजकं-रोहिः।

तिला, सं. पुं. (फ़ा. । मि. सं. तैलं) मर्दनौषधं २. लिंगलेपः।

तिलाक, सं. पुं., दे. 'तलाक'।

तिलि (ल) स्म, सं. पुं. (यू. टेलिस्मा) दे. 'इन्द्रजाल'।

तिल्ली, सं. स्त्री. (सं. तिलकं>) प्लीहन् (पुं.), प्लीहा, गुल्मः २ दे. 'तिल' १.।

ताप—, सं. स्त्री, दे. 'ताप' के नीचे।

तिवारी, सं. पुं. (सं. त्रिपाठी), दे. 'त्रिवेदी'।

तिस, सर्व., दे., 'उस'।

तिहत्तर, वि. [सं. त्रिसप्ततिः (नित्य स्त्री.)]। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (७३) च।

तिहरा, वि. दे. 'तेहरा'।

तिहराना, क्रि. स. (हिं. तिहरा) त्रिः कृ, तृतीयं वारं विधा (जु. उ. अ.)।

तिहवार, सं. पुं. (सं तिथिवारः)। पर्वन् (न.), उत्सवः, उद्धर्षः, उद्धवः, क्षणः, महः।

तिहाई, सं. स्त्री. (सं. त्रिभाग>) तृतीय,-अंशः-भागः।

तिहारा, सर्व., दे. 'तुम्हारा'।

तीक्ष्ण, वि. (सं.) नि,-शात-शित, तीव्र, प्र,-खर, सूच्यग्र, तीक्ष्ण-शित,-धार २. (बुद्धि) कुशाग्र, सूक्ष्म-शीघ्र-,ग्राहिन्, सूक्ष्म, तीव्र ३. उग्र, प्रचंड ४. दे. 'चरपरा' ५. (शब्द) कर्णकटु, अप्रिय ६. उद्यमिन्, अतंद्र, क्षिप्रकर्मन् ७. असह्य, दुःसह।

तीक्ष्णता, सं. स्त्री. (सं.) तीव्रता, प्रखरता, प्रचंडता इ.।

तीखा, वि., दे. 'तीक्ष्ण'।

तीखुर, सं. पुं., दे. 'तबाशीर'।

तीज, सं. स्त्री. (सं. तृतीया) कृष्णा शुक्ला वा तृतीया तिथिः (स्त्री.) २. श्रावण-भाद्र,-शुक्लतृतीया।

तीत-ता, वि. (सं. तिक्त) दे. 'तिक्त' २. कटु।

तीतर, सं. पुं. (सं. तित्तिरः) तिति (त्ति) रिः (पुं.), तैतिरः, याज्ञुषोदरः।

तीन, वि. [सं. त्रीणि (न. बहु.)] त्रयः (पुं.), तिस्रः (स्त्री.), त्रीणि (न.)। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकः (३) च।

—तेरह करना, मु., विद्रु (प्रे.), अवा-आ-प्र-वि,-कृ (तु. प. से.)।
—पाँच करना, मु., कलहायते (ना. धा.), विवद् (भ्वा. आ. से.)।
न तीन में न तेरह में, मु., सामान्य, साधारण।
तीमार, सं. पुं. (फ़ा.) सेवा, परिचर्या।
—दार, सं. पुं., रोगि-रुग्ण,-सेवकः-परिचारकः।
—दारी, सं. स्त्री., रोगि-रुग्ण,-परिचर्या-सेवा।
तीय, सं. स्त्री., दे. 'स्त्री'।
तीर¹, सं. पुं. (सं. न.) तटः-टं-टी।
तीर², सं. पुं. (फ़ा.) बाणः, शरः, इषुः (पुं.), सायकः।
—कश, सं. पुं. (फ़ा.) इषुधिः (पुं.), दे. 'तरकश'।
—चलाना या मारना, क्रि. स., इषुं प्र,-मुच्-क्षिप् (तु. प. अ.)।
तीरंदाज़, सं. पुं. [-+अंदाज़ (फ़ा.)] इषु-धनुर्,-धरः, धन्विन् (पुं.), धानुष्कः।
तीरंदाजी, सं. स्त्री., धनुर्,-विद्या-वेदः, शराभ्यासः।
तीर्थ, सं. पुं. (सं. तीर्थं) पुण्य-पवित्र,-स्थानं २. घट्टः ३. घट्टसोपानपथः, अवतारः ४. उपाध्यायः, गुरुः (पुं.) ५. ब्राह्मणः ६. परिव्राजकोपाधिः (पुं.) ७. तारकः, मोक्षकः ८. ईश्वरः ९. जननीजनकौ १०. अतिथिः (पुं.)।
—यात्रा, सं. स्त्री. (सं.) तीर्थाटनम्।
—राज, सं. पुं. (सं.) प्रयागः।
तीर्थिक, सं. पुं. (सं.) तीर्थपुरोहितः २. तीर्थंकरः ३. तीर्थयात्रिन्।
तीला, सं. पुं. (फ़ा. तीर) दे. 'तिनका'।
तीली, सं. स्त्री. (हिं. तीला) लघुतृणम् २. धात्वादेः दृढसूक्ष्मतारः।
तीव्र, वि. (सं.) अत्यधिक, अत्यंत, अतिशय २. दे. 'तीक्ष्ण'(१)। ३. सुतप्त, अत्युष्ण ४. असीम, अमित ५. कटु ६. दुःसह ७. प्रचंड ८. तिक्त ९. वेगवत्, शीघ्र १०. तार, उच्च (स्वर)।
तीव्रता, सं. स्त्री. (सं.) अत्यधिकता, बाहुल्यं, अत्युष्णता, असह्यता, प्रचंडता, तिक्तता इ.।
तीस, वि. [सं. त्रिंशत् (नित्य स्त्री.)]। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ(३०) च।
—मार खाँ, मु., वीराग्रणीः (पुं.), शूरशिरोमणिः (पुं.) (व्यंग्य)।
तीसों दिन, मु., सदा, सर्वदा।
तीसरा, वि. पुं. (हिं. तीन) तृतीयः [-या (स्त्री.)]। सं. पुं., मध्यस्थः, तटस्थः।
—पहर, सं. पुं., तृतीयप्रहरः अपराह्णः, पराह्णः, विकालः।
तीसरे, क्रि. वि. (हिं. तीसरा) तृतीयस्थाने, तृतीयं, तृतीयतः (अव्य.)।
तीसवाँ, वि. (हिं. तीस) त्रिंशत्तमः-मं-मी, त्रिंशः-शं-शी (पुं. न. स्त्री.)।
तुंग, वि. (सं.) दे. 'ऊँचा' २. चंड, उग्र।
तुंड, सं. पुं. (सं. न.) मुखं, आस्यं, वदनं २. चञ्चूः-ञ्चुः (स्त्री.)।
तुंडि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) दे. 'तुंड' (१-२)। (सं. स्त्री.) नाभिः।
तुंद, सं. पुं. (सं. न.) उदरं, तुन्दि (न.), तुन्दिः (स्त्री.)।
तुंबा, सं. पुं. (सं.) अलाबुः (पुं. स्त्री.) -बूः (स्त्री.) २. अलाबु (न.), अलाबुपात्रम्।
तुंबिया, सं. स्त्री. (सं. तुंबिका >) क्षुद्रालाबु (न.), क्षुद्रालाबुपात्रम्।
तुंबी, सं. स्त्री. (सं.) तुंबिः (स्त्री.) अलाबुः (पुं. स्त्री.) २. दे. 'तुंबा'(२)।
तुअर, सं. पुं. (सं. तुवरी) आढकी, दे. 'अरहर'।
तुक, सं. स्त्री. (हिं. टूक) अंत्यानुप्रासः, अक्षरमैत्री २. पद्यांशः ३. पादांतवर्णः।
बेतुकी, वि., असंबद्ध, असंगत।
—जोड़ना, मु., कुकवितां कृ अथवा रच् (चु.)।
तुख्म, सं. पुं. (अ.) दे. 'बीज'।
तुच्छ, वि. (सं.) नीच, हीन, अधम, क्षुद्र, दीन, निकृष्ट २. असार, लघ्वर्थक, अनर्थक।
तुड़वाना, तुड़ाना, क्रि. प्रे., व. 'तोड़ना' के प्रे. रूप।
तुतला (रा) ना, क्रि. अ. (अनु.) अस्पष्टं-शिशुवत् भाष् (भ्वा. आ. से.)।
तुपक, सं. स्त्री. (तु. तोप) *शतघ्निका २. नालास्त्रम्।
तुफंग, सं. स्त्री. (तु. तोप) वायव्यं नालास्त्रम्।
तुम, सर्व. (सं. त्वम्) त्वं (एक.), यूयं (बहु.) ('तुम को' आदि के लिए 'युष्मद्' की द्वितीया आदि के रूप बनेंगे)।

तुमड़ी, सं. स्त्री. (सं.तुम्बी>) शुष्कवर्तुलालाबुः (पुं. स्त्री.) २. दे. 'तुंबा'(२)।

तुमाई, सं. स्त्री. (हिं. तुमाना) कार्पासादि-प्रसाधनभृतिः (स्त्री.)।

तुमाना, क्रि. प्रे., व. 'तूमना' के प्रे. रूप।

तुमुल, वि. (सं.) घोररव-कलकल-कोलाहल,-भय-पूर्ण-युत। सं. पुं. (सं. पुं. न.) भीषण-घोर,-युद्धं-संग्रामः २. कोलाहलः, कलकलः।

तुम्हारा, सर्व. (हिं. तुम) युष्माकं-तव (त्रिलिंग) युष्मदीय, त्वदीय, तावक, यौष्माक-कीण।

तुम्हीं, सर्व० (हिं. तुम + ही) त्वमेव,युवामेव, यूयमेव।

तुम्हें, सर्व, (हिं. तुम) (कर्म) त्वाम् त्वा; युवाम्, वाम्; युष्मान्, वः (संप्रदान) तुभ्यं, ते, युवाभ्यां, वां; युष्मभ्यम्, वः।

तुरंग, तुरंगम, सं. पुं. (सं.) अश्वः, घोटकः।

तुरंत, क्रि. वि. (सं.) झटिति, आशु, सद्यः, सपदि, तत्क्षणं-णे।

तुरई, सं. स्त्री. (सं. तूरं >) मृदंगी, राज-, कोशातकी, जालिनी, कृतवेधना, सु,-पीत-पुष्पा, राजिमत्फला (घिया तुरई, देखो 'नेनुआ')।

तुरक, सं. पुं. (सं. तुरकः) तुरुष्कः २. यवनः ३. सैनिकः ४-५. टर्की-तुर्किस्तान,-वासिन्।

तुरकी, वि. (हिं. तुरक) तुरुष्कदेशीय २. तुरुष्कभाषा।

तुरग, सं. पुं. (सं.) अश्वः, वाजिन् (पुं.)।

तुरत, क्रि. वि., दे. 'तुरंत'।

तुरही, तुरी, सं. स्त्री. (सं. तूरं) तूर्यः-र्यं, काहलः-ला, शृंगवाद्यम्।

तुरीय, वि. (सं.) तुर्य, चतुर्थ।

—अवस्था, सं. स्त्री. (सं.) निःश्रेयसं, मुक्तिः (स्त्री.)।

तुरुष्क, सं. पुं. (सं.) दे. 'तुरक'।

तुर्य, वि., दे. 'तुरीय'।

तुर्रा, सं. पुं. (अ.) उष्णीष,-आलंबः-शेखरः २. चूड़ा, मौलिः (पुं.), शिखा, शेखरः ३. अलकः, चूर्णकुंतलः, भ्रमरकः, कुरलः। ४. वि., विचित्र, अद्भुत।

तुर्श, वि. (फ़ा.) दे. 'खट्टा'।

तुलना[1], सं. स्त्री. (सं.) उपमा, समता, साम्यं, सादृश्यं २. तारतम्यं, न्यूनाधिकता।

तुलना[2], क्रि. अ. (हिं. तोलना) तुल्-तूल् (कर्म., तोल्यते, तूल्यते), तुलया मा (कर्म. मीयते)।

किसी काम पर तुला हुआ, मु., कार्यविशेषं कर्तुं उद्यतः-कृतनिश्चयः-विहितसंकल्पः।

तुलनात्मक, वि. (सं.) तुलनायुक्त, अन्या-पेक्षक, अन्यसापेक्ष, सापेक्ष, साम्यवैषम्य,-सूचक-दर्शक।

तुलवाना, क्रि. प्रे., व. 'तोलना' के प्रे. रूप।

तुलसी, सं. स्त्री. (सं.) सुभगा, पावनी, भूतघ्नी, विष्णुवल्लभा, वृन्दा, पुण्या, वैष्णवी।

—दल, सं. पुं. (सं. न.) वृंदापत्रम्।

—दास, सं. पुं. (सं.) भक्तविशेषः, रामचरित-मानसादिरचयितृ (पुं.)।

तुला, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'तकड़ी' २. तुलना, सादृश्यं ३. राशिविशेषः (ज्यो.)।

—दान, सं. पुं. (सं. न.) देहभारसम-सुवर्णादिदानम्। वि., तोलित, तूलित।

तुल्य, वि. (सं.) स-सम,-तोल-भार-परिमाण २. सम, समान, सदृश, सदृक्ष।

तुल्यता, सं. स्त्री. (सं.) सम,-तोलता-परिमाणता २. सादृश्यं, साम्यं, समत्वम्।

तुष, सं. पुं. (सं.) तुसः, बुषं-सं, कडंगरः, धान्यत्वच् (स्त्री.)।

तुषानल, सं. पुं. (सं.) कुकूलः, तुषाग्निः (पुं.)।

तुषार, सं. पुं. (सं.) तुहिनं, हिमं, प्रालेयं, म(मि)हिका, अवश्यायः, नीहारः। वि., हिम, तुषार, तुषार-हिम,-वत्।

तुष्ट, वि. (सं.) तृप्त, तर्पित, पूर्णकाम २. प्रसन्न, मुदित।

तुष्टि, सं. स्त्री. (सं.) तुष्टता, तृप्तिः (स्त्री.), संतोषः २. हर्षः, प्रसन्नता।

तुहमत, सं. स्त्री., दे. 'तोहमत'।

तुहिन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'तुषार' २. चंद्रिका, कौमुदी ३. शीतलता, हिमता।

तूँबा, सं. पु., दे. 'तुंबा'।

तूँबी, सं. स्त्री., दे. 'तुंबी'।

तू, सर्व. (सं. त्वं)।

—तड़ाक,—तुकार या—तू-तू मैं-मैं करना, मु., अशिष्टभाषायां कलहायते (ना. धा.)।

तूण-णि, सं. पुं. (सं.) }
तूणी, सं स्त्री. (सं.) } दे. 'तरकश'।
तूणीर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) }

तूत, सं. पुं. (फ़ा. । मि. सं. तूदः) ब्रह्म,-काष्ठं-दारु (न.), सुरूपं, सुपुष्पम् ।

तूतिया, सं. पुं., दे. 'नीलाथोथा' ।

तूती, सं. स्त्री. (फ़ा.) शुकभेदः २. कनेरो-चटका ३. चटकाभेदः ४. मुखवाद्यो वाद्यभेदः, दे. 'तुरही' ।

—बोलना, मु., प्र-भू, अधिष्ठा (भ्वा. प. अ.) । नक्कारखाने में–की आवाज, मु., अरण्येरुदितम् ।

तूदा, सं. पुं. (फ़ा.) चयः, राशिः (पुं.) २. सीमाचिह्नम् ।

तून, सं. पुं. (सं. तुन्नः) नदीवृक्षः, तूणि-(णी) कः ।

तूफ़ान, सं. पुं. (अ.) झंझावातः, अति-चंड-महा,-वातः, वात्या, प्रभंजनः, प्रकंपनः २. तोय-जल,-ओघः-वृद्धिः (स्त्री.)-उपप्लवः-विप्लवः-प्रलयः, संप्लवः ३. उपद्रवः, संक्षोभः, विप्लवः ४. आपद्-आपत्तिः (स्त्री.) ५. दे. 'तोहमत' ।

—उठाना या मचाना, मु., तुमुलं कृ, संक्षोभं उत्पद् (प्रे.) ।

तूफ़ानी, वि. (फ़ा.) उपद्रविन्, कलहोत्पादक २. उग्र, प्रचंड ३. पिशुन, अभ्यसूयक ।

तूमड़ी, सं. स्त्री. (हिं. तूंबा) दे. 'तुंबी' २ तुम्बीनिर्मित आहितुण्डिकानां वाद्यभेदः ।

तूमना, क्रि. स. (सं. स्तोमः >) ऊर्णा-तूलं संमृज् (अ. प. वे., चु.) -घृष् (भ्वा. प. से.)-विश्लिष् (प्रे.) ।

तूरान, सं. पुं. (फ़ा.) तातार–तूरान,–देशः ।

तूरानी, वि. (फ़ा.) तातार-तूरान,-देशीय-सम्बन्धिन् । सं. पुं., तातार-तूरान-वासिन् (पुं.) ।

तूल[1], सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'रूई' २. दे. 'तूत' ।

तूल,[2] सं. पुं. (अ.) दे. 'लंबाई' ।

तूलिका, सं. स्त्री. (सं.) इ(ई) षीका, तुलिः (स्त्री.), तूली, ईषिका ।

तूली, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'तूलिका' २. नीली ३. वर्तिः (स्त्री.) ।

तृण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'तिनका' ।

तृणवत्, वि. (सं.) तृण,-तुल्य-सम, तुच्छ, क्षुद्र २. अग्राह्य, त्याज्य ।

तृतीय, वि. (सं.) दे. 'तीसरा' ।

तृप्त, वि. (सं.) तुष्ट, पूर्णकाम २. प्रहृष्ट, प्रमुदित ।

तृप्ति, सं. स्त्री. (सं.) संतोषः, सौहित्यं, तर्पणं, प्रीणनम् २. आनंदः, हर्षः ।

तृषा, सं. स्त्री. (सं.) पिपासा, तृष्णा, उदन्या २. लोभः ३. इच्छा ।

तृषित, वि. (सं.) पिपासित, तर्षितः सतृष् २. इच्छुक ३. लुब्ध ।

तृष्णा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'तृषा' (१-३) ।

तें, प्रत्य. [सं. तस् (प्रत्य.)] दे. 'से' ।

तैंतालीस, वि. [सं त्रिचत्वारिंशत्(नित्य स्त्री.)] त्रयश्चत्वारिंशत् । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (४३) च ।

तैंतालीसवाँ, वि. (हिं. तैंतालीस) त्रि-(त्रयश्) चत्वारिंशत्तमः-मी-मं, त्रि (त्रयश)-चत्वारिंशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.) ।

तैंतीस, वि. (त्रयस्त्रिंशत् (नित्य स्त्री.] । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (३३) च ।

तैंतीसवाँ, वि. (हिं. तैंतीस) त्रयस्त्रिंशत्तमः-मी-मं, त्रयस्त्रिंशः-शी,शं (पुं. स्त्री. न.) ।

तेंदुआ, सं. पुं. (देश.) चित्रक-चित्रकव्याघ्र,-भेदः ।

तेंदू, सं. पुं. (सं. तिंदुकः) कालस्कंधः, तिंदुलः २. तिंदुलं, तिंदुलफलम् ।

ते, सर्व. (सं. पुं. तद् का बहु.) दे. 'वे' ।

तेईस, वि. [सं. त्रयोविंशतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (२३) च ।

तेईसवाँ, वि. (हिं. तेईस) त्रयोविंशतितमः-मी-मं. त्रयोविंशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.) ।

तेग़, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'तलवार' ।

तेज, सं. पुं. [सं. तेजस् (न.)] कांतिः-दीप्तिः (स्त्री.), आभा, प्रभा २. पराक्रमः, वीर्यं, बलं ३. प्रतापः, अनुभावः, अभिख्या ४. तापः, ऊष्मन् (पुं.) ५. उग्रता, प्रचंडता ६. अग्निः (पुं.) ।

तेज़, वि. (फ़ा.) दे. 'तीक्ष्ण' (१) २. आशु, शीघ्रगामिन्, जवन, महावेग ३. क्षिप्र,-कर्मन्-कारिन् ४. दे. 'चरपरा' ५. उग्र, प्रचंड ६. महार्ह-र्घ, बहु-महा,-मूल्य ७. कुशाग्रबुद्धि ८. अतिचंचल ९. (विषादि) घोर, घातक ।

तेजपत्र, सं. पुं. (सं. न.) पत्रं, पत्रकं, गंधजातम् ।
तेजपात, सं. पुं., दे. 'तेजपत्र' ।
तेजबल, सं. पुं. (सं. तेजोवती) तेजनी, तेजवती ।
तेजस्वी, वि. (सं.-विन्) तेजोवत्, तेजस्वत्, ओजस्विन्, वर्चस्विन्, सुप्रभ, कांतिमत् २. प्रतापिन्, प्रतापवत् ३. वीर्यवत्, बलवत् ।
तेज़ाब, सं. पुं. (फ़ा.) अम्लः, द्रावकम् ।
तेज़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.), निशितत्वं, तीक्ष्णधारता, प्रखरता २. उग्रता, चंडता ३. शीघ्रता, त्वरा ४. महार्घत्वं, बहुमूल्यत्वं इ. ।
तेता, वि., दे. 'उतना' ।
तेरस, सं. स्त्री. (सं. त्रयोदशी) शुक्लकृष्णपक्षयोः त्रयोदशी तिथिः (स्त्री.) ।
तेरह, वि. (सं. त्रयोदश) । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (१३) च ।
तेरहवाँ, वि. (हिं. तेरह) त्रयोदशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.) ।
तेरा, सर्व. (सं. तव) तावक, [-की (स्त्री.)], तावकी¯, त्वत्क, त्वदीय, त्वत्- ।
तेल, सं. पुं. (सं. तैलं) स्नेहः, म्रक्षणं, अभ्यञ्जनम् ।
—मलना या लगाना, क्रि. स., तैलेन अंज् (रु. प. से.)-दिह् (अ. उ. अ.)-लिप् (तु. प. अ.) ।
—निकालना, क्रि. स., स्नेहं निष्कृष् (भ्वा. प. अ.) ।
—चढ़ाना, मु., विवाहात्प्राग् वरवध्वोः तैलाभ्यञ्जनम् ।
जलती पर**—डालना**, मु., कलहं वृध् (प्रे.) ।
तेलगू, सं. स्त्री. (सं. तैलंग >) तैलंगप्रान्त-आन्ध्रप्रान्त,-भाषा, तेलगूः (स्त्री.) ।
तेलहन, सं. स्त्री., दे. 'तिलहन' ।
तेलिन, सं. स्त्री. (हिं. तेली) तैलिनी, तैलिकी, तैल,-करी-कारिणी, चाक्रिकी ।
तेलिया, वि. (हिं. तेल) तैल,-चिक्कण-कृष्ण-भासुर । सं. पुं., कृष्ण,-रंगः-रागः-वर्णः । २. कृष्णाश्वः ३. वत्सनाभः, गरलः (विषभेदः) ।
तेली, सं. पुं. (सं. तैलिन्) तैलकारः तैलिकः, चाक्रिकः, घूसरः ।
तेवर, सं. पुं. (हिं. तेह=क्रोध) सकोप-सक्रोध,-दृष्टिः (स्त्री.) २. भ्रूः (स्त्री.), भ्रूलता ।
—बदलना, मु., भ्रूभंगं कृ, भ्रूकुटिं बन्ध् (क्र्. प. अ.)-रच् (चु.) ।
तेवरी-ड़ी, सं. स्त्री., 'त्योरी' ।
तेव(त्यो)हार, सं. पुं., दे. 'तिहवार' ।
तेहरा, वि. (हिं. तीन) त्रि-,गुण-गुणित, त्रिरावृत्त, त्रिरावर्तित ।
तैयार, वि. (फ़ा.) (मनुष्य) उद्यत, उद्युक्त, सज्ज, सिद्ध, संनद्ध २. (वस्तु) सज्जी,-कृत-भूत, आयोजित, उपस्थित, उप,-क्लृप्त-कल्पित, सज्ज, सिद्ध ३. पीन, हृष्टपुष्ट ।
—करना, क्रि. स., सज्जीकृ, सन्नह् (प्रे.), उप-परि-क्लृप् (प्रे.), उपस्था (प्रे.) ।
—होना, क्रि. अ., सज्जीभू, सन्नह् (दि. उ. अ.) उद्यत-सन्नद्ध (वि.) भू ।
तैयारी, सं. स्त्री. (फ़ा. तैयार) सज्जता, सन्नद्धता, उद्यतता २. सिद्धिः-उपस्थितिः (स्त्री.) ३. आडम्बरः, श्रीः, शोभा ।
तैरना, क्रि. स. (सं. तरणं) पारं गम् (भ्वा. प. अ.), सं-, तॄ (भ्वा. प. से., द्वितीया के साथ) । क्रि. अ., तॄ, प्लु (भ्वा. आ. अ.) ।
तैराक, सं. पुं. (हिं. तैरना) तारकः, तरितृ, तरण-प्लवन,-कृत् (पुं.) ।
तैराकी, सं. पुं. (हिं. तैराक) तरः, तरणं, प्लवः, प्लवनम् ।
तैल, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'तेल' ।
तैश, सं. पुं. (अ.) कोपः, क्रोधः ।
तैसा, वि. (सं. तादृश) दे. 'वैसा' ।
तोंद, सं. स्त्री. (सं. तुंद) पिचिण्डः, लम्बोदरम् ।
—निकलना, सं. पुं., तुन्दप्रसारः, तुन्दिकता, तुन्दिलता ।
तोंद(दै)ल, वि. (हिं. तोंद) तुंदिक, तुंदित, तुंदिभ, तुंदिल, तुंदिन्, पिचिंडिल, लम्बोदर ।
तोंदी, सं. स्त्री. [सं. तुण्डिः (स्त्री.)] तुन्दः-दी, दे. 'नाभि' ।
तो, तौ, अव्य. (सं. तद् >) तस्यां दशायां-स्थितौ (सप्तमी), तर्हि, तदा, तदानीम् ।
—भी, अव्य., दे. 'तथापि' ।
तोड़ना, क्रि स. (सं. त्रोटनं) त्रुट् (प्रे.), खंड् (चु.), भंज् (रु. प. अ.) २. भिद्-छिद् (रु. प. अ.), दॄ-शॄ (क्र्. प. से.) ३. अव-सं,-चि (स्वा. उ. अ.), आदा (जु. आ. अ.), ग्रह् (क्र्. प. से.) ४. नश्-ध्वंस् (प्रे.) ५. स्वपक्षं ग्रह् (प्रे.). स्वपक्षपातिनं विधा (जु. उ. अ.)

६. नाणकानि परिवृत (प्रे.) *त्रुट् (प्रे.)। सं. पुं., त्रोटनं, भंजनं, भेदनं, अव-सं,-चयनं, नाशः, ध्वंसः इ.।

तोड़नेवाला, सं. पुं., त्रोटकः, भञ्जकः, भेदकः, अवचायकः, नाशकः इ.।

टूटा हुआ, वि., त्रुटित, भग्न, भिन्न, ध्वस्त इ.।

तोड़ा, सं. पुं. (हिं. तोड़ना) नाणक-मुद्रा,-कोशः-कोपः २. धन,-कोपः-ग्रन्थिः (पुं.) ३. सुवर्ण-रजत,-अन्दुः-अन्दूः (दोनों स्त्री.) ४. तटः-टं-टी ५. हानिः (स्त्री.), अपचयः ६. रज्जु,-खण्डः-डम्।

तोतलाना, क्रि. अ., दे. 'तुतलाना'।

तोता, सं. पुं. (फ़ा.) कीरः, शुकः,वक्र,-तुण्डः-चंचुः (पुं.), किंकिरातः। (स्त्री., कीरी, शुकी इ.)।

—चश्म, सं. पुं. (फ़ा.) विश्वासघातकः, अप्रत्ययिन्, अविश्वासिन्।

—चश्मी, सं. स्त्री. (फ़ा.) अविश्वासः, अप्रत्ययः।

तोते की सी आँख फेरना, मु., नितांतं उपेक्ष् (भ्वा. आ. से)-उदास् (अ. आ. से.)।

हाथों के तोते उड़ जाना, मु., अत्याकुली-जडी भू, सं-न्या-मुह् (दि. प. वे.)।

तोप, सं. स्त्री. (तु.) शतघ्नी, अग्न्यस्त्रं, *तोपम्।

—खाना, सं. स्त्री. (तु.+फ़ा.) शतघ्नीशाला २. अग्न्यस्त्र-शतघ्नी-,समूहः।

तोपची, सं. पुं. (तु. तोप) दे. 'गोलंदाज़'।

तोबड़ा, सं. पुं. [फ़ा. तो (तु) बरा] *अश्वान्न-भस्त्रा।

तोबा, सं. स्त्री. (अ. तौबः) पापानावृत्तिप्रतिज्ञा, पश्चात्तापः।

तोम, सं. पुं (सं. स्तोमः) चयः, निकरः, पुंजः, संभारः।

तोमर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) भल्लसदृशं प्राचीनास्त्रम् २-३. द्वादशमात्रा-नववर्ण,-च्छन्दस् (न.)-वृत्तम् ४. राजपुत्रवंशविशेषः।

तोय, सं. पुं. (सं. न.) जलं, पानीयम्।

—कर्म, सं. पुं. (सं.-र्मन् न.) तर्पणम् दे०।

—क्रीडा, सं. स्त्री. (सं.) जलक्रीडा।

—द, सं. पुं. (सं.) जलदः, नीरदः, अंभोदः।

—धि, निधि, सं. पुं. (सं) जलधिः, वारिधिः, समुद्रः।

तोरई, सं. स्त्री., दे. 'तुरई'।

तोरण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) बहिर्द्वारं २. वंदनमाला ३. ग्रीवा।

तोल, सं. पुं. (सं.) भारः, गुरुत्वं २. भार-मानं, माडः, मात्रं, परिमाणं ३. तोलनं, भार-मानं, मस्तिः (स्त्री.)।

तोलन, सं. पुं. (सं. न.) तुलया भार,-मानं-मापनं २. उत्थापनम्।

तोलना, क्रि. स. (सं. तोलनं) तुल् (चु.), तूल् (भ्वा. प. से.), तुलायां धृ (चु.)। सं. पुं., दे. 'तोल'।

तोलनेवाला, सं. पुं., तोलकः, भारमातृ(पुं.)।

तोलवाना, क्रि. प्रे., व. 'तोलना' के प्रे. रूप।

तोला, सं. पुं. (सं. तोलः-लं) तोलकः-कं,-षण्णवतिरक्तिपरिमाणं, कोलं, वटकं, कर्षार्द्धम्।

तोशक, सं. स्त्री. (तु.) तूला, तूलिका।

तोष, सं. पुं. (सं.) तृप्तिः-तुष्टिः (स्त्री.), संतोषः २. प्रसन्नता, आनन्दः।

तोहफ़ा, सं. पुं. (अ.) उपहारः, उपायनं, उपदा, उपग्राह्यम्। वि., उत्कृष्ट, उत्तम।

तोहमत, सं. स्त्री. (अ.) मिथ्याभियोगः, मृषा-दोषारोपः।

—लगाना, क्रि. स. मिथ्या दुष् (प्रे. दूषयति), मृषा अभियुज् (रु. आ. अ.; चु.)।

तौर, सं. पुं. (अ.) आचारः, व्यवहारः २. दशा, अवस्था ३. प्रकारः,-विधा (समासांत में)।

—तरीका, सं. पुं. (अ.) शिष्टाचारः २. आचरणम्।

तौल, सं. पुं., दे. 'तोल'।

तौलना, क्रि स., दे. 'तोलना'।

तौलिया, सं. पुं. (अं. टावेल) मार्जनवस्त्रं, वरकम्।

तौहीन, सं. स्त्री. (अ.) अपमानः, निरादरः, अवमानना, अवज्ञा।

त्यक्त, वि. (सं.) विसृष्ट, उज्झित, अपास्त।

त्याग, सं. पुं. (सं.) उत्सर्गः, मोचनं, अपासनं, उज्झनं, हानं २. विरक्तिः (स्त्री.), वैराग्यं, संन्यासः ३. दे. 'तलाक'।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) उत्सर्गलेखः।

त्यागना, क्रि. स. (सं. त्यागः) त्यज् (भ्वा.

प. अ.), उत्सृज् (तु. प. अ.), उज्झ् (तु. प. से.), रह्-वर्ज् (चु.), दे. 'छोड़ना'। सं. पुं., दे. 'त्याग'।

त्यागने योग्य, वि., त्याज्य, त्यक्तव्य, हेय, परिहार्य, उत्स्रष्टव्य।

त्यागनेवाला, सं. पुं., त्यक्तृ, उत्स्रष्टृ (पुं.), उज्झकः।

त्यागा हुआ, वि., दे. 'त्यक्त'।

त्यागी, सं. पुं. (सं.-गिन्) त्यक्तसंगः, संन्यासिन्, विरक्तः, वैराग्यवत्।

त्याज्य, वि. (सं.) दे. 'त्यागने योग्य'।

त्यों, क्रि. वि. (सं. तद्+एवं >) तथा, एवं, तद्वत्, एवंविधम्।

ज्यों—, क्रि. वि., यथा. . .तथा।

—ही, क्रि. वि., तत्क्षणं-णे।

त्योरी, सं. स्त्री. (सं. त्रिकूटः>) कोपदृष्टिः (स्त्री.), क्रोधवीक्षितं २. नयन-दृष्टि-दृक्,-पातः।

त्यो(त्यौ)हार, सं. पुं., दे. 'तिहवार'।

त्यो(त्यौ)हारी, सं. स्त्री. (हिं. त्योहार) पार्वण,-उपायनं-दानम्।

त्रसरेणु, सं. पुं. (सं.) ध्वंसिन्, द्व्यणुकत्रयात्मकरेणुः (पुं.) २. त्रिंशत्परमाणुपरिमाणम्।

त्रसित, त्रस्त, वि. (सं. त्रस्त) भीत, सभय, भयार्त, ससाध्वस, भयाविष्ट।

त्राण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'रक्षा'।

त्रात, वि. (सं.) त्राण, गुप्त, गोपायित, पात, अवित, रक्षित।

त्रातव्य, वि. (सं.) त्राणार्ह, रक्षणीय, पातव्य।

त्राता, सं. पुं. [सं.-तृ (पुं.)] दे. 'रक्षक'।

त्रास, सं. पुं. (सं.) भयं, भीतिः (स्त्री.) २. कष्टम्।

त्रासक, सं. पुं. (सं.) भयंकरः, भयावहः, भयानकः, भयजनकः, त्रासयितृ।

त्रासित, वि. (सं.) भीषित, तर्जित, ससाध्वस, दर्शित, भयातुर।

त्राहि, अव्य. (सं. लोट्) पाहि, रक्ष, शरणं देहि।

—त्राहि करना, मु., रक्षार्थं असकृत् प्रार्थ् (चु. आ. से.)।

त्रिक, सं. पुं. (सं. न.) त्रितयं, त्रयं-यी।

त्रिकाल, सं. पुं. (सं. न.) कालत्रयं-यी, भूतवर्तमानभविष्यत्कालाः २. वेलात्रयं-यी (प्रातः, मध्याह्नः,सायं)। अव्य., त्रिः(अव्य.), त्रिवारम्।

—ज्ञ, वि. (सं.) त्रिकाल,-वेत्तृ-विद्, सर्वज्ञ। सं. पुं., ईश्वरः २. बुद्धः।

—दर्शी, सं. पुं. (सं.-र्शिन्) ईश्वरः २. ऋषिः (पुं.)।

त्रिकुटा, सं. पुं. [सं. त्रिकटु (न.)] त्र्युषणम्, व्योषम्, कटु,-त्रयं-त्रिकं, मिश्रितशुंठीमरीचपिप्पल्यः (स्त्री. बहु.)।

त्रिगुण, सं. पुं. (सं. न.) गुण,-त्रयं-त्रिकं, सत्त्वरजस्तमांसि (न. बहु.)।

त्रितय, सं. पुं. (सं. न.) त्रिकं, त्रयं-यी २. धर्मार्थकामाः (पुं. बहु.)।

त्रिदोष, सं. पुं. (सं. न.) वातपित्तकफरूपं दोषत्रयम्।

त्रिपथगा, सं. स्त्री. (सं) गंगा, भागीरथी।

त्रिपाठी, सं. पुं. (सं.-ठिन्) दे. 'त्रिवेदी'।

त्रिपुंड्र, सं. पुं. (सं. न.) भस्मादिकृतं कपालस्थतिर्यग्रेखात्रयं, त्रिपुंड्रकम्।

त्रिपुर, सं. पुं. (सं. न.) मयदानवनिर्मितं पुरत्रयं २. लोकत्रयी, त्रिलोकी ३. बाणासुरः ४. चंदेरीनगरम्।

—अरि, सं. पुं. (सं.) त्रिपुरांतकः, शिवः।

त्रिफला, सं. पुं. (सं. स्त्री.) फल,-त्रिकं-त्रयं, मिलितहरीतकीबिभीतकामलकीफलानि (न. बहु.)।

त्रिभुज, सं. पुं. (सं.) दे. 'तिकोन'।

त्रिभुवन, सं. पुं.(सं. न.) त्रिलोकी, लोकत्रयम्। स्वर्गः पृथिवी पातालं च।

त्रिमूर्ति, सं. पुं. (सं.) ब्रह्माविष्णुशिवनामकमूर्तित्रयवत् (पुं.)।

त्रियामा, सं. स्त्री. (सं.) रात्री-त्रिः (स्त्री.)।

त्रिलोक, सं. पुं. (सं. न.), त्रिलोकी, लोकत्रयी, दे. 'त्रिभुवन'।

त्रिवेणी, सं. स्त्री. (सं.) प्रयागे गंगायमुनासरस्वतीनां संगमः।

त्रिवेदी, सं. पुं. (सं. त्रिवेदिन्) त्रिविद्यः, त्रिवेदः, त्रैविद्यः २. ब्राह्मणजातिभेदः।

त्रिशूल, सं. पुं. (सं. न.) त्रिशिखं, शूलं, त्रिशीर्षकम्।

त्रिष्टुभ्, सं. स्त्री, (सं.) छंदोभेदः।

त्रुटि, सं. स्त्री. (सं.) त्रुटी, न्यूनता, अपूर्णता,

वैकल्यं २. स्खलितं, भ्रांतिः (स्त्री.) ३. संदेहः, संशयः ।

त्रेता, सं. पुं. (सं.) त्रेता-द्वितीय,-युगम् ।

त्वचा, सं. स्त्री. (सं.) त्वच् (स्त्री.), चर्मन् (न.), छदिस् (स्त्री.), संछादनी, असृग्धरा २. वल्कः-कं, वल्कलः-लं, ३. त्वगिन्द्रियं ४. (साँप की) कंचुकः, निर्मोकः ।

त्वरा, सं. स्त्री. (सं.) शीघ्रता, दे. 'जल्दी' ।

त्वरित, वि. (सं.) शीघ्र, दे. 'तेज़' ।

थ

थ, देवनागरीवर्णमालायाः सप्तदशो व्यंजनवर्णः, थकारः ।

थंब-भ, सं. पुं., दे. 'स्तम्भ' ।

थई, सं. स्त्री. (सं. स्थानं) स्थलं २. राशिः (पुं.), चयः ।

थकना, क्रि. अ. (स्थग् >) परि-, श्रम् (दि. प. से.), क्लम् (भ्वा. दि. प. से.) आयस् (भ्वा. दि. प. से.) २. निर्विद् (दि.आ.अ.)।

थकान, सं. स्त्री. (हिं. थकना) आयासः, क्लमः, खेदः, श्रमः, क्लांतिः (स्त्री.), शैथिल्यम् ।

थकाना, क्रि. स., ब. 'थकना' के प्रे. रूप ।

थकामाँदा, वि., परि-, श्रांतः, क्लांतः, खिन्न, म्लान ।

थकावट, सं. स्त्री., दे. 'थकान' ।

थकित, वि., दे. 'थकामाँदा' ।

थड़ा, सं. पुं. (सं. स्थलं) वेदिका, वितर्दीः-र्दिः (स्त्री.) २. आपणिकासनं, पण्याजीव-पीठः-ठम् ।

थन, सं. पुं. (सं. स्तनः) कुचः, पयोधरः ।

थनेली, सं. स्त्री. (हिं. थन) स्तन-कुच,-गण्डः-पिटकः ।

थपकना, क्रि. स. (अनु. थपथप) करतलेन परामृश्-स्पृश् (तु. प. अ.), स्नेहेन आहन् (अ. प. अ.)-लघु प्रहृ (भ्वा. प. अ)-तड् (चु.) ।

थपकी, सं. स्त्री. (हिं थपकना) करतल-परामर्शः, मृदु-लघु-प्रेम,-आघातः-प्रहारः-चपेटः ।

थपड़ी, सं. स्त्री. (अनु०) दे० 'ताली' ।

थपेड़ा, सं. पुं. (अनु. थप) तरंग-कल्लोल-ऊर्मि-वीची,-संघट्टः-संमर्दः-अभिघातः २. दे. 'थप्पड़' ।

थप्पड़, सं. पुं. (अनु. थप) चपेटः-टिका, तल-चपेट,-आघातः-प्रहारः ।

—मारना, क्रि. स., चपेटं दा, चपेटिकया तड् (चु.)-प्रहृ (भ्वा. प. अ.)-आहन् (अ. प. अ.) ।

थम, सं. पुं, दे. 'स्तंभ' ।

थमना, क्रि. अ. (सं. स्तंभनं) विरम् (भ्वा. प. अ.), उप-प्र-शम् (दि. प. से.), रुद्धगति (वि.) भू २. विश्रम्, (दि. प. से.), निवृत् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं., उप-प्र,-शमः, विरामः, विरतिः (स्त्री.) २. निवृत्तिः-विश्रांतिः (स्त्री.), विच्छेदः ।

थरथराना, क्रि. अ. (अनु.) (भयेन) कंप्-वेप् (भ्वा. आ. से.) २. स्फुर् (तु. प. से), स्पंद् (भ्वा. आ. से.) ।

थरथराहट, **थरथरी**, } सं. स्त्री. (हिं. थरथराना) वेपनं, वेपथुः (पुं.), प्र-, कंपः-कंपनं २. स्फुरणं, स्पंदनम् ।

थर्मामीटर, सं. पुं. (अं.) दे. 'तापमानयंत्र' ।

थर्राना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'थरथराना' ।

थल, सं. पुं., दे. 'स्थल' ।

थलथलाना, क्रि. अ. (अनु. थल-थल>) अभीक्ष्णं विचल् (भ्वा. प. से.), थलथलायते (ना. धा.) ।

थवई, सं. पुं. (सं. स्थपतिः) पलगंडः, सुधा-जीविन्, लेपकः, गृह,-कारकः-संवेशकः ।

थाइरायडग्लैंड, सं. पुं. (अं.) चुल्लिकाग्रन्थिः ।

थाक, सं. पुं. (सं. स्था>) ग्रामसीमा २. राशिः (पुं.), चयः ।

थाती, सं. स्त्री. (सं. स्थातृ>) दे. 'अमानत' २. दे. 'पूँजी' ।

थान, सं. पुं. (सं. स्थानं) स्थलं, प्रदेशः २. आलयः, गृहं ३. देवालयः, मंदिरं ४. पशु,-शाला-स्थानं ५. (पटादीनां) *व्यावर्तः ।

थानक, सं. पुं. (सं. स्थानकम्) स्थानं, स्थलम् २. नगरम् ३. फेनः ४. आलवालम् ।

थाना, सं. पुं. (सं.स्थानं>) गुल्मः, रक्षा-रक्षि,-स्थानम् ।

थानेदार, सं. पुं. (हिं+फ़ा.) रक्षास्थाना-ध्यक्षः, *गुल्मनिरीक्षकः, रक्षकोपदर्शकः ।

थाप, सं. स्त्री. (सं. स्थापनं>) मृदंगादेराघातो ध्वनिः (पुं.) वा. २. चपेटः-टिका ३. अंकः, चिह्नं ४. प्रतिष्ठा, संमानः ५. शपथः ६. लघु-मृदु,-प्रहारः-आघातः ७. स्थितिः (स्त्री.)।

थापना, क्रि. स. (सं. स्थापनं) स्था (प्रे. स्थापयति), आ-नि-धा (जु. उ. अ.), न्यस् (दि. प. से.), अवरुह्-निविश् (प्रे.), कृ। सं. स्त्री., स्थापनं-ना, आ-नि,-धानं, योजना, रोपणं, २. मूर्त्यादीनां स्थापना-प्रतिष्ठापना।

थापा, सं. पुं. (हिं. थापना) करांकः, पंचांगुली-चिह्नम्।

थापी, सं. स्त्री. (हिं थापना) १-२. मृत्तिका-कुट्टिम,-ताडनमुद्गरः ३. दे. 'थपकी'।

थाम, सं. स्त्री. (हिं. थामना) आ-अव,-लम्बनम्, धारणं,उप-सं,-स्तम्भनम् २. आधारः, आलम्बः, अवष्टम्भः, आश्रयः।

थामना, क्रि. स. (सं. स्तंभनं) अव-उत्-उप-सं-स्तंभ् (क्र्. प. से. या प्रे.), अवलंबं-आलंबं दा, अव-आ-लंब् (भ्वा. आ. से.) २. अव-,स्था (प्रे.), वि-,स्तंभ्, रुध् (रु. उ. अ.), विरम् (प्रे.) ३. साहाय्यं दा ४. निरुध्।

थाल, सं. पुं. (सं. स्थालं) धातुमयभाजनभेदः।

थाला, सं. पुं. (हिं. थाल) आ (अ) लवालं, आवालं, आवापः।

थाली, सं. स्त्री. (हिं. थाल) स्थालकं, लघु-स्थालम्।

थाह, सं. स्त्री. (सं. स्था>) (नद्यादीनां) तलं-अधोभागः २. गाधं ३. गांभीर्यानुमानं ४. अंतः, सीमा।

—लेना, क्रि. स. (तलं-वेधं) परीक्ष् (भ्वा. आ. से.)-निरूप् (चु.)-मा (जु. आ. अ.)।

थिएटर, सं. पुं. (अं.) नाट्य-रंग-नाटक,-शाला-गृहं-मन्दिरं-भूमिः (स्त्री.)।

थिगली, सं. स्त्री. (हिं. टिकली) पट,-खंडः-शकलः।

बादल में—लगाना, मु., असंभवं विकीर्षति (सन्नंत)।

थियोसोफ़ी, सं. स्त्री. (अं.) ब्रह्मविद्या २. सम्प्रदायविशेषः।

थिर, वि., दे. 'स्थिर'।

थिरकना, क्रि. अ. (अनु. थिर) नृत्ये चरणौ निरन्तरं कंप्-वेप् (भ्वा. आ. से.)।

थिरता, सं. स्त्री., दे. 'स्थिरता'।

थुड़ी, सं. स्त्री. (अनु.) धिक्, शान्तम्, अवज्ञा-कुत्सा-गर्हा-अवहेला,-शब्दः।

—थुड़ी करना, मु०, अव-ज्ञा (क्र्या. प. से.), दे. 'धिक्कारना'।

—थुड़ी होना, मु० ब० 'धिक्कारना' के कर्म० के रूप।

थुथनी, सं. स्त्री., दे. 'थूथनी'।

थूक, सं. स्त्री. (हिं. थूकना) मुखस्रावः, लाला, ष्ठीवनं, नि-,ष्ठ्यूतम्।

—की गिलटी, सं. स्त्री., लालाग्रन्थिः (पुं.)।

—कर चाटना, मु., प्रतिज्ञां भंज् (रु. प. अ.), वचनं व्यतिक्रम् (भ्वा. प. से.)।

थूकना, क्रि. स. (अनु. थू) नि-,ष्ठिव् (भ्वा. दि. प. से, ष्ठीवति, ष्ठीव्यति), लालां निःसृ (प्रे.), सं. पुं.,नि-,ष्ठीवः-वनं, निष्ठ्यूतिः (स्त्री.)।

थूथनी, सं. स्त्री. (देश. थूथन) प्रलंबमुखं, लंबास्यम्।

थूनी, सं. स्त्री. (सं. स्थूणा) स्थाणु (पुं.), स्तंभः, अवष्टंभः।

थूहर, सं. पुं. (सं. स्थूणा>) नेत्रारिः (पुं.), निस्त्रिंशपत्रिका, स्नुही-हिः (स्त्री.), वज्रिन, वज्र,-द्रुः-द्रुमः-कण्टकः, सिंहतुण्डः, सीहुण्डः।

थेवा, सं. पुं. (देश.) दे. 'नगीना'।

थैला, सं. पुं. (सं. स्थलम्>)प्रसेवः, स्यूतः-नः, पुटः-टं, स्योतः-नः, धौतकटः।

थैली, सं. स्त्री. (हिं. थैला) प्रसेवकः, स्यू(स्यो)-तकः, पुटकः।

थोक, सं. पुं. (सं. स्तवकः) राशिः (पुं.), चयः २. संघः, गणः।

—फ़िरोश,-दार, सं. पुं. (हिं.+फ़ा.) चय-स्तूप,-विक्रयिन्।

थोड़ा, वि. (सं. स्तोक) न्यून, अल्प, स्वल्प, अणुक-अल्प-क्षुद्र-लघु,-परिमाण-मात्र, ईषत्।

—करना, क्रि. स., लघयति (ना. धा.), अल्पी-न्यूनी कृ, ह्रस् (प्रे.)।

—होना, क्रि. अ., अल्पी-न्यूनी-लघू भू, क्षि-अपचि (कर्म.)। क्रि. वि., स्तोकं, मनाक्, ईषत्, यत्-,किंचित्।

—थोड़ा, क्रि,वि., अल्पशः,अल्पाल्पं, स्तोकशः।

—बहुत, वि., न्यूनाधिक।

—सा, क्रि. वि., दे. 'थोड़ा' क्रि. वि.।

थोड़े से, वि., कतिचित्, कतिपयाः, स्तोकाः ।
थोथा, वि. (देश.) रिक्त-शून्य,-गर्भ-मध्य-उदर, सुषिर २. कुंठित, अनिशित ३. निःसार, निर्गुण ४. निरर्थक, निष्प्रयोजन ।
थोपना, क्रि. स. (सं. स्थापनं) अनु-प्र-वि-लिप् (तु. प. अ.), दिह् (अ. उ. अ.) २. राशी-पिंडी कृ, समाक्षिप् (तु. प. अ.) ३. दुष् (प्रे.), दोषं आरुह् (प्रे. आरोपयति)-क्षिप् ।

द

द, देवनागरीवर्णमालाया अष्टादशो व्यंजनवर्णः, दकारः ।
दंग, वि. (फ़ा.) चकित, विस्मित, स्तब्ध ।
दंगई, वि. (हिं. दंगा) उपद्रविन्, कलहप्रिय २. उग्र, प्रचंड ।
दंगल, सं. पुं. (फ़ा.) मल्ल-बाहु-हस्ताहस्ति,-युद्धं, मल्लक्रीडा २. मल्ल,-भूः-भूमिः (दोनों स्त्री.) ३. जनौघः, लोकसमूहः ।
दंगा, सं. पुं. (फ़ा दंगल) कलहः, उपद्रवः २. कलकलः, कोलाहलः ।
दंड, सं. पुं. (सं.) दे. 'डंड' ।
दंडधर, सं. पुं. (सं.) यमराजः, दंडपाणिः २. नृपः, शासकः ३. परिव्राजकः, सन्न्यासिन् ।
दंडनीय, वि. (सं.) दंड्य, दंडयितव्य, दमनीय ।
दंडवत्, सं. पुं. स्त्री. (सं. अव्य.) साष्टांग,-प्रणामः-नमस्कारः ।
दंडी, सं. पुं. (सं.-डिन्) दंडधरः परिव्राजकः २. यमः ३. नृपः ४. दौवारिकः ५. दंडधारी मनुष्यः ६. संस्कृतकविविशेषः ।
दंत, सं. पुं. (सं.) दशनः, रदः, रदनः, दे. 'दाँत' ।
—कथा, सं. स्त्री. (सं.) लोक-पारंपरीय,-कथा, पारंपर्यं, लोक-जन,-श्रुतिः (स्त्री.) ।
—च्छद, सं. पुं. (सं.) ओष्ठः, रदनच्छदः ।
—धावन, सं. पुं. (सं. न.) दंत,-काष्ठं-मार्जनम् ।
दंती,[1] सं. स्त्री. (सं.) एरंडपत्रिका, रेचनी, विशोधनी ।
दंती,[2] सं. पुं. (सं.-तिन्) गजः, द्विपः ।
दँतुला, वि. (सं. दंतुल) दंतुर, दंतुरित, उन्नतदंत ।
दंतोष्ठ्य, वि. (सं.) दन्तौष्ठैरुच्चार्यवर्णः (उ, व्) ।
दंत्य, वि. (सं.) रदनविषयक २. दंतोच्चार्य (तवर्गादि) ।
दंदनाना, क्रि. अ. (अनु.)दनदनायते(ना. धा.), रम् (भ्वा. आ. अ.), नंद् (भ्वा. प. से.) ।
दंदान, सं. पुं. (फा.) दन्तः, दशनः, रदनः ।
—साज़, सं. पुं., दन्तकारः, दन्तचिकित्सकः ।
दंदाना, सं. पुं. (फ़ा.) दंतः, छेदः ।
दंदानेदार, वि. (फ़ा.) दंतुर, दंतुरित, अनुक्रकच ।
दंपती—ति, सं. पुं. (सं. दंपती पुं. द्वि.) जं-जाया-भार्या,-पती (पुं. द्वि.) ।
दंभ, सं. पुं. (सं.) कपटः-टं, कापट्यं, आर्य-रूपता, लिंगवृत्तिः (स्त्री.), आडंबरः, वक्रव्रतं, धर्मोपधा, दांभिकता, छाद्मिकता २. अभि-मानः, दर्पः ।
दंभी, वि. (सं.-भिन्) कपटिन्, कापटिक-छाद्मिक-दांभिक [-की (स्त्री.)], कपट-, छद्म- २. अभिमानिन्, साडंबर ।
दंभोलि, सं. पुं. (सं.) इन्द्रवज्रः-ज्रम् २. हीरः-रम् ।
दंश, सं. पुं. (सं.) दे. 'डाँस'[1] २. दे. 'डंक' (१-२) ३. दंतः, रदनः ।
दई, सं. पुं. (सं. दैवं) ईश्वरः २. अदृष्टं, भाग्यम् ।
—मारा, वि., मंद-हत,-भाग्य ।
दक़ीक़ा, सं. पुं. (अ.) युक्तिः (स्त्री.), उपायः । कोई—बाकी न रखना, मु., सर्वोपायान्-समस्त युक्तीः प्रयुज् (रु. आ. अ., चु.) ।
दक्खिन, सं. पुं., दे. 'दक्षिण' ।
दक्ष, वि. (सं.) कुशल, निपुण, चतुर, प्रवीण, विदग्ध, विशेषज्ञ । सं. पुं., ब्रह्मपुत्रः, शिव-श्वशुरः, सतीपितृ ।
दक्षता, सं. स्त्री. (सं.) कौशलं, नैपुण्यं, चातुर्यं, प्रावीण्यं, वैदग्ध्यं, पाटवम् ।
दक्षिण, वि. (सं.) अपसव्य, सव्येतर, वामेतर २. दक्ष, निपुण । सं. पुं., दक्षिण,-आशा-दिशा-दिश् (स्त्री.), दक्षिणा, वैवस्वती, यामी, अवाची २. दक्षिणापथः, दक्षिणः-णं ३. दक्षिण,-पार्श्वः-र्श्वं ४. नायकभेदः ।
—पूर्व, सं. पुं, आग्नेयी, दक्षिणपूर्वा । वि., आग्नेय, दक्षिणपूर्व ।

—पश्चिम, सं. पुं., नैर्ऋती, दक्षिणपश्चिमा। वि., नैर्ऋत, दक्षिणपश्चिम।

दक्षिणा, सं. स्त्री. (सं.) यज्ञादिविधिदानं, पौरोहित्यशुल्कः-कं २. दानं, त्यागः, उत्सर्गः।

दक्षिणायन, सं. पुं. (सं. न.) भानोर्दक्षिणा गतिः (स्त्री.)।

—सूर्य, सं. पुं. (सं.) मकरसंक्रांतिः (स्त्री.)।

दक्षिणी, वि. (सं. दक्षिण>) द (दा) क्षिण, दाक्षिणात्य, अवाचीन, अवाच्य, याम्य, आगस्त्य।

दख़ल, सं. पुं. (अ.) अधिकारः, स्वामित्वं २. हस्तक्षेपः, परकार्यचर्चा ३. प्रवेशः, उपगमः।

—देना, क्रि. स., परकार्याणि निरुप् (चु.)-चर्च् (चु. आ. से.), परकर्मसु व्यापृ (तु. आ. अ.), मध्ये पत् (भ्वा. प. से)।

दग़ना, क्रि. अ., व. 'दाग़ना' के कर्म. के रूप।

दग़ा, सं. स्त्री. (अ.) छलं, कपटं, वंचनं, प्रतारणा २. विश्वासघातः।

—करना या देना, क्रि. स., प्रतॄ-प्रलुभ्-भ्रम्-मुह् (प्रे.), वंच् (चु.)।

—दार,-बाज़, वि. (अ.+फ़ा.) कितवः, प्रतारकः, वंचकः, शठः, विश्वासघातिन्, छलिन्, कापटिक।

—बाज़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) वंचकता, कैतवं २. विश्वासघातकता।

दग्ध, वि. (सं.) ज्वलित, भस्मीभूत, भस्मसात् कृत २. दुःखित, व्यथित।

दढ़ियल, वि., दे. 'डढ़ियल'।

दतवन, दतौन, सं. स्त्री., दे. 'दातुन'।

दत्त, वि. (सं.) विसृष्ट, विश्राणित, अर्पित।

दत्तक, सं. पुं. (सं.) कृतकः पुत्रः, दत्रिमः सुतः, दत्तकपुत्रः।

दत्तचित्त, वि. (सं.) अवहित, समाहित, अभिनिविष्ट, एकाग्र, अनन्यवृत्ति।

ददिहाल, सं. पुं. (हिं. दादा+सं. आलयः) पितामहालयः २. पितामह,-कुलं-वंशः।

दद्रु, सं. पुं. (सं.) दर्द्रुः-र्द्रूः, दद्रुः, दद्रुरोगः, मंडलकुष्ठम्।

दधि, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दही'।

—जात, सं. पुं. (सं.) चंद्रः, सोमः।

दधीचि, सं. पुं. (सं.) मुनिविशेषः।

दनदनाना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'दंदनाना'।

दनादन, क्रि. वि. (अनु.) सदनदनशब्दं २. अनुक्रमेण, यथाक्रमम्।

दनुज, सं. पुं. (सं.) असुरः, राक्षसः।

दफ़ती, सं. स्त्री. (अ. दफ्तीन) दे. 'गत्ता'।

दफ़न, सं. पुं. (अ.) निखननं २. श्मशाने स्थापनम्।

—करना, क्रि. स., श्मशाने-प्रेतभूमौ निधा (जु. उ. अ.)-स्था (प्रे.)-निक्षिप् (तु. प. अ.) २. निखन् (भ्वा. प. से,), निगुह् (भ्वा. उ. से.)।

दफ़ा, सं. स्त्री. (अ. दफ़अः) दे. 'बार' २. विधान-, धारा। वि., अपसारित, दूरीकृत, निष्कासित, वि-, चालित।

दफ़्तर, सं. पुं. (फ़ा.) कार्यालयः २. बृहत्पत्रं ३. सविस्तरवृत्तांतः।

दफ़्तरी, सं. पुं. (फ़ा.) पत्रसंयोजकः २. दे. 'जिल्दसाज़'। वि., कार्यालयसंबंधिन्।

दबंग, वि. (हिं. दबाना) प्रभाव,-वत्-शालिन्, अनुभाववत्, प्रतापिन्, प्रबल।

दबकना, क्रि. अ. (हिं. दबाना) (भयेन) गुप्-गुह् (कर्म.), गुप्त-निलीन (वि.) भू, निली (दि. आ. अ.) २. परावस्कंदनार्थं निभृतं स्था (भ्वा. प. अ.) ३. देहं नम् (प्रे.), नम्रीभू।

दबकाना, क्रि. स. व. 'दबकना' के प्रे. रूप २. दे. 'डाँटना'।

दबदबा, सं. पुं. (अ.) आतंकः, प्रतापः, अनुभावः, प्रभावः, तेजस् (न.), प्रौढिः (स्त्री.)।

दबना, क्रि. अ. (सं. दमनं>) [भ (भा) रेण] अव-आ-नम् (भ्वा. प. अ.) अथवा नम्री-वक्री,-भू २. संकुच्-संपिंड्-संहृ (कर्म.) ३. पीड्-क्लिश् (कर्म.) ४. निखन्-निगुह् (कर्म.) ५. प्रच्छन्न-गुप्त-निलीन (वि.) भू ६. वशं इ-या (अ. प. अ.), वशीभू ७. आक्रम्-निष्पिष्-संमृद् (कर्म.) ८. भी (जु. प. अ.), त्रस् (दि. प. से.)।

दबे पाँव (चलना), मु., अपादशब्दं नीरवं-निभृतं चल् (भ्वा. प. से.)।

दबाना, क्रि. स., व. 'दबना' के प्रे. रूप।

दबा लेना, मु., अन्यायेन ग्रह् (क्र्. प. से.) आत्मसात्कृ।

दबाव, सं. पुं. (हिं. दबाना) अतिभारः, निर्बंधः, पीडनं २. अनुभावः, प्रतापः ।

दबैल, वि. (हिं. दबना) कातर, भीरु, ससाध्वस, त्रस्त ।

दबोचना, क्रि. स. (हिं. दबाना) बलेन-सहसा अभिद्रु (भ्वा. प. अ.), आक्रम् (भ्वा. प. से., आ. अ.)-ग्रह् (क्र्. प. से.)-धृ (चु.) । सं. पुं., सहसा ग्रहणं-धरणं-आक्रमणं इ. ।

दबौनी, सं. स्त्री. (हिं. दबाना) *पत्रदमनी २. कांस्यकाराणामुपकरणभेदः ।

दभ्र, वि. (सं.) स्वल्प, स्तोक २. सूक्ष्म, कृश । सं. पुं., समुद्रः ।

दम, सं. पुं. (सं.) आत्मसंयमः, इन्द्रिय,-जयः-निग्रहः, दांतिः (स्त्री.), दमथः-थुः (पुं.), २. दंडः, शासनं, निग्रहः ३. गृहं ४. कर्दमः ।

दम, सं. पुं. (फ़ा.), प्र-नि-, श्वासः, उच्छ्वासः, उच्छ्वसितं २. असवः-प्राणाः (पुं. बहु.), जीवनं, जीवितं ३. फूत्कारः, फूत्कृतं, धूमाकर्षः ४. पलं, क्षणः, निमि (मे) पः ५. व्यक्तित्वं ६. अभिमानः, दर्पः ७. छलं, कपटं ८. वाष्पेण पाचनम् ।

—दिलासा, सं. पुं., मोघाशा, सांत्वनं, आश्वासनम् ।

—बदम, क्रि. वि. अनु-प्रति,-क्षणं-पलं-निमिषं, क्षणे क्षणे, पले पले ।

—चढ़ना, मु., कष्टेन-सत्वरं श्वस् (अ. प. से.) कृच्छ्रेण-दीर्घं निःश्वस् ।

—निकलना, मु., दे. 'मरना' ।

—भर में, मु., क्षणेन, क्षण-निमेष,-मात्रेण, झटिति, सद्य एव ।

—में दम आना, मु., चेतनां-संज्ञां लभ् (भ्वा. आ. अ.) ।

—लगाना, मु., तमाखुं-धूमं पा (भ्वा. प. अ.)।

—लेना, मु., विश्रम् (दि. प. से), उद्योगात् विरम् (भ्वा. प. अ.) ।

—साधना, मु., प्राणान् रुध् (रु. प. अ.) ।

—नाक में आना, अत्यन्तं तप्-क्लिश्-पीड् (कर्म.)-खिद् (दि. आ. अ.) ।

दमक, सं. स्त्री. (हिं. चमक का अनु.) दे. 'चमक' ।

दमकना, क्रि. अ., दे. 'चमकना' ।

दमकल, सं. स्त्री. (हिं. दम+कल) *श्वासयंत्रम् २. अग्नियंत्रं (फ़ायर इंजन) ३. जलोत्तोलनयंत्रम् ।

दमकला, सं. पुं. (हिं. दमकल) *जपासेचनी ।

दमड़ी, सं. स्त्री. (सं. द्रम्मम् >) काकिनी-णी, काकिणिका, बोद्री, पण,-पादः-अष्टमभागः ।

दमदमा, सं. पुं. (फ़ा.) सिकतिलप्रसेवगुप्तिः (स्त्री.) (हिं. मोरचा) ।

दमन, सं. पुं. (सं. न.) अभिभवः, वि-, जयः निरोधनं, नियमनं, वशी-स्वायत्ती,-करणं, (२-३) दे. 'दम' (१-२) ।

दमनीय, वि. (सं.) वश्यः-श्या-श्यम्, निग्रहणीयः-या-यम्, संयमनीयः-या-यम् ।

दमयंती, सं. स्त्री. (सं.) भैमी, वैदर्भी, नलपत्नी ।

दमा, सं. पुं. (फ़ा.) श्वासरोगः, कृच्छ्रोच्छ्वासः, तमकः, तमकश्वासः ।

दमादम, क्रि. वि. (अनु०) सदम-दमशब्दम् २. निरन्तरं, सततम् ।

दमामा, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'नक्कारा' ।

दमित, वि. (सं०) संयमितः-ता-तम्, नियमितः-ता-तम्, शासितः-ता-तम्, निरुद्धः-द्धा-द्धम् ।

दया, सं. स्त्री. (सं.) अनुकंपा, अनुग्रहः, कृपा, प्रसादः, करुणा, हितेच्छा ।

—निधान / **—निधि** / **—मय** } वि., परमदयालु, परमकृपालु, परमकारुणिक; सं. पुं., ईश्वरः ।

—पात्र, वि. (सं. न.) दयनीय, अनुकंप्य, करुणार्ह ।

दयानतदार, वि. (अ. दयानत+फ़ा. दार) शुचि, सरल, ऋजु, शुद्धात्मन्, निष्कपट, अर्थशुचि ।

दयानतदारी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा) शुचिता, अर्थशौचं, आर्जवं, सत्यता, निष्कपटता ।

दयालु, वि. (सं.) दयित्नु, दयाशील, दयार्द्र, कृपालु, कारुणिक, अनुकम्पक, सदय, दयावत् ।

दयालुता, सं. स्त्री. (सं.) कृपालुता, दयाशीलता, दे. 'दया' ।

दर[1], सं. स्त्री. पुं., दे. 'निर्ख़' ।

दर[2], सं. पुं. (फ़ा.) द्वारं, द्वार् (स्त्री.), प्रति-(ती) हारः ।

—बदर, क्रि. वि., गृहाद् गृहं, द्वारे द्वारे, अनुद्वारम् ।

—बदर फिरना, मु०, दारिद्र्येण परिभ्रम् (भ्वा. प. से.)।

दरकना, क्रि. अ. (सं. दरः>) भंज्-विद्-विभिद् (कर्म.), स्फुट् (तु. प. से.), विदल् (भ्वा. प. से.)।

दरकाना, क्रि. स., व. 'दरकना' के प्रे. रूप ।

दरकार, वि. (फ़ा.) अपेक्षित, आकांक्षित, आवश्यक ।

दरकिनार, क्रि. वि., (फ़ा.) दूरे आस्ताम्, पृथक् तिष्ठतु, का कथा ।

दरख्त, सं. पुं. (फ़ा.) वृक्षः, तरुः ।

दरख्वास्त, सं. स्त्री. (फ़ा.) निवेदनं २. निवेदनपत्रम् ।

दरगाह, सं. स्त्री. (फ़ा.) देहली २. न्यायालयः ३. (मृतस्य) समाधिः (पुं.) ४. मन्दिरं, देवालयः ।

दरज, सं. स्त्री., दे. 'दरार' ।

दरद, सं. पुं., दे. 'दर्द' ।

दरदरा, वि. (सं. दरणं>) अर्द्धचूर्णित, सामिपिष्ट ।

दरवा, सं. पुं. (फ़ा. दर) विटंकः, कपोतपालिका २. कपोतबिलम् ।

दरबान, सं. पुं. (फ़ा. । मि. सं., द्वारवान्) द्वारपालः, दौवारिकः ।

दरबानी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दौवारिकता, द्वारस्थता ।

दरबार, सं. पुं. (फ़ा.) राज,-सभा-कुलं, आस्थानं-नी २. अधिकरणं, न्याय-धर्म,-सभा, व्यवहारमंडपः ।

दरबारी, सं. पुं. (फ़ा.) राजसभासद् (पुं.), सभ्यः, सभिकः, राजवल्लभः, आस्थानचरः ।

दरमियान, स. पुं. तथा क्रि. वि., दे. 'मध्य' ।

दरमियानी, वि. (फ़ा.) दे. 'मध्यम' ।

दरयाफ्त, वि., दे. 'दरियाफ़्त' ।

दरवाज़ा, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'दर' २. दे. 'किवाड़' ।

दरवेश, सं. पुं. (फ़ा.) साधुः (पुं.), सन्न्यासिन्, भिक्षुः (पुं.)।

दरस, सं. पुं. (सं. दर्शः) दर्शनं, वीक्षणं २. सं,-आगमः-मिलनं ३. सौन्दर्यम् ।

दराँती, सं. स्त्री. (सं. दात्रं) लवित्रं, शस्यकर्तनी, खडगीकम् ।

दराज़[1], सं. स्त्री. (अं. ड्राअर) चलसंपुटः, निष्कर्षणी ।

दराज़[2], वि. (फ़ा.) दीर्घ, लम्ब ।

दरार, सं. स्त्री. (सं. दरः-रं) छेदः, भेदः, स्फोटः, भिदा, भंगः ।

दरिंदा, सं. पुं. (फ़ा.) श्वापदः, हिंस्र-घातुक-पिशिताश,-पशुः (पुं.)-जीवः ।

दरिद्र-द्री, वि. (सं. दरिद्र) अधन, निर्धन, अकिंचन, निःस्व, अर्थ-धन-द्रव्य-विभव,-हीन, दीन, दुर्गत ।

दरिद्रता, सं. स्त्री. (सं.) दारिद्र्यं, निर्धनता, अकिंचनता, दुर्गतिः (स्त्री.) इ. ।

दरिया, सं. पुं. (फ़ा.) नदी, सरित् (स्त्री.) २. सागरः ।

—दिल, वि. (फ़ा.) उदार, दानशील, वदान्य २. महानुभाव, उदारचेतस् ।

दरियाई घोड़ा, सं. पुं. (फ़ा.+हिं.) करियादस् (न.), नदीघोटः-टकः ।

दरियाफ़्त, वि. (फ़ा.) ज्ञात, विदित । सं. स्त्री., आविष्कारः ।

दरी[1], सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गुफा' ।

दरी[2], सं. स्त्री. (सं. स्तरः>) कुथः-था, आस्तरणं, परिस्तोमः ।

दरीचा, सं. पुं. (फ़ा.) वातायनं २. द्वारकम् ।

दरीबा, सं. पुं., (फ़ा.) ताम्बूलापणः, ताम्बूलपर्णहट्टः, २. हट्टः, विपणी-णिः (स्त्री.)।

दरेग़, सं. पुं. (फ़ा.) अरुचिः (स्त्री.), विमुखता ।

दर्ज, वि. (फ़ा.) लिखित, लेख्ये निवेशित ।

—करना, क्रि. स., लिख् (तु. प. से.), लेख्ये निविश् (प्रे.)।

दर्जन, सं. पुं. (अं. डज़न) द्वादशकं, द्वादशसमूहः ।

दर्जा, सं. पुं. (अ.) श्रेणी-णिः (स्त्री.), वर्गः, छात्रगणः २. कोटिः (स्त्री.), काष्ठा ३. पदं, पदवी-विः (स्त्री.) ४. क्रमः, परम्परा ५. भूमिः (स्त्री.) (मकान की मंज़िल) । क्रि. वि.,-गुणं,-वारं,-गुणितम् ।

—ब दर्जा, क्रि. वि., क्रमशः, क्रमेण, शनैः शनैः ।

दर्ज़िन, सं. स्त्री. (फ़ा. दर्ज़ी) तुन्नवायी, (सौ) चिकी, सूचिकर्मोपजीविनी ।

दर्ज़ी, सं. पुं. (फ़ा.) तुन्नवायः, सू (सौ) चिकः, वस्त्रसेवकः, सूचिकर्मोपजीविन् ।

दर्द, सं. पुं. (फ़ा.) पीडा, व्यथा, दुःखं, वेदना, अ (आ) र्त्तिः (स्त्री.) यातना, क्लेशः, कष्टं, कृच्छ्रं २. करुणा, दया, सहानुभूतिः (स्त्री.) ३. हानि-नाश,-दुःखम् ।

—गुर्दा, सं. पुं. (फ़ा.) वृक्क (क्का) वेदना, गुर्द-शूलः-लम् ।

—नाक, वि. (फ़ा.) दुःखद, कष्टप्रद, क्लेश-कर [-री (स्त्री.)], संतापक ।

—सर, सं. पुं. (फ़ा.) शीर्ष,-शूलं-पीडा-व्यथा, शिरोवेदना ।

दर्दमंद, वि. (फ़ा.) पीडित, व्यथित, दुःखित २. दयालु, दयावत् ।

दर्दशी, सं. स्त्री. (देश.) गृध्रसी (ऊरुरोगभेदः)।

दर्दी, वि (फ़ा. दर्द) दे. 'दर्दमंद' ।

दर्प, सं. पुं. (सं.) अभिमानः, मानः, स्मयः, चित्तोन्नतिः (स्त्री.), गर्वः, अहङ्कारः, अवलेपः, २. उद्दण्डता, उद्धतता ।

दर्पक, सं. पुं. (सं.) दृप्तः, अहंकारिन्, गर्वितः, अवलिप्तः, उद्धतः ।

दर्पण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मुकुरः, आदर्शः, आत्मदर्शः, कर्कः, कर्करः, दर्शनम् ।

दर्पित, वि. (सं.) गर्वितः-ता-तं, दृप्तः-ता-तं, अवलिप्तः-ता-तम् ।

दर्भ, सं. पुं. (सं.) कुशभेदः २. कुशः ३. उल-पतृणं, काशः ।

दर्रा, सं. पुं. (फ़ा.) संकट-संबाध,-पथः-मार्गः, दुर्गसंचरः, गिरिद्वारम् ।

दर्शक, सं. पुं. (सं.) द्रष्टृ (पुं.), प्रेक्षकः, वीक्षकः, दर्शिन् २. (सभा आदि के) पार्षदः, पारिषद्यः, सामाजिकः ३. प्रकाशकः, प्रदर्शकः ।

दर्शन, सं. पुं. (सं. न.) वि-आ-अव,-लोकनं, वि-, ईक्षणं, साक्षात्करणं, चाक्षुषज्ञानं, निर्वर्णनं, निभालनं २. सं-, मिलनं, समागमः, संगतिः (स्त्री.) ३. तत्त्व,-विद्या-शास्त्रं-ज्ञानं ४. नेत्रं ५. दर्पणः ।

दर्शनीय, वि. (सं.) अव-आ-वि,-लोकनीय, ईक्षणीय, निभालनीय २. मनोहर, अभिराम ।

दर्शनी हुंडी, सं. स्त्री., सद्यःशोध्यं धनार्पणा-देशपत्रम् ।

दल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सेना, सैन्यं २ संघः, गणः, समूहः ३. पत्रं, पलाशं, पर्णं, छदः, छदनं ४. अर्द्धखण्डः-डं ५. चक्रं, मण्डली ।

—पति, सं. पुं. (सं.) सेना,-नीः (पुं.)-नायकः, चमूपतिः (पुं.) २. अग्रणीः (पुं.), अध्यक्षः, प्रमुखः, नायकः ।

दलकना, क्रि.अ., दे. 'दरकना' २. दे. 'थर्राना' ।

दलदल, सं. स्त्री. (सं. दलाढ्यं) कर्दमः, पंकः-कं, जंबालः-लं २. अनूपः, कच्छ,-भूः-भूमिः (स्त्री.), कच्छः ।

दलदली, वि. (हिं. दलदल) पंकदूषित, पंकिल, सकर्दम, कर्दममय [-यी (स्त्री.)] २. आनूप, [-पी (स्त्री.)], जल,-आढ्य-पूर्ण-मय ।

दलन, सं. पुं. (सं. न.) पेषणं, खंडनं, चूर्णनं, निष्पेषः, मर्दनं २. वि-, नाशः-ध्वंसः, संहारः ।

दलना, क्रि. स. (सं. दलनं) स्थूलस्थूलं पिष्-क्षुद् (रु. प. अ.)-मृद् (क्र्. प. से.)-चूर्ण्-खण्ड् (चु.), निर्दल् (भ्वा. प. से.) २. संपीड् (चु.), पादतलेन मृद् ३. (पेषण्यादिभिः), द्विधा खण्ड् (चु.)-शकलीकृ ४. नश्-ध्वंस् (प्रे.)। सं. पुं. दे. 'दलन' ।

दलनेवाला, सं. पुं., स्थूल,-पेषकः-मर्दकः-चूर्णकः।

दलबादल, सं. पुं. (सं. दलं+हिं. बादल) मेघमाला, कादंबिनी, घनपटली २. महती चमूः (स्त्री.) ३. बृहत्पटमंडपः ।

दलवाना, क्रि. प्रे., व. 'दलना' के प्रे. रूप ।

दलहन, सं. पुं. (हिं. दाल) दाली-द्विदला-वैदल,-मूलान्नं-उपयुक्तान्नम् ।

दलहरा, सं. पुं. (हिं. दाल) दाली-वैदल,-विक्रेतृ-विक्रयिन्-विक्रायकः ।

दलादली, सं. स्त्री. (सं. दलः-लं >) दल-गण-संघ-वर्ग,-स्पर्द्धा-विजिगीषा-प्रतियोगिता ।

दलाल, सं. पुं. (अ.) परार्थे क्रयविक्रययायो-जकः, क्रयविक्रयसहायकः, मध्यस्थः ।

दलाली, सं. स्त्री. (अ. दलाल) क्रयविक्रय-सहायकत्वं २. क्रयविक्रयसहायकत्ववेतनम् ।

दलित, वि. (सं.) खंडित, चूर्णित, मर्दित, शकलीकृत २. अवन(ना)मित, अवपीडित ३. अस्पृश्य, अंत्यज ४. नाशित, ध्वंसित । सं. पुं., अस्पृश्यः, नीचः, अंत्यजः, *हरिजनः ।

—उद्धार, सं. पुं. (सं.) अस्पृश्य-अन्त्यज-हरि-जन,-उन्नतिः (स्त्री.)-उन्नयनं-उद्धारः ।

—वर्ग, सं. पुं. (सं.) अस्पृश्य-अन्त्यज-नीच-, वर्गः-समुदायः ।

दलिया, सं. पुं. (हिं. दलना) *दलितकः, दलित खंडित-मर्दित,-अन्नम् ।

दलील, सं. स्त्री. (अ.) तर्कः, युक्तिः (स्त्री.), हेतुः (पुं.) २. वादः, वाद,-संवादः-विवादः, शास्त्रार्थः ।

दव, सं. पुं. (सं.) दे. 'दावानल' ।

दवा, सं. स्त्री. (फ़ा.) ओषधिः (स्त्री.), औषधं, भेषजं २. उपचारः, चिकित्सा ३. प्रति-(ती)कारः, प्रतिविधानम् ।

—ख़ाना, सं. पुं. (फ़ा.) औषधालयः, भेष-जालयः ।

—दारू, सं. स्त्री. (फ़ा.+सं.) उपक्रमः, उपचारः, चिकित्सा ।

दवाग्नि, सं. स्त्री. } सं. पुं., दे. 'दावानल' ।
दवानल, सं. पुं. }

दवात, सं. स्त्री. (अ. दावात) मसी,-कूपी-धानी-धानं-पात्रं-भाजनं, मेला,-नंदः-नंदा-अंधुकः ।

दवामी बंदोबस्त, सं. पुं. (फ़ा.) भूमिकरस्य स्थायिप्रबंधः ।

दश, वि. दे. 'दस' ।

—आनन, —आस्य, —कंठ, —कंधर, —ग्रीव,—मुख, सं. पुं, (सं.) रावणः ।

दशन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'दाँत' ।

दशम, वि. (सं.) दे. 'दसवाँ' ।

दशमलव, सं. पुं. (सं.) दशमबिन्दुः (बीज-गणित) ।

दशमी, सं. स्त्री. (सं.) चांद्रमासस्य शुक्ला कृष्णा वा दशमी तिथिः (पुं., स्त्री.) २. मरणा-वस्था ३. विमुक्तावस्था ।

दशमूल, सं. पुं. (सं. न.) पाचनभेदः (वैद्यक) ।

दशरथ, सं. पुं. (सं.) अवधेशो नृपविशेषः, श्रीरामचन्द्रस्य पिता ।

दशहरा, सं. पुं. (सं. स्त्री.) गंगा, भागीरथी २. गंगाया अवतरणतिथिः, ज्येष्ठशुक्लदशमी ३. उक्ततिथौ गंगावतरणोत्सवः ४. विजया-दशमी, रावणवधतिथिः (पुं., स्त्री.), आश्विन-शुक्लदशमी ।

दशांश, सं. पुं. (सं. दशांशः >) दशम,-अंशः-भागः ।

दशा, सं. स्त्री. (सं.) अवस्था, स्थितिः-वृत्तिः-गतिः (स्त्री.), भावः ।

दस, वि. (सं. दशन्) । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (१०) च ।

—गुना,वि., दश,-गुण-गुणित ।

—प्रकार से, क्रि. वि., दशधा (अव्य.) ।

—बार, क्रि. वि., दशकृत्वः (अव्य.) ।

दसवाँ, वि. (सं, दशमः-मी-मम्) ।

दस्तंदाज़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) हस्तक्षेपः, पर-कार्यचर्चा ।

दस्त, सं. पुं. (फ़ा.) अति(ती)सारः, द्रवमलं २. हस्तः, करः ।

आँव-लहू वाले—, सं. पुं., आमरक्तातिसारः ।

आँववाले—, सं. पुं., आमातिसारः ।

लहूवाले—, सं. पुं., रक्तातिसारः ।

—कार, सं. पुं. (फ़ा.) शिल्पिन्, शिल्पकारः ।

—कारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शिल्पं, शिल्पविद्या, हस्त,-शिल्पं-कर्मन् (न.)-क्रिया ।

—ख़त, सं. पुं. (फ़ा.) नाम-हस्त,-अक्षरम् ।

—ख़त करना, क्रि. स., स्वनामन् (न.) लिख् (तु. प. से.), हस्ताक्षरं कृ ।

—बस्ता, क्रि. वि. (फ़ा.) साञ्जलि, अञ्जलिं बद्ध्वा ।

दस्तक, सं. स्त्री. (फ़ा.) द्वार,-आघातः-ताडनं-प्रहारः ।

दस्तरख़ान, सं. पुं. (फ़ा.) गल्लकवस्त्रं, फल-कपटः ।

दस्ता, सं. पुं. (फ़ा. दस्तः) मुष्टिः (स्त्री.), वारंगः । (खड्ग का) त्सरुः-त्सरुः (पुं.) २. मुसलः-लं ३. पत्रचतुर्विंशतिः (स्त्री.) ४. सैनिकसंघकः ५. दे. 'गुलदस्ता' ।

दस्ताना, सं. पुं. (फ़ा.) *हस्तत्राणः, करच्छदः ।

दस्तावर, वि. (फा.) वि-, रेचक-रेचन, शोधन, सारक ।

दस्तावेज़, सं. स्त्री. (फ़ा.) व्यवहार-समय,-पत्रं-लेखः ।

दस्ती, वि. (फ़ा. दस्त) हस्त्य, कर-, हस्त-२. वारंगकः, लघुमुष्टिः (स्त्री.) ।

दस्तूर, सं. पुं. (फ़ा.) प्रथा, रीतिः (स्त्री.) २. नियमः, विधिः (पुं.) ।

दस्तूरी, सं. स्त्री., (फ़ा. दस्तूर >) (वणि-ग्भिर्धनिकदासेभ्यो देयं) प्रथाशुल्कम् ।

दस्यु, सं. पुं. (सं.) चौरः, लुंठकः, २. अनार्यः, म्लेच्छः ।

दह, सं. पुं. (सं. ह्रदः>) *सरिद्गर्तः २. कुंडं ३. जलावर्तः ।

दहक, सं. स्त्री. दे. 'धधक' ।

दहकना, क्रि. अ. (सं. दह्) दे. 'धधकना' ।

दहक़ान, सं. पुं. (फ़ा.) कृपाणः, कृप (पि)-कः, कृपीवलः । वि., अज्ञ, मूढ, अशिष्टं ।

दहकाना, क्रि. स. (हिं. दहकना) दे. 'धधकाना' ।

दहन, सं. पुं. (सं. न.) ज्वलनं, दाहः, प्लोषः २. (सं. पुं.) अग्निः (पुं.) ।

दहलना, क्रि. अ.(सं. दरः=डर>) भयेन कंप्-वेप् (भ्वा. आ. से.), वि-,त्रस् (भ्वा. दि. प. से.) ।

दहलाना, क्रि. प्रे., व. 'दहलना' के प्रे. रूप ।

दहलीज़, सं. स्त्री. (फ़ा.) देहली, गृहावग्रहणी ।

दहशत, सं. स्त्री. (फ़ा.) त्रासः, आतंकः, भीतिः(स्त्री.) ।

दहसेरी, सं. स्त्री. (सं. दशसेरी) दशसेटकी ।

दहाई, सं. स्त्री. (फ़ा. दह) दशत्वं २. दशकं, दशतिः (स्त्री.) ३. अंकगणनायां द्वितीयस्थानं ४. दशमांशः ।

दहाड़, सं. स्त्री. (अनु.) गर्जितं, गर्जनं-ना, महत्-दीर्घ-गंभीर,-नादः-शब्दः २. आ-वि,-क्रोशःआर्त्तनादः ।

दहाड़ना, क्रि. अ. (हिं. दहाड़) गर्ज्-रस्-नद्-नर्द् (भ्वा. प. से.) २. आ-उत्-वि-व्या,-क्रुश् (भ्वा. प. अ.), सचीत्कारं रुद् (अ. प. से.) ।

दहाना, सं. पुं. (फ़ा.) विस्तीर्णमुखं २. द्वारं ३. भस्त्रामुखं ४. नदीमुखम् ।

दहिना, वि. (सं. दक्षिण) अपसव्य, वामेतर, सव्येतर २. तुष्ट, कृपालु ।

दहिने, क्रि. वि. (हिं. दहिना) दक्षिणेन, दक्षिणतः, दक्षिणा-णात्-णाहि ।

दही, सं. पुं. [सं. दधि (न.)] क्षीरजं, विरलं, मंगल्यं, पयस्यं, द्रप्सः-प्सं, श्रीधनम् ।

दहेज, सं. पुं. (अ. जहेज़) युतकं, यौतुकं, स्त्रीधनं, शुल्कं, वाहनिकम् ।

दाँ, सं. पुं., (सं.-दा)-वारं,-कृत्वः (दोनों अव्य.) । (फ़ा.) वि., (समासान्त में)-ज्ञ, (हिसाबदाँ=गणितज्ञः इ.) ।

दाँए-बाँए, क्रि. वि. (सं. दक्षिण+वाम>) दक्षिणतो वामतश्च, दक्षिणवामपार्श्वयोः, इतस्ततः, अत्र तत्र ।

दाँत, सं पुं. (सं. दंतः) दशनः, रदनः, खादनः, रदः, द्विजः, खरुः (पुं.), दंशः । (सामने के आठ=छेदक-कर्तनक,-दन्ताः, साथ के चार=भेदक-रदनक,-दन्ताः, उनसे पिछले आठ=अग्रचर्वणकदन्ताः; पिछले बारह=चर्वणकदन्ताः) ।

—उगना, क्रि. अ., दंताः उद्गम् (भ्वा. प. अ.)-उद्भिद् (कर्म) । सं. पुं., दंतोद्गमः ।

—किचकिचाना, } क्रि. अ., (क्रोधेन)दंतैर्दंतान्
—किटकिटाना, } घृष् (भ्वा. प. से.)-निष्पिष्

—चबाना, } (रु. प. अ.)-विघट्ट् (प्रे.) ।
—पीसना, } सं.पुं.,दंत,-घर्षणं-निष्पेषः ।

—का दर्द, सं. पुं., दंत,-पीडा-शूलम् ।

—का पेस्ट, सं. पुं., *दंतलेपः ।

—का बुरुश, सं. पुं., दंतकूर्चकः,-कम् ।

—का मंजन, सं. पुं., निश्चुक्कणम्, दंतमार्जनं, रदशोदः ।

—खोदनी, सं. स्त्री., दंतोल्लेखनी, दंतशोधनी ।

—बनानेवाला, सं. पुं., दंत,-वैद्यः-चिकित्सकः ।

—खट्टे करना या तोड़ना, मु., वि-परा-जि (भ्वा. आ. अ.), अभि-परा-भू (भ्वा. प. से.) ।

—तले उँगली दबाना, मु., अत्यर्थं वि-स्मि (भ्वा. आ. अ.), विस्मित-चकित (वि.) भू ।

—निकालना, मु., हस् (भ्वा. प. से.) २. स्वायोग्यतां प्रकाश् (प्रे.) ।

—रखना, लगाना या होना, मु., अत्यंतं अभिलष्-वांछ् (भ्वा. प. से.) ।

दाँता, सं. पुं. (हिं. दाँत) दे. 'दंदाना' ।

—किटकिट, } सं. स्त्री., कलहः, वाग्युद्धं
—किलकिल, } २. दे. 'गालीगलौज' ।

दाँती, सं. स्त्री., दे. 'दराँती' ।

दांपत्य, वि. (सं.) पतिपत्नी-जायापति-विषयक, वैवाहिक, जांपत्य । सं. पुं. (सं. न.) दाम्पत्य,-संबंधः-व्यवहारः, जांपत्यम् ।

दांभिक, वि. (सं.) दे. 'दंभी' ।

दाइजा-जा, सं. पुं., दे. 'दहेज' ।

दाईं, वि. स्त्री., दे. 'दहिनी' ।

दाई, सं. स्त्री, (सं. धात्री; फ़ा. दायः) मातृका,

उपमातृ (स्त्री,), अंकपाली २. साविका, प्रसवकारिणी ।

—गीरी, सं. स्त्री., गर्भगोचनविद्या, प्रसव-सूति-, कार्यं-कर्मन् (न.) ।

—से पेट छिपाना, मु., रहस्यविदो रहस्यं गुह् (भ्वा. उ. वे.) ।

दाऊ, सं. पुं., (सं. देवः>) अग्रजः, ज्येष्ठभ्रातृ २. बल,-देवः-रामः, श्रीकृष्णाग्रजः ।

दाक्षायण, सं. पुं. (सं.) दक्षप्रजापतिकृतयज्ञः २. सुवर्णम् ३. आभूषणम् । वि. दक्षगोत्रीय ।

दाक्षायणी, सं. स्त्री. (सं.) अश्विन्यादिनक्षत्रम् २. सती ३. दुर्गा ४. अदितिः (स्त्री.) ५. दक्षगोत्रकन्या ।

—पति, सं. पुं. (सं.) शिवः २. चन्द्रः ।

दाक्षिणात्य, सं. पुं. (सं.) दक्षिणप्रदेश,-निवासिन्-वास्तव्यः २. नारिकेलः, अप्-कौशिक,-फलम् । वि. दक्षिण,-सम्बन्धिन्-प्रदेशीय ।

दाख, सं. स्त्री. (सं. द्राक्षा) गोस्तनी, स्वाद्वी, मृद्वीका, रसाला, गुच्छफला २. शुष्कद्राक्षा ३. दे. 'मुनक्का' ।

दाख़िल, वि. (फ़ा.) प्रविष्ट, निविष्ट २. संमिलित, समाविष्ट ३. न्यस्त, निक्षिप्त ।

—ख़ारिज, सं. पुं. (फ़ा.) स्वत्व-स्वामित्व,-परिवर्तः ।

—दफ़्तर, वि. (फ़ा.) लेखागारे निक्षिप्त ।

दाख़िला, सं. पुं. (फ़ा.) प्रवेशः-शनम् ।

दाग़, सं. पुं. (फ़ा.) अंकः, चिह्न २. कलंकः, लांछनं, दोषः ३. तप्तलोहमुद्रांकः ४. विंदुः (पुं.), तिलकः-कम् ।

—दार, वि. (फ़ा.) अंकित, चिह्नित २. सतिलक, विंदुमत्, कर्बुर ३. दूषित, कलंकित ।

—लगना, क्रि. अ., कलंकित-दूषित-लांछित-(वि.) भू २. तप्तलोहमुद्रांकित (वि.) भू ।

—लगाना, क्रि. स., दुष् (प्रे.), कलंकयति (ना. धा.) २. (तप्तलोहमुद्रया) अंकयति-चिह्नयति (ना. धा.) ।

दाग़ना, क्रि. स. (फ़ा. दाग़) दे. 'दाग़ लगाना' २. लोहादिगोलान् प्रक्षिप् (तु. प. अ.)-प्रास् (दि. प. से.) ।

दाग़ी, वि. (फ़ा. दाग़) दे. 'दाग़दार' ।

दाघ, सं. पुं. (सं.) तापः, दाहः, ऊष्मन् (पुं.) ।

दाड़िम, सं. पुं. (सं.) दे. 'अनार' ।

दाढ़[1], सं. स्त्री, (सं. दाढ़ा) द्रंष्ट्रा, जंभः, चर्वणदंतः ।

दाढ़[2], सं. स्त्री. (अनु.) गर्जितं, गर्जनं-ना २. चीत्कारः ।

दाढ़ी, सं. स्त्री. (दाढ़िका) कूर्चः-र्चं, श्मश्रु (न.), व्यंजनं, कोटः ।

—जार, सं. पुं., दग्ध,-कूर्च-श्मश्रु (गालीभेदः) ।

—बनवाना या मुड़ाना, क्रि. प्रे., कूर्चं मुंड् (चु.)-आवप् (प्रे.) ।

दाता, सं. पुं. (सं. दातृ) दानकर्तृ (पुं.) वदान्यः, दानशीलः, दारुः (पुं.), मुचिरः । [दात्री (स्त्री.) = दानकर्त्री] ।

दातु(तौ)न, सं. स्त्री. (हिं. दाँत) दंत,-काष्ठं-धावनम् ।

दाद[1], सं. स्त्री., दे. 'दद्रु' ।

दाद, सं. स्त्री, (फ़ा.) न्यायः, न्याय्यता ।

—देना, क्रि. स., गुणावगुणान् विविच्य प्रशंस् (भ्वा. प. से.) ।

दादा, सं. पुं. (सं. तातः>) पितामहः, पितृजनकः २. अग्रजः ।

दादी, सं. स्त्री. (हिं. दादा) पितामही, पितृजननी ।

दादुर, सं. पुं, (सं. दर्दुरः) मंडूकः, भेकः ।

दान, सं. पुं. (सं. न.) त्यागः, उत्-वि,-सर्जनं-सर्गः, विश्राणनं, वितरणं, भिक्षादानं २. प्रदानं ददनं, दत्तिः (स्त्री.), अतिसर्जनं ३. गजमदः ।

—करना या देना, क्रि. स., सत्कार्येषु-पुण्यार्थे वित्तं विसृज् (तु. प. अ.)-व्यय् (चु., भ्वा. उ. से.) ।

—धर्म, सं. पुं. (सं.) भिक्षा-,दानं, (पुण्यार्थे) त्यागः ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) दानलेखः ।

—पात्र, सं. पुं. (सं. न.) दान,-भाजनं-मंजूषा २. दानग्रहणाधिकारिन् ।

—पुण्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दानधर्म' ।

—शील, वि. (सं.) उदार, त्यागिन्, वदान्य, त्यागशील, दानशौंड ।

दानव, सं. पुं. (सं.) राक्षसः, रक्षस् (न.) ।

—इन्द्र, सं. (पुं.) वलिः ।

दानवी, वि. (सं.) दानवीय, दानव,-उचित-सम्बन्धिन् । सं. स्त्री. (सं.) दानव,-पत्नी-भार्या ।

दाना[1], सं. पुं. (फ़ा. दानह्) अन्नकणः-णिका

२. अन्नं, धान्यं ३. गुलिका ४. पिटिका, रक्तवटी, स्फोटकः।
—पानी, सं. पुं. (फ़ा.+हिं.) अन्नजलं, जलान्नम्, भक्ष्यपेयम्।
—पानी उठना, मु., व्यवसाय-आजीविका,-समाप्तिः (स्त्री.)-अवसानम्।
—(ने) दाने को तरसना, मु., क्षुधया बुभुक्षया मृ (तु. आ. अ.)।
दाना², वि. (फ़ा.) प्राज्ञ, बुद्धिमत्।
दानाई, सं. स्त्री. (फ़ा.) बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता।
दानी, वि. (सं.-निन्) दे. 'दानशील' तथा 'दाता'।
दानेदार, वि., कण-कणिका,-मय [-यी (स्त्री.)]।
दाव, सं. स्त्री., दे. 'दबाव'।
दावना, क्रि. स., दे. 'दबाना'।
दाम¹, सं. पुं. (सं. दामन् न. स्त्री.) रज्जुः (स्त्री.), गुणः, संदानं २. माला, हारः ३. समूहः ४. संसारः।
दाम², सं. पुं. (फ़ा.। मि. सं. 'दाम'¹) पाशः, जालं, वागुरा।
दाम³, सं. पुं. (हिं. दमड़ी) पणचतुर्विंशभागः २. मूल्यं, अर्घः, वस्नं ३. धनं ४. दाननीतिः (स्त्री., राजनीति)।
दामन, सं. पुं. (फ़ा.) चोलादीनां निम्नभागः, वस्त्रांचलः, वसनांतः २. उपत्यका।
—पकड़ना, मु., शरणं प्रपद् (दि. आ. अ.), आ-उपा-सं,-श्रि (भ्वा. उ. से.)।
—फैलाना, मु., याच् (भ्वा. उ. से.)।
दामाद, सं. पुं. (फ़ा.) जामातृ (पुं.), पुत्रीपतिः (पुं.), कन्यावेदिन्, दुहितृधवः।
दामिनी, सं. स्त्री. (सं.) तडित्-विद्युत् (स्त्री.), चञ्चला।
दामोदर, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णचन्द्रः २. विष्णुः।
दाय, सं. पुं. (सं.) पैतृकं, पैतृक,-रिक्थ-धनं, गोत्रधनं २. यौतुकादिदेयधनम्।
—भाग, सं. पुं. (सं.) दाय-रिक्थ,-विभागः-वंटनं-व्यंशनम्।
दायक, सं. पुं. (सं.) दे. 'दाता' [दायिका (स्त्री.)]।
दायजा, सं. पुं. (सं दायः>) दे. 'दहेज़'।
दायर, वि. (फ़ा.) चलत् (शत्रंत), वर्तमान।
दावा—करना, क्रि. स., अभियुज् (रु. आ. अ.; चु.), राजकुले निविद् (प्रे.), अभियोगं प्रवृत् (प्रे.)।
दायरा, सं. पुं. (अ.) चक्रं, मंडलं, वृत्तम्।
दायाँ, वि. (सं. दक्षिण) दे. 'दहिना'।
दायित्व, सं. पुं. (सं. न.) उत्तरदायित्वं २. दातृत्वम्।
दायें, क्रि. वि. (हि. दायाँ) दे. 'दहिने'।
दार, सं. स्त्री. [सं. दाराः (नित्य पुं. बहु.)] कलत्रं, पत्नी, भार्या।
—कर्म, सं. पुं. [सं.-मंन् (न.)] विवाहः, पाणिग्रहणम्।
दारक, सं. पुं. (सं.) शिशुः (पुं.), बालः, बालकः २. पुत्रः, तनयः।
दार(ल)चीनी, सं. स्त्री. (सं. दारु+चीन=देशविशेष>) दे. 'तज'।
दारा, सं. स्त्री., दे. 'दार'।
दारिद,-द्र,-द्र्य, सं. पुं. (सं. दारिद्र्यं) निर्धनता, अकिंचनता, दरिद्रता।
दारु, सं. पुं. (सं. न., कहीं-कहीं पुं.) काष्ठं २. देवदारु (पुं. न.)।
दारुण, वि. (सं.) घोर, विषम, विकट, दुःसह, कठोर, २. भीषण, भयङ्कर।
दारुहलदी, सं. स्त्री. (सं. दारुहरिद्रा) दार्वी, पीता, पीतिका।
दारू, सं. स्त्री. (फ़ा.) औषधं, भेषजं २. मद्यं, सुरा ३. दे. 'बारूद'।
—दरपन, } सं. स्त्री., चिकित्सा, उपचारः।
—दवा, }
दारोगा, सं. पुं. (फ़ा.) अध्यक्षः, अधिष्ठातृ (पुं.) निरीक्षकः २. दे. 'थानेदार'।
दार्शनिक, सं. पुं. (सं.) तत्त्व,-विद्-वेत्तृ-ज्ञः (सब पुं.), दर्शनशास्त्रपण्डितः।
दाल, सं. स्त्री. (सं. दालः=कोदों>) दाली, द्विदला-लं, वैदलः, शिंबा-बिका, हरेणुः (पुं.), हरेणुकः, शमी-शिम्बी,-धान्यम्।
—दलिया, मु., रूक्षभोजनम्।
—न गलना, मु., असमर्थ-अशक्त (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.)।
—में काला, मु., संदिग्धवार्ता २. कुरहस्यं ३. कुलक्षणम्।
—रोटी, सं. स्त्री., सामान्याहारः।
दालचीनी, सं. स्त्री., दे. 'तज'।

दालन, सं. पुं. (सं. दलन>) दन्तरोगभेदः, दन्तक्षयः ।

दालमोठ, सं. स्त्री. (हिं. दाल+मोठ) स्नेहभर्जितदाली, सलवणः ।

दालान, सं. पुं. (फ़ा) दे. 'बरामदा' ।

दालिम, सं. पुं. (सं. दालि (डि) मः-मा) (वृक्ष) कुचफलः, शुकवल्लभः । (फल) कुचफलं, रक्तबीजं, दालि (डि) मम् ।

दावँ, सं. पुं. (सं. प्रत्य. दा>, उ. एकदा) पर्यायः, परिवृत्तिः (स्त्री.), वारः २. अवसरः, वेला, कार्यकालः, प्रसंगः ३. उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ४. छलं, कपटं ५. मल्लयुद्धकूटयुक्तिः (स्त्री.) ६ निभृतावस्थितिः (स्त्री.) ।

—पर लगाना, मु., पण् (भ्वा. आ. से., षष्ठी के साथ; उ. 'रूप्यकस्य पणते') ।

—लगना, मु., अवसरः लभ् (कर्म.) ।

दाव, सं. पुं. (सं.) वनं २. दावानलः ३. अग्निः (पुं.) ४. दाहः, तापः ।

दावत, सं. स्त्री. (अ.) भोजनं-, निमंत्रणं २. विशिष्टभोजनम् ।

दावा, सं. पुं. (अ.) स्वत्वप्रतिपादनं, स्वामित्वप्रकाशनं २. स्वत्वं, अधिकारः ३. अभियोग-भाषा,-पत्रं ४. अभियोगः, पूर्वपक्षः, भाषा, भाषापादः ५. प्रतापः, प्रभुत्वं ६. दृढोक्तिः (स्त्री.) ७. प्रतिज्ञा, पक्षः, पूर्वपक्षः ।

पूर्वपक्षः स्मृतः पादो, द्विपादश्चोत्तरः स्मृतः ।
क्रियापादस्तथा चान्यः चतुर्थो निर्णयः स्मृतः ॥

—करना, क्रि. स., अभियुज् (रु. आ. अ., चु.) दे. 'दायर' के नीचे २. स्वत्वं प्रतिपद् (प्रे.) ।

—खारिज करना, क्रि. स., अभियोगं अपास् (दि. प. से.)-निराकृ ।

—गीर, } सं. पुं. (अ.+फ़ा.) अभियोक्तृ
—दार, } (पुं.), अर्थिन्, वादिन्, अभियोगिन्, सूचकः, कार्यार्थिन् २. स्वत्वप्रतिपादकः, स्वामित्वप्रकाशकः ।

दावानल, सं. पुं. (सं.) दा(द)वाग्निः (पुं.), वनवह्निः (पुं.), द(दा)वः ।

दास, सं. पुं. (सं.) किंकरः, भृत्यः, भुजिष्यः, दासेयः, दासेरः, दे. 'नौकर' ।

दासता, सं. स्त्री. (सं.) दासत्वं, दास,-भावः-वृत्तिः (स्त्री.) ।

दासानुदास, सं. पुं. (सं.) अतिनम्रः किंकरः, तुच्छसेवकः ।

दासी, सं. स्त्री. (सं.) चेटी, भुजिष्या, दे. 'नौकरानी' ।

दासेय, सं. पुं. (सं.), दासीपुत्रः २. दासः ।

दास्तान, सं. स्त्री. (फ़ा.) कथा २. वृत्तान्तः ३. वर्णनम् ।

दास्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दासता' ।

दाह, सं. पुं. (सं.) दाहनं, ज्वालनं, भस्मीकरणं २. शवदाहः, अन्त्येष्टि-मृतक,-संस्कारः-क्रिया ३. तापः, प्लोषः, शोकः, सन्तापः ४. ईर्षा-र्ष्या ।

—कर्म, सं. पुं. [सं.-र्मन् (न.)] दे. 'दाह'(२) ।

दाहक, वि. (सं.) तापक, दीपक, प्लोषक ।

दाहना, क्रि. सं., दे. 'जलाना' ।

दाहिना, वि., दे, 'दहिना' ।

दाहिने, क्रि. वि., दे. 'दहिने' ।

दिक्, सं. स्त्री. [सं. दिश् (स्त्री.)] दिशा ।

—पाल, सं. पुं. (सं.) आशापालाः, इन्द्रादयो दश देवाः ।

दिक्, सं. पुं. (अ.) क्षयरोगः । वि., व्यथित, संतपित २. अस्वस्थ, रुग्ण ।

—करना, क्रि. स., तप्-व्यथ् (प्रे.), पीड् (चु.), बाध् (भ्वा. आ. से.) ।

आँतों का—, सं. पुं., अन्नक्षयः ।

दिक्कत, सं. स्त्री. (अ.) काठिन्यं, बाधा, कष्टम् ।

दिखलाना, क्रि. स., व. 'देखना' के प्रे. रूप ।

दिखलावा, सं. पुं., दे. 'दिखावा' ।

दिखाई, सं. स्त्री. (हिं. दिखाना) प्रदर्शनं, व्यञ्जनं, निर्देशनं, प्रकाशनं, प्रकटी-व्यक्ती,-करणं २. प्रदर्शन,-अर्घः-मूल्यम् । (हिं. देखना) अव-आ-वि,-लोकनं, वि., ईक्षणं, निभालनं २. अवलोकन,-शुल्कः-कम् ।

—देना, क्रि. अ., लक्ष्-दृश् (कर्म.), अवभास् (भ्वा. आ. से.), प्रतिभा (अ. प. अ.) ।

दिखाना, क्रि. प्रे., ब. 'देखना' के प्रे. रूप ।

दिखावट, सं. स्त्री. (हिं. दिखाना) दे. 'दिखाई' में 'प्रदर्शन' इ. २. आडंबरः, बाह्य,-शोभा-श्रीः (स्त्री.) ।

दिखावटी, वि. (हिं. दिखावट) दृष्टिहारिन्, सुभगालोक, कृतक, कृत्रिम, अनुपयोगिन्, साडंबर ।

दिखावा, सं. पुं. (हिं. दिखाना) आडंबरः, दंभः, आपातरमणीयता, बाह्यशोभा ।

दिगंत, सं. पुं. (सं.) दिशांतः, दिक्सीमा २. क्षितिजं, दिक्-तटं-चक्रं-मण्डलं ३. चतस्रो दश वा दिशः ।

दिगंतर, सं. पुं. (सं. न.) अन्या दिशा २. दिङ्मध्यं, दिक्कोणः ३. आकाशः-शं, अन्तरिक्षं ४. विदेशः ।

दिगंबर, सं. स्त्री. (सं.पुं.) जैनसंप्रदायविशेषः २. शिवः । वि., नग्न, अवसन ।

दिग्गज, सं. पुं. (सं.) दिग्घस्तिन् २. ऐरावतादयोऽष्ट दिग्रक्षका गजाः ।

दिग्दर्शक यंत्र, सं. पुं. (सं. न.) दिङ्निरूपकयन्त्रम्, दिग्दर्शनम् ।

दिग्दर्शन, सं. पुं. (सं. न.) सामान्य-साधारण,-परिचयः-ज्ञानम् २. दिग्ज्ञापनं, दिशानिर्देशः ३. दिग्दर्शकयन्त्रम् ।

दिग्विजय, सं. स्त्री. (सं. पुं.) विद्यया युद्धेन वा जगज्जयः ।

दिठौना, सं. पुं. (हिं. दीठ) *कुदृष्टिनिवारणः (कज्जलबिंदुः) ।

दिति, सं. स्त्री. (सं.) कश्यपपत्नी, दैत्यजननी ।

दिन, सं. पुं. (सं. न.) अहन् (न.) दिवसः, वारः, वासरः घस्रः, अंशकं, दिव् (स्त्री.), द्यु (न.) २. समयः, कालः ।

—चढ़ना या निकलना, क्रि. अ., रजनी प्रभा (अ. प. अ.), अरुणः-सूर्यः उद्-इ (अ. प. अ.), प्रभातं-विभातं-अरुणोदयः जन् (दि. आ. से.) ।

—ढलना, क्रि. अ., दिनं-दिवसः परिणम् अथवा आ-अव-नम् (भ्वा. प. अ.), अपराह्णो वृत् (भ्वा. आ. से.) ।

—डूबना, क्रि. अ., सूर्यः-दिवसः अस्तं,-गम् (भ्वा. प. अ.)-अवलंब् (भ्वा. आ. से.) ।

—कर,
—नाथ,
—पति,
—मणि,
—राज,
} सं. पुं. (सं.) दिनेशः, दे. 'सूर्य' ।

—चढ़े, क्रि. वि., उदिते सूर्ये, प्रातः (अव्य.) ।

—चर्य्या, सं. स्त्री. (सं.) आह्निकं २. नित्यकर्मन् (न.) ।

—ढले, क्रि. वि., (अ-)पराह्णे, दिवसस्य तृतीययामे ।

—दिन, क्रि. वि., दिने दिने, अनु-प्रति,-दिनं-दिवसम् ।

—दहाड़े, क्रि. वि., दिन,-काले-समये एव, दिवैव ।

—बदिन, क्रि. वि., अन्वहं, प्रत्यहं, प्रतिदिनम् ।

—भर, क्रि. वि., सर्वं दिनम् ।

—में, क्रि. वि., दिवा, दिवसे ।

—रात, क्रि. वि., अहर्निशं, दिवानिशं, अहोरात्रं, रात्रिं-नक्तं,-दिवम् ।

अगले—, क्रि. वि., परेद्युः, परस्मिन् दिने ।

दूसरे—, क्रि. वि., अन्येद्युः, पराह्ने ।

पहले या पिछले—, क्रि. वि., पूर्वेद्युः, पूर्वस्मिन् दिने ।

—काटना, मु., यथाकथंचित्-कृच्छ्रेण जीवनं या (प्रे. यापयति) ।

—दूना रात चौगुना होना, मु., अहर्निशं समृध् (दि. प. से.)-प्र-उप,-चि (कर्म.) ।

—फिरना, मु., भाग्यं उद्-इ (अ. प. अ.) ।

दिनेश, सं. पुं. (सं.) सूर्यः, भानुः (पुं.) ।

दिनौंधी, सं. स्त्री. (सं. दिनांधः>) दिनांधता, दिवांधता, नेत्ररोगभेदः ।

दिमाग़, सं. पुं. (अ.) मस्तकस्नेहः, मस्तिष्कं, मस्तु,-लुंगः-लुङ्कः (—गं,-गकं), गोर्दं २. मतिः-धीः-बुद्धिः (स्त्री.) ३. दर्पः, अभिमानः ।

—चट, सं. पुं., वाचालः, वाचाटः, बहुभाषिन् ।

—दार, वि. (अ.+फ़ा.) धीमत्, बुद्धिमत् २. दृप्त, अभिमानिन् ।

—आस्मान पर होना या चढ़ना, मु., अतिशयेन दृप्त-अवलिप्त (वि.) वृत् (भ्वा.आ.से.) ।

—में खलल होना, मु., विक्षिप्त-वातुल-भ्रांत-चित्त (वि.) विद् (दि. आ. अ.) ।

—सातवें आस्मान पर होना, मु., अति,-दृप्त-दर्पित-गर्वित भू ।

दिमाग़ी, वि. (अ.) मानसिक, बौद्धिक, मस्तिष्कसंबन्धिन् २-३. दे. 'दिमाग़दार'(१-२) ।

दिया, सं. पुं. (सं. दीपः) दीपकः, प्रदीपः, स्नेहाशः, कज्जलध्वजः, गृहमणिः (पुं.) दोषास्यः, दीपतिलकः, नयनोत्सवः ।

—सलाई, सं. स्त्री., दीपशलाका ।

दिये का काजल, सं. पुं., दीप,-कज्जलं-किट्टं-ध्वजः ।

दिये की ज्वाला, सं. स्त्री., दीप,-कलिका-शिखा ।

दिये की वत्ती, सं. स्त्री., दीप-वर्तिः (स्त्री)-खोरी-कूपी, विदाहिका ।

दियानतदार, वि., दे., 'दयानतदार' ।

दिल, सं. पुं. (फ़ा.) हृदयं, हृद् (न.), अग्रमांसं, बुक्का, बुक्काग्रमांसं । २. मनस्-चेतस् (न.), मानसं, चित्तं, अंतःकरणं, हृदयं, स्वांतं, आत्मन्-अंतरात्मन् (पुं.) ३. साहसं, शौर्यं ४. प्रवृत्तिः (स्त्री.), इच्छा ।

—गीर, वि. (फ़ा.) खिन्न, विषण्ण, दुःखित ।

—चस्प, वि. (फ़ा.) रोचक, रुचिकर, मनोहर ।

—चस्पी, सं. स्त्री. (फ़ा.) रुचिः (स्त्री.) २. मनोरंजनम् ।

—चोर, वि. (फ़ा + हिं.) कार्यत्यागिन्, *कर्मचौरः ।

—जमई, सं. स्त्री. (फ़ा+अ. जमअः) संतोषः, निर्भयत्वं, शंकाभावः ।

—दरिया, वि., दे. 'दरिया दिल' ।

—दार, सं. पुं. (फ़ा.) दयितः, वल्लभः, प्रियः प्रेम-स्नेह-प्रीति,-भाजनम् ।

—पसंद, वि. (फ़ा.) चित्ताकर्षक, रुचिकर, इष्ट ।

—बर, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'दिलदार' २. वाद्यभेदः (टि. दिल के बहुत से मुहाविरे 'कलेजा' और 'जी' के नीचे मिलेंगे, कुछ यहाँ दिये जाते हैं) ।

—रुबा, (सं. पुं. (फा.) दे. 'दिलदार' ।)

—का कमल (**या कली**) **खिलना**, मु., आनंद् (भ्वा. प. से.), प्रसद् (भ्वा. प. अ.), मुद् (भ्वा. आ. से.) ।

—तोड़ना, मु., उत्साहं भंज् (रु. प. अ.)-हन् अ. प. अ.), साहसं धैर्यं ध्वंस् (प्रे.), अव-वि-सद् (प्रे.) ।

—में रखना[1], मु., गोप्यं-रहस्यं गुह् (भ्वा. उ. से.)-छद् (चु.) ।

—रखना[2], मु., प्री (क्र्. प. अ., चु.प्रीणयति), तुष्-प्रसद्-अनुरंज् (प्रे.) ।

—ही दिल में, मु., तूष्णीं, निःशब्दं, मौनं, जोषम् ।

दिलवाना, दिलाना, क्रि. प्रे., ब. 'देना' के प्रे. रूप ।

दिलावर, वि. (फ़ा.) शूर, वीर २. साहसिन् ।

दिलावरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शौर्यं, वीरता, पराक्रमः, विक्रमः ।

दिलासा, सं. पुं. (फ़ा. दिल) धैर्यं, आ-समा,-श्वासनम् ।

दिली, वि. (फ़ा. दिल) हार्दिक, मानसिक २. अभिन्नहृदय, हृदयंगम ।

दिलेर, वि. (फ़ा.) दे. 'दिलावर' ।

दिलेरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शौर्यं, वीरता, साहसम् ।

दिल्लगी, सं. स्त्री. (फ़ा. दिल+हिं लगना) परि (री) हासः, हास्यं, नर्मालापः, परिहासोक्तिः (स्त्री.) ।

—बाज़, सं. पुं., विनोद-परिहास,-शीलः, वैहासिकः ।

दिल्ली, सं. स्त्री. (हिं. ढिल्ली) इन्द्रप्रस्थं, भारत राजधानी, दिल्ली ।

—वाल, वि., इन्द्रप्रस्थ—दिल्ली,-वासिन्-सम्बन्धिन् ।

दिवंगत, वि. (सं.) प्रेत, मृत, स्वर्यात, स्वर्गत, स्वर्गीय ।

दिवस, सं. पुं. (सं.) दे. 'दिन' ।

दिवांध, वि. (सं.) दिनांध । सं. पुं., उलूकः २. दिनांधता ।

दिवाकर, सं. पुं. (सं.) दे. 'दिनकर' ।

दिवाला, सं. पुं. (हिं. दीया+बालना) ऋणशोधनासामर्थ्यं, ऋणदानाक्षमता ।

—निकलना, क्रि. अ., परिक्षि (कर्म.), ऋणशोधनाक्षमत्वं ख्या (प्रे.) ।

दिवालिया, वि. (हिं. दिवाला) ऋणशोधनासमर्थ, ऋणदानाक्षम, क्षीणसर्वस्व, परिक्षीण ।

दिवाली, सं. स्त्री., दे. 'दीवाली' ।

दिव्य, वि. (सं.) दैव (-वी स्त्री.), अमानुष (-पी स्त्री.), ऐश्वर (-री स्त्री.), अपार्थिव (-वी स्त्री.), अलौकिक (-की स्त्री.), स्वर्गीय २. भास्वर, प्रकाशमान ३. अति,-स्वच्छ-सुंदर-मनोहर ।

—चक्षु, सं. पुं. [सं.-क्षुस् (न.)] अपौरुषेय-अलौकिक,-दृष्टिः (स्त्री.) २. अंधः ३. उपनेत्रम् ।

—ज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) अतिमानुप-अपौरुषेय, मानुपातिग,-ज्ञानम् ।

दिशा, सं. स्त्री. (सं.) आशा, काष्ठा, ककुभ्-हरित्-दिश् (स्त्री.), ककुभा ।

—शूल, सं. पुं. (सं. न.) दिग्विशेषगमने निषिद्धवाराः (पुं.) ।

—जाना या फिरना, मु., पुरीषमुत्स्रष्टुं या (अ. प. अ.) मलोत्सर्गाय गम् ।
दिसावर, सं. पुं. (सं. देशापर>) वि-पर-देशः, देशांतरम् ।
दिसावरी, वि. (हिं. दिसावर) वैदेशिक, वि-पर,-देशीय, दे. 'विदेशी' ।
दिहात, सं. स्त्री., दे. 'देहात' ।
दीक्षक, सं. पुं. (सं.) मंत्रोपदेशकः, गुरुः (पुं.), आचार्यः ।
दीक्षांत, सं. पुं. (सं.) अवभृथयज्ञः ।
दीक्षा, सं. स्त्री. (सं.) गुरुमुखात् यथाविधि मंत्रग्रहणं २. यजनं, पूजनं ३. प्रथम,-उपदेशः-शिक्षा, उपनयः, विद्याप्रवेशः ।
दीक्षित, वि. (सं.) उपनीत, यथाविधि उपदिष्ट, संस्कारानंतरं प्रवेशित ।
दीखना, क्रि. अ., दे. 'दिखाई देना' ।
दीठ, सं. स्त्री. (सं. दृष्टिः, दे.) ।
दीदा, सं. पुं. (फ़ा.) दृष्टिः (स्त्री.) २. अवलोकनं ३. नेत्रं ४. धृष्टता ।
—दानिस्ता, क्रि. वि., ज्ञान-बुद्धि-मति,-पूर्वकं, कामतः (अव्य.) ।
दीदार, सं. पुं. (फ़ा.) दर्शनं, साक्षात्कारः ।
दीदी, सं. स्त्री. (हिं. दादा) अग्रजा, ज्यायसी, भगिनी ।
दीधिति, सं. स्त्री. (सं. पुं.) किरणः, मयूखः, अंशुः, मरीचिः ।
दीन, वि. (सं.) दरिद्र, निर्धन २. खिन्न, विषण्ण ३. अति-,नम्र-विनीत ४. संतप्त, दुःखित ।
—दयाल, वि. (सं.-लु) दरिद्रवत्सल । सं. पुं., ईश्वरः ।
—बंधु, वि. (सं.) दरिद्रमित्रं, दीनानुकंपिन् । सं. पुं., परमेश्वरः ।
—दीन, सं. पुं. (अ.) धर्मः ।
दार, वि. (अ.+फ़ा.) धार्मिक, पुण्यात्मन् ।
—दुनिया, सं. पुं. (अ.) लोकपरलोकौ (द्वि.) ।
दीनता, सं. स्त्री. (सं.) दरिद्रता, निर्धनता, अकिंचनता २. आर्त्तता, कातरता ३. खेदः, विषादः ४. अति,-नम्रत्वं-विनयः ।
दीनानाथ, सं. पुं. (सं. दीन+नाथ) दीन-, दयालुः-वत्सलः-बन्धुः, परमेश्वरः ।
दीनार, सं. पु. (सं.) स्वर्णमुद्रा २. स्वर्णाभूषणं ३. निष्क,-तोलः-भारः ।

दीप, सं. पुं. (सं.) दीपकः, दे. 'दिया' ।
—माला, सं. स्त्री. (सं.) दीप,-आलिः (स्त्री.)-आली-आवली-उत्सवः-मालिका २. दीपपंक्तिः (स्त्री.) ।
—शिखा, सं. स्त्री. (सं.) दीप-कलिका-ज्वाला ।
दीपक, सं. पुं. (सं.) प्र,-दीपः, दे. 'दिया' २-४. अर्थालंकार-राग-ताल,-भेदः ५. अग्नि-क्रीडनकभेदः । वि., प्रकाशक, दीप्तिकर २. पाचक, अग्निवर्द्धक ३. उत्तेजक ।
दीपन, सं. पुं. (सं. न.) प्रकाशनं, ज्वालनं २. जठराग्निवर्द्धनं, क्षुधोत्पादनं ३. उत्तेजनं-ना, आवेगजननम् ।
दीपावलि-ली-, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'दीपमाला' ।
दीप्त, वि. (सं.) प्रकाशित, प्रकाशमान २. प्रज्वलित, प्रज्वलत् (शत्रंत) ।
दीप्ति, सं. स्त्री. (सं.) आलोकः, प्रकाशः २. आभा, प्रभा, द्युतिः(स्त्री.) ३. कांतिः (स्त्री.), शोभा ।
दीमक, सं. स्त्री. (फ़ा.) उप,-दीका-देहिका ।
—लगना, क्रि. अ., उपदेहिकाभिः भक्ष्-निष्कुष् (कर्म.) ।
दीया, दे. 'दिया' ।
दीर्घ, वि. (सं.) लंब, आयत, आयामवत् ।
—काल, सं. पुं. (सं.) सुमहान् समयः ।
—जंघ, सं. पुं. (सं.) उष्ट्रः २. बकः । वि., लंबटंग ।
—जीवी, वि. (सं.-विन्) दीर्घ-चिर,-आयु-आयुस्-आयुष्य-जीविन्, आयुष्मत् ।
—दर्शिता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'दूरदर्शिता' ।
—दर्शी, वि. (सं.-शिन्) दे., 'दूरदर्शी' ।
—निद्रा, सं. स्त्री. (सं.) लंबस्वापः २. मृत्युः (पुं.) ।
—सूत्री, वि. (सं.-त्रिन्) दीर्घसूत्र, चिरक्रिय, विलंबिन् ।
दीर्घायु, सं. स्त्री. (सं. न.) चिर-दीर्घ,-जीवनं-आयुस् (न.) । वि., दे. 'दीर्घजीवी' ।
दीर्घायुध, सं. पुं. (सं. न.) भल्लः—ल्लम्, कुन्तः, प्रासः २. शूकरः, वराहः, कोलः ३. शल्यः, छेदारः । वि. दीर्घ-लम्ब-बृहद्,-अस्त्र-आयुध ।
दीवट, सं. स्त्री. (हिं. दीवा) दीप-दीपक,-ध्वजः-वृक्षः-आधारः, शिखातरुः ।

दीवान, सं. पुं. (अ.) राजसभा, आस्थानं-नी, राजकुलं २. अमात्यः, सचिवः ३. कवितासंग्रहः ।
—आम, सं. पुं. (अ.) *सामान्यास्थानम् ।
—ख़ास, सं. पुं. (अ.) *विशेषास्थानम् ।
दीवाना, वि. (फ़ा.) उन्मादिन्, विक्षिप्त, दे. 'पागल' ।
दीवार, सं. स्त्री. (फ़ा.) कुड्यं, भित्तिः (स्त्री.) ।
—गीर, सं. स्त्री. (फ़ा.) भित्तिदीपः २. भित्तिस्थो दीपाधारः ।
दीवाली, सं. स्त्री. (सं. दीपाली) दे. 'दीपमाला'।
दुंदुभ, सं. पुं. } सं. पुं., दे. 'नक्कारा'
दुंदुभि, सं. स्त्री. }
दुंबा, सं. पुं. (फ़ा. दुंबालः) गोलपुच्छो मेषः-मेढः ।
दुःख, सं. पुं. (सं. न.) कष्टं, क्लेशः, पीडा, बाधा, व्यथा, अ (आ) र्त्तिः (स्त्री.), कृच्छ्रं, वेदना, परि-सं-, तापः २. आपद्-विपद् (स्त्री.), संकटं ३. रोगः, व्याधिः (पुं.) ।
—उठाना या पाना, क्रि. अ., दुःखयति (ना. धा.), दुखं सह् (भ्वा. आ. से.)-अनुभू-उपभुज् (रु. आ. अ.)-प्राप् (स्वा. उ. अ.) ।
—देना या पहुँचाना, क्रि. स., दुःखयति (ना. धा.), तप्-व्यथ्-अर्द् (प्रे.), पीड् (चु.), क्लिश् (क्र्. प. से.) ।
—दाई, वि. (सं.-दायिन्) दुःख-कष्ट-क्लेश,-कर-द-दातृ-दायक-प्रद-जनक-उत्पादक ।
—मय, वि. (सं.) क्लेशमय, दुःखपूर्ण ।
—हर्त्ता, वि. (सं.-र्तृ) दुःख-क्लेश-कष्ट,-नाशक-निवारक-हारिन् ।
दुःखित, वि. (सं.) क्लेशित, पीडित, व्यथित, दुःखभाज्, दून, तापित, सं-परि,-तप्त, दुःख,-आर्त्त, कृच्छ्रगत, सव्यथ, दुःखिन् ।
दुःखिनी, वि. स्त्री. (सं.) विपन्ना, पीड़िता, व्यथिता, सं-परि,-तप्ता, आर्ता ।
दुःखी, वि. (सं.-खिन्) दे. 'दुःखित' (दुःखिनी स्त्री.) ।
दुःशासन, वि. (सं.) उच्छृङ्खल, उद्दाम, दुर्निग्रह । सं. पुं., धृतराष्ट्रस्य पुत्रविशेषः २.-कुशासनम् ।
दुःशील, वि. (सं.) दुःस्वभाव, कुशील, कुस्वभाव, दुष्प्रकृति, दुर्वृत्त २. धृष्ट, उद्धत ।
दुःश्रव, वि. (सं.) कर्ण-श्रुति,-कटु । सं. पुं., दुःश्रवत्व-श्रुतिकटुत्व,-दोषः (सा०) ।
दुःसंग, सं. पुं. (सं.) कुसंगः, कु-दुस्,-संगतिः (स्त्री.) ।
दुःसाध्य, वि. (सं.) कठिन, दुष्कर, कष्टसाध्य २. असाध्य, दुरुपचार, अशमनीय, अचिकित्स्य, निरुपाय ।
दुआ, सं. स्त्री. (अ.) प्रार्थना २. आशीर्वादः ।
दुआबा, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'दोआबा' ।
दुकड़ा, सं. पुं. (सं. द्विकं) द्वयं, द्वितयं, युगं, युगलं, २. दे. 'छदाम' ।
दुकान, सं. स्त्री. (फ़ा.) पण्य,-शाला-अगारं, आपणः, विपणिः (स्त्री.), निपद्या, *हट्टी ।
—दार, सं. पुं. (फ़ा.) आपणिकः, पण्याजीवः, विपणिन्, क्रयविक्रयिकः, वणिज् (पुं.) ।
—बढ़ाना, मु., पण्यशालां (अ)पिधा (जु. उ. अ.) ।
दुखड़ा, सं. पुं. (सं. दुःखं) दुःखवृत्तांतः, करुणकथा २. कष्टं, विपद् (स्त्री.) ।
दुखना, क्रि. अ. (सं. दुःखं >) पीड्-क्लिश्-तप् (कर्म.)-व्यथ् (भ्वा. आ. से.) ।
दुखाना, क्रि. स. (हिं. दुखना) पीड्-अर्द् (चु.), व्यथ् (प्रे.), दु (स्वा. प. अ.), क्लिश् (क्र्. प. से.), उप-परि-सं-, तप् (प्रे.) ।
दुखिया-यारा, वि. (सं. दुःखं >) दे. 'दुःखित' ।
दुगना, वि. (सं. द्विगुण) द्विगुणित ।
दुग्ध, सं. पुं. (सं. न.) क्षीरं, पयस् (न.) ।
—फेन, सं. पुं. (सं.) क्षीरडिंडि (डी)रः, शार्करः ।
दुचित्ता, वि. (सं. द्विचित्त) दोलायमान, संशयान, संदेहिन्, संदिग्ध,-बुद्धि-मति ।
दुचित्ती, सं. स्त्री. (हिं. दुचित्ता) दोलावृत्तिः (स्त्री.), द्वैधीभावः, निश्चयाभावः, संशयः ।
दुत, अव्य. (अनु.) अपसर-अपेहि (लोट्) ।
—कार, सं. स्त्री. (अनु. + सं. कारः) धिक्कारः, तिरस्कारः, भर्त्सना, वाग्दंडः २. अपसारणम् ।
दुतकारना, क्रि. स. (हिं. दुत्कार) धिक्-तिरस्कृ, निर्, भर्त्स् (चु. आ. से.) २. सापमानं निस्-अप,-सृ (प्रे.) ।
दुतरफ़ा, वि. (फ़ा. दो + अ. तरफ़) द्वि(द्वै)-पक्ष, द्वि(द्वै)पार्श्व, द्वि,-पक्ष्य-पक्षीय ।
दुधार, वि. (हिं. दूध) क्षीरिणी, दुग्धवती, पयस्वती, पीनोध्नी (गौ इ.) ।

दुधारा, वि. (सं. द्विधार) उभयतः तीक्ष्ण-निशित। सं. पुं., खड्गभेदः, *द्विधारः।

दुनिया, सं. स्त्री. (अ.-या) जगत् (न.), संसारः २. लोकः, जनता ३. जगत्प्रपंचः।

—दार, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) गृहस्थः, गृहिन्, संसारिन्, २. व्यवहार,-कुशलः-पटुः।

—दारी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) ऐहिकता-त्वं, प्रपंचानुरागः, संसारासक्तिः (स्त्री.) २. लोक,-आचारः-मार्गः, रूढिः (स्त्री.) ३. व्यवहार-कौशलम्।

दुनियावी, वि. (अ.) लौकिक, सांसारिक, ऐहिक।

दुपट्टा, सं. पुं. (हिं. दो+सं.-पट्टः>) द्विपट्टः, द्विपटी २. उष्णीषः-षम्।

दुपहर, सं. स्त्री., दे. 'दोपहर'।

दुपहरिया, सं. स्त्री. (हिं. दुपहर) बंधु(धू)-कः, रक्तकः, बंधुजीवकः २. दे. 'दोपहर'।

दुब(वि)धा, सं. स्त्री. (सं. द्विविधा>) संशयः, संदेहः २. निर्णय-निश्चय,-अभावः ३. संकोचः ४. आशंका, विचिकित्सा।

दुबला, वि. (सं. दुर्बल दे.)।

दुबलापन, सं. पुं., दे. 'दुर्बलता'।

दुबारा, क्रि. वि., दे. 'दोबारा'।

दुबे, सं. पुं. (सं. द्विवेदिन्) द्विवेदः, ब्राह्मणभेदः।

दुभाषिया, सं. पुं. (सं. द्विभाषिन्) भाषाद्वयज्ञः, द्विभाषाविद् (पुं.) २. व्याख्यातृ, अर्थबोधकः।

दुमंज़िला, वि. (फ़ा.) द्वि,-भूम-भूमिक-(प्रासादः इ.)।

दुम, सं. स्त्री. (फा.) पुच्छः-च्छं, लांगु(गू)-लं, लूमं २. अनुयायिन्, अनुगः ३. अंतिम-भागः।

—दार, वि. (फ़ा.) सपुच्छ, लांगूलिन्।

—दार सितारा, सं. पुं., उल्का, धूमकेतुः (पुं.); उत्पातः, केतुः (पुं.)। वि., सपुच्छ, लांगूलिन्।

—दबाकर भागना, मु., कापुरुषवत्-सकातर्यं पलाय् (भ्वा. आ. से.)-विद्रु (भ्वा. प. अ.)-अपधाव् (भ्वा. प. से.), कांदिशीक (वि.) भू।

दुमन, वि. (सं. दुर्मनस्) खिन्न, विषण्ण, म्लान, अवसन्न।

दुरंगा, वि., दे. दो के 'नीचे'।

दुरंत, वि. (सं.) दुष्परिणाम, कुफल, दुष्फल, दुरवसान २. दुर्गम, दुरतिक्रम ३. प्रचंड, उग्र ४. दुर्ज्ञेय, दुर्बोधः।

दुर, अव्य. (हिं. दूर) अपसर-अपेहि (लोट्)।

—दुर करना, मु., सन्यक्कारं अपसृ (प्रे.)।

दुराग्रह, सं. पुं. (सं.) दे. 'हठ'।

दुराग्रही, वि. (सं.-हिन्) दे. 'हठी'।

दुराचरण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दुराचार'।

दुराचार, सं. पुं. (सं.) कद्,-आचारः-आचरणं, दुर्,-वृत्तं-व्यवहारः-आचरणं, दुस्,-चरितं-चेष्टितं-चारित्र्यं-शीलं, अनार्यत्वम्।

दुराचारी, वि. (सं.-रिन्) दुष्ट, दुरात्मन्, पापात्मन्, पापकर्मन्, दुर्वृत्त, दुश्चरित्र, अधार्मिक, पाप, खल, शठ, लंपट, विषयासक्त।

दुराज, सं. पुं. (सं. द्विराज्यं) द्विशासनं, द्विराजकता।

दुरात्मा, वि. (सं.-त्मन्) दुष्ट, पापात्मन्, दे. 'दुराचारी'।

दुरुस्त, वि. (फ़ा.) दे. 'ठीक'।

दुरूह, वि. (सं.) दुर्बोध, दुर्ज्ञेय, गूढार्थ, गहन, क्लिष्ट।

दुर्गंध, सं. पुं. (सं.) पूतिः (स्त्री.), पूतिगंधः, कु-दुर्-वासः।

—युक्त, वि. (सं.) दुर्-पूति,-गंधि, दुर्-कुत्सित-, पूति, गंध।

दुर्ग, सं. पुं. (सं. न.) कोटः-टिः (स्त्री.), दे. 'किला'। वि. दे. 'दुर्गम' (१); अगम्य, गहन, विषमस्थ, दुर्ग २. दुर्बोध ३. विकट।

—अधिपति, सं. पुं. (सं.) दुर्ग,-पति-पालः-ईशः-अध्यक्षः।

दुर्गति, सं. स्त्री. (सं.) दुर्दशा, दुरवस्था, २. नरक,-वासः-भोगः।

दुर्गम, वि. (सं.) दुष्प्राप, दुरासद, दुरारोह।

दुर्गा, सं. स्त्री. (सं.) रुद्राणी, चंडी, दे. 'पार्वती'।

दुर्गुण, सं. पुं. (सं.) अवगुणः, दोषः, व्यसनं, दुर्लक्षणं, कुलक्षणम्।

दुर्घट, वि. (सं.) दुष्कर, दुस्साध्य।

दुर्घटना, सं. स्त्री. (सं.) अशुभ-अमंगल,-घटना-आपातः-समापत्तिः (स्त्री.) २.विपद्-आपद्(स्त्री.)।

दुर्जन, सं. पुं. (सं.) खलः, पापः, शठः, व. 'दुराचारी' के पर्यायों के पुं. रूप।

दुर्जनता, सं. स्त्री. (सं.) दुष्टता, खलता, शठता।

दुर्जय, वि. (सं.) अधृष्य, अजय्य, अदम्य, दुरासद, अ-दुर्,-जेय ।

दुर्ज्ञेय, वि. (सं.) दे. 'दुरूह' ।

दुर्दमनीय, वि. (सं.) दुर्दम्य, दुर्दान्त, अवश्य, दे. 'दुर्जय' ।

दुर्दशा, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गतिः (स्त्री.), दुरवस्था ।

दुर्दिन, सं. पुं. (सं. न.) मेघाच्छन्नो दिवसः २. कु-विपत्,-कालः, कष्टमयः समयः ।

दुर्दैव, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दुर्भाग्य' ।

दुर्धर्ष, वि. (सं.) दे. 'दुर्जय' २. उग्र, प्रचंड ।

दुर्नीति, सं. स्त्री. (सं.) कुनीतिः (स्त्री.), अन्यायः, अनाचारः ।

दुर्बल, वि. (सं.) अबल, निर्बल, अशक्त, क्षीण-अल्प,-बल-शक्ति, निस्,-तेजस्-सत्त्व २. कृश, क्षाम, क्षीण, अमांस, छात, शात ।

दुर्बलता, सं. स्त्री. (सं.) निर्बलता, अशक्तता, अबलता २. कृशता, क्षामता ।

दुर्बुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) कुमतिः-मंदधीः (स्त्री.) । वि., अज्ञ, मूर्ख, मंदमति ।

दुर्बोध, वि. (सं.) दे. 'दुरूह' ।

दुर्भाग्य, सं. पुं. (सं. न.) दुर्दैवं, दौर्-मंद,-भाग्यं, दुर्जातं, दुर्गतिः (स्त्री.), दैव,-दुर्विपाकः-विपर्ययः-विपर्यासः ।

दुर्भावना, सं. स्त्री. (सं.) दुर्भावः, दुष्ट,-बुद्धि-भावः, असूया, द्रोहः, द्वेषः, दौरात्म्यम् ।

दुर्भिक्ष, सं. पुं. (सं. न.) अकालः, दुष्कालः, अनशनं, प्रयामः, आहाराभावः, नीवाकः ।

दुर्मट, सं. पुं. (सं.दुर्+मुट् =कूटना). *भूकुट्टनं, *दुर्मुटम् ।

दुर्मति, सं. स्त्री. तथा वि. (सं.) दे. 'दुर्बुद्धि' ।

दुर्मुख, वि. (सं.)कटुभाषिन् २. कुदर्शन,कुरूप ।

दुर्योध, वि. (सं.) अजेय, अजय्य, अधृष्य, अदम्य ।

दुर्योधन, सं. पुं. (सं.) धृतराष्ट्रस्य ज्येष्ठपुत्रः ।

दुर्योनि, वि. (सं.) हीन–नीच,–जाति–वर्ण–कुल ।

दुर्रं, सं. पुं. (अ०), दे० 'मोती' ।

दुर्लंघ्य, वि. (सं.) दुस्तरः, दुःखतार्य, दुर्लंघनीय, दुरतिक्रम ।

दुर्लभ, वि. (सं.) अप्राप्य, दुष्प्राप, विरल, दुरधिगम २. अत्युत्तम, अत्युत्कृष्ट ।

दुर्वचन, सं. पुं. (सं.) दे. 'गाली' ।

दुर्विनीत, वि. (सं.) अविनय, अविनीत, उद्धत, धृष्ट, अशिष्ट, असभ्य, वियात ।

दुर्विपाक, सं. पुं. (सं.) कुपरिणामः, कुफलम् ।

दुर्वृत्त, वि. (सं.) दे. 'दुराचारी' ।

दुर्व्यवस्था, सं. स्त्री. (सं.) कुव्यवस्था, कुनीतिः (स्त्री.), दुर्णयः, कुप्रणयनं, कुप्रबंधः, दुर्निर्वाहः ।

दुर्व्यवहार, सं. पुं. (सं.) दुर्वृत्तिः (स्त्री.), असद्व्यवहारः, अप,-कारः-क्रिया, कुचेष्टितं, कुचरितम् ।

दुर्व्यसन, सं. पुं. (सं. न.) दुर्गुणः, दोषः, *कदासक्तिः (स्त्री.) ।

दुर्व्यसनी, वि. (सं.-निन्) दुर्गुण, दोषिन्, दुराचारिन्, पाप ।

दुलकी, सं. स्त्री. (हिं. दलकना) धो (धौ)-रितं-तकम् ।

—चलना, क्रि. अ., धोरितेन गम् ।

दुलत्ती, सं. स्त्री (हिं. दो+सं. ऊत्ता>)(पशूनां) द्विलत्ता-द्विखुर-द्विपाद,-आघातः-प्रहारः-क्षेपः ।

—मारना, क्रि. स., लत्ताभ्यां प्रहृ (भ्वा.प.अ.) आहन् (अ. प. अ.) ।

दुलह(हि)न, सं. स्त्री. (हिं. दुलहा) नव-वधूः (स्त्री.), वधूटी, नवोढा, नवपरिणीता ।

दुलहा, सं. पुं., दे. 'दूल्हा' ।

दुलाई, सं. स्त्री. (हिं तुलाई) दे. 'रज़ाई' ।

दुलार, सं. पुं. (हिं. दुलारना) उप-,लालनं, चुंबनं, आलिंगनम् ।

दुलारना, क्रि. स. (सं. दुर्लालनं>) उप-, लल् (चु.), आलिंग् (भ्वा. प. से.), स्नेहेन परामृश् (तु. प. अ.) ।

दुश्चरित-त्र, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दुराचार' । वि., दे. 'दुराचारी' ।

दुलारा, वि. (हिं. दुलार) दे. 'लाडला' ।

दुशाला, सं. पुं. (फ़ा.) द्विशाटः ।

दुश्मन, सं. पुं. (फ़ा.) शत्रुः, अरिः (पुं.) ।

दुश्मनी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शत्रुता, वैरम् ।

दुष्कर, वि. (सं.) दुस्साध्य, कठिन, विकट, कष्टसाध्य ।

दुष्कर्म, सं. पुं. [सं.-र्मन् (न.)] कु,-कार्य-कृत्यं, पापं, अधर्मः, दुष्कृतिः (स्त्री.) ।

दुष्काल, सं. पुं. (सं.) कु,-कालः-समयः २. दे. 'दुर्भिक्ष' ।

दुष्कुल, सं. पुं. (सं. न.) नीच-हीन-कु,-कुलं-वंशः।
दुष्कृत, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दुष्कर्मक'।
दुष्ट, वि. (सं) खल, शठ, पाप, दुर्जात, अभद्र, नीच, दुर्वृत्त, दे. 'दुराचारी'।
दुष्टता, सं. स्त्री. (सं.) दौर्जन्यं, दौरात्म्यं, कुचेष्टा, पापं, दुर्वृत्तं, दे. 'दुराचार'।
दुष्प्रकृति, सं.स्त्री. (सं.) दुस्स्वभावः, दुश्शीलम्। वि., कुशील, दुष्टस्वभाव।
दुष्प्राप्य, वि. (सं.) दे. 'दुर्लभ'।
दुष्यंत, सं. पुं. (सं.) पुरुवंशीयनृपविशेषः, शकुंतलापतिः।
दुस्तर, वि.(सं.)दुःखतार्य, दुर्लंघनीय २. कठिन, दुष्कर, विकट।
दुस्सह, वि. (सं.) दुर्विषह, असह्य, असहनीय।
दुस्साध्य, वि. (सं.), दे. 'दुःसाध्य'।
दुहना, क्रि. स. (सं. दोहनं) दे. 'दोहना'।
दुहरा, वि., दे. 'दोहरा'।
दुहाई[1], सं. स्त्री. (हिं. दुहना) दोहन,-भृतिः (स्त्री)-भृत्या।
दुहाई[2], सं. स्त्री. (सं. द्वि+आह्वायः>) दे. 'डौंडी' २. आत्मत्राणार्थं आह्वानं-आकारणं-संबोधनं ३. शपथः।
—देना, मु., स्वरक्षार्थं आ-ह्वे (भ्वा. प. अ.)-आ-कृ (प्रे.)।
दुहाना, क्रि. प्रे., व. 'दोहना' के प्रे. रूप।
दुहिता, सं. स्त्री. [सं. दुहितृ (स्त्री.)] दे. 'पुत्री'।
दूकान, सं. स्त्री., दे. 'दुकान'।
दूज, सं. स्त्री. (सं. द्वितीया) शुक्ला कृष्णा वा द्वितीया तिथिः (स्त्री.)।
—का चाँद, मु., दिवाप्रदीप, दुर्लभदर्शन।
दूत, सं. पुं. (सं.) वार्ता-संदेश,-हरः, संदिष्ट-कथकः, राज,-दूतः-प्रतिनिधिः २. प्रणिधिः, च (चा) रः, गूढदूतः।
दूती, सं. स्त्री. (सं.) संचारिका, दूति (ती) का, शंभली, कुट्ट (ट्टि) नी, सारिका २. वार्ता-संदेश,-हरी।
दूध, सं. पुं. (सं. दुग्धं) क्षीरं, पयस् (न.), स्तन्यं, ऊधस्यं, ऊधन्यं, बालजीवनं २. वृक्ष,-क्षीरं-रसः ३. (गौ का) गो,-दुग्धं-रसः, गव्यम्।
—का पानी, सं. पुं., आमिक्षामस्तु (न.), मोरटः।
—की झाग, सं. स्त्री., दुग्धफेनः, शार्करः, शार्ककः।
—पिलाई, सं. स्त्री., दे. 'दाई'।
—पूत, सं. पुं., संपद्संतती-धनसंतानौ (द्वि.)।
—बहन, सं. स्त्री., *सस्तन्या, धात्रीपुत्री, धात्रेयी, स्तनंधयी।
—भाई, सं. पुं., *सस्तन्यः, धात्रीपुत्रः, धात्रेयः।
—मुँहा, वि. पुं., स्तनंधयः, शिशुः। स्तन-क्षीर,-पायिन्-पः [—मुँही (स्त्री.)]।
—उगलना या डालना, मु., (शिशुः) दुग्धं उद्गृ (तु. प. से.)-उद्-वम् (भ्वा. प. से.)।
—का दूध, पानी का पानी, मु., न्यायः, नयः, धर्मः।
—की मक्खी की तरह निकाल फेंकना, मु., दुग्धमक्षिकावत् निरस् (प्रे.), अविमृश्यैव निष्कस् (प्रे.)।
—के दाँत न टूटना, मु., शैशवे वर्तमान।
—छुड़ाना या बढ़ाना, मु., स्तन्यं हा (प्रे., हापयति)-त्यज् (प्रे.)।
दूधों नहाना पूतों फलना, मु.,धनसंतानैः वर्ध् (भ्वा. आ. से.)।
—पिलाना, मु., स्तनं-स्तन्यं पा-धे-(प्रे., पाययति, धापयति) दा।
—फटना, मु., (अम्लादियोगेन) दुग्धं विकृ (कर्म.) अथवा नीरक्षीरे वि-श्लिष् (दि. प. अ.)।
दूधिया, वि. (हिं. दूध) शुक्ल, श्वेत, दुग्धवर्ण।
—पत्थर, सं. पुं. (सं.) *दौग्धप्रस्तरः, श्वेत-प्रस्तरभेदः।
दूना, वि. (सं. द्विगुण) द्विगुणित।
दूब, सं. स्त्री. (सं. दूर्वा) भार्गवी, हरिता, अनंता।
दूबदू, क्रि. वि., (हिं. दो या फ़ा. रूबरू) मुखामुखि (अव्य.), संमुखम्।
दूबे, सं. पुं., दे. 'दुबे'।
दूभर, वि. (सं. दुर्भर>) कठिन, दुस्साध्य।
दूरंदेश, वि. (फ़ा.) दे. 'दूरदर्शी'।
दूरंदेशी, सं. स्त्री. (फ़ा.) 'दूरदर्शिता'।
दूर, क्रि. वि. (सं. दूरं) दूरे, आरात् (अव्य.),

—लोक, सं. पुं. (सं.) स्वर्गः ।
—वाणी, सं. स्त्री. (सं.) देवभाषा, संस्कृतम् ।
देवकी, सं. स्त्री. (सं.) श्रीकृष्णचन्द्रजननी, देवकात्मजा ।
—नन्दन, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः ।
देवता, सं. पुं. (सं. स्त्री.) दे. 'देव' (१-३,५,६) ।
देवत्व, सं. पुं. (सं.) सुरत्व, अमरत्व ।
देवन, सं. पुं. (सं.) अक्षः, सारः, शारः, पाशकः । (सं. न.) कान्तिः-दीप्तिः (स्त्री.) २. अक्ष-द्यूत,-क्रीडा ३. क्रीडा, विनोदः ४. प्रमोदवाटिका ।
देवना, सं. स्त्री. (सं.) द्यूतम् २. क्रीडा ३. शोकः ।
देवर, सं. पुं. (सं.) देवृ (पुं.), देवलः, देवारः, देवानः, तुरागावः, पत्युरनुजः २. पतिभ्रातृ (पुं. छोटा या बड़ा) ।
देवरानी, सं. स्त्री. (सं. देवरः>) यातृ (स्त्री.), देवरपत्नी, जा ।
देवल, सं. पुं. (सं.) देवाजीवः, देवपूजोपजीविन् २. नारदः ३. स्मृतिकारमुनिविशेषः । हिं., देवालयः, मन्दिरम् ।
देवांगना, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अमरांगना' ।
देवालय, सं. पुं. (सं.) स्वर्गः २. मंदिरम् ।
देवी, सं. स्त्री. (सं.) देवपत्नी, सुरांगना २. दुर्गा, पार्वती ३. ब्राह्मणी ४. पतिव्रता ५. पट्ट,-महिषी-राज्ञी ।
देश, सं. पुं. (सं.) जनपदः, विषयः, भूभागः, नीवृत, उपवर्तनं, प्रदेशः २. राष्ट्रं ३. स्थानं, स्थलं ४. रागभेदः ।
—निकाला, सं. पुं., (स्वदेशात्) प्र-निर्-वि,-वासनं-वासः, प्रव्राजनम् ।
—भाषा, सं. स्त्री. (सं.) उप-प्राकृत-प्रादेशिक,-भाषा ।
देशांतर, सं. पुं. (सं. न.) अन्य-वि-पर,-देशः २. लम्बांशः, देशांतरं (तूलवत्) ।
देशाचार, सं. पुं. (सं.) देश,-धर्मः-व्यवहारः-रीतिः (स्त्री.) ।
देशाटन, सं. पुं. (सं. न.) भू,-यात्रा-भ्रमणं-पर्यटनम् ।
देशी, सं. स्त्री. (सं. देशीय) देश्य, देशिक, स्वदेश,-ज-उत्पन्न ।

देस, देसी, सं. पुं. तथा वि. दे. 'देश' तथा 'देशी' ।
देसावर, सं. पुं., दे. 'दिसावॅर' ।
देह, सं. पुं. (सं.) कायः, दे[illegible] २. अवयवः, अंगं ३. जीवनम् ।
—पात, सं. पुं. (सं.) मृत्युः (पुं. [illegible]),
देहरा, सं. पुं. (सं. देवः+हिं. घर) [illegible] मंदिरम् ।
देहली, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'दहलीज' २. इन्द्रप्रस्थं, देहली, दिल्ली ।
देहवंत, देहवान्, वि. (सं. देहवत्) दे. 'देही' ।
देहांत, सं. पुं. (सं.) मृत्युः (पुं.), निधनं, मरणम् ।
देहात, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'ग्राम' ।
देहाती, वि. (फा. देहात) दे. 'ग्रामीण' ।
देही, वि. (सं. देहिन्) प्राणिन्, देहवत्, शरीरिन्, तनु,-धारिन्-भृत । सं. पुं., (सं.) जीव-, आत्मन् (पुं.), जीवः, प्रत्यगात्मन् (पुं.)।
दैत्य, सं. पुं. (सं.) राक्षसः, दानवः, निशाचरः।
—गुरु, सं. पुं. (सं) शुक्राचार्यः ।
—पति, सं. पुं. (सं.) हिरण्यकशिपुः ।
—माता, सं. पुं. (सं.-तृ) दितिः (स्त्री.)।
दैत्यारि, सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. देवः ।
दैनिक, वि. (सं.) प्रात्यहिक-आह्निक [–की (स्त्री.)], दैनंदिन [–नी (स्त्री.)] २. नैत्यक-नैत्यिक [–की (स्त्री.)]। सं. पुं., दे. 'दैनिकी' ।
दैनिकी, सं. स्त्री. (सं.) दिन,-वेतनं-भृतिः (स्त्री.) ।
दैव, सं. पुं. (सं. न.) भाग्यं, अदृष्टं, नियतिः (स्त्री.), भागधेयं, भवितव्यता, दिष्टं, प्राक्तन, विधिः (पुं.), प्रारब्धं २. ईश्वरः ३. आकाशःशम् । वि., दिव्य, सौर, अमानुष, अपौरुष, ऐश्वर, अलौकिक (स्त्री., दे. 'दैवी') ।
—गति, सं. स्त्री. (सं.) दैवघटना, भाग्यचक्रं २. दे. 'दैव' (१) ।
—दुर्विपाक, सं. पुं. (सं.) दैवदोषः, दौर्भाग्योदयः ।
—योग, सं. पुं. (सं.) यदृच्छा, दैव,-गतिः (स्त्री.)-घटना ।
—वश, क्रि. वि. (सं.-शं) दैवात्, दैववशात्, दैवयोगात्, अकस्मात्, यदृच्छया ।

वी, वि. स्त्री. (सं.) आकस्मिकी, यादृच्छिकी, अलौकिकी, अमानुषी, नश्वरी, अपार्थिवी ।

हिक, सं.) शारीरिक-कायिक-वैग्रहिक-
—ला ( )] ।

द्वि.) द्वौ (पुं.), द्वे (स्त्री., न.), युग्मं (उ. दो मास=मासद्वयं इ.) ।

, सं. स्त्री., द्व्याणी ।

—अर्था, वि., द्व्यर्थ, द्व्यर्थक, श्लिष्ट २. संदिग्ध ।

—आब, सं. पुं. (फ़ा.) *द्व्यापम् ।

—गला सं. पुं. (फ़ा.) संकरजः, मिश्रजः, विजातः, सांकरिकः, वर्णसंकरः ।

—चंद, वि. (फ़ा.) द्विगुण, द्विगुणित ।

—चित्ता, वि., दे. 'दुचित्ता' ।

—तल्ला, वि., दे. 'दुमंजिला' ।

—तारा, सं. पुं., *द्वितारः, वाद्यभेदः ।

—धारा, वि., दे. 'दुधारा' ।

—नाली, वि., द्विनाली (भुशुंडी आदि) ।

—पहर, सं. स्त्री., मध्याह्नः, मध्याह्नकालः, मध्य (ध्यं)दिनं, उद्दिनं ।

—पर्ता, वि., द्विरावृत्त, द्विरावर्तित, द्विगुण, द्विगुणित ।

—पहर का, वि., माध्याह्निक [–की (स्त्री.)] माध्यंदिनं [–नीं (स्त्री.) ।

—पहर पहिले, क्रि. वि., अर्वाङ् मध्याह्नात् (अ. म.=A. M.) प्राह्णे, पूर्वाह्णे ।

—पहर ढले, क्रि, वि., पश्चान्मध्याह्नात् (प. म. =P. M.), अपराह्णे, विकाले ।

—पाया, वि., द्विप(पा)दः,द्विपाद्(पुं.)(मनुष्य) ।

—बारा, क्रि. वि. (फ़ा.) द्विः, द्विवारं, पुनः (सब अव्य.) ।

—भाषिया, सं. पुं., दे. 'दुभाषिया' ।

—महाला, मंज़िला, वि., दे. 'दुमंजिला' ।

—मानी, वि., दे. 'दोअर्थी' ।

—मुँहा, वि., द्विमुख, द्विवदन, २. छलिन्, दांभिक । सं. पुं., द्विमुखः सर्पः, सर्पभेदः ।

—रंगा, वि., द्विरंग, द्विवर्ण २. दांभिक ।

—रंगी, सं. स्त्री., दम्भः, द्वैधं, प्रतारणा ।

—राहा, सं. पुं., द्विपथं, चारुपथः ।

—लड़ा, सं. पुं., *द्विसूत्रकः ।

—साला, वि., द्विवार्षिक-द्वैवार्षिक (–की स्त्री.) द्विवर्षीण, द्विवर्ष ।

—सूती, सं. स्त्री., *द्विसूत्री ।

—सेरी, सं. स्त्री., द्विसेटकी, द्विसेरी ।

—हत्थड़, सं.पुं., करयुगलाघातः, द्विहस्तप्रहारः।

—हत्था, क्रि. वि., कराभ्यां-हस्तद्वयेन (तृ.) ।

—एक,–चार, मु., कतिपय, कति,-चित्-चन ।

—करना, मु., द्विधा-द्विखण्डी कृ, समांशद्वयेन वि-भञ् (भ्वा. प. अ.) ।

—कौड़ी की चीज, मु., तुच्छ-क्षुद्र-अल्पमूल्य,-पदार्थः ।

—घड़ी, मु., कञ्चित्,-कालं-समयं, अल्पसमयं यावत् ।

दोज़ख़, सं. पुं. (फ़ा.) न(ना)रकः, निरयः ।

दोज़ख़ी, वि. (फ़ा.) नारकिन्, नारकीय, नारकिक-नारक [–की (स्त्री.)] ।

दोना, सं. पुं. (सं. द्रोणं>) *द्रोणः, पत्र-पर्ण,-पुटः-पुटकः ।

दोनों, वि. (हिं. दो) उभौ (पुं.), उभे (स्त्री. न.), उभय (प्रायः एक. या बहु. में; कभी द्विवचन में भी), द्वौ अपि (पुं.), द्वे अपि (स्त्री. न.) ।

दोला, सं. स्त्री. (सं.) दोली, हिंदोला, प्रेंखः-खं-खा ।

—यंत्र, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दोला' २. वक्र-संधान,-यन्त्रम् ।

—युद्ध, सं. पुं, (सं. न.) सन्दिग्ध-परिणामं युद्धम् ।

दोलायमान, वि. (सं.) इतस्ततः विचलत् (शत्रंत), प्रेंखत् (शत्रन्त) ।

दोष, सं. पुं. (सं.) न्यूनता, विकलता, छिद्रं, विकारः २. पापं, पातकं ३. लांछनं, कलंकः, अभियोगः ४. अपराधः, दोषः ५. रसदोषादयः काव्यदोषाः (सा.) ६. प्रदोषः, रजनीमुखम् ।

—लगाना, क्रि. सं. दुष् (प्रे., दूषयति), अभि-युज् (रु. आ. अ., चु.), कलंकयति (ना. धा.), दोषं क्षिप् (तु. प. अ.)-आरुह् (प्रे., आरोपयति), निंद् (भ्वा. प. से.) ।

—कर, वि. (सं.) अनिष्ट-अहित-हानि,-कर-कारिन्-कार ।

—ग्राही, वि. (सं.-हिन्) दुष्ट, खल, दुर्जन ।

—घ्न, सं. पुं. (सं. न.) वातपित्तकफ-नाशक-मौषधम् ।

—ज्ञ, वि. (सं.) प्राज्ञ, विद्वस् ।

—त्रय, सं. पुं. (सं. न.) वातपित्तकफदोषाः, दोष,-त्रिकं-त्रयी ।

—दृष्टि, वि. (सं.) दोषैकदृश्, निंदक, पुरोभागिन्, छिद्रान्वेषिन् ।

दोषी, वि. (सं. दोषिन्) सदोष, दोषवत्, अपराधिन्, प्रमादिन् २. पाप, पापिन् ३. अभियुक्त, दंड्य, कृतापराध ४. व्यसनिन्, कुमार्गगामिन् ।

दोस्त, सं. पुं. (फ़ा.) सखि (पुं.), दे. 'मित्र' ।

दोस्ताना, सं. पुं. } (फ़ा.) सखित्वं, दे.
दोस्ती, सं. स्त्री. } 'मित्रता' ।

दोहता, सं. पुं., दे. 'दौहित्र' ।

दोहती, सं. स्त्री., दे. 'दौहित्री' ।

दोहद, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गर्भिण्यभिलाषः, लालसा, श्रद्धा, दौर्हृदं, दौहृदम् ।

—वती, सं. स्त्री., लालसावती गर्भिणी, श्रद्धालुः (स्त्री.) ।

दोहन, सं. पुं. (सं. न.) स्तन्य-ऊधस्य-ऊधन्य,-निःस्रावणं,-निष्कर्षणं-निस्सारणं २.दे. 'दोहनी'।

दोहना, क्रि. स. (सं. दोहनं) दुह् (अ. प. अ., द्विकर्मक), स्तन्यं निस्स-स्रु (प्रे.) । सं. पुं., दे. 'दोहन' ।

दोहनी, सं. स्त्री. (सं.) दोहन-दुग्ध,-पात्रं, दोहनं, दोहः, पारी, लेपनम् ।

दोहने योग्य, वि. दोग्धव्य, दोह्य ।

दोहनेवाला, सं. पुं., दोग्धृ (पुं.), दोहक ।

दोहर, सं. स्त्री. (हिं. दो) *द्विस्तरी ।

दोहरा, वि. पुं. (हिं. दो) द्विरावृत्त, द्विरावर्तित २. द्विगुण, द्विगुणित ।

—करना, क्रि. स., द्विपुटी कृ,द्विः व्यावृत् (प्रे.), द्विपुटयति (ना. धा.) २. द्विगुणी कृ, द्विगुणयति (ना. धा.) ।

दोहराना, क्रि. स. (हिं. दोहरा) पुनः-द्विः कथ् (चु.)-गद्-वद् (भ्वा. प. से.)-व्याहृ (भ्वा. प. अ.) २. मुहुः-द्विः कृ या अनुस्था (भ्वा. प. अ.)-आ-चर् (भ्वा. प. से.), अभ्यस् (दि. प. से.) ३. पुनः-द्विः ईक्ष् (भ्वा. आ. से.)-विचर् (प्रे.), संशुध् (प्रे.) ।

दोहराव, सं. पुं. (हिं. दोहराना) पुनरीक्षणं, संशोधनं २. पुनरुक्तिः (स्त्री.), पौनरुक्त्यं, पुनर्,-वचनं-वादः ।

दोहा, सं. पुं. (हिं. दो) हिंदीछन्दोभेदः ।

दौड़, सं. स्त्री. (हिं. दौड़ना) धावनं-पलायनं, द्रवणं, विद्रवः, द्रुत,-गमनं-गतिः (स्त्री.), २. आक्रमणं (३-५) गति-उद्योग-बुद्धि,-सीमा ।

—धूप, सं. स्त्री., घोर-कठोर,-प्रयासः-परिश्रमः-उद्योगः-उद्यमः ।

—धूप करना, मु., अत्यंतं आयस्-परिश्रम् (दि. प. से.)-प्र-यत् (भ्वा. आ. से.) ।

दौड़ना, क्रि. अ. (सं. धोरणं) धोर् (भ्वा. प. से.), द्रु (भ्वा. प. अ.), धाव् (भ्वा. प. से.), द्रुतं-सवेगं-शीघ्रं गम् २. सततं-अत्यधिकं प्रयत् (भ्वा.आ. से.)-परि-श्रम् (दि. प. से.) ३. सहसा प्र-वृत् (भ्वा. आ. से.) ४. पलाय् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं., दे. 'दौड़' ।

दौड़नेवाला, सं. पुं., धावकः, धोरकः, शीघ्रगामिन् ।

दौड़ाना, क्रि. स., ब. 'दौड़ना' के प्रे. रूप ।

दौर दौरा, सं. पुं. (अ+हिं.) आधिपत्यं, शासनं, प्रभुत्वं, स्वामित्वं, ईक्षत्वं. वशः-शम् ।

दौरा, सं. पुं. (अ. दौर) पर्यटनं, परिभ्रमणं २. इतस्ततः अटनं-भ्रमणं-गमनं ३. अधिकारिणो निरीक्षणार्थं भ्रमणं ४. रोगादेः आवृत्तिः-आवर्तनं-सामयिकाक्रमणम् ।

—करना, क्रि. अ., परिभ्रम्-पर्यट् (भ्वा. प.से.), स्वमंडलं निरीक्षितुं परिभ्रम् ।

—सुपुर्द करना, मु., अभियोगं दंडाधिकरणिकपार्श्वे प्रेष् (प्रे.) ।

दौरात्म्य, सं. पुं. (सं. न.) दुष्टता, खलत्वम् ।

दौर्जन्य, सं. पुं. (सं. न.) दुर्जनता, दुष्टता ।

दौर्बल्य, सं. पुं. (सं. न.) दुर्बलता, क्षामता ।

दौर्भाग्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दुर्भाग्य' ।

दौलत, सं. स्त्री. (अ.) धनं, संपद् (स्त्री.) ।

—खाना, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) गृहं, आनि,-वासः ।

—मंद, वि. (अ.+फ़ा.) धनिक, संपन्न ।

—मंदी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) धनाढ्यता, समृद्धिः (स्त्री.) ।

दौवारिक, सं. पुं. (सं.) दे. 'द्वारपाल' ।

दौष्कुल, वि. (सं.) हीन-नीच-क्षुद्र-, कुलवर्ण—जातीय ।

दौष्ट्य, सं. पुं. (सं. न.) दुष्टता, खलता, दुर्जनता ।

दौष्यंति, सं. पुं. (सं.) दुष्यन्तपुत्रो भरतः ।

दौहित्र, सं. पुं. (सं.) दुहितृ,-पुत्रः-तनयः ।

दौहित्री, सं. स्त्री. (सं.) दुहितृ,-पुत्री-तनया ।

द्यु, सं. पुं. (सं. न.) दिनं २. आकाशः-शं ३. स्वर्गः । सं. पुं., अग्निः ।

—लोक, सं. पुं. (सं.) स्वर्गः ।

द्युति, सं. स्त्री. (सं.) कांतिः-दीप्तिः (स्त्री.), आभा, प्रभा २. लावण्यं, सौन्दर्यं, शोभा, छविः (स्त्री.) ३. किरणः, रश्मिः (पुं.) ।

द्युतिमन्त, वि. (सं.-मत्) कांतिमत्, दीप्तिमत्, भासुर, भास्वर ।

द्यूत, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अक्षवती, कैतवं, पणः ।

—कर, सं. पुं. (सं.) कितवः, धूर्त्तः, दुरोदरः, अक्षदेविन्, द्यूतकृत् ।

—कार, सं. पुं. (सं.) सभि (भी) कः २. दे. 'द्यूतकर' ।

द्योतक, वि. (सं.) प्रकाशक, द्योतकार, उद्भासक २. ज्ञापक, ख्यापक ।

द्रव, स. पुं. (सं.) द्रवणं, स्रवणं, क्षरणं, गलनं, वहनं, अभि-नि,-स्यं (ष्यं) दनं २. स्र (स्रा) वः, प्रवाहः, प्रस्रवः, धारः-रा ३. धावनं, पलायनं ४. वेगः, जवः ५. आसवः ६. रसः ७. परिहासः ८. द्रवत्वं ९. द्रव,-द्रव्य-पदार्थः । वि., तरल, द्रव, प्रवाहिन्, २. आर्द्र, क्लिन्न, उन्न, ३. विलीन, विद्रुत, द्रवीकृत ।

द्रवीभूत, वि. (सं.) दयादिभिः आर्द्रीभूत-अभिष्यंदित, दयालु, कृपालु । २. विलीन, विद्रुत ।

द्रवत्व, सं. पुं. (सं. न.) द्रवता, द्रवभावः, प्रवाहधर्मः, रसता, तरलत्वम् ।

द्रव्य, सं. पुं. (सं. न.) पदार्थः, वस्तु (न.) २. भूम्यादयो नव पदार्थाः ३. उपादानकारणं, सामग्री ४. धनं, वित्तम् ।

—संचय, सं. पुं. (सं.) धनसंग्रहः ।

द्रव्यार्जन, सं.पुं. (सं.) धनोपार्जनं,वित्तार्जनम् ।

द्राक्षा, सं. स्त्री. (सं.) रसाला, प्रियाला, गुच्छफला, दे. 'दाख' ।

द्रुत, वि. (सं.) विलीन, विद्रुत, द्रवी,-कृत-भूत, अवदीर्ण २. शीघ्र, सिप्र, त्वरित, सत्वर ३. पलायित । क्रि. वि., आशु, झटिति ।

—गामी, वि. (सं.-मिन्) आशुग, शीघ्रगामिन्, द्रुतगति ।

द्रुम, सं. पुं. (सं.) पादपः, तरुः (पुं.), वृक्षः ।

द्रोण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) प्राचीनपरिमाणभेदः (४ सेर, १६ सेर या ३२ सेर) घटः, कलशः, उन्मानं, अर्म्मणः, उल्वणः । सं. पुं. द्रोणाचार्यः २. काष्ठकलशः ३. द्रुममयो रथः ४. काकोलः, कृष्ण-द्रोण-वृक्ष,-काकः ५. दे. 'दोना' ६. नौका ।

द्रोह, सं. पुं. (सं.) अहित-अनिष्ट,-चिंतनं वैरं, वि., द्वेषः, अपचिकीर्षा, जिघांसा, छद्मवधः, अहित-अनर्थ,-इच्छा ।

द्रोही, वि. (सं. द्रोहिन्) अहित-अनिष्ट-अनर्थ,-चिंतक-चिकीर्षक, मत्सरिन्, अभ्यसूयकः ।

द्वंद, सं. पुं. (सं. न.) मिथुनम् ।

द्वंद, द्वंद्व, सं. पुं. (सं. द्वंद्वं) द्वयं, द्वितयं, युगलं, युग्मं, युगं, यमकं, युतकं २. मिथुनं, जायापती, दंपती ३. परस्परविरोधिपदार्थौ (उ. शीत-उष्ण, सुख-दुःख इ.) ४. रहस्यं ५. कलहः, उपद्रवः ६. द्वंद्वयुद्धं ७. संशयः ८. संभ्रमः, संमोहः ९. कष्टं । सं. पुं., समासभेदः (व्या.) ।

—चारी, सं. पुं. (सं.-चारिन्) दे. 'चकवा' ।

—युद्ध, सं. पुं. (सं. न.) मल्ल-द्वयोर्,-युद्धम् ।

द्वादशी, सं. स्त्री. (सं.) शुक्ला कृष्णा वा द्वादशी तिथिः (स्त्री.) ।

द्वापर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) तृतीययुगं (८६४००० वर्ष) २. संदेहः ।

द्वार, सं. पुं. (सं. न.) द्वार् (स्त्री.) प्रति-(ती) हारः २. उपायः, साधनम् ।

—चार, सं. पुं. (सं. द्वाराचारः) वधूगृहद्वारे करणीया विशिष्टरीतिः (स्त्री.) ।

—पाल, सं. पुं. (सं.) द्वा(ः)स्थः, द्वारस्थः, द्वारिकः, दौवारिकः, प्रति(ती)हारः(–री स्त्री.) ।

द्वार(रि)का, सं. स्त्री. (सं.) द्वारा(र)वती, तीर्थविशेषः ।

द्वारा, अव्य. (सं.) द्वारेण, साधनेन, कारणेन, हेतुना । (हिं. प्रायः इसका अनुवाद तृतीया से करते हैं) ।

द्वि, वि. (सं.) दे. 'दो' ।

—ककार, सं. पुं. (सं.) काकः, वायसः २. कोकः, चक्रः ।

—गुण, वि. (सं.) द्विगुणित ।

—पद, वि. (सं.) द्विपाद, द्विचरण ।

द्विज, वि. (सं.) द्विजात, द्विरुत्पन्न, द्विजन्मन् । सं. पुं., ब्राह्मणक्षत्रियवैश्याः २. खगः, अंडजः ३. दंतः ४. ब्राह्मणः ५. चंद्रः ।

—दास, सं. पुं. (सं.) शूद्रः, दे० ।
—पति, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणः २. गरुड़ः ३. चन्द्रः ।
—प्रिया, सं. स्त्री. (सं.) सोमलता ।
—बंधु, सं. पुं. (सं.) कर्महीनो द्विजः ।
—राज, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणः २. चंद्रः ।
द्वितीय, वि. (सं.) द्वितीयः-यं-या (पुं. न. स्त्री.) २. गौण, अवर ।
द्वितीया, सं. स्त्री. (सं.) शुक्ला कृष्णा वा द्वितीया तिथिः (स्त्री.) ।
द्विधा, अव्य. (सं.) प्रकारद्वयेन, द्विप्रकारं २. द्विभागशः (अव्य.), दिखंडयोः (सप्तमी)।
द्विविध, वि. (सं.) द्विप्रकारक । क्रि. वि. दे. 'द्विधा' ।
द्वीप, सं. पुं. (सं. पुं. न.) जलवेष्टितभूमिः (स्त्री.) ।
द्वेष, सं. पुं. (सं.) वैरं, शत्रुता, सापत्न्यं, विरोधः, द्वंद्वभावः ।
द्वेषी, वि. (सं.-षिन्) विरोधिन्, वैरिन्, अहित, विपक्ष । सं. पुं., अरिः, शत्रुः, रिपुः, द्वेष्टृ ।
द्वैत, सं. पुं. (सं. न.) द्वित्वं, द्विता, द्वैतं, द्वैधं २. द्वैतवादः (दर्शन.) ३. भेदभावः ।
—वाद, सं. पुं. (सं.) जीवब्रह्मपृथक्त्ववादः २. देहदेहिपृथक्त्वसिद्धांतः ।
—वादी, सं. पुं. (सं.-दिन्) द्वैतिन् ।
द्वैधीभाव, सं. पुं. (सं.) संशयः, निश्चयाभावः २. दंभः ३. उपायविशेषः (राजनीतिः) ।
द्वैपायन, सं. पुं. (सं.) श्रीवेदव्यासः ।
द्व्यणुक, सं. पुं. (न.) परमाणुद्वयात्मकं द्रव्यम् ।

ध

ध,देवनागरीवर्णमालाया एकोनविंशो व्यंजनवर्णः, धकारः ।
धंधला, सं. पुं. (हिं. धंधा) दंभः, कपटं, माया ।
धंधा, सं. पुं. (सं. धनधान्यं>) आजीवः, आ-उप,-जीविका, जीवसाधनं, वृत्तिः (स्त्री.) २. उद्यमः, व्यवसायः ।
काम—, सं. पुं., दे. 'धंधा' ।
गोरख—, सं. पुं., मोहकर-भ्रांतिजनक,-व्यापारः ।
धँसना, क्रि. अ. (सं. दंशनं>) आ-प्र,-विश् (तु. प. अ.) निविश् (तु. आ. अ.), निर्-, भिद् (रु. प. अ.), व्यध् (दि. प. अ.), दे. 'गड़ना' ।
धँसाना, क्रि. स., व. 'धँसना' के प्रे. रूप ।
धँसाव, सं. पुं. (हिं. धँसना) नि-प्र,-वेशः-वेशनं, वेधः-धनम् ।
धक[1], सं. स्त्री. (अनु.) हृदय-हृत्,-कंपः, स्पंदः-स्फुरणं २. हृत्कंपशब्दः ।
धक[2], सं. स्त्री. (देश.) बृहल्लिक्षा, लघुयूका ।
धकधकाना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'धड़कना' ।
धकेलना, क्रि. स. (हिं. धक्का) (करादिभिः) प्रणुद्-प्रेर्-प्रचल्-प्रसृ (प्रे.) प्रचुद् (चु.) ।
धकेलू, सं. पुं. (हिं. धकेलना) प्रणोदकः, प्रचोदकः, प्रेरकः, प्रचालकः, अप-प्र,-सारकः ।
धक्कमधक्का, सं. पुं. (हिं. धक्का) अन्योन्य-परस्पर,-संमर्दः,समाघातः-संघर्षणं, अभिसंपातः ।
धक्का, सं. पुं. (अनु. धक् अथवा सं. धक्=नाश करना>) अपसारणं-णा, प्रचालनं-ना, प्रेरणा, प्रचोदना, संघर्षः, आघातः, संमर्दः २. संतापः, क्लेशः ३. आपद्-विपद् (स्त्री.) ।
—खाना, क्रि. अ., अपसार्-प्रेर्-प्रचाल्-प्रचोद् (कर्म.) ।
—देना, क्रि. स. दे. 'धकेलना' ।
—लगना, मु., विपदा अभि-उप-हन् (कर्म.) ।
धचका, सं. पुं. (अनु.) लघु,-प्रहारः-आघातः, दे. 'धक्का' ।
धज, सं. स्त्री. (सं. ध्वजः>) अलंक्रिया, सज्जा, भूषा २. आकारः, आकृतिः (स्त्री.), छविः (स्त्री.) ३. हावभावौ (द्वि.) ४. वर्तनं, शीलम् ।
धजीला, वि. (हिं. धज) दे. 'सजीला' ।
धज्जी, सं. स्त्री. (सं. धटी) पट-वस्त्र,-खंडः-पट्टी २. पट्टचरं, चीरम् ।
—धज्जियाँ उड़ाना, मु. विदॄ (प्रे.), खंड् (चु.) २. निर्दयं-निष्ठुरं- तीव्रं प्रहृ (भ्वा. प. अ.), हन् (अ. प. अ.) ।
धड़ंग, वि. (हिं. धड़+अंग) नग्न, दे. 'नंग' ।

धड़, सं. पुं. (सं. धरः>) कबंधः, अपमूर्ध-कलेवरं, आशीर्षशरीरं २. आकटिग्रीवं शरीरम् ।

धड़क-कन, सं. स्त्री. (अनु. धड़) हृदय-हृत्,-स्पंदनं-स्फुरणं-कंपनं २. हृत्स्पंदध्वनिः (पुं.) ३. आशंका, भयम् ।

—बेधड़क, क्रि. वि., निःशंकं, निर्भयं, निस्संकोचम् ।

धड़कना, क्रि. अ. (हिं धड़क) कंप्-वेप्-स्पंद् (भ्वा. आ. से.), स्फुर् (तु. प. से.) ।

धड़का, सं. पुं., दे. 'धड़कन' ।

धड़काना, क्रि. स., व. 'धड़कना' के प्रे. रूप ।

धड़धड़, सं. स्त्री. (अनु.) धड़धड़ात्,-कारः-कृतिः-कृतं । क्रि. वि., सधड़धड़शब्दं २. निःसंकोचम् ।

—जलना, क्रि. अ., अत्युग्रं-प्रचंडं ज्वल् (भ्वा. प. से.)-दह् (कर्म.)-दीप् (दि. आ. से.) ।

धड़धड़ाना, क्रि. अ. (अनु. धड़धड़)धड़धड़ायते (ना. धा.) धड़धड़शब्दं जन् (प्रे.) ।

धड़ल्ला, सं. पुं. (अनु. धड़) धड़धड़ात्कारः २. जनसंमर्दः ।

धड़ल्लेदार, वि. (अनु.+फ़ा.) निर्भय, निःसंकोच ।

धड़ल्ले से, मु., निर्भयं, निस्संकोचम् ।

धड़वाई, सं. पुं. (हिं. धड़ा) तोलकः, *धटधरः ।

धड़ा, सं. पुं. (सं. धटः) तुला २. तोलः, भारः ३. पक्षः, दलम् ।

धड़ाका, सं. पुं. (अनु०) धड़ाक् इति शब्दः–रवः–ध्वनिः (पुं.) गुरुद्रव्यपतनध्वनिः ।

धड़ाधड़, क्रि. वि. (अनु. धड़) सततं, निरंतरं, अविच्छिन्नं, अनवच्छिन्नं २. निरंतरं सधड़-धड़शब्दं च ।

धड़ाम से, सं. पुं. (अनु.) सशब्दम् ।

धड़ी, सं. स्त्री. (सं. धटः>) धटी, चतुः-सेरी-सेटकी, पंच,-सेरी-सेटकी ।

धड़ेबंदी, सं. स्त्री. (हिं. फ़ा.) दलबंधः, पक्ष,-पातः-ग्रहणं-अवलंबनम् ।

धत, सं. स्त्री., दे. 'लत' ।

धतकारना,क्रि.स. (अनु. धत) दे. 'दुतकारना' ।

धता, सं. पुं. (अनु. धत) निस्सारित,अपगत ।

—बताना, मु., छलेन अप-निस्-स (प्रे.), सन्याजं परिहृ (भ्वा. प. अ.) ।

धतूरिया, सं. पुं. (हिं धतूरा) धत्तूर–मोहन,-प्रयोजको वंचकः ।

धत्तू (तू)रा, सं. पुं. (सं. धत्तूरः) धुस्तूरः, शिवप्रियः, मोहनः, कनकः ।

धधक, सं. स्त्री. (अनु.] ज्वाला, झलका, आर्चिस् (न.) ।

धधकना, क्रि. अ., (हिं. धधक) उत्-प्र-सं-दीप् (दि. आ. अ.) उत्-प्र-ज्वल् (भ्वा. प. से.), प्रचंडं दह् (कर्म.) ।

धधकाना, क्रि. स., व. 'धधकना' के प्रे. रूप ।

धनंजय, सं. पुं. (सं.) अर्जुनः २. अग्निः ।

धन, सं. पुं. (सं. न.) वित्तं, द्रव्यं ऋ(रि)क्थं, वसु (न.), अर्थः, हिरण्यं, द्रविणं, विभवः, श्रीः-लक्ष्मीः (स्त्री.), भोग्यं, सम्पद्-सम्पत्तिः (स्त्री.) कांचनं, रै (पुं., राः, रायौ, रायः) २. गोधनं ३.प्रेमपात्रं ४.योगचिह्नं (+,गणित) ५. मूलद्रव्यम् ।

—कुबेर, सं. पुं. (सं.) लक्षपतिः (पुं.), कोटीशः, सुसमृद्धजनः ।

—धान्य, सं. पुं. (सं. न.) धनधान्ये,अर्थान्नं-न्ने ।

—पति, सं. पुं. (सं.) कुबेरः, दे. ।

—हीन, वि. (सं.) दरिद्र, अकिंचन ।

धनक, सं. पुं. (सं.) धनाया, धनैषणा ।

धनद, वि. (सं.) दानशील, वदान्य । सं. पुं. (सं.), कुबेरः ।

धनाढ्य, वि. (सं.) अर्थ-धन-वित्त-द्रव्य,-वत् । धनिन्, धनिक, स-बहु-महा,-धन, वित्त-विभव-धन,-शालिन्, सम्पन्न, समृद्ध, श्रीमत्, लक्ष्मीश, धनेश्वर ।

धनार्जन, सं. पुं. (सं. न.) वित्तोपार्जनं, धन-संग्रहः ।

धनिक, वि. (सं.) दे. 'धनाढ्य' ।

धनिया, सं. पुं. (सं. धनिका) धन्या, वितुन्नकं, सुगंधि (न.) कुस्तुम्बरी ।

धनिष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) श्रविष्ठा, नक्षत्रविशेषः ।

धनी, वि. (सं.-निन्) दे. 'धनाढ्य' २. दक्ष, कुशल । सं. पुं., स्वामिन्, अधिपतिः २. पतिः (पुं.) धनाढ्यः ।

—मानी, वि. (सं. धनिमानिन्) धनमान,-वत्-युक्त ।

बात का—, वि., प्रतिज्ञापक, स्थिर-दृढ़,-प्रतिज्ञ, सत्य,-संगर-संध-व्रत ।

धनु, सं. पुं. (सं.) दे. 'धनुष' ।

धनुआ, सं. पुं. [सं. धन्वं (वेद में)] दे. 'धनुष' २. दे. 'धुनकी' ।

धनुक, सं. पुं. (सं. धनुस् न.) धनुः, धनूः (स्त्री.), धनु (न.) इन्द्र,-चापः-आयुधं-धनुस् (न.) ।

धनुकी, सं. स्त्री., दे. 'धुनकी' ।

धनुर्धारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) धनुर्द्धरः, धन्विन्, इषुधरः, धानुष्कः, निषंगिन्, धनुर्भृत्-धनुष्मत् (पुं.), तूणिन् ।

धनुर्विद्या, सं. स्त्री. (सं.) शराभ्यासः, इषुक्षिप्तिः (स्त्री.) ।

धनुर्वेद, सं. पुं. (सं.) धनुर्विद्यानिरूपकशास्त्रम् ।

धनुष, सं. पुं. [सं. धनुस् (न.)] चापः-पं, इष्वासः, आसः, कार्मुकं, कोदण्डं, शरासनं, शारंगः, धनूः (स्त्री.) ।

धनेश-श्वर, सं. पुं. (सं.) धनपतिः २. कुबेरः ३. खगभेदः ।

धनैषणा, सं. स्त्री. (सं.) वित्तैषणा, धनाया ।

धनैषी, वि. (सं.-षिन्) धनेच्छुक, वित्तार्थिन् (पुं.)

धन्ना, सं. पुं., दे. 'धरना' सं. पुं.४ ।

धन्य, वि. (सं.) सौ,-भाग्यवत्, पुण्य,-वत्-भाज्, सु-,कृतिन्, सु,-भग-भाग्य, महाभाग २. श्लाघ्य, स्तुत्य । क्रि. वि., साधु, सुष्ठु, सम्यक् ।

—वाद, सं. पुं. (सं.) कृतज्ञता,-दर्शनं-प्रकाशनं, उपकारप्रशंसा २. साधुवादः, प्रशंसावचनानि (बहु.), श्लाघा ।

धन्वन्तरि, सं. पुं. (सं.) सुरचिकित्सकः, सुश्रुतकारः ।

धन्वा, सं. पुं. (सं. धन्वन्) धनुस् (न.), चापः २. मरुः ३. स्थलम् ।

धन्वी, सं. पुं. (सं.-विन्) दे. 'धनुर्धारी' ।

धप्पा, सं. पुं. (अनु. धप) चपेटः-टिका २. क्षतिः-हानिः (स्त्री.) ।

धब्बा, सं. पुं. (देश.) दे. 'दाग' ।

धम, सं. स्त्री. (अनु.) पतनशब्दः, धमिति ध्वनिः (पुं.) ।

—से, क्रि. वि. धमितिशब्देन सह २. अकस्मात् ।

धमक, सं. स्त्री. (अनु.) अवपतन-आघात,-शब्दः, धमिति ध्वनिः (पुं.) २. पादन्यासशब्दः-३. आघातः, प्रहारः ४. कम्पः ।

धमकना, क्रि. अ. (हिं. धमक) धमिति शब्देन सह पत् (भ्वा.प.से.) २. व्यथ् (भ्वा.आ.से.) । आ—, मु., अकस्मात् सहसा आया (अ. प. अ.) ।

धमकाना, क्रि. स. (हिं. धमकना) भी (प्रे. भाययति, भापयते, भीषयते), त्रस् (प्रे.) २. निर-, भर्त्स् (चु. आ. से.), तर्ज् (भ्वा. प. से., चु. आ. से.) ।

धमकी, सं. स्त्री. (हिं. धमक) विभीषिका, भयदर्शनं २. तर्जना, भर्त्सना, अपकारगिर् (स्त्री.) ।

—में आना, मु., विभीषिकाप्रभावेण कार्यं कृ ।

धमधमाना, क्रि. अ. (अनु.) धमधमायते (ना. धा.), धमधमशब्दं जन् (प्रे.) ।

धमनी, सं. स्त्री. (सं.) धमनिः (स्त्री.), रक्तवाहिनी नाडी ।

धमाका, सं. पुं. (अनु.) भुशुंड्यादिशब्दः, महाशब्दः, धमिति ध्वनिः (पुं.) २. पतनकूर्दन,-शब्दः ।

धमाचौकड़ी, सं. स्त्री. (अनु. धम+हिं. चौकड़ी) कलकलः, कोलाहलः, तुमुलः-लं, डमरः, संक्षोभः, विप्लवः ।

धमाधम, क्रि. वि. (अनु. धम) सधमधमशब्दम् ।

सं. स्त्री., धमधमध्वनिः (पुं.) २. आघातप्रतिघातौ, उपद्रवः, उत्पातः ।

धर, वि. (सं.) धारक, धारिन्, धर्तृ, ग्रहीतृ । (प्रायः समासांत में, उ. चक्रधर इ.) ।

धरणि-णी, सं. स्त्री. (सं.) धरा, भूमिः (स्त्री.) दे. 'पृथिवी' ।

—धर, सं. पुं. (सं.) पर्वतः २. कच्छपः ३. शेषनागः ४. विष्णुः (पुं.) ५. शिवः ।

—सुता, सं. स्त्री. (सं.) सीता, जानकी ।

धरती, सं. स्त्री. (सं. धरित्री) दे. 'धरणि' ।

धरना, क्रि. स. (सं. धरणं) आ-नि-धा (जु. उ. अ.), स्था (प्रे.), न्यस् (दि. प. से.), नि-क्षिप् (तु.प.अ.), आ-रुह् (प्रे.आरोपयति), धृ (चु.) २. ग्रह् (क्र्. प. से.), (हस्तेन) अव-लम्ब् (भ्वा. आ. से.)-धृ ३. परिधा (जु. उ. अ.), वस् (अ. आ. से.) । सं. पुं., धरणं, आ-नि,-धानं-न्यसनं २. ग्रहणं ३. परिधानं ४. साग्रहं उपवेशः स्थानं वा ।

—देना, मु., (उद्देश्यसिद्धये) साग्रहं स्था (भ्वा. प. अ.)।

धरवाना, क्रि. प्रे., व. 'धरना' के प्रे. रूप।

धरहरा, सं. पुं. (हिं. धुर+घर) ससोपानं गृहशिखरं २. अंतः-सोपानः स्तम्भः।

धरा, सं. स्त्री. (सं.) भूः-भूमिः (स्त्री.)।

—तल, सं. पुं. (सं. न.) भूतलं, पृथिवीतलं २. भूमिः (स्त्री.)।

—धर, सं. पुं. (सं.) दे. 'धरणीधर'।

धराऊ, वि. (हिं. धरना) महार्घ, बहुमूल्य २. विशिष्ट, उत्कृष्ट।

धरात्मज, सं. पुं. (सं.) मंगलग्रहः २. नरकासुरः।

धराधिप, सं. पुं. (सं.) धरा,-अधिपतिः-अधीशः, नृपः।

धरामर, सं. पुं. (सं.) विप्रः, ब्राह्मणः, भूसुरः।

धरित्री, सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी, दे.।

धरोहर, सं. स्त्री. (हिं. धरना) निक्षेपः, न्यासः, दे. 'अमानत'।

धर्ता, सं. पुं. (सं. धर्तृ) धारकः, धारयितृ २. ग्राहकः।

धर्म, सं. पुं. (सं.) अभ्युदयनिःश्रेयससाधको गुणकर्मसमूहः (अहिंसा, सत्य, अग्निहोत्रादि) २. ईश्वर,-निष्ठा-सेवा-भक्तिः (स्त्री.), आस्तिक्य-बुद्धिः (स्त्री.) ३. पुण्यं, परोपकारः ४. सदाचारः, साधुता, सुकृतं, सत्कर्मन् (न.) ५. नयः, न्यायः, नीतिः (स्त्री.), न्यायिता, ऋजुता ६. पक्षपातराहित्यं, समदर्शित्वं ७. श्रद्धा, भक्तिः, निष्ठा ८. मतं, सम्प्रदायः, पथिन् (पुं.) ९. शास्त्रविहित,-कर्तव्यं-कृत्यं १०. आचारः, व्यवहारः ११. रीतिः-रूढ़िः (स्त्री.) १२. प्रकृतिः (स्त्री.), स्वभावः, नित्यगुणः १३. विधिः (पुं.), व्यवस्था, राजाज्ञा, कार्याकार्य-नियमः।

—अध्यक्ष, सं. पुं. (सं.) प्राड्विवाकः, अक्ष-दर्शकः, धर्माधिकरणिन्, न्यायाधीशः, धर्माधि-कारिन्।

—अनुसार, क्रि. वि. (सं.-रं) यथाधर्मं, धर्मो-क्तरीत्या, धर्मपूर्वकम्।

—अर्थ, क्रि. वि, (सं.-र्थं) धर्माय, पुण्याय।

—अवतार, सं. पुं. (सं.) धर्ममूर्त्तिः (पुं.), अतिधर्मात्मन् (पुं.), धर्मिष्ठः, पुण्यात्मन् (पुं.)।

—आत्मा, वि. (सं.-त्मन्) धार्मिक, धर्मशील, धर्मवत्, पुण्यात्मन्, धर्म-पर-परायण।

—उपदेश, सं. पुं. (सं.) धर्म,-शिक्षा-अनु-शासनम्।

—उपदेशक, सं. पुं. (सं.) धर्म,-शिक्षकः-अनुशासकः।

—कर्म, सं. पुं. [सं.-र्मन् (न.)] शास्त्रोक्तं कृत्यम्।

—क्षेत्र, सं. पुं. (सं.न.) कुरुक्षेत्रं २. भारतवर्षम्।

—ध्वजी, सं. पुं. (सं. जिन्) धर्मध्वजः, पाषंडः, लिंग-वक,-वृत्तिः (पुं., स्त्री.), वक-वैडाल,-व्रतः, आर्य-रूप-लिंगिन्, छद्मधार्मिकः, मिथ्याचारः।

—करना, क्रि. स., धर्मं चर् (भ्वा. प. से.), पुण्यं कृ।

—निष्ठा, वि. (सं.) धार्मिक, धर्म,-पर-परायण।

—पत्नी, सं. स्त्री. (सं.) यथाशास्त्रं विवाहिता नारी २. भार्या, नारी, दाराः (पुं. बहु.), कलत्रम्।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) युधिष्ठिरः २. धर्मतः कृतः पुत्रः ३. नरनारायणमुनी (द्वि.)।

—भ्रष्ट करना, क्रि. स., धर्मं भ्रंश्-नश् (प्रे.)-हन् (अ.प.अ.) २. सतीत्वं हृ (भ्वा.प.अ.)।

—राज, सं. पुं. (सं.) धर्मात्मा नृपः २. युधि-ष्ठिरः ३. यमः ४. जिनः।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) *यात्रिकगृहं, *तीर्थ-सेविनिवासः ३. गुरुद्वारं, शिष्यसंप्रदाय-देवालयः।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) धर्मसंहिता, स्मृतिः (स्त्री.)।

—शील, वि. (सं.) धार्मिक, धर्मात्मन्।

—सभा, सं. स्त्री. (सं.) व्यवहारमण्डपः, न्यायसभा।

धर्मिष्ठ, वि. (सं.) दे. 'धर्मावतार'।

धर्मी, वि. (सं.-र्मिन्) पुण्यात्मन् २. मतानु-यायिन्।

धव, सं. पुं. (सं.) पतिः, भर्तृ २. पुरुषः, नरः ३. पिशाचवृक्षः।

धवल, वि. (सं.) श्वेत, शुक्ल २. भासुर ३. सुन्दर।

धवला, सं. स्त्री. (सं.) १-२. श्वेत-शुक्ल-गौर,-नारी-गौः (स्त्री.)। वि. स्त्री. (सं.)

शुक्ला, गौरी, सिता। वि. पुं. (हिं.) श्वेत, गौर, शुक्ल। सं. पुं., गौर-श्वेत,-वृषः-वृषभः।

धसकना, } क्रि. अ., दे. 'धँसना'।
धसना,

धस्सर, सं. स्त्री., दे. 'स्कारलेटिना'।

धाँधल, सं. स्त्री. (देश. धाँधना) क्षोभः, विप्लवः, उपद्रवः २. कपटं, माया ३. त्वरा, सम्भ्रमः।

धाँधली, वि. (हिं. धाँधल) उपद्रविन्, उत्पातिन्, कुचेष्टाप्रिय २. मायिन्, कपटिन्। सं. स्त्री., दे. 'धाँधल'।

धाँय धाँय, सं. स्त्री. (अनु.) शतघ्नी,-शब्दः-ध्वनिः (पुं.) २. प्रज्वलनध्वनिः।

धाक, सं. स्त्री. (सं. धक्क्>) प्रभावः, आतंकः, प्रतापः, शासनं २. ख्यातिः-प्रसिद्धिः (स्त्री.)।

—बँधना, मु., आतंकः-प्रतापः प्रसृ (भ्वा. प. अ.) २. प्रख्यात (वि.) भू।

धागा, सं. पुं.(हिं.तागा) सूत्रं, गुणः, तन्तुः(पुं.)।

धाड़, सं. स्त्री. (सं. धाटी>) लुंठनम्, लुंठिः (स्त्री.), लुंठनाक्रमणम् २. विलापः, क्रन्दनं, रोदनम् ३. दलः, गणः।

—मारना, मु., उच्चैः रुद् (अ. प. से.), आक्रन्द्, (भ्वा. प. से.)।

धाड़स, सं. पुं., दे. 'ढाढ़स'।

धात, सं. स्त्री., दे. 'धातु'।

धाता, सं. पुं. (सं. धातृ) ब्रह्मन्, चतुर्मुखः, स्रष्टृ (पुं.), २. विष्णुः (पुं.) ३. शिवः। वि., पालक २. रक्षक ३. धारक।

धातु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) अश्मविकारः (गैरिकादि) २. खनिजभेदः (सुवर्णादि) ३. शरीरधारक-पदार्थाः (रसरक्तमांसादि) ४. शुक्रं, वीर्यम्। सं. पुं. (सं.) भूतं, तत्त्वं (पृथिव्यादि) २. शब्दमूलं (भू , कृ, आदि) ३. आत्मन् ४. परमात्मन् (पुं.)।

धात्री, सं. स्त्री. (सं.) अंकपाली,-लिका, उपमातृ-मातृका, धात्रेयी, प्रतिपालिका २. जननी ३. पृथिवी।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) शिशुपालनविद्या २. सूतिकर्मन् (न.) गर्भमोचनविद्या।

धान, सं. पुं. (सं. धान्यं) व्रीहिः-शालिः-स्तम्बकरिः (पुं.) २. (पौदा) कलमः, नीवारः।

धाना, सं. स्त्री. [सं. धानाः (स्त्री. बहु.)] भृष्टयवाः २. भृष्टतण्डुलाः, लाजाः (पुं. बहु.) ३. दे. 'धनिया'।

धानी[1], वि. (हिं. धान) ईषद्धरितवर्ण।

धानी[2], सं. स्त्री. (सं. धानाः>) भृष्ट,-यवाः-गोधूमाः-तंडुलाः २. व्रीहिभेदः।

धान्य, सं. पुं. (सं. न.) अन्नं, अद्यं, भोग्यं, भोगार्हं, जीवसाधनं २. व्रीहिः-शालिः-स्तंबकरिः (पुं.) ३. चतुस्तिलपरिमाणं ४. धन्याकं, वितुन्नकम्।

—उत्तम, सं. पुं. (सं.) तंडुलः।

—राज, सं. पुं. (सं.) यवः।

धाभाई, सं. पुं. (हिं. धाय+भाई) धात्रेयः, धात्रीपुत्रः।

धाम, सं. पुं. [सं. धामन् (न.)] गृहं, गेहं, अ(आ)गारं २. शरीरं ३. स्थानं ४. पुण्य-देव,-स्थानम्।

धाय-यी, सं. स्त्री. (सं. धात्री, दे.)।

धार[1], सं. पुं. (सं.) वेगवान् वर्षः, धारा,-आसारः-संपातः २. ऋणं ३. प्रदेशः।

धार[2], सं. स्त्री, (सं. धारा) प्रवाहः, ओघः, मंदाकः, स्रोतस् (न.), प्रस्रावः, रयः, वेला, वेगः २. उत्सः, निर्झरः ३. अश्रि, कोटि, पाली-लिः, अणी-णिः (सब स्त्री.), अग्रम्। ४. दिशा-श् (स्त्री.) ५. रेखा-पा।

—दार, वि. (हिं.+फ़ा.) तीक्ष्ण, निशित, शितधार।

—मारना, मु., मूत्र् (चु.), मिह् (भ्वा.प.अ.)।

धारक, सं. पुं. (सं.) धारयितृ, धर्तृ २. ऋणिन्, अधमर्णः।

धारण, सं. पुं. (सं, न.) धरणं, ग्रहः-हणं, अवलंबः-बनं, करेण ग्रहणं-धरणं २. परिधानं वसनं ३. स्वी-अंगी,-करणं ४. पालनं, पोषणं, भरणम्।

—करना, क्रि. स., दे. 'धारना'।

धारणक, सं. पुं. (सं.) ऋणिन्, अधमर्णः।

धारणा, सं. स्त्री. (सं.) स्मृतिः-स्मरणशक्तिः (स्त्री.) २. धारणाशक्तिः, मेधा, धारणावती धीः (स्त्री.), ग्रहणसामर्थ्यं ३. धारणं, ग्रहणं ४. निश्चयः, निर्णयः, दृढसंकल्पः ४. बुद्धिः (स्त्री.) ५. मर्यादा, स्थितिः (स्त्री.) ६. योगांग-विशेषः, ध्येये चित्तस्य स्थिरबंधनं ७. मतिः (स्त्री.), मतम्।

धारना, क्रि. स. (सं. धारणं) धृ (भ्वा. उ. अ., चु.), ग्रह् (क्र्. प. से.), आदा (जु. आ. अ.), अवलंब् (भ्वा. आ. से.) २. परिधा (जु. उ. अ.), वस् (अ. आ. से.), धृ (चु.) ४. अव-उत्-उप-सं-स्तंभ् (क्र. प. से.) अवलंबं-आलंबं दा ।

धारा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'धार' सं. स्त्री. (१-५) । ६. परिच्छेदः, विभागः, अधिकरणम् ।

—यंत्र, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'फुहारा' ।

धारी[१] सं. स्त्री. (सं. धारा) रेखा, लेखा, रेपा ।

—दार, वि. (हिं.+फ़ा.) रे(ले)खांकित, सरेख ।

—धारी[२], वि. (.-रिन्)-धरः,-धारकः (उ. दंडधरः इ.) [–धारिणी (स्त्री.)] ।

धार्मिक, वि. (सं.) दे. 'धर्मात्मा' ।

धावन, सं. पुं. (सं. न.) धोरणं, द्रुतगमनं २. शोधनं, मार्जनं ३. शोधनसाधनम् ।

धावा, सं. पुं. (सं. धावनं) आक्रमणं, अभिद्रवः, अवस्कंदः, आपातः, उपप्लवः ।

—करना या मारना या बोलना, क्रि. स., आक्रम् (भ्वा. दि. प. से.), अभिद्रु (भ्वा. प. अ.), अवस्कंद् (भ्वा. प. अ.) ।

धाह, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'ढाड़' ।

धिक, अव्य. (सं. धिक्) (प्रायः द्वितीया परन्तु कभी षष्ठी के साथ) निंदा २. निर्भर्त्सना ।

धिक्कार, सं. पुं. (सं.) न्यक्-नि-नी,-कारः, तिरस्कारः, भर्त्सना, गर्हा, निंद्रा,परि(री)वादः, अधिक्षेपः ।

धिक्कारना, क्रि. स. (सं. धिक्करणं) तिरस्-धिक्-कृ, अप-परि-वद् (भ्वा. प. से.), (तीव्रं) निंद् (भ्वा. प. से.), अभि-आ-क्षिप् (तु. प. अ.) ।

धिग्दंड, सं. पुं. (सं.) दे. 'धिक्कार' ।

धिषणा, सं. स्त्री. (सं.) बुद्धिः, धीः (दोनों स्त्री.), प्रज्ञा २. स्तुतिः-नुतिः (स्त्री.) ३. वाणी ४. पृथिवी ५. दे. 'प्याली' ।

धींगा, सं. पुं. (सं. डिंगरः) दुष्टः. खलः शठः, पापः ।

धींगी, सं. स्त्री., शठता, शाठ्यं, दौष्ट्यं, उपद्रवः ३. बलात्कारः, अन्यायः ।

—मुश्ती, सं. स्त्री., कुचेष्टा, उपद्रवः, खलता २. बाहूबाहवि-मुष्टीमुष्टि(अव्य.)

धी[१], सं. स्त्री. (सं. दुहितृ) पुत्री ।

धी[२], सं. स्त्री. (सं.) बुद्धिः-मतिः (स्त्री.), प्रज्ञा ।

धीमा, वि. (सं. मध्यम) मंथर, मंद,-गतिगामिन्, २. लघु, तीव्रता-उग्रता-चण्डता,-शून्य ।

—पड़ना, क्रि. अ., न्यूनी भू , ह्रस् (भ्वा. प. से.), क्षि(कर्म.), उप-प्र-शम् (दि.प.से.) ।

धीमान् , वि. (सं.-मत्) बुद्धिमत्, प्राज्ञ [धीमती (स्त्री.)=बुद्धिमती] ।

धीमे धीमे, क्रि. वि., मंद मंद, शनैः शनैः २. अचंडं, अतीव्रं ३. मृदु, यथासुखम् ।

धीर, वि. (सं.) धृतिमत्, शांत, धैर्यान्वित, सहन-क्षमा,-शील, सहिष्णु, क्षमिन् २. नम्र, विनीत ३. गं(ग)भीर, चापल्यशून्य ।

धीरज, सं. पुं. (सं. धैर्य) } दे. 'धैर्य' ।
धीरता, सं. पुं. (सं.) }

धीवर, सं. पुं. (सं.) कैवर्तः, जालिकः, मत्स्य-आजीवः-उपजीविन, मात्स्यिकः, दाशः-सः, [धीवरी (स्त्री.)=कैवर्ती] ।

धुंध, सं. स्त्री. (सं. धूमांध>) धूमदृष्टिः (स्त्री.) २. कुज्झटिका, धूमिका, कुहेडिका ।

धुंधका, सं. पुं. (हिं. धुंध) धूम-अग्निवाह,-छिद्रं-विवरम् ।

धुँधला, वि. (हिं. धुंध) अस्पष्ट, अव्यक्त, मंद,-द्युति-प्रभ, दुरालोक २. धूम्र, ईषत्कृष्ण, धूमवर्ण ।

—पन, सं. पुं., अस्पष्टता, दुरालोकता, अव्यक्तता, मंदप्रभता ।

धुआँ, सं. पुं. (सं. धूमः) अग्नि-मरुद्,-वाहः, खतमालः, शिखिध्वजः, तरी ।

—कश, सं. पुं. (हिं.+फ़ा.) अग्निपोतः ।

—धार, वि. धूममय, सधूम २. धूम्र, धूमवर्ण ३. घोर, प्रचंड । क्रि. वि., सवेगं, अत्यधिकं, प्रबलम् ।

धुआँसा, सं. पुं. (हिं. धुआँ) कज्जलं, मसी-सिः (स्त्री.) ।

धुकधुकी, स. स्त्री. (अनु. धुकधुक) हृदयं, हृद् (न.), अग्रमांसं २. हृत,-कंपः-स्पंदः २. त्रासः, भयं ४. उरोभूषणभेदः ।

धुन, सं. स्त्री. (हिं. धुनना) अभिनिवेशः, दृढाग्रहः, आसक्तिः-अनिवार्यप्रवृत्तिः (स्त्री.)

उत्कटेच्छा, लालसा २. चिंता, विचारः ३. कामचारः, लहरी।

धुन, सं. स्त्री. [सं. ध्वनिः (पुं.)] स्वरः, गानप्रकारः २. रागभेदः।

धुनकना, क्रि. सं., दे. 'धुनना'।

धुनकी, सं. स्त्री. [धनुस् (न.) >] पिंजनं-नी, विहननं, तूलस्फोटनकार्मुकं, धुनकरी।

धुनना, क्रि. स. (हिं. धुनकी) (पिंजनेन) तूलं शुध् (प्रे.)-धु (स्वा. उ. अ.) २. भृशं तड् (चु.) ३. असकृत् कथ् (चु.) ४. सततं कृ।

धुनि¹, सं. स्त्री. (सं.) नदी, धुनी।

धुनि², सं. स्त्री. [सं. ध्वनिः (पुं.)] शब्दः, रवः।

धुनिया, सं. पुं. (हिं. धुनना>) पिंजाशोधकः, *पिंजकः, *तूलधावकः।

धुरंधर, वि. (सं.) धूर्वह, धुर्य २. भारवाह ३. श्रेष्ठ, प्रधान, प्रकांड, मुख्य।

धुर, सं. पुं. [सं. धुर् (स्त्री.)] अक्षः, ध्रुवः २. भारः ३. आरंभः ४. युगः-गं (जूआ)। अव्य., संपूर्णतया, अशेषतया, साकल्येन।

धुरपद, सं. पुं. (सं. ध्रुवपदं) गीतभेदः।

धुरा, सं. पुं. [सं. धुर् (स्त्री.)] अक्षः, ध्रुवः।

धुरी, सं. स्त्री. (हिं. धुरा) अक्षकः, ध्रुवकः।

धुलवाना, क्रि. प्रे., व. 'धोना' के प्रे. रूप।

धुलाई, सं. स्त्री. (हिं. धुलाना) धावनं, प्र,-क्षालनं २. धावन,-प्रक्षालन,-भृतिः (स्त्री.)

धुवाँ, सं. पुं , दे. 'धुआँ'।

धुवाँरा, सं. पुं. (हिं. धुवाँ) पटल-छदि-धूमच्छिद्रम्।

धुस-स्स, सं. पुं. (सं. ध्वंसः>) मृत्तिका-चयः, मृद्राशिः (पुं.), क्षुद्रपर्वतः; २. वप्रः, चयः।

धुस्सा, सं. पुं. (सं. द्विशाटः>) प्रावेण्यं-णिः (स्त्री.)।

धूआँ, सं. पुं., दे. 'धुआँ'।

धूत¹, वि. (सं. धूर्त) वंचक, कपटिन्, छलिन्, पापंड-डिन्।

धूत², वि. (सं.) चालित, कंपित २. त्यक्त, उत्सृष्ट, भर्त्सित, धिक्कृत।

धूता, सं. स्त्री. (सं.) पत्नी, भार्या।

धूनी, सं. स्त्री. (सं. धूमः>) धूपः, सुगंधि-धूमः २. भिक्षुकानलः, तपोवह्निः (पुं.)।

—देना, मु., धूप (चु.), धूपं घ्रा (प्रे. घ्रापयति)।

—रमाना या लगाना, मु., परिव्रज् (भ्वा. प. से.), भिक्षुको भू २. तपः तप् (दि. आ. अ.), तपस्यति (ना. धा.) ३. तपोवह्निं ज्वल् (प्रे.)।

धूप¹, सं. स्त्री. (सं. धूप्=चमकना>) आतपः, सूर्य,-आलोकः-प्रकाशः।

—छाँह, सं. स्त्री., * धूपच्छाया, द्विवर्णो वस्त्रभेदः।

—दिखाना, मु., आतपे प्रसृ (प्रे.)।

—सेंकना, मु., आतपं सेव् (भ्वा. आ. से.)।

धूप², सं. पुं. स्त्री. (सं. पुं.) पावनः, यावनः, तुरुष्कः पिंडकः, सिह्लः, तूणः, मेरुकः, २. गंध-पिशाचिका, धूपः, धूपधूमः ३. धूपवर्त्तिः(स्त्री.)।

—दान, सं. पुं., } धूपधानं-नी, धूपपात्रम्।
—दानी, सं.स्त्री., }

धूम¹, सं. पुं. (सं.) खतमालः, शिखिध्वजः, दे. 'धुआँ' २. वा(बा)ष्पः-ष्पम्।

—केतु, सं. पुं. (सं.) उल्का, खोल्का २. अग्निः (पुं.)।

—पान, सं. पुं. (सं. न.) तमाखुधूमपानम्।

—पोत, सं. पुं. (सं.) अग्नि-वाष्प,-पोतः।

धूम², सं. स्त्री. (सं. धूमः>) ख्यातिः-प्रसिद्धिः (स्त्री.) २. कोलाहलः, कलकलः ३. समारोहः आडंबरः, शोभा ४. उपद्रवः, क्षोभः, विप्लवः।

—धाम, सं. स्त्री., आडंबरः, शोभा, श्रीः (स्त्री.) बृहदायोजनं, वैभवम्।

धूमर, धूमला, धूमिल, वि. (सं. धूमल) धूम्र, धूम्रवर्ण, कृष्णलोहित।

धूर-रि, सं. स्त्री., दे. 'धूल'।

धूर्त, वि. (सं.) वंचक, मायिन्, कपटिन्, कापटिक, विप्रलंभक, वंचनशील, प्रतारक। सं. पुं., द्यूतकृत् (पुं.) अक्षदेविन्, कितवः २. वंचकः, प्रतारकः, इ.।

धूर्तता, सं. स्त्री. (सं.) वंचकता, माया, प्रतारणा, कपटं, कैतवम्।

धूल, सं. स्त्री. [सं. धूलिः (पुं. स्त्री.)] धूली, रजस् (न.), पांसुः-शुः (पुं.), रेणुः, क्षिति-कणः, महीद्रवः, वात-नभः,-केतुः (पुं.), चूर्णं, क्षोदः २. तुच्छवस्तु (न.)।

—झाड़ना, क्रि. स., धूलिं-लीं धु (स्वा. उ. अ.)।
—उड़ना, मु., (स्थान की) ध्वंस् (भ्वा. आ. से.) धूलीसात् भू। (मनुष्य की) निंद्-अधिक्षिप्-दूप् (कर्म.)।
—उड़ाना, मु., दुप् (प्रे. दूषयति) अधिक्षिप् (तु. प. अ.) २. उपहस् (भ्वा. प. से.)।
—चाटना, मु., पादयोः पतित्वा याच् (भ्वा. आ. से.)-अभ्यर्थ् (चु. आ. से.)।
—छानना, मु., मोघं भ्रम् (भ्वा. प. से.)।
—में मिलना, मु., धूलीसात् भू, नश् (दि. प. वे.)।
—समझना, मु., तृणं-तृणाय मन् (दि. आ. अ.) अवगण् (चु.)।
धूलि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) दे. 'धूल'।
धूसर, वि. (सं.) आ-ईषत्,-पांडु, पांसु-धूलि,-वर्ण २. पांसु (शु) ल, धूलिधूसर, रेणु,-दूषित-रूक्ष।
धूसरित, वि. (सं.) दे. 'धूसर'।
धूहा, सं. पुं. (हिं. ढूह) खगविभीषिका।
धृत, वि. (सं.) धारित, अवलंबित, २. आदत्त, गृहीत ३. स्थिरीकृत, निश्चित।
धृतराष्ट्र, सं. पुं. (सं.) दुर्योधनजनकः, नृप-विशेषः।
धृति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'धैर्य'।
धृष्ट, वि. (सं.) निर्लज्ज,वियात, प्रगल्भ, दे.'ढीठ'।
धृष्टता, सं. स्त्री. (सं.) प्रागल्भ्यं, वैयात्यं, दे. 'ढिठाई'।
धेनु, सं. स्त्री. (सं.) नवसू(प्रसू)तिका (गौः) २. गौः (स्त्री.), दे.।
धेला, सं. पुं. दे. 'अधेला'।
धेली, सं. स्त्री., दे. 'अधेली'।
धैर्य, सं. पुं. (सं. न.) धीरत्वं, धीरता, धृतिः (स्त्री.), मनःस्थैर्यं, सत्त्वं, द्रढिमन् (पुं.), दृढ़ता, क्षोभराहित्यम्।
धैवत, सं. पुं. (सं.) षष्ठः स्वरः (संगीत०)।
धोखा-क्का, सं. पुं. (सं. धूर्क>) छलं, कपटं, धूर्तता, प्रतारणा, वंचना, २. मोहः, भ्रमः, भ्रांतिः (स्त्री.) असत्-मिथ्या,-प्रतीतिः-(स्त्री.) ३. माया, इंद्रजालं, विवर्तः ४. अज्ञानं, अबोधः ५. संशयः, संदेहः ६. प्रमादः, त्रुटिः (स्त्री.)।
—खाना, मु., वंच्-विप्रलभ्-अभिसंधा-प्रतार् (कर्म.)।
—देना, मु., प्रतृ (प्रे.) वंच्-छल् (चु.), अति-अभि-संधा (जु. उ. अ.), मुह्-(प्रे.)।
—धोखे की टट्टी, मु., मोहजनक-मायामय,-वस्तु (न.)।
धोखेबाज़, वि., (हि.+फ़ा) कापटिक, छाद्मिक, मायाविन्।
धोखेबाज़ी, सं. स्त्री. (हिं. धोखेबाज़) कापटिकता, कपटं, छाद्मिकता।
धोती, सं. स्त्री.। (सं. धौत>) शाटिका, धौतांबरं, *धौता।
—ढीली होना, मु., भयात् पलाय् (भ्वा. आ. से.)।
धोना, क्रि. स. (सं. धावनं) धाव् (भ्वा. प. से.), प्र, क्षल् (चु.), निर्-निज् (जु.उ.अ.), प्रमृज् (अ. प. वे.) २. दूरी कृ, अपसृ (प्रे.)। सं. पुं., धावनं, प्र-,क्षालनं, निर्णेकः, मार्जनम्।
धोने योग्य, वि., धावनीय, प्र-,क्षालयितव्य, निर्णेक्तव्य।
धोनेवाला, सं. पुं., धावकः, प्र-,क्षालकः, क्षारकः।
धोबिन, सं. स्त्री. (हिं. धोबी) रजकी-का २. रजकपत्नी, धावकभार्या।
धोबी, सं. पुं. (हिं.-धोना) धावकः, रजकः, निर्णेजकः, क्षारकः, रजोहरः।
—घाट, सं. पुं. धावकघट्टः।
—का कुत्ता, मु. अकिंचित्करः, गुण-सार-हीनः (जनः)।
—का छैला, मु., परपदार्थ,-परवस्तु,-दृप्त-गर्वित।
धोया हुआ, वि. धौत, धावित, मार्जित, प्रक्षालित, निर्णिक्त, इ.।
धोवन, सं. स्त्री. (हिं. धोना) धावनं, प्र-,क्षालनं २. धावनावशिष्टं जलम्।
धौंकना, क्रि. स. (सं. ध्मा>) भस्त्रया ध्मा (भ्वा. प. अ., धमति), दृत्या वह्नि-प्रज्वल(प्रे.)।
धौंकनी, सं. स्त्री. (हिं. धौंकना) भस्त्रा, भस्त्री, भस्त्रिका, दृतिः (स्त्री.) चर्म,-प्रसेविका-प्रसेवकः।
धौंस, सं. स्त्री. (सं. ध्वंस्>) तर्जना, विभीषिका, भयदर्शनं २. प्रभुत्वं, अधिकारः ३. छलं, कपटम्।
—पट्टी, सं. स्त्री. मिथ्याऽऽशा, मिथ्या सांत्वना।

धौंसा, सं. पुं. (अनु.) दे. 'डंका' ।

धौंसिया[1], सं. पुं. (हिं धौंसा) डिंडिम-ढक्का-, वादकः-नादकः ।

धौंसिया[2], सं. पुं. (हिं. धौंस) भयदर्शक, बिभीषक २. वंचकः, कपटिन् ।

धौत, वि. (सं.) दे. 'धोया हुआ' २. स्वच्छ ३. स्नात ।

धौति-ती, सं. स्त्री. (सं.) यौगिकक्रियाभेदः ।

धौरा-ला, वि. (सं. धवल) श्वेत, शुक्ल, सित । सं. पुं. धवलः, ऋषभवरः ।

धौरेय, वि. (सं.) भार,-वाहक-वाहिन् । सं. पुं. (सं.) शकटवाहकवृषः २. अश्वः ३. मुख्यः, नायकः ।

धौल, सं. स्त्री. (अनु.) चपेटः-टिका, करतलाघातः २. क्षतिः-हानिः (स्त्री.) ।

—धप्पा, सं. पुं., मुष्टीमुष्टि-बाहूबाहवि (न.) ।

ध्यान, सं. पुं. (सं. न.) ऐकाग्र्यं, समाधिः (पुं.), अन्तर्ध्यानं, चित्तस्थैर्यं २. स्मृतिः (स्त्री.), धारणा ३. धीः-बुद्धिः (स्त्री.) ४. अवधानं, मनोयोगः ५. चित्तं, मनस् (न.) ६. चिंता, मननं ७. भावना, मतिः (स्त्री.) ८. मानसं प्रत्यक्षम् ।

—आना, मु., स्मृ (भ्वा. प. अ.), अनुचिंत् (चु.) ।

—दिलाना, मु., अनु-स्मृ (प्रे.) ।

—देना, मु., अवधा (जु. उ. अ.), मनः युज् (चु.) ।

—बटाना, मु., चित्तं-ध्यानं अपकृष् (भ्वा. प. अ.) ।

—में न लाना, मु., अवगण्-अवधीर् (चु.) ।

—में मग्न होना या डूबना, मु., विचार-ध्यान,-मग्न (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.) ।

—रखना, मु., न विस्मृ (भ्वा.प.अ.) मनसि ।

—लगाना, मु. नि-ध्यै (भ्वा. प. अ.), सम. (जु. उ. अ.), विचिंत् (चु.) ।

—से उतरना, मु., विस्मृ (कर्म.) ।

ध्यानस्थ, वि. (सं.) ध्यान-चिंतन-विचार-मग्न-लीन ।

ध्यानी, वि. (सं.-निन्) ध्यान-चिंतन,-शील-परायण-पर, विचारवत् ।

ध्येय, वि. (सं.) ध्यातव्य, चिंतनीय । सं. पुं. (सं. न.) लक्ष्यं, लक्षं, उद्देशः-श्यम् ।

ध्रुपद, सं. पुं., दे. 'धुरपद' ।

ध्रुव, वि. (सं.) अचल, अविचल, निश्चल, स्थिर २. नित्य, निर्विकार, अव्यय ३. निश्चित, नियत, असंदिग्ध । सं. पुं. (सं.) ध्रुवतारा, नक्षत्रनेमिः (पुं.), उत्तानपादजः, ज्योतीरथः ।

ध्वंस, सं. पुं. (सं.) प्र-वि,-ध्वंसः, वि,-नाशः, अवसादः उच्छेदः, क्षयः, निपातः, संहारः ।

ध्वजा, सं. स्त्री. (सं. ध्वजः) पताका, वैजयंती, केतुः (पुं.) केतनम् ।

ध्वजी, सं. पुं. (सं.-जिन्) पताकिन्, ध्वज,-वाहकः-धारिन् ।

ध्वनि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) नि-,नादः, शब्दः, र(रा)वः, स्वरः, घोषः, ध्वानः, निस्-, स्व(स्वा) नः, निह्रादः २. शब्दस्फोटः ३. व्यंग्यार्थ-प्रधानं काव्यं ४. गूढार्थः, गुप्ताशयः ।

ध्वनित, वि. (सं.) स्वनित, क्वणित, नदित, शब्दित, रसित २. भंग्या सूचित, द्योतित, उपलक्षित, व्यञ्जित, विवक्षित ३. वादित ।

ध्वस्त, वि. (सं.) प्र-वि,-ध्वस्त, वि,-नष्ट, अवसन्न, उच्छिन्न, क्षीण, निपातित, खण्डित, भग्न २. पराजित ।

ध्वांक्ष, सं. पुं. (सं.) काकः ।

ध्वान, सं. पुं. (सं.) शब्दः, दे. 'ध्वनि' ।

न

न, देवनागरीवर्णमालाया विंशो व्यञ्जनवर्णः, नकारः ।

नंग, सं. पुं. (हिं. नंगा), नग्नता-त्वं, दिगम्बरता-त्वं २. गुह्याङ्गं, गुह्यम् ।

—धड़ङ्ग, विं. } दे. 'नंगा' (१) ।
—मुनंगा, वि. } दे. 'नंगा' (१) ।

नंगा, वि. (सं. नग्न) अ-निर्-वि,-वस्त्र-वसन-वासस्, दिग्,-अम्बर-वासस् २. अनावृत, आवरण-आच्छादन,-रहित ३. निस्त्रप, निर्लज्ज ।

—करना, क्रि. स., नग्नी-विवस्त्री-निर्वसनी कृ ।

—बुचा या बूचा, वि., दरिद्र, अकिंचन ।

—मादरज़ाद, वि. (फ़ा.) दिगंबर, दिग्वसन ।

—लुचा, वि., दुष्ट, खल, दुर्वृत्त ।

नंगे पाँव, वि., नग्नपाद, पादहीन ।

नंगे सिर, वि., नग्नशिरस्क, निरुष्णीष ।
नंद, सं. पुं. (सं.) आनन्दः, मोदः २. पुत्रः ३. श्रीकृष्णस्य धर्मतातः-प्रतिपालकः ४. मगधेश्वरविशेषः ।
-किशोर,-कुमार,-नन्दन, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः, वासुदेवः ।
नंद, सं. स्त्री., दे. 'ननद' ।
नंदक, वि. (सं.) हर्ष,-प्रद-जनक, आनन्द-दायक । सं. पुं., श्रीकृष्णखड्गः ।
नंदन, सं. पुं. (सं. न.) 'इंद्रवनम्' । सं. पुं., पुत्रः २. मेघः । वि., हर्षक, मोदक ।
—वन, सं. पुं. (सं. न.) शक्रोद्यानम् ।
नंदना, सं. स्त्री. (सं.) पुत्री, तनया ।
नंदनी, सं. स्त्री., दे. 'नंदिनी' ।
नंदि, सं. पुं. (सं.) आनन्दः, हर्षः २. शिवदौवारिकः, वृषभः, नन्दिकेश्वरः ।
नंदिकेश्वर, सं. पुं. (सं.) नन्दिकेशः, शिववृषः २. शिवः ३. उपपुराणविशेषः ।
नंदिनी, सं. स्त्री. (सं.) पुत्री, दुहितृ (स्त्री.), तनया २. ननांदृ-ननंदृ (स्त्री.) ३. पत्नी, भार्या ४. दुर्गा ।
नंदी, सं. पुं. (सं. नन्दिन्) शिवगणभेदः २. शिवद्वारपालः वृषभः ।
—ईश्वर, सं. पुं. (सं.) शिवः ।
नंदोई, नंदोसी, सं. पुं. (हिं. नन्द) ननांदृपतिः, कौतुलः ।
नंबर, सं. पुं. (अं.) संख्या, गणना, अंकः २. चिह्नं, लांछनं ३. पर्यायः, परिवृत्तिः (स्त्री.), वारः ।
—दार, सं. पुं. (अं.+फ़ा.) भूकरोद्ग्राहकः ।
—वार, क्रि. वि. (अं.+फ़ा.) यथाक्रमं, क्रमशः, एकैकशः (सब अव्य.) पर्यायेण-क्रमेण (तृ.) ।
नंबरिंग मैशीन, सं. स्त्री. (अं.) अंकनयंत्रम् ।
नंबरी, वि. (अं. नंबर) अंकित, अंकयुत, सांक २. विख्यात, विश्रुत ।
—सेर, सं. पुं., आंग्ली,-सेटकं-सेरः ।
न, अव्य. (सं.) न, नहि, नो २. (मत) मा, मा मा, अलं (तृतीया अथवा क्त्वा (या ल्यप्) के योग में) ।
—न, मा मैवं, मा तावत् ।
न…न, न च…नवा, न…न वा, न च…न च, न…न (उ. न रामो गतो न वा कृष्णः) ।
नक, सं. स्त्री., (सं. नक्रा) नासा, नासिका ।
—कटा, वि., छिन्न,-नास-नासिक २. विख्य, विग्र, अ-वि-गत,-नासिक ३. निर्लज्ज, अपत्रप ।
—कटी, सं. स्त्री., नासाछेदः २. अवमानना, मानहानिः (स्त्री.) ।
—घिसनी, सं. स्त्री., भूमौ नासिकाघर्षणं २. दैन्यातिशयः ।
—चढ़ा, वि., दुष्प्रकृति, कु-दुः,-शील ।
—छिकनी, सं. स्त्री., छिकनी, छिक्किका, उग्रा, तिक्ता ।
—फूल, सं. पुं., लवंगं, घ्राण-भूषणभेदः ।
—बेसर, सं. पुं., नाथकः ।
नक़द, सं. पुं. (अ.) टंकः-कं, नाणकं, मुद्रा, मुद्राधनम । वि., प्रस्तुत (धनादि) ।
नक़दी, सं. स्त्री., दे. नक़द' सं. पुं. ।
नकपुड़ी, सं. स्त्री., दे. 'नथना' ।
नक़ब, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'सेंध' ।
नक़ल, सं. स्त्री. (अ.) अनु-प्रति,-लिपिः (स्त्री.)-लेखः २. अनुकृतिः-अनुवृत्तिः (स्त्री.) ३. अनु,-करणं-सरणं ३. सोपहासं अनुकरणं-विडंबनम् ।
—करना, क्रि. स., अनु-प्रति,-लिपिं कृ या लिख (तु. प. से.) २. अनुकृ ३. विडंब् (चु.) ।
—नवीस, सं.पुं.(अ.+फ़ा.) अनु-प्रति,-लेखकः, प्रतिलिपिक(का)रः ।
नक़ली, वि. (अ.) कृतक, कृत्रिम २. कापटिक, छाद्मिक, कपट-, कूट-, छद्म ।
नकसीर, सं. स्त्री. (हिं. नक+सं. क्षीर=जल) नासारक्तस्रावः ।
—फूटना, क्रि. अ., नासाया रक्तं स्रु (भ्वा. प. अ.) ।
नक़ाब, सं. स्त्री. पुं. (अ.) वर्णकः, वर्णिका २. अवगुंठनं, आवरकः-कम् ।
—पोश, वि., वर्णिकाच्छादितः, अवगुंठनवत् ।
नकार, सं. पुं. (सं.) निषेधकवाक्यं २. प्रत्याख्यानं, नि-प्रति,-षेधः ३. 'न' इत्यक्षरम् ।
नकारना, क्रि. अ. (सं. नकारः>) प्रति-नि,-षिध् (भ्वा. प. वे.) ।
नकीब, सं. पुं. (अ०) चारणः, वन्दिन् ।
नकुल, सं. पुं. (सं.) सर्पारिः, बभ्रुः २. पांडुराजस्य चतुर्थपुत्रः ३. पुत्रः ।
नकेल, सं. स्त्री. (हिं. नाक) नासिकारज्जुः (स्त्री.) ।

नक्कारख़ाना, सं. पुं. (फ़ा.) डिंडिमालयः, दुंदुभिगृहम् ।

—नक्कारखाने में तूती की आवाज़, मु., अरण्यरुदितम् ।

नक्कारची, सं. पुं. (फ़ा.) दुंदुभिवादकः, पटह-ताडकः ।

नक्कारा, सं. पुं. (फ़ा.) आनकः, डिंडिमः, दुंदुभिः (पुं.), पटहः, भेरी ।

नक्काल, सं. पुं. (अ.) अनुकारिन्, विडम्बनकारः, विडंबकः २. भंडः, विदूषकः,वैहासिकः ३. नटः, कुशीलवः, रंगाजीवः ।

नक्क़ाश, सं. पुं. (अ.) उत्कारकः ।

नक्क़ाशी, सं. स्त्री. (अ.) उत्किरणम् ।

नक्की, सं. स्त्री. (सं. नक्रा) अक्षे क्रीडापत्रे वा एकबिन्दुचिह्नम् ।

—दुआ, सं. पुं., अक्षक्रीडाभेदः ।

—मूठ, सं. स्त्री., द्यूतभेदः ।

नक्कू, वि. (हिं. नाक) कुख्यातिमत्, कुप्रसिद्ध, दुर्नामन् ।

नक्तंचर, सं. पुं. (सं.) राक्षसः, निशाचरः २. उलूकः, घूकः ३. चौरः, स्तेनः ।

नक्तंदिन, अव्य. (सं. नक्तंदिनम्) नक्तंदिवं, अहोरात्रं, अहर्निशम् । दिवारात्रम् (सब अव्य.)

नक्त, सं. पुं. (सं. न.) रात्री-त्रिः (स्त्री.), निशा ।

नक्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'मगरमच्छम्' ।

नक्श, सं. पुं. (अ.) आलेख्यं, चित्रं, प्रतिकृतिः (स्त्री.) २. मुद्रा, अंकः, चिह्नं ३. लक्षणं, आकृतिः (स्त्री.) ।

—करना, क्रि. स., अंक-मुद्र-चिह्न् (चु.) २. निविश् (प्रे.), न्यस् (दि. प. से.) ।

नक्शा, सं. पुं. (अ.) मान-प्रदेश,-चित्रं, देशा-लेख्यं २. आदर्शः, प्रति,-मानं-रूपं ३. रूप-रेखालेख्यम् ।

नक्षत्र, सं. पुं. (सं. न.) तारा, तारका, उडुः (पुं.) २. राशिः (पुं.), राशिनक्षत्रं ३. भगणः, तारासमूहः ।

—नाथ,—पति,—राज, सं. पुं. (सं.) चंद्रः ।

नख, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'नाखून' ।

—शिख, सं. पुं. (सं. न.) सर्वाणि अंगानि, सर्वावयवाः, गात्राणि (सब बहु.) २. सर्वां-गवर्णनम् ।

—शिख से, मु., आपादशीर्षं, पूर्णतया, साम-स्त्येन ।

नख़रा, सं. पुं. (फ़ा.) विभ्रमः, विलासः, लीला, हावः, २. चापल्यं, ३. व्याजः, कपटम् ।

नख़रेबाज़, वि., (फ़ा.) सविभ्रम, लीलामय (स्त्री. लीलावती, विलासिनी) ।

नख़रेबाज़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) ललिताभिनयः, लीला ।

—करना या बघारना, क्रि. स., विलस् (भ्वा. प. से.), ललिताभिनयं कृ २. कपटं-छलं-व्याजं कृ ।

नखी, सं. पुं. (सं. नखिन्) सिंहः २. चित्रकः। वि., सनख, नखवत् ।

नग[1], सं. पुं. (सं.) पर्वतः, गिरिः (पुं.) २. वृक्षः ३. 'सप्तन्' इति संख्या ४. सर्पः ५. सूर्यः । वि., अचल, स्थिर ।

—पति, सं. पुं. (सं.) शिवः २. हिमालयः ।

नग[2], सं. पुं., (फ़ा. नगीनह्) दे. 'नगीना' २. संख्या ।

नगण, सं. पुं. (सं.) त्रिलघुगणः, छन्दः-शास्त्रे गणभेदः (उ० नमन, चलन इ०) ।

नगण्य, वि. (सं. अगण्य) क्षुद्र, तुच्छ, साधा-रण, सामान्य ।

नगद, सं. पुं., दे. 'नकद' ।

नगनी, सं. स्त्री. (सं. नग्निका) नग्ना, निर्वस्त्रा, विवस्त्रा २. अपुष्पा, रजोरहिता कन्या ३. निर्लज्जा, स्वैरिणी ।

नग़मा, सं. पुं. (अ.) सु-मधुर,-स्वरः-स्वनः २. गीतं, गीतिका ३. रागः ।

नगर, सं. पुं. (सं. न.) पुर् (स्त्री.), पुरं, पुरी, नगरी, पत्तनं, पट्टनं-नी, पट्टं, निगमः ।

—कीर्तन, सं. पुं. (सं. न.) यात्रासंगानम् ।

—नारी, सं. स्त्री. (सं.) नगरनायिका, वेश्या ।

—वासी, सं. पुं. (सं.-सिन्) पौरः, पौर,-जनः-लोकः ।

नगरी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नगर' ।

नगाड़ा,-रा, सं. पुं. दे. 'नक्कारा' ।

नगीना, सं. पुं. (फ़ा.) रत्नं, मणिः (पुं.) २. देशीयवस्त्रभेदः ।

नग्न, वि. (सं.) दे. 'नंगा' ।

नग्नता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नंग' ।

नचवाना, नचाना, क्रि. प्रे., व. 'नाचना' के प्रे. रूप।
नज़दीक, वि. (फ़ा.) [illegible]हित, समीप, निकट।
नज़दीकी, सं. स्त्री. (फ़ा.) सान्निध्य, सामीप्य।
नज़म, सं. स्त्री. (अ. नज़्म) कविता, पद्यं, छंदस् (न.)।
नज़र, सं. स्त्री. (अ.) दृश्, दृक्शक्तिः, दृष्टिः (सब स्त्री.) २. दयादृष्टिः (स्त्री.) परि-, अवेक्षणं, अवेक्षा ३. निरीक्षणं ४. दे. 'नज़राना' ५. कु-दुर्,-दृष्टिः।
—अंदाज, वि. (अ.+फ़ा.) अवधीरित, निराकृत, उपेक्षित।
—आना या पड़ना, क्रि. अ., दृश्-ईक्ष्-अव-लोक् (कर्म.)।
—डालना, क्रि. स., दृश् (भ्वा. प. अ.), ईक्ष् (भ्वा. आ. से.)।
—बंद, वि. (अ.+फ़ा) निरुद्ध।
—बंदी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) (निश्चितस्थाने) निरोधः।
—बाज़, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) कटाक्षवीक्षकः, भ्रूविलासकः, *पापदृष्टिः।
—सानी, सं. स्त्री. (अ.) पुनरीक्षणं, संशोधनम्।
—लगना, मु., कुदृष्ट्या पीड् (कर्म.)।
—से गिरना, मु., अप-अव-मन् (प्रे.), कलंक-यति (ना. धा.)।
नज़राना, सं. पुं. (अ.) उपहारः, उपायनम्।
नज़ला, सं. पुं. (अ.) कफः, श्लेष्मन् (पुं.) २. अभिष्यंदः, प्रतिश्यायः, नासास्रावः।
नज़ाकत, सं. स्त्री. (फ़ा) लालित्यं, सुकुमारता, कोमलता।
नज़ात, सं. स्त्री. (अ.) मुक्तिः (स्त्री.), अपवर्गः।
नज़ारा, सं. पुं. (अ.) दृश्यं, दृग्गोचरस्थानं २. दृष्टिः (स्त्री.) ३. कटाक्षः।
नज़ीर, सं. स्त्री. (अ.) उदाहरणं, दृष्टांतः।
नजूम, सं. पुं. (अ.) ज्योतिषं, नक्षत्रविद्या।
नजूमी, सं. पुं. (अ.) ज्योतिषिकः, ज्योति-र्विद् (पुं.)।
[illegible]ज़ूल, पुं. (अ.) राज-नृप-शासक,-भूमिः (स्त्री.)।
नट, सं. पुं. (सं.) शैलूषः, जायाजीवः, भरतः, अभिनेतृ, भरतपुत्रकः, रंग,-जीवः-अवतारकः, सर्ववेशिन्, नंडः, नग्नः २. रज्जुनर्तकः ३. व्यायामिन् ४. जातिविशेषः।
—वर, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः।
नटखट, वि. (सं. नटः+अनु. खट) चपल, चंचल, कुचेष्टक २. धूर्त्त, मायाविन्।
नटखटी, सं. स्त्री. (हिं. नटखट) चपलता २. धूर्तता।
नटनी, सं. स्त्री., दे. 'नटी'।
नटी, सं. स्त्री. (सं.) शैलूषिकी, अभिनेत्री, सर्ववेशिनी २. नर्तकी ३. नटपत्नी ४. वेश्या ५. नटजातेर्नारी।
नतीजा, सं. पुं. (अ.) परिणामः, फलं २. अर्थः, पाकः।
नत्थी, सं. स्त्री. (हिं. नाथना) नहनं, संग्रंथनं २. नहनसूत्रं ३. लेख्यश्रेणी।
नथ, सं. स्त्री. (सं. नाथः = नाक की रस्सी) नाथः, नासावलयः।
नथना, सं. पुं. (सं. नस्तः = नाक)। नासा-नासिका,-छिद्रं-रंध्रं-विवरं २. नासापुटः-पुटम्। क्रि. अ., व्यध्-छिद् (कर्म.) २. संग्रंथ्-संनह् (कर्म.)।
—चढ़ाना या फुलाना, मु., क्रुध् (दि.प.अ.)।
नथनी, सं. स्त्री. (हिं. नथ) *नाथकः।
नद, सं. पुं. (सं.) उद्यः, भिद्यः, सरस्वत् (पुं.)।
—राज, सं. पुं. (सं.) समुद्रः।
नदारद, वि. (फा.) अनुपस्थित, लुप्त, अदृष्ट।
नदीश, सं. पुं. (सं.) समुद्रः, अब्धिः (पुं.)।
नदिया, सं. स्त्री. (सं. नदिका) क्षुद्र,-सरित्-नदी।
नदी, सं. स्त्री. (सं.) तटिनी, तरंगिणी, शैवलिनी, स्रोतस्विनी, वाहिनी, सरित् (स्त्री.) ह (हा) दिनी, धुनी, निम्नगा, आ(अ)पगा, सिंधुः (पुं.), रोधो,-स्रोतस्-वती, कुलवती, स्रवंती।
—कांत, सं. पुं. (सं.) सागरः, जलधिः (पुं.)।
—तीर, सं. पुं. (सं. न.) सरित्-नदी,-कूलं-तटम्।
नदीन, सं. पुं. (सं.) समुद्रः, सागरः २. वरुणः।
नदीश, सं. पुं. (सं.) अब्धिः-जलधिः (पुं.)।
नद्ध, वि. (सं.) बद्ध, योजित, संश्लेषित।
नद्ध्री, सं. स्त्री. (सं.) चर्म,-रज्जुः (स्त्री.)-कक्ष्या।
नधना, क्रि. अ. (सं. नद्ध) नि-, बंध् (कर्म.), संयुज् (कर्म.) २. दे. 'जुतना' ३. प्रारभ् (कर्म.)।
ननंद, ननद-दी, सं. स्त्री. [सं. ननंदृ (स्त्री.)]।

ननांदृ (स्त्री.), भर्तृभगिनी, नंदिनी, नंदा, पतिस्वसृ (स्त्री.)।

ननिहाल, सं. पुं. (हिं. नानी+सं. आलयः) मातामहालयः, मातृकुलम् ।

नन्हा, वि. (सं. न्यञ्च्√) अतिलघु, क्षुद्र, अल्प-क्षुद्र,-तनु, प्रतनु । सं. पुं., शिशुः, स्तनंधयः ।

नपुंसक, सं. पुं. (सं.) क्लीवः, तृतीय-प्रकृतिः (पुं.), पडः, पोगंडः, शं (षं) डः-ढः (सं. न.), क्लीवलिंगं (व्या.)। वि., भीरु, कातर ।

नपुंसकता, सं. स्त्री. (सं.) क्लीवता, षंडता, शंढता २. भीरुता, कातरता ।

नफ़रत, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'घृणा' ।

नफ़ा, सं. पुं. (अ.) लाभः, आयः, उदयः, फलं, वृद्धिः (स्त्री.)।

नफ़ीस, वि. (अ.) उत्कृष्ट, उत्तम, विशिष्ट २. चारु, शोभन, सुंदर ३. उज्ज्वल, विमल ।

नबी, सं. पुं. (अ.) सिद्धः, ईशदूतः, भाविकथकः।

नबेड़ना, क्रि. स., (सं.निवृत्त>) दे. 'निपटाना' ।

नबेड़ा, सं. पुं. (हिं. नबेड़ना) न्यायः, निर्णयः ।

नब्ज़, सं. स्त्री. (अ.) नाडी-डिः (स्त्री.)।

—देखना,क्रि.सं.,नाडिं-डींपरीक्ष् (भ्वा.आ.से.)।

नभ, सं. पुं. [सं. नभस् (न.)] दे. 'आकाश' ।

—चर, सं. पुं. (सं. नभश्चरः) खगः, खेचरः ।

नमः, अव्य. (सं.) प्रणतिः (स्त्री.), प्रणामः, अभिवादः-दनं, नमस्कारः, नमस्क्रिया ।

नम, वि. (फ़ा.) आर्द्र, उन्न ।

नमक, सं. पुं. (फ़ा.) लवणं २. लावण्यं, विशिष्ट-सौन्दर्यं ३. पिंडः। (नमक के भेद, दे. 'नोन')।

—ख़्वार, सं. पुं. (फ़ा.) पराश्रितः, परायत्तः, सेवकः ।

—दान, सं. पुं (फ़ा.) लवणधानं-नी ।

—का तेज़ाब,सं.पुं., उदनीरिकाम्लः,लवणाम्लः।

—हराम, वि. (फ़ा.+अ.) कृतज्ञताशून्य, अकृतवेदिन्, कृतघ्न, (-घ्नी स्त्री.)।

—हरामी, सं. स्त्री., अकृतज्ञता, कृतघ्नता ।

—हलाल, वि. (फ़ा.+अ.) अनुरक्त, भक्त, सानुराग ।

—हलाली, सं. स्त्री., भक्तिः-अनुरक्तिः (स्त्री.) कृतज्ञता ।

—खाना,मु., परपिंडं भुज् (रु. आ. अ.), पराश्रयं सेव् (भ्वा. आ. से.)।

—मिर्च लगाना, मु., अत्युक्त्या वर्ण् (चु.)। कटे पर—लगाना अथवा घाव पर—छिड़कना, मु. क्षते क्षारं क्षिप् (तु. प. अ.)।

नमकीन, वि. (फ़ा.) लवण, लवण-क्षार,-युक्त-मय-गुणविशिष्ट-धर्मक २. लवणित, सलवण, लवणसंसृष्ट ३. अभिराम, मनोज्ञ। सं. पुं., लवणपक्वान्नं (समोसा आदि)।

नमदा, सं. पुं. (फ़ा.) नमतम् ।

नमन, सं. पुं. (सं. न.) नमस्कारः, प्रणतिः (स्त्री.) २. अवगमनं, नतिः (स्त्री.)।

नमनीय, वि. (सं.) पूज्य, वन्दनीय ।

नमस्कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'नमः' ।

नमस्ते, वाक्य, (सं.) नमस्तुभ्यं, नमामि त्वाम् । सं. स्त्री., प्रणामः, प्रणतिः (स्त्री.), नमस्कारः।

नमाज़, सं. स्त्री. (फ़ा.) ईश,-प्रार्थना-वन्दना (इस्लाम)।

नमित, वि. (सं.) आभुग्न, नामित, प्रवण, प्रह्व।

नमी, सं. स्त्री. (फ़ा) आर्द्रता, क्लिन्नता ।

नमूदार, वि० (फ़ा.) उदित, प्रकट, दृग्गोचर ।

नमूना, सं. पुं. (फ़ा.) आदर्शः, प्रतिमा, प्रतिरूपं २. उपमानं, प्रतिमानम् ।

नम्र, वि. (सं.) निर्,-अभिमान-अहंकार, विनत, विनीत, विनयिन्, विनयशील, अभिमान-गर्व-दर्प,-रहित-शून्य-हीन, नम्रचेतस् २. नत, प्रवण ।

नम्रता, सं. स्त्री. (सं.) प्रश्रयः-यणं, विनयः, विनयिता, निरभिमानता, सौम्यता ।

नय, सं. पुं. (सं.) नायः, नीतिः (स्त्री.)।

—नागर, वि. (सं.) नय-नीति,-निपुण-कोविदज्ञ-विद्-विशारद-शील ।

नयन, सं. पुं. (सं. न.) नेत्रं, दे. 'आँख' २. अपनयनं, अपवहनम् ।

—गोचर, वि. (सं.) दृग्गोचर, दृष्टिगोचर ।

—च्छद, सं. पुं. (सं.) नेत्र-नयन-च्छदः-पटः ।

—जल, सं. पुं. (न.) नयन,-वारि (न.)-सलिलं-जलम् ।

नया, वि. (सं. नव) अधुनातन-इदानींतन [-नी (स्त्री.)], आधुनिक [-की (स्त्री.)],

अर्वाचीन २. अभिनव, नवीन, नूतन, प्रत्यग्र ३. अभूत-अदृष्ट,-पूर्व ४. अनभ्यस्त, अपरिचित।
—पन, सं. पुं., नवीनता, नूतनता, अपूर्वता।
नये सिरे से, क्रि. वि., पुनः, पुनरपि, अभिनवम्।
नर, सं. पुं. (सं.) पु (पू)रुषः, नृ-पुंस् (पुं.), २. मनुजः, मनुष्यः, मानुषः, मानवः, मर्त्यः। वि., पुंजातीय, नर-, पुं-, पुरुष-(उ., पुंव्याघ्रः)।
—देव, सं. पुं. (सं.) नृपः २. ब्राह्मणः।
—नाथ, सं. पुं. (सं.) नरपतिः, भूपः।
—नारायण, सं. पुं. [सं.-णौ (द्वि.)] ऋषिविशेषौ।
—पिशाच, सं.पुं.(सं) महादुष्टः, महाक्रूरः।
—भक्षी, सं. पुं. (सं.-क्षिन्) राक्षसः, पिशाचः।
—लोक, सं. पुं. (सं.) पृथिवी, मर्त्यलोकः।
—सिंघ, सं. पुं., दे. 'नृसिंह'।
—सिंह, सं. पुं. (सं.) दे. 'नृसिंह'।
नरक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दुर्गतिः (स्त्री.), नारकः, निरयः २. अतिमलिनस्थानं ३. दुःखपूर्णस्थानम्।
—कुंड, सं. पुं. (सं. न.) निरय-नरक,-कूपः-कुण्डम्।
नरकट, सं. पुं. (सं. नलः) धमनः, नडः, नालः, कीचकः, कुक्षिरंध्रः।
नरक(कु)ल, नरकस, सं. पुं., दे. 'नरकट'।
नरकेश(स, ह)री, सं. पुं., दे. 'नृसिंह'।
नरख़ड़ी, सं. स्त्री. } (देश.),कंठः, गलः २.प्राण-
नरख़रा, सं. पुं. } श्वास,-मार्गः-नालिका।
नरगिस, सं. पुं. (फ़ा.) पुष्पभेदः, *नरगिसम्।
नरद, सं. स्त्री. (फ़ा नर्द) शारिः (पुं.), शारिका, शारिफलम्।
नरमी, सं. स्त्री., दे. 'नर्मी'।
नरसिंघा, सं. पुं. (सं. नर (=बड़ा)+शृङ्ग>) वाद्यभेदः, *नरशृङ्गः, काहलः-ला-लम्।
नरसों, क्रि. वि., दे. 'अतरसों'।
नराच, सं. पुं. (सं. नाराचः) बाणः, शरः।
नराधम, सं. पुं. (सं.) खलः, पापः, पापिष्ठः, नीचः।
नराधिप, सं. पुं. (सं.) नृपः, भूपः।
नरेन्द्र, नरेश, नरेश्वर, सं. पुं. (सं.) नृपः, नृपतिः, राजन् (पुं.)।
नर्तक, सं. पुं. (सं.) लयालम्बः, नृत्य,-कर-कारिन् २. दे. 'नट' (१) ३. वंदिन्, वैतालिकः ४. दे. 'नरकट'।
नर्तकी, सं. स्त्री. (सं.) लयपुत्री, नृत्य,-करी-कारिणी, लासिका २. दे. 'नटी' (१)।
नर्तन, सं. पुं. (सं. न.) नृत्यम्। (पुरुषों का–) ताण्डवः-वम्। (स्त्रियों का–) लास्यम्।
नर्बदा, सं. स्त्री. (सं. नर्मदा) रेवा, मेकलकन्या, सोमसुता।
नर्म[1], सं. पुं. [सं. नर्मन् (न.)] परि(री)-हासः, विनोदः।
नर्म[2], वि. (फ़ा.) (स्वभाव) कोमल, मृदुल, सुकुमार, सौम्य, २. (पदार्थ) मसृण, स्निग्ध, श्लक्ष्ण, सुखस्पर्श, ३. (ध्वनि) मधुर, मंजुल।
नर्माना, क्रि. अ. (फ़ा. नर्म) मृदू भू २. दयार्द्री भू, प्र-, शम् (दि. प. से.)। क्रि. स., मृदू कृ २. दयार्द्रीं कृ, प्र-, शम् (प्रे. शमयति)।
नर्मी, सं. स्त्री. (फ़ा. नर्म) कोमलता, मृदुता, सौम्यता २. मसृणता, श्लक्ष्णता।
नल[1], सं. पुं. (सं.) नृपविशेषः, दमयन्तीपतिः (पुं.)।
नल[2], सं. पुं. (सं.) दे. 'नरकट'।
नल[3], सं. पुं. (सं. न.) पद्मं, कमलम्।
नल[4], सं. पुं. (सं. नालः) नाड़ी-ली, नाडिः–लिः (स्त्री.) प्रणालः-ली।
पानी का नल, सं. पुं. प्रणालिका, सारणिः (स्त्री.), जलनाली।
नला, सं. पुं. (हिं. नल) मूत्र,-मार्गः-नाली।
नलिन, सं. पुं. (सं. न.) कमलं, सरोजम्।
नलिनी, सं. स्त्री, (सं.) अंबुजं, कमलं २. पद्मसमूहः ३. पद्माकरः, पुष्करिणी ४. (लता) कमलिनी, पद्मिनी, मृणालिनी ५. नदी।
नली, सं. स्त्री. (हिं. नल) सूक्ष्म-क्षुद्र,-नाली-नाडी, दे. 'नल' (१) २. दे. 'नरखरा' ३. अन्नवहनाली-डी ४. अनुजंघास्थि (न.) ५. सूत्रवेष्टनं, त्रसरः।
नव[1], वि. (सं.) नवीन, नूतन, दे. 'नया'।
—युवक, सं. पुं., नव,-युवन् (पुं.), तरुणः, कुमारः, किशोरः।
—यौवना, सं. स्त्री. (सं.) नवयुवतिः (स्त्री.)-ती, नवयूनी, तरुणी, तलुनी, कुहेली।
—वधू, सं. स्त्री. (सं.) नवोढा, वधूः (स्त्री.), नवपाणिग्रहणा, नववरिका।

नव[2], वि. तथा सं. पुं. (सं. नवन्) दे. 'नौ'।
—ग्रह, सं. पुं. [सं.-हाः (बहु.)] सूर्यादयः नव ग्रहाः।
—द्वार, वि. (सं.) नवद्वारयुक्तं २. नवच्छिद्रं (शरीरम्)।
—निधि, सं.स्त्री. (सं.पुं.)नवरत्नयुतःकुबेरकोषः।
—रत्न, सं. पुं. (सं. न.) नवप्रकारमणयः (मोती, माणिक्य आदि) २. विक्रमादित्यस्य राजसभायाः कालिदासादयो नव पंडिताः ३. नवविधरत्नयुतः हारः केयूरं वा।
—रात्र, सं. पुं. (सं. न.) आश्विनशुक्लप्रतिपदादिनवमीपर्यंतकर्तव्यदुर्गाव्रतविशेषः।
—सत साजना, मु., षोडशशृंगारैः अलंकृ।
नवक, सं. पुं. (सं. न.) नववस्तुसमूहः।
नवधा, अव्य. (सं.) नवप्रकारैः, नवखण्डेषु।
—भक्ति, सं. स्त्री. (सं.) नवप्रकारा भक्तिः (श्रवणं, कीर्तनं, स्मरणं, पादसेवनं, अर्चनं, वन्दनं, दास्यं, सख्यं, आत्मनिवेदनम्)।
नवनी, नवनीत, सं. स्त्री., सं. पुं., (सं.) दे. 'मक्खन'।
नवम, वि. (सं.) नवमः-मं-मी (पुं.न.स्त्री.)।
नवमी, सं. स्त्री. (सं.) चांद्रमासस्य कृष्णा शुक्ला वा नवमी तिथिः (स्त्री.)।
नवल, वि. (सं.) नवीन, नव्य, नूतन २. सुंदर ३. युवन् (पुं.) ४. उज्ज्वल, स्वच्छ।
नवला, सं. स्त्री. (सं.) तरुणी, युवती-तिः(स्त्री.)।
नवाँ, वि., दे. 'नौवाँ'।
नवाना, क्रि. स., दे. 'झुकाना'।
नवान्न, सं. पुं. (सं. न.) नूतनान्नं २. श्राद्धभेदः ३. सद्यःपक्वमन्नम्।
नवाब, सं. पुं (अ. नव्वाब) राजप्रतिनिधिः (पुं.) २. उपाधिभेदः ३. प्रांताध्यक्षः। वि., अतिव्ययिन्, अर्थनाशिन् २.आज्ञापक, शासक।
—ज़ादा, सं. पुं. (फ़ा.) राजप्रतिनिधि-प्रांताध्यक्ष,-पुत्रः २. विलासिन्, सुखपरायणः।
नवाबी, सं. स्त्री. (अ. नव्वाब) राज,-प्रतिनिधित्वं-प्रातिनिध्यं २. अधिकारः, शासनं, स्वाम्यं ३. सुखोपभोगः, विलासित्वम्।
नवासा, सं. पुं. (फ़ा.) दौहित्रः, पुत्री-दुहितृ,-पुत्रः। नवासी (स्त्री. = दौहित्री)।
नवासी, वि. [सं. नवाशीतिः (नित्य स्त्री.)]। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (८९) च।
नवीन, वि. (सं.) दे. 'नया'।
नवीनता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नयापन'।
नव्य, वि. (सं.) दे. 'नया'।
नव्वे, वि. [सं. नवतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (९०) च।
नशा, सं. पुं. (फा.) क्षीवता, मत्तता, मदः, मादः, शौंडता २. मादकद्रव्यं ३. धनविद्यादीनां अवलेपः-गर्वः-दर्पः।
—उतरना, मु., मदो व्यपगम्।
—उतारना, मु., दर्पं हृ (भ्वा. प. अ.), अभिमानं चूर्ण् (चु.)।
—ख़ोर, सं. पुं. (फ़ा.) मद्यपः, मधुपः, पान,-रतः-शौंडः।
—चढ़ना, मु. मंद् (भ्वा. आ. से.) क्षीव-मत्त (वि.) भू।
—पानी, सं. पुं., मादकसामग्री।
नशीला, वि. (फ़ा. नशा) मादक, उन्मादक, मदोत्पादक २. मदमत्त।
नशेबाज, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'नशाख़ोर'।
नश्तर, सं. पुं. (फ़ा.) वैद्यछुरिका।
—लगाना, मु., छुरिकया स्फोटकं छिद् (रु. प. अ.), शस्त्रेण उपचर् (भ्वा. प. से.)।
नश्वर, वि. (सं.) क्षयिन्, क्षयिष्णु, भंगुर, अनित्य, अस्थिर, वि.,ध्वंसिन्।
नश्वरता, सं. स्त्री. (सं.) क्षय-नाश,-शीलता, अनित्यता, अस्थिरता, भङ्गुरता।
नष्ट, वि. (सं.) अदृष्ट, लुप्त, च्युत, भ्रष्ट २. ध्वस्त, क्षीण, प्र-वि,-लीन, उच्छिन्न, उत्सन्न।
नस, सं. स्त्री. (सं. स्नसा) स्नायुः (स्त्री.) वस्नसा २. धमनी, नाडी।
नसर, सं. स्त्री. (अ.) गद्यं, छंदोहीनप्रबंधः।
नसल, सं.स्त्री. (अ.) वंशः, कुलं, जातिः (स्त्री.)।
नसवार, सं. स्त्री. दे. 'नास'।
नसा, सं. स्त्री. (सं.) नासिका, घ्राणेंद्रियम्।
नसीब-बा, सं. पुं. (अ.) दे. 'भाग्य'।
—जगना, मु., पुण्यं उद्-इ (अ. प. अ.)।
नसीहत, सं. स्त्री. (अ.) उपदेशः, शिक्षा।
—देना, क्रि. स., उपदिश् (तु. प. अ.), अनुशास् (अ. प. से.), २. निर्भर्त्स् (चु. आ. से.)।
नस्य, सं. पुं. (सं. न.) नस्तं, लावणं २. नासिक्यं, नासासंबंधिन्।

नस्या, सं. स्त्री. (सं.) नासा- नासिका, नक्रा २. नासिकारज्जुः (स्त्री.) ।

नहछू, सं. पुं. (सं. नखक्षौरं>) वैवाहिकरीति-भेदः ।

नहर, सं. स्त्री. (फ़ा.) कुल्या, प्रणाली, स(ह)-रणी, भ्रूणिः (स्त्री.) ।

नहरनी, नहन्नी, सं. स्त्री. (सं. नखहरणी) नख,-निष्कृतनी-दारणी ।

नहला, सं. पुं. (हिं. नौ) नवांकयुतं क्रीडा-पत्रम् ।

नहलाई, सं. स्त्री. (हिं. नहलाना) स्नापनं, क्षालनं, प्रधावनं २. स्नापन-क्षालन-प्रधावन,-भृतिः (स्त्री.) भृत्या-पारिश्रमिकम् ।

नहलाना, क्रि. स., व. 'नहाना' के प्रे. रूप ।

नहाना, क्रि. अ. (सं. स्नानं) स्ना (अ. प. अ.); अव-वि,-गाह् (भ्वा. आ. से.; द्वितीया के योग में); मस्ज् (तु. प. अ. ; सप्तमी के योग में), शुच्य् (भ्वा. प. से.), शुच् (दि. उ.से.) । सं. पुं., दे. 'स्नान' ।

नहाने योग्य, वि., स्नानीय, अवगाहनीय ।

नहानेवाला, सं. पुं., स्नातृ, अवगाहक ।

नहाया हुआ, वि., स्नात. अभिषिक्त, कृतस्नान ।

नहार, वि. (फ़ा.) निराहार, अकृतप्रातराश ।

—मुँह, मु., *रिक्तोदरं, निराहारम् ।

नहारी, सं. स्त्री. (फ़ा. नहार) प्रातराशः, कल्य-वर्तः २. अश्वानां गुडचूर्णम् ।

नहीं, अव्य. (सं. नहि) न, नो, मा, दे. 'न' ।

—तो, अव्य., अन्यथा, इतरथा २. एतद्विना, न(नो)चेत् ३. वा, अथवा ।

नहुष, सं. पुं. (सं.) सोमवंशीयनृपविशेषः २. वैदिकर्षिविशेषः ३. नागविशेषः ४. कुशिक-वंशीयो विप्रनृपः ।

नहूसत, सं. स्त्री. (अ.) अशुभं, अमंगलं २. दैन्यं, खिन्नता ।

नाँद, सं. स्त्री. (सं. नंदिकः-का>) मृद्-मृत्तिका,-द्रोणी-द्रोणिः (स्त्री.) ।

नांदी, सं. स्त्री. (सं.) मंगलाचरणं, नाटकारंभे देवद्विजादीनामाशीर्वादः २. अभ्युदयः समृद्धिः (स्त्री.) ३. आनंदः ।

ना, अव्य. (सं. फ़ा.) न, नो, मा ।

—इत्तिफ़ाकी, सं. स्त्री. (फ़ा.) विरोधः, विसंवादः, वैमत्यम् ।

—उम्मेद, वि. (फ़ा.) निराश, भग्नाश ।

—उम्मेदी, सं. स्त्री. (फ़ा.) निराशा, आशा-ऽभावः ।

—क़ाबिल, वि. (फ़ा.+अ.)अयोग्य, असमर्थ ।

—कारा, वि. (फ़ा.) निष्प्रयोजन, अनुपयो-गिन्, निरर्थक ।

—खुश, वि. (फ़ा.) खिन्न, विपण्ण ।

—गवार, वि. (फ़ा.) असह्य २. अप्रिय ।

—चीज़, वि. (फ़ा.) तुच्छ, क्षुद्र । सं. स्त्री., निरर्थकवस्तु ।

—जायज़, वि. (फ़ा.) अनुचित, नियमविरुद्ध ।

—तजर्बाकार, त्रि. (फ़ा.) अनुभवहीन, अप-रिणतबुद्धि ।

—पसंद, वि. (फ़ा.) अप्रिय, अरुचिकर ।

—पाक, वि. (फ़ा.) अशुद्ध, अपवित्र २. मलिन ।

—बालिग़, वि. (फ़ा.) अप्राप्तवयस्क, अप्राप्त-व्यवहार ।

—माकूल, वि.(फ़ा.+अ.) निर्बोध, निर्विवेक २. असंगत, अनुचित ।

—मालूम, वि. (फ़ा.+अ.) अज्ञात, अविदित ।

—मुनासिब, वि. (फ़ा.) अनुचित, अयुक्त ।

—मुमकिन, वि. (फ़ा+अ.) असंभव, अशक्य ।

—मुवाफ़िक, वि. (फ़ा.+अ.) अपथ्य, अहि-तकर ।

—याब, वि. (फ़ा.) अप्राप्य, दुष्प्राप, दुर्लभ ।

—लायक़, (फ़ा.+अ.) अयोग्य, मूर्ख ।

—वाक़िफ़, वि. (फ़ा+अ.) अनभिज्ञ, अपरिचित ।

—शायस्ता, वि. (फ़ा.) असभ्य, अशिष्ट ।

—समझ, वि. (सं.+हिं.) निर्बुद्धि, मूर्ख, अबोध ।

—समझी, सं. स्त्री. (हिं. नासमझ) अज्ञता, मूर्खता ।

—साज़, वि. (फ़ा.) अस्वस्थ, रुग्ण ।

नाइट्रोजन, सं. स्त्री. (अं.) भूयातिः (स्त्री.), नत्रजनम् ।

नाईं, (सं. न्यायः) सदृश, समान, तुल्य ।

नाई, नाउन, सं. पुं. (सं. नापितः) क्षुरिन्, मुंडिन्, क्षुरमर्दिन्, अंतावसायिन्, दिवाकीर्तिः (पुं.), क्षौरिकः चंडिलः, नखकुट्टः, मुंडः ।

नाक[1], सं. स्त्री. (सं. नक्रा) नासा, नासिका, घ्राणं, घोणा, गंधवहा, सिंघिणी, नस्या, नासि-क्यं, गंधनाली २. (नाक का मल) शिंघाणं-

णकं, शिंघणी, सिहानं ३. प्रधान-मुख्य,-वस्तु (न.) ४. प्रतिष्ठा, मानः।
—कटी, सं. स्त्री. मानहानिः (स्त्री.), प्रतिष्ठानाशः।
—का बाल, सं. पुं., प्रियः प्रीतिभाजनं, सहचरः।
—की फिंसी, सं. स्त्री., नासापिटिका।
—की रसोली, सं. स्त्री. नासार्बुदः-दम्।
—घिसनी, सं. स्त्री., कार्पण्यं, दैन्येन याचनम्।
—बहना, क्रि. अ., नासा वह् (भ्वा. उ. अ.) अथवा प्र,-स्नु (भ्वा. प. अ.)।
—सिनकना, क्रि. स., नासां शुध् (प्रे.) या निर्मली कृ।
—कटना, मु., अपमन्-अवज्ञा (कर्म.), अनादृत (वि.) भू।
—घिसना या रगड़ना, मु., पादयोः पतित्वा अभि-प्र-अर्थ् (चु.), दैन्येन याच् (भ्वा.उ.से.)।
—चढ़ाना, मु., क्रोधं घृणां वा प्रकटयति (ना. धा.)।
—पर मक्खी न बैठने देना, मु., दोषलेशमपि न सह् (भ्वा. आ. से.) २. विमल-स्वच्छ-(वि.) स्था (भ्वा. प. अ.)।
—बोलना, मु., नास् (भ्वा. आ. से.) घर्घरायते (ना. धा.), घर्घररवं कृ।
—भौं चढ़ाना या सिकोड़ना, मु., अरुचि-अप्रीतिं वा प्रकटी कृ।
—में दम करना, मु., अत्यर्थं क्लिश् (क्र्. प. से.) बाध् (भ्वा. आ. से.)।
—रखना, मु., संमानं रक्ष् (भ्वा. प. से.), अपमानात् त्रै (भ्वा. आ. अ.)।
—सिकोड़ना, मु., अरुचिं घृणां वा दृश् (प्रे.)।
नाकों चने चबवाना, मु., अर्द्-व्यथ् (प्रे.), परि-सं-तप् (प्रे.)।
नाक[२], सं. पुं. (सं.) स्वर्गः २. आकाशः-शम्।
नाकड़ा, सं. पुं. (हिं. नाक) नासापाकः २. दीर्घनासिका।
नाका[१], सं. पुं. (हिं नाकना = लाँघना) रथ्यांतः, मार्गावधिः (पुं.) २. वीथी, मार्गः ३. नगरादीनां प्रवेशद्वारं ४. नगरपाल-पुररक्षक,-स्थानं ५. सूचीछिद्रम्।
—बंदी, सं. स्त्री., (पुररक्षकैः) मार्गावरोधः-वीथीप्रतिबंधः।
नाका[२], सं. पुं. (सं. नक्रः) कुंभीरः।

नाक़िस, वि. (अ.) सदोष, विकल।
नाकेश, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः, देवराजः।
नाख़ुदा, सं. पुं. (फ़ा.) पोत-नौका,-अध्यक्षः, कर्णधारः।
नाख़ुना, सं.पुं. (फ़ा.) अर्मः-र्मम्,नेत्ररोगभेदः।
नाख़ून, सं. पुं. (फ़ा. नाखुन) नखः-खं, नखरः-रं, कर,-जः-अग्रजः-अंकुशः-कंटकः-रुहः, पुनर्,-भवः-नवः।
नाख़ूना, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'मोतियाबिंद'। २. अश्वनेत्रेषु रक्तरेखाः (स्त्री.) ३. तूलकौशपटः।
नाग, सं. पुं. (सं.) सर्पः, पन्नगः २. गजः, हस्तिन् ३. निर्दयः, क्रूरचारिन् ४. देवभेदः ५. नागकेशरः ६. पुन्नागः।
—केस(श)र, सं. पुं. (सं.) नागकिंजल्कः, नागीयः, पन्नगः-फणि,-केस(श)रः।
—पंचमी, सं. स्त्री. (सं.) श्रावणशुक्लपंचमी, पर्वभेदः।
—फनी, सं. स्त्री. (सं. नागफणः-णा) कन्यारी, दुर्धर्षा, दुष्प्रवेशा, तीक्ष्णकण्टका।
—फाँस, सं. स्त्री. (सं. नागपाशः) वरुणायुधः २. सार्द्धद्वयावर्तनात्मकः पाशभेदः ३. बंधन-प्रकारः।
—बेल, सं. स्त्री. (सं.नागवल्ली) तांबूली, तांबूल-वल्ली, नागलता, पूगी।
नागर, वि. (सं.) दक्षिण, चतुर, विदग्ध, सभ्य २. पौर, नागरिक। सं. पुं., नगर-पौर,-जनः, पौरः, नागरिकः।
नागरक, सं. पुं. (सं.) शिल्पिन्, शिल्पकारः २. नगर-प्रबन्धकः ३. चौरः। वि., दे. 'नागर'।
नागरमोथा, सं. पुं. (सं. नागरमुस्ता) चक्रांका, चूड़ाला, कच्छरुहा, नादेयी।
नागरिक, वि. तथा सं. पुं., दे० 'नागर'(१-२)।
नागरिकता, सं. स्त्री. (सं.) नागरता, पौरता २. दाक्षिण्यं, विदग्धता, सभ्यता।
नागरी, सं. स्त्री. (सं.) पुर-नगर-वासिनी २. चतुरा, प्रवीणा (नारी) ३. देवनागरी-लिपिः (स्त्री.)।
नागहानी, वि. स्त्री. (फ़ा.) आकस्मिकी, यादृच्छिकी।
नागा, सं. पुं. (सं. नग्नः) नग्नभिक्षुः।

नाग़ा, सं. पुं. (अ.) अनुपस्थितिः (स्त्री.), असंनिधिः (पुं.), कार्यपरंपराभंगः, अवकाशः।
नागिन, नी, सं. स्त्री. (सं. नागी) सर्पिणी, उरगी, भुजगी, भुजंगमी।
नागेश(स)र, सं. पुं., दे. 'नागकेसर'।
नागेश(स)री, वि. (हिं. नागेश(स)र) पीत, दे. 'पीला'।
नागोद, सं. पुं. (सं. नागोदरम्) उरस्-वक्षस्,-त्राणं, आयसी, उरश्छदः।
नागोदरिका, सं. स्त्री. (सं.) कर-हस्त-पाणि-त्राणम्।
नाच, सं. पुं. [सं. नृत्यं, नृत्तिः (स्त्री.)] नर्तनं, नृत्तं, २. (कोमल) लासः, लास्यं-स्यकं ३. (उद्धत) तांडवं ४. नटनं, नाटः, नाट्यम्।
—घर, —महल, } सं.पुं., नृत्य,-शाला-स्थानम्।
—रङ्ग, सं. पुं., आमोदप्रमोदाः, उल्लासः, विनोदः, कौतुकम्।
—नचाना, मु., अर्द्-क्षुभ् (प्रे.), दु (स्वा. प. अ.)।
नाचना, क्रि. अ. (सं. नर्तनं) नृत् (दि. प. से.) नट् (भ्वा. प. से.), नृत्यं कृ। सं. पुं., दे. 'नाच'।
नाचनेवाला, सं. पुं., दे. 'नर्तक'।
नाज़, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'नख़रा'।
—अदा,—नखरा, सं. पुं., हावभावौ, विभ्रमः, विलासः।
—बरदार, सं. पुं., चाटुकारः, मिथ्याप्रशंसकः।
नाज़नी, सं. स्त्री. (फ़ा.) सुन्दरी, वामा।
नाज़िर, सं. पुं. (अ.) निरीक्षकः २. आसेदृ (पुं.) ग्राहकः।
नाज़ुक, वि. (फ़ा.) कोमल, सुकुमार, मृदुल २. प्रतनु, सूक्ष्म ३. भंगुर, भिदुर ४. भयंकर, भयावह।
—बदन, वि. (फ़ा.) कोमलांग-तन्वंग (—गी, तन्वी स्त्री.)।
—मिज़ाज, वि. (फ़ा+अ.) कोमलप्रकृति, मृदुस्वभाव।
नाटक, सं. पुं. (सं. न.) दृश्यकाव्यं, अभिनय-ग्रंथः, महारूपकं २. अभिनयः, नाट्यम्।
—कार, सं. पुं. (सं.) नाटक-रूपक,-कारः-प्रणेतृ (पुं.)।
—शाला, सं. स्त्री. (सं.) रंगशाला।
नाटकीय, वि. (सं.) नाटक,-विषयक-संबंधिन्।
नाटना, क्रि. अ., दे. 'इनकार करना'।
नाटा, वि. (सं. नत>) खर्व, वामन, ह्रस्व, ह्रस्वकाय।
नाट्य, सं. पुं. (सं. न.) तौर्यत्रिकं, नृत्यगीत-वाद्यं २. अभिनयः ३. विडम्बनं, अनुकारः।
—शाला, सं. स्त्री. (सं.) रंग-नाट्य,-मंदिरं-शाला।
नाड़ा, सं. पुं. (सं. नाडः>) नीवी-विः (स्त्री.), कटीवस्त्रबंधः, नाला।
नाड़ी, सं. स्त्री. [सं. नाडी-डिः (स्त्री.)] दे. 'नब्ज़' २. नालः-लं-ली-लिका, प्रणालः-ली ३. धमनी, रक्तवाहिनी ४. शि(सि)रा, रक्ता-वाहिनी ५. (रक्त की अति सूक्ष्म नाडी Capillary) कैशिकनाडी ६. चालकनाडी (Motor nerve) ७. सांवेदनिकनाडी (Sensory nerve)
—चलना, क्रि. अ., नाडी स्फुर् (तु. प. से.) स्पंद् (भ्वा. आ. से.)।
—मंडल, सं.पुं.(सं.न.) नाडी-वात,-संस्थानम्।
—छूटना, मु., दे. 'मरना' तथा 'मूर्छित होना'।
नाणक, सं. पुं. (सं. न.) टंकः-कं, मुद्रा।
नाता, सं. पुं. (सं. ज्ञातिः>) संबंधः, बंधुता, सगोत्रता, सजातिता, सपिंडता।
नातिन, सं. स्त्री. (हिं. नाती) दौहित्री २. पौत्री।
नाती, सं. पुं. [सं. नप्तृ (पुं.)] दौहित्रः २. पौत्रः।
नाते, क्रि. वि. (हिं. नाता) संबंधेन (तृ.)।
—दार, सं. पुं., ज्ञाति-बन्धु-बांधव,-गणः-वर्गः-जनः।
—दारी, सं. स्त्री., दे. 'नाता'।
नाथ, सं. पुं. (सं.) अधिपतिः (पुं.), प्रभुः, स्वामिन् २. पतिः, भर्तृ ३. नास्यं, पशुनासा-रज्जुः (स्त्री.) ४. योगिनामुपाधिभेदः ५. अ-(आ)हितुंडिकः, व्यालग्राहिन्।
नाथना, क्रि. सं. (सं. नाथनं) नाथ् (भ्वा.प.से.), वशी कृ, अभिभू (भ्वा.प.से.) २. नासां व्यध् (दि.प.अ.), नासायां छिद्रं कृ।
नाद, सं. पुं. (सं.) शब्दः, ध्वनिः (पुं.), रवः २. गीतं, गीतिका ३. गर्जनं, गर्जितं ४. प्रयत्न-भेदः (व्या.) ५. अर्द्धचन्द्रः,अर्द्धेंदुः(पुं.) (व्या).

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) संगीतशास्त्रम् ।
नादान, वि. (फ़ा.) अज्ञ, मूर्ख, जड़ ।
नादानी, सं, स्त्री, (फा.) अज्ञानं, मौर्ख्यं, 'जाड्यम्' ।
नादित, वि. (सं.) वादित, ध्मात, क्वणित, ध्वनित ।
नादिम, वि. (अ.) लज्जित, ह्रीण ।
नादिर, वि. (फ़ा) अद्भुत, विचित्र ।
नादिरशाही, सं. स्त्री. (फ़ा. नादिरशाह) निष्ठुरशासनं, नृशंसता, क्रूरकृत्यम् । वि., घोर, नृशंस ।
नाधना, क्रि. स. (सं. नद्ध=वद्ध>) योक्त्रयति (ना. धा.), युज् (चु.) २. आरभ् (भ्वा. आ. अ.) ।
नान, सं. स्त्री. (फ़ा) स्थूलरोटिका ।
नानखताई, सं. स्त्री. (फ़ा.) मिष्टान्नभेदः, *नानखतायी ।
नानबाई, सं. पुं. (फ़ा. नानवा) आपूपिकः, कांदविकः ।
नाना[1], सं. पुं. (देश.) मातामहः, मातुः पितृ (पुं.), जननीजनकः ।
नाना[2], वि. (सं.) विविध, बहुविध २. अनेक, बहु ।
—भाँति, वि., अनेकप्रकारक, नानाजातीय ।
—रूप, वि., (सं.) अनेक-बहु,-रूप ।
—वर्ण, वि. (सं.) अनेक-बहु,-वर्ण-रंग ।
—विध, क्रि. वि. (सं.-धं) अनेकधा, बहुधा ।
नानार्थ, वि. (सं.) अनेकार्थक, बह्वर्थ २. अनेकत्र-बहुत्र,-उपयुक्त ।
नानिहाल, सं. पुं. दे. 'ननिहाल' ।
नानी, सं. स्त्री. (देश.) मातामही, मातुः मातृ (स्त्री.), जननीजननी ।
—मर जाना, मु., हतोत्साह-गतसाहस (वि.) भू. ।
नाप, सं. स्त्री. (सं. मापनं) प्र-परि,-माणं-मितिः (स्त्री.), मानं २. मानदण्डः, मापनसाधनं, मानम् ।
—तौल, सं. स्त्री., मापनं-तोलनं-ने (न. द्वि.) ।
नापना, क्रि. स. (सं. मापनं) मा (दि. आ. अ., जु. आ. अ., अ. प. अ.), मानं निरूप् (चु.), दे. 'मापना' ।
नापित, सं. पुं. (सं.) दे. 'नाई' ।
नाफ़ा, सं. पुं. (फ़ा.) कस्तूरी-मृगमद,-कोशः-कोषः ।
नाभि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) नाभी, तुन्दकूपी, उदरावर्त्तः, तुंदः-दी-दिः (स्त्री.), तुंदिका २. चक्रमध्यं ३. कस्तूरी ।
नाम, सं. पुं. [सं. नामन् (न.)] अभिधा, अभिधानं, अभिधेयं, आह्वा, आह्वयः, आख्या, संज्ञा २. यशस् (न.), ख्यातिः (स्त्री.) ।
—रखना या धरना, क्रि. स., नाम-संज्ञां कृ, अभिधा (जु. उ. अ.) ।
—करण, सं. पुं. (सं. न.) संस्कारभेदः (धर्म.) २. नामदानम् ।
—कमाना,—करना,—पाना या—होना, मु., विख्यात-विश्रुत-महायशस्क-(वि.) भू ।
—डुबोना, मु., यशः मलिनी कृ, ख्यातिं नश् (प्रे.), कीर्तिं कलंकयति (ना. धा.) ।
—पर धब्बा लगाना, मु., दे. 'नाम डुबोना' ।
नामक, वि. (सं) नामधारिन्,-आख्य,-संज्ञक ।
नामर्द, वि. (फ़ा.) नपुंसक २. भीरु ।
नामी, वि. (सं. नामन्>)-नामक, नामधेय २. विख्यात, विश्रुत ।
—गिरामी, वि. (फ़ा., मि. सं. नामग्रामिन्) यशस्विन्- प्रसिद्ध ।
नायक, सं. पुं. (सं.) नेतृ-अग्रणीः (पुं.), मुख्यः, प्रमुखः २. स्वामिन्, प्रभुः, अधिपतिः ३. नरव्याघ्रः, जननायकः ४. कथापुरुषः (सा०) ५. संगीतकुशलः ६. सेनापतिः ।
नायका, सं. स्त्री. (सं. नायिका) दे. 'नायिका' २. वेश्याजननी ३. दूती, कुट्टिनी, शंभली ।
नाय(इ)न, सं. स्त्री. (हिं. नाई) नापिती, क्षुरिणी, मुण्डनी, क्षौरिकी ।
नायब, सं. पुं. (अ.) प्रति,-निधिः (पुं.)-हस्तकः-पुरुषः २. सहायः-यकः, सहकारिन्, उप-(उ. उपमंत्रिन्) ।
—तहसीलदार, सं. पुं., उपमण्डलेशः-श्वरः ।
नायिका, सं. स्त्री. (सं.) शृंगाररसालम्बनभूता नारी २. सुन्दरी. रूपिणी ३. कान्ता, दयिता ।
नारंगी, सं. स्त्री. (सं. नारंगः) (वृक्ष) नागरंगः, नार्यंगः, नागरः, ऐरावतः, त्वग्गन्धः, (फल) नारंगं, नारंगकं, नारंगफलम् इ. । वि.,

पिच्छिल, कौसुंभ [–भी (स्त्री.)], पीत-लोहित।

नार-रि, सं. स्त्री., दे. 'नारी' तथा 'नाल'।

नारकी, वि. (सं.-किन्) नारकिक, नारकीय, पापिन्।

नारद, सं. पुं. (सं.) देवर्षिविशेषः।

नारमल, वि.(अं.) सामान्य, साधारण, यथार्ह।

नारा, सं. पुं., दे. 'नाड़ा'।

नाराज़, वि. (फ़ा.) अप्रसन्न, रुष्ट।

—होना, क्रि. अ., कुप् (दि. प. से.), रुष्ट (वि.) भू।

नारायण, सं.पुं. (सं.) विष्णुः, चक्रिन्, ईश्वरः।

नारायणी, सं. स्त्री. (सं.) लक्ष्मीः २. दुर्गा ३. मुद्गलमुनेः पत्नी ३. दुर्योधनाय दत्ता कृष्णसेना।

नारियल, सं. पुं. (सं. नारिकेलः-ली) (वृक्ष) सदा-रस-दृढ-स्कंध,-फलः, तुंगः, उच्चः, मंगल्यः, (फल) अप्फलं, कौशिकफलं, नारिकेरः-लः।

नारियली, सं. स्त्री. (हिं. नारियल) नारीकेल २. अप्फल-नारिकेल,-रसः ३. नारिकेलसारः।

नारी, सं. स्त्री. (सं.) स्त्री, सीमंतिनी, यो(जो)-पा, यो(जो)षित् (स्त्री.), अबला, वामा, वनिता, महिला, रामा, प्रिया, जनी-निः (स्त्री.), सुभ्रूः-वधूः (स्त्री.), यो(जो)षिता।

—दूषण, सं. पुं., (सं. न.) सुरापानदुर्जन-संसर्गादयः स्त्रीदोषाः।

—रत्न, सं. पुं., (सं. न.) श्रेष्ठ-उत्तम-रूपगुण-शीलवती,-नारी।

नाल[1], सं. स्त्री. (सं. नालं) नाला-ली-लिका, कमलादीनां दंडः २. दे. 'नल' ३. अग्न्यस्त्र-नाडी-ली ४. सूत्रवेष्टनं, त्रसरः ५. दे. 'आँवल-नाल'।

नाल[2], सं. पुं. (अ.) खुरत्रं, खुरत्राणं २, लोह-वलयः-यम्।

—बंद, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) खुरत्र-,वंधकः-योजकः।

—बंदी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) खुरत्रवंधनम्।

—लगाना, क्रि. स., खुरत्रं बंध् (क्र्. प. अ.), खुरत्रेण सनाथी कृ।

नालकी, सं. स्त्री. (सं. नालः) शिविकाभेदः, *नालकी।

नाला, सं. पुं. (सं. नालः) अल्प-कु-क्षुद्र,-नदी-सरित् (स्त्री.) २. दे. 'नाड़ा'।

नालिश, सं. स्त्री. (फ़ा.) अभियोगः, भाषा, भाषापादः।

—करना या दाग़ना, क्रि. स., अभियुज् (रु. आ. अ.; चु.), राजकुले निविद् (प्रे.)।

नाली, सं. स्त्री. (सं.) नालः, नालिः (स्त्री.), प्रणालः ली, जलमार्गः, परि(री)वाहः २. नाडी, धमनी, शिरा ३. धात्वादेर्नाली-डी।

नाव, सं. स्त्री. [सं. नौः (स्त्री.)] तरणी-णिः (स्त्री.), तरीः-रिः (स्त्री.), तरिका, तरंडः। (छोटी) नौका, उडुपं, कोलः, प्लवः।

—चलाना, क्रि.स., नौकां प्रेर्-वह्-चल् (प्रे.)।

नावक, सं. पुं. (फ़ा.) क्षुद्रबाणभेदः २. मधु-मक्षिकादंशः।

नाविक, सं. पुं. (सं.) औडुपिकः, नौ-तरणी-वाहः २. कर्णधारः, मुख्यनाविकः।

नाश, सं. पुं. (सं.) प्रणाशः, विनाशः, प्र-वि-ध्वंसः, उच्छेदः, क्षयः, संहारः ३. अदर्शनं, लोपः, तिरोधानं ३. मृत्युः (पुं.)।

—करना, क्रि. स., प्र-वि-, नश्-ध्वंस् (प्रे.) उत्-अव-, सद् (प्रे.), क्षि-विलुप् (प्रे.), उच्छिद् (रु. प. अ.) २. दे. 'मारना'।

—होना, क्रि. अ., प्र-वि-, नश् (दि. प. वे.), प्र-वि-, ध्वंस् (भ्वा. आ. से.), प्र-वि-ली (दि. आ. अ.), क्षयं इ-या (अ. प. अ.)।

नाशक, सं. पुं. (सं.) प्र-वि-, ध्वंसकः, क्षयकरः [-री (स्त्री.)], उच्छेदकः. संहारकः २. घातुकः, अंतकरः [-री (स्त्री.)], नाशकारिन्।

नाशपाती, सं. स्त्री. (तु.) अमृत-रुचि,-फलं, अमृताह्वम्।

नाशवान्, वि.(सं.-वत्) क्षयिन्, क्षयिष्णु, क्षय-नाश,-शील, वि-,नश्वर [-री (स्त्री.)] अनित्य, अध्रुव।

नाशी, वि. (सं.-शिन्) दे. 'नाशक' २. दे. 'नाशवान्'।

नाश्ता, सं. पुं. (फ़ा.) कल्यवर्तः, प्रातराशः, उप-लघु,-आहारः, जलपानम्।

नास, सं.स्त्री. (सं. नस्यं) क्षुत्करी, नासाचूर्णम्।

—दान, सं. पुं, नस्यधानं-नी।

नासपाल, सं. पुं. (फ़ा.) अपक्वदाडिमत्वच् (स्त्री.) २. अपक्वदाडिमम्।

नासा, सं.स्त्री.(सं.)दे. 'नाक[1]'(१)तथा'नथना'।

नासिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नाक[1]'(१–२)।

नासूर, सं. पुं. (अ.) नाडीव्रणः-णम्।

नास्तिक, सं. पुं. (सं.)अनीश्वरवादिन्, निरीश्वरः, ईश्वराविश्वासिन् ।
नास्तिकता, सं. स्त्री. (सं.) अनीश्वरवादः, ईश्वराविश्वासः, नास्तिक्यम् ।
नाह, सं. पुं., दे. 'नाथ' ।
नाहक, क्रि. वि. (फ़ा.) वृथा, व्यर्थं, मुधा, निरर्थकं, निष्फलम् ।
नाहर-(रु), सं. पुं. (सं. नरहरिः>) सिंहः २. व्याघ्रः ।
निंदक, सं. पुं. (सं.) अभिशापकः, अभ्यसूयकः, अप-परि-वादकः, आक्षेपकः. पिशुनः ।
निंदनीय, वि. (सं.) निंद्य, उपालभ्य, गर्हणीय, वाच्य, गर्ह्य २. अभद्र, अशुभ, कुत्सित ।
निंदा, सं. स्त्री. (सं.) अप-परि,-वादः, आ-अधि,-क्षेपः, अव-अप-उप,-क्रोशः, कुत्सा, गर्हा, गर्हणं, कुत्सनं, भर्त्सनं-ना ।
—करना, क्रि. स., निंद् (भ्वा. प. से.), गर्ह् (चु.,भ्वा.आ.से.) अधि-आ-,क्षिप् (तु. प. अ.), अप-परि-,वद् (भ्वा. प. से.), आक्रुश् (भ्वा. प. अ.), निर्भर्त्स् (चु. आ. से.) ।
—होना, क्रि. अ., उक्त धातुओं के कर्म. रूप ।
निंदासा, वि. (हिं. नींद) निद्रालु, तंद्रिल, निद्रालस ।
निंदित, वि. (सं.) अधि-आ,-क्षिप्त, गर्हित, आक्रुष्ट, निर्भर्त्सित, २. कुत्सित, गर्हित ।
निंद्य, वि. (सं.) दे. 'निंदनीय' ।
निंब, सं. पुं. (सं.) अरिष्टः, सर्वतोभद्रः, तिक्तकः, शीतः ।
निंबकौरी, सं.स्त्री. (सं. निंबः>) दे. 'निबौरी' ।
निंबू, सं. पुं. [सं. निंबु(बू)कं] (वृक्ष) अम्ल-जंबीरः, दंताघातः, रोचनः, शोधनः, जंतुमारिन्, निंबूः (स्त्री.) । (फल) जंबीरं, जंबीरफलं इ. ।
निःशंक, वि. (सं.) अभय, निर्भय, अभीत, निर्भीत २. निःसंकोच, निःसंदेह । क्रि. वि., निर्भयं, निःसंकोचम् ।
निःशब्द, वि.(सं.)नीरव, विराव, मूक, मौनिन् ।
निःशेष, वि. (सं.) अशेष, अखिल, समग्र, समस्त २. समाप्त, अवसित, संपूर्ण ।
निःश्रेयस, सं. पुं. (सं. न.) अपवर्गः, मुक्तिः (स्त्री.), मोक्षः, २. कल्याणं, मंगलम् ।
निःश्वास, सं. पुं. (सं.) बहिर्मुखश्वासः, प्रतनः, अपानः, पानः २. उच्छ्वासः, उच्छ्वसितं, दीर्घ (निः)श्वासः इ. ।
निःसंकोच, क्रि. वि. (सं.-चं) निर्विकल्पं, निःसंशयं, निःशंकं २. निर्भयं, निस्त्रासम् ।
निःसंग, वि. (सं.) असंग, गत-वीत,-संग २. निर्लिप्त ३. निःस्वार्थ ।
निःसंतान, वि. (सं.) अनपत्य, निरपत्य, निरन्वय, निर्वंश, अपुत्र । (स्त्री.=वंध्या, अशिश्वी, अनपत्या) ।
निःसंदेह, क्रि. वि. (सं.-हं) निःशंकं, निःसंशयं, असंशयं, शंकां-संदेहं,-विना । वि., निर्विकल्प, निःसंशय, असंशय, निःशंक ।
निःसंशय, वि. तथा क्रि. वि., दे. 'निःसंदेह' ।
निःसार, वि. (सं.) नीरस, विरस, निःसत्त्व २. तुच्छ, क्षुद्र ३. असार, तत्त्वहीन ।
निःसीम, वि. (सं.) अनंत, अमित, अपरिमित, निरवधि ।
निःसृत, वि. (सं.) निर्गत, निर्यात, निष्क्रान्त ।
निःस्पृह, वि. (सं.) निष्काम, अकाम, निरिच्छ २. निर्लोभ, संतुष्ट ।
निःस्वार्थ, वि. (सं.) स्वार्थ-स्वहित-स्वलाभ,-हीन-विमुख, परोपकारिन् ।
निआमत, सं. स्त्री. (अ. नेअमत) अलभ्य-दुर्लभ,-वस्तु (न.) २. स्वादुवस्तु ३. धनम् ।
निकट, वि. (सं.) आसन्न, समीप, सन्निकृष्ट, सन्निहित, दे. 'समीप' ।
—वर्ती, वि. (सं.-र्तिन्) निकटस्थ, समीपस्थ ।
निकटता, सं. स्त्री. (सं.) 'समीपता' दे. ।
निकम्मा, वि. (सं. निष्कर्म्मन्) वृत्तिहीन, निर्व्यापार २. अलस, आलस्यशील, निरुद्यम ३. निरर्थक, मोघ, अनुपयोगिन् ।
निकर, सं. पुं. (सं.) गणः, समूहः २. राशिः (पुं.) ३. निधिः (पुं.) ।
निकलंक, वि. (सं. निष्कलंक) निर्दोष, निष्पाप, अनघ, दोष-पाप,-रहित, शुद्ध, पवित्र ।
निकलंकी, सं. पुं. (सं. कल्किः) विष्णोः दशमावतारः । वि. (हिं. निकलंक दे०) ।
निकल, सं. स्त्री. (अ.) धातुभेदः, *निकिलम् ।
निकलना, क्रि. अ. (हिं. निकालना) निर्गम्, निर्या तथा अप-ए (दोनों अ. प. अ.), निःसृ (भ्वा. प. अ.), निष्क्रम् (भ्वा. प. से.), पृथग् भू २. अतिक्रम्, उत्-सं-, तॄ (भ्वा. प. से.), अति-इ, उत्-लंघ् (भ्वा. आ. से.)

३. सफली-उत्तीर्णी भू ४. गम्, या, व्रज् (भ्वा. प. से.) ५. उद्-इ, उदगम्, उदय् (भ्वा. आ. से.) ६. जन् (दि. आ. से.) प्रादुर्भू, उत्पद् (दि. आ. अ.) ७. निष्-संपद्, सिध् (दि. प. अ.) ८. (सवाल आदि) उत्तरं लभ्-प्राप् (कर्म.) ९. प्रवृत् (भ्वा. आ. से.) प्र,-त्वर्-चल् (भ्वा. प. से.) १०. वि-निर्,-मुच् (कर्म.) ११. आविष्कृ (कर्म.) १२. स्थापित-प्रमाणित (वि.) भू, सिध् १३. अप,-सृ-सृप् (भ्वा. प. अ.), पलाय् (भ्वा. आ. से.) १४. आप्, लभ् (कर्म.) १५. (समयादि) व्यति-इ, अतिक्रम् गम् । सं. पुं., दे. 'निकास'।

निकलनेवाला, सं. पुं., निर्गंतृ निर्यातृ इ. ।

निकलवाना, क्रि.प्रे.,व. 'निकलना' के प्रे. रूप ।

निकष, सं. पुं. (सं.) दे. 'कसौटी'।

निकषा, सं. स्त्री. (सं.) रावणादिराक्षसानां मातृ (स्त्री.) । अव्य०, समीपं-पे, अन्तिकं-के, दे० 'समीप'।

निकषोपल, सं. पुं. (सं.) दे. 'कसौटी' १ ।

निकाई, सं. स्त्री. (सं. निक्त = स्वच्छ>) भद्रता, प्रशस्तता २. सुंदरता, मनोज्ञता ।

निकाम, वि. (सं.) पर्याप्त, अलं (चतुर्थी के साथ), आवश्यकतानुरूप । २. अभीष्ट, यथेष्ट ३. विपुल, बहुल ४. इच्छुक, अभिलाषिन्, आकांक्षिन् ।

अव्य० अत्यन्तम्, अत्यधिकं, बहु, भृशं, भूरि (सब अव्य०) ।

निकाय, सं. पुं. (सं.) गणः, संघः २. चयः, राशिः (पुं.) ३. गृहं, सद्मन् (न.) ४. ईश्वरः ।

निकाल, सं. पुं. (हिं. निकलना) दे. 'निकास'।

निकालना, क्रि. स. (सं. निष्कालनं) व. 'निकलना' के प्रे. रूप ।

निकाला, सं. पुं. (हिं. निकालना) निर्-वि,-वासनं, अपसारणं, निष्कासनं, प्रव्राजनम् ।

निकास, सं. पुं. (सं. निष्कासः) अप-निर्,-गमः, अप-निष्,-क्रमः-क्रमणं, २. निष्कासनं, निष्कालनं ३. द्वारं, द्वार् (स्त्री.) ४. क्षेत्रं, समभूमिः (स्त्री.) ५. उद्गमः, प्रभवः ६. रक्षोपायः ७. आयोपायः ८. आयः, अर्थलाभः ।

निकासी, सं. स्त्री. (हिं. निकास) प्रस्थानं, निर्गमः २. आयः अर्थलाभः ३. विक्रयः; विनियोगः, निर्गमशुल्कः-कम् ।

निकाह, सं. पुं. (अ.-विवाहः-इस्लाम.) ।

निकुंज, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कुंजः-जं, लता-मंडपः, पर्णशाला ।

निकृति, सं. स्त्री. (सं.) तिरस्कारः, अपमानः २. शठता, नीचता ।

निकृष्ट, वि. (सं.) अधम, अवर, अपकृष्ट, क्षुद्र, गर्ह्य, निंद्य, नीच, हीन, जघन्य ।

निकृष्टता, सं. स्त्री. (सं.) अधमता, क्षुद्रता, हीनता, गर्ह्यता, जघन्यता, नीचता इ. ।

निकेत, सं. पुं (सं.) निकेतकः, निकेतनं, गृहं, स्थानं, स्थलम् ।

निक्षिप्त, वि. (सं.) प्र-, अस्त-क्षिप्त, अव-नि,-पातित २. त्यक्त, विसृष्ट ३. अधिकृत, न्यस्त ।

निक्षेप, सं. पुं. (सं.) नि-प्र,-क्षेपः-क्षेपणं, प्रासनं, प्रेरणं, निपातनं २. त्यागः, विसर्गः, उत्-वि,-सर्गः, विसर्जनं ३. आधिः-उपनिधिः (पुं.), न्यासः ।

निखंग, सं. पुं., दे. 'तरकश'।

निखट्टू, वि. (हिं. नि = नहीं + खटना = कमाना) उद्यम-उद्योग-व्यवसाय,-विमुख,अलस ।

निखरना, क्रि. अ. (सं. निक्षरणं>) निर्मली-स्वच्छी भू, शुध् (दि. प. अ.) प्र-सं-मृज् (कर्म.) २. सुंदरतर (वि.) जन् (दि. आ. से.)।

निखरवाना,निखराना, क्रि. प्रे., व. 'निखरना' के प्रे. रूप ।

निखरी, सं. स्त्री. (हिं.निखरना) पक्वं-घृतपक्वं,-भोजनम् ।

निखर्व, सं. पुं. (सं. निखर्वः-र्वं) दशखर्वसंख्या दशसहस्रकोटयो वा, तदंकौ । वि., वामन, ह्रस्वकाय ।

निखार, सं. पुं. (हिं. निखरना) निर्मलता, स्वच्छता २. शृङ्गारः ।

निखारना, क्रि. स., व. 'निखरना' के प्रे. रूप ।

निखिल, वि. (सं.) अखिल, समस्त, संपूर्ण ।

निखोट, वि. (हिं. नि+खोट) निर्दोष, शुद्ध ।

निगंदना, क्रि. स. (फ़ा. निगंदः=सीवन) तूलां सिव् (दि. प. से.) ।

निगड़, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) अंदुकः, अंधुः । २. शृंखलः-ला-लं, बंधनम् ।

निगम, सं. पुं. (सं.) वेदः, श्रुतिः (स्त्री.)

२. मार्गः ३. आपणः, विपणी-णिः (स्त्री.) ४. मेला, मेलकः ५. वाणिज्यम् ।
निगमन, सं. पुं. (सं. न.) प्रत्याम्नायः (न्या.) ।
निगरण, सं. पुं. (सं. न.) भक्षणं, खादनं २. कंठः, गलः ।
निगरानी, सं. स्त्री. (फ़ा.)निरीक्षणं,पर्यवेक्षणम् ।
निगलना, क्रि. स. (सं. निगलनं) निगल् (भ्वा. प. से.) निगॄ (तु. प. से.), ग्रस् (भ्वा. आ. से.) २. दे. 'खाना' ।
निगह, सं. स्त्री., दे. 'निगाह' ।
—बात, सं. पुं. (फ़ा.) रक्षकः, परित्राता ।
—बानी, सं. स्त्री., रक्षा, त्राणम् ।
निगाली, सं. स्त्री. (देश. निगाल = बांस का प्रकार) धूमपानयंत्रनाली ।
निगाह, सं. स्त्री. (फ़ा.) दृष्टिः (स्त्री.) दृक्-शक्तिः (स्त्री.) २. दर्शनं, वीक्षणं, विलोकनं ३. कृपा-दया-,दृष्टिः ४. विचारः, मतिः (स्त्री.) ५. विवेकः ।
—लड़ाना, मु., कटाक्षेण अवलोक् (चु.)-वीक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।
निगूढ़, वि. (सं.) निलीन, प्रच्छन्न, निभृत ।
निगोड़ा, वि. (हिं. निगुरा) दुष्ट, खल, २. अधम, नीच ३. मंद-हत,-भाग्य, दुर्दैव ।
—नाठा,सं,पुं., बंधुहीन, निर्बांधव, अविवाहित ।
निग्रह, सं. पुं. (सं.) अव-नि,-रोधः, नियंत्रणं-णा, बाधा, प्रति,-बंधः-रोधः २. दमः, दमनं ३. दंडः ४.पीडनं, संतापनं ५. निग्रहणं, बंधनं ६. भर्त्सनं-ना ।
—स्थान, सं. पुं. (सं. न.) वादे पराजयस्थानं (न्या.) ।
निग्राह, सं. पुं. (सं.) शापः २. दंडः ।
निघंटु, सं. पुं. (सं.) वैदिककोषविशेषः २. शब्दसंग्रहः ।
निघर्ष, सं. पुं. (सं.) दे. 'घिसाव' २. पेषणं, चूर्णनं, मर्दनम् ।
निघात, सं. पुं. (सं.) प्रहारः, आघातः २. अनुदात्तस्वरः (व्या०) ।
निघाती, वि. (सं.-तिन्) प्रहर्तृ, आहन्तृ, प्रहारक, आघातक २. घातक, मारक, प्राणहर ।
निचय, सं. पुं. (सं.) समूहः, राशिः, गणः, निकरः २. निश्चयः ३. संचयः, संग्रहः ।
निचला[1], वि. (हिं. नीचे) अवांच्, अधःस्थ, अधरः,अधस्तन, नीचस्थ,अधः-(उ.अधोदेशः) ।
निचला[2], वि. (सं. निश्चल) अचल, स्तब्ध २. शांत, गम्भीर ।
निचाई, सं. स्त्री. (हिं. नीचा) अपकर्षः, हीनता, निम्नता २. अधमता, नीचता, गर्ह्यता ३. निम्न,-देशः-भूमिः (स्त्री.) ।
निचान, सं. स्त्री. (हिं. नीचा) अवसर्पि-प्रवण,-भूमिः (स्त्री.), २. प्रावण्यं, क्रमशः निम्नता ।
निचिंत, वि., दे. 'निश्चिंत' ।
निचुड़ना, क्रि. अ. (सं. निच्यवनं) च्यु (भ्वा. आ. अ.), च्युत् (भ्वा. प. से.),क्षर्-निर्गल् (भ्वा. प. से.), स्रु (भ्वा. प. अ.), २. निष्-सं-पीड् (कर्म.), निष्कृप्-उद्हृ (कर्म.) ३. दुर्बलीभू ।
निचोड़, सं. पुं. (हिं. निचोड़ना) मूलं, मूलवस्तु (न.), निर्यासः, सारः-रं. २. तात्पर्यं, निष्कर्षः, भावः, निर्गलित-निकृष्ट-पिंडित,-अर्थः ।
निचोड़ना, क्रि. स. (हिं. निचुड़ना) निष्-सं-पीड् (चु.), उद्-निर्-हृ (भ्वा. प. अ.), निष्कृष् (भ्वा. प. अ.), निर्गल् (प्रे.) २. सर्वस्वं हृ, निर्वनी कृ । सं. पुं., निष्-सं-पीडनं, निष्कर्षणं, निर्गालनं, सर्वस्वहरणम् ।
निछावर, सं. पुं. (सं. न्यासावर्तः मि. अ. निसार>) (पीडकदेवसांत्वनार्थं) अर्पणं, उपनयनं, उपहरणं, उत्सर्जनं २.उत्सर्गः, दानं, बलिः (पुं.), उपायनम् ।
—करना, मु., उत्सृज् (तु. प. अ.), त्यज् (भ्वा. प. अ.) ।
—होना, मु., कस्मैचित् प्राणान् त्यज् ।
निज, वि. (सं.) आत्मीय, स्वीय, स्वकीय, स्वकः, आत्म-, स्व २. व्यक्तिगत, वैयक्तिक ३. मुख्य, प्रधान ।
—का या निजी, वि., दे. 'निज' २. ।
निठल्ला-ल्लू , वि. (हिं. नि+टहल = काम) क्षीण-निर्,-वृत्ति, वृत्तिहीन, निर्व्यापार २. अलस, कार्यविमुख । सं. पुं., वातरायणः ।
निठाला, सं. पुं. (हिं. नि+टहल) अवकाशः, निर्व्यापारता ।
निठुर, वि., दे. 'निष्ठुर' ।
निठुराई, सं. स्त्री. (हिं. निठुर) दे. 'निष्ठुरता' ।
निडर, वि. (सं. निर्दर) अभय, अभीत, निर्भीक, विदर २. साहसिक,साहसिन् ३. धृष्ट ।
—पन-पना, सं. पुं., निर्भयता, निर्भीकता इ. ।

निढाल, वि. (हिं. नि+ढाल = गिरा हुआ) श्रांत, क्लांत, शिथिल, अशक्त २. अलस, निरुत्साह ।

नितंब, सं. पुं. (सं.) दे. 'चूतड़' २. स्कंधः ३. तटः-टम् ।

नितंबिनी, सं. स्त्री. (सं.) सुनितंबा-स्त्री नारी २. सुन्दरी ।

नित, क्रि. वि. दे. 'नित्य' क्रि. वि. ।

—नित, क्रि. वि. दे. 'नित्य' क्रि. वि. (१) ।

नितरां, अव्य. (सं.) पूर्णतया, सामस्त्येन, २. अतिशयेन, अत्यंतं ३. सदा ४. निश्चयेन ।

नितांत, वि. (सं.) अत्यधिक, सातिशय, निरतिशय, अत्यंत । क्रि. वि., सर्वथा, पूर्णतया, अत्यंतम् ।

नित्य, वि. (सं.) शाश्वत [-ती (स्त्री.)] अनश्वर, अविनाशिन्, ध्रुव, सतत, अनाद्यनंत, अमर २. आह्निक-प्रात्यहिक [-की (स्त्री.)] । क्रि. वि., अनु-प्रति,-दिनं, दिने दिने प्रत्यहं, अन्वहं २. सदा, सर्वदा, ३. सततं, अविच्छिन्नम् ।

—कर्म, सं. पुं. [सं.-र्मन् (न.)] प्रात्यहिक-दैनंदिन,-कार्यं, आह्निकं, नित्य,-क्रिया-कृत्यम् ।

—प्रति, क्रि. वि., दे. 'नित्य' क्रि. वि. (१) ।

नित्यता, सं. स्त्री. (सं.) नित्यत्वं, अमरता, ध्रुवता, शाश्वतता ।

नित्यानित्य, वि. (सं.) ध्रुवाध्रुव, शाश्वताशाश्वत ।

निथरना, क्रि. अ. (सं. नि+स्थिर>) स्थैर्येण निर्मलीभू (जलादि) । सं. पुं., निकण्ठनं, *निपदनम् ।

निथार, सं. पुं. (हिं. निथरना) निर्मलजलं २. जलाधःस्थितं मलम् ।

निथारना, क्रि. स. (हिं. निथरना) स्थैर्येण निर्मली कृ अथवा शुध् (प्रे.) ।

निदर्शक, वि. (सं.) प्र-,दर्शक, दर्शयितृ २. कथक, कथिक, आख्यापक, ज्ञापक ।

निदर्शन, सं. पुं. (सं. न.) उदाहरणं, दृष्टांतः २. प्रदर्शनं, प्रकटीकरणम् ।

निदर्शना, सं. स्त्री. (सं.) काव्यालंकारभेदः ।

निदाघ, सं. पुं. (सं.) ग्रीष्मः, ग्रीष्म, -कालः-समयः-ऋतुः (पुं.) २. आतपः, सूर्यालोकः ३. दाहः, तापः ।

निदान, सं. पुं. (सं. न.) रोगनिर्णयः, रोगहेतुः (पुं.) २. आदि,-मूल-कारणं ३. कारणं ४. अंतः, अवसानं ५. शुद्धिः (स्त्री.) । क्रि. वि., अंततः, अंते, अंततो गत्वा, चरमतः । वि. निकृष्ट, अधम ।

निदारुण, वि. (सं.) कठोर, घोर, दुःसह, असह्य १. निर्दय, निष्करुण ।

निदिध्यासन, सं. पुं. (सं. न.) निदिध्यासः, सतत-निरन्तर-अनवरत,-चिन्तनं-स्मरणं-ध्यानम् ।

निदेश, वि. (सं.) आज्ञा, आदेशः २. कथनं ३. सामीप्यम् ४. पात्रम् ।

निद्रा, सं. स्त्री. (सं.) स्वप्नः, स्वपनं, स्वापः, सुप्तिः (स्त्री.) शयनं, संवेशः ।

—भंग, सं. पुं. (सं.) जागरणम् ।

—वृक्ष, सं. पुं. (सं.) अन्धकारः ।

निद्रायमान, वि. (सं. निद्रायमाण) शयान, निद्राण, निद्रित, शयित ।

निद्रालु, वि. (सं.) तंद्रालु, निद्राशील, शयालु ।

निद्रित, वि. (सं.) शयित, सुप्त, निद्रागत ।

निधड़क, वि. (हिं. नि+धड़क) निःसंकोच, निर्भय, निःशंक । क्रि. वि., निर्भयं, निःसंकोचं, निःशंकं, विस्रब्धम् ।

निधन[1], सं. पुं. (सं. पुं. न.) मृत्युः २. नाशः ।

निधन[2], वि. (सं.) दे. 'निर्धन' ।

निधान, सं. पुं. (सं. न.) आधारः, आश्रयः, २. निधिः, कोषः ३. स्थापनम् ।

निधि, सं. पुं. (सं.) कोषः-शः, द्रव्य,-राशिः (पुं.) संग्रहः-संचयः, निधानं, शे(से)वधिः (पुं.) २ आधारः, आश्रयः ।

निनाद, सं. पुं. (सं.) ध्वनिः, रवः, शब्दः ।

निनानवे, वि. [सं. नवनवतिः (नित्य स्त्री.)] एकोनशतम् । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (९९) च ।

—के फेर में पड़ना, मु. वित्तोपार्जनपर (वि.) भू , सर्वात्मना धनं संचि, (स्वा. उ. अ.) ।

निपट, वि. (देश.) अत्यंत, अत्यधिक, नितांत ।

निपटना, क्रि. अ., दे. 'निबटना' ।

निपटाना, क्रि. स., दे. 'निबटना' ।

निपटा(टे)रा, सं. पुं., दे. 'निबटेरा' ।

निपटावा, सं. पुं., दे. 'निबटाव' ।

निपात, सं. पुं. (सं.) अधः-नि,-पतनं २. प्र-,ध्वंसः ३. मृत्युः (पुं.) निधनं ४. व्याकरणलक्षणानुत्पन्नं पदम् (व्या.) ।

निपातन, सं. पुं. (सं. न.) अवपातनं, अवभंजनं, अवकृंतनं २. वि,-नाशनं-ध्वंसनं, हननं, मारणम् ।

निपान, सं. पुं. (सं.) तडागः-गं, जल-तोय,-आधारः-आशयः २. आहावः, निपानकं ३. दोहनपात्रं दे., 'दोहनी' ४.आचमनं, पानं, पीतिः (स्त्री.) ।

निपीड़न, सं. पुं. (सं. न.) अर्दनं, संतापनं, नि-अप-विप्र,-करणं २. मर्दनं, दलनं ३. निर्हरणं, निष्कर्षणं, निष्पीडनम् ।।

निपुण, वि. (सं.) प्रवीण, निष्णात, कुशल, चतुर, दक्ष, विज्ञ, कृतिन्, विचक्षण, विदग्ध, प्रौढ, कुशलिन् ।

निपुणता, सं. स्त्री. (सं.) प्रावीण्यं, वैदग्ध्यं, दाक्ष्यं, कुशलता, दक्षता इ. ।

निपूता, वि. (सं. निष्पुत्र) अपुत्र, पुत्रहीन २. दे. 'निःसंतान' ।

निफ़ाक़, सं. पुं. (अ.) द्रोहः, वैरं २. विच्छेदः, विभेदः, विघटनम् ।

निबंध, सं. पुं. (सं.) बंधनं, नियमनं, दृढीकरणं २. प्रस्तावः, लेखः, प्रबन्धः ।

निब, सं. स्त्री. (अं.) लेखनीचंचुः (स्त्री.), कलमाग्रम् ।

निबटना, क्रि. अ. (सं. निवर्त्तनं) निवृत्त-लब्धावकाश-कृतकार्य(वि.) भू , निवृत् (भ्वा. आ. से.) २. समाप् (कर्म.), निप्-सं-पद् (दि. आ. अ.) ३. निर्णी (कर्म.), व्यवसो (कर्म. व्यवसीयते) ।

निबटाना, क्रि. स., व. 'निबटना' के प्रे. रूप ।

निबटाव, निबटेरा, सं. पुं. (हि. निबटना) अवकाशः, कार्यनिवृत्तिः (स्त्री.), क्षणः, विश्रामः २. समाप्तिः, निष्पत्तिः (स्त्री.) ३. निर्णयः. कलहान्तः ।

निबड़ना, क्रि. अ., दे. निबटना' ।

निबद्ध, वि. (सं.) पिनद्ध, बद्ध, नियंत्रित २. विरुद्ध, श्रृंखलित ३. सं.,-ग्रथित-सूत्रित ४. निवेशित, खचित ५. संबद्धः ।

निबरना, क्रि. अ. (हिं. निबटना) दे. 'निबटना' (१-३) २. विच्छिद्- वियुज् (कर्म.), व्यप-इ (अ. प. अ.) ३. विश्लिष् (दि. प. अ.) ४. वि-,मुच् (कर्म.), त्रै-रक्ष् (कर्म.) ।

निबल, वि., दे. 'निर्बल' ।

निबहना, क्रि. अ., (निर्वहणम्) दे. 'निभना' ।

निबाह, सं. पुं. (सं. निर्वाहः) जीवनयापनं, कालक्षेपः, निर्वहणं २. धारणं, रक्षणं ३. त्राणोपायः, रक्षासाधनं ४. निर्वृत्तिः-समाप्तिः(स्त्री.) ।

निबाहना, क्रि. स. (सं. निर्वाहणं) निर्वह् (भ्वा. उ. अ.; प्रे.) रक्ष् (भ्वा. प. से.), प्रवृत् (प्रे.), न विच्छिद् (रु. प. अ.) २. (वचनं) प्रतिज्ञां निर्वह्-शुध् (प्रे.)-पा (प्र. पालयति)-अपवृज् (चु.) ३. निर्वृत्-निष्पद्-साध् (प्रे.), समाप् (स्वा. उ. अ.) ४. निरंतरं कृ या विधा (जु. उ. अ.)। सं. पुं., दे. 'निबाह' ।

निबाहनेवाला, सं. पुं., निर्वाहकः, संपादकः, साधकः, पूरयितृ (पुं.) ।

निबिड़, वि. (सं.) घन, सान्द्र २. कठिन ।

निबेड़(र)ना, क्रि. सं. (हिं. निवड़(र)ना) समाप् (स्वा. उ. अ.), अवसो (प्रे. अवसाययति), साध्-संपद् (प्रे.) २. विसृज्-निर्मुच् (तु. प. अ.; प्रे.), मोक्ष् (चु.), ३. विश्लिष् (प्रे.) पृथक् कृ, वियुज् (रु.प. अ.) ४. निर्णी (भ्वा. प. अ.), व्यवस्था (प्रे.), अव-निर्-धृ (चु.) ।

निबेड़ा-रा, सं. पुं. (हिं. निबेड़ना) मुक्तिः (स्त्री.), मोचनं, मोक्षणं २. रक्षा, त्राणं, उद्धारः ३. वरणं, वृतिः (स्त्री.) ३. विश्लेषः, पृथक्कृतिः (स्त्री.) ४. निर्णयः, व्यवस्था ।

निबौरी-ली, सं. स्त्री. (सं. निंबः) निंब-अरिष्ट,-फलं-बीजम् ।

निभ, वि. (सं.) तुल्य, समान । (सं. पुं. न.) व्याजः, मिषं २. प्रभा, आभा ।

निभना, क्रि. अ. (हिं. निबहना) निर्वह्(कर्म. निरुह्यते), निर्वाही भू २. निष्-सं-,पद् (दि. आ. अ.) समाप् (कर्म.) ३. निरंतरं कृ-विधा (कर्म.) ।

निभागा, वि., (निर्भाग्य) अभाग्य, मन्द-भाग्य, भाग्य-प्रारब्ध,-हीन ।

निभाना, क्रि. स., दे. 'निबाहना' ।

निभाव, सं. पुं., दे. 'निबाह' ।

निभृत, वि. (सं.), १. न्यस्त, निहित, स्थापित २. गुप्त, अन्तर्हित ३. अस्तोन्मुख ४. नम्र ५. अचल ६. पूर्ण ७. निर्जन, शून्य ८. नीरव, निःशब्द ९. मन्द १०. पिहित ११. धीर ।

निमंत्रण, सं. पुं. (सं. न.) अभ्यर्थनं-ना, आमंत्रणं, आवाहनं, आह्वानं २. भोजनाय अभ्यर्थनम् ।

—देना, क्रि. स., अभि-आ-नि-मंत्र् (चु. आ. से.), अभ्यर्थ् (चु. आ. से.), आ-समा-ह्वे (भ्वा. प. अ.) आकृ-आवह् (प्रे.) ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) अभ्यर्थन-आमंत्रण,-पत्रम् ।

निमंत्रित, वि. (सं.) आमंत्रित, आहूत ।

निमक, सं. पुं., दे. 'नमक' ।

निमित्त, सं. पुं. (सं. न.) कारणं, हेतुः (पुं.) २. चिह्नं, लक्षणं ३. शकुनम् । क्रि. वि., उद्दिश्य, अभिलक्ष्य ।

निमिष, सं. पुं. (सं.) दे. 'निमेष' ।

निमीलन, सं. पुं. (सं. न.) पक्ष्मसंकोचनं, निमेषः ।

निमीलित, वि.(सं.) मुद्रित, पिहित, संवृत ।

निमेष, सं. पुं. (सं.) निमिषः, पक्ष्मसंकोचः, २. क्षणः, पलम् ।

निमोनिया, सं. पुं. (अं.) फुप्फुसप्रदाहः, श्वसनकज्वरः ।

निम्न, वि. (सं.) ग(गं)भीर, गहन २. नत, नीच, अधःस्थ ।

—लिखित, वि. (सं.) अधो,-लिखित-वर्णित ।

नियंता, सं. पुं. (सं. नियंतृ) व्यवस्थापकः, न्याय-विधि,-प्रवर्तकः-२. विधायकः, कार्यसंचालकः ३. शासकः, शासितृ (पुं.) ४. अश्वशिक्षकः, ५. अध्यक्षः, अधिष्ठातृ, ईशः ६. सारथिः (पुं.) ।

नियंत्रण, सं. (सं. न.) निग्रहः, निरोधः प्रतिबंधः ।

नियंत्रित, वि. (सं.) नियमित, नियमबद्ध, प्रतिबद्ध, निरुद्ध ।

नियत, वि. (सं.) संयत, प्रतिबद्ध, दांत, वशीकृत २. निश्चित, स्थिरीकृत, पूर्वनिर्णीत. ३. प्रतिष्ठापित, नियोजित, नियुक्त ।

नियति, सं. स्त्री. (सं.) भाग्यं, दैवं, भवितव्यता ।

नियतेन्द्रिय, वि. (सं.) जितेन्द्रिय, संयमिन् ।

नियम, सं. पुं. (सं.) विधिः (पुं.), व्यवस्था, सूत्रं, स्थितिः-पद्धतिः (स्त्री.), मर्यादा, आ-नि-देशः, नियोगः २. प्रतिबंधः, नियंत्रणं ३. रीतिः (स्त्री.), परंपरा ४. प्रतिज्ञा, दृढ़संकल्पः ५. दे. 'शर्त' ।

—धर्म, सं. पुं. (सं.-र्मौ) सदाचारः, सद्-वृत्तम् ।

—बद्ध, वि. (सं.) नियमाधीन, नियमिन्, नियमित, नियंत्रित, सनियम ।

नियमन, सं. पुं. (सं. न.) वशीकरणं अनु-, शासनं, नियन्त्रणम् २. दमनं, निग्रहः, निग्रहणम् ।

नियमित, वि. (सं.) दे. 'नियमबद्ध' ।

नियम्य, वि. (सं.) वशीकार्य, अनु-,शासनीय, नियंत्रणीय २. दमनीय, निग्रहणीय ।

नियाज, सं. पुं. (फ़ा.) इच्छा २. प्रार्थना ३. दर्शनम्, साक्षात्कारः ।

—मंद, वि., इच्छुक २. प्रार्थिन्, ३. दर्शनार्थिन्. दिदृक्षु ।

—हासिल करना, मु., दर्शनं कृ, परिचयं प्राप् (स्वा. उ. अ.) ।

नियामक, सं. पुं. (सं.) व्यवस्थापकः, विधायकः, प्रतिबंधकः २. निरोधकः, प्रतिबंधकः ३. नाविकः ।

नियामत, सं. स्त्री., दे. 'निआमत' ।

नियुक्त, वि. (सं.) आयुक्त, नियोजित, व्यापारित २. निश्चित, नियत, स्थिरीकृत ।

नियुक्ति, सं. स्त्री. (सं.) नियोजनं, नियोगः, व्यापारणं, स्थापनम् ।

नियुत, सं. पुं. (सं. न.) लक्षं, लक्षदशकं वा ।

नियोग, सं. पुं. (सं.) नियोजनं, नियुक्तिः (स्त्री.), व्यापारणं २. प्रेरणं-णा ३. अवधारणं, निश्चयः । ४. देवरादिभिः अपुत्रायां पुत्रोत्पादनं (धर्म.) ५. आज्ञा ।

नियोजन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'नियुक्ति' २. प्रेरणं-णा ।

नियोजित, वि. (सं.) दे. 'नियुक्त' (१) ।

निरंकुश, वि. (सं.) स्वैर, स्वैरगति, स्वैरिन्, काम,-वृत्ति- चारिन् ।

निरंजन, वि. (सं.) पूत, विशुद्ध, पवित्र, निर्लेप । २. अकज्जल । सं. पुं., ईश्वरः २. शिवः ।

निरंतर, वि. (सं.) अविच्छिन्न, अविरत, स-(सं)तत, अनंतर, अव्यवहित । क्रि. वि., सदा, सततं निरंतरं, नित्यं- अनवरतं, अविश्रांतम् ।

निरक्षर, वि.(सं.)अनक्षर, अज्ञ, अशिक्षित,मूर्ख।

निरखना, क्रि. स. (सं. निरीक्षणं) दे. 'देखना'।

निरपराध, वि. (सं.) अ-निर्,-दोष, अनवद्य, दोषहीन, अनघ, निष्पाप।

निरपेक्ष, वि. (सं.), निरीह, अकाम, नि-विगत,-स्पृह, विरक्त, तटस्थ।

निरर्थक, वि. (सं.). अर्थशून्य, अनर्थक २. निष्-अ-वि,-फल, मोघ, वंध्य, अनुपयुक्त।

निरस, वि. (सं.) दे. 'नीरस'।

निरस्त्र, वि. (सं.) अशस्त्र, निरायुध।

निरहंकार, वि. (सं.) निरभिमान, नम्र, विनीत।

निरा, वि. (सं. निरालय) विशुद्ध, मिश्रण-रहित, असंसृष्ट २. केवल, एव, मात्र ३. अत्यंत, अत्यधिक।

निराकार, वि. (सं.) अदेह, अकाय, अशरीर, अमूर्त, अरूप। सं.पुं., ईश्वरः २. आकाशः-शम्।

निरादर, सं. पुं. (सं.) अनादरः, अवज्ञा, अव-अप,-मानः, अवधीरणं-णा, तिरस्कारः, परिभवः।

निराधार, वि. (सं.) निरवलंब, निराश्रय २. अयुक्त, मिथ्या ३. निराहार।

निरामिष, वि. (सं.) निर्मांस. मांसरहित २. शाकाहारिन्।

निरायुध, वि. (सं.) दे. 'निरस्त्र'।

निराला, वि. (सं. निरालय>) अद्भुत, विचित्र, विलक्षण, विशिष्ट २. अनुपम, अतुल्य, अपूर्व ३. वि-निर्,-जन। सं.पुं., निभृतस्थानम्।

निराश, वि. (सं.) भग्नाश, हताश, त्यक्ताश, आशाहीन, निरपेक्ष।

निराशा, सं. स्त्री. (सं.) नैराश्यं, निराशता, आशाहीनता।

निराश्रय, वि. (सं.) अनाश्रय, अशरण, अस-हाय, आश्रयहीन।

निराहार, वि. (सं.) निरन्न, अनाहार, उपो-षित, कृतोपवास।

निरीक्षण, सं. पुं. (सं. न.) दर्शनं, वीक्षणं, अवलोकनं २. अवेक्षणं, निरूपणं, कार्यदर्शनम्।

निरीक्षित, वि. (सं.) दृष्ट, आलोकित २. अवेक्षित, निरूपित।

निरुक्त, सं. पुं. (सं. न.) वेदांगविशेषः २. यास्कमुनिप्रणीतो ग्रंथविशेषः।

निरुक्ति, सं. स्त्री. (सं.) निर्वचनं, व्युत्पत्ति-दर्शिनी व्याख्या।

निरुत्तर, वि. (सं.) अनुत्तर, वद्ध-रुद्ध,-मुख।

निरुपम, वि. (सं.) अनुपम, अतुल-ल्य, अस-दृश [-शी (स्त्री.)], दे. 'अनुपम'।

निरूपण, सं. पुं. (सं. न.) अव-निर्,-धारणं, निर्णयः-यनं, निश्चयः २. अवलोकनं ३. निद-र्शनम्।

निरूपित, वि. (सं.) व्याख्यात, विवेचित सम्यक् वर्णित २. निर्धारित, निर्णीत ३. अव-लोकित, ईक्षित।

निरूप्य, वि. (सं.) व्याख्यातव्य, विवेचनीय, वर्णनीय २. निर्धारणीय, निर्णेतव्य ३. अव-लोक्य, ईक्षणीय, अन्वेषणीय।

निरूहण, सं. पुं. (सं. न.) तर्कणं, विवेचनं, विचारणम् २. निर्धारणं, निर्णयनम्।

निरोग-गी, वि., दे. 'नीरोग'।

निरोध, सं. पुं. (सं.) अवरोधः, प्रतिबन्धः २. नाशः।

निरोधक, वि. (सं.) निवारक, प्रतिबन्धक, प्रतिषेधक, बाधक।

निर्ख, सं. पुं. (फ़ा.) अर्घः, मूल्यम्।

—**नामा**, सं. पुं (फ़ा.) अर्घसूची, मूल्यपत्रम्।

निर्गत, वि. (सं.) निर्यात, प्रस्थित, निष्क्रान्त।

निर्गम, सं. पुं. (सं.) बहिर्गमनं, प्रस्थानं २. द्वारं, निर्गमनमार्गः।

निर्गुंडी, सं. स्त्री. (सं.) शेफाली-लिका, सिंधुवारः।

निर्गुण, वि. (सं.) त्रिगुणातीत २. मूर्ख, गुणहीन। सं. पुं., परमेश्वरः।

निर्जन, वि. (सं.) विजन, एकान्त, विविक्त।

निर्जर, वि. (सं.) जराहीन। सं. पुं., देवता।

निर्जल, वि. (सं.) जलशून्य, शुष्क।

निर्जीव, वि. (सं.) अचेतन, जड़, प्राणहीन।

निर्णय, सं. पुं. (सं.) आधर्षणं, निर्णयपादः, व्यवस्था, दंडाज्ञा २. निश्चयः, परिच्छेदः, विवेकः, अव-निर्,-धारणं-धारणा।

निर्णीत, वि. (सं.) निश्चित, अव-निर्,-धारित।

निर्दय-यी, वि. (सं. निर्दय) निष्कृप, निष्करुण, क्रूर, निष्ठुर, निर्घृण, नृशंस, कठोर।

निर्दिष्ट, वि. (सं.) उक्त, कथित, वर्णित २. निश्चित, नियत, संकेतित ३. आदिष्ट।

निर्देश, सं. पुं. (सं.) वर्णनं, कथनं, विज्ञापनं, संकेतः २. निश्चयः, निर्णयः ३. आज्ञा, आदेशः ४. नामन् (न.), संज्ञा।

निर्दोष, वि. (सं.) दे. 'निरपराध' ।
निर्द्वन्द्व, वि. (सं. निर्द्वन्द्व) शत्रु-प्रतिद्वन्द्वि,-रहित २. द्वंद्वातीत, विरक्त ३. स्वैर, स्वैरगति ।
निर्धन, वि. (सं.) अकिंचन, दरिद्र, अधन, निःस्व, अर्थ-द्रव्य-धन-वित्त,-हीन, दुर्गत, दीन ।
निर्धनता, सं. स्त्री. (सं.) दारिद्र्यं, अकिंचनता, दुर्गतिः (स्त्री.), दीनता ।
निर्धार, सं. पुं. (सं.) } निश्चयः, परिच्छेदः,
निर्धारण, सं. पुं. (सं.न.) } विवेकः, अवधारणा
निर्धारित, वि. (सं.) निश्चित, कृतनिश्चय, परिच्छिन्न ।
निर्निमेष, वि. (सं.) अनिमिष, पक्ष्मपातरहित । क्रि. वि., अनिमि(मे)षं, निर्निमे(मि)षम् ।
निर्बन्ध, सं. पुं. (सं.) आग्रहः, अभिनिवेशः २. विघ्नः, अन्तरायः ।
निर्बल, वि. (सं.) अबल, अशक्त, दुर्बल, निस्तेजस्, निर्वीर्य, अल्प-क्षीण,-बल-शक्ति, निःसत्त्व ।
निर्बलता, सं. स्त्री. (सं.) बल-शक्ति,-शून्यता, बल-शक्ति-सत्त्व,-क्षयः-नाशः-हानिः (स्त्री.) ।
निर्बुद्धि, वि. (सं.) मूर्ख, जड ।
निर्बोध, वि. (सं.) अज्ञान, अबोध ।
निर्भय, वि. (सं.) अभय, अभीत, अकुतोभय, निर्भीक, निःशंक २. प्रगल्भ, साहसिन् ।
निर्भयता, सं. स्त्री. (सं.) निर्भीकता, अभयं, अभीतिः (स्त्री.), निःशंकता २. प्रागल्भ्यं, साहसम् ।
निर्भीक, वि. (सं.) दे. 'निर्भय' ।
निर्भीकता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'निर्भयता' ।
निर्मम, वि. (सं.) विरक्त, वैराग्यवत् २. निः-स्वार्थ, निरिच्छ ३. उदासीन, तटस्थ ।
निर्मल, वि. (सं.) अमल, विमल, स्वच्छ, शुभ्र २. अपाप, पवित्र ३. निष्कलंक, निर्दोष ।
निर्मलता, सं. स्त्री. (सं.) विमलता, स्वच्छता २. पवित्रता ३, निष्कलंकता इ. ।
निर्मली, सं. स्त्री. (सं. निर्मल>) अंबुप्रसादः, कतकः, तिक्तमरिचः २. कतकबीजं ३. दे. 'रीठा' ।
निर्माण, सं. पुं. (सं. न.) निर्मितिः (स्त्री.), रचनं-ना, विधानं, सर्जनं, घटनं, कल्पनं, साधनं, संपादनं, सृष्टिः (स्त्री.) ।
निर्माता, सं. पुं. [सं.-तृ] रचयितृ-स्रष्टृ(पुं.) ।
निर्माल्य, सं. पुं. (सं. न.) देवोच्छिष्टद्रव्यं, देवार्पितवस्तु (न.) ।
निर्मित, वि. (सं) रचित, घटित, कल्पित, सृष्ट ।
निर्मूल, वि. (सं.) अमूलक, निर्मूलक, निराधार २. उन्मूलित, उत्पाटित ।
निर्मोही, वि. (सं. निर्मोह) निर्मम, ममत्व-शून्य, रूक्ष २. निर्दय, पाषाणहृदय ।
निर्लज्ज, वि. (सं.) अप-निस्,-त्रप, निर्,-व्रीड-हीक, त्रपा-लज्जा,-हीन, धृष्ट, वियात ।
निर्लोभ, वि. (सं.) परि-सं,-तुष्ट, तृप्त, निःस्पृह, वितृष्ण, अलोलुप, अगृध्नु ।
निर्वाण, सं. पुं. (सं. न.) मोक्षः, मुक्तिः (स्त्री.), अपवर्गः ।
निर्वात, वि. (सं.) अपवन, निर्वात्य, वातवेग-शून्य (प्रदेशादि) ।
निर्वाह, सं. पुं. (सं.) दे. 'निवाह' ।
निर्विकार, वि. (सं.) विकृति-विकार-परिवर्तन,-रहित, अविकारिन्, अपरिवर्तिन् ।
निर्विघ्न, वि. (सं.) निरंतराय, निर्व्याघात, विघ्नरहित । क्रि. वि., निर्विघ्नं, शांत्या (तृ.) निरुपद्रवम् ।
निर्विवेक, वि. (सं.) निर्बुद्धि, अविवेकिन् ।
निर्वीर्य, वि. (सं.) निस्तेजस्-निःसत्त्व, निर्बल ।
निवार, सं. स्त्री. (फ़ा. नवार) पर्यंकपट्टिका, *निवारम् ।
निवारक, वि. (सं.) रोधक २. अपसारक, नाशक ।
निवारण, सं. पुं. (सं.) नि-,रोधः-रोधनं २. अपसारणं, दूरीकरणं ३. निवृत्तिः (स्त्री.) ।
निवाला, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'ग्रास' ।
निवास, सं. पुं. (सं.) वसतिः-स्थितिः (स्त्री.) २. गृहं, निकेतनं आ(अ)गारं, आवसथः, आ-नि,-लयः २. वास,-गृहं-स्थानम् ।
—करना, क्रि. अ., अधि-आ-नि-प्रति-वस् (भ्वा. प. अ.) ।
निवासी, सं. पुं. (सं.-सिन्) वासकृत (पुं.), वासिन्,-स्थ,-वर्तिन् ।
निवृत्त, वि. (सं.) वि-,मुक्त, विरत, लब्धाव-काश, कृतकार्य २. विरक्त, पृथग्भूत ।
निवृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) उपरमः, प्रवृत्त्यभावः, अप-उप-वि,-रतिः (स्त्री.), मुक्तिः (स्त्री.) ।

निवेदन, सं. पुं. (सं. न.) आवेदनं, प्रार्थनं-ना, अभ्यर्थना, याञ्चा, याचना, विज्ञापना, विज्ञप्तिः (स्त्री.)।

—करना, क्रि. स., आ-नि-विद् (प्रे.)- विज्ञा (प्रे., विज्ञापयति) अभि-प्र-अर्थ (चु. आ. से.), याच् (भ्वा. उ. से.)।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) आवेदन-प्रार्थना,-पत्रम्।

निशंक, वि., दे. 'निःशंक'।

निशांध, वि. (सं.) रात्र्यंध, दोषांध।

निशा, सं. स्त्री. (सं.) रात्रिः (स्त्री.), शर्वरी।

—कर,—नाथ,—पति, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः, सोमः।

निशाचर, सं. पुं. (सं.) राक्षसः, रक्षस् (न.), पिशाचः २. चौरः, लुंठकः ३. नक्तंचरः। (उल्लू आदि)।

निशात, वि. (सं.) निशितः-ता-तं, तेजित, शित, क्ष्णुत २. परिष्कृतः-ता-तं, उज्ज्वलित।

निशाद, सं. पुं. (सं.) निशादनः, नक्तभोजिन् २. राक्षसः, पिशाचः ३. घूकः।

निशादि, सं. पुं. (सं.) सायम्, (अव्य.) सन्ध्या।

निशान, सं. पुं. (फ़ा.) अभिज्ञानं, चिह्नं, अंकः, लक्षणं, लांछनं, लिंगं, व्यंजकं-नं २. प्रमाणं, साधनं ३. किणः, क्षत,-अंकः-चिह्नं ४. लक्ष्यं, शूरव्यं ५. अधिकार-प्रतिष्ठा,-चिह्नं ६. ध्वजः, वैजयंतः-ती।

—करना या लगाना, क्रि. स., अंक् (चु.), चिह्नयति, मुद्रयति (ना. धा.)।

—दार, वि. (फ़ा.) चिह्नित, अंकित २. ध्वज-वाहकः।

—बर्दार, सं. पुं. (फ़ा.) वैजयन्तिकः, पताकिन् २. अग्रेसरः, पुरोगः।

नाम—, चिह्नं, लक्षणं २. अस्तित्वलेशः।

निशानची, सं. पुं. (फ़ा. निशान) दे. 'निशानबर्दार' २. लक्ष्यवेधकः।

निशाना, सं. पुं. (फ़ा.) लक्ष्यं-क्षं, शरव्यम्।

—बाँधना, मु., लक्षी-क्ष्यी कृ., संधा (जु. उ. अ.)।

—मारना या लगाना, मु., लक्ष्यं प्रति क्षिप् (तु. प. अ.)-अस् (दि. प. से.)।

निशानी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'निशान' २. स्नेहाभिज्ञानं स्मृति-स्मारक,-दानं २. अभिज्ञानं, स्मारकम्।

निशावसान, सं. पुं. (सं. न.) निशा,-अतिक्रमः-अत्ययः, प्रातः (अव्य.)।

निशीथ, सं. पुं. (सं.) अर्द्ध-मध्य,-रात्रः, रात्रि-निशा,-मध्यं २. रात्रिः (स्त्री.)।

निश्चय, सं. पुं. (सं.) नियतता, निश्चितत्वं, ध्रुवत्वं २. विश्वासः, विश्रंभः ३. निर्णयः ४. दृढ-संकल्पः, अध्यवसायः।

निश्चल, वि. (सं.) अचल, अविचल, धीर, दृढ़, धृतिमत् २. स्थिर, निःस्तब्ध, निश्चेष्ट।

निश्चिंत, वि. (सं.) वीत-मुक्त,-चित्त, शांत, चिंता-रणरणक,-रहित।

निश्चित, वि. (सं.) संदेह-संशय,-शून्य, अ-निस्,-संशय, नियत, दृढ २. निर्णीत, निर्धारित।

निश्वास, सं. पुं. (सं.) दे. 'निःश्वास'।

निषध, सं. पुं. (सं. निषधाः बहु.) विंध्याचलस्थः देशविशेषः २. 'कमाऊँ'प्रदेशः ३. निषधवासिन्।

—पति, सं. पुं. (सं.) नलः।

निषाद, सं. पुं. (सं. पुं.) अनार्यजातिविशेषः २. चांडालः, हीनः ३. सप्तमस्वरः (संगीत)।

निषिद्ध, वि. (सं.) प्रतिषिद्ध, प्रत्यादिष्ट, निवारित २. दूषित, गर्ह्य, निन्द्य।

निषूदन, वि. (सं.) मारक, मारयितृ, हंतृ, प्राणहर, अन्तकर, घातक।

निषेक, सं. पुं. (सं.) अव-आ-,सेकः-सेचनं, अभि-,वर्षणं-उक्षणम् २. गर्भाधानं ३. गर्भाधान-संस्कारः ४. धावन-जलं ५. मलिनजलं ६. वीर्याशुद्धिः (स्त्री.)।

निषेचन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'निषेक' १।

निषेध, सं. पुं. (सं.) प्रतिषेधः, निरोधः, निवारणम्, निषिद्धिः (स्त्री.)।

निषेधक, वि. (सं.) प्रतिषेधक, निवारक, प्रतिषेद्धृ, बाधक, निरोधक।

निष्कंटक, वि. (सं.) निर्विघ्न-निर्बाध, निरंतराय २. निःशल्य, अकंटकित।

निष्कपट, वि. (सं.) ऋजु, सरल, अमाय, निश्छल, विशुद्ध।

निष्काम, वि. (सं.) निरिच्छ, निरीह, निःस्पृह।

निष्कारण, वि. (सं.) अकारण, निर्निमित्त। क्रि. वि. अकारणं, अहेतुकम्।

निष्क्रमण, सं. पुं. (सं. न.) बहिर्गमनं, निर्गमनं २. संस्कारभेदः (धर्म.)।

निष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) प्रत्ययः, विश्रंभः, विश्वासः २. भक्तिः (स्त्री.); श्रद्धा।

निष्ठुर, वि. (सं.) क्रूर, क्रूरकर्मन्, निर्दय, निर्घृण, निष्करुण, नृशंस, कठोरहृदय।

निष्ठुरता, सं. स्त्री. (सं.) क्रूरता, निर्दयता, नृशंसता।

निष्पत्ति, सं. स्त्री. (सं.) अंतः, समाप्तिः (स्त्री.) २. परिपाकः, सिद्धिः (स्त्री.)।

निष्पन्न, वि. (सं.) समाप्त, अवसित २. सिद्ध, परिगत, संपन्न।

निष्पादन, सं. पुं. (सं. न.) साधनं, निर्वर्तनं, विधानं २. समापनं, संपूरणम्।

निष्पाप, वि. (सं.) अपाप, अनघ, अकल्मष, अकिल्बिष, पापरहित, पुण्यात्मन्।

निष्प्रयोजन, वि. (सं.) निस्स्वार्थ, निष्काम २. अकारण, निष्कारण ३. अनर्थक, व्यर्थ। क्रि. वि., व्यर्थं, मुधा।

निष्फल, वि. (सं.) निरर्थक, अनुपयोगिन्, मोघ, विफल, निष्प्रयोजन, वृथा, मुधा।

निसबत, सं. स्त्री. (अ.) संबंधः, अनुषंगः २. वाग्दानं, वाक्प्रदानं ३. तुलना, सादृश्यम्। क्रि. वि., अपेक्षया-तुलनया-औपम्येन(तृतीया)।

निसर्ग, सं. पुं. (सं.) स्वभावः, प्रकृतिः (स्त्री.)।

निसार, सं. पुं. (अ.) दे. 'निछावर'।

निस्तब्ध, वि. (सं.) जड़ी-निष्पंदी,-भूत, अवसन्न, जडतुल्य, निश्चेष्ट २. अनालापिन्, मौनिन्, तूष्णीक।

निस्तब्धता, सं. स्त्री. (सं.) निष्पंदता, निःस्पंदता, जडता, निश्चेष्टता २. नीरवता, मौनम्।

निस्तार, सं. पुं. (सं.) अपवर्गः, मुक्तिः (स्त्री.) २. उद्धारः, त्राणम्।

निस्तारा, सं. पुं. (सं. निस्तारः) निर्णयः, निर्धारणं २. दे. 'निस्तार'।

निस्तेज, वि. (सं. निस्तेजस्) अप्रभ, निष्प्रभ, मलिन, तेजोहीन २. निःसत्त्व, निर्वीर्य, निरुत्साह।

निस्पंद, वि. (सं.) निष्पंद, अकंप, अचल, स्थिर, गतिशून्य, निस्स्पन्द, निःस्पन्द।

निस्पृह, वि., दे. 'निःस्पृह'।

निस्फ़, वि. (अ.) दे. 'आधा'।

निस्संकोच, वि. (सं.) दे. 'निःसंकोच'।

निस्संतान, वि. (सं.) दे. 'निःसंतान'।

निस्संदेह, वि. (सं.) दे. 'निःसंदेह'।

निस्सार, वि. (सं.) दे. 'निःसार'।

निस्सीम, वि. (सं.) दे. 'निःसीम'।

निस्स्वार्थ, वि. (सं.) दे. 'निःस्वार्थ'।

निहंग, वि. (सं. निःसंग) एकल, एकाकिन्, २. ब्रह्मचारिन् ३. नग्न ४. निर्लज्ज।

निहत्था, वि. (सं. निर्हस्त>) निरस्त्र, निःशस्त्र, निरायुध, अस्त्र-शस्त्र,-हीन २. निर्धन।

निहाई, सं. स्त्री. (सं. निधातिः>) शूर्मः-र्मी, स्थूणा।

निहायत, वि. (अ.) अत्यंत, अत्यधिक।

निहारना, क्रि. स. (सं. निभालनं) दे. 'देखना'।

निहाल, वि. (फ़ा.) संतुष्ट, पूर्णकाम, प्रसन्न।

—करना, क्रि. स., प्रसद्-आनंद्-हृष् (प्रे.)।

निहित, वि. (सं.) स्थापित, न्यस्त, निक्षिप्त।

निहोरा, सं. पुं. (सं. मनोहारः>) अनुग्रहः, कृपा, उपकारः २. कृतज्ञता, कृतवेदिता ३. प्रार्थनं-ना, निवेदनं ४. आश्रयः, आधारः। क्रि. वि., द्वारा-कारणेन (अव्य.)।

—मानना, क्रि. अ., उपकारं स्मृ (भ्वा. प. अ.) कृतं ज्ञा (क्र्. उ. अ.)।

नींद, सं. स्त्री. (सं. निद्रा) स्वपनं, संवेशः, दे. 'निद्रा'।

—आना, क्रि. अ. स्वप् (सन्नंत., उ., सुषुप्सति) निद्रया पराभू (कर्म.)।

—उचाट होना, क्रि. अ., वि-भग्न,-निद्र (वि.) भू।

—न आना, सं. पुं., निद्रा,-लोपः-नाशः।

—भर सोना, मु., यथेष्टं स्वप् (अ. प. अ.)।

नींदू, वि. (हिं. नींद) दे. 'निद्रालु'।

नींबू, सं. पुं., दे. 'निंबू'।

नीक-का, वि. (सं. निक्त>) अच्छ, सुन्दर, उत्तम, भद्र, उत्कृष्ट।

नीच, वि. (सं.) अधम, अवर, अप-नि,-कृष्ट, क्षुद्र, खल, गर्ह्य, जघन्य, तुच्छ, पामर। सं. पुं., अपसदः, जाल्मः, दुर्वृत्तः, पृथग्जनः, २. हीन,-जातिः-वर्णः-कुलः, अंत्यजातीयः, नीच,-कुलजः-वंशप्रसूतः।

—ऊँच, मु., भद्राभद्रे (न.) २. गुणावगुणौ, ३. हानिलाभौ ४. सुखदुःखे (न.) ५. संपद्-विपदौ (स्त्री.) ६. उत्कर्षापकर्षौ ।

नीचता, सं. स्त्री. (सं.) अधमता, क्षुद्रता, तुच्छता, पामरता, २. अन्त्यजता, हीनकुलता ।

नीचा, वि. (सं. नीच) अधःस्थ, अधस्तन- (-नी स्त्री.), नत, निम्न, नीचस्थ, अवांच् २. दे. 'नीच' ।

—ऊँचा, वि., नतोन्नत, विषम, असम, २. दे. 'नीच-ऊँच' ।

—दिखाना, मु., पराजि (भ्वा. आ. अ.), पराभू २. ही (प्रे. ह्रेपयति), लघू कृ, व्रीड् (प्रे.) ।

नीचाई, सं. स्त्री. (हिं. नीचा) नीचता,निम्नता, अधःस्थता ।

नीचे, क्रि. वि. [सं. नीचैः (अव्य.)] अधः, अधोभागे, अधस्तात्, तले २. अधीनतायां, वशे ३. न्यून, अवर ।

—ऊपर, क्रि. वि., अन्योन्यस्योपरि, इतरेत-रस्योर्ध्वम् । २. अस्तव्यस्तं, संकीर्णतया ।

नीड़, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'घोंसला' ।

नीति, सं. स्त्री. (सं.) उपायः, युक्तिः-रीतिः (स्त्री.), प्रयोगः २. राज-राज्यशासन,-नीतिः-नयः-न्यायः-मार्गः, नय-नीति,-क्रमः-मार्गः ३. सदाचारः, सद्व्यवहारः, सु-सत्,-चरितं ४. नीति,-विद्या-शास्त्रम् ।

नीतिज्ञ, वि. (सं.) नयज्ञ, नीतिशास्त्रज्ञ ।

नीतिमान्, वि. (सं.-मत्) नयपर, सदाचा-रिन् [-मती (स्त्री.)] ।

नीप, सं. पुं. (सं.) कदंबः, विषघ्नः, मदिरा-गंधः ।

नीबू, सं. पुं. (सं. निंबुकं) दे. 'निंबू' ।

—निचोड़, वि., अल्पदायिन् बहुग्राहिन्, अल्प-दातृ बहुग्रहीतृ, अल्पद बहुग्राहक ।

नीम¹, सं. पुं., दे. 'निंब' ।

नीम², वि. (फ़ा., मि. सं. नेम) दे. 'आधा' ।

—हकीम, सं., पुं. वैद्यमानिन्, वैद्यंमन्यः, मिथ्या-कु-छद्म,-वैद्यः-चिकित्सकः ।

—हकीम ख़तरे जान, मु., वैद्यम्मन्यात् प्राण-संकटम्, छद्मवैद्यः संकटावहः ।

नीयत, सं. स्त्री. (स्त्री.) आशयः, उद्देशः, भावः, इच्छा, लक्ष्यम् ।

—बदल जाना, मु. पापं प्रति प्रवृत् (भ्वा. आ. से.), धर्मं त्यज् (भ्वा. प. अ.) ।

नेक—, वि., सदाशय, सुसंकल्प ।

बद—, वि., दुराशय, कुसंकल्प ।

नीर, सं. पुं., (सं. न.) तोयं, दे. 'जल' ।

नीरज, सं. पुं. (सं. न.) पद्मं, दे. 'कमल' ।

नीरद, सं. पुं. (सं.) जलदः, दे. 'मेघ' ।

नीरस, वि. (सं.) अरस, विरस, अ-वि,-द्रव, शुष्क २. अस्वादु, रसहीन, अरुचिकर ।

नीरोग, वि. (सं.) सुस्थ, कल्य, वार्त्त, दे. 'स्वस्थ' ।

नीरोगता, सं. स्त्री. (सं.) आरोग्यं, दे. 'स्वास्थ्य' ।

नील, सं. पुं. (सं. नीलं) (पौदा) काला, नीली, नीलिनी, रंजनी, २. (द्रव्य) नीलं, नील-वर्णः ३. प्रहारजं, नीलचिह्नं, नीला ४. लांछनं ५. वानरविशेषः ६. इन्द्रनीलमणिः, नीलोपलः (पुं.) ७. संख्याविशेषः (दस हज़ार अरब अथवा सौ अरब) । वि., दे. 'नीला' ।

—कंठ, सं. पुं. (सं.) चाषः, किकीदि(दी)विः (पुं.) २. शिवः ३. मयूरः ।

—कमल, सं. पुं. (सं. न.) नील,-पद्मम्-अब्जं-इन्दि(न्दी)वरं, इन्दीवारः ।

—का टीका, मु., कलंकः, अपयशस् (न.) ।

—गाय, सं. स्त्री., दे. 'गवय' ।

नीलम, सं. पुं. [फ़ा.; सं. नीलमणिः (पुं.)] नीलः, नीलोपलः, महा-इंद्र,-नीलः ।

नीलांबर, सं. पुं. (सं. न.) नीलकौशेयवस्त्रं २. तालीशपत्रम् । सं. पुं., बलदेवः २. राक्षसः ।

नीलोफ़र, सं. पुं. (फ़ा.; मि. सं. नीलोत्पलं) कुमुदं, कैरवं २. इंदी(दि)वरं, नील,-अब्जं-कमलम् ।

नीला, वि. (सं. नील) श्याम, मेचक, नीलवर्ण ।

—रंग, सं. पुं., नीलः, नीलवर्णः, नीलिमन् (पुं.) ।

—पीला होना, मु., क्रुध् (दि. प. अ.) कुप् (दि. प. से.) ।

नीलाई, सं. स्त्री. (हिं. नीला) नीलत्वं, नीलिमन् (पुं.) ।

नीलाथोथा, सं. पुं. (हिं. नीला+सं. तुत्थं) हेमसारं, तुत्थं, नीलाञ्जनं, ताम्रगर्भं, मयूर-ग्रीवकं, नीलं, वितुन्नकं, मयूरकम् ।

नीलाम, सं. पुं. (पुर्त. लेलम) *लीलामय-विक्रयः ।

नीवँ, सं. स्त्री. (सं. नेमी) वास्तु (पु. न.), गृह-भित्ति,-मूलं-प्रतिष्ठा, पीठः, वेदमभूः (स्त्री.) ।

—डालना या रखना, क्रि. सं., वास्तुं निर्मा (जु. आ. अ.), स्था (प्रे. स्थापयति) । मु., प्रारभ् (भ्वा. आ. अ.), प्रवृत् (प्रे.) ।

नुक़ता[1], सं. पुं. (अ. नुक़तह्) बिंदुः (पुं.), (गोल-) अंकः-चिह्नं २. शून्यं, खं, बिंदुः ।

नुकता[2], सं. पुं. (अ. नुकतह्) रहस्यं, मर्मन् (न.) २. व्यंग्योक्तिः (स्त्री.), गूढार्थ-वचनं, व्यंग्यं ३. दोषः, त्रुटिः (स्त्री.) ।

—चीं, वि. (फ़ा.) छिद्र-दोष,-अन्वेषिन्, दोषैकदृश् (पुं.), पुरोभागिन् ।

—चीनी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दोषदर्शनं, छिद्रान्वेषणं, पुरोभागित्वम् ।

नुक़सान, सं. पुं. (अ.) क्षतिः (स्त्री.), दे. 'हानि' ।

नुकीला, वि. (हिं. नोक) साग्र, तीक्ष्णाग्र, नि-, शित, अणिमत् [–ली (स्त्री.)] ।

नुक्कड़, सं. पुं. (हिं. नोक) अंतः, सीमा, अग्रं २. कोणः, अस्रः ३. दे. 'नोक' ।

नुक्स, सं. पुं. (अ.) दोषः, त्रुटिः (स्त्री.), न्यूनता ।

नुमाइश, सं. स्त्री. (फ़ा) प्रदर्शनं-नी २. आडंबरः, श्रीः (स्त्री.) ३. आविष्करणं, प्रकाशनम् ।

नुमाइशी, वि. (फ़ा. नुमाईश) आपातरमणीय, साडंबर, सुभगालोक ।

नुसख़ा, सं. पुं. (अ.) योगः, कल्पः ।

नूतन, वि. (सं.) दे. 'नया' ।

नून, सं. पुं., दे. 'नमक' ।

नूपुर, सं. पुं. (सं. न.) पाद,-कटकः-अंगदं, मंजीरः, हंसकः ।

नूर, सं. पुं. (अ.) प्रकाशः, ज्योतिस् (न.) २. कांतिः (स्त्री.), शोभा ।

—चश्म, सं. पुं., प्रियपुत्रः ।

—चश्मी, सं. स्त्री., प्रियपुत्री ।

नृ, सं. पुं. (सं.) नरः, मनुष्यः, मनुजः, मानुषः ।

—केशरी, सं. पुं. (सं.-रिन्) नरसिंह-नृसिंह,-अवतारः २. वीरः, शूरः ।

—घ्न, वि. (सं.) मनुष्य-मनुज,-घातक-मारक ।

—देव, सं. पुं. (सं.) विप्रः, ब्राह्मणः २. नृपः, भूपः ।

—पति, सं. पुं. (सं.) नर-भू,-पालः ।

—पशु, सं. पुं. (सं.) मूढ़, अज्ञ ।

—सिंह, सं. पुं. (सं.) नर-नृ,-सिंहः-केशरिन्-हरिः, विष्णोश्चतुर्थावतारः ।

नृत्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'नाच' ।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नाचघर' ।

नृप, नृपति, सं. पुं. (सं.) भूपः, दे. 'राजा' ।

नृशंस, वि. (सं.) दे. 'निष्ठुर' ।

नृशंसता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'निष्ठुरता' ।

नृसिंह, सं. पुं. (सं.) नरसिंहः, विष्णोश्चतुर्थावतारः २. श्रेष्ठजनः, नरर्षभः ।

नेक, वि. (फ़ा.) भद्र, अच्छ, उत्तम, सु-, सत्-, २. शिष्ट, सौम्य, सभ्य ।

—चलन, वि. (फ़ा.+हिं.) सदाचारिन्, सद्वृत्त ।

—चलनी, सं. स्त्री., सदाचारः, सौजन्यम् ।

—नाम, वि. (फ़ा.) यशस्विन् , कीर्तिमत् ।

—नामी, वि., सुयशस् (न.), कीर्तिः (स्त्री.) ।

—नीयत, वि. (फ़ा.+अ.) धर्मवर्तिन्, सदाशय ।

—नीयती, सं. स्त्री., निष्कापट्यं, सदाशयः ।

—बख़्त, वि. (फ़ा.) भाग्यवत्, सौभाग्यशालिन् २. सत्स्वभाव, सुशील ।

नेकी सं. स्त्री. (फ़ा.) भद्रता, सद्व्यवहारः २. सज्जनता, सौजन्यं ३. हितं, उपकारः ।

—बदी, सं. स्त्री. (फ़ा.) उपकारापकारौ, हिताहिते २. पुण्यापुण्ये ।

नेग, सं. पुं. (सं. नैयमिक>) *सांस्कारिक,-उपहारः-पुरस्कारः, नैयमिकं दानम् ।

नेगिटिव, वि. (अं.) ऋणात्मक (विद्युदादि) ।

नेगी जोगी, सं. पुं., सांस्कारिकपुरस्काराधिकारिणः (पुं. बहु.) ।

नेज़ा, सं. पुं. (फ़ा.) कुंतः, प्रासः, शक्तिः (स्त्री.) ।

—बरदार, सं. पुं. (फ़ा) कौंतिकः, प्रासिकः, शाक्तीकः, कुंतधरः ।

नेता, सं. पुं. (सं. नेतृ) सञ्चारकः, नायकः, मार्ग,-उपदेशकः-दर्शकः, अग्र-पुरो,-गः, अग्र-

पुरः,-सरः, मुख्यः २. प्रभुः, स्वामिन् ३. निर्वाहकः, प्रवर्तकः [नेत्री (स्त्री.)]।

नेती, सं. स्त्री. (सं. नेत्रं) मंथनरज्जुः (स्त्री.), मंथगुणः ।

—धोती, सं. स्त्री., दीर्घपट्टिकया अंत्रशोधनं (हठयोग)।

नेत्र, सं. पुं. (सं. न.) नयनं, चक्षुस् (न.), दे. 'आँख' २. दे. 'नेती' ३. वस्तिशलाका ।

—रंजन, सं. पुं. (सं. न.) कज्जलम् ।

नेत्र्य, वि. (सं.) नयन-नेत्र,-विषयक-संबंधिन् २. नयन नेत्र,-हितकर ।

नेदिष्ठ, वि. (सं.) निकटतम २. अधिकतम ३. निपुण ।

नेनुआ-वा, सं. पुं. (?) घोषः-षकः, आदानी, देवदानी, ऐभी, महाफला ।

नेपचून, सं. पुं. (अं.) नेपचूनः, ग्रहविशेषः ।

नेपथ्य, सं. पुं. (सं. न.) वेशः-षः, परिधानं, वस्त्रं, आभरणं, अलंकारः २. (रंगशालायां) वेशस्थानं, अलंकारकोष्ठः ३. रंग,-भूमिः (स्त्री.)-शाला ।

नेपाल, सं. पुं. (सं.) भारतोत्तरवर्ति देशविशेषः । (सं. न.) दे. 'ताँबा' ।

—जा, सं. स्त्री. (सं.) नेपालजाता, दे. मैनसिल ।

नेब्यूला, सं. पुं. (अं.) नीहारिका ।

नेमि, सं. स्त्री. (सं.) नेमी, प्रधिः-चक्रपरिधिः (त्र.) २. कूपांतिकसमस्थलं ३. कूपसमीपे रज्जुधारणार्थं त्रिदारुयंत्रं, त्रिका ।

नेवता, सं. पुं., दे. 'निमंत्रण' ।

नेवर, सं. पुं. (सं. नूपुरं) दे. 'नूपुर' २. अश्वपादक्षतम् ।

नेवला, सं. पुं. (सं. नकुलः) पिंगलः, सूचीवदनः, लोहिताननः, अंगूषः, कशः ।

नेवार, सं. पुं., दे. 'निवार' ।

नेस्त, वि. (फ़ा.) नष्ट, लुप्त ।

—नाबूद, वि. (फ़ा.) नष्टभ्रष्ट, उच्छिन्न ।

नेस्ती, सं. स्त्री. (फ़ा.) अनस्तित्वं, अभावः २. आलस्यं ३. नाशः ।

नेह, सं. पुं. (सं. स्नेहः) प्रेमन् (पुं.), प्रीतिः (स्त्री.) २. घृतं, तैलम् ।

नैतिक, वि. (सं.) नीति,-विषयक-शास्त्रीय ।

नैत्य, वि. (सं.) नैत्यक-नैत्यिक[-की (स्त्री.)], नित्य-संबंधिन्-करणीय ।

नैन-ना, सं. पुं. (सं. नयनं) दे. 'आँख' ।

नैपुण्य, सं. पुं. (सं. न.) कौशलं, दाक्ष्यं, पाटवम् ।

नैमित्तिक, वि. (सं.) निमित्त,-जन्य-उत्पन्न, अनैत्यिक ।

नैया, सं. स्त्री., दे. 'नाव' ।

नैयायिक, सं. पुं. (सं.) न्याय-तर्क,-शास्त्रज्ञः, न्यायविद् (पुं.), तार्किकः ।

नैराश्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'निराशा' ।

नैर्ऋत, सं. स्त्री. (सं. नैर्ऋती) नैर्ऋतकोणः, अवाची-प्रतीच्योर्मध्या दिक् (स्त्री.) ।

नैवेद्य, सं. पुं. (सं. न.) देव-बलिः (पुं.)-भोजनं, भोगः ।

नैसर्गिक, वि. (सं.) प्राकृतिक-साहजिक, स्वाभाविक-सांसिद्धिक[-की (स्त्री.)], प्रकृति-स्वभाव,-सिद्ध ।

नैहर, सं. पुं., दे. 'मायका' ।

नोक, सं. स्त्री. (फ़ा.) अग्रं, अग्रभागः, अणिः (पुं. स्त्री.), प्रांतः, मुखं, शिखरं, चंचुः (स्त्री.) २. उदग्र-बहिर्वर्ति,-कोणः-अस्रः ।

—झोंक, सं. स्त्री., नर्म,-आलापः-भाषितं, परि-(री)हासः, व्यंग्यम् ।

—दार, वि., दे. 'नुकीला' ।

नोकीला, वि., दे. 'नुकीला' ।

नोच, सं. स्त्री. (हिं. नोचना) लुंचः, लुंचनं २. आकस्मिक आच्छेदः, लुंठनं ३. परितो याचनम् ।

नोचना, क्रि. स. (सं. लुंचनं) लुंच् (भ्वा. प. से.), उत्पट् (चु.), आच्छिद् (रु. प. अ.) २. वि-,दृ-शृ (क्र्. प. से.) ३. अपनी-निर्हृ-व्यपहृ (भ्वा. उ. अ.) ४. अव-विं-दृ (प्रे.), निर्भिद् (रु. प. अ.), क्षुर् (तु. प. से.)।

नोट, सं. पुं. (अं.) स्मृत्यै लेखः-लेखनं-लिखनं, २. स्मरणं, स्मरणचिह्नं, अभिज्ञानं ३. पत्रं, पत्रिका ४. टिप्पनी-णी, टीका ५. धनपत्रकं, नाणकपत्रम् ।

—करना, क्रि. स., लिख् (तु. प. से.), अंक (चु.) ।

—बुक, सं. स्त्री. (अं.) अभिज्ञानसंचितिः (स्त्री.)।

नोटिस, सं. पुं. (अं.) विज्ञापना, ख्यापना, सूचना, विज्ञप्तिः (स्त्री.) २. विज्ञापनं, सूचनापत्रम्।

—देना, क्रि. स., विज्ञा-प्रख्या (प्रे.) सूच् (चु.)।

नोन, सं. पुं., (सं. लवणम्)।

कँचिया—, काचं, काचलवणं, काचसौवर्चलम्।

काला—, कृष्णलवणं, सौवर्चलं, शूलनाशनं, हृद्यगन्धम्।

खारी—, ऊपरजं, औपरकं, सार्वगुणं, मेलकलवणम्।

संचर (कटीला)—, खण्ड-काल-विड्,-लवणं, विडम्।

समुद्री—, सागरजं, सामुद्रिकं, लवणाब्धिजं, त्रिकूट-द्रोणी,-लवणम्।

सांभर—, शाकम्भरीयं, रौमं, रौमकं, साम्बरं, सम्बरोद्भवम्।

सेंधा—, सैन्धवं, सिन्धु,-उत्थं-उपलं-जं-लवणं लवणोत्तमम्।

नोना, सं. पुं. (सं. लवणं>) सीताफलं, गंडगात्रं २. लवणमृत्तिका २. यवक्षारभेदः। वि., क्षार-लवण,-युक्त-मय २. लावण्ययुत, सुंदर ३. उत्कृष्ट।

नौ[1], वि. (सं. नवन्)। सं. पुं. उक्ता संख्या, तदंकः (९) च।

—खंड, सं. पुं., भूमेर्नव भागाः।

—गुना, वि., नव,-गुण-गुणित।

—दो ग्यारह होना, मु., सत्वरं पलाय् (भ्वा. आ. से.), प्रस्था (भ्वा. आ. अ.)।

—रत्न, सं. पुं., दे. नवरत्न'।

नौ[2], वि. (फ़ा.; सं. नव) दे. 'नया'।

—आबाद, वि., (फ़ा.) अधि,-वासिन्-निवेशिन्।

—आबादी, सं. स्त्री. (फ़ा.) नव,-अधिनिवेशः-वासितप्रदेशः।

नौकर, सं. पुं. (फ़ा.) सेवकः, भृत्यः, दासः, किंकरः, प्रेष्यः, अनु-उप,-जीविन्, परि,-जनः-चारकः, अनु-परि,-चरः, चेटः, नियोज्यः, भुजिष्यः, वैतनिकः, भृतकः।

—चाकर, सं. पुं., परिजनः, दासवर्गः।

—शाही, सं. स्त्री., भृत्य,-राज्यं-शासनम्।

नौकराना, सं. पुं. (फ़ा. नौकर) दे. 'दस्तूरी' २. सेवक-दास,-पुरस्कारः-वेतनम्।

नौकरानी, सं. स्त्री. (फ़ा. नौकर) सेविका, परिचारिका, दासी, चेटी, प्रेष्या, भुजिष्या, सैरं(रिं)ध्री।

नौकरी, सं. स्त्री. (फ़ा. नौकर) सेवा, दास्यं, प्रेष्य-भृत्य,-भावः।

—पेशा, सं. पुं. (फ़ा.) सेवाजीविन्, वैतनिकः, दे. 'नौकर'।

नौका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नाव'।

नौछावर, सं. स्त्री., दे. 'निछावर'।

नौज, अव्य० (अ. नऊज) शान्तं पापम्, मैवं भूयात्। नैवं भवतु।

नौजवान, सं. पुं., (फ़ा.) दे. 'नवयुवक'।

नौजवानी, सं. स्त्री. (फ़ा.) नौवयौवनं, तारुण्यं, कौमारं-रकं, नव-पूर्व-प्रथम,-वयस् (न.)।

नौता, सं. पुं., दे. 'निमंत्रण'।

नौबढ़-ढ़िया, सं. पुं. (सं. नव+हिं. बढ़ना) नवोदयः, नवोत्थानम्।

नौबत, सं. स्त्री. (फ़ा.) पर्यायः, वारः २. दशा, गतिः (स्त्री.) ३. वैभवादिसूचकं वाद्यम्।

—बजना, मु., मंगलोत्सवः प्रवृत् (भ्वा.आ.से.)।

नौमी, सं. स्त्री., दे. 'नवमी'।

नौलक्खा-खा, वि. (हिं.नौ+लाख) नवलक्षार्घ, महार्घ, महामूल्य।

नौसादर, सं. पुं. (फ़ा. नौशादर) नरसारः, अमृत-वज्र,-क्षारं, चूलिकालवणम्।

नौसिख-खिया, सं. पुं. (सं. नवशिक्षितः) अनभ्यस्तः, शैक्षः, नव,-शिष्यः-च्छात्रः।

न्यक्कार, सं. पुं. (सं.) अभिभवः, पराजयः, न्यक्करणम् २. तिरस्कारः।

न्यग्रोध, सं. पुं. (सं.) वटः, जटालः, अवरोहिन्, वृक्षनाथः, रक्तफलः।

न्याय, सं. पुं. (सं.) पक्षपाताभावः, समदर्शित्वं, साम्यं, सर्वसमता, धर्मः, न्याय्यता, न्यायिता, साधुता २. अपराधानुरूप-योग्य-न्याय्य,-दंडः ३. आन्वीक्षिकी, तर्कः, तर्क-न्याय,-विद्या-शास्त्रं, युक्तिवादः।

—करना, क्रि. स., निर्णी (भ्वा. प. अ.), अव-संप्रधृ (चु.), परिच्छिद् (रु. प. अ.), व्यवसो (दि. प. अ.) २. व्यवहारं दृश् (भ्वा. प. अ.) अवेक्ष् (भ्वा. आ. से.), कार्यं निर्णी।

—कर्ता, सं. पुं. [सं. -र्तृ (पुं.)] दे. 'न्यायाधीश'।
—सभा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'न्यायालय'।
न्यायाधीश, सं. पुं. (सं.) न्याय-धर्म,-अध्यक्षः, आधिकरणिकः, निर्णेतृ-व्यवहारद्रष्टृ (पुं.) प्राड्विवाकः,धर्माधिकरणिकः, दंड,-नायक-धरः।
न्यायालय, सं. पुं. (सं.) धर्म-न्याय,-सभा, व्यवहारमंडपः, अधिकरणम्।
न्यायी, वि. (सं.-यिन्) न्याय,-पर-परायण-शील, न्यायवर्तिन्।
न्याय्य, वि. (सं.) उचित, धर्म्य, युक्त, योग्य, तथ्य।
न्यारा, वि. (सं. निर्+आरात्>) दूरस्थ, दूरवर्तिन् २. विश्लिष्ट, पृथक् स्थित ३. अन्य, अपर,भिन्न ४. विलक्षण, विचित्र[न्यारी(स्त्री.)]।
न्यारिया, सं. पुं. (हिं. न्यारा) डावकः, बंधुलः।
न्यारे, क्रि. वि. (हिं. न्यारा) दूरं, दूरे, आरात् २. पृथक्, विश्लिष्ट।
न्यास, सं. पुं. (सं.) निधानं, स्थापनं, न्यसनं, निक्षेपणं २. उपनिधिः (पुं.), निक्षेपः ३. अर्पणं, त्यागः।
न्यूक्लियस, सं. पुं. (अं.) नाभिकणः।
न्यून, वि. (सं.) अल्पतर, अल्पीयस्, क्षोदीयस्, लघीयस्, ऊन २. अवर, अधर ३. क्षुद्र, नीच।
न्यूनता, सं. स्त्री. (सं.) ऊनता, अल्पता, अपूर्णता, पर्याप्तताभावः २. हीनता, अभावः।
न्योछावर, सं. स्त्री., दे. 'निछावर'।
न्योतहरी, सं. पुं.(हिं. न्योता) निमंत्रितजनः।
न्योता, सं. पुं., दे. 'निमंत्रण'।
न्योला, सं. पुं., दे. 'नेवला'।
न्योली, सं. स्त्री. (सं. नली) हठयोगक्रियाभेदः।

प

प, देवनागरीवर्णमालाया एकविंशो व्यंजनवर्णः, पकारः।
पंक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कर्दमः, चिकिलः, दे. 'कीचड़'।
पंकज, सं. पुं. (सं.न.)पद्मं, सरोजं, दे. 'कमल'।
पंकजासन, सं. पुं. (सं.) चतुर्मुखः, ब्रह्मन् (पुं.)।
पंकिल, वि. (सं.) सपंक, सकर्दम, सचिकिल।
पंक्ति, सं. स्त्री. (सं.) रेखा-घा, लेखा २. ततिः, राजी-जिः श्रेणी-णिः, आवली-लिः (सब स्त्री.)।
—च्युत, वि. (सं.) जातिच्युत।
—दूषक, वि. (सं.) हीन, नीच, कुजाति।
—पावन, सं. पुं. (सं.) विप्रवरः, ब्राह्मणश्रेष्ठः, द्विजोत्तमः।
पंख, सं. पुं. (सं. पक्षः) वाजः, गरुत्, पत्रं, पतत्रं, छदः, तनूरुहम्।
पंखड़ी, सं. स्त्री. [सं. पक्ष्मन् (न.)] पुष्पदलम्।
पंखा, सं. पुं. (हिं. पंख) व्यजनं, वीजनं, तालवृंतम्।
—झलना, क्रि. स., वीज् (चु.)।
कपड़े का—, आलावर्तः।
चमड़े का—, धवित्रम्।
पंखी, सं. स्त्री. (हिं. पंखा) व्यजनकं-वीजनकम्।
पंखी, सं. पुं., दे. 'पक्षी'।
पंगत-त्ति, सं. स्त्री. (सं. पंक्तिः) दे. 'पंक्ति' (१-२) २. सभा, समाजः।
पंगु, वि. (सं.) श्रोण, खंज, खोल-ड।
पंच, वि. (सं. पंचन्)। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकः (५)च २. लोकः, जनता ३. निर्णेतृसभा, मध्यस्थाः।
—तत्त्व, सं. पुं., (सं. न.) पंचभूतम् (पृथिवी-जलानलानिलाकाशानि)।
—नद, सं. पुं. (सं.) पंचनदीयुतः प्रांतविशेषः, *पञ्जापः।
—नामा, सं.पुं. (सं.+फ़ा.) *पंचनिर्णयपत्रम्।
—प्राण, सं. पुं. (सं. प्राणाः) प्राणपंचकम् (प्राणः, अपानः, समानः, व्यानः, उदानः)।
—भूत, सं. पुं. (सं. न.) पंचतत्त्वं, पंच,-तत्त्वानि-भूतानि।
—महायज्ञ, सं. पुं. (सं.-यज्ञाः) ब्रह्म-देव-पितृ-बलिवैश्वदेव-नृयज्ञाः।
—रत्न, सं. पुं. (सं. न.) कनकहीरकनील-मणिपद्मरागमौक्तिकानीति पंचरत्नानि।
पंचक, सं. पुं. (सं. न.) पंचवस्तुसमुदायः।
पंचत्व, सं. पुं. (सं. न.) मरणं, निधनं, मृत्युः, पंचता।
पंचम, वि. (सं. पंचमः-मी-मं) २. सुंदर ३. दक्ष। सं. पुं., पंचमस्वरः (संगीत)।
पंचमी, सं. स्त्री. (सं.) शुक्ला कृष्णा वा पंचमी

तिथिः (स्त्री.) २. विभक्तिविशेषः (व्या.) ३. द्रौपदी ।
पंचांग, सं. पुं. (सं. न.) वारतिथिनक्षत्रयोग-करणात्मकपंजिका, पंजिका ।
पंचाग्नि, सं. स्त्री.(सं.न.)तपस्याभेदः,पंचातपा ।
पंचानन, वि. (सं.) पंच,-मुख-आस्य । सं. पुं., शिवः २. सिंहः ३. सिंहराशिः ।
पंचाननी, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा २. सिंही ।
पंचायत, सं. स्त्री. (सं. पंचायतनं>) *पंच,-सभा-समितिः (स्त्री.) २. ग्रामसभा ।
—नामा, सं. पुं. (हिं.+फ़ा.) पंचसभानिर्णयपत्रम् ।
पंचायती, वि. (हिं. पंचायत) पंचसभा-संबंधिन् २. सामान्य, सार्वजनिक ।
पंचाली, सं. स्त्री. (सं.) पुत्तली, वस्त्रादिनिर्मित-पुत्रिका २. द्रौपदी, पांचाली ।
पंछी, सं. पुं., दे. 'पक्षी' ।
पंजर, सं. पुं. (सं.) कंकालः, देहास्थिसमूहः २. देहः, शरीरं ३. दे. 'पिंजरा' ।
पंजा, सं. पुं. (फ़ा.) पंचकं २. करचरणानां पंचांगुलीसमूहोऽग्रभागो वा ३. (व्याघ्रादीनां) पादः ।
—पंजे में, मु., अधिकारे, वशे ।
पंजाबी, वि. (फ़ा.) पांचनद [-दी (स्त्री.)] । सं. पुं., पंचनदवासिन् ।
पंजारा, सं. पुं. (सं. पंजिकारः) तंतुकारः, कर्तकः २. दे. 'धुनिया' ।
पंजीरी, सं. स्त्री. (फ़ा. पंजा) गोधूममिष्ट चूर्णं, मिष्टान्नभेदः ।
पँड़वा, सं. पुं., (?) महिषी-पयस्विनी,-शावः-शावकः ।
पंडा, सं. स्त्री. (सं. पंडित>) तीर्थपुरोहितः ।
पंडाइन, सं. स्त्री. (हिं. पंडा) तीर्थपुरोहित,-भार्या-पत्नी ।
पंडाल, सं. पुं., (तमिल पैंडल) दे. 'मंडप' ।
पंडित, सं. पुं. (सं.) बुधः, कोविदः, प्राज्ञः, विद्वस् (पुं.) २. ब्राह्मणः । वि., ज्ञानिन्, बुद्धिमत् २. चतुर, दक्ष ३. संस्कृतज्ञ ।
पंडिता, सं. स्त्री. (सं.) विदुषी, बुद्धिमती नारी ।
पंडिताई, सं. स्त्री., दे. 'पांडित्य' ।
पंडिताऊ, वि. (हिं. पंडित) पंडित-ब्राह्मण,-तुल्य-सदृश ।
पंडितानी, सं. स्त्री. (हिं. पंडित) पण्डित-कोविद,-पत्नी-जाया २. ब्राह्मणी, द्विजोत्तमा ।
पंडुक, सं. पुं. (सं. पांडु>) कपोतजातीयः खगभेदः, पांडुकः, *घूकरः ।
पंथ, सं. पुं. (सं. पथिन्) मार्गः, वर्त्मन् (न.) २. सम्प्रदायः, मतं, धर्ममार्गः ३. रीतिः (स्त्री.) ।
पंथी, सं. पुं. (हिं. पंथ) पथिकः, यात्रिन् २. सांप्रदायिकः, मतावलंबिन् ।
पँवाड़ा, सं. पुं. (सं. प्रवादः) आख्यानं, बृहत्-विस्तृत,-कथा, अरुचिकरं वृत्तम् ।
पंसारी, सं. पुं. (सं.पण्यशालिन्>) औषधा-दिविक्रयिन्, *पण्यशालिन् ।
पंसेरी, सं. स्त्री. (सं. पंच+सेरः>) पंचसेरी, पंचसेटकी ।
पकड़, सं. स्त्री. (सं. प्रकृष्ट>) ग्रहः,-हणं, धा(ध)रणं, ग्रसनं, आकलनं २. मल्ल-बाहु,-युद्धं ३. दोषान्वेषणं, आक्षेपः, आपत्तिः (स्त्री.) ।
—धकड़, सं. स्त्री., निरोधासेधौ, ग्रहणधरणे (दोनों द्वि.) ।
पकड़ना, क्रि. स. (सं. प्रकृष्ट>) ग्रह् (क्र्. प. से.), धृ (भ्वा. प. अ., चु.), आदा (जु. आ. अ.), अवलंब् (भ्वा. आ. से.), परामृश् (तु. प. अ.) २. निरुध् (रु. उ. अ.), आसिध् (भ्वा. प. से.), बंध् (क्र्. प. अ.) ३. आसद् (प्रे.), लंघ् (भ्वा. आ. से., चु.), पश्चाद् आगत्य अतिक्रम् (भ्वा. प. से.), पश्चाद् आभिल् (तु. प. से.) ४. निवृ-स्तंभ् (प्रे.), स्थिरीकृ ५. अन्विष् (दि. प. से.), अनुसंधा (जु. उ. अ.) ६. ग्रस् (भ्वा. आ. से.), आक्रम् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., दे. 'पकड़' ।
पकड़नेवाला, सं. पुं., ग्रहीतृ-धर्तृ-धारयितृ (पुं.); निरोधकः, आसेकः इ. ।
पकड़वाना, पकड़ना, क्रि. प्रे., व. 'पकड़ना' के. प्रे. रूप ।
पकड़ा हुआ, वि., गृहीत, धृत, निरुद्ध, ग्रस्त ।
पकना, क्रि. अ. (सं. पक्व>) पच्-श्रा-श्री (कर्म.), सिध् (दि. प. अ.) २. पाकं व्रज् (भ्वा. प. से.), पाकोन्मुख (वि.) भू । (केशाः) धवली-शुक्ली भू ।

पकवाई, सं. स्त्री. (हिं. पकवाना) पाचन,-मूल्यं-भृतिः (स्त्री.)।

पक्कान, सं. पुं. (सं. पक्वान्नं, दे.)।

पकाई, सं.स्त्री., दे. 'पकवाई' २. पाचनं, पाकः, दे. 'पाक'।

पकाना, क्रि. स. (हिं. पकना) पच् (भ्वा. प. अ.), श्री (क्र्. उ. अ.), श्रा (अ. प. अ.; चु. श्रपयति), (अन्नं) संस्कृ अथवा सिध् (प्रे. साधयति)।

पकाने योग्य, वि., पचनीय, श्रातव्य, श्रेतव्य।

पकानेवाला, सं. पुं., पाचकः, सूदः, वल्लवः।

पकाया हुआ, वि. पक्व, पाचित, साधित, संस्कृत, श्राण।

पकाव, सं. पुं. (हिं. पकना) पचनं, पाकः २. (व्रणादीनां) सपूयत्वं, परि-, पाकः।

पका हुआ, वि., पक्व, सिद्ध, श्राण, शृत।

पको(कौ)ड़ा, सं. पुं. (हिं. पकौड़ी) पक्व-पौडः।

पको(कौ)ड़ी, सं. स्त्री. (सं. पक्ववटी) पक्व-वटिका।

पक्का, वि. (सं. पक्व) सु-परि-,पक्व, परिणत, पक्वतामापन्न २. प्रौढ, सिद्ध, परि-सं,-पूर्ण ४. संस्कृत, संशोधित ४. पक्व, श्राण, श्रृत ५. अनुभविन्, बहुदर्शिन् ६. दक्ष, निपुण ७. दृढ, स्थिर ८.निश्चित, ध्रुव ९. प्रामाणिक, प्रमाणसिद्ध।

पक्व, वि. (सं.) दे. 'पक्का' (१, ३, ४)।

पक्वान्न, सं. पुं. (सं. न.) संस्कृत-सिद्ध-शृत,-अन्नम्।

पक्वाशय, सं. पुं. (सं.) नाभ्यधोभागः, लब्धं-त्रारंभिको भागः।

पक्ष, सं. पुं. (सं.) पार्श्वः-र्श्वं, पक्ष-पार्श्व,-भागः, कुक्षिः (पुं.) २. दे. 'पंख' ३. दलं, गणः, संघः ४. अर्द्धमासः, मासार्द्धं ५. सहायकः, सखि (पुं.) ६. गृहं ७. मतं, विचारः।

उत्तर—, सं. पुं. (सं.) सिद्धान्तः, कृतान्तः, समाधिः (पुं.)।

पूर्व—, सं. पुं. (सं.) शास्त्रीयप्रश्नः, सिद्धान्त-विरुद्धकोटिः (स्त्री.), चोद्यं, देश्यं, फक्किका।

पक्षक, सं. पुं. (सं.) गुप्त-चौर,-द्वारं-द्वार् (स्त्री.) २. पार्श्वः-र्श्वं, पक्षभागः ३. सहायः, सहायकः।

पक्षति, सं. स्त्री. (सं.) पक्ष-वाज,-मूलम्, शुक्ला प्रथमतिथिः (स्त्री.), प्रतिपदा, प्रतिपदी।

पक्षपात, सं. पुं. (सं.) पक्षपातिता, असम,-दृष्टिः-बुद्धिः (स्त्री.), असमता।

पक्षपाती, सं. पुं. (सं.-तिन्) पक्ष्यः, पक्षधरः, पक्षावलंबिन्, सपक्षः, पार्श्विकः।

पक्षांत, स. पुं. (सं.) अमावस्या २. पूर्णिमा।

पक्षाघात, सं. पुं. (सं.) पक्षवातः, जाड्यं, स्तंभः, सादः।

पक्षिणी, सं. स्त्री. (सं.) पत्रिणी, पतत्रिणी, गरुत्मती. वाजिनी, नीडजा, नीडोद्भवा।

पक्षी, सं. पुं. (सं. पक्षिन्) विहगः, विहंगः-गमः, खगः, शकुंतः-तिः (पुं.), शकुनः-निः (पुं.), द्विजः, पत्रिन्, पतत्रिन्, अंडजः, वाजिन्, वि. (पुं.), पतत्रिः (पुं.), गरुत्मत् (पुं.), पतगः, पतंगः-गमः २. पक्ष्यः, पक्षपातिन्।

पख, सं. पुं. (सं. पक्षः>) कलहः, विवादः २. दोषः, त्रुटिः (स्त्री.) ३. विघ्नः. प्रतिबंधः।

पखवारा-ड़ा, सं. पुं. (सं. पक्षः+वारः >) कृष्णः शुक्लो वा पक्षः२. अर्द्धमासः, मासार्द्धम्।

पखारना, क्रि. स. (सं. प्रक्षालनं) दे. 'धोना'।

पखावज़, सं. स्त्री. (सं. पक्षवाद्यं>) मृदंग-भेदः, *पक्षवाद्यम्।

पखेरू, सं. पुं. [सं. पक्षालुः (पुं.)] दे. 'पक्षी'।

पखौरा-ड़ा, सं. पुं. (सं. पक्षः>) अंसास्थि (न.), भुजस्कंधसंधिः (पुं.)।

पग, सं. पुं. (सं. पदकं) पादः, पदं, चरणः-णं २. पदं, क्रमः ३. पादन्यासः, चरणपातः।

—डंडी, सं. स्त्री., पद्या, चरणवीथिः (स्त्री.), पथिकमार्गः, एकपदी।

पगड़ी, सं. स्त्री. (सं. पटकः) उष्णीषः-षं, शिरोवेष्टनं, वेष्टनं, वेष्टकं, चेलाण्डकः।

—बाँधना, क्रि. सं., उष्णीषं परिधा (जु. उ. अ.) वंध् (क्र्. प. अ.)।

—उछालना, मु., लघू कृ, अप-अव-मन् (प्रे.)।

—उतारना, मु., दे. 'पगड़ी उछालना' २. लुंट्-ठ् (भ्वा. प. से.), धनं अपहृ (भ्वा. उ. अ.)।

—बदलना, मु., सौहार्दं स्था (प्रे. स्थापयति)।

पगना, क्रि. अ. (सं. पाक>) रसेन मधु-

क्वाथेन वा सिच् (कर्म.)-क्लिद् (दि. प. वे.), २. अनुरंज् (कर्म.), स्निह् (दि. प. से.)।

पगला, वि. पुं., दे. 'पागल' (पगली स्त्री.)।

पगहा, सं. पुं. (सं. प्रग्रहः) पशुग्रीवारज्जुः (स्त्री.), संदानम्।

पगुराना, क्रि. अ., दे. 'जुगाली करना'।

पघा, सं. पुं., दे. 'पगहा'।

पचना, क्रि. अ. (सं. पचनं) पच् (कर्म.), परिणम् (भ्वा. प. अ.), जॄ (दि. प. से.) २. छलेन स्वकीयं कृत्वा उप-विनि,-युज् (कर्म.)।

पचपच, सं. स्त्री. (अनु.) पचपचध्वनिः (पुं.), कर्दमसंचारशब्दः २. पंकः-कं, कर्दमः।

पचपन, वि. [सं. पंचपंचाशत् (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (५५) च।

पचपनवाँ, वि. (हिं. पचपन) पंचपंचाशत्तमः-मी-मं, पंचपंचाशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.)।

पचमेल, वि. (सं. पंचमेलः>) मिश्रित, व्या-सं,-मिश्र।

पंचरंगा, वि. (सं. पंचरंग) पंचवर्ण २. नाना-अनेक-बहु,-वर्ण-रंग।

पचलड़ा, सं. पुं. }
पचलड़ी, सं. स्त्री. } (सं. पंच+हिं.लड़)*पंच-सूत्रिका,*पंचतारो हारः।

पचहत्तर, वि. [सं. पंचसप्ततिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (७५) च।

पचहत्तरवाँ, वि. (हिं. पचहत्तर) पंचसप्तति-तमः-मी-मं, पंचसप्ततः-ती-तं (पुं. स्त्री. न.)।

पचाना, क्रि. स. (हिं. पचना) दे. 'पकाना' २. पच् (भ्वा. प. अ.), जॄ (प्रे.), परिणम् (प्रे.) ३. परद्रव्यं छलेन आत्मसात् कृ ४. अतिपरिश्रमेण शरीरं क्षि (प्रे. क्षाययति)।

पचाव, सं. पुं. (हिं. पचना) वि-परि-, पाकः, पक्तिः (स्त्री.), पचनं, परीणामः।

पचास, वि. [सं. पंचाशत् (नित्य स्त्री.)]। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (५०) च।

पचासवाँ, वि. (हिं. पचास) पंचाशत्तमः-मी-मं, पंचाशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.)।

पचासा, सं. पुं. (हिं. पचास) पंचाशिका।

पचासी, वि. [सं. पंचाशीतिः (नित्य स्त्री.)]। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (८५) च।

पचासीवाँ, वि. (हिं. पचासी) पंचाशीतितमः-मी-मं, पंचाशीतः-ती-तं (पुं. स्त्री. न.)।

पचीस, वि. [सं. पंचविंशतिः (नित्य स्त्री.)] उक्ता संख्या, तदंकौ (२५) च।

पचीसवाँ, वि. (हिं. पचीस) पंचविंशतितमः-मी-मं, पंचविंशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.)।

पचीसी, सं. स्त्री. (हिं. पचीस) पंचविंशतिका २. मानवायुपः प्रथम-पंचविंशतिवर्षाणि ३. कप-र्दकक्रीडाभेदः।

पचोतरा, सं. पुं. (सं. पंचोत्तरः>) पंचोत्तरा-ख्यः करः, विंशभागात्मकः पण्यकरः।

पच्चर, सं. स्त्री. (सं. अथवा अनु. पच्>) रंध्र-पूरकः-कं काष्ठखंडः-डं २. शंकुः (पुं.), कीलः।

—लगाना, क्रि.स., काष्ठखंडेन रन्ध्रं पूर् (चु.)।

—मारना, मु., मोघी-निष्फली कृ।

पच्चानवे, वि. [सं. पंचनवतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (९५) च।

पच्ची, सं. स्त्री. (सं. वा अनु. पच्>) समतल-तया निवेशः-प्रतिवापः-खचितिः (स्त्री.)।

—कारी, सं. स्त्री. (हिं.+फ़ा.) समतलतया निवेशनं-प्रतिवपनं-खचनं-प्रणिधानम्।

पच्छिम, सं. पुं., दे. 'पश्चिम'।

पच्छिमी, वि., दे. 'पश्चिमी'।

पछड़ना, क्रि. अ., दे. 'पिछड़ना'।

पछताना, क्रि. अ. (हिं. पछतावा) पश्चात्तापं कृ, अनुतप् (दि. आ. अ.), अनुशी (अ. आ. से.)।

पछतानेवाला, सं. पुं. अनुतापिन्, अनुश-यिन्, पश्चात्तापिन्।

पछतावा, सं. पुं. (सं. पश्चात्तापः) अनुशयः, अनुतापः, अनुशोकः, खेदः।

पछत्तर, वि., सं. पुं., दे. 'पचहत्तर'।

पछवाँ, वि. (सं. पश्चिम) पश्चिमः-मा-मं, प्रत्यङ्-तीची-त्यक्, प्रतीच्यः-च्या-च्यं,पाश्चात्यः-त्या-त्यम्। सं. स्त्री., पश्चिम-प्रतीच्य,-पवनः-वायुः।

पछाँह, सं. पुं. (सं. पश्चात्>) पश्चिमस्थो देशः, पश्चिमप्रदेशः।

पछाड़, सं. स्त्री. (हिं. पाछा), मूर्च्छावपातः, निःसंज्ञपतनम्।

—खाना, क्रि. अ., मूर्च्छया अवपत् (भ्वा. प. से.)।

पछाड़ना, क्रि. स. (हिं. पछाड़) अव-नि-पत् (प्रे.) २. (शत्रुं) पराजि (भ्वा. आ. अ.)।
पछाड़ी, सं. स्त्री. दे. 'पिछाड़ी'।
पजावा, सं. पुं. (फ़ा.) इष्टकापाकः।
पट¹, सं. पुं. (सं.) वस्त्रं, वसनं, सुचेलकं २. तिरस्करिणी, व्यवधानं, प्रतिसीरा ३. चित्रपटः ४. धातुमय,-पत्रं-पट्टः-पट्टिका।
—खोलना, क्रि. स., तिरस्करिणीं अपसृ-विचल् । (प्रे.)।
—मंडप—वास, सं. पुं. (सं.) दे. 'तंबू'।
पट², क्रि. वि. (चट का अनु.) झटिति, सपदि।
पट³ (अनु.) पतन-ताडन,-ध्वनिः (पुं.), पटिति।
पट⁴, सं. पुं. (देश.) ऊरुः (पुं.)। वि., अधोमुख, अधरोत्तर, अवमूर्द्धशय।
पट⁵, सं. पुं. (सं. पट्टः) कपा(वा)टः-टी-टं द्वारं, द्वार् (स्त्री.)।
—खोलना—बंद करना, क्रि. स., दे. 'द्वार'।
पटकना, क्रि. स. (अनु. पटक) उत्थाप्य भूमौ रभसा नि-अव-पत् (प्रे.) २. बाहुयुद्धे प्रतिद्वंद्विनं जि (भ्वा. प. अ.)।
पटकनी, सं. स्त्री. (हिं. पटकना) रभसा अधः-नि-अव,-पातः-पतनम्।
—देना, क्रि. स., दे. 'पटकना'।
पट(टु)का, सं. पुं. (सं. पट्टकः>) परिकरः, कटि,-बंधनी-वलयम्।
—बाँधना, मु., परिकरं बंध् (क्र्. प. अ.), उद्यत-सन्नद्ध (वि.) भू।
पटच्चर, सं. पुं. (सं.) चौरः, स्तेनः। न., जीर्णवस्त्रम्।
पटड़ा-रा, सं. पुं. (सं. पट्टः-ट्टं) काष्ठ-दारु,-फलकः-फलकं २. काष्ठ-दारु,-पीठम्।
—कर देना, मु., निर्बली-निःसत्त्वी कृ २. अव-उत्-सद् (प्रे.), उच्छिद् (रु. प. अ.)।
पटड़ी-री, सं. स्त्री. (हिं. पटड़ा-रा) पट्टकः-कं २. पट्टिका ३. पद्या, चरणवीथिः (स्त्री.), पाद-चरण-पथः।
पटना, सं. पुं. (सं. पट्टनं>) कुसुमपुरं, पुष्पपुरं, पाटलिपुत्रम्।
पटना, क्रि. अ. (हिं. पट = भूमि की सतह के बराबर) आ-समा-छाद् (कर्म.), आ-सं-वृ (कर्म.) २. व्याप्-आस्तृ (कर्म.) ३. पृ-प (कर्म.), आ-प्र-सं-पूर् (कर्म.) ४. सिच् (कर्म.) ५. संमन् (दि. आ. अ.), एकचित्ती भू ६. ऋणात् मुच् (कर्म.)।
पटपट, सं. स्त्री. (अनु.) पटपटाशब्दः, पटपट-ध्वनिः (पुं.)। क्रि. वि., सपटपटशब्दम्।
पटरानी, सं. स्त्री. (सं. पट्टराज्ञी) पट्ट,-देवी-महिषी, राज-, महिषी।
पटल, सं. पुं. (सं. न.) छदिस् (न.), छदिः (स्त्री.) २. आवरणं, आच्छादनं ३. तिरस्करिणी, व्यवधानं ४. आ-,स्तरः, फलकः-कं ५. दृष्टेरावरकं ६. समूहः, पटली ७. अध्यायः, परिच्छेदः ८. चयः, राशिः (पुं.) ९. परिच्छदः १०. तिलकः-कं ११. दे. 'मोतियाबिंद'।
पटवा, सं. पुं. (सं. पट्टं + हिं. वाहा) *पट्टवाहः, *पट्टहारः।
पटवाना, क्रि. प्रे., व. 'पटना' के प्रे. रूप।
पटवारगरी, सं. स्त्री. (हिं. पटवारी + फ़ा. गरी) ग्रामभूलेखकत्वं २. ग्रामभूलेखपदम्।
पटवारी, सं पुं. (सं. पट्ट + हिं. वार) *ग्रामभूलेखकः।
पटसन, सं. पुं. (सं. पाटः + शणं>) शणं, अतसी, मसृणी।
पटह, सं. पुं. (सं.) दुंदुभिः (पुं.), भेरी, पणवः।
पटहार, सं. पुं., दे. 'पटवा'।
पटा, सं. पुं. (सं. पट्टः-ट्टं) काष्ठ,-पट्टं-पीठं २. मिथ्याखड्गः ३. लगुडः, दंडः।
पटाई, सं. स्त्री. (हिं. पाटना) पटलेन आच्छादनम् २. पटलाच्छादनभृतिः (स्त्री.)।
पटाक, सं. स्त्री. (अनु.) तारध्वनिः (पुं.), महा-,शब्दः-नादः।
पटाका-खा, सं. पुं. (अनु. पटाक) अग्निक्रीडनकभेदः, *पटाकः।
पटाक्षेप, सं. पुं. (सं.) यवनिका-जवनिका-पट-अपटी,-निपातः-अवपातः।
पटाना, क्रि. स., व. 'पाटना' के प्रे. रूप।
पटापट, क्रि. वि. (अनु. पट) सपटपटशब्दम्। सं. स्त्री., पटपटाशब्दः।
पटु, वि. (सं.) कुशल, दक्ष, निपुण, प्रवीण, निष्णात, विशारद, विदग्ध।
पटुता, सं. स्त्री. (सं.) कौशलं-ल्यं, दक्षता,

नैपुण्यं-णं, प्रावीण्यं, वैचक्षण्यं, पटुत्वं, वैदग्ध्यम् ।

पटेबाज़, सं. पुं. (हि.+फ़ा.) खड्गाभ्यासिन्, मिथ्यासियोधः ।

पटेल, सं. पुं. (हिं. पट्टा) ग्रामणीः (पुं.), ग्रामाध्यक्षः २. दक्षिणभारतवर्षे उपाधिभेदः ।

पटोर-ल, सं. पुं. (सं. पटोलः) लता-राज-अमृत(ता)-कटु-नाग,-फलः, कुष्ठारिः (पुं.), कासमर्दनः ।

पट्ट, सं. पुं. (सं. पुं. न.) पीठं-ठी, उप-,आसनं २. पट्टिका ३. धातुमय,-पत्रं-पट्टिका ४. चर्मन् (न.) फलकः-कं ५. पेषणपाषाणः, शिला ६. उष्णीषः-षं ७. व्रण-, बन्धनं-आवेष्टनं ८. उत्तरीयं ९. नगरं १०. चतुष्पथः-थं, शृंगाटकं ११. राज-, सिंहासनं १२. कौशेयं १३. शणं १४. दे. 'पट्टा' ।

पट्टन, सं. पुं. (सं. न.) पत्तनं, पुरं, नगरं २. महानगरम् ।

पट्टा, सं. पुं. (सं. पट्टः) पट्टोलिका, आविहितकालात् भूम्यधिकारपत्रं २. (कुक्कुरादीनां) ग्रैवं, ग्रीवापटः ३. केश,-पाशः-कलापः ४. पीठं ५. चर्ममय,-कटिबंधनो-परिकरः ६. दे. 'चपरास' ७. खड्गभेदः ८. अधिकारपत्रम् ।

पट्टे पर दाने, क्रि. स., आविहितभयात् निरूपितमूल्येन दा अथवा विसृज् (तु. प. अ.) ।

पट्टी[1], सं. स्त्री. (सं. पट्टिका) काष्ठ-,पट्टिका २. पाठः, प्रपाठकः, ३. शिक्षा, उपदेशः ४. वंचनात्मकोपदेशः, ५. (वस्त्रादिकस्य) दीर्घ,-खंडः-शकलं ६. व्रण,-बंधनं-आवेष्टनं ७. *जंघावेष्टनी ८. और्णपटभेदः, पट्टी ९. पंक्तिः-ततिः (स्त्री.) १०. प्रसाधिताः केशाः ११. रिक्थभागः १२. खट्वायाः पार्श्व,-काष्ठं-दंडः १३. मिष्टान्नभेदः ।

—बाँधना, क्रि. स., पट्टिकां बंध् (क्र्. प. अ.) व्रणं आच्छद् (चु.) ।

—दार, सं. पुं. (हिं+फ़ा.) अंशिन्, भागग्राहिन् ।

—दारी, सं. स्त्री. (हिं+फ़ा.) अंशित्वं, भागग्राहित्वम् ।

पट्टी[2], सं.स्त्री. (सं.) अश्ववक्षोबंधनरज्जुः (स्त्री.), कक्ष्या, नद-ध्री २. ललाटभूषा ३. यन्त्रकम् ।

पट्टू, सं. पुं. (हिं. पट्टी) और्णपटभेदः, नीशारः ।

पट्ठा, सं. पुं. (सं. पुष्टः) तरुणः, युवकः, युवन्, कुमारकः २. शावः, पोतः, डिंभः ३. मल्लः, बाहुयोधः-धिन् ४. दीर्घस्थूलपत्रं ५. स्नसा, स्नायुः (स्त्री.), पेशी ।

पठक, सं. पुं. (सं.) पाठकः, वाचकः ।

पठन, सं. पुं. (सं. न.) अध्ययनं, पाठः, अधीतिः (स्त्री.), वाचनं २. श्रावणं, उच्चारणम् ।

—पाठन, सं. पुं. (सं. न.) अध्ययनाध्यापनं-ने (द्वि.) ।

पठनीय, वि. (सं.) पठितव्य, अध्येतव्य, पाठ्य, वाचनीय, पठन-अध्ययन,-अर्ह ।

पठान, सं. पुं. (पश्तो. पुख्ताना) यवनजातिभेदः, *पख्तूनः *पठानः ।

पठानी, सं. स्त्री. (हिं. पठान) पख्तूनी, पठानी २. पठानत्वं, पख्तूनत्वम् ।

पठार, सं. पुं. (सं. प्रस्तारः>) अधित्यका, २. प्रस्तारः ।

पठावनी, सं. स्त्री. (सं. प्रस्थापनम्) प्रेषणं, प्रहितिः (स्त्री.) २. प्रस्थापनभृतिः । (स्त्री.) ।

पठित, (वि. सं.) अधीत, वाचित २. श्रावित ३. साक्षर, विद्यावत्, विद्वस् ।

पड़छती (-त्ती), सं. स्त्री. दे. 'परछत्ती' ।

पड़ताल, सं. स्त्री. (सं. परितोलनं>) अनुसंधानं, अन्वेषणं २. अन्वीक्षणं, विमर्शः, निरूपणम् ।

—करना, क्रि. स., अनुसंधा (जु. उ. अ.), अन्विष् (दि. प. से.) २. विमृश् (तु. प. अ.), निरूप् (चु.), अनु-परि-ईक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।

पड़तालना, क्रि. स., दे. 'पड़ताल करना' ।

पड़ती, सं. स्त्री. (हिं. पड़ना) अकृष्ट-अहल्य,-भूमिः (स्त्री.) ।

पड़दादा, सं. पुं. (सं. प्र+तातः>) प्रपितामहः ।

पड़दादी, सं. स्त्री. (हिं. पड़दादा) प्रपितामही ।

पड़ना, क्रि. अ. (सं. पतनं) अव-नि-, पत् (भ्वा. प. से.), भ्रंश्-स्रंस् (भ्वा. आ. से.), च्यु (भ्वा. आ. अ.) २. घट्-वृत् (भ्वा. आ. से.); आ-सं-पत्, प्रसंज् (कर्म.) संवृत्, सं-

समा-पद् (दि. आ. अ.) ३. संविश् (तु. प. अ.), विश्रम् (दि. प. से.); शी (अ. आ. से.), स्वप् (अ. प. अ.) ४. रुग्ण (वि.) वृत, रोगेण अभिभू (कर्म.) ५. प्रविश् (तु. प. अ.)।

क्या पड़ी है, मु., कोऽर्थः, किं प्रयोजनम् ।

पड़नाना, सं. पुं. (सं.प्र+दे. नाना) प्रमातामहः ।

पड़नानी, सं. स्त्री. (हिं. पड़नाना) प्रमातामही ।

पड़ (र)वा, सं. स्त्री., दे. 'प्रतिपदा' ।

पड़वाल, सं. पुं., दे. 'परवाल' ।

पड़ाव, सं. पुं. (हिं. पड़ना) प्रयाणभंगः, निवेशः, अवस्थितिः (स्त्री.) २. निवेश-विश्राम,-स्थानम् ।

पड़ोस, सं. पुं. (सं. प्रतिवासः या प्रतिवेशः) निकट-समीप-संनिहित,-देशः; संनिधिः (पुं.), २. सांनिध्यं, प्रातिवेश्यम् ।

पड़ोसी, सं. पुं. (हिं. पड़ोस) प्रतिवेशः श्यः-शिन्, प्रतिवासिन्, प्रातिवेशिकः, [पड़ोसिन (स्त्री.)=प्रति,-वेशिनी-वासिनी इ.] ।

पढ़ना, क्रि. स. (सं. पठनं) पठ् (भ्वा. प. से.), अधि-इ (अ. आ. अ.), (अपने आप पढ़ना) अनुवच् (प्रे.) २. वच् (प्रे.), उच्चर् (प्रे.) २. अभ्यस् (दि. प. से.), आवृत् (प्रे.)। सं. पुं. तथा भाव, पाठः, पठनं, अध्ययनं, वाचनं, उच्चारणं, अभ्यसनं, अभ्यासः, आवर्तनं, श्रावणम् ।

—लिखना, सं. पुं., पाठलेखौ-पठनलेखने, विद्याभ्यासः, शिक्षा ।

पढ़नेयोग्य, वि., दे. 'पठनीय' ।

पढ़नेवाला, सं. पुं., अध्येतृ-पठितृ (पुं.) वाचकः, पाठकः, अधीयानः [अध्येत्री, पठित्री, पाठिका (स्त्री.)] ।

पढ़ा हुआ, वि., दे. 'पठित' ।

पढ़वाना, क्रि. प्रे., व. 'पढ़ना' के प्रे. रूप ।

पढ़ा, वि. (सं. पठित, दे.) ।

—लिखा, वि., विद्वस्, उपात्तविद्य, साक्षर, शिक्षित, व्युत्पन्न ।

पढ़ाई, सं. स्त्री. (हिं. पढ़ना). दे. 'पढ़ना' सं. पुं. । २. अध्यापनं, पाठनं, शिक्षणं ३. अध्यापन,-शैली-रीतिः (स्त्री.) ४. अध्ययन-अध्यापन,-शुल्कं-वेतनम् ।

पढ़ाना, क्रि. स. (हिं. पढ़ना) पठ्-शिक्ष् (प्रे.), अधि-इ (प्रे. अध्यापयति), शास् (अ. प. से.), उपदिश् (तु. प. अ.)। सं. पुं. तथा भाव, अध्यापनं, उपदेशः, शिक्षा-क्षणं, पाठनम् ।

पढ़ानेवाला, सं. पुं, अध्यापकः, शिक्षकः, गुरुः, उपदेष्टृ-शास्तृ (पुं.) ।

पण, सं. पुं. (सं.) द्यूतं, देवनं, दुरोदरं, कैतवं २. ग्लहः (शर्त) ३. मूल्यं, निर्वेशः ४. शुल्कः-ल्कं, प्रतिफलं ५. धनं, रिक्थं ६. पणितव्यं, विक्रेयवस्तु (न.) ७. व्यवसायः, व्यवहारः ८. स्तुतिः (स्त्री.) ९. मुष्टिमानं १०. (पैसा) ताम्रमुद्राभेदः, पणमुद्रा ।

पतंग, सं. पुं. (सं.>) पत्रचिल्लः-ला, चिल्लाभासं, *पतंगः २. सूर्यः ३. खगः ४. शलभः ।

—उड़ाना, क्रि. स., पत्रचिल्लं-पतंगं उड्डी (प्रे. उड्डाययति) ।

—बाज़, सं. पुं., पतंगोड्डायकः ।

—बाज़ी, सं. स्त्री., पतंगक्रीडा ।

पतंगा, सं. पुं. (सं. पतंगः) शलभः २. स्फुलिंगः, अग्निकणः ।

पतंजलि, सं. पुं. (सं.) योगदर्शनकारऋषिविशेषः २. महाभाष्यकारो मुनिविशेषः ।

पत[1], सं. पुं. (सं. पतिः) भर्तृ, धवः २. प्रभुः, स्वामिन् ।

पत[2], सं. स्त्री. (सं. प्रत्ययः>) प्रतिष्ठा, गौरवं, मानः, यशस् (न.), कीर्तिः (स्त्री.) ।

—उतारना या लेना, मु., अप-अव-मन् (प्रे.), दुष् (प्रे. दूषयति) ।

—रखना, क्रि. स., गौरवं रक्ष् (भ्वा. प. से.) ।

पतझड़, सं. स्त्री. (सं. पत्रं+हिं. झड़ना) शिशिरः, शिशिरर्तुः (पुं.) (माघफाल्गुनमासौ) २. अवनतिकालः, संकटमयः समयः ।

पतत्प्रकर्ष, सं. पुं. (सं.) काव्यदोषभेदः (सा०) ।

पतत्र, सं. पुं. (सं. न.) पक्षः, वाजः, छदः २. यानं, वाहनं, युग्यं, वाहः ।

पतत्रि, सं. पुं. (सं.) पक्षिन्, पत्रिन्, पतत्रिन्, खगः, विहगः ।

पतन, सं. पुं. (सं. न.) अव-नि-अधः-, पातः,

च्यवनं, च्युतिः (स्त्री.), ध्वंसः, भ्रंशः, २. अपकर्षः, अवनतिः (स्त्री.) ३. विनाशः, मृत्युः (पुं.) ४. बहिष्कारः, अपांक्तेयत्वम् ।

—शील, वि. (सं.) पातुक, पतयालु ।

पतला, वि. (सं. पात्रट) प्र-तनु, सूक्ष्म, २. कृश, क्षाम, क्षीण ३. जलबहुल, प्रवाहिन् ४. विरल, घनत्वरहित ।

—करना, क्रि. स., वि-, द्रु-ली (प्रे.), विरलयति (ना. धा.), तनू कृ, तक्ष् (भ्वा. प. से; भ्वा. प. वे.); कृशी कृ ।

—होना, क्रि. अ., क्षि-अपचि (कर्म.), तनूविरली भू; कृशी भू ; द्रवी भू, विली (कर्म.) ।

पतलापन, सं. पुं. (हिं. पतला) तनुता, तनुत्वं, सूक्ष्मत्वं २. कार्श्यं, क्षीणता ३. जलबहुलत्वं ४. वैरल्यम् ।

पतलून, सं. स्त्री. (अं. पैंटलून) *पतलूनं, आंग्लपादायामः ।

पतवार-ल, सं. स्त्री. (सं. पात्रपालः) कर्णः, केनिपातः-तकः ।

पता, सं. पुं. (सं. प्रत्ययः>) (पत्रादि का) बाह्यनामन् (न.), पत्रसंज्ञा २. (घरादि का) नामधामसंकेतः, गृहपरिचयः, निकेतसंकेतः ३. बोधः, ज्ञानं ४. रहस्यं, गुह्यं ५. चिह्नं, लक्षणम् ।

पताका, सं. स्त्री. (सं.) वै-,जयंती-तिका, ध्वजः, केतनं, केतुः (पुं.) कदली-लिका ।

पति, सं. पुं. (सं.) धवः, हृदय-जीवित,-ईशः, प्राणनाथः, वरः, परिणेतृ-भर्तृ-पाणिग्रहितृ (पुं.), प्रियः, कांतः, स्वामिन्, गृहिन्, रमणः । २. प्रभुः (पुं.), अधिपतिः (पुं.) ।

—व्रत, सं. पुं. (सं. न.) पति-भक्तिः (स्त्री.)-निष्ठा, पातिव्रत्यम् ।

—व्रता, वि. स्त्री.(सं.) साध्वी, सच्चरित्रा, सती ।

पतित, वि. (सं.) गलित, अव-नि-अधः,-पतित, च्युत, ध्वस्त, स्रस्त २. धर्म-आचार,-भ्रष्ट ३. पापिन्, पातकिन् ४. जातेः-समाजात् च्युत-बहिष्कृत ५. अधम, नीच ।

—पावन, वि. (सं.) पाप-पतित,-पावक-शोधक-उद्धारक, अघनाशक, पापमोचक ।

पतीला, सं. पुं. (हिं. पतीली) स्थाली, दे. 'देगचा' ।

पतीली, सं. स्त्री. (सं. पातिलि>) उखा, दे. 'देगची' ।

पते की बात, सं. स्त्री., गुह्यवार्ता, गुप्तवृत्तम् ।

पतोखा, सं. पुं. (हिं. पत्ता) दे. 'दोना' ।

पतोहू, सं. स्त्री., दे. 'पुत्रवधू' ।

पत्तन, सं. पुं. (सं.) पुरं, नगरं; महती पुरी ।

पत्तल, सं. स्त्री, (सं. पत्रं>)पत्रं, *पत्रस्थालोलिका २. पत्रस्थं भोजनम् ।

जिस पत्तल में खाना उसी पत्तल में छेद करना, मु., उपकारकमेव दु (स्वा. प. अ)-बाध् (भ्वा. आ. से.), उपकारकस्यैवापकारः ।

पत्ता, सं. पुं. (सं. पत्रं) दे. 'पत्रं' २. क्रीडापत्रम् ।

पत्ती, सं. स्त्री. (हिं. पत्ता) पत्रकं, पर्णकं २. अंशः, भागः ३. पुष्पदलम् ।

—दार, सं. पुं. (हिं+फ़ा.) अंश-भाग,-ग्राहिन्-हारिन्, हरः २. पत्रमय ।

पत्थर, सं. पुं. (सं. प्रस्तरः) शिला, अश्मन्-ग्रावन् (पुं.), पाषाणः, उपलः, दृश(ष)द् (स्त्री.), मृन्मरुः (पुं.), काचकः, पारटीटः २. वर्षशिला, इन्द्रोपलः ३. रत्नं ४. न किंचिदपि । वि., क्रूर, निर्दय २. गुरु, भारवत् ३. कीकस, दृढ़ ।

—चटा, सं. पुं., (१-३) घास-सर्प-मीन,-भेदः ४. कृपणः, मितंपचः ।

—फोड़, सं. पुं. दे. 'हुदहुद' ।

—की लकीर, मु., अक्षय्य, अक्षर, नित्य, शाश्वत, निश्चित ।

छाती पर—रखना, मु., प्रतीकाराक्षमतया सह् (भ्वा. आ. से.), निरुपायतया मृष् (दि. उ. से.) ।

—पड़ना, मु., नश् (दि. प. वे.) ध्वंस् (भ्वा. आ. से.) ।

—पसीजना, मु. मृदू-दयार्द्रीभू ।

—होना, मु., निश्चल (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.) २. निर्दय-निर्घृण (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।

पत्नी, सं. स्त्री. (सं.) जाया, भार्या, दाराः (नित्य पुं. बहु.) स-सह,-धर्मिणी, गृहिणी, अर्द्धांगिनी, सहचरी, जनी, वधूः (स्त्री.), परिग्रहः, क्षेत्रं, कलत्रं, ऊढा ।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) पत्नी,-कोष्ठः-गृहम् ।

पत्र, सं. पुं. (सं. न.) पर्णं, छदनं, पलाशं, दलः-लं, छदः २. (पुस्तकादीनां) पत्रं, पर्णं, पृष्ठं ३. समाचार-वृत्त,-पत्रं ४. संदेश-, पत्रं, लेखः-ख्यं ५. लेखपत्रं ६. (धात्वादेः पट्टः-ट्टं, फलकः-कम्) ।

—कार, सं. पुं. (सं.) वृत्तपत्र-लेखकः-संपादकः ।

—वाहक, सं. पुं. (सं.) लेखहारः, संदेशहरः ।

—व्यवहार, सं. पुं. (सं.) पत्रविनिमयः, लेखव्यवहारः ।

पत्रांजन, सं. पुं. (सं. न.) मशी-पी-सी, मशिः, षिः-सिः (सब (स्त्री.) ।

पत्रा, सं. पुं. (सं. पत्रं>) पंचांगं, पंजिका २. पृष्ठं, पर्णं, पत्रम् ।

पत्राचार, सं. पुं. (सं.), पत्र,-व्यवहारः-विनिमयः ।

पत्रावलि, सं. स्त्री. (सं.) पर्ण-दल-छद-श्रेणी-राजी-आवली २. पत्रभंगः ।

पत्रिका, सं. स्त्री. (सं.) संदेश-,पत्रं २. सामयिक,-पुस्तकं-ग्रंथः ३, समाचार-वृत्त,-पत्रं ४. लघुलेखः ।

पत्री, सं. स्त्री. (सं.) लिपिपत्रिका, लघुलेखः २. संदेश-,पत्रम् ।

जन्म—, सं. स्त्री. (सं.) जन्मपत्रिका ।

पथ, सं. पुं. (सं.) पथिन् (पुं.), मार्गः, अध्वन् (पुं.), वर्त्मन् (न.), पदवी-विः (स्त्री.), २. रीतिः (स्त्री.), विपानम् ।

—गामी, सं. पुं., दे. 'पथिक' ।

—(प्र)दर्शक, सं. पुं. (सं.) मार्ग,-दर्शक-उपदेशकः, नेतृ, नायकः ।

पथरी, सं. स्त्री. (हिं. पत्थर) प्रस्तर-कटोरा-रिका २. अश्मरी, अश्मरीः-रं ३. अष्ठीलाः (स्त्री. बहु.), पाषाणशकलाः (पुं. बहु.) ४. दे. 'चकमक' ५. पक्षिजठरः-रं ६. झामरः, शाणी ।

पथरीला, वि. (हिं. पत्थर) प्रस्तर-उपल, संकुल-आकीर्ण-बहुल ।

पथिक, सं. पुं. (सं.) अध्वगः, अध्वनीनः, अध्वन्यः, पान्थः, पथिलः, यात्रि(तृ)कः, यातुः-गंतुः (पुं.), पथकः ।

पथ्य, सं. पुं. (सं. न.) उपयुक्ताहारः । २. मंगलम् । वि., स्वास्थ्यकर, आरोग्यावह ।

पद, सं. पुं. (सं. न.) पादः, चरणः, अंघ्रिः (पुं.) २. पाद-पद,,चिह्न-मुद्रा ३. पदं, पद-पाद,-न्यासः-विक्षेपः, विं-,क्रमः, ४. स्थानं, स्थितिः (स्त्री.), पदवी ५. वृत्तिः (स्त्री.), व्यवसायः ५. पद्यं, छन्दस् (न.) ६. पद्यपादः, छंदश्चरणः ७. उपाधिः (पुं.), मानपदं ८. सुप्तिङन्तं प्रातिपदिकं, सविभक्तिकः शब्दः (व्या.) ९. भक्तिगीतिः (स्त्री.) १०. निःश्रेयसं, मुक्तिः (स्त्री.) ।

—चर, सं. पुं. (सं.) पदगः, पदातिकः-तिः (पुं.) ।

—च्छेद, सं. पुं. (सं.) संधिसमासयुक्तवाक्यस्य पदानां विभागः (व्या.) ।

—च्युत, वि. (सं.) भ्रष्टाधिकार, अधिकारच्युत ।

—दलित, वि. (सं.) पाद-पद,-आक्रांत-मर्दित २. अपकर्षित, अवपीडित ।

पदक, सं. पुं. (सं. न.) कीर्ति-प्रतिष्ठा-, मुद्रा ।

पदवी, सं. स्त्री. (सं.) पदं, वृत्तिः-स्थितिः, (स्त्री.) स्थाणं २. उपाधिः (पुं.), उप-मान-, पदं, कीर्तिचिह्न ३. मार्गः ४. रीतिः (स्त्री.) ।

पदाति, सं. पुं. (सं.) प(पा)दातिकः, पदिकः, पत्तिः (पुं.) प(पा)दगः, प(पा)दाद् (पुं.), पादातः ।

पदाना, क्रि. स., ब. 'पादना' के प्रे. रूप ।

पदार्थ, सं. पुं. (सं.) मूर्त्त-, द्रव्यं, वस्तु (न.), अर्थः २. शब्दार्थः ३. धर्मार्थकाममोक्षाः ४. द्रव्यगुणकर्मादयः प्रमेयविषयाः (दर्शन.) ।

—विज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) विज्ञानं, भौतिक-शास्त्रम् ।

पदार्पण, सं. पुं. (सं. न.) चरणार्पणं, पादन्यसनं, शुभागमनम् ।

पदावली, सं. स्त्री. (सं.) शब्दश्रेणी २. गीत-संग्रहः ।

पद्धति, सं. स्त्री. (सं.) मार्गः, पथः, पथिन् २. पंक्तिः-ततिः (स्त्री.) ३. रीतिः (स्त्री.), परिपाटी-टिः (स्त्री.) ४. प्रकारः, विधा ५. संस्कारविधिदर्शको ग्रन्थः ।

पद्धरि-री, सं. स्त्री. (सं. पद्धटिका) मात्रिकसमभेदः (सा०) प्रतिचरण १६ मात्रा, अन्त में जगण, उ० नभ रैनि सघन तममय विलास । पद अटकत कंटक दंभजाल ।]

पद्म, सं. पुं. (सं. न.) सरोजं, पुंडरीकं, दे.

'कमल' २. विष्णोरायुधविशेषः ३. षोडशस्थानिनी संख्या (ग., १०००००००००००००००)।

—कंद, सं. पुं. (सं. पुं. न.) शालु(लू)कं, जलालुकं, पद्ममूलम् ।

—नाभ-भिः, सं. पुं. (सं.) दे. 'विष्णु' ।

—पाणि, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मन् (पुं.) २. सूर्यः ३. बुद्धः ।

—योनि, सं. पुं. (सं.) दे. 'ब्रह्मा' ।

—राग, सं. पुं. (सं.) लोहितकः, लोहितं, शोणरत्नं, कुरुविंदकम् ।

पद्मा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'लक्ष्मी' ।

पद्माकर, सं. पुं. (सं.) तटा(डा)कः, सरोवरः, सरसी, सरस् (न.), सरकम् ।

पद्माक्ष, सं. स्त्री. (सं.) विष्णुः २. सूर्यः ३. पद्मबीजम् । वि. (सं.) कंजाक्ष, कमलनयन, कमलनेत्र ।

पद्मालया, सं. स्त्री. (सं.) कमला, पद्मा, श्रीः, इन्दिरा, रमा ।

पद्मासन, सं. पुं. (सं. न.) योगासनविशेषः । २. (सं. पुं.) दे. 'ब्रह्मा' ।

पद्मिनी, सं. स्त्री. (सं.) कमलिनी, नलिनी, बिसिनी २. दे. 'पद्माकर' ३. स्त्रीभेदविशेषः, (जो कोमलांगी, सुशीला, सुन्दरी तथा पतिव्रता हो) ४. हस्तिनी ५. दे. 'लक्ष्मी' ।

—वल्लभ, सं. पुं. (सं.) सूर्यः ।

पद्य, सं. पुं. (सं. न.) छंदस् (न.), श्लोकः २. काव्यं, कविता ।

—मय, वि. (सं.) पद्य-, रूप-आत्मक, छन्दोबद्ध ।

पधारना, सं. पुं. (हिं. पग+धरना) गमनं, प्रस्थानं २. उप-, आगमनं, प्रापणम् ।

पन[1], सं. पुं. (सं. पणः) प्रतिज्ञा, दृढसंकल्पः ।

पन[2], सं. पुं. [सं. पर्वन् (न.)>] आयुषो चतुर्थभागः ।

पन[3], प्रत्यय. (हिं.)-त्वं,-ता (उ. बालपनः बालत्वं-ता ।

पनघट, सं. पुं. (हिं. पानी+घाट) घट्टः-ट्टी ।

पनचक्की, सं. स्त्री. (हिं. पानी+चक्की) जल,-चक्री-पेषणी-यंत्रम् ।

पनडुब्बा, सं. पुं. (हिं. पानी+डूबना) निमंक्तृ (पुं.), अवगाहकः २. खगभेदः ३. जलकुक्कुटः ।

पनडुब्बी, सं. स्त्री. (पूर्व.) *जलमग्ना (नौका) ।

पनपना, क्रि. अ. (सं. पर्ण) पुनः पल्लवित-हरित (वि.) भू २. पुनः स्वास्थ्यं लभ् (भ्वा. आ. अ.) अथवा पुष् (दि. प. अ.) ।

पनपाना, क्रि. स., व. 'पनपना' के प्रे. रूप ।

पनवाड़ी, सं. स्त्री. (हिं. पान+वाड़ी) *पर्णवाटी-टिका, तांबूलीवाटिका ।

पनवाड़ी, सं. पुं. (हिं. पान) दे. 'तमोली' ।

पनस, सं. पुं. (सं.) (वृक्ष) कंट-कंटकि,-फलः, स्थूलः, मृदंगफलः, (फल) पनसं, दे. 'कटहल' ।

पनसारी, सं. पुं., दे. 'पंसारी' ।

पनसाल, सं. स्त्री. (सं. पानीय-शाला) प्रपा, दे. 'सबील' ।

पनहा, सं. पुं. (सं. परिणाहः) दे. 'चौड़ाई' २. गूढाशयः, मर्मन् (न.) ।

पनहारा, सं. पुं. (सं.पानीयहारः) जल,-वाहकः-वोढृ (पुं.) ।

पनहारिन-री, सं. स्त्री. (हिं. पनहारा) जलः-वाहिका-वोढ्री ।

पनाती, सं. पुं. [सं. प्रनप्तृ (पुं.)] प्रपौत्रः २. प्रदौहित्रः ।

पनारा-ला, सं. पुं., दे. 'परनाला' ।

पनाह, सं. स्त्री. (फ़ा.) परि-, त्राणं, रक्षा २. रक्षास्थानं, आश्रयः ।

पनीर, सं. पुं. (फ़ा.) कूर्चिका २. निर्जलं दधि (न.) ।

पनीरी, सं. स्त्री. (सं. पर्ण>) पर्णबीजानि (न. बहु.) ।

पन्नग, सं. पुं. (सं.) दे. 'साँप' ।

पन्ना, सं. पुं. (सं. पर्ण>) पुस्तक,-पत्रं-पृष्ठं २. धातुपट्टः-ट्टं ३. मरकतं, हरिन्मणिः (पुं.), अश्मगर्भजं, सौपर्णं ४. देशीयोपानह उपरिभागम् ।

पन्नी, सं. स्त्री. (हिं. पन्ना) त्रपु-पित्तल,-पत्रम् ।

पपड़ा, सं. पुं. (सं. पर्पटः>) शुष्ककाष्ठत्वक्-खंडः २. रोटिकाया बाह्यभागः ।

पपड़ी, सं. स्त्री. (हिं. पपड़ा) बाह्य,-पटलं-वेष्टनं, वल्कं, शुष्कत्वम् (स्त्री.) २. दे. 'खुरंड' ३. पर्पटकः ४. वल्कलः-लम् ।

पपनी, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'बरौनी' ।

पपीहा, सं. पुं. (देश.) चातकः, मेघजीवनः, सारंगः, स्तोककः ।

पपीता, सं. पुं. (देश.) स्थूलैरण्डः, महापञ्चाङ्गुलः २. पीपीकरः, क्रीडनकभेदः ।

पपीहा, सं. पुं. (अनु.) दे. 'चातक' ।

पपैया, सं. पुं. (अनु.) चातकः २. पीपीकरः, क्रीडनकभेदः ३. आम्रवृक्षकः ।

पपोटा, सं. पुं. (सं. प्रपटः>) दे. 'पलक' ।

पब्लिक, सं. स्त्री. (अं.) लोकाः, जनता, जनाः । वि., सार्व,-जनिक-जनीन-लौकिक ।

—प्रासिक्यूटर, सं. पुं. (अं.) राजकीयप्राभियोक्तृ ।

—वर्क्स डिपार्टमेंट, सं. पुं. (अं.) लोकनिर्माणविभागः ।

पब्लिशर, सं. पुं. (अं.) पुस्तक-ग्रंथ-,प्रकाशकः । दे. 'प्रकाशक' ।

पय, सं. पुं. [सं. पयस् (न.)] दुग्धं, क्षीरं २. जलं. ३. अन्नम् ।

पयस्विनी, सं. स्त्री. (सं.) क्षीरिणी, दोग्ध्री, दुग्धदा, दुधा ।

पयाल, सं. पुं. (सं. पलालः-लं) निष्फलकांडः, निश्शस्यो धान्यनालः ।

पयोज, सं. पुं. (सं. न.) सरोजं, पद्मं, दे. 'कमल' ।

पयोद, सं. पुं. (सं.) मेघः, दे. 'बादल' ।

पयोधर, सं. पुं. (सं.) कुचः, स्त्रीस्तनः २. ऊधस् (न.), आपीनं ३. मेघः ।

पयोधि, पयोनिधि, } सं. पुं. (सं.) सागरः, समुद्रः ।

परंच, अव्य. (सं. परं+च) अपरं च, अपि च, अथ च २. तथापि, किंतु, परंतु ।

परंतप, वि. (सं.) अरिमद्दर्दन, रिपुसूदन ।

परंतु, अव्य. (सं. परं+तु) किन्तु, परं, तथापि ।

परंपरा, सं. स्त्री. (सं.) अनु-,क्रमः, आनुपूर्वी-र्व्यं, पूर्वापरक्रमः २. संतानः, संततिः (स्त्री.) ३. परिपाटी-टिः (स्त्री.), प्रथा ।

—गत, वि. (सं.) परंपरीण, सांप्रदायिक-पौराणिक [-की (स्त्री.)], क्रम,-आगत-प्राप्त ।

पर[१], वि. (सं.) अपर, अन्य, इतर, स्वातिरिक्त, आत्मभिन्न २. परकीय, अन्यदीय, अन्य-, पर- (समासारंभ में), अन्यस्य, परस्य ३. दूर, दूर,-स्थ-वर्तिन्, विप्रकृष्ट ४. अपर, उत्तर, उत्तरकालीन, पाश्चात्य ५. अतिरिक्त, भिन्न ६. उत्तम, श्रेष्ठ ७. लीन,-मग्न,-परायण । (उ. स्वार्थपर=स्वार्थमग्न) । सं. पुं. (सं.) शत्रुः-अरिः (पुं.) ।

पर[२], अव्य. (सं. परं) तदनु, ततः, तत्पश्चात् २. परंतु, किंतु, तथापि ।

पर[३], प्रत्य. (सं. उपरि) प्रायः सप्तमी विभक्ति से (उ. कुर्सी पर=आसंद्याम्), अधि, उपरिष्टात् ।

पर[४], सं. पुं. (फ़ा.) पक्षः, गरुत् (पुं.) वाजः ।

—दार, वि., सपक्ष, वाजिन्, पक्षिन्, गरुत्मत् ।

—कट जाना, मु., अशक्त-असमर्थ (वि.) भू ।

—न मारना, मु., गंतुं न शक् (स्वा. प. अ.) ।

—निकलना, मु., दृप् (दि. प. अ.), गर्व् (भ्वा. प. से.), प्रगल्भ् (भ्वा. आ. से.) ।

परकार, सं. पुं. (फ़ा.) ।

परकीय, वि. (सं.) दे. 'पर'[१](२) ।

परकीया, सं. स्त्री. (सं.) नायिकाभेदः, परपुरुषानुरागिणी ।

परकोटा, सं. पुं. (सं. परिकूटं>) प्राकारः, वप्रः-प्रं, तालः, वरणः ।

परख, सं. स्त्री. (सं. परीक्षा) विमर्शः, सूक्ष्म,-निरूपणं-परीक्षणं-दर्शनं २. विवेकः, विचारणा, परिच्छेदः ।

परखना, क्रि. स. (सं. परीक्षणं) परीक्ष् (भ्वा. आ. से.) विमृश् (तु. प. अ.) २. विविच् (रु. उ. अ.), विज्-विच् (जु. उ. अ.), परिच्छिद् (रु. प. अ.) । सं. पुं., दे. 'परख' ।

परखनेवाला, सं. पुं., दे. 'परीक्षक' ।

परखा हुआ, वि., दे. 'परीक्षित' ।

परगना, सं. पुं. (फ़ा.) उपमंडलविभागः, ग्रामसमूहः, *परिगणः ।

परगहनी, सं. स्त्री. (सं. प्रग्रहणं >) सुवर्णकाराणां नालाकार उपकरणभेदः, *प्रग्रहणी ।

परचना, क्रि. अ. (सं. परिचयनं) परि-चि (स्वा. उ. अ.), सुपरिचित (वि.) भू, रूढबद्ध,-सख्य-सौहृद (वि.) भू ।

परचा, सं. पुं. (फ़ा.) (परीक्षायाः) प्रश्नपत्रं २. संदेश-,पत्रं ३. पत्रखंडः-डम् ।

परचाना, क्रि. स., व. 'परचना' के प्रे. रूप ।

परचून, सं. पुं. (सं. पर=अन्य+चूर्णं=आटा>) प्रकीर्ण-विविध,-पण्यं, *परचूर्णम् ।

परचूनिया, सं. पुं. (हिं. परचून) स्तोकशः-अल्पशः विक्रयिन्-विक्रेतृ, खंडवणिज् (पुं.) ।

परछत्ती, सं. स्त्री. (सं. प्र+हिं. छत) *प्र,-छदिः (स्त्री.)-छदिस् (न.)-पटलं २. तृण,-पटलं-छदिः ।

परछन, सं. स्त्री. (सं. परि+अर्चनं) (वधू-संबंधिनीभिः वरस्य) पर्यर्चनं-पर्यर्चा ।

परछांई, सं. स्त्री. (सं. प्रतिच्छाया) छाया, छायाकृतिः (स्त्री.) २. प्रतिबिंबः-बं, प्रति,-रूपं-फलं-मूर्तिः (स्त्री.) ।

परजौट, सं. पुं. (हिं. परजा) *गृहभूमिकरः ।

परतंत्र, वि. (सं.) पराधीन, परायत्त, पराश्रित, परवश, परावलंबिन्, परनिघ्न ।

परतंत्रता, सं. स्त्री. (सं.) पराधीनता, पराश्रयः, परावलंबनं, परवशता इ. ।

परत, सं. स्त्री. (सं. पत्रं>) अथवा स्तरः, तलं २. पुटः, भंगः, वलिः (स्त्री.) ३. दे. 'पपड़ी'(१) ।

परतल, सं. पुं. (सं. पटललं>) *अश्व-गोणी-प्रसेवः-भारः ।

—का टट्टू, सं. पुं. पृष्ठ्यः, स्थौरिन् ।

परतला, सं. पुं. (सं. परि+तन्) खड्ग-कृपाण,-पट्टिका ।

परती, सं. स्त्री., दे. 'पड़ती' ।

परदा, सं. पुं. (फ़ा.) अपटी, तिरस्करिणी, कांडपट-टकः, ज(य)वनिका, प्रतिसी(सी)रा २. व्यवधानं ३. अवगुंठनं-ठिका ४. (नारीणां) एकांतवासः, परपुरुषादर्शनं ५. स्तरः, तलं ६. व्यवधायककुड्यं ७. पटलं, आवरकं ८. आवरणं, आच्छादनं ९. वाद्यानां स्वरोद्गमस्थानम् ।

—उठाना या खोलना, मु., रहस्यं-गुह्यं प्रकटयति (ना. धा.)-प्रकाश् (प्रे.) ।

—करना या रखना, मु., अवगुंठ् (चु.), अंतःपुरे वस् (भ्वा. प. अ.) ।

—नशीन, वि. (फ़ा.) अवगुंठनवती, अंतःपुरवासिनी ।

परदादा, सं. पुं., दे. 'पड़दादा' ।

परदेस, सं. पुं. (सं. परदेशः) विदेशः ।

परदेसी, सं. पुं. (सं. परदेशीयः) विदेशीयः, पारदेशिकः, वैदेशिकः । वि., अन्य-पर,-देशीय ।

परनाना, सं. पुं., दे. 'पड़नाना' ।

परनाला, सं. पुं. (सं.) प्रणालः ।

परनाली, सं. स्त्री. (सं. प्रणाली) परि(री)-वाहः, सरणिः (स्त्री.), निर्गमः जलनिस्सरण-मार्गः, जलोच्छ्वासः ।

पर(ड़)पोता, सं. पुं. (सं. प्रपौत्रः) पुत्रपौत्रः, पौत्रपुत्रः ।

पर(ड़)पोती, सं. स्त्री. (सं. प्रपौत्री) पुत्रपौत्री, पौत्रपुत्री ।

परब्रह्म, सं. पुं. (सं. न.) परमेश्वरः, निर्गुणो जगदीश्वरः ।

परभृत, सं. स्त्री. (सं. पुं.) कोकिलः, पिकः ।

परम, वि. (सं.) उत्तम, श्रेष्ठ २. आदिम, प्रथम ३. प्रधान, मुख्य ३. अत्यधिक अत्यंत ।

—गति, सं. स्त्री. (सं.)
—धाम, सं.पुं.[सं.-मन्(न.)]
—पद, सं. पुं. (सं. न.)
} मोक्षः, मुक्तिः (स्त्री.), अपवर्गः, निःश्रेयसम् ।

—ज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) ब्रह्मज्ञानम् ।

—तत्त्व, सं. पुं. (सं. न) मूलसत्ता २. ईश्वरः ।

—पिता, सं. पुं. [सं.-तृ (पुं.)]
—पुरुष, सं. पुं. (सं.)
—ब्रह्म, सं. पुं. [सं.-ह्मन् (न.)]
} परमेश्वरः सच्चिदानंदो जगदीश्वरः ।

—हंस, सं. पुं. (सं.) संन्यासिभेदः २. ईश्वरः ।

परमानेंट, वि. (अं.) स्थिर, स्थायिन् ।

परमाक्षर, सं. पुं. (सं. न.) ओङ्कारः, प्रणवः ।

परमाणु, सं. पुं. (सं.) भूजलानलानिलानां सूक्ष्मतमो लवः ।

—वाद, सं. पुं. (सं.) परमाणुभ्यो जगद्रचना इति न्यायवैशेषिकसिद्धांतः ।

परमात्मा, सं. पुं. (सं.-त्मन्) परमेश्वरः, परब्रह्मन् (न.) जगदीश्वरः, वि., धातृ (पुं.) ओम् (अव्य.) सच्चिदानंदः ।

परमानंद, सं. पुं. (सं.) अत्यंतसुखं २. ब्रह्म-सायुज्यसुखं ३. आनंदस्वरूपं ब्रह्मन् (न.) ।

परमान्न, सं. पुं. (सं. न.) पायसः-सं, क्षीरिका ।

परमायु, सं. स्त्री. [सं.-युस् (न.)] अधिकाधिक.युस् (न.), जीवनसीमा (यह मनुष्यों की १२० वर्ष है) ।

परमार्थ, सं. पुं. (सं.) उत्कृष्टवस्तु (न.) २. यथार्थतत्त्वं ३. मोक्षः ४. सुखम् ।

परमार्थी, वि. (सं.-र्थिन्) तत्त्वज्ञानाभिलाषिन् २. मुमुक्षु, मोक्षेच्छुक ।

परमेश्वर, सं. पुं. (सं.) दे. 'परमात्मा' २. विष्णुः ३. शिवः ।

परला, वि. (सं. पर) पर, परस्थ, परवर्तिन्, २. अनंतर, निरंतराल ३. दूर, दूर,-स्थ वर्तिन् ।

परलोक, सं. पुं. (सं.) लोकांतरं २. देहांतर-प्राप्तिः (स्त्री.), प्रेत्यभावः, पुनर्जन्मन् (न.) ।

—गमन, सं. पुं. (सं. न.) मृत्युः (पुं.) निधनम् ।

—वासी, वि. (सं.-सिन्) मृत, विपन्न, दिवंगत, स्वर्गिन् ।

—सिधारना, मु., दिवं-स्वर्गं-पंचत्वं गम् ।

परवरदिगार, सं. पुं. (फ़ा.) पालकः २. ईश्वरः ।

परवरिश, सं. स्त्री. (फ़ा.) पालनं, पोषणं, भरणम् ।

—करना, क्रि. स., परि-प्रति,-पा (प्रे. पालयति), संवृध्-परिपुष् (प्रे.) ।

परवल, सं. पुं. (सं. पटोलः) दे. 'पटोर' ।

परवश-स्थ, वि. (सं.) दे. 'परतंत्र' ।

परवशता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'परतंत्रता' ।

परवा[1], सं. स्त्री. (फ़ा.) आशंका, चिंता, व्यग्रता, उद्वेगः २. आश्रयः, अवलंबः ।

परवा[2], सं. स्त्री. (सं. 'प्रतिपदा' दे०)

परवाज़, सं. स्त्री. (फ़ा.) उड्डयनं, उत्पतनं, खे विसर्पणम् २. गर्वः, अवलेपः ।

परवानगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) अनुमतिः (स्त्री.), अनुज्ञा ।

परवाना, सं. पुं. (फ़ा.) आज्ञा-शासन-अनुज्ञा,-पत्रं २. पतंगः, शलभः, दीपशत्रुः (पुं.) ।

—राहदारी, सं. पुं., दे. 'पासपोर्ट' ।

परवाल, सं. पुं. (सं. पर+वालः>) पक्ष्म-प्रकोपः ।

परशु, सं. पुं. (सं.) पर्शुः (पुं.) परश्वधः, पर्श्वधः, कुठारः ।

—राम, सं. पुं. (सं.) भार्गवः, जामदग्न्यः, पर्शुरामः ।

[illegible] दे. 'परशु' ।

[illegible] (सं. पर+फ़ा. साल) [illegible], गतवर्षं परुत् (अव्य.) २. (आगामी) उत्तर-पर-आगामि,-वर्षम् । क्रि. वि., परुत्, गतवर्षे २. आगामि,-वत्सरे-वर्षे ।

परसों, क्रि. वि. [सं. परश्वः (अव्य.)] श्वः-परदिनं २. ह्यः-पूर्वदिनम् ।

परस्पर, क्रि. वि. (सं. परस्परं) अन्योन्यं, इतरेतरं, मिथः (सब अव्य.) ।

—का, वि., परस्परस्य-अन्योऽन्यस्य-इतरेतरस्य (केवल एकवचन में), परस्पर-, अन्योन्य-, इतरेतर-, मिथः ।

परहित, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'परोपकार' ।

परहेज़, सं. पुं. (फ़ा.) कुपथ्यत्यागः, पथ्य-सेवनं, मित,-अशनं-पानं, आहार-पानाशन,-नियमः २. संयमः, जितेन्द्रियता, दोष-दुर्गुण,-त्यागः ।

—करना, क्रि. स., कुपथ्यं त्यज् (भ्वा. प. अ.), २. दोषान् परि-वि-वर्ज् (चु.) ।

—गार, सं. पुं. (फ़ा.) कुपथ्यत्यागिन्, संयताहारः २. संयमिन्, जितेन्द्रियः ।

—गारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'परहेज़' (१–२) ।

पराँठा, सं. पुं. (हिं. पलटना ?) *परम-घृत-गर्भ,-रोटिका, परोटः ।

परांत, सं. पुं. (सं.) मृत्युः, निधनम् ।

—काल, सं. पुं. (सं.) मृत्युसमयः २. मुमुक्षूणां देहत्यागकालः ।

परा[1], सं. स्त्री. (सं.) ब्रह्म-उपनिषद्,-विद्या । वि. स्त्री. (सं.) परवर्तिनी, दूरस्था २. श्रेष्ठा ।

परा[2], सं. पुं. (फ़ा. पर=पंख ?) पंक्तिः-ततिः (स्त्री.) ।

पराकाष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) अतिभूमिः-परा-कोटिः (स्त्री.), परमसीमा, परमावधिः (पुं.), अत्यंतता ।

पराक्रम, सं. पुं. (सं.) वीर्यं, शौर्यं, विक्रमः, पौरुषं, ओजस्-सहस्-तरस् (न.), रणोत्साहः ।

पराक्रमी, वि. (सं.-मिन्) वीर, शूर, विक्रमिन्, विक्रांत, वीर्य-विक्रम,-शालिन्, साहसिक [-की (स्त्री.)], तेजस्विन् [-नी (स्त्री.)] ।

पराग, सं. पुं. (सं.) पुष्प-कुसुम,-धूलिः (स्त्री.)-रजस् (न.)-रेणुः (पुं.) २. रजस्, धूलिः ३. स्नानीयसुगन्धिचूर्णं ४. चंदनं ५. कर्पूर-रजस् ।

पराङ्मुख, वि. (सं.) विमुख, पराचीन २. प्रतिकूल, विपरीत, विरक्त [पराङ्मुखी (स्त्री.)] ।

पराजय, सं. पुं. (सं.) पराभवः, हारी-रिः (स्त्री.) भंगः ।

पराजित, वि. (सं.) हारित, पराभूत, निर्-वि., जित ।
परात, सं. स्त्री. (सं. पात्रं>) पारीत्रा ।
पराधीन, वि. (सं.) दे. 'परतंत्र' ।
पराधीनता, सं. स्त्री. (सं.) 'परतंत्रता' ।
पराभव, सं. पुं. (सं.) दे. 'पराजय' २. तिरस्कारः, मानहानिः (स्त्री.) ३. विनाशः ।
पराभूत, वि.(सं.) दे. 'पराजित' २. तिरस्कृत ३. ध्वस्त, नष्ट ।
परामर्श, सं. पुं. (सं.) विवेचनं, विचारणा, वितर्कः, मंत्रणा, २. उपदेशः अनुशासनम् ।
परायण, वि. (सं.) लग्न, मग्न, प्रवृत्त, पर, निरत (प्रायः समासांत में, उ. धर्मपरायण= धर्मपर इ.)।
पराया, वि. पुं. (सं. पर) दे. 'पर१' (२) ।
परार, सं. पुं. [सं. परारि (अव्य.)] पूर्वतरवत्सरः, गततृतीयवर्षः-र्षम् ।
परार्द्ध, सं. पुं. (सं. न.) शंखः-खं, अष्टादशांकवती संख्या (१०००००००००००००००००)।
परावर, वि. (सं.) पूर्वापर २. निकटदूर ३. सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ ।
परावर्त, सं. पुं. (सं.) (निर्णयादिकस्य) परा-प्रत्या,-वृत्तिः (स्त्री.) वर्तनम् ।
—व्यवहार, सं. पुं. (सं.) अभियोगस्य निर्णयस्य वा पुनर्विचारः ।
परावर्तन, सं. पुं. (सं. न.) प्रतिनि-नि-परा-प्रत्या,-वृत्तिः (स्त्री.)-वर्तनं, अप,-क्रमणं-सरणं-यानम् ।
पराशर, सं. पुं. (सं.) व्यासपितृ ।
पराश्रय, सं. पुं. (सं.) अन्य-पर,-संश्रयः-अवलम्बः-अवलंबनं २. दे. 'परतंत्रता' ।
पराश्रित, वि. (सं.) अन्य-पर,-संश्रित–अवलंबित २. दे. 'परतंत्र' ।
परासु, वि. (सं.) प्रेतः-ता-तं, मृतः-ता-तम्, परेतः-ता-तं, निर्जीवः-वा-वं, प्रणीतः-ता-तम् ।
परास्त, वि. (सं.) दे. 'पराजित' ।
पराह्न, सं. पुं. (सं.) अपराह्णः, विकालः ।
परिंदा, सं. पुं. (फ़ा.) पक्षिन्, पत्रिन्, पतत्रिन, खगः ।
परिकर, सं. पुं. (सं.) परिजनः, अनुचरवर्गः २. कटिबंधः, प्रगाढ़गात्रिकाबंधः ३. कुटुम्बं ४. समूहः ५. अर्थालंकारभेदः (सा.) ।

परिकल्पित, वि. (सं.) रचित, आविष्कृत २. कल्पित, उद्भावित ३. निश्चित ।
परिक्रमा, सं. स्त्री. (सं.-मः) प्रदक्षिणः-णा-णं, (पूजार्थं) परिभ्रमणम् ।
—करना, क्रि. स., परिक्रम् (भ्वा. प. से.; भ्वा. आ. अ.), (पूजार्थं) परि-भ्रम् (भ्वा. प. से.) प्रदक्षिणां कृ ।
परिखा, सं. स्त्री. (सं.) खातं, खेयम् ।
परिख्यात, वि. (सं.) विख्यात, विश्रुत ।
परिगणन, सं. पुं. (सं. न.) संख्यानं, सम्यक् गणनम् ।
परिगृहीत, वि. (सं.) स्वीकृत, उररीकृत २. प्राप्त, लब्ध २. अंतर्भूत, समाविष्ट ।
परिग्रह, सं. पुं. (सं.) आदानं, ग्रहणं, प्रतिग्रहः २. लब्धिः-प्राप्तिः (स्त्री.) ३. धनादिसंग्रहः ४. स्वी-अंगी,-कार ५. विवाहः ६. पत्नी ७. परिजनः, परिवारः ८. परिवेष्टनम् ।
परिघ, सं. पुं. (सं.) परिघातनः लोहमुखलगुडः २. परि,-घातःहननं ३. अर्गलः-लं-ला-ली ४. मुद्गरः ५. शूलः ६. कलसः ७. भवनं प्रतिबंधः, बाधा ।
परिचय, सं. पुं. (सं.) परि-, ज्ञानं, अभिज्ञता, बोधः २. प्रमाणं, उपपत्तिः (स्त्री.) ३.अभ्यासः ।
परिचर, सं. पुं. (सं.) अनुचरः, सेवकः, दे. 'परिचारक' ।
परिचर्या, सं. स्त्री. (सं.) सेवा, शुश्रूषा-षणा, उपस्थान, उपचारः, उपासनम् ।
परिचायक, सं. पुं. (सं.) परिचयदायकः, परि-अभि,-ज्ञापकः २. सूचकः, द्योतकः, बोधकः, निर्देशकः, ज्ञापकः । परिचायिका (स्त्री.) ।
परिचारक, सं. पुं. (सं.) सेवकः, किंकरः, दासः, भृत्यः, प्रेष्यः, भुजिष्यः, नियोज्यः ।
परिचालन, सं. पुं. (सं. न.) (कार्य-) निर्वाहः, संचालनं २. प्रचोदना, प्रेरणं-णा, प्रोत्साहनम् ।
परिचित, वि. (सं.) अभि-परि-ज्ञात, परिचयविशिष्ट २. ज्ञात, बुद्ध, विदित ।
परिच्छद, सं. पुं. (सं.) परिधानं, वेशः-षः, वसनं २. आच्छादनं ३. राजचिह्नानि (न. बहु.) ४. राजसेवकवर्गः ५. परिजनः, *परिवारः, कुलं ६, उपस्करः, संभारः, सामग्री ।
परिच्छेद, सं. पुं. (सं.) अध्यायः, प्रकरणं,

उल्लासः, उच्छ्वासः २. विभंजनं, खंडनं ३. सीमा, इयत्ता ४. विवेकः ५. निर्णयः ६. विभागः, विभाजनम् ।

परिजन, सं. पुं. (सं.) परिवारः, कुटुंबं, कुलं २. दास-अनुचर,-वर्गः, परिवारः ।

परिणत, वि. (सं.) विकृत, रूपांतरं-विकारं प्राप्त, सविकार २. पक्व ३. जीर्ण, जठराग्नौ पक्व ४. पुष्ट, प्रौढ ।

परिणय, सं. पुं. (सं.) विवाहः, दारपरिग्रहः ।

परिणाम, सं. पुं. (सं) फलं २. अंतः, पाकः, उदर्कः ३. विकारः, विक्रिया, रूपांतर-अवस्थांतर,-प्राप्तिः (स्त्री.), दशापरिवर्तनम् ।

परिताप, सं. पुं. (सं.) दुःखं, क्लेशः, व्यथा २. संतापः, क्षोभः २. अनु-पश्चात्-, तापः ।

परितोष, सं. पुं. (सं.) तृप्तिः (स्त्री.), संतोषः २. हर्षः, मोदः ।

परित्याग, सं. पुं. (सं.) सर्वथा त्यागः-वर्जनं-उत्सर्गः २. निष्कासनं, बहिष्करणम् ।

परित्राण, सं. पुं. (सं. न.) रक्षा, रक्षणं, पालनं २. हस्तवारणं, मारणोद्यतस्य निवारणम् ।

परिधान, सं. पुं. (सं. न.) वसनं, वस्त्रं, वासस् (न.), परिच्छदः, नेपथ्यं, वेशः-षः २. वस्त्रैः आवेष्टनं-आच्छादनं, वस्त्रधारणम् ।

परिधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) परिणाहः, परिवेशः, मंडलं २. सूर्यचंद्रसमीपमंडलं, ३. प्राचीरं, वृतिः (स्त्री.) ४. नियतमार्गः ।

परिधेय, वि. (सं.) धार्य, वसनीय, धारणीय, परिधातव्य ।

परिनिर्वाण, सं. पुं. (सं. न.) मुक्तिः-परिनिवृत्तिः (स्त्री.), मोक्षः ।

परिनिष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) चरमसीमा, परमावधिः (पुं.), पराकाष्ठा, पारः-रम् ।

परिनिष्ठित, वि. (सं.) पारंगत, सुनिपुण, सुदक्ष, विज्ञ ।

परिपक्व, वि. (सं.) सम्यक्,-सिद्ध-संस्कृत-पक्व २. (जठरे) सुष्ठु,-जीर्ण-पक्व-परिणत ३. प्रौढ, सुविकसित, पुष्ट ४. अनुभविन्, बहुदर्शिन् ५. कुशल, प्रवीण ।

परिपक्वता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'परिपाक' ।

परिपाक, सं. पुं. (सं.) (जठरे) पचनं, पाचनं परिणामः २. प्रौढता, पूर्णता ३. अनुभवः, बहुदर्शिता ४. नैपुण्यं, प्रावीण्यं ५. परिणामः, फलं ६. कर्म,-विपाकः-फलम् ।

परिपाटी, सं. स्त्री. (सं.) अनु,-क्रमः, परिपाटिः (स्त्री.), परंपरा, आनुपूर्वी-र्व्यं २. शैली, प्रणाली, विधिः (पुं.) ३. रीतिः-पद्धतिः (स्त्री.), संप्रदायः ।

परिपालन, सं. पुं. (सं. न.) रक्षणं, पालनं २. रक्षा, त्राणम् ।

परिपूर्ण, वि. (सं.) व्याप्त, संभृत, संपूर्ण, पूरित, निर्भर २. अतितृप्त, संतर्पित, २. अवसित, समाप्त ।

परिभ(भा)व, सं. पुं. (सं.) तिरस्कारः, अप-अव,-मानः, अनादरः ।

परिभाषा, सं. स्त्री. (सं.) लक्षणं, निर्वचनं, निर्देशः, परिच्छेदः, प्रज्ञप्तिः, समयकारः २.ग्रंथ-संक्षेपनिर्वाहार्थं संकेत-संज्ञा,-विशेषः ३. परिष्कृतभाषणं ४. निंदा ।

परिभूत, वि. (सं.) पराजित २. तिरस्कृत ।

परिभ्रमण, सं. पुं. (सं. न.) पर्यटनं, विचरणं २. घूर्णनं-ना ३. दे. 'परिधि' ।

परिमल, सं. पुं. (सं.) आमोदः, सौरभं, सुवासः, सुगंधः २. मैथुनम् ।

परिमाण, सं. पुं. (सं. न.) मानं, प्रमाणं, प्र-परि,-मितिः (स्त्री.) २. मात्रा, भारः ३. विस्तारः, इयत्ता ४. परिधिः (पुं.) ।

परिमार्जन, सं. पुं. (सं. न.) परिधावनं, परिशोधनं, परिष्करणम् ।

परिमार्जित, वि. (सं.) परि,-धौत-धावित, परिष्कृत, परिशोधित ।

परिमित, वि. (सं.) परिच्छिन्न, सावधिक, ससीम, समर्याद-, दित, २. अल्प, न्यून ।

परिरंभ, सं. पुं. (सं.) } उपगूहनं, परिष्वंगः,आलिंगनम् ।
परिरंभण, सं. पुं. (सं.न.) }

परिवर्त, सं. पुं. (सं.) वि-आ,-वर्तनं आवृत्तिः (स्त्री.), घूर्णनं २. विनिमयः, परिवृत्तिः (स्त्री.) ।

परिवर्तन, सं. पुं. (सं. न.) विकारः, विकृतिः (स्त्री.), विक्रिया, रूपांतरं, दशांतरं २. विनिमयः, परिदानं, नैमेयः, व्यति(ती)हारः, परावर्तः, विमयः, वैमेयः ३. आवर्तनं, घूर्णनं ४. काल-युग,-समाप्तिः (स्त्री.) ।

—करना, क्रि. स., परिवृत (प्रे.), परिवर्तन-

अन्यथा कृ २. प्रतिदा (जु. उ. अ.) विनि-निमे (भ्वा. आ. अ.)।

—होना, क्रि. अ., परिवृत् (भ्वा. आ. से.), विकृ (कर्म.), विपर्यस् (दि. प. से.) २. व्यतिहृ -प्रतिदा-विनिमे (कर्म.)।

परिवर्तित, वि. (सं.) विकृत, रूपांतरित, दशांतरं प्राप्त २. विनिमित, व्यतिहृत, विनिमयेन प्राप्त।

परिवर्द्धन, सं. पुं. (सं. न.) परिवृद्धिः (स्त्री.), बृंहणं, स्फीतिः (स्त्री.)।

परिवर्द्धित, वि. (सं.) विस्तृत, विस्तीर्ण, प्रवि.,-तत, उपचित २. विशालीकृत, वृद्धिं नीत, आप्यायित।

परिवा, सं. स्त्री., दे. 'प्रतिपदा'।

परिवाद, सं. पुं. (सं.) निंदा, अपवादः, दोषकथनं २. *वीणावादनवलयः (मिजराव)।

परिवादक, सं. पुं. (सं.) निंदकः, अपवादकः, दोषकथकः २. अभियोक्तृ (पुं) अर्थिन्, वादिन् ३. वीणावादकः।

परिवार, सं. पुं. (सं.>) कुटुंबं, पुत्रकलत्रादीनि, गृहजनः, *परि(री)वारः।

—नियोजन, सं. पुं. (सं. न.) परिवार-कुटुम्ब,-नियन्त्रणं-निरोधः, सन्तति-सन्तान,-निरोधः।

परिवाह, सं. पुं. (सं.) जलोच्छ्वासः तोयाप्लावः।

परिवृत, वि. (सं.) परिवेष्टित, परिगत, परिक्षिप्त २. आच्छादित, आवृत।

परिवृत्त, वि. (सं.) 'परिवर्तित'(२) २. परिवेष्टित, परिगत ३. समाप्त।

परिवेषण, सं. पुं. (सं. न.) भोजनपात्रे भोजननिधानं २. परिधिः (पुं.), वेष्टनं ३. परिवेशः-षः।

परिवेष्टन, सं. पुं. (सं. न.) संवलनं, परिक्षेपणं, परिवारणं २. आच्छादनं, आवरणं, पुटं, वेष्टन,-कोशः-षः ३. परिधिः (पुं.)।

परिव्रज्या, सं. स्त्री. (सं.) सन्न्यासः, वैराग्यं, चतुर्थाश्रमः २. परिभ्रमणम्।

परिव्राजक, सं. पुं. (सं.) } भिक्षुः,
परिव्राट्, सं.पुं. (सं.-व्राज्) } दे. 'संन्यासी'।

परिशिष्ट, सं. पुं. (सं. न.) परि-शेष,-पूरणं, उत्तरखंडः, शेषग्रंथः, खिलम्। वि., अव,-शिष्ट-शेष, उद्वृत्त।

परिशीलन, सं. पुं. (सं. न.) गंभीर-समनन,-अध्ययन-पठनं २. स्पर्शनम्।

परिशीलित, वि. (सं.) सम्यक्-सुष्ठु,-अधीत-पठित।

परिशुद्ध, वि. (सं.) पूर्ण,-शुद्ध-अमल-निर्दोष-पूत २. कारा-कारावास,-मुक्त।

परिशुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) पूर्ण-शुद्धिः (स्त्री.) पवित्रता-निर्दोषता २. कारागार-मुक्तिः (स्त्री.)।

परिशेष, सं. पुं., (सं.) अंतः, समाप्तिः (स्त्री.), दे. 'परिशिष्ट' सं. पुं. तथा वि.।

परिशोधन, सं. पुं. (सं. न.) परिमार्जनं, परिधावनं, २. ऋण,-शोधनं-शुद्धिः (स्त्री.)।

परिश्रम, सं. पुं. (सं.) आ-प्र,-यासः, श्रमः, उद्यमः, उद्योगः, प्र-, यत्नः २. क्लमः, क्लांतिः-श्रांतिः-ग्लानिः (स्त्री.), खेदः।

—करना, क्रि. अ., आयस्-परिश्रम् (दि. प. से.), उद्यम् (भ्वा. प. अ.), व्यव-सो (दि. प. अ.)।

परिश्रमी, वि. (सं.-मिन्) उद्यमिन्, उद्योगिन्, उद्यम-उद्योग-परिश्रम,-शील, आयसिन्।

परिश्रांत, वि. (सं.) क्लांत, म्लान, खिन्न, आयस्त।

परिषद्-त्, सं. स्त्री. (सं.-षद्) सभा, समाजः, समितिः (स्त्री.) २. जनसमूहः।

परिषद, सं. पुं. (सं.) सदस्य, सभासद् (पुं.)। २. राज-वल्लभः,-सभासद्।

परिष्कार, सं. पुं. (सं.) शौचं, शुद्धिः (स्त्री.), शुचिता, संस्कारः २. निर्मलत्वं, स्वच्छता ३. आभूषणं, अलंकारः ३. मंडनं, प्रसाधनम्।

परिष्कृत, वि. (सं.) मार्जित, धावित, धौत २. मंडित, प्रसाधित, अलंकृत ३. संस्कृत, शोधित।

परिसंख्या, सं. स्त्री. (सं.) संख्या, गणना २. अर्थालंकारभेदः (सा.)।

परिस्तान, सं. पुं. (फ़ा.) अप्सरोलोकः २. सुंदरीस्थानम्।

परिहरण, सं. पुं. (सं. न) बलात् ग्रहणं-अपहरणं २. परि,त्यागः, उत्सर्गः ३. दोषादीनां निवारणं, निराकरणम्।

परिहार, सं. पुं. (सं.) (दोषादेः) निवारणं, निराकरणं २. उपचारः, उपायः ३. त्यागः, परिवर्जनं ४. गोप्रचरः, प्रचारभूमिः (स्त्री.)

५. युद्धार्जितं धनं, विजितद्रव्यं ६. (करादेः) मोचनं, वर्जनं ७. प्रत्याख्यानं, खंडनं ८. अवज्ञा, अपमानः ९. उपेक्षा ।

परिहार्य, वि. (सं.) परिवर्जनीय, प्रोज्झनीय, हेय, त्यक्तव्य ।

परि(री)हास, सं. पुं. (सं.) नर्मन् (न.), नर्मालापः, प्रहसनं, हास्यं, विनोद,-उक्तिः-(स्त्री.)-भाषणम् ।

परी, सं. स्त्री. (फ़ा.) अप्सरस् (स्त्री.), योगिनी, यक्षिणी, विद्याधरी २. सुंदरी ।

—ज़ाद, वि. (फ़ा.) अतिसुंदर, परमशोभन ।

परीक्षक, सं. पुं. (सं.) प्राश्निकः, अनुयोक्तृ-परीक्षितृ (पुं.) २. विचारकः निरूपकः ३. समालोचकः, समीक्षकः ।

परीक्षा, सं. स्त्री. (सं.) परीक्षणं, प्रश्नः, अनुयोगः २. समालोचना, समीक्षा, ३. निरीक्षा, अवेक्षा, आलोकनं, निरूपणं ४. दिव्यं ५. प्रयोगः, अनुभवः ।

परीक्षित, वि. (सं.) नृपविशेषः, अभिमन्यु-पुत्रः २. प्रश्नित, अनुयुक्त, कृतपरीक्ष ३. समालोचित, समीक्षित ४. अनुभूत, प्रयुक्त ।

परुष, वि. (सं.) क्रूर, निर्दय, निर्घृण, २. अप्रिय, कटु ।

परे, क्रि. वि. (सं. परं) दूरं, दूरे, दूरतः, २. पृथक्, बहिस् ३. तदनु, ततः, तदनन्तरं ४. उपरि, उच्चैः (सब अव्य.) ।

—परे करना, मु. परिहृ (भ्वा. प. अ.), अप-, वृज् (चु.), न संगम् (भ्वा. आ. अ.) ।

परेवा, सं. पुं. (सं. पारावतः) दे. 'कबूतर' ।

परेशान, वि. (फ़ा.) उद्विग्न, व्यग्र, व्याकुल ।

परेशानी, सं. स्त्री. (फ़ा.) उद्विग्नता, व्याकुलता ।

परोक्ष, वि. (सं.) अदृश्य, अलक्ष्य, अचाक्षुष २. गुप्त, गूढ । सं. पुं. (सं. न.) अनुपस्थितिः (स्त्री.), अविद्यमानता ।

परोपकार, सं. पुं. (सं.) परोपकृतिः (स्त्री.) परहितं, लोकसाहाय्यं, उदारता ।

—करना, क्रि. स., परोपकारं कृ., परहितं संपद् (प्रे.) परसाहाय्यं विधा (जु. उ. अ.), उपकृ ।

परोसना, क्रि. स. (सं. परिवेषणं) भक्ष्याणि पात्रे स्था (प्रे. स्थापयति), परिविष् (प्रे.) । सं. पुं., परि(री)वेषः-पणम् ।

परोसनेवाला, सं. पुं., परिवेषकः, परिवेष्टृ (पुं.) ।

परोसा हुआ, वि., परिवेषित, पात्रे निहित ।

पर्चा, सं. पुं., दे. 'परचा' ।

पर्जन्य, सं. पुं. (सं.) जलदः, दे. 'मेघ' ।

पर्ण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पत्र' (१) २. तांबूली-नागलता,-दलं, तांबूलम् ।

—लता, सं. स्त्री. (सं.) पुन्नागवल्ली, नागलता ।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) पर्णकुटी, उटजः-जम् ।

पर्णाद, सं. पुं. (सं.), पत्र-पर्ण,-अशनः-आहारः-भक्षकः (व्रतिन्) २. ऋषिविशेषः ।

पर्णाशन, सं. पुं. (सं.) दे. 'पर्णाद' ।

पर्णाहार, सं. पुं. (सं.) दे. 'पर्णाद' ।

पर्णी, सं. पुं. (सं. पर्णिन्) वृक्षः, तरुः, पादपः, विटपः-पिन् ।

पर्त, सं. स्त्री., दे., 'परत' ।

पर्दा, सं. पुं., दे. 'परदा' ।

पर्यंक, सं. पुं. (सं.) पल्यंकः, अवसक्थिका, पर्यस्तिका, परिकरः ।

पर्यटन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'भ्रमण' ।

पर्यंत, अव्य. (सं. पर्यन्तं) यावत्, आ-, पर्यंतं (उ., मृत्युपर्यंतं, मृत्युं यावत्, आमृत्योः, मरणपर्यंतम्) ।

पर्याप्त, वि. (सं.) प्रभूत, प्रचुर, पूर्ण, यथेष्ट, उपयुक्त, अलं (चतुर्थी के साथ) २. समर्थ, शक्त ।

पर्याय, सं. पुं. (सं.) तुल्यार्थ-समार्थ,-शब्दः २. क्रमः, परंपरा, आनुपूर्व्यं-र्वी ३. अर्थालंकार-भेदः ४. अवसरः, उचितसमयः ।

—वाची, वि. (सं.-चिन्) पर्यायवाचक, सम-समान-तुल्य,-अर्थक ।

पर्व, सं. पुं. [सं. पर्वन् (न.)] उत्सवः, उद्धवः, उद्धर्षः, क्षणः, महः २. पंचपर्वाणि (चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा, रविसंक्रांतिः) ३. ग्रंथपर्वच्छेदः, कांडः-डं, ४. संधिः (पुं.), ग्रंथिः (पुं.) ५. खंडः-डं, भागः ।

पर्वत, सं. पुं. (सं.) अद्रिः-गिरिः (पुं.), शैलः, धरणीकीलकः, सानुमत्-क्ष्माभृत्-शिखरिन् (पुं.), अचलः, भूधरः, अगः, नगः, कु-धरा-अवनी-मही-धरणी,-ध्रः-धरः, भू-क्षिति,-भृत् (पुं.) २. चयः, राशिः (पुं.) ।

—नंदिनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पार्वती' ।

—राज, सं. पुं. (सं.) दे. 'हिमालय'।

—वासी, सं. पुं. (सं.-सिन्) गिरि-शैल-वासिन्, पार्वतः [-ती (स्त्री.)], पार्वतीयः [-यी (स्त्री.)]। वि., पार्वत, पार्वतीय इ.।

पर्वतीय, वि. (सं.) सपर्वत, नगप्राय, शैल-अद्रि,-मय [-मयी (स्त्री.)]

पलंग, सं. पुं., दे. 'पर्यंक'।

—पोश, सं. पुं. (हिं+फ़ा.) पर्यंक-प्रच्छदः।

पल, सं. पुं. (सं.) विघटिका, घटिकायाः षष्टितमो भागः, षष्टिविपलात्मकः कालः (=२४ सेकंड) २. क्षणः, मुहूर्तः, निमि (मे)षः।

—भर में या—मारते, मु., क्षणेन, क्षणात्, निमेष-पल,-मात्रेण।

पलक, सं. स्त्री. (सं. पलं) दे. 'पल' २. नेत्र-नयन,-छदः।

—मारना, क्रि. अ., निमील् (भ्वा. प. से.), निमिष् (तु. प. से.) २. चक्षुषा संकेतं दा।

—मारते या झपकते, मु., दे. 'पल भर में'।

पलटन, सं. स्त्री. (अं. प्लैटून), सैनिकानां द्विशती, सैन्य,-दलं-गणः।

पलटना, क्रि. अ. (सं. प्रलोठनं) नि-प्रतिनि-प्रत्या,-वृत् (भ्वा. आ. से.) प्रत्या,-गम् (भ्वा. प. अ.)-या (अ. प. अ.) २. पर्यस् (कर्म.), अधोमुखी-अधरोत्तरीभू, परिवृत्। ३. (दशा) परिवृत्, अवस्थांतरं जन् (दि. आ. से.) ४. परि-परा,-वृत्। क्रि. स., व. 'पलटना' के प्रे. रूप। सं. पुं., नि-प्रत्या,-वर्तनं; वि., पर्यासः परिवर्तनम्।

पलटा, सं. पुं. (हिं. पलटना) नि-प्रत्या,-वृत्तिः (स्त्री.), दे. 'पलटना' सं. पुं. २. प्रतिफलं, कर्मविपाकः ३. स्वरपरावृत्तिः (संगीत) ४. उत्पातः, उत्प्लवः ५. व्यतिहारः, विनिमयः ६. *परिवर्तकः, (भाजनभेदः)७. दे. 'बदला'।

पलटाना, क्रि. स., दे. 'लौटाना'।

पलटा हुआ, वि., प्रतिनिवृत्त, विपर्यस्त परिवृत्त, परावृत्त।

पलड़ा, सं. पुं. (सं. पटलं>) तुला,-पटलं-फलकम्।

पलथी, सं. स्त्री. (सं. पर्यस्तं>) स्वस्तिकासनम्।

—मारना, क्रि. अ., स्वस्तिकासनेन उपविश् (तु. प. अ.)।

पलना, क्रि. अ. (सं. पालनं>) पाल-पोष-संभृ (कर्म.) २. परि-, पुष् (कर्म.) प्याय् (भ्वा. आ. से.), पुष्ट-पीन (वि.) भू।

पलवाना, क्रि. प्रे., व. 'पालना' के प्रे. रूप।

पलस्तर, सं. पुं. (अं. प्लास्टर) *पलस्तरः, लेपः, सुधा २. उपनाहः, प्रलेपपट्टिका।

—करना, क्रि. स., सुधया लिप् (तु. प. अ.) २. उपनह् (दि. प. अ.)।

—ढीला होना या बिगड़ना, मु., अत्यंतं क्लिश्-पीड्-खिद् (कर्म.)।

पलांडु, सं. पुं. (सं.) दे, 'प्याज़'।

पलाद, सं. पुं. (सं.) पलादनः, पलाशः, राक्षसः। वि., मांस,-भक्षक-आहारिन्।

पलान, सं. पुं. (सं. पल्ययनं) पर्याणं, पर्ययणं, दे. 'ज़ीन'।

पलान्न, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पुलाव'।

पलायक, सं. पुं. (सं.) वि-प्र-, पलायिन्, युद्ध-विमुखः, पराङ्मुखं-त्यागिन्।

पलायन, सं. पुं. (सं. न.) वि-, द्रवः, उद्-सं-प्र-नि-, द्रावः, चंक्रमः, शृगालिका, अप,-क्रमः-यानम्।

पलायमान, वि. (सं.) प्र-वि-,द्रवत्, अप,-धावत्-क्रामत्, परायत् (सब शत्रंत)।

पलाश, सं. पुं. (सं.) किंशुकः, याज्ञिकः, त्रिपर्णः, ब्रह्मवृक्षकः, पूतद्रुः (पुं.), (सं. न.) पत्रं, पर्णम्।

पलाशी, सं. पुं. (सं.-शिन्) वृक्षः, तरुः २. क्षीरवृक्षः (गूलर, पीपल, बरगद, महुआ इ०) ३. राक्षसः। वि. सपत्र, पत्रवत् २. मांस-भक्षक।

पलित, वि. (सं.) वृद्ध, दे. 'बूढ़ा' २. पक्व, धवल, श्वेत, सित, (केश)। सं. पुं. (सं. न.) केशपाकः।

पली, सं. स्त्री. (सं. पलिघः>) *स्नेहनिष्कासनी, पल्लिका।

पलीता, सं. पुं. (फ़ा.) भूतवद्राविका वर्तिका-वर्त्तिः (स्त्री.) २. दहनवर्त्तिः। वि. कोपाकुल, संरब्ध २. शीघ्रगामिन्।

पलीद, वि. (फ़ा.) मलिन, मलीमस, अपवित्र २. नीच, खल।

पलेथन, सं. पुं. (सं. परिस्तरणं>) (गोधूमादीनां) शुष्कचूर्णं, *रोटिकापरिस्तरणम्।

—निकालना, क्रि. स., परुषं तड् (चु.)।

पलौठा, वि. (हिं. पहला) *प्रथमज (पलौठी=प्रथमजा)।

पल्लव, सं. पुं. (सं. पुं. न.) किस(श)लयः-यं, प्रवालं, नवपत्रं, किस(श)लं २. प्र-, शाखा, विटपः ३. नवपत्रस्तबकः।

पल्लवित, वि. (सं.) सपल्लव, सकिसलय २. तत, विस्तृत ३. रोमांचित।

पल्ला[1], क्रि. वि. (सं. परं या पारे>) दूरं, दूरे, दूरतः। सं. स्त्री., दूरता, विप्रकर्षः।

पल्ला -पल्लू, सं. पुं. (सं. पटाञ्चलः) वसनांतः, वस्त्र-,अंचलः २. पार्श्वे, अधिकारे ३. दिशा।

—छुड़ाना, मु., आत्मानं उद्वह् (भ्वा. प. अ.)-मुच् (प्रे.); अनिष्टं त्यज् (भ्वा. प. अ.)-अपास् (दि. प. से.)।

—पसारना, मु., याच् (भ्वा. आ. से.)।

पल्ले पड़ना, मु., लभ्-अधिगम् (कर्म.)।

पल्ला[3], सं. पुं., दे. 'पलड़ा'।

पल्ली, सं. स्त्री. (सं.) ग्रामकः, ग्रामटिका २. ग्रामः ३. कुटी ४. गृहगोधिका।

पवन, सं. पुं. (सं.) अनिलः, वातः, दे. 'वायु'।

—चक्की, सं. स्त्री., वायुपेषणी, *पवनचक्री।

—चक्र, सं. पुं. (सं. न.) वातावर्तः, चक्रवातः।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) हनुमत् २. भीमसेनः।

पवनाशन, सं. पुं. (सं.) पवनाशः, सर्पः।

पवि, सं. पुं (सं.) व्रजः-जं, कुलिशं, अशनिः, (पुं. स्त्री.)।

पवित्र, वि. (सं.) वि., शुद्ध-शुचि, स्वच्छ, विशद, निर्मल २. पुण्य, निष्पाप, अनघ, अकल्मष।

पवित्रता, सं. स्त्री. (सं.) शुचिता, शौचं, वि-,शुद्धिः (स्त्री.), शुद्धता २. स्वच्छता, वैशद्यं, निर्मलता ३. पुण्यता, निष्पापता।

पवित्रात्मा, वि. [सं.-त्मन् (पुं.)] विमल-शुद्ध-आत्मन् (पुं.), शुद्ध,-मति-हृदय।

पवित्री, सं. स्त्री. (सं. पवित्रं) पवित्रकं, कुशांगुलीयकम्।

पशम, सं. स्त्री. (फ़ा. पश्म) उत्तमोर्णा, सूर्णा २. उपस्थलोमन् (न.) ३. अतितुच्छवस्तु (न.)।

पशमीना, सं. पुं. (फ़ा. पश्मीनह्) दे. 'पशम' २. उत्तमौर्ण,-वस्त्रं-पटः।

पशु, सं. पुं. (सं.) लोमलांगूलवज्जीवः (सिंह-व्याघ्रगोमहिषपादयः), जंतुः (पुं.), खुराकः-का, मृगः २. प्राणिन्, जीवमात्रम्।

—पति, सं. पुं. (सं.) शिवः २. पशुप्रभुः।

—पाल,सं. पुं. (सं.) पशु-गो,-रक्षकः-पालकः।

—राज, सं. पुं. (सं.) मृगेन्द्रः, सिंहः।

पशुता, सं. स्त्री. (सं.) पशुत्वं, पशु,-भाव-धर्मः २. मौर्ख्यं, औद्धत्यं, जाड्यम्।

पशुत्व, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पशुता'।

पश्चात्, अव्य. (सं.) ततः, तदनन्तरं, तत्पश्चात्, तदनु, ततः,-परं-ऊर्ध्वम्।

पश्चात्ताप, सं. पुं. (सं.) अनु,-तापः-शयः-शोकः, पाप-दुष्कृत,-खेदः, विप्रतीसारः।

—करना, क्रि. अ., दे. 'पछताना'।

पश्चिम, सं. पुं. (सं. पश्चिमा) प्रतीची, वारुणी, पश्चिम,-दिशा-आशा। वि., पश्चात् उत्पन्न, २. अंत्य, अंतिम।

पश्चिमा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पश्चिम'।

पश्चिमी, वि. (सं. पश्चिमा>) प्रतीच्य, पाश्चात्य, पश्चिमाशासंबंधिन्।

पश्चिमोत्तर, सं. पुं. (सं. पश्चिमोत्तरा) उत्तर-पश्चिमा, वायवी। वि., वायव, वायुदिक्स्थ।

पश्तो, सं. स्त्री. (देश.) पश्चिमोत्तरसीमाप्रांतस्य भाषाविशेषः।

पश्यंती, सं. स्त्री. (सं.) वेश्या, गणिका, क्षुद्रा, रूपाजीवा २. वाणीभेदः, वायुसंयोगात् नाभिजः शब्दः।

पसंद, सं. स्त्री. (फा.) अभि-,रुचिः (स्त्री.), मनोबंधः। वि., मनोनीत, रुचिकर, सं-अभि,-मत, प्रिय।

—करना, रुच् (भ्वा. आ. से. चतुर्थी के साथ) अभि-प्रति,-नंद् (भ्वा. प. से.) अनुमुद् (भ्वा. आ. से.) २. दे. 'चुनना'।

पसंदीदा, वि. (फ़ा.) अभीष्ट, वृत, रुचिकर, रोचक, उत्तम।

पस[1], सं. पुं. (अं.), पूयः-यं, क्षतजं, मलजं, कुणपम्।

पस[2], अव्य. (फ़ा.) तदनु, तत्पश्चात्, तदनन्तरम्।

—(सो) पेश, पुं. मिषं, व्याजः, छलम्।

पसरना, क्रि. अ. (सं. प्रसरणं) प्रसृ (भ्वा. प. अ.) प्र-वि-तन् (कर्म.) २. विस्तॄ (कर्म.), वृध् (भ्वा. आ. से.) ३. करचरणान् प्रसार्य शे (अ. आ. से.)।

पसली, सं. स्त्री. (सं. पर्शुका) पार्श्वास्थि (न.), पार्श्वकम्।

—का रोग, सं. पुं., श्वसनकः ।
हड्डी—तोड़ना, मु., भृशं तड् (चु.) ।
पसाना, क्रि. स. (सं. प्रस्रावणं), मंडं प्रस्नु (प्रे.) २. अतिरिक्तजलांशं अवपत् (प्रे.) ।
पसार-रा, सं. पुं.; दे. 'प्रसार' ।
पसारना, क्रि. स. (सं. प्रसारणं) ब. 'पसरना' के प्रे. रूप । दे. 'फैलाना' ।
पसाव, सं. पुं. (सं. प्रस्रावः>) प्रस्रवः, मंडः-डं, दे. 'मांड' ।
पसीजना, क्रि. अ. (सं प्रस्वेदनं) (शनैः) क्षर्-गल् (भ्वा. प. से.)-स्रु (भ्वा. प. अ.) प्रस्नु (अ. प. से.) २. दयार्द्र-करुणार्द्र (वि.) भू, अनुकंप्-दय् (भ्वा. आ. से) ।
पसीना, सं. पुं. (हिं. पसीजना>) प्र-,स्वेदः, घर्मः, घर्म-स्वेद,-उदकं-जलं-बिंदुः (पुं.) श्रम-वारि (न.) ।
—आना, क्रि. अ., प्र-,स्विद् (दि. प. अ.) स्वेदः स्रु-निस्सृ (भ्वा. प. अ.) ।
पसोपेश, सं. पुं. (फा.) विचिकित्सा, वितर्कः, संशयः आ-परि-वि,-शंका २. परिणामः, हानिलाभौ ।
—करना, क्रि. अ., दोलायते (ना. धा.), विलंब्-विक्लृप् (भ्वा. आ. से.) ।
पस्त, वि. (फ़ा.) पराजित, विजित २. परि-श्रांत, क्लांत ।
—क़द, वि. (फ़ा.) वामन, खर्व ।
—हिम्मत, वि. (फ़ा.) भीरु, कातर ।
पहचान, सं. स्त्री. (सं. परिचयनं या प्रत्य-भिज्ञानं (प्रति-,अभिज्ञा-अभिज्ञानं, २. विवेकः, विचारणं-णा, परिच्छेदः ३. लक्षणं, चिह्न ४. परिचयः, परि-,ज्ञानम् ।
पहचानना, क्रि. स. (हिं. पहचान) प्रति-, अभिज्ञा (क्र्. उ. अ.) अनुस्मृ (भ्वा. प. अ.)- परिच्छिद् (रु. प. अ.), संविद् (अ. प. से.) २. विच् (जु. उ. अ.), विशिप् (रु. प. अ.), परिच्छिद् ३. अव-गम् ज्ञा (क्र्. उ. अ.), बुध् (भ्वा. प. से.), विद् (अ. प. से.) । सं. पुं., दे. 'पहचान' ।
पहचाननेवाला, सं. पुं., प्रति-, अभिज्ञातृ (पुं.), परिच्छेदकः; विवेकिन् ; ज्ञातृ, बोद्धृ (पुं.) ।
पहचाना हुआ, वि., विविक्त, परिच्छिन्न; प्रति-, अभिज्ञात, बुद्ध, विदित ।

पह(हि)नना, क्रि. स. (सं. परिधानं) परिधा (जु. उ. अ.), वस् (अ. आ. से.), धृ (भ्वा. प. अ., चु.), भृ (जु. उ. अ.) । सं. पुं., परिधानं, ध(धा)रणं, भरणं, वसनम् ।
पहनने योग्य, वि., परिधेय, धार्य, वसनीय ।
पहननेवाला, सं. पुं., परि,-धातृ (पुं.) धायकः, धर्तृ-धारयितृ (पुं.) ।
पहनवाना, क्रि. प्रे. } ब. 'पहनना'
पहनाना, क्रि. स. } के प्रे. रूप ।
पहनावा, सं. पुं. (हिं. पहनना) वेशः-षः, परिधानं, वस्त्राणि-वसनानि (न. बहु.), नेपथ्यं, परिच्छदः ।
पहना हुआ, वि., परिहित, धृत, धारित, वसित इ. ।
पहर, सं. पुं. (सं. प्रहरः) यामः, होरात्रयं-यी २. कालः, युगं, समयः ।
पहरना, क्रि. स., दे. 'पहनना' ।
पहरा, सं. पुं. (हिं. पहर) रक्षा, रक्षणं, जाग-रणं, निरूपणं, अवेक्षणं-क्षा, गोपनं, गुप्तिः (स्त्री.) २. रक्षकः, रक्षिन्, रक्षापुरुषः, रक्षि-वर्गः, प्रहरिन्, वैबोधिकं ३. रक्षणकालः, प्रहरः ४. प्रहरि,-भ्रमणं-पर्यटनं ५. प्रहरिपरिवर्तनं ६. प्रहरिघोषः ।
—देना, क्रि. अ., रक्षार्थं जागृ (अ. प. से.) परि,-भ्रम्-अट् (भ्वा. प. से.) ।
पहरेदार, सं. पुं. (हिं.+फा.) दे. 'पहरा'(२) ।
पहरावनी, सं. स्त्री. (हिं पहरना) २. *परिधा-पनी, *परितोषवेषः ।
पहरी, पहरुआ, पहरू, सं.पुं. दे. 'पहरा'(२) ।
पहल, सं. स्त्री. (हिं. पहला) उपक्रमः, प्र-, आरम्भः २. अति-आ,-क्रमः, प्रथमापकारः ।
पहलवान, सं. पुं. (फ़ा.) मल्लः, बाहु,-योधः-योदधृ (पुं.)-योधिन् २. दृढांगः, वज्रदेहः ।
पहलवानी, सं. स्त्री. (फ़ा.) मल्ल-बाहु,-युद्धम् ।
पह(हि)ला, वि. (सं. प्रथम) दे. 'प्रथम' ।
पहलू, सं. पुं. (फ़ा.) पक्षः, पार्श्वः-र्श्वं (सब अर्थों में) २. पक्ष-पार्श्व,-भागः, कक्षाधोभागः ३. विचार्यविषयस्य अंग-भाग,-विशेषः ४. गूढाशयः ५. व्यंग्यार्थः ।
—बचाना, मु., संघट्टं परिहृ (भ्वा. प. अ.) ।
—में बैठना, मु., अतिसमीपं-पे उपविश् (तु. प. अ.)-निपद् (भ्वा. प. अ.) ।

पहले, अव्य. (हिं. पहला) पूर्वं, प्रथमं, आदौ, प्राक्, आरम्भे २. पूर्वं, पुरा, पूर्व-प्राचीन,-काले ।

—पहल, अव्य., सर्वप्रथमं, प्रथमवारे, आदौ ।

पहाड़, सं. पुं. (सं. पाषाणः >) दे. 'पर्वत' (१-२) ३. दुस्साध्य-दुष्कर,-कार्यम् ।

पहाड़ा, सं. पुं. (सं. प्रस्तारः >) गुणनसूची ।

पहाड़िया, वि. (हिं. पहाड़) दे. 'पर्वतवासी' ।

पहाड़ी, सं. स्त्री. (हि. पहाड़) पर्वतकः, लघु-गिरिः (पुं.) २. वल्मीकः-कं, वामलूरः ।

पहिया, सं. पुं. (सं. परिधिः) चक्रं, रथांगम् ।

पहिलौठा, वि., दे. 'पलौठा' ।

पहुँच, सं. स्त्री. (सं. प्रभूत >) उपसर्पणं, अभि-उप,-गमः, प्रवेशः २. गतिसीमा ३. प्राप्तिः (स्त्री.), प्राप्तिसूचना, अभिज्ञतासीमा,- परिचयः ४. आगमनं, उपस्थितिः (स्त्री.) ।

पहुँचना, क्रि. अ. (हिं. पहुँच) आ,-गम्-सद् (भ्वा. प. अ.) समा-सद् प्र-सं-आप् (स्वा. प. अ.), प्रपद् (दि. आ. अ.) २. विस्तॄ (कर्म.) ३. प्रविश् (तु. प. अ.) ४. लभ्-प्राप् (कर्म.) । सं. स्त्री., दे. 'पहुँच' ।

पहुँचनेवाला, सं. पुं., आगंतृ-उपस्थातृ (पुं.); लब्धप्रवेशः, सहायकः ।

पहुँचा, सं. पुं., दे. 'कलाई' ।

पहुँचाना, क्रि. स., व. 'पहुँचना' के प्रे. रूप ।

पहुँचा हुआ, वि., आगत, उपस्थित, प्राप्त, प्रपन्न, प्रविष्ट, लब्ध, अधिगत, सिद्ध ।

पहुँची, सं. स्त्री. (हिं. पहुँचा) आवापकः, मणि-बन्धकटकः ।

पहुनाई, सं. स्त्री. (हिं. पाहुना) प्राघुण-अतिथि,-सेवा-सत्कारः । २. अतिथित्वं, प्राघुणता ।

पहेली, सं. स्त्री. [सं. प्रहेली-लिः (स्त्री.)] प्रहेलिका, प्रश्नदूती, प्रवह्ली-लिः (स्त्री.)–लिका २. समस्या, गूढार्थव्यापारः ।

पह्लवी, सं. स्त्री. (सं. पह्लवः >) पारसीक-देशस्थ प्राचीन भाषा, पह्लवी ।

पाँच, वि. (सं. पंचन्) । सं. पुं., उक्त संख्या तदंकः(५) च ।

—भौतिक, वि. (सं.) पंचभूतनिर्मित (शरीरादि) ।

पाँचों उँगलियाँ घी में होना, मु., सर्वथा प्र-उप-चि (कर्म.) समृध् (दि. प. से.) ।

पाँचवाँ, वि. (हिं. पाँच) पंचमः-मं-मी (पुं. न. स्त्री.) ।

पांचाल, सं. पुं. (सं.) पंचालः । वि. पंचाल-देशोद्भवः ।

पांचाली, सं. स्त्री. (सं.) शाल-भंजी-जिका, पुत्रिका, पंचालिका २. रीतिविशेषः (सा.) ३. द्रौपदी, कृष्णा, याज्ञसेनी ।

पांडव, सं. पुं. (सं.) पांडुनन्दनः, पंच पांडवाः ।

पांडित्य, सं. पुं. (सं. न.) बुद्धि-धी,-मत्त्वं, व्युत्पत्तिः (स्त्री.), विद्वत्ता, विद्वत्त्वं, ज्ञानं, प्राज्ञता ।

पांडु, सं. पुं. (सं.) नृपविशेषः २. सितपीत–वर्णः, हरिणः, पांड(डु)रः ३. रक्तपीतवर्णः ४. श्वेतवर्णः ५. दे. 'पांडुरोग' ।

—रोग, सं. पुं. (सं.) कामलः-ला, पांडुः (पुं.) ।

पांडुर, वि. (सं.) सितपीतवर्ण, पांडु २. पीत ३. शुक्ल । सं. न. (सं.) श्वित्ररोगः । सं. पुं. (सं.) दे. 'पांडुरोग' ।

पांडुलिपि, सं. स्त्री. (सं.) पांडुलेखः, *शोधनीयलेखः ।

पांडे, पांडेय, } सं. पुं. (सं. पंडितः) द्विज-कायस्थ,-भेदः ३. प्राज्ञः, विद्वस् (पुं.) ४. शिक्षकः, अध्यापकः ५. पाचकः, सूदः ।

पाँत, पाँति, सं. स्त्री., दे. 'पंक्ति' ।

पांथ, सं. पुं. (सं.) पथिकः, यात्रिन् २. प्रवासिन् ३. वियोगिन् ४. भानुः ।

—निवास, सं. पुं. (सं.) पांथशाला, यात्रिक-गृहम्, धर्मशाला ।

पाँव, सं. पुं. (सं. पादः) पदं, चरणः-णं, अंघ्रिः (पुं.) २. जंघा ३. मूलं, आधारः, उपष्टम्भः ४. धैर्यं, स्थैर्यम् ।

—का अंगूठा, सं. पुं., पादांगुष्ठः ।

—का सोना, सं. पुं., पादहर्षः (रोग) ।

—की अंगुली, सं. स्त्री., पादांगुली-लिः (स्त्री.) ।

—अड़ाना, मु., दे. 'टांग अड़ाना' ।

—उखड़ना, मु., परा-जि (कर्म.), पलाय् (भ्वा. आ. से.) ।

—उठाना, मु., निष्क्रम् (भ्वा. प. से.) २. सत्वरं चल् (भ्वा. प. से.) ।

—जमाना, मु., निश्चलं-दृढं स्था (भ्वा.प.अ.)।

—तले की मिट्टी निकल जाना, मु., जड़ी-निष्पंदी-भू, विस्मयेन उपहन् (कर्म.)।

—पड़ना, मु., चरणयोः अवपत् (भ्वा. प. से.), अतिनम्रतया याच् (भ्वा. आ. से.)।

—पसारना, मु. प्रसृते प्रसृ (प्रे.) सुखं स्वप् (अ. प. अ.) २. दे. 'मरना'।

—पाँव, मु., पादचारी भूत्वा, पद्भ्यामेव चलत् (शत्रंत)।

—पूजना, मु. चरणौ चुंब् (भ्वा. प. से.)–सेव् (भ्वा. आ. से.)।

—फटना, मु., पादौ शीतेन स्फुट् (तु.प.से.)।

—फूँक-फूँक कर रखना, मु., सावधानं प्रवृत् (भ्वा. आ. से.) कार्येषु ।

—फैला कर सोना, मु., निश्चिंतं स्वप् (अ. प. अ.)।

—भारी होना, मु., गर्भं आधा (जु. उ. अ.)-धृ (चु.)।

दबे—आना, मु., निभृतं आया (अ. प. अ.)।

धरती पर—न रखना, मु., नितरां दृप् (दि. प. अ.), गर्व् (भ्वा. प. से.)।

पाँवड़ा, सं. पुं. (हिं. पाँव) पादचारास्तरणम् ।

पाँवड़ी, सं. स्त्री. (हि. पाँव) दे. 'खड़ाऊँ' तथा 'जूता'।

—पांश (स) न, वि. (सं.) दूषक, कलंक-जनक ।

पांशु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) पांसुः (पुं.), धूली-लिः (स्त्री.), रजस् (न.)।

पांशुल, वि. (सं.) रेणु,-दूषित-रूक्ष, धूलिधूसर।

पाँसा, सं. पुं. (सं. पाशकः) अक्षः, देवनः, सारः, शारः।

—उलटना, मु., यत्नो विपरीतफलो जन् (दि. आ. से.)।

पा, सं. पुं. (फ़ा.) पादः, पदं, चरणः-णम् ।

—अंदाज़, सं. पुं. पद-पाद,-घर्षण-प्रोंछनम् ।

पाइओरिया, सं. पुं. (अं.) दन्तपूयम् ।

पाई, सं. स्त्री. (सं. पादः>) पादिका २. चतुर्थांशसूचिका ऊर्ध्वरेखा (उ. ४।=सवा चार) ३. आकारमात्रा (ा) ४. पूर्णविराम-चिह्नम् (।)।

पाउंड, सं. पुं. (अं.) निष्कः, दीनारः २. *पौण्डं, अर्द्धसेरात्मको देशीय आंग्लतोलभेदः।

पाउडर, सं. पुं. (अं.) पिष्टं, क्षोदः, चूर्णं २. पटवासकः, पिष्टातकः, पिष्टापः।

पाक[1], सं. पुं. (सं.) पचनं, पाचनं, श्रातिः (स्त्री.), अधिश्रयणं, पचा, रन्धनं (सात प्रकार का पाक—

भर्जनं तलनं स्वेदः पचनं क्वथनं तथा।
तांदूरं पुटपाकश्च पाकः सप्तविधो मतः ॥)

२. पक्व-सिद्ध,-अन्नं ३. परिणतिः (स्त्री.) ४. औषधभेदः ५. जठरे आहारपचनं ६. दैत्य-विशेषः।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) महानसः-सम् ।

—शासन, सं. पुं. (सं.) दे. 'इन्द्र'।

पाक[2], वि. (फ़ा.) पवित्र, वि-, शुद्ध २, निष्पाप, निष्कल्मष ३. समाप्त ।

—दामन, वि. (फ़ा.) पतिव्रता, सती ।

—साफ़, वि. (फ़ा+अ.) स्वच्छ, निर्मल ।

पाकेट, सं. पुं. (अं.) दे. 'जेब'।

पाक्षिक, वि. (सं.) अर्द्धमासिक, मासार्द्धिक २. पक्षपातिन् ।

पाखंड, सं. पुं. (सं. पाषंडः-डं) दम्भः, दांभि-कता, छाद्मिकता, आर्यरूपता, कपटधर्मः, कुटक-लिंग,-वृत्तिः (स्त्री.), कापट्यम् ।

पाखंडी, वि. (सं. पाषंडिन्) पाषंड-डक, दंभिन्, दांभिक, कपटिन्, कापटिक, आर्य,-रूप-लिंगिन्, छद्म-कपट,-वेशिन् ।

पाख, सं. पुं. (सं. पक्षः) दे. 'पखवारा'।

पाखर, सं. स्त्री. (सं. प्रखरः) प्रक्षरः, अश्व-गज,-सन्नाहः।

पाखा (पा) न, सं. पुं. (सं. पाषाणः) प्रस्तरः, शिला, अश्मन्, ग्रावन् (पुं.)।

पाख़ाना, सं. पुं. (फ़ा.) शौच,-कूपः-स्थानं २. उच्चारः, गूथः-थं, मलः-लं, पुरीषं, विष् (स्त्री.) विष्ठा, शकृत् (न.), शमलम्।

—निकलना, मु., नितरां भी (जु. प. अ.), त्रस् (दि. प. से.)।

पाखाने जाना, मु., शौचकूपं या (अ. प. अ.) पुरीषं उत्सृज् (तु. प. अ.)।

पाग[1], सं. स्त्री. (हिं. पग) दे. 'पगड़ी'।

पाग[2], सं. पुं. (सं. पाकः>) मधु-शर्करा,-क्वाथः २. मधुक्वाथपक्वफलमौषधं वा ।

पागना, क्रि. स. (सं. पाकः>) गुड-सिता,-रसे निमस्ज् (प्रे.)।

पागल, सं. पुं. (देश.) उन्मत्तः, वातुलः,

विक्षिप्तः, उन्मादिन्, भ्रांत,-चित्तः-मतिः २. जडः, मूर्खः ।

—खाना, सं. पुं. (हिं.+फ़ा.) वातुलालयः, उन्मत्तागारम् ।

—पन, सं. पुं. उन्मादः, वातुलता, मतिभ्रंशः २. मौर्ख्यातिशयः ।

पागुर, सं. पुं., दे. 'जुगाली' ।

पाचक, सं. पुं. (सं. न.) दीपनं, पाचनं जारणं, अग्निवर्द्धनं (चूर्णादि) २. सूपकारः, पाककर्तृ (पुं.) सूदः, वल्लवः ३. अनलः ।

पाचन, सं. पुं. (सं.) अग्निः (पुं.), जठर,-अनलः-अग्निः २. दे. 'पाचक' ३. दे. 'पाक'[1] । वि., पाचक, अग्निवर्द्धक ।

—शक्ति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पाचन' (१) ।

पाछ, सं. पुं. (हिं. पाछना) *रोगनिवारकद्रव्य-निवेशः २. *ईषच्छेदः, *क्षुद्रक्षतम् ।

पाछना, क्रि. स. [हिं. पंछा (पानी+छाल)] रोगनिवारकद्रव्यं निविश् (प्रे.) २. (तरु-मनुजादीनां) त्वचं ईषत् छिद् (रु. प. अ.) ।

पाजामा, सं. पुं. (फ़ा.) पादायामः ।

पाज़िटिव, वि. (अं.) धनात्मक (विद्युत्) ।

पाजी, वि. (सं. पाय्य) दुष्ट, दुर्वृत्त, खल, नीच, अधम, तुच्छ ।

—पन, सं. पुं. (हिं.) नीचता, अधमता, दुष्टता इ. ।

पाजेब, सं. स्त्री. (फ़ा.) नूपुरः-रं, तुलाकोटी-टि. (स्त्री.), मंजीरः-रं, हंसकः, पाद,-अङ्गदं-कटकः-भूषणम् ।

पाटंबर, सं. पुं. (सं. पट्टांबरं) पट्टांशुकं, कौशिकं, क्षौमं, पट्टः-ट्टम् ।

पाट, सं. पुं. (सं. पट्टः-ट्टं) कृमिजं, कौशेयं, कीटसूत्रं २. विस्तारः, पृथुता, विशालता ३. काष्ठफलकं ४. शिला, पट्टिका ५. धावक,-फलकं-शिला ६. सिंहासनं ७. पेषणीपाषाणः ।

राज—, सं. पुं., राज्यं २. राजसिंहासनम् ।

पाटक, सं. पुं. (सं.) भेदकः, छेदकः, विदारकः २-३. ग्राम,-मागः-अर्द्धम् ४. वाद्यभेदः ५. कूलं, तीरम्, तटम् ६. तीर्थसोपानततिः (स्त्री.) ।

पाटन, सं. स्त्री. (हिं. पाटना) पटलं, छदिः (स्त्री.) छदिस् (न.) २. (निम्नस्थलस्य) संपाटी-समरेखी,-करणं ३. प्र-सं-पूरणम् ।

पाटना, क्रि. स. (हिं. पाट) (गर्तादीन्) आ-प्र-सं-पूर् (चु.) २. निम्नभूमिं समी-सपाटी,-कृ ३. पटलेन आच्छद् (चु.) ४. तृप् (प्रे.) ५. सिच् (तु. प. अ.) ।

पाटल, सं. पुं. (सं.) श्वेतरक्त,-वर्णः-रङ्गः ।

पाटला, सं. स्त्री. (सं.) स्थिरगंधा, अमोघा, ताम्रपुष्पी (हिं.) पाढर का पेड़ ।

पाटलिपुत्र, सं. पुं. (सं. न.) कुसुम-पुष्प,-पुरं, पाटलिपुत्रकम् (नगरम्) ।

पाटलिमा, सं. स्त्री. (सं.-मिन् पुं.) पीतरक्त,-वर्णः-रंगः ।

पाटव, सं. पुं. (सं. न.) दाक्ष्यं, कौशलं, चातुर्यं २. तार्ढ्यं ३. आरोग्यम् ।

पाटा, सं. पुं. (सं. पट्टः) धावक-रजक,-शिला-काष्ठफलकं-पट्टम् ।

पाटी[1], सं. स्त्री. (सं. स्त्री.) अनुक्रमः, परिपाटी २. श्रेणी, पंक्तिः (स्त्री.) ३. वलाक्षुपः ।

पाटी[2], सं. स्त्री. (हिं. पाट) पट्टिका, दे. 'तख्ती' २. पाठः ३. सीमंतः ४. खट्वायाः पार्श्वदंडः ५. कटः ६. शिला ।

पाठ, सं. पुं. (सं.) पठनं, अध्ययनं, वाचनं २. पठितव्य-अध्येतव्य,-विषयः ३. आह्निकः स्वाध्यायः ४. परिच्छेदः, अध्यायः ५. वाक्य-शब्द,-क्रमः ।

—शाला, सं.स्त्री.(सं.) विद्या,-आलयः-मंदिरम् ।

पाठक, सं. पुं. (सं.) अध्येतृ, पठितृ, वाचकः २. अध्यापकः, शिक्षकः, गुरुः (पुं.) ३. ब्राह्मणभेदः ।

पाठन, सं. पुं. (सं. न.) अध्यापनं, शिक्षणं, उपदेशः ।

पाठिका, सं. स्त्री. (सं.) अध्येत्री, पठित्री, वाचिका २. अध्यापिका, शिक्षिका ३. पाठा, अंबष्ठा-ठिका लताभेदः ।

पाठी, सं. पुं. (सं.-ठिन्) पाठकः, अध्येतृ (पुं.) (प्रायः अंत में; उ. वेदपाठी इ.) ।

पाठीन, सं. पुं. (सं.) पुराण-कथा,-वाचकः-श्रावकः २. मत्स्यभेदः ३. अध्ययनशीलः ।

पाठ्य, वि. (सं.) पठनीय, अध्येतव्य, वाचनार्ह २. पाठयितव्य, अध्यापनीय ।

—क्रम, सं. पुं. (सं.) पाठ्यपुस्तकावली, परीक्षाग्रंथावली ।

—पुस्तक, सं. पुं. (सं. न.) नियत-निर्दिष्ट-ग्रंथः ।

पाड़, सं. पुं. (हिं. पाट) शाटी-धौता,-प्रान्तः-

अंचलः २. मंचः, मंचकः ३. कूपच्छादनम् ४. उद्बन्धनपट्टः-टम् ५. कुड्यकोणपट्टः-टम् ।

पाणि, सं. पुं. (सं.) करः, हस्तः ।

—ग्रहण, सं. पुं. (सं. न.) उद्वाहः, दे. 'विवाह' ।

—ग्राहक, सं. पुं. (सं.) भर्तृ (पुं.), दे 'पति' ।

पाणिनि, सं. पुं. (सं.) अष्टाध्यायीप्रणेता वैयाकरणविशेषः ।

पात[1], सं. पुं. (सं. पत्रं) दे. 'पत्ता' ।

पात[2], सं. पुं. (सं.) अधः-नि,-पतनं, स्रंसनं, च्युतिः (स्त्री.) २. पातनं, ३. वि,-नाशः ध्वंसः ४. मृत्युः (पुं.), अधोनयनम् ।

पातक, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पाप' ।

पातकी, (सं.-किन्) दे. 'पापी' ।

पाताल, सं. पुं. (सं.) अधो,-भुवनं-लोकः, नागलोकः २. विवरं, बिलं ३. भुवनविशेषः ।

पातिव्रत, सं. पुं. (सं. न.)पातिव्रत्यं-सतीत्वम् ।

पातुर, सं. स्त्री. (सं. पातली>) दे. 'वेश्या' ।

पात्र, सं. पुं. (सं. न.) भाजनं, अमत्रं, भांडं, कोशः-शी, कोपः-पी, कोरि(शि)का, पात्री २. नटः, अभिनेतृ (पुं.) ३. तीरद्वयांतरं (हिं. पाट) ४. राजमंत्रिन् ५. स्रुवादीनि यज्ञोपकरणानि ६. *नाटकस्य कथापुरुषः (नायकादि) ७. सत्पात्रं, गुणास्पदम् । वि., योग्य, उचित, अर्ह ।

पात्रता, सं. स्त्री. (सं.) विद्यातपस्याचारयुक्तता, पात्रत्वं, योग्यता, अर्हता, गुणः ।

पाथ[1], सं. पुं. (सं. पाथं) पाथस् (न.), जलम् ।

पाथ[2], सं. पुं. (सं. पथः) मार्गः, अध्वन् (पुं.) ।

पाथना, क्रि. स. (हिं. थापना) गोमयानि रच् (चु.)-निर्मा (जु. आ. अ.) २. तड् (चु.) ।

पाथेय, सं. पुं. (सं. न.) सं(शं)बलं पथि उपभोक्तव्यं द्रव्यम् ।

पाथोधि, सं. पुं. (सं.) सागरः ।

पाद[1], सं. पुं. (सं.) पदं, चरणः-णं, पद् (पुं.), अंह्रि-अंघ्रिः (पुं.) २. मंत्रश्लोकादीनां चरणः ३. चतुर्थभागः ४. ग्रंथभागः ५. गिरिवृक्षादीनां मूलम् ।

—टीका, सं. स्त्री. (सं.) पृष्ठतल-पाद,-टिप्पणी ।

—त्राण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पादुका' ।

—पीठ, सं. पुं. (सं. न.) पदासनम् ।

—प्रहार, सं. पुं. (सं.) चरणाघातः, दे. 'ठोकर' ।

पाद[2], सं. पुं. (सं. पर्दः) अपान-अधो,-वायुः (पुं.) ।

—मारना, क्रि. अ., दे. 'पादना' ।

पादना, क्रि. अ. (सं. पर्दनं) पर्द् (भ्वा. आ. मे.), अपानवायु उत्सृज् (तु. प. अ.) ।

पादप, सं. पुं. (सं.) तरुः, दे. 'वृक्ष' ।

पादरी, सं. पुं. (पुर्त. पैद्रे) खिस्तमत,-पुरोहितः-उपदेशकः ।

पादविक, सं. पुं. (सं.) पथिकः, पांथः, यात्रिन् ।

पादांगुली, सं. स्त्री. (सं.) } दे. 'पाँव' के नीचे ।
पादांगुष्ठ, सं. पुं. (सं.) }

पादांत, सं. पुं. (सं.) पादं-पद-चरण,-अग्रं-अग्रभागः २. पद्य-चरणावसानम् (सा०) ।

पादुका, सं. स्त्री. (सं.) पादूः (स्त्री.), पाद,-त्रं-त्राणं, पादरक्षिका, कौपी । २. दे. 'जूता' तथा 'बूट' ।

पाद्य, सं. पुं. (सं. न.) पादप्रक्षालनजलम् ।

पाधा, सं. पुं. (सं. उपाध्यायः) गुरुः (पुं.), आचार्यः, शिक्षकः २. पंडितः, विद्वस् (पुं.) ।

पान[1], सं. पुं. (सं. न.) पीतिः (स्त्री.), आचमनं, धयनं, द्रवद्रव्यस्य गलाधःकरणं २. मद्य-सुरा,-पानं ३. पेयद्रव्यं ४. मद्यं ५. जलम् ।

—करना, क्रि. स., दे. 'पीना' ।

—पात्र, सं. पुं. (सं. न.) पानं, चषकः, सरकः, पानभाजम् ।

पान[2], सं. पुं. (सं. पर्णं) तांबूली, तांबूलवल्ली, नाग,-लता-वल्ली २. तांबूलं, पर्णं, नागवल्ली-दलं ३. क्रीडापत्ररंगभेदः ४. पत्रं, किसलयः ।

—गोष्ठी, सं. स्त्री. (सं.) आपानं, मद्यपान,-चक्रं-सभा ।

—दान, सं. पुं. (हिं+फ़ा) *पर्णधानं, तांबूल-करंकः ।

पानक, सं. पुं. (सं. न.) *मधुराम्लपेयम् ।

पाना, क्रि. स. (सं. प्रापणं) प्र-, आप् (स्वा. उ. अ.), लभ् (भ्वा. आ. अ.), विद् (तु. उ. वे.), समा-सद् (प्रे.) आ-प्रति-पद् (दि. आ. अ.) अधिगम्, आदा (जु. आ. अ.), ग्रह् (क्र्. प. से.), २. (सुखादि) अनुभू, भुज् (रु. आ. अ.) ३. बुध् (भ्वा. उ. से.); विद् (अ. प. से.) ४. तुल्य-सदृश (वि.) भू

५. खाद् (भ्वा. प. से.) ६. सह् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं., प्रापणं, लब्धिः (स्त्री.), अधिगमनं, आदानं, अनुभवः, बोधः, भुक्तिः इ. ।

पानेवाला, सं. पुं., प्रापकः, अधिगंतृ-आदातृ-ग्रहीतृ (पुं.) इ. ।

पाने योग्य, वि., प्राप्य, लभ्य, आदेय, ग्राह्य इ.

पाया हुआ, वि., प्राप्त, अधिगत, लब्ध, गृहीत इ. ।

पानिप, सं. पुं. (हिं. पानी) द्युतिः-कांतिः (स्त्री.) २. दे. 'पानी' ।

पानी, सं. पुं. (सं. पानीयं) वारि-अंभस् (न.), दे. 'जल' २. कांतिः-द्युतिः (स्त्री.) ३. प्रतिष्ठा, संमानः ४. वृष्टिः (स्त्री.) ५. पौरुषं, वीर्यं ७. वातवर्षादिसामग्री, *जलवायु (न.) ७. रसः ८. शीतलवस्तु (न.) ९. समयः, अवसरः १०. परिस्थितिः (स्त्री.) ।

—दार, वि. (हिं.+फ़ा.) कांतिमत्, भासुर २. मान्य ३. आत्माभिमानिन् ।

—देवा, सं. पुं., तर्पकः, पिंडदः २. पुत्रः ३. स्ववंशीयः ।

—फल, सं. पुं., दे. 'सिंघाड़ा' ।

—से डरना, सं. पुं., आलर्कं, जल,-आतंकः-संत्रासः ।

—कर देना, मु., क्रोधं अपनी (भ्वा. प. अ.) शम् (प्रे., शमयति) ।

—का बुलबुला, मु., क्षणभंगुर, असार, नश्वर ।

—की तरह बहाना, मु., अपव्यय् (चु.), अमितं व्यय्, मुधा क्षि (प्रे., क्षपयति) ।

—के मोल, मु., स्वल्पमूल्येन, अत्यल्पार्घेण ।

—देना, मु., (पितॄन्) उदकेन तृप् (प्रे.) २. उदकं पत (प्रे.)-निषिच् (तु. प. अ.) ।

—पड़ना, मु., वृष् (भ्वा. प. से.) ।

—पानी होना, मु., अतीव लज्-लस्ज् (तु. आ. से.) ।

—पी-पी कर कोसना, मु. नितरां आक्रुश्-शप् (भ्वा. प. अ.)-अभिशंस् (भ्वा. प. से.) ।

—भरना, मु., (तुलनायां) तुच्छ (वि.) प्रतीयते ।

—में आग लगाना, मु., शांतं कलहं पुनः उज्जीव् (प्रे.)-नवीकृ ।

—लगना, मु., प्रतिकूलजलवायुनाऽस्वस्थ (वि.) भू ।

—सा पतला, मु., जलरूप, जलबहुल, जलविरल ।

अद्रक का—, सं. पुं., आर्द्रकजलम् ।

खारा—, सं. पुं., क्षारजलम् ।

पानीय, वि. (सं.) पेय, पातव्य । सं. पुं. (सं. (न.) दे. 'जल' ।

पाप, सं. पुं. (सं. न.) अधर्मः, पाप्मन् (पुं.) पापकं, किल्बिषं, कल्मषं, वृजिनं, अघं, अंहस्,-एनस् (न.), दुरितं, दुष्कृतं, पातकं, शल्यं २. अपराधः, दोषः ३. वधः ४. पापबुद्धिः (स्त्री.) ५. अनिष्टं, अहितम् ।

—कटना, क्रि. अ., पापेभ्यः मुच् (कर्म.), पापं नश् (दि. प. वे.) ।

—करना, क्रि. स., पापं कृ अथवा आचर् (भ्वा. प. से.) २. अपराध् (दि. स्वा. प. अ.) ।

—नाशी, वि. (सं-शिन्) पापघ्न, अघनाशक, पापहर ।

—बुद्धि, वि. (सं.) पाप-कु-दुर्,-मति-बुद्धि ।

—रोग, सं. पुं. (सं.) रतिजरोगः (प्रमेहादिः) ।

—लोक, सं. पुं. (सं.) दे. 'नरक' ।

पापक, वि. (सं.) दुर्जन, दुष्ट, पापिन् । सं. पुं., दुर्जनः, पापः, पातकिन् २. कुकृत्यं, पापम् ।

पापड़, सं. पुं. (सं. पर्पटः) माषयोनिः, शिंबीपूपः, वैदलपिष्टकः । वि., तनु २. शुष्क ।

—बेलना, मु., घोरं परिश्रम् (दि. प. से.) २. दुःखं जीव् (भ्वा. प. से.) ।

पापड़ा, सं. पुं. (सं. पर्पटः) अरकः, वरकः, प्रगंधः, सुतिक्तः २. दे. 'पित्तपापड़ा' ।

—खार, सं. पुं. (सं. पर्पटक्षारः) *कदलीक्षारः ।

पापर, सं. पुं. (अं.) दरिद्रः, अकिञ्चनः, निर्धनः ।

पापाचार, सं. पुं. (सं.) दुराचारः, दुर्वृत्तम् ।

पापात्मा, वि. (सं.-त्मन्) दे. 'पापी' ।

पापिन-नी, वि. स्त्री. (सं.) पातकिनी, दुष्टा, दुराचारिणी, पाप,-करी-कारिणी; एनस्विनी २. अपराधिनी, दोषिणी ।

पापिष्ठ, वि. (सं.) पाप(पि)तम, दुष्टतम [पापिष्ठा (स्त्री.) = पापतमा, दुष्टतमा] ।

पापी, वि. (सं.-पिन्) पातकिन्, पाप, पापकर, कु-पाप-दुष्-दुष्ट,-कर्मन्, एनस्विन्, किल्बिपिन्, पाप,-निरत-बुद्धि-मति, पापकृत्-पापात्मन् २. अपराधिन्, दोषिन् ।

पापोश, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'जूता'।
पाबंद, वि. (फ़ा.) नि-, बद्ध, परतन्त्र, निरुद्ध, संयत, नियंत्रित।
पाबंदी, सं. स्त्री. (फ़ा.) बंधः, बंधनं, नियंत्रणं-णा २. विवशता, बाध्यता।
पाम, सं. पुं. (सं. पामन्) पामा, विचर्चिका, खर्जूः-कंडूतिः (स्त्री.)।
—घ्न, सं. पुं., (सं.) पामारिः, गन्धकः, सौगन्धिकः।
पामन, वि. (सं.)पाम-पामा-खर्जू-, पीडित-ग्रस्त।
पामर, वि. (सं.) दुष्ट, खल, दुर्वृत्त २. नीच, अधम ३. मूर्ख, जड।
पामाल, वि. (फ़ा.) पदाक्रांत, पददलित, पादक्षुण्ण, अव-सं,-मर्दित २. वि-,ध्वस्त-नष्ट।
पायँचा, सं. पुं. (फ़ा.) *पादायामजंघा।
पायँता, सं. पुं. (हिं. पायँ) खट्वायाः *पद्धानं, *पदतानः।
पायँती, सं. स्त्री., दे. 'पायँता'।
पायंदाज़, सं. पुं. (फ़ा.) *पादघर्षणम्।
पाय, सं. पुं. (सं. पादः) दे. 'पाँव'।
पायख़ाना, सं. पुं., दे. 'पाख़ाना'।
पायजामा, सं. पुं. दे. 'पाजामा'।
पायजेब, सं. स्त्री., दे. 'पाजेब'।
पायदार, वि. (फ़ा.) चिर-, स्थायिन्, दृढ।
पायदारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) चिरस्थायिता,दृढता।
पायमाल, वि. (फ़ा.) दे. 'पामाल'।
पायल, सं. स्त्री. (हिं. पाय) दे. 'पाजेब' २. वंशनिःश्रेणी ३. शीघ्रगामिनी हस्तिनी।
पायस, सं. पुं. (सं. पुं. न.) परमान्नं, दे. 'खीर' २. श्रीवासः, दे. 'तारपीन'।
पाया, सं. पुं. (सं. पादः) (पर्यंकादीनां) पादः, जंघा, टंगा, २. स्तंभः, स्थूणा, स्थाणुः (पुं.) ३. पदं, पदवी-विः (स्त्री.), स्थितिः (स्त्री.) ४. सोपान,-पथः-मार्गः, परम्परा।
पायु, सं. पुं. (सं.) दे. 'गुदा'।
पारंगत, वि. (सं.) पारग, परतीर-पार,-गत, २. प्रौढपंडित, अधीतिन्, सुविद्वस्, शास्त्रमर्मज्ञ।
पार, सं. पुं. (सं. पुं. न.) पर-,तीरं-तटं २. अन्यतरं तटं ३. पर-अभिमुख,-पार्श्वः-दिशा ४. अंतः, पर्यंतः, सीमा ५. तलं, अधोभागः। अव्य., पारे, दूरे, अग्रे, परतः।
—करना, क्रि. स., सं-उत्,-तॄ (भ्वा. प. से.), उत्,-लंघ् (भ्वा. आ. से.; चु.), अति-इ (अ. प. अ.), अतिक्रम् (भ्वा. प. से.)। २. समाप् (स्वा. उ. अ.) संपूर् (चु.), निर्वृत् (प्रे.) दे. 'बींधना'।
—दर्शक, वि. (सं.) स्वच्छ, किरण-प्रकाश,-भेद्य।
—दर्शी, वि. (सं.-र्शिन्) दूरदर्शिन्, भविष्यदर्शिन्।
—पाना, मु., सम्यक् बुध् (भ्वा. प. से.), आद्यंतं या (अ. प. अ.) अथवा संपूर् (चु.)।
आर—, सं. पुं. पारापारं, पारावारम्। क्रि. वि., अवारपारम्।
वार—, सं. पुं., दे. 'आरपार'।
पारखी, सं. पुं. (हिं. परख>) परीक्षकः, गुणदोषविद् (पुं.)।
पारग, पारगत, वि. (सं.) दे. 'पारंगत'।
पारण, सं. पुं. (सं. न.) पारणा, उपवासानन्तरं प्राथमिकभोजनं २. तर्पणं ३. समाप्तिः (स्त्री.)।
पारतंत्र्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'परतंत्रता'।
पारद, सं. पुं. (सं.) दे. 'पारा'।
पारदेशिक-शी, वि., दे. 'परदेसी'।
पारधी, सं. पुं., दे. 'शिकारी'।
पारलौकिक, वि. (सं.) आमुष्मिक, परलोक,-संबंधिन्-विषयक, अपार्थिव।
पारस, सं. पुं. (सं. स्पर्शः>) स्पर्श,-मणिः-उपलः २. अतिलाभदः पदार्थः।
पारसाल, सं. पुं. (सं.+पार+फ़ा. साल) गतवर्षं, परुत् (अव्य.)। क्रि. वि., गताब्दे, परुत्।
पारसी, वि. (फ़ा.) पारसवासिन् २. भारतस्थाः पारसीकाः ३. 'फ़ारसी'।
पारसीक, सं. पुं. (सं) पारसदेशः, पारसिकः २. पारसवासिन् ३. पारसघोटकः, वानायुजः।
पारस्परिक, वि. (सं.) दे. 'परस्पर का'।
पारा, सं. पुं. (सं. पारः) महा-दिव्य-,रसः, रस,-राजः-नाथः-उत्तमः-इन्द्रः, चपलः, पारदः, शिवबीजं, सिद्धधातुः।
पारायण, सं. पुं. (सं. न.) समापनं, समाप्तिः (स्त्री.) २. आद्यन्तपाठः।
पारावत, सं. पुं. (सं.) कपोतः, २. कपिः ३. पर्वतः।

पारावार, सं. पुं. (सं.) समुद्रः । (सं. न.) तटद्वयं २. सीमा, पर्यंतः, अवधिः ।
पारिजात, सं. पुं. (सं.) सुर-देव-कल्प,-तरुः-वृक्षः, मंदारः ।
पारिजातक, सं. पुं. (सं.) देवतरुषु अन्यतमः २. हरशृंगारः ३. कांचनालः, कोविदारः ४. पारिभद्रः, देववृक्षविशेषः ।
पारितोषिक, सं. पुं. (सं. न.) सिद्धिपालं, जयलाभः, दे. 'इनाम' ।
पारिपंथिक, सं. पुं. (सं.) परिपंथिन्, लुंट-(टा, ठा) कः, मार्गतस्करः ।
पारिभाषिक, वि. (सं.) सांकेतिक, परिभाषा-संकेत,-संबंधिन् ।
पारिषद, सं. पुं. (सं.) सभासद् (पुं.), सभ्य, पारिषद्य २. गणः, अनुचरवर्गः ।
पारी, सं. स्त्री., दे. 'बार' ।
पार्थक्य, सं. पुं. (सं. न.) पृथकूता, भिन्नता २. वियोगः, विरहः, विश्लेषः ।
पार्थिव, वि. (सं.) मृण्मय (-यी स्त्री.), मार्तिक (-की स्त्री.) २. भौम, पृथिवीसंबंधिन् ३. लौकिक, ऐहिक (-की स्त्री.) । सं. पुं., नृपः २. कुजः ।
पार्लियामेंट, सं.स्त्री. (अं.) व्यवस्थापिका सभा ।
पार्वती, सं. स्त्री. (सं.) उमा, अद्रिजा, अंबिका, गौरी, नंदा, भवानी, महादेवी, शिवा, रुद्राणी, सती, सिंहवाहिनी, हिमाद्रितनया, हैमवती ।
—नंदन, सं. पुं. (सं.) कार्त्तिकेयः ।
पार्श्व, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कक्षाधोभागः, पार्श्व-पक्षः,-भागः, कुक्षिः २. पक्षः, पार्श्वः-र्श्वं, समीप-निकट,-स्थानं ३. पार्श्वास्थि (न.), पार्श्वकम् ।
—वर्ती, सं. पुं. (सं. तिंन्) समीपस्थ-निकटस्थ,-जनः ।
—शूल, सं. पुं. (सं. पुं, न.) शूलरोगभेदः ।
पाल[1], सं. पुं. (सं.) पालकः, पोषकः २. पतद्ग्रहः, दे. 'पीकदान' ।
पाल[2], सं. पुं. (हिं. पालना) फलपाकाय पलालास्तरणम् ।
पाल[3], सं. पुं. (सं. पटः वा पाटः>) नौ-,* वातपटः २.पट,-मंडपः-गृहं ३.शकटाच्छादनम् ।
पाल[4], सं. स्त्री. [सं. पालिः (स्त्री.)] सेतुः, धरणः, वप्रबंधः २. उच्च,-तीरं-कूलं, दे.'कगार' ।
पालक,[1], सं. पुं. (सं.) पोषकः, रक्षकः, पालन-कर्तृ-पालयितृ २. अश्व,-पालः-रक्षः ३. दत्तक-पुत्रः ४. चित्रकवृक्षः ।
पालक[2], सं. पुं. (सं. पालंकः) पालंकी, सु-स्निग्ध,-पत्रा, मधुरा, क्षुरपत्रिका, ग्रामीणा ।
पालकी, सं. स्त्री. (सं. पल्यंकः>) शिरस्का, डयनं, शिविका, *पल्यंकी, रथगर्भकः, याप्य-यानम् ।
—गाड़ी, सं. स्त्री., *पल्यंकी शकटी ।
पालतू, वि. (सं. पालित) गृह,-वर्धित-पोषित, गृह्य, छेक, गृह-, ग्राम- ।
पालथी, सं. स्त्री., दे. 'पलथी' ।
पालन, सं. पुं. (सं. न.) भरणं, पोषणं, सं-, वर्धनं, अन्नवसनै रक्षणं २. निर्वाहः, अनुकूला-चरणं, अनुवर्तनं, साधनं, पूरणम् ।
पालना, क्रि. स. (सं. पालनं) परि-, पा (प्रे. पालयति), परि-, पुष् (भ्वा. क्र्. प. से. तथा प्रे.), संवृध् (प्रे.), सं-, भृ (भ्वा. जु. प. अ.) २. (पशुविहगान्) विनी (भ्वा.प.अ.), दम् (प्रे.), गृहे पुष्-संवृध् (प्रे.) ३. अनुकूलं आचर् (भ्वा. प. से.), निर्वह् (प्रे.) संपूर्-साध् (प्रे.) । सं. पुं., दे. 'पालन' २. (शिशु-) प्रेंखा-दोला ।
पालने योग्य, वि., परि-, पालनीय-पोषणीय, भरणीय, विनेय, निर्वाह्य, इ. ।
—वाला, सं. पुं., दे. 'पालक'[1](१) २. विनेतृ, गृहे पोषकः ३. निर्वाहकः, साधकः ।
पाला[1], सं. पुं. (सं. प्रालेयं) तुषारः, नीहारः, कुज्झटिका, मिहिका, तुहिनं, २. घनजलं, जल-घनः, तुषारसंघातः, हिमं ३. शीतं, शैत्यं, हिमः ।
—मार जाना, मु., नीहारेण नश् (दि. प. वे.), तुषारेण ध्वंस् (भ्वा. आ. से.) ।
पाला[2], सं.पुं.(हिं. पल्ला) व्यवहारावसरः, संबंधः ।
—पड़ना, मु., व्यवहारः-संबंधः-कार्यं जन् (दि. आ. से.) ।
पाले पड़ना, मु., वशीभू, अधीन (वि.) जन् ।
पाला[3], सं. पुं. (सं. पट्टः>) प्रधानस्थानं, मुख्यकार्यालयः २. विभाजकरेखा ३. क्षेत्रसीमा ४. अन्नार्थं बृहत्पात्रं ५. मल्लयुद्धभूमिः (स्त्री.), व्यायामशाला ।
पालागन, सं. स्त्री. (हिं. पाँय+लगना) चरणचुंबनं, पादप्रणतिः (स्त्री.), प्रणामः, वंदना, नमस्कारः ।

पाला हुआ, वि., परि-,पालित, पोषित, सं-, भृत, गृहे संवर्धित, संपूरित, रक्षित, इ.।
पालित, वि. (सं.) दे. 'पाला हुआ'।
पालिश, सं. स्त्री. (अं.) प्रमार्जनम्, *कांतिकरी।
पालिसी, सं. स्त्री. (अं.) नीतिः (स्त्री.), नयः २. राजनीतिः-शासनरीतिः (स्त्री.) ३. उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ४. आयतिरक्षणसमयलेखः, संभाव्यहानिरक्षण-पत्रम्, आश्वासिका।
—होल्डर, सं., पुं. आश्वासिकाधारकः।
पाली[1], सं. स्त्री. (सं. पालिः=पंक्तिः>) भारतवर्षस्य प्राचीनभाषाविशेषः (प्रायः बौद्ध धर्म-ग्रंथ इसी में हैं)।
पाली[2],वि.(सं.-लिन्) पालक, पोषक २. रक्षक।
पाली[3], सं.स्त्री. (सं. पल्लिः=स्थान>) कुक्कुट-युद्ध-भूमिः (स्त्री.)।
पावँ, सं. पुं., दे. 'पाँव'।
पाव, सं. पुं. (सं. पादः) चतुर्थ,-अंशः-भागः, तुर्यं, तुरीयं २. (चार गिरह) गजतुर्यं, हस्तार्द्धं ३. सेर-, पादः, षट्टंकचतुष्कम्।
पावक, सं. पुं. (सं.) अनलः, अग्निः २. तापः ३. सूर्यः। वि., पावन, शोधक, मार्जक।
पावन, वि. (सं.) शुद्ध, पूत, पवित्र, शुचि २. दे. 'पावक'। वि. [पावनी (स्त्री.)]।
पावस, सं. स्त्री. (सं. प्रावृष्) दे. 'बरसात' (मौसिम)।
पावा, सं. पुं., दे. 'पाया' (१)।
पाश, सं. पुं. (सं.) शस्त्रभेदः, बंधनं, २. जालं, मृगबंधनी, पातिली, वागुरा ३. 'पाँसा'।
पाश्चात्य, वि. (सं.) पश्चिमदेशज, प्रतीच्य २. उत्तर, उत्तरगामिन् ३. पश्चिम, चरम, अपर, अवर।
पाषंड, सं. पुं., दे. 'पाखंड'।
पाषंडी, वि., दे. 'पाखंडी'।
पाषाण, सं. पुं. (सं.) दे. 'पत्थर'।
पासंग, सं. पुं. (फ़ा.) प्रतितोलकं, तुलापूरकम्।
पास[1], सं. पुं. (सं. पार्श्वः-र्श्वं) पक्षः, दिशा २. अधिकारः, आधिपत्यं (अव्य.), निकटे, समीपं-पे, अंतिकं-के, आरात्, उपकंठं, निकषा, समया, सविधे (सब अव्य.)।
—पड़ोस, सं. पुं., समीप-सन्निहित,-देशः, प्रतिवेशः २. प्रातिवेश्याः-प्रतिवासिनः (पुं. बहु.)।
आस—, क्रि. वि., इतस्ततः, अभितः, परितः २. दे. 'लगभग'।

पास, सं. पुं. (अं.) *अनुज्ञापत्रम्। वि., उत्तीर्ण, सफल, सफलीभूत २. स्वीकृत, उररीकृत।
—पोर्ट, सं. पुं. (अं.) पार-निष्क्रम,-पत्रम्।
—बुक, सं. स्त्री. (अं.) धनागारपुस्तकम्।
पासा, सं. पुं. (सं. पाशकः) दे. 'पाँसा' २. दे. 'चौसर'।
—फेंकना, मु., भाग्यं परीक्ष् (भ्वा. आ. से.) २. अक्षैः दिव् (दि. प. से.)।
पाहुना, सं. पुं. (सं. प्राघुणः) प्राघुण(णि)कः, प्राघूर्णिकः, अतिथिः २. जामातृ, दे. 'दामाद'।
पाहुनी, सं. स्त्री. (हिं. पाहुना) प्राघुणिका-की, प्राघूर्णिकी २. आतिथ्यं, अतिथि-सत्कारः।
पिंग, वि. (सं.) आ-ईषत्,-पीत २. कपिल, पिंगल, पिशंग ३. आ-ईषत्,-पिंगल-कपिल।
पिंगल, सं. पुं. (सं.) छंदःसूत्रकारो मुनिविशेषः २. (पिंगलरचितं) छंदःशास्त्रं ३. कपिः ४. उलूकः ५. अग्निः। वि., दे. 'पिंग'।
—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) छन्दो,-विद्या-विज्ञानम।
पिंगला, सं. स्त्री. (सं.) शरीर-नाडीभेदः।
पिंगी, सं. स्त्री. (सं.) शमी, शिवा, भद्रा २. २. मूषा, मूषिका ३. क्षुद्र-,मूषकः-आखुः।
पिंजड़ा-रा, सं. पुं. (सं. पिंजरं) पंजरः-रं, वि. (वी)तंसः।
पिंजर, सं. पुं. (सं. न.) कायास्थिवृंदं,कंकालः, अस्थिपंजरः-रं २. स्वर्णं ३. दे. 'पिंजड़ा'। वि., ईषत् पीत २. सुवर्णाभ ३. कपिल, पिंगल।
पिंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गोलः-लं, वर्तुलद्रव्यं २. लोष्ठः-ठं, मृत्-खंडः पिंडः, द्रव्यखंडः-डं, गंडः, घनः ३. चयः, राशिः, ४. निवापः, श्राद्धोपयोगिभक्तादिगोलः ५. आहारः ६. शरीरं, देहः।
—खजूर, सं. स्त्री. (सं. पिंडखर्जूरः) राजजंबूः (स्त्री.), स्थूलपिण्डा, पिंडखर्जूरी, दीप्या, फलपुष्पा, हयभक्षा।
—दान, सं. पुं. (सं. न.) पिंडनिर्वापः।
—छोड़ना, मु., न बाध् (भ्वा. आ. से.)।
पिंडली, सं. स्त्री. (सं. पिंडी) जंघापिंडः, पिंडिका, पिंडिः (स्त्री.), पिचिंडिका।
पिंडा, सं. पुं. (सं. पिंडः-डं) दे. 'पिण्ड' (१, २, ४, ६)।
—पानी देना, मु., पितृभ्यः पिंडोदकं दा।

पिंडालू, सं. पुं. (पिंडालुः) रोमालुः, रोमपिंड,-कंदः, रोमशः।
पिंडिका, सं. स्त्री. (सं.) क्षुद्रपिंडः-डं २. लोष्ठकं ३. दे 'पिंडली' ४. चक्रनाभिः (स्त्री.) ५. प्रतिमावेदिका।
पिंडित, वि. (सं.) पिंडी-घनी,-भूत २. गणित ३. गुणित।
पिंडी, सं. स्त्री. (सं.) दे. पिंडिका' (१,३,४)। २. अलाबूः (स्त्री.) ३. पिंडखर्जूरः ४. बलिवेदी ५. सूत्रगोलः-लम्।
पिउ, वि. (सं. प्रिय.) वल्लभ, कांत, दयित। सं. पुं., पतिः, भर्तृ।
पिक, सं. पुं. (सं.) कोकिलः, दे. 'कोयल'।
—बंधु, सं. पुं. (सं.) पिक,-रागः-वल्लभः, आम्रवृक्षः।
—बैनी, सं. स्त्री., कोकिलकंठा-ठी, सु-मधु-, कंठा-ठी।
पिकानन्द, सं. पुं. (सं.) पिकवान्धवः, वसन्तः, ऋतुराजः।
पिघलना, क्रि. अ. (सं. प्रघरणम्>) गल्-क्षर् (भ्वा. प. से.), वि-, द्रु (भ्वा. प. अ.), द्रवीभू, वि-, ली (दि. आ. अ.) २. करुणार्द्रीं-दयार्द्रीभू, करुणया द्रु, दय् (भ्वा. आ. से.)। सं.पुं.,क्षरणं, गलनं, विलयनं, द्रवणं २. दयार्द्रीभावः, दयनं, अनुकम्पनम्।
पिघलनेवाला, वि., वि-,लेय,द्रवणीय,गलनार्ह।
पिघलाना, क्रि. स., व. 'पिघलना' (१-२) के प्रे. रूप। सं. पुं., वि,-द्रावणं-लावनं, द्रवीकरणम्।
पिघलानेवाला, सं.पुं., विद्रावकः, विलयनकृत्।
पिघला हुआ, वि., वि,-लीन, वि,-द्रुत, गलित।
पिघलाया हुआ, वि., वि,-द्रावित-लापित, क्षारित, गालित।
पिघालबिंदु, सं. पुं. (हिं.+सं.) द्रावाङ्कः, द्रवण,-अङ्कः-विंदुः।
पिचं (चिं) ड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) उदरं, जठरं, फंडः।
पिचकना, क्रि. अ., व. 'पिचकाना' के कर्म. के रूप।
पिचकाना, क्रि. स. (अनु. पिच) आ-नि-सं-पीड् (चु.), संमृद् (क्. प. से.), आ-सं-कुच् (भ्वा. प. से.। सं. पुं., संपीडनं, संमर्दनं, संकोचनम्।
पिचकानेवाला, सं. पुं., संपीडकः,संमर्दकः इ.।
पिचकाया हुआ, वि., संपीडित, संकोचित इ.।
पिचकारी, सं. स्त्री. (अनु. पिच>) रेचनयन्त्रं, शृङ्गं, शृङ्गकं, वस्ति (पुं. स्त्री.)।
—छोड़ना या मारना, मु., शृङ्गेण क्षिप् (तु. प. अ.), तरलद्रव्यं सवेगं प्रास् (दि.प.से.)।
पिचपिचा, (हिं. पिचपिचाना) उन्न, क्लिन्न, श्यान, सांद्र।
पिचपिचाना, क्रि. अ. (अनु. पिचपिच>) पिचपिचायते (ना. धा.), शनैः क्षर् (भ्वा. प. से.), प्र-स्नु (अ. प. से.)।
पिचुक्का, सं. पुं., दे. 'पिचकारी' २. दे. 'गोलगप्पा'।
पिच्छ, सं. पुं. (सं. न.) पुच्छ,-पक्षः-वाजः २. मयूरपुच्छं, वर्हः-र्हं, शिखंडः, कलापः ३. शरपक्षः, पुंखः-खम् ४. पक्षः, वाजः ५. शिखा, शेखरम्।
पिच्छल, वि. (सं.) चिक्कणः-णा-णम्, मेदरः-रा-रम्, श्लक्ष्णः-क्ष्णा-क्ष्णम्।
पिछड़ना, क्रि. अ. (हिं. पिछाड़ी) मंदं चल्-र् (भ्वा. प. से.), मंदायते-चिरायति (ना.धा.), पश्चात् वृत (भ्वा. आ. से.)।
पिछड़नेवाला, सं. पुं., मंदः, मंथरः मंदगामिन्।
पिछलगा,पिछलग्गू, सं. पुं. (हिं. पीछे+लगना) अनुयायिन्, अनुगामिन्, अनुवर्तिन्, शिष्यः २. सेवकः ३. आश्रितः।
पिछला, वि. (हिं. पीछा) पृष्ठस्थ, पश्चिम, पृष्ठ्य, पश्च-,पश्चात्-, २. उत्तर, उत्तरकालीन, अपर, पर, पाश्चात्य ३. अन्त्य, अन्तिम, उत्तर ४. गत, अतीत, पुराण।
पिछवाड़ा, सं. पुं. } (हिं. पीछा) गृहस्य
पिछवाड़ी, सं. स्त्री } पृष्ठं, पृष्ठभागः २. पृष्ठ-पश्चाद्,-भागः ३. गृहपृष्ठवर्तिभूमिः (स्त्री.)।
पिछाड़ी, सं.स्त्री. (हिं. पीछा) पृष्ठं, पृष्ठ-पश्चाद्,-भागः-देशः २. (अश्वादीनां) पृष्ठपादरज्जुः (स्त्री.)।
पिटना, क्रि. अ. (हिं. पीटना) ताड्-आहन् (कर्म.)।
पिटवाना, क्रि. प्रे., व. 'पीटना' के प्रे. रूप।
पिटाई, सं. स्त्री. (हिं. पीटना) ताडनं, प्रहरणं, आहननं २, ताडनभृतिः (स्त्री.)।

पिटारा, सं. पुं. (सं. पिटः) पेटः, करंडः, कडोलः।

पिटारी, सं. स्त्री. (हिं. पिटारा) पिटकः-कं, पेट(टा)कः, पेडा, मंजूषा, पेटि(डि)का, तरीः-रिः (स्त्री)।

पिट्ठू, सं. पुं. (हिं. पीठ) अनुगामिन्,-अनुयायिन् २. सहायः, साहाय्यकारिन्।

पित, सं. स्त्री. (सं. पित्तं>) घर्मचर्चिका, घर्मकंटकः।

पितपापड़ा, सं. पुं. (सं. पर्पटः) अरकः, वरकः, सु-, तिक्तः, चरकः, शीतः, प्रगंधः।

पितर, सं. पुं. (सं. 'पितृ'का बहु.) पिंड-स्वधा-श्राद्ध,-भुजः-भाजः, पिंडाशः (सब बहु.)।

पितराई, सं. स्त्री. (हिं. पीतल) पित्तल-ताम्र,-किट्टं-मलं-स्वादः, दे. 'कसाव'।

पिता, सं. पुं. (सं. पितृ) तातः, जनकः, वप्तृ, प्रसवितृ, जनयितृ, जनितृ, जन्मदः, बीजिन्।

—मह, सं. पुं. (सं.) दे. 'दादा'।

—मही, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'दादी'।

पितृ, सं. पुं. (सं.) दे. 'पिता' २. दिवंगताः पूर्वपुरुषाः २. देवविशेषाः।

—ऋण, सं. पुं. (सं. न.) जायमानस्य ऋणभेदः (अपना पुत्र उत्पन्न होने पर मनुष्य पितृ-ऋण से मुक्त होता है। धर्म.)।

—कर्म, सं. पुं. [सं.-र्मन् (न.)] श्राद्धतर्पणादिक्रिया।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) श्मशानं २. दे. 'मायका'।

—तर्पण, सं. पुं. (सं. न.) नि-निर्,-वापः, निवपनं, निर्वपणं २. दे. 'तिल'।

—तिथि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) अमाव-(वा)स्या।

—तीर्थ, सं. पुं. (सं. न.) गया २. वाराणस्यादितीर्थस्थानानि ३. तर्जन्यंगुष्ठयोर्मध्यम्।

—पक्ष, सं. पुं. (सं.) आश्विनकृष्णपक्षः २. पितृसंबंधिनः (बहु.)।

—यज्ञ, सं. पुं. (सं.) पितृतर्पणम्।

—लोक, सं. पुं. (सं.) पितृभुवनम्।

पितृक, वि. (सं.) दे. 'पैतृक'।

पितृव्य, सं. पुं. (सं.) दे. 'चाचा'।

पित्त, सं. पुं. (सं. न.) मायुः, पलज्वलः, तिक्तधातुः।

—घ्न, वि. (सं.) पित्त-मायु,-हर-नाशक।

—ज्वर, सं. पुं. (सं.) पैत्तिक-मायुज,-ज्वरः।

—की थैली, सं. स्त्री., पित्तकोषः (gall-bladder)।

—पथरी, सं. स्त्री., पित्ताश्मरी।

—पापड़ा, सं. पुं., दे. 'पितपापड़ा'।

—प्रकृति, वि. (सं.) मायुप्रकृति २. क्रोधिन्।

—प्रकोप, सं. पुं. (सं.) पित्त-मायु,-प्रकोपः-आधिक्यं-विकारः।

—हर, वि. (सं.) दे. 'पित्तघ्न'।

पित्तल, सं. पुं. (सं. न.) आरकूटः,-टं, आरः, क्षुद्र-सुवर्णं, रीती-तिः (स्त्री.), पीतलकं, पीतकं, पिंगललोहम्।

—का, वि.; पित्तल-पीतक,-मय (-यी स्त्री.)।

पित्ता, सं. पुं. (सं. पित्तं>) दे. 'पित्ताशय' २. साहसं, वीर्यं, शौर्यं ३. कोपः, क्रोधः।

—खौलना, मु., अत्यंतं क्रुध् (दि. प. अ.)।

—निकालना, मु., नितरां परिश्रम् (प्रे.)।

—पानी करना, मु., सुतरां परिश्रम् (दि. प. से.)।

—मारना, मु., क्रोधं जि-नियम् (भ्वा.प.अ.)।

पित्ताशय, सं. पुं. (सं.) पित्त-मायु,-कोषः।

पित्ती, सं. स्त्री. (सं. पित्तं>) शीतपित्तम्, पित्तविकारजः त्वग्रोगभेदः, २. दे. 'पित'।

पित्र्य, वि. (सं.) दे. 'पैतृक'। सं. पुं., (सं.) अग्रजः २. माघमासः ३. मघानक्षत्रम् ४. मधु (न.) ५. माषः, मांसलः।

पित्र्या, सं. स्त्री. (सं.) अमावस्या २. पूर्णिमा।

पिदड़ी, सं. स्त्री., दे, 'पिद्दी'।

पिद्दा, सं. पुं. } (अनु. पिद) चटकभेदः २. तुच्छ,-जीवः-पदार्थः।
पिद्दी, सं.स्त्री. }

पिधान, सं. पुं. (सं. न.) आच्छादनं, आवरणं, कोषः २. छदः, छदनं, पुटः-टं-टी ३. असिकोषः।

पिधायक, वि. (सं.) आ-प्र-च्छादक, आवरक।

पिन, सं. स्त्री. (अं.) *धातुकटकः-कं, अन्धसूची।

पिनकना, क्रि. अ. (अनु.) (अहिफेनमदेन) ईषत् निद्रा-स्वप् (अ. प. अ.)।

पिनाक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) (शिवस्य) चापः, धनुस् (न.) २. त्रिशूलम्।

पिनाकी, सं. पुं. (सं.-किन्) शिवः, महादेवः।

पिन्ना, सं. पुं. (सं. पिंडः-डं) तैलकिट्ट-पिण्याक,-पिंडः-डं २. सूत्र,-गोलः-पिंडः।

पिन्नी, सं. स्त्री. (सं. पिंडी) पिंडिका, पिंडिः (स्त्री.) कांदव,-मिष्टान्न-भेदः २. दे. 'पिंडली'।

पिपरमिंट, सं. पुं. (अं.) पुदीनजातीयः क्षुपः, *पिपरमिंटः २. *पिपरमिंटम्।

पिपरामूल, सं. पुं. (सं. पिप्पलीमूलं) चोल-कटु,-मूलं, ग्रंथिक, सर्व-पड्-कटु, ग्रंथि (न.)।

पिपली, सं. स्त्री. (सं. पिप्पली) पिप्पलिः (स्त्री.) श्यामा, कृष्णा, मागधी, उ(ऊ)षणा, कोला, दंतफला।

पिपासा, सं. स्त्री. (सं.) तृषा, दे. 'प्यास'।

पिपासित, वि. (सं.) तृषित, दे. 'प्यासा'।

पिपासु, वि. (सं.) तृषित, दे. 'प्यासा'।

पिपीलक, सं. पुं. (सं.) पिपीलः, पिपीलिकः, पीलकः, दे. 'चींटा'।

पिपीलिका, सं. स्त्री. (सं.) पिपी(पिं)ली, हीरा, दे. 'चींटी'।

पिप्पल, सं. पुं. (सं.) अश्वत्थः, दे. 'पीपल'।

पिप्पलाद, सं. पुं. (सं.) ऋषिविशेषः।

पिप्पली, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पिंपली'।

—मूल, सं. पुं., दे. 'पिपरामूल'।

पिय, पिया, वि. (सं. प्रिय) वल्लभ, कांत, दयित। सं. पुं., पतिः, भर्तृ।

पियानो, सं. पुं. (अं.) आंग्लवाद्यभेदः, *प्रियध्वानः।

पिरिच, सं. पुं. (देश.) दे. 'तश्तरी'।

पिरोना, क्रि. स. (सं. प्रोत>) सूत्र् (चु.), गु(गुं)फ् (तु. प. से.), सं-,ग्रंथ् (क्र्.प.से.), सं.,-दृभ् (चु., भ्वा., तु. प. से.)। सं. पुं., सूत्रणं, गुं-फनं, ग्रंथनं, संदर्भणम्।

पिरोने योग्य, वि., सूत्रयितव्य, गुंफनीय इ.।

पिरोनेवाला, सं. पुं., गुंफकः, ग्रंथकः, सूत्रयितृ इ.।

पिरोया हुआ, वि., सूत्रित, गुंफित, ग्र(ग्रं)थित, संदृब्ध इ.।

पिल, सं. स्त्री. (अं.) गुटिका, गुलिका, वटिका।

पिलना, क्रि. अ. (सं. पेलनं>) सहसा प्रविश् (तु. प. अ.) २. सवेगं अभिद्रु (भ्वा. प. अ.)-आपत् (भ्वा. प. से.) ३. सोत्साहं प्रवृत् (भ्वा. आ. से.), अत्यंतं परिश्रम् (दि. प. से.) ४. निष्पीड्-निष्कृष् (कर्म.)।

पिलपिला, वि. (अनु. पिलपिल) शिथिल, अतिपक्व, अतिमृदु।

पिलाना, क्रि. प्रे. (हिं. पीना) पा (प्रे. पाययति), धे (प्रे., धापयति), चम् (प्रे., चामयति), २. स्तन्यं-स्तनं पा-धे (प्रे.)।

पिल्ला, सं. पुं. (तामिल) श्व,-शावकः-शिशुः।

पिशंग, वि. (सं.) कपिल, पिंगल।

पिशाच, सं. पुं. (सं.) भूतः, प्रेतः, राक्षसः, वेतालः, असुरः, दानवः, दैत्यः, निशाचरः।

पिशाचनी, सं. स्त्री. (सं. पिशाची) पिशाचिका, निशाचरी, राक्षसी।

पिशुन, सं. पुं. (सं.) द्विजिह्वः, सूचकः, कर्णेजपः २. परोक्षनिंदकः, परिवादरतः ३. दुर्जनः, खलः, नीचः, गर्ह्यः।

पिशुनता, सं. स्त्री. (सं.) पैशुन्यं, पिशुनत्वं, द्विजिह्वता २. परोक्ष,-निंदा-परि(री)वादः ३. दुर्जनता।

पिष्ट, वि. (सं.) चूर्णित, चूर्णीकृत, क्षुण्ण। सं. पुं., दे. 'पीठी'।

—पेषण, सं. पुं. (सं. न.) चूर्णितचूर्णनं, क्षुण्णक्षोदनं २. पुनरुक्तिः (स्त्री.), पौनरुक्त्यं, पुनर्,-वचनं-वादः।

पिसनहारी, सं. स्त्री, (हिं. पीसना) *पेषणकारी।

पिसना, क्रि. अ., ब. 'पीसना' के कर्म. के रूप।

पिसाई, सं. स्त्री. (हिं. पीसना) पेषणं, चूर्णनं, विदलनं, क्षोदनं २. पेषण-चूर्णन,-भृतिः(स्त्री.)-भृत्या ३. घोरपरिश्रमः।

पिसान, सं. पुं. (हिं. पिसा+सं. अन्नम्) दे. 'आटा'।

पिसा(सवा)ना, क्रि. प्रे., ब. 'पीसना' के प्रे. रूप।

पिसौनी, सं. स्त्री., पेषणं, चूर्णनम् २. अन्न-चूर्णन-व्यवसायः ३. अतिपरिश्रमः।

पिस्ता, सं. पुं. (फा.) मुकूलकम्।

पिस्तौल, सं. पुं. (अं. पिस्टल) गुलिकास्त्रं, लघ्वग्न्यस्त्रम्।

पिस्सू, सं. पुं. (फ़ा. पश्शह्=मच्छर)*कुटकी, देहिका, कुटः।

पिहित, वि. (सं.) तिरोहित, गुप्त २. अर्थालंकारभेदः (सा.)।

पींजना, क्रि. स. (सं. पिंजनं=धुनकी>) *पिंज् (प्रे. पिंजयति) दे. 'धुनना'।

पी, सं. पुं. (सं. प्रियः) कान्तः, दयितः, वल्लभः, २. पतिः, भर्तृ, प्राणेश्वरः।

पीक, सं. स्त्री. (अनु. पिच्) पर्णष्ठ्यूतं, तांबूललाला।

—दान, सं. पुं. (हिं.+फ़ा.) पतद्ग्रहः, प्रतिग्राहः, *लालाधानं, निष्ठीवनपात्रम्।

पीच, सं. स्त्री. (सं.-पिच्छा) पिच्छलः-लं-ला, भक्तमंडः-डं, दे. 'मांड'।

पीछा, सं. पुं. (सं. पश्चात>) पृष्ठं, पृष्ठ-पश्च-पश्चाद्-भागः देशः २. अनु,-गमनं-सरणं-धावनं ३. अन्वेषणम्।

—करना, मु., अनु,-इ-या (अ. प. अ.) अनु,-गम्-सृ (भ्वा. प. अ.), अनु-धाव्-व्रज् (भ्वा. प. से.) २. साग्रहं प्रार्थ् (चु. आ. से.)।

—छुड़ाना, मु., परिहृ (भ्वा. प. अ.), विं-परि-वृज् (चु.), आत्मानं रक्ष् (भ्वा. प. से.)-त्रै (भ्वा. आ. अ.)।

—छोड़ना, मु., न बाध् (भ्वा. आ. से.) व्यथ्-संतप् (प्रे.)।

पीछे, क्रि. वि. (हिं. पीछा) अनु (द्वितीया के साथ), पृष्ठतः, पश्चात, पश्चाद्-पृष्ठ,-भागे-देशे २. अनंतरं, ऊर्ध्वं, परं, पश्चात् (सब अव्य.) ३. अनुपस्थितौ, अभावे, परोक्षं-क्षे ४. निधनानंतरं ५. हेतोः, कारणात, निमित्तात ६.-अर्थं,-अर्थे, कृते (षष्ठी के साथ) ७. अंततः, अंते, परिणामे।

—आना, मु., विलंबेन या कालमतिक्रम्य आया (अ. प. अ.)।

—छूटना या रहना, मु., अतिक्रम्-अतिलंघ् (कर्म.) मंदं चल् (भ्वा. प. से.) मंदायते (ना. धा.)।

—चलना, मु., अनु,-इया (अ. प. अ.), अनु,-व्रज् (भ्वा. प. से.)-सृ (भ्वा. प. अ.)-कृ।

—पड़ना, मु., साग्रहं प्रार्थ् (चु. आ. से.) २. सततं बाध् (भ्वा. आ. से.)-अर्द-व्यथ् (प्रे.)।

—लगना, मु. इष्टसिद्धये सततं अनुगम्, २. रोगादिभिः निरंतरं पीड् (कर्म.)।

पीटना, क्रि. स. (सं. पीडनं>) अभि-उप-प्र-, हन् (अ. प. अ.), आहन् (अ. उ. अ.), प्रहृ (भ्वा. प. अ., सप्तमी के साथ) २. तड् (चु.), तुद् (तु. प. अ.), प्रहृ, आहन्, अर्द्-पीड् (चु.) ३. दंड् (चु.), निग्रह् (क्र्. प. से.)। सं. पुं., आहतिः (स्त्री.), आघातः, प्रहारः, ताडनं, प्रहरणं, पीडनं, दंडनं, निग्रहः; मृत्यु-, शोकः, आपद्-विपद् (स्त्री.)।

पीटने योग्य, वि., आहननीय, प्रहरणीय, ताडनीय, दंडयितव्य।

पीटने वाला, सं. पुं., आ-अभि-,हंतृ, प्रहर्तृ, ताडयितृ, पीडकः, दंडयितृ।

पीटा हुआ, वि., आहत, प्रहत, ताडित, दंडित इ.।

पीठ[1], सं. स्त्री. (सं. पृष्ठं) पश्चिमांगं, तनु-चरमं २. पश्चाद्-पृष्ठ,-भागः-देशः।

—चारपाई से लगना, मु., नितरां क्षि (भ्वा. प. अ.)-कृशी भू।

—ठोंकना, मु., उत्तिज्-प्रोत्सह् (प्रे.)।

—दिखाना या देना, मु., पलाय् (भ्वा. आ. से.) अपधाव् (भ्वा. प. से.) २. परित्यज् (भ्वा. प. अ.)।

—पर हाथ फेरना, मु., दे. 'पीठ ठोंकना' २. पृष्ठं परामृश् (तु. प. अ.)।

—पीछे, मु., अनुपस्थितौ, परोक्षं-क्षे।

—पीछे कहना, मु. परोक्षे निंद् (भ्वा. प. से.)।

—फेरना, मु., प्रस्था (भ्वा. आ. अ.) २. प्राङ्मुखी भू (३-४) दे. 'पीठ दिखाना'।

—लगना, मु., मल्लयुद्धे उत्तानो निपत् (भ्वा. प. से.) २. सर्वथा पराजि (कर्म.)।

—लगाना, मु., मल्लयुद्धे उत्तानं निपत् (प्रे.) ३. सर्वथा विजि (भ्वा. आ. अ.)।

पीठ[2], सं. पुं. (सं. न.) (काष्ठपाषाणधात्वादिनिर्मितं) आसनं, पीठी २. (व्रतिनां) कुशासनं, विष्टरः ३. प्रतिमाधारः ४. अधिष्ठानं, आवासः ५. सिंहासनं ६. वेदी-दिका ७. प्रदेशः, प्रांतः।

पीठक, सं.पुं., दे. 'पीठ'[2] १। २.शिविकाभेदः।

पीठा, सं. पुं., (सं. पिष्ट >) भोज्यभेदः। पिष्टः।

पीठिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पीठ' (२)। २. (स्तंभादीनां) आधारः, पादः ३. ग्रंथभागः।

पीठी, सं. स्त्री. (सं. पिष्टिका), पिष्टार्द्रदालीलिः (स्त्री.), पिष्टद्विदलः।

पीड़क, सं. पुं. (सं.) दुःख,-दः-दायकः-दायिन्, क्लेशकरः, पीडावहः ।

पीड़न, सं. पुं. (सं. न.) अर्दनं, बाधनं, उपमर्दनं, क्लेशनं २. दे. 'दबाना' ।

पीड़ा, सं. स्त्री. (सं.) वेदना, व्यथा, दुःखं, रुज् (स्त्री.), रुजा, अ(आ)र्तिः (स्त्री.), क्लेशः, बाधः-धा, यातना, कष्टं, कृच्छ्रं, परि-सं,-तापः ।

—कर, वि. (सं.) दुःख-कष्ट-व्यथा,-कर-आवह-प्रद इ. [—करी (स्त्री.) = दुःखदा] ।

मानसिक—, सं. स्त्री. (सं.) आधिः, मनोव्यथा, चित्तोद्वेगः ।

शारीरिक—, सं. स्त्री. (सं.) व्याधिः, रोगः ।

पीड़ित, वि. (सं.) दुःखित, व्यथित, क्लेशित, सव्यथ, सरुज, कृच्छ्रगत ।

पीढ़ा, सं. पुं. (सं. पीठं) दे. 'पीठ' (१) ।

पीढ़ी, सं. स्त्री. (सं. पीठी) पीठकः कं (काष्ठादिनिर्मितं) उपासना, क्षुद्रासनम् ।

पीढ़ी[२], सं. स्त्री. (सं. पीठी) वंशपरम्परायां पितृपितामहपुत्रपौत्रादीनां पूर्वापरस्थानं, *संततिक्रमः ।

पीत, वि. (सं.) हरिद्राभ, दे. 'पीला' ।

पीतल, सं. पुं, दे. 'पित्तल' ।

पीतांबर, सं. पुं. (सं. न.) हरिद्राभवस्त्रं २. श्रीकृष्णचंद्रः । वि., पीतवस्त्रधारिन् ।

पीदड़ी, सं. स्त्री., दे. 'पिद्दी' ।

पीन, वि. (सं.) पीवर, स्थूल, पुष्ट, मांसल ।

पीनक, सं. स्त्री. (हिं. पिनकना) अफेनतंद्रा, अहिफेननिद्रा ।

पीनता, सं. स्त्री. (सं.) पीवरता, स्थूलता, पुष्टता ।

पीनस[१], सं. पुं. (सं.) अपीनसः, नासिकामयः, घ्राणशक्तिराहित्यम् ।

पीनस[२], सं. स्त्री. (फ़ा. फ़ीनस) दे. 'पालकी' ।

पीना, क्रि. स. (सं. पानं) पा-धे (भ्वा. प. अ.), चम् (भ्वा. प. से.), पानं कृ २. सह् (भ्वा. आ. से.) ३. (क्रोधादीन्) नि-सं-यम् (भ्वा. प. अ.), प्र-, शम् (प्रे.) ४. मद्यं पा, सुरापानं कृ ५. उत्-, शुष् (प्रे.) ६. धूमं पा, धूमपानं कृ । सं. पुं., धयः, पानं, आचमनं, पीतिः (स्त्री.) ।

पीने योग्य, वि. पेय, पानीय, चमनीय, धेय ।

पीनेवाला, सं. पुं.-धयः पायिन्, पातृ २. पान,-आसक्तः-रतः-शौंडः, मद्यपः ।

पीया हुआ, वि., पीत, धौत, चांत ।

पीनोध्नी, सं. स्त्री. (सं.) पीवरस्तनी गौः ।

पीप-ब, सं. स्त्री. (सं. पूयः-यं) क्षतजं, मलजं, प्रसितं, पूयनं, कुणपम् ।

—पड़ना, क्रि. अ., पूय् (भ्वा. आ. से) ।

पीपल[१], सं. पुं. (सं. पिप्पलः) अश्वत्थः, क्षीर-शुचि-बोधि,-द्रुमः, चल,-दलः-पत्रः, कुञ्जराशनः ।

पीपल[२], सं. स्त्री., दे. 'पिपली' ।

पीपलामूल, सं. पुं., दे. 'पिपरामूल' ।

पीपा, सं. पुं. (देश.) *पटहपात्रम् ।

पीयु, सं. पुं. (सं.) काकः, वायसः २. सूर्यः ३. अग्निः (पुं.) ४. उलूकः ५. समयः ६. सुवर्णम् ।

पीयूष, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सुधा, अमृतं २. (नवप्रसूतायाः गोः) दुग्धम् ।

—वर्षी, वि. (सं.-र्षिन्) सुधास्यंदिन्, सुमधुर ।

पीर[१], सं. स्त्री. (सं. पीड़ा) दे. 'पीड़ा' २. सहानुभूतिः (स्त्री.) ३. प्रसवपीड़ा ।

पीर[२], वि. (फ़ा.) वृद्ध, जरठ २. धूर्त । सं. पुं., धर्मगुरुः, सिद्धः (मुसलमान) ।

पीरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) जरा, वार्धकं-क्यम् ।

पील, सं. पुं. (फ़ा.) गजः, द्विपः ।

—पाँव, सं. पुं. (फ़ा.+हिं.) श्लीपदं, शिलीपदम् ।

पीला, वि. (सं. पीत) पीतल, हरिद्राभ, सुवर्ण-कुंकुम,-वर्ण २. निस्तेजस्क, कांतिहीन । (पीली (स्त्री.) = पीता, हरिद्राभा) ।

—बुख़ार, सं. पुं., पीतज्वरः ।

—पड़ना या होना, मु., पांडुच्छाय (वि.) भू, गतश्रीक-नीरक्त (वि.) जन् (दि.आ.से.) ।

पीलिया, सं. पुं. (हिं. पीला) दे. 'पांडुरोग' ।

पीलू, सं. पुं. (सं. पीलुः) गुड़फलः, शीतसहः, विरेचनः, श्यामः, करभवल्लभः २. कृमिः, कीटः ३. रागभेदः ।

पीव, सं. पुं., दे० 'पी' । सं. स्त्री., दे० 'पीप' ।

पीवर, वि. (सं.) दे. 'पीन' ।

पीसना, क्रि. स. (सं. पेषणं) पिष्-क्षुद् (रु. प. अ.), चूर्ण् (चु.), चूर्णी कृ, मृद् (क्र्. प. से.) २. सजलं पिष् इ. ३. विकटं

परिश्रम् (दि. प. से.)। सं.पुं., पेषणं, चूर्णनं, मर्दनं, खंडनं २. पेषणीयपदार्थः।
पीसने योग्य, वि., पेषणीय, चूर्णयितव्य इ.।
पीसने वाला, सं. पुं. पेषकः, चूर्णयितृ, मर्दकः।
पीसा हुआ, वि., पिष्ट, चूर्णित, मर्दित।
—पीसना, मु., सततं घोरं च परिश्रम्।
पीहर, सं. पुं. (सं. पितृगृहं>) नारीणां पितृ-वेश्मन् (न.)।
पुंगव, सं. पुं. (सं.) वृषः, वृषभः। वि., श्रेष्ठ, उत्तम (उ. नरपुंगवः=मानवोत्तमः)।
पुंज, सं. पुं. (सं.) उत्करः, राशिः, चयः।
पुंड, सं. पुं. (सं.) पुंड्रः, दे. 'तिलक'।
पुंडरीक, सं. पुं. (सं. न.) शुक्लपद्मं, शतपत्रं, महापद्मं, सित,-अंबुजं-अंभोजं २. कमलं ३. सिंहः ४. व्याघ्रः ५. तिलकः ६. श्वेतच्छत्रं ७. शर्करा ८. तीर्थविशेषः ९. कुष्ठभेदः।
पुंडरीकाक्ष, सं. पुं. (सं.) विष्णुः। वि., कमल-नयन (नयनी-ना, स्त्री.)।
पुंड्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'पुंड्रक' (१) २. दे. 'पुंडरीक' (१) ३. दे. 'पुंड'।
पुंड्रक, सं. पुं. (सं.) रसालः-ली, इक्षु-वाटी-योनिः (स्त्री.), रसदालिका, करंकशालिः, इक्षुभेदः। २. माधवी लता ३. तिलकः ४. तिलकवृक्षः।
पुंलिंग, सं. पुं. (सं. न.) पुरुषचिह्नं २. शिश्नः ३. (प्रायः) पुरुषवाचकशब्दः (व्या.)।
पुंश्चली, सं. स्त्री. (सं.) कुलटा, व्यभिचारिणी, त्रपारंडा, स्वैरिणी।
पुंसवन, सं. पुं. (सं. न.) संस्कारभेदः (धर्म.)।
पुंस्त्व, सं. पुं. (सं. न.) पौरुषं, पुरुषत्वं, मैथुनसामर्थ्यं २. शुक्रं, वीर्यं ३. तेजस्, ओजस् (न.)।
पुआ, सं. पुं. (सं. पूपः) अपूपः, पिष्टकः।
पुआल, सं. पुं., दे. 'पयाल'।
पुकार, सं. स्त्री. (हिं. पुकारना) आह्वयनं, आह्वानं, आह्वावः, अहू(हु)तिः (स्त्री.), आका-(क)रणं-णा, संबोधनं २. परिदेवनं, दुःख-निवेदनं ३. प्रबलप्रार्थना, उच्चस्वरेण याचना ४. चीत्कारः, उत्क्रोशः।
पुकारना, क्रि. सं. (सं. प्लुतकरणं>) आ-ह्वे (भ्वा. प. अ.), आकृ-संबुध् (प्रे.) २. उच्चैः कथ् (चु.), उद्घुष् (प्रे.) ३. तार-स्वरेण याच् (भ्वा. आ. से.)-प्रार्थ् (चु. आ. से.) ४. रक्षार्थं आ-वि-क्रुश् (भ्वा. प. अ.) ५. (प्रतिकारार्थं) परिदेव् (भ्वा. आ. से., चु.), दुःखं निविद् (चु.) ६. नाम कृ, अभिधा (जु. उ. अ.)। सं. पुं., दे. 'पुकार'।
पुकारने योग्य, वि., आ-ह्वेय, आकार्य, संबोधनीय।
पुकारने वाला, सं. पुं., आह्वायकः, आकारकः इ.।
पुकारा हुआ, वि., आहूत, आकारित इ.।
पुक्कश, पुक्कस, सं. पुं. (सं.) निषादात् शूद्रायां जातो मनुष्यः, वर्णसंकरभेदः। वि. अधम, नीच (–शी,-सी स्त्री.)।
पुखराज़, सं. पुं. (सं. पुष्पराजः) पुष्परागः, पीतः, पीत,-स्फटिकः-मणिः-अश्मन् (पुं.), मंजुमणिः।
पुख़्ता, वि. (फ़ा.-तह्) सबल, प्रबल २. दृढ़, कठिन ३. स्थायिन् ४. पक्वेष्टकानिर्मित्त ५. अभिज्ञ ६. अनुभविन् ७. निश्चित।
पुचकार-री, सं. स्त्री. (हिं. पुचकारना) पुच,-कारः-करणं-कृतिः (स्त्री.)।
पुचकारना, क्रि. स. (अनु. पुच) पुचपुचायते (ना. धा.), पुचिति शब्दं कृ।
पुचारना, क्रि. स., दे. 'पोतना'।
पुच्छ, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) दे. 'पूँछ'।
पुच्छल, वि. (सं. पुच्छं>) पुच्छिन्, सपुच्छ, लांगूलिन्, लांगूलवत्।
—तारा, सं. पुं., धूम्र-, केतुः, उल्का, उत्पातः।
पुछल्ला, सं. पुं. (हिं. पूंछ) दीर्घपुच्छः-च्छं, लंब-लांगूलं २. चाटुकारः, मिथ्याशंसकः ३. परिहायसंगिन्।
पुजना, क्रि. अ. (हिं. पूजना) पूज्-अभ्यर्च् (कर्म.)।
पुजवाना, पुजाना, क्रि. प्रे., ब. 'पूजना' के प्रे. रूप।
पुजापा, सं. पुं. (सं. पूजापत्रं) पूजा,-प्रसेवः-पुटः २. पूजासामग्री, देव,-उपायनं-उपहारः, नैवेद्यम्।
पुजारी, सं. पुं. (सं. पूजाकारिन्) प्रतिमा-, पूजकः, देवलः-लकः २. भक्तः, उपासकः।
पुट[१], सं. पुं. (अनु.) शीकरासेकः २. आ-ईषद्,-रंजनं ३. आ-ईषत्,-मिश्रणं-संपर्कः।

पुट[२], सं. पुं. (सं. पुं. न.) आच्छादनं, आवरणं, कोषः, पिधानं, वेष्टनं २. पर्णपुटः-टं., पत्र-, द्रोणं ३. द्रोणाकारपदार्थः (उ., अंजलिपुटं) ४. औषधपाकाय पात्रभेदः।

—पाक, सं. पुं. (सं.) पुटस्थौषधपचनं (वैद्यक)।

पुटकी, सं. स्त्री. (सं. पुटकं>) दे. 'पोटली'।

पुटित, वि. (सं.) चूर्णित, पिष्ट २. विदारित, छेदित ३. संकुचित, आकुंचित।

पुट्ठा, सं. पुं. (सं. पृष्ठं>) नितंबः, जघनं, कटिप्रोथः, २. अश्वादीनां नितंबः इ. ३. ग्रंथावरकपृष्ठम्।

पुट्ठी, सं. स्त्री. (हिं. पुट्ठा>) शकटनेमीभागः।

पुड़ा, सं. पुं. (सं. पुटः-टं) पत्रकोशः २. दे. 'पुड़ी'।

पुड़िया, सं. स्त्री. (सं. पुटिका) पत्र-, पुटिका २. औषधपुटिका।

पुड़ी, सं. स्त्री. (सं. पुटी>) दे. 'पुड़िया' २. पटहचर्मन् (न.)।

पुण्य, सं. पुं. (सं. न.) शुभादृष्टं, सुकृतं, धर्म-सु-भद्र,-कृत्यं, धर्मः, वृषः, श्रेयस् (न.)। वि., शुभ, मंगल, पवित्र, भद्र, शास्त्र-धर्म,-विहित।

—भूमि, सं. स्त्री. (सं.) भारतं, भ(भा)रतवर्षं, आर्यावर्तः।

—लोक, सं. पुं. (सं.) स्वर्गः, नाकः, सुरलोकः।

—वान्, वि. (सं.-वत्) } दे. 'पुण्यात्मा'।
—शील, वि. (सं.) }

—श्लोक, वि. (सं.) सच्चरित्र, आर्यवृत्त।

—स्थान, सं. पुं. (सं. न.) पवित्रस्थलं २. तीर्थस्थानम्।

पुण्यात्मा, वि. (सं.-त्मन्) पुण्यवत्, पुण्यशील, धर्मशील, धार्मिक, धर्मात्मन्।

पुण्योदय, सं. पुं. (सं.) सौभाग्योदयः, पूर्वसुकृतफलम्।

पुतला, सं. पुं. (सं. पुत्तलकः) दे. 'पुतली'(१) (मृत्तिकावस्त्रादिनिर्मिता) प्रतिमूर्तिः-प्रतिकृतिः (स्त्री.)।

अकल का—, वि., चतुर, दक्ष।

ख़ाक का—, सं. पुं., मानवः, मनुष्यशरीरम्।

पुतली, सं. स्त्री. (सं. पुत्तली) पुत्रिका, पुत्तलिका, कुरुटी, पांचाली-लिका, शालभंजिका २. कनीनिका, तारा,-तारका ३. तन्वी, कृशांगी ४. वस्त्रयंत्रं ५. भेकाकारमश्वखुरमांसम्।

—का तमाशा, सं.पुं., पुत्तली,-कौतुकं-नृत्यम्।

—घर, सं. पुं., वस्त्रयंत्रालयः।

—फिरना, मु., कनीनिके स्तंभ् (कर्म., मृत्युचिह्न) २. दृप् (दि. प. अ.)।

पुताई, सं. स्त्री. (हिं. पोतना) लेपः, लेपनं २. लेपन,-भृतिः (स्त्री.)-भृत्या ३. सुधालेपः।

पुतारा, सं. पुं., (हिं. पोतना) उपदेहनं, प्रलेपनम् २. लेपन-उपदेहन,-पटः-वस्त्रम्।

पुत्तलिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पुतली' (१)।

पुत्तिका, सं. स्त्री. (सं.) पतंगिका, मधुमक्षिकाविशेषः। २. दे. 'दीमक'।

पुत्र, सं. पुं. (सं.) पुत्रः, आत्मजः, तनयः, सुतः, सूनुः, तनु(नू)जः, पुंसंतानः, दायादः, नंदनः, आत्मजन्मन् (पुं.), अंगजः, कुमारः. दारकः।

—कंदा, सं. स्त्री., (सं.) लक्ष्मणाकन्दा, पुत्रदः ओषधिभेदः।

—घ्नी, सं. स्त्री., गर्भनाशकयोनिरोगभेदः।

—वती, वि. स्त्री. (सं.) सपुत्रा, सुतवती।

—वधू, सं. स्त्री. (सं.) स्नुषा, वधूः (स्त्री.), जनी, पुत्रपत्नी।

पुत्रिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पुत्री' २. दे. 'पुतली' ३. कनीनिका, तारा।

पुत्री, सं. स्त्री. (सं.) कन्या, आत्मजा, दुहितृ (स्त्री.), तनुजा, सुता, तनया, स्वजा, नंदिनी।

पुत्रेष्टि, सं. स्त्री. (सं.) पुत्रनिमित्तक-यज्ञभेदः।

पुदीना, सं. पुं. (फ़ा. पोदीनह्) पुदीनः, व्यञ्जनः, सुगंधिपत्रः, वातहारिन्, अजीर्णहरः, रुचिष्यः।

पुनः, अव्य. (सं. पुनर्) भूयः (अव्य.)।

—पुनः, अव्य. (सं.) भूयोभूयः, वारंवारं,-रेण, अनेकवारं, मुहुः, असकृत, पौनःपुन्येन।

पुनरावृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) पुनः पाठः, पुनरध्ययनं २. आवृत्तिः-प्रत्यावृत्तिः (स्त्री.) ३. पुनः,-विधानं-संपादनं-करणं ४. पुनरीक्षणं, संशोधनम्।

पुनरुक्ति, सं. स्त्री. (सं.) पौनरुक्त्यं, पुनर्वचनम्।

पुनर्जन्म, सं. पुं. [सं.-जन्मन् (न.)] पुन-

भवः; पुनरुत्पत्तिः (स्त्री.), प्रेत्यभावः, देहांतरप्राप्तिः (स्त्री.)।

पुनर्भू, सं. स्त्री. (सं.) द्विरूढा, दिधिषूः (स्त्री.)।

पुनर्वसू, सं. पुं. (सं. द्वि.) यामकौ, आदित्यौ (द्वि.)।

पुनीत, वि. (सं.) पूत, पवित्र, शुद्ध, निर्दोष।

पुन्य, सं. पुं., दे. 'पुण्य'।

पुमान्, सं. पुं. (सं. पुंस्) नरः, पु(पू) रुषः, नृ (पुं.)।

पुरंदर, सं.पुं. (सं.) दे. 'इंद्र' २. नगरभंजकः ३. चौरः।

पुरंध्री, सं. स्त्री. (सं.) पुरंध्रिः (स्त्री.), कुटुंबिनी २. नारी।

पुरः, अव्य. (सं. पुरस्) अग्रे, अग्रतः, संमुखे, पुरतः, पुरस्तात्, समक्षं (सब अव्य. षष्ठी के साथ) २. पूर्वं, प्राक्, अर्वाक् (सब अव्य. पंचमी के साथ) ३. प्राच्यां दिशि।

पुर, सं. पुं. (सं. न.) नगरं-री, पुर् (स्त्री.) पुरी, पत्तनं, स्थानीयं २. शरीरं ३. दुर्गं। ४. गृहं ५. लोकः, भुवनम्।

—द्वार, सं. पुं. (सं. न.) नगरं, द्वारम्।

—वासी, सं. पुं. (सं.-सिन्) पौरः, नागरिकः, पुर-नगर (-जनः)।

अंतः—, सं. पुं. (सं. न.) अवरोधः, शुद्धांतः।

पुरखा, सं. पुं. (सं. पुरुषः>) पूर्वजाः, पूर्वपुरुषाः, पितरः, वंशकराः (प्रायः बहु. में)।

पुरज़ा, सं. पुं. (फ़ा.) (पत्रवस्त्रादीनाम्) खंडः-डं, शकलः-लं २. अवयवः; अंगम्।

चलता—, मु., चतुर ३. उद्योगिन्।

पुरवा[1], सं.पुं. (सं.पुरं>) लघुग्रामः, ग्रामटिका।

पुरवा[2], सं. पुं. (सं. पूर्ववातः) प्राचीपवनः।

पुरश्चरण, सं. पुं. (सं. न.) पुरस्क्रिया, पूर्वानुष्ठानम्।

पुरस्कार, सं. पुं. (सं.) पारितोषिकः, उपायनं, प्रतिफलं २. आदरः, संमानः, पूजा।

पुरस्कृत, वि. (सं.) आदृत, संमानित २. प्राप्तोपायन, लब्धपारितोषिक।

पुरा[1], अव्य. (सं.) पूर्व-प्राचीन-पुरातन,-काले। वि., अतीत, प्राचीन (उ. पुरावृत्त)।

पुरा[2], सं. पुं. (सं. पुरं>) ग्रामः।

—कल्प, सं. पुं. (सं.) पूर्वकल्पः २. प्राचीनकालः।

पुराण, वि. (सं.) प्राचीन, पुरातन। सं. पुं. (सं. न.) प्राचीन,-कथा-आख्यानं २. हिंदूनामष्टादश आख्यानग्रन्थाः (ब्रह्मविष्णुशिवपुराणादि)।

पुरातन, वि. (सं.) पुराण, प्रतन, प्रत्न, चिरंतन, चिरत्न, प्राचीन। (पुरातनी स्त्री.)।

पुराना, वि. (सं. पुराण) दे. 'पुरातन' २. जीर्ण, शीर्ण, ३ अनुभविन्, सानुभव।

—खुर्राट, मु., वृद्ध, जरठ २. अत्यनुभविन्।

पुरी, सं. स्त्री. (सं.) नगरी, नृपावासः, दे. 'पुर'।

पुरीष, सं. पुं. (सं. न.) विष्ठा, दे. 'पाखाना। २. जलम्।

पुरु, सं. पुं. (सं.) नृपविशेषः, ययातेः कनिष्ठपुत्रः। वि., प्रचुर, बहु।

पुरुष, सं. पुं. (सं.) मनुजः, मानुषः, दे. 'मनुष्य' २. नरः, नृ, पुंस् ३. परमेश्वरः ४. आत्मन् ५. पूर्वजः, पूर्वपुरुषः, ६. पतिः ७. क्रियासर्वनामादीनां रूपभेदः (व्या.) ८. शरीरम्।

—कार, सं. पुं. (सं.) उद्योगः, पुरुषार्थः।

—घ्नी, सं. स्त्री. (सं.) पतिघातिनी नारी।

—धर्म, सं. पुं. (सं.) मनुष्यमात्रस्य धर्मः।

—धौरेयक, सं. पुं. (सं.) नरर्षभः नरपुंगवः।

—पुर, सं. पुं. (सं. न.) गांधारदेशराजधानी (वर्तमान पिशावर)।

—मेध, सं. पुं. (सं.) यज्ञभेदः, नरमेधः।

—वार, सं. पुं. (सं.) रवि-मंगल-बृहस्पति-शनि,-वारः-वासरः।

—सूक्त, सं. पुं. (सं. न.) ऋग्वेदस्य यजुर्वेदस्य च सूक्तविशेषः (यह 'सहस्रशीर्षा' से आरंभ होता है)।

महा—, सं. पुं. (सं.) महाजनः, नरकुञ्जरः, महात्मन् २. दुष्टः, दुरात्मन्।

पुरुषत्व, सं. पुं. (सं. न.) पौरुषं, वीर्यं, साहसं २. पुंस्त्वं, नरत्वम्।

पुरुषार्थ, सं. पुं. (सं.) उद्यमः, प्रयत्नः, उद्योगः, परिश्रमः, पौरुषं, पराक्रमः, पुरुषकारः २. पुरुष,-प्रयोजनं-लक्ष्यं (धर्मार्थकाममोक्षाः) ३. शक्तिः (स्त्री.), बलम्।

पुरुषार्थी, वि. (सं.-र्थिन्) उद्यमिन्, उद्योगिन्, परिश्रमिन्, उद्योग-उद्यम-परिश्रम,-शील-पर २. समर्थ, बलवत्।

पुरुषोत्तम, सं. पुं. (सं.) पुरुषर्षभः, नरकुंजरः, मनुजश्रेष्ठः २. विष्णुः ३. श्रीकृष्णः।

पुरोहित, सं. पुं. (सं.) पुरोधस् (पुं.), सौवस्तिकः, धर्मकर्मादिकारयितृ, याज्ञिकः, याजकः, ऋत्विज्।

पुरोहिताई, सं. स्त्री. (सं. पुरोहितः>) पौरोहित्यं, पुरोहितकर्मन् (न.) २. पुरोहित-दक्षिणा।

पुरोहितानी, सं. स्त्री. (सं. पुरोहितः>) पुरोहित,-पत्नी-भार्या।

पुल, सं. पुं. (फ़ा.) सेतुः, वारणः, संवरः।

—बाँधना, सेतुं बंध् (क्र्. प. अ.),-निर्मा (जु. आ. अ.)।

पुलक, सं. पुं. (सं.) रोमांचः, रोम,-उद्गमः-हर्षः-विकारः-उद्भेदः, त्वक्पुष्पं, त्वगंकुरः २. रत्नभेदः।

पुलकावली, सं. स्त्री. (सं.) पुलकावलिः (स्त्री.), हर्षोत्फुल्लरोमाणि (न. बहु.)।

पुलकित, वि. (सं.) रोमांचित, रोमांकित, पुलकिन्, जातपुलक, सपुलक, कंटकित २. प्रहृष्ट, प्रसन्न।

—करना, क्रि. स., रोमांचयति (ना. धा.), रोमाणि उद्-हृष् (प्रे.)।

—होना, क्रि. अ., रोमाणि उद्गम् (भ्वा. प. अ.) हृष् (-दि. प. से.)।

पुलपुला, वि. (अनु.) दे. 'पिलपिला'।

पुलाव, सं. पुं. (फ़ा.) मांसौदनं, भक्तामिषम्, पलान्नम्।

पुलिंद, सं. पुं. (सं.) चंडालभेदः, प्राचीन-जातिविशेषः।

पुलिंदा, सं. पुं. (हिं. पूला) कूर्चः, भारः, पोट्टली।

पुलिन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) तोयोत्थिततटः-टं-टी २. कूलं, तीरं, तटं, ३. सैकतं, सिकता-मयं तटम्।

पुलिस, सं. स्त्री. (अं.) नगररक्षकाः, पुरपालाः, रक्षापुरुषाः (बहु.), रक्षिगणः।

—इन्स्पेक्टर, सं. पुं. (अं.) रक्षक-रक्षि,-निरीक्षकः।

—मैन, सं. पुं. (अं.) रक्षकः, दंडधरः, रक्षक-रक्षा-रक्षि,-पुरुषः, नगरपालः, राजपुरुषः।

—सब-इन्स्पेक्टर, सं. पुं. (अं.) रक्षकोप-निरीक्षकः, दे. 'थानेदार'।

—सुपरिण्टेंडेंट, सं. पुं. (अं.) रक्षकाध्यक्षः।

पुवाल, सं. स्त्री., दे. 'पयाल'।

पुश्त, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'पीठ[1]' २. दे. 'पीढ़ी[2]'।

—दर पुश्त, क्रि. वि., 'वंशपरंपरया'।

पुश्तैनी, वि. (फ़ा. पुश्त>) कुलक्रम-वंश-परंपरा,-आगत-प्राप्त, परंपरीय, परंपरीण।

पुष्कर, सं. पुं. (सं. न.) कमलं, पद्मं २. जलं ३. तडागः-गं ४. गजशुंडाग्रं ५. तीर्थविशेषः।

पुष्करिणी, सं. स्त्री. (सं.) कासारः-रं, तटाकः-कं, सरसी, सरोवरः।

पुष्कल, वि. (सं.) अधिक, बहु, प्रचुर, प्रभूत, बहुल, विपुल २. पर्याप्त, पूर्ण।

पुष्ट, वि. (सं.) पालित, सं-, वर्धित, पोषित, भृत २. बलिष्ठ, पीन, पीवर ३. बल,-प्रद-वर्धक ४. दृढ।

पुष्टई, सं. स्त्री. (सं. पुष्ट>) पुष्टिकरं भक्ष्य-मौषधं वा, रसायनम्।

पुष्टता, सं. स्त्री. (सं.) पीनता, पीवरता, दृढांगता।

पुष्टि, सं. स्त्री. (सं.) भरणं, पोषणं, सं-,वर्धनं २. बलिष्ठता, दृढांगता, पीवरता ३. दृढता ४. समर्थनं, अनुमोदनं, दृढीकरणं, उपो-द्बलनम्।

—कारक, वि. (सं.) पुष्टि,-कर-दायक, बल-वीर्य-वर्धक।

पुष्प, सं. पुं. (सं. न.) कुसुमं, प्रसूनं, मणी-चकं, सुमं, सूनं, सुमनः, प्रसवः, सुमनस् (स्त्री. न., केवल बहुवचन में) २. आर्तवं, ऋतुस्रावः, रजःस्रावः ३. नेत्ररोगभेदः (हिं. फूला) ४. कुबेरविमानम्।

—करंड, —डक, सं. पुं. (सं.) उज्जयिन्याः प्राचीनशिवोद्यानम् २. कुसुमकंडोलः।

—काल, सं. पुं. (सं.) वसन्तः, ऋतुराजः। २. नारीणां आर्तव-रजः,-समयः।

—कीट, सं. पुं. (सं.) भ्रमरः, षट्पदः २.कुसुमकीटः।

—ज, सं. पुं. (सं.) मकरन्दः, भ्रामरम्, पुष्परसः।

—ध्वज,—बाण,—शर, —पुर, सं. पुं. (सं.) पुष्पधन्वन् (पुं.) मदनः, दे. कामदेव'।

—पुर, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पटना'।

—रस, सं. पुं. (सं.) पुष्पासवं, भ्रामरं, मकरंदः ।

—राज, सं. पुं. (सं.) दे. 'पुखराज' ।

—रेणु, सं. पुं. (सं.) परागः, पुष्पधूलिः (स्त्री.) ।

—वाटिका, सं. स्त्री. (सं.) पुष्प-कुसुम,-वाटी-उद्यानम् ।

—वृष्टि, सं. स्त्री. (सं.) पुष्प-कुसुम,-आसारः-वृष्टिः ।

पुष्पक, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) कुबेरविमानं २. पुष्पं ३. चक्षूरोगभेदः ४. पितलभस्मन् (न.) ।

पुष्पित, वि. (सं.) कुसुमित, कुसुम-पुष्प,-विशिष्ट-युक्त ।

पुष्पोद्यान, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पुष्पवाटिका' ('पुष्प' के नीचे) ।

पुष्य, सं. पुं. (सं.) सिध्यः, तिष्यः, (अष्टम-नक्षत्रं) २. पौषमासः ।

पुस्तक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) ग्रंथः, पुस्तं-ती ।

पुस्तकालय, सं. पुं. (सं.) ग्रंथ,-आलयः-अगार-शाला ।

पूँछ, सं. स्त्री. (सं. पुच्छः-च्छं) लांगू(गु)लं, लूमं; (बालोंवाली पूँछ) बालधिः, बालहस्तः २. पृष्ठ-पश्चाद्-भागः ३. दे. 'पिछलगा' ।

पूँजी, सं. स्त्री. (सं. पुंजः>) मूल,-द्रव्यं-धनं, मूलं २.संचितसंपत्तिः (स्त्री.) धनः-पुंजः-राशिः ।

—पति, सं. पुं , द्रव्यवत्, धनिकः, कोटीश्वरः, धनाढ्यः ।

पूआ, सं. पुं. (सं. पूयः) अपूपः, पिष्टकः ।

पूग, सं. पुं. (सं.) गु(गू)वाकः, क्रमुः, क्रमुकः २. समुदायः, समूहः ३. (सं. न.) क्रमुक-गु(गू) वाक-, फलम् ।

—फल, पूगीफल, सं. पुं., (सं. पूगफलं) पूगं, चिक्का-क्कणं-क्कणा, उद्वेगम् ।

पूछ, सं. स्त्री. (हिं. पूछना) पृच्छा, प्रच्छना, अनुयोगः, प्रश्नः, जिज्ञासा २. आदरः,संमानः, प्रतिष्ठा ३. आवश्यकता, प्रयोजनं ४. अन्वेषणं-णा, गवेषणं-णा ।

—ताछ, **—ताछ**, **—पाछ**, } सं. स्त्री., दे. 'पूछ'(१) ।

पूछना, क्रि. स. (सं. पृ(प्र)च्छनं) प्रच्छ् (तु. प. अ.), प्रश्नयति (ना. धा.),अनुयुज् (रु. आ. अ.) २. आदृ (तु. आ. अ.) संमन् (प्रे.)। सं. पुं., प्रच्छनं-ना, पृच्छा, अनुयोगः, जिज्ञासा ।

पूछने योग्य, वि., प्रष्टव्य, जिज्ञासितव्य, अनु-योक्तव्य ।

पूछनेवाला, सं. पुं. प्रष्टृ, अनुयोक्तृ, जिज्ञासुः ।

पूछा हुआ, वि., पृष्ट, अनुयुक्त, जिज्ञासित इ. ।

बात न—, मु., न आदृ (तु. आ. अ.) न संमन् (प्रे.) ।

पूजक, सं. पुं. (सं.) पूजयितृ, अर्चकः, उपा-सकः, आराधकः, भक्तः ।

पूजन, सं. पुं. (सं. न.) पूजा, अभि-, अर्चनं-ना, अर्चा, आराधनं-ना, सपर्या, उपासनं-ना २. संमाननं, सत्करणं ३. वंदनं-ना ।

पूजना, क्रि. स. (सं. पूजनं) पूज् (चु.), अभि-, अर्च् (भ्वा. प. से., चु.), उपास् (अ. आ. से.), आराध् (स्वा. प. अ), भज् (भ्वा. उ. अ.) २. संमन् (प्रे.), आदृ (तु. आ. अ.) ३. वंद् (भ्वा. आ. से.), नमस्यति (ना. धा.) ४. उत्कोचं दा । सं. पुं., दे. 'पूजन' ।

पूजनीय, वि. (सं.) दे. 'पूज्य' ।

पूजा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पूजन' ।

पूजार्ह, वि. (सं.) दे. 'पूज्य' ।

पूजने योग्य, वि., दे. 'पूज्य' ।

पूजनेवाला, सं. पुं., दे. 'पूजक' ।

पूजा हुआ, वि., दे. 'पूजित' ।

पूजित, वि. (सं.) अभि-, अर्चित, आराधित, उपासित २. संमानित, आदृत, सत्कृत ३. वंदित, नमस्कृत ।

पूज्य, वि. (सं.) पूजनीय, पूजयितव्य, पूजार्ह, अभि-,अर्चनीय, आराधनीय, भजनीय २. आदरणीय, माननीय, सत्कार्य, वंदनीय ।

—पाद, वि. (सं.) परम-अत्यंत,-पूजनीय-आराध्य ।

—पूजा, सं. स्त्री. (सं.) सत्कार्यसत्कारः, अर्चनीय पूजनीय,-वन्दना-समादरः ।

पूड़ा, सं. पुं. (सं. पूपः) अपूपः, पिष्टकः ।

पूड़ी, सं. स्त्री.. दे. 'पूरी' ।

पूत, वि. (सं.) दे. 'पवित्र' ।

पूत, सं. पुं., दे. 'पुत्र' ।

पूतड़ा, सं. पुं. (हिं. पूत) शिशु-बालक,-आस्तरः-विस्तरः ।

—(डों) का अमीर, मु. परंपरागत-क्रमागत-परंपरीण,-धनिकः-धनाढ्यः।

पूतना, सं. स्त्री. (सं.) राक्षसीविशेषः २. बालरोगभेदः।

पूति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पवित्रता'।

पूनी, सं. स्त्री. (सं. पू >) पिंजिका, तूल,-नालिका-वर्त्तिका।

पूप, सं. पुं. (सं.) अपूपः, पिष्टकः।

पूर, सं. पुं. (सं.) जल-विप्लवः-बृंहणं २. व्रण-संशुद्धिः (स्त्री.)।

पूरक, वि. (सं.) पूरयितृ, पूरणकर्तृ २. खैलिक, परिशिष्टात्मक। सं. पुं., बीजपूरः, मातुलुंगः, सुफलः २. गुणकांकः (गणित) ३. प्राणायामभेदः।

पूरण, सं. पुं. (सं. न.) भरणं, निचयनं, सकुलीकरणं, व्यापनं २. निर्वर्तनं, निष्पादनं, समापनं, संपादनं ३. अंकगुणनम्। वि., पूरक, पूरयितृ।

पूरना, क्रि. स. (सं. पूरणं) पूर् (चु.) पृ-भृ (जु. उ. अ.) २. आच्छद् (चु.) ३. संपद्-साध् (प्रे.) ४. ध्मा (भ्वा. प. अ.), (वायुना) पूर् (चु.) ५. दे. 'बटना'।

पूरब, सं. पुं., दे. 'पूर्व'।

पूरबी, वि., दे. 'पूर्वी'।

पूरा, वि. (सं. पूर्ण) पूरित, व्याप्त, संकीर्ण,आ-सं-समा,-कुल, आविष्ट, निचित, संभृत २. समग्र, समस्त, सकल, ३. अविकल, निर्दोष ४. यथेष्ट, पर्याप्त ५. संपन्न, संपादित, कृत।

—करना, क्रि. स., समाप् (स्वा. उ. अ.) निर्वृत् (प्रे.), निःशिष् (प्रे.), अंतं गम् (प्रे.), संपूर (चु.)।

—होना, क्रि. अ., समाप् (कर्म.), अंतं गम् (भ्वा. प. अ.), निःशेषी भू., संपद् (दि. आ. अ.)।

—उतरना, मु., यथोचितं वृत् (भ्वा. आ. से.) २. सफली भू।

—होना, मु., स्वर्गं-दिवं गम्, मृ (तु.आ.अ.)।

पूरित, वि. (सं.) दे. 'पूरा'(१)। २. तृप्त, तुष्ट ३. गुणित, आ-नि-,हत।

पूरी, सं. स्त्री. (सं.) पू(पो)लिका, पूपिका। खस्ता—, शष्कुली।

पूर्ण, वि. (सं.) दे. 'पूरा'(१-५)।

—काम, वि. (सं.) आप्तकाम, सफलमनोरथ २. निष्काम, अकाम, निरिच्छ।

—चंद्र, सं. पुं. (सं.) पूर्णेन्दुः।

—विराम, सं. पुं. (सं.) वाक्यपूर्णताचिह्नम्।

पूर्णतया, **पूर्णतः**, क्रि. वि. (सं.) अशेषतः, सर्वथा, साकल्येन,सामग्र्येण, सामस्त्येन, निरवशेषम्।

पूर्णता, सं. स्त्री. (सं.) समग्रता, साकल्यं २. सिद्धिः, समाप्तिः (स्त्री.) ३. अविकलता, निर्दोषता ४. पूरितत्वं, संभृतता।

पूर्णमासी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पूर्णिमा'।

पूर्णाहुति, सं. स्त्री. (सं.) यागांताहुतिः (स्त्री.) २. अनुष्ठानावसानकृत्यम्।

पूर्णिमा, सं. स्त्री. (सं.) पूर्णमा, पौर्णमासी, राका, पित्र्या, चांद्री,सिता, इंदुमती, ज्योत्स्नी।

पूर्त्त, सं. पुं. (सं. न.) पालनं २. वापी-कूप-तटाकादिनिर्माणम्।

पूर्त्ति, सं. स्त्री. (सं.) (आरब्धस्य) समाप्तिः-निर्वृत्तिः-सिद्धिः-निष्पत्तिः (स्त्री.) २. पूर्णता, समग्रता ३. पूरणं ४. गुणनं ५. अपेक्षितद्रव्योपस्थापनम्।

पूर्व, सं. पुं. (सं. पूर्वा) प्राची, पूर्व,-दिशा-दिश् (स्त्री.)-आशा, ऐंद्री २. पूर्वदेशः, पौरस्त्यजनपदः। वि., अग्रग, पूर्वग, अग्र-पूर्व,-गामिन्-वर्तिन् २. पुराण, प्राचीन ३. दे. 'पिछला'। क्रि. वि., प्राक्, अर्वाक् (दोनों अव्य.)।

—काय, सं. पुं. (सं.) (पशूनां) देहाग्रभागः २. (नराणां) देहोर्ध्वभागः।

—काल, सं. पुं (सं.) प्राक्-पूर्व-प्राचीन, समयः-कालः-वेला।

—कालिक, वि. **—कालीन**, वि (सं.) पुराण,प्राचीन,प्राक्-कालीन,पुरातन, प्राक्तन।

—कृत, वि. (सं.) प्राग्विहित २. पूर्वजन्मकृत।

—जन्म, सं पुं. [सं.-जन्मन् (न.)] प्राग्जनिः (स्त्री.)।

—दिशा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पूर्व' सं. पुं.(१)।

—पक्ष, सं. पुं. (सं.) शास्त्रीय,-प्रश्नः-शंका, चोद्यं, देश्यं, फक्किका २. कृष्णपक्षः ३. दे. 'पूर्ववादः'।

—पक्षी, सं. पुं. (सं.-क्षिन्) वादिन्, सिद्धांत-विरोधिन्।

—मीमांसा, सं. स्त्री. (सं.) जैमिनिमुनिप्रणीत-दर्शनग्रंथविशेषः।
—वत्, क्रि वि. (सं.) यथापूर्वं, पूर्वसदृशम्।
—वर्ती, वि. (सं.-र्तिन्) प्राग्वर्तिन्, पूर्व-अग्र,-गामिन्।
—वाद, सं. पुं. (सं.) भाषा, भाषापादः, पूर्व-, पक्षः, प्रतिज्ञा, अभियोगः, दे 'नालिश'।
—वादी, सं. पुं. (सं.-दिन्) अभियोक्तृ, अर्थिन्, वादिन्, शिरोवर्तिन्, दे. 'मुद्दई'।
पूर्वज, सं. पुं. (सं) पूर्वपुरुषाः, पितरः (बहु.) २. अग्रजः, ज्यायान् भ्रातृ। वि., प्रागुत्पन्न।
पूर्वतः, अव्य. (सं.) प्रथमं, प्रथमतः २. पुरतः, अग्रतः (सब अव्य.)।
पूर्वतन, वि. (सं.) पुरातन, प्राचीन, प्रतन, प्रत्न।
पूर्वापर, वि. (सं.) अग्रिमपश्चिम, पूर्वपरवर्तिन्। सं. पुं प्राचीनप्रतीच्यौ (द्वि.) २. हानिलाभौ (द्वि.)।
पूर्वाभिमुख, (वि. सं.) प्राङ्मुख (-खी स्त्री.)।
पूर्वाह्न, सं. पुं. (सं.) त्रिधा विभक्तदिवसस्य प्रथमभागः, प्राह्णः, प्रातरह्णः।
पूर्वी, वि. (सं. पूर्वीय) प्राच्य, पौरस्त्य, पूर्व-देशीय, पूर्वदिक्स्थ, प्राच् [-ची (स्त्री.)]। सं. स्त्री, पूर्वीयभाषाविशेषः २. रागिणीभेदः।
पूर्वीय, वि. (सं.) दे. 'पूर्वी' वि.।
पूला, सं. पुं. (सं. पूलः) पूलकः।
पूष, पूस, सं. पुं., दे. 'पौष'।
पृथक्, वि. (सं.) भिन्न, व्यतिरिक्त, विश्लिष्ट, विभक्त, असंलग्न। अव्य, विना, ऋते, अंत-रेण (सब अव्य.)।
—पृथक्, अव्य., वि, वि,-भिन्नम्।
पृथक्ता, सं. स्त्री. (सं.) पृथक्त्वं, पृथग्भावः, पार्थक्यं, भिन्नता, विश्लेषः, विभेदः।
पृथा, सं. स्त्री. (सं) कुन्ती, पाण्डुपत्नी, युधिष्ठिरादिजननी।
—तनय, सं. पुं. (सं.) युधिष्ठिरः, भीमः, अर्जुनः, (प्रायः अर्जुनः, पार्थः)।
—पति, सं. पुं. (सं.) पाण्डुनृपः, कुन्तीपतिः।
पृथिवी, सं. स्त्री. (सं.) पृथ्वी, पृथिविः (स्त्री.), क्षितिः-भूः-भूमिः (स्त्री.), धरा, धरित्री, क्षोणी, वसुधा, वसुमती, वसुंधरा, अवनी-निः (स्त्री.), मेदिनी, धरणी-णिः (स्त्री.), मही-हिः (स्त्री.), अचलकीला, अचला, स्थिरा, इडा।

—तल, सं. पुं. (सं. न.) भू-धरणी,-तलं २. संसारः।
—नाथ, सं. पुं. (सं.) भू,-पतिः-पालः।
पृथु, वि. (सं.) विस्तीर्ण, विस्तृत, विशाल, २. बहु, प्रभूत ३. विशिष्ट।
—कीर्ति, वि. (सं.) अतियशस्विन्। सं. स्त्री., वसुदेवभगिनी।
—दर्शी, वि., (सं.) दूरदर्शिन्, प्राज्ञ।
—लोचन, वि., विशाल,-नेत्र-नयन।
—शेखर, सं. पुं., (सं.) गिरिः, पर्वतः।
—स्कंध, सं. पुं. (सं.) शूकरः, कोलः।
पृष्ट, वि. (सं.) अनुयुक्त, प्रश्नित, जिज्ञासित।
पृष्ठ, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पीठ'[1] (१-२)। २. पुस्तक,-पत्रं-पर्णं ३. पुस्तकपृष्ठम्।
—पोषक, सं. पुं. (सं.) सहायः-यकः, उपकर्तृ।
पेंग, सं. स्त्री. (सं. प्रेंखा>) दोलनं, प्रेंखणं, दोलागतिः (स्त्री.)।
—चढ़ाना या बढ़ाना, मु., सवेगं प्रेंख् (प्रे.), उच्चैः प्रेंखोलयति (ना. धा.)।
पेंदा, सं. पुं. (सं. पिंडः-डं>) तलं, अधोभागः, बुध्नः।
पेंसिल, सं. स्त्री. (अं.) अङ्कनी, स्वयंलेखनी, वर्णिका, वर्णमातृ (स्त्री.)।
पेच, सं. पुं. (फ़ा.) व्यावर्तनं, मोटनं, आ-,कुंचनं २. विघ्नः, विघातः-प्रत्यूहः ३. धूर्तता, शाठ्यं ४. उष्णीष-व्यावर्तनं ५. यंत्रं ६. यंत्रावयवः ७. वलयकीलकः ८. पतंगसूत्रसंग्रथनं ९. (मल्ल-युद्धादीनां) कपटोपायः, युक्तिः (स्त्री.) १०. उष्णीषादेरलंकारः ११. दे. 'पेचिश'।
—कश, सं. पुं. (फ़ा.) *वलयकीलकर्षः २. *पिधानकर्षः।
—खाना, क्रि. अ., मंडली-वर्तुली भू।
—डालना, क्रि. स., पतंगसूत्राणि मिथः संश्लिष् (प्रे.)।
—ताव, सं. पुं. (फ़ा.) अंतः,-कोपः-क्रोधः।
—दार, वि. (फ़ा.) आकुंचित, व्यावर्तित २.गहन, कठिन, दुर्बोध ३. संश्लिष्ट, संग्रथित।
—पड़ना, क्रि. अ., पतंगसूत्राणि परस्परं संश्लिष् (दि. प. अ.)।
—वान, सं. पुं. (फ़ा.) बृहद्धूमपानयन्त्रं २. धूमपानयन्त्रस्य बृहन्नाली।
पेचक, सं. स्त्री. (फ़ा) सूत्र-तन्तु,-गोलः-गोलम्।

पेचिश, सं. स्त्री. (फ़ा.) प्रवाहिका, आमरक्तम् २. उदरवेदनाभेदः ।

पेचीदगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) कौटिल्यं, वक्रत्वं २. दुर्बोधता, क्लिष्टत्वं, गहनत्वम् ।

पेचीदा, वि. (फ़ा.) } दे. 'पेचदार'।
पेचीला, वि. (फ़ा. पेच) }

पेज, सं. पुं (अं.) पुस्तक-, पृष्ठम् ।

पेट, सं. पुं, (सं. पेटः>) उदरः, जठरः-रं, कुक्षिः, फंडः, मलुकः २. गर्भः ३. आमाशयः ४. अन्तःकरणं ५. अवकाशः ६. विस्तारः ७. जीवनं, प्राणधारणम् ।

—काटना, मु., धनसंचयाय अल्पं खाद् (भ्वा. प. से.) ।

—का धंधा, मु., जीवनोपायः, आजीविका-साधनम् ।

—का पर्दा, मु., अंत्रावरणम् ।

—का हलका, मु., क्षुद्रप्रकृति, तुच्छ, प्राकृत ।

—की आग, मु., क्षुधा, बुभुक्षा ।

—की आग बुझाना,—मु., क्षुधां निवृत् (प्रे.)।

—गिरना, मु., गर्भः पत् (भ्वा. प. से.)-स्रु (भ्वा. प. अ.) ।

—गुड़गुड़ाना या बोलना, मु., कर्दनं जन् (दि. आ. से.) कर्द् (भ्वा. प. से.) ।

—दिखाना, मु., निजदारिद्र्यं प्रकटयति (ना. धा.) ।

—पालना, मु., कृच्छ्रेण जीव् (भ्वा. प. से.), यथाकथंचित् उदरं पृ (जु. प. से.) ।

—पीठ एक होना, मु. अत्यंतं क्षि (भ्वा. प. अ.),-कृशीभू ।

—फटना, मु., अधीर (वि.) भू , धैर्यं मुच् (तु. प. अ.) ।

—फूलना, मु., हासातिशयेन उदरं स्फाय् (भ्वा. आ. से.)-स्वि (भ्वा. प. से.) ।

—भर, मु., उदरपूर्ति यावत् २. यथेष्टम् ।

—भरना, मु., सं-परि-तुष् (दि. प. अ.), परि-,तृप् (दि. प. अ.) २. उदरं पूर् (कर्म.) ।

—में चूहे कूदना या दौड़ना, मु., नितरां क्षुध् (दि. प. अ.), अत्यन्तं अशनायति (ना. धा.) ।

—रहना, } मु. गर्भं धृ (चु.), अन्तर्वत्नी
—से होना, } भू ।

—वाली, मु., गर्भिणी, गर्भवती, अन्तर्वत्नी ।

—से पाँव निकालना, मु. सज्जनः कु- प्रवृत् (भ्वा. आ. से.) ।

पेटा, सं. पुं. (हिं. पेट) मध्यं, मध्यभागः विस्तृतविवरणं ३. दे. 'पिटारा' ४. र.. ५.परिधिः ६.सरित्प्रवाहमार्गः ७. नदी विस्तार ८. पश्वंत्रं ९. *पतंगसूत्रशिथिलभागः ।

पेटी[1], सं. स्त्री. (सं.) पेटिका, लघु-पेटः पेटं-पेटा, मंजूषा, समुद्गकः २. नापितकोशः-पः ।

पेटी[2], सं. स्त्री. (हिं. पेट) कटि-सूत्रं-बं- मेखला, कांची २. बुल्बुलकटिसूत्रम् ।

पेटीकोट, सं. पुं. (अं.) चोटी, पटवासः ।

पेटू, वि. (हिं. पेट) औदरिक, उदरं-कुक्षि- भरि, अघ्नर, घस्मर ।

पेटेंट, वि.(अं.)विशिष्टाधिकाररक्षिता,नवरचना ।

पेट्रन, सं. पुं. (अं.) संरक्षकः दे. ।

पेट्रोल, सं. पुं. (अं.) *प्रस्तरतैलम् ।

पेठा, सं. पुं. (देश.) (सफ़ेद) पीतपुष्पं, कुष्मांडं, पीतपुष्पं, पुष्प-बृहत्,-फलं (पीला पेठा-दे. 'कुम्हड़ा') ।

पेड़, सं. पुं. (सं. पिंडः-डं>) दे. 'वृक्ष' ।

पेड़ा, सं. पुं. (सं. पिंडः) किलाटपिंडः-डं २. आर्द्रचूर्णपिंडः ।

पेड़ी, सं. स्त्री. (हिं. पेड़) तरु,-स्कन्धः-प्रकांडः २. कवन्धः ३. नागवल्लीदलभेदः ४. सकृल्लूनो नीलीक्षुपः ।

पेड़ू, सं. पुं. (हिं. पेट) वस्तिः (पुं. स्त्री.) २. गर्भाशयः ।

पेढ़ी, सं. स्त्री., दे. 'पिढ़ी' ।

पेन्शन, सं. स्त्री. (अं.) वार्द्धक्य-पूर्वसेवा- वृत्तिः (स्त्री.) ।

पेन्शनर, सं. पुं. (अं.) पूर्वसेवावृत्तिभोजिन्

पेन्सिल, सं. स्त्री. (अं.) दे. 'पेंसिल' ।

पेपर, सं. पुं. (अं) पत्रं, दे. 'काग़ज़' २. लेखः, लेख्यपत्रं ३. वृत्त-समाचार,-पत्रम् ।

पेय, वि. (सं.) पानीय, पानार्ह, धेय । सं. पुं., पानीयपदार्थः २. जलं ३. दुग्धम् ।

पेयूस, सं. पुं. (सं. पे(पी)यूषः-षं) सप्तरात्रप्र- सूतायाः गोः क्षीरं २. अमृतं ३. अभिनवघृतम् ।

पेरना, क्रि. स. (सं. पीडनं) (रसतैलादिकं), निष्पीड् (चु.), निष्कुष् (भ्वा. प. अ.) २. नितरां पीड् (चु.)-अर्द् (भ्वा. प. से.) ।

पेलना, क्रि. स. (सं. पीडनं) सहसा निविश्

पे.) वलात् अंतः प्रविश् (प्रे.) २. (हस्ता- न) प्र-वि-चल् (प्रे.), प्रणुद्,प्रवृत् (प्रे.) ३. उपेक्ष् (भ्वा. आ. से.) अवगण् (चु.) त्यज् (भ्वा. प. अ.), प्रास् (दि. प. से.) ५. वलं प्रयुज् (रु. आ. अ.) ६.-७. दे. पेरना (१-२)।

लवाना, क्रि. प्रे., व. 'पेलना' के प्रे. रूप।

पेला, सं. पुं. (हिं. पेलना) कलहः, वाग्युद्धं २. अपराधः, दोषः ३. आक्रमणं ४. (वलात्) सारणं-संचालनम्।

पेश, क्रि. वि. (फ़ा.) अग्रे, पुरः, पुरतः, मुखं (सव अव्य.)।

—आना, मु., व्यवहृ (भ्वा. प. अ.), आचर् (भ्वा. प. से.) २.घट्-वृत् (भ्वा. आ. से.)।

—करना, मु., पुरतः स्था (प्रे. स्थापयति) दृश् (प्रे.) २. उपहृ (भ्वा. प. अ.), ऋ (प्रे. अर्पयति)।

—चलना या जाना, मु., प्रभुत्वं वृत्।

—होना, मु., उपस्था (भ्वा. आ. अ.), पुरतः स्था (भ्वा. प. अ.)।

पेशगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) प्राग्दत्तमूल्यं,*अग्रार्घः।

पेश (प, स) ला, वि. (सं.) सुकुमार, मृदु, मृदुल २. तनु, क्षीण ३. सुन्दर, मनोज्ञ ४. विज्ञ, दक्ष ५. छलिन्, मायिन्।

पेशवा, सं. पुं. (फ़ा.) नेतृ, नायकः, अग्रणीः २. पुरोहितः ३. महाराष्ट्रामात्योपाधिः।

वाई, सं. स्त्री. (फ़ा.) प्रत्युद्गमनं, दे. वानी २. नेतृत्वम्।

, सं. पुं. (फ़ा.) व्यवसायः, उपजीविका, ः (स्त्री.)।

माना वा करना, मु., वेश्यावृत्त्या र्वाहं कृ।

ानी, सं. स्त्री. (फ़ा.) मस्तकं २. भाग्यं पे. अग्रभागः।

-पर बल आना वा पड़ना, मु., क्रुध् (दि. प. अ.), कुप्-रुप् (दि. प. से.)।

पेशाब, सं. पुं. (फ़ा., मि० सं. प्रस्रावः)मूत्रम्।

विक्री अधिकता, सं. स्त्री., मूत्र,-मेहः- पोराधिक्यम्।

ग्रख़ाना, सं. पुं. (फ़ा.) मूत्रालयः, मेहनशाला, पर्वनावागारम्।

—जल कर आना, सं. पुं., मूत्रकृच्छ्रम्।

—रुकना, सं. पुं., मूत्र,-रोधः-स्तम्भः।

पेशावर,[१] सं. पुं. (फ़ा.) व्यवसायिन्, उपजीविन्।

पेशावर,[२] सं. पुं. (फ़ा. पेश+आवर>) पुरुषपुरम्।

पेशी[२], सं. स्त्री. (फ़ा.) व्यवहारदर्शनं, विचारः २. उप-पुरः,स्थानं-स्थितिः(स्त्री.), *पुरोभावः।

पेशी,[१] सं. स्त्री.(सं.) (देहस्था) मांस,-पिंडी- ग्रन्थिः (पुं.) २. वज्रं ३. अंडः-डं ४. असि- कोशः-षः ५. गर्भवेष्टनचर्ममयकोषः।

पेशीनगोई, सं. स्त्री. (फ़ा.) भविष्यद्वादः, अनागतकथनम्।

पेषण, सं. पुं. (सं.न.) चूर्णनं, मर्दनं, खंडनम्।

पेषणी, सं. स्त्री. (सं.) पेषणशिला, पेषणिः (स्त्री.), पट्टः, गृहाश्मन् (पुं.)।

पैंजन-नी, सं. स्त्री. (हिं. पायँ+अनु. झन>) पादांगदं, नूपुरः-रं, मंजीरः-रम्।

पैंठ, सं. स्त्री. (सं. पण्यस्थानं) दे. 'बाजार' २. दे. 'दुकान'।

पैंड, सं. पुं. (सं. पाददंडः>) पादन्यासः, चरणपातः, क्रमणं २. पदं, क्रमः ३. मार्गः।

पैंडा, सं. पुं. (हिं. पैंड) मार्गः, पथः, पथिन् २. मंदुरा, वाजिशाला ३. रीतिः (स्त्री.), प्रणाली।

पैंताना, सं. पुं. (हिं. पायँ) खट्वायाः पदधानं, *पदतानः।

पैंतालीस, वि. [सं. पंचचत्वारिंशत् (नित्य स्त्री.)]। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (४५) च।

पैंतीस, वि. [सं. पंचत्रिंशत् (नित्य स्त्री.)]। सं. पुं, उक्ता संख्या, तदंकौ (३५) च।

पैंसठ, वि. [सं. पंचषष्टिः (नित्य स्त्री.)।] सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (६५) च।

पै[१], अव्य. (सं. परं) परंतु, किंतु, परं २. अनं- तरं, तदनु ३. निश्चयेन, अवश्यम्।

जो—, यदि।

तो—, तदा।

पै[२], अव्य. (हिं. पास वा सं. प्रति) समीपं-पे, निकटं-टे २. प्रति, दिशि।

पौंडा, सं. पुं. (सं. पौंड्रः) पौंड्रकः। इक्षुभेदः।

पौ,[1] सं. स्त्री. (सं. पादः>) किरणः, रश्मिः, ज्योतिस् (न.) अहर्मुखं, उषा।

—फटना, मु., वि-प्र,-भातं जन् (दि. आ. से.) अरुणः उत् इ (अ. प. अ.)।

पौ,[2] सं. स्त्री. (सं. पदं>) अक्षपातभेदः।

—बारह होना, मु., जि (भ्वा. उ. अ.), २. भाग्यं उत्-इ (अ. प. अ.)।

पौडर, सं. पुं. (अं.) क्षोदः चूर्णं २. पटवासकः, पिष्टातः।

पौढ़ना, क्रि. अ., दे. 'लेटना'।

पौत्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'पोता'।

पौत्री, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पोती'।

पौद, सं. स्त्री. (सं. पोतः>) बालवृक्षः, वृक्षकः, २. स्थानांतरे आरोपणीयः उद्भिज्जः ३. संतानः, वंशः।

पौदा, पौधा, सं. पुं. (सं. पोतः>) क्षुद्रपादपः, वृक्षकः, उद्भिज्जः, बालतरुः २. क्षुपः, गुल्मः।

पौन,[1] वि. (सं. पादोन) त्रिचतुर्थ, त्रितुर्य, त्रिपाद [पौनी (स्त्री.)]।

पौन,[2] सं. पुं. स्त्री. दे. 'पवन'।

पौना, सं. पुं. (सं. पादोन) पादोनगुणनसूत्री। वि., दे. 'पौन'।

पौने, वि. (सं. पादोन) दे. 'पौन'।

—सोलह आने, मु., प्रायः साकल्येन-सामस्त्येन-सामग्र्येण।

पौर, वि. (सं.) नागरिक, पुर-नगर,-संबंधिन्-जात।

—कन्या, सं. स्त्री. (सं.) पौर-नागर-पुर-नगर,-कन्या-कुमारी २. नागरी, पौरांगना।

—जन, सं. पुं. (सं.) पौरलोकः, नागरः, नागरिकः, पौरः, पुरः, पुर-नगर,-वासिन्।

—मुख्य, सं. पु. (सं.) पौरवृद्धः, महापौरः।

—सख्य, सं. पु. (सं. न.) सहनागरिकता।

पौराणिक, वि. (सं.) पुराणसंबंधिन् २. पुराण,-वेत्तृ-पाठक २. प्राचीन ३. काल्पनिक।

पौरिया, सं.पुं. (हिं. पौरि) द्वारपालः, द्वाःस्थः।

पौरी-रि-ली, सं. स्त्री. (सं. प्रतोली>) (नगर-दुर्गादीनां) द्वारं २. दे. 'ड्योढ़ी'।

पौरुष, सं. पुं. (सं. न.) पुरुषत्वं, पुंस्त्वं २. पुरुषार्थः, उद्यमः, उद्योगः ३. साहसम्, पराक्रमः। वि., पुरुषसंबंधिन्, मानुष, मानव।

पौरुषेय, वि. (सं.) पौरुष, मानवीय, मानव-मनुष्य,-रचित।

पौर्णमासी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पूर्णिमा'।

पौवा, सं. पुं. (सं. पादः) (सेर-) पादः २. पादमानपात्रम्।

पौष, सं. पुं. (सं.) तिष्यः, तैषः, पौषिकः, हैमनः, सहस्यः।

पौष्टिक, वि. (सं.) पुष्टि,-कर-कारक, बल-वीर्य,-वर्द्धक।

पौसर—ला, पौसाला, सं. स्त्री. (सं. पयःशाला) प्रपा, दे. 'सबील'।

प्याऊ, सं. पुं. (सं. प्रपा) पयःशाला, दे. 'सबील'।

प्याज़, सं. पुं. (फ़ा.) पलांडुः, मुखदूपणः, उष्णः, शूद्रप्रियः, कृमिघ्नः, दीपनः, बहुपत्रः, रोचनः, मुखगंधकः।

प्याज़ी, वि. (फ़ा. प्याजः) पलाण्डुवर्ण।

प्यादा, सं. पुं. (फ़ा.) पादगः, पदगः, पत्तिः, पदातिः २. दूतः, संदेशहरः ३. शारिभेदः।

प्यार, सं. पुं. (हिं. प्यारा) प्रीतिः (स्त्री.), प्रेमन् (पुं. न.), स्नेहः, अनु-, रागः, भावः, प्रणयः, अभिनिवेशः २. लालनं, चुम्बनं, आलिंगनं इ.।

—करना, क्रि. स., भावं-अनुरागं बंध् (क्र्. प. अ.), कम् (भ्वा. आ. से.), स्निह् (दि. प. से., सप्तमी के साथ) २. लल् (चु.), आलिंग् (भ्वा. प. से.), परिरंभ् (भ्वा. आ. अ.), चुंब् (भ्वा. प. से.)।

प्यारा, त्रि. (सं. प्रिय) दयित, वल्लभ, कांत, प्रेमपात्र २. हृद्य, रम्य, मनोज्ञ, रुचिकर, रुच्य [प्यारी (स्त्री.)=प्रिया, वल्लभा, दयिता २. रुचिकरी, हृद्या इ.]।

प्याला, सं. पुं. (फ़ा.) चपकः-कं, शरावः।

प्याली, सं. स्त्री. (फ़ा.) शरावकः, लघुचषकः।

प्यास, सं. स्त्री. (सं. पिपासा) तृष् (स्त्री.)। तृष्णा, तृषा, तर्षः, उदन्या, शुष्पिका २.लालसा, प्रबलेच्छा।

—बुझाना, मु., तृषां शम् (प्रे.) अपनी (भ्वा. प. अ.)।

—लगना, मु., उदन्यति (ना. धा.); पिपासति (सन्नंत), तृष् (दि. प. से.)।

प्यासा, वि. (हिं. प्यास) पिपासु, तृषार्त्त, तृषित, तर्षुल, तर्षित।

प्रकंप, सं. पुं. (सं.) वेपथुः, राजथुः, दे. 'कँपकँपी'।

प्रकट, वि. (सं.) स्पष्ट, व्यक्त, स्फुट, उल्वण-उद्रिक्त २. आविर्भूत, दृष्ट।

—करना, क्रि. स., प्रकटयति (ना. धा.), प्रकटी कृ, प्रकाश् (प्रे.)।

—होना, क्रि. अ., आविर्-प्रकटी,-भू, प्रकाश् (भ्वा. आ. से.)।

प्रकटित, वि. (सं.) प्रादुर्-आविर्-प्रकटी,-भूत, २. आविष्-प्रकटी, कृत।

प्रकरण, सं. पुं. (सं. न.) पौर्वापर्यं, पूर्वापर-संबंधः, प्रसंगः २. अध्यायः, परिच्छेदः ३. दृश्यकाव्यभेदः।

प्रकर्ष, सं. पुं. (सं.) उत्कर्षः, श्रेष्ठत्वं, उत्तमता २. आधिक्यं, प्राचुर्य्यम्।

प्रकांड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) स्कंधः, दंडः, कांडं २. शाखा ३. वृक्षः। वि., सुमहत्, सुवि-स्तृत, सुविशाल।

प्रकार, सं. पुं. (सं.) भेदः, वर्गः, जातिः (स्त्री.) २. रीतिः (स्त्री.), सारणी, विधिः ३.सादृश्यम्।

प्रकाश, सं. पुं. (सं.) आलोकः, उज्ज्वला, आभा, आभासः, ज्युतिः-द्युतिः-दीप्तिः-त्विष्-भास् (सब स्त्री.), भासस्-ज्योतिस्-तेजस् (न.), आ-,द्योतः, प्रभा २. आतपः, सूर्यालोकः, धर्मः ३. अभिव्यक्तिः (स्त्री.), आविर्भावः ४. प्रसिद्धिः (स्त्री.) ५. अध्यायः।

प्रकाशक, सं. पुं. (सं.) द्योतकः, दीप्तिकरः, उद्भासकः २. ख्यापकः, प्रकाशयितृ।

प्रकाशन, सं. पुं. (सं. न.) प्रकटी-आविष्,-करणं २. प्रख्यापनं, प्रचारणं (पुस्तकादि का)।

प्रकाशमान, वि. (सं.) भासमान, द्योतमान, भासुर २. प्रसिद्ध, विश्रुत।

प्रकाशित, वि. (सं.) दे. 'प्रकाशमान' २. उद्भासित, आलोकित ३. प्रचारित, प्रख्यापित, प्रकट।

प्रकाश्य, वि. (सं.) प्रकाशनीय, प्रख्यापनीय, प्रचारणीय।

प्रकीर्ण, वि. (सं.) आ-वि-,कीर्ण, व्यस्त, विक्षिप्त, विश्लिष्ट।

प्रकीर्णक, वि. (सं.) दे. 'प्रकीर्ण'। सं. पुं. (सं. पुं. न.) चमरं, चामरम्। सं. पुं. (सं.) घोटः, अश्वः। सं. पुं. (सं. न.) नाना-विविध-बहुविध-वस्तुसंग्रहः २. प्रकरणं, अध्यायः ३. विविधविषयकाध्यायः।

प्रकुपित, वि. (सं.) अति,-कुपित-क्रुद्ध-संरब्ध।

प्रकृत, वि. (सं.) वास्तविक-तात्त्विक [-की (स्त्री.)] तथ्य, अवितथ, यथार्थ २. सविशेषं कृत-रचित-विहित।

प्रकृति, सं. स्त्री. (सं.) स्वभावः, वृत्तिः (स्त्री.), शीलं, स्वरूपं, धर्मः, गुणः २. दे. 'तासीर' ३. प्रधानं, माया, जगतः उपादानकारणं, पृथ्व्यादि-परमाणवः (बहु.)।

—ज, वि. (सं.) सहज, स्वाभाविक, सह-जात, नैसर्गिक।

—मंडल, सं. पुं. (सं.न.) राष्ट्रं, राज्यं, देशः।

—सिद्ध, वि. (सं.) सहज, स्वाभाविक, नैस-र्गिक, औत्पत्तिक।

—स्थ, वि. (सं.) स्वस्थ, शान्त, विकार-क्षोभ,-रहित।

प्रकोप, सं. पुं. (सं.) अत्यंत,-कोपः-क्रोधः-संरंभः-अमर्षः २. (रोगादीनां) प्रसारः, आधिक्यं ३. देहधातुविकारः।

प्रकोष्ठ, सं. पुं. (सं.) कफोणेरधोमणिबन्ध-पर्यन्तो हस्तभागः २. बहिर्द्वारपार्श्वस्थः कोष्ठः ३. विशालांगनम्।

प्रक्षालन, सं. पुं. (सं. न.) धावनं, मार्जनम्।

प्रक्षालित, वि.(सं.) धौत. मार्जित, जलशोधित।

प्रक्षिप्त, वि. (सं.) प्रास्त, अपास्त, निरस्त २. कालांतरे मिश्रित योजित।

प्रक्षेप, सं. पुं. (सं.) प्रासनं, निरसनं, प्रक्षेपणं, अपासनं २. विकिरणं ३. पश्चात् मिश्रणम्।

प्रखर, वि. (सं.) उग्र, प्र-, चंड, प्रबल, तीव्र २. निशि(शा)त, तीक्ष्णाग्र, दे. 'तेज़'।

प्रख्यात, वि. (सं.) दे. 'प्रसिद्ध'।

प्रख्याति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'प्रसिद्धि'।

प्रगट, वि., दे. 'प्रकट'।

प्रगल्भ, वि. (सं.) चतुर, दक्ष, कुशल,-प्रवीण २. प्रत्युत्पन्नमति, प्रतिभाशालिन् ३. उत्साहिन्, साहसिन् ४. निर्भय, अभय ५. वावदूक, प्रजल्पक ६. गम्भीर, प्रौढ़ ७. प्रधान, मुख्य ८. धृष्ट, निर्लज्ज, अपत्रप ९. उद्धत, विनय-शून्य १०. अभिमानिन्, दृप्त ११. पुष्ट १२. समर्थ, शक्त।

प्रगल्भता, सं. स्त्री. (सं.) दाक्ष्यं, कौशलं, प्रावीण्यं २. प्रतिमा ३. निर्भयता ४. उत्साहः ५. वाक्चातुर्यं, प्रत्युत्पन्नमतित्वं ६. गांभीर्यं ७. प्रधानता ८. धाष्टर्यं, निर्लज्जता ९. औद्धत्यं,

वैयात्यं १०. अभिमानः ११. पुष्टत्वं १२. प्रजल्पः, वावदूकता १३. सामर्थ्यम् ।

प्रगाढ़, वि. (सं.) अत्यन्त, अत्यधिक, प्रभूत, प्रचुर २. अतिग(गं)भीर, अतिगहन ३. कीकस, कठिन, घन ।

प्रग्रह, सं. पुं. (सं.) ग्रहणं, धारणं २. अश्वादीनां रश्मिः ३. किरणः ४. (तुला-) सूत्रं ५. बाहुः ६. इन्द्रियनिग्रहः ।

प्रचंड, वि. (सं.) तीव्र, उग्र, घोर, प्र-,खर, २. प्रबल, बलवत्, ३. भीषण, भयंकर ४. कठिन, कठोर ५. असत्य, दुस्सह ६. बृहत्, महत् ७. पुष्ट, पीन ८. प्रतप्त ९. प्रतापिन् ।

प्रचंडता, सं. स्त्री. (सं.) उग्रता, तीव्रता, प्रखरता, २. भीषणता, भयंकरता ।

प्रचलन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'प्रचार' ।

प्रचलित, वि. (सं.) प्रचरित, संचारिन्, प्रसिद्ध, लोकसिद्ध, वर्तमान, विद्यमान ।

प्रचार, सं. पुं. (सं.) प्रचलनं, प्रसारः, सततोपयोगः, निरन्तरव्यवहारः ।

—करना, क्रि. स., प्रचर्-प्रचल्-प्रसृ (प्रे.) ।

प्रचारक, वि. (सं.) प्रसारक,प्रचालक, विस्तारक । [प्रचारिका (स्त्री.)] ।

प्रचुर, वि. (सं.) विपुल, बहुल, अधिक, प्रभूत, प्राज्य, बहु, भूयिष्ठ, भूरि ।

प्रचुरता, सं. स्त्री. (सं.) बाहुल्यं, आधिक्यं, वैपुल्यं, भूयिष्ठत्वम् ।

प्रच्छन्न, वि. (सं.) गुप्त, गूढ, अदृष्ट, तिरोभूत २. आच्छादित, आवेष्टित ।

प्रजा, सं. स्त्री. (सं.) संतानः, संततिः (स्त्री.) २. प्रकृतयः-शासितजनाः-राज्यनिवासिनः (सब बहु.) ।

—तंत्र, सं. पुं. (सं. न.) जनतंत्रशासनं, प्रजासत्ताकं राज्यं, जनताप्रभुत्वम् ।

—नाथ, सं. पुं. (सं.) नृपः २. ब्रह्मन् ३. मनुः ४. दक्षः ।

—पति, सं. पुं. (सं.) सृष्टि-जगत्,-कर्तृ-रचयितृ-स्रष्टृ, २. ब्रह्मन् ३. मनुः ४. नृपः ५. सूर्यः ६. अग्निः ७. पितृ ८. गृहपतिः ।

प्रजावती, सं. स्त्री. (सं.) भ्रातृजाया, दे. 'भावज' २. अग्रजपत्नी ३. गर्भवती ४. संतानवती ।

प्रज्ञ, सं. पुं. (सं.) प्राज्ञः, बुद्धिमत्, विद्वस्, पंडितः ।

प्रज्ञा, सं. स्त्री. (सं.) बुद्धिः (स्त्री.), ज्ञानं २. सरस्वती ३. एकाग्रता ।

—चक्षु, सं. पुं. (सं.-क्षुस्) धृतराष्ट्रः २. अंधः (व्यंग्य) ३. बुद्धिनेत्रम् ४. प्राज्ञः ।

—पारमिता, सं. स्त्री. (सं.) पूर्णज्ञानं, सर्वज्ञता (बौद्ध०) ।

—वाद, सं. पुं. (सं.) पांडित्य-विद्वत्ता-पूर्णोक्तिः (स्त्री.) ।

—हीन, वि. (सं.) मूर्ख, मूढ, जड, अज्ञ ।

प्रज्वलित, वि. (सं.) देदीप्यमान, दंदह्यमान, जाज्वल्यमान, प्रदीप्त, २. सुस्पष्ट, स्वच्छ ।

प्रण[1], सं. पुं. (सं. पणः>) व्रतं, दृढसंकल्पः, प्रतिज्ञा, शपथः, वाचा ।

—करना, सशपथं प्रतिज्ञा (क्र्. आ. अ.), प्रतिश्रु (स्वा. प. अ.) ।

प्रण[2], वि. (सं.) पुराण, प्राचीन ।

प्रणत, वि. (सं.) प्रह्वीभूत, २. वंदमान ३.नम्र ४. निर्धन ।

प्रणति, सं. स्त्री. (सं.) प्रणामः, प्रणिपातः, नमस्कारः, नमस्क्रिया, वंदना २. नम्रता ३. निवेदनम् ।

प्रणय, सं. पुं. (सं.) दे. 'प्यार' २. सस्नेहप्रार्थनम् ।

प्रणयन, सं. पुं. (सं.) लेखनं, रचनं, निर्माणं, विधानं, करणम् ।

प्रणयिनी, सं. स्त्री. (सं.) प्रिया, वल्लभा, दयिता २. पत्नी, भार्या ।

प्रणयी, सं. पुं. (सं.-यिन्) रमणः, वल्लभः कांतः- दयितः २. पतिः, भर्तृ ।

प्रणव, सं. पुं. (सं.) ॐकारः २. परमेश्वरः ।

प्रणाम, सं. पुं. (सं.) दे. 'प्रणति' (चतुर्विधः अष्टांगः, पंचांगः, अभिवादनं, करशिरःसंयोगः) ।

—करना, क्रि. स., नमस्कृ, प्रणम् (भ्वा. प. अ.), अभिवद् (चु. आ. से.), वंद् (भ्वा. आ. से.) ।

प्रणाली, सं. स्त्री. (सं.) जलोच्छ्वासः, परिवाहः, सरणिः (स्त्री.) २. प्रथा, परिपाटी, परंपरा, रीतिः (स्त्री.) ३. युक्तिः-पद्धतिः(स्त्री.) ।

प्रणिधान, सं. पुं. (सं. न.) समाधिभेदः २. भक्तिविशेषः ३.कर्मफलत्यागः, ४. चित्तैकाग्र्यम् ५. प्रार्थना ६. व्यवहारः ।

प्रणिधि, सं. पुं. (सं.) दे. 'गुप्तचर' ।

प्रणिपात, सं. पुं. (सं.) दे. 'प्रणति'।

प्रणीत, वि. (सं.) लिखित, रचित, निर्मित, कृत, विहित २. संस्कृत, संशोधित ३. आनीत ४. प्रेषित।

प्रणेता, सं. पुं. (सं. प्रणेतृ) लेखकः, रचयितृ, कर्तृ, निर्मातृ।

प्रतप्त, वि. (सं.) तापित, अत्युष्णी,-कृत-भूत।

प्रताप, सं. पुं. (सं.) तेजस्-ओजस् (न.), अनुभावः, अभिख्या, गौरवं, ऐश्वर्यं, महिमन् (पुं.) २. पौरुषं, वीर्यं, शौर्यं ३. तापः, उष्णता, घर्मः।

प्रतापी, वि. (सं.-पिन्) प्रतापवत्, तेजस्विन्, ओजस्विन्, अनुभाववत् २. वीर, शूर।

प्रतारणा, सं. स्त्री. (सं.) वंचनं-ना, कपटं, प्रतारणं २. धूर्तता, कैतवम्।

प्रति, सं. स्त्री. (सं. प्रति>) प्रति-अनु,-लिपिः (स्त्री.), प्रतिलेखः। (उपसर्ग) समक्षं, सम्मुखं तुलनायां २. प्रति (द्वितीया के साथ, सप्तमी विभक्ति से भी, उ., भगवान् के प्रति श्रद्धा = भगवंतं प्रति अथवा भगवति श्रद्धा) ३. दिशि (सप्तमी)।

प्रति(ती)कार, सं. पुं. (सं.) प्रतिकृतिः (स्त्री.), प्रतिक्रिया, निर्यातनं, शमनोपायः २.चिकित्सा, उपचारः।

प्रतिकूल, वि. (सं.) विपरीत, विरुद्ध, प्रतीप, विषम।

प्रतिकूलता, सं. स्त्री. (सं.) वैपरीत्यं,विरोधः।

प्रतिकृति, सं. स्त्री. (सं.) प्रतिमूर्तिः (स्त्री.), प्रतिमा २. चित्रं, आलेख्यं ३. छाया, प्रतिबिंबं ४. प्रतिक्रिया, प्रति(ती)कारः।

प्रतिक्रिया, सं. स्त्री. (सं.) प्रति(ती)कारः, प्रतिकृतिः (स्त्री.) २. प्रतिघातः, प्रत्याघातः ३. निवारण-शमन,-उपायः।

प्रतिक्षण, क्रि. वि. (सं.-क्षणं) अनुक्षणं, क्षणे क्षणे, प्रति-अनु,-पलम्।

प्रतिग्रह, सं. पुं (सं.) स्वी-अंगी,-कारः, आदानं, ग्रहणं २. विवाहः, पाणिग्रहणम्।

प्रतिघात, सं. पुं. (सं.) प्रतिप्रहारः, प्रत्याघातः, प्रतिहतिः (स्त्री.) ३. विघ्नः, बाधा।

प्रतिच्छाया, सं. स्त्री. (सं.) प्रतिबिंबं, छाया, प्रतिफलं, प्रतिरूपं २. चित्रं ३. मूर्त्तिः (स्त्री.)।

प्रतिज्ञा, सं. स्त्री. (सं.) प्रतिश्रवः, संगरः, समयः, संविद्-आगूः (स्त्री.), वचनं, वाचा शपथः, दृढसंकल्पः २. साध्यनिर्देशः (न्या.)।

—करना, क्रि. स., आ-प्रति-सं-श्रु (भ्वा. प. अ.), प्रतिज्ञा (क्र्. आ. अ.)। क्रि. अ., प्रतिज्ञां कृ, वचनं दा।

—तोड़ना, क्रि. स., प्रतिज्ञां भंज् (रु. प. अ.), उल्लंघ् (चु.), विसंवद् (भ्वा. प. से.)।

—पालना, क्रि. स. वचनं पा (प्रे. पालयति) शुध् (प्रे.)।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) समय-प्रतिज्ञा,-पत्रं-लेख्यम्।

—पालन, सं. पुं. (सं. न.) प्रतिज्ञानिर्वाहः, संगरशोधनम्।

—भंग, सं. पुं. (सं.) वचनव्यतिक्रमः,प्रतिज्ञोल्लंघनं, विसंवादः।

—विवाहित, वि. (सं.) वाग्दत्तः-त्ता-त्तम्, प्रदत्तः-त्ता-त्तम्, प्रत्तः-त्ता-त्तम्।

प्रतिज्ञात, वि. (सं.) प्रतिश्रुत, संश्रुत, आश्रुत। सं. पुं. (सं. न.) प्रतिज्ञा, दृढ़संकल्पः।

प्रतिदंड, वि. (सं.) दुःशीलः-ला-लं, धृष्टः-धृष्टा-धृष्टम्, आज्ञालंघिन्, अननुवर्तिन्।

प्रतिदान, सं.पुं. (सं.न.)प्रत्यर्पणं २.विनिमयः।

प्रतिदिन, क्रि.वि. (सं.-दिनं) अनु,-दिनं-दिवसं, प्रत्यहं अन्वहं, दिने दिने।

प्रतिद्वंद्विता, सं. स्त्री. (सं.) शत्रुता, वैरं, विरोधः २. प्रतिस्पर्द्धा, प्रत्यर्थिता।

प्रतिद्वंद्वी, सं. पुं. (सं.-द्विन्) अरिः, शत्रुः, विरोधिन् २. प्रत्यर्थिन्, प्रतिस्पर्धिन्।

प्रतिध्वनि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) प्रति,-ध्वनिः-नादः-शब्दः-श्रुतिः (स्त्री.)।

—उठना या होना, क्रि. अ., प्रति,-ध्वन्-नद् (भ्वा. प. से.)।

प्रतिनिधि, सं. पुं. (सं.) प्रतिपुरुषः, प्रतिहस्तः-स्तकः २. प्रतिमा, प्रतिमूर्तिः (स्त्री.)।

प्रतिपक्षी, सं. पुं. (सं.-क्षिन्) विपक्षिन्, प्रतिवादिन् २. विरोधिन्, प्रतिद्वंद्विन् ३. शत्रुः, वैरिन्।

प्रतिपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) प्राप्तिः-उपलब्धिः(स्त्री.) अधिगमनं २. ज्ञानं ३. अनुमानं ४. दानं, अर्पणं ५. निरूपणं, प्रतिपादनं ६. प्रवृत्तिः (स्त्री.) ७. निश्चयः ८. परिणामः ९. गौरवं १०. प्रतिष्ठा, सत्कारः ११. स्वीकृतिः (स्त्री.) १२. सप्रमाणं प्रदर्शनम्।

प्रतिपदा, सं. स्त्री. (सं.) प्रतिपद् (स्त्री.) पक्षतिः (स्त्री.), शुक्ला प्रथमतिथिः (स्त्री.), प्रतिपदी ।

प्रतिपन्न, वि. (सं.) ज्ञात, अवबुद्ध, अधिगत २. स्वी-अंगी,-कृत ३. निर्धारित, निश्चित ४. शरणागत ५. संमानित ६. प्राप्त ७. प्रवृद्ध ।

प्रतिपादक, वि. (सं.) दातृ,-दायक, २. निरूपक, व्याख्यातृ ३. उन्नायक ४. निष्पादक ।

प्रतिपादन, सं. पुं. (सं. न.) निरूपणं, सप्रमाणं कथनं-साधनं-स्थापनं २. सम्यग् ज्ञापनं-अवबोधनं ३. दानं, अर्पणम् ।

प्रतिपादित, वि. (सं.) सम्यग् अवबोधित-ज्ञापित २. निर्धारित, निश्चित ३. दत्त ।

प्रतिपाद्य, वि. (सं.) निरूपणीय, अवबोधनीय २. देय ।

प्रतिपालन, सं. पुं. (सं. न.) पालनं, पोषणं, संवर्द्धनं २.रक्षणं, त्राणं ३.निर्,-वाहः-वहणम् ।

प्रतिफल, सं. पुं. (सं.न.) दे. 'प्रतिच्छाया'(१) २. परिणामः, फलं ३. प्रत्युपकारः ४. प्रत्यपकारः, निष्कृतिः (स्त्री.) ।

प्रतिबंध, सं. पुं. (सं.) विघ्नः, बाधा, अन्तरायः २. प्रतिरोधः, व्याघातः ३. दे. 'प्रबंध' ।

प्रतिबिंब, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'प्रतिच्छाया' ।

प्रतिबिंबित, वि. (सं.) प्रतिफलित,प्रतिरूपित ।

प्रतिभा, सं. स्त्री. (सं.) नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा, चमत्कारिणी बुद्धिः (स्त्री.), मतिप्रकर्षः २. बुद्धिः-मतिः-धीः (स्त्री.) ३. वैदग्ध्यं, बुद्धिचातुर्यं ४. दीप्तिः (स्त्री.) ।

प्रतिभाशाली, वि. (सं.-लिन्) प्रतिभावत्, प्रतिभान्वित, सप्रतिभ २. धीमत्, बुद्धिमत् ।

प्रतिभू, सं. पुं. (सं.) लग्नकः, दे. 'ज़ामिन' ।

प्रतिमा, सं. स्त्री. (सं.) अनुकृतिः-मूर्तिः (स्त्री.), चित्रं, प्रति,-कृतिः(स्त्री.)-मानं-रूपं-च्छन्दकं २. प्रति,-बिंबं-च्छाया ३. माडः, मात्रं, तोलमार,-मानं ४. अलंकारभेदः (सा.) ।

प्रतियोगिता, सं. स्त्री. (सं.) प्रतिद्वंद्विता, प्रतिस्पर्द्धा, अहमहमिका, विजिगीषा २.विरोधः, शत्रुता ।

प्रतियोगी, सं. पुं. (सं.-गिन्) प्रतिद्वंद्विन्, प्रतिस्पर्द्धिन, विजिगीषुः २. शत्रुः, वैरिन् ३. सहायकः ३. अंशिन्, अंशभाज् ।

प्रतिरूप, सं. पुं. (सं. न.) मूर्तिः (स्त्री.), प्रतिमा २. चित्रं, आलेख्यं ३. प्रतिनिधिः ।

प्रतिरोध, सं. पुं. (सं.) विरोधः, प्रातिकूल्यं, वैपरीत्यं २. बाधः-धा, व्याघातः, प्रतिबंधः ।

प्रतिलिपि, सं. स्त्री. (सं.) अनुलिपिः (स्त्री.), प्रतिलेखः ।

प्रतिलोम, वि. (सं.) प्रतिकूल, विपरीत, विरुद्ध २. तुच्छ, नीच ३. विलोम, विपर्यस्त, व्यत्यस्त ।

प्रतिलोमज, सं. पुं. (सं.) वर्णसंकरः २. उत्तमवर्णायां नार्यां अधमवर्णात् पुरुषात् जातः ।

प्रतिवचन, सं. पुं. (सं. न.) उत्तरं, प्रतिवचस (न.) २. प्रतिध्वनिः ।

प्रतिवत्सर, अव्य. (सं.) प्रति-अनु,-वर्षं-वत्सरं-अब्दं, वर्षे-वर्षे, वत्सरे-वत्सरे ।

प्रतिवनिता, सं. स्त्री. (सं.) सपत्नी, सभार्या, समानपतिका ।

प्रतिवस्तु, सं. स्त्री. (सं.) सदृश-समान-तुल्य,-वस्तु (न.), पदार्थः २. प्रतिदत्तपदार्थः ३. उपमानम् ।

प्रतिवस्तूपमा, सं. स्त्री. (सं.) अर्थालंकारभेदः ।

प्रतिवाद, सं. पुं. (सं.) प्रत्याख्यानं, निराकरणं, निरासः, दे. 'खंडन' २. विवादः ३. उत्तरम् ।

प्रतिवादी, सं. पुं. (सं.-दिन्) प्रत्यर्थिन्, अभियुक्तः २. विपक्षिन्, प्रतिपक्षिन्, प्रत्याख्यातृ ।

प्रतिवासी, सं. पुं. (सं. सिन्) दे. 'पड़ोसी' ।

प्रतिवेशी, सं. पुं. (सं-शिन्) दे. 'पड़ोसी' ।

प्रतिशोध, सं. पुं. (सं.>) निर्यातनं, प्रति,-अपकारः-द्रोहः ।

प्रतिश्याय, सं. पुं. (सं.) दे. 'जुकाम' २. पीनसरोगः ।

प्रतिषिद्ध, वि. (सं.) दे. 'निषिद्ध' ।

प्रतिषेध, सं. पुं. (सं.) दे. 'निषेध' २. खंडनं, निरसनं ३. अर्थालंकारभेदः (सा.) ।

प्रतिष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) संस्कारः, अर्हणा, सं-,मानः, आदरः, गौरवं २. यशस् (न.), कीर्तिः-विख्यातिः-प्रसिद्धिः (स्त्री.) ३. स्थापनं-ना, निधानम् ।

प्रतिष्ठित, वि. (सं.) सत्कृत, सं-,मानित, अभ्यर्चित २. विश्रुत, प्रसिद्ध, विख्यात २.स्थापित, प्रतिष्ठापित ।

प्रतिस्पर्द्धा, सं. स्त्री. (सं.) प्रत्यर्थिता, प्रतिद्वंद्विता, विजिगीषा, अहमहमिका २. कलहः ।

प्रतिस्पर्द्धी, सं. पुं. (सं.-द्धिन्) प्रत्यर्थिन्, प्रतिद्वंद्विन्, विजिगीषुः।

प्रतिहत, वि. (सं.) अव-प्रति,-रुद्ध, प्रतिबाधित २. पराणुन्न, परावर्तित ३. अपास्त, क्षिप्त ४. पतित ५. निराश ६. पराजित, परास्त।

प्रति(ती)हार, सं. पुं. (सं.) द्वार् (स्त्री.), द्वारं २. द्वारपालः, द्वाःस्थः।

प्रति(ती)हारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) द्वारपालः, द्वाःस्थः, दौवारिकः। सं. स्त्री. (सं.) द्वारपालिका।

प्रतिहिंसा, सं. स्त्री. (सं.) प्रत्यपकारः, प्रत्यपक्रिया, प्रतिद्रोहः, प्रति-,निर्यातनम्।

प्रतीक, सं. पुं. (सं. न.) प्रतिमा, मूर्तिः २. मुखं, आननं ३. अग्रं, अग्रभागः ४. श्लोकादेः प्रथमशब्दः ५. अंगं, अवयवः ६. चिह्नं, लक्षणं ७. आकारः, रूपं ८. प्रतिरूपं, स्थानापन्नवस्तु (न.)।

प्रतीकार, सं. पुं. (सं.) दे. 'प्रतिकार'।

प्रतीक्षा, सं. स्त्री. (सं.) प्रतीक्षणं, उद्वीक्षा, प्रत्याशा, अपेक्षा।

—करना, क्रि. अ., अप-उद्-प्रति-ईक्ष् (भ्वा. आ. से.), अनु-प्रति-पा (प्रे. पालयति)।

प्रतीची, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पश्चिम'।

प्रतीत, वि. (सं.) ज्ञात, विदित, अवगत, बुद्ध २. प्रसिद्ध ३. प्रसन्न।

—होना, क्रि. अ., ज्ञा-अवगम्-बुध्-प्रती· (=प्रति-इ) (सब कर्म.)।

प्रतीति, सं. स्त्री. (सं.) ज्ञानं, बोधः, अवगमः २. ख्यातिः (स्त्री.) ३. विश्वासः ४. आनंदः ५. आदरः।

प्रतीप, वि. (सं.) विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल।

प्रतीहार, सं. पुं. (सं.) दे. 'प्रतिहार'।

प्रत्यंचा, सं. स्त्री. (सं.) मौर्वी, शिंजिनी, ज्या, धनुर्गुणः।

प्रत्यक्ष, वि. (सं.) दृश्य, दृग्गोचर, पुरःस्थित २. इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रियगोचर, ऐन्द्रियक ३. प्रकट, स्पष्ट। सं. पुं. (सं. न.) प्रमाणभेदः (न्याय.), अनुभवभेदः। क्रि. वि., नयनयोः पुरतः २. स्पष्टं, व्यक्तम्।

—दर्शी, सं. पुं. (सं.-र्शिन्) (प्रत्यक्ष-) साक्षिन् (

—प्रमाण, सं. पुं. (सं. न.) प्रमाणभेदः (न्या.)।

प्रत्यय, सं. पुं. (सं.) विश्वासः, विश्रंभः २. शब्दांतयभागः, प्रकृत्युत्तरं जायमानः आगमः (सुप् तिङ् आदि, व्या.) ३. प्रमाणं, साधनं ४. ज्ञानं ५. विचारः ६. व्याख्या ७. कारणं ८. आवश्यकता ९. प्रसिद्धिः (स्त्री.) १०. चिह्नं ११. निर्णयः १२. सम्मतिः (स्त्री.) १३. सहायकः १४. स्वादः।

प्रत्याख्यान, सं. पुं. (सं. न.) निराकरणं, निरसनं, खंडनम्।

प्रत्याशा, सं. स्त्री. (सं.) आशा, आशंसा, आकांक्षा २. उद्वीक्षा, प्रतीक्षा, अपेक्षा।

प्रत्याशी, वि. (सं.-शिन्) परीक्षार्थिन् २. पदान्वेषिन् ३. आशावत्, आशान्वित।

प्रत्याहार, सं. पुं. (सं.) प्रत्याहरणं, उपादानं, इन्द्रियनिग्रहः २. अल्पेन बहूनां ग्रहणं (उ. अच्=सब स्वरवर्ण, व्या.) (

प्रत्युक्ति, सं. स्त्री. (सं.) उत्तरं, प्रतिवचनम्।

प्रत्युत, अव्य. (सं.) दे. 'बल्कि'।

प्रत्युत्तर, सं. पुं. (सं. न.) उत्तरस्योत्तरं, उत्तरप्रतिवचनम्।

प्रत्युत्थान, सं. पुं. (सं. न.) स्वागतार्थम् उत्थानं-अभ्युत्थानम् २. शत्रुसाम्मुख्यार्थम् उत्थितिः (स्त्री.) ३. कार्यविशेषाय सज्जी भू, सन्नह् (दि. उ. अ.)।

प्रत्युत्पन्न, वि. (सं.) पुनरुत्पन्न २. स्वावसरे उत्पन्न।

—मति, वि. (सं.) तत्कालधी, कुशाग्रीयमति, सूक्ष्मदर्शिन् २. प्रतिभान्वित। सं. स्त्री. (सं.) तत्कालधीः (स्त्री.), कुशाग्रबुद्धिः (स्त्री.) २. प्रतिभा।

प्रत्युद्गमन, सं. पुं. (सं. न.) प्रत्युत्थानं, प्रत्युद्गमः।

प्रत्युपकार, सं. पुं. (सं.) प्रति,-उपकृतिः (स्त्री.)-साहाय्यम्।

प्रत्येक, वि. (सं.) एकैक, सर्व, सकल।

प्रथन, सं. पुं. (सं. न.) विस्तारः, विततिः-व्याप्तिः (स्त्री.) २. यशः-प्रसरणं-प्रसारणम् ३. क्षेपणम् ४. प्रदर्शनम्।

प्रथम, वि. (सं.) आद्य, आदिम, अग्रिम २. श्रेष्ठ, उत्तम ३. प्रधान, मुख्य। क्रि. वि. (सं. न.) अग्रे, आदौ, पूर्वं, प्रथमतः।

—कल्प, सं. पुं. (सं.) सर्वोत्तम-,उपायः-युक्तिः (स्त्री.) २. मुख्यनियमः।

—पुरुष, सं. पुं. (सं.) अन्यपुरुषः (व्या०)।

—वय, सं. पुं. (सं.-यस् न.) यौवनं, तारुण्यम्, नववयस् (न.)।

प्रथमा, सं. स्त्री. (सं.) विभक्तिविशेषः (व्या.) २. मदिरा।

प्रथा, सं. स्त्री. (सं.) रीतिः-रूढिः (स्त्री.), अनुसारः, आचारः, व्यवहारः २. दे.'प्रसिद्धि'।

प्रथित, वि. (सं.) दे. 'प्रसिद्ध'।

प्रदक्षिणा, सं. स्त्री. (सं.) प्रदक्षिणः-णं, परिक्रमः।

प्रदत्त, वि. (सं.) अर्पित, विश्राणित, उत्-वि,-सृष्ट, संक्रामित।

प्रदर, सं. पुं. (सं.) नारीरोगभेदः, असृग्दरः (द्वौ भेदौ–श्वेतप्रदरः, रक्तप्रदरः)।

प्रदर्शक, सं. पुं. (सं.) प्र-,दर्शयितृ, दर्शनकारयितृ २. दर्शकः, द्रष्टृ, प्रेक्षकः ३. गुरुः।

प्रदर्शन, सं. पुं. (सं. न.) प्रकटनं, प्रकाशनं, व्यंजनं, विजृम्भणं, प्रकटी-आविष्-करणं २. दे. 'नुमाइश'।

प्रदर्शनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नुमाइश'।

प्रदर्शित, वि. (सं.) प्रकटीकृत, प्रकटित, प्रकाशित।

प्रदान, सं. पुं. (सं. न.) दानं, विश्राणनं, अर्पणं, संक्रामणं २. विवाहः।

प्रदिशा, सं. स्त्री. (सं.) प्रदिश्-विदिश् (स्त्री.) विदिशा, दिक्कोणः।

प्रदीप, सं. पुं. (सं.) दीपः, कज्जलध्वजः, नयनोत्सवः दोषास्यः २. प्रकाशः।

प्रदीपन, सं. पुं. (सं. न.) उद्-सं,-दीपनं, प्रज्वलनं २. प्र-,द्योतनं, प्रकाशनं, ३. उत्तेजनं, प्रोत्साहनम्।

प्रदीप्त, वि. (सं.) प्रज्वलित, उद्-सं,-दीप्त, समिद्ध २. प्रकाशित, प्रकाशमान ३. उज्ज्वल, भासुर।

प्रदेश, सं. पुं. (सं.) चक्रं, मंडलं, प्रांतः, देशविभागः, भूभागः २. स्थानं, स्थलं ३.अंगं, अवयवः।

प्रदोष, सं. पुं. (सं.) संध्यासमयः, संध्या, सायंकालः, दिनावसानं, रजनीमुखं २. संध्यांधकारः।

प्रधान, वि. (सं.) मुख्य, श्रेष्ठ, अग्र्य, अग्रिम, परम, उत्तम, प्रमुख, विशिष्ट। सं. पुं., नेतृ, नायकः, पुरोगः, अग्रणीः २. मंत्रिन्, सचिवः ३. प्रकृतिः (स्त्री.), जगतः उपादानकारणं, प्रधानं ४. सभा,-पतिः-अध्यक्षः ५. ईश्वरः।

—मंत्री, सं. पुं. (सं.-त्रिन्) महामंत्रिन्, प्रधान,-अमात्यः-सचिवः।

प्रधानता, सं. स्त्री. (सं.) उत्तमता, श्रेष्ठता, मुख्यता २. नेतृत्वं, नायकत्वं ३. अध्यक्षता, सभापतित्वं ४. मंत्रिपदं, मंत्रित्वम्।

प्रध्वंस, सं. पुं. (सं.) वि-,नाशः, प्रणाशः, विध्वंसः, उच्छेदः संहारः।

प्रपंच, सं. पुं. (सं.) सृष्टिः (स्त्री.), संसारः, जगज्जालं २. विस्तरः, विस्तारः, ३. छलं, आडंबरः, कपटं ४. दे. 'बखेड़ा'।

प्रपंची, वि. (सं.-चिन्) कापटिक, मायाविन्, छलिन् २. चतुर, धूर्त ३. कलहप्रियः।

प्रपन्न, वि. (सं.) प्राप्त, आगत २. शरणागत।

प्रपात, सं. पुं. (सं.) दे. 'झरना' २. अतटः, भृगुः, निरवलंबः पर्वतादिपार्श्वः ३. अव,-पातः-पतनम्।

प्रपितामह, सं. पुं. (सं.) दे. 'पड़दादा'।

प्रपितामही, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पड़दादी'।

प्रपौत्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'परपोता'।

प्रपौत्री, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'परपोती'।

प्रफुल्ल, वि. (स.) विकसित, स्फुटित, उत्-सं,-फुल्ल, प्रबुद्ध, भिन्न, विकच २. कुसुमित, पुष्पित ३. उन्मीलित, उन्मिषित (नेत्र) ४. स्मित, आनंदित।

—नयन, वि. (सं.) विकचनेत्र [-त्रा,-त्री (स्त्री.)]।

—वदन, वि. (सं.) स्मितानन, प्रसन्नमुख [-नी (स्त्री.) = स्मिताननाना-नी, प्रसन्नमुखा स्त्री.]।

प्रफुल्लित, वि. (सं.) दे. 'प्रफुल्ल'।

प्रबंध, सं. पुं. (सं.) संविधा, उपायः, आयोजनं, प्रयोगः, युक्तिः (स्त्री.) २. अवेक्षा-क्षणं, निर्वाहः-हणं, प्रवर्तनं, अधिष्ठानं, व्यवस्थापनं, चालनं, व्यवस्था ३. निबंधः, लेखः, प्रस्तावः ४. महाकाव्यं, संग्रथितकविता।

—कर्ता, सं. पुं. (सं.-र्तृ) प्रबंधकः, आयोजकः, व्यवस्थापकः, निर्वाहकः, चालकः, अध्यक्षः, अधिष्ठातृ, अवेक्षकः।

—कल्पना, सं. स्त्री. (सं.) स्तोकसत्या कल्पनाबहुला कथा।

—कारिणी, सं. स्त्री. (सं.) प्रबन्ध-व्यवस्था,-कर्त्री समितिः (स्त्री.)।

—काव्य, सं. पुं. (सं. न.) क्रमबद्धकाव्यम्, श्रव्यकाव्यभेदः (सा०)।

प्रबंधक, सं. पुं. (सं.) दे. 'प्रबंधकर्ता'।

प्रबल, वि. (सं.) बलवत्, सबल, बलिन्, शक्तिमत्, ऊर्जस्विन्, प्रभविष्णु २. उग्र, घोर, तीव्र, प्र-,चंड।

प्रबुद्ध, वि. (सं.) जागरित, उन्निद्र, जाग्रत (शत्रंत) २. विकसित ३. ज्ञानिन्।

प्रबोध, सं. पुं. (सं.) जागरणं, प्रबोधनं, निद्रा,-भंगः-त्यागः २. यथार्थ-पूर्ण,-ज्ञानं ३.सांत्वनं-ना ४. विकासः ५. पूर्वनिवेदनं ६. चेतनालाभः, मूर्च्छाभंगः।

प्रबोधन, सं. पुं. (सं. न.) (निद्रांतः) उत्थानं, निद्राभंजनं २. जागरणं ३. उद्बोधः, उपदेशः, ज्ञापनं ४. सांत्वनम्।

प्रभंजन, सं. पुं. (सं.) वायुः, पवनः २.वात्या, झंझावातः, प्रकंपनः। (सं. न.) उत्पाटनं, उन्मूलनं, वि-, नाशनम्।

प्रभव, सं. पुं. (सं.) जन्महेतुः (पुं.) उत्पत्ति-कारणं २.उत्पत्तिस्थानं, आकरः ३. सृष्टिः(स्त्री.) ४. (नद्यादीनां) उद्गमः, उद्भवः, मूलम्।

प्रभा, सं. स्त्री. (सं.) दीप्तिः-द्युतिः-कांतिः-रुचिः-शोचिः (स्त्री.), आभा, विभा, प्रकाशः, त्विषा।

—कीट, सं. पुं. (सं.) खद्योतः, दे. 'जुगनू'।

प्रभाकर, सं. पुं. (सं.) दिवाकरः, दे. 'सूर्य'।

प्रभात, सं. पुं. (सं. न.) विभातं, प्रातःकालः, उषा, ऊषा, उषः, ऊषः, अहर्मुखं, क(का)ल्यं, व्युष्टं, प्रत्यु(त्यू)षः-षं, अरुणोदयः, विहानः-नं, उषस् (स्त्री.)।

प्रभाव, सं. पुं. (सं.)सामर्थ्यं,शक्तिः (स्त्री.), बलं २. माहात्म्यं, महत्त्वं ३. वशः-शं, प्राबल्यं ४. परिणामः, फलम्।

प्रभु, सं. पुं. (सं.) जगदीशः, परमेश्वरः २. स्वामिन्, भर्तृ ३. अधिपतिः, नायकः ३. श्रेष्ठजनोपाधिः।

—भक्त, वि. (सं.) स्वामिभक्त, कर्तव्यपर, सत्सेवक २. प्रभूपासक, भगवद्भक्त।

प्रभुता, सं. स्त्री. (सं.) महत्त्वं, माहात्म्यं २. शासकता, अधिकारित्वं ३. वैभवं ४. स्वामित्वं, प्रभुत्वम्।

प्रभूत, वि. (सं.) दे. 'प्रचुर' २. उत्पन्न, उद्भूत, उद्गत।

प्रभृति, क्रि. वि. (सं.) तदारभ्य, ततोऽनन्तरं, आदि,-इत्यादि। सं. स्त्री., आरंभः।

प्रभेद, सं. पुं. (सं.) प्रकारः, वर्गः, जातिः (स्त्री.) २. अंतरं, भेदः, भिदा।

प्रमत्त, वि. (सं.) उन्मद, मदोन्मत्त, मत्त, क्षीब २. उन्मत्त, वातुल, उन्मादिन्।

प्रमथन, सं. पुं. (सं. न.) विलोडनं २. क्लेशनं ३. हननम्।

प्रमद, सं. पुं. (सं.) आनंदः, हर्षः २. क्षीबता। वि., क्षीब।

प्रमदा, सं.स्त्री.(सं.) सुंदरी, उत्तमयोषित् (स्त्री.)।

प्रमा, सं. स्त्री. (सं.) यथार्थज्ञानं, शुद्धबोधः २. दे. 'माप'।

प्रमाण, सं. पुं. (सं. न.) निदर्शनं, साधनं, उपपत्तिः (स्त्री.) मुख्यहेतुः २. साक्ष्यं, प्रामाण्यं ३. सत्यता ४. इयत्ता, निर्दिष्टपरिमाणं ५. शास्त्रम्। वि.,सत्य, सिद्ध २. मान्य, स्वीकार्य।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) आगम-निर्णय-निदर्शन,-पत्रम्।

प्रमाणित, वि. (सं.) साधित, उपपादित, स्थापित, प्रमाणी-सत्या,-कृत, सत्यापित।

प्रमाता, सं. पुं. (सं.-तृ) प्रमाणैःज्ञातृ-बोद्धृ।

प्रमातामह, सं. पुं. (सं.) मातामहपितृ।

प्रमातामही, सं. स्त्री. (सं.) प्रमातामहपत्नी।

प्रमाद, सं. पुं. (सं.) अनवधानं-नता, उपेक्षा, सावधानताऽभावः २. भ्रांतिः-त्रुटिः (स्त्री.), भ्रमः।

—करना, क्रि. अ., प्रमद् (दि. प. से.), प्रमादं कृ।

प्रमादिका, सं. स्त्री. (सं.) क्षतयोनिकन्या २. प्रमादिनी नारी।

प्रमादी, वि. (सं.-दिन्) अनवधान, प्रमत्त, अनवहित।

प्रमापण, सं. पुं. (सं. न.) वधः, हत्या, हननम्।

प्रमित, वि. (सं.) (यथार्थ) ज्ञात, अवगत २. परिमित, स्तोक ३. प्रमाणित।

प्रमिति, सं. स्त्री. (सं.) प्रमा, प्रमाणैः प्राप्तं सत्यज्ञानम् २. मानं, परिमाणम्।

प्रमुख, वि. (सं.) प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य २. प्रथम, आदिम ३. प्रतिष्ठित, मान्य ।
प्रमुदित, वि. (सं.) प्रहृष्ट, प्रसन्न, आनंदित ।
प्रमेह, सं. पुं. (सं.) मेहः, मूत्रदोषः, बहुमूत्रता ।
प्रमोद, सं. पुं. (सं.) हर्षः, आनंदः, प्रसन्नता २. सुखम् ।
प्रयत्न, सं. पुं. (सं.) उद्यमः, अध्यवसायः, आयासः, चेष्टा, चेष्टितं २. जीवव्यापारः(न्या.)।
—शील, वि. (सं.) प्रयत्नवत्, सयत्न, उद्यमिन्, अध्यवसायिन्, सचेष्ट।
प्रयाग, सं. पुं. (सं.) तीर्थविशेषः २. महायज्ञः ।
प्रयाण, सं. पुं. (सं. न.) प्रस्थानं, गमनं, व्रज्या, यात्रा २. युद्धयात्रा ।
—काल, सं.पुं.(सं.)गमनकालः २. मृत्युसमयः ।
प्रयास, सं. पुं. (सं.) उद्योगः, प्र,-यत्नः, परि-,श्रमः।
प्रयुक्त, वि. (सं.) व्यवहृत, व्यापृत, उपयुक्त, सेवित, उपभुक्त ।
प्रयोग, सं. पुं. (सं.) उपयोगः, उपभोगः, सेवनं, व्यवहारः २. अनुष्ठानं, साधनं ३. प्रक्रिया, विधानं ४. तांत्रिकोपचारः ५.अभिनयः ६. कुसीदाय ऋणदानम् ।
—करना, उप-प्र-युज् (रु. आ. अ.), व्यापृ (प्रे.), सेव् (भ्वा. आ. से.), उपभुज् (रु. आ. अ.)।
प्रयोजक, सं. पुं. (सं.) अनुष्ठातृ, उपयोक्तृ २. प्रेरकः ३. व्यवस्थापकः ।
प्रयोजन, सं. पुं. (सं. न.) अर्थः, कार्यं २. उद्देश्यं, अभिप्रायः, आशयः ।
प्रलयंकर, वि. (सं.) प्रलय-विनाश-संहार,-कर-कारिन् ।
प्रलय, सं. पुं. (सं.) कल्पांतः, प्रतिसंचयः, ब्रह्मांडनाशः, विलयः, संक्षयः ।
प्रलाप, सं. पुं. (सं.) निरर्थकवचनानि (बहु.), प्र-, जल्पः-जल्पनम् ।
प्रलोभन, सं. पुं. (सं. न.) विलोभनं, लोभेन प्रवर्तनं २. प्रलोभकपदार्थः, विकारहेतुः ।
प्रवंचना, सं. स्त्री. (सं.) धूर्तता, कैतवं,छलम् ।
प्रवचन, सं. पुं. (सं. न.) व्याख्यानं, विवरणं, प्रकाशनं, स्पष्टीकरणं २. व्याख्या ३. वेदांगम् ।
प्रवर, वि. (सं.) श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य (सं. न.) गोत्रम् । (सं. पुं.) संततिः (स्त्री.) २. गोत्र-प्रवर्तकमुनिव्यावर्तको मुनिगणः ।
प्रवर्तक, सं. पुं, (सं.) आरम्भकः, संस्थापकः, प्रवर्तयितृ २. संचालकः, निर्वाहकः ३. प्रेरकः, नियोजकः ४. उत्तेजकः ५. आविष्कारकः ।
प्रवर्तन, सं. पुं. (सं. न.) कार्योपक्रमणं, २. कार्य,-संचालनं-निर्वहणं ३. प्रचारणं ४. उत्तेजनम् ।
प्रवाद, सं. पुं. (सं.) जनश्रुतिः (स्त्री.), किंवदंती, लोक,-वादः-वार्त्ता २. अपवादः, मिथ्याकलंकः ।
प्रवाल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) विद्रुमः २. किश-(स)लयः ३. वीणादण्डः ।
प्रवास, सं. पुं. (सं.) विदेशवासः २. विदेशः ।
प्रवासी, वि. (सं.-सिन्) प्रोषित, विदेशस्थ, विदेशवासिन् ।
प्रवाह, सं. न. (सं.) स्रवः, स्रवणं, स्रुतिः (स्त्री.), स्रावः २. (जल-) धारा, वेगः, ओघः, स्रोतस् (न.) ३. कार्यनिर्वाहः ४. व्यवहारः ५. प्रवृत्तिः (स्त्री.) ६. क्रमः, सततगतिः (स्त्री.) ।
प्रविष्ट, वि. (सं.) कृतप्रवेश, अन्तर्गत ।
प्रवीण, वि. (सं.) निपुण, कुशल, दक्ष, पटु, चतुर, निष्णात, विज्ञ २. वीणावादनकुशल ।
प्रवीणता, सं. स्त्री. (सं.) नैपुण्यं, दाक्ष्यं, कौशलं, पाटवं, चातुर्यम् ।
प्रवृत्त, वि. (सं.) रत, मग्न, -पर, -परायण २. उद्यत ३. नियुक्त ।
—करना, क्रि. स., प्रवृत् (प्रे.), नि-उद्-युज् (चु.) प्रवणी कृ, प्रेर् (प्रे.) ।
—होना, क्रि. अ., प्रवृत् (भ्वा. आ. से.), रत मग्न-तत्पर (वि.) भू ।
प्रवृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) रुचिः (स्त्री.), छंदः, अभिलाषः, भावः २. वृत्तांतः ३. कार्यनिर्वाहः ४. विषयासंगः ५. उत्पत्तिः (स्त्री.) ।
प्रवेश, सं. पुं. (सं.) अन्तर्,-विगाहनं-गमनं २. गतिः (स्त्री.), उपगमः ३. बोधः, ज्ञानं, परिचयः ।
—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) प्रविष्टि,-पत्रं-पत्रकम् ।
—शुल्क, सं. पुं. (सं.) प्रविष्टि,-शुल्कः-कम् ।
प्रवेशिका, सं. स्त्री. (सं.) परीक्षाभेदः २. प्रवेष्ट्री ।
प्रव्रजित, वि. (सं.) सन्न्यासिन्, चतुर्थाश्रमिन्, परिव्राजक ।

प्रव्रज्या, सं. स्त्री. (सं.) *सन्न्यासः, वैराग्यम्, चतुर्थाश्रमः।

प्रशंसक, सं. पुं. (सं.) स्तोतृ, स्तावकः, नावकः, श्लाघकः २. चाटुकारः।

प्रशंसनीय, वि. (सं.) प्रशंस्य, श्लाघ्य, स्तुत्य, नुत्य. प्रशंसार्ह।

प्रशंसा, सं. स्त्री. (सं.) श्लाघा, स्तुतिः-नुतिः-नुः (स्त्री.), स्तवः, कीर्तनं, ईडा।

—करना, क्रि. स., प्रशंस् (भ्वा. प. से.), श्लाघ् (भ्वा. आ. से.), नु (अ. प. से.), स्तु (अ. प. अ.); ईड् (अ. आ. से.)।

—होना, क्रि. अ., प्रशंस्-स्तु-नु श्लाघ् (कर्म.)।

प्रशंसित, वि. (सं.) दे. 'प्रशस्त'।

प्रशमन, सं. पुं. (सं. न.) शमनं, शांतिः (स्त्री.) २. नाशनं ३. मारणं ४. वशीकरणम्।

प्रशस्त, वि. (सं.) नुत, नूत, स्तुत, श्लाघित, प्रशंसित २. दे. 'प्रशंसनीय' ३. उत्तम, श्रेष्ठ।

—पाद, सं. पुं. (सं.) दर्शनाचार्यविशेषः।

प्रशस्ति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'प्रशंसा' २. पत्रारंभे प्रशंसावाक्यं ३. राज्ञां कीर्तिलेखः ४. प्राचीनग्रन्थानां लेखकादिपरिचायकानि आद्यंतवाक्यानि।

प्रशस्य, वि. (सं.) दे. 'प्रशंसनीय' २. उत्तम।

प्रशांत, वि. (सं.) स्थिर, क्षोभहीन, निश्चल, स्तिमित, निष्कंप २. शांतचित्त, क्षोभ, उद्वेग-शून्य।

प्रशाखा, सं. स्त्री. (सं.) लघु-तनु,-शाखा, प्रशाखिका।

प्रश्न, सं. पुं. (सं.) पृच्छा, अनुयोगः, २. विकल्प-विवाद-जिज्ञासा,-विषयः।

—उत्तर, सं. पुं. (सं. रं-रे) अनुयोगप्रतिवचनं-ने (द्वि.), संवादः।

—करना, या पूछना, क्रि. स., प्रश्नं प्रच्छ् (तु. प. अ.), प्रश्नयति (ना. धा.), अनुयुज् (रु. आ. अ.)।

प्रश्वास, सं. पुं. (सं.) उच्छ्वासः २. उच्छ्वसनम्।

प्रष्टव्य, वि. (सं.) प्रश्नार्ह २. पृच्छाविषयः।

प्रसंग, सं. पुं. (सं.) विषयानुक्रमः, प्रकरणं, अर्थसंगतिः (स्त्री.) २. मैथुनं ३. संबंधः, संगतिः (स्त्री.) ४. अनुरक्तिः (स्त्री.) ५. वार्ता, विषयः ६. सदवसरः ७. विस्तारः।

प्रसक्त, वि. (सं.) संलग्न, संश्लिष्ट २. आसक्त ३. प्रस्तावित।

प्रसन्न, वि. (सं.) सं-,तुष्ट, प्र-,हृष्ट, सानंद, आनंदित, प्र-,मुदित, प्रफुल्ल २. निर्मल।

—करना, क्रि. स., आनंद्-आह्लाद्-तुष्-प्रसद्-प्रमुद्-प्रहृष् (प्रे.)।

—होना, क्रि. अ., प्रसद् (भ्वा. प. अ.), आह्लाद्-प्रमुद् (भ्वा. आ. से.), प्र-,हृष् (दि. प. से.)।

प्रसन्नता, सं. स्त्री. (सं.) आनंदः, आह्लादः, प्र-,हर्षः,सं.-तोषः, प्र-,मोदः,उल्लासः २.अनुग्रहः ३. स्वच्छता।

प्रसव, सं. पुं. (सं.) जननं, प्रसूतिः (स्त्री.), गर्भमोचनं २. जन्मन् (न.), उत्पत्तिः (स्त्री.) ३. संतानः ४. फलं ५. कुसुमम्।

प्रसविनी, वि. (स्त्री.) उत्पादयित्री, जनयित्री, प्रसवित्री।

प्रसाद, सं. पुं. (सं.) कृपा, दया., अनुग्रहः २. प्रसन्नता ३. स्वच्छता ४. काव्यगुणविशेषः (सा.) ५. देवाद्यवशिष्टपदार्थः, शेषः ६. भोजनं ७. नैवेद्यं, वायनं-नकम्।

प्रसादी, सं. स्त्री. (सं. प्रसादः>) देवार्पितपदार्थः २. नैवेद्यं ३. गुरुजनदत्तवस्तु (न.)।

प्रसाधन, सं. पुं. (सं. न.) वेशः-षः २. भूषणं, मंडनं, शृंगारः ३. निष्-सं,-पादनं, करणम्।

प्रसाधित, वि. (सं.) परिष्-संस्,-कृत २. सु-सम्पादित।

प्रसार, सं. पुं. (सं.) प्रसरः, विस्तारः, विततिः (स्त्री.)।

प्रसिद्ध, वि. (सं.) प्र-वि-,ख्यात, यशस्विन्, कीर्तिमत्, लोकविश्रुत, यशोधर, सुशंस, लब्धकीर्ति।

प्रसिद्धि, सं. स्त्री. (सं.) ख्यातिः-कीर्तिः-विश्रुतिः (स्त्री.), यशस् (न.), श्लोकः, विश्रावः।

प्रसू, सं. स्त्री. (सं.) जननी, मातृ (स्त्री.)। वि., प्रसवित्री, जनयित्री।

प्रसूता, सं. स्त्री. (सं.) जातापत्या, प्रजाता, प्रसूतिका।

—का बुखार, सं. पुं., सूतिकाज्वरः।

प्रसूति, सं. स्त्री. (सं.) प्रसवः, जननं २. उद्भवः ३. उत्पत्तिस्थानं ४. संततिः (स्त्री.) ५. प्रसूता।

प्रसून, सं. पुं. (सं. न.) कुसुमं, पुष्पं २. फलम् । वि., जात, उत्पन्न ।

—वर्ष, सं. पुं. (सं.) पुष्पवृष्टिः (स्त्री.) ।

—वाण, सं. पुं. (सं.) पुष्प-,शरः-बाणः, कामः, मदनः ।

प्रसृत, वि. (सं.) प्रगत, प्रचलित २. विस्तृत, विस्तीर्ण ३. लंब, दीर्घ, आयत ४. व्यस्त, संलग्न ५. सुशील, विनम्र ६. गत, यात ७. स्फूर्तिमत्

प्रसृता, सं. स्त्री. (सं.) जंघा, टक्किका ।

प्रसेक, सं. पुं. (सं.) आ-अव-, सेकः-सेचनम्, अभिवर्षणं, अभ्युक्षणं, प्रोक्षणम् क्षरणं, गलनं, स्रवणम् ३. वमनं, वयः, वयिः (स्त्री.) ४. दर्विका,-कटोरिका-अग्रभागः ।

प्रस्तर, सं. पुं. (सं.) शिला, पाषाणः, दे. 'पत्थर' ।

प्रस्ताव, सं. पं. (सं.) अवसरः, उचितकालः २. प्रसंगः, विषयः ३. प्रकरणं ४. उपक्षेपः, उपन्यासः ५. प्र-नि,-बंधः, लेखः ६. दे. 'प्रस्तावना' ।

प्रस्तावना, सं. स्त्री. (सं.) भूमिका, उपोद्घातः, प्राक्कथनं, आमुखं, अवतरणिका २. आरम्भः, उपक्रमः ।

प्रस्तुत, वि. (सं.) नु(नू)त, श्लाघित । २. उक्त, कथित ३. प्रासंगिक, प्रसंगप्राप्त ४. उपस्थित, प्रतिपन्न ५. उद्यत, सज्ज ६. निष्पन्न, संपादित ।

प्रस्थान, सं. पुं. (सं. न.) प्रयाणं, अपक्रमः, गमनं, यात्रा २. विजिगीषुसेनायाः प्रयाणम् ।

प्रस्वेद, सं. पुं. (सं.) दे. 'पसीना' ।

प्रहर, सं. पुं. (सं.) यामः, दे. 'पहर' ।

प्रहरी, वि. (सं.-रिन्) दे. 'पहरा' सं. पुं. २ ।

प्रहसन, सं. पुं. (सं. न.) रूपक-नाटक,-भेदः, २. परिहासः, विनोदः ३. अव-उप,-हासः ।

प्रहार, सं. पुं. (सं.) आघातः, ताडः, निर्घातः, हथः ।

—करना, क्रि. सं. आहन् (अ. प. अ.), प्रहृ (भ्वा. प. अ.), तड् (चु.), प्रहारं कृ ।

प्रहृष्ट, वि. (सं.) प्रमुदित, सुप्रसन्न, अत्यानंदित ।

प्रहेलिका, सं. स्त्री. (सं.) प्रश्नदूती, दे. 'पहेली' ।

प्रांगण, सं.पुं. (सं. न.)अजिरं, अंगनं, चत्वरम् ।

प्रांजल, वि. (सं.) सरल, ऋजु, २. सत्य, यथार्थ ३. सम, समतल ।

प्रांत, सं. पुं. (सं.) देशभागः, राष्ट्रविभागः २. भूखंडः, प्रदेशः ३. सीमा, समंतः ४. अग्रं, कोटिः (स्त्री.) ५. दिश् (स्त्री.) ।

प्रांतीय, वि. (सं.) प्रांतिक, प्रांत,संबंधिन्-विषयक ।

प्राइवेट, वि. (अं.) स्वकीय, आत्मीय २. विशिष्ट, असार्वजनिक ३. गुप्त, संवरणीय ।

—सेक्रेटरी, सं. पुं. (अं.) *स्वकीयसचिवः ।

प्राकार, सं. पुं. (सं.) वप्रः-प्रं, शा(सा)लः, वरणः ।

प्राकृत, वि. (सं.) प्रकृतिज, प्राकृतिक २. स्वाभाविक, नैसर्गिक ३. साधारण ४. लौकिक ५. तुच्छ, नीच ६. भौतिक । सं. स्त्री. (सं. न.) व्यवहारभाषा २. प्राचीन-भाषाविशेषः ।

प्राकृतिक, वि. (सं.) दे. 'प्राकृत' ।

प्राची, सं. स्त्री. (सं.) पूर्वदिशा, पूर्वदिश् (स्त्री.) २. पूजकपूज्ययोः पुरोवर्तिदिशा ।

प्राचीन, वि. (सं.) पुराण, प्राक्तन, पुरातन, पूर्व, प्राक्कालीन २. पूर्वदेशीय, प्राच्य, पौरस्त्य, पूर्वदिक्स्थ, प्रांच् ।

प्राचीनता, सं. स्त्री. (सं.) पुराणता, पुरातनता इ. ।

प्राचीर, सं. पुं. (सं. न.) प्रांततो वृत्तिः (स्त्री.) प्रावरः, प्रावृतिः (स्त्री.), दे. 'प्रकार' ।

प्राचुर्य, सं. पुं. (सं. न.) 'प्रचुरता' ।

प्राच्य, वि. (सं.) दे. 'प्राचीन' (१-२) ।

प्राज्ञ, वि. तथा सं. पुं. (सं.) पंडित(:), विज्ञ (:), धीमत्, बुद्धिमत्, विद्वस् ।

प्राज्ञी, सं. स्त्री. तथा वि. (सं.) पंडिता, बुद्धिमती, विदुषी (नारी) ।

प्राण, सं. पुं. (सं. प्राणाः बहु.) असवः (बहु.) हृन्मारुतः २. श्वासः, उच्छ्वासः, श्वसितं, ३. पवनः, अनिलः ४. बलं, शक्तिः (स्त्री.) ५. जीवनं, चैतन्यं ६. आत्मन् ७. प्रियो मनुष्यः पदार्थो वा ।

—त्याग, सं. पुं. (सं.) मृत्युः, निधनं २.आत्म,-हत्या-घातः ।

—दंड, सं. पुं. (सं.) देह-मृत्यु,-दंडः, उत्तम-साहसम् ।

—धारण, सं. पुं. (सं. न.) जीवनं, प्राणनं, देहधारणम् ।

—नाथ, सं. पुं. (सं.) प्राणपतिः, प्राणेश्वरः, पतिः, भर्तृ २. दयितः, वल्लभः ।

—प्रतिष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) देवप्रतिमायां प्राणस्थापनविधिः ।

—प्रिय, वि. (सं.) प्रियतम, अत्यंतप्रिय । सं. पुं., भर्तृ, पतिः ।

—हर, वि. (सं.) प्राणहारिन्, मारक, घातक ।

—उड़ जाना, मु., अत्यंतं त्रस् (दि. प से.) भी (जु. प. अ.), भयविह्वल(वि.)भू ।

—गले तक आना, मु., आसन्नमृत्यु (वि.) भू, कंठगतप्राण (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।

—त्यागना, देना या निकालना, मु., प्राणान् त्यज् (भ्वा. प. अ.) दे. 'मरना' ।

—लेना, मु., हन् (अ. प. अ.), मृ-व्यापद् (प्रे.) हिंस् (रु. प. से. चु.) ।

प्राणांत, सं. पुं. (सं.) निधनं, मरणम् ।

प्राणांतक, वि. (सं.) प्राण,-हर-हारिन्, घातक, मारक ।

प्राणात्यय, सं. पुं. (सं.) मृत्युः, निधनम् २. प्राणान्त-देहान्त-समयः-कालः ३. प्राण,-भयं-संशयः-संकटम् ।

प्राणाधार, सं. पुं. (सं.) पतिः, भर्तृ । वि., जीवनाश्रय, अतिप्रिय ।

प्राणायाम, सं. पुं. (सं.) योगांगभेदः, श्वासप्रश्वासगतिनिरोधः ।

प्राणाहुति, सं. स्त्री. (सं.) जीवनोत्सर्गः, आत्मबलिः, भोजनारम्भे पंचप्राणेभ्यो भक्षणम् ।

प्राणी, वि. (सं.-णिन्) सप्राण, प्राणधारिन्, संजीव, जीवत् (शत्रंत) । सं. पुं. जीवः, जंतुः २. मनुष्यः ३. व्यक्ति (स्त्री.) ।

प्राणेश-श्वर, सं. पुं. (सं.) दे. 'प्राण' के नीचे 'प्राणनाथ' ।

प्राणोपहार, सं. पुं. (सं.) आहारः, भोजनं, खाद्यम्, भक्ष्यम् ।

प्रातः, अव्य.
प्रातःकाल, सं. पुं. } (सं.) दे. 'प्रभात' ।

प्रातः-स्मरणीय, वि. (सं.) पुण्य,-श्लोक-शील-चरित, महात्मन्, पुण्यात्मन् ।

प्रात, क्रि. वि. (सं. प्रातर् अव्य.) प्रातःकाले, प्रभातसमये ।

—नाथ, सं. पुं. (सं.) सूर्यः, भानुः ।

—भोजन, सं. पुं., दे. 'कलेवा' ।

प्राथमिक, वि. (सं.) आद्य, आदिम, प्रारंभिक २. पूर्व, प्रावेशिक, प्रास्ताविक ३. मौल, मौलिक ।

प्रादुर्भाव, सं. पुं. (सं.) आविर्भावः, प्राकट्यं, प्राकाश्यं, व्यक्तता २. उत्पत्तिः (स्त्री.), जन्मन् (न.) ।

प्रादुर्भूत, वि. (सं.) आविर्भूत, प्रकटित, प्रकटीभूत, व्यक्त २. जात, उत्पन्न ।

प्राधान्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'प्रधानता' ।

प्राप्त, वि. (सं.) लब्ध, अधिगत, आसादित, प्रतिपन्न, वित्त, विन्न ।

—करना, क्रि. स., प्र-,आप् (स्वा. प. अ.), अधिगम्, लभ् (भ्वा. आ. अ.) आसद् (प्रे.), विद् (तु. उ. वे.) ।

—होना, क्रि. अ. आप्-लभ्-अभिगम् (कर्म.) ।

प्राप्ति, सं. स्त्री. (सं.) लाभः, प्रतिपत्तिः-उपलब्धिः (स्त्री.) अधिगमः, प्रापणं २. गतिः (स्त्री.) ३. अर्जनं ४. आयः, अर्थागमः ।

प्राप्य, वि. (सं.) लभ्य, अधिगंतव्य, प्राप्तव्य २. समासादनीय, गम्य ।

प्रामाणिक, वि. (सं.) सप्रमाण, प्रमाणसिद्ध, २. विश्वसनीय, विश्वास्य ३. सत्य, तथ्य ४. शास्त्रसिद्ध ५. हैतुक, युक्तियुक्त ।

प्रामाण्य, सं. पुं. (सं. न.) प्रमाणता-त्वं २. प्रतिष्ठा ।

प्रायः, क्रि. वि. (सं.) प्रायशः बहुशः,-धा, प्रायेण, मुहुर्मुहुः, भूयोभूयः, अनेकशः, अभीक्ष्णं २.-कल्प,-भूयिष्ठ,-प्राय, (उ. दे. 'प्राय' की टि.), उप-(उ. उपविंशाः छात्राः) ।

प्राय, सं. पुं. (सं.) प्रस्थानं, प्रयाणं २. मरणं ३. मरणार्थमनशनं, दे. 'धरना' ।

—द्वीप, सं. पुं., द्वीपकल्पः-पम् ।

(टि. जब 'प्राय' समासांत में हो तब १.-तुल्य, सदृश (उ. अमृतप्राय वचन = अमृत,तुल्यं-सदृशं वचनं) २.-भूयिष्ठ,-कल्प (उ. मृतप्रायो मनुष्यः, मृत,-कल्पः-भूयिष्ठः मानवः) ।

प्रायश्चित्त, सं. पुं. (सं. न.) पाप,-निष्कृतिः-विशुद्धिः (दोनों स्त्री.), अघ,-नाशनं-क्षालनं-मार्जनं, पापनाशककृत्यम् ।

प्रारंभ, सं. पुं. (सं.) उपक्रमः २. आदिः ।

प्रारंभिक, वि. (सं.) औपक्रमिक, आरंभिक २. आद्य, आदिम ३. प्राथमिक, प्रावेशिक ।

प्रारब्ध, सं. स्त्री. (सं. न.) भाग्यं, दैवं, अदृष्टं, प्राक्तनं, नियतिः (स्त्री.)। वि., कृतारंभ, उपक्रांत।

प्रार्थना, सं. स्त्री. (सं.) याचना, याच्ञा, अभिशस्तिः (स्त्री.), आ-नि,-वेदनं, अभि-, अथना।

—करना, क्रि. स. अभि-प्र-, अर्थ (चु.आ.से.), याच् (भ्वा. उ. से.), सविनयं आ-नि-विद् (प्रे.)।

—पत्र, सं. पुं. (सं.) आवेदनपत्रम्।

प्रार्थनीय, वि. (सं.) याचनीय, अभ्यर्थनीय।

प्रार्थित, वि. (सं.) याचितं, अभ्यर्थित, निवेदित।

प्रार्थी, सं. पुं. (सं.-र्थिन्) प्रार्थयितृ, याचकः-निवेदकः।

प्रालब्ध, सं. स्त्री., दे. 'प्रारब्ध' सं. स्त्री.।

प्रासंगिक, वि. (सं.) प्रसंग,-आगत-प्राप्त-उचित, अनुरूप, प्रस्तुत, प्रास्ताविक [-की (स्त्री.) = प्रास्ताविकी]।

प्रासाद, सं. पुं. (सं.) राज-नृप,-गृहं-भवनं-मंदिरं, हर्म्यं, सौधः-धम्।

प्रिज़्म, सं. पुं. (अं.) त्रिपार्श्वकाचः।

प्रिय, वि. (सं.) दे. 'प्यारा' २. मनोहर, अभिराम। सं. पुं., पतिः २. कांतः, दयितः ३. जामातृ ४. हितम्।

—तम, वि. (सं.) प्रेष्ठ, प्राणप्रिय। सं. पुं., पतिः, भर्तृ। २. वल्लभः, कांतः।

—तमा, वि. (सं.) प्रेष्ठा, प्राणप्रिया। सं. स्त्री., पत्नी २. कांता।

—दर्शन, वि. (सं.) सु-शुभ,-दर्शन, चक्षुष्य, सुरूप, शोभन, सुंदर।

—भाषी, वि. (सं.-षिन्) मधुरभाषिन्, प्रिय,-वादिन्-वचन।

—वर, वि. (सं.) प्रेष्ठ, प्रियतम।

प्रिया, सं. स्त्री. (सं.) नारी, रमणी २. पत्नी, भार्या ३. प्रेयसी, प्रेमवती, कांता।

प्रीतम, सं. पुं., दे. 'प्रियतम'।

प्रीत, प्रीति, } सं. स्त्री. [सं. प्रीतिः (स्त्री.)] दे. 'प्यार' २.तृप्तिः(स्त्री.) ३.आनंदः, हर्षः।

—पूर्वक, क्रि. वि. (सं.-र्कं) प्रेम्णा, स्नेहेन।

—भोज, सं. पुं. (सं.-भोगः) प्रीतिभोजनं, भोजनोत्सवः।

प्रेक्षक, सं. पुं. (सं.) दर्शकः, द्रष्टृ २. (नाटकादि में) पार्षदः, सामाजिकः।

प्रेक्षण, सं. पुं. (सं. न.) नेत्रं २. अवलोकनं, दर्शनम्।

प्रेत, सं. पुं. (सं.) नरकस्थप्राणिन् २. भूतभेदः, वेतालः ३. मृतमानवः, शवः।

—कर्म, सं. पुं. [सं.-कर्मन् (न.)] प्रेत,-कार्यं-क्रिया-कृत्यं, आमृत्योः सपिंडीकरणपर्यंतः क्रियाकलापः।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) प्रेतभूमिः (स्त्री.) श्मशानम्।

—दाह, सं. पुं. (सं.) अन्त्येष्टि-मृतक,-संस्कारः।

—पक्ष, सं.पुं.(सं.) पितृपक्षः, गौण-चांद्राश्विन-कृष्णपक्षः।

—पति, सं. पुं. (सं.) यमराजः।

प्रेतनी, सं. स्त्री. (सं. प्रेतः) पिशाची-चिका, प्रेतपत्नी।

प्रेम, सं. पुं. [सं. प्रेमन् (पुं. न.)] स्नेहः, अनु,-रागः, प्रणयः, दे. 'प्यार' २. कामः, शृङ्गारः, रतिः (स्त्री.) ३. ईश्वरभक्तिः (स्त्री.)।

—कहानी, सं. स्त्री.,प्रेमकथा, शृंगाराख्यायिका।

—पात्र, सं. पुं. (सं. न.) स्नेहभाजनं (मानव वा पदार्थ)।

—पाश, सं. पुं. (सं.) स्नेह-अनुराग-प्रेम,-बन्धनं-रज्जुः (स्त्री.)-शृंखला-जालम्।

—पुत्तलिका, सं. स्त्री. (सं.) पत्नी, भार्या, कलत्रम्।

—वारि, सं. पुं. (सं. न.) प्रेमाश्रु (न.), स्नेहास्रम्।

प्रेमालाप, सं. पुं. (सं.)स्नेहसंभाषणं २.शृंगार-संवादः।

प्रेमाश्रु, सं. पुं. (सं. न.) प्रेम,-जलं-वारि(न.), अनुरागवाष्पम्।

प्रेमिक, सं. पुं., दे. 'प्रेमी'।

प्रेमिका, सं. स्त्री., दे. 'प्रेयसी'।

प्रेमी, सं. पुं. (सं.-मिन्) प्रणयिन्, अनुरागिन्, स्नेहिन्, अनुराग-प्रणय,-वत् २. कामिन्, कामुकः, रमणः, वल्लभः। वि.,-प्रिय,-आसक्त-निरत, सेवी (उ., संगीत का प्रेमी = संगीत,-प्रिय-आसक्त इ.)।

प्रेय, वि. (सं. प्रेयस्) प्रियतर, अतिप्रिय

२. लौकिक-सांसारिक,-सुखानि-भोगाः ३. अलंकारभेदः (सा०)।

प्रेयसी, सं. स्त्री. (सं.) प्रेमवती, प्रेमिणी, प्रिया, वल्लभा, कांता, दयिता।

प्रेरक, सं. पुं. (सं.) प्रचोदयितृ, प्रवर्तयितृ, प्रोत्साहकः, उत्तेजकः।

प्रेरणा, सं. स्त्री. (सं.) प्रचोदना, प्रोत्साहनं-ना, उत्तेजनं-ना, प्रवर्तनं २. दे. 'धक्का'।

—करना, क्रि. स., उत्तिज्-प्रवृत्-प्रेर्-प्रचुद्-प्रोत्सह् (प्रे.)।

प्रेरित, वि. (सं.) प्रचोदित, प्रोत्साहित, उत्तेजित, प्रवर्तित।

प्रेस, सं. पुं. (अं.) संपीडनयंत्रं २. मुद्रणयंत्रं ३. मुद्रणयंत्रालयः।

प्रेसिडेंट, सं. पुं. (अं.) सभा,-पतिः-अध्यक्षः, प्रधानः।

प्रोग्राम, सं. पुं. (अं.) कार्यक्रमः २. कार्यक्रमपत्रम्।

प्रोटीन, सं. पुं. (अं.) प्रोभूजिनं, भोजनतत्त्वभेदः।

प्रोत, वि. (सं.) खचित, निहित २. स्यूत, ग्रथित, गुंफित।

प्रोत्साहन, सं. पुं. (सं. न.) धैर्य-उत्साह,-वर्द्धनं, उत्तेजनं, आश्वासनम्।

प्रोत्साहित, वि. (सं.) उत्तेजित, आश्वासित, वर्द्धितोत्साह, प्रेरित।

प्रोथ, वि. (सं.) विश्रुत, प्रख्यात २. प्रचलित, प्रस्थित ३. स्थापित, स्थिरीकृत (सं. पुं. न.) १-२ अश्व,-नासा-नासारन्ध्रम् ३. शूकर-लंबास्यम्।

प्रोदक, वि. (सं.) उत्त, उन्न, आर्द्र २. निर्जल, निर्गतजल, शुष्क।

प्रोनोट, सं. पुं. (अं.) ऋणनिस्तारप्रतिज्ञा-लेखः, ऋणपत्रम्।

प्रोपगेंडा, सं. पुं. (सं.) प्रचारः, प्रचारकार्यम्।

प्रोप्राइटर, सं. पुं. (अं.) स्वामिन्, प्रभुः, इनः।

प्रोफ़ेसर, सं. पुं. (अं.) (महाविद्यालयस्य विश्वविद्यालयस्य वा) उपाध्यायः।

प्रोषित, वि. (सं.) विदेशस्थ, प्रवासिन्।

—पतिका, सं. स्त्री. (सं.) प्रोषितभर्तृका, नायिकाभेदः।

प्रौढ, वि. (सं.) प्रवृद्ध, एधित, प्रोपचित २. सं-परि,-पूर्ण, संपन्न, सिद्ध ३. परिणत, परिपक्व ४. पुष्ट, दृढ़ ५. निपुण, चतुर।

प्रौढ़ता, सं. स्त्री. (सं.) प्रौढ़त्वं, प्रवृद्धिः (स्त्री.) २. परिपूर्णता ३. परिपक्वता ४. पुष्टिः (स्त्री.) ५. निपुणता।

प्रौढ़ा, सं. स्त्री. (सं.) चिरिंटी, श्यामा, सुवयाः, दृष्टरजाः (स्त्री. एक.) (३० से ५५ वर्ष तक की नारी) २. नायिकाभेदः। वि., पुष्टा, परिपक्वा, दृढ़ा।

प्लग, सं. पुं. (अं.) निगम्।

प्लवग, सं. पुं. (सं.) कपिः, वानरः २.हरिणः ३. मंडूकः।

प्लवन, सं. पुं. (सं. न.) कूर्दनं २. तरणम्।

प्लाटिनम, सं. पुं. (अं.) महातु।

प्लावन, सं. पुं. (सं. न.) महाप्रवाहः, जल,-प्रलयः-बृंहणं-विप्लवः।

प्लावित, वि. (सं.) जलमग्न।

प्लास्टर, सं. पुं. (अं.) दे. 'पलस्तर'।

—आव पेरिस, सं. पुं., दग्धाचूर्णम्, पेरिसप्रलेपः।

प्लीहा, सं. स्त्री. (सं.) प्ली(प्लि)हन् (पुं.), गुल्मः, प्लिहा।

प्लुत, सं. पुं. (सं.) त्रिमात्रवर्णः। वि., झंपगतियुत २. प्लावित ३. सिक्त ४. त्रिमात्र।

प्लूरिसी, सं. स्त्री. (अं.) फुफ्फुसवेष्टनपाकः, फुफ्फुसावरणप्रदाहः।

प्लेग, सं. पुं. (अं.) महा,-मारी, मारिका २. मूषिकरोगः अग्निरोहिणी।

प्लेट, सं. स्त्री. (अं.) दे. 'तश्तरी' २. (धात्वादिकस्य) पट्टः-टं, फलकः-कम्।

—फ़ार्म, सं. पुं. (अं.) वेदी, वेदिका, मञ्चः, पीठिका।

फ

फ, देवनागरीवर्णमालायाः द्वाविंशतितमो व्यंजनवर्णः, फकारः।

फंका, सं. पुं. (हिं. फाँकना) मुष्टिः (पुं. स्त्री.), अंजलिः (पुं.), मुष्टि-अंजलि,-मात्रं अन्नादिकं २. खंडः-डं, शकलः-लम्।

फंकी, सं. स्त्री. (हिं. फंका) चूर्णं, चूर्णौषधम्।

फंद, सं. पुं. (सं. बंधः) बंधनं २. दे. 'फंदा' ३. छलं, कपटं ४. रहस्यं, गूढवार्ता ५. दुःखम्।

फंदा, सं. पुं. (सं. बंधः) पाशः, बन्धनं, वागुरा, पातिली, मृगबंधनी २. जालं ३. दुःखं, कष्टम्।

—लगाना, मु., छल् (चु.), विप्रलभ् (भ्वा. आ. अ.) वंच्-प्रतॄ (प्रे.) २. जालं निक्षिप् (तु. प. अ.)-निधा (जु. उ. अ.)।

फंदे में पड़ना, मु., पाशे बंध्-ग्रह् (कर्म.), वशी भू, २. विप्रलभ्-प्रतार् (कर्म.)।

फंसना, क्रि. अ. (हिं. फांसना) संग्रंथ्-संश्लिष्-संबंध् (कर्म.), आकुली-संकीर्णी-भू, संशक्त-संलग्न-संश्लिष्ट (वि.) भू २. जाले पाशे वा धृ-बंध् (कर्म.), जालबद्ध (वि.) भू।

फंसवाना, क्रि. प्रे., ब. 'फंसाना' के प्रे. रूप।

फंसाना, क्रि. स. (हिं. फंसना) संश्लिष् (प्रे.), संग्रंथ् (क्र्. प. से.), आकुली-संलग्नी-संकीर्णी-कृ २. पाशेन बंध् (क्र्. प. अ.) जाले धृ (चु.), पाशे पत् (प्रे.)।

फंसाव, सं. पुं. } (हिं. फंसना) संश्लिष्टता,
फंसावट, सं. स्त्री. } ग्रंथिलत्वं २. संकुलता, व्यतिकरः, संकरः।

फ़क, वि. (अ. फ़क़) श्वेत, शुक्ल, स्वच्छ २. विवर्ण, मंदप्रभ।

रंग—होना या पड़ जाना, मु., पांडुच्छाय-विवर्ण (वि.) भू, मंद-म्लान मलिन,प्रभ(वि.) जन् (दि. आ. से.) २. आकुली भू, मुह् (दि. प. से.)।

फ़क़त, वि. (अ.) अलं, पर्याप्त २. एकाकिन्। क्रि. वि., केवलम्।

फ़क़ीर, सं. पुं. (अ.) भिक्षुः, भिक्षुकः २. साधुः, सन्न्यासिन् ३. निर्धनः।

फ़क़ीरनी, सं. स्त्री. (अ. फकीर>) भिक्षुकी, भिक्षोपजीविनी, भिक्षाचरी २. परिव्राजिका, सन्न्यासिनी, वैरागिणी।

फ़क़ीरी, सं. स्त्री. (अ. फ़क़ीरी) भिक्षुकता, याचकता २. सन्न्यासः ३. दारिद्र्यम्।

फक्कड़, वि. (अ. फकीर) निश्चित २. निर्धन, ३. निश्चितदरिद्र। सं. पुं., गाली, अश्लील-वचनम्, अश्लील-ग्राम्य-अवाच्य,-वचनं २. मिथ्यावचनम्।

—बाज, सं. पुं., अवाच्यवाचकः अश्लील-भाषिन् २. मिथ्याभाषिन्।

—बाज़ी, सं. स्त्री., अश्लीलभाषिता, अवाच्य-वाचकता।

फक्किका, सं. स्त्री. (सं.) तत्त्वनिर्णयार्थमुपस्था-पितः पूर्वपक्षः २. छलं, कपटम्, दंभः।

फ़ख़र, सं. पुं. (फ़ा. फ़ख़्र) गर्वः, अभिमानः।

फगुआ, सं. पुं. (हिं. फागुन) होलिकोत्सवः २. होलिकागीतानि (न. बहु.)।

फ़ज़ीलत, सं. स्त्री. (अ.), गौरवं, महत्ता।

—की पगड़ी, मु., विद्वत्ताप्रमाणम्, वैदुष्यो-ष्णीषम्।

फज़ीहत, सं. स्त्री. (अ.) दुर्गतिः (स्त्री.) दुर्दशा, २. कलहः।

फ़ज़ूल, वि. (अ.) निरर्थक, व्यर्थ।

—ख़र्च, वि. (अ.+फ़ा) मुक्तहस्त, अप-व्यर्थ,-व्ययिन्।

—ख़र्ची, सं. स्त्री., अति-अप-अमित,-व्ययः, मुक्तहस्तता।

फ़ज़्ल, सं. पुं. (अ.) कृपा, अनुग्रहः।

फट, सं. स्त्री. (अनु.) फटिति शब्दः-ध्वनि।

—फट, सं. स्त्री., फट-फटाशब्दः २. प्रजल्पः।

—से, क्रि. वि., झटिति, सपदि।

फटक[1], सं. पुं. दे. 'स्फटिक'।

फटक[2], क्रि. वि. (अनु.) तत्क्षणे, झटिति।

फटकन, सं. स्त्री. (हिं. फ़टकना) बुर्प-सं, तुषः, असारद्रव्यम्।

फटकना, क्रि. स., (अनु. फट) प्रस्फुट् (प्रे.), प्रस्फोटनेन-शूर्पेण विशुध् (प्रे.) २. दे. 'पींजना' ३. दे. 'फटफटाना'। ४. रेणुं अपमृज् (अ. प. से.), निर्धूली कृ ५. क्षिप् (तु. प. अ.), अस् (दि. प. से)। क्रि. अ., या (अ. प. अ.), गम् २. दूरी-पृथग्-भू ३. 'तड़फड़ाना' ४. श्रम् (दि. प. से.)।

फटकरी, सं. स्त्री., दे. 'फिटकरी'।

फटकार, सं. स्त्री. (अनु. फट्+सं. कारः>) निर्भर्त्सना, वाग्दंडः, उपालंभः, निंदा, आक्रोशः, गर्हा।

फटकारना, क्रि. स. (पूर्व.) शिलायां आहत्य आहत्य वस्त्राणि प्रक्षल् (चु.) २. दूरी-पृथक्-कृ ३. निर्भर्त्स्-तर्ज् (चु. आ. से.) वाचा दंड् (चु.), निंद् (भ्वा. प. से.) ४. सफटफट-शब्दं एज्-कंप् (प्रे.)।

फटकारने योग्य, वि., निर्भर्त्सनीय, तर्जनीय।

फटकारने वाला, सं. पुं., निर्भर्त्सकः, तर्जकः ।
फटकी, सं. स्त्री. (हिं. फटक^{2}>) शाकुनिक-पंजरः-रम् ।
फटना, क्रि. अ. (हिं. फाड़ना) विदृ-विभिद्-विशृ (कर्म.) २. स्फुट् (तु. प. से.), दल् (भ्वा. प. से.) ३. खंडशो भिद् (कर्म.) शकली भू ४. अप-वि कृ (तु. प. से.) इतस्ततः विद्रु (भ्वा. प. अ.) ५. अत्यंतं व्यथ् (भ्वा. आ. से.) ६. अम्ली भू ।
फट पड़ना, मु. सहसा आपत् (भ्वा. प. से.)-उपस्था (भ्वा. आ. अ.) ।
छाती—, (शोकातिशयेन) हृदयं विदृ-द्विधा भिद् (कर्म.) ।
फटफटाना, क्रि. स. (अनु. फटफट) प्र-, जल्प् (भ्वा. प. से.) अपार्थकं वद् (भ्वा. प. से.) २. दे. 'फड़फड़ाना' ३. प्रयस्-परिश्रम् (दि. प. से.) ४. फटफटायते (ना. धा.), फटफटाशब्दं कृ ५. आजीविकायै भृशं चेष्ट (भ्वा. आ. से.) ।
फटा, वि. (हिं. फटना) विदीर्ण, विशीर्ण २. स्फुटित, विदलित ३. शकलीभूत । सं. पुं., छिद्रं, छेदः, भेदः ।
—दूध, सं. पुं., अम्लीभूतं क्षीरम् ।
—पुराना, सं. पुं., चीरं, चीवरं, कर्पटः ।
फटे में पाँव देना, मु.. अव्यापारेषु व्यापारं कृ, परकार्येषु व्यापृ (तु. आ. अ.) ।
फटिक, सं. पुं. दे. 'स्फटिक' ।
फट्टा, सं. पुं. (हिं. फटना>) विदीर्णवेणुदंडः ।
फड़, सं. स्त्री. (सं. पणः) ग्लहः २. द्यूत,-शाला-सभा ३. क्रयविक्रयस्थानं ४. पंक्तिः (स्त्री.), समूहः ।
—बाज़, सं. पुं. (हिं.+फा.) सभिकः, द्यूत-कारकः २. वाचालः, वावदूकः ।
फड़क, सं. स्त्री. (अनु.) प्र-,स्पंदः, स्फुरणं, कंपः २. पक्ष,-चालनं-आस्फालनम् ।
—उठना, मु., प्रसद् (दि. प. अ.) ।
—जाना, मु., अनुरंज् (कर्म.), स्निह् (दि.प.से) ।
फड़कना, क्रि. अ. (पूर्व.) स्फुर् (तु. प. से.), वेप्-कंप्-स्पंद् (भ्वा. आ. से.) २. क्षुभ् (दि. प. से.), आकुली भू २. पक्षाः विचल् (भ्वा. प. से.), विधू (कर्म.) ।
फड़काना, क्रि. स., ब. 'फड़कना' के प्रे. रूप ।

फड़फड़ाना, क्रि. स. (अनु. फड़फड़>) फट-फटायते (ना. धा.), फटफटाशब्दं जन् (प्रे.) २. पक्षौ विधू (स्वा. उ. से.; क्र्. उ. से., भ्वा. उ. से., चु.), आस्फल्-विचल् (प्रे.), दे. 'फटफटाना' । क्रि. अ., क्षुभ् (दि.प.से.), आकुली भू २. उत्सुकः वृत् (भ्वा. आ. से.) ।
फड़फड़ाहट, सं. स्त्री. (हिं. फड़फड़ाना) पक्ष,-आस्फालनं-विधुवनं-विचालनं २. स्फुरणं, स्पंदनं, विकंपः ३. आकुलता, चित्त,-वेगः-भ्रमः, सं-,क्षोभः ४. प्रयासः,अति-प्र,-यत्नः, चेष्टितम् ।
फड़वाना, **फड़ाना**, } क्रि. प्रे., ब. 'फाड़ना' के प्रे.रूप ।
फड़िया, सं. पुं. (हिं. फड़) द्यूतकारकः, सभिकः २. दे. 'परचूनिया' ।
फण, सं. पुं. (सं.) फणा, फणं, कटः,-टा-टी, स्फटः-टा, भोगः, स्फुटः-टा, दर्वी-दर्विः (स्त्री.) ।
—कर, सं. पुं. (सं.) सर्पः, अहिः ।
—धर, सं. पुं. (सं.) नागः, सर्पः २. शिवः ।
—मणि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) सर्प-मणिः-रत्नम् ।
फणा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'फण' ।
फणी, सं. पुं. (सं.-णिन्) फणधरः, फणकरः, दे. 'सर्प' ।
फणीन्द्र, **फणीश**, } सं. पुं. (सं.) अनंतः, शेषः, भुजगेशः, सर्पराजः ।
फ़तवा, सं. पुं. (अ.) व्यवस्था, निर्णयः (इस्लाम) ।
फ़तह, सं. स्त्री. (अ.) विजयः २. साफल्यम् ।
—मंद, **—याब**, (अ.+फ़ा.) विजयिन्, विजेतृ ।
फतिंगा, सं. पुं. (सं. पतंगः) शलभः, पतंगमः ।
फ़तूर, सं. पुं. (अ.) दोषः, विकारः, २. हानिः (स्त्री.) ३. विघ्नः ४. उपद्रवः ।
फन, सं. पुं., दे. 'फण' ।
फ़न, सं. पुं. (फ़ा.) गुणः, वैशिष्ट्यं २. विद्या, ज्ञानं ३. कलाकौशलं, शिल्पं ४. व्याजः, छद्मन् (न.) ।
फ़ना, सं. स्त्री. (अ.) प्रलयः, वि-,नाशः, प्र-,ध्वंसः ।
फनी, सं. पुं., दे. 'फणी' ।
फफोला, सं. पुं. (सं. प्रस्फोटः) त्वक्-,स्फोटः, शोफः । दे. 'छाला' ।
दिल के —फोले फोड़ना, मु., वैर,-साधनं-

शोधनं-निर्यातनं कृ (ना. धा.), प्रतिहिंस् (रु. प. से.), क्रोधं प्रकटयति (ना. धा.),

फब, सं. स्त्री., दे. 'फबन'।

फबती, सं. स्त्री. (हिं. फबना) क्ष्वेला-लिका, नर्मन् (न.), नर्मोक्तिः (स्त्री.), व्यंग्यवचनं २. समयोचितसूक्तिः (स्त्री.)।

—**उड़ाना**, मु., अव-उप,-हस् (भ्वा. प. से.), वक्रोक्त्या आक्षिप् (तु. प. अ.)।

—**कहना**, मु., सहास्यं उपालभ् (भ्वा. आ. अ.), सहासं व्यंग्यवचनं प्रयुज् (रु.आ.अ.)।

फबन, सं. स्त्री. (हिं. फबना) शोभा, छविः (स्त्री.), सौन्दर्यं २. मंडनं, प्रसाधनं, परिष्कारः।

फबना, क्रि. अ., (सं. प्रभवनं>) शुभ् (भ्वा. आ. से.), युज् (कर्म.) उपपद् (दि. आ. अ.), उचित-उपपन्न-अनुरूप-युक्त-सदृश (वि.) वृत (भ्वा. आ. से.)।

फबनेवाला, वि., शोभन, उचित, युक्त, अनुरूप, सदृश।

फबीला, वि. (हिं. फब) शोभन, सुन्दर, २. उचित, अनुरूप।

फरक, फरकन, सं. स्त्री., दे. 'फड़क'।

फ़रक़, सं. पुं., दे. 'फ़र्क़'।

फरकना, क्रि. अ., दे. 'फड़कना'।

फ़रज़ंद, सं. पुं. (फ़ा.) पुत्रः, तनुजः।

फरजी, सं. पुं., दे. 'फर्जी'।

फ़रद, सं. स्त्री., दे. 'फ़र्द'।

फरफंद, सं. पुं. (अनु. फर+हिं. फंदा) माया, कपटं, छलं, छद्मन्, (न.), व्याजः २. भावः, हावः।

फरफर, सं. पुं. (अनु.) पक्ष,-स्फुरणं-आस्फालनम्। क्रि. वि., सवेगं, शीघ्रं, द्रुतं २. अप्रतिहतम्।

फरफराना, क्रि. स., क्रि.अ., दे. 'फड़फड़ाना'।

फ़रमा[1], सं. पुं. (अं. फ्रेम) घटना, रचना २. दे. 'कालबूत' ३. आकारसाधनम्।

फ़रमा[2], सं. पुं. (अं. फ़ार्म) सकृन्मुद्रणार्हं पूर्णपत्रम्।

फ़रमान, सं. पुं. (फ़ा.) राजकीयं आज्ञापत्रं, अनुशासनपत्रं २. आज्ञा, आदेशः।

फ़रमाना, क्रि. स. (फ़ा.) आज्ञा (प्रे.), आदिश् (तु. प. अ.) शास् (अ. प. से.) २. कथ् (चु.)।

फ़रयाद, सं. स्त्री. (फ़ा.) दुःखनिवेदनं २. प्रार्थना, अभ्यर्थना ३. अभियोगः।

फ़रयादी, सं. पुं. (फ़ा.) दुःखनिवेदकः २. अभियोक्तृ २. प्रार्थिन्।

फ़रलांग, सं. पुं. (अं.) क्रोशस्य षोडशो भागः, अध्वमानभेदः।

फ़रलो, सं. स्त्री. (अं.) सार्द्धवेतनो दीर्घावकाशः, अवकाशभेदः।

फ़रवरी, सं. स्त्री. (अं. फ़ेब्रुअरी) आंग्लसंवत्सरस्य द्वितीयो मासः।

फरसा, सं. पुं. (सं. परशुः) दे. 'कुल्हाड़ा'।

फ़रहंग, सं. पुं. (फ़ा.) कोशः-षः, अभिधानं, शब्दसंग्रहः २. टीका, कुंचिका, व्याख्या।

फ़रहत, सं. स्त्री. (अ.) मोदः, हर्षः, प्रसन्नता।

फरहरा, सं. पुं. (हिं. फहराना) पताका, केतुः।

फ़राख़, वि. (फ़ा.) आयत, विस्तृत, विशाल।

—**दिल**, वि. (फ़ा.) विशालहृदय, उदार।

फ़राग़त, सं. स्त्री. (अ.) व्यवसाय-विश्रामः, उद्योगविश्रांतिः (स्त्री.), अवकाशः। २. निश्चिंतता ३. मलत्यागः।

फ़रामोश, वि. (फ़ा.) विस्मृत।

फ़रामोशी, सं. स्त्री. (फ़ा.), विस्मृतिः (स्त्री.), विस्मरणम् २. स्खलनं, स्खलितम्।

फ़रार, वि. (अ.) (दंडभयात्) पलायित, अपक्रांत।

फ़रिश्ता, सं. पुं. (फा., मि. सं. प्रेषितः) दिव्य-ईश,-दूतः २. देवता।

फ़रीक़, सं. पुं. (अ.) प्रतिद्वंद्विन्, विपक्षिन् २. वादिन्, अर्थिन्, प्रतिवादिन्, प्रत्यर्थिन् ३. पक्षः; प्रतिपक्षः ४. पक्ष्यः, सपक्षः ५. श्रेणी, वर्गः।

—**सानी**, (सं. पुं. अ.) प्रतिवादिन्।

फ़रीक़ैन, सं. पुं. (अ.) (व्यवहारे) पक्षप्रतिपक्षौ, वादिप्रतिवादिनौ, अभियोग्यभियुक्तौ।

फरुहा, सं. पुं., दे. 'फावड़ा'।

फरेंद-दा, सं. पुं. (सं. फलेन्द्रः) राज-महा,-जंबुः, नंदः।

फ़रेब, सं. पुं. (फ़ा.) छलं, कपटं, प्रतारणा।

फ़रेबी, वि. (फ़ा.) छलिन्, कापटिक, प्रतारक।

फ़रोख़्त, सं. स्त्री. (फ़ा.) विक्रयः-यणम् ।
फ़र्क़, सं. पुं. (अ.) पृथक्कृता-त्वं, भिन्नत्वं, इतरत्वं २. अंतरं, भेदः, विशेषः ३. दूरता-त्वं, अंतरं ४. न्यूनता, विकलता ।
फ़र्ज़, सं. पुं. (अ.) धार्मिककृत्यं (इस्लाम) २. कर्तव्यकर्मन् (न.) ३. कल्पना ४. उत्तरदायित्वम् ।
—करना, क्रि. अ., क्लृप् (प्रे.), उत्प्रेक्ष् (भ्वा. आ. से.); (प्रमाणं विना) सिद्धं मन् (दि. आ. अ.) ।
फ़र्ज़ी, सं. पुं. (फ़ा.) कल्पित, काल्पनिक, २. सत्ताहीन, वितथ ।
फ़र्द, सं. स्त्री. (अ.) सूची-चिः (स्त्री.) नामावली-लिः (स्त्री.), अनुक्रमणिका २. पृथक्स्थितः पत्रवस्त्रादिखंडः ३. प्रच्छदपटस्योर्ध्वपुटः । वि., अनुपम, अतुल्य ।
फ़र्याद, सं. स्त्री., दे. 'फरयाद' ।
फ़र्राटा, सं. पुं. (अनु.) त्वरा, वेगः २. दे. 'खर्राटा' ।
फ़र्राश, सं. पुं. (अ.) कुथप्रसारकः २. किंकरः ।
फ़र्श, सं. पुं. (अ.) कुट्टिमः-मं., शिलास्तरः २. गृहभूमिः (स्त्री.) आस्तरणं, कुथः-था, नमतं, परिस्तोमः ।
फल, सं. पुं. (सं. न.) शस्यं, प्रसवः, उत्पन्नं २. लाभः, प्राप्तिः (स्त्री.) ३. परिणामः, ४. गुणः, प्रभावः ५. कर्मभोगः ६. प्रतिफलं, प्रतीकारः ७. धारा, पत्रं, फलं (खड्गादिकस्य) ८. फालः, कुशी, कृषकः ९. फलकः-कं १०. ढालं, फरं, चर्मन् (न.) ११. उद्देश्यसिद्धिः (स्त्री.) १२. गुण्यः (गतिः) १३. गणितक्रियापरिणामः (उ. योग-गुणन,-फलं) १४. क्षेत्रफलं १५. ग्रहयोगपरिणामः (ज्यो.) १६. प्रयोजनं, अर्थः १७. वृद्धिः (स्त्री.), दे. 'सूद' .
—आना, या **लगना**, क्रि. अ., फल् (भ्वा. प. से.), सफलीभू , फलवत् जन् (दि. आ. से.), फलित (वि.) भू ।
—दार, वि.(सं.+फ़ा.) फलवत्, फलदायक, फलद, फलप्रद, फलित, फलिन्, सफल २. अमोघ, अवंध्य ।
—पाक, सं. पुं. (सं.) करमर्दकः २. जलामलकं ३. फलपरिणतिः (स्त्री.) ।
—पाना, क्रि. स., (स्वकर्मणाम्) फलं भुज् (रु. आ. अ.)-लभ् (भ्वा. आ. अ.) प्राप् (स्वा. प. अ.) ।
—प्राप्ति, सं. स्त्री. (सं.) कृतकार्यता, मनोरथसिद्धिः (स्त्री.) ।
—भोग, सं. पुं. (सं.) उदर्कानुभवः, परिणामोपभोगः ।
—राज, सं. पुं. (सं.) दे. 'तरबूज़' २. दे. 'ख़रबूज़ा' ।
फलक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) (काष्ठादिकस्य) पट्टः-ट्टं २. शिला ३. ढालं, चर्मन् (न.) ४. रजकपट्टं ५. आस्तरणं ६. पत्रं,पृष्ठं ७. हस्ततलं ८. फलं ९. पीठं, पीठिका ।
फ़लक, सं. पुं. (अ.) आकाशः-शं, गगनं २. स्वर्गः ।
फलतः, अव्य. (सं.) परिणामतः, अतः, इति हेतोः, अस्मात् कारणात् ।
फलद, वि. (सं.) फल,-दायक-प्रद-जनक ।
फलना, क्रि. अ. (सं. फलनं) दे. 'फल आना' ('फल' के नीचे) २. फलं आवह् (भ्वा. प. अ.), लाभं जन् (प्रे.) ।
—फूलना, मु., समृध् (दि. प. से.), संवृध् (भ्वा. आ. से.), उत्कर्षं या (अ. प. अ.) ।
फ़लसफ़ी, सं. पुं. (अ.) दर्शनशास्त्रं, तर्क,-विद्याशास्त्रम् ।
फ़लसफ़ा, सं. पुं. (अ.) दार्शनिकः, तत्त्वज्ञः, दर्शनशास्त्रज्ञः ।
फलां, वि. (फ़ा.) अमुक ।
—फलाँ, वि. अमुकामुक, विशिष्ट, निर्दिष्ट ।
फलांग, सं. स्त्री., दे. 'कुदान' ।
फलांगना, क्रि. अ. (सं. प्रलंघनम्) दे. 'कूदना' ।
फलाकांक्षी, वि. (सं.-क्षिन्) फलेच्छुक, फलाभिलाषिन् ।
फलाना, वि., दे. 'फलां' ।
फलार्थी, वि. (सं.-र्थिन्) फलेच्छुक, फलाभिलाषिन् २. परिणामोत्सुक ।
फलाहार, सं. पुं. (सं.) फलभक्षणं, फलैर्निर्वहणम् ।
फलाहारी, वि. (सं.-रिन्) फलभक्षक ।
फलित, वि. (सं.) फलवत्, फलिन्, प्राप्तफल २. संपन्न, पूर्ण ।

—ज्योतिष, सं. पुं. (सं. न.) दैवज्ञविद्या ।
फली, सं. स्त्री. (हिं. फल) बीजपुटं, बीजकोषः ।
फलीता, सं. पुं. (अ. फतीलह्) वर्तिका, वर्तिः (स्त्री.) २. नालीकास्त्रवर्तिः, फली ।
फलीभूत, वि. (सं.>) सफल, फलप्रद ।
फलोदय, सं. पुं. (सं.) फलोत्पत्तिः (स्त्री.) २. लाभः ३. हर्षः ४. स्वर्गः ।
फ़सल, सं. स्त्री. (अ. फस्ल) शस्यं, धान्यं, अन्नम् २. ऋतुः ३. कालः ।
फ़साद, सं. पुं. (अ.) संक्षोभः, विप्लवः २. कलहः, उपद्रवः २. विकारः, विक्रिया ।
फ़सादी, वि. (फ़ा.) विद्रोहिन्, विप्लवकारिन् २. उपद्रविन्, कलहप्रिय ।
फ़साना, सं. पुं. (फ़ा.) आख्यायिका, लघु-, कथा ।
फ़साहत, सं. स्त्री. (अ.) भाषा-,सौष्ठवं-परिष्कृतिः (स्त्री.) ।
फ़सील, सं. स्त्री. (अ.) प्राकारः, वरणः, वप्रः, वप्रम् ।
फहरना, क्रि. अ. (सं. प्रसरणम्) प्रसृ (भ्वा. प. अ.), उद्डी (भ्वा. आ. से.) ।
फहराना, क्रि. स., 'फहराना' के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप ।
फाँक, सं. स्त्री. (सं. फलकम्>) खण्डं-ण्डः, शकलं-लः २. छुरिका ३. रेखा ।
फाँकना, क्रि. स. (हिं. फंकी) हस्ततलेन मुखे निक्षिप् (तु. प. अ.) । सं. पुं., चूर्णस्य मुखे निक्षेपणम् ।
फाँदना, क्रि. अ. (सं. फणनं>) कुर्द् (भ्वा. आ. से.) उत्प्लु (भ्वा. आ. अ.) २. उल्लंघ् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं., उत्प्लवनं, कूर्दनं, उल्लंघनम् ।
फाँस, सं. स्त्री. (सं. पाशः) बंधनम्, दे. 'फंदा' ।
फाँसना, क्रि. स. (हिं. फाँस) पाशयति (ना. धा.) २. वंच्-प्रतॄ (प्रे.) ।
फाँसी, सं. स्त्री. (हिं. फाँस) उद्बंधनम् २. मृत्युदण्डः २. पाशः, बंधनम् ।
—देना, क्रि. स., उद्बध्य हन् (अ. प. अ.) ।
फ़ाइल, सं. स्त्री. (अं.) पत्रसंग्रहः २. पंक्तिः (स्त्री.) ३. सूत्रं, गुणः ।
फाका, सं. पुं. (अ. फाकह्) उपवासः, उपोषितं, लंघनम् ।
फाग, सं. पुं. (हिं. फागुन) होलिकोत्सवः २. रक्तचूर्णभेदः ३. होलिकागीतम् ।
फागुन, सं. पुं. (सं. फाल्गुनः दे.) ।
फाटक, सं. पुं. (सं. कपाटः) अंगनद्वारं, बृहद्-द्वारम् २. लौहद्वारम् ३. दे. 'काँजी हौद' ।
फाड़ना, क्रि. स. (सं. स्फाटनम्) व्रश्च् (तु. प. से.), भिद्-छिद् (रु. प. अ.), विद् (प्रे.) २. खण्ड् (चु.), भंज् (रु. प. अ.) । सं. पुं., व्रश्चनं, भेदनं, छेदनं, विदारणं, विपाटनं २. खंडनं., भंजनम् ।
फानूस, सं. पुं. (फ़ा.) *दीप,-कोषः-पुटः ।
फ़ायदा, सं. पुं. (अ. फ़ाइदह्) लाभः, धनागमः, आयः २. प्रयोजनसिद्धिः-ईप्सितप्राप्तिः (स्त्री.) ३. सुफलं, सुपरिणामः ४. नीरोगता ।
—मंद, वि., लाभदायक, उपकारक ।
फारखती, सं. स्त्री. (अ. फ़ारिग़+खती) दायित्वत्यागः २. दायित्वत्यागपत्रम् ।
फारम, सं. पुं. (अं. फ़ार्म) प्रपत्रम् ।
फ़ारमूला, सं. पुं. (अं.) सूत्रम् ।
फ़ारस, सं. पुं. (फ़ा.) पारसि(सी)कः ।
फ़ारसी, सं. स्त्री. (फ़ा.) पारसी ।
—दाँ, वि. पारसीविद्, पारसीपंडित ।
फ़ारिग़, वि. (फ़ा.) लब्धावकाश, निर्वर्तित-व्यापारः, निवृत्त ।
—होना, मु., कार्यमुक्त-, लब्धावकाश भू २. शौचाय गम् ।
फ़ारेन, वि. (अं.) विदेशीय, परदेशीय, वैं-पार,-देशिक ।
—आफ़िस, सं. पुं. (अं.) विदेश-परराष्ट्र,-कार्यालयः ।
—सेक्रेटरी, सं. पुं., विदेश-परराष्ट्र-,सचिवः ।
फ़ारेनर, सं. पुं. (अं.) विदेशीयः, परदेशीयः, वैदेशिकः, पारदेशिकः ।
फ़ारेनहाइट, सं. पुं., जर्मनवैज्ञानिकविशेषः ।
—थर्मामीटर, सं. पुं. (अं.) फ़ारेनहाइट-तापमापकम् ।
फ़ारेस्ट, सं. पुं. (अं.) वनं, जंगलम् ।
—डिपार्टमेंट, सं. पुं. (अं.) वन-जंगल,-विभागः ।
फाल, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) कुशिलं, कृषिका, हलोपकरणम् ।
फ़ालतू, वि. (हिं. फाल=टुकड़ा) उपयुक्ताव-

शिष्ट, अतिरिक्त २. अनुपयोगिन्, निरर्थक ३. अकर्मण्य ।

फ़ालसा, सं. पुं. (फ़ा.) गिरिपीलु (न.), नीलमंडलं, परावतम्, परुपकम् ।

फ़ालिज, सं. पुं. (अ.) पक्षाघातः, गात्रसादः ।

फाल्गुन, सं. पुं. (सं.) फल्गुनः, तपस्यः, वत्सरान्तकः, फाल्गुनिकः २. अर्जुनः ३. अर्जुनवृक्षः ।

फावड़ा, सं. पुं. (सं. फालः>) आखानः-नं, टं.-गः ।

फ़ासफ़ोरस, सं. पुं. (अं.) स्फुरं., स्फूरकं, भास्वरम् ।

फ़ासला, सं. पुं. (अ. फ़ासलह्) अन्तरं, दूरता, विप्रकर्षः ।

फाहा, सं. पुं. (सं. फालम्>) स्नेहाक्त,-तूल-खंडः, पटखंडः ।

फिंकवाना, क्रि. प्रे., 'फेंकना' के प्रे. रूप ।

फ़िकर, सं. स्त्री. (अ. फ़िक्र) चिन्ता, दुःखं, खेदः २. ध्यानं, विचारः ३. उपायचिन्ता ।

फिट, अव्य. (अनु.) धिक् , धिग्धिक् ।

—कार, सं. स्त्री. (अनु. फिट+सं. कारः) धिक्कारः, धिक्क्रिया २. अभिशापः, अभिशपनम् ।

फ़िट, वि. (अं.) यथार्ह, उपपन्न । सं. पुं., मूर्च्छा, भ्रमिः (स्त्री.) ।

फिटकिरी, सं. स्त्री. (सं. स्फटिकी) स्फटी, श्वेता, शुभ्रा, फाटकी, तुवरी, स्फटिका ।

फ़िटन, सं. स्त्री. (अं.) चतुश्चक्रोऽश्वयानभेदः ।

फिरंग, सं. पुं. ((अं. फ्रांक>) युरोप-गौरांग,-देशः २. विदेशः ३. उपदंशरोगः ।

फिरंगी, सं. पुं. (हिं. फिरंग) फिरंग-युरोप-वास्तव्यः-वासिन्, गौरांगः ।

फिर, क्रि. वि. (हिं. फिरना) पुनर् , भूयस् , द्विः (दोनों अव्य.) २. अनन्तरं, ततः, तत्पश्चात् ३. अतिरिक्तम् ।

—फिर, क्रि. वि., पुनः पुनः, वारं वारं, असकृत्, उभयोभयः ।

फ़िरक़ा, सं. पुं. (अ.) जातिः (स्त्री.), सम्प्रदायः ।

फिरना, क्रि. अ. (हिं. फेरना) इतस्ततः अट्-विचर्-भ्रम् (भ्वा. प. से.) २. वायुं सेव् (भ्वा. आ. से.) ३. प्रत्यागम् , निवृत् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं., भ्रमणं, विचरणं ४. वायुसेवनम् ३. प्रत्यागमनं, निवर्तनम् ।

फिरनी, सं. स्त्री. (फा. फ़ीरीनी) पायसभेदः ।

फिराना, क्रि. स. (हिं. फिरना) इतस्ततः प्रेर् (प्रे.) २. प्रत्यावृत् (प्रे.) ३. चक्रवत् भ्रम् (प्रे.) ।

फिल्टर, सं. पुं. (अं.) पावम् ।

—पेपर, सं. पुं. (अं.) पावपत्रम् ।

फिल्टरेशन, सं. पुं. (अं.) पावपत्रम् ।

फिसलन, सं. स्त्री. (हिं. फिसलना) निपत्या, चिक्कणस्थानं, पिच्छिलपथः ।

फिसलना, क्रि. अ. (सं. प्रस्खलनम्) (पिच्छिलभूमौ) प्रस्खल् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., प्रस्खलनम् ।

फीका, वि. (सं. अपक्व>?) निस्स्वाद, नीरस २. धूमिल, मलिन, ३. निष्प्रभ ४. व्यर्थ, निष्फल ।

फ़ीता, सं. पुं. (पुर्त.) पट्टिका ३. बंधनसूत्रम् ।

फ़ीरोजा, सं. पुं. (फ़ा.) वैदूर्यं, हरिन्नीलरत्नम् ।

फ़ीरोज़ी, वि. (फ़ा.) हरिन्नील ।

फीस, सं. स्त्री. (अं. बहु.) शुल्कः-कम्, दक्षिणा ।

फुँकना, क्रि. अ. (हिं. फूंकना) दह् , भस्मसात् भू ।

फुँकनी, सं. स्त्री. (हिं. फूंकना) धमनी २. भस्त्रा ।

फुंकार, सं, पुं. (अनु. फुं.+सं. कारः) फूत्कारः २. सर्पनिःश्वासः ३. सक्रोधं निःश्वसनम् ।

फुंकारना, क्रि. अ. (हिं. फुंकार) फूत्कृ, सर्पवत् श्वस् (अ. प. से.) ।

फुंसी, सं. स्त्री. (सं. पनसिका>) पिटि(ट)का, वरंडः, वरंडकः ।

फ़ुट, सं. पुं (अं.) गजतृतीयांशः, चरणमानम् । २. चरणम्, पादः ।

फुटकर, वि. (सं. स्फुट>) अयुग्म, विषम २. पृथक् स्थित, संबंधरहित ३. विविध, बहुप्रकार ४. अल्पाल्प, स्तोकस्तोक ।

फ़ुटनोट, सं. पुं. (अं.) पादटिप्पणी ।

फ़ुटपाथ, सं. पुं. (अं.) पदपथः ।

फ़ुटबाल, सं. पुं. (अं.) पदकन्दुकः २. पदकन्दुक-क्रीडा ।

फुदकना, क्रि. अ. (अनु.) उत्प्लुत्य गम्

(भ्वा. प. अ.) २. नृत् (दि. प. से.) । सं. पुं. उत्प्लवनं, नर्तनम् ।

फुनगी, सं. स्त्री. (सं. स्फुटनम्) शाखा-विटप,-अग्रपल्लव:-अग्रांकुरा: (बहु०) ।

फुप्फुस, सं. पुं. (सं.) दे. 'फेफड़ा' ।

फुफकार, सं. पुं. (अनु.) दे. 'फुंकार' ।

फुफेरा, वि., (हिं. फूफा) पैतृष्वसेय, पि (पै) तृष्वस्रीय ।

फ़ुरकत, सं. स्त्री. (अ.). वियोग:, विरह: ।

फुरती, सं. स्त्री. (सं. स्फूर्ति:) शीघ्रता, क्षिप्रकारिता ।

फुरतीला, वि. (हिं. फुरती) शीघ्र-क्षिप्र,-कारिन्, स्फूर्तिमत् ।

फुरना, क्रि. अ. (सं. स्फुर्) प्रादुर्भू, प्रकटीभू २. कंप्-वेप् (भ्वा. आ. से.) ३. प्रकाश् (भ्वा. आ. से.) ४. फुरफुरायते (ना. धा.) ।

फुरसत, सं. स्त्री. (अ.) अवकाश:, रिक्तसमय: २. अवसर:, समय: ।

फुलका, सं. पुं. (हिं. फूलना) लघु-तनु,-रोटिका २. विस्फोट:, पिटिका ।

फुलझड़ी, सं. स्त्री. (हिं. फूल+झड़ना) फुल्लक्षारिणी २. कलहकारिणी वार्ता ।

फुलवाड़ी, सं. स्त्री. (सं. फुल्लवाटी) पुष्प-कुसुम,-वाटी-वाटिका, उद्यानम् २. वरयात्रायाः कर्गल-निर्मिता फुल्लवाटी ३. पुत्रकलत्रादयः ।

फुलाना, क्रि. स., व. 'फूलना' के प्रे. रूप ।

फुलेल, सं. पुं. (हिं. फूल+तेल) सुगन्धितैलम् ।

फुल्ल, वि. (सं.) विकसित, स्फुटित, उन्निद्र ।

फुसफुसा, वि. (अनु. फुस) शिथिल, श्लथ २. भंगुर, भिदुर ३. अशक्त, दुर्बल ।

फुसलाना, क्रि. स. (हिं. फिसलाना) प्रतॄ-वंच् (प्रे.), विप्रलभ् (भ्वा. आ. अ.) ।

फुहार, सं. स्त्री. (सं. फूत्कार: >) शीकरवर्ष:, मन्दवृष्टि: (स्त्री.) ।

फुहारा, सं. पुं. (हिं. फुहार) जल-धारा,-यन्त्रम् २. जलोत्क्षेप: ।

फूँक, सं. स्त्री. (अनु. फू) फूत्कार:, ध्मानम् २. मुखमारुत:, श्वास: ।

—मारना, क्रि. स., फूत्कृ, ध्मा (भ्वा. प. अ.) ।

फूँकना, क्रि. स. (हिं. फूँक) दह् (भ्वा. प. अ.), भस्मसात् कृ २. फूत्कृ ।

फूँकनी, सं. स्त्री., दे. 'फुँकनी' ।

फूँस, सं. स्त्री. (घास से अनु.) पलाल:-लं, पल: २. शुष्क,-तृण-घास: ।

फूट, सं. स्त्री. (हिं. फूटना) चित्रा, मरुजा, चिर्भिटा, पथ्या २. विश्लेप: ३. विरोध:, मतभेद: ।

—डालना, क्रि. स., विरोधं जन् (प्रे.) ।

फूटना, क्रि. अ. (सं. स्फुटनम्) भिद्-छिद्-विदॄ (कर्म.) स्फुट् (तु. प. से.) २. विकस्-फुल्ल् (भ्वा. प. से.) ।

फूत्कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'फुंकार' ।

फूफा, सं पुं. (देश.) पितृष्वसृ,-पति:-धव: ।

फूफी, सं. स्त्री. (हिं. फूफा) पितृष्वसृ ।

फूल, सं. पुं. (सं. फुल्लम्) कुसुमं, प्रसूनं, पुष्पम् ।

—दान, सं. पुं., कुसुमभाजनं, फुल्लधानम् ।

—दार, वि., पुष्पित, सपुष्प ।

फूलना, क्रि. अ. (हिं. फूल) फुल्ल्-विकस् (भ्वा. प. से.) २ प्रमुद् (भ्वा. आ. से.) । सं.पुं.,विकास:,प्रस्फुटनं २. प्रमोद:, आह्लाद: ।

फूला, सं. पुं. } (हिं. फूल) शुक्रं, पुष्पम्,
फूली, सं. स्त्री. } पुष्पकं, नेत्ररोगभेद: ।

फूस, सं. पुं., दे. 'फूँस' ।

फूहड़, वि. (अनु.) जड, मूढ, मन्दमति २. कदाकार, कुरूप, कुदर्शन ।

फेंकना, क्रि. स. (सं. क्षेपणम्) क्षिप्-मुच् (तु. प. अ.), प्र-अस् (दि. प. से.) २. प्रमादेन पत् (प्रे.) ३. सावमानं त्यज् (भ्वा. प. अ.) ४. अपव्यय् (चु.) । सं. पुं., क्षेपणं, प्रासनं, पातनं, अपव्यय: ।

फेंकने योग्य, वि., क्षेपणीय, त्यक्तव्य ।

—वाला, सं. पुं., क्षेपक:, प्रासक: ।

फेंका हुआ, वि., क्षिप्त, प्रास्त, त्यक्त ।

फेंटना, क्रि. स. (सं. पिष्ट) मंथ् (क्र्. प. से.), मथ्-खज् (भ्वा. प. से.) २. क्रीडापत्राणि मिश्र् (चु.) ।

फेंटा, सं. पुं. (हिं. पेटा वा पेटी) परिकर:, कटि,-बंध:-पट: २. लघूष्णीषं-ष: ।

फेन, सं. पुं. (सं.) जलहास:, अब्धिकफ:, मण्ड:-डं, डिण्डीर:, अंबुकफ: ।

फेनिल, वि. (सं.) फेन,-युक्त-आवृत, फेनल ।

फेनी, सं. स्त्री. (सं. फेनिका) पक्वान्नभेद: ।

फेफड़ा, सं. पुं. (सं. फुप्फुस:-सम्) तिलकं, क्लोमं, क्लोमन् (न.), फुप्फुसं-स:, रक्तफेनज: ।

फेफड़ी, सं. स्त्री. दे. 'पपड़ी१'।
फेर, सं. पुं. (हिं. फेरना) भ्रामणं, परिवर्तनम् २. भ्रान्तिः (स्त्री.), भ्रमः ३. पुनर् (अव्य.)।
फेरना, क्रि. स. (सं. प्रेरणम्) घूर्ण्-परिभ्रम् (प्रे.) २. प्रतिदा-प्रत्यृ (प्रे.) ३. प्रतिया-प्रतिनिवृत् (प्रे.) सं. पुं. घूर्णनं, परिभ्रामणं, प्रतिदानं, प्रत्यर्पणम्, प्रतियापनं, प्रतिनिवर्तनम्।
फेरफार, सं. पुं. (हिं. फेरना) परिवर्तनं, विपर्यासः, विपर्ययः २. व्याजः, कपटम्।
फेरा, सं. पुं. (पूर्व.) प्रत्यावर्तनं, प्रत्यागमनं २. भ्रमणम्, परिक्रमणम् ३. द्विरागमनम्।
फेरी, सं. स्त्री. (पूर्व.) परिक्रमा, प्रदक्षिणा २. दे. 'फेरा' ३. दे. 'फेर'।
—वाला, सं. पुं., भाण्डवाहः, वैवधिकः।
फेल, वि. (अं.) विफल, मोघयत्न, अनुत्तीर्ण।
फैक्टरी, सं. स्त्री. (अं.) शिल्पशाला।
फैलना, क्रि. अ. (सं. प्रसरणम्) वितन्-विस्तृ (कर्म.) २. व्याप् (स्वा. प. अ.) ३. आप्यै (भ्वा. आ. अ.) पीनी भू ४. प्रख्यात (वि.) जन् (दि. आ. से.) ५. आग्रहं कृ। सं. पुं., विस्तारः, विततिः-व्याप्तिः (स्त्री.)।
फैला हुआ, वि., विस्तृत, वितत, व्याप्त, आप्यायित, पीन, प्रख्यात, प्रसिद्ध।
फैलसूफ़, सं. पुं. (अ. फ़िलसफ़ऽ) बुधः, प्राज्ञः २. छलिन्, कपटिन्। ३. अपव्ययिन्।
फैलसूफ़ी, सं. स्त्री., (अ.) बुद्धिमत्ता, प्राज्ञता २. छलं, कपटम् ३. अपव्ययः, मुक्तहस्तता।
फैलाना, क्रि. स., व. 'फैलना' के प्रे. रूप।
फैलाव, सं. पुं. (हिं. फैलना) विस्तारः, प्रसारः २. विततिः-व्याप्तिः (स्त्री.)।
फैशन, सं. पुं. (अं.) रीतिः, प्रथा २. शैली, विधिः, वेषभूषा।
फैसला, सं.पुं. (अ.-लह्) निर्णयः, संप्रधारणम्।
फोक, सं. पुं. (हिं. फूँकना) मलः-लं,उच्छिष्टं, शेषं, अवकरः।
फोकट, वि. (हिं. फोक) निस्सार, तत्त्वहीन।
फोकस, सं. पुं. (अं.) रश्मिकेन्द्रम्।
फ़ोटो, सं.पुं. (अं.) छायाचित्रं, आलोकालेख्यम्।
—का केमरा, सं. पुं., छायाचित्रपेटिका।
—ग्राफ़र, सं. पुं. (अं.) छायाचित्रकः।
—ग्राफी, सं. स्त्री. (अं.) छायाचित्रणम्।
फोड़ना, क्रि. स. (सं. स्फोटनम्) स्फुट्-विदृ-खण्ड् (प्रे.)। सं. पुं., विदारणं, स्फोटनं, खण्डनम्।
फोड़ा, सं. पुं. (सं. स्फोटः), पिटकः, गण्डः, विद्रधिः।
फ़ौज, सं. स्त्री. (अ.) सेना, बलं, सैन्यम्।
—दार, सं. पुं., (फ़ा.) सेनापतिः, सेनानीः।
—दारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दण्डाधिकरणम् २. कलहः, कलिः।
फ़ौजी, वि. (फ़ा.) सैनिक, यौध। सं. पुं., सैनिकः, योधः।
फ़ौरन, क्रि. वि. (अ.) सपदि, सद्यः झटिति, अचिरात् (सब अव्य.)।
फ़ौलाद, सं. पुं. (फ़ा. पोलाद) वज्रायसं, सारलोहं, शस्त्रकम्।

ब

ब, देवनागरीवर्णमालायाः त्रयोविंशो व्यंजनवर्णः, बकारः।
बंग, सं. पुं. (सं. वंगाः बहु.) भारतस्य प्रांतविशेषः।
बँगला[१], वि. (हिं. बंगाल) वांग, वंगदेशीय। सं. स्त्री., वंगभाषा।
बँगला[२], सं.पुं. (अं. बैंगलो) एकभूमिकं भवनम्।
बंगाल, सं. पुं. (सं. वंगाः बहु.) वंगप्रान्तः।
बंगाली, वि. (हिं. बंगाल) वंगीय, वंगदेशीय। सं. पुं., वंगवासिन्।
बंजर, वि. (हिं. बन+ऊजड़) ऊपर, ऊषवत्, अशस्यप्रद। सं. पुं. ऊषरः-रम्, अनुर्वरा भूः (स्त्री.) ३. मरुस्थलम्।
बंजारा, सं. पुं. (सं. वणिज्) धान्य,-वणिज्-व्यवसायिन्।
बँटना, क्रि. अ. (सं. वंटनम्) विभज्-वंट् (कर्म.)।
बँटवाना, क्रि. प्रे., 'बाँटना' के धातुओं के प्रे. रूप।
बंडल, सं. पुं. (अ.) पोट्टलिका, गुच्छः,पोट्टली, संघातः, भारः, कूर्चः।
बंडी, सं. स्त्री. (हिं. बंद) कु(कू)र्पासकः-कम्।
बंद, सं. पुं. (फ़ा.) बन्धः, बंधनम् २. अवरोधः,

उपरोधः ३, विघ्नः। वि., संयत, नियंत्रित २. अवरुद्ध, अन्तरित ३. पिहित, संवृतमुख ४. विरत, स्तब्ध।

—करना, क्रि. स. (अर्गलेन) पिधा (जु. उ. अ.) रुध् (रु. उ. अ.), कीलयति (ना. धा.) २. निवृ (प्रे.) प्रतिषिध् (भ्वा. प. से.) ३. विरम्-विश्रम् (प्रे.), स्तम्भ् (क्र्. प. से.) ४. (रन्ध्रादिकं) पूर् (चु.)।

बंदगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) प्रणामः २. सेवा ३. ईश्वरोपासना।

बंदनवार, सं. पुं. (सं. वंदनमाला) द्वारस्था पुष्पपत्रमाला, बंदनमालिका।

बंदना, सं. स्त्री. (सं. वंदना) प्रणामः, नमस्कारः, वन्दनम्। क्रि. स., प्रणम् (भ्वा. प. अ.), वन्द् (भ्वा. आ. से.), नमस्कृ।

बंदर, सं. पुं. (सं. वानरः) कपिः, मर्कटः, शाखामृगः, वलीमुखः। (स्त्री. वलीमुखी, मर्कटी)।

—खत, सं. पुं. (सं. वानरक्षतम्) कपि-मर्कट,-व्रणः-क्षतम्।

—घुड़की, सं. स्त्री., निस्सार-निष्प्राण,-विभीषिका-भयप्रदर्शनम्।

—का घाव, मु., स्थायि-स्थिर,-व्रणः-क्षतम्।

बंदरगाह, सं. पुं. (फ़ा.) पोताशयः २. पोताशयपुरम्।

बंदा, सं. पुं. (फ़ा.) मानवः, मनुष्यः २. सेवकः, भृत्यः।

—निवाज़, वि., दीनदयालु, दीनवत्सल।

—परवर, वि., अनाथनाथ, दीनबन्धु।

बंदिश, सं. स्त्री. (फ़ा.) बंधनं, अवरोधः।

बंदी, सं. पुं. (सं.-दिन्) भट्टः, चारणः, वंदिन् २. कारागुप्त, रुद्ध, वन्दिन्।

—ख़ाना, सं. पुं., कारागृहं, गुप्तिः (स्त्री.), कारा।

बंदूक, सं. स्त्री. (अ.) नालास्त्रं, गुलिकास्त्रं, अग्न्यस्त्रम्।

बंदूकची, सं. पुं. (फ़ा.) नालास्त्रसैनिकः।

बंदोबस्त, सं. पुं. (फ़ा.) अवेक्षणं, संविधा २. भूकरविभागः।

बंधक, सं. पुं. (सं.) न्यासः, निक्षेपः, आधिः।

बंधन, सं. पुं. (सं. न.) प्रतिबन्धः, अन्तरायः २. बन्धनं, ग्रन्थिः ३. रज्जुः (स्त्री.), शृङ्खला कारा, बन्दिगृहम्।

बँधना, क्रि. अ., अवरुध-बन्ध् (कर्म.)।

बँधवाना, क्रि. प्रे., 'बाँधना' के धातुओं के प्रे. रूप।

बंधु, सं. पुं. (सं.) बान्धवः, ज्ञातिः, सजातीय, सगोत्र।

बंधुक, सं. पुं. (सं.) रक्तकः, बंधूकः, पुष्पभेदः।

बंधुता, सं. स्त्री. (सं.) बन्धुत्वं, सगोत्रता, सजातीयता २. मैत्री, मित्रता।

बंधेज, सं. पुं. (हिं. बाँधना) अवरोधोपायः २. प्रतिबन्धः ३. नियतकाले देयमादेयं वा द्रव्यम्।

बंध्या, सं. स्त्री. (सं.) वन्ध्या, प्रसवशून्यनारी २. वशा, अपत्यरहिता गौः (स्त्री.)।

बंब, सं. स्त्री. (अनु.) रण-सिंह,-नादः, क्ष्वेडा २. युद्धपटहः ३. अग्निगोलकास्त्रम्।

बंबा, सं. पुं. (अ. मंबह्>) जलनालीकीलकः।

बंबूकाट, सं. पुं. (मलाया बैंबू+अं. कार्ट) वंशशकटम्।

बंबी, सं. स्त्री. (सं. वल्मीकः-कम्) सर्पविलं २. वल्मीकूटं, कूलकः, खोलकः, वामलूरः।

बंसरी, सं. स्त्री: (सं. वंशी) मुरली, वेणुः, वंशः, नालिका।

बँहगी, सं. स्त्री. दे. 'बहँगी'।

बक, सं. पुं. (सं. बकः) कह्वः २. असुरविशेषः ३. कुवेरः।

बकना, क्रि. स. (अनु. बक) जल्प्-प्रलप् (भ्वा. प. से.), अवाच्यं वद् (भ्वा. प. से.)।

सं. पुं., प्रजल्पनं, उन्मत्त-, प्रलापः।

बकरा, सं. पुं. (सं. बर्करः) स्तुभः, छ(छा)गः, अजः, शुभः, छगलकः (बकरी=अजा, सर्वभक्षा, गलस्तनी)।

बकवाद, सं. स्त्री. (अनु. बक+सं. वादः>) प्रलापः, प्रजल्पः। क्रि. अ., दे. 'बकना'।

बकवादी, वि. (हिं. बकवाद) जल्पक, प्रलापिन्, वाचाल।

बकायन, सं. पुं. (हिं. बड़का+नीम) द्रेका, विषमुष्टिकः, महानिंबः, कार्मुकः।

बकुचा, सं. पुं. (सं. विकुंच्>) कूर्चः-र्चं, पोट्टलिका २. गुच्छः, संघातः।

बकुल, सं. पुं. (सं.) बकूलः, सुरभिः, सिंहकेसरः २. शिवः।

बक्की, वि., दे. 'बकवादी'।
बक्स, सं. पुं. (अं. बॉक्स) पेटिका, मंजूषा, संपुटः, समुद्गकः, पिटकः-कम्।
बखिया, सं. पुं. (फ़ा.) दृढसूक्ष्म,-सीवनं-स्यूतिः (स्त्री.)।
बख़ूबी, क्रि. वि. (फ़ा.) सम्यक, साधु, सुष्ठु (सब अव्य.)।
बखेड़ा, सं. पुं. (हिं. बिखेरना) विपत्तिः, संकटम् २. विवादः ३. कठिनता।
बखेड़िया, वि. (हिं. बखेड़ा) विवाद-कलि-कलह,-प्रिय, विवादिन्।
बखेरना, क्रि. स., दे. 'बिखराना'।
बख़्त, सं. पुं. (फ़ा.) भाग्यं, दैवं, अदृष्टम् २. सौभाग्यम्।
बख़्तावर, वि. (फ़ा.) भाग्यशालिन्, सुभग, महाभाग।
बख़्शना, क्रि. स. (फ़ा. बख्श) दद् (भ्वा. आ. से.), विश्रण् (चु.), उत्सृज् (तु. प. अ.)।
बख़्शिश, सं. स्त्री. (फ़ा.) दानम् २. दत्त-वस्तु (न.) ३. पुरस्कारः ३. क्षमा, अनुग्रहः।
बगल, सं. स्त्री. (फ़ा.) कक्षा, बाहुकोटरः, दोर्मूलम्।
बगला, सं. पुं. (सं. बकः) कह्वः, दीर्घजंघः, तापसः, दांभिकः, तीर्थसेविन्, मीनघातिन्, शुक्लवायसः।
बग़ावत, सं. स्त्री. (अ.) राजद्रोहः, विप्लवः, उपप्लवः।
—का झंडा बुलंद करना, मु., राजद्रोहं-राज-विरोधं कृ।
बग़ीचा, सं. पुं. (फ़ा. बागचह्) वाटः-टी, वाटिका, उपवनम्।
बगूगोशा, सं. पुं. (देश.) मधुगोसः, दे. 'नाशपाती'।
बगूला, सं. पुं. (हिं. बाऊ+गोला) चक्रवातः, वातावर्त्तः, वातभ्रमः, धूलिचक्रं, वात्या।
बगैर, अव्य. (अ.) विना, अन्तरा, अन्तरेण, विहाय, वर्जयित्वा, ऋते।
बग्घी, सं. स्त्री. (अं. बोगी) चतुश्चक्रं सपटलम-श्वयानम्।
बघारना, क्रि. स. (सं. अवधारणम्) अवधृ (भ्वा. प. अ., चु., जु. प. अ., स्वा. उ. अ.), व्यंजनं तप्तघृतादिकेन सिच् (तु. प. अ.)।
बघेला, सं. पुं. (हिं. बाघ) व्याघ्रः, मृगान्तकः।
बचत, सं. स्त्री. (हिं. बचना) लाभः, प्राप्तिः (स्त्री.) २. संचयः, संग्रहः ३. संचित-रक्षित,-अवशिष्ट,-धनम्।
बचना, क्रि. अ. (सं. वंचनम्>) रक्ष्-निर्मुच् (कर्म.) २. अवशिष् (कर्म.)।
बचपन, सं. पुं. (हिं. बच्चा) बाल्यं, कौमारं, बालत्वम्।
बचाना, क्रि. स. (हिं. बचना) परित्रै (भ्वा. आ. अ.), रक्ष्-गुप् (भ्वा. प. से.) २. अव-शिष् (प्रे.), संचि (स्वा. उ. अ.)।
बचाव, सं. पुं. (पूर्व.) रक्षा, त्राणं, उद्धारः, गोपनं, ऊतिः (स्त्री.)।
बख़्शीश, सं. स्त्री. (फ़ा.-शिश) दानम् २. पारितोषिकम्।
बच्चा, सं.पुं. (फ़ा.-चह्) वत्सः, बालः, बालकः, शिशुः २. शावः, शावकः ३. अज्ञानिन्।
—दानी, सं. स्त्री., गर्भाशयः, गर्भकोषः।
बच्ची, सं. स्त्री. (फ़ा.) वत्सा, बाला, बालिका।
बछड़ा, सं. पुं. (सं.वत्सः) गोवत्सः, गोशावकः, तर्णकः।
बछेड़ा, सं. पुं. (हिं. बछड़ा) बालाश्वः, अश्व-शावकः।
बजट, सं. पुं. (अं.) आयव्ययिकम्, व्याकल्पः।
बजना, क्रि. अ. (सं. वदनं>) क्वण्-ध्वन् (भ्वा. प. से.), वाद् (कर्म.)।
बजरंग, वि. (सं. वज्रांग) दृढावयव, अशनि-कठोर।
—बली, सं. पुं., हनुमत्।
बजवाना, क्रि. प्रे., व. 'बजाना' के प्रे. रूप।
बजा, वि. (फ़ा.) युक्त, उचित। क्रि. वि., सत्यम्, ओम्।
बजाज, सं. पुं. (अ. बज्जाज) वस्त्रविक्रेतृ।
बजाजा, सं. पुं. (फ़ा.) वस्त्रहट्टः।
बजाजी, सं. स्त्री. (फ़ा.) वस्त्रविक्रयः २. वस्त्र-निचयः।
बजाना, क्रि. स. (हिं. बजना) वाद् (चु.), क्वण्-ध्वन् (प्रे.)। सं. पुं., वादनम्।
बजानेवाला, सं. पुं., वादकः, वादयितृ।
बजाय, अव्य. (फ़ा.) स्थाने, प्रातिनिध्ये।
बज्र, सं. पुं. (सं. वज्रं) ऐन्द्रास्त्रं, अशनिः, पविः।
बट, सं. पुं. (सं. वटः) जटिलः, न्यग्रोधः।

बटखरा, सं. पुं. (सं. वटकः>) दे. 'बाट'।

बटन, सं. पुं. (अं.) कुड्डुपः, गण्डः।

बटना, क्रि. स. (सं. वर्तनम्>) व्यावृत (प्रे.), तन्तून् घूर्ण्-भ्रम् (प्रे.) सं. पुं., व्यावर्तनं, तन्तु,-घूर्णनं-भ्रामणम्।

बटमार, सं. पुं. (हिं. बाट+मारना) पारिपन्थिकः, लुण्ठकः, प्रतिरोधकः।

बटलोई, सं. स्त्री. (हिं. बटला) दे. 'देगची'।

बटवारा, सं. पुं. (हिं. बाँटना) भूविभागः, भूमिव्यंशनम् २. धनविभागः, दायभागः।

बटा, सं. पुं. (हिं. बँटना) भिन्नं, अपूर्णांकः, राशिभागः, प्रभागः।

बटुआ, सं. पुं. (सं. वर्तुल>) मुद्रा-नाणक,-कोषः।

बटेर, सं. स्त्री. (सं. वर्तका) वर्तकः, वर्तकी, वर्तिका।

बटोरन, सं. स्त्री. (हिं. बटोरना) अवस्करः, निस्सारवस्तुसमूहः, उच्छिष्टम्।

बटोरना, क्रि. स. (सं. वर्तुल>) संचि (स्वा. उ. अ.), संग्रह् (क्र्. उ. से.)।

बटोही, सं. पुं. (हिं. बाट) पान्थः, पथिकः।

बट्टा[1], सं. पुं. (सं. वार्त्ता>) दोषः, कलंकः।
—**खाता**, सं. पुं., अप्राप्यधनलेखः।

बट्टा[2], सं. पुं. (सं. वटकः) पेषणपाषाणः, कुट्टनप्रस्तरः २. प्रस्तरादीनां वर्तुलखण्डः।

बड़[1], सं. पुं. (सं. वटः) दे. 'वट'।

बड़[2], वि. (हिं. 'बड़ा' से, समास के आरम्भ में ही) दे. 'बड़ा'।

बड़प्पन, सं. पुं. (हिं. बड़ा) श्रेष्ठता, महत्ता, गौरवम् २. वयस्कता, प्रौढ़ता।

बड़बड़, सं. स्त्री. (अनु.) प्र-,जल्पः,व्यर्थवचनम्।

बड़बड़ाना, क्रि. अ. (अनु. बड़बड़) प्र-,जल्प् (भ्वा. प. से.) २. असंतोषेण नीचैः वद् (भ्वा. प. से.)।

बड़बोला, वि. (हिं. बड़ा+बोल) विकत्थक, विकत्थनशील।

बड़भागी, वि. (हि. बड़ा+भाग) महाभाग्य, सुभग, भाग्यशालिन्।

बड़वा, सं. स्त्री. (सं. वड़वा) घोटी, तुरंगी २. बड़वाग्नि।

बड़वानल, सं. पुं. (सं. वडवानलः) वडवाग्निः, वडवामुखः।

बड़ा, (सं. वृध्>) आयत, विस्तृत, विशाल २. महत्, गुरु ३. वयोवृद्ध, अधिकवयस्क ४. उत्तम, श्रेष्ठ ५. अधिक, अतिशायिन्। सं. पुं., धनाढ्यः २. महापुरुषः।

बड़ाई, सं. स्त्री. (हिं. बड़ा) मानः, गौरवम्। महत्ता, प्रतिष्ठा २. वृद्धता, गुरुत्वम्।

बड़ी, सं. स्त्री. (सं. वटी) वटिका, वैदलशिंबी,-वटिका।

बढ़ई, सं. पुं. (सं. वर्द्धकिः) तक्षक-, तक्षन्, वर्द्धकिन्, त्वष्टृ, छादः।

बढ़ती, सं. स्त्री. (हिं. बढ़ना) उन्नतिः-वृद्धिः (स्त्री.), उपचयः, उत्कर्षः।

बढ़ना, क्रि. अ. (सं. वर्द्धनम्) वृध् (भ्वा. आ. से.), उपचि (कर्म.), वृद्धिं प्राप् (स्वा. उ. अ.), एध्-स्फाय्-आप्याय् (भ्वा. आ. से), बृंह् (भ्वा. तु. प. से.)। सं. पुं., दे. 'बढ़ती'।

बढ़ा हुआ, वि., उन्नत, वृद्ध, उपचित, स्फीत, पीन, आप्यान।

बढ़ाना, क्रि. स., व. 'बढ़ना' के धातुओं के प्रे. रूप।

बढ़िया, वि. (हिं. बढ़ना) महार्घ, बहुमूल्य २. उत्कृष्ट, गुणवत्।

बणिक, सं. पुं. (सं. वणिज्) पण्याजीवः, दे. 'बनिया'।

बतकही, सं. स्त्री. (हिं. बात+कहना) वार्तालापः २. विवादः।

बतख़, सं. स्त्री. (अ. बत) वरटः, कादंबः, हंसजातीय- खगभेदः।

बतलाना, क्रि. स. (हिं. बात) कथ्-वर्ण् (चु.), आख्या (अ. प. अ.), आचक्ष् (अ. आ.), निविद् (प्रे.) २. बुध्-ज्ञा (प्रे.) ३. निर्दिश् (तु. प. अ.), प्रदृश् (प्रे.)। सं. पुं., कथनं, वर्णनं, निवेदनं, श्रावणं,बोधनं, ज्ञापनं,निर्देशः, प्रदर्शनम्।

बतलाने योग्य, वि.,कथनीय,वर्णनीय,आख्येय।
—**वाला**, सं. पुं. आख्यातृ, कथकः, वर्णयितृ २. बोधकः, ज्ञापकः ३. निर्देशकः, प्रदर्शकः।

बतलाया हुआ, वि., कथित, वर्णित, श्रावित, बोधित, ज्ञापित ३. निर्दिष्ट, प्रदर्शित।

बताना, क्रि. स., दे. 'बतलाना'।

बताशा, सं. पुं. (हिं. बतास) फूल सिताबुद्बुदः, वाताशः।

बत्ती, सं. स्त्री. (सं. वर्तिः) वर्ती, वर्तिका, तैलिनी, झिल्ली २. दीपः।

बत्तीस, वि. [सं. द्वात्रिंशत् (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या तदंकौ (३२) च ।
—वाँ, वि., द्वात्रिंशत्तमः-मी-मं, द्वात्रिंशः-शी-शम् ।
बत्तीसी, सं. स्त्री. (हिं. बत्तीस) द्वात्रिंशत्पदार्थ-समूहः २. मानवदन्तसमूहः, दशनावलिः (स्त्री.) ।
बथुआ, सं. पुं. (सं. वास्तुकम्) शाकराजः, राजशाकः, शाकश्रेष्ठः ।
बद, वि., (फ़ा.) दुष्ट, पाप, खल, नीच ।
—क़िस्मत, वि., मन्दभाग्य ।
—चलन, वि., दुर्वृत्त, कुचरित ।
—ज़बान, वि., कटुभाषिन्, दुर्भाषिन् ।
—ज़ात, वि., नीच, क्षुद्र, निकृष्ट ।
—तमीज़, वि., अशिष्ट, असभ्य, ग्राम्य ।
—नीयत, वि., वंचक, दुराशय ।
—परहेज़, वि., कुपथ्यसेविन् ।
—परहेज़ी, सं. स्त्री., कुपथ्यम् ।
—बू, सं. स्त्री., दुर्गन्धः, दे. ।
—माश, वि., दुर्वृत्त, दुश्चरित्र ।
—शकल, वि., कुरूप, दुर्दर्शन ।
—हज़मी, सं. स्त्री., अजीर्णं, अग्निमान्द्यं, अपाक ।
बदन, सं. पुं. (फ़ा.) शरीरं, देहः, कायः ।
—टूटना, मु., अंगसंधिषु-अवयवग्रंथिषु वेदनानुभवः (ज्वरपूर्वरूपम्) ।
—में आग लगना, मु., अत्यन्तं कुप् (दि. प. से.)-क्रुध् (दि. प. अ.) । २. अतीव सन्तप्त (वि.) भू ।
—साँचे में ढला होना, मु., लावण्य-सौन्दर्य,-अतिशयः-आतिशय्यम् ।
—सूख कर काँटा हो जाना, मु., अत्यर्थं कृश-क्षीण-शुष्कांग (वि.) भू ।
बदर, सं. पुं. (सं.) बदरी, बदरिका, बदरं, बदरीफलम् ।
बदलना, क्रि. अ. (अ. बदल) स्थानान्तरं-रूपान्तरं-अवस्थान्तरं गम्, अन्यथा भू, विकृ (कर्म.), परिवृत् (भ्वा. आ. से.), विपर्यस् (दि. प. से.) । क्रि. स., परिवृत् (प्रे.), अन्यथा कृ, विकृ, विपर्यस् (प्रे.), विनिमे (भ्वा. आ. अ.) । सं. पुं., अवस्थान्तर-रूपान्तर-स्थानान्तर,-प्राप्तिः (स्त्री.), परिवर्तनं, विनिमयः, विक्रिया, विपर्यासः, परिवृत्तिः, (स्त्री.), विपरिणामः ।
बदला, सं. पुं. (हिं. बदलना) विनिमयः, आदानप्रदानम् २. प्रतिशोधः, प्रति(ती)कारः ३. परिणामः, फलम् ।
बदलाना, क्रि. स., दे. 'बदलना' क्रि. स. ।
बदली, सं. स्त्री. (हिं. बदलना) परिवृत्तिः (स्त्री.), परिवर्तनम् ।
बदाबदी, सं. स्त्री. (सं. वद् >) वैरं, द्वेषः, विरोधः २. प्रतिस्पर्द्धा ।
बदौलत, क्रि. वि. (फ़ा.) कृपया, अनुग्रहेण २. कारणेन, साधनेन, द्वारा ।
बद्ध, वि. (सं.) नियंत्रित, वशी,-कृत-भूत, संयत ।
—कोष्ठ, सं. पुं. (सं.) मलावरोधः, विड्ग्रहः ।
बधाई, सं. स्त्री. (सं. वर्द्धनं>) वर्धापनं, वृद्धि-वचनं, अभिनन्दनम् ।
—देना, क्रि. स., वर्धापनं दा (जु. उ. अ.) ।
बधिया, सं. पुं. (हिं. वध=मारना) नपुंसकः पशुः, पण्डीकृतः चतुष्पादः ।
बधिर, वि. (सं.) अकर्ण, एड, श्रोत्रविकल ।
बधूटी, सं. स्त्री. (सं. वधूटी), दे. 'वधू' ।
बन, सं. पुं. (सं. वनम्) अरण्यं, काननं, कांतारः ।
—चर, सं. पुं., अरण्यवासिन्, आटविकः ।
—वास, सं. पुं., वनवासः, अरण्यवासः ।
बनजारा, सं. पुं. (हिं. बनज) दूरव्यवसायिन्, वाणिज्यजीविन् २. वणिज्, दे. 'बनिया' ।
बनना, क्रि. अ. (सं. वर्णनं>) निर्मा-रच-विधा-अनुष्ठा (कर्म.) ।
बना हुआ, वि. निर्मित, रचित, विहित, कृत, सृष्ट, संपन्न, निष्पन्न ।
बनमानुस, सं. पुं. (सं. वनमानुषः) वानर-भेदः २. असभ्यमानवः ।
बनवाई, सं. स्त्री. (हिं. बनवाना) निर्माण,-भृतिः (स्त्री.)-शुल्कः ।
बनवाना, क्रि. प्रे., ब. 'बनाना' के प्रे. रूप ।
बनात, सं. स्त्री. (हिं. बाना) उत्तमौर्णपटभेदः ।
बनाना, क्रि. सं. (हिं. बनना) निर्मा (अ. प. अ., जु. आ. अ.), रच् (चु.), कृ, क्लृप्-घट् (प्रे.) २. जन्-उत्पद् (प्रे.) ३. संपद्-साध् (प्रे.), अनुष्ठा (भ्वा. प. अ.),

बसना², क्रि. अ. (हिं. वास=गंध) सुगंधित (त्रि.) भू ।

बसर, सं. पुं. (फ़ा.) निर्वाहः, कालयापनम् ।

बसाना, क्रि. स. (हिं. वसना) अधिवस्-निवस् (प्रे.) ।

बसूला, सं. पुं. (सं. वासिः पुं. स्त्री.) तक्षणी ।

बसेरा, सं.पुं. (हिं. वसना) आवासः, निवासः २. वासः, वसतिः (स्त्री.) ।

बस्ता, सं. पुं. (फ़ा.-तह्) पोट्टलिका, कूर्चः ।

बस्ती, सं. स्त्री. (सं. वसतिः) निवासः २. ग्रामः, ग्रामटिका ।

बहँगी, सं. स्त्री. (सं. विहंगिका) वेणुशिक्या, स्कंधवाहनी ।

—का छीका, सं. पुं., विहंगिकाशिक्या ।

बहकना, क्रि, अ. (हिं. वहना) अतिसंधा, (कर्म.), वंच् (कर्म.) २. पथभ्रष्ट (वि.) भू ३. लक्ष्यभ्रष्ट (वि.) भू ४. मद् (दि.प.से.) ।

बहकाना, क्रि. स. (हिं.) 'बहकना' के प्रे. रूप बनाएँ ।

बहत्तर, वि. [सं. द्विसप्ततिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (७२) च ।

—वाँ, वि., द्विसप्ततितमः-मी-मं, द्विसप्ततः-ती-तम् ।

बहन, सं. स्त्री. (सं. भगिनी) दे. 'बहिन' ।

बहना, क्रि. अ. (सं. वहनम्) वह् (भ्वा. उ. अ.), क्षर् (भ्वा. प. से.), सृ-स्रु (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं., वहनं, क्षरणं, सरणं, स्रावः, स्रुतिः (स्त्री.) ।

बहनापा, सं. पुं. (हिं. बहन) स्वसृत्वं, भगिनीत्वम् ।

बहनोई, सं. पुं. (हिं. बहन) आवुत्तः, नशिकः, स्वसृपतिः, भगिनीभर्तृ ।

बहनौता, सं. पुं., दे. 'भाँजा' ।

बहरा, वि. पुं. (सं. बधिरः) एडः, अकर्णः, अश्रोत्रः ।

बहलना, क्रि. अ. (हिं. बहलाना) चित्त-विनोदः जन् (दि. आ. से.) ।

बहलाना, क्रि. स. (फ़ा. बहाल) चित्तं रंज्-विनुद्-नन्द् (प्रे.) ।

बहलाव, सं. पुं. (हिं. बहलना) विनोदः, मनोरंजनम् ।

बहली, सं. स्त्री. (सं. वहल=बैल>) रथ-सदृशी वृषशकटी ।

बहस, सं. स्त्री. (अ.) वादः, वादप्रतिवादः, ऊहापोहः, प्रश्नोत्तरम् ।

—करना, क्रि. अ., वादप्रतिवादं कृ, विवद् (भ्वा. आ. से.) ।

बहादुर, वि. (फ़ा.) शूर, वीर, बलिष्ठ, पराक्रमिन् ।

बहादुरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) वीरता, शूरता, पराक्रमः ।

बहाना¹, क्रि. स., ब. 'बहना' के प्रे. रूप ।

बहाना², सं. पुं. (फ़ा.-नह्) मिषं, व्याजः, छलम् ।

—करना, क्रि. अ., व्यपदिश् (तु. प. अ.) ।

बहार, सं. स्त्री. (फ़ा.) शोभा, श्रीः (स्त्री.), दर्शनीयता २. मधुमासः, वसन्तर्तुः ३. मनोविनोदः ।

बहाल, वि. (फ़ा.) पूर्ववत् स्थित, पदारूढ २. स्वस्थ. ३. प्रसन्न ।

बहाव, सं. पुं. (हिं. बहना) प्रवाहः, स्रावः २. धारा, मन्दाकः, स्रोतस् (न.) ।

बहिन, सं. स्त्री. (सं. भगिनी) सोदरा, सहोदरा, स्वसृ, जामिः (स्त्री.) ।

छोटी—, अनुजा, बड़ी—, अग्रजा, अंतिका ।

बहिरंग, वि. (सं.) बाह्य, बहिर्भव, बहिः-स्थित ।

बहिश्त, सं. पुं. (फ़ा. बिहिश्त) स्वर्गः, नाकः । २. सुखावासः ।

बहिष्कार, सं. पुं. (सं.) अपसारणं २. निष्कासनम्, विवासनम् ।

बहिष्कृत, वि. (सं.) अपसारित २. विवासित, निष्कासित ।

बही, सं. स्त्री. (हिं. बँधी ?) आयव्यय,-पंजी-जिः (स्त्री.) ।

बहु, वि. (सं.) अधिक, अनेक २. प्रचुर, बहुल ।

—क्षीरा, सं. स्त्री. (सं.) बहुल-प्रचुर-, दुग्धा-स्तन्या गौः (स्त्री.) ।

—गंधा, सं. स्त्री. (सं.) १. यूथी, यूथिका, हेमयूथिका, कनकप्रभा । २. चंपक,-कलिका-कोरकः ३. कृष्णजीरकः ।

—गुण, वि. (सं.) प्रचुर सूत्र २. प्रचुर-विशेष ।

—जल्प, वि. (सं.) वाचाल, मुखर, जल्प-(पा)क ।

बहुकर, सं. स्त्री. (सं. बहुकरी) संमार्जनी, शोधनी। वि., परिश्रमिन्।

बहुत, वि. (सं. बहुतर) असंख्य २. यथेष्ट, पर्याप्त ३. प्रचुर, विपुल, भूरि।

बहुतायत, सं. स्त्री. (हिं. बहुत) अतिशयः, आधिक्यम् २. पर्याप्तता।

बहुधा, क्रि. वि. (सं.) प्रायः, प्रायशः (दोनों अव्य.) २, बहुप्रकारैः।

बहुभाषी, वि. (सं.-षिन्) वाचाल।

बहुमूल्य, वि. (सं.) महार्घ, दुष्क्रेय।

बहुरंगा, वि. (सं.-ग) चित्रविचित्र, अनेकवर्ण २. बहुवेश ३. चलचित्र।

बहुरूपिया, वि. (सं. बहुरूप>) वेशाजीविन्, बहुरूपक।

बहू, सं. स्त्री. (सं. वधूः) वधूटी, नवोढा, नववधूः।

बहेड़ा, सं. पुं. (सं. विभीतकः) कलिद्रुमः, भूतवासः।

बाँका, वि. पुं. (सं. वंकः>) तिर्यञ्च्, वक्र, कुटिल, २. सुन्दर, मनोहर ३. वेशमानिन्, रूपगर्वित।

बाँग, सं. स्त्री. (फ़ा.) प्रातः कुक्कुटनादः २.यवनपुरोहितस्य पूजासमयसूचकोमहानादः।

बाँझ, सं. स्त्री. (सं. वंध्या दे.)।

बाँटना, क्रि. स. (वंटनम्) विभज् (भ्वा. उ. अ.), अंश्-वंट् (चु.), परिक्लृप् (प्रे.), यथाभागं वितॄ (भ्वा. प. से.)। सं. पुं., अंशनं, वंटनं, परिकल्पनं, विभाजनं,वितरणम्।

बाँटने योग्य, वि.,अंशनीय, वंटनीय, विभाज्य।

—वाला, सं. पुं., विभाजकः, अंशयितृ।

बाँटा हुआ, वि., विभक्त, विभाजित, वंटित।

बाँदी, सं. स्त्री. (फ़ा. वंदा) दासी, सेविका, परिचारिका।

बाँध, सं. पुं. (हिं. बाँधना) बंधः, सेतुः।

बाँधना, क्रि. स. (सं. बंधनम्) बंध् (क्र्. प. अ.), सं-नि,-यम् (भ्वा. प. अ.), पिनह् (दि. प. अ.), ग्रंथ् (क्र्. प. से.; भ्वा. आ. से., चु.)। सं. पुं., बंधनम्, सं-नि,-यमनं, पिनाहः, ग्र(ग्रं)थनम्।

बाँधा हुआ, वि., बद्ध, नियत, संयत, पिनद्ध, ग्रथित।

बांधव, सं. पुं. (सं.) अंशकः, दायादः, सगोत्रः, सकुल्यः, ज्ञातिः।

बांधव्य, सं. पुं. (सं. न.) सगोत्रता, रक्त-सम्बन्धः, बन्धुता, बन्धुत्वम्।

बाँबी, बाँमी, सं. स्त्री. (सं. वल्मीकः>) वल्मीक-वामलूर वम्री,-कूटं-शैलः। २. सर्प-अहि,-विवरं-बिलम्।

बाँस, सं. पुं. (सं. वंशः) वेणुदंडः, तृणध्वजः, वेणुः, कीचकः, त्वक्सारः, मृत्युपुष्पः।

—पर चढ़ना, मु., अपकीर्ति-दुष्कीर्ति-वाच्यताम् लभ् (भ्वा. आ. अ.)।

—पर, चढ़ाना, मु., कुख्यातिं-अपकीर्तिं कृ।

—बराबर, मु., अति,-दीर्घ-आयत-लंब।

—(सों) उछलना, मु., अत्यर्थं मुद् (भ्वा. आ. से.)।

बाँह, सं. स्त्री. (सं. बाहुः पुं.) भुजः-जा।

बाइसिकिल, सं. स्त्री. (अं.-साइकल) द्विचक्रिका, पादयानम्।

बाई[1], सं. स्त्री. (सं. वायुः) वात,-दोषः-रोगः।

बाई[2], सं. स्त्री. (हिं. बाबा) कुलवधूनामादर-सूचकः शब्दः, देवी २. वेश्या।

बाईस, वि. (सं. द्वाविंशतिः नित्य स्त्री.)। सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (२२) च।

—वाँ, वि., द्वाविंशतितमः-मी-मं, द्वाविंशः-शी-शम्।

बाएँ, क्रि. वि. (हिं. बायाँ) वामतः, वाम-सव्य,-पार्श्वे।

बाक़ी, वि. (अ.) अवशिष्ट, उद्वृत्त। सं. पुं., अव-, शेषः।

बाग़, सं. पुं. (अ.) उपवनं, उद्यानम्, आरामः।

बाग, सं. स्त्री. (सं. वल्गा) अभीशुः, प्रग्रहः, रश्मिः।

बागडोर, सं. स्त्री. (सं. वल्गा+डोरः) दे. 'बाग' २. प्रमुत्वं, अधिकारः।

बाग़वान, सं. पुं. (फ़ा.) मालाकारः, मालिकः, उद्यानपालः।

बाग़ी, वि. (अ.) विद्रोहिन्, राजद्रोहिन्।

बागीचा, सं. पुं. (फ़ा. बागचह्) कुसुमोद्यानं, पुष्प-, वाटिका।

बाघ, सं. पुं. (सं. व्याघ्रः) चुलुकः, मेलः, चन्द्रकिन्, हिंसारुः, व्याडः, मृगान्तकः।

बाज़[1], सं. पुं. (अ.) श्येनः, कपोतारिः, शशादनः।
बाज़[2], वि. (फ़ा.) रहित, हीन।
—आना, क्रि. अ., त्यज्-परिहृ (भ्वा. प. अ.)।
—रखना, क्रि. स., नि-प्रति-,षिध् (भ्वा.प.से.)।
बाज़[3], प्रत्य. (फ़ा.)-प्रिय,शील,-सेविन् (उ. नशेबाज़ = मद्यसेविन्)।
बाज़[4], वि. (अ.) केचित्, काश्चित्, कानिचित्।
बाजरा, सं. पुं. (सं. वर्जरी) वज्रकः।
बाजा, सं. पुं. (सं. वाद्यम्) वादित्रं, वादनयंत्रम्।
बाज़ाब्ता, क्रि. वि. (फ़ा.-तह्) नियमानुसारं, यथाविधि (न.)। वि., वैध, नियमानुकूल।
बाज़ार, सं. पुं. (फ़ा.) आपणः, निषद्या, हट्टः, विपणी-णिः (स्त्री.), पण्यवीथिका, निगमः, पणिः (स्त्री.)।
बाज़ारी, वि. (फ़ा.) आपणिक २. साधारण ३. अशिष्ट।
बाज़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) क्रीडा, खेला २. पणः, ग्लहः।
—गर, सं. पुं., रज्जुनर्तकः।
बाज़ू, सं. पुं. (फ़ा.) बाहुः, दे. 'बाँह'।
—बंद, सं. पुं. (फ़ा.) केयूरः-रं, अंगदः-दम्।
बाट[1], सं. पुं. (सं. वाटः-टम्) मार्गः, पथिन्, अध्वन्, वर्त्मन् (न.)।
—जोहना, क्रि. स., प्रतीक्ष् (भ्वा. आ. से.)।
बाट[2], सं. पुं. (सं. वटकः>) भारमानं, माडः, मात्रम्।
बाटी[1], सं. स्त्री. (सं. वटी) वटिका, गुलिका २. अंगारपक्वरोटिका।
बाटी[2], सं. स्त्री. (सं. वर्तुल>) पारी, पात्रभेदः।
बाड़, सं. स्त्री., दे. 'बाढ़'।
बाड़व, सं. पुं., दे. 'बड़वानल'।
बाड़ा, सं. पुं. (सं. वाटः-टं) अंगनं-णं, प्रांगणं, अजिरं, चत्वरः-रम् २. गोष्ठः, व्रजः।
बाड़ी, सं. स्त्री. (सं. वाटी) दे. 'बाड़ा' (१)। २. पुष्प-, वाटिका ३. पुरभागः।
बाडीगार्ड, सं. पुं. (अं.) अंगरक्षकः, तनुपः।
बाढ़, सं. स्त्री. (हिं. बढ़ना) आप्लावः, संप्लवः, तोयविप्लवः २. आधिक्यं, वृद्धिः (स्त्री.)।
बाण, सं. पुं. (सं.) इषुः, शरः, विशिखः, आशुगः, सायकः, मार्गणः, रोपणः, पत्रिन्, चित्रपुंखः।
बाणिज्य, सं. पुं. (सं. न.) क्रयविक्रयौ, वणिक्कर्मन् (न.)।
बात, सं. स्त्री. (सं. वार्त्ता) वचनं, कथनं, उक्तिः (स्त्री.), वाक्यं, भाषितम् २. वर्णनम् ३. किंवदंती, प्रवादः ४. वृत्तान्तः ५. संदेशः ६. वाग्विलासः, वार्तालापः ७. मिषं, व्याजः ८. प्रतिज्ञा, संगरः ९. विश्वासः, प्रत्ययः १०. प्रतिष्ठा ११. उपदेशः १२. रहस्यम् १३. स्तुत्यविषयः १४. गूढ,-अर्थः-आशयः १५. उत्कर्षः, गुणः १६. तात्पर्यं, अभिप्रायः १७. इच्छा १८. आचरणम्।
—का बतंगड़ बनाना, मु., अत्युक्त्या वर्ण् (चु.), अणुं पर्वतीकृ।
—की बात में, मु., झटिति, सपदि।
—न पूछना, मु., अवगण्-अवधीर् (चु.)।
—बनना, मु., कार्यं सिध् (दि. प. अ.)।
—बिगड़ना, मु., कार्यं विफलीभू।
बातचीत, स. स्त्री. (हिं. बात+सं. चिंतन>) संवादः, संभाषणं, वार्तालापः, आलापः।
बातूनी, वि. (हिं. बात) बहुभाषिन्, वाचालः,वाचाटः, जल्पकः, वावदूकः,जल्पाकः।
बाथ, सं. पुं. (अं.) दे. 'स्नान'।
—रूम, सं. पुं. (अं.) दे-'स्नानगृह'।
बाथू, सं. पुं. दे० 'बथुआ'।
बाद[1], अव्य. (अ.) पश्चात्, अनंतरम्।
—अज़ाँ, अव्य., अतोऽनन्तरम्।
बाद[2], सं. पं. (फ़ा.) वायुः (२) अश्वः।
—(दे) ख़िज़ाँ, सं. स्त्री., शिशिरानिलः।
—(दे) बहारी, सं. स्त्री., वसन्तानिलः।
बादबान, सं. पुं. (फ़ा.) वातवसनम्।
बादल, सं. पुं. (सं. वारिदः) घनः, जलदः, जीमूतः, वारिवाहः, मेघः, अब्दः, कंधरः, अभ्रं, जल-पयो,-मुच्, धाराधरः, धूमयोनिः, नभोगजः, बलाहकः, वातरथः, स्तनयित्नुः, व्योमधूमः।
बादशाह, सं. पुं. (फ़ा.) नृपः, भूपतिः।
बादशाही, सं. स्त्री. (फ़ा.) राज्यम्, शासनाधिकारः २. शासनम् ३. स्वेच्छाचारः।
बादाम, सं. पुं. (फ़ा.) (वृक्ष) वातादः, वातामः, नेत्रोपमफलः। (फल) वातादं, वातामं, नेत्रोपमफलम्।
बादामी, वि. (फ़ा. बादाम) वातादवर्णं, वातामीय।

बादी, वि. (फ़ा.) वायव्य, पवनविषयक २. वातीय, वातविकारविषयक ३. वातविकारोत्पादक। सं. स्त्री., वात,-विकारः-दोषः।

बाधक, वि. (सं.) प्रतिबन्धक, विघ्नकारिन्।

बाधा, सं. स्त्री. (सं.) विघ्नः, अन्तरायः, प्रत्यूहः, व्याघातः, प्रतिबन्धः २. यातना, वेदना।

—डालना, क्रि. स., प्रतिबन्ध् (क्र्. प. अ.), प्रतिरुध् (रुधा. उ. अ.)।

बानर, सं. पुं. (सं. वानरः) दे. 'बंदर'।

बानबे, वि. (सं. द्वानवतिः नित्य स्त्री.)। सं. पुं. उक्ता संख्या, तदंकौ (९२) च।

बाना[1], सं. पुं. (हिं. बनाना) वेशः-षः, वेशविन्यासः २. रीतिः (स्त्री.), प्रथा।

बाना[2], सं. पुं. (सं. वयनम्) तिर्यक्तन्तवः (पुं. बहु.)।

बानी, सं. पुं. (अ.) संस्थापकः, प्रवर्त्तकः।

बाप, सं. पुं. (सं. वापः>) पितृ, जनकः।

—दादा, सं. पुं. पूर्वजाः, पूर्वपुरुषाः।

बाबत, अव्य. (अ.) अर्थे, अर्थे, हेतोः, निमित्तेन।

बाबा, सं. पुं. (तु.) पितृ २. पितामहः ३. मातामहः ४. वृद्धः ५. साधूनां संबोधनम्।

बाबू, सं. पुं. (हिं. बाबा) महाशयः, महानुभावः। वि., श्रीयुत, श्री।

बायकाट, सं. पुं. (अं.) संबंधत्यागः, बहिष्करणम्।

बायबिडंग, सं. पुं. (सं. विडंगः-गम्) वेल्लः-ल्लं, अमोघा, कृमिघ्नः।

बॉयलर, सं. पुं. (अं.) वाष्पित्रम्।

बायाँ, वि. (सं. वाम) सव्य, वामक, दक्षिणेतर, प्रतिलोम २. प्रतिकूल, विरुद्ध।

बारंबार, क्रि. वि. (सं. वारं वारम्) पुनः-पुनः, पौनःपुन्येन २. सततं, अनवरतम्।

बार, सं. स्त्री. (सं. वारः) क्रमः, पर्यायः।

—बार, क्रि. वि., दे. 'बारंबार'।

बारदाना, सं. पुं. (फ़ा.) पण्यभाण्डं २. सैन्यभक्ष्यम्।

बारबरदार, सं. पुं. (फ़ा.) भारवाहः, भारिकः, वाहकः।

बारह, वि. (सं. द्वादशन्)। सं. पुं. उक्ता संख्या, तदंकौ (१२) च।

—वाँ, वि., द्वादशः-शी-शम्।

—दरी, सं. स्त्री., * द्वादशद्वारा।

—सिंगा, सं. पुं., द्वादशशृंगः, मृगभेदः।

बारिश, सं. स्त्री. (फ़ा.) वृष्टिः (स्त्री.) २. प्रावृष् (स्त्री.)।

बारी, सं. स्त्री., दे. 'बार'।

—का बुखार, सं. पुं., *वारज्वरः, तृतीयकः, तृतीयकज्वरः।

बारीक, वि. (फ़ा.) सूक्ष्म, तनु।

बारीकी, सं. स्त्री. (फ़ा.) सूक्ष्मता, तनुता २. विशिष्टता।

बारूद, सं. स्त्री. (तु.-त) आग्नेय-अग्नि,-चूर्णं, स्फोटकचूर्णम्।

—खाना, सं. पुं., स्फोटक-अग्निचूर्णं,-आगारं-गृहम्।

बारोठा, सं. पुं. (सं. द्वारम्) द्वार् (स्त्री.), प्रतिहारः २. द्वार-,पूजा-पूजनम्, वैवाहिकरीतिविशेषः।

बार्डर, सं. पुं. (अं.) (देश का) सीमा, सामन्तं, समन्तः, पर्यन्तम्। २. (वस्तु का) अन्तः, प्रान्तः, अन्तं, उपान्तम्, सीमा, पर्यन्तम्।

बार्बर[1], वि. (सं.) बर्बरदेशज।

बार्बर[2], सं. पुं. (अं.) नापितः, क्षौरिकः।

बाल, सं. पुं. (सं.) बालकः, शिशुः २. रो(लो)-मन् (न.), शरीरांकुरं, तनुरुहः-हम् ३. शिरसिजः, शिरोरुहः-हं, केशः, कचः, कुन्तलः।

बालक, सं. पुं. (सं.) पुत्रः, सुतः २. बालः, शिशुः, माणवः-वकः, किशोरः-रकः, मुष्टिंधयः, वटुः, वटुकः ३. अज्ञानिन्, निर्बुद्धिः।

बालटी, सं. स्त्री. (अं. बकेट) उदंचनं, सिरा।

बालतोड़, सं. पुं. (सं. बालः+हिं. तोड़ना) * बालत्रोटः।

बालम, सं. पुं. (सं. वल्लभः) पतिः, भर्तृ २. दयितः, प्रियः।

बाला, सं. स्त्री. (सं.) प्रमदा, कामिनी २. युवतिः (स्त्री.) ३. कन्या ४. पुत्री।

बालिका, सं. स्त्री. (सं.) कुमारी, बाला, कन्या २. पुत्री, तनया, तनुजा ३. कन्यका, कुमारिका।

बालिग़, वि. (अ.) प्रौढ, व्यवहारज्ञ, वयस्क।

बालिश्त, सं. पुं. (फ़ा.) वितस्तिः (पुं.)।

बाली, सं. स्त्री. (सं. वालीका) कर्णालंकारभेदः।

बालुका, सं. स्त्री. (सं.) सिकता, शीतला, महा-, सूक्ष्मा।

बालू, सं. पुं. (सं.) बालुका दे.।

—शाही, सं. स्त्री., मधुमण्ठः ।
बाल्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'बचपन' ।
बावजूद, क्रि. वि. (फ़ा.) एवं सत्यपि, इति स्थितेऽपि ।
बावन, वि. [सं. द्वापंचाशत् (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (५२) च ।
—वाँ, वि., द्वि (द्वा) पंचाशत्तमः. मी-मम् ।
बावरची, सं. पुं. (फ़ा.) सूदः, पाचकः ।
बावला, वि. (सं. वातुल) विक्षिप्त, उन्मत्त २. मूर्ख ।
बावली, सं. स्त्री. (सं. वापी) वापिका, सोपानकूपः ।
बाशिंदा, सं. पुं. (फ़ा.) नि,-वासिन्, वास्तव्यः ।
बास, सं. स्त्री. (सं. वासः) सुगन्धः, सुवासः, परिमलः, सौरभं २. दुर्गंधः, पूतिगंधः ।
बासठ, वि. [सं. द्विषष्टिः (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं. उक्ता संख्या, तदंकौ (६२) च ।
—वाँ, वि., द्वि(द्वा)षष्टितमः-मी-मं, द्वि(द्वा)षष्टः-ष्टी-ष्टम् ।
बासन, सं. पुं. (सं. वासनम्) दे. 'बरतन' ।
बासमती, स. पुं. (सं. वासमती>) वासवद्व्रीहिः ।
बासी, वि. (सं. वासिन्) निवासिन्, वास्तव्य २. शुष्क, म्लान, पर्युषित, व्युष्ट ।
बाहर, क्रि. वि. (सं. वहिस्) बाह्यतः, बहिर्भवनम् ।
बाहरी, वि. (हिं. बाहर) बाह्य, बहिःस्थ, बहिर्भव, बहिर्वर्तिन्, बहिस् ।
बाहु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) दे. 'बाँह' ।
बाहुल्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'बहुतायत' ।
बिंदी, सं. स्त्री. (सं. बिन्दुः) शून्यं, खम् २. अंकः, चिह्नम् ३. तिलकः-कं, चित्रकम् ।
बिंदु, सं. पुं. (सं.) कणः, लवः, पृषतः २. दे. 'बिंदी' १-२. ३. भ्रूमध्यम् ।
बिंब, सं. पुं. (सं. पुं. न.) प्रतिच्छाया, प्रति,-बिंबं-कृतिः (स्त्री.) २. सूर्य-चन्द्र,-मण्डलं ३. बिंबफलम् ।
बिकना, क्रि. अ. (सं. विक्रयणं>) विक्री (कर्म.) ।
बिकवाना, क्रि. प्रे. (हिं. बिकना) विक्री (प्रे., विक्रापयति) ।
बिकाऊ, वि. (हिं. बिकना) विक्रेय, पण्य, विक्रयणीय ।
बिक्री, सं. स्त्री. (सं. विक्री) पणनं, विक्रयः, विक्रयणम् ।
बिखरना, क्रि. अ. (सं. विकिरणम्) विप्रकॄ (कर्म.) २. प्रसृ (भ्वा. प. अ.) ।
बिखरा(खेर)ना, क्रि. स. (सं. विकिरणम्) अव-वि-,कॄ (तु. प. से.), आस्तॄ (क्र्. प. से.), विक्षिप् (तु. प. अ.) । सं. पुं. भाव, अव-वि,-किरणं, विक्षेपः, आस्तरणम् ।
बिगड़ना, क्रि. अ. (सं. विकरणम्) विकृ (कर्म.), दुष् (दि. प. अ.), क्षि (कर्म.), दुर्दशां प्राप् (स्वा. प. अ.) २. उन्मार्गं गम्, सुपथभ्रष्ट (वि.) भू ३. कुप् (दि. प. से.) ४. दुर्दान्त (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।
बिगड़ा हुआ, वि., विकृत, दूपित, क्षीण, २. दुर्ललित ३. दुर्दान्त ।
बिगाड़ना, क्रि. स. (हिं. बिगड़ना) दुष् (प्रे.) आविलयति-मलिनयति-कलुषयति (ना. धा.) २. सन्मार्गात् भ्रंश् (प्रे.) ३. अत्यन्तं लल् (चु.) ।
बिगुल, सं. पुं. (अं.) काहलः-लं-ला ।
बिचकाना, क्रि. अ. (अनु.) मुखं विरूप् (चु.) आननं वक्रीकृ ।
बिचला, वि. (हिं. बीच) मध्यम, मध्यवर्तिन् ।
बिचवई, सं. पुं. (हिं. बीच) प्रमाणपुरुपः, निर्णेतृ, मध्यस्थ, मध्य,-वर्तिन्-स्थायिन्, सन्धायक । सं. स्त्री., मध्यस्थता, माध्यस्थ्यम्, निर्णायकत्वम् ।
बिच्छू, सं. पुं. (सं. वृश्चिकः) आलिः,-आलिन्, द्रुणः ।
बिछ(छु)ड़ना, क्रि. अ. (सं. विच्छुट्>)वियुज्-विरह् (कर्म.), विघट् (भ्वा. आ. से.), विश्लिष् (दि. प. अ.), पृथक् भू । सं. पुं., दे. 'बिछोड़ा' ।
बिछाना, क्रि. स. (सं. विस्तरणम्) आ-वि,-स्तॄ (क्र. उ. से.), आ-वि,-तन् (त. उ. से.), प्रसृ (प्रे.) । सं. पुं., आ-वि,-स्तारः, प्रसारः, प्रसारणम् ।
बिछावन, सं. पुं., दे. 'बिछौना' ।
बिछिया, सं. स्त्री. (हिं. बिच्छू) पादांगुलीभूषणम् ।
बिछुआ (-वा), सं. पुं. (हिं. बिच्छू) दे. 'बिछिया' २. कट्टारभेदः ।

बिछोड़ा, सं. पुं. (हिं. बिछुड़ना) विरहः, वियोगः, विश्लेषः ।

बिछौना, सं. पुं. (हिं. बिछाना) आस्तरः-रणम्, शय्योपकरणम् ।

बिजली, सं. स्त्री. (सं. विद्युत्) तडित् (स्त्री.), सौदामिनी, शंपा, क्षणप्रभा, चपला, चंचला ।

बिज्जू, सं. पुं. (देश.) बिडालाकारो वन्य-जन्तुः ।

बिडाल, सं. पुं. (सं. बिडालः) मार्जारः, ओतुः, आखुभुज् ।

बिताना, क्रि. स. (सं. व्यत्ययनम्) कालं अतिवह्-या-गम्-क्षै (सब प्रे.) ।

बिनती, सं. स्त्री. (सं विनतिः) प्रार्थना, निवेदनं, अभ्यर्थना, याचना ।

—करना, क्रि. अ., अभ्यर्थ्-प्रार्थ् (चु. आ. से.), याच् (भ्वा. आ. से.) ।

बिना, अव्य. (सं. विना) अंतरा, अंतरेण, ऋते, वर्जयित्वा, विहाय (सब अव्य.) ।

बिनौला, सं. पुं. (देश.) कार्पास-तूल,-बीजम् ।

बिरद, सं. पुं. (सं. विरुदः-दम्) यशो-कीर्ति, गीतम् ।

बिल[१], सं. पुं. (सं. बिलम्) विवरं, छिद्रम्, रन्ध्रं, कुहरं, सुषिरं, श्वभ्रं, रोकम् ।

बिल[२], सं. पुं. (अं.) प्राप्यकम् २. विधेयकम् ।

बिलकुल, क्रि. वि. (अ.) सर्वथा, पूर्णतया, कात्स्न्येंन ।

बिलखना, क्रि. अ. (सं. विलक्ष्>) विलप् (भ्वा. प. से.), करुणं उच्चैर्वा रुद् (अ. प. से.) ।

बिलटी, सं. स्त्री. (अं. बिलेट) प्रहितवस्तु, पत्रम् ।

बिलबिलाना, क्रि. अ. (अनु. बिलबिल) रुद् (अ. प. से.) २. क्षुभ् (दि. प. से.) ३. (कीटादि) विसृप् (भ्वा. प. अ.) ।

बिला, अव्य. (अ.) विना, ऋते ।

बिलोना, क्रि. स. (स. विलोडनम्) विलुड् (प्रे.), मन्थ् (भ्वा. प. से.), खज् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., मन्थनं, विलोडनं, खजनम् ।

बिल्ला, सं. पुं. (सं. बिडालः) मार्जारः, ओतुः, वृषदंशः-शकः, मण्डलिन्, आखुभुज्, गात्र-संकोचिन् । (बिल्ली=बिडाली, मार्जारी) ।

बिल्लौर, सं. पुं. (फ़ा. बिल्लूर) स्फटिकः, सितोपलः, सितमणिः, स्फटिकाश्मन् ।

बिल्लौरी, वि. (हिं. बिल्लौर) स्फाटिक, स्फटिकमय २. स्फटिकस्वच्छ ।

बिसात, सं. स्त्री. (अ.) सामर्थ्यं, शक्तिः (स्त्री.) २. विभवः, वित्तम् ३. चतुरंगक्रीडापटः ।

बिसाती, सं. पुं. (अ.) वैवधिकः, भाण्डवाहः, क्षुद्रवणिज् ।

बिस्तर, सं. पुं. (फ़ा., मिं. सं. विष्टरः>) आस्तरः-रणं, *विस्तरः ।

—बंद, सं. पुं., *विस्तरबन्धः ।

बिस्वा, सं. पुं. (हिं. बीसवाँ) विंशतितमोंऽशः ।

बींधना, क्रि. स. (सं. वेधनम्) विध् (तु. प. से.), व्यध् (दि. प. अ.), छिद्रयति (ना. धा.) ।

बीघा, सं. पुं. (सं. विग्रहः) ३०२५ गजात्मको भूमानभेदः ।

बीच, सं. पुं. (सं. विच्>) मध्यः, मध्यं, मध्यभागः, गर्भः २. अन्तरं, भेदः । क्रि. वि., अन्तरे, अन्तः, मध्ये, अभ्यंतरे ।

बीज, सं. पुं. (सं. न.) बीजकम्, रोहिः, इरुः । २. वीर्यं, रेतस् (न.) ३. मूलं, आदिः ४. कारणं, हेतुः ५. अव्यक्तसंज्ञासूचकं चिह्नम् ।

बीजक, सं. पुं. (सं. न.) पण्यसूची २. सूचीचिः (स्त्री.) ३. कबीरग्रंथसंग्रहः ।

बीजना, क्रि. स., दे. 'बोना' ।

बीट-ठ, सं. स्त्री. (सं. विष्) खग,-विष्ठा-मलं-पुरीषं-अवस्करः-उच्चारः ।

बीड़ा, सं. पुं. (सं. वीटी) वीटिः (स्त्री.), वीटिका २. कार्य-, भारः ।

—उठाना, मु., उत्तरदायित्वं स्वीकृ, धुरं वह् (भ्वा. उ. अ.) ।

बीड़ी, सं. स्त्री. (सं. वीटी>) वीटिका २. पत्रवेष्टिततमाखुवर्ती-र्तिः (स्त्री.), वीटी ३. लघु-कूर्चः-पोटलिका ४. दे. 'मिस्सी' ।

बीतना, क्रि. अ. (सं. व्यतीत>) (कालः) व्यती (अ. प. अ.), अतिवह् (भ्वा. अ. प.), या (अ. प. अ.) ।

बीती, सं. स्त्री. (हिं. बीतना) अतीत-व्यतीत-, वार्ता-घटना २. वृत्तान्तः, उदन्तः ।

बीन, सं. स्त्री. (सं. वीणा) तंत्री, वल्लकी ।

बीबी, सं. स्त्री. (फ़ा.) धर्मपत्नी २. कुलवधूः (स्त्री.) ३. कुमारी ४. भगिनी ।

बीभत्स, वि. (सं.) घृणावह, कुत्सित २. क्रूर ३. पापिन् ४. भयावह ।

बीभत्सा, सं. स्त्री. (सं.) जुगुप्सा, घृणा ।

बीम[१], सं. पुं. (अं.) दे. 'शहतीर' ।

बीम[२], (फ़ा.) भयम् , संकटम् ।

बीमा, सं. पुं. (फ़ा. बीम=भय>) संभाव्य-हानेः रक्षणम् २. संभाव्यहानिपूरकं शुल्कम् ।

बीमार, वि. (फ़ा.) रोगिन्, रुग्ण ।

बीमारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) रोगः, व्याधिः ।

बीस, वि. [सं. विंशतिः (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (२०) च ।

—वाँ, वि., विंशतितमः-मी-मं, विंशः-शी-शम् ।

बीहड़, वि. (सं. विकट) निबिड, दुर्गम २. विषम, नतोन्नत ।

बुंदा, सं. पुं. (सं. बिन्दुः>) कर्णाभरणभेदः, लोलकम् ।

बुकचा, सं. पुं. (तु.-चः) पोट्टली-लिका, कूर्चः-र्चम् , भारः ।

बुकनी, सं. स्त्री. (हिं. बूकना=पीसना) चूर्णं, क्षोदः ।

बुख़ार, सं. पुं. (अ.) ज्वरः, तापः ।

—पुराना, सं. पुं., जीर्णज्वरः ।

बुज़दिल, वि. (फ़ा.) भीरु, त्रस्तु, कातर, निस्साहस ।

बुज़ुर्ग, वि. (फ़ा.) वृद्ध, स्थविर । सं. पुं., पूर्वजः, वंशकरः, गुरुः ।

बुझना, क्रि. अ. (देश.) शम् (दि. प. से.), निर्वापित (वि.) भू २. शीती भू ३. उत्साहो नश् (दि. प. वे.) ।

बुझाना, क्रि. स. (हिं. बुझना) निर्वा (प्रे.), ज्वालां शम् (प्रे.) २. शीती कृ. ३. उत्साहं नश् (प्रे.) । सं. पुं., निर्वापः- अग्निशमनम् ।

बुझारत, सं. स्त्री. (हिं. बूझना) प्रहेलिका, कूटप्रश्नः ।

बुड़बुड़ाना, क्रि. अ. (अनु.) जल्प् (भ्वा. प. से.) ।

बुड्ढा, वि. पुं. (सं. वृद्धः) दे. 'बूढ़ा' ।

बुढापा, सं. पुं. (हिं. बूढ़ा) वार्द्धकं-क्यं, जरा, ज्यानिः (स्त्री.), स्थाविरम ।

बुत, सं. पुं. (फ़ा.) मूर्तिः, प्रतिकृतिः (स्त्री.), प्रतिमा ।

—परस्त, वि., मूर्ति-प्रतिमा,-पूजक ।

बुद्बुद, सं. पुं., दे. 'बुलबुला' । (सं. बुद्बुदः) सं. पुं. (अनु.), फेनः, जलविकारः (वर्तुलाकारः), अम्बुस्फोटः । २. गर्भस्थावयवविशेषः ।

बुद्ध, वि. (सं.) ज्ञानवत्, ज्ञा नन् २. बुद्धदेवः, सुगतः, सर्वार्थसिद्धः, मुनीन्द्रः ।

बुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) धीः-मतिः (स्त्री.), पण्डा, प्रज्ञा, मनीषा-षिका, धिषणा, बुधा, मेधा ।

—मान्, वि. (सं.-मत्) धीमत्, प्राज्ञ, बुध, मनीषिन्, पंडित, मेधाविन्, विचक्षण, विदग्ध, विवेकिन्, चतुर ।

बुध, सं. पुं. (सं.) बुधवासरः २. चन्द्रसुतः, चतुर्थग्रहः ३. ज्ञानिन्, पंडितः ४. देवः ।

बुनना, क्रि. स. (सं. वयनम्) वे-वप् (भ्वा. उ. अ.) । सं. पुं. भाव, वपनं, वयनं, वस्त्रनिर्माणम् ।

बुनने योग्य, वि., वयनार्ह, वपनीय, वातव्य ।

—वाला, सं. पुं., तन्तुवायः, तंत्रवापः, कुविंदः, पटकारः ।

बुना हुआ, वि., उप्त, उत ।

बुनियाद, सं. स्त्री. (फ़ा.) वास्तुः, वास्तु (न.), गृहमूलं, पोटः, भित्तिमूलम् २. यथार्थता ।

बुरका, सं. पुं. (अ.) आवरकम् ।

बुरा, वि. (सं. विरूप>) दूषित, दुष्ट, निकृष्ट, मंद, २. दुर्गुण, अशुभ ३. गर्ह्य, कुत्सित ४. खल, दुर्वृत्त ।

बुराई, सं. स्त्री. (हिं. बुरा) दुष्टता, नीचता, निकृष्टता, दुर्वृत्तं, खलत्वम् ।

बुरादा, सं. पुं. (फ़ा.) काष्ठचूर्णं, दारुक्षोदः ।

बुरुश, सं. पुं. (अं. ब्रश) आघर्षणी, लोममयी मार्जनी २. तूलिका, वर्तिका ।

बुर्ज, सं. पुं (अ.) प्राचीर,-शिखरं-शृङ्गम् ।

बुलबुल, सं. स्त्री. (फ़ा.) प्रियगीतः, बुल्बुलः, खगभेदः ।

बुलबुला, सं. पुं. (सं. बुद्बुदः>) जल-विकारः, फेनः दे. बुद्बुदा ।

बुलाना, क्रि. स. (देश.) आकृ (प्रे.), आह्वे (भ्वा. प. अ.), आ नि-मंत्र् (चु. आ. से.), शब्द (चु.) । सं. पुं. भाव, आकारणं, आह्वानं, आ-नि,-मंत्रणम् ।

बुलावा, सं. पुं. (हिं. बुलाना) दे. 'बुलाना' सं. पुं. ।

बुलेटिन, सं. स्त्री. (अं.) रोगिवृत्तपत्रिका, २. राजकीय-आधिकारिक,-विज्ञप्तिः (स्त्री.) ।

बुप, बुस, सं. पुं. (सं. बुषम्) बुसम्, तुषः-सः २ शुष्कगो,-मयं-मलं-पुरीषं-विष्ठा ।

बुहारना, क्रि. स. (सं. बहुकरी>) संमृज् (अ. प. वे.), शुध् (प्रे०) ।

बुहारी, सं. स्त्री. (हिं. बुहारना) शोधनी, दे. 'बहुकर' ।

बूँद, सं. स्त्री. (सं. विंदुः) कणः, लवः, पृषतः, पृषत् (न.), विप्रुष् (स्त्री.); द्रप्सः ।

बूँदा-बाँदी, सं. स्त्री. (हिं. बूँद+अनु.) मन्द-वृष्टिः (स्त्री.) शीकरवर्षः ।

बूँदी, सं. स्त्री. (हिं. बूँद) बिन्दवः (पुं. बहु.), मिष्टान्नभेदः २. वृष्टिजलबिन्दुः ।

बू, सं. स्त्री. (फ़ा.) गंधः, वासः २. दुर्गन्धः ।

—उड़ना वा फलना, मु., कुख्यात-अपख्यात (वि.) भू ।

बूआ, सं. स्त्री. (देश.) पितृष्वसृ (स्त्री.), पितृभगिनी २. अग्रजा ।

बूचड़, सं. पुं. (अं. बुचर) शौ(सौ)निकः, मांसिकः, खट्टिकः, कौटिकः ।

—खाना, सं. पुं., सूना, शूना ।

बूझ, सं. स्त्री. (सं. बुद्धिः) बोधः, ज्ञानं, विवेकः २. प्रहेलिका ।

बूझना, क्रि. अ. (हिं. बूझ) ज्ञा (क्.उ.अ.), बुध् (भ्वा. उ. से.) २. प्रच्छ् (तु. प. अ.) ।

बूट, सं. पुं. (अं.) उपानह् (स्त्री.), पत्रद्घ्नी ।

बूटा, सं. पुं. (सं. विटपः) वृक्षकः, बालवृक्षः, लता, ओषधिः (स्त्री.) २. वंशः, वंशपरंपरा ।

बूटी, सं. स्त्री. (हिं. बूटा) ओषधिः (स्त्री.), काष्ठौषधम् २.भंगा ३.वस्त्रस्था पत्रपुष्परचना ।

बूड़ना, क्रि. अ., दे. 'डूबना' ।

बूढ़ा, सं. पुं. (सं. वृद्धः) जरठः, स्थविरः, पलितः, जरितः । वि., जरठ-ण,जरित-न, जीन, जीर्ण, वयस्क, प्रवयस्, वृद्ध, स्थविर, पलित ।

—होना, क्रि. अ., जॄ (दिं. क्. प. से.), ज्या (क्र् प. अ.), परिणम् (भ्वा. प. अ.), वृद्ध (वि.) भू ।

—पन, सं. पुं., जरा, परिणतिः-ज्यानिः-जीर्णिः (स्त्री.), वार्धक-क्यं, वृद्धावस्था ।

बूढ़ी, सं. स्त्री. (हिं. बूढ़ा) वृद्धा, जरती, स्थविरा, पलिता, पलिक्नी । वि., ब. 'बूढ़ा' वि. के. स्त्री. रूप ।

बूता, सं. पुं. (सं. वित्तं>) बलं, शक्तिः (स्त्री.) ।

बूरा, सं. पुं. (हिं. भूरा) शर्करा २. सुपिष्टा, शुभ्रा ३. चूर्णं, क्षोदः ४. काष्ठचूर्णम् ।

बृहत्, वि. (सं.) विशाल, महत् २. दृढ, बलवत् ३. पर्याप्त ४. उच्च (स्वरादि) ।

बृहस्पति, सं. पुं. (सं.) देवताविशेषः, सुरगुरुः, गुरुः, वाचस्पतिः, वागीशः (दृ. त.) २. सौर-मंडलस्य पंचमो ग्रहः ।

—वार, सं. पुं. (सं.) गुरु,-वारः-वासरः ।

बेंच, सं. स्त्री. (अं.) (काष्ठादिनिर्मितं) *उच्चा-सनं, २. धर्म-व्यवहार,-आसनं ३. आधिकर-णिकाः-धर्माध्यक्षाः (पुं. बहु.) ।

बेंत, सं. पुं. (सं. वेत्रः) वेतसः, वानीरः,वंजुलः, नीरप्रियः, अभ्रपुष्पः । २. वेत्र-वेतस्,-दंडः-यष्टिः (स्त्री.) ।

बेंदी, सं. स्त्री. (सं. बिंदुः) वर्तुलचिह्नं २. तिलकः-कं ३. शून्यं, खम् ।

बे,[1] अव्य. (सं. हे) अरे, रे, अयि ।

बे,[2] अव्य. (फ़ा., मि. सं. वि.) अ-, अन्-, वि-, निर्-, रहित,-वर्जित,-व्यतिरिक्त,-वंचित ।

—अक़ल, वि. (फ़ा.+अ.) निर्बुद्धि, मूर्ख ।

—अक़ली, सं. स्त्री., निर्बुद्धिता, मौर्ख्यम् ।

—अदब, वि. (फ़ा.+अ.) अविनीत, धृष्ट ।

—अदबी, सं. स्त्री., धृष्टता, वैयात्यम् ।

—आबरू, वि. (फ़ा.) निराकृत- अवधीरित, संमानरहित ।

—आबरूई, सं. स्त्री., अवधीरणा, अवज्ञा, अपमानः ।

—इंतिहा, सं. पुं. (फ़ा.+अ.) अनंत, असीम ।

—इन्साफ़, वि. (फ़ा.+अ.) अन्यायिन्, अधर्मिन् ।

—इन्साफ़ी, सं. स्त्री., अन्यायः, अधर्मः ।

—इज़्ज़त, वि. (फ़ा.+अ.) दे. 'बेआबरू' ।

—इज़्ज़ती, सं. स्त्री., दे. 'बेआबरूई' ।

—इल्म, वि. (फ़ा.+अ.) अविद्य, निरक्षर ।

—ईमान, वि. (फ़ा.+अ.) कुटिल, जिह्म, धर्म-न्याय,-विमुख, कपटिन्, वंचक, शठ ।

—ईमानी, सं. स्त्री., कुटिलता, वंचना, अधर्म ।

—औलाद, वि. (फ़ा.+अ.) निरपत्य, निस्संतान ।

—क़दर, वि. (फ़ा.) दे. 'बेआबरू' ।

—क़दरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'बेआबरूई' ।

—क़रार, वि. (फ़ा.) अशांत, विकल, व्याकुल ।

—क़रारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) अशांतिः (स्त्री.), व्याकुलता ।

—कल, वि., आकुल, व्याकुल, अशान्त ।
—कली, सं. स्त्री., आ-व्या,-कुलता, अशान्तिः (स्त्री.), क्षुब्धता ।
—कस, वि. (फ़ा.) निस्सहाय २. दरिद्र ३. अनाथ, मातृपितृहीन ।
—कसी, सं. स्त्री., दैन्यम्, विवशता, दीनता ।
—कानूनी, वि., अवैध, विधि-नियम,-विरुद्ध-विपरीत ।
—क़ाबू, वि. (फ़ा.+अ.) संयमशून्य, विवश २. अदम्य, अवश्य ।
—काम, वि. (फ़ा.+हिं.) वृत्तिहीन, व्यवसाय-शून्य २. व्यर्थ, निरर्थक ।
—क़ायदा, वि. (फ़ा.+अ.) नियमविरुद्ध, अवैध, अनियमित ।
—कार, वि. (फ़ा.) दे. 'बेकाम' (१-२) । क्रि. वि., व्यर्थं, निष्प्रयोजनम् ।
—कारी, सं.स्त्री.,नियोगाभावः, वृत्तिराहित्यम् ।
—क़ुसूर, वि. (फ़ा.+अ.) निरपराध, निर्दोष ।
—खटके, क्रि. वि. (फ़ा.+हिं.) निःसंकोचं, निःशंकं, निर्भयम् ।
—ख़बर, वि. (फ़ा.) अज्ञ, अपरिचित २. मूर्च्छित, निःसंज्ञ ।
—ख़बरी, सं. स्त्री., अज्ञता, प्रमादः २. मूर्च्छा, मोहः, संज्ञालोपः ।
—ख़ौफ़, वि. (फ़ा.) निर्भय, त्रासहीन ।
—ग़रज़, वि. (फ़ा.+अ.) निरपेक्ष, निश्चिंत ।
—गुनाह, वि. (फ़ा.) निष्पाप २. निरपराध ।
—चैन, वि. (फ़ा.) विकल, अशांत २. विनिद्र ।
—चैनी, सं. स्त्री., व्याकुलता २. विनिद्रता ।
—छंद, सं. पुं. (हिं.+सं. छंदस्) अंत्यानुप्रासहीनं छन्दस् (न.), अमिताक्षरं वृत्तम् ।
—ज़बान, वि. (फ़ा.) अवाच्, मूक २. दीन ।
—ज़ा, वि. (फ़ा.) अनुचित, असंगत २. कुत्सित, गर्ह्य ।
—ज़ान, वि. (फ़ा.) निष्प्राण, मृत २. निर्बल, अशक्त ।
—ज़ाब्ता, वि. (फ़ा.+अ.) अवैध, अनैयमिक ।
—जोड़, वि. (फ़ा.+हिं.) अनुपम २. अखंड ।
—ठिकाने, वि. (फ़ा.+हिं.) स्थान,-च्युत-भ्रष्ट, २. निरर्थक ३. असंगत ।
—डौल, वि. (फ़ा.+हिं.) कुरूप, कदाकार ।
—ढंगा, वि. (फ़ा.+हिं.) अनाचारिन्, दुर्वृत्त २. कुरूप ३. अक्रम, कुव्यवस्थित ।
—ढब, वि. (फ़ा.+हिं.) कदाचार, कुशील, २. कुदर्शन, कुरूप ।
—तकल्लुफ़, वि. (फ़ा.+अ.) उपचारोपेक्षक, निराडंबर २. ऋजु, सरल ।
—तकल्लुफ़ी, सं. स्त्री., उपचारोपेक्षा, आडंबर-हीनता २. आर्जवं, सरलता ।
—तमीज़, वि. (फ़ा. अ.) अशिष्ट, असभ्य, उद्धृत, वियात ।
—तरह, क्रि. वि. (फ़ा.+अ.) अनुचितं, अस्थाने, असम्यक् २. असाधारण-विलक्षण,-रूपेण । वि., अत्यधिक ।
—तरीक़ा, वि. (फ़ा+अ.) अनुचित, अनैयमिक । क्रि. वि., अनुचितम् ।
—तहाशा, क्रि. वि. (फ़ा.+अ.) अति,-जवेन-वेगेन-शीघ्रतयां २. ससंभ्रमं ३. अविचार्य्य, अविमृश्य ।
—ताब, वि. (फ़ा.) दुर्बल २. विकल ।
—ताबी, सं. स्त्री. (फ़ा.) निर्बलता २. व्याकुलता ।
—तार, वि. (फ़ा.+सं.) वितार, तंतुहीन ।
—तार का तार, सं. पुं., *वितारतारः, वितारो विद्युत्संदेशः ।
—तुका, वि. (फ़ा.+हिं.) विषमस्वर, सामंजस्यहीन २. दे. 'बेढब' ।
—दख़ल, वि. (फ़ा.) निष्कासित, निरस्त, अपास्त, अधिकारभ्रष्ट ।
—दख़ली, सं. स्त्री. (फ़ा.) निष्कासनं, अपासनं अधिकारभ्रंशः ।
—दम, वि. (फ़ा.) मृत, निष्प्राण २. मृतप्राय, मरणासन्न ।
—दर्द, वि. (फ़ा.) निर्दय, निष्करुण ।
—दाग़, वि. (फ़ा.) निष्कलंक, शुद्धाचार २. निर्दोष, निरपराध ३. स्वच्छ ।
—धड़क, क्रि. वि. (फ़ा.+हिं.) निःसंकोचं २. निर्भयं ३. अविमृश्य । वि., निःसंकोच, निर्भय, अविमृश्यकारिन् ।
—नज़ीर, वि. (फ़ा.+अ.) अनुपम, अद्वितीय ।
—नसीब, वि. (फ़ा.+अ.) मंद-हत,-भाग्य ।
—परदा, वि. (फ़ा.) अनावृत, निरावरण २. नग्न ।
—परवाह, वि. (फ़ा.) निश्चिंत, वीतचिंत । २. स्वेच्छाचारिन् ३. उदार ।

—परवाही, सं. स्त्री., निश्चिंतता २. स्वेच्छाचारः ३. औदार्यम् ।
—पीर, वि. (फ़ा.+हिं.) निर्दय, अकरुण २. सहानुभूतिशून्य ।
—फ़ायदा, वि. (फ़ा.) निष्फल, निरर्थक । क्रि. वि., मोघं, निष्फलम् ।
फ़िक्र, वि. (फ़ा.) दे. 'बेपरवाह' ।
—फ़िक्री, सं. स्त्री., दे. 'बेपरवाही' ।
—बस, वि. (सं. विवश) अशक्त, अवश, निरधिकार २. परवश, पराधीन ।
—बसी, सं. स्त्री. (हिं.) विवशता, अवशता, २. परवशता ।
—बहरा, वि., भाग्यहीन २. विद्याहीन ।
—बाक, वि. निर्भय, धृष्ट ।
—बाक़, वि. (फ़ा.) निस्तारित, शोधित ।
—बुनियाद, वि. (फ़ा.) निर्मूल, निराधार ।
—भाव, वि. (फ़ा.+हिं.) असंख्यात, अगणित ।
—भाव की पड़ना, मु., भृशं ताड् (कर्म.) ।
—मज़ा, वि. (फ़ा.) नीरस, विरस, निस्स्वाद ।
—मतलब, अ०, निष्प्रयोजनम्, व्यर्थम् ।
—मानी, वि. (फ़ा.+अ.) निरर्थक ।
—मुरव्वत, वि. (फ़ा.) निःसंकोच, अविनीत, अदक्षिण, कुशील ।
—मेल, वि. असंगत, विषम ।
—मौक़ा, वि. (फ़ा.) असामयिक, असमयोचित ।
—रहम, वि. (फ़ा.+अ.) निष्ठुर, निर्दय ।
—रहमी, वि. निर्दयता, निष्ठुरता ।
—रोक, } क्रि. वि. (फ़ा.+हिं.) निष्प्रति-
—रोक-टोक, } बंधं, निर्विघ्नं, निर्व्याघातम् ।
—रोज़गार, वि. (फ़ा.) दे. 'बेकार' ।
—रोज़गारी, सं. स्त्री., दे. 'बेकारी' ।
—रौनक, वि. (फ़ा.) शोभाहीन, निःश्रीक २. निष्प्रभ, कांतिहीन ।
—लाग, वि. (फ़ा.+हिं.) निःसंग, निर्मोह २. निष्कपट, निर्व्याज ।
—वफ़ा, वि. (फ़ा.+अ.) विश्वास,-घातक-घातिन्, भक्तिहीन २. दुःशील ३. कृतघ्न ।
—वफ़ाई, सं. स्त्री. (फ़ा.) विश्वासघातः २. दुःशीलता ३. कृतघ्नता ।
—शऊर, वि. (फ़ा.+अ.) दे. 'बेतमीज़' ।
—शक, क्रि. वि. (फ़ा.+अ.) अवश्यं, निःसंदेहम् ।
—शरम, वि. (फ़ा.-शर्म) निर्लज्ज, अपत्रप ।
—शरमी, सं. स्त्री., निर्लज्जता, निर्व्रीडता ।
—शुमार, वि. (फ़ा.) अगणित, असंख्य ।
—सब्र, वि. (फ़ा.+अ. सब्र) अधीर २. असंतुष्ट ।
—सबरी, सं. स्त्री., धैर्यलोपः २. संतोषाभावः ।
—सरो सामान, वि. (फ़ा.) निष्परिच्छद, दरिद्र, अकिञ्चन ।
—सुध, वि. (फ़ा+हिं.) मूर्च्छित, नष्टसंज्ञ, निस्संज्ञ २. अज्ञ, जड ।
—सुधी, सं. स्त्री., मूर्च्छा २. जडता ।
—सुर,—सुरा, वि. (सं. विस्वर) विषमस्वर २. दुःश्राव्य, कटुस्वर ३. दे. 'बेमौका' ।
—स्वाद, वि. (सं. विस्वाद) दे. 'बेमज़ा' ।
—हद, वि. (फ़ा.) असीम, निस्सीम, अपरिमित २. अत्यधिक ।
—हया, वि. (फ़ा.) दे. 'बेशरम' ।
—हयाई, सं, स्त्री., दे. 'बेशरमी' ।
—हाल, वि. (फ़ा.+अ.) विकल २. दुर्गत ।
—हाली, सं. स्त्री., विकलता २. दुर्गतिः (स्त्री.) दारिद्र्यम् ।
—हिसाब, क्रि. वि. (फ़ा.+अ.) अत्यधिकं, अपरिमितम् । वि., अत्यंत, अगणनीय ।
—होश, वि. (फ़ा.) दे. 'बेसुध' ।
—होशी, सं. स्त्री., दे. 'बेसुधी' ।
बेकल, वि. (सं. विकल) अशांत, विह्वल, दे. 'व्याकुल' ।
बेकली, सं, स्त्री, (हिं. बेकल) अशांतिः अनिर्वृतिः (स्त्री.) दे. 'व्याकुलता' ।
बेकिंग पाउडर, सं. पुं. (अं.) मर्जनक्षोदः ।
बेक्टीरिया, सं. पुं. (अं.) कीटाणवः (पुं. बहु.) ।
बेगम, सं. स्त्री. (तु.) राज्ञी, राजपत्नी २. राज्ञीचित्रांकितक्रीडापत्रभेदः ।
बेगाना, वि. (फ़ा.) अस्वीय, अस्वकीय, अनात्मीय, पर, अन्य २. अपरिचित, अज्ञात ।
बेगार, सं. स्त्री. (फ़ा.) विष्टिः-आजूः-आजुर् (स्त्री.) ।
—टालना, मु., अमनोयोगेन कृ; येन केन प्रकारेण विधा (जु. उ. अ.) ।

बेगारी, सं. पुं. (फ़ा.) अनिष्टोद्योगकारिन्, आजुर्-आजूः (स्त्री.)।
बेचना, क्रि. स. (सं. विक्रयणम्) विक्री (क्र्. आ. अ.), मूल्येन दा (जु. उ. अ.), विपण् (भ्वा. आ. से.)। सं. पुं., विक्रयः-यणं, मूल्येन दानं, विपणः-गनम्।
बेचने योग्य, वि., विक्रेय, विपणनीय, पण्य।
बेचने वाला, सं. पुं., विक्रेतृ, विक्रयिन्, विक्रयिकः, विपणिन्, विपणितृ।
बेचा हुआ, वि., विक्रीत, मूल्येन दत्त, विपणित।
बेचारा, वि. (फ़ा.) दीन, निरवलंब।
बेटा, सं. पुं. (सं. वंटः>) पुत्रः, आत्मजः, सूनुः।
—बेटी, सं. स्त्री., सन्तानः, संततिः (स्त्री.)।
—(टे) वाला, सं. पुं., वर,-जनकः-पितृ।
—गोद लेना, मु., पुत्री कृ, पुत्रत्वेन परिग्रह् (क्र्. प. से.), दे. 'गोद' के नीचे।
बेटी, सं. स्त्री. (हिं. बेटा) पुत्री, तनया, तनुजा, आत्मजा, दुहितृ (स्त्री.)।
—वाला, सं. पुं. कन्या-वधू-,जनकः पितृ।
—व्यवहार, सं. पुं., विवाहसम्बन्धः।
बेड़ा, सं. पुं. (सं. वेडा) तरणः, तरंडकः, भेलः २. वृहन्नौका ३. नौकागणः, पोतावली, (युद्ध-) नौनिकरः।
—डूबना, मु., विपदा नश् (दि. प. वे.)।
—पार करना, मु.,संकटात् त्रै (भ्वा. आ. अ.), विपदं हृ (भ्वा. प. अ.),।
—पार होना, मु., कष्टात् मुच् (कर्म.)।
बेड़ी,[१] सं. स्त्री. (सं. वलयः>) निगडः-डं, श्रृंखला-लम्।
—डालना, क्रि. स., निगडयति (ना. धा.); श्रृंखलैः-निगडैः बंध् (क्र्. प. अ.), निगडितं कृ।
बेड़ी,[२] सं. स्त्री. (हिं. बेडा) तरणकः, भेलकः-कं २. नौका, उडुपम्।
बेत, सं. पुं, दे. 'बेंत'।
बेताल[१], सं. पुं., दे. 'वेताल'।
बेताल[२], सं. पुं., दे. 'वैतालिक'।
बेदाना, सं. पुं. (फ़ा.) दाडिमभेदः २. निर्बीज-द्राक्षा। वि., निर्बीज, तिरछील, अछिहीन।
बेधना, क्रि. स., दे. 'बींधना'।
बेधिया, सं. पुं., दे. 'बींधनेवाला'।

बेन, सं. स्त्री. (सं. वेणुः) मुरली २. वंशः।
बेनी, सं. स्त्री., दे. 'वेणी'।
बेनु, सं. पुं. (सं. वेणुः) वंशः, तृणध्वजः॥ २. मुरली।
बेर, सं. पुं. (सं. बदरी) (वृक्ष) कर्कंधूः (स्त्री.), कर्कन्धुः, वदरिका, कोलं, घोंटा, (वदरः, वालेष्टः) २. (फल) वदरं, वदरीफलम् इ.।
बेर[१], सं. स्त्री. (सं. वारः) दे. 'वार'।
बेर[२], सं. स्त्री. (सं. वेला>) दे. 'देर'।
बेरियम, सं. पुं. (अं.) अहर्यातु (न.)।
बेरी, सं. स्त्री. (सं. वदरी) दे. 'वेर' (वृक्ष)।
बेल[१], सं. [सं. बि(वि)ल्वः] (वृक्ष) मालूरः, महा-श्री-सदा-सत्य,-फलः, शिवद्रुमः, पत्रश्रेष्ठः, मंगल्यः। (फल) बिल्वं, मालूरफलम् इ.।
—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) बिल्व-मालूर,-पत्रम्।
बेल[२], सं. स्त्री. (सं. वल्ली) लता, वल्लरी, व्रतती-तिः (स्त्री.) उलपः, गुल्मिनी, प्रतानिनी २. वंशः, संततिः (स्त्री)।
—बूटा, सं. पुं., सूची,-कर्मन्-शिल्पं, वस्त्रचित्रितं पुष्पपत्रम्।
बेलचा, सं. पुं. (फ़ा.) खनित्रं, अवदारणम्।
बेलदार, सं.पुं. (फ़ा.) भूखनकः, टंगचालकः।
बेलन, सं. पुं. (सं. वेलनं>) *बेलनम्।
बेलना, सं. पुं. (सं. वेल्लनं) वेल्लनी। क्रि. स., वेल्-वेल्ल (प्रे.), (क्लिन्न-चूर्णपिण्डं) रोटिका-रूपेण 'परिणम्' (प्रे.)।
बेला[१], सं. पुं. (सं. मल्लिका) मल्ली, षट्पद-प्रिया, वनचंद्रिका, अतिगंधा।
बेला[२], सं. पुं., दे. 'वेला'।
बेवकूफ़, वि.(फ़ा.) मूर्ख, मूढ, जड़, निर्बुद्धि।
बेवकूफ़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) मूर्खता, मूढता इ.।
बेवा, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'विधवा'।
बेशकीमत-ती, वि. (फ़ा.+अ.) बहुमूल्य, महार्घ।
बेशी, सं. स्त्री. (फ़ा.) अधिकता, आधिक्यं २. वृद्धिः (स्त्री.) ३. लाभः।
बेसन, सं. पुं. (देश.) चणचूर्णं, चणकक्षोदः।
बेसनी, वि. (हिं. बेसन) वेशन-चणचूर्ण,-मय-मिश्रित।
बेसर, सं. पुं. (सं. वेसरः) वेश्वरः, वेगसरः, अश्वतरः।
बेसर, सं. पुं., दे. 'नत्थ'।

बेहूदगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) अशिष्टता, असभ्यता।
बेहूदा, वि. (फ़ा.) अशिष्ट, असभ्य २. अशिष्टतापूर्ण।
—पन, सं. पुं., दे. 'बेहूदगी'।
बैंगन, सं. पुं. (सं. वंगनः) (पौदा) मांस-वृत्त-नील,-फला, वार्ताकी, वृंताकः-की, वंगः २. (तरकारी) वृंताकं, वंगफलम्।
बैंग(ज)नी, वि. (हिं. बैंगन) नील-,लोहित-अरुण।
बै, सं. स्त्री. (अ.) विक्रयः, विक्रयणं, मूल्येन दानम्।
बैकुण्ठ, सं. पुं. (सं. वैकुंठः) स्वर्गः, नाकः।
बैजंती, बैजयंती, सं. स्त्री., दे. 'वैजयंती'।
बैज, सं. पुं. (अं.) चिह्नं, लक्षणं, लक्ष्मन् (न.) २. दे. 'चपरास'।
बैटरी, सं. स्त्री. (अं.) विद्युद्यंत्रं २. *विद्युद्दीपिका, दे. 'टार्च' ३. दे. 'तोपखाना'।
बैठक, सं. स्त्री. (हिं. बैठना) *उपवेशकोष्ठकः, दर्शनगृहं, सभाजनकोष्ठः २. आसनं, पीठं ३. अधिवेशनं ४. उपवेशः-शनं ५. उत्थानोपवेशनात्मको व्यायामभेदः ६. संगः।
बैठकी, सं. स्त्री. (हिं. बैठक) व्यायामभेदः, *उपवेशकी २. आसनं, पीठम् ३. पादफलकप्रदीपः।
बैठना, क्रि. अ. (सं. विष्ट>) उपविश् (तु. प. अ.), निषद् (भ्वा. प. अ.), आस् (अ. आ. से.) २. खच्-अनुव्यध् (कर्म.) ३. अभ्यस्त (वि.) भू ४. अधः-अधवा तलं गम् ५. नि-,मस्ज् (तु. प. अ.) ६. संकुच् (तु. भ्वा. प. से.), मूल्येन ग्रह (कर्म.), क्री. (कर्म) ७. लक्ष्यं व्यध् (दि. प. अ.), सिध् (दि. प. अ.) ८. आ-अधि-रुह् (भ्वा. प. अ.) ९. आ-, रोप् (कर्म.), निधा (कर्म.), प्रति-,स्थाप् (कर्म.) १०. दृढं वस् (भ्वा. प. अ.) ११. (केनचित् सह) पत्नीत्वेन संवस् १२. वृत्तिक्षीण, (वि.) वृत (भ्वा. आ. से.) १३. दरिद्री भू, परिक्षि (कर्म.) १४. अप्,-सृ-गम् (भ्वा. प. अ.)। सं. पुं., उपवेशः-शनं, निषदनं, आसितं,आसनं,निषत्तिः (स्त्री.)।
बैठने योग्य, वि., उपवेशनीय, निषदनीय, आसितव्य।
बैठनेवाला, सं. पुं., उपवेशकः, उपवेष्टृ, उपवेशिन्, आसक, निषादिन्।
बैठा हुआ, वि., उपविष्ट, निषण्ण, आसीन।
बैठते-उठते, क्रि. वि., सदा, प्रतिक्षणम्।
बैठे बैठे, } क्रि. वि., निष्कारणं अहेतुकं
बैठे बैठाए, } २. अकांडे, अतर्कितम्।
बैठवाना, क्रि. प्रे., व. 'बैठना' के प्रे. रूप।
बैठाना, } क्रि. स., व. 'बैठना' के प्रे. रूप।
बैठालना, }
बैत, सं. स्त्री. (अ.) पद्यं, श्लोकः।
—बाज़ी, सं. स्त्री., पद्यपाठप्रतियोगिता २. अन्त्याक्षरी।
बैतरनी, सं. स्त्री., दे. 'वैतरणी'।
बैताल, सं. पुं., दे. 'वेताल'।
बैन, सं. पुं. (सं. वचनं*) शब्दः २. वार्ता ३. *परिदेवनपद्यम् (पंजाब)।
बैना, सं. पुं. (सं. वायनं) वायनकं, सांस्कारिकमिष्टान्नम्।
बैनामा, सं. पुं. (अ. बै+फ़ा. नामह्) विक्रयपत्रम्।
बैरंग, वि. (अं. *बेयरिंग) शुल्कापेक्षिन्, *निस्तार्य।
—लौटना, मु., विफल-अकृतकार्य (वि.) प्रत्यावृत् (भ्वा. आ. से.)।
बैर, सं. पुं., दे. 'वैर'।
बैरक, सं. पुं. (तु.) सैनिक,-ध्वजः-केतुः २. सैनिक,-आवासः-आगारः।
बैराग, सं. पुं., दे. 'वैराग्य'।
बैरागी, सं. पुं., दे. 'वैरागी'।
बैरी, सं. पुं., दे. 'वैरी'।
बैरोमीटर, सं. पुं. (अं.) वायुभारमापकम्।
बैल, सं. पुं. [सं. ब(व)लीवर्दः] बलदः, वृषः, वृषभः, उक्षन्-अनडुह्-वृषन्-ककुद्मत् (पुं.), पुंगवः, शाक्करः, सौरभेयः २. जडः, मूढः।
—गाड़ी,सं.स्त्री.,बलदशकटी,वृषभव(वा)हनम्।
छकड़े का—, सं. पुं., शाकटः, धुरंधरः, धुरीणः, धौरेयः, प्रासंग्यः।
बूढ़ा—, सं. पुं., जरद्गवः।
हल खींचनेवाला—, सं. पुं., सैरिकः, हालिकः।
बैलून, सं. पुं. (अं.) दे. 'गुब्बारा'।
बैशाख, सं. पुं., दे. 'वैशाख'।
बैसाखी[१], सं. स्त्री. (सं. वैशाखी) आर्याणां पर्वविशेषः।
बैसाखी[२], सं. स्त्री. (सं. वैशाखः>) *वैशाखी, कुक्षियष्टिः (स्त्री.)।

बोझ, सं. पुं. (सं. वोढव्यं ?) भारः, भरः, वीवधः, पर्याहारः २. गुरुत्वं, तोलः, भारः ३. दुष्करकार्यं ४. कार्यचिंता ५. कार्यभारः ६. उत्तरदायित्वम् ।

बोझ(झि)ल, वि. (हिं. बोझ) गुरु, भारवत्, भारिक, भारिन्, दुर्वह ।

बोटा, सं. पुं. (सं. वृंतं>) छिन्नस्थूलकाष्ठखंडः २, खंडः-डं, शकलः-लम् ।

बोटी, सं. स्त्री. (हिं. बोटा) मांसखंडकः-कम् ।

—बोटी काटना, मु., शरीरं खंडशः कृत् (तु. प. से.)-शकली कृ, देहं स्तोकशः खंड् (चु.) ।

बोतल, सं. स्त्री. (अं. बॉटल) काचकूपी ।

बोदा, वि. (सं. अबोध) दुर्-मंद-जड़,-मति-धी-बुद्धि, मूर्ख २. अलस, मंथर ३. निर्बल, अशक्त ४. शिथिल, श्लथ ।

बोध, सं. पुं. (सं.) उपलब्धिः प्रतिपत्तिः (स्त्री.), ज्ञानं २. धैर्यं, आश्वासनम् ।

—गम्य, वि. (सं.) ज्ञेय, बुद्धिगम्य, सुबोध, सुगम ।

बोधक, सं. पुं. (सं.) अध्यापकः, शिक्षकः । वि., ज्ञापक, व्यंजक ।

बोधन, सं. पुं. (सं. न.) अध्यापनं, शिक्षणं २. ज्ञापनं, सूचनं ३. उत्थापनं, निद्राभंजनं ४. उद्दीपनं, प्रज्वलनम् ।

बोधनीय, वि. (सं.) विज्ञापनीय २. निद्रायाः उत्थापनीय ।

बोधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) समाधिभेदः, पूर्ण-ज्ञान,-प्रकाशः-उपलब्धिः (स्त्री.) २. कुक्कुटः ।

—द्रुम, सं. पुं. (सं.) बोधि,-तरुः-वृक्षः, पावन,-पिप्पलः-चलदलः-कुंजराशनः ।

—सत्त्व, सं. पुं. (सं.) बुद्धत्वोन्मुखो महात्मन् ।

बोना, क्रि. स. (सं. वपनं) आ-नि-,वप् (भ्वा. उ. अ.), (बीजानि)विकॄ (तु. प. से.)-आरुह् (प्रे.) । सं. पुं., उप्तिः (स्त्री.), वपनं, वापः, वपः, बीज,-विकिरणं-आरोपणम् ।

बोने योग्य, वि., वपनीय, वप्तव्य, वाप्य ।

बोने वाला, सं. पुं., वपः, वापकः, वप्तृ, वापिन् ।

बोया हुआ, वि., उप्त, भूमौ विकीर्ण (बीज) ।

बोरा, सं. पुं. (सं. पुरं = दोना>) स्यूतः, स्योतः, प्रसेवः ।

बोरिक एसिड, सं. पुं. (अं.) टङ्कणाम्लः ।

बोरिया, सं. स्त्री. (हिं. बोरा) कटः, किलिं-जकः २. आस्तरः-रणं, *विष्टरः ३. दे. 'बोरी' ।

—(अथवा बोरिया बधना) उठाना, मु., गमन-प्रस्थान-उद्यत (वि.) भू ।

बोरी, सं. स्त्री. (हिं. बोरा) स्यूतकः, स्योतकः, प्रसेवकः ।

बोल, सं. पुं. (हिं. बोलना) वाणी, गिर्-वाच-उक्तिः-व्याहृतिः (स्त्री.), वचस् (न.), शब्दः, वाक्यं, वचनं २. व्यंग्य-व्याज-छेक,-उक्तिः (स्त्री.), दे. 'बोली' ३. प्रतिज्ञा ४. वाद्यानां नियतध्वनिः ५. गीतांशः ।

—चाल, सं. स्त्री., सौहार्दं, सद्भावः, आ-सं,-लापः ।

—चाल की भाषा, सं. स्त्री., सांलापिक-व्याव-हारिक,-भाषा ।

—बाला होना, मु., वाक्यं आह (कर्म.) २. भाग्यं उद्-इ (अ. प. अ.) ३. यशो वृध् (भ्वा. आ. से.) ।

बोलना, क्रि. अ. (सं. ब्रू) आलप्-गद्-भण् (भ्वा. प. से.), ब्रू (अ. उ. अ.), वच् (आ. प. अ.) २. किलकिलायति-ते (ना. धा.), कूज् (भ्वा. प. से.) ३. कथ् (चु.) ४. गै (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं., आलपनं, निगदनं,भाषणं, वचनं, गदनं कथनं, कूजनम् ।

बोलने योग्य, वि., आलपनीय, वचनीय,गेय ।

बोलने वाला, सं. पुं., वाचकः, वक्तृ, निगदितृ, कथकः, व्याख्यातृ, गायकः ।

बोला हुआ, वि., उक्त, गदित, कथित, गीत ।

बोली, सं. स्त्री. (हिं. बोलना) गिर्-वाच् (स्त्री.) गिरा, उदीरणा, वाणी २. वचनं-उक्तिः (स्त्री.), वाक्यं, शब्दः ३. विक्रय-घोषणा ४. भाषा, वाणी, गिरा ५. उप-प्राकृत-प्रादेशिक,-भाषा ६. वक्र-व्यंग्य-व्याज-छेक-भंगि,-उक्तिः (स्त्री.)-भाषितं, कूटाक्षेपः ।

—ठोली, सं. स्त्री., दे. 'बोली' (६) ।

—ठोली मारना, मु., भंग्या आक्षिप् (तु.प.अ.) वक्रोक्त्या अधिक्षिप्, व्याजोक्त्या सूच् (चु.) ।

बोवा(आ)ना, क्रि. प्रे., व. 'बोना' के प्रे. रूप ।

बोहनी, सं. स्त्री. (सं. बोधनं>)प्रथमविक्रयः ।

बौखलाना, क्रि. अ. (सं. वायुस्खलनं>) ईषत् उन्मद् (दि. प. से.)—वातुलीभू ।

बौछाड़-र, सं. स्त्री. (सं. वायुक्षरणं>) झंझा, झंझा,-अनिलः-वातः-मरुत् (पुं.) २. आसारः, धारासंपातः ३. *सततसंपातः ४. व्यंग्योक्तिः (स्त्री.), दे. 'बोली' (६) ।

बौद्ध, सं. पुं. (सं.) गौतमबुद्धानुयायिन् । वि., बुद्ध,-संबंधिन्-प्रचारित ।

—धर्म, सं. पुं. (सं.) बुद्धप्रवर्तितधर्मः, बुद्धमतम् ।

बौना, सं. पुं. (सं. वामनः) खर्वः, ह्रस्वः, खट्टनः, खट्टेरकः, न्यंच् । वि., खर्व, ह्रस्व ।

बौरा, वि. (सं. वातुल) विक्षिप्त, उन्मत्त । २. अज्ञ, मूर्ख ।

बोली, सं. स्त्री. (देश.) विकं, रुद्यःप्रसूताया गोर्दुग्धम् ।

ब्याज, सं. पुं. दे. 'सूद' ।

ब्याध, सं. पुं., दे. 'व्याध' ।

ब्याना, क्रि. स. (सं. बीजं>) जन्-उत्पद् (प्रे.), प्रसू (अ. आ. से.) ।

ब्यालू, सं. पुं. (सं. वैकालिक>) सांध्य भोजनं, *नक्ताशः । *वैकालिकम् ।

ब्याह, सं. पुं. (सं. विवाहः) उद्वाहः, परिणयः, उपयमः, पाणि,-ग्रहः-ग्राहः-ग्रहणं, दार,-परिग्रहः-अधिगमः ।

ब्याहता, वि. स्त्री. (सं. विवाहिता) ऊढा, परिणीता । सं. पुं., पतिः, भर्तृ ।

ब्याहना, क्रि. स, (सं. विवहनं) (पत्नीग्रहण) उद्-वि-वह् (भ्वा. प. अ.), परिणी (भ्वा. प. अ.), उपयम् (भ्वा. आ. अ.), परि-,प्रति-ग्रह् (क्र्. प. से.) २. (पति-ग्रहणं) पतिं विद् (तु. उ. वे.)-लभ् (भ्वा. आ. अ.)-अधिगम् (भ्वा. प. अ.), वृ (स्वा. उ. से.), भर्त्रा संयुज् (कर्म.) ३. उद्वाहं कृ (प्रे.), पाणिं ग्रह् (प्रे.), विवाहेन-संयुज् (प्रे.), पाणिग्रहणं संपद् (प्रे.)। सं. पुं., दे. 'ब्याह' सं. पुं. ।

ब्याहने योग्य, वि., उद्-वि,-वाह्य-वोढव्य, परिणेय, विवाहयोग्य ।

ब्याहने वाला, सं. पुं., वि-उद्-वोढृ, परिणेतृ, परिणायकः, पाणि-,ग्राहः-ग्राहकः-ग्रहीतृ ।

ब्याहा हुआ, वि. पुं., विवाहित, सपत्नीक, सभार्य, कृतदार, स्त्रीमत्, कुटुंबिन्, ऊढ, परिणीत । (वि. स्त्री.) सभर्तृका, पतिवत्नी, सधवा, सुवासिनी, परिणीता, ऊढा ।

ब्योंत, सं. स्त्री. (सं. व्यवस्था) वृत्तं, वृत्तांतः २. कार्य,-विधिः-प्रणाली-शैली ३. युक्तिः (स्त्री.), उपायः ४. आयोजनं, उपकल्पनं ५. अवसरः ६. व्यवस्था, प्रबंधः ७. सीवनाय वस्त्रकर्तनम् ।

ब्योंतना, क्रि. स., दे. 'कतरना' ।

ब्योपार-री, सं. पुं., दे. 'व्यापार-री' ।

ब्योरा, सं. पुं. (सं. विवरणम्) विस्तृत,-वर्णनं-वृत्तान्तः २. उदन्तः, वृत्तान्तः ३. अन्तरम्, भेदः ।

—(रे)वार, अ०, स,-विस्तरं-विस्तारम्, विस्तारपूर्वकम् ।

ब्योहार, सं. पुं., दे. 'व्यवहार' ।

ब्रज, सं. पुं., दे. 'व्रज' ।

ब्रत, सं. पुं., दे. 'व्रत' ।

ब्रह्म, सं. पुं. [सं. ब्रह्मन् (न.)] परमात्मन्, परमेश्वरः, सच्चिदानंदः, जगत्कर्तृ २. आत्मन्, देहिन् ३. ब्राह्मणः (प्रायः समासारंभ में, उ. ब्रह्महत्या) ४. चतुर्मुख, विधिः, पद्मासनः ५. वेदः ६. ब्रह्मांडं, भुवनकोषः ।

—चर्य, सं. पुं. (सं. न.) आश्रमभेदः, प्रथमाश्रमः २. वीर्यरक्षा, अष्टांगमैथुनप्रतिषेधः, यमभेदः (योग.), ऊर्ध्वरेतस्त्वम् ।

—चारिणी, सं. स्त्री. (सं.) ब्रह्मचर्यधारिणी, २. प्रथमाश्रमिणी २. अनूढा, कुमारी ।

—चारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) व्रतिन्, लिंगिन्, लिङ्गस्थः, ब्रह्मचर्यधारिन् वर्णिन् २. प्रथमाश्रमिन्, अविवाहितः ।

—ज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) परमेश्वरबोधः ।

—ज्ञानी, सं. पुं. (सं.-निन्) ब्रह्मवेत्ता २. अद्वैतवादिन् ।

—दिन, सं. पुं. (सं. न.) परमेष्ठिदिवसः, सृष्ट्यवधिः (= १०० चतुर्युगी) ।

—देश, सं. पुं. (सं.) आर्यावर्तस्य भागविशेषः (कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पंचालाः शूरसेनकाः । एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्तादनन्तरः—मनु० २।१९)

—पुराण, सं. पुं. (सं. न.) पुराणविशेषः ।

—बंधु, सं. पुं. (सं.) पतितो विप्रः ।

—भोज, सं. पुं. (सं.-ज्यं) ब्राह्मणभोजनम् ।

—मुहूर्त, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सूर्योदयात् त्रिचतुरघटीपूर्ववर्तिकालः, ब्रह्मरात्रः ।

—यज्ञ, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मसत्रं, सविधि वेदाध्ययनाध्यापनम् ।

—रंध्र, सं. पु. (सं. न.) ब्रह्म,-छिद्र-द्वारम् ।

—रात्रि, सं. स्त्री. (सं.) ब्रह्मणो निशा, प्रलयावधिः (= १०० चतुर्युगी) ।

—वर्चस, सं. पुं. (सं. न.) तपःस्वाध्यायजं तेजस् (न.) ।

—वर्चस्वी, वि. (सं.-स्विन्) ब्रह्मवर्चसविशिष्ट ।

—वादिनी, सं. स्त्री. (सं.) गायत्री । वि., वेदोपदेष्ट्री ।

—वादी, वि. (सं.-दिन्) वेदोपदेशकः ।

—विद, वि. (सं.) ब्रह्मवेत्तृ २. वेदार्थज्ञः ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) उपनिषद्-परा,-विद्या ।

—वेत्ता, सं. पुं. (सं.-वेत्तृ) ब्रह्मज्ञः ।

—वैवर्त्त, सं. पुं. (सं. न.) पुराणविशेषः ।

—समाज, सं. पुं. (सं.) श्रीराममोहनराजप्रवर्तितः संप्रदायविशेषः ।

—सूत्र, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'यज्ञोपवीत' २. शारीरिकसूत्रम् ।

—हत्या, सं. स्त्री. (सं.) विप्रवधः ।

—हत्यारा, सं. पुं. (सं.+हि.) विप्रघ्नः-ब्राह्मणघातकः ।

ब्रह्मत्व, सं. पुं. (सं. न.) परमेश्वर,-त्वं-ता २. ब्राह्मणत्वम् ।

ब्रह्मर्षि, सं. पुं. (सं.) वसिष्ठादयो मंत्रद्रष्टारः ऋषयः २. ब्राह्मणः ऋषिः ।

ब्रह्मा, सं. पुं. (सं.-ह्मन् पुं.) चतुर्मुखः, अष्टकर्णः, अजः, कः, कंजः, कमल-पद्म-अब्ज,-योनिः, वि-,धातृ, नाभिजः, पद्मासनः, परमेष्ठिन्, पितामहः, विधिः, विरिंचः-चिः-चनः, विश्वसृज्, सर्वतोमुख, स्रष्टृ, स्वयंभूः, हंसवाहनः, हिरण्यगर्भः (सब पुं.) ।

ब्रह्मांड, सं. पुं. (सं. न.) भुवनकोषः, विश्वगोलकः, विश्वं, जगत् (न.),जगती, त्रिभुवनम् ।

ब्रह्माक्षर, सं. पुं. (सं. न.) ओम् इत्यक्षरम्, प्रणवः, ओङ्कारः ।

ब्रह्माणी, सं.स्त्री. (सं.) ब्रह्मणः पत्नी, शतरूपा, सावित्री, सरस्वती, गायत्री ।

ब्रह्मानंद, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मदर्शनाह्लादः ।

ब्रह्माभ्यास, सं. पुं. (सं.) वेद,-अध्ययनं-स्वाध्यायः ।

ब्रह्मावर्त्त, सं. पुं. (सं.) तपोवटः, सरस्वती-दृपद्वत्योर्मध्यवर्तिदेशः ।

ब्रह्मासन, सं. पुं. (सं. न.) योग-ध्यान,-आसनम् ।

ब्रह्मास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) ब्रह्मस्वरूपमस्त्रं २. अमोघास्त्रभेदः ।

ब्राह्मण, सं. पुं. (सं.) आर्याणामुत्तमो वर्णः २. विप्रः, ज्येष्ठवर्णः, अग्र,-जन्मन्-जातकः । भूदेवः, द्वि,-जन्मन्-जातिः, वक्त्रजः, द्विजः, गुरुः, द्विजोत्तमः, षट्कर्मन्, ब्रह्मन् (सब पुं.) ।

ब्राह्मणत्व, सं. पुं. (सं. न.) द्विजत्वं, विप्रत्वं, ब्राह्मण्यम् इ. ।

ब्राह्मणी, सं. स्त्री. (सं.) ब्राह्मणपत्नी २. ज्येष्ठवर्णा, द्विजोत्तमा ३. बुद्धिः (स्त्री.) ।

ब्राह्ममुहूर्त्त, स. पुं. (सं. पुं. न.) अरुणोदय-कालस्य प्रथमदंडद्वयम् ।

ब्राह्मी, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा २. भारतवर्षस्य प्राचीनलिपिविशेषः ३. (बूटी) सोमवल्लरी, सुरसा, परमेष्ठिनी, ब्रह्मकन्यका, शारदा, सरस्वती ।

ब्रिटिश, वि. (अं.) आंग्ल ।

ब्रुश, सं. पुं. (अं.) आघर्षणी, लोममयी शोधनी-मार्जनी २. कूर्चिका-र्ची, तूलिका, वर्तिका ।

ब्रूरी, सं. स्त्री. (अं. ब्र्यूरी) यवासवनी ।

ब्रोंकाइटस, सं. पुं. (अं.) श्वासनालीभुजप्रदाहः ।

ब्लाक, सं. पुं. (अं.) *चित्रफलकः-कं २. चतुरस्रो भूखंडः ३. गृहवर्गः ।

ब्लीचिंग पौडर, सं. पुं. (अं.) श्वेतनक्षोदः, रंगनाशकचूर्णम् ।

ब्लैडर, सं. पुं. (अं.) मूत्राशयः, बस्तिः (पुं. स्त्री.) २. पित्ताशयः ३. (पादकन्दुकस्य) अन्तःकोषः ।

भ

भ, देवनागरीवर्णमालायाश्चतुर्विंशो व्यंजनवर्णः, भकारः ।

भंग[1], सं. स्त्री., दे. 'भांग' ।

भंग[2], सं. पुं. (सं.) भंजनं, भेदनं २. विनाशः, विध्वंसः ३. अतिक्रमणं, उल्लंघनं ४. तरंगः, कल्लोलः ५. पराजयः ६. खंडः-डं ७. बाधा, विघ्नः ८. वक्रता, जिह्मता ९. दे. 'लकवा' ।

भंगड़, वि. (हि. भांग) भंगाप, भंगापायिन् ।

भँगरा[1],सं.पुं. (सं. भृगराजः) केशयः,केशरंजनः, कुन्तलवर्द्धनः, पितृप्रियः, भृंगः, केशराजः ।

भँगरा[2], सं. पुं. (हिं. भंग) शाणपटः, वराशिः-सिः ।

भंगराज, सं. पुं. (सं. भृङ्गराजः) पिकाकारः खगभेदः २. दे. 'भंगरा'[1] ।

भंगिन, सं. स्त्री. (हिं. भंगी[1]) खलपूः (स्त्री.), सम्मार्जिका ।

भंगिमा, सं. स्त्री. (सं.-मन् पुं.) वक्रता, कुटिलता, जिह्मता, अरालता ।

भंगी,[1] सं. पुं. (सं. भक्तः>) खलपूः (पुं.), मलहारकः, संमार्जकः २. क्षुद्रजातिभेदः ।

भंगी,[2] वि. (हिं. भंग[1]) दे. 'भंगड़' ।

भंगी,[3] सं. स्त्री. (सं.) भेदः, विच्छेदः २. कुटिलता, वक्रता ३. अंगनिवेशः, विन्यासः ४. कल्लोलः, लहरी ५. व्याजः ६. प्रतिकृतिः (स्त्री.) ।

भंगी,[4] वि. (सं. भंगिन्) भिदुर, भंगुर, सुभंग, भंजनशील २. भंजक, भंजन, खंडक, खंडन ।

भंगुर, वि. (सं.) भिदुर, सुभंग २. नश्वर, अध्रुव २. कुटिल, वक्र ।

भंजक, त्रि. (सं.) खंडक, खंडन, त्रोटक २. उल्लंघक, अतिक्रमणकारिन् ।

भंजन, सं. पुं. (सं. न.) खंडनं, त्रोटनं, भेदनं, शकलीकरणं २.अतिक्रमः-मणं, उल्लंघनं, भंगः, व्याहननं ३. वि-,ध्वंसनं ४. भंगः, ध्वंसः ५. नाशनं, लोपनम् । वि., दे. 'भंजक' (१-२) ।

भंजना, क्रि. अ. (सं. भंजनं) दे. 'टूटना' ।

भंटा, सं. पुं. (सं. वृंताकः) दे. 'बैंगन' ।

भंड, सं. पुं. (सं.) दे. 'भांड़' ।

भंडा, सं. पुं., दे. 'भांडा' ।

भंडार, सं. पुं. (सं. भांडारं) कोशः-पः, निधिः, शेवधिः, निधानं २. धान्य,-कोष्ठः, अ(आ)गारः-रं ३. पाकशाला. ४. उदरं, जठरं ५. भांडागारः-रं ६. 'दे' 'भंडारा' ।

भंडारा, सं. पुं. (हिं. भंडार) दे. 'भंडार' (१-५) २. समूहः, राशिः ३. साधूनां भोजनोत्सवः ।

भंडारी, सं. (हिं. भंडार) कोष्ठकः, अ(आ)-गारकः-कं २. कोशः-षः ।

भंडारी, सं. पुं. (भांडारिन्) कोशा(षा)ध्यक्षः, धनाध्यक्षः २. भांडागारिकः, भांडारिकः ३. सूदः, पाचकः ।

भंभीरी, सं. स्त्री. (अनु.) रक्तवर्णः पतंगभेदः, *भंभीरी २. दे. 'तीतुरी' ।

भँवर, सं. पुं. (सं. भ्रमरकः) जल,-आवर्तः-गुल्मः, भ्रमिः (स्त्री.), आवर्तः, अवघूर्णः, कूलहुंडकः, तानूरः २. दे. 'भ्रमर' ३. गर्तः-र्तं, अवटः ।

भँवरा, सं. पुं., दे. 'भ्रमर' ।

भँवरी,[1] सं. स्त्री. (हिं. भँवर) दे. 'भँवर' (१), शरीरांगस्थं रोम,-वर्तुलं-मंडलम् ।

भँवरी,[2] सं. स्त्री. (हिं. भँवरना, सं. भ्रमणं>) दे. 'भाँवर' २. वैवधिकता, भांडवाहकता ३. (प्रजारक्षार्थं अधिकारिणां) पर्यटनं-परिभ्रमणम् ।

भइया, सं. पुं. (हिं. भाई, दे.) ।

भक, सं. स्त्री. (अनु.) ज्वाला-झलका,-ध्वनिः (पुं.) ।

भक्त, वि. (सं.) धार्मिक, धर्मात्मन्, पुण्य-धर्म,-शील, पुण्यात्मन् । सं. पुं., पूजकः, उपासकः, सेवकः २. अनुयायिन्, अनुगामिन् ३. पक्षपातिन्, सहायकः ।

भक्ताई, सं. स्त्री., दे. 'भक्ति' ।

भक्ति, सं. स्त्री. (सं.) ईश्वर,-सेवा,-पूजा-अर्चा-उपासना-परायणता २. नियमः, धार्मिकता, धर्मक्रिया, तपस् (न.) ३. श्रद्धा, निष्ठा ४. परायणता, निरतिः (स्त्री.), अनुरागः, अभिनिवेशः ।

भक्ष, सं. पुं. (सं.) भोजनम् २. भक्षणम् ।

—कार, सं. पुं. (सं.) खांडिकः २. पाचकः ।

भक्षक, वि. (सं.) खादक, अद्मर, भोक्तृ, घस्मर, भोजिन् [भक्षिका (स्त्री.) = खादिका, भोजिनी, भोक्त्री] ।

भक्षण, सं. पुं. (सं. न.) अशनं, आस्वादनं, खादनं, भोजनं, अभ्यवहरणं २. आहारः ।

भक्षित, वि. (सं.) भुक्त, खादित, अशित ।

भक्षी, वि. (सं.-क्षिन्) दे. 'भक्षक' ।

भक्ष्य, वि. (सं.) खाद्य, भोज्य, अभ्यवहार्य । सं. पुं. (सं. न.) भोजनं, आहारः, खाद्यवस्तु (न.), अन्नम् ।

भगंदर, सं. पुं. (सं.) अपानदेशे व्रणरोगभेदः ।

भग, सं. पुं. (सं.) सूर्यः २. ऐश्वर्यं, धनं ३. स्त्री-महा,-भाग्यं ४. चंद्रः ५. योनिः (स्त्री.) ६. गुदं ७. पूर्वाफल्गुनीनक्षत्रं ८. धर्मः ९. कांतिः (स्त्री.) १०. मोक्षः ११. माहात्म्यं १२. यत्नः ।

भगण, सं. पुं. (सं.) नक्षत्रसमूहः २. गणभेदः। (ऽ।।; छंदःशास्त्र)।

भगत, सं. पुं. तथा. वि., दे. 'भक्त'।

भगतानी, सं. स्त्री. (हिं. भगत) भक्त,-भार्या-पत्नी २. ईश्वर,-उपासिका-पूजिका-सेविका, धर्मशीला ३. अनुगामिनी।

भगती, सं. स्त्री., दे. 'भक्ति'।

भगदड़, सं. स्त्री. (हिं. भाग+दौड़) पलायनं, अप,-क्रमणं-यानं, विद्रावः।

—पड़ना या मचना, क्रि. अ., पलाय् (भ्वा. आ. से.), वि-प्र-द्रु (भ्वा. प. अ.), अपधाव् (भ्वा. प. से.)।

भगवंत, सं. पुं. (सं. भगवन्तः>) ईश्वरः, भगवत् (पुं.)।

भगवती, सं. स्त्री. (सं.) देवी २. गौरी ३. सरस्वती ४. गंगा ५. दुर्गा।

—भगवत्, वि. (सं.) श्रीमत्, लक्ष्मीवत्, ऐश्वर्यशालिन् २. पूज्य, मान्य, अर्चनीय। सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः, जगदीश्वरः ३.विष्णुः ४. शिवः ५. जिनः ६. बुद्धः।

—गीता, सं. स्त्री. (सं.) श्रीकृष्णार्जुनसंवादात्मको विख्यातो धर्मग्रंथविशेषः।

—पदी, सं. स्त्री. (सं.) गंगा, *देवनदी।

भगवाँ-वा, सं.पुं., दे. 'गेरु'। वि., दे.'गेरुआ'।

भगवान-न्, वि. (सं. भगवत्) दे. 'भगवत्' वि. तथा सं. पुं.।

भगाना, क्रि. स., व. 'भागना' के प्रे. रूप।

भगिनी, सं. स्त्री. (सं.) सोदरा, दे. 'बहन'।

भगीरथ, सं. पुं. (सं.) अयोध्यापतिविशेषः। वि., सुमहत्, विपुल, अत्यधिक।

भगोड़ा, वि. (हिं. भागना) रणविमुख, युद्ध-त्यागिन् २. अपधावित, प्रपलायित ३. भीरु, कातर।

भग्न, वि. (सं.) खंडित, त्रुटित, ध्वस्त २. भिन्न, वि-,दीर्ण ३. पराजित, पराभूत।

भग्नावशेष, सं. पुं. (सं.) ध्वंसावशेषः, दे. 'खंडहर'।

भजन, सं. पुं. (सं. न.) पूजा, अर्चा, सेवा, सपर्य्या २. जपः, संततस्मरणं ३. भक्तिगीतं-तिका।

—करना, क्रि. स., दे. 'भजना'।

भजना, क्रि. स. (सं. भजनं) भज् (भ्वा. उ. अ.), पूज्-सभाज् (चु.), उपास् (अ. आ. से.), आराध् (चु.), नमस्यति (ना. धा.), सेव् (भ्वा. आ. से.) २. जप् (भ्वा. प. से.), निरंतरं स्मृ (भ्वा. प. अ.) ३. आ-,श्रि (भ्वा. उ. से.)। क्रि. अ., दे. 'भागना'। सं. पुं., दे. 'भजन' (१-२)।

भजनानंद, सं. पुं. (सं.) भक्ति,-आनन्दः-रसः-आह्लादः। वि. भक्तिपरायण।

भजनानंदी, वि. (सं.-दिन्) भक्त्यानन्द,-मग्न-लीन-परायण।

भजनीक, सं. पुं. (सं. भजनं>) गायकः, गातृ, गातुः, गेष्णः।

भजनीय, वि. (सं.) पूज्य, सम्मान्य, सेव्य।

भजने योग्य, वि., भजनीय, उपास्य, सेव्य, जपार्ह, आश्रयणीय।

भजने वाला, सं. पुं., भक्तः, उपासकः आराधकः।

भट, सं. पुं. (सं.) योधः, योद्धृ (सैनिकः, आयुधिकः) २. वीरः, शूरः ३. वर्णसंकरभेदः।

भटकटाई, भटकटैया, सं. स्त्री. (सं. भटः+कंटकः>) दुःस्पर्शा, दुष्प्रधर्षिणी, बहुकंटा, चित्रफला।

भटकना, क्रि. अ. (सं. भ्रान्तक>) मोघं पर्यट्-परिभ्रम् (भ्वा. प. से.) २. पथभ्रष्ट (वि.), इतस्ततः या (अ. प. अ.), विपथंगम् ३. भ्रम्, मुह् (दि. प. से.)। सं. पुं., व्यर्थपर्यटनं, पथ-भ्रंशः, उन्मार्ग-गमनं, भ्रमः, माया, मोहः।

भटकाना, क्रि. स., व. 'भटकना' के प्रे. रूप।

भटका हुआ, वि., उन्मार्ग-विपथ,-गामिन्, पथ-भ्रष्ट, भ्रांत, मूढ।

भटू, सं. स्त्री., (सं. वधूः>) (सम्बोधन में हा) (हे) सखि! (हे) आलि! (हे) वयस्ये.

भट्ट[1], सं. पुं. (सं. भट्टः) जातिविशेषः २. स्तुति-पाठकः, दे. 'भाट'।

भट्ट[2], सं. पुं., दे. 'भट'।

भट्ठा, सं. पुं. (सं. भ्राष्ट्रः>) आपाकः, कंदुः (पुं. स्त्री.), पाकपुटी।

भट्ठी, सं. स्त्री. (हिं. भट्ठा) अश्मंतं, उद्धानं, अंतिका, अंदिका, अधिश्रयणी, अग्निकुंडं २. संधानी, अभिषवशाला ३. रजककटाहः।

भठियारा, सं. पुं. (हिं. भट्ठा) पांथागार,-अध्यक्षः-पतिः २. भृष्टकारः, भ्राष्ट्रमिंधः, भर्जन,-कारः-कर्तृ।

भठियारिन-री, सं. स्त्री. (हिं. भठियारा) पांथागाराध्यक्षा २. भर्जन,-कारी-कर्त्री, भृष्टकारी।

भड़क, सं. स्त्री. (अनु.) औज्ज्वल्यं, प्रभा, भास् (स्त्री.), अति-बाह्य,-कांतिः-दीप्तिः (दोनों स्त्री.)-शोभा।

—दार, वि. (हिं.+फ़ा.) भासुर, भासमान, उज्ज्वल, दीप्तिमत्।

भड़काना, क्रि. अ. (हिं. भड़क) उत्-प्र ज्वल् (भ्वा. प. से.), उत्-प्र-सं दीप् (दि. आ. से.) २. ससाध्वसं अपसृ (भ्वा. प. अ.)-परावृत् (भ्वा. आ. से.), सहसा कंप् (भ्वा. आ. से.) ३. क्रुध् (दि. प. अ.)।

भड़काना, क्रि. स. व., 'भड़कना' के प्रे. रूप २. उत्तिज् उद्दाप्-(प्रे.)।

भड़कीला, वि. (हिं. भड़क) दे. 'भड़कदार'।

भड़भड़िया, वि. (अनु. भड़भड़) वाचाऊ, वाचाट, वावदूक, जल्पक, बहुभाषिन्।

भड़भूँजा, सं. पुं. (हिं. भाड़ भूंजना) दे. 'भठियारा' (२)।

भड़भूजी,-जिन, सं. स्त्री. (हिं. भड़भूंजा) दे. 'भठियारिन' (२)।

भड़ुआ, सं. पुं, (हिं. भाँड) भगाजीविन्, वेश्याचार्यः, कुंडाशिन्, विटः।

भड्डर, सं. पुं. (सं. भद्र>) क्षुद्रब्राह्मणभेदः।

भणित, वि. (सं.) उक्त, कथित, व्याहृत।

भतीजा, सं. पुं. (सं. भ्रातृजः) भ्रातृव्यः, भ्रात्री-(त्रे)यः, भ्रातुःपुत्रः।

भतीजी, सं. स्त्री. (हिं. भतीजा) भ्रातृजा, भ्रातृव्या. भ्रात्रीया, भ्रातुःपुत्री, भ्रात्रेयी।

भत्ता, सं. पुं. (सं. भक्तं>) *भक्त, मार्गव्ययः, यात्रावृत्तिः (स्त्री.), यात्रिकम्।

भदभद, वि. (अनु.) अतिस्थूल २. कुदर्शन।

भद्दा, वि. (अनु. भद) कदाकार, कुदर्शन, कुरूप, विषमांग २. नैपुण्य-दाक्ष्य-शून्य ३. अश्लील, अवाच्य।

भद्र[1], वि. (सं.) सभ्य, शिष्ट, सुशिक्षित, श्रेष्ठ, गुणिन्, प्रशस्त, साधु, सुवृत्त, सुशील २. मंगल, कल्याण, शुभ ३. उचित, उपयुक्त। सं. पुं. (सं. न.) कल्याणं, क्षेमं, मंगलं, कुशलं, हितं २. चंदनं ३. गजजातिभेदः ४. सुवर्णं ५. समृद्धिः (स्त्री.)।

भद्र[2], सं. पुं. (सं. भद्राकरणं) केशकूर्चश्मश्रु-मुंडनं, मुंडनम्।

भद्रता, सं. स्त्री. (सं.) शिष्टता, सभ्यता, सज्जनता, सुशीलता।

भद्रासन, सं. पुं. (सं. न.) नृपासनं, सिंहासनं २. योगासनभेदः।

भद्रिका, सं. स्त्री. (सं.) भद्रा तिथिः (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी) २. वृत्तभेदः।

भनक, सं. स्त्री. (सं. भण्>) मंद-अस्पष्ट-ध्वनिः २. जनप्रवाहः, किंवदंती।

भनभनाना, क्रि. अ. (अनु.) भणभणायते (ना. धा.), गुंज् (भ्वा. प. से.) झंकारं कृ।

भनभनाहट, सं. स्त्री. (हिं. भनभनाना) भणभणायितं, भणभणध्वनिः, गुंजनं, गुंजितं, झंकारः।

भब(भ)का, सं. पुं. (हिं. भाप) बक-संधान,-यंत्रम्।

भभक, सं. स्त्री. (अनु. भक) ज्वालोत्थानं, कीलोद्गतिः (सं. स्त्री.) २. दे. 'उज्वाल'।

—मारना, क्रि. अ., गर्ज् (भ्वा. प. से.)।

भभकना, क्रि. अ. (हिं. भभक) प्रज्वल् (भ्वा. प. से.), उद्दीप् (दि. आ. से.) २. तापातिशयेन स्फुट् (तु. प. से.)-भंज् (कर्म.) ३. दे. 'उबलना'।

भभकी, सं. स्त्री. (हिं. भभक) विभीषिका, तर्जना, भर्त्सना, भयदर्शनम्।

—देना, क्रि. स., निर्-,भर्त्स्, तर्ज् (दोनों चु. आ. से.)।

गीदड़—, मु., कपटविभीषिका, मिथ्या तर्जना।

भभ्भड़, सं. पुं., दे. 'भीड़भाड़'।

भभूका, सं. पुं. (हिं. भभक) ज्वाला, शिखा, अर्चिस् (न.)।

भभूत, सं. स्त्री. [सं. विभूतिः (स्त्री.)] गोमयभस्मन् (न.) २. वैभवम्।

—लगाना, क्रि. स., विभूत्या विग्रहं लिप् (तु. उ. अ.)। सं. पुं. भस्मगुंठनम्।

भयंकर, वि.(सं.) त्रास-भीति-भय,-जनक-द-प्रद-आवह, भीम, भीषण, भयानक, रौद्र, भैरव।

भयंकरता, सं. स्त्री. (सं.) भीमता, भीषणता, भयानकता इ.।

भय, सं. पुं. (सं. न.) भीः-भीतिः (स्त्री.),

साध्वसं, सं-,त्रासः, दरः-रं, भिया २. आतंकः ३. आशंका ।

—कारक,—प्रद, वि., दे. 'भयंकर' ।

—खाना या लगना, क्रि. अ., भी (जु. प. अ.), वि-सं-त्रस् (भ्वा. दि. प. से.), दे. 'डरना' ।

—भीत, वि. (सं.) भीत, भयार्त, ससाध्वस, त्रस्त, सभय, सदर ।

—हीन, वि. (सं.) निर्भय, अभय, निर्भीक, अकुतोभय, दे. 'निर्भय' ।

भयातुर, वि. (सं.) दे. 'भयभीत' ।

भयानक, वि. (सं.) दे. 'भयंकर' ।

भयावना, वि. (सं. भयं>) दे. 'भयंकर' ।

भयावह, वि. (सं.) दे. 'भयंकर' ।

भर, वि. (हिं. भरना) समस्त, सम्पूर्ण, समग्र, यावत् (-ती स्त्री.) तावत् (-ती स्त्री.) । क्रि. वि., यावत् (द्वितीया के साथ), आ-(पंचमी के साथ-मात्र,-मित,-परिमित,-परिमाण ।

आयु—, क्रि. वि., यावज्जीवं, आमृत्योः ।

कोस—, क्रि. वि., क्रोशं यावत्, क्रोशमात्रम् ।

बाँस—, वि., वंश,-मात्र-मित-परिमाण ।

शक्ति—, क्रि. वि., यथाशक्ति (न.), यावच्छक्यं, यावच्छक्ति (अव्य.) ।

सेर— वि., सेर-सेटक,-मात्र-परिमित ।

भरण, सं. पुं. (सं. न.) पालनं, पोषणं, संवर्धनं, रक्षणं, समालंबनम् ।

भरणी, सं. स्त्री. (सं.)नक्षत्रविशेषः, यमदेवता २. घोषकलता । वि. स्त्री. (सं.) पालयित्री, पोषिका ।

भरत, सं. पुं. (सं.) कैकेयीपुत्रः, रामानुजः २. शाकुंतलेयः, दौष्यंतिः, सर्वदमनः ३. ऋषभदेवपुत्रः ४. नाट्यशास्त्रलेखको मुनिर्विशेषः ५. नटः ।

—खंड, सं. पुं. (सं. न.) भारतं, भारतवर्षः-र्षं २. भारतांतर्गतकुमारिकाखंडम् ।

भरता[1], सं. पुं. (देश.) *वृंताकभृक्तम् ।

भरता[2], **भरतार**, सं. पुं. [सं. भर्तारः (बहु.)] भर्तृ, पतिः, धवः २. स्वामिन्, प्रभुः ।

भरती, सं. स्त्री. (हिं. भरना) सैन्यप्रवेशः २. प्रवेशः ३. भरणं, पूरणं, पूर्तिः (स्त्री.) ।

—करना, क्रि. स., सैन्ये प्रवेशं कृ (प्रे.) ।

—डालना, क्रि. स., गर्तं पूर् (चु.) ।

—होना, क्रि. अ., सेनायां प्रविश् (तु.प.अ.) ।

भरना, क्रि. स. (सं. भरणं) भृ (भ्वा. उ. अ.), भृ (जु. उ. अ.), पृ. (जु. प. अ.), पॄ (जु. प. से.), पूर् (चु.), व्याप् (स्वा. प. अ.) २. प्रस्रु-पत् (प्रे.) ३. ऋणादिकं शुध्-निस्तॄ (प्रे.) ४. सह् (भ्वा. आ. से.) ५. उत्तिज्-प्रकुप् (प्रे.) ६. लिप् (तु. उ. अ.) । क्रि. अ., भृ-पृ-पॄ-व्याप्-पूर् (कर्म.) २. अंतः कुप् (दि. प. से.) ३. ऋणादिकं शुध् (दि. प. अ.) ४. पुष् (कर्म.) । सं. पुं., भरणं, पूरणं, व्यापनं, पूर्तिः-भृतिः (स्त्री.) २. ऋणं ३. उत्कोचः ।

भरनी[1], सं. स्त्री. (हिं. भरना) मल्लिकः,त्र(त)-सरः, सूत्रवेष्टः-ष्टनं २. तिर्यकृतंतवः (पुं. बहु.) ।

भरनी[2], सं. स्त्री., दे. 'भरणी' ।

भरने योग्य, वि., भर्तव्य, भरणीय, पूरणीय, पूरयितव्य २. शोधनीय (ऋणादि) ।

—वाला, सं. पुं., पूरकः, भर्तृ, पूरयितृ २. ऋणादिशोधकः ।

भरा हुआ, वि., सं,-भृत, पूर्ण, पूरित, आ-सं-कीर्ण, व्याप्त, निचित, संकुल, आविष्ट ।

भरपूर, वि. (हिं. भरना+पूरा) सं-परि-, पूर्ण-पूरित-भृत-संकीर्ण-व्याप्त, निचित । क्रि.वि., पूर्णतया, अशेषेण २. सम्यक्, साधु ।

भरभराना, क्रि. अ. (अनु.) आकुल (वि.) भू ।

भरम, सं. पुं. (सं. भ्रमः) भ्रान्तिः, मिथ्या-मतिः (दोनों स्त्री.), माया, आभासः, अविद्या २. भेदः, रहस्यम् ३. प्रतिष्ठा, प्रत्ययः ।

भरमार, सं. स्त्री. (हिं. भरना+मार) बहुलता, प्रचुरता, विपुलता, भूयिष्ठता ।

भरराना, क्रि. अ. (अनु०) सहसा पत् (भ्वा. प. से.) ९. त्रुट् (दि. तथा तु. प. से.) ।

भरवाना, क्रि. प्रे., व. 'भरना' के प्रे. रूप ।

भरसक, क्रि. वि. [हिं. भर+सक (=शक्ति)] यथा-शक्ति-बलं-सामर्थ्यं, पूर्ण,-शक्त्या-बलेन ।

भरा, वि. (हिं. भरना) पूर्ण, पूरित, (सं.) भृत, निचित, आविष्ट ।

—(री) जवानी, पूर्ण,-यौवनं-तारुण्यम् ।

—(री) थाली में लात मारना, मु., लाभ-प्रदजीविकां परित्यज् (भ्वा. प. अ.) ।

—पूरा, वि. (हिं. भरना+पूरा) संपन्न, समृद्ध २. परि-सं-,पूर्ण ।

भराई, सं. स्त्री. (हिं. भरना) दे. 'भरना' सं. पुं. २. भरणं-पूरणं,-भृतिः (स्त्री.)—वेतनम् ।

भराना, क्रि. प्रे., व. 'भरना' के प्रे. रूप।
भरी, सं. स्त्री. (हिं. भर) दशमाषो।
भरोसा, सं. पुं. (हिं. भरा+सं. विश्वासः>) विश्वासः, प्रत्ययः २. आश्रयः, अवलंबः-बनं, आधारः ३. आशा।
—करना, क्रि. अ., आ-अव-लंब् (भ्वा.आ.से.) २. विश्वस् (अ. प. से.) ३. आशां बंध् (क्र्. प. अ.)।
भर्ता, भर्तार, } सं. पुं. (सं. भर्तृ) दे. 'भरता[२]'।
भर्ता, सं. पुं., दे. 'भरता[१]'।
भर्ती, सं. स्त्री., दे. 'भरती'।
भर्त्सना, सं. स्त्री. (सं.) तर्जना, निर्भर्त्सना, अधिक्षेपः, निंदा, गर्हा, वाग्दंडः, उपालंभः।
—करना, क्रि. स., निर्भर्त्स्-तर्ज् (चु. आ. से.), गर्ह् (भ्वा. आ. से.), निंद् (भ्वा. प. से.)।
भलमनसत, भलमनसाहत, भलमनसी, } सं.स्त्री. (हिं. भला+मानुस) भद्रता, सज्जनता, आर्यत्वं, महानुभावता।
भला, वि. (सं. भद्र) शुभ, वर, शोभन, उत्तम, श्रेष्ठ, गुणवत्, निर्दोष, साधु, प्रशस्त, प्रशस्य, वर, सु-, सत्- २. उत्कृष्ट, विशिष्ट। सं. पुं. (सं. न.) कल्याणं, कुशलं, मंगलं, हितं २. लाभः, प्राप्तिः (स्त्री.)। अव्य., भवतु, अस्तु, तावत्।
—करना, मु., उपकृ, साहाय्यं दा (जु.उ.अ.)।
—चंगा, वि., नीरोग, स्वस्थ, निरामय।
—बुरा, सं. पुं., दुर्-अश्लील,-वचनं २. हानि-लाभौ।
—मानुस, सं. पुं., भद्रः, आर्यः, सज्जनः।
भले ही, मु., कामं, (लोट्, विधिलिङ् से भी अनुवाद किया जाता है)।
भलाई, सं. स्त्री. (हिं. भला) सज्जनता, साधुता, आर्यता २. उपकारः, उपकृतिः (स्त्री.), परहितम्।
भव, सं. पुं. (सं.) संसारः, जगत् (न.), २. जन्मन् (न.), उत्पत्तिः (स्त्री.) ३. पुनर्जन्मदुःखं ४. सत्ता ५. शिवः ६. मेघः।
—बंधन, सं. पुं. (सं. न.) जगज्जालम्।
—भंजन, सं. पुं. (सं.) ईश्वरः, मुक्तिदः।
—भय, सं. पुं. (सं. न.) पुनर्जन्मत्रासः।
—मोचन, वि. (सं.) मोक्षद।
—सागर, सं. पुं. (सं.) संसारपारावारः।
भवदीय, सर्व. (सं.) भावत्क, युष्मदीय, त्वदीय, तावक-यौष्माक [—की (स्त्री.)], यौष्माकीण।
भवन, सं. पुं. (सं.न.) अ(आ)गारः-रं, वेश्मन्-सद्मन् (न.), सदनं, निकेतनं, मंदिरं, गृहं, गेहं २. प्रासादः, नृपमंदिरम्।
भवानी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पार्वती'।
भवितव्य, वि. (सं.) अवश्यं भाविन्, भवनीय।
भवितव्यता, सं. स्त्री. (सं.) नियतिः (स्त्री.), भाग्यं, भागधेयं, दैवम्।
भविष्णु, वि. (सं.) भविष्य, भविष्यत्, आगामिन्, भूष्णु।
भविष्य, वि. (सं.) आगामिन्, अनागत, उत्तर, भविष्यत्, श्वस्तन [—नी (स्त्री.)। सं. पुं. (सं. न.), भविष्यत्-आगामि-भावि-उत्तर-अनागत,-कालः-समयः, अनागतं, श्वस्तनं, प्रगेतनं, भाविन्-आगामिन् (न.), आयतिः (स्त्री.), उदर्कः।
भविष्यत्, वि. तथा सं. पुं., दे. 'भविष्य'।
भविष्य(द्)वक्ता, सं. पुं. (सं.-वक्तृ) भविष्यद्-वादिन्, दैवज्ञः।
भविष्य(द्)वाणी, सं. स्त्री. (सं.) भावि-कथनं-सूचनं, भविष्यद्वादः।
भव्य, वि. (सं.) सश्रीक, शोभान्वित, दिव्य, सुप्रभ, शोभन २. शुभ, मंगल ३. सत्य, यथार्थ ४. योग्य ५. भाविन् ६. श्रेष्ठ ७. प्रसन्न ८. महत्, गुरु।
भव्यता, सं. स्त्री. (सं.) दिव्यता, शोभा, श्रीः (स्त्री.), सुंदरता इ.।
भषक, सं. पुं. (सं.) कुक्कुरः, सारमेयः।
भसींड, सं. स्त्री. (देश.) मृणालः-लं, शालूकं (बिसदंडः ?), बिसं, नालीकः २. करहाटः, कर्कटः, शिफाकंदः।
भसुंड, सं. पुं., दे. 'हाथी'।
भसुर, सं. पुं. (हिं. ससुर का अनु.) ज्येष्ठः, भर्तुरग्रजः।
भस्म, सं. पुं. [सं. भस्मन् (न.)] भसितं, वि-, भूतिः (स्त्री.)।
—करना, क्रि. स., भस्मी(स्मी)कृ, भस्मसात् कृ २. दे. 'जलाना'।

—लेपन, सं. पुं. (सं. न.) भस्म,-गुंठन-उद्धूलनम् ।

—होना, क्रि. अ., भस्मीभू, भस्मसात्भू २. दे. 'जलना' ।

भस्मक, सं. पुं. (सं. न.) भस्मकीटः, उदररोग-भेदः २. क्षुधातिशयः ३. सुवर्णं ४. विडंगः ।

भस्मीभूत, वि. (सं.) मसितीभूत, सर्वथा दग्ध ।

भहराना, क्रि. अ. (अनु.) त्रुट् (दि. प. से.) २. सहसा पत् (भ्वा. प. से.) ३. स्खल् (भ्वा. प. से.) ।

भाँग, सं. स्त्री. (सं. भंगा) गजा, मादिनी, वि-,जया, मातुलानी ।

—खा या पी जाना, मु., उन्मत्त इव भाष् (भ्वा. आ. से.) ।

भांजा, सं. पुं. (हिं. बहिन) भागिनेयः, स्वस्रि(स्री-स्रे) यः ।

भांजी[१], सं. स्त्री. (हिं. भांजा) भागिनेयी, स्वस्रि(स्री)या, स्वस्रेयी ।

भाँजी[२], सं. स्त्री. (हिं. भाँजना) *भंजिका, भंजक-बाधक,-उक्तिः (स्त्री.) ।

—मारना, मु., बाध् (भ्वा. आ. से.) प्रति-बन्ध् (क्र्. प. अ.), प्रतिरुध् (स्वा. उ. अ.) ।

भाँटा, सं. पुं., दे. 'बैंगन' ।

भाँड़, सं. पुं. (सं. भंडः) चाटुपटुः, विनोद-परिहास,-कारिन्, वैहासिकः, परिहासयितृ । (राजा का भांड़) विदूषकः, नर्मसचिवः २. अनुकारिन्, विडंबनकृत् ३. वि., अपत्रप, निर्लज्ज ।

भांड़ा, सं. पुं. (सं. भांडं) (बृहत्-) पात्रं, भाजनं २. सामग्री, साधनानि (न. बहु.) ।

—फूटना, मु., रहस्यं भिद् (कर्म.) प्रकटीभू ।

—फोड़ना, मु., रहस्यं प्रकाश् (प्रे.)-भिद् (रु. प. अ.) ।

भांडागार, सं. पुं. (सं. पुं. न.) } दे. 'भंडार' ।
भांडार, सं. पुं. (सं. भाडारं) }

भाँति, सं. स्त्री. (सं. भेदः) प्रकारः, जातिः (स्त्री.), रूपं,-विधा (उ., बहुविध) २. रीतिः (स्त्री.), शैली, विधिः ।

—भाँति के, मु., विविध, बहु-अनेक-नाना,-विध-रूप-प्रकार ।

भाँपना, क्रि. स. (सं. भा>) ऊह् (भ्वा. आ. से.) अनुमा (जु. आ. अ.) ।

भाँवर-री, सं. स्त्री. (सं. भ्रमणं>) वैवाहिक,-प्रदक्षिणा-परिक्रमः २. परि,-भ्रमणं-अटनं-क्रमणम् ।

—फिरना या लेना, क्रि. अ., प्रदक्षिणीकृ, परिभ्रम्-परिक्रम् (भ्वा. प. से.) ।

भाई, सं. पुं. (सं. भ्रातृ) (सगा) सहोदरः, सोदरः, सोदर्य्यः, समानोदर्य्यः, सगर्भः, सहजः २.सगोत्रः, सजातीयः, सवर्णः, सकुल्यः, सवंशीयः, सनाभिः ३. (संबोधन में) सखे, मित्र, वयस्य, भ्रातः ।

चचेरा—, पितृव्य,-जः-पुत्रः ।

छोटा—, अनुजः, कनीयान् भ्रातृ ।

फुफेरा—, पैतृष्वसेयः, पि(पै)तृष्वस्रीयः ।

बड़ा—, अग्रजः, ज्यायान् भ्रातृ ।

ममेरा—, मातुल,-जः-पुत्रः, मातुलेयः ।

मौसेरा—, मातृष्वसेयः; मातृष्वस्रीयः ।

सौतेला—, वैमात्रः, वैमात्रेयः ।

—चारा, सं. पुं., भ्रातृत्वं, भ्रातृभावः, सौभ्रात्रं २. मित्रत्वं ३. सवर्णत्वं, सगोत्रत्वम् ।

—दूज, सं. स्त्री., यमद्वितीया, कार्तिकशुक्ला द्वितीया, पर्वविशेषः ।

—बंद, सं. पुं., ज्ञातयः, स्वजनाः, भ्रातरः, बंधवः, बांधवाः, सजातीयाः, सगोत्राः, सुहृदः (सब बहु.) ।

—बंदी, सं. स्त्री., दे. 'भाईचारा' ।

—बिरादरी, सं. स्त्री., दे. 'भाईबंद' ।

भाखा, सं. स्त्री. (सं. भाषा) दे. 'भाषा' २. हिन्दीभाषा ।

भाग, सं. पुं. (सं.) अंशः, विभागः, खंडः-डं २. पार्श्वः-र्श्वं ३. भाग्यं, भागधेयं ४. मस्तकं, ललाटं ५. सौभाग्यं ६. प्रातःकालः ७. वैभवं ८. गणितक्रियाभेदः (= तकसीम) ।

—करना, क्रि. स., दे. 'बाँटना' ।

—फल, सं. पुं. (सं. न.) फलं, लब्धिः (स्त्री.)।

भाज्यं
भाजकः ४) १६ (४ फलं
१६
×

—भरोसा, सं. पुं., भाग्याश्रयः, दैवपरता ।

—जगना, मु., भाग्यं उद्-इ (अ. प. अ.) ।

भागड़, सं. स्त्री. (हिं. भागना) सामूहिक-सामुदायिक,- पलायनं- अपमानं- अपधावनं, विद्रावः ।

भागना, क्रि. अ. (सं. भाज्) पलाय् (भ्वा. आ. से.), अपधाव् (भ्वा. प. से.), वि-प्र-द्रु (भ्वा. प. अ.), अप,-सृ-सृप् (भ्वा. प. अ.) २. वृज् (चु.), परिहृ (भ्वा. प. अ.)। सं. पुं., पलायनं, अपधावनं, अप,-यानं-द्रवणं-सरणं, परिहरणम्।

भाग-दौड़, सं. स्त्री., दे. 'भगदड़'।

सिर पर पैर रखकर भागना, मु., महाजवेन पलाय् या अपधाव्।

भागनेवाला, सं. पुं., दे. 'भगोड़ा'।

भागवत, सं. पुं. (सं. न.) श्रीमद्भागवतं, महापुराणविशेषः २. देवीभागवतपुराणं ३. भगवद्भक्तः। वि., ऐश्वर, वैष्णव।

भागार्थी, वि. (सं.-र्थिन्) भाग-अंश-खंड,-इच्छुक-कामिन्-अर्थिन्।

भागार्ह, वि. (सं.) अंशिन्, अंशभागिन्, भाग,-धारिन्-भागिन् २. विभाज्य, अंशनीय, वंटनीय।

भागिनेय, सं. पुं. (सं.) दे. 'भाँजा'।

भागी, सं. पुं. (सं. भागिन्) अंशिन्, अंश-भाग, ग्राहिन्-हारिन् २. दायादः, दायिकः, रिक्थिन्, अंशकः।

भागीरथ, वि. (सं.) भगीरथ,-सम्बन्धिन्-विषयक-सदृश।

भागीरथी, सं. स्त्री. (सं.) गंगा, जाह्नवी २. गंगाया वंगवर्तिशाखाविशेषः।

भाग्य, सं. पुं. (सं. न.) भागधेयं, दिष्टं, अदृष्टं, दैवं, नियतिः (स्त्री.) विधिः, भवितव्यता, विपाकः, प्राक्तनम्।

—उदय, सं. पुं. (सं.) पुण्योदयः, दैवानुकूलता।

—चक्र, सं. पुं. (सं. न.) दैवगतिः (स्त्री.), भाग्यक्रमः।

—वश,—वशात्, क्रि. वि. सौभाग्येन, सुदैवेन, दिष्ट्या, दैवात्।

—वान्, वि. (सं.-वत) भाग्यशालिन्, महाभाग, सुभग, धन्य, सौभाग्य-पुण्य,-वत सुकृतिन्, श्रीमत्।

—हीन, वि. (सं.) हत-दुर्-मंद,-भाग्य-भाग, दुर्दैव, दैवहतक।

भाजक, वि. (सं.) विभागकल्पक, विभेदक, विच्छेदक, विभाजयितृ २. हरः, हारः, हारकः (गणित) दे. 'भागफल' में।

भाजन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पात्र'।

भाजित, वि. (सं.) विभक्त, विभाजित २. पृथक्कृत, विश्लेषित।

भाजी, सं. स्त्री. (सं.) व्यञ्जनं, उपसेचनं, अन्नोपस्करः २. शाकः, हरितकः, शिग्रुः ३. दे. 'मांड'।

भाज्य, वि. (सं.) भागार्ह, भाजनीय। सं. पुं. (सं. न.) भागार्हांकः(गणित) दे. 'भागफल' में।

भाट, सं पुं. (सं. भट्टः) वर्णसंकरजातिविशेषः। २. चारणः, वंदिन्, वैतालिकः, मागधः, स्तुति-पाठकः, मधुकः ३. चाटुकारः ४. राजदूतः।

भाटा, सं. पुं. (हिं. भाठना) वेला,-परिवर्तः-अपचयः, क्षीयमाण-अपचीयमान,-वेला।

ज्वार—, सं. पुं. वेलोपचयापचयौ (पुं. द्वि.)।

भाड़, सं. पुं. (सं. भ्राष्ट्रः-ष्ट्रं) अंबरीषं, भर्जनापाकः।

—झोंकना, मु., क्षुद्रकार्यं कृ २. कालं व्यर्थं या (प्रे. यापयति)।

—में झोंकना वा डालना, मु., नश् (प्रे.), क्षै (प्रे. क्षपयति) २. त्यज् (भ्वा. प. अ.), उपेक्ष् (भ्वा. आ. से.)।

—में पड़े, मु., नश्यतु, भस्मसात् भवतु।

भाड़ा, सं. पुं. (सं. भाटकः-कं) भाटं, भाटिः (स्त्री.)।

—भाड़े का टट्टू, मु., अस्थिर, अस्थायिन् २. स्वार्थपर, अर्थपर ३. अल्पमूल्य, गुण-सार,-हीन।

भात, सं. पुं. (सं. भक्तं) ओदनः-नं, अन्नं, अंधस् (न.) कूरं, भिस्सा, दीदिविः २. वर-वधूपित्रोर्भक्तभोजनात्मको वैवाहिकरीतिभेदः।

भाथा, सं. पुं. (सं. भस्त्रा) दे. 'तरकश'।

भादों, सं. पुं. (सं. भाद्रः) भाद्रपदः, नभस्यः, प्रौष्ठपदः।

भाद्र, भाद्रपद, सं. पुं. (सं.) दे. 'भादों'।

भाद्रपदी, सं. स्त्री. (सं.) भाद्री, भाद्र-भाद्र-पद,-पूर्णिमा।

भान, सं. पुं. (सं.) प्रकाशः, ज्योतिस् (न.) २. ज्ञानं ३. आभासः, प्रतीतिः (स्त्री.)।

भानजा, सं. पुं., दे. 'भांजा'।

भानजी, सं. स्त्री. दे. 'भांजी'।

भानमती, सं. स्त्री. (सं. भानुमती) ऐन्द्र-जालिकी, मायिनी।

—का पिटारा, सं. पुं., विषमवस्तुसंग्रहः।
भाना, क्रि. अ., दे. 'पसन्द आना'।
भानु, सं. पुं. (सं.) रविः, सूर्यः २. किरणः।
भानुजा, भानुतनया, } सं. स्त्री. (सं.) यमुना, कालिंदी, भानुसुता।
भाप, सं. स्त्री. (सं. बा(वा)ष्पः-पम्।
—निकलना, क्रि. अ., बा(वा)ष्पायते (ना. धा.), बाष्पं उत्क्षिप् (तु. प. अ.)-उद्गृ (तु. प. से.)।
—देना, क्रि. स., बाष्पेण स्विद् (प्रे.) या पच् (भ्वा. प. अ.)।
—बनना या बनाना, उद्बाष्पणं, वाष्पी,-भवनं-करणम्।
भाभी, सं. स्त्री. (सं. भ्रातृभार्या) अग्रजपत्नी २. भ्रातृ,-जाया-पत्नी, प्रजावती ३. जननी।
भामा, सं. स्त्री. (सं.) पत्नी, भार्या २. नारी ३. क्रुद्धा स्त्री।
भामिनी, सं. स्त्री. (सं.) कोपना स्त्री २. नारी।
भार, सं. पुं. (सं.) दे. 'बोझ'।
—वाह, सं. पुं. (सं.) भारिन्, भारिकः, भार-हरः-हारः, वाह(हि)कः।
—उठाना, मु., प्रष्टव्यतां अंगीकृ।
—उतरना, मु., उत्तरदायित्वं हा (जु.प.अ.)।
भारत, सं. पुं. (सं. न.) भारतवर्षः-र्षं, भ(भा)रतखंडं २. महाभारतग्रन्थः।
भारती, सं. स्त्री. (सं.) गिर्-वाच् (स्त्री.), वाणी २. सरस्वती, शारदा ३. वृत्तिभेदः (सा.)।
भारतीय, वि. (सं.) भारत,-देशीय-वर्षीय। सं. पुं., भारतवासिन्।
भारी, वि. (सं.-रिन्) भारिक, गुरु, दुर्वह, भारवत् २. कराल, भीषण ३. महत्, बृहत्, विशाल ४. अत्यंत, अत्यधिक ५. असह्य, दुर्भर, दुर्धर ६. प्रबल ७. शून, स्फीत ८. शांत, ग(गं)भीर।
—पन, सं. पुं., भारवत्त्वं, गुरुत्वं, गरिष्ठता।
—भरकम, वि., अति-बहु,-भारवत्।
पैर भारी होना, मु., गर्भं धृ (चु.)।
भार्या, सं. स्त्री. (सं.) दाराः (पुं. बहु.), दे. 'पत्नी'।
भाल, सं. पुं. (सं. न.) ललाटं, अलिकं, गोधिः (पुं. स्त्री.), निट(टि)लं, मूर्धन् (पुं.), मस्तं, मस्त(स्ति)कं, मस्तकः।
—चंद्र,—नेत्र,—लोचन, सं. पुं. (सं.) शिवः।

भाला, सं. पुं. (सं. भल्लः-ल्लं) दे. 'बरछा'।
—बरदार, सं. पुं. (हिं.+फ़ा.) दे. 'बरछैत'।
भालू, सं. पुं. (सं. भालूकः) भल्लु(ल्लू)कः, ऋक्षः, भल्लः, दुर्घोषः, दीर्घकेशः, दुश्चरः, भालुकः, भाल्लूकः।
भाव, सं. पुं. (सं.) अस्तित्वं, सत्ता, विद्यमानता २. मानस-मनो,-विकारः-वृत्तिः (स्त्री.), विचारः ३. अभिप्रायः, आशयः ४. मुखाकृतिः (स्त्री.) ५. जन्मन् (न.) आत्मन् (पुं.) ७. पदार्थः ८. विद्वस् (पुं.) ९. जंतुः १०. कृत्यं, विभूतिः (स्त्री.)। ११. सं-विषय,-भोगः १२. प्रेमन् (पुं. न.), अनुरागः १३. संसारः १४. कल्पना १५. स्वभावः १६. गूढेच्छा १७. शैली-रीतिः (स्त्री.) १८. दशा १९. भावना २०. विश्वासः २१. प्रतिष्ठा २२. वस्तु,-गुणः-धर्मः २३. उद्देश्यं २४. मूल्यं, अर्घः, वस्नः, अवक्रयः, अर्घ-मूल्य,-प्रमाणं २५. श्रद्धा, भक्तिः (स्त्री.) २६. स्थायि-व्यभिचारिसात्त्विकभावाः (काव्य.), नायिकादिमानसविकाराः २७. हावः, दे. 'नखरा'।
—ताव, सं. पुं., मूल्यं, अर्घः।
—वाचक, सं. स्त्री. (सं.-वाचिका) संज्ञाभेदः (व्या., उ. श्रेष्ठता)।
—वाच्य, सं पुं. (सं. न.) वाच्यभेदः (व्या., उ. हस्यते)।
—उतरना या गिरना, मु., अर्घः अपचि (कर्म.), मूल्यं ह्रस् (भ्वा. प. से.), मंदायते (ना. धा.)।
—चढ़ना या बढ़ना, मु. वस्नं वृध् (भ्वा. आ. से.), अवक्रयः उपचि (कर्म.)।
भावक, वि. (सं.) उत्पादक, स्रष्टृ २. कल्याण-कारक ३. उत्प्रेक्षक ४. काव्यरसिक।
भावज, सं. स्त्री. (सं. भ्रातृजाया) दे. 'भाभी' (२.)।
भावता, वि. (हिं. भावना = अच्छा लगना) प्रिय, रुचिकर, रोचक। सं. पुं., वल्लभः, प्रियतमः, प्रेमपात्रम्।
भावन, वि. (सं.) उत्पादक, प्रकाशक। सं. पुं. (सं.) निमित्तकारणम् २. सृष्टिकर्तृ ३. शिवः। (सं. न.) उत्पादनम् २. चिन्तनम् ३. कल्पना ४. भक्तिभावना।
भावना, सं. स्त्री. (सं.) ध्यानं, चिंता, विमर्शः,

विचारः २. कामना, वासना, इच्छा ३. स्मृत्यनुभवजश्चित्तसंस्कारभेदः ४. सामान्य,-विचारः-कल्पना ५. दे. 'पुट' (वैद्यक)। वि., शोभन, प्रिय, रोचक। क्रि. अ., दे. 'पसंद आना'।

भावनीय, वि. (सं.) चिन्तनीय, कल्पनीय।

भावाभाव, सं. पुं. [सं.-वौ (द्वि.)] अस्तित्वानस्तित्वे (न.) २. उत्पत्तिविनाशौ ३. जन्ममृत्यू (सव द्वि.)।

भावार्थ, सं. पुं. (सं.) तात्पर्यार्थः, आशयः, तात्पर्य्यं, भावः २. भावप्रधानटीका।

भावित, वि. (सं.) विचारित, चिंतित।

भावी, वि. (सं.-विन्) दे. 'भविष्य' (वि.)। सं. स्त्री., दे. 'भविष्य' सं. पुं. २.दे. 'भवितव्यता'।

भावुक, वि. (सं.) रसिक, सरस, रसभूयिष्ठ, भावप्रधान २. चिंतक, विचारक।

भाव्य, वि. (सं.) भवितव्य, अवश्यंभाविन्।

भाषण, सं. पुं. (सं. न.) कथनं, वचनं, उक्तिः (स्त्री.) २. व्याख्यानं, प्रवचनं, उपदेशः।

भाषांतर, सं. पुं. (सं. न.) अनुवादः।

—कार, सं. पुं. (सं.) अनुवादकः।

भाषा, सं. स्त्री. (सं.) वाणी, वाच्-गिर् (स्त्री.), भारती, गिरा, उदीरणा २. हिन्दीभाषा ३. वचस् (न.), वचनं, वाक्यं, उक्तिः (स्त्री.), व्याहारः, निगदः, शब्दः, भाषितं, आलापः ४. सरस्वती ५. अभियोगपत्रं (अर्ज़ीदावा)।

भाषित, वि. (सं.) कथित, उक्त, उदीरित। सं. पुं. (सं. न.) कथनं, वार्तालापः।

भाषी, सं. पुं. (सं.-षिन्), वादिन्, वक्तृ।

भाष्य, सं. पुं. (सं. न.) टीका, व्याख्या, वृत्तिः (स्त्री.) विवरणम्।

—कार, सं. पुं. (सं.) टीका-भाष्य-व्याख्या,-कारः-कृत् (पुं.) २. महाभाष्यकारः, पतंजलिः, गोनर्दीयः।

भास, सं. पुं. (सं.) संस्कृतभाषायाः महाकविविशेषः २. कान्तिः-दीप्तिः (स्त्री.) ३. कल्पना ४. गोष्ठः-ष्ठम् ५. कुक्कुटः ६. गृध्रः ७. पक्षिन्।

भासना, क्रि. अ. (सं. भासनं) भास्-प्रकाश् (भ्वा. आ. से.), २. प्रति-इ (कर्म.) ३. दृश् (कर्म.)।

भासुर, वि. (सं.) दे. 'भास्वर'।

भास्कर, सं. पुं. (सं.) सूर्यः २. अग्निः, (सं. न.) सुवर्णं ३.ज्योतिषग्रन्थकारो भास्कराचार्यः।

भास्वर, वि. (सं.) द्युति-कांति-दीप्ति,-मत्, उज्ज्वल, भासुर, देदीप्यमान, भ्राजमान।

भिंडी, सं. स्त्री. (सं. भिंडा) भिंडः, भिंडकः, सुशाकः, करपर्णः, वृत्तबीजः, चतुष्पुंड्रः।

भिक्षा, सं. स्त्री. (सं.) याञ्चा, याचना, अर्थना, २. भिक्षाटनं ३. भक्ष्यं, दानम्।

—पात्र, सं. पुं. (सं. न.) भिक्षा-दान,-पात्रं-भाजनम्।

भिक्षु, सं. पुं. (सं.) परिव्राज्, परिव्राजकः, व्रजकः, (बौद्ध-) सन्न्यासिन्, मस्करिन्, प(पा)-राशरिन् २. दे. 'भिखारी'।

भिक्षुक, सं. पुं., (सं.) दे. 'भिखारी'।

भिखमंगा, सं. पुं. दे. 'भिखारी'।

भिखारिन, सं. स्त्री. (हिं. भिखारी) भिक्षुकी, भिक्षाकी, भिक्षाचरी।

भिखारी, सं. पुं. (हिं. भीख) भिक्षुः, भिक्षुकः, भिक्षाकः, भिक्षाचरः, भिक्षाशिन्, मार्गणः, याचकः, याचनकः, वनीयकः, अर्थिन्।

भिगोना, क्रि. स. (हिं. भीगना) क्लिद् (प्रे.), उद् (रु. प. से.), आर्द्रीकृ।

भिजवाना, क्रि. प्रे., व. 'भेजना' के प्रे. रूप।

भिटनी, सं. स्त्री. (देश.) स्तनाग्रं, चूचुकम्।

भिड़, सं. स्त्री. (हिं. बर्रे ?) वरटः-टा-टी, इडाचिका, गंधोली, गृहकारिका।

भिड़ना, क्रि. अ. (अनु. भड़ ?) संघट्ट (भ्वा. आ. से.) संमृद्-संहन् (कर्म.) उप,-इ-या (अ. प. अ.), संमिल् (तु. प. से.) ३. कलहायते (ना. धा.), युध् (दि. आ. अ.)।

भिड़ाना, क्रि. स., व. 'भिड़ना' के प्रे. रूप।

भितल्ला, सं. पुं. (हिं. भीतर+तल) दे. 'अस्तर'। वि. आन्तर, आभ्यन्तर, दे. 'भीतरी'।

भितल्ली, सं. स्त्री., (हिं. भितल्ला) पेषण्याः अधस्थः पाषाणः।

भित्त, सं. पुं. (सं. न.) भागः, अंशः २.खण्डः-डं, शकलः-लम् ३. दे. 'भित्ति'।

भित्ति, सं. स्त्री. (सं.) कुड्यं, कूड्यं, कुड्यकं, भित्तिका २. भित्ति-गृह,-मूलम् ३. चित्राधारः ४. छेदः, भेदः ५. खण्डः, शकलः ६. भग्नवस्तु (न.) ६. कटः, किलंजं, तृणपूली ७. दोषः ८. अवसरः।

भिदना, क्रि. अ. (सं. भिद्) विध्-व्यध् (कर्म.), छिद्रित (वि.) भू २. आहन्-व्रण् (कर्म.)।

भिनकना, **भिनभिनाना,** } क्रि.अ. (अनु. भिनभिन) भिणभिणायते (ना. धा.), भिणभिण,-रणितं-निनदं जन् (प्रे.)।

भिनभिनाहट, सं. स्त्री. (हिं. भिनभिनाना) भिणभिणायितं, भिणभिण,-रणितं-निनदः, झंकारः, गुञ्जनम्।

भिन्न, वि. (सं.) असंबद्ध, अलग्न, पृथग्भूत, विश्लिष्ट २. अन्य, इतर, अपर। सं. पुं. (सं. न.) अपूर्णांकः, राशि,-भागः।

—भिन्न, वि., अनेक, विभिन्न २. वि-नाना,-विध।

भिन्नता, सं. स्त्री. (सं.) भिन्नत्वं, पृथक्त्वं, भेदः, अंतरम्।

भिलावाँ, सं. पुं. (सं. भल्लातकः) भल्लातः, शोथहृत् (पुं.), वीर,-तरुः-वृक्षः, कृमिघ्नः, भूतनाशनः, स्फोटबीजकः, व्रणकृत् (पुं.)।

भी, अव्य. (सं. अपि) च, अपि च २. अवश्यं ३. अधिकम्।

भीख, सं. स्त्री. (सं. भिक्षा) दे. 'भिक्षा' (१-३)।

—मांगना, क्रि. स., भिक्ष् (भ्वा. आ. से.), भिक्षां याच् (भ्वा. आ. से.)।

भीग(ज)ना, क्रि. अ. (सं. अभ्यंजनं>) क्लिन्नी-आर्द्री भू, उंद् (कर्म. उद्यते), क्लिद् (दि. प. वे.)।

भीगी बिल्ली होना, मु., भयात् तूष्णीं स्था (भ्वा. प. अ.)।

भीड़, सं. स्त्री. (हिं. भिड़ना) जन,-समुदायः-संमर्दः-ओघः-समूहः २. आपद्-विपद् (स्त्री.)।

—भड़क्का, सं. पुं. **—भाड़,** सं. स्त्री. } सुमहान् जनसंमर्दः इ.।

भीत[1], वि. (सं.) भयार्त्त, त्रस्त, सभय।

ओछे की प्रीत ज्यों बालू की भीत, मु., * क्षुद्रसख्यं हि नश्वरम्।

भीत[2], सं. स्त्री., दे. 'भित्ति'।

भीतर, क्रि. वि. (सं. अभ्यंतरे) अंतः, गर्भे, अंतरे, दे. 'अंदर'। सं. पुं., हृदयं, मानसं, अंतःकरणं २. अंतःपुरं, अवरोधः।

भीतरी, वि. (हिं. भीतर) आंतर-आभ्यंतर [-री (स्त्री.)], अन्तर्, अंतरस्थ, अंतर्भव २. गुप्त, गूढ, प्रच्छन्न।

भीति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'भय'।

भीम, सं. पुं. (सं.) युधिष्ठिरानुजः, भीमसेनः, वृकोदरः। वि., दे. भयंकर २. सुमहत्, अतिविशाल।

—के हाथी, मु., अप्रत्यागामि-अप्रत्यावर्ति,-पदार्थः।

भीरु, वि. (सं.) कातर, त्रस्नु, भयशील, भारु(लु)क।

भीरुता, सं. स्त्री. (सं.) कातर्यं, कापुरुषत्वं, क्लीबता, त्रस्नुता।

भील, सं. पुं. (सं. भिल्लः) म्लेच्छजातिविशेषः।

भीलनी, सं. स्त्री. (हिं. भील) भिल्ली, भिल्लनारी।

भीषण, वि. (सं.) दे. 'भयंकर'।

भीषणता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'भयंकरता'।

भीष्म, सं. पुं. (सं.) गांगेयः, देवव्रतः, शांतनुपुत्रः २. शिवः। वि., दे. 'भयंकर'।

भुक्खड़, वि. (हिं. भूख) बुभुक्षित, क्षुधार्त २. औदरिक, बहुभोजिन्, अघंर, घस्मर, अत्याहारिन् ३. दरिद्र, दीन।

भुक्त, (सं.) भक्षित, जग्ध २. उपभुक्त, व्यवहृत।

—शेष, वि. (सं.) उच्छिष्ट, जुष्ट।

भुक्ति, सं. स्त्री. (सं.) भोजनं, आहारः, अन्नं २. विषयोपभोगः, लौकिकसुखम्।

भुखमरा, वि. (हिं. भूख-मरना) दे. 'भुक्खड़' (२, ३)।

भुगतना, क्रि. स. (सं. भुक्त>) उप-,भुज् (रु. आ. अ.), अनुभू, प्राप् (स्वा. प. अ.) २. क्षम्-सह् (भ्वा. आ. से.), मृष् (दि. प. से., चु.) ३. (ऋणादिकं) शुध् (दि. प. अ.), अपाकृ (कर्म.)। क्रि. अ., समाप (कर्म.), पूर् (कर्म.), निर्वृत् (भ्वा. आ. से.) अवसो (कर्म.)।

भुगतान, सं. पुं. (हिं. भुगताना) निर्वृत्तिः-समाप्तिः-सिद्धिः-पूर्तिः (स्त्री.) २. (ऋणादिकस्य) निस्तारः, परिशुद्धिः, अपनयनम्।

भुगताना, क्रि. प्रे. व. 'भुगतना' क्रि. स. के प्रे. रूप।

भुग्गा, वि., मूर्ख, जड, अज्ञ, निर्बुद्धि।

भुग्न, वि. (सं.) अराल, जिह्म, वक्र, न्युब्ज, आ-, न(ना)मित।

भुच्च, भुच्चड़, वि. (सं. भूत+हिं. चढ़ना) जड़, अज्ञ, मूर्ख, जडमति।

भुजंग,
भुजंगम } सं. पुं. (सं.) दे. 'सर्प'।
भुजंगी-गिनी, सं. स्त्री., दे. 'सर्पिणी'।
भुज, सं. पुं. (सं.) भुजा, बाहुः, दोर्दंडः २. (ज्योमैट्री में) भुजः, बाहुः, पार्श्वः।
—दंड, सं. पुं. (सं.) दोर्-बाहु,-दंडः।
—पाश, सं. पुं. (सं.) आलिंगनं, परिष्वंगः।
—बंद, सं. पुं., अंगदं, केयूरं, बाहुवलयः।
—मूल, सं. पुं. (सं. न.) कक्षा, दोर्मूलं, खडिकः।
भुजना, सं. पुं. (हिं. भूजना) *भृष्टान्नम्।
भुजा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'भुज'।
भुजिया, सं. स्त्री. (हिं. भूजना) *भर्जिता, भृष्टशुष्क,-शाकः-शिग्रुः। सं. पुं. क्वथितधान्यं २. क्वथितधान्यतंडुलः।
भुट्टा, सं. पुं. (सं. भृष्ट>) मकायकणिशम्।
भुतना, सं. पुं. दे. 'भूत' (७-९)।
भुनगा, सं. पुं. (अनु.) (१-२) कीट-पतंग,-भेदः।
भुनना, क्रि. अ., ब. 'भूनना' के कर्म. रूप २. ब. 'भुजना' के कर्म. रूप।
भुनभुनाना, क्रि. अ. (अनु.) भुणभुणायते (ना. धा.) अव्यक्तं वच् (अ. प. अ.)।
भुनवाना, क्रि. प्रे., ब. 'भूनना' के प्रे. रूप। २. ब. 'भुनाना' के प्रे. रूप।
भुनाई[1], सं. स्त्री. (हिं. भूनना) भर्जन,-भृतिः-भाटिः (दोनों स्त्री.)।
भुनाई[2], सं. स्त्री. (हिं. भुनाना) नाणकवि-निमयभाटिः-भृतिः (दोनों स्त्री.)।
भुनाना[1], क्रि. प्रे. ब. 'भूनना' के प्रे. रूप।
भुनाना[2], क्रि. स. (सं. भंजनं) अल्पनाण-केभ्यः बृहन्नाणकानि प्रतिदा (जु. उ. अ.), नाणकानि*भंज्*त्रुट् (प्रे.) नाणकानि विनि-मे (भ्वा. आ. अ.)।
भुरकुस, सं. पुं. (अनु. भुर>) *चूर्णं, क्षोदः।
—निकालना, मु., निर्दयं तड् (चु.) २. नश्-ध्वंस् (प्रे.)।
भुरता, सं. पुं. (अनु. भुर>) दे. 'भरता' २. चूर्णित-विकृत,-पदार्थः।
—करना, मु., आपाड्य चूर्ण् (चु.)-पिष् (रु. प. अ.)।
भुरभुरा, वि. (अनु.) भिदुर, भंगुर, सुभंग २. वालुकानिभ।
भुलक्कड़, वि. (हिं. भूलना) विस्मरणशील, मंद-अल्प,-स्मृति २. प्रमादिन्, प्रमत्त।
भुलाना, क्रि. प्रे., ब. 'भूलना' के प्रे. रूप।
भुलावा, सं. पुं. (हिं. भुलाना) प्र-,वंचना, प्रतारणा, छलम्।
—देना, क्रि. स., प्रतॄ (प्रे.), वंच (चु.)।
भुवः, अव्य. (सं.) आकाशः-शं, अंतरिक्ष-लोकः, द्वितीयलोकः २. द्वितीयमहाव्या-हृतिः (स्त्री.)।
भुवन, सं. पुं. (सं. न.) जगत् (न.), जगती, सृष्टिः (स्त्री.), संसारः २. जलं ३. जनः, लोकः ४. चतुर्दश-भुवनानि (न. बहु.)-लोकाः।
त्रि—, सं. पुं. (सं. न.) त्रिलोकी, लोकत्रयम्।
भुशुंडि, सं. पुं. (सं.) काकभुशुंडिः। (सं. स्त्री.) भुशुंडी, अस्त्रभेदः।
भुस, सं. पुं., दे. 'भूसा'।
भुसी, सं. स्त्री., दे. 'भूसी'।
भूँकना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'भौंकना' (१-२)।
भूँचाल, (सं. भूचालः) मही-, भू-कंपः-प्रकंपः-चलनं, क्ष्मायितम्।
भूँजना, क्रि. स., दे. 'भूनना' (१-२)।
भूँडोल, सं. पुं. दे. 'भूँचाल'।
भू, सं. स्त्री. (सं.) धरणी, धरा, दे. 'पृथिवी' २. स्थानं, स्थलम्।
—कंप, सं. पुं. (सं.) दे. 'भूँचाल'।
—चाल,
—डोल, } दे. 'भूँचाल'।
—तल, सं. पुं. (सं. न.) धरातलं २. पृथिवी।
भूख, सं. स्त्री. (सं. बुभुक्षा) क्षुधा, क्षुध् (स्त्री.), जिघत्सा, अशनाया, अशनायितं २. आवश्य-कता ३. अभिलाषः।
—का अभाव, सं. पुं., अरुचिः (स्त्री.), भक्त,-उपघातः-द्वेषः।
—प्यास, सं. स्त्री., क्षुधापिपासे, क्षुत्तृषे।
भूखों मरना, मु., आहाराभावात् मृ (तु. आ. अ.)-अवसद् (भ्वा. प. अ.)-नश् (दि. प. वे.)।
—लगना, क्रि. अ., क्षुध् (दि. प. अ., चतुर्थी के साथ), भुज् (सन्नंत, बुभुक्षति-ते) क्षुधया अर्द्-पीड् (कर्म.)।

भूखा, वि. (हिं. भूख) क्षुधा,-आविष्ट-आतुर-आर्त्त-अन्वित-पीडित, क्षुधित, जिघत्सु, बुभुक्षु, अन्नार्थिन्, अशनायित २. इच्छुक ३. दरिद्र ।

—नंगा, वि., दीन, दरिद्र, निर्धन, अकिंचन ।

—प्यासा, वि., क्षुत्पिपासित, क्षुत्तृषार्त्त ।

भूखे प्यासे, मु., *निरन्नपानं, अन्नपानं विना ।

भूगर्भ, सं. पुं. (सं.) धरा,-अंतरं-अभ्यंतरं-गर्भः ।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) भू-गेहं-गृहम् ।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) भूतत्त्व,-शास्त्रं-विद्या-विज्ञानम् ।

—शास्त्रवेत्ता, सं. पुं. (सं.-तृ) भूतत्त्वज्ञः, भूगर्भशास्त्रज्ञः ।

भूगोल, सं. पुं. (सं.) भूमंडलं, भुवनकोषः २. भूगोलः,-विद्या-शास्त्रं, भूपृष्ठविद्या ।

—वेत्ता, सं. पुं. (सं.-तृ.) भूगोलशास्त्रज्ञः ।

भूचक्र, सं. पुं. (सं. न.) पृथ्वीपरिधिः २. विषुवद्रेखा ३. अयनवृत्तं ४. क्रांतिवृत्तम् ।

भूचर, सं. पुं. (सं.) स्थलचरः २. शिवः ।

भूत, सं. पुं. (सं. न.) पृथ्व्यप्तेजोवाय्वाकाश-पंचकं २. जड़चेतनपदार्थः, चराचरवस्तु (न.) ३. प्राणिन्, जीवः ४. भूत-अतीत,-कालः ५. शवः ६. क्रियारूपभेदः (व्या.) ७. रुद्रानुचराः, पिशाचाः ८. मृतस्य आत्मन् (पुं.) ९. पिशाचः, प्रेतः, रक्षस् (न.), राक्षसः । वि. (सं.) गत, वि-,अतीत, २. युक्त ३. सदृश ४. परिणत (सब प्रायः समासांत में) ।

—उतारना, क्रि. स., भूतान् निष्कस् (प्रे.)-अपनुद् (तु. प. अ.)-अपसृ (प्रे.) ।

—काल, सं. पुं. (सं.) पूर्वभूत-अतीत-, कालः-समयः ।

—नाथ, } **—भावन**, } सं. पुं. (सं.) शिवः ।

—पूर्व, वि. (सं.) प्राक्तन, पूर्वतन, पौर्विक ।

—संचार, सं. पुं. (सं.) भूतावेशः ।

—चढ़ना या सवार होना, मु., अतिनिर्बंधेन अव-स्था (भ्वा. आ. अ.) २. अत्यर्थं कुप् (दि. प. से.) ।

भूतत्त्वविद्या, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'भूगर्भविद्या' ।

भूतात्मा, सं. पुं. (सं.-त्मन्) जीवात्मन्, देहिन् २. शरीरं ३. परमेश्वरः ४. विष्णुः ५. शिवः ।

भूतानुकंपा, सं. स्त्री. (सं.) जीव-भूत-प्राणि-, दया-कृपा-अनुकम्पा ।

भूताविष्ट, वि. (सं.) पिशाच-भूत,-ग्रस्त-पीडित-आक्रांत ।

भूतावेश, सं. पुं. (सं.) भूत,-संचारः-क्रांतिः (स्त्री.), पिशाचावेशः ।

भूति(त)नी, सं. स्त्री. (हिं. भूत) शाकिनी, डाकिनी, राक्षसी, पिशाची-चिका ।

भूदेव, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणः, भूसुरः ।

भूधर, सं. पुं. (सं.) गिरिः, पर्वतः ।

भूनना, क्रि. स. (सं. भर्जनं>) भृज् (भ्वा. आ. से.), भ्रस्ज् (तु. उ. अ.), ईषत्तापेन प्लुष् (भ्वा. प. से.)-शुष् (प्रे.) ।

भूप, सं. पुं. (सं.) भूपतिः, भूपालः, नृपः, राजन् (पुं.) ।

भूपति, } **भूपाल**, } सं. पुं. (सं.) नृपः, दे. 'राजा' ।

भूभल, सं. स्त्री. (सं. भूः+हिं. बलना) उष्ण,-भसितं-भस्मन् (न.)-वालुका ।

भूमंडल, सं. पुं. (सं. न.) पृथिवी, धरा, धरित्री ।

भूमिका, सं. स्त्री. (सं.) प्रस्तावना, उपोद्घातः, अवतरणिका, आमुखं, मुखबंधः २. वेशांतर-परिग्रहः ।

भूमि, सं. स्त्री. (सं.) धरा, धरित्री, दे. 'पृथिवी' ।

—ज, वि. (सं.) भूमिजात ।

—जा, सं. स्त्री. (सं.) जानकी, सीता ।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) मंगलग्रहः, भूसुतः ।

—सुता, सं. स्त्री. (सं.) सीता, वैदेही ।

भूय, अव्य. (सं. भूयस्) पुनः, पुनरपि ।

भूरा, वि. (सं. बभ्रु) धूलि-मृद् ,-वर्ण-रंग २. कपिल-श, पिंग, पिंगल । सं. पुं., १-२ बभ्रु-पिंगल,-वर्णः-रंगः ३. शर्करा, सिता ।

भूरि, वि. (सं.) अधिक, बहु, प्रचुर २. महत्, गुरु ।

भूल, सं. स्त्री. (हिं. भूलना) विस्मरणं, विस्मृतिः (स्त्री.) २. दोषः अपराधः ३. अशुद्धिः (स्त्री.), स्खलितं, स्खलनं २. मोहः, भ्रमः ।

—चूक, सं. स्त्री., प्रमादः, अपराधः, त्रुटिः (स्त्री.), स्खलितम् ।

—भुलैयाँ, सं. स्त्री., सुगहनस्थानं, भ्रांतिचक्रं २. संशय-संदेह,-आस्पदम् ।

भूलना, क्रि. स. (प्रा. भुल्लइ) विस्मृ (भ्वा. प. अ.) २. स्खल् (भ्वा. प. से.), प्रमद् (दि. प. से.) ३. त्यज् (भ्वा. प. अ.), हा (जु. प. अ.) । क्रि. अ., विस्मृ (कर्म.) २. भ्रंश्-नश् (दि. प. से.), च्यु (भ्वा. आ. अ.) ३. गर्वित-अवलिप्त (वि.) भू. ४. कम् (भ्वा. आ. से.), स्निह् (दि. प. से., सप्तमी के साथ) । सं. पुं., विस्मरणं, विस्मृतिः (स्त्री.) २. प्रमादः, स्खलितं ३. भ्रंशः, नाशः ।

भूलने योग्य, वि., विस्मर्तव्य, विस्मरणीय ।

भूलनेवाला, सं. पुं., दे. 'भुलक्कड़' ।

भूला-भटका, वि., पथ-मार्ग,-भ्रष्ट ।

भूला हुआ, वि., विस्मृत, स्मृतिपथात् अपेत ।

भूलोक, सं. पुं. (सं.) मर्त्यलोकः, भूमिः (स्त्री.) ।

भूशायी, वि. (सं.-यिन्) धराशायिन्, मृत, २. भूमिशयन ३. भूमौ पतित ।

भूषण, सं. पुं. (सं. न.) आभरणं, अलंकारः, आ-वि-,भूषणं, दे. 'गहना' ।

भूषणीय, वि. (सं.) भूष्य, अलंकार्य, मंडनीय ।

भूषा, सं. स्त्री. (सं.) अलंक्रिया, परिष्-,कारः-क्रिया, प्रसाधनं, नेपथ्यम् ।

भूषित, वि. (सं.) अलंकृत, परिष्कृत, प्रसाधित, मण्डित ।

भूसा, सं. पुं. (सं. बुसं>) पलालः-लं, यवसं, धान्यतृणं, पलः ।

भूसी, सं. स्त्री. (हिं. भूसा) दे. 'भूसा' २. बुषं, बुसं, तुषः-सः, कडंगरः, धान्यत्वच् (स्त्री.) ।

भूसुर, सं. पुं. (सं.) विप्रः, ब्राह्मणः ।

भृंग, सं. पुं. (सं.) भ्रमरः, षट्पदः २. कीटभेदः ।

—राज, सं. पुं. (सं.) पक्षिभेदः २. केशरंजनः, केश्यः, कुंतलवर्द्धनः, क्षुपभेदः ।

भृकुटी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'भौंह' ।

भृगु, सं. पुं. (सं.) मुनिविशेषः २. परशुरामः ।

—नाथ, सं. पुं. (सं.) परशुरामः, भृगुरामः ।

भृत, वि. (सं.) पूरित, पूर्ण, निचित २. पालित, पोषित ।

भृतक, सं. पुं. (सं.) वैतनिकः, कर्मकरः ।

भृतकाध्यापक, सं. पुं. (सं.) सवेतनः शिक्षकः ।

भृति, सं. स्त्री. (सं.) वेतनं, भृत्या २. कर्मण्या, तुलिका, भरण्यं, भर्मण्या ३. मूल्यं ४. पूरणं, भरणं ५. पालनं ६. वैतनिकता ।

भृत्य, सं. पुं. (सं.) सेवकः, दे. 'नौकर' ।

भृत्या, सं. स्त्री. (सं.) सेविका, दासी २. दे. 'भृति' ।

भृश, क्रि. वि. (सं. भृशं) अत्यंतं, अत्यधिकम् ।

भेंगा, वि. (देश.) केकर, केदर, टेर, टगर, वलिर ।

—पन, स. पुं., तिर्यग्दृष्टिः (स्त्री.), टेरता इ. ।

भेंट, सं. स्त्री. (सं. भिद्>) सं(समा)गमः, संमिलनं, साक्षात्कारः २. उपहारः, उपायनं, प्राभृतं-तकं, प्रदेशनम् ।

—करना, क्रि. स., संमिल् (तु. प. से.), अभि-सं-मुखीभू, सं-इ (अ. प. अ.) २. उत्सृज् (तु. प. अ.), उपह (भ्वा. प. अ.), उपढौक् (प्रे.), ऋ (प्रे. अर्पयति) ।

भेक, सं. पुं. (सं.) दे. 'मेंढक' ।

भेख, सं. पुं. दे. 'वेष' ।

भेजना, क्रि. स. (सं. व्रजनं>) सं-,प्रेष् (प्रे.), प्र-हि (स्वा. प. अ.), प्रस्था (प्रे.), विसृज् (तु. प. अ.), सं-,प्रेर् (प्रे.) । सं. पुं., सं-, प्रेषणं-प्रेरणं, विसर्जनं, प्रस्थापनं, प्रहितिः (स्त्री.) ।

भेजने योग्य, वि., प्रेषयितव्य, प्रस्थाप्य, प्रहेयणीय ।

भेजनेवाला, सं. पुं., प्रेषकः, प्रहेतृ ।

भेजा हुआ, वि., प्रेषित, विसृष्ट, प्रहित ।

भे(भि)जवाना, क्रि. प्रे., व. 'भेजना' के प्रे. रूप ।

भेजा, सं. पुं. (देश.) दे. 'मगज़' ।

भेड़, सं. स्त्री. (सं. मेडकः>) मेषी, एडका, अविला, उरणी, उरा, कुररी, जालकिनी, अविः (स्त्री.), रुजा (पुं., दे. 'भेड़ा') २. मूढः, मूढधीः, ऋजुः ।

भेड़ना, क्रि. स., दे. 'बंद करना' ।

भेड़ा, सं. पुं. (सं. मेड्रः) अविः, उरणः, उरभ्रः, ऊर्णायुः, एडकः, मेढ्रः, हुडः, रो(लो)मशः, मेडुः, भेडकः ।

भेड़िया, सं. पुं. (हिं. भेड़) वृकः, कोकः, ईहामृगः ।

—धसान, सं. पुं., अंध,-अनुकरणं-अनुसरणं-अनुवर्तनम् ।

भेड़ी, सं. स्त्री., दे. 'भेड़'।

भेद, सं. पुं. (सं.) छेदः, दे. 'भेदन' २. शत्रु-वशीकरणोपायभेदः, उपजापः ३. रहस्यं, गूढाशयः ४. अन्तरं, विशेषः ५. प्रकारः, जातिः (स्त्री.)।

—खोलना, क्रि. स., रहस्यं विवृ (स्वा. उ. से.)।

—पाना, क्रि. स., गुह्यं बुध् (भ्वा. प. से.)।

—बुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) विश्लेषः, विच्छेदः, ऐक्याभावः।

—भाव, सं. पुं. (सं.) अंतरं, विशेषः।

—लेना, क्रि. स., गोप्यं ज्ञा (सन्नंत, जिज्ञासते)।

भेदक, वि. (सं.) भेत्तृ, छेत्तृ २. रेचक।

भेदन, सं. पुं. (सं. न.) विदारणं, छेदनं, वेधनं, व्यधः-धनं, त्रोटनम्। वि., भेदक २. रेचक।

भेदिया, **भेदी**,[1] } सं. पुं. (सं. भेदः >) दे. 'जासूस' २. रहस्यविद् (पुं.)।

भेदी[2], वि. (सं. भेदिन्) छेदक, विदारक।

भेद्य, वि. (सं.) छेद्य, विदारणीय।

—रोग, सं. पुं. (सं.) शल्यचिकित्स्यो रोगः।

भेरी, सं. स्त्री. (सं.) भेरिः (स्त्री.), दुंदुभिः, डिंडिमः, पटहः, ढक्का।

भेली, सं. स्त्री. (देश.) गुडपिंडः-डम्।

भेष, स. पुं., दे. 'वेष'।

भेषज, सं. पुं. (सं. न.) औषधं, अगदः, भैषज्यम्।

भेस, सं. पुं., दे. 'वेष'।

भैंस, सं. स्त्री. (सं. महिषी) मंदगमना, महाक्षीरा, पयस्विनी, कलुषा।

भैंसा, सं. पुं. (सं. महिषः) अश्वारिः, कलुषः, कासरः, कृष्णशृंगः, गद्गदस्वरः, जर(र)तः, यमरथः, लुलापः (यः), वीरस्कंधः, सैरिभः, हेरंबः।

भैया, सं. पुं., दे. 'भाई'।

भैरव, सं. पुं. (सं.) शंकरः, शिवः २. शिवगणभेदः ३. रागभेदः। वि., भीम, भीषण, भयङ्कर।

भैरवी, सं. स्त्री. (सं.) चामुंडा, देवीविशेषः २. रागिणीभेदः।

भैरों, सं. पुं., दे. 'भैरव'।

भोंकना, क्रि. स. (अनु. भक) सहसा शस्त्रादिकं निविश् (प्रे.); व्यध् (दि. प. अ.) २. अकस्मात् आहन् (अ. प. अ.)।

भोंडा, वि., दे. 'भद्दा'।

भोंदू, वि. दे., 'बुद्धू'।

भोंपा, सं. पुं. (अनु. भों) दे. 'भोंपू' २. मूर्खः, अज्ञः।

भोंपू, सं. पुं. (अनु. भों) काहलः-लं-ला, मुखवाद्यभेदः।

भो, अ० (सं.) हे, अरे, अयि।

भोक्तव्य, वि. (सं.) दे० 'भोग्य'।

भोक्ता, वि. (सं. भोक्तृ) खादक, भक्षक २. विलासिन्, विषयिन् ३. प्र-उप,-योक्तृ। सं. पुं., पतिः।

भोग, सं. पुं. (सं.) सुख-दुःखादीनामनुभवः-२. सुखं ३. दुःखं ४. रतिः (स्त्री.), संभोगः ५. सर्पफणः-णं-णा ६. सर्पः ७. धनं ८. गृहं ९. भक्षणं १०. शरीरं ११. परिमाणं १२. विपाकः, कर्मफलं १३. भुक्तिः (स्त्री.) (क्रञ्जा) १४. नैवेद्यं १५. भाटकः-कम्।

—लगाना, क्रि. स., देवाय नैवेद्यं कृ (प्रे. अर्पयति) २. भक्ष् (चु.)।

—विलास, सं. पुं. (सं.) आमोदप्रमोदाः (पुं. बहु.), सुखं, हर्षः।

भोगना, क्रि. सं. (सं. भोगः >) दे. 'भुगता' (१-२)।

भोगी, वि. (सं. -गिन्) भोग-विषय,-आसक्त-लंपट, विलासिन् २. भक्षक।

भोग्य, वि. (सं.) उपयोक्तव्य, उपयोगिन् २. भोगार्ह, उपभोक्तव्य ३. भक्ष्य। सं. पुं. (सं. न.) धनं २. धान्यम्।

भोज[1], सं. पुं. (सं.) धारानगरस्य नृपविशेषः।

भोज[2], सं. पुं. (सं. भोजनं) भक्ष्यं, आहारः २. सह-सं.,-भोजनं, सग्धिः (स्त्री.)।

भोजन, सं. पुं. (सं. न.) भक्षणं, खादनं, अशनं, आस्वादनं २. खाद्यं, भोज्यं, भक्ष्यम्।

—करना, क्रि. स., भुज् ((रु. आ. अ.), भक्ष् (चु.)।

—भट्ट, सं. पुं. (सं. भोजनभटः) अत्याहारिन्, अद्मरः, घस्मरः।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) भोजन,-आलयः-आगारः(रं.) २. पाकशाला, महानसः-सम्।

भोजनाच्छादन, सं. पुं. (सं. न.) अन्नवस्त्रं, अशनवसनम्।

भोजपत्र, सं. पुं. (सं.) भूर्जवृक्षः, बहुलवल्कलः, छत्रपत्रः, मृदु-बहु,-त्वच् (पुं.)।

भोज्यं, वि. (सं.) भक्ष्य, खाद्य, अभ्यवहार्य । सं. पुं., भक्ष्यपदार्थः ।

भोर, सं. पुं. (सं. विभावरी>) उषा, उषस् (स्त्री.) वि-प्र,-भातं, विहानः-नम् ।

भोला, वि. (हिं. भूलना) सरल, ऋजु, निष्कपट, निश्छल २. मूर्ख, जड ।

—नाथ, सं. पुं. (हिं.+सं.) शिवः ।

—पन, सं. पुं., आर्जवं, सरलता, निर्व्याजता २. मौर्ख्यं, अज्ञता ।

—भाला, वि., निष्कपट, सरल, ऋजु ।

भौं, सं. स्त्री., दे. 'भौंह' ।

भौंकना, क्रि. अ. (अनु. भौं भौं) बुक्क् (भ्वा. प. से., चु.), भष् (भ्वा. प. से.) २. प्र-,जल्प् (भ्वा. प. से.)। सं. पुं., बुक्कनं, भषणं २. जल्पः-पनम् ।

भौंतुवा, (हिं. भौना=घूमना) तैलिक-तैलकार,-वृषः-वृषभः । २. कीटभेदः ३. हस्तरोगभेदः ।

भौंर, सं. पुं. (सं. भ्रमरः) दे. 'भ्रमर' २. जलावर्तः, भ्रमिः (स्त्री.) ।

भौंरा, सं. पुं. (सं. भ्रमरः) दे. 'भ्रमर' २. भ्रमरकः-कं, क्रीडनकभेदः ३. भू,-गेहं-गृहम् ।

भौंरी, सं. स्त्री. (सं. भ्रमरी) षट्पदी, मधुकरी २. घोटकादिशरीरस्थं रोम,-चक्रं-मंडलं-वर्तुलं ३. वैवाहिक,-परिक्रमः-प्रदक्षिणा ४. आवर्तः, जलगुल्मः ।

भौंह, सं. स्त्री. [सं. भ्रूः (स्त्री.)] चिल्लिका, भ्रूलता, नयनोद्र्ध्ववर्ति रोमराजी ।

—चढ़ाना या तानना, मु., कुप् (दि. प. से.), क्रुध् (दि. प. अ.) २. भृ(भ्रू)कुटीं बंध् (क्र्. प. अ.)-रच् (चु.) ।

भौगोलिक, वि. (सं.) भूगोल,-विषयक-सम्बन्धिन् ।

भौंचक, भौचक्का, वि. (सं. भयचकित>) विस्मयापन्न, विस्मित, ससाध्वस, भयाभिभूत, स्तंभित ।

भौजाई, भौजी, सं. स्त्री. (सं. भ्रातृजाया) दे. 'भाभी'(२) ।

भौत, वि. (सं.) भौतिक, भूतनिर्मित २. पैशाचिक ३. भूताविष्ट । (सं. पुं.) भूतपूजकः २. भूतयज्ञः ।

भौतिक, वि. (सं.) भूतात्मक, भूतमय, आधिपांच,-भौतिक २. पार्थिव ३. शारीरिक, दैहिक, दैह्य ।

भौम, वि. (सं.) पार्थिव, भौमिक २. भूमिज । सं. पुं., मंगलग्रहः, कुजः ।

—वार, सं. पुं. (सं.) मंगलवासरः ।

भौमिक, वि., दे. 'भौम' वि. । सं. पुं., क्षेत्र,-पतिः-स्वामिन् ।

भौमी, सं. स्त्री. (सं.) जानकी, सीता, वैदेही ।

भ्रंश, सं. पुं. (सं.) अधः-अव,-पतनं-पातः २. वि-,नाशः = ध्वंसः ३. पलायनम् ।

भ्रंशित, वि. (सं.) अधःपातित २. वंचित ।

भ्रम, सं. पुं. (सं.) भ्रांतिः (स्त्री.), माया, मिथ्या,-मतिः (स्त्री.) ज्ञानं, आभासः, अविद्या २. संशयः, संदेहः ३. मूर्च्छाभेदः ४. मूर्च्छा ५. कुलालचक्रं ६. भ्रमणं ७. भ्रमद्वस्तु (न.) ।

भ्रमण, सं. पुं. (सं. न.) पर्यटनं, विचरणं, परिभ्रमणं २. गतागतं ३. यात्रा ।

—करना, क्रि. अ., पर्यट्-विचर् (भ्वा. प. से.), परिक्रम् (भ्वा. दि. प. से.) ।

भ्रमात्मक, वि. (सं.) भ्रमोत्पादक २. संदिग्ध ।

भ्रमर, सं. पुं. (सं.) षट्पदः, द्विरेफः, मधु,-करः-पः-लिह् (पुं.), अलिः, अलिन्, भृङ्गः, शिलीमुखः, पुष्पंधयः, चंचरीकः २. कामुकः ।

भ्रमरी, सं. स्त्री. (सं.) षट्पदी, मधुकरी, शिलीमुखी २. जतुकालता, पुत्रदात्री ३. पार्वती ४. मृगीरोगः, भ्रामरम् ।

भ्रमी, वि. (सं.-मिन्) भ्रांत, भ्रमविशिष्ट, मिथ्याज्ञानिन् २. चकित, विस्मित ३. शंकाशील, साशंक ।

भ्रष्ट, वि. (सं.) अधः-अव,-पतित, अव-,गलित-स्रस्त, च्युत २. विकृत,दूषित, सदोष ३.दुर्वृत्त, दुराचार-रिन् ।

—करना, क्रि. स., भ्रंश्-दुष्-आधृष् (प्रे.) च्यु (प्रे.) २. सतीत्वं नश् (प्रे.) ३. मलिनी-कलुषी-कृ ।

—होना, क्रि. अ., भ्रश् (दि. प. से.), भ्रंश् (भ्वा. आ. से.) २. दुष् (दि. प. अ.), विकारं आपद् (दि. आ. अ.) ३. मलिनी-कलुषी-भू ४. क्षीणवृत्त (वि.) भू ।

भ्रष्टा, सं. स्त्री. (सं.) कुलटा, पुंश्चली ।

भ्रांत, वि. (सं.) भ्रांति-भ्रम,-विशिष्ट २. व्याकुल, विह्वल ३. उन्मत्त ४. पथभ्रष्ट ५. आवर्तित, चक्रवत् चालित ।

भ्रांति, सं. स्त्री. (सं.) भ्रमः, मोहः, आभासः, मिथ्याज्ञानं, मतिभ्रमः, माया २. संदेहः, संशयः ३. स्खलितं, प्रमादः, त्रुटिः (स्त्री.) ४. भ्रमणं ५. मंडलाकारगतिः (स्त्री.) ६. अलंकारभेदः।

भ्राता, सं. पुं. (सं. भ्रातृ) सोदरः, दे. 'भाई'।

भ्रातृभाव, सं. पुं.(सं.) भ्रातृत्वं, दे. 'भाईचारा'।

भ्रात्रीय, वि. (सं.) भ्रातृक, भ्रात्रेय।

भ्रुकुटि-टी, सं. स्त्री. (सं.) भ्रूकुटी-टिः, भृकुटी-टिः (सब स्त्री.), भ्रू,-विक्षेपः-भंगः-बंधः-संकोचः २. दे. 'भौंह'।

भ्रू, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'भौंह'।

—भंग, सं. पुं. (सं.) दे. 'भ्रुकुटि' (१)।

भ्रूण, सं. पुं. (सं.) गर्भः, गर्भस्थशिशुः।

—हत्या, सं. स्त्री. (सं.) गर्भ,-पातनं-स्रावणं, गर्भस्थशिशुघातः।

म

म, देवनागरीवर्णमालायाः पंचविंशो व्यंजनवर्णः, मकारः।

मंगता, सं. पुं. (हिं. मांगना) दे. 'भिखारी'।

मंगन, मंगनी, } सं. स्त्री. (हिं. मांगना) वाग्दानं, विवाहप्रतिज्ञा। २. याच्ञा, याचनं-ना।

मंगल, सं. पुं. (स. न.) कल्याणं, कुशलं,भद्रं, हितं, क्षेमं, भव्यं, प्र-,शस्तं, अरिष्टं, शिवं, भद्रं ३. अभीष्टसिद्धिः (स्त्री.) ३. ग्रहविशेषः, कुजः, भौमः, अंगारकः, महीसुतः, वक्रः, लोहितांगः, आवनेयः ४. मंगलवारः। वि., (सं.) शुभ, शिव, भद्र, मंगल्य, शिवं-शुभं,-कर, मांगलिक।

—काम, वि. (सं.) शुभ-हित-मंगल,-चिन्तक-इच्छुक-कामिन्।

—कामना, सं. स्त्री. (सं.) हितचिन्तनम्, शुभ,-इच्छा-कामना।

—कारक, वि. (सं.) कल्याण-मंगल,-कारिन्-प्रद, दे. 'मंगल' वि.।

—क्षौम, सं. पुं. (सं. न.) उत्सवोचित-कौशेयवस्त्रम्।

—गान, सं. पुं. (न.) मांगल्य-शुभ,- गीतं-गीतिः (स्त्री.)-गानम्।

—वार, सं. पुं. (सं.) मंगल-भौम,-वासरः।

—सूत्र, सं. पुं. (न.) हरिद्रारंजितवैवाहिक-सूत्रम्।

मंगलाचरण, सं. पुं. (सं. न.) ग्रंथाद्यारम्भे कल्याणप्रार्थना।

मंगलाचार, सं. पुं. (सं.) मांगलिक,-संस्कारः-कृत्यं २. आशीर्वादः ३. स्तवः।

मंगलामुखी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'वेश्या'।

मंगली, वि. (सं. मंगलः) अमांगलिक,-कन्या-वरः (फलित ज्योतिष)।

मँगवाना, क्रि. प्रे., व. 'माँगना' के प्रे. रूप।

मंगेतर, वि. (हिं. मंगनी) वाग्दत्त।

मंच, मंचक, सं. पुं. (सं.) खट्वा २. पीठिका ३. उच्चासनं, इन्द्रकोशः-षः-षकः, वेदिका, ५. रंगः, रंग,-भूमिः(स्त्री.)-पीठं ६. मंच-मंडपः।

मंजन, सं. पुं. (सं. न.) दंतधावन-दंत्य,-चूर्णं २. (पेस्ट) *दंतपिष्टं, दंतोदपेषः।

मँजना, क्रि. अ., व. 'माँजना' के कर्म. के रूप।

मँजवाना, क्रि. प्रे., व. 'माँजना' के प्रे. रूप।

मंजरी, सं. स्त्री. (सं.) मंजरिः-वल्लरी-रिः (सब स्त्री.), मंजी-जिः (स्त्री.) मंजरं, वल्लरं, वल्लिः (स्त्री.) २. पल्लवः, किसलयः ३. लता ४. मुक्ता।

मंज़िल, सं. स्त्री. (अं.) दे. 'पड़ाव' २. कोष्ठः, भूमिः (उ. दोमंज़िला = द्विभूमिकं गृहं) ३. गंतव्य-निर्दिष्ट,-स्थानम्।

मंजीर,रा, सं. पुं. (सं. पुं. न.) नूपुरः-रं २. झल्लरीभेदः।

मंजु, मंजुल, } वि. (सं.) सुंदर, मनोहर, मनोज्ञ, मनोरम, चारु, रम्य, रुचिर, रुच्य, हृद्य।

मंज़ूर, वि. (अ.) दे. 'स्वीकृत'।

मंज़ूरी, सं. स्त्री. (अ. मंज़ूर) स्वीकृतिः (स्त्री.)।

मंजूषा, सं. स्त्री. (सं.) पिटकः, दे. 'पिटारी'।

मँझला, वि. पुं., दे. 'मझला'।

मँझा, सं. पुं. 'माँझा'।

मँझार, क्रि. वि., दे. 'मझदार'।

मंड, सं. पुं. (सं.) दे. 'माँड़'।

मंडन, सं. पुं. (सं. न.) अलंकरणं, परिष्करणं, भूषणं, प्रसाधनं २. दृढी-पुष्टी,-करणं, समर्थनं, सत्यापनं, प्रामाण्यसाधनम्।

मंडप, सं. पुं. (सं. पुं. न.) वितानः-नं; उल्लोचः, चंद्र,-उदयः-आतपः २. जनाश्रयः,

विश्रामगृहं ३. (संस्कारादिभ्यः) शाला, आच्छादनं २. देवालयोर्ध्वभागः।

मँडराना, क्रि. अ., दे. 'मँडलाना'।

मंडल, सं. पुं. (सं. न.) वृत्तं, वर्तुलं, चक्रं, वलयः-यं २. गोलः-लं ३. परिवेशः-,षः-परिधिः, उपसूर्यकं ४. क्षितिजं, दिक्,-चक्रं-तटं, दिगंतः ५. द्वादशराजकं ६. समाजः, समुदायः ७. व्यूहभेदः ८. चक्रं, दे. 'पहिया' ९. ऋग्वेद-परिच्छेदः १०. गोलचिह्नं ११.ग्रह,-कक्षा-मार्गः १२. भूप्रदेशः।

मंडलाकार, वि. (सं.) गोल, वर्तुल, चक्राकार, वृत्त।

मँडलाना, क्रि. अ. (सं. मंडलं>) चक्राकारं उद्-डी (भ्वा. दि. आ. से.) अथवा खे चर् (भ्वा. प. से.) २. परि,-भ्रम्;अट्-क्रम् (भ्वा. प. से.)। सं. पुं., चक्रवत् उड्डयनं; परि,-क्रमणं-भ्रमणम्।

मंडली,[१] सं. स्त्री. (सं.) समाजः, सभा, समितिः (स्त्री.), गोष्ठी २. संघः, समुदायः ३. दूर्वा ४. गुडूची।

मंडली,[२] सं. पुं. (सं.-लिन्) सर्पः २. सर्पभेदः ३. सूर्यः ४. विडालः ५. मंडलाधिपः ६. वटः, न्यग्रोधः।

मँडवा, सं. पुं. (सं. मंडपः, दे.)।

मंडा, सं. स्त्री. (सं.) सुरा, मद्यं २.दे. 'आँवला'।

मंडित, वि. (सं.) भूषित, अलंकृत, परिष्कृत।

मंडी, सं. स्त्री. (सं. मंडपः>) महाहट्टः, पण्याजिरं, बृहद्-आपणः-विपणी।

मंडूक, सं. पुं. (सं.) दे. 'मेढक'।

मंडूर, सं पुं. (सं. पुं. न.) लौहमलं, शिघाणं, सिंहानं-णम्।

मंतव्य, सं. पुं. (सं.) विचारः, मतम्। वि., स्वीकार्य, विश्वसनीय, अभ्युपगंतव्य २. मननीय, भाव्य।

मंत्र, सं. पुं. (सं.) वेदवाक्यं २. वेदानां संहिताभागः ३. मंत्रणा, परामर्शः, विचारणा ४.गोप्यं, रहस्यं, गुह्यं ५. अभिचारमंत्रः(तंत्र)।

यंत्र—, सं. पुं., दे. 'जादू टोना'।

—**कार**, सं. पुं. (सं.) मंत्र,-रचयितृ-कर्तृ-द्रष्टृ।

—**गृह**, सं. पुं. (सं. न.) मंत्रणाभवनम्।

—**विद्या**, सं. स्त्री., तंत्रं, तंत्रविद्या।

मंत्रणा, सं. स्त्री. (सं.) परामर्शः, विचारणा, संमतिः (स्त्री.) २. उपदेशः, अनुशासनम्।

मंत्रित्व, सं. पुं. (सं. न.) साचिव्यं, मंत्रिता, अमात्यत्वं, मंत्रि-सचिव,-कार्यं-पदम्।

मंत्री, सं. पुं. (सं. मंत्रिन्) अमात्यः, सचिवः, धी,-सचिवः-सखः, सामवायिकः, राज,-अमात्यः-सचिवः।

प्रधान—, सं. पुं. (सं.-त्रिन्) मुख्य-महा,-मंत्रिन्, प्रधानामात्यः, महामात्रः।

मंथन, सं. पुं. (सं. न.) मथनं, विलोडनं, २. अनुसंधानं, अवगाहनं, निरूपणं ३. दे. 'मथनी'।

मंथर, वि. (सं.) मंद, अलस २. जड, मंदमति ३. स्थूल, भारवत् ४. अधम। सं. पुं. (सं.) दे. 'मंथनी' २. ज्वरभेदः।

मंद, वि. (सं.) अलस, तंद्रालु, कार्यविमुख, उद्योगशून्य २. मंथर ३. शिथिल ४. मूर्ख ५. दुष्ट।

—**बुद्धि,-मति**, वि. (सं.) मूढ, मूर्ख, जड बालिश।

—**भाग्य**, वि. (सं.) हतभाग्य, दुर्दैव। सं. पुं. (सं. न.) दुर्-दैवं-भाग्यम्।

—**मंद**, क्रि. वि. (सं.-दं.) शनैः-शनकैः (अव्य.) मंदगत्या, सौम्यतया, गाम्भीर्येण।

मंदता, सं. स्त्री. (सं.) आलस्यं २. मंथरता ३. क्षीणता।

मंदर, सं. पुं. (सं.) मंथशैलः, पर्वतविशेषः २. स्वर्गः ३. मुकुरः। वि., मंद, मंथर।

मँदरा, वि., दे. 'बौना'।

मंदा, वि. (सं. मंद) मंथर, बहल २. शिथिल ३. अल्प,-अर्घ-मूल्य, सुलभ ४. निकृष्ट, हीन ५. विकृत, भ्रष्ट।

मंदाकिनी, सं. स्त्री. (सं.) स्वर्ग-वियद्,-गंगा, स्वर्णदी, सुरदीर्घिका।

मंदाक्रान्ता, सं. स्त्री. (सं.) वर्णवृत्तभेदः।

मंदाग्नि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) अजीर्णं, अपचनं अपाकः, अग्निमांद्यम्।

मंदार, सं. पुं. (सं.) स्वर्गवृक्षविशेषः २. अर्क-वृक्षः ३. मंदरपर्वतः ४. गजः ५. स्वर्गः ६. दे. 'धत्तूरा'।

मंदिर, सं. पुं. (सं. न.), देवतायतनं, देव,-गृहं-भवनं-निकेतनं-आलयः २. गृहं, गेहं, सद्मन्-वेश्मन् (न.) ३. आ-नि,-वासः, वासस्थानम्।

मंदी, सं. स्त्री. (सं. मंद>) अल्पार्घता, पण्यसुलभता, मूल्यापकर्षः।

मंद्र, सं. पुं. (सं.) गंभीरध्वनिः (पुं.) (संगीत) २. मृदंगकः। वि., मनोहर २. प्रसन्न ३. गंभीर ४. मंद. गंभीर (शब्दादि)।

मंशा, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'मंसा'।

मंसब, सं. पुं. (अ.) पदं, पदवी, स्थानं २. कर्तव्यं ३. अधिकारः।

मंसा, सं. स्त्री. (अ. मंशा) इच्छा, कामना २. संकल्पः ३. आशयः।

मंसूख़, वि. (अ.) विलुप्त, अपसृष्ट, निरस्त, निवर्तित, गण्डित।

मंसूख़ी, सं. स्त्री. (अ. मंसूख़) विलोपः, निरासः, निवर्तनं, खंडनम्।

मंसूबा, सं. पुं. (फ़ा.) संकल्पः, विचारः २. युक्तिः (स्त्री.), उपायः।

—बाँधना, मु., निश्चि (स्वा. उ. अ.), संकल्प् (प्रे.) २. उपायं चिंत् (चु.)।

मई, सं. स्त्री. (अं. मे) आंग्लवर्षस्य पंचमो मासः, वैशाखज्येष्ठम्।

मकई, सं. स्त्री. (सं. मकायः) कटिजः।

मकड़ा, सं. पुं. (सं. मर्कटकः>) बृहल्लूता।

मकड़ी, सं. स्त्री. (हिं. मकड़ा) लूता, तंतु,-वापः-नाभः, ऊर्णनाभः, मर्कटः-टकः, जालिकः, कोषकारः, अष्टापदः।

—का जाला, सं. पुं., मर्कटकजालम्।

मकतब, सं. पुं. (अ.) पाठशाला।

मकतबा, सं. पुं. (अ.) पुस्तकालयः २. ग्रंथविपणिः (स्त्री.)।

मक़दूर, सं. पुं. (अ.) सामर्थ्यं, शक्तिः (स्त्री.)।

मक़नातीस, सं. पुं. (अ.) दे. 'चुंबक'।

मक़बरा, सं. पुं. (अ.) समाधिः (पुं.), *मृतकमंदिरम्।

मक़बूज़ा, वि. (अ.) अधिकृत, हस्तगत।

मक़बूल, वि. (अ.) स्वीकृत, मत २. प्रिय।

मकरंद, सं. पुं. (सं.) मरंदः, मरंदकः, पुष्प,-रसः-सारः-स्वेदः-निर्यासः-निर्यासकः, मधु (न.), पुष्पजं २. किंजलः, किंजल्कः ३. कुंदक्षुपः।

मकर, सं. पुं. (सं.) नक्रः, ग्राहः, कुंभीरः, अवहारः, जलकुंजरः २. दशमराशिः, आकोकेरः ३. माघमासः ४. व्यूहभेदः ५. दे. 'मछली'।

—ध्वज, सं. पुं. (सं.) मकर,-केतुः-केतनः, कामदेवः।

मकर[2], सं. पुं. (फ़ा.) कपटं, छलम्।

मक़रूज़, वि. (अ.) दे. 'ऋणी'।

मकरूह, वि. (फ़ा.) कलुष, मलीमस २. घृणोत्पादक।

मक़सद, सं. पुं. (अ.) मनःकामना २. अभिप्रायः।

मकान, सं. पुं. (फ़ा.) अ(आ)गारः-रं, भवनं-वेश्मन्-सद्मन् (न.), सदनं, दे. 'घर'।

—किराये पर देना या लेना, क्रि. स., सदनं भाटकेन दा अथवा आ-दा (जु.आ.अ.)।

मालिक—, सं. पुं., गृह-,-सदन-स्वामिन्-पतिः।

मकोड़ा, सं. पुं. (हिं. कीड़ा का अनु०), क्षुद्रकीटः।

मकोय, सं. स्त्री. (सं. काकमाता से विप०) काकमाची-चिका, कुष्ठघ्नी, वायसी, रसायनी, बहुतिक्ता, काका, काकिनी २. काकमाचीफलं इ. ३. दे. 'रसभरी'।

मक्का, सं. पुं., दे. मकई।

मक्कार, वि. (अ.) कपटिन्, छलिन्।

मक्कारी, सं. स्त्री. (अ.) कपटं, छलम्।

मक्खन, सं. पुं. (सं. म्रक्षणं>) नवनीतं, मन्थजं, नवोद्धृतं, तक्र-जं-सारं, दधि,-जं-स्नेहः, पीथं, हैयंगवीनम्।

मक्खी, सं. स्त्री. (सं. मक्षीका) मक्षिका, माचिका, गंधलोलुपा, भंभः, पतंगिका, वमनीया, पलंकषा, नीला, वर्वणा २. मधुमक्षिका ३. *अग्न्यस्त्रमक्षिका।

—चूस, सं. पुं. (सं. कृपणः, मितंपचः, कदर्यः)

जीती मक्खी निगलना मु., जानन्नपि पापं कृ।

नाक पर मक्खी न बैठने देना, मु., उपकारं न सह् (भ्वा. आ. से.)।

मक्खी छोड़ना और हाथी निगलना, मु., पापकानि परित्यज्य महापापेषु प्रवृत् (भ्वा. आ. से.)।

मक्खी पर मक्खी मारना, मु., मक्षिका स्थाने मक्षिका, निर्विवेकप्रतिलिपिः (स्त्री.)।

मक्खी मारना या उड़ाना, मु., उद्योगहीन (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.)।

मक्षिका, सं. स्त्री. (सं.); दे. 'मक्खी'।

—मल, सं. पुं., दे. 'मोम'।

मख, सं. पुं. (सं.) यज्ञः, क्रतुः।

मख़्तूल, सं. पुं. (सं. महार्घतूलं>) कृष्ण,-कौशेय-कीटसूत्रम् ।

मख़मल, सं. स्त्री. (अ.) *मखमलं, श्लक्ष्ण-वस्त्रभेदः ।

मखमली, वि. (अ. मख़मल) मखमल,-मय-निर्मित २. श्लक्ष्ण, स्निग्ध ।

मख़ौल, सं. पुं., (दे. 'ठट्ठा') ।

मग, सं. पुं., दे. 'मार्ग' ।

मग़ज़, सं. पुं. (अ. मग्ज़) मस्तिष्कं, मस्तुलुंगकः २. बुद्धिः-मतिः (स्त्री.) ३. दे. 'गिरी' ।

—चट, सं. पुं. (अ.+हिं.) वाचालः, वाचाटः ।

—चट्टी, सं. स्त्री., वाचालता, प्रजल्पः ।

—पच्ची, सं. स्त्री. (अ.+हिं.) बौद्धिकश्रमः ।

—खाना या चाटना, मु. वावदूकतया खद् (प्रे.) ।

—खाली करना या पचाना, मु., प्र-,जल्प् (भ्वा. प. से.) २. मस्तिष्कं खिद्-आयस् (प्रे.) ।

मगजी, सं. स्त्री, (अ. मग्ज़) चीरी-रिः (स्त्री.), दशा ।

मगध, सं. पुं. (सं.) कीकटदेशः, विहार-प्रांतस्य दक्षिणभागः २. चारणः, वंदिन् ।

मगन, वि., दे. 'मग्न' ।

मगर, अव्य. (फ़ा.) किंतु, परं, परंतु ।

मगर, } सं. पुं. (सं. मकरः)
मगरमच्छ, } दे. 'मकर' (१) २. महा,-मत्स्यः-मीनः ।

मग़रिब, सं. पुं. (अ.) दे. 'पश्चिम' ।

—ज़दा, वि., पाश्चात्यसभ्यतया प्रभावित, पश्चिम,-आकृष्ट-प्रेरित-प्रवर्तित ।

मग़रिबी, वि. (अ.) दे. 'पश्चिमी' ।

—तहज़ीब, स्त्री., पाश्चात्यसभ्यता ।

मग़रूर, वि. (अ.) दे. 'अभिमानी' ।

मग़रूरी, सं. स्त्री. (अ. मग़रूर) दे. 'अभिमान' ।

मग्न, वि. (सं.) जलांतःप्रविष्ट, निमज्जनेन-, मृत-नष्ट २. लीन, निरत, आसक्त,-पर,-परायण ४. मत्त, क्षीव, मदोदग्र ४. प्रसन्न, प्रहृष्ट ।

—होना, क्रि. अ., प्र-,हृष् (दिं. प. से.) २. निरत-लीन-आसक्त (वि.) भू ।

मघवा, सं. पुं. (सं.-वन्) इन्द्रः, आखण्डलः ।

मघा, सं. स्त्री. (सं.) नक्षत्रविशेषः, मघाः (स्त्री. बहु. भी.) २.औषधभेदः दे. 'पिप्पली' ।

मचक, सं. स्त्री. (हिं. मचकना) भारः, पीडनं २. अस्थिसंधिपीडा ३. कंपनम् ।

मचकना, क्रि. अ. (अनु. मच मच>) अस्थिसंधिः व्यथ् (भ्वा. आ. से.)-पीड् (कर्म.) २. भारेण समचमचध्वनि कंप् (भ्वा. आ. से.), निमिष् (तु. प. से.), निमील् (भ्वा. प. से.) ।

मचकाना, क्रि. स. (हिं. मचकना) व. 'मचकना' के प्रे. रूप ।

मचकोड़, सं. स्त्री. (हिं. मचकना) सन्धि,-व्यावर्तनं-व्याक्षेपः ।

मचना, क्रि. अ. (अनु. मच)कृ-आरभ् (कर्म.), प्रवृत् (भ्वा. आ. से.) ।

मचलना, क्रि. अ. (अनु.) निर्बंधेन वद् (भ्वा. प. से.), साग्रह (वि.) अवस्था (भ्वा. आ. अ.) ।

मचला, वि. (हिं. मचलना) कपटमूढ, अज्ञलक्षण, व्याजजड ।

मचलाना, क्रि. अ. (अनु.) वम् (सन्नंत, विवमिषति), वमनेच्छया पीड् (कर्म.) ३. दे. 'मचलना' ।

मचलापन, सं. पुं. (हिं. मचलना) कपट-मूढता, व्याजजडत्वम् ।

मचलाहट, सं. स्त्री. (हिं. मचलना) निर्बंधः, आग्रहः २. विवमिषा, वमनवांछा ।

मचान, सं. पुं. (सं. मंचः) मंचकः उच्चासनं, वेदिका, इंद्रकोषः ।

मचाना, क्रि. स. (हिं. मचना) व. 'मचना' के. प्रे. रूप ।

मचिया, सं. स्त्री. (सं. मंचः>) मंचिका, पीठी, पीठकं, क्षुद्रासनम् ।

मच्छ-छ, सं. पुं. (सं. मत्स्यः>) महा-बृहत,-मीनः-मत्स्यः-झषः ।

—अवतार, सं. पुं., दे. 'मत्स्यावतार' ।

मच्छड़-र, सं. पुं. (सं. मशकः) वज्रतुण्डः, मशः, सूच्यास्यः, सूक्ष्ममक्षिकः, रात्रिजागरदः ।

—दानी, सं. स्त्री., मश(शक)हरी, चतुष्की, मसूरिका, नीशारः ।

मच्छर पर तोप लगाना, मु., तुच्छशत्रौ बहूद्योगः ।
मच्छी, सं. स्त्री. (हिं. मच्छ) दे. 'मछली' ।
मछंदर, सं. पुं. (सं. मत्स्येन्द्र या वंदर से अनु.) कपिः, वानरः २. आखुः, मूषिकः ३. जडः, मूढः ४. मिथ्यावैद्यः ५. विदूषकः, वैहासिकः ६. भिक्षुकः ।
मछरायँध, सं. स्त्री. (हिं. मछली+सं. गंधः) मत्स्यगंधः, मीनपूतिः (स्त्री.) ।
मछली, सं. स्त्री. (सं. मत्स्यः) मीनः, झषः, अंडजः, विसारः, पृथुरोमन् (पुं.), शकुलिन्, वैसारिणः, आत्माशिन्, तिमिः, जलपिप्पकः । वि., शंबरः, संघचारिन्, स्थिरजिह्वः, बकुलक्षयः २. मत्स्याकारो भूषणभेदः ।
—वाला, सं. पुं., दे. 'मछुआ' ।
—की तरह तड़पना, मु., जलहीनमीनवद् व्याकुलीभू ।
मछवा, सं. पुं. (हिं. मच्छी) मत्स्यभारिनौका २. दे. 'मछुआ' ।
मछुआ-वा, सं. पुं. (हिं. मच्छी) मत्स्य,-आजीवः-उपजीविन्,मात्स्यिकः, धीवरः, कैवर्तः ।
मज़दूर, सं. पुं. (फ़ा.) भार,-हरः-हारः-वाहकः-वाहः, भारिकः, वोढृ, वाहः, वाहकः २. कार्मः, कर्मिन, श्रमजीविन्, कर्म,-करः-कारः ।
मज़दूरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) भारवहनं, श्रमः, व्रातं २. कर्मण्या, भृतिः (स्त्री.), भृत्या, भर्मण्या, भर्म, पारिश्रमिकम् ।
मजनूँ, सं. पुं. (अ.) उन्मत्तः, उन्मादिन्, वातुलः २. लयला-वल्लभः, कैसः ३. प्रणयिन्, प्रेमिन्, कामुकः, कामिन् ४. कृशांगः,क्षीणदेहः ।
मज़बूत, वि. (अ.) दृढ, २. स्थिर ३. बलवत् ।
मज़बूती, सं. स्त्री. (अ. मज़बूत) दृढता २. स्थिरता ३. बलवत्ता ४. साहसम् ।
मजबूर, वि. (अ.) दे. 'विवश' ।
मजबूरन्, क्रि. वि. (अ.) बलेन, बलात्, हठात्, प्रसह्य, प्रसभम् ।
मजबूरी, सं. स्त्री. (अ. मजबूर) विवशता, अगतिकता, अपरिहार्यता ।
मजमा, सं. पुं. (अ.) जन,-संमर्दः-समुदायः ।
मजमूआ, सं. पुं. (अ.) समुदायः, संग्रहः, समूहः ।
मज़मून, सं. पुं. (अ.) प्रस्तावः, निबंधः,लेखः २. व्याख्यान-लेख,-विषयः ।
—नवीस, सं. पुं., निबन्ध,-कारः-लेखकः ।
मज़मूम, वि. (अ.) निन्दित, दुष्ट २. हीन,-वर्ण-कुल ।
मज़म्मत, सं. स्त्री. (अ.) निन्दा, कुत्सा २. भर्त्सना ।
मजरूह, वि. (अ.) आहत, दे. 'घायल' ।
मजलिस, सं. स्त्री. (अ.) सभा, समाजः, गोष्ठी । मीर—सं. पुं. (फ़ा+अ.) सभा,-पतिः अध्यक्षः, प्रधानः ।
मजलिसी, वि. (अ.) सामाजिक ।
मज़हब, सं. पुं. (अ.) धर्मः, संप्रदायः,मतम् ।
मज़हबी, वि. (अ.) धार्मिक, सांप्रदायिक । सं. पुं., खलपूः, शिष्यः, शिष्य(सिक्ख), जाति-विशेषः ।
मज़ा, सं. पुं. (फ़ा.) आ-,स्वादः, रसः २. आनंदः, सुखं ३. विनोदः, हास्यम् ।
—उड़ाना या लूटना, मु., मुद् (भ्वा. आ. से.), रम् (भ्वा. आ. अ.), नंद् (भ्वा. प. से.) ।
—दिखाना या चखाना, मु., दंड् (चु., द्विकर्म) २. प्रतिहिंस् (रु. प. से.), प्रत्यपकृ ।
मजे से, मु., सानंदं,ससुखं, निर्विघ्नम् ।
मज़ाक, सं. पुं. (अ.) दे. 'ठठ्ठा' ।
मज़ार, सं. पुं. (अ.) समाधिः २. दे. 'क़ब्र' ।
मजाल, सं. स्त्री. (अ.) सामर्थ्यं, शक्तिः (स्त्री.) ।
म(मे)जिस्ट्रेट, सं. पुं. (अं.) दंड,-नायकः-अध्यक्षः-अधिकारिन् ।
म(मे)जिस्ट्रेटी, सं. स्त्री. (अं. मेजिस्ट्रेट) दंडनायक-दण्डाध्यक्ष,-पदं-कार्यं २. दंडनायक-सभा ।
मजीठ, सं. स्त्री. (सं. मंजिष्ठा) रक्ता, रोहिणी, रक्तयष्टिका, रागाढ्या, अरुणा, रागांगी, वस्त्र-भूषणा, विकसा, जिंगी ।
मजीठी, वि. (हिं. मजीठ) रक्त, लोहित, अरुण ।
मजीरा, सं. पुं., (सं. मञ्जीरः) नूपुरः, पादाङ्गदं (न.) २-विष्कम्भः, कुटरः ।
मजेदार, वि. (फ़ा.) स्वादु, रुच्य, रुचिकर २. उत्कृष्ट, उत्तम ३. आनंद,-दायक-प्रद ।
मज्जन, सं. पुं. (सं. न.) स्नानं, दे. 'नहाना' सं. पुं. ।
मज्जा, सं. स्त्री. (सं.) शुक्रकरः, कौशिकः, अस्थि,-स्नेहः-सारः-संभवः, अस्थिजम् ।
मझधार, सं. स्त्री. (सं. मध्यधारा) नद्याः

मध्य–केन्द्रीय–मध्यस्थ–मध्यम,–धारा-प्रवाहः-मंदाकः-स्रोतस् (न.) २. कार्य,-मध्यः-मध्यम् ।

मझ(झो)ला, वि. (सं. मध्य) मध्यम, मध्य,-वर्तिन्-स्थ २. मध्यमाकार, मध्यमपरिमाण ।

मटक, मटकन, सं. स्त्री. (हिं. मटकना) हावः, विभ्रमः, विलासः २. गतिः (स्त्री.) संचारः ।

मटकना, क्रि. अ. [सं. मट् (सौत्रधातु) = अवसाद] विलस् (भ्वा. प. से.), सविलासं चल् (भ्वा. प. से.) विभ्रम् (भ्वा. दि. प. से.) ।

मटका, सं. पुं. (हिं. मिट्टी) मणिकः-कं, अलिंजरः ।

मटकाना, क्रि. स. (हिं. मटकना) सविलासं अंगानि चल् (प्रे.), विभ्रम् (प्रे.) ।

मटकी, सं. स्त्री. (हिं. मटका) क्षुद्र,-मणिकः-अलिंजरः ।

मटमैला, वि. (हिं. मिट्टी+मैला) दे. 'मटियाला' ।

मटर, सं. पुं. (सं. मधुर) कलायः, कालपूरः, मुण्डचणकः, रेणुकः, वातुलः, सतीन-(ल)कः, हरेणुः, खंडिकः ।

मटरगश्त, सं. पुं. स्त्री. (सं. मंथर+फ़ा. गश्त) सुखाटनं, विहारः, विहरणं, यथेष्टभ्रमणं, सुखसंचरणम् ।

मटियामसान, **मटियामेट** } वि. दे. 'मलियामेट' ।

मटियाला, वि. (हिं. मट्टी+वाला) धूलि-रेणु-पांशु,-वर्ण-रंग ।

मट्टी, सं. स्त्री., दे. 'मिट्टी' ।

मट्ठा, सं. पुं. (सं. मथितं) असरोदक-घोलं, जलनवनीत-शून्यं घोलम् ।

मट्ठी, सं. स्त्री. (सं. मठः) पक्वान्नभेदः ।

मठ, सं. पुं. (सं. पुं. न.) आ-नि,-वासः, २. आश्रमः, विहारः, मुनिवासः ३. धार्मिक-विद्यालयः ४. मंदिरं, देवालयः ।

—धारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) मठपतिः, मठिन् ।

मढ़ना, क्रि. स. (सं. मंडनं>) कोशे निविश् (प्रे.), आवेष्ट् (भ्वा. आ. से.) २. चर्मादिभिर्बांधमुखं आच्छद् (प्रे.) ३. बलात् आरुह् (प्रे.), दे. 'थोपना' । सं. पुं., आवेष्टनं, आच्छादनं, आरोपणम् ।

मढ़ने योग्य, वि., आवेष्टनीय, आच्छादनीय ।

मढ़नेवाला, सं. पुं., आवेष्टकः, आच्छादकः ।

मढ़वाना, क्रि. प्रे., व. 'मढ़ना' के प्रे. रूप ।

मढ़ा हुआ, वि., आवेष्टित, चर्मादिभिराच्छादित, बलादारोपित ।

मढ़ी, सं. स्त्री. (सं. मठः>) क्षुद्रमठः-ठं, लघु-मंदिरं २. कुटी, पर्णशाला ३-४. क्षुद्र,-सदनं-मंडपः ।

मणि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) रत्नं २. नर,-पुंगवः-कुंजरः-ऋषभः ।

—कांचन योग, सं. पुं. (सं.) उभयशोभा-वर्द्धकसंयोगः ।

—दीप, सं. पुं. (सं.) दीपोज्ज्वलमणिः, रत्न-दीपः २. मणिरत्नजटितदीपः ।

—धर, सं. पुं. (सं.) सर्पः, अहिः ।

—बंध, सं. पुं. (सं.) मणिः, पाणिमूलं, कलाचिका ।

—माला, सं. स्त्री. (सं.) रत्नहारः २. रमा, पद्मा, कमला, इन्दिरा ३. वर्णवृत्तभेदः ।

मतंग, सं. पुं. (सं.) गजः २. मेघः ३. ऋषि-विशेषः ।

मत[1], सं. पुं. (सं. न.) धर्मः, संप्रदायः २. मतिः (स्त्री.), तर्कः ३. आशयः, अभिप्रायः । वि., पूजित ।

मत[2], क्रि. वि. (सं. मा) न, नो, मा, अलं (तृतीया के साथ) ।

मतलब, सं. पुं. (अ.) आशयः, अभिप्रायः, तात्पर्यं २. शब्द-वाक्य,-अर्थः ३. स्वार्थः ४. उद्देशः, उद्देश्यं ५. संबंधः, संपर्कः ।

—निकालना, मु., स्वार्थं साध्-सिध् (प्रे.) ।

बे—क्रि. वि., व्यर्थं,मोघं,निष्प्रयोजनं,निरर्थकम् ।

मतलबी, वि. (अ. मतलब) स्वार्थिन्, निजहित-स्वार्थ,-पर-परायण-निरत ।

मतलाना, क्रि. अ., दे. 'मचलाना' (१) ।

मतली, सं. स्त्री., दे. 'मचलाहट' (२) ।

मतवाला, वि. (सं. मत्त) मदोद्धत, मदोदग्र, क्षीब २. उन्मत्त ३. अभिमानिन् ।

मताधिकार, सं.पुं. (सं.) मतप्रकाशनाधिकारः ।

मतावलंबी, सं. पुं. (सं.-बिन्) धर्म-मत,-अनु-गामिन्-अनुयायिन्-अनुवर्तिन्-अनुसारिन् ।

मति, सं. स्त्री. (सं.) धीः (स्त्री.), धि(धी)षणा, प्रज्ञा, बुद्धिः (स्त्री.) २. मत्तं, तर्कः, अभिप्रायः ३. इच्छा ४. स्मृतिः (स्त्री.) ।

—मान्, वि. (सं.-मत्) प्राज्ञ, चतुर ।

—हीन, वि. (सं.) जड, मूढ, मूर्ख ।

मतीरा, सं. पुं., दे. 'तरबूज' ।

मत्कुण, सं. पुं. (सं.) रक्तपायिन्, रक्तांगः, मंचकाश्रयः, उद्दंशः ।

मत्त, वि. (सं.) शौंड, उत्कट, क्षीब, उन्मद, मदाढ्य, समद, मदिरोत्कट, मद,-मत्त-उन्मत्त-उद्धत-उदग्र २. निर्विवेक ३. वातुल, उन्मत्त ४. प्रसन्न ।

—गयंद, सं. पुं. (सं. मत्तगजेन्द्रः>) सवैयाछन्दोभेदः । (७ भगण+२ गुरु अक्षर) ।

मत्था, सं. पुं., दे. 'मस्तक' (२) ।

मत्सर, सं. पुं. (सं.) मात्सर्य्यं, परोत्कर्षद्वेषः, असूया, ईर्ष्या २. क्रोधः ।

मत्स्य, सं. पुं. (सं.) दे. 'मछली' २. मीनराशिः ३. विराटदेशः (दीनाजपुर-रंगपुर, अथवा प्राचीन पांचाल के अंतर्गत) ४. महापुराणविशेषः ५. विष्णोरवतारविशेषः, मत्स्यावतारः ।

मथन, सं. पुं. (सं. न.) दे. मंथन १-२ ।

मथना, क्रि. स. (सं. मथनं) दे. 'बिलोना' २. ध्वंस्-नश् (प्रे.) ३.अन्विष् (दि. प. से.) ४. असकृत् अनेकवारं कृ । सं.पुं., दे. 'मथानी' २. मंथनं, मंथः ।

मथनी-नियां, सं. स्त्री. (सं. मंथनी) मंथनघटी, गर्गरी, मंथिनी २. दे. 'मथानी' ।

मथानी, सं. स्त्री. (सं. मंथानः) मंथ-मंथन,-दंडः, मंथः, मंथनः, खजः, वैशाखः, मथिः, मथिन् (पुं.), तक्राटः ।

मथुरा, सं. स्त्री. (सं.) मधुपुरं-री ।

मद, सं. पुं. (सं.) मादः, शौंडता, क्षीबता २. वातुलता, उन्मादः, मतिभ्रंशः ३. दर्पः, अभिमानः ४. सुरा, मद्यं ५. हर्षः, मोदः ६. कस्तूरी-रिका, मृग,-मदः-नाभिः ७. गजगंड-जलं, मद,-जलं-वारि (न.), दानं ८. शुक्रं, वीर्यं ९. अज्ञानं, प्रमादः १०. मदनः, कामः ।

—माता[1], वि., दे. 'मत्त' (१) २. कामार्त्त, अनंगपीडित ।

मद[2], सं. स्त्री. (अ.) लिखितपदं २. गणनापदं ३. प्रकरणम् ।

मदक, सं. स्त्री. (सं. मदः>) मदकं, मादक-द्रव्यभेदः ।

मदद, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'सहायता' ।

—गार, वि. (अ.+फ़ा.) दे. 'सहायक' ।

मदन, सं. पुं. (सं.) मन्मथः, कंदर्पः, अनंगः दे. 'कामदेव' २. कामक्रीडा, मैथुनं ३. पिचुकः, मुचकुंदः, कंटकिन् ४. धुस्तूरः ५. भ्रमरः ६. खंजनः ७. दे. 'मैना' ।

—कदन, सं. पुं. (सं.) शिवः, मदनदहनः ।

—गोपाल, सं. पुं. (सं.) मदनमोहनः, कृष्णः ।

—बाण, सं. पुं. (सं.) कामशरः, पुष्पभेदः ।

—सदन, सं. पुं. (सं. न.) मदन,-गृहं-भवनं, भगम् ।

—महोत्सव, सं. पुं. (सं.) मदनोत्सवः, सुवसंतकः, मदनपूजासंगीतरात्रिजागरणादियुक्तः चैत्रे भवः प्राचीनोत्सवभेदः ।

मदनोद्यान, सं. पुं. (सं. न.) प्रमोदवनम् ।

मदर, सं. स्त्री. (अं.) मातृ (स्त्री.), जननी ।

मदरसा, सं. पुं. (अ.) विद्यालयः, पाठशाला ।

मदांध, वि. (सं.) दे. 'मत्त' (१) ।

मंदार, सं. पुं. (सं. मंदारः) दे. 'आक' ।

मदारी, सं. पुं. (अ. मदार) दे. 'कलंदर' २. सौभिकः, दे. 'जादूगर' ।

मदिरा, सं. स्त्री. (सं.) सुरा, हाला, मद्यं, वारुणी, कादंबरी, हलिप्रिया, गंधोत्तमा, इरा, प्रसन्ना, परिश्रुता, कश्यं, गंधमादनी, माधवी, मदः, मत्ता, मदगंधा, मधु, माध्वीकं, अब्धिजा, देवसृष्टा, मदना, शुंडा, मैरेयं, सीधुः,महानंदा, मदनी, मोदिनी, मनोज्ञा, अमृता, आसवः, प्रिया, चपला, मत्ता, कामिनी ।

मदिराक्ष, वि. (सं.) मत्तलोचन (-नी स्त्री.) ।

मदीय, वि. (सं.) मामकीन, मामक(-मिका स्त्री.), मत् ।

मदीला, वि. (सं. मदः>) दे. 'नशीला' ।

मदोन्मत्त, वि. (सं.) मद,-उत्कट-उदग्र-उद्धत ।

मद्धि(द्ध)म, वि., दे. 'मध्यम' ।

मद्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मदिरा' ।

—प, वि. (सं.) सुराप, दे. 'शराबी' ।

—पान, सं. पुं. (सं. न.) सुरापानं-णम् ।

—भाजन, सं. पुं. (सं. न.) सुरा,-पात्रं-भांडम् ।

मधु, सं. पुं. (सं. न.) क्षौद्रं, माक्षि(क्षी)कं, कुसुम-पुष्प,-आसवः, पित्र्यं, पवित्रं, माध्वीकं, सारघं, पुष्परस,-उद्भवं-आहार्यं, मक्षिका-वरटी-भृंग,-वांतं २. मदिरा ३. दुग्धं ४. जलं

५. मकरंदः, पुष्परसः ६. अमृतं ७. वसंतर्त्तुः ८. चैत्रमासः ९. दैत्यविशेषः। त्रि., मधुर,स्वादु।

—कंठ, सं. पुं. (सं.) कोकिलः, पिकः।

—कर, सं. पुं. (सं.) भ्रमरः २. कामुकः ३. भृङ्गराजवृक्षः।

—करी, सं. स्त्री. (सं.) षट्पदी, भ्रमरी २. सिद्धान्न-पक्वान्न,-भिक्षा।

—कार, सं. पुं. (सं.) मधुमक्षिका।

—कोषः, सं. पुं. (सं.) मधु,-क्रमः-चक्रं-पटलं-कोशः, करंडः, चपालः।

—प, सं. पुं. (सं.) भ्रमरः २. मधुमक्षिका।

—पर्क, सं. पुं. (सं.) दधिमधुमिश्रं आज्यं, (अतिथ्यादिभ्यः)।

—मक्खी, सं. स्त्री. (सं.-मक्षिका) मधु,-कारः-कारिन्, सरघा।

—मय, वि. (सं.) मधुर, मधुल, मिष्ट, स्वादु, रुचिर।

—मास, सं. पुं. (सं.) चैत्रः।

—मेह, सं. पुं. (सं.) मधुप्रमेहः, मूत्ररोगभेदः।

मधुर, वि. (सं.) मिष्ट, मधुर, मधुल, मधुक, मधुमय २. रुच्य, रुचिकर, स्वादु ३. कर्ण-श्रुति,-मधुर, कल, मंजुल ४. सुंदर, मनोज्ञ।

—भाषी, वि. (सं.-षिन्) प्रियंवद, मधुर-सु,-वाच्, चारुभाषिन्।

मधुरिमा, सं. स्त्री. [सं.-रिमन् (पुं.)] माधुर्यं २. सौन्दर्यम्।

मधूकरी, सं. स्त्री., दे. 'मधुकरी' (२)।

मध्य, वि. (सं.) दे. 'मध्यम'। क्रि. वि., मध्ये, अंतरे,अभ्यंतरे। सं. पुं., मध्यं, मध्य-भागः-देशः-स्थलं-स्थानं २. गर्भः, अभि-, अंतरम्।

—देश, सं. पुं. (सं.) हिमाचलविंध्याचलकुरुक्षेत्रप्रयागमध्यस्थो देशः २. मध्यप्रांतः।

—भाग, सं. पुं. (सं.) मध्य,-स्थलं-स्थानं, केन्द्रम्।

—लोक, सं. पुं. (सं.) भूमिः (स्त्री.), पृथिवी।

—वर्ती, वि. (सं.-र्तिन्) केन्द्रीय, मध्य, मध्यम, मध्य,-स्थ-स्थित।

मध्यम, वि. (सं.) मध्य, मध्य,-स्थ-स्थित-वर्तिन् २. मध्यपरिमाण ३. सामान्य, साधारण ४. व्यवहित, अंतरालस्थ। सं. पुं. (सं.) चतुर्थस्वरः (संगीत.) २-४ नायक-मृग-राग,-भेदः।

—पुरुष, सं. पुं. (सं.) पदविशेषः (व्या. त्वं पचसि इ.)।

मध्यमा, सं. स्त्री. (सं.) ज्येष्ठांगुली-लिः (स्त्री.), मध्या, ज्येष्ठा २. नायिकाभेदः ३. रजस्वला नारी।

मध्यस्थ, सं. पुं. (सं.) निर्णेतृ, प्रमाणपुरुषः २. उदासीनः, निष्पक्षः, तटस्थः। वि., दे. 'मध्यम'।

मध्यस्थता, सं. स्त्री. (सं.) माध्यस्थ्यं, निर्णयः २. तटस्थता।

मध्याह्न, सं. पुं. (सं.) मध्य(ध्यं)दिनं, मध्याह्न,-कालः-समयः-वेला।

मध्याह्नोत्तर, सं. पुं. (सं. न.) अपराह्णः,पराह्णः, विकालः।

मन[1], सं. पुं. [सं. मनस् (न.)] चित्तं, चेतस् (न.), हृदयं, स्वांतं, हृद् (न.), मानसं, अंगं, अनंगकं, अंतःकरणं २. अंतःकरणस्य संकल्पविकल्पात्मकवृत्तिः (स्त्री.) ३. विचारः, संकल्पः ४. इच्छा, कामना।

—गढ़ंत, वि., मनःकल्पित, काल्पनिक, अवास्तविक, मनःप्रसूत।

—चला, वि., निर्भय २. साहसिक ३. रसिक।

—चाहा,-चीत, वि., अभीष्ट, मनोवांछित।

—जात, सं. पुं., मनोजः, कामदेवः।

—भावता,-भावन, वि., रुच्य, रुचिकर, प्रिय, अभिमत।

—मति, वि., स्वच्छन्द, अनियन्त्रित, स्वेच्छा-चारिन्।

—मथ, सं. पुं., मन्मथः, कंदर्पः।

—माना, वि., रुच्य, रुचिकर २. अभिमत, मनोनीत ३. यथेष्ट, यथेच्छ, यथेप्सित। क्रि. वि., यथेष्टं, यथाभिलाषम्।

—मानी, सं. स्त्री., यथेष्ट,-कार्यं-कर्मन् (न.)।

—मुटाव, सं. पुं., वैमनस्यं, वैमत्यं, दुष्ट,-भावः-बुद्धिः द्वेषः।

—मोदक, सं. पुं., काल्पनिकसुखं, मनः-कल्पिता-नंदः।

—मोहन, सं. पुं., श्रीकृष्णः। वि.,मनोहर,हृद्य।

—मौजी, वि., स्वैरिन्, स्वेच्छाचारिन्।

—रंजन, वि., मनोरंजक। सं. पुं., मनोरंजनम्, चित्तविनोदः।

—हर, —हरण, —हारी, } वि.,मनोहर, मनोहर्तृ,मनोहारिन्, २. सुंदर, मनोज्ञ ३. प्रिय, हृद्य।

(टिप्पणी—मन के बहुत से यौगिक शब्दों और मुहावरों के पर्यायवाची 'जी', 'दिल' और 'कलेजा' के नीचे मिलेंगे; कुछ यहाँ देते हैं)।

—अटकना, मु, स्निह् (दि. प. से.), अनुरंज् (कर्म.)।

—करना, मु., अभिलष्-वांछ् (दि. भ्वा. प. से.)।

—के लड्डू खाना, मु., गगनकुसुमानि चि (स्वा. उ. अ.), मोघाशया हृष् (दि. प. से.)।

—बहलाना, मु., मनो विनुद्-रंज् (प्रे.), विहृ (भ्वा. प. अ.)।

—बसना, मु., रुच् (भ्वा. आ. से.), दे. 'मनमाना'।

—भर, वि., यथेष्ट, यथेच्छम्। (क्रि. वि.), यथा-रुचि, यथाभिलाषं, यथेष्टम्।

—भरना, मु., परि-सं,-तृप्-तुप् (दि. प. अ.)।

—भाना, मु., इष् (तु. प. से.), अभिलष्, रुच्।

—भाना मुड़िया हिलाना, मु., मनसि कामयमानोऽपि शिरःकंपेन (बाह्यतः) निषिध् (भ्वा. प. से.)।

—माने, वि. तथा क्रि. वि., दे. 'मनभर'।

—मारना, मु., मनः निग्रह् (क्र्. प. से.) २. धैर्येण सह् (भ्वा. आ. से.)।

—मिलना, मु., सांमत्यं-ऐकमत्यं वृत् (भ्वा. आ. से.)।

—ललचाना, मु., लुभ् (दि. प. से.), अत्यधिकं स्पृह् (चु., चतुर्थी के साथ)।

—हरा होना, मु., मुद् (भ्वा. आ. से.)।

मन,[२] सं. पुं. (सं. मणः) चत्वारिंशत्सेरात्मकं भारमानम्।

—भर, वि., मण,-मित-परिमित-मात्र।

मनका,[१] सं. पुं. (सं. मणिकः>) अक्षः, गुटिका २. जपमाला।

मनका[२] सं. स्त्री. (सं. मन्याका) मन्यः, अवटुः, कृकाटिका, शिरःपीठं, घाटः-टा।

—ढकलना, मु., मरणोन्मुख-मुमूर्षु-आसन्नमृत्यु (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से.)।

मनकूला, वि. (अ.) चर, चल, अस्थिर।

—गैरमनकूला जायदाद, सं. स्त्री. (अ.+फा.) स्थावररिक्थं, स्थिरसंपद् (स्त्री.)।

—जायदाद, सं. स्त्री., (अ.+फ़ा.) उपकरणरिक्थं, चरसंपद् (स्त्री.)।

मनन, सं. पुं. (सं. न.) अनुचिंतनं, ध्यानं, आलोचनम्।

—शील, वि., विचार,-शील-वत्।

मननीय, वि. (सं.) विचारणीय, चिन्तनीय, विचारास्पद, मननार्ह।

मनवाना, क्रि. प्रे., व. 'मानना' के प्रे. रूप।

मनशा, सं. स्त्री., दे. 'मंसा'।

मनसब, सं. पुं. (अ.) पदं, पदवी २. अधिकारः ३. स्तरः ४. सेवा।

मनसा[१] सं. स्त्री., दे, 'मंसा'।

मनसा, अ. (सं.) चित्तेन, हृदयेन। सं. स्त्री. १. जरत्कारु पत्नी २. वासुकिभगिनी।

मनसिज, सं. पुं. (सं.) कामदेवः, पंचशरः।

मनसूख, वि. दे. 'मंसूख'।

मनसूबा, सं. पुं., दे. 'मंसूबा'।

मनस्ताप, सं. पुं. (सं.) मनोवेदना, आधिः २. अनु-पश्चात्,-तापः।

मनस्वी, वि. (सं.-विन्) महाशय, महानुभाव २. बुद्धिमत्, सुबुद्धि ३. स्वेच्छाचारिन्।

मनहुँ, क्रि. वि., दे. 'मानो'।

मनहूस, वि. (अ.) अशुभ, अमंगल २. कुरूप, दुर्दर्शन ३. अलस, मंथर।

मना, वि. (अ.) नि-प्रति,-षिद्ध- वर्जित। सं. पुं., दे. 'मनाही'।

—करना, क्रि. स., नि-प्रति-षिध् (भ्वा. प. से.), निवृ (प्रे.), नि-अव-रुध् (स्वा.उ.अ.)।

मनादी, सं. स्त्री. (अ. मुनादी) उद्घोषणा, प्रख्यापनम्।

—करना, क्रि. स., उद्घुष् (चु.), प्रख्या (प्रे., प्रख्यापयति)।

मनाना, क्रि. स., व. 'मानना' के प्रे. रूप।

मनाही, सं. स्त्री. (अ. मना) नि-प्रति,-षेधः, निरोधः, निवारणं, प्रत्यादेशः।

मनिहार, सं. पुं. (सं. मणिकारः) रत्नकारः, रत्नाजीविन् २.,-३. काचकंकण,-कारः-विक्रयिन्।

मनिहारी, सं. स्त्री. (हिं. मनिहार) मणि,-व्यव-

सायः-वाणिज्यं, रत्नव्यवहारः २. काचद्रव्य-व्यवसायः।

मनी-आर्डर, सं. पुं. (अं.) धनादेशः।

—फार्म, सं. पुं. (अं.) धनादेशपत्रम्।

मनीषा, सं. स्त्री. (सं.) बुद्धिः (स्त्री.) २. स्तुतिः (स्त्री.)।

मनीषी, वि. (सं.-षिन्) पंडित, बुद्धिमत्।

मनु, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मणः पुत्रः, धर्मशास्त्र-कारो-मुनिविशेषः २. मनुष्यः।

मनुज, सं. पुं. (सं.) मनुष्यः, मानवः।

मनुष्य, सं. पुं. (सं.) मानुषः, मनुजः, मानवः, मर्त्यः, नरः, द्विपदः, मनुः, पंचजनः, पु(पू)-रुषः, पुम्स्-नृ (पुं.), मर्णः, विश् (पुं.)।

मनुष्यता, सं. स्त्री. (सं.) मनुष्यत्वं, मानवता २. सभ्यता, शिष्टता ३. दया, सौहार्दम्।

मनुष्यी, सं. स्त्री. (सं.) नारी, मानुषी, मानवी, मर्त्या, मनुजी, नरी।

मनुहार, सं. स्त्री. (सं. मानहारः>) प्रसादनं, उपशमनं, सांत्वनं २. विनयः, प्रार्थनं-ना ३. आदरः, माननं-ना।

मनो¹, क्रि. वि., दे. 'मानो'।

मनो², (सं. मनस् न.) दे. 'मन'।

—कामना, सं. स्त्री. (सं. मनःकामना) अभिलाषः, वांछा।

—गत, वि. (सं.) हृदयस्थ, हार्दिक।

—ज, सं. पुं. (सं.) मदनः, कंदर्पः।

—ज्ञ, वि. (सं.) सुन्दर, अभिराम।

—नीत, वि. (सं.) रुच्य, रुचिकर, हृद्य २. वृत।

—योग, सं. पुं. (सं.) अनन्यमनस्कता, चित्तै-काग्र्यं, अवधानम्।

—रंजक, वि. (सं.) चित्ताह्लादकः, सुखकर, हर्षावह, हृदयहारिन्, मनोविनोदक।

—रंजन, सं. पुं. (सं. न.) मनोविनोदः, चित्ताह्लादनं-दः, क्रीडा, कौतुकम्।

—रथ, सं. पुं. (सं.) स्पृहा, वांछा।

—रथ सफल होना, क्रि. अ., सफलमनोरथ (वि.) भू, अभिलषितं अधिगम्।

—रम, वि. (सं.) मनोज्ञ, सुंदर।

—वांछित, वि. (सं.) अभिलषित, अभीष्ट।

—विकार, सं. पुं. (सं.) चित्त,-विकृतिः (स्त्री.)-विकारः, मनो,-धर्मः-वृत्तिः (स्त्री.)-वेगः।

—विज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) मानसशास्त्रम्।

—वृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) चित्तवृत्तिः (स्त्री.), मनोविकारः, मानसी दशा।

—हर, वि. (सं.) सुंदर, हृदयहारिन्।

—हरता, सं. स्त्री. (सं.) सौन्दर्यं, चित्ताकर्ष-कता, मनोज्ञता।

मनौती, सं. स्त्री. (हिं. मानना) दे. 'मनुहार'(१) २. दे. 'मन्नत'।

मन्नत, सं. स्त्री. (हिं. मानना) देवपूजा,-प्रणः-प्रतिज्ञा-शपथः।

—उतारना या बढ़ाना, मु., देवपूजाप्रतिज्ञां पा (प्रे. पालयति)।

—मानना, मु., अभीष्टसिद्धये देवपूजां प्रतिज्ञा (क्र्. आ. अ.)।

मन्वंतर, सं. पुं. (सं. न.) एकसप्तति चतुर्यु-ग्यात्मकः कालः, ब्रह्मदिनस्य चतुर्दशो भागः।

मपना, क्रि. अ., व. 'मापना' के कर्म. के रूप।

मपवाना, मपाना, क्रि. प्रे., व. 'मापना' के प्रे. रूप।

मफ़रूर, वि. (सं.) पलायित, गुप्त, अन्तर्हित, प्रच्छन्न, व्यपसृप्त।

मम, सर्व. (सं.) दे. 'मेरा'।

ममता, सं. स्त्री. (सं.) } **ममत्व**, सं. पुं. (सं. न.) } स्वाम्यं, स्वामित्वं, अधिकारः, स्वत्वं, प्रभुत्वं २. स्नेहः, प्रेमन् (पुं.न.) ३. वात्सल्यं ४. मोहः ५. लोभः ६. अभिमानः, गर्वः।

ममिया, वि., दे. 'ममेरा'।

—ससुर, सं. पुं., पति-पत्नी,-मातुलः।

—सास, सं. स्त्री., पति-पत्नी,-मातुली।

ममियौरा, सं. पुं. (हिं. मामा) मातुलगृहम्।

ममीरा, सं. पुं. (अ. मामीरान) नेत्ररोगो-पकारकः क्षुपमूलभेदः।

ममेरा, वि. (हिं. मामा) मातुलीय, मातुलिक।

—भाई, सं. पुं., मातुलपुत्रः, मातुलेयः (—यी स्त्री.), दे. 'भाई' के नीचे।

ममोला, सं. पुं., दे. 'खंजन'।

मयंक, सं. पुं. (सं. मृगांकः) दे. 'चाँद'।

मयस्सर, वि. (अ.) प्राप्त, लब्ध २. प्राप्य, सुलभ।

मयूख, सं. पुं. (सं.) किरणः, रश्मिः।

मयूर, सं. पुं. (सं.) दे. 'मोर'।

मयूरी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मोरनी'।

मरक, सं. पुं. (सं.) दे. 'मरी'।
मरकत, सं. पुं. (सं. न.) हरिन्मणिः, अश्मगर्भं, मरक्तं, राजनीलं, गारुडम्।
मरकना, क्रि. अ. (अनु.) भारेण भंज्-भिद्-दृ (कर्म.)।
मरघट, सं. पुं. (हिं. मरना+घाट) शतानकं, श्मशानं, पितृकाननं, प्रेतभूः (स्त्री.)।
मरज़, सं. पुं. (अ. मर्ज़) रोगः, व्याधिः २. दुर्व्यसनं, कुवृत्तिः (स्त्री.)।
मरजिया, वि. (हिं. मरना+जीना) मृत्युमुक्त, *मृतजीवित २. मरण, उन्मुख-आसन्न ३. मृत,-प्राय-कल्प। सं. पुं. (मुक्तार्थं) नियंक्तृ, विगाहकः।
मरण, सं. पुं. (सं. न.) मृत्युः, निधनम्।
—धर्मा, वि. (सं.-धर्मन्) मर्त्य, मरणशील।
मरतबा, सं. पुं. (अ.) पदं, पदवी २. वारः।
मरतबान, सं. पुं., दे. 'अमृतबान'।
मरदूद, वि. (अ.) तिरस्कृत, अपमानित २. क्षुद्र।
मरना, क्रि. अ. (सं. मरणं) मृ (तु.आ.अ.), पंचत्वं इ-या (अ. प. अ.), असून्-प्राणान्-देहं-तनु-जीवितं त्यज् (भ्वा. प. अ.)-उत्सृज् (तु. प. अ.)-हा (जु. प. अ.), प्र-इ (अ. प. अ.), गतासु-परासु (वि.) भू, विपद् (दि. आ. अ.), प्र-मी (कर्म.), २. क्लेशातिशयं सह् (भ्वा. आ. से.) ३. शुष् (दि. प. अ.), म्लै (भ्वा. प. अ.) ४. अत्यन्तं लज् (तु. आ. से.)-लस्ज् (भ्वा. आ. से.) ५. परा-परि,-भू, (कर्म.), परा-वि-जि (कर्म.) ६. शम् (दि. प. से.) ७. क्रीडातो बहिष्कृ (कर्म.)। सं. पुं., मरणं, निधनं, दे. 'मृत्यु'।
—जीना, मु., सुखदुःखं-खे, हर्षशोकं-कौ।
किसी पर—, मु., अनुरंज् (कर्म.), भावं-अनुरागं बंध् (क्र्. प. अ.)।
पानी—, मु., कलंकित-दूषित-अपमानित (वि.) भू, अवगण्, अवमन् (कर्म.)।
मर कर, मु., अत्यायासेन, अतिकठिनतया।
मर के बचना, मु., मृत्युमुखात् मुच् (कर्म.), मरणासन्नोऽपि पुनः स्वास्थ्यं लभ् (भ्वा. आ. अ.)।
मर मिटना, मु., श्रमातिशयेन नश् (दि.प.से.)।
मरने तक की फ़ुर्सत न होना, मु., अतिव्यापृत-अनवकाश (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से.)।
मरने योग, वि., मरणार्ह, व्यर्थजीवित, २. हतक, खल, दुष्ट।
मरनेवाला, सं. वि., मरिष्यमाण, मरणोन्मुख, आसन्नमृत्यु २. मर्त्य, मृत्युवश, नश्वर।
मरा हुआ, वि., मृत, गतासु, पंचत्वं,-गत-प्राप्त-इत, प्रेत, परेत, उपरत,संस्थित, विपन्न, प्रमीत, विचेतन, निष्-गत,-प्राण।
मरभुक्खा, वि. (हिं. मरना+भूखा) क्षुधा-अर्दित-पीडित-आर्त-अवसन्न २. अकिंचन, निर्धन।
मरमर[1], सं. स्त्री. (अनु.) मर्मर-ध्वनिः-शब्दः, मर्मरः, पत्र-वस्त्र,-स्वनः।
मरमर[2], सं. पुं. (यू०) चिक्कणप्रस्तरभेदः, मरमरः।
मरमरा,वि. (अनु०) भिदुर, भंगुर, सुभंग।
मरमराना, क्रि. अ. (हिं. मरमर) मर्मर-रव कृ, मर्मरायते (ना. धा.) २. समर्मरशब्दं अव-आ-नम् (भ्वा. प. अ.)।
मरम्मत, सं. स्त्री. (अ.) जीर्ण-,उद्धारः, प्रति-, समाधानं, संधानं, संस्कारः, नवीकरणं, पूर्वावस्थाप्रापणम्।
—करना, क्रि. अ., पूर्ववत्-नवी,-कृ, उद्धृ (भ्वा. प. अ.), सं-समा-प्रतिसमा,-धा (जु. उ. अ.) २. तड् (चु.)।
मरवाना, क्रि. प्रे., व. 'मारना' के प्रे. रूप।
मरसा, सं. पुं. (सं. मारिषः) कंधरः, मार्षिकः (शाकभेदः)।
मरसिया, सं. पुं. (अ.) निधनकाव्यं, शोकमयी कविता।
मरहटा-ठा, सं. पुं. (सं. महाराष्ट्रः>) महाराष्ट्रवासिन, महाराष्ट्राः (बहु.)।
मरहटी-ठी, सं. स्त्री. (सं. महाराष्ट्री)माहाराष्ट्री।
मरहम, सं. पुं. (अ.) अनु,-लेपः, उपदेहः, समालंभः, अभ्यंजनम्।
—पट्टी, सं. स्त्री. (अ.+सं.) लेपपट्टी, व्रणोपचारः।
मरहमत, सं. स्त्री. (अ.) अनुग्रहः, कृपा।
—करना या फ़रमाना, दे. 'देना'।
मरहूम, वि. (अ.) स्वर्,-गत-यात, दिवंगत, मृत।
मराल, सं. पुं. (सं.) राजहंसः २. कारंडवः ३. अश्वः ४. गजः ५. मेघः।
मरिच, सं. स्त्री. (सं. न.) दे. 'मिर्च'।

मरियल, वि. (हिं. मरना) मृतकल्प, कृश, निर्बल ।

मरी, सं. स्त्री. (सं. मारी) जन-, मारः, महामारी, मारिका ।

मरीचि[1], सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) किरणः, रश्मिः २. कांतिः (स्त्री.) ३. मरुमरीचिका ।

मरीचि[2], सं. पुं. (सं.) १-४. ऋषि-मरुद्-दानव-दैत्य,-विशेषः ।

मरीज, वि. (अ.) रुग्ण, रोगिन् ।

मरीचिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मृगतृष्णा' ।

मरु, सं. पुं. (सं.) धन्वन् (पुं.), मरु,-स्थलं-स्थली, ऊषरः-रं, खिलम् ।

—भूमि, सं. स्त्री. (सं.) } दे. 'मरु' ।
—स्थल, सं. पुं. (सं. न.) } दे. 'मरु' ।

मरुआ, सं. पुं. (सं. मरुवः) गंध-खर,-पत्रः, शीतलकः, बहुवीर्यः (क्षुपभेदः) ।

मरुत, सं. पुं. (सं.) दे. 'वायु' ।

मरोड़, सं. पुं. (हिं. मरोड़ना) आकुंचनं, व्यावर्तनं २. अंत्र-उदर,-वेदना-शूलं-पीडा ३. दर्पः ४. क्रोधः ५. दे. 'पेचिश' ।

—फली, सं. स्त्री., मधूलिका, मूर्वा, मूर्वी, मधुरसा, रंग-दिव्य,-लता ।

मरोड़ना, क्रि. स. (हिं. मोड़ना) कुच्-कुंच् (भ्वा. प. से.), व्यावृत् (प्रे.), कुटिली-वक्री कृ. २. पीड् (चु.), दुःखयति (ना. धा.) ३. मुष्टिना-मुष्ट्या ग्रह् (क्र्. प. से.)-धृ (भ्वा. प. अ.) ।

मरोड़ा, सं. पुं., (हिं. मरोड़ना) दे. 'मरोड़' (१-२) २. दे. 'पेचिश' ।

मरोड़ी, सं. स्त्री. (हिं. मरोड़ना) दे. 'मरोड़'(१) २. कुंचित-व्यावर्तित,-वस्तु (न.) ३. ग्रंथिः ।

मर्कट, सं. पुं. (सं.) दे. 'बंदर' ।

मर्ज़, सं. पुं. (अ.) दे. 'मरज़' ।

मर्ज़ी, सं. स्त्री. (अ.) इच्छा, रुचिः (स्त्री.) २. प्रसन्नता ३. स्वीकृतिः (स्त्री.), अनुज्ञा ।

मर्त्य, सं. पुं. (सं.) मनुष्यः, मानवः, २. शरीरम् ।

—लोक, सं. पुं. (सं.) भूमिः (स्त्री.), भूलोकः ।

मर्द, सं. पुं. (फ़ा.) मानवः, मनुजः, २. पुंस् (पुं.), पुरुषः, नरः ३. वीरः साहसिन्, योधः ४. पतिः ।

—बच्चा, सं. पुं., वीरबालः ।

मर्दन, सं. पुं. (सं. न.) पद्भ्यां पीडनं-क्षोदनं-आक्रमणं २. अभ्यंजनं, संवाहनं, मर्दनं, घर्षणं ३. ध्वंसनं, नाशनं ४. पेषणं, चूर्णनम् ।

मर्दानगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शूरता, वीरता, पुरुषत्वम् ।

मर्दाना, वि. (फ़ा.) पुरुष-वीर-शूर,-उचित २. पुरुष-नर,-सदृश-उपम विक्रांत,-नर-पुरुष ।

—भेष, सं. पुं. पुरुषवेशः, नरोचितवेषः ।

मर्दित, वि. (सं.) पाद,-पीडित क्षुण्ण-आक्रांत २. खंडित, चूर्णित ३. नाशित ।

मर्दुम, सं. पुं. (फ़ा.) जनः, मनुष्यः ।

—ख़ोर, सं. पुं., नरभक्षकः, मनुजादः ।

—शिनास, वि., नर-मानव,-अभिज्ञ ।

—शुमारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) जन,-संख्यानं-गणना ।

मर्म, सं. पुं. [सं. मर्मन् (न.)] तत्त्वं, स्वरूपं २. रहस्यं, गोप्यवृत्तं ३. संधिस्थानं ४. जीव-स्थानम् ।

—ज्ञ, वि. (सं.) तत्त्वज्ञ, मर्मवेदिन् २. रहस्यविद् (पुं.) ।

—पीड़ा, सं. स्त्री. (सं.) हृच्छूलं, मर्मव्यथा ।

—भेदी, वि. (सं.-दिन्) मर्म,-भिद् (पुं.)-भेदक-छेदक-विदारक ।

—स्थान, सं. पुं. (स्त्री.) मर्मस्थलं, जीवन-स्थानम् ।

मर्मर, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'मरमर' ।

मर्यादा, सं. स्त्री. (सं.) स्थितिः (स्त्री.), धारणा, संस्था, नियमः २. सीमा ३. कूलं ४. प्रतिज्ञा, समयः ५. सदाचारः, सद्वृत्तं ६. गौरवं, प्रतिष्ठा ७. धर्मः ।

मलंग, सं. पुं. (फ़ा.) मलंगः, यवनभिक्षुभेदः २. वकभेदः ३. स्वेच्छाचारिन् ।

मल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अव(प)स्करः, कल्कः-कं, किट्टं २. कर्दमः, पंकः ३. उच्चारः, गूथः-थं, पुरीषं, विष् (स्त्री.), विष्ठा, शकृत् (न.), शमलम् ।

मलना, क्रि. स. (सं. मर्दनं) अंज् (रु. प. से.), लिप् (तु. प. अ.), दिह् (अ. उ. अ.), म्रक्ष् (भ्वा. प. से.) २. घृष् (भ्वा. प. से.), मृद् (क्र्. प. से.; प्रे.) ३. परि-प्र-मृज् (अ. प. से.), निज् (जु. उ. अ.) ४. करत-

लाभ्यां-चूर्ण् (चु.)। सं. पुं., अंजनं, लेपनं, घर्षणं, मर्दनं; मार्जनं; चूर्णनम्।
हाथ—, मु., अनु-पश्चात्,-तप् (दि. आ. अ.), अनुशुच् (भ्वा. प. से.), अनुशी (अ. आ. से.)।
मलबा, सं. पुं. (सं. मलः-लं) दे. 'मल' १-२। २. शकलराशिः।
मलमल, सं. स्त्री. (सं. मलमल्लकः>) *मलमल्लकं, सूक्ष्मं तूलवस्त्रम्।
मलमास, सं. पुं. (सं.) अधिमासः, मलिम्लुचः, असंक्रांतमासः, नपुंसकः।
मलय, सं. पुं. (सं.) दक्षिणाचलः, चंदनाद्रिः, आषाढ़ः, मलयाचलः २. तैलपर्णिकं, श्वेतचंदनं ३. नंदनवनम्।
मलयज, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'चंदनम्'।
मलयाचल, सं. पुं. (सं.) मलय,-अद्रिः-गिरिः-पर्वतः।
मलयानिल, सं. पुं. (सं.) मलय,-पवनः-वातः-समीरः।
मलवाई, सं. स्त्री. (हिं. मलवाना) मर्दन-अंजन-घर्षण,-भृतिः (स्त्री.)।
मलवाना, मलाना, क्रि. प्रे., व. 'मलना' के प्रे. रूप।
मलहम, सं. पुं., दे. 'मरहम'।
मलाई, सं. स्त्री. (फ़ा. बालाई) (दूध की) संतानी-निका, क्षीर-,शरः, दुग्ध,-अग्रं-तालीयं, शार्करः, शार्ककः, (दही की) दे. 'शर' (४) २. सारः, उत्तमांशः।
मलामत, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'फटकार'।
मलार, सं. पुं. (सं. मल्लारः) रागभेदः।
मलाल, सं. पुं. (अ.) खेदः २. औदासीन्यम्।
मलिक, सं. पुं. (अ.) नृपः २. अधीश्वरः।
मलिका, सं. स्त्री. (अ.) राज्ञी २. अधीश्वरी।
मलिन, वि. (सं.) आविल, कलुष, मलीमस, समल, पंकिल, सकर्दम, मलदूषित २. दूषित, विकृत ३. धूलिवर्ण ४ धूमवर्ण ५. पापात्मन्, दुष्ट, पाप ६. विषण्ण, म्लानमुख।
मलिनता, सं. स्त्री. (सं.) आविलत्वं, कालुष्यं, मालिन्यं, पंकिलत्वं इ.।
मलियामेट, सं. पुं. (हिं. मलना+मिटाना)। वि-, ध्वंसः-नाशः, क्षयः, उच्छेदः।
—**करना**, क्रि., स., उच्छिद् (रु. प. अ.), ध्वंस्-नश् (प्रे.), निर्मूल् (चु.)।

मलीदा, सं. पुं. (फ़ा. मालीदा) मर्दितः, स्निग्धमिष्टरोटिकाचूर्ण २. और्णवस्त्रभेदः, मर्दितः।
मलीन, वि., दे. 'मलिन'।
मलेरिया, सं. पुं. (अं.) विषमज्वरः, *मशक-कुपवन,-ज्वरः।
मल्ल, सं. पुं. (सं.) प्राचीनजातिविशेषः २. बाहु,-योधः-योधिन्। वि., महाबल, मांसल, स्थूल-महा,-काय।
—**भूमि**, सं. स्त्री. (सं.) मल्लशाला।
—**युद्ध**, सं. पुं. (सं. न.) बाहु-नि,-युद्धं, दे. 'कुश्ती'।
—**विद्या**, सं. स्त्री. (सं.) नियुद्धविद्या।
मल्लाह, सं. पुं. (अ.) नाविकः,नौ-पोत,-वाहः, औडुपिकः, मार्गरः २. धीवरः, कैवर्तः।
मल्लिका, स. स्त्री. (सं.) दे.'मोतिया' २. छन्दोभेदः।
मल्लू, सं.पुं. (सं. मल्लुकः) ऋक्षः, दे. 'रीछ' २. वानरः।
मवक्किल, सं. पुं. (अ. मुवक्किल) अभिभाषकनियोजकः।
मवाद, सं. पुं. (अ.) दे. 'पीप'।
मवेशी, सं. पुं. (अ. मवाशी) पशवः (पुं. बहु.), पशुसमूहः, गोकुलम्।
—**खाना**, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) गोष्ठः-ष्ठं, व्रजः।
मश(स)क[1], सं. पुं. (सं.) दे. 'मच्छड़'।
मशक[2], सं. स्त्री. (फ़ा.) जलभस्त्रा-स्त्रिका।
मशकूक, वि. (अ.) संदेह-संशय,-आस्पद-पात्र, संदिग्ध।
मशकूर, वि. (अ.) कृत,-ज्ञ-विद्-वेदिन्, उपकारज्ञ, उपकारस्मर्तृ, आभारिन्।
मशक्कत, सं. स्त्री. (अ.) परिश्रमः, प्रयासः।
मशक्कती, वि. (अ.) उद्योगिन्, परिश्रमिन्।
मशग़ला, सं. पुं. (अ.) कार्यम्, व्यवसायः, आजीविका, वृत्तिः (स्त्री.)।
मशगूल, वि. (अ.) व्यापृत, व्यग्र, कार्यमग्न।
मशरिक, सं. स्त्री. (अ.) प्राची, दे. 'पूर्व' (दिशा)।
मशविरा, सं. पुं. (अ.) संमंत्रणा, परामर्शः।
मशहूर, वि. (अ.) विख्यात, प्रसिद्ध।
मशान, सं. पुं. (सं. श्मशानं) दे. 'मरघट'।
मशाल, सं. स्त्री. (अ.) दीपिका, झिंगिनी, अलातं, उल्मुकं, उल्का।

—लेकर या जलाकर ढूंढना, मु., सम्यक् अन्विष् (दि. प. से.)।

मशालची, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) उल्काधारिन्, उल्मुक-दीपिका,-वाहकः।

मशीन, सं. स्त्री. (अं.) यंत्रम्।

मश्क़, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'अभ्यास'।

मष्ट, वि. (सं. मष्ठ>) मौनं, निःशब्दता।

—मारना, मु., तूष्णीं स्था (भ्वा. प. अ.)-भू।

मसकना, क्रि. अ. (अनु. मस) व. 'मसकाना'के कर्म. के रूप। क्रि.स., दे. 'मसकाना'।

मसकाना, क्रि. स. (हिं. मसकना) विदल्-विद्द (प्रे.), विपट् (चु.) २. सबलं मृद् (क्र्. प. से.)-निपीड् (चु.)।

मसख़रा, सं. पुं. (अ.) विदूषकः, भंडः, वैहासिकः।

—पन, सं. पुं., भंडता, वैहासिकता, परिहासः, क्ष्वेडा।

मसजिद, सं. स्त्री. (फ़ा.) *यवनमंदिरं, मोहम्मदीयदेवालयः।

मसनद, सं. स्त्री. (अ.) च(चा)तुरः, चक्रगंडुः, बृहद्वालिशं. महामसूरकः २. धनिकासनम्।

मसल, सं. स्त्री. (अ.) आभाणकः, लोकोक्तिः (स्त्री.)।

मसलन्, क्रि. वि. (अ.) यथा, उदाहरण-दृष्टांत,-रूपेण।

मसलना, क्रि. स. (हिं. मलना) हस्तेन पादेन वा संमृद् (क्र्. प. से., प्रे.), संपीड् (चु.) २. सबलं निपीड् (चु.) ३. दे. 'गूँथना'।

मसलहत, सं. स्त्री. (अ.) *भावि-गुप्त,-शुभं-मंगलं-भद्रं, औचित्यं, युक्तता।

मसला, सं. पुं. (अ.) दे. 'मसल' २. विषयः, समस्या।

मसविदा, सं. पुं. (अ. मुसविदा)। संस्कार्य-शोधनीय,-लेखः २. हस्त-अमुद्रित-,लेखः ३. युक्तिः (स्त्री.), उपायः।

—बाँधना, मु., उपायं चिंत् (चु.)।

मस(छ)हरी, सं. स्त्री. (सं. मशहरी) दे. 'मच्छड़दानी'।

मसा, सं. पुं. (सं. मांसकीलः-लं) चर्मकीलः-लं २. अर्शः,-कीलः-कीलं, मांसकीलकः-कम्।

मसान, सं. पुं. (सं. श्मशानं) पितृ-,वनं-काननं, अंतशय्या, शतानकं, रुद्राक्रीडः, दाह-सरस् (न.)-स्थलं २. पिशाचः ३. रणक्षेत्रम्।

मसाना, सं. पुं. (अ.) मूत्राशयः, वस्तिः (पुं. स्त्री.)।

मसाला, सं. पुं. (फ़ा.) वेश(प,स)वारः, उपस्करः, उपस्करसामग्री, स्वादनं २.उपकरणानि, उपसाधनानि (न. बहु.), सामग्री।

—डालना, क्रि. स., उपस्कृ, स्वादूकृ, अधि-, वास् (चु.)।

मसालेदार, वि. (फ़ा.) उपस्कृत, सोपस्कर, वेशवारयुक्त, स्वादूकृत।

मसि, सं. स्त्री. (सं. स्त्री. पुं.) मसिजलं, पत्रांजनं, मेला, मसी, रंजनी, मशी, काली।

—दान, सं. पुं. } सं.+फ़ा.) दे. 'मसिपात्र'।
—दानी, सं.स्त्री. }

—पात्र, सं. पुं. (सं. न.) मसिं(सी),-कूपः-घटी-धानं-धानी-आधारः।

मसी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मसि'।

मसीह, सं. पुं. (अ.) दे. 'ईसा' २. विश्वत्रातृ।

मसूड़ा, सं. पुं. [सं. श्मश्रु (न.)>] दंत,-मूलं-मांसं, दंत-वेष्टः।

मसूर, सं. पुं. [सं. मसु(सू)रः] मसु(सू)रा, मसूरकः-का, मंगल्यः-ल्या, पृथु-गुड-कल्याण,-बीजः, व्रीहिकांचनः।

मसूरिया, सं. स्त्री. (सं. मसूरिका) वसंतरोगः, पापरोगः, रक्तवटी, मसूरी, शीतला-ली, दे. 'चेचक'।

मसूरी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मसूरिया' २. दे. 'मसूर'।

मसो(सू)सना, क्रि. अ. (फ़ा. अफ़सोस) (मनसि) खिद्-दु (कर्म.), शुच् (भ्वा. प. से.), तप् (दि. आ. अ.) २. मनोवेगं रुध् (रु. प. अ.) शम् (प्रे.) ३-४. दे. 'मरोड़ना' तथा 'निचोड़ना'।

मसौदा, सं. पुं., दे. 'मसविदा'।

मस्त, वि.(फ़ा.) दे.सं. 'मत्त'(१) २. निश्चित, निरुद्विग्न ३. कामुक, कामिन् ४. स्वैरिन्, स्वेच्छाचारिन् ५. दृप्त, गर्वित ६. प्रहृष्ट, अति-प्रसन्न ७. उन्मादिन्, वातुल ८. समद, मद-घूर्णित (नेत्रादि)।

माल—, वि., वित्तमत्त, धनमूढ।

मगर—, वि., पीनप्रमोदिन्।

मस्तक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) शिरस् (न.), उत्तमांगं, शीर्षं, मूर्द्धन् (पुं.), मुंडं, शिरं, वरांगं, मौलिः, कपालं, केशभूः (स्त्री.)

२. ललाटं, अलि(ली)कं, भालं, ललाट-भाल,-पट्टं, गोधिः ।

मस्तगी, सं. स्त्री. (अ. मस्तकी) उत्तमनिर्यास-भेदः, *मरतगी ।

मस्ताना, वि. (फ़ा.) मत्त,-तुल्य-सदृश २. मत्त, क्षीव, मदिरोन्मत्त ।

मस्तिष्क, सं. पुं. (सं. न.) गोदं, गोर्द, मस्तकस्नेहः, मस्तुलुंगकः (मस्तिष्कभागाः–बृहन्मस्तिष्कं, लघुमस्तिष्कं, सुषुम्णाशीर्षकम्) ।

मस्ती, सं. स्त्री. (फ़ा.) मत्तता, क्षीवता, शौंडता, मदाढ्यता, उन्मदता, २. सुरतेच्छा, रतिकामना ३. अभिमानः ४. मदः, मदजलं, दानम् ।

मस्तूल, सं. पुं. (पूर्त.) कूपकः, गुणवृक्षः-क्षकः, कूपदंडः ।

मस्सा, सं. पुं., दे. 'मसा' ।

महँगा, वि. (सं.महार्घ) महार्घ, बहु-महा,-मूल्य ।

महँगाई, **महँगी**, सं. स्त्री. (हिं. महँगा) महार्घता, बहुमूल्यता २. दुर्भिक्षं, दुष्कालः ।

महंत, सं. पुं. (सं. महत् >) मठाधीशः, २. साधूत्तमः । वि., प्रधान, श्रेष्ठ ।

महंती, सं. स्त्री. (हिं. महंत) मठाधीशता २. साधुनेतृत्वम् ।

महक, सं. स्त्री. (महमह से अनु.) दे. 'सुगंध' ।

—दार, वि. (हिं+फ़ा.) दे. 'सुगंधित' ।

महकना, क्रि. अ. (हिं. महक) सुवासं-सौरभं उत्सृज्-मुच् (तु. प. अ.) ।

महकमा, सं. पुं. (अ.) विभागः ।

महकाना, क्रि. स. (हिं. महकना) अधि-, वास् (चु.), सुरभीकृ, धूप् (चु.; भ्वा. प, से.), परिमलयति (ना. धा.) ।

महकूम, वि. (अ.) शासित, अधीन २. आदिष्ट, आज्ञापित ।

महज़, वि. (अ.) शुद्ध, केवल । क्रि. वि., केवलं, एव, मात्रा ।

महत्, वि. (सं.) गुरु, विशाल, बृहत, स्थूल, दीर्घ २. उत्तम, श्रेष्ठ ।

महता, सं. पुं. (सं. महत् >) ग्रामणीः (पुं.), अग्रिमः, पुरोगः, नायकः २.लेखकः, कायस्थः ।

महताब, सं. पुं. (फ़ा.) चंद्रः, सोमः । सं.स्त्री. (फ़ा.) चंद्रिका, कौमुदी ।

महताबी, सं. स्त्री. (फ़ा.) वर्तिकाकारोऽग्नि-क्रीडनकभेदः, चन्द्राभा ।

महतारी, सं. स्त्री. दे. 'माता' ।

महती, वि. स्त्री. (सं.) बृहती, विशाला, विपुला, प्रचुरा ।

महतो, सं. पुं. (सं. महत् >) ग्रामनायकः, ग्रामणीः (पुं.), ग्रामाध्यक्षः ।

महत्तत्त्वं, सं. पुं. (सं. न.) प्रकृतेः प्रथम-विकारः (सांख्य.), बुद्धितत्त्वम् ।

महत्तम, वि. (सं.) महिष्ठ, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, बलिष्ठ, गरिष्ठ, विशालतम, प्रथिष्ठ । सं. पुं. (सं. न.) [= आदे आजम (गणित) ।

महत्तर, वि. (सं.) बृहत्तर, गुरुतर, विशाल-तर, उत्तर ।

महदूद, वि. (अ.) मित, परिमित, ससीम, मर्यादित ।

महफ़िल, सं. स्त्री. (अ.) संगीतसभा, प्रमोद-परिषद् (स्त्री.), रंगशाला ।

महफ़ूज़, वि. (अ.) सुरक्षित, परि,-त्रात-त्राण ।

महबूब, सं. पुं. (अ.) प्रियः, कांतः, दयितः ।

महबूबी, सं. स्त्री. (अ.) प्रिया, कांता, दयिता ।

महरा, सं. पुं. (सं. महत्तरः >) दे. 'कहार' ।

महराब, सं. स्त्री., दे. 'मेहराब' ।

महरूम, वि. (अ.) वंचित, विरहित, दीन (प्रायः सब समासांत में) ।

महर्षि, सं. पुं. (सं.) ऋषीश्वरः, ऋषिश्रेष्ठः २. रागभेदः ।

महल, सं. पुं. (अ.) प्रासादः, सौधः-धं, हर्म्यं, राज-नृप,-कुलं-भवनं-मंदिरम् ।

—सरा, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) अंतःपुरं, अवरोधः ।

महल्ला, सं. पुं. (अ.) पुरभागः, नगरविभागः ।

महल्लेदार, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) पुरभाग-नायकः २. समपुरभागवासिन् ।

महसूर, वि. (अ.) परिवेष्टित, रुद्ध, बाधित, परिवृत ।

महसूल, सं. पुं. (अ.) करः, राजस्वं, शुल्कः-कं, बलिः २.भाटं, भाटकं ३.दे. 'मालगुज़ारी' ।

—खाना, सं. पुं., कारभूः (स्त्री.) ।

महसूस, वि. (अ.) अनुभूत, ज्ञात, उपगत अवगत, विदित ।

महा, वि. (सं. महत्) अत्यंत, अत्यधिक, अतिशय, बहुल २. सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ, उत्कृष्ट-तम ३. विस्तीर्ण, विशाल, विपुल ।

—काय, वि. (सं.) विशालदेह ।

—काल, सं. पुं. (सं.) शिवरूपविशेषः ।

—काली, सं. स्त्री. (सं.) महाकालपत्नी।

—काव्य, सं. पुं. (सं. न.) सर्गबंधः, काव्य-भेदः।

—दंत, सं. पुं. (सं.) गजदंतः २. शंकरः।

—देव, सं. पुं. (सं.) शिवः।

—देवी, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा २. पट्टराज्ञ्या उपाधिः।

—द्वीप, सं. पुं. (सं.) भूखंडः, वर्षः-र्षम्।

—धातु, सं. पुं. (सं.) सुवर्णम्।

—निद्रा, सं. स्त्री. (सं.) मृत्युः।

—निशा, सं. स्त्री. (सं.) निशीथः, अर्द्ध-मध्य,-रात्रः-रात्रिः (स्त्री.), महारात्रम्।

—पथ, सं. पुं. (सं.) प्रधान-महा-राज,-मार्गः २. मृत्युः, घंटा-श्री,-पथः, संसरणं, राजवर्त्मन् (न.)।

—पाप, सं. पुं. (सं. न.) महापातकम्।

—पापी, सं. पुं. (सं.-पिन्) महापातकिन्।

—पात्र, सं. पुं. (सं.) मुख्य-प्रधान महा,-मंत्रिन्-अमात्यः-सचिवः।

—पुरुष, सं. पुं. (सं.) पुरुषर्षभः, नरोत्तमः २. दुष्टः (व्यंग्य में)।

—प्रभु, सं. पुं. (सं.) पवित्रात्मन्, महात्मन् २. नृपः ३. विष्णुः ४. शिवः ५. इन्द्रः।

—प्रलय, सं. पुं. (सं.) त्रिलोकीनाशः, संसार-संहारः।

—प्रस्थान, सं. पुं. (सं. न.) मृत्युः।

—प्राण, वि. (सं.) महासत्त्व, महाबल। सं. पुं. (सं.) वर्णमालायाः अक्षरविशेषाः (ख्, घ्, छ्, झ्, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्, श्, ष्, स्, ह्)।

—बली, वि. (सं.-लिन्) बलिष्ठ।

—बाहु, वि. (सं.) दीर्घ-आजानु,-बाहु २. बलवत्।

—ब्राह्मण, सं. पुं. (सं.) गर्ह्यविप्रः।

—भाग, वि. (सं.) सौभाग्यशालिन्।

—भारत, सं. पुं. (सं. न.) व्यासप्रणीत-श्लोकमयः इतिहासग्रंथः।

—भाष्य, सं.पुं. (सं. न.) अष्टाध्यायीसूत्राणां पतंजलिकृतं बृहद्भाष्यम्।

—मांस, सं. पुं. (सं. न.) (१-८) गो-नर-गज-घोटक-महिष-वराह-उष्ट्र-सर्प,-मांसम्।

—माई, सं. स्त्री. (सं.+हिं.) दुर्गा २. काली।

—माया, सं. स्त्री. (सं.) प्रकृतिः (स्त्री.) २. दुर्गा ३. गंगा ४. गौतमबुद्धजननी।

—मारी, सं. स्त्री. (सं.) मारिका, जनमारः।

—मुनि, सं. पुं. (सं.) मुनिपुंगवः, मुनीन्द्रः।

—मूल्य, वि. (सं.) महार्घ, बहुमूल्य।

—यज्ञः, सं. पुं. (सं.) बृहद्यागः २. आर्यैः प्रत्यहं कार्याः पंचयज्ञाः (ब्रह्मयज्ञः, देवयज्ञः, पितृयज्ञः, नृयज्ञः, बलिवैश्वदेवयज्ञः)।

—यात्रा, सं. स्त्री. (सं.) मृत्युः।

—युग, सं. पुं. (सं. न.) चतुर्युगी।

—रथी, सं. पुं. (सं. महारथः) महायोधः।

—राजा, सं. पुं. (सं. महाराजः) राजेश्वरः, राजेन्द्रः, नृपश्रेष्ठः, सम्राज् (पुं.), अधिराजः।

—राजाधिराज, सं. पुं. (सं.) चक्रव र्ति-सार्व-भौम,-नृपः।

—रात्रि, सं. स्त्री. (सं.) महाप्रलयांधकारः २. दे. 'महानिशा'।

—रानी, सं. स्त्री. (सं. महाराज्ञी) अधिराज्ञी।

—हास, सं. पुं. (सं.) अट्टहासः, अति,-हासः-हसितम्।

महाजन, सं. पुं. (सं.) नरर्षभः, पुरुषोत्तमः २. साधुः ३. धनिकः, धनाढ्यः ४. कुसीदिकः-दिन्, वार्द्धुषिकः-षिन्, ऋणदः ५. वणिज् (पुं.) ६. आर्यः, सज्जनः।

महाजनी, सं. स्त्री. (सं. महाजनः>) वृद्धि-जीविका, अर्थप्रयोगः, कुसीदं, कौसीद्यं २. लिपिविशेषः।

महातम, सं. पुं., दे. 'माहात्म्य'।

महात्मा, सं. पुं. (सं.-त्मन्) महाशयः, महानुभावः, महामनस् (पुं.), उदारचरित।

महान्, वि. (सं. महत्) दे. 'महा' (१-३)।

महाराष्ट्र, सं. पुं. (सं.) दक्षिणापथे प्रांतविशेषः।

महाराष्ट्री, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मरहटी' २. प्राकृतभाषाभेदः।

महावत, सं. पुं. (महामात्रः) हस्तिपकः, हास्तिकः, गजाजीवः, निषादिन्, आधोरणः, इभ्यः।

महावर, सं. पुं. (सं. महावर्ण ?) याव-यावक-अरुक्तक-लाक्षा,-रसः।

महावरा, सं. पुं., दे. 'मुहावरा'।

महाशन, वि. (सं.) अद्मर, घस्मर, औदरिक, उदरंभरि।

महाशय, सं. पुं. (सं.) महात्मन्, महामनस्,

सज्जनः, आर्यः, उदार,-चेतस्-मतिः-धीः, महानुभावः। (स्त्री. महाशया)।

महास्पद, वि. (सं.) उच्च,-पदस्थ-अधिकारिन् २. शक्तिशालिन्, सशक्त, शक्तिमत्।

महि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पृथिवी'।

—पाल, सं. पुं. (सं.) दे. 'राजा'।

महिमा, सं. स्त्री. [सं. महिमन् (पुं.)] महत्त्वं, माहात्म्यं, गौरवं, महत्ता, गरिमन् (पुं.), गुरुत्वं २. श्रीः (स्त्री.), शोभा, प्रभावः, प्रतापः, तेजस् (न.), प्रभा, विभूतिः (स्त्री.) ३. सिद्धिविशेषः (योग.)।

महिला, सं. स्त्री. (सं.) नारी, रामा, स्त्री, ललना, वनिता।

महिष, सं. पुं. (सं.) असुरविशेषः २. दे. 'भैंसा' ३. अभिषिक्तो नृपः।

महिषी, सं. स्त्री. (सं.) १. 'भैंस' २. पट्टराज्ञी।

मही, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पृथिवी'।

—धर, सं.पुं. (सं.) पर्वतः, गिरिः २.शेषनागः।

—प,-पति, सं. पुं. (सं.) दे. 'राजा'।

—रुह, सं. पुं. (सं.) वृक्षः, पादपः।

—सुर, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणः।

महीन, वि. (महा-क्षीण) दे. 'सूक्ष्म' तथा 'बारीक'।

महीना, सं. पुं. [सं. मासः, मास् (पुं.), मि. फ़ा. माह] दे. 'मास' २. मासिकवेतनम्।

महुआ, सं. पुं. (सं. मधूकः) गुडपुष्पः, मधुद्रुमः, मधुः, मधुकः, मधु,-पुष्पः-वृक्षः-स्रवः, माधवः।

महेंद्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'इन्द्र' २. विष्णुः ३. पर्वतविशेषः।

महेश, सं. पुं. (सं.) शिवः २. ईश्वरः।

महेश्वर, सं. पुं. (सं.) शिवः २. परमेश्वरः ३. सुवर्णम्।

महेश्वरी, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा, पार्वती।

महोत्सव, सं. पुं. (सं.) महा,-क्षणः-उद्धर्षः-पर्वन् (न.)-महस् (न.)-महः।

महोदधि, सं. पुं. (सं.) महा,-सागरः-अब्धिः।

महोदय, सं. पुं. (सं.) महाशयः, महानुभावः (आदरसूचक संबोधन) २. ऐश्वर्यं, वैभवं ३. स्वर्गः ४. मोक्षः। (स्त्री. महोदया)

महोपाध्याय, सं. पुं. (सं.) प्राध्यापकः, पण्डितः।

महौषध, सं. पुं. (सं. न.) भूम्याहुल्यं २. शुंठी ३. लशुनं ४. वाराहीकंदः ५. वत्सनाभः ६. पिप्पली ७. अतिविषा।

माँ, सं. स्त्री. (सं. मा) दे. 'माता'।

मांग,[1] सं. स्त्री. हिं. मांगना) दे. 'मांगना'। सं. पुं. २. आवश्यकता, पृच्छा, जिघृक्षा, प्रेप्सा, लिप्सा ३. प्रार्थनाविषयः।

मांग[2], सं. स्त्री. (सं. मार्गः ?) सीमंतः, *मूर्द्धजरेखा।

—निकालना, क्रि. स., सीमंतयति (ना. धा.), सीमंतं उन्नी (भ्वा. प. अ.)।

—चोटी, सं. स्त्री., केश,-विन्यासः-संस्कारः।

—जली, सं. स्त्री., विधवा।

माँगना, क्रि. अ. (सं. मार्गणं>) भिक्ष् (भ्वा. आ. से.) भिक्षाटनं कृ। क्रि. स., याच् (भ्वा. आ. से.), अभि-प्र-अर्थ् (चु. आ. से.) २. ऋणं कृ अथवा ग्रह् (क्र.प.से.)। सं. पुं., भिक्षणं, भिक्षा, भिक्षाटनं, याचनं-ना, याञ्चा, अभ्यर्थनं-ना, प्रार्थनं-ना।

मांगने योग्य, वि., याचनीय, अभि-प्र,-अर्थ्-नीय, प्रार्थयितव्य।

मांगनेवाला, सं. पुं. भिक्षु, भिक्षुकः; याचकः, प्रार्थकः, प्रार्थिन् इ.।

मांगलिक, वि. (सं. शिवं-शुभं,-कर (-री स्त्री.), शिव, शुभ, कल्याण (-णी स्त्री.), मंगल, भद्र, मांगल्य।

मांगल्य, वि. (सं.) दे. 'मांगलिक'। सं. पुं. (सं. न.) शुभं, भद्रं, कल्याणं, शिवम्।

मांगा हुआ, वि., प्रार्थित, याचित।

माँजना, क्रि. स. (सं. मार्जनं) प्र-सं-मृज् (अ. प. से.; चु.), प्रक्षल् (चु.), धाव् (भ्वा. प. से.; चु.), अव-निर्-,निज् (जु. उ. अ.), पवित्री कृ २. पतंगगुणं तीक्ष्णीकृ, मृज् (भ्वा. प. वे.)। क्रि. अ., अभ्यस् (दि. प. से)। सं. पुं., मार्जनं, प्रक्षालनं, धावनं, अभ्यसनम्।

माँजने योग्य, वि., मृज्य, मार्जनीय, प्रक्षालनीय, धावनीय।

माँजनेवाला, सं. पुं., मार्जकः, प्रक्षालकः, धावकः, पावकः, शोधकः।

माँजा हुआ, वि., मार्जित, मृष्ट, प्रक्षालित इ.।

माँझा[1], सं. पुं. (सं. मध्य>) पुलिनं, नदीमध्यस्थं, द्वीपं २. वरप्रदत्तं संभोजनं ३. औद्वाहिकः पीतवेशः ४. प्रकांडः, स्कंधः।

माँझा², सं. पुं. (सं. मार्जनं>) *पतंगगुण-गुंडिकः, *मार्जनः ।

माँझी, सं. पुं. (सं. मध्य>) दे. 'मल्लाह' ।

माँड़, सं. पुं. (सं. मंडः-डं) भक्तमंडः, आचामः, पिच्छलः-लं-ला, निस्र(स्रा)वः, मासरः, पिच्छाच्छम् ।

माँड़ना, क्रि. स., दे. 'रौंदना', 'मसलना' और 'गूँधना'।

मांडलिक, सं. पुं. (सं.) मंडल,-ईश्वरः-अधीशः, अध्यक्षः ।

माँडव, सं. पुं. (सं. मंडपः) औद्वाहिकमंडपः ।

मांडवी,सं.स्त्री. (सं.) भरतपत्नी, कुशध्वजपुत्री।

माड़ा, सं. पुं. (सं. मंडकः) पिष्टकभेदः ।

माँड़ी, सं. स्त्री. (सं. मंडः>) श्वेतसारः-मंडः-डम् ।

मांत्रिक, वि. (सं.) मंत्र,-सम्बन्धिन्-विषयक । सं. पुं. (सं.) मंत्रविद्, वेदपाठिन् २. अभिचारिन्, मायिन् ।

माँद¹, वि. (सं. मंद) निःश्रीक, खिन्न, विवर्ण २. मंदतर, निकृष्टतर, मलिनतर ।

माँद², सं. स्त्री. (देश.) शुष्कगोमयराशिः, शकृच्चयः २. (हिंस्रपशूनां) गुहा, गह्वरं, विवरम् ।

माँदगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) रोगः २. क्लांतिः-ग्लानिः (स्त्री.) ।

माँदा, वि. (फ़ा.) श्रांत, क्लांत २. अवशिष्ट ३. रुग्ण, रोगिन् ।

मांस, सं. पुं. (सं. न.) पिशितं, पलं, पललं, तरसं, क्रव्यं, आमिषं, अस्रजं, कीरं, जांगलम् ।

—का घी, सं. पुं., मांस,-सारः-स्नेहः, मेदस् (न.) ।

—पेशी, सं. स्त्री. (सं.) शरीरस्थं मांसपिंडकं, मांसपिंडी, स्नसा, वस्नसा, स्नायुः, स्नावः (ये पुरुष में ५००, स्त्रियों में ५२० होती हैं) २. द्वितीयसप्ताहे गर्भरूपम् ।

—भक्षक, सं. पुं. (सं.) मांस,-अद् (पुं.)-अदः-भोजिन्-भक्षिन्-आहारिन्-आशिन् ।

—भक्षण, सं. पुं. (सं. न.) मांस,-भोजनं-अशनं-अदनं-आहारः ।

—रस, सं. पुं. (सं.) मांसमंडः-डं, दे. 'यखनी' ।

मांसल, वि. (सं.) पीन, पीवर, मांसपूर्ण २. पुष्ट, दृढांग ३. बलवत्, बलिन् । सं. पुं., दे. 'उड़द' ।

मा, सं. स्त्री. (सं.) लक्ष्मीः (स्त्री.) २. मातृ (स्त्री.) ।

—बाप, सं. पुं., दे. 'मातापिता' ।

माइक्रोमीटर, सं. पुं. (अं.) अणुमापकम् ।

माई, सं. स्त्री. [सं. मातृ (स्त्री.)] दे. 'माता' २. वृद्धा, जरती, स्थविरा ।

—का लाल, सं. पुं., उदारः, वदान्यः २. वीरः, शूरः ।

माक़ूल, वि. (अ.) यथार्थ, न्याय्य, उचित, युक्त, योग्य २. पर्याप्त ३. उत्तम ।

माखन, सं. पुं., दे. 'मक्खन' ।

—चोर, सं. पुं., श्रीकृष्णः ।

मागध, सं. पुं. (सं.) मगधवासिन् २. जरासंधः ३. चारणः, वंदिन् ।

माघ, सं. पुं. (सं.) शिशुपालवधमहाकाव्य-लेखको महाकविविशेषः । २. तपस् (पुं.), मासविशेषः (जनवरी-फ़रवरी) ।

माजरा, सं. पुं. (अ.) वृत्तं, वृत्तांतः २. घटना ।

माजाया, वि. (सं. माजात) सोदर, सहोदर, सोदर्य ।

माजू, सं पुं. (फ़ा.) मज्ज-मायि-छिद्रा,-फलं, मायिका ।

—फल, सं. पुं. (फ़ा+सं.) माया-मायि-छिद्रा,-फलं, मायिकम् ।

माजून, सं. स्त्री. (अ.) अवलेहः, लेह्यं (औषधं) २. भंगामिश्रितावलेहः ।

माट, सं. पुं. (हि. मटका) बृहन्नीलमांडं २. 'मटका' ।

माटी, सं. स्त्री., दे. 'मिट्टी' ।

माणिक्य, सं. पुं. (सं. माणिक्यं) शोण,-रत्नं-उपलः, पद्मरागः, लोहितकं, रत्नम् ।

मातंग, सं. पुं. (सं.) द्विपः, गजः ।

मात, सं. स्त्री. (अ.) परा-अभि-परि,-भवः, पराजयः २. पराजित, परास्त, पराभूत ।

—करना, क्रि. स., विजि (भ्वा. आ. अ.), परा-भू ।

—होना, क्रि. अ., परा-भू (कर्म), विजित (वि.) भू ।

मातदिल, वि. (अ. मोऽतदिल) अनुष्णशीत, मध्यम, सामान्य, मध्यमप्रकृतिक ।

मातबर, वि. (अ. मोतबिर) दे. 'विश्वसनीय' ।

मातबरी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) दे. 'विश्वसनीयता' ।

मातम, सं. पुं. (अ.) मृतक-,शोकः, क्रंदनं, विलापः, परिदेवना।
—ख़ाना, सं. पुं., शोकसदनम्।
—पुर्सी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) आ-समा,-श्वासनं, सांत्वनं, शोकशमनं, अनुशोचनम्।
—पुर्सी करना, क्रि. स., अनुशोकं प्रकाश् (प्रे.), अनुशुच् (भ्वा. प. से.), मृतकबन्धून् समाश्वस् (प्रे.)।
मातमी, वि. (फ़ा.) शोक,-सूचक-प्रकाशक-पूर्ण।
—लिबास, सं.पुं.(फ़ा.+अ.)शोक,-वेशः(-षः)।
मातरिश्वा, सं. पुं. (सं.-श्वन्) वायुः दे. वातः, पवनः, अनिलः।
मातलि, सं. पुं. (सं.) इन्द्रसारथिः।
—सूत, सं. पुं. (सं.) सुरेशः, शचीपतिः, इन्द्रः।
मातहत, वि. (अ.) अधीन, आयत्त।
मातहती, सं. स्त्री. (अ. मातहत) अधीनता, आयत्तता।
माता[1], सं. स्त्री. [सं. मातृ (स्त्री.)] जननी, जनयित्री, शुश्रूः (स्त्री.), जनी निः (स्त्री.), जनित्री, सवित्री, प्रसूः (स्त्री.), अक्का, अंबा, अंबिका, अंबालिका, माता (क्वचित्)। २. वृद्धा, स्थविरा, पूज्यनारी ३. गौः (स्त्री.) ४. भूमिः (स्त्री.) ५. शीतला-ली, दे. 'चेचक' ६. मसूरी-रिका, दे. 'ख़सरा'।
—ढलना, क्रि. अ., शीतला शम् (दि. प. से.)।
—निकलना, क्रि. अ., शीतला आविर्भू।
—पिता, सं. पुं. पितरौ, मातापितरौ, मातरपितरौ, मातातौ, अंबाजनकौ।
—मह, सं. पुं. (सं.) मातुर्जनकः।
—मही, सं. स्त्री. (सं.) मातुर्जननी।
छोटी—, सं. स्त्री., लघुमसूरिका (हि. लाकड़ा-काकड़ा)।
माता[2], वि., दे. 'मत्त' (१)।
मातुल, सं. पुं. (सं.) मातृभ्रातृ, पितृश्यालः, मातृकः।
मातुली, सं. स्त्री. (सं.) मातुला-लानी, मातुल-पत्नी।
मातृ, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'माता'।
—भाषा, सं. स्त्री. (सं.) जन्मभाषा।
मातृक, वि. (सं.) मातृ,-विषयक-संबंधिन्। सं. पुं. (सं.) दे. 'मातुल'।
मातृका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'माता' २. उपवि,-माता, मातृसपत्नी ३. धात्री, धातृका, अंकपाली ४. ब्राह्मीत्यादयः सप्तदेव्यः ५. स्वर-वर्णचिह्नानि, मात्रा (ा, ि, इ.)।
मात्र, अव्य. (सं.-मात्रं) एव, केवलम्।
मात्रा, सं. स्त्री. (सं.) परि-प्र,-माणं, मानं, अंशः, भागः २. सकृत्सेव्यः औषधभागः ३. मात्रिका, कला, ह्रस्ववर्णोच्चारणापेक्षितः कालः ४. स्वरवर्णचिह्न (ा, ि, इ.)।
मात्सर्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मत्सर'।
माथा, सं. पुं. (सं. मस्तकः-कं>) दे. 'मस्तक' (२) अग्रं, अग्र,-भागः-देशः ३. मूर्धन् (पुं.), शिखरम्।
—पची, **—पिट्टन**, } सं. स्त्री., दे. 'मग़ज़पच्ची'।
—टेकना, मु., चरणयोः पत् (भ्वा. प. से.), प्रणम् (भ्वा. प. अ.)।
—ठनकना, मु., भाविसंकटं आशंक् (भ्वा. आ. से.)।
—रगड़ना, मु., पादयोः पतित्वा याच् (भ्वा. आ. से.)।
मादक, वि. (सं.) मद,-कारक-जनक।
मादकता, सं. स्त्री. (सं.) मदकारकता।
मादर, सं. स्त्री. [फ़ा., मि. सं. मातरः (मातृ से)] जननी, जनित्री, मातृ (स्त्री.)।
—ज़ाद, वि. (फ़ा.), मि. सं., मातृजात) सहज, स्वाभाविक, नैसर्गिक, जात्या-जन्मना-जन्मतः (अंधः, बधिरः इ.) २. दिगंबर, नग्न ३. सोदर, सहोदर।
मादा, सं. स्त्री. (फ़ा.) नारी, स्त्री., स्त्रीजातीयको जीवः।
माद्दा, सं. पुं. (अ.) प्रकृतिः (स्त्री.) उपादानकारणं २. योग्यता ३. दे. 'पीप'।
माधव, सं. पुं. (सं.) विष्णुः, नारायणः २. वैशाखः ३. वसंतः।
माधवी, सं. स्त्री. (सं.) वासंती, सुगंधा, चंद्रवल्ली, भद्रलता, अतिमुक्तकः, माधविका २. सुराभेदः।
माधुरी, सं. स्त्री. (सं.) मधुरता २. सुंदरता ३. मद्यम्।
माधुर्य, सं. पुं. (सं. न.) मधुरता-त्वं, मिष्टत्वं, स्वादुत्वं,मधुमयता, मिष्टता २.सौन्दर्यं, लावण्यं ३. चित्तद्रवीभावमयो ह्लादः, काव्य-गुणभेदः।

माध्यंदिन, वि. (सं. >) मध्य, मध्यम, मध्यवर्तिन्। सं. पुं., मध्याह्नः, मध्य(ध्यं) दिनम्, उद्दिनम् २.वाजसनेयिसंहितायाः शाखाविशेषः।

माध्यम, वि. (सं.) माध्यमक [—मिका (स्त्री.)], माध्यमिक (—मिकी स्त्री.), माध्य [—ध्यी (स्त्री.)], केन्द्रीय, मध्यम। सं. पुं. (सं. न.) उपकरणं, साधनं २. मृतसंदेशहरः।

माध्यमिक, वि. (सं.) मध्य, मध्यम, मध्यवर्तिन्। सं. पुं. बौद्धसम्प्रदायविशेषः।

माध्यस्थ्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मध्यस्थता'।

माध्वी, सं. स्त्री. (सं.) मध्यादिनिर्मितसुरा २. माधवी, वासन्ती, सुगंधा।

मान, सं. पुं. (सं.) गर्वः, अभिमानः, दर्पः, अहंकारः, अवलेपः २.संमानः, प्रतिष्ठा, आदरः, संभावना, पूजा, प्रश्रयः-यणं ३. कोपः, प्रीतिप्रसाद,-अभावः। (सं. न.) यौतवं, पौतवं, पाय्यं, द्रुवयं (हि. तौल नाप) २. प्र-परि,-माणं, मात्रा ३. इयत्ता, विस्तारः ४. भारः, गुरुत्वं, तोलः ५. भारभावं, परिमाणं, मात्रं, माडः ६. मान,-दंडः-सूत्रं इ. ७. साधनं, हेतुः, युक्तिः (स्त्री.)।

—करना, क्रि. स., सत्-पुरस्,-कृ, संमन् (प्रे.), पूज्-मह् (चु.)। क्रि. अ., मानं धा (जु. उ. अ.), कुप् (दि. प. से.) २. दृप् (दि. प. अ.), गर्व् (भ्वा. प. से.)।

—चित्र, सं. पुं. (सं. न.) देशालेख्यं, प्रदेशचित्रं, दे. 'नक्शा'।

—मंदिर, सं. पुं. (सं. न.) वेधशाला २. कोपभवनं, मानगृहम्।

—मनौती, सं. स्त्री. (सं.+हि.) दे. 'मन्नत' २. पारस्परिकप्रेमन् (पुं. न.) ३. कोपप्रसादनं-ने।

—मोचन, सं. पुं. (सं. न.) कोप,-उपशमनं-अपनयनं, प्रसादनम्।

—रखना, क्रि. स., दे. 'मान करना' क्रि. स. २. स्वाभिमानं-आत्मसंमानं रक्ष् (भ्वा.प.से.)।

—हानि, सं. स्त्री. (सं.) अप-परि,-वादः, अपभाषणं. अवधीरणा, मानभंगः, अवमानना।

मानता, सं. स्त्री. (हिं. मानना) दे. 'मन्नत' २. संमानः, प्रतिष्ठा।

मानना, क्रि. अ. (सं. मननं) क्लृप् (प्रे.), तर्क् (चु.), उत्प्रेक्ष् (भ्वा. आ. से.) २. अंगी-स्वी,-कृ. अभ्युपगम्, अभ्युप-इ (अ. प. अ.), मन् (दि. आ. अ.) ३. सन्मार्गगामिन् भू। क्रि. स., दे. 'मानना' क्रि. अ. २. दक्ष-प्रवीणं-पूज्यं मन् (दि. आ. अ.) ३. श्रद्धा (जु. उ. अ.), विश्वस् (अ. प. से.) ४. दे. 'मन्नत मानना'। सं. पुं., स्वी-अंगी,-करणं-कारः, अभ्युपगमः-गमनं, कल्पनं, उत्प्रेक्षणं-क्षा, विश्वसनम्।

माननीय, वि. (सं.) पूज्य, पूजनीय, सत्कार्य, आदरणीय, संमान्य।

मानने योग्य, वि., स्वी-अंगी,-कार्य, मंतव्य, अभ्युपेय २. श्रद्धेय, पूज्य, विश्वसनीय।

माननेवाला, सं. पुं., स्वीकर्तृ, मंतृ २. श्रद्धालुः, विश्वासिन्।

मानव, सं. पुं. (सं.) दे. 'मनुष्य'।

मानवी, सं. स्त्री. (सं.) मानुषी, स्त्री, नारी। वि., मानव, मानुष, पौरुषेय, मनुजोचित।

मानस, सं. पुं. (सं. न.) मनस्-चेतस् (न.), हृदयं, दे. 'मन' (१-४)। २. कैलासवर्ती सरोवरविशेषः ३. कामदेवः, कंदर्पः। वि., मानसिक, चैत्त, बौद्धिक, हार्दिक।

—शास्त्र, सं. पुं, (सं. न.) मनोविज्ञानम्।

मानसिक, वि. (सं.) मनोभव, मानस, दे. 'मानस' वि.।

माना हुआ, वि., स्वी-अंगी,-कृत, मत २. पूजित प्रतिष्ठित, विश्वस्त।

मानिंद, वि. (फ़ा.) तुल्य, सदृश,-वत्।

मानिक, सं. पुं., दे. 'माणिक'।

मानित, वि. (सं.) आदृत, प्रतिष्ठित, पूजित।

मानिनी, सं. स्त्री. (सं.) रुष्टनायिका। वि., मानवती, अभिमानिनी २. रुष्टा, प्रतीपा, कुपिता।

मानी[1], वि. (सं.-निन्) अहंकारिन्, दृप्त, गर्वित २. संमानित, प्रतिष्ठित। सं. पुं., रुष्टनायकः २. सिंहः।

मानी[2], सं. पुं. (अ.) अर्थः, तात्पर्यं २. तत्त्वं, रहस्यं ३. प्रयोजनम्।

मानुष, सं. पुं. (सं.) मनुष्यः, नरः, दे. 'मनुष्य' २. प्रमाणभेदः (धर्म.)। वि., मानुषि(ष)क, मानुष्यक, मनुष्यसंबंधिन्, मानुष्य, मानुषीय।

मानुषिक, वि. (सं.) दे. 'मानुष' वि. ।
मानुष्य, सं. पुं. (सं. न.) मनुष्यता त्वम् । वि., दे. 'मानुष' वि. ।
माने, सं. पुं., दे. 'मानी' (१-३) ।
मानो, अव्य. (हिं. मानना) इव, (प्रायः मन्) (दि. आ. अ.) से अनुवाद करते हैं ।
मान्य, वि. (सं.) दे. 'माननीय' ।
माप, सं. स्त्री. (हिं. मापना) (सामान्य) मानं, प्र-परि,-माणं, यौ(पौ)तवं, पाय्यं, द्रुवयं २. (गजादि) मान,-दंड:-सूत्रं इ., ३. (बट्टा) भारमानं, माढः, मात्रं ४. (पात्र) प्रतीमानं, प्रस्थः ५. मानं, मापनं, माननिरूपणं ६. परिमाणं, इयत्ता, दे. 'मान' ।
मापक, सं. पुं. (सं.) माननिरूपकः, मातृ (पुं.) २. दे. 'माप' (१-४) ।
मापन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मापना' सं. पुं. ।
मापना, क्रि. स. (सं. मापनं) प्र-परि,-मा (अ. प. अ.; जु. आ. अ.; दि. आ. अ.), मानं निरूप् (चु.) २. तुल् (चु.), भारं निरूप् , दे. 'तोलना' । सं. पुं., मानं, माननिरूपणं, मापनं, मस्तिः (स्त्री.), तोलनं, भारनिरूपणम् ।
मापने योग्य, वि., परि,-मेय, तोलयितव्य ।
मापनेवाला, सं. पुं., दे. 'मापक' ।
मापा हुआ, वि. परि,-मित, ज्ञातमान, तोलित ।
माफ़, वि., दे. 'मुआफ़' ।
माफ़िक, दे. 'मुआफ़िक' ।
माफ़ी, दे. 'मुआफ़ी' ।
मामता, सं. स्त्री. (सं. ममता) दे. 'ममता' (१-४) ।
मामा[1], सं. पुं., दे. 'मातुल' ।
मामा[2], सं. स्त्री. (फ़ा.) मातृ (स्त्री.) जननी २. वृद्धा ३. दासी ४. धात्री, मातृका ।
मामि(म)ला, सं. पुं., दे. 'मुआमिला' ।
मामी, सं. स्त्री., दे. 'मातुली' ।
मामू, सं. पुं., दे. 'मातुल' ।
मामूल, वि. (अ.) दे. 'आदत' २. रीतिः–परिपाटी-टिः (स्त्री.) ।
मामूली, वि. (अ.) साधारण, सामान्य ।
मायका, सं. पुं. (हिं. माय) ऊढायाः पितृ–मातृ,-गृहम् ।
मायल, वि. (फ़ा.) आनत, प्रवृत्त, प्रवण २. मिश्रित ।

माया, सं. स्त्री. (सं.) द्रव्यं, धनं, संपद् (स्त्री.) २. अज्ञानं, भ्रांतिः (स्त्री.), अविद्या ३. छलं, कपटं ४. प्रकृतिः (स्त्री.), सृष्टेः उपादान-कारणं ५. ईश्वरीयशक्तिः (स्त्री.) ६. इंद्रजालं, कुहकं ७. देव,-लीला-शक्तिः (स्त्री.)-प्रेरणा ८. ममता-त्वम् ।
—कार, सं. पुं. (सं.) मायाजीविन्, ऐन्द्र-जालिकः ।
—जोड़ना, क्रि. स., धनं सं-चि (स्वा. प. अ.) ।
—मोह, सं. पुं. (सं.) जगज्जालं २. ममता-त्वम् ।
—रूप, वि. (सं.) मायामय, अलीक, भ्रांति-मय, मायिक ।
—वती, सं. स्त्री. (सं.) रतिः (स्त्री.), काम-पत्नी ।
—वाद, सं. पुं. (सं.) भ्रांतिवादः, जीवजग-न्मिथ्यात्ववादः ।
मायाविनी, सं. स्त्री. (सं.) मायिनी, कपटिनी, वंचनशीला २. ऐंद्रजालिकी ।
मायावी, सं. पुं. (सं.-विन्) मायिन्, कपटिन्, वंचकः, धूर्त्तः, शठः २. ऐन्द्रजालिकः, कुहुक-जीविन्, मायाकारः ।
मायिक, वि. (सं.) कृतक, कृत्रिम, २. दे. 'मायावी' (२) ।
मायी, वि. (सं.-यिन्) मायाविन्, धूर्त्त, वंचक, कपटिन् ।
मायूस, वि. (फ़ा.) दे. 'निराश' ।
मायूसी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'निराशा' ।
मार[1], सं. पुं. (सं.) कामदेवः २. विघ्नः ३. विषं ४. धुस्तूरः ।
मार[2], सं. स्त्री. (सं. मृ.) मारणं, हननं, हिंसनं २. घातः, वधः, हत्या ३. ताडनं, आह-ननं, प्रहरणं ४. आघातः, प्रहारः ५. युद्धम् ।
—काट, सं. स्त्री., युद्धं २. वधः, घातः, हननं, हिंसनम् ।
—धाड़, } सं. स्त्री., मारताडं, मारणताडनं,
—पीट, } अभिमर्दः, अभिसंपातः ।
—खाना, } मु., ताड्-प्रहृ (कर्म.) ।
—पड़ना, }
—गिराना, मु., आहत्य निपत् (प्रे.) ।
—डालना, मु., हन् (अ. प. अ.), मृ-व्या-पद् (प्रे.) ।

—बैठना, मु., परद्रव्यं कपटेन आत्मसात्-कृ ।
—भगाना, मु., विद्रु (प्रे.), पलाय् (प्रे.), सर्वथा परा-जि (भ्वा. आ. अ.) ।
—मारना, मु., भृशं-अत्यर्थं-निर्दयं तड् (चु.) ।
—लाना, मु., लुंट् (चु.), अन्यायेन अपहृ (भ्वा. प. अ.) ।
—लेना, मु., दे. 'मार बैठना' ।
—हटाना, मु., बलेन अपसृ (प्रे.)-विद्रु (प्रे.) ।
मारक, वि. (सं.) घातक, हिंसक, संहारक, नाशक ।
मारका[1], सं. पुं. (अं. मार्क) चिह्नं, लक्षणं, अभिज्ञानम् ।
मारका[2], सं. पुं. (अ.) युद्धं, संग्रामः २. विशिष्ट,-वृत्तं-घटना ।
मारकीन, सं. स्त्री. (अं. नैनकिन्) *मारकीनं, स्थूलवस्त्रभेदः ।
मारण, सं. पुं. (सं. न.) हननं, हिंसनं, व्यापादनं २. तांत्रिकप्रयोगभेदः ।
मारतौल, सं. पुं. (पुर्त० मोर्टेली) महा-बृहद्-, घनः-विघनः ।
मारना, क्रि. स., (सं. मारणं) मृ-व्यापद् (प्रे.), हन् (अ. प. अ.), हिंस् (भ्वा. रु. प. से.), सूद् (चु.) २. तड् (चु.), प्रहृ (भ्वा. प. अ.), आहन् (अ.प.अ.) ३. पीड् (चु.), दुःखयति (ना. धा.) ४. मल्लयुद्धादिषु निपत् (प्रे.)-पराजि (भ्वा. आ. अ.) ५. (किवाड़ादि) अ-,पिधा (जु. उ. अ.), आ-सं-वृ (स्वा. उ. से.) ६. मुच्-प्रक्षिप् (तु. प. अ.), आस् (दि. प. से.) ७. निग्रह् (क्र्. प. से.), निरुध् (रु. प. अ.) ८. नश्-ध्वंस् (प्रे.) ९. (धात्वादिकं) भस्मीकृ १०. अन्यायेन आत्मसात् कृ ११. अनु-स्था (भ्वा. प. अ.) १२. जि (भ्वा. प. अ.) १३. दंश् (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं., मारणं, हननं, निषूदनं, हिंसनं, विशसनं, व्यापादनं, प्रमापणं २. हत्या, वधः, हिंसा, घातः ३. आहननं, ताडनं, प्रहरणं ४. पीडनं ५. निपातनं ६. पिधानं ७. नाशनं, ध्वंसनं ८. भस्मीकरणं ९. अन्यायेन आत्मसात्करणं १०. दंशनं, इ. ।
मारने योग्य, वि., हंतव्य, हिंसितव्य, व्यापाद्य २. ताडयितव्य, आहननीय, इ. ।
मारनेवाला, सं.पुं., घातकः, हिंसकः, ताडकः ।
मारपेच, सं. स्त्री. (हिं. मारना+पेच) कैतवं, कपटोपायः ।
मारवाड़, सं. पुं., राजस्थानस्य भागविशेषः ।
मारवाड़ी, सं. पुं., मारवाड़वासिन् । सं. स्त्री. मारवाड़ी, मारवाड़भाषा ।
मारा, वि. (हिं. मारना) दे. 'मारा हुआ' (१-२) ।
—जाना, क्रि. अ., हन्-हिंस्-सूद् (कर्म.) ।
—मार, सं. स्त्री., मिथःताडनं, कलिः, संघर्षः । क्रि. वि., सत्वरं, सवेगं, शीघ्रतया ।
—मार करना, मु., त्वर् (भ्वा. आ. से.), शीघ्रं या (अ. प. अ.)-कृ ।
—मारा फिरना, मु., मुधा परिभ्रम् (भ्वा. दि. प. से.), क्षीणवृत्तिक (वि.) पर्यट् (भ्वा.प.से.) ।
—हुआ, वि., हत, व्यापादित, मारित, २. ताडित, प्रहृत, आहत ।
मारी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मरी' ।
मारुत, सं. पुं. (सं.) वायुः, मरुत् (पुं.), मरुतः ।
—तनय, सं. पुं. (सं.) पवन,-सुतः-पुत्रः-जः, मारुतिः, आंजनेयः ।
मारू, सं. पुं. (हिं. मारना) रागभेदः २. रण,-भेरी-दुंदुभिः । वि., मारक, हृदयवेधक ।
मारे, अव्य. (हिं. मारना) कारणेन-णात्, हेतोः ।
मार्ग, सं. पुं. (सं.) अध्वन्-पथिन् (पुं.), पथः, वर्त्मन् (न.) २. चरणपथः, पदवी-विः (स्त्री.), पद्या, पद्धती-तिः (स्त्री.) ३. प्रतोली, राजपथः, रथ्या, वाहनी, श्रीपथः, सरणी-णिः (स्त्री.) ४. वीथी-थिः (स्त्री.), विशिखा ५. उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ।
मार्गशीर्ष, सं. पुं. (सं.) आग्रहायणिकः, मार्गः, मार्गशिरः-रस् (पुं.), सहस् (पुं.) ।
मार्जन, सं. पुं. (सं. न.) मार्ष्टिः-शुद्धिः (स्त्री.), मार्जना, मृजा, प्रक्षालनं, धावनं, शोधनं, पवनं, निर्मलीकरणम् ।
मार्जनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'झाड़ू' ।
मार्जार, सं. पुं. (सं.) दे. 'बिल्ला' (-री स्त्री.) ।
मार्जित, वि.(सं.)पूत, शोधित, प्रक्षालित, धौत ।
मार्तंड, सं. पुं. (सं.) सूर्यः २. अर्कक्षुपः ३. शूकरः ।
मार्दव, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मृदुता' ।
माफ़ त, अव्य. (अ.) दे. 'द्वारा' ।

मार्मिक, वि.(सं.) प्रभावशालिन्, हृदयग्राहिन् ।
माल, सं. पुं. (अ.) संपद्-संपत्तिः (स्त्री.), वित्तं, अर्थः २. सामग्री, परिच्छदः ३. पण्य-जातं, पणसाः (पुं. बहु.), क्रय्यद्रव्याणि (न. बहु.) ४. राजस्वं, करः ५. उत्पन्नं, प्रसवः, फलं ६. स्वादुभोजनं ७. गो-पशु,-धनम् ।
—खाना, सं. पुं. (फ़ा.) भांडारं, पण्यागारम् ।
—गाड़ी, सं. स्त्री. (फ़ा+हिं.) द्रव्यशकटी, दे. 'गाड़ी' ।
—गुज़ार, सं. पुं. (फ़ा.) राजस्वदायकः, भूमिकरदः ।
—गुज़ारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) भूमि-क्षेत्र,-करः-शुल्कः ।
—टाल, सं. पुं., धनं, वित्तं, संपद् (स्त्री.) ।
—दार, वि. (फ़ा.) धनिक, धनाढ्य ।
—मस्त, वि. (फ़ा.) वित्तदृप्त, धन-,गर्वित-मत्त ।
माला—, वि., सुसंपन्न, सुसमृद्ध ।
मालकंगनी, सं. स्त्री. (हिं. माल ?+सं. कंगुनी) महाज्योतिष्मती, कंगुनी, कनकप्रभा, सुरलता, तीव्रा, तेजस्विनी (लताभेदः) ।
मालती, सं. स्त्री. (सं.) सुमना, सुमनस् (स्त्री., न.), जाती-तिः (स्त्री.) २. ज्योत्स्ना ३. रात्री ।
मालदह, सं. पुं. (देश०) विहार राज्यस्य-नगरविशेषः २. आम्रभेदः ।
मालपु(पू) आ, सं. पुं. (अ. माल+सं. पूपः) पूपः, पिष्टकः, दे. 'पुआ' ।
मालवा, सं. पुं. (सं. मालवः) अवंतिदेशः ।
मालवीय, वि. (सं.) मालवसम्बन्धिन् । सं. पुं., मालववासिन् २. विप्रभेदः ।
माला, सं. स्त्री. (सं.) माल्यं, स्रज् (स्त्री.), माल(लि-ला)का, आपीडः, अवतंसः, अंकिलिः (स्त्री.) २. पंक्तिः-आवलिः-राजिः-श्रेणिः (स्त्री.) ३. समूहः, निकरः ४. अक्ष-जप,-माला ५. कंठ-माला, हारः ।
—कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'माली' ।
—फेरना, मु., ईश्वरं, भज् (भ्वा. उ. अ.), प्रणवं जप् (भ्वा. प. से.) ।
मालामाल, वि. (अ.) समृद्ध, सम्पन्न, धन-धान्यपूर्ण ।
मालिक, सं. पुं. (अ.) परमेश्वरः २. स्वामिन्, प्रभुः ३. पतिः [मालिका (स्त्री.) ।]
मालिका, सं. स्त्री. (सं.) पंक्तिः-श्रेणिः-ततिः- (स्त्री.) २. माला ३. कंठभूषणभेदः ४. द्राक्षा-, मद्यं ५. मालिनी ६. दे. 'चमेली' ।
मालिकी, सं. स्त्री. (फ़ा. मालिक) स्वामित्वं, प्रभुत्वं, स्वत्वम् ।
मालिक्यूल, सं. पुं. (अं.) व्यूहाणुः, अणुः ।
मालिन, सं. स्त्री. (सं. मालिनी) मालाकारी, मालिकी ।
मालिन्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मलिनता' २. अंधकारः ।
मालियत, सं. स्त्री. (अ.) मूल्यं, अर्घः २. धनं ३. मूल्यवद्द्रव्यम् ।
मालिया, सं. पुं., दे. 'मालगुज़ारी' ।
मालिश, सं. स्त्री. (सं.) अभ्यंजनं, मर्दनं, घर्षणं, संवाहनम् ।
माली[1], सं. पुं. (सं.-लिन्) मालाकारः, मालिकः, उद्यानपालः २. जातिविशेषः ३. मालाधारिन् ।
माली[2], वि. (अ. माल) आर्थिक, सांपत्तिक, अर्थ-द्रव्य-धन,-विषयक ।
मालीख़ोलिया, सं. पुं. (यूनानी) विषाद-वायुरोगः, श्लैष्मिकोन्मादः ।
मालीदा, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'मलीदा' ।
मालूम, वि. (अ.) ज्ञात, दे. 'विदित' ।
माल्टाफ़ीवर, सं. पुं. (अं.) माल्टाज्वरः ।
माल्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'माला'(१) २. पुष्पं, कुसुमम् ।
मावस, सं. स्त्री., दे. 'अमावस्या' ।
मावा, सं. पुं. (सं. मंडः) दे. 'मांड' २. किलाटः ३. गोधूमादिकस्य दुग्धं ४. अंड,-गर्भः-पीतिमन् (पुं.) ५. तमाखु,-मासरः-किण्वः ६. सारः, निष्कर्षः ७. सामग्री, उपकरणजातम् ।
माशकी, सं. पुं. (फ़ा. मशक) दृतिहरः ।
माशा-षा, सं. पुं., दे. 'मासा' ।
वल्लभः, प्रियः ।
माशूक़, सं. पुं. (अ.) कांतः, दयितः, वल्लभः, प्रियः ।
माशूक़ा, सं. स्त्री. (अ.) प्रिया, कांता, दयिता, वल्लभा ।
माष, सं. पुं. (सं.) कुरुविंदः, धान्यवीरः, वृषाकरः, मांसलः, बलाढ्यः, पित्र्यः, पितृ-भोजनः २. दे. 'मसा' ३. दे. 'मासा' ।
मास[1], सं. पुं. (सं. पुं. न.) वर्षांश, वर्षांगः, शुक्लकृष्णपक्षद्वयात्मकः कालः, त्रिंशद्दिनात्मकः

समयः, मास् (पुं., इसके पहले पांच रूप नहीं होते), मासकः २. चांद्रमासः, तांतः, सांवत्सरः ३. सौरमासः, सावनः ।

—भर का, वि., मास्य, मासीन (बालकादि) ।

हर—, क्रि. वि., प्रति-अनु,-मासं, मासे मासे ।

मास², सं. पुं., दे. 'मांस' ।

मासड़, सं. पुं. (हिं. मासी) मातृष्वस,-धवः-पतिः ।

मासा, सं. पुं. (सं. मासः) माषकः, माषः, हेमः, धानकः, अष्टगुंजामाडः ।

—भर, वि., माप,-मास-मात्र २. अत्यल्प ।

—तोला होना, मु., दशायाः अस्थिरत्वं-अध्रुवत्वं-परिवर्तित्वम् ।

मासिक, वि. (सं.) मासानुमासिक, प्रतिमासिकः, मासि भव, मासीन । सं. पुं. (सं. न.) अन्वाहार्यं, श्राद्धभेदः २. रजोदर्शनं ३. मासिकवेतनम् ।

—धर्म, सं. पुं. (सं.) ऋतुः, आर्तवं, रजस् (न.), रजः, रजःस्रावः ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) प्रातिमासिकपत्रिका ।

मासी, सं. स्त्री. (सं. मातृष्वसृ) जननी-भगिनी ।

—का लड़का, सं. पुं., मातृष्वसेयः, मातृष्वस्रीयः ।

—की लड़की, सं. स्त्री., मातृष्वसेयी, मातृष्वस्रीया ।

मासीन, वि. (सं.) मासिक, मास्य, मास्यानुमासिक ।

माह, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'मास¹' २. चंद्रः ३. प्रियः ।

—ताब, सं. पुं. (फ़ा.) चंद्रः २. चन्द्रिका ।

—ताबी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'महताबी' ।

—वार, वि. (फ़ा.) दे. 'मासिक' । क्रि. वि., प्रतिमासम् । सं. पुं., मासिकवेतनम् ।

—वारी, वि. (फ़ा.) दे. 'मासिक' ।

माहात्म्य, सं. पुं. (सं. न.) महिमन्-गरिमन् (पुं.), महत्त्वं, महत्ता, गौरवं, महात्मता, २. तीर्थयात्राग्रंथाध्ययनादिकस्य विशिष्टफलम् ।

माही, सं. स्त्री, (फ़ा.) मीनः, मत्स्यः ।

—गीर, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'मछुआ-वा' ।

माहुर, सं. पुं. (सं. मधुरं) विषं, गरलः-लम् ।

मिक़दार, सं. स्त्री. (अ.) मात्रा, परिमाणं, मानम् ।

मिक्स्चर, सं. पुं. (अं.) मिश्रम् ।

मिचकाना, क्रि. स. (हिं. मिचना) नेत्रेऽसकृत् निमील् (भ्वा. प. से.) उन्मील् च, नयने पुनः पुनः निमिष् (तु. प. से.) उन्मिष् च, असकृत् निमेषोन्मेषं कृ २. दे. 'मीचना' ।

मिचना, क्रि. अ. ब. 'मीचना' के कर्म. रूप ।

मिचलाना, क्रि. अ., दे. 'मचलाना' (२) ।

मिजराब, सं. स्त्री. (अ.) परि(री)वादः, वीणामुद्रा ।

मिज़ाज, सं. पुं. (अ.) प्रकृतिः, स्वभावः २. शारीरिक-मानसिक,-अवस्था-दशा ३. दर्पः ।

—दार, वि. (अ.+फ़ा.) दृप्त, गर्वित ।

—पुरसी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) कुशल-पृच्छा ।

—शरीफ़, वाक्यांश (अ.), अपि कुशली भवान् ।

मिटना, क्रि. अ. (सं. मृष्ट>) अप-व्या,-मृज् (कर्म.), विलुप् (दि. प. से.) २. उच्छिद् (कर्म.), विनश् (दि. प. वे.), उन्मूल् (कर्म.) ३. निर्-अस् (कर्म.), खंड-प्रत्याख्या (कर्म.) । सं. पुं., लोपः, अप-व्या,-मृष्टिः (स्त्री.), उच्छेदः, विनाशः, निरासः, प्रत्याख्यानम् ।

मिटाना, क्रि. स., ब. 'मिटना' के प्रे. रूप ।

मिटा हुआ, वि., अप-व्या,-मृष्ट, विलुप्त, विनष्ट, खंडित ।

मिट्टी, सं. स्त्री. [सं. मृत्तिः (स्त्री.)] मृत्तिका, रेणुः, धूलिः (स्त्री.) मृदा, मृद् (स्त्री.) । (अच्छी मिट्टी) मृत्सा-त्स्ना २. पृथिवी ३. भस्मन् (न., सुवर्णादि की) ४. शरीरं ५. शवः ।

—का तेल, सं. पुं., मृत्तैलम् ।

—का पिंजर, सं. पुं., मानवदेहः ।

—का पुतला, सं. पुं., मनुष्यः २. मानवशरीरम् ।

—का माधव, सं. पुं., जडः, मूर्खः ।

—करना, मु., नश्-ध्वंस् (प्रे.) २. कलुषयति (ना. धा.) ।

—के मोल, मु., अत्यल्प,-मूल्येन-अर्घेण, निर्मूल्यमिव ।

—ठिकाने लगाना, मु., अन्त्येष्टिं कृ २. शवं भूमौ निधा (जु. उ. अ.)-स्था (प्रे.) ।

—डालना, मु., शम् (प्रे., शमयति), गुह् (भ्वा. उ. से.) ।

—पलीद या ख़राब होना, मु., परिक्षि (कर्म.), क्षयं-नाशं इ-या (अ. प. अ.),

परिक्षीण-गतविभव (वि.) भू , दुर्दशां आपद् (दि. आ. अ.) ।
—में मिलना, मु., दे. 'मिट्टी पलीद होना' २. मृ (तु. आ. अ.) पंचत्वं गम् ।
मिट्टी, सं.स्त्री. (सं. मिष्ट>) चुंबनं, दे. 'चूमा' ।
मिट्ठू, सं. पुं. (सं. मिष्ट>) मधुरभाषिन् २. शुकः, कीरः । वि. मौनिन्, तूष्णीक, प्रियंवद ।
अपने मुँह आप मियां मिट्ठू बनना, मु., विकत्थ् (भ्वा. आ. से.), आत्मानं श्लाघ् (भ्वा. आ. से.) ।
मिठाई, सं. स्त्री. (हिं. मीठा) कांदवं, मिष्टान्नं, मिष्टं, मोदकजातं २. दे. 'मिठास' ।
मिठास, सं. स्त्री. (हिं. मीठा) मधुरता-त्वं, मधुरिमन् (पुं.), माधुर्यं, मिष्टत्वम् ।
मिड (डि)ल, वि. (अं.) मध्य, मध्यम, मध्यवर्तिन् । सं. पुं. मध्यमाः कक्षाः (स्त्री.) ।
—ची, वि., अल्पशिक्षित (तिरस्कारसूचक) ।
—स्कूल, सं. पुं., मध्यम-विद्यालयः ।
मित, वि. (सं.) परिमित, सीमित, ससीम २. अल्प, स्तोक ।
—भाषी, वि. (सं.-षिन्) मित,-वाच्-कथ, अल्पवादिन् ।
—भोजी, वि. (सं.-जिन्) दे० 'मिताशी' ।
—व्यय, सं. पुं. / **—व्ययिता,** सं. स्त्री. } (सं.) अल्प-परिमित-स्तोक,-व्ययः-व्ययिता, अमुक्तहस्तत्वम् ।
—व्ययी, वि. (सं.-यिन) अमुक्तहस्त, अल्प-स्तोक,-व्ययिन ।
मिताशन, सं. पुं. (सं. न.) परिमितभोजनं, ईषद्भक्षणं, मिताहारः २. वि. दे. 'मिताशी' ।
मिताशी, वि. (सं.-शिन) मिताहारिन, परिमित-अल्प-ईषद्,-भोजिन्-भुज ।
मिती, सं. स्त्री. (सं. मितिः>) देशीयतिथिः (पुं. स्त्री.) २. दिनं, दिवसः ।
—वार, क्रि. वि., तिथिक्रमेण, तिथ्यनुसारम् ।
मित्र, सं. पुं. (सं. न.) सुहृद् (पुं.), सखि (पुं.), वयस्यः २. सहचरः, सहायः ।
मित्रता, सं. स्त्री. (सं.) सखित्वं, सख्यं, सौहृदं, सौहार्दं, मैत्री, मैत्र्यं, मित्रत्वम् ।
मिथुन, सं. पुं. (सं. न.) द्वन्द्वं, दं(जं)पती (द्वि.), जायापती, स्त्रीपुंसयोः युग्मं-युगं-युगलं २. रतिः (स्त्री.), संभोगः ३-४. राशि-लग्न,-विशेषः (ज्यो.) ।
मिथ्या, वि. (सं. अव्य.) अनृत, असत्य, वितथ २. काल्पनिक, अवास्तविक, मायामय ।
—वादी, वि. (सं.-दिन्) अनृत-असत्य-मृषा-वितथ,-भाषिन्-आलापिन्-वादिन् ।
मिनिमम, वि. (अं.) न्यूनतम, अल्पिष्ठ ।
मिन्नत, सं. स्त्री. [अ., मि. सं. विनतिः (स्त्री.)] प्रार्थना, निवेदनम् ।
मिमियाना, क्रि. अ. (अनु. मिनमिन>) मिणमिणायते (ना. धा.), मे-मेशब्दं कृ, रेभ् (भ्वा. आ. से.), उ (भ्वा. आ. अ., अवते) ।
मियाँ, सं. पुं. (फ़ा.) स्वामिन, प्रभुः २. पतिः, भर्तृ ३. (संबोधनपदं) महाशय ! महोदय ! (मुसल.) ४. अध्यापकः ५. दे. 'मुसलमान' ।
—मिट्ठू, सं. पुं. (फ़ा+हिं.) मधुरभाषिन, मधुवाच् (पुं.) २. शुकः ३. मूर्खः ।
मियान, सं. स्त्री. (फ़ा.) असि-, कोशः-षः, खड्ग-,पिधानम् ।
मियाना, वि. (फ़ा.) मध्यम, मध्याकार ।
मियानी, सं. स्त्री. (फ़ा. मियान) पादायामस्य मध्यमो वस्त्रखंडः २. *मध्यमा, मध्य-कोष्ठकः (पुं.) ।
मिरगी, सं. स्त्री. (सं. मृगी) अपस्मारः,भ्रामरम् ।
मिर्च, सं. स्त्री. [सं. मरि(री)चं] (काली) कृष्णं, को(का)लकं, श्यामं, ऊ(औ)ष्णं, कटुकं, शाकांगं, सर्वहितं, धर्मपत्तनं, वेल्लजं, कफविरोधि (न.) पवितम् । (लाल) कु-रक्त,-मरि(री)चं, तीव्रशक्तिः (स्त्री.), उज्ज्वला, अजडा, कटुवीरा, तीक्ष्णा (सफ़ेद) सित-मरि(री)चं-वल्लीजं, धवलं, बहुलम् । वि., तीक्ष्ण-उग्र,-स्वभाव ।
नमक—लगाना, मु. अत्युक्त्या वर्ण् (चु.)-प्रतिपद् (प्रे.), अतिवद् (भ्वा. प. से.) ।
मिर्चा, सं. पुं. दे. 'मिर्च' (लाल) ।
मिलता-जुलता, वि., तुल्य, सदृश ।
मिलन, सं. पुं. (सं. न.) सं(समा)गमः, संयोगः, संमिलनं, परस्परसाक्षात्कारः, मेलः २. मिश्रणं, संयोगः, संसर्गः, मेलनम् ।
—सार, वि., मिलन-सख्य,-शील, संगमप्रिय ।
—सारी, सं. स्त्री., सख्य-मिलन,-शीलता ।
मिलना, क्रि. अ. (सं. मिलनं) मिश्र्-संपृच्-संयुज्-संसृज् (कर्म.), एकी-मिश्रित-संसृष्ट भू ,

२. संमिल् (तु. प. से.), सं-इ (अ. प. अ.), संगम् (भ्वा. आ. अ.), आ-समा,-सद् (भ्वा. प. अ.), आ-समा,-गम्, अभिमुखी-संमुखी भू, नयन,-पथं-विषयं या (अ. प. अ.) ३. तुल्य-सम-सदृश (वि.), वृत् (भ्वा. आ. से.) संवद् (भ्वा. प. से.) ४. आलिंग् (भ्वा. प. से.), परिरभ् (भ्वा. आ. अ.) ५. यम् (भ्वा. प. अ.), सुरतं आतन् (त. प. से.) ६. लभ् (भ्वा. आ. अ.) अधिगम ७. एक-सम,-स्वर (वि.) भू (सितारादि) । सं. पुं., दे. 'मिलन' (१-२) । ३. सादृश्यं, साम्यं ४. आलिंगनं ५. मैथुनं ६. लाभः ७. समस्वरता, इ. ।

मिलनी, सं. स्त्री. (हिं. मिलना) औद्वाहिक-मि(मे)लनम् ।

मिलवाना, क्रि. प्रे., ब. 'मिलना' के प्रे. रूप ।

मिला-जुला वि., मिश्रित २. संमिलित ।

मिलान, सं. पुं. (हिं. मिलाना) संमेलनं, संमिश्रणं २. समी-सदृशी,-करणं, तुलना ३. सत्यापनं, प्रामाण्यपरीक्षा ।

मिलाना, क्रि. स., व. 'मिलना' के प्रे. रूप ।

मिलाप, सं. पुं. (हिं. मिलना) दे. 'मिलन'(१) २. सौहार्द-र्दं, मैत्री ३. संयोगः, रतिः (स्त्री.) ।

मिलावट, सं. स्त्री. (हिं. मिलाना) अपद्रव्येण मिश्रणं-मेलनम् ।

—करना, क्रि. स., (अपद्रव्येण) संमिश्र् (चु.) ।

मिला हुआ, वि., मिश्र, मिश्रित, संपृक्त, संसृष्ट २.संगत, संमिलित, संमुखीभूत ३.लब्ध, प्राप्त ।

मिलिंद, सं. पुं. (सं.) भ्रमरः, षट्पदः ।

मिलिटरी, वि. (अं.) सांग्रामिक, सामरिक, सैनिक । सं. स्त्री., सेना, सैन्यं, वाहिनी ।

मिल्क, सं. पुं. (अं.) दुग्धं, पयस् (न.), क्षीरम् ।

मिल्कियत, सं. स्त्री. (अ.) भूमिः (स्त्री.) रि(ऋ)क्थं २. द्रव्यं, संपत्तिः (स्त्री.), दायः ।

मिल्लत[१], सं. स्त्री. (हिं. मिलना) मैत्री २. मिलनशीलता ।

मिल्लत[२], सं. स्त्री. (अ.) धर्मः, संप्रदायः, मतम् ।

मिल्लिग्राम, सं. पुं. (अं.) सहस्रिधान्यम् ।

मिल्लिमीटर,सं. पुं. (अं.) सहस्रिमाः = क्रर-मुस्कभूमिः ।

मिशन, सं. पुं. (अं.) उद्देश्यं, लक्ष्यम् २. प्रचारकमण्डलम् ३. प्रतिनिधिमण्डलम् ।

मिशनरी, सं. पुं. (अं.) ख्रिष्टधर्म,-प्रचारकः २. दे. 'पादरी' ।

मिश्र, सं. पुं. (सं.) विप्रोपाधिभेदः २. मिश्रितं, मिश्रितद्रव्यं, योगः, संकरः संनिपातः । वि., मिश्रित, मिश्रापित, सं-सृष्ट-मिश्र-मिलित ३. श्रेष्ठ ।

मिश्रण, सं. पुं. (सं. न.) संयोजनं, संमेलनं, संमिश्रणं, एकी-एकत्र,-करणं, संसर्जनं २. नाना-द्रव्यसमुदायः, दे. 'मिश्र' (२) । ३. योगः, संक-लनं, दे. 'जमा' (गणित) ।

मिश्रित, वि. (सं.) संसृष्ट, संमिश्र, दे. 'मिश्र' (वि.) ।

मिष, सं. पुं. (सं. न.) छलं, कपटं २. व्यप-देशः, व्याजः, कृतकहेतुः ।

मिष्ट, सं. पुं. (सं.) मधुररसः । वि., दे. 'मीठा' (१) ।

—भाषी, वि. (सं.-षिन्) मधुरभाषिन्, प्रियं-वद ।

मिष्टान्न, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मिठाई' (१) ।

मिस[१], सं. पुं., दे. 'मिष' (२) ।

मिस[२], सं. स्त्री. (अं.) कुमारी, कन्या, अक्षता ।

मिसरा, सं. पुं. (अ.) पद्यपादः, श्लोकचरणः ।

मिसाल, सं. स्त्री. (अ.) उपमा २. उदाहरणं, दृष्टांतः ३. लोकोक्तिः (स्त्री.), आभाणकः ।

मिसिल, सं. स्त्री. (अ.) लेख-,पंजिका ।

मिस्कीन, सं. पुं. (अ.) निःसहायः, निराश्रयः २. दरिद्रः, अकिंचनः ३. सरलः, सुशीलः ।

मिस्टर,सं.पुं. (अं.) मिश्रः, महाशयः, महोदयः ।

मिस्तरी, सं. पुं. (अं. मास्टर) कुशल,-शि(शि)ल्पिन्-शिल्पकारः ।

मिस्र, सं. पुं. (अ. = नगर) मिश्रदेशः ।

मिस्री[१], सं. पुं. (अ. मिस्र) मिश्रदेशवासिन् । सं. स्त्री., मिश्रदेशभाषा ।

मिस्री[२], सं. स्त्री., (अ.) खण्ड,-मोदकः-शर्करा, शर्करजा, शार्करः, खांडवः, सितोपला, सिता-खंडः, खण्डकः ।

मिस्ल, वि. (अ.) तुल्य, समान, इव ।

मिंस्सा, सं. पुं. (सं. मिश्र>) *मिश्रान्नम् ।

मिस्सी रोटी, सं. स्त्री., वेढमिका ।

मिस्सी-सी, सं. स्त्री. (फ़ा. मिसी) दंत-, *मसी-मसिः (स्त्री.), दंत्यचूर्णभेदः ।

—काजल करना, मु., आत्मानं भूष्-मंड् (चु.)-प्रसाध् (प्रे.) ।
मींगो, सं. स्त्री., दे. 'गिरी' ।
मीआद, सं. स्त्री. (अ.) काल-,अवधिः, नियत-समयः २. आसेध-कारावास,-अवधिः ।
मीआदी, वि. (अ. मीआद) सावधिक, नियतकालवत् ।
—बुख़ार, सं. पुं., सावधिकज्वरः २. सांनिपातिकज्वरः ।
मीचना, क्रि. स. (सं. मिष्) निमिष् (तु. प. से.), क्ष्मील्-निमील् (भ्वा. प. से.), नेत्रे मुकुलयति (ना. धा.) ।
मीज़ान, सं. पुं. (अ.) योगः, संकलः, परिसंख्या ।
मीटिंग, सं. स्त्री. (अं.) सभा, गोष्ठी, अधिवेशनम् ।
मीठा, वि. (सं. मिष्ट) मधुर, मधुल, मधु, मधुमय २. सरस, स्वादु, सस्वाद, स्वादवत् ३. अलस, मंथर ४. मध्यम, साधारण ५. सह्य, मंद ६. नपुंसक ७. प्रिय, रुचिकर । ८. सुशील, सरल । सं. पुं., मधुकर्कटी, मिष्टनिंबूकं, मधुरजंबीरं, मधुबीजपूरं, मधूली, महाफला २. मिष्टान्नं ३. मिष्टं, गुडः, शर्करा इ. ।
—आलू, सं. पुं., दे. 'शकरकंद' ।
—चावल, सं. पुं., मिष्ट-गुड,-ओदनः (-नम्) ।
—तेल, सं. पुं., तिल,-तैलं-स्नेहः २. खस्खसतैलम् ।
—तेलिया, सं. पुं., वत्सनाभः, प्राणहारकं, ब्रह्मपुत्रः, गरलः, क्ष्वेडः, प्रदीपनः ।
—नीबू, सं. पुं., दे. 'मीठा' सं. पुं. (१) ।
—पानी, सं. पुं., जंबीरपेयम् ।
—बोलना, मु., प्रियं ब्रू (अ. उ.), मधुरं भाष् (भ्वा. अ. से.) ।
मीठी छुरी, सं. स्त्री., अंतःशत्रुः, कपटमित्रं, विश्वासघातकः २. कुटिलः, कपटिन् ।
मीठीमार, सं. स्त्री., गूढ़-गुप्त-आंतरिक,-ताडनं-प्रहारः ।
मीन, सं. पुं. (सं.) दे. 'मछली' (२-३) द्वादश,-राशिः-लग्नम् ।
—मेख़ निकालना, मु., गुणदोषान् परीक्ष् (भ्वा. आ. से.) २. छिद्रं अन्विष् (दि. प. से.) ।
मीना, सं. पुं. (फ़ा.) चित्र-बहुवर्ण,-काचः २. नीलप्रस्तरभेदः ३. *धातु-रंजनं-चित्रणं (इनमैल) ४. सुराग्रहः ।
—कार, सं. पुं. (फ़ा.) *धातु,-रंजकः-चित्रकः ।
—कारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'मीना'(३) ।
—बाज़ार, सं. पुं. (फ़ा.) *कांतापणः, मनोज्ञमेला, प्रदर्शनी ।
मीनार, सं. पुं. (अ. मनार) सूच्यग्रस्तंभः, मेंठिः-थिः ।
मीमांसा, सं. स्त्री. (सं.) दर्शनशास्त्रविशेषः २. विचारः, विवेचनं, निर्णयः ।
मीर, सं. पुं. (फ़ा.) नायकः, प्रधानः ।
—मजलिस, सं. पुं. (फ़ा.)सभा,-पतिः-अध्यक्षः ।
—मुंशी, सं. पुं. (फ़ा.+अ.) मुख्य,-लेखकः, कायस्थः ।
मीरास, सं. स्त्री. (अ.) रिक्थं, दायः, पितृद्रव्यम् ।
मीरासी, सं. पुं. (अ. मीरास) संगीतकुशलयवनजाति-विशेषः २. भंडः, वैहासिकः ।
मील, सं.पुं. (अं. माइल) क्रोशार्द्धं, अर्द्धक्रोशः, *मीलं, *मीलकम् ।
मीलन, सं. पुं. (सं. न.) पिधानं, निमीलनं, मुद्रणम् २. संकोचनं, संहरणं, आकुंचनम् ।
मीलित, वि. (सं.) पिहित, निमीलित, मुद्रित २. संकोचित, संहृत, आकुंचित ।
मुँगरा, सं. पुं. (सं. मुद्गरः) वि-,घनः,द्रुघणः-नः,प्रघणः । [मुँगरी(स्त्री.) क्षुद्रमुद्गरः इ.] ।
मुंज, सं. पुं., दे. 'मूँज' ।
मुंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) शिरस् (न.), शीर्षं मूर्द्धन् (पुं.), मस्तकं २. छिन्न,-शिरस्-शीर्षम् । सं. पुं., स्थाणुः, निष्पत्रो वृक्षः २.राहुः ३.नापितः, मुंडकः ४.उपनिषद्विशेषः । वि. मुंडित, वापितमुंड, कृत्तकेश (-शा,-शी स्त्री.) २. अधम ।
—माला, सं. स्त्री. (सं.) छिन्नमस्तकमाल्यम् ।
—मालिनी, सं. स्त्री. (सं.) काली ।
—माली, सं. पुं. (सं.-लिन्) शिवः ।
मुंडक, सं. पुं. (सं.) नापितः २. उपनिषद्-विशेषः ३. छिन्न-,शीर्षम् ।
मुंडन, सं. पुं. (सं. न.) क्षौरं, केश,-छेदनं-वपनं, परिवापनं, भद्रकरणं २. चूडा, चूडाकरणं-कर्मन् (न.), संस्कारविशेषः (धर्म.) ।

मुँडना, क्रि. अ. (सं. मुंडनं) व. 'मूँडना' के कर्म. के रूप।

मुंडा, सं. पुं. (सं. मुंडः) मुंडितः, उप्तकेशः, छिन्नमूर्द्धजः, कृत्त-केशः २. कृत्तकेशः साधु-शिष्यः ३. शृंगहीनपशुः ४.अंग-अवयव-शाखा,-हीनः ५. लिपिविशेषः (महाजनी, लंडे) ६. उपानत्प्रकारः।

मुँड़ाई, सं. स्त्री. (हिं. मूँडना) दे. 'मुंडन' (१)। २. मुंडन,-भृत्या-भृतिः (स्त्री.)।

मुँड़ासा, सं. पुं. [सं. मुंडवासस् (न.)] उष्णीषः-षं, दे. 'पगड़ी'।

मुंडित, वि. (सं.) दे. 'मुंड' वि..।

मुंडी[1], सं., स्त्री. (हिं. मुंडा) मुंडा, क्लृप्त-केशा-शी २. विधवा।

मुंडी[2], सं. पुं. (सं.-मुंडिन्) मुंडितः,क्लृप्तकेशः २. नापितः ३. संन्यासिन्।

मुँडेर, सं. स्त्री. (सं. मुंडं >) दे. 'मुंडेरा' २. दे. 'मेंड़'।

मुँडेरा, सं. पुं. (सं. मुंडं >) प्राकारशीर्षं, *कुड्यमुंडः-ण्डम्।

मुँडेरी, सं. स्त्री., दे. 'मुँडेरा' तथा 'मेंड़'।

मुंडो, सं. स्त्री. (सं. मुण्डा) मुण्डिता, वापिता, क्षुदिता, उप्त-कृत्त,-केशा-मूर्द्धजा २. विधवा, मृतभर्तृका।

मुंतकिल, वि. (अ.) स्थानांतरं नीत २. पर-हस्ते समर्पित, परस्वत्वे दत्त।

मुंतख़ब, वि. (अ.) निर्वाचित, वृत, चित २. उत्कृष्ट, श्रेष्ठ।

मुंतज़िम, सं. पुं. (अ.) अध्यक्षः, व्यवस्थापकः।

मुंतज़िर, वि. (अ.) प्रतीक्षकः, प्रतीक्षाकारिन्।

मुँदना, क्रि. अ. (सं. मुद्रणं) व. 'मूँदना के कर्म. के रूप।

मुँदरा, सं. पुं. (सं. मुद्रा) (योगिनां) कर्ण,-मुद्रा-वलयम्।

मुँदरी, सं. स्त्री. (हिं. मुँदरा) अंगुली(री)यं-यकं, ऊर्मिका।

मुंशियाना, वि. (अ०) लेखक,-सदृश-उप-युक्त। सं. स्त्री., लेखक,-भृतिः (स्त्री.)-भृत्या।

मुंशी, सं. पुं. (अ.)लेखकः,कायस्थः,लिपिकारः।

मुंसिफ़, सं. पुं. (अ.) निर्णेतृ, धर्म-न्याय-अध्यक्षः-अधिकारिन्।

मुंसिफ़ाना, वि. (अं.) न्याय,-उचित-युक्त-अनुसारिन्, न्याय्य।

मुंसिफ़ी, सं. स्त्री. (अ. मुंसिफ़) १-३ न्याया-ध्यक्ष,-पदं-कार्यं-सभा ४. निर्णयः ५. न्यायः।

मुँह, सं. पुं. (सं. मुखं) आस्यं, तुंडं, वक्त्रं, वदनं, लपनं, आननं २. मुख-वदन-आनन,-मंडलं ३. (बर्तन आदि का) ऊर्ध्वविवरं, मुखं ४. छिद्रं, रंध्रं ५. आदरः ६. सामर्थ्यं ७. साहसं ८. उपरितनभागः, कर्णः, कंठः प्रांतः ९. विद्यमानता, उपस्थितिः (स्त्री.)।

—अँधेरा—सं. पुं., प्र-वि,-भातं, विहानः-नं, उषा, उषस् (स्त्री.)।

—काला, सं. पुं., अपमानः, अपयशस् (न.)।

—चोर, वि., लज्जालु, ह्रीमत्, सलज्ज।

—ज़बानी, वि., वाचिक, लेखरहित। क्रि. वि., वाचैव, संभाषणेन।

—जोर, वि., वाचाल, वावदूक २. दुर्दांत ३. दे. 'मुँहफट'।

—दिखाई, सं. स्त्री., नवोढामुखदर्शनं २. मुख-दर्शनोपहारः (विवाह की रीतियाँ)।

—देखा, वि., बाह्य, उपरितन, कृत्रिम।

—फट, वि., अवाचंयम, वाक्चपल, वाग्दुष्ट, अविमृश्यवादिन्।

—बोला, वि., धर्म-(धर्म-भ्राता आदि)।

—मांगा, वि., यथेष्ट, यथेच्छ, यथेप्सित।

—उतरना या निकल आना, मु., कृशी-तनू-भू, कृशवदन (वि.) जन् (दि. आ. से.), क्षि (भ्वा. प. अ.)।

—का कौर, मु., सुलभं द्रव्यं-वस्तु (न.)।

—काला करना, मु., दुष् (प्रे. दूषयति), कलंकयति (ना. धा.), अपकीर्तिं जन् (प्रे.)।

—काला होना, मु., कलंकित-दूषित (वि.) भू, अपयशस् (न.), लभ् (भ्वा. आ. अ.)।

—की खाना, मु., नितरां परा-जि (कर्म.) सुतरां अभिभू (कर्म.) २. लज्जितो भू ३. दुर्दशां आपद् (दि. आ. अ.)।

—खोलना, मु., वद् (भ्वा. प. से.) २. गालीः दा-अपभाष् (भ्वा. आ. से.) ३. अवगुंठनं अपसृ (प्रे.)।

—जुठारना या जूठा करना, मु., नाममात्रमेव भुज् (रु. आ. अ.)।

—त(ता)कना, मु., स्थिरं आ-अव-लोक् (चु.) २. वि-स्मि (भ्वा. आ. अ.), चकित (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.)।

—देखते रह जाना, मु., दे. 'मुँह ताकना'।

—देखे की प्रीत, मु., मृषा-स्नेहः, कृत्रिमानुरागः।

—पर लाना, मु., वद् (भ्वा. प. से.), कथ् (चु.)।

—पर हवाइयां उड़ना, मु., (भयलज्जादिभिः) मुखं विवर्णीभू।

—फ़क होना. मु., दे. 'मुँहपर हवाइयां उड़ना'।

—फुलाना या सिकोड़ना, मु., रुष्ट-कुपित-क्रुद्ध (वि.) भू.।

—फेरना, मु., उपेक्ष् (भ्वा. आ. से.), अपरंज् (दि. उ. अ.)।

—बनाना, बिगाड़ना या चिढ़ाना, मु., विडंब् (चु.), मुखं विकृ, स्वमुखविकारैः उप-अव-हस् (भ्वा. प. से.)।

—मीठा करना, मु., उत्कोचं दा।

—में पानी भर आना, मु., वि-प्र-लुभ् (दि. प. से.) अत्यर्थं अभिलष् (भ्वा. उ. से.)।

—लटकाना, मु., दे. 'मुँह फुलाना'।

—(किसी के) लगना, मु., उद्दंड इव आचर् (भ्वा. प. से.) २. धृष्टतया प्रश्नोत्तरं कृ।

—लगाना, मु., हीनान् मित्रीयति (ना. धा.,) अनुग्रह् (क्र्. प. से.), उद्दण्डान् विधा (जु. उ. अ.)।

—से फूल झड़ना, मु., सुमधुरं वच् (कर्म.)।

मुहाँ—, मु., परिपूर्ण, आकर्ण पूर्ण,-निर्भर।

मुँहासा, सं. पुं. (हिं. मुँह) यौवन,-कंटकः-पिट(टि)का।

मुअज़्ज़म, वि. (अ०) पूज्य, संमान्य २. महत्, ज्येष्ठ।

मुअत्तल, वि. (अ.) आनियतकालं अधिकारात् च्यावित अथवा भ्रंशित। २. दे. 'बेकार'।

मुअत्तली, सं. स्त्री. (अ. मुअत्तल) आनियतकालं अधिकार,-भ्रंशः-च्युतिः (स्त्री.) २. दे. 'बेकारी'।

मुअद्दब, वि. (अ.) सभ्य, शिष्ट।

मुअद्दबाना, अव्य. (अ.) सविनयम्, वि-, नम्रं, विनयेन, नम्रतया।

मुअम्मा, सं. पुं. (अ.) प्रहेली, प्रहेलिका, प्रश्नदूती २. गुह्यं, गोप्यं, रहस्यं।

मुअल्ला, वि. (अ.) उच्च, उत्कृष्ट, प्रकृष्ट २. उच्च,-पद-अधिकार।

मुआ, वि., दे. 'मुवा'।

मुआफ़, वि. (अ.) क्षांत, मर्षित, दोष-दंड,-मुक्त।

—करना, दे. 'क्षमा करना'।

मुआफ़िक़, वि. (अ.) अनुकूल, अनुरूप २. सदृश, तुल्य ३. अन्यूनाधिक ४. यथेष्ट।

मुआफ़ी, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'क्षमा' २. कार-मुक्तभूः (स्त्री.)।

मुआमिला, सं. पुं. (अ.) उपजीविका, वृत्तिः (स्त्री.), व्यवसायः २. पारस्परिकव्यवहारः, क्रयविक्रयं, दानादानं ३. वृत्तं, वार्त्ता, विषयः ४. कलहः, विवादः ५. अभियोगः ६. प्रतिज्ञा, समयः।

मुआयना, सं. पुं. (अ.) दे. 'निरीक्षण'।

मुआवज़ा, सं. पुं. (अ.) निष्कृतिः (स्त्री.), निस्तारः, प्रतिफलं २. क्षतिपूरण-हानिपूरण,-मूल्यम्।

मुक़दमा, सं. पुं. (अ.) अभियोगः, अक्षः, अर्थः, कार्यं, व्यवहारः, व्यवहारपदम्।

—करना या खड़ा करना, क्रि. स., अभियुज् (रु. आ. अ., चु.), राजकुले निविद् (प्रे.)।

मुक़दमेबाज़, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) कार्यार्थिन्, वादिन्, व्यवहर्तृ, अभियोगशीलः।

मुक़दमेबाज़ी, सं. स्त्री. (अ.+फा.), अभियोगशीलता, व्यवहर्तृत्वम्।

मुक़द्दमा, सं. पुं., दे. 'मुकदमा'।

मुक़द्दर, सं. पुं. (अ.) भाग्यं, दैवम्।

मुक़द्दस, वि. (अ.) पवित्र, पुण्य, पावन।

मुकम्मल, वि. (अ.) समाप्त, अवसित २. संपूर्ण, निःशेष।

मुकरना, क्रि. अ. (सं. मा=न+करणं) अप-नि-ह्नु (अ. आ. अ.), अपलप् (भ्वा. प. से.), निरा-कृ।

मुक़रनी, सं. स्त्री., दे. 'मुकरी'।

मुकरी, सं. स्त्री. (हिं. मुकरना) कविताभेदः, अपह्नुतियुता कविता।

मुकर्रर[1], क्रि. वि. (अ.) पुनरपि, द्वितीयवारं, भूयः।

मुक़र्रर, वि. (अ.) नियत, निश्चित २. नियुक्त।

मुक़ाबला, सं. पुं. (अ.) विरोधः, प्रतिद्वंद्विता, प्रातिकूल्यं २. स्पर्द्धा, संघर्षः, अहमहमिका, प्रतियोगिता ३. संग्रामः, युद्धं ४. तुलना, औपम्यं ५. साम्यं, सादृश्यं ६. समी-सदृशी,-करणम्।

—करना, क्रि. स., स्पर्ध् (भ्वा. आ. से.), संघृष् (भ्वा. प. से.) २. प्रतिकृ, विरुध्

(रु. उ. अ.) ३. युध् (दि. आ. अ.) ४. तुल् (चु.), उपमा (जु. आ. अ.) ५. समी-सदृशी,-कृ ।

मुक़ाम, सं. पुं. (अ.) स्थानं, स्थलं २. विराम-स्थानं, दे. 'पड़ाव' ३. विरामः, निवेशः ४.आ-नि,-वासः, गृहं ५. अवसरः ।

—करना, क्रि. अ., विश्रम् (दि. प. से.), निविश् (तु. प. अ.), विरम् (भ्वा. प. अ.) ।

मुकुंद, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः २. रत्नभेदः ३. पारदः ४. मोक्षदः, परित्रातृ ।

मुकुट, सं पुं. (सं. न.) किरीटः-टं, मकुटं, कोटीरः, मौलिः, उत्तंसः ।

मुकुर, सं. पुं. (सं.) दर्पणः, दे. ।

मुकुल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कुड्मलः, दे. 'कली' २. आत्मन् (पुं.) ३. शरीरं ४. पृथिवी ।

मुकुलित, वि. (सं.) समुकुल, सकुड्मल २. ईषद्विकसित, अर्द्धोन्मिषित, अर्द्धनि-मीलित ३. निमेषोन्मेषयुक्त ।

मुक्का, सं. पुं. (सं. मुष्टिका) मुष्टिः (पुं. स्त्री.), मुस्तुः, मुचुटी, सपिंडितांगुलिबद्ध-पाणिः २. मुष्टि-मुचुटी,-प्रहारः-घातः-ताडः-हथः ।

—मारना, क्रि. स., मुचुट्या प्रहृ (भ्वा. प. अ.) ।

मुक्केबाज, (हिं.+फ़ा.) मुष्टि,-योधः-योधिन् ।

मुक्केबाजी, सं. स्त्री., (हिं.+फ़ा.) मुष्टियुद्धं, मौष्टा, मुष्टिकं, मुष्टी(ष्टा)मुष्टि (अव्य.) ।

मुक्त, वि. (सं.) लब्ध-प्राप्त,-मोक्ष-निर्वाण, निस्तीर्ण २. मोचित, स्वाधीन, बन्धन-निरोध-रहित ।

—कंठ, वि. (सं.) तारस्वर, महास्वन २. अविमृश्यवादिन्, अयतवाच् ।

—हस्त, वि. (सं.) व्ययशील, अतिव्ययिन्, बहुव्यय ।

मुक्ता, सं. स्त्री. (सं.) } दे. 'मोती' ।
—फल, सं. पुं. (सं. न.) } दे. 'मोती' ।

—हार, सं. पुं. (सं.) मुक्तावली ।

मुक्तागार, सं. पुं. (सं. न.) शुक्तिः (स्त्री.), शुक्तिका, मौक्तिक,-प्रसूः (स्त्री.)-प्रसवा ।

मुक्ति, सं. स्त्री. (सं.) मोक्षः, कैवल्यं, निर्वाणं, श्रेयस् (न.), निःश्रेयसं, अमृतं, अपवर्गः, अपुनर्भवः २. मोचनं, निर्यंत्रणं-णा, निरोधा-भावः ३. स्वच्छंदता, स्वतंत्रता ।

—क्षेत्र, सं. पुं. (सं. न.) काशी, वाराणसी ।

—धाम, सं. पुं. (सं. न.) मोक्षदं स्थानम्, तीर्थम् ।

—फौज, सं. स्त्री. (सं.+अ०) मुक्तिसेना, ख़िस्तधर्मप्रचारकसंघः ।

मुख, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मुँह' ।

—बंध, सं. पुं. (सं. न.) प्रस्तावना, भूमिका ।

मुखड़ा, सं. पुं. (सं. मुखं) दे. 'मुँह' (२) ।

मुख़्तार, सं. पुं. (अ.) प्रति,-निधिः-पुरुषः-हस्तकः २.पराभियोगकारिन् ३.उपाभिभाषकः ।

—नामा, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) *प्रातिनिध्य-प्रतिनिधित्व,-पत्रम् ।

मुख़्तारी, सं. स्त्री. (अ. मुख़्तार) पराभियोग-कारिता-त्वं २. उपाभिभाषकता-त्वं ३. प्राति-निध्यम् ।

मुख़बिर, सं. पुं. (अ.) दे. 'जासूस' ।

मुख़बिरी, सं. स्त्री. (अ. मुख़बिर)दे. 'जासूसी'।

मुखर, वि. (सं.) कटु-अप्रिय,-वादिन्-भाषिन्, दुर्मुख २. वाचाल, वाचाट ३. नेतृ, अग्रया-यिन् ४. शब्दायमान ।

मुखरित, वि. (सं.) प्रति,-ध्वनित-नादित ।

मुखस्थ, वि. (सं.) मुखाग्र, कंठाग्र, कंठस्थ ।

मुख़ालिफ़, वि. (अ.) विपक्षिन्, विरोधिन् २. वैरिन् ३. प्रतिद्वंद्विन् ।

मुखिया, सं. पुं. (सं. मुख्य) नेतृ, नायकः, पुरो-अग्र,-गः-गामिन्, अग्रणीः, प्रधानः, मुखरः २. ग्रामणीः (पुं.), ग्राममुख्यः ।

मुख़्तलिफ़, वि. (अ.) भिन्न, अपर २. बहु-अनेक,-विध ।

मुख़्तसर, वि. (अ.) संक्षिप्त २. लघु, क्षुद्र ३. अल्प । सं. पुं., संक्षेपः ।

मुख्य, वि. (सं.) प्रधान, अग्रय, अग्रिम, प्रमुख, परम, उत्तम, श्रेष्ठ, विशिष्ट-,ऋषभ, इंद्र,-पुंगव,-वर ।

मुख्यतः, } क्रि. वि., (सं.) प्रधानतः-तया,
मुख्यतया, } विशेष-तया, प्रधान-मुख्य-विशेषेण,-रूपेण ।

मुगदर, सं. पुं., दे. 'मुद्गर' ।

मुग्ध, वि. (सं.) आसक्त, अनुरक्त, बद्धभाव, सानुराग, कामासक्त २. मूढ, भ्रांत ३. सुन्दर, अभिराम ४. नव, नवीन ।

मुग्धता, सं. स्त्री. (सं.) आसक्तिः (स्त्री.), अनुरागः २. मूढता ३. सौन्दर्यम् ।

मुग्धा, सं. स्त्री. (सं.) नायिकाभेदः २. सुकुमारी तरुणी।

मुचलका, सं. पुं. (तु.) निस्तारः।

मुछंदर, सं. पुं. (हिं. मूछ) महा,-गुंफ-श्मश्रु-व्यंजन- श्मश्रुल २. कपिः ३. मूषिकः ४. कुरूपमूर्खः, जडः।

मुज़क्कर, वि. (अ.) पुंल्लिंग (व्या.)।

मुजरा, सं. पुं. (अ.) उद्धृत-व्यवकलित,-धनं २. अभिवादनं, प्रणिपातः ३. वेश्यायाः सनृत्यमनृत्यं वा गानम्।

मुजरिम, सं. पुं. (अ.) अपराधिन्, कृतापराधः, दंड्यः २. अभियुक्तः।

मुजस्सिम, वि. (अ.) सशरीर, देहवत्, शरीरिन्।

मुज़िर, वि. (अ.) हानि,-कारक,-प्रद।

मुझ, सर्व. (हिं. मुझे) (अस्मद् के रूप बनेंगे)।

—को, मां, मा २. मह्यं, मे।

—से, मया २. मत्।

—में, मयि।

मुटाई, सं. स्त्री., दे. 'मोटाई'।

मुट्ठा, सं. पुं. (हिं. मुट्ठी) मुष्टिः (पुं. स्त्री.), मुष्टिमात्रं द्रव्यं २. वारंगः, दंडः, मुष्टिः (पुं. स्त्री.)।*

मुट्ठी, सं. स्त्री. [सं. मुष्टिः (पुं. स्त्री.)] दे. 'मुक्का' (१)। २. मुष्टिमेयः पदार्थः, मुष्टिः ३. संवाहः-हनं-हना ४. ग्रहः-हणम्।

—भरना, क्रि. स., संवह् (प्रे.), मृद् (क्र्. प. से.)।

—चाँपी, सं. स्त्री., दे. 'मुट्ठी' (३)। २. सेवा, परिचर्या।

—भर, वि., मुष्टि,-मात्र-मेय-मित।

—गरम करना, मु., उत्कोचं दा।

—में, मु., वशे, अधिकारे।

मुठभेड़, सं. स्त्री. (हिं. मुट्ठी + भिड़ना) संघट्टः, समाघातः २. संग्रामः, युद्धं ३. सांमुख्यं, संमुखागमनं, सं,-मिलनं-आगमः।

मुठिया, सं. स्त्री. (सं. मुष्टिका>) (खड्गादि की) त्सरुः, वारंगः, सरुः २. दंडः, कर्णः, मुष्टिः-टिका, तलः-लं ३. *पिंजकदण्डः।

मुड़ना, क्रि. अ. (सं. मुरणं) वक्रीभू, नम् (भ्वा. प. अ.) २. प्रत्यागम, प्रतिगम्, प्रतिनिवृत् (भ्वा. आ. से.) ३. व्यावृत्। सं. पुं., वक्रीभावः, नमनं, प्रति,-गमनं-आगमनं, व्यावर्तनम्।

मुड़ाना, क्रि. प्रे. व. 'मूंडना' के प्रे. रूप।

मुड्ढा, सं. पुं. (सं. मूर्द्धन्>) स्कंधः २. *सूत्रपिंडः-डं, तूलपीठी।

मुड्ढी, सं. स्त्री. (हिं. मुड्ढा) छिन्नतरुमूलम्।

मुतअल्लिक, वि. (अ.) संबद्ध, संलग्न, संगत। क्रि. वि., विषये, संबंधे।

मुतफ़र्रिक़, वि. (अ.) बहु-नाना-वि,-विध, प्र-सं,कीर्ण।

मुतबन्ना, सं. पुं. (अ.) दे. 'दत्तक'।

मुतलक, क्रि. वि. (अ.) किंचिद्,मनाग्-ईषद्,-अपि २. केवलं, सर्वथा। वि., केवल,ऐकांतिक।

मुताबिक, क्रि. वि. (अ.)-अनुसारं-रेण, -अनुरोधेन-धात्, यथा, अनु, वि., अनुकूल, अनुरूप।

मुतालबा, सं. पुं. (अ.) प्राप्तव्यधनं २. ऋण-देय,-शेषं-शेषः।

मुदित, वि. (सं.) प्रसन्न, आनंदित, प्रहृष्ट।

मुद्गर, सं. पुं. (सं.) घनः, द्रुघनः-णः,प्रघणः २. गोपुच्छाकारो व्यायामोपयोगी स्थूलदंडः ३. अतिगंधः, गंधराजः।

मुद्दआ, सं. पुं. (अ.) अभिप्रायः, तात्पर्यम्।

मुद्दई, सं. पुं. (अ.) परिवादकः, अभियोगिन्, वादिन्, अर्थिन्, अभियोक्तृ २. शत्रुः, वैरिन्।

मुद्दत, सं. स्त्री. (अ.) अवधिः, समयसीमा, नियतकालः,२. चिरं, चिरकालः,महान् समयः, युगः-गम्।

—का, वि., चिर,-कालिक-कालीन, पुराण, पुरातन।

—तक,—से, क्रि. वि., चिरं, चिरेण, चिराय, चिरात्, चिरस्य, चिरे।

मुद्दाअलेह, सं. पुं. (अ.) अभियुक्तः, प्रत्यर्थिन्, प्रतिवादिन्, उत्तरवादिन्।

मुद्रक, सं. पुं. (सं.) मुद्रण,-कारः-कर्तृ।

मुद्रण, सं. पुं. (सं. न.) मुद्राक्षरैः अंकनं, मुद्रांकनं २. मुद्रानिर्माणम्।

मुद्रणालय, सं. पुं. (सं.) मुद्रणगृहं, दे. 'प्रेस'।

मुद्रांकित, वि. (सं.) स-कृत,-मुद्र,मुद्राचिह्नित २. नारायणायुधचिह्नयुक्तः (वैष्णवः)।

मुद्रा, सं. स्त्री. (सं.) मुद्रिका, प्रत्ययकारिणी, * नामांकनी २. अंगुली(री)यं-यकं, ऊर्मिका ३. नाणकं, टंकः-कं ४. मुद्रित-शब्दः-चित्रं ५. दे. 'मुँदरा' ६. शरीरस्य तदवयवानां वा

स्थितिविशेषः, अंगविन्यासः, संस्थितिः (स्त्री.) ७. मुख,-आकारः-आकृतिः (स्त्री.) ८. भक्त-देहांकितं भगवदायुधचिह्नं ९. अगस्त्यपत्नी, लोपामुद्रा १०. मुद्रा,-लांछनं-चिह्नम् ।

—मार्ग, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मरंध्रम् ।

—यंत्र, सं. पुं. (सं.) मुद्रणयंत्रम् ।

—राक्षस, सं. पुं. (सं. न.) विशाखदत्तप्रणीतं संस्कृतनाटकम् ।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) मुद्रातत्त्वम् ।

मुद्राक्षर, सं. पुं. (सं. न.) सीसक-धातुमय-मुद्रण,-अक्षराणि ।

मुद्रिका, सं. स्त्री. (सं.) अंगुलीयकं, ऊर्मिका २. अनामिकाधार्यं कुशांगुलीयकं, पवित्रं ३. नाणकं ४. मुद्रा ।

मुद्रित, वि. (सं.) दे. 'मुद्रांकित' २. मुद्राक्षरैः-सीसकाक्षरैः अंकित ३. पिहित, संवृत, निमीलित, मुकुलित ।

मुधा, अव्य. (सं.) व्यर्थं, वृथा २. असत्यं, मृषा (अव्यः) । वि., व्यर्थ २. असत्य । सं. पुं., असत्यं, अनृतम् ।

मुनक्का, सं. पुं. (अ.) काकलीद्राक्षा, जांबुका, फलोत्तमा, दुग्धी-धिका ।

मुनहसि(स)र, वि. (अ.) आश्रित, अवलंबित ।

मुनाज़रा, सं. पुं. (अ.) शास्त्रार्थः, वादः, तर्कशास्त्रम् ।

मुनादी, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'मनादी' ।

मुनाफ़ा, सं. पुं. (अ.) लाभः, आयः, फलम् ।

मुनासिब, वि. (अ.) उचित, युक्त, योग्य ।

मुनि, सं. पुं. (सं.) विचारकः, चिंतकः, तत्त्व,-ज्ञः-दर्शिन्, प्राज्ञः २. मौनिन्, वाचंयमः, ऋषिः, व्रतिन्, तपस्विन् ।

मुनीम, सं. पुं. (अ. मुनीब) सहायः-यकः, उपकारिन्, उप-(उ. उपमंत्रिन् आदि) २. गणकः, कायस्थः, लेखकः ।

मुनीश, सं. पुं. (सं.) मुनीश्वरः, मुनिपुंगवः २. श्रीबुद्धदेवः ।

मुन्ना, मुन्नूँ, सं. पुं. (सं. मुंडः>) शिशुः, बालकः २. (बच्चों को बुलाने में) अंग, तात ।

मुफ़रद, वि. (अ.) एकाकिन्, असहाय २. अमिश्रित (औषधादि), केवलैक ।

मुफ़र्रह, वि. (अ.) आनन्द-मोद,-दायक प्रद ।

मुफ़लिस, वि. (अ.) अधन, अकिंचन, दरिद्र ।

मुफ़लिसी, सं. स्त्री. (अ.) निर्धनता, दरिद्रता ।

मुफ़स्सल, वि. (अ.) स,-विस्तर-प्रपंच । क्रि.-वि., सविस्त(स्ता)र,विस्त(स्ता)रेण, विस्तरतः । सं. पुं., नगर,-उपांतः-प्रान्तः, पुरोपकंठः ठं,-उप-शाखा,-नगरं-पुरम् ।

मुफ़ीद, वि. (अ.) उपकारिन्, उपयोगिन्,-हितकर[-री (स्त्री.)] ।

मुफ़्त, वि. (अ.) निःशुल्क, निर्मूल्य ।

—ख़ोर-रा, वि., परपिंडाद, परान्नपुष्ट ।

—में, मु., निःशुल्कं, निर्मूल्यं, मूल्यं विना २. व्यर्थं, निष्प्रयोजनम् ।

मुफ़्ती, सं. पुं. (अ.) न्याय,-अधीशः-अधिपतिः, धर्माध्यक्षः (इस्लाम) ।

मुबतिला, वि. (अ.) ग्रस्त, गृहीत, पीडित ।

मुबर्रा, वि. (अ.) मुक्त, अनिरुद्ध २. निर्दोष,-पूत ।

मुबल(लि)ग़, वि. (अ.) सर्व, समस्त । सं. पुं., मात्रा २. रूप्यकादिसंख्या ।

मुबारक, वि. (अ.) शुभ, भद्र, मंगल । अव्य., शुभं-भद्रं भूयात्, स्वस्ति ।

—बाद, सं. पुं. } (फ़ा.) दे. 'बधाई' ।
—बादी, सं. स्त्री. }

मुबालिग़ा, सं. पुं. (अ.) अत्युक्तिः (स्त्री.) ।

मुबाहिसा, सं. पुं. (अ.) सं.-वि-,वादः, हेतु-वादः, प्र ति-,वादः, ऊहापोहः, विचारः-रणा ।

मुमकिन, वि. (अ.) संभाव्य, संभवनीय, *संभव, शक्य, संभावित, साध्य, संपाद्य ।

मुमानियत, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'मनाही' ।

मुमुक्षु, वि (सं.) मोक्षार्थिन्, अपवर्गाभिलाषिन् २. श्रमणः, मुनिः, साधुः, भिक्षुः ।

मुमुर्षु, वि. (सं.) आसन्नमृत्यु २. निधनेच्छुक ।

मुम्तहिन, सं. पुं. (अ.) दे. 'परीक्षक' ।

मुरकना, क्रि. अ. (हिं. मुड़ना) व्यावृत् (भ्वा. आ. से.), आकुंच् (कर्म.) २. वि-, नश् (दि. प. वे.) ३. अभिशंक् (भ्वा. आ. से.) ४. प्रतिगम्-प्रत्यागम्, प्रतिनिवृत् (भ्वा. आ. से.) ५. अकस्मात् त्रुट् (तु. दि. प. से.)-स्फुट् (तु. प. से.) ६. दे. 'मोच आना' ।

मुरकाना, क्रि. स., ब. 'मुरकना' के प्रे. रूप ।

मुरकी, सं. स्त्री. (हिं. मुरकना) कर्णपूरकः,-कर्णवलयकः-कम् ।

मुरग़ा, सं. पुं. (फ़ा. मुर्ग़) उषाकलः, कृकवाकुः, दे. 'कुक्कुट' २. पक्षिन् ।

मुरग़ावी, सं. स्त्री. (सं.) जलकुक्कुटः, यष्टिकः, शुक्लकण्ठः।
मुरज, सं. पुं. (सं.) दे. 'मृदंग'।
मुरझाना, क्रि. अ. (स. मूर्च्छनं>) ग्लै-म्लै (भ्वा. प. अ.), विशॄ (कर्म.), ग्लान-म्लान-विशीर्ण (वि.) भू, जॄ (दि. प. से.) २. अवसद्-विषद् (भ्वा. प. अ.), दुर्मनायते (ना.धा.), विषण्ण-अवसन्न-विच्छाय (वि.) भू। सं. पुं., ग्लानिः-म्लानिः (स्त्री.) ३. विषादः, अवसादः, वै-दौर् ,-मनस्यम्।
मुरझाया हुआ, वि., ग्लान, म्लान, जीर्ण, शीर्ण, २. विषण्ण, निर्विण्ण, अवसन्न, दीन।
मुरदा, सं. पुं. (फ़ा.) मृतकः-कं, शवः-वं, कुणपः, प्रेतम्। वि., उपरत, प्रेत, परेत, विपन्न, परासु, मृत, निर्जीव, निष्प्राण, प्रमीत २. दुर्बल २. म्लान।
मुरदार, वि. (फ़ा.) मृत, प्रेत २. दूषित, अपवित्र ३. जड, स्तंभित, स्तब्ध।
मुरब्बा[१], (अ.मुरब्बह्)मिष्टपाकः, फलोपस्करः।
मुरब्बा[२], सं. पुं. (अ. मुरब्बअ) समचतुरस्रः, समचतुर्भुजः २. वर्गः,द्विघातः ३. समचतुरस्र-समचतुर्भुज-वर्गाकार,-भूखंडः(-डम्)। वि., वर्गीकृत, वर्ग-(गज, फुट आदि)।
मुरमुरा, सं. पुं. (अनु. मुरमुर) भिष्मा, भिष्मिका-टा, भिस्स(स्सि)टा।
मुरमुराना, क्रि. अ. (अनु. मुरमुर) मुरमुरायते (ना. धा.)।
मुरली, सं. स्त्री. (सं.) वंशी-शिका, वंशः, वेणुः, वंश-,नालिका, सानिका।
—धर, **—मनोहर**, } सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णचंद्रः।
मुरव्वत, सं. स्त्री. (अ.) शीलं २. सज्जनता।
बे—, वि., रूक्ष, सहानुभूतिशून्य।
मुराद, सं. स्त्री. (अ.) अभिलाषः, कामना २. आशयः, अभिप्रायः।
मुरादों के दिन, मु., यौवनम्।
मुरारी, सं. पुं. (सं.-रिः) श्रीकृष्णचन्द्रः।
मुरीद, सं. पुं. (अ.) शिष्यः २. अनुयायिन्।
मुर्दनी, सं. स्त्री. (फ़ा. मुर्दन) मृत्यु,-लक्षणानि (न. बहु.)-च्छाया २. अवसादः, विषादः, दौर्मनस्यं, निर्वेदः, उत्साहाभावः।
चेहरे पर मुर्दनी छाना या फिरना, मु., मुखे मृत्युलक्षणानि प्रादुर्भू २. अति,-विषण्ण-निराश (वि.) विद् (दि. आ. अ.)।
मुर्दा, सं. पुं., दे. 'मुरदा'।
मुर्रा, सं. पुं. (हिं. मरोड़) दे. 'मरोड़' (२)। २. दे. 'पेचिश'।
मुलज़िम, वि. (अ.) अभियुक्त, दूषित।
मुलतवी, वि. (अ.) विलंबित, व्याक्षिप्त, *स्थगित।
मुलतान, सं. पुं. (सं. मूलत्राणं) प्रह्लादपुरं, साम्बीपुरम्।
मुलतानी, वि. (हिं. मुलतान) मूलत्राण,-विषयक-संबंधिन्, मौलत्राण। सं. स्त्री., रागिणी-भेदः २. *पीतगैरिकं, मौलत्राणीमृत्तिका।
मुलम्मा, वि. (अ.) भासुर, भ्राजमान २. सुवर्ण-रजत,-लिप्त-रंजित। सं. पुं., हेमलेपः, रजतरंजनं २. आडंबरः, आपातरम्यता।
—करना, क्रि. स., रजतेन-स्वर्णेन लिप् (तु. प. अ.)-रंज् (प्रे.)।
—साज़, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) *धातु-हेम,-लेपकारः।
मुलहटी-ठी, सं. स्त्री., दे. 'मुलेठी'।
मुलाक़ात, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'मिलन' (१)।
—करना, क्रि. स., दे. 'मिलना'।
—करवाना, क्रि. प्रे., परिचय कृ (प्रे.), परिचि (प्रे.)।
मुलाक़ाती, सं. पुं. (अ. मुलाक़ात) परिचितः २. दर्शकः।
मुलाज़िम, सं. पुं. (अ.) दे. 'नौकर'।
मुलाज़िमत, सं. स्त्री. (अ.) दे, 'नौकरी'।
मुलायम, वि. (अ.) कोमल, सुकुमार २. श्लक्ष्ण, चिक्कण।
—करना, मु., परस्य क्रोधं शम् (प्रे., शमयति)।
मुलाहिज़ा, सं. पुं. (अ.) दे. 'निरीक्षण' २. आदरः ३. अनुग्रहः।
मुलेठी, सं. स्त्री. [सं. मधुयष्टी-टिः (स्त्री.)] यष्टिमधु (न.), मधुयष्टिका, मधुकं, क्लीतकम्।
मुल्क, सं. पुं. (अ.) देशः २. प्रांतः ३. संसारः।
मुल्की, वि. (अ.) स्व-,देशीय २. शासन-संबंधिन्।
मुल्ला, सं. पुं. (अ.) यवनपुरोहितः २. अध्यापकः।
मुवक्किल, सं. पुं. (अ.) *अभिभाषकनियोजकः।

मुवा-आ, वि. (सं. मृत) निर्जीव, निष्प्राण २. नीच, तुच्छ ।
मुशाइरा, सं. पुं. (अ.) कविसम्मेलनम् ।
मुशाबहत, सं. स्त्री. (अ.) सादृश्यं, साम्यम् ।
मुश्क[1], सं. पुं. (फ़ा.) कस्तूरी-रिका, मृगमदः २. दुर्-,गंधः ।
मुश्क[2], सं. स्त्री. (देश.) भुजः, बाहुः ।
मुश्कें कसना या बाँधना, मु., बाहू पृष्ठतः नियंत्र् (चु.) ।
मुश्किल, वि. (अ.) कठिन, दुस्साध्य । सं. स्त्री., कठिनता २. विपत्तिः (स्त्री.) ।
—कुशा, वि., संकट-क्लेश-विघ्न,-हर विनाशक ।
—आसान होना, मु., संकटहरणम्, विपद् विनश् (दि. प. से.) ।
मुश्की, वि. (फ़ा.) कृष्ण, श्याम २. मृगमद-मिश्रित २. श्यामाश्वः, खुंगाहः ।
मुश्त, सं. पुं. (फ़ा.) मुष्टिः (पुं. स्त्री.) ।
एक—, क्रि. वि., युगपत् (अव्य.) ।
मुष्टामुष्टी, सं. स्त्री. [सं.-ष्टि (अव्य.)] मुष्टी-मुष्टि (अव्य.), मुष्टियुद्धम् ।
मुष्टि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) दे. 'मुक्का' (१) । २. पलपरिमाणं (४ या ८ तोले का) ३. चौर्यं ४. दुर्भिक्षं ५. त्सरुः, सरुः ।
—युद्ध, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मुक्केबाजी' ।
मुष्टिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मुक्का' २. दे. 'मुट्ठी' (२) ।
मुसक(कि)राना, क्रि. अ. (सं. स्मयकरणं) स्मि (भ्वा. आ. अ.), ईषत्-मंदं-मृदु हस् (भ्वा. प. से.) मृदुहास्यं कृ । सं. पुं., स्मयनं, ईषद्हसनं, स्मितं, मृदुहासः ।
मुसकरानेवाला, सं. पुं., स्मेर, सस्मित, स्मयमान, स्मित,-कारिन्-शालिन् ।
मुसक(कि)राहट, सं. स्त्री. (हिं. मुसकराना) स्मितं-तिः (स्त्री.), मंद-मृदु,-हासः-हसितं-हास्यम् ।
मुसन्निफ़, सं. पुं. (अ.) ग्रंथकारः, पुस्तकप्रणेतृ ।
मुसल, सं. पुं., दे. 'मूसल' ।
मुसलमान, सं. पुं. (फ़ा.) यवनः, मोहम्मदीयः, *मुसलमानः ।
मुसलमानी, सं. स्त्री. (फ़ा.) यवनी, *मुसलमानी २. दे. 'खतना' ३. दे. 'इस्लाम' । वि., यावन (-नी स्त्री.), यवनधर्मसंबंधिन् ।

मुसलाधार, / **—मेंह बरसना**, मु. } दे. 'मूसल' के नीचे ।
मुसलामुसलि, सं. स्त्री. (सं.) मुस (श, ष) ल,-युद्धं-संग्रामः ।
मुसलिम, सं. पुं. (अ.) दे. 'मुसलमान' ।
मुसली, सं. स्त्री. (सं.मुश(ष)ली) मुश(ष)लिका, ताल,-मूलिका-पत्रिका, अर्शोघ्नी, भूताली, दीर्घकंदिका, हेमपुष्पी, गोधापदी ।
मुसल्ला, सं. पुं. (अ.) *आराधनास्तरः, *उपासनासनम् ।
मुसव्विर, सं. पु. (अ.) दे. 'चित्रकार' तथा 'फ़ोटोग्राफ़र' ।
मुसाफ़िर, सं. पुं. (अ.) पथिकः, पांथः, दे. 'यात्री' ।
—ख़ाना, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) पथिकाश्रमः, पांथ,-शाला-गृहं, *धर्मशाला ।
मुसाफ़िरी, सं. स्त्री. (अ.) पथिकत्वं २.यात्रा, प्रवासः ।
मुसाहब, सं. पुं. (अ.) परिपार्श्व(र्श्वि)कः, पार्श्वगः ।
मुसीबत, सं. स्त्री. (अ.) कष्टं,क्लेशः २:आपद्-विपद् (स्त्री.) ।
मुस्टं(ष्टं)डा, वि. (सं. दंडः का अनु.) पुष्टांग, दृढ,-देह-तनु-अंग, बलवत् २. दुर्वृत्त, खल ।
मुस्तक़िल, वि. (अ.) ध्रुव, अचल २. दृढ़, चिरस्थायिन् ।
मुस्तनद, वि. (अ.) प्रामाणिक, विश्वसनीय ।
मुस्तहक़, वि. (अ.) अर्ह, योग्य,-पात्र, अधिकारिन् ।
मुस्तैद, वि. (अ. मुस्तअद) सज्ज, संनद्ध २. आशु-क्षिप्र,-कारिन् ।
मुस्तैदी, सं. स्त्री. (हिं. मुस्तैद) सन्नद्धता, सज्जता २. आशुकारित्वं, क्षिप्रता ।
मुहताज, वि. (अ.) निर्धन, अकिंचन २.दीन, पराश्रित ३. आकांक्षिन् ।
मुहब्बत, सं. स्त्री. (अ.) प्रेमन् (पुं. न.) २. मित्रता ३. अभिलाषः, कामः, प्रणयः ।
मुहम्मद, सं. पुं. (अ.) श्रीमोहम्मदः, यवन-धर्मप्रवर्तकः ।
मुहर्रिर, सं. पुं. (अ.) लेखकः, लिपिकारः ।
मुहल्ला, सं. पुं. दे. 'महल्ल' ।
मुहाना, सं. पुं. (हिं. मुँह) नदीमुखं, सरित्संगमः २. प्रवेशद्वारम् ।

मुहाफ़िज़, वि. (अ.) रक्षक, त्रातृ ।
मुहाल, वि. (अ.) कठिन, दुष्कर २. असंभाव्य, अशक्य, असंभव । सं. पुं., दे. 'महल्ला' ।
मुहावरा, सं. पुं. (अ.) वाग्धारा, वाक्,-रीतिः(स्त्री.)-संप्रदायः २. अभ्यासः ३. शीलम् ।
मुहासिरा, सं. पुं. (अ.) उपरोधः, अवरोधनम् ।
—करना, क्रि. स., अव-उप,-रुध् (रु. उ. अ.) ।
मुहिम, सं. स्त्री. (अ.) दुष्करकार्यं २. आक्रमणं ३. युद्धम् ।
मुहुः, अव्य. (सं.) पुनः ।
— मुहुः, अव्य., पुनः पुनः, असकृत् ।
मुहूर्त, सं. पुं. (सं. पुं. न.) द्वादशक्षणपरिमित-कालः २. घटिकाद्वयं, अहोरात्रस्य त्रिंशो भागः ३. मांगलिकसमयः (ज्यो.) ।
मूँग, सं. स्त्री. पुं. (सं. मुद्गः) सूपश्रेष्ठः, रसोत्तमः, हयानंदः, वाजिभोजनः, सुफलः ।
छाती पर मूँग दलना, मु., दे. 'छाती' के नीचे।
मूँगफली, सं. स्त्री. (सं. भूमिफली) मंडपी, भूस्था, भूशिंबिका, भूचणकः ।
मूँगा, सं. पुं. (हिं. मूँग) विद्रुमः, प्रवालः-लं, भोमीरा ।
मूँगिया, वि. (हिं. मूँग) मुद्ग-हरित(त)-पलाश,-वर्ण ।
मूँछ, सं. स्त्री. [सं. श्मश्रु (न.)] गुंफः, ओष्ठ-रो(लो)मन् (न.) ।
—उखाड़ना, मु., कठोरं दंड् (चु.) २. गर्वं चूर्ण् (चु.) ।
—नीची होना, मु., लज्जित (वि.) भू २. अवमन् (कर्म.) ।
—पर ताव देना या हाथ फेरना, मु., शौर्यं प्रदृश् (प्रे.), वीरताभिमानेन श्मश्रुव्यावृत्(प्रे.)।
मूँज, सं. स्त्री. (सं. मुंजः) मुंजनकः,दृढ,-तृणः-मूलः, ब्राह्मण्यः, रंजनः, दूरमूलः, शत्रुभंगः ।
मूँड़, सं. पुं. (सं. मुंडः-डं) दे. 'मुंड' (१) ।
—मुड़ाना, मु., परिव्रज् (भ्वा. प. से.), संन्यस् (दि. प. से.) ।
मूँडन, सं. पुं., दे. 'मुंडन' ।
मूँडना, क्रि. स. (सं. मुण्डनं) मुण्ड् (भ्वा. प. से.), वप् (भ्वा. उ. अ., प्रे.), खुर्-क्षुर् (तु. प. से.), केशान् कृत् (तु. प. से.)-छिद् (रु. प. अ.)-लू (क्र्. उ. से.) २. वंच् (प्रे.), छल् (चु.), प्रतॄ (प्रे.), विप्रलभ् (भ्वा. आ. अ.) ३. दीक्ष् (भ्वा. आ. से; प्रे.), उप-नी (भ्वा. प. अ.) । ४. मेडोर्णा कृत् (तु. प. से.) । सं. पुं., मुण्डनं, क्षौरं, वपनं, केश,-छेदनं-लवनं-कर्तनम् ।
मूँडने योग्य, वि., मुण्डनीय, वप्तव्य, वाप्य ।
मूँडनेवाला, सं. पुं., मुण्डकः, नापितः,मुंडिन् ।
मूँडा हुआ, वि., मुण्डित, क्षुरित, उप्त, क्लृप्त—केश-श्मश्रु ।
मूँड़ी, सं. स्त्री., दे. 'मुण्ड'(१) । २. मुण्डाकारः ऊर्ध्वभागः ।
मूँदना, क्रि. स. (सं. मुद्रणं) प्र-आ,-च्छद् (चु.), सं-आ, वृ (स्वा. उ. से.), आ-,स्तृ (स्वा. उ. अ.), स्तॄ (क्र्. उ. से.) २. अ-, पिधा (जु. उ. अ.) ३. निमील् (भ्वा. प. से.), (प्रे.) मुद्रयति (ना. धा.) । सं. पुं., आ-प्र,—च्छादनं, आ-सं,-वरणं, पिधानं, निमीलनं, मुद्रणम् ।
मूक, वि. (सं.) अवाच्, वाणीहीन, *निर्गिर ।
मूगरी, सं. स्त्री. (सं. मुद्गरः>) * वसन-कुट्टनी, *मुद्गरी ।
मूज़ी, वि. (अ.) दुःख-क्लेश-कष्ट,-द-दायक २. दुष्ट, दुर्जन, खल ।
मूठ, सं. स्त्री., दे. 'मुट्ठी' (१-२) तथा 'मुठिया' (१-२) ।
मूठा, सं. पुं., दे. 'मुट्ठा' ।
मूढ़, वि. (सं.) अज्ञ, मूर्ख, मंदधी, मंद, निर्बुद्धि २. स्तब्ध, निश्चेष्ट ३. व्यामोहित, भ्रष्टसंज्ञ ।
—मति, वि. (सं.) मूढ़-, बुद्धि-चेतस् ।
मूढ़ता, सं. स्त्री. (सं.) अज्ञता, मूर्खता, बुद्धि-हीनता इ. ।
मूत्र, सं. पुं. (सं. न.) स्रवः, प्रस्रावः, मेहः, गुह्यनिस्यंदः ।
—करना, क्रि. अ., मूत्रयति (चु.), मूत्रोत्सर्गं कृ, मिह् (भ्वा. प. अ.), मूत्रं उत्सृज् (तु. प. अ.) ।
—कृच्छ्र, सं. पुं. (सं. न.) अश्मरी २. कृच्छ्रं ३. मूत्ररोधः ।
—स्थान, सं. पुं. (सं. न.) *प्रस्रावागारः-रम्, मूत्रालयः ।
मूर्ख, वि. (सं.) निर्-दुर्, बुद्धि, अ-निर्,-बोध, अज्ञ, अनभिज्ञ, अज्ञान-निन्, मंद, मंदधी, विद्या-प्रज्ञा-ज्ञान-बुद्धि,-हीन-शून्य-रहित इ. ।
मूर्खता, सं. स्त्री. (सं.) अज्ञता, अनभिज्ञता,

मंदता, दुर्-निर्,-बुद्धित्वं, अज्ञानं, अवोधः, जडता इ.।

मूर्च्छना, सं. स्त्री. (सं.) संगीतांगप्रकारः।

मूर्च्छा, सं. स्त्री. (सं.) सं-,मोहः, कश्मलं, मूर्च्छनं, मूर्च्छायः, चैतन्य-संज्ञा.-लोपः-नाशः।

—आना, क्रि. अ. मूर्च्छ् (भ्वा. प. से.), मुह् (दि. प. से.) मोहं-मूर्च्छा प्राप् (स्वा. प. अ.), संज्ञां-चेतनां हा (जु. प. अ.), नष्ट-संज्ञ-लुप्तचेतन (वि.) भू।

मूर्च्छित, वि. (सं.) मूढ, मुग्ध, मोहवश, मूर्च्छापन्न, नष्ट-लुप्त-विगत,-चेतन-चैतन्य-संज्ञ।

मूर्त, वि. (सं.) मूर्तिमत्, साकार, आकृतियुक्त २.कठिन,स्थूल,सुसंहत, घन ३. 'मूर्च्छित' दे.।

मूर्ति, सं. स्त्री. (सं.) चित्रं, आलेख्यं, रेखा-चित्रं २. प्रतिकृतिः (स्त्री.), प्रतिच्छंदः, प्रतिमा ३. आकृतिः (स्त्री.), आकारः, स्वरूपं ४. शरीरं, देहः।

—कार सं. पुं. (सं.) चित्रकारः २. प्रतिमा-कारः।

—पूजा, सं. स्त्री. (सं.) प्रतिमापूजनम्।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) मूर्ति-निर्माणं-घटना।

मूर्तिमान्, वि. (सं. मत्) सशरीर, शरीरिन्, काय-देह,-भृत्-धारिन्-वत्, देहिन्, मूर्त २. दृश्य, दृष्टिगोचर, प्रत्यक्ष, साकार।

मूर्द्धज, सं. पुं. (सं.) शिरोरुहः, दे. 'केश'।

मूर्द्धा, सं. पुं. (सं.-र्द्धन्) शीर्ष, दे. 'सिर'।

मूल, सं. पुं. (सं. न.) शिफः-फा, जटा, ब्र(बु)ध्नः, अंघ्रिनामकः २. कंदः-दं ३. उप-क्रमः, आरंभः, आदिः ४. आदि,-कारणं-बीजं-हेतुः, प्रकृतिः (स्त्री.) ५. मूलवित्तं, दे. 'पूंजी' ६. आद्य-आरंभिक,-भागः ७. गृह-मूलं, वास्तु (पुं. न.) ८. मूलग्रंथः, व्याख्येय-वाक्यं ९. नक्षत्रविशेषः १०. समीपं-पे ११. दे. 'पिपलामूल'। वि., मुख्य, प्रधान।

—धन, सं. पुं. (सं. न.) मूलं, मूल,-द्रव्यं-वित्तं, सामकम्।

—मूलक, वि. (सं. समासान्त में) -कारणक, उद्भूत,,-उत्पन्न (उ. अज्ञानमूलक, अज्ञान-कारणक इ.)।

मूली, सं. स्त्री. (सं. मूलकः-कं) राजालुकः, महाकंदः, हस्तिदंतं, कंदमूलं, दीर्घ-मूलकं-पत्रकं-कंदकम्। (छोटी मूली) मूलकपोतिका, चाणक्यमूलकं, लघुमूलकम्।

किसी को मूली गाजर समझना, मु., तृणाय-तृणं मन् (दि. आ. अ.), अवधीर्-अवगण् (चु.)।

मूल्य, सं. पुं. (सं. न.) वस्नः-स्नं, अर्घः, अर्हा, अवक्रयः, पण्यः।

—रहित, वि. (सं.) तुच्छ, निस्सार, व्यर्थ, क्षुद्र।

—वृद्धि, सं. स्त्री. (सं.) वस्न-अर्घ,-वृद्धिः-उप-चयः-उन्नतिः (स्त्री.)।

मूल्यवान्, वि. (सं.-वत्) बहुमूल्य, महार्घ, अतिमूल्य, अमूल्य।

मूल्यांकन, सं. पुं. (सं. न.) मूल्य-वस्न-अर्घ,-निर्धारणं-निश्चयनम्।

मूष, मूष(षि)क, सं. पुं. (सं.) उंदुरुः, दे. 'चूहा'।

—वाहन, सं. पुं. (सं.) गणेशः।

मूसल-र, सं. पुं. (सं. मुसलः-लं) मुष(श)-लः-लं, अयोऽग्रम्।

—चंद, सं. पुं., अशिष्टः, असभ्यः २. पुष्टदुष्टः।

मूसल(ला)धार बरसना, मु., अतीव-अति-वेगेन धारासारैः वृष् (भ्वा. प. से.)।

मूसलाधार वर्षा, आसारः, धारा,-आसारः-(नि-सं)पातः-वर्षः-वर्षम्।

मूसली, सं. स्त्री., दे. 'मुसली'।

मूसा, सं. पुं. (सं. मूषः) दे. 'चूहा'।

मृग, सं. पुं. (सं.) हरिणः, कुरंगः,-गमः, वातायुः, (अ)जिनयोनिः, एणः-णकः, ऋश्यः-श्यः, रिष्यः-श्यः, चारुलोचनः, शारंगः, कृष्ण-सारः, पृषतः-त् (पुं.), प्लाविन् (पुं.), मरुकः, रुरुः, रोहितः, लिगुः, वननः, शंवरः, रौहिषः, वातप्रमीः (पुं.) २. पशुमात्रं ३. वन्यपशुः ४. मार्गशीर्षमासः ५. मकरराशिः ६. पुरुषभेदः।

—छाला, सं. स्त्री. (सं+हिं.) मृग-हरिण,-अजिनं-चर्मन् (न.)।

—तृष्णा, सं. स्त्री. (सं.) मृग,-तृष्-तृषा-तृष्णिः-तृष्णिका-मरीचिका (सब स्त्री.)।

—नयनी, सं. स्त्री. (सं.) कुरंग-मृग,-दृश् (स्त्री.)-लोचना(-नी)-अक्षी-ईक्षणा-नयना।

—राज, सं. पुं. (सं.) मृगेन्द्रः, दे. 'सिंह'।

मैथिली, सं. स्त्री. (सं.) वैदेही, जानकी ।
मैथुन, सं. पुं. (सं. न.) रतं, सुरतं, रति,-क्रिया-क्रीडा, महासुखं, क्रीडारत्नं, अब्रह्मचर्यकं, निधुवनं, धर्षितं, संभोगः ।
—करना, क्रि. स., सुरतं आतन् (त. प. से.), संभोगं-रतिक्रीडां कृ, महासुखं अनुभू ।
मैदा, सं.पुं. (फ़ा.)समिता, अपूप्यः, *अट्टसारः ।
मैदान, सं. पुं. (फ़ा.) सम-भूमिः (स्त्रीः)-स्थलं-स्थली-प्रदेशः, उपशल्यं २. क्रीडा,-भूमिः-क्षेत्रं ३. युद्धभूमिः, रणक्षेत्रम् ।
—मारना, मु., वि-परा-जि (भ्वा. आ. अ.), दे. 'जीतना'।
मैन, सं. पुं. (सं. मदनः) कामदेवः २. दे. 'मोम' ।
मैनफल, सं. पुं. (सं. मदनफलं) श्वसन-छर्दन-शल्य-करहाटक,-फलं २. (वृक्ष) मदनः, श्वासनः, छर्दनः, शल्यः ।
मैनसिल, सं. पुं. (सं. मनःशिला) नैपाली, मनोज्ञा, शिला, कुनटी, दिव्यौषधिः (स्त्री.), नागजिह्विका, कल्याणिका ।
मैना, सं. स्त्री. (सं. मदना) शा(सा)रिका, चित्रलोचना, कुणपी, मधुरालापा, मेधाविनी, गो,-किराटा-किराटिका, कलहप्रिया ।
मैनाक, सं. पुं. (सं.) हिमवत्सुतः, सु-हिरण्य,-नाभः ।
मैया, सं. स्त्री. (सं. मातृका) दे. 'माता' ।
मैल, सं. स्त्री. (सं. मलिन>) दे. 'मल' (१–२) । ३. दोषः, विकारः ।
—ख़ोरा, वि. (हिं.+फ़ा.) मल,-गोपिन्-गोप्तृ । सं. पुं., अन्तर्-वस्त्रं-वसनं-वासस् (न.) २. दे. 'साबुन' ।
हाथ की—, मु., तुच्छवस्तु (न.), क्षुद्रद्रव्यम् ।
मैला, वि. (सं. मलिन) दे. 'मलिन' । सं. पुं., दे. 'मल' (१–३) ।
—करना, क्रि. स., आविलयति-मलिनयति (ना. धा.), पंकिली-मलिनीकृ ।
—होना, क्रि. अ., आविली-मलिनीभू, कलुष-पंकिल (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।
—कुचैला, वि., अति-आविल-कलुष-मलिन ।
मोंछ, सं. स्त्री., दे. 'मूंछ' ।
मोंढ़ा, सं. पुं. (सं. मूर्द्धन्>) *शरकांडपीठं २. भुजमूल-स्कंध,-प्रदेशः ।
मोक्ष, सं. पुं. (सं.) दे. 'मुक्ति' ।
—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) वेदांतशास्त्रम् ।
मोगरा, सं. पुं. (सं. मुद्गरः) अतिगन्धः गंध,-राजः-सारः, विट-,प्रियः, जन-मृग,-इष्टः २. दे. 'मुँगरा' ।
मोघ, वि. (सं.) व्यर्थ, निष्फल ।
मोच, सं. स्त्री. (सं. मुच्>) संधि,-व्याक्षेपः-व्यावर्तनं, स्नायुवितानः ।
—आना या निकलना, क्रि. अ., संधिः व्याक्षिप् (कर्म.)-व्यावृत् (भ्वा. आ. से.), स्नायुः वितन् (कर्म.) ।
मोचक, सं. पुं. (सं.) मुक्तिदः २. सन्न्यासिन् ३. कदली ।
मोचन, सं. पुं. (सं. न.) मोक्षणं, मुक्तिदानं, बंधनभंजनं, मुक्तिः (स्त्री.) । वि., मोचक, मोक्षक, मुक्तिप्रद ।
मोचना, सं. पुं. (सं. मोचन>) *मोचनः, *वालोत्पाटनः २. मुचुटी, लोहकारोपकरणभेदः ।
मोचरस, सं. पुं. (सं.) मोच,-स्रावः-सारः-निर्यासः, शाल्मलीवेष्टः, सुरसः ।
मोची, सं. पुं. (सं. मुच्>) चर्मकारः, पादू,-कारः-संधायकः ।
मोज़ा, सं. पुं. (फ़ा.) अनुपदीना, *चरणावरणं, दे. 'जुर्राब' ।
मोजिज़ा, सं. पुं. (अ.) चमत्कारः, कौतुकं, आश्चर्यम् ।
मोट, सं. स्त्री., दे. 'गठरी' ।
मोटन, सं. पुं., (सं. न.) पेषणं, चूर्णनं, मर्दनं, खण्डनम् ।
मोटर, सं. पुं. (अं.) चालक-प्रवर्तक,-यंत्रम् ।
—कार, सं. स्त्री. (अं.) चित्र-तैल,-रथः, *मोटरम् ।
—ख़ाना, सं. पुं., मोटरागारम् ।
—ड्राइवर, सं. पुं., मोटरचालकः ।
—बस, सं. स्त्री. *मोटर-,वसम् ।
—बोट, सं. स्त्री. *मोटरनौका ।
—साइकिल, सं. स्त्री. *मोटरसाइकलम्, *फटफटिया ।
मोटा, वि. (सं. मुष्टि> ?) पीन, पीवर, पुष्ट, पुष्टांग (-गी स्त्री.), स्थूल, स्थूलदेह, मेदस्विन् २. घन, निविड, सांद्र, गाढ, स्थूल ३. कणमय, कुपिष्ट, ४. अप,-नि-कृष्ट, हीन, गर्ह्य ५. कुरूप

६. असाधारण, विशिष्ट ७. दृप्त, गर्वित ८. महत्, बृहत् ९. धनाढ्य, धनिक।
—असामी, सं. पुं., धनिन्, धनशालिन्, श्रीमत्।
—ताजा, वि., हृष्टपुष्ट, पुष्टांग, मांसल।
मोटी बात, सं. स्त्री., सामान्य-साधारण-प्राकृत,-वार्त्ता।
मोटे हिसाब से, क्रि. वि., स्थूलमानेन।
मोटाई, सं. स्त्री. / मोटापन, मोटापा, सं. पुं. } (हिं. मोटा) पीवरता, मेदोवृद्धिः (स्त्री.), स्थूलता, पीनता २. घनता, गाढ़ता, सांद्रता इ.
मोठ, सं. स्त्री. (सं. मकुष्ठः) राज-अरण्य-वन,-मुद्गः, मुकुष्ठः-ष्ठकः, मय(यु)ष्ठः-ष्ठकः।
मोड़, सं. पुं. (हिं. मुड़ना) (नदीमार्ग आदि का) वंकः, आवृत्-त्तिः (स्त्री.) २. वक्रता, वक्रिमन् (पुं.), वक्रीभावः, जिह्मता ३. दे. 'मुड़ना' सं. पुं.।
मोड़ना, क्रि. स., व. 'मुड़ना' के प्रे. रूप।
मोढ़ा, सं. पुं., दे. 'मोंढा'।
मोतदिल, वि. दे. 'मातदिल'।
मोतिया, सं. पुं. (हिं. मोती) मल्ली, मल्लिका, वन-,चन्द्रिका, गौरी, प्रिया, सौम्या, सिता, दे. 'मोगरा' (१)।
मोतियाबिंद, सं. पुं. (हिं. मोती+सं. विंदुः) मौक्तिक-मुक्ता,-विन्दुः (नेत्ररोगः)।
मोती, सं. पुं. (सं. मौक्तिकं) मुक्ता, शौक्तिकं, मुक्ताफलं, शुक्तिजम्।
—पिरोना, क्रि. स., मौक्तिकानि सूत्र् (चु.)-गु(गुं)फ् (तु. प. से.)-संग्रंथ् (क्र्. प. से.)। मु., सुमधुरं भाष् (भ्वा. आ. से.) २. सुस्पष्टाक्षरैः लिख् (तु. प. से.) ३. रुद् (अ. प. से.) ४. सुसूक्ष्मकार्यं कृ।
मोतीचूर, सं. पुं. (हिं. मोती+चूर) मुक्तामोदकः।
—आँख, सं. स्त्री., *मौक्तकनेत्रं, लघुगोलभासुरनेत्रम्।
मोतीज्वर, सं. पुं. (हिं. मोती+सं. ज्वरः) शीतला-मसूरिका,-ज्वरः।
मोतीझि(झ)रा, सं. पुं. (हिं. मोती+झरना) आन्त्रिक-मन्थर,-ज्वरः।
मोथा, सं. पुं. (सं. मुस्तकः-कं) मुस्ता, कुरुविंदः, भद्रा, भद्रकः।

मोद, सं. पुं. (सं.) हर्षः, आनंदः, दे. 'प्रसन्नता'।
मोदक, सं. पुं. (सं.) मिष्टान्नभेदः। वि., हर्षजनक, आह्लादक।
मोदी, सं. पुं. (सं. मोदक>) अन्न,-विक्रेतृ-विक्रयिन्, दे. 'परचूनिया'।
—खाना, सं. पुं. (हिं.+फ़ा.) अन्न.-भांडारम्।
मोम, सं. पुं. (फ़ा.) सिक्थं, सिक्थकं, माक्षिकामलः-लं, मधुजं, मधुशेषं, मधूच्छिष्टं, मधूलं, मधूत्थम्।
—की नाक, सं. स्त्री., मु., चलचित्त, अस्थिरमति।
—जामा, सं. पुं. (फ़ा.) *माधुज-सैक्थिक-सिक्थाक्त,-वस्त्रम्।
—दिल, वि. (फ़ा.) मृदुमानस, आर्द्रचित्त।
—बत्ती, सं. स्त्री. (फ़ा.+हिं.) मधुज-सिक्थ,-वर्ती-र्तिः (स्त्री.)।
—करना या बनाना, मु., दयार्द्रीकृ, करुणार्द्र (वि.) विधा (जु. उ. अ.)।
—होना, मु., दयार्द्र (वि.) भू, अनुकंप् (भ्वा. आ. से.)।
मोमियाई, सं. स्त्री. (फ़ा.) कृत्रिमशिलाजतु (न.), कृतकशिलाजित (स्त्री.) २. व्रणपूरकः स्निग्धौषधभेदः।
मोमी, वि. (फ़ा.) सिक्थमय, माधुज, सैक्थिक।
मोर, सं. पुं. (सं. मयूरः) बर्हिणः, नीलकंठः, चित्र,-पिच्छकः-पत्रकः, कलापिन्, केकिन्, चंद्रकिन्, नर्तनप्रियः, बर्हिन, भुजंगारिः, मेघानंदिन्, शिखंडिन्, शिखावलः, वर्षामदः, प्रचलाकिन्।
—की ध्वनि, सं. स्त्री., 'केका' दे.।
—की पूंछ, सं. स्त्री., कलापः, पिच्छं, प्रचलाकः, बर्हः, शिखंडः।
—चंद्रिका, सं. स्त्री., चंद्रकः, मेचकः।
—पंखी, सं. स्त्री., केलि-विहार,-नौका।
—मुकुट, सं. पुं., मयूरमुकुटः-टं, शिखंडशेखरः।
—शिखा, सं. स्त्री., बर्हिचूडा, शिखिशिखा, शिखालुः।
मोरचा[1], सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'जंग' २. मुकुरमलम्।

मोरचा[2], सं. पुं. (फ़ा. मोरचाल) परिखा, खेयं, खातम् ।
—बंदी करना, मु., परिखया परिवेष्ट् (प्रे.); परिखां खन् (भ्वा. प. से.), सेनां खातेषु नियुज् (रु. आ. अ.) ।
—लेना, मु., युध् (दि. आ. अ.) ।
मोरछल, सं. पुं. (हिं. मोर+छड़) *शिखंड-चामरः, *कलापव्यजनम् ।
मोरनी, सं. स्त्री. (हिं. मोर). मयूरी, शिखंडिनी, बर्हिणी, केकिनी ।
मोरी, सं. स्त्री. (हिं. मोहरी) नाली, नालिः (स्त्री.) *वहनी, जलमार्गः ।
मोल, सं. पुं. (सं. मूल्यं, दे.) ।
—लेना, क्रि. स., दे. 'ख़रीदना' ।
—तोल, सं. पुं., अर्घनिर्धारणं, मूल्यनिर्णयः ।
मोह, सं. पुं. (सं.) भ्रमः, भ्रांतिः-मिथ्यामतिः (स्त्री.), विवर्तः, आभासः, प्रपंचः, अविद्या, अज्ञानं २. ममता-त्वं ३. स्नेहः, रागः, प्रेमन् (पुं. न.) ४. कष्टं, दुःखं ५. मूर्च्छा ।
—लेना, क्रि. स., मुह् (प्रे.), मनः हृ (भ्वा. प. अ.), वशी कृ ।
मोहक, वि. (सं.) चेतोहर, मनो,-हारिन्-रम, २. मोहजनक ।
मोहताज़, वि. (अ.) दे. 'मुहताज' ।
मोहन, सं. पुं. (सं.) मोहकः, मनोहारिन् २. श्रीकृष्णः ३. मूर्छाकारक उपचारभेदः (तंत्र) ४. अस्त्रभेदः ५. कंदर्पबाणविशेषः ६. धस्तूरक्षुपः । वि., मोहक, चेतोहर ।
—भोग, सं. पुं. (सं.) (१–३) संयाव-कदली-आम्र,-भेदः ।
मोहना, क्रि. अ. (सं. मोहनं) अनुरंज्-आसंज् (कर्म.), आसक्त-अनुरक्त-बद्धभाव भू २. मुह् (दि. प. से.), दे. 'मूर्च्छा आना' । क्रि. स., प्रीतिं-अनुरागं-अभिलापं जन् (प्रे.), अनुरंज् (प्रे.), वशी कृ २. भ्रमं-भ्रांतिं-संदेहं जन् (प्रे.), प्रतृ-वंच् (प्रे.) । सं. पुं., अनुरंजनं, अनुरागः. मूर्च्छा, मोहनं, वशीकरणं, वंचनं, प्रतारणम् ।
मोहनी, सं. स्त्री. (सं.) विष्णो रूपविशेषः २. मिष्टान्नभेदः ३. मोहन,-शक्तिः (स्त्री.)-मंत्रः ४. माया । वि. स्त्री. (सं.) मोहिका, चेतोहरी ।
—डालना, मु., अभिचारेण मायया वा वशीकृ ।
मोहर, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'मुद्रा' (१–४) । २. सुवर्णमुद्रा, निष्कः-कं, दीनारः ।
—लगाना, क्रि. स., मुद्रयति (ना. धा.), मुद्रया अंक् (चु.) ।
मोहरा[1], सं. पुं. (हिं. मुँह) पात्र-भाजन,-मुखं २. पदार्थस्य अग्र-ऊर्ध्व,-भागः ३. पशुमुख-जालकं ४. नासीरचराः (पुं. बहु.), सेना-मुखं ५. निर्गमनमार्गः, द्वारम् ।
मोहरा,[2] सं.पुं. (फ़ा. मोहर) शारः-रिः, खेलनी २. मृण्मय *संस्थानपुटः (सांचा) ३. दे. 'ज़हरमोहरा' ।
मोहलत, सं. स्त्री. (अ.) अवकाशः २. अवधिः ।
मोहित, वि. (सं.) मोहग्रस्त, भ्रांत २. आसक्त, अनुरक्त, बद्धभाव ।
मोहिनी, वि. तथा सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मोहनी' वि. तथा सं. स्त्री. ।
मोही, वि. (सं.-हिन्) मुग्धकारिन्, चेतोहर २. अनुरागिन्, स्नेहिन् ३. भ्रांत ४. लुब्ध, लोभिन् ।
मौंजी, सं. स्त्री. (सं.) मुंजमेखला ।
—बंधन, सं. पुं. (सं. न.) मुंजमेखलधारणम् ।
मौक़ा, सं. पुं. (अ.) घटनास्थानं २. स्थानं, प्रदेशः ३. अवसरः, अवकाशः ।
—देखना, मु., अवसरं प्रतिपा (प्रे., प्रतिपालयति) ।
—हाथ से न जाने देना, मु., अवसरं न वा (प्रे. वापयति)-हा (जु. प. अ., प्रे-, हापयति) ।
मौकूफ़, वि. (अ.) दे. 'बरख़ास्त' ।
मौकूफ़ी, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'बरख़ास्तगी' ।
मौक्तिक, सं. पुं. (सं. न.) मुक्ता, मुक्ताफलं, शौ क्तकम्, शुक्तिजम् ।
—दाम, सं. पुं. (सं.-मन् न.) मुक्ता-मौक्तक,-हारः-सरः, मुक्तावली ।
—सर, सं. पुं. (सं.) दे. 'मौक्तिकदाम' ।
मौखिक, वि. (सं.) वाचिक, लेखं विना ।
मौज, सं. स्त्री. (अ.) तरंगः, कल्लोलः, वीची-चिः (स्त्री.) २. कामचारः, छंदः, छंदस् (न.), चित्ततरंगः ३. आनंदः, मोदः ४. वैभवं, विभवः ५. दे. 'धुन' ।
—आना, मु., स्वच्छंदतया सहसा प्रवृत् (भ्वा. आ. से.) ।

—मनाना या उड़ाना, मु., नंद् (भ्वा.प.से.), मुद् (भ्वा. आ. से.), रम् (भ्वा. आ. अ.) ।
मौज़ा, सं. पुं. (अ.) ग्रामः ।
मौजी, वि. (अ. मौज) आनंदिन्, उल्लासिन् २. कामचारिन्, स्वैरिन् ३. अस्थिरमति ।
मौजूद, वि. (अ.) उपस्थित, विद्यमान ।
मौजूदगी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) उपस्थितिः (स्त्री.), विद्यमानता ।
मौजूदा, वि. (अ.) वर्तमान, विद्यमान, प्रचलित, आधुनिक, सांप्रतिक ।
मौत, सं. स्त्री. (सं. मृत्युः दे.) ।
—सिर पर खेलना, मु., जीवितसंशये वृत् (भ्वा. आ. से.) ।
अपनी**—मरना**, मु., प्रकृत्या स्वभावेन मृ (तु. आ. अ.) ।
मौन, सं. पुं. (सं. न.) निःशब्दता, तूष्णींभावः, वाक् ,-रोधः-नियमनं-स्तंभः २. मुनिव्रतम् । वि., दे. 'मौनी' ।
—व्रत, सं. पुं. (सं. न.) मूकता-मूकिम-तूष्णीकता,-प्रतिज्ञा-संकल्पः-व्रतम् ।
—खोलना, क्रि. अ., मौनं भंज् (रु. प. अ.), तूष्णींभावं त्यज् (भ्वा. प. अ.) ।
—धारण करना, क्रि. अ., वाचंयम् (भ्वा. प. अ.)-निरुध् (रु. उ. अ.), मौनं धृ (चु.) भज् (भ्वा. उ. अ.) ।
मौनी, वि. (सं.-निन्) वाचंयम, मौनव्रतिन् , मूक, निःशब्द, तूष्णीक । सं. पुं. (सं.) मुनिः, तपस्विन् ।
मौर, सं. पुं. (सं. मुकुटं>) वरस्य तालपत्रमुकुटं, *मुकुटं, २. प्रधानः, शिरोमणिः ।
मौरी, सं. स्त्री. (हिं. मौर) वध्वास्तालपत्रमुकुटकं, *मुकुटकम् ।
मौरूसी, वि. (अ.) पैतृक, पित्र्य, परंपरागत ।
मौर्ख्य, सं. पुं. (सं. न.) मूर्खता, अज्ञता, जडता, मूढता ।
मौर्य, सं. पुं., (सं.) प्राचीन-भारतस्य वंशविशेषः ।
मौर्वी, सं. स्त्री. (सं.) धनुर्गुणः, प्रत्यंचा, ज्या ।
मौलसिरी, सं. स्त्री. (सं. मौलिः+श्रीः>) वकुलः, सीधुगंधः, मुकु(कू)लः, मधुपुष्पः सुरभिः, स्थिरकुसुमः, भ्रमरानंदः ।
मौला, सं. पुं. (अ.) परमेश्वरः ।
मौलि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) शिखरं, शृंगं, ऊर्ध्वभागः २. शीर्ष, मस्तकं ३. मुकुटं, किरीटं ४. जूटः, जूटकं ५. अशोकवृक्षः ६. प्रधानः, मुख्यः ७. पृथिवी ।
मौलिक, वि. (सं.) मौल, आधारभूत २. प्रधान, मुख्य ३. आद्य, आदिम ।
मौसा, सं. पुं., दे. 'मासड़' ।
मौसिम, सं. पुं. (अ.) ऋतुः, कालः, समयः २. उपयुक्तसमयः, उचितकालः ।
मौसिम, वि. (फ़ा.) आर्तव, ऋतु-संबंधिन्-विषयक २. समयानुकूल, कालानुरूप ।
मौसी, सं. स्त्री., दे. 'मासी' ।
मौसेरा, वि. (हिं. मौसी) मातृष्वसृसंबंधिन् ।
—भाई, सं. स्त्री., मातृ,-ष्वसेयः-ष्वस्रीयः ।
मौसेरी बहिन, सं. स्त्री., मातृ-ष्वसेयी-ष्वस्रीया ।
म्याँवँ, सं. स्त्री. (अनु.) विडालशब्दः, *म्यूँकारः ।
—करना, मु., भयेन मंदमंदं वद् (भ्वा.प.से.) ।
म्याद, सं. पुं., दे. 'मीआद' ।
म्यान, सं. स्त्री., दे. 'मियान' ।
म्लान, वि. (सं.) ग्लान, विशीर्ण २. दुर्बल ३. मलिन ४. खिन्न, अवसन्न ।
म्लानि, सं. स्त्री. (सं.) म्लानता, कांतिक्षयः, विवर्णता २. खेदः, अवसादः, शोकः, ग्लानिः, (स्त्री.) ।
म्लेच्छ, सं. पुं. (सं.) वर्णाश्रमधर्मविहीनः, अनार्यः २. गोमांसभक्षकः ४. अस्पष्टभाषिन् ४. दुर्वृत्तः, दुष्टः । वि., अधम, नीच, पापिन् ।

य

य, देवनागरीवर्णमालायाः षड्विंशो व्यंजनवर्णः, यकारः ।
यंता, सं. पुं. (सं. यन्तृ) शासकः, निदेशकः २. वाहन-चालकः, सारथिः । ३. हस्तिपकः, गजाजीवः ।
यंत्र, सं. पुं. (सं. न.) देवाद्यधिष्ठानं, विविधप्रभावयुक्तं अंकाक्षरयुतं कोष्ठकचित्रं (तंत्र.). २. दारुयंत्रादि, यंत्रं (मशीन) ३. साधनं, उपकरणं ४. अग्न्यस्त्रं ५. वाद्यं, वीणा ६. दे. 'ताला' ।
—गृह, सं. पुं. (सं. न.) यंत्रशाला २. मानमंदिरं, वेधशाला ३. (अपराधिनां) यंत्रणागृहम् ।
—मंत्र, सं. पुं. (सं. न.) अभिचारः, कुहकं, कुसृतिः ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) यंत्र,-शास्त्रं-विज्ञानम् ।
—शाला, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'यंत्रगृह' ।
यंत्रक, सं. पुं. (सं.) यंत्रकारः, यंत्रज्ञः, शिल्पिन् ।
यंत्रण, सं. पुं. (सं. न.) नियंत्रणं, दमनम् २. बन्धनं, संयमनम् ३. पीडा, वेदना ४. रक्षणं, अभिरक्षा ।
यन्त्रणा, सं. स्त्री. (सं.) कष्टं, क्लेशः, यातना २. वेदना, पीडा ।
यंत्रालय, सं. पुं. (सं.) यंत्र,-गृहं-शाला २. मुद्रणयंत्रालयः ।
यंत्रित, वि. (सं.) यंत्ररुद्ध २. तालकबद्ध ।
यकता, वि. (फ़ा) अनुपम, अद्वितीय, अप्रतिम ।
यकसाँ, वि. (फ़ा.) तुल्य, सम, सदृश ।
यक़ीन, सं. पुं. (अ.) निश्चयः २. विश्वासः ।
यकृत्, सं. पुं. (सं. न.) कालखंडं, कालकं, कालेयं, करंडा, महास्नायुः, दे. 'जिगर' २. यकृत्, उदरं-वृद्धिः ।
यक्ष, सं. पुं. (सं.) देवताभेदः, गुह्यकः २.कुबेरः ।
—राज, सं. पुं. (सं.) कुबेरः, यक्षराजः ।
यक्षिणी, सं. स्त्री. (सं.) यक्षभार्या, यक्षी, २. कुबेरपत्नी ।
यक्ष्मा, सं. पुं. (सं. यक्ष्मन्) क्षयः, शोषः, राजयक्ष्मन् (पुं.), रोगराजः ।
यख़नी, सं. स्त्री. (फ़ा.) मांस,-मंडः-रसः २. शाक,-मंडः-रसः ।
यगाना, सं. पुं., आत्मीयः, संबंधिन्, बान्धवः, बंधुः । वि., एकाकिन् २. अनुपम ।
—बेगाना, सं. पुं., स्वकीयपरकीयाः (बहु.) २. मित्रबांधवाः (बहु.) ।
यजमान, सं. पुं. (सं.) यज्ञपतिः, यष्टृ, व्रतिन्, यज्ञ,-कृत-कर्तृ २. दानिन्, दातृ ।
यजुर्वेद, सं. पुं. (सं.) आर्याणां धर्मग्रंथविशेषः, यजुस् (न.), यजुः श्रुतिः (स्त्री.) ।
यजुर्वेदी, सं. पुं. (सं.-दिन्) यजुर्विद् (पुं.) ।
यज्ञ, सं. पुं. (सं.) यागः, अध्वरः, सवः-वनं, मखः, क्रतुः, सत्रं, हवनं, होमः यजः-जिः, इज्या, इष्टिः (स्त्री.), सप्ततंतुः, महः २. विष्णुः ।
—कर्म, सं. पुं. [सं.-र्मन् (न.)] यज्ञ,-क्रिया-कृत्यं. २. कर्मकांडम् ।
—कुंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) हवन,-वेदी-कुंडम् ।
—पति, सं. पुं. (सं.) दे. 'यजमान' ।
—पशु, सं. पुं. (सं.) यज्ञियचरिः २. अश्वः ३. छागः ।
—पात्र, सं. पुं. (सं. न.) याग,-भाजनं-भांडम् ।
—भूमि, सं. स्त्री. (सं.) यागक्षेत्रम् ।
—शाला, सं. स्त्री. (सं.) यज्ञ-सदनं-मंदिरं-आगारम् ।
—सूत्र, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञोपवीतम् ।
—स्तंभ, सं. पुं. (सं.) यागयूपः ।
यज्ञांग, सं पुं., (सं. न.) यज्ञभागः २. यज्ञ-, साधनम्-सामग्री-उपकरणम् । (सं. पुं.) उदुम्बरः, जन्तुफलः २. खदिरः, दन्तधावनः ३. विष्णुः ।
यज्ञागार, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञ,-शाला-वेदी-वेदिः (स्त्री.) ।
यज्ञोपवीत, सं. पुं. (सं. न.) पवित्रं, सावित्री-यज्ञ-ब्रह्म,-सूत्रं, द्विजायनी ।
यति[1], सं. पुं. (सं.) यतिन्, जितेन्द्रियः, तापसः, परिव्राजकः, सन्न्यासिन्, योगिन्, भिक्षुः, रक्तवसनः २. ब्रह्मचारिन् ।
—धर्म, सं. पुं. (सं.) सन्न्यासः, भिक्षाचर्यम् ।
यति[2], सं. स्त्री. (सं.) विरामः, विरतिः (स्त्री.), विश्रामः, पाठविच्छेदः (छंद.) ।
यतिनी, सं. स्त्री. (सं.) सन्न्यासिनी, परिव्रा-जिका २. विधवा ।
यती, सं. पुं. (सं.-तिन्) दे. 'यति' 'सं. पुं.' ।
यतीम, सं. पुं. (अ.) छ(छे)मंडः, अनाथः, मातृपितृहीनः ।
—खाना, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) अनाथालयः, छ(छे)मंडालयः ।
यत्न, सं. पुं. (सं.) प्रयत्नः, उद्योगः, उद्यमः, अध्यवसायः, चेष्टा-ष्टितं, आ-प्र,-यासः, परि-, श्रमः, व्यवसायः २. उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ३. चिकित्सा, उपचारः, रोगप्रतिकारः ।
—करना, क्रि. अ., प्र-, यत् तथा चेष्ट् (भ्वा.आ. से.) परि-, श्रम् (दि. प. से.), अध्यव-व्यव,-सो (दि. प. अ.), उदयम् (भ्वा. प. अ.), आयस् (भ्वा. दि. प. से.), प्रयत्नं-परिश्रमं-अध्यवसायं कृ ।
—शील, वि. (सं.) यत्नवत्, उद्यमिन्, उद्यो-गिन्, आ-प्र,-यासिन्, परिश्रम-उद्योग-कर्म,-शील-पर-परायण इ. ।
यत्र, अव्य. (सं.) यस्मिन् देशे-स्थले-स्थाने ।
—तत्र, अव्य. (सं.) अत्र तत्र, इतस्ततः २. अनेकत्र, बहुत्र ।
यथांश, अव्य. (सं. न.) यथा,-भागं-खण्डम्,

भाग-अंश,-अनुसारं-अनुकूलम् ७. यथायोग्यम्, यथोचितम् ।

यथा, अव्य. (सं.) येन प्रकारेण, यया रीत्या २. दृष्टांत-उदाहरण,-रूपेण-,तया यथा हि, -वत्, इव, यद्वत्,-अनुरूपं,-अनुसारम् ।

—काम, क्रि. वि. (सं. न.) यथा,-इच्छं-इष्टं-ईप्सितं अभिमतम् ।

—क्रम, क्रि.वि. (सं.न.) क्रमेण, क्रमानुसारं-रेण ।

—तथा, क्रि. वि. (सं.) यथाकथंचित्, येन केन प्रकारेण ।

—मति, क्रि.वि.(सं. न.) यथाबुद्धि, यथाज्ञानम् ।

—योग्य, वि. (सं.) यथोचित, यथार्ह ।

—रुचि, क्रि. वि. (सं. न.) दे. 'यथाकाम' ।

—वत्, क्रि. वि. (सं.) यथोचितं, यथार्हं, यथायुक्तं २. यथाविधि, नियमानुसारं ३. यथा-तथं, यथ सत्यम् ।

—शक्ति, क्रि. वि. (सं. न.) यथा-बलं-सामर्थ्यं-क्षमम् ।

—शास्त्र, क्रि. वि. (सं. न.) शास्त्रानुकूलम् ।

—संभव, क्रि. वि. (सं. न.) यथाशक्यम् ।

—समय, क्रि. वि. (सं. न.) यथाकालं, कालानुसारम् ।

—साध्य, क्रि. वि. (सं. न.) यथा,-शक्ति-सामर्थ्यम् ।

—स्थान, क्रि. वि. (सं. न.) स्थानानुकूलं, उचितस्थानेषु ।

यथार्थ, वि. (सं.) सत्य, अवितथ, निर्दोष, निर्भ्रान्त २. उचित, उत्पन्न, युक्त । क्रि. वि. (सं. न.) युक्तं, यथार्हं, सांप्रतं, सम्यक् ।

यथार्थता, सं. स्त्री. (सं.) सत्यता, निर्दोषता २. औचित्यं, युक्तता ।

यथेच्छ, क्रि. वि. (सं. न.) 'यथाकाम' दे. । वि., (सं.) यथेष्ट, यथेप्सित, यथाकाम ।

यथेच्छाचार, सं. पुं. (सं.) स्वेच्छाचारः, यथेष्टव्यवहारः ।

यथेच्छाचारी, वि. (सं.-रिन्) स्वच्छन्द, स्वैर, स्वैरिन्, अनियंत्रित ।

यथेष्ट, वि. तथा क्रि. वि. दे. 'यथेच्छ' ।

यथोचित, वि. (सं.) यथा,-योग्य-अर्ह-युक्त । क्रि. वि. (सं. न.) यथा,-योग्यं-अर्हम् ।

यदा, अव्य. (सं.) यस्मिन् काले-समये ।

—कदा, अव्य. (सं.) काले काले, कदाचित्, कदापि ।

यदि, अव्य. (सं.) चेत् (यह वाक्यारंभ में नहीं आता) ।

यदु, सं. पुं. (सं.) ययातिपुत्रः ।

—नंदन, सं. पुं. (सं.) यदु,-नाथः-श्रेष्ठः-पतिः-राजः, श्रीकृष्णः ।

यद्यपि, अव्य. (सं.) षष्ठी वा सप्तमी से भी, जैसे, यद्यपि दशरथ विलाप करता रहा तो भी राम वन को चल दिया = विलपति दशरथे (विलपतो दशरथस्य) रामो वनं ययौ ।

यम, सं. पुं. (सं.) धर्मराजः, पितृपतिः, कृतांतः, यमुनाभ्रातृ, वैवस्वतः, कालः,दंडधरः, अंतकः, धर्मः, महिषध्वजः, महिषवाहनः, जीवितेशः २. इन्द्रियनिग्रहः ३. योगांगविशेषः, अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहधर्मपालनं ४. वायुः ५. दे. 'यमज' ।

—दूत, सं. पुं. (सं.) धर्मराजचरः ।

—पुर, सं. पु. (सं. न.) यमपुरी, यमलोकः ।

—राज, सं. पुं. (सं.) दे. 'यम' (१) ।

यमक, सं. पुं. (सं. न.) शब्दालंकारभेदः (काव्य.), (सं. पुं.) संयमः २. दे. 'यमज' ।

यमज, सं. पुं. (सं.-जौ) यमौ, यमकौ, यमलौ २. अश्विनीकुमारौ (जोड़े में से एक) यमः, यमलः । वि., यम, यमक, यमल ।

यमल, सं. पुं. तथा वि., दे. 'यमज' ।

यमुना, सं. स्त्री. (सं.) कालिंदी, कलिंद,-कन्या-नंदिनी, यमी, यमनी, सूर्यसुता, तरणि-तनुजा २. दुर्गा ।

ययाति, सं. पुं. (सं.) नहुषपुत्रः, पुरुपितृ, चंद्रवंशिनृपविशेषः ।

यरक़ान, सं. पुं. (अ.) पाण्डु,-रोगः-आमयः, कामला, पाण्डुकः ।

यव, सं. पुं. (सं.) सित-तीक्ष्ण,-शूकः, मेध्यः, दिव्यः, अक्षतः, धान्यराजः, तुरगप्रियः, शक्तुः, महेष्टः, पवित्रधान्यम् ।

—क्षार, सं. पु. (सं.) यवजः, पाक्यं, यवाग्रजः ।

यवन, सं. पुं. (सं.) यूनानवासिन् २. दे. 'मुसलमान' ३. विदेशीयः ४. म्लेच्छः ५. वेगः ६. वेगवान् अश्वः ।

यवनानी, सं. स्त्री. (सं.) १-२. यवन-यूनान,-भाषा-लिपिः (स्त्री.) ।

यवनारि, सं. पुं. (सं.) कृष्णः, नन्दनन्दनः, वासुदेवः, मधुसूदनः ।

यवनिका, सं. स्त्री. (सं.) जवनिका, अपटी, कांडपटः २. तिरस्करिणी, प्रतिसीरा, व्यवधानम्।

यवनी, सं. स्त्री. (सं.) यवनभार्या २. यवन-जातेर्नारी।

यवस, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) घासः, शादः, तृणम् २. पलः, पलालः, धान्यतृणम्।

यवागू, सं. पुं. (सं. स्त्री.) उष्णिका, श्राणा, विलेपी, तरला।

यश, सं. पुं. [सं. यशस् (न.)]ख्यातिः-कीर्तिः-विश्रुतिः-प्रसिद्धिः (स्त्री.), श्लोकः, विश्रावः, अभिख्यानं, समाख्या।

—गाना, मु., प्रशंस् (भ्वा. प. से.), श्लाघ् (भ्वा. आ. से.) २. कृतं ज्ञा (क्र्. उ. अ.), उपकारं विद् (अ. प. से.)।

यशस्वी, वि. (सं.-स्विन्) कीर्तिमत्, प्रवि,-ख्यात, लोकविश्रुत, सुशंस, यशोधर, कीर्तित, पुण्यलोक, प्रसिद्ध। [यशस्विनी (स्त्री.) = कीर्तिमती, विख्याता इ.]।

यष्टि, **यष्टिका**, } सं. स्त्री. (सं.) दंडः, लगुडः, यष्टी २. हारभेदः।

यह, सर्व. (सं. इह>) इदम्, एतद्।

यहाँ, क्रि. वि. (सं. इह) अत्र, अस्मिन् देशे-स्थाने।

—तक, क्रि. वि., एतद्—अत्र,-पर्यंतं—यावत्—अवधि-अंतम्।

—वहाँ, क्रि.वि., अत्र तत्र,इतस्ततः, अत्रामुत्र।

—से, क्रि. वि., इतः, अस्मात् स्थानात् २.अतः इतः,-परं-ऊर्ध्वं-प्रभृति।

यही, क्रि. वि. (हिं. यह+ही) अयं-इयं-इदं-एषः-एषा-एतद,-एव।

यहीं, क्रि. वि. (हिं-यहाँ+ही) इहैव, अत्रैव, अस्मिन्नेव स्थाने।

यहूदी, सं. पुं. (इब्रानी, यहूद) यहूद,-वासिन्-भाषा-लिपिः (स्त्री.)।

याँ, क्रि. वि., दे. 'यहाँ'।

या, अव्य. (फ़ा.) वा, अथवा, यद्वा; (प्रश्न करने में) नु।

याकूत, सं. पुं. (अं.) दे. 'लाल' (रत्न)।

याग, सं. पुं. (सं.) दे. 'यज्ञ'।

याचक, सं. पुं. (सं.) अर्थिन्, प्रार्थकः २. भिक्षुः, भिक्षुकः।

याचना, सं. स्त्री. (सं.) याचनं, याच्ञा, प्रार्थनं-ना। क्रि. स., दे. 'मांगना'।

याजक, सं. पुं. (सं.) याजयितृ, पुरोहितः।

याज्ञवल्क्य, सं. पुं. (सं.) वैशंपायनशिष्यः, वाजसनेयः २. जनकसभ्यो योगीश्वरयाज्ञवल्क्यः ३. स्मृतिकारविशेषः।

याज्ञिक, सं. पुं. (सं.) यजमानः, यष्टृ २. याजयितृ। वि., यज्ञि(ज्ञी)य, यागविषयक। [याज्ञिकी (स्त्री.)]।

यातना, सं. स्त्री. (सं.) पीडा-वेदना-व्यथा,-अतिशयः २. यमदण्डपीडा।

यातायात, सं. पुं. (सं. न.) गतागतं, आयातनिर्यातं २. प्रेत्यभावः, पुनर्जन्मन् (न.)।

यात्रा, सं. स्त्री. (सं.) प्रस्थानं, प्रयाणं, व्रज्या, गमः-मनं,प्रवासः, देश,-भ्रमणं-पर्यटनं, प्रस्थितिः (स्त्री.), अध्व-मार्ग,-गमनं-क्रमणम्।

—करना, क्रि. अ., प्र-या (अ. प. अ.) प्रवस् (भ्वा. प. अ.), देशे अट् (भ्वा. प. से.), यात्रां कृ।

यात्री, वि. (सं.-त्रिन्) पथिकः, पथिलः, पांथः, अध्वगः, अध्वन्यः, पादविकः, प्रवासिन्, मार्गिकः, यात्रिकः, सारणिकः २. तीर्थयात्रिन्, कार्पटिकः।

याद, सं. स्त्री. (फ़ा.) धारणा, स्मृतिः-स्मरण-शक्तिः (स्त्री.) २. स्मरणम्।

यादगार, सं. स्त्री. (फ़ा.) स्मृतिचिह्नं, स्मारकम्।

याददाश्त, सं. स्त्री. (फ़ा.) स्मृतिः (स्त्री.), धारणा. २. स्मरण,-स्मारक-टिप्पणी।

यादव, सं. पुं. (सं.) यदुवंश्यः, यदुवंशजः २. श्रीकृष्णः। वि., यदुसंबंधिन्।

यान, सं. पुं. (सं. न.) प्रवहणं, रथः, स्यंदनः, शताङ्गः, वाहनं, वह्यम्।

यानी-ने, अव्य. (अ.) अयं आशयः, एष भावः, इदं तात्पर्यं, अर्थात्।

यापन, सं. पुं. (सं. न.) कालक्षेपः, समयातिवहनम्।

याबू, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'टट्टू'।

याम, सं. पुं. (सं.) दे. 'पहर' २. समयः।

यामिनी, सं. स्त्री. (सं.) रात्रि, रजनी, निशा।

यार, सं. पुं. (फ़ा.) मित्रं, सुहृद् (पुं.) २. उपपतिः, जारः।

यारनी, सं. स्त्री. (फ़ा. यार) उपपत्नी, भुजिष्या २. प्रिया, दयिता।

याराना, सं. पुं. } (फ़ा.) सख्यं, मित्रता
यारी, सं. स्त्री. } २. अधर्म्य-अनुचित,-प्रणयः-प्रेमन् (पुं. न.), अनंगरागः।

याल, सं. स्त्री. (तु.) दे. 'अयाल'।

यावक, सं. पुं. (सं.) सक्तुः २. अलक्तकः।

यावज्जीवन, क्रि. वि. (सं. न.) आ,-मरणं-मृत्योः, यावज्जन्म, यावज्जीवम्।

यावत्, वि. (सं.) दे. 'जितना' २. समस्त, सकल (अव्य.) पर्यन्तम्, आ-(समास में वा पंचमी युक्त)।

यावनी, सं. स्त्री. (सं.) करंकशालिनामकः इक्षुः, गुडतृणभेदः, वि. स्त्री. यवन-सम्बन्धिनी।

युक्त, वि. (सं.) उचित, उपपन्न, योग्य, औपपत्तिक २. श्लिष्ट, संहत, संलग्न, मिलित।

युक्ति, सं. स्त्री. (सं.) उपायः, प्र,-योगः-युक्तिः (स्त्री.) २. कौशलं, चातुर्यं ३. रीतिः (स्त्री.), प्रथा ४. न्यायः, नीतिः (स्त्री.) ५. अनुमानं, तर्कः ६. हेतुः, कारणं ७. ऊहा, तर्कः ८. योगः, संश्लेषः।

—युक्त, वि. (सं.) उचित, उपपन्न न्याय्य, यथार्थ।

युग, सं. पुं. (सं. न.) द्वयं, द्वितयं, युग्मं, युगलं, युतकं, यमकं २. समयः ३. सुदीर्घ-कालपरिमाणविशेषः, कृतादिकालचतुष्टयं (दे. 'कलियुग' आदि) ४. धुर् (स्त्री.), धुर्वी, प्रासंगः, युगः-गं ५. शारः-रिः, खेलनी ६. एक-कोष्ठकस्थं शारद्वयम्।

—युग, क्रि. वि. (सं. न.) निरंतरं, सदा, शाश्वत, नित्यं, चिरं, (सब अव्य.)।

—धर्म, सं. पुं. (सं.) युगानुरूप,-कर्तव्यं-आचारः।

युगपत्, अव्य. (सं.) सहैव, समकालम्।

युगल, सं. पुं. (सं.) दे. 'युग' (१)। २. दंपती (द्वि.) जंपती।

युगांत, सं. पुं. (सं.) महाप्रलयः, कल्पांतः २. सत्यादियुगविशेषस्य समाप्तिः (स्त्री.)।

युगांतर, सं. पुं. (सं. न.) अन्य-द्वितीय,-युगं २. परिवर्तितः समयः।

—उपस्थित करना, मु., सर्वथा परिवृत् (प्रे.) क्रांतिं कृ।

युग्म, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'युग' (१)।

युत, वि. (सं.) युक्त, संलग्न, सहित, मिलित, संश्लिष्ट।

युद्ध, सं. पुं. (सं. न.) संग्रामः, आयोधनं, जन्यं, प्रधनं, मृधं, आस्कंदनं, संख्यं, समरं, रणः, विग्रहः, संप्रहारः, अभिसंपातः, कलिः, आहवः, विदारः, आजिः (पुं. स्त्री.) बलजं, युध् (स्त्री.)।

—काल, सं. पुं. (सं.) संगर-संग्राम,-समयः-कालः-वेला।

—क्षेत्र, सं. पुं. (सं. न.) युद्ध-रण-संगर,-भूः (स्त्री.)-भूमिः (स्त्री.)-क्षेत्रम्-अजिरम्।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) रण-समर-संगर,-शास्त्रं-विज्ञानम्।

—वीर, सं. पुं. (सं.) भटः, योधः, शूरः, योद्धृ।

युधिष्ठिर, सं. पुं. (सं.) पांडवराजः, अजात-शत्रुः, धर्मपुत्रः, शल्यारिः, अजमीढः।

युरेनियम, सं. पुं. (अ.) किरणधातुः, वरु-णिकम्।

युवक, सं. पुं. (सं.) दे. 'युवा'।

युवती, सं. स्त्री. (सं.) युवतिः (स्त्री.), तरुणी, यूनी, धनि(नी)का, मध्यमा,-मिका, वयस्था, वर्या, ईश्वरी, दृष्टरजस् (स्त्री.), प्राप्तयौवना।

युवराज, सं. पुं. (सं.) राज्याधिकारिन्, राज-कुमारः।

युवा, सं. पुं. (सं. युवन्) तरुणः, तलुनः, वय-(यः)स्थः।

यूँ, अव्य., दे. 'यों'।

यूका, सं. पुं. (सं.) यूकः, केशकीटः, स्वेदजः, बालकृमिः, पाली-लिः (स्त्री.), षट्पदः। दे. 'जूँ' २. दे. 'खटमल'।

यूथ, सं. पु. (सं. न.) कुलं, वृंदं, गणः, समजः, सजातीयवस्तुसमूहः २. सैन्यं, दलः-लम्।

—पति, सं. पुं. (सं.) यूथ,-पः-नाथः २. दल-पतिः।

यूनान, सं. पुं. (ग्रीक, आयोनिया) *यूनानः, यवनदेशः।

यूनानी, वि. (हिं. यूनान) यवनदेशसंबंधिन्। सं. स्त्री., (१-२) यवनदेश-यूनान,-भाषा-चिकित्सा-प्रणाली। सं. पुं., यवनदेशीयः, यूनानवासिन्।

यूनिवर्सिटी, सं. स्त्री. (अं.) विश्वविद्यालयः।

यूप, सं. पुं. (सं.) यज्ञ-याग,-स्तंभः २. वि-जयस्तंभः, कीर्तिस्तंभः।

यूरोप, सं. पुं. (अं. युरोप) *यूरोपः, महाद्वीप-विशेषः।

यूरोपियन, वि. (अं.) *यूरोपीय, यूरोप,-संबं-धिन्-विषयक। सं. पुं., यूरोपीयः, यूरोप-वासिन्।

यूष, सं. पुं. (सं. पुं. न.) जूषः-षं, द्विदल-क्वाथरसः। दे. 'शोरबा'।

ये, सर्व. (हिं. यह) इमे-एते, इदम्, एतद् के बहुवचन के रूप।

यों, अव्य. (सं. एवमेव>) इत्थं, एव, अनेन प्रकारेण, एतया रीत्या।

—तो, क्रि. वि. प्रायः, प्रायशः, प्रायेण २. साधारण्येन, सामान्यतः।

—ही, क्रि. वि., एवमेव, इत्थमेव २. व्यर्थं, मुधा, निष्प्रयोजनं ३. अकारणं, अहेतुकम्।

—ही सही, क्रि. वि., एवमस्तु, एव भवतु, तथास्तु।

योग, सं. पुं. (सं.) चित्तवृत्तिनिरोधः, मनः-स्थैर्यं २. दर्शनशास्त्रविशेषः ३. मोक्षोपायः, मुक्तियुक्तिः (स्त्री.) ४. संधिः, संगः, सं(समा)-गमः, संहतिः (स्त्री.), संयोगः, संश्लेषः ५. उपायः ६. औषधं ७. धनं ८. लाभः ९. शुभ-मंगल,-अवसरः-मुहूर्तः (-र्तं) १०. दूतः, चरः ११. वलीवर्दशकटी १२. चातुर्यं १३. वाहनं १४. परिमाणः १५. नियमः १६. उपयुक्तता १७. सामाद्युपायचतुष्टयं १८. वशीकरणोपायः १९. ध्यानं, चिंतनं २०. संबंधः २१. धनोपार्जनवर्द्धने २२. सौहार्दं २३. वैराग्यं २४. संकलनं, परिसंख्या, पिंड-करणं (गणित) २५. सौकर्यं २६. तिथिवार-नक्षत्रादीनां स्थितिविशेषः (ज्यो.)।

—क्षेम, सं. पुं. (सं. न.) अनागतानयनागत-रक्षणे (न. द्वि.), प्राप्तिरक्षणे। जीवननिर्वाहः २. मंगलं ३. लाभः ४. राष्ट्रसुव्यवस्था ५. दायादेषु अविभाज्यं वस्तु (न.)।

—निद्रा, सं. स्त्री. (सं.) योगसमाधिः २. वीरगतिः (स्त्री.)।

—फल, सं. पुं. (सं. न.) संकलः, पिंडः, परिसंख्या (गणित)।

—बल, सं. पुं. (सं. न.) तपोबलं, योग-शक्तिः (स्त्री.)।

योगांग, सं. पुं. (सं. न.) योग,-साधनानि-उपायाः (पुं.) [यमनियमासनप्राणायाम-प्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावंगानि।

योगांजन, सं. पुं. (सं. न.) सिद्धांजनं, भूग-र्भस्थपदार्थदर्शककज्जलम् २. नेत्ररोगनाश-कांजनम्।

योगाभ्यास, सं. पुं. (सं. न.) योगांगानुष्ठानं, योगसाधनम्।

योगासन, सं. पुं. (सं. न.) ब्रह्मासनं, ध्यानासनम्।

योगिनी, सं. स्त्री. (सं.) योगाभ्यासिनी, तपस्विनी २. रण,-पिशाची-पिशाचिका।

योगी, सं. पुं. (सं.-गिन्) योगाभ्यासिन, तपस्विन्, तापसः, यतिः, मुनिः, वैरागिन्-गिकः, संन्यासिन्।

योगीश्वर, सं. पुं. (सं.) योगीन्द्रः, योगिराजः।

योगेश्वर, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः २. शिवः ३. योगेन्द्रः, सिद्धः, योगेशः।

योग्य, वि. (सं.) क्षम, शक्त, समर्थ, पात्रं २. सुशील, श्रेष्ठ, ३. चतुर, दक्ष, निपुण ४. उचित, उपपन्न, युक्त।

योग्यता, सं. स्त्री. (सं.) क्षमता, सामर्थ्यं २. चातुर्यं, नैपुण्यं ३. औचित्यं, युक्तता।

योग्या, सं. स्त्री. (सं.) युवती, तरुणी २. अभ्यासः ३. शल्यक्रियाभ्यासः।

योजक, वि. (सं.) संयोजक, सम्मेलक, संश्लेषक। सं. पुं. डमरुमध्यम्, बृहद्भूखण्ड-युग्मयोजकसूक्ष्मभूभागः।

योजन, सं. पुं. (सं. न.) (१-३) द्वि-चतुः-अष्ट,-कोशी ४. योगः ५. संयोजनम्।

योजना, सं. स्त्री. (सं.) उपायः, कल्पना, प्रयोगः, प्रयुक्तिः (स्त्री.) २. नियुक्तिः (स्त्री.) ३. रचना, विन्यासः ४. व्यवस्था, आयोजनं।

योद्धा, योधा, सं. पुं. (सं. योद्धृ) भटः, योधः, वीरः, शूरः, सैनिकः, आयुधिकः, युद्ध-शस्त्र,-उपजीविन्, अस्त्र-शस्त्र,-धरः-भृत्-आजीवः।

योनि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) भगं, वरांगं, स्मरमंदिरं, रतिगृहं, अधरं, स्मर-कंदर्प,-कूपः नारी,-गुह्यं-उपस्थं, संसारमार्गः २. कारणं ३. उद्गमः, उद्भवः, निर्गमः ४. प्राणिजातिः (स्त्री.) ५. देहः ६. गर्भः ७. जन्मन् (न.) ८. गर्भाशयः।

योनिज, वि. (सं.) भगज, योनिसंभव। सं. पुं., (सं.) जरायुजः अंडजो वा जीवः।

योरोप, सं. पुं., दे. 'यूरोप'।

यौगिक, सं. पुं. (सं.) व्युत्पन्नः, प्रकृतिप्रत्यय-योगलभ्यार्थवाचकः शब्दः २. समस्तशब्दः।

यौतक, सं. पुं. (सं. न.) यौतुकं, युतकं, दे. 'दहेज'।

यौवन, सं. पुं. (सं. न.) तारुण्यं, पूर्वं-प्रथमं-नवं,-वयः (न.)।

—काल, सं. पुं. (सं.) यौवन,-दशा-पदवी, तारुण्यावस्था।

र

र, देवनागरीवर्णमालायाः सप्तविंशो व्यंजनवर्णः, रेफः, रकारः।

रंक, वि. (सं.) दरिद्र, निर्धन २. कृपण, कदर्य। सं. पुं., भिक्षुकः २. दरिद्रः।

रंग, सं. पुं. (सं.) रागः, वर्णः २. वर्णकः-का, लेपः ३. नृत्यगीते (न. द्वि.), संगीतं ४. नाट्य-रंग,-क्षेत्रं,-शाला-गृहं-मंडपः-स्थलं-भूमिः (स्त्री.) ५. युद्ध-रण,-क्षेत्रं-भूमिः ६. शरीर-त्वग्,-वर्णः ७. यौवनं ८. सौंदर्यं ९. प्रभावः १०. कौतुकं, क्रीडा ११. युद्धं १२. कामचारः, छंदः (पुं.) १३. आनंदः १४. दशा १५. कांडं, अद्भुत-व्यापारः १६. कृपा १७. अनुरागः १८. प्रकारः, रीतिः (स्त्री.)।

—करना, क्रि. स., दे. 'रंगना'।

—चढ़ना, क्रि. अ., व.'रंगना' के कर्म. के रूप।

—ढंग, सं. पुं., आकारः, रूपं, २. दशा ३. आचारः।

—दार, वि., रंजित, वर्णित, सरागः, रागयुक्त, चित्रित।

—बिरंग-गा, वि., अनेक-बहु-नाना,-रंग-वर्ण, चित्र, कर्बुर, शबल। २. विशिष्ट, अनेक-बहु-नाना,-विध-प्रकारक।

—भूमि, सं. स्त्री. (सं.) उत्सव,-स्थलं-स्थानं २. क्रीडा-कौतुक,-स्थलं ३. दे. 'रंग' (४)।

—र(रे)लियाँ, सं. स्त्री., आमोदप्रमोदं, परि-हासः, विनोदः, लीला, हासिका, विहारः, क्रीडा।

—रस, सं. पुं., दे. 'रंगरलियाँ'।

—रसिया, सं. पुं., क्रीडाप्रियः, विलासिन्, विनोदिन्, आनंदिन्, हास्यशीलः।

—रूप, सं. पुं. (सं. न.) आकारः, आकृतिः (स्त्री.), रूपम्।

—रेज, सं. पुं. (फ़ा.) रंजकः, रंगाजीवः। [-जिन (स्त्री.)=रंजिका]।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'रंग' (४)।

—साज, सं. पुं. (फ़ा.) रंजकः, वर्णचारकः, कुणुः, वर्णाटः, तौलिकः, तौलिकिकः, रंग,-कारः-जीवकः-आजीवः २. रंग,-निर्मातृ-रच-यितृ-कारः।

—साजी, सं. स्त्री. (फ़ा.) रंजनं, वर्णनं, रंजकता, तौलिकता।

—महल, सं. पुं. (सं+अ.) रंगभवनं, प्रमोदप्रासादः।

—उड़ना या उतरना, मु., पांडुच्छाय (वि.) जन् (दि. आ. से.), विवर्णतां प्रपद् (दि. आ. अ.), मलिन-म्लान-मंद,-प्रभ-कांति-द्युति जन्।

—जमाना या बाँधना, मु., स्वगौरवं प्रति-ष्ठा (प्रे. प्रतिष्ठापयति), निजप्रतिष्ठां प्रसृ (प्रे.)।

—पीला (फ़क, फीका या मंद) होना, मु., दे. 'रंग उड़ना'।

—बदलना, मु., क्रुध् (दि. प. अ.), कुप् (दि. प. से.)।

—में भंग पड़ना, मु., आनंदोत्सवः विहन् (क.मं.), रंगभंगो जन्।

—र(रे)लियाँ मनाना, मु., मुद् (भ्वा. आ. से.), रम् (भ्वा. आ. अ.), विहृ (भ्वा. प. अ.), नंद्-क्रीड्-विलस् (भ्वा. प. से.)।

रंगत, सं. स्त्री. (सं. रंगः>) दे. 'रंग' (१-६)। २. आनंदः, स्वादः ३. दशा, अवस्था।

—लाना, मु., परिवर्तनं जन् (प्रे.), क्रांति उत्पद् (प्रे.)।

रँगना, क्रि. स. (सं. रंगः>) रंज् (प्रे.), चित्र्-वर्ण (चु.) २. दे. 'मोहना' क्रि. स. (१) तथा क्रि. अ. (१)। सं. पुं., रंजनं, चित्रणं, वर्णनम्।

रंगने योग्य, वि. रंजनीय, चित्रयितव्य, वर्णनीय।

रंगनेवाला, सं.पुं.,दे. 'रंगरेज' तथा 'रंगसाज'।

—रेशा, सं. पुं. (फ़ा.) शरीर,-अवयवाः-अङ्गानि (बहु.) २. पत्र,पल्लव,-नाडयः (स्त्री. बहु.)।

रगड़, सं. स्त्री. (हिं. रगड़ना) दे. 'रगड़ना' सं. पुं.। २. त्वग्भंगहीन-क्षुद्र,-व्रणः (णं) ३. कलहः, विवादः ४. विकट,-परिश्रमः-प्रयासः।

—खाना या लगना, क्रि. अ., व. 'रगड़ना' के कर्म. के रूप।

रगड़ना, क्रि. स. (अनु.) घृष् (भ्वा. प. से.), मृद् (क्र्. प. से.) २. चूर्ण् (चु.), पिष् (रु. प. अ.) ३. श्लक्ष्णीकृ, परिष्कृ ४. परि-प्र-मृज् (अ. प. से. प्रे.), निज् (जु. उ. अ.) ५. अभ्यस् (दि. प. से.), पुनः पुनः कृ ६. सवेगं सपरिश्रमं च संपद् (प्रे.)-अनुष्ठा, (भ्वा. प. अ.) ७. पीड् (चु.), संतप् (प्रे.) ८. तड् (चु.), आहन् (अ. प. अ.)। सं. पुं., घर्षणं, मर्दनं २. चूर्णनं, पेषणं ३. श्लक्ष्णीकरणं ४, परिमार्जनं, प्रक्षालनं, ५. अभ्यसनं, आवृत्तिः (स्त्री.) ६. पीडनं ७. ताडनं ८. सवेगं संपादनं इ.।

रगड़ने योग्य, वि., घर्षणीय, मर्दनीय, पेषणीय इ.।

रगड़नेवाला, सं. पुं., घर्षकः, मर्दकः,पेषकः इ.।

रगड़वाना, क्रि. प्रे., व. 'रगड़ना' के प्रे. रूप।

रगड़ा, सं. पुं. (हिं. रगड़ना) दे. 'रगड़ना' सं. पुं.। २. अतिशय-अत्यंत,-परिश्रमः-उद्योगः ३. चिरस्थायिकलहः, नैत्यिकविवादः।

—झगड़ा, सं. पुं. (नित्य-सतत-) विवादः-कलहः-कलिः।

—हुआ, वि., घर्षित, मर्दित, पिष्ट, अभ्यस्त।

रगड़ी, वि. (हिं. रगड़ा) विवादक, कलह-कलि,-प्रिय, विवादिन्।

रग़बत, सं. स्त्री. (अ.) कामना २. रुचिः-प्रवृत्तिः (स्त्री.)।

रगेदना, क्रि. स. (सं. खेटः), अपनुद् (तु. प. अ.), विद्रु-अपधाव् (प्रे.)।

रघु, सं. पुं. (सं.) सूर्यवंश्यो नृपविशेषः, दिलीपसूनुः।

—नंदन, सं. पुं. (सं.) रघु,-नाथः-पतिः-राजः-वरः-वीरः, श्रीरामचंद्रः।

—वंश, सं. पुं. (सं.) रघुकुलं २. महाकवि-कालिदास-प्रणीतो महाकाव्यविशेषः।

रचना[1], क्रि. सं. (सं. रचनं) सृज् (तु. प. अ.), निर्मा (अ. प. अ., जु. आ. अ.), जन्-उत्पाद् (प्रे.) २. क्लृप्-घट् (प्रे.), रच् (चु.), कृ ३. प्रणी (भ्वा. प. अ.), निबंध् (क्र्. प. अ.); रच् (चु.), लिख् (तु. प. से.) ४. यथाविधि न्यस् (दि. प. से.)-स्था (प्रे.) ५. परिष्कृ, अलंकृ, भूष् (भ्वा. प. से., चु.) ६. आयुज् (प्रे.), मंत्र् (चु. आ. से.)। सं. पुं., दे. 'रचना' सं. स्त्री. (१-३, ८-९); परिष्करणं, भूषणं, आयोजनम्।

रचना[2], क्रि. स. (सं. रंजनं) दे. 'रंगना'। क्रि. अ. अनुरंज् (कर्म.), स्निह् (दि. प. से.) २. व. 'रंगना' के कर्म. के रूप।

रचना[3], सं. स्त्री. (सं.) रचनं, निर्माणं, सर्जनं, घटनं, विधानं, कल्पनं, साधनं, निष्पादनं, उत्पादन,जननं २-३. रचना-निर्माण-उत्पादन,-कौशलं-रीतिः (स्त्री.) ४. रचित-निर्मित,-वस्तु (न.) ५. गद्यमयी पद्यमयी वा कृतिः (स्त्री.) ६. केशविन्यासः ७. पुष्पगुंफनं ८. स्थापनं ९. प्रणयनं, नि-प्र-बंधनम्।

रचने योग्य, वि., स्रष्टव्य, निर्मातव्य, रचनीय, प्रणेतव्य, यथाविधि, स्थापनीय इ.।

रचनेवाला, सं. पुं., स्रष्टृ, निर्मातृ, जनयितृ, घटयितृ,रचयितृ,प्रणेतृ,लेखकः,आयोजकः इ.।

रचयिता, सं. पुं. (सं.-तृ) निर्मातृ, स्रष्टृ, विधातृ, उत्पादकः २. लेखकः, प्रणेतृ इ.।

रचवाना या रचाना, क्रि. प्रे. व. 'रचना' के प्रे. रूप।

रचा हुआ, वि., सृष्ट, निर्मित, जनित, रचित, घटित, प्रणीत, लिखित, परिष्कृत इ.।

रचित, वि. (सं.) निर्मित, घटित, २. सृष्ट, जनित ३. लिखित, प्रणीत।

रज, सं. पु. [सं. रजस् (न.)] पुष्पं, कुसुमं, आर्तवं, ऋतुः, रजः (पुं.) २. प्रकृतेर्गुणविशेषः, रजः (पुं.) ३. आकाशः-शं ४. पापं ५. जलं ६. परागः, रेणुः (पुं. स्त्री.), पुष्पधूली-लिः (स्त्री.) ७. भुवनं, लोकः। सं. स्त्री., रजस् (न.), धूली-लिः (स्त्री.) २. रात्री ३.प्रकाशः।

—का रुक जाना, सं. पुं., रजोरोधः २. रजोनिवृत्तिः (स्त्री.)।

—की पीड़ा, सं. स्त्री., ऋतुशूलं, रजःकृच्छ्रम्।

रजक, सं. पुं. (सं.) निर्णेजकः, धावकः, शौचेयः, कर्मकीलकः।

रजकी, सं. स्त्री. (सं.) रजका, निर्णेजिका, धाविका ।
रजत, सं. स्त्री. (सं. न.) रूप्यं, दे. 'चाँदी' २. सुवर्णं ३. गजदंतः ४. हारः । वि., रजतमय २. शुक्ल ।
—कुंभ, सं. पुं. (सं.) रूप्य-श्वेत,-कुंभः-घटः-कलशः ।
—पात्र, सं. पुं. (सं. न.) रूप्य-श्वेत-दुर्वर्ण,-पात्रं-भाजनम् ।
रजनी, सं. स्त्री. (सं.) निशा, रात्रि २. हरिद्रा ३. जतुका ४. नीली ५. लाक्षा ।
—कर, सं. पुं. (सं.) रजनी,-पतिः-नाथः, चन्द्रः ।
—चर, सं. पुं. (सं.) राक्षसः, निशाचरः ।
—मुख, सं. पुं. (सं. न.) सायं, प्रदोषः, दिनांतः ।
रजवाड़ा, सं. पुं. (हिं. राज+वाड़ा) देशीय-राज्यं २. नृपः, राजन् (पुं.) ।
रजस्, सं. पुं. स्त्री. (सं. न.) दे. 'रज' सं. पुं. स्त्री. ।
रजस्वला, सं. स्त्री. (सं.) स्त्रीधर्मिणी, ऋतुमती, पुष्पवती, पुष्पिता, म्लाना, पांशुला ।
रज़ा, सं. स्त्री. (अ.) इच्छा, कामः २. संमतिः (स्त्री.), एकचित्तता, मतैक्यं ३. अनुज्ञा, अनुमतिः (स्त्री.) ।
—मंद, वि. (फ़ा.) सह-एक,-मत-चित्त,संमत ।
—मंदी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'रज़ा' (२-३) ।
रजाइस, रजायस, रजायसु, सं. स्त्री. (सं. राजादेशः>) आ-नि,-देशः, नियोगः, आज्ञा, शासनम् २. अनुमतिः-स्वीकृतिः (स्त्री.) ।
रज़ाई, सं. स्त्री. (<सं. रजनं ?) *पिचुल-प्रच्छदः, तूलाच्छादनम् ।
रजिस्टर, सं. पुं. (अं.) पंजिका, पंजी ।
रजिस्टर्ड, वि. (अं.) पंजीबद्ध ।
रजिस्ट्रार, सं. पुं. (अं.) पंजी-पंजिका,-लेखकः ।
रजिस्ट्री, सं. स्त्री. (अं.) पंजीनिबंधनम् ।
—कराना, क्रि. प्रे., राजकीयपंजिकायां लिख् (प्रे.) ।
—शुदा, वि., पंजी-पंजिकाकृत, लिखित ।
रजिस्ट्रेशन, सं. पुं. (अं.), पंजी-पंजिका,-करणं लेखनम् ।
रज़ील, वि. (अं) अधम, नीच २. अन्त्यज ।
रजोगुण, सं. पुं. (सं.) दे. 'रज'सं. पुं. (२) ।
रजोदर्शन, सं. पुं. (सं. न.) कन्यायां प्रथमः पुष्पस्रावः ।
रजोधर्म, सं. पुं. (सं.) दे. 'रज' सं. पुं. (१) ।
रज्जु, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'रस्सी' २. वेणी ।
रट, सं. स्त्री. (हिं. रटना) असकृद् उच्चारणं, आम्रेडनं, अभीक्ष्णं वचनं, पौनःपुन्येन पठनम् ।
रटना, क्रि. स. (सं. रटनं>) अभ्यस् (दि. प. से.), असकृत् आवृत् (प्रे.) २. मुखस्थ-हृदयस्थ-कंठस्थ (वि.) कृ, स्मरणार्थं पुनःपुनः उच्चर् (प्रे.)-वद्-पठ् (भ्वा. प. से.) । क्रि. अ., अभीक्ष्णं रण-क्वण् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., अभ्यसनं, आवर्तनं, आवृत्तिः (स्त्री.), कंठे करणं, हृदये धारणं, पुनः पुनः उच्चारणम् ।
रटने योग्य, वि., आवर्तनीय,स्मर्तव्य,स्मरणार्ह ।
रटनेवाला, सं. पुं., अभ्यासिन्, आवर्तयितृ ।
रटा हुआ, वि., अभ्यस्त, आवर्तित, कंठे कृत ।
रण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) संग्रामः, दे. 'युद्ध' ।
—क्षेत्र, सं. पुं. (सं. न.) रणांगणं-नं युद्ध-रण,-भूमिः (स्त्री)-स्थलं-क्षेत्रम् ।
—छोड़, सं. पुं., श्रीकृष्णः ।
—बाँकुरा, सं. पुं. (सं.+हिं.) शूरः, भटः ।
—रंग, सं. पुं. (सं.) युद्धोत्साहः २. युद्धं ३. रणक्षेत्रम् ।
—स्तंभ, सं. पुं. (सं.) विजय,-स्तंभः-यूपः ।
रत, वि. (सं.) व्यापृत, मग्न, लग्न, लीन, आसक्त २. अनुरक्त, बद्धभाव ।
रतजगा, सं. पुं. (हिं. रात+जागना) रात्रि-, जागरणं-जागरा २. *नैशोत्सवः ।
रतनार, वि. (सं. रत्नं>) आ-ईषद्,-रक्त-लोहित ।
रतालू, सं. पुं. (सं. रक्तालुः) (= लाल-शकरकंद) रक्त,-पिंडकः-पिंडालुः, लोहितः, लोहितालुः, रक्तकंदः ।
रति, सं. स्त्री. (सं.) कामदेवकलत्रं, मदनपत्नी २. मैथुनं, संभोगः, कामक्रीडा ३. अनुरागः, प्रीतिः (स्त्री.) ४. शोभा, सौन्दर्यं, छविः (स्त्री.) ५. सौभाग्यं ६. स्थायिभावभेदः ७. रहस्यम् ।
—क्रिया, सं. स्त्री. (सं.) रति,-केलिः (स्त्री.)-कलहः-समरं, मैथुनम् ।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) रति,-भवनं-मंदिरं २. योनिः (स्त्री.)।
—नाथ, सं. पुं. (सं.) रति,-कांतः-पतिः-प्रियः-राजः-रमणः, कामदेवः।
—बंध, सं. पुं. (सं.) सुरतासनम्।
—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) कामशास्त्रं, कोकशास्त्रम्।
रतौंधी, सं. स्त्री. (हिं. रात+अंधा) निशांधता-त्वम्।
रत्ती, सं. स्त्री. (सं. रक्तिका) काक,-तिक्ता-वल्लरी-पीलुः-जंघा-चिंची, कृष्णला, दे. 'गुंजा'। २. रक्तिकापरिमाणम्।
—भर, वि., अल्प, स्तोक, ईषत्।
रत्थी-थी, सं. स्त्री. (सं. रथः) *विमानं, शव,-यानं,-फलकं, दे. 'अरथी'।
रत्न, सं. पुं. (सं. न.) मणिः (पुं. स्त्री.), अश्मभेदः २. स्वजातिश्रेष्ठः ३. माणिक्यम्।
—गर्भा, सं. स्त्री. (सं.) वसुंधरा, वसुधा।
—जटित, वि. (सं.) मणि,-खचित-अनुविद्ध-करंबित।
—दाम, सं. स्त्री. [सं.-मन् (न.)] मणिमाला।
—पारखी, सं. पुं., रत्नपरीक्षकः २. मणिकारः, रत्नाजीविन्।
नौ—, सं. पुं., दे. 'नवरत्न'।
रत्नाकर, सं. पुं. (सं.) रत्नालयः, समुद्रः २. मणि-खानिः (स्त्री.)-गंजा ३. वाल्मीकेः प्रथमनामन् (न.)।
रत्नावली, सं. स्त्री. (सं.) मणिमाला, रत्नदामन् (न.)।
रथ, सं. पुं. (सं.) शतांगः, स्यंदनः, चक्रयानम्। (युद्ध का रथ) सांपरायिकः, वैनायिकः। (सैर का रथ) पुष्प-रथः। (यात्रा का) पारियानिकः। २. शरीरं ३. चरणः-णम्।
—कार, सं. पुं. (सं.) रथ-स्यन्दन-चक्रयान,-निर्मातृ-रचयितृ-कर्तृ। २. वर्णसंकरजातिभेदः।
—चर्या, सं. स्त्री. (सं.) रथ-चक्रयान,-यात्रा-व्रज्या-गमनम्।
—पति, सं. पुं. (सं.) रथिन्, रथिकः, रथिनः, रथिरः।
—यात्रा, सं. स्त्री. (सं.) आषाढशुक्लद्वितीयायां श्रीजगन्नाथस्य रथारोपणरूपोत्सवः।
—वीथि, सं. स्त्री. (सं.) रथ-मुख्य-प्रधान,-मार्गः-पथः।
—शाला, सं. स्त्री. (सं.) स्यन्दनागारम्।
—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) रथ,-शास्त्रं-विज्ञानम्।
—सूत, सं. पुं. (सं.) सारथिः, रथवाहः।
रथवान्, सं. पुं. (सं. रथवत्) रथ,-वाहः-वाहकः, सारथिः, दे. 'सारथी'।
रथांग, सं. पुं. (सं. न.) चक्रम् २. अस्त्रभेदः ३. कोकः, चक्रः, कामुकः।
—पाणि, सं. पुं. (सं.) चक्रपाणिः, विष्णुः।
रथी, सं. पुं. (सं.-थिन्) रथिकः, रथिनः, रथिरः. रथ,-आरोहिन्-स्वामिन्, साराक्षः। वि., रथस्थ, रथारूढ़। २. रथस्थ-महा,-योधः-योद्धृ। ३. (सं. रथ) दे. 'रत्थी'।
रद, रदन, } सं. पुं. (सं.) दंतः, दे. 'दाँत'।
—च्छद, —पुट, } सं. पुं. (सं.) ओष्ठः, दे. 'ओठ'।
रद्द, वि. (अ.) मोघ, निरर्थक २. मंद, निष्प्रभ, ३. निरस्त, खंडित।
—करना, क्रि. स., निरस् (दि. प. से.), खंड् (चु.), निवृत् (प्रे.)।
—बदल, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) परिवर्तनं, विपर्ययः, परि(री)वर्तः।
रद्दा, सं. पुं. (देश.) इष्टका-मृत्तिका,-स्तरः।
—रखना या लगना, क्रि. स., भित्तिं चि (स्वा. उ. अ.), स्तरं रच् (चु.) निर्मा (जु. आ. अ.)।
रद्दी, वि. (अ. रद्द) निरर्थक, अनुपयोगिन्। सं. स्त्री., निरर्थकपत्राणि (न. बहु.)।
रन(नि)वास, सं. पुं. (हिं. रानी+सं. वासः) अंतःपुरं, शुद्धांतः, अवरोधः।
रपट[1], सं. स्त्री. (हिं. रपटना) दे. 'फिसलाहट' २. धावनं, सत्वरगमनं ३. निम्नभूः (स्त्री.), प्रवणम्।
रपट[2], सं. स्त्री. (अं. रिपोर्ट) सूचना, आख्या।
रपटना, क्रि. अ. (सं. रफनं) दे. 'फिसलना'।
रफ़, वि. (अं.) चिक्कणताशून्य, दुःस्पर्श, विषम २. संस्कार-परिष्कार-शून्य।
रफ़ा, वि. (अ.) अपसारित, दूरीकृत २. निवारित, शमित, शांत ३. समाप्त, पूर्ण।
रफ़ू, सं. पुं. (अ.) तंतुभिर्वस्त्रछिद्रपूरणम्।

—करना, क्रि. स., वस्त्रछिद्रं तंतुभिः पूर्(चु.)। मु., स्वविरोधिवचनेषु सामंजस्यं दृश् (प्रे.)।

—गर, सं. पुं. (फा.) वस्त्रछिद्रपूरकः।

—चक्कर होना, मु., पलाय् (भ्वा. आ. से.), अपधाव् (भ्वा. प. से.)।

रफ़्तार, सं. स्त्री. (फ़ा.) गतिः (स्त्री.) २. वेगः, जवः।

रफ़्ता-रफ़्ता, क्रि. वि. (फ़ा.) शनैः शनैः (अव्य.) २. क्रमशः (अव+)।

रब, सं. पुं. (अ.) परमेश्वरः, जगदीशः।

रबड़[1], सं. पुं. (अं. रबर) *घर्षकं, घृषि(न.)-वृक्षनिर्यासभेदः २. वटजातीयो वृक्षभेदः, *घर्षकः।

रबड़[2], सं. स्त्री. (हिं. रगड़) व्यर्थ,-श्रमः-प्रयासः २. दूरता, विप्रकर्षः।

रबड़ना, क्रि. स. (हिं. रपटना) तरलद्रव्यं परि-भ्रम्-चल् (प्रे.)। श्रम्-क्लम् (प्रे.), मुधा धाव् (प्रे.), आयस्-खिद् (प्रे.)। क्रि. अ., वृथा भ्रम् (भ्वा. प. से.)-परिश्रम् (दि. प. से.), आयस् (भ्वा. दि. प. से.)।

रबड़ी, सं. स्त्री. (हिं. रबड़ना) किलाटिका, क्षैरेयम्।

रबाब, सं. पुं. (अ.) वाद्यभेदः, *रवापम्।

रबाबिया, रबाबी, सं. पुं. (अ. रबाब) रवापवादकः।

रब्त, सं. पुं. (अ.) अभ्यासः २. संबंधः।

—ज़ब्त, सं. पुं., गाढ़सौहृदं, सुपरिचयः।

रब्बी की फ़सल, सं. स्त्री. (अ.) चैत्रशस्यम्।

रमण, सं. पुं. (सं. न.) क्रीडा, विलासः, विहरणं, विहारः, केलिः (पुं. स्त्री.), खेला, लीला २. मैथुनं, रतिः (स्त्री.) ३. भ्रमणं, पर्यटनं ४. जघनम्। (सं. पुं.) पतिः २. कामदेवः। वि., मनोहर २. प्रिय, आनंदप्रद ३. क्रीडापर।

रमणी, सं. स्त्री. (सं.) नारी २. सुन्दरी, वरवर्णिनी, वामा।

रमणीक, वि. (सं. रमणीय) मनोज्ञ, मनोहर, दे. 'सुन्दर'।

रमणीय, वि. (सं.) सुरूप, शोभनं, दे. 'सुन्दर'।

रमणीयता, सं. स्त्री. (सं.) सुच्छविः (स्त्री.), मनोहरता, दे. 'सुन्दरता'।

रमता, वि. (हिं. रमना) विचरत्-विहरत्-व्रजत् (शत्रंत)।

रमना, क्रि. अ. (सं. रमणं) रम् (भ्वा. आ. अ.), नंद्-क्रीड् (भ्वा. प. से.), मुद् (भ्वा. आ. से.) २. सुखोपलब्धये वस्-स्था (भ्वा. प. अ.) ३. विहृ (भ्वा. प. अ.), पर्यट् (भ्वा. प. से.) ४. व्याप् (स्वा. प. अ.), व्यश् (स्वा. आ. से.) ५. अनुरंज् (कर्म.), स्निह् (दि. प. से., सप्तमी के साथ) ६. कामक्रीडां कृ. सुरतं आतन् (त. प. से.)। सं.पुं., रमणं, नंदनं, क्रीडनं, क्रीडा, मोदः, सुखाय वसनं, विहरणं, विचरणं, व्यापनं, व्यशनं, अनुरागः, निधुवनं इ.।

रमा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'लक्ष्मी'।

—पति, सं. पुं. (सं) विष्णुः।

रम्ज़, सं. स्त्री. (अ.) (नेत्रादिभिः) संकेतः, इंगितम् २. रहस्यं, गुह्यं, कूटम् ३. आशयः, अभिप्रायः।

रम्माल, सं. पुं. (सं.) दैवज्ञः, ज्योतिषिकः।

रम्य, वि. (सं.) दे. 'रमणीय'।

रम्या, सं. स्त्री. (सं.) स्थलपद्मिनी २. रजनी ३. गंगा ४. निर्गुण्डी, इन्द्राणी।

रम्हाना, क्रि. अ. (सं. रंभणं) दे. 'रंभाना'।

रय्यत, सं. स्त्री. (अ. रअय्यत) दे. 'प्रजा'।

रव, सं. पुं. (सं.) शब्दः, नि-,नादः, ध्वनिः, वि-,रवः-रावः २. कलकलः, कोलाहलः, उत्क्रोशः।

रवाँ, वि. (फा.) प्रवहत्-प्रस्रवत्-प्रचलत् (शत्रंत) २. अभ्यस्त ३. निशित, तीक्ष्ण (शस्त्रादि) ४. प्रस्थित।

रवा[1], सं. पुं. (सं. रजः) कणः, लवः, अणुः, लेशः २. दे. 'सूजी'।

रवा[2], वि. (फ़ा.) उचित, युक्त २. प्रचलित, विद्यमान।

रवाज, सं. पुं. (अ.) दे. 'रिवाज'।

रवानगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) प्रस्थानं, प्रयाणम्।

रवाना वि. (फ़ा.) प्रस्थित, प्रचलित २. प्रेषित, प्रहित।

—करना, क्रि. स., प्रस्था (प्रे. प्रस्थापयति), प्रहि (स्वा. प. अ.), सं-, प्रेष् (प्रे.), प्रचल् (प्रे.)।

—होना, क्रि. अ., प्रस्था (भ्वा. आ. अ.), अप,-सृ-गम् (भ्वा. प. अ.), प्रया (अ. प. अ.)।

रवानी, सं.स्त्री. (फ़ा.) प्रवाहः, प्रगतिः (स्त्री.)।

रवायत, सं. स्त्री. (अ.) कथा २. लोकोक्तिः (स्त्री.)।

रवि, सं. पुं. (सं.) अर्कः, भानुः, दे. 'सूर्य'।

—वार, सं. पुं. (सं.) आदित्य,-वारः-वासरः।

रवैया, सं. पुं. (फ़ा. रविश) आचारः, आचरणं, चेष्टित, वृत्तिः (स्त्री.), व्यवहारः।

रशना, सं. स्त्री. (सं.) कांची, दे. 'मेखला' (१) २. जिह्वा ३. रज्जुः (स्त्री.)।

रश्क, सं. पुं. (फ़ा.) ईर्ष्या, मात्सर्यम्।

रश्मि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) किरणः २. अश्वरज्जुः (स्त्री.) ३. पक्ष्मन्-वल्गु (न.)।

रस, सं. पुं. (सं.) आ-,स्वादः २. षट् इति संख्या ३. शरीरस्थधातुविशेषः, रसिका, चर्म-रक्त,-सारः,तेजः-अग्नि-आहार,-संभवः ४. तत्त्वं, सारः ५. काव्यनाटकानुभवजः शृङ्गारादिदश-विधो मानसानंदभेदः (काव्य.) ६. 'नव' इति संख्या ७. आनंदः, सुखं, आह्लादः, प्रमोदः ८. अनुरागः ९. रतिः (स्त्री.), सुरतं १०. उत्साहः, औत्सुक्यं ११. गुणः १२. द्रवः, सारः, रसः, आसवः, निर्यासः, सत्त्वं १३. जलं, १४. यू(जू)षः-षं १५. दे. 'शरबत' १६. वीर्यं १७. विषं १८. पारदः १९. दे. 'शिंगरफ़' २०. धातुभस्मन् (न.) २१. आनंदरूपं ब्रह्मन् (न.) २२-२३. गंध-शिला,-रसः २४. प्रकारः, रूपं २५. चित्ततरंगः, छंदः।

—चूना या टपकना, क्रि. अ., रसः कणशः निस्यंद् (भ्वा. आ. से.)-स्रु (भ्वा. प. अ.)।

—लेना, क्रि. अ., नंद् (भ्वा. प. से.), मुद् (भ्वा. आ. से.)।

—कपूर, सं. पुं. (सं. रसकर्पूरं) कर्पूररसः।

—गुल्ला, सं. पुं., *रसगोलः।

—भरा, वि., रस,-पूर्ण-मय-युक्त-वत्, सरस, रसिन्।

—भरी, सं. स्त्री., *रसबदरी।

—पति, सं. पुं. (सं.) चंद्रः २. नृपः ३. पारदः, *रसराजः ४. शृंगाररसः, रसराजः।

—सिंदूर, सं. पुं. (सं. न.) सिंदूररसः।

रसज्ञ, सं. पुं. (सं.) रस-स्वाद,-विद्-ज्ञात् २. काव्यमर्मज्ञः, काव्यालोचकः ३. निपुणः, कुशलः ४. अनुरागिन्, रसिकः, प्रेमिन् ५.गुणग्राहकः ६.रसवैद्यः ७. रसायनविद् (पुं.)

रसद[१], वि. (सं.) सुखद, आनंदप्रद, २. स्वादु, सुरस। सं. पुं. (सं.) चिकित्सकः वैद्यः, भिषज्।

रसद[२], सं. स्त्री.(फ़ा.) अन्नसामग्री, भक्ष्यजातम्।

रसना[१], सं. स्त्री. (सं.) रसा, जिह्वा, रसज्ञा, लोला, रसनेन्द्रियं २. कांची, मेखला ३. रज्जुः (स्त्री.) ४. अभीशुः-षुः, वल्गा।

रसना[२], क्रि. अ., दे. 'रिसना'।

रसनीय, वि. (सं.) आस्वाद्य, चषणीय २. स्वादु, रुच्य, रुचिकर।

रसनेन्द्रिय, सं. स्त्री. (सं. न.) जिह्वा, रसा, लोला, रसज्ञा।

रसम, सं. स्त्री. (अ. रस्म) प्रथा, परिपाटी-टिः (स्त्री.), रीतिः (स्त्री.)।

रसा[१], सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी २. जिह्वा, रसना ३. पाठा ४. रास्ना, एलापर्णी ५. द्राक्षा ६. नदी ७. रसातलम्।

—पति, सं. पुं. (सं.) नृपः, भूपः।

—पायी, वि. (सं.-यिन्) जिह्वापायिन्।
सं. पुं., श्वन्, कुक्कुरः, सारमेयः।

रसा[२], सं. पुं. (सं.रसः>) यू(जू)षः-षं*रसः, दे. 'शोरबा'।

रसाई, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'पहुँच'।

रसांजन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'रसौत'।

रसातल, सं पुं. (सं. न.) पातालं २. पाताल-विशेषः।

रसायन, सं. पुं. (सं. न.) जराव्याधिनाश-कौषधं २. तक्रं ३. विषं ४. रस-विद्या-शास्त्रं-सिद्धिः (स्त्री.) ५. [रसायनशास्त्रं] दे. 'कैमिस्ट्री' ६. धातुविद्या।

—बनाना, मु., (क्षुद्रधातून्) सुवर्णरूपेण परि-णम् (प्रे.) अथवा सुवर्णीकृ।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'कैमिस्ट्री'।

रसाल, सं. पुं. (सं.) इक्षुः, दे. 'गन्ना' २.आम्रः।
वि., स्वादु, सुस्वाद २. सरस ३. मधुर ४. सुंदर।

रसिक, सं. पुं. (सं.) रसास्वादिन्, स्वाद-ग्राहिन् २. प्रणयिन्, अनुरागिन्, कामुकः ३. सहृदयः, भावुकः, काव्यमर्मज्ञः ४. आनंदिन्, विनोदिन् ५. भक्तः, प्रेमिन्।

रसिकता, सं. स्त्री. (सं.) विनोदित्वं, परि-हासप्रियता २. सहृदयता, भावुकता ३. कामुकता, विलासिता।

रसिया, सं. पुं., दे. 'रसिक'।

रसीद, सं. स्त्री. (फ़ा.) प्राप्तिः-उपलब्धिः (स्त्री.) २. *प्राप्तिपत्रम्।

—बुक, सं. स्त्री. (फ़ा.+अं.) प्राप्तिपत्रपंजिका ।
रसीला, वि. (सं. रसः>) दे. 'रसभरा' ।
रसूल, सं. पुं. (अ.) ईशदूतः ।
रसेंद्र, सं. पुं. (सं.) पारदः, दे. 'पारा' ।
रसोइया, सं. स्त्री. (हिं. रसोई) पाचकः, सूदः, सूपकारः, वल्लवः, आरातिकः, आंधसिकः, औदनिकः, रन्धकः ।
रसोई, सं. स्त्री. (सं. रसवती) पाकशाला, महानसं २. सिद्धान्नं, पक्वाहारः, भोजनम् ।
—घर, सं. पुं., दे. 'रसोई' (१) ।
—दार, सं. पु., दे. 'रसोइया' ।
कच्ची—, सं. स्त्री. (घृतादिपु) *अपक्वभोजनम् ।
पक्की—, सं. स्त्री., (घृतादिपु) *पक्वभोजनम् ।
रसौत, सं. स्त्री. (सं. रसोद्भूतं) रसांजनं, रसगर्भं, कृतकं, वालभैषज्यं, वर्योजनम् ।
रस्सा, सं. पुं. (हिं. रस्सी) स्थूलसंदानं, बृहद्रज्जुः (स्त्री.), स्थूलरश्मिः ।
रस्सी, सं. स्त्री. [सं. रश्मिः (पुं.)] रज्जुः (स्त्री.), गुणः, दामन् (न.), वराटः, शुल्वा, वटी, रश(स)ना ।
रहँट, सं. पु., दे. 'अरहट' ।
रहटा, सं. पुं., दे. 'चरखा' ।
रहते, क्रि. वि. (हिं. रहना) उपस्थितौ, विद्यमानतायां, जीवने (सब सप्तमी एक.) ।
रहन[1], सं. स्त्री. (हिं. रहना) वासः, वसनं, वसती-तिः (सं.), वस्तिः (स्त्री.), स्थितिः (स्त्री.) २. आचारः, व्यवहारः, चरितं, वर्तनं, वृत्तिः (स्त्री.) ।
—सहन, सं. स्त्री. दे. 'रहन' (२) ।
रहन[2], सं. स्त्री. (हिं. रखना) आधानं, दे. 'गिरवी' ।
रहना, क्रि. अ. (सं. राजनं>) अधि-नि-प्रति, वस् (भ्वा. प. अ.) २. अवस्था (भ्वा. आ. अ.), वृत् (भ्वा. आ. से.), स्था (भ्वा. प. अ.) ३. जीव् (भ्वा. प. से.), प्राणान् धृ (चु.) ४. विरम् (भ्वा. प. अ.), विश्रम् (दि. प. से.) ५. अव-उत्-परि-, शिष् (कर्म.) ६. उज्झ्-त्यज् (कर्म.) ७. विद् (दि. आ. अ.), उपस्था (भ्वा. प. अ.) ८. मुधा कालं या (प्रे.) । सं. पुं., अधि-नि-प्रति-, वसनं वसती-तिः (स्त्री.), अवस्थानं, अवस्थितिः (स्त्री.), जीवनं, प्राणधारणं, अवशिष्टता, त्यागः, उपस्थितिः (स्त्री.) ।

रहने योग्य, वि., निवसनीय, वासार्ह ।
रहनेवाला, सं. पुं., नि-, वासिन्-स्थ-वर्तिन्, (तद्धित प्रत्यय से भी, उ., भारतीयाः, पांचनदाः) ।
रह रह के, मु., पुनः पुनः, भूयो भूयः, पौनः-पुन्येन, वारं वारम् ।
रहम[1], सं. पुं. (अ.) कृपा, दया, करुणा, अनुकंपा ।
—दिल, वि., कृपालु, सकरुण ।
रहम[2], सं. पुं. (अ. रह्म) गर्भाशयः, दे. ।
रहमत, सं. स्त्री. (अ.) कृपा, अनुग्रहः ।
रहमान, वि. (अ.) अतिशय-परम, कृपालु-दयालु । सं. पुं., परमेश्वरः ।
रहस्य, वि. (सं.) गोप्य, गोपनीय, गुह्य २. गुप्त, गूढ़, प्रच्छन्न । सं. पुं. (सं. न.) गुह्यं, गोप्यं, मर्मन्, गूढ़-मंत्रः, वार्ता ।
रहा-सहा, वि., 'बचाखुचा' ।
रहा हुआ, वि., उषित, अव-, स्थित, अव-उत्-परि-, शिष्ट, उपस्थित इ. ।
रहाइश, सं. स्त्री. (हिं. रहना) वसती-तिः (स्त्री.), वासः, अवस्थानं, अवस्थितिः (स्त्री.) ।
रहित, वि. (सं.) हीन, विरहित, वर्जित, शून्य, वियुक्त, विनाभूत ।
रहीम, वि. (अ.) दयालु । सं. पुं., ईश्वरः ।
राँग,गा, सं. पुं. (सं. रंगः-गं) वंगं, त्रपुः, त्रपुपं, पूतिगंधं, कुरूप्यं, मधुरं, हिमं,पिच्चटम् ।
राँड, वि. (सं. रंडा) विधवा दे. । २. वेश्या ।
राँधना, क्रि. स. (सं. रंधनं) दे. 'पकाना' ।
राँपी, सं. स्त्री. (देश.) चर्मकारछुरिका, *चर्मकर्तनी ।
राँभना, क्रि. अ., दे. 'रंभाना' ।
राई, सं. स्त्री. (सं. राजी) रक्तसर्षपः. रक्तिका, आसुरी, क्षवः, क्षवकः, क्षुतकः । दे. 'सरसों' के भेद २. अत्यल्प,-मात्रा-परिमाणम् ।
—नोन उतारना, मु. राजीलवणधूमेन कुदृष्टि-प्रभावं नश् (प्रे.) ।
—भर, मु., तिल-अणु-लेश-राजी,-मात्रं, अत्यल्पम् ।
—से पर्वत करना, मु., अणुमपि पर्वतीकृ, तिले तालं पश्यति, अत्युक्त्या वर्ण् (चु.) ।
राईफल, सं. स्त्री. (अ.) कुक्षिभृतास्त्रं-, नाला-स्त्रभेदः ।

राका, सं. स्त्री. (सं.) संपूर्णचंद्रा, पौर्णमासी २. पूर्णिमा, पूर्णा, पूर्णमासी।

राकेश, सं. पुं. (सं.) राकापतिः, चंद्रः।

राक्षस, सं. पुं. (सं.) निशा रजनी-रात्रि-नक्तं,-चरः, क्रव्यादः-द् (पुं), रक्षस् (न.), पलाशः-शिन्, भूतः, क्षपाटः, सन्ध्यावलः, यातुः, यातुधानः, अस्र-कौण,-पः, कर्बुरः, दैत्यः, असुरः दानवः २. दुष्टप्राणिन्, पापः ३. विवाहभेदः (धर्म.)।

—विवाह, सं. पुं. (सं.) विवाहभेदः, युद्धेन कन्यां प्राप्य विवाहः।

राक्षसी, सं. स्त्री. (सं.) पिशाची, निशाचरी, दानवी। वि., राक्षस-दानव,-उचित-योग्य, अमानुषिक।

राख, सं. स्त्री. (सं. रक्ष् >) भसितं, भस्मन् (न.), भूतिः (स्त्री.)।

राखी, सं. स्त्री. (सं. रक्षा >) दे. 'रक्षाबंधन' २. दे. 'राख'।

राग, सं. पुं. (सं.) अभिमतविषयाभिलाषः, सुखैषणा २. क्लेशः, कष्टं ३. मात्सर्य्यं, ईर्ष्या ४. प्रीतिः (स्त्री.), अनुरागः ५. अंगरागः ६. लोहित-,रंगः-वर्णः ७. रंजनं, आह्लादनं ८. कथा ९. संगीतशास्त्रीयरागः (भैरवादि)।

—रंग, सं. पुं. (सं.) विनोदः; विलासः-क्रीडा-कौतुकं, संगीतं, रंजनम्।

अपना—अलापना, मु., (परविचारान् अश्रुत्वा) स्वकीयानेव विचारान् सरभसं श्रु (प्रे.)।

रागान्वित, वि. (सं.) अनुरक्त, आसक्त, सकाम २. कुपित, क्रुद्ध।

रागिनी, सं. स्त्री. (सं. रागिणी) रागपत्नी (भैरवी, गुर्जरी आदि) २. विदग्धा नारी।

रागी, सं. पुं. (सं.-गिन्) रागविद् (पुं.), गायकः, गातृ २. अनु,-रागिन्-रक्तः, प्रेमिन्। वि., रंजित, सराग २. लौहित-रक्त,-वर्ण ३. विषयासक्त, भोगिन्।

राघव, सं. पुं. (सं.) रघुवंश्यः २. अजः ३. दशरथः ४. श्रीरामचंद्रः।

राछ, सं. पुं. (सं. रक्ष् >) (शिल्पिनां) उपकरणं, साधनं, यंत्रं २. वरयात्रा ३. दे. 'जलूस' ४. चक्री-पेषणी,-कीलकः।

राज, सं. पुं. (सं. राज्यं) शासनं, शिष्टिः (स्त्री.), देश,-प्रबंधः-व्यवस्था, प्रजापालनं, आधिपत्यं २. जनपदः, नीवृत् (पुं.), मंडलं, राष्ट्रं, देशः, राज्यं, विषयः, उपवर्तनं ३. अधिकारः, आधिपत्यं ४. शासन-राजत्व-राज्य,-कालः। सं. पुं. (सं. राजन्) नृपः २. 'मेमार'।

—करना, क्रि. स., प्र,-शास् (अ. प. से.), ईश् (अ. आ. से.), अधिष्ठा (भ्वा. प. अ.), परि-पा (प्रे., पालयति), तंत्र् (चु. आ. से.)।

—कर, सं. पुं. (सं.) राज,-स्वं-बलिः-शुल्कः-(कं.) धनम्।

—काज, सं. पुं. (सं.-कार्यं) शासन-,व्यवस्था-कृत्यम्।

—कुमार, सं. पुं. (सं.) राज,-पुत्र-सुतः,सूनुः।

—कुमारी, सं. स्त्री. (सं.) राज-नृप,-कन्या-सुता-पुत्री।

—कुल, सं. पुं.(सं.न.) राज-नृप,-वंशः-अन्वयः।

—गद्दी, सं. स्त्री., नृपासनं, राजसिंहासनं २. राज्य-, अभिषेकः, *राजतिलकः-कम्।

—गीर, सं. पुं., दे. 'मेमार'।

—गुरु, सं. पुं. (सं.) राज,-शिक्षकः-पुरोहितः।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) नृप-राज,-प्रासादः-भवनं-मंदिरं-सदनं, सौधः, सुधामयं २. मगध-प्रांतस्य प्राचीनराजधानी।

—तिलक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'राजगद्दी' २. अभिषेकोत्सवः।

—दंड, सं. पुं. (सं.) राज-शासनं, प्रजापालनं २. राज्यनियमविहितः आर्थिक-शारीरिक,-दंडः ३. दे. 'राजकर'।

—दंत, सं. पुं. (सं.) पुरोवर्तिदंतचतुष्कं २. उपरिश्रेणीमध्यवर्तिदंतद्वयम्।

—दरबार, सं. पुं., दे. 'राजसभा'।

—दूत, सं. पुं. (सं.) नृप,-वार्तिकः-सांदेशिकः।

—द्रोह, सं. पुं. (सं.) नृपविरोधः, राज्यविप्लवः, प्रजाक्षोभः।

—द्रोही, सं. पुं. (सं.-हिन्) नृपविरोधिन्।

—धानी, सं. स्त्री. (सं.) नृपनगरी।

—नीति, सं. स्त्री. (सं.) नृप-राज,-नयः-विद्या, शासनरीतिः (स्त्री.) (संधिविग्रहसामदानादि)।

—नीतिक, वि. (सं.) राजशासनविषयकः-तंत्रणसंबंधिन्।

—पथ, सं. पुं. (सं.) राज,-मार्गः-वर्त्मन् (न.), महा-घंटा श्री,-पथः।

—पाट, सं. पुं., (सं.) राजसिंहासनं २. शासनाधिकारः २. जनपदः, राष्ट्रम्।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) राजकुमारः २. क्षत्रिय-जाति-भेदः ३. बुधग्रहः ।

—पूत, सं. पुं. (सं. राजपुत्रः>) क्षत्रियजाति-भेदः, *राजपुत्रः ।

—पूती, सं. स्त्री. (हिं. राजपूत) शौर्यं, वीर्यम् ।

—फोड़ा, सं. पुं., *राजस्फोटः, *स्फोटराजः, दे. 'कारबंकल' ।

—बाहा, सं. पुं., राज-,महा-कुल्या ।

—भंडार, सं. पुं. (सं.-भांडारं) राज-राज्य,-कोषः(शः)-भांडागारः (रम्) ।

—भक्त, सं. पुं. (सं.) राज्य-राज,-भक्तः-निष्ठः ।

—भक्ति, सं. स्त्री. (सं.) राज्य-राज,-भक्तिः (स्त्री.)-निष्ठा ।

—भवन, —मंदिर, } सं. पुं. (सं.न.) दे.'राजगृह'(१) ।

—मज़दूर, सं. पुं., पलगंडकार्मिकाः, गेहकार-कर्मकाराः (प्रायः बहु.) ।

—महल, सं. पुं., दे. 'राजगृह' (१) ।

—मार्ग, सं. पुं. (सं.) दे. 'राजपथ' ।

—माष, सं. पुं. (सं.) ववटंः-टी, नील-नृप,-माषः, नृपोचितः ।

—मुद्ग, सं. पुं. (सं.) मुकुष्ठः, दे. 'मोठ' ।

—यक्ष्मा, सं. पुं. (सं.-क्ष्मन्) राजयक्ष्मः, दे. 'यक्ष्मा' ।

—योग, सं. पुं. (सं.) अष्टांगयोगः ।

—राजेश्वर, सं. पुं. (सं.) सम्राज् (पुं.), राजाधिराजः ।

—रोग, सं. पुं. (सं. >) असाध्यव्याधिः २. दे. 'यक्ष्मा' ।

—लक्षण, सं. पुं. (सं. न.) सहजं राजचिह्नं (सामुद्रिक) ।

—लक्ष्मी, सं. स्त्री. (सं.) राजश्रीः (स्त्री.), २. नृपच्छविः (स्त्री.), नृपवैभवम् ।

—वंशी, वि. (सं. राजवंशः>) राजवंश्य, नृपकुलोद्भूत, राजकुलज ।

—सत्ता, सं. स्त्री. (सं.) राज-,शक्तिः-अधिकारः (स्त्री.), राजता-त्वम् ।

—सभा, सं. स्त्री. (सं.) राज,-परिषद्-संसद् (दोनों स्त्री.) २. नृपतिसमाजः ।

—हंस, सं. पुं. (सं.) मरालः २. कलहंसः, कदंबः ३. नृपोत्तमः ।

राज़, सं. पुं. (फ़ा.) रहस्यं, गुह्यं, गोप्यम् ।

राजकीय, वि. (सं.) राज-,नृप-,राज-राज्य,-विषयक २. नृपोचित, राजार्ह ।

राजत, वि. (सं.) रौप्यः-प्यी-प्यम्, रूप्यमयः-यी-यं, रजत,-मय-निर्मित-कृत ।

राजत्व, सं. पुं. (सं.न.) राजता, नृपत्वं, राज,-अधिकारः-आधिपत्यम् ।

राजस, वि. (सं.) रजोगुण,-उद्भूत-जनित-प्रधान-मय (राजसी स्त्री.) ।

राजसिक, वि., दे० 'राजस' ।

राजसी, वि. (सं. राजस>) राज,-योग्य-अर्ह, नृपोचित, राजकीय ।

राजसूय, सं. पुं. (सं.) नृपाध्वरः, क्रतु,-राजः-उत्तमः ।

राजस्व, सं. पुं. (सं. पुं. न.) राज,-धनं-करः-बलिः ।

राजा, सं.पुं. (सं. राजन्) नृपः, भूपः, पार्थिवः, नर-नृ-भू-मही, पालः पतिः, क्ष्मा-मही-भू,-भृत् (पुं.), पार्थः, महींद्रः, नरेन्द्रः, प्रजेश्वरः, भूमिपः, दंडधरः, अवनि,-पः-पतिः, इनः, भूभुज् (पुं.), राज् (पुं.), महीक्षित् (पुं.), नाभिः, अर्थपतिः, प्रभुः २. स्वामिन् , अधि-पतिः ३. उपाधिभेदः ४. धनाढ्यः ।

राजाज्ञा, सं. स्त्री. (सं.) नृपादेशः, राजशा-सनम् ।

राजाधिकारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) राज,-नियो-गिन्-भृत्यः-कर्मकरः-पुरुषः २. न्यायाधीशः, धर्माध्यक्षः ।

राजाधिराज, सं. पुं. (सं.) राजराजेश्वरः, सम्राज् (पुं.) ।

राजाधिष्ठान, सं. पुं. (सं. न.) राजधानी, नृपनगरी, राजपुरम् ।

राजानक, सं. पुं. (सं. ?) राजकः, साधारण,-नृपः-भूपः-पार्थिवः, सामंतः ।

राजाभियोग, सं. पुं. (सं.) प्रजया बलात् कार्यकारणम्, दे. 'बेगार' ।

राजि-जिका, सं. स्त्री. (सं.) श्रेणी, पंक्तिः (स्त्री.) २. रेखा ३. दे. 'राई' ।

राजी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'राजि' ।

राज़ी, वि. (अ.) एक-सह-सं,-मत-चित्त २. स्वस्थ ३. प्रसन्न ४. सुखिन् ।

—करना, क्रि. स., प्रसद् (प्रे.), सं-परि-तुष् (प्रे.), प्री (क्र्. उ. अ.) ।

—होना, क्रि. अ., प्रसद् (भ्वा. प. अ.) सं-परि तुष् (दि. प. अ.), प्री (कर्म.) ।

—नामा, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) समाधानं २. समाधानपत्रम् ।

राजीव, सं. पुं. (सं. न.) नीलकमलं २. पद्मं, सरोजं, कमलम् ।

राजेन्द्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'राजाधिराज' ।

राज्ञी, सं. स्त्री. (सं.) राजपत्नी, दे. 'रानी' ।

राज्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'राज' (१-२) ।

—च्युत, वि. (सं.) राज्यभ्रष्ट, सिंहासनच्युत ।

—च्युति, सं. स्त्री. (सं.) राज्य,-भ्रंशः-भंगः, सिंहासनावरोपणम् ।

—तंत्र, सं. पुं. (सं. न.) शासन,-प्रणाली-व्यवस्था ।

—पाल, सं. पुं. (सं.) राज्य-प्रदेश-प्रान्त-, शासकः । (प्रादेशिक शासन का सर्वोच्च प्रबन्धक) ।

—लक्ष्मी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'राजलक्ष्मी' ।

—व्यवस्था, सं. स्त्री. (सं.) राज्य,-नियमः-व्यवस्था ।

राज्याभिषेक, सं. पुं. (सं.) राज्य-सिंहासन,-आरोहणं, राजतिलकः-कं २. सिंहासनारोहणे राजसूये वा नृपस्नानविशेषः ।

राणा, सं. पुं. (सं. राजन्) राजपुत्रनृपाणां उपाधिः ।

रात, सं. स्त्री. [सं. रात्री-त्रिः (स्त्री.)] श(शा)र्वरी,निशा,निशीथिनी,त्रियामा, क्षणदा, क्षपा, विभावरी, रजनी, यामिनी, तमी, तमस्विनी, श्यामा, घोरा, नक्तं, दोषा ।

—दिन, क्रि. वि., नक्तंदिनं, नक्तंदिवं, सदा, सर्वदा।

—भर, क्रि. वि., यावन्नक्तं, निशांतं यावत् ।

आधी—, सं. स्त्री., मध्य-अर्ध,-रात्रः, निशीथः, निशा-रात्रि,-मध्यम् ।

रातों—, क्रि. वि., निशीथे एव ।

रात्रि-त्री, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'रात' ।

रात्र्यंध, सं. पुं. (सं.) निशांधः (मनुष्य या पशु आदि) ।

राधा-धिका, सं. स्त्री. (सं.) रासेश्वरी, रसिकेश्वरी, कृष्णप्रिया, वृषभानुतनया ।

—रमण, सं. पुं. (सं.) राधावल्लभः, श्रीकृष्णः ।

रान, सं. स्त्री. (फ़ा.) ऊरुः, सक्थि (न.) ।

राना, सं. पुं., दे. 'राणा' ।

रानी, सं. स्त्री. (सं. राज्ञी) राजपत्नी, नृप-कलत्रं २. स्वामिनी ।

छोटी—, सं. स्त्री., परिवृक्ती ।

पट्ट—, सं. स्त्री., पट्ट,-राज्ञी-महिषी-देवी, महा-पट्ट,-राज्ञी ।

प्रिय परन्तु छोटी—, सं. स्त्री., वावाता ।

राब, सं. स्त्री. (सं. द्रावक) फाणितं, अर्द्धा-वर्तितेक्षुरसः ।

राबड़ी, सं. स्त्री., दे. 'रबड़ी' ।

राम, सं. पुं. (सं.) परशुरामः २. बल,-रामः-देवः ३. श्रीरामचंद्रः ४. परमेश्वरः ५. 'त्रि' इति संख्या ।

—कली, सं. स्त्री. (सं.) रामक(कि)री (रागिणी) ।

—कहानी, सं. स्त्री., बृहत्कथा २. करुणकथा ।

—जनी, सं. स्त्री., हिंदू नर्तकी २. वेश्या ।

—तरोई, सं. स्त्री., दे. 'भिंडी' ।

—दूत, सं. पुं. (सं.) हनुमत् (पुं.), पवनपुत्रः ।

—धनुष, सं. पुं. [सं.-नुस् (नः)] इन्द्रचापः ।

—नवमी, सं. स्त्री. (सं.) श्रीरामजन्मतिथिः, चैत्रशुक्लनवमी ।

—नामी, सं. पुं. [सं. रामनामन् (न.)] रामनामांकितवस्त्रं २. रामनामांकितहारभेदः ।

—पुर, सं. पुं. (सं. न.) स्वर्गः २ अयोध्या ।

—बाण, सं. पुं. (सं.) अजीर्णनाशक औषध-विशेषः २. रामशरः, शरवृक्षभेदः । वि., अमोघ, सद्यः फलदायिन् ।

—रस, सं. पुं. (सं.) लवणं २. भंगासवः (मदरास में) ।

—राज्य, सं. पुं. (सं. न.) धर्म्य-न्याय्य,-राज्यम् ।

—राम, अव्य. (सं.) प्रणामः, नमस्कारः ।

—लीला, सं. स्त्री. (सं.) रामायणाभिनयः ।

—सखा, सं. स्त्री. (सं.-खः) सुग्रीवः ।

—करके, मु., अत्यायासेन, अतिकृच्छ्रेण, यथाकथंचित् ।

—जाने, मु., न वेद्मि, न जाने, ईश्वरो जानाति २. ईश्वरः साक्षी, अहं सत्यं वच्मि ।

—नाम सत्य है, मु., रामनाम(गोविन्दनाम)-सत्यं, प्रेतवहनकालोचितवाक्यम् ।

रामचंद्र, सं. पुं. (सं.) दशरथस्य ज्येष्ठसुतः, रघुनंदनः, सीतापतिः, रामभद्रः, रावणारिः ।

रामा, सं. स्त्री. (सं.) सुंदरनारी, सुन्दरी, वामा २. नारी ३. संगीतकुशला नारी ४. सीता ५. राधा ६. रुक्मिणी ७. लक्ष्मीः ८. शीतला ।

रामानंद, सं. पुं. (सं.) वैष्णवाचार्यविशेषः ।

रामानुज, सं. पुं. (सं.) लक्ष्मणः, सौमित्रिः २. श्रीवैष्णवसम्प्रदायप्रवर्तकाचार्यः (सं. १०७३-११९४) ।

रामायण, सं. पुं. (सं. न.) श्रीवाल्मीकि-प्रणीतो महाकाव्यविशेषः २. रामचरितम् ।

रामायणी, वि. (सं. रामायणम्>) रामायण,-सम्बन्धिन्-विषयक, रामायणीय । सं. पुं. रामायण,-पाठिन्-पंडितः ।

राय[1], सं. पुं. (सं. राजन्) नृपः, भूपः २. सामंतः, नायकः ३. चारणः, वंदिन् ४. राजकीयोपाधिभेदः, राजन् (पुं.) ।

—बहादुर, सं. पुं. (हिं.+फ़ा.) *राजवीरः (उपाधिभेदः) ।

—साहब, सं. पुं. (हिं+फ़ा.) *राजमहोदयः (उपाधिभेदः) ।

राय[2], सं. स्त्री. (फ़ा.) मतं, मतिः (स्त्री.) आशयः, अभिप्रायः, विचारः, तर्कः ।

—देना, क्रि. अ., निजमतं-स्वमतिं प्रकटयति (ना. धा.) ।

—पूछना या लेना, क्रि. स., परमतं प्रच्छ् (तु. प. अ.), (स्वहिताय) परविचारं ज्ञा (सन्नंत, जिज्ञासते) ।

रायगाँ, वि, (सं.) व्यर्थ, निरर्थक, अपार्थक ।

रायज, वि. (सं.) दे. 'प्रचलित' ।

रायता, सं. पुं. (सं. राज्यक्ता) दाधिकव्यंजनभेदः, दाधेयम् ।

रायल, वि. (अं.) राजकीय, राजोचित, नृपोचित, राजार्ह ।

रार, सं. स्त्री. [सं. राटिः (स्त्री.)] दे. 'झगड़ा' ।

राल[1], सं. पुं. (सं.) शाल-साल,-वृक्षः २. सर्ज-साल,-निर्यासः-रसः, सुर-यक्षः-धूपः, सुरभिः, अग्निवल्लभः, दे. 'धूप' ।

राल[2], सं. स्त्री. (सं. लाला) सृणि(णी)का, स्यंदिनी, द्राविका, मुखस्रावः ।

—गिरना चूना या टपकना, मु., लालायते (ना. धा.), लालायित (वि.) भू, अत्यर्थं अभिलष् (भ्वा. प. से.) ।

राव, सं. पुं., दे. 'राय' ।

—चाव, सं. पुं., संगीतोत्सवः, दे. 'रागरंग' २. लालनम् ।

रावण, सं. पुं. (सं.) पौलस्त्यः, लंकेशः, दश, कंधरः-ग्रीवः-आननः-आस्यः ।

रावल[1], सं. पुं. (सं. राजपुरं>) अंतःपुरं, दे. 'रनवास' ।

रावल[2], सं. पुं. (सं. राजपुत्रः>) नृपः २. सामंतः ३. संमानसूचकं संबोधनपदं, राजन् ! ४. योधः, भटः ।

रावी, सं. स्त्री. (सं. इरावती) ऐरावती, पंचनदप्रान्तवर्तिनदीविशेषः ।

राशि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) पुं(पिं)जः, पुंजिः (स्त्री.), उत्करः, कूटः-टं, समुच्चयः, निकरः, दे. 'ढेर' २. ज्योतिश्चक्रस्य द्वादशांशः ३. उत्तराधिकारः ।

—चक्र, सं. पुं. (सं. न.), ज्योतिश्चक्रं, भ,-मंडल-पंजरः-चक्रम् ।

—भाग, सं. पुं. (सं.) राश्यंशः, भग्नांशः (ज्यो.) ।

—भोग, सं. पुं. (सं.) राशौ ग्रहावस्थितिः (स्त्री.) २. राशौ ग्रहावस्थितिकालः ।

राशी[1], सं. स्त्री., दे. 'राशि' ।

राशी[2], वि. (अ.) दे. 'रिश्वतखोर' ।

राष्ट्र, सं. पुं (सं. न.) देशः, विषयः, जनपदः, दे. 'राज' (२) । २. राष्ट्रवासिनः, राष्ट्रिकाः, जनाः, प्रजाः (सव बहु.), लोकः, जनता ३. राष्ट्रीय-,उपद्रवः, दे. 'ईति' ।

—पति, सं. पुं. (सं.) राष्ट्रिकः, राष्ट्रियः, राष्ट्रनायकः, प्रजातंत्रप्रधानः ।

—पाल, सं. पुं. (सं.) नृपः, भूप । २. कंसभ्रातृ ।

—विप्लव, सं. पुं. (सं.) राजद्रोहः, प्रजाक्षोभः, क्रान्तिः (स्त्री.) ।

राष्ट्रीय, वि. (सं.) देशीय, देश्य, राष्ट्रिय, जानपदिक ।

राष्ट्रीयता, सं. स्त्री. (सं.) देशीयता, देशभक्तिः (स्त्री.) ।

रास[1], सं. पुं. (सं.) कोलाहलः, कलकलः, महाध्वानः २. ध्वनिः, शब्दः । सं. स्त्री.

(सं. पुं.), गोपानां नृत्य-क्रीडाभेदः २. नाटक-रूपक,-भेदः३. शृंखला ४. प्रचलितगीतिकाभेदः ५. विलासः ६. लास्यं ७. नर्तकसमाजः ।

—क्रीड़ा, सं. स्त्री. (सं.) रासविलासः, रास-लीला २. कृष्णगोपिकानृत्यम् ।

—धारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) रासाभिनेतृ ।

—बिहारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) श्रीकृष्णः ।

रास[२], सं. स्त्री. (अ.) दे. 'लगाम' ।

रास[३], सं. स्त्री., दे. 'राशि' (१-२) ।

रासभ, सं. पुं. (सं.) गर्दभः २. अश्वतरः (रासभी स्त्री.) ।

रास्त, वि. (फ़ा.) सरल २. उचित ३. अनुकूल ४. यथातथ ।

रास्ता, सं. पुं. (फ़ा.) मार्गः, पथिन् (पुं.) २. रीतिः (स्त्री.) ।

रास्ती, सं. स्त्री. (फ़ा.) सत्यं, तथ्यं, ऋतं २. आर्जवं, धर्मशीलता ।

राह, सं. स्त्री. (फ़ा.) पथिन् (पुं.), दे. 'मार्ग' २. प्रथा, रीतिः (स्त्री.) २. नियमः ।

—खर्च, सं. पुं. (फ़ा.) मार्गव्ययः ।

—गीर, सं. पुं. (फ़ा.) यात्रिन्, पथिकः ।

—चलता, सं. पुं. (फ़ा.+हिं.) पथिकः २. अपरिचितः ।

—ज़न, सं. पुं. (सं.) दस्युः, परिपंथिन्, मार्गतस्करः ।

—ज़नी, सं. स्त्री. (फ़ा.) लुंठनं, मोषणं, अपहारः ।

—दारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) पथ,-करः-देयं, मार्ग-शुल्कः-कम् ।

—रीति, सं. स्त्री. (फ़ा.+सं.) परस्पर,-व्यवहारः-संसर्गः ।

—ताकना या देखना, मु., प्रतीक्ष् (भ्वा. आ. से.), प्रतिपा (प्रे. प्रतिपालयति) ।

—नापना, मु., व्यर्थं पर्यट् (भ्वा. प. से.) ।

—निकालना, मु., युक्तिं चिंत् (चु.) उपायं क्लृप् (प्रे.) ।

—पर आना, मु., सुपथे प्रवृत् (भ्वा. आ. से.), सन्मार्गं आलम्ब् (भ्वा. आ. से.) ।

—बताना, मु., स्वपदात् भ्रंश्-च्यु (प्रे.) २. मार्गं दृश् (प्रे.) ।

—रखना, मु., व्यवहृ (भ्वा. प. अ.), संसर्गं रक्ष् (भ्वा. प. से.) ।

—लेना, मु., प्रस्था (भ्वा. आ. अ.), प्रया (अ. प अ.) ।

राहत, सं. स्त्री. (अ.) सुखं, आनंदः ।

राही, सं. पुं. (फ़ा.) पांथः, पथिकः ।

राहु, सं. पुं. (सं.) विधुंतुदः, सैंहिकः-केयः, तमस् (पुं. न.), स्वर्भानुः, शीर्षकः, कबंधः ।

—ग्रास, सं. पुं. (सं.) राहु,-ग्रसनं-दर्शनं-स्पर्शः-ग्राहः-उपरागः, सूर्य-चंद्र,-ग्रहणम् ।

रिआयत, सं. स्त्री. (अ.) मूल्यन्यूनता २. अनुग्रहः, व्यवहारमार्दवं, प्रसादः ३. पक्षपातः ।

—करना, क्रि. स., मूल्यं न्यूनीकृ २. अनुग्रह् (क्र्. प. से.) ३. सपक्षपातं आचर् (भ्वा. प. से.) ।

रिआयती, वि., (अ.) प्रासादिक, आनुग्राहिक, न्यूनमूल्य ।

रिआया, सं. स्त्री. (अ.) प्रजा, दे. ।

रिक्शा, सं. स्त्री. (अं. रिक्षा) *नर,-यानं-वाहनम् ।

रिकाब, सं. स्त्री., दे. 'रकाब' ।

रिकाबी, सं. स्त्री., दे. 'तश्तरी' ।

रिकेट्स, सं. पुं. (अं.) बालग्रहः (रोगभेदः) ।

रिक्त, वि. (सं.) पार-,शून्य, शून्यगर्भ २. निर्धन ।

—हस्त, वि. (सं.) शून्यपाणि ।

रिक्थ, सं. पुं. (सं. न.) दायः, पैतृकधनम् ।

—हारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) रिक्थिन्, दायादः ।

रिज़क, सं. पुं. (अ. रिज़्क) आ-उप,-जीविका, वृत्तिः (स्त्री.) ।

रिज़र्व, वि. (अं.) रक्षित, निश्चित, नियत ।

रिज़ल्ट, सं. पुं. (अं.) परीक्षा,-फलं-परिणामः २. परिणामः, फलम् ।

रिझाना, क्रि. स., ब. 'रीझना' के. प्रे. रूप ।

रिपु, सं. पुं. (सं.) अरिः, वैरिन्, दे. 'शत्रु' ।

रिपोर्ट, सं. स्त्री. (अं.) सूचना २. विवरणिका, विवरणं, प्रतिवेदनम् ।

रिपोर्टर, सं. पुं. (फ्रें.) संवाद,-दातृ-प्रेषकः, वृत्तान्त-समाचार,-लेखकः ।

रिपोर्ताज़, सं. पुं. (अं.) घटनान्दोलनादीनां साहित्यिकविवरणं, साहित्यांगविशेषः, *रिपोर्ताजम् ।

रिफ़ार्म, सं. पुं. (अं.) संशोधनं, दोषापनयनं, संस्करणम्, संस्कारः । *सुद्धारः ।

रिफ़ार्मर, सं. पुं. (अं.) (समाज-) संशोधकः-संस्कारकः-दोषहर्तृ, *सुद्धारकः ।

रिफ़ार्मेटरी, सं. स्त्री. (अं.) कारास्थबालक-संस्कारकपाठशाला, *संशोधिका, *संस्कारिका, *सुद्धारिका ।

रिब्बन, सं. पुं. (अं.) पट्टिका ।

रिमझिम, सं. स्त्री. (अनु.) शीकर,-वर्षः-पातः ।

—होना, क्रि. अ., मंदं मंदं वृष् (भ्वा.प.से.) ।

रियासत, सं. स्त्री. (अ.) देशीयराज्यं, राज्यं २. ऐश्वर्यं, वैभवम् ।

रिवाज, सं. पुं. (अ.) दे. 'रीति' ।

रिशवत, सं. स्त्री. (अ. रिश्वत) उत्कोचः, आमिषं, ढौकनं, लंचा २. उत्कोचदानादानम् ।

—खाना, क्रि. अ., उत्कोचं ग्रह् (क्र्. प. से.)-आदा (जु. आ. अ.) ।

—ख़ोर, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) उत्कोचग्राहिन् ।

—ख़ोरी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) उत्कोच,-आदानं-ग्रहणम् ।

—देना, क्रि. स., उत्कोचं दा ।

रिश्ता, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'संबंध' ।

रिश्तेदार, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'संबंधी' ।

रिश्तेदारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'संबंध' ।

रिस, सं. स्त्री. (सं. रिष्>) कोपः, क्रोधः ।

रिसना, क्रि. अ. (सं. रसः>) बिंदुशः कणक्रमेण स्यंद् (भ्वा. आ. से.)-क्षर्-गल् (भ्वा. प. से.), री (दि. आ. अ.) २. मंदं मंदं स्रु (भ्वा. प. अ.)-प्रस्रु (अ. प. से.)-स्यंद्, री ।

रिसालदार, सं. पुं. (फ़ा.) सादि-सेना,-नीः (पुं.)-पतिः ।

रिसाला[1], सं. पुं. (अ.) सामयिक-, पत्रिका, २. पुस्त-ती ।

रिसाला[2], सं. पुं. (फ़ा.) तुरगबलं, सादिसैन्यं, अश्वारोहानीकम् ।

रिहा, वि. (फ़ा.) निर्-वि,-मुक्त, विमोचित, दे. 'मुक्त' ।

रिहाई, सं. स्त्री. (फ़ा.) (बंधनादिभ्यः) वि-, मुक्तिः (स्त्री.) उद्धारः, निस्तारः ।

रींगना, क्रि. अ., दे. 'रेंगना' ।

रींधना, क्रि. स. (सं. रंधनं) दे. 'पकाना' ।

री, अव्य. (सं. रे) अरे, भोः, अयि, हे, दे. 'अरी' ।

रीछ, सं. पुं. (सं. ऋक्षः) भल्लूकः, दे. 'भालू' ।

रीझ, सं. स्त्री. (हिं. रीझना) तुष्टिः तृप्तिः-प्रीतिः (स्त्री.), प्रसादः, २. दे. 'रीझना' सं. पुं. ।

रीझना, क्रि. अ. (सं. रंजनं) अनुरंज्-आसंज् (कर्म.), अनुरक्त-आसक्त-बद्धभाव (वि.) भू, वि-परि,-मुह् (दि. प. से.) २. तुष्-तृप् (दि. प. से.), प्रसद् (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं., अनुरागः आसक्तिः (स्त्री.) २. तुष्टिः-प्रीतिः (स्त्री.) ।

रीझा हुआ, वि., अनुरक्त, आसक्त, बद्धभाव,-वि-,मुग्ध, प्रेमिन्, प्रणयिन् ।

रीटार्ट, सं. पुं. (सं.) वकभाण्डम् ।

रीठा, सं. पुं. (सं. रिष्टः) अरिष्टः-ष्टकः, मांगल्यः, कृष्णवर्णः, अर्थसाधनः, पीतफेनः, गुच्छफलः, फेनि(णि)लः २. रिष्ट-फेनि(णि)ल,-फलम् ।

रीढ़, सं. स्त्री. (सं. रीढ़कः) पृष्ठवंशः, पृष्ठास्थि (न.), कशे(से)रु(:)(पुं. न.), कशेरुका ।

रीता, वि. (सं. 'रिक्त' दे.) ।

रीति, सं. स्त्री. (सं.) रूढ़िः (स्त्री.), आचारः, व्यवहारः प्रथा, परिपाटी-टिः (स्त्री.) २. संस्कारः, कृत्यं, विधिः, कल्पः ३. प्रकारः, विधा, पद्धतिः (स्त्री.) ४. नियमः ५. रसादीनां उपकर्त्री पदसंघटना (काव्य., उ.) वैदर्भी, गौड़ी इ.) ५. स्वभावः, प्रकृतिः (स्त्री.), धर्मः ।

—रिवाज, सं. पुं., रूढयः, आचारव्यवहाराः, संस्काराः (तीनों बहु.) ।

रीस, सं. स्त्री. (सं. ईर्ष्या) मात्सर्यं २. स्पर्द्धा, विजिगीषा ।

—करना, क्रि. अ., स्पर्ध (भ्वा. आ. से.), संघृष् (भ्वा. प. से.) । (पं.) अनुकृ ।

रुंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कबंधः, निःशीर्षकायः २. छिन्नपाणिपादो देहः ।

रुँ(रौँ) दवाना, क्रि. प्रे. व. 'रौंदना' के प्रे. रूप ।

रुंधना, क्रि. अ. (सं. रुद्ध) अव-उप,-रुध् (कर्म.), प्रतिबाध्-स्तंभ् (कर्म.) ।

रुकना, क्रि. अ., व. 'रोकना' के कर्म. के रूप ।

रुकवाना, क्रि. प्रे., व. 'रोकना' के प्रे. रूप ।

रुकाव, सं. पुं. } (हिं. रुकना) दे. 'रोक' ।
रुकावट, सं. स्त्री. }

रुक्का, सं. पुं. (अ. रुक्अह्) पत्रकं, लघुपत्रम् ।

रुक्म, सं. पुं. (सं. न.) सुवर्णं, कांचनं २. लोहं ३. रुक्मिणीभ्रातृ । वि. भास्वर ।

—रथ, सं. पुं. (सं.) रुक्मवाहनः द्रोणाचार्यः।
रुक्मिणी, सं. स्त्री. (सं.) श्रीकृष्णस्य प्रथमपत्नी, विदर्भेशभीष्मपुत्री।
रुक्मी, सं. पुं. (सं.-क्मिन्) विदर्भेश्वरभीष्मस्य ज्येष्ठपुत्रः।
रुख, सं. पुं. (फ़ा.) मुखं, वदनं, आननं, २. कपोलः, गल्लः ३. मुख-मुद्रा आकृतिः (स्त्री.) ४. भावः, आशयः ५. कृपा-दया,-दृष्टिः (स्त्री.) ५. रथ-गज,-नामकश्चतुरंगशारः। क्रि. वि., प्रति (द्वितीया के साथ), दिशायां २. समक्षं, पुरतः।
—करना या देना, मु., अवधा (जु. उ. अ.) मनोयुज् (चु.) २. अभिमुखीभू।
—बदलना या फेरना, मु., पराङ्मुखीभू २. मनोऽन्यत्र युज् (चु.), अन्यमनस्क (वि.) भू।
रुख़सत, सं. स्त्री. (अ.) प्रस्थानं, प्रयाणं २. अवकाशः दे. 'छुट्टी'।
रुखाई, सं. स्त्री. (हिं. रूखा) शुष्कता, शोषः, नीरसता २. रूक्षता, औदासीन्यं, स्नेहाभावः, उपेक्षा, रौक्ष्यम्।
रुखानी, सं. स्त्री. (सं. रोकखानं) *रोकखननी; वर्धक्युपकरणभेदः।
रुचना, क्रि. अ. (सं. रोचनं) रुच् (भ्वा. आ. से.), प्रिय-भद्र-रुचिकर प्रति-इ (कर्म.)। इष्-अभिलष् (कर्म.)।
रुचि, सं. स्त्री. (सं.) अभिरुचिः-प्रीतिः-तुष्टिः-प्रवृत्तिः (स्त्री.), छंदः, कामः २. अनुरागः, प्रेमन् (पुं. न.) ३. किरणः ४. सौन्दर्यं, छविः (स्त्री.) ५. बुभुक्षा, जिघत्सा, क्षुधा ६. आ,-स्वादः।
—कर, वि. (सं.) स्वादिष्ट, सुरस २. हृद्य, प्रिय, मनोहर, रुचिकारक।
—वर्द्धक, वि. (सं.) रुचि-कारक-कर-कारिन् २. पाचक, दीपक, अग्निवर्द्धक।
रुचिर, वि. (सं.) सुन्दर, मनोहर २. मधुर, सुस्वादु।
रुठाना, क्रि. स., व. 'रूठना' के प्रे. रूप।
रुतबा, सं. पुं. (अ.) पदं, पदवी २. मानः, प्रतिष्ठा।
रुदन, सं. पुं. (सं.) रुदितं, रोदनं, विलपनं, विलापः, क्रंदनं, क्रंदितं, अश्रुपातः।
रुद्ध, वि. (सं.) वेष्टित, वलयित, संवीत, २. मुद्रित, अ,-पिहित, आ-सं,-वृत ३. स्तंभित, निश्चलीकृत।
—कंठ, वि. (सं.) गद्गदस्वर, स्खलद्वचन २. वक्तुमसमर्थ (प्रेमादि के कारण)।
रुद्र, सं. पुं. (सं.) शिवस्य रूपविशेषः, शिवः २. गणदेवताभेदः ३. 'एकादश' इति संख्या ४. रसभेदः (काव्य.)। वि., भीम, भयंकर-भीषण।
रुद्राक्ष, सं. पुं. (सं.) (वृक्ष) तृणमेरुः, अमरः, पुष्पचामरः २. (फल) शिव-हर-नीलकंठ,-अक्षं, पावनं, भूतनाशनम्।
रुधिर, सं. पुं. (सं. न.) शोणितं, दे. 'रक्त'।
रुपया, सं. पु., (सं. रूप्यं) रूप्यकं, रूपकः, टङ्कः, रजतमुद्रा २. धनम्।
—उड़ाना, मु., धनं अपव्यय् (चु.) अथवा वृथा क्षै (प्रे.)।
—जोड़ना, मु., धनं संचि (स्वा. उ. अ.)।
—तुड़ाना, मु., दे. 'भुनाना'।
—वाला, वि., धनिक, धनाढ्य।
रुपहला, वि. (हिं. रूपा) रूप्य-रजत,-मय, राजत २. रूप्य-रजत,-वर्ण, धवल।
रुमाली, सं. स्त्री. (फ़ा. रूमाल) दे. 'लंगोट'।
रुरुआ, सं. पुं. (हिं ररना) भीषणरव उलूकभेदः।
रुलाई, सं. स्त्री. (हिं. रोना) दे. 'रुदन' २. रोदनवृत्तिः (स्त्री.), रुरुदिषा।
रुलाना, क्रि. स., व. 'रोना' के प्रे. रूप।
रुष्ट, वि. (सं.) कुपित, क्रुद्ध।
रुँधना, क्रि. स. (सं. रोधनं) (रक्षार्थं कंटकादिभिः) परि-,वेष्ट् (भ्वा. आ. से., प्रे.), परिवृ (स्वा. उ. से., प्रे.) २. परि-इ (अ. प. अ.), परिच्छद् (चु.), संवलयति (ना. धा.) संवल् (भ्वा. आ. से.) ३. अव-नि-सं-रुध् (रु. उ. अ.); पिधा (जु. उ. अ.)।
रूँ रूँ, सं. स्त्री. (अनु.) शिशु,-रुदितं-रुदनं, *रूँकारः।
—करना, क्रि. अ., मंदं मंदं रुद् (अ. प. से.)।
रू, सं. पुं. (फ़ा.) मुखं, वदनं (२-३) उपरि-अग्र,-भागः।
—स्याह, वि. (फ़ा.) अपकीर्तिमत्, कलंकित।
—स्याही, सं. स्त्री. (फ़ा.) अप-यशस् (न.), कीर्तिः (स्त्री.)।

रूई, सं. स्त्री. [सं. रोमन् (न.)] (पौदा) कर्पासः-सं-सी, कार्पासी-सिका २. (धूआ) कार्पासः, तूलः-लं, पिचुः, पिचुलः, पिचुतूलम् ।
—का गाला, सं. पुं., पिचुपिंडः-डम् ।
—दार, वि., कार्पास (–सी स्त्री.), कार्पासिक (–की स्त्री.) ।
—दार वस्त्र, सं. पुं., कर्पासं, फालं, बादरं, तूलांबरम् ।
रूक्ष, वि. (सं.) दे. 'रूखा' ।
रूख, सं. पुं. (सं. वृक्षः) पादपः, तरुः ।
रूखा, वि. (सं. रूक्ष) स्निग्धता-चिक्कणता-मसृणता-श्लक्ष्णता,-शून्य-रहित २. घृत-तैल,-हीन-रहित ३. विरस, स्वादहीन ४. शुष्क, निर्जल, नीरस ५. उदासीन, प्रेमहीन, विरक्त ६. कठोर, परुष ७. विषम, नतोन्नत ।
—सूखा, वि., रूक्षशुष्क (भोजनादि), विरस, निःस्वाद ।
रूखापन, सं. पुं., दे. 'रुखाई' ।
रूठन, सं. स्त्री. (हिं. रूठना) दे. 'रूठना' सं. पुं. ।
रूठना, क्रि. अ. (सं. रुष्ट) रुष् (दि. प. से.) अप-वि-रंज् (भ्वा. उ. से.) रज(ज्य)ति-ते, रुष्ट-कुपित-रुषित (वि.) भू । सं. पुं., रोषः, अप-वि,-रागः, प्रीति-प्रसाद-परितोष,-अभावः ।
रूठा हुआ, वि., रुषित, कुपित, अप-वि,-रक्त, कृतरोष ।
रूढ़, वि. (सं.) आ-अधि,-रूढ, उपर्यासीन २. प्रचलित, प्रसिद्ध ३. कठिन, कठोर ४. अविभाज्य (संख्या) ५. अशिष्ट, ग्राम्य ।
रूढ़ि, सं. स्त्री. (सं.) प्रथा, दे. 'रीति' (१) । २. ख्यातिः-प्रसिद्धिः (स्त्री.) ३. आ-अधि-, रोहः ४. वृद्धिः (स्त्री.) ।
रूप, सं. पुं. (सं. न.) आकारः, आकृतिः-मूर्तिः (स्त्री.), संस्थानं २. प्रकृतिः, स्वभावः ३. मुख-,सौन्दर्य-छविः (स्त्री.)-वर्णः ४. कायः, देहः ५. वेशः-षः ६. दशा ७. लक्षणम् ।
—बिगाड़ना, क्रि. स., विरूप् (चु.), आकृतिं दुष् (प्रे.) विकृ ।
—रंग, सं. पुं. (सं. न.) वर्णाकारम् ।
—रेखा, सं. स्त्री., दे. 'रूप' (१) ।
—भरना या बनाना, मु., वेषं ग्रह् (क्र्. प. से.), रूपं धृ (भ्वा. प. अ., चु.) ।
रूपक, सं. पुं. (सं. न.) नाटकं २. अर्थालंकार-भेदः (काव्य.) । सं. पुं., दे. 'रुपया' ।
रूपवती, वि. (सं.) सुरूपिणी, वरवर्णिनी ।
रूपवान्, वि. (सं.-वत्) सुन्दर, सुरूप, रूपशालिन् ।
रूपा, सं. पुं. (सं. रूप्यं) रजतं, श्वेतं, शुभ्रं, सितं, दे. 'चाँदी' ।
रूपी, वि. (सं.-पिन्) रूपान्वित, रूपधारिन् २. तुल्य, समान ।
रूपोपजीविनी, सं. स्त्री. (सं.) वेश्या, वारांगना ।
रूपोपजीवी, सं. पुं. (सं.-विन्) दे. 'बहुरूपिया' ।
रूपोश, वि. (फ़ा.) (दंडभयात्) पलायित-गुप्त-गूढ-प्रच्छन्न ।
रूपोशी, सं. स्त्री. (फ़ा.) (दंडादिभयात्) गुप्तिः (स्त्री.), अज्ञातवासः, प्रच्छन्नता ।
रूप्यक, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'रुपया' ।
रूबरू, क्रि. वि. (फ़ा.) अभि-सं,-मुखं-मुखे, पुरः, पुरतः (सब अव्य.) ।
रूमाल, सं. पुं. (फ़ा.) वरकं, कर,-वस्त्रं-पुः (पुं.), कर्पटः ।
—पर रूमाल भिगोना, मु., अत्यधिकं रुद् (अ. प. से.), अश्रुधाराः प्रवह् (प्रे.), वाष्पवर्षं कृ ।
रूल, सं. पुं. (अं) नियमः, विधिः २. पत्ररेखा ३. *रेखादंडः ।
—दार, वि. (अं+फ़ा) रेखांकित, सरेख (पत्रादि) ।
रूलर, सं. पुं. (अं.) *रेखादंडः २. प्रमाणपट्टिका ३. शासकः ।
रूस, सं. पुं. (फा.) *रूसः, देशविशेषः ।
रूसी, सं. पुं. (फा.) रूसवासिन् । सं. स्त्री., रूसभाषा ।
रूह, सं. स्त्री. (अ.) जीव-, आत्मन् (पुं.) २. तत्त्वं, सारः-रम् ।
—केवड़ा, सं. स्त्री., केतकीसारः ।
—गुलाब, सं. स्त्री., जपा,-तत्त्वं-सारः ।
रेंक, सं. स्त्री. (हिं. रेंकना) *रेंकारः, खर-गर्दभ,-नादः, चि(ची)त्कारः-, हेषः-षा-षितम् ।
रेंकना, क्रि. अ. (अनु.) आरट् (भ्वा. प. से.), रेंकृ, चीत्कृ, हेष्-हेष् (भ्वा. आ. से.) २. परुषं गै (भ्वा. प. अ.) ।

रेंगटा, सं. पुं. (हि. रेंकना) गर्दभार्भकः, रासभशावकः ।
रेंगना, क्रि. अ. (सं. रिंगणं) रिंग्-(भ्वा. प. से.), सृप् (भ्वा. प. अ.), उरसा गम् २. निभृतं-शनैः-अतिमंदं चल् (भ्वा. प. से.)-सृप् । सं. पुं., रिंगणं, सर्पणं, उरसा गमनं, शनैः चलनम् ।
रेंगनेवाला, सं. पुं., उरोगामिन्, सर्पिन् ।
रेंट-टा, सं. पुं. (देश.) सिंघाणं, सिंहाणं-नं, नासामलम् ।
रेंड़, सं. पुं. (सं. एरंडः) अलंबकः, हस्तपर्णः ।
रेंड़ी, सं. स्त्री. (हिं. रेंड़) ऐरंडबीजम् ।
—का तेल, सं. पुं., एरंडतैलम् ।
रेंदी, सं. स्त्री. (देश.) क्षुद्रख(र्बु)र्बूजं २. क्षुद्र-तरंबुजं (पं. रेंडी) ।
रें रें, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'रूँ रूँ' ।
रे, अव्य. (सं.) अरे, अयि, भोः (सब अव्य.) ।
रे, सं. पुं. (सं. ऋषभः) ऋषभस्वरः (संगीत) ।
रेख, सं. स्त्री. (सं. रेखा) दे. 'रेखा' २. चिह्न ३. संख्या, गणना ४. नवश्मश्रु (न.), श्मश्रूद्भेदः ।
रेखांश, सं. पुं. (सं.) द्राघिमांशः ।
रेखा, सं. स्त्री. (सं.) रेषा, लेखा, दंडाकार-लिपिः (स्त्री.) २. चिह्नं, अंकः ३. गणना, संख्या ४. आकारः ५. पाणिपादादिरेखा (सामुद्रिक) ६. हीरकदोषभेदः ७. भाग्यम् ।
—गणित, सं. पुं. (सं. न.) भू-ज्या,-मितिः (स्त्री.) ।
कर्म—, सं. स्त्री. (सं.) भाग्यलेखः, दैवम् ।
रेगिस्तान, सं. पुं. (फ़ा.) मरुः, मरु,-स्थलं-भूमिः (स्त्री.), खिलं, धन्वन् (पुं.), ऊषरः-रम् ।
रेचक, वि. (स.)वि-,रेचक-रेचन, दे. 'दस्तावर' ।
रेचन, सं. पुं. (सं. न.) वि-,रेकः, प्रस्कंदनं, रेचना, विरेचनं, उदरशोधनम् । सं. पुं., सारकं वि,-रेचकं-रेचनम् ।
रेज़ा, सं. पुं. (फ़ा.) लवः, लेशः, अणुः, कणः ।
रेजीमेंट, सं. स्त्री. (अं.) सैन्य,-दलं-गुल्मम् ।
रेट, सं. पुं. (अं.) अर्घः, मूल्यम् ।
रेडियम, सं. पुं. (अं.) *रेडियमं, धातुभेदः । २. तेजातु (न.) ।
रेणु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) पांशुः-सुः, धूली-लिः (स्त्री.) २. वालुकः, सिकता ३. कणः-णिका ।
—रूषित, वि. (सं.) धूलिधूसरित २. गर्भ... ।

रेणुका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'रेणु' १, २, ३. जमदग्निपत्नी, परशुरामजननी ।
रेत, सं. पुं. [सं.-तस् (न.)] वीर्यं २. पारदः ३. जलम् ।
रेत, सं. स्त्री. (सं. रेतजा) वालुका, सिकता, सिक्ता, शीतला, महा-,सूक्ष्मा ।
रेतना, क्रि. स. (हिं. रेत) व्रश्चन्या घृष् (भ्वा. प. से.), लोहमार्जन्या श्लक्ष्णीकृ २. व्रश्चन्यादिभिः शनैःशनैः कृत् (तु. प. से.) । सं. पुं., लोहमार्जन्या घर्षणं-श्लक्ष्णीकरणं-कर्तनं-छेदनम् ।
रेतल-ला, वि., दे. 'रेतीला' ।
रेता, सं. पुं. (हिं. रेत) दे. 'रेत' २. धूली-लिः (स्त्री.) ३. सिकतिलस्थलम् ।
रेतिया, सं. पुं. (हिं. रेतना) (लोहमार्जन्या) घर्षकः ।
रेती[1], सं. स्त्री. (हिं. रेतना) लोहमार्जनी, व्रश्चनः*नी ।
रेती[2], सं. स्त्री. (हिं. रेत) पुलिनं, सैकतं २. सरिन्मध्ये सिकतिलद्वीपः-पम् ।
रेतीला, वि. (हिं. रेत) सिकतिल, सैकत, वालुका-सिकता,-मय-युत ।
रेफ, सं. पुं. (सं.) रवर्णः, रकारः (र) २. वर्णा-न्तरमूर्धस्थो रकारः (उ., दर्प) ।
रेल[1], सं. स्त्री. (अं.) लोहपथभागः ।
—की लाइन, सं. स्त्री., लोह-,पथः-सारणी-मार्गः ।
—गाड़ी, सं. स्त्री., वाष्पशकटी ।
रेल[2], सं. स्त्री. (हिं. रेलना) धारा, प्रवाहः २. आधिक्यं, बाहुल्यम् ।
—पेल, सं. स्त्री. जनौघः, जनसंमर्दः २. बाहुल्यं
रेलना, क्रि. स. (देश.) दे. 'धकेलना' ।
रेलवे, सं. स्त्री. (अं.) लोहपथः २. लोहपथ-विभागः ।
रेला, सं. पुं. (देश.) दे. 'धक्का' २. दे. 'धावा' ३. प्रवाहः, आप्लावः ४. पंक्तिः, राजिः (स्त्री.) ।
रेवंद, सं. पुं. (फ़ा.) पीतमूली, गन्धिनी ।
रेवड़, सं. पुं. (देश.) (अजमेषादीनां) यूथं, वृंदं, समजः, कुलं, षण्डः-ण्डम् ।
रेवड़ी, सं. स्त्री. (देश.) *गुडतिलगुली ।
रेवती, सं. स्त्री. (सं.) नक्षत्रविशेषः २. बलदेव-पत्नी, रेवतपुत्री ३. गौः (स्त्री.) ४. दुर्गा ।
—रमण, सं. पुं. (सं.) बल,-देवः-रामः ।

रेवा, सं. स्त्री. (सं.) नर्मदा २. कामपत्नी, रतिः (स्त्री.) ३. दुर्गा।

रेश, सं. स्त्री. (फ़ा.) दाढ़िका, कूर्चः, कूर्चम्।

—सफ़ेद, सं. पुं. (फ़ा.) वृद्धः, स्थविरः,जरठः।

रेशम, सं. पुं. (फ़ा.) कौशेयं, कीट,-जं-सूत्रं, कौशं, पट्टः-ट्टम्।

—का कीड़ा, सं. पुं., तंतु-पट्ट,-कीटः।

रेशमी, वि. (फ़ा.) कौश, कौशिक, कौशेय, पट्ट-, कौश—।

—कपड़ा, सं. पुं., कौशिकं, चीन-पट्ट,-अंशुकं, दुकूलं, कौशांबरम्।

रेशा, सं. पुं. (फ़ा.) (फलवल्कलादीनां) गुणः, तंतुः, सूत्रं २. नाडी, दे. 'रग' ३. दे. 'जुक़ाम'।

रेशेदार, वि. (फ़ा.) सूत्र-तंतु,-मत्-युक्त।

रेहन, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'गिरवी'।

रैदास, सं. पुं. (सं. राजदासः) भक्तविशेषः, श्रीरामानंदशिष्यविशेषः २. चर्मकारः।

रैन, सं. स्त्री. (सं. रजनी) दे. 'रात'।

रैयत, सं. स्त्री. (अ.) प्रजा, दे.।

रोआँ, सं. पुं., दे. 'रोंगटा'।

रोंगटा, सं. पुं. [सं. रोमन् (न.)] लोमन् (न.), अंग-चर्म-त्वग्,-जं, तनुरुहम्।

रोंगटे खड़े होना, मु., रोमांचः-रोमहर्षः-रोमोद्गमः जन् (दि. आ. से.), दे. 'रोमांच'।

रोक¹, सं. स्त्री. (सं. रोधक>) विरामः, विरतिः (स्त्री.), गतिविच्छेदः, अवरोधः २. नि-प्रति,-षेधः, प्रत्याख्यानं ३. बाधः-धा, विघ्नः, प्रतिबंधः ४. वरणः, वृतिः (स्त्री.)।

—टोक, सं. स्त्री., दे. 'रोक' (२-३)।

बे—टोक, क्रि. वि., निरंतरायं, निर्विघ्नं, निर्बाधं (सब अव्य.)।

रोक², सं. पुं. (सं.) प्रस्तुतटंकैर्व्यवहारः २. टंकः, नाणकं, मुद्रा, दे. 'नकद' ३. दीप्तिः (स्त्री.)।

रोकड़, सं. स्त्री. (सं. रोकः>) दे. 'रोक' (२) २. मूलद्रव्यं, दे. 'पूंजी'।

—बही, सं. स्त्री. (हि. रोकड़) मूलद्रव्य-आयव्यय,-लेखनपञ्जिका।

रोकड़िया, सं. पुं. (हि. रोकड़+प्र-इया), आयव्यय-मूलद्रव्य-, लेखकः-प्रस्तोता।

रोकना, क्रि. स., (हिं. रोक) अव-नि-प्रति-सं-, रुध् (रु. उ. अ.), अवस्था (प्रे.), प्रतिबंध् (क्र. प. अ.), वि,-स्तंभ् (क्र्. प. से.) २. नि-विनि-,वृ (प्रे.), नि-प्रति-षिध् (भ्वा. प. से.), निवृत् (प्रे.) ३. वशीकृ, निग्रह् (क्र्. प. से.), नियम् (भ्वा. प. अ.) ४. प्रतियुध् (दि. आ. अ.), शत्रुसैन्यं प्रतिबंध्-प्रतिरुध्। सं. पुं., अव-नि-प्रति-सं-,रोधः-रोधनं, निवारणं, नियमनं, निग्रहः-हणं, प्रतियोधनं, नि-प्रति,—षेधः-षेधनम्।

रोकनेवाला, सं. पुं., अव-नि-,रोधकः, निवारकः, प्रतिषेधकः, प्रतियोधः इ.।

रोका हुआ, वि.,अव-नि-, रुद्ध, निवारित, निगृहीत इ.।

रोग, सं. पुं. (सं.) रुज् (स्त्री.), रुजा,व्याधिः, गदः,अ(आ)मः, आमयः, उपतापः, मृत्युभृत्यः।

—कारक, वि. (सं.) व्याधिजनक।

—ग्रस्त, वि. (सं.) रोगाक्रांत, दे. 'रोगी'।

—नाशक, वि. (सं.) रोग-गद, हारिन्-हर, स्वास्थ्यकर।

—निदान, सं. पुं. (सं. न.) रोग,-निर्णयः-निरूपणम्।

—राज, सं. पुं. (सं.) राज,-यक्ष्मन् (पुं.)-यक्ष्मः।

—लक्षण, सं. पुं. (सं. न.) व्याधिचिह्नं २. रोगनिदानम्।

—लगना, क्रि. अ., रोगेण ग्रस्-उपसृज्-बाध् (कर्म.)।

रोग़न, सं. पुं. (फ़ा. रौग़न) तैलं, दे. 'तेल' २. कुक्कुभः, रंगः, रागः, वर्णः-र्णकः-र्णिका।

—करना, क्रि. स., रंज् (प्रे.), वर्ण् (चु.), २. कुक्कुभेन लिप् (तु. प. अ.)।

—ज़र्द, सं. पुं. (फ़ा.) घृतं, आज्यम्।

रोगी, वि. (सं.) व्याधित, रुग्ण, रोग-युक्त-पीडित-आर्त्त-आक्रांत, आतुर, अभ्यांत, अभ्यमित, सामयः, आमयाविन्, मंद, विकृत। [रोगिणी (स्त्री.) = रुग्णा, व्याधिता]।

रोचक, वि. (सं.) आह्लादक, मनोरंजक २. दे. 'रुचिकर'(२)।

रोचन, वि. (सं.) रोचक, रुचिकर २. दीप्तिमत्, छविमत् २. हृद्य, प्रिय।

रोचना, सं. स्त्री. (सं.) कोकनदं, रक्तकमलं २. गोरोचना ३. वरनारी, सुन्दरी ४. दे. 'वंशलोचन'।

रोज़, सं. पुं. (फ़ा.) दिनं, दिवसः, अहन् (न.)। क्रि. वि., दिने दिने, प्रति-अनु,-दिनं-अहम्।

—बरोज़, } क्रि. वि., दे., 'रोज़' क्रि. वि.।
—मर्रा,
—रोज़,
रोज़गार, सं. पुं. (फ़ा.) आ-उप,-जीविका, वृत्तिः (स्त्री.), व्यवसायः २. वाणिज्यं, वणिक्-कर्मन् (न.)।
रोज़नामचा, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'डायरी' २. दैनिकायव्ययपंजिका, दैनिकलेखः।
रोज़ा, सं. पुं. (फ़ा.) व्रतं, उपवासः, उपोषणं-षितम् (इस्लाम)।
रोज़ाना, क्रि. वि. (फ़ा.) प्रतिदिनं २.सर्वदा।
रोज़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दैनिकान्नं, प्रात्याहिक-भोजनं २. आ-उप,-जीविका, व्यवसायः।
रोज़ीना, वि. (फ़ा.) प्रात्यहिक, दैनिक। सं. पुं., प्रात्याहिक-दैनिक,-वृत्तिः-भृतिः (स्त्री.)-वेतनम्।
रोट, सं. पुं. (हिं. रोटी) बृहत्-स्थूल,-रोटि(ट)का २. मिष्टस्थूलरोटिका।
रोटी, सं. स्त्री. (सं. रोटिका) रोटका २. भोजनं, सिद्धान्नम्।
—**कपड़ा,** मु., भोजन-वस्त्रं, निर्वाहसामग्री २. ग्रासाच्छादनमात्रम्।
—**दाल,** मु., सामान्य-साधारण,-भोजनं, अन्नो-दकमात्रम्।
—**दाल चलना,** मु., जीवनं निर्वह्, सामान्य-निर्वाहः भू।
किसी के यहाँ—**तोड़ना,** मु., परान्नेन जीव् (भ्वा. प. से.), परार्पितं भुज् (रु. आ. अ.)।
रोड़ा, सं. पुं. (सं. लोष्टः-ष्टं) लोष्टकः, लोष्टुः पाषाण-प्रस्तर-इष्टका,-खण्डः-शकलः।
—**अटकाना, या डालना,** मु., बाध् (भ्वा. अ. से.), अव-उप-नि-प्रति-सं-,रुध् (रु. प. अ.), प्रतिबंध (क्रू. प. अ.)।
रोदन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'रुदन'।
रोधन, सं. पुं. (सं.) अवरोधः दे. 'रोक' २. दमनम्।
रोना, क्रि. अ. (सं. रोदनं) रुद् (अ. प. से., अश्रूणि पत् (प्रे.)-विमुच् (तु. प. अ.), आ-,क्रन्द् (भ्वा. प. से.), क्रुश् (भ्वा. प. अ.), शुच् (भ्वा. प. से.) २. दे. 'रूठना' ३. अनुतप् (दि. आ. अ.), अनुशी (अ. आ. से.) पश्चात्तापं कृ। क्रि. स., अनुशुच्-विलप् (भ्वा. प. से.), परिदेव् (भ्वा. आ. से.)। सं. पुं., दे. 'रुदन'।
रोनी, वि. स्त्री. (हिं. रोना) विषण्णा, शोकमयी।
रोनेवाला, सं. पुं., रोदकः, अश्रुमोचकः, आक्रन्दकः २. अनुशोचकः, परिदेवकः, विलापकः।
रोपना, क्रि. स. (सं. रोपणं) दे. 'बोना'।
रोब, सं. पुं. (अ. रुअब) आतंकः, तेजस्(न.), प्रतापः, प्रभावः, प्राबल्यम्।
—**दाब,** सं. पुं. (अ.) दे. 'रोब'।
—**दार,** वि. (अ.+फ़ा.) तेजस्विन्, प्रतापिन्, प्रभावशालिन्।
—**जमाना,** मु., स्वप्रभावं जन् (प्रे.), स्वगौरवं प्रतिष्ठा (प्रे.), निजतेजसा अभिभू।
—**में आना,** मु., परतेजसा अभिभू (कर्म.), परप्रतापेन नम् (भ्वा. प. अ.)।
रोबीला, (अ.) दे. 'रोबदार'।
रोमंथ, सं. पुं. (सं.) उद्गीर्य चर्वणं, दे. 'जुगाली'।
रोम[1], सं. पुं. [सं. रोमन् (न.)] दे. 'रोंगटा'
—**कूप,** सं. पुं. (सं. पुं. न.) लोम,-विवरं-छिद्रं, रोम,-द्वारं-गर्तः।
—**राजी,** सं. स्त्री. (सं.) रो(लो)मलता, रोमाली, रोमावली-लिः (स्त्री.)।
—**हर्ष,** सं. पुं. (सं.) रोमांचः।
—**हर्षण,** सं. पुं. (सं. न.) रोम,-उद्गमः-उद्भेदः-हर्षः। वि. (सं.) रोमांचकर, भीषण।
—**रोम में,** मु., सर्वदेहे, संपूर्णशरीरे।
—**रोम से,** मु., सर्वात्मना, साभिनिवेशम्।
रोम[2], सं. पुं. (सं. रोमकः) रोम,-पत्तनं-नगरं, रोमम्।
—**वासी,** सं. पुं. (सं.-सिनः) रोमकाः (प्रायः बहु.)।
रोमन, सं. पुं. (अं.) रोम,-निवासिन्-वास्तव्यः। वि. रोम,-सम्बन्धिन्,-विषयक।
—**कैथलिक,** सं. पुं., ख्रिस्तसम्प्रदायविशेषः।
रोमांच, सं. पुं. (सं.) रोम,-उद्गमः-उद्भेदः-विकारः-विक्रिया-हर्षः-हर्षणं, पुलकः, कंटकः-कं, उद्धर्षणं, उल्लसनं, उल्वणकम्।
रोमांचित, वि. (सं.) हृष्टरो(लो)मन्, पुलकित, कंटकित, सपुलक।
—**करना,** क्रि. स., कंटकयति-पुलकयति-रोमांचयति (ना. धा.)।
—**होना,** क्रि. अ., पुलकित-कंटकित (वि.) जन् (दि. आ. से.)।

रोयां, सं. पुं., दे. 'रोंगटा' तथा 'रोम' (१)।

रोलर, सं. पुं. (अं.) (१-२) समीकरण-पिंडी-करण,-यंत्रं ३. दे. 'बेलना'।

रोला[1], सं. पुं. (सं. रावण) कोलाहलः, कलकलः तुमुलं, महा,-शब्दः-स्वनः-ध्वनः-घोषः-रवः-रावः, निनादः, निस्वनः, उत्क्रोशः, उद्घोषः २. तुमुलयुद्धम्।

—डालना या मचाना, क्रि. स., कलकलं-कोलाहलं कृ, वि,-रु (अ. प. अ.), उत्क्रुश (भ्वा. प. अ.)।

रोला[2], सं. पुं. (सं.) चतुर्विंशतिमात्रिक-छन्दस् (न.)।

रोली, सं. स्त्री. (सं. रोचनी>) चूर्णहरिद्रा निर्मितं तिलकोपयोगि रक्तचूर्णम्।

रोशन, वि. (फ़ा.) प्रकाशित, प्रदीप्त २. भास्वर, प्रकाशमान ३. प्र-वि,-ख्यात ४. प्रकट, व्यक्त।

—दान, सं. पुं. (फ़ा.) गवाक्षः-छदिर्वातायनम्।

—दिमाग़, वि., प्राज्ञ, बुद्धिमत्।

रोशनाई, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'मसी' २. प्रकाशः।

रोशनी, सं. स्त्री. (फ़ा.) प्रकाशः, आलोकः २. दीपः ३. दीपमालिका ४. ज्ञानालोकः।

रोष, सं. पुं. (सं.) कोपः, क्रोधः, मन्युः।

रोहिणी, सं. स्त्री. (सं.) धेनुः (स्त्री.), गौः (स्त्री.) २. तडित् (स्त्री.), चपला ३. नक्षत्र-विशेषः ४. बलदेवजननी।

—पति, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः २. वसुदेवः।

रोहित, वि. (सं.) रक्त, लोहित। सं. पुं., रुधिरं, रक्तं २. रक्त,-वर्णः-रंगः (३-४) मृग-मीन,-भेदः ५. हरिश्चन्द्रपुत्रः।

रोहू, सं. स्त्री. (सं. रोहिषः) (१-२) मीन-मृग,-भेदः।

रौंद(ध)ना, क्रि. स. (सं. मर्दनं ?) पादाभ्यां मृद् (क्र्. प. से.)-क्षुद् (रु. प. अ.)।

रौ, सं. स्त्री. (फ़ा.) धारा, प्रवाहः, मंदाकः, स्रोतस् (न.)।

रौग़न, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'रोगन'।

रौज़ा, सं. पुं. (अ.) समाधिः, चैत्यः २. उद्यानम्।

रौद्र, वि. (सं.) रुद्र,-विषयक-संबंधिन् २. भीम, भीषण ३. चंड, संरब्ध, कोपान्वित। सं. पुं. (सं.) रुद्रोपासकः २. कोपः ३. रसभेदः (काव्य.) ४. यमः।

रौनक, सं. स्त्री. (अ.) कांतिः-दीप्तिः-द्युतिः (स्त्री.) २. श्रीः (स्त्री.), शोभा, छटा ३. जन-ओघः-समुदायः।

रौप्य, सं. पुं. (सं. न.) रूप्यं, रजतम्। वि. (सं.) राजत, रजतमय, रजतोपम।

रौरव, वि. (सं.) भीम, घोर २. धूर्त, कापटिक ३. रुरुसंबंधिन्। सं. पुं. (सं.) नरकविशेषः।

रौला, सं. पुं., दे. 'रोला'।

रौशन, वि., दे. 'रोशन'।

ल

ल, देवनागरीवर्णमालाया अष्टाविंशो व्यंजनवर्णः, लकारः।

लंक, सं. स्त्री. (सं. लंका, दे.)।

—नाथ-नायक-पति, सं. पुं. (सं.) रावणः, दशाननः।

लंका, सं. स्त्री. (सं.) रक्षःपुरी, रावणराज-धानी २. भारतदक्षिणवर्तिद्वीपविशेषः।

—पति, सं. पुं. (सं.) दे. 'रावण'।

लंग[1], सं. स्त्री., दे. 'लांग'।

लंग[2], सं. पुं. (सं.) दे. 'लँगड़ापन'।

लँगड़ा, वि. (सं. लंगः>) पंगु (-गू स्त्री.), खंज, श्रोण, खोड-र-ल, विचलगति २. एकपाद-हीन (मेज़ आदि)। सं. पुं., उत्तमाम्रभेदः।

लँगड़ाना, क्रि. अ. (हिं. लगड़ा) खंज्-खोल्-खोर्-खोड्-लंग् (भ्वा. प. से.), सलंगं चल् (भ्वा. प. से.)। सं. पुं., खंजनं, खोडनं-रणं-लनं, लंगनं, लंग-विकल,-गतिः (स्त्री.)।

लगड़ापन, सं. पुं. (हिं. लंगड़ा) खंजता, पंगुता, खोड(रल)ता, लंगः, विकलगतिः (स्त्री.)।

लंगर, सं. पुं. (फ़ा.) लांगलं, पोतस्तंभनं २. महानसं, पाकशाला ३. अनाथ-दरिद्र,-भोजनं ४. 'लंगोट' ५. लोहमयीस्थूल-शृंखला ६. लंबकः, लोलकः ७. दुष्टधेनूनां गललगुडः। वि., भारवत्, गुरु २. खल, दुष्ट।

—ख़ाना, सं. पुं. (फ़ा.) *क्षेत्रं, अनाथभोजन-शाला।

—गाह, सं. पुं. (फ़ा.) नौकाशयः, नौकाश्रयः।

—करना, मु., कुत्सितं चेष्ट् (भ्वा. आ. से.), कुचेष्टां कृ ।

लंगूर, सं. पुं. (सं. लांगूलिन्) कपिः, मर्कटः, वानरः २. कपि-वानर,-पुच्छं, लांगु(गू)लं ३. श्वेतलोमा कृष्णमुखो वानरभेदः ।

—फल, सं. पुं. (हिं.+सं.) नारिकेलः, लांगलिन् ।

लंगूल, सं. पुं. (सं. न.) लांगूलं, पुच्छं, दे. 'पुच्छ' ।

लँगोट-टा, सं. पुं. (सं. लिंगं+हिं. ओट) पुटी, धटी, कौपीनं, लिंगावरणम् ।

—बंद, वि., ब्रह्मचारिन्, ऊर्ध्वरेतस् ।

लँगोटिया यार, सं. पुं. (हिं. फ़ा.) सह-पांशु-क्रीडिन् शैशव-बाल्य,-मित्रं सखि (पुं.) ।

—में मस्त, मु., दारिद्र्येऽपि प्रसन्न, अकिंचनत्वेऽपि संतुष्ट ।

लँगोटी, सं. स्त्री. (हिं. लँगोट) दे. 'कछनी' २. लघु,-पुटी-कौपीनं, धटिका ।

लंघन, सं. पुं. (सं. न.) उपवासः, उपोषणं-षितं, अनाहार-,व्रतं २. दे. 'लाँघना' सं. पुं. प्लवनं ३. अति,-क्रमणं-क्रमः,नियम,-भंगः-उल्लंघनं ४. घोटकानां अतित्वरितगतिः (स्त्री.) ।

लंघना, क्रि. स. (सं. लंघनं) दे. 'लाँघना' ।

लंच, सं. पुं. (अं.) मध्याह्न-माध्यन्दिन,-भोजनम् ।

लंठ, वि. (हिं. लट्ठ) जड, मूर्ख २. धृष्ट ।

लंडूरा, वि. (देश.) अलांगु(गू)ल, छिन्नपुच्छ, लूसहीन (खगादि) २. परित्यक्त, निराश्रय ।

लंप, सं. पुं. (अं. लैंप) दे. 'लालटेन' ।

लंपट, वि. (सं.) लिंपट, अभिक, कामिन्, कामुक, विषय-काम,-आसक्त, रतेच्छु, स्मरार्त्त, व्यभिचारिन्, दुराचारिन् ।

लंपटता, सं. स्त्री. (सं.) व्यभिचारीः, विषयासक्तिः (स्त्री.), कामुकता, अभिकता, लांपट्यं, दुराचारः ।

लंब, सं. पुं. (सं.) लंबकः (= अमूद) । वि. (सं.) दे. 'लंबा' ।

—कर्ण, सं. पुं. (सं.) अजः २. गजः ३. खरः ४. शशः ५. राक्षसः ६. श्येनः । वि. (सं.) दीर्घश्रवण ।

—ग्रीव, सं. पुं. (सं.) उष्ट्रः, क्रमेलकः ।

लंबतड़ंग, वि. (सं. लंब+तालः+अंगं) तालतुंग, अत्युच्च, अत्युच्छ्रित ।

लंबा, वि. (सं. लंब) दीर्घ, दीर्घ,-आकार-परिमाण, आयत, आयामवत् २. उच्च, प्रांशु, तुंग, उच्छ्रित ३. विशाल, महत्, बहु, अधिक ।

—करना, क्रि. स., दीर्घी-लंबी-आयती-वितती कृ, आयम् (भ्वा. उ. अ.), विस्तृ-प्रसृ (प्रे.) प्र-वि,-तन् (त. उ. से.) । मु., प्रस्था (प्रे.) २. भूमौ अवपत् (प्रे.) ।

—चौड़ा, वि., विशाल, विपुल, महत्, बृहत्, लंबोरु, आयतविस्तृत ।

—होना, क्रि. अ., दीर्घीभू, विस्तृ-प्रतन्-आयम् (कर्म.) । मु., प्रस्था (भ्वा. आ. अ.), प्रया (अ. प. अ.) ।

लंबाई, सं. स्त्री. (हिं. लंबा) दीर्घता-त्वं, दैर्घ्य-र्घं, द्राघिमन् (पुं.), आयामः, आयमनं, आयतिः (स्त्री.) लंबता, आनाहः २. उच्चता ।

—चौड़ाई, सं. स्त्री., आनाहपरि(री)णाहौ, दीर्घत्वपृथुत्वे, आयामविस्तारौ (सब द्वि.) २. मानं, प्र-परि,-माणम् ।

लंबान, सं. स्त्री. (हिं. लंबा) दे. 'लंबाई' ।

लंबी, वि. स्त्री. (हिं. लंबा) दीर्घा, आयता, आयामवती ।

—तानना, मु., निश्चिंतं शी (अ. प. से.) ।

—सांस भरना, मु., दीर्घं निःश्वस् (अ.प.से.) ।

लंबोतरा, वि. (हिं. लंबा) दीर्घचतुरस्र -. अंड,-आकार-आकृति ।

लंबोदर, वि. (सं.) तुंदिक-भ-ल-त । सं. पुं. (सं.) गणेशः २. औदरिकः, घस्मरः ।

लकड़बग्घा, सं. पुं. (हिं. लकड़+बाघ) ईहावृकः, *लगुडव्याघ्रः ।

लकड़फोड़, सं. पुं. (हिं. लकड़+फोड़ना) दार्वाघाटः, काष्ठकूटः ।

लकड़हारा, सं. पुं. (हिं. लकड़+हारा) काष्ठिकः, काष्ठछिद्, *लगुडहारः ।

लकड़ा, सं. पुं. (सं. लकुटः) लगुडः-रः-लः, स्थूल-बृहत्,-काष्ठं-दारु (न.) ।

लकड़ी, सं. स्त्री. (हिं. लकड़ा) काष्ठं, दारु (न.) २. इंधनं, एधः, दंडः, यष्टिः (स्त्री), वेत्रं ३. दे. 'गतका' ।

—देना, मु., अंत्येष्टिं कृ, शवं दह् (भ्वा.प.अ.) ।

लक़ब, सं. पुं. (अ.) उपाधिः, उपनामन् (न.) ।

लक़्लक़, सं. पुं. (अ.) लंबग्रीवो जलखगभेदः, *लकलकः ।

लक़्वा, सं. पुं. (अ.) अर्दितम् ।
लकीर, सं. स्त्री. (सं. लेखा) रेषा-खा, दंडाकारलिपिः (स्त्री.) २. पंक्तिः-श्रेणिः-आलिः (स्त्री.) ।
—का फ़क़ीर, मु., विवेकशून्य, अंध,-अनुगामिन्-अनुयायिन्-अनुवर्तिन्, परंपरानुसारिन् ।
—पर चलना, } मु., अंधवत्-अनुगम् (भ्वा. प.अ.)-अनुया(अ.प.अ.) ।
—पीटना, }
लकुट, सं. पुं. (सं.) लगुडः, यष्टिः (स्त्री.), दंडः ।
लक्कड़, सं. पुं., दे. 'लकड़ा' ।
लक्का, सं. पुं. (अ.) व्यजनपुच्छः, पारावतः, कपोतभेदः ।
लक्ष, वि. तथा सं. पुं. (सं.) दे. 'लाख' ।
लक्षक, वि. (सं.) प्रकटयितृ, प्रकाशक । सं. पुं. (सं.) लक्ष्यार्थप्रकाशकः शब्दः । (सं. न.) दे. 'लाख' ।
लक्षण, सं. पुं. (सं. न.) अंकः, चिह्नं, लिंगं, लांछनं, व्यंजनं; अभिज्ञानम् । २. परिभाषा, परिच्छेदः, निर्देशः ३. विशिष्टलिंगं, विशेषः ४. चरित्रं, आचारः ।
लक्षणा, सं. स्त्री. (सं.) शब्दशक्तिभेदः, शक्यसंबंधः (सा.) २. सारसी ३. हंसी ।
लक्षित, वि. (सं.) निर्दिष्ट, ज्ञापित २. दृष्ट, वीक्षित ३. अनुमित, तर्कित ४. चिह्नित, अंकित ।
लक्ष्मण, सं. पुं. (सं.) रामानुजः, सौमित्रिः २. दुर्योधनपुत्रविशेषः ३. सारसः ।
लक्ष्मी, सं. स्त्री. (सं.) श्रीः, कमला, पद्मा, पद्मालया, हरि,-प्रिया-वल्लभा, इंदिरा, मा, रमा, क्षीराब्धितनया, भार्गवी, लोकमातृ (स्त्री.) २. धनं, संपद् (स्त्री.) ३. छविः (स्त्री.), शोभा ४. दुर्गा ५. सीता ६. वीरनारी ७. गृहस्वामिनी ।
—नारायण, सं. पुं. (सं.) लक्ष्मीजनार्दनः, शालग्रामभेदः ।
—पति, सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. श्रीकृष्णः ३. नृपः ।
लक्ष्मीश, सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. आम्रवृक्षः ३. धनाढ्यः ।
लक्ष्य, सं. पुं. (सं. न.) शरव्यं, लक्षं, वेध्यं, वेधं, प्रतिकायः २. निंदा-आक्षेप-उपालंभ,-विषयः ३. आशयः, उद्देशः, अभि-,इष्टं, मनोरथः, ईप्सितं ४. लक्ष्यार्थः । वि., दर्शनीय, अवलोकनीय ।
—वेधी, सं. पुं. (सं.-धिन्) वेध्यवेधकः ।
लखपती, सं. पुं. (सं. लक्षपतिः) लक्ष,-ईश्वरः-अधीशः २. धनिकः, धनाढ्यः ।
लखेरा, सं. पुं. (हिं. लाख) लाक्षा-जतु,-कारः २. हिंदूपजातिभेदः ३. कुक्कुभ,-लेपकः-लेपिन् ।
लग, क्रि. वि. (सं. लग् >) दे. 'तक', २. समीपं पे । अव्य.,सह, सार्द्धं २. दे. 'लिए' ।
—भग, क्रि. वि. प्रायः, प्रायशः, प्रायेण,–प्राय, -कल्प, उप-,आसन्न– ।
लगन[1], सं. स्त्री. (हिं. लगना) आसंग, प्रीतिः (स्त्री.), आ-प्र,-सक्तिः (स्त्री.), अभिनिवेशः, दे. 'धुन' २. प्रेमन् (पुं. न.), अनुरागः, स्नेहः ३. दे. 'लगना' सं. पुं. ।
लगन[2], सं. पुं. (सं. लग्न) राशीनामुदयः (ज्यो.) २. (विवाहस्य) शुभमुहूर्तः-र्तम् ।
—कुंडली, सं. स्त्री. (सं. लग्नकुंडली) जन्मकुंडली ।
—लगना, क्रि. अ., अनुरंज् (कर्म.), स्निह् (दि. प. से.) ।
लगना, क्रि. अ. (सं.लगन) सं-, युज् (कर्म.), लग् (भ्वा. प. से.), संहन्-संधा (कर्म.), संश्लिष् (दि. प. अ.) संपृच्-संसृज् (कर्म.) २. आरोप्-मूल् (कर्म.) ३. निवेश्-स्थाप् (कर्म.) ४. आहन्-ताड्-प्रहृ-व्यध् (कर्म.) ५. स्पृश्-समालभ्-परामृश् (कर्म.) ६. विन्यस्-व्यवस्थाप्-व्यूह् (कर्म.) ७. दृश्-लक्ष्-प्रती (कर्म.), प्रति-,भा (अ. प. अ.) ८. संबन्ध् (कर्म.), सम्बन्धः ज्ञातित्वं वृत् (भ्वा. आ. से.) ९. स्वादं-रसं धा १०. अनुरंज् (कर्म.), स्निह् (दि. प. से.) ११. करः-शुल्कः नियोज् (कर्म.) १२. मूल्यं अपेक्ष् (भ्वा. आ. से.), मूल्यकेन लभ् (कर्म.) १३. व्यापृ (तु. आ. अ.), मग्न-व्यापृत (वि.) वृत् १४. पण् (कर्म.) १५. पूतीभू, जॄ (दि. प. से.), पूय् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं. तथा भाव, लगनं, सं-, योगः, संधानं, सं.-श्लेषः-श्लेषणं, संपर्कः, संसृष्टिः (स्त्री.), आरोपणं, मूलनं, निवेशः, स्थापनं, आघातः, प्रहारः, स्पर्शः, समालम्भः, विन्यासः, व्यूहः, व्यवस्थितिः, प्रतीतिः (स्त्री.), भानं, व्यापृतिः-आसक्तिः (स्त्री.) १६. पूतीभावः, पूयनं इ. ।

लगा हुआ, वि., सं-, युक्त, लगित, लग्न, संहत, संपृक्त, संसृष्ट, आरोपित, निवेशित, स्पृष्ट, विन्यस्त, अनुरक्त, व्यापृत, मग्न इ.।

लगवाना, क्रि. प्रे., ब. 'लगाना' के प्रे. रूप।

लगातार, क्रि. वि. (हिं. लगना+तार) सततं, अविच्छिन्नं, दे. 'निरंतर'।

लगान, सं. पुं. (हिं. लगाना) भू-भूमि,-करः, शस्यशुल्कं, राजस्वम्।

लगाना, क्रि. स., ब. 'लगना' के स. रूप।

लगाम, सं. स्त्री. (फ़ा.) कविकः-का, खलीनः-नं, कवि(वी)यं, कवी, पंचांगी २. वल्गा, रश्मिः, अवक्षेपणी, कुशा।

—चढ़ाना या देना, मु., संयम्(भ्वा. प. अ.), निग्रह् (क्र्. प. से.), वशीकृ, निवृ (प्रे.)।

लगालगी, सं. स्त्री. (हिं. लगना) अनुरागः, प्रेमन् (पुं. न.) २. संबंधः, संपर्कः, संसर्गः, संगतिः (स्त्री.)।

लगाव, सं. पुं.
लगावट, सं. स्त्री. } (हिं. लगाना) दे. 'लगालगी' १-२।

लगुड-र-ल, सं. पुं. (सं.) दंडः, यष्टिः (स्त्री.) २. लोहमयोऽस्त्रभेदः।

लग्गा, सं. पुं. (सं. लग्न>) लंब,-वेणुः-वंशः २. नौदंडः ३. आकर्षणी।

लग्गी, सं. स्त्री. (हिं. लग्गा) मीनदंडः २-४: दे. 'लग्गा' १-३।

लग्न[1], सं. (पुं. सं. न.) दे. 'लगन[2]' (१-२)।

लग्न[2], वि. (सं.) संयुक्त, संश्लिष्ट, संलगित, संबद्ध २. आसक्त, मग्न, व्यापृत,-पर,-परायण,-निष्ठ ३. लज्जित।

लघु, वि. (सं.) अल्प-ईषद्,-भार, सु-सुख,-वाह्य २. अणु, महत्त्व-बृहत्त्व,-शून्य, क्षुद्र, तनु, अल्प,-आकार-आकृति-काय ३. निस्तत्त्व, निस्सार ४. अल्प, स्तोक (मात्रा) ५. अधम, नीच ६. दुर्बल, निर्बल ६. कनीयस्, यवीयस्।

—चेता, वि. (सं.-तस्) तुच्छ, क्षुद्रमति, क्षुद्राशय।

—शंका, सं. स्त्री. (सं.) मूत्रोत्सर्गः, मेहनम्।

लघुता, सं. स्त्री. (सं.) लघुत्वं, लाघवं, लघिमन् (पुं.), अल्पभारवत्त्वं २. अणुता, तनुता, क्षुद्रता ३. अधमता ४. कनीयस्त्वं ५. अल्पता।

लचक, सं. स्त्री. (हिं. लचकना) स्थितिस्थापकता-त्वं, नम्यता, कुंचनीयता २. दे. 'लचकना' सं. पुं.।

—दार, वि. (हिं.+फ़ा.) नम्य, कुंचनीय, नमन-कुंचन,-शील, स्थितिस्थापक, प्रकृतिप्रापक।

लचकना, क्रि. अ. (हिं. लच अनु.) अव-, नम् (भ्वा. प. अ.), वक्रीभू। सं. पुं. तथा भाव, अव,-नमनं-नतिः-नामः, वक्रीभावः।

लचकाना, क्रि. स., ब. 'लचकना' के प्रे. रूप।

लचकीला,
लचलचा, } वि. (हिं. लचक) दे. 'लचकदार'।

लचना, क्रि. अ., दे. 'लचकना'।

लचाना, क्रि. स., ब. 'लचकना' के प्रे. रूप।

लचीला, वि., दे. 'लचकदार'।

लच्छा, सं. पुं. (सं. लंबगुच्छः>) सूत्रस्तबकः, गुणगुच्छः, तंतुपंची २. सूत्राकाराः, पट्टिकाकाराः वा तनुदीर्घखंडाः ३. सूक्ष्मतंतुरूपः पाणिपादभूषणभेदः ४. मिष्टान्नभेदः।

लच्छेदार, वि. (हिं.+फ़ा.) गुच्छ-सूत्र-पट्टिका,-आकार २. श्रुतिमधुर, सुश्राव्य, सुखश्रव।

लजाना, क्रि. अ., दे. 'लज्जित होना'।

लजालू, सं. पुं., दे. 'लाजवंती'।

लज़ीज़, वि. (अ.) सुस्वादु, सुरस, स्वादिष्ट (भक्ष्य)।

लजीला, वि. (हिं. लाज) दे. 'लज्जाशील'।

लज़्ज़त, सं. स्त्री. (अ.) आ-,स्वादः, रसः।

—दार, वि. (अ.+फ़ा.) दे. 'लज़ीज़'।

लज्जा, सं. स्त्री. [सं. व्रीडः-डा, ह्रीः (स्त्री.),] त्रपा, मंदाक्षं, शालीनता, लज्या २. मानः, प्रतिष्ठा।

—कर, वि. (सं.) त्रपा-लज्जा,-प्रद-जनक-आवह, गर्हित।

—शील, वि. (सं.) ह्रीमत्, शालीन, लज्जालु, सलज्ज, विनीत, लज्जावत्, लज्जान्वित।

—हीन, वि. (सं.) निर्लज्ज, निर्व्रीड, धृष्ट, निस्त्रप, अपत्रप, लज्जा-त्रपा,-शून्य।

लज्जालु, वि. (सं.) दे. 'लाजवंती' २. दे. 'लज्जाशील'।

लज्जित, वि. (सं.) ह्रीत, ह्रीण, व्रीडित, त्रपित, त्रपा-लज्जा,-अन्वित।

—करना, क्रि. स., लज्ज-त्रप्-व्रीड्-ह्री (प्रे.)।

—होना, क्रि. अ., लज्ज् (तु. आ. से.), त्रप् (भ्वा. आ. से.), व्रीड् (दि. प. से.), ह्री (जु. प. अ.)।

लट,[1] सं. स्त्री. (सं. लट्वा) अलकः, चूर्णकुन्तलः,

कुरलः २. केशपाशः, कचपक्षः ३. जटा, सटा, संश्लिष्टकेशाः।

—धारी, सं. पुं., जटिन्, जटिलः (भिक्षु)।

लट,[२] सं. स्त्री. (हिं. लपट) ज्वालः, अग्निशिखा।

लटक, सं. स्त्री. (हिं. लटकना) दे. 'लटकना' सं. पुं.। २. कुंचनीयता, नम्यता ३. आवेशः, आवेगः ४. हावः, विभ्रमः, मनोहरी(-रा) अंगभंगिः (स्त्री.)।

—चाल, सं. स्त्री., सविभ्रमगतिः (स्त्री.)।

लटकन, सं. पुं. (हिं. लटकना) दे. 'लटकना' सं. पुं. २. हावः, विभ्रमः ३. प्रालंबः, लोलकः ४. नासिकाभूषणभेदः ५. उष्णीषलंबितो रत्नगुच्छः।

लटकना, क्रि. अ. (सं. लटनं>) अव-प्र-लम्ब् (भ्वा. आ. से.), उद्बन्ध् (कर्म.) २. दोलायते (ना. धा.)। प्रेंख् (भ्वा. प. से.) ३. विलंबं कृ, चिरायति-ते (ना. धा.), विलम्ब् (भ्वा. आ. से.)। सं. पुं. तथा भाव, अव-प्र,-लम्बः-लम्बनं, उद्बंधनं २. प्रेंखणं, दोलनं ३. विलम्बनं, कालक्षेपः।

लटका, सं. पुं. (हिं. लटक) गतिः (स्त्री.), चारः २. हावभावौ, विभ्रमः ३. सविलासं भाषणं ४. वागाधारः (=तकिया कलाम) ५. संक्षिप्त,-योगः-उपचारः-औषधं ६. चलद्-गीतं ७. माया-यातु,-यष्टिः (स्त्री.) ८. अभिचारमंत्रः।

लटकाना, क्रि. स., व. 'लटकना' के. प्रे. रूप।

लटकाव, सं. पुं., दे. 'लटकना' सं. पुं.।

लटकीला, वि. (हिं. लटक) दे. 'लचकदार'।

लटपट-टा, वि. (हिं. लटपटाना) प्रस्खलत्-विचलत् (शत्रंत), अस्थिरगतिक २. शिथिल, अपरिष्कृत, अस्तव्यस्त, अवत्रस्त ३. अस्पष्ट, त्रुट्यत् (शब्द) ४. क्रमहीन, असंगत ५. खिन्न, श्रांत, ग्लान, अशक्त ६. उदपेष,-गाढ-घन ७. वलियुत (वस्त्रादि)।

लटपटाना, क्रि. अ. (सं. लड्+पत्) प्रस्खल् (भ्वा. प. से.) २. पतत् चल् (भ्वा. प. से.) ३. चपलतया गम् ४. वेप् (भ्वा. आ. से.) ५. अनुरंज् (कर्म.)। सं. पुं., प्रस्खलनं, दूषितगतिः (स्त्री.), कंपनं, अनुरागः।

लटा, वि. (सं. लट्टः) लंपट २. नीच ३. तुच्छ ४. पतित ५. दुष्ट।

लटापटी, सं. स्त्री. (हिं. लटपटाना) दे. 'लटपटाना' सं. पुं. २. कलहः, कलिः।

लटी, सं. स्त्री. (हिं. लटा) १-२. अभद्र-असत्य,-वार्ता ३. भिक्षा(क्षु)की ४. वेश्या ५. पंजी-जिः (स्त्री.)।

लटूरी, सं. स्त्री. (हिं. लट) दे. 'लट' (१)।

—उतरवाना, चूडाकरणसंस्कारं कृ (प्रे.)।

लटोरा, सं. पुं. (देश.) कलिंगः, धूम्राटः, खगभेदः।

लट्टू, सं. पुं. (सं. लुंठनं>) भ्रमरकः-कं, २. लंबकः, लंबसीसकम्।

—होना, मु., अत्यधिकं स्निह् (दि. प. से.), गाढं अनुरंज् (कर्म.)।

लट्ठ, सं. पुं. [सं. लगुड-यष्टिः (स्त्री.)] स्थूल-बृहद्,-दंडः-यष्टिः, लकुटः, लगुडः।

—बाज़, वि. (हिं.+फ़ा.) यष्टियोध-धिन्, दंडधर, दंडिक।

—बाज़ी, सं. स्त्री. (हिं.+फ़ा.) दंडादंडि (अव्य.), यष्टियुद्धम्।

—मार, वि. (हिं.) दे. 'लट्ठबाज़' २. कटु, कठोर (वचन)।

—मारना, क्रि. स., दंडेन-यष्ट्या प्रहृ (भ्वा. प. अ.)। मु., परुषं ब्रू (अ. उ. से.)।

पीछे—लिये फिरना, मु., सततं विरुध् (रु. उ. अ.) २. प्रतिकूलं आचर् (भ्वा. प. से.)।

लट्ठा[१], सं. पुं. (हिं. लट्ठ) दीर्घकाष्ठं २. तुला, छदिः, स्थूणा ३.सार्द्धपंचगजमितो भूमानदंडः।

लट्ठम्—, सं. पुं., दे. 'लट्ठबाजी'।

लट्ठा[२], सं. पुं. (अं. लांगक्लाथ) *लंबपटः।

लठ, सं. पुं., दे. 'लट्ठ'।

लठालठी, सं. स्त्री., दे. 'लट्ठबाजी'।

लठैत, सं. पुं. (हिं. लठ) दे. 'लट्ठबाज'।

लड़ंत, सं. स्त्री. (हिं. लड़ना) दे. 'लड़ाई'।

लड़, सं. स्त्री. [सं. यष्टिः (स्त्री.) ?] आवली-लिः (स्त्री.), सरल,-माला-हारः २. रज्जोः घटक-सूक्ष्म,-तंतुः ३. शृंखलः-लं-ला ४. श्रेणिः-पंक्तिः (स्त्री.)।

लड़कपन, सं. पुं. (हिं. लड़का) बाल्यं, कौमारं २. चापल्यं, चांचल्यम्।

लड़कबुद्धि, सं. स्त्री. (हिं.+सं.), बालबुद्धिः (स्त्री.), अपक्वमतिः (स्त्री.)।

लड़का, सं. पुं. (हिं. लाड़) बालकः, कुमारः २. पुत्रः।

—वाला, सं. पुं., संततिः (स्त्री.), संतानः २. *परिवारः, कुटुंबम् ।

—लड़की, सं. स्त्री., संततिः (स्त्री.) ।

लड़केवाला, मु., (विवाहे) वरस्य जनकः संरक्षको वा ।

लड़कों का खेल, मु., सुकरकर्मन् (न.), सुसाध्यकार्यम् ।

लड़की, सं. स्त्री. (हिं. लड़का) बालिका, कुमारी २. पुत्री ।

—वाला, मु. (विवाहे) वध्वा जनकः संरक्षको वा ।

लड़कौरी, वि. स्त्री. (हिं. लड़का) बालोत्संगा, शिशुमती ।

लड़खड़ाना, क्रि. अ. (सं. लड्+हिं. खड़ा) प्रस्खल् (भ्वा. प. से.), घूर्ण् (भ्वा. आ. से.) २. गद्गदवाचा भाष् (भ्वा. आ. से.), सगद्गदं ब्रू (अ.उ.से.) स्खल् । सं. पुं., प्रस्खलनं, घूर्णनं २. सगद्गदं भाषणं, स्खलनम् ।

लड़ना, क्रि. अ. (सं. रणनं>) विग्रह् (क्र्. प. से.), युध् (दि. आ. अ.), युद्धं-संग्रामं-संगरं कृ २. विवद् (भ्वा. आ. से.), विप्रलप् (भ्वा. प. से.), कलहायन्ते (ना. धा.) ३. दंश् (भ्वा. प. अ.) ४. संघट्ट् (भ्वा. आ. से.), संमृद् (क्र्. प. से.) ५. मल्लयुद्धं कृ, हस्ताहस्ति-मुष्टीमुष्टि युध् । सं. पुं. तथा भाव, विग्रहः, युद्धं, विवादः, विप्रलापः, कलहः, दंशनं, संघट्टनं, संमर्दः, मल्लयुद्धम् ।

लड़बड़ाना, क्रि. अ., दे. 'लड़खड़ाना' ।

लड़बावरा, वि. (हिं. लड़का+बावरा) मूर्ख, अज्ञ, बालबुद्धि २. अशिष्ट, ग्रामीण ।

लड़ाई, सं. स्त्री. (हिं. लड़ना) संग्रामः, दे. 'युद्ध' २. मल्ल-बाहु,-युद्धं ३. वाग्युद्धं, कलहः ४. वादः, वादप्रतिवादः ५. संघट्टः, समाघातः ६. विरोधः, वैरम् ।

—करना, क्रि. स., दे. 'लड़ना' ।

—का मैदान, रणक्षेत्रं, युद्धभूमिः (स्त्री.) ।

—मोल लेना, मु., कामतः कलहे प्रवृत् (भ्वा. आ. से.), युध् (सन्नंत, युयुत्सते) ।

लड़ाका, सं. पुं. (हिं. लड़ना) योधः, भटः, योद्धृ । वि., कलह-कलि,-प्रिय, युयुत्सु, विवादिन् ।

लड़ाकू, वि. (हिं. लड़ना) सांग्रामिक (-की स्त्री.), यौद्ध (-द्धी स्त्री.) ।

लड़ाना, क्रि. स., व. 'लड़ना' के प्रे. रूप ।

लड़ी, सं. स्त्री., दे. 'लड़' ।

लड़ीला, वि., दे. 'लाड़ला' ।

लड्डू, सं. पुं. (सं. लड्डुः) लड्डुकः, मोदकः ।

—खिलाना, मु., निमंत्र् (चु. आ. से.) ।

—मिलना, मु., सुफलं अधिगम् ।

मन के—खाना, मु., मनोराज्यं विजृम्भ् (प्रे.) ।

लढ़ा, सं. पुं. } [हिं. लुढ़(ढ़क)ना]
लढ़िया, सं. स्त्री. } बलदशकटी ।

लत, सं. स्त्री. (सं. रतिः>) कु,-वृत्तिः (स्त्री.)-शीलं, कदभ्यासः, दुर्व्यसनं, दुष्प्रवृत्तिः (स्त्री.), दे. 'आदत' (बुरी) ।

लतखोर-रा, वि. (हिं. लात+फ़ा. ख़ोर) पादप्रहारसह, जंघाघातसह, कुकर्मिन् २. नीच, क्षुद्र । सं. पुं., दासः, किंकरः २. देहली, अवग्रहणी ३. दे. 'पायंदाज़' [लतख़ोरिन (स्त्री.)] ।

लतपत, वि., दे. 'लथपथ' ।

लता, सं. स्त्री. (सं.) वल्ली, व(वे)ल्लिः-व्र(प्र)-ततिः (स्त्री.); (बहुत शाखाओं तथा पत्तों वाली) प्रतानिनी, गुल्मिनी, वीरुध् (स्त्री.), उलपः २. सुन्दरी, तन्वी, रोचना ।

—मंडप, सं. पुं. (सं.) लता,-भवनं-कुंजः-गृहं, नि,-कुंजः-जं, कुडंगः-गम् ।

लताड़, सं. स्त्री., दे. 'लथाड़' ।

लताड़ना, क्रि. स. (हिं. लात) दे. 'रौंदना' ।

लतिका, सं. स्त्री. (सं.) लघु,-वल्ली-व्रततिः(स्त्री.) ।

लतीफ़ा, सं. पुं. (अ.) दे. 'चुटकुला' ।

लत्ता, सं. पुं. (सं. लक्तकः) नक्तकः, कर्पटः-टं, चीरं, पटच्चरं, जीर्णवसनं २. वस्त्रखंडः ३. वस्त्रम् ।

—कपड़ा, सं. पुं., परिधानं, वस्त्राणि-वासांसि (न. बहु.) ।

लत्ती[1], सं. स्त्री. (हिं. लात) पादप्रहारः, लत्ताघातः, खुर,-आघातः-क्षेपः ।

लत्ती[2], सं. स्त्री. (हिं. लत्ता) *पतंगपुच्छं २. लंबवस्त्रखंडः-डम् ।

लथड़ना, क्रि. अ., व. 'लथेड़ना' के कर्म. के रूप ।

लथपथ, वि. (अनु.) अति,-क्लिन्न-उन्न-तिमित-आर्द्र २. (पंकादिभिः) लिप्त, दिग्ध, मलिन, कलुष ।

लथाड़, सं. स्त्री. (अनु. लथपथ) भूमौ पात-

यित्वा इतस्ततः कर्षणं २. पराजयः ३. हानिः (स्त्री.) ४. अधिक्षेपः, निर्भर्त्सनं-ना, तर्जनम् ।

लथाड़ना, क्रि. स., दे. 'लताड़ना' २. 'लथेड़ना' ।

लथेड़ना, क्रि. स. (अनु. लथपथ) पंकेन मलिनयति (ना. धा.), कर्दमे कृष् (भ्वा. प. अ.) २. संमिश्र् (चु.), संसृज् (तु. प. अ.) ३. निर्भर्त्स् (चु.), अधिक्षिप् (तु. प. अ.) ४. व्यथ् (प्रे.), पीड् (चु.) ।

लदना, क्रि. अ. (सं. लब्ध>) व. 'लादना' के कर्म. के रूप २. मृ (तु. आ. अ.) ।

लदवाना, लदाना, } क्रि. प्रे., व. 'लादना' के प्रे. रूप ।

लदा फँदा, वि. (हिं. लदना+फँदना) भाराक्रांत, भारग्रस्त, पर्याहारपीडित ।

लदाव, सं. पुं. (हिं. लादना) दे. 'लादना' सं. पुं. २. भारः, भरः, पर्याहारः ३. पटलादिषु निराधार इष्टकाचयः ।

लदुवा, लद्दू, वि. (हिं. लादना) धुरंधर, धुरीण, धौरेय, धुर्य, पृष्ठ्य, स्थूरिन् (घोड़ा, बैल आदि) ।

लद्धड़, वि. (हिं. लदना) अलस, मंथर ।

—पन, सं. पुं., आलस्यं, मन्थरत्वम् ।

लप[1], सं. स्त्री. (देश.) अंजलिः, करपुटः २. अंजलि,-मितं-मात्रं वस्तु (न.) ।

लप[2], सं. स्त्री. (अनु.) वेत्र-यष्टि,-शब्दः, लपलपध्वनिः २. खड्गादीनां तरलप्रभा ।

लपक, सं. स्त्री. (अनु.) ज्वाला, अग्निशिखा २. क्षणिक-अस्थिर,-दीप्तिः (स्त्री.) प्रभा ३. वेगः, जवः, त्वरा, लाघवं ४. प्लुतिः (स्त्री.), झंपा ।

लपकना, क्रि. अ. (हिं. लपक) धाव् (भ्वा. प. से.), द्रु (भ्वा. प. अ.), सत्वरं गम् २. स्फुर् (तु. प. से.), तरलप्रभया प्रकाश् (भ्वा. आ. से.) ३. वल्ग् (भ्वा. प. से.), उत्,-प्लु (भ्वा. प. अ.) ४. धृ (चु.), ग्रह् (क्र्. प. से.) । सं. पुं., धावनं, स्फुरणं, उत्-प्लवनं, धारणम् ।

लपकाना, क्रि. स., व. 'लपकना' के प्रे. रूप ।

लपकी, सं. स्त्री. (हिं. लपकना) सरलसीवनभेदः ।

लपझप, वि. (अनु. लप+हिं. झपटना) चपल, चंचल २. क्षिप्र, आशु ।

लपट, सं. स्त्री. (हिं. लौ+पट) वह्निशिखा, ज्वाला २. तप्तपवनः, घर्मानिलः ३. सुगन्धः, सुवासः, दुर्गंधः, पूतिगंधः ४. सुगंधि-दुर्गंधि,-पवनतरंगः ।

लपटना क्रि. अ., दे. 'लिपटना' ।

लपड़शपड़, सं. स्त्री. (सं. लपन+अनु.) प्र,-जल्पः-पनं, निरर्थकशब्दाः (बहु.) ।

लपन, सं. पुं. (सं. न.) मुखं २. भापणम् ।

लपलप, सं. पुं. (अनु.) लेहनं, लेहः । वि., क्षिप्र-शीघ्र,-कारिन्, आशु । क्रि. वि., क्षिप्रं, द्रुतं, झटिति (सब अव्य.) ।

—करना, क्रि. स., लिह् (अ. उ. अ.), जिह्वाग्रेण पा (भ्वा. प. अ.) ।

—खाना, क्रि. स., सत्वरं भक्ष् (चु.) ।

लपलपाना, क्रि. स. (अनु. लपलप) (जिह्वा-खड्गादिकं) परिभ्रम् (प्रे.)-वि-धू (स्वा. क्र्. उ. से.) । क्रि. अ., खड्गवत् प्रकाश्-भास्-द्युत् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं. तथा भाव, विधुवनं, विधूतिः (स्त्री.), विधूननं, परिभ्रा(भ्र)मणं, प्रकाशनं, भासनं, द्योतनम् ।

लपलपाहट, सं. स्त्री. (हिं. लपलपाना) (खड्गादीनां) द्युतिः-दीप्तिः (स्त्री.), प्रभा २. दे. 'लपलपाना' सं. पुं. ।

लपसी, सं. स्त्री. (सं. लप्सिका) द्रवप्रायः संयावः २. द्रवप्रायं भक्ष्यम् ।

लपेट, सं. स्त्री. (हिं. लपेटना) दे. 'लपेटना' सं. पुं. व्यावर्तः, व्यावृत्तिः (स्त्री.) बंधनचक्रं ३. परिधिः, परिणाहः, परिवेशः, मंडलं ४. कष्टं, क्लेशः, कृच्छ्रं, जालं ५. कु-दुष्,-प्रभावः ६. वेष्टनं, बंधनं ७. पुटः, भंगः, वलिः (स्त्री.) ।

लपेटना, क्रि. स. (हिं. लिपटना) संवेष्ट् (प्रे.), संपुटीकृ २. भ्रम्-घूर्ण् (प्रे.) ३. व्यावृत् (प्रे.), पुटीकृ, पुटयति (ना. धा.) ४. पिण्डी-वर्तुली-कृ ५. आच्छद् (चु.), परिवेष्ट् (भ्वा. आ. से., प्रे.) ६. संग्रंथ् (क्र्. प. से.) ७. अन्तर्गण् (चु.), संश्लिष् (प्रे.) । सं. पुं. तथा भाव, संवेष्टनं, संपुटीकरणं, भ्रामणं, घूर्णनं, व्यावर्तनं, पिण्डीकरणं, आच्छादनं, संग्रंथनं, संश्लेषणम् ।

लपेटवाँ, वि. (हिं. लपेटना) सपुट, सभंग, वलियुत २. व्यावृत्त, आकुंचित, ३. गूढार्थ, गुप्ताशय, व्यंग्य ४. वक्र ।

लप्पड़, सं. पुं., दे. 'थप्पड़'।

लप्पा, सं. पुं. (देश.) सौवर्ण-राजत,-तंतुजाला-भरणभेदः।

लफ़ंगा, सं. पुं. (फ़ा.-ग) लंपटः, व्यभिचारिन् २. कुपथगः, दुर्वृत्तः।

लफ़टंट, सं. पुं. (अं. लेफ्टिनेंट) गणाध्यक्षः २. प्रतिपुरुषः।

—गवर्नर, सं. पुं. (अं.) उपप्रांताध्यक्षः, उप-भोगपतिः।

—जनरल, सं. पुं. (अं.) अक्षौहिणीयः।

सेकंड—, सं. पुं. (अं.) गुल्मपः।

लफ़्ज़, सं. पुं. (अ.) शब्दः, पदं २. उक्तिः (स्त्री.), भाषणम्।

—बलफ़्ज़, क्रि. वि., शब्दशः, यथाशब्दं, अक्षरशः।

लफ़्ज़ी, वि. (अ.) शाब्द-ब्दिक।

—तर्जुमा, सं. पुं. (अ.) अक्षरशः-शब्दशः-मूलशब्दानुवर्ति-भावोपेक्षक,-अनुवादः।

—बहस, सं. स्त्री. (अ.) भावोपेक्षक-शाब्दिक,-वादप्रतिवादः।

लफ़्फ़ाज़, वि. (अ.) वावदूक, वाचाल, बहुभाषिन्, मुखर।

लफ़्फ़ाज़ी, सं. स्त्री. (अ.) वावदूकता, वाचालता, मुखरता, जल्पकता।

लब, सं. पुं. (फ़ा.) अधरः, ओष्ठः, दंतच्छदः २. स्यंदिनी, लाला ३. प्रान्तः, मुखं, कंठः, धारः, कर्णः।

—रेज़, वि., परि-,पूर्ण, संभृत।

लबड़धोंधों, सं. स्त्री. (अनु.) कोलाहलः-कलकलः २. अ-कु-दुर् ,-व्यवस्था, संकुलं, क्रमाभावः ३. अन्यायः, अधर्मः, अनीतिः (स्त्री.) ४. वाक्छलं, वाग्वंचना।

लबलबा, सं. पुं. (अनु.) क्लोमं, पङ्क्रिया (अं. पेनक्रियास)। वि., चिक्कण, संलग्नशील।

—का रस, सं. पुं., क्लोमरसः।

लबादा, सं. पुं. (फ़ा.) *पिचुकंचुकः २. कंचुकः।

लबार, वि. (सं. लपनं>) मिथ्याभाषिन् २. जल्पाकः, वृथालापिन्।

लबालब, क्रि. वि. (फ़ा.) आ,-कंठं-मुखं-कर्णम्। वि., आकर्ण, परिपूर्ण।

लबी, सं. स्त्री., दे. 'राव'।

लबेरा, सं. पुं. (देश.) दे. 'लसोड़ा'।

लब्ध, वि. (सं.) अव-प्र,-आप्त, अधिगत, समासादित २. उप,-अर्जित। सं. पुं. (सं. न.) फलं, लब्धिः (गणित) २. दासभेदः।

—प्रतिष्ठ, वि. (सं.) लब्ध,-कीर्ति-नामन्, वि-प्र,-ख्यात।

लब्धि, सं. स्त्री. (सं.) प्राप्तिः (स्त्री.), लाभः २. उत्तरं, लब्धांकः (गणित)।

लभ्य, वि. (सं.) प्राप्य, अधिगम्य २. उचित।

लमछड़, सं. पुं. (हिं. लंबा+छड़) लंबयष्टिः (स्त्री.) २. कुंतः, प्रासः ३. लंबाग्न्यस्त्रम्। वि., तनुलंब।

लमटंगा, वि. (हिं. लंबी+टांग) दीर्घजंघ (-घा,-घी स्त्री.) २. दे. 'लमढींग'।

लमढींग, सं. पुं. (देश.) सारसः, पुष्कराह्वः।

लमतड़ंग, वि., दे. 'लंबतड़ंग'।

लमहा, सं. पुं. (अ.) क्षणः, पलं, निमि(मे)षः।

लय, सं. पुं. (सं.) एकरूपता, ऐकरूप्यं, एकी-सदृशी,-भावः, सायुज्यं, मग्नता, लीनता २. एकाग्रता, समाधिः, अनन्यमनस्कता ३. अनुरागः, प्रेमन् (पुं. न.) ४. महाप्रलयः, कल्पांतः ५. अदर्शनं, लोपः, तिरोभावः ६. सं-श्लेषः, संमिश्रणं ७. नृत्यगीतवाद्यानां साम्यं (संगीत) ८. मूर्च्छा। सं. स्त्री., स्वरोद्गम-प्रकारः (२-३) दे. 'तर्ज' तथा 'सम'।

लरज़ना, क्रि. अ. (फ़ा. लरज़ा) कंप्-वेप् (भ्वा. आ. से.) २. भी (जु. प. अ.), वि-सं-त्रस् (भ्वा. दि. प. से.)।

लरज़ा, सं. पुं. (फ़ा.) कंपः, वेपथुः २. भूकंपः ३. *कंपज्वरः।

ललक, सं. स्त्री. (सं. लल् = चाहना>) उत्कटेच्छा, लालसा, अभिलाषातिशयः।

ललकना, क्रि. अ. (हिं. ललक) अत्यन्तं स्पृह् (चु., चतुर्थी के साथ), अतीव अभिलष्-वांछ् (भ्वा. प. से.)।

ललकार, सं. स्त्री. (हिं. अनु. लेले+सं. कारः) समर-, आह्वानं, युद्धाय आकारणं-णा, रणनि-मंत्रणं २. आक्रमण,-उत्तेजना-प्रेरणा।

ललकारना, क्रि. स. (हिं. ललकार) आह्वे (भ्वा. आ. अ.), (योद्धुं) आक्रु-उद्दीप्-उत्तिज्-प्रचुद् (प्रे.)। सं. पुं. तथा भाव, दे. 'ललकार'।

ललचना, क्रि. अ. (हिं. लालच) दे. 'लल-चाना' कि. अ.।

ललचाना, क्रि. अ. (हिं. ललचना) (अत्यन्तं) लुभ् (दि. प. से.)-स्पृह् (चु.)-कम् (भ्वा. आ. से.)-अभिलष् (भ्वा. दि. प. सें.) २. मुह् (दि. प. से.)। क्रि. स., अभिलाषां जन् (प्रे.), प्र-, लुभ् (प्रे.) २. मुह् (प्रे.) वशीकृ।

ललचौहाँ, वि. (हिं. लालच) लोलुप-भ, गृध्नु, अत्यभिलाषिन्, अत्याकांक्षिन्।

ललन, सं. पुं. (सं.) प्रिय-ललित-,बालः-कुमारः २. कांतः, वल्लभः ३. (नायकसंबोधन-पदं) ललन! प्रियवर! ४. विहारः, क्रीडा, केलिः (स्त्री.)।

ललना, सं. स्त्री. (सं.) कामिनी, रामा २. जिह्वा।

लला-ल्ला, सं. पुं. (सं. लल>) दे. 'ललन' (१-३) २. (बालकसंबोधनपदं) अंग! वत्स! *ललित! लालितक!

ललाई, सं. स्त्री. (हिं. लाल) दे. 'लाली'।

ललाट, सं. पुं. (सं. न.) अलि(ली)कं, गोधिः (पुं. स्त्री.) भालं, निटि(ट)लं, दे. 'माथा' २. भाग्यं, दैवम्।

—पटल, सं. पुं. (सं. न.) ललाट-मस्तक,-पट्टं-फलकम्।

—रेखा, सं. स्त्री. (सं.) भाग्यलेखः।

ललाटिका, सं. स्त्री. (सं.) पत्रपाश्या, ललाटा-भरणभेदः २. ललाट,-चरी-चर्चा, भालस्थचंदनं, तिलकः-कम्।

ललाम, वि. (सं.) रम्य, सुन्दर २. रक्त, लोहित ३. श्रेष्ठ, प्रधान। सं. पुं. (सं. न.) आ-,भूषणं २. रत्नं ३. चिह्नं ४. ध्वजः ५. शृंगं ६. अश्वः ७-८. अश्व,-भूषणं,-भाल-चिह्नं ९. प्रभावः १०. केस(श)रः-रं, दे. 'अयाल'।

ललित, वि. (सं.) सुंदर, मनोहर, रम्य, २. ईप्सित, अभीष्ट ३. लोल, चंचल, कंप्र।

—कला, सं. स्त्री. (सं.) कोमल-उत्कृष्ट,-कला-शिल्पं (काव्य, संगीत, चित्रकारी इ.)।

—लोचन, वि. (सं.) सु,-नेत्र-नयन।

ललिता, सं. स्त्री. (सं.) रमणी, सुन्दरी २. राधिकायाः सखीविशेषः।

ललिताई, सं. स्त्री. (सं. ललित>) सौन्दर्यं, रम्यता।

लली,ल्ली, सं. स्त्री. (हिं. लला-ल्ला) प्रिय-पुत्री, ललिततनुजा २. (नायिकासंबोधनपदं) प्रिये! कान्ते! वल्लभे! ३. (बालिकासंबोधनपदं) ललिते! वत्से! कन्यके।

ललौहाँ, वि. (हिं. लाल) आ-ईषद्,-रक्त-लोहित।

लल्लो, सं. स्त्री. (सं. ललना) जिह्वा-रसना।

—चप्पो, } सं. स्त्री., चाटु (पुं. न.),
—पत्तो, } चाटूक्तिः (स्त्री.), उपच्छंदनम्।

—पत्तो करना, मु., मिथ्या प्रशंस् (भ्वा. प. से.), उपछंद् (चु.), चाटुभिः तुष् (प्रे.)।

लवंग, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लौंग'।

—लता, सं. स्त्री. (सं.) श्रीपुष्पलता २. राधा-सखीविशेषः।

लव, सं. पुं. (सं.) परम-,अणुः, लेशः, कणः, कणिका, क्षुद्रखंडः, विंदुः २. काष्ठाद्वयं, षट्त्रिंशन्निमेषमितः कालः ३. श्रीरामपुत्रः, कुशभ्रातृ।

—लेश, सं. पुं. (सं.) १-२. अत्यल्प,-मात्रा-संसर्गः।

लवण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'नमक'। सं. पुं. (१-३) राक्षस-रस-समुद्र,-विशेषः। वि., लवणित, लावणिक, दे. 'नमकीन' २. सुन्दर।

—भास्कर, सं. पुं. (सं.) पाचकचूर्णभेदः (वैद्यक)।

लवणाकर, सं. पुं. (सं.) लवणख(खा)निः (स्त्री.) २. सागरः।

लवनि-नी, सं. स्त्री. (सं. लवनं) शस्य,-लावः-संचयः।

लवलीन, वि. (सं. लयः+लीन>) व्यग्र, नि,-मग्न, पर,-परायण, निरत, लीन, आसक्त, व्यापृत।

लवा, सं. पुं. (सं. लवः) लावः (वः), लाव-(ब)कः, लघुजंगलः।

लश्कर, सं. पुं. (फ़ा.) सेना, सैन्यं, अनीकं-किनी २. जन,-ओघः-संमर्दः ३. शिबि(वि)रं, निवेशः ४. नाविकाः-नौवाहाः (बहु.)।

लश्करी, वि. (फ़ा. लश्कर) सैनिकः, सेना-संबंधिन् २. पौत-थ, हौड। सं. पुं., सैनिकः २. नाविकः।

—भाषा, सं. स्त्री., मिश्रित-सैनिक,-भाषा २. दे. 'उर्दू'।

लशुन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लहसुन'।

लस, सं. पुं. (सं. लस्>) संलग्नशीलता,

श्लेषः, श्लेषणं २. संश्लेषक,-लेपः-द्रव्यं ३. आकर्षणम् ।
लसक, वि. (सं.) नर्तक, लासक ।
लसदार, वि. (हिं+फ़ा.) संलग्नशील, सांद्र, श्यान, शीन, श्लेषशील ।
लसना, क्रि. स. (सं. लसनं>) लेपेन संश्लिष् (प्रे.)-संयुज् (चु.) । क्रि. अ., शुभ् (भ्वा. आ. से.) २. विद् (दि. आ. अ.) ।
लसलसा, वि. (हिं. लस) दे. 'लसदार' ।
लसलसाना, क्रि. अ. (सं. लस्>) संश्लिष् (कर्म.). सांद्र-श्यान-शीन (वि.) भू ।
लसित, वि. (सं.) सुशोभित, सश्रीक २. प्रकट, स्फुट ३. क्रीडाशील ।
लसाला, वि. (हिं. लस) दे. 'लसदार' २. सुन्दर ।
लसुन, सं. पुं. (सं. लसुनं) दे. 'लहसुन' ।
लसो (सू)ड़ा, सं. पुं. (हिं. लस) (वृक्ष) श्लेष्मांतः-तकः, पिच्छिलः, भूतद्रुमः, शीतः, शेलुः, उद्दालकः २. (फल) श्लेष्मांतक-पिच्छिल,-फलं, श्लेष्मांतकं इ. ।
लस्टमपस्टम, क्रि. वि. (देश.) शनैः शनैः, मंदं मंदं २. यथाकथंचित्, कथं,-अपि-चित् ।
लस्सी, सं. स्त्री. (सं. रसः> वा हिं. लयस्) दुग्धजलं. *क्षीरनीरं २. तक्रं, दे. 'छाछ' ।
लहँगा, सं. पुं. (हिं. लंक+अंगा) दे. 'घघरा' ।
लहकना, क्रि. अ. (अनु.) इतस्ततः धू (कर्म.) प्र-वि-चल् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., इतस्ततः विधूननं-विचलनं, धूतिः-निः (स्त्री.) ।
लहकाना, क्रि. स., व. 'लहकना' के प्रे. 'रूप' ।
लहकौर-रि, सं. स्त्री. (हिं. लहना+कौर) कवललाभः, वैवाहिकरीतिभेदः ।
लहजा[१], सं. पुं. (अ.-जः) ध्वनिः, स्वरः ।
लहज़ा[२], सं. पुं. (अ.) क्षणः, पलम् ।
लहना, क्रि. स. (सं. लभनं) दे. 'लेना' सं. पुं., शोध्य-प्रतिदेय,-ऋणं-पर्युदंचनं २. आदेय-लभ्य,-धनं ३. भाग्यम् ।
—चुकाना, मु., ऋणं शुध् (प्रे.) ।
लहर, सं. स्त्री. [सं. लहरी-रिः (स्त्री.)] उल्लोलः, कल्लोलः, ऊर्मिः-वीचिः (पुं. स्त्री.), भंगः, दे. 'तरंग' । २. आ,-वेगः, भाव-,आवेशः ३. कामचारः, छंदः ४. सर्पदंशनमूर्च्छा-पीडादीनां पुनःपुनर्भवो वेगः ५. प्रति,-शब्दः-ध्वनिः ६. आनन्दलहरी, आनन्दातिशयः ७. जिह्म-वक्र-कुटिल,-गतिः (स्त्री.) ८. दे. 'लपट' (४) ।
—बहर, सं. पुं. (हिं.+अ.) आनंदमंगलं, सौभाग्यं, अभ्युदयः ।
लहरना, क्रि. अ., दे. 'लहराना' क्रि. अ. ।
लहराना, क्रि. अ. (हिं. लहर) इतस्ततः प्र-वि-चल् (भ्वा. प. से.), धू (कर्म.), प्रकंप् (भ्वा. आ. से.), तरंगति-तरंगायते (ना. धा.), २. सर्पवत् व्रज् (भ्वा. आ. से.) ३. (चित्तं) उल्लस् (भ्वा. प. से.) ४. विराज् (भ्वा. आ. से.) । क्रि. स., व. 'लहराना' क्रि. अ. के प्रे. रूप । सं. पुं., धूतिः, धूनिः (स्त्री.), इतस्ततः विचलनं-विधूननं-कंपनम् ।
लहरिया, सं. पुं. (हिं. लहर) वक्ररेखावृंदं २. वक्ररेखांकितवस्त्रं, *लहरीयः ३. तरंगः ।
—दार, वि. (हिं.+फ़ा.) वक्ररेखा,-युत-अंकित, ऊर्मिमत्, भंगिमत् ।
लहरी, सं. स्त्री. (सं.) तरंगः, दे. 'लहर'(१) । वि. (हिं. लहर) स्वेच्छा,काम,-चारिन्, आनंदिन् ।
लहलहा, वि. (हिं. लहलहाना) स्फुटित, विकसित, सपत्रपुष्प, हरित, सरस, विकच २. आनंदित, मुदित ३. पुष्ट ।
लहलहाना, क्रि. अ. (हिं. लहरना) दे. 'लहराना' (१) । २. पत्रित-पुष्पित-हरित-सरस (वि.) जन् (दि. आ. से.) ३. स्फुट् (तु. प. से.), विकस्-फुल्ल् (भ्वा. प. से.) ४. मुद् (भ्वा. आ. से.), हृष् (दि. प. से.) ।
लहलहाहट, सं. स्त्री. (हिं. लहलहाना) धूतिः-धूनिः (स्त्री.), इतस्ततो विचलनं, दोलः २. सरसता, विकचता, प्रफुल्लता, विकासः ।
लहसुन, सं. पुं. [सं. लशुन(शू)नः-नं] रसु-(सो)नः, महौषधं, महा-म्लेच्छ,-कंदः, गृंजनः-नं, अरिष्टं, उग्रगंधः, भूतघ्नः ।
लहसुनिया, सं. पुं. (हिं. लहसुन) धूम्ररत्न-भेदः, रुद्राक्षकं, वैदूर्यम् ।
लहू, सं. पुं. (सं. लोहः-हं) लोहितं, दे. 'रक्त' ।
—का प्यासा, वि., रक्तपिपासु, जिघांसु ।
—की कै, सं. स्त्री., रक्त,-वमनं-छर्दिका ।
—के घूँट पीना, मु., यथाकथंचित् सह् (भ्वा. आ. से.) ।

—लुहान होना, मु., लोहितक्लिन्न-रुधिर-स्नात-रक्तरंजित-शोणशोण (वि.) भू ।

लांग, सं. स्त्री. (सं. लांगूलं>) कच्छः-च्छं, कच्छ(च्छा)टिका, कच्छाटी, कक्षा, दे. 'काँछ' ।

—खुलना, मु., अत्यर्थं भी (जु. प. अ.), साहसं धैर्यं मुच् (तु. प. अ.) ।

लांगल, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'हल' ।

लांगली, सं. पुं. (सं-लिन्) बलरामः २. सर्पः ।

लांगूल, सं. पुं. (सं. न.) पुच्छं २. शिश्नम् ।

लांगूली, सं. पुं. (सं.-लिन्) कपिः, वानरः ।

लाँघना, क्रि. स. (सं. लंघनं) लंघ् (चु.), अतिक्रम् (भ्वा. दि. प. से.), तॄ (भ्वा. प. से.) २. उत्प्लुत्य लंघ् (भ्वा. आ. से., चु.) । सं. पुं. तथा भाव, अतिक्रमणं, लंघनं, तरणं, उत्प्लुत्य लंघनम् ।

लांछन, सं. पुं. (सं. न.) कलंकः, दोषः, दूषणं, अपकीर्तिचिह्नं २. चिह्नं, लक्षण. लक्ष्मन् (न.), लिंगम् ।

—लगाना, दुष् (प्रे.); कलंकयति, यशो मलिनयति (दोनों ना. धा.) ।

लाइन, सं. स्त्री. (अं.) पंक्तिः (स्त्री.) २. रेखा ३. लोहमार्गः, ४. पत्तिसेना ५. दे. 'वारक' ।

—डोरी, सं. स्त्री., दे. 'पेशखेमा' ।

ला, अ. (अ.) विना, न, ऋते (सब अव्य.) ।

—इलाज, वि. (अ.) असाध्य, निरुपाय, अचिकित्स्य, अप्रतिकार्य ।

—इल्म, वि. (अ.) निरक्षर, शिक्षाशून्य, विद्याविहीन, अज्ञ ।

लाइट, सं. स्त्री. (अं.) प्रकाशः, आलोकः ।

—हाउस, सं. पुं. (अं.) प्रकाश-,स्तम्भः-गृहम्, आकाशदीपः, दीपस्तम्भः ।

लाकड़ा काकड़ा, सं. पुं., दे. 'माता(छोटी)' ।

लाक्षणिक, वि. (सं.) लक्षणागम्य (अर्थ), लाक्षण २. लक्षणज्ञ, लाक्षण्य ३. गौण, अप्रधान ४. लक्षणसंबंधिन् ।

लाक्षा, सं. स्त्री. (सं.) कीटजा, जतुका, दे. 'लाख[1]' ।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) पांडवदाहार्थं दुर्योधननिर्मापितो जतुगृहविशेषः ।

—रस, सं. पुं. (सं.) दे. 'महावर' ।

लाख[1], सं. स्त्री. (सं. लाक्षा) राक्षा, यावः, यावकः-कं, जतुकं-का, जतु (न.) रक्ता, अलक्तः (-क्तकः), द्रुम,-आमयः-व्याधिः, मुद्रिणी, जंतुका २. रक्तवर्णः कृमिभेदः ।

—चपड़ा, सं. स्त्री., पत्रकलाक्षा ।

लाख[2], वि. (सं. लक्षं) नियुतं, अयुतदशकं, सहस्रशतकं २. असंख्य, अगण्य । सं. पुं. (सं. न.) उक्ता संख्या, तदंकाश्च (=१०००००) । क्रि. वि., असकृत, अनेकवारं, बहु, अधिकम् ।

—टके की बात, मु., अत्युपयोगिवार्ता ।

—से ख़ाक होना, मु., वैभवात् दारिद्र्यं उप-इ (अ. प. अ.), वित्ततः परिक्षि (कर्म.) ।

लाखा, सं. पुं. (हिं. लाख) ओष्ठरंजको लाक्षिकरंगः ।

लाखी, सं. स्त्री. (हिं. लाख) लाक्षिकरंगः । वि., लाक्षिक, लाक्षा,-निर्मित-रंजित-वर्ण-संबंधिन् ।

लाग, सं. स्त्री. (हिं. लगना) संपर्कः, संसर्गः, संबधः २. प्रेमन् (पुं. न.), अनुरागः २. अभिनिवेशः, आसक्तिः (स्त्री.) ४. युक्तिः (स्त्री.), उपायः ५. इंद्रजालं, माया ६. प्रतियोगिता, स्पर्द्धा ७. वैरं, शत्रुता ८. अभिचारः ९. भूमिकरः १०. धातुभस्मन् (न.), दे. 'भस्म' ११. *लागम् ।

—डाँट, सं. स्त्री. (हिं.) वैरं, द्वेषः २. प्रतियोगिता-स्पर्द्धा ।

—लपेट, सं. स्त्री. (हिं.) पक्षपातः, पक्षपातिता, समदृष्ट्यभावः (स्त्री.) २. मनोगुप्तिः-संवृतिः (स्त्री.) ।

लागत, सं. स्त्री. (हिं. लगना) व्ययः, विनियोगः, विसर्जनं २. मूल्यं, अर्घः, अर्हा ।

—आना या बैठना, क्रि. अ., मूल्येन क्री-ग्रह् (कर्म.) २. व्ययेन सपद्-साध् (कर्म.) ।

लाघव, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लघुता' (१-५) । ६. क्षिप्रता, द्रुतता, दक्षता ७. क्लीबता ८. आरोग्यम् ।

लाचार, वि. (फ़ा.) विवश, निरुपाय, अगतिक । क्रि. वि., विवश-निरुपाय-अगतिक,-तया ।

लाचारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) विवशता, अगतिकता ।

लाची, सं. स्त्री., दे. 'इलायची' ।

लाज, सं. स्त्री. (सं. लज्जा) दे. 'लज्जा' (१-२) ।

—आना या करना, क्रि. अ., दे. 'लज्जित होना' ।

—रखना, मु., प्रतिष्ठां रक्ष् (भ्वा. प. से.), अपमानात् त्रै (भ्वा. आ. अ.) ।

लाजवंत, वि. (सं. लज्जावत्) दे. 'लज्जाशील'।

लाजवंती, वि. (हिं. लाजवंत) लज्जावती, ह्रीमती। सं. स्त्री., लज्जालुः (पुं. स्त्री.), संकोचिनी, स्पर्शलज्जा, महाभीता, महौषधिः (स्त्री.), रक्त,-पादी-मूला।

लाजवर्द, सं. पुं. (फ़ा., मि. सं. राजावर्तः) नृपावर्तः, आवर्तमणिः २. (विदेशीयं) नीलम्।

लाजवर्दी, वि. (फ़ा.) नीलवर्णः, आ-ईषत्-,नील।

लाजवाब, वि. (अ.) निरुत्तर, मूकी,-कृत-भूत, वादे पराजित ३. अनुपम, अतुल।

लाजा, सं. स्त्री. [सं. लाजाः (पुं. बहु.)] अक्षताः (पुं. बहु.) २. तंडुलः।

लाज़िम, वि. (अ.) आवश्यक, अवश्यकर्तव्य २. उचित, युक्त।

लाज़िमी, वि. (अ. लाज़िम) दे. 'लाज़िम'।

लाट[1], सं. पुं. (अं. लॉर्ड) शासकः, शासितृ २. भोगपतिः, प्रांताध्यक्षः।

लाट[2], सं. स्त्री. (हिं. लट्ठा) स्तंभः, मेठिः-थिः, यूपः।

लाट[3], सं. पुं. (सं. बहु.) प्रांतविशेषः (गुजरात, अहमदाबाद के आसपास) २. लाट-प्रांतवासिनः (बहु.) ३. (लाटः) अनुप्रास-भेदः (सा.) ४. जीर्णवसनभूषणादिकं ५. वसनानि-वासांसि (न. बहु.) ५. पंडितः।

लाटरी, सं. स्त्री. (अं.) गुटिकापातः, पाटकः, *लात्री।

लाटानुप्रास, सं. पुं. (सं.) शब्दालंकारभेदः (सा.)।

लाटिका, लाटी, सं. स्त्री. (सं.) रीतिभेदः (सा.) २. प्राकृतभाषाविशेषः।

लाठ, सं. पुं., दे. 'लाट' (१-२)।

लाठी, सं. स्त्री. (सं. लकुटयष्टी>) यष्टिकः-का, यष्टी-ष्टिः (स्त्री.), दंडः, लगुडः, दंडः, पशुघ्नः २. वेत्रं, वेत्रयष्टिः (स्त्री.)।

—चलना, मु., दंडादंडि जन (दि. आ. से.)।

—टेक के चलना, मु., यष्टिमवलंब्य-दंडाश्रयेण चल् (भ्वा. प. से.)।

—बाँधना, मु., यष्टिं धृ (चु.)।

लाड़, स. पु. (सं. लाडः) लाडनं, उप-,लालनं, २. परिष्वंगः, आलिंगनं, परिरंभणं ३. चुंबनं, निंसनं ४. क्रोडीकरणम् इ.।

—करना, क्रि. स., लल्-लड्-लाड् (चु.), चुंब्-आलिंग (भ्वा. प. से.), क्रोडीकृ इ.।

लाड़ला, वि. (सं. लाडः>) उप-, लाडि(लि)-त, चुंबित, आलिंगित, प्रेम-लालन,-आस्पदं-पात्रं-भाजनं, प्रिय, अभिमत।

अत्यधिक—, वि., दुर्ललित, अतिलालित, लालनदूषित।

लाड़ा, सं. पुं. (हिं. लाड़) दे. 'वर'।

लाड़ी, सं. स्त्री. (हिं. लाड़ा) दे. 'वधू'।

लात, सं. स्त्री. (देश.) जंघा, जाघनी, प्रसृता २. पादः, चरणः-णं, पदं ३. जंघा-पाद,-प्रहारः-आघातः ४. खुर-पार्ष्णि,-क्षेपः-आघातः।

—चलाना, मु., पादेन-जंघया प्रहृ (भ्वा. प. अ.)-तड् (चु.)।

—जाना, मु., (गौ भैंस आदि) दुग्धं न दद् (भ्वा. आ. से.)।

—मारना, मु., तुच्छं मत्वा त्यज् (भ्वा. प. अ.)।

लाद, सं. स्त्री. (हिं. लादना) दे. 'लादना' सं. पुं. २. उदरं ३. अंत्रम्।

लादना, क्रि. स. (हिं. लदना) भारं न्यस् (दि. प. से.), निधा (जु. उ. अ.)-आरुह् (प्रे.)-निविश् (प्रे.), भाराक्रांतं कृ, भारेण पूर् (चु.) ३. राशी कृ, समा-चि (स्वा.उ.अ.)। सं. पुं. भ(भा)र,-न्यासः-निवेशनं-आधानं-आरोपणम्।

लादनेवाला, सं. पुं. भ(भा)र,-आरोपकः-निवेशकः।

लादवा, वि. (अ.) दे. 'लाइलाज'।

लादा हुआ, वि., भार,-ग्रस्त-आक्रांत, आरोपित-निवेशित-स,-भार।

लादी, स्त्री. (हिं. लादना) भारः, पोटलिका।

लादू, वि. (हिं. लादना) दे. 'लद्दू'।

लानत, सं. स्त्री. (अ. लअनत) धिक्कारः, न्यक्कारः, निर्-,भर्त्सनं-ना, अधिक्षेपः, गर्हा।

—मलामत करना, क्रि. स., निर्भर्त्स् (चु. आ. से.), अधिक्षिप् (तु. प. अ.)।

लानती, सं. स्त्री. (अ. लानत>) निंद्य, गर्ह्य, निर्भर्त्सनीय, दुष्ट, खल।

लाना, क्रि. स. (हिं. लेना+आना) आनी (भ्वा. प. अ.), उपा-आ,-हृ (भ्वा. प. अ.), आवह् (भ्वा. प अ.) २. उपस्था (प्रे.), पुरो निधा (जु. उ. अ.), उपन्यस् (दि. प. से.) ३. उपहृ (भ्वा. प. अ.), सम्-ऋ (प्रे.), उपायनं दा ४. उत्पद्-जन् (प्रे.)। सं. पुं.,

आनयनं, आ-उपा-हरणं, आवहनं, उपस्थापनं, उत्पादनं इ.।
लाने योग्य, वि., आनेय, उपाहार्य, उपस्थाप्य।
लानेवाला, सं. पुं., आनेतृ, आ-उपा,-हर्तृ-हारकः।
लापता, वि. (अ. ला+हिं. पता) अलभ्य, अदृश्य, तिरोहित, अन्तर्हित, -गुप्त, प्रच्छन्न, अज्ञातवास।
लापरवा-वाह, वि. (अ. ला+फ़ा. परवाह) निश्चिंत, अनवहित, प्रमत्त, प्रमादिन्।
लापरवाही, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) निश्चिंतता, अनवधानता, प्रमत्तता, प्रमादः।
लाफ़, सं. स्त्री. (फ़ा.) आत्म-स्व-,श्लाघा-प्रशंसा, विकत्थनम्।
—ज़न, वि., आत्मश्लाघिन्, विकत्थनशील।
—ज़नी, सं. स्त्री., आत्मश्लाघिता, विकत्थनशीलता।
लाफ़िंग गैस, सं. स्त्री. (अं.) हसनवातिः (स्त्री.)।
लाभ, सं. पुं. (सं.) अव-प्र,-आप्तिः, उप-, लब्धिः (दोनों स्त्री.), अधिगमः-मनं, आसादनं ३. फलं, आयः, उदयः, वृद्धिः (स्त्री.), लभ्यं ३. कल्याणं, उपकारः, हितम्।
—उठाना, क्रि. अ., लाभं अधिगम्, अर्ज् (भ्वा. प. से., प्रे.), लभ् (भ्वा. आ. अ.) समासद् (प्रे.), विद् (तु. उ. वे.)।
—दायक, वि. (सं.) लाभ,-कारक-कारिन्-जनक-प्रद, गुणकारिन, हित, हितकर, फलदायक, उपयोगिन्।
लाभालाभ, सं. पुं. (सं.-भौ द्वि.) आयापायौ, अधिगमापगमौ, वृद्धिक्षयौ, उपचयापचयौ।
लाम, सं. पुं. (फ़ा. लाम) सैन्यं, सेना २. जनौघः ३. युद्धम्।
लामज़हब, वि. (अ.) धर्मविमुख, नास्तिक।
लायक़, वि. (अ.) योग्य, क्षम, समर्थ, शक्त २. अनुरूप, अनुकूल, उपयुक्त ३. गुणिन्, गुणवत्, सुशील, श्रेष्ठ, भद्र।
लाया हुआ, वि., आनीत, आ-उपा,-हृत, उपस्थापित, उपन्यस्त।
लार, सं. स्त्री. (सं. लाला) दे. 'राल' (२)।
लार्ड, सं. पुं. (अं.) जगदीशः २. स्वामिन् ३. क्षेत्रपतिः ४. आंग्लदेशे उपाधिभेदः।

लाल, सं. पुं. (फ़ा.) पद्मरागः, दे. 'माणिक्य' वि., रक्त, लोहित, शोण।
—आलू, सं. पुं., दे. 'रतालू' २. दे. 'अरुई'।
—इलायची, सं. स्त्री., दे. 'इलायची' (बड़ी)।
—कुर्त्ती, सं. स्त्री., आंग्लसैन्यनिवेशः, शिबि-(वि)रम्।
—चंदन, सं. पुं., रक्त-कु-देवी,-चंदनं, रंजनं, दे. 'चंदन' में।
—पानी, सं. स्त्री., सुरा, मद्यम्।
—पेठा, सं. पुं., दे. 'कुम्हड़ा'।
—बुझक्कड़, सं. पुं., पंडितं-प्राज्ञं,-मन्यः, प्राज्ञ-पंडित,-मानिन्-अभिमानिन्-वादिन्।
—मिर्च, सं. स्त्री., दे. 'मिर्च' में।
—मूली, सं. स्त्री., दे. 'शलजम'।
—शक्कर, सं. स्त्री., दे. 'खाँड़'।
—सागर, सं. पुं., रक्तसागरः।
—सुर्ख़, वि., अग्निरूप, अंगारवर्ण, अतिलोहित २. अति,-कुपित-संरब्ध।
—पीला होना,-पीली आँखें निकालना, मु., अत्यंतं कुप् (दि. प. से.)-क्रुध् (दि. प. अ.), संरंभातिशयेन लोहितलोचन-रक्तवदन (वि.)भू।
लालच, सं. स्त्री. (सं. लालसा) लोलुपता, दे. 'लोभ'।
लालची, वि. (हिं. लालच) लोलुप, दे. 'लोभी'।
लालटेन, सं. स्त्री. (अं. लैंटर्न) प्रदीपः-पकः, प्रदीपकोशः(षः)।
लालड़ी, सं. स्त्री. (फ़ा. लाल) मिथ्यामाणिक्यं, कृतकलोहितकम्।
लालन[1], सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लाड' सं. पुं.।
—पालन, सं. पुं. (सं. न.) पालन-भरण,-पोषणं, संवर्द्धनं, भरणं, रक्षणम्।
लालन[2], सं. पुं. (हिं. लाला) प्रिय-ललित,-पुत्रः-कुमारः २. बालकः।
लालसा, सं. स्त्री. (सं.) उत्कटेच्छा, लिप्सा–आकांक्षा–वांछा–स्पृहा–इच्छा–अभिलाष,-अतिशयः २. उत्कंठा, उत्सुकता ३. गर्भ-,दोहदः।
लाला[1], सं. पुं. (सं. लालकः >) महाशयः, महोदयः, श्रीमत्, श्रीयुतः २. (क्षत्रियवैश्यानां संबोधनं) श्रीमन्! महोदय! श्रेष्ठिन् ३. कायस्थः ४. शिशुः, बालः ५. (बालसंबोधनपदं) वत्स! अंग! ललित! लालितक! ६. पितृ, जनकः।

—भैया करना, मु., सादरं संभाष् (भ्वा. आ. से.)-संबुध् (प्रे.) २. लड्-लस् (चु.)।

लाला[2], स. स्त्री. (सं.) मुखस्रावः, दे. 'राल'(२)।

लाला[3], सं.पुं. (फ़ा.) खस्खस-खसतिल,-पुष्पम्।

लालाटिक, वि. (सं.) ललाट-भाल,-संबंधिन् २. दैव,-आयत्त-निर्दिष्ट ३. सावधान। सं. पुं., सावधानः सेवकः २. अलसः।

लालायित, वि. (स.) अत्यभिलाषिन्, अत्याकांक्षिन्, अत्युत्सुक, लालस।

ललित, वि. (सं.) लाडित, चुंबित, आलिंगित, क्रोडीकृत, प्रिय २. संवर्द्धित, पोषित।

लालित्य, सं. स्त्री. (सं. न.) सौंदर्यं, मनोज्ञता, मनोहरता, छविः (स्त्री.), माधुर्यम्।

लालिमा, सं. स्त्री. (फ़ा. लाल) दे. 'लाली'।

लाली, सं. स्त्री. (फ़ा. लाल) रक्तत्वं-ता, लौहित्य, रक्तिमन्-लोहितिमन्-अरुणिमन् (पुं.), अरुणता, लोहितता-त्वं, २. सम्मानः, प्रतिष्ठा ३. प्रिय,-कन्य(न्यि)का-कुमारिका।

लाले, सं. पुं. (सं. लाला>) लालसा, उत्कटेच्छा।

(किसी चीज के)—पड़ना, मु., अतिलालायित (वि.) भू, अत्यंतं स्पृह (चु., चतुर्थी के साथ) २. दुर्लभ-दुष्प्राप (वि.) वृत (भ्वा. आ. से.), कृच्छ्रेण लभ्-प्राप् (कर्म.)।

लाव[1], सं. पुं. (सं.) कर्तनं, कृंतनं, लवनं, छेदनम् २. लवः, लावकः, लघुजंगलः।

लाव[2], सं. स्त्री. (देश.) दे. 'रस्सा, रस्सी'।

लावक, सं. पुं. (सं.) लवः, लावकः, लघुजंगलः २. छेदकः, छेत्तृ, छेदकरः,-छिद्।

लावण्य, सं. पुं. (सं. न.) लवणता-त्वं, क्षारता २. विशिष्ट-सौंदर्य-रूपं, छविः (स्त्री.), चारुता, श्रीः-कांतिः (स्त्री.)।

लावनी, सं. स्त्री. (देश.) (१-२) छन्दो-गीतिका,-भेदः, *लावणी।

लावलशकर, सं. पुं. (हिं+फ़ा.) सपरिच्छदं सैन्यम्।

लावल्द, वि. (अ.) निस्संतान, निरपत्य।

लावा[1], सं. पुं. (सं. लावः-बः) दे. 'लवा'।

लावा[2], सं. पुं. (अं.) ज्वालामुखी-आग्नेय,-उद्गारः।

लावारिस, वि. (अ.) अदायाद, दायादरहित (मनुष्य) २. अदायिक, स्वामि-प्रभु,-हीन (धन)।

—माल, सं. पुं. (अ.) अदायिकं-स्वामिहीनं, रिक्थं-द्रव्यं-धनम्।

लाश, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'शव'।

लासा, सं. पुं. (हिं. लस) संश्लेपक,-द्रव्यं-लेपः २. द्रुमदुग्धं, क्षुपक्षीरम्।

—लगाना, मु., प्र-वि,-लुभ् (प्रे.), प्रतॄ-वंच् (प्रे.) २. उत्तिज्-उद्दीप् (प्रे.) ३. संश्लेपक-द्रव्येण खगान् बंध् (क्र्. प. अ.)।

लासानी, वि. (अ.) अनुपम, अप्रतिम, अद्वितीय।

लास्य, सं. पुं. (सं. न.) नृत्यं २. भाव-ताल-लय-आश्रयं-नृत्यं ३. स्त्रीनृत्यं ४. तौर्यत्रिकम्।

लाहौरी नमक, सं. पुं. (हिं.+फ़ा.) दे. 'सैंधा नमक' (नमक के नीचे)।

लिंग, सं. पुं. (सं.) चिह्नं, लक्षणं, अभिज्ञानं, लक्ष्मन् (न.) २. अनुमानकारणं, साधक-हेतुः ३. मूलप्रकृतिः (स्त्री., सां.) ४. मेढ्रः-ढ्रं, दे. 'लिंगेंद्रिय' ५. शिवमूर्ति-भेदः ६. शब्द-रूपभेदः (व्या.) ७. पुराणविशेषः।

—देह, सं. पुं. (सं.) सूक्ष्म-लिंग,-शरीरं (=१० इन्द्रियाँ, ५ तन्मात्रा, मन, बुद्धि=१७ तत्त्व)।

—पुराण, सं. पुं. (सं. न.) शैवानां पुराण-विशेषः।

—वृत्ति, सं. पुं. (सं.) धर्मध्वजिन्, दांभिकः, लिंगिन्।

—स्थ, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मचारिन्।

लिंगेंद्रिय, सं. पुं. (सं. न.) शेफः, शिश्नः-नं, लिंगं, उपस्थः-स्थं, शेफस् (न.), राग-काम,-लता मेढ्रः-ढ्रं, मेहनं, शंकुः, काम-मदन,-अंकुशः, ध्वजः, कंदर्पमुषलः।

लिंगोटी, सं. स्त्री., दे. 'लँगोटी'।

लिंट, सं. पुं. (अं.) व्रणोपयोगी श्लक्ष्णवस्त्रभेदः।

लिंफ, सं. पुं. (अं.) देहरसः।

लिए, अव्य. (कारकचिह्न) (सं. लग्न या कृते) –अर्थं,–अर्थे–अर्थाय,-कृते,-हेतोः, (प्रायःचतुर्थी विभक्ति, से, उ. राम के लिए=रामाय)।

लिखत, सं. स्त्री. (सं. लिखितं) लेखः, लिपि-बद्ध-अक्षरांकित,-विषयः २. लिखितपत्रं ३. लिखितं दे. 'दस्तावेज़'।

लिखना, क्रि. स. (सं. लिखनं) लिख् (तु. प. से.), लेखे वर्ण् (चु.)-प्रतिपद् (प्रे.),

पत्रे आरुह्-निविश् (प्रे.), लिपिबद्ध (वि.) कृ. २. (ग्रंथादि), प्रणी (भ्वा. प. अ.), रच् (चु.), निर्मा (जु. आ. अ.; अ. प. अ.), ग्रंथ् (क्र्. प. से.), नि-प्र,-बंध् (क्र . प. अ.) ३. वर्ण् (चु.), आ-अभि,-लिख्, चित्र् (चु.)। सं. पुं., लि(ले)खनं, पत्रे आरोपणं-निवेशनं २. रचनं, निर्माणं, प्रणयनं ३. आलिखनं, चित्रणम्।

लिखने योग्य, वि., लेख्य, लेखनीय, लेखार्ह इ.।

लिखने वाला, सं. पुं., दे. लेखकः।

लिखवाई, सं. स्त्री., दे. 'लिखाई' (४)।

लिखवाना, क्रि. प्रे., व. 'लिखना' के प्रे. रूप।

लिखाई, सं. स्त्री. (हिं. लिखना) लिखनं, लेखनं, अक्षरविन्यासः २. लिपिः (स्त्री.)-पी, अक्षर रचना ३. लि(ले)खन,-रीतिः (स्त्री.)-शैली ४. लि(ले)खन,-भृतिः (स्त्री.)।

—पढ़ाई, सं. स्त्री., विद्याभ्यासः, शिक्षा, लिखनपठनम्।

लिखाना, क्रि. प्रे., व. 'लिखना' के प्रे. रूप।

—पढ़ाना, मु., शिक्ष् (प्रे.), विद्याभ्यासं कृ (प्रे.)।

लिखापढ़ी, सं. स्त्री. (हिं. लिखना+पढ़ना) लेख-पत्र,-व्यवहारः २. लिखितेन दृढीकरणम्।

लिखावट, सं. स्त्री. (हिं. लिखना) लिपी-पिः (स्त्री.), अक्षर,-विन्यासः-संस्थानं २. लेख-लखन,-प्रणाली-शैली।

लिखा हुआ, वि. लिखित, लिपिबद्ध, लेख्यार्पित २. रचित, प्रणीत, निर्मित ३. चित्रित।

लिखित, वि. (सं.) लेख-लिपि,-बद्ध, अंकित, लेख्य, कृत-आरूढ सं. पुं. (सं. न.) लि(ले)-खनं, लेखः २. लिपी-पिः (स्त्री.) ३. लिखितं, दे. 'दस्तावेज़' ४. प्रमाणपत्रम्।

—पाठक, सं. पुं. (सं.) हस्तलेख,-पाठकः-अध्येतृ।

लिटमस, सं. पुं. (अं.) शेवलम्।

लिटाना, क्रि. स., व. 'लेटना' के प्रे. रूप।

लिथड़ना, क्रि. अ., व. 'लथेड़ना' के कर्म. के रूप।

लिपटना, क्रि. अ. (सं. लिप्त>), आ-प्र-सं, संज् (भ्वा. प. अ.), सं-परि,-लग् (भ्वा. प. से.) संसक्त-परिलग्न (वि.) भू, श्लिष् (दि. प. अ.) २. आलिंग् (भ्वा. प. से.), आश्लिष्; परि-,स्वंज् (भ्वा. आ. अ.), उपगुह् (भ्वा. उ. से.) ३. लीन-मग्न-व्यापृत-निरत-परायण (वि.) भू। सं. पुं., आसंगः, परिलगनं, श्लेषः २. आलिंगनं, परिरंभण, परिष्वजनम्।

लिपटनेवाला, सं. पुं., आसंगिन्, संलग्नशीलः २, आलिंगनकर्तृ, परिरंभकः ३. आलिंगित।

लिपटाना, क्रि. स., व. 'लिपटना' के प्रे. रूप।

लिपटा हुआ, वि., परिलग्न, संसक्त, उपगूढ।

लिपड़ी, सं. स्त्री. (सं. लेपः>) उपनाहः, उत्कारिका, प्रलेपः।

लिपना, क्रि. अ., व. 'लीपना' के कर्म. के रूप।

लिपवाना, लिपाना, क्रि. प्रे., व. 'लीपना' के प्रे. रूप।

लिपाई, सं. स्त्री. (हिं. लीपना) प्र-वि-,लेपः-लेपनं, उपनाहनं, लिपः, लिंपः, लिपी-पिः (स्त्री.) २. लेपन-भृत्या-कर्मण्या-मर्मण्या।

लिपि, सं. स्त्री. (सं. लिपी-पिः, स्त्री.) लिपिका, लिबी-विः-विः (स्त्री.), अक्षर,-विन्यासः-संस्थानं-रचना, लिखितं, लि(ले)खनम्।

—कर, सं. पुं. (सं.) लेपकः, लेपकारः, पलगंडः, लिंपः, लिपिंकरः २. लेखकः, पंजिकारः, लिपिकारः।

—कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'लिपिकर'(२)।

—बद्ध, वि. (सं.) लिखित, अक्षरांकित, लेखनिवेशित।

—सज्जा, सं. स्त्री., लेख,-साधनानि-उपकरणानि (न. बहु.)।

लिप्त, वि. (सं.) चर्चित, दिग्ध, लेपान्वित, २. मग्न, लग्न, निरत, आसक्त, लीन।

लिप्सा, सं. स्त्री. (सं.) इच्छा, अभिलाषः, ईप्सा २. लोभः, लोलुपता।

लिप्सु, वि. (सं.) इच्छु-च्छुक, अभिलाषिन् २. लोलुप-भ, गृध्नु।

लिफ़ाफ़ा, सं. पुं. (अ.) पत्र,-पुटः-कोषः-आवेष्टनं-आवरणं २. आपातरमणीयवेशः ३. आडंबरः ४. भंगुर-भिदुर,-पदार्थः।

—खुलना, मु., रहस्यं विवृ (कर्म.), स्वरूपं प्रकटीभू।

—बनाना, मु. आडंबरं रच् (चु.)।

लिबास, सं. पुं. (अ.) दे. 'वेश'।

लियाक़त, सं. स्त्री. (अ.) योग्यता, क्षमता २, गुणः, कला ३. सामर्थ्यं ४. शीलम्।

लिवाना, क्रि. प्रे., व. 'लेना' तथा 'लाना' के प्रे. रूप।

लिवा लाना, क्रि. स., सह आनी (भ्वा.प.अ.)।

लिसोड़ा, सं. पुं., दे. 'लसोड़ा'।

लिहाज़, सं. पुं. (अ.) अवेक्षणं. अवधानं २. कृपा-दया,-दृष्टिः, (स्त्री.) अनुग्रहः ३. पक्षपातः-तिता ४. लज्जा, त्रपा ५. प्रतिष्ठा-मर्यादा,-विचारः ६. शीलसंकोचः।

—करना, क्रि. अवधा (जु. उ. अ.) २. आदृ (तु. आ. अ.) ३. अनुग्रह् (क्र्. प. से.) ४. मर्यादां पा (प्रे. पालयति)।

लिहाज़ा, अ. (अ.) अतः, अत एव (दोनों अव्य.)।

लिहाफ़, सं. पुं. (अ.) दे. 'रजाई'।

लीक, सं. स्त्री. (सं. लेखा) रेखा-खा, दंडाकार-लिपी-पिः (स्त्री.) २. (शकटादीनां) चक्र-मार्गः ३. दे. 'पगदंडी' ४. यशस् (न.), प्रतिष्ठा ५. रीतिः (स्त्री.), लोकाचारः, प्रथा ६. कलंकः, लांछनं ७. गणनाचिह्नम्।

—पर चलना,
—पीटना, } मु. दे. 'लकीर' के नीचे।

—से बेलीक होना, मु., पथभ्रष्ट (वि.) भू, रूढ़िं त्यज् (भ्वा. प. अ.)।

लीख, सं. स्त्री. (सं. लीक्षा) लिक्षा, यूकांडं, लि(ली)क्षा, लिख्यः।

लीचड़, वि. (देश.) अलस, मंद, मंथर २. संलग्नशील, दृढ़ग्राहिन् ३. कृपण, कदर्य।

—पन, सं. पुं., आलस्यं, कार्पण्यं, संलग्न-शीलता!

लीची, सं. स्त्री. (चीनी-लीचू) अलीचिका, फलभेदः।

लीडर, सं. पुं. (अं.) दे. 'नेता'।

लीद, सं. स्त्री. (देश.) (गजाश्वादीनां) अव-स्करः, उच्चारः, शमलं, पुरीषं, फलम्।

लीन, वि. (सं.) लयप्राप्त, समाविष्ट, व्याप्त २. तन्मय, नि-,मग्न, आसक्त, तद्गतचित्त, निरत, व्यापृत,-पर,-परायण। ३. द्रवीभूत ४. तिरोहित, लुप्त।

लीनता, सं. स्त्री. (सं.) तन्मयता, तत्परता, निमग्नता, आसक्ति (स्त्री.)।

लीपन, सं. पुं. (सं. लेपनं) दे. 'लिपाई'(१)।

लीपना, क्रि. स. (सं. लेपनं) अनु-प्र-वि,-लिप् (तु. प. अ.) २. दिह् (अ. उ. अ.), उपनह् (दि. प. अ.), अंज् (रु. प. वे.)। सं. पुं., अनु-प्र-वि,-लेपः-लेपनं; उपनाहनं, उपदेहनम्।

—पोतना, क्रि. स., शुध् (प्रे.), संस्कृ.।

लीपनेवाला, सं. पुं., लेपकः, पलगंडः, २. उपदेहकः।

लीपा हुआ, वि., प्र-वि-,लिप्त, दिग्ध, अक्त।

लीमू, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'निंबू'।

लीला, सं. स्त्री. (सं.) क्रीडा, केलिः (स्त्री.), खेला, खेलनं, कूर्दनं, क्रीडनं २. विहारः, विनोदः, रंजनं ३. शृङ्गारभावचेष्टा, विलासः, काम,-क्रीडा-केलिः (स्त्री.) ४. हावभेदः (सा.), ५. विचित्रव्यापारः, रहस्यकृत्यं ६. चरित्रा-भिनयः (उ. रामलीला इ.)।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) विलास-क्रीडा,-भवनम्।

—पुरुषोत्तम, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः।

—स्थल, सं. पुं. (सं. न.) क्रीडाभूमिः (स्त्री.)।

लीलावती, वि. स्त्री. (सं.) विलासिनी। सं. स्त्री. (सं.) भास्कराचार्यभार्या २. गणित-ग्रन्थविशेषः (३-४) रागिनी-छंदो,-भेदः।

लुंगी, सं. स्त्री. (हिं. लांग) *निष्कच्छ,-शाटी-धौतिका २. *रेखोष्णीपः-पं, चित्रशिरो-वेष्टनम्।

लुंचन, सं. पुं. (सं. न.) उत्पाटनं, उद्धरणं, उत्कर्षणं, २. पृथक् करणं, अपनयनं ३. कर्तनं छेदनम्।

लुंज-जा, वि. (सं. लुंचनं>) करचरणविहीन, अपांग, व्यंग, विकल, विकलांग, श्रोण। सं. पुं., स्थाणुः, ध्रुवः, शंकुः, अपत्रपादपः।

लुंठक, सं. पुं. (स.) लुंटा(ठा)कः, दे. 'लुटेरा'।

लुंठन, सं. पुं. (सं. न.) अपहरणं, मोषणं, दे. 'लूटना' (सं. पुं.)।

लुंड[1], सं. पुं. (सं.) चौरः, तस्करः।

लुंड[2], सं. पुं. (सं. रुंडः-डं) कबंधः।

—मुंड, वि. (सं. रुंडं+मुंडं>) दे. 'लुंज' वि. तथा सं. पुं. २. पोट्टलीवत् व्यावर्तित।

लुंडा, वि. (सं. रुंड>) दे. 'लंडूरा'।

लुआठी, सं. स्त्री. (सं. उल्का+काष्ठं>) अलातं, उल्का, प्रदीप्तकाष्ठम्।

लुआब, सं. पुं. (अ.) संलग्नशीलः, फलसारः २. लाला, स्यंदिनी।

—दार, वि. (अ.+फ़ा.) संलग्नशील, दे. 'लसदार'।

लुक, सं. पुं. (सं. लोकः>) कुक्कुभः (=वार्निश) २. ज्वाला।

लुकना, क्रि. अ. (सं. लुक्=लोप>) दे. 'छिपना'।

—लुकछिपकर, मु., निभृतं, रहसि, रहः (सब अव्य.)।

लुकमा, सं. पुं. (अ.) कवलः, ग्रासः, गुडकः।

लुकमान, सं. पुं. (अ.) प्राचीनो वैद्य-विशेषः।

—के पास दवा नहीं, मु., असाध्य-अप्रतिकार्य-निरुपाय,-रोगः-व्याधिः-आमयः।

—को हिकमत सिखाना, मु., प्राज्ञाय प्रज्ञां दा (जु. उ. अ.), चतुरमपि चातुर्यं शिक्ष् (प्रे.)।

लुकाट, सं. पुं. (सं. लकु(क)चः) (वृक्ष) लिकुचः, शूरः, कार्श्यः, दृढवल्कलः, उहुः। २. (फल) लक(कु)चं, शूरं इ.।

लुकाना, क्रि. स. (हिं. लुकना) व. 'छिपना' के प्रे. रूप।

लुगदी, सं. स्त्री. (देश.) आर्द्रगोलकः-कम्।

लुगाई, सं. स्त्री. (हिं. लोग) नारी २. पत्नी।

लुचपन, सं. पुं. (हिं. लुचा) लंपटता, कामुकता २. दुर्वृत्तं, दुराचारः, दौर्जन्यम्।

लुच्चा, सं. पुं. (हिं. लुचकना, सं. लुंचन से) लुंचकः, अपहारकः, दुर्वृत्तः, दुराचारिन्, कुपथगामिन् २. लंपटः, कामुकः ३. क्षुद्रः, दुष्टः, निर्लज्जः [लुची (स्त्री.)]।

लुची, सं. स्त्री. (सं. चूलिकं) पक्वान्नभेदः।

लुटना, क्रि. अ., व. 'लूटना' के कर्म. के रूप।

लुटवाना, क्रि. स. व. 'लूटना' के प्रे. रूप।

लुटाना, क्रि. स. (हिं. लूटना) व. 'लूटना' के प्रे. रूप। २. अमितं व्यय् (चु.), अपव्ययं-अतिव्ययं कृ, अपव्यय् (चु.) ३. मूल्यं विना दा ४. मुष्टिभिः परिक्षिप् (तु. प. अ.)-पर्यस् (दि. प. से.)। सं. पुं., अप-अति-अमित,-व्ययः २. मुधा विक्षेपः।

लुटानेवाला, सं. पुं., अपव्ययिन्, विक्षेपिन्।

लुटारू, वि. (हिं. लुटाना) अप-अति-वृथा,-व्ययिन्, मुक्तहस्त, अर्थनाशिन्।

लुटिया, सं. स्त्री. (हिं. लोटा) लघुकमंडलुः।

—डुबाना, मु., आत्मानं न्यक्कृ (प्रे.)।

लुटेरा, सं. पुं. (हिं. लूटना) मार्गतस्करः, हठमोषकः, पाटच्चरः, परिपंथिन्, लुंट(टा,ठा)कः २. वंचकः, प्रतारकः।

लुढ़कना, लुढ़ना, क्रि. अ. (सं. लुंठनं) वि-लुठ् (तु. प. से.), वि-लुट् (भ्वा. दि. प. से.) २. स्रु (भ्वा. प. अ.), बहिःपत्-निर्गल् (भ्वा. प. से.), निःसृ (भ्वा. प. अ.)। सं. पुं., वि-, लुठनं-लोटनं २. बहिः पतनं, निर्गलनं, च्यवनम्।

लुढ़काना, लुढ़ाना, क्रि. स., व. 'लुढ़कना' के प्रे. रूप।

लुढ़ियाना, क्रि. स. (हिं. लोढ़िया) वर्त्तिकाकारं सिव् (दि. प. से.)।

लुतरा, सं. पुं. (देश.) परोक्षनिंदकः, पिशुनः, कलहसाधकः। कर्णेजपः २. अपकारकः, कुचेष्टकः। [लुतरी (स्त्री.)]।

लुत्फ़, सं. पुं. (अ.) आनंदः, मोदः २. रसः, आ-,स्वादः ३. उत्तमता ४. कृपा ५. रोचकता।

लु(लो)नाई, सं. स्त्री. (हिं. लोना) दे. 'लावण्य'(२)।

लुपरी-ड़ी, सं. स्त्री. (सं. लेपः>) दे. 'लिपड़ी' २. द्रवप्रायं भक्ष्यं, लप्सिका।

लुप्त, वि. (सं.) गुप्त, प्रच्छन्न, निभृत २. अंतर्हित, तिरोभूत, अदृष्ट ३. नष्ट, ध्वस्त। सं. पुं., लुप्तं, चौर्यधनम्।

लुब्ध, वि. (सं.) गृध्नु, गर्द्धन, दे. 'लोभी'। २. मुग्ध, मोहित, हृत। सं. पुं., दे. 'लुब्धक'।

लुब्धक, सं. पुं. (सं.) व्याधः, दे. 'शिकारी' २. लंपटः ३. गृध्नुः।

लुब्बलुबाब, सं. पुं. (अ.) तत्त्वं, सारः, सारांशः २. दे. 'गूदा'।

लुभाना, क्रि. अ. (हिं. लोभ) विलुभ् (प्रे.), दुराचारे-कुमार्गे प्रवृत् (प्रे.) २. वि-, मुह् (प्रे.), प्रलुभ् (प्रे.) ३. सम्-, आकृष् (भ्वा. प. अ.)। क्रि. अ., दे. 'रीझना'।

लुहंडा, सं. पुं. (सं. लोहहंडी) *अयःस्थाली।

लुहां(हं)गी, सं. स्त्री. (सं. लोहांग>) *लोहांगी, लोहमुखी यष्टी-ष्टिः (स्त्री.)।

लुहार, सं. पुं. (सं. लो(लौ)हकारः) अयस्कारः, व्योकारः, कर्मारः, कर्मकारः (लुहारिन स्त्री.)।

लुहारी, सं. स्त्री. (हिं. लुहार) लो(लौ)हकारी,

अयस्कारी २. लोहकारव्यवसायः, कर्मारता, अयःशिल्पम् ।

लू, सं. स्त्री. (हिं. लूक) घर्मवातः, उष्णानिलः, तप्तपवनः ।

—चलना, क्रि. अ., उष्णानिलः वा(अ.प.अ.) ।

—मारना या लगना, मु., घर्मवातेन व्यथ् (भ्वा. आ. से.) ।

लूक, सं. स्त्री. (सं. लोक्>) ज्वाला २, दे. 'लुआठी' ३. दे. 'लू' ४. उल्का ।

लूट, सं. स्त्री. (हिं. लूटना) वि-,लुंट(ठ)नं, बलात् अपहरणं, मोषणं, लुंटा-ठा, लुंठितं, लुंटी-ठी-टिः-ठिः (स्त्री.) २. अन्याय्य-व्यवहारः ३. लोतं, लोत्रं, लोप्त्रं-त्री, स्तेय-अपहृत-लुंठित,-धनं, लुंपम् ।

—का माल, सं. पुं., दे. 'लूट' (३) ।

—खसोट-पाट, सं. स्त्री. लुंठनध्वंसनं, लुंठालुंठि (न.) ।

—खूंद, मार, सं. स्त्री.. मोषणहिंसनं लुंठन-मारणं, लुंठामारम् ।

—पड़ना या मचना, क्रि. अ., ब. 'लूटना' के कर्म. के रूप ।

—मचाना, क्रि. स., दे. 'लूटना' ।

लूटना, क्रि. स. (सं. लुंठनं) वि-,लुंट्-लुंठ् (भ्वा. प. से., चु.), लुट् (भ्वा. दि. प. से.), बलात् अपहृ (भ्वा. प. अ.), प्रसह्य मुष् (क्र्. प. से.) २. चुर् (चु.), मुष्, अपहृ ३. वि-,ध्वंस्-नश् (प्रे.) ४. छलेन अन्यायेन वा आदा (जु. आ. अ.)-हृ ५. अत्यधिक-अनुचित,-मूल्यं आदा ६. मुह् (प्रे.), वशी-कृ. मनो हृ । सं. पुं., दे. 'लूट' ।

लूटने योग्य, वि., लुंठनीय, लुंठितव्य ।

लूटनेवाला, सं. पुं., दे. 'लुटेरा' ।

लूटा हुआ, वि., लुंटि(ठि)त, बलात् अपहृत-मुषित ।

लूता, सं. स्त्री. (सं.) मर्कटकः, ऊर्णनाभिः, दे. 'मकड़ी' २. पिपीलिका ३. मर्कटकमूत्र-स्पर्शजः त्वग्रोगः ।

लूती, सं. स्त्री., दे. 'लुआठी' ।

—लगाना, मु., कलहं जन् (प्रे.), दे. 'चुगली करना' ।

लून, वि. (सं.) छिन्न, कृत्त ।

लून, सं. पुं. (सं. लवणं) दे. 'नमक' ।

लूनिया, वि. (हिं. लून) लवण, क्षार । सं. पुं., लवणकारः ।

लूम, सं. पुं. (सं. न.) लांगूलं, पुच्छम् ।

लूमड़ी, सं. स्त्री., दे. 'लोमड़ी' ।

लूला, वि. (सं. लून>) छिन्न-लून,-पाणि-हस्त-कर २. अपांग, व्यंग ३. असक्त, असमर्थ ।

लेंड़ी, सं. स्त्री. (सं. लेंडं>) बद्धमलं, *विष्ठा-वर्तिः (स्त्री.) २. दे. 'मेंगनी' ।

लेंस, सं. पुं. (अं.) वीक्षम् ।

—मेग्निफाइङ्ग लेंस, बृहद्दर्शकवीक्षम् ।

लेंहड़ा, सं. पुं. (देश.) पशु,-वृंदं-यूथं कुलं-समजः ।

ले, लेकर, अव्य. (हिं. लेना) आरभ्य, प्रभृति, आ-, (पंचमी से भी; उ., गांव से ले(कर)= आग्रामात्, ग्रामात्, कल से ले(कर) = श्वः (प्रभृति-आरभ्य) २. गृहीत्वा, आदाय ।

लेई[1], सं. स्त्री. (सं. लेपः>) संश्लेषकलेपः, २. *सुधेष्टकचूर्णलेपः ।

लेइ[2], सं. स्त्री. (सं. लेहः) अवलेहः, दे. २. लप्सिका, द्रवप्रायसंयावः ।

लेकिन, अव्य. (अ.) किंतु, परंतु २. तथापि ।

—अगर, अव्य. (अ.+फ़ा.) किंतु, यदि ।

लेक्चर, सं. पुं. (अ.) व्याख्यानं, भाषणं २. प्रपाठः, अध्यापनम् ।

—बाज़ी, सं. स्त्री. (अं.+फ़ा.) व्याख्यान-प्राचुर्य्यम् ।

—झाड़ना, मु., सोत्साहं व्याख्या (अ. प. अ.) अथवा अधि-इ (प्रे., अध्यापयति) ।

लेक्चरार, सं. पुं. (अं. लेक्चरर) व्याख्यातृ, उपदेशकः, वक्तृ २. अध्यापकः, उपाध्यायः ।

लेक्टोमीटर, सं. पुं. (अं.) दुग्धमापकम् ।

लेख, सं. पुं. (सं.) लिपी(बी)-पिः(बिः) (स्त्री.) २. लिखित-लिपिबद्ध,-विषयः-वार्ता ३. प्रस्तावः, निबंधः ४. दे. 'लिखाई' (१-३) । ५. गणनं, संकलनम् ।

लेखक, सं. पुं. (सं.) ग्रंथकारः, पुस्तक-लेखकः-रचयितृ-प्रणेतृ २. लिपि(पी-बी) कारः, मसिपण्यः, पंजीकारः, लिपिज्ञः, वाणिकः ।

लेखन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लिखाई'(१) । २. लेखन,-कला-विद्या ३. गणनं, संख्यानं ४. भूर्जत्वच् (स्त्री.) ।

लेखनी, सं. स्त्री. (सं.) अक्षर-वर्ण,-तूली-

लिका, कलमः, चित्रकः, कराश्रयः, वर्णिका, शर्करी।

लेखा, सं. पुं. (सं. लेखः>) संकलनं, संख्यानं, गणनं-ना २. व्यय-मूल्य-निरूपणं-अनुमानं ३. आयव्यय-देयादेय,-विवरणं ४. अनुमानं, विचारः।

—डालना, मु., आयव्ययपंजिकायां नामन् (न.) लिख् (तु. प. से.)।

—पूरा या साफ करना, मु., अवशेषं शुध् (प्रे.)।

लेखिका, सं. स्त्री. (सं.) ग्रंथकर्त्री, पुस्तकप्रणेत्री २. लिपिकारी, लिपिज्ञा।

लेखे, क्रि. वि. (हिं. लेखा) विचारेण २. संबंधे।

लेख्य, वि. (सं.) लि(ले)खितव्य, ले(लि)खनार्ह, ले(लि)खनीय। सं. पुं. (सं. न.) लिखितलिपिबद्ध,-विषयः, लेखः २. दे. 'दस्तावेज़'।

लेजिस्लेटिव काउंसिल, सं. स्त्री. (अं.) व्यवस्थापकसभा।

लेट[1], वि. (अं.) चिरायित, विलंबित, कालसमय,-अतीत।

लेट[2], सं. स्त्री. (देश.) दे. 'गच'।

लेटना, क्रि. अ. (हिं. लोटना) संविश् (तु. प. अ.), शी (अ. आ. से.) २. विश्रम् (दि. प. से.) ३. दे. 'मरना'। सं. पुं., संवेशः-शनं, शयनम्।

लेटनेवाला, सं. पुं., संवेशेच्छुकः, शयालुः।

लेटर, सं. पुं. (स्त्री.) (अं.) पत्रं, लेखः, लेख्यं, पत्रिका, पत्री, पत्रकं, लिखितं, सन्देशपत्रं। २. अक्षरं, वर्णः,-र्णं मातृका, अभिनिष्ठानः।

—बाक्स, सं. पुं. (अं.) पत्रपेटिका।

लेटाना, क्रि. स., व. 'लेटना' के प्रे. रूप।

लेटा हुआ, वि., संविष्ट, शयान, शयित।

लेड, सं. पुं. (अं.) सीसं, सीसकम्, दे. 'सीसा'।

लेडी, सं. स्त्री. (अं.) महिला, कुलांगना, आर्या २. नारी, रमणी ३. लार्डोपाधिधारकस्य पत्नी।

—डाक्टर, सं. स्त्री. (अं.), जीवदा, चिकित्साजीविनी, चिकित्सिका, रोगहारिणी।

लेन, सं. पुं. (हिं. लेना) आदानं, ग्रहणं, धारणं २. दे. 'लहना' (१-२)।

—दार, सं. पुं. (हिं.+फ़ा.) उत्तमर्णः, ऋणदः, महाजनः।

—देन, सं. पुं. (हिं.) आदानप्रदानं, व्यवहारः २. कौसीद्यं, वृद्धिजीवनं-विका।

लेना, क्रि. स. (सं. लभनं) आदा (जु. आ. अ.), प्रति-इष् (तु. प. से.), प्रति-परि,-ग्रह् (क्र. प. से.) २. अधिगम् (भ्वा. प. अ.), आसद् (प्रे.), प्राप् (स्वा. प. अ.), लभ् (भ्वा. आ. अ.) ३. धृ (भ्वा. प. अ., चु.), अव-आ-लंब् (भ्वा. आ. से.), ग्रह् ४. जि (भ्वा. प. अ.), अभिभू (भ्वा. प. से.), वशीकृ ५. क्री (क्र्. उ. अ.) ६. ऋणं ग्रह् ७. अंके-क्रोडे निधा (जु. उ. अ.) ८. स्वी-अंगी-कृ, प्रतिपद् (दि. आ. अ.) ९. प्रत्युद्,-गम्-व्रज् (भ्वा. प. से.)-या (अ. प. अ.) सत्कृ, संमन्-संभू (प्रे.) १०. कार्यभार स्वीकृ ११. रुचि (स्वा. प. अ.), संग्रह् (क्र्. प. से.) १२. उपहस् (भ्वा. प. से.), व्यंग्योक्तिभिः लज्ज् (प्रे.)। सं. पुं., आदानं, ग्रहणं, प्रतिग्रहः, अधिगमनं, प्रापणं, आसादनं, आलंबनं, धारणं, ऋणादानं, अंगीकरणं, वशीकरणं, संचयः-यनं, क्रयणं, क्रयः इ.।

लेने योग्य, वि. (सं.) आदेय, ग्राह्य, ग्रहीतव्य, प्राप्य, आसादनीय, क्रेय, क्रयणीय इ.।

लेने वाला, सं. पुं., आदातृ, गृहीतृ, अधिगंतृ, आसादयितृ, अंगीकर्तृ, क्रेतृ, ग्राहकः।

लिया हुआ, वि. (सं.) आत्त, आदत्त, गृहीत, प्राप्त, अधिगत, धृत, अंगीकृत, वशीकृत, क्रीत इ.।

ले आना, मु., दे. ३. 'लाना'।

ले चलना या ले जाना, मु., आदाय गम् २. आत्मना सह नी (भ्वा. प. अ.)।

ले डूबना, मु., परमपि आत्मना सह क्षै-अवसद्-नश् (प्रे.)।

ले देकर, मु., सर्वं संकलय्य २. कृच्छ्रेण, कथमपि।

लेना एक न देना दो, मु., न कोऽप्यर्थः, न किमपि प्रयोजनम्।

लेना देना, मु., दानादानं, आदानप्रदानं २. कौसीद्यं, वृद्धिजीवनम्।

लेने के देने पड़ना, मु., भद्रस्यामद्रं फलं, इष्टाशायामनिष्टप्रसंगः।

ले भागना, मु., सह नीत्वा पलाय् (भ्वा. आ. से.), अपहृ (भ्वा. उ. अ.)।

ले मरना, मु., दे. 'ले डूबना'।

लेन्स, सं. पुं. (अं.) काचः ।

लेप, सं. पुं. (सं.) अभि,-अंजनं, उपदेहः, समालभः, उपनाहः, प्रलेपपट्टिका २. लेपनं, सुधा ३. लेपस्तरः ४. उद्वर्तनं, दे. 'उबटन' ५. संपर्कः, सम्बन्धः ।

—चढ़ाना, क्रि. स., दे. 'लीपना'।

लेपक, सं. पुं. (सं.) लेपिन्, लेपकारः, पलगंडः, लेप्यकृत् ।

लेपन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लिपाई' (१)।

लेपना, क्रि. स., दे. 'लीपना'।

लेपालक, सं. पुं. (हिं. लेना+पालना) दत्तकः, दे.।

लेबर, सं. पुं. (अं.) परि-,श्रमः, आयासः, प्रयासः २. श्रमिक-कर्मकर,-वर्गः ।

—पार्टी, सं. स्त्री. (अं.) श्रमिकदलः लम् ।

—यूनियन, सं. स्त्री. (अं.) श्रमिक-कर्मकर-, संघः-समाजः-सभा ।

लेबुल, सं. पुं. (अं.) लेपपत्रम् ।

लेबोरेटरी, सं. स्त्री. (अं.) प्रयोगशाला, २. रसायनशाला।

लेमोनेड, सं. पुं. (अं.) जंबीर,-पेयं-पानकम् ।

लेरुवा, सं. पुं. (सं. लेहः>) दे. 'बछड़ा'।

लेवा, वि. (हिं. लेना) आ,-दातृ-दायक ।

—देवा, सं. पुं., आदानप्रदानम् ।

नाम—, सं. पुं., पुत्रः २. दायादः ।

लेश, सं. पुं. (सं.) दे. 'लव' २. चिह्नं, लक्षणं ३. संबंधः ४. अलंकारभेदः (सा.) २. अल्प, स्तोक ।

—मात्र, वि. (सं.) अणु-अल्प,-मात्र (—त्रा, त्री स्त्री.) ।

लेस, सं. पुं., दे. 'लासा' (१)।

—दार, वि. (हिं+फ़ा.) दे. 'लसदार'।

लेहन, सं. पुं. (सं. न.) जिह्वया स्वादनं-स्वदनं-रसनम् ।

लेहाज़ा, क्रि. वि. (अ.) अतः, अतएव ।

लेहिन, सं. पुं. (सं.) टंकणं-नं, रसशोधनः, बिडम् ।

लेह्य, वि. (सं.) लेहनीय, लेटव्य । सं. पुं. (सं. न.) दे. 'अवलेह' २. लेहनीयाहारः ३. अमृतम् ।

लैन, सं. स्त्री., दे. 'लाइन'।

लैसंस, सं. पुं. (अं. लाइसेंस) अधिकारपत्रं, अनुज्ञालेखः ।

लैस, सं. पुं. (अं. लेस) सज्ज, सन्नद्ध, सिद्ध २. जालाभरणं, दे. 'फ़ीता'।

लोंद, सं. पुं., दे. 'मलमास'।

लोंदा, सं. पुं. (सं. लोष्टः-ष्टं) आर्द्र-,पिंडः (–डं)-घनः, क्लिन्नगोलः (–लं)-लोष्टः(–ष्टं) ।

लो, अव्य. (हिं. लेना) दृश्यतां, प्रेक्ष्यतां, अवलोक्यतां । (केवल इन्हीं रूपों में) ।

लोई[1], सं. स्त्री. (सं. लोमीय) लौमी, नीशारः, आविकं. ऊर्णायुः, कंबलभेदः ।

लोई[2], सं. स्त्री., दे. 'पेड़ा' (गूंधे हुए आटे का) ।

लोक, सं. पुं. (सं.) भुवनं, भूर्भुवःस्वरादयः चतुर्दशस्थानविशेषाः २. जगत् (न.),जगती, विश्वं, चराचरं, ब्रह्मांडं, भुवनं, विष्टपं ३. नि-आ,-वासः ४. दिशा, प्रदेशः ५. लोकः-काः, जनः-नाः ६. समाजः ७. प्राणिन् ।

—कंटक, सं. पुं. (सं.) जनपीडकः ।

—तंत्र, सं. पुं. (सं. न.) जन-प्रजा-तंत्रम् ।

—त्रय, सं. पुं. (सं. न.) त्रिभुवनं, त्रैलोक्यं, त्रिलोकी ।

—नाथ, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मन् (पुं.) २. विष्णुः ३. शिवः ४. बुद्धः ५. लोकपालः ।

—पति, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मन् (पुं.) २. नृपः ३. लोकपालः ।

—परलोक, सं. पुं. (सं.-कौ) उभौ लोकौ, लोकद्वयम् ।

—पाल, सं. पुं. (सं.) दिक्पालः २. नृपः ।

—प्रवाद, सं. पुं. (सं.) जन-लोक,-रवः-श्रुतिः-(स्त्री.)-प्रवादः ।

—मर्यादा, सं. स्त्री. (सं.) लोक, आचारः-व्यवहारः, जगद्रीतिः (स्त्री.) ।

—यात्रा, सं. स्त्री. (सं.) जीवनं, प्राणधारणं ।

—विश्रुत, वि. (सं.) जगद्विख्यात । २. व्यवहारः, लौकिककृत्यानि (न. बहु.) ।

—श्रुति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'लोकप्रवाद'।

—संग्रह, सं. पुं. (सं.) लोक-जन,-रंजनं-प्रसादनं २. लोकहितैषणा ।

लोकांतर, सं. पुं. (सं. न.) पर-प्रेत,-लोकः ।

लोकाचार, सं. पुं. (सं.) जगद्रीतिः-रूढ़िः (स्त्री.), लौकिकं, लोक,-मार्गः-व्यवहारः ।

लोकाट, सं. पुं. (चीनी लुः+क्यू) लवकटं, चैनम् ।

लोकालोक, सं. पुं. (सं.) चक्रवालः, पर्वत-विशेषः (पुराणं) ।

लोकैषणा, सं. स्त्री. (सं.) अभ्युदयाभिलाषः २. स्वर्गलिप्सा ।

लोकोक्ति, सं. स्त्री. (सं.) आभाणकः, जनवादः, लौकिक,-न्यायः २. अलंकारभेदः (सा०) ।

लोकोत्तर, वि. (सं.) अलौकिक, अमानुष, अपार्थिव, लोकातिशायिन्, दिव्य, अति,-विलक्षण-अद्भुत ।

लोग, सं. पुं. (सं. लोकः) लोकः-काः, जनः-नाः, मानवाः, मनुष्याः, नराः, मानुषाः, मर्त्याः, मनुजाः (सब बहु.) ।

लोच[1], सं. स्त्री. (हिं. लचक) दे. 'लचक' २. कोमलता, मृदुता ।

लोच[2], सं. पुं. [सं. रुचिः (स्त्री.)] अभि-लाषः, इच्छा ।

लोचन, सं. पुं. (सं. न.) नयनं, नेत्रम्, दे. 'आँख' ।

लोट, सं. स्त्री. (हिं. लोटना) लु(लो)ठनं, लोटनं, वेल्लनं, लुंटा,-लुंठा, लोटः ।

—पोट, वि., लुटि(ठि)त, वेल्लित, स्खलित २. मुग्ध, बद्धभाव, अनुरागिन् ३. वि-,आकुल ४. व्यत्यस्त, विपर्यस्त ।

—जाना, मु., मूर्च्छ् (भ्वा. प. से., मूर्च्छति) २. मृ (तु. आ. अ.) ३. विश्रम् (दि. प. से.) ४. चकितो मुग्धो वा भू ।

—पोट होना, मु., (पीडादिभिः) वि-,लुठ् (तु. प. से., भ्वा. आ. से.) २. भावं-अनुरागं बंध् (क्र्. प. अ.), ३. सहसा विलुठ्य वा मृ (तु. आ. अ.) ।

—होना, मु., अनुरक्त-आसक्त (वि.) भू २. व्याकुलीभू ।

लोटन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लोट' २. *लोट-नकपोतः ३. लांगलभेदः ४. मार्गशर्करा ।

लोटना, क्रि. अ. (सं. लोटनं) लुट् (भ्वा. दि. प. से.), लुठ् (भ्वा. आ. से., तु. प. से.) २. पार्श्वं परिवृत् (प्रे.) ३. आकुल-व्याकुल (वि.)भू । सं. पुं. तथा भाव, दे. 'लोट' सं. स्त्री. ।

लोटा, सं. पुं. (हिं. लोटना) कमंडलुः, दे. ।

लोडन, सं. पुं. (सं. न.) मथनं, आ-वि-लोडनम्, मंथः ।

लोडित, वि. (सं.) मथित, आ-वि-लोडित, व्याघट्टित ।

लोढ़ा, सं. पुं, (सं. लोष्टः-ष्टं>) दे. 'बट्टा' ।

लोथ-थि, सं. स्त्री. (सं. लोष्टः-ष्टं>) शवः, दे. ।

—पोथ, मु., अति,-शिथिल-श्रांत-खिन्न ।

लोथड़ा, सं. पुं. (हिं. लोथः) पलल-मांस,-पिंडः (डं) ।

लोद-ध, सं. स्त्री. (सं. लोधः) (लाल) लोध्रः, रक्तः, मार्जनः, तिरीटः, तिंदुकः । (सफेद) शुक्लः, महा,-शबरः, लोध्रः, शावरः ।

लोन, सं. पुं. (सं. लवणं) दे. 'नमक' २. लावण्यं, विशिष्टसौन्दर्यम् ।

लोना, वि. (हिं. लोन) लवण दे. 'नमकीन' २. सुन्दर, चारु । सं. पुं., *कुडय-भित्ति,-लवणं ३ लवणितकुडयस्य धूलिः (स्त्री.) ।

लोनिया, सं. पुं. (हिं. लोग) दे. 'लूनिया' । सं. पुं. ।

लोप, सं. पुं. (सं.) वि-,नाशः, क्षयः, वि,-ध्वंसः २. अदर्शनं, तिरोभावः, अंतर्धानं ३. अभावः, अविद्यमानता ४. वर्णविनाशः (व्या.) ५. विच्छेदः, विरामः ।

लोपामुद्रा, सं. स्त्री. (सं.) अगस्त्यमुनिपत्नी, लोपः, वरप्रदा, कोशीतकी ।

लोबान, सं. पुं. (अ.) सुगंधिनिर्यासभेदः *लोबानम् ।

लोबिया, सं. पुं. (सं. लोभ्यः = मूँग) क्षुधा-भिजनकः, चप(ब)लः, चर्बरः, सुकुमारः, शिंबिका, दीर्घ,-शिम्बी-बीजः ।

लोभ, सं. पुं. (सं.) परद्रव्याभिलाषः, गृध्या, गृध्नता, स्पृहा, लौल्यं, लिप्सा, गर्द्धः, तृष्णा, कांक्षा, शंसा, लोलुपता-भता, इच्छा, वांछा, मनोरथः, अभिलाषः, कामः २, कार्पण्यं, कदर्यता ।

लोभित, वि. (सं.) मोहित, आकृष्ट, हृतचित्त, लुब्ध, मुग्ध ।

लोभी, वि. (सं.-भिन्) गृध्नु, गर्द्धन, लुब्ध, लोलुप-भ, लिप्सु, अभिलाषुक, तृष्णक ।

लोम, सं. पुं. (सं.) लोमन् (न.) दे. 'रोंगटा' २. लांगूलं, पुच्छम् ।

—हर्षण, सं. पुं. (सं. न.) रोमांचः, दे. । वि., दे. 'रोमहर्षण' ।

लोमड़, सं. पुं. (सं. लोमः>) *लोमशः, *लोमाशः, दे. 'गीदड़' ।

लोमड़ी, सं. स्त्री. (हिं. लोमड़) लोमशा, लोमाशिका, दे. गीदड़ी' (संस्कृत में गीदड़-लोमड़ तथा गीदड़ी-लोमड़ी के लिए समान शब्दों का ही प्रयोग होता है ।) ।

लोमश, सं. पुं. (सं.) ऋषिविशेषः २. मेषः, दे.'भेड़ा' । वि., बहुलोमान्वित, केशिन, केशिक २. ऊर्णामय (-यी स्त्री.), और्ण (-र्णी स्त्री.) ।

—मार्जार, सं. पुं. (सं.) गंधमार्जारः, पूतिकः, मूत्रपातनः ।

लोरी, सं. स्त्री. (सं. लोल>) निद्रा-शयन-, गीतिका ।

—देना, क्रि. स., निद्रा-गीतिकया स्वप् (प्रे.) ।

लोल, वि. (सं.) सकंप, कंपमान, वेपमान, कंपित, कंप २. चंचलचित्त ३. क्षणभंगुर, पल, क्षणिक ४. उत्सुक, उत्कंठित ।

लोला, सं. स्त्री. (सं.) जिह्वा, रसना २. लक्ष्मीः-श्रीः (स्त्री.) ।

लोलुप, वि. (सं.) दे. 'लोभी' ।

लोलुपता, सं. स्त्री., दे. 'लोभ' ।

लोशन, सं. पुं. (अं.) व्रणक्षालकं, धावनौषधं, *औषधजलम् ।

लोष्ट, सं. पुं. (सं. पुं. न.) लोष्टः, मृत्तिकाखंडं, दलिः (पुं. स्त्री.), दलनी २. अश्मखंड-डः ।

लोह, सं. पुं. (सं. लोहः-हं) लौहं, दे. 'लोहा' २. रुधिरं ३. रक्तछागः ।

—कांत, सं. पुं. (सं.) अयस्कांतः, लोह-, चुंबकः ।

—कार, सं. पुं. (सं.) अयस्कारः, दे. 'लुहार' ।

—किट्ट, सं. पुं. (सं. न.) लोह,-मलं, मंडूरं, लोहजं, कृष्णचूर्णं, अयो,-मलं-रजस् (न.) ।

—चून, **—चूर**, **—चूर्ण**, } सं. पुं. (सं. लोहचूर्णं) कालक्षोदः ।

—द्रावी, सं. पुं. (सं.-विन्) लोहितः, टंकणं न. दे. 'सोहागा' ।

लोहाँगी, सं. स्त्री. (सं. लोहांगी) लोहशीर्ष,-यष्टी-दंडः-लगुडः ।

लोहा, सं. पुं. (सं. लोहः-हं) कृष्ण-, अयस् (न.)-आयसं, कालं, कालायसं, लौहं, अश्म-गिरि,-सारः, दृढं, पिंडं २. अस्त्रं, शस्त्रं, ३. लोहमयद्रव्यम् । वि., रक्त, लोहित २. अति,-दृढ-कीकस ।

लोहे का, वि., लौह(-ही स्त्री.), लोह-अयो,-मय (-यी स्त्री.), आयस (-सी स्त्री.), लोह-, आयस-, ।

लोहे का चना, मु., सुदुष्करं कर्मन् (न.) ।

लोहे के चने चबाना, मु., सुदुष्करं कर्म संपद् (प्रे.) ।

—गहना या लेना, मु., युध् (दि. आ. अ.) दे. 'लड़ना' ।

—बजना, मु., युद्धं प्रवृत् (भ्वा. आ. से.) ।

(किसीका)—मानना, मु., (अन्यस्य) प्रभुत्वं *स्वीकृ २. वि-परा,-जि (कर्म.) ।

लोहार, सं. पुं. (सं. लोहकारः) दे. 'लुहार' ।

—की स्याही, सं. स्त्री., दे, 'हीराकसीस' ।

लोहित, वि. (सं.) रक्त, शोण । सं. पुं. (सं.) मंगलग्रहः, कुजः, भौमः २. रक्तवर्णः । (सं. न.) रक्तं, रुधिरम् ।

—चंदन, सं. पुं., केसरः-रं, कश्मीरजं, कुंकुमम् ।

—नयन, वि., (सं.) रक्त-लोहित, नेत्र-नयन-ईक्षण, कुपित, क्रुद्ध ।

—शतपत्र, सं. पुं., कोकनदं, रक्त,-उत्पलं-नीरजम् ।

लोहिया, सं. पुं. (हिं. लोहा) लोहपण्य-विक्रेतृ, लोहविक्रयिन् २. लोहितर्षभः ३. लोह-गुलिका ।

लोहू, सं. पुं. (सं. लोहितं) दे. 'रक्त' तथा 'लहू' ।

लौं, अव्य. (हिं. लग) दे. 'तक' २. सदृश, तुल्य ।

लौंग, सं. पुं. (सं. लवंगं) देवकुसुमं, श्री,-प्रसूनं-पुष्पं-संज्ञं, लवंगकं, दिव्यं, शेखरं, लवं २. लवंगं (घ्राणभूषणभेदः) ।

लौंडा, सं. पुं. (हिं. लोना) (लावण्यविशिष्टः) बालकः-दारकः । वि., अबोध, अज्ञ २. चपल, चंचल ।

—पन, सं. पुं., बाल्यं २. चांचल्यम् ।

लौंडी-डिया, सं. स्त्री. (हिं. लौंडा) कन्या, कुमारी २. पुत्री ३. दासी ।

लौंडेबाज़, वि. (हिं.+फ़ा.) पुंमैथुनकारिन् ।

लौंडेबाज़ी, सं. स्त्री. (हिं. + फ़ा.) पुंमैथुनम् ।
लौ¹, सं. स्त्री. (हिं. लपट) कीलः-ला, अग्नि-ज्वाला(लः)ज्वाला, जिह्वा, शिखा २. दीपशिखा ।
लौ, सं. स्त्री. (हिं. लाग) अभिलाषः, रागः २. चित्त-मनो,-वृत्तिः(स्त्री.) ३. कामना,वांछा ।
—लगना, क्रि. अ., उद्यत (वि.) भू २. (भक्त्यादिषु) लीन-मग्न-निरत(वि.) भू ।
—लगाना, क्रि. स., सततं अभिलष् (भ्वा. प. से.) २. आत्मानं भक्त्यादिषु निमस्ज्-आसंज् (प्रे.) ३. आम्रेड् (प्रे.) ।
—लीन, वि. (सं.) मग्न, आसक्त, निरत ।
लौकिक, वि., (सं.) सांसारिक, ऐहिक, प्रापंचिक, लौक्य २. व्यावहारिक, आचारिक ।
लौकी, सं. स्त्री. (सं. लाबु-बूः दोनों स्त्री.) अलाबुः-बूः (स्त्री.), दे. 'कद्दू' ।
लौटना, क्रि. अ. (हिं. उलटना) दे. वापस आना' तथा 'वापस जाना' ।
लौटफेर, सं. पुं. (हिं. लौटना + फेरना) बृहत्-महा,-परिवर्तः-परिवर्तनम् ।
लौटाना, क्रि. स., दे. 'वापस करना' ।
लौह, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लोहा' (१) । वि., दे. 'लोहे का' ('लोहा' में) ।

व

व, देवनागरीवर्णमालाया ऊनत्रिंशो व्यंजनवर्णः, वकारः ।
वंक, वि. (सं.) अराल, वृजिन, कुंचित, वक्र, आनत, जिह्म, वेल्लित, आभुग्न, कुटिल । सं. पुं. (सं.) नदीवक्रम् ।
वंकिम, वि. (सं.) ईषत्–किंचित्,–अराल–वक्र–वृजिन ।
वंग, सं. पुं. [सं. वंगाः (पुं. बहु.)] वंगप्रांतः (=बंगाल) । (सं. न.) त्रपुः, त्रपु (न.), रंगं, नागजं, कस्तीरं २.सीसं-सकं, सीसपत्रम् ।
—भस्म, सं. पुं. [सं.-भस्मन् (न.)] रंगभस्मन् (न.) ।
वंगन, सं. पुं., दे. 'बैंगन' ।
वंचक, वि. तथा सं. पुं. (सं.) कपटिन्, प्रतारक(:), धूर्त (:) ।
वंचना, सं. स्त्री. (सं.) वंचनं, प्रतारणं-णा, माया, कपटं, कैतवं, वंचथः ।
वंचित, वि. (सं.) प्रतारित, विप्रलब्ध २. हीन, रहित ।
वंदन, सं. पुं. (सं. न.) वंदना, प्रणामः, प्रणतिः (स्त्री.), नमस्कारः २. पूजा, अर्चा, आराधना २. स्तुतिः-नुतिः (स्त्री.) ।
—वार, सं. स्त्री. (सं. वंदनमाल्यं) वंदनमालालिका, तोरणस्रज् (स्त्री.) ।
वंदना, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'वंदन' (१-३) ।
वंदनीय, वि. (सं.) नमस्य, वंद्य २. पूज्य, अर्चनीय ३ स्तुत्य, न(ना)व्य ।
वंदी, सं. पुं. (सं.-दिन्) स्तुतिपाठकः, मा(म)-गधः, चारणः, वंदथः २. कारागुप्तः, बंदी-दिः (स्त्री.) ।
—गृह, सं. पुं. (सं. न.) कारा, कारा,-गृहं-गारम् ।
वंद्य, वि. (सं.) दे. 'वंदनीय' ।
वंध्या, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'बंध्या' ।
वंश, सं. पुं. (सं.) कुलं, अन्वयः, अन्ववायः, गोत्रं, अभिजनः २. जातिः (स्त्री.), वर्गः ३. कुटुंबं, गृहजनः, पुत्रकलत्रादीनि (न. बहु.) ४. वेणुः, दृढग्रंथिः, दे. 'बांस' । ५. मुरली, वंशी ६. पृष्ठास्थि (न.), पृष्ठवंशः ७. भुजादीनां लंबास्थि (न.) ।
—ज, सं. पुं. (सं.) पुत्रः २. संतानः ।
—धर, सं. पुं. (सं.) वंशजः, संततिः (स्त्री.) ।
—लोचन, सं. पुं. [सं.-लो(रो)चना]वंशशर्करा, वंशजा-जा, वांशी, शुभा ।
—हीन, वि. (सं.) निर्वंश २. अपुत्र ।
वंशानुक्रम, सं. पुं. (सं.) वंश-, अन्वयः-क्रमः,-परम्परा (स्त्री.)-अवलिः-विततिः ।
वंशावली, सं. स्त्री. [सं.-ली-लिः (स्त्री.)] वंश,-क्रमः-श्रेणी-परंपरा ।
वंशी, सं. स्त्री. (सं.) वंशिका, मुरली दे. ।
—धर, सं. पुं. (सं.) मुरलीधरः, श्रीकृष्णः
व, अव्य. (फ़ा.) च, दे. 'और' ।
वक, सं. पुं. (सं.) दे. 'बगला' २. राक्षसविशेषः ।
—वृत्ति, सं. स्त्री. (अ.) विडालवृत्तिः, दंभः ।
वकालत, सं. स्त्री. (अ.) अभिभाषकता-त्वं, वाक्कीलत्वं, व्यवहारदर्शकता-त्वं २. परप्रातिनिध्यं, परकार्यसाधकत्वं ३. दूतकर्मन् (न.) ४. परपक्षमंडनम् ।

—करना, क्र. अ., परिपक्षं समर्थ् (चु.) २. अभिभाषकवृत्तिं उपजीव् (भ्वा. प. से.)।

—नामा, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) अभिभाषकता-पत्रम्।

वकील, सं. पुं. (अं.) अभिभाषकः, व्यवहार-दर्शकः, वाक्कीलः, पक्षवादिन् २. राज-, दूतः ३. प्रतिनिधिः, प्रतिहस्तकः ४. पर-पक्ष-पोषकः।

वकुल, सं. पुं. (सं.) दे. 'बकुल'।

वकूफ़, सं. पुं. (अ.) ज्ञानं २. बुद्धिः (स्त्री.)।

बे—, वि. (फ़ा.+अ.) निर्बुद्धि।

वक्त, सं. पुं. (अ.) समयः, कालः २. अवसरः ३. अवकाशः ४. ऋतुः ५. मृत्युकालः।

—की चीज़, सं. स्त्री., कालानुकूलो रागः।

—बे वक्त, क्रि. वि. कालेऽकाले वा, समयेऽसमये वा।

—काटना, मु., येन केन प्रकारेण कालं या (प्रे. यापयति) २. मनो विनुद् (प्रे.)।

—पड़ना, मु., आपद् आपत (भ्वा. प. से.), उपनम् (भ्वा. प. अ.)।

वक्तन् फ़ौक़्तन, क्रि. वि. (अ.) कदा कदा, यदा कदा २. यथाकालम्।

वक्तव्य, वि. (सं.) कथनीय, वचनीय २. हीन, कुत्सित। सं. पुं. (सं. न.) कथनं, वचनं २. व्याख्यानम्।

वक्ता, सं. पुं. (सं. वक्तृ) वाग्मिन्, वाक्पटुः २. व्याख्यातृ, उपदेशकः ३. कथ(थि)कः।

वक्तृता, सं. स्त्री. (सं.) वक्तृत्वं, वाग्मिता, वाक्पाटवं, भाषणकौशलं २. व्याख्यानं, भाषणं, कथनम्।

वक्त्र, सं. पुं. (सं. न.) मुखं, आस्यं, लपनं, वदनम् २. चंचुः—चूः (स्त्री.) ३. लम्बास्यं, प्रलम्बमुखम् ४. बाणाग्रम् ५. कार्यारम्भः ६. परिधानभेदः।

—ज, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणः, विप्रः २. दन्तः, दशनः, रदनः, खादनः।

—तुंड, सं. पुं. (सं.) गणेशः, गजवदनः।

—शोधन, सं. पुं. (सं. न.) मुखशुद्धिः (स्त्री.) २. निंबुकं, जंबीरम् ३. मातुलुंगम्।

वक्फ़, सं. पुं. (अ.) परोपकाराय दानं २. धर्मार्थं उत्सृष्टा संपद् (स्त्री.)।

—नामा, सं. पुं. (अ+फ़ा.) दानपत्रम्।

वक्फ़ा, सं. पुं. (अ.) अवकाशः २. उद्योग-विश्रांतिः (स्त्री.)।

वक्र, वि. (सं.) दे. 'वंक' २. छलिन्, कपटिन्, धूर्त्त। (सं. पुं.) शनैश्चरः २. मंगलः, भौमः। (सं. न.) नदीवक्र, वंकः।

—गामी, वि. (सं.) कुटिलगति २. शठ, कुटिल।

—तुंड, सं. पुं. (सं.) गणेशः २. शुकः।

वक्रता, सं. स्त्री. (सं.) जिह्मता, आनतिः (स्त्री.), कौटिल्यं २. छलं, कपटं, शाठ्यम्।

वक्रोक्ति, सं. स्त्री. (सं.) काकूक्तिः (स्त्री.) २. शब्दालंकारभेदः (सा.) ३. चमत्कृत-कुटिल,-उक्तिः (स्त्री.)।

वक्षःस्थल, सं. पुं. (सं. न.) उरस्-वक्षस् (न.), अंकः, उत्संगः, उरःस्थलम्।

वग़ैरह, अव्य. (अ.)-आदि,-प्रभृति।

वचन, सं. पुं. (सं. न.) भाषा, सरस्वती, वाणी दे. २. उक्तिः (स्त्री.), कथनं, भाषणं, वाक्यं ३. एकत्वादिबोधकः शब्दरूपभेदः (व्या.) ४. प्रतिज्ञा, संगरः।

वजह, सं. स्त्री. (अ.) कारणं, हेतुः।

वज़न, सं. पुं. (अ.) भारः, गुरुत्वम्।

वज़नी, वि. (अ. वज़न) भारवत्, गुरु २. मान्य, प्रभावशालिन्।

वज़ा, सं. स्त्री. (अ. वज़अ) रचना २. आकृतिः (स्त्री.) ३. आचारः, व्यवहारः ४. दशा ५. रीतिः (स्त्री.)।

वज़ारत, सं. स्त्री. (अ.) साचिव्यं, अमात्यत्वं, मंत्रित्वम्।

वज़ीफ़ा, सं.पुं.(अ.) (छात्र)-वृत्तिः-भृतिः(स्त्री.)।

वज़ीर, सं. पुं. (अ.) अमात्यः, सचिवः, मंत्रिन्, मंत्रधरः, मंत्रज्ञः, धी-बुद्धि,-सहायः।

वज़ीरी, सं. स्त्री., दे. 'वज़ारत'।

वज़ू, सं. पुं. (अ.) प्रार्थनायाः पूर्वं अंग-प्रक्षालनं (इस्लाम), *अङ्गस्पर्शः।

वजूद, सं. पुं. (अ.) अस्तित्वं, सत्ता २. शरीरं ३. सृष्टिः (स्त्री.) ४. अभिव्यक्तिः (स्त्री.)।

वज्र, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कुलिशं, पविः, अशनिः (पुं. स्त्री.), दंभोलिः, ह्रादिनी, शतधारं, अभ्रोत्थं, शंबः, गिरिकंटकः २. हीरः-रं, हीरकः, रत्नं २. विद्युत् (स्त्री.)। वि., अति,-दृढ-संहत-कीकस-कठिन, दुर्भेद्य २. घोर, भीषण।

—धर, सं. पुं. (सं.) इंद्रः, वज्रिन्, वज्र,-पाणिः-बाहुः-मुष्टिः ।
—पात, सं. पुं. (सं.) वज्राघातः ।
—मय, वि. (सं.) दे. 'वज्र' वि. (१) ।
—हृदय, वि. (सं.) पाषाणहृदय, निष्करुण, निर्दय ।
वट, सं. पुं. (सं.) न्यग्रोधः, वृक्षनाथः, रक्तफलः, क्षीरिन्, जटालः, अवरोही, महाछायः ।
वटी, सं. स्त्री. (सं.) गुली-लिका, वटिका, निस्तली, दे. 'गोली' ।
वटु, } वटुक, } सं. पुं. (सं.) बालकः, माणवकः २. वर्णिन्, ब्रह्मचारिन् ।
वड़ी, सं. स्त्री. (सं. वटी) मापवटी ।
वणिक्, सं. पुं. (सं. वणिज्) पण्याजीवः, क्रयविक्रयिकः २. वैश्यः ।
वतन, सं. पुं. (अ.) जन्म,-भूः-भूमिः (दोनों (स्त्री.), स्वदेशः २. निवासस्थानं ३. जन्मस्थानम् ।
वतीरा, सं. पुं. (अ.) प्रथा, रीतिः (स्त्री.) २. आचारः, वृत्तम् ।
वत्स, सं. पुं. (सं.) गोशिशुः, तर्णकः, दोषःपकः, तंतुभः २. शिशुः, बालकः ।
वत्सतर, सं. पुं. (सं.) दम्यः, दुर्दांतः, गडिः ।
वत्सतरी, सं. स्त्री. (सं.) त्रिहायणी गौः (स्त्री.) ।
वत्सर, सं. पुं. (सं.) अब्दः, हायनः, वर्षम् ।
वत्सल, वि. (सं.) अपत्यानुरागिन्, संतानस्नेहिन्, पुत्रप्रेमिन् २. स्नेहिन्, प्रेमिन् ।
वत्सलता, सं. स्त्री. (सं.) (सन्तानादिकस्य) अनुरागः-स्नेहः ।
वदन, सं. पुं. (सं. न.) मुखं, आननम ।
वदान्य, वि. (सं.) बहुप्रद, दानशील, उदार २. वल्गुवाच्, मधुरभाषिन् ।
वदाम, सं. पुं., दे. 'बादाम' ।
वदावद, वि. (सं.) वाचाल, वाचाट ।
वध, सं. पुं. (सं.) घातः, हननं, हत्या, विशसनं, प्रमाथः, संहारः ।
वधक, सं. पुं. (सं.) नरघातकः, हंतृ, हिंसकः २. व्याधः, शाकुनिकः ३. मृत्युः ।
वधू, वधूटी, सं. स्त्री. (सं.) नवोढ़ा, नववधूः, पाणिगृहीता २. पत्नी ३. पुत्रवधूः ।
वध्य, वि. (सं.) वधार्ह, शीर्षच्छेद्य, हंतव्य ।
वन, सं. पुं. (सं. न.) अरण्यं, विपिनं, अटवी, काननं, गहनं, द(दा)वः, कांतारं २. वाटिका ३. जलम् ।
—चर, सं. पुं. (सं.) वन,-चारिन्-विहारिन् २. वन्य,-पशुः-मनुष्यः ।
—माली, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः २. वनपुष्पमालाधारिन् ।
—राज, सं. पुं. (सं.) सिंहः ।
—वास, सं. पुं. (सं.) विपिनवसतिः (स्त्री.) ।
—वासी, सं. पुं. (सं.-सिन्) आटविकः, वनेचरः, वनौकस्, वनिन् ।
—स्थली, सं. स्त्री. (सं.) कानन-भूमिः, अरण्यप्रदेशः ।
वनस्पति, सं. स्त्री. (सं. पुं.) पुष्पहीनः फलिवृक्षः (उ. बड़, पीपल आदि) २. वृक्षः, पादपः ३. वटः, न्यग्रोधः ।
—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) वनस्पतिविज्ञानम् ।
वनिता, सं. स्त्री. (सं.) नारी, रमणी २. प्रिया, कांता ।
वनी, सं. स्त्री. (सं.) वनं, दे. ।
वनी, सं. पुं. (सं.-निन्) वानप्रस्थः दे. २. दे. 'वनवासी' ।
वन्य, वि. (सं.) वन,-उद्भव-उद्भूत-जात, आरण्यक, जांगल २. असभ्य, अशिष्ट ३. क्रूर, हिंस्र ।
वपनं, सं. पुं. (सं. न.) केशमुंडनं २. बीजाधानम् ।
वपा, सं. स्त्री. (सं.) मेदस् (न.), वसा ।
वपु, सं. पुं. [सं. वपुस् (न.)] शरीरम् ।
वप्र, सं. पुं. (सं. पुं. न.) वरणः, सालः, प्राकारः २. क्षेत्रं ३. धूलिः (स्त्री.) ४. तुंगतटः ५. गिरिशिखरं ६. वल्मीकः-कं, मृत्तिकाचयः ।
—क्रीड़ा, सं. स्त्री. (सं.) वप्रक्रिया ।
वफ़ा, सं. स्त्री. (अ.) प्रतिज्ञापालनं २. आज्ञा,-कारिता-अनुसरणं-पालनं ३. विश्वसनीयता ४. सुशीलता ।
—दार, वि. (अ.+फ़ा.) विश्वसनीय, विश्वास्य, स्वामिभक्त २. आज्ञा,-कारिन्-पालक ३. कर्तव्यपालक ।
—दारी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) दे. 'वफ़ा' ।
वबा, सं. स्त्री. (अ.) महा-,मारी, जन-, मारः, मारिका २. स्पर्शसंचारिरोगः ।
वबाल, सं. पुं. (अ.) भारः, भरः २. कष्टं, विपद् (स्त्री.) ।

वमन, सं. पुं. (सं. न.) वमः, वमिः (स्त्री.), छर्दनं, छर्दिका २. वांत-वमन,-द्रव्यम् ।
—करना, क्रि. स., उद्-,वम् (भ्वा. प. से.), छर्द् (चु.) ।
वयःसंधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) बाल्ययौवन-मध्यकालः ।
वय, सं. स्त्री. [सं. वयस् (न.) आयुस् (न.), वयःक्रमः, अतीतजीवनकालः ।
वयस्क, वि. (सं.) प्रौढ़, प्राप्तव्यवहार, दे. 'बालिग़' ।
वयस्य, सं. पुं. (सं.) समवयस्कः २. मित्रं, सखि (पुं.) ।
वयस्या, सं. स्त्री. (सं.) सखी दे. ।
वयोवृद्ध, वि. (सं.) स्थविर, जरठ-ण, जरित-न्, वृद्ध ।
वरंच, अव्य. (सं.) अपि तु, दे. 'बल्कि' २. परंतु, किंतु ।
वर, सं. पुं. (सं.) वृतिः (स्त्री.), तपोभिः देवेभ्यो याचितो मनोरथः २. (देवादीनां) अनुग्रहः, प्रसादः, आशिस् (स्त्री.) ३. जामातृ ४. परिणेतृ, वोढृ ५. पतिः, भर्तृ । वि. (सं.)- उत्तम,-श्रेष्ठ (उ. ऋषिवरः=ऋषिश्रेष्ठः) ।
—मांगना, क्रि. स., वरं याच् (भ्वा. आ. से.) वृ (स्वा. उ. से.)-वॄ (क्र्. उ. से.) ।
—दान, सं. पुं. (सं.) मनोरथपूरणं, अभीष्ट-प्रदानं २. दे. 'वर' (२) ।
—दायक, सं. पुं. (सं.) वर-दः-प्रदः-दातृ, वांछितार्थदः, समर्द्धकः ।
—यात्रा, सं. स्त्री. (सं.) *जनेतं, परिणेतृ-प्रस्थानम् । दे. 'बरात' ।
—वर्णिनी, सं. स्त्री. (सं.) वर,-अंगना-नारी, सुंदरी ।
वरक़, स. पुं. (अ.) (पुस्तक–) पत्रं-पर्णं २-३. सुवर्ण-रजत,-पत्रम् ।
—गरदानी, सं. स्त्री., (अ.+फ़ा.) ग्रन्थे विहंगमदृष्टिः (स्त्री.), अध्ययनाडम्बरः, अध्ययनाभासः ।
—स्याह करना, मु., अत्यन्तं-अत्यर्थं लिख् (तु, प. स.) ।
वरगलाना, क्रि. स. (फ़ा. वरग़लानीदन) प्रलुभ्-विमुह् (प्रे.) २. प्रतॄ-वंच् (प्रे.) ।
वरज़िश, सं. स्त्री. (फ़ा.) व्यायामः, दे. ।
वरण, सं. पुं. (सं. न.) वृतिः (स्त्री.), उद्ग्रहणं २. भर्तृत्वेनांगीकरणं, पतित्वेन स्वीकरणं ३. पूजा ४. आवरणं, आच्छादनम् ।
वरद, सं. पुं. (सं.) दे. 'वरदायक' ('वर' के नीचे) ।
वरदी, सं. स्त्री. (अ.) *नियतपरिधानं, विशिष्ट-वर्गीय-वेषः ।
वरन्, अव्य. (सं. वरं>) अपि तु ।
वरना, अव्य. (अ.) अन्यथा, इतरथा, नो चेत् ।
वराटिका, सं. स्त्री. (सं.) कपर्दिका, दे. 'कौड़ी' ।
वरानना, सं. स्त्री. (सं.) सुंदरी, वरवर्णिनी, सुवदना-नी ।
वराह, सं. पुं. (सं.) शूकरः, दे. 'सूअर' २. विष्णुः, विष्णोरवतारविशेषः ।
वरिष्ठ, वि. (सं.) उत्तम, श्रेष्ठ, पूज्यतम ।
वरुण, सं. पुं. (सं.) पाशिन्, प्रचेतस् , अप्-अपां,-पतिः, जलेश्वरः, मेघनादः २. जलं ३. सूर्यः ४. ग्रह-विशेषः (अं. नेपचून) ।
वरुणालय, सं. पुं. (सं.) सागरः ।
वरूथिनी, सं. स्त्री. (सं.) सेना, सैन्यम् ।
वरे, क्रि. वि. [सं. अवारतः (अव्य.)] इतः, एतत्स्थानं प्रति, अत्र २. समीपं-पे-पतः, अतिकं-के (सब १-२. अव्य.) ।
वरेण्य, वि. (सं.) प्रधान, मुख्य २. वरणीय, सत्कार्य ।
वर्कशाप, सं. स्त्री. (अं.) प्रावेशनं, शिल्प,-शालं-शाला ।
वर्ग, सं. पुं. (सं.) (सजातीयानां) गणः, जातिः (स्त्री.), समूहः, श्रेणी-णिः (स्त्री.) २. समस्थानवत् व्यंजनपंचकं (उ. कवर्गः, इ.) ३. अध्यायः, परिच्छेदः ४. सम-,चतुर्भुजः-चतुरस्रः ५. समद्विघातः, वर्गफलं, कृतिः (स्त्री.) (उ. ३×३=९ वर्गांकः) ।
—फल, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'वर्ग' (५) ।
—मूल, सं. पुं. (सं. न.) पूरितसमानांकद्वय-स्याद्यंकः, पद (उ. ९ का वर्गमूल=३) ।
वर्चस्, सं. पुं. (सं. न.) तेजस् (न.), कांतिः (स्त्री.) ।
वर्चस्वी, वि. (सं.-स्विन्) तेजस्विन्, कांतिमत् ।
वर्जन, सं. पुं. (सं. न.) त्यागः २. निषेधः ।
वर्जनीय, वि. (सं.) त्याज्य, हेय, वर्ज्य २. निषेधार्ह ।
वर्जित, वि. (सं.)त्यक्त, उत्सृष्ट २. निषिद्ध, हेय ।
वर्ण, सं. पुं. (सं.) आर्याणां ब्राह्मणादिविभाग-

चतुष्टयं, जातिः (स्त्री.) २. रंगः, रागः ३. प्रकारः, विधा ४. अक्षरं ५. रूपं, आकारः ।
—धर्म, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणादिकर्तव्यकलापः ।
—नाश, सं. पुं. (सं.) वर्ण-अक्षर,-लोपः-पातः (निरुक्तः) (उ., पृषतोदर से पृषोदर) ।
—माला, सं. स्त्री. (सं.) वर्णसमाम्नायः, अक्षरश्रेणी (उ. अ से ह् तक) ।
—विकार, सं. पुं. (सं.) अक्षरविक्रिया (निरुक्त) (उ. गाली से गारी) ।
—विचार, सं. पुं. (सं.) व्याकरणांगविशेषः, शिक्षा ।
—विपर्यय, सं. पुं. (सं.) अक्षरव्यत्यासः (निरुक्त; उ. हिंस से सिंह) ।
—वृत्त, सं. पुं. (सं. न.) अक्षरछंदस् (न.) ।
—श्रेष्ठ, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणः ।
—संकर, सं. पुं. (सं.) वर्ण-जाति,-मिश्रणं २. मिश्रजः, संकरजः, सांकरिकः ।
—हीन, वि. (सं.) बहिष्कृत, अपांक्तेय ।
वर्णन, सं. पुं. (सं. न.) निरूपणं, विवरणं, व्याख्यानं, सविस्तरकथनं, वर्णना २. स्तवनं, गुणकथनं ३. रंजनं, चित्रणम् ।
—करना, क्रि. स., विवृ (स्वा. उ. से.), निरूप्, वर्ण् (चु.), सविस्तरं कथ् (चु.), व्याख्या (अ. प. अ.) ।
वर्णनीय, वि. (सं.) वर्णयितव्य, निरूपयितव्य, व्याख्येय, वर्ण्य ।
वर्णित, वि. (सं.) निरूपित, व्याख्यात २. उक्त, कथित ।
वर्णी, सं. पुं. (सं.-र्णिन्) ब्रह्मचारिन् २. लेखकः ३. चित्रकारः ।
वर्ण्य, वि. (सं.) वर्णनीय, निरूपयितव्य, प्रस्तुत, उपमेय, व्याख्यातव्य ।
वर्तन, सं. पुं. (सं. न.) व्यवहारः, वृत्तं, चेष्टितं, आचरणं २. वृत्तिः (स्त्री.), आ-उप,-जीविका ३. पात्रम्, भाजनं, दे. 'बर्तन' ।
वर्तनी, सं. स्त्री. (सं.) मार्गः, पथः, पथिन् २. पेषणभृतिः (स्त्री.) ३. तर्कुः (पुं. स्त्री.), तर्कुटम् । ४. वसती-तिः (स्त्री.), अवस्थितिः (स्त्री.) ५. वर्णविन्यासः, शब्दाक्षरोच्चारणम् ।
वर्तमान, वि. (सं.) प्रचरि(लि)त, प्रचल, सर्वसंमत २. उपस्थित, विद्यमान ३. आधुनिक(-की), अधुना-इदानीं,-तन(-नी स्त्री.) । सं. पुं. (सं.) क्रियायाः कालभेदः (व्या.) २. वृत्तांतः ३. प्रचलितव्यवहारः ।
वर्ती, सं. स्त्री. (सं.) वर्तिः-र्तिका (स्त्री.), दे. 'बत्ती' २. शलाका ।
—वर्ती, वि. (सं.-र्तिन्)-स्थ,-वासिन् ।
वर्तुल, वि. (सं.) गोल, मंडल-चक्र,-आकार ।
वर्दी, सं. स्त्री., दे. 'वरदी' ।
वर्द्धन, सं. पुं. (सं. न.) वृद्धिः-उन्नतिः (स्त्री.) २. समृद्धिः (स्त्री.) ।
वर्मा, सं. पुं. (सं. वर्मन्) क्षत्रियोपाधिः ।
वर्बर, सं. पुं. (सं.) देशविशेषः २. वर्बरवासिन् ३. असभ्यः, ग्राम्यः ४. म्लेच्छः, वर्वरः, वर्वरः, अनार्यः ।
वर्ष, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अब्दः, हायनः, समा, शरद् (स्त्री.), सं,-वत्सरः, संवत् (अव्य.) २. मेघः ३. वृष्टिः (स्त्री.) ४. महाभूभागः ।
—गांठ, सं. स्त्री. (सं+हिं.) वर्षवृद्धिः (स्त्री.), जन्म,-दिवसः-दिनं-तिथिः ।
—फल, सं. पुं. (सं. न.) वार्षिकग्रह-फल-दर्शिका-पत्रिका ।
वर्षा, सं. स्त्री. [सं. वर्षाः (स्त्री. बहु.)] प्रावृषा-ष् (स्त्री.), मेघागमः, घनकालः, जलार्णवः, घनाकारः २. वृष्टिः (स्त्री.), वर्षः-र्षं-र्षणं, गोघृतं, परामृतम् ।
—काल, सं. पुं. (सं.) दे. 'वर्षा' (१) ।
—होना, क्रि. अ., वृष् (भ्वा. प. से.), वृष्टिः भू । मु., अतिमात्रं अवपत् (भ्वा. प. से.) ।
वलद, सं. पुं. (अ. वल्द) पुत्रः २. संतानः ।
वलय, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कटकः, आवापकः २. वेष्टनं ३. मंडलम् ।
वलयित, वि. (सं.) परिवेष्टित, परिवृत ।
वलवला, सं. पुं. (अ.) उत्साहः, औत्सुक्यम् ।
वलाहक, सं. पुं. (सं.) मेघः, जलदः २. पर्वतः ।
वलि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'वली' ।
वलित, वि. (सं.) न(ना)मित, आभुग्न २. आवर्जित, प्रह्व ३. वलयित, दे. ४. वलीमत्, वलिभ, वलिन ५. आच्छादित ६. सहित ७. लग्न ।
वली, सं. स्त्री. (सं.) वलिः (स्त्री.), वली-लिः (स्त्री.), दे. 'झुर्री' २. श्रेणी, अवली-लिः (स्त्री.) ३. रेखा ४. पुटः, भंगः ।

वली, सं. पुं. (अ.) स्वामिन्, प्रभुः २. शासकः ३. साधुः ।
—अहद, सं. पुं. (अ.) युवराजः ।
वल्कल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) वल्कः-कं, वृक्षत्वचा-च् (स्त्री.), चोचं, शल्कं, छल्ली २. वल्कल-वल्क, वसनं-वस्त्रम् ।
वल्द, सं. पुं. (अ.) दे. 'वलद' ।
वल्दियत, सं. स्त्री. (अ.) पितृनामन् (न.) ।
वल्मीक, सं. पुं. (सं.) वामलूरः, वल्मकूटं, कृमिशैलकः, नाकुः २. वाल्मीकिः मुनिः ।
वल्लभ, वि. (सं.) प्रियतम, दयित । सं. पुं. (सं.) नायकः, प्रियतमः, कांतः २. पतिः, भर्तृ ।
वल्लभा, वि. (सं.) प्रियतमा, कांता, दयिता । सं. स्त्री. (सं.) प्रिय-, पत्नी-भार्या ।
वल्लरी-रि, सं. स्त्री. (सं.) लता, वल्ली-ल्लिः (स्त्री.) २. मंजरी ।
वशंवद, वि. (सं.) वश-वर्तिन्-अनुग, आज्ञाकारिन् । सं. पुं. (सं.) सेवकः, दासः ।
वश, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अधिकारः, प्रभुत्वं २. शक्तिः (स्त्री.), प्रभावः, सामर्थ्यं ३. अधीनता, आयत्तता ४. इच्छा, कामना । वि. (सं.) अधीन, आयत्त ।
—(में) करना, क्रि. स., वशीकृ, दम् (प्रे., दि. प. से.), वशं नी (भ्वा. प. अ.), नियम् (भ्वा. प. अ.) ।
—वर्ती, वि. (सं.-वर्तिन्) वशग, वशानुग, -वश,-अधीन,-आयत्त, परतंत्र ।
वशिष्ठ, सं. पुं., दे. 'वसिष्ठ' ।
वशी, वि. (सं.-शिन्) जितात्मन्, संयमिन् २. अधीन,-आयत्त ३. शक्तिमत्, समर्थ ।
वशीकरण, सं, पुं. (सं. न.) (मणिमंत्रौषधादिभिः) स्वायत्तीकरणं २. दमः-मनं, निग्रहः-हणं, वशीकारः ।
वशीकृत, वि. (सं.) वशं नीत २. मंत्रमोहित ३. मुग्ध ।
वशीभूत, वि.(सं.)अधीन, आयत्त २. परवशग ।
वश्य, वि. (सं.) विनेय, शिक्ष्य, दम्य ।
वश्यक, वि. (सं.) आज्ञा-वचन,-अनुवर्तिन्-ग्राहिन्-सेविन्-पालक ।
वश्यका, सं. स्त्री. (सं.) आज्ञानुवर्तिनी पत्नी ।
वश्यता, सं. स्त्री. (सं.) अधीनता, परवशता, पराधीनता ।
वश्या, सं. स्त्री. (सं.) वशवर्तिनी,-आज्ञानुवर्तिनी,-पत्नी ।
वषट्, अव्य.(सं.) देवनिमित्तकहविस्त्यागमंत्रः ।
—कार, सं. पुं. (सं.) होमः, देवयज्ञः ।
वसंत, सं. पुं. (सं.) ऋतुराजः, दे. 'बसंत' २. शीतलारोगः ३. मसूरिकारोगः ४. रागभेदः ५. तालभेदः ।
—तिलक, सं. पुं. (सं.-कः-कं-का)वर्णवृत्त-भेदः ।
—पंचमी, सं. स्त्री. (सं.) श्रीपंचमी, माघशुक्लपंचमी ।
वसंती, वि., दे. 'बसंती' ।
वसती, सं. स्त्री. (सं.) वसतिः-वस्तिः (स्त्री.), नि-, वासः २. गृहं, सद्मन् (न.) ।
वसन, सं. पुं. (सं. न.) वस्त्रं, वासस् (न.) ।
वसिष्ठ, सं. पुं. (सं.) ऋषिविशेषः २. सप्तर्षिमंडलांतर्गतो नक्षत्रविशेषः ।
वसीका, सं. पुं. (अ.) समय-प्रतिज्ञा-संविद्,-लेखः-पत्रम् ।
—नवीस, सं.पुं.(अ.+फ़ा.) दे. 'अर्ज़ीनवीस' ।
वसीयत, सं. स्त्री. (अ.) (मरणासन्नस्य) अंत्यादेशः २. रिक्थविभागव्यवस्था ।
—करना, क्रि. स., मृत्युपत्रेण दा (जु. उ. अ.)-ऋ (प्रे., अर्पयति) ।
—नामा, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) मृत्यु,-पत्रं-लेखः ।
वसीला, सं. पुं. (अ.) उपायः, साधनं, २. साहाय्यं ३. संबंधः ।
वसुंधरा, सं. स्त्री. (सं.) वसुधा-दा, पृथिवी, दे. ।
वसु, सं. पुं. (सं. न.) धनं २. रत्नं ३. सुवर्णं ४. जलम् । (सं. पुं.) गणदेवताविशेषः, अष्टवसवः (धरो ध्रुवश्च सोमश्च विष्णुश्चैवानिलोऽनलः । प्रत्यूपश्च-प्रभातश्च वसवोऽष्टौ क्रमात् स्मृताः) २. वकवृक्षः ३. रश्मिः । अष्ट इति संख्या ४. सूर्यः ५. विष्णुः ६. सज्जनः ।
वसुदेव, सं. पुं. (सं.) कृष्णपितृ, आनकदुंदुभिः ।
वसुधा, सं. स्त्री. (सं.) वसुदा, वसुमती, पृथिवी, दे. ।
वसूल, वि. (अ.) प्राप्त, लब्ध २. समाहृत ।
वसूली, सं. स्त्री. (अ. वसूल) प्राप्तिः (स्त्री.), अभिगमः २. समाहारः ।
वस्ति, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) नाभेरधोभागः, दे. 'पेड़ू' २. मूत्राशयः ३. रेचनयंत्रं, शृङ्गकः-कं, दे. 'पिचकारी' ।

—कर्म, सं. पुं. [सं.-मंन् (न.)] यंत्रेण मलमूत्रनिष्कासनम् ।

वस्तु, सं. स्त्री. (सं. न.) पदार्थः, द्रव्यं २. सत्यं ३. वृत्तांतः ४. नाटकीयाख्यानं, कथावस्तु(न.)।

वस्तुतः, अव्य. (सं.) यथार्थतः, तत्त्वतः, याथार्थ्येन, सत्यं, यथार्थम् ।

वस्त्र, सं. पुं. (सं. न.) नि-,वसनं, वासस् (न.), आच्छादनं चेलः-लं, अंशुकं, अंबरं, पटः, भिचयः, परिधानं, छादं, वासं, कर्पटः ।

वस्फ़, सं. पुं. (अ.) सद्-,गुणः, विशेषः, धर्मः २. स्तुतिः (स्त्री.) ।

वस्ल, सं. पुं. (सं.) संगमः, समागमः, मिलनम् ।

वह, सर्व. (सं. सः) तद् तथा अदस् के रूप । [उ. सः, असौ (पुं.), सा, असौ (स्त्री.), तद्, अदः (न.)] ।

वहन, सं. पुं. (सं. न.) प्रापणं, स्थानांतरे नयनं, २. धारणं, उत्थापनम् ।

वहम, सं. पुं. (अ.) भ्रमः, भ्रांतिः (स्त्री.) २. मिथ्या,-शंका-संदेहः ३. मिथ्याधारणा ४. व्याधिकल्पना, कुक्षिरोगः ।

वहमी, वि. (अ. वहम) संशयात्मन्, शंकाशील, आशंकिन् ।

वहशी, वि. (अ.) वन्य, आरण्य २. असभ्य, अशिष्ट ३. दुर्दांत, दुर्दमनीय ।

वहाँ, क्रि. वि. (हिं. वह) तत्र, तस्मिन् स्थाने ।

—से, क्रि. वि., ततः, तस्मात् स्थानात् ।

वहीं, क्रि. वि. (हिं. वहां+ही) तत्रैव, तस्मिन्नेव स्थाने ।

वही, सर्व. (हिं. वह+ही) स एव, असावेव (पुं.), सैव, असावेव (स्त्री.), तदेव, अद एव (न.) इ. ।

वह्नि, सं. पुं. (सं.) अनलः, अग्निः, दे. 'आग' ।

वांछनीय, वि. (सं.) स्पृहणीय, कमनीय, काम्य २. वांछित, दे. ।

वांछा, सं. स्त्री. (सं.) इच्छा, अभिलाषः, कामना ।

वांछित, वि. (सं.) अभिलषित, अभीष्ट ।

वा, अव्य. (सं.) अथवा । २. दे. 'वह' ।

वाइदा, सं. पुं., दे. 'वादा' ।

वाइस चान्सलर, सं. पुं. (अं.) विश्वविद्यालयस्य उपाध्यक्षः, कुलपतिः ।

वाइस-प्रेसिडेंट, सं. पुं. (अं.) उपसभापतिः, उपप्रधानः ।

वाइसराय, सं. पुं. (अं.) राजप्रतिनिधिः ।

वाक्, सं. पुं. [सं. वाच् (स्त्री.)] वाणी, वाक्यं २. सरस्वती, शारदा ३. वागिन्द्रियं, वाक्शक्तिः (स्त्री.) ।

—पटु, वि. (सं.) वाक्कुशल, वाग्मिन् ।

—पटुता, सं. स्त्री. (सं.) वाक्पाटवं, वाग्मिता, वाग्वैदग्ध्यम् ।

—पारुष्य, सं. पुं. (सं. न.) अप्रियवाक्योच्चारणं, कटुभाषणम् ।

—संयम, सं. पुं. (सं.) वाग्यमः, मितवाच् (स्त्री.) ।

वाक, सं. पुं (सं.) वाक्यं, वचनम्, उक्तिः (स्त्री.) । सं. स्त्री., वाणी, सरस्वती, शारदा ।

वाक़ई, क्रि. वि. (अ.) वस्तुतः, यथार्थतः । वि., यथार्थ, सत्य ।

वाक़ा, वि. (अ.) स्थित,-वर्ति,-स्थ ।

वाक़ि (के) आ, सं. पुं. (अ.) घटना, वृत्तं २. समाचारः ।

वाक़िफ़, वि. (अ.) परिचित, अभ्यस्त २. ज्ञातृ, बोद्धृ, अभिज्ञ ३. अनुभविन् ।

—कार, वि. (अ.+फ़ा.) कार्याभिज्ञ, कुशल, निष्णात ।

वाकफ़ियत, सं. स्त्री. (अ.) परिचयः, परिज्ञानं २. अनुभवः ।

वाक्य, सं. पुं. (सं. न.) पदसमूहः, योग्यताकांक्षासक्तियुक्तः पदोच्चयः २. कथनं, वचनं ३. सूत्रं ४. आभाणकः ।

वागा, सं. स्त्री. (सं.) वल्गा, दे. 'लगाम' ।

वागीश, सं. पुं. (सं.) बृहस्पतिः २. ब्रह्मन् (पुं.) ३. वाग्मिन्, कविः । वि. (सं.) सुवक्तृ, सुव्याख्यातृ ।

वागुरा, सं. स्त्री. (सं.) मृगबंधनार्थं जालभेदः ।

वागुरिक, सं. पुं. (सं.) व्याधः, शाकुनिकः ।

वाग्जाल, सं. पुं. (सं. न.) वागडंबरः, शब्दाडंबरः, वाक्प्रपंचः ।

वाग्दंड, सं. पुं. (सं.) निर्भर्त्सना, अधिक्षेपः ।

वाग्दत्ता, सं. स्त्री. (सं.) *नियतवरा, *वाचार्पिता (कन्या) ।

वाग्दान, सं. पुं. (सं. न.) कन्यादानप्रतिज्ञा ।

वाग्दुष्ट, वि. (सं.) कटुभाषिन् २. अभिशप्त ।

वाग्देवी, सं. स्त्री. (सं.) सरस्वती, दे. ।

वाग्मी, सं. पुं. (सं. वाग्मिन्) वाग्विदग्धः, वाक्पटुः, सुवक्तृ २. पंडितः, प्राज्ञः ३. बृहस्पतिः ।

वाग्विलास, सं. पुं. (सं.) सानन्दो वार्तालापः ।

वाङ्मय, वि. (सं.) वाक्यात्मक २. वाग्विहित (पापादि)। सं. पुं. (सं. न.) भाषा २. साहित्यम् ।

वाच्, सं. स्त्री. (सं.) वाणी २. वाक्यम् ।

वाच, सं. स्त्री. (अं.) *घटिका ।

वाचक, वि. (सं.) ज्ञापक, द्योतक, सूचक, बोधक २. पाठक, वाचयितृ ३. वक्तृ ।

—लुप्ता, सं. स्त्री. (सं.) उपमालंकारभेदः ।

वाचन, सं. पुं. (सं.) पठनं, अध्ययनं, उच्चारणं २. कथनं ३. प्रतिपादनम् ।

वाचस्पति, सं. पुं. (सं.) बृहस्पतिः, सुविद्वस् ।

वाचा, सं. स्त्री. (सं.) वाणी, गिरा २. वाक्यं, वचनम् ।

वाचाट-ल, वि. (सं.) बहुभाषिन्, मुखर, जल्प(ल्पा)क २. वाक्पटु ।

वाचाल(ट)ता, सं. स्त्री. (सं.) मुखरता, बहुभाषिता २. वाग्वैदग्ध्यम् ।

वाचिक, वि. (सं.) वाग्विषयक २. मौखिक ।

वाची, वि. (सं.-चिन्)-सूचक,-बोधक ।

वाच्य, वि. (सं.) वचनीय, कथनीय २. अभिधेय, अभिधावृत्त्या बोध्य (अर्थ.) ३. कुत्सित, हीन ।

वाच्यार्थ, सं. पुं. (सं.) अभिधेय-मूलशब्द,-अर्थः, शब्दार्थः ।

वाच्यावाच्य, वि. (सं.) भद्राभद्र (वाक्यादि)।

वाज़, सं. पुं. (अ.) उपदेशः, धार्मिक-व्याख्यानम् ।

वाजपेय, सं. पुं. (सं. पुं. न.) श्रौतयागभेदः ।

वाजपेयी, सं. पुं. (सं.-यिन्) हुतवाजपेयः २. ब्राह्मणोपाधिभेदः ३. सुकुलजः ।

वाजसनेय, सं. पुं. (सं.) यजुर्वेदस्य शाखा-विशेषः २. याज्ञवल्क्यः ।

वाजिब-बी, वि. (अ.) उचित, योग्य, युक्त ।

वाजी, सं. पुं. (सं.-जिन्) अश्वः, घोटकः २. आमिक्षामस्तु (न.), मोरटः (=फटे हुए दूध का पानी) ३. पक्षिन् ४. बाणः ५. वासकः ।

—कर, वि. (सं.) कामोद्दीपक (औषधादि) ।

—करण, सं. पुं. (सं. न.) वीर्यवृद्धिकरः प्रयोगः ।

वाट, सं. पुं. (सं.) मार्गः २. वास्तु ३. मंडपः ।

वाटर, सं. पुं. (अं.) जलं, वारि (न.) २. जलाशयः ३. मूत्रम् ४. हीराभा ।

—प्रूफ़, वि. (अं.) अक्लेद्य, जलाभेद्यम् ।

—फ़ाल, सं. पुं. (अं.) जलप्रपातः ।

—वर्क्स, सं. पुं. (अं.) *जलयंत्रं २. जलयंत्रालयः ।

वाटिका, सं. स्त्री. (सं.) क्षुद्र,-आरामः-उद्यानं, दे. 'बग़ीचा' ।

वाडवाग्नि, सं. स्त्री. (सं.) वाडवः, व(वा)ड-वानलः ।

वाण, सं. पुं. (सं.) बाणः, दे. ।

वाणिज्य, सं. पुं. (सं. न.) क्रयविक्रयः, निगमः, वणिक्कर्मन् (न.), व्यापारः ।

वाणी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'बाणी' ।

वात, सं. पुं. (सं.) पवनः, वायुः, दे. । २. देहस्थवायुः ३. रोगभेदः ।

—चक्र, सं. पुं. (सं.न.) चक्रवातः, वातावर्त्तः ।

—ज, वि. (सं.) वातप्रकोपज (रोगादि) ।

—जात, सं. पुं. (सं.) हनुमत्, मारुतिः ।

—तूल, सं. पुं. (सं. न.) वृद्धसूत्रकं, ग्रीष्म-हासम् ।

—ध्वज, सं. पुं. (सं.) वातरथः, मेघः ।

—पट, सं. पुं. (सं.) ध्वजः, पताका ।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) हनुमत् २. भीमः ३. महाधूर्त्तः ।

—प्रकोप, सं. पुं. (सं.) (शरीरे) वायुवृद्धिः (स्त्री.) ।

—रोग, सं. पुं. (सं.) वायु-वात,-व्याधिः, चलातंकः, अनिलामयः, दे. 'गठिया' ।

—वैरी, सं. पुं. (सं.-रिन्) वाताढः, दे. ।

वाताद, सं. पुं. (सं.) नेत्रोपमफलः, वाताम्रः, वातवैरिन् । (फल) वाताम्रं, वादामम् (दे. बादाम)।

वातायन, सं. पुं. (सं. न.) क्षुद्रखडक्किका २. दे. 'रोशनदान' ।

वातुल, सं. पुं. (सं.) उन्मत्तः, दे. 'बावला' ।

वात्सल्य, सं. पुं. (सं.) रसविशेषः (काव्य.)। (सं. न.) पित्रोः अपत्यस्नेहः, वत्सलता ।

वात्स्यायन, सं. पुं. (सं.) न्यायसूत्रभाष्य-कारः २. कामसूत्रप्रणेतृ, पक्षिलः, मंदनागः ।

वाद, सं. पुं. (सं.) वादानुवादः, वादप्रतिवादः, ऊहापोहः, *शास्त्रार्थः, दे. । २. सिद्धांतः, राद्धांतः ३. कलहः, विवादः ।
—विवाद, सं. पुं. (सं.) दे. 'वाद' (१) ।
वादक, सं. पुं. (सं.) वाद्यवादयितृ २. वक्तृ ३. वादिन्, तार्किक ।
वादन, सं. पुं. (सं. न.) वाद्य-वादित्र,-ध्वननं २. वाद्यं, दे. ।
वादरायण, सं. पुं. (सं.) महर्षिः वेदव्यासः ।
वादा, सं. पुं. (अ. वाइदा) नियतसमयः २. प्रतिज्ञा, वचनं, संगरः ।
वादानुवाद, सं. पुं. (सं.) दे. 'वाद' (१) ।
वादी, स. पुं. (सं.–दिन्) अभियोक्तृ, अभियोगिन्, अर्थिन्, शिरोवर्तिन्, दे. 'मुद्दई' २. प्रस्तावकः, प्रणेतृ ३. वक्तृ ।
—प्रतिवादी, सं. पुं. (सं. वादिप्रतिवादिनौ) अर्थिप्रत्यर्थिनौ २. पक्षिप्रतिपक्षिणौ (सब द्वि.) ।
वाद्य, सं. पुं. (सं.) वादित्रं, आतोद्यम् ।
वानप्रस्थ, सं. पुं. (सं.) तृतीयाश्रमिन्, वैखानसः, आरण्यकः, तापसः २. तृतीयाश्रमः ३-४. मधूक-पलाश,-वृक्षः ।
वानर, सं. पुं. (सं.) कपिः, मर्कटः, दे. 'बंदर' ।
वानरी, सं. स्त्री. (सं.) मर्कटी, वलीमुखी ।
वापस, वि. (फ़ा.) वि-प्रत्या-प्रतिनि,-वृत्त, प्रति,-गत-आगत-यात-आयात ।
—आना, क्रि. अ., प्रत्यागम्, प्रत्यावृत् (भ्वा. आ. से.) ।
—करना, क्रि. स., प्रतिगम्, प्रतिनिवृत् (प्रे.) २. प्रतिदा (जु. उ. अ.), प्रति-ऋ (प्रे. प्रत्यर्पयति) ।
—जाना, क्रि. अ., प्रति,-गम्-निवृत् ।
—लेना, क्रि. स., प्रत्यादा, पुनः स्वीकृ ।
—होना, क्रि. अ., दे. 'वापस जाना' २. प्रतिदा-आदा (कर्म.) ।
वापसी, वि. (फ़ा. वापस) प्रत्या-प्रतिनि,-वृत्त । सं. स्त्री., प्रति,-गमनं-आगमनं-आवृत्तिः (स्त्री.) २. प्रति,-दानं-अर्पणं-आदानम् ।
वापी, सं. स्त्री. (सं.); वापिः (स्त्री.) दीर्घिका, वापिका ।
वाबस्ता, वि. (फ़ा.) बद्ध, संयत, २. लग्न, श्लिष्ट ३. संबद्ध, संग्रथित ।
वाम, वि. (सं.) सव्य, दक्षिणेतर, दे. 'बायाँ' २. प्रतिकूल, विरुद्ध, प्रतीप ३. कुटिल ४. दुष्ट, नीच ५. अभद्र, अमंगल ।
—देव, सं. पुं. (सं.) शिवः ।
—मार्ग, सं. पुं. (सं.) वामाचारः, वेदविरुद्ध-संप्रदायविशेषः ।
—मार्गी, सं. पुं. (सं.-र्गिन्) वामाचारिन्, वेदविरोधिन् ।
—लोचन, सं. स्त्री. (सं.) वामाक्षी, सुंदरी, शोभना ।
वामन, वि. (सं.) खर्व, ह्रस्व, लघुकाय । सं. पु. (सं.) खट्टनः, खट्टेरकः, खर्वः, ह्रस्वः २. विष्णुः ३. शिवः ४. पुराणग्रंथविशेषः ।
—अवतार, सं. पुं. (सं. वामनावतारः) अदितिगर्भजो विष्णोः पंचमावतारः ।
वामनी, सं. स्त्री. (सं.) खर्वा, खट्टनी ।
वामा, सं. स्त्री. (सं.) नारी, रामा, २. दुर्गा, गौरी ३. लक्ष्मीः, सरस्वती ४. स्कन्दानुचरी ।
वामी, सं. स्त्री. (सं.) बडवा, २. रासभी ३. शृगाली ।
वायव्य, वि. (सं.) १-३. वायु,-संबंधिन्-देवताक-निर्मित, वायवीय ।
—कोण, सं. पुं. (सं.) पश्चिमोत्तर,-कोणः-दिशा, वायवी ।
वायस, सं. पुं. (सं.) काकः, ध्वांक्षः ।
—वायु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) वातः, पवनः, अनिलः, गंधव(वा)हः, समीरः-रणः, मरुत्, मा(म)रुतः, श्वसनः, मातरिश्वन्, सदागतिः, जगत्प्राणः, नभस्वत्, पवमानः, प्रभंजनः, धूलिध्वजः, फणिप्रियः ।
—कोण, सं. पुं. (सं.) पश्चिमोत्तरदिशा, वायवी ।
—गुल्म, सं. पुं. (सं.) वातचक्रं, चक्रवातः, वात्या २. जल,-गुल्मः-आवर्तः ३. वातगुल्मः, उदरव्याधिभेदः ।
—पुत्र, सं. पुं. (सं.) पवन,-सुतः-पुत्रः, हनुमत् ।
—भक्षण, सं. पुं. (सं.) वायु,-भक्षः-भुज्, यतिभेदः २. पवनाशनः, सर्पः ।
—मंडल, सं. पुं. (सं. न.) अंतरि(री)क्षं, गगनं २. वातावरणम् ।
वारंट, सं. पुं. (अं.) अधिकारपत्रम् ।
—गिरफ्तारी, सं. स्त्री. (अं.+फ़ा.) *आसेधाधिकारपत्रम् ।

—तलाशी, सं. पुं. (अं.+फ़ा.) *अन्वेषणाधिकारपत्रम् ।
—रिहाई, सं. पुं. (अं.+फ़ा.) (कारागारादिभ्यः) मोचनाधिकारपत्रम् ।
वारंवार, क्रि. वि., दे. 'बारंबार' ।
वार, सं. पुं. (सं.) पर्यायः, क्रमः २. अवसरः, समयः ३. सप्ताह,-दिनं-दिवसः, वासरः, ४. द्वारं ५. आघातः, प्रहारः, आक्रमणं ६. आवरणं ७. समूहः ८. पारः-रम् ।
—करना, क्रि. स., अभिद्रु (भ्वा. प. अ.), अवस्कंद् (भ्वा. प. अ.), आक्रम् (भ्वा. प. से., भ्वा. आ. अ.) ।
—ख़ाली जाना, मु., लक्ष्यं न व्यध् (कर्म.), अस्त्रं अपलक्ष्यं पत् (भ्वा. प. से.) २. युक्तिः निष्फलीभू ।
वारक, वि. (सं.) निषेधक, प्रतिबंधक ।
वारण, सं. पुं. (सं. न.) नि-प्रति,-षेधः, २. विघ्नः, अंतरायः । (सं. पुं.) गजः, वाणवारः, कवचः-चम् ।
वारदात, सं. स्त्री. (अ.) दुर्घटना २. विप्लवः, संक्षोभः ।
वारना, क्रि. स. (सं. वारणं>) अनिष्टवारणाय उत्सृज् (तु. प. अ.)-त्यज् (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं., शांतिकरः उत्सर्गः, कष्टवारकं दानम् ।
वारनारी, सं. स्त्री. (सं.) वारमुखी, वारांगना, वेश्या, वारविलासिनी ।
वारपार, सं. पुं. [सं. अवारपारौ-रे (पुं. न.)] (नद्यादीनां) तटद्वयं २. अंतः, सीमा । क्रि. वि., अवारात् पारं यावत् २. निकटपार्श्वात् परपार्श्वपर्यंतम् ।
वारांगना, सं. स्त्री. (सं.) वारनारी, दे. ।
वारा, सं. पुं. (सं. वारणं>) मितव्ययः २. लाभः ।
वाराणसी, सं. स्त्री. (सं.) काशी-शिका, शिवपुरी, तपःस्थली, व(वा)रणसी ।
वारान्यारा, सं. पुं. (हिं. वार+न्यारा) निर्णयः, निश्चयः, निर्धारणं २. समाधानं, संधिः, शमः-मनम् ।
वारापार, सं. पुं. तथा क्रि. वि., दे. 'वारपार' ।
वाराह, सं. पुं. (सं.) वराहः, दे. ।
वारि, सं. पुं. (सं. न.) पानीयं, जलं, दे. ।
—चर, सं. पुं. (सं.) जलजन्तुः २. मत्स्यः ।
—ज, सं. पुं. (सं. न.) कमलं,वारि-जातं-रुहम् ।
—द, सं. पुं. (सं.) वारि,-धरः-वाहः, मेघः ।
—धि, सं. पुं. (सं.) वारिनिधिः, सागरः ।
—यंत्र, सं. पुं. (सं. न.) जलयंत्रं, दे. 'फव्वारा' ।
वारित, वि. (सं.) नि-अव,-रुद्ध, निवारित २. निषिद्ध, प्रतिषिद्ध, प्रत्यादिष्ट ३. आच्छादित, आवृत ।
वारिद[1], सं. पुं. (सं.) मेघः, जलदः ।
वारिद[2], वि. (अ.) आगत, आयात २. प्रकट, आविर्भूत ।
वारिस, सं. पुं. (अ.) अंश,-हरः-हारिन्-भाज्, दायादः, दायिकः २. उत्तराधिकारिन् ।
—होना, क्रि. अ., पैतृकसंपदाधिकारी जन् (दि. आ. से.), दायादो भू ।
वारींद्र, सं. पुं. (सं.) वारीशः, सागरः ।
वारुणी, सं. स्त्री. (सं.) मदिरा, मद्यं, सुरा २. पश्चिमदिशा ३. वरुणानी ।
वार्ड, सं. पुं. (अं.) रक्षणं, गोपनं २. पुर-विभागः ३. कारागारादीनां विभागः ।
वार्डर, सं. पुं. (अं.) रक्षकः २. कारारक्षकः ।
वार्त्ता, सं. स्त्री. (सं.) विषयः, प्रसंगः २.किंवदंती, जनश्रुतिः (स्त्री.) ३. समाचारः, वृत्तं ४. वार्त्तालापः, दे. ।
वार्त्तालाप, सं. पुं. (सं.) संलापः, संवादः, संभाषणं, आलापः ।
—करना, क्रि. अ., संलप्-संवद् (भ्वा. प. से.), संभाष् (भ्वा. आ. से.) ।
वार्त्तिक, सं. पुं. (सं. न.) उक्तानुक्तदुरुक्तार्थप्रकाशको ग्रंथः;-टीका । (सं.पुं.) चरः २. दूतः ।
वार्द्धक्य, सं. पुं. (सं. न.) वार्द्धकं, वृद्धत्वं, वृद्धावस्था, स्थविरम् ।
वार्षिक, वि. (सं.) आब्दिक, वात्सरिक, सांवत्सरिक २. प्रावृषेण्य ।
वालंटेयर, सं. पुं. (अं.) स्वयंसेवकः, स्वेच्छासेवकः ।
वाल(लि)दैन, सं. पुं. (अ.) पितरौ, मातापितरौ (दोनों द्वि.) ।
वालिद, सं. पुं. (अ.) पितृ, जनकः ।
वालिदा, सं. स्त्री. (अ.) मातृ (स्त्री.), जननी ।
वाल्मीकि, सं. पुं. (सं.) रामायणप्रणेतृमुनिविशेषः, व(वा)ल्मीकः, प्राचेतसः, आद्यकविः, कविज्येष्ठः ।
वावदूक, सं. पुं. (सं.) वाग्मिन् २. वाचालः ।

वावैला, सं. पुं. (अ.) विलापः २. कोलाहलः ।
वाष्प, सं. पुं. (सं.) उष्मन्, दे. 'भाप' २. अश्रु (न.) ।
वासंती, सं. स्त्री. (सं.) माधवी, प्रहसंती, वसंतजा २. यूथी ।
वास, सं. पुं. (सं.) अव,-स्थानं-स्थितिः (स्त्री.) नि-,वस्तिः (स्त्री.) २. गृहं, भवनं ३. सु-,गंधः ४. दुर्-,गंधः ।
वासक, सं. पुं. (सं.) अटरूषः, वैद्य-भिषड्,-मातृ (स्त्री.), वासा-सकः ।
वासकेट, सं. स्त्री. (अं. वेस्टकोट) वासकटिः ।
वासना, सं. स्त्री. (सं.) कामना, अभिलाषः, वांछा २. संस्कारः, भावना, स्मृतिहेतुः ३. ज्ञानं ४. प्रत्याशा ५. देहात्मबुद्धिजन्यो मिथ्यासंस्कारः (न्याय.) ।
वासर, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) दिवसः, दिनम् ।
वासव, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः, दे. ।
वासित, वि. (सं.) भावित, सुरभीकृत २. वस्त्रवेष्टित ३. पर्युषित ।
वासी, सं. पुं. (सं-सिन्) निवासिन्, वास्तव्य ।
वासुदेव, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः ।
वास्तव, वि. (सं.) सत्य, यथार्थ, अवितथ ।
—में क्रि. वि., वस्तुतः, सत्यम् ।
वास्तविक, वि. (सं.) तथ्य, सत्य, तात्त्विक, दे. 'वास्तव' ।
वास्ता, सं. पुं. (अं.) संबंधः, संपर्कः ।
—पड़ना, मु., व्यवहारावसरः जन् (दि. आ. से.) ।
वास्तु, सं. पुं. (सं. पुं. न.) वेश्मभूः, गृहपोतकः २. गृहं, सौधः ।
—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) भवननिर्माणकला, स्थापत्यम् ।
वास्ते, अव्य. (अ.)—अर्थं,—निमित्तम्, चतुर्थी विभक्ति से भी (उ., तेरे वास्ते = त्वदर्थं, तुभ्यम् ।
वाह[1], अव्य. (फ़ा.) साधु, वरं, भद्रं, शोभनं २. अद्भुतं, आश्चर्यं ३. धिक् ४. हंत ।
वाह[2], अव्य., साधु-साधु इ. ।
—करना, क्रि. स., अभि-प्रति,-नंद् (भ्वा. प. से.), साधु-वादान् दा २. करतलध्वनिं कृ. ।
—होना, मु., अभि-प्रति-नंद् (कर्म.) ।

वाहक, सं. पुं. (सं.) भारवाहः, भारिकः २. सारथिः, यंतृ ।
वाहन, सं. पुं. (सं. न.) यानं, युग्यं, दे. 'सवारी' ।
वाहवाही, सं. स्त्री. (फ़ा.) ख्यातिः-विश्रुतिः (स्त्री.), साधुवादः, प्रशंसा ।
—लेना या लूटना, मु., यशः वितन् (त. उ. से.), साधुवादान् लभ् (भ्वा. आ. अ.), प्रशंसापात्रं भू ।
वाहिद, वि. (अ.) एक, एकाकिन्, एकल, अद्वितीय ।
वाहिनी, सं. स्त्री. (सं.) सेना २. नदी ३. सैन्यभेदः (=८१ हस्ती, ८१ रथ, २४३ घोड़े, ४०५ पैदल) ।
—पति, सं. पुं. (सं.) सेनापतिः ।
वाहियात, वि. (अ. वाही+फ़ा. यात) व्यर्थ, निरर्थक २. दुष्ट, खल ।
वाहीतबाही, वि. (अ.+फ़ा.) निरर्थक, निष्प्रयोजन २. असंगत, असंबद्ध । सं. स्त्री., प्र-, जल्पः-पनं २. गालिः (स्त्री.), अपभाषणम् ।
वाह्य, वि. (सं.) वोढव्य २. वोढृ ।
विंदु, सं. पुं., दे. 'बिंदु' ।
विंध्याचल, सं. पुं. (सं.) विंध्यः, पर्वतविशेषः ।
वि, उप. (सं.) वैशिष्ट्यनिषेधादिबोधकः उपसर्गः (व्या.) ।
विकच, वि. (सं.) विकसित, उत्फुल्ल २. केशहीन ।
विकट, वि. (सं.) कठिन, दुस्साध्य, दुष्कर २. भीम, भीषण, भयप्रद ३. विशाल, विस्तीर्ण ४. दुर्गम ५. वक्र, कुटिल ।
विकराल, वि. (सं.) दे. 'विकट' (२) ।
विकल, वि. (सं.) विह्वल, उद्विग्न, वि-,आकुल, अशांत २. खंडित, अपूर्ण ।
विकलांग, वि. (सं.) अ-,पोगंड, अंगहीन, विकल-न्यून,-अङ्ग-इंद्रिय ।
विकला, सं. स्त्री. (सं. न.) कलायाः षष्टितमो भागः ।
विकल्प, सं. पुं. (सं.) भ्रमः, भ्रांतिः (स्त्री.) २. संदेहः, संशयः ३. विभाषा (व्या.) ४. विरुद्ध-विपरीत,-विचारः-कल्पना ५. चित्तवृत्तिभेदः (योग.) ६. अर्थालंकारभेदः (सा.) ७. अवांतरकल्पः ८. ऐच्छिकविषयः ।

विकसित, वि. (सं.) विकच, स्फुट-टित, स्मित, उज्जृंभ-म्भित, उन्निद्र, उन्मीलित, प्र-उत्-सं-, फुल्ल, भिन्न, उद्‌बुद्ध ।

विकस्वर, वि. (सं.) विकासशील, विकश्वर, विकासिन् ।

विकाम, वि. (सं.) निष्काम, निःस्पृह, विकांक्ष ।

विकार, सं. पुं. (सं.) परिणामः, विक्रिया, विकृतिः (स्त्री.), विकृत्या २. रोगः, आमयः ३. दोषः, अवगुणः ४. मनो,-वृत्तिः-(स्त्री.) -वेगः ५. उपद्रवः, हानिः (स्त्री.) ।

विकारी, वि. (सं.-रिन्) विकारवत्, परिणामिन् २. विकृत, परिवर्तित ३. कुवासनान्वित ।

विकाल, सं. पुं. (सं.) अतिकालः, विलंबः २, सायः-यं, दिनांतः ।

विकाश, सं. पुं. (सं.) क्रमशो वृद्धिः (स्त्री.), (२-४) दे. 'विकास' (१-३) ।

विकास, सं. पुं. (सं.) क्रमशो वृद्धिः (स्त्री.), क्रमिकोन्नतिः (स्त्री.) २. प्रसारः, विस्तारः ३. विकसनं, प्रस्फुटनम् ।

—का सिद्धांत, सं. पुं. विकासवादः ।

विकीर्ण, वि. (सं.) विक्षिप्त, व्यस्त, प्रसृत, विश्लिष्ट २. विख्यात ।

विकृत, वि. (सं.) परिणत, परिवर्तित, विकारान्वित, विकृतिमत् २. कुरूप, विरूप ३. अपूर्ण, विकल ४. रुग्ण ५. कृतक, कृत्रिम ।

विकृति, सं. स्त्री, (सं.) (१-३) दे. 'विकार' (१-३) । ४. परि,-वर्तनं-वृत्तिः (स्त्री.) ५. मनोविक्षोभः ६. धातुप्रत्ययजं शब्दरूपं (व्या.) ७. माया ८. वैरूप्यं, कुरूपता ।

विक्टोरिया, सं. स्त्री. (अं.) सम्राज्ञीविशेषः २. घोटकशकटीभेदः ३. उपग्रहविशेषः ।

विक्रम, सं. पुं. (सं.) शौर्यं, पराक्रमः, वीर्यं, साहसं, पौरुषं २. विक्रमादित्यः, दे. ।

विक्रमादित्य, सं. पुं. (सं.) साहसांकः, शकारिः, विक्रमसंवत्प्रवर्तक उज्जयिन्या नृपविशेषः ।

—संवत्, सं. पुं. (सं. अव्य.) विक्रमाब्दः ।

विक्रमी, सं. पुं. (सं.-मिन्) पराक्रमिन्, वीरः, शूरः २. सिंहः ३. विष्णुः ।

विक्रय, सं. पुं. (सं.) विक्रयणं, विपणः-णनम् ।

विक्रांत, सं. पुं. (सं.) दे. 'विक्रमी' (१-२) ।

विक्रीत, वि. (सं.) विपणायित, मूल्येन दत्त, कृतविक्रय ।

विक्रेता, सं. पुं. (सं.-तृ) विक्रयिन्, विक्रयिकः, विक्रायकः, विपणितृ ।

विक्रेय, वि. (सं.) पण्य, पणितव्य, विक्रेतव्य ।

विक्लव, वि. (सं.) भीत, त्रस्त २. भीरु, कातर, त्रस्नु ३. रुग्ण, रोगार्त्त ४. विक्षुब्ध, विह्वल ५. संतप्त, दुःखित ६. विरक्त, उदासीन ।

विक्लांत, वि. (सं.) श्रान्त, श्रमार्त्त, ग्लान, क्लान्त २. उत्साह,-हीन-रहित, निर्-हत,-उत्साह ।

विक्षत, वि. (सं.) विशेषेण,-व्रणित-विद्ध-भिन्नदेह ।

विक्षिप्त, वि. (सं.) दे. 'विकीर्ण' (१) २. त्यक्त, उज्झित ३. उन्मत्त, वातुल ।

विक्षेप, सं. पुं. (सं.) (इतस्ततः) विक्षेपणं, प्रासनं, निपातनं, प्रेरणं २. चित्तचांचल्यं, संयमाभावः २. विघ्नः, अंतरायः ।

विक्षोभ, सं. पुं. (सं.) मनोलौल्यं, चित्तचांचल्यं, उद्वेगः, क्षोभः ।

विख्यात, वि. (सं.) प्रसिद्ध, दे. ।

विख्याति, सं. स्त्री. (सं.) प्रसिद्धिः (स्त्री.), दे. ।

विगत, वि. (सं.) वि-,अतीत, वीत, गत २. उपांत्य, उपांत ३. निष्प्रभ ४. विरहित, विहीन ।

विगलित, वि. (सं.) शिथिल, श्लथ, स्रस्त २. अव-अधः-,पतित ३. विकृत ४. प्रस्नुत, स्यन्न ।

विगुण, वि. (सं.) निर्गुण, गुणहीन ।

विग्रह, सं. पुं. (सं.) युद्धं, संग्रामः २. कलहः, कलिः ३. शरीरं, कायः ४. विभागः ५. विश्लेषणं, पृथक्करणं ६. व्यासः, विस्तरः, समासांगविश्लेषणं (व्या.) ७. आकारः, आकृतिः (स्त्री.) ।

विघटन, सं. पुं. (सं. न.) विश्लेषः-षणं, पृथक्,-करणं-क्रिया, विच्छेदः, विभेदः २. त्रोटनं ३. वि-,ध्वंसः-सनम् ।

विघटित, वि. (सं.) विश्लेषित, विश्लिष्ट २. त्रुटित, त्रोटित ३. नष्ट, नाशित ।

विघट्टन, सं. पुं. (सं. न.) उद्घाटनं, अपावरणं २. प्रसह्य अवपातनं ३. घर्षणं (४-६) दे. 'विघटन' (१-३) ।

विघात, सं. पुं. (सं.) विघ्नः २. आघातः, प्रहारः ३. खंडनं, शकलीकरणं ४. नाशः ५. वैफल्यम् ।

विघ्न, सं. पुं. (सं.) व्याघातः, अंतरायः,प्रत्यूहः, प्रतिबंधः, बाधः-धा, रोधः, प्रति-वि,-ष्टम्भः।

—कारी, वि. (सं.-रिन्) बाधाजनकः विघ्न,-कर-कर्तृ, विघातिन्।

—नाशक, सं. पुं. (सं.) विघ्न,-विनायकः-पतिः-राजः-नायकः, गणेशः।

विचक्षण, वि. (सं.) विद्वस्, बुद्धिमत् २. कुशल, दक्ष, निपुण।

विचरण, सं. पुं. (सं.) चलनं, गमनं, २. भ्रमणं, पर्यटनं, विहरणम्।

विचल, वि. (सं.) कंपमान, कंप्र २. चञ्चल, चल।

विचलता, सं. स्त्री. (सं.) अस्थैर्यं, चाञ्चल्यं २. वि-,आकुलता।

विचलित, वि. (सं.) पतित, स्खलित २. लोल, अधीर, चञ्चल।

विचार, सं. पुं. (सं.) मतिः (स्त्री.), कल्पना, भावना, संकल्पः, तर्कः, मतं, अभिप्रायः २. चिंतनं, ध्यानं, आलोचनं, विचारणं-णा, तत्त्व-निर्णयः, वितर्कः-र्कणं, मनसा कल्पनं, विवेचनं ३. व्यवहारदर्शनं, विचारकरणम्।

—शील, वि. (सं.) विचारवत्, विवेकिन् समीक्ष्य-विमृश्य,-कारिन्।

—शीलता, सं. स्त्री. (सं.) विवेकिता, बुद्धिमत्ता।

विचारक, सं. पुं. (सं.) विचार-धर्म-न्याय,-अध्यक्षः, आधिकरणिकः २. विवेकिन्, गुण-दोषज्ञः, विवेचकः, आलोचकः।

विचारणीय, वि. (सं.) विचार्य, चिंतनीय, विचारार्ह, ध्येय २. संदिग्ध।

विचारना, क्रि. अ. (सं. विचारणं) विचर्—सभू (प्रे.), चिंत्-तर्क् (चु.) ध्यै (भ्वा. प. अ.), विमृश् (तु. प. अ.), आ-पर्या,-लोच् (चु.)।

विचारित, वि. (सं.) ध्यात, चिंतित, तर्कित, पर्यालोचित, विमृष्ट २. निर्णीत, निश्चित।

विचार्य, वि. (सं.) दे. 'विचारणीय'।

विचिकित्सा, सं. स्त्री. (सं.) संशयः, संदेहः।

विचित्र, वि. (सं.) कर्बुर-रित, कल्माष-षित, शार, शबल २. विशिष्ट, विलक्षण, असाधारण ३. अद्भुत, आश्चर्य, विस्मापक ४. सुन्दर।

—वीर्य, सं. पुं. (सं.) चन्द्रवंशीयो नृपविशेषः।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) अद्भुतालयः।

विच्छिन्न, वि. (सं.) निकृत्त, विलून, विवृक्ण २. वियुक्त, विश्लिष्ट, पृथक्-स्थित ३. समाप्त, अवसित।

विच्छेद, सं. पुं. (सं.) लवनं, लावः, कर्तनं, विच्छेदनं २. विश्लेषः-षणं, वियोजनं ३. क्रम,-भंगः-भञ्जनं ४. विरहः, वियोगः।

विछोह, सं. पुं. (सं. विक्षोभः>) वियोगः, विरहः।

विजन, वि. (सं.) निर्जन, विविक्त, निःशलाक, एकांत।

विजय, सं. पुं. (सं.) जयः, जयनं, वशी-स्वायत्ती-करणम्।

—दशमी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'दशहरा'।

—पताका, सं.स्त्री. (सं.) जयकेतुः २. जयचिह्न।

—शील, वि. (सं.)विजयिन्, सदाजयिन्, जिष्णु।

—श्री, सं. स्त्री. (सं.) जयलक्ष्मीः (स्त्री.)।

विजया, सं. स्त्री. (सं.) भंगा, हर्षिणी, दे. 'भांग' २. उमासखी ३. दुर्गा।

—दशमी, सं. स्त्री. (सं.) आश्विनशुक्लदशमी, आर्याणां पर्वविशेषः, विजयोत्सवः।

विजयी, वि. (सं.-यिन्) वि-, जेतृ, जयिन्,-जित, जिष्णु (विजयिनी स्त्री.)।

विजयोत्सव, सं. पुं. (सं.) विजयदशमी-विजयादशमी,-उत्सवः-पर्वन् (न.)-क्षणः। २. जय,-उत्सवः-क्षणः-उद्धर्षः।

विजर, वि. (सं.) अजर, निर्जर, वार्द्धक्य-रहित २. नूतन, नवीन।

विजल, वि. (सं.) अजल, निर्जल, जल-वारि,-रहित।

विजातीय, वि. (सं.) भिन्न-असमान,-जाति-वर्ण २. साम्यरहित, असम।

विजिगीषा, सं. स्त्री. (सं.) विजयकामना २. उत्कर्षः।

विजिगीषु, वि. (सं.) जयाभिलाषिन्।

विज़िट, सं. स्त्री. (अं.) अभिगमः, अभ्यागमः, दर्शनार्थं गमनं,-दर्शनयात्रा।

विज़िटर, सं. पुं. (अं.) दर्शकः, प्रेक्षकः २. अभ्यागतः, गृहागतः।

विज़िटिंग कार्ड, सं. पुं. (अं.) *दर्शकपत्रम्।

विजित, वि. (सं.) पराजित, अभि-परा,-भूत, वशी-स्वायत्ती,-कृत।

विजेता, सं. पुं. (सं.-तृ) दे. 'विजयी'।

विज्ञ, वि. (सं.) प्रवीण, कुशल, विशेषज्ञ २. धीमत्, बुद्धिमत् ३. कोविद, पंडित ।

विज्ञता, सं. स्त्री. (सं.) प्रवीणता २. बुद्धिमत्ता ३. विद्वत्ता ।

विज्ञप्ति, सं. स्त्री. (सं.) सूचनं, ख्यापनम् ।

विज्ञात, वि. (सं.) अवगत, अवबुद्ध २. प्रसिद्ध ।

विज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) ज्ञानं, बोधः, अवगमः, उपलब्धिः (स्त्री.) २. विषयविशेषस्य विशिष्ट-ज्ञानं ३. अध्यात्म,-विद्या-ज्ञानं ४. कर्मन् (न.) ५. आत्मानुभवः ।

—मयकोष, स. पुं. (सं.) ज्ञानेन्द्रियसहिता बुद्धिः (स्त्री.) ।

विज्ञापन, सं. पुं. (सं. न.) बोधनं, सूचनं, घोषणं, ख्यापनं, विज्ञप्तिः (स्त्री.), विज्ञापना २. विज्ञापनपत्रम् ।

विट, सं. पुं. (सं.) कामुकः, लंपटः २. धूर्त्तः ३. नायकभेदः (सा.) ३. कामुकानुचरः ।

विटप, सं. पुं. (सं. पुं. न.) शाखा, शाखा-पल्लवसमुदायः २. क्षुपः, गुल्मः-मं ३. वृक्षः ।

विटपी, सं. पुं. (सं-पिन्) वृक्षः, पादपः ।

विटामिन, सं. पुं. (अं.) खाद्यौजम् ।

विडंबना, सं. स्त्री. (सं.) अनु,-करणं-कारः-कृतिः (स्त्री.) २. अव-उप,-हासः, अवहेलना २. निर्भर्त्सनं-ना ।

—करना, क्रि. स., अव-उप,-हस् (भ्वा. प. से.) २. सोपहासं अनुकृ, विडंब् (चु.) सावहासं अवमन् (दि. आ. अ.) ।

विडारना, क्रि. स. (हिं. डालना) विकॄ (तु. प. से.), विक्षिप् (तु. प. अ.) २. (वि-, नश् (प्रे.) ३. विद्रु-प्रपलाय् (प्रे.) ।

वि(बि)डाल, सं. पुं. (सं.) मार्जारः, दीप्त,-लोचन-अक्षः, दे. 'बिल्ला' ।

वितंडा, सं. स्त्री. (सं.) परपक्षव्युदासपूर्वकं स्वपक्षस्थापनं २. प्रतिपक्षस्थापनाहीनो जल्पः ३. व्यर्थ,-कलहः-विवादः ।

वितत, वि. (सं.) विस्तृत, विस्तीर्ण ।

वितथ, वि. (सं.) वितथ्य, असत्य, अनृत २. व्यर्थ ।

वितरण, सं. पुं. (सं. न.) दानं, अर्पणं, उत्सर्गः २. विभाजनं, अंशनम् ।

—करना, क्रि. स., अंश् (चु.), विभज् (भ्वा. उ. अ.) ।

वितर्क, सं. पुं. (सं.) ऊहः-हनं, ऊहापोहः २. सदेहः ३. अनुमानं ४. अर्थालंकारभेदः (सा.) ।

वितल, सं. पुं. (सं. न.) पातालविशेषः ।

वितस्ता, सं. स्त्री. (सं.) पंचनदप्रांतवर्ती नदविशेषः ।

वितस्ति, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) द्वादशांगुलः, दे. 'बित्ता' ।

वितान, सं. पुं. (सं. पुं. न.) उल्लोचः, चंद्रातपः २. विस्तारः ३. यज्ञः ।

वितुंड, सं. पुं. (सं. वि.+तुंड>)गजः, द्विपः ।

वितृष्ण, वि.(सं.) निःस्पृह, निष्काम, संतोषिन् ।

वित्त, सं. पुं. (सं. न.) संपत्तिः (स्त्री.), धनं,दे. ।

—वान् , वि. (सं.-वत्) धनाढ्य ।

—हीन, (वि.) निर्धन ।

विदग्ध, वि. (सं.) चतुर, दक्ष, कुशल २. व्युत्पन्न, पंडित ३. प्लुष्ट, व्युष्ट । सं. पुं. (सं.) रसिकः २. विद्वस् ।

विदग्धता, सं. स्त्री. (सं.) चातुर्यं २. पांडित्यं, विद्वत्ता ।

विदा, सं. स्त्री. (अ. विदाअ) प्रस्थानं, प्रयाणं ३. गमनानुमतिः (स्त्री.), प्रस्थानानुज्ञः ।

—करना, क्रि. स., प्रस्था-प्रया (प्रे.) विसृज् (तु. प. अ.) ।

—होना, क्रि. अ., प्रस्था (भ्वा. आ. अ.), प्रया (अ. प. अ.) ।

विदाई, सं. स्त्री. (हिं. विदा) दे. 'विदा' (१-२) । ३. 'प्रास्थानिकं धनं द्रव्यं वा ।

विदारक, वि.(सं.)विपाटक, विभेदक, विदारण ।

विदारण, सं. पुं. (सं. न.) विपाटनं, विभेदनं, विदलनं २. हननं ३. युद्धम् ।

विदारीकंद, सं. पुं. (सं. पुं. न.) भूमिकुष्मांडः, विदारी-रिका, वृष्य-स्वादु,-कंदा ।

विदित, वि. (सं.) अवगत, बुद्ध, ज्ञात, दे. ।

विदिशा, सं. स्त्री. (सं.) दशार्णानां राजधानी, नगरविशेषः (भेलसा) २. दिक्-दिशा,-कोणः ।

विदीर्ण, वि. (सं.) विपाटित, विदलित, विभिन्न २. त्रुटित, भग्न ३. हत ।

विदुर, सं. पुं. (सं.) धृतराष्ट्रस्य भ्राता मंत्री च ।

विदुष, सं. पुं. (सं. विद्वस्) पंडितः, प्राज्ञः ।

विदुषी, वि. (सं.) विप्रकृष्ट, सुदूरवर्तिन् ।

विदूर, सं. पुं. (सं.) वैहासिकः, प्रहासिन्, प्रीतिदः, वासंतिकः २. भंडः ।

विदेश, सं. पुं. (सं.) परदेशः, देशांतरम् ।
विदेशी, वि. (सं. विदेशीय) अन्य-पर,-देशीय, वै-पार,-देशिक ।
विदेह, वि. (सं.) अकाय, अशरीर-रिन् । सं. पुं. (सं.) जनकः, मिथिलेश्वरः ।
—पुर, सं. पुं. (सं. न.) जनकपुरी, मिथिला, विदेहा ।
विद्ध, वि. (सं.) सच्छिद्र, समुत्कीर्ण, सुषिर, वेधित, छिद्रित, निर्भिन्न २. क्षत, व्रणित ३. क्षिप्त, अस्त ।
विद्यमान, वि. (सं.) वर्तमान, भवत्, २. प्रत्यक्ष, समक्ष, उपस्थित ।
विद्यमानता, सं. स्त्री. (सं.) उपस्थितिः (स्त्री.), वर्तमानता ।
विद्या, सं. स्त्री. (सं.) ज्ञानं, विज्ञानं, बोधः २. अध्यात्मविद्या, परा विद्या ३. शास्त्रम् ।
—दान, सं. पुं. (सं. न.) अध्यापनं २. पुस्तकदानम् ।
—प्राप्ति, सं. स्त्री. (सं.) ज्ञानाधिगमः, अध्ययनम् ।
—वान्, वि. (सं.-वत्) विद्वस्, प्राज्ञ ।
—हीन, वि. (सं.) अशिक्षित, निरक्षर, अज्ञ, अविद्य ।
विद्यारंभ, सं. पुं. (सं.) १. वेदारम्भसंस्कारः २. अध्ययनोपक्रमः, शिक्षाप्रारम्भः ।
विद्यार्जन, सं. पुं. (सं. न.) ज्ञान-बोध-,प्राप्तिः-उपलब्धिः (दोनों स्त्री.) २. विद्यया धनोपार्जनम् ।
विद्यार्थी, सं. पुं. (सं.-र्थिन्) छात्रः, शिष्यः, २. अधीयानः, अध्येतृ, पाठकः ।
विद्यालय, सं. पुं. (सं.) पाठशाला, विद्या,-गृहं-मन्दिरम् ।
विद्युत्, सं. स्त्री. (सं.) चंचला, चपला, तडित् (स्त्री.), दे. 'बिजली' ।
—प्रिय, सं. पुं. (सं. न.) कांस्यं २. कांस्यपात्रम् ।
विद्रुम, सं. पुं. (सं.) प्रवालः, भौमीरः, दे. 'मूंगा' २. रत्नवृक्षः ३. पल्लवः-वं, किस(श)लयः-यम् ।
विद्रोह, सं. पुं. (सं.) राज,-द्रोहः, विरोधः, प्रजाक्षोभः, प्रकृतिप्रकोपः, राज्यविप्लवः ।
विद्रोही, सं. पुं. (सं.-हिन्) राज,-द्रोहिन्-विरोधिन्-द्रुह् ।
विद्वत्ता, सं. स्त्री. (सं.) पांडित्यं, व्युत्पत्तिः (स्त्री.), विद्वत्त्वं, विद्याप्रकर्षः ।
विद्वान्, सं. पुं. (सं. विद्वस्) पंडितः, प्राज्ञः, बहुश्रुतः, विपश्चित्, ज्ञानवत् ।
विद्वेष, सं. पुं. (सं.) वैरं, शत्रुता, विरोधः ।
विद्वेषी, सं. पुं. (सं.-षिन्) वैरिन्, विरोधिन्, शत्रुः ।
विधवा, सं. स्त्री. (सं.) रंडा, मृतभर्तृका, विश्वस्ता, यतिनी, जालिका ।
—पन, सं. पुं. (सं.+हिं.) वैधव्यं, दे. ।
विधवाश्रम, सं. पुं. (सं) *विश्वस्तालयः ।
विधाता, सं. पुं. (सं.-तृ) ब्रह्मन् (पुं.), जगदुत्पादकः, सृष्टिकर्तृ, परमेश्वरः २. विधायकः, रचयितृ ३. व्यवस्थापकः, *प्रबन्धकः ।
विधात्री, सं. स्त्री. (सं.) रचयित्री, विधायिका २. व्यवस्थापिका ।
विधान, सं. पुं. (सं. न.) अनुष्ठानं, करणं, संपादनं, निष्पादनं, साधनं २. व्यवस्था, आयोजनं, *प्रबन्धः ३. रीतिः-पद्धतिः (स्त्री.), प्रणाली ४. निर्माणं, रचनं-ना ५. उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ६. पूजा, अर्चा ७. शासनपद्धतिः (स्त्री.), राज्यव्यवस्था ८. विधिः, नियमः, कल्पः ।
—करना, क्रि. स., विधा, आदिश् (तु. प. अ.), शास् (अ. प. से.) ।
—परिषद्, सं. स्त्री. (सं.) विधि-अधिनियम,-निर्मात्री सभा ।
विधायक, सं. पुं. (सं.) अनुष्ठातृ, कर्तृ, निष्पादकः, साधकः २. निर्मातृ, रचयितृ, विधातृ, ३. व्यवस्थापकः प्रबन्धकः, प्रस्तोतृ ।
विधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) (शास्त्राणां) आदेशः, नियोगः, नियमः, कल्पः, अनुशासनं २. रीतिः (स्त्री.), कार्यक्रमः, प्रणाली ३. व्यवस्था, संगतिः (स्त्री.), क्रमः ४. आचारः, व्यवहारः ५. प्रकारः, रीतिः (स्त्री.) ६. भाग्यम् । सं. पुं. (सं.) ब्रह्मन्, विधातृ (पुं.) ।
—निषेध, सं. पुं. [सं.-धौ (द्वि.)] नियोग-प्रतिषेधौ (द्वि.) ।
—पूर्वक, क्रि. वि. (सं.-र्वकं) यथाविधि, यथाशास्त्रं २. यथातथं, यथोचितम् ।
—वत्, क्रि. वि. (सं.) दे. 'विधिपूर्वक' ।
—वशात्, अ. (सं.) दैवात्,-भाग्येन, भाग्य-दैव,-वशात् ।

—वाहन, सं. पुं. (सं.) हंसः, मरालः, धवलपक्षः।
—हीन, वि. (सं.) अवैध, अविहित, विधिविरुद्ध, अनियमित।
विधु, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः, सोमः।
—वदनी, सं. स्त्री (सं.) चन्द्रमुखी २. सुन्दरी।
विधुर, वि. (सं.) दुःखित, पीडित २. भीत, त्रस्त ३. वि-,आकुल ४. असमर्थ ५. परित्यक्त ६. विमूढ [विधुरा (स्त्री.)]।
विधेय, वि. (सं.) अनुष्ठेय, कर्तव्य, निष्पाद्य, साध्य २. वशवर्तिन्, विनीत, वश्य, विनेय, वचनेस्थित ३. विधानार्ह, अनुशासनीय। सं. पुं. (सं. न.) विशेषकं, वाक्यांशभेदः (व्या.)।
विध्वंस, सं. पुं. (सं.) वि-,नाशः, अवसादः, निर्मूलनं, उच्छेदः।
विध्वंसी, वि. (सं.-सिन्) विध्वंसकः, वि-, नाशकः, निर्मूलयितृ।
विध्वस्त, वि. (सं.) वि-,नष्ट, उच्छिन्न, निर्मूलित, उत्सन्न।
विनत, वि. (सं.) प्रणत, वंदमान २. आवर्जित, प्रवण ३. वक्र, जिह्म ४. संकुचित ५. नम्र ६. शिष्ट।
विनती, सं. स्त्री. (सं.-तिः) प्रार्थना, याच्ञा २. विनयः, नम्रता, शिष्टता ३. प्रवणता, प्रह्वता।
विनय, सं. स्त्री. (सं. पुं.) प्रश्रयः, नम्रता, शालीनता, सौजन्यं, दाक्षिण्यं २. शिक्षा ३. निवेदनं, प्रार्थना ४. निर्भर्त्सना ५. नीतिः (स्त्री.)।
—शील, वि. (सं.) नम्र, विनीत, शिष्ट, दक्षिण, सभ्य, सुजन, सुशील।
विनश्वर, वि. (सं.) क्षयिष्णु, नश्वर, अनित्य, अस्थायिन्।
विनष्ट, वि. (सं.) वि-,ध्वस्त, अवसन्न, उच्छिन्न, निर्मूलित २. मृत ३. विकृत ४. भ्रष्ट।
विना, अव्य. (सं.) अन्तरेण, मुक्त्वा, वर्जयित्वा, विहाय (सब द्वितीया के साथ)। ऋते (पञ्चमी के साथ)।
विनायक, सं. पुं. (सं.) गणेशः, दे.।
विनाश, सं. पुं. (सं.) दे. 'विध्वंस' तथा 'नाश'।
विनाशक, सं. पुं. (सं.) नाश-कर्तृ, विध्वंसकः।
विनिपात, सं. पुं. (सं.) वि-,नाशः-ध्वंसः २. वधः, हत्या ३. अव-अप,-मानः, अनादरः, अवधीरणा।
विनिमय, सं. पुं. (सं.) परि,-वर्तः-वृत्तिः (स्त्री.), प्रति-परि,-दानम्।
—करना, क्रि. स., विनि-मे (भ्वा. आ. अ.), प्रतिदा, परिवृत (प्रे.)।
विनियोग, सं. पुं. (सं.) कृत्यविशेषे मंत्रप्रयोगः २. उपयोगः, प्रयोगः ३. प्रेषणं ४. प्रवेशः।
विनीत, वि. (सं.) दे. 'विनयशील' २. जितेंद्रिय ३. शिक्षित ४. अपनीत ५. दंडित ६. धार्मिक।
विनोद, सं. पुं. (सं.) कु(कौ)तूहलं, कौतुकं, मनोरंजकव्यापारः २. खेला, क्रीडा, लीला ३. परिहासः, प्रमोदः ४. आनंदः, हर्षः।
विनोदी, वि. (सं.-दिन्) कु(कौ)तूहलिन्, कौतुकिन् २. लीलामय, क्रीडाशील ३. आनंदिन्, उल्लासिन् ४. परिहासशील, प्रमोदप्रिय।
विन्यास, सं. पुं. (सं.) स्थापनं, न्यसनं, निधानं २. रचनं, परिष्करणं, अलंकरणं ३. प्रणिधानं, उत्खचनं, अनुव्यधनं ४. क्षेपः-पणम्।
विपंची, सं. स्त्री. (सं.) वीणाभेदः २. केलिः (स्त्री.)।
विपक्ष, सं. पुं. (सं.) प्रति-विरुद्ध-विपरीत-प्रतियोगि-विरोधि,-पक्षः २. विरोधिवर्गः, प्रतिद्वंद्विवर्गः ३. प्रतिवादिन्, विरोधिन् ४. विरोधः ५. अपवादः, बाधकनियमः (व्या.) ६. साध्याभाववान् पक्षः (न्या.)। वि. (सं.) विरुद्ध २. असहाय ३. निश्छद, निर्वाज।
विपक्षी, सं. पुं. (सं.-क्षिन्) प्रतिपक्षिन्, प्रतिवादिन्, पर,-पक्षीयः-पक्ष्यः-पक्षपातिन् प्रतिद्वंद्विन् २. शत्रुः, वैरिन् ३. निष्पतत्र, पक्षहीन (पंछी आदि)।
विपणि,-णी, सं. स्त्री. (सं.) आपणः, हट्टः, पण्य,-शाला-वीथी, २. विक्रेयपदार्थाः (पुं.) ३. वाणिज्यं, व्यापारः।
विपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) आपद्-विपद्-आपत्तिः (स्त्री.), व्यसनं, महा,-दुःखं-कष्टं २. आपत्-विपत्,-कालः-समयः।
—आना या पड़ना, क्रि. अ., व्यसनं उपस्था (भ्वा. प. अ.), कष्टं आ-समा-पत् (भ्वा. प. से.) विपद् उपनम् (भ्वा. प. अ.)।
विपथ, सं. पुं. (सं.) कु,-पथः-मार्गः २. कद्,-आचारः-आचरणम्।

—गति, सं. स्त्री. (सं.) कुमार्ग-कुपथ,-गमनं-गतिः (स्त्री.)।

—गा, सं. स्त्री. (सं.). कुमार्गगामिनी नारी २. नदी, सरित् (स्त्री.)।

—गामी, वि. (सं.-मिन्) कुमार्ग-गामिन्, दुर्वृत्त, दुराचारिन्।

विपद्-दा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'विपत्ति'।

विपन्न, वि. (सं.) विपद्-आपद्,-ग्रस्त, २. दुःखित ३. भ्रान्त ४. मृत।

विपरीत, वि. (सं.) विरुद्ध, प्रतीप, अप-प्रति,-सव्य, प्रतिकूल, विलोमक २. रुष्ट, क्रुद्ध ३. कष्टकर, दुःखप्रद।

विपरीतता, सं. स्त्री. (सं.) प्रतीपता, प्रतिकूलता, विरोधः, वैपरीत्यम्।

विपर्यय, सं. पुं. (सं.) व्यत्यासः, व्यत्ययः, विपर्यासः, व्यतिक्रमः २. अव्यवस्था, क्रमाभावः ३. भ्रांतिः (स्त्री.), स्खलितं ४. मिथ्याज्ञानम्।

विपर्यस्त, वि. (सं.) व्यत्यस्त, अधरोत्तर २. अव्यवस्थित, भग्नक्रम, संकुल, संकीर्ण।

विपर्यास, सं. पुं. (सं.) दे. 'विपर्यय' (१,२,४)।

विपल, सं. पुं. (सं. न.) क्षणं, निमिषः, पलस्य षष्टितमो भागः।

विपाक, सं. पुं. (सं.) पचनं, पक्वता २. चरमोत्कर्षः, पूर्णता ३. फलं, परिणामः ४. कर्मफलं ५. जठरे भोजनस्य रसरूपेण परिणतिः (स्त्री.) ६. स्वादः ७. दुर्गतिः (स्त्री.)।

विपिन, सं. पु. (सं. न.) जंगलं, वनं, दे.। २. उपवनं, वाटिका।

विपुल, वि. (सं.) बहु, भूरि, प्रभूत, अत्यधिक २. विशाल, विस्तीर्ण ३. बृहत्, महत् ४. अगाध, अतिगंभीर।

विपुलता, सं. स्त्री. (सं.) आधिक्यं, बहुत्वं, अतिशयः २. विशालता, विस्तीर्णता ३. महत्ता, बृहत्ता।

विपुला, सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी, दे.।

विप्र, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणः दे. २. पुरोहितः।

विप्रतिपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) विरोधः, विसंवादः, असंगतिः (स्त्री.) २. परस्परविसंवादिवाक्यम् (न्या.), कुख्यातिः (स्त्री.) ४. विकृतिः (स्त्री.) ५. असिद्धिः (स्त्री.)।

विप्रतिषेध, सं. पुं. (सं.) मिथोविरोधः, असंगतिः (स्त्री.)।

विप्रलंभ, सं. पुं. (सं.) वियोगः, विरहः, रागिणोर्विच्छेदः २. छलं, वंचनं-ना।

विप्लव, सं. पुं. (सं.) उपद्रवः, डिंबः, डमरः २. विद्रोहः, दे. ३. कुव्यवस्था, क्रमहीनता ४. आपद्-विपद् (स्त्री.) ५. विनाशः आप्लावः, जलबृंहणम्।

विफल, वि. (सं.) निष्फल, दे.।

विबुध, सं. पुं. (सं.) पंडितः, प्राज्ञः २. देवः ३. चंद्रः ४. शिवः।

विबोध, सं. पुं. (सं.) जागरणं २. सम्यग्ज्ञानं ३. सावधानता ४. विकासः।

विभक्त, वि. (सं.) कृतविभाग, परिकल्पित २. पृथक्कृत, विश्लेषित ३. विभिन्न, प्राप्तविभाग।

विभक्ति, सं. स्त्री. (सं.) विभजनं, विभागः २. वियोगः, पार्थक्यं ३. सुप्प्रत्ययः, तिङ्प्रत्ययः (व्या.)।

विभव, सं. पुं. (सं.) धनं, संपत्तिः (स्त्री.) २. ऐश्वर्यं, प्रतापः ३. मोक्षः, निःश्रेयसम्।

—शाली, वि. (सं.-लिन्) धनाढ्य २. प्रतापिन्।

विभा, सं. स्त्री. (सं.) क्रांतिः (स्त्री.), प्रभा २. किरणः ३. सौन्दर्य्यम्।

विभाग, सं. पुं. (सं.) परिकल्पनं, विभजनं, अंशनं, वंटनं २. अंशः, भागः, खंडः-डं, एकदेशः ३. दायांशः, रिक्थभागः ४. प्रकरणं, अध्यायः ५. शाखा, कार्यक्षेत्रम्।

—करना, क्रि. स., दे. 'बाँटना'।

विभाज, सं. पुं. (सं.) विभाजयितृ, विभाग-, परिकल्पकः, वंट(ड)कः।

विभाजन, सं. पुं. (सं. न.) वंट(ड)नं, विभजनं, विभाग-,परिकल्पनम्।

विभाजित, वि. (सं.) कृतविभाग, परिकल्पित, वंटित, पंडित।

विभाज्य, वि. (सं.) विभजनीय, विभागार्ह, वंटि(डि)तव्य।

विभावना, सं. स्त्री. (सं.) अर्थालंकारभेदः (सा.)।

विभावरी, सं. स्त्री. (सं.) शर्वरी, रात्री २. दूती, कुट्टनी।

विभाषा, सं. स्त्री. (सं.) विकल्पः (व्या.)।

विभिन्न, वि. (सं.) विच्छिन्न, लून, कृन्त

२. विभक्त, वियुक्त, पृथक्‌स्थित ३. नाना-अनेक-बहु-वि,-विध।
विभिन्नता, सं. स्त्री. (सं.) विविधता २. पृथक्ता-त्वम्।
विभीषण, सं. पुं. (सं.) रावणभ्रातृ। वि. (सं.) भयंकर, भीम।
विभु, वि. (सं.) सर्वव्यापक, विश्वव्यापिन्, सर्वग, सर्वगत, २. नित्य ३. सुमहत् ४. शक्तिमत्। सं. पुं. (सं.) ईश्वरः २. स्वामिन् ३. आत्मन्।
विभूति, सं. स्त्री. (सं.) विभवः, ऐश्वर्यं २. धनं, वित्तं ३. अलौकिक-दिव्य,-शक्तिः-सिद्धिः (दोनों स्त्री.) ४. शिवधृतभस्मन् (न.) ५. लक्ष्मीः (स्त्री.) ६. (विविध) सृष्टिः (स्त्री.), वृद्धिः (स्त्री.), उत्कर्षः।
विभूषण, सं. पुं. (सं. न.) अलंकरणं, मंडनं २. आभूषणं, अलंकारः।
विभूषित, वि. (सं.) अलंकृत, मंडित २. युक्त, सहित ३. सुशोभित।
विभ्रम, सं. पुं. (सं.) वि-,भ्रांतिः (स्त्री.), भ्रमः, स्खलितं २. संदेहः ३. भ्रमणं ४. स्त्रीणां हावभेदः ५. सौन्दर्यम्।
विमति, सं. स्त्री. (सं.) विपरीत-विरुद्ध-,मतं-विचारः २. कुमतिः (स्त्री.)।
विमन, वि. (सं.-नस्) खिन्न, विषण्ण, दुर्मनस्।
विमर्श, सं. पुं. (सं.) विचारः-रणं-रणा, मंत्रणं-णा, विवेचनं २. समीक्षा, आलोचना ३. परीक्षा ४. परामर्शः।
विमल, वि. (सं.) स्वच्छ, निर्मल, दे. २. निर्दोष ३. सुन्दर।
—मणि, सं. पुं. (सं.) दे. 'स्फटिक'।
—मति, वि., (सं.) शुद्ध,-हृदय-चित्त।
विमलता, सं. स्त्री. (सं.) निर्मलता, दे.।
विमला, सं. स्त्री. (सं.) सरस्वती, शारदा २. सिद्धिविशेषः।
—पति, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मन् (पुं.), विधिः।
विमांस, सं. पुं. (सं. पुं. नं.) अस्वच्छ-अपवित्र-अभक्ष्य,-मांसम्। (कुक्कुरादीनाम्)।
विमाता, सं. स्त्री. (सं.-तृ) मातृसपत्नी।
विमान, सं. पुं. (सं. पुं. न.) देवरथः, वायु-व्योम,-यानं २. रथः, वाहनं ३. घोटकः ४. सप्तभूमिकं गृहं ५. शवयानम्।
विमुख, वि. (सं.) विरत, निरपेक्ष, निरीह, औत्सुक्यहीन २. विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल ३. निराश, अपूर्णकाम ४. अवदन।
विमुखता, सं. स्त्री. (सं.) विरतिः (स्त्री.), औदासीन्यं २. विरोधः, विपरीतता।
विमूढ़, वि. (सं.) अज्ञ, अज्ञानिन्, २. निस्संज्ञ, मूर्च्छित ३. आ-व्या,-कुल, विक्लव ३. अति,-मुग्ध-मोहित।
विमोक्ष, सं. पुं. (सं.) दे. 'मोक्ष'।
वियोग, सं. पुं (सं.) विरहः, विप्रलंभः, विप्रयोगः २. विच्छेदः, विश्लेषः, विभेदः ३. पार्थक्यं, पृथग्भावः ४.व्यवकलनं (गणित.)।
वियोगांत, वि. (सं.) दुःख,-अन्त-पर्यवसायिन् (नाटकादि)।
वियोगिनी, वि. स्त्री. (सं.) विरहिणी, वियुक्ता, प्रोषित,-पतिका-भर्तृका।
वियोगी, वि. (सं.-गिन्) विरहिन, वियुक्त।
वियोजक, वि. (सं.) विश्लेषक, विच्छेदक।
विरंचि, सं. पुं. (सं.) विधातृ, ब्रह्मन् (पुं.)।
—सुत, सं. पुं. (सं.) नारदः।
विरक्त, वि. (सं.) विरत, विमुख, निरीह, निवृत्त २. उदासीन, निष्प्रयोजन ३. खिन्न, रुष्ट, वैरागिन्, वैरागिक।
विरक्ति, सं. स्त्री. (सं.) विरतिः (स्त्री.), विरागः, विमुखता, वैराग्यं, विरक्तता २. औदासीन्यं ३. खेदः।
विरत, वि. (सं.) दे. 'विरक्त' (१, ४), सावकाश, अव्यापृत—अतिव्यापृत,—पर,—परायण।
विरति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'विरक्ति' (१-३) ४. विरामः, विच्छेदः, उपर(रा)मः।
विरद, सं. पुं., दे. 'विरुद'।
विरल, वि. (सं.) घनता-निविडता,-शून्य २. दुर्लभ, दुष्,-प्राप-प्रापण ३. तनु ४. निर्जन ५. अल्प ६. विप्रकृष्ट, दूरस्थ।
—पातक, वि. (सं.) न्यून-अल्प-पातक-पाप, अकिल्विष-अनघ-पूत,-प्राय-कल्प।
विरला, वि. (सं. विरल) दे. 'विरल' (१-२)।
विरव, वि. (सं.) निःशब्द, नीरव।
विरस, वि. (सं.) नीर, दे. २. अप्रिय।
विरसा, सं. पुं. (अ.) दे. 'विरासत ?'।
विरह, सं. पुं. (सं.) दे. 'वियोग' (१-३)। ४. वियोगजं दुःखम्।

—जनित, वि. (सं.) विरह,-ज-जन्य, वियोग,-ज-उद्भूत ।
विरहिणी, वि. स्त्री. (सं.) वियोगिनी, दे. ।
विरही, वि. (सं.-हिन्) दे. 'वियोगी' ।
विराग, सं. पुं. (सं.) दे. 'वैराग्य' ।
विरागी, वि. (सं.-गिन्) दे. 'वैरागी' ।
विराजना, क्रि. अ. (सं. विराजनं) शुभ्-विराज् (भ्वा. आ. से.), प्र-वि-भा (अ. प. अ.) २. वृत् (भ्वा. आ. से.), विद् (दि. आ. अ.), उपविश् (तु. प. अ.), आस् (अ. आ. से.) ।
विराजमान, वि. (सं.) प्रकाशमान, शोभमान, भ्राजमान, भासुर २. विद्यमान, उपस्थित, वर्तमान ३. उपविष्ट, आसीन ।
विराट्, सं. पुं. (सं.-राज्) विश्वरूपं, ब्रह्मन् (न.) २. क्षत्रियः ।
विराट, सं. पुं. (सं.) मत्स्यदेशः २. तद्देशीयो राजविशेषः ।
—पर्व, सं. पुं. [सं.-र्वन् (न.)] श्रीमहाभारतस्य चतुर्थं पर्वन् (न.) ।
विराम, सं. पुं. (सं.) दे. 'विरति' (४) । २. विश्रामः, विश्रांतिः (स्त्री.) ३. वाक्यावसानं ४. यतिः (स्त्री.) ।
विराव, सं. पुं. (सं.) शब्दः,ध्वनिः २.कलकलः ।
विरासत, सं. स्त्री. (अ.) दायः, पैतृकधनं, रिक्थं २. दायादत्वं, रिक्थहरत्वम् ।
विरुद, सं. पुं. (सं.) गुणोत्कर्षवर्णनं, यशः-कीर्तनं, प्रशस्तिः (स्त्री.) २. यशस् (न.), कीर्तिः (स्त्री.) ३. नृपोपाधिशब्दः ।
विरुदावली, सं. स्त्री. (सं.) स्तवमाला, यशोवर्णनम् ।
विरुद्ध, वि. (सं.) प्रतिकूल, विरोधिन्, विपरीति, प्रतीप २. रुष्ट, खिन्न ३. अनुचित, अन्याय्य ।
विरूप, वि. (सं.) बहुरूप, नानाकार २. कुरूप, कुदर्शन ३. परिवर्तित ४. निश्श्रीक, शोभाहीन ५. विरुद्ध ६. भिन्न ।
विरेचक, वि. (सं.) सारक, मलभेदक, विरेचकारक, दे. 'रेचक' ।
विरेचन, सं. पुं. (सं. न.) मलभेदकौषधं, दे. 'रेचन' २. रेकः, रेचनं-ना, मलभेदः ।
विरोध, सं. पुं. (सं.) वैरं, शत्रुता-त्वं, वि-, द्वेषः, सापत्न्यं २. असंगतिः (स्त्री.), विसंवादः, विपरीतता ३. विप्रतिपत्तिः (स्त्री.), व्याघातः ४. अर्थालंकारभेदः (सा.) ।
—करना, क्रि. स., वि-प्रति-रुध् (रु. उ. अ.), प्रतिकृ, प्रत्यवस्था (भ्वा. आ. अ.). वि-प्रति-हन् (अ. प. अ.) २. विप्रलप् (भ्वा. प. से.), प्रतिक्षिप् (तु. प. अ.) ।
विरोधी, सं. पुं. (सं.-धिन्) वैरिन्, शत्रुः, ३. विपक्षिन्, प्रतिद्वंद्विन् ४. विरोधकरः, विघ्नकरः ।
विलंब, सं. पुं. (सं.) अतिकालः, वेलातिक्रमः, काल,-क्षेपः-हरणं, दे. 'देर' ।
विलंबित, वि. (सं.) चिरायित, व्याक्षिप्त २. प्रलंब, लंबमान ।
विलक्षण, वि. (सं.) असाधारण, असामान्य, अद्भुत, अपूर्व, विशिष्ट ।
विलक्षणता, सं. स्त्री. (सं.) वैलक्षण्यं, विशिष्टता इ. ।
विलय, सं. पुं. (सं.) विलयनं, द्रवीभवनं २. लोपः, अदर्शनं ३. मृत्युः ४. वि-, नाशः ५. प्रलयः ।
विलाप, सं. पुं. (सं.) परिवेदनं,-ना, शोकजं वचनं, अनुशोचनोक्तिः (स्त्री.) २. क्रंदनं, रु(रो)दनम् ।
—करना, क्रि. अ., विलप्-अनुशुच्-परिदेव् (भ्वा. प. से.) ।
विलायत, सं. पुं. (अ.) वि-पर,-देशः २. दूरदेशः (यूरोप, अमेरिका आदि) ।
विलायती, वि. (अ.) दे. 'विदेशी' ।
—बैंगन, सं. पुं. (अ+हिं.) दे. 'टमाटर' ।
विलास, सं. पुं. (सं.) विभ्रमः, लीला, हावभेदः दे. 'नखरा' २. आनन्दः, हर्षः ३. मनो,-रंजनं-विनोदः ४. सुखभोगः ५. कंपः-पनं, गतिः (स्त्री.) ६. आह्लादक-हर्षप्रद-मनोहर-ललित,-चेष्टा-क्रिया ।
विलासिनी, सं. स्त्री. (सं.) कामिनी, सुंदरी, वरांगना २. नारी ३. वेश्या ४. वर्णवृत्तभेदः ।
विलासी, वि. (सं.-सिन्) भोगिन्, विषय-भोग,-आसक्त, कामिन् २. लीलापर, क्रीडाप्रिय, कौतुकिन् ३. सुखैषिन् ।
विलीन, वि. (सं.) अन्तर-तिरो,-हित, लुप्त २. नष्ट ३. गुप्त, गूढ़ ।
विलीयन, सं. पुं. (सं. विलयनं) विलयनं, द्रवीभावः २. क्षरणं, गलनम् ।

विलुंठन, सं. पुं., विलुंटनं, लुंटा, लुंठा २. चोरणं. मोषणम् ३. लुठनं, लोठनम् ।
विलोकना, क्रि. स. (सं. विलोकनं) दे. 'देखना' ।
विलोड़ना, क्रि. स., दे. 'विलोना' ।
विलोम, वि. (सं.) प्रतिकूल, विपरीत, प्रतिलोम, प्रतीप २. स्वरावरोहः (संगीत.) ।
विलोल, वि, (सं.) चल, अस्थिर २. सुंदर ।
विवक्षा, सं. स्त्री. (सं.) वक्तुमिच्छा, विवदिषा २. तात्पर्यं ३. संदेहः ।
विवक्षित, वि. (सं.) वक्तुमिष्ट २. अपेक्षित ।
विवर, सं. पुं. (सं. न.) छिद्रं, विलं २. गर्तः-र्तं, अवटः, खातं ३. कंदरा, गुहा ।
विवरण, सं. पुं. (सं. न.) व्याख्यानं, विवेचनं २. विस्तृत,-वर्णनं-वृत्तांतः ३. टीका, भाष्यं, व्याख्या ।
विवर्जित, वि. (सं.) निषिद्ध, वर्जित २. उपेक्षित, अनादृत ३. वंचित, रहित ।
विवर्ण, वि. (सं.) निस्तेजस्, निष्प्रभ, कांतिहीन २. क्षुद्र, नीच ।
विवर्त, सं. पुं. (सं.) भ्रमः, भ्रांतिः (स्त्री.) २. रूपांतरं, दशांतरम् ।
—वाद, सं. पुं. (सं.) वेदांतसिद्धांतविशेषः ।
विवश, वि. (सं.) अगतिक, निरुपाय २. पराधीन ३. दुर्दांत ४. निर्बल ।
विवस्वान्, सं. पुं. (सं.-स्वत्) सूर्यः २. अरुणः, सूर्यसारथिः ।
विवाद, सं. पुं. (सं.) वाद,-अनुवादः-प्रतिवादः, वाग्-वाद,-युद्धं, तर्कवितर्कः २. कलहः, कलिः ३. मतभेदः ४. व्यवहारः, ऋणादिन्यायः, दे. 'मुकदमेबाजी' ।
—करना, कि. अ., विवद् (भ्वा. आ. से.), विप्रतिपद् (दि. आ. अ.), विप्रलप् (भ्वा. प. से.) ।
विवादास्पद, वि. (सं.) विवाद-अर्ह-ग्रस्त-योग्य, संदिग्ध ।
विवाह, सं. पुं. (सं.) पाणि,-ग्रहणं-करणं-पीडन, उपय(या)मः, परिणयः, उद्वाहः, दार,-परिग्रहः-कर्मन् ।
—करना, क्रि. स., उद् वि वह् (भ्वा. उ. अ.), दारान् परिग्रह् (क्र्. प. से.), परिणी (भ्वा. प. अ.) ।
—(में) देना, क्रि. स., विवाहे दा, पाणिं ग्रह् (प्रे.), उद्वह् (प्रे.) ।
विवाहित, वि. पुं. (सं.) ऊढ, परिणीत, निविष्ट, कृतविवाद, उपयत, स्त्रीमत्, सपत्नीक ।
विवाहिता, सं. स्त्री. (सं.) पतिवत्नी, सभर्तृका, ऊढा, परिणीता, उपयता ।
विविक्त, वि. (सं.) पृथग्भूत, वियुक्त २. एकल, असहाय ३. पूत, निर्दोष ४. विवेकिन्, विवेकशील ।
विविध, वि. (सं.) अनेक-नाना-बहु,-विध-प्रकार-रूप-जातीय ।
विवेक, सं. पुं. (सं.) परिच्छेदः, सदसज्ज्ञानं, मिथो व्यावृत्त्या वस्तुस्वरूपनिश्चयः, पृथग्भावः, पृथगात्मता, विवेचनं २. भद्राभद्र-सदसद्,-परिच्छेदशक्तिः (स्त्री.), ३. बुद्धिः-मतिः (स्त्री.) ४. सत्यज्ञानम् ।
विवेकी, वि. (सं.-किन्) परिच्छेदक, विवेचक, गुणदोषज्ञ, विशेषज्ञ, विवेकवत् २. बुद्धि-मति,-मत् ३. ज्ञानिन् ४. न्यायशील ५. आधिकरणिक ।
विवेचक, वि. (सं.) दे. 'विवेकी' ।
विवेचन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'विवेक'(१) । २. सम्यक्, परीक्षा-क्षणं, गुणदोषविचारणं, परि,-आलोचनं-ना ३. अनुसंधानं ४. तर्कवितर्कः ५. मीमांसा ।
विवेचना, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'विवेचन' ।
विशद, वि. (सं.) निर्मल, विमल, स्वच्छ २. सु-वि-,स्पष्ट, व्यक्त, प्रकट, स्फुट ३. सित, उज्ज्वल, श्वेत ४. सुंदर ।
विशाखा, सं. स्त्री. (सं.) राधा, नक्षत्रविशेषः ।
विशारद, वि. (सं.) कुशल, दक्ष, प्रवीण २. विज्ञ, विशेषज्ञ, व्युत्पन्न, निष्णात ।
विशाल, वि. (सं.) विस्तृत, विस्तीर्ण, महत्, बृहत्, पृथु, उरु २. भव्य, सुंदर ३, विख्यात ।
विशालता, सं. स्त्री. (सं.) प्रथिमन्, विस्तारः, बृहत्ता, पृथुता ।
विशिख, सं. पुं. (सं.) वाणः, इषुः । वि. (सं.) शिखाहीन ।
विशिष्ट, वि. (सं.) युत, युक्त, अन्वित, सहित २. विशेष–, असामान्य ३. अद्भुत, विलक्षण ३. अतिशिष्ट ४. यशस्विन् ५. प्रसिद्ध ।
विशिष्टता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'विशेषण' ।

विशिष्टाद्वैतवाद, सं. पुं. (सं.) भेदाभेदवादः, द्वैताद्वैतवादः ।
विशीर्ण, वि. (सं.) शुष्क २. क्षीण ३. जीर्ण ।
विशील, वि. (सं.) दुश्चरित, दुःशील, कुशील ।
विशुद्ध, वि. (सं.) दे. 'शुद्ध' २. सत्य ।
विशुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) शुद्धता, पवित्रता २. संदेह-संशय,-निवारणम् । ३. प्रति(ती) कारः, प्रतिशोधः ४. ऋणशोधनम् ५. परिष्कारः ६. पूर्णज्ञानम् ।
विशूचिका, सं. स्त्री., दे. 'विसूचिका' ।
विशेष, वि. (सं.) असाधारण (-णी स्त्री.), विशिष्ट, विलक्षण । सं. पुं. (सं.) सप्तपदार्थान्तर्गतपदार्थविशेषः (वैशेषिक) २. अंतरं, भेदः ३. अर्थालंकारभेदः (सा.) ।
विशेषज्ञ, वि. (सं.) प्रवीण, निपुण, विज्ञ, पारंगत, पारदर्शिन् ।
विशेषण, सं पुं. (सं. न.) संज्ञादीनां विशेषताबोधकं पदं (व्या.) २. उपाधिः, गुणः, विशेष्यधर्मः ।
विशेषतः, अव्य. (सं.) विशेषेण, प्रधानतः ।
विशेषता, सं. स्त्री. (सं.) विशिष्टता, असाधारणता, विलक्षणता ।
विशेष्य, सं. पुं. (सं. न.) विशेषणान्वितं संज्ञादिपदं (व्या.) ।
विशोक, वि. (सं.) शोकहीन, प्रसन्न, मुदित, प्रहृष्ट ।
विश्रंभ, सं. पुं. (सं.) विश्वासः, प्रत्ययः २. अनुरागः, प्रेमन् (पुं. न.) ।
विश्रब्ध, वि. (सं.) विश्वसनीय, विश्वासार्ह २. शांत ३. निर्भय ।
विश्रांत, वि. (सं.) व्यपगतश्रम, क्लान्ति-श्रान्ति,-शून्य ।
विश्रांति, सं. स्त्री. (सं.) विश्रामः, दे. ।
विश्राम, सं. पुं. (सं.) विश्रामः, विश्रांतिः (स्त्री.), श्रमोपशमः, कार्य-व्यापार,-निवृत्तिः (स्त्री.) २. सुखं ३. शांतिः (स्त्री.) ।
—करना, क्रि. अ., विश्रम् (दि. प. से.), आ-वि-रम् (भ्वा. प. अ.), कार्यात् निवृत् (भ्वा. आ. से.) ।
विश्रुत, वि. (सं.) विख्यात, प्रसिद्ध, दे. ।
विश्लिष्ट, वि. (सं.) पृथग्भूत, भिन्न, विघटित २. विकसित ३. प्रकट ४. अपावृत ५. श्रांत ६. व्याकृत ।
विश्लेष, सं. पुं. (सं.) विघटनं, विच्छेदः, पृथग्भावः २. विरहः, वियोगः ।
विश्लेषण, सं. पुं. (सं. न.) व्यवच्छेदः, व्याकृतिः (स्त्री.), पृथक्करणम् ।
विश्वंभर, सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः २. विष्णुः ।
विश्वंभरा, सं. स्त्री. (सं.) धरणी, पृथिवी, दे. ।
विश्व, सं. पुं. (सं. न.) जगत् (न.), जगती (स्त्री.), त्रिभुवनं, ब्रह्मांडं २. भू-पृथिवी,-लोकः । वि. (सं.) सर्व, सकल, समस्त ।
—कर्ता, सं. पुं. (सं.-र्तृ) परमेश्वरः ।
—कर्मा, सं. पुं. (सं.-र्मन्) विश्वकृत्, देव,-वर्द्धकिः-शिल्पिन्, त्वष्टृ २. परमेश्वरः ३. ब्रह्मन् (पुं.) विधिः ४. सूर्यः ५. तक्षकः, वर्धकिः ६. लोहकारः ७. गृहकारकः, पलगंडः ।
—कोश (-ष), सं. पुं. (सं.) सर्वविषय-बृहत्,-कोषः ।
—जित्, सं. पुं. (सं.) यज्ञ-याग,-भेदः । वि. (सं.) जितविश्व, विश्वविजयिन् ।
—देव, सं. पुं. (सं-वाः बहु.) देवगणभेदः ।
—नाथ, सं. पुं. (सं.) शिवः २. साहित्य-दर्पणकारः पंडितविशेषः ।
—पति, सं. पुं. (सं.) ईश्वरः ।
—बंधु, सं. पुं. (सं.) शिवः २. जगत्सखः ।
—विद्यालय, सं. पुं. (सं.) दे. 'यूनिवर्सिटी' ।
—व्यापी, वि. (सं.-पिन्) विश्व-सर्व,-व्यापक (ईश्वरादि) ।
—साक्षी, सं. पुं. (सं.-क्षिन्) सर्वद्रष्टा जगदीश्वरः ।
विश्वसनीय, वि. (सं.) विश्वास्य, विश्वास,-योग्य-अर्ह, विश्रंभ,-पात्रं-भाजनं-आस्पदम् ।
विश्वसनीयता, सं. स्त्री. (सं.) विश्वास्यता, विश्वासपात्रता ।
विश्वस्त, वि. (सं.) दे. 'विश्वसनीय' ।
विश्वामित्र, सं. पुं. (सं.) गाधेयः, गाधिजः, कौशिकः (ब्रह्मर्षिविशेषः) ।
विश्वास, सं. पुं. (सं.) प्रत्ययः, विश्रंभः, २. श्रद्धा, दे. ।
—करना, क्रि. अ., विश्वस् (अ. प. से.), श्रद्धा (जु. उ. अ.), प्रति-इ (अ. प. अ.) ।
—दिलाना, क्रि. स., उपर्युक्त धातुओं के प्रे. रूप ।

—घात, सं. पुं. (सं.) विश्रंभभंगः, प्रत्यय-भञ्जनं, समय,-लंघनं-भंगः ।
—घातक, वि. (सं.) विश्रंभभञ्जक, विश्वास-घातिन् ।
—पात्र, सं.पुं. (सं.न.) विश्वास्यः,विश्वसनीयः।
विश्वेश्वर, सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः २. शिवमूर्तिविशेषः ।
विष, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गरलं, जं(जां)गुलं, क्ष्वेडः, कालकूटं, ह(हा)लाहलं, गरं, गरदं, घोरं, तीक्ष्णम् ।
—कन्या, सं. स्त्री. (सं.) मैथुनमात्रेण संभोक्तृहंत्री कुमारी नारी वा ।
—धर, सं. पुं. (सं.) सर्पः ।
—हर, वि. (सं.) विष,-नाशक-घातिन् ।
—की गांठ, मु., अपकारक, हानिप्रद ।
—देना, मु., विषेण मृ-हन् (प्रे.) ।
विषक्त, वि. (सं.) संस्थित, बद्धमूल, दृढबद्ध संलग्न ।
विषण्ण, वि. (सं.) शोकमग्न, परि-सं,-तप्त, अवसन्न ।
—मुख, वि. (सं.) विषण्णवदन, सशोकास्य । आर्त्त, विदून ।
विषण्णता, सं. स्त्री. (सं.), संतप्तता, परितप्तता, अवसन्नता, शोकार्तता ।
विषम, वि. (सं.) असम, नतोन्नत, पिंडलावृत, २. अयुग्म, दे. 'ताक' ३. विकट, कठिन, दुस्साध्य ४. अति,-तीव्र-तीक्ष्ण ५. भीषण, घोर ।
—ज्वर, सं. पुं. (सं.) ज्वरभेदः २. दे. 'मलेरिया' ।
—नयन, सं. पुं. (सं.) विषमनेत्रः, शिवः ।
—बाण, सं. पुं. (सं.) कंदर्पः, कामः ।
—वृत्त, सं. पुं. (सं. न.) असमचरणं वृत्तं (छंद.) ।
विषमता, सं. स्त्री. (सं.) वैषम्यं, समताऽभावः २. अयुग्मता ३. वैरं, विरोधः ।
विषय, सं. पुं. (सं.) गोचरः, इन्द्रियार्थाः (=शब्दस्पर्शरूपरसगंधाः) २. देशः, जनपदः ३. प्रकरणं, प्रसंगः ४. उपभोगः, आस्वादः-दनं ५. सुरतं, मैथुनं ६. द्रव्यं, पदार्थः ७. कार्यं, व्यापारः, अर्थः ।
—सुख, सं. पुं. (सं. न.) इंद्रियसौख्यम् ।
—विषयक, वि. (सं.)-संबंधिन्, उद्दिश्य, अधिकृत्य, आश्रित्य ।
विषयी, वि. (सं.-यिन्) भोग-विषय,-आसक्त, लंपट,विषय,-निरत-पर-परायण-अधीन, कामिन्, विलासिन्, रतहिण्डक, टांकर, औपस्थिक ।
विषाण, सं. पुं. (सं. न.) शृंगं, दे. 'सींग' २. गजदंतः ३. कोलदंतः ।
विषाद, सं. पुं. (सं.) अवसादः, दुःखं, शोकः, परि-सं,-तापः, आधिः (पुं.), आर्तिः (स्त्री.) २. जाड्यं ३. मौर्ख्यम् ।
विषुव, सं. पुं. (सं. न.) विषुवत् (न.), विषुपं, विषुणः, समरात्रिदिवकालः [= सौर चैत्र मास की नवीं (२१ मार्च) तथा सौर आश्विन मास की नवीं (२२ सितंबर)] ।
—रेखा, सं. स्त्री. (सं.) निरक्षः, भूकक्षा, भूमध्यरेखा, विषुवद्रेखा ।
जल—, सं. पुं. (सं. न.) विषुपदं (२२ सितंबर)।
महा—, सं. पुं. (सं. न.) हरिपदं (२१ मार्च) ।
विषूचिका, सं. स्त्री., दे. 'हैजा' ।
विष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) उच्चारः, गूथः-थं, मलः-लं, पुरीषं, शमलं, शकृत (न.), विष् (स्त्री.) ।
विष्णु, सं. पुं. (सं.) चक्रिन्, चतुर्भुजः, चक्रपाणिः, जनार्दनः, त्रिविक्रमः, हरिः, हृषीकेशः, श्री,-पतिः-निवासः-वत्सः-करः-धरः, वैकुंठः, माधवः, मधुसूदनः, पुरुषोत्तमः, पीतांबरः, दामोदरः, पद्मनाभः, नारायणः, केशवः, कृष्णः, गोपालः इ. । २. अग्निः ३. आदित्यविशेषः ।
—गुप्त, सं. पुं. (सं.) वैयाकरणविशेषः २. चाणक्यः ।
—पद, सं. पुं. (सं. न.) आकाशः-शं २. पद्मं ३. क्षीरोदः ।
—पदी, सं. स्त्री. (सं.) गंगा ।
—पुराण, सं. पुं. (सं. न.) पुराणग्रंथविशेषः ।
विसर्ग, सं. पुं. (सं.) विसर्जनीयः, वर्णविशेषः (= व्या.) २. दानं ३. त्यागः ४. मुक्तिः (स्त्री.), निःश्रेयसं ५. मृत्युः ६. प्रलयः ७. विरहः ।
विसर्जन, सं. पुं. (सं. न.) परि-,त्यागः,उत्सर्गः, मोचनं, उज्झनं २. सं-,प्रेषणं, प्रस्थापनं ३. प्रस्थानं, प्रयाणं ४. समाप्तिः (स्त्री.), अंतः ५. दानं, वितरणम् ।
विसाल, सं. पुं. (अ.) संयोगः, संगमः ।

विसूचिका, सं. स्त्री. (सं.) विसूची, दे. 'हैज़ा' २. अजीर्णरोगभेदः ।

विस्तर, सं. पुं. (सं.) विस्तारः, दे. २. आसनं, पीठम् ।

विस्तार, सं. पुं. (सं.) विस्तरः, प्रस(सा)रः, आयामः, विततिः (स्त्री.), विग्रहः, व्यासः, विस्तीर्णता २. विटपः, शाखा ।

—करना, क्रि. स., प्रसृ-विस्तृ (प्रे.), दे. 'फैलाना' ।

विस्तीर्ण, वि. (सं.) विस्तृत, प्रसृत, वितत, आयत २. विपुल, प्रचुर ३. विशाल, महत्, बृहत् ।

विस्तृत, वि. (सं.) दे. 'विस्तीर्ण' ।

विस्फोट, सं. पुं. (सं.) सशब्द,-भंगः-स्फुटनं-स्फोटनं २. पि(वि)टकः-कं-का, स्फोटः-टकः ।

विस्फोटक, सं. पुं. (सं.) दे. 'विस्फोट' (२)। २. स्फोटनशील ३. दे. 'चेचक' ।

विस्मय, सं. पुं. (सं.) आश्चर्यं, चमत्कारः २. गर्वः ३. संदेहः । वि. (सं.) हृतदर्प ।

विस्मरण, सं. पुं. (सं. न.) विस्मृतिः (स्त्री.)-स्मृति,-नाशः-लोपः ।

विस्मय, वि. (सं.) विस्मय-आश्चर्य,-आपन्न-अन्वित, चकित, विस्मयाकुल ।

विस्मृत, वि. (सं.) स्मृतिभ्रष्ट, स्मृतिपथात् अपेत ।

विस्मृति, सं. स्त्री. (सं.) विस्मरणं, दे. ।

विस्रंभ, सं. पुं. (सं.) विश्वासः, प्रत्ययः २. हत्या, वधः ।

विहंग, विहंगम, विहग, सं. पुं. (सं.) खगः, दे. 'पक्षी' ।

विहरण, सं. पुं. (सं. न.) विचरणं, अटनं, भ्रमणं २. वियोगः ३. प्रसरणम् ।

विहार, सं. पुं. (सं.) परिक्रमः-मणं, पर्यटनं, परिभ्रमणं, विहरणं, विचरणं २. सुरतं, संभोगः ३.सुरतालयः ४. संघारामः, आश्रमः, मठः दे. ।

विहारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) भोगासक्तः २. विहारकृत् ३. श्रीकृष्णः ।

विहित, वि. (सं.) (शास्त्रादिभिः) आदिष्ट, शिष्ट, उपदिष्ट २. न्याय्य, धर्म्य, उचित ३. कृत, अनुष्ठित ४. दत्त ।

विहीन, वि. (सं.) परि-,त्यक्त, उज्झित २. रहित, वंचित, हीन, वर्जित, शून्य ।

विह्वल, वि. (सं.) विक्लव, व्याकुल, दे. ।

विह्वलता, सं. स्त्री. (सं.) व्याकुलता, दे. ।

वीची, सं. स्त्री. (सं.) लहरी, तरंगः, दे. । २. रश्मिः, मरीचिः, दीधितिः, (सब पुं.) ३. कान्तिः-दीप्तिः (स्त्री.) ।

—क्षोभ, सं. पुं. (सं.) लहरीविलासः ।

—तरंग न्याय, सं. पुं. (सं.) दे. षष्ठ परिशिष्ट ।

—माली, सं. पुं. (सं.-लिन्) सागरः, समुद्रः, अर्णवः ।

वीज, सं. पुं. (सं. न.) बीजं, दे. ।

वीजन, सं. पुं. (सं. न.) व्यजनं, दे. 'पंखा' ।

वीणा, सं. स्त्री. (सं.) वल्लकी, विपंची-चिका, ध्वनिमाला, वंगमल्ली, परिवादिनी, घोषवती, कंठकूणिका २. विद्युत् (स्त्री.) ।

—दंड, सं. पुं. (सं.) प्रवालः ।

—पाणि, सं. स्त्री. (सं.) सरस्वती ।

वीत, वि. (सं.) प्रस्थित, प्रयात २. परित्यक्त ३. मुक्त ४. समाप्त ५. रहित, हीन ।

—भय, वि. (सं.) विगत-निर्,-भय ।

—राग, वि. (सं.) विरक्त, निस्स्पृह ।

—शोक, वि. (सं.) निश्शोक । सं. पुं. (सं.) अशोकवृक्षः ।

वीथी, सं. स्त्री. (सं.) वीथिः (स्त्री.), वीथिका, रथ्या, मार्गः २. पंक्ति (स्त्री.) ३. रूपकभेदः (सा.) ।

वीर, सं. पुं. (सं.) शूरः, शौटीरः, सुविक्रमः, प्र-महा-सु,-वीरः, जेतृ २. योधः, योद्धृ, भटः, सैनिकः ३. नायकः, अग्रणीः (पुं.) ४. पुत्रः ५. पतिः ६. भ्रातृ । वि. (सं.) विक्रांत, वीर्यवत्, साहसिक, पराक्रमिन् ।

—केसरी, सं. पुं. (सं.-रिन्) वीर,-पुंगवः-उत्तमः ।

—गति, सं. स्त्री. (सं.) युद्धे मरणात् स्वर्ग-लाभः २. स्वर्गः ।

—चक्र, स. पुं., (सं. वीर+चक्र) सैनिकानां-आरक्षिणां-,सम्मानास्पदं-स्वर्णमयं राजतं वा पदकम् २. पुरस्कारविशेषः ।

—पत्नी, सं. स्त्री. (सं.) वीरभार्या ।

—प्रसू, सं. स्त्री. (सं.) वीर,-सूः-मातृ (स्त्री.)-जननी ।

—भद्र, सं. पुं. (सं.) अश्वमेधाश्वः २. वीरोत्तमः ३. शिवगणविशेषः ।

—लोक, सं. पुं. (सं.) स्वर्गः ।

वीरता, सं. स्त्री. (सं.) वीर्यं, शूरता, शौर्यं, परा-वि,-क्रमः, साहसं, रणोत्साहः, ओजस्-धामन् (न.) ।

वीरान, वि. (फ़ा.) निर्मानुष, निर्-वि,-जन २. निश्श्रीक, शोभाहीन ।

वीराना, सं. पुं. (फ़ा.) विजनं, निर्जनप्रदेशः ।

वीरानी, सं. स्त्री. (फ़ा.) विजनता, निर्जनता ।

वीर्य, सं. पुं. (सं. न.) शुक्रं, रेतस्-तेजस् (न.) बीजं, चरमधातुः, इन्द्रियं २. दे. 'रज' ३. वीरता, दे. ४. बीजम् ।

—के कीड़े, सं. पुं., शुक्रकीटाः ।

—ज, सं. पुं. (सं.) पुत्रः, तनयः ।

—विरहित, वि. (सं.) निःशक्त २. क्लीव ३. भीरु ।

वीर्यवान्, वि. (सं.-वत्) बलवत्, दृढांग २. मांसल ।

वुकूफ़, सं. पुं. (अ.) परिचयः २. ज्ञानम् ३. बुद्धिः (स्त्री.) ।

वुज़ू, सं. पुं. (अ.) अंगक्षालनम् (इस्लाम) ।

वृंत, सं. पुं. (सं. न.) चूचुकः-कं, स्तन-कुच,-अग्रं २. प्रसवबंधनं, दे. 'बौंडी' ।

वृंद, सं. पुं. (सं. न.) समूहः, निकरः २. कोटिशतकं, अर्बुदम् ।

वृंदा, सं. स्त्री. (सं.) तुलसी (पौदा) दे. २.राधा ।

—वन, सं. पुं. (सं.) वृंदारण्यं २. तीर्थविशेषः ।

वृक, सं. पुं. (सं.) कोकः, ईहामृगः २. शृगालः ।

वृक्ष, सं. पुं. (सं.) तरुः, पादपः, शाखिन्, विटपिन्, द्रुः, द्रुमः, पलाशिन्, मही-क्षिति-भू,-रुहः-जः, अगः, नगः, विटपः ।

वृत्त, सं. पुं. (सं. न.) चरितं, चरित्रं, आचारः, आचरणं २. सद्,-वृत्तं-आचारः ३. समाचारः, वृत्तान्तः, उदंतः ४. वर्णिकछंदस् (न.) ५. मंडलं., वर्तुलम् ।

—खंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मंडल-वर्तुल,-अंशः ।

वृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) आजीवः-वनं-विका, जीवनं, जीविका २. उपजीविका, भृतिः (स्त्री.) ३. संक्षिप्तगंभीरव्याख्या, सूत्रार्थविवरणं, टीका ४. वृत्तं, वृत्तांतः ५. नाटकीयशैली (सा. कैशिकी इ.) ६. व्यवहारः ७. चित्तावस्था (योग., क्षिप्तमूढ़ादि) ७. स्वभावः, प्रकृतिः (स्त्री.) ।

छात्र, सं. स्त्री. (सं.) शिक्षणोपजीविका ।

मनो, सं. स्त्री. (सं.) स्वभावः, प्रकृतिः (स्त्री.), प्रवणता ।

वृथा, वि. (सं.) व्यर्थ, निरर्थक, मोघ । क्रि. वि. (सं.) मुधा, व्यर्थं, निष्फलम् ।

वृद्ध, वि. (सं.) स्थविर, वयस्क, जीन, जीर्ण, जरित-न । सं. पुं. (सं.) जरठः, स्थविरः इ., दे. 'बूढ़ा' २. पंडितः ।

वृद्धता, सं. स्त्री. (सं.) जरा, वार्द्धकं-क्यं, दे. 'बुढ़ापा' ।

वृद्धा, सं. स्त्री. (सं.) स्थविरा, जरती, दे. 'बुढ़िया' ।

वृद्धावस्था, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'वृद्धता' ।

वृद्धि, सं. स्त्री. (सं.) वर्धनं, बृंहणं, उन्नतिः (स्त्री.), उत्कर्षः, उपचयः, आधिक्यं, विस्तारः २. कुशीदं, वार्द्धुषं-ष्यं, दे. 'सूद' ३. अभ्युदयः, समृद्धिः (स्त्री.) ४. कृष्याद्यष्टवर्गोपचयः (राजनीति), स्फीतिः-स्फातिः (स्त्री.) ५. जीवभद्रा (औषधविशेषः) ।

—जीवक, सं. पुं. (सं.) कुसीदिन्, वार्द्धुषिकः ।

—जीवन, सं. पुं. (सं. न.) कौसीद्यं, वृद्धिजीविका ।

वृश्चिक, सं. पुं. (सं.) वृश्चनः, पृदाकुः, दे. 'बिच्छू' २. अष्टमराशिः (ज्यो.) ३. अग्रहायणमासः ।

वृष, सं. पुं. (सं.) ऋषभः, वृषभः, दे. 'बैल' २. पुरुषप्रकारः (कामशास्त्र) ३. धर्मः ४. द्वितीयराशिः (ज्यो.) ५. पतिः ।

वृषभ, सं. पुं. (सं.) बलीवर्दः, उक्षन्, दे. 'बैल' ।

वृष्टि, सं. स्त्री. (सं.) वर्षं, वर्षणं, परामृतं, दे. 'वर्षा' ।

वृहस्पति, सं. पुं. (सं.) सुराचार्यः, दे. 'बृहस्पति' २. नवग्रहांतर्गतपंचमग्रहः ३. गुरुवारः ।

वे, सर्व. (हिं. वह का बहु.) ते, अमी (दोनों पुं. बहु.) ताः, अमूः (दोनों स्त्री. बहु.), तानि, अमूनि (दोनों न. बहु.) ।

वेग, सं. पुं. (सं) प्रवाहः, धारा, वेणी, ओघः २. जवः, स्यदः, रयः, तरस्-रंहस् (न.), रभसः, प्रसभः ३. मूत्रविष्ठादिनिर्गमप्रवृत्तिः (स्त्री.) ४. त्वरा, शीघ्रता ५. आनंदः ६. प्रवृत्तिः (स्त्री.) ७. उद्योगः ८. वृद्धिः (स्त्री.) ९. वीर्यं, शुक्रं १०. गुणभेदः (न्याय.) ।

वेगवान्, वि. (सं.-वत्) क्षिप्र, द्रुत, शीघ्र, जवन, आशु ।

वेणी, सं. स्त्री. (सं.) वेणिः (स्त्री.), प्रवेणी-णिः, वेणिका २. जलौघः, तोयप्रवाहः ।

वेणु, सं. पुं. (सं.) वंशः, दे. 'बाँस' २. वंशी, दे. 'बाँसुरी' ।

वेतन, सं. पुं. (सं. न.) भरणं-ण्यं, निर्वेशः, भृतिः (स्त्री.), भृत्या, मर्मण्या, कर्मण्या २. मासिकं, मासिकभृतिः (स्त्री.) ।

—भोगी, सं. पुं. (सं.-गिन्) वेतन-भृति,-भुज्, वैतनिकः ।

वेताल, सं. पुं. (सं.) द्वारपालः २. भूतभेदः ३. भूताधिष्ठितशवः ।

वेत्ता, सं. पुं. (सं.-तृ) ज्ञातृ, बोद्धृ, विद् ।

वेद, सं. पुं. (सं.) श्रुतिः (स्त्री.), छंदस् (न.), आम्नायः, निगमः, ब्रह्मन् (न.), प्रवचनं, आर्यधर्मग्रन्थविशेषाः (ऋग्, यजुः, साम, अथर्व = ४ वेद) २. सत्यज्ञानम् ।

—त्रयी, सं. स्त्री. (सं.) वेदत्रयम् ।

—निंदक, सं. पुं. (सं.) श्रुतिविरोधिन्, नास्तिकः २. बुद्धः ३. बौद्धः ।

—पारग, सं. पुं. (सं.) वेद,-ज्ञः-विद्-मूर्तिः-वेत्तृ-ज्ञानिन्-दर्शिन् ।

—मंत्र, सं. पुं. (सं.) श्रुति,-वचनं-वाक्यम् ।

—माता, सं. स्त्री. (सं.-तृ) गायत्री, सावित्री २. सरस्वती ३. दुर्गा ।

—वाक्य, सं. पुं. (सं. न.) वेद,-मंत्रः-वचनं २. प्रामाणिकवचनम् ।

—विद्, सं. पुं. (सं.) दे. 'वेदपारग' ।

—विहित, वि. (सं.) वेद,-प्रतिपादित-आदिष्ट-उक्त ।

—व्यास, सं. पुं. (सं.) दे. 'व्यास' ।

—सम्मत, वि. (सं.) वेद,-अनुकूल-अनुमोदित ।

वेदना, सं. स्त्री. (सं.) पीडा, व्यथा, यातना, संतापः २. वेदनं, अनुभवः, संवेदः, ज्ञानम् ।

वेदनीय, वि. (सं.) ज्ञातव्य, ज्ञेय, बोद्धव्य २. ज्ञापनीय, बोधयितव्य ३. कष्टप्रद, दुःखद ।

वेदांग, सं. पुं. (सं. न.) श्रुत्यवयवषट्प्रकार-शास्त्रं [= शिक्षा, कल्पः, व्याकरणं, निरुक्तं, ज्योतिषं, छंदस् (न.)] ।

वेदांत, सं. पुं. (सं.) ब्रह्म-अध्यात्म,-विद्या, ज्ञानकांडं २. उपनिषद् (स्त्री.) ३. उत्तरमीमांसा, दर्शनशास्त्रविशेषः ।

वेदांती, सं. पुं. (सं.-तिन्) वेदांतशास्त्रवेत्तृ-ब्रह्मवादिन् ।

वेदाभ्यास, सं. पुं. (सं.) वेद,-अध्ययनं-स्वाध्यायः-पाठः ।

वेदी,[1] सं. स्त्री. (सं.) वेदिः, वेदिका, वितर्दी-र्दिका (सब स्त्री.) ।

वेदी,[2] सं. पुं. (सं.-दिन्) पंडितः २. ज्ञातृ ।

वेदोक्त, वि. (सं.) वेदविहित, दे. ।

वेध, सं. पुं. (सं.) वेधनं, निर्भेदः-दनं, व्यधः । यंत्रैर्ग्रहनक्षत्रावलोकनम् ।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) मानमंदिरम् ।

वेधक, सं. पुं. (सं.) वेधनकरः, छिद्रकारः, वेधिन् ।

वेधना, क्रि. स. (सं. वेधनं) व्यध् (दि. प. अ.), विध्-समुत्कृ (तु. प. से.), छिद्रयति (ना. धा.) । सं. पुं., वेधः-धनं, व्यधः-धनं, समुत्किरणं (दे. वेधक, विद्ध इ.) ।

वेधनी, सं. स्त्री. (सं.) वेधनिका, आ-,स्फोटनी, वृषदंशिका ।

वेधी, सं. पुं. (सं.-धिन्) वेधकः, दे. ।

वेला, सं. स्त्री. (सं.) कालः, समयः २. सागर-तरंगः ३. समुद्रतटः-टम् ।

वेल्डिंग, सं. पुं. (अं.) सन्धानम् ।

वेल्व, सं. पुं. (अं.) कपाटः ।

—ट्यूब, सं. स्त्री. (अं.), *कपाटनलिका ।

वेश, सं. पुं. (सं.) आकल्पः, प्रसाधनं, नेपथ्यं, प्रतिकर्मन् (न.), वेषः २. परिधानं, वस्त्राणि-वसनानि (न. बहु.) ३. पट,-कुटी-मंडपः ४. गृहम् ।

—धारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) वेषधरः, कपट-छद्म,-वेशिन् २. दंभिन् ।

—भूषा, सं. स्त्री. (सं.) परिधानं, वस्त्राभरणम् ।

किसी का—धारना, मु., अन्यवेशं परिधा, वेषं परिवृत् (प्रे.), वेशांतरं विधा ।

वेश्या, सं. स्त्री. (सं.) वेश,-युवती-वधूः (स्त्री.)-वनिता-स्त्री, वार,-अंगना-वधूः-विलासिनी-नारी-स्त्री, गणिका, रूपाजीवा, साधारणस्त्री, पण्यांगना, कामरेखा, भोग्या, भुजिष्या, क्षुद्रा ।

—पन, सं. पुं. गणिकावृत्तिः (स्त्री.), वेश्याजीवः ।

वेष, सं. पुं. (सं.) दे. 'वेश' ।

वेष्टन, सं. पुं. (सं. न.) पुटः-टं, कोशः-षः,

प्रावरणं २. आच्छादनं, परिवेष्टनं ३. उष्णीषः-पम् ।
वेष्टित, वि. (सं.) वलयित, संवीत, कृतवेष्टन २. रुद्ध ।
वेसर, सं. पुं. (सं.) वेश(श्व)रः, अश्वतरः, वेगसरः, दे. 'खच्चर' ।
वेसवार, सं. पुं. (सं.) उपस्करः, वेश (ष)-वारः ।
वैकल्पिक, वि. (सं.) ऐच्छिक, रुच्यधीन २. संदिग्ध, विकल्प्य ३. एकांगिन् ।
वैकुंठ, सं. पुं. (सं. न.) स्वर्गः, विष्णुलोकः (सं. पुं.) विष्णुः ।
वैजयंती, सं. स्त्री. (सं.) केतुः, पताका, ध्वजः ।
वैज्ञानिक, सं. पुं. (सं.) विज्ञान,-वेत्तृ विद् । वि. (सं.) विज्ञान,-सम्बन्धिन्-विषयक-मूलक ।
वैतनिक, सं. पु. (सं.) दे. 'वेतनभोगी' ।
वैतरणी, सं. स्त्री. (सं.) यमद्वारवर्ती नदी-विशेषः (पुराण.) ।
वैताल, वि. (स.) वेताल,-विषयक-सम्बन्धिन् । सं. पुं. दे. 'वेताल' तथा 'वैतालिक' ।
वैतालिक, सं. पुं. (सं.) वैतालः स्तुतिपाठकः, बोधकरः ।
वैद, वि. (सं.) वेद,-विषयक-सम्बन्धिन्, श्रौत, छन्दस् २. वेद,-अनुकूल-विहित-समर्थित ३. वेदज्ञ । सं. पुं. (सं.) वेदज्ञ-वेदनिष्णात,-विप्रः-ब्राह्मणः ।
वैदिक, वि. (सं.) छांदस, श्रौत, वेद,-विषयक-संबंधिन्-उक्त-प्रतिपादित ।
वैदूर्य, सं. पुं. (सं. न.) केतुरत्नं, विदूररत्नं-जम् ।
वैदेशिक, वि. (सं.) अन्य-पर-वि,-देशीय । सं. पुं. (सं.) पारदेशिकः, विदेशीयः ।
—मंत्री, सं. पुं. (सं.-त्रिन्) पारदेशिकसचिवः ।
वैदेही, सं. स्त्री. (सं.) विदेहतनया, जानकी, सीता ।
वैद्य, सं. पुं. (सं.) भिषज्, अगदंकारः, रोग-हारिन्, चिकित्सकः, आयुर्वेदिन् २. पंडितः ।
—राज, सं. पुं. (सं.) भिषग्वरः ।
वैद्यक, सं. पुं. (सं. न.) आयुर्वेदः, चिकित्सा-शास्त्रम् ।
वैध, वि. (सं.) वैधिक (-की), धर्म्य, न्याय्य, शास्त्र,-संमत-अनुकूल २. उचित, युक्त ।
वैधव्य, सं. पुं. (सं. न.) रंडात्वम् ।
वैनतेय, सं. पुं. (सं.) गरुडः, दे. ।
वैभव, सं. पुं. (सं. न.) वित्तं, धनं, विभवः, संपद्-संपत्तिः (स्त्री.) ऐश्वर्यं २. महिमन् (पुं.), सामर्थ्यम् ।
—शाली, वि. (सं.-लिन्) समृद्ध, धनिन् ।
वैमनस्य, सं. पुं. (सं. न.) वैरं, वि-,द्वेषः २. अन्यमनस्कता ।
वैयाकरण, सं. पुं. (सं.) व्याकरण,-वेत्तृ-अध्येतृ-पण्डितः ।
वैर, सं. पुं. (सं. न.) विरोधः, वि,-द्वेषः, शत्रुता-त्वं, सापत्न्यं, विपक्षता, द्वंद्वभावः ।
—करना, वि,-द्विष् (अ. उ. अ.), विरुध् (रु. प. अ.), वैरायते (ना. धा.), अमित्रा-यते (ना. धा.) ।
वैराग, सं. पुं., दे. 'वैराग्य' ।
वैरागी, सं. पुं. (सं.-गिन्) वैरागिकः, वैराग्य-वत्, 'विरक्त' दे. । २. वैष्णवसंप्रदायविशेषः ।
वैराग्य, सं. पुं. (सं. पुं.) विरक्तिः (स्त्री.), वैरक्तं-क्त्यं, अनासक्तिः (स्त्री.) ।
वैरी, सं. पुं. (सं.-रिन्) अरिः, शत्रुः, सपत्नः, रिपुः, अरातिः, जिघांसुः, द्वेष्टृ, प्रत्यर्थिन्, परिपंथिन् ।
वैवाहिक, वि. (सं.) औद्वाहिक (-की स्त्री.), वैवाह (-ही स्त्री.) ।
वैशाख, सं. पुं. (सं.) माधवः, राधः, सौर-प्रथम-चांद्रद्वितीय,-मासः ।
वैशेषिक, सं. पुं. (सं. न.) कणादमुनिप्रणीतो दर्शनग्रंथविशेषः, औलूक्यदर्शनम् ।
वैश्य, सं. पुं. (सं.) ऊरुजः, अर्य्यः, विश्, वणिज्, पणिकः, भूमिजीविन्, वार्तिकः, व्यवहर्तृ ।
वैश्यानी, सं. स्त्री. (सं. वैश्यः) वैश्या, अर्य्या, अर्य्याणी ।
वैश्वदेव, सं. पुं. (सं.) विश्वदेवसंबंधियज्ञः ।
वैश्वानर, सं. पुं. (सं.) अग्निः २. परमेश्वरः ।
वैषम्य, सं. पुं. (सं. न.) विषमता, दे. ।
वैष्णव, सं. पुं. (सं.) विष्णु,-उपासकः-भक्तः, कार्ष्णः २. संप्रदायविशेषः । वि. (सं.) कार्ष्ण, हार, विष्णुसंबंधिन् ।
वैसा, वि. (हिं. वह+सा) तादृश-क्ष, तद्,-तुल्य-सदृश, तथाविध ।
ऐसा—, वि. सामान्य, साधारण, प्राकृत ।
—का वैसा, क्रि. वि., पूर्ववत्, यथापूर्वम् ।

वैसे, क्रि. वि. (हिं. वैसा) तथा, तद्वत्, तत्सदृशम् ।

—ही, क्रि. वि., मूल्यं विना, दे. 'मुफ्त' ।

वोट, सं. पुं. (अं.) मतं, छंदः, छंदस् (न.) २. मतदर्शनं ३. मतदर्शनाधिकारः ।

वोटर, सं. पुं. (अं.) मतदर्शकः २. मतदर्शनाधिकारिन् ।

व्यंग, वि. (सं.) अकाय, अशरीर २. विकलहीन,-अंग ३. 'व्यंग्य' ।

व्यंगार्थ, सं. पुं., दे. 'व्यंग्य' ।

व्यंग्य, सं. पुं. (सं. न.) व्यंजनया बोध्योऽर्थः, गूढ़-गुप्त,-अर्थः-आशयः २. उपालंभः, अधि-आ,-क्षेपः ।

—कसना या छोड़ना, क्रि. स., उपालभ् (भ्वा. आ. अ.), अधि-आ,-क्षिप् (तु. प. अ.), अव-उप-हस् (भ्वा. प. से.) ।

व्यंजन, सं. पुं. (सं. न.) स्फुटी-प्रकटी,-करणं-भवनं, प्रकाशनं २. दे. 'व्यंजना' ३. चिह्नं, लक्षणं ४. अर्द्धमात्रकं, ककारादयो वर्णाः ५. अंगं, अवयवः ६. श्मश्रु (न.) ७. तेमः, तेमनं, निष्ठानं, अन्नोपकरणं ८. सिद्धान्नं ९. उपस्थः ।

—कार, सं. पुं. (सं.) पाचकः, सूदः, रन्धकः ।

—संधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) व्यञ्जन,-संयोगः-सन्निकर्षः ।

व्यंजना, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'व्यंजन' (१) । २. शब्दशक्तिविशेषः (सा.) ।

व्यक्त, वि. (सं.) प्रकट,-टित, स्फुट, विशद, स्पष्ट, प्रत्यक्ष, प्रकाशित । :

—करना, क्रि. स., व्यंज् (रु. प. से., प्रे.) प्रकाश (प्रे.), प्रकटी-विशदी-स्पष्टीकृ ।

—होना, क्रि. अ. व्यंज् (कर्म.), प्रकटी-स्पष्टी-आविर्,-भू , प्रकाश् (भ्वा. आ. से.) ।

व्यक्ति, सं. स्त्री. (सं.) स्पष्टता, विशदता, स्फुटता, प्राकट्यं, आविर्-प्रादुर्,-भावः २. मनुष्यः, मानवः ३. व्यष्टिः (स्त्री.), पृथक्त्वं ४. वस्तु (न.), पदार्थः ५. भूतमात्रं ६. प्रकाशः ।

—गत, वि. (सं.) व्यक्ति,-स्थ,-वर्तिन्-संबंधिन्, वैयक्तिक, पुरुषविशेषानुबद्ध ।

व्यग्र, वि. (सं.) संभ्रांत, अधीर, व्याकुल, दे. २. भीत, त्रस्त ३. व्यापृत, कार्यमग्न, व्यासक्त ।

व्यग्रता, सं. स्त्री. (सं.) उद्वेगः, संभ्रमः, व्याकुलता दे. २. चिंता, रणरणकः, उत्कलिका ३. व्यासक्तिः (स्त्री.) ।

व्यजन, सं. पुं. (सं. न.) तालवृंतकं, दे. 'पंखा' ।

व्यतिक्रम, सं. पुं. (सं.) क्रम,-भंगः-विपर्ययः-विपर्यासः-व्यत्ययः २. अंतरायः, विघ्नः ।

व्यतिरिक्त, वि. (सं.) भिन्न, अपर, इतर २. अधिक, विशिष्ट । क्रि. वि. (सं. न.) विना, अतिरिक्तम् ।

व्यतिरेक, सं. पुं. (सं.) भेदः, भिन्नता, पृथक्त्वं, अन्तरं २. वृद्धिः (स्त्री.) ३. अतिक्रमः-मणं ४. अर्थालंकारभेदः (का.) ।

व्यतीत, वि. (सं.) अतीत, गत, अतिक्रांत ।

व्यत्यय, } सं. पुं. (सं.) दे. 'व्यतिक्रमः'
व्यत्यास, } (१) ।

व्यथा, सं. स्त्री. (सं.) पीडा, वेदना, यातना २. कष्टं, क्लेशः, दुःखम् ।

व्यथित, वि. (सं.) पीडित, आर्त २. दुःखित, सं-परि,-तप्त ३. शोकमग्न ।

व्यभिचार, सं. पुं. (सं.) जारकर्मन् (न.), पारदार्यं, परयोषित्संगः । (स्त्री का) पतिलंघनं, परपुरुषगमनं २. कदाचारः, दुराचारः, दुर्वृत्तम् । स्वैर

व्यभिचारिणी, सं. स्त्री. (सं.) जारिणी, पुंश्चली, बंधकी, परपुरुषगामिनी । स्वैरिणी

व्यभिचारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) पारदारिकः, परस्त्रीगामिन्, जारः, भुजंगः, परतल्पगः, उपपतिः २. दुर्वृत्तः, दुराचारिन् ३. दे. 'संचारी' (भाव) ।

व्यय, सं. पुं. (सं.) वित्त-,विनियोगः, अर्थ-, उत्सर्गः, २. दानं ३. परित्यागः ।

—शील, वि. (सं.) मुक्तहस्त, अमितव्ययिन् ।

व्यर्थ, वि. (सं.) विफल, निष्फल, मोघ, निरर्थक, निष्प्रयोजन, वृथा-, मुधा-२. अपार्थक, अर्थहीन । क्रि. वि. (सं. न.) निरर्थकं, वृथा, मुधा, निष्प्रयोजनं, निर्निमित्तं, निष्फलम् ।

व्यवच्छेद, सं. पुं. (सं.) पार्थक्यं, पृथक्त्वं, २. विभागः, खंडः-डं ३. विरामः, ४. निवृत्तिः (स्त्री.) ।

व्यवधान, सं. पुं. (सं. न.) व्यवधा, आवरणं,

२. तिरस्करिणी, प्रतिसीरा ३. विभागः, खंडः ४. विच्छेदः ।

व्यवसाय, सं. पुं. (सं.) वृत्तिः (स्त्री.), उप-आ-,जीविका, आजीवः २. व्यापारः, क्रय-विक्रयः ३. कार्य,-आरंभः-उपक्रमः ४. निश्चयः ५. प्रयत्नः, उद्यमः ।

व्यवसायी, सं. पुं. (सं.-यिन्) उद्यमिन्, उद्योगिन् २. क्रयविक्रयिकः, वणिज् ३. वृत्तिमत्, व्यवसायविशिष्टः ४. अनुष्ठातृ ।

व्यवस्था, सं. स्त्री. (सं.) शास्त्रनिरूपित,-विधिः-विधानं-निर्णयः २. रचना, विन्यासः, क्रमेण स्थापनं, व्यूहनं ३. प्रबंधः, कार्यनिर्वाहणं, अवेक्षणं ४. स्थिरता ।

व्यवस्थापक, सं. पुं. (सं.) व्यवस्थादायकः, व्यवस्थापयितृ २. अधिष्ठातृ, अध्यक्षः, चालकः, निर्वाहकः, प्रबंधकः ।

—मंडल, सं. पुं. (सं. न.) व्यवस्थापिका सभा ।

व्यवहार, सं. पुं. (सं.) वृत्तं, वर्तनं, चरितं, आचारः, चेष्टितं २. कर्मन् (न.), कार्यं २. व्यवसायः, व्यापारः ३. कौसीद्यं, वृद्धिजीवनं ४. विवादः ५. ग्लहः, पणः ६. अभियोगः, कार्यं (=मुकदमा) ७. प्र-उप,-योगः ।

—करना, क्रि. अ., व्यवहृ (भ्वा. उ. अ.), वृत् (भ्वा. आ. से.), आचर् (भ्वा. प. से.)।

व्यवहारी, वि. (सं.-रिन्) व्यवहारक, व्यवहर्तृ २. प्रचलित, लौकिक । सं. पुं. (सं.) वादिन्, कार्य-,अर्थिन् ।

व्यवहार्य, वि. (सं.) व्यवहरणीय २. उपयोक्तव्य ।

व्यवहित, वि. (सं.) व्यवधानविशिष्ट, सावरण, तिरोहित ।

व्यवहृत, वि. (सं.) व्यापारित, उप-प्र,-युक्त २. आचरित, अनुष्ठित ।

व्यसन, सं. पुं. (सं. न.) दोषः, दुर्गुणः, कुशीलं, दुर्वृत्तिः (स्त्री.) २. विपद्-विपत्तिः (स्त्री.) ३. दुःखं, कष्टं ३. अनिष्टं, अमंगलं ४. विषय,-अनुरागः-आसक्तिः (स्त्री.) ५. दुर्-दौर्,-भाग्यं ६. अभिरुचिः (स्त्री.) ।

व्यसनी, वि. (सं.-निन्) दुश्शील, दुर्वृत्त, विषयासक्त २. वेश्यागामिन् ।

व्यस्त, वि. (सं.) संभ्रांत, व्याकुल दे. २. व्यासक्त, लीन, मग्न ३. व्याप्त ४. क्षिप्त ५. प्रत्येक, पृथक्-पृथक् ६. क्रमहीन, अव्यवस्थित ।

व्याकरण, सं. पुं. (सं. न.) वेदांगविशेषः, शब्दशास्त्रं २. व्याकरणग्रंथः ।

व्याकुल, वि. (सं.) आकुल, व्यग्र, संभ्रांत, विकल, विहस्त, मोहित, विक्षिप्त, वि-,मूढ, कातर, विह्वल, अधीर, संभ्रांत-व्यस्त-विक्षिप्त-मूढ,-चित-मनस् २. अति,-उत्क-उत्कंठ-उत्सुक ।

—करना, क्रि. स., मुह्-संभ्रम् (प्रे.), आकुलीविहस्तीकृ, वि-सं,-क्षुभ् (प्रे.) ।

—होना, क्रि. अ., आकुलीभू, मुह् (दि. प. से.), २. अत्युत्सुक (वि.) भू ।

व्याकुलता, सं. स्त्री. (सं.) आ-व्या,-कुलता-कुलत्वं, व्या-,मोहः, व्यग्रता, संभ्रमः, विकलता, व्यस्तता, विह्वलता, सं-वि,-क्षोभः, चित्तवैक्लव्यं-अशांतिः-अनिर्वृतिः (स्त्री.), उद्वेगः, व्याक्षेपः, उद्विग्नता २.उत्कंठातिशयः, लालसा ।

व्याख्या, सं. स्त्री. (सं.) स्पष्टी-विशदी,-करणं, विवरणं, प्रकाशनं, व्याख्यानं,प्रवचनं २. टीका, टिप्पणी, भाष्यं (विविधभेद) ३. विवरणात्मको ग्रन्थः ।

—करना, क्रि. स., व्याख्या (अ. प. अ.), निरूप् (चु.), विवृ (स्वा. उ. से.), व्याचक्ष् (अ. आ. अ.), स्फुटी विशदी-स्पष्टी कृ ।

—स्थान, सं. पुं. (सं. न.) व्याख्यानभवनं सभाभवनम् २. विद्यालयः ।

व्याख्याता, सं. पुं. (सं.-तृ) भाष्य-व्याख्या-टीका,-कारः २. प्र-,वक्तृ, उपदेशकः, व्याख्यानदातृ, सञ्चारकः ।

व्याख्यान, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'व्याख्या'(१) २. भाषणं, उपदेशः, प्रवचनम् ।

—देना, क्रि. स., व्याख्या (अ. प. अ.), संभाष् (भ्वा. आ. से.); उपदिश् (तु. प. अ.), प्रवच् (अ. प. अ.) ।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) सभा-व्याख्यान-, स्थानं-भवनम् २. शिक्षालयः ।

व्याघात, सं. पुं. (सं.) विघ्नः, दे. २. प्रहारः, आघातः ३. अलंकारभेदः (सा.) ।

व्याघ्र, सं. पुं. (सं.) शार्दूलः, द्वीपिन्-लः, मृगांतकः, हिंसारुः, चंद्रकिन्, भेलः, व्याडः २. पंच,-नखः-शिखः-आस्यः, सिंहः दे. ।

व्याज[1], सं. पुं., दे. 'ब्याज' ।

व्याज[2], सं. पुं. (सं.) अप-व्यप,-देशः,

कपट, छलं, छद्मन् (सं.), मिषं २. विघ्नः ३. विलंबः ।

—निंदा, सं. स्त्री. (सं.) कपटकुत्सा २. अलंकार-भेदः (सा.) ।

—स्तुति, सं. स्त्री. (सं.) कपटप्रशंसा २. अलंकारभेदः (सा.) ।

व्याजोक्ति, सं. स्त्री. (सं.) कपट-छल,-वाक्यं २. अलंकारभेदः (सा.) ।

व्याध, सं. पुं. (सं.) मृगयुः, मृगजीवनः, लुब्धकः, द्रोहाटः, वलपांशुनः, आखेटकः, मृगवधाजीवः २. शाकुनिकः, जालिकः, पक्षिग्राहकः, जीवांतकः ।

व्याधि, सं. पुं. (सं.) रोगः, दे. २. विपत्तिः (स्त्री.) ।

व्यान, सं. पुं. (सं.) देहस्थवायुभेदः ।

व्यापक, वि. (सं.) व्यापिन्, प्रसारिन् २. आच्छादक ।

सर्व—, वि. (सं.) विश्वव्यापिन्, सर्वग ।

व्यापकता, सं. स्त्री. (सं.) व्याप्तिः, दे. ।

व्यापना, क्रि. स. (सं. व्यापनं) व्याप् (स्वा. प. अ.), वि-अश् (स्वा. आ. से.), अंतः-प्रसृ (भ्वा. प. अ.) ।

व्यापादन, सं. पुं. (सं. न.) अपकार-अनिष्ट,-चिन्ता-चिन्तनम् २. वधः, हत्या ३. नाशः, ध्वंसः ।

व्यापार, सं. पुं. (सं.) वाणिज्यं, वणिक्कर्मन् (न.), क्रयविक्रयः, निगमः २. कार्यं, कर्मन् (न.) ३. व्यापारः, इन्द्रियार्थसंयोगः (न्या.) ४. व्यवसायः ।

—करना, क्रि. अ., क्रयविक्रयं-वाणिज्यं कृ, पण् (भ्वा. आ. से.) ।

व्यापारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) वणिज्, वणिजः, आपणिकः, नैगमः, क्रयविक्रयिणः, पण्याजीवः, सार्थिकः, श्रेष्ठिन्, व्यापारिन् ।

व्यापी, वि. (सं.-पिन्) दे. 'व्यापक' ।

व्यापृत, वि. (सं.) कार्य,-संलग्न-लीन-रत २. निहित, स्थापित । सं. पुं. (सं.) मंत्रिन्, उच्चकर्मचारिन् ।

व्याप्त, वि. (सं.) ओतःप्रोत, अंतःप्रसृत २. भृत, परिपूरित ।

व्याप्ति, सं. स्त्री. (सं.) व्यापनं, परिपूरणं, अंतःप्रसारः ।

व्याम, सं. पुं. (सं.) व्यामनं, दैर्ध्यमानभेदः ।

व्यामोह, सं. पुं. (सं.) वि-सं-,मोहः, विवेक-भ्रंशः ।

व्यायाम, सं. पुं. (सं.) मल्लक्रीडा, वलवर्द्धकः, श्रमः २. परिश्रमः ।

व्यायोग, सं. पुं. (सं.) रूपक-नाटक,-भेदः (सा.) ।

व्याल, सं. पुं. (सं.) सर्पः, अहिः २. सिंहः ३. व्याघ्रः ४. हिंस्रपशुः । वि. (सं.) दुष्ट, अपकर्तृ ।

—ग्राही, सं. पुं. (सं.-हिन्) दे. 'संपेरा' ।

व्यावहारिक, वि. (सं.) वर्तन-व्यवहार,-विषयक २. अभियोगसम्बन्धिन् ३. सामान्य, साधारण ।

व्यास, सं. पुं. (सं.) पाराशरः-रिः-र्यः, कृष्ण-, द्वैपायनः, कानीनः, वादरायणः-णिः, सत्य,-भारतः-व्रतः-रतः, माठरः, वेदव्यासः, सात्यवतः २. कथावाचकः ३. विष्कंभः, गोलस्य मध्यरेखा ४. विस्तारः ।

व्यासक्त, वि. (सं.) अत्यंतानुरक्त ।

व्याहृति, सं. स्त्री. (सं.) उक्तिः (स्त्री.) २. मंत्रविशेषः (= भूः, भुवः, स्वः) ।

व्युत्पत्ति, सं. स्त्री. (सं.) विशिष्टज्ञानं २. उद्गमस्थानं, मूलं ३. निरुक्तिः (स्त्री.), शब्द,-साधनं-सिद्धिः (स्त्री.), निर्वचनम् ।

व्युत्पन्न, वि. (सं.) निष्णात, प्रवीण, निपुण, विशेषज्ञ, विज्ञ २. व्युत्पत्तियुत ३. संस्कृत ।

व्यूह, सं. पुं. (सं.) सैन्य-सेना,-विन्यासः-संस्थानं २. सेना ३. समूहः ४. रचना, ५. तर्कः ६. शरीरम् ।

—रचना, क्रि. स., व्यूह् (भ्वा. प. से.), सैन्यं विन्यस् (दि. प. से.), व्यूहं रच् (चु.) ।

व्योम, सं. पुं. [सं. मन् (न.)] आकाशः-शं २. जलं ३. जलदः ।

—यान, सं. पुं. (सं. न.) विमानः-नं, वायुयानं, *वातपोतः ।

व्रज, सं. पुं. (सं.) समूहः, समुदायः २. मथुरावृंदावनयोश्चतुष्पार्श्ववर्तिदेशः, व्रज,-मंडलं-भूमिः (स्त्री.) ३. गोष्ठम् ।

—नाथ, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः, व्रज,-मोहनः-राजः-वल्लभः-ईश्वरः-इंद्रः ।

—भाषा, सं. स्त्री. (सं.) शौरसेनीप्राकृतादुद्भूतो भाषाविशेषः ।

व्रण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) क्षतं-तिः (स्त्री.), अरुस् (न.), ईर्मः-र्मं २. दे. 'विस्फोट' (२.)।

व्रत, सं. पुं. (सं. पुं. न.) निय(या)मः, पुण्यकं, २. उपवासः- उपोषणं, लंघनं ३. दृढ,-संकल्पः-अध्यवसायः-निश्चयः-प्रतिज्ञा ।

—रखना, क्रि. अ., उपवस् (भ्वा. प. अ.), लंघ् (भ्वा.आ.से.), उपोषणं कृ, व्रतयति (ना. धा.)।

—लेना, क्रि. अ., दृढ-संकल्पं कृ, सशपथं प्रतिज्ञा (क्र्. आ. अ.), व्रतं धृ (चु.) चर् (भ्वा. प. से.)।

व्रती, सं. पुं. (सं.-तिन्) व्रत,-धरः-स्थः-चारिन् २.यजमानः ३. ब्रह्मचारिन् ४. तापसः, तपस्विन् ।

व्रात्य, सं. पुं. (सं.) संस्कारहीनः २. सावित्री-पतितः ३. सांकरिकः, मिश्रजः ।

व्रीडा, सं. स्त्री. (सं.) त्रपा, लज्जा ।

व्रीहि, सं. पुं. (सं.) शालिः, स्तंबकरिः २. धान्यमात्रम् ।

बहु—, सं. पुं. (सं.) समासभेदः (व्या.)।

श

श, देवनागरीवर्णमालायाः त्रिंशो व्यंजनवर्णः, शकारः ।

शंकर, वि. (सं.) शुभ(भं)कर, मंगल्य, शुभ, शिव, भद्र । सं. पुं. (सं.) महादेवः, शिवः, दे. । २. शंकराचार्यः ।

शंकरा, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती २. मंजिष्ठा ३. शमीवृक्षः । वि. स्त्री., सुख-मंगल,-कारिणी-दायिनी ।

शंकराचार्य, सं. पुं. (सं.) अद्वैतमतप्रवर्तक आचार्यविशेषः ।

शंकरी, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, उमा २. मंजिष्ठा, रक्ता ३. शमीवृक्षः ४. रागिणीभेदः । वि. स्त्री., मंगल-कल्याण,-कारिणी ।

शंका, सं. स्त्री. (सं.) भयं, भीतिः (स्त्री.), त्रासः, दरः, साध्वसं २. संदेहः, संशयः, विकल्पः, आशंका ३. आक्षेपः ।

शंकित, वि. (सं.) भीत, त्रस्त, ससाध्वस २. संदिग्ध, अनिश्चित ३. संशय-संदेह,-मग्न, आशंकिन्, साशंक ।

शंकु, सं. पुं. (सं.) तीक्ष्णाग्र-निशिताग्र,-पदार्थः २. कीलः ३. नागदंतकः, कीलकः ४. कुन्तः, प्रासः ५. (शरादीनां) फलं, फलकं ६. दशलक्षकोटिः (स्त्री.) (संख्याविशेषः) ७. मेढ्रः ८. गोपुच्छाकारः सूक्ष्माग्रो यूपः ।

शंख, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कंबुः, कंबोजः, अर्णोभवः, पावनध्वनिः, अंतःकुटिलः, महा-सु-बहु-दीर्घ,-नादः, मुखरः, हरिप्रियः २. लक्ष-कोटिः (स्त्री.), दशनिखर्वसंख्या ३. गंडः ४. गजगंडः गजदंतमध्यं वा ५. असुरविशेषः ।

—बजाना, क्रि. स., शंखं ध्मा (भ्वा. प. अ.), श्वासेन पूर् (चु.)।

—ध्वनि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) कंबुनादः ।

—पाणि, सं. पुं. (सं.) शंखधरः, विष्णुः २. कृष्णः ।

शंखिनी, सं. स्त्री. (सं.) चतुर्विधनारीष्वन्य-तमा २. यव-महा-भद्र,-तिक्ता, सूक्ष्मपुष्पी ३. दे. 'सीप' ।

शंठ, सं. पुं. (सं.) अविवाहितः, अकृतविवाहः, कुमारः २. मूर्खः ३. क्लीवः ।

शंड, सं. पुं. (सं.) क्लीवः, छिन्नमुष्कः, षंढः, नपुंस् (पुं.), नपुंसः-सकः(कं) २. गोपतिः, बलीवर्दः ३. उन्मत्तः ।

शंतनु, सं. पुं. (सं.) महाभीष्मः, प्रातीपः, भीष्मजनकः ।

शंबर, सं. पुं. (सं.) दैत्यविशेषः २. युद्धम् । (सं. न.) जलं २. मेघः ३. धनम् ।

—सूदन, सं. पुं. (सं.) कामदेवः ।

शंबुक-क, सं. पुं. (सं.) शंबूकः-का, शंबुः, जल,-शुक्तिः-(स्त्री.)-डिंबः, दुश्चरः, पंकमंडूकः, घोंघः २. शंखः ३. क्षुद्रशंखः ।

शंभु, सं. पुं. (सं.) महादेवः, शिवः दे. २. ब्रह्मन् ३. विष्णुः ।

—बीज, सं. पुं. (सं. न.) पारदः, दे. 'पारा' ।

—भूषण, सं. पुं. (सं. न.) चंद्रः ।

शऊर, सं. पुं. (अ.) विवेकः, सूक्ष्म,-दृष्टिः-बुद्धिः (स्त्री.) २. योग्यता, कौशलं ३. शिष्टता, सुशीलता ।

—दार, वि. (अ.+फ़ा.) विवेकिन् २. योग्य ३. शिष्ट ।

शक[1], सं. पुं. (सं.) जातिविशेषः २. शकादित्यः, शालिवाहनः ३. शालिवाहनप्रवर्तितः संवत्-विशेषः ।

शक[२], सं. पुं. (अ.) संदेहः, संशयः २. अविश्वासः, प्रत्ययाभावः ।

—करना, क्रि. अ., दे. 'संदेह करना' ।

शकट, सं. पुं. (सं. पुं. न.) वहनं, अक्षः, अनस् (न.) २. शरीरं, देहः ।

—का भार, सं. पुं., शलाटः, शाकटीनः ।

शकटिका, सं. स्त्री. (सं.) लघुशकटः-टं, शकटी २. शकटक्रीडनकम् ।

शकर, सं. स्त्री. (सं. शर्करा, फ़ा.) शार्कः, स्थूल-रक्त,-शर्करा, गुडचूर्णम् ।

—कंद, सं. पुं. (सं. शर्कराकंदः दं) (लाल) रक्तालुः, लोहितालुः, रक्त,-कंदः-पिंडकः(सफेद) शर्करा-मधुर,-कंदः ।

—पारा, सं. पुं. (सं. फ़ा.) शंखपालः, शर्करापालः ।

—बादाम, सं. पुं. (फ़ा.) क्षुरमानिका, दे. 'खुरमानी' तथा 'जर्द आलू' ।

शकल[१], सं. स्त्री. (अ. शक्ल) आकारः, आकृतिः (स्त्री.), रूपं २. मुख-मुद्रा ३. रचना, घटनं-ना ४. उपायः ५. मूर्तिः (स्त्री.), दे. 'रूप' ।

बिगाड़ना, मु., भृशं तड् (चु.) ।

शकल[२], सं. पुं. (सं. पुं. न.) खंडः-डं, लवः, भागः ।

शकील, वि. (अ. शक्ल) आकृतिमत्, सुंदर, सुरूप, चारु ।

शकुंत, सं. पुं. (सं.) खगः, दे. 'पक्षी' २.कीटभेदः ३. विश्वामित्रपुत्रः ।

शकुंतला, सं. स्त्री. (सं.) कण्वप्रतिपालिता मेनकाविश्वामित्रयोः कन्या, दुष्यंतपत्नी २. श्रीकालिदासप्रणीतं प्रख्यातनाटकम् ।

शकुन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) फल-पूर्व,-लक्षणं, अजन्यं, निमित्तं २. मंगल्यमुहूर्तः (-र्तं), तत्र भवं कार्यं वा ३. पक्षिन् ४. गृध्रः ४. माङ्गलिकगीतं ५. विवाहनिश्चायको वरोपहारः, *शकुनःनम् ।

—देखना या विचारना, मु., (कार्यारंभात् प्राक्) शकुनैः फलं चिंत् (चु.) ।

शकुनि, सं. पुं. (सं.) पक्षिन् २. गृध्रः ३. गांधारीभ्रातृ, सौवलकः ४. महादुष्टः ।

शक्कर, सं. स्त्री. (सं. शर्करा) दे. 'शकर' २. दे. 'चीनी' ।

शक्की, वि. (अ. शक) संशयात्मन्, विश्वासविहीन, श्रद्धाशून्य, शंकाशील ।

शक्त, वि. (सं.) समर्थ, क्षम, योग्य २. सबल, शक्तिमत् ३. धनिक ४. मधुरभाषिन् ।

शक्ति, सं. स्त्री. (सं.) बलं, सामर्थ्यं, प्रभावः, तरस्-ओजस्-तेजस्-ऊर्जस्-सहस् (न.), शौर्यं, पराक्रमः, शुष्मं, सहं, स्थामन्-शुष्मन् (न.), प्राणः २. वशः, अधिकारः ३. शत्रुविजयसाधनं प्रभु-मंत्र-उत्साह,-शक्तिः (स्त्री.), ४. माया, प्रकृतिः (स्त्री.) ५. दुर्गा, भगवती ६. गौरी ७. लक्ष्मीः (स्त्री.) ८. काशुः-सूः (स्त्री.), शस्त्रभेदः ९. खड्गः १०. देवतावलम् ।

—धर, सं. पुं. (सं.) शक्ति,-ग्रहः-ध्वजः-पाणिः-भृत, कार्त्तिकेयः ।

—वाला, वि., शक्ति,-मत्-शालिन्, बलवत्, शक्त, बलिन्, पराक्रमिन्, ऊर्जस्विन्, समर्थ ।

—हीन, वि. (सं.) अशक्त, अबल, निर्बल, बलहीन, असमर्थ २. नपुंसक, क्लीब ।

शक्य, वि. (सं.) संभवनीय, संभाव्य, संभावित २. संपाद्य, साध्य २. दे. 'शक्त' । सं. पुं. (सं.) वाच्यार्थः ।

शक्यता, सं. स्त्री. (सं.) संभाव्यता, संभवः २. साध्यता, संपादनीयता ।

शक्र, सं. पुं. (सं.) पुरन्दरः., दे. 'इन्द्र' ।

शक्राणी, सं. स्त्री. (सं.) शची, इन्द्राणी ।

शक्ल, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'शकल' (१) ।

शख़्स, सं. पुं. (अ.) जनः, मनुष्यः, दे. 'व्यक्ति' ।

शख़्सियत, सं. स्त्री. (अ.) व्यक्तित्वं, दे. ।

शग़ल, सं. पुं. (अ.) व्यवसायः, उपजीविका २. मनोविनोदः ।

शगु(गू)न, सं. पुं., दे. 'शकुन' ।

शगुनिया, सं. पुं. (हिं. शगुन) निमित्तज्ञः, दैवज्ञः ।

शगूफ़ा, सं. पुं. (फ़ा.) कोरकः-कं, कलिका २. पुष्पं ३. विलक्षणवृत्तांतः ।

—खिलना, मु., अद्भुतं, संवृत् (भ्वा.आ.से.) ।

शचि-ची, सं. स्त्री. (सं.) पौलोमी, ऐन्द्री, दे. 'इन्द्राणी' ।

—पति, सं. पुं. (सं.) शचीशः, बलभिद्, दे. 'इन्द्र' ।

शजर, सं. पुं. (अ.) पादपः, वृक्षः ।

शजरा, सं. पुं. (अ.) वंशावली-लिः (स्त्री.), वंशवृक्षः २. वृक्षः ३. क्षेत्रमानचित्रम् ।

शठ, वि. (सं.) धूर्त्त, वंचक, प्रतारक, मायाविन् २. दुर्वृत्त, दे. 'लुच्चा' ।

शठता, सं. स्त्री. (सं.) धूर्तता, माया, शाठ्यं, कपटं २. दुर्वृत्तं, दुराचारः, दौर्जन्यम् ।

शड़प्पा, सं. पुं. (अनु. शड़प्) शड़प्कारः, द्रुतनिगरणध्वनिः ।

—मारना, मु., द्रुतं निगृ (तु. प. से.), शड़प्कारैः भुन्ज् (रु. आ. अ.) ।

शण, सं. पुं. (सं.) दीर्घ,-शाखः-पल्लवः, माल्यपुष्पः, त्वक्सारः, वमनः, कटुतिक्तकः २. भंगा, विजया ३. शणपुष्पी ।

शत, वि. [सं. शतं (नित्य न.)] । सं. पुं., दशगुणितदशसंख्या तद्बोधका अङ्काश्च (१००), दे. 'सौ' ।

—कोटि, सं. पुं. (सं.), वज्रं, पविः । सं स्त्री. (सं.) अब्जसंख्या, अर्बुददशकं, अर्वम् ।

—क्रतु, सं. पुं. (सं.) शतमखः, इन्द्रः ।

—घ्नी, सं. स्त्री. (सं.) अस्त्रभेदः, लोहकंटकसंछन्ना महती शिला ।

—च्छद, सं. पुं. (सं.) काष्ठकुट्टपक्षिन् । (सं. न.) शतदलपद्मम् ।

—दल, सं. पुं. (सं. न.) शतपत्रं, कमलम् ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'शतच्छद' ।

—पथ ब्राह्मण, सं. पुं. (सं. न.) शुक्लयजुर्वेदस्य ब्राह्मणग्रंथविशेषः ।

—पथिक, वि. (सं.) नानामतावलंबिन्, नानापथगामिन् ।

—पद, सं. पुं. (सं.) शतपदी, कर्णकीटी २. पिंपीलिका । वि., शत,-पद्-पाद् ।

—पदी, सं. स्त्री. (सं.) कर्णकीटी, शतपादिका, कर्ण,-जलुका-जलौकस् (स्त्री.), शतपाद् (स्त्री.) ।

—भिष, सं. पुं. (सं. शतभिषा) नक्षत्रविशेषः, शतभिषज् (स्त्री.) ।

—लक्ष, सं. पुं. (सं. न.) कोटी-टिः (स्त्री.) ।

—वादन, सं. पुं. (सं. न.) अनेकवाद्यानां युगपद् वादनम् ।

—वर्ष, वि. (सं.) शताब्द, शतायुस् । सं. पुं. (सं. न.) शताब्दी-ब्दम् ।

—सहस्र, सं. पुं. (सं. न.) लक्षम् ।

शतक, सं. पुं. (सं. न.) शतंवर्षं, वर्षशतं, शताब्दं-ब्दी २. शतं, शतवस्तुसमूहः । वि., शतसंख्याविशिष्ट, शत ।

शतधा, अव्य. (सं.) शतप्रकारं २. शतखंडेषु ३. शतगुण-णित ।

शतद्रु, सं. स्त्री. (सं.) शितद्रुः, शतद्रूः, शुतुद्रिः-द्रूः (सब स्त्री.) ।

शतरंज, सं. पुं. (फ़ा.) चतुरंगम् ।

—का मुहरा, सं. पुं., खेलनी, शारः-रिः ।

—की बिसात, सं. स्त्री., अष्टापदं, शारिफलम् ।

—बाज़, सं. पुं. (फ़ा.) चतुरंगक्रीडकः ।

—बाज़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) (१-२) चतुरंग,-क्रीडा-व्यसनम् ।

शतरंजी, सं. स्त्री. (फ़ा.) विविधाब्जरोटिका २. बहुवर्ण,-कुथा-स्तरी ३.अष्टापदं,शारिफलम् । सं. पुं., चतुरंगचतुरः ।

शतशः, अ. (सं.) शतं शतमिति कृत्वा २. शतकृत्वः (अव्य.) शतवारान् ३. अनेकधा, बहुधा, नानाप्रकारेण ।

शताब्दी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शतक' (१) ।

शतायु, वि. (सं.-युस्) शत,-वर्ष-अब्द ।

शतिक, वि. (सं.) शतवान् २. शत,-संबंधिन्-विषयक ।

शती, सं. स्त्री. (सं.) शती, शताब्दी २. शतवस्तुसंग्रहः ।

शत्रुंजय, सं. पुं. (सं.) शत्रु-अमित्र,-जित्, शत्रुंतपः, अरिंदमः, रिपुसूदनः ।

शत्रु, सं. पुं. (सं.) रिपुः, अरिः, सपत्नः, वैरिन्, द्वेषणः, द्विष्, दुर्हृद्, दौर्हृदः, परः, शात्रवः, अरातिः, प्रत्यर्थिन्, परिपंथिन्, प्रतिपक्षः-क्षिन्, द्वेषिन्, जिघांसुः, घातकः, हिंसकः, २. शत्रुसेना ।

शत्रुघ्न, सं. पुं. (सं.) लक्ष्मणानुजः, शत्रुमर्दनः । (अन्य) दे. 'शत्रुंजय' ।

शत्रुता, सं. स्त्री. (सं.) वैरं, सापत्न्यं, विद्वेषः, प्रति-वि,-पक्ष(क्षि)ता, विरोधः ।

—करना, क्रि. अ., वैरायते, अमित्रति, अमित्रयति, अमित्रायते (सब ना. धा.), वि.-, द्विष् (अ. उ. अ.) ।

शदीद, वि. (अ.) गंभीर, प्रबल, भयंकर, तीव्र ।

शनाख़्त, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'पहचान' ।

शनि, सं. पुं. (सं.) शनैश्चरः, सौरिः, मंदः, छायासुतः, ग्रहनायकः, वक्रः, पंगुः, सूर्यपुत्रः २. दौर्भाग्यं ३. शनिवासरः ।

—प्रिय, सं. पुं. (सं.) नीलमणिः, दे. 'नीलम'।
—वार, सं. पुं. (सं.) शनि-शनैश्चर,-वारः-वासरः।
शनैः, अव्य. (सं.) मंदं, शनकैः।
—शनैः, अव्य. (सं.) मंदं मंदं, शनकैः शनकैः।
शनैश्चर, सं. पुं. (सं.) दे. 'शनि' (१-३)।
शपथ, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सौगंद' २. दिव्यं ३. प्रतिज्ञा।
शफ, सं. पुं. (सं. न.) (गवादीनां) खुरः, दे.।
शफ़क, सं. स्त्री. (अ.) संधा, संध्या, संध्यांशुः।
शफ़क़त, सं. स्त्री. (अ.) अनुग्रहः २. प्रेमन् (पुं. न.)।
शफ़तालू, सं. पुं. (फ़ा.) (पेड़) सप्तालुकः। (फ़ल) सप्तालुकं, आरूकं, दे. 'आड़ू'।
शफ़ा, सं. स्त्री. (अ.) स्वास्थ्यं, नीरोगता।
—ख़ाना, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) चिकित्सालयः।
शव, सं. स्त्री. (फ़ा.) रात्री-त्रिः (स्त्री.), रजनी।
शबनम, सं. स्त्री. (फ़ा.) अवश्यायः, दे. 'ओस'।
शबल, वि. (सं.) कर्बुर, कल्माप, नानावर्ण, चित्र।
शबाब, सं. स्त्री. (अ.) यौवनं २. सौन्दर्यातिशयः।
शबाहत, सं. स्त्री. (अ.) आकृतिः (स्त्री.) २. समानता।
शबीह, सं. स्त्री. (अ.) चित्रं २. साम्यम्।
शब्द, सं. पुं. (सं.) निन(ना)दः, वि-, र(रा)वः, निर्-,घोषः, स्व(स्वा)नः, ध्वनिः, ध्व(ध्वा)नः २. पदं, सार्थकोऽक्षरसमूहः ३. ओ३म्, प्रणवः ४. भक्तिगीतम्।
—कोष, सं. पुं. [सं.-षः(शः)] अभिधानं, शब्दसंग्रहः।
—चातुर्य, सं. पुं. (सं. न.) वाग्मिता, वाक्पाटवम्।
—चित्र, सं. पुं. (सं. न.) अधमकाव्यभेदः, अनुप्रासः।
—चोर, सं. पुं. (सं.) कुम्भिलः, शब्दतस्करः।
—चोरी, सं. स्त्री., शब्दचौर्यं, कुंभिलत्वम्।
—पति, सं. पुं. (सं.) अनुयायिरहितो नेतृ।
—प्रमाण, सं. पुं. (सं. न.) आप्तप्रमाणम्।
—विरोध, सं. पुं. (सं.) विरोधाभासः, मिथ्यावैपरीत्यम्।
—ब्रह्मन्, सं. पुं. (सं. न.) चत्वारो वेदाः।
—भेदी, वि. (सं.-दिन्) शब्द,-वेधिन्-पातिन्। सं. पुं., अर्जुनः २. दशरथः ३. बाणभेदः ४. पायुः।
—वेधी, सं. स्त्री. (सं.-धिन्) दे. 'शब्दभेदी'।
—शक्ति, सं. स्त्री. (सं.) शब्दानामर्थबोधकशक्तिः (स्त्री.) (=अभिधा, लक्षणा, व्यंजना)।
—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) शब्दविद्या, व्याकरणम्।
—श्लेष, सं. पुं. (सं.) शब्दालंकारभेदः (सा.), अनेकार्थकपदप्रयोगः।
—सौष्ठव, सं. पुं. (सं. न.) पदलालित्यम्।
शब्दाडंबर, सं. पुं. (सं.) शब्द-पद,-जालं-प्रपञ्चः।
शब्दातीत, वि. (सं.) शब्दातिग, अवर्णनीय, (ईश्वरादि)।
शब्दानुशासन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'शब्दशास्त्र'।
शब्दार्थ, सं. पुं. (सं.) पदानुवर्ती अर्थः, भावोपेक्षकोऽर्थः।
शब्दालंकार, सं. पुं. (सं.) अलंकारभेदः (सा.), शब्दाश्रितो वाक्चमत्कारः।
शम, सं. पुं. (सं.) प्र-,शांतिः (स्त्री.), शपथः, निश्चलत्वं, स्वास्थ्यं, प्र-उप,-शमः २. मोक्षः ३. इन्द्रियनिग्रहः ४. निवृत्तिः, (स्त्री.), वैराग्यं ५. क्षमा।
शमन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'शम' (१)। २. यज्ञार्थं पशुहननं ३. दमनं, नाशनं ४. चर्वणं ५. हिंसा।
शमनी, सं. स्त्री. (सं.) निशा, रजनी।
शमला, सं. पुं. (अ.) उष्णीष-शिरोवेष्टन,-शिखा-शिखरं-अग्रं-प्रान्तः।
शमशेर, सं. स्त्री. (फ़ा.) असिः, खड्गः।
—बहादुर, सं. पुं. (फ़ा.) आसिकः, खड्गिन्।
शमा, सं. पुं. (अ. शमअ्) दे. 'मोम' २. दीपिका ३. दीपः-पकः।
—दान, सं. पुं. (फ़ा.) दीपि-दीपिका,-वृक्षः-ध्वजः।
शमी[1], सं. स्त्री. (सं.) शक्तु,-फला-फली, शिवा, केशमथनी, पापशमनी, भद्रा, शं-शुभ,-करी।
शमी[2], वि. (सं.-मिन्) शांत, क्षोभरहित, निश्चल।
शयन, सं. पुं. (सं. न.) संवेशः, स्वपनं, निद्राणं, सुप्तिः (स्त्री.), स्वापः २. शय्या ३. संवेशनं, मैथुनम्।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) शयन,-आगारं-मन्दिरम् ।
शयालु, वि. (सं.) निद्रालु, तंद्रालु २. सुषुप्सु, निद्रावश ।
शय्या, सं. स्त्री. (सं.) आस्तरः, दे. 'बिछौना' २. खट्वा, पर्यंकः, दे. 'खाट' ।
—गत, वि. (सं.) रुग्ण, रोगिन् ।
—गृह, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'शयनगृह' ।
—मूत्र, सं. पुं. (सं. न.) *स्वप्नस्रावः, शिशुरोगभेदः ।
—छादन, सं. पुं. (सं. न.) पर्यंकप्रच्छदः ।
शर, सं. पुं. (सं.) इषुः, बाणः, दे. । २.शरकांडः, दे. 'सरकंडा' ३. क्षीरशरः, दुग्धाग्रं, संतानीनिका ४. दधिशरः, दधि,-सारः-स्नेहः, कट्टरं, कटवरं ५. उशीरः ।
शरअ्, सं. स्त्री. (अ.) धर्मः, मतं २. धर्मशास्त्रं ३. प्रथा ४. धार्मिकादेशः ५. ईशदर्शितमार्गः (इस्लाम) ।
शरकांड, सं. पुं. (सं.) दे. 'सरकंडा' ।
शरण, सं. स्त्री. (सं. न.) आश्रयः, गतिः (स्त्री.) २. आश्रय-त्राण,-स्थानं ३. गृहं, भवनं ४. शरण्यः, रक्षितृ, त्रातृ ५. शरणागतरक्षणम् ।
—देना, क्रि. स., अव्-रक्ष् (भ्वा. प. से.), शरणं दा ।
—लेना, क्रि. अ., आश्रि (भ्वा. उ. से.), शरणं प्रपद् (दि. आ. अ.) इ-या (दोनों अ. प. अ.) ।
शरणागत, वि. (सं.) शरणापन्न, अभिपन्न, शरणार्थिन् , शरणैषिन् । सं. पुं. (सं.) शिष्यः ।
शरणार्थी, वि. (सं.-र्थिन्) शरणेच्छुक, रक्षाभिलाषिन् ।
शरण्य, वि. (सं.) शरणद, शरणागतरक्षक, रक्षितृ, त्रातृ २. दुःखित, असहाय ।
शरद्, सं. स्त्री. (सं.) परि-,वत्सरः, अब्दः, वर्षः-र्षं २. वर्षावसानः, मेघांतः, कालप्रभातः-तं, प्रावृडत्ययः (= आश्विन-कार्तिक) ।
शरधि, सं. पुं. (सं.) तूणः, इषुधिः, दे. 'तरकश' ।
शरफ़, सं. पुं. (अ.) महत्त्वं, महत्ता २. श्रेष्ठता ३. गुणः ४. प्रतिष्ठा ।
शरबत, सं. पुं. (अ.) शर्करोदकं, गुडोदकं, पानकं, गौल्यं, सितोदं, मिष्टोदं २. शर्करामधु,-क्वाथः ।
शरबती, सं. पुं. (अ. शरबत) दे. 'मीठी' (फल) २. ईषत्पीतवर्णः । वि., रसपूर्ण, सरस, सुमधुर ।
शरम, सं. स्त्री., दे, 'शर्म' ।
शरह, सं. स्त्री. (अ.) टीका, व्याख्या, भाष्यं २. दे. 'भाव' (मूल्य) ।
शरा, सं. स्त्री., दे. 'शरअ्' ।
शराकत, सं. स्त्री. (फ़ा.) सहभागिता, दे. 'साझा' २. सहकारिता ।
शराफ़त, सं. स्त्री. (अ.) सज्जनता, सौजन्यं, शीलम् ।
शराब, सं. स्त्री. (अ.) सुरा, मदिरा २. दे. 'शरबत' (हिकमत) ।
—का ख़मीर, सं. पुं., मद्यपंकः, सुराकल्कः, मेदकः, जगलः ।
—का प्याला, सं. पुं., पान-मद्य-सुरा,-भाजनं-भांडं-पात्रम् ।
—के ख़मीर की झाग, सं. स्त्री., मद्य,-फेनः-मंडः, कार,-उत्तरः-उत्तमः ।
—के नशे में चूर, वि., मत्त, क्षीब, मदोत्कट, मदोद्धत, समद, मदाढ्य, मदोन्मत्त, शौंड ।
—खाना, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) गंता, शुंडा, सुरालयः ।
—खींचना, क्रि. स., मद्यं संधा (जु. उ. अ.) सुरां स्रु-स्यंद् (प्रे.) । सं. पुं., मद्य,-संधानं-अभिषवः ।
—खींचने का स्थान, सं.पुं., संधानी, अभिषवशाला ।
—खींचनेवाला, सं. पुं., सुराकारः, शौंडिकः, संधानिन् ।
—ख़ोर, सं. पुं. (अ.+फा.) पान,-आसक्तः-रतः, मधु-मद्य-सुरा,-पः, पानशौंडः, सुराशुः ।
—खोरी, सं. स्त्री., सुरापानं-णं, मद्यसेवनम् ।
—पीना, क्रि. स., सुरां पा (भ्वा. प. अ.), मद्यं सेव् (भ्वा. आ. से.) ।
शराबी, सं. पुं. (अ. शराब) दे. 'शराबखोर' ।
शराबोर, वि. (फा.) दे. 'लथपथ' ।
शरारत, सं. स्त्री. (अ.) कुचेष्टा-ष्टितं, दुर्ललितं, दुष्टता, खलता, अपकारः ।
शरारती, वि. (अ. शरारत) कुचेष्टक, दुर्ललित, दुष्ट, खल, अपकारक ।
श(स)राव, सं. पुं. (सं. पुं. न.) वर्द्धमानकः, मार्तिकः, मृत्कांस्यं, दे. 'कुल्हड़' ।

शरासन, सं. पुं. (सं. न.) शरास्यं, शरावापः दे. 'धनुष'।

शरीअत, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'शरअ' (२,५)।

शरीक, वि. (अ.) संमिलित। सं. पुं., सह,-चरः-कारिन्-योगिन् २. सह,-भागिन्, अंशिन्, अंशग्राहिन् ३. सहायः-यकः ४. सजातीयः, सजातिः।

शरीफ़, सं. पुं. (अ.) अभिजातः, कुलीनः, आर्यः, सुप्रतिष्ठः, भद्रजनः, सज्जनः। वि. (अ.) सभ्य, शिष्ट, सदाचारिन् २. कुलीन, अभिजात, अभिजनवत् ३. पवित्र, निर्दोष।

शरीफ़ा, सं. पुं. (सं. श्रीफलं>) (फल) सीताफलं, वैदेहीवल्लभं, गंडगात्रं, कृष्ण बहु,-बीजकम्। (वृक्ष) सीताफलः इ. पुं. रूप।

शरीर[1], सं. पुं. (सं. न.) कायः, देहः-हं, कलेवरः-रं, गात्रं, अंगं, क्षेत्रं, विग्रहः, संहननं, वपुस् (न.)। मूर्तिः-तनुः-नूः (स्त्री.) पुरं, चतुःशाखं, पिंडं, स्कन्धः, पंजरः, इन्द्रियायतनं, पुद्गलः, करणम्।

—त्याग, सं. पुं. (सं.) देहपातः, मृत्युः।

—रक्षक, सं. पुं. (सं.) अंगरक्षकः, *तनुत्रः।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) शरीरविज्ञानम्।

—संस्कार, सं. पुं. (सं.) गर्भाधानादयः षोडशसंस्काराः २. कायशुद्धिः (स्त्री.), देहपरिष्कारः।

शरीर[2], वि. (अ.) दे. 'शरारती'।

शरीरांत, सं. पुं. (सं.) देहपातः, निधनम्।

शरीरी, सं. पुं. (सं.-रिन्) शरीरवत्, देहिन् २. जीवः, आत्मन् ३. प्राणिन्, जंतुः।

शर्क़, सं. पुं. (अ.) प्राची, पूर्वदिशा।

शर्करा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शकर' २. सिकताकणः ३. अश्मरी, दे. 'पथरी' ३. अष्ठीलाः-पाषाणशकलाः (बहु.) ४. क(ख)र्परः।

शर्क़ी, वि. (अ. शर्क़>) प्राच्य, पूर्वीय।

शर्त, सं. स्त्री. (अ.) पणः, ग्लहः २. संकेतः, समयः, नियमः।

—करना, बाँधना या लगाना, मु., पण् (भ्वा. आ. से.), ग्लह् (भ्वा. चु. उ. से.) २. समयं-नियमं कृ।

बिला—, क्रि. वि., समयं-नियमं विना।

शर्तिया, क्रि. वि. (अ.) ग्लहेन, पणेन, ग्लह-पण,-पूर्वकं २. निस्संशयं, निस्सन्देहम्। वि., अमोघ, अवंध्य।

शर्म, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'लज्जा' २. संकोचः, दे. 'लिहाज़' ३. मानः, प्रतिष्ठा।

—से गड़ना या पानी पानी होना, मु., अत्यर्थं लज्ज् (तु. आ. से.)-त्रप् (भ्वा. आ. से.), लज्जानतास्य (वि.) भू।

शर्मसार, वि. (फ़ा.) लज्जाशील २. ह्रीण, लज्जित।

शर्मा, सं. पुं. (सं. शर्मन्) ब्राह्मणोपाधिभेदः।

शर्माना, क्रि. अ. तथा क्रि. स. (फ़ा. शर्म) दे. 'लज्जित होना' २. दे. 'लज्जित करना'।

शर्माशर्मी, क्रि. वि. (फ़ा. शर्म) लज्जया, ह्रिया।

शर्मिंदगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) लज्जा, त्रपा, व्रीडा।

—उठाना, मु., दे. 'लज्जित होना'।

शर्मिंदा, वि. (फ़ा.) लज्जित, व्रीडित, त्रपित।

शर्मीला, वि. (फ़ा. शर्म) लज्जावत्, सलज्ज, दे. 'लज्जाशील'।

शर्वरी, सं. स्त्री. (सं.) निशा, रात्री, दे. 'रात'।

—नाथ, सं. पुं. (सं.) शर्वरीदीपः, चन्द्रः।

शलग़(ज)म, सं. पुं. (फ़ा.) शिखा,-मूलं-कंदः, गृञ्जनम्।

शल(र)भ, सं. पुं. (सं.) पत्रांकः-गः, पतङ्गः, फडिगा, शिरिः, दे. 'टिड्डी' २. पतंगः, दे. 'पतंगा'।

शलाका, सं. स्त्री. (सं.) धातुकाष्ठादिनिर्मिता यष्टिका, दे. 'सलाख़' २. बाणः ३. अस्थि (न.) ४. तृणं ५. शारिका ६. कज्जलशलाका ७. अक्षः, देवनः ८. दीपशलाका।

शल्य, सं. पुं. (सं.) मद्रराजः, माद्रीभ्रातृ २-३. बिल्व-लोध्र,-वृक्षः ४. सीमा ५. शलाका ६. शललः-ली, शल्यकः ७. मीनभेदः (सं.न.) कुंतः, प्रासः २. इषुः, बाणः ३. कंटकः-कं ४. पीडाकारणं ५. दुर्वाक्यं ६. पापं ७. कष्टं ८. विषं ९. अस्थि (न.) १०. अस्त्रचिकित्सा ११. शंकुः।

—कर्ता, सं. पुं. (सं.-र्तृ) दे. 'सर्जन'।

—क्रिया, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सर्जरी'।

शव, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कुणपः, क्षितिवर्द्धनः, मृतकः-कं, प्रेतम्।

—दाह, सं. पुं. (सं.) अंत्येष्टि-मृतक,-संस्कारः।

—यान, सं. पुं. (सं. न.) शवरथः, खाटीटिका, खोटः, काष्ठमल्लः, दे. 'अरथी'।

शवर, सं. पुं. (सं.) म्लेच्छजातिभेदः २. शिवः ३. जलम् ।
शवरी, सं. स्त्री. (सं.) श्रमणानाम्नी तपस्विनी २. शवरजातेर्नारी ।
शश, सं. पुं. (सं.) शशकः, शूलिकः, रोमकर्णः, मृदुरोमन् २. चंद्रलांछनं ३. पुरुषभेदः ।
—धर, सं. पुं. (सं.) शशभृत, चंद्रः ।
—शृंग, सं. पुं. (सं. न.) शशकविषाणं, खपुष्पं, गगनकुसुमं, असंभवनीयवस्तु (न.) ।
शशक, सं. पुं. (सं.) दे. 'शश'(१) ।
शशमाही, वि. (फ़ा.) षाण्मासिक-अर्द्धवार्षिक- (-की स्त्री.) ।
शशांक, सं. पुं. (सं.) शशधरः, चन्द्रः ।
शशी, सं. पुं. (सं. शशिन्) शशधरः, सोमः, दे. 'चाँद' ।
—कर, सं. पुं. (सं.) चन्द्रकिरणः ।
—कला, सं. स्त्री. (सं.) चंद्रलेखा २ वृत्तभेदः (छंद.) ।
—कांत, सं. पुं. (सं.) चंद्रकांतमणिः । (सं.न.) कुमुदम् ।
—कुल, सं. पुं. (सं. न.) चंद्रवंशः ।
—पुत्र, सं. पुं. (सं.) शशिजः, बुधग्रहः ।
—प्रभा, सं. स्त्री. (सं.) कौमुदी, चंद्रिका ।
—भूषण, सं. पुं. (सं.) शशि-चंद्र,-मौलिः-शेखरः, शिवः ।
—वदना, सं. स्त्री. (सं.) वृत्तभेदः (छंद.) २. चंद्रमुखी-खा । (उपर्युक्त सभी समासों में 'शशि' रूप रहेगा । उ. शशिकर इ.) ।
शस्त्र, सं. पुं. (सं. न.) अस्त्रं, प्रहरणं, शत्रुघ्नं, हत्नुः, हेतिः (पुं. स्त्री.) ।
—बाँधना, क्रि. अ., शस्त्राणि धृ (चु.), सन्नह् (दि. उ. अ.) ।
—कर्म, सं. पुं. [सं.-र्मन्(न.)] शल्य-शस्त्र,-क्रिया ।
—गृह, सं. पुं. (सं.) शस्त्र,-शाला-आगारम् ।
—जीवी, सं. पुं. (सं.-विन्) शस्त्रवृत्तिः, आयुधिकः ।
—धारी, वि. (सं.-रिन्) सशस्त्र,शस्त्र,-भृत्-धर ।
—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) धनुर्वेदः ।
शस्त्रागार, सं. पुं. (सं. शस्त्र+आगार) शस्त्र-शाला-गृहं-स्थानम् ।
शस्त्राभ्यास, सं. पुं. (सं.) अस्त्रशिक्षा, खुरली ।
शस्य, सं. पुं. (सं.) शस्यं, क्षेत्रस्थं फलं, दे. 'फ़सल' शष्पं, शादः ३. वृक्ष-लता,-फलं ४. धान्यं (शस्यं क्षेत्रगतं प्राहुः, सतुषं धान्यमुच्यते । आमं वितुषमित्युक्तं, स्विन्नमन्नमुदाहृतम् ॥) वि. (सं.) उत्तम, श्रेष्ठ २. स्तुत्य, प्रशंसनीय ।
—भक्षक, वि. (सं.) तृण-शाक,-भक्षक ।
शस्यागार, सं. पुं. (सं. नं.) धान्यागारम्, कुशूलः ।
शहंशाह, सं. पुं. (फ़ा.) राजाधिराजः, दे. 'सम्राट्' ।
शह, सं. स्त्री. (फ़ा.) गुप्तोत्तेजना ।
—देना, मु., निभृतं उत्तिज्-उद्दीप् (प्रे.) ।
शहज़ादा, सं. पुं. (फ़ा.) राजकुमारः २. युवराजः ।
शहज़ोर, वि. (फ़ा.) बलिन्, शक्तिशालिन् ।
शहतीर, सं. पुं. (फ़ा.) तुला, स्थूणा,छद्याधारः ।
शहतूत, सं. पुं. (फ़ा.) (वृक्ष) ब्रह्मदारुः, तूदः, तूतः, पूपः, ब्रह्मण्यः, तूलः, यूषः । (फल) तूतं, तूलं, तूदं, पूषं, यूषम् ।
शहद, सं. पुं. (अ.) माक्षिकं, क्षौद्रं, मधु (न.) दे. ।
—की मक्खी, सं. स्त्री., मधुमक्षिका ।
—लगाकर चाटना, मु., व्यर्थं पदार्थं निरर्थं रक्ष् (भ्वा. प. से.) ।
शहनाई, सं. स्त्री. (फ़ा.) सानेयी-यिका, सानिका ।
शहबाला, सं. पुं. (फ़ा.) *सहबालः (पं. सवाला), *वर,-पृष्ठगः-सहचरः ।
शहर, सं. पुं. (फ़ा.) नगरं, पुरम् ।
—पनाह, सं. स्त्री. (फ़ा.) *नगरकोट्टः, वृत्तिः (स्त्री.), प्राचीरं, दे. ।
शहरी, सं. पुं. (फ़ा.) पौरः, नागरिकः, नगर-पौर,-जनः । वि., नगरीय, नागर, नागरेयक, नागरिक दे. ।
शहवत, सं. स्त्री. (अ.) संभोग-मैथुन,-इच्छा ।
—परस्त, वि., कामुक, लंपट, कामातुर ।
—परस्ती, सं. स्त्री. कामुकता, लम्पटता, कामान्धता ।
शहसवार, सं. पुं. (फ़ा.) कुशलसादिन् ।
शहादत, सं. स्त्री. (अ.) साक्ष्यं, दे. 'गवाही' २. प्रमाणं ३. बलिदानम् ।

शहीद, सं. पुं. (अं.) *हुतात्मन्, धर्महतः, धर्मपतंगः ।

—होना, क्रि. अ., धर्मार्थे प्राणान् हा (जु. प. अ.) परोपकाराय हन् (कर्म.) ।

शांत, वि. (सं.) स्वस्थचित्त, प्रसन्न,-मानस-चेतस्, निर्वृत, स्वस्थ, निरुद्वेग, आवेशशून्य, शमित, शमान्वित २. रुद्ध, वेग-गति-क्रिया,-रहित, विरत ३. सौम्य, गंभीर, धीर ४. निःशब्द, मौनिन् ५. जितेन्द्रिय, संयमशील ६. शिथिल, निरुत्साह ७. श्रांत, क्लांत, खिन्न ८. निर्वापित, निर्वाण (अग्न्यादि) ९.निर्विघ्न, निर्बाध । सं. पुं. (सं.) रसविशेषः (काव्य.) २. विरक्तः, योगिन् ।

—करना, क्रि. स., उप-प्र-शम् (प्रे.) २. प्रसद्-तुप् (प्रे.) ।

—होना, क्रि. अ., शम् (दि. प. से.), शांत-निश्चल (वि.) भू ।

शांतता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शांति' ।

शांतनु, सं. पुं. (सं.) दे. 'शंतनु' २. कर्कटी ।

शांता, सं. स्त्री. (सं.) दशरथतनया, ऋष्यशृंगभार्या ।

शांति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शम' (१) । २. गति-क्रिया-वेग-क्षोभ,-राहित्यं ३. नीरवता, निःशब्दता ४. रोगादीनां क्षयः-नाशः ५. मृत्युः ६. सौम्यता, गम्भीरता ७. वैराग्यं, तृष्णाक्षयः ८. संकटनिवारणम् ।

—दायक, वि. (सं.) शांति,-प्रद-कर-दायिन् ।

—पर्व, सं. पुं. [सं.-पर्वन् (न.)] श्रीमन्महाभारतस्य द्वादशपर्वन् ।

शादूर, सं. पुं. दे. 'शायर' ।

शाइस्तगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शिष्टता, सज्जनता ।

शाइस्ता, वि. (फ़ा,-तः) शिष्ट, सुशील ।

शाक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'साग' ।

शाकाहार, सं. पुं. (सं.) हरितकभोजनं, मांसत्यागः ।

शाकाहारी, वि. (सं.-रिन्) हरितकभोजिन्, मांसत्यागिन् ।

शाक्त, सं. पुं. (सं.) शक्त्युपासकः, शाक्तिकः, शाक्तेयः ।

शाक्तिक, सं. पुं. (सं.) दे. 'शाक्त' । २. शक्तिकासू ,-धरः सैनिकः, शाक्तीकः ।

शाक्य, सं. पुं. (सं.) प्राचीनक्षत्रियजातिविशेषः ।

—मुनि, सं. पुं. (सं.) गौतमबुद्धः, सिद्धार्थः, महाबोधिः, महामुनिः ।

शाख़, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'शाखा' (१) । २. शृंगं, विषाणं ३. उपांगं ४. उपनदी ।

—दार, वि. (फ़ा.) शाखायुत २. शृंगयुत ।

शाखा, सं. स्त्री. (सं.) विटपः-पं, शिखा, लंका, लता २. देहावयवः, शरीरांगं (हाथ, पाँव आदि) ३. अंगुली, करशाखा ४. अंग, उपांगं ५. वि-,भागः ६. वैदिकग्रंथ-भेदः ।

—नगर, सं. पुं. (सं. न.) उपपुरं, शाखापुरं, नगरप्रांतः ।

शाखी, सं. पुं. (सं.-खिन्) वृक्षः २. वेदः । वि., सशाख ।

शागिर्द, सं. पुं. (फ़ा.) शिष्यः, दे. ।

शागिर्दी, सं. स्त्री. (फ़ा. शागिर्द) शिष्यता २. सेवा ।

शाटक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) पटः, वस्त्रम् ।

शाटिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'धोती' ।

शाटी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'साड़ी' ।

शाठ्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'शठता' (१-२) ।

शाण, सं. पुं. (सं.) शाणी, सामकः । (छोटा) झामरः २. नि-,कषः-सः, कषपट्टिका ३. माषचतुष्टयं, टंकः, निष्कः ।

शाद[1], सं. पुं. (सं.) कर्दमः २. शष्पम् ।

शाद[2], वि. (फ़ा.) प्रसन्न, मुदित २. परिपूर्ण ।

शादाब, वि. (फ़ा.) जलाढ्य, जलसिक्त ।

शादियाना, सं. पुं. (फ़ा.) मंगलवाद्यं २. दे. 'बधाई' ।

शादी, सं. स्त्री. (फ़ा.) विवाहः, दे. २. हर्षः ३. आनन्दोत्सवः ।

—गमी, सं. स्त्री. (फ़ा+अ.) हर्षशोकौ, सुखदुःखे ।

—मर्ग, सं. स्त्री., हर्षातिरेकजनितमृत्युः ।

शाद्वल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) हरितः-तं, शष्पबहुलो देशः । वि., हरित, शष्पाच्छन्न ।

शान, सं. स्त्री. (अ.) श्रीः (स्त्री.), अभिख्या, औज्ज्वल्यं, शोभा, प्रभा, भव्यता, आडंबरः २. विभूतिः-शक्तिः (स्त्री.) ३. प्रतिष्ठा, गौरवं ४. विभ्रमः ५. महिमन् (पुं.) ।

—दार, वि. (अ.+फ़ा.) श्रीमत्, शोभान्वित, भव्य, साडंबर, शोभन, सुप्रभ, समुज्ज्वल, वैभवशालिन् ।

—शौकत, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'शान' (१)।
—घटना, मु., लघूभू, महिमा अपचि (कर्म.)।
शाप, सं. पुं. (सं.) दे. 'सराप' २. धिक्कारः।
शापित, वि. (सं.) शाप,-ग्रस्त-बद्ध-पीडित।
शाबाश, अव्य. (फ़ा.) साधु, साधु साधु,शोभनं, सुष्ठु, भद्रम्।
शाबाशी, सं. स्त्री. (फ़ा. शाबाश) प्रशंसा, स्तुतिः (स्त्री.), साधुवादः।
—देना, क्रि. स., अभि-प्रति नंद् (भ्वा.प.से.), प्रोत्सह् (प्रे.)।
शाब्दिक, वि. (सं.) मौखिक, लेखरहित २. शाब्द, शब्दप्रधान, शब्दसम्बन्धिन्।
शाम¹, सं. स्त्री. (फ़ा.) संध्या, दे.।
शाम², सं. स्त्री. (देश.) यष्टयादिमध्यवर्ती प्रांतवर्ती वा धातुवलयः।
—जड़ना, क्रि. स., धातुवलयेन खच् (चु.)।
शामत, सं. स्त्री. (अ.) दौर्भाग्यं २. आपद् (स्त्री.) ३. दुर्दशा।
—आना, क्रि. अ., आपदा ग्रस् (कर्म.)।
—का मारा, मु. दैवहतकः, दुर्दैवः-मंदभाग्यः।
शामियाना, सं. पुं. (फ़ा. शाम) महा-वितानः, बृहदुल्लोचः।
शामिल, वि. (फ़ा.) दे. 'संमिलित'।
शामी, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'शाम' (२)।
शायक़, वि. (अ.) प्रेमिन्, अनुरागिन् २. अभिलाषिन्।
शायद, अव्य. (फ़ा.) स्यात्, कदापि, कदा-चित्, नाम, सम्भाव्यते।
शाय(इ)र, सं. पुं. (अ.) कविः, दे.।
शाय(इ)रा, सं. स्त्री. (अ.) कवित्री, कविता-काव्य-कर्त्री।
शायराना, वि. (अ.) कविसुलभ २. कवि-सदृश ३. कवित्वमय ४. अतिरंजित, अति-शयोक्ति-अत्युक्ति-युक्त।
शायरी, सं. स्त्री. (अ.) काव्यकला २. काव्यं, कविता।
शारदा, सं. स्त्री. (सं.) सरस्वती दे. २. दुर्गा ३. ब्राह्मी ४. प्राचीनलिपिविशेषः।
शारीरिक, वि. (सं.) शारीर(—री स्त्री.), कायिक-दैहिक (—की स्त्री.)।
—भाष्य, सं. पुं. (सं. न.) श्रीशंकराचार्य-प्रणीतं ब्रह्मसूत्रभाष्यम्।
—सूत्र, सं. पुं. (सं.-त्राणि) श्रीवेदव्यास-प्रणीतानि वेदांतसूत्राणि (न. बहु.)।
शार्क, सं. स्त्री. (अ.) जलकिराटः।
शार्ट हैंड, सं. पुं. (अं.) शीघ्र-संक्षिप्त,-लिपी-पिः (स्त्री.)।
शार्दूल, सं. पुं. (सं.) व्याघ्रः, दे. २. सिंहः, दे.। वि., उत्तम, श्रेष्ठ (केवल समासांत में, उ. नरशार्दूल = नरोत्तम)।
—विक्रीडित, सं. पुं. (सं. न.) वर्णवृत्तभेदः (छन्द.)।
शाल¹, सं. पुं. (सं.) सालः, सर्जः, शंकुवृक्षः, अश्वकर्णकः, चीरपर्णः, गंधवृक्षकः, रालनिर्यासः, अग्निवल्लभः, यक्षधूपः, सुरेष्टकः २. दे. 'राल' ३. मीनभेदः (=गजाड़ मछली)।
शाल², सं. स्त्री. (फ़ा.) १-२. और्ण-कौशेय,-प्रावारः-रकः, दे. 'दुशाला'।
शालग्राम, सं. पुं. (सं.) विष्णुमूर्तिभेदः २. शालबहुलो गंडकीतीरवर्तिग्रामविशेषः।
शाला, सं. स्त्री. (सं.) गृहं, गेहः-हं, सदनं, अ(आ)गारः-रं २. स्थानं, स्थलं, ३. शाखा।
शालि, सं. पुं. (सं.) व्रीहिश्रेष्ठः, धान्योत्तमः, सुकुमारकः, कैदारः, नृपप्रियः २. गंधमार्जारः।
—धान, सं. पुं. (सं. शालिधान्यं) *तंडुलो-त्तमः, दे. 'बासमती चावल'।
शालिवाहन, सं. पुं. (सं.) शकजातीयको नृपविशेषः, सातवाहनः।
शालिहोत्र, सं. पुं. (सं.) पशुचिकित्साशास्त्र-लेखकविशेषः २. घोटकः। (सं. न.) पशु-चिकित्साशास्त्रम्।
शालीन, वि. (सं.) विनीत, नम्र २. लज्जाशील ३. समान ४. सदाचारिन् ५. धनाढ्य ६. व्यवहारकुशल ७. शालासंबंधिन्।
शालीनता, सं. स्त्री. (सं.) विनयः २. लज्जा ३. सदाचारः।
शावक, सं. पुं. (सं.) शावः, अर्भकः, पोतः, पोतकः, डिंभः-पृथुकः, खग-मृग,-शिशुः २. शिशुः (कदाचित्)।
शाश्वत, वि. (सं.) नित्य, अनन्त, अक्षय, अविनाशिन्।
शासन, सं. पुं. (सं. न.) शास्तिः-शिष्टिः (स्त्री.), राज्यं, आधिपत्यं, अधिकारः २. आज्ञा, आदेशः ३. राजदत्तभूमिः (स्त्री.) ४. अधि-कारपत्रं ५. शास्त्रं ६. इन्द्रियनिग्रहः ७. निय-

न्त्रणा, नियमनं ८. राज्य-,दण्डः ९. लिखित-प्रतिज्ञा ।

—करना, क्रि. स., प्र-,शास् (अ. प. से.), ईश् (अ. आ. से.), तंत्र् (चु.), अधिष्ठा (भ्वा. प. से.), नियम्–विनी (भ्वा. प. अ.) । सं.पुं., ईशनं, अधिष्ठानं, नियमनं, नियंत्रणम् ।

—कर्ता, सं. पुं. (सं.-र्तृ)शासकः, शासनधरः, शास्तृ, शासितृ, अधिष्ठातृ, देशकः ।

—पत्र, सं, पुं. (सं. न.) राजादेशपत्रम् ।

—हर, सं. पुं. (सं.) आज्ञावाहकः २. शासन,-हारक-हारिन्, राजदूतः ।

शासित, वि. (सं.) कृतशासन, अधिकृत, अधिष्ठित, नियंत्रित २. दंडित, दे. ।

शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) धर्मग्रंथः २. विज्ञानम् ।

—कार, सं. पुं. (सं.) शास्त्र,-कृत्-रचयितृ, आचार्यः ।

—चक्षु, सं. पुं. [सं.-क्षुस् (न.)] व्याकरणं २. ज्ञानिन् ।

—ज्ञ, सं. पुं (सं.) शास्त्र,-दर्शिन्-दृष्टिः-विद्-कोविदः-वेत्तृ ।

—वक्ता, सं. पुं. (सं.-क्तृ) उपदेशकः ।

—विरुद्ध, वि. (सं) धर्मविरुद्ध, अधर्म्य ।

शास्त्रानुसार, क्रि. वि. (सं. न.) यथाशास्त्रं, धर्मानुकूलम् । वि., शास्त्रोक्त, स्मार्त ।

शास्त्री, सं. पुं. (सं.-स्त्रिन्) उपाधिभेदः २. धर्मशास्त्रज्ञः ३. दे. 'शास्त्रज्ञ' ।

शास्त्रीय, वि. (सं.) श्रौत, स्मार्त, शास्त्रविषयक २. शास्त्र,-उक्त-विहित ।

शास्त्रोक्त, वि. (सं.) शास्त्र,-विहित-निर्दिष्ट-अनुकूल ।

शास्य, वि. (सं.) नियंत्रणीय, नियन्तव्य, शासन-अर्ह-योग्य २. शिक्षणीय, उपदेष्टव्य, विनेय ३. दण्डय, दंडनीय ।

शाह, सं. पुं. (फ़ा.) महाराजः २. यवनभिक्षूपाधिः । वि., महत्, बृहत्, प्रधान ।

—ज़ादा, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'शहज़ादा ।

शाहिद, सं. पुं. (अ.) साक्षिन् , प्रत्यक्षदर्शिन्, देश्यः ।

शाही, वि. (फ़ा.) राजकीय २. भूपोचित, नृपयोग्य ।

शिंगरफ़, सं. पुं. (फ़ा. शंगर्फ़) हिंगुलं,-लः, हिंगुलुः,-लिः, रक्तपारदः, चूर्णपारदं, सुरंगं, रसोद्भवम् ।

शिंघाण, सं. पुं. (स. न.) नासिकामलं, शिंघाणकः-कं २. लोहमलं ३. काचपात्रम् । (सं.पुं.) शिंघाणकः, श्लेष्मन् ।

शिंजन, सं. पुं. (सं. न.) शिंजितं, झणत्कारः, झणझणध्वनिः ।

शिकंजबी, सं. स्त्री. (फ़ा. शिकंजबीं) पानकं, *अम्लगौल्यम् ।

शिकंजा, सं. पुं. (फ़ा.) १-३. निपीडन-दृढीकरण-निर्गालन,-यंत्रं ४. ग्रन्थनिपीडनयंत्रं ५. निगडः, हडिः ६. दे. 'कोल्हू' ।

शिकंजे में खींचना, मु., प्रमंथ् (क्र्. प. से.), यत् (प्रे.), अत्यर्थं अर्द् (प्रे.)-पीड् (चु.), निगडयति (ना. धा.) ।

शिकन, सं. स्त्री. (फ़ा.) व(व)ली-लिः (स्त्री.) २. पुटः, भंगः ।

—डालना, क्रि. स., वलिनं कृ. २. सपुटं विधा ।

—पड़ना, क्रि. अ. वलिन-वलिभ-वलियुत (वि.) भू २. सपुट-सभंग (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।

शिकम, सं. पुं. (फ़ा.) उदरं, जठरम् ।

शिकरा, सं. पुं. (फ़ा.) श्येनभेदः, *शीकरः ।

शिकवा, सं. पुं. (अ.) दे. 'शिकायत' ।

शिकस्त, सं. स्त्री. (फ़ा.) अभि-परा,-भवः, पराजयः दे. २. वैफल्यम् ।

—खाना, क्रि. अ., परिभू विजि (कर्म.), दे. 'हारना' ।

शिकायत, सं. स्त्री. (अ.) (सविलापा) विज्ञापना, दुःखनिवेदनं २. परि(री)वादः, आक्षेपः, गर्हा, निंदा ३. उपालम्भः, ४.आमयः, व्याधिः ।

—करना, क्रि. अ., सशोकं-सविलापं विज्ञा–निविद् (प्रे.) २. आ-अधि-क्षिप् (तु. प. अ.), गर्ह् (भ्वा. चु. आ. से.), अप-परि,-वद् (भ्वा. प. से.) ३. उपालभ् (भ्वा. आ. अ.) ।

शिकार, सं. पुं. (फ़ा.) आखेटः-खेटनं-टकं, मृगया, मृगव्यं, आच्छोदनं, पापर्द्धिः (स्त्री.) २. मृग्य,-जंतुः-प्राणिन् ३. मृगयाहतो जीवः ४. मांसं ५. भक्ष्यं ६. प्रतारितः, वञ्चितः ।

—करना, क्रि. स., मृग् (चु. आ. से., दि. प. से.) मृगयां कृ, अनुधाव् (भ्वा. प. से.) । मु., छलेन धनादिकं हृ (भ्वा. प. अ.) ।

—होना, क्रि. अ., आखेटे हन्-मार् (कर्म.) । मु., वशवर्ती जन् (दि. आ. से.) ।

शिकारी, सं. पुं. (फ़ा.) व्याधः, लुब्धकः,

मृगयुः, आखेटकः, जीवांतकः, शाकुनिकः, जालिकः, वागुरिकः। वि., आखेटिक।
—कुत्ता, सं. पुं., मृगदंशकः, मृगयाकुक्कुरः, विश्वकद्रुः।
—ब्याह, सं. पुं., गांधर्वविवाहः।
—लिबास, सं. पुं., मृगया-आखेट,-वेशः(षः)।
शिक्षक, सं. पुं. (सं.) अध्यापकः, गुरुः, उपाध्यायः, अनुशास्तृ, उपदेशकः, आचार्यः।
शिक्षण—सं. पुं. (सं. न.) शिक्षा, अध्यापनं, विद्यादानं, पाठनं, अनु,-शासनं-शिष्टिः (स्त्री.), विनयः २. विद्या,-उपादानं-ग्रहणं-अभ्यासः।
शिक्षा, सं. स्त्री. (सं.) अध्ययनाध्यापनं, पठनपाठनं। २-३. दे. 'शिक्षण' (१-२) ४. निपुणता ५.उपदेशः, मंत्रः ६. वेदांगविशेषः ७. नियंत्रणं ७. दंडः, कुफलम्।
—हीन, वि. (सं.) अशिक्षित, निरक्षर।
शिक्षार्थी, सं. पुं. (सं.-र्थिन्) शिक्षाग्राहकः, छात्रः।
शिक्षालय, सं. पुं. (सं.) शिक्षणालयः, विद्यालयः।
शिक्षित, वि. (सं.) साक्षर, अक्षराभिज्ञ, लेखनवाचनक्षम, कृतविद्य २. पंडित, विज्ञ। [शिक्षिता (स्त्री.)=कृतविद्या पंडिता इ.]।
शिखंड=डक, सं. पुं. (सं.) मयूरपुच्छं २. चूडा, शिखा ३. काकपक्षः।
शिखंडी, सं. पुं. (सं-डिन्) मयूरः २. कुक्कुटः ३. द्रुपदपुत्रविशेषः ४. विष्णुः ५. कृष्णः ६. शिवः ७. बाणः ८. गुञ्जा ९. स्वर्णयूथिका।
शिखर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गिरि,-मस्तकं-शृङ्गं, पर्वताग्रं, कूटं २. उच्चतमो भागः, दे. 'चोटी'।
शिखरन, सं. स्त्री. (सं. शिखरिणी) *दधिसितोदकम्।
शिखरिणी, सं. स्त्री. (सं.) वर्णवृत्तभेदः २. स्त्रीरत्नं ३. रोमराजी ४. द्राक्षाभेदः ५. दे. 'शिखरन'।
शिखरी, सं. पुं. (सं.-रिन्) पर्वतः २. वृक्षः ३. कोट्टः।
शिखा, सं. स्त्री. (सं.) शिखंडः-डकः, चूडा २. अग्निज्वाला,ज्वालः, अर्चिस् (न.) ३. दीप,-अर्चिस् (न.)-शिखा ४. शिखरः-रं ५. किरणः ६. शाखा।
—कंद, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'शलजम'।
—वान्, वि. (सं.-वत्) शिखिन्, चूडावत्, शिखान्वित। सं. पुं., दीपकः २. अग्निः ३. केतुग्रहः ४. उल्का, खोल्का।
—सूत्र, सं. पुं. (सं.-त्रे) चूडायज्ञोपवीते (न. द्वि.)।
शिखिनी, सं. स्त्री. (सं.) मयूरी, शिखंडिनी, केकिनी २. कुक्कुटी, कुक्कुटवधूः (स्त्री.), पक्षिणी।
शिखी, वि. (सं.-खिन्) शिखावत्-चूडावत्। सं. पुं. (सं.) मयूरः २. कुक्कुटः ३. दीपकः ४. अग्निः ५. पर्वतः ६. बाणः ७. वृक्षः ८. उल्का, केतुः।
शिगाफ़, सं. पुं. (फ़ा.) छिद्रं-विलं २. विदरः, भेदः।
शिगार, शिगा(ग़ा)ल, सं. पुं. (फ़ा.) शृगालः, जंबुकः।
शिताब, क्रि. वि. (फ़ा.) शीघ्रं, सत्वरम्।
शिथिल, वि. (सं.) मंदबन्धन, श्लथ, स्रस्त, दे. 'ढीला' २. अलस, मंथर ३. उदासीन ४. दृढत्वशून्य ५. बंधनहीन, मुक्त ६. श्रांत, क्लांत ७. अस्पष्ट (शब्दादि) ८. उपेक्षित (नियम)।
शिथिलता, सं. स्त्री. (सं.) शैथिल्यं, श्लथता, स्रस्तता, दे. 'ढीलापन' २. आलस्यं ३. औदासीन्यं ४. दृढताऽभावः ४. श्रांतिः (स्त्री.) ५. नियमभंगः ६. शक्तिन्यूनता।
शिद्दत, सं. स्त्री. (अ.) उग्रता, तीव्रता, प्रचंडता २. आधिक्यम्।
शिर, सं. पुं. (सं.) शिरस् (न.) दे. 'सिर'।
शिर(रा)कत, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'शराकत'।
शिरस्त्राण, सं. पुं. (सं. न.) शीर्षण्यं, शिरस्त्रं, दे. 'खोद'।
शिरा, सं. स्त्री. (सं.) सिरा, ईलिका, रक्तवाहिनी नाड़ी (Vein)।
शिरोधार्य, वि. (सं.) अंगी-स्वी,-कार्य, पालयितव्य।
—करना, मु., सादरं स्वी-अंगी,-कृ।
शिरोमणि, सं. पुं. स्त्री. (सं.) चूडामणिः, शिरोरत्नं २. प्रधानः, मुख्यः।
शिला, सं. स्त्री. (सं.) शिला,-पट्टः-फलकं २. अश्मन्-ग्रावन् (पुं.) ३. गंडशैलः ४. *पेषणशिला, *शिला-पट्टी-पट्टिका, *शिला।

—जीत, सं. पुं. [सं.-जतु (न.)] गिरि-अग-अद्रि-अश्म-शिला,-जं, अश्म,-जतुकं-लाक्षा-उत्थं, शिला,-जित (स्त्री.)-दद्रुः-मलं-स्वेदः।
—लेख, सं. पुं. (सं.) प्रस्तरलेख्यम्।
—वृष्टि, सं. स्त्री. (सं.) करकासारः।

शिलोंछ, सं. पुं. (सं.) उंछशिलं, उपात्तशस्य-क्षेत्रात् शेषावचयनम्।

शिल्प, सं. पुं. (सं. न.) यंत्र-,कला, *हस्त-कर्मन् (न.)-शिल्पं-व्यवसायः, शिल्पिकं, दे. 'दस्तकारी'।
—कला, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शिल्प'।
—कार, सं. पुं. (सं.) शिल्पिन्, कारुः, देवटः, शिल्पजीविन्, शिल्पकारिन्, कर्मकारः।
—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) हस्तकौशलं २. गृह-निर्माण-वास्तु,-कला।
—शाला, सं. स्त्री. (सं.) शिल्प(ल्पि),-गृहं-गेहं-शाला-आवेशनम्।
—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) हस्तव्यवसाय-शास्त्रं २. गृहनिर्माण-वास्तु,-शास्त्रम्।

शिल्पी, सं. पुं. (सं.-ल्पिन्) दे. 'शिल्पकार' २. गृह,-कारकः-संवेशकः, पलगंडः ३. चित्र-कारः।

शिव, सं. पुं. (सं.) महादेवः, शंभुः, पशुपतिः, शूलिन्, महा-,ईश्वरः, शंकरः, चंद्रशेखरः, गिरीशः, मृडः, पिनाकिन्, त्रिलोचनः, भूतेशः, धूर्जटिः, हरः, त्र्यंबकः, त्रिपुरारिः, गंगाधरः, वृषध्वजः, भवः, रुद्रः, उमापतिः, महानटः, भैरवः, पंचाननः, कंठेकालः, नंदीश्वरः २. परमेश्वरः ३. वेदः ४. श्रृगालः। (सं. न.) कल्याणं, मंगलम्। वि., कल्याण-मंगल,-कारक-कारिन्।
—द्रुम, सं. पुं. (सं.) बिल्ववृक्षः।
—नंदन, सं. पुं. (सं.) गणेशः।
—पुराण, सं. पुं. (सं. न.) शैवपुराणं, पुराण-ग्रंथविशेषः।
—पुरी, सं. स्त्री. (सं.) काशी, शिवतीर्थम्।
—बीज, सं. पुं. (सं. न.) पारदः, शिववीर्यम्।
—रात, सं. स्त्री. (सं. शिवरात्रिः) शिवचतु-र्दशी, फाल्गुनकृष्णचतुर्दशी।
—लिंग, सं. पुं. (सं. न.) शिवप्रतिमाभेदः।
—लिंगी, सं. स्त्री. (सं.-लिंगिनी) शिव,-वल्ली-वल्लिका, ईश्वरलिंगी, चित्रफला।
—लोक, सं. पुं. (सं.) कैलासः, शिवशैलः।
—वाहन, सं. पुं. (सं.) शिववृषभः, नंदिन्।
—सुंदरी, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा।

शिवा, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा २. पार्वती ३. श्रृगाली।

शिवानी, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, गौरी, दुर्गा।

शिवाला, सं. पुं. (सं.-लयः) शिव,-मंदिरं-आयतनं २. देवालयः ३. श्मशानम्।

शिवि, सं. पुं. (सं.) उशीनरनृपपुत्रः, ययाति-दौहित्रः २. हिंस्रपशुः ३. भूर्जवृक्षः।

शिविका, सं. स्त्री. (सं.) याप्ययानं, शिवीरथः, दे. 'पालकी'।

शिविर, सं. पुं. (सं. न.) कटकः-कं, निवेशः, आगन्तुकसैन्यवासः २. पट,-मंडपः-कुटी, दे. 'तंबू' ३. दुर्गः-र्गम्।

शिवेतर, वि. (सं.) अशुभ, अमंगल, हानि-कारक।

शिशिर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कंपनः, शीतः, हिमकूटः, कोटनः (माघ तथा फाल्गुन) २. तुषारः, तुहिनम्। वि., शीत, शीतल, उष्णताशून्य।
—कर, सं. पुं. (सं.) हिमांशुः, चंद्रः।
—काल, सं. पुं. (सं.) शीतर्तुः, शीतकालः।

शिशु, सं. पुं. (सं.) स्तनंधयः, स्तनपः, वत्सः, बालकः, दारकः, उत्तानशयः, डिंभः, अपत्यम्।

शिशुता, सं. स्त्री. (सं.) शिशुत्वं, शैशवं, बाल्यं दे.।

शिशुपाल, सं. पुं. (सं.) चेदिराजः, दमघोष-सुतः, चैद्यः।
—वध, सं. पुं. (सं. न.) महाकविमाघप्रणीत-महाकाव्यविशेषः।

शिष्ट, वि. (सं.) सभ्य, भद्र, श्रेष्ठ, सुशील २. धर्मशील ३. शांत ४. बुद्धिमत् ५. शालीन, व्यवहारनिपुण ६. प्रख्यात ७. आज्ञाकारिन्।

शिष्टता, सं. स्त्री. (सं.) सभ्यता, भद्रता, सुशीलता, श्रेष्ठता २. अधीनता।

शिष्टाचार, सं. पुं. (सं.) सदाचारः, सद्व्यव-हारः २. सत्कारः, संमानः ३. विनयः, प्रश्रयः ४. उपचारः, आचारः, यथाविधि वर्तनं ५. आतिथ्यं, आतिथेयम्।

शिष्य, सं. पुं. (सं.) छात्रः, अंते-वासिन्, सद्-

विद्यार्थिन्, शिक्षार्थिन् २. अनु,-गामिन्, यायिन् ।
शिस्त, सं. स्त्री. (फा.) शरव्यं, लक्ष्यम् ।
—बाँधना, मु., लक्ष्ये दृष्टि बंध् (क्र्. प. अ.)।
शीकर, सं. पुं. (सं.) पवनादिप्रेरित-,जलकणः, तुषारः २. अवश्यायः, दे. 'ओस' ३. स्वल्पवृष्टिः (स्त्री.), दे. 'फुहार' (१)।
शीघ्र, क्रि. वि. (सं. शीघ्रं) आशु, सद्यः, सपदि, अचिरेण, अविलंबेन, झटिति ।
—कारी, वि. (सं.-रिन्) विलम्बासह, आशुकारिन् ।
—कोपी, वि. (सं.-पिन्) कोपन, आशुक्रोधिन् ।
—गामी, वि. (सं.-मिन्) द्रुतगामिन् , आशु ।
—चेतन, वि. (सं.) तीव्रबुद्धि ।
—वेधी, सं. पुं. (सं.-धिन्) लघुहस्तः ।
शीघ्रता, सं. स्त्री. (सं.) त्वरा, क्षिप्रता, लाघवं, तरस्-रंहस् (न.), जवः, वेगः, रंभसः-सम् ।
—करना, क्रि. अ., त्वर् (भ्वा. आ. से.), सत्वरं-झटिति कृ ।
शीत, वि. (सं.) शीतल, शिशिर, हिम, तुषार, उष्णत्वशून्य २. शिथिल, दीर्घसूत्रिन् । सं. पुं. (सं. न.) शीतः, शीतर्तुः, शीतकालं, शिशिरः, हिमागमः २. शीतता, हिमता, शैत्यं ३. अवश्यायः, तुषारः ४. प्रतिश्यायः, दे. 'जुकाम' ५. जलम् ।
—कटिबंध, सं. पुं. (सं.) कर्कमकररेखापरवर्तिनौ अतिशीतौ भूभागौ (पुं. द्वि.) ।
—काल, सं. पुं. (सं.) दे. 'शीत' सं. पुं.(२) ।
—किरण, सं. पुं. (सं.) शीत-हिम,-करः-रश्मिः-अंशुः,-द्युतिः, चंद्रः ।
शीतता, सं. स्त्री. (सं.) शैत्यं, शीतं-तलम् ।
शीतल, वि. (सं.) दे. 'शीत' वि. । २. शांत, शमान्वित ३. संतुष्ट, प्रसन्न ।
शीतलता, सं. स्त्री. (सं.) दे. शीतता' ।
शीतला, सं. स्त्री. (सं.) विस्फोटकरोगः, विस्फोटा, मसूरिका, शीतली, वसंतरोगः, दे. 'चेचक' २.वसंतविस्फोटकादीनामधिष्ठात्री देवी ।
—वाहन, सं. पुं. (सं. न.) गर्दभः, खरः ।
शीतांशु, सं. पुं. (सं.) चंद्रः २. कर्पूरः-रम् ।
शीर, सं. पुं. (फ़ा.) क्षीरं, दुग्धं, दे. 'दूध' ।
शीताकुल, वि. (सं.) शीत-शैत्य-हिम,-आकुल-अर्दित-पीडित-विह्वल ।
शीरा, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'शरबत' २. दे. 'चाशनी' ।
शीरीं, वि. (फ़ा.) मधुर २. प्रिय ।
शीरीनी, सं. स्त्री. (फ़ा.) मिष्टान्नं, दे. 'मिठाई' २. माधुर्यम् ।
शीर्ण, वि. (सं.) कृश, क्षीणतनु, क्षाम, २.भग्न, खंडित, ३. च्युत ४. जीर्ण, विदीर्ण ५. म्लान, विरस ।
शीर्णता, सं. स्त्री. (सं.) कृशता, दौर्बल्यं, जीर्णता, विदीर्णता ।
शीर्ष, सं. पुं. (सं. न.) शिरस् (न.), दे. 'सिर' २. ललाटं, दे. 'माथ.' ३. शिखरं ४. अग्रभागः ।
शीर्षक, सं. पुं. (सं. न.) अग्राक्षरपंक्तिः, शिरः पंक्तिः (स्त्री.) २. शिरस्त्रं, दे. 'खोद' ।
शील, सं. पुं. (सं. न.) चरित्रं, आचरणं, वृत्तिः (स्त्री.) ३. स्वभावः, प्रकृतिः (स्त्री.) ४. सदाचारः, सच्चरित्रम् ५. सत्,-स्वभावः-प्रकृतिः (स्त्री.) ६. हृदयमार्दवं ७. संकोचः, आदरः वि. पर,-परायण (उ. दानशील) ।
शीलवान, वि. (सं.-वत्) सदाचारिन्, सद्वृत्त २. सत्स्वभाव, कोमलप्रकृति, सुशील ।
शीशम, सं. स्त्री. (फ़ा.) शिंशपा, पिच्छि-(च्छ)ला, पिंगला, कपिला, भस्मगर्भा ।
शीशमहल, सं. पुं. (फ़ा. शीशा+अ. महल) काच-स्फटिक,-भवनं २. काचकोष्ठः, आदर्शावासः ।
—का कुत्ता, मु., उन्मत्तः, वातुलः ।
शीशा, सं. पुं. (फा.) काचः, दे. २. आदर्शः, मुकुरः, दर्पणः, दे. ३. काचफलकः-कम् ।
शीशी, सं. स्त्री. (फ़ा. शीशा) काचकूपी ।
—सुँघाना, औषधगंधेन मूर्च्छ् (प्रे.) ।
शुंठी, सं. स्त्री. (सं.) कटुग्रंथिः, दे. 'सोंठ' ।
शुक, सं. पुं. (सं.) कीरः, वक्रतुंडः, दे. 'तोता' २. महर्षि-व्यासपुत्रः ।
शुक्ति, सं. स्त्री. (सं.) मुक्तामातृ (स्त्री.), दे. 'सीपी' ।
—बीज, सं. पुं. (सं. न.) मौक्तिकं, शुक्तामणिः ।
शुक्र[१], सं. पुं. (सं.) सितः, श्वेतः, काव्यः, कविः, भार्गवः, दैत्यगुरुः २. अग्निः ३. ज्येष्ठमासः ४. शुक्रवासरः । (सं. न.) बीजं, वीर्यं

रेतस् (न.) २. बलं, सामर्थ्यम् । वि. (सं.) भासुर, देदीप्यमान २. स्वच्छ, उज्ज्वल ।

शुक्र[२], सं. पुं. (अ.) धन्यवादः, कृतज्ञताप्रकाशः ।

—गुज़ार, वि. (अ.+फ़ा.) कृतज्ञ, दे. ।

—गुज़ारी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) कृतज्ञता ।

शुक्ल, वि. (सं.) धवल, सित, श्वेत, दे. 'सफ़ेद' ।

—पक्ष, सं. पुं. (सं.) शुक्लकः, दे. 'पक्ष' में ।

शुक्लता, सं. स्त्री. (सं.) धवलता, दे. 'सफेदी' ।

शुग़ल, सं. पुं. (अ.) दे. 'शग़ल' ।

शुचि, वि. (सं.) वि-शुद्ध, पवित्र, पूत २. उज्ज्वल, निर्मल ३. निर्दोष, निष्पाप ४. शुद्ध मानस ।

शुतुरमुर्ग़, सं. पुं. (फ़ा.) * उष्ट्रकुक्कुटः ।

शुदनी, सं. स्त्री. (फ़ा.) नियतिः (स्त्री.), भवितव्यता ।

शुद्ध, वि. (सं.) केवल, स्वच्छ, मिश्रणशून्य २. उज्ज्वल, श्वेत ३. त्रुटिरहित, यथातथ, यथार्थ ४.निर्दोष ५.पूत, पवित्र, पावन, मेध्य ।

—करना, क्रि. स., परि-,पू (क्र्. उ. से.), शुचीकृ । परि-वि-सं-, शुध् (प्रे.), निर्मलीकृ २. प्रतिसमा-समा-धा (जु. उ. अ.), त्रुटिरहितं विधा (जु. उ. अ.) ।

शुद्धता, सं. स्त्री. (सं.) शुचिता, शौचं, पवित्रता, पूतता, वि,-शुद्धिः (स्त्री.) २. निर्दोषता, यथार्थता ।

शुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शुद्धता' (१) । २. स्वच्छता, नैर्मल्यं ३. वैदिकधर्मप्रवेशसंस्कारः ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) त्रुटिदर्शकपत्रम् ।

शुबहा, सं. पुं. (अ.) संदेहः २. भ्रमः ।

शुभ, वि. (सं.) मंगल, हित, कल्याण २. उत्तम, भद्र । सं. पुं. (सं. न.) मंगलं, हितं, कल्याणम् ।

—कर्म, सं. पुं. (सं.-र्मन् न.) सुकृत्यं, पुण्यम् ।

—घड़ी, सं. स्त्री., मांगलिकमुहूर्तः-र्तम् ।

—चिंतक, वि. (सं.) हितैषिन्, हितचिंतक ।

—दर्शन, वि. (सं.) प्रिय-सु,-दर्शन, सुन्दर ।

—फल, सं. पुं. (सं. न.) सुपरिणामः ।

शुभ्र, वि. (सं.) श्वेत, शुक्ल, भासुर ।

—कर, सं. पुं. (सं.) शुभ्र,-भानुः-रश्मिः, चन्द्रः ।

शुभ्रता, सं. स्त्री. (सं.) शुक्लता, भासुरता ।

शुमार, सं. पुं. (फ़ा.) 'गणनं', संकलनम् ।

शुमाल, सं. पुं. (अ.) उदीची, दे. 'उत्तर' (दिशा) ।

शुमाली, वि. (अ.) उत्तर, उदीचीन, उत्तर,-दिश्य-संबंधिन् ।

शुरू, सं. पुं. (अ.) उपक्रमः, आरंभः दे. २. प्रभवः, आदिः ।

शुल्क, सं. पुं. (सं. पुं. न.) घट्टपथादीनां करः २. वरात् ग्राह्योऽर्थः ३. युतकं, दे. 'दहेज' ४. पणः, ग्लहः ५. मूल्यं ६. भाटं, भाटकं ७. प्रतिफलं, वेतनम् ।

शुश्रूषा, सं. स्त्री. (सं.) परिचर्या, सेवा दे. २. श्रवणेच्छा ।

शुष्क, वि. (सं.) निर्जल, आर्द्रतारहित, वान २. वि-नी-अ,-रस, निःस्वाद ३. खेदकर, अरुचिकर ४. मोघ, निरर्थक ५. रूक्ष,स्नेहहीन ६. जीर्ण, शीर्ण ।

शुष्कता, सं. स्त्री. (सं.) शोषः, शुष्कता २. नीरसता ३. अरोचकता ४. रूक्षता ५. जीर्णता ।

शूकर, सं. पुं. (सं.) वराहः, दे. 'सुअर' ।

शूद्र, सं. पुं. (सं.) वृषलः, दासः, पादजः, पद्यः, पज्जः, जघन्यः, द्विजसेवकः, उपासकः, चतुर्थः २. निकृष्टः ३. सेवकः ।

शूद्रक, सं. पुं. (सं.) मृच्छकटिकरचयिता महाकविः २. शूद्रः ३. शंबुकः, तपस्विशूद्रविशेषः (रामायण) ।

शूद्रा, सं. स्त्री. (सं.) शूद्रजातेः स्त्री ।

शूद्री, सं. स्त्री. (सं.) शूद्रस्य पत्नी ।

शून्य, वि. (सं.) रिक्त, वशिक, शून्य-रिक्त,-गर्भ-मध्य २. निराकार ३. असत् ४. रहित । सं. पुं. (सं. न.) आकाशः-शं, दे. २. बिंदुः, खं ३. रिक्त-एकांत-निर्जन,-स्थानं ४. अभावः ।

शून्यता, सं. स्त्री. (स.) शून्यत्वं, रिक्तता ।

शूप, सं. पुं. (सं. शूर्पः-र्पं) सूर्पः, कुल्यः, प्रस्फोटनं-नी, दे. 'छाज' ।

शूर, सं. पुं. (सं.) दे. 'वीर' ।

शूरण, सं. पुं. (सं.) दे. 'सूरन' ।

शूरता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'वीरता' ।

शूर्प, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'शूप' ।

—कर्ण, सं. पुं. (सं.) गजः २. गणेशः ।

—णखा, सं. स्त्री. (सं.) रावणभगिनी।

शूल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) उदरवेदना, जठर-व्यथा, वातरोगभेदः २. पीडा, क्लेशः व्यथा ३. कुंतः, प्रासः ४. त्रिशूलं, त्रिशीर्षकं ५. ध्वजः ६. मृत्युः ७. अयःकीलः ८. शलाका ९. दे. 'सूली'।

—धारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) शूल,-धर-ग्राहिन्-पाणिः, शिवः।

शूली, सं. पुं. (सं.-लिन्) शिवः, शूलपाणिः २. शशकः ३. शूलार्त्तः। सं. स्त्री., दे. 'सूली'।

शृंखला, सं. स्त्री. (सं.) शृंखलः-लं, निगडः, बंधः, बंधनं २. क्रमः, परंपरा ३. श्रेणी, पंक्तिः (स्त्री.) ४. मेखला, पुंस्कटिवस्त्रबन्धः ५. कांची, रश(स)ना।

—बद्ध, वि. (सं.) शृङ्खलित, निगडित २. क्रम-श्रेणी,-बद्ध।

शृंग, सं. पुं. (सं. न.) विषाणं, दे. 'सींग' २. सानुः, कूटः-टं, शिखरं, शैलाग्रं ३. वाद्य-भेदः ४. कामोत्तेजना ५. क्रीडाजलयंत्रं (पिच-कारी, दे. रघुवंश १६'७०) ६. दे. 'कंगूरा'।

शृंगार, सं. पुं. (सं.) रसविशेषः (सा.) २. मैथुनस्पृहा ३. मंडनं, भूषणं, प्रसाधनं, अलंकरणं, परिष्करणं ४. संभोगः, मैथुनं ५. मंडन-प्रसाधन,-साधनं-द्रव्यं (चंदनादि) दे. 'षोडश शृंगार'।

—करना, क्रि. स., अलंकृ, परिष्कृ, प्रसाध् (प्रे.), भूष्-मंड् (चु.)।

—योनि, सं. पुं. (सं.) मदनः, कंदर्पः।

शृंगी, सं. पुं. (सं.-गिन्) गजः २. वृक्षः ३. पर्वतः ४. ऋषिविशेषः ५. शृङ्गवत् पशुः ६. वाद्यभेदः ७. महादेवः।

शृगाल, सं. पुं. (सं.) गोमायुः, क्रोष्टुः, जंबु-(बू)कः, दे. 'गीदड़'। वि., भीरु २. खल ३. निष्ठुर।

शेख, सं. पुं. (अ.) श्रीमोहंमदवंशजानामुपाधिः २. यवनवर्गविशेषः ३. यवनोपदेशकः ४. वृद्धः।

—चिल्ली, सं. पुं. (अ.+हिं.) मंदः, जडः २. भंडः, विदूषकः।

शेखर, सं. पुं. (सं.) शिरोमाल्यं, शीर्षमाला २. शिरोभूषणमात्रं ३. शीर्षं ४. किरीटः, मौलिः ५. पर्वताग्रं, सानुः।

शेखी, सं. स्त्री. (अ. शेखह्) दर्पः, गर्वः २. विकत्थनं, गर्वोक्तिः (स्त्री.)।

—बाज़, वि. (हिं.+फ़ा.) विकत्थक, आत्म-श्लाघिन् २. दृप्त।

—झड़ना या निकलना, मु., गर्वः खंड् (कर्म.) मदः व्यपगम् (भ्वा. प. अ.) लघूभू।

—बघारना,-मारना या-हाँकना, मु., विकत्थ् (भ्वा. आ. से.), आत्मानं श्लाघ् (भ्वा. आ. से.)।

शेप, सं. पुं. (सं.) शेप(फ)स् (न.), शेफः-फं, मेढ्रं २. मुष्कः, वृषणः, शुक्रग्रंथिः ३. पुच्छं, लांगूलं, लूमम्।

शेमुषी, सं. स्त्री. (सं.) बुद्धिः-धीः-मतिः (स्त्री.), प्रज्ञा।

शेयर, सं. पुं. (अं.) अंशः, भागः।

—होल्डर, सं. पुं. (अं.) अंशिन्, भागिन्।

शेर[1], सं. पुं. (फ़ा.) द्वीपिन्, भेलः, मृगांतकः, शार्दूलः, व्याघ्रः दे. २. केसरी, सिंहः दे. ३. वीरः, शूरः।

—पंजा, सं. पुं. (फ़ा.+हिं.) दे. 'बघनखा'।

—बचा, सं. पुं. (फ़ा.+हिं.) सिंह-व्याघ्र,-पोतः शावकः २. वीरः, शूरः।

—बबर, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'शेर' (२)।

—मर्द, वि. (फ़ा.) वीर, निर्भय।

—होना, मु., भयं मुच् (तु. प. अ.), निर्भय (वि.) भू।

शेर[2], सं. पुं. (अ.) कवितायाश्चरणद्वयं (उर्दू, फ़ारसी आदि)।

शेरनी, सं. स्त्री. (फ़ा. शेर) व्याघ्री, द्वीपिनी. २. सिंही, केसरिणी इ.।

शेरवानी, सं. स्त्री. (देश.) *आजानुलंबी कंचुकभेदः।

शेष, सं. पुं. (सं.) अनंतः, सर्पराजः, शेषनागः, फणींद्रः, फणीश्वरः २. परमेश्वरः ३. लक्ष्मणः ४. बलरामः ५. अंतरम् (गणित) ६. अन्तः ७. परिणामः ८. गजः ९. मृत्युः १०. नाशः। (सं. पुं. न.) अव-परि,-शेषः, उद्वर्तः, अव-शिष्ट-उपयुक्तेतर,-वस्तु (न.) २. अध्याहार्य-शब्दः। वि., अवशिष्ट २. समाप्त ३. इतर, अपर, अन्य।

—नाग, सं. पुं. (सं.) दे. 'शेष' सं. पुं. (१)।

—शायी, सं. पुं. (सं.-शायिन्) विष्णुः।

शेषांश, सं. पुं. (सं.) १-२ अवशिष्ट-अंतिम,-भागः।

शैतान, सं. पुं. (अ.) ईश्वर-विरोधी देवविशेषः

(सामी धर्म) २. भूतः, प्रेतः ३. क्रूरः ४. दुष्टः, खलः ५. कामः, मदनः ६. क्रोधः ।

शैतानी, सं. स्त्री. (अ. शैतान) दुष्टता, कुचेष्टा ।

शैत्य, सं. पुं. (सं. न.) शीतता, शीतलत्वम् ।

शैथिल्य, सं. पुं. (सं. न.) शिथिलता, दे. ।

शैल, सं. पुं. (सं.) गिरिः, अद्रिः, पर्वतः, दे. । २. गंडशैल, दे. 'चट्टान' ३ दे. 'शिलाजीत' ।

—कुमारी, सं. स्त्री. (सं.) अद्रितनया, शैल,-कन्या-जा, दे. 'पार्वती' ।

शैली, सं. स्त्री. (सं.) भाषण-लेखन,-रीतिः-सरणिः (दोनों स्त्री.)-प्रकारः २. प्रथा, रीतिः ३. परिपाटिः (स्त्री.), प्रणाली ४. चर्या, वर्तनं, वृत्तिः (स्त्री.) ।

शैलेंद्र, सं. पुं. (सं.) हिमगिरिः, हिमालयः ।

शैव, सं. पुं. (सं.) शिव,-भक्तः-उपासकः-अनुयायिन् २. संप्रदायविशेषः । वि. (सं.) शिव-संबन्धिन् ।

शैव्या, सं. स्त्री. (सं.) सत्यहरिश्चन्द्रपत्नी ।

शैशव, सं. पुं. (सं. न.) शिशुता-त्वं, बाल्यम् । वि. (सं.) बाल-बाल्य-संबंधिन् ।

शोक, सं. पुं. (सं.) आर्तिः (स्त्री.) आधिः, दुःखं, परितापः, खेदः, शुच् (स्त्री.), शुचा, मन्युः, निस्समः, शोचनम् ।

शोकार्त, वि. (सं.) शोकिन्, शोक,-आकुल-आतुर-ग्रस्त-उपहत-विह्वल, सशोक, परितप्त ।

शोख़, वि. (फ़ा.) धृष्ट, वियात २. चंचल, चपल ३. गाढ़, भासुर (रस) २. दुर्ललित, कुचेष्टक ।

शोख़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) धाष्टर्यं, वैयात्यं २. चाञ्चल्यं ३. गाढ़ता, प्रखरता ।

शोच, सं. पुं. (सं. शोचनं) शोकः २. चिंता ।

शोचनीय, वि. (सं.) आपन्न, दुःख, आर्त्त, निरानंद २. सांशयिक, संदिग्ध ।

शोण, सं. पुं. (सं.) रक्त-लोहित-वर्ण-रंगः २. नदविशेषः, हिरण्यवाहः ३. माणिक्यं ४. रक्तेक्षुः ५. अग्निः ६. लोहिताश्वः । सं. न., रुचिरं २. सिंदूरम् ।

—रत्न, सं. पुं. (सं. न.) पद्मरागमणिः, शोणितोपलः ।

शोणित, सं. पुं. (सं. न.) रुधिरं, रक्तं दे. । वि. (सं.) लोहित, रक्त, शोण ।

शोणिमा, सं. स्त्री. (सं.-मन् पुं.) रक्तिमन्-, लोहितिमन्-अरुणिमन् (पुं.) । दे. 'लाली' ।

शोथ, सं. पुं. (सं.) शोफः, शोथकः, श्वयथुः ।

शोध, सं. पुं. (सं.) शोधनं, निस्तारः (ऋणादिका) २. अनुसंधानं, अन्वेषणं ३. शुद्धिः (स्त्री.), शुद्धिसंस्कारः ४. परीक्षा-क्षणम् ।

शोधक, सं. पुं. (सं.) पावन, शोधन, मलहर २. अन्वेषक, अनुसंधातृ ३. दे. 'सुधारक' ।

शोधन, सं. पुं. (सं. न.) पावनं, संस्करणं, निर्मली-पवित्री-शुची,-करणं, मार्जनं, प्रक्षालनं, धावनं २. प्रतिसमा-समा,-धानं, त्रुटिनिरसनं ३. धातूनां निर्दोषीकरणं ४. अन्वेषणं, अनुसंधानं ५. परीक्षणं ६. ऋणनिस्तारणं ७. दंडः ८. प्रायश्चित्तं ९. विरेचनं १०. निबूकं ११. व्यवकलनम् ।

शोधना, क्रि. स. (सं. शोधनं) दे. 'शुद्ध करना' (१-२) ३. औषधार्थं धातुं संस्कृ ४. अन्विष् (दि. प. से.), अनुसंधा (जु. उ. अ.) । सं. पुं., दे. 'शोधन' ।

शोधनी, सं. स्त्री. (सं.) सं-, मार्जनी, बहुकरी ।

शोधनीय, वि. (सं.) पवनीय, मार्जनीय २. निस्तार्य, प्रत्यर्पयितव्य ३. अनुसंधेय ।

शोभन, वि. (सं.) सुंदर, रम्य, रमणीय, २. उत्तम, श्रेष्ठ ३. उचित, उपयुक्त ४. मांगलिक, मंगल्य, मंगलीय ।

शोभा, सं. स्त्री. (सं.) कांतिः-द्युतिः-दीप्तिः (स्त्री.), भा, भासा, श्रीः (स्त्री.) २. छवीविः (स्त्री.), सुन्दरता, रुचिरता ३. भूषा, परिष्क्रिया ४. वर्णः, रंगः ५. श्रेष्ठगुणः ।

—देना, क्रि. अ., राज्-शुभ् (भ्वा. आ. से.) ।

शोभायमान, वि. (सं. शोभमान) राजमान, भ्राजमान, भासुर, देदीप्यमान, सुन्दर २. विद्यमान, उपस्थित ।

शोभित, वि. (सं.) शोभान्वित, सुन्दर, छविमत् । २. मंडित, भूषित ३. उपस्थित, विद्यमान ।

शोर, सं. पुं. (फ़ा.) महारवः, कलकलः, कोलाहलः दे. ।

—मचाना, क्रि. अ., कोलाहलं कृ, उत्क्रुश् (भ्वा. प. अ.) ।

शोरबा, सं. पुं. (फ़ा.) यूषः-षं, सूपः, लासः, *रसः २. मांसरसः, दे. 'यखनी' ।

शोरा, सं. पुं. (फ़ा. शोर) यवक्षारः, विपाकिन्, निपीतिन्, पाक्यः ।
शोरे का तेज़ाब, सं. पुं., भूयिकाम्लः, पाक्यद्रावकं, नत्रिक-यवक्षार,-अम्लः ।
शोला, सं. पुं. (अ.), ज्वाला, अर्चिस् (न.) ।
शोशा, सं. पु. (फ़ा.) अद्‌भुत-विलक्षण,-वार्त्ता २. व्यंग्योक्तिः (स्त्री.) ३. कलहोत्पादिका वार्त्ता ।
शोषक, वि. (सं.) रसाकर्षक, शोषणकर २. क्षय-ध्वंस,-कारिन् ।
शोषण, सं. पुं. (सं. न.) रसाकर्षणं, शुष्कीकरणं २. क्षपणं ३. वि,-नाशनं, वि,-ध्वंसनं ४. सारोद्धारः, ५. चूषणम् ।
शोहदा, सं. पुं. (अ.) दे. 'लुच्चा' ।
शोहरत, सं. स्त्री. (अ.) ख्यातिः-प्रसिद्धिः (स्त्री.) ।
शोहरा, सं. पुं. (अ.) शोहरत, दे. ।
शौक, सं. पुं. (अ.) अभि,-रुचिः (स्त्री.), प्रवृत्तिः (स्त्री.), प्रवणता २. लालसा, उत्कंठा, औत्सुक्यम् ।
—करना, मु., भुज् (रु. आ. अ.) ।
—चर्राना, मु., तीव्रम् अभिलष् (भ्वा.प.से.) ।
—पूरा करना, मु., कामं उपभोगेन शम् (प्रे.) ।
—से, मु., सानंदं, सहर्षं, समोदम् ।
शौकीन, सं. पुं. (अ. शौक) प्रसाधन-शृङ्गार-सुवेश,-प्रियः, वेषाभिमानिन्, छेकः २. वेश्यागामिन् ३. प्रेमिन्, अनुरागिन्, स्नेहिन्, अभिलाषिन् ।
शौकीनी, सं. स्त्री. (हिं. शौकीन) वेषाभिमानः, शृङ्गारप्रियता २. वेश्यागमनम् ।
शौच, सं. पुं. (सं. न.) शुद्धता, शुद्धिः (स्त्री.), पवित्रता, पूतता, शुचिता-त्वं, पुण्यता, निष्पापता २. प्रातः,-कृत्यानि-कार्याणि (न. बहु०) (शौच, स्नान, संध्या आदि) ३. पुरीषोत्सर्गः, हदनम् ।
शौरसेनी, सं. स्त्री. (सं.) १-२. प्राकृत-अपभ्रंश,-भाषाविशेषः ।
शौर्य, सं. पुं. (सं. न.) शूरता, वीरता, पराक्रमः ।
शौहर, सं. पुं. (फ़ा.) पतिः, भर्तृ ।
श्मशान, सं. पुं. (सं. न.) पितृ,-वनं-काननं, अंतशय्या, शवानकं, रुद्राक्रीडः, दाहसरः (पुं.), शवसानम् ।
—वासी, सं. पुं. (सं.-सिन्) शिवः, २. चांडालः ।
श्मश्रु, सं. पुं. (सं. न) कूर्चः,-र्चं, चोटः, व्यंजनं, मुखरोमन् (न.), शिंगिन् (न.), शिंघाणं, दे. 'दाढ़ी' ।
—वर्धक, सं. पुं. (सं.) नापितः ।
श्याम, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः २. कृष्णवर्णः । वि. (सं.) काल, कृष्ण २. कालनील, कृष्णमेचक ।
—सुंदर, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः ।
श्यामता, सं. स्त्री. (सं.) कालिमन्-कृष्णिमन् (पुं.) २. नीलता, मेचकता ।
श्यामल, वि. (सं.) काल २. कालीन ।
श्यामा, सं. स्त्री. (सं.) राधा-धिका २. शकुनी, कालिका, कृष्णा (खगभेदः) ३. अप्रसूतांगना ४. (तप्तकांचनवर्णाभा) नारी ५. कृष्णा गौः (स्त्री.) ६. यमुना ७. रात्री ।
श्याल, सं. पुं. (सं.) श्यालकः, भार्या-पत्नी,-भ्रातृ ।
श्यालकी, सं. स्त्री. (सं.) श्यालिका, श्याली, भार्या-पत्नी,-भगिनी ।
श्येन, सं. पुं. (सं.) शशादः-दनः, कपोतारिः, खगांतकः, घाति-रण,-पक्षिन्, नीलपिच्छः ।
श्येनी, सं. स्त्री. (सं.) श्येनिका, नीलपिच्छीच्छा ।
श्रद्धा, सं. स्त्री. (सं.) आदरः, संमानः सत्कारः २. विश्वासः, प्रत्ययः, विश्रंभः ३. निष्ठा, आस्था, भक्तिः (स्त्री.) ।
—करना या—रखना, क्रि. अ. श्रद्धा (जु. उ. अ.), विश्वस् (अ. प. से.) ।
—हीन, वि. (सं.) अविश्वासिन्, अश्रद्दधान २. आस्था-निष्ठा-भक्ति,-हीन ।
श्रद्धालु, वि. (सं.) श्रद्धा,-वत्-युक्त-अन्वित, श्रद्दधान, विश्वासिन्, प्रत्ययिन् २. (स्त्री.) दोहदवती ।
श्रद्धेय, वि. (सं.) विश्वास-श्रद्धा,-पात्रं-आस्पदं, श्रद्धातव्य, पूज्य, सं-,मान्य, नमस्य ।
श्रम, सं. पुं. (स.) परिश्रमः, दे. । २. श्रांतिः (स्त्री.) ३. व्यायामः ।
—जल, सं. पुं. (सं. न.) प्र,-स्वेदः, श्रम,-कणाः-शीकराः (बहु.) दे. 'पसीना' ।
—जीवी, सं., पुं. (सं.-विन्) श्रमिकः, कर्मकरः, दे. 'मजदूर' ।

श्रवण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कर्णः, श्रवः, श्रोत्रं दे. 'कान' सं. न. निशमनं, आकर्णनम् (सं. पुं. स्त्री.) श्रवणनक्षत्रम् (ज्यो.) ।
श्रवणा, सं. स्त्री. (सं.) श्रवणः-णं, नक्षत्र-विशेषः ।
श्रव्य, वि. (सं.) दे. 'श्राव्य' ।
श्रांत, वि. (सं.) क्लांत, ग्लान, खिन्न, श्रमार्त्त, अवसन्न, जातश्रम २. शांत ३. निवृत्त ।
श्रांति, सं. स्त्री. (सं. स्त्री.) श्रमः, आयासः, अवसादः, खेदः ।
श्राद्ध, सं. पुं. (सं. न.) श्रद्धया क्रियमाणं कर्मन् (न.) २. पितॄन् उद्दिश्य श्रद्धया अन्नादिदानं ३. पितृ-आश्विनकृष्ण,-पक्षः ।
श्राप, सं. पुं., दे. 'सराप' ।
श्रावण, सं. पुं. (सं.) श्रावणिकः, नभः (पुं.) ।
श्रावणी, सं. स्त्री. (सं.) श्रावणमासीयपूर्णिमा ।
श्राव्य, वि. (सं.) श्रव्य, श्रोतव्य, श्रवणार्ह, आकर्णनीय, निशमनीय ।
श्री, सं. स्त्री. (सं.) कमला, लक्ष्मीः दे. २. सरस्वती ३. धनं, संपद् (स्त्री.) ४. विभूतिः (स्त्री.), विभवः ५. यशस् (न.) ६. शोभा, प्रभा ७. कांतिः-द्युतिः (स्त्री.) ८. नामपुरोवर्ति समानपद श्रीयुत, श्रीमन् ९. वृद्धिः (स्त्री.) १०. साफल्यं, सिद्धिः (स्त्री.) ११. रागभेदः । वि., योग्य २. मनोज्ञ ३. उत्तम ४. मंगल ।
—कंठ, सं. पुं. (सं.) शिवः, शंभुः ।
—खड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) हरिचंदनं २. दे. 'शिखरन' ।
—धर, सं. (सं.) विष्णुः, श्री,-निवासः-निकेतनः । वि., तेजस्विन् ।
—पति, सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. श्रीरामः ३. श्रीकृष्णः ४. कुबेरः ५. नृपः ।
—पथ, सं. पुं. (सं.) राज,-मार्गः-पथः ।
—पाद, वि. (सं.) पूज्य २. संपन्न ।
—पुष्प, सं. पुं. (सं. न.) लवंगं, श्रीप्रसूनम् ।
—फल, सं. पुं. (सं.) बिल्ववृक्षः २. नारिकेलः ३. राजादनीवृक्षः ४. आमलकः-की ।
—फली, सं. स्त्री. (सं.) आमलकी २. नीली ।
श्रीमंत, वि. (सं-मत) धनिक, धनाढ्य ।
श्रीमत्, वि. (सं.) धनवत्, धनिन्, श्रील, २. शोभान्वित, द्युतिमत् ३. छविमत्, सुन्दर । सं. पुं., विष्णुः २. कुबेरः ३. शिवः ।
श्रीमती, सं. स्त्री. (सं.) स्त्रीनामपुरोवर्त्तिसंमानपदं २. लक्ष्मीः (स्त्री.) ३. राधा । वि., धनाढ्या २. शोभान्विता ३. सुन्दरी ।
श्रीमान्, सं. पुं. (सं. श्रीमत्) नरनामपुरोवर्तिसंमानपदं, श्रीयुत, श्रीयुक्त । दे. 'श्रीमत्' वि. तथा सं. पुं. ।
श्रीरस, सं. पुं. (सं.) श्रीवेष्टः, दे. 'श्रीवास' ।
श्रीराग, सं. पुं. (सं.) षड्रागमध्ये तृतीयो रागः ।
श्रील, वि. (सं.) लक्ष्मीवत्, धनाढ्य २. श्री-शोभा,-युक्त-युत ३. अनश्लील, भद्र ।
श्रीवत्स, सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. विष्णुवक्षःस्थशुक्लवर्णदक्षिणावर्तरोमावली ।
—लांछन, सं. पुं. (सं.) विष्णुः ।
श्रीवास, सं. पुं. (सं.) पायसः, वृकधूपः, श्रीवेष्टः, सरलद्रवः दे. 'गंधाबिरोजा' तथा 'तारपीन' २. पद्मं ३. विष्णुः ४. शिवः ।
श्रीहर्ष, सं. पुं. (सं.) नैषधकाव्यरचयिता २. सम्राट् हर्षवर्द्धनः ।
श्रुत, वि. (सं.) आकर्णित, श्रवणगोचरतां गत, निशान्त २. प्र-,ख्यात ।
—कीर्ति, सं. स्त्री. (सं.) शत्रुघ्न-पत्नी । वि., कीर्तियुत, यशस्विन् ।
श्रुति, सं. स्त्री. (सं.) वेदः २. कर्णः, दे. 'कान' ३. श्रवणं ४. ध्वनिः ५. किंवदंती ।
—कटु, सं. पुं. (सं.) (काव्ये दोषभेदः) कर्कशशब्दप्रयोगः, दुःश्रवत्वम् ।
—पथ, सं. पुं. (सं.) कर्णः २. वेदोक्तमार्गः ।
श्रेणी, सं. स्त्री. (सं.) श्रेणिः (स्त्री.), कक्षा, वर्गः, छात्रगणः २. पंक्तिः-,क्तिका, विंजोली, आली-लिः, आवलि-ली:, राजी-जिः, वीथी-थिका, रेखा, लेखा, पाली-लिः (सब स्त्री.) ३. क्रमः, परंपरा, शृङ्खला ४. समव्यवसायिसंघः ।
—बद्ध, वि. (सं.) पंक्ति,-बद्ध-स्थ, वर्गीकृत ।
श्रेय, सं. पुं. [सं. श्रेयस् (न.)] कल्याणं, आनन्दः, मंगलं २. धर्मः, सुकृतं ३. मोक्षः, समृद्धिः (स्त्री.) ४. कीर्तिः (स्त्री.), यशस् (न.) । वि., भद्रतर, साधीयस्, उत्कृष्टतर २. उत्तम, श्रेष्ठ ३. शुभंकर, मंगल ४. कीर्तिकर, यशोदायक ।
श्रेयस्कर, वि. (सं.) कल्याण-हित-मंगल,-कारक-कारिन् ।

श्रेष्ठ, वि. (सं.) उत्तम, परम, प्रशस्ततम, वरेण्य, मुख्य, प्रथम, अग्रि(ग्री)य ३. पूज्य, मान्य ४. वृद्ध, ज्येष्ठ ५. अभिजात, अभिजनवत्, कुलीन ६. आर्य, महानुभाव, महाशय।

श्रेष्ठता, सं. स्त्री. (सं.) औदार्यं, माहात्म्यं, प्रधानता, भद्रता, आर्यत्वं, कुलीनता २. उत्तमता, उत्कृष्टता।

श्रोतव्य, वि. (सं.) दे. 'श्राव्य'।

श्रोता, सं. पुं. (सं.-तृ) श्रावकः, श्रवण-निशमन,-कर्तृ, आकर्णयितृ।

श्रोत्र, सं. पुं. (सं. न.) श्रवणः-णं, कर्णः, दे. 'कान'।

श्रोत्रिय, सं. पुं. (सं.) वेद,-विद्-पाठकः, छांदसः २. ब्राह्मणजातिभेदः।

श्रौत, वि. (सं.) श्रुति-वेद,-विहित-प्रतिपादित २. वैदिक, छांदस ३. यज्ञीय। (सं. न.) गार्हपत्याहवनीयदक्षिणाग्नयः (बहु.)।

—सूत्र, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञविधायकग्रन्थविशेषः।

श्लाघनीय, वि. (सं.) श्लाघ्य, प्रशंसनीय, दे. २. उत्तम, श्रेष्ठ।

श्लाघा, सं. स्त्री. (सं.) स्तुतिः-नुतिः (स्त्री.), प्रशंसा, दे. २. चाटु (पुं. न.), चाटूक्तिः (स्त्री.) ३. इच्छा।

श्लाघ्य, वि. (सं.) श्लाघनीय, दे.।

श्लिष्ट, वि. (सं.) संयुक्त, संलग्न २. आलिंगित ३. अनेकार्थक, श्लेषयुक्त (शब्दादि)।

श्लीपद, सं. पुं. (सं. न.) पादवल्मीकं, दे. 'फीलपाँव'।

श्लील, वि. (सं.) उत्तम, उत्कृष्ट २. शुभ, भद्र।

श्लेष, सं. पुं. (सं.) अनेकार्थकशब्दप्रयोगः, शब्दालंकारभेदः (सा.) २. परिरंभः, आलिंगनं ३. संयोगः, संधिः।

श्लेष्मा, सं. पुं. (सं.-मन्) कफः, दे. 'बलग़म'।

श्लोक, सं. पुं. (सं.) अनुष्टुप्छंदस् (न.) २. पद्यं, छंदस् (न.) ३. यशस् (न.) ४. प्रशंसा।

श्वसुर, सं. पुं. (सं.) दे. 'ससुर'।

श्वशुर्य, सं. पुं. (सं.) देवरः २. श्यालः।

श्वश्रू, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सास'।

श्वान, सं. पुं. (सं.) श्वन्, कुक्कुरः, दे. 'कुत्ता'।

—निद्रा, सं. स्त्री. (सं.) अगाढ़-कुक्कुर,-निद्रा-स्वापः।

श्वानी, सं. स्त्री. (सं.) कुक्कुरी, शुनी, सरमा, भषी, सारमेयी।

श्वापद, सं. पुं. (सं.) हिंस्रपशुः।

श्वास, सं. पुं. (सं.) प्राणाः-असवः (बहु.), दे. 'सांस' २. श्वासरोगः, दे. 'दमा'।

—धारण, सं. पुं. (सं. न.) श्वासरोधः, प्राणायामः।

श्वासोच्छ्वास, सं. पुं. (सं.) *प्राण,-गतिः क्रिया, श्वसितोच्छ्वासितम्।

श्वित्र, सं. पुं. (सं. न.) श्वेतं-त्रं, श्वेतकुष्ठम्। वि. (सं.) श्वेत २. श्वित्रिन्।

श्वित्री, वि. (सं.-त्रिन्) श्वित्र-श्वेतकुष्ठ,-युक्त।

श्वेत, वि. (सं.) धवल, गौर, शुक्र-क्ल, दे. 'सफेद' २. निर्मल, स्वच्छ ३. निर्दोष, निष्कलंक। सं. पुं. (सं.) शुक्लवर्णः २. शंखः ३. शुक्रग्रहः (सं. न.) रूप्यं, रजतम्।

—कुष्ठ, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'श्वित्र'।

—कृष्ण, वि. (सं.) सितासित, शुक्लश्याम २. पक्षविपक्ष।

—केतु, सं. पुं. (सं.) उद्दालकपुत्रः।

—प्रदर, सं. पुं. [सं. प्रदरभेदः (स्त्रीरोग)]।

श्वेतता, सं. स्त्री. (सं.) श्वेतिमन् (पुं.), शुक्लता, दे. 'सफेदी'।

श्वेतांबर, सं. पुं. (सं.) जैनसंप्रदायविशेषः, धवलवेषः।

ष

ष, देवनागरीवर्णमालाया एकत्रिंशो व्यंजनवर्णः, षकारः।

षंड, सं. पुं. (सं.) दे. 'शंड' (१-२)।

षट्, वि. (सं. षष्) सं. पुं., उक्ता संख्या, तद्बोधकांकश्च (६) २. दीपकरागपुत्रः।

—कर्म, सं. पुं. (सं.-र्मन् (न.) षट् ब्राह्मणकर्माणि (यजनं, याजनं, अध्ययनं, अध्यापनं, दानं, प्रतिग्रहः)।

—कोण, सं. पुं. (सं. न.) षड्भुजः। वि., षड्भुज।

—पद, सं. पुं. (सं.) षडंघ्रिः, षट्चरणः, भ्रमरः।

—पदी, सं. स्त्री. (सं.) भ्रमरी २. छन्दोभेदः (छप्पय) ३. यूका ।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) सांख्ययोगन्यायवैशेषिकमीमांसावेदांतशास्त्राणि (न. बहु.) ।

—शास्त्री, सं. पुं. (सं.-स्त्रिन्) षड्दर्शनविद् ।

षट्क, सं. पुं. (सं. न.) षट् इति संख्या २. षट्वस्तुसमूहः ।

षडंग, सं. पुं. (सं. न.) वेदांगषट्शास्त्राणि (शिक्षा, कल्पः, व्याकरणं, निरुक्तं, छन्दस् (न.), ज्योतिषं) २. षट् शरीरावयवाः (जंघे बाहू शिरो मध्यं षडंगमिदमुच्यते)) वि., षडवयवयुक्त ।

षडंघ्रि, सं. पुं. (सं.) भ्रमरः, षट्पदः ।

षडानन, सं. पुं. (सं.) कार्तिकेयः, षण्मुखः ।

षड्गुण, सं. पुं. (सं. न.) षाड्गुण्यं, राज्यरक्षणस्य षडुपायाः (=संधिः, विग्रहः, यानं, आसनं, द्वैधीभावः, संश्रयः) । वि., गुणषट्कयुत २. षड्गुणित ।

षड्ज, सं. पुं. (सं.) स्वरसप्तके प्रथमः, चतुर्थो वा स्वरः (संगीत) ।

षड्दर्शन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'षट्शास्त्र' ।

षड्यंत्र, सं. पुं. (सं.) कूटः-टं, कूट-, युक्तिः (स्त्री.)-उपायः उपजापः, *षडयंत्रं, *षट्चक्रं, कुमंत्रणा ।

षड्रस, सं. पुं. (सं.-रसं,-रसाः) रसषट्कं (= मधुरः, अम्लः, लवणः, कटुः, तिक्तः, कषायः) ।

षड्रिपु, सं. पुं. (सं. न.) षड्वर्गः, विकारषट्कं (= कामः क्रोधस्तथा लोभो मदमोहौ च मत्सरः) ।

षष्ठी, सं. स्त्री.(सं.) शुक्लकृष्णपक्षयोः षष्ठी तिथिः (स्त्री.) २. संबन्धविभक्तिः (व्या.) ३. कात्यायनी, दुर्गा ।

षाड्गुण्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'षड्गुण' सं. पुं. ।

षोडश, वि. तथा (सं.) 'सोलह' ।

—कला, सं. स्त्री. (सं. बहु.) चंद्रमण्डलस्य षडधिकदश भागाः (= अमृता, मानदा, पूषा, तुष्टिः, पुष्टिः, रतिः धृतिः, शशिनी, चन्द्रिका, कांतिः, ज्योत्स्ना, श्रीः, प्रीतिः, अंगदा, पूर्णा, पूर्णामृता = १६ कला) ।

—शृङ्गार, सं. पुं. (सं. बहु.) षोडशसंख्याकानि प्रसाधनसाधनानि ।
(अंग शुची, मंजन, वसन, मांग, महावर, केश ।
तिलक भाल, तिल चिबुकमें, भूषण, मेंहदीवेष ।
मिस्सी, काजल, अर्गजा, वीरी और सुगंध ।
पुष्पकली, युत होय कर तव नवसप्त निबन्ध ।)

—संस्कार, सं. पुं. (सं. बहु.) धार्मिककृत्यभेदः (= गर्भाधानपुंसवनसीमन्तोन्नयनजातकर्मनामकरणनिष्क्रमणान्नप्राशनचूडाकर्मकर्णवेधोपनयनवेदारंभसमावर्तनविवाहवानप्रस्थसन्न्यासांत्येष्टिसंस्काराः (स्वामी दयानन्द) ।

षोडशी, सं. स्त्री. (सं.) षोडशवर्षा युवतिः (स्त्री.) २. प्रेतक्रियाभेदः ।

षोडशोपचार, सं. पुं. (सं. बहु.) षोडशपूजनं, (=आसनं स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम् ।
मधुपर्काचमस्नानं वसनाभरणानि च ॥
गंधपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं वंदनं तथा ।
प्रयोजयेदर्चनायां उपचारास्तु षोडश ॥)

स

स, देवनागरीवर्णमालाया द्वात्रिंशो व्यंजनवर्णः सकारः ।

संकट, सं. पुं. (सं. न.) आपद्-विपद्-आपत्तिः-विपत्तिः (स्त्री.) २. दुःखं, कष्टं ३. जन,-समूहः-संमर्दः ४. गिरिद्वारं, दे. 'दर्रा' ५. संबाधपथः ।

संकटापन्न, वि. (सं.) आपद्-विपद्-आपत्ति,-ग्रस्त ।

संकटोत्तीर्ण, वि. (सं.) 'कष्ट-क्लेश-विपत्ति,-मुक्त-रहित ।

संकर, सं. पुं. (सं.) सम्मिश्रणं, संमिलनं २. सांकरिकः, मिश्रजः, संकरजः, ३. अधर्म्यविवाहः ।

संकरता, सं. स्त्री. (सं.) संमिश्रता, सांकर्य्यं, क्रमभंगः, व्यतिकरः, अस्तव्यस्तता ।

संकल, सं. स्त्री. (सं.) शृंखला, दे. ।

संकलन, सं. पुं. (सं. न.) संग्रहणं, संचयनं २. संचयः, राशिः, ३. परिगणनं, परिसंख्या ३. संग्रहः, संग्रहग्रन्थः ।

—करना, क्रि. स., संकल् (चु.), संग्रह् (क्र्. प. से.), समाहृ (भ्वा. प. अ.) ।

संकलित, वि. (सं.) संगृहीत, संचित २. परिसंख्यात, परिगणित ३. राशी-एकत्री,-कृत।
संकल्प, सं. पुं. (सं.) चिकीर्षा, भावः, विचारः, इच्छा, कामः २. विशिष्टमन्त्रपूर्वक,-दानं वितरणं-उत्सर्जनं ३. मंत्रविशेषः ४. निश्चयः, अवधारणं, अध्यवसायः।
—करना, क्रि. स., निश्चि (स्वा. प. अ.), दृढं अवधृ (चु.), संक्लृप् (प्रे.) २. संकल्पमंत्रपूर्वकं वितॄ (भ्वा. प. से.), दा।
संकाश, वि. (सं.) तुल्य, सदृश २. निकट-समीप, वर्तिन्। (सं. पुं.) सामीप्यं, नैकट्यम्।
संकीर्ण, वि. (सं.) संबाध, संकट, संकुचित २. मिश्रित, संमिश्र, संसृष्ट ३. क्षुद्र, तुच्छ ४. संकुल, निचित, व्याप्त, समा-आ,-कीर्ण।
संकीर्णता, सं. स्त्री. (सं.) संबाधता २. मिश्रितत्वं ३. संकुलता ४. क्षुद्रता, नीचता।
संकीर्तन, सं. पुं. (सं. न.) (देवादीनां) गुणगानं, कीर्तिकथनम्।
संकुचित, वि. (सं.) संकीर्ण, संबाध २. सलज्ज, सत्रप ३. कदर्य, किंपचान ४. संहृत, संपिंडित, आकुंचित ५. मुद्रित, मीलित, मुकुलित।
संकुल, वि. (सं.) आ-सं,-कीर्ण, निचित, व्याप्त, कलिल, गहन, संभृत, सं-परि,-पूर्ण, पूरित। सं. पुं. (सं. न.) युद्धं २. जन,-ओघः-संमर्दः ३. पशुकुलं, गो,-वृंदं-कुलं, यूथं, निवहः ४. असंगतवाक्यम्।
संकेत, सं. पुं. (सं.) इङ्गितं, संज्ञा, संज्ञानं, अंगविक्षेपः, प्रज्ञप्तिः (स्त्री.), आकारः, अभिप्रायव्यंजकचेष्टा २. (प्रेमिणोः) संकेतनिकेतनं, संमिलनस्थानं ३. शृंगारचेष्टा, हावः, विभ्रमः, विलासः ४. चिह्न ५. उपक्षेपः, आकूतं, उपन्यासः।
—करना, क्रि. स., इंगितेन सूच् (चु.), उपक्षिप् (तु. प. अ.), साकूतं उपन्यस् (दि. प. से.)।
संकोच, सं. पुं. (सं.) आकुंचनं, संकोचनं, समाकर्षः, संपीडनं २. लज्जा, त्रपा ३. निश्चयाभावः, विकल्पः, संशयः ४. संक्षेपः-पणम्।
संकोचन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'संकोच' (१)।
संकोचना, क्रि. स. (सं. संकोचनं) संकुच् (प्रे.), आकुंच् (प्रे.), अल्पीकृ, संहृ (भ्वा. प. अ.)। क्रि. अ., लज्ज् (तु. आ. से.) त्रप् (भ्वा. आ. से.)।
संकोची, वि. (सं.-चिन्) लज्जालु, लज्जाशील, विनीत, शालीन।
संक्रमण, सं. पुं. (सं. न.) गमनं, व्रजनं २. भ्रमणं, पर्यटनं ३. सूर्यस्य राश्यंतरप्रवेशः।
संक्रांत, वि. (सं.) अतीत, गत २. प्रविष्ट, निविष्ट ३. प्राप्त, गृहीत ४. स्थानान्तरित ५. प्रति,-फलित-बिम्बित।
संक्रांति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'संक्रमण' (३)। २-३. सूर्यसंक्रमण,-समयः-दिवसः।
संक्रामक, वि. (सं.) स्पर्श,-जन्य-संचारिन् (रोग)।
संक्षिप्त, वि. (सं.) संहृत, समस्त, संकुचित, लघु, अल्पीभूत।
—करना, क्रि. स., संक्षिप् (तु. प. अ.), समस् (दि. प. से.), समाहृ-संहृ (भ्वा. प. अ.)।
—लिपि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शार्टहैंड'।
संक्षेप, सं. पुं. (सं.) सारः-रं, संग्रहः, समासः, समाहारः।
संक्षेपण, सं. पुं. (सं. न.) संकोचनं, संहरणं २. संचयनं, संग्रहणम् ३. प्रासनं, क्षेपणम्।
संक्षेपतः, अव्य. (सं.) संक्षेपेण, समासेन, साररूपेण।
संख, सं. पुं., दे. 'शंख' (१-२)।
संखिनी, सं. स्त्री., दे. 'शंखिनी'।
संखिया, सं. पुं. (सं. शृङ्गिकं) फेनाश्मन, आखु-गौरी,-पाषाणः, शत-,मल्लः, करवीरा, कुनटी, नाग,-जिह्विका-मातृ (स्त्री.)।
संख्या, सं. स्त्री. (सं.) गणना २. अंकः ३. बुद्धिः (स्त्री.) ४. विचारणा।
—करना, क्रि. स., गण् (चु.) संख्या (अ. प. अ.)।
संग[1], सं. पुं. (सं.) मेलः, संमिलनं, समागमः २. संगतं-तिः (स्त्री.), साहचर्यं, संसर्गः, संवासः, संपर्कः ३. विषय,-अनुरागः-आसक्तिः (स्त्री.) ४. सरित्संगमः। क्रि. वि., सह, सार्द्धं, साकं, समं (तृतीया के साथ)।
—करना, क्रि. अ., संगम् (भ्वा. आ. अ.), सहचर् (भ्वा. प. से.), संवस् (भ्वा. प. अ.)।
संग[2], सं. पुं. (फ़ा.) पाषाणः, प्रस्तरः, दे. 'पत्थर'। वि., कीकस, कर्कर, कक्खट, २. कठोर।
—ज़राअत, सं. पुं. (फ़ा.+अ.) कर्षण-, पाषाणः-प्रस्तरः।

—तराश, सं. पुं. (फ़ा.) मूर्ति-प्रतिमा,-कारः, आश्मिकः, औपलिकः ।
—तराशी, सं. स्त्री., मूर्त्ति-प्रतिमा,-निर्माणम् ।
—दिल, वि. (सं.) पाषाण-कठोर,-हृदय, निर्दय ।
—दिली, सं. स्त्री., निर्दयता, निष्करुणता ।
—मर्मर, सं. पुं. (फ़ा.+अ.) राजाश्मन् (पुं.), मणिशिला, मर्मर,-उपलः-प्रस्तरः ।
—मूसा, सं. पुं. (फ़ा.) *मूषोपलः, *मूषाश्मन् (कृष्णश्लक्ष्णप्रस्तरभेदः) ।
संगठन, सं. पुं. (सं. सं+हिं. गठना) संघटनं-ना, संव्यवस्थानं, संविधानं, दे. 'संघटन' २. संस्था, संघः ३. ऐक्यं, संधिः, सं,-हतिः (स्त्री.) योगः-गमः ।
संगठित, वि. (हिं. संगठन) संघटित, संविहित, संव्यवस्थापित ।
संगत, सं. स्त्री. (सं. न.) दे. 'संग' (२) । २. सहचरः, संगिन् ३. मैथुनम् ।
—करना, क्रि. अ., दे. 'संग करना' ।
संगतरा, सं. पुं. (पुर्त.) (वृक्ष) नारंगः, नागरंगः, ऐरावतः । (फल) नारंगं इ., दे. 'नारंगी' ।
संगति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'संग' (१-२) । ३. मैथुनं ४. संबन्धः ५. संवादः, विरोधाभावः, आनुरूप्यं ६. ज्ञानं ७. युक्तिः (स्त्री.) ।
संगती, सं. पुं. (सं. संगतं>) सहचरः, मित्रं, सहायः ।
संगम, सं. पुं. (सं.) दे. 'संग' (१-२) । ३. वेणी-णिः (स्त्री.) सरित्,-संयोगः-समागमः-मेलकः ४. मैथुनं ५. ग्रहयोगः (ज्यो.) ।
संगर, सं. पुं. (सं.) युद्धं २. प्रतिज्ञा ३ः नियमः ४. आपद् (स्त्री.) ५. अंगीकारः ६. विषम् ।
संगसार, सं. पुं. (फ़ा.) *उपलभारः, प्राणदंडभेदः । वि., नष्ट, ध्वस्त ।
संगिनी, सं. स्त्री. (हिं. संगी) सहचरी, सहगामिनी २. पत्नी ।
संगी, सं. पुं. (हिं. संग) सहचरः, सहायः २. मित्रं ३. बन्धुः ।
संगीत, सं. पुं. (सं. न.) प्रेक्षणार्थं नृत्यगीतवाद्यम् ।
—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) गंधर्व,-विद्या-वेदः ।
संगीन, सं. स्त्री. (फ़ा.) *नाल्यस्त्रसंगिनी । वि., अश्म-पाषाण,-मय-रचित २. स्थूल ३. स्थायिन्, दृढ ४. घोर, विकट ५. संकीर्ण ।

संगृहीत, वि. (सं.) संचित, समाहृत, एकत्रीकृत २. संकलित, परिसंख्यात ।
संग्रह, सं. पुं. (सं.) सञ्चयः-यनं, संग्रहणं, समा,-हारः-हृतिः (स्त्री.)-हरणं, संकलनं, राशी-एकत्री,-करणं २. संग्रहग्रंथः ३. संक्षेपः ४. मुष्टिः (पुं. स्त्री.) ५. निग्रहः, संयमः ६. रक्षा ७. बद्धकोष्ठः, दे. 'कब्ज़' ८. स्वीकृतिः (स्त्री.) ९. ग्रहणम् ।
संग्रहणी, सं. स्त्री. (सं.) ग्रहणी (अजीर्णभेदः) ।
संग्रहणीय, वि. (सं.) संचेतव्य, संचयनीय, निचेय ।
संग्रहालय, सं. पुं. (सं.) अद्भुतालयः ।
संग्रहीता, वि. (सं.-तृ) संग्राहक, संग्रहिन्, संचेतृ, संचयिन् ।
संग्राम, सं. पुं. (सं.) रणं, आहवः, युद्धं, दे. ।
—तुला, सं. स्त्री. (सं.) युद्धपरीक्षा ।
—भूमि, सं. स्त्री. (सं.) युद्धक्षेत्रम् ।
—मृत्यु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) वीरगतिः (स्त्री.), रणमरणम् ।
संघ, सं. पुं. (सं.) सभा, समाजः, समितिः (स्त्री.), गोष्ठी, परिषद्–संसद् (स्त्री.) २. समूहः, गणः, वृंदं, दल ३. प्राचीनप्रजातंत्रभेदः ४. बौद्धश्रमणसमाजः ५. विहारः, मठः-ठम् ।
—चारी, वि. (सं.-रिन्) गण-यूथ,-गामिन् । सं. पुं., मीनः ।
—शासन, सं. पुं. (सं. न.) *संयुक्ततंत्रम् ।
संघटन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'संगठन' (१-३) ४. निर्माणं, रचनं ५. घटना, रचना ।
संघट्टन, सं. पुं. (सं. न.) संघर्षः-र्षणं २. संघट्टः, संमर्दः ३. रचना, घटना ४. संमिलनं, संयोगः ५. दे. 'संगठनम्' ।
संघर्ष, सं. पुं. (सं.) संघृष्टिः (स्त्री.), सं-अभि-आ,-घर्षः-र्षणं, आ-वि,-घट्टनं, परस्पर,-घर्षणं-मर्दनं २. प्रति-,स्पर्द्धा, विजिगीषा, प्रतियोगिता, अहमहमिका ३. सं,-घट्टः-मर्दः ४. युद्धम् ।
संघर्षण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'संघर्ष' ।
संघात, सं. पुं. (सं.) समूहः, वृंदं २. हननं, वधः ३.आघातः ४. निविडसंयोगः ५. आवासः ।
संघाती, सं. पुं. (सं. संघाः>) सहचरः, मित्रम् ।
संघाराम, सं. पुं. (सं.) आश्रमः, विहारः, मठः-ठम् ।

संचय, सं. पुं. (सं.) राशिः, निकरः, पुंजः-जिः (स्त्री.) २. आधिक्यं, बाहुल्यं ३. दे. 'संग्रह' (१)।

संचयी, वि. (सं.-यिन्) संचेतृ-संग्रहीतृ, संचय-संग्रह,-कारक २. कृपण।

संचार, सं. पुं. (सं.) सं-वि,-चरणं-चलनं, व्रजनं, गमनं, अटनं, भ्रमणं, २. प्रचारः, प्रसारः, प्रचरणं, प्रसरणं ३. पथप्रदर्शनं ४. प्र,-चालनं-चारणं-सारणं ५. ग्रहाणां राश्यंतर-प्रवेशः।

संचारिका, सं. स्त्री. (सं.) कुट्ट(ट्टि)नी, चुंदी, दूती-तिका।

संचारित, वि. (सं.) प्रचालित, प्रसारित।

संचारी, वि. (सं.-रिन्) संचरण-गमन-गति,-शील, चल २. परिवर्तनशील, परिवर्तिन्। सं. पुं. (सं.) पवनः २. व्यभिचारिभावः (सा.) ३. आगंतुकः ४. धूपः, दे.।

संचालक, सं. पुं. (सं.) परिचालकः, चाल-यितृ २. अधिष्ठातृ, अध्यक्षः ३. निर्वाहकः, व्यवस्थापकः।

संचालन, सं. पुं. (सं.) परि-,चालनं, प्रेरणं, प्रवर्तनं २. निर्वाहः, व्यवस्था ३. अध्यक्षता, निरीक्षणं ४. नियंत्रम्।

संचित, वि. (सं.) दे. 'संगृहीत' (१)।

संजय, सं. पुं. (सं.) धृतराष्ट्रसचिवः २. शिवः ३. ब्रह्मन् (पुं.)।

संजाफ़, सं. स्त्री. (फ़ा.) अंचलः, दशा, चीरी-रिः(स्त्री.)-वस्त्रप्रांतः।

संजीदगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) गंभीरता, गांभीर्यम्।

संजीदा, वि. (फ़ा.) शांत, ग(गं)भीर २. बुद्धिमत्।

संजीवक, वि. (सं.) नव-पुनर् ,-जीवनदायक, उज्जीवकः।

संजीवन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'संजीवक' २. सम्यक् प्राणधारणं ३. नरकविशेषः।

संजीवनी, वि. स्त्री. (सं.) उज्जीविका, नव-पुनर् ,-जीवनदात्री। सं. स्त्री.(सं.) उज्जीवकौष-धविशेषः (कल्पित) २. भेषजभेदः।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) मृतकजीवनप्रद-कल्पितविद्याविशेषः।

संज्ञा, सं. स्त्री. (सं.) चेतना, चैतन्यं, वेदनं, बोधः २. अभिधा-धानं, आख्या, दे. 'नाम' ३. वस्तुबोधकः शब्दः (व्या.), नामन् (न.), विशेष्यं ४. इंगितं, संज्ञानं, संकेतः।

—हीन, वि. (सं.) मूर्च्छित दे., अ-विगत,-चेतन, मूर्च्छापन्न।

संड-डा, सं. पुं. [सं. शं(षं)डः] वृषभः २. पीनो मानवः।

—मुसंड-डा, वि. (सं.+अनु.) मांसल, पीन, उपचित, दृढ़ांग (-गी स्त्री.)।

संडसा-सी, सं. पुं. स्त्री. (सं.) दे. 'संडासा-सी'

संडास, सं. पुं. (?) शौचकूपः, दे. 'पाखाना'।

संडासा सं. पुं. (सं. संदशः) संदंशकः, कंक,-मुखः(-खं)-वदनम्।

संडासी, सं. स्त्री. (हिं. संडासा) संदंशिका, त्रुचु(चू)टी।

संत, सं. पुं. (सं. सत्) महात्मन्, धर्मात्मन्, हरिभक्तः २. विरक्तजनः। वि., भद्र, धार्मिक, श्रेष्ठ।

—समागम, सं.पुं. (सं.) सत्-साधु,-संगः-संगतिः।

संतत, अव्य. (सं.-तं) सदा, सर्वदा, सततं, निरंतरम्।

संतति, सं. स्त्री. (सं.) संतानः, दे.।

—निरोध, सं. पुं. (सं.) गर्भनिरोधः, परि-वारायोजनम्।

—होम, सं. पुं. (सं.) पुत्रेष्टियज्ञः।

संतप्त, वि. (स.) उत्-अति-सु,-तप्त, ज्वलित, दग्ध २.अति, दुःखित-पीडित-अर्दित ३.विषण्ण, विमनस्क ४. श्रांत, क्लांत, श्रमार्त्त।

संतरा, सं. पुं., दे. 'संगतरा'।

संतरी, सं. पुं. (अं. सैंट्री) दे. 'सिपाही' २. द्वारपालः।

संतान, सं. पुं. (सं.) संततिः-प्रसूतिः (स्त्री.), प्रजा, प्रसवः, अपत्यं, तोकं, बीजं २. अन्वयः, वंशः ३. कल्पवृक्षः ४. विस्तारः। (सं. न.) अस्त्रभेदः।

संताप, सं. पुं. (सं.) (अनलादिजः) तापः, संज्वरः, प्रोषः, उष्णः-णं, दाहः, ऊष्मन् घर्मः २. कष्टं, व्यथा ३. आधिः, मनोव्यथा ४. ज्वरः ५. शत्रुः ६. दाहनामको रोगः।

—देना, क्रि. स., परि-सं,-तप् (प्रे.), अर्द् (प्रे.), पीड् (चु.) २. दे. 'जलाना'।

संतापित, वि. (सं.) दे. 'संतप्त' (२)।

संतापी, वि. (सं.-पिन्) दुःखदायिन्।

संतुष्ट, वि. (सं.) सं,-तृप्त, परि-, तुष्ट, वितृष्ण,

कृतार्थ २. अनुनीत, तोषित, प्रीत, सांत्वित, प्रसादित ।

संतोष, सं. पुं. (सं.) सं-परि,-तोषः-तुष्टिः (स्त्री.), वितृष्णा, शांतिः-तृप्तिः (स्त्री.), प्रीतिः, २. आनन्दः, हर्षः, सुखम् ।

—करना, क्रि. अ., संतुष्-संतृप् (दि. प. अ.), नंद् (भ्वा. प. से.) ।

संतोषी, वि. (सं.-षिन्) दे. 'संतुष्ट' (१) ।

संथा, सं. पुं. (सं. संहिता > ?) आह्निकं, दैनिक,-पाठः ।

संदर्भ, सं. पुं. (सं.) रचना, घटना, निर्मितिः (स्त्री.) २. प्रस्तावः, लेखः, प्र-नि,-बंधः ३. भाष्य-टीका,-आत्मकग्रन्थः ४. लघु,-ग्रन्थः-पुस्तकं ५. संग्रहः, संकलनं (ग्रंथ) ६. विस्तारः ।

संदल, सं. पुं. (फ़ा.) मलयजं, श्रीखंडं, चंदनं, दे. ।

संदली, वि. (फ़ा. संदल) चंदनवर्ण, ईषत्पीत २. चंदन,-मय-निर्मित ।

संदिग्ध, वि. (सं.) संदेह-संशय,-युक्त-पूर्ण, निश्चयशून्य, सविकल्प, विकल्प्य ।

—व्यक्ति, सं.पुं.(सं. स्त्री.) शंकित-शंक्य,-जनः ।

संदूक़, सं. पुं. (अ.) संपुटः, पेटा, मंजूषा, समुद्गः ।

संदूकचा, सं. पुं. } (अ.+फ़ा.) पेटिका, समुद्गकः ।
संदूकची, सं. स्त्री. } करण्डकः, संपुट(टि)कः ।

संदेश, सं. पुं. (सं.) संवादः, वार्ता, वाचिकं, दिष्टं, आख्यायनी २. वंगप्रांतीयमिष्टान्नभेदः ।

—भेजना, क्रि. स., संदिश् (तु. प. अ.), वाचिकं-दिष्टं प्रेष् (प्रे.) ।

—हर, सं. पुं., वार्ताहरः, वार्तिकः, सांदेशिकः, दूतः, आख्यायकः ।

संदेसा, सं. पुं., दे. 'संदेश' (१) ।

संदेह, सं. पुं. (सं.) संशयः, विचिकित्सा, द्वापरः, विकल्पः, द्वैधं, आशंका, निश्चय-निर्णय-, अभावः २. प्रत्यय-विश्वास,-अभावः ५. अर्थालंकारभेदः (सा.) ।

संदोह, सं. पुं. (सं.) समूहः, निकरः ।

संधान, सं. पुं (सं. न.) अभिषवः, संधानी, मद्यसज्जीकरणं, संधिका २. चापे बाणयोजन ३. मदिराभेदः ४. संघट्टनं, संयोजनं ५. अन्वेषणं ६. सञ्जीवनं, दे. ७. संधिः ८. अवदंशः ९. कांजिकं १०. संधानिका ।

संधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) संयोगः, संमिलनं, संगमः, संहतिः (स्त्री.) २. ग्रंथिः, पर्वन्(न.), संधिस्थानं ३. मित्रीकरणं, राज्यरक्षायाः गुणविशेषः (राजनीति) ४. मैत्री, सख्यं ५. वर्णद्वयमेलनं, संहिता (व्या.) ६. रूपकांगभेदः (सा.) ७. दे. 'सेंध' ८. युगसंधिः ९. वयःसन्धिः ।

—चौर, सं. पुं. (सं.) संधिहारकः ।

—च्छेद, सं. पुं. (सं.) संहितपदविश्लेषणम् ।

—जीवक, सं. पुं. (सं.) विटः, संचारकः ।

—बंधन, सं. पुं. (सं.) स्नसा, स्नायुबंधः ।

—वेला, सं. स्त्री. (सं.) अहोरात्रमिलनसमयः, संधिकालः २. सायम् ।

संध्या, सं. स्त्री. (सं.) संधिकालः, अहोरात्र-संयोगसमयः २. सायंकालः, दे. ३. उपासनाभेदः ४. युगसंधिः ।

—कालिक, वि. (सं.) संध्याकालीन, विकालसंधिकाल,-सम्बन्धिन् ।

—बल, सं. पुं. (सं.) निशाचरः, राक्षसः ।

—राग, सं. पुं. (सं.) संध्या-विकाल-विकालक,-रक्तिमन्-शोणिमन्-रागः ।

—वंदन, सं. पुं. (सं. न.) संध्योपासनम् ।

संनिकर्ष, सं. पुं. (सं.) सन्निधिः, सन्निधानं, सामीप्यं २. इन्द्रियार्थसम्बन्धः ।

संनिपात, सं. पुं. (सं.) वातपित्तकफानां युगपद् विकारः, विकारोत्पादकं मिलितदोषत्रयं २. समाहारः, समूहः ३. समवपातः ४. समुड्डयनं ५. संयोगः, मिश्रणम् ।

संनिवेश, सं. पुं. (सं.) समुपवेशः-शनं २. उपवेशः-शनं, आसितं, निषदनं ३. आ-नि,-धानं, स्थापनं ४. प्रतिबन्धनं, उत्खचनं, प्रणिधानं ५. गृहं ६. समूहः ७. रचना ८. संस्थानं ९. प्रतिमादीनां स्थापनम् ।

संनिहित, वि. (सं.) निकट-समीप,-स्थ-वर्तिन् २. (समीपे) स्थापित ।

संन्यास, सं. पुं. (सं.) आर्यजीवनस्य चतुर्थाश्रमः, प्रव्रज्या, वैराग्यं २. काम्यकर्मन्यासः (गीता) ३. जटामांसी ।

संन्यासी, सं. पुं. (सं.-सिन्) चतुर्थाश्रमिन्, परि,-व्राजकः-व्राज्, श्रमणः, भिक्षुः, मस्करिन्, कर्मन्दिन्, पाराशरिन् ।

संपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) विभवः, वैभवं, ऐश्वर्यं, अर्थः, धनं, वित्तं, श्रीः-लक्ष्मीः-समृद्धिः (स्त्री.)

२. रिक्थं, दायः ३. सिद्धिः (स्त्री.), सफलता, पूर्णता ४. लाभः, प्राप्तिः (स्त्री.) ।

संपद्-दा, सं. स्त्री. (सं. संपद्) दे. 'संपत्ति' ।

संपन्न, वि. (सं.) धनाढ्य, धनिक, धनिन् दे. २. सिद्ध, निष्पन्न, पूर्ण ३. सहित, युक्त ४. संमृद्ध, धनधान्ययुत ।

संपराय सं. पुं. (सं.) उत्तरकालः २. युद्धं ३. आपद् (स्त्री.) ।

संपर्क, सं. पुं. (सं.) संसर्गः, सम्बन्धः, साहचर्यं २. मिश्रणं दे. ३. संयोगः, मिलनं ४. स्पर्शः ५. योगः, संकलनं (गणित) ।

संपात, सं. पुं. (सं.) सहपतनं २. समागमः ३. संगमस्थानं ४. संवृत्तिः-समापत्तिः (स्त्री.) ।

संपादक, सं. पुं. (सं.), पत्र-पत्रिकादीनां-संपादयितृ, संपादनकरः २.साधकः, निष्पादकः ३. अनुष्ठातृ, कर्तृ, निर्वर्तयितृ ।

संपादकता, सं. स्त्री. (सं.) सम्पादकत्वम् ।

संपादकीय, वि. (सं.) १-२ सम्पादक,-लिखित-सम्बन्धिन् ।

संपादन, सं. पुं. (सं. न.) मुद्रणार्थं सज्जीकरणं २. परिकल्पनं, प्रसाधनं, सज्जीकरणं ३.साधनं निष्पादनं, समापनं ४. करणं, निर्वर्तनं, अनुष्ठानम् ।

संपादित, वि. (सं.) मुद्रणार्थं सज्जीकृत २. निष्पादित, पूर्त्ति गमित-नीत, संपूरित, साधित ३. प्रस्तुत, सज्ज ।

संपुट, सं. पुं. (सं.) समुद्गकः, करंडकः, संपुट-(टि)का, मंजूषा, दे. 'डिब्बा' २. अञ्जलिः, कर-हस्त-पाणि,-पुटः ३.*द्रोणं, पत्रपुटः, दे.'दोना'।

संपूर्ण, वि. (सं.) व्याप्त, पूरित, पूर्ण, आकर्णभृत २. समग्र, समस्त,सकल,कृत्स्न ३. समाप्त, अवसित । सं. पुं., सप्तस्वरयुतो रागः (संगीत) ।

संपूर्णतः / **संपूर्णतया**, } क्रि. वि. (सं.) साकल्येन, सामस्त्येन२.सम्यक् ,सुष्ठु(सब अव्य.)

संपूर्णता, सं. स्त्री. (सं.) समग्रता, कात्स्न्र्यं, साकल्यं २. समाप्तिः (स्त्री.), अवसानम् ।

संपृक्त, वि. (सं.) मिश्र, मिश्रित २. खचित ३. स्पृष्ट ४. संसृष्ट, जातसम्पर्क ।

सँपेरा, सं. पुं. (हिं. साँप) अ(आ)हितुंडिकः, गारुडिकः, जांगलिकः, जांगलिः, व्यालग्राहिन् ।

सँपोला, सं. पुं. (हिं. साँप) अहि-सर्प,-शावः-शावकः ।

संप्रति, अव्य. (सं.) अधुना, इदानीं २. अद्यत्वे, वर्तमाने ।

संप्रतिपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) ऐकमत्यं, सांमत्यं २. स्वीकृतिः (स्त्री.) ३. लाभः, प्राप्तिः (स्त्री.) ४. प्रवेशः ५. सम्यक् बोधः ६. कार्यसिद्धिः (स्त्री.) ।

संप्रदान, सं. पुं. (सं. न.) दानं, वितरणं, विश्राणनं, प्रतिपादनं २. कारकभेदः, चतुर्थी (व्या.) ३. दीक्षा, मंत्रोपदेशः ४. उपहारः ।

संप्रदाय, सं. पुं. (सं.) मतं, धर्म,-शाखा-पथः-मार्गः २. आम्नायः गुरुपरंपरागतसदुपदेशः, गुरुमंत्रः ३. अनुयायिमंडलं ४. प्रथा, रीतिः (स्त्री.) ।

संप्रदायी, वि. (सं.-यिन्) मतावलंबिन्, मतानुयायिन् ।

संबंध, सं. पुं. (सं. न.) संयोगः, संश्लेषः, सम्मिलनं २. सम्पर्कः, संसर्गः ३. बन्धुता, सगोत्रता, सजातीयता, ज्ञातित्वं ४. प्रगाढसख्यं ५. षष्ठी, विभक्तिभेदः (व्या.) ।

संबंधक, वि. (सं.)-सम्बन्धिन्,-विषयक २. उपयुक्त, योग्य । सं. पुं. (सं.) जन्मविवाहसख्यादिजनितः सम्बन्धः ।

संबंधी, वि. (सं.-धिन्) संबन्धविशिष्ट २. संपृक्त, संसृष्ट ३. प्रसंगगत । सं. पुं. (सं.) बंधुः, बांधवः, सगोत्रः, ज्ञातिः (स्त्री.) २. दे. 'समधी' ।

संबद्ध, वि. (सं.) संयुक्त, संश्लिष्ट, संलग्न २. सम्बन्धविशिष्ट ३. (अ-) पिहित, संवृत ४. संग्रथित, सन्नियंत्रित ।

संबल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) पाथेयं, संबलः-लम् ।

संबाध, वि. (सं.) संकीर्ण, संकुचित २. संकुल, परिपूर्ण । सं. पुं. (सं.) विघ्नः, बाधः, बाधा २. जन,-समुदायः-समूहः-संमर्दः-ओघः ।

संबोधन, सं. पुं. (सं. न.) आभिमुख्यविधानं, आमंत्रणं, सम्बुद्धिः (स्त्री.), आकारणं, आह्वानं २. आह्वानार्थकः शब्दरूपभेदः (व्या., उ. राम !) ३. प्रबोधनं निद्रात उत्थापनं ४.आख्यापनं, ज्ञापनं. ५. आकाशभाषितं (नाटक) ।

सँभलना, क्रि. अ. (हिं. सम्भालना) उत्तम्भ्-उपस्तंभ्-धृ-भृ (सब कर्म.) २. निश्चलं-दृढं स्था (स्वा. प. अ.) ३. सावधान-अवहित-जागरूक (वि.) भू ४. पादप्रहारपराजयादिभ्यो रक्ष्-मुच् (कर्म.) ५. उत्कर्षं या (अ. प. अ.),

अभिवृध् (भ्वा. आ. से.) ६. पुनः स्वास्थ्यं लभ् (भ्वा. आ. अ.), प्रकृतिं आपद् (दि. आ. अ.)।

संभव, सं. पुं. (सं.) उत्पत्तिः (स्त्री.), जन्मन् (न.) २. मेलः, समागमः ३. शक्यता, सम्भवनीयता। वि. (सं.>) शक्य, सम्भवनीय, सम्भाव्य २. साध्य, सम्पाद्य।

संभवतः, क्रि. वि. (सं.) कदाचित्, स्यात्, सम्भाव्यते, शक्यते (विधिलिङ् से भी)।

संभार, सं. पुं. (सं.) संग्रहणं, सञ्चयनं, समाहरणं ३. सामग्री, आवश्यकवस्तूनि (न. बहु.) ३. सम्पत्तिः (स्त्री.) ४. राशिः, चयः ५. भरणपोषणम्।

सँभाल, सं. स्त्री. (सं. सम्भारः) पोषणं, भरणं, संवर्द्धनं, २. रक्षणं, त्राणं, पालनं ३. पर्यवेक्षणं, अवेक्षा-क्षणं, अधिष्ठानं, कार्यनिर्वाहणम्।

सँभालना, क्रि. स. (हिं. सँभाल) उत्-उप-सं-स्तंभ् (क्र. प. से., प्रे.), आ-अव-लंब् (भ्वा. आ. से.), सं-,धृ (भ्वा. प. अ., चु.), २. ग्रह् (क्र्. प. से.), धृ, विरम् (प्रे.), रुध् (रु. उ. अ.) (पादप्रहारपराजयादिभ्यो) रक्ष् (भ्वा. प. से.)-त्रै (भ्वा. आ. अ.) ३. संवृध् (चु.), पुष् (क्र.) ४. उपकृ, साहाय्यं विधा (जु. उ. अ.) ५. अधिष्ठा (भ्वा. प. अ.), निर्वह्-सम्पद् (प्रे.) ६. मनोवेगं नियम् (भ्वा. प. अ.) ७. पर्यवेक्ष् (भ्वा. आ. से.) ८. प्रोत्सह् समाश्वस् (प्रे.)। सं. पुं., आ-अव,-लंबः-लंबनं, धारणं, उत्तम्भनं २. ग्रहणं ३. रक्षणं, त्राणं ४. संवर्धनं, पोषणं ५. साहाय्यदानं, उपकारः ६. अधिष्ठानं, निर्वाहणं ७. पर्यवेक्षणं ८. प्रोत्साहनं इ.।

सँभालने योग्य, वि. धारयितव्य, उत्तम्भनीय, रक्ष्य, त्रातव्य, पोष्य, पर्यवेक्षणीय, इ.।

सँभालनेवाला, सं. पुं., उत्तंभकः, धारकः, आधारः, आश्रयः, आलम्बनं, पोषकः, संवर्द्धकः, रक्षकः, प्रोत्साहकः इ.।

सँभाला हुआ, वि., संस्तंभित, धृत, धारित, रक्षित, संवर्धित, उपकृत, पर्यवेक्षित, प्रोत्साहित इ.।

संभावना, सं. स्त्री. (सं.) शक्यता, सम्भवनीयता, सम्भाव्यता, सम्भवः २. आदरः, सत्कारः ३. प्रतिष्ठा, मानः ४. कल्पना, अनुमानम्।

संभावित, वि. (सं.) दे. 'संभव' वि. २. कल्पित, उद्भावित ३. आदृत, सम्मानित।

संभाव्य, वि. (सं.) दे. 'संभव' वि.।

संभाषण, सं. पुं. (सं.) आ-सं,-लापः, वार्तालापः, सं,-कथा-वादः-भाषा २. प्रवचनं, व्याख्यानम्।

संभूत, वि. (सं.) (सह–) जात-उत्पन्न-उद्भूत।

संभूति, सं. स्त्री. (सं.) उद्भवः, उत्पत्तिः (स्त्री.) २. विभूतिः-वृद्धिः (स्त्री.) ३. क्षमता।

संभोग, सं. पुं. (सं.) रतिः (स्त्री.), मैथुनं दे. २. सम्यक्,–उपयोगः–व्यवहारः–प्रयोगः ३. संयोगशृंगारः (सा.)।

संभ्रम, सं. पुं. (सं.) व्याकुलता, वैक्लव्यं, व्यग्रता २. त्वरा-रिः (स्त्री.), रभसः, रभस् (न.), आ-सं,-वेगः ३. आदरः, मानः ४. भ्रांतिः (स्त्री.), भ्रमः, स्खलितम्।

संभ्रांत, वि. (सं.) व्याकुल, व्यग्र, उद्विग्न २. प्रतिष्ठित, संमानित।

—जन, सं. पुं. (सं.) सम्मान्य-पूज्य,-जनः-मनुष्यः।

—मना, वि. (सं.-नसं) वि-सं,-भ्रान्त-क्षुब्ध, आकुल, व्याकुल।

संमत, वि. (सं.) संप्रतिपन्न, २. समादृत, संमानित।

संमति, सं. स्त्री. (सं.) संमतं, ऐकमत्यं, मतैक्यं, सांमत्यं, ऐक्यं २. अनुमतिः (स्त्री.)-तं, अनुज्ञा, अनुमोदनं ३. मतं-तिः (स्त्री.), अभिप्रायः, आशयः, बुद्धिः (स्त्री.)।

संमन, सं. पुं. (अं. संमन्स्) (धर्माधिकारिणः) आह्वानपत्रम्।

संमर्द, सं. पुं. (सं.) युद्धं २. विवादः ३. जन,-समुदायः-संकुलम्।

संमान, सं. पुं. (सं.) सम्-,आदरः, सत्कारः, पूजा, अर्हणा, अभ्यर्चनं, संभावना, प्रतिष्ठा, गौरवं, अर्चा।

—करना, क्रि. स., संमन् (प्रे.) आदृ (तु. आ. अ.), मह्-पूज् (चु.), संभू (प्रे.)।

संमानित, वि. (सं.) समादृत, सत्कृत, पूजित, गौरवान्वित, अभ्यर्चित, पूज्य, उपास्य, नमस्य, सं,-मान्य २. प्रधान, मुख्य, अग्रिय।

संमिलन, सं. पुं. (सं. न.) संगमः, समागमः, संगः, संयोगः, संगतं-तिः (स्त्री.)।

संमिलित, वि. (सं.) संमिश्र, मिश्रित, संयुक्त, संहत, संयुक्त, समवेत ।

संमिश्रण, सं. पुं. (सं. न.) सपर्कः, संसर्गः, संयोगः, संमिलनं २. मिश्रं, मिश्र-द्रव्यं, संनिपातः, संकरः, नानाद्रव्यसमुदायः ।

संमुख, क्रि. वि. (सं. संमुखं-खे) अभिमुखं-खे, पुरः, पुरतः, पुरस्तात्, समक्षं, साक्षात्, प्रत्यक्षम् ।

संमेलन, सं. पुं. (सं. न.) समाजः, सभा, परिषद् (स्त्री.) २. बृहदधिवेशनं ३. संमंत्रणं, संवादः ४. दे. 'संमिलन' ।

संयत, वि. (सं.) अव-नि-सं,-रुद्ध, नियत, निगृहीत २. नि-प्रति,-बद्ध, नियंत्रित, पिनद्ध ३. वशं नीत, वशीकृत, दमित ४. क्रम-नियम,-बद्ध, व्यवस्थित ५. मित, समर्याद, सावधिक ६. जितेन्द्रिय, आत्म-इन्द्रिय,-निग्रहिन् ।

—मना, वि. (सं.-नसं) संयमशील, संयत, आत्मनिग्रहिन् ।

—प्राण, वि. (सं.) प्राणायामिन् , संयतवासः ।

—मुख, वि. (सं.) मित-अल्प,-भाषिन्-वादिन् ।

संयम, सं. पुं. (सं.) इन्द्रिय,-जयः-निग्रहः, दमः, आत्मनियंत्रणं २. निग्रहः, निरोधः, नियंत्रणं-णा ३. पथ्यसेवनं, मिताशनं ४. परिमितता-त्वं, मर्यादापालनं ५. पिधानं, निमीलनं, संवरणं ६. बंधनम् ।

संयमी, वि. (सं.-मिन्) इन्द्रिय-आत्म,-निग्रहिन् , संयत, जितेन्द्रिय, दमिन् , संयमशील, योगिन् २. मित-अल्प-संयत,-आहार-भोजिन् ।

संयुक्त, वि. (सं.) समवेत, संहत, संलग्न, संश्लिष्ट २. सहित, अन्वित, युक्त ३. संबद्ध, संपृक्त ४. संमिलित, संमिश्रित ।

संयोग, सं. पुं. (सं.) दे. 'संमिलन' २. संश्लेषः, संमिश्रणं ३. संभोगश्रृंगारः (सा.) ४. संबंधः, संपर्कः ५. अनेकव्यंजनसंश्लेषः ६. योगः, संकलनं (गणित) ७. दैवं, दैव,-घटना-गतिः (स्त्री.)-योगः ।

—से, मु., दैवात्, दैव,-योगात्-वशात्, अकस्मात् ।

संयोगी, सं. पुं. (सं.-गिन्) गृहस्थसाधुः २. दयितायुतः ।

संयोजक, वि. (सं.) संमेलक, संश्लेषक । सं. पुं. (सं. न.) १-२, शब्द-वाक्य,-योजक-पदम् ।

संरक्षक, सं. पुं. (सं.) आश्रयदातृ, पुरस्कर्तृ, २. पोषकः, प्रतिपालकः, भरणकृत्, संवर्द्धकः, संरक्षिन ३. त्रातृ, गोप्तृ, पालकः, रक्षितृ ५. सहायकः, उपकारकः ।

संरक्षण, सं पुं. (सं. न.) गोपनं, रक्षा, त्राणं २. अवेक्षा, पर्यवेक्षणं ३. अधिकारः ४. रोधः, प्रतिबंधः ।

संलग्न, वि. (सं.) संयुक्त, संहत, संश्लिष्ट, संहित, संमिलित, संबद्ध ।

संलाप, सं. पुं. (सं.) वार्तालापः, संवादः ।

संवत् , सं. पुं. (सं. अव्य.) वर्षः-र्षं, अब्दः, वत्सः, परि-,वत्सरः २. विक्रमाब्दः ३. शाकः ।

संवत्सर, सं. पुं. (सं.) दे. 'संवत्' ।

संवरण, सं. पुं. (सं. न.) गोपनं, प्रच्छादनं, निगूहनम् ।

सँवरना, क्रि. अ. (सं. संवर्णनं>) व. 'सँवारना' के कर्म, के रूप ।

संवाद, सं. पुं. (सं.) दे. 'संभाषण' (१) । २. वृत्तं, वृत्तांतः, समाचारः ३. कथा, प्रसंगः ४. व्यवहारः, अभियोगः ५. ऐकमत्यं, संमतिः (स्त्री.) ६. संदेशः, दे. ७. स्वीकृतिः, अनुमतिः (स्त्री.) ।

—दाता, सं. पुं. (सं.-तृ) *वृत्तप्रेपकः, वृत्तांत-लेखकः ।

संवादी, वि. (सं.-दिन्) संलापिन्, संभाषिन् २. सदृश, समान, तुल्य । सं. पुं. (सं.) संगीते स्वरभेदः ।

सँवारना, क्रि. स. (सं. सवर्णनं>) अलंकृ, परिष्कृ, भूष्-मंड् (चु.), प्रसाध् (प्रे.) । २. संस्कृ, सं-, शुध् (प्रे.) ३. व्यवस्था (प्रे.), विन्यस् (दि. प. से.), रच् (चु.) ४. कार्यं सम्यक् संपद्-निष्पद् (प्रे.) । सं. पुं., अलं-परिष्,-करणं, मंडनं, प्रसाधनं २. संस्कारः, शोधनं ३. व्यवस्थापनं ४. सम्यक् संपादनं ।

सँवारने योग्य, वि., अलंकार्य, परिष्करणीय, भूषयितव्य, संस्कार्य, व्यवस्थाप्य ।

सँवारनेवाला, सं. पुं., अलं-परिष्-,कर्तृ-कारकः, प्रसाधकः, मंडयितृ २. संशोधकः, संस्कर्तृ ३. व्यवस्थापकः, सुसंपादकः ।

सँवारा हुआ, वि., अलं-परिष्-,कृत, मंडित,

प्रसाधित २. संस्कृत, सं-,शोधित ३. व्यवस्थापित ४. सुसंपादित ।

संवाहक, सं. पुं. (सं.) अंग-शरीर-,मर्दकः-संवाहकः । वि. (सं.) चालकः, चालयितृ ।

संवेदना, सं. स्त्री. (सं.) संवेदनं, अनुभवः, सुखदुःखादि-प्रतीतिः (स्त्री.) ।

संशय, सं. पुं. (सं.) संदेहः, दे. ।

संशयात्मा, सं. पुं. (सं.-त्मन्) विश्वासहीन, संदेहशील, श्रद्धाशून्य, संशयालु ।

संशयापन्न, वि. (सं.) संदिग्ध, अनिश्चित ।

संशयालु, वि. (सं.) दे. 'संशयात्मा' ।

संशोधक, सं. पुं. (सं.) संशोधयितृ, प्रति,-समाधातृ २. संस्कर्तृ, संस्कारक, ३. निस्तारक (ऋणादि) ।

संशोधन, सं. पुं. (सं. न.) पावनं, निर्मलीकरणं २. दोषनिवारणं, त्रुटिनिष्कासनं, संस्कारः, प्रति-,समाधानं ३. निस्तारणं (ऋणादि) ।

—करना, क्रि. स., सं.-परि-शुध् (प्रे.), पू (क्र्. उ. से.) २. दोषान् निवृ (प्रे.), संस्कृ ३. निस्तृ (प्रे.) ।

संशोधित, वि. (सं.) सुपूत, सम्यक् निर्मलीकृत २. संस्कृत, परशोधित ३. निस्तारित ।

संसर्ग, सं. पुं. (सं.) संपर्कः, संबंधः २. साहचर्यं, संगतिः (स्त्री.) ३. संयोगः संमिलनं ४. सुपरिचयः, अभ्यंतरत्वम् ।

संसार, सं. पुं. (सं.) सृष्टिः (स्त्री.), भुवनं, विश्वं, जगत् (न.)-ती, चराचर, संसृतिः (स्त्री.) २. पुनर्जन्मन् (न.), प्रेत्यभावः, ३. भू-मर्त्य-इह,-लोकः ४. प्रपंचः, जगज्जालं ५. सततपरिवर्तनं ६. गार्हस्थ्यम् ।

—चक्र, सं. पुं. (सं. न.) १-२, दे. 'संसार' (२, ४) ३. दशापरिवर्तः-र्तनम् ।

संसारी, वि. (सं.-रिन्) लौकिक, सांसारिक २. ऐहिक, प्रापंचिक ३. व्यवहारकुशल ४. अमुक्तात्मन् । सं. पुं. (सं.) प्राणिन् २. जीवात्मन् ।

संसृति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'संसार' (१-२) ।

संसृष्ट, वि. (सं.) मिश्रित, संश्लिष्ट २. संबद्ध, संलग्न ।

संसृष्टि, सं. स्त्री. (सं.) संमिश्रणं, संश्लेषः २. संबंधः, संपर्क, ३. सुपरिचयः, सौहार्दं ४. संग्रहणं, संचयनं ५. अलंकारमिश्रणभेदः (सा.) ।

संस्करण, सं. पुं. (सं. न.) ग्रन्थमुद्रणवारः, आवृत्तिः (स्त्री.) २. संशोधनं ३. परिष्करणम् ।

संस्कार, सं. पुं. (सं.) परि-सं,-शोधनं, संस्करणं २.परिष्,-कारः-करणं, परिमार्जनं ३. शौचं, शरीरशुद्धिः (स्त्री.) ४.मानसी शिक्षा ५. शिक्षासंगत्यादीनां प्रभावः ६. पूर्वजन्मवासना ७. पावनं, शुद्धिः (स्त्री.) ८. धार्मिककृत्यभेदः (दे. 'षोडशसंस्कार') २. अंत्येष्टिक्रिया, दाहकर्मन् (न.) ।

संस्कृत, वि. (सं.) सं-परि,-शोधित, निर्मली,-कृत २. परिष्कृत, परिमार्जित, परिमृष्ट ३.पाचित, सिद्ध, पक्व ४. कृतसंस्कार, संस्कारपूत । सं. स्त्री. (सं. न.), देववाणी, सुरगिर् (स्त्री.), आर्याणां भाषाविशेषः ।

संस्कृति, सं. स्त्री. (सं.) सभ्यता, आचारविचाराः (बहु.) २. संस्क्रिया, संस्कारः, शुद्धिः (स्त्री.) ३. परिष्कारः ।

संस्था, सं. स्त्री. (सं.) मंडलं, दलं, गणः २. सभा, समाजः, परिषद् (स्त्री.) ।

संस्थागार, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सभाभवनम् २. संसद्भवनम् ।

संस्थान, सं. पुं. (सं. न.) चतुष्पथः, चतुष्कं २. आकृतिः (स्त्री.), आकारः ३. रचना ४. सन्निवेशः ५. स्थितिः (स्त्री.), दशा ६. नाशः ७. मृत्युः ८. आयोजनं, व्यवस्था (९-१०), दे. 'ढाँचा' तथा 'खाका' ।

संस्थापक, सं. पुं. (सं.) प्रवर्तकः, प्रवर्तयितृ, आरंभकः, प्रतिष्ठापकः ।

संस्थापन, सं. पुं. (सं.) प्रवर्तनं, प्रारंभणं, प्रतिष्ठापनं, प्रारंभः २. निर्माणं ३. दृढीकरणम् ।

संस्थापित, वि. (सं.) प्रवर्तित, प्रतिष्ठापित, प्रारब्ध २. निर्मित ३. दृढीकृत ।

संस्पृष्ट, वि. (सं.) स्पृष्ट, छुप्त, परामृष्ट २. संपृक्त, जातसंपर्क ३. संयुक्त, संबद्ध ।

संस्फुट, वि. (सं.) अपावृत, व्यावृत, उद्घटित २. विकसित, उन्निद्र, स्फुटित,उन्मीलित ।

संस्मरण, सं. पुं. (सं. न.) संस्मृतिः (स्त्री.), सम्यक्,-स्मरणं-अनुचिंतनं-अनुबोधनं २. स्मारकं, स्मारकघटना ३. संस्कारजं ज्ञानम् ।

संहत, वि. (सं.) घन, दृढ, निबिड, अनंतरं २. संयुक्त, संबद्ध ३. संमिलित, संमिश्रित ४. आहत ५. संगृहीत ।

संहति, सं. स्त्री. (सं.) संगतिः (स्त्री.), संमिलनं २. राशिः, चयः ३. गणः, समूहः ४. घनत्वं, निबिडता ५. संधिः, संयोगः ।

संहार, सं. पुं. (सं.) हिंसा-सनं, हननं, हत्या, वधः, घातः २. वि-,नाशः-ध्वंसः ३. (मुक्तास्त्रस्य) संहरणं-संकोचनं-संहृतिः (स्त्री.), ४. संग्रहः, संकोचः ५. संक्षेपः, सारः ६. समाप्तिः (स्त्री.), अंतः ७. प्रलयः, कल्पांतः ।

—करना, क्रि. स., मृ-व्यापद्-निषूद् (प्रे.) २. वि-,नश्-ध्वंस् (प्रे.) ।

संहारक, सं. पुं. (सं.) संहर्तृ, नाशकः २. संग्रहीतृ, संचेतृ ।

संहिता, सं. स्त्री. (सं.) संधिः, वर्णसंनिकर्षः (व्या.) २. संयोगः, मिलनं ३. धर्मसंहिता, स्मृतिः (स्त्री.), श्रुतिजीविका ४. वेदानां मंत्रभागः ।

सइँयाँ, सं. पुं. (सं. स्वामिन्) पतिः २. कांतः ३. ईश्वरः ।

सइयाँ, सं. स्त्री. (हिं. सखियां) दे. 'सखी' ।

सकता, सं. पुं. (अ.-तः) सन्न्यासः, मूर्च्छा (रोगभेदः) २. यतिः (स्त्री.), विरामः (छन्द.) ।

सकना, क्रि. अ. (सं. शकनं) शक् (स्वा. प. अ.), प्रभू (भ्वा. प. से.), क्षम-समर्थ (वि.) भू । (यह क्रिया सदा दूसरी क्रियाओं के साथ ही प्रयुक्त होती है) ।

सकपकाना, क्रि. अ. (अनु. सकपक) विस्मि (भ्वा. आ. अ.), विस्मयाकुलीभू । २. अभिशंक् (भ्वा. आ. से.), दोलायते (ना. धा.) ३. लज्ज् (तु. आ. से.), त्रप् (भ्वा. आ. से.) ।

सकर्मक, वि. (सं.) कर्मविशिष्ट (व्या.) ।

सकल, वि. (सं.) दे. 'सब' ।

सकाम, वि. (सं.) फलाभिलाषिन्, कामनाविशिष्ट २. लब्धकाम, पूर्णमनोरथ ३. कामुक, कामिन् ।

सकारण, वि. (सं.) सहेतुक, कारणविशिष्ट ।

सकुचना, क्रि. अ. (सं. संकोचनं) व्रीड् (दि. प. से.), ह्री (जु. प. अ.), लज्ज् (तु. आ. से.) २. संकुच्-संहृ (कर्म.), मुद्रित-संकुचित (वि.) भू ।

सकुचाना, क्रि. अ. (सं. संकोचनं) दे. 'सकुचना' । क्रि. स., व. 'सकुचना' के प्रे. रूप ।

सकुचीला, वि. (सं. संकोचः >) संकोचशील दे. 'लज्जाशील' ।

सकूनत, सं. स्त्री. (अ.) नि-,वासः, निकेतनं, नि-,वासस्थानम् ।

सकृत्, अव्य. (सं.) एकवारं २. सदा ३. सह ।

सकोड़ना, क्रि. स., दे. 'सिकोड़ना' ।

सकोरा, सं. पुं. (हिं. कसोरा, दे.) ।

सखरा, सं. पुं. } दे. 'रसोई कच्ची' ।
सखरी, सं. स्त्री. }

सखा, सं. पुं. (सं. सखि) मित्रं, सुहृद्, २. सह,-चारिन्-चरः, संगिन् ३. नायकसहचरः (सा.) ।

सखावत, सं. स्त्री. (अ.) वदान्यता २. औदार्य्यम् ।

सखित्व, सं. पुं. (सं. न.) सख्यं, मैत्री ।

सखी, सं. स्त्री. (सं.) सहचरी, आली-लिः, (स्त्री.), वयस्या, आध्रीची *संगिनी २. नायिकायाः सहचरी (सा.) ।

सखी, वि. (अ.) दानशील, वदान्य ।

सखुन, सं. पुं. (फा.) वार्तालापः, संवादः २. काव्यं, कविता ३. वचनम् ।

—तकिया, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'तकिया कलाम'

—दाँ, सं. पुं. (फ़ा.) काव्यमर्मज्ञः, रसिकः २. वाक्पटुः ३. कविः ।

—दानी, सं. स्त्री. (फ़ा.) काव्यमर्मज्ञता, रसिकता २. वाक्पाटवं ३. काव्यकला ।

—शनास, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'सखुनदाँ' ।

—साज़, सं. पुं. (फ़ा.) कविः २. दे. 'गप्पी' ।

सख़्त, वि. (फा.) कीकस, कर्कर, कक्खट, घन, दृढसंधि, संहत २. दुष्कर, कठिन, दुस्साध्य, निर्दय, निष्करुण ४. चंड, परुष, कठोर, दुस्सह ५. कुशील, दुष्प्रकृति ६. कृपण ७. अतिशय, अत्यधिक । क्रि. वि., परुषं, निर्दयं, तीव्रम् ।

—सुस्त कहना, (मु.) भर्त्स् (चु. आ. से.), आक्रुश् (भ्वा. प. अ.) ।

सख़्ती, सं. स्त्री. (फ़ा.) कक्खटता, कीकसता, घनता २. दुष्करता ३. निर्दयता ४. चंडता ५. कुशीलता ६. आधिक्यं इ. ।

—से, क्रि. वि., चंडं, घोरं २. निर्दयम् ।

—करना, मु., वलं प्रयुज् (रु. आ. अ.), निर्दयं व्यवहृ (भ्वा. प. अ.) ।

सख्य, सं. पुं. (सं. न.) सौहार्दं, साप्तपदीनं, मित्रता, दे. ।

सगंध, वि, (सं.) गंध-वास,-वत्-युक्त, सुवास, गंधित, वासित २. सुगंधि, सुगन्धित, सुगन्धवत्, सुवासित ३. समान-तुल्य,-गंध ४. गर्वित ।

सग, सं. पुं. (फ़ा.) श्वानः, कुक्कुरः ।

सगण, वि. (सं.) सदल, ससैन्य । सं. पुं. (सं.) शिवः २. छन्दःशास्त्रीयगणभेदः, अन्तगुरुगणः ।

सगबग, वि. (अनु.) अति,-क्लिन्न-आर्द्र, दे. 'लथपथ' २. आर्द्री-द्रवी,-भूत ३. परिपूर्ण ।

सगर्व, वि. (सं.) गर्वित, दृप्त । क्रि. वि., सगर्वं, साभिमानम् ।

सगा, वि. (सं. स्वक>) सोदर, सहोदर, सोदर्य, सयोनि, सगर्भ २. स्वकुलज । सं. पुं., सकुल्यः, सगोत्रः, बंधुः ।

—भाई, सं. पुं., सोदरः, सहोदरः, सगर्भ्यः ।

सगापन, सं. पुं. (हिं. सगा) सोदरता, सगर्भता २. संबंधनैकट्यम् ।

सगाई, सं. स्त्री. (हिं. सगा) दे. 'मंगनी' ।

सगुण, वि. (सं.) गुणिन्, गुणान्वित । सं. पुं. (सं.) साकारेश्वरः २. अवतारपूजक-भक्त-संप्रदायः ।

सगुन, सं. पुं., दे. 'शकुन' ।

सगोती, सं. पुं. (सं. सगोत्र) एक-सम-,गोत्रः २. बंधुः, ज्ञातिः (स्त्री.) ।

सगोत्र, वि. (सं.) संबंधिन्, सजाति, सजातीय, एक-स,-गोत्र । (सं. न.) कुलम् ।

सघन, वि. (सं.) निबिड, सांद्र, घन, अनन्तर, गाढ २. स्थूल, संहत ।

सच, वि. (सं. सत्य) यथार्थ, अवितथ, दे. 'सत्य' । सं. पुं., सत्यं, तथ्यं, अवितथम् । क्रि. वि., वस्तुतः, यथार्थतः (दोनों अव्य.) ।

—बोलना, क्रि. स., सत्यं वद् (भ्वा. प. से.) -ब्रू (अ. उ.) ।

—मुच, क्रि. वि. (हिं. अनु.) तत्त्वतः, वस्तुतः, सत्यं, सत्यतः २.अवश्यं, निःसंदेहम् ।

सचराचर, सं. पुं (सं.) चराचर-स्थावर-जंगम-जडचेतन-सजीवनिर्जीव,-पदार्थाः (पुं. बहु०) ।

सचल, वि. (सं.) चल, चर, जंगम, गतिशील २. चेतन, प्राणिन् ।

सचाई, सं. स्त्री. (हिं. सच) सत्यता, अवितथता २. याथार्थ्यं, वास्तविकता ।

सचान, सं. पुं (सं. संचानः अथवा सचमानः> ?) श्येनः, पत्रिन्, शशादनः, दे. 'बाज़' ।

सचिंत, वि. (सं.) चिंता,-पर-मग्न, उद्विग्न, व्याकुल ।

सचिव, सं. पुं. (सं.) मित्रं, सखि (पुं.) २. मंत्रिन्, अमात्यः ३. सहायः-यकः ।

सचेत, वि., दे. 'सचेतन' ।

सचेतन, वि. (सं.) चेतनवत्, ससंज्ञ, चेतनोपपन्न २. सावधान ३. चतुर ।

सचेष्ट, वि. (सं.) उद्योगिन्, उत्साहिन्, सोत्साह,सोद्योग, उत्साह-उद्योग,-शील २. चेष्टमान, कर्मोद्युक्त ।

सच्चा, वि. (सं. सत्य) सत्य-यथार्थ,-भाषिन्-वादिन् २. सत्य, यथार्थ, वास्तविक ३. वि-, शुद्ध, पवित्र, स्वच्छ, मिश्रणशून्य ४. यथायोग्य, यथोचित ।

सच्चाई, सं. स्त्री., दे. 'सचाई' ।

सच्चिदानंद, सं. पुं. (सं.) नित्यज्ञानसुखस्वरूपं ब्रह्मन् (न.), परमेश्वरः ।

सज, सं. स्त्री. (सं. सज्जा) अलंक्रिया,परिष्क्रिया प्रसाधनं, मंडनं २. रूपं, आकृतिः (स्त्री.) ३. शोभा, छविः (स्त्री.) ।

—धज, बज, सं. स्त्री. (हिं. अनु.) दे. 'सज' (१-३) । ४. परिकल्पनं, सज्जा, सज्जनं-ना ।

सजग, वि. (सं. स+हिं. जागना) जागरूक, अवहित, सावधान ।

सजन, सं. पुं. (सं. सज्जनः) आर्यः, भद्रः, सत्पुरुषः २. पतिः, भर्तृ ३. उपपतिः, जारः ४. दयितः, कांतः ।

सजनपद, वि. (सं.) एक-समान,-देशजः-देशीयः-देशवासिन् ।

सजना, क्रि. अ. (सं. सज्जनं) सज्ज् (भ्वा. उ. से.) सज्ज-परिकल्पित सिद्ध (वि.) भू २. आत्मानं मंड-भूष् (चु.) अलंकृ ३. राज्, शुभ् (भ्वा, आ. से.) ।

सजनी, सं. स्त्री. (हिं. सजन) सखी, सहचरी २. उपपत्नी, जारिणी, भुजिष्या ३. कांता, प्रिया, दयिता ।

सजल, वि. (सं.) उत्त, उन्न, तिमित, आर्द्र, क्लिन्न, जलयुत, सनीर २. सवाष्प, सास्र, अश्रुपूर्ण (नेत्र) ।

सज़ा, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'दंड' ।

—याफ़्ता, वि. (सं.) दंडित, भुक्तदंड २. अपराधशील, पुराणपातकिन् ।

—वार, वि. (फ़ा.) दंडनीय, दंड्य ।

सजाति / **सजातीय** } वि.(सं.)सगोत्र, गोत्रज, सवंश-श्य २. तुल्य, सदृश ।

सजाना, क्रि. स. (हिं. सजना) सज्जीकृ, सज्ज्-परिक्लृप् , (प्रे.) २. व्यवस्था (प्रे.), क्रमशः निविश् (प्रे.) ३. मंड्-भूष् (चु.), अलंकृ । दे. 'संवारना' ।

सजावट, सं. स्त्री. (हिं. सजाना) दे. 'सज' (१) २. शोभा, श्रीः (स्त्री.) ३. दे. 'सज-धज' (४) ।

सजावल, सं. पुं. (तु. सज़ावुल) *शुल्कलः, करसंग्राहकः २. राजकर्मचारिन् ३. दे. 'सिपाही' ।

सजा हुआ, वि., सज्ज, सिद्ध, संनद्ध २. भूषित ३. शोभमान ।

सजीला, वि. (हिं सजना) सुवेशमानिन्, वेशाभिमानिन्, अलंकृत २. छविमत्, मनोहर ।

सजीव, वि. (सं.) प्राणिन्, प्राणधारिन्, चेतन, चैतन्यवत् २. क्षिप्र, लघु ३. ओजस्विन् ।

सजीवता, सं. स्त्री. (सं.) प्राणवत्ता, चैतन्यं २. लाघवं, क्षिप्रता ३. ओजस्विता ।

सजीवन, सं. पुं., दे. 'संजीवनी', सं. स्त्री. । १,२ ।

—बूटी, सं. स्त्री. रुद्रवती (?) ।

—मूर,-मूल, सं. पुं. 'संजीवनी बूटी' ।

सज्जन, सं. पुं. (सं.) आर्यः, भद्रः, सत्पुरुषः, सु-साधु,-जनः, महानुभावः, महाशयः २. कुलीनः, अभिजातः । वि., भद्र,-सद्वृत्त २. महाकुल, कुलीन ।

सज्जनता, सं. स्त्री. (सं.) भद्रता-त्वं, आर्यतात्वं, सुशीलता, सौजन्यं, सुजनता-त्वं २. कुलीनता, आभिजात्यम् ।

सज्जित, वि. (सं.) अलंकृत, भूषित, मंडित, परिष्कृत २. सन्नद्ध, सिद्ध, सज्ज, उद्यत ।

सज्जी, सं. स्त्री. (सं. सर्जी) सर्जिः (स्त्री.), सर्जिका, स्वर्जिकः, स्वर्जिन् ।

सटक, सं. स्त्री. (अनु. सट) मृदुयष्टिः (स्त्री.) २. धूमपानयंत्रस्य नम्यनाली ३. निभृतापसारः ।

सटकना, क्रि. अ., निभृतं अपया (अनु. सट) (अ. प. अ.), शनैः अपसृ (भ्वा. प. अ.) ।

सटना, क्रि. अ. (सं. स+स्था>) लग् (भ्वा. प. से.), संस्पृश् (तु. प. अ.), लग्न-संस्पृष्ट-संनिहित (वि.) भू २. श्लिष् (दि. प. अ.) संज् (भ्वा. प. अ.) ।

सटपटाना, क्रि. अ. (अनु.) सटपटायते (ना. धा.), सटपटध्वनिः जन् (दि. आ. से.) २. अशांत-पर्याकुल-चंचल (वि.) भू. दे. 'व्याकुल होना' ।

सटपटाया हुआ, वि., संक्षुब्ध, संमूढ, अशांत, व्याकुल, संभ्रांत, अस्वस्थ ।

सटरपटर, वि. (अनु.) क्षुद्र, तुच्छ, साधारण । सं. स्त्री., व्यर्थकार्यं २. दुष्करकृत्यम् ।

सटाना, कि. स., व. 'सटना' के प्रे. रूप ।

सटा हुआ, (वि.), लग्न, संस्पृष्ट, संनिहित, २. सक्त, श्लिष्ट ।

सटीक, वि. (सं.) सभाष्य, व्याख्यान्वित ।

सट्टा, सं. पुं. (सं. सार्थ>) समयलेखः, दे. 'इकरारनामा' २. संदिग्धफलव्यवहारः, खेला ।

सट्टा-बट्टा, सं. पुं. (हिं. सटना+अनु.) उपजापः,कूटः-टं,-कूट,-युक्तिः-उपायः २. संसर्गः, मेलः ।

सठियाना, क्रि. अ. (हिं. साठ) षष्टिवर्ष (वि.) भू २. ज्या (क्र्. प. अ.), जॄ (दि. क्र्. प. से.) ३. वार्धक्येन बुद्धिः क्षि (कर्म.) -नश् (दि. प. से.) ।

सठियाया हुआ, वि., षष्टिवर्ष २. जरठ, स्थविर २. जरया मंदमति-नष्टबुद्धि ।

सड़क, सं. स्त्री. (अ. शरक) अध्वन्, पथिन्, राज श्री,-पथः, मार्ग, दे. ।

सड़न, सं. स्त्री. (हिं. सड़ना) गलनं, विद्रवणं, विलयनम्, क्षरणम् ।

सड़ना, क्रि. अ. (सं. शरणं>) विशृ (कर्म.), जॄ (दि. प. से.), विगल् (भ्वा. प. से.) २. पूय् (भ्वा. आ. से.), पूतीभू ३. फेनायते (ना. धा.), उत्सिच् (कर्म.), अंतः क्षुभ् (दि. प. से.) (=खमीर आना.) ४. दुर्गत (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.), अवसद् (भ्वा. प. अ.)। सं. पुं., जीर्णिः (स्त्री.), विगलनं, पूयनं, पूतिः (स्त्री.), अवसादः, दुर्गतिः (स्त्री.); अभिषवः, अंतःक्षोभः ।

सड़सठ, सं. पुं. तथा वि., दे. 'सतसठ' ।

सड़ाक, सं. स्त्री. (अनु. सड़) त्वरा २. कशा-शब्दः ।

सड़ायँध, सं. स्त्री. (हिं. सड़ना+गंध>) दुर्गंध, पूतिः (स्त्री.), पूतिगंधः ।

सड़ा हुआ, वि., जीर्ण, विशीर्ण, दूषित, विगलित, पूति, पूतिगंध, पूतिक, उत्सिक्त, सफेन, दुर्गत, अवसन्न ।

सड़ियल, वि. (हिं. सड़ना) पूति, पूतिगंध, कलुष २. जीर्ण, शीर्ण ३. क्षुद्र, तुच्छ ४. निरर्थक, व्यर्थ ।

सत् , सं. पुं. (सं.) ऋषिः २. सज्जनः । (सं. न.) ब्रह्मन् (न.) २. भद्रभू । वि. (सं.) सत्य, यथार्थ २. साधु, श्रेष्ठ ३. धीर ४.शाश्वत, नित्य ५. प्राज्ञ, पंडित, ६. पूज्य ७. पवित्र ४. उत्तम, उत्कृष्ट। सत्कर्म आदि, दे. आगे ।

सत[1], सं. पुं. (सं. सत्त्वं) तत्त्वं, सारः २.निष्कर्षः, भावः ३. ऊर्जस् (न.), सामर्थ्यम् ।

सत[2], वि. (सं. सप्तन्) दे. 'सात' ।

—मंजिला, वि. (हिं.+अ.) सप्त, भूमिक-भौम (महल आदि) ।

—मासा, सं. पुं., सप्तमास्यः (शिशुः) २. रीतिविशेषः, *साप्तमासिकम् ।

—रंगा, वि., सप्त-वर्ण-रंग ।

सतगुरु, सं. पुं. (सं. सत्+गुरुः) सद्गुरुः, सच्छिक्षकः २. परमेश्वरः ।

सतजुग, सं. पुं., दे. 'सत्ययुग' ।

सतत, अव्य. (सं. सततं) निरन्तरं, सदा, सर्वदा, नित्यम् ।

—गति, सं. पुं. (सं.) पवनः, वायुः ।

—ज्वर, सं. पुं. (सं.) स्थायि-स्थास्नु-नित्य-जीर्ण,-ज्वर-तापः ।

सतर, सं. स्त्री. (अ.) रेखा २. पंक्तिः (स्त्री.) ।

सतरह, वि. (सं. सप्तदशन्) सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकौ अंकौ (१७) च ।

सतरहवाँ, वि. (हिं. सतरह) सप्तदशः-शी शं (पुं. स्त्री. न.) ।

सतर्क, वि. (सं.) सहेतुक, संयुक्तिक, उपपत्तिमत् २. प्रमादरहित, जागरूक, सावधान ।

सतर्कता, सं. स्त्री. (सं.) जागरूकता, सावधानता ।

सतलज, सं. स्त्री., दे. 'शतद्रु' ।

सतलड़ा, सं. पुं. (हिं. सात+लड़) सप्तसत्री हारः २. सप्तगुणा माला । वि., सप्त,-सूत्र-गुण-शुल्व ।

सतवंती, वि. स्त्री. (सं. सत्यवती>) सुचरित्रा, पतिव्रता, पतिपरायणा, सती, साध्वी ।

सतसई, सतसैया, } सं. स्त्री. (सं. सप्तशती-तिका) शतसप्तकपद्यात्मकः संग्रहः २. श्री-विहारीलालरचितो हिंदीभाषायाः काव्य-विशेषः ।

सतसठ, वि. [सं. सप्तषष्टिः (नित्य स्त्री.]) सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकांकौ (६७) च ।

सतह, सं. स्त्री. (अ.) तलं, पृष्ठं, उपरि-पृष्ठ,-भागः ।

सतहत्तर, वि. [सं. सप्तसप्ततिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकांकौ (७७) च ।

सताना, क्रि. स. (सं. संतापनं) सं-परि-तप् (प्रे.), पीड् (चु.), दुःखयति (ना. धा.), क्लिश् (क्र्. प. से.) २. खिद्-आयस्-उद्विज् (प्रे.) । सं. पुं., सं-परि,-तापनं, पीडनं, क्लेशनं, अर्दनं,आयासनं, उद्वेजनं, बाधनं इ. ।

सताने योग्य, वि., संताप्य, पीडनीय, उद्वेजनीय ।

सताने वाला, सं. पुं., सं-परि,-तापकः-पीडकः, क्लेश-दुःख,-करः-आवहः, आयासकः,खेदकरः ।

सताया हुआ, वि., पीडित, संतापित, आयासित उद्वेजित, बाधित, इ. ।

सतालू, सं. पुं., दे. 'शफ़तालू' ।

सतावर, सं. स्त्री. (सं. शतावरी) शतमूली, नारायणी, वरी, बहुसुता ।

सतासी, वि. [सं. सप्ताशीतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकांकौ (८७) च)

सती, वि. स्त्री. (सं.) दे. 'सतवंती' । सं. स्त्री. (सं.) पतिव्रता नारी २. मृतभर्त्रा सह दग्धा नारी, सह,-गामिनी-मृता ३. दक्षकन्या ।

—चौरा, सं. पुं. (सं.+हिं.) *सतीवेदिका ।
—पुत्र, सं. पुं. (सं.) पतिव्रता-साध्वी,-पुत्रः-तनयः ।
—व्रत, सं. पुं. (सं. न.), पातिव्रतं-त्यम्, सतीत्वम् ।
—व्रता, सं. स्त्री. (सं.) पतिव्रता नारी ।
—होना, मु., मृतभर्त्रा सार्द्धं दह् (कर्म.)-भस्मीभू ।
सतीत्व, सं. पुं. (सं. न.) पातिव्रत्यं, साध्वीत्वं ।
—बिगाड़ना या नष्ट-करना, मु., सतीत्वं नश् (प्रे.), बलात्कारेण गम् (भ्वा. आ. अ.)-अभिगम् (भ्वा. प. अ.), पातिव्रत्यं दुष् (प्रे.) ।
—हरण, सं. पुं. (सं. न.) बलात्कारः, हठ-संभोगः, बलान्मैथुनम् ।
सतीर्थ, सं. पुं. (सं.) सतीर्थ्यः, एकगुरुः ।
सतून, सं. पुं. (फा.) स्थूणा, स्तंभः ।
सतोगुण, सं. पुं., दे. 'सत्त्वगुण' ।
सतोगुणी, वि. (हिं. सतोगुण) दे. 'सत्त्वगुणी' ।
सत्कर्म, सं. पुं. (सं.-र्मन् (न.) शुभ-सु-पुण्य,-कार्य-कृत्यं-कृतिः(स्त्री.)-क्रिया-कर्मन्, पुण्यम् ।
सत्कार, सं. पुं. (सं.) आदरः, संमानः, पूजा २. आतिथ्यं, अतिथिसेवा ।
सत्कार्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सत्कर्म' । वि., पूज्य, मान्य, आदरणीय ।
सत्कृत, वि. (सं.) आदृत, संमानित, पूजित ।
सत्त, सं. पुं., दे. 'सत[1]' ।
—सत्तम, वि. (सं.)-उत्तम,-श्रेष्ठ ।
सत्तर, वि. [सं. सप्ततिः (नित्य स्त्री.)] उक्ता संख्या तद्बोधकांकौ (७०) च ।
सत्तरवाँ, वि. (हिं. सत्तर) सप्ततितमः-तमी-तमं (पुं. स्त्री. न.) ।
सत्तरह, वि., तथा सं. पुं., दे. 'सतरह' ।
सत्ता[1], सं. स्त्री. (सं.) सत्त्वं, अस्तित्वं, भावः, विद्यमानता २. शक्तिः (स्त्री.), सामर्थ्यं ३. प्रभुत्वं, अधिकारः ।
—धारी, सं. पुं. (सं.-रिन्>) अधिकारिन्, आधिकारिकः ।
सत्ता[2], (सं. सप्तन्>) सप्तचिह्नांकितं क्रीडापत्रं, *सप्तकः ।
सत्ताईस, वि. [सं. सप्तविंशतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकांकौ (२७) च ।
सत्ताईसवाँ, वि. (हिं. सत्ताईस) सप्तविंशतितमः-तमी-तमं, सप्तविंशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.) ।
सत्तानवे, वि. [सं. सप्तनवतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकांकौ(९७)च ।
सत्तावन, वि. [सं. सप्तपंचाशत् (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकांकौ (५७) च ।
सत्तासी, वि. [सं. सप्ताशीतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकांकौ (८७) च ।
सत्तू, सं. पुं. [सं. सक्तु (केवल पुं. बहु. में सक्तवः)] सक्तुकः, शक्तु (पुं. न.), भृष्टयव-चूर्णम् ।
सत्त्व, सं. पुं. (सं.न.) प्रकृतेर्गुणविशेषः २.सत्ता, अस्तित्वं, भावः ३. सारः, तत्त्वं, मूलद्रव्यं ४. विशेषता, अंतःप्रकृतिः (स्त्री.) ५. चित्त-प्रवृत्तिः (स्त्री.) ६. चेतना, चैतन्यं ७. प्राणः ८. आत्मन् ९. प्राणिन् १०. गर्भः ११. प्रेतः, भूतः १२. शक्तिः (स्त्री.), वीर्यम् ।
—गुण, सं. पुं. (सं.) सत्कर्मसु प्रवर्तको गुणः, विवेकशीलप्रकृतिः (स्त्री.) ।
—गुणी, वि. (सं.) सात्त्विक, उत्तमप्रकृति, विवेकशील ।
सत्पथ, सं. पुं. (सं.) सु-सन् ,-मार्गः २. सद्,-वृत्तं-आचारः ३. सु,-संप्रदायः-सिद्धांतः ।
सत्पात्र, सं. पुं. (सं. न.) सुपात्रं, दानार्हो जनः २. आर्यः, भद्रजनः ३. सु,-वरः-वोढृ ।
सत्पुरुष, सं. पुं. (सं.) आर्यः, सद्वृत्तो मानवः, भद्रः ।
सत्य, सं. पुं. (सं. न.) तथ्यं, ऋतं, तत्त्वं, यथार्थं, अवितथं, भूत–परम–तत्त्व,–अर्थः २. शपथः ३. प्रतिज्ञा ४. कृतयुगम् । वि., तथ्य, अवितथ, वास्तविक, यथार्थ, ऋतु २. अकृत्रिम, अकृतक ।
—काम, वि. (सं.) सत्य,-प्रिय-अभिलाषिन् ।
—नारायण, सं. पुं. (सं.) देवताविशेषः (= सत्यपीर हिं.) ।
—प्रतिज्ञ, वि. (सं.) सत्य,-व्रत-संगर-संध-अभिसंध ।
—युग, सं. पुं. (सं. न.) चतुर्युगेषु प्रथमयुगं, कृतयुगं (= १७२८००० वर्ष) ।
—युगी, वि. (सं. सत्ययुगं>) सत्ययुगसंबंधिन् २. अति,-पुराण-प्राचीन ३. धर्मात्मन्, सद्-वृत्त, सरल ।

—लोक, सं. पुं. (सं.) सप्तलोकांतर्गत उच्चतमो लोकः, ब्रह्मलोकः ।
—वचन, सं. पुं. (सं. न.) सत्य-यथार्थ,-कथनं-भाषणं २. प्रतिज्ञा ।
—वादी, वि. (सं.-दिन्) तथ्य-सत्य,-भाषिन्, यथार्थवक्तृ २. दे. 'सत्यप्रतिज्ञ' ।
—व्रत, सं. पुं. (सं. न.) सत्यभाषणप्रतिज्ञा । वि., सत्य,-वादिन्-प्रतिज्ञ-सन्ध ।
—संकल्प, वि. (सं.) दृढसंकल्प ।
—संध, वि. (सं.) दे. 'सत्यप्रतिज्ञ' । सं. पुं. (सं.) श्रीरामः २. भरतः ३. जनमेजयः ।
सत्यतः, अव्य. (सं.) वस्तुतः, सत्यम् ।
सत्यता, सं. स्त्री. (सं.) वास्तविकता, याथार्थ्यं २. नित्यत्वम् ।
सत्यभामा, सं. स्त्री. (सं.) सत्राजित्पुत्री, श्रीकृष्णपत्नीविशेषः ।
सत्यवती, वि. स्त्री. (सं.) सत्य,-भाषिणी-वादिनी २. धार्मिकी । सं. स्त्री. (सं.) व्यास-जननी, योजन-मत्स्य,-गंधा,गंध-,काली ।
—सुत, सं. पुं. (सं.) व्यासः, द्वैपायनः ।
सत्यवान्, वि. (सं.-वत) दे. 'सत्यवादी' (१-२) ।
सं. पुं., सावित्रीपतिः, नृपविशेषः ।
सत्या, सं. स्त्री. (सं.) सत्यता, दे. । २. सीता ३. द्रौपदी ४. दे. 'सत्यवती' सं. स्त्री. ५.दुर्गा ।
सत्याकृति, सं. स्त्री. (सं.) सत्यापनं, सत्यं-कारः, अग्रार्घः, दे. 'पेशगी' ।
सत्याग्रह, सं. पुं. (सं.) निःशस्त्र-अहिंसात्मक,-विरोधः-प्रतिकारः २. तथ्यनिर्बंधः ।
—आंदोलन, सं. पुं. (सं. न.) निःशस्त्र-विरोधांदोलनम् ।
सत्याग्रही, सं. पुं. (सं.-हिन्) अहिंसात्मक-विरोधिन् २. तथ्याभिनिवेशिन् ।
सत्यानास, सं. पुं. (सं. सत्तानाशः>) वि-, ध्वंसः-नाशः, सर्वनाशः ।
—करना, क्रि. स., वि-,नश्-ध्वंस् (प्रे.), समूलं उच्छिद् (रु. प. अ.) ।
सत्यानासी, वि. (हिं. सत्यानास) सर्व-वि,-नाशक-ध्वंसक २. मंद-हत,-भाग्य ।
सत्यानृत, सं. पुं. (सं. न.) वाणिज्यं २. सत्या-सत्यमिश्रणम् ।
सत्र, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञः, भागः, मखः २. सोमयागभेदः ३. भवनं, सद्मन् (न.), ४. धनं ५. दे. 'सदावर्त' ।
सत्रह, वि. तथा सं. पुं., दे. 'सतरह' ।
सत्वर, अव्य. (सं.-रं) शीघ्रं, दे. ।
सत्संग, सं. पुं. (सं.) आर्य-सत्,-संगतिः (स्त्री.)-समागमः-संसर्गः-संवासः-साहचर्यम् ।
सत्संगी, वि. (सं.-गिन्) सज्जनसहचर (-री स्त्री.) २. धार्मिक (-की स्त्री.) ।
सथिया, सं. पुं. (सं. स्वस्तिकः) मांगलिक-चिह्नविशेषः २. दे. 'जर्राह' ।
सदका, सं. पुं. (अ.-कह्) दानं, बलिः, उपहारः, दे. 'निछावर' ।
सदन, सं. पुं. (सं. न.) भवनं, गृहं, दे. 'घर' २. जलम् ।
सदमा, सं. पुं. (अ. सद्मह्) आघातः, प्रहारः २. दुःखं, शोकः ३. अत्याहितं, विपद् (स्त्री.) ४. महा,-क्षतिः-हानिः (दोनों स्त्री.) ।
—पहुँचना, क्रि. अ., आहन् (कर्म.), शोकेन विपदा वा ग्रस् (कर्म.) ।
सदय, वि. (सं.) दयान्वित, दयालु, दे. ।
सदर, वि. (अ.) प्रधान,-मुख्य, विशिष्ट । सं. पुं., केंद्रस्थलं २. राजधानी ३. सैन्यनिवेशः, दे. 'छावनी' ४. सभा,-पतिः-अध्यक्षः ।
—नशीन, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) दे. 'सदर'(४) ।
—बाजार, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) प्रधानापणः २. सैन्यापणः ।
—बोर्ड, सं. पुं. (अ.+अं.) *राजस्वपरिषद् ।
—मुकाम, सं. पुं. (अ.) मुख्यकार्यालयः ।
सदरी, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'वास्कट' ।
सदस्य, सं. पुं. (सं.) दे. 'सभासद्' ।
सदा, अव्य. (सं.) नित्यं, सर्वदा, अनिशं, सततं, सर्वकालं २. निरन्तरं, अनवच्छिन्नं, अविरतम् ।
—गति, सं. पुं. (सं.) वायुः ।
—बहार, वि. (सं.+फ़ा.) *सदावसंत, नित्य-हरित, शश्वत्पत्र ।
—वर्त, सं.पुं.(सं.-व्रतं>) नैत्यिकभोजन, दानं-वितरणं-उत्सर्गः, *सदाव्रतं २. नैत्यिकदानम् ।
—सुखी, वि. (सं.-खिन्) सर्वदानंद ।
—सुहागिन, वि. स्त्री. (सं+हिं.) नित्य-सौभाग्यवती, अमरपतिका २. वेश्या ।
सदाचार, सं. पुं. (सं.) सच्चर्या, सदाचरणं, सच्चारित्र्यं, सद्वृत्तं-त्तिः (स्त्री.), सच्चरितं, सद्-

व्यवहारः २. शिष्टता, सौजन्यं, भद्रता ३. रीतिः (स्त्री.), प्रथा ।
सदाचारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) सद्वृत्त, सुचरित-सच्चरित्र २. धर्मात्मन्, पुण्यात्मन् [सदाचारिणी-सद्वृत्ता आदि (स्त्री.)] ।
सदानन्द, वि. (सं.) आनन्दशील, नित्यानंद । सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः ।
सदार, वि. (सं.) सपत्नीक, जायान्वित ।
सदारत, सं. स्त्री. (अ.) सभा,-पतित्वं-अध्यक्षता ।
सदाश्रित, वि. (सं.) परावलंबशील, परावलंविन् ।
सदी, सं. स्त्री. (अ.) शताब्दी, शती २. शतम् ।
सदुपदेश, सं. पुं. (सं.) सच्छिक्षा २. सन्मंत्रणा ।
सदृश, वि. (सं.) सरूप, तुल्याकार २. सम, समान, तुल्य, सदृक्ष ३. योग्य, उचित ।
सदृशता, सं. स्त्री. (सं.) समानता, तुल्यता ।
सदेह, क्रि. वि. (सं. न.) सशरीरं, सकायम् ।
सदैव, अव्य. (सं.) सर्वदैव, नित्यमेव ।
सदोष, वि. (सं.) सापराध, अपराधिन्, दोषिन्, त्रुटि-दोष,-युक्त ।
सद्गति, सं. स्त्री. (सं.) मोक्षः, मुक्तिः (स्त्री.) २. सुदशा, सुगतिः (स्त्री.) ३. सदाचारः ।
सद्गुण, सं. पुं. (सं.) सु-,गुणः, सल्लक्षणम् ।
सद्भाव, सं. पुं. (सं.) हित-शुभ,-चिंता, हितैषणा-षिता २. सख्यं ३. निष्कपटता, सरलता, ऋजुता ४. सत्ता, अस्तित्वम् ।
सधना, क्रि. अ. (हिं. साधना) विनी (कर्म.), वशीभू, दम् (दि. प. से.) २. अभ्यस्त (वि.) भू ।
सधर्मिणी, सं. स्त्री. (सं.) धर्मपत्नी २. तुल्यमतावलंबिनी ।
सधर्मी, वि. (सं.-र्मिन्) सधर्मन्, सधर्म, समानधर्मानुयायिन् २. तुल्यगुण ।
सधवा, सं. स्त्री. (सं.) सिन्दूरतिलका, सभर्तृका, सनाथा, पतिवत्नी, जीवत्पतिका, सौभाग्यवती ।
सधाना, क्रि. स. (हिं. सधना) विनी (भ्वा-प. अ.), दम् (प्रे.), शिक्ष् (प्रे.), वशी कृ । सं. पुं., विनयनं, दमनं, वशे करणम् ।
सधानेवाला, सं. पुं., विनेतृ, दमयितृ ।
सधा हुआ, वि., विनीत, दांत, शिक्षित, वशग ।
सन्, सं. पुं. (अ.) दे. 'संवत्' (१, ३) ।
—ईसवी, सं. पुं., खिस्त,-शाकः-संवत् (अव्य.) ।
—हिजरी, सं. पुं., यवन,-शाकः-संवत् ।
सन[1], सं. पुं. (सं. शणः) दीर्घ,-शाखः-पल्लवः, त्वक्सारः, वमनः ।
सन[2], सं. स्त्री. (अनु.) सणिति, सणत्कारः, शीघ्रनिर्गमनध्वनिः । वि., स्तब्ध २. निःशब्द ।
—से, क्रि. वि., ससणत्कारम् ।
सनई, सं. स्त्री. (हिं. सन) क्षुद्रशणः ।
सनक, सं. स्त्री. (सं. शंका>) दृढाग्रहः, उत्कटाभिनिवेशः, चित्तलहरी, छन्दः ३. उन्मादः, चित्तभ्रमः ।
सनकना, क्रि. अ. (हिं. सनक) उन्मद् (दि. प. से.), व्यामुह् (दि. प. वे.) ।
सनकी, वि. (हिं. सनक) उत्कटाभिनिवेशिन्, दृढाग्रहिन् ।
सनद, सं. स्त्री. (अ.) प्रमाणपत्रं २. प्रमाणम् ।
—याफ़्ता, वि. (अ.+फ़ा.) प्रमाणपत्रधारिन् ।
सनना, क्रि. अ. (सं. संधानं>) व. 'सानना' के कर्म. के रूप ।
सनम, सं. पुं. (अं.) प्रियतमः, दयितः, वल्लभः ।
सनमान, सं. पुं., दे. 'संमान' ।
सनसनाना, क्रि. अ. (अनु. सनसन) सणसणायते (ना. धा.) २. ससणसणशब्दं वा (अ. प. अ.) ।
सनसनाहट, सं. स्त्री. (हिं. सनसनाना) पवनवहनध्वनिः, वातगतिशब्दः २. (शरादीनां) सणसणायितं, सणसणत्कारः ३. दे. 'सनसनी' ।
सनसनी, सं. स्त्री. (अनु. सनसन) संवेदननाडीनां स्पंदनभेदः, सणसणत्कृतिः (स्त्री.) २. स्तब्धता ३. संक्षोभः, उद्वेगः ४. नीरवता ।
—खेज़, वि. (अनु.+फ़ा.) संक्षोभजनक, उद्वेगकर ।
सनस्ट्रोक, सं. पुं. (अं.) अंशुघातः ।
सनातन, वि. (सं.) अति,-पुराण-प्राचीन-पुरातन २. क्रमागत, परंपरालब्ध ३. नित्य, शाश्वत [सनातनी (स्त्री.)] । सं. पुं., प्राचीनकालः २. पुरातनी परंपरा ३. विष्णुः ४. ब्रह्मन् ५. शिवः ।
—धर्म, सं. पुं. (सं.) प्राचीन-पुरातन-धर्मः

२. परंपरागतो धर्मः ३. प्रतिमापूजनमृतकश्राद्धादिविश्वासी हिंदूधर्मशाखाविशेषः, पौराणिकधर्मः ।

—धर्मी, सं. पुं. (सं.-र्मिन्) सनातनधर्मानुयायिन्, पुराणमतावलंबिन् ।

—पुरुष, सं. पुं. (सं.) विष्णुः ।

सनातनी, सं. पुं. (सं. सनातन) दे. 'सनातनधर्मी' । वि., पुरातन, परंपरालब्ध ।

सनाथ, वि. (सं.) मातृपितृमत् २. सपतिक, सभर्तृक, संरक्षकयुत, सहायवत् [सनाथा (स्त्री.) जीवद्भर्तृका] ।

सनाभि, सं. पुं. (सं.) सोदरः, सहोदरः २. सपिंडः, सगोत्रः, सनाभ्यः ।

सनाय, सं. स्त्री. (अ. सनाऽ) स्वर्णपत्री-त्रिका, रेचनी, कल्याणी, मलहारिणी ।

सनाह, सं. पुं. (सं. सनाहः) तनुत्राणं, कवचः-चं दे. ।

सनिद्र, वि. (सं.) निद्रित, निद्राण, शयित, सुप्त, शयान ।

सनीचर, सं. पुं., दे. 'शनैश्चर' ।

सनीड, वि. (सं.) सकुलाय, सम-एक,-नीडवासिन् २. सम्बन्धिन्, सम्बन्धकः, सम्पर्किन् । सं. पुं., सामीप्यं, नैकट्यम् २. प्रातिवेश्यम्, प्रतिवेशः ।

सनोबर, सं. पुं. (अ.) दे. 'चीड़' (वृक्ष) ।

सन्न, वि. (सं. शून्य) चकितचकित, अतिविस्मित २. स्तब्ध, जड़ीभूत, व्यामोहित ३.निःसंज्ञ, अचेतन ४.ससाध्वस, भयाभिभूत ।

संनद्ध, वि. (सं.) बद्धकवच, धृतसंनाह २. सायुध, सशस्त्र ३. सज्ज, सिद्ध, उद्यत, उपक्लृप्त ४. संबद्ध, संलग्न ।

सन्नाटा, सं. पुं. (हिं. सुन्न) निःशब्दता, नीरवता २. निर्जनता, विजनता, विविक्तं ३. भयविस्मयादिजनिता निःस्तब्धता । वि., नीरव २. निर्जन ।

सन्मान, सं. पुं., दे. 'संमान' ।

सन्मुख, अव्य., दे. 'संमुख' ।

सन्यास, सं. पुं., दे. 'संन्यास' ।

सपक्ष, सं. पुं. (सं.) स्वपक्ष,-पातिन्-अवलंबिन्, सहायकः, मित्रम् ।

सपत्नी सं. स्त्री. (सं.) समानपतिका, समानभर्तृका ।

सपत्नीक, वि. (सं.) सकलत्र, सपरिग्रह ।

सपना, सं. पुं., दे. 'स्वप्न' ।

—होना, मु., दुर्दृश्य-दुर्लभ (वि.) भू ।

सपरदाई, सं. पुं. (सं. संप्रदायिन्>) दे. 'सारंगिदा' ।

सपर्या, सं. स्त्री. (सं.) पूजा-जनं, आराधनानम् ।

सपाट, वि. (सं.) सम, समरेख, समस्थ, समतल ।

सपाटा, सं. पुं. (सं. सर्पणं>) चलनधावनोड्डयनादीनां) जवः, वेगः, रयः २. त्वरितगतिः (स्त्री.), धावनम् ।

सैर—, सं. पुं., परिभ्रमणं पर्यटनं, विहरणम् ।

सपिंड, सं. पुं. (सं.) सनाभिः, सप्तपुरुषांतर्गतज्ञातिः (पुं.), सगोत्रः, सवंशीयः, बंधुः ।

सपूत, सं. पुं. (सं. सुपुत्रः) सत्पुत्रः, सुतनयः ।

सपेरा, सं. पुं., दे. 'सँपेरा' ।

सपो(पे)ला, सं. पुं., 'सँपोला' ।

सप्त, वि. (सं. सप्तन्) सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकोऽङ्कश्च (७) ।

—ऋषि, सं. पुं. [सं. सप्तर्षयः (बहु.) =मरीचिः, अत्रिः, अंगिरस्, पुलस्त्यः, पुलहः, क्रतुः, वसिष्ठः, अथवा गौतमः, भरद्वाजः, विश्वामित्रः, जमदग्निः, वसिष्ठः, कश्यपः] ।

—जिह्व, सं. पुं. (सं.) सप्तज्वालः, अग्निः ।

—धातु, सं. पुं. [सं. सप्तधातवः (बहु.) = रसासृग्मांसमेदोऽस्थिमज्जानः शुक्रसंयुताः ।]

—पदी, सं. स्त्री. (सं.) विवाहांगसप्तपदीगमनम् ।

—पाताल, सं. पुं. (सं. न.) सप्तसंख्याकाधोभुवनं (= अतलं, वितलं, सुतलं, रसातलं, तलातलं, महातलं, पातालम्) ।

—पुरी, सं. स्त्री. (सं.) सप्तपुण्यनगराणि (न. ब.) (=अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वारं) काशी, काँची, अवंतिका, (उज्जयिनी), द्वारका) ।

—प्रकृति, सं. स्त्री. (सं.-प्रकृतयः (स्त्री. बहु.) राज्यस्य सप्तांगानि (बहु.) (=नृपः, मंत्रिन्, सामंतः, देशः, कोशः, दुर्गं, सेना) ।

—भुवन, सं. पुं. (सं. न.) सप्तोर्ध्वलोकाः (पुं. बहु.) भूर्भुवः स्वर्महश्चैव जनश्च तप एव च सत्यलोकश्च) ।

—सप्ति, सं. पुं. (सं.) सूर्यः, सप्ताश्वः ।
सप्तक, सं. पुं. (सं. न.) सप्तवस्तुसमूहः २. सप्तस्वरसमूहः (संगीत) ।
सप्तमी, सं. स्त्री. (सं.) शुक्लकृष्णपक्षयोः सप्तमतिथिः (पुं. स्त्री.) । २. अधिकरणकारकस्य विभक्तिः (स्त्री.) ।
सप्तर्षि, सं. पुं. [सं. सप्तर्षयः (बहु.)] दे. 'सप्तऋषि' ।
सप्ताश्व, सं. पुं. (सं.) सूर्यः, भानुः, रविः, अर्कः ।
सप्ताह, सं. पुं. (सं.) सप्तदिवसात्मकः कालः, *दिनसप्तकं २. साप्ताहिकं कृत्यं ३. श्रीमद्भागवतादीनां साप्ताहिकी कथा ।
सप्रज, वि. (सं.) सबाल, सापत्य, ससन्तान, अपत्यवकृत् ।
सफ़, सं. स्त्री. (अ.) श्रेणी-णिः (स्त्री.), पंक्तिः (स्त्री.) २. लंबकटः ।
सफ़र, सं. पुं. (अ.) यात्रा दे. ।
—खर्च, सं. पुं. (अ+फ़ा.) मार्गव्ययः ।
सफरमैना, सं. स्त्री. (अं. सैपर+माइनर) खनकसौरुगिकाः (पुं. बहु.) ।
सफ़री, वि. (अ. सफ़र) यात्रोपयोगिन् ।
सफ़री, सं. स्त्री. (शफरी) शफरः, मत्स्यभेदः ।
सफल, वि. (सं.) फलिन्, फलवत्, फलित, सशस्य, फल्युत २. सार्थक, अमोघ, अर्थवत् २. निष्पन्न, सिद्ध, पूर्ण ४. कृत,-कार्य-कृत्य सफलमनोरथ, सिद्धार्थ, कृतार्थ, कृतिन्, चरितार्थ, प्राप्त-पूर्ण-लब्ध,-काम ।
—होना, क्रि. अ., कृतकार्य-सफल (वि.) भू ।
सफलता, सं. स्त्री. (सं.) साफल्यं, अर्थ-मनोरथ,-सिद्धिः (स्त्री.), कृत,-कार्यता-कृत्यता २. पूर्णता, निष्पन्नता ३.फलवत्ता ४. सार्थकता ।
सफ़हा, सं. पुं. (अ.) पत्रं, पर्णं, पृष्ठम् ।
सफ़ा, वि. (अ.) अ-वि-निर्,-मल, स्वच्छ, २. शुचि, पूत, पवित्र ३. श्लक्ष्ण, मसृण ४.समतल, समस्थ ।
—चट, वि., अतिस्वच्छ, नितांतनिर्मल २.अति,-श्लक्ष्ण-मसृण ।
—चट करना, क्रि. स., क्षुरेण मुंड् (भ्वा. प. से.; चु.), केशान् सम्यक् आवप् (भ्वा. उ. अ.; प्रे.) २. विनश्-विध्वंस् (प्रे.) ।
सफ़ाई, सं. स्त्री. (अ. साफ़) स्वच्छता, निर्मलता २. शौचं, शुद्धिः (स्त्री.) ३. अवस्करापसारणं ४. निष्कपटता, आर्जवं ५. चित्त-मानस,-शुद्धिः (स्त्री.) ६. निर्दोषिता ७. ऋणशोधनं ८. निर्णयः ।
—देना, मु., स्वनिर्दोषितां प्रमाणीकृ, आरोपितापराधं निरस् (दि. प. से.) ।
सफ़ीना, सं. पुं. (अ.) पुस्तकं २. दे. 'संमन' ।
सफ़ीर, सं. स्त्री. (अ.) राजदूतः ।
सफ़ेद, वि. (फ़ा. सुफ़ैद) श्वेत, धवल, श्येत, श्येन, शुक्र, सित, शुक्ल, शुभ्र, गौर (-री स्त्री.) २. अंक-चिह्न-लेख,-रहित (पत्रादि) ।
—स्याह, सं. पुं. (फ़ा.) हिताहित, इष्टानिष्टम् ।
—पोश, सं. पुं. (फ़ा.) आर्यः, भद्रजनः । वि., श्वेतवासस् ।
रंग—पड़ना, मु., विवर्णतां आपद् (दि. आ. अ.) ।
सफेदा, सं. पुं. (फ़ा. सुफ़ैदा) सीसकभस्मन् (न.), *श्वेतसीसं २. आम्रभेदः ३. *श्वेतः (वृक्षभेदः) ।
सफ़ेदी, सं. स्त्री. (फ़ा. सुफ़ैदी) शुक्लता, श्वेतता, धवलता, धवलिमन्, शुक्लिमन्, श्वेतिमन् २. सुधा, सुधालेपः ३. प्रत्यूषः, प्रभातम् ।
—करना, क्रि. स., सुधया लिप् (तु. प. अ.)-धवलयति (ना. धा.), सुधालेपं कृ ।
—आना, मु., जॄ (दि. प. से.), ज्या (क्र्-प. अ.); केशा धवलायते (ना. धा.) ।
सब, वि. (सं. सर्व) विश्व, समस्त, सकल, अखिल, निखिल, कृत्स्न, अशेष, निःशेष २. पूर्ण, अनून, अखंड, समग्र ।
—कहीं, क्रि. वि., सर्वत्र ।
—का सब, वि., समग्र, संपूर्ण ।
—कुछ, सं. पुं., सर्वम् ।
—कोई, सर्व., सर्वे, विश्वे (पुं. बहु.) ।
—से अच्छा, वि., उत्तम, परम, श्रेष्ठ, प्रशस्ततम ।
—हाल, सं. पुं., संपूर्ण,-वृत्तं-वृत्तांतः ।
—मिलाकर, मु., सर्वं, समस्त २. सर्वाणि संकलय्य-परिगणय्य ।
सब—, वि. (अ.) सहायक, उप— ।
—इन्स्पेक्टर, सं. पुं. (अं.) उप,-निरीक्षकः-अवेक्षकः ।
—जज, सं. पुं. (अं.) उपाधिकरणिकः, उपन्यायाधीशः ।
सबक़, सं. पुं. (फ़ा.) पाठः, दे. । २. शिक्षा ।
सबब, सं. पुं. (अ.) कारणं, हेतुः ।

सबर, सं. पुं., दे. 'सब्र'।

सबल, वि. (सं.) बलवत्, बलशालिन्, बलिन्, वीर्यवत्, शक्तिमत्, शक्त, प्रबल, ऊर्जित, ऊर्जस्वल, समर्थ २. ससैन्य।

सबा, सं. स्त्री. (अ.) प्रभातपवनः।

सबाध, वि. (सं.) दुःखद, कष्टदायक २. हानिकारक, अहितकर।

सबील, सं. स्त्री. (अ.) मार्गः, पथिन् २. उपाय ३. प्रपा, दे.।

सबूत, सं. पुं., दे. 'सुबूत'।

सब्ज़, वि. (फ़ा.) हरित-त्, प(पा)लाश, हरिद्वर्ण २. नव, प्रत्यग्र, सरस (फलशाकादि)।

—बाग़ दिखाना, मु., मोघाशाभिः वंच्-प्रतॄ (प्रे.)।

सब्ज़ा, सं. पुं. (फ़ा. सब्जह्) हरितत्वं, हारित्यं, शादः, शाद्वलता २. भंगा, विजया ३. हरिन्मणिः, मरकतम्।

—ज़ार, सं. पुं. (फ़ा.) शाद्वलः-लम्।

सब्ज़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'सब्जा'(१) २. शाकः-कं, शि(सि)ग्रुः, हरितकः-कं ३. भंगा, विजया।

सब्जेक्ट, सं. पुं. (अ.) विषयः, प्रकरणं, प्रसंगः २. प्रजा।

—(क्ट्स) कमिटी, सं. स्त्री. (अं.) विषयसमितिः (स्त्री.)।

सब्र, सं. पुं. (अ.) संतोषः, धैर्यं, तितिक्षा, सहिष्णुता।

बे—, वि. (फ़ा.+अ.) संतोषहीन २. असहिष्णु।

बेसब्री, सं. स्त्री., तितिक्षाभावः, असहिष्णुता २. धीरताभावः, व्याकुलता।

सभा, सं. स्त्री. (सं.) समाजः, गोष्ठिः-(ष्ठी) -समितिः-परिषद्-संसद्-पर्षद् (स्त्री.), समज्या, सदस् (न.), आस्थानं २. सभा,-भवनं-गृहं-आगारं-मंडपः-निकेतनं, आस्थानं-नी।

—पति, सं. पुं. (सं.) सभाध्यक्षः, संसत्पतिः, (सभायाः) प्रधानः।

—सद, सं. पुं. (सं.-सद्) सदस्यः, सभ्यः, सामाजिकः, परिष(पर्ष)द्वलः, प(पा)रिषदः, पार्षदः, सभास्तारः, प(पा)रिषद्यः।

धर्म—, सं. स्त्री. (सं.) धार्मिकपरिषद् (स्त्री.)।

न्याय—, सं. स्त्री. (सं.) व्यवहारमंडपः।

राज—, सं. स्त्री. (सं.) राजकीयपरिषद् (स्त्री.)।

सभागा, वि. (सं. सुभाग्य) सौभाग्य,-वत्-शालिन्, महाभाग, धन्य।

सभाला, सं. पुं. (सं. संभलः) वरसखः, परिणेतृमित्रम्।

सभ्य, सं. पुं. (सं.) सभासद्, दे. २. सज्जनः, भद्रपुरुषः। वि., शिष्ट, नागरिक, दक्षिण, भद्र, विनीत, सुशील, आर्यवृत्त, संस्कृत, संस्कृतिः (स्त्री.)।

सभ्यता, सं. स्त्री. (सं.) शिष्टता, नागरिकता, दाक्षिण्यं, सुजनता, आर्यवृत्तिः (स्त्री.) २. सदस्यता।

समंजस, वि. (सं.) उचित, न्याय्य, योग्य।

सम, वि. (सं.) समान, तुल्य, सदृश-श्, सदृक्ष, संनिभ, सविध,-उपम,-निभ,-प्रकार, -विध (समासांत में) २. समतल, दे. ३. युग्म, दे. 'जुफ़्त'। सं. पुं. (सं.) तालमानभेदः (संगीत) २. अर्थालंकारभेदः (सा.)।

—कक्ष, वि. (सं.) तुल्य, सदृश।

—काल, अव्य. (सं.-लं) युगपद् (अव्य.), यौगपद्येन, एक-सम,-कालं(-ले)।

—कालीन, वि. (सं.) एक,-कालिक-कालीन, समकाल।

—कोण, सं. पुं. (सं.) नवत्यंशात्मकः कोणः। वि., तुल्याभिमुखकोण (त्रिभुज अथवा चतुर्भुज)।

—चित्त, वि. (सं.) सम,-चेतस्-बुद्धि, धीर, शांतमनस्क।

—तल, वि. (सं.) सम, समस्थ, समरेख, सपाट।

—दर्शी, वि. (सं.) सम,-दर्शन-दृश्-दृष्टि-बुद्धि।

—भाव, वि. (सं.) सम,-प्रकृति-गुण २. समता, तुल्यता।

—भूमि, सं. स्त्री. (सं.) सम,-भूः (स्त्री.) -स्थली।

—वयस्क, वि. (सं.) सवयस्क, समायुष्क।

समक्ष, अव्य. (सं.-क्षं) अग्रे, अग्रतः, पुरः, पुरतः, पुरस्तात् (सब अव्य.)।

समग्र, वि. (सं.) दे. 'सब' (१-२)।

समझ, सं. स्त्री. (हिं. समझना) बुद्धिः-धीः-मतिः (स्त्री.), प्रज्ञा २. ज्ञानं, बोधः, उपलब्धिः (स्त्री.)।

—**में आना**, क्रि. अ., अवगम्-बुध्-ज्ञा (कर्म.)।
—**दार**, वि. (हिं.+फ़ा.) धीमत्, बुद्धिमत्, प्राज्ञ, विचक्षण।
समझना, क्रि. स. (सं. संज्ञानं>) ज्ञा (क्र्. उ. अ.), बुध् (भ्वा. प. से.), अवगम्, बुद्ध्या ग्रह् (क्र्. प. से.) २. क्लृप् (प्रे.), उत्प्रेक्ष् (भ्वा. आ. से.), तर्क् (चु.) ३. विचर् (प्रे.) ४. प्रतिकृ, निर्यत् (चु.)। सं. पुं., ज्ञानं, बोधनं, अवगमनं, उपलब्धिः (स्त्री.)।
समझने योग्य, वि., ज्ञेय, अवगंतव्य, बोध्य।
समझनेवाला, सं. पुं., ज्ञातृ, बोद्धृ, अवगंतृ।
समझाना, क्रि. प्रे. (हिं. समझना) व. 'समझना' (१) के प्रे. रूप २. विशदी-स्पष्टीकृ, व्याख्या (अ. प. अ.), व्याचक्ष् (अ. आ.) ३. उपदिश् (तु. प. अ.), शिक्ष् (प्रे.) ४. निर्भर्त्स् (चु. आ. से.) ५. प्रति इ (प्रे.), अभिज्ञा (प्रे.)।
—**बुझाना**, क्रि. प्रे., दे. 'समझाना'।
समझा हुआ, वि., ज्ञात, बुद्ध, अवगत।
समझौता, सं. पुं. (हिं. समझना) संधिः, सं-समा,-धानं, कलह-विवाद,-शमः-शांतिः(स्त्री.), २. संमतिः (स्त्री.), ऐकमत्यम्।
समता, सं. स्त्री. (सं.) तुल्यता, सादृश्यं, समानता, साम्यं, समत्वम्।
समद, वि. (सं.) मत्त, क्षीव, उन्मद, मदोद्धत २. मदोत्कट, मत्त (गजादि) ३. प्रसन्न, प्रहृष्ट।
समध(धि)न, सं. स्त्री. (हिं. समधी) १-२. पुत्र-पुत्री-अपत्य,-श्वश्रूः (स्त्री.), जामातृ-स्नुषा,-जननी।
समधियान,-ना, सं. पुं. (हिं. समधी) पुत्र-पुत्री,-श्वशुरालयः।
समधी, सं. पुं. (सं. संबंधिन्>) १-२. पुत्र-पुत्री-अपत्य,-श्वशुरः, जामातृ-स्नुषा,-जनकः।
समन्वय, सं. पुं. (सं.) संयोगः, मिलनं २. आनुरूप्यं, विरोधाभावः, सवादः ३. कार्य-कारणनिर्वाहः।
समन्वित, वि. (सं.) संयुक्त, मिलित, संबद्ध २. युक्त, युत, सहित २. निर्बाध।
समय, सं. पुं. (सं.) वेला, कालः, दिष्टः, अनेहस् २. प्रस्तावः, प्रसंगः ३. ऋतुः ४. अवकाशः, क्षणः ५. अवसरः, उचितसमयः।
समर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) संग्रामः, युद्धं दे.।
—**भूमि**, सं. स्त्री. (सं.) समरांगणं, युद्ध-रण,-क्षेत्रम्।
—**शायी**, सं. पुं. (सं.-यिन्) लब्धवीरगति, धराशायिन्।
समर्थ, वि. (सं.) क्षम, योग्य, शक्त, सामर्थ्यवत् २. बलिन्, सबल।
समर्थक, वि. (सं.) समर्थनकार, साहाय्यकारिन्, उपोद्बलक, अनुमोदक।
समर्थन, सं. पुं. (सं. न.) दृढी-प्रमाणी,-करणं, उपोद्बलनं, अनुमोदनम्।
—**करना**, क्रि. स., समर्थ् (चु.), दृढी-प्रमाणी-कृ, द्रढयति (ना. धा.), उपोद्बलयति (ना. धा)।
समर्थित, वि. (सं.) उपोद्बलित, दृढीकृत, अनुमोदित।
समर्पक, वि. (सं.) समर्पयितृ, समर्पणकर, उपहारिन्, उपहारक।
समर्पण, सं. पुं. (सं.) उपहरणं, ससंमानं उत्सर्जनं ३. दानं, उत्सर्गः।
—**करना**, क्रि. स., सं.-ऋ (प्रे., समर्पयति), सादरं दा, उपहृ (भ्वा. प. अ.)।
समर्पित, वि. (सं.) उपहृत, सादरं उत्सृष्ट-दत्त।
समवाय, सं. पुं. (सं.) समूहः २. नित्य-गुण-गुणि-जातिव्यक्ति-अवयवावयवि,-संबंधः(न्याय.)
समवेत, वि. (सं.) संचित, संगृहीत २. युक्त, मिलित ३. नित्यसंबंधविशिष्ट।
समष्टि, सं. स्त्री. (सं.) संघः, समुदायः, समूहः।
समस्त, वि. (सं.) समग्र, संपूर्ण, निःशेष, दे. 'सब' २. समासयुक्त ३. संक्षिप्त।
समस्या, सं. स्त्री. (सं.) समासार्था, समाप्त्यर्था, (पद्यरचनार्थै) श्लोकांशः २. विकटप्रश्नः ३. कठिनावसरः।
—**पूर्ति**, सं. स्त्री. (सं.) निर्दिष्टपद्यांशमाश्रित्य काव्यरचना।
समाँ, सं. पुं. (सं. समयः) कालः, वेला।
—**बँधना**, मु. (संगीतादिमग्नतया) स्तब्धीभू।
समाख्या, सं. स्त्री. (सं.) यशस् (न.), नामन् (न.)।
समागम, सं. पुं. (सं.) आगमनं, आयानं २. संमिलनं, संयोगः २. मैथुनम्।
समाचार, सं. पुं. (सं.) वृत्तं, वृत्तांतः, उदंतः, वार्ता।

—पत्र, सं. पुं. (सं.) वृत्तपत्रम् ।

समाज, सं. पुं. (सं.) सभा, दे. २. समूहः, संघः, दलं, समुदायः ३. आर्यसमाजः ।

—वाद, सं. पुं. (सं.) संपत्तौ राज्याधिकारः इति सिद्धान्तः ।

समाजी, सं. पुं. (सं.-जिन्) सभासद् २. आर्य-समाज,-सदस्यः सभासद्, आर्यसामाजिकः ३. दे. 'सपरदाई' ।

समादृत, वि. (सं.) सम्मानित, पूजित, सत्कृत ।

समाधान, सं. पुं. (सं. न.) समाधिः, अंत-र्ध्यानं, प्रणिधानं २. शंका-संदेह,-निवारणं ३. शंकानिवारकमुत्तरं ४. आ-समा,-श्वासनं, सांत्वनं ५. विरोधापहरणं ६. निराकरणं ७. अनुसंधानं ८. तपस् (न.) ९. ध्यानं १०. समर्थनं, दृढ़ीकरणं, उपोद्वलनम् ।

—करना, क्रि. स., समाधा (जु. उ. अ.), शंकां निवृ (प्रे.) ।

शंका—, सं. पुं. (सं. न.) संदेहनिवारणम् ।

समाधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) अंतर्ध्यानं, समा-धानं, ब्रह्मणि स्थितिः (स्त्री.), योगस्य चरम-फलं २. प्रेतावटः, शव-अस्थि,-गर्तः ३. निद्रा ४. चित्तैकाग्र्यं, अनन्यमनस्कता ५. योगः ६. मौनं ७. प्रतिशोधः ८. अर्थालंकारभेदः (सा.) ।

—लगाना, क्रि. अ., ब्रह्मणि मनो निविश् (प्रे.) -समाधा (जु. उ. अ.), अंतः ध्या (भ्वा. प. अ.), समाहित-समाधिस्थ (वि.) भू ।

समान, वि. (सं.) तुल्य, सदृक्ष-श-श्, सम, सन्निभ, सविध, सवर्ण,-उपम,-विध,-रूप, -प्रकार ।

समानता, सं. स्त्री. (सं.) समता, साम्यं, सादृश्यं, औपम्यं, सारूप्यं, सावर्ण्यम् ।

समाना, क्रि. अ. (सं. समावेशनम्) प्रविश् (तु. प. अ.), अन्तः या (अ. प. अ.), क्रि. स., प्रविश् (प्रे.), अन्तः स्था (प्रे.), धा-धृ-भृ (कर्म.) ।

समाप्त, वि. (सं.) अवसित, अंतं,-गत-इत, संपूरित, संपूर्ण, निःशेषीभूत ।

—करना, क्रि. स., समाप् (स्वा. प, अ., प्रे.), निर्वृत् (प्रे.), सं-पृ (प्रे.)-पूर् (चु.), पारं-अंतं गम् (प्रे.), निःशिष् (प्रे.), संपद् (प्रे.) ।

—होना, क्रि. अ., समाप्-अवसो (कर्म.)., निःशेषीभू , समाप्तिं-अंतं गम् ।

समाप्ति, सं. स्त्री. (सं.) अंतः, परि-, अवसानं, निर्वृत्तिः-सिद्धिः (स्त्री.), निःशेषता २. प्राप्तिः (स्त्री.) ।

समारोह, सं. पुं. (सं.) आडंबरः, विभवः, दे. 'धूमधाम' २. आडंबरमय उत्सवः ।

—से, क्रि. वि., साडंबरं, साटोपम् ।

समार्थक, वि. (सं.) समानार्थक, पर्यायवाचिन्, तुल्याशय (शब्द) ।

समालोचक, सं. पुं. (सं.) गुणदोष-निरूपकः-विवेचकः, आलोचकः ।

समालोचना, सं. स्त्री. (सं.) सं.-,आलो-चनं-ना, गुणदोष,-निरूपणं-विवेचनं-दर्शनं-परीक्षणम् ।

—करना, क्रि. स., गुणदोषान् निरूप् (चु.)-विविच् (रु. उ. अ.)-विचर् (प्रे.), समालोच् (प्रे.) २. छिद्राणि अन्विष् (दि. प. से.) ।

समावर्तन, सं. पुं. (सं. न.) (गुरुकुलात्) प्रत्यागमनं, प्रत्यावृत्तिः (स्त्री.) २. आर्याणां संस्कारभेदः, समा-वर्तः-वृत्तिः (स्त्री.) (धर्म.) ।

समाविष्ट, वि. (सं.) अंतर् ,-गत-भूत-गणित २. एकाग्रचित्त ।

समावेश, सं. पुं. (सं.) अंतर्भावः, अंतर्गणना ।

—करना, क्रि. स., अंतर्भू (प्रे.), अंतर्गण् (चु.) ।

समास, सं. पुं. (सं.) पदसंयोगः (व्या.) २. संक्षेपः ३. संमिश्रणं ४. संग्रहः ।

—करना, क्रि. स., समस् (दि. प. से.), एकीकृ, संमिश्र् (चु.) ।

समासोक्ति, सं. स्त्री. (सं.) अर्थालंकारभेदः (सा.) ।

समाहार, सं. पुं. (सं.) संचयनं, संग्रहणं २. चयः, राशिः ३. संक्षेपः ।

—द्वंद्व, सं. पुं. (सं.) द्वंद्वसमासभेदः (व्या.) ।

समिति, सं. स्त्री. (सं.) परिषद् (स्त्री.) सभा, दे. ।

समिधा, सं. स्त्री. [सं. समिध् (स्त्री.)] यज्ञिय-होमीय,-इंधनं-एधः २. एधः, इंधनं दे. ।

समीकरण, सं. पुं. (सं. न.) समानीकरणं, समीक्रिया २. क्रियाभेदः ।

समीक्षा, सं. स्त्री. (सं.) समालोचना, दे. ।

समीचीन, वि. (सं.) सत्य, यथार्थ, अवितथ २. उचित, उपपन्न, योग्य, ३. न्याय्य, धर्म्य ।

समीप, क्रि. वि. (सं. समीपं-पे) अंतिकं-के-कात्, आरात्, निकषा, निकटं-टे, उपकंठं-ठे, समया, सविधे, सकाशं-शे-शात्, संनिधौ, उप– ।

—वर्ती, वि. (सं.-र्तिन्) समीप, निकट, संनिहित, अंतिक, अभ्याश, आसन्न, उपकंठ, उपांत, अभ्यर्ण, अभ्यग्र, सविध, समीप-निकट-स्थ-वर्तिन् ।

समीपता, सं. स्त्री. (सं.) सामीप्यं, नैकट्यं, संनिधिः (पुं.), आसन्नता, संनिकर्षः ।

समीर, सं. पुं. (सं.) समीरः, समीरणः, पवनः, वायुः दे. ।

समीहा, सं. स्त्री. (सं.) उद्योगः, प्रयत्नः २. इच्छा ३. अनुसंधानम् ।

समुंदर, सं. पुं. (सं. समुद्रः) सागरः ।

—झाग, सं. पुं., दे. 'समुद्रफेन' ।

—सोख, सं. पुं. (सं. समुद्रशोषः) क्षुपभेदः ।

समुचित, वि. (सं.) यथेष्ट, उचित दे. ।

समुच्चय, सं. पुं. (सं. समाहारः) संमिलनं २. राशिः, समूहः ३. अर्थालंकार-भेदः (सा.) ।

समुद, वि. (सं.) सहर्ष, सामोद, सानन्द । अ., सहर्षं, सानन्दम् ।

समुदाय, सं. पुं. (सं.) नि-सं,-चयः, निकरः, राशिः २. गणः, संघः, वृंदं, समूहः ।

समुद्र, सं. पुं (सं.) सागरः, अब्धिः, वारि-अंभो-उद-जल-नीर-अंबु-पाथो,-धिः, पारावारः, सरित्पतिः, सिंधुः, अर्णवः, रत्नाकरः, नीर-वारि-जल,-निधिः, मकरालयः, ऊर्मिमालिन् ।

—तट, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सागर,-तीरं-कूलं, रोधस् (न.), वेला ।

—पत्नी, सं. स्त्री. (सं.) समुद्र,-कांता-गा, नदी ।

—फेन, सं. पुं. (सं.) समुद्रकफः, जलहासः, सामुद्रम् ।

—यान, सं. पुं. (सं. न.) पोतः ।

—लवण, सं. पुं. (सं. न.) अक्षि(क्षी)वं, वशि(सि)रं, समुद्रकं, लवणाब्धिजम् ।

—वह्नि, सं. पुं. (सं.) वडवानलः, वाडवः ।

समुद्रगुप्त, सं. पुं. (सं.) गुप्तवंशीयः सम्राड्विशेषः ।

समुद्रीय, वि. (सं.) समुद्रिय, समुद्रथ ।

समुल्लास, सं. पुं. (सं.) परिच्छेदः, अध्यायः २. आनंदः, हर्षः ।

समूचा, वि. (सं. समुच्चयः>) समस्त, समग्र, संपूर्ण ।

समूल, वि. (सं.) सकारण, सहेतुक २. मूल,-वत्-अन्वित । क्रि. वि. (सं. न.) मूलतः, सम्पूर्णतया, अशेषेण, साकल्येन ।

समूलोन्मूलन, सं. पुं. (सं. न.) (मूलतः) उत्पाटनं-उच्छेदनं-व्यपरोपणम् ।

—करना, क्रि. स., उत्पट् (चु.) विध्वंस्-उत्सद् (प्रे.), आमूलं उत्खन् (भ्वा. प. से.)-व्यपरुह् (प्रे., व्यपरोपयति) ।

समूह, सं. पुं. (सं.) निवहः, व्यूहः, संदोहः, विसरः, व्रजः, स्तोमः, ओघः, निकरः, व्रातः, वारः, संघातः, नि-प्र-सं,-चयः, समुद(दा)यः, समवायः, गणः, संहतिः (स्त्री.), वृंदं, निकुरंबं, कदंबकं, समाहारः, समुच्चयः, –मंडलं, –जालं, -पूगः,-ग्रामः (समासांत में) । (सदृश पदार्थों का) वर्गः । (जंतुओं का) संघः, सार्थः । (सजातीय जंतुओं का) कुलम् (टेढ़े जंतुओं का) यूथः-थं । (पशुओं का) समजः । (औरों का झुंड) समाजः । (एक धर्मवालों का) निकायः । (अन्नादि का ढेर) पुंजः, पिंजः, पुंजिः (स्त्री.), राशिः, उत्करः, कूटः-टं २. जनता, जनमेलकः, जन–लोक,-संघः-समुदायः-संमर्दः-संकुलं ३. बहुत्वं, बाहुल्यं, बहु-बृहत, संख्या ।

समूहनी, सं. स्त्री. (सं.) संमार्जनी, 'दे. झाड़' ।

समृद्ध, वि. (सं.) अति-शय-, धनाढ्य–धनिक-संपन्न ।

समृद्धि, सं. स्त्री. (सं.) एधा, अतिशय-प्रचुर-, संपद्-संपत्तिः (दोनों स्त्री.)-वित्तं विभवः–वैभवम् ।

समेटना, क्रि. स. (हिं. सिमटना) एकत्र कृ, संग्रह् (क्र्. प. से.), संचि (स्वा. उ. अ.), संनी-समाहृ (भ्वा. प. अ.) २. आकुंच् (प्रे.), संकुच् (तु. प. से.), संहृ (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं. तथा भाव, एकत्रकरणं संग्रहणं, संचयनं, संनयनं, समाहरणं, आकुञ्चनं, संकोचनम् ।

समेत, क्रि. वि. (सं. न.) सह, साकं, सार्धं, सहितं, समं (सब तृतीया के साथ) । वि. (सं.) संयुक्त ।

समोसा, सं. पुं. (फ़ा.) *समोषः, त्रिकोणाकारः पक्वान्नभेदः ।

सम्यक्, क्रि. वि. (सं.) सर्वथा, सर्वप्रकारेण २. संपूर्णतया, सामस्त्येन, साद्यंतं, संपूर्णं ३. सुष्ठु साधु ।

सम्राज्ञी, सं. स्त्री. (सं.) सम्राट्पत्नी २. राज-राजेश्वरी, अधि-महा-राजाधि,-राज्ञी ।

सम्राट्, सं. पुं. (सं. सम्राज्) महा-, राजाधि-राजः, सार्वभौमः, चक्रवर्तिन्, मण्डलेश्वरः, एक,-अधिपतिः-राजः, अधि,-ईश्वरः-राजः ।

सयाना, वि., दे. 'स्याना' ।

सयूथ्य, वि. (सं.) एक-स-समान-अभिन्न,-वर्ण-गण-संघ ।

सयोनि, वि. (सं.) सोदर, सहोदर, सगर्भ, सोदर्य २. निकट-समीप,-सम्बन्धिन् । सं. पुं. (सं.) सहोदरः, सोदरः, सोदर्यः २. इन्द्रः, शचीपतिः ।

सर[1], सं. पुं. [सं. सरस् (न.)] सरसी, कासारः, ह्रदः, सरोवरः, पद्माकरः, तटाकः-कं, तडागः-गं, जलाशयः ।

सर[2], सं. पुं. (फ़ा.) शिरस् (न.), दे. 'सिर' २. शिखरं, शिखा, अग्रम् । वि., पराजित, अभिभूत ।

—अंजाम, सं. पुं. (फ़ा.) सामग्री, संभारः २. सिद्धिः, समाप्तिः (स्त्री.) ।

—कश, वि, (फ़ा.) उद्धत, उद्दंड २. अवश्य ३. कु-दुश् -,चेष्टक ।

—कशी, सं. स्त्री. (फ़ा.) औद्धत्यं, उद्दण्डता २. कुचेष्टा, चापल्यम् ।

—ग़ना,—गरोह, सं. पुं. (फ़ा.) अग्रणीः, नायकः ।

—गर्म, वि. (फ़ा.) उत्साहिन्, उत्साहवत् ।

—गर्मी, सं. स्त्री., उत्साहः, व्यग्रता ।

—ज़ोर, वि. (फ़ा.) बलवत् २. उद्दण्ड ।

—ज़ोरी, सं. स्त्री., बलात्कारः २. उद्दण्डता ।

—ताज़, सं. पुं. (फ़ा.) पुरोगः, नायकः, शिरो-चूडा-मुकुट,-मणिः ।

—पंच, सं. पुं. (फ़ा.+हिं.) सभा,-पतिः-अध्यक्षः, *पञ्चप्रधानः ।

—परस्त, सं. पुं. (फ़ा.) त्रातृ, रक्षकः २. संरक्षकः, आश्रयदः ।

—परस्ती, सं. स्त्री., रक्षणं, त्राणं २. संरक्षणं, आश्रयः ।

—पेच, सं. पुं. (फ़ा.) उष्णीषभूषणभेदः ।

—बराह, सं. पुं. (फ़ा.) कार्याध्यक्षः, अधि-ष्ठातृ, *प्रवन्धकः ।

—बराही, सं. स्त्री., अधिष्ठानं, *प्रवन्धः, अवेक्षा २. अधिष्ठातृत्वम् ।

—हद, सं. स्त्री. (फ़ा.+अ.) सीमन् (स्त्री.), सीमा, दे. २. सीमांतः, पर्यंतः, प्रांतः ।

—हदी सूबा, सं. पुं. (फ़ा.) (पश्चिमोत्तर-) सीमाप्रांतः ।

—करना, मु., विजि (भ्वा. आ. अ.), अभिभू, वशीकृ ।

सर[3], सं. पुं. (अं.) आंगलीयानामुपाधिभेदः, *शिरोमणिः २. भद्रः, आर्यः ।

सरकंडा, सं. पुं. (सं. शरकांडः) कांडः, तेजनः, गुंद्रकः, क्षुरिकापत्रः, उत्कटः ।

सरकना, क्रि. अ. (सं. सरणं) शनैः-मृदु चल् (भ्वा. प. से.)-सुप्-सृ (दोनों भ्वा. प. अ.) २. सत्वरं सृ ३. अलक्षितं अती (अ. प. अ.) ४. उरसा गम्-चल् । सं. पुं. तथा भाव, मृदु सरणं-सर्पणं-चलनं, इ. ।

सरकाना, क्रि. स., व. 'सरकना' के प्रे. रूप ।

सरकार, सं. स्त्री. (फ़ा.) राज्य,-संस्था-तंत्रं शासक-अधिकारि,-वर्गः, राजमंत्रिणः (बहु.) २. प्रभुः, स्वामिन् ३. राज्यं, राष्ट्रम् ।

सरकारी, वि. (फ़ा.) आधिकारिक, राजकीय, राज्यसंबंधिन् ।

—नौकर, सं. पुं. (फ़ा.) राज्य,-भृत्यः-सेवकः-परिचारकः ।

—नौकरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) राज्य,-सेवा-परिचर्या ।

सरगम, सं. पुं. (हिं. सा+रे+गा+मा) स्वर-,ग्रामः (संगीत) ।

सरघा, सं. स्त्री. (सं.) मधुमक्षिका, दे. ।

सरजा, सं. पुं. (फ़ा. सरजाह=उच्चपदाधिकारी, अ. शरजह् = शेर) नायकः, अग्रणीः, नर-शार्दूलः २. सिंहः ।

सरणी, सं. स्त्री. (सं.) सरणिः (स्त्री.), पथिन्, मार्गः २. पंक्तिः (स्त्री.), रेखा ३. पद्या, पद्धतिः (स्त्री.) ४. शैली, प्रकारः ।

सरद, वि., दे. 'सर्द' ।

सरदई, वि. (फ़ा. सर्दह्) हरित्पीत ।

सरदल, सं. पुं. (देश.) द्वारोर्ध्वस्थूणा ।

सरदा, सं. पुं (फ़ा. सर्दह्) *शीतखर्बुजम् ।

सरदार, सं. पुं. (फ़ा.) नायकः, अग्रणीः,पुरोगः, अध्यक्षः, प्रधानः २. शासकः ३. धनिकः ।

सरदारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) नायकत्वं, प्रधानत्वम् ।

सरन, सं. स्त्री., दे. 'शरण' ।

सरना, क्रि. अ. (सं. सरणं) दे. 'सरकना' । २. कृ-अनुष्ठा (कर्म.), संपद् (दि. आ. अ.), साध् (दि, प. अ.) ।

सरनामा, सं. पुं. (फ़ा.) (निबंधादीनां) शीर्षकं २. पत्रसंज्ञा, दे. 'पता' ३. पत्र,-संबोधनं-प्रारम्भः ।

सरपट, क्रि. वि. (फ़ा. सर+हिं. पटकना) आस्कंदितं-तकम् । क्रि. वि., जवेन, वेगेन ।

—भागना, क्रि. अ., आस्कंद् (भ्वा. प. अ.) २. द्रुतं-सवेगं धाव् (भ्वा. प. से.) ।

सरपत, सं. पुं. (सं. शरपत्रं) कुशाकारो घासभेदः ।

सरमा, सं. स्त्री. (सं.) देवशुनी २. कुक्कुरी ।

सरमाया, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'पूंजी' ।

—दार, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'पूंजीपति' ।

सरयू, सं. स्त्री. (सं.) अयोध्यासमीपवर्तिनदीविशेषः ।

सरल, वि. (सं.) ऋजु, निर्व्याज, निष्कपट, निश्छल, साधु-सत्य,-वृत्त-शील, शुद्ध,-मति-भाव-आत्मन्, दक्षिण, शुचि २. दे. 'सीधा' ३. सुकर, सुसाध्य ४. कृत्रिमतारहित, वास्तविक । (सं. पुं.) पीतः, धूपवृक्षकः, दे. 'चीड़' ५. सरलनिर्यासः, वृकधूपः, दे. 'गंधाबिरोजा' ।

सरलता, सं. स्त्री. (सं.) सारल्यं, निष्कापट्यं, आर्जवं, साधुता, शुचिता, शुद्धभावः २. दे. 'सीधापन' ३. सुकरता, सुसाध्यता ४.बालिश्यं, मौर्ख्यम् ।

सरवन, सं. पुं. (सं. श्रमणः) अंधकमुनिपुत्रः (रामायण) ।

सरवर, सं. पुं., दे. 'सर' (१) ।

सरविस, सं. स्त्री. (अं. सर्विस) सेवा, दे. ।

सरशार, वि. (फ़ा.) मग्न, लीन २. मत्त, क्षीब ।

सरस, वि. (सं.) रस,-युक्त-अन्वित, दे. 'रसीला' २. आर्द्र, उन्न, क्लिन्न ३. हरित, अभ्यग्र ४. सुन्दर ५. मधुर ६. भावपूर्ण, हृदिस्पृश् ७. भावुक, रसिक, सहृदय ।

सरसठ, वि. तथा सं. पुं., दे. 'सड़सठ' ।

सरसता, वि. (सं.) रसवत्ता, दे. 'रसीलापन' २. आर्द्रता, क्लिन्नता ३. हारित्यं, प्रत्यग्रता ४. सुंदरता ५.मधुरता ६. रसिकता, भावुकता ।

सरसब्ज़, वि. (फा.) हरित-त, हरितपर्ण, सरस २. शाद्वल, शाद-तृण,-आवृत ।

—मैदान, सं. पुं. (फ़ा.) शाद्वलः-लं, शाद्वलस्थलं-ली, तृणावृतभूमिः (स्त्री.), शादहरितः-तम् ।

सरसर, सं. पुं. (अनु.) दे. 'सरसराहट' ।

सरसराना, क्रि. अ. (अनु. सरसर) सरसरायते (ना. धा.), सरसरध्वनिः जन् (दि. आ. से.) २. ससरसरशब्दं वा (अ. प. अ.) ३. सृप् (भ्वा. प. अ.), उरसा गम् ।

सरसराहट, सं. स्त्री. (हिं. सरसर) सरसरायितं, सरसरशब्दः, सर्पणध्वनिः २. कंडुः-डूः, खर्जुः-र्जूः (चारों स्त्री.) ३. पवनध्वनिः ।

सरसरी, वि. (फ़ा. सरासरी) सत्वर, सरभस, त्वरित २. स्थूल ।

—तौर पर, क्रि. वि., सत्वरं, त्वरया २. स्थूलरूपेण, मनोयोगं विना ।

—निगाह, सं. स्त्री. विहंगमदृष्टिः (स्त्री.), विहंगावलोकनम् ।

सरसाई, सं. स्त्री. (हिं. सरस) सरसता, रस,-युक्तता-पूर्णता २. शोभा ३. आधिक्यम् ।

सरसाम, सं. पुं. (फ़ा.) त्रिदोषं, संनिपातः, दे. ।

सरसिज, सं. पुं. (सं, न.) पद्मं, अब्जं, कमल, दे. ।

—योनि, सं. पुं. (सं.) चतुर्मुखः, ब्रह्मन् (पुं.) ।

सरसिरुह, सं. पुं. (सं. न.) कमलं, सरोपंके,-रुहम् ।

सरसी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सर' (१) २. वापी ।

—रुह, सं. स्त्री. (सं. न.) पद्मं, कमलं, दे. ।

सरसों, सं. स्त्री. (सं. सर्षपः) (सफ़ेद) सिद्धार्थः, सर्षपः, शुभकः, कदंबकः २. (काली) कृष्णिका, क्षवः, राजिका ।

—का तैल, सं. पुं., सर्षपस्नेहः, *कटुतैलम् ।

सरस्वती, सं. स्त्री. (सं.) शारदा, भारती, वाग्देवी, ब्राह्मी, गीर्देवी, वर्णमातृका २. कुरुक्षेत्रसमीपवर्तिप्राचीननदीविशेषः ३. विद्या, ज्ञानम् ।

सरहज, सं. स्त्री. (सं. श्यालजाया) श्वशुर्यपत्नी ।

सराप, सं. पुं. (सं. शापः) अभिशापः, आक्रोशः, अकरणिः-अजीवनिः-अजननिः (स्त्री.), अवग्रहः, निग्रहः ।
—देना, क्रि. स., अभि-, शप् (भ्वा. उ. अ.), अभिशंस् (भ्वा. प. से.), आक्रुश् (भ्वा. प. अ.), शापं दा ।
सरापा हुआ, वि., अभि,-शप्त, आक्रुष्ट, अभिशप्त ।
सराफ़, सं. पुं. (अ. सर्राफ़) सुवर्णाजीविन्, कनकवणिज् २. टंक-नाणक,-परिवर्तकः ३. श्रेष्ठिन्, कुसीदिकः ।
सराफ़ा, सं. पुं. (अ. सर्राफ़ह्) सुवर्णव्यवसायः, रत्नवाणिज्यं २. सुवर्णाजीवि,-निगमः-हट्टः ३. धनागारं, दे. 'बैंक' ।
सराफ़ी, सं. स्त्री. (हिं. सराफ़) दे. 'सराफ़ा' (१) २. वर्णमालाभेदः, देः. 'महाजनी' ३. टंक-परिवर्तन-शुल्कः ।
सराबोर, वि., दे. 'लथपथ' ।
सराय, सं. स्त्री. (फ़ा.) पांथगृहं, पथिकशाला, दे. 'मुसाफ़िरखाना' २. गृहम् ।
—का कुत्ता, मु., स्वार्थपरायणः ।
—की भठियारी, मु., निर्लज्जा कलहप्रिया च नारी ।
सरावन, सं. पुं. (सं. सरणं>) मत्यं, कोटि-(टी)शः ।
सरासर, क्रि. वि. (फ़ा.) सर्वथा, पूर्णतया, सामस्त्येन २. साद्यंतं ३. साक्षात्, प्रत्यक्षम् ।
सराहना, क्रि. स. (श्लाघनं) श्लाघ् (भ्वा. आ. से.), प्रशंस् (भ्वा. प. से.), ईड् (अ. आ. से.), स्तु (अ. प. अ.) कृत् (चु.), नू (तु. प. से.)। सं. पुं. तथा भाव, प्रशंसा, श्लाघा, स्तवः-वनं, कीर्तनं नुतिः-स्तुतिः (स्त्री.)।
सराहनीय, वि, (सं. श्लाघनीय) स्तुत्य, प्रशस्य, प्रशंसनीय २. उत्तम, श्रेष्ठ ।
सराहनेवाला, सं. पुं., प्रशंसकः, स्तावकः, नावकः ।
सरि, सं. स्त्री. (सं.) निर्झरः, उत्सः, प्रपातः २. जल-धारा,-यन्त्रम् । (हि.) नदी २. माला ३. समता । वि. तुल्य, सदृश । अव्य., पर्यन्तम्,-अवधि, आ- ।
सरित्, सं. (स्त्री.) निम्नगा, नदी दे. २. सूत्रम् ३. दुर्गा ।
—फ़फ, सं. पुं. (सं.) नदी-तटिनी-सरित्,-फेनः-डिंडीरः-कफः ।
—पति, सं. पुं. (सं.) सागरः, समुद्रः ।
—सुत, सं. पुं. (सं.) भीष्मः, गांगेयः ।
सरिता, सं. स्त्री., दे. 'सरित्' ।
सरिश्ता, सं. पुं. (फ़ा.-तह) अधिकरणं, न्यायालयः, दे. २. शासन-,विभागः ३. कार्यालयः ।
सरिश्तेदार, सं. पुं. (फ़ा,-तह्दार) शासन-, विभागाध्यक्षः, *पंजिकाध्यक्षः ।
सरिस, वि. (सं. सदृश, दे.)।
सरीखा, वि. (सं. सदृक्ष) सदृश, दे. ।
सरीसृप, सं. पुं. (सं.) सर्पणशीलो जंतुः २. अहिः, सर्पः ।
सरूप, वि. (सं.) साकार, रूप,-युक्त-अन्वित २. सदृश, तुल्य ३. सुंदर ।
सरूर, सं. पुं. (फ़ा. सुरूर) आनंदः, उल्लासः २. ईषन्म(मा)द्वः, आमत्तता ।
सरे दस्त, क्रि. वि. (फ़ा.) इदानीं, अधुना २. वर्तमाने, अस्मिन् काले ।
सरे बाज़ार, क्रि. वि. (फ़ा.) सर्व,-समक्षं-संमुखं २. प्रकाशं, प्रकटं, व्यक्तम् ।
सरेस, सं. पुं. (फ़ा. सरेश) संश्लेपकद्रव्यभेदः, *श्लेषः ।
सरो, सं. पुं. (फ़ा. सर्व) *सरुः, वृक्षभेदः ।
सरोकार, सं. पुं. (फ़ा.) संबंधः, संपर्कः २. अर्थः, प्रयोजनम् ।
सरोज, सं. पुं. (सं. न.) पद्मं, कमलं, दे. ।
सरोजिनी, सं. स्त्री. (सं.) कमलिनी, पद्मिनी, मृणालिनी २. पद्मवनं ३. कमलम् ।
सरोता, सं. पुं. (सं. सारपत्रं>) *पूग,-कर्तनी-छेदनी ।
सरोरुह, सं. पुं. (सं. न.) सरोजं, कमलं,दे. ।
सरोवर, सं. पुं. (सं.) दे. 'सर'[१] ।
सरोष, वि. (सं.) सकोप, रुष्ट, क्रुद्ध ।
सरोसामान, सं. पुं. (फ़ा. सर+व+सामान) सामग्री, परिच्छदः ।
सरोही, सं. स्त्री. (देश.) राजस्थानप्रदेशे पुरविशेषः २. (तत्र निर्मितः) खड्गः ।
सर्कस, सं. पुं. (अं.) (पशु-) क्रीडा,-अंगणं-(नं.)-रंगः-मण्डलम् ।
सर्ग, सं. पुं. (सं.) (काव्यादीनां) अध्यायः, परिच्छेदः, प्रकरणं २. सृष्टिः-जगदुत्पत्तिः

(स्त्री.) ३. संसारः, जगत् (न.) ४. स्वभावः, प्रकृतिः (स्त्री.) ५. संततिः (स्त्री.), संतानः ६. उद्गमः, मूलं ७. प्रवाहः, स्रावः ८. क्षेपणं, प्रासनं ९. प्राणिन् १०. प्रवृत्तिः (स्त्री.)।

सर्जन[1], सं. पुं. (सं. न.) सृष्टिः-जगदुत्पत्तिः (स्त्री.) २. विसर्जनं, दे.।

सर्जन[2], सं. पुं. (अं.) शस्त्रवैद्यः, शल्य-चिकित्सकः।

सर्जरी, सं. स्त्री. (अं.) शल्य,-चिकित्सा-शास्त्रं, शस्त्रवैद्यकं २. शल्यक्रिया।

सर्जि, सं. स्त्री. (सं.) सर्ज्जी, सर्ज्जिका, सर्ज्जि-सर्ज्जिका,-क्षारः, क्षारः, कापोतः, सौवर्चलं, रुचकं, दे. 'सज्जी'।

सर्जू, सं. स्त्री. दे. 'सरयू'।

सर्टिफ़िकेट, सं. पुं. (अं.) प्रमाणपत्रं, दे.।

सर्द, वि. (फ़ा. मि. सं. शरद>) शीत, शीतल दे. २. अलस, मंद ३. नपुंसक, निर्वीर्य ४. निःस्वाद, नीरस।

—ऋतु, सं. स्त्री. (फ़ा.+सं.) शरद् (स्त्री.) दे.।

—ख़ाना, सं. पुं., हिमगृहम्।

—मिजाज़, वि. (फ़ा.+अ.) निरुत्साह २. रूक्ष।

—होना, मु., मृ. (तु. आ. अ.) २. शीतली-मंदी,-भू।

सर्दी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शीतं, शैत्यं, हिमः २. प्रतिश्यायः।

—का बुख़ार, सं. पुं., शीतज्वरः।

—खाना, मु., शीतपीडित (वि.) भू।

सर्प, सं. पुं. (सं.) अहिः, भुजगः, दे. 'साँप'।

—भक्षक, सं. पुं. (सं.) मयूरः।

—मणि, सं. पुं. (सं.) भुजगफणजः।

—याग, सं. पुं. (सं.) जनमेजयकृतो नागयज्ञः।

—राज, सं. पुं. (सं.) शेषनागः २. वासुकिः-केयः।

—लता, सं. स्त्री. (सं.) नागवल्ली, दे. 'पान'।

सर्पिणी, सं. स्त्री. (सं.) भुजगी, दे. 'सांपिन'।

सर्फ़, वि. (अ.) व्ययित, विनियोजित, दे. 'खर्च'।

सर्फ़ा, सं. पुं. (अ. सर्फ़ह्) व्ययः, विनियोगः २. मितव्ययः।

सर्राफ़, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'सराफ़'।

सर्व, सर्व. (सं.) सकल, समस्त।

—काम्य, वि. (सं.) सर्व,-प्रिय-इष्ट।

—काल, अ० (सं.) सर्वदा, नित्यम्।

—कालीन, वि. (सं.) सार्वकालिक, सदातन।

—जनीन, वि. (सं.) सार्वजनिक, विश्वजनीन।

—जित्, वि. (सं.) विश्व,-जित्-विजेतृ २. उत्तम, श्रेष्ठ। (सं. पुं.) यज्ञभेदः २. मृत्युः।

—ज्ञ, वि. (सं.) सर्व-विश्व-वेत्तृ-विद्। (सं. पुं.) परमेश्वरः।

—ज्ञता, सं. स्त्री. (सं.) विश्ववेत्तृत्वम्।

—तंत्र, वि. (सं.) सर्वशास्त्रसंमत। (सं. न.) सर्वशास्त्रम्।

—तंत्रस्वतंत्र, वि. (सं.) सर्वशास्त्रपारग।

—दमन, सं. पुं. (सं.) भरतराजः, दुष्यंत-पुत्रः। वि. (सं.) सर्वाभिभावक।

—दर्शी, वि. (सं.-र्शिन्) विश्वद्रष्टृ।

—नाम, सं. पुं. (सं.-मन् (न.) शब्दभेदः (व्या.)।

—नाश, सं. पुं. (सं.) विध्वंसः, विनाशः, समूलोच्छेदः।

—नियंता, सं. पुं. (सं.-तृ) विश्वनियामकः, परमेश्वरः।

—प्रिय, वि. (सं.) विश्व,-प्रिय-इष्ट-वल्लभ।

—भक्षी, सं. पुं. (सं.-क्षिन्) सर्वभक्षकः २. अग्निः।

—भूत, सं. पुं. (सं. न.) चराचर, सर्वसृष्टिः (स्त्री.)।

—मेध, सं. पुं. (सं.) सोमयागभेदः २. सार्वजनिकसत्रम्।

—वल्लभा, सं. स्त्री. (सं.) कुलटा, पुंश्चली।

—व्यापक, वि. (सं.) विश्वव्यापिन्, विश्व-सर्व,-ग-गत।

—शक्तिमान्, वि. (सं.-मत्) सर्वसामर्थ्ययुत। (सं. पुं.) परमेश्वरः।

—श्रेष्ठ, वि. (सं.) सर्व-,उत्तम, प्रशस्ततम।

—साक्षी, सं. पुं. (सं.-क्षिन्) परमेश्वरः २. अग्निः ३. वायुः।

—साधारण, सं. पुं., जनाः, लोकाः, जनता, पृथग्-प्राकृत,-जनाः। वि. (सं.) साधारण, सामान्य।

—सामान्य, वि. (सं.) साधारण, प्राकृत, प्रायिक।

सर्वत्र, अव्य. (सं.) सर्वदिग्देशकाले ।
—ग, वि. (सं.) सर्वव्यापक ।
सर्वथा, अव्य. (सं.) सर्वप्रकारं-रेण २. सामस्त्येन ३. नितांतं, अत्यन्तम् ।
सर्वदा, अव्य. (स.) सदा, दे. ।
सर्वस्व, सं. पुं. (सं. न.) समस्तसंपद् (स्त्री.), समग्रद्रव्यं, निखिलधनम् ।
सर्वांग, सं. पुं. (सं. न.) समस्तशरीरं २. सर्ववेदांगानि (न. बहु.) ३. समग्रावयवाः (पुं. बहु.) ।
सर्वांगीण, वि. (सं.) सार्वदेहिक-सर्वांगिक (-की स्त्री.) ।
सर्वात्मा, सं. पुं. (सं.-त्मन्) परमात्मन्, ब्रह्मन् (न.) ।
सर्वाधिकार, सं. पुं. (सं.) पूर्णप्रभुत्वं, ऐकाधिपत्यम् ।
सर्वे, सं. पुं (अं.) सर्वेक्षणम्, भूमापनम् ।
सर्वेयर, सं. पुं. (अं.) सर्वेक्षकः, भूमापकः ।
सर्वेश्वर, सं. पुं. (सं.) सर्वेशः, परमेशः-श्वरः २. चक्रवर्तिन्, सार्वभौमः ।
सर्षप, सं. पुं. (सं.) दे. 'सरसों' ।
सलगम, सं. पुं., दे. 'शलगम' ।
सलज्ज, वि. (सं.) ह्रीमत्, लज्जाशील दे. ।
सलतनत, सं. स्त्री. (अ.) राज्यं २. साम्राज्यं ३. शासनम् ।
सलना, क्रि. अ. (सं. शल्यं) ब. 'सालना' के कर्म. के रूप ।
सलफ़, वि. (अ.) प्राचीन, पुरातन, पुराण । सं. पुं., पूर्वजाः, पूर्वपुरुषाः, पितरः (सभी बहु.) ।
सलब, वि. (अ. सल्ब) नष्ट, उच्छिन्न ।
सलवाई, सं. स्त्री. (हिं. सलवाना) वेधन,-शुल्कं-भृतिः (स्त्री.) ।
सलवाना, क्रि. प्रे., ब. 'सालना' के प्रे. रूप ।
सलहज, सं. स्त्री., दे. 'सरहज' ।
सलाई[१], सं. स्त्री. (सं. शलाका) धात्वादिनिर्मिता तनुयष्टिः (स्त्री.) २. दीपशलाका ।
सलाई[२], सं. स्त्री. (हिं. सालना) वेधः-धनं २. दे. 'सलवाई' ।
सलाख, सं. स्त्री. (फ़ा. मि. सं. शलाका) दे. 'सलाई' २. धातु-दंडः-यष्टिः (स्त्री.) ३. रेखा ।

सलाजीत, सं. स्त्री., दे. 'शिलाजीत' ।
सलाद, सं. पुं. (अं. सैलाड) शिग्रुखाद्यम् ।
सलाम, सं. पुं. (अ.) प्रणामः, दे. ।
—अलैक या अलैकम, प्रणामः, नमस्ते, नमस्कारः ।
दूर से—करना, मु. (अनिष्टं दुर्जनं वा दूरतः) परिहृ (भ्वा. प. अ.)-हा (जु. प. अ.) ।
सलामत, वि. (अ.) सुरक्षित, अक्षत, संकटमुक्त २. जीवत्, सजीव ३. स्वस्थ, नीरोग ४. विद्यमान, वर्तमान । क्रि. वि., सकुशलं, क्षेमेण ।
—रहना, क्रि. अ., स्वस्थ (वि.) जीव् (भ्वा. प. से.) कुशली वृत् (भ्वा. आ. से.) ।
सलामती, सं. स्त्री. (अ. सलामत) स्वास्थ्यं २. कुशलं, क्षेमः ।
—से, मु., ईश्वरकृपया ।
सलामी, सं. स्त्री. (अ. सलाम) नमस्क्रिया, अभिवादनं, २. सैनिक,-प्रणामः-प्रणतिः (स्त्री.)-नमस्कारः ३. अग्न्यस्त्रैः संमानना-संभावना ४. प्रवणं, निम्न-अवसर्पि,-भूमिः (स्त्री.) ।
—उतारना, मु., अग्न्यस्त्रैः संभू संमन् (प्रे.) ।
सलाह, सं. स्त्री. (अ.) अभिप्रायः, तर्कः, मतं-तिः (स्त्री.) २. परामर्शः, मंत्रणा ३. उपदेशः, मंत्रः ।
—करना, क्रि. अ., विचर (प्रे.), संमंत्र् (चु. आ. से.), परामृश् (तु. प. अ., तृतीया के साथ) उपदेशार्थं प्रच्छ् (तु. प. अ.) ।
—कार, स. पुं. (अ.+फ़ा.) उपदेष्टृ, मंत्रदः, परामर्शप्रदः, बुद्धिसहायः ।
—देना, क्रि. स., उपदिश् (तु. प. अ.), अनुशास् (अ. प. से.), मंत्र् (चु. उ. से.) ।
—ठहरना, मु., सर्वैः निश्चि-निर्णी (कर्म.), सांमत्यं जन् (दि. आ. से.) ।
सलिल, सं. पुं. (सं. न.) अंबु, वारि, जलं दे. ।
—निधि, सं. पुं. (सं.) सागरः, समुद्रः दे. ।
सलिलाहार, वि. (सं.) सलिल-जल-नीर,-अशन-भोजन । सं. पुं. (सं.) जल-नीर,-अशनम्-आहारः ।
सलीका, सं. पुं. (अ.) कौशलं, दाक्ष्यं, वैदग्ध्यं, चातुर्यं २. समय-शिष्ट,-आचारः, शिष्टता ३. आचारः, चरित्रं, व्यवहारः ४. सभ्यता ।

—मंद, वि. (अ.+फ़ा.) दक्ष, कुशल, विदग्ध, चतुर २. शिष्ट, शिष्टाचारिन् ३. सभ्य ।

सलीस, वि. (अ.) सुगम, सुबोध २. दे. 'मुहावरेदार' ।

सलूक, सं. पुं. (अ.) व्यवहारः, वृत्तिः (स्त्री.), वर्तनं २. स्नेहः, सद्भावः ३. उपकारः ।

सलूना, वि. (सं. सलवण) ल(ला)वण, लावणिक । सं. पुं., व्यंजनं, दे. 'भाजी' ।

सलोतर, सं. पुं. (सं. शालिहोत्रः>) १-२, पशु-अश्व,-चिकित्सा ।

सलोतरी, सं. पुं. (हिं. सलोतर) १-२. पशु-अश्व,-चिकित्सकः-वैद्यः ।

सलोना, वि. (सं. सलवण) दे. 'सलूना' वि. २. सुन्दर, लावण्यमय, छविमत् ३. स्वादु, सरस ।

सलोनो, सं. स्त्री. (सं. श्रावणी) ऋषितर्पणी, रक्षाबंधनं दे. ।

सवन, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञस्नानं २. सोमपानं ३. यज्ञः ४. प्रसवः ।

सवर्ण, वि. (सं.) तुल्य-समान-स-एक,-जाति-जातीय-वर्ण २. सदृश, समान, तुल्य ।

सवा, वि. (सं. सपाद) पादाधिक, पादोर्ध्व ।

सवाब, स. पुं. (अ.) पुण्यं, सुकृतफलं २. हितं, उपकारः ।

सवाया, वि., दे. 'सवा' ।

सवार, सं. पुं. (फ़ा.) सादिन्, तुरगिन्, अश्व,-आरोहः-आरोहिन् । वि., आरूढ़, अधिरूढ़, उपर्यासीन ।

—होना, क्रि. स. (अश्वादिकं) अधि-अध्या-आ-समा-रुह् (भ्वा. प. अ.), अधिस्था (भ्वा. प. अ.), अध्यास् (अ. आ. से.) ।

सवारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) अधि-अध्या-आ,-रोहणं, आ,-रोहः-रूढं, (रथादिभिः) संचरणं-विहरणं २. यानं, वाहनं ३. आरोहकः, आरोहिन्, यात्रिन्, यात्रिकः ४. यात्रा, दे. 'जलूस' ।

—करना, क्रि. अ., अश्वादिभिः गम्-या (अ. प. अ.) ।

सवाल, सं. पुं. (अ.) अनुयोगः, प्रश्नः दे. । २. निवेदनं, प्रार्थना ३. भिक्षायाच्ञा ४. गणित-प्रश्नः ५. प्रार्थनाविषयः ।

—जवाब, सं. पुं. (अ.) प्रश्नोत्तरं २. वाद-प्रतिवादः ३. कलहः ।

—जवाब करना, मु., विवद् (भ्वा. आ. से.), विचर् (प्रे.), तर्क् (चु.), ऊहापोहं कृ ।

सवालिया, वि. (अ. सवाल>) प्रश्नात्मक, पृच्छापर ।

सवाली, वि. (अ. सवाल>) याचक, भिक्षुक, अर्थिन् ।

सविकल्प, वि. (सं.) संशय-संदेह-विकल्प,-युक्त, संदिग्ध २. साशंक, संशयान, संदिहान । सं. पुं. (सं.) समाधिभेदः ।

सविता, सं. पुं. (सं.-तृ) सूर्यः, भानुः ।

सवित्री, सं. स्त्री. (सं.) साविका, दे. 'दाई' २. जननी ३. गौः (स्त्री.) ।

सवेरा, सं. पुं. [सं. सुवेला>(स्त्री.)] अरुणोदयः, अहर्मुखं, प्रातःकालः, दे. विलम्ब-चिरता-चिरत्व,-अभावः ।

सवैया, सं. पुं. (हिं. सवा) मालिनी, छंदोभेदः २. सपादसेरात्मकं भारमानं ३. सपादगुणन-सूची ।

सव्य, वि. (सं.) वाम, दे. 'बायाँ' २. दक्षिण (कभी ही) ३. विरुद्ध, प्रतिकूल ।

—साची, सं. पुं. (सं.-चिन्) अर्जुनः ।

सशंक, वि. (सं.) दोलायमानं, संशयापन्न, संशयान २. भीत, उद्विग्न, त्रस्त ३. भीम, भयंकर ।

ससुर, सं. पुं. (सं. श्वशुरः) पतिपितृ २. जाया-जनकः ३. (गाली) दुष्टः, शठः, खलः ।

ससुराल, सं. स्त्री. (सं. श्वशुरालयः) १-२. पति-पत्नी,-पितृगृहं, श्वशुरगृहम् ।

ससुरी, सं. स्त्री. (हिं. ससुर) श्वश्रूः (स्त्री.), दे. 'सास' २. दुष्टा, पापा ।

सस्ता, वि. (सं. स्वस्थ>) अल्प,-अर्घ-मूल्य, सुखक्रेय २. सुलभ ३. सामान्य, साधारण, अवर ।

—होना, क्रि. अ., अल्पमूल्य-सुखक्रेय (वि.) भू ।

सस्ते छूटना, मु., स्तोकात् मुच् (कर्म.) ।

सस्य, सं. पुं. (सं. न.) शस्यं, धान्यं, व्रीह्यं, व्रीहिः, स्तंबकरिः २. वृक्षादीनां फलम् ।

सह, अव्य. (सं.) साकं, सार्धं, समं, सहितं (सब तृतीया के साथ) दे. 'साथ' ।

—कार, सं. पुं. (सं.) आम्रः, आम्रं २. सहायकः ३. सहयोगः ।

—कारिता, सं, स्त्री. (सं.) सहयोगिता २, सहायता ।

—कारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) सह,-कृत्-कृत्वन्-योगिन्, सव्यवसायिन् २. सहायकः ।
—गमन, सं. पुं. (सं. न.) सह,-चरणं-व्रजनं २. पतिशवेन सह ज्वलनं, सह,-मरणं-अनुगमनम् ।
—गामिनी, सं. स्त्री. (सं.) सहमृता, पत्या सह ज्वलिता नारी २. पत्नी ३. सहचरी ।
—गामी, सं. पुं. (सं.-मिन्) संगिन्, सह,-चरः-चारिन्-यायिन्-वर्तिन् २. अनुयायिन् ।
—चर, सं. पुं. (सं.) दे. 'सहगामी' (१) । २. सेवकः ३. सखि, मित्रम् ।
—चरी, सं. स्त्री. (सं.) पत्नी, भार्या २. सखी, वयस्या ३. सहगामिनी, संगिनी ।
—चार, सं. पुं. (सं.) दे. 'सहगामिन्' (१) । २. संगः, संगतिः (स्त्री.) ।
—चारिणी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सहचरी'(१-३)।
—चारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) दे. 'सहगामिन्' (१) । २. सेवकः, अनुचरः ।
—जात, वि. (सं.) सहजन्मन्, यमज २. सोदर, सहोदर ।
—जीवी, वि. (सं.-विन्) समकालीन २. महवासिन् ।
—धर्मिणी, सं. स्त्री. (सं.) सहधर्म,-चरी-चारिणी, धर्मपत्नी ।
—पाठी, सं. पुं. (सं.-ठिन्) सह,-अध्यायिन्-पाठकः ।
—भोज, सं. पुं. (सं.) सन्धिः (स्त्री.), सहभक्षणं, संभक्षः ।
—भोजी, सं. पुं. (सं.-जिन्) सहभक्षकः ।
—मत, वि. (सं.) एक,-मत-चित्त, संवादिन्, संप्रतिपन्न ।
—योग, सं. पुं. (सं.) सह,-कारः-कारिता-योगिता २. संगतिः (स्त्री.) ३. सहायता ।
—योगी, सं. पुं. (सं.-गिन्) दे. 'सहकारी' (१-२) ३. समवयस्क ४. समकालीन ।
—वाद, सं. पुं. (सं.) वादप्रतिवादः, हेतु-,वादः।
—वास, सं. पुं. (सं.) सहवसतिः (स्त्री.) २. संगः ३. मैथुनम् ।
—वासी, सं. पुं. (सं.-सिन्) सहवासकृत २. दे. 'सहगामी' ।
सहज, वि. (सं.) सुगमं, सरल, सुकर २. सहजात, दे. ३. स्वाभाविक, प्राकृतिक ४. साधारण । क्रि. वि., सौकर्येण, सुखम् ।
—पथ, सं. पुं. (सं. सहज+पथिन्>) सहजपथनामा वैष्णवसंप्रदायविशेषः ।
—मित्र, सं. पुं. (सं. न.) स्वाभाविकसुहृद् २. भागिनेयः ३. भ्रातृष्वसेयः ४. पैतृष्वसेयः ।
—शत्रु, सं. पुं. (सं.) स्वाभाविकशत्रुः, सहजारिः २. पितृव्यपुत्रः ३. वैमात्रेयभ्रातृ ।
सहजन, सं. पुं., दे. 'सहिजन' ।
सहजिया, सं. पुं. (सं. सहज>) सहजमतानुयायिन् ।
सहदेव, सं. पुं. (सं.) पांडुराजस्य पंचमपुत्रः ।
सहन[1], सं. पुं. (सं. न.) सहिष्णुता, मर्षः, मर्षणं २. क्षमा, तितिक्षा, क्षांतिः (स्त्री.) ।
—करना, क्रि. अ. दे., 'सहना' ।
—शील, वि. (सं.) सहिष्णु, तितिक्षु २. क्षमिन्, क्षमितृ, सहन ।
—शीलता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सहन' (१-२) ।
सहन[2], सं. पुं. (अ.) अंगनं, प्रांगणं, अजिरं, चत्वरम् ।
सहना, क्रि. अ. (सं. सहनं) क्षम्,सह् (भ्वा. आ. से.), तिज् (सन्नन्त, तितिक्षते), मृष् (दि. प. से., चु.) । सं. पुं. तथा भाव, सहनं, सहिष्णुता, सहनशीलता, क्षमा, मर्षणं, क्षान्तिः (स्त्री.), तितिक्षा ।
सहनीय, वि. (सं.) मर्षणीय, सह्य, सोढव्य, क्षमार्ह, क्षन्तव्य ।
सहने वाला, सं. पुं., सोढृ, क्षन्तृ,-सहः ।
सहम, सं. पुं. (फ़ा.) भयं, त्रासः २. संकोचः, दे. 'लिहाज़' ।
सहमना, क्रि. अ. (फ़ा. सहम) दे. 'डरना' ।
सहर, सं. स्त्री. (अ.) उषा, प्रभातम् ।
सहरा, सं. पुं. (अ.) मरुः, मरु,-स्थलं-भूमिः (स्त्री.) २. वनं, निविडकाननम् ।
सहरी, सं. स्त्री. (सं. शफरी) मीनभेदः ।
सहल, वि. (अ.) सरल, सुगम, सुकर, सुसाध्य ।
सहला(रा)ना, क्रि. स. (हिं-सहर = धीरे अथवा अनु०) मृद् (क्र्. प. से.), घृष् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं. अंगमर्दनं, संवाहनम् ।
सहसा, अव्य. (सं.) अकस्मात्, एकपदे, अकांडे-डे, अतर्कितं, झटिति (सब अव्य.) ।
सहस्र, वि. (सं. न.) दशशतं-तकम् । सं. पुं., दशशतसंख्या २. तद्बोधकांकाश्च (१०००) ।

—कर, सं. पुं. (सं.) सहस्र,-किरणः-रश्मिः, सूर्यः ।

—दल, सं. पुं. (सं. न.) सहस्रपत्रं, कमलम् ।

—नयन, सं. पुं. (सं.) सहस्र,-लोचनः-नेत्रः-दृश् ।

—नाम, सं. पुं. [सं.-मन् (न.)] सहस्र-नामयुतं देवस्तोत्रम् ।

—बाहु, सं. पुं. (सं.) शिवः, २. कार्तवीर्योऽर्जुनः, नृपविशेषः ३. बलिनृपस्य ज्येष्ठसुतः ।

सहस्रांशु, सं. पुं. (सं.) सूर्यः ।

सहस्राक्ष, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः २. विष्णुः ।

सहाइ-ई, सं. पुं. (सं. सहायः) सहायकः दे. ।

सहाध्यायी, सं. पुं. (सं.-यिन्) दे. 'सहपाठी'।

सहानुभूति, सं. स्त्री. (सं.) समवेदनं-ना, समदुःख(खि)ता २. समदुःखसुखता ।

—करना या दिखाना, क्रि. अ., सहानुभूतिं प्रकटयति (ना. धा.), प्रकाश् (प्रे.) ।

सहाय, सं. पुं. (सं.) सहायकः, दे. २. सहायता, दे. ३. आश्रयः ।

सहायक, वि. (सं.) सहायः, उप,-कर्तृ-कारिन्-कारकः, साहाय्यदः. अभिसरः, अनु,-चरः-प्लवः २. उप–, (उ. उपमंत्री) ।

सहायता, सं. स्त्री. (सं.) साहाय्यं, उप,-कारः-कृतं-कृतिः (स्त्री.) २. अनुग्रहः ।

—करना, क्रि. स., साहाय्यं कृ, सहायकः भू, उपकृ (षष्ठी के साथ), अनुग्रह् (क्र्. प. से.)।

सहारना, क्रि. स. (हिं. सहारा) दे. 'सहना' २. धृ (चु.), भृ (जु. उ. अ.) ३. उत्तम्भ्-उपस्कम्भ् । (क्र्. प. से.) । सं. पुं., दे. 'सहना' सं. पुं. २. धारणं, उत्तम्भनं, उपस्तम्भः ।

सहारा, सं. पुं. (सं. सहाय>) दे. सहायता (१) २. आश्रयः, अवलंबः, अवष्टंभः ३. विश्वासः, प्रत्ययः, विश्रंभः ।

—देना, क्रि. स., साहाय्यं कृ, उपकृ २. उत्तंभ्-उपस्तम्भ् (क्र्. प. से.) ३. शरणं-आश्रयं दा, गुप् (भ्वा. प. से.) ४. समाश्वस् (प्रे.) ।

—ढूंढ़ना, मु., आश्रयं अन्विष् (दि. प. से.)।

सहिजन, सं. पुं. (सं. शोभांजनः) तीक्ष्णगंधः, सु-,तीक्ष्णः, रुचिरांजनः ।

सहित, वि. (सं.) समेत, युक्त, संगत, अन्वित, दे. 'साथ' तथा 'सह' । क्रि. वि., साकं, सार्धं, समं, सह ।

सहिष्णु, वि. (सं.) सहनशील, दे. ।

सहिष्णुता, सं. स्त्री. (सं.) सहनशीलता, दे. ।

सही, वि. (फ़ा. सहीह) सत्य, यथार्थ २. प्रामाणिक ३. शुद्ध, निर्दोष ।

सहीफ़ा, सं. पुं. (अ.) ग्रन्थः, पुस्तकम् २. धर्म,-ग्रन्थः-पुस्तकम् ३. पत्रम् ४.पत्रिका ।

—सलामत, वि. (हिं+अ.) स्वस्थ, नीरोग २. संपूर्ण, निर्दोष, त्रुटिरहित ।

सहूलियत, सं. स्त्री. (फ़ा.) सुकरता, सुगमता २. शिष्टाचारः ।

सहृदय, वि. (सं.) समवेदना-सहानुभूति,-युक्त २. दयालु ३. रसिक ४. भद्र, महाशय ५. सत-साधु,-स्वभाव ६. प्रसन्नमनस्क, आनंदिन् ।

सहृदयता, सं. स्त्री. (सं.) समवेदना, सहानुभूतिः (स्त्री.) २. सज्जनता, सौजन्यं ३. रसिकता-त्वं ४. अनुक्रोशः, दयालुता ।

सहेजना, क्रि. स. (अ. सही+हिं. जांचना) सम्यक् परीक्ष्-निरीक्ष् (भ्वा. आ. से.) सुष्ठु बोधयित्वा प्रतिपद् (प्रे.)-दा ।

सहेली, सं. स्त्री. (सं. सह+हेलनं>) सखी, आली-लिः (स्त्री.), संगिनी २. परिचारिका, अनुचरी ।

सहोक्ति, सं. स्त्री. (सं.) अर्थालंकारभेदः (सा.)।

सहोदर, सं.पुं. (सं.) सोदरः, सोदर्य्यः, सहजः, सगर्भः, समानोदर्य्यः, भ्रातृ ।

सह्य, वि. (सं.) सहनीय, दे. । सं. पुं. (सं.) सह्याद्रिः ।

साँई, सं. पुं. (सं. स्वामिन्) प्रभुः, ईशः, अधिकारिन् २. परमात्मन्, परमेश्वरः ३. पतिः, भर्तृ ४. यवनभिक्षुः ।

सांकड़, सांकल, सं. स्त्री. (सं. शृङ्खला, दे.) ।

सांकेतिक, वि. (सं.) संकेतात्मक, लाक्षणिक, संकेत,-सम्बन्धिन्-विषयक ।

सांख्य, सं. पुं. (सं. पुं. न.) महर्षिकपिल-प्रणीतो दर्शनग्रन्थविशेषः ।

सांग[1], सं. पुं., दे. 'स्वांग' ।

सांग[2], सं. स्त्री. (सं. शक्तिः) काशूः-सूः (दोनों स्त्री.), अस्त्रभेदः ।

सांग[3], वि. (सं.) संपूर्ण, सर्वांगयुत ।

सांगी, सं. स्त्री. (हिं. सांग) दे. 'सांग[2]' २. शकटवाहकासनं, युगः-गं ३. शकटाधोवर्तिजालकम् ।

सांगोपांग, वि. (सं.) अंगोपांगयुक्त, सं,-पूर्ण, समग्र, समस्त ।

साँच, वि. (सं. सत्य) अवितथ, यथार्थ ।

साँचा, सं. पुं. (सं. स्थातृ) आकारसाधनं, संस्थानं, संस्थानपुरः २. दे. 'छापा' ।

साँचे में ढला होना, मु., सर्वांगसुंदर (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से.) ।

साँझ, सं. स्त्री. (सं. संध्या) सायंकालः, दे. ।

साँझा, सं. पुं., दे. 'साझा' ।

साँट, सं. स्त्री. (अनु. सट) सूक्ष्म-तनु,-दंडः-यष्टिः (स्त्री.) २. कशः-शा ३. यष्टि-कशा,-प्रहारचिह्नं, *नीलं ४. कंडनी ।

सांठी, सं. स्त्री. (हिं. गांठ का अनु.) मूलधनं, दे. 'पूँजी' ।

सांड-ड़, सं. पुं. (सं. पंडः) श(षं)ढः, गोपतिः, वृषन्, वृषभः २. दिवंगतस्मृत्यामुत्सृष्टोऽकितो वृषभः ३. वृषणाश्वः, वृषन् । वि., दृढांग, बलिन् २. स्वैरिन्, दुराचारिन् ।

साँड(ड़)नी, सं. स्त्री. (हिं. सांड) उष्ट्री, दे. 'ऊंटनी' ।

—सवार, सं. पुं. (हि.+फ़ा.) उष्ट्र,-आरोहः-आरोहिन् २. उष्ट्र-क्रमेलक,-वाहकः ।

साँडा, सं. पुं. (सं. शयानकः) कृकलाशः-सः, क्रकचपादः, प्रतिसूर्यः, सरटः-डुः, गोधिका, चित्रकोलः ।

सांत, वि. (सं.) अंतवत्, नश्वर, नाशवत् ।

सांत्वना, सं. स्त्री. (सं.) सांत्वः-त्वनं, आसमा,-श्वासनं २. शमः, शांतिः (स्त्री.), ३. प्रणयः ।

—देना, क्रि. स., सां(शां)त्व् (चु.), आसमा,-श्वस् (प्रे.), शोकं शम् (प्रे.) ।

सांद्र, सं. पुं. (सं.) वनं २. राशिः । वि. (सं.) घन, निबिड, सुसंहत ।

सांद्रता, सं. स्त्री. (सं.) निबिडता, घनता इ. ।

सांधिविग्रहिक, सं. पुं. (सं.) सन्धियुद्धमंत्रिन् ।

सांध्य, वि. (सं.) संध्या,-सम्बन्धिन्-विषयक, वैकालिक, वैकालीन ।

सांनिध्य, सं. पुं. (सं. न.) सामीप्यं, निकटता २. मोक्षभेदः ।

सांप, सं. पुं. (सं. सर्पः) भुज(जं)गः, भुजंगमः, अहिः, फण-विष,-धरः, व्यालः, सरीसृपः, आशीविषः, कुंडलिन्, चक्षुःश्रवस्, फणिन्, विलेशयः, उरगः, पन्नगः, पवनाशनः, दंष्ट्रिन्, द्वि,-जिह्वः-रसनः, पृदाकुः, चक्रिन्, दंदशूकः, भोगिन्, गूढपाद्-दः, दीर्घपृष्ठः, जिह्मगः । (धब्बोंवाला सांप) मातुलाहिः, मालुधानः । (धारीदार सांप) राजि(जी)लः । (फनियर साँप) भोग-फण,-भृत्-धरः, फणिन्, भोगिन् ।

—की लहर, मु., अहिदंशव्यथा ।

—के मुँह में, मु., महासंकटे ।

—छछूँदर की दशा, मु., द्वैधीभाव, दोलावृत्तिः (स्त्री.), संदेहः ।

—सूँघ जाना, मु., सर्पेण दंश् (कर्म.), मृ (तु. आ. अ.) ।

कलेजे पर—लोटना, मु. (ईर्ष्यादिभिः) मनोऽत्यंतं संतप् (कर्म.) ।

सांपत्तिक, वि. (सं.) आर्थिक, दे. ।

सांपिन, सं. स्त्री. (हिं. सांप) सर्पिणी, सर्पी, पन्नगी, उरगी, भुजगी इ. ।

सांप्रत, अव्य. (सं.-तं) अधुनैव, इदानीमेव, सद्यः, संप्रति । वि. (सं.) उचित, योग्य, २. प्रासंगिक, प्रास्ताविक ।

सांप्रदायिक, वि. (सं.) शाखागत, संप्रदायधर्म-मत,-विषयक-संबंधिन् २. परंपरीण, क्रमागत ।

सांब, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णपुत्रः ।

सांभर, सं. पुं. (सं. सांबरं) संबरोद्भवं, रौमकं, वसुकं २. राजपुत्रस्थानप्रदेशे कासारविशेषः ।

सांमुख्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सामना'(२) ।

साँय साँय, सं.स्त्री.(अनु.)दे. 'सनसनाहट'(१)।

साँवला, वि. (सं. श्यामल) कृष्ण, श्याम २. ईषच्छ्याम, आकृष्ण ३. कृष्णनील । सं. पुं., श्रीकृष्णः २. पतिः ३. प्रेमिन्, प्रणयिन् ।

साँवलापन, सं. पुं. (हिं. साँवला) श्यामलता, श्यामता, आ-,कृष्णता, कृष्णनीलता ।

साँवाँ, सं. पुं. (सं. श्यामाकः) श्यामः-मकः, त्रिबीजः, अविप्रियः ।

साँस, सं. स्त्री. [सं. श्वासः (पुं.)] उच्छ्वासः, उच्छ्वसितं, नि(निः)श्वासः, निः(नि)श्व-सितं, आनः, आहरः, पतनः, असवः-प्राणाः (दोनों पुं. बहु.) २. दीर्घश्वासः, निश्वासः, उच्छ्वासः ३. विरामः; विश्रामः ४. स्फोटः, भंगः ५. श्वासरोगः, दे. 'दमा' ।

—रुकना, क्रि. अ., श्वासः निरुध् (कर्म.) ।
—लेना, क्रि. अ., अन्-प्राण्-श्वस् (अ. प. से.) २. जीव् (भ्वा. प. से.) ३. विश्रम् (दि. प. से.) विरम् (भ्वा. प. अ.) ।
—उखड़ना, मु., (निधनकाले) कृच्छ्र-कष्टं श्वस् ।
—खींचना, मु., श्वासमंतः निरुध् (रु.प.से.) ।
—चढ़ना या—फूलना, मु., सवेगं प्राण् ।
—तक न लेना, मु., मौनं आकल् (चु.) ।
—रहते, मु., यावज्जीवं-वनं, आमृत्योः ।
गहरी या लंबी—लेना, मु., दीर्घं श्वस् ।
सांसारिक, वि. (सं.) ऐहिक, लौकिक, प्रापंचिक, व्यावहारिक ।
सा, वि. (सं. सदृश) सम, समान, तुल्य, सदृश २. इव, मात्रं (उ. थोड़ा सा=किंचिदिव, किंचिन्मात्रं) ३. आ,-ईषत् (उ. काला सा=आ-ईषत्,-कृष्ण) ।
साइक्लोपीडिया, सं. स्त्री. (अं.) (विषयविशेष-निरूपकः) बृहद्ग्रंथः २. विश्वकोशः-पः ।
साइत, सं. स्त्री. (अ. साअत) होरा, दे. 'घंटा' २. पलं, क्षणः-णं ३. मंगलमुहूर्तः, शुभलग्नम् ।
साइनबोर्ड, सं. पुं. (अं.) चिह्नपट्टः-ट्टम् ।
साइन्स, सं. स्त्री. (अं.) विज्ञानं, शास्त्रं २. रासायनिकविज्ञानं भौतिकविज्ञानं च ।
साइफ़न, सं. स्त्री. (अं-) उत्क्षेपणनाली ।
साई, सं. स्त्री., दे. 'पेशगी' ।
साईस, सं. पुं. (रईस का अनु.) अश्व,-सेवकः-पालः-पालकः-रक्षकः, यावासिकः ।
साईसी, सं. स्त्री. (हिं. साईस) अश्वसेवा, अश्वसेवकत्वम् ।
साक, सं. पुं., दे. 'साग' ।
साकांक्ष, वि. (सं.) इच्छु, इच्छुक, आकांक्षिन् , अभिलाषिन् ।
साका, सं. पुं. (सं. शाकः) संवत् (अव्य.), दे. २. यशस् (न.), कीर्तिः-ख्यातिः (स्त्री.) ३. कीर्ति,-चिह्नं-स्मारकं ४. आतंकः, प्रभावः ५. कीर्तिकरं कर्मन् (न.) ।
साकार, वि. (सं.) आकारवत्, आकृतिमत्, रूपवत् २. स्थूल, मूर्त्त ३. मूर्तिमत्, वपुष्मत्, देहधारिन् ।
साकारोपासना, सं. स्त्री. (सं.) मूर्त्यादिभिः प्रभुपूजनं,-मूर्त्तिपूजा ।
साकिन, वि. (अ.) नि,-वासिन् , वास्तव्य ।
साक़ी, सं. पुं. (अ.) सुरापरिवेषकः २.वल्लभः, प्रेमपात्रं, दे. 'माशूक़' ।
साकूत, वि. (सं.) सार्थक. अर्थवत्, साभिप्राय, सप्रयोजन ।
साकेत, सं. पुं. (सं. न.) अयोध्या, दे. ।
साक्षर, वि. (सं.) शिक्षित, अक्षर,-ज्ञ-अभिज्ञ ।
साक्षात् , अव्य. (सं.) पुरतः, अग्रतः, समक्षं, प्रत्यक्षम् । वि., मूर्तिमत्, साकार, विग्रहवत् । सं. पुं., सं-समा,-गमः, मेलः, संमिलनम् ।
—करना, क्रि. स., साक्षात् कृ. स्वचक्षुर्भ्यां दृश् (भ्वा. प. अ.), निजेन्द्रियैः अवगम् ।
—कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'साक्षात्' । सं. पुं. २. प्रत्यक्षं, इंद्रियार्थसंनिकर्षजं ज्ञानम् ।
साक्षी, सं. पुं. (सं.-क्षिन्) दे. 'गवाह' २. द्रष्टृ, प्रेक्षकः । सं. स्त्री., साक्ष्यम् ।
साक्ष्य, सं. पुं. (सं. न.) साक्षिता-त्वं, दे. 'गवाही' २. दृश्यम् ।
साख, सं. स्त्री. (हिं. साका) प्रभावः, वशः-शं, आतंकः २. (हट्टे) प्रतिष्ठा, प्रत्ययः, विश्वसनीयता ।
साग, सं. पुं. (सं. शाकः-कं) शि(सि)ग्रु, ह(हा)रितकं २. व्यंजनं, अन्नोपस्करः, दे. 'भाजी' ।
—पात, सं. पुं., शाकपत्रं, कंदमूलं २. साधारण-नीरस,-भोजनम् ।
सागर, सं. पुं. (सं.) समुद्रः, दे. २. महा,-ह्रदः-तटाकः(-कम्) ।
सागवान, सं. पुं., दे. 'सागौन' ।
सागू, सं. पुं. (अं. सैगो) *सागुः, वृक्षभेदः ।
—दाना, सं. पुं. (हिं.+फ़ा.) *सागुदानः ।
सागौन, सं. पुं. (सं. शाकवनं>) गृहद्रुमः, श्रेष्ठकाष्ठः, शाकः, शाक,-तरुः-वृक्षः, अर्णः ।
साज़, सं. पुं. (फ़ा., मि. सं. सज्जा) सामग्री, उपकरणं २. (अश्व–) सज्जा-संनाहः ३. वाद्यं, वादित्रं ४. अस्त्रशस्त्रं ५. सुपरिचयः, प्रगाढसख्यम् । वि. (फ़ा.)-कारः २. प्रतिसमाधातृ । (उ. घड़ीसाज़=घटीकारः, घटीप्रतिसमाधातृ) ।
—बाज, सं. स्त्री., सुपरिचयः ।
—सामान, सं. पुं., सामग्री, उपकरणं, परिच्छदः २. दे. 'ठाठबाट' ।
साजन, सं. पुं. (सं. सज्जनः) भद्रजनः, आर्यः, सत्पुरुषः २. पतिः ३. वल्लभः ४. परमेश्वरः ।

साजना, क्रि. स., दे. 'सजाना'।

साज़िंदा, सं. पुं. (फ़ा.) वाद्य-वादित्र-,वादकः।

साज़िश, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'षड्यंत्र'।

साझा, सं. पुं. (सं. साहाय्यं >) अंशिता, भागिता, भागधरत्वं २. अंशः, भागः।

साझी, सं. पुं. (हिं. साझा) दे. 'साझेदार'।

साझेदार, सं. पुं. (हिं. साझा) अंशकः, अंशिन्, भागधरः, अंशयितृ।

साझेदारी, सं. स्त्री. (हिं. साझेदार) दे. 'साझा' (१)।

साटन, सं. पुं. (अं. सैटिन) *साटनं, कौशेय-वस्त्रभेदः।

साटा, सं. पुं. (देश.) विनिमयः, परिवर्तः।

साठ, वि. [सं. षष्टिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं. उक्ता संख्या तद्बोधकांकौ (६०) च।

साठवाँ, वि. (हिं. साठ) षष्टितमः-मी-मं (पुं. स्त्री. न.)।

साठा, वि. (हिं. साठ) षष्टिवर्ष।

साठी, सं. पुं. (सं. षष्टिकः-का) स्निग्धतंडुलः, षष्टिजः।

साड़ी, सं. स्त्री. (सं. शाटी) नारीवस्त्रभेदः।

साढ़साती, सं. स्त्री. (हिं. साढ़े+सात) सार्द्धसप्तवर्ष(-मास-दिवस-)वर्तिनी शनिदशा।

—आना या—चढ़ना, मु., दुर्दिनानि आपत् (भ्वा. प. से.)।

साढ़ू, सं. पुं. (सं. श्यालीधवः) श्यालीपतिः, जायानशिकः।

साढ़े, वि. (सं. सार्ध) अध्यर्ध।

सात, वि. (सं. सप्तन्) सं. पुं., उक्ता संख्या, तद्बोधकांकश्च (७)।

—गुना, वि., सप्त,-गुण-गुणित।

—प्रकार का, वि., सप्त,-विध-प्रकार।

—फेरी, सं. स्त्री., दे. 'भाँवर'।

—पांच, मु., शाठ्यं, कापट्यम्।

—पांच करना, मु., प्रतृ-वंच् (प्रे.), विप्रलभ् (भ्वा. आ. अ.)।

—पुश्तों से, मु., अनादिकालात्।

—समुद्र पार, मु., अति,-दूरं-दूरे।

सातवाँ, वि. (हिं. सात) सप्तमः-मी-मं (पुं. स्त्री. न.)।

सात्यकि, सं. पुं. (सं.) यादवयोधविशेषः, श्रीकृष्णसारथिः।

सात्विक, वि. (सं. सात्त्विक) १-३. सत्त्वगुण,-संबंधिन्-निष्पादित-प्रधान ४. शुद्धात्मन्, निष्कपट, ऋजु, सरल। सं. पुं. (सं.) सत्त्व-गुणजा अष्टप्रकारा भावाः (=स्वेदः स्तंभोऽथ रोमांचः स्वरभंगोऽथ वेपथुः। वैवर्ण्यमश्रु प्रलय इत्यष्टौ सात्त्विकाः स्मृताः, सा.)।

साथ, अव्य. (सं. सहितं) सह, साकं, सार्धं, समं, तृतीया से भी (उ. क्रोध के साथ=क्रोधेन इ.), स-, -पूर्वकं, -पुरःसरं (उ. आदर के साथ=सादरं, आदर,-पूर्वकं-पुरःसरं इ.), सं-, (उ. साथ रहना=संवासः)। सं. पुं. संगः, संगतिः (स्त्री.) सहचारः, साहचर्य्यं, संसर्गः।

—का, मु., व्यंजनं, अन्नोपस्करः।

—छूटना, मु., विश्लिष् (दि. प. अ.), व्यप-इ. (अ. प. अ.)।

—देना, मु., साहाय्यं कृ २. रक्ष् (भ्वा. प. से.) ३. सह या (अ. प. अ.)।

—ही, मु., अपरं च, अन्यच्च, अपि च, किं च, -अतिरिक्तम्।

एक—, मु., युगपत्, समकालं-ले, यौगपद्येन २. संभूय, मिलित्वा।

साथिन, सं. स्त्री. (हिं. साथी) सहचरी २. सखी।

साथी, सं. पुं. (हिं. साथ) संगिन्, सहचरः २. मित्रं, सखि (पुं.)।

सादगी, सं. स्त्री. (फ़ा.) साधुता, सरलता, आर्जवं, निष्कापट्यं २. आडंबरहीनता।

सादर, वि. (सं.) सगौरव, सविनय। क्रि. वि. (सं.-रं) सप्रश्रयं, सविनयम्।

सादा, वि. (फ़ा.-दः) निष्कपट, निश्छल, सरल, ऋजु, माया,-रहित, निर्व्याज, शुद्धात्मन् २. अज्ञ, मूर्ख ३. श्वेत, रंग-वर्ण,-हीन ४. अक्ष-रांकादिरहित, रेखारहित ५. शुद्ध, केवल ६. अलंकाररहित ७. विनीत-अनुद्धत,-वेश(ष) ८. अल्पावयव (यंत्रादि)।

सादापन, सं. पुं. (फ़ा. सादह्) दे. 'सादगी'।

सादि, वि. (सं.) सारम्भ, सोपक्रम, आरम्भ-उपक्रम,-वत्-युक्त।

सादिक़, वि. (अ.) सत्य, यथार्थ २. शुद्ध, त्रुटिरहित।

सादृश्य, सं. पुं. (सं. न.) समता, समानता, साम्यं, सदृशता, तुल्यता।

साध[1], सं. पुं., दे. 'साधु'।
साध[2], सं. स्त्री. (सं. उत्साहः>) अभिलाषः, कामना, लालसा, वाञ्छा।
साधक, सं. पुं. (सं.) सं-निष्,-पादकः, समापकः, सिद्धिकरः, निर्वर्तयितृ २. तपस्विन्, तापसः, योगिन् ३. करणं, साधनं ४. परहितकारिन्, परकार्यसहायः ५. भक्तः, उपासकः ६. भूतापसारकः, दे. 'ओझा'।
साधन, सं. पुं. (सं. न.) निष्पादनं, विधानं, संपादनं, करणं, अनुष्ठानं, समापनं, निर्वर्तनं २. उपकरणं, सामग्री ३. युक्तिः (स्त्री.), उपायः ४. उपासना, पूजा ५. सहायता ६. धातुशोधनं ७. कारणं, हेतुः ८. धनं ९. पदार्थः १०. सिद्धिः (स्त्री.)।
साधना, सं. स्त्री. (सं.) सिद्धिः-निर्वृत्तिः-निष्पत्तिः (स्त्री.) २. आराधना, उपासना ३. अभ्यासः, क्रियासातत्यं, नित्यानुष्ठानम्। क्रि. स. (सं. साधनं) साध् (स्वा. प. अ., प्रे.), सिध् (प्रे. साधयति) २. निर्वृत्-संपद्-समाप् (प्रे.), अनुष्ठा (भ्वा. प. अ.) २. विनी (भ्वा. प. अ.), शिक्ष् (प्रे.) ३. दम् (प्रे. दमयति) वशीकृ ४. अभ्यस् (दि. प. से.), अभ्यासंव्यवहारं कृ ५. नियंत्र् (चु.), अनुशास् (अ. प. से.)। सं. पुं. तथा भाव, साधनं, निर्वर्तनं, सं-निप्,-पादनं, अनुष्ठानं, विनयनं, दे. 'साधक', 'साधन' इ.।
साधर्म्य, सं. पुं. (सं. न.) सधर्मता-त्वं, समानतुल्य,-धर्मता-गुणता।
साधारण, वि. (सं.) सामान्य, विशिष्टता-रहित, प्रायिक, प्राकृत, मध्यम, अवर २. सुकर, सुसाध्य ३. सार्वजनिक, सर्वजनीन ४. सदृश, तुल्य।
—धर्म, सं. पुं. (सं.) सार्वजनिकधर्मः २. चातुर्वर्ण्यस्य सामान्यधर्मः।
—स्त्री, सं. स्त्री. (सं.) वेश्या।
साधारणतः, अव्य. (सं.) सामान्यतः, प्रायशः, प्रायेण, बहुशः (सब अव्य.)।
साधारणतया, अव्य. (सं.) दे. 'साधारणतः'।
साधारणता, सं. स्त्री. (सं.) सामान्यता, विशिष्टताऽभावः, साधारण्यम्।
साधु, सं. पुं. (सं.) सन्न्यासिन्, परिव्राजकः, महात्मन्, तापसः, मुनिः, यतिः २. सत्पुरुषः, सज्जनः, आर्यः ३. अभिजातः, कुलीनः। वि. (सं.) भद्र, उत्तम, श्रेष्ठ २. यथार्थ, सत्य, अवितथ ३. प्रशंसनीय, स्तुत्य ४. निपुण ५. अर्ह, योग्य ६. उचित, युक्त।
—वाद, सं. पुं. (सं.) साधु,-वचनं-उक्तिः (स्त्री.), शंसात्मकं वचनम्।
—साधु, अव्य. (सं.) धन्य-धन्य, सम्यक्-सम्यक्, शोभनं शोभनं, वरं वरम्।
साधुता, सं. स्त्री. (सं.) सज्जनता, श्रेष्ठता, भद्रता, आर्यता २. सरलता, आर्जवं ३-४. साधु,-चरितं-धर्मः।
साधू, सं. पुं., दे. 'साधु'।
साध्य, वि. (सं.), निष्पादनीय, करणीय, अनुष्ठेय, समाप्तव्य २. शक्य, संभाव्य, संभवनीय ३. सुकर, सुगम ४. प्रमाणयितव्य, सत्यापयितव्य, उपपादयितव्य ५. प्रतिकारार्ह, प्रतिकार्य ६. ज्ञेय। सं. पुं. (सं.) देवता २. गणदेवताभेदः ३. साधनीयपदार्थः (न्या.)।
साध्वस, सं. पुं. (सं. न.) भयं २. व्याकुलता।
साध्वी, सं. स्त्री. (सं.) सती, सच्चरित्रा २. पति,-व्रता-परायणा।
सानंद, वि. (सं.) प्रहृष्ट, मुदित। क्रि. वि. (सं. न.) सकुशलं, सहर्षम्।
सान, सं. पुं. (सं. शाणः) शाणी, शाणाश्मन्।
—देना, क्रि. स., तिज् (प्रे.), नि-, शो (दि. प. अ.), तीक्ष्णीकृ, क्ष्णु (अ. प. से.)।
सानना, क्रि. स. (हिं. सनना, सं. संधा से) मर्दनेन संमिश्र् (चु.), हस्ताभ्यां मृद् (क्र्. प. से., प्रे.)-संपीड् (चु.) २. मलिनयति, कलुपयति-कलंकयति (ना. धा.) ३. संश्लिष् (प्रे.), संबंध् (क्र्. प. अ.)।
सानी[1], सं. स्त्री. (हिं. सानना) *सिक्तान्नम्।
सानी[2], वि. (अ.) द्वितीय, अपर २. तुल्य, समान।
ला—, वि. (अ.) अद्वितीय, अनुपम, अप्रतिम।
सापत्न्य, सं. पुं. (सं. न.) सपत्नीभावः, सदारत्वम्। (सं. पुं.) सपत्नीसुतः २. शत्रुः।
साफ़, वि. (अ.) स्वच्छ, निर्मल दे.। २. शुद्ध, केवल ३. निर्दोष, त्रुटिहीन ४. स्पष्ट, विशद ५. श्वेत, उज्ज्वल, भास्वर ६. निष्कपट, निश्छल ७. सम, सम,-तल-रेख ८. निर्विघ्न, निर्बाध ९. अंकाक्षरशून्य, लेखरहित। क्रि. वि.,

निष्कलंकं निरपवादं २. प्रच्छन्नं, निभृतं ३. हानिं-क्षतिं विना ४. अत्यंतं नितांतं ४. निराहारम्।

—करना, क्रि. स., प्रक्षल् (चु.), प्र-सं,-मृज् (अ. प. से., प्रे.), धाव् (भ्वा. प. से., चु.), निर्णिज् (जु. उ. अ.) २. शुध् (प्रे.), पू (क्र्. उ. से.), पवित्रीकृ ३. (ऋणादिकं) निस्तॄ-शुध् (प्रे.)-अपाकृ।

—गो, वि., स्पष्ट-यथार्थ,-भाषिन्-वादिन्।

—गोई, सं. स्त्री. स्पष्ट-यथार्थ,-भाषिता-वादिता।

—दिल, वि. (अ.+फ़ा.) ऋजु, सरल, निष्कपट।

—साफ़, अव्य., स्पष्टतः, प्रकटम्, प्रकाशम्, स्फुटं, व्यक्तम् (सब अव्य.)।

साफल्य, सं. पुं. (सं. न.) सफलता, दे. २. लाभः।

साफ़ा, सं. पुं (अ. साफ़) उष्णीषः-षं, शिरोवेष्टनम्।

साफ़ी, सं. स्त्री. (अ. साफ़) गालनी।

साबन, सं. पुं., दे. 'साबुन'।

साबर, सं. पुं. (सं. शंबरः) मृग-भेदः २.शंबर-चर्मन् (न.) ३. वातमृगचर्मन् (न.)।

साबिक़, वि. (अ.) पुराण, पुरातन, पूर्व, प्राचीन, प्राक्तन।

साबिक़ा, सं. पुं. (अ.) व्यवहारः, संबंधः २. परिचयः।

साबित, वि. (अ.) प्रमाणित, सिद्ध दे.।

साबु(बू)त, वि. (फ़ा. सबूत) संपूर्ण, समस्त, पूर्णांग २. निर्दोष ३. स्थिर।

साबुन, सं. पुं. (अ.) *फेनलं, स्वफेनम्।

साबूदाना, सं. पुं. दे. 'सागूदाना'।

सामंजस्य, सं. पुं. (सं. न.) औचित्यं, योग्यता २. उपयुक्तता ३. अनुकूलता ४. आनुकूल्यं, आनुरूप्यम्।

सामंत, सं. पुं. (सं.) वीरः, भटः, योधः, २. नायकः, गणाधिपतिः ३. क्षेत्र,-पतिः-स्वामिन्।

साम, सं. पुं. [सं.- मन् (न.)] सामवेदः २. गेयवेदमंत्रः ३. प्रियवाक्यादिभिः सांत्वनं, मधुरभाषणं ४. उपायभेदः (राजनीति)।

—वेद, सं. पुं. (सं.) आर्याणां प्रसिद्धो धर्म-ग्रंथविशेषः।

सामक, सं. पुं., दे. 'साँवाँ'।

सामग्री, सं. स्त्री. (सं.) उपकरणजातं, संभारः, साधनसमूहः, आवश्यकद्रव्याणि (न. बहु.) २. परिच्छदः, उपस्करः।

सामग्र्य, सं. पुं. (सं. न.) समग्रता, पूर्णता, समष्टिः (स्त्री.) २. अनुचर-सेवक,-वर्गः-समुदायः ३. उपकरणसंग्रहः ४. कोषः ५. परिच्छदः, उपस्करः।

सामना, सं. पुं. (हिं. सामने) अग्र-पूर्व,-भागः, मुखं २. सं(समा)गमः, संमिलनं, दर्शनं, सांमुख्यं ३. विरोधः, विपक्षता।

—करना, क्रि. स., वि-प्रति-रुध् (रु. उ. अ.), प्रत्यव-स्था (भ्वा. आ. अ.), बाध् (भ्वा. आ. से.)।

सामने, क्रि. वि. (सं. संमुखे) अग्रतः, अग्रे, पुरः, पुरतः, समक्षं, अभि-सं,-मुखं-मुखे २. उप-स्थितौ, विद्यमानतायां ३. तुलनायां, प्रतियो-गितायां, विरुद्धम्।

—आना या—होना, क्रि. अ., अभि-सं,-मुखी भू, संमुखं स्था (भ्वा. प. अ.)।

—करना क्रि. स., अग्रे-पुरतः स्था (प्रे.), समक्षं नी (भ्वा. प. अ.)।

—से, क्रि. वि., अग्रतः, पुरस्तात्, पुरतः।

आमने—, क्रि. वि. (अन्योन्यस्य) संमुखं-खे, मुखामुखि, प्रतिमुखम्।

सामयिक, वि. (सं.) कालिक [—की (स्त्री.)] काल-समय,-विषयक २. सांप्रतिक, इदानींतन, आधुनिक, वर्तमान ३.समयोचित, कालानुरूप।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) समाचारपत्रं, दे.।

सम—, वि. (सं.) समकालीन, दे.।

सामर्थ्य, सं. पुं. स्त्री. (सं. न.) धीशक्तिः (स्त्री.), योग्यता, कार्यक्षमता २. बलं, शक्तिः (स्त्री.) ३. तेजस् (न.), पराक्रमः ४. शब्द-संबंधः (व्या.)।

सामाजिक, वि. (सं.) सामुदायिक, समाज-जनसंघ,-संबंधिन्,-समाज।

सामान, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'सामग्री' (१-२)। यंत्राणि, उपकरणानि (दोनों न. बहु.) ४. दे. 'प्रबंध'।

सामान्य, वि. (सं.) दे. 'साधारण'। सं. पुं. (सं. न.) सादृश्यं, समानता २. साधारण,-धर्मः-गुणः (वैशेषिक.) ३. अर्थालंकार-भेदः (सा.)।

—वनिता, सं. स्त्री. (सं.) वेश्या, वारांगना।

सामान्यतः, क्रि. वि. (सं.) दे. 'साधारणतः'।

सामान्यतया, क्रि. वि. (सं.) दे. 'साधारणतया'।

सामिग्री, सं. स्त्री., दे. 'सामग्री'।

सामीप्य, सं पुं. (सं. न.) सान्निध्यं, नैकट्यं २. मुक्तिभेदः।

सामुदायिक, वि. (सं.) सामूहिक, सामवायिक।

सामुद्रिक, सं.पुं. (सं. न.) *तनुचिह्नविज्ञानम्। वि. (सं.) सामुद्र, समुद्रीय।

साम्य, सं. पुं. (सं. न.) समता, समानता, तुल्यता।

—वाद, सं. पुं. (सं.) समाज-समष्टि,-वादः, पाश्चात्यः सामाजिकसिद्धांतविशेषः।

साम्राज्य, सं. पुं. (सं. न.) आधिपत्यं, आधिराज्यं, पूर्णाधिकारः; दशलक्षाधिपत्यं २. महाविस्तृत,-राज्यं-विषयः-राष्ट्रम्।

सायं, क्रि. वि. (सं.) दिनांते, सायंकाले। सं. पुं., दे. 'सायंकाल'।

—काल, सं. पुं. (सं.) सायाह्नः, सायः-यं, सायंसंध्यासमयः, रजनीमुखं, प्रदोषः, दिवस-दिन,-अंतः-अवसानं, संध्या, वि-वै,-कालः।

—कालीन, वि. (सं.) सायंतन (-नी स्त्री.), सायं-, प्रादोपिक-वैकालिक(-की स्त्री.),सायंभव।

—संध्या, सं. स्त्री. (सं.) पश्चिमा संध्या।

सायंस, सं. स्त्री., दे. 'साइन्स'।

सायक, सं. पुं. (सं.) इषुः, बाणः २. खड्गः।

सायण, सं. पुं. (सं.) चतुर्वेदभाष्यकारो मायणपुत्रः।

सायत, सं. स्त्री., दे. 'साइत'।

सायबान, सं. पुं. (फ़ा. सायः बान) प्रघ(घा,)णः, अलिंदः २. *तृणप्रच्छदिस् , *प्रच्छायवत्।

सायल, सं. पुं. (अ.) प्रश्न,-क(का)रः-कर्तृ, प्रष्टृ, पृच्छकः २. याचकः, भिक्षुः ३. प्रार्थिन्, आवेदकः ४. पद-आकांक्षिन्-अन्वेषिन्।

साया, सं. पुं. (फ़ा.-यह्) दे. 'छाया'।

सायुज्य, सं. पुं. (सं. न.) एकीभावः, ऐक्यं, सारूप्यं २. मुक्तिभेदः।

सारंग, सं. पुं. (सं.) मृगभेदः २. मृगः ३. वाद्यभेदः ४. रागिणीभेदः ५. धनुस् (न.) ६. इषुः ७. सर्पः ८. रात्री ९. रमणी १०.खड्गः ११. मेघः १२. खगः १३. मयूरः १४. हंसः १५. चातकः १६. भ्रमरः १७. सागरः १८. कमलं १९. चंद्रः २०. श्रीकृष्णः, इ.।

—पाणि, सं. पुं. (सं.) विष्णुः।

—लोचना, सं. स्त्री. (सं.) मृगलोचनी, हरिणाक्षी, कुरंगाक्षी, मृगनयनी।

सारंगिया, सं. पुं. (सं. सारंगी>)सारंग(गी)-वादकः।

सारंगी, सं. स्त्री. (सं.) शारंगी, सारंगः, पिनाकी, वाद्यभेदः।

सार, सं. पुं. (सं. पुं. न.) तत्त्वं, मुख्यांशः, स्थिरांशः, मूलं, मूलवस्तु (न.) २. भावः, तात्पर्यं, निष्कर्षः, पिंडित-निष्कृष्ट-निर्गलित,-अर्थः ३. मज्जा, अस्थि,-जं-संभवं-स्नेहः-तेजस् (न.)। (सं. पुं.) रसः, द्रवः, निर्यासः २. संक्षेपः, संग्रहः ३. शक्तिः (स्त्री.), बलं ४. वीर्यं, पराक्रमः ५. वज्रक्षारं ६. वायुः ७. रोगः ८. पाशकः ९. दध्युत्तरं १०. अर्थालंकारभेदः (सा.)। (सं. न.) जलं २. धनं ३.नवनीतं ४. अमृतं ५. लौहं ६. वनम्। वि. (सं.)उत्तम, श्रेष्ठ २. दृढ, बलवत् ३. न्याय्य, धर्म्य।

—गर्भित, वि. (सं.) तत्त्वपूर्ण, सार,-युक्त-वत्।

—वर्जित, वि. (सं.) निस्सार, तत्त्वहीन।

सारथि-थी, सं. पुं. (सं.-थि:) सूतः, हयंकषः, नि-,यंतृ, नियामकः, क्षत्तृ, प्राजितृ, दक्षिणस्थः, रथः,-नागरः-कुटुंबिन्।

सारल्य, सं. पुं. (सं. न.) सरलता, दे.।

सारस, सं. पुं. (सं.) पुष्कराह्वः, लक्ष्मणः, लक्षणः, कामिन्, रसिकः, सरसीकः २. हंसः ३. चंद्रः। (सारसी स्त्री.)।

सारस्वत, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणजातिभेदः २. व्याकरणग्रन्थविशेषः। वि. (सं.) सारस्वतीय।

सारांश, सं. पुं. (सं.) सारः, निष्कर्षः, पिंडितार्थः २. अभिप्रायः, आशयः ३.परिणामः, फलं ४. उपसंहारः।

सारा, वि. (सं. सर्व) संपूर्ण, समग्र, समस्त।

सारिका, सं. स्त्री. (सं.) सारी, शारीरिका, चित्रलोचना, पीतपादा, कलहप्रिया, मधुरालापा।

सारूप्य, सं. पुं. (सं. न.) तुल्य,-सम-स-एक,-रूपता, तुल्यता, समता २. मोक्षभेदः।

सार्थ, वि. (सं.) सार्थक, साभिप्राय २. समान-तुल्य,-अर्थक-अर्थिन् (शब्दादि) ३. धनिन्, धनाढ्य। सं. पुं. (सं.) धनाढ्यः, धनिकः २. यात्रि-यात्रिक,-समूहः-समुदायः

३. तीर्थयात्रिकाः (बहु.) ४. पण्याजीवः, सार्थिकः, व्यापारिन् ।

सार्थक, वि. (सं.) सार्थ, अर्थ,-वत्-युक्त-पूर्ण २.सकल, पूर्णकाम ३. गुणकारिन्, उपयोगिन्, हितकर।

सार्थकता, सं. स्त्री. (सं.) अर्थवत्ता २. सफलता, सिद्धिः (स्त्री.) ।

सार्दूल, सं. पुं. (सं. शार्दूलः) सिंहः ।

सार्वकालिक, वि. (सं.) सार्वसामयिक, शाश्वत-तिक ।

सार्वजनिक, वि. (सं.) सर्वजनहित, स(सा)र्वजनीन, सार्वलौकिक ।

सार्वत्रिक, वि. (सं.) सर्वत्र,-भव-व्यापिन् ।

सार्वदेशिक, वि. (सं.) सर्व-समग्र,-देशविषयक ।

सार्वभौतिक, वि. (सं.) चराचरसंबंधिन् ।

सार्वभौम, सं.पुं. (सं.) चक्रवर्तिन्, नृपाग्रणीः, सर्वभूमीश्वरः, एकजन्मन् । वि. (सं.) अखिलभूमंडलविषयक ।

सार्वलौकिक, वि. (सं.) सकलब्रह्मांडसंबंधिन् २. सार्वभौम ।

साल[1], सं. पुं. (सं.) सर्जः, चीरपर्णः, अग्निवल्लभः, रालनिर्यासः ।

साल[2], सं. पुं. स्त्री. (हिं. सालना) छिद्रं, विवरं १. व्रणः, क्षतं ३. पीडा, व्यथा ।

साल[3], सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'वर्ष' ।

—गिरह, सं. स्त्री. (फ़ा.) जन्म,-दिनं-दिवसः, नववर्षारंभः ।

सालग्राम, सं. पुं., दे. 'शालग्राम' ।

सालन, सं. पुं. (सं. सलवण>) व्यंजनं, दे. 'भाजी' ।

सालना, क्रि. स. तथा क्रि. अ. (सं. शल्यं>) दे. 'चुभाना' तथा 'चुभना' ।

सालममिश्री, सं. स्त्री. (अ. सालब+मिस्री = मिस्र देश का) सुधामूली, वीरकंदा, अमृतोत्था ।

सालसा, सं. पुं. (अं. सार्सापेरिल्ला) रक्तशोधकक्वाथभेदः ।

साला, सं. पुं. (सं. श्यालः-लकः) श्वशुर्य्यः, आत्मवीरः, वाक्कीरः, पत्नीभ्रातृ ।

सालाना, वि. (फ़ा.) वार्षिक, दे. ।

सालिक, वि. (अ.) पथिकः, पान्थः, अध्वगः, यात्रिन्, यात्रिकः ।

सालिबमिश्री, सं. स्त्री., दे. 'सालममिश्री' ।

सालिम, वि. (अ.) समग्र, सं-,पूर्ण, अखंडित, अक्षत ।

सालिस, सं. पुं. (अ.) निर्णेतृ, मध्यस्थः, प्रमाणपुरुषः ।

सालिसी, सं. स्त्री. (अ.) माध्यस्थ्यं, निर्णयः २. दे. 'पंचायत' ।

साली, सं. स्त्री. (सं. श्याली) श्यालिका, केलीकुंचिका, पत्नीभगिनी, (छोटी) यन्त्रणी, यन्त्रिणी, (बड़ी) कुली ।

सालू, सं. पुं. (देश.) मांगलिको रक्तपटभेदः ।

सालोत्री, सं. पुं., दे. 'सलोतरी' ।

सावधान, वि. (सं.) अवहित, दत्तावधान, समाहित, तन्द्रा-प्रमाद,-रहित, जागरूक, दक्ष ।

—करना, क्रि. स., प्राक् सूच् (चु.)-प्रबुध् (प्रे.) ।

—होना, क्रि. अ., सावधान-अवहित-जागरूक (वि.) भू २. अवधा (जु. उ. अ.), मनो युज् (चु.) ।

सावधानता, सं. स्त्री. (सं.) अवधानं,दक्षता, जागरूकता, मनोयोगः, अभिनिवेशः ।

सावन, सं. पुं. (सं. श्रावणः) नभः, नभस् (पुं.), श्रावणिकः ।

—की झड़ी, सं. स्त्री., श्रावणिकी सततवृष्टिः (स्त्री.) ।

—हरे न भादों सूखे, मु., अपरिवर्तितदशा, सदैकरसता ।

सावनी, सं. स्त्री., दे. 'श्रावणी' ।

सावित्री, सं. स्त्री. (सं.) गायत्री २. सरस्वती ३. ब्रह्मणः पत्नी ४. उपनयनसंस्कारः ५. दक्षकन्या, धर्मस्य पत्नी ६. सत्यवतो नृपस्य पत्नी ७. सधवा नारी ८. यमुना ।

—सूत्र, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञोपवीतं, दे. ।

साष्टांग, वि. (सं.) अष्टांगयुत ।

—प्रणाम, सं. पुं. (सं.) अष्टांगपातः, साष्टांगनमस्कारः, दे. 'अष्टांग' ।

—करना, मु., दूरतः परिहृ (भ्वा. प. अ.) ।

सास, सं. स्त्री. (सं. श्वश्रूः) साधुधीः (स्त्री.), २. पति-पत्नी,-प्रसूः (स्त्री.)-जननी ।

सास्ना, सं. स्त्री. (सं.) गलकंबलः ।

साह, सं.पुं. (सं.साधुः)सज्जनः, सत्पुरुषः, आर्यः २. वाणिजः, आपणिकः ३. धनिन्, श्रेष्ठिन् ।

साहब, सं. पुं., दे. 'साहिब' ।

साहस, सं. पुं. (सं. न.) धृष्टता, निर्भीकता, प्रगल्भता, धैर्यं, धार्ष्ट्यं २. लुंठनं, बलात् अप-

हरणं ३. कुकृत्यं ४. द्वेषः ५. क्रूरता, निर्दयता ६. क्रूर-घोर,-कर्मन् (न.) ७. परदारगमनं ८. बलात्कारः ९. दंडः १०. अर्थ-धन,-दंडः ।

साहसांक, सं. पुं. (सं.) विक्रमादित्यः, शकारिः ।

साहसिक, सं. पुं. (सं.) साहसिन्, आततायिन्, वधोद्यतः २. लुंठकः, दस्युः ३. परतल्पगः, परदारगामिन् । वि. (सं.) साहसवत्, पराक्रमिन्, वीर २. निर्भीक, प्रगल्भ ३. मिथ्या,-भाषिन्-वादिन् ४. परुषभाषिन्, कटुवादिन् ५. हठकारिन् ।

साहसी, वि. (सं.-सिन्) दे. 'साहसिक' वि. (१-२) ।

साहाय्य, सं. पुं. (सं. न.) सहायता, दे. ।

साहित्य, सं. पुं. (सं. न.) वाङ्मयं, सारस्वतं, ग्रंथसमूहः २. संगतिः (स्त्री.), संमिलनं, साह्यं ३-४. साहित्य-अलंकार,-शास्त्रम् ।

साहित्यिक, वि.(सं.) साहित्यसंबंधिन्, वाङ्मयविषयक । सं. पुं., साहित्य,-सेवकः,-सेविन् ।

साहिब, सं. पुं. (अ.) मित्रं, सुहृद् २. प्रभुः, स्वामिन् ३. परमेश्वरः ४. महाशयः, श्रीमत् ५. श्वेतवर्णो वैदेशिकः ।

—इक़बाल, वि. (अ.) संपन्न, समृद्ध ।

—ज़ादा, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) पुत्रः, तनुजातः ।

—दिमाग़, वि. (अ.) धी-बुद्धि,-मत् ।

—सलामत, सं. स्त्री. (अ.) मिथः प्रणामः, पारस्परिकनमस्कारः २. परिचयः ।

साहिबा, सं. स्त्री. (अ.) स्वामिनी, ईश्वरा-री ३. आर्या, कुलांगना २. देवी, भट्टिनी ४. अत्र-तत्र,-भवती, भद्रा, भवंती, श्रीमती ।

साहिल, सं. पुं. (अ.) वेला, तटः-टम् ।

साही, सं. स्त्री. (सं. शल्लकी) शल्यः, शल्यकः, श्वाविध्, क्रकचपादः, शल्यमृगः, विलेशयः, छेदारः ।

साहु-हू, सं. पुं. (सं. साधुः) सज्जनः, आर्यः, भद्रमानुषः २. कुसीदिक-दिन, वार्द्धुषिकः ।

साहु(हू)ल, सं. पुं. (फ़ा. शाकूल) लंबकः, लंबसीसकम् ।

साहूकार, सं. पुं. (हिं. साहु) धनिकः, धनाढ्यः २. सार्थवाहः, सार्थिकः, श्रेष्ठिन् ३. कुसीदिन्, वार्द्धुषिकः ।

साहूकारा, सं. पुं. (हिं. साहूकार), वृद्धि,-जीवनं-जीविका २.अर्थव्यवसायः ३. अर्थार्पणः ।

साहूकारी, सं. स्त्री. (हिं. साहूकार) दे. 'साहूकारा'(१-२) ।

सिंगा, सं. पुं. (सं. शृंगं>) दे. 'नरसिंहा' ।

सिंगार, सं. पुं. (सं. शृंगारः दे.) ।

—दान, सं. पुं. (हिं.+फ़ा.) *शृङ्गारधानं, *प्रसाधनपिटकम् ।

—हाट, सं. स्त्री., शृङ्गारहट्टः-वेश्यापणः ।

सिंगारिया, सं. पुं. (हिं. सिंगार) शृङ्गारकारः, प्रसाधकः ।

सिंगिया, सं. पुं. (सं. शृंगिकं) विषभेदः ।

सिंगौटी, सं. स्त्री. (हिं. सींग) (वृषादीनां) शृंगभूषणम् ।

सिंगौटी, सं. स्त्री. (हिं. सिंगार) दे. 'सिंगारदान' ।

सिंघ, सं. पुं., दे. 'सिंह' ।

सिंघण, सं. पुं. (सं. न.) सिंघाणम्, शिंघणी, शिंघाणकम्, नासिकामलम् २. अयोमलः-लं, अयोरसः ।

सिंघाड़ा, सं. पुं. (सं. शृंगाटः-टकः) संघाटिका, जल-वारि, कंटकः-कुब्जकः, शृंग,-कंदः-मूलः, शुक्लदुग्धः ।

सिंघासन, सं. पुं., दे. 'सिंहासन' ।

सिंचाई, सं. स्त्री. (हिं. सींचना) सेकः,सेचनं, जलप्लावनं, सिक्तिः (स्त्री.) २. अभि-प्र,-उक्षणं ३. सेचन-प्रोक्षण,-भृतिः (स्त्री.) भृत्या ।

सिंचित, वि., दे. 'सींचा हुआ' ।

सिंडिकेट, सं. पुं. (अं.) व्यापार-समितिः (स्त्री.) व्यवहारसंघः २. विश्वविद्यालय-प्रबन्धसमितिः (स्त्री.) ।

सिंदूर, सं. पुं. (सं. न.) सीमंतकं, मंगल्यं, गणेशभूषणं, शृंगारकं, सौभाग्यं, नाग,-जं-संभवं-गर्भं, अरुणं, शोणं, रक्तम् ।

सिंदूरिया-री, वि. (सं. सिंदूरं>) शोण-सिंदूर,-वर्ण ।

सिंध, सं. पुं. (सं. सिंधुः) सिंधुखेलः, भारतवर्षस्य प्रांतविशेषः । सं. स्त्री. (सं. पुं.) पंचनदप्रांतवर्तिनदविशेषः ।

—सागर, सं. पुं. (सं. सिंधुसागरः) सिंधुवितस्तामध्यवर्तिप्रदेशः ।

सिंधी, सं. स्त्री. (हिं. सिंध) सैंधवी, सिंधुप्रांतभाषा । सं. पुं., सिंधु,-देशीयः-वासिन्, सैंधवाः (प्रायः बहु.) २. सैंधवः (घोड़ा) ।

सिंधु, सं. पुं. (सं.) सागरः २. नदः ३. नद-विशेषः ४. प्रांतविशेषः, सिंधुखेलः ।
—कन्या, सं. स्त्री. (सं.) सिंधु,-जा-सुता, लक्ष्मीः (स्त्री.) ।
—पुत्र, सं. पुं. (सं.) चंद्रः ।
—माता, सं. स्त्री. (सं.-तृ) सरस्वती (नदी) ।
सिंधुर, सं. पुं. (सं.) गजः, द्विपः ।
—वदन, सं. पुं. (सं.) गजाननः, गणेशः ।
सिंधोरा, सं. पुं. (सं. सिंदूरं>) सिंदूरपुटः ।
सिंह, सं. पुं. (सं.) हरिः, हर्यक्षः, मृग,-राजः-इन्द्रः-अधिपः, पंच,-आस्यः शिखः-मुखः, केश(स)रिन्, महा,-नादः-वीरः, नखिन्, क्रव्यादः २. लेयः, पंचमराशिः (ज्यो.) ३.वीरः, श्रेष्ठः (उ., पुरुषसिंह) ४. दे. 'सिक्ख' ।
—के(श)सर सं. पुं. (सं. पुं. न.) सटा-टा २. बकुलवृक्षः ।
—नाद, सं. पुं. (सं.) सिंह,-गर्जनं-गर्जना-ध्वनिः २. क्ष्वेडा, रणोत्साहजरवः ३. निःशंककथनम् ।
—पौर, सं. पुं. (सं.+हिं.) सिंहद्वारं, प्रवेशनम् ।
सिंहनी, सं. पुं. (हिं. सिंह) नखिनी, सिंही, पंचमुखी ।
सिंहल, सं. पुं. (सं.) स्वर्णद्वीपः-पं (सीलोन या लंका) ।
सिंहली, वि. (सं. सिंहलः>) सैंहलः २.सिंहल-वासिन् ।
सिंहावलोकन, सं. पुं. (सं. न.) सिंहावलोकित २. पूर्व,-अनुदर्शनं-वृत्तांतविमर्शः ३. पद्यरचना-रीतिभेदः ।
सिंहासन, सं. पुं. (सं.न.) नृप-राज,-आसनम् ।
—पर बैठना, क्रि. अ., सिंहासने उपविश् (तु. प. अ.), राज्ये अभिषिच् (कर्म.) ।
—से उतारना, क्रि. स., राज्यात् भ्रंश्-च्यु (प्रे.) ।
सिंहिका, सं. स्त्री. (सं.) राहुमातृ, राक्षसी-विशेषः ।
—सूनु, सं. पुं. (सं.) सैंहिकः,-केयः, राहुः ।
सिंहिनी, सं. स्त्री. दे. 'सिंहनी' ।
सिंही, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सिंहनी' २. सिंहिका ३. श्रृंगं, वाद्यभेदः ।
सिआर, सं. पुं. (सं. श्रृगालः) दे. 'गीदड़' ।
सिकंजबीन, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'शिकंजबीन' ।
सिकड़ी, सं. स्त्री. (सं. श्रृंखला) द्वार-कपाट,-श्रृंखला, दे. 'कुंडी' २. गलभूषणभेदः ३.कांची, मेखला ।
सिकता, सं. स्त्री. (सं. बहु.) वालुकाः (स्त्री. बहु.), दे. 'रेत' २. अश्मरी, दे. 'पथरी' ३. शर्करा, सिता ।
—मेह, सं. पुं. (सं.) प्रमेहभेदः ।
सिकत्तर, सं. पुं. (अं. सेक्रेटरी दे.) ।
सिकलीगर, सं. पुं. (अ. सैकाल+फ़ा. गर) दे. 'सैकलगर' ।
सिकहर, सं. पुं. (सं. शिक्यं+हर) शिक्यं-क्या, शिच् (स्त्री.), काचः, दे. 'छींका' ।
सिकुड़न, सं. स्त्री. (हिं. सिकुड़ना) संकोचः-चनं, आकुंचनं २. दे. 'शिकन' ।
सिकुड़ना, क्रि. अ. (हिं. सिकोड़ना) संकुच् (भ्वा. तु. प. से.), आकुंच् (भ्वा. आ. से; तु. प. से.), संहृ (कर्म.) २. वलिमत् जन् (दि. आ. से.) ३. अल्पी-न्यूनीभू ।
सिकोड़ना, क्रि. स. (सं. संकोचनं) संकुच् (प्रे.) संहृ (भ्वा. प. अ.), आकुंच् (प्रे.) २. संक्षिप् (तु.प.अ.), अल्पीकृ ३. वलिनं(वि.) कृ । सं. पुं. तथा भाव, संकोचः-चनं, संहरणं, आकुञ्चनं, संक्षेपः-पणं, अल्पीकरणम् ।
सिक्का, सं. पुं. (अ.) टंकः-कं, नाणकं, मुद्रा २. पदकम् ।
—जमाना या बैठाना, मु., शासनं-प्रभुत्वं-आधिपत्यं स्था (प्रे.), वशीकृ, अधि-ष्ठा (भ्वा. प. अ.) २. प्रतापं-प्रभावं प्रसृ (प्रे.) ।
सिक्ख, सं. पुं. (सं. शिष्यः) अंतेवासिन्, छात्रः २. गुरुनानकमतानुयायिन् , *सिक्खः ।
—मत, सं. पुं., शिष्य-सिक्ख,-मत-संप्रदायः-धर्मः, नानकपथः ।
सिक्त, वि. (सं.) अभ्युक्षित २. कृतसेचन, आर्द्र, क्लिन्न, दे. 'सींचना' ।
सिख, सं. स्त्री. (सं. शिक्षा) उपदेशः ।
सिखलाना } क्रि. स., व. 'सीखना' के प्रे.
सिखाना } रूप ।
सिगरेट, सं. पुं. (अं.) तमाखुवर्त्तीं-र्त्तिः(स्त्री.)।
सिगार, सं. पुं. (अं.) तमाखुशलाका ।
सिजदा, सं. पुं. (अ.) प्रणामः, नमस्कारः ।
सिटकिनी, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'चटकनी' ।
सिटपिटाना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'सिट्टापिट्टी भूलना' २. विक्लृप् (भ्वा. आ. से.), दोला-

यते (ना. धा.), संज्ञी (अ. आ. से.)।
सिटी, सं. स्त्री. (अं.) नगरं-री, पुरं-री।
सिट्टा, सं. पुं.(देश.) कणिश, मंजरी, दे. 'भुट्टा' तथा 'बाली' (अन्न की)।
सिट्टी, सं. स्त्री. (अनु. सीटना) वाक्पाटवम्।
—पिट्टी भूलना, मु., व्यामुह् (दि. प. वे.), किंकर्तव्य-।मूढ़ (वि.) जन् (दि. आ. से.), संभ्रम् (भ्वा. दि. प. से.)।
सिठनी, सं. स्त्री. (सं. अशिष्टं >) वैवाहिक-गालिः (स्त्री.), *गालिगीतिका।
सिड़, सं. स्त्री. (हिं. सिड़ी) उन्मादः, वातुलता २. दे. 'धुन'।
—बिल्ला, सं. पुं. (हिं. सिड़ी+बिल्ला) उन्मत्तः २. मूर्खः।
सिड़ी, वि. (सं. शृणिः>) उन्मत्त, वातुल २. दृढाग्रहिन् ३. स्वेच्छाचारिन्।
सितंबर, सं. पुं. (अ.) भाद्रपदाश्विनं, आंग-लीयो नवममासः।
सित, वि. (सं.) श्वेत, शुक्ल २. शुभ्र,भास्वर ३. निर्मल, स्वच्छ। सं. पुं. (सं.) शुक्रग्रहः २. शुक्लपक्षः ३. सिता, शर्करा ४. रजतम्।
—च्छद, सं. पुं. (सं.) हंसः, सितपक्षः।
—भानु, सं. पुं. (सं.) सितांशुः, चंद्रः।
सितम, सं. पुं. (फ़ा.) अर्दनं, पीडनं, नैष्ठुर्यं, क्रौर्यं २. अन्यायः, अनीतिः (स्त्री.)।
—गर, सं. पुं. (फ़ा.) निष्ठुरः, क्रूरचित्तः, अनर्थकरः २. अन्यायशीलः।
—ढाना, क्रि. स., पीड् (चु.), अर्द् (भ्वा. प. से., प्रे.)।
सितरी-ली, सं. स्त्री. (सं. शीतल >)शीतल-प्रस्वेदः।
सिताँ, सं. पुं. (फ़ा.) स्थानं, स्थलम् २. निवासः, स्थानम् ३. देशः।
सितांशु, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः, सोमः।
सिता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चीनी' २. दे. 'शक्कर' २. मल्लिका ४. चंद्रिका।
—खंड, सं. पुं. (सं.) मधुशर्करा २. दे. 'मिस्री'।
सितार, सं. पुं. (सं. सप्त+तार) वीणा, वल्लकी, विपंची, (सात तारोंवाला) परिवादिनी।
—बाज़, सं. पुं. (हिं+फ़ा.) वीणावादकः।
सितारा, सं. पुं. (फ़ा.-रः) तारा, तारका, भं, नक्षत्रं, रात्रिजं, उडु (स्त्री. न.) २. भाग्यं, दैवं ३. *त्रितारः, वाद्यभेदः।
—चमकना या बलंद होना, मु., भाग्यम् उत्+इ (अ. प. अ.), भाग्यं-पुण्यं फल् (भ्वा. प. से.)।
सितोपल, सं. पुं. (सं.) कठिनी, दे. खड़िया (सं. पुं.) स्फटिकः, सितमणिः।
सितोपला, सं. स्त्री. (सं.) शर्करा दे. 'शक्कर' २. दे. 'चीनी' ३. सिताखंडः, दे. 'मिस्री'।
सिद्ध, वि. (सं.) निष्-सं,-पन्न-पादित, साधित, अनुष्ठित, कृत २. प्राप्त, उपलब्ध ३. कृतकृत्य, सफल ४. अतिकुशल, सुनिपुण ५. दिव्यशक्ति-युत ६. योगविभूतिज्ञ ७. मोक्षाधिकारिन् ८. प्रमाणित, साधित ९. निर्णीत १०. शोधित ११. अनुकूल १२. पक्व, शृत, श्राण १३. प्र-ख्यात १४. सज्जी,-भूत-कृत, उपक्लृप्त, १५. प्र-स्तुत, उपस्थित। सं. पुं. (सं.) मुनिः, ऋषिः, पुण्यजनः, योगिन्, महात्मन् २.देवयोनिभेदः।
—करना, क्रि. स., साध् (भ्वा. प. अ.या प्रे.), सिध् (प्रे., साधयति) संपद् (प्रे.) २. मंत्रैः वशीकृ ३. प्रमाणीकृ, सत्याकृ।
—होना, क्रि. अ., सिध् (दि. प. अ.) सं.-निष् ,-पद् (दि. आ. अ.) २. मंत्रैः वशीभू ३. प्रमाणीकृ (कर्म.)।
—हस्त, वि. (सं.) प्रवीण, कुशल, पटु, निपुण।
सिद्धांत, सं. पुं. (सं.) राद्धान्तः, पूर्वपक्षं निरस्य स्थापितं मतं २. तत्त्वं, मतं, वादः।
—पक्ष, सं. पुं. (सं.) तर्कसंगत-युक्तियुक्त,-पक्षः-मतम्।
सिद्धांती, सं. पुं. (सं.-तिन्) मीमांसकः, तार्किकः २. शास्त्रविद् ३. सिद्धान्त-नियम,-निष्ठः।
सिद्धार्थ, वि. (सं.) आप्त-पूर्ण,-काम, कृतकृत्य। सं. पुं. (सं.) गौतमबुद्धः।
सिद्धि, सं. स्त्री. (सं.) निष्पत्तिः, समाप्तिः (स्त्री.), पूर्णता २. साफल्यं, कृतकार्यता ३. योगजा दिव्यशक्तिः (स्त्री.), विभूतिः (स्त्री.) (योग की आठ सिद्धियाँ :—अणिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं महिमा तथा। ईशित्वं च वशित्वं च सर्वकामावसायिता॥) ४. समृद्धिः (स्त्री.), भाग्योदयः ५. निर्णयः ६. निश्चयः ७. मोक्षः ८. नैपुण्यं, दाक्ष्यम्,
सिधाई, सं. स्त्री. (हिं. सीधा) सरलता, ऋजुता, सारल्यं, आर्जवम्।

सिधारना, क्रि. अ. (सं. सिद्ध) प्रस्था (भ्वा. आ. अ.), प्रया (अ. प. अ.) २. प्र-इ (अ. प. अ.), मृ (तु. आ. अ.), दे. 'मरना'।
सिन, सिन्न, सं. पुं. (अ.) वयस्-आयुस् (न.), दे. 'उम्र'।
सिनक, सं. स्त्री. (सं. सिंहा(घा)णकं) नासा-नासिका,-मलं, सिंघ(घा)णं, दे. 'रेंट'।
सिनकना, क्रि. स. (हिं. सिनक) सिंघणं स्रु (प्रे.), नासिकां शुध् (प्रे.)।
सिनेट, सं. स्त्री., दे. 'सीनेट'।
सिनेमा, सं. पुं. (अं.) चलचित्र,-गृहं-शाला, २. चलचित्रम्, चित्रपटः।
सिन्नी, सं. स्त्री. (फ़ा. शीरीनी) दे. 'मिठाई'।
सिपर, सं. स्त्री. (फ़ा.) खड्गरीटः, खेटकं, ढालं, दे.।
सिपाह, सं. स्त्री. (फ़ा.) सेना, सैन्यम्।
—गिरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) युद्धव्यवसायः, सैनिकवृत्तिः (स्त्री.)।
—सालार, सं. पुं. (फ़ा.) प्रधान,-सेनापतिः-सेनानीः-चमूपतिः।
सिपाही, सं. पुं. (फ़ा.) सैनिकः, योधः, योद्धृ, भटः २. राजपुरुषः, यष्टि-दंड,-धरः, रक्षिन्, शान्तिरक्षकः, रक्षापुरुषः।
सिपुर्द, दे. 'सुपुर्द'।
सिप्रा, सं. स्त्री. (सं.) उज्जयिनीसमीपवर्तिनदी-विशेषः।
सिफ़त, सं. स्त्री. (अ.) गुणः, विशेषता २. लक्षणं ३. स्वभावः, धर्मः।
सिफ़र, सं. पुं. (अ.) शून्यं, बिंदुः, खम्।
सिफ़ारिश, सं. स्त्री. (फ़ा.) गुणवर्णनं, प्रशंसनं २. अनुशंसा, परकार्यसिद्ध्यर्थमनुरोधः ३. प्रशंसा,-पत्रं-लेखः।
—करना, क्रि. स., प्रशंस् (भ्वा. प. से.), गुणान् वर्ण् (चु.) २. परकार्यसिद्ध्यै अनुरुध (रु. अ. अ.), अनुशंस् (भ्वा. प. से.)।
सिफ़ारिशी, वि. (फ़ा.) गुणश्लाघिन्, प्रशंसात्मक।
—टट्टू, सं. पुं. (फ़ा.+हिं.) परप्रभावलब्धाधिकारः, परानुग्रहनियुक्तः, गुणहीनः।
सिमटना, क्रि. अ. (सं. समित) आकुंच्-संकुच्-संक्षिप्-संहृ (कर्म.), संकुचित भू, दे. 'सिकुड़ना'।
सिमेटना, क्रि. स., दे. 'समेटना'।
सियापा, सं. पुं. (फ़ा. सियाहपोश) संविलापः, संपरिदेवनं-ना।
सियार, सं. पुं. (सं. शृगालः) जंबुकः, दे. 'गीदड़'।
सिर, सं. पुं. [सं. शिरस् (न.)] शीर्षं, शीर्षकं, मस्तकः-कं, मूर्धन् (पुं.), मौलिः (पुं. स्त्री.), मुंडः-डं, उत्तम-वर,-अंगं, शिरं २. अग्रं, शिखरं, शिखा, सानु (पुं. न.) शृङ्गम्।
—कटा, वि., छिन्न,-शीर्ष-मस्तक-शिर।
—का घूमना, सं. पुं., भ्र(भ्रा)मरं, भ्रमः-मिः (स्त्री.), घूर्णिः (स्त्री.)।
—का दर्द, सं. पुं., शिरः,-शूलं-पीडा, शिरोवेदना।
—के बल, क्रि. वि., अवाक्शिरं, अधोशीर्षम्।
—गुंथी, सं. स्त्री., *शिरग्रंथनं, आर्याणामौद्वाहिकरीतिविशेषः।
—चढ़ा, वि., दुर्लळित, अतिलालित, दृप्त, उत्सिक्त।
—मुंड़ा, सं. पुं., मुंडः, क्लृप्तकेशः, मुण्डितशिरः।
—आँखों पर होना, मु., शिरोधार्य(वि.)वृत् (भ्वा. आ. से.), सहर्षं स्वीकार्य(वि.)वृत्।
—आँखों पर बैठाना, मु., अत्यंतं सत्कृ, अत्यर्थं मन्-संभू (प्रे.)-आदृ (तु. आ. अ.)।
—उतारना या काटना, मु., शिरः छिद् (रु. प. अ.), मस्तकं कृत् (तु. प. से.), शिरश्छेदं कृ।
—गंजा करना, मु., बलवत् तड् (चु.), परुषं प्रहृ (भ्वा. प. अ.)।
—चढ़ाना, मु., दृप्तं-उत्सिक्तं-अवळिप्तं विधा (जु. उ. अ.) २. अत्यंतं लल् (चु.)।
—झुकाना, मु., नम् (भ्वा. प. अ.), अभिवद् (प्रे.)।
—धुनना, मु., शुच् (भ्वा. प. से.) सशीर्षताडनं रुद् (अ. प. से.)।
—नीचा करना, मु., त्रप् (भ्वा. आ. से.), लज्ज् (तु. आ. से.)।
—पर, मु., समीपं-पे, निकटं-टे।
—पर खून सवार होना, मु., जिघांसाविष्ट (व.) वृत् (भ्वा. आ. से), वधोद्यत (वि.) भू।
—पर पड़ना, मु., आ-सम्-आ-पत् (भ्वा. प. से.), उपनम् (भ्वा. प. अ., षष्ठी के साथ)।
—पर लेना, मु., उत्तरदायित्वं उररीकृ, भारं स्वीकृ।

—परस्ती करना, मु., अनु-प्रति-पा (प्रे. पालयति), संवृध् (प्रे.), साहय्यं कृ ।

—पीटना, मु , दे. 'सिर धुनना' ।

—भारी होना, मु., भ्रामरेण घूर्ण्या वा पीड् (कर्म.) २. शिरोवेदना वृत् ।

—मारना, मु , अत्यंतं प्रयत् (भ्वा. आ. से.), भूरि परिश्रम् (दि. प. से.) २. सपरिश्रमं अन्विष् (दि. प. से.)-विचि (स्वा. उ. अ.) ।

—मुँडाना, मु., परिव्रज् (भ्वा. प. से.), संन्यस् (दि. प. से.) ।

—मूँडना, मु., लुंठ् (भ्वा. प. से., चु.), छलेन अपहृ (भ्वा. प. अ.) ।

—सफ़ेद होना, मु., केशा धवलीभू , पलित-शीर्ष (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।

—से कफ़न बाँधना, मु., निधनोद्यत (वि.) भू , मरणाय सज्जीभू ।

—से पाँव तक, मु., आमूलचूलं, आपादशीर्षं, आनखशिखम् ।

—होना, मु., कलहायते (ना. धा.), कलहोद्यत (वि.) भू ।

बिना—पैर का, वि., निराधार, निर्मूल २. असंबद्ध, अप्रासंगिक, असंगत ।

सिरका, सं. पुं. (फ़ा.) शुक्तं, शौक्तिकम् ।

सिरकी, सं. स्त्री. (हिं. सरकंडा) शरकांडः, क्षुरिकापत्रः३.शरकांड,-तिरस्करिणी-प्रतिसीरा ।

सिरजनहार, सं. पुं. (सं. सर्जनं>) स्रष्टृ, जगत्कर्तृ, विधातृ (सब पुं.) ।

सिरताज, सं. पुं. (हिं+फ़ा.) किरीटः-टं, मु(म)कुटं दे. २. शिरोमणिः, अग्रणीः, पुरोगः, श्रेष्ठः, मुख्यः, प्रधानम् ।

सिरनामा, सं. पुं., दे. 'सरनामा' ।

सिरपेच, सं. पुं. (फ़ा.) उष्णीषः-षं, दे. 'पगड़ी' ।

सिरहाना, सं. पुं. (सं. शिरं+धानं>) शिरोधानम् (न.), खट्वादीनां शिरो-अग्र,-भागः २. उपधानं, खुरालिकः, उपबर्हः-र्हणं, उच्छीर्षं, बालिशं, मसूरकः ।

सिरा, सं. पुं. (सं. शिरस्>) अंतः, प्रांतः, अवधिः, सीमा २. ऊर्ध्व-शीर्ष,-भागः, शिखा, शिखरं ३. अंत्य-अन्तिम,-भागः ४. आद्य-आदिम,-भागः ५. अग्रं, अग्रभागः ६. अणी-णिः (स्त्री.) अश्रिः-कोटिः (स्त्री.) ।

सिरिंज, सं.स्त्री.(अं.) शृंगकः-कं, दे, 'पिचकारी'।

सिरोपाव, सं. पुं. (सं. शिरःपाद>) संमान-वेशः-षः ।

सिरोही, सं. स्त्री. (देश०) सिरोहीनगर-निर्मित खड्गः, शिरोघ्नी ।

सिर्फ़, क्रि. वि. (अ.) दे. 'केवल' ।

सिर्री, वि., दे. 'सिड़ी' ।

सिल, सिला, सं. स्त्री. (सं. शिला) पाषाणः, प्रस्तरः, उपलः २. शैलः, शिलोच्चयः, महा-प्रस्तरः ३. शिला,-पट्टः-फलकः ।

—बट्टा, सं. पुं., शिलावटकं, *पेषणपाषाणौ (द्वि) ।

सिलना, क्रि. अ. (हिं. सीना) सिव् (कर्म.) ।

सिलपट, वि. (सं. शिलापट्टः>) सम, समस्थ, सपाट ।

सिलबट्टा, सं. पुं. (सं. शिला+वटकः>) शिलावटकं-कौ, पेषण,-पाषाणौ-प्रस्तरौ ।

सिलवट, सं. स्त्री. (हिं. सिलना) वलिः(स्त्री.), वस्त्रभंगः, पुटचिह्नम् ।

सिलवाई, सं. स्त्री. (हिं. सिलवाना) सीवन-सेवन स्यूति,-भृतिः-भृत्या-कर्मण्या ।

सिलवाना, (हिं. सीना) सिव् (प्रे.) ।

सिलसिला, सं. पुं. (अ.) क्रमः, आनुपूर्वी, परंपरा २. पंक्तिः-राजिः-श्रेणिः (स्त्री.), ३. शृङ्खला ४. व्यवस्था, संविधानं, विन्यासः ५. वंशानुक्रमः, कुलपरंपरा ।

—लेवार, क्रि. वि. (अ.+फ़ा.) क्रमेण, क्रमशः, यथाक्रमं, आनुपूर्व्या, अनुपूर्वशः ।

सिलह, सं. पुं. (अ. सिलाह) अस्त्रं, शस्त्रम् ।

—ख़ाना, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) शस्त्रशाला, अस्त्रागारम् ।

—पोश, वि., सन्नद्ध, शस्त्रास्त्रसज्ज ।

सिला[1], सं. पुं. (अ.) पुरस्कारः, पारितोषि-कम् २. परिणामः, फलम् ।

सिला[2], सं. स्त्री., दे. 'शिला' ।

सिलाई, सं. स्त्री. (हिं. सिलाना) संधिः, सीवनं २. सी(से)वनं, स्यूतिः (स्त्री.) ३. दे. 'सिलवाई' ।

सिलाजीत, सं. पुं. [सं. शिलाजतु (न.)] अद्रिजं, अश्मजं, दे. 'शिलाजीत' ।

सिलारस, सं. पुं. (सं. सिह्लकीरसः) श(स)ल्ल-की,-द्रवः-रसः-निर्यासः ।

सिलिंडर, सं. पुं. (अं.) रम्भं वर्तुलं (पात्रभेदः) ।

सिली, सिल्ली, सं. स्त्री. (हिं. सिल) शाणः-णी, सामकः, शाणाश्मन् (पुं.)।
सिलौट, सिलौटा, सं. पुं. (हिं. सिल+वट्टा) शिला,-पट्टः-फलकः २. दे. 'सिलवट्टा'।
सिंवई, सं. स्त्री., दे. 'सेंवई'।
सिवान, सं. पुं. (सं. सीमांतः) सीमा, प्रांतः, पर्यंतः।
सिवाय, क्रि. वि. (अ. सिवा) अपि च, अपरं च २. ऋते, विना, अंतरेण, विहाय, वर्जयित्वा। वि., अधिक, भूयस् २. अपेक्षाधिक।
सिवार-ल, सं. स्त्री. पुं. (सं. शैवालं) शेपालः-लं, जल,-केशः-नीली-नीलिका, शैवलं, सलिल-कुन्तलम्।
सिविल, वि. (अं.) नागरिक, पौर २. सभ्य, शिष्ट।
—डिसओबिडिएंस, सं. स्त्री. (अं.) सविनयावज्ञा।
—सर्जन, सं. पुं. (अं.) नागरिकः शस्त्रवैद्यः।
—सर्विस, सं. स्त्री. (अं.) नागरिकसेवा।
सिसकना, क्रि. अ. (अनु.) सगद्गदं रुद् (अ. प. से.) २. निधनासन्न (वि.) क्लृप् (भ्वा. आ. से.)।
सिसकी, सं. स्त्री. (हिं. सिसकना) गद्गदः-दं, गद्गदध्वनिः।
—भरना या लेना, क्रि. अ., दे. 'सिसकना'।
सिहरा, सं. पुं., दे. 'सेहरा'।
सींक, सं. स्त्री. (सं. इषीका) इषिका, तृण-घास,-सूक्ष्मनालं-सूक्ष्मकांडम्।
सींकुर, सं. पुं. (हिं. सींक) इषीकापुष्पम्।
सींकिया, सं. पुं. (हिं. सींक) सरेखो वस्त्रभेदः।
सींग, सं. पुं. (सं. शृङ्गं) विषाणः-णं, कूणिका २. काहल,-लं-ला, शृङ्गमयो वाद्यभेदः।
(किसी के सिर पर)**—होना** मु., वैशिष्ट्यं वृत् (भ्वा. आ. से.)।
—दिखाना, मु., अंगुष्ठ दृश् (प्रे.), किमप्यदत्त्वा उपहस् (भ्वा. प. से.)।
—निकलना, मु., (पशुः) युवा जन् (दि. आ. से.) २. उन्मद् (दि. प. से.), दे. 'इतराना'।
—समाना, मु., आश्रयः-शरणं लभ् (कर्म.)।
सींगी, सं. स्त्री. (हिं. सींग) दे. 'सींग' (२)। २. रक्तचूषणशृङ्गं, रक्तचूषणी ३. शृङ्गी, मीनभेदः।
—लगाना या तोड़ना, मु. शृङ्गेण रक्तं निष्कस् (प्रे.)।
सींचना, क्रि. स. (सं. सेचनं) अव्-, सिच् (तु. प. अ.), वारिणा आप्लु (प्रे.)-अभ्युक्ष् (भ्वा. प. से.), अभिवृष् (भ्वा. प. से.), जलं दा २. अभि-प्र-सं-, उक्ष्, अव-आ-नि-, सिच् ३. अव-वि,-कृ (तु. प. से.)। सं. पुं., अव-आ-,सेकः-सेचनं, जलप्लावनं, अभिवर्षणं, अभ्युक्षणं, प्रोक्षणम्।
सींचने योग्य, वि. अव-आ-,सेचनीय-सेक्तव्य, अभ्युक्षणीय, अभिवर्षणीय।
सींचने वाला, सं. पुं., सेचकः, सेक्तृ, प्रोक्षकः।
सींचा हुआ, वि., सिक्त, अभ्युक्षित, जलप्लावित।
सींह, सं. पुं. (देश.) शल्यः, शल्यकः, शल्लकी, शल्यमृगः।
सी, वि. स्त्री. (हिं. सा) समा, तुल्या, सदृशी, सदृक्षी।
सी. आई. डी., सं. पुं. (अं.) गुप्तचरविभागः, अपसर्प-च(चा)र-प्रणिधि,-विभागः।
सीकर, सं. पुं. (सं.) कणः, द्रप्सः, पृषतः, लवः, बिंदुः, विप्रुष् (स्त्री.) २. शीकरः, तुषारः ३. प्रस्वेदः, घर्मः, स्वेदजलम्।
सीख, सं. स्त्री. (सं. शिक्षा) शिक्षणं, विनयनं, अध्यापनं, अनुशासनं, बोधनं २. शिक्षाविषयः ३. मंत्रणा, परामर्शः, उपदेशः।
सीख़, सं. स्त्री. (फ़ा.) शलाका, धातु-लोह,-दंडः २. लघुसूक्ष्मयष्टिः (स्त्री.) ३. शंकुः, शल्यं, महासूचिः (स्त्री.) ४. (मांसभर्जनाय) शूलः-लम्।
सीख़चा, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'सीख़' (१, ४)।
सीखना, क्रि. स. (सं. शिक्षणं) शिक्ष् (भ्वा. आ. से.), अधि-इ (अ. आ. अ.), अभ्यस् (दि. प. से.), अभ्यासेन विद्यां लभ् (भ्वा. आ. अ.)-प्राप् (स्वा. प. अ.), पठ् (भ्वा. प. से.)। सं. पुं., शिक्षणं, अध्ययनं, अभ्यासः, विद्या,-अर्जनं-लाभः, प्राप्तिः (स्त्री.)।
सीखने योग्य, वि., शिक्षणीय, अध्येतव्य, अभ्यसनीय।

सीखने वाला, सं. पुं., छात्रः, शिष्यः, शिक्षकः (क्वचित्), अध्येतृ, विद्यार्थिन्, शिक्षार्थिन् ।
सीखा हुआ, वि. (मनुष्य) शिक्षित, कृतविद्य, पंडित, प्राज्ञ, बुध । (विषय) शिक्षित, ज्ञात, बुद्ध, पठित, अधीत ।
सीग़ा, सं. पुं. (अ.) शासन-,विभागः २. व्यवसायः, वृत्तिः (स्त्री.) ।
सीझना, क्रि. अ. (सं. सिद्ध>) तापेन सिध् (दि. प. अ.), ऊष्मणा श्री-पच् (कर्म.), सिद्ध (वि.) भू २. (तापादिभिः) मृद्भू, मार्दवं भज् (भ्वा. आ. अ.) ३. कष्टं सह् (भ्वा. आ. से.) ४. ऋणं शुध् (दि. प. अ.), ऋणनिस्तारः जन् (दि. आ. से.) ५. शीतेन वि-, गल् (भ्वा. प. से.) ।
सीटी, सं. स्त्री. [सं. शीत्कृतिः (स्त्री.)] शीत-कृतं-कारः, शीच्छब्दः २. *शीत्करी, वाद्यभेदः ।
—**बजाना**, क्रि. अ., शीच्छब्दं कृ । क्रि. स., शीत्करीं वद् (प्रे.) ।
—**देना**, मु., शीच्छब्देन आकृ (प्रे.) ।
सीठना, सं. पुं. (सं. अशिष्ट>) अश्लील-गीतं-तिः (स्त्री.), वैवाहिकगालिः (स्त्री.) ।
सीठनी, सं. स्त्री. (हिं. सीठना) दे. 'सीठना' ।
सीठा, वि. (सं. शिष्ट>) अरस, विरस, नीरस, स्वादहीन ।
—**पन**, सं. पुं., नीरसता, निस्स्वादता ।
सीठी, सं. स्त्री. (सं. शिष्टं) (पत्रपुष्पफलादीनां) उच्छिष्टं, नीरसांशः २. निस्सारद्रव्यं ३. नीरसपदार्थः ।
सीड़, सं. स्त्री. (सं. शीतं>) क्लेदः, स्तेमः, आर्द्रता २. क्लिन्नभूमिः (स्त्री.) ।
सीढ़ी, सं. स्त्री. (सं. श्रेणी>) सोपानः, पथः-मार्गः-पंक्तिः (स्त्री.) पद्धतिः (स्त्री.)-पदवी, अधिरोह(हि)णी, नि(निः) श्रेणी-णिः (स्त्री.), नि(निः)श्रय(यि)णी २. काष्ठनिश्रेणी ।
—**का डंडा**, सं. पुं., सोपानदंडः ।
—**चढ़ना**, मु., क्रमशः उत्कर्षं व्रज् (भ्वा. प. से.) ।
सीतल, वि., दे. 'शीतल' ।
—**पाटी**, सं. स्त्री., *शीतलकटः ।
सीतला, सं. स्त्री., दे. 'शीतला' ।
सीता, सं. स्त्री. (सं.) जानकी, मैथिली, वैदेही, अयोनिजा, भूसुता, पार्थिवी । २. फाल-रेखा, लांगलपद्धतिः (स्त्री.), हलिः (पुं.) ।
—**द्रव्य**, सं. पुं. (सं. न.) कृषि-कर्षण,-उपकरणानि (न. बहु.) ।
—**पति**, सं. पुं. (सं.) श्रीरामः, राघवः ।
—**फल**, सं. पुं. (सं.) दे. 'शरीफ़ा' २. दे. 'कुम्हड़ा' ।
सीत्कार, सं. पुं. (सं.) सीत,-कृतं-कृतिः (स्त्री.), आनंदपीडादिजः सीच्छब्दः ।
सीध, सं. स्त्री. (हिं. सीधा) सरलायामः, अंजसायतिः (स्त्री.) २. लक्ष्यम् ।
सीधा[1], वि. (सं. शुद्ध>) सरल, वक्रतारहित, ऋजु, अंजस, प्रगुण २. निर्व्याज, निष्कपट, निश्छल ३. शिष्ट, सुशील ४. शांतस्वभाव, सौम्य, ५. सुकर, सुसाध्य ६. सुबोध, सुगम ७. दक्षिण, अपसव्य । क्रि. वि., सरलं, अवक्रं, अजिह्मम् ।
—**करना**, क्रि. स., सरली-प्रगुणी,-कृ २. दम् (प्रे.), वशीकृ, विनी (भ्वा. प. अ.) ।
—**पन**, सं. पुं., सरलता, वक्रताऽभावः २. आर्जवं, सौम्यता, निष्पटता ।
—**होना**, सरली-प्रगुणी,-भू २. वशीभू । ३. सन्मार्गं अवलंब् (भ्वा. आ. से.) ।
सीधा[2], सं. पुं. (सं. असिद्ध) असिद्ध-अपक्व-आम,-अन्नम् ।
सीधी तरह, क्रि. वि., शांत, शान्त्या २.सम्यक्, सुचारुरूपेण ३. धर्मेण, न्यायेन ।
सीधे, क्रि. वि., सरलं, अञ्जसं २. दे. 'सीधी तरह' ।
सीन, सं. पुं. (अं.) दृश्यं, दृक्पातविषयः २. ज(य)वनिका, अपटी ।
सीनरी, सं. स्त्री. (अं.) दृश्यप्रदेशः, प्राकृतिक-दृश्यं २. रंगसज्जा ।
सीना[1], क्रि. स. (सं. सीवनं) सिव् (दि.प.से.) । सं. पुं., सेवनं, सीवनं, स्यूतिः (स्त्री.), ऊतिः-व्यूतिः (स्त्री.) ।
—**पिरोना**, सं. पुं., सूची(चि)-कर्मन् (न.) -शिल्पम् ।
सीना[2], सं. पुं. (फ़ा.) उरस्-वक्षस् (न.) ।
—**ज़ोर**, वि. (फ़ा.) प्रबल, दुर्दम, उद्धत ।
—**ज़ोरी**, सं. स्त्री., औद्धत्यं, बलात्कारः ।
—**बंद**, सं. पुं. (फ़ा.) आंगिकः-कं, दे. 'अंगिया'।
—**उभार कर चलना**, मु., साटोपं, चल (भ्वा. प. से.) ।

सीने से लगाना, मु., आलिंग् (भ्वा. प. से.), उपगुह् (भ्वा. उ. से.) ।

सीनियर, वि. (अं.) वरीयस्-ज्यायस् (-सी स्त्री.) । सं. पुं., गुरुजनः ।

सीनेट, सं. स्त्री. (सं.) वृद्ध-प्रधान-महा,-सभा ।

सीने योग्य, वि. सीवनीय, सीवितव्य, सीवनार्ह ।

सीने वाला, सं. पुं., सेवकः, सीवनकर्तृ,सीवकः ।

सीप, सं. पुं. [सं. शुक्तिः (स्त्री.)] शुक्तिका-मुक्ता,-मातृ(स्त्री.)-प्रसूः(स्त्री.)-स्फोटः,मौक्तिक-प्रसवा, तौतिकः ।

—सुत, सं. पुं. (सं. शुक्तिसुतः) मौक्तिकं, मुक्ता, शक्ति,-जं-बीजम् ।

सीपी, सं. स्त्री., दे. 'सीप' ।

—सा मुँह निकल आना, मु., अत्यन्तर्दुर्बल-अत्यधिकक्षीण (वि.) भू ।

सीमंत, सं. पुं. (सं.) केशेपु वर्त्मन् (न.), दे. 'माँग' । २. अस्थिसंधिः ।

सीमंतिनी, सं. स्त्री. (सं.) नारी, दे. ।

सीमन्तोन्नयन, सं. पुं. (सं. न.) गर्भस्थितेः पष्ठेऽष्टमे वा मासे करणीयः संस्कारः (धर्म.) ।

सीमांत, सं. पुं. (सं.), सीमा, सीमन् (स्त्री.), उपांतः, पर्यंतः, प्रांतः २. ग्रामसीमा ।

सीमा, सं. स्त्री. (सं.) सीमन् (स्त्री.), अवधिः, आधाटः, प्रान्तः, पर्यन्तः, मर्य्यादा २. दे. 'सीमंत'(१) ।

सीमित, वि. (सं.) परि,-मित, ससीम, मर्यादित ।

सीया हुआ, वि., स्यूत, स्यून ।

सीमेंट, सं. पुं. (अं.) वज्रचूर्णम् ।

सीर. सं. पुं. (सं.) हलं, हालः २. सूर्यः ३. अर्कवृक्षः । सं. स्त्री., क्षेत्रपतेः आत्मकृष्ट-भूमिः (स्त्री.) ।

—ध्वज, सं. पुं. (सं.) जनकः २. बलरामः ।

—में, मु., संभूय, एकत्र मिलित्वा ।

सीरम, सं. पुं. (अं.) रक्तरसः ।

सीरा[1], सं. पुं. (फ़ा. शीरह्) मधु-शर्करा,-क्वाथः, दे. 'चाशनी' २. लप्सिका ।

सीरा[2], वि. (सं. शीतल) शीत, शिशिर, उष्णत्वशून्य २. शांत, मौनिन् ।

सील, सं. स्त्री. (सं. शीतल>) क्लेदः, स्तेमः, आर्द्रता ।

सीला[1] वि. (सं. शीतल) आर्द्र, क्लिन्न ।

सीला[2], सं. पुं. (सं. शिलः-लं) मुनीनां जीव-नोपायभेदः, मंजर्यात्मकानेकधान्योच्चयनम् ।

सीवन, सं. पुं. (सं. न.) सेवनं, स्यूतिः(स्त्री.), सूचीकर्मन् (न.) २. सीवनं, (स्यूति-) संधिः ३. लिंगमण्यधःसूत्रम् ।

सीस, सं. पुं. (सं. शीर्ष) दे. 'सिर' ।

—फूल, सं. पुं. (हिं.) *शीर्षफुल्लं, शिरोभूषण-भेदः ।

सीसा, सं. पुं. (सं. सीसं) सीसकं, सिन्दूर-कारणं, त्रपु (पुं. न.), महाबलं, बहुमलं, सुवर्णारिः, जडम् ।

सीसे का दर्द, सं. पुं., सीसकशूलम् ।

सी-सी, सं. स्त्री. (अनु.) सीत्,-कारः-कृतिः, (स्त्री.)-कृतं, हर्षपीडाशीतादिजनितध्वनिः ।

सीह, सं. पुं., दे. 'सींह' ।

सुँघनी, सं. स्त्री. (हिं. सूँघना) नस्यं, दे. 'नसवार' ।

सुँघाना, क्रि. प्रे., बनाओ 'सूँघना' के प्रे. रूप ।

सुंदर, वि. (सं.) रुचिर, सुषम, चारु, शोभन, कान्त, रुच्य, मंजु, मंजुल, मनोहर, मनोज्ञ, मनोरम, (मनो-)हारि, रमणीय, रामणीयक, बंधु(धू)र, पेश(स)ल, वाम, (अभि-)राम, नन्दित, सुमन, वल्गु, सुरूप, अभिरूप, दिव्य २. शुभ, भद्र, मंगल ३. उत्तम, श्रेष्ठ, उत्कृष्ट । ('सु' से भी रूप बनाते हैं, जैसे-सुमुखम् ।)

—कांड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) लंकावर्तिसुंदर-पर्वतमधिकृत्य रचितंरामायणस्य पंचमं कांडम् ।

सुंदरता, सं. स्त्री. (सं.) सौन्दर्यं, रुचिरता, सुषमा, कांतिः (स्त्री.), मंजुता, मंजुलत्वं, मनोज्ञता-त्वं, रमणीयता, अभिरूपता, लावण्यं, शोभा, रूपं, अभिख्या, श्रीः-लक्ष्मीः (स्त्री.) ।

सुंदरी, सं. स्त्री. (सं.) रूपलावण्यसंपन्ना नारी, रामा, वामा, रोचना, वरांगना, वरवर्णिनी, सिता । वि. (सं.) रूपवती, मनोज्ञा, रुचिरा ।

सुंबा, सं. पुं. (सं. सूचकः) *लोहवेधनी, शतघ्नी, शोधनी ।

सुंबुल, सं. पुं. (फ़ा.) सुगंधितघासभेदः, सुंबुलम् ।

सु, उप. (सं.) सौन्दर्योत्कर्षभद्रत्वादिबोधकः उपसर्गः (उ. सुपुत्रः इ.) ।

सुकचाना, क्रि. अ., दे. 'सकुचाना'।
सुकड़ना, क्रि. अ., दे. 'सिकुड़ना'।
सुकर, वि. (सं.) सु-सुख-अयत्न,-साध्य-निष्पाद्य-कार्य, अनायास।
सुकरता, सं. स्त्री. (सं.) सु-सुख,-साध्यता, सौकर्य्यं, सुकरत्वम्।
सुकर्म, सं. पुं. [सं.-र्मन् (न.)] सु-सत्-उत्तम-पुण्य-श्रेष्ठ,-कर्मन् (न.)-कृत्यं-कार्यम्।
सुकर्मी, वि. (सं.-र्मिन्) सुकर्मन्, सुकृत, सत्क्रिय, सुकर्मशील २. धर्मात्मन्, पुण्यात्मन् ३. सदाचारिन्, सद्वृत्त।
सुकवि, सं. पुं. (सं.) कविवरः, सुकाव्यकारः।
सुकाल, सं. पुं. (सं.) सुसमयः २. सुभिक्षम्।
सुकुमार, वि. (सं.) अति-,कोमल, मृदु, मृदुल, प्र,-तनु, परि-,पेलव, श्लक्ष्ण, ललित। सं. पुं. (सं.) सुन्दर-उत्तम,-बालकः।
सुकुमारता, सं. स्त्री. (सं.) सौकुमार्यं, मार्दवं, पेलवता, मृदुलता, तनुता।
सुकुमारी, सं. स्त्री. (सं.) सुन्दर-श्रेष्ठ,-कन्या २. दुहितृ (स्त्री.), पुत्री। वि. (सं.) कोमलांगी, तन्वंगी, तनुगात्री।
सुकुल, वि. (सं.) महाकुल, अभिजात, सद्वंशज, कुलीन। सं. पुं. (सं. न.) सु-सद्,-वंशः।
सुकुलीन, वि. (सं.) दे. 'सुकुल' वि.।
सुकृत, सं. पुं. (सं. न.) पुण्यं, सत्-सु-पुण्य,-कार्य-कृत्यं-कर्मन् (न.) वि. (सं.) सौभाग्यवत्, भाग्यशालिन् २. धार्मिक, पुण्यात्मन् ३. सुविहित।
सुकृति, सं. स्त्री. (सं.) पुण्यं, सत्कृत्यम्।
सुकृती, वि. (सं.-तिन्) धार्मिक, पुण्यवत्, सत्कर्मन् २.सौभाग्यशालिन् ३.प्राज्ञ, बुद्धिमत्।
सुकेशी, सं. स्त्री. (सं.) सुन्दरकेशवती नारी, सुकेशिनी।
सुख, सं. पुं. (सं. न.) मुद् (स्त्री.), मुदा, मुदितं-ता, प्रीतिः (स्त्री.), हर्षः, आ-प्र-,मोदः, संमदः, शर्मन् (न.), शा(सा)तं, आ-,नंदः, आ-,नंदथुः प्र-,मदः, भोगः, रभसः, निर्वृतिः (स्त्री.), सौख्यं, जोषः।
—कर, वि. (सं.) सुख,-कार-कारिन्-कारक-आवह-दः-दायकः, सुखंकरः।
—की नींद सोना, मु., सुखं जीव् (भ्वा. प. से.)-वस् (भ्वा. प. अ.)।
—चैन, सं. पुं. (सं.+हिं.) दे. 'सुख'।
—दायी, वि. (सं.-यिन्) सुख,-द-प्रद-दायक-दातृ-आवह, दे. 'सुखकर'।
—देना, क्रि. स., सुखयति (ना. धा.), सुखी कृ, सुखं दा, निर्वृतं-सुखिनं कृ।
—धाम, सं. पुं. [सं.-मन् (न.)] स्वर्गः, स्वर्लोकः।
—पाना, क्रि.अ., सुखमनुभू, सुखायते (ना. धा.), निर्वृत-सुखित (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.), सौख्यं लभ् (भ्वा. आ. अ.)।
—पाल, सं. पुं. (सं.+हिं. पालकी) *सुख-शिबिका।
—पूर्वक, क्रि. वि, (सं.-कं.) सुखेन, सौकर्येण, सुखं, लीलया, अनायासम्।
—लूटना, मु., सुखायते (ना. धा.), यथेष्टसुखं भुज् (रु. आ. अ.)।
—साध्य, वि. (सं.) सुकर, अयत्नसाध्य।
सुखांत, सं. पुं. (सं. न.) सुखप्रधानं नाटकं रूपकं वा २. प्रहसनं (सा.)।
सुखागत, सं. पुं. (सं. न.) स्वागतम्, शुभागमनम्।
सुखाना, क्रि. स., बनाओ 'सूखना' के प्रे. रूप।
सुखार्थी, वि. (सं.-र्थिन्) सुखैषिन्, सुखेच्छुक, सुखकामिन्।
सुखी, वि. (सं.-खिन्) सुखित, निर्वृत, निश्चित, स्वस्थ, सुस्थ, निरुद्वेग, शांत, आनंदित, मुदित, वीतचिंत, प्रसन्न, सानंद, संतुष्ट।
सुखेच्छा, सं. स्त्री. (सं.) सुख,-अभिलाषः-कामना-वांछा।
सुख्यात, वि. (सं.) प्रख्यात, प्रसिद्ध, विश्रुत।
सुख्याति, सं. स्त्री. (सं.) सुकीर्तिः-विश्रुतिः (स्त्री.), यशस् (न.)।
सुगंध, सं. स्त्री. (सं. पुं.) सु-, वासः, सुरभिः, सु-,गंधः, सौरभं-भ्यं, आमोदः, परिमलः।
सुगंधि, सं. स्त्री. (सं.>) दे. 'सुगंध' सं. स्त्री.। वि. (सं.) दे. 'सुगंधित'।
सुगंधित, वि. (सं.) सुरभि, सुगंधि, सुवास, आमोद-परिमल,-वत-युक्त, सुवासित, सद्गंध, इष्टगंध, घ्राणतर्पण, सुगंधाढ्य।
सुगम, वि. (सं.) उपगम्य, उपसर्पणीय, सुगम्य, सुख,-गम्य-उपसर्य २.सुबोध, सुखज्ञेय ३. सुकर, सुसाध्य, सरल ४. सुलभ, सुप्राप्य, सुप्राप।

सुगमता, सं. स्त्री. (सं.) सौकर्यं, सुसाध्यता ।
सुगम्य, वि. (सं.) दे. 'सुगम' (१) ।
सुग्गा, सं. पुं. (सं. शुकः) दे. 'तोता' [सुग्गी (स्त्री.) = शुकी] ।
सुग्रीव, सं. पुं. (सं.) सुकंठः, वानरेन्द्रः, श्रीरामसखः । वि., सुकंठ, शोभनग्रीव ।
सुघट, वि. (सं.) सुकर, सुखसाध्य २. सुंदर, मनोहर ३. सुघटित, सुरचित, सुरेख ।
सुघटित, वि. (सं) सुरचित, सुनिर्मित ।
सुघड़, वि. (सं. सुघट) सुंदर, सुरेख, सुघटित २. निपुण, दक्ष, प्रवीण ।
सुघड़(ड़ा)ई, सं. स्त्री. (हिं. सुघड़) सुंदरता, सुरूपता २. चातुर्यं, कौशलम् ।
सुघड़ता, सं. स्त्री., दे. 'सुघड़ई' ।
सुघड़ी, सं. स्त्री. (सं. सुघटी) सु-शुभ,-कालः-समयः-मुहूर्तम् ।
सुघर, वि., दे. 'सुघड़' ।
सुचित, वि. (सं. सुचित्त) सावकाश, निर्व्यापार २. निश्चित ३. सावधान ।
सुचेत, वि. (सं. सुचेतस्) अवहित, सावधान, प्रमादशून्य ।
सुजन[1], सं. पुं. (सं.) आर्यः, सत्पुरुषः, भद्रजनः, सज्जनः दे. ।
सुजन[2], सं. पुं. (सं. स्वजनाः) आत्मीय-पारिवारिक,-जनाः,संबंधिनः, बांधवाः (सब बहु.) ।
सुजनता, सं. स्त्री. (सं.) सौजन्यं, भद्रता, सज्जनता दे. ।
सुजाति, सं. स्त्री. (सं.) सत्कुलं, सद्वंशः, वरान्वयः । वि. (सं.) अभिजात, कुलीन दे. ।
सुजान, वि. (सं. सुजान) प्राज्ञ, बुद्धिमत्, पंडित, विज्ञ २. प्रवीण, निपुण । सं. पुं., पतिः २. प्रणयिन्, रमणः ३. परमात्मन् ।
सुजाना, क्रि. स., बनाओ 'सूजना' के प्रे. रूप ।
सुझाना, क्रि. स., बनाओ 'सूझना' के प्रे. रूप ।
सुठि, वि. [सं. सुष्ठु (अव्य.)] सुंदर, वर, उत्कृष्ट २. अतिशय, बहु. । क्रि. वि., सामग्र्येण, संपूर्णतया, सम्यक् ।
सुड़पना, क्रि. स. (अनु. सुड़-सुड़) ससुड़-सुड़शब्दं पा (भ्वा. प. अ.)-आचम् (भ्वा. प. से.) ।
सुड़कना, क्रि. सं. (अनु. सुड़सुड़) सशब्दं सत्वरं च निगॄ (तु. प. से.) २. सशब्दं श्वस् (अ. प. से.) ।

सुडौल, वि. (सं. सु+हिं. डौल) सुरूप,सुरेख, सदाकार, सदाकृति, सुन्दर, सुघटित ।
सुढंग, सं. पुं. (सं. स+हिं. ढंग) सुरीतिः-सुरूढ़िः (स्त्री.) । वि., सुरूप, सुंदर ३.सद्वृत्त ।
सुत, सं. पुं. (सं.) आत्मजः, सूनुः, पुत्रः दे. ।
सुतनु, वि. (सं.) सुगात्र, सुन्दरशरीर । सं. स्त्री. (सं.) कोमलांगी, कृशांगी, सुन्दरी ।
सुतराम्, अव्य. (सं.) अतः २. अपितु ३. अगत्या ४. अत्यंतं ५. अवश्यम् ।
सुतली, सं. स्त्री. दे. 'सुतली' ।
सुता, सं. स्त्री. (सं.) पुत्री, दुहितृ (स्त्री.), तनुजा ।
—पति, सं. पुं. (सं.) जामातृ (पुं.), दे. 'दामाद' ।
सुतारी, सं. स्त्री. (सं. सूत्रकारः>) आरा, चर्म,-प्रभेदिका-प्रभेदिनी-वेधनी, *चर्म,-सूची-सीवनी ।
सुतार्थी, वि. (सं.-र्थिन्) पुत्र-सन्तान-सन्तति-अपत्य,-अभिलाषिन्-कामिन्-इच्छुक ।
सुतिनी, सं. स्त्री. (सं.) पुत्रवती, सुतवती, प्रजावती, सन्तानवती, ससन्ताना ।
सुतीक्ष्ण, वि. (सं.) अत्यन्त-अत्यधिक,-शित-शात-तीव्र-प्रखर । दे. 'तीक्ष्ण' । सं. पुं. (सं.) अगस्त्यभ्रातृ, ऋषिविशेषः । २. शोभांजनः, तीक्ष्णगंधः, दे. 'सहिजन' ।
सुत्थन, सं. स्त्री. (देश.) सुस्थूणा, *सूत्थानं, जंघावस्त्रभेदः ।
सुथना, सं. पुं. } दे. 'सुत्थन' ।
सुथनी, सं. स्त्री. }
सुथरा, वि. (सं. स्वच्छ वा सुस्थ>) स्वच्छ, निर्मल, विमल ।
—पन, सं. पुं., स्वच्छता, नैर्मल्यम् ।
सुदर्शन, वि. (सं.) शोभन, सुरूप, सुन्दर, प्रियदर्शन [सुदर्शना-नी (स्त्री.)] । सं. पुं. (सं.) सुदर्शनचक्रम् ।
—चक्र, सं. पुं. (सं. न.) विष्णुचक्रं, सुनाभं, श्रीकृष्णस्यास्त्रविशेषः ।
—चूर्ण, सं. पुं. (सं. न.) ज्वरौषधभेदः ।
सुदामा, सं. पुं. (सं.-मन्) श्रीकृष्णसखः । वि. (सं.) सुदातृ ।
सुदिन, सं. पुं. (सं. न.) शुभ,-दिनं-दिवसः-पुण्याहम् ।

सुदी, सं. स्त्री. (सं. सुदि अव्य.) शुक्ल-सित,-पक्षः-अर्द्धमासः ।

सुदूर, वि. (सं.) अति-सु-बहु-दूर-दूरवर्तिन्-दूरस्थ, अतिविप्रकृष्ट, द्रवीयस्, दविष्ठ । क्रि. वि. (सं. न.) अतिदूरं-रे ।

सुदृढ़, वि. (सं.) सुस्थिर, सुनिश्चल, सुधीर २. अति,-गाढ़-घन-कीकस, दुर्भेद्य ३. अतिबलिन्, सुशक्तिमत् ।

सुदेह, वि. (सं.) सुतनु, सुकाय, सुन्दर । सं. पुं. (सं.) सुन्दरशरीरम् ।

सुध, सं. स्त्री. [सं. शुद्ध-(बुद्धिः) >] स्मरणं, स्मृतिः (स्त्री.) २. संज्ञा, चैतन्यं, उपलब्धिः (स्त्री.), प्रति-,बोधः, चेतना ३. अवधानं, वृत्तज्ञानम् ।

—बुध, सं. स्त्री., चेतना, चैतन्यं, संज्ञा ।

—दिलाना, मु., स्मृ (प्रे.) ।

—न रहना या बिसरना, मु., विस्मृ (कर्म.) ।

—बिसराना या बिसारना, मु., विस्मृ (भ्वा. प. अ.) ।

—रखना, मु., सावधान-जागरूक (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.) ।

—लेना, मु., वृत्तान्तं ज्ञा (क्र्. उ. अ.) ।

बे—, वि., निःसंज्ञ, मूर्च्छित २. प्रमादिन् ।

सुधना, क्रि. अ. (हिं. सोधना) शुध् (दि. प. अ.) निर्मलीभू ।

सुध-बुध, सं. स्त्री. (सं. शुद्धबुद्धिः>) दे. 'सुध' (२) ।

—जाती रहना या मारी जाना, मु., गतचेतन-नष्टसंज्ञ-निःसंज्ञ-मूर्च्छित (वि.) भू ।

—ठिकाने न रहना, मु., विक्षिप्त (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।

सुधरना, क्रि. अ. (हिं. सुधना) दोष-त्रुटि,-रहित-हीन (वि.) भू , परि-वि-सं-, शुध् (दि. प. अ.), शुद्ध-निर्दोष (वि.) जन् (दि. आ. से.), प्रतिसमाधा (कर्म.) ।

सुधवाना, क्रि. प्रे. (हिं. सोधना) शुध् (प्रे.), पू (प्रे.), दोष-मल,-हीनं कृ (प्रे.) ।

सुधांशु, सं. पुं. (सं.) चंद्रः दे. ।

सुधा, सं. स्त्री. (सं.) पीयूषं, अमृतं दे. २. मकरंदः, पुष्परसः ३. मधु (न.) ४. जलं ५. दुग्धं ६. विषं ७. चूर्णः, दे. 'चूना' ।

—कंठ, सं. पुं. (सं.) पिकः, कोकिलः ।

—कर, सं. पुं. (सं.) सुधा,-घटः-दीधितिः-(पुं.)-धरः-आधारः-मयूखः-रश्मिः-योनिः (पुं.) -सूतिः (पुं.)-निधिः, चंद्रः ।

—कार, सं. पुं. (सं.) सुधाजीविन्, पलगंडः, लेपकः ।

—धौत, वि. (सं.) सुधा-चूर्ण,-सित-क्षालित-धवलित ।

—निधि, सं. पुं. (सं.) दे. 'सुधाकर' ।

—भोजी, सं. पुं. (सं.-जिन्) सुधाभुज्, देवः ।

—स्पर्धी, वि. (सं.-र्धिन्) अमृत-पीयूष,-उपम-सदृश, सुमधुर ।

सुधाना, क्रि. प्रे., दे. 'सुधवाना' ।

सुधार, सं. पुं. (हिं. सुधारना) दोष,-हरणं-अपनयनं, सं,-शोधनं, संस्करणं, प्रति-,समाधानम् ।

—करना, क्रि. स., सं-,शुध् (प्रे.), निर्दोषं-दोषरहितं विधा (जु. उ. अ.) कृ-प्रति-, समाधा, संस्कृ ।

सुधारक, सं. पुं. (हिं. सुधार) संशोधकः, दोषहारिन्, संस्कारकः ।

सुधारना, क्रि. स. (हिं. सुधारना) दे. 'सुधार करना' ।

सुधित, वि. (सं.) सुव्यवस्थित २. सु-सम्यक्,-पक्व-सिद्ध-शृत ।

सुधी, सं. पुं. (सं.) पंडितः, विद्वस् (पुं.), २. चतुर, सुबुद्धि ।

सुनना, क्रि. स. (सं. श्रवणं) श्रु (भ्वा. प. अ., शृणोति), आ-समा-कर्ण् (चु.), निशम् (दि. प. से. या प्रे. निशामयति), श्रवणगोचरीकृ २. अवधा (जु. उ. अ.) ३. भर्त्सनावचनानि श्रु । सं. पुं., श्रवणं, आ-समा,-कर्णनं, निश(शा)मनं, श्रुतिः (स्त्री.) ।

सुनने योग्य, वि., श्रोतव्य, श्राव्य, आ-समा,-कर्णनीय, निशमनीय ।

सुनने वाला, सं. पुं., श्रावकः, आ-समा,-कर्णयितृ-श्रोतृ (पुं.) ।

सुन लेना, मु., छलेन यदृच्छया अलक्षितं वा श्रु ।

सुना हुआ, वि., श्रुत, आ-समा,-कर्णित, श्रवणगोचरीकृत ।

सुनी अनसुनी कर देना, मु., श्रुत्वापि न अवधा (जु. उ. अ.)-उपेक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।

सुनय, सं. पुं. (सं.) सु-उत्तम-श्रेष्ठ-,नीतिः (स्त्री.)।

सुनयन, सं. पुं. (सं.) मृगः । वि. (सं.) सुलोचन।

सुनयना, सं. स्त्री. (सं.) नारी । वि. (सं.) सुलोचना-नी ।

सुनवाई, सं. स्त्री. (हिं. सुनना) श्रवणं, निश-(शा)मनं २. व्यवहारदर्शनं, कार्य,-अवेक्षणं-विचारणम् ।

सुनसान, वि. (सं. शून्यस्थानं>) निर्जन, विजन, विविक्त, एकान्त २. उच्छिन्न, उद्ध्वस्त, जर्जर । सं. पुं., नीरवता, निःस्तब्धता ।

सुनहरा-री, वि., दे. 'सुनहला' ।

सुनहला, वि. (हिं. सोना) हैम, सौवर्ण, सुवर्ण-कांचन-हेम-हिरण्य,-वर्ण-आभ ।

सुनाई, सं. स्त्री. (हिं. सुनना) दे. 'सुनवाई' (१, २.) । ३. न्यायः ।

सुनाना, क्रि. प्रे., ब. 'सुनना' के प्रे. रूप ।

सुनार, सं. पुं. (हिं. सोना) सुवर्ण-हेम,-कारः, कलादः, नाडिंधमः, मौष्टिकः, हेमलः ।

सुनारी, सं. स्त्री. (हिं. सुनार) सुवर्णकार,-व्यवसायः-वृत्तिः (स्त्री.) २. सुवर्णकारपत्नी ।

सुनावनी, सं. स्त्री. (हिं. सुनाना) मृत्युसमाचारः, निधनवृत्तम् ।

सुनीति, सं. स्त्री. (सं.) सुनयः, दे. २. ध्रुव-जननी, उत्तानपादपत्नी ।

सुनी-सुनाई, सं. स्त्री. (हिं. सुनना-सुनाना) किंवदन्ती, जनप्रवादः ।

सुनेत्र, वि. (सं.) सु-सुन्दर,-नयन-नेत्र-लोचन-ईक्षण ।

सुन्न, वि. (सं. शून्य>) चेष्टा-क्रिया-चेतना-स्पंदन,-शून्य-हीन,जडीभूत,निःस्तब्ध, निश्चेष्ट, निर्जीव, निश्चल। सं. पुं. (सं. शून्यं) बिंदुः, खम् ।

सुन्नत, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'खतना' ।

सुन्ना, सं. पुं. (सं. शून्यं) बिंदुः, खम् ।

सुन्नी, सं. पुं. (अ.) यवनसंप्रदायविशेषः ।

सुपक्व, वि. (सं.) सुपरिणत २. सुसिद्ध, सुश्रृत, सुश्राण ।

सुपथ, सं. पुं. (सं.) सत्पथः, सन्मार्गः, सुपन्थाः (पुं. एक.) २. सदाचारः, सद्वृत्तम् ।

सुपथ्य, सं. पुं. (सं. न.) पथ्यं, स्वास्थ्य-प्रदाहारः ।

सुपना, सं. पुं., दे. 'स्वप्न' ।

सुपरिंटेंडेंट, सं. पुं. (अं.) पर्यवेक्षकः, अध्यक्षः ।

सुपर्ण, सं. पुं. (सं.) गरुडः २. कुक्कुटः ३. किरणः ४. खगः ।

सुपात्र, सं. पुं. (सं. न.) योग्यजनः, अधिकारि-व्यक्तिः (स्त्री.) ।

सुपारी, सं. स्त्री. (सं. सुप्रिय>) क्रमुकं, पूगं, क्रमुक-पूग,-फलं, तांबूलम् ।

—पाक, सं. पुं. (हिं.+सं.) पौष्टिकौषधभेदः ।

सुपास, सं. पुं. (देश.) सौख्यं, सुखं दे. ।

सुपुत्र, सं. पुं. (सं.) सत्-उत्तम-श्रेष्ठ,-पुत्रः ।

सुपुत्री, सं. स्त्री. (सं.) सत्-उत्तम-श्रेष्ठ,-पुत्री ।

सुपुर्द, सं. स्त्री., (फ़ा.) निक्षेपः, न्यासः ।

—करना, क्रि. स., निक्षिप् (तु. प. अ.), न्यस् (दि. प. से.) ।

सुपूत, सं. पुं. (सं. सुपुत्रः, दे.) ।

सुपूती, सं. स्त्री. (हिं. सुपूत) सुपुत्रत्वं २. सुपुत्रवती ।

सुप्त, वि. (सं.) निद्रित, निद्राण, शयित २. जडीभूत, निश्चेष्ट, निःस्तब्ध ३. मुद्रित, मुकुलित ४. कर्णविमुख ५. अलस ।

सुप्ति, सं. स्त्री. (सं.) निद्रा, स्वप्नः, स्वापः, शयनं, संवेशः २. सुप्तांगता, अंगजडता, स्तंभः ३. तंद्रा, निद्रालुता-त्वम् ।

सुप्रतिष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) सुख्यातिः-सुविश्रुतिः (स्त्री.) ।

सुप्रतिष्ठित, वि. (सं.) सुकीर्तिमत्, सुविख्यात ।

सुप्रतीक, वि. (सं.) सुंदरांग, रूपवत्, सरूप, सुन्दर, सुरूप २. धार्मिक । सं. पुं. (सं.) शिवः २. कामदेवः ३. दिग्गजविशेषः ४. यक्ष-विशेषः ।

सुप्रदर्श, वि. (सं.) सुदर्शन, रूपवत्, सुन्दर ।

सुप्रसिद्ध, वि. (सं.) सुविश्रुत, प्रख्यात ।

सुफल, सं. पुं. (सं. न.) सत्परिणामः २. सुन्दर-फलं । वि. सफल, कृतार्थ २. सुन्दरफलयुक्त ।

सुबह, सं. स्त्री. (अ.) प्रातः, दे. ।

सुबास, सं. स्त्री., दे. 'सुवास' ।

सुबाहु, सं. पुं. (सं.) राक्षसविशेषः । वि. (सं.) दृढ़-सुन्दर,-बाहु-भुज ।

सुबुक, वि. (फ़ा.) लघु, अल्प-लघु,-भार २. सुन्दर ।

सुबुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) सुमतिः (स्त्री.),

सुधिषणा, सुधीः (स्त्री.)। वि. (सं.) बुद्धि-धी,-मत्, पंडित, प्राय, बुध।

सुबूत, सं. पुं. (अ.) प्रमाणं, साधनं, उपपत्तिः (स्त्री.)।

—तहरीरी, सं. पुं. (अ.) लेखप्रमाणं, साधन-पत्रम्।

सुभ, वि., दे. 'शुभ'।

सुभग, वि. (सं.) सुन्दर, मनोरम २. सौभाग्यवत्, धन्य ३. प्रिय, प्रियतम ४. सुख-आनंद,-प्रद ५. धनाढ्य, ऐश्वर्यशालिन्।

सुभगा, वि. (सं.) सुन्दरी, रूपवती २. जीवित-पतिका, सधवा। सं. स्त्री. (सं.) पतिप्रिया, भर्तृवल्लभा।

सुभट, सं. पुं. (सं.) सुसैनिकः, सुयोधः।

सुभट्ट, सं. पुं. (सं.) सुविद्वस् (पुं.) पंडितवरः।

सुभद्र, वि. (सं.) भाग्यवत् २. श्रेष्ठ। सं. पुं. (सं. न.) सौभाग्यं २. कल्याणम्।

सुभद्रा, सं. स्त्री. (सं.) श्रीकृष्णभगिनी, अर्जुनस्य भार्या, अभिमन्युजननी।

सुभाग, वि. (सं.) सौ-,भाग्यवत्, सुभाग्य। सं. पुं. (सं.) सौभाग्यं, सुदैवम्।

सुभागी, वि. (सं. सुभाग>) धन्य, महाभाग, सौ-,भाग्यवत्, सुभाग्य।

सुभाग्य, वि. (सं.) दे. 'सुभागी'। सं. पुं. (सं. न.) सौभाग्यं, दे.।

सुभान, अव्य. (अ. सुबहान) साधु-साधु, बाढम्।

—अल्ला, धन्योऽसि परमेश्वर! (आश्चर्यादि-बोधकं वाक्यम्)।

सुभाव, सं. पुं. (सं. स्वभावः, दे.)।

सुभाषित, वि. (सं.) सम्यगुक्त। सं. पुं. (सं. न.) सूक्तिः (स्त्री.), वरवचनम्।

सुभिक्ष, सं. पुं. (सं. न.) सुकालः, अन्न-भिक्षा,-बहुलकालः।

सुभीता, सं. पुं. (देश.) सौकर्य्यं, सुगमता २. सदवसरः, सुयोगः ३. सुखं, सौख्यम्।

सुभूषित, वि. (सं.) सम्यक् अलंकृत, सुमंडित।

सुमंगल, वि. (सं.) सुमांगलिक, सुभद्र, शिव,-तम-तर।

सुम, सं. पुं. (फ़ा.) शफः, विखः, खुरः दे.।

सुमति, सं. स्त्री. तथा वि. (सं.) दे. 'सुबुद्धि' सं. स्त्री. तथा वि.।

सुमन, सं. पुं. (सं. सुमनस् न., स्त्री. बहु.) पुष्पं, कुसुमं २. सुचित्तं, सुहृदयम् (सं. पुं.) देवः २. पंडितः ३. गोधूमः। वि. (सं.) सहृदय, सुचित्त, दयालु।

—चाप, सं. पुं. (सं. सुमनश्चापः) कामदेवः।

सुमनस, सं. पुं., तथा वि. दे. 'सुमन' सं. पुं., तथा वि.।

सुमरन, सं. पुं., दे. 'स्मरण'।

सुमरनी, सं. स्त्री. (हिं. सुमरना) (सप्तविंशतिगुटिकावती) जपमालिका।

सुमात्रा, सं. पुं. (सं. सुमात्रा) मलयद्वीप-पुंजान्तर्वर्तिमहाद्वीपविशेषः, सुवर्ण,-भूमिः (स्त्री.) -द्वीपम्।

सुमार्ग, सं. पुं. (सं.) दे. 'सुपथ'।

सुमित्रा, सं. स्त्री. (सं.) दशरथपत्नी २. मार्कण्डेयजननी।

—नंदन, सं. पुं. (सं.) लक्ष्मणः २. शत्रुघ्नः।

सुमुख, सं. पुं. (सं. न.) सुवदनं, शोभनाननम्। वि. (सं.) सुवदन, सुन्दरानन २. सुन्दर ३. प्रसन्न ४. कृपालु।

सुमुखी-खा, सं. स्त्री. (सं.) सुवदना-नी, सुन्दरानना-नी २. सुन्दरी ३. दर्पणः।

सुमेर-रु, सं. पुं. (सं. सुमेरुः) मेरुः, हेमाद्रिः, रत्नसानुः, सुरालयः २. उत्तरध्रुवः ३. जपमालाया बृहद्गुटिका।

सुयश, सं. पुं. [सं.-शस् (न.)] सुकीर्तिः-सुख्यातिः-सुविश्रुतिः-सुप्रसिद्धिः (स्त्री.)।

सुयोग, सं. पुं. (सं.) योज्य-उचित,-कालः, सु-सद्,-अवसरः।

सुयोग्य, वि. (सं.) सुसमर्थ, सुशक्त, सुकुशल, सुनिष्णात, सुनिपुण।

सुयोधन, सं. पुं. (सं.) दुर्योधनः।

सुरंग, वि. (सं.) शोभन-सुन्दर-वर,-वर्णः-रंगः-रागः। वि., सुन्दर, सदाकृति, सुरूप।

सुरंग, सं. स्त्री. (सं. सुरं(रुं)गः-गा) सुरं(रुं)-गः-गा, अंतर्-गूढ़-भौम,-मार्गः २. सन्धिः, संधिला, सुरं(रुं)गः-गा, खानिकं ३. ख(खा)नी-निः (स्त्री.), आकरः ४. पोतस्फोटिनी सुरंगा (यंत्रभेदः)।

—उड़ाना, क्रि. स., सुरुङ्गं सशब्दं स्फुट् (प्रे.)।

—लगाना, क्रि. स., संधिलां कृ अथवा खन् (भ्वा. प. से.)।

—बिछाना, मु., समुद्रे पथि वा सुरंगाः न्यस् (दि. प. से.) निक्षिप् (तु. प. अ.)।

सुरंगिया, सं. पुं. (सं. सौरंगिकः) सुरुङ्ग-(गा)कारः।

सुर, सं. पुं. (सं.) अमर, देवः, देवता दे. २. सूर्यः ३. पंडितः।

—गज, सं. पुं. (सं.) देवद्विपः २. ऐरावतः।

—गाय, सं. स्त्री. (सं. गौः) कामधेनुः (स्त्री.)।

—गायक, सं. पुं. (सं.) गंधर्वः।

—गिरि, सं. पुं. (सं.) सुमेरुः, सुरपर्वतः।

—गुरु, सं. पुं. (सं.) बृहस्पतिः।

—चाप, सं. पुं. (सं.) सुर-इन्द्र,-धनुस् (न.)।

—जन[1], सं. पुं. (सं.) देवगणः।

—जन[2], वि. (सं. सुजन) सज्जन २. चतुर।

—तरु, सं. पुं. (सं.) कल्पवृक्षः, सुर,-द्रुमः-पादपः।

—दारु, सं. पुं. (सं. न.) देवदारु (न.)।

—द्विप्, सं. पुं. (सं.) असुरः, राक्षसः २.राहुः।

—धाम, सं. पुं. [सं.-मन् (न.)] स्वर्गः, नाकः, देवलोकः।

—धुनी, सं. स्त्री. (सं.) गंगा, देवनदी।

—धूप, सं. पुं. (सं.) रालः।

—धेनु, सं. स्त्री. (सं.) कामधेनुः।

—ध्वज, सं. पुं. (सं.) इन्द्रध्वजः, सुरकेतुः।

—नाथ, सं. पुं. (सं.)सुर,-नायकः-पतिः-पालकः-इन्द्रः-ईशः।

—नारी, सं. स्त्री. (सं.) सुर-देव,-वधूः (स्त्री.)-वाला-अंगना।

—पथ, सं. पुं. (सं. न.) आकाशः-शम्।

—पुर, सं. पुं. (सं. न.) देवपुरी, अमरावती।

—मंदिर, सं. पुं. (सं. न.) देवालयः, मंदिरम्।

—मणि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) चिन्तामणिः।

—रिपु, सं. पुं. (सं.) दानवः, राक्षसः।

—लोक, सं. पुं. (सं.) स्वर्गः, देवलोकः।

—वल्ली, सं. स्त्री. (सं.) तुलसी, वृन्दा।

—वाणी, सं. स्त्री. (सं.) देववाणी, सस्कृतभाषा।

—श्रेष्ठ, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः २. शिवः ३. विष्णुः ४. गणेशः ५. धर्मः।

—सरि, —सरिता, —सरी, } सं. स्त्री. (सं.-सरित्) गंगा, सुरसिंधुः।

सुर, सं. पुं. (सं. स्वरः) ध्वनिः, नादः, स्वनः, दे. 'सुर'।

—मिलाना, क्रि. स., तुल्यस्वरं कृ।

बे—, वि., विस्वर।

बेसुरा, क्रि. वि., विस्वरं, अपस्वरम्।

—में सुर मिलाना, मु., चाटूक्तिभिः तुष् (प्रे.) या उपच्छंद् (चु.)।

सुरत[1], सं. स्त्री. [सं. स्मृतिः (स्त्री.)] स्मरणं, दे. 'सुध' (१-३)।

—सँभालना, मु., सावधान-अवहित (वि.) भू।

सुरत[2], सं. पुं. (सं. न.) काम-केली,-क्रीडा, संभोगः, मैथुनं, रतिक्रिया, निधुवनन्।

ग्लानि, सं. स्त्री. (सं.) रतिजशैथिल्यम्।

सुरता, सं. स्त्री. (सं.) देवत्वं, अमरत्वम्। २. देव-सुर,-समूहः-समुदायः ३. पत्नी, भार्या।

सुरति, सं. स्त्री., दे. 'सुरत' (१-२)।

सुरभि, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) सुगंधः, सौरभं, सु-, वासः। (सं. स्त्री.) गौः (स्त्री.) २. कामधेनुः (स्त्री.), सुरभी ३. पृथिवी ४. सुरा।

सुरभित, वि. (सं.) सुरभि, सुगंधित दे.।

सुरभी, सं. स्त्री. (सं.) सुगंधः, दे. २. कामधेनुः (स्त्री.)।

सुरमई, वि. (फ़ा.) यामुनरंग, सौवीरवर्ण, आ-ईषत्,-कृष्ण-नील।

सुरमा, सं. पुं. (फ़ा.-मह्) यामुनं, सौवीरं, स्रोतोऽञ्जनं, कपोतांजनं, कृष्ण-,अंजनम्।

—दानी, सं. स्त्री., यामुन-सौवीर-अंजन,-आधानी।

—लगाना, क्रि. स., (नेत्रयोः) सौवीरं निविश् (प्रे.), या ऋ (प्रे. अर्पयति)।

सुरम्य, वि. (सं.) सुन्दर, दे.।

सुरस, वि. (सं.) मधुर, स्वादु २. सरस, रस-युक्त ३. सुन्दर।

सुरसा, सं. स्त्री. (सं.) हनुमन्मार्गावरोधक नागमातृ (स्त्री.) २. राक्षसीविशेषः ३. दुर्गा ४. नदीविशेषः ५. तुलसी ६. ब्राह्मी।

सुरसुराना, क्रि. अ. (अनु. सुर+सुर>) सृप् (भ्वा. प. अ.), मन्दं निभृतं च गम् २. कंडूति अनुभू ३. सुरसुरायते (ना. धा.)।

सुरसुरी, सं. स्त्री. (सं.) सुरसुर-सर्पण,-ध्वनिः २. कंडूः-कंडूतिः-खर्जूः (स्त्री.) ३. कीटभेदः।

सुरक्षित, वि. (सं.) सुत, स्ववित, सुत्रात, सुत्राण, सुपालित।

सुरांगना, सं. स्त्री. (सं.) देवी, देवपत्नी, अमरांगना ३. अपसरा, स्वर्वेश्या, नाकनर्तकी।

सुरा, सं. स्त्री. (सं.) मदिरा, वारुणी, हाला, कादंबरी, मद्यं दे. ।

सुराख़, सं. पुं., दे. 'सूराख़' । दे. 'सुराग' ।

सुराग़, सं. पुं. (तु.) अन्वेषणं, अनुसंधानं २. पद-,चिह्नं, लक्षणं, सूत्रं, संधानम् ।

—लगाना, क्रि. स., चिह्नैः मृग् (चु.) या अन्विष् (दि. प. से.) ।

—लेना, क्रि.स., निभृतं निरीक्ष् (भ्वा.आ.से.) ।

सुरागाय, सं. स्त्री. [सं. सुरगौः> (स्त्री.)] चमरः-सृमरः[-री (स्त्री.)], त्रिविष्टपदेशीयः संकरजो गोभेदः ।

सुराग़ी, सं. पुं. (फ़ा. सुराग़) च(चा)रः, अपसर्पः, दे. 'भेदिया' ।

सुराही, सं. स्त्री. (सं.) *लंबग्रीवघटी,*सुराधिः।

—दार, वि. (अ.+फ़ा.) सुराधिसदृश ।

सुरीला, वि. (हिं. सुर) सु-मधुर,-स्वर-स्वन, कल, मंजुल, कर्णमधुर (राग, कंठादि) २. सु-मधुर,-कंठ (गायकादि) ।

सुरुखुरु, वि. (फ़ा. सुर्ख़रू, दे.) ।

सुरुचि, सं. स्त्री. (सं.) उत्तम,-रुचिः-अभिरुचिः-शीलं २. ध्रुवभक्तस्य विमातृ (स्त्री.) । वि. (सं.) सुरुचि-उत्तमाभिरुचि,-विशिष्ट ।

सुरूप, वि. (सं.) सुन्दर, रूपवत् २. बुद्धिमत् । सं.पुं. (सं.न.) वराकृतिः (स्त्री.), सुन्दराकारः ।

सुरेन्द्र, सं. पुं. (सं.) देवेशः, इन्द्रः, सुरेशः—श्वरः ।

—चाप, सं. पुं. (सं.) इन्द्रधनुस् (न.) ।

सुर्ख़, वि. (फ़ा.) रक्त, रो(लो)हित, शोण, शोणित, अरुण, कषाय, फल्गुन ।

—होना, क्रि. अ., रक्तायते—लोहितायते (ना. धा.) ।

—रू, वि. (फ़ा.) तेजस्विन्, कांतिमत् २. प्रतिष्ठित, संमानित ३. कृतकार्य ।

—रूई, सं. स्त्री., कृतकार्यता २. यशस् (न.), कीर्तिः (स्त्री.) ३. संमानः, प्रतिष्ठा ।

सुर्ख़ाब, सं. पुं. (फ़ा.) कोकः, कुकः, चक्रः, चक्रवालः, रथांगः, रथांगनामकः ।

—का पर लगाना, मु., वैलक्षण्यविशिष्ट (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से.) ।

सुर्ख़ी, सं. स्त्री. (फ़ा.) रक्तिमन्-लोहितिमन्, अरुणिमन् (पुं.), शोणता, रक्तता २. (लेखादीनां) शीर्षकं ३. रुधिरं, रक्तं ४. इष्टकाचूर्णं ५. रक्तवर्णः ।

सुलक्षण, सं. पुं. (सं. न.) शुभ-भद्र-सु,-लक्षणं-चिह्नं-लक्ष्मन् (न.) । वि. (सं.) शुभ, शिव, मांगलिक, सुलक्ष्मयुत २. भाग्यवत्, धन्य ।

सुलगना, क्रि. अ. (अनु. सुलसुल>) (सधूमं) ज्वल् (भ्वा. प. से.), दह् इंध् (कर्म.), दीप् (दि. आ. से.) २. अत्यंतं संतप् (कर्म.), दुःखायते (ना. धा.) ।

सुलगाना, क्रि. स. (हिं. सुलगना) उद्दीप्-प्रज्वल् (प्रे.), सम्-,इंध् (रु. आ. से.) २. संतप् (प्रे.), पीड् (चु.) ३. उत्तिज्-उद्दीप् (प्रे.) ।

सुलझना, क्रि. अ. (हिं. उलझना) उद्ग्रंथ् (कर्म.), विश्लिष् (दि. प. अ.), सरलीभू ।

सुलझाना, क्रि. स. (हिं. सुलझना) उद्ग्रंथ् (क्र्. प. से.), विश्लिष् (प्रे.), सरलीकृ, जटिलतां अपनी (भ्वा. प. अ.) २. विवादं शम् (प्रे. श(शा)मयति) ।

सुलझाव, सं. पुं. (हिं. सुलझाना) विश्लेषः, मोचनं, सरलीकरणं, जाटिल्यापनयनम् ।

सुलतान, सं. पुं., दे. 'सुल्तान' ।

सुलफ़ा, सं. पुं. (फ़ा.) तमाखुभेदः, *सुलफः २. दे. 'चरस' ।

सुलभ, वि. (सं.) सुलभ्य, सुप्राप्य-प २. सरल, सुगम ३. सामान्य, साधारण ।

सुलभता, सं. स्त्री. (सं.) सुलभत्वं, सुप्राप्यता २. सरलता ।

सुलह, सं. स्त्री. (अ.) सख्यं, मैत्री, सौहार्दं २. शान्तिः (स्त्री), विप्लवाभावः ३. संधिः, संधानं ४. प्रसादनं, समाधनम् ।

—नामा, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) संधिपत्रम् ।

सुलाना, क्रि.स., ब. 'सोना' के प्रेरणार्थक रूप ।

सुलूक, सं. पुं., दे. 'सलूक' ।

सुलेमान, सं. पुं. (अ.) सुलेमानः, देवदूतो नृपविशेषः २. पर्वतविशेषः ।

सुलेमानी, वि. (अ.) सुलेमानसंबंधिन् । सं. पुं. (अ.) सिताक्षोऽश्वः २. श्वेतकृष्णः प्रस्तर-भेदः ।

सुलोचन, वि. (सं.) सुनयन, सुनेत्र । सं. पुं. (सं.) दैत्यविशेषः २. मृगः ३. चकोरः ।

सुलोचना, वि. स्त्री. (सं.) सुनयनी-ना । सं. स्त्री. (सं.) मेघनादपत्नी ।

सुल्तान, सं. पुं. (अ.) नृपः, राजन्, सम्राज् ।

सुल्ताना, सं. स्त्री. (अ.) सम्-,राज्ञी, नृपपत्नी ।

सुल्तानी, वि. (अ.) राजकीय २. रक्तवर्ण । सं. स्त्री., राज,-पदं-अधिकारः, राज्यं २. कौशेयवस्त्रभेदः ।

सुवर्ण, सं. पुं. (सं. न.) स्वर्णं, कांचनं, दे. सोना'' । २. धनं, वित्तम् । वि. (सं.) सुंदर-रम्य,-वर्ण-रंग २. हेमवर्ण ३. कुलीन, अभिजात ।

—कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'सुनार' ।

सुवास, सं. पुं. (सं.) सुगंधः, दे. २. सु,-सदनं-भवनं-गृहं, सुंदर,-निवासः-निलयः ।

सुविचार, सं. पुं. (सं.) सद्विमर्शः २. सुनिर्णयः, सुन्यायः ।

सुविधा, सं. स्त्री., दे. 'सुभीता' ।

सुवृत्त, वि. (सं.) सदाचारिन्, सच्चरित्र २. गुणिन् ३.साधु ४.सुच्छन्दोविशिष्ट(काव्य) ।

सुवेश-ष, वि. (सं.) सुन्दरवेष-श, सुवसन, सुवेशि(षि)न् २. सुन्दर, सुरूप ।

सुशिक्षा, सं. स्त्री. (सं.) सच्छिक्षा, सुन्दर,-अनुशासनं-अनुशिष्टिः (स्त्री.) ।

सुशिक्षित, वि. (सं.) सुविनीत, व्युत्पन्न, सुपाठित, सूपदिष्ट २. शिष्ट, संस्कृत, प्रबुद्ध ।

सुशील, वि. (सं.) सत्-उत्तम,-शील-स्वभाव-प्रकृति, शीलवत्, सभ्य, दक्षिण २. सच्चरित्र, सदाचारिन् ३. नम्र, विनीत ४. सरल, ऋजु ।

सुशीलता, सं. स्त्री. (सं.) शीलवत्ता, दाक्षिण्यं, सभ्यता, शिष्टता २. सच्चारित्र्यं, सद्वृत्तिः (स्त्री.) ३. नम्रता ४. आर्जवम् ।

सुश्री, वि. (सं.) अति,-सुंदर-रम्य-मनोहर २. महा-बहु,-धन, सुसंपन्न, सुसमृद्ध ।

सुषमा, सं. स्त्री. (सं.) शोभातिशयः, सुंदरता, दे. ।

—शाली, वि. (सं.) अतिसुंदर, सुपमित ।

सुषिर, सं. पुं. (सं. न.) विविरं, छिद्रं २. वंश्यादिवाद्यम् । वि. (सं.) सच्छिद्र, सरंध्र ।

सुषुप्त, वि. (सं.) गाढं शयित-सुप्त-निद्राण, गाढनिद्रामग्न ।

सुषुप्ति, सं. स्त्री. (सं.) सु-गाढ,-निद्रा-स्वप्नः-स्वापः-सुप्तिः (स्त्री.)-शयनं-संवेशः २. अज्ञानं (वे.) ३. चित्तवृत्तिभेदः (यो.) ।

सुषुप्सु, वि. (सं.) शिशयिषु, निद्रा,-आकुल-आतुर ।

सुषुम्ना, सं. स्त्री. (सं.-णा) इडापिंगलामध्यगा मध्यनाडी, नाडी, पृष्ठवंशः ।

सुष्ट, वि. (सं. दुष्ट का अनु.) शुभ, भद्र २. सुंदर ।

सुष्ठु, अव्य. (सं.) अत्यन्तं, सातिशयं २.सम्यक्, सुचारु ३. यथायोग्यं, अवितथम् ।

सुष्ठुता, सं. स्त्री. (सं.)मंगलं, शिवं २. सौभाग्यं ३. सौन्दर्यम् ।

सुसंगति, सं. स्त्री. (सं.) सु-सत्-साधु-उत्तम,-संगः-संगमः-समागमः-संगतिः ।

सुसज्जित, वि. (सं.) सुप्रसाधित, सुमंडित, सुभूषित, सुपरिष्कृत, स्वलंकृत ।

सुसताना, क्रि. अ. (फ़ा. सुस्त) विश्रम् (दि. प. से.), आ-वि-रम् (भ्वा. प. अ.), कार्यात् निवृत् (भ्वा. आ. से.), श्रमं अपनी (भ्वा. प. अ.) ।

सुसमय, सं. पुं. (सं.) सुकालः २. सुभिक्षम् ।

सुसर-रा, सं. पुं. (सं. श्वशुरः) दे. 'ससुर' ।

सुसरार-ल, सं. स्त्री. (सं. श्वशुरालयः) दे. 'ससुराल' ।

सुसरी, सं. स्त्री. (हिं. ससुर) दे. 'ससुरी' ।

सुस्त, वि. (फ़ा.) अलस(क), आलस(स्य), कार्य-उद्योग,-विमुख, मंद, मंथ(द)र, शीतक, तुंद,-परिमृज-परिमार्ज २. निर्बल ३. निस्तेजस्क, हतप्रभ ४. मंद,-गति-वेग ५. स्थूल-मंद,-बुद्धि ६. रुग्ण, दे. 'रोगी' ।

सुस्ताना, क्रि. अ., दे. 'सुसताना' ।

सुस्ती, सं. स्त्री. (फ़ा.) आलस्यं, मांद्यं, उद्योग-कार्य,-विमुखता-द्वेषः २. तेजोहीनता, निष्प्रभता ३. रोगः ।

—करना, क्रि. अ., समयं व्यर्थं नी (भ्वा.प.अ.) अलस-निर्व्यापार-उद्योगशून्य (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.) २. विलंब (भ्वा. आ. से.), चिरा(र)यति (ना. धा.) ।

सुस्थिति, सं. स्त्री. (सं.) सुन्दर-सुखद,-स्थितिः (स्त्री.)-अवस्था-दशा । २. सुखं, मंगलम् ३. स्वास्थ्यम् ।

सुस्थिर, वि. (सं.) अचल, निश्चल २. सुदृढ, धीर ।

सुस्पर्श, वि. (सं.) कोमल, मृदुल, चिक्कण, श्लक्ष्ण ।

सुस्मिता, सं. स्त्री. (सं.) स्मेरमुखी, प्रसन्न-प्रफुल्ल,-मुखी-आनना-वदना ।

सुहबत, सं. स्त्री., दे. 'संगत' ।

सुहाग, सं. पुं. (सं. सौभाग्यं) सुभगत्वं, पतिवत्नीत्वं, २. वरस्य वैवाहिकवस्त्रं, दे. 'जामा' ३. वैवाहिकं मंगलगीतम् ।

—पिटारा, सं. पुं., *सौभाग्यपिटाकः ।

—पूरा, सं. पुं., सौभाग्यपुटः ।

सुहागा, सं.पुं. (सं. सुभगः)टंकणं-नं,कनकक्षारः, रसशोधनः, विडं, लोहद्राविन्, स्वर्णपाचकः ।

सुहागिन-नी, सं. स्त्री. (हिं. सुहाग) सधवा, पतिवत्नी, सनाथा, सभर्तृका, जीवत्पतिका ।

सुहाता, वि. (हिं. सुहाना) शोभन, सुखकर ।

सुहाता, वि. (हिं. सहना) सहनीय, सह्य । २. कोष्ण, कदुष्ण (जल) ।

सुहाना, क्रि. अ. (सं. शोभनं) विराज् शुभ् (भ्वा. आ. से.) २. रुच् (भ्वा. आ. से.), रुचिकर वृत (भ्वा. आ. से.) ।

सुहावना, वि. (हिं. सुहाना) शोभन, प्रिय-सुभग,-दर्शन, सुन्दर दे. । [सुहावनी (स्त्री.)= शोभनी] । क्रि. अ., दे. 'सुहाना' ।

—पन, सं. पुं., सौन्दर्यं, मनोहरता ।

सुहृद्, सं. पुं. (सं.) सखि, मित्रं, वयस्यः ।

सुहृदय, वि. (सं.) सुचित्त, सुमनस्क २. सहृदय, स्नेहशील ।

सूँघना, क्रि. स. (सं. शिंघनं) शिंघ् (भ्वा. प. से.), आ-उपा-सं, घ्रा (भ्वा. प. अ.), घ्राणेन्द्रियेण गंधं ग्रह् (क्र्. प. से.) २. अत्यल्पं भक्ष् (चु.) ३. (सर्पादि का) दंश् (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं., उपा-आ,-घ्राणं, घ्रातं-तिः (स्त्री.) गन्धग्रहणम् ।

सिर—, मु., शिरसि आ-समा-उपा,-घ्रा ।

सूँघनी, सं. स्त्री. (हिं. सूँघना) नस्यं, दे. 'नसवार' ।

सूँघने योग्य, वि., घ्रातव्य, घ्रेय, शिंघनीय ।

सूँघने वाला, सं. पुं., शिंघकः, घ्रातृ, गंधग्राहकः ।

सूँघा सं. पुं. (हिं. सूँघना) विश्वकद्रुः, मृगयाकुकुरः, आखेटिकः २. *निधिघ्रातृ ३. च(चा)रः, अपसर्पः ।

सूँघाहुआ, वि., शिंघित, घ्रात, घ्राण, गृहीतगंध ।

सूँड, सं. स्त्री. (सं. शुंडः) शुंडा,-दंडः, शुंडारः, हस्ति-,हस्तः, करि-,करः ।

सूँस, सं. पुं. [सं. शि(शि)शुमारः] अंबुकपिः, असि,-पुच्छः-प्लवः, शिशुकः, महावसः, उष्णवीर्यः, उलु(लू)पिन् ।

सूँ-सूँ, सं. स्त्री. (अनु.) *सूं,-कारः-कृतिः (स्त्री.) ।

—करना, क्रि. अ., नासिकया सूँ कृ अथवा सूँ-सूँध्वनिं कृ ।

सूअर, सं. पुं. [सं. सू(शू)करः] वराहः, रोमशः, किरिः, दंष्ट्रिन्, क्रोडः, पोत्र-दंत-रद,-आयुधः, शूरः, कोलः, भेदनः, घोणिन्, पोत्रिन् २. (गाली) अधमजनः, गृध्नुः ।

—का मांस, सं. पुं., शूकर-वराह,-मांसम् ।

सूअरी, सं. स्त्री. [सं. सू(शू)करी] कोली, वराही, शूरी इ. ।

सूआ[1], सं. पुं. (सं. शुकः) कीरः, दे. 'तोता' ।

सूआ[2], सं. पुं. (सं. सूचा) सूचकः, स्थूल-बृहत्,-सूची ।

सूई, सं. स्त्री. (सं. सूची) सूचिः (स्त्री.), व्यधनी, सूचिका, सी(से)वनी २. घटीसूची ।

—पिरोना, क्रि. स., सूची ससूत्रां कृ या सूत्रेण सनाथयति (ना. धा.) ।

—का काम, सं. पुं., सूचीकर्मन् (न.) ।

—का नाका, सं. पुं., सूची,-छिद्रं-रंध्रं-मुखं-पाशः ।

—की नोक, सं. स्त्री., सूच्यग्रं, सूचिकाग्रम् ।

—तागा, सं. पुं., *सूची,-सूत्रं-डोरम् ।

—का भाला या फावड़ा बनाना, मु., अणुं पर्वतीकृ, अत्युक्त्या वर्ण् (चु.) ।

सूकर, सं. पुं. (सं.) दे. 'सूअर' ।

सूकरी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सूअरी' ।

सूक्त, सं. पुं. (सं. न.) वेदमंत्र-ऋक्,-समूहः २. उत्तमकथनं ३. महावाक्यम् । वि. (सं.) साधु कथित, सम्यगुक्त ।

सूक्ति, सं. स्त्री. (सं.) सुभाषितं, सुन्दरकथनं, सुन्दर-वर,-वचनं-वाक्यं-उक्तिः (स्त्री.) ।

सूक्ष्म, वि. (सं.) अति-अत्यंत,-अल्प-क्षुद्र-तनु-दभ्र-लघु-स्तोक-क्षुल्ल-क्षुल्ल २. दुर्बोध, गहन, गूढ ३. अति,-तनु-विरल-श्लक्ष्ण ।

—कोण, सं. पुं. (सं.) लघुकोणः ।

—दर्शकयंत्र, सं. पुं. (सं. न.) अणुवीक्षणयंत्रम् ।

—दर्शिता, सं. स्त्री. (सं.) कुशाग्रबुद्धिः (स्त्री.)-प्रत्युत्पन्नमतित्वम् ।

—दर्शी, वि. (सं.-र्शिन्) कुशाग्र,-बुद्धि-मति, सूक्ष्मदृष्टि, गूढज्ञ, सुविचक्षण, प्रत्युत्पन्नमति ।

—भूत, सं. पुं. (सं. न.) अपंचीकृताकाशादि-भूतम् ।

—मति, वि. (सं.) तीक्ष्ण-तीव्र-कुशाग्र,-बुद्धि-मति ।

—शरीर, सं. पुं. (सं. न.) सूक्ष्म-लिंग-, देहः-शरीरम् ।

सूक्ष्मता, सं. स्त्री. (सं.) सूक्ष्मत्वं, अति,-लघुता-अल्पता-स्तोकता २. सु-अति,-तनुता-विरलता, श्लक्ष्णता ३. दुर्बोधता, गहनता, गूढता-त्वम् ।

सूखना, क्रि. अ. (सं. शोषणं) शुष् (दि. प. अ.), शोषं-शुष्कतां या (अ. प. अ.), शुष्क-निर्जल-नीरस (वि.) भू २. कान्ति-प्रभा,-हीन (वि.) भू ३. नश् (दि. प. वे.) ४. कृश-दुर्बल (वि.) जन् (दि. आ. से.) ५. भी (जु. प. अ.), सद् (भ्वा. प. अ.) ६. विशॄ (कर्म.), म्लै (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं., शुषः, शोषः, शोषणं, शुषी-षिः (स्त्री.) ।

सूखा, वि. (सं. शुष्क) निर्जल, निरुदक, अरस, विरस, नीरस, वान २. निष्प्रभ, कान्तिहीन ३. नष्ट, ध्वस्त ४. कृशांग, दुर्बल ५. विशीर्ण, म्लान ६. परुष, कठोर, निर्दय ७. केवल, शुद्ध । सं. पुं., अनावृष्टिः (स्त्री.), अवर्षणं, अवग्रा(ग्र)हः २. नदी, तीरं-कूलं ३. निर्जलस्थानं ४. शुष्कतमाखुः ५. (बाल-कानां) कासभेदः, शोषः ६. दौर्बल्यं, कृशांगता ७. भंगा, दे. 'भाँग' ।

—पड़ना, क्रि. अ., वृष्टि-वर्ष,-विघातः-निरोधः वृत् (भ्वा. आ. से.) ।

—जवाब देना, मु., स्पष्टं निराकृ वा प्रत्याख्या (अ. प. अ.) ।

सूखा हुआ, वि., दे. 'सूखा' (१-५) ।

सूखकर काँटा होना, मु., अतिकृश-अतिक्षीण (वि.) जन्, अत्यंतं क्षि (भ्वा. प. अ.) ।

सूखे खेत लहलहाना, मु., सुदिवसा आगम् ।

सूचक, सं. पुं. (सं.) सूची-चिः (स्त्री.), दे. 'सूई' २. दे. 'सूआ' ३. सू(सौ)चिकः, सौचिः, तुन्नवायः, सूत्रभिद्, दे. 'दरजी' ४. सूत्रधारः ५. कथकः ६. कुक्कुरः ७. खलः, विश्वासघातकः ८. गुप्त-,चरः-चारः ९. पिशुनः, कर्णेजपः १०. शिक्षकः । वि. (सं.) ज्ञापक, बोधक, निर्देशक, निदर्शक ।

सूचना, सं. स्त्री. (सं.) विज्ञापना, आ-,ख्या-पना, विज्ञप्तिः (स्त्री.) २. दे. 'सूचनापत्र' ३. वार्ता, संदेशः, ज्ञानं, बोधः ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) विज्ञापन-विज्ञप्ति-घोषणा-प्रसिद्धि,-पत्रम् ।

सूचनीय, वि. (सं.) बोधनीय, ज्ञापनीय, ज्ञापयितव्य, आवेदनीय ।

सूचि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सूई' ।

सूचित, वि. (सं.) ज्ञापित, बोधित, आ-,ख्या-पित, कथित, प्रकाशित ।

सूची, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सूई' २. अनुक्रमणी-णिका, नामावली-लिः (स्त्री.) परि,-गणना-संख्या ।

—कर्म, सं. पुं. [सं.-र्मन् (न.)] कलाभेदः ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.), सूचि(ची) पुस्तकं-पत्रकम् ।

—भेद्य, वि. (सं.) सीवनीच्छेद्य २. घन, निविड (अन्धकार) ।

सूजन, सं. स्त्री. (हिं. सूजना) शोथः, शोफः, गंडः ।

सूजना, क्रि. अ. (फ़ा. सोज़िश) सशोथ-सशोफ (वि.) संजन् (दि. आ. से.), श्वि (भ्वा. प. से.), स्फाय् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं., दे. 'सूजन' ।

सूजनी, सं. स्त्री. (फ़ा. सोज़नी) कुथभेदः *सूचिनी ।

सूजा, सं. पुं. (सं. सूचा >) दे. 'सूआ' २. वेधनी, वेधनिका ।

सूज़ाक, सं. पुं. (फ़ा.) भृश-,उष्णवातः, रतिजरोगभेदः ।

सूजा हुआ, वि., शून, स्फीत, सशोफ, शोथयुत ।

सूजी, सं. स्त्री. (सं. शुचि >) कणिकः ।

सूझ, सं. स्त्री. (हिं. सूझना) कल्पना, उद्भावना २. बोधः, ज्ञानं ३. दृष्टिः (स्त्री.) ।

—बूझ, सं. स्त्री., बुद्धिः-मतिः (स्त्री.) ।

सूझना, क्रि. अ. (सं. सुध्यानम्) दृश्-लक्ष (कर्म.), अवभास् (भ्वा. आ. से.), प्रतिभा (अ. प. अ.) २. (मनसि विचारः) आविर्भू-अथवा उत्पद् (दि. आ. अ.) ।

सूट, सं. पुं. (अं.) आङ्गल,-वेशः(षः)-परिधानं २. *समवेशः-षः ।

—केस, सं. पुं. (अं.) वेश(ष)कोषः ।

सूटा, सं. पुं. (अनु.) (तमाखुप्रभृतीनां) धूम,-कर्षः-कृष्टिः (स्त्री.) ।

सूत¹, सं. पुं. (सं. सूत्रं) तन्तुः, डोरः, शुल्वं २. सूत्रं, यज्ञोपवीतं ३. मेखला, कांची ।

—धार, सं. पुं., दे. 'बढ़ई' ।

सूत², सं. पुं. (सं.) वर्णसंकरजातिभेदः, क्षत्रियात् ब्राह्मणीसुतः २. सारथिः, यंतृ, क्षत्तृ, हयंकषः ३. चारणः, वंदिन्, वैतालिकः ४. पुराणवक्तृ, पौराणिकः । [सूती (स्त्री.)] वि. (सं.) प्रेरित २. उत्पन्न ।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) सारथिजः २. सारथिः ३. कर्णः ४. कीचकः ।

सूतक, सं. पुं. (सं.) जन्माशौचम् २. मरणाशौचम् ३. सूर्य-चन्द्र,-ग्रहणं, उपरागः ।

सूतली, सं. स्त्री. (हि. सूत) सूत्रं, डोरः, गुणः, रज्जुः (स्त्री.), शुल्वं, शुल्लम् ।

सूति, सं. स्त्री. (सं.) प्रसूतिः (स्त्री.), प्रसवः, जननम् २. सन्ततिः (स्त्री.), सन्तानः ।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सूतिकागृह' ।

—मारुत, सं. पुं. (सं.) प्रसव-प्रसूति,-पीडा-वेदना, सूतिवातः ।

सूतिका, सं. स्त्री. (सं.) सद्यः-नव,-प्रसूता, दे. 'जच्चा' ।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) अरिष्टं, सूतिकागारं, प्रसव-सूति,-गृहं-भवनं-आवासः-गेहम् ।

सूती, वि. (हिं. सूत) कार्पास, कार्पासिक, तूल-तूलक-पिचु-पिचुल,-निर्मित-संबंधिन् ।

—कपड़ा, सं. पुं., कार्पासं, फालं, वादरं, तूलांवरम् ।

सूत्र, सं. पुं. (सं. न.) तंतुः, डोरः, शुल्वं, शुल्लं २. यज्ञ,-सूत्रं-उपवीतं ३. प्राचीनमानभेदः ४. रेखा-घा, लेखा ५.मेखला, कांची ६. नियमः, व्यवस्था ७. ससारं संक्षिप्तवचनं ८. कारणं, मूलं ९. संधानं. दे. 'सुराग' ।

—कंठ, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणः २. कपोतः ३. खंजनः, खंजरीटः ।

—कर्म, सं. पुं. [सं.-र्मन् (न.)] दारुकर्मन्, तक्षशिल्पं २. लेपकर्मन्, इष्टकान्यासः, वास्तुनिर्माणम् ।

—कार, सं. पुं. (सं.) सूत्र,-कर्तृ-प्रणेतृ-रचयितृ-कृत् ।

—ग्रंथ, सं. पुं. (सं.) सूत्ररूपेण रचितं पुस्तकम् ।

—धार, सं. पुं. (सं.) नाटकीयकथासूत्रसूचकः प्रधाननटः, नाट्यशालाव्यवस्थापकः, सूत्रभृत् २. तक्षन्, रथकारः ३. इन्द्रः [-धारी (स्त्री.) सूत्रधारपत्नी] ।

—पात, सं. पुं. (सं.) उपक्रमः, प्र-,आरंभः ।

सूथनी, सं. स्त्री., दे. 'सुत्थन' ।

सूद¹, सं. पुं. (फ़ा.) लाभः, प्राप्तिः (स्त्री.), आयः, फलं, अर्थः २. वृद्धिः (स्त्री.), वार्द्धुष्यं, कला, कायिका, कारिका, कालिका ।

—खाना, क्रि. स., वार्द्धुष्यं ग्रह् (क्र्. प. से.) ।

—ख़ोर, सं. पुं. (फ़ा.) कुशी(शी-षी)दः-दकः, कुसीदिन्, वार्द्धुषिकः, वार्द्धुषिन्, वृद्ध्याजीवः ।

—ख़ोरी, सं. स्त्री., कुसीदं, कौसीद्य, वृद्धि,-जीवनं-जीविका ।

—दर सूद, सं. पुं. (फ़ा.) चक्रवृद्धिः (स्त्री.) ।

—पर देना, क्रि. स., कुसीदं कृ ।

—पर लेना, क्रि. स., वृद्ध्या ऋणं ग्रह् ।

—बट्टा, सं. पुं., हानिलाभौ, आयापायौ ।

बे—, वि., वृद्धि-कला,-रहित २. निष्फल, व्यर्थ ।

सूद², सं. पुं. (सं.) पाचकः, सूपकारः २. व्यंजनं, दे. 'भाजी' ३. सारथ्यं ४. अपराधः ५. पापम् ।

सूदन, वि. (सं.) नाशक, घातक ।

सूदी, वि. (फ़ा.) सवार्द्धुष्य, सकल (दत्तं आदत्तं वा) ।

सूना, वि. (सं. शून्य) निर्जन, विजन, विविक्त, जन,-हीन-शून्य २. रिक्त, –विरहित, –हीन, वशिक, तुच्छ, निर्– । सं. पुं. (सं. न.) एकांतः, विविक्तं, निर्जनस्थानम् ।

—पन, सं. पुं., शून्यता, विजनता, विविक्तता २. रिक्तता ३. एकांतः ।

सूनु, सं. पुं. (सं.) पुत्रः २. अनुजः ३. दौहित्रः ।

सूप¹, सं. पुं. (सं. शूर्पः-र्पं) प्रस्फोटनं-नी, कुल्यः, सूर्पः ।

सूप², सं. पुं. (सं., मि. अं. सूप) पक्व-सिद्ध,-दाली-लिः (स्त्री.) २. दालीरसः ३. सरसं व्यंजनं ४. सूदः ।

—कार, सं. पुं. (सं.) सूदः, औदनिकः, आंधसिकः, पाच(कु)कः, भक्ष्यंकारः ।

सूफ़, सं. पुं. (अ.) दे. 'ऊन' ।

सूफ़ी, सं. पुं. (अ.) यवनसंप्रदायविशेषः । वि., शुद्ध, पवित्र ।

सूबा, सं. पुं. (अ.) प्रांतः, प्रदेशः, देशभागः ।

सूबेदार, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) प्रान्त,-अधिपतिः-शासकः-अध्यक्षः, भोगपतिः २. सेनाधिकारिभेदः ।

सूबेदारी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) भोगपतित्वं, प्रान्ताधिपतित्वं २-३. प्रान्ताधिपति-,पदं-कर्मन् (न.) ।

सूम[1], वि. (अ. शूम=अशुभ) कृपण, मितंपच, दे. 'कंजूस' ।

सूम[2], सं. पुं. (सं.) जलं, नीरम् २. दुग्धं, क्षीरम् ३. गगनं, आकाशः-शम् ।

सूय, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सोम-सोमलता,-निष्पीडनं-संपीडनम् २. यज्ञः, यागः, मेधः, मखः ।

सूर[1], सं. पुं. (सं.) सूर्यः २. अर्कवृक्षः ३. पंडितः ।

सूर[2], सं. पुं., दे. 'शूर' ।

सूर[3], सं. पुं., दे. 'सूअर' ।

सूरज, सं. पुं. (सं. सूर्यः, दे.) ।

सूरत, सं. स्त्री. (फ़ा.) रूपं, आकारः, आकृतिः (स्त्री.) २. सौन्दर्यं, छविः (स्त्री.) ३. युक्तिः (स्त्री.), उपायः, विधिः ४. दशा, अवस्था ।

—दिखाना, मु., प्रकटति (ना. धा.), संमुखं-खे आया (अ. प. अ.) ।

—बनाना, मु., वेषं परिवृत् (प्रे.) २. अन्यस्य रूपं ग्रह् (क्र्. प. से.)-धृ (चु.) ३. अरुचिं प्रकटयति (ना. धा.), विडंब् (चु.) ४. चित्रं लिख् (भ्वा. प. से.) ।

—बिगड़ना, मु., वदनं विवर्णं जन् (दि. आ. से.) ।

—बिगाड़ना, मु., मुखं विरूपयति (चु.),कुरूपं विधा (जु. उ. अ.) २. दंड् (चु.) ३. अप-अव-मन् (प्रे.), अवज्ञा (क्र्. प. अ.) ।

—शक्ल, सं. स्त्री. (फ़ा+अ.) आकृतिः (स्त्री.)।

सूरदास, सं. पुं. (सं. सूर्यदासः) हिन्दीभाषायाः श्रीकृष्णभक्तो महाकविविशेषः २. अंधः, प्रज्ञाचक्षुष्कः ।

सूरन, सं.पुं. [सं. सू(शू)रणः] अर्शोघ्नः, ओलः-ल्लः, वातारिः, सुवृत्तः, बहुरुच्य,-कंदः, दे. 'ज़मींकंद' ।

सूरमा, सं. पुं. (सं. शूरमानिन्>) शूरः, वीरः, योधः, भटः, विक्रमशीलः ।

—पन, सं. पुं., शौर्यं, वीरत्वं,विक्रमः, साहसम् ।

सूरसागर, सं. पुं. (सं.) भक्त-सूरदासरचितः श्रीकृष्णलीलावर्णनात्मकः काव्यविशेषः ।

सूराख़, सं. पुं. (फ़ा.) छिद्रं, विलं, विवरं, रंध्रं, सुषिः (स्त्री.) ।

—करना, क्रि. स., छिद्रयति (ना. धा.), समुत्कृ (तु. प. से.) ।

—दार, वि., सच्छिद्र, सरंध्र ।

सूर्य, सं. पुं. (सं.) सूरः, आदित्यः, भास्करः, दिन-प्रभा-विभा-दिवा,-करः, भास्वत्, विवस्वत्, उष्ण-तिग्म-चंड,-रश्मिः,-करः, अर्कः, मार्तण्डः, मिहिरः, तरणिः, मित्रः, सवितृ, अंशु-मरीचि,-मालिन्, सहस्रांशुः, रविः, दिन-अहः,-पतिः, तपनः, पद्मिनीवल्लभः, दिनमणिः, सप्त,-अश्वः-सप्तिः, तापनः, ख-दिवा,-मणिः, पतंगः,ग्रहराजः, तमोनुदः । भानु।

—कांत, सं. पुं. (सं.) सूर्य-तपन,-मणिः, रविकांतः, सूर्याश्मन्, अग्निगर्भः, अर्क-दीप्त,-उपलः ।

—ग्रहण, सं. पुं. (सं. न.) सूर्योपरागः, सूर्यग्रहः ।

—घड़ी, सं. स्त्री. (सं. सूर्यघटी) शंकुयंत्रम् ।

—तनय, सं. पुं. (सं.) सूर्य,-पुत्रः-सुतः-नंदनः, कर्णः २. शनिः, शनैश्चरः ३. यमः ४. सुग्रीवः ५. अश्विनौ (द्वि.) ।

—तनया, सं. स्त्री. (सं.) सूर्यपुत्री, सूर्यजा, यमुना, भानु,-जा-तनया ।

—मंडल, सं. पुं. (सं. न.) उपसूर्यकं, परिधिः, परिवेशः, मंडलं, सूर्यबिंबम् ।

—मुखी, सं. स्त्री. (सं.) सूर्यलता, आदित्य-भक्ता, वरदा,अर्ककान्ता, भास्करेष्टा, अर्कहिता ।

—मुखी का फूल, सं. पुं., सूर्यकमलं, वरदा-पुष्पम् ।

—रश्मि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) रवि,-किरणः-पादः-करः ।

—लोक, सं. पुं. (सं.) सौरभुवनं, लोक-विशेषः ।

—वंश, सं. पुं. (सं.) रविकुलम् ।

—वंशी, वि. (सं.-शिन्) सूर्यवंश्य, रविकुलज ।

—वार, सं. पुं. (सं.) रवि-आदित्य,-वारः-वासरः ।

—संक्रांति, सं. स्त्री. (सं.) रविसंक्रमणम् ।
प्रातः का—सं. पुं., बाल,-रविः-सूर्यः-अर्कः ।
सूर्यास्त, सं. पुं. (सं.) अस्तः, अस्तमनं, निम्लोचः, भानोरस्ताचलगमनं २. दिनांतः, सायंकालः ।
—होना, क्रि. अ., सूर्यः अस्तं इ-या (अ. प. अ.)-गम् ।
सूर्योदय, सं. पुं. (सं.) भानूद्गमः २. प्रातः-कालः ।
—होना, क्रि. अ., सूर्यः उत्-इ (अ. प. अ.)-उद्गम् ।
सूल, सं. पुं., देखो 'शूल' ।
सूली, सं. स्त्री. (सं. शूलः-लं) शूला, तीक्ष्णाग्र-स्थूणा २. शूलारोपणं, प्राणदंडप्रकारः ३. वध-पाशस्थूणा, दे. 'फाँसी' ४. दंडपाशवधः, कंठं उद्बध्य घातः, उद्बंधनं ५. प्राण-मृत्यु,-दंडः ।
—चढ़ाना या—देना, क्रि. स., शूले आरुह्(प्रे. आरोपयति) २. उद्बध्य व्यापद् (प्रे.) या हन् (अ. प. अ.) ।
—चढ़ाने या—देनेवाला, दंडपाशिकः, वधकः, *शूलारोपकः ।
सूस, सूसमार, सं. पुं. (सं. शिशुमारः) दे. 'सूँस' ।
सूहा, वि. (हिं. सोहना) रक्त, शोण, लोहित ।
सृजन, सं. पुं. (सं. सर्जनं) उत्पादनं, निर्माणं, रचनं २. सृष्टिः-उत्पत्तिः (स्त्री.) ३. मोचनम् ।
—हार, सं. पुं., स्रष्टृ, उत्पादकः, विधातृ ।
सृजना, क्रि. स. (सं. सर्जनं) सृज् (तु. प. अ.), उत्पद् (प्रे.), विधा (जु. प. अ.) ।
सृष्टि, सं. स्त्री. (सं.) संसार-उत्पत्तिः (स्त्री.) -सर्गः-निर्माण-रचना २. जगत् (न.), संसारः, चराचरं वस्तुजातं ३. प्रकृतिः (स्त्री.), दे. 'कुदरत' ।
—कर्ता, सं. पुं. (सं.-र्तृ) स्रष्टृ, वेधस् , विधातृ, विश्वसृज् , ब्रह्मन् (सब पुं.) २. ईश्वरः ।
सेंक, सं. पुं. (हिं. सेंकना) उ(ऊ)ष्मन्, त(ता)-पः, उष्णः-णं-णा, उष्णता २. तापनं, उष्णी-करणं, तापेन अंगारेषु वा भर्जनं ३. प्र-,स्वेदनं, घर्मसेकः, ऊष्मणा तापनं-उष्णीकरणम् ।
सेंकना, क्रि. स. (सं. श्रेषणं) ऊष्मणा अंगारैः वा भ्रस्ज् (तु. उ. अ.) २. तप् (प्रे.), उष्णी कृ ३. (उष्णजलादिभिः) सं-, सिच् (तु. प. अ.)-सेकं कृ, प्र-, स्विद् (प्रे.) ।

आँख—, मु., सौन्दर्यं अवलोक् (भ्वा. आ. से., चु. प. से.) ।
धूप—, मु., आतपं सेव् (भ्वा. आ. से.) ।
सेंटर, सं. पुं. (अं.) केन्द्रं, मध्यबिंदुः, मध्यः-ध्यं २. प्रधान-मुख्य,-स्थानम् ।
सेंट्रल, वि. (अं.) केन्द्रीय, मध्य, मध्यम, मध्यस्थ ।
सेंटिग्रेड, वि. (अं.) शतिक ।
सेंटिमीटर, सं. पुं. (अं.) शतिमानं, शतांश-मानम् ।
सेंत, सं. स्त्री. (सं. संहतिः=किफ़ायत २. राशि>) व्ययाभावः-विनियोगाभावः ।
—मेंत, क्रि. वि. (हिं.+अनु.) मूल्यं विना २. निष्प्रयोजनं, व्यर्थम् ।
—का, मु., मूल्यं विना लब्ध, निर्मूल्य ।
—में, मु., व्यर्थ-मूल्यं,-विना २. व्यर्थम् ।
सेंद्रिय, वि. (सं.) सकरण, साक्ष, इन्द्रियवत्, सजीव । २. पुंस्त्वयुक्त, मैथुन-समर्थ, वीर्यवत् ।
सेंध, सं. स्त्री. [सं. संधिः(पुं.)] संधिला, सुरं-(रुं)गः-गा, खानिकम् ।
—लगाना या सेंधना, संधिलां कृ अथवा खन् (भ्वा. प. से.) ।
—लगाने वाला, सं. पुं., सुरं(रुं)गयुज् , संधि-हारकः, संधिलाकारः ।
सेंधा, सं. पुं. (सं. सैंधवः-वं) शीतशिवं, माणि-, मंथं-बंधं, वशिरं, सिंधु(देश)जं, शिवं, सिद्धं, पथ्यम् ।
सेंधिया, सं. पुं. (हिं. सेंध) दे. 'सेंध लगाने वाला' ।
सेंवई, सं. स्त्री. (सं. सेविका) सूत्रिका ।
—पूरना या—बटना, मु., सेविकाः व्यावृत(प्रे.) ।
सेंहुड़, सं. पुं., दे. 'थूहर' ।
से¹, प्रत्य. (प्रा. सुंतो, पुं. हिं. सेंति) करण-कारकचिह्नं (प्रायः तृतीया से, 'स-' से या -पूर्वं,-पूर्वकं आदि से अनुवाद करते हैं । उ., आदर से=आदरेण, सादरं, आदरपूर्वकं इ.) २. अपादानचिह्नं (प्रायः पंचमी से 'आ-' से या '-प्रभृति' '-आरभ्य' आदि से अनुवाद करते हैं । उ., वृक्ष से गिरा=वृक्षात् अपतत्, जन्म से=आजन्म, आजन्मनः, कल से लेकर=श्वः प्रभृति, श्व आरभ्य इ.) ।
से², वि. (हिं. 'सा' का बहु.) सम, समान, सदृश ।

सेकंड, सं. पुं. (अं.) विकला, विपलं, क्षणः । वि. (अं.) द्वितीय ।
सेक, सं. पुं. (सं.) दे. 'सिंचाई' ।
सेक्रेटरी, सं. पुं.(अं.) मंत्रिन्, लेखनसचिवः ।
सेक्शन, सं. पुं. (अं.) वि-,भागः ।
सेचक, सं. पुं. (सं.) मेघः, वारिदः । वि. प्रोक्षक, सेक्तृ ।
सेचन, सं. पुं. (सं. न.) अव-आ-,सेकः-सेचनं, अभ्युक्षणं, प्रोक्षणम् ।
सेज, सं. स्त्री. (सं. शय्या, दे.) ।
—पाल, सं. पुं. (सं. शय्यापालः) शयनागाररक्षकः, शय्या,-अध्यक्षः-पालः ।
सेठ, सं. पुं. (सं. श्रेष्ठिन्) लक्षपतिः, कोटीश्वरः, धनाढ्यः । २. वणिग्वरः, सार्थवाहः ३. धनिमानिजनोपाधिः ४. क्षत्रियोपजातिभेदः [सेठानी (स्त्री.) धनाढ्या, धनाढ्यपत्नी] ।
सेतु, सं. पुं. (सं.) वारणः, संवरः, दे. 'पुल' ।
—बंध, सं. पुं. (सं.) वारण संवर,-बंधनं-निर्माणं. २. श्रीरामनिर्मितः सेतुविशेषः ।
सेना, क्रि. स. (सं. सेवनं) अंडात् उत्पद्(प्रे.), अंडेषु उपविश् (तु. प. अ.) २. सेव् (भ्वा. आ. से.) ३. उपास् (अ. आ. से.) ।
सेना, सं. स्त्री. (सं.) सैन्यं, बलं, वाहिनी, चमूः (स्त्री.), अनीकं-किनी, पृतना, ध्वजिनी, वरूथिनी, चक्रं, गुल्मिनी ।
—पति, सं. पुं. (सं.) सेनानीः, वाहिनीपतिः, सेना,-वाहः-नायकः-पालः-अध्यक्षः-अधीशः-नाथः ।
—व्यूह, सं. पुं. (सं.) सैन्यविन्यासः ।
सेनानी, सं. पुं. (सं.-नीः) दे. 'सेनापति' ।
सेनेट, सं. स्त्री. (अं.) प्रधानव्यवस्थापिका सभा, २. विश्वविद्यालयस्य प्रबन्धकर्त्री सभा ३. परिषद् (स्त्री.), सभा ।
सेफ़, सं. पुं. (अं.) लोहपेटिका, रक्षामंजूषा ।
सेब, सं. पुं. (फ़ा.) आता-सेवि-सिवितिका-सिंचितिका,,फलं, सेवं, मुष्टिप्रमाणबदरम् ।
सेम, सं. स्त्री. (सं. शिंबी) शिंबा, शिंबिका । वि. (स्त्री.) सिंबा, सिंबिका, सिंबी-बिः (स्त्री.) ।
सेमल, सं. पुं. [सं. शाल्मलिः (पुं. स्त्री.)] शाल्मलः-लिनी, तूलवृक्षः, दीर्घद्रुमः, रम्यपुष्पः दुरारोहा ।

सेर[१], सं. पुं. (सं.) सेटकम् ।
सेर[२], वि. (फ़ा.) तृप्त, संतुष्ट ।
सेराब, वि.(फ़ा.) जलाप्लुत, अतिक्लिन्न २.सिक्त, प्लावित ।
सेरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) तृप्तिः (स्त्री.), संतोषः ।
सेरु, सं. पुं. (हिं. सिर)खट्वायाः शीर्षपादपट्टौ ।
सेल, सं. पुं. (अं.) जीवकोषः ।
सेलखड़ी, सं. स्त्री., दे. 'खड़िया' ।
सेल्लोज़, सं. पुं. (अं.) काष्ठौजम् ।
सेवक, सं. पुं. (सं.) परि-अनु,-चरः, किंकरः, भृत्यः, भृतकः, कर्मक(का)रः अनुजीविन्, दासः, नियोज्यः, चेटः, चेटकः, डिंगरः, परि,-कर्मिन्-चारकः-जनः-स्कंदः, प्रेष्यः, भुजिष्यः, लाडीकः, शुश्रूषकः २. भक्तः, उपासकः, आराधकः ३. शिष्यः, अन्तेवासिन् ।
सेवकाई, सं. स्त्री. (सं. सेवकः>) उप,-चारः-चर्या-स्थानं, परिचर्या, शुश्रूषा, सेवकत्वं,कैंकर्यं, सेवा, श्ववृत्तिः (स्त्री.) २. आराधनं, पूजा ।
सेवती, सं. स्त्री. (सं. शेवन्ती) शतपत्री, कर्णिका, चारुकेश(स)रा, महाकुमारी,गंधाढ्या, अतिमंजुला, तरुणी, भृङ्गेष्टा, शिववल्लभा, रामतरुणी ।
सेवन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सेवा' २. उपासनं, आराधनं, पूजनं ३. उपयोगः, प्रयोजनं, उपभोगः ४. सततवासः ।
—करना, क्रि. स., उपभुज् (रु. आ. अ.),सेव् (भ्वा. आ. से.) ।
सेवनीय, वि. (सं.) सेव्य, सेवितव्य, सेवा-परिचर्या-उपचार,-अर्ह-योग्य २. पूज्य,आराध्य ३. उपयोगार्ह, प्रयोजनीय ।
सेवा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सेवकाई' (१, २) ३. आश्रयः, शरणम् ।
—करना, क्रि. स., सेव् (भ्वा. आ. से.), अनु-उप-परि,-चर् (भ्वा. प. से.), उपास् (अ. आ. से.), उपस्था (भ्वा. आ. अ.), श्रु (सन्नन्त. शुश्रूषते) ।
—टहल, सं. स्त्री. (सं.+हिं.) परिचर्या ।
—शुश्रूषा, सं. स्त्री. (सं.) उप,-चारः-चर्या ।
सेविका, सं. स्त्री. (सं.) चेटी, दासी, भुजिष्या, प्रेष्या, कर्मकरी, नियोज्या, परिचारिका ।
सेवित, वि. (सं.) शुश्रूषित, उप-परि,-चरित

२. उपासित, पूजित, आराधित ३. व्यवहृत, प्रयुक्त ४. आश्रित ५. उपभुक्त, कृतोपभोग ।
सेवी, वि. (सं.-विन्) सेवक, सेवापरायण २. पूजक, आराधक ३. -भोजी। -भुज्, -भक्षिन्, -पायिन ।
सेशन, सं. पुं. (अं.) बहुदिवससमाप्यं अधिवेशनं-संमेलनं २. सत्रं (स्कूल आदि का) ।
—कोर्ट, सं. स्त्री. (अं.) दण्डसत्राधिकरणम् ।
—जज, सं. पुं. (अं.) दण्डसत्राधीशः ।
सेहत, सं. स्त्री. (अ.) सुखं, सौख्यं २. रोगमुक्तिः (स्त्री.), दे. 'स्वास्थ्य' ।
—खाना, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) *शौचागारम् ।
सेहरा, सं. पुं. (सं. शेखरः) वरमुखावलंबिमालावली-स्रग्जालं २. वर-परिणेतृ,-मुकुटं ३. वरगुणवर्णनात्मकं गीतम् ।
—बँधाई, सं. स्त्री., शेखरबंधनशुल्कम् ।
सेही, सं. स्त्री., दे. 'साही' ।
सैंडफ़्लाई फ़ीवर, सं. पुं. (अं.) वालुकामक्षिकाज्वरः ।
सैंतालीस, वि. (सं. सप्तचत्वारिंशत्) सं. पुं., उक्ता संख्या, तद्बोधकांकौ(४७) च ।
सैंतालीसवाँ, वि. (हिं. सैंतालीस) सप्तचत्वारिंशत्तमः-मी-मं, सप्तचत्वारिंशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.) ।
सैंतीस, वि. (सं. सप्तत्रिंशत्) सं. पुं., उक्ता संख्या, तद्बोधकांकौ(३७) च ।
सैंतीसवाँ, वि. (हिं. सैंतीस) सप्तत्रिंशत्तमः-मी-मं, सप्तत्रिंशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.) ।
सैंधव, सं. पुं. (सं.) (सिंधोरदूरभवः) घोटकः, सिंधुदेशीयोऽश्वः २. दे. 'सेंधा' ३. जयद्रथः ४. सिंधुदेशवासिन् । वि. (सं.) सिंधुदेशीय २. समुद्रय, समुद्रीय, सामुद्रिक ।
सैकड़ा, सं. पुं. (सं. शतकांडः-डं) शतं, शतकं २. शतवस्तु,-समुदायः-समूहः-समुच्चयः । क्रि. वि., प्रतिशतम् ।
सैकड़ों, वि., परःशत ।
सैकलगर, सं. पुं. (अ. सैकल+गर) शस्त्र,-मार्जः-मार्जकः-तेजकः ।
सैद्धांतिक, सं. पुं. (सं.) सिद्धांत,-विद्-ज्ञः, तत्त्वज्ञः, राद्धान्तिकः २. तांत्रिकः । वि. (सं.) सिद्धान्त-राद्धान्त-तत्त्व,-संबंधिन ।
सैन, सं. स्त्री. (सं. संज्ञपनं>) संकेतः, संज्ञा, इङ्गितं २. लक्षणं, चिह्नम् ।
—करना, क्रि स., (शीर्षहस्तादिभिः) संज्ञां संकेतं वा कृ-दा ।
—मारना, क्रि. स., सहावं अवलोक् (चु.) २. निमेषेण संकेतं कृ ।
सैना, सं. स्त्री., दे. 'सेना' ।
सैनापत्य, सं. पुं. (सं. न.) सेनापति-सेनाध्यक्ष,-कार्यं-पदम्, सेनापतित्वम् । वि. (सं.) सेनापति,-सम्बन्धिन्-विषयक ।
सैनिक, सं. पुं. (सं.) सेनाचरः, योधः, भटः, सैन्यः, आयुधिकः, योद्धृ २. रक्षापुरुषः, दे. 'संतरी' । वि. (सं.) सांग्रामिक, सामरिक, आयुधिक, क्षात्र[-त्री (स्त्री.)] ।
—वाद, सं. पुं. (सं.) समरसमर्थकसिद्धान्तः, युद्धानुमोदकवादः ।
सैनिटरी, वि. (अं.) स्वास्थ्य-आरोग्य,-कर-रक्षक-विषयक ।
सैनिटेशन, सं. पुं. (अं.) आरोग्य-स्वास्थ्य,-रक्षा-रक्षणम् ।
सैन्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सेना' ।
सैरंध्री, सं. स्त्री. (सं.) स्वतंत्रा शिल्पजीविनी २. अंतःपुर,-परिचारिका-दासी ३. द्रौपदी ।
सैर, सं. स्त्री. (फ़ा.) सुख,-पर्यटनं, परि-, भ्रमणं, विहारः, विहरणं, विचरणम् ।
—करना, क्रि. अ., सुखं पर्यट् विचर् (भ्वा. प. से.), विहृ (भ्वा. प. अ.), भ्रम् (भ्वा. प. से.) ।
—गाह, सं. स्त्री. (फ़ा.) भ्रमण-पर्यटन,-स्थानं-स्थली ।
—सपाटा, सं. पुं., दे. 'सैर' ।
सैलानी, वि. (फ़ा. सैर) पर्यटन-भ्रमण-विहरण,-शील, पर्यटक, यथेष्टविहारिन् २. आनंदिन्, विनोदिन्, प्रमोदिन्, उल्लासिन् ।
सैलाब, सं. पुं. (फ़ा.) जल,-प्लावनं-बृंहणं-विप्लवः-प्रलयः-आप्लावः २. महा,-प्रवाहः-ओघः ।
सों, प्रत्य., दे. 'से' ।
सोंचर नमक, सं. पुं. (सं. सौवर्चलं+फ़ा.) सौवर्चलं, रुचकं, रुच्यं, अक्षं, कृष्णलवणं, तिलकं, हृद्यगंधकम् ।
सोंटा, सं. पुं. (सं. शुंडः>) लकुटः-डः, स्थूल-, यष्टिः (स्त्री.)-दण्डः २. मुसलः-लम् ।
—बरदार, सं. पुं. (हिं.+फ़ा.) दंड,-धरः-भृत् ।

सोंठ, सं. स्त्री. [सं. शुंठी-ठिः (स्त्री.)] महा-विश्व,-औषधं, विश्वभेषजं, कटुग्रन्थिः, कफारिः।
सोंधा, वि. (सं. सुगन्ध) सुगन्धित, दे.।
सोंपना, क्रि. स., दे. 'सौंपना'।
सोंह, सं. स्त्री., दे. 'सौगंद'।
सो, सर्व. (सं. सः) देखो 'वह'। अव्य., अतः, अत-एव, अनेन कारणेन, अस्मात् कारणात्।
सोऽहं, वाक्यांश (सं. सः + अहं) अहं ब्रह्मास्मि (वे.)।
सोआ, सं. पुं. (सं. शताह्वा) सित-अति,-च्छत्रा, शत,-अक्षी-पुष्पिका, मधुरा, मधुरिका, माधवी, मिशी-शिः [(स्त्री.) शाकभेदः]।
सोई, सर्व., दे. 'वही'।
सोखना, क्रि. स., दे. 'सुखाना'।
सोख़्ता, सं. पुं., दे. 'स्याहीचूस'।
सोगंद, सं. स्त्री., दे. 'सौगंद'।
सोग, सं. पुं. (सं. शोकः) (मृत्युजनितः) परितापः, शुचा, दुःखम्।
—मनाना, मु., शोकचिह्नानि धृ (चु.), शुच् (भ्वा. प. से.)।
सोच, सं. पुं. (सं. शोचनं) शोकः, शुचा-च् (स्त्री.), विषादः २. विचारः, विमर्शः, विचारणं-णा ३. चिन्ता, रणरणकः, उत्कलिका, व्यग्रता ४. पश्चात्-अनु,-तापः।
—विचार, सं. पुं. (हिं. + सं.) विचारः-रणा, विमर्शः, आलोचना, समीक्षा, वितर्कः, विवेचनं-ना।
सोचना, क्रि. अ. (सं. शोचनं) विचर् (प्रे.), विमृश् (तु. प. अ.), आ-पर्या-समा-लोच् (चु.) २. चिन्तां कृ, चिन्त् (चु.) ३. शुच् (भ्वा. प. से.), दे. 'विचारना'।
सोच्छ्वास, वि. (सं.) प्रसन्न, प्रहृष्ट २. शिथिल, श्लथ ३. उच्छ्वासयुक्त ४. सत्वरप्राण। अव्य. (सं. न.) सदीर्घश्वासं, निःश्वासपूर्वकं, सनिःश्वासम्।
सोज, सं. स्त्री. (हिं. सूजना) शोथः, शोफः, दे. 'सूजन'।
सोज़िश, सं. स्त्री. (फ़ा.) पाकः, प्रदाहः २. शोथः।
सोटा, सं. पुं. दे. 'सोंटा'।
सोडा, सं. पुं. (अं.) विक्षारः।
—वाटर, सं. पुं. (अं.) विक्षारजलम्।
खाने का—, *भक्ष्यविक्षारः।
धोने का—, *धावनविक्षारः।
सोडियम, सं. पुं. (अं.) क्षारातु (न.), क्षारजम्।
सोत-ता[1], सं. पुं. (सं.)स्रोतस् (न.) उत्सः, वारिप्रवाहः, प्रस्रवणं, निर्-,झरः २. नदी-शाखा, कुल्या।
सोता[2], वि. (सं.) सुप्त, शयान, निद्रित।
सोते-जागते, मु., अहर्निशं, दिवानिशं, प्रतिक्षणं, सदा।
सोदर, सं. पुं. (सं.) सहोदरः, सोदर्यः, भ्रातृ।
सोदरा, सं. स्त्री. (सं.) सहोदरा, सोदर्या, स्वसृ (स्त्री.)।
सोन, सं. पुं. (सं. शोणः) हिरण्यवाहः-हुः, शोणभद्रः, शोणा (नदविशेषः)।
सोनजूही, सं. स्त्री. (सं. स्वर्णयूथी) हरिणी, पीतिका, हेमपुष्पिका, हैमा, स्वर्णयूथिका।
सोना[1], सं. पुं. (सं. सुवर्ण) स्वर्णं, कनकं, हिरण्यं, हेमन् (न.), हाटकं, तपनीयं, शातकुंभं, चामीकरं, जातरूपं, महारजतं, कांचनं, रुक्मं, कार्तस्वरं, जांबूनदं, अष्टापदं, भद्रं, कर्बु(र्बू)रं, द्रविणं, पिंजरं, कलधौतं, लोहवरं, कल्याणं, मनोहरं, भास्करं, दीप्तं, मंगल्यं, निष्कं, अग्निशिखं, २. महार्घ-बहुमूल्य,-वस्तु (न.)-द्रव्यम्।
—(ने)का तार, सं. पुं., कनकसूत्रम्।
—(ने)का पानी, सं. पुं., सुवर्णलेपः।
—(ने)का वर्क़, सं. पुं., सुवर्णपत्रम्।
गहनों का—, सं. पुं., शृंगिः, शृंगी, शृङ्गीकनकम्।
सोना[2], क्रि. अ. (सं. शयनं) सं-,शी (अ. आ. से.), निद्रा (अ. प. अ.), संविश् (तु. प. अ.), स्वप् (अ. प. अ.) २. (अंगादि) निश्चेष्ट-निस्तब्ध-निश्चल (वि.) भू ३. दे. 'मरना'। सं. पुं., शयनं,-निद्रा, गुडाका, तंद्रा, तामसी, प्रमीला, संवेशः, सुप्तं-प्तिः (स्त्री.), स्वप्नः, स्वापः, शी।
सोनामाखी, सं. स्त्री. (सं. स्वर्णमाक्षिकं) माक्षिक,-मधु-धातुः, तापिंजं (उपधातुभेदः)।
सोने का कमरा, सं. पुं., स्वप्न-गृहं-निकेतनं, शयन,-गृहं-मंदिरं-आगारम्।
सोने योग्य, वि., शयितव्य, शेय, शयनीय।
सोनेवाला, सं. पुं., सुषुप्सुः, शिशयिषुः, निद्रालुः, शयालुः, तंद्रालुः।

सोया हुआ, वि., निद्रित, निद्राण, शयित, सुप्त, शयान, निद्रामग्न ।
सोप, सं. पुं. (अं.) दे. 'साबुन' ।
सोपान, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सीढ़ी' ।
सोफ़ा, सं. पुं. (अं.) शय्या, पर्यंकः, शयनीयम्, *उपवेश्यः, *आस्यः ।
सोम, सं. पुं. (सं.) सुधांशुः, चंद्रः, दे. 'चाँद' २. सोमवारः ३. स्वर्गः ४. कर्पूरः ५. सोमलता ।
—कांत, सं. पुं. (सं.) चंद्रकांतः ।
—ग्रह, सं. पुं. (सं.) चंद्रग्रहणम् ।
—देव, सं. पुं. (सं.) सोमदेवता २. चंद्रदेवता ३. कथासरित्सागरस्य रचयितृ ।
—नाथ, सं. पुं. (सं.) ज्योतिर्लिङ्गविशेषः २. प्राचीनगरविशेषः ।
—पान, सं. पुं. (सं. न.) सोमपीतं-तिः (स्त्री.) ।
—पायी, वि. (सं.-यिन्) सोम,-प-पा-पीतिन् ।
—पुत्र, सं. पुं. (सं.) सोमजः, बुधग्रहः ।
—यज्ञ, सं. पुं. (सं.) सोम,-यागः-मखः-क्रतुः ।
—रोग, सं. पुं. (सं.) स्त्रीरोगभेदः २. बहुमूत्रता, मूत्रातिसारः ।
—लता, सं. स्त्री. (सं.) सोमवल्ली, सोमा, क्षीरी, द्विजप्रिया, गुल्म-यज्ञ,-वल्ली, धनुर्लता, सोमक्षीरा, यज्ञश्रेष्ठा २. गुडूची ३. ब्राह्मी ।
—वंश, सं. पुं. (सं.) चंद्रवंशः २. युधिष्ठिरः ।
—वती, सं. स्त्री. (सं.) सोमवती अमावस्या ।
—वल्ली, सं. स्त्री. (सं.) सोमलता २. गुडूची ३. सोमराजी ४. पातालगरुड़ी ५. ब्राह्मी ६. सुदर्शना ।
—वार, सं. पुं. (सं.) सोम-चंद्र,-वारः-वासरः-दिनम् ।
सोरठ, सं. पुं. (सं. सौराष्ट्रः) प्रान्तविशेषः (गुजरात तथा दक्षिणी काठियावाड़) २. सौराष्ट्र-राजधानी (सूरत नगर) ३. रागभेदः ।
सोरठा, सं. पुं. (हिं. सोरठ) हिन्दीकवितायाः छंदोभेदः ।
सोल[1], वि. (?) शीत, शीतल, शिशिर २. तिक्ताम्लकषाय । सं. पुं. (?) शीतं, शैत्यं ३. तिक्ताम्लकषायः स्वादः ।
सोल[2], सं. स्त्री. (अं.) आत्मन्, जीवः, चेतनः ।
सोल[3], सं. पुं. (अं.) पाद-,तलम् २. पादुकातलम् ।

सोलह, वि. (सं. षोडशन्) षडधिकदश । सं. पुं., उक्ता संख्या, तद्बोधकांकौ (१६) च ।
सोलहो आने, मु., साकल्येन, अशेषतः, पूर्णतया, सामस्त्येन ।
सोलहवाँ, वि. (हिं. सोलह) षोडशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.) ।
सोशल, वि. (अं.) सामाजिक, समाजविषयक ।
सोशलिज़्म, सं. पुं. (अं.) समाजवादः ।
सोशलिस्ट, सं. पुं. (अं.) समाजवादिन् ।
सोसनी, (वि. (फ़ा. सौसन) रक्तनील ।
सोसाइ(य)टी, सं. स्त्री. (अं.) समाजः, सभा, गोष्ठी २. संगतिः (स्त्री), संसर्गः ।
सोहं-सोहंगम, वेदान्त-वाक्य, दे. 'सोऽहं' ।
सोहन, वि. (सं.) शोभन, मनोहर, दे. 'सुंदर' । सं. पुं., नायकः, सुन्दरपुरुषः ।
—चिड़िया, सं. स्त्री., *शोभनचटकः (-का स्त्री.) ।
—पपड़ी, सं. स्त्री., *शोभनपर्पटी ।
—हलवा, सं. पुं., *शोभनसंयावः ।
सोहना[1], क्रि. अ. (सं. शोभनं) शुभ्-विराज् (भ्वा. आ. से.), ललित-सुंदर- शोभन (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से), विभा (अ. प. अ.) । वि., शोभन, रम्य, सुंदर, मनोज्ञ ।
सोहना[2], क्रि. स. (सं. शोधनं) कुतृणानि उन्मूल् (चु.), क्षेत्रं कुतृणरहितं कृ ।
सोहबत, सं. स्त्री. (अ.) संगतिः (स्त्री.), संसर्गः २. मैथुनम् ।
सोह(हि)ला, सं. पुं. (हिं. सोहना) *पुत्र-जन्मोत्सवगीतं २. मंगल्य-मांगलिक-शुभ,-गीतं ३. देवतास्तोत्रम् ।
सोहिनी, वि. स्त्री. (सं. शोभिनी) सुंदरी, मनोरमा, रम्या, सुरूपा । सं. स्त्री., रागिणी-भेदः ।
सौंदर्य, सं. पुं. (सं. न.) रमणीयता, दे. 'सुंदरता' ।
सौंपना, क्रि. स. (सं. समर्पणं) न्यस् (दि. प. से.), निक्षिप् (तु. प. अ.), सम्-ऋ (प्रे. समर्पयति), प्रतिपद्-निविश् (प्रे.) । सं. पुं., न्यासः, निक्षेपः, समर्पणं, प्रतिपादनम् ।
सौंपने योग्य, वि., निक्षेप्तव्य, समर्पणीय ।
सौंपने वाला, सं. पुं., निक्षेप्तृ, समर्पयितृ ।
सौंपा हुआ, वि., निक्षिप्त, न्यस्त, समर्पित ।
सौंफ, सं. स्त्री. (सं. शतपुष्पा) मधुरिका,

माधवी, माधुरी, मधुरा, सुगंधा, शतपत्रिका, अति-सित,-छत्रा ।
—का अर्क, सं. पुं., शतपुष्पासवः ।
सौंह, सं. स्त्री., दे. 'सौगंद' ।
सौ, वि. (सं. शतं, नित्य न.) दशगुणितदश-संख्या । सं. पुं., उक्ता संख्या, तद्बोधकांकाः (१००) च ।
—बात की एक बात, मु., सारः, तात्पर्यं, सारांशः ।
—बिस्वे, मु., निश्चयेन, अवश्यं, निःसंशयम् ।
सौवाँ, वि., शततमः-मी-मम् ।
सौकन, सं. स्त्री., दे. 'सौत' ।
सौकर्य, सं. पुं. (सं. न.) सुकरता, सुसाध्यता २. दे. 'सुभीता' ।
सौकुमार्य, सं. पुं. (सं. न.) कोमलता, दे. 'सुकुमारता' २. यौवनं ३. काव्यगुणभेदः ।
सौखिक, वि. (सं.) सुखेच्छुक, सुखैषिन्, सुखकामिन् २. सुख-आनन्द-मोह,-दायक-प्रद ३. सुख-आनन्द,-विषयक-सम्बन्धक ।
सौख्य, सं. पुं. (सं. न.) आनंदः, सुखं, दे. ।
सौगंद, सं. स्त्री. (फ़ा.) शपथः, समयः, प्रतिज्ञा, वचनं, वाचा, संकल्पः ।
—खाना, क्रि. अ., शप् (भ्वा. दि. उ. अ.), सशपथं वद् (भ्वा. प. से.) ।
—देना, क्रि. स., शप (प्रे.), सशपथं वच् (प्रे.) ।
सौगंध, सं. पुं. (सं. न.) सुगंधः, दे. २. गांधिकः, दे. 'गंधी' ३. कत्तृणम् । सं. स्त्री., दे. 'सौगंद' । वि. (सं.) सुगंधित दे. ।
सौगंधिक, वि. (सं.) सुगंधि, सुगंधित, सुवास, सुरभि । सं. पुं. (सं.) गांधिकः, गंध,-विक्रयिन्-उपजीविन्-वणिज् । २. गंध(धि)कः, गंधाश्मन् । (सं. न.) नील,-कमलं-उत्पलं, कुवलयम् । २. पुण्डरीकं, सिताम्भोजं, श्वेत-कमलम् । ३. सुगन्धिघासभेदः ४. पद्मरागः ।
सौग़ात, सं. स्त्री. (तु.) उपहारः, उपायनं, प्राभृतं-तकं २. दुर्लभवस्तु (न.) ।
सौजन्य, सं. पुं. (सं. न.) सज्जनता, सुजनता, दे. ।
सौत, सौत(ति)न, सं. स्त्री. (सं. सपत्नी) समानपतिका ।
सौतिया डाह, सं. पुं., सापत्न्येर्ष्या २. साप-त्न्यं, ईर्ष्या ।
सौतेला, वि. (हिं. सौत) सापत्न [—नी (स्त्री.)] सपत्नी,-ज-संबंधिन ।
—पिता, सं. पुं., वि. मातृपतिः ।
—पुत्र, सं. पुं., सपत्नीपुत्रः, सापत्न्यः ।
—बच्चा, सं, पुं., पर,-जातं-अपत्यम् ।
—भाई, सं. पुं., वैमात्रः, वैमात्रेयः, विमातृजः ।
सौतेली पुत्री, सं. स्त्री., सपत्नी,-पुत्री-दुहितृ (स्त्री.) ।
सौतेली बहन, सं. स्त्री., वैमात्री, वैमात्रेयी, विमातृजा ।
सौतेली माता, सं. स्त्री., विमातृ (स्त्री.) ।
सौदा[1], सं. पुं. (अ.) भांडं, भांडानि (बहु.), पण्यं, क्रयविक्रयवस्तु (न.) २. आदान-प्रदानं, दानादानं, व्यवहारः ३. क्रयविक्रयौ (द्वि.), नियमः, वाणिज्यं, *व्यापारः, वणिक्कर्मन् (न.) ४. क्रय-विक्रय,-प्रतिज्ञा ।
—करना, क्रि. अ., क्रयविक्रयं कृ, वाणिज्यं कृ, पण् (भ्वा. आ. अ.) ।
—सुलुफ़, सं. पुं., दे. 'सौदा' (१) ।
—सूत, सं. पुं., व्यवहारः ।
सौदा[2], सं. पुं. (अ.) उन्मादः, दे. 'पागलपन' ।
सौदाई, सं. पुं. (अ. सौदा) उन्मत्तः, दे. 'पागल' ।
सौदागर, सं. पुं. (फ़ा.) नैगमः, क्रयविक्रयिकः, पण्याजीवः, वणिज्, वाणिज्यकारिन्, सार्थ-वाहः, सार्थिकः ।
—बच्चा, सं. पुं. (फ़ा.+हिं.) वणिज् २. वणिक्पुत्रः ।
सौदागरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'सौदा[1]' (३) ।
सौदाम(मि)नी, सं. स्त्री. (सं.) सौदाम्नी, चपला, चंचला, तडित्-विद्युत (स्त्री.), दे. 'बिजली' ।
सौध, सं. पुं. (सं. न.) हर्म्यं, प्रासादः, भवनं, अट्टालिका ।
सौप्तिक, सं. पुं. (सं. न.) निशायुद्धं, रात्रिरणं, रात्रि-निशा,-मारणं २. महाभारतीयपर्वविशेषः ।
सौभागिनी, सं. स्त्री., दे. 'सुहागिन' ।
सौभाग्य, सं. पुं. (सं. न.) सु,-भाग्यं-भागधेयं-दैवं-दिष्टं-दिष्टिः(स्त्री.)-नियतिः (स्त्री.) २. सुखं, आनंदः ३. कल्याणं, कुशलं ४. दे. 'सुहाग' (१) ५. ऐश्वर्यं, विभवः ६. सौन्दर्यं ७. शुभेच्छा ८. साकल्यं ९. सिंदूरम् ।

—शुंठी, सं. स्त्री. (सं.) सूतिकारोगनाशकः पाकभेदः (आयु.)।

सौभाग्यवती, वि. स्त्री. (सं.) सधवा, दे. 'सुहागिन' २. भाग्यशालिनी।

सौभाग्यवान्, वि. पुं. (सं.-वत्) महाभाग, सुभाग्य, सुभग, पुण्यवत्, धन्य २. सुखी संपन्नश्च।

सौमित्रि, सं. पुं. (सं.) सौमित्रः, लक्ष्मणः।

सौम्य, वि. (सं.) सोमसंबंधिन् २. सौमिक, चान्द्र ३. शीतस्निग्ध ४. नम्र, सुशील, शांत ५. शुभ, मंगल्य ६.प्रसन्न, प्रहृष्ट ७.प्रियदर्शन, सुन्दर ८. उज्ज्वल, भासुर।

—दर्शन, वि. (सं.) प्रियदर्शन, सुभगाकार।

—वार, सं. पुं. (सं.) बुधवासरः।

सौम्यता, सं. स्त्री. (सं.) शीतलता, शीतस्निग्धता २. सुशीलता, साधुत्वं ३. सौन्दर्यं ४. उदारता, परोपकारिता।

सौर[1], वि. (सं.) सौर्य, सूर्य-विषयक-संबंधिन् २. भानुज ३. सूर्यानुसारिन्।

—मास, सं. पुं. (सं.) सूर्यैकराशिभोगावच्छिन्नकालः।

—संवत्सर, सं. पुं. (सं.) सूर्यस्य द्वादशराशिभोगावच्छिन्नकालः।

सौर[2], सं. स्त्री. (देश० सौड़) दे. 'चादर'।

सौरथ, सं. पुं. (सं.) वीरः, भटः, योधः, योद्धृ।

सौरभ, सं. पुं. (सं. न.) सुगंधः, दे. २. कुंकुमं, दे. 'केसर' ३. आम्रम्।

—वाह, सं. पुं. (सं.) वायुः, पवनः।

सौरभित, वि. (सं.) सुरभि, सुगंधित दे.।

सौराष्ट्र, सं. पुं. (सं.) प्रान्तविशेषः (गुजरात-काठियावाड़)।

सौरी, सं. स्त्री. (सं. सूतिकागारं) दे. 'सूतिका-गृह'।

सौष्ठव, सं. पुं. (सं. न.) सौन्दर्यं, सुषमा, लावण्यं २. लाघवं, क्षिप्रता ३. गुण,-अतिशयः-उत्कर्षः, वैशिष्ट्यं ४. उपयुक्तता, उपयोगिता।

सौहँ, सं. स्त्री. (सं. शपथः) दे. 'सौगंद'।

सौहांजना, सं. पुं. (सं. शोभाञ्जनः) तीक्ष्णगंधः, सु-,तीक्ष्णः, रुचिरांजनः।

सौहार्द, सं. पुं. (सं. न.) सख्यं, साप्तपदीनं, सौहार्दं, अजर्यं। दे. 'मित्रता'।

स्कंद, सं. पुं. (सं.) कार्तिकेयः, सेनानीः, शिखिवाहनः, षाण्मातुरः, कुमारः, शक्तिधरः, स्वामिन्, द्वादशलोचनः।

—पुराण, सं. पुं. (सं. न.) पुराणग्रंथविशेषः।

स्कंध, सं. पुं. (सं.) अंसः, भुज-शिरस् (न.)-मूलं, दोःशिखरं, कत्सवरं २. प्रकांडः-डं, दंडः, स्कंधस् (न.), प्रकांडकः, दे. 'तना' ३. शाखा ४. समूहः ५. सैन्यव्यूहः ६. ग्रन्थविभागः, खंडं-डं, पर्वन् (न.)।

स्कंधावार, सं. पुं. (सं.) शिवि(बि) रं, कटकः, २, सेना,-आवासः-स्थानं ३. राजधानी ४. सेना ५. यात्रि-वणिङ्,-निवेशः।

स्कर्वी, सं. स्त्री. (अं.) शीतादः।

स्कारलेटिना, सं. पुं. (अं.) आरक्तज्वरः, उदर्दः, लोहितज्वरः।

स्कालर, सं. पुं. (अं.) छात्रः, विद्यार्थिन् २. सुविद्वस्, भट्टः, प्रकांडपंडितः।

—शिप, सं. पुं. (अं.) छात्रवृत्तिः (स्त्री.) २. पांडित्यं, विद्वत्ता।

स्कीम, सं. स्त्री. (अं.) योजना, आयोजनं, व्यवस्थितविचारः, प्रयोगः, युक्तिः (स्त्री.)।

स्कूल, सं. पुं. (अं.) विद्यालयः, पाठशाला।

—मास्टर, सं. पुं. (अं.) शिक्षकः, अध्यापकः।

स्खलन, सं. पुं. (सं. न.) पतनं, भ्रंशः, स्रंसः, स्रंसनं २. सन्मार्गात् च्युतिः (स्त्री.)-च्यवनं-विचलनं-भ्रंशः, उन्मार्गगमनम्।

स्खलित, वि. (सं.) पतित, च्युत, भ्रष्ट, २. स्रस्त, मृदु सृप्त ३. विचलित ४. भ्रांत ५. उन्मार्गगत।

स्टांप, सं. पुं. (अं. स्टैंप) (आधिकरणिकं) मुद्राङ्कितपत्रं २. पत्रशुल्कमुद्रा, दे. 'डाक का टिकट' ३. मुद्रा ४. मुद्रांकः।

स्टार्च, सं. पुं. (अं.) श्वेतसारः।

स्टीम, सं. स्त्री. (अं.) बाष्पः।

—इंजन, सं. पुं. (अं.) वाष्पयंत्रम्।

स्टीमर, सं. पुं. (अं.) वाष्पपोतः।

स्टूल, सं. पुं. (अं.) *उच्चपीठम्।

स्टेज, सं. पुं. (अं.) रंग,-मंचः-भूमिः (स्त्री.)-पीठं २. मंचः।

—मैनेजर, सं. पुं. (अं.) रंगमंचप्रबंधकः, सूत्रधारः।

स्टेथिस्कोप, सं. स्त्री. (अं.) *उरःपरीक्षणी।

स्टेशन, सं. पुं. (अं.) (वाष्पशकट्याः) स्थानम्।

स्टेशनरी, सं. स्त्री. (अं.) लेखनसामग्री ।
स्टैंड, सं. पुं. (अं.) आधारः, स्थापकम् ।
स्तंभ, सं. पुं. (सं.) स्थूणा, स्थाणुः, यूपः, मेठिः-थिः २. तरुस्कंधः, प्रकांडः-डं ३. सात्त्विकभावभेदः ४. प्रतिबंधः २. मूर्च्छा, जाड्यम् ।
स्तंभक, वि. (सं.) स्तंभकर, रोधक २. जाड्य,-कर-जनक ३. वीर्यरोधक ४. मलावष्टंभक ।
स्तंभन, सं. पुं. (सं. न.) अव-,रोधः-रोधनं, निवारणं २. शुक्रपातविलंबः ३. स्तंभकं (औषधं) ४. जडी-निश्चेष्टी,-करणं ५. (सं. पुं.) मदनबाणविशेषः ।
स्तंभित, वि. (सं.) अव-,रुद्ध, निवारित २. जडी,-भूत-कृत, निस्स्तब्ध ३. स्थित, विरत ।
स्तनंधय, सं. पुं. स्त्री. (सं.) उत्तानशयः-या, डिंभः-भा, स्तनपः-पा, स्तनंधयः-या-यी, स्तन,-पायकः (पायिका)-पायिन् (–पायिनी) ।
स्तन, सं. पुं. (सं.) कु(कू)चः, उरो-उरसि,-जः, वक्षो,-जः-रुहः ।
—चूचुक, सं. पुं. (सं. न.) स्तन,-मुखं-अग्रं-शिखा-वृंतं, मेचकम् ।
—पान, सं. पुं. (सं.) स्तन्य-धीतिः (स्त्री.) ।
—पायी, सं. पुं., दे. 'स्तनंधय' ।
स्तन्य, सं. पुं. (सं. न.) क्षीरं, दुग्धम् ।
स्तब्ध, वि. (सं.) निश्चली-जडी,-भूत, निश्चेष्ट, सुप्त, निस्स्यंद २. दृढ निरुद्ध ३. दृढ़ स्थिर ४. मंद, अलस ५. दुराग्रहिन् ६. दृप्त ।
—दृष्टि, वि. (सं.) स्तब्धनयन, निर्निमेष ।
—बाहु, वि. (सं.) जड-निस्तब्ध,-निश्चेष्ट,-हस्त-कर-बाहु-भुज ।
—मति, वि. (सं.) मंदबुद्धि, जड ।
स्तब्धता, सं. स्त्री. (सं.) जडता, स्पंदन-हीनता २. स्थिरता, दृढ़ता ३. बधिरता, श्रवणशून्यता ।
स्तर, सं. पुं. (सं.) दे. 'परत' २. शय्या, आस्तरः, तल्पः-ल्पम् ।
स्तव, सं. पुं. (सं.) स्तावः, स्तुतिः (स्त्री.) दे. । २. स्तोत्रं ३. ईश्वरप्रार्थना ।
स्तवक, सं. पुं. (सं.) पुष्प-कुसुम,-गुच्छः–स्तवकः २. राशिः अध्यायः, परिच्छेदः ४. स्तवः ५. स्तोतृ ।
स्तवन, सं. पुं. (सं. न.) गुणकीर्तनं. स्तुतिः (स्त्री.) ।

स्तुत, वि. (सं.) प्रशंसित, प्रशस्त, श्लाघित, ईडित, कीर्तित ।
स्तुति, सं. स्त्री. (सं.) स्त(स्ता)वः, गुण,-वर्णनं-कीर्तनं-कथनं, श्लाघा, नुतिः (स्त्री.), ईडा, प्रशंसा दे. ।
—करना, क्रि. स., नु (अ. प. से.), स्तु (अ. प. अ.), ईड् (अ. आ. से.), श्लाघ् (भ्वा. आ. से.), प्रशंस् (भ्वा. प. से.) ।
—पाठक, सं. पुं. (सं.) मागधः, चारणः, वैतालिकः ।
स्तुत्य, वि. (सं.) नव्य, नाव्य, नवितव्य, प्रशस्य, प्रशंसनीय, स्तोतव्य, स्तवनीय, प्रशंसार्ह ।
स्तूप, सं. पुं. (सं.) मृदादि,–कूटः–राशिः २. बौद्धचैत्यः ।
स्तेन, सं. पुं. (सं.) चौरः, तस्करः ।
स्तेय, सं. पुं. (सं. न.) चौर्यं, परद्रव्यहरणं, स्तैन्यम् ।
स्तोतव्य, वि. (सं.) दे. 'स्तुत्य' ।
स्तोता, वि. (सं.-तृ) प्रशंसक, स्तावक, नवितृ, नावक, वर्णक, स्तुतिवादक ।
स्तोत्र, सं. पुं. (सं. न.) छन्दोबद्धं देवगुण-कीर्तनं, स्तवः, स्तुतिः (स्त्री.) ।
स्तोम, सं. पुं. (सं.) स्तुतिः (स्त्री.), स्तवः २. यज्ञः ३. राशिः ।
स्त्री, सं. स्त्री. (सं.) वनिता, महिला, रामा, नारी, दे. २. पत्नी, भार्या ३. स्त्रीलिंगी जीवः ।
—ग्रह, सं. पुं. (सं.) चंद्रबुधशुक्रग्रहाः (ज्यो.) ।
—जित, स्त्री,-वश-विजित-वश्य ।
—धन, सं. पुं. (सं. न.) स्त्रीस्वत्वास्पदीभूतं धनं (माता, पिता, भाई तथा पति से प्राप्त, विवाह-संस्कार के समय प्राप्त और जहेज) ।
—धर्म, सं.पुं. (सं.) ऋतुः, पुष्पं, रजस् (न.) २. मैथुनं ३. स्त्रीकर्तव्यं ४. स्त्रीसंबंधि विधानम् ।
—पुंसलक्षणा, सं. स्त्री. (सं) पोटा (स्तन-श्मश्रुवादियुक्ता) ।
—पुरुष, सं. पुं. (सं.) स्त्री,–पुरुषौ–पुंसौ, मिथुनं, द्वन्द्वं, युग्मम् ।
—राज्य, सं. पुं. (सं. न.) प्राचीनप्रदेश-विशेषः (महाभारत) ।
—लंपट, वि. पुं. (सं.) स्त्री,-लोलः-शौंडः–चौरः, कामुकः ।

—लिंग, सं. पुं. (सं. न.) योनिः (स्त्री.), भगं, स्त्रीचिह्नं २. शब्दलिंगभेदः (व्या.) ।

—व्रत, सं. पुं. (सं. न.) पत्नीव्रतं, एकपत्नी-परायणता ।

—समागम, सं. पुं. (सं.) स्त्री,-संसर्गः-सम्भोगः ।

—स्वभाव, सं. पुं. (सं.) महल्लकः, दे. 'खोजा' २. नारीशीलम् ।

स्त्रीत्व, सं. पुं. (सं. न.) नारीत्वं, स्त्री-नारी,-धर्मः-भावः ।

स्त्रैण, वि. (सं.) स्त्रीजित, रमणीरत ३. स्त्री,-संबंधि-योग्य ।

स्थगित, वि. (सं.) विलंबित, व्याक्षिप्त, दे. 'मुलतवी' २. आच्छादित ३. गुप्त ४. अव-, रुद्ध ।

स्थपति, सं. पुं. (सं.) वास्तुशिल्पिन् २. तक्षन् ।

स्थल, सं. पुं. (सं. न.) भूमिः (स्त्री.), भूभागः, स्थली २. शुष्क-निर्जल,-भूमिः ३. स्थानं ४. अवसरः ।

—कमल, सं. पुं. (सं. न.) पद्मा, पद्मचारिणी, अतिचरा, स्थलरुहा ।

—चर, वि. (सं.) स्थल,-ग-गामिन्-चारिन्, भू,-चर-चारिन् ।

स्थली, सं. स्त्री. (सं.) शुष्क,-भूमिः (स्त्री.)-भूभागः २. समोन्नतभूः (स्त्री.) ३. स्थानं, स्थलम् ।

स्थविर, सं. पुं. (सं.) वृद्धः २. ब्रह्मन् (पुं.) ।

स्थाणु, सं. पुं. (सं.) अशाखवृक्षः, ध्रुवः, शंकुः २. स्तंभः, स्थूणा ३. शिवः ४. स्थावरपदार्थः । वि. (सं.) अचल, स्थिर ।

स्थाण्वीश्वर, सं. पुं. (सं. न.) कुरुक्षेत्रं, स्थानेश्वरनगरम्, स्थाणुतीर्थम् । २. स्थानेश्वरस्य लिंगविशेषः ।

स्थान, सं. पुं. (सं. न.) स्थलं २. आ-नि,-वासः, गृहं ३. भूमिः (स्त्री.), स्थली, भूभागः ४. पदं, दे. 'पदवी' ५. वर्णोच्चारणस्थानं (व्या.) ६. राज्यं, देशः ७. देवालयः, मंदिरं ८. अवसरः ९. दशा १०. परिच्छेदः, अध्यायः ।

—च्युत, वि. (सं.) स्थानभ्रष्ट २. पद,-च्युत-भ्रष्ट ।

स्थानक, सं. पुं. (सं. न.) स्थानं, स्थलम् २. पदं, स्थितिः (स्त्री.) ३-४. शरक्षेप-नृत्य,-मुद्राभेदः ५. नाटकव्यापारस्थलविशेषः ६. आलवालं, आवालवालम् ७. सुराफेनः ।

स्थानी, वि. (सं.-निन्) सस्थान, पदयुक्त २. स्थायिन् ३. उचित, उपयुक्त ।

स्थानीय, वि. (सं.) स्थानिक, स्थानविशेष-संबंधिन् ।

स्थापक, सं. पुं. (सं.) स्थापयितृ, संस्थापकः, प्रवर्तकः, प्रारंभकः, स्थापनकरः २. निधायकः ३.उत्थापकः, उन्नायकः ४.मूर्ति-प्रतिमा,-कारः ।

स्थापत्य, सं. पुं. (सं. न.) वास्तु,-विद्या-शिल्प-कला २. सूत्रकर्मन् (न.), भवननिर्माणम् ।

स्थापन, सं. पुं. (सं. न.) निधानं, न्यसनं, निवेशनं २.उत्थापनं,उन्नयनं,उन्नमनं ३.संस्थापनं, प्रवर्तनं, प्रारंभणं ४.प्रतिपादनं, साधनम् ।

स्थापना, सं. स्त्री. (सं.) (मंदिरे) मूर्ति,-प्रतिष्ठापनं-निवेशनं २-३. दे. 'स्थापनं (३-४) ४. विचारांगविशेषः (न्या०) ।

स्थापित, वि. (सं.) संस्थापित, प्रवर्तित २. निहित, निवेशित, न्यस्त ३. उत्थापित, उन्नीत, उन्नमित ४. स्थिर, दृढ ५. निश्चित ।

स्थायित्व, सं. पुं. (सं. न.) स्थायिता, स्थिरता, स्थैर्यं, ध्रुवता, नैत्यम् ।

स्थायी, वि. (सं.-यिन्) ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय २. चिरस्थायिन्, दृढ ३. स्थिर, स्थास्नु, स्थायुक, स्थितिशील ४. विश्वसनीय ।

—भाव, सं. पुं. (सं.) रसस्य भावविशेषः (सा.) (९ स्थायिभाव = रति, हास्य, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय और निर्वेद) ।

स्थाली, सं. स्त्री. (सं.) उखा, पिठरः-री, दे. 'पतीला' ।

—पुलाक न्याय, सं. पुं. (सं.) न्यायभेदः, अंशगुणज्ञानेन पूर्णगुणज्ञानानुमानम् ।

स्थावर, वि. (सं.) अचल, निश्चल, स्थिर २. स्थविर, स्थातृ, स्थाणु, स्थायुक, स्थास्नु, स्थितिशील । (सं. न.) अजंगम-अचल,-संपत्तिः (स्त्री.) ।

स्थित, वि. (सं.) विद्यमान, वर्तमान २. उप-विष्ट, आसीन ३. उत्थित ४. अवलंबित ।

—प्रज्ञ, वि. (सं.) स्थिर-स्थित,-बुद्धि-धी-प्रज्ञ, ब्रह्मबुद्धिसंपन्न २. आत्मसंतोपिन् ।

स्थिति, सं. स्त्री. (सं.) अवष्टंभः, आधारः, आलंबः २. निवासः, अवस्थानं ३. दशा,

अवस्था ४. पदं, दे. 'पदवी' ५. अस्तित्वं, सत्ता ६. मर्यादा ।

—स्थापकता, सं. स्त्री. (सं.) कुंचनीयता, नम्यता, दे. 'लचक' ।

स्थिर, वि. (सं.) अचल, निश्चल, अविचल २. निश्चित, स्थिरीकृत ३. शांत ४. दृढ़, बलवत् ५. स्थायिन्, शाश्वत, ध्रुव ६. नियत, ७. विश्वसनीय ८. स्थायुक, स्थास्नु ।

—चित्त, वि. (सं.) दृढसंकल्प, स्थिर,-मति-धी-बुद्धि ।

स्थिरता, सं. स्त्री. (सं.) निश्चलता, अचलता, स्थिरत्वं २. दृढता, बलवत्ता ३. स्थायित्वं, ध्रुवता ४. धैर्यं, धीरता ५. चिरस्थायिता, स्थास्नुता ।

स्थूणा, सं. स्त्री. (सं.) गृहस्तंभः, दे. 'स्तंभ' (१. २.) ।

स्थूल, वि. (सं.) पीन, पीवर (-रा-री स्त्री.) पुष्ट, मांसल, मेदुर, भिन्न, मेदस्विन्, पीवस, पीवन् २. स्पष्ट, सुबोध ३. मूर्ख, जड ४. विषम, नतोन्नत ।

—बुद्धि, वि. (सं.) मंदमति, जड ।

स्थूलता, सं. स्त्री. (सं.) पीनता, पीवरता, मेदुरता, स्थूलत्वं २. गुरुता-त्वं, भारवत्ता ३. विषमता ४. महाकायता ।

स्थैर्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'स्थिरता' ।

स्थौल्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'स्थूलता' ।

स्नात, वि. (सं.) कृतस्नान, दे. 'नहाया हुआ' ।

स्नातक, सं. पुं. (सं.) आप्लुतव्रतिन् ।

स्नान, सं. पुं. (सं. न.) आप्लव(प्ला)वः, अभिषेकः, उपस्पर्शः-र्शनं, अवगाहनम् ।

—करना, क्रि. अ., स्ना (अ. प. अ.), अवगाह् (भ्वा. आ. से.), दे. 'नहाना' ।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) स्नान,-शाला-आगारं ।

स्नायु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) वस्नसा, स्नसा, नसा, ज्ञानतंतुः, नाडी-डिका-डिः (स्त्री.), वायुवाहिनी नाडी, वातरज्जुः (स्त्री.) ।

स्निग्ध, वि. (सं.) चिक्कण, चिक्क, चक्कण, मसृण, श्लक्ष्ण, अमृष्ट २. सस्नेह, सतैल, तैलाक्त ।

स्निग्धता, सं. स्त्री. (सं.) चिक्कणता, मसृणत्वं, श्लक्ष्णता २. तैलवत्ता, स्नेहवत्ता ३. प्रियता ।

स्नीढ, वि. (सं.) मृदुल, कोमल, स्निग्ध २. अनुरक्त, आसक्त ।

स्नुषा, सं. स्त्री. (सं.) पुत्र-,वधूः (स्त्री.) ।

स्नेह, सं. पुं. (सं.) प्रेमन् (पुं. न.), अनु-, रागः, प्रीतिः (स्त्री.), प्रणयः २. चिक्कणपदार्थः (घृततैलादि) ।

—करना, क्रि. स., दे. 'प्रेम करना' ।

—संस्कृत, वि. (सं.) घृत-तैल,-पक्व-श्राण ।

—सार, सं. पुं. (सं.) मज्जा, दे. । वि., तैल,-प्रधान-बहुल ।

स्नेहनीय, वि. (सं.) स्नेह्य, तैलार्ह २. प्रेम,-पात्र-भाजन, अनुराग,-अर्ह-योग्य ।

स्नेही, सं. पुं. (सं. = हिन्) स्नेहशीलः, अनुरागिन्, प्रणयिन्, प्रेमिन्, मित्रम् । वि. (सं.) चिक्कण, मसृण ।

स्पंज, सं. पुं. (अं.) छिद्रिष्ठं, *स्फण्टम् ।

स्पंदन, सं. पुं. (सं. न.) स्पंदः, ईषत्कंपनं, प्रस्फुरणं, क्षिप्रकंपः ।

स्पर्द्धा, सं. स्त्री. (सं.) विजिगीषा, संघर्षः, अहमहमिका, ईर्ष्या, सापत्न्यम् ।

—करना, क्रि. अ., प्रति-,स्पर्ध् (भ्वा. आ. से.), संघृष् (भ्वा. प. से.), विजि(सन्नंत-विजिगीषते), अभिभवितुं यत् (भ्वा. आ. से.), ईर्ष्य् (भ्वा. प. से.) ।

स्पर्श, सं. पुं. (सं.) सं-,स्पर्शः-र्शनं, संसर्गः, संपर्कः, परामर्शः २. त्वगिन्द्रिय-ग्राह्यगुणविशेषः ३. कादिवर्गपंचकं (व्या.) ४. वायुः ।

—करना, क्रि. स., सं-,स्पृश् (तु. प. अ.), दे. 'छूना' ।

स्पष्ट, वि. (सं.) परि-,स्फुट, प्रकट, व्यक्त, प्रत्यक्ष, उल्वण, उद्रिक्त, विशद, सुबोध, स्पष्टार्थ। सं. पुं. (सं.) वर्णोच्चारणप्रयत्नप्रकारः (व्या.) ।

—कथन, सं. पुं. (सं. न.) सरल-निष्कपट,-भाषणं २. कथनप्रकारभेदः परवचनानामवितथोपन्यासः (व्या.) ।

—वक्ता, सं. पुं. (सं.-क्तृ) स्पष्टवादिन् ।

स्पष्टतया, क्रि. वि. (सं.) प्रकटं, स्पष्टं, व्यक्तं, स्फुटं, प्रत्यक्षम् ।

स्पष्टता, सं. स्त्री. (सं.) वैशद्यं, विशदता, स्फुटता, उल्वणता, सुबोधता, सरलता, आर्जवं, सारल्यं, निर्व्याजता ।

स्पिरिट, सं. स्त्री. (अं.) जीव,-आत्मन्, देहिन्, जीवः २. प्राण-जीवन,-शक्तिः (स्त्री.), वीर्यं ३. तत्त्वं, सत्त्वं, सारः ४. मद्यसारः ।

—लेप, सं. पुं., सारप्रदीपः ।
मेथिलेटिड—, मिथिलितमद्यसारः ।
रेक्टिफाइड—, शुद्धमद्यसारः ।
स्पीच, सं. स्त्री. (अं.) व्याख्यानं, कथनम् ।
स्पृहा, सं. स्त्री. (सं.) कामना, इच्छा दे. ।
स्पेक्टरास्कोप, सं. स्त्री. (अं.) रश्मिवर्णदर्शकम् ।
स्पेशल, वि. (अं.) विशिष्ट, विलक्षण, असामान्य, असाधारण, सविशेष, विशेष ।
—गाड़ी, सं. स्त्री. (अं.+हिं.) विशिष्टशकटी ।
स्फटिक, सं. स्त्री. (सं.) स्फाट(टि)कं, भासुरः, स्फाटिकोपलः, धौतशिलं, सितोपलः, विमल,-स्वच्छ-मणिः, स्वच्छः, अमर-निस्तुप,-रत्नं, शिवप्रियः ।
स्फुट, वि. (सं.) व्यक्त, प्रकट, प्रकाशित, दे. स्पष्ट २. विकसित ३. शुक्ल ४. नाना-बहु-वि,-विध ।
स्फुरण, सं. पुं. (सं. न.) स्फुरणा, स्फुरित, स्फुलनं, स्फुरः-रणा, स्फ(स्फा)रणं, ईषत-किंचिच्,-चलनम् ।
स्फुलिंग, सं. पुं. (सं.) अग्निकणः, दे. 'चिनगारी' ।
स्फूर्ति, सं. स्त्री. (सं.) क्षिप्रता, शीघ्रता, आशुकारिता-त्वं, त्वरा २. स्फुरणं ३.मानसी प्रेरणा ।
स्फोटक, सं. पुं. (सं.) पिडकः, गंडः । वि., स्फोटः ।
स्फोटन, सं. पुं. (सं. न.) सशब्द,-भेदनं-विदारणं २. प्रकाशनं, प्रख्यापनं ३. शब्दः, ध्वनिः ४. आकस्मिक,-भंजनं-विद्लनं-स्फुटनम् ।
स्मय, सं. पुं. (सं.) अभिमानः, दर्पः ।
स्मर, सं. पुं. (सं.) कंदर्पः, मदनः, कामः २. स्मृतिः (स्त्री.), स्मरणम् ।
स्मरण, सं. पुं. (सं. न.) आध्यानं, अनुचिंतनं, २. स्मृतिः (स्त्री.) ।
—करना, क्रि. स., अनु-सं-, स्मृ (भ्वा. प. अ.), अनुचिंत (चु.), अनुबुध् (भ्वा. प. से.), आध्यै (भ्वा. प. अ.) २. कंठस्थं-मुखस्थं कृ ।
—दिलाना या**—कराना**, क्रि. प्रे., व. 'स्मरण करना' के प्रे. रूप ।
—रखना, क्रि. स., चित्ते-चेतसि-मनसि निधा (जु. उ. अ.), मनसि धृ (चु.) ।
—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) स्मारण-स्मारक,-पत्रम् ।
—शक्ति, सं. स्त्री. (सं.) स्मृति (स्त्री.), स्मरणं, धारणा, चिन्ता, आ-,ध्यानं, आध्या, चर्चा, चितितिः (स्त्री.), चिन्तः, चिंतिया ।
स्मरणीय, वि. (सं.) आध्येय, अनुचिंतनीय, स्मर्तव्य, स्मरणार्ह, मनसि धारणीय ।
स्मशान, सं. पुं., दे. 'श्मशान' ।
स्मारक, वि. (सं.) अनुबोधक, स्मृतिकर । सं. पुं. (सं. न.) स्मृति-स्मरण,-चिह्नं ३. स्मारकदानं, स्नेहाभिज्ञानम् ।
स्मार्त्त, वि. (सं.) स्मृति,-विहित-संबंधिन् २. स्मरणसंबंधिन् ।
स्मित, सं. पुं. (सं. न.) ईषद्धास्यं, मंदहासः, दे. 'मुसकराहट' ।
स्मृति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'स्मरणशक्ति' २. स्मरणं, आध्यानं, अनु,-चिंतनं-बोधः ३. आर्यधर्मशास्त्राणि (मनुस्मृति आदि) ।
—कार, सं. पुं. (सं.) धर्मशास्त्रकारः ।
—वर्द्धिनी, सं. स्त्री. (सं.) ब्राह्मी ।
स्यंदन, सं. पुं. (सं.) रथः, दे. ।
स्यात्, अव्य. (सं.) दे. 'शायद' ।
स्यानपन, सं. पुं. (हिं. स्याना) नैपुण्यं, दाक्ष्यं, चातुर्यं २. कैतवं, शाठ्यं, व्याजः ।
स्याना, वि. (सं. सज्ञान) चतुर, बुद्धिमत् २. धूर्त्त, कापटिक ३. वयस्क, युवन् । सं. पुं., वृद्धः २. ग्रामणीः ३, चिकित्सकः ।
—पन, सं. पुं., दे. 'स्यानपन' ।
स्यानी, वि.(स्त्री.) (हिं. स्याना) चतुरा, दक्षा, बुद्धिमती । सं. स्त्री., युवती-तिः (स्त्री.), समकन्या, परिणेया, उद्वाह्या ।
स्यार, सं. पुं. (सं. शृगालः) जंबुकः, दे. 'गीदड़' ।
स्याह, वि. (फ़ा.) काल, कृष्ण, असित ।
—दिल, वि. (फ़ा.) दुष्ट, खल, पाप ।
स्याही, सं. स्त्री. (फ़ा.) मशी,-षी-सी, मशिः-षिः-सिः (सब स्त्री.), मेला २. कालिमन् (पुं.), कृष्णता, श्यामता ३. कज्जलभेदः ४. कलंकः, लांछनम् ।
—चट, —चूस, सं. पुं., मसी,-शोषकं-चूसकं (पत्रम्) ।
—जाना, मु., यौवनं अति-इ (अ. प. अ.) ।
—लगाना, मु०. अपवद्-परिवद्-निन्द् (भ्वा. प. से,), कलंक (ना. धा., कलंकयति) ।
स्यूत, वि. (सं.) स्यून, निष्यूत २. व्यूत,

व्यूत, प्रोत, पुटित, पुटित ३. विद्ध। सं. पुं. (सं.) स्योतः, प्रसेवः।

स्रवण, सं. पुं. (सं. न.) स्र(स्रा)वः, प्रस्रावः, २. गर्भ,-पातः-स्रावः ३. मूत्रं ४. प्रस्वेदः।

स्रष्टा, सं. पुं. (सं.-ष्टृ) विश्वसृज्, ब्रह्मन्, चतुर्मुखः। वि. (सं.) रचयितृ, निर्मातृ।

स्रुवा, सं. पुं. (सं. स्त्री.) स्रुवः, स्रुच् (स्त्री.), स्रूः (स्त्री.) (यज्ञपात्रभेदः)।

स्रोत, सं. पुं. (सं. न.) स्रोतस् (न.), प्रवाहः, ओघः, धारा, मंदाकः २. नदी ३. देहछिद्राणि (न. बहु.) ४. वंशपरंपरा।

स्लीपर, सं. पुं. (अं. स्लिप्पर) फर्फरीका।

फुल—, सं. पुं. (अं.) पूर्णफर्फरीका।

स्लेट, सं. स्त्री. (अं.) लेखन-,शिला, अश्म-पाषाण,-पट्टिका, *पाषाणी।

स्व, सं. पुं. (सं.) आत्मन् २. बंधुः, ज्ञातिः (पुं.) २. धनम्। वि. (सं.) स्वीय, स्वकीय, आत्मीय, स्वक, निज, स्व–,निज–,आत्म–।

—कार्य, सं. पुं. (सं. न.) निजकृत्यम्।

—कुटुंब, सं. पुं. (सं. न.) निजपरिवारः।

—जन, सं. पुं. (सं.) बंधुवर्गः, बांधवाः (बहु.)।

—देश, सं. पुं. (सं.) जन्म-मातृ,-भूमिः (स्त्री.)।

—देशी, वि. (सं.-शीय) निजदेश-,संबंधिन्-निर्मित।

—धर्म, सं. पुं. (सं.) निजकर्तव्यं २. सहज-गुणः।

—राज, सं. पुं. (सं. राज्यं) निजशासनम्।

स्वकीय, वि. (सं.) स्व, निज, आत्मीय, स्वीय।

स्वकीया, सं. स्त्री. (सं.) नायिकाभेदः (सा.), स्वीया, स्वामिन्येवानुरक्ता।

स्वगत, सं. पुं. (सं. न.) आत्म-मनो,-गतं, अश्राव्यं, नाट्ययोक्तिभेदः (सा.)।

स्वच्छंद, वि. (सं.) स्वतंत्र, स्वाधीन, स्वायत्त, २. नियंत्रण-शून्य, स्वैर-रिन्, निरंकुश, स्व-रुचिः। क्रि. वि. (सं.न.) स्वातंत्र्येण,स्वच्छंदतः ३. स्वैरं, निरंकुशं, यथेष्टम्।

—चारिणी, सं. स्त्री. (सं.) वेश्या।

—चारी, वि. (सं.-रिन्) स्वेच्छाचारिन्, स्वैर, स्वैरिन्।

स्वच्छंदता, सं. स्त्री. (सं.) स्वातंत्र्यं, स्वाधीनता, स्वतंत्रता २. स्वैर(रि)ता, निरंकुशता।

स्वच्छ, वि. (सं.) अमल, निर्मल, विमल, मल,-हीन-रहित २. शुभ्र, श्वेत, उज्ज्वल ३. पवित्र, शुचि, वि-,शुद्ध ४. स्पष्ट, विशद ५. स्वस्थ, निरामय ६. निष्कपट, ऋजु ७. पारदर्शक।

स्वच्छता, सं. स्त्री. (सं.) निर्मलता, विमलता २. उज्ज्वलता ३. पवित्रता ४. पारदर्शकता।

स्वतंत्र, वि. (सं.) दे. 'स्वच्छंद' वि. तथा क्रि. वि.।

स्वतंत्रता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'स्वच्छंदता'।

स्वतः, अव्य. (सं.) स्वेच्छया, स्वयमेव, स्वेच्छा-पूर्वं, कामतः (स्व अव्य.)।

—प्रमाण, वि. (सं.) स्वतःसिद्ध, स्वयंसिद्ध, प्रमाणान्तरनिरपेक्ष।

स्वत्व, सं. पुं. (सं. न.) शक्तिः (स्त्री.), अधिकारः, वशः २. आधिपत्यं, स्वामित्वं, प्रभुत्वम्।

स्वप्न, सं. पुं. (सं.) स्वापः, प्रसुप्तस्य ज्ञानं २. निद्रा ३. असंभवकल्पना, वृथा-मिथ्या-वासना, आभासः, स्वप्नसृष्टिः (स्त्री.)।

—देखना, स्वप्नं दृश् (भ्वा. प. अ.), स्व-प्नायते (ना. धा.)

—दोष, सं. पुं. (सं.) निद्रायां शुक्रपातः।

—में बोलना, क्रि. अ. उत्स्वप्नायते (ना. धा.)।

—लेना, मु., असंभवकल्पनां कृ, मनसा क्लृप् (प्रे.)।

स्वभाव, सं. पुं. (सं.) धर्मः, गुणः, प्रकृतिः-संसिद्धिः (स्त्री.) स्वरूपं, नि-,सर्गः, भावः, २. प्रकृतिः-मनोवृत्तिः (स्त्री.), शीलं ३. अ-भ्यासः, नित्यव्यवहारः।

—सिद्ध, वि. (सं.) सहज, प्राकृतिक, स्वाभाविक।

स्वभावतः, अव्य. (सं.) प्रकृत्या, जन्मतः, निसर्गतः।

स्वयं, अव्य. (सं.) आत्मना २. स्वत एव, विनाऽऽयासं, प्रयत्नं विना।

—भू, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मन् (पुं.) २. कालः ३. कामदेवः ४. विष्णुः ५. शिवः। वि. (सं.) स्वयं,-जात-भूत, स्वज, स्वयोनि।

—वर, सं. पुं. (सं.) स्वयंवरणं, स्वेच्छया पतिवरणम्।

—वरा, सं. स्त्री. (सं.) पतिंवरा, वर्या।

—सिद्ध, वि. (सं.) स्वतःसिद्ध २. स्वतः-सफल।

—सेवक, सं. पुं. (सं.) स्वेच्छासेवकः।

—सेविका, सं. पुं. (सं.) स्वेच्छासेविका ।
स्वर् , सं. पुं. (सं. अव्य.) स्वर्गः २. परलोकः ३. आकाशः-शम् ।
स्वर, सं. पुं. (सं.) ध्वनिः, शब्दः, नि-,स्व-(स्वा)नः, नि-,नादः, घोषः, क्ष्वेडः, विरुतं, वि-,र(रा)वः, ह्रादः २. षड्जादयः सप्त-स्वराः (संगीत) ३. उदात्तादिस्वरत्रिकं (व्या.) ४. अच् , मात्रा (व्या.) ५. उच्छ्वासः ।
—भंग, सं. पुं. (सं.) स्वर,-क्षयः-भेदः, गल-रोगभेदः ।
—संक्रम, सं. पुं. (सं.) स्वरारोहावरोहौ (संगीत) ।
स्वरूप, सं. पुं. (सं. न.) निजरूपं, आकारः, आकृतिः (स्त्री.) २. मूर्तिः (स्त्री.), चित्रं इ. ३. प्रकृतिः (स्त्री.), स्वभावः ४. देवादिभिः धृतं रूपं ५. देवादिरूपधारिन् । वि. (सं.) तुल्य, सम २. सुंदर, मनोज्ञ ३. पंडित, प्राज्ञ । क्रि. वि., रूपेण, रीत्या (उ. प्रमाण-स्वरूपः= प्रमाणरूपेण) ।
स्वर्ग, सं. पुं. (सं.) स्वर्-देव-अमर-सुर-ऊर्ध्व,-लोकः, स्वर् (अव्य.), नाकः, त्रिदिवः, त्रिदशालयः, मन्दरः, शुक्रभवनं, सुखाधारः २. ईश्वरः ३. सुखं ४. सुखदं स्थानं ५. आकाशः-शम् ।
—काम, वि. (सं.) स्वर्ग-,लिप्सु-इच्छुक ।
—गमन, सं. पुं. (सं. न.) स्वर्-स्वर्ग,-गतिः (स्त्री.)-लाभः, निधनं, मरणम् ।
—गामी, वि. (सं.-मिन्) स्वर्गमनकर्तृ २. स्व-र्गस्थ, स्वर्गत, मृत ।
—तरु, सं. पुं. (सं.) कल्पवृक्षः ।
—धेनु, सं. स्त्री. (सं.) कामधेनुः ।
—नदी, सं. स्त्री. (सं.) स्वर्गापगा, मंदाकिनी ।
—पति, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः ।
—पुरी, सं. स्त्री. (सं.) अमरावती ।
—लोक, सं. पुं. (सं.) दे. 'स्वर्ग' (१) ।
—वधू , सं. स्त्री. (सं.) स्वर्गस्त्री, अप्सरस् (स्त्री.) ।
—वास, सं. पुं. (सं.) स्वर्गवासः २. मरणं, निधनम् ।
—वासी, वि. (सं.-सिन्) देवलोकवासिन् २. दिवंगत, प्रेत, मृत, स्वर्यात, स्वर्गस्थ ।
स्वर्गीय, वि. (सं.) स्वर्ग्य, दिव्य, दैव २. दे. 'स्वर्गवासी' (२) ।
स्वर्ग्य, वि. (सं.) दे. 'स्वर्गीय' (१, २) ।
स्वर्ण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सोना' (१) ।
स्वर्लोक, सं. पुं. (सं.) दे. 'स्वर्ग' (१) ।
स्वल्प, वि. (सं.) अत्यल्प, अतिस्तोक ।
स्वशुर, सं. पुं. (सं. श्वशुरः) दे. 'ससुर' ।
स्वस्ति, अव्य. (सं.) कल्याणं-मंगलं-भद्रं भूयात् (असीस) । सं. स्त्री. (सं.) कल्याणं, मंगलं २. सुखम् ।
—वाचन, सं. पुं. (सं. न.) मंगलयमंत्रपाठः २. धार्मिककृत्यभेदः (गणेशपूजनादि) ।
स्वस्तिक, सं. पुं. (सं.) मंगल्यचिह्नभेदः (卐) २. मंगलद्रव्यं ३. चतुष्पथः ।
स्वस्तिका, सं. स्त्री., दे. 'स्वस्तिक' (१) ।
स्वस्त्ययन, सं. पुं. (सं. न.) कार्यारम्भे मंगल्यमंत्रपाठः २. समृद्धिसाधनम् ३. दलाग्रे नीयमानो मंगल्यजलकलशः । ४. दानप्राप्त्य-नन्तरं विप्रस्याशीर्वादः ।
स्वस्थ, वि. (सं.) अनामय, निरामय, नीरोग, अरोग, कुशल, कुशलिन्, सुस्थ, आरोग्यवत्, नीरुज-ज् , निर्व्याधि, व्याधि-रोग, रहित २. 'सावधान' दे. ।
—चित्त, वि., शान्तमनस्क ।
स्वांग, सं. पुं. (सं. स्वांगं>) (उपहासार्थं) अनु,-करणं-कारः-कृतिः (स्त्री.), विडंबनं २. वेषांतरं, छद्म-कृतक-कपट,-वेषः ।
—रचना, क्रि. स., वेषं परिवृत् (प्रे.), वेषान्तरं रच् (चु.) २. नट् (चु.), अभिनी (भ्वा. प. अ.) ।
स्वांगी, सं. पुं. (सं. स्वांगं>) नटः, अभिनेतृ, शैलूषः, रंगाजीवः २. भंडः ३. दे. 'बहुरूपिया' ।
स्वागत, सं. पुं. (सं. न.) उपचारः, संमानः, संभावना, सत्,-कारः-कृतिः (स्त्री.) क्रिया, प्रत्युद्गमनं, प्रत्युद्व्रजनं, प्रत्युत्थानं, प्रत्युद्-, गमः-गतिः (स्त्री.) ।
—करना, क्रि. स., प्रत्युद्गम् (भ्वा. प. अ.), प्रत्युद्व्रज् (भ्वा. प. से.) ।
—समिति, सं. स्त्री. (सं.) स्वागतकारिणी सभा ।
स्वातंत्र्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'स्वतन्त्रता' ।
स्वाति, सं. स्त्री. (सं.) स्वाती, पञ्चदशं नक्षत्रम् ।
स्वाद, सं. पुं. (सं.) आस्वादः, रसः २. आनंदः, रसानुभूतिः (स्त्री.) ३. इच्छा ४. माधुर्यम् ।

—लेना, क्रि. स., आ-,स्वाद् (भ्वा. आ. से.), रस् (चु.) २. ईषत् खाद् (भ्वा. प. से.)। सं. पुं., आ-,स्वादनं, रसनम्।

स्वादिष्ट, वि. (सं. स्वादिष्ठ) सरस, सुरस, रुच्य, रुचिकर (-री स्त्री.) स्वादु २. मिष्ट।

स्वादीला, वि. (सं. स्वादः>) दे. 'स्वादिष्ट'।

स्वादु, वि. (सं.) 'स्वादिष्ठ' २. मधुर, मिष्ट, ३. मनोज्ञ।

स्वादुता, सं. स्त्री. (सं.) सुरसता, स्वादवत्ता २. मधुरता।

स्वाधिपत्य, सं. पुं. (सं. न.) निजप्रभुत्वम्।

स्वाधीन, वि. (सं.) दे. 'स्वतंत्र'।

स्वाधीनता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'स्वतंत्रता'।

स्वान, सं. पुं. (सं. श्वन्) कुक्कुरः, दे. 'कुत्ता'।

स्वाध्याय, सं. पुं. (सं.) वेदाध्ययनं, धर्मशास्त्रानुशीलनं २. अध्ययनं, विषयविशेषानुशीलनम्।

स्वाप, सं. पुं. (सं.) निद्रा २. स्वप्नः ३. अज्ञानं ४. निस्पंदता, स्पर्शाज्ञता।

स्वाभाविक, वि. (सं.) स्वभावसिद्ध, सहज, प्राकृतिक, नैसर्गिक, कृत्रिमता,-रहित।

स्वामित्व, सं. पुं. (सं. न.) स्वामिता, प्रभुता-त्वं, स्वाम्यम्।

स्वामिनी, सं. स्त्री. (सं.) गेहिनी, गृहिणी, गृहपत्नी, कुटुम्बिनी, पुरंध्री २. ईशित्री, ईश्वरी, स्वत्ववती, अधिकारिणी ३. श्रीराधा।

स्वामी, सं. पुं. (सं.-मिन्) प्रभुः, अधि,-पः-पतिः-भूः, ईश्वरः, ईशितृ, परिवृढः, नायकः, नेतृ, आर्यः, पालकः २. गृहपतिः, कुटुम्बिन्, गृहिन् ३. पतिः, भर्तृ, धवः ४. परमेश्वरः ४. नृपः ५. कार्तिकेयः ६. परिव्राजकोपाधिः।

स्वाम्य, सं. पुं. (सं. न.) स्वामित्वं, प्रभुत्वं, आधिपत्यं, अधिकारः।

स्वायत्त, वि. (सं.) आत्मवश, निजाधिकारस्थ।

—शासन, सं. पुं. (सं. न.) स्थानिकस्वराज्यं।

स्वाराज्य, सं. पुं. (सं. न.) स्वाधीनशासनं २. स्वर्गलोकः ३. ब्रह्मणा तादात्म्यम्।

स्वार्थ, सं. पुं. (सं.) निजोद्देश्यं, आत्मप्रयोजनं २. आत्महितं, निजलाभः ३. स्वधनम्।

—त्याग, सं. पुं. (सं.) निजलाभोत्सर्गः।

—त्यागी, वि. (सं.-गिन्) निजलाभोत्सर्गिन्।

—परायण, वि. (सं.) स्वार्थ-स्वहित-स्वलाभ,-पर-परायण-निष्ठ।

—परायणता, सं. पुं. (सं.) स्वार्थ-स्वहित-स्वलाभ,-परता-निष्ठा-बुद्धिः-दृष्टिः (दोनों स्त्री.)

—साधक, वि. (सं.) दे. 'स्वार्थपरायण'।

—साधन, सं. पुं. (सं. न.) निजहितनिर्वहणम्।

स्वार्थी, वि. (सं.-र्थिन्) दे. 'स्वार्थपरायण'।

स्वावमानना, सं. स्त्री. (सं.) स्वावमाननम्, आत्म,-भर्त्सना-गर्हा-निन्दा।

स्वावलंबन, सं. पुं. (सं. न.) आत्मनिर्भरता, स्वाश्रयः।

स्वावलंबी, वि. (सं.-बिन्) आत्मनिष्ठ, आत्माश्रय, आत्माश्रित, स्वाश्रित।

स्वास, सं. पुं. } (सं. श्वासः) दे. 'साँस'।
स्वासा, सं. स्त्री. }

स्वास्थ्य, सं. पुं. (सं. न.) आरोग्यं, स्वस्थता, कुशलं, नीरोगता, अरोगिता।

—कर, वि. (सं.) आरोग्य,-प्रद-वर्द्धक।

स्वाहा, अव्य. (सं.) हविर्दान,-मंत्रः-शब्दः।

—करना, मु. नश् (प्रे.), अपव्यय् (चु.) २. भस्मसात्कृ।

स्वीकार, सं. पुं. (सं.) अंगीकारः २. स्वीकरणं, अंगीकरणं, ग्रहणं, आदानं ३. वचनं, प्रतिज्ञा।

स्वीकार्य, वि. (सं.) स्वीकरणीय, अंगीकार्य।

स्वीकृत, वि. (सं.) आदत्त, अंगीकृत, प्रतिगृहीत, २. प्रशस्त, अनु-सं,-मत।

स्वीकृति, सं. स्त्री. (सं.) सं.-अनुमतिः (स्त्री.), अनुमोदनं २. आदानं, स्वीकारः, प्रतिग्रहः।

स्वीय, वि. (सं.) स्वकीय, निज, आत्मीय।

स्वेच्छा, सं. स्त्री. (सं.) निजाभिलाषः, स्वरुचिः (स्त्री.), स्वच्छंदः।

—चारी, वि. (सं.) स्वैर, प्रतिनिविष्ट, निरङ्कुश, स्वच्छंद।

—मृत्यु, सं. पुं. (सं.) भीष्मः २. स्वेच्छया मरणम्। वि. (सं.) स्वायत्तनिधनन्।

स्वेद, सं. पुं. (सं.) घर्मः, निदाघः, प्रस्वेदः, स्वेद-घर्म,-जलं-उदकं २. वाष्पः ३. तापः, उष्मन् ४. स्वेदनं ५. घर्मकारकमौषधम्।

स्वेदज, वि. (सं.) घर्मजात (जूँ, लीख आदि)।

स्वैर, वि. (सं.) दे. 'स्वच्छंद'।

स्वोपार्जित, वि. (सं.) आत्म-निज-स्व,-अर्जित-उपार्जित।

ह

ह, देवनागरीवर्णमालायास्त्रयस्त्रिंशो व्यंजनवर्णः, हकारः।

हँकवाना, क्रि. प्रे., व. 'हाँकना' के प्रे. रूप।

हँकाना, क्रि. स. तथा प्रे., दे. 'हाँकना' तथा 'हँकवाना'।

हँकारना, क्रि. स., दे. 'पुकारना' २. दे. 'ललकारना'।

हंगामा, सं. पुं. (फ़ा.-मह्) कोलाहलः, तुमुलः-लं, कलकलः २. संमर्दः, विप्लवः।

हंजीराँ, सं. स्त्री. (पं.) गण्डमाला, गलांकुरः।

हंटर, सं. पुं. (अं.) कशः-शा, दे. 'कोड़ा'।

हंडा, सं. पुं. (सं.) धातुमयं बृहज्जलभांडम्।

हँड़िया, सं. स्त्री. (सं. हंडिका) हंडी।

हंडी, सं. स्त्री. (सं.) हंडिका।

हंता, सं. पुं. (सं.-तृ) घातकः, मारकः, वधकारिन्,-हन् (समासान्त में)।

हंस, सं. पुं. (सं.) मरालः, मानसौकस्, च(व)क्रांगः, क्षीराशः, नीलाक्षः, चक्रपक्षः, राजहंसः, श्वेतगरुत्, कलकंठः, सित,-च्छदः-पक्षः, धवलपक्षः, मानसालयः २. सूर्यः ३. परमात्मन् ४. शुद्धात्मन् ५. परिव्राजकभेदः।

—गति, सं. स्त्री. (सं.) कलमंदगतिः।

—गामिनी, वि. स्त्री. (सं.) कलकंठगामिनी।

—नादिनी, वि. स्त्री. (सं.) मधुर-चारु-प्रिय,-भाषिणी, हंसगद्गदा।

—वाहन, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मन् (पुं.), हंसरथः।

—वाहनी, सं. स्त्री. (सं.) सरस्वती।

हँसना, क्रि. अ. (सं. हसनं) प्र-वि-, हस् (भ्वा. प. से.), हास्यं कृ २. (मंद-मंद हँसना), स्मि (भ्वा. आ. अ.) ३. (ऊंचा हँसना), अट्टहासं कृ ४. नर्मालापं कृ, परिहस् ५. मुद् (भ्वा. आ. से.), हृष् (दि. प. से.)। क्रि. स., अव-उप,-हस्। सं. पुं., हासः, हास्यं, हसनं, हसितम्।

—खेलना, सं. पुं., विनोदः, प्रमोदः, आनंदः, परिहासः।

—बोलना, सं. पुं., हास्यालापः, सुखसंभाषणं।

हँसने योग्य, वि., हासा(स्या)र्ह, हसितव्य, हास्य, हासकर (-री स्त्री.), हास्यास्पदम्।

हँसने वाला, सं. पुं., हासकः, हासिन्।

हँसमुख, वि. (हिं. हँसना+सं. मुखं>) हास्यमुख(-खा,-खी स्त्री.), स्मेरानन(-ना,-नी स्त्री.), प्रसन्न-प्रफुल्ल-हास्य,-वदन (-ना, नी स्त्री.)। २. नर्मगर्भ, विनोदप्रिय, हास्यशील, विनोदिन्।

हँसली, सं. स्त्री. (सं. अंसल>) जत्रु (न.), जत्रुकं, ग्रीवास्थि (न.) २. ग्रैवेयं, कंठाभरणभेदः।

हँसाई, सं. स्त्री. (हिं. हँसना) हसनं, हासः २. अवहासः, उपहासः, लोक,-निन्दा-अपवादः।

हँसाना, क्रि. स., व. 'हँसना' के प्रे. रूप।

हंसिनी, सं. स्त्री., दे. 'हंसी'।

हँसिया, सं. पुं. (सं. हंसः>) लवाकः, लवाणकः, लविः।

हंसी, सं. स्त्री. (सं.) वरटा-टी, च(व)क्रांगी, हंसिका, व(वा)रला, वराली, मंजुगमना, मृदुगामिनी।

हँसी, सं. स्त्री. (हिं. हँसना) हासः, हास्यं, हसितं, हसनं, हसितिः (स्त्री.) २. परिहासः, नर्मन् (न.), कौतुकं, लीला, विनोदः ३. उप-अव,-हासः ४. लोक,-अपवादः-निंदा, अपकीर्तिः (स्त्री.)।

—खुशी, सं. स्त्री., आनंदः, मोदः।

—खेल, सं. पुं., विनोदः, कौतुकं २. सुकर-सुसाध्य,-कार्यं, साधारणवार्ता।

—ठट्ठा, सं. पुं., दे. 'हँसी' (२)।

—उड़ाना, मु., उप-अव,-हस् (भ्वा. प. से.), सव्यंग्यं निन्द् (भ्वा. प. से.)।

—खेल समझना, मु., सुकरं-सुसाध्यं मन् (दि. आ. अ.)।

—में उड़ाना, मु., साधारणं मत्वा उपेक्ष् (भ्वा. आ. से.)।

—में खाँसी, मु., विनोदे कलहः, परिहासः, उपद्रवे परिणतः।

हँसोड़, वि. (हिं. हँसना) हास्य-परिहास-विनोद,-प्रिय-शील, नर्मगर्भ, विनोदिन्, कौतुकिन्।

—पन, सं. पुं., हास्यशीलता, विनोदप्रियता, नर्मगर्भता।

हँसौहाँ, वि. (हिं. हँसना) हासोन्मुख २. परिहासयुक्त।

हक़, वि. (अ.) सत्य, ऋत, अवितथ, तथ्य,

यथार्थ २. उचित, न्याय्य, धर्म्य। सं. पुं. (अ.) अधिकारः, स्वत्वं २. प्रभुत्वं, शक्तिः (स्त्री.) ३. कर्तव्यं, धर्मः ४. सत्यं, ऋतं, तथ्यं ५. परमात्मन् ६. देयं, परिशोध्यं ७. ग्राह्यं, प्राप्यम्।
—अदा करना, मु., कर्तव्यं पा(प्रे.,पालयति-ते)।
—दार, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) अधिकारिन्, स्वत्ववत्।
—नाहक, अव्य. (अ.+फ़ा.+अ.) बलात्, सरभस (दोनों अव्य.) २. व्यर्थं, निष्प्रयोजनं।
—मालिकाना, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) स्वाम्याधिकारः।
—मौरूसी, सं. पुं. (अ.) परंपरागत-पैतृक,-अधिकारः।
—शुफ़ा, सं. पुं. (अ.) प्रतिवेशाधिकारः।
हकबकाना, क्रि. अ. (अनु. हक्का वक्का) निश्चेष्टी-निस्तब्धी जडी,-भू, व्यामुह् (दि. प. वे.)।
हकला, वि. (हिं. हकलाना) अव्यक्त-गद्गद,-वादिन्, स्खलितस्वर।
हकलाना, क्रि. अ. (अनु. हक) गद्गदवाचा वद् (भ्वा. प. से.), स्खलद्वाक्यैः-अस्फुटवर्णैः भाष् (भ्वा. आ. से.), स्खल् (भ्वा. प. से.)। सं. पुं., स्खलनं, गद्गद-अस्पष्ट-अव्यक्त,-भाषणम्।
हक़ारत, सं. स्त्री. (अ.), क्षुद्रता, तुच्छता, लघुता।
—की नजर से देखना, मु., अवमन् (दि. आ. अ.), उपेक्ष् (भ्वा. आ. से.)।
हक़ीक़त, सं. स्त्री. (अ.) तथ्यं, तत्त्वं, सत्यं २. तथ्यवार्त्ता, सत्यवृत्तान्तः।
—में, मु., तत्त्वतः, वस्तुतः।
हक़ीक़ी, वि. (अ.) सत्य, यथार्थ २. निज, आत्मीय, सोदर ३. ईश्वरीय, पारमार्थिक।
हक़ीम, सं. पुं. (अ.) आचार्यः, विद्वस् २. वैद्यः, चिकित्सकः।
नीम—, सं. पुं., मिथ्या-कु-अनुभवशून्य-, वैद्यः।
नीम हकीम खतरे जान, लोकोक्ति, ईषज्ज्ञानं भयंकरम्, अल्पबोधो भयावहः।
हक़ीमी, सं. स्त्री. (अ. हक़ीम) (यावनं) चिकित्साशास्त्र २. (यावनी) वैद्यवृत्तिः (स्त्री)।
हक़ीर, वि. (अ.) तुच्छ, क्षुद्र २. उपेक्ष्य।
हक़ूक़, सं. पुं. (अ., हक़ का बहु.) स्वत्वानि, अधिकाराः (दोनों बहु०)।
हकूमत, सं. स्त्री., दे. 'हुकूमत'।

हक्का-बक्का, वि. (अनु. हक बक.) विस्मयापन्न, आश्चर्यचकित, संभ्रान्त, जडी-आकुली-निश्चेष्टी,-भूत, निस्तब्ध।
—होना, क्रि. अ., दे., 'हकबकाना'।
हगना, क्रि. अ. (सं. हदनं) हद् (भ्वा. आ. अ.), पुरीषं-मलं उत्सृज् (तु. प. अ.), उच्चर् (भ्वा. प. से.)। सं. पुं., हदनं, मल-,उच्चारः, रेकः, पुरीषोत्सर्गः।
हगाना, क्रि. प्रे., व. 'हगना' के प्रे. रूप।
हचकोला, सं. पुं. (अनु. हचक) उद्घातः, उत्क्षेपः, उच्छलनं, संक्षोभः।
हज, सं. पुं. (अ.) मक्कायात्रा, हजः।
हज़ (–ज़्ज़), सं. पुं. (अ.) सुखं, आनन्दः, हर्षः २. लाभः, प्राप्ति (स्त्री.)।
हज़्म, सं. पुं. (अ.) जठरे पचनं, वि-परि-,पाकः, परिणामः (वि., (जठरे) पक्व, परिणत, जीर्ण २. सकपट अपहृत, छलेन आत्मसात्कृत।
—होना, क्रि. अ., दे. 'पचना'। मु., कपटापहृतवस्तुनः स्वपार्श्वे स्थितिः (स्त्री.)।
हज़रत, सं. पुं. (अ.) महात्मन्, महाजनः २. महाशय! महोदय! श्रीमन्! (संबोधनवचनं) ३. धूर्त्त, कितव (व्यंग्य)।
हजामत, सं. स्त्री. (अ.) केशादीनां वपनं, मुण्डनं, क्षौरं २. प्रवृद्धाः श्मश्रुकेशाः (बहु.)।
—बनना, क्रि. अ., मुण्ड्-वप्-क्षुर्-खुर् (कर्म.)। मु., वंच्-शठ्-विप्रलभ् (कर्म.)।
—बनाना, क्रि. स. मुण्ड् (भ्वा. प. से., चु.) क्षुरेण कृ (तु. प. से.)-छिद् (रु. प. अ.), क्षुर्-खुर् (तु. प. से.)। मु., धनं हृ (भ्वा. प. अ.) २. तड् (चु.)।
हज़ार, वि. तथा सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'सहस्र'। क्रि. वि., सहस्र-बहु-असंख्य,-वारम्।
हज़ारा, (फ़ा.) सहस्रदलं (पुष्पं) २. धारायंत्रं, दे. 'फ़ौवारा'।
हज़ारी, सं. पुं. (फ़ा.) सहस्रिन्, सहस्रयोधाध्यक्षः।
दस—, सं. पुं., दशसहस्रिन्।
पंच—, सं. पुं., पंचसहस्रिन्।
—बाजारी, सं. पुं., उच्चनीच-विविध-सधनाधन,-जनाः।
हज्जाम, सं. पुं. (अ.) नापितः, दे. 'नाई'।
हट, सं. स्त्री, दे. 'हठ'।
हटना, क्रि. अ. (सं. घट्टनं>) स्थानान्तरं या

(अ. प. अ.), सृ (भ्वा. प. अ.) २. अप,-या-इ (अ. प. अ.), अपसृ ३. कर्तव्यात् विमुखीभू, कर्तव्यं त्यज् (भ्वा. प. अ.) ४. दूरीभू, नेत्रागोचर (वि.) जन् (दि. आ. से.) ४. स्थगित (वि.) जन्, व्याक्षिप् (कर्म.) ५. नश् (दि. प. वे.), शम् (दि. प. से.) ६. विचलित (वि.) भू, प्रतिज्ञाभंगं कृ। सं. पुं. तथा भाव, स्थानान्तरगमनं, अप-,सरणं-सृतिः (स्त्री.), कर्तव्यत्यागः, व्याक्षेपः, विलंबः, शमनं, नाशः, (संकटादि का), विचलनं, प्रतिज्ञाभंगः।

हटनेवाला, सं. पुं., स्थानान्तरगामिन्,अपयातृ, अपसर्तृ, कर्तव्यविमुख, शमनोन्मुखः, प्रतिज्ञा-विरोधिन्।

पीछे न हटना, मु., पराङ्मुख (वि.) न जन्, सज्ज (त्रि.) स्था (भ्वा. प. अ.)।

हटवाना, क्रि. प्रे., व. 'हटाना' के प्रे. रूप।

हटाना, क्रि. स. (हिं. हटना) स्थानान्तरं नी (भ्वा. प. अ.), अप-, सृ (प्रे.) २. दूरीकृ, अपनी ३. पलाय् (प्रे.) ४. प्रतिज्ञाभंगं कृ(प्रे.)। सं. पुं. तथा भाव, स्थानान्तरे नयनं, अपसारणं, अपनयनं इ.।

हटा हुआ, वि., स्थानान्तरगत, अप,-यात-इत-गत-सृत, दूरीभूत, कर्तव्यविमुखीभूत, शांत, नष्ट, विचलित।

हट्ट, सं. पुं. (सं.) आपणः, निगमः, पण्य,-भूमिः (स्त्री.)-वीथिका, क्रयविक्रयस्थानं २. पण्यशाला, दे. 'दुकान'।

हट्टा-कट्टा, वि. (सं. हृष्ट+अनु.) हृष्ट-पुष्ट, मांसल, दृढांग, प्र-महा,-बल, महा-स्थूल,-कार्य।

हट्टी, सं. स्त्री. (सं.) क्षुद्र,-आपण-निगमः २. पण्यशाला (दे. 'हट्ट')।

हठ, सं. स्त्री. पुं. (सं.) बलात्कारः, रभसः २. दुराग्रहः, निर्बंधः, प्रतिनिवेशः ३. दृढ,-प्रतिज्ञा-संकल्पः ४. अवश्यंभाविता,अनिवार्यता।

—करना, क्रि. अ., दुराग्रहं कृ, प्रतिनिविष्ट (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से.)।

—धर्मी, सं. स्त्री. (सं. हठधर्मः) हठः, दुराग्रहः २. विचारसंकीर्णता, दे. 'कट्टरपन'। वि., दुराग्रहिन्, प्रतिनिविष्ट, निर्बंधपर।

—योग, सं. पुं. (सं.) योगभेदः, हठविद्या।

—योगी, सं. पुं. (सं.-गिन्) हठयोगाभ्यासिन्।

हठात्, अव्य. (सं.) दुराग्रहेण, सनिर्बंधं २. बलात्, सरभसं ३. अवश्यम्।

हठी, वि. (सं. हठिन्) दे. 'हठीला'।

हठीला, वि. (सं. हठः>) दुराग्रहिन्, प्रति-निविष्ट, निर्बंधपर २. दृढप्रतिज्ञ, सत्यसंकल्प।

हड़, सं. स्त्री. (सं. हरीतकी) अभया, अमृता, पथ्या, श्रेयसी, शिवा, रसायनफला, प्राणदा, देवी, दिव्या।

हड़क, सं. स्त्री. (अनु.) उत्कटेच्छा, तीव्राभि-लाषः।

हड़काया, वि. (देश. हड़काना) उन्मत्त, वातुल (प्रायः कुत्तों के लिए) २. अत्युत्सुक, अतीच्छुक।

हड़गीला, सं. पुं. (हिं. हाड़+गिलना?) *हड्डगिलः, खगभेदः।

हड़ताल, सं. स्त्री. (सं. हट्टः+तालः) *हट्ट-तालं, (विरोधादिप्रकाशनार्थं) संभूय व्यवसाय-कर्म,-त्यागः।

—करना, क्रि. अ., संभूय व्यवसाय त्यज् (भ्वा. प. अ.), हट्टतालं कृ।

हड़प, वि. (अनु.) निगीर्ण, जठरक्षिप्त, ग्रसित २. कपटापहृत।

—करना, मु., दे. 'हड़पना'(२)।

हड़पना, क्रि. स. (अनु. हड़प) आस्ये निक्षिप् (तु. प. अ.), निगृ (तु. प. से.), ग्रस् (भ्वा. आ. से.), सत्वरं भक्ष् (चु.) २. कप-टेन अपहृ (भ्वा. प. अ.), अन्यायेन आदा (जु. आ. अ.)।

हड़बड़ाना, क्रि. अ. (अनु. हड़+बड़) त्वर् (भ्वा. आ. से.), ससंभ्रमं विधा (जु.उ.अ.), आतुर, आकुल (वि.) जन् (दि. आ. से.)।

हड़बड़िया, वि. (हिं. हड़बड़ी) त्वरित-तूर्ण-क्षिप्र-आशु,-कारिन्, त्वराकुल।

हड़बड़ी, सं. स्त्री. (अनु.) त्वरा, तूर्णिः (स्त्री.), रभसः-सं, क्षिप्रता, शीघ्रता, २. संभ्रमः, त्वरा,-आतुरता-आकुलता।

हड़हड़ाना, क्रि. स. (अनु. हड़+हड़) त्वर् (प्रे.), त्वरितुं प्रवृत् (प्रे.)। क्रि. अ., कम्-वेप् (भ्वा. आ. से.) २. सशब्दं चल् (भ्वा. प. से.)।

हड्डा, सं. पुं. (सं. हडाचिका) वरटा, दे. 'भिड़'।

हड्डी, सं. स्त्री. (सं. हड्डं) अस्थि (न.) आदिकं, कुल्यं. कीकसं, मेदोभवं, मज्जाकरं,

विड्डं, कर्करः, श्वदयितं (प्रायः बहु.) २. वंशः, कुलम् ।

हड्डियाँ गढ़ना या तोड़ना, मु., परुषं तड् (चु.)।

हड्डियाँ निकल आना, मु., अतिकृश-अतिक्षीण-अस्थिशेष (वि.) जन् (दि. आ. से.)।

हत, वि. (सं.) प्रमापित, निषूदित, नि-, हिंसित, निहत, क्षणित, निर्वापित, विशसित, मारित, प्रति-,घातित, प्रमथित, आलंभित, पिंजित, वधित, व्यापादित, पंचत्वं-परलोक,-गमित-नीत प्रेषित २. ताडित, प्रहृत, आहत, ३. रहित, विहीन (उ. श्रीहत) ४. नाशित, नष्ट, ध्वस्त, ध्वंसित ५. पीडित, ग्रस्त ६. निकृष्ट, उपयोगानर्ह ७. गुणित (गणित.) ८. व्यथित, अर्दित ।

—**प्रभ**, वि. (सं.) निष्प्रभ, कान्तिहीन ।

—**बुद्धि**, वि. (सं.) मूर्ख, निर्बुद्धि ।

—**भागी**, वि. (सं.-गिन्) हत-मंद,-भाग्य, दुर्दैव ।

—**वीर्य**, वि. (सं.) निर्बल, अशक्त ।

—**हृदय**, वि. (सं.) हताश, भग्न,-चित्त-हृदय-उत्साह ।

हतक, सं. स्त्री. (अ. हतक = फाड़ना) अपमानः, निरादरः. तिरस्कारः, अवज्ञा, मान-हानिः (स्त्री.)।

—**इज़्ज़ती**, सं. स्त्री. (अ. हतक+इज़्ज़त>) मानहानिः (स्त्री.), अवधीरणा ।

—**करना**, क्रि. स. (संमुखं-खे) अप-अव,-मन् (प्रे.), अवज्ञा (क्र्. प. अ.), तिरस्कृ ।

हताश, वि. (सं.) निराश, त्यक्ताश, आशा,-अतीत-हीन-रहित, निरपेक्ष ।

हताहत, वि. (सं.) मृतक्षत, प्रेतव्रणित, क्षत-मृत, व्रणितप्रेत ।

हतोत्साह, वि. (सं.) निर्-भग्न उत्साह, मनो-हत, भग्नोद्यम, विषण्ण, अवसन्न, खिन्न, प्रति,-बद्ध-हत, स्खलितधैर्य ।

हत्था, सं. पुं. } (सं. हस्तः>) मुष्टिः (स्त्री.),
हत्थी, सं.स्त्री. } वारंगः, दंडः ।

हत्या, सं. स्त्री. (सं.) हननं, वधः, घातः, सूदनं, हिंसनं, हिंसा, मारणम् ।

—**करना**, क्रि. स., हन् (अ. प. अ., तथा प्रे. घातयति), व्यापद् (प्रे.), दे. 'मारना' ।

हत्यारा, सं. पुं. (सं. हत्याकारः) घातकः, मारकः, वधकारिन्, हंतृ, हनः, प्राणहरः ।

हत्यारी, सं. स्त्री. (हिं. हत्यारा) प्राण,-हरी-हारिणी, वधकारिणी, घातिका २. हत्या,-पापं-अपराधः-दोषः-पातकम् ।

हथ, सं. पुं. (सं. हस्तः) करः, पाणिः ।

—**कंडा**, सं. पुं. (सं. हस्तकांडः-डं>) हस्त-लाघवं, करकौशलं, इन्द्रजालं २. गुप्तचेष्टा, प्रच्छन्न,-प्रयोगः-प्रयुक्तिः (स्त्री.), प्रतारणा, छलः-लम् ।

—**कड़ी**, सं. स्त्री. (सं. हस्तकटकः-कं>) हस्त,-पाशः-निगडः, करबंधनी ।

—**कड़ी लगाना**, क्रि. स., पाणिपाशेन बंध (क्र्. प. अ.)-संयम् (प्रे.)।

—**छुट**, वि., ताडनशील ।

—**लेना**, सं. पुं., पाणि-कर,-पीडनं, पाणि-ग्रहणम् ।

—**सार**, सं. स्त्री., गज-हस्ति,-शाला, दे. 'फ़ील-ख़ाना' ।

हथनाल, सं. स्त्री. (हिं.) *हस्तिनालम्, गज-नेयशतघ्नी ।

हथ(थि) नी, सं. स्त्री. (सं. हस्तिनी) करिणी, करेणुः-णूः (दोनों स्त्री.), इभी, मातंगी, गज-योषित्, क-,रेणुका, व(वा)सा, कचा, कटंभरा ।

हथिया, सं. पुं. (सं. हस्ता) हस्तः, त्रयोदशं नक्षत्रम् ।

हथियाना, क्रि. स. (हिं. हाथ) बलात् ग्रह् (क्र्. प. से.)-धृ (चु.)-आदा (जु. आ. अ.) २. चुर् (चु.), मुष् (क्र्. प. से.) ३. कपटेन स्वायत्तीकृ ।

हथियार, सं. पुं. (हिं. हथियाना) अस्त्रं, शस्त्रं, आयुधं, हेतिः (पुं. स्त्री.), हत्नुः २. उपकरणं, यंत्रं, दे. 'औज़ार' ।

—**बंद**, वि., सशस्त्र, सायुध, सन्नद्ध, सज्ज ।

—**बाँधना**, मु., शस्त्राण्णि धृ (चु.), सन्नह् (दि. प. अ.), सज्जीभू ।

हथेली, सं. स्त्री. (सं. हस्ततलं) करतलः, तलः-लं, प्रतलः, तालः, प्रपाणिः, प्रहस्तः, फर्फरीकः ।

—खुजलाना, मु., वित्तलाभः संभाव्यते ।
—पर सिर रखना, मु., जीवनमोहं त्यज् (भ्वा. प. अ.), प्राणान् अवगण् (चु.) ।
—में आना, मु., स्वाधिकारे आया (अ.प.अ.) ।
हथौड़ा, सं.पुं. (हिं. हाथ) महा,-घनः-विघनः ।
हथौड़ी, सं. स्त्री. (हिं. हथौड़ा) वि-,घनः, द्रुघणः, अयोघनः ।
हथ्यार, सं. पुं., दे. 'हथियार' ।
हद, सं. स्त्री. (अ.) सीमा, दे. ।
—करना, मु., सीमां-मर्य्यादां अतिक्रम् (भ्वा. प. से.)-उल्लंघ (भ्वा. आ. से.) ।
—से ज्यादा, मु., असीम, निःसीम, अमित, अपरिमित ।
हनन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'हत्या' २. ताडनं, प्रहरणं ३. गुणनं, गुणाकारः, पूरणं (गणित) ।
हननीय, वि. (सं.) हन्तव्य, वधार्ह, शीर्षच्छेद्य, वध्य ।
हनु, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) हनूः (स्त्री.), कपोलद्वय-परमुखभागः २. चि(च-चु)बुकम् ।
—की जकड़ाहट, सं. स्त्री., हनुग्रहः ।
हनुमान, सं. पुं. (सं. हनुमत्) मारुतिः, पवनपुत्रः, वायुसुतः, आंजनः-नेयः, कपीन्द्रः ।
हप, सं. पुं. (अनु.) त्वरितनिगरणात्मको हपिति शब्दः ।
—कर जाना, मु., सत्वरं निगॄ (तु. प. से.) ।
हफ़्ता, सं. पुं. (फ़ा.) सप्ताहः, दे. ।
हबर दबर, क्रि. वि. (अनु. हड़ बड़) शीघ्रं, सत्वरं, ससंभ्रमम् ।
हबशी, सं. पुं. (अ.) हब्शीयः, हब्शदेशवासिन् २. कृष्णांगः, कुरूपः ।
हब्बा डब्बा, सं. पुं. (हिं. हाँफ़+अनु. डब्बा) शिशूनां श्वासरोगभेदः, श्वसनकः ।
हब्स, सं. पुं. (अ.) कारावासः ।
—बेजा, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) अन्याय्यकारावासः ।
हम[1], सर्व. (सं. अहम्>) वयम् (बहु.) । सं. पुं., अहंकारः ।
हम[2], अव्य. (फ़ा.) सह, साकं २. सम, तुल्य ।
—असर, सं. पुं. (फ़ा.+अ.) एक-सम,-कालीन-कालं, सह,-वर्तिन्-जीविन् ।
—जिंस, सं. पुं. (फ़ा.) सजात-तीय, सवर्गीय ।
—जोली, सं. पुं. (फ़ा.+हिं.) सहचरः, सखि (पुं.) ।
—दर्द, सं. पुं. (फ़ा.) समदुःखः, समवेदनः, सहानुभूति,-मत्-युक्तः, सानुकंपः ।
—दर्दी, सं.स्त्री., सहानुभूतिः (स्त्री.), अनुकंपा, समवेदना ।
—निवाला, सं. पुं. (फ़ा.) सह,-भोक्तृ (पुं.) भोजकः ।
—प्याला, सं. पुं. (फ़ा.) सहपायिन् ।
—राह, अव्य. (फ़ा.) सह, साकम् ।
—राही, सं. पुं. (फ़ा.) सह,-चारिन्-गामिन्, मित्रम् ।
—वतन, सं. पुं. (फ़ा.+अ.) सम-एक,-देशीयः, देशभ्रातृ ।
—वार, वि. (फ़ा.) सम, सम,-तल-रेख, सपाट ।
—सबक़, सं. पुं. (फ़ा.) सहपाठिन् ।
—सर, सं. पुं. (फ़ा.) सम,-गुणः-बलः-पदः ।
—सरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) समता, समानता ।
—साया, सं. पुं. (फ़ा.) प्रति,-वासिन्-वेशिन्-वेशः ।
हमल, सं. पुं. (अ.) गर्भः, दे. ।
हमला, सं. पुं. (अ.) युद्धयात्रा, यानं २. अवस्कंदः, आक्रमः, आक्रमणं दे. ३. प्रहारः ४. क्रूरव्यंग्यम् ।
—आवर, (हमलावर) वि. पुं., आक्रामक, आक्रमण,-कारिन्-कर्तृ-कारः, अवस्कन्दकृत ।
हमाक़त, सं. स्त्री. (अ.) मूढ़ता, अज्ञता, मूर्खता, मूर्खत्वं, मौर्ख्यम् ।
हमाम, सं. पुं. (अ. हम्माम) स्नानागारम् ।
हमारा, सर्व. (हिं. हम) अस्माकं, अस्मदीयः-या-यं (पुं. स्त्री. न.) ।
हमाहमी, सं. स्त्री. (हिं. हम) स्वार्थः, स्वार्थपरता २. अहमग्रिका, अहमहमिका ।
हमें, सर्व. (हिं. हम) अस्मान्, नः २. अस्मभ्यं, नः ।
हमेल, सं. स्त्री. (अ. हमायल) *टंक-मुद्रा,-माला ।
हमेशा, अव्य. (फ़ा.) सदा, नित्यम् ।
हय, सं. पुं. (सं.) अश्वः, घोटकः (हया स्त्री.) ।
—ग्रीव, सं. पुं. (सं.) विष्णोः अवतारविशेषः २. वेदहारी राक्षसविशेषः ।
हया, सं. स्त्री. (अ.) लज्जा, त्रपा ।

—दार, वि. (अ.+फ़ा.) लज्जाशील ।
बे—, वि. (फ़ा.+अ.) निर्लज्ज ।
बेहयाई, सं. स्त्री., निर्लज्जता ।
हयात, सं. स्त्री. (अ.) जीवनं, प्राणधारणम् ।
हर[१], सं. पुं. (सं.) शिवः, महादेवः २. अग्निः ३. भाजकः, छेदः, हारः (गणित.) । वि. (सं.) हारक, मोषक २. नाशक, अंतक ३. मारक, घातक ४. वाहक, प्रापक ।
—गिरि, सं. पुं. (सं.) कैलासः ।
—द्वार, सं. पुं., दे. 'हरिद्वार' ।
—भजन, सं. पुं. (सं. न.) हरजपः, ईश-भक्तिः (स्त्री.) ।
हर[२], वि. (फ़ा.) प्रति-,अनु-,सर्व, दे. 'प्रति' ।
—एक, वि. तथा क्रि. वि., दे. 'प्रत्येक' ।
—कोई, सर्व., सर्वः, सर्वे (बहु.) सर्वजनः ।
—गिज़, अव्य. (फ़ा.) कदापि, कदाचिदपि ।
—चंद, अव्य. (फ़ा.) बहु-अनेक,-वारं २. यद्यपि ।
—जाई, सं. पुं. (फ़ा.) गेह-गृह,-शून्य-हीन २. स्वेच्छाचारिन्, यथेच्छविहारिन् ।
—दम, क्रि. वि., प्रति,-क्षणं-पलं, सदा ।
—बार, क्रि. वि., प्रति,-वारं-अवसरम् ।
—रोज़, क्रि. वि., प्रति-अनु,-दिनं-दिवसम् ।
—वक्त, क्रि. वि., सदा, सर्वदा, नित्यम् ।
—हाल में, मु., सर्वदशासु, अखिलावस्थासु ।
हरकत, सं. स्त्री. (अ.) गतिः (स्त्री.), चलनं, स्पंदः २. क्रिया, चेष्टा, व्यापारः ३. कुकृत्यं, कुचेष्टा ।
—करना, क्रि. अ., चल् (भ्वा. प. से.), स्पंद्-चेष्ट् (भ्वा. आ. से.), सृ (भ्वा. प. अ.) २. कुचेष्टां कृ, कुत्सितं चेष्ट् ।
हरकारा, सं. पुं. (फ़ा.) संदेश-वार्ता,-हरः २. पत्रवाहकः, दे. 'डाकिया' ।
हरज-जा, सं. पुं., दे. 'हर्ज' २. दे. 'हरजाना' ।
हरजाना, सं. पुं. (फ़ा.) हानि-क्षति,-पूरणं-पूर्तिः-निष्कृतिः (दोनों स्त्री.) २. क्षतिपूरक-द्रव्यम् ।
—देना, क्रि. स., निष्कृतिं दा, क्षतिं पूर् (चु.) ।
हरण, सं.पुं. (सं. न.) अप,-हरणं-हारः,सहसा,-आकलनं-आच्छेदः, आकस्मिक,-ग्रहणं-धारणं, चोरणं, मोषणं २. नाशनं, ध्वंसनं, अपसारणं ३. वहनं, नयनं, प्रापणम् ।
हरताल, सं. स्त्री. (सं. हरितालं) पिंजरं, पिंगं, पीतकं, नट,-मंडनं-भूषणं, तालं-लकं, गौरी-ललितं, वर्णकं, रोमहृत् (न.) चित्रगंधं, गोदंतम् ।
—लगाना, मु., नश् (प्रे.) ।
हरन-ना, सं. पुं., दे. 'हिरन' ।
हरना, क्रि. स. (सं. हरणं) अप-,हृ (भ्वा. प. अ.), चुर्-स्तेन् (चु.), मुष् (क्र्. प. से.), २. आच्छिद् (रु. प. अ.), आक्रम्य ग्रह् (क्र्. प. से.) धृ (चु.) आकल् (चु.), लुंट्-ठ् (भ्वा. प. से., चु.) ३. दूरीकृ, अपसृ (प्रे.) ४. नश्-ध्वंस् (प्रे.) ५. नी-वह् (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं. तथा भाव, दे. 'हरण' सं. पुं. (१-३) ।
हरनी, सं. स्त्री., दे. 'हिरनी' ।
हरने योग्य, वि. अप-,हरणीय-हर्तव्य-हार्य, चोरयितव्य, मोषणीय, आच्छेदनीय, लुंठनीय, अपसार्य, नाशयितव्य, नेय, वोढव्य ।
हरने वाला, सं. पुं., अप-,हारकः-हर्तृ, चौरः, स्तेनः, दस्युः, लुंटाकः, अपसारकः, नाशकः, नेतृ, वाहकः ।
हरनौटा, सं. पुं., दे. 'हिरनौट' ।
हरफ़, सं. पुं. (अ.) अक्षरं, वर्णः ।
हरफारेवड़ी, सं. स्त्री. (सं. हरिपर्वरी) लवली, सुगन्धमूला, कोमलवल्कला ।
हरबा, सं. पुं. (अ.) आयुधं, अस्त्रं, शस्त्रं, हेतिः (पुं. स्त्री.), हत्नुः ।
हरबोंग, वि. (सं. हलं+देश. बोंग = लठ) अशिष्ट, असभ्य, ग्राम्य, उद्धत, वियात २. मूर्ख, निर्बुद्धिः, जड, मूढ । सं.पुं., कुशासनं, अनीतिः (स्त्री.), विप्लवः ।
हरम, सं. पुं. (अ.) अंतःपुरं, शुद्धांतः, अवरोधः, पराविद्धः । सं. स्त्री. (अ.) पत्नी, भार्या २. दासी ३. उपपत्नी ।
—सरा, } सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) दे.
—सराय, } 'हरम' (सं. पुं.) ।
हरामज़दगी, सं. स्त्री. (फ़ा. हरामजादह्) दौरात्म्यं, दौर्जन्यं, दुष्टता, खलता, कुचेष्टा, पापम् ।

हरसिंगार, सं. पुं. (सं. हारशृङ्गारः) पारिजातः-तकः, प्राजक्तः, रागपुष्पी, खरपत्रकः ।

हरा, वि. (सं. हरित) हरित, प(पा)लाश २. प्रसन्न, प्रहृष्ट, प्रफुल्ल ३. अभि-,नव, प्रत्यग्र, ४. आम, अपक्व, अपरिणत ५. (व्रणादि) अविरोपित, अशुष्क । सं. पुं., हरितः, पलाशहरिद्,-वर्णः ।

—पन, सं. पुं., हरितत्वं, पलाशत्वं २. अपरिणतिः (स्त्री.), अपक्वता ३. नवता, प्रत्यग्रता ।

—बाग़, मु., आपातरमणीया वार्ता ।

—भरा, मु., सरस, शोषरहित, हरिततरुलताभिः आच्छादित (वि.) ।

हराना, क्रि. स. (हिं. हारना) अभि-परि-परा,-भू (भ्वा. प. से.), जि (भ्वा. प. अ.), वि-परा-जि (भ्वा. आ. अ.), दम् (प्रे.) २. (शत्रुं) विफली-मोघी कृ ३. क्लम्-श्रम्-खिद्-आयस् (सब प्रे.) ।

प्राण—, मु., मृ (प्रे.), हन् (अ. प. अ.) ।

मन—, मु., मनः-चेतः हृ (भ्वा. प. अ.), मुह् (प्रे.) ।

हराम, वि. (अ.) अधर्म्य, अन्याय्य, अवैध, न्याय-धर्म-नियम-विधि,-विरुद्ध, निषिद्ध, दूषित । सं. पुं., शूकरः २. अधर्मः, पापं, दोषः ३. व्यभिचारः, जारकर्मन् (न.) ।

—कार, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) व्यभिचारिन्, औपस्थिकः २. पापः, पापाचारिन् ।

—कारी, सं. स्त्री., पापं, अधर्मः २. व्यभिचारः, जारकर्मन् (न.) ।

—ख़ोर, सं. पुं. (अ. +फ़ा.) पापाजीविन्, पापभक्षिन् २. परपिंडादः, परान्नपुष्टः ३. अलसः, उद्योगविमुखः ।

—ख़ोरी, सं. स्त्री., पाप,-आजीवः-आजीवनं २. परान्नभोजनं ३. आलस्यं, उद्योगविमुखता ।

—ज़ादा, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) जार,-ज-जात-उत्पन्न, विजात (जारजा स्त्री.) २. दुष्ट, खल, पापिन् (गाली) ।

हरामी, वि., दे. 'हरामज़ादा' (१-२) ।

हरारत, सं. स्त्री. (अ.) तापः, दाहः, उष्मन् २. मंद-ईषज् ,-ज्वरः, ज्वरांशः ।

हरावल, सं. पुं. (तु.) सेना,-मुखं-अग्रं, अग्रानीकं, नासीरचराः (बहु.) ।

हरास, सं. पुं. (फ़ा. हिरास) भयं, त्रासः २. आशंका ३. विषादः ४. नैराश्यं, निराशता ।

हरा हुआ, वि., अप-,हृत, चोरित, स्तेनित, मुषित, मुष्ट, २. आच्छिन्न, सहसा आकलित-गृहीत-धृत ३. दूरीकृत, अपसारित ४. नाशित ध्वंसित ५. नीत, ऊढ ।

हरि, सं. पुं. (सं.) श्री,-करः-धरः-निवासः । पतिः-वत्सः, विष्णुः दे. २. इन्द्रः ३. अश्वः ४. कपिः ५. सिंहः ६. सूर्यः ७. चन्द्रः ८. मंडूकः ९. सर्पः १०. अग्निः ११. मयूरः १२. श्रीकृष्णः १३. श्रीरामः १४. शिवः १५. यमः । वि. (सं.) (१-२) पिंगल-हरित,-वर्ण ।

—कथा, सं. स्त्री. (सं.) भगवच्चरितवर्णनम् ।

—कीर्तन, सं. पुं. (सं. न.) भगवद्गुणगानम् ।

—गीतिका, सं. स्त्री. (सं.) हरिगीता, छंदोभेदः ।

—चंदन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) तैलपर्णिकं, गोशीर्षं (चंदनभेदः) २. स्वर्गस्थवृक्षविशेषः ३. पद्मपरागः ४. कुंकुमं ५. चन्द्रिका ।

—चाप, सं. पुं. (सं.) इन्द्र-हरि,-धनुस् (न.) ।

—जन, सं. पुं. (सं.) भगवद्भक्तः, ईशसेवकः ।

—ताल, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'हरताल' ।

—द्वार, सं. पुं. (सं. न.) प्रख्याततीर्थविशेषः, गंगाद्वारम् ।

—धाम, सं. पुं. [सं.—मन् (न.)] विष्णुलोकः, वैकुंठं, हरि,-पदं-पुरम् ।

—भक्त, सं. पुं. (दे.) 'हरिजन' ।

—भक्ति, सं. स्त्री. (सं.) हरि,-भजनं-प्रेमन् (पुं. न.)-सेवनम् ।

—वंश, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णसंतानः २. पुराणग्रंथविशेषः ।

—वाहन, सं. पुं. (सं.) गरुडः २. सूर्यः ३. इन्द्रः ।

हरिण, सं. पुं. (सं.) मृगः, कुरंगः ।

—कलंक, सं. पुं. (सं.) मृगांकः, चन्द्रः ।

—नयना, सं. स्त्री., मृग-हरिण-,नयनी-नेत्रा-नेत्री-अक्षी ।

हरिणी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'हिरनी' ।

हरित, वि. (सं.) हरित, प(पा)लाश, हरित(द्)-वर्ण २. कपिल, पिंग, पिंगल, पिशंग ।

हरिद्रा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'हल्दी' ।

हरिन, सं. पुं. (सं. हरिणः) दे. 'हिरन'।
हरियाला, वि. (हिं. हरा) हरित, हरिद्वर्ण २. शाद्वल।
हरियाली, सं. स्त्री. (हिं. हरा) हरितत्व,-विस्तारः-प्रसारः, हरीतिमन् (पुं.) २. तरु-लता,-समूहः-विस्तारः, शादः, शाद्वलता।
हरिश्चन्द्र, सं. पुं. (सं.) त्रिशंकुजः, त्रेतायुगे नृपविशेषः।
हरि(री)स, सं. स्त्री. (सं. हलीषा) हल-लांगल,-दंडः।
हरीतकी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'हड़'।
हरीफ़, सं. पुं. (अ.) शत्रुः २. प्रति,-द्वन्द्विन्-स्पर्द्धिन्।
हरीश, सं. पुं. (सं.) वानरेन्द्रः २. सुग्रीवः ३. हनुमत्।
हर्ज, सं. पुं. (अ.) विघ्नः, अन्तरायः २. हानिः-क्षतिः (स्त्री.)।
हर्त्ता, सं. पुं. (सं. हर्तृ) दे. 'हरनेवाला'।
हर्फ़, सं. पुं., दे. 'हरफ़'।
हर्म्य, सं. पुं. (सं. न.) प्रासादः, राजभवनं २. विशालभवनं, धनिगृहं ३. न(ना)रकः।
हर्रा, सं. पुं., दे. 'हड़'।
हर्ष, सं. पुं. (सं.) पुलकः, रोमांचः दे.। २. आनंदः, प्र-,मोदः, आह्लादः, उल्लासः।
—विषाद, सं. पुं. (सं.-दौ द्वि.) मोदखेदौ, आनंदविषादौ।
हर्षित, वि. (सं.) हृष्ट, हृषित, प्रीत, प्र-, मुदित, प्रसन्न, प्रफुल्ल, आनंदित।
हल्, सं. पुं. (सं.) शुद्ध-स्वरहीन,-व्यंजनं, (क् से ह् तक अक्षर)।
हलंत, वि. (सं.) शुद्धव्यंजनान्त (शब्द)। सं. पुं., दे. 'हल्'।
हल[1], सं. पुं. (सं. न.) लांगलं, हालः, हलिः, गोदारणं, सीरः, सीरकः।
—चलाना या जोतना, क्रि. स., हल् (भ्वा. प. से.), कृष् (भ्वा. प. अ., तु. उ. अ.)।
—जीवी, सं. पुं. (सं.-विन्) हालिकः, लांगलिन्, कृषाणः, कृषिकः।
—धर, सं. पुं. (सं.) हल,- पाणिः-भृत्, बलदेवः।
—मुख, सं. पुं. (सं. न.) निरीषः-षं, फालः-लम्।
—वाहा, सं. पुं. (सं-हः) हलग्राहिन्, परहल-चालकः।
—वाही, सं. स्त्री. (हिं. हलवाहा) कृषिः (स्त्री), कर्षणम्।
हल[2], सं. पुं. (अ.) विवरणं, व्याख्यानं, साधनं २. निर्णयः, समाधानं, समाधिः ३. गणनं, संख्यानं ४. द्रावणं, विलयनम्।
—करना, क्रि. स., विवृ (स्वा. उ. से.), व्याख्या (अ. प. अ.), विशदयति (ना. धा.), स्पष्टीकृ, उत्तरं दा २. विद्रु-विली (प्रे.), द्रवीकृ।
हलक़, सं. पुं. (अ.) कंठः, गलः, निगरणः।
हलक़ा[1], सं. पुं. (अ.) वृत्तं, वर्तुलं, मंडलं २. परिधिः ३. समूहः, निकरः ४. ग्रामादि-समूहः ५. चक्रवलयः-यम्।
हलका[2], वि. (सं. लघुक) लघु, अल्प-लघु-स्तोक,-भार-तोल, सु-सुख,-वाह्य २. विरल, घनता-रहित ३. गाध ४. अल्प, स्तोक ५. अल्प,-मूल्य-अर्घ ६. मंद, सह्य ७. तुच्छ, नीच, क्षुद्र ८. सुकर, सुसाध्य ९. निश्चित, कृतकार्य १०. सूक्ष्म, तनु ११. निकृष्ट, अपकृष्ट।
—पन, सं. पुं., लघुता, लाघवं, अल्पभारता, सुखवाह्यता २. क्षुद्रत्वं, तुच्छता ३. अव,-मानः-हेलना, प्रतिष्ठाऽभावः।
—करना, मु., लघयति (ना. धा.), लघूकृ २. अवगण् (चु.) अवमन् (प्रे.), तृणाय मन् (दि. आ. अ.)।
हलचल, (हिं हिलना+चलना) संक्षोभः, संरंभः, संभ्रमः, संकुलं, कोलाहलः २. उपद्रवः, विप्लवः, संमर्दः ३. कंपः, स्पंदः।
—मचना, क्रि.अ., संक्षोभः संजन् (दि.आ.से.)-प्रवृत् (भ्वा. आ. से.)।
हलदिया, सं. पुं. (हिं. हलदी) पाण्डु,-रोगः-आमयः, पाण्डुकः, कामला।
हलदी, सं. स्त्री. (सं. हलद्दी) हरिद्रा, पीतिका, पीता, कांचनी, वर्णवती, पिंजा, वर-,वर्णिनी, रंजनी, भद्रा, मंगला, शोभा।
—उठना या चढ़ना, मु., विवाहात् प्राक्, वर-वध्वोः तैलहरिद्राभ्यंजनम्।
—लगा के बैठना, मु., निरुधम एकत्र स्था (भ्वा. प. अ.) २. दर्पावलिप्त (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से.)।

—लगी न फिटकरी, मु., व्ययं विनैव।
हलफ़, सं. पुं. (अ.) शपथः, दे. 'सौगंद'।
—नामा, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) शपथपत्रम्।
हलवा, सं. पुं. (अ.) काटाहः, संयावः, मोहनभोगः।
—सोहन, सं. पुं., शोभन,-संयावः-काटाहः-मोहनभोगः।
हलवाइ(य)न, सं. स्त्री. (हिं. हलवाई) कांदविकी, मिष्टान्नविक्रेत्री (खांडिकी, खांडविकी) २. कांदविक-मिष्टान्नविक्रेतृ-खांडिक-,पत्नी।
हलवाई, सं. पुं. (अ. हलवा) खांडिकः, खांडविकः, कांदविकः, मिष्टान्नविक्रेतृ।
हलाक, वि. (अ.) हत, मारित।
—करना, मु., हन् (अ. प. अ.)।
हलाकत, सं. स्त्री. (अ.) वधः, हत्या २. मृत्युः ३. विनाशः।
हलाल, वि. (अ.) धर्म्य, न्याय्य, वैध, शास्त्र-विधि-धर्म,-अनुकूल-विहित, उचित। सं. पुं. (अ.) भक्ष्य,-पशुः-जंतुः (इस्लाम)।
—ख़ोर, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) धर्म-पुण्य,-आजीविन् २. खलपूः (पुं.), संमार्जकः, दे. 'भंगी'।
—ख़ोरी, सं. स्त्री., धर्म-पुण्य,-आजीवः-आजीवनम्।
—करना, मु., न्यायेन-धर्मेण व्यवहृ(भ्वा.प.अ.) २. शनैः शनैः हन् (अ. प. अ.) (इस्लाम)।
—का, मु., शास्त्रानुकूल, वैध, धर्म्य।
—की कमाई, मु., पुण्यलक्ष्मीः, न्यायोपार्जित-धनम्।
—हलाहल, सं. पुं. (सं. न.) हाल(ला)हलं, हाहलं, समुद्रमंथनजो विषविशेषः २. कालकूटं, महाविषं ३. गरलः-लं, विषं दे.।
हली, सं. पुं. (सं.-लिन्) बलदेवः २. कृषाणः।
हलीम, वि. (अ.) नम्र, विनीत २. शान्त, क्षमान्वित।
हलीमी, सं. स्त्री. (अ. हलीम) नम्रता, विनयः २. शान्तिः (स्त्री.), प्रसादः।
हलुका, वि., दे. 'हलका'।
हल्दी, सं. स्त्री., दे. 'हलदी'।
हल्ला, सं. पुं. (अनु.) कोलाहलः, कलकलः, तुमुलं, उत्क्रोशः, विर(रा)वः २. आक्रमः, अवस्कन्दः।
—करना, क्रि, अ. कोलाहलं कृ, उत्क्रुश् (भ्वा. प. अ.) २. आक्रम् (भ्वा. प. से., भ्वा. आ. अ.)।
हवन, सं. पुं. (सं. न.) होमः, होत्रं, यज्ञः दे. २. अग्निः ३. हवनी, होमकुंडम्।
—करना, क्रि. स., हु (जु. उ. अ.), यज् (भ्वा. उ. अ.), होमकुंडे हविः क्षिप् (तु. प. अ.)।
—कुंड,सं.पुं. (सं. न.) हवनी-यज्ञ-होम,-कुंडम्।
हवलदार, सं. पुं. (अ. हवालः+फ़ा. दार) *हवालदारः, सेनाधिकारिभेदः।
हवस, सं. स्त्री. (फ़ा.) कामना, लालसा २. तृष्णा, दे.।
हवा, सं. स्त्री. (अ.) मरुत्, पवनः, वायुः दे.। २. भूतः, प्रेतः ३. ख्यातिः, प्रसिद्धिः (स्त्री.) ४. विश्वासः, प्रत्ययः ५. उत्कटेच्छा।
—ख़ोरी, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा) पर्यटनं, भ्रमणं, वायुसेवनम्।
—चक्की, सं. स्त्री. (अ.+हिं.) *वायुचक्री, पवनपेषणी।
—दार, वि. (अ.+फ़ा.) प्रवात, सुवात, पवनपूर्ण।
—उखड़ना, मु.,यशः-प्रत्ययः नश् (दि.प.वे.)।
—करना, मु., वीज् (चु.)।
—खाना, मु., पर्यट् (भ्वा. प. से.), वायुं सेव् (भ्वा. आ. से.)।
—बँधना, मु., ख्यातिः कीर्तिःजन्(दि.आ.से.)।
—बाँधना, मु., विकत्थ् (भ्वा. आ. से.), आत्मानं श्लाघ् (भ्वा. आ. से.)।
—से बातें करना, मु., अतिवेगेन धाव् (भ्वा. प. से.)।
—से लड़ना, मु., नित्यं कलहोद्यत (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से.)।
—हो जाना, मु., सत्वरं पलाय् (भ्वा. आ. से.) २. तिरोभू, विली (कर्म.)।
हवाई, वि. (अ. हवा) वायव(-वी स्त्री.), वायव्य-वायवीय (-या स्त्री.) २. नभःस्थ, गगन,-गामिन्-चारिन् ३. निर्मूल, निराधार। सं. स्त्री., *वायवी, अग्निक्रीडनकभेदः।
—अड्डा, सं. पुं., विमान,-वायुयान,-स्थानं-निवेशः।

—क़िला, महल, सं. पुं., खपुष्पं, गगन-कुसुमम्।
—चक्की, सं. स्त्री., दे. 'हवाचक्की'।
—जहाज़, सं. पुं. (हिं.+अ.) वायु-व्योम-यानं, विमानः-नं, पवनपोतः।
हवाल, सं. पुं. (अ. अहवाल) दशा, अवस्था २. परिणामः, गतिः (स्त्री.) ३.वृत्तं, समाचारः।
हवाला, सं. पुं. (अ.) उल्लेखः, निर्देशः, संकेतः २. उदाहरणं, दृष्टान्तः ३. रक्षा, रक्षणं, अधिकारः।
—देना, क्रि. स., निर्दिश् (तु. प. अ.),उल्लिख् (तु. प. से.)।
—करना, मु., दे. 'सौंपना'।
हवालात, सं. पुं. स्त्री. (अ.) गुप्तिः (स्त्री.), निरोधः २. *गुप्तिगृहम्।
—करना, मु. गुप्तिगृहे निरुध् (रु. प. अ.)।
हवास, सं. पुं. (अ.) इन्द्रियाणि-हृषीकाणि (न. बहु.) २. उपलब्धिः (स्त्री.), संवेदनं ३. संज्ञा, चैतन्यं, दे. 'होश'।
हवि, सं. पुं. [सं. हविस् (न.)] हवनसामग्री, हव्यं, सान्नाय्यं, हवनीयं, होमीयद्रव्यम्।
हवेली, सं. स्त्री. (अ.) हर्म्यं, भवनं, धनिगृहं २. पत्नी।
हव्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'हवि'।
हशमत, सं. स्त्री. (अ.) गौरवं, महिमन् २. विभवः, ऐश्वर्यम्।
हसद, सं. पुं. (अ.) ईर्ष्या, मत्सरः।
हसब, अव्य. (अ.)–अनुसारं, यथा–।
—तौफ़ीक़, अव्य. (अ.) सामर्थ्यानुसारं, यथाशक्ति (दोनों अव्य.)।
हसरत, सं. स्त्री. (अ.) शोकः, आधिः, दुःखम्।
हसीन, वि. (अ.) सुन्दर, सुरूप।
हस्त, सं. पुं. (सं.) करः, पाणिः, दे. 'हाथ' २. चतुर्विंशत्यंगुलिपरिमाणं ३. हस्तलिपिः (स्त्री.), लेखनशैली ४. नक्षत्रविशेषः ५.शुंडा, दे. 'सूँड'।
—कार्य, सं. पुं. (सं. न.) करकर्मन् (न.) २. हस्तशिल्पं, दे. 'दस्तकारी'।
—कौशल, सं. पुं. (सं. न.) पाणिपाटवं,हस्त-,लाघवं-चापल्यम्।
—क्रिया, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'हस्तकार्य(१-२)।
—क्षेप, सं. पुं. (सं.) प्रात, बंधनं-रोधनं २. परकार्यं,-चर्चा-प्रतिघातः।
—क्षेप करना, क्रि. स., परकार्येषु व्यापृ (तु. आ. अ.), परकार्याणि चर्च् (तु. प. से.) निरूप् (चु.)।
—गत, वि.(सं.)प्राप्त, लब्ध, अधिगत, हस्तस्थ।
—तल, सं. पुं. (सं. न.) करतलः, दे. 'हथेली'।
—त्राण, सं. पुं. (सं. न.) करत्राणं दे. 'दस्ताना'।
—पृष्ठ, सं. पुं. (सं. न.) कर-पाणि.-पृष्ठम्।
—मैथुन, सं. पुं. (सं. न.) हस्तेन शुक्रपातनं-इन्द्रियसंचालनम्।
—रेखा, सं. स्त्री. (सं.) करतल,-रेखा-रेघा।
—लाघव, सं. पुं. (सं. न.) हस्त,-कौशलं-चापल्यम्।
—लिखित, वि. (सं.) हस्तेन लिपिबद्ध।
—लिपि, सं. स्त्री. (सं.) लेखनशैली।
—सूत्र, सं. पुं. (सं. न.) मंगल्यं करसूत्रं, सूत्र-मयं,-कंकणं-वलयम्।
—हस्ति, सं. पुं. (सं.-तिन्) दे. 'हाथी'।
हस्तिनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'हथनी' २. स्त्री-भेदः (कामशास्त्र)।
हस्ती[1], सं. पुं., दे. 'हाथी'।
हस्ती[2], सं. स्त्री. (फ़ा.) सत्ता, अस्तित्वम्।
हस्ते, अव्य. (सं.) द्वारा, द्वारेण।
हहा, सं. स्त्री. (अनु.) अट्ट,-हास्यं-हासः-हसितं, हहाकारः, हीही (अव्य.), हास्यध्वनिः २. दैन्यसूचकध्वनिः, अयि (अव्य.), हहा-कृतिः (स्त्री.) ३. अनुनयातिशयः, सप्रणि-पातं प्रार्थनम्।
—खाना, मु., पादयोः पतित्वा अनुनी (भ्वा. प. अ.)-प्रार्थ् (चु. आ. से.)।
हाँ, अव्य. (सं. आम्) ओम्, एवं, अथ किं २. तथेति, बाढं, साधु (सब अव्य.) ३. तथापि ४. दे. 'यहाँ'।
—हाँ, अव्य., आमाम्, ओमोम् २. न न, मा मा, न, नहि, नो।
—करना, मु., अंगी-स्वी,-कृ, अनुज्ञा (क्र्. उ. अ.), अनुमन् (दि. आ. अ.)।
—जी हाँ जी करना, मु., चाटुभिः प्रसद् (प्रे.)-उपच्छंद (चु.)-स्तु (अ. प. अ.)।

—में हाँ मिलाना, मु., अविचार्यैव द्रढयति-सत्यापयति (ना. धा.) २. दे. 'हाँ जी हाँ जी करना'।

हाँक, सं. स्त्री. (सं. हुंकारः) हुंकृतिः (स्त्री.), आकारणं-णा, उच्चैराह्वानं, तारस्वरेण संबोधनं २. गर्जनं-ना, युद्धाह्वानं, सिंहनादः, क्ष्वेडा, समरार्थमाकारणं-णा ३.प्रोत्साहन-,शब्दः-ध्वनिः ४. रक्षार्थं-सहायतार्थं,-आह्वानं-आकारणम्।

—पुकार, सं. स्त्री., कोलाहलः, उत्क्रोशः।

—देना या लगाना, मु., उच्चैः आह्वे (प्रे.), तारस्वरेण आह्वे (भ्वा. प. अ.), शब्दायते (ना. धा.)।

हाँकना, क्रि. स. (हिं. हाँक) दे. 'हाँक देना' २. सिंहनादं कृ, युद्धाय-आह्वे (प्रे.) ३. वि-कत्थ् (भ्वा. आ. से.), आत्मानं श्लाघ् (भ्वा. आ. से.) ४. नुद्-प्रणुद् (तु. प. अ., प्रे.) प्रेर् (प्रे.), चर्-चल् (प्रे.), चुद् (चु.), अज् (भ्वा. प. से.) ५. अपसृ-निष्कस् (प्रे.) ६. वीज् (चु.)। सं. पुं. तथा भाव, दे. 'हाँक' (१-२) ३. विकत्थनं, आत्मश्लाघनं-घा ४. प्रणोदनं, प्रेरणं, प्रचोदनं, प्रचालनं, प्राजनं ५. अपसारणं, निष्कासनं ६. वीजनम्।

हाँकनेवाला, सं. पुं., प्रेरकः, वाहकः, चालकः, प्रमोदकः, प्रचोदकः इ.।

हाँडी, सं. स्त्री. (सं. हंडी) हंडिका २. काच,-हंडी-हंडिका।

—पकना, मु., उपजप् (कर्म.), कूटं, रच् (कर्म.), उपजापः कृ (कर्म.)।

हाँफ(प)ना, क्रि. अ. (अनु-हँफ हँफ या सं. हाफिका >) सकष्टं श्वस् (अ. प. से.), सत्वरं प्राण् (अ.प.से.)। सं. पुं., कृच्छ्रश्वासः, त्वरितप्राणनम्।

हाँसी, सं. स्त्री., दे. 'हँसी'।

हा, अव्य. (सं.) हर्षशोकभयविस्मयक्रोधनिंदा-सूचकमव्ययम्।

हाइड्रोजन, सं. पुं. (अं.) उदजनम्, आर्द्र-जनम्।

हाइड्रोफ़ोबिया, सं. पुं. (अं.) अलर्करोगः, आलर्कं, जल,-भय-संत्रासः।

हाइफ़न, सं. पुं. (अं.) समासचिह्नं (-)। (उ. राज-सेवक)।

हाईकोर्ट, सं. पुं. (अं.) प्रधानन्यायालयः, उच्चाधिकरणम्।

हाई-स्कूल, सं. पुं. (अं.) उच्च-,विद्यालयः।

हाउस, सं. पुं. (अं.) गृहं, गेहः-हं, अ(आ)गारः-रम् २. सभा, परिषद् ३. नृपवंशः।

हाऊ, सं. पुं. (अनु.) दे. 'हौवा'।

हाकिम, सं. पुं. (अ.) शासकः, शासितृ, अधिकारिन्, नियोगिन्, आधिकारिकः।

हाकिमी, सं. स्त्री. (अ. हाकिम) शासनं, अधिकारः, प्रभुत्वं, आधिपत्यं, शिष्टिः (स्त्री.), राज्यम्।

हॉकी, सं. स्त्री. (अं.) आंगलक्रीडाभेदः।

हाजत, सं. स्त्री. (अ.) आवश्यकता, अपेक्षा २. कामना, लालसा ३. मल-मूत्र,-उत्सिसृक्षा ४. गुप्तिः (स्त्री.), दे. 'हवालात' (१)।

हाज़मा, सं. पुं. (अ.) पचनं, वि-परि-,पाकः, पक्तिः (स्त्री.) २. जठर,-अग्निः-अनलः, पाचनशक्तिः (स्त्री.)।

—बिगड़ना, मु., अग्निमांद्यं जन् (दि. आ. से.), अन्नं न पच् (कर्म.)।

हाज़िम, वि. (अ.) पाचक, पाचन, अग्नि-वर्द्धक।

हाज़िर, वि (अ.) उपस्थित, पुरःस्थित, वर्त-मान, विद्यमान २. संनद्ध, सज्ज, उद्यत।

—करना, क्रि. स., उप-पुरः-संमुखं स्था (प्रे.)।

—जवाब, वि. (अ.) प्रत्युत्पन्नमति, विदग्ध।

—जवाबी, सं. स्त्री., प्रत्युत्पन्नमतिता-त्वं, वैद-ग्ध्यम्।

—व नाज़िर, वि., प्रत्यक्षदर्शक।

—होना, क्रि. अ., उपस्था (भ्वा. उ. अ.), उपस्थित (वि.) भू।

ग़ैर—, वि., अनुपस्थित, अविद्यमान।

हाज़िरी, सं. स्त्री. (अ.) उपस्थितिः (स्त्री.), विद्यमानता।

—का रजिस्टर, सं. पुं., उपस्थितिपंजिका।

—लेना, क्रि. स. उपस्थितिं अंक् (चु.)।

हाज़िरीन, सं. पुं. (अ. 'हाज़िर' का बहु.) उपस्थितजनाः (बहु०) श्रोतृवर्गः।

—(ने) जलसा, सं. पुं., सभ्याः-सदस्याः (बहु.)।

हाजी, सं. पुं. (अ.) मक्कायात्रिन्, *हाजिन २. कृत-मक्कायात्रः-हजः।

हाट, सं. स्त्री., दे. 'हट्ट' (१-२)।
हाटक, सं. पुं. (सं. न.) सुवर्णं, दे. 'सोना'।
हाता, सं. पुं., दे. 'इहाता'।
हातिम, सं. पुं. (अ.) अरबदेशीयोऽत्युदारः सामतविशेषः २. मुक्तहस्तमनुष्यः ३. निपुण-दक्ष-,मनुष्यः।
हाथ, सं. पुं. (सं. हस्तः) करः, पाणिः, शयः, पंचशाखः, भुजादलः, शमः, कुलिः २. चतुर्विंशत्यंगुलिपरिमाणं ३. वारः, दे. 'दाँव' ४. कर्मकरः ५. दंडः, मुष्टिः (स्त्री.), वारंगः ६. वशः, अधिकारः।
—आना, मु., अधिगम्-उपलभ् (कर्म.)।
—उठाना, मु., तड् (चु.), प्रहृ (भ्वा. प. अ.)।
—की चालाकी, मु., हस्तकौशलं, दे.।
—की मैल, मु., तुच्छ-क्षुद्र-असार,-वस्तु (न.)।
—खींचना, मु., परिहृ-विरम् (भ्वा. प. अ.), वर्ज् (चु.)।
—चढ़ना, मु., दे. 'हाथ आना' २. वशं आया (अ. प. अ.)।
—जोड़ना, मु., हस्तौ समानीय अथवा अंजलिं बद्ध्वा अथवा सांजलि प्रार्थ् (चु. आ. से.) । -अनुनी (भ्वा. प. अ.)-याच् (भ्वा. आ. से.)
—डालना, मु., दे. हस्तक्षेप करना'।
—धोना, मु., वियुज् (कर्म.), वंचित-विरहित-विहीन (वि.) भू।
—तंग होना, मु., दारिद्र्येण-निर्धनतया पीड् (कर्म.)।
—पर हाथ धरे रहना, मु., निरुद्योगं-निरुद्यमं स्था (भ्वा. प. अ.)।
—पसारना, मु., याच् (भ्वा. आ. से.)।
—पाँव फूलना मु., भयेन निस्तब्धीभू, शोकेन जडीभू।
—पाँव मारना, मु., प्र-, यत् (भ्वा. आ. से.), उद्युज् (रु. उ. अ.)।
—फेरना, मु., लल् (चु.)।
—बढ़ाना, मु., ग्रहीतुं-आदातुं प्रयत् (भ्वा. आ. से.)।
—बाँधना, मु., दे. 'हाथ जोड़ना'।
—मलना, मु., अनुशी (अ. आ. से.), पश्चात्तापं कृ २. निराश-दुःखित (वि.) भू।
—मारना, मु., छलेन अपहृ (भ्वा. प. अ.) २. असिना प्रहृ (भ्वा. प. अ.)।
—मिलाना, मु., करौ स्पृश् (तु. प. अ.) २. मल्लयुद्धाय सज्ज (वि.) भू।
—में रखना, मु., वशे-अधिकारे स्था (प्रे.)।
—लगना, मु., दे. 'हाथ आना' २. आरभ् (कर्म.)।
—समेटना, मु., दानात्, वितरणात् निवृत् (भ्वा. आ. से.)-विरम् (भ्वा. प. अ.)।
—साफ़ करना, मु., हन् (अ. प. अ.) २. अन्यायेन हृ (भ्वा. प. अ.)।
—से जाना, मु., दे. 'हाथ धोना'।
हाथों-हाथ, मु., सत्वरं, शीघ्रं २. कर-हस्त,-परंपरया।
हाथा, सं. पुं. (सं. हस्तः>) दे. 'हत्थी' २. कुड्यर्पितं मंगल्यं हस्तचिह्नम्।
—पाई, सं. स्त्री., हस्ताहस्ति (अव्य.), संमर्दः, कलहः।
—पाई करना, क्रि. अ., हस्ताहस्ति युध् (दि. आ. से.), कलहायते (ना. धा.)।
—बाँही, सं. स्त्री., दे. 'हाथापाई'।
हाथी, सं. पुं. (सं. हस्तिन्) करिन्, दन्तिन्, दन्तावलः, द्विपः, अनेकपः, द्विरदः, गजः, नागः, कुंजरः, वारणः, इभः, स्तम्बेरमः, म(मा)तंगः, पद्मिन्, पुष्करिन्, महामृगः, कर्शूर्पकर्णः, सिंधुरः, महानदः, सिन्दूरतिलकः, रदनिन्, महाबलः, द्रुमारिः।
—खाना, सं. पुं. (हि+फ़ा.) गजगृहं, हस्तिशाला।
—दाँत, सं. पुं. (सं. हस्तिदंतः) गजदंतः।
—पाँव, सं. पुं., श्लीपदः-दं, शिलीपदः-दं, प(पा)द,-गंडीरः-वल्मीकः।
—वान, सं.पुं., आधोरणः,हस्तिपकः, हास्तिकः, दे. 'महावत'।
—पर चढ़ना या बाँधना, मु., सुसमृद्ध (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से.)।
हादसा, सं. पुं. (अ.) दुर्घटना, दे.।
हानि, सं. स्त्री. (सं.) क्षतिः (स्त्री.), अप,-चयः-हारः, अपायः २. क्षयः, नाशः, अभावः, ३. स्वास्थ्यबाधा ४. अनिष्टं, अहितं, अशुभम्।
—करना, क्रि. स., हानिं कृ, नश् (प्रे.), क्षि (प्रे.), अपचि (भ्वा. उ. अ.), क्षतिं जन् (प्रे.)।
—कारक, वि. (सं.) हानि,-कर-कार-कारिन्, अपचय-क्षय,-कारिन्, नाशक, अनिष्टोत्पादक।

—होना, क्रि. अ., क्षतिः जन् (दि. आ. से.), नश् (दि. प. वे.), वियुज् (कर्म.), वि-परि,-हा (कर्म.), वियुक्त-हीन-रहित (वि.) भू ।

हाफ़िज़, सं. पुं. (अ.) रक्षकः, त्रातृ २. *कुरानपाठिन् ।

हाफ़िज़ा, सं. पुं. (अ.) स्मृतिः, दे. 'स्मरण-शक्ति' ।

हामिल, वि. (अ.) भारवाह-हक, भारिन् २. नेतृ, प्रापक ।

हामिला, सं. स्त्री. (अ.) गर्भिणी, गर्भवती, अन्तर्वत्नी, ससत्त्वा ।

हामी, सं. स्त्री. (हिं. हाँ) अनुमतिः-स्वीकृतिः (स्त्री.), स्वीकारः, अनुज्ञा ।

—भरना, मु., स्वी-अंगी,-कृ, अनुज्ञा (क्र्. उ. अ.), अनुमन् (दि. आ. अ.) ।

हाय, अव्य. (सं. हा) आः, अहह, कष्टं, हंत (सब अव्य.) । सं. स्त्री., नि-दीर्घ-श्वासः, उच्छ्वसितं २. कष्टं, पीड़ा) ।

—हाय, अव्य. (सं. हा हा) आः आः इ. । सं. स्त्री., शोकः २. व्याकुलता ।

—पड़ना, मु., दुष्कृतं शापः फल् (भ्वा.प.से.) ।

—मारना, मु., दीर्घं श्वस् (अ. प. से.), (शोकेन) हा-हा कृ, निश्वासं मुच् (तु.प.अ.) ।

हार[1], सं. स्त्री. (सं. हारिः) पराजयः, परि-परा-अभि,-भवः २. श्रांतिः, क्लांतिः (स्त्री.), आयासः ३. हानिः-क्षतिः (स्त्री.) ।

—जीत, सं. स्त्री., जयपराजयौ (पुं. द्वि.) ।

—खाना, मु., दे. 'हारना' ।

—देना, मु., दे. 'हराना' ।

हार[2], सं. पुं. (सं.) कंठ,-भूषा-आभरणं-माला, ग्रैवं, ग्रैवेयकं २. दे. 'मोतियों का हार' ।

—का मनका, सं. पुं., हार-,-गुटिका-गुलिका-अक्षः ।

फूलों का—, सं. पुं., माला, माल्यं, स्रज् (स्त्री.) आपीडः ।

मोतियों का—, सं. पुं., मुक्तावली-लिः (स्त्री.), मुक्ता,-लता-माला, मौक्तिकसरः, हारा ।

रत्नों का—, सं. पुं. मणिमाला, रत्नावली-लिः (स्त्री.) ।

सोने का—, सं. पुं., कनकसूत्रम् ।

—हार, प्रत्य., दे. 'हारा' ।

हारना, क्रि. अ. (सं. हारणं >) परा-,जि (कर्म.), अभि-परा-परि,-भू (कर्म.) अभिभूत-पराजित (वि.) भू २. विफल (वि.) जन् (दि. आ. से.) ३. श्रन् क्लम् (दि. प. से.), खिद् (दि. आ. अ.) । क्रि. स., हा (जु. प. अ., प्रे. हापयति), अप,- हृ (प्रे.) २. नश्-क्षि (प्रे.) ३. त्यज् (भ्वा. प. अ.) ४. दा (जु. उ. अ.) । सं. पुं. तथा भाव, दे. 'हार[1]' ।

हारने योग्य, वि., अभिभवनीय, पराजेय ।

—वाला, सं. पुं., आसन्नपराजय, पराजित,-कल्प-प्राय !

हारा हुआ, वि., वि-परा-,जित, अभि-परा-परि,-भूत २. हृत, हारित, नष्ट, ३. श्रान्त, क्लान्त, खिन्न ४. अकृतकार्य ।

हारमोन, सं. पुं. (अं.) जीवनरसः ।

हारमोनियम, सं. पुं. (अं.) *मधुरध्वनम् ।

—हारा, प्रत्य. (सं.-त्यार>) (प्रायः कर्तृवाचक प्रत्ययों, (-अक,-तृच् ,-तन् आदि) से अनुवाद किया जाता है । उ. देनेहारा=दायकः, दातृ इ०) ।

हारिल, सं. पुं. (सं. हरितालकः) हरितवर्णः पीतपादः नीलचंचुः चटकभेदः, हारि(री)तः, हारीतकः ।

हारी, वि. (सं.-हारिन्) अप,-हर्तृ हारक, आच्छेदक, बलात् ग्रहीतृ २. वाहक, प्रापक, नायक,-हर ३. लुंटक, लुंठक, मोषक, चौर ४. नाशक, ध्वंसक ५. संग्राहक, समाहर्तृ (कर आदि) मनो-चेतो,-हर ।

हारीत, सं. पुं. (सं.) चौरः, लुंठकः, कितवः २. स्मृतिकारविशेषः ३. दे. 'हारिल' ।

हार्ट-फ़ेल, सं. पुं. (अं.) हृत्स्यन्दनविरोधः, हृदयावरोधः ।

हार्दिक, वि. (सं.) हृदय,-संबंधिन्-विषयक, चैत्त(-त्ती स्त्री.), चैत्तिक (-की स्त्री.), मानस -सी स्त्री.), मानसिक(-की स्त्री.) २.निर्व्याज्, निष्कपट ३. स्नेहशील, स्निग्ध, स्नेहिन्, अनुरागवत्, अनुरागिन् ।

हाल[1], सं. पुं. (अ.) अवस्था, दशा २. परि-स्थितिः (स्त्री.) ३. समाचारः, वृत्तांतः ४. विवरणं, इतिवृत्तं ५. चरित्रं, कथा ६. समाधिः, ईशैकाग्रता ७. वर्तमानकालः । वि., वर्तमान, विद्यमान, उपस्थित । अव्य., अधुनैव २. शीघ्रं, त्वरितम् ।

—का, मु., अभि-,नव, नूतन, अचिर, प्रत्यग्र ।
—बेहाल होना, मु., शुभात् अशुभं, मंगलात् अमंगलं, क्रमशो विकारवृद्धिः (स्त्री.) ।
—में, मु., वर्तमाने, आधुनिकसमये, इदानींतने काले ।
हाल², सं. स्त्री. (सं. हल्लनं) कंपः, कंपनं २. संघट्टः, समाघातः ३. लौहं चक्रवलयम् ।
हाल³, सं. पुं. (अं.) मुख-,शाला, बाह्यकोष्ठः, आस्थानी ।
हालत, सं. स्त्री. (अ.) दशा, अवस्था, स्थितिः (स्त्री.) २. आर्थिकावस्था ३. परिस्थितिः (स्त्री.) ।
हालहूल, सं. स्त्री. (सं. हल्लनम् >) कलकलः, कोलाहलः २. उपद्रवः, संमर्दः ।
हालाँ कि, अव्य. (फ़ा.) यद्यपि (अव्य.) ।
हाला, सं. स्त्री. (सं.) मद्यं, सुरा दे. ।
हालाहल, सं. पुं., दे. 'हलाहल' ।
हाली, अव्य. (अ. हाल) शीघ्रं, सत्वरम् ।
हाव, सं. पुं. (सं.) शृङ्गारभावजा चेष्टा (लीला, विभ्रम, विलास आदि) आह्वानम् ।
—भाव, सं. पुं. (सं.) पुरुषमनोहारी स्त्रीचेष्टाभेदः, विभ्रमः, विलासः, लीला ।
हावनदस्ता, सं. पुं. (फ़ा.) उलूखल-खल्ल,-मुसलं-ले-लौ (द्वि.) ।
हाशिया, सं. पुं. (अ.—यह्) प्रांतः, उपांतः, सीमा २. वस्त्रप्रांतः, चीरी-रिः (स्त्री.), दशा ।
हास, सं. पुं. (सं.) दे. 'हँसी' (१-४) ।
—कर, वि. (सं.) हास्यजनक २. अव-उप,-हास्य ।
हासिद, वि. (अ.) ईर्षा(र्ष्या)लु, ईर्षु-र्ष्यु ।
हासिल, वि. (अ.) लब्ध, अधिगत, प्राप्त दे. ।
हास्य, वि. (सं.) हास,-कर-जनक-उत्पादक, हास,-योग्य-आस्पद २. अव-उप,-हास्य, अव-उप,-हासार्ह। सं. पुं. (सं.न.) दे. 'हँसी' (१-४)।
—कर, वि. (सं.) दे. 'हास्य' वि. (१-२) ।
हास्यास्पद, सं. पुं. (सं. न.) हासविषयः २. उपहासविषयः। वि., दे. 'हास्य' (वि.१-२)।
हास्योत्पादक, वि. (सं.) दे. 'हास्य' (वि. १-२) ।
हा हा, सं. पुं. (अनु.) हास(स्य), शब्दः-ध्वनिः, अट्टहासः, अनुनय-दैन्य,-शब्दः-ध्वनिः ३. अहह, कष्टं, हा हंत ।

—ही ही, }
—ठी ठी, } सं. स्त्री., परिहासः, विनोदः ।
—खाना, मु., सदैन्यं आक्रू (प्रे.)-प्रार्थ् (चु. आ. से.) ।
—ही ही करना, मु., हस् (भ्वा. प. से.) २. परिहस्, विनोदवाक्यानि उदीर् (प्रे.) ।
हाहाकार, सं. पुं. (सं.) हाहा,-रवः-शब्दः-ध्वनिः २. आ-वि,-क्रोशः, आ-,क्रन्दनं, क्रन्दितं, चीत्कारः, भयजः कोलाहलः ।
—करना, क्रि. अ., हा हा कृ, हा हा ध्वनिं उत्पद् (प्रे.) २. आ-वि,-क्रुश् (भ्वा. प. अ.), आ-, क्रंद् (भ्वा. प. से.) ।
हिंजीर, सं. पुं. (सं.) गजपद,-बन्धनं-शृंखला-रज्जुः (स्त्री.) ।
हिंडोल, सं. पुं. (सं. हिंदोलः) रागभेदः ।
हिंडोला, सं. पुं. (सं. हिंदोलः-ला) हिंदोलकः, २. दोलः-ला-लिका, प्रेंखा, आन्दोलः, हिन्दोलः ३. दोला,-गीतं-गीतिका ।
हिंद, सं. पुं. (फ़ा.) भारतं, भारतवर्षं, आर्यावर्त्तः ।
हिंदवाना, सं. पुं., दे. 'तरबूज' ।
हिंदवी, सं. स्त्री. (फ़ा.) भारतीयभाषा २. हिन्दीभाषा ।
हिंदसा, सं. पुं. (अ.) अंकः (गणित) ।
हिंदी, वि. (फ़ा.) भारतीय, भारत,-वर्षीय-देशीय । सं. पुं., भारतः, भारतवासिन्, भारतवर्षवासिन्, भारतीयः । सं. स्त्री., उत्तरभारतस्य मुख्यभाषा, हिंदीभाषा ।
हिंदुस्तान, सं. पुं. (फ़ा. हिंदोस्तान) दे. 'हिंद' २. उत्तरभारतस्य मध्यमभागः (दिल्ली से पटने तक) ।
हिंदुस्तानी, वि. (फ़ा. हिन्दोस्तानी) दे. 'हिंदी' वि. । सं. पुं., दे. हिंदी' सं. पुं. । सं. स्त्री., अखिलभारतीयभाषा, *हिन्दुस्थानी ।
हिंदू, सं. पुं. (फ़ा.) आर्यः, वेद-स्मृति-पुराण,-अनुयायिन्-अनुगामिन्, *हिन्दुः ।
—पन, सं. पुं., *हिंदुत्व, आर्यत्वम् ।
हिंदोस्तान, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'हिंदुस्तान' ।
हिंसक, वि. (सं.) घात(तु)क, घातन, हिंस्र, शरारु, हन्तृ, हिंसालु, वध-हिंसा,-शील २. मांसभक्षक, क्रव्याद (पशु) ।

हिंसनीय, वि. (सं.) हन्तव्य, व्यापादनीय, मारणीय, वध्य।

हिंसा, सं. स्त्री. (सं.) अप,-कारः-कृतिः (स्त्री.)-क्रिया-करणं, पीडा, बाधा, अर्दनं २. वधः, हत्या, हननं, हिंसनं, घातः,मारणं, निषूदनम्।

—करना, क्रि. स., पीड् (चु.), अपकृ, व्यथ् (प्रे.), अर्द् (भ्वा. प. सें., प्र.) २. हन् (अ. प. अ.), हिंस् (रु. प. से.), व्यापद्-मृ (प्रे.), निषूद् (चु.)।

हिंसात्मक, वि. (सं.) पीडा-बाधा,-आत्मक-युक्त-दायक २. हत्यात्मक, जीववधयुक्त।

हिंसालु, वि. (सं.) हिंसक, घातक, हिंस्र, वधशील। सं. पुं. (सं.) हिंसक,-कुक्कुरः-भषकः-शुनसः, अलर्कः, मत्तश्वन्।

हिंस्र, वि. (सं.) दे. 'हिंसक'।

हिकमत, सं. स्त्री. (अ.) तत्त्वज्ञानं, दर्शनं २. शिल्पं, कलाकौशलं ३. उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ४. नीतिः (स्त्री.), नयः ५. मित-व्ययः ६. चिकित्सा, वैद्यकम्।

हिकमती, वि. (अ. हिकमत) कर्मकुशल, कार्यपटुः २. चतुर, विदग्ध ३. मितव्ययिन्।

हिकायत, सं. स्त्री. (अ.) कथा, आख्यानम्।

हिकारत, सं. स्त्री. (अ.) तिरस्कारः, अवगणना।

—की नजर से देखना, मु., लघयति (ना. धा.), अवमन् (दि. आ. अ.), अवगण् (चु.)।

हिचक, सं. स्त्री. (हिं. हिचकना) आ-वि-परि-,शंका, संदेहः, संशयः, विकल्पः, निश्चय-निर्णय,-अभावः।

हिचकना, क्रि. अ. (अनु. हिच) दोलायते (ना. धा.), विक्लृप् (भ्वा. आ. से.), आ-वि,-शंक् (भ्वा. आ. से.), संशी (अ. आ. से.) २. दे. 'हिचकी आना'।

हिचकिचाना, क्रि. अ., दे. 'हिचकना'।

हिचकिचाहट, सं. स्त्री., दे. 'हिचक'।

हिचकिची, सं. स्त्री., दे. 'हिचक'।

हिचकी, सं. स्त्री. (अनु. हिच) हि(हे)क्का, हिक्किका, हिध्मा, झिणिका।

—आना, क्रि. अ., हिक्क् (भ्वा. उ. से.)।

—लगना, मु., मरणोन्मुख (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से.) २. हिक्क्।

हिचर-पि(मि)चर, सं. स्त्री., दे. 'हिचक' २. दे. 'टालमटूल'।

हिजड़ा, सं. पुं., दे. 'हीजड़ा'।

हिजरी, सं. पुं. (अ.) यवनसंवत् (अव्य.) (यह १५।७।६२२ ई० अर्थात् श्रावण शुक्ल२, संवत् ६७९ वि. से चला है)।

हिजाब, सं. पुं. (अ.) अवगुंठनं २. लज्जा।

हिज्जे, सं. पुं. (अ. हिज्जह्) *शब्दाक्षरोच्चारणं।

—करना, क्रि. स., शब्दाक्षराणि उच्चर् (प्रे.)।

हिज्र, सं. पुं. (अ.) वियोगः, विरहः।

हित, वि. (सं.) लाभ,-प्रद-दायक, उप,-कारिन्-योगिन्, हितकर २. अनुकूल, योग्य२.हितेच्छु-च्छुक, हितैषिन्। सं. पुं. (सं. न.) लाभः, अर्थः २. मंगलं, भद्रं ३. अनुकूलता ४. स्वास्थ्य-लाभः ५. स्नेहः, अनुरागः ६. मैत्री, हितेच्छा ७. मित्रं ८. संबंधः, बंधुता ९. संबंधिन्, बंधुः। अव्य., लाभाय, हिताय २. कारणात्, हेतोः ३. अर्थे, कृते।

—कर, वि. (सं.) हित,-कर्तृ-कारक-कारिन् २. लाभ,-दायक-प्रद, उपयोगिन्, फलावह ३. स्वास्थ्य,-कर-प्रद।

—काम, सं. पुं. (सं.) हित,-कामना-इच्छा। वि. (सं.) हितैषिन्।

—कारी, वि. (सं.-रिन्) दे. 'हितकर'।

—चिंतक, वि. (सं.) हितेच्छु-च्छुक, हितैषिन्।

—चिंतन, सं. पुं. (सं. न.) हितेच्छा, उप-चिकीर्षा।

—वादी, वि. (सं.-दिन्) सत्परामर्शिन्।

हिताहित, सं. पुं. (सं. न.) हानिलाभौ-उप-कारापकारौ (पुं. द्वि.), इष्टानिष्टे-भद्राभद्रे (न. द्वि.)।

हितू, सं. पुं. (सं. हितः) मित्रं, हितैषिन्, सुहृद् २. संबंधिन्, बंधुः।

हितैषी, वि. (सं.-षिन्) हितचिंतक, दे.।

हितोपदेश, सं. पुं. (सं.) सत्परामर्शदानं २. विष्णुशर्मरचितो नीतिग्रंथविशेषः।

हिदायत, सं. स्त्री. (अ.) पथप्रदर्शनं २. शिक्षा, अनुशिष्टिः (स्त्री.)।

हिनहिनाना, क्रि. अ. (अनु. हिनहिन) हेष्-ह्रेष् (भ्वा. आ. से.)।

हिनहिनाहट, सं. स्त्री. (हिं. हिनहिनाना) हेषा, ह्रेषा, हे(ह्रे)षितम्।

हिना, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'मेहंदी' ।

हिफ़ाज़त, सं. स्त्री. (अ.) रक्षा, दे. । २. निरीक्षणम् ।

हिफ़्ज़, वि. (अ.) कंठस्थ, मुखस्थ ।

—करना, क्रि. स., कंठस्थं कृ ।

हिब्बा, सं. पुं. (अ.) दानम् ।

—नामा, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) दानपत्रम् ।

हिम, सं. पुं. (सं. न.) आकाश-ख,-वाष्पः, अवश्यायः, नीहारः, तुषारः, तुहिनं, प्रालेयं, मिहिका, रजनीजलं, इन्द्राग्निधूमः, कुज्झटिका २. हिम,-राशिः (पुं.)-संहतिः (स्त्री.), हिमानी ३. शीतं, शैत्यं ४. कमलं ५. नवनीतं ६. मौक्तिकं (सं. पुं.) हेमन्तर्तुः । २. चंदन-तरुः ३. कर्पूरः ४. चंद्रः ५. हिमालयः । वि. (सं.) शीत, शीतल, शिशिर ।

—कण, सं. पुं (सं.) तुषार,-लवः-बिंदुः ।

—कर, सं. पुं. (सं.) हिम,-किरणः-दीधितिः-भानुः-मयूखः-रश्मिः-रुचिः, चंद्रः ।

—गिरि, सं. पुं. (सं.) हिमालयः, दे. ।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) शीत-शीतल-शिशिर,-गृहं-अगारं-कोष्ठः ।

—जा, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, उमा, गौरी, भवानी ।

—पात, सं. पुं. (सं.) हिम-तुषार,-वृष्टिः (स्त्री.) -वर्षः-संपातः ।

हिमांशु, सं. पुं. (सं.) चंद्रः, दे. 'हिमकर' २. कर्पूरः ।

हिमाक़त, सं. स्त्री. (अ.) मूर्खता, दे. ।

हिमाचल, सं. पुं. (सं.) हिमाद्रिः, हिमालयः दे. ।

हिमामदस्ता, सं. पुं., दे. 'हावनदस्ता' ।

हिमायत, सं. स्त्री. (अ.) सं-,रक्षा-रक्षणं २. पक्षपातः ३. साहाय्यं, सहायता ।

—करना, क्रि. स., साहाय्यं कृ, सं-,रक्ष् (भ्वा. प. से.) ।

हिमायती, वि. (अ.) साहाय्यकारिन्, सहायक २. समर्थक, अनुमोदक ३. सपक्ष ४. रक्षक, त्रातृ ।

हिमालय, सं. पुं. (सं.) हिम,-अचलः-प्रस्थः-अद्रिः-शैलः, नग,-पतिः-अधिपः, उमा-भवानी,-गुरुः, हिमवत्, मेना-मेनका,-धवः-प्राणेशः, अद्रि-राजः ।

हिम्मत, सं. स्त्री. (अ.) साहसं, धैर्यं २. परा-वि,-क्रमः, शौर्यं, वीरता ।

—पड़ना, मु., साहसं विद् (दि. आ. अ.) ।

—हारना, मु., धैर्यं त्यज् (भ्वा. प. अ.), साहसं मुच् (तु. प. अ.), अधीर-निस्साहस (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।

हिम्मती, वि. (फ़ा. हिम्मत) धीर, धैर्यवत्, साहसिन्, साहसिक २. वीर, शूर, पराक्रमिन् ।

हिया, सं. पुं. (सं. हृदयं), मानसं २. वक्षस् (न.) ।

हिरण्य, सं. पुं. (सं. न.) सुवर्णं, दे. 'सोना'' २. धनं ३. शुक्रं ४. रजतं ५. अमृतम् ।

—कशिपु, सं. पुं. (सं.) हिरण्याक्षभ्रातृ, दैत्यविशेषः, प्रह्लादपितृ ।

—गर्भ, सं. पुं. (सं.) सृष्टिकारणं ज्योतिर्मयांडं २. ब्रह्मन् (पुं.) ३. प्राण-सूत्र,-आत्मन्, सूक्ष्मशरीरयुतात्मन् ४. विष्णुः ।

हिरण्याक्ष, सं. पुं. (सं.) हिरण्यकशिपुभ्रातृ, दैत्यविशेषः ।

हिरन, सं. पुं. (सं. हरिणः,) कुरंगः-गमः, एणः, एणकः, कृष्णसारः, पृषत्-तः, अ-,जिन-योनिः, चारु-सु,-लोचनः, रुरुः,रोहितः, वननः, चलनः, प्लाविन्, मरुकः, लिगुः, ऋ(रि)श्यः-ष्यः ।

—हो जाना, मु., अतिवेगेन धाव् (भ्वा. प. से.), पलाय् (भ्वा. आ. से.) ।

हिरनी, सं. स्त्री. (सं. हरिणी) मृगी, कुरंगी, एणी ।

हिरनौटा, सं. पुं. (हिं. हिरन) हरिण-मृग-,पोतः-शावः-शावकः-शिशुः-कुरंगकः ।

हिरफ़त, सं. स्त्री. (अ.) व्यवसायः २. शिल्पं, हस्तकार्यं, दे. 'दस्तकारी' ३. चातुर्यं ४. माया, धूर्तता ।

हिरमज़ी, सं. स्त्री. (अ.) सौराष्ट्री, रक्तमृत्तिकाभेदः ।

हिरास, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'हरास' ।

हिरासत, सं. स्त्री. (अ.) निरोधः, बंधनं २. कारा, गुप्तिः (स्त्री.) ।

हिर्स, सं. स्त्री. (अ.) लोभः, तृष्णा, लिप्सा ।

हिर्सी, वि. (अ. हिर्स) लुब्ध, गृध्नु, लोलुप ।

हिलना[1], क्रि. अ. (सं. हल्लनं) चल्-चर् (भ्वा. प. से.), इ-या (अ. प. अ.), गम् २. सृ-सृप् (भ्वा. प. अ.) ३. कंप् वेप्-स्पंद् (भ्वा. आ. से.) ४. दोलायते (ना. धा.) प्रेंख् (भ्वा. प. से.), इतस्ततः वि-सं,-चल् ५. (जले) प्रविश् (तु. प. अ.)। सं. पुं. तथा भाव, चलनं, चरणं, अयनं, यानं, गमनं, सरणं, सर्पणं, कंपः, वेपनं, स्पदनं, चेष्टा, चेष्टितं, क्रिया, प्रवृत्तिः, व्यापारः ।

—डोलना, मु., अट्-भ्रम् (भ्वा. प. से.) २. श्रम् (दि. प. से.), प्रयत् (भ्वा. आ. से.) ।

हिलनेवाला, वि., चर, चल, जंगम, चलन-गमन,-शील, कंपमान, वेपमान, चेष्टमान, स्पंदमान ।

हिला हुआ, वि., चलित, सृत, यात, इत इ. ।

हिलना[2], क्रि. अ. (हिं. हिलगना, सं. अधि-लग्न) सुपरिचित-बद्धसख्य-रूढसौहृद् (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।

— मिलना, क्रि. अ., परस्परं सख्येन वृत् (भ्वा. आ. से.)-व्यवहृ-अस् (दोनों भ्वा. प. अ.) ।

हिलमिलकर, मु., सौमनस्येन, सौहार्देन २. सं-भूय, मिलित्वा ।

हिल-मिला, मु., सुपरिचित, गाढसौहृद, बद्ध-सख्य ।

हिलाना, क्रि. स., व. 'हिलना' (१-२) के प्रे. रूप ।

हिलोर-रा, सं. पुं. (सं. हिल्लोलः) उल्लोलः, तरंगः, भंगः, ऊर्मिः (पुं. स्त्री.) ।

हिलोरे लेना, मु., तरंगायते (ना. धा.), तरं-गित (वि.) भू ।

हिलोरना, क्रि. स. (हिं. हिलोर) तरंगयति-उल्लोलयति (ना. धा.), इतस्ततः चल् (प्रे.)-विधू (स्वा. उ. से.) ।

हिलोल, सं. पुं., दे. 'हिलोर' ।

हिसाब, सं. पुं. (अ.) गणनं-ना, संख्यानं २.आयव्यय देयादेय,-लेखः-विवरणं ३. गणितं, अंकविद्या ४. अर्घ-मूल्य,-मानं-प्रमाणं ५.नियमः, व्यवस्था ६. विचारः, मतं ७. रीतिः (स्त्री.), विधिः ।

—करना या लगाना, क्रि. स., गण् (चु.), संख्या (अ. प. अ.) ।

—किताब, सं. पुं. (अ.) दे. 'हिसाब'(२) ।

—चलना, मु., व्यवहारः-दानादानं वृत् (भ्वा. आ. से.) ।

—चुकाना या चुकता करना, मु., ऋणं निस्तॄ-शुध् (प्रे.) ।

—बंद करना, मु.,व्यवहारं त्यज् (भ्वा.प.अ.) ।

हिस्टीरिया, सं. पुं. (अं.) योषापस्मारः, वात-गर्भाशय,-उन्मादः, हर्षमोहः ।

हिस्सा, सं. पुं. (अ.) वि-,भागः, अंशः २. वंटः, उद्धारः ३. खंडः-डं, एकदेशः ४. अंगं, अवयवः ।

—करना, क्रि. स., अंश् (चु.), विभज् (भ्वा. उ. अ.) ।

—दार, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) अंशिन्, अंश-ग्राहिन्, सह-, भागिन् ।

—दारी, सं. स्त्री., सहभागिता, अंशिता ।

हींग, सं. स्त्री. [सं. हिंगु (पुं. न.)] र(रा)-मठं, वाल्हीकं, जंतु,-घ्नं-नाशनं, सूपधूपनं, उग्रगंधं, रक्षोघ्नं, जरणं, अगूढगंधम् ।

हींसना, क्रि. अ. (सं. हेषणं) दे. 'हिनहिनाना' २. दे. 'रेंकना' ।

ही, अव्य. (सं. हिं.) एव, अवश्यं, केवलं (सब अव्य.) ।

हीक, सं. स्त्री. (सं. हिक्का) दे. 'हिचकी' दुर्गंधः ।

हीजड़ा, सं. पुं. (देश.) शं(षं)डः-ढः, तृतीया प्रकृतिः, क्लीबः, नपुंसकः ।

हीन, वि. (सं.) वि-,रहित, शून्य, वर्जित, वंचित, वियुक्त,अ-,निर्-, वि-, (उ. धनहीन= अधन इ.) २. परि-,त्यक्त, उत्सृष्ट ३. अपकृष्ट, निकृष्ट,नीच, अधम ४. क्षुद्र, तुच्छ ५. कुत्सित, निंद्य, असत्, दुष्ट, कु- ६.दीन, दरिद्र, अकिंचन ७. अल्प, ऊन, स्तोक ।

—जाति, वि. (सं.) नीच,-वर्ण-जाति २. अ-पांक्तेय, पतित ।

—यान, सं. पुं. (सं. न.) बौद्धसंप्रदायभेदः ।

हीनता, सं. स्त्री. (सं.) अभावः, राहित्यं, त्रुटिः (स्त्री.), न्यूनता २. क्षुद्रता, तुच्छता ३. नि-अप,-कृष्टता ।

हीमोग्लोबिन, सं. पुं. (अं.) रक्तकणः, रक्तरञ्जकम् ।

हीर¹, सं. पुं. (सं.) शिवः २. इन्द्रवज्रं ३. सर्पः ४. हारः ५. सिंहः ६. हीरकः ।

हीर², सं. पुं. (हिं. हीरा) सारः, सारांशः, अन्तर्भागः, तत्त्वं २. वीर्यं, शुक्रं ३. बलं, शक्तिः (स्त्री.) ।

हीरक, सं. पुं. (सं.) दे. 'हीरा' ।

हीरा, सं. पुं. (सं. हीरः) हीरकः, वज्र-ज्रं, रत्नमुख्यं, सूचीमुखं, दधीच्यस्थि (न.), वरारकम् ।

—मन, सं. पुं. (हिं.+सं. मणिः) हेमवर्णः कल्पितः शुकभेदः, *हीरमणिः ।

हीला, सं.पुं. (अ. हीलः) व्याजः, छद्मन्(न.)-व्यपदेशः, मिषं, २. साधनं, उपायः ।

—करना, क्रि. अ., वि-, अपदिश् (तु. प., अ.), कपट-छद्मन् कृ ।

—बाज़, वि., कापटिक-छाद्मिक (-की स्त्री.) ।

—हवाला, सं. पुं., दे. 'हीला' ।

—निकलना, मु., उपायः ज्ञा (कर्म.), साधनं प्राप् (कर्म.) ।

हीहो, अव्य. (सं.) हर्षाश्चर्यसूचकमव्ययं, (हर्ष) हन्त २. (आश्चर्य) अहह ।

हुँ, अव्य. (सं.) ओं, आं, २. साधु, वाढं, अस्तु ।

हुंकार, सं. पुं. (सं.) हुंकृतिः (स्त्री.), हुंकृतं, भर्त्सनाशब्दः २. गर्जनं-ना, निनादः, हुहुतं ३. चीत्कारः, उत्क्रोशः ।

हुंकारना, क्रि. अ. (सं. हुंकार>) निर्भर्त्स् (चु. आ. अ.), तर्ज् (चु.), अधिक्षिप् (तु. प. अ.) २. गर्ज्-गर्द्-निनद् (भ्वा. प. से.) ३. चीत्कृ, उत्क्रुश् (भ्वा. प. अ.) ।

हुंडावन, सं. पुं. (हिं. हुंडी) *विधिपत्रशुल्कः-ल्कम् ।

हुंडी, सं. स्त्री. (देश.) *विधिपत्रं, धनार्पणादेशपत्रम् ।

हुकूमत, सं. स्त्री. (अ.) शासनं, राज्यं २. अधिकारः, प्रभुत्वम् ।

हुक्का, सं. पुं. (अ.) *धूमपानयंत्रम् ।

—पानी, सं. पुं. (अ.+हिं.) सामाजिकव्यवहारः ।

—गुड़गुड़ाना, मु., धूमपानं कृ ।

—पानी बंद करना, मु., समाजात् वहिष्-अपांक्ती कृ, जातेः निष्कस् (प्रे.) ।

हुक्काम, सं, पुं. (अ. हाकिम का बहु.) शासक-अधिकारि,-वर्गः-वृन्दम् ।

हुक्म, सं. पुं. (अ.) आदेशः, आज्ञा दे. २. अनुमतिः (स्त्री.) ३. प्रभुत्वं, अधिकारः ४. नियमः, विधि-, उपदेशः (धर्मशास्त्रादि का) ५. क्रीडापत्ररंगभेदः ।

—नामा, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) आज्ञापत्रम् ।

—बरदार, सं. पुं. (अ.+फ़ा.) आज्ञा,-पालक-अनुसारिन्-अनुवर्तिन्-अधीन ।

हुक्मी, वि. (अ. हुक्म) आज्ञा,-पालक-अनुवर्तिन् २. अमोघ, सफल, सिद्धिकर ३. लक्ष्य, भेदिन्-वेधिन् ४. विकल्परहित, अवश्य-कर्तव्य, अनिवार्य ।

हुजूम, सं. पुं. (अ.) जन, समूहः-समुदायः-संमर्दः-ओघः ।

हुजूर, सं. पुं. (सं.) सामीप्यं, संनिधिः २. न्याय,-आलयः-सभा ३. (संबोधनशब्द) भगवन् ! श्रीमन् ! (संबोधन एक.), भगवन्तः ! श्रीमन्तः ! (संबोधन बहु.) ।

हुजूरी, सं. स्त्री. (अ. हुजूर>) निकटता, समीपता २. उपस्थितिः (स्त्री.), विद्यमानता ३. राज-राजकीय,-सभा । सं. पुं. विशिष्ट,-सेवकः-भृत्यः २. राजसमासद्, सभ्यः, सभिकः ।

हुज्जत, सं. स्त्री. (अ.) कुतर्कः, व्यर्थयुक्तिः (स्त्री.) २. विवादः, वाग्युद्धम् ।

—करना, क्रि. अ., व्यर्थं तर्क् (चु.) २. विवद् (भ्वा. आ. से.), वाग्युद्धं कृ ।

हुज्जती, वि. (अ. हुज्जत) कुतार्किक २. कलह-विवाद,-प्रिय ।

हुड़दंग-गा, सं. पुं. (अनु. हुड़+हिं. दंगा) उपद्रवः, तुमुलं, संक्षोभः ।

हुड़दंगी, वि. (हिं. हुड़दंग) कुचेष्टित, कुचेष्टक, कुचेष्टाप्रिय, उपद्रविन्, उद्दण्ड ।

हुत, वि. (सं.) वषट्कृत, सविधि अग्नौ क्षिप्त ।

—भुज्, सं. पुं. (सं.) अग्निः ।

हुताशन, सं. पुं. (सं.) हुतवहः, हुताशः, अग्निः ।

हुदहुद, सं. पुं. (अ.) दार्वाघाटः, काष्ठकूटः, दे. 'कठफोड़ा' ।

हुनर, सं. पुं. (फ़ा.) कला, शिल्पं २. दाक्ष्यं, कौशलं ३. गुणः, विशिष्टधर्मः ।

—मंद, वि. (फ़ा.) कला,-विद्-कुशल २. दक्ष, निपुण ३. गुणिन् ।

हुमा, सं. स्त्री. (फ़ा.) कल्पितखगभेदः, *राज्यदः, हुमा ।

हुरमत, सं. स्त्री. (फ़ा.) आदरः, संमानः ।

हुर्रा, सं. पुं. (अं.) हर्षनादः, जयशब्दः, जयजयकारः ।

हुलास, सं. पुं. (सं. उल्लासः) आनंदः, आह्लादः २. उत्साहः ।

हुलिया, सं. पुं. (अ.-यः) आकारः, आकृतिः (स्त्री.) २. आकार-रूपरेखा,-विवरणम् ।

हुल्लड़, सं. पुं. (अनु. हुल हुल) कोलाहलः, कलकलः २.संक्षोभः, उपद्रवः ३. प्रजाविप्लवः, व्यवस्थाभंगः ।

हुश्, अव्य. (अनु.) शान्तं, मौनं, तूष्णीं (सब अव्य.) ।

हुस्न, सं. पुं. (अ.) लावण्यं, सौन्दर्यम् ।

—परस्त, वि. (अ.+फ़ा.) सौन्दर्योपासक ।

—परस्ती, सं. स्त्री., सौन्दर्योपासना ।

हूँ[1], क्रि. अ. (हिं. होना) अस्मि-वर्ते (लट्, उत्तम. एक.) ।

हूँ[2], अव्य. (सं. पुं.) आम्, ओम्, तथा २. साधु, सुष्ठु ३. अवधानतासूचकशब्दः, हुंकारः ।

—करना या हूँकारी भरना, क्रि. अ., हुंकृ २. आमिति उच्चर् (प्रे.) ३. अनुमन् (दि. आ. अ.), अनुज्ञा (क्र्. उ. अ.) ४. स्वी-अंगी,-कृ ।

—हाँ करना, मु., अप-व्यप-दिश् (तु. प. अ.), शाठ्येन परिहृ (भ्वा. प. अ.), अस्पष्टं व्याहृ ।

हू, सं. पुं. (अनु.) शृगाल-जम्बुक,-रावः-रुतं-शब्दः-ध्वनिः, हूकारः ।

—रव, सं. पुं. (सं.) शृगालः, सृगालः, जम्बु-(म्बू)कः, भूरिमायः ।

हूक, सं. स्त्री. (अनु.) हृद्ग्रहः, हृल्लेखः, हृदय-पीडा, वक्षोवेदना २. पीडा, व्यथा, आर्तिः (स्त्री.), वेदना ३. आधिः, सं-परि,-तापः, दुःखं ४. आशंका ।

हूकना, क्रि. अ. (हिं. हूक) व्यथ् (भ्वा. आ. से.), पीड् (कर्म.) ।

हूड़, वि, (सं. हूणः>) उद्दण्ड, असभ्य, ग्राम्य २. प्रमत्त, निरवधान ३. मंदबुद्धि, मूर्ख ४. दुराग्राहिन् ।

हूण, सं. पुं. (सं.) हूनः, म्लेच्छजातिविशेषः ।

हूबहू, वि. (अ.) पूर्णतया तुल्य सम-समान-सदृश ।

हूर, सं. स्त्री. (अ.) स्वर्-स्वर्ग,-वधूः (स्त्री.) -स्त्री, अप्सरस् (न.), अप्सरा, दिव्यांगना ।

हूल, सं. स्त्री. (सं. शूलः-लं) दे. 'हूक' (१) (खड्गादीनां) वेधः, आघातः, प्रहारः, निवेशनम् ।

—देना या मारना, क्रि. स., दे. 'हूलना' ।

हूलना, क्रि. स. (हिं. हूल) शस्त्राग्रं सहसा निविश् (प्रे.), अप-,व्यध् (दि. प. अ.) २. प्रेर्-प्रणुद्-प्रचल् (प्रे.) ।

हूहा, सं. पुं. (अनु.) किंवदन्ती, जनप्रवादः २. आडंबरः, विजृम्भणम् ।

हृत, वि. (सं.) नीत, प्रापित २. गृहीत, आदत्त ३. चोरित, स्तेनित, मुषित ।

हृत्कंप, सं. पुं. (सं.) हृदय,-कंपनं-स्फुरणं-स्पंदनम् ।

हृत्पिंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) हृदयं, दे. ।

हृद्, सं. पुं. (सं. न.) हृदयं, दे. ।

हृदयंगम, वि. (सं.) सम्यक्,-ज्ञात-बुद्ध-अवगत २. करुण, रोमहर्षण ३. सुन्दर, मनोहर ।

हृदय, सं. पुं. (सं. न.) हृद् (नं.), हृत्पिंडः-डं, बुक्का, अग्रमांसं २. वक्षस्-उरस् (न.) ३.मनस्-चेतस् (न.), मानसं, चित्तं ४. सारः, सारांशः, तत्त्वं ५. रहस्यं ६. प्रियजनः, प्राणाधारः (दे. 'दिल', 'कलेजा', 'मन', 'जी') ।

—ग्राही, वि. (सं.-हिन्) हृदयहारिन्, मनोमोहक २. रुचिकर, प्रिय ।

—वान्, वि. (सं.-वत्) सहृदय, हृदयालु २. भावुक, रसिक ।

—विदारक, वि. (सं.) हृदयवेधिन्, शोकजनक, करुणोत्पादक ।

—स्पर्शी, वि. (सं.-र्शिन्) हृदिस्पृश्, प्रभावोत्पादक २. दयोत्पादक, करुणाजनक ।

—हारी, वि. (सं.-रिन्) चेतोहर, मनोहारिन् ।

हृदयेश्वर, सं. पुं. (सं.) वल्लभः, प्रियतमः, प्रेमपात्रं २. पतिः, भर्तृ ।

हृदयेश्वरी, सं. स्त्री. (सं.) हृदयेशा, प्राणेशा, कान्ता २. पत्नी, भार्या ।

हृद्गत, वि. (सं.) आन्तर, आभ्यन्तर,अभि-, अन्तर, हृद्य, अन्तर्,-वर्तिन्-गत, मानस, चैत्त २. अवगत, ज्ञात, बुद्ध ३. प्रिय, रुचिकर ।

हृद्य, वि. (सं.) (१-२) दे. 'हृद्गत' (१-३) २. सुन्दर ३. शान्तिप्रद ४. स्वादु, सुरस ।

हृषीक, सं. पुं. (सं. न.) इन्द्रियं, दे. ।

हृषीकेश, सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. श्रीकृष्णः ३. तीर्थविशेषः ।

हृष्ट, वि. (सं.) हर्षित, सुप्रसन्न, प्रमुदित, आनंदित, प्रीत, पुष्ट, प्रमनस् ।

—पुष्ट, वि. (सं.) दृढ़,-अंग-देह-तनु, पीन, मांसल, बलवत् ।

हेंगा, सं. पुं. (सं. अभ्यंगः>) मत्यं, कोटि-(टी)शः ।

हेंहें, सं. स्त्री. (अनु.) मन्दहासध्वनिः २. दैन्यसूचकशब्दः ।

हे, अव्य. (सं.) अंग, भोः, हंहो, हुंहो, अरे, अये, अयि, पाट्, प्याट् (सब अव्य.) ।

हेकड़, वि. (हिं. हिया+कड़ा) दे. 'हृष्टपुष्ट' २. प्रचंड, उग्र ३. उद्दंड, वियात, धृष्ट ।

हेकड़ी, सं. स्त्री. (हिं. हेकड़) उग्रता, चंडता, उद्दंडता २. बलं, बलात्कारः, रभस् (न.), रभसः ।

हेच, वि. (फ़ा.) तुच्छ, क्षुद्र २. निस्सार, तत्त्वहीन ।

हेठ, क्रि. वि. (सं. अधःस्थ>) नीचैः, अधः (दोनों अव्य.) ।

हेठा, वि. (हिं. हेठ) अवर, अधर २. ऊन, हीन ३. तुच्छ, क्षुद्र ।

—पन, सं. पुं., तुच्छता, क्षुद्रता, ऊनता ।

हेठी, सं. स्त्री. (हिं. हेठा) मानहानिः (स्त्री.), अवधीरणा, अपमानः ।

हेड[1], सं. पुं. (सं.) तिरस्कारः, अवज्ञा, अपमानः ।

—ज, सं. पुं. (सं.) क्रोधः, कोपः, रोषः ।

हेड[2], सं. पुं. (अं.) शिरस् (न.), शीर्षं, मुण्डं, मस्तकम् २. मुख्यः, प्रधानः, अध्यक्षः ।

—क्वार्टर, सं. पुं. (अं.) मुख्यालयः, मुख्यकार्यालयः ।

हेडिंग, सं. स्त्री. (अं.) शीर्षकं, शिरःपंक्तिः (स्त्री.), नामन् (न.), संज्ञा ।

हेत, सं. पुं., दे. 'हेतु'(१, २) ।

हेतु, सं. पुं. (सं.) प्रयोजनं, अभिप्रायः, निमित्तं, उद्देशः २. कारणं, बीजं, मूलं ३. युक्तिः-उपपत्तिः (स्त्री.), प्रमाणं ४. अर्थालंकारभेदः (सा.) ।

—वाद, सं. पुं. (सं.) ऊहापोहः, तर्कः २. कुतर्कः, नास्तिकता, नास्तिक्यम् ।

—वादी, वि. (सं.-दिन्) तार्किकः २. नास्तिकः ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) तर्क-हेतु,-शास्त्रम् ।

—हेतुमद्भाव, सं. पुं. (सं.) कार्यकारण,-भावसंबंधः ।

हेत्वाभास, सं. पुं. (सं.) असद्-दुष्ट,-हेतुः ।

हेमंत, सं. पुं. (सं.) हैमनः, उष्मासहः, शरदन्तः, हिमागमः, अग्रहायणपौषमासात्मकः ऋतुः ।

हेम, सं. पुं. [सं.-मन् (न.)] सुवर्णं, दे. 'सोना' ।

—गिरि, सं. पुं. (सं.) सुमेरुः, हेम,-अचलः-अद्रिः ।

—चंद्र, सं. पुं. (सं.) जैनाचार्यविशेषः ।

हेय, वि. (सं.) त्याज्य, त्यक्तव्य, उत्सर्जनीय, हातव्य २. निकृष्ट, अपकृष्ट, गर्ह्य, निन्द्य ।

हेरना, क्रि. स. (सं. आखेटः>) अन्विष् (दि. प. से.), गवेष् (भ्वा. आ. से., चु. प. से.) २. दृश् (भ्वा. प. अ.) ३. विचर् (प्रे.) ।

—फेरना, क्रि. स. (अनु.+हिं.) परिवृत्-विपर्यस् (प्रे.), अन्यथा-वि,-कृ, विनिमे (भ्वा. आ. अ.) ।

हेर-फेर, सं. पुं. (हिं. हेरना+फेरना) परिवर्तः-र्तनं, परिवृत्तिः (स्त्री.), विनिमयः २. विकारः, विक्रिया, विकृतिः (स्त्री.) ३. विपर्यासः, क्रमाभावः, अव्यवस्था ४. वक्रोक्तिः (स्त्री.), वागाडंबरः ५. कपटं, छलं ६. अन्तरं, भेदः ।

हेरा-फेरी, सं. स्त्री., दे. 'हेर-फेर' ।

हेलमेल, सं. पुं. (हिं. हिलना+मिलना) दृढ़-गाढ,-सौहृदं-सौहार्द-सख्यं-मैत्री २. संगतिः (स्त्री.), संपर्कः ३. परिचयः ।

हेला[1], सं. स्त्री. (सं.) अव-अप,-मानः,अवज्ञा, तिरस्कारः २. प्रमादः, उपेक्षा ३. क्रीडा, खेला ४. सुकर-सुसाध्य,-कार्यं ५. शृंगारचेष्टा, केलिः (स्त्री.)-ली ६. नारीणां सुरतलालसा ।

हेला[2], सं. पुं. दे. 'हल्ला' ।

हैं[1], अव्य. (अनु.) (निषेध) मा, मास्म, अलं २. (आश्चर्य) अहो, ही ।

—हैं, अव्य. (अनु.) मा मा, अलं अलं २. ही ही ।

हैं[2], क्रि. अ. (हिं. होना) सन्ति-विद्यन्ते-वर्तन्ते (लट्, बहु.) ।

हैंडबेग, सं. पुं. (अं.) (चर्ममयी) करपेटिका २. कर,प्रसेवः-संपुटः ।

हैंडल, सं. पुं. (अं.) मुष्टिः (स्त्री.), वारंगः ।

है, क्रि. अ., (हिं. होना) अस्ति-विद्यते-वर्तते (लट्) ।

हैकल, सं. स्त्री. (सं. हयः+गलः>) अश्व-ग्रैवेयकं २. 'हमेल' ।

हैज़ा, सं. पुं. (अ.-जह्) विषूचिका, दे. ।

हैट, सं. पुं. (अं.) गुरुंड-आंगल,-शिरस्त्राणं-शीर्षकम् ।

हैफ़, अव्य. (अ.) हा, हन्त, खेदः, शोकः ।

हैबत, सं. स्त्री. (अ.) त्रासः, भयम् ।

—नाक, वि. (अ.) भीम, भयंकर ।

हैरत, सं. स्त्री. (अ.) आश्चर्यं, विस्मयः ।

हैरान, वि. (अ.) चकित, विस्मित २. विं-, आकुल, उद्विग्न ।

हैवान, सं. पुं. (अ.) पशुः, चरिः, मृगः २. जडः, मूर्खः, असभ्यः ।

हैवानियत, सं. स्त्री. (अ.) पशुता-त्वं २. अशिष्टता, असभ्यता ३. क्रूरता ।

हैवानी, वि. (अ. हैवान) पाशव, पशु-तुल्य-सम २. क्रूर, निष्ठुर ।

हैसियत, सं. स्त्री. (अ.) सामर्थ्यं, योग्यता २. आर्थिकावस्था, धनबलं ३. धनं, वित्तं ४. संमानः । प्रतिष्ठा ४. मूल्यं, अर्घः ।

है है, अव्य. (सं. हा हा) हंत, हा हन्त, कष्टं, दुःखम् ।

होंठ, सं. पुं. (सं. ओष्ठः) दंत-रद-दशन,-च्छदः, दे. 'ओठ' ।

—फटना, सं. पुं., ओष्ठभेदः ।

—काटना या चबाना, मु., क्रुध् (दि. प. अ.), आन्तरक्षोभं प्रकटयति (ना. धा.) ।

—हिलाना, मु., वक्तुं उपक्रम् (भ्वा. आ. अ.) ।

हो, अव्य. (सं.) 'हे' ।

होटल, सं. पुं. (अं.) भोजनशाला २. पांथ-शाला ।

होड़, सं. स्त्री. (सं. हारः = युद्ध) पणः, ग्लहः २. प्रति-,स्पर्द्धा, विजिगीषा ३. आग्रहः ।

—बदना, बाँधना या लगाना, क्रि. स., ग्लह् (भ्वा. प. से , चु.), दिव् (दि. प. से.), पण् (भ्वा. आ. से.) २. विजिगीषते (सन्नन्त), स्पर्ध् (भ्वा. आ. से.) ।

होड़ाबादी, सं. स्त्री. } (हिं. होड़+बदना)
होड़ाहोड़ी, सं. स्त्री. } (हिं. होड़)दे. 'होड़' (१-२) ।

होता, सं. पुं. (सं. होतृ) ऋत्विग्भेदः, होत्रिन्, होमकर्तृ, यष्टृ ।

होत्र, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञः, यागः, मखः हवनम् २. यज्ञ-हवन,-सामग्री, हविस् (न.), हव्यम् ।

होत्री, सं. पुं. (सं.-त्रिन्), होतृ, याजकः, यष्टृ, ऋत्विग्भेदः, होमकर्तृ ।

होनहार, वि. (हिं. होना) सल्लक्षण, उन्नति-शील, आशाजनक, सिद्धिसूचक २. भाविन्,

भविष्यत्, भवितव्य। सं. स्त्री., भवितव्यता, नियतिः (स्त्री.), भाग्यं, दैवं, विधिः।

होना, क्रि अ. (सं. भवनं) भू, अस् (अ. प.), वृत् (भ्वा. आ. अ.), विद् (दि. आ. अ.), अवस्था (भ्वा. आ. अ.) २. भू, जन् (दि. आ. से.), संपद् (दि. आ. अ.), परिणम् (भ्वा. प. अ.) ३. कृ-अनुष्ठा-विधा (कर्म.) ४. रच्-निर्मा (कर्म.) ५. वट्-संवृत् (भ्वा. आ. से.), समापद् (दि. आ. अ.), आपत् (भ्वा. प. से.) ६. (रोगादिभिः) पीड् (कर्म.) ७. अति-व्यति,-इ (अ. प. अ.), व्यतिक्रम् (भ्वा. प. से.) ८. उत्पद् (दि. आ. अ.), जन् (दि. आ. से.) ९. जीव् (भ्वा. प. से.)। सं. पुं. तथा भाव, सत्ता, अस्तित्वं, अव-,स्थितिः (स्त्री.), सद्-,भावः, वर्तनं, विद्यमानता इ.।

होने योग्य, भवितव्य, शक्य, संभाव्य, संभवनीय, संपादनीय, साध्य।

होनेवाला, भाविन्, भविष्यत्, भवितव्य, दे. 'होने योग्य'।

हुआ हुआ, वि., भूत, वृत्त, जात, संपन्न, निष्पन्न, अनुष्ठित, विहित, रचित, निर्मित, उत्पन्न इ.।

(जो) हुआ सो हुआ, मु., अतीतं विस्मर २. यद् भूतं न तद्भावि।

हो आना, मु., दृष्ट्वा-मिलित्वा आगम् (भ्वा. प. अ.)।

होकर या होते हुए, मु., मध्यतः, मार्गेण।

हो चुकना या–जाना, मु., सं. निष्,-पद् (दि. आ. अ.), समाप् (स्वा. प. अ.)।

हो न हो, मु., निःसंदेहं, निःसंशयम्।

होनी, सं. स्त्री. (हिं. होना) उत्पत्तिः (स्त्री.), जन्मन् (न.) २. वृत्तं, वृत्तांतः ३. दे. 'होनहार' सं. स्त्री. ४. संभाव्य-शक्य,-वार्ता।

होम, सं. पुं. (सं.) देवयज्ञः, दे. 'हवन'।

होमना, क्रि. स., दे. 'हवन करना'।

होमियोपैथी, सं. स्त्री. (अं.) समचिकित्सा, चिकित्सापद्धतिविशेषः।

होरा, सं. स्त्री. (सं., यूनानी से लिया गया) लग्नं २. राश्यर्द्धं ३. जन्मपत्रिका ४. जातकं, जातकशास्त्रं ५. दे. 'घंटा' (= ६० मिनट)।

होला[1], सं. पुं. (सं. होलकः) तृणाग्निभृष्टार्द्धपक्वशमीधान्यम्।

होला[2], सं. पुं. (सं. होली) सिक्खानां होलिकोत्सवः।

होली, सं. स्त्री. (सं.) होलिका, होलाका, २. होलिकादहनार्थस्तृणकाष्ठराशिः ३. होलिकागीतम्।

—खेलना, मु., होलिकोत्सवे रम् (भ्वा. आ. अ.), खेल्-क्रीड् (भ्वा. प. से.), अन्योन्यं रंज् (प्रे.)।

होल्डर, सं. पुं. (अं.) लेखनीदंडः २. लेखनी।

होश, सं. पुं. (फ़ा.) संज्ञा, चैतन्यं २. स्मरणं, स्मृतिः (स्त्री.) ३. बुद्धिः-मतिः (स्त्री.)।

—मंद, वि. (फ़ा.) धी-बुद्धि-मति,-मत्।

—हवास, सं. पुं. (फ़ा+अ.) संज्ञाबुद्धी २. चैतन्यम्।

—उड़ना या जाता रहना, मु., (मायादिभिः) निस्तब्धी-जड़ी-अत्याकुली,-भू।

—करना, मु., सावधान-अवहित (वि.) भू।

—ठिकाने होना, मु., मोहः-भ्रान्तिः (स्त्री.) नश् (दि. प. वे.) २. चेतः स्वास्थ्यं आपद् (दि. आ. अ.) ३. गवनाशः जन् (दि. आ. से.) दंडं भुक्त्वा अनुतप् (दि. आ. अ.)।

—दंग होना, मु., आश्चर्यस्तब्धः (वि.) जन् (दि. आ. से.), चकितचकित (वि.) भू।

—दिलाना, मु., स्मृ (प्रे.)।

—में आना, मु., प्रकृतिं आपद् (दि. आ. अ.), संज्ञां लभ् (भ्वा. आ. अ.)।

—सँभालना, मु., प्रौढ-प्राप्तवयस्क (वि.) जन् २. सावधानो भू।

होशियार, वि. (फ़ा.) बुद्धिमत्, चतुर, प्रज्ञ २. निपुण, कुशल ३. सावधान, अवहित ४. धूर्त, मायाविन् ५. पक्वबुद्धि।

होशियारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) बुद्धि-धी-,मत्ता, २. दक्षता, नैपुण्यं ३. सावधानता।

होस्टल, सं. पुं. (अं. होस्टेल) छात्रावासः, छात्रालयः।

हौंकना, क्रि. अ. (सं. हुंकरणं) हुंकृ, गर्ज् (भ्वा. प. से.) २. दे. हाँफ(प)ना'।

हौआ, सं. पुं. (अनु. हौ) भूतः, पिशाचः, डाकिनी, शिशुत्रासार्थं काल्पनिकं भयमूलम् । सं. स्त्री., दे. 'हौवा' ।

हौका, सं. पुं. (अनु. हाव) औदरिकता, घस्मरता २. लोभ-तृष्णा,-अतिशयः ।

हौज़, सं. पुं. (अ.) कुंडं, जलाशयः, क्षुद्र-तडागः २. बृहन्मृद्भांडं, दे. 'नाँद' ।

हौदा, सं. पुं. (फ़ा. हौज़ह्) परिस्तो(ष्टो)मः, प्रवेणी, आस्तरणं, कुथः-था-थम् ।

हौल, सं. पुं. (अ.) भयं, संत्रासः ।

—नाक, वि. (अ.+फ़ा.) भयंकर, त्रासन ।

हौले, क्रि. वि. (हिं. हरुआ) शनैः, शनकैः, मंदं २. मृदु, कोमलम् (सब अव्य.) ।

हौवा, सं. स्त्री. (अ.) आदमपत्नी, *हव्वा, पृथिव्यां प्रथमा नारी मानवजातेः जननी च । सं. पुं., दे. 'हौआ' ।

हौस, सं. स्त्री., दे. 'हवस' ।

हौसला, सं. पुं. (अ.) लालसा, उत्कंठा साहसं, उत्साहः ३. हर्षः, प्रफुल्लता ।

—मंद, वि. (फ़ा.) उत्कंठित, अत्यभिलाषिन् २. साहसिन्, उत्साहिन् ३. हृष्ट, प्रफुल्ल ।

—निकालना, मु., आकांक्षां-वाञ्छां-स्पृहां संपद् (प्रे.)-सम्पूर् (प्रे.) ।

—पस्त होना, मु., हतोत्साह-भग्नहृदय (वि.) भू ।

ह्रद, सं. पुं. (सं.) अगाधजलाशयः, महा-तडागः २. तटाकः, कासारः, सरसी ३. नादः ।

ह्रसित, वि. (सं.) अल्पी-न्यूनी,-कृत-भूत, संक्षिप्त, संकुचित ।

ह्रसिमा, सं. स्त्री. (सं.-मन् पुं.) ह्रस्वता, अल्पता, क्षुद्रता ।

ह्रस्व, वि. (सं.) लघु, क्षुद्र, दभ्र, अल्प, दैर्घ्य-आयाम,-शून्य २. ऊन, न्यून, हीन ३. खर्व, न्यंच् ४. अवनत, नीच ५. क्षुद्र, तुच्छ । सं. पुं. (सं.) वामनः २. लघुवर्णः (अ. इ. उ. ऋ.) ।

ह्रास, सं. पुं. (सं.) अपकर्षः, अवनतिः (स्त्री.), क्षयः, अधोगतिः (स्त्री.), अपचयः, ध्वंसः, भ्रंशः ।

—होना, क्रि. अ., क्षि (कर्म.), ह्रस् (भ्वा. प. से.), अपचि (कर्म.) ।

ह्री, सं. स्त्री. (सं.) लज्जा, त्रपा, व्रीडा ।

ह्लाद, सं. पुं. (सं.) आनंदः,-प्र,-मोदः, हर्षः ।

ह्विस्की, सं. स्त्री. (अं.) आंग्लमद्यभेदः ।

ह्वेल, सं. पुं. (अं.) तिमिंगलः, तिमिः, ह्वेल-मत्स्यः ।

प्रथम परिशिष्ट

संस्कृत-सूक्तियों का हिन्दी-अनुवाद

संस्कृत	हिन्दी
अकालमेघवद् वित्तमकस्मादेति याति च। (कथासरित्सागर)	धन अकाल-मेघ के समान अकस्मात् आता-जाता है।
अक्षोभ्यतैव महतां महत्त्वस्य हि लक्षणम्। (कथा०)	क्षुब्ध न होना ही बड़ों के बड़प्पन का चिह्न है।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति।	विना चले तो गरुड़ भी पग-भर भी नहीं जा सकता।
अगुणस्य हतं रूपम्।	निर्गुण व्यक्ति का रूप किस काम का ?
अङ्कमारुह्य सुप्तं हि हत्वा किं नाम पौरुषम् ?	गोद में सोये हुए की हत्या में कहाँ की वीरता है।
अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति।	श्रेष्ठ लोग कही हुई बात को पूरा करते हैं।
अचिन्त्यं हि फलं सूते सद्यः सुकृतपादपः। (कथा०)	पुण्यरूपी वृक्ष शीघ्र ही अचिन्त्य फल देता है।
अजीर्णे भोजनं विषम्।	अपच में भोजन विष-तुल्य होता है।
अज्ञता कस्य नामेह नोपहासाय जायते ?	अज्ञान के कारण किसका उपहास नहीं होता ?
अतिदानाद् बलिर्बद्धः।	अत्यधिक दान से बलि को बँधना पड़ा।
अतिपरिचयादवज्ञा, संततगमनादनादरो भवति।	बहुत मेल-जोल से अवज्ञा होती है और किसी के यहाँ अधिक जाने से अनादर।
अतिभुक्तिरतीवोक्तिः सद्यः प्राणापहारिणी।	बहुत खाने और बहुत बोलने से तुरन्त मृत्यु हो जाती है।
अतिलोभो न कर्तव्यः।	अत्यधिक लोभ नहीं करना चाहिए।
अति सर्वत्र वर्जयेत्।	सब बातों में 'अति' त्याज्य है।
अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति।	जो आग तृणादि पर नहीं पड़ी, वह स्वयमेव बुझ जाती है।
अधरेष्वमृतं हि योषितां हृदि हालाहलमेव केवलम्।	स्त्रियों के ओठों में तो अमृत रहता है किंतु हृदय में भयंकर विष।
अधर्मविषवृक्षस्य पच्यते स्वादु किं फलम् ? (कथा०)	क्या कभी अधर्मरूपी विषवृक्ष पर सरस फल लग सकते हैं ?
अधिकस्याधिकं फलम्।	जितना गुड़ उतना मीठा।
अनध्वा वाजिनां जरा।	सदा बँधे रहनेवाले घोड़े बूढ़े हो जाते हैं।
अनन्यगामिनी पुंसां कीर्तिरेका पतिव्रता।	पुरुषों की स्थायी कीर्ति पतिव्रता नारी के समान होती है।
अनपेक्ष्य गुणागुणौ जनः स्वरुचिं निश्चयतोऽनुधावति। (शिशुपालवधे)	वस्तुतः मनुष्य गुण-दोष की उपेक्षा करके रुचि के अनुसार ही कार्य करता है।
अनवसरे याचितमिति सत्पात्रमपि कुप्यते दाता।	यदि कुअवसर पर माँगा जाए तो दानी मनुष्य सत्पात्र पर भी क्रोध करता है।

अनार्यः परदारव्यवहारः । (अभिज्ञानशाकुन्तले)	पराई स्त्रियों से सम्बन्ध रखना आर्योचित नहीं ।
अनार्यसंगमाद्वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः । (किरातार्जुनीये)	अनार्यों (दुष्टों) के साथ मेल-जोल की अपेक्षा महात्माओं से वैर अच्छा ।
अनाश्रया न शोभन्ते पण्डिता वनिता लताः ।	विद्वान्, स्त्रियाँ और लताएँ आश्रय के विना शोभा नहीं देतीं ।
अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम् । (अभिज्ञान०)	पराई स्त्रियों की ओर ताकना न चाहिए ।
अनुकूलेऽपि कलत्रे नीचः परदारलम्पटो भवति ।	पत्नी के अनुकूल होने पर भी नीच मनुष्य परदाराभिगमन करता है ।
अनुत्सेकः खलु विक्रमालंकारः ।	नम्रता वीरता का भूषण है ।
अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं शमयति परितापं छायया संश्रितानाम् । (अभिज्ञान०)	वृक्ष स्वयं तो कड़ी धूप सहता है, परन्तु शरणागतों के ताप को छाया से शान्त कर देता है ।
अनुसृत्य सतां वर्त्म यत्स्वल्पमपि तद् बहु ।	सज्जनों के मार्ग पर चलते हुए थोड़ा भी मिले तो बहुत समझिए ।
अनुहुंकुरुते घनध्वनिं नहि गोमायुरुतानि केसरी । (शिशु०)	सिंह मेघ-गर्जन सुनकर तो दहाड़ता है, गीदड़ों की ध्वनि सुनकर नहीं ।
अन्तःसारविहीनानामुपदेशो न विद्यते ।	जड़बुद्धि मनुष्य को शिक्षा देना व्यर्थ है ।
अन्यायं कुरुते यदा क्षितिपतिः कस्तं निरोद्धुं क्षमः ?	जब राजा ही अन्याय करने लग पड़े तब उसे कौन रोक सकता है ?
अपथे पदमर्पयन्ति हि श्रुतवन्तोऽपि रजोनिमीलिताः । (रघुवंशे)	रजोगुण से अभिभूत विद्वान् भी कुमार्गगामी बन जाते हैं ।
अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति ।	कुपथगामी का साथ सगा भाई भी नहीं देता ।
अपायो मस्तकस्थो हि विषयग्रस्तचेतसाम् । (कथा०)	विपत्तियाँ विषयी लोगों के सिर पर मँडराती रहती है ।
अपि धन्वन्तरिर्वैद्यः किं करोति गतायुषि ।	जब आयु समाप्त हो जाती है तब वैद्य धन्वन्तरि भी कुछ नहीं कर सकता ।
अपि स्वदेहात् किमुतेन्द्रियार्थाद्यशोधनानां हि यशो गरीयः । (रघु०)	यशस्वी लोग, भोगों की तो बात ही क्या, स्वशरीर से भी यश को श्रेष्ठ समझते हैं ।
अपुत्रस्य गृहं शून्यम् ।	पुत्रहीन व्यक्ति के लिए घर सूना होता है ।
अपेक्षन्ते हि विपदः किं पेलवमपेलवम् ! (कथा०)	विपत्तियाँ लक्ष्य की कोमलता वा कठोरता नहीं देखा करतीं ।
अप्रकटीकृतशक्तिः शक्तोऽपि जनस्तिरस्क्रियां लभते ।	जो बलवान् निज बल को कभी प्रकट नहीं करता वह तिरस्कार का भाजन बनता है ।
अप्राप्यं नाम नेहास्ति धीरस्य व्यवसायिनः । (कथा०)	धीर और व्यवसायी व्यक्ति के लिए संसार में कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं ।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ।	कड़वी परन्तु हितकर बात कहने और सुनने वाले व्यक्ति दुर्लभ हैं ।
अबला यत्र प्रबला ।	जहाँ स्त्री सबल हो··· ।
अभद्रं भद्रं वा विधिलिखितमुन्मूलयति कः ?	बुरा हो या भला, विधाता के लेख को कौन मिटा सकता है ?
अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु ! (रघु०)	तपाने पर लोहा भी पिघल जाता है, प्राणियों की तो बात ही क्या ?
अभोगस्य हतं धनम् ।	जो भोगता नहीं, उसका धन व्यर्थ है ।

अमर्षणः शोणितकाङ्क्षया किं पदा स्पृशन्तं दशति द्विजिह्वः ? (रघु०)	क्या उग्र सर्प पाँव से छूनेवाले व्यक्ति को लहू पीने की इच्छा से काटता है ?
अमृतं क्षीरभोजनम् ।	खीर-रूपी भोजन अमृत है ।
अमृतं प्रियदर्शनम् ।	प्रिय पदार्थ का दर्शन अमृत है ।
अमृतं राजसंमानम् ।	राजा से प्राप्त सम्मान अमृत है ।
अमृतं शिशिरे वह्निः ।	जाड़ों में अग्नि अमृत है ।
अम्बुगर्भो हि जीमूतश्चातकैरभिनन्द्यते ।(रघु०)	पपीहे जलपूर्ण बादल की ही प्रशंसा करते हैं ।
अयशोभीरवः किं न कुर्वते बत साधवः ! (कथा०)	अपयश से डरने वाले सज्जन क्या नहीं करते !
अयातपूर्वा परिवादगोचरं सतां हि वाणी गुणमेव भाषते । (किरातार्जुनीय)	सज्जनों की वाणी, निन्दा के मार्ग से अपरिचित होने के कारण, गुणों का ही वर्णन करती है ।
अरुंतुदत्वं महतां ह्यगोचरः । (किरात०)	बड़े लोग किसी का जी नहीं दुखाते ।
अर्थमनर्थं भावय नित्यं, नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम् ।	सदा ही धन को दुःखरूप समझो, वस्तुतः उससे तनिक भी सुख नहीं ।
अर्थातुराणां न गुरुर्न बंधुः ।	धन के लोभी गुरु और बन्धु तक का ध्यान नहीं करते ।
अर्थो हि कन्या परकीय एव । (अभिज्ञान०)	कन्या पराया ही धन है ।
अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम् ।	अधजल गगरी छलकत जाए ।
अल्पविद्यो महागर्वी ।	थोड़ी विद्या वाला व्यक्ति बहुत ही गर्वीला होता है ।
अल्पश्च कालो बहवश्च विघ्नाः ।	समय थोड़ा है और विघ्न बहुत ।
अल्पीयसोऽप्यामयतुल्यवृत्तेर्महापकाराय रिपोर्विवृद्धिः । (किरात०)	रोग की तरह स्वभाव वाले छोटे से शत्रु की उन्नति से भी भारी अनिष्ट होता है ।
अवस्तुनि कृतक्लेशो मूर्खो यात्यवहास्यताम् । (कथा०)	तुच्छ वस्तु के लिए कष्ट उठाने वाला मूर्ख उपहासास्पद बनता है ।
अविद्याजीवनं शून्यम् ।	अविद्यापूर्ण जीवन सूना है ।
अविनीता रिपुर्भार्या ।	नम्रता-रहित पत्नी शत्रु है ।
अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयंकरः ।	जिसका मन ठिकाने न हो, उसकी कृपा भी भयावनी होती है ।
अशीलस्य हतं कुलम् ।	शीलरहित व्यक्ति की कुलीनता व्यर्थ है ।
अश्नुते स हि कल्याणं, व्यसने यो न मुह्यति ।	जो विपत्ति में विमूढ़ नहीं होता वह अवश्य ही कल्याणभागी बनता है ।
अश्रेयसे न वा कस्य विश्वासो दुर्जने जने ?	दुष्ट जन पर विश्वास करने से किसका अनिष्ट नहीं होता ?
असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः ।	संतोष-हीन-ब्राह्मण नष्ट हो जाते हैं ।
असन्मैत्री हि दोषाय कूलच्छायेव सेविता । (किरात०)	दुर्जनों की मित्रता कगार की छाया के समान अनर्थकारिणी होती है ।
असारे दग्धसंसारे सारं सारङ्गलोचनाः ।	इस दुःखपूर्ण निस्सार संसार में साररूप तो केवल मृगनयनियाँ ही हैं ।
असिद्धार्था निवर्तन्ते न हि धीराः कृतोद्यमाः । (कथा०)	उद्यमी धीर कार्यसिद्धि से पूर्व नहीं रुकते ।
असिद्धेस्तु हता विद्या ।	सिद्धि के बिना विद्या व्यर्थ है ।

अस्थिरं जीवितं लोके ।	जगत् में जीवन अस्थिर है ।
अस्थिराः पुत्रदाराश्च ।	पुत्र और कलत्र अस्थिर हैं ।
अस्थिरे धनयौवने ।	धन और यौवन अस्थिर हैं ।
अस्वर्ग्यं लोकविद्विष्टम् ।	लोकविरुद्ध आचरण सुखदायक नहीं होता ।
अहितो देहजो व्याधिः ।	शरीर में उत्पन्न रोग शत्रु है ।
अहो चित्राकारा नियतिरिव नीतिर्नयविदः ।	नीतिज्ञ की नीति नियति के समान विचित्र रूपों वाली होती है ।
अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता । (किरात०)	बलवान् से विरोध करने का परिणाम बुरा ही होता है ।
अहो दैवाभिशप्तानां प्राप्तोऽप्यर्थः पलायते । (कथा०)	हा ! दैव से शापित लोगों के बने हुए काम भी बिगड़ जाते हैं ।
अहो रूपम्, अहो ध्वनिः ।	वाह ! क्या रूप है और क्या स्वर !
आकण्ठजलमग्नोऽपि श्वा लिहत्येव जिह्वया ।	गले तक पानी में डूबा हुआ भी कुत्ता जल को जीभ से ही चाटता है ।
आचारः प्रथमो धर्मः ।	आचार सर्वोत्तम धर्म है ।
आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया । (रघु०)	गुरुजनों की आज्ञा का बिना विचारे ही पालन करना चाहिए ।
आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ।	अपने रक्षार्थ पृथ्वी को भी त्याग दे ।
आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव । (रघु०)	मेघों के समान सत्पुरुषों का आदान भी प्रदान के लिए ही होता है ।
आपत्काले च कष्टेऽपि नोत्साहस्त्यज्यते बुधैः । (कथा०)	विपत्ति और कष्ट के समय में भी बुद्धिमान् उत्साह नहीं छोड़ते ।
आपत्सु धीरान् पुरुषान् स्वयमायान्ति संपदः । (कथा०)	आपत्तियों में धैर्य रखने वालों के पास सम्पत्तियाँ स्वयमेव आती हैं ।
आपदि स्फुरति प्रज्ञा यस्य धीरः स एव हि । (कथा०)	जिसकी बुद्धि आपत्ति में चमकती है, वह धीर है ।
आपद्यपि सतीवृत्तं किं मुञ्चन्ति कुलस्त्रियः ? (कथा०)	क्या कुलीन ललनाएँ आपत्ति में भी सतीत्व का त्याग करती हैं ?
आपन्नार्तिप्रशमनफलाः संपदो ह्युत्तमानाम् । (मेघदूते)	उत्तम जनों का धन दुखियों के दुःख दूर करने पर ही सफल होता है ।
आमुखापाति कल्याणं कार्यसिद्धिं हि शंसति । (कथा०)	कार्यारम्भ में होने वाला मंगल, कार्यसिद्धि का सूचक होता है ।
आये दुःखं व्यये दुःखं धिगर्थाः कष्टसंश्रयाः ।	धन का आगम और व्यय दोनों ही दुःखपूर्ण होते हैं; इस दुःखदायक धन को धिक्कार है ।
आरब्धे हि सुदुष्करेऽपि महतां मध्ये विरामः कुतः । (कथा०)	आरम्भ किये हुए अत्यन्त कठिन काम में भी बड़े लोग बीच में नहीं रुकते ।
आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः । (नैषधीयचरिते)	कुटिलों के साथ सरलता का व्यवहार नीति नहीं है ।
आलस्योपहता विद्या ।	आलस्य विद्या का विनाशक है ।
आवेष्टितो महासर्पैश्चन्दनः किं विषायते ?	सर्पों से परिवेष्टित चन्दन क्या विषैला हो जाता है ?
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।	आहार और व्यवहार में संकोच छोड़कर सुखी रहे ।

आहुः सप्तपदी मैत्री।	सात पग साथ-साथ चलने को मैत्री कहते हैं।
इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः।	न इधर के रहे न उधर के रहे।
इदं च नास्ति न परं च लभ्यते।	न यह रहा, न वह मिला।
इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः।	अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनकर इन्द्र भी गौरव-हीन हो जाता है।
इन्धनौघधगप्यग्निस्त्विषा नात्येति पूषणम्। (शिशु०)	ईंधन के बहुत बड़े ढेर को जलानेवाली आग भी अपनी ज्योति से सूर्य को मात नहीं कर सकती।
इष्टं धर्मेण योजयेत्।	अभिलाषा धर्मानुसारिणी चाहिए।
इहामुत्र च नारीणां परमा हि गतिः पतिः। (कथा०)	लोक और परलोक में स्त्रियों का परम आश्रय पति ही है।
ईर्ष्या हि विवेकपरिपन्थिनी। (कथा०)	ईर्ष्या विवेक की शत्रु है।
ईश्वराणां हि विनोदरसिकं मनः। (किरात०)	धनाढ्य लोग विनोदी होते हैं।
उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः। (अभिज्ञान०)	मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं।
उत्साहैकधने हि वीरहृदये नाप्नोति खेदोऽन्तरम्। (कथा०)	वीरों के उत्साहपूर्ण हृदय में खेद के लिये अवकाश कहाँ!
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।	उदारचरित लोगों के लिये तो सारी भूमि ही कुटुम्ब है।
उदारस्य तृणं वित्तम्।	उदार व्यक्ति के लिये धन तृणतुल्य है।
उदिते तु सहस्रांशौ न खद्योतो न चन्द्रमाः।	सूर्य के उदय पर न जुगुनू की चमक रहती है, न चाँद की।
उदिते परमानन्दे नाहं न त्वं न वै जगत्।	ब्रह्मानन्द की प्राप्ति होने पर मैं, तू और जगत् का ज्ञान नहीं रहता।
उद्योगः पुरुषलक्षणम्।	उद्योग ही पुरुष का लक्षण है।
उन्नतो न सहते तिरस्क्रियाम्।	उच्च व्यक्ति तिरस्कार नहीं सहता।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये।	मूर्ख लोग उपदेश से प्रकुपित होते हैं, शांत नहीं।
उप्तं सुकृतबीजं हि सुक्षेत्रेषु महत्फलम्। (कथा०)	उत्तम पात्रों में बोया हुआ पुण्यरूपी बीज महान् फल देता है।
उष्णत्वमग्न्यातपसंप्रयोगाच्छैत्यं हि यत् सा प्रकृतिर्जलस्य (रघु०)	जल का स्वाभाविक गुण तो शीतलता है, उसमें गर्मी तो अग्नि या धूप के संसर्ग से आती है।
उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम्।	गर्म अङ्गार हाथ को जलाता है, ठण्डा कलुषित करता है।
ऋणकर्ता पिता शत्रुः।	ऋण लेनेवाला पिता शत्रु है।
ऋद्धिश्चित्तविकारिणी।	ऐश्वर्य चित्त को विकृत कर देता है।
एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः। (कुमार०)	गुण-समुदाय में अकेला दोष ऐसे छिप जाता है जैसे किरणों में चाँद का कलंक।
क उष्णोदकेन नवमल्लिकां सिञ्चति! (अभि०)	मोतिये के पौधे को गर्म जल से कौन सींचता है!
कणशः क्षणशश्चैव विद्यामर्थञ्च साधयेत्।	विद्या और धन का संग्रह क्षण-क्षण में कण-कण करके करते रहना चाहिए।
कण्ठे सुधा वसति वै खलु सज्जनानाम्। (कथा०)	अमृत सज्जनों के कण्ठ में ही रहता है।
कमलवनभूषा मधुकरः।	भ्रमर कमल-समूह का अलंकार है।
कर्तव्यं हि सतां वचः। (कथा०)	सत्पुरुषों के वचनानुसार चलना चाहिए।
कर्तव्यो महदाश्रयः।	आश्रय बड़ों का ही लेना चाहिए।

कर्मणो गहना गतिः । — कर्म की गति गहन है ।

कर्मणो ज्ञानमतिरिच्यते । — कर्म से ज्ञान बढ़कर है ।

कर्मदोषाद् दरिद्रता । — दरिद्रता कर्म-दोष का फल है ।

कर्मानुगो गच्छति जीव एकः । — अकेला जीव कर्मानुसार गति पाता है ।

कर्मायत्तं फलं पुंसाम् । — मनुष्य को फल की प्राप्ति कर्मानुसार होती है ।

कलासीमा काव्यम् । — कला की सीमा काव्य है ।

कवयः किं न पश्यन्ति ! — कवि क्या नहीं देखते !

कवले पतिता सद्यो वमयति ननु मक्षिकान्न-भोक्तारम् । — ग्रास में गिरी हुई मक्खी भोजनकर्ता को तुरन्त वमन करा देती है ।

कष्टं निर्धनिकस्य जीवितमहो दारैरपि त्यज्यते । — हा ! निर्धन का जीवन इतना दुःखपूर्ण होता है कि पत्नी भी उसका साथ छोड़ देती है ।

कष्टः खलु पराश्रयः । — दूसरे का भरोसा दुःखदायक होता है ।

कष्टादपि कष्टतरं परगृहवासः परान्नं च । — पराये घर में निवास और पराये अन्न से निर्वाह सबसे बड़े दुःख हैं ।

कस्त्यागः स्वकुटुम्बपोषणविधावर्थव्ययं कुर्वतः ! — अपने कुटुम्ब के पालन में ही धन व्यय करने-वाले व्यक्ति का त्याग भी कोई त्याग है !

कस्य नेष्टं हि यौवनम् ? (कथा०) — यौवन किसे अच्छा नहीं लगता ?

कस्यचित् किमपि नो हरणीयम् । — किसी का भी कुछ भी चुराना नहीं चाहिए ।

कस्य नोच्छृङ्खलं बाल्यं गुरुशासनवर्जितम् ? (कथा०) — गुरु का शासन न होने से किसका बचपन उच्छृङ्खल नहीं हो जाता ?

कस्य सत्संगो न भवेच्छुभः ? (कथा०) — सत्सङ्ग किसका भला नहीं करता ?

कः कालस्य न गोचरान्तरगतः । — काल के क्षेत्र से बाहर कौन है !

कः परः प्रियवादिनाम् । — मधुरभाषी का कोई शत्रु नहीं होता ।

कः पैतामहगोलकेऽत्र निखिलैः सम्मानितो वर्तते ? — इस ब्राह्मण में सर्वसम्मानित कौन है ?

कः प्राज्ञो वाञ्छति स्नेहं वेश्यासु सिकतासु च ? (कथा०) — कौन-सा विद्वान् वेश्याओं और रेत से स्नेह (प्रेम, तेल) चाहता है ?

कः सूनुर्विनयं विना ! — विनय से रहित पुत्र क्या !

काकाः किमपराध्यन्ति हंसैर्जग्धेषु शालिषु ! (कथा०) — जब धानों को हंस खा गये तब कौए क्या अपराध करेंगे !

कान्ता रूपवती शत्रुः । — सुरूपा पत्नी शत्रु है ।

कामं व्यसनवृक्षस्य मूलं दुर्जनसंगतिः । (कथा०) — बुरी संगत व्यसन-रूपी वृक्ष की जड़ है ।

कामातुराणां न भयं न लज्जा । — कामपीड़ित व्यक्ति भय और लज्जा से रहित होते हैं ।

कामिनश्च कुतो विद्या ? — कामी को विद्या कहाँ ?

कायः कस्य न वल्लभः ? — शरीर किसे प्यारा नहीं होता ?

कालस्य कुटिला गतिः । — काल की चाल टेढ़ी होती है ।

काले खलु समारब्धाः फलं बध्नन्ति नीतयः । (रघु०) — समय पर प्रयुक्त नीतियाँ अवश्य फल लाती हैं ।

काले दत्तं वरं ह्यल्पमकाले बहुनापि किम् ! (कथा०) — समय पर दिया हुआ थोड़ा भी दान असमय पर दिये हुए बड़े दान से अच्छा होता है ।

कालेन फलते तीर्थं, सद्यः साधुसमागमः ।	तीर्थ का फल विलम्ब से परन्तु सत्संगति का फल शीघ्र प्राप्त होता है ।
का विद्या कवितां विना ?	कविता के विना विद्या कैसी ?
काश्मीरजस्य कटुतापि नितान्तरम्या ।	केसर की कड़वाहट भी अत्यन्त प्यारी होती है ।
का ह्यब्जिनी विना हंसं, कश्च हंसोऽब्जिनीं विना ? (कथा०)	हंस-हीन सरसी कैसी और सरसी-हीन हंस कैसा ?
किं हि न भवेदीश्वरेच्छया ? (कथा०)	ईश्वर की इच्छा से क्या नहीं हो सकता ?
किं किं करोति न निरर्गलतां गता स्त्री ?	निरंकुश नारी क्या-क्या नहीं करती ?
किञ्चित्कालोपभोग्यानि यौवनानि धनानि च ।	यौवन तथा सम्पदा के सुख कुछ ही काल तक लूटे जा सकते हैं ।
कुराजान्तानि राष्ट्राणि ।	बुरे राजाओं से राष्ट्रों का नाश हो जाता है ।
कुरूपता शीलतया विराजते ।	सुन्दर शील से कुरूपता भी खिल उठती है ।
कुरूपी बहुचेष्टिकः ।	कुरूप मनुष्य बहुत चेष्टाएँ करता है ।
कुलवधूः का स्वामिभक्तिं विना ?	पतिभक्ति-विहीन कुलवधू कैसी ?
कुले कश्चिद्धन्यः प्रभवति नरः श्लाघ्य-महिमा ।	कुल में कोई ही धन्य व्यक्ति यशस्वी प्रभु होता है ।
कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते ।	फटे-पुराने वस्त्र भी स्वच्छ रहने से खिल उठते हैं ।
कुवाक्यान्तं च सौहृदम् ।	कुवचनों से मित्रता नष्ट हो जाती है ।
कुशिष्यमध्यापयतः कुतो यशः ?	कुशिष्य के अध्यापक को यश कहाँ ?
कृतघ्नानां शिवं कुतः ?	कृतघ्नों का कल्याण कहाँ ?
कृतार्थः स्वामिनं द्वेष्टि ।	पूर्ण-मनोरथ व्यक्ति स्वामी से द्वेष करता है ।
कृपणानुसारि च धनम् ।	धन कृपण के पीछे चलता है ।
कृशे कस्यास्ति सौहृदम् ?	निर्बल या निर्धन से कौन मित्रता करता है ?
केचिदज्ञानतो नष्टाः ।	कई लोग अज्ञान से नष्ट हो गये ।
केचिन्नष्टाः प्रमादतः ।	कई लोग प्रमाद से नष्ट हो गये ।
केवलोऽपि सुभगो नवाम्बुदः किं पुनस्त्रिदश-चापलाञ्छितः ? (रघु०)	नया मेघ वैसे भी सुन्दर होता है; परन्तु जब वह इन्द्रधनुष से युक्त हो तब तो बात ही क्या ?
केषां न स्यादभिमतफला प्रार्थना ह्युत्तमेषु ! (मेघ०)	उत्तम जनों के समक्ष की हुई किनकी प्रार्थना सफल नहीं होती !
केषां नैषा कथय कविताकामिनी कौतुकाय !	कहो तो, यह कविता-कामिनी किन के मन में कौतुक उत्पन्न नहीं करती !
को जानाति जनो जनार्दनमनोवृत्तिः कदा कीदृशी ?	कौन जानता है कि भगवान् के मन की वृत्ति कब कैसी होती है ?
कोऽतिभारः समर्थानाम् ।	बलवानों के लिये कोई भी भार अधिक नहीं है ।
को धर्मः कृपया विना ?	दया के विना धर्म कैसा ?
को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः ।	संसार में जिसके मुँह में ग्रास डाल दो, वही वश में हो जाता है ।
को नाम राज्ञां प्रियः !	राजाओं का प्यारा कौन होता है !
कोऽर्थान् प्राप्य न गर्वितः !	धन पाकर कौन गर्वित नहीं होता !
कोऽर्थी गतो गौरवम् ?	किस याचक को गौरव प्राप्त हुआ ?
को विदेशः समर्थानाम् ।	समर्थ व्यक्ति के लिये विदेश कौन-सा है ।
को हि मार्गममार्गं वा व्यसनान्धो निरीक्षते ? (कथा०)	कौन व्यसनान्ध मनुष्य सुपथ-कुपथ का ध्यान रखता है ?

को हि वित्तं रहस्यं वा स्त्रीषु शक्नोति गूहितुम्। (कथा०)	स्त्रियाँ सम्पत्ति और गोपनीय बात को नहीं छिपा सकतीं।
को हि स्वशिरसश्छायां विधेश्चोल्लङ्घयेद् गतिम् ? (कथा०)	अपने सिर की परछाईं और विधि की गति का उल्लंघन कौन कर सकता है ?
क्रियाणां खलु धर्म्याणां सत्पत्न्यो मूलकारणम्। (कुमारसंभवे)	धार्मिक कृत्यों का मूल कारण श्रेष्ठ पत्नियाँ होती हैं।
क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे।	बड़े लोग स्वप्रताप से कार्य सिद्ध करते हैं, उपकरणों से नहीं।
क्रुद्धे विधौ भजति मित्रममित्रभावम्।	विधाता क्रुद्ध हो तो मित्र भी अमित्र बन जाता है।
क्रोधो मूलमनर्थानाम्।	क्रोध अनर्थों की जड़ है।
क्वाश्रयोऽस्ति दुरात्मनाम् ?	दुष्टों को आश्रय कहाँ ?
क्षणविध्वंसिनः कायाः का चिन्ता मरणे रणे।	जब शरीर क्षणभङ्गुर है तब रण में मरने में चिन्ता कैसी।
क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः। (शिशु०)	वास्तविक सौन्दर्य वही है जो अनुक्षण नया-नया होता जाये।
क्षमया किं न सिध्यति ?	क्षमा से क्या नहीं सिद्ध होता ?
क्षान्तितुल्यं तपो नास्ति।	क्षमा के तुल्य कोई तप नहीं है।
क्षारं पिबति पयोधेर्वर्षत्यम्भोधरो मधुरमम्भः।	मेघ समुद्र का खारा पानी पीता है और मधुर जल बरसाता है।
क्षितितले किं जन्म कीर्तिं विना !	भूमि पर कीर्तिहीन जीवन क्या !
क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति।	निर्धन लोग निर्दय बन जाते हैं !
क्षुधातुराणां न रुचिर्न पक्वम्।	भूख से व्याकुल व्यक्ति न स्वाद देखते हैं न पक्वता।
ख(फ)टाटोपो भयङ्करः।	फण का विस्तार-मात्र भी भयंकर होता है।
गतस्य शोचनं नास्ति।	बीती बात का शोक व्यर्थ है।
गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः।	लोग भेड़चाल चलते हैं, तत्त्व की पहचान नहीं करते।
गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः।	सम्पत्तियाँ स्वयं गुणों की लोभी होती हैं।
गुणान् भूषयते रूपम्।	रूप गुणों को अलंकृत कर देता है।
गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।	गुणियों में गुण ही पूज्य होते हैं, न बाह्य चिह्न और न आयु।
गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः।	गुण का मूल्य गुणी जानता है, निर्गुण नहीं।
गुणैर्विहीना बहु जल्पयन्ति।	गुणहीन मनुष्य वाचाल होते हैं।
गुरुतां नयन्ति हि गुणा न संहतिः। (किरात०)	गौरव गुणों से मिलता है, समूह से नहीं।
गृहे या पुण्यनिष्पत्तिः साध्वनि अमतः कुतः। (कथा०)	गार्हस्थ्य में जो पुण्य किये जा सकते हैं वे संन्यास में नहीं।
ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।	गाँव की रक्षा के लिये कुल की बलि दे दे।
चकास्ति योग्येन हि योग्यसंगमः (नैषध०)	योग्य से योग्य का मेल ही शोभा देता है।
चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च।	दुःख और सुख (रथ के) चक्र के तुल्य घूमते हैं।
चक्षुःपूतं न्यसेत् पादम्।	देखकर ही पग रखना चाहिए।
चपलौ किल शूराणां रणे जयपराजयौ। (कथा०)	युद्ध में वीरों की जय या पराजय अनिश्चित होती है।

चाण्डालोऽपि नरः पूज्यो यस्यास्ति विपुलं धनम् ।	अति धनवान् चाण्डाल भी पूज्य है ।
चित्तमेतदमलीकरणीयम् ।	इस चित्त को निर्मल करना चाहिए ।
चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकरूपता ।	सज्जनों के मन, वाणी और कर्म में समानता रहती है ।
चित्रा गतिः कर्मणाम् ।	कर्मों की गति न्यारी ।
चिन्ता जरा मनुष्याणाम् ।	चिन्ता मनुष्यों का बुढ़ापा है ।
चिन्तासमं नास्ति शरीरशोषणम् ।	चिन्ता के समान शरीर को कोई भी नहीं सुखाता ।
चौराणामनृतं बलम् ।	झूठ ही चोरों का बल है ।
चौरे गते वा किमु सावधानम् !	चोर के भाग जाने पर सावधानता से क्या !
छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति ।	दोषों के कारण अनेक विपत्तियाँ आ घेरती हैं ।
जठरं को न बिभर्ति केवलम् !	केवल अपना पेट कौन नहीं भर लेता !
जपतो नास्ति पातकम् !	जप करने वाला पाप-मुक्त रहता है ।
जरा रूपं हरति ।	बुढ़ापा सौन्दर्य का नाशक है ।
जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।	बूँद-बूँद करके घड़ा भर जाता है ।
जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ।	उत्पन्न व्यक्ति की मृत्यु अटल है ।
जातापत्या पतिं द्वेष्टि ।	संतानवती नारी पति से द्वेष करती है ।
जातौ जातौ नवाचाराः ।	प्रत्येक जाति के आचरण अलग-अलग होते हैं ।
जानन्ति पशवो गन्धात् ।	पशु गन्ध से पहचान जाते हैं ।
जामाता दशमो ग्रहः ।	दामाद दसवाँ ग्रह है ।
जारस्त्रीणां पतिः शत्रुः ।	कुलटा को पति शत्रु प्रतीत होता है ।
जितक्रोधेन सर्वं हि जगदेतद् विजीयते । (कथा०)	क्रोध का विजेता जगद्विजयी होता है ।
जीवन् हि धीरोऽभिमतं किं नाम न यदाप्नुयात् । (कथा०)	धैर्यशाली व्यक्ति जीवित रहे तो प्रत्येक अभीष्ट प्राप्त कर लेता है ।
जीवो जीवस्य जीवनम् ।	प्राणी प्राणी का जीवन है ।
ज्ञानस्याभरणं क्षमा ।	क्षमा ज्ञान का भूषण है ।
ज्येष्ठभ्राता पितुः समः ।	बड़ा भाई पिता के तुल्य है ।
झटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः । (नैषध०)	विद्वान् लोग दूसरे के भाव को तुरन्त जान जाते हैं ।
तक्रान्तं खलु भोजनम् ।	भोजन के अन्त में मट्ठे का सेवन करे ।
तपोऽधीनानि श्रेयांसि, ह्युपायोऽन्यो न विद्यते । (कथा०)	सुख-सुविधाएँ तपस्या से ही प्राप्त होती हैं, किसी अन्य उपाय से नहीं ।
तपोऽधीना हि संपदः । (कथा०)	संपत्तियाँ तप के अधीन हैं ।
तमस्तपति घर्मांशौ कथमाविर्भविष्यति ? (अभिज्ञान०)	सूर्य के चमकने पर अन्धकार कैसे प्रकट होगा ?
तस्करस्य कुतो धर्मः !	चोर का धर्म कहाँ !
तस्य तदेव मधुरं यस्य मनो यत्र संलग्नम् ।	जिसका मन जिसमें लगा हो, उसे वही प्रिय होता है ।
तिष्ठत्येकां निशां चन्द्रः श्रीमान् संपूर्णमंडलः ।	१. शोभान्वित पूर्ण चाँद तो एक ही रात रहता है । २. चार दिन की चाँदनी और फिर अँधेरी रात है ।

तुष्यन्ति भोजनैर्विप्राः ।	ब्राह्मण सुंदर भोजन से प्रसन्न होते हैं ।
तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते । (रघु०)	तेजस्वियों की उमर नहीं देखी जाती ।
त्यजन्त्युत्तमसत्त्वा हि प्राणानपि न सत्पथम् । (कथा०)	उत्तम प्रकृति के लोग प्राण त्याग देते हैं, सन्मार्ग नहीं ।
त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ।	कुटुम्ब की रक्षार्थ एक सम्बन्धी का त्याग कर देना चाहिए ।
त्यागाज्जगति पूज्यन्ते पशुपाषाणपादपाः ।	पशु, पत्थर और पेड़ त्याग के कारण ही संसार में पूजे जाते हैं ।
त्रिभुवनविषये कस्य दोषो न चास्ति !	तीनों लोकों में कौन निर्दोष है !
त्रैलोक्ये दीपको धर्मः ।	धर्म तीनों लोकों का दीपक है ।
दया मांसाशिनः कुतः !	मांसभक्षक में दया कहाँ !
दयितं जनः खलु गुणीति मन्यते । (शिशु०)	लोग प्रिय मनुष्य को गुणी समझते हैं ।
दरिद्रता धीरतया विराजते ।	निर्धनता धैर्य से शोभा पाती है ।
दर्दुरा यत्र वक्तारस्तत्र मौनं हि शोभनम् ।	जहाँ मेढक वक्ता हों वहाँ मौन ही अच्छा ।
दशाननोऽहरत्सीतां बन्धनं च महोदधेः ।	सीता तो चुराई रावण ने और बाँधा गया समुद्र ।
दारिद्र्यदोषेण करोति पापम् ।	मनुष्य दरिद्रता के कारण पाप करता है ।
दारिद्र्यदोषो गुणराशिनाशी ।	दरिद्रता अनेक गुणों की नाशिका है ।
दारिद्र्यं परमाञ्जनम् । (भागवते)	दरिद्रता सबसे उत्तम सुर्मा है ।
दुग्धधौतोऽपि किं याति वायसः कलहंसताम् ?	दूध से धोने पर क्या कौआ हंस बन जाता है ?
दुरधीता विषं विद्या ।	बुरी तरह से पढ़ी हुई विद्या विष है ।
दुर्जनस्य कुतः क्षमा ?	दुष्ट में क्षमा कहाँ ?
दुर्जनस्यार्जितं वित्तं भुज्यते राजतस्करैः ।	दुर्जन की कमाई राजा और चोर ने खाई ।
दुर्ज्ञेया हि विषया विदुषापि । (नैषध०)	विद्वान् भी विषयों को कठिनता से जानता है ।
दुर्बलस्य बलं राजा ।	राजा दुर्बल का बल है ।
दुर्मन्त्री राज्यनाशाय ।	कुमंत्री से राज्य का नाश होता है ।
दुर्लभं क्षेमकृत् सुतः ।	कल्याणकारी पुत्र दुर्लभ है ।
दुर्लभं भारते जन्म मनुष्यं तत्र दुर्लभम् ।	भारत में जन्म दुर्लभ है और फिर मनुष्य-जन्म तो और भी दुर्लभ है ।
दुर्लभः स गुरुर्लोके शिष्यचिन्तापहारकः ।	शिष्यों की चिन्ता का नाशक गुरु जगत् में दुर्लभ है ।
दुष्टेऽपि पत्यौ साध्वीनां नान्यथावृत्ति मानसम् । (कथा०)	पति के दुष्ट होने पर भी सती स्त्रियों का मन अन्यत्र नहीं जाता ।
दूरतः पर्वता रम्याः ।	दूर के ढोल सुहावने ।
देवो दुर्बलघातकः ।	ग़रीब को खुदा की मार ।
देहस्नेहो हि दुस्त्यजः ।	शरीर का प्रेम छोड़ना कठिन है ।
दैवमेव हि साहाय्यं कुरुते सत्त्वशालिनाम् । (कथा०)	दैव भी पराक्रमी लोगों की ही सहायता करता है ।
दैवी विचित्रा गतिः ।	दैव की गति अद्भुत है ।
दोषग्राही गुणत्यागी पल्लोलीव हि दुर्जनः ।	दुष्ट मनुष्य छलनी के समान दोषों का ग्रहण करते हैं और गुणों का त्याग ।
दोषोऽपि गुणतां याति प्रभोर्भवति चेत्कृपा ।	प्रभु की कृपा हो तो दोष भी गुण हो जाता है ।
द्रव्येण सर्वे वशाः ।	धन से सब अधीन हो जाते हैं ।

धनं सर्वप्रयोजनम् ।	धन सर्वप्रमुख प्रयोजन है ।
धनानि जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत् ।	बुद्धिमान् मानव परोपकार के लिए धन और जीवन त्याग दे ।
धर्मक्षयकरः क्रोधः ।	क्रोध धर्म का नाशक है ।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम् ।	धर्म का तत्त्व गुफा में छिपा है ।
धर्मः कीर्तिर्द्वयं स्थिरम् ।	धर्म और कीर्ति ही दो स्थिर पदार्थ हैं ।
धर्मः स नो यत्र न सत्यमस्ति ।	जिसमें सत्य नहीं, वह धर्म नहीं ।
धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ।	धर्महीन जन पशुतुल्य हैं ।
धिक् कलत्रमपुत्रकम् ।	अपुत्रा नारी धिक्कार्य है ।
धिक् पुत्रमविनीतं च ।	अनम्र पुत्र धिक्कार्य है ।
धिगाशा सर्वदोषभूः ।	सब दोषों की जननी आशा धिक्कार्य है ।
धिग्गृहं गृहिणीशून्यम् ।	गृहिणीरहित घर धिक्कार्य है ।
धिग्जीवितं चोद्यमवर्जितस्य ।	उद्यमहीन का जीवन धिक्कार्य है ।
धिग्जीवितं व्यर्थमनोरथस्य ।	विफल-मनोरथ मनुष्य का जीवन धिक्कार्य है ।
धिग्जीवितं शास्त्रकलोज्झितस्य ।	शास्त्र तथा कला से रहित मानव का जीवन धिक्कार्य है ।
धूर्ताः क्रीडन्ति बालिशैः । (कथा०)	धूर्त लोग मूर्खों को ही उल्लू बनाते हैं ।
ध्रुवं फलाय महते महतां सह संगमः । (कथा०)	बड़ों की संगति का फल बड़ा होता है ।
न काचस्य कृते जातु युक्ता मुक्तामणेः क्षतिः । (कथा०)	काँच की प्राप्ति के लिए मोती की हानि उचित नहीं ।
न कामसदृशो रिपुः ।	काम के समान शत्रु नहीं ।
न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे ।	घर में आग लगने पर कूआँ खोदना उचित नहीं ।
न खलु स उपरतो यस्य वल्लभो जनः स्मरति ।	जिसका स्मरण प्रियजन करते हैं, उसे मरा न समझिए ।
न च धर्मो दयापरः ।	दया से बड़ा कोई धर्म नहीं ।
न चलति खलु वाक्यं सज्जनानां कदाचित् ।	सज्जनों की बात कभी झूठी नहीं होती ।
न च विद्यासमो बन्धुः ।	विद्या के समान बन्धु नहीं ।
न च व्याधिसमो रिपुः ।	रोग के तुल्य शत्रु नहीं ।
न चापत्यसमः स्नेहः ।	सन्तति के प्रति प्रेम अप्रतिम है ।
न जाने संसारः किममृतमयः किं विषमयः ।	न जाने यह जगत् अमृतमय है या विषमय ।
न ज्ञानात् परमं चक्षुः ।	ज्ञान से बड़ी आँख नहीं ।
न तोषात् परमं सुखम् ।	संतोष से बड़ा सुख नहीं ।
न तोषो महतां मृषा । (कथा०)	बड़े लोगों की प्रसन्नता व्यर्थ नहीं होती ।
न दरिद्रस्तथा दुःखी लब्धक्षीणधनो यथा ।	निर्धन उतना दुःखी नहीं होता जितना धन को पाकर खोनेवाला ।
न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते । (कुमार०)	धर्म-वृद्धों की उमर नहीं देखी जाती ।
न धर्मसदृशं मित्रम् ।	धर्म के समान मित्र नहीं ।
न नश्यति तमो नाम कृतया दीपवार्तया ।	दीपक की बात करने से अँधेरा नष्ट नहीं होता ।
ननु प्रवातेऽपि निष्कम्पा गिरयः । (अभि०)	आँधी से पर्वत कभी नहीं हिलते ।
ननु वक्तृविशेषनिःस्पृहा गुणगृह्या वचने विपश्चितः । (किरात०)	गुणग्राही लोग बात का गुण ग्रहण करते हैं, वक्ताविशेष का ध्यान नहीं करते ।
न पुत्रात् परमो लाभः ।	पुत्र-प्राप्ति से बड़ा कोई लाभ नहीं ।

न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम्।	प्राणान्तकारी समय आ जाने पर भी उत्तम मनुष्यों के स्वभाव में विकार नहीं आता।
न भयं चास्ति जाग्रतः।	जाननेवाले को कोई डर नहीं।
न भवति पुनरुक्तं भाषितं सज्जनानाम्।	सज्जन एक ही बात को बार-बार नहीं कहते।
न भार्यायाः परं सुखम्।	पत्नी से बड़ा कोई सुख नहीं।
न भूतो न भविष्यति।	न हुआ है न होगा।
न मुक्तेः परमा गतिः।	मोक्ष से ऊँची कोई स्थिति नहीं।
नये च शौर्ये च वसन्ति संपदः।	संपदाएँ नीति और शूरवीरता में रहती हैं।
न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्। (कुमार०)	रत्न किसी को नहीं खोजता, उसी की खोज की जाती है।
नवा वाणी मुखे मुखे।	प्रत्येक मुख में वाणी पृथक्-पृथक् होती है।
न शरीरं पुनः पुनः।	शरीर बार बार नहीं मिलता।
न शान्तेः परमं सुखम्।	शान्ति से बड़ा कोई सुख नहीं।
न शास्त्रं वेदतः परम्।	वेद से बड़ा कोई शास्त्र नहीं।
न स शक्नोति किं यस्य प्रज्ञा नापदि हीयते? (कथा०)	जिसकी बुद्धि विपत्ति में भी स्थिर रहती है, वह क्या नहीं कर सकता?
न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः।	वह सभा ही नहीं जिसमें वृद्ध न हों।
न सुवर्णे ध्वनिस्तादृग्यादृक् कांस्ये प्रजायते।	काँसे से जैसी ध्वनि उत्पन्न होती है वैसी सोने से नहीं।
न स्पृशति पल्वलाम्भः पञ्जरशेषोऽपि कुञ्जरः क्वापि।	हाथी की हड्डियाँ निकल आवें तो भी वह जोहड़ का जल नहीं छूता।
न स्वेच्छं व्यवहर्तव्यमात्मनो भूतिमिच्छता। (कथा०)	वृद्धि के इच्छुक मनुष्य को स्वेच्छापूर्वक व्यवहार नहीं करना चाहिए।
न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति।	श्रेष्ठ लोग किये हुये उपकार को नहीं भूलते।
न हि तापयितुं शक्यं सागराम्भस्तृणोल्कया।	समुद्र का जल तिनकों की मशाल से गर्म नहीं किया जा सकता।
न हि दुष्करमस्तीह किंचिदध्यवसायिनाम्। (कथा०)	अध्यवसायी व्यक्ति के लिये जगत् में कोई भी कार्य दुष्कर नहीं।
न हि नार्यो विनेर्ष्यया।	स्त्रियाँ ईर्ष्या-रहित नहीं होतीं।
न हि प्रफुल्लं सहकारमेत्य वृक्षान्तरं काङ्क्षति षट्पदाली। (रघु०)	भँवरे पुष्पित आम्र-वृक्ष पर पहुँचकर अन्य वृक्ष की इच्छा नहीं करते।
न हि वन्ध्याऽश्नुते दुःखं यथा हि मृतपुत्रिणी।	बाँझ को वह दुःख नहीं होता जो मृतपुत्रा नारी को।
न हि सत्त्वावसादेन स्वल्पाप्यापद् विलंघ्यते। (कथा०)	उत्साह के त्याग से तो साधारण आपत्ति पर भी विजय नहीं मिलती।
न हि सर्वविदः सर्वे।	सब लोग सब कुछ नहीं जानते।
न हि सिंहो गजास्कन्दी भयाद् गिरिगुहाशयः। (रघु०)	हाथियों पर आक्रमण करनेवाला सिंह डर के कारण पर्वत-गुफा में नहीं रहता।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।	सोये हुए सिंह के मुख में मृग स्वयं नहीं आ घुसते।
नातिपीडयितुं भग्नानिच्छन्ति हि महौजसः। (किरात०)	ओजस्वी जन पराजितों को अत्यधिक पीड़ा नहीं देना चाहते।
नाधर्मश्चिरमृद्धये। (कथा०)	अधर्म चिरकाल तक धन नहीं देता।

नानृतात्पातकं परम् ।	झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं ।
नारीणां भूषणं पतिः ।	पति स्त्रियों का भूषण है ।
नाक्रांतपैर्जलजमेति हिमैस्तु दाहम् । (नैषध०)	कमल धूप से नहीं, पाले से झुलसता है ।
नाल्पीयान् बहु सुकृतं हिनस्ति दोषः । (किरात०)	थोड़े से दोष से बहुत से पुण्यों का नाश नहीं होता ।
नासमीक्ष्य परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत् ।	दूसरे स्थान को देखे बिना पहले को न छोड़े ।
नास्ति कामसमो व्याधिः ।	काम के समान कोई रोग नहीं ।
नास्ति क्रोधसमो वह्निः ।	क्रोध के समान कोई तेज नहीं ।
नास्ति चक्षुःसमं तेजः ।	नेत्र के समान कोई आग नहीं ।
नास्ति आत्मसमं बलम् ।	आत्मा के तुल्य कोई बल नहीं ।
नास्ति प्राणसमं भयम् ।	प्राणभय के तुल्य कोई भय नहीं ।
नास्ति बन्धुसमं बलम् ।	बन्धु के तुल्य कोई बल नहीं ।
नास्ति मेघसमं तोयम् ।	मेघ के समान कोई जल नहीं ।
नास्ति मोहसमो रिपुः ।	मोह के समान कोई शत्रु नहीं ।
नास्त्यदेयं महात्मनाम् ।	ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसे महात्मा लोग न दे सकें ।
नास्त्यहो स्वामिभक्तानां पुत्रे वात्मनि वा स्पृहा । (कथा०)	अहो ! स्वामिभक्तों को न पुत्र का मोह होता है न प्राणों का ।
निःसारस्य पदार्थस्य प्रायेणाडम्बरो महान् ।	प्रायः निकम्मी वस्तु का आडम्बर बहुत होता है ।
निजेऽप्यपत्ये करुणा कठिनप्रकृतेः कुतः ? (प्रसन्नराघवे)	कठोर स्वभाववाले व्यक्ति को अपनी सन्तति पर भी दया नहीं आती ।
निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते ।	वृक्षहीन देश में एरण्ड भी वृक्ष माना जाता है ।
निर्द्रव्यं पुरुषं त्यजन्ति गणिकाः ।	वेश्याएँ निर्धन पुरुष को छोड़ देती हैं ।
निर्धनता सर्वापदामास्पदम् ।	दरिद्रता सब दुःखों का कारण है ।
निर्धनस्य कुतः सुखम् ?	निर्धन को सुख कहाँ ?
निर्वाणदीपे किमु तैलदानम् ?	दीपक बुझ जाने पर तेल डालने से क्या ?
निवसन्ति पराक्रमाश्रया न विषादेन समं समृद्धयः । (किरात०)	समृद्धियाँ पराक्रम के आश्रय पर रहती हैं, विषाद के साथ नहीं ।
निवसन्नन्तर्दारुणि लंघ्यो वह्निर्न तु ज्वलितः ।	लकड़ी के अन्दर विद्यमान अग्नि पर से कूदा जा सकता है, जलती पर से नहीं ।
निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम् ।	राग-रहित के लिए घर ही तपोवन है ।
निष्प्रज्ञास्त्ववसीदन्ति लोकोपहसिताः सदा । (कथा०)	बुद्धिहीन व्यक्ति दुःख उठाते हैं तथा लोगों के उपहासास्पद बनते हैं ।
निसर्गसिद्धो हि नारीणां सपत्नीषु हि मत्सरः । (कथा०)	स्त्रियों की सौतों के प्रति ईर्ष्या स्वाभाविक है ।
निःस्पृहस्य तृणं जगत् ।	कामनारहित के लिये जगत् तृणतुल्य है ।
नीचाश्रयो हि महतामपमानहेतुः ।	नीच का आश्रय लेना बड़े लोगों के लिये अपमानजनक होता है ।
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण । (मेघ०)	पहिये के हाल के समान मनुष्य की अवस्था ऊँची-नीची होती रहती है ।
नीचैरनीचैरतिनीचनीचैः सर्वैरुपायैः फलमेव साध्यम् ।	नीचे, ऊँचे और अत्यन्त नीचे, सभी उपायों से अभीष्ट-सिद्धि करनी चाहिए ।

४४

नीचो वदति, न कुरुते, वदति न साधुः करोत्येव ।	नीच मनुष्य कहता है, करता नहीं। सज्जन कहता नहीं, कर देता है।
नैकत्र सर्वो गुणसंनिपातः ।	सभी गुण एकत्र नहीं रहते।
न्याय्यां वृत्तिं समाचरेत् ।	जीवकोपार्जन न्याय के अनुसार करना चाहिए।
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ।	धीर लोग न्याय के मार्ग से तनिक भी विचलित नहीं होते।
पङ्को हि नभसि क्षिप्तः क्षेप्तुः पतति मूर्धनि । (कथा०)	आकाश में फेंका हुआ कीचड़ फेंकनेवाले के सिर पर ही पड़ता है।
पञ्चभिर्मिलितैः किं यज्जगतीह न साध्यते । (नैषध०)	संसार में ऐसा कौन-सा काम है जिसे पाँच मनुष्य मिलकर नहीं कर सकते ?
पठतो नास्ति मूर्खत्वम् ।	अध्ययनशील मनुष्य मूर्ख नहीं रहता।
पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते ।	गुण सर्वत्र अपना स्थान बना लेते हैं।
पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीषपुष्पं, न पुनः पतत्रिणः। (कुमार०)	शिरीष का फूल भ्रमर के कोमल चरण को तो सह लेता है, पक्षी के चरण को नहीं।
पद्मपत्रस्थितं वारि धत्ते मुक्ताफलश्रियम् ।	कमल-पत्र पर पड़ा हुआ जल मोती की शोभा धारण कर लेता है।
पयःपानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम् ।	साँपों को दूध पिलाने से उनका विष ही बढ़ता है।
पयोगते किं खलु सेतुबंधः ?	बाढ़ के उतर जाने पर बाँध बाँधने से क्या लाभ ?
परदुःखेनापि दुःखिता विरलाः ।	दूसरों के दुःख से दुःखित होनेवाले लोग थोड़े ही हैं।
परबुद्धिर्विनाशाय ।	दूसरों के मतानुसार आचरण विनाशकारी होता है।
परभुक्ते हि कमले किमलेर्जायते रतिः ? (कथा०)	क्या भँवरा दूसरे से मुक्त कमल से प्रेम करता है ?
परमं लाभमरातिभङ्गमाहुः । (किरात०)	शत्रु का नाश सब से बड़ा लाभ कहा जाता है।
परलोकगतस्य को बन्धुः ?	दिवंगत व्यक्ति का बन्धु कौन है ?
परवृद्धिमत्सरि मनो हि मानिनाम् । (शिशु०)	मानी मनुष्यों का मन दूसरों की उन्नति से ईर्ष्या करता है।
परसदननिविष्टः को लघुत्वं न याति ?	दूसरे के घर जाने से किसका गौरव क्षीण नहीं होता ?
परहितनिरतानामादरो नात्मकार्ये ।	परोपकारपरायण लोग अपने कार्यों की परवाह नहीं करते।
परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः ।	बुद्धियाँ वही हैं जो दूसरों के सङ्केत समझ जाती हैं।
परोपकारजं पुण्यं न स्यात्क्रतुशतैरपि ।	परोपकार-जन्य पुण्य सैकड़ों यज्ञों के पुण्य से श्रेष्ठ है।
परोपकाराय सतां विभूतयः ।	सज्जनों की सम्पत्तियाँ परोपकार के लिए होती हैं।
परोपकारार्थमिदं शरीरम् ।	यह शरीर परोपकार के लिए है।
परोपदेशवेलायां शिष्टाः सर्वे भवन्ति वै ।	दूसरों को उपदेश देते समय तो सब सभ्य बन जाते हैं।
परोऽपि हितवान् बन्धुः ।	हितकारक बेगाना भी बन्धु ही है।
पर्वतानां भयं वज्रात् ।	पर्वतों को वज्र से भय होता है।

पाणौ पयसा दग्धे तक्रं फूत्कृत्य पामरः पिबति।	दूध का जला छाछ को फूँक-फूँक कर पीता है।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति।	मनुष्य योग्य होने पर धन प्राप्त करता है।
पापप्रभावान्नरकं प्रयाति।	पाप के प्रभाव से नरक को जाता है।
पितृदोषेण मूर्खता।	मूर्खता पिता के दोष से होती हैं।
पिपासितैः काव्यरसो न पीयते।	प्यासे काव्यरस नहीं पिया करते।
पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिराम् उन्मत्तभूतं जगत्।	मोहमयी प्रमाद-मदिरा पीकर जगत् उन्मत्त हो गया है।
पुण्यवन्तो हि सन्तानं पश्यन्त्युच्चैः कृतान्वयम्। (कथा०)	वंश को ऊँचा करनेवाली सन्तान पुण्यवानों के घर ही होती है।
पुत्रः शत्रुरपण्डितः।	मूर्ख पुत्र शत्रु है।
पुत्रप्रयोजना दाराः।	पत्नी पुत्र को जन्म देने के लिए ही होती है।
पुत्रहीनं गृहं शून्यम्।	पुत्रहीन घर सूना है।
पुत्रादपि भयं यत्र तत्र सौख्यं हि कीदृशम्?	जहाँ पुत्र से भी भय हो वहाँ सुख कैसा?
पुनर्दरिद्री पुनरेव पापी।	फिर दरिद्री, फिर पापी।
पुनर्धनाढ्यः पुनरेव भोगी।	फिर धनी, फिर भोगी।
पुरुषा अपि वाणा अपि गुणच्युता कस्य न भयाय?	पुरुष भी और बाण भी गुण (गुण, धनुष की डोरी) से रहित हो जाने पर किसके लिए भयंकर नहीं होते?
पूज्यं वाक्यं समृद्धस्य।	धनाढ्य का वाक्य पूज्य होता है।
पूर्वपुण्यतया विद्या।	विद्या पिछले पुण्यों से मिलती है।
प्रच्छन्नमप्यूहयते हि चेष्टा। (किरात०)	चेष्टा गुप्त बात को भी व्यक्त कर देती है।
प्रजानामपि दीनानां राजैव सद्यः पिता।	राजा दीन प्रजाओं का दयालु पिता है।
प्रज्ञाबलं च सर्वेषु मुख्यं कार्येषु साधनम्। (कथा०)	सब कार्यों में बुद्धिबलं सबसे बड़ा साधन है।
प्रणामान्तः सतां कोपः।	सज्जनों का क्रोध प्रणाम से समाप्त हो जाता है।
प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः। (रघुवंश०)	पूज्यों की पूजा में उलट-फेर कल्याणों का बाधक होता है।
प्राणव्ययाय शूराणां जायते हि रणोत्सवः। (कथा०)	युद्ध का मेला शूरवीरों के प्राणधन के व्ययार्थ होता है।
प्राणिनां हि निकृष्टापि जन्मभूमिः परा प्रिया। (कथा०)	प्राणियों को अपनी निकृष्ट जन्मभूमि भी अत्यन्त प्यारी लगती है।
प्राणेभ्योऽप्यर्थमात्रा हि कृपणस्य गरीयसी। (कथा०)	कंजूस को थोड़ा-सा भी धन प्राणों से अधिक प्यारा लगता है।
प्राणैरपि हि भृत्यानां स्वामिसंरक्षणं व्रतम्। (कथा०)	प्राण देकर भी स्वामी की रक्षा करना सेवकों का व्रत है।
प्राप्नोतीष्टमविक्लवः। (कथा०)	धीर अभीष्ट को पा लेता है।
प्राप्यते किं यशः शुभ्रमनङ्गीकृत्य साहसम्? (कथा०)	जान जोखिम में डाले बिना कहाँ शुभ्र यश प्राप्त हो सकता है?
प्रायः श्वश्रूस्नुषयोर्न दृश्यते सौहृदं लोके।	संसार में प्रायः सास-बहू में सौहार्द नहीं देखा जाता।

प्रायः समानविद्याः परस्परयशः पुरोभागाः।	प्रायः समान विद्यावाले लोग एक दूसरे के यश को सह नहीं सकते।
प्रायः समासन्नविपत्तिकाले धियोऽपि पुंसां मलिनीभवन्ति।	जब आपत्ति आने को होती है तब मनुष्यों की बुद्धि प्रायः मलिन हो जाती है।
प्रायः स्त्रियो भवन्तीह निसर्गविषमाः शठाः। (कथा०)	स्त्रियाँ स्वभाव से ही प्रायः कठोर और शठ हुआ करती हैं।
प्रायः स्वं महिमानं क्रोधात्प्रतिपद्यते हि जनः।	क्रोध आने पर ही प्रायः मनुष्य अपने महत्त्व को प्राप्त करता है।
प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्यार्थेषु कुटुम्बिनः। (कुमारसंभवे)	कुटुम्बी पुरुष कन्याओं के मामलों में प्रायः गृहिणी के ही मतानुसार चलते हैं।
प्रायेण भार्यादौःशील्यं स्नेहान्धो नेक्षते जनः। (कथा०)	प्रेमान्ध पुरुष पत्नी की दुःशीलता की प्रायः उपेक्षा कर जाता है।
प्रायेण भूमिपतयः प्रमदा लताश्च यः पार्श्वतो भवति तं परिवेष्टयन्ति।	राजा, स्त्रियाँ और लताएँ जो भी पास हो प्रायः उसीसे लिपट जाती हैं।
प्रायेण साधुवृत्तानामस्थायिन्यो विपत्तयः।	सदाचारियों की विपत्तियाँ प्रायः अस्थायी होती हैं।
प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः। (कुमार०)	विधाता प्रायः सभी गुणों को एकत्र नहीं रखता।
प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः संसर्गतो जायते।	अधम, मध्यम और उत्तम गुण प्रायः संसर्ग से ही आता है।
प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः।	भाग्यहीन मनुष्य जहाँ जाता है, प्रायः वहीं आपत्तियाँ भी जा पहुँचती हैं।
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति।	श्रेष्ठ लोग कार्य आरंभ करके बीच में नहीं छोड़ते।
प्रासादशिखरस्थोऽपि काकः किं गरुडायते?	महल की चोटी पर बैठा हुआ कौआ क्या गरुड़ बन जाता है?
प्रियबन्धुविनाशोत्थः शोकाग्निः कं न तापयेत्? (कथा०)	प्रिय बन्धु की मृत्यु का शोक किसे संतप्त नहीं करता?
प्रियमांसमृगाधिपोज्झितः किमवद्यः करि-कुम्भजो मणिः? (शिशु०)	मांसभक्षक सिंह से त्यक्त, हाथी के मस्तक से निकला हुआ रत्न क्या निन्द्य होता है?
प्रियानाशे कृत्स्नं किल जगदरण्यं हि भवति।	कान्ता की मृत्यु पर सारा संसार कान्तार ही बन जाता है।
फलं भाग्यानुसारतः।	फल भाग्य के अनुसार होता है।
बताश्रितानुरोधेन किं न कुर्वन्ति साधवः? (कथा०)	आश्रितों के आग्रह पर सज्जन क्या नहीं करते?
बधिरस्य गानम्।	बहिरे के सामने गाना।
बधिरान्मन्दकर्णः श्रेयान्।	बहिरे की अपेक्षा ऊँचा सुननेवाला अच्छा।
बन्धुः को नाम दुष्टानाम्?	दुष्टों का बन्धु कौन?
बन्धुरप्यहितः परः।	अहितकर बन्धु भी शत्रु है।
बलं मूर्खस्य मौनित्वम्।	मौन मूर्ख का बल है।
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।	बलवान् ही बल को जानता है, निर्बल नहीं।
बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा।	ईश्वर की इच्छा ही बलवती है।
बहुरत्ना वसुन्धरा।	पृथ्वी में बहुत रत्न हैं।

बहुवचनमल्पसारं यः कथयति विप्रलापी सः।	जो अल्प-सार को बहुत शब्दों से कहता है, वही विप्रलापी है।
बहुविघ्नास्तु सदा कल्याणसिद्धयः। (कथा०)	कल्याणों की सिद्धि में सदा अनेक विघ्न पड़ते हैं।
बह्वाश्चर्या हि मेदिनी।	पृथ्वी आश्चर्यों से पूर्ण है।
बालानां रोदनं बलम्।	रोना ही बच्चों का बल है।
बुद्धयः कुञ्जगामिन्यो भवन्ति महतामपि।	बड़ों की बुद्धि भी कुमार्गगामिनी हो जाती है।
बुद्धिः कर्मानुसारिणी।	बुद्धि कर्मों के अनुसार होती है।
बुद्धिर्नाम च सर्वत्र मुख्यं मित्रं न पौरुषम्। (कथा०)	सब स्थानों पर बुद्धि ही मुख्य मित्र है, पुरुषार्थ नहीं।
बुद्धेः फलमनाग्रहः।	हठ का न होना ही बुद्धि का फल है।
बुभुक्षितः किं न करोति पापम्?	भूखा मनुष्य कौन-सा पाप नहीं करता?
बुभुक्षितं न प्रतिभाति किंचित्।	भूखे को कुछ नहीं सूझता।
बुभुक्षितैर्व्याकरणं न भुज्यते।	भूखे लोग व्याकरण नहीं खाया करते।
ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम्। (नैषध०)	श्रेष्ठ लोग अपनी उपयोगिता वाणी से नहीं, फल से कहते हैं।
भक्त्या हि तुष्यन्ति महानुभावाः।	महानुभाव लोग भक्ति (श्रद्धा) से ही प्रसन्न होते हैं।
भद्रकृत्प्राप्नुयाद्भद्रमभद्रं चाप्यभद्रकृत्। (कथा०)	भले का भला और बुरे का बुरा होता है।
भये सीमा मृत्युः।	सबसे बड़ा भय मृत्यु है।
भर्तृमार्गानुसरणं स्त्रीणां च परमं व्रतम्।	पति-निर्दिष्ट मार्ग पर चलना स्त्रियों का परम व्रत है।
भवन्तिक्लेशबहुलाः सर्वस्यापीह सिद्धयः। (कथा०)	संसार में सबके कार्य अनेक कष्ट उठाने पर ही सिद्ध होते हैं।
भवन्त्युदयकाले हि सत्कल्याणपरम्पराः। (कथा०)	जब अच्छे दिन आते हैं तब सभी काम शुभ होते जाते हैं।
भवितव्यता बलवती। (अभिज्ञान०)	होनहार बलवती है।
भवितव्यं भवत्येव कर्मणामीदृशी गतिः।	कर्मों की गति ऐसी है कि होनी होकर ही रहती है।
भवेन्न यस्य यत्कर्म स तत्कुर्वन् विनश्यति। (कथा०)	१. जिसका काम उसी को साजे, और करे तो डफली बाजे। २. जो काम जिसका न हो, उसे करने पर मनुष्य नष्ट हो जाता है।
भस्मीभूतस्य भूतस्य पुनरागमनं कुतः? (नैषध०)	भस्मीभूत प्राणी लौटकर कैसे आ सकता है?
भाग्येनैव हि लभ्यते पुनरसौ सर्वोत्तमः सेवकः।	सर्वोत्तम सेवक भाग्य से ही प्राप्त होता है।
भार्यासमं नास्ति शरीरतोषणम्।	पत्नी के समान शारीरिक सुख देनेवाला कोई नहीं।
भिक्षुको भिक्षुकं दृष्ट्वा श्वानवद् गुर्गुरायते।	भिखारी, भिखारी को देखकर कुत्ते के समान गुर्राता है।
भिन्नरुचिर्हि लोकः।	लोगों की रुचि भिन्न-भिन्न है।

भीता इव हि धीराणां दूरे यान्ति विपत्तयः। (कथा०)	विपत्तियाँ मानो धीरों से डरकर ही दूर भाग जाती हैं।
भूयोऽपि सिक्तः पयसा घृतेन न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति।	दूध और घी से निरन्तर सींचा जाने पर भी नीम का वृक्ष मधुर नहीं होता।
भोगो भूषयते धनम्।	भोग धन को अलंकृत करता है।
भ्रष्टस्य का वा गतिः?	पतित की क्या गति होती होगी?
मतिरेव बलाद् गरीयसी।	बल से बुद्धि ही बड़ी है।
मदमूढबुद्धिषु विवेकिता कुतः? (शिशु०)	मद से मूढ़ बुद्धिवालों में विवेक कहाँ?
मद्यपस्य कुतः सत्यम्? (कथा०)	शराबी में सत्य कहाँ?
मधुरविधुरमिश्राः सृष्टयो हा विधातुः। (प्रसन्नराघवे)	विधाता की रचनाएँ सुखपूर्ण, दुःखपूर्ण तथा मिली-जुली हैं।
मनःपूतं समाचरेत्।	आचरण ऐसा करे जिसकी पवित्रता का मन साक्षी हो।
मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।	मन ही मनुष्यों के बंधन और मुक्ति का कारण है।
मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।	महात्माओं के मन, वचन और कर्म में एकरूपता होती है।
मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्।	मनस्वी कार्यकर्ता दुःख-सुख की चिन्ता नहीं किया करता।
मनोरथानामगतिर्न विद्यते। (कुमार०)	मनोरथ सर्वत्र पहुँच जाते हैं।
मरणं प्रकृतिः शरीरिणाम्।	मृत्यु प्राणियों का स्वभाव है।
मर्दनं गुणवर्धनम्।	मालिश गुणवर्द्धक है।
मर्मवाक्यमपि नोच्चरणीयम्।	दुःखदायक बात न कहनी चाहिए।
महाजनो येन गतः सः पन्थाः।	जिस मार्ग से कोई महापुरुष गया हो वही सुमार्ग है।
महान् महत्येव करोति विक्रमम्।	बड़ा मनुष्य बड़े पर ही पराक्रम दिखाता है।
महीपतीनां विनयो हि भूषणम्।	नम्रता राजाओं का भूषण है।
मातर्लक्ष्मि, तव प्रसादवशतो दोषा अपि स्युर्गुणाः।	हे लक्ष्मी माता, आपकी कृपा से दोष भी गुण हो जाते हैं।
माता दुश्चारिणी रिपुः।	दुश्चरित्रा माता शत्रु है।
मातापितृभ्यां शप्तः सन् न जातु सुखमश्नुते। (कथा०)	माता-पिता से शापित जन कभी सुख नहीं पाता।
मातृजङ्घा हि वत्सस्य स्तम्भीभवति बन्धने।	बछड़े को बाँधने के लिए माता की टाँग ही स्तम्भ बन जाती है।
मात्रा समं नास्ति शरीरपोषणम्।	माता के समान शरीर का पोषक कोई नहीं।
माने म्लाने कुतः सुखम्?	सम्मान दूषित होने पर सुख कहाँ?
मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता।	महत्त्वपूर्ण बात थोड़े शब्दों में कहना ही वाग्मिता है।
मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः।	मूढ़ दूसरे के विश्वास का अनुसरण करता है।
मूर्खस्य किं शास्त्रकथाप्रसंगः?	मूर्ख का शास्त्रों की कथाओं से क्या सम्बन्ध?
मूर्खस्य हृदयं शून्यम्।	मूर्ख का हृदय विचाररहित होता है।
मूर्खाणां बोधको रिपुः।	मूर्ख लोग समझानेवाले को शत्रु समझते हैं।
मूर्खैर्हि संगः कस्यास्ति शर्मणे? (कथा०)	मूर्ख-सङ्गति किसे सुख देती है?

मृत्यः सर्वत्र तुल्यता।	मौत के सामने सब समान हैं।
मेघो गिरिजलधिवर्षी च।	मेघ पर्वत और सागर दोनों स्थानों पर बरसता है।
मोहान्धमविवेकं हि श्रीश्चिराय न सेवते। (कथा०)	मोहग्रस्त और विवेकहीन के पास लक्ष्मी अधिक नहीं ठहरती।
मौनं विधेयं सततं सुधीभिः।	बुद्धिमानों को निरन्तर चुप रहना चाहिए।
मौनं सर्वार्थसाधकम्।	मौन से सब काम सिद्ध होते हैं।
मौनिनः कलहो नास्ति।	मौनी का किसी से कलह नहीं होता।
यतः सत्यं ततो धर्मः।	जहाँ सत्य है वहाँ धर्म है।
यतो धर्मस्ततो धनम्।	जहाँ धर्म है वहाँ धन है।
यतो रूपं ततः शीलम्।	जहाँ रूप है वहाँ शील है।
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः?	यदि यत्न करने पर भी सिद्धि न हो तो इसमें यत्नकर्ता का क्या दोष?
यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पधीरपि।	जहाँ विद्वान् नहीं होता वहाँ अल्पबुद्धि भी श्लाघ्य होता है।
यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति।	जहाँ रूप तहाँ गुण भी है।
यत्रास्ति लक्ष्मीर्विनयो न तत्र।	जहाँ लक्ष्मी होती है वहाँ नम्रता नहीं।
यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रिया।	जैसा मन वैसी वाणी, जैसी वाणी वैसी क्रिया।
यथा देशस्तथा भाषा।	जैसा देश वैसी भाषा।
यथा बीजं तथाङ्कुरः।	जैसा बीज वैसा अङ्कुर।
यथा भूमिस्तथा तोयम्।	जैसी भूमि वैसा जल।
यथा राजा तथा प्रजा।	जैसा राजा वैसी प्रजा।
यथा वृक्षस्तथा फलम्।	जैसा वृक्ष वैसा फल।
यथाशक्त्यातिथेः पूजा धर्मो हि गृहमेधिनाम्। (कथा०)	अतिथि की यथाशक्ति सेवा करना गृहस्थों का धर्म है।
यथौषधं स्वादु हितं च दुर्लभम्।	जैसे स्वादिष्ट और गुणकारी दवा दुर्लभ है।
यदि वात्यन्तमृदुता न कस्य परिभूतये? (कथा०)	अत्यधिक कोमलता से किसका निरादर नहीं होता?
यदेव रोचते यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरम्।	जो जिसे अच्छा लगता है, वही उसके लिये सुन्दर होता है।
यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः?	विधाता ने भाग्य में जो लिख दिया है, उसे कौन मिटा सकता है?
यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नो करणीयं नाचरणीयम्।	लोकविरुद्ध शुद्ध बात भी न करनी चाहिये।
यद्वा तद्वा भविष्यति।	कुछ न कुछ तो होगा ही।
यशः पुण्यैरवाप्यते।	यश पुण्यों से ही मिलता है।
यशस्तु रक्ष्यं परतो यशोधनैः। (रघु०)	यशस्वियों को शत्रु से यश की रक्षा करनी चाहिए।
यः क्रियावान् स पण्डितः।	जिसके कर्म अच्छे, वही पण्डित है।
याचनान्तं हि गौरवम्।	याचना गौरव को समाप्त कर देती है।
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा। (मेघ०)	नीच से याचना के सफल होने की अपेक्षा गुणी से उसका विफल होना अच्छा।

यादृशो यः कृतो धात्रा भवेत्तादृश एव सः । (कथा०)	विधाता ने जिसे जैसा बना दिया वह वैसा ही होता है ।
यादृशास्तन्तवः कामं तादृशो जायते पटः । (कथा०)	जैसे तागे होते हैं वैसा कपड़ा बनता है ।
यानरत्नं हि तुरगः ।	वाहनों में घोड़ा रत्न है ।
यान्ति न्यायप्रवृत्तस्य तिर्यञ्चोऽपि सहायताम् । (अनर्घराघवे)	न्यायानुसार चलनेवाले की सहायता पशु-पक्षी भी करते हैं ।
या यस्य प्रकृतिः स्वभावजनिता केनापि न त्यज्यते ।	जो जिसका सहज स्वभाव है, वह छोड़ा नहीं जा सकता ।
युक्तियुक्तं प्रगृह्णीयाद् बालादपि विचक्षणः ।	बुद्धिमान् को बच्चे की भी युक्तियुक्त बात मान लेनी चाहिए ।
युद्धस्य वार्ता रम्या स्यात् ।	युद्ध के समाचार रोचक होते हैं ।
ये तु घ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे ।	जो दूसरों के कार्यों को व्यर्थ ही नष्ट करते हैं, वे किस कोटि के होते हैं, हम नहीं जानते ।
येन केन प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत् ।	मनुष्य को किसी भी उपाय से प्रसिद्धि प्राप्त करनी चाहिए ।
यो यद् वपति बीजं हि लभते सोऽपि तत्फलम् । (कथा०)	जैसा बोएगा वैसा काटेगा ।
रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि ।	पूर्व पुण्य मनुष्य की रक्षा करते हैं ।
रत्नदीपस्य हि शिखा वात्ययापि न नश्यति ।	रत्नों के दीये की लौ आँधी से भी नहीं बुझती ।
रत्नव्ययेन पाषाणं को हि रक्षितुमर्हति । (कथा०)	कौन इतना समर्थ है जो पत्थर के रक्षार्थ रत्न व्यय करे ।
वनेऽपि दोषा प्रभवन्ति रागिणाम् ।	वन में भी दोष रागयुक्तों को दबा लेते हैं ।
वरं हि मानिनो मृत्युः, न दैन्यं स्वजनाग्रतः । (कथा०)	प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु अच्छी किन्तु सम्बन्धियों के सामने दीनता बुरी ।
वरं क्लैब्यं पुंसां न च परकलत्राभिगमनम् ।	पुरुषों का नपुंसक होना अच्छा, परस्त्री-गमन बुरा ।
वरं भिक्षाशित्वं न च परधनास्वादनसुखम् ।	भीख माँग कर खाना अच्छा, पराये धन के भोग का सुख बुरा ।
वरं मौनं कार्यं न च वचनमुक्तं यदनृतम् ।	झूठ बोलने की अपेक्षा चुप रहना अच्छा ।
वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति विचक्षणाः ।	बुद्धिमान् वर्तमान काल के अनुसार व्यवहार करते हैं ।
वस्त्रपूतं पिबेज्जलम् ।	वस्त्र से छानकर ही जल पीना चाहिए ।
वस्त्राणामातपो जरा ।	धूप वस्त्रों का बुढ़ापा है ।
वामे विधौ न हि फलन्त्यभिवाञ्छितानि ।	भाग्य विपरीत हो तो अभीष्ट सिद्ध नहीं होते ।
वासः प्रधानं खलु योग्यतायाः ।	योग्यता से भी परिधान प्रधान होता है ।
वासोविहीनं विजहाति लक्ष्मीः ।	वस्त्रविहीन को लक्ष्मी छोड़ जाती है ।
विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः । (कुमार०)	विकारक वस्तुओं की विद्यमानता में भी जिनके चित्त विकृत नहीं होते, वे ही धीर हैं ।
विक्रीते करिणि किमङ्कुशे विवादः ?	हाथी के बेच देने पर अंकुश के बारे में विवाद कैसा ?
विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः । (किरात०)	चित्त की वृत्तियों के रूप विचित्र होते हैं ।

विदेशे बन्धुलाभो हि मरावम्रुतनिर्झरः। (कथा०)	विदेश में बन्धु से समागम मरुभूमि में अमृत-स्रोत के समान है।
विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा।	विद्या के लिए व्याकुल व्यक्तियों को न सुख रुचता है न नींद।
विद्या ददाति विनयम्।	विद्या से नम्रता आती है।
विद्या मित्रं प्रवासेषु।	विदेश में विद्या मित्र है।
विद्यारत्नं सरसकविता।	सरस कविता करना ही उत्तम विद्या है।
विद्या रूपं कुरूपिणाम्।	कुरूप लोगों का रूप विद्या है।
विद्यासमं नास्ति शरीरभूषणम्।	विद्या के समान शरीर का कोई भूषण नहीं।
विद्या सर्वस्य भूषणम्।	विद्या सबका भूषण है।
विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वम्।	कुलीन विद्वान् अभिमान नहीं करता।
विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।	विद्वान् की सब जगह पूजा होती है।
विनयाद् याति पात्रताम्।	विनय से मनुष्य योग्य बनता है।
विनयो हि सतीव्रतम्। (कथा०)	विनय ही सतियों का व्रत है।
विना मलयमन्यत्र चन्दनं न प्ररोहति।	चन्दन मलय पर्वत के सिवा कहीं नहीं उगता।
विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।	विनाश के समय बुद्धि फिर जाती है।
विना हि गुर्वादेशेन संपूर्णाः सिद्धयः कुतः? (कथा०)	गुरु के उपदेश के विना सम्पूर्ण सिद्धियाँ कहाँ?
विप्रियमप्याकर्ण्य ब्रूते प्रियमेव सर्वदा सुजनः।	कटु बात भी सुनकर सज्जन सदा प्रिय बात ही कहते हैं।
विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।	मौन मूर्खों का भूषण है।
विमलं कलुषीभवच्च चेतः कथयत्येव हितैषिणं रिपुं वा। (किरात०)	१. दिल, दिल का साक्षी है। २. निर्मल या मलिन होता हुआ मन हितैषी या शत्रु को बता देता है।
विरक्तस्य तृणं भार्या।	विरक्त को पत्नी तृणसम लगती है।
विलासिनी हि सर्वस्य संध्येव क्षणरागिणी। (कथा०)	संध्या के समान सब के साथ वेश्या का राग (प्रेम, लाली) क्षणस्थायी होता है।
विवक्षितं ह्यनुक्तमनुतापं जनयति।(अभिज्ञा०)	अकथित अभिलषित बात पश्चात्ताप उत्पन्न करती है।
विश्वासः कुटिलेषु कः? (कथा०)	कपटियों पर क्या विश्वास?
विषं गोष्ठी दरिद्रस्य।	निर्धन की बात-चीत विष है।
विषयाकृष्यमाणा हि तिष्ठन्ति सुपथे कथम्? (कथा०)	विषयासक्त लोग सुमार्ग पर कैसे रह सकते हैं?
विषयिणः कस्यापदोऽस्तं गताः?	किस विषयी व्यक्ति की आपत्तियाँ समाप्त हो गई हैं?
विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसांप्रतम्। (कुमार०)	अपने पाले-पोसे हुए विष-वृक्ष को भी उखाड़ना उचित नहीं।
वीरो हि स्वाम्यमर्हति। (कथा०)	वीर ही स्वामी बनने के योग्य होता है।
वृक्षं क्षीणफलं त्यजन्ति विहगाः।	फल-हीन वृक्ष को पक्षी छोड़ जाते हैं।
वृथा दीपो दिवापि च।	दिन में दीपक व्यर्थ है।
वृथा वृष्टिः समुद्रेषु।	समुद्रों में वर्षा व्यर्थ है।
वृद्धस्य तरुणी विषम्।	बूढ़े के लिए युवती विष है।

वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम् ।	जो धर्म की बात नहीं कहते, वे वृद्ध नहीं ।
वृद्धा नारी पतिव्रता ।	वृद्धा स्त्री पतिव्रता होती है ।
वेदाज्जानन्ति पण्डिताः ।	बुद्धिमान् लोग वेद से ज्ञान पाते हैं ।
वेश्याङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा ।	वेश्या के समान राजनीति भी अनेक रूप धारण करती है ।
व्याघ्रस्य चोपवासस्य पारणं पशुमारणम् ।	भेड़िए के उपवास की पारणा पशु-वध होती है ।
व्याधितस्यौषधं मित्रम् ।	औषध रोग का मित्र है ।
व्रताभिरक्षा हि सतामलंक्रिया । (किरात०)	व्रत का पालन सज्जनों का भूषण है ।
शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि ।	शत्रु के भी गुणों का और गुरु के भी दोषों का कथन करना चाहिए ।
शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् । (कुमार०)	धर्म का प्रथम साधन शरीर ही है ।
शाम्येत् प्रत्युपकारेण नोपकारेण दुर्जनः । (कुमार०)	दुष्ट जन उपकार से नहीं, अपकार से ही शान्त होता है ।
शास्त्राद् रूढिर्बलीयसी ।	शास्त्रों से रीति बलवती है ।
शीलं परं भूषणम् ।	शील सर्वोत्तम भूषण है ।
शीलं भूषयते कुलम् ।	शील कुल को अलंकृत करता है ।
शील हि विदुषां धनम् । (कथा०)	शील ही विद्वानों का धन है ।
शुभकृन्न हि सीदति । (कथा०)	शुभ कार्य करने वाला दुःखी नहीं होता ।
शुभस्य शीघ्रम् ।	भला काम शीघ्र ही कर देना चाहिए ।
शुष्केन्धने वह्निरुपैति वृद्धिम् ।	सूखे ईंधन में आग तुरन्त फैल जाती है ।
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः ।	वीर, कृतज्ञ और दृढ़ मित्र के पास रहने के लिए लक्ष्मी स्वयं जाती है ।
शूरस्य मरणं तृणम् ।	वीर के लिए मृत्यु तृणवत् है ।
शोभन्ते विद्यया विप्राः ।	ब्राह्मण विद्या से सुशोभित होते हैं ।
श्यालको गृहनाशाय ।	साला घर का नाश कर देता है ।
श्रद्धया न विना दानम् ।	श्रद्धा-रहित दान दान नहीं ।
श्रेयसि केन तृप्यते ? (शिशु०)	मंगल से कौन तृप्त होता है ?
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रम् ।	शास्त्र कान का भूषण है ।
संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति ।	दोष और गुण संगति से होते हैं ।
सकलं शीलेन कुर्याद्वशम् ।	शील से सब को वशीभूत करना चाहिए ।
सकलगुणभूषा च विनयः ।	नम्रता सब गुणों का भूषण है ।
सकलगुणसीमा वितरणम् ।	दान सब गुणों की सीमा है ।
सकलसुखसीमा सुवदना ।	सुमुखी सर्व सुखों की सीमा है ।
स क्षत्रियस्त्राणसहः सतां यः ।	सज्जनों की रक्षा में समर्थ व्यक्ति क्षत्रिय है ।
संकटे हि परीक्ष्यन्ते प्राज्ञाः शूराश्च संगरे । (कथा०)	बुद्धिमानों की परीक्षा संकट में और शूरों की परीक्षा संग्राम में होती है ।
सतां महासंमुखधावि पौरुषम् । (नैषध०)	सज्जनों का पौरुष बड़ों पर ही प्रकट होता है ।
सतां हि सङ्गः सकलं प्रसूते ।	सत्संगति से सब कुछ प्राप्त होता है ।
सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः । (अभिज्ञान०)	संदिग्ध विषयों में सत्पुरुषों का अन्तःकरण ही प्रमाण होता है ।
स तु निरवधिरेकः सज्जनानां विवेकः ।	सज्जनों के विवेक की सीमा नहीं होती ।
सत्त्वाधीना हि सिद्धयः । (कथा०)	सफलताएँ उत्साह के अधीन हैं ।

सत्पुत्र एव कुलसद्मनि कोऽपि दीपः ।	अच्छा पुत्र ही वंश का विलक्षण दीपक है ।
सत्यपूतां वदेद् वाणीम् ।	सत्य से शोधित वाणी बोलनी चाहिए।
सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।	सत्य कण्ठ का भूषण है ।
सत्यं न तद् यच्छलमभ्युपैति ।	वह सत्य नहीं जो छल का आश्रय लेता है ।
सत्यमेव जयते ।	सत्य की ही विजय होती है।
सत्येन धार्यते पृथ्वी ।	पृथ्वी को सत्य ही धारण किये हुए हैं ।
सदसद्वा न हि विदुः कुस्त्रीवचनमोहिताः । (कथा०)	बुरी नारियों के वचन से मोहित लोग अच्छाई या बुराई नहीं समझते ।
सदो भूषा सूक्तिः ।	सुभाषित सभा का भूषण है ।
सद्भिः कुर्वीत संगतिम् ।	सज्जनों का संग करना चाहिए।
सद्भिर्विवादं मैत्री च ।	झगड़ा और मैत्री सज्जनों से ही करनी चाहिए।
सद्भिस्तु लीलया प्रोक्तं शिलालिखितमक्षरम् ।	सज्जनों की स्वाभाविक बात भी पत्थर की लकीर होती है ।
स धार्मिको यः परमर्म न स्पृशेत् ।	धार्मिक वही है जो दूसरे का जी नहीं दुखाता ।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते ।	सज्जन परीक्षा के अनन्तर ही कोई बात स्वीकार करते हैं ।
संततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे । (रघु०)	शुद्ध वंश की सन्तान लोक-परलोक में सुखदायक होती है ।
संतोष एव पुरुषस्य परं निधानम् ।	संतोष ही मनुष्य का सर्वोत्तम कोष है ।
संतोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत् ।	संतोष के समान धन नहीं ।
संधिं कृत्वा तु हन्तव्यः संप्राप्तेऽवसरे पुनः । (कथा०)	सन्धि करके भी अवसर प्राप्त होने पर शत्रु को मार देना चाहिए ।
सभारत्नं विद्वान् ।	विद्वान् सभा का रत्न है ।
समये हि सर्वमुपकारि कृतम् । (शिशु०)	समय पर किया हुआ सब कुछ उपकारक होता है ।
समानशीलव्यसनेषु सख्यम् ।	समान शील तथा व्यसन वालों में मैत्री होती है।
सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दम् ।	भरा हुआ घड़ा शब्द नहीं करता ।
सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते । (भगवद्गीता)	सम्मानित मनुष्य के लिए अपयश मृत्यु से भी बुरा होता है ।
सरित्पतिर्न हि समुपैति रिक्तताम् । (शिशु०)	समुद्र कभी खाली नहीं होता ।
सरित्पूरप्रपूर्णोऽपि क्षारो न मधुरायते ।	नदियों के जलसमूह से भर जाने पर भी समुद्र मीठा नहीं होता ।
सर्वः कालवशेन नश्यति ।	समय पाकर सब नष्ट होते हैं ।
सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सत्त्वानुरूपं फलम् ।	विपत्ति पड़ने पर भी सब लोग अपनी योग्यतानुसार फल चाहते हैं ।
सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति । (अभिज्ञान०)	सबको अपनी वस्तु सुन्दर दिखाई देती है ।
सर्वः प्रियः खलु भवत्यनुरूपचेष्टः । (शिशु०)	अनुकूल चेष्टाओंवाले सब व्यक्ति प्यारे लगते हैं ।
सर्वं कार्यवशाज्जनोऽभिरमते तत्कस्य को वल्लभः ?	लोग सभी को कार्य-वश प्यारे लगते हैं, वैसे कौन किसका प्रिय है ?
सर्वं जीवद्भिराप्यते (कथा०)	जीवित मनुष्य सब कुछ पा लेते हैं ।
सर्वं रत्नमुपद्रवेण सहितं निर्दोषमेकं यशः ।	सब रत्नों में कोई न कोई दोष होता है, निर्दोष तो केवल यश है ।

सर्वं शून्यं दरिद्रस्य ।	दरिद्र के लिए सब कुछ सूना है ।
सर्वं सावधि नावधिः कुलभुवां प्रेम्णः परं केवलम् ।	सबकी सीमा है परन्तु कुलीन नारियों के प्रेम की सीमा नहीं ।
सर्वनाशाय मातुलः ।	मामा सर्वनाश कर देता है ।
सर्वलोकप्रतिष्ठायां यतन्ते बहवो जनाः ।	बहुत से व्यक्ति लोगों में प्रतिष्ठा पाने के लिए उद्योग करते हैं ।
सर्वांगे दुर्जनो विषम् ।	दुष्टजन के सभी अंगों में विष रहता है ।
सर्वारम्भास्तण्डुलप्रस्थमूलाः ।	सभी उद्योग दूसेरी भर धान के लिए हैं ।
सर्वास्ववस्थासु रमणीयत्वमाकृतिविशेषाणाम् । (अभिज्ञा०)	सुंदर व्यक्ति सभी दशाओं में सुंदर लगते हैं ।
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते ।	सभी गुण धन पर आश्रित रहते हैं ।
सलज्जा गणिका नष्टा ।	लज्जाशील वेश्या नष्ट हो जाती है ।
स सुहृद्व्यसने यः स्यात् ।	जो विपत्ति में सहायक है, वही मित्र है ।
सहते विपत्सहस्रं मानी नैवापमानलेशमपि ।	मानी मानव सहस्रों कष्ट सह लेता है, परन्तु तनिक-सा भी अपमान नहीं ।
सहसा विदधीत न क्रियाम् अविवेकः परमापदां पदम् ।	कोई भी कार्य एकाएक न करना चाहिए, अविवेक भारी आपत्तियों का कारण है ।
सहस्रेषु च पण्डितः ।	सहस्रों में कोई एक विद्वान् होता है ।
सागरं वर्जयित्वा कुत्र महानद्यवतरति ? (अभिज्ञा०)	बड़ी नदी सागर के सिवा कहाँ आश्रय लेती है ?
साधने हि नियमोऽन्यजनानां योगिनां तु तपसाखिलसिद्धिः । (नैषध०)	साधारण जन साधनों से कार्य सिद्ध करते हैं, योगियों को तप से सब सिद्धियाँ मिलती हैं।
साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्तौ कलौ दुर्युगे ।	इस कलियुग नाम के बुरे युग में सज्जन दुःख पाते हैं और दुर्जन अधिकार जमाते हैं।
साधूनां दुर्जनाद् भयम् ।	सज्जनों को दुर्जनों से भय होता है ।
सानुकूले जगन्नाथे विप्रियः सुप्रियो भवेत् ।	भगवान् अनुकूल हो तो विरोधी भी मित्र बन जाते हैं ।
सामानाधिकरण्यं हि तेजस्तिमिरयोः कुतः ? (शिशुपालवधे)	प्रकाश और अन्धकार एकत्र कैसे रह सकते हैं ?
सारं गृह्णन्ति पण्डिताः ।	बुद्धिमान् सारग्राही होते हैं ।
सिद्धिर्भूषयते विद्याम् ।	सिद्धि विद्या को अलंकृत करती है ।
सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम् ?	यदि सुंदर काव्य रचना आती हो तो राज्य से क्या लाभ है ?
सुकृती चानुभूयैव दुःखमप्यश्नुते सुखम् । (कथा०)	सुकर्मी मनुष्य दुःख सहकर भी सुख भोगता है ।
सुखमास्ते निःस्पृहः पुरुषः ।	कामनारहित मनुष्य सुखी रहता है ।
सुखार्थिनः कुतो विद्या ?	सुखैषी को विद्या कहाँ ?
सुतप्तमपि पानीयं शमयत्येव पावकम् ।	पानी भले ही खूब गर्म हो फिर भी अग्नि को शान्त कर ही देता है ।
सुलभा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जनम् । (किरात०)	संसार में सुन्दरता सुलभ है, गुण-धारण दुर्लभ ।
सुलभो हि द्विषां भङ्गो, दुर्लभा सत्स्ववाच्यता । (किरात०)	शत्रु का नाश करना सरल है, सज्जनों में प्रशंसा दुर्लभ ।

सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्। (शिशु०)	सूर्य के अस्त हो जाने पर कमल अपनी शोभा को धारण नहीं करता।
सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा ? (रघुवंशे)	जब सूर्य चमक रहा हो तब रात्रि लोगों की दृष्टि कैसे बंद कर सकती है ?
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः।	सेवा-रूपी धर्म अत्यन्त कठिन है, योगी भी वहाँ तक नहीं पहुँच सकते।
स्तोत्रं कस्य न तुष्टये ? (कुमार०)	प्रशंसा से कौन प्रसन्न नहीं होता ?
स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्यः ?	स्त्री के चरित्र और पुरुष के भाग्य को भगवान् भी नहीं जानता, मनुष्य भला क्या जानेगा?
स्त्रियो नष्टा ह्यभर्तृकाः।	पति-हीन स्त्रियाँ नष्ट हो जाती हैं।
स्त्रीणां पतिः प्राणा न बान्धवाः। (कथा०)	स्त्रियों का जीवन पति है, बन्धु नहीं।
स्त्रीणां प्रियालोकफलो हि वेषः। (कुमार०)	स्त्रियाँ सौन्दर्यवर्द्धक परिधान पहनती हैं।
स्त्री पुंवच्च प्रभवति यदा तद्धि गेहं विनष्टम्।	जब स्त्री पुरुषवत् प्रभावशाली हो जाती है तब घर नष्ट हो जाता है।
स्त्रीबुद्धिः प्रलयावहा।	स्त्री की बुद्धि प्रलयकारिणी होती है।
स्त्रीभिः कस्य न खण्डितं भुवि मनः ?	भूमि पर स्त्रियों ने किस के हृदय को खण्डित नहीं किया ?
स्त्री विनश्यति रूपेण।	स्त्री रूप से नष्ट होती है।
स्त्रीषु वाक्संयमः कुतः ? (कथा०)	स्त्रियों में वाणी का संयम कहाँ ?
स्नापितोऽपि बहुशो नदीजलैर्गर्दभः किमु हयो भवेत् क्वचित् ?	नदी के जल से बहुत बार नहाने पर भी क्या कहीं गधा भी घोड़ा बनता है ?
स्नुषात्वं पापानां फलमधनगेहेषु सुदृशाम्।	निर्धन घरों की पुत्रवधू बनना सुन्दरियों के पापों का फल है।
स्पृशन्ति न नृशंसानां हृदयं बन्धुबुद्धयः। (नैषध०)	सम्बन्धियों की सीख क्रूर जनों के हृदय को प्रभावित नहीं करती।
स्पृशन्त्यास्तारुण्यं किमिव न हि रम्यं मृगदृशः ?	यौवन में प्रविष्ट होती हुई मृगनयनी की कौन-सी बात सुंदर नहीं होती ?
स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः।	संसार अपने कर्मों के सूत्र से गूँथा हुआ है।
स्वगृहे पूज्यते मूर्खः।	मूर्ख अपने घर में ही पूजा जाता है।
स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः।	ग्रामपति अपने गाँव में ही पूजा जाता है।
स्वदेशजातस्य नरस्य नूनं गुणाधिकस्यापि भवेदवज्ञा।	अपने देश के गुणी व्यक्ति की भी उपेक्षा की जाती है।
स्वदेशे पूज्यते राजा।	राजा की पूजा अपने ही देश में होती है।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।	अपने धर्म में मरना अच्छा है, पर-धर्म भयंकर होता है।
स्वपन्त्यज्ञा हि निश्चेष्टाः, कुतो निद्रा विवेकिनाम् ?	अज्ञानी गहरी नींद में सोते हैं, विवेकियों को नींद कहाँ ?
स्वपदाच्च्यवमानस्य कस्याज्ञां को हि मन्यते ? (कथा०)	अपनी पदवी से च्युत हुए की आज्ञा कौन मानता है ?
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।	परोपकारियों का यह स्वभाव ही है।
स्वभावतः सर्वमिदं हि सिद्धम्।	यह सब स्वभाव से ही सिद्ध है।

स्वभावस्वच्छानां पतनमपि भाग्यं हि भवति ।

स्वभावतः पवित्र व्यक्तियों का पतन भी भाग्यार्थ ही होता है ।

स्वयमेव हि वातोऽग्नेः सारथ्यं प्रतिपद्यते । (रघु०)

पवन स्वयमेव अग्नि का सारथि बन जाता है ।

स्वसुखं नास्ति साध्वीनां तासां भर्तृसुखं सुखम् । (कथा०)

सत्स्त्रियों का अपना कोई सुख नहीं होता, वे पति के सुख को ही अपना सुख समझती हैं ।

स्वस्थः को वा न पण्डितः ?

कौन स्वस्थ मनुष्य बुद्धिमान् नहीं ?

स्वस्थे चित्ते बुद्धयः संभवन्ति ।

स्वस्थ चित्त में ही सुविचार उत्पन्न होते हैं ।

स्वादुभिस्तु विषयैर्हृतस्ततो दुःखमिन्द्रियगणो निवार्यते । (रघु०)

स्वादिष्ट विषयों से आकर्षित इन्द्रियों को उनसे हटाना कठिन है ।

स्वाधीना दयिता सुतावधि ।

सन्तान से पूर्व ही स्त्री स्वाधीन होती है ।

हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः । (अभिज्ञा०)

हंस दूध ले लेता है और उसमें मिले जल को छोड़ देता है ।

हं हो पद्मसरः कुतः कतिपयैर्हंसैर्विना श्रीस्तव ?

अरे कमलसर ! कुछ हंसों के विना तुम्हारी शोभा कहाँ ?

हतं ज्ञानं क्रियाहीनम् ।

क्रिया-रहित ज्ञान व्यर्थ है ।

हतं निर्नायकं सैन्यम् ।

सेनानी के विना सेना निकम्मी है ।

हतश्चाज्ञानतो नरः ।

मनुष्य अज्ञान से मारा जाता है ।

हरति मनो मधुरा हि यौवनश्रीः । (किरात०)

यौवन की मधुर शोभा मन को हर लेती है ।

हस्तस्य भूषणं दानम् ।

दान हाथ का गहना है ।

हितः परोऽपि स्वीकार्यो हेयः स्वोऽप्यहितः पुनः । (कथा०)

हितकारक बेगाना भी स्वीकार्य है और अहित-कारक अपना भी त्याज्य ।

हितप्रयोजनं मित्रम् ।

मित्र भलाई के लिए ही होता है ।

हितभुक्, मितभुक्, शाकभुक् ।

हितकर वस्तु खानेवाला, थोड़ा खानेवाला, साग-सब्ज़ी खानेवाला (स्वस्थ रहता है) ।

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः । (किरात०)

हितकर तथा मनोहर वचन दुर्लभ है ।

हितोपदेशो मूर्खस्य कोपायैव न शान्तये । (कथा०)

हितकारक उपदेश मूर्ख को कुपित करता है, शान्त नहीं ।

हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा । (रघुवंशे०)

सुवर्ण की खराई-खोटाई अग्नि में ही परखी जाती है ।

अर्थो हि लोके पुरुषस्य बन्धुः ।

संसार में धन ही मनुष्य का बन्धु है ।

द्वितीय परिशिष्ट

हिन्दी सूक्तियों के संस्कृत-पर्याय

हिन्दी	संस्कृत
अंगूर खट्टे हैं।	१. अलभ्यं हीनमुच्यते। २. दुष्प्रापा द्राक्षा अम्लाः।
अंडा सिखावे बच्चे को तू चीं-चीं मत कर।	१. बालः शिक्षयति वृद्धान्। २. वृद्धानां मन्त्रदो बालः।
अंडे सेवे कोई बच्चे लेवे कोई।	पश्येह मधुकरीणां सञ्चितमर्थं हरन्त्यन्ये।
अंडे होंगे तो बच्चे बहुतेरे हो जायँगे।	स्थिरे मूले ध्रुवा वृद्धिः।
अन्तःकरण के अनुसार आचरण करे।	मनःपूतं समाचरेत्। (मनु०)
अँतड़ी में रूप बुकची में छब्ब।	१. रूपमन्ने छविर्वसने। २. निराहारे कुतो रूपं निर्वसने च कुतश्छविः।
अंत बुरे का बुरा।	१. दुरितस्य दुःखम्। २. दुष्टस्य कष्टम्।
अंत भले का भला।	१. भद्रस्य भद्रम्। २. शुभस्य शुभम्।
अंत मता सो गता।	अन्ते मतिः सा गतिः।
अंदर से काले बाहर से गोरे।	१. विषकुम्भाः पयोमुखाः। २. अंतः शाक्ता बहिः शैवाः।
अंधा क्या चाहे? दो आँखें।	इष्टलाभः परं सुखम्।
अंधा क्या जाने बसंत की बहार?	१. गुणान्वसन्तस्य न वेत्ति वायसः। २. लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति? ३. न भेकः कोकनदिनीकिञ्जल्कास्वादकोविदः। (कथासरित्सागर)
अंधा गुरु बहरा चेला, दोनों नरक में ठेलमठेला।	अन्धस्यान्धानुलग्नस्य विनिपातः पदे पदे।
अंधा बाँटे रेवड़ियाँ फिर फिर अपनों ही को।	विवेकरहितः खलु पक्षपाती।
अंधी पीसे कुत्ता खाय।	पश्येह मधुकरीणां सञ्चितमर्थं हरन्त्यन्ये। (पंचतंत्र)
अंधे के आगे रोवे अपने दीदे खोवे।	१. अरण्यरोदनं व्यर्थं भस्मनि हुतमेव च। २. अरण्यरुदितमिव निष्प्रयोजनम्।
अंधे के हाथ बटेर लगना।	अन्धस्य वर्तकीलाभः!
अंधे को अंधा कहने से बुरा मानता है।	न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
अंधे को अँधेरे में बड़े दूर की सूझी।	बालिशस्य मतिस्फूर्तिः।
अंधे को सब अंधे ही दीखते हैं।	१. पित्तेन दूने रसने सिताऽपि तिक्तायते। २. पश्यति पित्तोपहतः शशिशुभ्रं शङ्खमपि पीतम्
अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा।	नृपे मूढे नयः कुतः?
अंधों ने गाँव लूटा दौड़ियो रे लँगड़े।	१. अयं बन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः। २. अन्धैर्लुण्ठितो ग्रामः पंगो रे धाव सत्वरम्।

अंधो में काना राजा ।	१. निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते । २. यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पधीरपि।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता ।	उत्पतितोऽपि चणकः शक्तः किं भ्राष्ट्रकं भङ्क्तुम्?
अक्ल बड़ी कि भैंस ?	१. बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम् । (पंचतंत्र) २. मतिरेव बलाद् गरीयसी । ३. प्रज्ञा नाम बलं श्रेष्ठं निष्प्रज्ञस्य बलेन किम् ?
अक्लमंद को इशारा, अहमक को फटकारा।	विज्ञाय संज्ञा, मूढाय दण्डः ।
अक्लमंद को इशारा ही काफ़ी है ।	१. अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः । २. परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः ।
अच्छी बात बच्चे की भी मान लेनी चाहिए।	युक्तियुक्तं प्रगृह्णीयाद् बालादपि विचक्षणः ।
अच्छी वस्तु स्वयमेव प्रसिद्ध हो जाती है ।	न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते ।
अच्छी संतान सुख की खान ।	१. संततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे ।(रघु०) २. सुखमूलं सुसन्ततिः ।
अटका बनिया देय उधार ।	परवशैः किन्न क्रियते ?
अटकेगा सो भटकेगा।	संशयात्मा विनश्यति ।
अढ़ाई पाव कंगनी चौबारे रसोई ।	निस्सारस्य पदार्थस्य प्रायेणाडम्बरो महान् ।
अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप्प । अति का भला न बरसना, अति की भली न धुप्प ।	अति सर्वत्र वर्जयेत् ।
अदले का बदला ।	१. कृते प्रतिकृतिं कुर्यात् । २. भद्रो भद्रे खलः खले । ३. शठे शाठ्यं समाचरेत् ।
अधजल गगरी छलकत जाय ।	अर्द्धो घटो घोषमुपैति नूनम् ।
अधिकार बड़ा है न कि बल।	स्थानं प्रधानं न बलं प्रधानम् । (पंचतंत्र)
अधेला न दे, अधेली दे ।	१. अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम् । (रघुवंश) २. पणमदत्त्वा निष्कं प्रयच्छति ।
अनहोनी होती नहीं होनी होवनहार।	न यद् भावि न तद् भावि भावि चेन्न तदन्यथा । (हितोपदेश)
अपना अपना ग़ैर ग़ैर ।	निजो निज एव परः परश्च ।
अपना टँटर न देखे दूसरों की फुल्ली निहारे ।	खलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति । आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति ॥ (महाभारत)
अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है।	१. जठरं को न बिभर्ति केवलम् ? २. काकोऽपि जीवति चिराय बलिञ्च भुङ्क्ते ।
अपना पैसा खोटा तो परखया का क्या दोष ?	१. आत्मीयाः सदोषाश्चेत् को लाभः परदूषणैः ? २. समले सुवर्णे निकषो न निन्द्यः ।
अपना वही जो आए काम ।	१. स एव बन्धुः सहायको यः । २. परोऽपि हितकरः स्वीयः ।
अपना हाथ जगन्नाथ ।	स्वातन्त्र्यमिष्टप्रदम् ।
अपनी अपनी डफली अपना अपना राग ।	स्वार्थसिद्धौ हि ये मग्नास्तेषां साम्मत्यं कुतः?

अपनी इज़्ज़त अपने हाथ।	१. लोके गुरुत्वं विपरीततां वा स्वचेष्टितान्येव नरं नयन्ति। २. निजाधीनं स्वगौरवम्।
अपनी करनी पार उतरनी।	कृत्यैः स्वकीयैः खलु सिद्धिलब्धिः।
अपनी ग़रज़ बावली होती है।	१. अर्थार्थी जीवलोकोऽयं श्मशानमपि सेवते। (पंचतंत्र) २. किन्न कुर्वन्ति स्वार्थिनः ?
अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है।	निजसदननिविष्टः श्वा न सिंहायते किम् ?
अपनी छाछ को कोई खट्टी नहीं कहता।	१. सर्वः खल्वात्मीयं कान्तं पश्यति। २. न हि कश्चिन्निजं तक्रमम्लमित्यभिभाषते।
अपनी देह किसे प्यारी नहीं?	(अशेषदोषदुष्टोऽपि) क़ायः कस्य न वल्लभः? (पंचतंत्र)
अपनी नाक कटे तो कटे दूसरों का सगुन तो बिगड़े।	आत्मक्षत्याऽपि विघ्नन्ति परकर्माणि दुर्जनाः।
अपनी पगड़ी अपने हाथ।	दे. 'अपनी इज़्ज़त अपने हाथ'।
अपनी बुद्धि पराया धन कई गुना दीखता है।	स्वमतिः परधनञ्चैव वृद्धवृद्धं हि दृश्यते।
अपने गरीबान में मुँह डाल कर देखना।	विरूपो यावदादर्शे पश्यति नात्मनो मुखम्। मन्यते तावदात्मानमन्येभ्यो रूपवत्तरम्। (महाभारत)
अपने दही को कोई खट्टा नहीं कहता।	दे. 'अपनी छाछ को....'
अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ा मारना।	१. दुःखसहनं स्वदोषेण। २.स्वकरेणांगारकर्षणम्।
अपने मुँह मियाँ मिट्ठू।	इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः।
अपयश से मौत भली।	सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते। (गीता)
अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।	१. निर्वाणदीपे किमु तैलदानम्? २. गतस्य शोचनं नास्ति। ३. गतं शोचन्त्यपण्डिताः। ४. गते शोको निरर्थकः।
अभी दिल्ली दूर है।	अद्यापि दूरतः सिद्धिः।
अमीर को जान प्यारी, गरीब को जान भारी।	धनाढ्यो रक्षति प्राणान् निर्धनस्त्यक्तुमिच्छति।
अरहर की टट्टी गुजराती ताला।	पाषाणे मृगमदलेपः।
अलख़ामोशी नीमरज़ा।	मौनं स्वीकारलक्षणम्।
अल्पाहारी सदा सुखी।	अल्पाहारी सदासुखी।
अशरफ़ियाँ लुटीं, कोयलों पर मुहर।	१. निष्कापव्ययः, पणरक्षणम्। २. चन्दनदाहः, शमीरक्षा।
अस्सी की आमद चौरासी का ख़र्च।	१. अल्प आयो व्ययो महान्। २. न्यूनायेऽधिकव्ययः।
आँख और कान में चार अंगुल का फ़र्क़ होता है।	श्रवणे दर्शने चैव वर्तते महदन्तरम्।
आँख न दीदा काढ़े कसीदा।	अन्धो वीक्षितुमुद्यतः।
आँख से दूर दिल से दूर।	१. दूरता स्नेहनाशिनी। २. नयनदूरं मनोदूरम्।
आखों के अंधे नाम नयन-सुख।	१. यस्य पार्श्वे धनन्नास्ति सोऽपि धनपाल उच्यते। २. वित्तेन हीनो नाम्ना नरेशः।

	३. ज्ञानेन हीनोऽपि सुबोधसंज्ञः । ४. गुणैर्विरहितोऽपि गुणाकराख्यः ।
आँधी के आम ।	अल्पार्घद्रव्यम् ।
आई को कौन टारे ?	१. अपि धन्वन्तरिर्वैद्यः किं करोति गतायुषि ? २. मृत्योर्नास्ति भेषजम् ।
आई तो ईद-बरात न आई तो जुम्मेरात ।	सघृतं भोजनं वित्ते, दारिद्र्ये शुष्कमेव च ।
आई थी आग लेने मालिक बन बैठी ।	१. सूचीप्रवेशे मुसलप्रवेशः । २. अनलार्थं समायाता सञ्जाता गृहस्वामिनी ।
आई है जान के साथ जायगी जनाज़े के साथ	जीवनसंगिनी रुजा ।
आए की खुशी न गए का ग़म ।	१. सन्तुष्टः सदासुखी । २. लाभालाभयोः समः ।
आग पानी का मेल कैसे हो सकता है ?	१. सामानाधिकरण्यं हि तेजस्तिमिरयोः कुतः ? २. जलानलयोः सङ्गमः कुतः ?
आग लगने पर कूआँ नहीं खोदा जाता ।	१. सन्दीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः? (नीतिशतक) २. न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे ।
आग लगा पानी को दौड़े ।	१. अन्तर्दुष्टः क्षमायुक्तः सर्वानर्थकरः किल । २. विषकुम्भः पयोमुखः ।
आगे कूआँ पीछे खाईं ।	इतः कूपस्ततस्तटी ।
आगे जगह देखकर पाँव रखा जाता है ।	१. दृष्टिपूतं न्यसेत्पादम् । (मनु०) २. नासमीक्ष्य परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत् ।
आगे दौड़ पीछे चौड़ ।	पूर्वाधीतं तु विस्मृत्य अग्रस्थं प्रत्युत्सुकः ।
आगे नाथ न पीछे पगहा, सब से भला कुम्हार का गदहा ।	का चिन्ता बन्धुहीनस्य ?
आज का काम कल पर मत छोड़ो ।	यदद्य कार्यं न श्वः कुर्यात् ।
आदत सिर के साथ जाती है ।	अभ्यासो हि दुस्त्यजः ।
आदि बुरा अंत बुरा ।	१. दुरारम्भो दुरन्तः स्यात् । २. दुर्बीजात्सुफलं कुतः ?
आधा तीतर आधा बटेर ।	विषमयोगो न युज्यते ।
आधी छोड़ सारी को धावे, ऐसा डूबे थाह न पावे ।	यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते । ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव तु ॥
आप मरे जग परलै ।	१. आत्मप्रलये जगत्प्रलयः । २. आत्मनाशे जगन्नाशः ।
आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता ।	१. नात्मयत्नं विना सिद्धिः । २. यावन्न निधनं तावन्न स्वर्गः ।
आप हारे बहू को मारे ।	निजापराधे भृत्यस्य भर्त्सनम् ।
आ बला, गले लग ।	विपत्ते ! परिष्वजस्व माम् ।
आमों की कमाई नींबू में गँवाई ।	इतो लाभस्ततः क्षतिः ।
आम के आम गुठलियों के दाम ।	एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा ।
आम बोओ आम खाओ ।	यादृशमुप्यते बीजं तादृशं फलमाप्यते ।
आयगा सो जायगा राजा रंक फ़क़ीर ।	जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ।
आरत काह न करइ कुकर्मू ।	आर्त्तो जनः किन्न करोति पापम् ।

आलस्य बुरी बला है।	१. अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति। २. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।
आलिम वह क्या अमल न हो जिसका किताब पर।	यः क्रियावान् स पण्डितः।
आस-पास बरसे दिल्ली पड़ी तरसे।	सस्पृहा निर्धना दृष्टा निःस्पृहाणां धनं बहु।
आस्मान पर थूका अपने सिर।	पङ्को हि नभसि क्षिप्तः क्षेप्तुः पतति मूर्धनि।
आस्मान से गिरा खजूर में अटका।	इतो मुक्तस्ततो बद्धः।
आहारे व्यौहारे लज्जा न कारे।	आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।
इक चुप हज़ार सुख।	मौनं सर्वसुखप्रदम्।
इक नागिन अरु पंख लगाई।	दे. 'एक तो करेला…'
इधर कूआँ उधर खाई।	१. इतोऽन्धकूपस्ततो दन्दशूकः। २. इतः कूपस्ततस्तटी।
इधर बाघ उधर खाई।	इतो व्याघ्रस्ततस्तटी।
इलाज लाख, एक पथ्य।	पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः?
इश्क नाज़ुक मिज़ाज है बेहद। अक्ल का बोझ उठा नहीं सकता॥	अनुरागान्धमनसां विचारसहता कुतः। (कथा.)
इस घर का बाबा आदम ही निराला है।	गृहमेतद् विलक्षणम्।
इस हाथ दे उस हाथ ले।	१. इतो देयं ततो ग्राह्यम्। २. त्वरितं फलं कर्मणाम्।
ईंट का जवाब पत्थर से।	१. शठे शाठ्यं समाचरेत्। २. कृते प्रतिकृतिं कुर्यात्। (चाणक्यनीतिः)
ईश्वर की निगाह सीधी हो तो किसी वस्तु की कमी नहीं रहती।	१. प्रसन्ने हि किमप्राप्यमस्तीह परमेश्वरे। २.विधिर्हि घटयत्यर्थानचिन्त्यानपि संमुखः।(कथा.)
ईश्वर की निगाह सीधी हो तो कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता।	श्रीकृष्णस्य कृपालवो यदि भवेत् कः कं निहन्तुं क्षमः।
ईश्वर की निगाह सीधी हो तो शत्रु भी मित्र बन जाता है।	सानुकूले जगन्नाथे विप्रियः सुप्रियो भवेत्।
ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया।	दैवी विचित्रा गतिः।
ईश्वर के नियम अटल हैं।	ध्रुवाः परमेशनियमाः।
ईश्वर के रंग (खेल) न्यारे हैं।	१. विधेर्विचित्राणि विचेष्टितानि। २. अहो विधेरचिन्त्यैव गतिरद्भुतकर्मणाम्।(कथा.) ३. अहो नवनवाश्चर्यनिर्माणे रसिको विधिः। (कथा०) ४. दैवी विचित्रा गतिः। ५. मधुरविधुरमिश्राः सृष्टयो हा विधातुः।
ईश्वर के सिवा कोई निर्दोष नहीं।	त्रिभुवनविषये कस्य दोषो न चास्ति।
ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए।	रामधाम शरणीकरणीयम्।
ईश्वर से क्या दूर है?	किं हि न भवेदीश्वरेच्छया?
उखली में सिर दिया तो मूसलों का डर क्या?	रणे योद्धुं प्रवृत्तस्य शत्रुशस्त्रात्तु किं भयम्।
उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई?	१. निर्लज्जस्य कुतो भयम्? २. मानहीनमनुष्याणां लोकोऽयं किं करिष्यति?
उदार मनुष्य पात्र का विचार नहीं करते।	मेघो गिरिजलधिवर्षी च।
उधार का खाना फूस का तापना बराबर है?	उद्धारभोजनं तृणतापसेवनम्।

उधार दिया गाहक खोया।	उद्धारः क्रेतृलोपकः।
उधार मुहब्बत की कैंची है।	उद्धारः स्नेहनाशकः।
ऊधो मन माने की बात।	तस्य तदेव हि मधुरं यस्य मनो यत्र संलग्नम्।
उन्नीस-बीस का तो फ़र्क़ होता ही है।	समयोरप्यल्पमन्तरम्।
उपजहिं एक संग जल माहीं, जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं।	न सोदरास्तुल्यगुणा भवन्ति।
उलटा चोर कोतवाल को डांटे।	दोषी पृच्छकमवक्षिपेत्।
उलटे बाँस बरेली को।	गङ्गां हिमाचलं नयति।
ऊँट के मुँह में जीरा।	१. दाशेरस्य मुखे जीरः। २. न स्तोकेन घस्मरतृप्तिः।
ऊँट की चोरी और झुके झुके।	न महान्ति कर्म्माणि भवन्ति गूढम्।
ऊँची दुकान फीका पकवान।	निस्सारस्य पदार्थस्य प्रायेणाडम्बरो महान्।
ऊँट घोड़े बहे जायँ, गधा कहे कितना पानी?	यत्र शूरगतिर्नास्ति कातरः किं करिष्यति?
ऊँट तो कूदे बोरे भी कूदे।	नृत्यति पिनाकपाणौ नृत्यन्त्यन्येऽपि भूतवेतालाः।
ऊँट रे ऊँट तेरी कौन सी कल सीधी?	१. सर्वपापमयो जनः। २. सर्वदोषयुतो नरः।
ऊँटों के विवाह में गधे गवैये।	उष्ट्राणां विवाहे तु गीतं गायन्ति गर्दभाः।
ऊधो का लेना न माधो का देना।	निश्चिन्तो नरः सुखी।
ऊपर से पानी देना नीचे से जड़ काटना।	१. अन्तर्दुष्टः क्षमायुक्तः सर्वाऽनर्थकरः किल। २. क्षालयन्नपि वृक्षांघ्रिं नदीवेगो निकृन्तति। ३. अन्तः शत्रुः बहिः सुहृद्।
एक अंडा वह भी गंदा।	काकमांसं शुनोच्छिष्टमतिस्वल्पञ्च तत्पुनः।
एक अनार सौ बीमार।	एकः कपोतपोतः श्येनाः शतशोऽभिधावन्ति।
एक और एक ग्यारह होते हैं।	१. संहतिः कार्यसाधिका। २. समवायो दुरत्ययः। ३. एकचित्ते द्वयोरेव किमसाध्यं भवेदिति। (कथासरित्सागर)
एक कहो दस सुनो।	गाल्या उत्तरं दश।
एक कान से सुनना दूसरे से निकाल देना?	अवधानरहितं श्रवणं हि व्यर्थम्।
एक के दूने से सौ के सवाए भले।	विक्रयाधिक्ये लाभाधिक्यम्।
एक चुप हज़ार को हराए।	१. मौनं सर्वार्थसाधनम्। २. मौनं विश्वजिद् ध्रुवम्।
एकता में बड़ी शक्ति है।	१. समवायो दुरत्ययः। २. संहतिः कार्यसाधिका।
एक तो करेला कड़ुआ दूसरे नीम चढ़ा।	१. अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः। २. मर्कटस्य सुरापानं ततो वृश्चिकदंशनम्।
एक तो चोरी दूसरे सीनाज़ोरी।	अपराधित्वेऽपि धृष्टता।
एक थैली के चट्टे-बट्टे।	दुष्टत्वे सर्वे समाः।
एक दिन मेहमान, दो दिन मेहमान, तीसरे दिन बलाए जान।	१. प्राघुणिको दिनद्वयम्, यमदूतस्ततः परम्। २. प्राहुणपूजा दिनद्वयम्।
एक नज़ीर न सौ नसीहत।	कृतिरुपदेशशताद् वरीयसी।
एक पंथ दो काज।	१. एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा। (महाभाष्य) २. देहल्यां दीपः।
एक परहेज़, न सौ हकीम।	पथ्यं भिषक्शताद् वरम्।
एक पुण्य दूसरे फलियाँ।	१. एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा। २. एकं कृत्यं लोकपरलोकफलदम्।

एक बार मरना फिर मरने से क्या डरना ?	क्षणविध्वंसिनः कायाः का चिन्ता मरणे रणे ।
एक बोटी सौ कुत्ते ।	दे. 'एक अनार सौ बीमार' ।
एक मछली सारे जल को गंदा करती है ।	एकेनैव कुपुत्रेण मलिनं जायते कुलम् ।
एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं।	१. नैकस्मिन्नेव कान्तारे सिंहयोर्वसतिः क्वचित् । २. बलवतोर्नैकत्र शासनम् ।
एक हमाम में सब नंगे ।	सर्वे सहवासिनः समाः ।
एक हाथ से ताली नहीं बजती ।	१. नह्येकेन हस्तेन तालिका संप्रपद्यते । (पंचतंत्र) २. नैकाकी कलहे क्षमः ।
एक ही लकड़ी से सब को हाँकना ।	योग्यायोग्योर्विवेकाभावः ।
एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय ।	एकलक्ष्ये सर्वसिद्धिर्लक्ष्याधिक्येन काचन ।
ऐब करने को भी हुनर चाहिए ।	पापं कौशलापेक्षि ।
ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देय ।	वृत्तिहीनाय वृद्धाय को जनो भोजनं दद्यात् ।
ओछे की प्रीत बालू की भीत ।	अस्थिरं क्षुद्रसौहृदम् ।
ओछे के मुँह लगना अपनी इज्ज़त खोना ।	क्षुद्रसंगतिर्माननाशिनी ।
ओस चाटे प्यास नहीं बुझती ।	१. न तारालोकेन तमिस्रनाशः । २. प्रालेयलेहान्न तृषाविनाशः ।
और बात खोटी सही दाल रोटी ।	अन्नपानं परित्यज्य सर्वमन्यन्निरर्थकम् ।
कड़वी दवाई का फल मीठा ।	यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।
कड़वे बोल न बोल ।	मर्मवाक्यमपि नोच्चरणीयम् ।
कन्या पराया धन होती है ।	अर्थो हि कन्या परकीय एव । (अभिज्ञान०)
करमगति टारे नाहिं टरे ।	१. भवितव्यं भवत्येव कर्मणामीदृशी गतिः । २. भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र । (अभिज्ञान०)
करम प्रधान बिस्व रचि राखा, जो जस करहिं सो तस फल चाखा ।	स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः । दे. 'जैसी करनी वैसी भरनी' ।
करमों की गति न्यारी ।	१. चित्रा गतिः कर्म्मणाम् । २. गहना कर्मणो गतिः ।
कल की छोड़ो आज की बात करो ।	वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति विचक्षणाः ।
कह रहीम परकाज हित संपति सँचहिं सुजान ।	१. आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव। (रघु.) २. आपन्नार्त्तिप्रशमनफलाः संपदो ह्युत्तमानाम् । (रघु.) ३. परोपकाराय सतां विभूतयः ।
का करै अद्वितीय जन यद्यपि होय समर्थ ।	असहायः समर्थोऽपि तेजस्वी किं करिष्यति । (पंचतंत्रम्) सबलोऽप्येकलोऽबलः ।
काल सबको खा जाता है ।	सर्वः कालवशेन नश्यति ।
काला अक्षर भैंस बराबर ।	निरक्षरभट्टाचार्यः ।
काठ की बिल्ली तो बन गई परन्तु म्याऊँ कौन करेगा ?	सुलभा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जनम् ।
कुत्ता कुत्ते का वैरी ।	१. भिक्षुको भिक्षुकं दृष्ट्वा श्वानवद् गुर्गुरायते । २. याचको याचकं दृष्ट्वा श्वानवद् गुर्गुरायते ।
कुत्ते की दुम बारह बरस नली में रखो तो भी टेढ़ी की टेढ़ी ।	तरुणीकच इव नीचः कौटिल्यं नैव विजहाति ।

क्या बूढ़ा क्या जवान मौत के लिए सब समान	मृत्योः सर्वत्र तुल्यता ।
खूँटे के बल बछड़ा कूदे ।	अन्यस्माल्लब्धपदो नीचः प्रायेण दुःसहो भवति ।
दर्वाजे का गवाह मैंढक ।	अहो रूपमहो ध्वनिः ।
गंगा गए गंगाराम जमुना गए जमुनादास ।	भजन्ति वैतसीं वृत्तिं मानवाः कालवेदिनः ।
ग़रीब को ख़ुदा की मार ।	देवो दुर्बलघातकः ।
ग़रीब को संसार सूना ।	१. सर्वं शून्यं दरिद्रस्य । २. सर्वशून्या दरिद्रता ।
ग़रीब को सुख कहाँ ?	१. निर्धनस्य कुतः सुखम् ? २. निर्धनता सर्वापदामास्पदम् ।
गुणी गुणों से आदर पाते हैं, आयु तथा लक्षणों से नहीं ।	गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः ।
गुरु बिना गत नहीं ।	विना हि गुर्वादेशेन सम्पूर्णाः सिद्धयः कुतः ?
ग़ुस्सा बड़ा चंडाल है ।	१. धर्मक्षयकरः क्रोधः । २. क्रोधो मूलमनर्थानाम् ।
गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाता है ।	अपेक्षन्ते हि विपदः किं पेलवमपेलवम् ?
घर का जोगी जोगड़ा बाहर जोगी सिद्ध ।	स्वदेशजातस्य नरस्य नूनं गुणाधिकस्यापि भवेदवज्ञा ।
घोड़ों का घर कितनी दूर ?	किं दूरं व्यवसायिनाम् ?
चुपड़ी और दो दो ?	यथौषधं स्वादु हितं च दुर्लभम् ।
चमड़ी जाय दमड़ी न जाय ।	प्राणेभ्योऽप्यर्थमात्रा हि कृपणस्य गरीयसी । (कथा०)
चार दिन की चाँदनी औ फिर अँधेरी रात ।	तिष्ठत्येकां निशां चन्द्रः श्रीमान् संपूर्णमण्डलः ।
जगत् भेड़-चाल है ।	गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः ।
जब बुरे दिन आते हैं बुद्धि मारी जाती है ।	१. विनाशकाले विपरीतबुद्धिः । २. प्रायः समापन्नविपत्तिकाले धियोऽपि पुंसां मलिना भवन्ति ।
जब भाग्य ही सीधा न हो तो काम कैसे सिद्ध हो ।	१. वक्रे विधौ वद कथं व्यवसायसिद्धिः । २. वामे विधौ न हि फलन्त्यभिवाञ्छितानि ।
जब लग पैसा गाँठ में तब लग ताको यार	अम्बुगर्भो हि जीमूतश्चातकैरभिनन्द्यते । (रघु.)
ज़बाँ शीरीं मुल्क गीरी ।	कः परः प्रियवादिनाम् ?
ज़रूरत के वक्त गधे को भी बाप कहा जाता है ।	महानपि प्रसङ्गेन नीचं सेवितुमिच्छति ।
जहाँ न जाय रवि वहाँ जाय कवि ।	कवयः किं न पश्यन्ति ?
जान किसे प्यारी नहीं ।	कायः कस्य न वल्लभः ।
जान है तो जहान है ।	आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ।
जिसका काम उसी को साजे, और करे तो डफ़ली बाजे ।	अज्ञता कस्य नामेह नोपहासाय जायते । (कथासरित्सागर)
जिसका खाएँ उसी का गीत गाएँ ।	को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः ?
जिसकी लाठी उसकी भैंस ।	औचित्यं गणयति को विशेषकायः ।
जिसके घर दाने उस के कमले (मूर्ख) भी स्याने ।	लक्ष्मीर्यस्य गृहे स एव भजति प्रायो जगद्वन्द्यताम् ।
जितना गुड़ डालोगे उतना मीठा होगा ।	अधिकस्याधिकं फलम् ।
जितने मुँह उतनी बातें ।	नवा वाणी मुखे मुखे ।
जिनको कछू न चाहिए तेई साहंसाह ।	सुखमास्ते निःस्पृहः पुरुषः ।

जीभ रोगों की जड़ है।	रसमूला हि व्याधयः।
जीवन का क्या भरोसा है ?	अस्थिरं जीवितं लोके।
जैसा कारण वैसा कार्य।	१. यथा बीजं तथाङ्कुरः। २. यथा वृक्षस्तथा फलम्। ३. यादृशास्तन्तवः कामं तादृशो जायते पटः।
जैसा मुँह वैसी चपेड़।	पात्रानुसारं फलम्।
जैसी करनी वैसी भरनी।	१. भद्रकृत्प्राप्नुयाद् भद्रं, अभद्रञ्चाप्यभद्रकृत्। (कथा०) २. भद्रमभद्रं वा कृतमात्मनि कल्प्यते। (कथा०) ३. यो यद्वपति बीजं हि लभते सोऽपि तत्फलम्। ४. कर्मायत्तं फलं पुंसाम्। दे. 'करम प्रधान…'
जैसी संगत वैसी रंगत।	१. संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति। २. प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः संसर्गतो जायते।
जैसे को तैसा।	१. शठे शाठ्यं समाचरेत्। २. आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः। (नैषध.)
जो अपनी सहायता करते हैं ईश्वर भी उनकी सहायता करता है।	दैवमेव हि साहाय्यं कुरुते सत्त्वशालिनाम्।
जो गरजते हैं वे बरसते नहीं।	नीचो वदति न कुरुते, वदति न साधुः करोत्येव।
जो तुव को काँटा बुवै ताहि बोव तू फूल।	क्षारं पिबति पयोधेर्वर्षत्यम्भोधरो मधुरमम्भः।
जो पैदा हुआ सो मरेगा।	१. कः कालस्य न गोचरान्तरगतः। २. जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः। (गीता) ३. मरणं प्रकृतिः शरीरिणाम्। ४. उत्पद्यन्ते विलीयन्ते।
जो सुख छज्जू के चौबारे, वह न बलख़ न बुख़ारे।	प्राणिनां हि निकृष्टाऽपि जन्मभूमिः परा प्रिया। (कथा०)
जो है जिसको भावता सो ताही के पास।	न हि विचलति मैत्री दूरतोऽपि स्थितानाम्।
ज्ञान से बड़ा कोई सुख नहीं।	नास्ति ज्ञानात्परं सुखम्।
डूबा बंस कबीर का उपजे पूत कमाल।	कुपुत्रेण कुलं नष्टम्।
तृष्णा बूढ़ी नहीं होती।	तृष्णैका तरुणायते।
थोथा चना बाजे घना।	१. अर्द्धो घटो घोषमुपैति नूनम्। २. गुणैर्विहीना बहु जल्पयन्ति। ३. अल्पज्ञानी महाभिमानी। ४. न सुवर्णे ध्वनिस्तादृग् यादृक्कांस्ये प्रजायते।
दमड़ी की बुढ़िया टका सिरमुड़ाई।	१. न काचस्य कृते जातु युक्ता मुक्तामणेः क्षतिः। (कथा०) २. रत्नव्ययेन पाषाणं को हि रक्षितुमर्हति? (कथा.)
दया धर्म का मूल है।	१. धर्मस्य मूलं दया। २. को धर्मः कृपया विना ?
दिल दिल का साक्षी होता है।	विमलं कलुषीभवच्च चेतः कथयत्येव हितैषिणं रिपुं वा।
दुधार गाय की लात भली।	काश्मीरजस्य कटुतापि नितान्तरम्या।
दूध का जला छाछ भी फूँक कर पीता है।	पाणौ पयसा दग्धे तक्रं फूत्कृत्य पामरः पिबति।
दूर के ढोल सुहावने।	दूरतः पर्वता रम्याः।
धन जोबन का गरब न कीजै।	१. अस्थिरे धनयौवने। २. किञ्चित्कालोपभोग्यानि यौवनानि धनानि च।

धर्महीन नर पशू समाना।	धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।
न इधर के रहे न उधर के रहे।	१. इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः। २. इदं च नास्ति न परं च लभ्यते। ३. उभयतो भ्रष्टः।
नदी नाव संजोगी मेले।	असंभाव्या अपि नृणां भवन्तीह समागमाः। (कथा०)
नहिं अस कोउ जग माहीं, प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं।	ऋद्धिश्चित्तविकारिणी।
नहीं यह जन्म बारंबार।	भस्मीभूतस्य भूतस्य (देहस्य) पुनरागमनं कुतः?
नहीं शील सम गहना दूजा।	१. शीलं परं भूषणम्। २. शीलं हि सर्वस्य नरस्य भूषणम्।
न होने की अपेक्षा थोड़ी अच्छी।	१. बधिरान्मन्दकर्णः श्रेयान्। २. अभावादल्पता वरा।
निरन्तर ख़र्च से क़ारूँ का ख़ज़ाना भी समाप्त हो जाता है।	भक्ष्यमाणो निरुदयः सुमेरुरपि हीयते।
पर उपदेस कुसल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे।	१. परोपदेशवेलायां शिष्टाः सर्वे भवन्ति वै। २. परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम्। धर्मे स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित्तु महात्मनः॥
पर घर कबहुँ न जाइए जात घटत है जोत।	परसदननिविष्टः को लघुत्वं न याति?
परहित सरिस धरम नहिं भाई।	परोपकारजं पुण्यं न स्यात् क्रतुशतैरपि।
पराधीन सपने सुख नाहीं।	कष्टः खलु पराश्रयः।
परोपकारी लोग स्वार्थ की चिन्ता नहीं करते।	१. परहितनिरतानामादरो नात्मकार्ये। २. परार्थप्रतिपन्ना हि नेक्षन्ते स्वार्थमुत्तमाः। (कथा.)
पहले तोलो पीछे बोलो।	युक्तं न वा युक्तमिदं विचिन्त्य वदेद् विपश्चिन्महतोऽनुरोधात्।
पाप का भांडा फूट ही जाता है।	नाधर्मश्चिरमृद्धये। (कथा.)
पैसा पापियों को पूज्य बना देता है।	चाण्डालोऽपि नरः पूज्यो यस्यास्ति विपुलं धनम्।
पैसा रहा न पास यार मुख से नहिं बोलें।	वृक्षं क्षीणफलं त्यजन्ति विहगाः।
पैसा हाथ की मैल है।	उदारस्य तृणं वित्तम्।
पैसे से दोष भी गुण बन जाते हैं।	मातर्लक्ष्मि तव प्रसादवशतो दोषा अपि स्युर्गुणाः।
प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं।	१. कोऽर्थान् प्राप्य न गर्वितः? २. यत्रास्ति लक्ष्मीर्विनयो न तत्र।
प्राण जायँ पर धर्म न जाई।	त्यजन्त्युत्तमसत्त्वा हि प्राणानपि न सत्पथम्। (कथा०)
प्राण जायँ पर वचन न जाई।	न चलति खलु वाक्यं सज्जनानां कदाचित्।
बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद?	१. न भेकः कोकनदिनीकिंजल्कास्वादकोविदः। २. किमिष्टमन्नं खरसूकराणाम्?
बड़ों का मार्ग ही ठीक मार्ग है।	महाजनो येन गतः स पन्थाः।
बड़ों की बड़ी बातें।	अहह महतां निस्सीमानश्चरित्रविभूतयः।
बड़ों की संगत से बहुत लाभ होता है।	ध्रुवं फलाय महते महतां सह संगमः। (कथा०)
बढ़ी हुई (आयु) के इलाज़ हैं घटी हुई के नहीं।	प्रतिकारविधानमायुषः सति शेषे हि फलाय कल्पते।
बदनाम जो होंगे तो क्या नाम न होगा?	येन केन प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत्।
बहुत निबल मिलि बल करैं, करैं जु चाहैं सोय।	बहूनामप्यसाराणां संहतिः कार्यसाधिका।

बातों से काम नहीं चलता ।	न नश्यति तमो नाम कृतया दीपवार्तया ।
बाप पर बेटा तुख़म पर घोड़ा ।	कार्यं निदानाद्धि गुणानधीते । (नैषध०)
बिन घरनी घर भूत का डेरा ।	१. प्रियानाशे कृत्स्नं किल जगदरण्यं हि भवति । २. भार्याहीनं गृहस्थस्य शून्यमेव गृहं मतम् । ३. धिग्गृहं गृहिणीशून्यम् ।
बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय ।	१. सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् । २. सहसा हि कृतं पापं (कार्य्यं) कथं मा भूद्विपत्तये । (कथा०)
बीती बात का शोक न करना चाहिए ।	१. गतस्य शोचनं नास्ति । २. गते शोको निरर्थकः । ३. गतं शोचन्त्यपंडिताः ।
बुरी संगत का बुरा फल ।	असन्मैत्री हि दोषाय कूलच्छायेव सेविता । (किरात०)
बूँद-बूँद पड़ने से घड़ा भर जाता है ।	जलविन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।
भले काम में देर कैसी ?	शुभस्य शीघ्रम् ।
भलों का संग करना चाहिए ।	१. सद्भिः कुर्वीत संगतिम् । २. सद्भिरेव सहासीत ।
भाग्य का मारा जहाँ जाता है विपत्ति भी वहीं उसे जा घेरती है ।	१. प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रापदां भाजनम् । २. प्रायो गच्छति यत्र दैवहतकस्तत्रैव यान्त्यापदः । (नीति०)
भूख में सब कुछ स्वादु लगता है ।	क्षुधातुराणां न रुचिर्न पक्वम् ।
भैंस के आगे बीन बजे भैंस खड़ी पगुराय ।	१. अन्धस्य दीपः । २. वधिरस्य गीतम् ।
मन के हारे हार है मन के जीते जीत ।	१. जिते चित्ते जितं जगत् । २. जितचित्तेन सर्वं हि जगदेतद्विजीयते । ३. जितं जगत्केन ? मनो हि येन । (शंकराचार्य)
मन चंगा तो कठौती में गंगा ।	निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम् ।
मनस्वी लोग सुख-दुःखकी परवाह नहीं करते।	मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम् ।
मरता क्या न करता ।	१. बुभुक्षितः किन्न करोति पापम् ? २. क्षीणा जना निष्करुणा भवन्ति । ३. दारिद्र्यदोषेण करोति पापम् ।
महात्माओं के मन, वाणी तथा कर्म में समानता होती है ।	मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम् ।
माँगन गए सो मर गए ।	१. याचनान्तं हि गौरवम् । २.याचनान्मरणं वरम्। ३. वरं हि मानिनो मृत्युर्न दैन्यं स्वजनाग्रतः । (कथा०) ४. कोऽर्थी गतो गौरवम् ?
मित्र की पहचान विपद में ही होती है।	१. हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा । (रघु०) २. मित्रस्य निकषो विपत् । ३. स सुहृद् व्यसने यः स्यात् ।

मुक्ति तथा बंधन का कारण मन ही है।	मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।
मूरख का बल मौन।	बलं मूर्खस्य मौनित्वम्।
मूर्ख लोग भेड़-चाल चलते हैं।	मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः। (कालिदास)
मूर्खों की संगत से कौन सुख पाता है ?	मूर्खैहि संगः कस्यास्ति शर्मणे ? (कथा०)
मेरे मन कछु और है बिधना के कछु और।	को जानाति जनो जनार्दनमनोवृत्तिः कदा कीदृशी ?
मोह की फाँसी बड़ी प्रबल है।	नास्ति मोहसमो रिपुः।
मौत का कोई इलाज़ नहीं।	अपि धन्वन्तरिर्वैद्यः किं करोति गतायुषि ?
योग्य, योग्य के साथ ही फबता है।	चकास्ति योग्येन हि योग्यसंगमः।
रखिए मेलि कपूर में हींग न होय सुगंध।	किं मर्दितोऽपि कस्तूर्या, लशुनो याति सौरभम् ?
राम भए जेहि दाहिने सबै दाहिने ताहि।	१. ग्रावाणोऽप्यार्द्रतां सम्यग् भजन्त्यभिमुखे विधौ। २. ईशेऽनुकूले सर्वेऽनुकूलाः। ३. दोषोऽपि गुणतां याति प्रभोर्भवति चेत्कृपा।
राम राम जपना पराया माल अपना।	अहो विश्वास्य वञ्च्यन्ते धूर्तैश्छद्मभिरीश्वराः।
रोग तथा शत्रु को छोटा न समझो।	अल्पीयसोऽप्यामयतुल्यवृत्तेर्महापकाराय रिपोर्विवृद्धिः। (किरात.)
लालच बुरी बला है।	नास्ति तृष्णासमो व्याधिः।
लोकमर्यादा का पालन अवश्य करना चाहिए।	यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नो करणीयं नाचरणीयम्।
लोभ पापों की खान।	१. लोभः पापस्य कारणम्। २. लोभमूलानि पापानि। ३. पापानामाकरो लोभः।
विद्या पुण्य कर्मों से आती है।	पूर्वपुण्यतया विद्या।
विधाता क्रुद्ध हो तो मित्र भी शत्रु बन जाते हैं।	क्रुद्धे विधौ भजति मित्रममित्रभावम्।
विधि का लिखा मिटाया नहीं जा सकता।	१. अभद्रं भद्रं वा विधिलिखितमुन्मूलयति कः ? २. यद्देवेन ललाटपत्रलिखितं तत्प्रोक्षितुं कः क्षमः ? ३. यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः ? ४. लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः ? ५. शिरसि लिखितं लङ्घयति कः ?
शूरवीर मौत की परवाह नहीं करते।	शूरस्य मरणं तृणम्।
शेर भूखा मर जाता है परन्तु घास नहीं खाता।	१. न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम्। २. न स्पृशति पल्वलाम्भः पञ्जरशेषोऽपि कुञ्जरः क्वापि। ३. सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सत्त्वानुरूपं फलम्।
संगठन में बड़ी शक्ति है।	पञ्चभिर्मिलितैः किं यज्जगतीह न साध्यते। (नैषध.)
संतसमागम बड़ा दुर्लभ है।	पुण्यैरेव हि लभ्यते सुकृतिभिः सत्संगतिर्दुर्लभा।
संतों के कारज आप सँवारे।	देवेनैव हि साध्यन्ते सदर्थाः शुभकर्मणाम्। (कथा.)
संतोष सबसे बड़ा धन है।	१. संतोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत्। २. संतोष एव पुरुषस्य परं निधानम्। ३. संतोषः परमं धनम्।
संतोष सबसे बड़ा सुख है।	१. न तोषात् परमं सुखम्। २. संतोषः परमं सुखम्।
संसार में धन-सा सम्बन्धी कोई नहीं।	अर्थो हि लोके पुरुषस्य बन्धुः।

सच की ही जीत होती है।	सत्यमेव जयते।
सदाचार सब से बड़ा धर्म है।	आचारः परमो (प्रथमो) धर्मः।
सबको काम प्यारा है, चाम प्यारा नहीं।	सर्वे कार्यवशाज्जनोऽभिरमते तत्कस्य को वल्लभः ?
सब लोग गुण तो किसी में नहीं होते।	नैकत्र सर्वो गुणसंनिपातः।
सब सब कुछ नहीं जानते।	१. न हि सर्वविदः सर्वे। २.सर्वे सर्वं न जानन्ति।
साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।	नास्ति सत्यात्परो धर्मः, नानृतात् पातकं परम्।
साँप निकल गया लकीर पीटा करो।	१. चौरे गते वा किमु सावधानम् ? २. पयोगते किं खलु सेतुबन्धः।
सार सार को गहि रहे थोथा देय उड़ाय।	१. सारं गृह्णन्ति पण्डिताः। २. हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्। ३. हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः। (अभिज्ञान.)
सारी जाती देखकर आधी लेय बचाय।	१. सर्वनाशे समुत्पन्ने, अर्द्धं त्यजति पण्डितः। २. ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्। ३. त्यजेदेकं कुलस्यार्थे।
सारी रात रोते रहे मरा एक भी नहीं।	परमार्थमविज्ञाय न भेतव्यं क्वचिन्नृभिः। (कथा.)
सास-बहू में मेल कहाँ ?	प्रायः श्वश्रूस्नुषयोर्न दृश्यते सौहृदं लोके।
सीख न दीजै बानरा जो बए का घर जाय।	१. उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये। २. हितोपदेशो मूर्खस्य कोपायैव न शान्तये। (कथा.) ३. मूर्खाणां बोधको रिपुः।
सीधी उँगलियों से घी नहीं निकलता।	१. आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः। (नैषध.) २. शाम्येत् प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः।
सुख-दुःख सब के साथ लगे हुए हैं।	कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा। नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण। (मेघ.)
सुत बिना सूना गेह।	१. अपुत्रस्य गृहं शून्यम्। २. पुत्रहीनं गृहं शून्यम्।
सूरदास जाको जासों हित सोई ताहि सुहात।	यदेव रोचते यस्मै भवेत् तत्तस्य सुन्दरम्।
सोने में सुगन्ध।	केवलोऽपि सुभगो नवाम्बुदः, किं पुनस्त्रिदशचापलाञ्छितः। (रघु.)
स्वभाव नहीं बदलता।	१. यादृशो यः कृतो धात्रा भवेत्तादृश एव सः। २. या यस्य प्रकृतिः स्वभावजनिता केनापि न त्यज्यते। ३. स्नापितोऽपि बहुशो नदीजलैर्गर्दभः किमु हयो भवेत् क्वचित् ?
होनहार फिरती नहीं होवे बिस्से बीस।	१. प्राचीनकर्म बलवन्मुनयो वदन्ति। २. साध्यासाध्यविचारं हि नेक्षते भवितव्यता। (कथा.) ३. हतविधिपरिपाकः केन वा लङ्घनीयः ? ४. भवितव्यता बलवती। ५. विधिरहो बलवानिति मे मतिः।
हो बिधना प्रतिकूल जबै तब ऊँट चढ़े पर कूकर काटत।	अहो विधौ विपर्यस्ते न विपर्यस्यतीह किम्।

तृतीय परिशिष्ट

अंग्रेजी संस्कृत शब्दावली

A

Academy—१. शिक्षालयः २. साहित्य-विज्ञान-कला,-परिषद् (स्त्री.)।
Accountancy—लेखा-संख्यान,-कर्मन् (न.)।
Account—१. लेखा २. विवरणम्।
Accountant—लेखापालः।
Accountant general—महालेखापालः।
Acknowledgment—प्राप्तिपत्रम्।
Act—अधिनियमः।
Acting—१. कार्यकारिन् २. अभिनयः।
Adhoc committee—तदर्थसमितिः (स्त्री.)।
Adjournment motion—स्थगनप्रस्तावः।
Administration—प्रशासनम्।
Administrator—प्रशासकः।
Adult—वयस्कः, प्रौढ़ः।
Adult franchise—वयस्कमताधिकारः।
Advance—अग्रिमधनम्।
Advocate—अधिवक्तृ (पुं.)।
Advocate general—महाधिवक्तृ।
Aesthetics—सौन्दर्यशास्त्रम्।
Affidavit—शपथपत्रम्।
Affiliation—*सम्बन्धनम्, सम्बद्धीकरणम्।
Agency—अभिकरणी।
Agenda—कार्यसूची।
Agent—अभिकर्तृ (पुं.)।
Agitation—आन्दोलनम्।
Agreement—१. संविदा २. साम्मत्यम्।
Air-conditioned—नियन्त्रिताताप।
Air-port—वायुपत्तनम्।
Air-tight—*पवन-वात,-रोधक।
All India Radio—आकाशवाणी।
Allotment officer—आवंटनाधिकारिन्।
Alphabetically—वर्णक्रमानुसारं, वर्णमालाक्रमेण।
Amenity—सुख-सुविधा।
Anniversary—वार्षिकोत्सवः।
Appeal—पुनरावेदनम्, पुनर्न्यायप्रार्थना।
Application—आवेदनपत्रम्।
Appointment—नियुक्तिः (स्त्री.)।
Archaeologist—पुरातत्त्वज्ञः।
Architect—वास्तुकारः।
Aristocracy—अभिजात-कुलीन,-तन्त्रम्।
Assembly—सभा।
Assembly, legislative—विधानसभा।
Assessment officer—करनिर्धारणाधिकारिन्।
Assistant controller/director/secretary—सहायक,-नियंत्रकः-निदेशकः—सचिवः।
Assosiate member—सहसदस्यः।
Atlas—मानचित्रावली।
Atmosphere—१. वायुमण्डलम् २. वातावरणम्।
Attesting officer—साक्ष्यांकनाधिकारिन्।
Attorney general—महान्यायवादिन्।
Audience—श्रोतृवर्गः।
Audit—लेखापरीक्षा।
Auditor—लेखापरीक्षकः।
Authority—१. प्राधिकारिन् २. प्राधिकारः।
Autocracy—एकतन्त्रम्।
Autonomy—स्वायत्तशासनम्, स्वायत्तता।
Aviation—विमाननम्, विमानयात्रा।

B

Balance sheet—तुलनपत्रम्।
Ballot-box—मतपेटिका।
Ballot-paper—मतपत्रम्, शलाका।
Bank—अधिकोपः।
Banker—अधिकोषिन्।

Basic Education—आधारिकशिक्षा ।
Bibliography—ग्रन्थसूची ।
Bill—१. विधेयकम् २. प्राप्यकम् ।
Biology—जीवविज्ञानम् ।
Birth control—सन्ततिनिरोधः ।
Black-out—बहिरन्धकारः ।
Blood-pressure—रक्तचापः ।
Board—मण्डली ।
Board, District-मण्डल-,मण्डली-पालिका ।
Board, Municipal-नगर-,मण्डली-पालिका।
Board of Directors—निदेशकमंडली ।
Body—निकायः ।
Bonafied—विश्वस्त, प्रामाणिक, सदाशय ।
Bonafides—विश्वस्तता, सदाशयता, प्रामाणिकता ।
Bond—बन्धपत्रम् ।
Bonus—अधिलाभांशः ।
Booking-office—टिकटगृहम् ।
Broad-cast—प्रसारणम् ।
Budget—आयव्ययकम् ।
Bye-election—उपनिर्वाचनम् ।
Bye-law—उपविधिः ।
By-post—पत्रविभागेन ।

C

Cabinet—मन्त्रिमण्डलम् ।
Cadet—सैन्यछात्रः ।
Calculator—गणकः ।
Calendar—तिथिपत्रम्, पंचांगम् ।
Calory—उष्णाङ्कः ।
Candidate—१. परीक्षार्थी २. अभ्यर्थी ३. पदार्थी ।
Cantonment—कटकः-कम् ।
Capital—मूलधनम् ।
Capsule—पुटी ।
Case—काण्डः-डम् ।
Cash-Memo—विक्रयपत्रम्, विक्रयिका ।
Casting vote—निर्णायकं मतम् ।
Casuality—हताहत ।
Cell—१. कोशाणुः २. कुटी ।
Census—जनगणना ।
Central Investigation Agency—केन्द्रियान्वेषणाभिकरणी ।

Century—१. शती २. शताब्दी ।
Cess—उपकरः ।
Chairman—सभापतिः ।
Chamber of Commerce—वाणिज्य-मंडलम् ।
Chancellor—कुलाधिपतिः ।
Chancellor, Pro-vice—उपकुलपतिः ।
Chancellor, Vice—कुलपतिः ।
Charge d' Affairs—कार्यदूतः ।
Charge-sheet—आरोपपत्रम् ।
Chart—१. रेखापत्रम् २. चित्रफलकम् ।
Charter—अधिकारपत्रम् ।
Chartered Accountant—अधिकारपत्रितलेखपालः ।
Cheque—*चेकम्, देयादेशः ।
Cheque, Bearer—वाहकचेकम् ।
Cheque, Blank—निरंकचेकम् ।
Cheque, Crossed—रेखितचेकम् ।
Cheque, Order—आदेशचेकम् ।
Chief Commissioner—मुख्यायुक्तः ।
Chief Judge—मुख्यन्यायाधीशः ।
Chief Justice—मुख्यन्यायाधिपतिः ।
Chief Minister—मुख्यमंत्रिन् (पुं.) ।
Chief of Air staff—वायुसेनाध्यक्षः ।
Chief of Army staff—स्थलसेनाध्यक्षः ।
Chief of Naval staff—नौसेनाध्यक्षः ।
Chlef of Protocal—नयाचारप्रमुखः ।
C. I. D.—गुप्तचरविभागः ।
Circular—परिपत्रम् ।
Citizen—नागरिकः ।
Citizen-ship—नागरिकता ।
Civil—नागरिक, असैनिक ।
Civil Code—व्यवहार-संहिता ।
Civil Court—व्यवहार न्यायालयः, व्यवहारालयः ।
Civilization—सभ्यता ।
Civil Service—नागरिकसेवा ।
Clause—खण्डः-डम् ।
Clock tower—घण्टा,-गृहम्-स्तम्भः ।
Code—संहिता ।
Collector—समाहर्तृ, संग्राहकः ।
Commerce—वाणिज्यम् ।

Commission—१. आयोगः २. वर्तनम् ।
Commissioner—आयुक्तः ।
Committee—समितिः (स्त्री.) ।
Committee, Executive, working—कार्यकारिणी समितिः (स्त्री.), कार्यसमितिः ।
Committee, Select—प्रवरसमितिः (स्त्री.) ।
Committee, Standing—स्थायिसमितिः (स्त्री.) ।
Commonwealth—राष्ट्रमण्डलम् ।
Communication—संचारः ।
Communique—विज्ञप्तिः (स्त्री.) ।
Communism—साम्यवादः ।
Community Development—सामुदायिक विकासः ।
Company—समवायः ।
Compensation—प्रतिकरः, क्षतिपूर्तिः (स्त्री.) ।
Complaint—१. अभियोगः २. परिवादः, परिवेदना ।
Computor—संगणकम् ।
Confederacy—राज्यसंघः ।
Confederation—राज्यमण्डलम् ।
Conference—सम्मेलनम् ।
Constituency—निर्वाचनक्षेत्रम् ।
Constituent Assembly—संविधानसभा ।
Constitution—संविधानम् ।
Consul—वाणिज्यदूतः ।
Context—सन्दर्भः, प्रसंगः, प्रकरणम् ।
Continent—महाद्वीपः-पम् ।
Contingency fund—आकस्मिकतानिधिः, सांयोगिकनिधिः ।
Contract—संविदा ।
Contribution—अंशदानम् ।
Control—नियन्त्रणम् ।
Controller General—महानियन्त्रकः ।
Convassing—उपार्थनम् ।
Convener—संयोजकः ।
Convention—१.रूढिः(स्त्री.) २.संगमनम् ।
Co-operation—सहयोगः । सहकारिता ।
Co-operative society—सहकारिसंस्था ।
Co-ordination—समन्वयः ।
Copy—१.प्रतिलिपिः(स्त्री.) २.*प्रतिः (स्त्री.) ।
Copyright—प्रकाशनाधिकारः ।
Corporation—निगमः ।
Cost—परिव्ययः ।
Cottage Industry—कुटीरोद्योगः ।
Council—परिषद् (स्त्री.) ।
Council, Advisory—परामर्शपरिषद् (स्त्री.) ।
Council of Ministers—मंत्रिपरिषद् (स्त्री.) ।
Council of States—राज्यपरिषद् (स्त्री.) ।
Court—न्यायालयः ।
Court, Criminal—दण्डन्यायालयः ।
Court, District—मण्डलन्यायालयः ।
Court, Federal—संघीयन्यायालयः ।
Court, High—उच्चन्यायालयः ।
Court, Martial सेनान्यायालयः ।
Court of Appeal—पुनर्विचारन्यायालयः ।
Court of Wards—प्रतिपालकाधिकरणम् ।
Court, Revenue—राजस्वन्यायालयः ।
Court, Session—सत्रन्यायालयः ।
Court, Subordinate-अधीनन्यायालयः ।
Court, Supreme—उच्चतमन्यायालयः ।
Credential—प्रत्ययपत्रम् ।
Credit—१. प्रत्ययः (हिं. साख) २. आकलनम् ।
Criminal Law—दण्डविधिः (पुं.) ।
Culture—संस्कृतिः (स्त्री.) ।
Currency—चलार्थः, मुद्रा ।
Custodian—अभिरक्षकः ।
Custody—अभिरक्षा ।
Custom duty—सीमा,-शुल्कः-शुल्कम् ।

D

Daily diary—दैनिकी ।
Debit—विकलनम् ।
Decentralization—विकेन्द्रीयकरणम् ।
Declaration—घोषणा ।
Decree—आज्ञप्तिः (स्त्री.) ।
Deed—विलेखः ।
Defence—रक्षा ।
Delegate—प्रतिनिधिः ।
Delegation—प्रतिनिधिमण्डलम् ।
Democracy—लोकतन्त्रम् ।

Demonstrator—निदर्शकः ।
Deputation—शिष्टमण्डलम् ।
Deputy Commissioner—उपायुक्त ।
Deputy Speaker—उपाध्यक्षः ।
Designer—रूपकारः ।
Despatcher—प्रेषकः ।
Development Block—विकासखंडः-डम् ।
Diplomacy—राजनयः, कूटनीतिः (स्त्री.) ।
Directorate—निदेशालयः ।
Director General—महानिदेशकः ।
Director, Managing—प्रबन्धनिदेशकः ।
Disposal—व्ययनम् ।
Disqualification—अनर्हता, अयोग्यता ।
District—मण्डलम् ।
District Board—*मण्डलमण्डली ।
Dividend—लाभांशः ।
Division—प्रभागः ।
Divorce—विवाहविच्छेदः, विविच्छेदः ।
Document—प्रलेखः ।
Draft—१. प्रारूपम् २. धनार्पणादेशः ।
Draftsman—प्रारूपकारः ।
Drainage—जलनिष्कासः ।
Drive—अभियानम् ।
Duplicate Copy—अनुलिपिः (स्त्री.) ।
Duty—१. शुल्कः-कम्, २. कर्तव्यम् ।
Duty, Custom—सीमाशुल्कः-कम् ।
Duty, Death—मरणशुल्कः-कम् ।
Duty, Estate—संपत्तिशुल्कः-कम् ।
Duty, Excise—उत्पादशुल्कः-कम् ।
Duty, Export—निर्यातशुल्कः-कम् ।
Duty, Import—आयातशुल्कः-कम् ।
Duty, Stamp—मुद्राशुल्कः-कम् ।
Duty, Succession—उत्तराधिकारशुल्कः-कम् ।

E

Election—निर्वाचनम् ।
Election, Bye—उपनिर्वाचनम् ।
Election Commission—निर्वाचनायोगः ।
Election, Direct—प्रत्यक्षनिर्वाचनम् ।
Election, Indirect—परोक्षनिर्वाचनम् ।
Election, Compaign—निर्वाचनाभियानम् ।
Election, Tribunal—निर्वाचनाधिकरणम् ।
Elector—निर्वाचकः ।
Electoral Roll—निर्वाचकसूची ।
Electorate—१. निर्वाचनक्षेत्रम् ।
२. निर्वाचकसमूहः ।
Electorate, Joint—संयुक्तनिर्वाचनपद्धतिः (स्त्री.) ।
Electorate, Separate—पृथङ्निर्वाचनपद्धतिः (स्त्री.) ।
Electorate, Separate—पृथङ्निर्वाचनपद्धतिः (स्त्री.) ।
Embassy—राज-, दूतावासः ।
Emergeney—आपातः ।
Emigration—परावासः ।
Emporium—आपणः ।
Employment Exchange—नियोजनकार्यालयः ।
Enfranchisement—मताधिकारदानम् ।
Enquiry clerk—पृच्छलिपिकः ।
Equator—भूमध्यरेखा ।
Establishment Officer—स्थापनाधिकारिन् ।
Estates—सम्पद् (स्त्री.) ।
Excise—उत्पादशुल्कः-कम् ।
Executive Engineer—कार्यपालकाभियन्तृ ।
Ex-officio—पदेन ।

F

Family Planning Centre—परिवारनियोजनकेन्द्रम् ।
Federal—संघीय ।
Federation—संघः ।
Fermentation—किण्वनम् ।
Feudalism—सामन्तवादः ।
Finance—वित्तम् ।
Financial—वित्तीय ।
Financial Year—वित्तवर्षः-र्षम् ।
Fine—अर्थदण्डः ।
Fire Service—अग्निशमनसेवा ।
Flying Squad—उड्डयनदलः-लम् ।
Foreign Exchange—विदेशीयविनिमयः ।

Forensic Science—न्यायवैद्यकविज्ञानम् ।
Form—प्रपत्रम् ।
Formula—सूत्रम् ।
Franchise—मताधिकारः ।
Freedom of press—मुद्रणस्वातन्त्र्यम् ।
Freedom of speech—भाषणस्वातन्त्र्यम् ।
Function—कृत्यम् ।
Fund—निधिः ।

G

Gallery—दीर्घा ।
Gate-keeper—द्वारपालः ।
Gate-pass—द्वारपत्रम ।
Gazette—राजपत्रम् ।
Gazetteer—राजपत्रित-विवरणम् ।
Geologist—भू ,-विज्ञानिन्-वैज्ञानिकः ।
Germ—कीटाणुः ।
Glacier—हिमनदी ।
Government—शासनम् ।
Government, Hereditary—पैतृक-शासनम् ।
Government, Interim—अन्तरिम-शासनम् ।
Government, local self—स्थानीयस्वायत्तशासनम् ।
Government, Parliamentary—संसदीयशासनम् ।
Government, Presidential—राष्ट्रपतीय-प्रधानीय,-शासनम् ।
Government, self—स्वशासनम् ।
Government, unitary—एकीयशासनम् ।
Governor—१. राज्यपालः २. शासकः ।
Grant—अनुदानम् ।
Grant-in-aid—सहायकानुदानम् ।
Gratuity—उपदानम् ।
Guarantee—प्रत्याभूतिः (स्त्री.) ।

H

Habeas corpus—बन्दिप्रत्यक्षीकरणम् ।
Handicrafts—हस्तशिल्पम् , हस्तकला ।
Head-Quarter—मुख्यालयः, प्रधान-कार्यालयः ।
Hereditary—पैतृक, आनुवंशिक ।
Honorarium—मानदेयम् ।
Horticulturist——उद्यानकृषिविशेषज्ञः ।
Hostess—सत्कारिणी ।
House—१. सदनम् २. गृहम् ।
House of people—लोकसभा ।
Housing Department—आवासविभागः ।

I

Illiteracy—निरक्षरता ।
Immigrant—आवासिन् ।
Improvement Trust—नगरसुद्धार-मण्डलम् ।
Incharge—प्रभारिन् ।
Indian Administrative Service—भारतीय-प्रशासनिकसेवा ।
Indian Council of Agricultural Research —भारतीयकृष्यनुसन्धानपरिषद् (स्त्री.) ।
Indian Council of Medical Research—भारतीयचिकित्सानुसन्धानपरिषद्-(स्त्री.) ।
In due course—यथासमयम् ।
Industry—उद्योगः ।
Industry, cottage—कुटीरोद्योगः ।
In order of merit—योग्यताक्रमेण ।
Inquiry—परिप्रश्नः ।
Inspection—निरीक्षणम् ।
Institute—संस्थानम् ।
Institution—संस्था ।
Insurance—बीमा ।
International—अन्तर्-राष्ट्री(ष्ट्रि)य ।
In toto—पूर्णतः, पूर्णतया ।
Investigator—अन्वेषकः ।

J

Judge—न्यायाधीशः ।
Judge, additional—अपर-अतिरिक्त-, न्यायाधीशः ।
Judge, extra—अतिरिक्तन्यायाधीशः ।
Judiciary—न्यायपालिका ।
Justice—१. न्यायः २. न्यायपतिः, न्यायाधिपतिः ।
Justice, chief—मुख्य,-न्यायपतिः-न्यायाधिपतिः न्यायाधीशः ।

L

Labour Commissioner—श्रमायुक्तः ।

Land-revenue—भूराजस्वम् ।
Latitude—अक्षांशः ।
Law—विधिः (पुं.) ।
Law & order—विधिव्यवस्थे (स्त्री. द्वि.) ।
Law Commission—विधि-आयोगः ।
Legation—दूतावासः ।
Legislation—विधानम् ।
Legislative assembly—विधानसभा ।
Legislative council—विधानपरिषद् (स्त्री.) ।
Legislature—विधानमण्डलम् ।
Letter of Introduction—परिचयपत्रम् ।
Levy—१. आरोपणम् २. उद्ग्रहणम् ।
Liaision officer—सम्पर्काधिकारिन् ।
Licence—अनुज्ञप्तिः (स्त्री.) ।
Lieutenant governor—उपराज्यपालः ।
Life Insurance Corporation—जीवनभीमानिगमः ।
Literacy—साक्षरता ।
Local board—स्थानीयमण्डली ।
Local body—स्थानीयनिकायः ।
Local government—स्थानीयशासनम् ।
Longitude—रेखांशः ।

M

Major—वयस्क ।
Majority—१. बहुमतम् २. बहुसंख्या ।
Mandamus—परमादेशः ।
Manifesto—आविष्यपत्रम् ।
Marketing officer—पणनाधिकारिन् ।
Maternity home—प्रसवशाला ।
Matriarchy—मातृतन्त्रम् ।
Medical Science—आयुर् चिकित्सा-, विज्ञानम् ।
Member—सदस्यः ।
Memo—ज्ञापः ।
Memorandum—ज्ञापकम्, स्मृतिपत्रम् ।
Meteorological Department—ऋतु-विज्ञान-विभागः ।
Meteorologist-ऋतु,-विज्ञानिन्-वैज्ञानिकः ।
Migration—प्रव्रजनम्, प्रवासः ।
Military Engineering Service (M. E. S.) सैनिकयान्त्रिकसेवा ।

Minerelogist-खनिज,-विज्ञानिन्-वैज्ञानिकः ।
Minister—मंत्रिन् ।
Ministry—१. मंत्रालयः २. मंत्रिमंडलम् ।
Minor—अवयस्क ।
Minority—१. अल्पसंख्यकवर्गः २. अल्प-मतम् ।
Mission—१. उद्देश्यम्, लक्ष्यम् २. प्रचारक-मण्डलम् ।
Monopoly—एकाधिकारः ।
Motion—प्रस्तावः ।
Motion of no-confidence—अविश्वास-प्रस्तावः ।
Multipurpose—बहूद्देशीय ।
Municipal area—नगरक्षेत्रम् ।
Municipal commissioner—नगर-पालः, नगरपालिकासदस्यः ।
Municipal corporation-नगरनिगमः, नगरमहापालिका ।
Municipality—नगरपालिका ।
Museum—संग्रहालयः ।

N

Nation—राष्ट्रम् ।
Nationalization—राष्ट्रीयकरणम् ।
Nationality—राष्ट्रीयता ।
National Physical Laboratory—राष्ट्रीयभौतिकप्रयोगशाला ।
Nomination—मनोनयनम् ।
Nominee—मनोनीत ।
Notice—१. सूचना २. सूचनापत्रम् ।
Notification—अधिसूचना ।
Notified area—(अधि-) सूचितक्षेत्रम् ।

O

Oasis—मरूद्यानम् ।
Observatry—वेधशाला ।
Office—१. कार्यालयः २. पदम् ।
Officer—अधिकारिन् ।
Officer-incharge—प्रभाराधिकारिन् ।
Official Language—राजभाषा ।
Officiating—स्थानापन्न ।
Oligarchy—अल्पतन्त्रम् ।
Ordinance—अध्यादेशः ।
Organization—संघटनम् ।

Out door patients Department—बहिरंगरोगविभागः ।

P

Pact—वचनपत्रम् ।
Parliament—संसद् (स्त्री.) ।
Parliamentary secretary—संसदीयसचिवः ।
Pass—पारणम् ।
Passport—पारपत्रम् ।
Patents—एकत्वम् ।
Patriarchy—पितृतन्त्रम् ।
Patron—संरक्षकः ।
Penalty—शास्तिः (स्त्री.) ।
Pending—१. लम्बित २. लम्बमान ।
Pension—निवृत्तिवेतनम् ।
Personal Assistant—वैयक्तिकसहायकः ।
Petition—याचिका ।
Planning Commission—योजनायोगः ।
Plebiscite—जनमतसंग्रहः ।
Police—आरक्षकः ।
Police force—आरक्षकबलम् ।
Police station—आरक्षकस्थानम् ।
Poll—मतदानम् ।
Polling station—मतदानस्थानम् ।
Portfolio—संविभागः ।
Ports department—पत्तनविभागः ।
Post—१. पदम् २. पत्रम् ।
Post-office—पत्रालयः ।
Preference—अधिमानम् ।
Prerogative—परमाधिकारः ।
President—१. राष्ट्रपतिः २. प्रधानः ।
Prime Minister—प्रधानमंत्रिन् ।
Post & Telegraph Depatt.—पत्रतारविभागः ।
Private Secretary—निजसचिवः ।
Privilege—विशेषाधिकारः ।
Privy purse—राजवृत्तिः (स्त्री.) ।
Procedure—प्रक्रिया ।
Proceedings—* १. कार्यावली, कृत्यावली * २. कृत्यावलीविवरणम् ।
Proclamation—उद्घोषणा ।
Project—प्रायोजना ।
Promissory note—वचनपत्रम् ।
Proof-reader—मुद्रितपत्रशोधकः ।
Provident fund—भविष्यनिधिः (पुं.) ।
Provision—१. उपबन्धः २. अन्नसामग्री ।
Provisional—अन्तःकालीन ।
Proxy—प्रतिपत्री ।
Public Health—लोकस्वास्थ्यम् ।
Publicity—प्रचारः ।
Public Relations Officer—जनसंपर्काधिकारिन् ।
Public Service Commission—लोकसेवाऽऽयोगः ।
Public Services—लोकसेवाः ।
Public Works Department—लोकनिर्माणविभागः ।

Q

Quality Control Officer—कोटिनियंत्रकाधिकारिन् ।
Quarantine—संगरोधः ।
Quorum—गणपूर्तिः (स्त्री.) ।
Quota—अभ्यंशः, नियतांशः ।

R

Railway Board—*रेलपथमंडली ।
Receptionist—स्वागतकरः ।
Recommendation—अनुशंसा ।
Record—अभिलेखः ।
Records-keeper—अभिलेखपालः ।
Recruitment—* सैन्यप्रवेशः ।
Reference—निर्देशः ।
Referendum—परिपृच्छा ।
Regent—राजपः ।
Regional—क्षेत्रीय ।
Register—पंजी ।
Registered—पंजीकृत ।
Registrar—पंजीकारः, कुलसचिवः ।
Registration—पञ्जीकरणम् ।
Regulation—विनियमः ।
Rehabilitation Ministry—पुनर्वासमंत्रालयः ।
Reminder—अनुस्मारकम् ।
Report—प्रतिवेदनम् ।
Representation—प्रतिनिधानम् ।

Representative—प्रतिनिधिः ।
Republic—गणराज्यम् ।
Requisition—अधिग्रहणम् ।
Reservation—रक्षणम्, प्रारक्षणम् ।
Reserved seat—रक्षित-प्रारक्षित,-स्थानम् ।
Re irement—निवृत्तिः (स्त्री.) ।
Returning officer—निर्वाचनाधिकारिन् ।
Revenue—राजस्वम् ।
Review—पुनर्विलोकनम् ।
Revision—पुनरीक्षणम् ।
Rule—नियमः ।

S

Safeguard—सुरक्षणम् ।
Sales Tax—विक्रयकरः ।
Savings—व्यावृत्तिः (स्त्री.) ।
Savings bank—* व्यावृत्त्यधिकोषः ।
Schedule—अनुसूची ।
Scheduled caste—अनुसूचितजातिः (स्त्री.) ।
Scheduled Tribe—अनुसूचितजनजातिः (स्त्री.) ।
Secondary Education Board—माध्यमिकशिक्षामंडली ।
Secretariate—सचिवालयः ।
Section officer—अनुभागाधिकारिन् ।
Secular—धर्मनिरपेक्ष, ऐहिक ।
Security—१. प्रतिभूतिः (स्त्री.) २. सुरक्षा ।
Security council—सुरक्षापरिषद् (स्त्री.) ।
Self-determination—आत्मनिर्णयः ।
Session—सत्रम् ।
Sitting—उपवेशः, *उपविष्टिः (स्त्री.) ।
Small Scale Industries—लघूद्योगाः ।
Socialism—समाजवादः ।
Social Welfare—समाजकल्याणम् ।
Sovereign—प्रभुः ।
Sovereign democratic republic—संपूर्णप्रभुत्वसम्पन्नलोकतंत्रात्मकगणराज्यम् ।
Speaker—१. अध्यक्षः (लोकसभादीनाम्) २. वक्तृ (पुं.) ।
Staff—कर्मचारिवृन्दम् ।
State—१. राज्यम् । २. राष्ट्रम् ।
State, Buffer—अन्तःस्थराष्ट्रम् ।
State, Totalitarian—एकदलराष्ट्रम् ।
State Trading Corporation—राज्यव्यापारनिगमः ।
State, Unitary—एकीयराष्ट्रम् ।
State, Welfare—हितकारिराष्ट्रम् ।
Statistician—सांख्यिकः ।
Statistics—सांख्यिकी ।
Statute—संविधिः (पुं.) ।
Stenographer—आशुलिपिकः ।
Steno-typist—आशुटंककः ।
Stock Exchange—श्रेष्ठिचत्वरम् ।
Store keeper—भाण्डारिन् ।
Subcontinent—उपमहाद्वीपः-पम् ।
Suffrage—मताधिकारः ।
Suffrage, Universal—सर्वमताधिकारः ।
Summon—आह्वानम् ।
Superintendent—अधीक्षकः ।
Supervisor—पर्यवेक्षकः ।
Supplies—पूर्त्तिः, संभरणम् ।
Suspension—निलम्बनम् ।
Surcharge—अधिकरः ।
Survey—सर्वेक्षणम् ।
Syndicate—अभिषद् (स्त्री.) ।

T

Tabulator—तालिक-सारणी,-कारः ।
Tariff—शुल्कसूची ।
Tax—करः ।
Tax, Direct—प्रत्यक्षकरः ।
Tax, Entertainment—प्रमोदकरः, मनोरञ्जनकरः ।
Tax, Indirect—परोक्षकरः ।
Tax, Export—निर्यातकरः ।
Tax, Income—आयकरः ।
Tax, Sales—विक्रयकरः ।
Tax, Super—अतिकरः ।
Tax, Terminal—सीमाकरः ।
Technician—प्रविधिज्ञः ।
Technique—प्रविधिः ।
Tele communication—दूरसञ्चारः ।
Telegraphist—तारसंकेतकः ।
Telephone Exchange—दूरभाषकेन्द्रम् ।
Tenure—पदावधिः (पुं.) कार्यकालः ।

Territory—राज्यक्षेत्रम् ।
Terrorism—आतङ्कवादः ।
Terrorist—आतङ्कवादिन् ।
Theocracy—धर्मतन्त्रम् ।
Theory—सिद्धान्तः ।
Through proper channel—विधिवत् ।
Time keeper—समयपालः ।
Toll—पथकरः ।
Totalitarianism—एकदलवादः ।
Tourist—पर्यटकः ।
Tourist Depatt—पर्यटनविभागः ।
Tracer—अनुरेखकः ।
Tractor—कर्षकरथः ।
Trade mark—व्यापारचिह्नम् ।
Trade Union—कार्मिकसंघः ।
Traffic—यातायातम् ।
Training—प्रशिक्षणम् ।
Training, Technical—प्रविधि-प्रशिक्षणम् ।
Tramcar—रथ्यायानम् ।
Transfer—१. स्थानान्तरणम् २. हस्तान्तरणम् ।
Transition—संक्रमणम् ।
Transport—परिवहणम् ।
Treaty—संधिः (पुं.) ।
Tribe—जनजातिः (स्त्री.) ।
Tribunal—न्यायाधिकरणम् ।
Tropic of Cancer—कर्करेखा ।
Tropic of Capricorn—मकररेखा ।
Trust—न्यासः ।
Trustee—न्यास-निक्षेप,-धारिन् ।
Tube well—नलकूपः ।
Typist—टंककः ।

U

Under Secretary—अवरसचिवः ।
Union—संघः ।
Union Public Service Commission—संघलोकसेवायोगः ।
Unit—एककम् ।
United Nations Organization—संयुक्तराष्ट्रसंघः ।

V

Vacancy—१. रिक्तस्थानम् २. रिक्तिः (स्त्री.) ३. रिक्तता ।
Verification officer—सत्यापनाधिकारिन् ।
Veto—प्रतिषेध-रोध,-अधिकारः ।
Vice President—उपराष्ट्रपतिः ।
Village Industry—ग्रामोद्योगः ।
Visas—दृष्टांकः ।
Vote—मतम् ।
Vote by ballot—गुप्तमतदानम् ।
Vote of censure—निन्दाप्रस्तावः ।
Voter—मतदातृ (पुं.) ।
Vote, Single Transfarabie—एकलसंक्रमणीयमतम् ।

W

Warrant—अधिपत्रम् ।
Will—इच्छापत्रम् ।
Wireless operator—*वितारप्रचालकः ।
Works Manager—कर्मशालाप्रबन्धकः ।
Writ—आदेशलेखः ।

Z

Zonal Council-आंचलिकपरिषद् (स्त्री.) ।

चतुर्थ परिशिष्ट

छन्दःपरिचय

छन्द—संस्कृत में रचना प्रायः दो प्रकार की होती है—गद्य और पद्य। छन्द-रहित रचना को गद्य कहते हैं और छन्दोबद्ध रचना को पद्य। जो रचना अक्षर, मात्रा, गति, यति आदि के नियमों से युक्त होती है, उसे छन्द कहते हैं। जिन ग्रन्थों में छन्दों के स्वरूप तथा प्रकार आदि का विवेचन रहता है, उन्हें छन्दः-शास्त्र कहते हैं।

वर्ण या अक्षर—छन्दः-शास्त्र की दृष्टि से केवल व्यंजन (क् ख् आदि) अक्षर या वर्ण नहीं कहलाते। अकेला स्वर या व्यंजन-सहित स्वर अक्षर कहलाता है। 'आ', 'का' और 'काम्' में छन्दः-शास्त्र की दृष्टि से एक ही अक्षर है क्योंकि उनमें स्वर तो केवल एक 'आ' ही है। छन्द में अक्षर गिनते समय व्यंजनों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता।

गुरु, लघु—ह्रस्व अक्षरों (अ, इ, उ, ऋ, ऌ) को छन्दः-शास्त्र में लघु कहते हैं और दीर्घ अक्षरों (आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ) को गुरु। इसी प्रकार क, कि आदि लघु अक्षर हैं और का, की आदि गुरु। छन्दः-शास्त्र में निम्नलिखित को गुरु अक्षर माना गया है—

> सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
> वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥

अर्थात् अनुस्वार-युक्त, दीर्घ, विसर्गयुक्त और संयुक्त अक्षरों से पूर्व वर्ण गुरु होता है। छन्द के पाद या चरण का अन्तिम अक्षर आवश्यकतानुसार लघु या गुरु माना जा सकता है। सो इस श्लोक के अनुसार 'कंस' में 'कं', 'काल' में 'का', 'दुःख' में 'दुः' और 'युक्त' में 'यु' गुरु अक्षर हैं। छन्द के चरणों की लम्बाई और गति को ठीक रखने के लिए अक्षरों के गुरु-लघु के भेद को सम्यक् हृदयंगम कर लेना चाहिए। गुरु का चिह्न (ऽ) है और लघु का (।)।

गण—छन्दः-शास्त्र में तीन-तीन अक्षरों के समूह को गण कहा गया है। उन गणों के नाम, स्वरूप तथा उदाहरणों को निम्नलिखित तालिका से समझ लेना चाहिए—

गण-नाम	संक्षिप्तनाम	लक्षण	संकेत	उदाहरण
१. मगण	म	तीनों अक्षर गुरु	ऽ ऽ ऽ	मान्धाता, विद्यार्थी
२. नगण	न	तीनों अक्षर लघु	। । ।	निगम, सरल
३. भगण	भ	प्रथम अक्षर गुरु	ऽ । ।	भारत, कृत्रिम
४. यगण	य	प्रथम अक्षर लघु	। ऽ ऽ	यशोदा, सुमित्रा
५. जगण	ज	मध्यम अक्षर गुरु	। ऽ ।	जिगीषु, जवान
६. रगण	र	मध्यम अक्षर लघु	ऽ । ऽ	राधिका, राक्षसी
७. सगण	स	अन्तिम अक्षर गुरु	। । ऽ	सविता, कमला
८. तगण	त	अन्तिम अक्षर लघु	ऽ ऽ ।	तारेश, आकाश

गणों का स्वरूप स्मरण रखने के लिए निम्नलिखित श्लोक कण्ठस्थ कर लेना चाहिए—

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो
भादिगुरुः, पुनरादिलघुर्यः ।
जो गुरुमध्यगतो, रलमध्यः
सोऽन्तगुरुः, कथितोऽन्तलघुस्तः ॥

अर्थ—मगण में तीनों गुरु, नगण में तीनों लघु, भगण में आदि का अक्षर गुरु, यगण में आदि का लघु, जगण में मध्यम गुरु, नगण में मध्यम लघु, सगण में अन्तिम गुरु और तगण में अन्तिम लघु होता है ।

मात्रा—ह्रस्व या लघु अक्षर के उच्चारण में जितना समय लगता है उसे एक मात्रा कहते हैं और दीर्घ या गुरु के उच्चारण-काल को दो मात्रा । इसलिए जब छंदों में मात्राओं की गिनती की जाती है तब लघु की एक और गुरु की दो मात्राएँ गिनी जाती हैं । छन्दःशास्त्र में एक अक्षर की मात्राएँ दो से अधिक नहीं होतीं परन्तु संगीत में स्वर को यथेष्ट मात्राओं तक बढ़ाया जा सकता है । एक ही शब्द में अक्षरों और मात्राओं की संख्या समान भी हो सकती है और भिन्न भिन्न भी । जैसे—'कल' में दो अक्षर हैं और दो ही मात्राएँ, 'काल' में दो अक्षर और तीन मात्राएँ, 'काला' में दो अक्षर और चार मात्राएँ ।

गति—छन्दों में अक्षरों या मात्राओं की नियत संख्या से ही काम नहीं बनता, उनमें गति अर्थात् लय या प्रवाह का भी ध्यान रखना पड़ता है । वार्णिक छन्दों में तो प्रायः गणों का क्रम प्रवाह को अक्षुण्ण रखता है परन्तु मात्रिक छन्दों में इसकी ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता रहती ही है । जैसे—

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः ।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं तं न रञ्जयति ॥ (भर्तृहरि)

यदि उपर्युक्त आर्या छन्द को यों पढ़ें—

'आराध्यः सुखमज्ञः विशेषज्ञः आराध्यते सुखतरम्' तो कान तुरन्त बता देते हैं कि इसमें आर्या छन्द की गति नहीं रही ।

यति—जिन छन्दों के एक-एक चरण में अक्षरों या मात्राओं की संख्या थोड़ी होती है उन्हें पढ़ने में तो कोई कठिनाई नहीं होती; परन्तु लम्बे चरणों के पाठ में बीच में रुकना ही पड़ता है । उस विश्राम-स्थल को ही यति या विराम कहते हैं । कुशल कवि इस बात का ध्यान रखते हैं कि यति किसी शब्द की समाप्ति पर ही आए परन्तु कभी-कभी वह किसी शब्द के मध्य में भी आ जाती है ।

चरण—अधिकतर छन्दों में चार चरण, पाद या पंक्तियाँ होती हैं, परन्तु कभी-कभी छन्द न्यूनाधिक चरणों के भी दिखाई देते हैं ।

छन्दों के भेद—छन्दों के मुख्य भेद दो हैं—वर्णिक छन्द और मात्रिक छन्द । मात्रिक छन्द को जाति छन्द भी कहा जाता है । वर्णिक छन्दों में वर्णों की संख्या और गणक्रम पर विशेष ध्यान रहता है तथा मात्रिक छन्दों में मात्राओं की संख्या और गति पर । वर्णवृत्तों के चरणों में गुरु-लघु-क्रम प्रायः समान होता है, परन्तु मात्रिक छन्दों में यह बन्धन नहीं होता । उक्त दोनों भेदों के तीन-तीन अवान्तर भेद भी होते हैं—सम छन्द, अर्द्धसम छन्द और विषम छन्द । सम छन्दों के चारों चरणों में वर्णों या मात्राओं की संख्या समान होती है । अर्द्धसम छन्दों में प्रथम

और तृतीय चरणों की तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों की अक्षर या मात्रा-संख्या समान होती है। जो छन्द उक्त दोनों वर्गों में नहीं आते, उन्हें विषम कहते हैं।

नीचे संस्कृत के कुछ प्रसिद्ध छन्दों का परिचय प्रस्तुत किया जाता है। विस्तार के लिए छन्दःशास्त्र, वृत्तरत्नाकर, छन्दोमञ्जरी आदि ग्रन्थ द्रष्टव्य हैं।

(क) वर्णवृत्त, समछन्द

प्रति चरण ८ अक्षरवाले छन्द

(१) अनुष्टुप् (अन्य नाम—श्लोक)

लक्षण—श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं, सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्विचतुःपादयोर्ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

अर्थ—इसके प्रत्येक पाद का पाँचवाँ वर्ण लघु होता है और छठा गुरु। सम (द्वितीय तथा चतुर्थ) चरणों का सातवाँ वर्ण लघु होता है और विषम (प्रथम तथा तृतीय) चरणों का सातवाँ वर्ण गुरु। शेष वर्णों के विषय में लघु-गुरु की स्वतंत्रता है।

उदाहरण—यदा यदा हि धर्मस्य; ग्लानिर्भवति भारत।
ISS ISI
अभ्युत्थानमधर्मस्य; तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
ISS ISI

(२) विद्युन्माला

लक्षण—मो मो गो गो विद्युन्माला।

अर्थ—मगण, मगण और दो गुरु के क्रम से इसके प्रत्येक चरण में ८ वर्ण होते हैं; अर्थात् सब चरणों के सब वर्ण गुरु।

उदाहरण—

म म गु गु
(क) मौनं ध्यानं भूमौ शय्या; गुर्वी तस्याः कामाऽवस्था।
SS S, SSS, SS
मेघोत्सङ्गे नृत्तासक्ता; यस्मिन्काले विद्युन्माला॥

(ख) गंगा माता तेरी धारा; काटै फंदा मेरा सारा।
विद्युन्माला जैसी सोहै; वीचीमाला तेरी मोहै॥ (सुधादेवी)

प्रति चरण १० अक्षरवाले छन्द

(१) रुक्मवती (अन्य नाम—चम्पकमाला)

लक्षण—भ्मौ सगयुक्तौ रुक्मवतीयम्।

अर्थ—रुक्मवती के प्रत्येक पाद में भगण, मगण, सगण और गुरु के क्रम से १० वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

भ म स गु

(क) भग्नमसस्त्यैः कायसहस्त्रैः; मोहमयी गुर्वी तव माया।
S I I, S S S, I I S,S
स्वप्नविलासा योगवियोगा; रुक्मवती हा कस्य कृते श्रीः ॥

(ख) शान्ति नहीं तो जीवन क्या है, कान्ति नहीं तो यौवन क्या है !
प्रेम नहीं तो आदर क्या है, प्यास नहीं तो सागर क्या है !
(रामनरेश त्रिपा०)

(२) मत्ता

लक्षण—मत्ता ज्ञेया मभसगयुक्ता (विराम ४, ६)।

अर्थ—मत्ता के प्रत्येक चरण में मगण, भगण, सगण और गुरु के क्रम से १० वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

म भ स गु

पीत्वा मत्ता मधु मधुपाली; कालिन्दीये तटवनकुञ्जे।
S S S, S I I, I I S, S
उद्दीव्यन्तीर्व्रजजनरामाः; कामासक्ता मधुजिति चक्रे ॥

प्रति चरण ११ अक्षरवाले छन्द

(१) इन्द्रवज्रा

लक्षण—स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः। (विराम पादान्त में)

अर्थ—इन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में दो तगण, जगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

त त ज

(क) गोष्ठे गिरिं सव्यकरेण धृत्वा,
S S I, S S I, I S I S S
रुष्टेन्द्रवज्राहतिमुक्तवृष्टौ।
यो गोकुलं गोपकुलं च सुस्थं,
चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणिः ॥

(ख) मैं जो नया ग्रन्थ विलोकता हूँ,
भाता मुझे सो नव मित्र-सा है।
देखूँ उसे मैं नित बार बार,
मानो मिला मित्र मुझे पुराना ॥ (गिरधर शर्मा)

(२) उपेन्द्रवज्रा

लक्षण—उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ। (विराम पादान्त में)

अर्थ—उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण और दो गुरु अक्षरों के क्रम से ११ वर्ण होते हैं।

उदाहारण—

ज त ज गु गु

(क) जितो जगत्येष भवभ्रमस्तै-
।ऽ ।,ऽऽ।, ।ऽ।,ऽऽ
र्गुरूदितं ये गिरिशं स्मरन्ति।
उपास्यमानं कमलासनाद्यै—
रुपेन्द्रवज्रायुधवारिनाथैः ॥

(ख) बड़ा कि छोटा कुछ काम कीजै,
परन्तु पूर्वापर सोच लीजै।
विना विचारे यदि काम होगा,
कभी न अच्छा परिणाम होगा॥ (मैथिलीशरण गुप्त)

(३) उपजाति

लक्षण—जिस छन्द के कुछ चरण इन्द्रवज्रा के हों और कुछ उपेन्द्रवज्रा के, उसे उपजाति कहते हैं। इसके १४ भेद होते हैं।

टि०—समान-संख्यक अक्षर तथा समान यतिवाले अन्य छन्दों के भी इसी प्रकार के मिश्रण का नाम उपजाति ही है। जैसे वंशस्थ और इन्द्रवंशा (१२-१२ अक्षरों के छंद) के मिश्रण से भी उपजाति छन्द बनता है।

उदाहरण—(क) उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं, (इन्द्र.)
क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्। (उपे.)
शूरं कृतज्ञं दृढ़सौहृदं च, (इ.)
लक्ष्मीः स्वयं वाञ्छति वासहेतोः॥ (उ.)

(ख) इच्छा न मेरी कुछ भी बनूँ मैं, (इ.)
कुबेर का भी जग में कुबेर। (उ.)
इच्छा मुझे एक यही सदा है, (इ.)
नये नये उत्तम ग्रंथ देखूँ॥ (उ.) (गिरधर शर्मा)

(४) दोधक (अन्य नाम—बन्धु)

लक्षण—दोधकनामनि भत्रयतो गौ। (विराम पाद के अन्त में)

अर्थ—दोधक छन्द के प्रत्येक चरण में तीन भगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

भ भ भ गु गु

(क) दोधकमर्थविरोधकमुग्रं
ऽ।।,ऽ।।,ऽ।।,ऽऽ,
स्त्रीचपलं युधि कातरचित्तम्।
स्वार्थपरं मतिहीनममात्यं
मुञ्चति यो नृपतिः स सुखी स्यात्॥

(ख) पाकर मानव-देह धरा में,
पाशववृत्ति तजो जितना है।
पुच्छ विषाण विहीन पशू जो,
होन न चाहत प्रेम करो तो ॥ (रामबहोरी शुक्ल)

(५) शालिनी

लक्षण—शालिन्युक्ता म्तौ तगौ गोऽब्धिलोकैः ॥ (४, ७ पर विराम)

अर्थ—शालिनी के प्रत्येक पाद में मगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से ११ अक्षर होते हैं। अब्धि (४) और लोक (७) पर विराम होता है।

उदाहरण—

म त त गुरु गुरु

(क) अंधो हन्ति ज्ञानवृद्धिं विधत्ते
SS S, SSI, S S I, S S,
धर्मं दत्ते काममर्थं च सूते।
मुक्तिं दत्ते सर्वदोपास्यमाना,
पुंसां श्रद्धाशालिनी विष्णुभक्तिः ॥

(ख) कैसी कैसी ठोकरें खा रहा है,
तीखी पीड़ा चित्त में ला रहा है।
तौ भी प्यारे! हाल तेरा वही है,
विद्वानों की पद्धती क्या यही है ॥ (छन्दशिक्षा)

(६) रथोद्धता

लक्षण—रान्नराविह रथोद्धता लगौ। (विराम पाद के अन्त में)

अर्थ—रथोद्धता के प्रत्येक चरण में रगण, नगण, रगण और लघु-गुरु के क्रम से ११ अक्षर होते हैं।

उदाहरण—

र न र ल गु

किं त्वया सुभट! दूरवर्जितं
S IS, III, SIS, IS
नात्मनो न सुहृदां प्रियं कृतम्।
यत्पलायनपरायणस्य ते
याति धूलिरधुना रथोद्धता ॥

(७) स्वागता

लक्षण—स्वागतेति रनभाद्गुरुयुग्मम्। (पादान्त में विराम)

अर्थ—स्वागता के प्रत्येक पाद में रगण, नगण, भगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

र न भ गु गु

(क) रत्नभङ्गविमलैर्गुणतुङ्गै-
ऽ।ऽ, ।।।, ऽ।।, ऽऽ
र्थिनामभिमतार्पणसक्तैः।
स्वागताऽभिमुखनम्रशिरस्कैः
जीव्यते जगति साधुभिरेव॥

(ख) रानि! भोगि गहि नाथ कन्हाई,
साथ गोप जन आवत धाई।
स्वागतार्थ सुनि आतुर माता,
धाइ देखि मुद सुन्दर गाता॥ (भानु कवि)

प्रति चरण १२ अक्षरवाले छन्द

(१) वंशस्थ (नामान्तर—वंशस्थविल तथा वंशस्तनित)

लक्षण—जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ। (पादान्त में विराम)

अर्थ—वंशस्थ के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण और रगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं।

उदाहरण—

ज त ज र

(क) जनस्य तीव्रातपजार्तिवारणा
।ऽ।, ऽऽ।, ।ऽ।, ऽ।ऽ
जयन्ति सन्तः सततं समुन्नताः।
सितातपत्रप्रतिमा विभान्ति ये
विशालवंशस्थतया गुणोचिताः॥ (सुवृत्ततिलक)

(ख) स्वरूप होता जिसका न भव्य है,
न वाक्य होते जिसके मनोज्ञ हैं।
अतीव प्यारा बनता सदैव हैं
मनुष्य सो भी गुण के प्रभाव से॥ (हरिऔध)

(२) इन्द्रवंशा

लक्षण—स्यादिन्द्रवंशा ततजैरसंयुतैः। (पादान्त में विराम)

अर्थ—इन्द्रवंशा के प्रत्येक पाद में दो तगण, जगण और रगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

त त ज र

(क) कुर्वीत यो देवगुरुर्द्विजन्मना-
ऽऽ।, ऽऽ।, ।ऽ।, ऽ।ऽ
मुर्वीपतिः पालनमर्थलिप्सया।
तस्येन्द्रवंशेऽपि गृहीतजन्मनः
सञ्जायते श्रीः प्रतिकूलवर्तिनी॥

(ख) यों ही बड़ा हेतु हुए विना कहीं,
होते वड़े लोग कठोर यों नहीं।
वे हेतु भी यों रहते सुगुप्त हैं,
ज्यों अद्रि अम्भोनिधि में प्रलुप्त हैं॥ (चन्द्रहास)

(३) तोटक

लक्षण—इह तोटकमम्बुधिसैः प्रथितम्। (पादान्त में विराम)

अर्थ—तोटक के प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं।

उदाहरण—

स स स स

(क) त्यज तोटकमर्थनियोगकरं
I I S, I I S, I I S, I I S
प्रमदाऽधिकृतं व्यसनोपहतम्।
उपधाभिरशुद्धमतिं सचिवं
नरनायक ! भीरुकमायुधिकम्॥ (छन्दोवृत्ति)

(ख) अब लों न कहीं वह देश मिला,
इसका न जिसे उपदेश मिला।
उस गौरव के गुण अस्त हुए,
गुरु के गुरु शिष्य समस्त हुए॥ (नाथूराम शंकर)

(४) द्रुतविलम्बित

लक्षण—द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ। (पादान्त में विराम)

अर्थ—द्रुतविलम्वित के प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण और रगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं।

उदाहरण—

न भ भ र

(क) तरणिजापुलिने नववल्लवी-
I II, S I I, S I I, S I S
परिषदा सह केलिकुतूहलात्।
द्रुतविलम्बितचारुविहारिणं
हरिमहं हृदयेन सदा वहे॥ (छन्दोमंजरी)

(ख) मन ! रमा रमणी रमणीयता,
मिल गई यदि ये विधि योग से।
पर जिसे न मिली कविता-सुधा
रसिकता सिकता-सम है उसे॥ (रामचरित उपाध्याय)

(५) मौक्तिकदाम

लक्षण—चतुर्जगणं वद मौक्तिकदाम। (पादान्त में विराम)

अर्थ—मौक्तिकदाम (हिन्दी, मोतियदाम) छंद के प्रत्येक चरण में चार जगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं।

उदाहरण—

ज ज ज ज

(क) मया तव किञ्चिदकारि कदापि,
। ऽ ।, । ऽ ।, । ऽ ।, । ऽ ।
विलासिनि ! वाक्यमनुस्मरताऽपि ।
तथापि मनस्तव नाश्वसनाय,
व्रजामि कुतो भवतीमपहाय ॥ (वाणीभूषण)

(ख) बड़े जन को नहिं माँगन जोग,
फबैं छल साधन में लघु लोग ।
रमापति विष्णु असंग अनूप,
धर्यो एहि कारण वामन रूप ॥ (देवीप्रसाद पूर्ण)

(६) भुजङ्गप्रयात

लक्षण—भुजंगप्रयातं भवेद्यैश्चतुर्भिः । (पादान्त में विराम)

अर्थ—भुजंगप्रयात के प्रत्येक चरण में चार यगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

य य य य

(क) धनैर्निष्कुलीनाः कुलीना भवन्ति,
। ऽ ऽ, । ऽ ऽ, । ऽ ऽ, । ऽ ऽ
धनैरापदं मानवा निस्तरन्ति ।
धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके,
धनान्यर्जयध्वम् धनान्यर्जयध्वम् ॥

(ख) अजन्मा न आरंभ तेरा हुआ है,
किसी से नहीं जन्म तेरा हुआ है ।
रहेगा सदा अन्त तेरा न होगा,
किसी काल में नाश तेरा न होगा ॥ (नाथूरामशङ्कर)

(७) स्रग्विणी

लक्षण—रैश्चतुर्भिर्युता स्रग्विणी सम्मता । (पादान्त में यति)

अर्थ—स्रग्विणी के प्रत्येक पाद में चार रगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं ।

उदाहरण—

र र र र

(क) इन्द्रनीलोपलेनेव या निर्मिता
ऽ । ऽ, ऽ । ऽ, ऽ । ऽ, ऽ । ऽ
शातकुम्भद्रवालंकृता शोभते ।
नव्यमेघच्छविः पीतवासा हरे-
र्मूर्तिरास्तां जयायोरसि स्रग्विणी ॥

(ख) वे गृही धन्य हैं जो मनोहारिणी,
मिष्टभाषी सुशीला सदाचारिणी।
धर्मशीला सती धीरताधारिणी,
सुन्दरीयुक्त हैं प्रेमश्रृङ्गारिणी ॥ (रामनरेश त्रिपाठी)

प्रति चरण १३ अक्षरवाले छन्द

(१) प्रहर्षिणी

लक्षण—म्याशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम् । (विराम ३, १०)

अर्थ—प्रहर्षिणी छन्द के प्रत्येक पाद में मगण, नगण, जगण, रगण और गुरु के क्रम से १३ वर्ण होते हैं। तीन और आशा (दिशा १०) पर यति होती है।

उदाहरण—

म न ज र गु

(क) ते रेखाध्वजकुलिशातपत्रचिह्नं,
S SS, I I I, I S I, S I S, S
सम्राजश्चरणयुगं प्रसादलभ्यम्।
प्रस्थानप्रणतिभिरंगुलीषु चक्रः
मौलिस्रक्च्युतमकरन्दरेणुगौरम् ॥ (रघुवंश ४।८८)

(ख) मानो जू, रँग रहि प्रेम में तुम्हारे,
प्राणों के, तुमहिं अधार हौ हमारे।
वैसो ही, विचरहु रास हे कन्हाई,
भावै जो, शरद प्रहर्षिणी जुन्हाई ॥ (भानुकवि)

(२) रुचिरा (नामान्तर—अतिरुचिरा)

लक्षण—चतुर्ग्रहैरतिरुचिरा जभस्जगाः। (विराम ४, ९ पर)

अर्थ—रुचिरा या अतिरुचिरा छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, भगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १३ वर्ण होते हैं। चार और ग्रह (९) पर यति होती है।

उदाहरण—

ज भ स ज गु

कदा मुखं वरतनु कारणादृते,
I S I, S I I, I I S, I S I, S
तवागतं क्षणमपि कोपपात्रताम्।
अपर्वणि ग्रहकलुषेन्दुमण्डला,
विभावरी कथय कथं भविष्यति ॥ (मालविकाग्निमित्रम् ४।१३)

प्रति चरण १४ अक्षरवाले छन्द

(१) वसन्ततिलका (अन्य नाम–सिंहोन्नता तथा उद्धर्षिणी)

लक्षण—उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।

अर्थ—वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक पाद में तगण, भगण, दो जगण और दो गुरु के क्रम से १४ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

त भ ज ज गु गु

(क) जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं,
S S ।, S । ।, । S ।, । S ।, S S
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥ (नीतिशतक)

(ख) रोगी दुखी विपत-आपत में पड़े की,
सेवा अनेक करते निज हस्त से थे ।
ऐसा निकेत व्रज में न मुझे दिखाया,
कोई जहाँ दुखित हो पर वे न होवें ॥ (हरिऔध)

प्रति चरण १५ वर्णवाले छन्द

(१) मालिनी

लक्षण—ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः । (विराम ८, ७ पर)

अर्थ—मालिनी के प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण और दो यगण के क्रम से १५ अक्षर होते हैं । भोगी (८), लोक (७) पर यति होती है ।

उदाहरण—

न न म य य

(क) मनसि वचसि काये, पुण्यपीयूषपूर्णा-
। । ।, । । ।, S S S, । S S, । S S
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः ।
परगुणपरमाणून्, पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः, सन्ति सन्तः कियन्तः ॥ (नीतिशतक)

(ख) सहृदय जन के जो, कंठ का हार होता,
मुदित मधुकरी का, जीवनाधार होता ।
वह कुसुम रँगीला, धूल में जा पड़ा है,
नियति नियम तेरा, भी बड़ा ही कड़ा है ॥ (रूपनारायण पांडेय)

(२) चामर (अन्य नाम—तूणक)

लक्षण—तूणकं समानिका पदद्वयं विनान्तियम् ॥ (विराम ८, ७)

अर्थ—तूणक या चामर छंद के प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और रगण के क्रम से १५ अक्षर होते हैं । आठवें और पादान्त में यति होती है ।

उदाहरण—

र ज र ज र

(क) सा सुवर्णकेतकं विकाशि भृङ्गपूरितं,
S । S, । S । ,S । S, । S ।, S । S
पंचबाणबाणजालपूर्णहेतितूणकम् ।
राधिका वितर्क्य माधवाद्यमासि माधवे,
मोहमेति निर्भरं त्वया विना कलानिधे ॥

(ख) मत्त-दन्ति-राज-राजि, वाजिराज राजि कै,
हेम हीर मुक्त चीर, चारु साज साजि कै।
वेष वेषवाहिनी, अशेष वस्तु सोधि यो
दाइजो विदेहराज, भाँति भाँति को दियो ॥ (केशवदास)

प्रति चरण १६ वर्णवाले छन्द

पंचचामर

लक्षण—जरौ जरौ ततो जगौ च पंचचामरं वदेत् ॥ (८, ८ या ४, ४, ४, ४ पर विराम)

अर्थ—पंचचामर छन्द के प्रत्येक पाद में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और गुरु के क्रम से १६ वर्ण होते हैं। ८, ८ या ४, ४, ४, ४ पर यति होती है।

उदाहरण—

ज र ज र ज गु

(क) सुरद्रुमूलमण्डपे विचित्ररत्ननिर्मिते
। ऽ ।, ऽ । ऽ, । ऽ ।, ऽ । ऽ, । ऽ ।, ऽ
लसद्वितानभूषिते सलीलविभ्रमालसम्।
सुरांगनाभवल्लवीकरप्रपंचचामर-
स्फुरत्समीरवीजितं सदाच्युतं भजामि तम् ॥

(ख) उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती ॥ (मैथिलीशरण गुप्त)

प्रति चरण १७ वर्णवाले छन्द

(१) शिखरिणी

लक्षण—रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी। (६, ११ पर विराम)

अर्थ—जिस छन्द के प्रत्येक चरण में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ अक्षर हों तथा रस (६) और रुद्र (११) पर यति हो उसे शिखरिणी कहते हैं।

उदाहरण—

य म न स भ ल गु

(क) करे श्लाघ्यस्त्यागः, शिरसि गुरुपादप्रणयिता,
। ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ, । । ।, । । ऽ, ऽ । ।, । ऽ
मुखे सत्या वाणी, विजयिभुजयोर्वीर्यमतुलम्।
हृदि स्वच्छा वृत्तिः, श्रुतमधिगतं च श्रवणयो-
र्विनाप्यैश्वर्येण, प्रकृतिमहतां मण्डनमिदम् ॥ (भर्तृहरि)

(ख) छटा कैसी प्यारी, प्रकृति-तिय के चन्द्रमुख की
नया नीला ओढ़े, बसन चटकीला गगन का।
जरी-सलमा-रूपी, जिस पर सितारे सब जड़े
गले में स्वर्गंगा, अतिललित माला सम पड़ी ॥ (सत्यशरण रतूड़ी)

(२) पृथ्वी

लक्षण—जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः। (८, ९ पर विराम)

अर्थ—पृथ्वी छन्द के प्रत्येक पाद में जगण, सगण, जगण, सगण, यगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ वर्ण होते हैं। वसु (८) और ग्रह (९) पर यति होती है।

उदाहरण—

ज स ज स य लगु

(क) लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्
। ऽ ।, । । ऽ, । ऽ ।, । । ऽ, । ऽ ऽ, । ऽ
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।
कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणामासादयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥ (भर्तृहरि)

(ख) अगस्त ऋषिराज जू, वचन एक मेरे सुनौ,
प्रशस्त सब भाँति भूतल सुदेश जी में गुनौ।
सुनीर तरुखंड मंडित समृद्ध शोभा धरैं,
तहाँ हम निवास की, विमल पर्णशाला करैं॥ (रामचन्द्रिका)

(३) हरिणी

लक्षण—नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता। (६, ४, ७ पर विराम)

अर्थ—हरिणी के प्रत्येक चरण में नगण, सगण, मगण, रगण, सगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ अक्षर होते हैं। छठे, दसवें और सत्रहवें अक्षर के बाद विराम होता है।

उदाहरण—

न स म र स लगु

वहति भुवनश्रेणीं शेषः फणाफलकस्थितां,
। । ।, । । ऽ, ऽ ऽ ऽ, ऽ । ऽ, । । ऽ, । ऽ
कमठपतिना मध्येपृष्ठं सदा स च धार्यते।
तमपि कुरुते क्रोडाधीनं पयोधिरनादरा-
दहह महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः॥ (भर्तृहरि)

(४) मन्दाक्रान्ता

लक्षण—मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तो गयुग्मम्। (४, ६, ७ पर विराम)

अर्थ—मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक पाद में मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से १७ अक्षर होते हैं। अम्बुधि (सागर ४), रस (६) और नग (७) पर यति होती है।

उदाहरण—

म भ न त त गु गु

(क) मौनान्मूकः, प्रवचनपटुर्वाचको जल्पको वा,
ऽ ऽ ऽ, ऽ । ।, । । ।, ऽ ऽ ।, ऽ ऽ ।, ऽ ऽ
धृष्टः पार्श्वे भवति च वसन्दूरतोऽप्यप्रगल्भः।
क्षान्त्या भीरुर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः,
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः॥ (भर्तृहरि)

(ख) जो लेवेगा, नृपति मुझ से, दंड दूँगी करोड़ों,
लोटा थाली, सहित तनके, वस्त्र भी बेंच दूँगी।
जो माँगेगा, हृदय वह तो, काढ़ दूँगी उसे भी
बेटा तेरा गमन मथुरा, मैं न आँखों लखूँगी॥ (हरिऔध)

प्रतिचरण १९ वर्णवाले छन्द

(१) शार्दूलविक्रीडित

लक्षण—सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्। (१२, ७ पर विराम)

अर्थ—शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, दो तगण और गुरु के क्रम से १९ वर्ण होते हैं। यति सूर्य (१२) और अश्व (७) पर होती है।

उदाहरण—

म स ज स त त गु

(क) केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः,
SSS, I I S, I S I, I I S, S S I, S S I, S
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते,
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्॥ (भर्तृहरि)

(ख) छोटे और बड़े जहाज जल में, देखो वहाँ वे खड़े,
सो भी दृश्य विचित्र किन्तु हमको, वे हानिकारी बड़े।
ले जाते वरवस्तु देशभर की जाने कहाँ की कहाँ,
लाते केवल ऊपरी चटक की, चीजें विदेशी यहाँ॥ (कन्हैयालाल पोद्दार)

प्रति चरण २० वर्णवाले छन्द

(१) गीतिका

लक्षण—सजजा भरौ सलगा यदा कथिता तदा खलु गीतिका। (५, ७, ८ पर विराम)

अर्थ—गीतिका छन्द के प्रत्येक चरण में सगण, जगण, जगण, भगण, रगण, सगण और लघु-गुरु के क्रम से २० वर्ण होते हैं। पाँचवें, बारहवें और बीसवें अक्षर के बाद यति होती है।

उदाहरण—

स ज ज भ र स ल गु

(क) करतालचंचलकंकणस्वनमिश्रणेन मनोरमा,
I I S, I S I, I S I, S I I, S I S, I I S, I S
रमणीयवेणुनिनादरंगिमसंगमेन सुखावहा।
बहुलानुरागनिवासरासमुद्भवा तव रागिणं,
विदधौ हरिं खलु वल्लवीजनचारुचामरगीतिका॥

(ख) सज जीभ री ! सुलगै मुहीं सुन मो कहा चित लायकै,
नय काल लक्खन जानकी सह राम को नित गायकै।
पद मो शरीरहि राम के कल धाम को लय धावहू,
कर बीन लै अति दीन है नित गीति कान सुनावहू॥ (भानु कवि)

प्रति चरण २१ वर्णवाले छन्द

(१) स्रग्धरा

लक्षण—म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् । (७, ७, ७ पर विराम)

अर्थ—स्रग्धरा के प्रत्येक पाद में मगण, रगण, भगण, नगण और तीन यगण के क्रम से २१ अक्षर होते हैं । सातवें, चौदहवें और इक्कीसवें अक्षर के अन्त में यति होती है ।

उदाहरण—

म र भ न य य य

(क) प्राणाघातान्निवृत्तिः, परधनहरणे संयमः, सत्यवाक्यं,
ऽ ऽ ऽ, ऽ । ऽ, ऽ ।।, ।।।। ऽ ऽ, । ऽ ऽ, । ऽ ऽ
काले शक्त्या प्रदानं, युवतिजनकथा, मूकभावः परेषाम् ।
तृष्णास्रोतोविभंगो, गुरुषु च विनयः, सर्वभूतानुकम्पा,
सामान्यं सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः, श्रेयसामेष पन्थाः । (भर्तृहरि)

(ख) नाना फूलों-फलों से, अनुपम जग की, वाटिका है विचित्रा,
भोक्ता हैं सैकड़ों ही, मधुप शुक तथा कोकिला गानशीला ।
कौए भी हैं अनेकों, पर धन हरने में सदा अग्रगामी,
कोई है एक माली, सुधि इन सबकी, जो सदा ले रहा है ॥ (रामनरेश त्रिपाठी)

(ख) वर्णवृत्त, अर्द्धसम छन्द

(१) वियोगिनी (अन्य नाम—सुन्दरी)

लक्षण—विषमे ससजा गुरुः समे, सभरा लोऽथ गुरुर्वियोगिनी ।

अर्थ—वियोगिनी के विषम (प्रथम, तृतीय) चरणों में दो सगण, जगण और गुरु के क्रम से १०-१० अक्षर और सम (द्वितीय, चतुर्थ) चरणों में सगण, भगण, रगण, लघु और गुरु के क्रम से ११-११ अक्षर होते हैं । (१०, ११, १०, ११) ।

उदाहरण—

स स ज गु

(क) सहसा विदधीत न क्रियाम्,
।। ऽ, ।। ऽ, । ऽ ।, ऽ
अविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं

स भ र लगु

गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥ (किरातार्जुनीय २।३०)
।। ऽ, ऽ ।।, ऽ । ऽ, । ऽ

(ख) चिर-काल रसाल ही रहा,
जिस भावज्ञ कवीन्द्र का कहा ।
जय हो उस कालिदास की,
कविता-केलि-कला-विलास की ॥ (छन्दरत्नावली)

(२) हरिणप्लुता

लक्षण—सयुगात् सलघू विषमे गुरुर्युजि नभौ भरकौ हरिणप्लुता ।

अर्थ—हरिणप्लुता छन्द के विषम चरणों में तीन सगण और लघु-गुरु के क्रम से ११–११ अक्षर और सम चरणों में नगण, दो भगण और रगण के क्रम से १२–१२ अक्षर होते हैं ।

(११, १२, ११, १२)

उदाहरण—

स स स लगु

स्फुटफेनचया हरिणप्लुता,

। । ऽ, । । ऽ, । । ऽ, । ऽ

वलिमनोज्ञतटा तरणेः सुता ।

कलहंसकुलारवशालिनी,

न भ भ र

विहरतो हरति स्म हरेर्मनः ॥ (छन्दोमञ्जरी)

। । ।, ऽ । ।, ऽ । ।, ऽ । ऽ

(३) अपरवक्त्र

लक्षण—अयुजि ननरला गुरुः समे ।
तदपरवक्त्रमिदं नजौ जरौ ॥

अर्थ—अपरवक्त्र वृत्त के विषम चरणों में दो नगण, एक रगण और लघु-गुरु के क्रम से ११-११ अक्षर और समचरणों में नगण, दो जगण और रगण के क्रम से १२-१२ अक्षर होते हैं ।

(११, १२, ११, १२)

उदाहरण—

न न र लगु

स्फुटसुमधुरवेणुगीतिभि-

। । ।, । । ।, ऽ । ऽ, । ऽ

स्तमपरवक्त्रमवेत्य माधवम् ।

मृगयुवतिगणैः समं स्थिता

न ज ज र

व्रजवनिता धृतचित्तविभ्रमा ॥ (छन्दोमञ्जरी)

। । ।, । ऽ ।, । ऽ ।, ऽ । ऽ

(४) पुष्पिताग्रा (नामान्तर औपच्छन्दसिक)

लक्षण—अयुजि नयुगरेफतो यकारो,
युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा ।

अर्थ—पुष्पिताग्रा के विषम चरणों में दो नगण, रगण और यगण के क्रम से १२-१२ अक्षर तथा सम चरणों में नगण, दो जगण, रगण और गुरु के क्रम से १३-१३ अक्षर होते हैं ।

(१२, १३, १२, १३)

उदाहरण—

न न र य

(क) अथ मदनवधूरुपप्लवान्तं
।। ।,।।।,ऽ।ऽ,।ऽ ऽ
व्यसनकृशा परिपालयांबभूव ।
शशिन इव दिवातनस्य लेखा
न ज ज र गु
किरण परिक्षयधूसरा प्रदोषम् ॥ (कुमारसम्भव ४।४६)
।।।, ।ऽ।,।ऽ।,ऽ।ऽ,ऽ

(ख) प्रभु सम नहिं अन्य कोइ दाता,
सुध न जु ध्यावत तीन लोक त्राता ।
सकल असत कामना विहाई,
हरि नित सेवहु मित्त चित्त लाई ॥ (भानुकवि)

(ग) वर्णवृत्त, विषम छन्द

उद्गता

लक्षण—प्रथमे सजौ यदि सलौ च नसजगुरुकाण्यनन्तरम् ।
यद्यथ भनजलगाः स्युरथो सजसा जगौ च भवतीयमुद्गता ॥

अर्थ—उद्गता के प्रथम चरण में सगण, जगण, सगण और लघु के क्रम से १० अक्षर, द्वितीय चरण में नगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १० अक्षर, तृतीय चरण में भगण, नगण, जगण और लघु-गुरु के क्रम से ११ अक्षर तथा चतुर्थ चरण में सगण, जगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १३ अक्षर होते हैं। (१०, १०, ११, १३)

उदाहरण—

स ज स ल
अथ वासवस्य वचनेन,
।। ऽ,।ऽ।, ।।ऽ,।
न स ज गु
रुचिरवदनस्त्रिलोचनम् ।
।।।,।।ऽ,।ऽ,।ऽ
भ न ज लगु
क्लान्तिरहितमभिराधयितुं,
ऽ । ।,।।।,।ऽ।,।ऽ
स ज स ज गु
विधिवत्तपांसि विदधे धनंजयः ॥ (किरातार्जुनीय १२।१)
। ।ऽ,।ऽ।, ।।ऽ,।ऽ।,ऽ

(घ) मात्रिक वा जाति छन्द

आर्या (विषम छन्द)

लक्षण—यस्याः पादे प्रथमे, द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।
अष्टादश द्वितीये, चतुर्थके पञ्चदश सार्या ॥

अर्थ—आर्याछन्द के प्रथम और तृतीय चरण में १२-१२ मात्रायें, द्वितीय में १८ तथा चतुर्थ में १५ मात्रायें होती हैं। (१२, १८, १२, १५ मात्रायें)

उदाहरण—

ऽऽ ।।।। ।।।।
(क) सिंहः शिशुरपि निपतति, = १२
।।। ।।।ऽ।ऽ।। ।ऽऽ
मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु । = १८
।।।।ऽ ऽ।।ऽ
प्रकृतिरियं सत्त्ववतां, = १२
। ।। ।ऽऽ।ऽ ऽऽ
न खलु वयस्तेजसां हेतुः । = १५

(ख) कवि निर्धन भी होकर,
शठ की सेवा कभी न करता है ।
रत्नाकर में जाकर,
हंस कभी क्या विचरता है ॥ (रामचरित उपाध्याय)

पञ्चम परिशिष्ट

संस्कृत-साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय

अनंगहर्ष—ये चेदिदेश के कल्चुरीवंशीय नृप नरेन्द्रवर्धन के पुत्र थे। वास्तविक नाम माउराज (मातृराज) था। समय अष्टम शतक का उत्तरार्द्ध है। इनकी कृति 'तापस वत्सराज' (नाटक) में उदयन तथा वासवदत्ता की प्रसिद्ध कथा है। 'मायुराजसमो जज्ञे नान्यः कलचुरिः कविः' (राजशेखर)।

अप्पय दीक्षित—इनका जन्म भारद्वाजगोत्रीय रंगराज के गृह में १५५४ ई० में काञ्ची के समीप अचपलम में हुआ था। ये अनेक वर्षों तक वेल्लोर और विजयनगर की राजसभाओं में सम्मानित रहे। प्रख्यात वैयाकरण भट्टोजीदीक्षित को वेदान्त इन्हीं ने पढ़ाया था। पूर्व तथा उत्तरमीमांसा के ये पारदृश्वा पंडित जे। १६२६ ई० में इन्होंने ग्यारह विद्वान् पुत्रों की उपस्थिति में चिदम्बरम् में सहर्ष प्राणविसर्जन किया। काव्य, अलंकार, तर्क, दर्शन आदि अनेक विषयों पर इन्होंने १०४ ग्रंथों की रचना की जिनमें से काव्यकृतियाँ निम्नलिखित हैं—शिवपंचाशिका, दशकुमार-चरितसंग्रह, पंचरत्नस्तव, शिवकर्णामृत, वैराग्यशतक, भक्तामरस्तव, शान्तिस्तव, रामायण-तात्पर्यनिर्णय, भरतस्तव, वरदराजस्तव, आदित्यस्तोत्ररत्न आदि। वसुमतीचित्रसेनविलास (नाटक), चित्रमीमांसा, वृत्तिवार्त्तिक, कुवलयानन्द (अलंकार) आदि के अतिरिक्त इन्होंने कई ग्रंथों पर टीकाएँ भी रची हैं।

अमरुक—इस कवि का वंश, देश, काल आदि अज्ञात है। आनन्दवर्द्धन ने 'ध्वन्यालोक' में इन के 'अमरुकशतक' के शृङ्गारी मुक्तकों की सरसता की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। अतः ये नवमी शताब्दी से पूर्व विद्यमान थे। ये शब्द-कवि न थे, रस-कवि थे। हिन्दी के विहारी, पद्माकर आदि कवियों पर इनके काव्य का पर्याप्त प्रभाव लक्षित होता है।

अश्वघोष—संस्कृत के बौद्ध कवियों में सर्वश्रेष्ठ हैं। इनका जन्म साकेत में सम्भवतः ब्राह्मणवंश में सुवर्णाक्षी के गर्भ से हुआ था। परम्परानुसार ये महाराज कनिष्क (७८ ई०) के गुरु तथा आश्रित कवि थे। ये दार्शनिक तथा संगीतज्ञ भी थे। बौद्ध बनने के बाद इन्होंने बौद्ध-धर्म के प्रचार में भरसक सहयोग दिया। 'सौन्दरानन्द' तथा 'बुद्धिचरित' इनके प्रख्यात महाकाव्य हैं। 'सौन्दरानन्द' के १८ सर्ग हैं। उनमें बुद्ध के उपदेश से उनके अनुज नन्द द्वारा पत्नी सुंदरी के परित्याग तथा दीक्षाग्रहण की कथा है। 'बुद्धचरित' के २८ सर्गों में से १७ उपलब्ध हैं और बुद्धचरित-विषयक हैं। वैदर्भी रीति में रचित ये महाकाव्य संस्कृत-काव्यसाहित्य के अलंकार हैं। अश्वघोष संस्कृत के प्रथम बौद्ध नाटककार हैं। इनके तीन नाटक उपलब्ध हुए हैं। 'शारिपुत्र-प्रकरण' नौ अंकों में है और पूर्ण है। इसमें बुद्ध के उपदेश से शारिपुत्र और मौद्गल्यायन के दीक्षित होने का उल्लेख है। शेष दो नाटक लुप्तनामक और खण्डित हैं। उनमें एक का कथानक 'प्रबोधचन्द्रोदय' के समान रूपकात्मक है और दूसरे का 'मृच्छकटिक' के तुल्य वेश्यानायकप्रणयात्मक।

आर्यशूर—ये बौद्धकवि सम्भवतः पाँचवीं शताब्दी में विद्यमान थे। 'जातकमाला' तथा 'पारमिता-समास' इनकी दो प्रख्यात कृतियाँ हैं। इनकी कीर्ति का आधार-स्तम्भ 'जातक-माला' है जिसमें महात्मा बुद्ध के ३४ जन्मों की कथाएँ गद्य-पद्यमयी सरस भाषा में वर्णित हैं। दूसरे काव्य में दान, शील, क्षान्ति आदि विषयों पर रचना की गई है। 'जातकमाला', 'पालिजातक' के आधार पर रचित स्वतंत्र कृति है। इसके पद्यभाग के समान गद्यभाग भी सुश्लिष्ट, सुन्दर तथा सरस

है।' जातकमाला के कुछ अंश का चीनी में अनुवाद ९६० और ११२७ ई० के मध्य में किया गया था।

कल्हण (कल्याण)—इनके पिता चणपक काश्मीरनरेश हर्ष (१०४८–११०१ ई०) के प्रधानमंत्री थे। ये अलंकदत्त नामक व्यक्ति के आश्रित थे। इन्होंने राज-दरबार से दूर रहकर अपनी प्रख्यात ऐतिहासिक काव्यकृति 'राजतरंगिणी' की रचना सुस्सल के तनुज राजा जयसिंह (११२७–५९ ई०) के शासनकाल में की थी। 'राजतरंगिणी' का निर्मितिकाल ११४८–११५० ई० है। इसमें काश्मीर के राजनीतिक इतिहास, भौगोलिक विवरण, सामाजिक व्यवस्था, साहित्यिक समृद्धि आदि का सविस्तर और रोचक उल्लेख किया गया है। 'राजतरंगिणी' काव्य तथा इतिहास दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण कृति है जिसमें काश्मीर के प्राचीन काल से लेकर बारहवीं शती तक का विश्वसनीय वृत्त प्रस्तुत किया गया है।

कविराज सूरि—जयन्तपुरी के राजा कामदेव (११८२–९७ ई०) के सभापंडित माधवभट्ट की ही उपाधि कविराज थी। इनकी रचना 'राघवपांडवीय' अपने ढंग की अपूर्व कृति है जिसका अनुकरण परवर्ती अनेक कवियों ने किया। इसका प्रत्येक पद्य श्लिष्ट है और रामायण तथा महाभारत दोनों से सम्बन्धित अर्थ व्यक्त करता है। इसी के अनुकरण पर हरदत्त ने 'राघव-नैषधीय', चिदंबर ने 'राघवपाण्डवयादवीय' और विद्यामाधव ने 'पार्वतीरुक्मणीय' नामक काव्यों की सृष्टि की। इस प्रकार की श्लिष्ट रचनाएँ संस्कृत के अतिरिक्त सभी भाषाओं में अलभ्य हैं और सम्भवतः अलभ्य रहेंगी।

कालिदास—कुछ विद्वान् इन्हें ई० पू० प्रथम शताब्दी में मानते हैं तो कुछ छठी शती ईसवी में। कोई इनकी जन्मभूमि काश्मीर मानता है, कोई बंगाल और कोई उज्जयिनी। बहुमत उज्जयिनी के प्रति विशेष पक्षपात तथा सूक्ष्म भौगोलिक परिचय के आधार पर कालिदास उज्जयिनीवासी प्रतीत होते हैं।

कृतियाँ—ऋतुसंहार, कुमारसम्भव, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, रघुवंश, अभिज्ञान-शाकुन्तल, मेघदूत।

'कुमारसम्भव' तथा 'रघुवंश' महाकाव्य हैं। 'कुमारसम्भव' के १७ सर्गों में शिव-पार्वती के विवाह, कार्तिकेय की उत्पत्ति तथा तारकासुर के वध की कथा है। 'रघुवंश' के १९ सर्गों में सूर्य-वंशी राजाओं का कीर्तिगान है। मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और अभिज्ञानशाकुन्तल—तीनों नाटक हैं। प्रथम में राजा अग्निमित्र और मालविका की, द्वितीय में राजा पुरूरवा और अप्सरा उर्वशी की तथा तृतीय में राजा दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रेमकथा का वर्णन है। 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' संस्कृत गीतिकाव्य की प्राचीनतम कृतियाँ हैं। ऋतुसंहार के १४४ पद्यों में षड्ऋतुओं का सुन्दर वर्णन है तथा उनका प्रेमियों के हृदय पर प्रभाव अंकित किया गया है। 'मेघदूत' के १२१ पद्यों में एक निर्वासित विरही यक्ष की मनोव्यथा का हृदयस्पर्शी चित्रण किया गया है। कालिदास की सर्वप्रियता का कारण है उनकी प्रसादपूर्ण, लालित्योपेत, परिष्कृत शैली। इन्होंने सभी ग्रन्थ वैदर्भी रीति में लिखे हैं। उपमाओं में ये अपना जोड़ नहीं रखते। भाव, रस, भाषा, शैली, छंद, अलंकार जिस किसी भी दृष्टि से देखें कालिदास उत्कृष्टतम ठहरते हैं।

कुमारदास—सिंहल की जनश्रुति के अनुसार कुमारदास ने वहाँ ५१७–५२६ ई० तक शासन किया था। आधुनिक विद्वान् इन्हें ६५० और ७५० ई० के बीच में मानते हैं। इनके महाकाव्य 'जानकीहरण' के २५ में से १५ सर्ग ही प्राप्त हैं। कथा रामायण की पुरानी ही है परन्तु वर्णन-शैली अभिरूप है। प्रसाद, सुकुमारता, शब्दसौष्ठव तथा नादसौन्दर्य कृति के उल्लेख्य गुण हैं। राजशेखर (९०० ई०) ने इसकी प्रशंसा में यों लिखा है—

जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति।
कविः कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षमः॥

रघुवंश की विद्यमानता में जानकीहरण करना या तो रावण का काम है या फ़िर कुमारदास का।

कृष्ण मिश्र—'प्रबोधचन्द्रोदय' नामक रूपक नाटक के रचयिता कृष्ण मिश्र जेजाकभुक्ति के राजा कीर्तिवर्मा के शासनकाल में ११०० ई० के लगभग विद्यमान थे। भास के 'बालचरित' के समान इस नाटक में विवेक, मोह, ज्ञान, विद्या आदि भावों को स्त्री-पुरुष पात्रों के रूप में कल्पित किया गया है। इसी कृति के अनुकरण पर यशःपाल ने 'मोहपराजय', वेंकटनाथ ने 'संकल्पसूर्योदय' तथा कविकर्णपूर ने 'चैतन्यचन्द्रोदय' की रचना की। हिन्दी कवि केशवदास ने 'विज्ञानगीता' में इसका छन्दोवद्ध अनुवाद किया है। दार्शनिक दृष्टि से कृति महत्त्वपूर्ण है।

क्षेमेन्द्र—सिन्धु के पौत्र तथा प्रकाशेन्द्र के पुत्र क्षेमेन्द्र का जन्म काश्मीर के एक धनाढ्य और उदार परिवार में हुआ था। इन्होंने आचार्य अभिनवगुप्त से साहित्याध्ययन किया था। ये ११वीं शती के मध्य में विराजमान थे। शैवमंडल में रहते हुए भी ये परम वैष्णव थे और इसका कारण था भागवताचार्य सोमपाद की शिक्षा।

इनके बृहदाकार अनेक ग्रंथों में से प्रमुख ये हैं—रामायणमञ्जरी, भारतमञ्जरी तथा बृहत्कथा-मञ्जरी। ये क्रमशः रामायण, महाभारत और गुणाढ्य की बृहत्कथा के आधार पर रचित स्वतंत्र काव्यकृतियाँ हैं। 'दशावतारचरित' में विष्णु के दशावतारों का तथा 'बोधिसत्त्वावदान' कल्पलता' में जातक कथाओं का सरल-सुन्दर वर्णन है। अल्पाकार कृतियों में कलाविलास, चतुर्वर्ग-संग्रह, चारुचर्या, नीतिकल्पतरु, समयमातृका और सेव्यसेवकोपदेश व्यवहारविषयक सुन्दर काव्यकृतियाँ हैं। इनकी रचनाएँ साहित्यिकता से पूर्ण भी हैं और लोकोपकार की भावना से ओत-प्रोत भी।

गोवर्धनाचार्य—ये बंगाल के अन्तिम हिन्दूनरेश लक्ष्मणसेन (१११६ ई०) की सभा के प्रतिष्ठित कवि थे। 'आर्यासप्तशती' इनकी एकमात्र रचना है जो 'हाल' की 'गाथासप्तशती' के अनुकरण पर रचित है। 'गाथासप्तशती' तो हालकृत संग्रह है परन्तु 'आर्यासप्तशती' केवल आचार्य की रचना है। इसमें संयोग तथा वियोग-श्रृंगार की विविध दशाओं का मार्मिक चित्रण पुष्ट आर्या छन्द में किया गया है। नागरिक ललनाओं की श्रृङ्गारिक चेष्टाओं तथा ग्रामीण रमणियों की स्वाभाविक उक्तियों का उल्लेख अत्यन्त रमणीय है। हिन्दी के बिहारी आदि श्रृङ्गारी कवि भी इसके प्रभाव से अछूते नहीं रहे।

जगन्नाथ (पंडितराज)—आंध्र ब्राह्मण जगन्नाथ काशीनिवासी पेरुभट्ट तथा लक्ष्मीदेवी के पुत्र थे। इन्होंने काव्य और अलंकार का अध्ययन अपने पिता से किया और न्याय, व्याकरण आदि विषयों का ज्ञानेन्द्रभिक्षु, महेशाचार्य, खण्डदेव, शेष वीरेश्वर आदि से। दिल्लीश्वर शाहजहाँ (शासन १६२८-६६ ई०) ने इन्हें दाराशिकोह के शिक्षार्थ दिल्ली में बुलवा लिया था। उसके पश्चात् वृद्धावस्था में इनका स्वर्गवास १६७४ ई० में मथुरा में हुआ। कहते हैं, किसी यवनी के प्रेमजाल में फँसने के कारण इन्हें स्वजातीयों का कोपभाजन भी बनना पड़ा था।

गंगालहरी, सुधालहरी, अमृतलहरी, करुणालहरी और लक्ष्मीलहरी इनके सरस काव्यस्तोत्र हैं। 'जगदाभरण' में दाराशिकोह का, 'आसफविलास' (गद्यकाव्य) में नवाब आसफ़खाँ का और 'प्राणाभरण' में कामरूपाधिपति प्राणनारायण का वर्णन है। इनकी अन्य कृतियाँ 'चित्रमीमांसा-खंडन', मनोरमाकुचमर्दन' तथा 'भामिनीविलास' हैं। इनकी सर्वोत्तम कृति 'रसगंगाधर' नामक अलंकार-शास्त्र है जिसमें इनके प्रकाण्ड पाण्डित्य तथा अप्रतिम काव्य-प्रतिमा का पूर्ण परिचय प्राप्त होता है। इन्हें अपने पाण्डित्य और कवित्व पर जो अभिमान था, वह अनुचित न था।

जयदेव—सात अंकों के प्रसिद्ध संस्कृत नाटक 'प्रसन्नराघव' के कर्ता जयदेव का परिचय अभी तिमिराच्छन्न है। सुनते हैं, ये मिथिलावासी थे। ये १४वीं शती से पूर्व हुए हैं। 'प्रसन्नराघव' में रामायणीय कथा सुचारु रीति से चित्रित की गई है। मंजुल पदावली तथा प्रसादोपेत कविता

के कारण नाटक का नाम सार्थक है। 'रामचरितमानस' के कई स्थलों पर इस तार्किक और कवि का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है।

जयदेव—अमर काव्य 'गीतगोविन्द' के रचयिता जयदेव वंगाधिपति लक्ष्मणसेन (१११६ ई०) के सभारत्न थे। बंगाल के केन्दुबिल्व नामक स्थान में इनका जन्म हुआ था। वे राधा-कृष्ण की भक्ति के रस में पूर्णतया पगे हुए थे और उसी रस से पूर्ण 'गीतगोविन्द' नामक गीतिकाव्य भी है। १२ सर्गों का यह गीतिकाव्य इतना सरस व मधुर है कि कालिदास की कृतियों को भी मात करता है। भाव-सौष्ठव, कल्पनोत्कर्ष और सुललित पदावली के कारण रचना अपने ढंग की एक ही है।

तिरुमलांबा (रानी)—राजा अच्युत राय की पत्नी तिरुमलांबा ने 'वरदाम्बिकापरिणयचम्पू' की रचना १५२९-४० के बीच में किसी समय की। इसमें अच्युत राय और वरदाम्बिका के प्रेम तथा परिणय का वर्णन है। सम्भव है, रानी ने नामान्तर से अपनी ही कथा अंकित की हो। कृति से कर्त्री की पुष्ट कल्पना तथा संस्कृत-भाषा पर पूर्ण अधिकार का परिचय मिलता है।

त्रिविक्रम भट्ट—शांडिल्यगोत्री त्रिविक्रम वा सिंहादित्य, नेमादित्य (देवादित्य) के पुत्र थे। राष्ट्रकूट नृपति तृतीय इन्दु (९१४–९१६ ई०) के सभाकवि थे। 'नलचम्पू' (दमयन्तीकथा) और 'मदालसाचम्पू' इनकी विख्यात कृतियाँ हैं। ये संस्कृत-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ श्लेष-कवि हैं। 'नलचम्पू' में सरस तथा चमत्कारपूर्ण श्लेषों का प्राचुर्य है। इस कृति के कमनीय उद्धरणों को भोजराज तथा विश्वनाथ ने अनेकत्र उद्धृत किया है। नलचम्पू संस्कृत का प्रथम उपलब्ध चम्पू है।

दंडी—कहा जाता है कि दंडी का जन्म भारवि की चौथी पीढ़ी में हुआ था। इनकी माता का नाम गौरी तथा पिता का वीरदत्त था। ये सप्तमी शती के उत्तरार्द्ध तथा अष्टमी के पूर्वार्द्ध में विद्यमान थे और काञ्ची के पल्लवनरेशों की सभा में रहते थे।

इनकी तीन रचनाएँ हैं—दशकुमारचरित, काव्यादर्श तथा अवन्तिसुन्दरीकथा (?)। एक किंवदन्ती के अनुसार इन्होंने 'काव्यादर्श' की रचना पल्लवनरेश के पुत्र के शिक्षार्थ की थी। 'दशकुमारचरित' नामक प्रख्यात गद्यकाव्य में दस कुमारों के रोमाञ्चजनक चरित प्रस्तुत किये गये हैं। छल-कपट, मारकाट तथा सत्यानृत से परिपूर्ण होने के कारण रचना अत्यन्त सजीव है। पात्रों के चरित्र सुन्दर शैली में हैं तथा हास्य और व्यंग्य से पूर्ण हैं। भाषाशैली के विचार से भी यह रचना स्तुत्य है। भाषा प्रवाहपूर्ण, परिष्कृत तथा मुहावरों से अलंकृत है। जो पदलालित्य दंडी में है वह अन्यत्र दुर्लभ है। कहा भी है—'दण्डिनः पदलालित्यम्'। कुछ आलोचक वाल्मीकि और व्यास के अनन्तर इन्हें ही तीसरा कवि मानते हैं—

जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाऽभवत्।
कवी इति ततो व्यासे कवयस्त्वयि दण्डिनि॥

दामोदर मिश्र—इनके महानाटक 'हनुमन्नाटक' की रचना ८५० ई० के पूर्व हुई थी। इसमें १४ अंक हैं और कथानक रामायण पर आधृत है। प्रस्तावना और प्राकृत का अभाव, पद्यों की प्रचुरता, गद्य की न्यूनता, पात्रों की बहुलता तथा विदूषक की अविद्यमानता इसकी मुख्य विशेषताएँ हैं। इसके दो संस्करण हैं—प्रथम दामोदर मिश्र कृत, द्वितीय जिसमें ९ अंक हैं, मधुसूदन-रचित हैं।

दिङ्नाग—'कुन्दमाला' नाटक के रचयिता दिङ्नाग या धीरनाग (अथवा वीरनाग) पाँचवीं शती के बौद्ध दार्शनिक दिङ्नाग से सर्वथा भिन्न हैं। ये १००० ई० के लगभग हुए हैं। 'कुन्दमाला' की कथा 'उत्तररामचरित' के समान वैदेहीवनवास पर आश्रित है। इस पर उत्तर-रामचरित का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। यह नाटक 'उत्तररामचरित'-सा सरस तो नहीं परन्तु क्रियाशीलता में उससे बढ़कर है। शैली प्रसादपूर्ण है तथा करुण-रस की व्यंजना अच्छी हुई है।

धोयी—जयदेव ने 'गीतगोविन्द' (१-४) में धोयी को 'श्रुतिधर' लिखा है। ये गोवर्धनाचार्य तथा जयदेव के साथ राजा लक्ष्मणसेन (१११६ ई०) की सभा में विद्यमान थे। मन्दाक्रान्ता छन्द में लिखे हुए इनके 'पवनदूत' में १०४ पद्य हैं। मलयाचल में कुवलयवतीनाम्नी गन्धर्वकन्या दिग्विजयी लक्ष्मणसेन पर आसक्त हो गई और उसने उनके विदेश जाने पर पवन द्वारा संदेश भेजा। 'मेघदूत' का प्रभाव इस कृति पर स्पष्ट दिखाई देता है। काव्य में भावसौष्ठव तथा वाक्यविन्यास मनोरम हैं।

नारायणपण्डित—ये बंगाल के राजा धवलचन्द्र के आश्रित थे। इन्होंने १४वीं शती से पूर्व 'हितोपदेश' की रचना बहुत सीमा तक 'पंचतंत्र' के आधार पर की। कई श्लोक कामन्दकीय-नीतिसार से लिए गए हैं। हितोपदेश में नीति-सम्बन्धी रोचक गद्य-पद्यमयी कथाएँ हैं। भाषा सरल एवं सुबोध है।

पद्मगुप्त—ये धारानरेश मुंज तथा उनके पुत्र सिन्धुराज (नवसाहसांक) के सभा-कवि थे। इन्होंने 'नवसाहसांक-चरित' काव्य की रचना सं० १००५ ई० के आस-पास की थी। काव्य-का विषय कृति-नाम से ही अनुमित हो जाता है। उसमें सिन्धुराज और शशिप्रभा के विवाह आदि का उल्लेख है। ऐतिहासिक तथ्यों की दृष्टि से भी कृति महत्त्वपूर्ण है। कृति में १८ सर्ग तथा १९ प्रकार के छन्द हैं और कुल १५०० पद्य हैं। भाषा व शैली कालिदास से प्रभावित है। काव्य का माधुर्य तथा वर्णनकौशल प्रशस्य है।

बाणभट्ट—बाणभट्ट के पूर्वज अत्यन्त विद्वान् थे और सोनतीरवर्त्ती प्रीतिकूट नगर में रहते थे। बाण का जन्म वात्स्यायनगोत्री चित्रभानु के गृह में हुआ था। कुसंगति में पड़कर बाण पहले तो आवारा घूमते रहे परन्तु सँभलने पर महान विद्वान् तथा सम्राट् हर्षवर्धन के सभारत्न बन गये। बाण अपनी 'कादम्बरी' को पूर्ण नहीं कर पाये थे कि काल का निमंत्रण आ पहुँचा। उस अपूर्ण कृति को इनके पुत्र पुलिन या पुलिन्दभट्ट ने पूर्ण किया। कहते हैं बाण का विवाह मयूर कवि की पुत्री से हुआ था और उनकी एकाधिक सन्तान थी। बाण का स्फुरण सातवीं शती में हुआ। उनकी प्रख्यात कृतियाँ ये हैं—

१. 'चण्डीशतक' में देवी भगवती की प्रशंसा है।

२. 'हर्षचरित' के प्रथम दो उच्छ्वासों में कवि का आत्मचरित है और शेष छह में हर्ष का चरित। यह रचना बड़ी ओजस्विनी तथा समासबहुला है। संस्कृत की प्राचीनतम उपलब्ध आख्यायिका यही है।

३. 'कादम्बरी' इनकी उत्कृष्टतम कृति है। दो-तिहाई भाग (पूर्वार्द्ध) बाणकृत है और उत्तरार्द्ध पुलिन्दरचित। भाव, भाषा, कल्पना, वर्णन, रस—सभी दृष्टियों से कादम्बरी अनुपम है।

४. 'पार्वतीपरिणय' नाटक में शिव-पार्वती के विवाह का वर्णन है, कई लोग इसे किसी अन्य बाण की कृति कहते हैं।

५. 'मुकुटताडितक' नाटक को इनकी रचना कहा गया है परन्तु अभी तक प्राप्त नहीं हुआ।

किसी ने तो समग्र संसार को ही बाण का जूठा कहा है—'बाणोच्छिष्टं जगत् सर्वम्।' गोवर्द्धनाचार्य ने तो बाण को वाणी का अवतार ही माना है—

जाता शिखण्डिनी प्राग् यथा शिखण्डी तथावगच्छामि।
प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं बाणो वाणी बभूवेति॥

बिह्लण—अपने ऐतिहासिक महाकाव्य 'विक्रमांकदेवचरित' में बिह्लण ने स्वपरिचय भी प्रस्तुत किया है। बिह्लण ज्येष्ठकलश और नागदेवी के पुत्र तथा इष्टराय और आनन्द के भाई थे। आश्रयदाता की खोज में ये काश्मीर से निकलकर मथुरा, प्रयाग, काशी आदि होते हुए कल्याणनगर के चालुक्यवंशीय विक्रमादित्य षष्ठ (१०७६–११२७) की सभा में जा

पहुँचे। उक्त काव्य में कवि ने निज आश्रयदाता तथा उसके वंश का विस्तृत वर्णन किया है। १८ सर्गों के इस काव्य में माधुर्य एवं प्रसाद की भाषा प्रचुर है तथा वैदर्भी रीति प्रयुक्त की गई है। यह काव्य अनूठी सूक्तियों तथा वीर, शृङ्गार और करुण रस से पूर्ण है।

भट्टनारायण—इनका विशेष वृत्त अभी तक अविदित है। सुनते हैं, ये उन पाँच कनौजिया ब्राह्मणों में से थे जिन्हें वंगनरेश 'आदिशूर' ने वंग में वैदिकधर्म-प्रचारार्थ बुलाया था। आदिशूर ७१५ ई० में गौड़ाधिपति के पद पर आसीन हुए थे। इनका नाटक 'वेणीसंहार' ८०० ई० से पूर्व रचा जा चुका था। कवि की उक्त एकमात्र कृति का विषय है महाभारत का युद्ध। रचना में गौड़ी रीति तथा ओजगुण विशिष्ट रूप से मिलता है। नाटकीय सिद्धान्तों के प्रदर्शनार्थ नाटक अत्यन्तोपयोगी है।

भट्टि वा भट्टिस्वामी—'भट्टिकाव्य' (रावणवध) के रचयिता का विशेष वृत्त अज्ञात है। इस महाकाव्य के अन्तिम पद्य से ज्ञात होता है कि वलभी-नरेश श्रीधरसेन की सभा में कवि समादृत था। भट्टि का समय छठी शती का उत्तरार्द्ध तथा सप्तमी का पूर्वार्द्ध है।

उक्त महा-काव्य की रचना सरलता से व्याकरण सिखाने को की गई थी। इसके २२ सर्गों में १६२४ श्लोक हैं। इसके प्रकीर्ण, प्रसन्न, अलंकार और तिङन्त नामक चार भागों में व्याकरण तथा अलंकारों का सुन्दर निरूपण हुआ है। राम-कथा के साथ-साथ पाठक को व्याकरण-ज्ञान भी पूर्णतया हो जाता है। काव्यत्व की दृष्टि से भी ग्रन्थ उपादेय है। कवि ने इसके उद्देश्य के विषय में स्वयं लिखा है—

दीपतुल्यः प्रबन्धोऽयं शब्दलक्षणचक्षुषाम्।
हस्तादर्श इवान्धानां भवेद् व्याकरणाद् ऋते॥

और इस उद्देश्य की पूर्ति में कृति सफल हुई है।

भर्तृहरि—भर्तृहरि का नाम जितना प्रसिद्ध है, उतना ही जीवन-चरित अबुद्ध। कुछ लोग इन्हें महाराज विक्रमादित्य का अग्रज मानते हैं परन्तु अधिकतर विद्वान् इन्हें प्रख्यात वैयाकरण भर्तृहरि से अभिन्न कहते हैं। कुछ लोग इन्हें बौद्ध कहते हैं परन्तु इनकी कृतियाँ इन्हें अद्वैतवादी वैदिकधर्मी घोषित करती हैं। इनका समय सप्तमी शती कहा जाता है।

इनके तीन शतक प्रसिद्ध हैं—नीतिशतक, शृङ्गारशतक और वैराग्यशतक। भर्तृहरि ने जो पर्याप्त सांसारिक अनुभव प्राप्त किया था उसी को स्वकृतियों में अंकित कर अक्षय यश प्राप्त किया है। धार्मिक कृतियों में जेसे गीता प्रख्यात है, लौकिक कृतियों में वैसे ही इनकी शतकत्रयी।

भवभूति—इनके नाटकों की प्रस्तावना से विदित होता है कि इनका जन्म विदर्भ (बरार) के पद्मपुर नगर में उदुम्बरवंशी विप्र-परिवार में हुआ था। इनका परिवार कृष्णयजुर्वेद का अध्येता तथा सोमयाजी था। ये भट्टगोपाल के पौत्र तथा नीलकण्ठ के पुत्र थे। इनकी जननी का नाम जतुकर्णी था तथा इनका निजी नाम श्रीकण्ठ था। भवभूति इनका प्राज्ञ-प्रदत्त नाम था और ये ज्ञाननिधि के शिष्य थे। इनका जीवन-काल सम्भवतः ६५०-७५० ई० के मध्य में होगा। ये प्रख्यात मीमांसक कुमारिल भट्ट के भी शिष्य थे और दार्शनिक जगत् में भट्ट उम्बेक के नाम से विख्यात थे।

इनके तीन रूपक प्राप्त हुए हैं—महावीरचरित, मालतीमाधव और उत्तररामचरित। महावीरचरित के छह अंकों में श्रीराम का चरित प्रस्तुत किया गया है। नाटक वीररस-प्रधान है। मालतीमाधव दस अंकों का विशाल 'प्रकरण' है। इसमें मालती तथा माधव की काल्पनिक प्रेम-कथा को भावपूर्ण ढङ्ग से उपन्यस्त किया गया है। उत्तररामचरित में सीताजीवन का बहुत ही करुणाजनक वर्णन है। सात अंकों की यह रचना भवभूति की सर्वोत्कृष्ट कृति है। इसमें कवि ने राम के विलाप से निर्जीव पत्थरों तक को रुलाया है। कवि ने अपने कल्पना-बल से वाल्मीकीय

रामायण के कई प्रसंगों में परिवर्तन कर दिये हैं। इनकी कविता में भाव तथा भाषा का अतुल्य सामञ्जस्य है। भाषा में भावानुकूल परिवर्तन करने में ये विशेष निपुण थे। यों तो सभी रसों की अभिव्यक्ति में ये कुशल थे परन्तु करुणरस की व्यंजना में तो विशेष दक्ष थे। नाटककारों में कालिदास के पश्चात् इन्हीं का नाम लिया जाता है।

भारवि—'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार ये दाक्षिणात्य थे और पुलकेशी द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन (शासनकाल ६१५ ई०) के सभाकवि थे। कुछ विद्वान् इन्हें त्रावणकोरवासी बताते हैं। इनका समय ६०० ई० के लगभग है।

'किरातार्जुनीय' महाकाव्य ही इनकी एकमात्र प्राप्त कृति है। महाकाव्य के सभी लक्षण इसमें पूर्णतया विद्यमान हैं। इसका कथानक, जो महाभारत के वनपर्व पर आधृत है, इस प्रकार है—द्यूत में पराजित पाण्डव जब द्वैतवन में रह रहे थे तब उनके गुप्तचर ने दुर्योधन के सुव्यवस्थित शासन की स्तुति की। इस पर द्रौपदी और भीमसेन ने युधिष्ठिर को युद्धार्थ उत्तेजित किया परन्तु धर्मपुत्र ने प्रतिज्ञाभंग अनुचित माना। वेदव्यास की प्रेरणा से अर्जुन शिवजी से पाशुपतास्त्र प्राप्त करने को इन्द्रकील पर्वत पर पहुँचे। उनकी उग्र तपस्या को अप्सराएँ भी भग्न न कर सकीं। पीछे अर्जुन ने किरातवेशी शिव को अपनी शक्ति से प्रसन्न कर पाशुपतास्त्र की प्राप्ति की।

समग्र संस्कृत-वाङ्मय में किरातार्जुनीय-सा ओजःपूर्ण काव्य अन्य नहीं है। १८ सर्गों के इस महाकाव्य में प्रधान रस वीर है, अन्य रस गौण। अर्थगौरव अर्थात् थोड़े शब्दों में विशाल और गंभीर अर्थ को सन्निविष्ट कर देना भारवि की उल्लेख्य विशेषता है जिसके कारण 'भारवेरर्थगौरवम्' उक्ति प्रख्यात हो चुकी है। भारवि का काव्य आपाततः कठिन है परन्तु अर्थ व्यक्त होने पर वैसे ही आनन्ददायक सिद्ध होता है जैसे नारियल की जटा और खोल तोड़ देने पर उसका फल। इन्हीं गुणों के कारण महाकाव्यों की बृहत्त्रयी (किरात, माघ और नैषध) में 'किरातार्जुनीय' का स्थान प्रमुख है।

भास—प्रख्यात नाटककार भास के काल के सम्बन्ध में विद्वानों में ऐकमत्य नहीं है। कुछ इन्हें तीसरी शती ईसवी का बताते हैं तो कुछ ई० पू० दूसरी शती का। इनके तेरह नाटक प्राप्त हुए हैं जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

१. प्रतिमा नाटक—इसमें राम-वनवास से रावणवध तक की घटनाओं का उल्लेख है। केकय से लौटते हुए भरत देवकुल में दशरथ की प्रतिमा देखकर उनकी मृत्यु का अनुमान करते हैं। अतएव नाटक को उक्त नाम दिया गया है।

२. अभिषेक नाटक—राम के राज्याभिषेक का वृत्त है।

३. पञ्चरात्र—महाभारत से सम्बन्धित एक कल्पित घटना के आधार पर रचा गया है। दुर्योधन की शर्त के अनुसार द्रोण ने पाण्डवों को पाँच रातों में ढूँढ़ लिया और दुर्योधन ने उन्हें आधा राज्य दे दिया, यही कथानक-सार है।

४–८. मध्यमव्यायोग, दूतघटोत्कच, कर्णभार, दूतवाक्य, ऊरुभंग के कथानक महाभारत के विशिष्ट प्रसंगों से सम्बन्धित हैं।

९. बालचरित—का सम्बन्ध बालकृष्ण की लीलाओं से है।

१०. दरिद्रचारुदत्त—इसमें निर्धन परन्तु चरित्रवान् चारुदत्त और गुणग्राहिणी वेश्या वसन्तसेना के प्रणय का चित्रण है।

११. अविमारक—में एक प्राचीन आख्यायिका को नाटकीय रूप दिया गया है।

१२. प्रतिज्ञायौगन्धरायण—इसमें मन्त्री यौगन्धरायण की नीति से वत्सराज उदयन के कारामुक्त होने तथा अवन्तिकुमारी वासवदत्ता से उनके विवाह का वर्णन है।

१३. स्वप्नवासवदत्त—इसे 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' का उत्तरार्द्ध कहना उचित है। इसमें उदयन का मगधकुमारी पद्मावती से विवाह और वासवदत्ता से पुनर्मिलन वर्णित है। यही भास की सर्वोत्तम कृति है।

भास नवों रसों की व्यंजना में कुशल हैं। उनके चरित्र-चित्रण मनोवैज्ञानिक हैं और संवाद चुस्त तथा संक्षिप्त। सबसे बड़ी बात यह है कि ये नाटक अभिनय के लिए अत्यन्त उपयुक्त हैं।

भोज—सिंधुल के पुत्र परमार-वंशीय राजा भोज की राजधानी मालवा की धार या धारानगरी थी, जहाँ इन्होंने १०१८–१०६३ ई० तक शासन किया। पिता की मृत्यु के अनन्तर बालक भोज, राज्यलोलुप चाचा मुंज के हाथों कालकवलित होने को थे वे परन्तु भाग्यवश बच गये। ये बहुत उदार, विद्वान् तथा विद्वानों के आश्रयदाता थे। भोजप्रबन्ध आदि कई ग्रंथों में इनके गुणों की कथाएँ लिखित हैं।

शृङ्गारमंजरी (आख्यायिका), विद्याविनोद (काव्य), शिवदत्त (स्तोत्र), शिवतत्त्वरत्नकलिका (शिवस्तोत्रव्याख्या), सुभाषित, संगीतप्रकाशित, शृङ्गारप्रकाश, रामायणचम्पू और सरस्वती-कंठाभरण इनकी कृतियाँ कही जाती हैं।

मंखक—काश्मीरनरेश महाकवि मंखक प्रख्यात आलंकारिक रुय्यक के शिष्य थे और गुरु-शिष्य दोनों ही काश्मीरनरेश राजा जयसिंह (११२९–५० ई०) के सभापंडित थे। स्वर्गीय पिता की आज्ञानुसार ही मंखक ने 'श्रीकण्ठचरित' नामक २५ सर्गों के सुन्दर महाकाव्य की रचना की जिसमें शंकर और त्रिपुर का युद्ध वर्णित है। इनकी शैली कालिदासानुसारिणी है। प्राकृतिक दृश्यों, सरस भावों तथा प्रभावक कल्पनाओं को कोमल पदावली में व्यक्त करने में मंखक विशेष कुशल हैं।

मयूरभट्ट—ये बाणभट्ट के सगे सम्बन्धी थे और वाराणसी के पूर्व में रहते थे। बाण के समान ये भी हर्षवर्द्धन की सभा के कवि थे। इन्होंने अपने कुष्ठ रोग के निवारणार्थ स्रग्धरा वृत्त में 'सूर्यशतक' स्तोत्र का प्रणयन किया जो वस्तुतः प्रौढ़ और मार्मिक कृति है। ये सूर्यदेव के रथ, अश्व आदि उपकरणों के वर्णन में तथा अनुप्रासमयी भाषा के प्रयोग में विशेष सफल हुए हैं।

माघ—महाकवि माघ के पितामह सुप्रभदेव गुजरात के वर्मलात नामक राजा के मुख्यमंत्री थे और पिता दत्तक प्रकाण्ड विद्वान् तथा वदान्य। माघ का जन्म भीनमाल नगर में हुआ था और ये धारा के भोज से भिन्न किसी अन्य राजा भोज के मित्र थे। सुसम्पन्न कुल में उत्पन्न होने पर भी, कहते हैं इनकी मृत्यु अत्यधिक उदारता के कारण, दरिद्रता-वश हुई थी। ये सातवीं शती के उत्तरार्द्ध में विद्यमान थे।

ये अपने एकमात्र उपलब्ध महाकाव्य 'शिशुपाल-वध' के कारण अमर हो गये हैं। बीस सर्गों के इस महाकाव्य में युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण के हाथों शिशुपाल के वध का विस्तृत वृत्त वर्णित है। काव्य के अध्ययन से माघ की राजनीतिज्ञता और अलंकारप्रियता का अच्छा परिचय प्राप्त हो जाता है। माघ केवल रससिद्ध कवि ही नहीं, सर्वशास्त्रविद् गम्भीर विद्वान् भी थे। शास्त्रीय सिद्धान्तों का जितना सुन्दर सरस प्रतिपादन शिशुपालवध में उपलब्ध होता है, किसी अन्य काव्य में नहीं। माघ का पांडित्य सर्वतोमुखी है, वेद तथा दर्शन से लेकर राजनीति तक की विशेषज्ञता इनके ही काव्य में दिखाई देती है। नव-नव शब्दों के प्रयोग तथा व्याकरणा-नुरूप नव-नव शब्दरूपों के व्यवहार के कारण भी माघ विशेष प्रख्यात हैं।

किसी भारतीय आलोचक का मत है—

उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं, माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥

मुरारि—'अनर्घराघव' नाटक के रचयिता मुरारि मौद्गल्यगोत्री वर्धमानक तथा तन्तुमती के पुत्र थे। ये संभवतः माहिष्मती (दक्षिण में स्थित मान्धाता नगरी) के निवासी थे और ८०० ई०

के लगभग वर्द्धमान थे। 'अनर्घराघव' सात-अंकों का और भवभूति के महावीरचरित से प्रभावित नाटक है। उसमें ताड़कावध से लेकर रामराज्याभिषेक तक की घटनायें वर्णित हैं। कविता प्रौढ़ तथा पांडित्यपूर्ण है, वर्णन प्रशस्य हैं और शब्दराशि विशाल है। इनकी उपमाओं की मौलिकता देखकर ही कहा गया है—'मुरारेस्तृतीयः पन्थाः'।

रत्नाकर—काश्मीरी महाकवि रत्नाकर, अमृतभानु के पुत्र और काश्मीर-नरेश जयापीड (८०० ई०) के सभापण्डित थे। इनके 'हरविजय' महाकाव्य में ५० सर्ग तथा ४३२१ पद्य हैं। आकार के कारण ही नहीं, काव्योचित अन्य गुणों के कारण भी यह महाकाव्य संस्कृतवाङ्मय में विशिष्ट स्थान रखता है। यह महाकाव्य ललित, मधुर, प्रसादोपेत भाषा तथा चित्र, यमक और श्लेष के चमत्कारों से मंडित है।

इस महाकाव्य में शंकर द्वारा अन्धक असुर के वध का वर्णन है। रत्नाकर ने 'शिशुपालवध' को मात करने के लिए इस काव्य का प्रणयन किया था और उनका प्रयास व्यर्थ नहीं हुआ।

राजशेखर—ये 'महाराष्ट्रचूड़ामणि' कविवर अकालजलद के प्रपौत्र तथा दुर्दुक और शीलवती के पुत्र थे। ये स्वयं यायावर क्षत्रिय थे और इनकी पत्नी अवन्तिसुन्दरी चौहान, संस्कृत और प्राकृत की प्रकाण्ड विदुषी थीं। राजशेखर महाराष्ट्र, सम्भवतः विदर्भ के रहनेवाले थे और कन्नौज-नरेश महेन्द्रपाल के गुरु थे। अतः इनका काल नवीं शती का उत्तरार्ध तथा दशमी का पूर्वार्द्ध माना जाता है। राजशेखर धुरंधर विद्वान् थे और अपने को वाल्मीकि तथा भवभूति का अवतार समझते थे। ये भूगोल के बहुत बड़े पण्डित थे परन्तु इनका इस विषय का ग्रन्थ 'भुवनकोष' आज अप्राप्य है। ये संस्कृत, प्राकृत, पैशाची तथा अपभ्रंश के दिग्गज विद्वान् तथा लेखक थे।

इनके चार नाटक उपलब्ध हैं—कर्पूरमंजरी, विद्धशालभंजिका, बालरामायण और बालभारत अथवा प्रचण्डपाण्डव। कर्पूरमंजरी प्राकृत में लिखित एक 'सट्टक' है जिसमें चण्डपाल तथा राजकुमारी कर्पूरमंजरी का विवाह चित्रित किया गया है। विद्धशालभंजिका चार अङ्कों की प्रेमाख्यानात्मक नाटिका है। बालरामायण दश अङ्कों का महानाटक है। बालमहाभारत के दो ही अंक प्राप्त हैं। भाषा-कौशल तथा सुन्दर उक्तियों से युक्त होने पर भी इनके नाटक नाटकीय कला की दृष्टि से उत्कृष्ट नहीं माने जाते। इनका महाकाव्य 'हरविलास' तो आज उपलब्ध नहीं है परन्तु 'काव्यमीमांसा' इनका अलंकारविषयक प्रौढ़ ग्रन्थ है।

वत्सराज—कालिंजर-नरेश परमर्दिदेव (११६३-१२०३ ई०) के मन्त्री वत्सराज के छह रूपक उपलब्ध हुए हैं—१. किरातार्जुनीय-व्यायोग, २. कर्पूरचरित, ३. हास्यचूड़ामणि, ४. रुक्मिणीहरण, ५. त्रिपुरदाह और ६. समुद्रमंथन। किरातार्जुनीय-व्यायोग की रचना भारवि के किरातार्जुनीय के आधार पर हुई है। कर्पूरचरित 'भाण' में द्यूतकर कर्पूर ने स्वरोचक अनुभव वर्णित किये हैं। हास्यचूड़ामणि एकांकी प्रहसन है। रुक्मिणीहरण चतुरात्मक 'ईहामृग' है। त्रिपुरदाह चतुरंकी 'डिम' है जिसमें शिव द्वारा त्रिपुर असुर के पुर के विध्वंस का वर्णन है। समुद्रमंथन त्र्यंकी 'समवकार' है जिसमें समुद्रमंथन तथा लक्ष्मी-विष्णु के विवाह का चित्रण है। भास के पश्चात् वत्सराज ने ही अनेक प्रकार के रूपकों की रचना की है। इनके लघ्वाकार नाटकों की शैली सरल और सशक्त है। उनमें नाटकीय क्रियाशीलता और रोचकता प्रचुर है।

वाल्मीकि—कहते हैं वाल्मीकि पहले एक दस्यु थे परन्तु सत्संगति से ऋषि बन गये। वे भारत के आदिकवि माने जाते हैं और रामायण आदिकाव्य। श्रद्धालु लोगों का विश्वास है कि रामायण की रचना श्री राम के आविर्भाव से सहस्रों वर्ष पूर्व की जा चुकी थी परन्तु आधुनिक विद्वान् इसे आज से प्रायः ढाई सहस्र वर्ष पूर्व की कृति बताते हैं। अधिकतर विद्वान् इसके उत्तरकाण्ड को पूर्णतः और बालकाण्ड को अंशतः प्रक्षिप्त मानते हैं। रामायण में २४०० श्लोक हैं जिनमें बहुलता अनुष्टुभ् छन्द की है। उत्तरी-भारत, बंगाल तथा काश्मीर में रामायण के

जो संस्करण प्राप्त होते हैं उनमें पर्याप्त पाठभेद हैं। सच्चा कवि और उत्तम महाकाव्य कैसा होना चाहिए, यह हमें वाल्मीकि-रामायण से ही विदित होता है। सामान्य मनुष्य गृहस्थ बनता है परन्तु गार्हस्थ्य को सफल बनाना कितना दुष्कर है, इसे गृहस्थ ही जानते हैं। इसी उच्च उद्देश्य की सिद्धि का मार्ग वाल्मीकि ने दशरथ, राम, लक्ष्मण, सीता, भरत आदि के दिव्य चरित्रों से प्रशस्त किया है। किसी विद्वान् का यह विचार अत्युक्तियुक्त नहीं है कि संसार-भर के साहित्य में सदाचार और काव्यत्व का जितना सुन्दर मिश्रण वाल्मीकि-रामायण में हुआ है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं। रामायण करुणरस-प्रधान महाकाव्य है। इसमें बाह्य प्रकृति तथा मानवीय प्रकृति का अत्यन्त मनोरम चित्रण हुआ है। यह प्राचीन भारत की सभ्यता का उज्ज्वल दर्पण है। यही कारण है कि इसके उदात्त आदर्शों तथा पवित्र कथा के आधार पर परवर्ती असंख्य कवियों ने अपने काव्य, नाटक, चम्पू आदि की रचना की तथा इस पर तिलक, शृङ्गारतिलक, रामायणकूट, वाल्मीकितात्पर्यतरणि, विवेकतिलक आदि अनेक टीकाएँ लिखकर विद्वानों ने अपने प्रयास को सफल समझा।

विशाखदत्त—इनके पितामह वटेश्वरदत्त अथवा वत्सराज कहीं के सामन्त थे और पिता भास्करदत्त वा पृथु ने महाराज-पदवी प्राप्त की थी। विशाखदत्त राजनीति, दर्शन और ज्योतिष के विशेषज्ञ थे। ये वैदिकधर्मावलम्बी थे परन्तु साम्प्रदायिक कट्टरता से रहित थे। इन्होंने अपने प्रख्यात राजनीतिक तथा कूटनीतिक नाटक 'मुद्राराक्षस' की रचना छठी शती ईसवी के उत्तरार्द्ध में की थी। नाटक में चाणक्य का समग्र उद्योग इसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए है कि राक्षस को चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधान मन्त्री बना दिया जाय और अन्ततः वे उसमें सफल होते हैं। राजनीतिक चालों तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से नाटक विशेष महत्त्वपूर्ण है। विशाखदत्त की दूसरी रचना 'देवीचन्द्रगुप्त' के कुछ ही उद्धरण अन्य कृतियों में प्राप्त हुए हैं। उन्हीं के आधार पर चन्द्रगुप्त के अग्रज रामगुप्त की सत्ता ऐतिहासिकों ने स्वीकृत की है।

विष्णुशर्मा—महिलारोप्य के शासक अमरशक्ति अपने मूर्ख राजकुमारों को चतुर बनाने के लिए योग्य शिक्षक की खोज में थे। इस कार्य को विष्णुशर्मा नामक ब्राह्मण ने पंचतंत्र की रचना द्वारा छह मास में ही पूर्ण कर दिया। 'पंचतंत्र' का रचना-काल ३०० ई० के लगभग माना जाता है। छठी शती में इसका पहलवी भाषा में अनुवाद भी हो गया था। कदाचित् आरम्भ में इसके बारह भाग थे परन्तु वर्तमान में इसके पाँच भाग हैं—मित्रभेद, मित्र-सम्प्राप्ति, काकोलूकीय, लब्ध-प्रणाश, अपरीक्षितकारक। इस कथा-ग्रन्थ में कथाएँ गद्य में हैं और शिक्षाप्रद बातें पद्यों में। एक-एक मुख्य कथा के अन्तर्गत अनेक गौण कथाएँ दी गई हैं। सदाचार, व्यवहार और नीति के शिक्षार्थ यह कृति अत्यन्त उपयोगी है और यही कारण है कि अनेक विदेशी भाषाओं तक में अनूदित हो चुकी है।

वेंकटाध्वरि—ये मद्रास प्रान्त के श्रीवैष्णव थे। इन्होंने अपने 'विश्वगुणादर्शचम्पू' में मद्रास में अंग्रेजों के दुराचार का भी वर्णन किया है जिससे ये सत्रहवीं शती के मध्य के प्रतीत होते हैं। इनका यशोविस्तारक काव्य तो "लक्ष्मीसहस्र" है जिसको एक सहस्र ललित व भावपूर्ण पद्यों की रचना कहते हैं, इन्होंने एक ही रात में कर दी थी। काव्य में श्लेष तथा अन्यालंकारों की छटा अवलोकनीय है। इस अत्यन्त सरस व उत्प्रेक्षाबहुल रचना से कवि अमर हो गया है।

व्यास—व्यासजी का पूरा नाम कृष्णद्वैपायन व्यास था। ये पराशर और सत्यवती के पुत्र थे। सुनते हैं, रंग से कृष्ण होने के कारण कृष्ण, द्वीप में उत्पन्न होने के कारण द्वैपायन तथा वैदिक मन्त्रों को वर्तमान व्यवस्थित रूप देने के कारण ये व्यास कहलाए। भारतीय परंपरा इन्हें महाभारत, १८ पुराणों तथा ब्रह्मसूत्रों का कर्ता मानती है, परन्तु आधुनिक विद्वान् महाभारत को न एककर्तृक मानते हैं न एककालीन। उनका मत है कि महाभारत के विभिन्न अंशों की रचना अनेक विद्वानों द्वारा समय-समय पर होती रही और उसे वर्तमान रूप ३२० ई० पू० तथा ५० ई० के मध्य में किसी समय प्राप्त हुआ।

अनुसन्धायकों का मत है कि पहले महाभारत का नाम 'जय' था और उसमें ८८०० श्लोक थे। पीछे इसके परिवर्द्धित रूप का नाम 'भारत' पड़ा और श्लोकसंख्या २४००० हो गई। अन्त में जब सौति ने अनेक प्रसंग और बढ़ाए तब इसका नाम 'महाभारत' हो गया और श्लोक-संख्या एक लाख के लगभग तक जा पहुँची। अस्तु, महाभारत संसार का बृहत्तम काव्य माना जाता है परन्तु इसका वास्तविक महत्त्व बृहदाकारता के कारण न होकर एक विश्वकोश-सा होने के कारण है। स्वयं महाभारत में लिखा है कि यह सर्वप्रधान काव्य, समग्र दर्शन-सार, स्मृति, इतिहास, चरित्र-चित्रण की खान तथा पंचम वेद है। यह भी कहा गया है कि—

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥

भाव यह कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-विषयक जितनी जानकारी इसमें है उतनी अन्यत्र नहीं।

शंकराचार्य—स्वामी शंकराचार्य (७८८–८२० ई०) दक्षिण के नाम्बूद्री ब्राह्मण थे। ये प्रकाण्ड पण्डित और दिग्गज दार्शनिक थे। इन्होंने अल्पावस्था में ही संन्यास लेकर ब्राह्मण-धर्म के पुनरुत्थान में महनीय सहयोग दिया। आज इनकी विद्वत्ता की संसार मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करता है। इनके नाम से बहुत से ग्रन्थ प्रचलित हैं परन्तु निम्नलिखित ग्रन्थों के शंकर-कृत होने में सन्देह नहीं किया जाता—ब्रह्मसूत्र-भाष्य, गीता-भाष्य, उपनिषदों के भाष्य, उपदेश-साहस्री, आत्मबोध, हस्तामलक। यद्यपि इनकी विश्वव्यापी कीर्ति के आधार इनके दार्शनिक ग्रन्थ ही हैं तथापि अनेक देवी-देवताओं के जो स्तोत्र इन्होंने लिखे हैं वे अत्यन्त सरस हैं और पाठकों को भक्तिरस में तन्मय करने में सर्वथा समर्थ है। इनकी कविता का परम माधुर्य 'आनन्दलहरी' में लिया जा सकता है जो भाव, भाषा, रस, अलंकार, साहित्य, तंत्र आदि सभी दृष्टियों से अपूर्व है।

शक्तिभद्र—मालाबार जनश्रुति शक्तिभद्र को स्वामी शंकराचार्य (७८८–८२० ई०) का शिष्य बताती है, अतः इन्हें नवीं शती के प्रारम्भ का कवि माना जा सकता है। इनका 'आश्चर्य-चूडामणि' नाटक उत्तररामचरित के बाद सर्वोत्तम रामनाटक समझा जाता है। नाटक अद्भुत रस-प्रधान है और सरल, आडंबररहित भाषा में लिखा गया है।

शिवस्वामी—काश्मीरी महाकवि शिवस्वामी आनन्दवर्धन तथा रत्नाकर के समकालीन थे और विख्यात काश्मीरनरेश अवन्तिवर्मा (८५५–८८४ ई०) के शासनकाल में विद्यमान थे। शैव होते हुए भी इन्होंने बौद्धाचार्य चन्द्रमित्र की प्रेरणा से बौद्ध-साहित्य में प्रसिद्ध कप्फिण के आख्यान के आधार पर एक सुन्दर महाकाव्य 'कप्फिणाभ्युदयम्' की रचना की। इसमें दाक्षिणात्यनरेश कप्फिण द्वारा श्रावस्ती-नरेश प्रसेनजित् की पराजय तथा अन्त में कप्फिण के बुद्ध की शरण में जाने का उल्लेख है। शिवस्वामी ने अपने को 'यमककवि' कहा है और उनके काव्य में यमक, उपमा, उत्प्रेक्षा तथा श्लेष की अद्भुत छटा द्रष्टव्य है। निस्सन्देह यह काव्य संस्कृत वाङ्मय का एक उज्ज्वल रत्न है।

शूद्रक—महाराज विक्रमादित्य के समान ही महाराज शूद्रक के विषय में अनेक दन्तकथाएँ भारत में प्रचलित हैं। इनका उल्लेख कादम्बरी, कथासरित्सागर आदि अनेक ग्रन्थों में हुआ है। 'मृच्छकटिक' में इन्होंने अपना जो परिचय दिया है उससे ये शिवजी के कृपापात्र, अश्वमेधयाजी, युद्धकुशल, वेदज्ञ, हाथियों से बाहुयुद्ध करने के प्रेमी विदित होते हैं। शतायु हो जाने पर पुत्र को सिंहासनासीन कर इन्होंने अग्निप्रवेश द्वारा प्राणत्याग किया था।

इन्होंने 'मृच्छकटिक' की रचना पाँचवीं शती में की थी। इस 'प्रकरण' के दस अंकों में उज्जयिनी की प्रख्यात वेश्या वसन्तसेना और उदारमना सेठ चारुदत्त के प्रेम का सुन्दर वर्णन

किया गया है। कृति का प्रेमि-प्रेमविषयक अंश भास-कृत 'दरिद्रचारुदत्त' से बहुत अधिक प्रभावित है परन्तु राजनीतिक भाग कवि की निजी सम्पदा है। 'मृच्छकटिक' की सबसे बड़ी विशेषता उसकी प्राकृत भाषा है। जितनी प्राकृत इस नाटक में प्रयुक्त हुई है उतनी अन्य किसी में भी नहीं। नाटक में पात्रों का चरित्र तथा समाज का चित्र सरल शैली में सम्यक् चित्रित किया गया है। नाटक का प्रधान रस शृङ्गार है।

श्रीहर्ष—श्रीहर्ष का जन्म हीर पण्डित और मामल्लदेवी के गृह में हुआ था। हीर पण्डित कान्यकुब्जेश्वर जयचंद्र के पिता विजयचंद्र की सभा के प्रधान पण्डित थे परन्तु संयोगवश मैथिल नैयायिक उदयनाचार्य से शास्त्रार्थ में पराजित हो गये थे। मरणासन्न हीर ने पुत्र को कहा—'यदि तुम सुपुत्र हो तो मेरे विजेता को पराजित करना' श्रीहर्ष ने गंगातट पर चिन्तामणि मंत्र का वर्ष-भर जप किया और सफलमनोरथ हुए। श्रीहर्ष जयचंद्र की सभा के रत्न तो थे ही, सम्भवतः विजयचन्द्र की सभा को भी सुभूषित करते रहे होंगे, क्योंकि उन्होंने 'विजयप्रशस्ति' उन्हीं के नाम पर रची है। ये रससिद्ध कवि ही न थे, प्रकाण्ड पण्डित भी थे, जैसा कि इनके 'खण्डनखण्डखाद्य' से सिद्ध होता है। इनका सिद्ध योगी होना नैषधकाव्य के अन्त्य श्लोक से सिद्ध होता है—

यः साक्षात् कुरुते समाधिषु परं ब्रह्म प्रमोदार्णवम्।

इनका आविर्भावकाल बारहवीं शती का उत्तरार्द्ध है।

श्रीहर्ष ने अपनी कृतियों का उल्लेख 'नैषध' में इस क्रम से किया है—(१) स्थैर्यविचारण-प्रकरण (दर्शन), (२) विजयप्रशस्ति, (३) खण्डनखण्डखाद्य (वेदान्त), (४) गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति, (५) अर्णववर्णन, (६) छिन्दप्रशस्ति, (७) शिवशक्तिसिद्धि, (८) नवसाहसांकचरितचम्पू, (९) नैषधीयचरित। सुविख्यात 'नैषधीय चरित' में २२ सर्ग हैं और २८३० श्लोक। इसमें नल-दमयन्ती की कथा का सरस तथा सुविस्तृत वर्णन है। नैषध में वैदग्ध्य तथा पाण्डित्य का अद्भुत मिश्रण है। वक्रोक्ति के प्रयोग में श्रीहर्ष विशेष कुशल हैं। भाव-पक्ष तथा कला-पक्ष दोनों की अभिव्यक्ति नैषधकाव्य में मार्मिक ढंग से की गई है। किसी आलोचक का यह पद्य नैषध के महाभाष्य का सच्चा निदर्शक है—

तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः॥

सुबन्धु—अविदित-वृत्त सुबन्धु अपने एकमात्र गद्यकाव्य 'वासवदत्ता' से अक्षय कीर्ति के भागी बने हैं। इस काव्य की कथा का वासवदत्ता की प्राचीन कथा से राई-रत्ती मात्र का भी सम्बन्ध नहीं है। पूर्ण कथानक कवि के उर्वर मस्तिष्क की कल्पना है। अनुमानतः इसकी रचना सातवीं शती के प्रथम चरण में की गई थी।

अति संक्षेप में कथा यह है कि राजकुमार चिन्तामणि स्वप्न में एक सुन्दर कन्या को देखकर मुग्ध हो जाता है और जगने पर मित्र मकरन्द के साथ उसकी खोज में निकल पड़ता है। उधर कुसुमपुर की राजकुमारी वासवदत्ता भी स्वप्न में एक सुरूप युवक को देखकर स्वयंवर में आये युवकों का विचार त्याग देती है। कई विघ्न-बाधाओं के अनन्तर प्रेमियों का सुखद मिलन हो जाता है। 'वासवदत्ता' एक वर्णनबहुल आख्यायिका है जिसमें उपमा, उत्प्रेक्षा और विरोधाभास की बहुलता है परन्तु सभंग या अभंग श्लेष तो प्रतिपद पाया जाता है जहाँ कवि की कल्पना प्रशंसनीय है, वहाँ श्लेष की 'अति' तथा तज्जनित दुरूहता अरुचिकर हो गई है।

सोड्ढल—ये गुजरात के लाटप्रदेश के निवासी थे और कोंकणाधीश मुम्मुणिराज (१०६० ई०) के आश्रित थे। इनका 'उदयसुन्दरीकथा' चम्पूकाव्य है जिसमें प्रतिष्ठान-नरेश मलयवाहन और नागनृप शिखण्डतिलक की पुत्री उदयसुन्दरी के विवाह का वर्णन है। कृति बाण के हर्षचरित

से प्रभावित है और उसमें भाषा का माधुर्य और लालित्य प्रशंसनीय है। लेखक कमनीय कल्पनाएँ करने में कुशल हैं।

सोमदेव सूरि—ये जैनकवि राष्ट्रकूटनरेश कृष्णराजदेव के समकालीन थे। ९५८ ई० में रचित इनके 'यशस्तिलकचम्पू' में अवन्ति-नरेश यशोधर की कथा का वर्णन है। रानी की सकपट चालों से राजा की विरक्ति, वध तथा पुनर्जन्म की घटनाओं का रोचक उल्लेख है। जैनधर्म के पालन के महत्त्व को सम्यक् व्यक्त किया गया है। इसमें अनेक अज्ञात काव्यकारों और कृतियों का उल्लेख है, अतएव साहित्य के इतिहास के विचार से भी कृति महत्त्वपूर्ण है।

हरिचन्द—जैनकवियों में हरिचन्द का नाम विशेष उल्लेख्य है। ये कायस्थ अद्रिदेव तथा रथ्यादेवी के तनुज थे। सम्भवतः इनका समय ग्यारहवीं शती है। इनके 'धर्मशर्माभ्युदय' नामक महाकाव्य में पन्द्रहवें तीर्थंकर धर्मनाथजी का चरित्र वर्णित है। वैदर्भी रीति में उपनिबद्ध इस काव्य की भाषा अतिसुन्दर और अलंकृत है। जैनसाहित्य में २१ सर्गों के इस महाकाव्य का वही स्थान है जो नैषध और शिशुपालवध का ब्राह्मण-साहित्य में।

हर्षवर्धन—ये थानेसर के महाराज प्रभाकरवर्द्धन के द्वितीय पुत्र थे और अग्रज राज्यवर्धन के पश्चात् सिंहासनासीन हुए थे। इन्होंने ६०६–६४८ तक शासन किया था। बाणभट्ट, मयूरभट्ट और दिवाकर इन्हीं के सभापंडित थे। इनके तीन रूपक मिलते हैं—रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानन्द। प्रथम दो संस्कृत की प्राचीनतम नाटिकाएँ हैं और वत्सराज उदयन की प्रणयकथाओं के आधार पर प्रणीत हैं। नागानन्द का आधार एक बौद्ध कथानक है जिसमें नागों को गरुड़ से बचाने के लिए जीमूतवाहन आत्मसमर्पण कर देता है। इस उच्चादर्श के कारण नागानन्द विद्वत्समाज में विशेष सम्मानित है।

हेमचन्द्र—प्रसिद्ध जैनमुनि हेमचन्द्र का जन्म ढंढुक में १०८८ ई० में हुआ। इनके पिता का नाम छछिगश्रेणी और माता का पाहिनी था। इनकी माता ने इन्हें पाँच वर्ष के वय में ही देवेन्द्र सूरि को सौंप दिया और ये विद्याध्ययन में संलग्न हो गये। ये संस्कृत और प्राकृत वाङ्मय के विभिन्न विभागों में ऐसे निष्णात हो गये कि 'कलिकालसर्वज्ञ' कहाने लगे। इनके संस्कृत-प्राकृत ग्रन्थों की पङ्क्तिसंख्या साढ़े तीन करोड़ है। ये गुजराज में राजा जयसिंह और कुमारपाल की सभा में रहे थे और इनकी प्रेरणा से जैनधर्म राज्यधर्म बन गया था। इन्होंने अनशन-समाधि से ११७३ ई० में प्राणत्याग किया। इनके 'कुमारपालचरित' में २८ सर्ग हैं—पहले २० संस्कृत में और अन्तिम ८ प्राकृत में। 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित' और 'स्थविरावली-चरित' में जैन सन्तों की जीवनियाँ हैं। कुछ अन्य कृतियाँ ये हैं—काव्यानुशासन, छन्दोऽनु-शासन, देशीनाममाला, अभिधानचिन्तामणि, अनेकार्थसंग्रह, निघंटुशेष, शब्दानुशासन, योगशास्त्र।

षष्ठ परिशिष्ट

न्याय

संस्कृत का शब्द 'न्याय' प्रक्रिया, रीति, नियम, योजना, औचित्य, विधि, समता, धार्मिकता, अभियोग, निर्णय, नीति, तर्क आदि अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है। प्रस्तुत प्रसंग में 'न्याय' से अभिप्राय उन आभाणकों या लोकोक्तियों का है जिनका प्रयोग वर्ण्य-विषय के स्पष्टीकरण के लिए दृष्टान्त-रूप में किया जाता है। नीचे कुछ ऐसे न्यायों के अर्थ और प्रयोग अकारादि क्रम से प्रस्तुत किये जा रहे हैं जिनका प्रयोग प्रायः संस्कृत-ग्रन्थों में और यदा-कदा हिन्दी रचनाओं में भी दृष्टिगोचर होता है। आशा है, पाठक इनका आशय हृदयंगम कर इनके उचित प्रयोग से स्व-निबन्धों तथा संवादों को रोचक तथा विशद बनाने में समर्थ हो सकेंगे।

१. अजातपुत्रनामोत्कीर्तनन्याय—इस न्याय का अर्थ है, पुत्रजन्म से पहले ही उसका नाम घोषित करने की कहावत। बच्चे की उत्पत्ति से पूर्व तो यह जानना भी दुष्कर होता है कि पुत्र होगा वा पुत्री। इसलिए पहले ही उसका नाम बताते फिरना बहुत बड़ी मूर्खता माना जाता है। इसी प्रकार असिद्ध कार्य से सम्बन्धित भावी बातों की घोषणा करना अन्याय्य होता है। यथा—'यद्यपीदानीं यावत् परीक्षापरिणामोऽपि न घोषितस्तथापि रामेणाग्रिमकक्षायाः पुस्तकानि क्रीतानि। अजातपुत्रनामोत्कीर्तनं होतत्।'

२. अन्धगजन्याय—अन्धगजन्याय अर्थात् अंधों और हाथी का दृष्टान्त। कुछ अंधों के मन में हाथी का आकार-प्रकार जानने की इच्छा उत्पन्न हुई। एक ने उसकी सूँड छुई और समझा कि वह सर्पवत् होता है। दूसरे ने उसकी टाँग टटोली और सोचा कि वह स्तम्भ-समान होता है। इसी प्रकार जहाँ वस्तु के आंशिक ज्ञान से उसके पूर्ण स्वरूप का मिथ्या अनुमान किया जाता है, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। जैसे—

तदेतदद्वयं ब्रह्म निर्विकारं कुबुद्धिभिः।
जात्यन्धगजदृष्ट्येव कोटिशः परिकल्प्यते ॥ (नैष्कर्म्यसिद्धिः २।९३)

३. अन्धचटकन्याय—अन्धचटकन्याय अर्थात् प्रज्ञाचक्षु द्वारा चिड़िया के पकड़े जाने की कहावत। यह न्याय घुणाक्षरन्याय का पर्याय है। अन्धा वैसे तो किसी चिड़िया को नहीं पकड़ सकता, संयोगवश उसके हाथ आ जाए तो बात दूसरी है। इसी प्रकार आकस्मिक घटनाओं के लिए इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—'सम्यग् जानामि कृष्णचन्द्रं, नासौ मेधावी न च परिश्रमी, यत्तु स उच्चपदं प्राप्तवान् तत्तु अन्धचटकन्यायेनैव।'

४. अन्धदर्पणन्याय—इस न्याय का अर्थ है, अन्धे को दर्पण दिखाने की कहावत। दर्पण चक्षुष्मान् के लिए ही उपयोगी है, प्रज्ञाचक्षु के लिए नहीं। किसी के लिए वस्तुविशेष की व्यर्थता सूचित करने के लिए यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति ॥ (हितोपदेश ३।११५)

५. अन्धपरम्परान्याय—अन्धपरम्परान्याय अर्थात् अन्धे के पीछे अन्धों के चलने की कहावत। इस न्याय का प्रयोग वहाँ किया जाता है जहाँ सामान्य जन अग्रगामी का अनुगमन बिना सोचे-विचारे ही करने लगते हैं और परिणाम-रूप में दुःख उठाते हैं। हिन्दी के 'भेड़िया-धँसान'

तथा 'भेड़चाल' मुहावरे इसी के समानार्थक हैं। उदाहरण—'विरलविरला एव जना जगति सविवेकमाचरन्ति प्रायस्त्वन्धपरम्परैवावलोक्यते।'

६. **अरण्यरोदनन्याय**—उक्त न्याय का अर्थ है, निर्जन में रोने की कहावत। ग्राम, नगर आदि में रोनेवाले व्यक्ति से उसका कष्ट पूछा जाता है और उसे नष्ट करने का उद्योग भी किया जाता है। परन्तु सुनसान स्थान में रोना तो सर्वथा व्यर्थ है। इसी प्रकार किसी व्यर्थ कार्य के लिए या किसी क्रूर के समक्ष प्रार्थना के समय पर यह न्याय होता है। यथा—'अरण्यरोदनमेव धनाढ्येभ्यः साहाय्ययाचनं प्रायशो भवति।'

७. **अरुन्धतीप्रदर्शनन्याय**—अरुन्धतीप्रदर्शन न्याय अर्थात् अरुन्धती नक्षत्र दिखाने का न्याय। इसकी व्याख्या स्वामी शंकराचार्य ने इस प्रकार की है—'अरुन्धतीं दिदर्शयिषुस्तत्समीपस्थां स्थूलां तारामुख्यां प्रथममरुन्धतीति ग्राहयित्वा, तां प्रत्याख्याय पश्चादरुन्धतीमेव ग्राहयति।' अर्थात् किसी को अरुन्धती दिखाने का इच्छुक व्यक्ति पहले उसके समीपवर्ती किसी बड़े नक्षत्र को ही अरुन्धती बताता है और उसके बाद वास्तविक अरुन्धती को दिखाता है जिसका प्रकाश मन्द होता है। इस प्रकार जहाँ किसी सूक्ष्म वस्तु के स्पष्टीकरणार्थ पहले किसी स्थूल वस्तु को बताकर निषेध किया जाता है, वहाँ 'अरुन्धतीनक्षत्रन्याय' का प्रयोग होता है। यथा—'अयमेव सूर्यो देव इति पूर्वमुद्दिश्य तत्पश्चात्—वास्तविको देवस्तदन्तर्वर्तीति अरुन्धती-प्रदर्शनन्यायेन गुरुः शिष्यं ज्ञापयति।'

८. **अशोकवनिकान्याय**—अशोकवनिकान्याय अर्थात् अशोक-नामक वृक्षों की वाटिका का न्याय। रावण ने अपहृत सीता को अशोकवाटिका में रखा था परन्तु यह कहना कठिन है कि अन्यत्र कहीं न रखकर वहीं क्यों रखा? इसी प्रकार जहाँ किसी कार्य की निष्पत्ति के अनेक समान उपायों में से किसी एक का प्रयोग किया जाए, परन्तु यह न बताया जा सके कि अन्यों को छोड़ उसी को क्यों प्रयुक्त किया गया है, वहाँ 'अशोकवनिकान्याय' व्यवहृत होता है। जैसे—'प्रायो निर्विवेकाः स्वामिनः स्वसेवकान् अशोकवनिकान्यायेन विविधकार्येषु प्रवर्तयन्ति।'

९. **अश्मलोष्टन्याय**—अश्मलोष्टन्याय अर्थात् पत्थर और ढेले का न्याय। जिस प्रकार मिट्टी का ढेला रूई से कठोर होता है और पत्थर से कोमल, उसी प्रकार कोई मनुष्य अपने से छोटों की अपेक्षा तो महान् होता है और बड़ों की अपेक्षा क्षुद्र। उदाहरण—'अस्मिन् संसारे सर्वं सापेक्षमश्मलोष्टवत्, न हि किमपि अत्यन्तमुत्कृष्टमपकृष्टं वा कथयितुं पार्यते।'

१०. **अहिकुण्डलन्याय**—अहिकुण्डलन्याय अर्थात् साँप की कुण्डलाकार स्थिति का न्याय। साँप स्वभावतः कुण्डली मार कर बैठता है, इसके लिए उसे प्रयास नहीं करना पड़ता। इसी प्रकार जहाँ किसी पदार्थ के स्वाभाविक धर्म का उल्लेख किया जाता है, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'अहिकुण्डलवत् स्वाभाविकं हि कवेः काव्यं न हि तत्र तस्य महाप्रयासस्यापेक्षा।'

११. **आकाशमुष्टिहननन्याय**—इस न्याय का शब्दार्थ है आकाश को मुक्के से पीटने की कहावत। जैसे आकाश को मुक्कों से पीटना असंभव है, वैसे ही किसी को असंभव कार्य करते देख इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है। यथा—'आकाशमुष्टिहननमेव तवायमुद्योगो प्रधानमन्त्रिपदप्राप्तये।'

१२. **आम्रसेकपितृतर्पणन्याय**—इस न्याय का अर्थ है, आम सींचने और पितरों के तर्पण करने की कहावत। आशय वही है जो हिन्दी की कहावत 'एक पंथ दो काज' का है। जहाँ एक क्रिया से दो प्रयोजनों की सिद्धि अभीष्ट हो वहाँ इस न्याय का प्रयोग न्याय्य है। यथा—'संसत्सदस्या आम्रसेकपितृतर्पणन्यायेन राष्ट्रसेवामपि कुर्वन्ति, पर्याप्तं वेतनं चापि प्राप्नुवन्ति।'

१३. आशामोदकतृप्तन्याय—इस न्याय का अर्थ है—प्रत्याशित लड्डुओं से तृप्त मनुष्य का दृष्टान्त। लड्डू खाने पर ही प्रसन्नता का प्रकाशन उचित है। जो मनुष्य काल्पनिक लड्डुओं से तृप्ति का अनुभव कर मुदित होता है, वह सयाना नहीं माना जाता। सो वास्तविक और काल्पनिक प्रसन्नता में भेद करना ही समीचीन है। जैसे—को नाम व्यवहारपटुर्मानवो जगत्याशामोदकैस्तृप्तो दृश्यते।

१४. इषुकारन्याय—इस न्याय का अर्थ है, बाण बनानेवाले का दृष्टान्त। यह न्याय महाभारत के शान्तिपर्व के १७८वें अध्याय के निम्नलिखित श्लोक पर आधृत है—'इषुकारो नरः कश्चिदिषावासक्तमानसः। समीपेनापि गच्छन्तं राजानं नावबुद्धवान्।' भाव यह कि एक बाणनिर्माता बाण-निर्माण में इतना निमग्न था कि वह पास से जाते हुए राजा को भी न देख सका। इसी प्रकार की एकाग्रचित्तता के लिए यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'विद्याव्रतः स्वग्रन्थाध्ययन इत्थं निमग्न आसीत् यदिषुकारन्यायेन कक्षायामागतमध्यापकमपि न ज्ञातवान्।'

१५. इषुवेगक्षयन्याय:—इस न्याय का अर्थ है—बाणवेग के नाश का दृष्टान्त। धनुष से फेंके हुए बाण की गति क्रमशः क्षीण होती जाती है और अन्ततः समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार जहाँ किसी पदार्थ में कारणवशात् जात-क्रिया आदि का क्रमशः ह्रास और अन्त में विनाश हो जाता है, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है, यथा—'इयं सृष्टिरिषुवेगक्षयन्यायेन कालेन स्वयमेव प्रलयमुपैति।'

१६. उत्खातदंष्ट्रोरगन्याय:—उक्त न्याय का अर्थ है, निर्दन्त किये हुए सर्प का दृष्टान्त। दाँत उखाड़ देने पर सर्प की भयंकरता नष्ट हो जाती है। इसी प्रकार जहाँ किसी घातक पदार्थ के अनिष्टकर अङ्ग का निवारण कर उसकी घातकता नष्ट कर दी जाती है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। यथा—'इन्द्रप्रदत्तशक्त्या घटोत्कचं हत्वा कर्णः पाण्डवेभ्य उत्खातदंष्ट्रोरगवत् निरुपद्रवः संजातः।'

१७. उष्ट्रलगुडन्याय:—उक्त न्याय का अर्थ है—ऊँट और लकड़ी का दृष्टान्त। ऊँट पर लकड़ी का भार प्रायः लादा जाता है। आवश्यकता के समय उन्हीं में से एक लकड़ी निकालकर (उष्ट्रचालक) ऊँट को पीट भी देता है। इसी प्रकार जहाँ विरोधी की युक्ति से ही विरोधी की उक्ति का खंडन कर दिया जाये अथवा वैरियों के उपकरण से ही वैरियों का नाश कर दिया जाये, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। जैसे—'शक्तो गृहस्थ उष्ट्रलगुडन्यायेन चौरशस्त्रेणैव चौरं गतासुमकरोत्।'

१८. ऊषरवृष्टिन्याय:—इस न्याय का अर्थ है, बंजर में वर्षा का दृष्टान्त। भूमि उर्वरा हो तो वृष्टि सफल होती है। ऊषर में बरसना न बरसना बराबर है। इसी प्रकार जहाँ कोई कार्य सर्वथा बेकार हो वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'इमाः सुधास्यन्दिन्यः सूक्तयोऽरसिकेभ्य ऊषरवृष्टिवन्निष्फलाः।'

१९. एकवृन्तगतफलद्वयन्याय:—उक्त न्याय का अर्थ है, एक डंठल पर लगे दो फलों की उक्ति। जैसे एक डंठल पर कभी-कभी दो भी फल लग जाते हैं, वैसे ही जब श्लेष आदि के बल से कोई शब्द दो अर्थ देता है या एक क्रिया फलयुग्म की साधिका होती है, तब यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'एकवृन्तगतफलद्वयन्यायेन देवदत्त आङ्ग्लदेशमप्यपश्यद् भारतीयबालचराणां प्रतिनिधित्वमपि चाकरोत्॥'

२०. कदंबकोरक(गोलक)न्याय:—कदंबकोरकन्याय अर्थात् कदंब की कलियों का न्याय। कहा जाता है कि कदंब की सब कलियाँ एक साथ विकसित हो उठती हैं। इसी प्रकार जहाँ

कुछ व्यक्ति एकदम उठ खड़े हों या सब लोग एक साथ ही कार्य में जुट जायँ वहाँ इस न्याय का व्यवहार किया जाता है। यथा—'श्रीकृष्णचन्द्रमवलोक्य कदम्बकोरकन्यायेन प्रहृष्टा बभूवुः पाण्डवाः।'

२१. **कफोणिगुडन्याय** :—उक्त न्याय का शब्दार्थ है कोहनी और गुड़ की कहावत। यदि किसी की कोहनी पर कुछ गुड़ लगा दिया जाय और उसे जिह्वा से चाटने को कहा जाय तो वह अपने उद्योग में कदापि सफल न होने के कारण उपहासास्पद बनेगा। इसी प्रकार इस उक्ति का प्रयोग तरसानेवाली परन्तु अलभ्य वस्तु के विषय में होता है। यथा—'सरोवरे पतितं प्रतिबिम्बं वीक्ष्य कफोणिगुडन्यायेन चन्द्रग्रहणाय प्रयतते शिशुः।'

२२. **कम्बलनिर्णेजनन्याय** :—अर्थ है—कम्बल स्वच्छ करने का दृष्टान्त। कई बार मनुष्य कम्बल की मिट्टी झाड़ने के लिए उसे अपने पाँव पर झटकते हैं। इस एक क्रिया के दो फल होते हैं। कम्बल भी स्वच्छ हो जाता है और पाँव भी झाड़े जाते हैं। इस प्रकार यह न्याय हिन्दी के 'एक पंथ दो काज' का समानार्थक है। उदाहरण—'ह्यः सायमहं भ्रमणार्थं नागच्छम्, प्रदर्शनीक्षेत्र एवाभ्रमम् एवं कम्बलनिर्णेजनन्यायेन भ्रमणमपि जातं, नवज्ञानञ्चाप्युपलब्धम्।'

२३. **करिबृंहिन्याय** :—इस न्याय का अर्थ है—हाथी की चिग्घाड़ का न्याय। प्रश्न होता है, 'चिग्घाड़' के साथ 'हाथी' शब्द के प्रयोग की आवश्यकता नहीं क्योंकि 'चिग्घाड़' शब्द हाथी की चीख के लिए ही प्रयुक्त होता है। उत्तर यह है कि ऐसे वाक्यों में फ़ालतू प्रतीत होने वाला शब्द विशिष्टता का सूचक होता है। यहाँ 'करि' शब्द मस्त या प्रबल हाथी के लिए व्यवहृत हुआ है। ऐसे ही अवसरों पर जहाँ कोई शब्द व्यर्थ प्रतीत होता हुआ भी विशिष्टतासूचक हो, यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'किं कवेस्तस्य काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः। परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः॥ इति। अस्मिन् श्लोके 'कवेः' इति पदं करिबृंहितन्यायेन प्रयुक्तम्।'

२४. **काकतालीयन्याय** :—काकतालीयन्याय अर्थात् कौए और ताड़ के फल की कहावत। एक कौआ ताड़ के वृक्ष पर बैठा ही था कि एकाएक ऊपर की शाखा से उसका भारी फल टूटकर कौए के सिर पर आ लगा जिससे वह मर गया। इस प्रकार की आकस्मिक घटना के लिए यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'अपहृतं ममेदं पुस्तकं काकतालीयन्यायेन पुनरधिगतमापणात्।'

२५. **काकदधिघातकन्याय** :—इस न्याय का शब्दार्थ है—दही को बिगाड़ने वाले कौओं का दृष्टान्त। आशय यह है कि जब किसी को कौओं से दही की रक्षा करने के लिए कहा जाता है तब वह रक्षक कुत्तों आदि से भी दही को बचाता ही है। इसलिए जहाँ एक वस्तु अनेक का प्रतिनिधित्व करती है, अर्थात् उपलक्षण होती है, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'अश्लीलोऽयं मदनमोहनाख्योपन्यासो नाध्येतव्य इति तातेनोपदिष्टः सुपुत्रोऽन्यानपि कुग्रन्थान्नाधीते काकदधिघातकन्यायेन।'

२६. **काकदन्तगवेषणन्याय** :—काकदन्तगवेषणन्याय अर्थात् कौए के दाँत की खोज का न्याय। चिड़िया के दूध तथा शश के सींग के समान कौए के दाँत नहीं होते। इसलिए इस न्याय का प्रयोग वहाँ किया जाता है जहाँ कोई किसी नितान्त निरर्थक कार्य के लिए उद्योगशील हो। उदाहरण 'सामान्येषु सार्वजनिकपुस्तकालयेषु पुरातनग्रन्थरत्नानामन्वेषणं तु काकदन्तगवेषणमेव।'

२७. **काकाक्षिगोलकन्याय** :—काकाक्षिगोलकन्याय अर्थात् कौए की आँख के डेले का न्याय। जैसे कि कौए के पर्याय 'एकाक्षः', 'एकदृष्टिः' आदि संस्कृत शब्द से व्यक्त होता है कि लोगों का यह विश्वास रहा है कि कौआ दो आँखें रखता हुआ भी देखता एक ही आँख से है। तात्पर्य यह है कि उसे जिधर देखना होता है, उधर की आँख में उसकी पुतली चली जाती है। इसी

प्रकार इस न्याय का व्यवहार वहाँ होता है। जहाँ वाक्य के किसी शब्द का अन्वय एक से अधिक तरफ किया जाय अथवा कोई व्यक्ति आवश्यकतानुसार एक से अधिक पक्षों से सम्बन्ध रखे। यथा—'बलिनोर्द्विषतोर्मध्ये वाचात्मानं समर्पयन्। द्वैधीभावेन वर्त्तेत काकाक्षिवदलक्षितः॥' (कामन्दकीय नीतिसार : ९।२४)

२८. **कुल्याप्रणयनन्याय**:—शब्दार्थ है—कूलनिर्माण का न्याय। किसान लोग अपने खेतों की सिंचाई के लिए ही नदी-नालों से कूल निकालते हैं। परन्तु प्यास लगने पर उसमें से पानी पी भी लेते हैं। इसी प्रकार जहाँ एक उद्देश्य से किये हुए कार्य से दूसरा कार्य भी सिद्ध कर लिया जाय वहाँ इस न्याय का प्रयोग करते हैं। यथा—'सद्भावेन देशसेवायां रता नेतारः कदाचित् कुल्याप्रणयनन्यायेन संसत्सदस्या अपि जायन्ते।'

२९. **कूपमंडूकन्यायः**—इस न्याय का अर्थ है कूएँ के मेढक की कहावत। कूएँ का मेढक कूएँ में रहता है, इसलिए कूएँ से विस्तृत या विशाल स्थान का अनुमान नहीं कर सकता। इस न्याय का प्रयोग उस अनुभवहीन व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसका पालन-पोषण संकुचित वातावरण में हुआ हो और जो सार्वजनिक जीवन तथा मानव जाति की गतिविधि से अनभिज्ञ हो। यथा—'अद्य खलु देशभक्तोऽपि कूपमंडूक एव मन्यते युगधर्मस्य 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इति लक्षणात्।'

३०. **कूपयंत्रघटिकान्यायः**—कूपयंत्रघटिकान्याय अर्थात् अरहट की घड़ियों (लोटों) का न्याय। अरहट की माला के साथ बँधे हुए लोटों की दशा समान नहीं होती। जब कुछ लोटे नीचे पानी से भरते हैं, तभी ऊपर के लोटे रिक्त होते हैं। कुछ पूर्ण लोटे एक ओर से ऊपर को आते हैं तो कुछ रिक्त नीचे को जाते हैं। संसार में मनुष्यों के भाग्य की दशा भी इसी प्रकार भिन्न-भिन्न है। इसी अर्थ में इस न्याय का प्रयोग यों होता है–'कूपयन्त्रघटिका इव अन्योऽन्यमुपतिष्ठन्ते रायः।'

३१. **क्षीरनीरन्यायः**—इस न्याय का अर्थ है—दूध और पानी का दृष्टान्त। जब दूध और पानी परस्पर मिल जाते हैं तब यह जानना दुष्कर होता है कि उसमें दूध या पानी कितना और कहाँ है। इसी प्रकार जब दो या अधिक पदार्थों में घनिष्ठ सम्बन्ध बताना हो तब दूध-पानी की उपमा दी जाती है। यथा—'क्षीरनीरन्यायेन संगतानामेव मित्राणां मैत्री श्रेयस्करी भवति।'

३२. **गगनरोमन्थन्यायः**—इस न्याय का अर्थ है, आकाश की जुगाली या पागुर करने का न्याय। यदि कोई पशु नीले आकाश को घास का मैदान मानकर मुँह हिलाता हुआ यह समझने लगे कि घास की जुगाली कर रहा हूँ तो उसका यह उद्योग नितान्त निष्फल होगा। इसी प्रकार के निरर्थक उद्योग के विषय में इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'लोकसेवां विना शाश्वतयशोऽभिलाषो ननु गगनरोमन्थ इव।'

३३. **गड्डरिकाप्रवाहन्याय**:—इस न्याय का अर्थ है भेड़ियाधसान। यदि भेड़ों के झुंड में से एक भेड़ नदी आदि में गिर जाए तो शेष भेड़ें भी रोके नहीं रुकतीं और नदी में कूद पड़ती हैं। इसी प्रकार जहाँ लोग समझाने पर भी सत्पथ का अनुसरण न करें और अन्धाधुन्ध किसी के पीछे चलते जाएँ, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'न जातु गड्डरिकाप्रवाहं विचरन्ति केसरिणः।'

३४. **गुडजिह्विकान्यायः**—उक्त न्याय का अर्थ है, गुड़ को जिह्वा पर लगाने की कहावत। प्रायः बालक कड़वी दवाई प्रसन्नतापूर्वक नहीं पीते। जब उनके हित के लिए उन्हें वह पिलानी अनिवार्य होती है तब बुद्धिमान् मनुष्य पहले उनकी जिह्वा पर गुड़ का लेप कर देते हैं इससे औषध की कड़वाहट लुप्त या न्यून हो जाती है। इसी प्रकार जब किसी मनुष्य को किसी दुष्कर कार्य में प्रवृत्त करना होता है तब कोई प्रलोभन आदि दे दिया जाता है। ऐसे ही अवसर इस न्याय के

प्रयोगार्थ उपयुक्त होते हैं। जैसे—'न हि लोकाः प्रायशो विना गुडजिह्विकां दुष्करकर्मसु प्रवर्तन्ते।'

२५. घट्टकुटीप्रभातन्याय :—घट्टकुटीप्रभातन्याय अर्थात् चुंगी की चौकी के समीप सवेरा होने का न्याय। चुंगी से बचने के लिए गाड़ीवान आदि रात को उन मार्गों से निकलने का यत्न करते थे जिनसे चुंगी देने से बच जायँ। परन्तु कभी-कभी दुर्भाग्यवश प्रभात वहाँ हो जाता था जहाँ चुङ्गी की चौकी समीप होती थी। इस प्रकार उनके किये-कराये पर पानी फिर जाता था। इस कहावत का प्रयोग ऐसे ही अवसरों पर किया जाता है जिन पर परिहार्य वस्तु अवश्य ही समक्ष आ जाती है। यथा—'कानिचिद् वस्तून्येकाक्ययेव क्रेतुमहं मध्याह्ने आपणमगच्छम्, परन्तु घट्टकुटीन्यायेन मोहनस्तत्र मां विफलमनोरथं व्यदधात्।'

२६. घुणाक्षरन्याय :—घुणाक्षरन्याय अर्थात् घुन या किसी अन्य कीड़े द्वारा लकड़ी आदि में कोई अक्षर बन जाने का न्याय। घुन आदि कीड़े लकड़ी, पुस्तक के पन्ने आदि को खाते रहते हैं। कभी-कभी उनके खाने से कोई अक्षर-सा बन जाता है, जिसे देख कौतुक होता है। इसी प्रकार दैवयोग से होने वाली बातों के लिए इस न्याय का व्यवहार होता है। पूर्वोक्त अन्धचटक-न्याय का आशय भी इसी प्रकार का है। यथा—प्राचीनहस्तलिखितग्रन्थान्वेषणाय गतेन मया तत्र 'विमाननिर्माणम्' अपि घुणाक्षरन्यायेनाधिगतम्।'

२७. चन्दनन्याय :—इस न्याय का अर्थ है, चन्दन के तेल की उपमा। यदि शरीर के किसी एक भाग पर चन्दन के तेल की बूँद या चन्दन का लेप लगाया जाए तो उसके आह्लादक प्रभाव का समग्र शरीर में अनुभव होता है। इसी प्रकार जहाँ एकत्र स्थित पदार्थ व्यापक प्रभाव डाले वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। यथा—'चन्दनन्यायेन प्रसरति दिग्दिगन्तं युगा-युगञ्च महात्मनां कीर्तिः।'

२८. चौरापराधान्माण्डव्यनिग्रहन्याय :—इस न्याय का अर्थ है, चोरों के अपराध पर माण्डव्य को दण्ड देने की कहावत। महाभारत के आदिपर्व में ऋषि अणीमाण्डव्य के मौनव्रत से सम्बन्धित तप की कथा आती है। जब वे तपोमग्न थे तब चोर, चुराई हुई सम्पत्ति के सहित उनके आश्रम में आ छिपे। राज-कर्मचारियों ने चोरों के साथ उन्हें भी पकड़ लिया और लगे सूली पर चढ़ाने। अन्त में मुनिजी छोड़ तो दिये गये परन्तु सूली की अणी के शरीर में रह जाने के कारण अणीमाण्डव्य कहलाने लगे। इसी प्रकार जहाँ 'करे कोई और भरे कोई' का व्यवहार होता है वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'कदाचित्तु नृपः कुख्यातदुष्टापराधेन सर्वानेव ग्रामवासिनः चौरापराधमाण्डव्यनिग्रहन्यायेन दण्डयति।'

२९. छत्रिन्याय :—उक्त न्याय का अर्थ है, छातेवालों की कहावत। आशय यह है कि यदि किसी जाते हुए जन-समुदाय में अनेक लोगों ने छत्रियाँ तानी हुई हों तो हम उन सबको 'छाते वाले लोग' कह देते हैं चाहे सबके पास छत्रियाँ न भी हों। इसी प्रकार जहाँ कुछ एक के सम्बन्ध में कही हुई बात सब पर चरितार्थ कर दी जाती है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार उचित होता है। जैसे—'पुरा देवा राहुं सुरमेव मेनिरे छत्रिन्यायेन।'

३०. जामातृशुद्धिन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—जमाई-कृत पुनरीक्षण की कहावत। मेरुतुंग के 'प्रबन्धचिन्तामणि' में कहानी यों दी गई है कि विक्रमादित्य ने राजकुमारी के लिए वर ढूँढ़ने का काम वररुचि को सौंपा। राजकुमारी ने वररुचि से पढ़ते समय एक दिन उनकी अवज्ञा की थी, इसलिए चतुराई से वररुचि ने एक मूढ़ को राजा का जामाता बना दिया। वररुचि के उपदेशानुसार जामाता चुप ही रहता था परन्तु राजकुमारी ने परीक्षार्थ एक पुस्तक उसे दोहराने को दी। उसने अक्षरों के ऊपर के बिन्दु और मात्राएँ नखछेदिनी से मिटा डालीं। कुमारी पहचान गई कि यह तो कोई चरवाहा है। तब से मूर्ख से शोधन-कार्य कराने के सम्बन्ध

में यह न्याय चल पड़ा है। यथा—'कैश्चित् अयोग्यजनैः कारितं कार्यं जामातृशुद्धिवदुपहास्पदमेव भवति।'

४१. तिलतण्डुलन्याय :—उक्त न्याय का अर्थ है—तिल और चावल की उपमा। दूध और पानी भी मिलते हैं तथा तिल और चावल भी। परन्तु प्रथम मेल में दूध-पानी का पार्थक्य अज्ञेय होता है, द्वितीय में स्पष्ट। तिल-चावल की तरह जहाँ मेल तो हो परन्तु दोनों पदार्थ पृथक्-पृथक् प्रतीत भी होते हों, वहाँ तिलतण्डुलन्याय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—'कथं नाम मौनमेवापण्डितानामज्ञताया आच्छादनं भवितुमर्हति विदुषां समाजे, तिलतण्डुलयोः स्पष्टं पृथग्दर्शनात्।'

४२. तुलोन्नमनन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—तुला को उठाने की कहावत। आशय यह है कि जब तुला का एक पलड़ा हाथ से उठाया जाता है तब दूसरा स्वयमेव नीचे चला जाता है। इसी प्रकार जहाँ एक क्रिया से दूसरी क्रिया करना भी अभिप्रेत होता है वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। जैसे—'आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्, तेन हि तुलोन्नयनन्यायेन दुष्टनाशो जायते देवप्रसादश्च।'

४३. तृणभक्षणन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—तिनका खाने का न्याय। भारत में यह रीति रही है कि जब कोई व्यक्ति किसी के सम्मुख दाँतों से तिनका दबा लेता था तब इसका आशय होता था—पराजय की स्वीकृति। ऐसी दशा में वह अवध्य माना जाता है। हिन्दी में यह उक्ति 'दाँतों तले तिनका दबाना' के रूप में प्रचलित है। पराजय की स्वीकृति के अर्थ में इसका प्रयोग यों होता है—'आर्यैः पराजिता रिपवः खलु तृणभक्षणन्यायेन निजप्राणानरक्षन्।'

४४. दग्धेन्धनवह्निन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—उस अग्नि का दृष्टान्त जो ईंधन को जलाकर स्वयं भी बुझ गई हो। इसी प्रकार जहाँ कोई वस्तु अपने कार्य को सम्पन्न कर स्वयं भी समाप्त हो जाए, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। 'जलकतकरेणुन्याय' का आशय भी ऐसा ही है। यथा—'पाण्डवानां कोपः दुर्योधनादीन् विनाश्य दग्धेन्धनवह्निन्यायेन शान्तः।'

४५. देहलीदीपकन्याय :—देहलीदीपकन्याय अर्थात् दहलीज में रखे हुए दीपक का न्याय। कमरे के कोने में रखा हुआ दीपक तो कमरे को ही आलोकित करता है परन्तु दहलीज पर रखा हुआ अन्दर और बाहर दोनों ओर प्रकाश देता है। इसी प्रकार जहाँ कोई शब्द, वाक्यांश या कोई अन्य वस्तु दो तरफ़ अपना प्रभाव डाल रही हो, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। उदाहरण—'भवति हि पितृतर्पणार्थं श्रपितस्य भोजनस्यातिथ्युपकारकत्वं देहलीदीपकन्यायेन।'

४६. धान्यपलालन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—अनाज और भूसे का दृष्टान्त। जिस प्रकार लोग अनाज को ग्रहण कर लेते हैं और भूसे को त्याग देते हैं, उसी प्रकार जहाँ सारसहित वस्तु को लिया तथा निस्सार को छोड़ दिया जाता है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। जैसे—'ग्राह्यो बुधैः सारः निस्सारम् अपास्य फल्गु-धान्य-पलालन्यायेन।'

४७. नष्टाश्वदग्धरथन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—लुप्त घोड़ों और जले रथ की कहावत। कहावत की आधार-कथा इस प्रकार है कि दो यात्री अपने-अपने रथों में यात्रा करते हुए रात को एक गाँव में ठहरे। दैवयोग से रात को गाँव में आग लगी जिससे एक के घोड़े लुप्त हो गये और दूसरे का रथ जल गया। तब एक के घोड़ों को दूसरे के रथ में जोड़ दिया गया और यात्रा जारी रही। इसी प्रकार यह न्याय वहाँ व्यवहृत होता है जहाँ पारस्परिक लाभ के लिए मिल-जुलकर काम किया जाए। जैसे—'अपद्धरहमितिहासे तथा पुरास्त्वं तु गणिते, मन्ये नष्टाश्वदग्धरथन्यायेनैवावां परीक्षामुत्तरिष्यावः।'

४८. नासिकाग्रेण कर्णमूलकर्षणन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—नाक की नोक से कान के अधोभाग को खींचने की कहावत। जैसे नाक के अग्रभाग से कान के निचले भाग को खींचना असम्भव है, वैसे ही अशक्य विषयों में यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'यो वै विद्यार्थी परिश्रमं विनैव विद्वान् भवितुमिच्छति, स खलु नासिकाग्रेण कर्णमूलं कर्षति।'

४९. नृपनापितपुत्रन्याय :—नृपनापितपुत्रन्याय अर्थात् राजा और नाई के बेटे की कहावत। कहा जाता है, कि एक राजा ने अपने भाई को राज्य-भर में से सुन्दरतम बालक लाने का आदेश दिया। वह नाई सारे देश में बहुत घूमा-फिरा परन्तु उसे ऐसा कोई बालक दिखाई न दिया जैसा कि राजा चाहता था। विवश होकर वह घर लौट आया। उसका अपना पुत्र न सुरूप था न सुलक्षण परन्तु उसे वही सुन्दरतम प्रतीत हुआ। इसलिए वह उसे ही लेकर राजा के समक्ष जा उपस्थित हुआ। पहले तो राजा, यह समझकर कि यह मेरा उपहास कर रहा है, क्रुद्ध हुआ; परन्तु कुछ सोचने पर उसे इस मनोवैज्ञानिक तथ्य का बोध हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति आत्मीय पदार्थ को ही सर्वोत्तम समझता है। अतः इस न्याय का प्रयोग उन्हीं अवसरों पर होता है जिनमें कोई व्यक्ति अपनी बुरी वस्तु को भी अच्छी समझता है। जैसे—'अकाव्यमपि स्वं कुकवयः नृपनापितपुत्रन्यायेन सत्काव्यपदे गणयन्ति।'

५०. पंकप्रक्षालनन्याय :—पंकप्रक्षालनन्याय अर्थात् कीचड़ धोने का न्याय। शरीर पर लगे कीचड़ को सभ्य मनुष्य तुरन्त धो डालता है। परन्तु उससे कहीं अच्छी बात यह है कि कीचड़ लगने ही न दिया जाय। इसी प्रकार परिस्थितियों से पहले ही बचना उत्तम है, जिनमें पड़ने के पश्चात् फिर उनके प्रभाव को मिटाने का यत्न किया जाय। जैसे—'पश्चात्त्यागाद्धि वित्तस्य वरं पूर्वमसङ्ग्रहः। प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरम्।'

५१. पंग्वंधन्याय :—इस न्याय का अर्थ है लँगड़े और अंधे की कहावत। न अंधा मार्ग देख सकता है न पंगु पथ पर चल सकता हैं। परन्तु यदि पंगु अंधे के कंधों पर बैठ जाय तो दोनों निर्विघ्न यात्रा कर सकते हैं। इसी प्रकार जहाँ पारस्परिक लाभार्थ सहयोग किया जाय, वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'सुवक्ताऽपि देवदत्तो न पण्डितः, सुपण्डितोऽपि यज्ञदत्तो वक्तृत्वविहीनः, तथापि तौ पंग्वन्धन्यायेन संगत्य स्वदेशसेवायां संलग्नौ दृश्येते।'

५२. पिष्टपेषणन्याय :—पिष्टपेषणन्याय अर्थात् पीसी हुई वस्तु को पुनः पीसने का न्याय। गेहूँ, मकई आदि को तो पीसा जाता है परन्तु उनके आटे को पीसना निरर्थक होता है। साथ ही वह पेषण पेषक की मूर्खता का द्योतक माना जाता है। इसी प्रकार के अनावश्यक और अनर्थक कार्यों के सम्बन्ध में उक्त न्याय का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है—'महान् दोष एवायं यदिदमुक्तस्य पुनः पुनर्वचनम्, पिष्टपेषणं हि तत्।'

५३. पुष्टलगुडन्याय :—इस न्याय का अर्थ है, मोटे डंडे का दृष्टान्त। आशय यह है कि यदि भौंकने वाले कुत्ते की ओर मोटा डंडा फेंका जाय तो वह सम्भवतः दूसरे कुत्तों को भी लग कर शान्त कर देगा। इसी प्रकार जहाँ एक क्रिया से एकाधिक कार्यों की सिद्धि हो जाय, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'हीरोशीमानागासाकीनगरयोरणुबमास्यां विध्वस्तयोर्महायुद्धं पुष्टलगुडन्यायेन निमिषेण समाप्तिमगात्।'

५४. प्रधानमल्लनिबर्हणन्याय :—इस न्याय का अर्थ है, मुख्य शत्रु के विनाश की कहावत। आशय यह है कि जब प्रबलतम वैरी का विनाश कर दिया जाता हैं तब सामान्य वैरी स्वयमेव वश में हो जाते हैं। इसी प्रकार जब भारी बाधाएँ मिटा दी जाती हैं तब सामान्य विघ्न बाधक नहीं बन सकते। जैसे—'हतयोर्भीष्मद्रोणयोर्निश्चित एवाभूत् पाण्डवानां विजयः प्रधानमल्लनिबर्हणन्यायेन।'

५५. प्रपानकरसन्याय :—प्रपानकरसन्याय अर्थात् शर्बत की उपमा। शर्बत बनाने के लिए अनेक द्रव्यों को मिश्रित करना पड़ता है। शर्बत का स्वाद उनमें से किसी एक के भी तुल्य नहीं होता। इसी प्रकार जहाँ अनेक वस्तुओं के संयोग से एक विलक्षण पदार्थ निर्मित हो जाय वहाँ यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'अभिमन्युः किल प्रपानकरसन्यायेन वृष्णींश्च पाण्डवांश्च गुणैरत्यरिच्यत।'

५६. फलवत्सहकारन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—आम के फलित पेड़ का दृष्टान्त। आम का फलवान् वृक्ष फल ही नहीं देता, थके-माँदे यात्रियों को सुगन्ध और छाया भी प्रदान करता है। इसी प्रकार जहाँ कोई क्रिया अभीष्ट फल के अतिरिक्त भी कोई फल दे, वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। यथा—'पुत्रोत्पत्तिर्हि नाम प्रस्नवयित्री मातृवक्षसः, प्रशमयित्री पितृनेत्रयोर्विकाशयित्री च भवति वंशस्य फलवत्सहकारन्यायेन।'

५७. बहुराजदेशन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—अनेक राजाओं के देश की कहावत। जहाँ एकाधिक राजाओं का शासन होता है वहाँ उनकी परस्पर विरोधी आज्ञाओं के कारण प्रजा अति पीड़ित हो उठती है। यथा—'यस्मिन् कुले मातापित्रोर्वैमत्यं विद्यते तत्रातिदुःखिता भवति संततिर्बहुराजकदेशवत्।'

५८. बीजाङ्कुरन्याय :—बीजांकुरन्याय अर्थात् बीज और अँखुए का न्याय। इस न्याय का उद्गम बीज और अंकुर के पारस्परिक कारण-कार्यभाव से हुआ है। बीज से अंकुर उत्पन्न होता है अतः बीज कारण है, अंकुर कार्य। परन्तु आगे चलकर उसी अंकुर से बीज भी उत्पन्न होते हैं; इसलिए अंकुर कारण और बीज कार्य बन जाता है। इस प्रकार जहाँ दो पदार्थ एक दूसरे के कारण और कार्य भी हों, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। जैसे—'स्वास्थ्येन वित्तमधिगम्यते वित्तेन च पुनः स्वास्थ्यं बीजाङ्कुरवत्।'

५९. मण्डूकप्लुतिन्याय :—उक्त न्याय का अर्थ है, मेंढक की छलाँग की लोकोक्ति। मेंढक सर्पवत् समग्र मार्ग का स्पर्श करता हुआ नहीं चलता, छलाँगें लगाता जाता है, जिससे मध्यवर्ती स्थान अस्पृष्ट रह जाता है। इसी प्रकार जहाँ कोई नियम सब पर समानरूप से लागू न हो, बीच-बीच में कई वस्तुओं को छोड़ता जाए, अथवा कोई काम बीच-बीच में छोड़कर किया जाए वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। यथा—'अस्माकमध्यापकः पाठ्यपुस्तकं मण्डूकप्लुतिन्यायेन पाठयति न तु यथाक्रमम्।'

६०. मात्स्यन्याय :—मात्स्य न्याय अर्थात् मछलियों का दृष्टान्त। प्रायः यह देखा जाता है कि बड़ी मछलियाँ छोटी मछलियों को हड़प जाती हैं। इस प्रकार जहाँ बलवान् निर्बल को मारने या सताने लग जाएँ वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी की लोकोक्ति 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस' भी इसी आशय को व्यक्त करती है। उदाहरण देखिए—'सुशासकाभावे यदि राष्ट्रे मात्स्यन्यायः प्रवर्तेत, तर्हि किमाश्चर्यम्।'

६१. रथकारन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—रथकार (रथ बनानेवाले) का दृष्टान्त। शास्त्र में कहा गया है कि रथकार वर्षाऋतु में अग्नि की स्थापना करे। प्रश्न उठता है, रथकार का अर्थ रथ बनाने वाला कोई भी व्यक्ति है या विशेष उपजाति का मनुष्य। जैमिनि ने निर्णय किया है कि केवल जातिविशेष का व्यक्ति ही। इस प्रकार इस न्याय का भाव यह है कि शब्दों का रूढ़ या प्रचलित अर्थ यौगिक अर्थों से बलवान् होता है। यथा—'अद्य तु रथकारन्यायेन कार्यपटुरेव कुशलो मन्यते न पूर्ववत् गुरोः कृते कुशानयनदक्ष एव।'

६२. राजपुरप्रवेशन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—राजधानी में प्रवेश का दृष्टान्त। राजपुर में प्रवेश करने का नियम यह है कि पंक्ति बनाकर पर्याय से प्रविष्ट हुआ जाए। जो उच्छृङ्खल

इस नियम को भंग करता है, उसके पिटने की आशंका रहती है। इसी प्रकार जहाँ किसी कार्य को नियमानुसार करना अभीष्ट हो, वहाँ इस न्याय का प्रयोग करते हैं। दृष्टान्त लीजिए—'यस्मिन् तु विद्यालये छात्रा राजपुरप्रवेशन्यायेन स्वकक्षाः प्रविशन्ति न तत्र कोलाहलो जायते।'

६३. **रुमाक्षिप्तकाष्ठन्याय** :—इस न्याय का अर्थ है, नमक की खान और लकड़ी का दृष्टान्त। यह प्रसिद्ध है कि जो वस्तु नमक की खान में फेंकी जाती है, नमक बन जाती है। इसी प्रकार जहाँ कुसंगति के प्रबल प्रभाव से अन्य वस्तु भी वैसी बन जाए, वहाँ इस न्याय का प्रयोग उचित है। यथा—'विनीता अपि जना अधिकारं प्राप्य रुमाक्षिप्तकाष्ठन्यायेन दृप्ता भवन्ति।'

६४. **लोहचुंबकन्याय** :—लोहचुम्बकन्याय अर्थात् लोहे और चुम्बक का न्याय। यह न्याय उस सम्बन्ध को व्यक्त करता है जिसके कारण दो पदार्थ दूर होते हुए भी, स्वभावतः एक-दूसरे के समीप जाने का उद्योग करते हैं। जैसे—'दूरस्था अपि सज्जना लोहचुम्बकवत् मिथो मिलितुं वाञ्छन्ति।'

६५. **वकबन्धनन्याय** :—इस न्याय का अर्थ है, बगुले को पकड़ने का दृष्टान्त। किसी ने बगुला पकड़ने की रीति यह बताई कि जब बगुला बैठा हो तो चुपके से उसके सिर पर मक्खन रख देना चाहिए। जब मक्खन धूप से पिघलकर उसकी आंखों में पड़ेगा तो वह अन्धा हो जायगा और झट पकड़ लिया जाएगा। वस्तुतः यह विधि हास्यास्पद है क्योंकि बगुला तभी क्यों न पकड़ लिया जाए जब उसके सिर पर मक्खन रखा जाए। इसी प्रकार जहाँ सहज सरल विधि को छोड़कर किसी हास्यास्पद ढंग को स्वीकृत किया जाता है वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'वकबन्धनन्यायपर्याय एवायं यद् गलघण्टिकारावेग अवगते मार्जारागमे मूषाणा-मात्मरक्षाविचारः।'

६६. **वनसिंहन्याय** :—इस न्याय का शब्दार्थ है—वन और सिंह का दृष्टान्त। सिंह न हो तो लोग वन को ही काट डालें और वन न हो तो सिंह को ही मार डालें। ये दोनों वस्तुतः एक-दूसरे के रक्षक हैं। इसी प्रकार जहाँ पदार्थ परस्पर रक्षक हों वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—'न जातु सेव्यसेवकौ अन्योऽन्यं हन्तुं पारयतः-वनसिंहवदन्योऽन्याश्रयित्वात्।'

६७. **वह्निधूमन्याय** :—वह्निधूमन्याय अर्थात् अग्नि और धूएँ के निरन्तर साथ-साथ रहने का न्याय। जहाँ धूआँ होता है वहाँ अग्नि होती ही है। इसी प्रकार जहाँ एक पदार्थ का दूसरे से अनिवार्य साहचर्य बताया जाए वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। जैसे—'यत्र योगेश्वरः कृष्णः यत्र च धनुर्धरः पार्थः, तत्र विजयो वह्निधूमन्यायेन निश्चित एव।'

६८. **विषक्रमिन्याय** :—विषक्रमिन्याय अर्थात् विष के कीड़ों का न्याय। साधारण प्राणी तो विष के प्रभाव से मर जाते हैं, परन्तु विष के कीड़े विष में ही उत्पन्न होते हैं, उसी को खाते हैं और फिर भी जीवित रहते हैं। इस न्याय का प्रयोग उन अवसरों पर होता है जिन पर सामान्य प्राणी तो प्राणों से हाथ धो बैठते हैं परन्तु व्यक्तिविशेष सुरक्षित रहते हैं। जैसे—'हरिजनानां कर्म कुर्वन्तः सामान्यास्तु अचिरात् कालकवलिता भवेयुः ते च हरिजनाः पुनः विषक्रमिन्यायेन दीर्घजीविनो भवन्ति।'

६९. **विषवृक्षन्याय** :—विषवृक्षन्याय अर्थात् विषैले पेड़ का न्याय। कालिदास ने 'कुमारसम्भव' में कहा है—'विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसांप्रतम्' अर्थात् यदि विष का वृक्ष भी स्वयं लगाया और पाला-पोसा गया हो तो उसे काटना या उखाड़ना उचित नहीं होता। इसी प्रकार जिस व्यक्ति का स्वयं पालन-पोषण किया हो, वह बड़ा होने पर अनिष्टकर भी सिद्ध हो, तो भी उसका विध्वंस समीचीन नहीं। यही इस न्याय का आशय है। उदाहरण द्रष्टव्य है—'विषवृक्षन्यायमनुसरता पित्रा कुपुत्रस्याप्यहितं कर्तुं न पार्यते।'

७०. वीचितरंगन्याय :—वीचितरंगन्याय अर्थात् तरंग और तरंग का न्याय। नदी, सरोवर, समुद्र आदि में हम देखते हैं कि तरंगें क्रमशः एक दूसरी को तब तक आगे-आगे ढकेलती जाती हैं जब तक वे सब तट तक नहीं जा पहुँचतीं। इसी प्रकार जब कुछ वस्तुएँ या व्यक्ति एक-दूसरे की सहायता से गन्तव्य तक जा पहुँचते हैं, तब इस न्याय का निम्नलिखित प्रकार से प्रयोग किया जाता है—'वीचितरंगन्यायेन अन्योऽन्योपकारि खलु सकलमिह जीवितम्।'

७१. वृद्धकुमारीवाक्य(वर)न्याय :—वृद्धकुमारीवाक्यन्याय अर्थात् बूढ़ी कन्या के वर का न्याय। पतंजलि ने महाभाष्य में लिखा है कि जब इन्द्र ने एक बूढ़ी कन्या को वर माँगने को कहा तब वह बोली—'पुत्रा मे बहुक्षीरघृतमोदनं काञ्चनपात्र्यां भुञ्जीरन्' अर्थात् मेरे पुत्र सुवर्ण के पात्रों में प्रभूत दूध और घी से युक्त चावल खावें। अब यदि यह वर प्राप्त हो जाए तो पति, सन्तान, गौ, दूध, घी, सुवर्ण आदि सभी पदार्थ स्वतः एव प्राप्त हो जाते हैं। इसी प्रकार जहाँ कोई ऐसी वस्तु माँगी जाए जिसके साथ अनेक उपयोगी द्रव्यों की प्राप्ति अनिवार्य हो जाए, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'स्वपौत्रं राजसिंहासनस्थमीक्षितुमिच्छामीति वरं देवं याचमानेनान्धवृद्धेन आत्मनः कृते यौवनं नेत्रे पत्नी पुत्रः पौत्रश्च वृतः।'

७२. व्यालनकुलन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—साँप और नेवले की कहावत। साँप और नेवले में जन्मजात वैर होता है। वे जहाँ एक-दूसरे को देखते हैं, लड़ पड़ते हैं। उन्हीं की तरह जब दो वस्तुओं में स्वाभाविक वैर हो तब व्यालनकुलन्याय (अहिनकुलन्याय) का व्यवहार होता है। यथा—'अद्यत्वे तु रूसामरीकयोर्दशाव्यालनकुलवद् दृश्यते।'

७३. शतपत्रपत्रशतभेदन्याय :—उक्त न्याय का अर्थ है—कमल के सौ पत्रों को छेदने का दृष्टान्त। जब कोई व्यक्ति कमल के सौ कोमल पत्रों को सूए से छेदता है तब ऐसा लगता है कि सब पत्र एक-साथ ही छिद गये हैं। परन्तु वस्तुतः छिदते एक दूसरे के अनन्तर ही हैं। इसी प्रकार जहाँ क्रमशः होने वाली अनेक क्रियाओं का एक साथ होना कहा जाता है, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। जैसे—'पतिं मृतं श्रुत्वा सा साध्वी कम्पिता मूर्च्छिता मृता च शतपत्रपत्रशतभेदन्यायेन।'

७४. शलभन्याय :—इस न्याय का अर्थ है पतंगे का दृष्टान्त। मूर्ख पतंगा जलते हुए दीपक को देख ऐसा मुग्ध होता है कि प्राणों तक की चिन्ता नहीं करता। इसी प्रकार मूर्ख लोग विषयों से आकृष्ट होकर प्राणों से हाथ धो बैठते हैं। आजकल इसका प्रयोग प्रशंसा के लिए भी किया जाता है। दोनों के दृष्टान्त एक ही वाक्य में देखें—'विषयेषु शलभायन्ते मूढाः, प्रमदासु कामुकाः, राष्ट्रसेवायां च राष्ट्रभक्ताः।'

७५. शाखाचन्द्रन्याय :—शाखाचन्द्रन्याय अर्थात् वृक्ष की शाखा और चाँद का न्याय। आकाश में चन्द्र तो बहुत दूर होता है परन्तु प्रतिपदा आदि के दिन किसी को दिखाने के लिए प्रायः कहा जाता है—'देखो, वह वृक्ष की शाखा के ऊपर है। इसी प्रकार जहाँ कोई पदार्थ हो तो बहुत दूरवर्ती पर उसको दिखाने के लिए ऐसे पदार्थ की ओर संकेत किया जाय जो उसके समीप प्रतीत होता हो, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'शाखाचन्द्रन्यायेन पेरिसनगरमपि रोमसमीपवर्तिनमेव ज्ञापयति कोऽपि मानचित्रे।'

७६. शिरोवेष्टनेन नासिकास्पर्शन्याय :—उक्त न्याय का अर्थ है—बाहु को सिर के पीछे से लाकर नाक को छूने का दृष्टान्त। नाक को सामने से छूना सुकर है, बाहु पीछे से लाकर छूना दुष्कर। जब उद्देश्य केवल नासिकास्पर्श हो तो बाहु को सिर के पीछे से लाकर छूने में कोई लाभ नहीं है। इसी प्रकार कई लोग किसी कार्य को सीधे ढङ्ग से नहीं करते, घुमा-फिराकर व्यर्थ कष्ट

सहते या देते हैं। ऐसे ही अवसरों पर उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'को लाभोऽनेन शिरोवेष्टनेन नासिकास्पर्शेन, प्रकृतं स्पष्टं ब्रूहि ।'

७७. श्वपुच्छोन्नामनन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—कुत्ते की पूँछ को सीधा करने का दृष्टान्त। कुत्ते की पूँछ अनेक यत्न करने पर भी सीधी नहीं होती; प्रयत्न करने वाले का श्रम व्यर्थ ही सिद्ध होता है। इसी प्रकार जहाँ काम के लिए किया हुआ उद्योग सर्वथा निष्फल रहे, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'श्वपुच्छोन्नाम-मेवैतद् महात्मा गांधी अकार्षीद् यद् मुस्लिम-लीगिनः प्रेम्णा वशीकर्तुमयतत ।'

७८. शवोद्वर्तनन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—मृतक को उबटन लगाने का दृष्टान्त। सुगन्धित द्रव्य सजीव शरीर के शोभावर्द्धक हैं, निर्जीव के नहीं। इसी प्रकार जहाँ सर्वथा निष्फल उद्योग किया जाता हैं, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'पाकिस्तानंनिर्माणानन्तरं मुस्लिमलीगस्य पुनः भारते संस्थापनं शवोद्वर्तनमेव ।'

७९. सिंहावलोकनन्याय :—सिंहावलोकनन्याय अर्थात् सिंह के समान देखने का न्याय। चलता हुआ सिंह सामने तो देखता ही है, थोड़ी-थोड़ी देर बाद पीछे भी दृष्टिपात कर लेता है कि कोई भक्ष्य जन्तु पहुँच के भीतर पीछे भी है या नहीं। इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति आगे-आगे कार्य करता हुआ पिछले कार्य पर भी कुछ दृक्पात करता है, तब सिंहावलोकन-न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'सोत्साहैरपि छात्रैरधीतस्य सिंहावलोकनं कर्तव्यमेव ।'

८०. सिकतातैलन्याय :—अर्थात् रेत से तेल निकालने की कहावत। जैसे गधे या शश के सिर पर सींग नहीं निकलते वैसे ही रेत से तेल की उत्पत्ति असम्भव है। इसी प्रकार की असम्भव बातों के लिए यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्ताराधनं कविभिः सिकतासु तैलस्योपलब्ध्या उपमीयते ।'

८१. सुन्दोपसुन्दन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—सुन्द और उपसुन्द की उपमा। महाभारत के आदिपर्व (अध्याय २०९–२१२) में सुन्दोपसुन्द नाम के दो अजेय असुर भाइयों की कथा आती है। उन्हें नष्ट करने के उद्देश्य से ब्रह्मा ने विश्वकर्मा को एक अद्वितीय सुन्दरी (तिलोत्तमा) निर्माण करने को कहा। ब्रह्मा ने तिलोत्तमा को उन भाइयों के पास कैलासोद्यान ने भेजा। दोनों उसे देख मुग्ध हो गये और लगे अपनी-अपनी ओर खींचने। अन्ततः दोनों क्रुद्ध होकर लड़ पड़े और दोनों ही मर गये। इन्हीं के समान जब दो समान बल वाले पदार्थ एक दूसरे के नाशक हों, तब इस न्याय का प्रयोग-स्थल होता है। जैसे—'यावद्रूसामरीकाराष्ट्रे परस्परं युध्यमाने सुन्दोपसुन्दवत् न नश्यतः, शान्तिस्तावत् असिद्धस्वप्न एव ।'

८२. सूचीकटाहन्याय :—सूचीकटाहन्याय अर्थात् सूई और कड़ाहे का न्याय। किसी लोहार के पास जब एक व्यक्ति कड़ाहा बनवाने जा पहुँचे और दूसरा सूई, तब लोहार पहले सूई बनाता है क्योंकि उसे वह सहज ही अल्प काल में बना लेता है। इसी प्रकार इस न्याय का आशय यह है कि कठिन तथा दीर्घकालसाध्य कार्य पीछे करना चाहिए और सुकर तथा अल्पकालसाध्य कार्य पहले। जैसे—'श्रेणीमध्यापयन् शिक्षकः मुख्याध्यापकादागतां सूचनां, प्रकृतं पाठं स्थगयित्वा, सूचीकटाहन्यायेन प्रथमं श्रावयति ।'

८३. सूत्रबद्धशकुनिन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—सूत से बँधे हुए पक्षी का दृष्टान्त। सूत से बँधा हुआ पक्षी न इधर-उधर स्वच्छन्द उड़ सकता है, न कहीं यथेष्ट विश्राम कर सकता है। जिस पराधीन व्यक्ति की दशा उसके समान हो, उसके विषय में यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'कैकेयीमोहपाशबद्धस्य दशरथस्य दशा सूत्रबद्धशकुनेरिवासीत् ।'

८४. सोपानारोहणन्याय :—सोपानारोहणन्याय अर्थात् सीढ़ियाँ चढ़ने का दृष्टान्त। जैसे मनुष्य छत पर एकाएक नहीं जा पहुँचता, एक-एक सीढ़ी चढ़कर ही पहुँचता है, वैसे ही ज्ञानादि की प्राप्ति भी क्रमशः ही होती है। ऐसे ही अवसर इस न्याय के प्रयोगार्थ उचित हैं। जैसे—'सोपानारोहणन्यायेनैव भवति विद्योपचयो विद्यार्थिनां, धनवृद्धिश्च सज्जनानाम्।'

८५. स्थालीपुलाकन्याय :—स्थालीपुलाकन्याय अर्थात् देगचे और पुलाव का न्याय। जब किसी देगचे में चावल पकाये जाते हैं तब पाचक प्रत्येक दाने को निकाल कर नहीं देखता कि वह गल गया है या नहीं। दो-चार दाने देखकर ही अनुमान कर लेता है कि सब के सब गल गये या कुछ कसर है। इसी प्रकार जहाँ किसी समुदाय के दो-चार व्यक्तियों से सबके सम्बन्ध में कुछ अनुमान किया जाता है, वहाँ इस न्याय का इस प्रकार व्यवहार किया जाता है—'विद्यालय-निरीक्षकाः स्थालीपुलाकन्यायेनैव विद्यार्थिनां योग्यतां परीक्षन्ते।'

८६. स्थावरजंगमविषन्याय :—अर्थ है—स्थावर और जगम विष का दृष्टान्त। पौधों और खनिज द्रव्यों के विष स्थावर विष कहलाते हैं तथा प्राणियों के विष जंगम विष। कहते हैं, विष को विष नष्ट करता है, जैसे कि महाभारत की कथा में भीमसेन को दुर्योधन द्वारा दिया हुआ स्थावर विष नदी में साँपों के जंगम विष से दूर हो गया था। इसी प्रकार जहाँ एक वस्तु का प्रतिकार दूसरी से हो जाय, वहाँ यह न्याय प्रयोक्तव्य है। यथा—'वर्तमाने बहूनां रोगाणां चिकित्सा स्थावरजंगमविषन्यायेनैव विधीयते।'

८७. स्थूणानिखननन्यायः—स्थूणानिखननन्याय अर्थात् खंबा गाड़ने का न्याय। जैसे भूमि में खंबा गाड़ना हो तो उसे बार-बार हिलाकर गहरा ठोंका जाता है; वैसे ही अपने पक्ष के सुसमर्थन के लिए जब कोई वक्ता, लेखक आदि अनेक युक्तियाँ, दृष्टान्त आदि प्रस्तुत करता है तब यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'स्थूणानिखननन्यायेन समर्थयति प्रवक्ता स्वकीयं पक्षं दृष्टान्तपरम्परया।'

८८. स्वामिभृत्यन्याय :—स्वामिभृत्यन्याय अर्थात् मालिक और नौकर का न्याय। स्वामी और सेवक में पोषक तथा पोष्य या धारक और धार्य का सम्बन्ध होता है। इसी प्रकार का सम्बन्ध जहाँ दो वस्तुओं या व्यक्तियों में दिखाई दे, वहाँ उक्त न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'इह लोके सर्वत्र जीवेश्वरयोः व्यवहारः स्वामिभृत्यन्याय इव दृश्यते।'

८९. स्वेदजनिमित्तेन शाकटस्यागन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—पसीने से उत्पन्न कीड़ों के कारण वस्त्र फेंक देने का न्याय। इसी को कहीं पर 'यूकाभिया कन्थात्यागन्यायः' भी कहते हैं जिसका हिन्दी रूपान्तर 'जुओं के डर से गुदड़ी नहीं फेंकी जाती' है। आशय यह है कि सामान्य भयों से भीत होकर भारी हानि सहन करना बुद्धिमत्ता नहीं है। यथा—'परीक्षायां वैफल्यमपि संभवंतीति भयेन परीक्षायां छात्रा न सम्मिलिता भवेयुरिति न, स्वेदजनिमित्तेन त्यागन्यायेन।'

९०. ह्रदनक्रन्याय :—ह्रदनक्रन्याय का अर्थ है—झील और मगर का दृष्टान्त। इसका आशय 'वनसिंहन्याय' के समान है। विस्तारार्थ वहीं देखिए।

सप्तम परिशिष्ट

प्राचीन भारत का भौगोलिक परिचय

मातृसंस्कृति से अपना सम्बन्ध स्थापित करने के लिए जहाँ मातृभाषा का परिचय आवश्यक है, वहाँ मातृभूमि के विषय में भी कुछ-न-कुछ ज्ञान अपरिहार्य है। इसी ध्येय से प्रस्तुत अनुक्रमणी हम जोड़ रहे हैं।

जिस वृद्ध भारत के विषय में हम सदा गर्व अनुभव करते हैं, उसके तीर्थादि स्थानों के सम्बन्ध में परिचयात्मक संकेत प्राचीन साहित्य में जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े हैं। संस्कृत-नाटकों के कथा-प्रवाह को भी, उनकी पृष्ठभूमि के अभाव में, समझ सकना असम्भव है। हमारी विभिन्न बोलियों, रीति-वृत्तियों, कवि-समयोक्तियों के मूलोद्गम भी तो लोक-संस्कृति के यही उर्वर प्रदेश ही थे। राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का जितना श्रेय अश्वमेध की परम्परा को अक्षुण्ण रखने वाले हमारे चक्रवर्ती सम्राटों को रहा है, उतना ही श्रेय इस देश के महाकवियों (वाल्मीकि, व्यास) को भी है। मेघदूत का संदेशहर बादल स्वयं कवि का उदार हृदय है, जिसके मुक्त-व्योम में उमड़ने-उड़ने में भारत, मानो एक घोंसले में आबद्ध हो गया है।

हमारे प्राचीन भूगोल को लेकर कोई क्रमबद्ध अनुसन्धान अभी तक नहीं किया गया। श्री नन्दूलाल दे की 'दि जिओग्राफ़िकल डिक्शनरी ऑव एन्शेण्ट एण्ड मिडीवल इण्डिया' (प्रथम संस्करण १८८९, द्वितीय १९२७) आज स्वयं संशोधन चाहती है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने जिस प्रकार पाणिनिकालीन तथा बाणकालीन भारतवर्ष के सांस्कृतिक रूप को एकसूत्रित करने का यत्न किया है; जिस प्रकार डा० ऑरेलस्टाइन ने काश्मीर के विस्मृत नामों का उद्धार किया था, उसी प्रकार की बृहत्तर-भारत की क्रमिक कहानी के लेखक को अभी जन्म लेना है।

प्राचीन भारत के कुछ एक नामों का तुलनात्मक उल्लेख हम कर रहे हैं, इस आशा से कि कोई अज्ञात युवक, एक ही सही, उस 'प्रथम प्रभात' के संस्पर्श से पुलकित होकर अनुसन्धान की इस अछूती दिशा में प्रयत्नशील हो जाए।

अंग—प्राचीन भारत के १६ 'राजनीतिक' जनपदों में एक, जो कभी रोमपाद (रामायण) तथा कर्ण (महाभारत) के शासन में था। आजकल भागलपुर के आसपास का प्रदेश।

अंजनगिरि—पंजाब की 'सुलेमान' पर्वतमाला (वराह०*)।

अगस्त्याश्रम—नासिक, कोल्हापुर (बम्बई), उत्तरप्रदेश, गढ़वाल, सतपुड़ा आदि में ऋषि अगस्त्य के नाम से प्रसिद्ध आश्रम। अगस्त्य ही वे 'चरित्र-विजयी' वीर थे, जिन्होंने सर्वप्रथम आर्य-सभ्यता का दक्षिण में प्रवेश संभव किया था। लोगों का विश्वास है कि अगस्त्य आज भी ताम्रपर्णी के उद्गम स्रोत (तिनिवेली में) 'अगस्त्यकूट' पर समाधिस्थ हैं।

अचिन्त—मध्यभारत में एलोरा के प्रायः ६० मील उत्तरपूर्व की ओर 'अजिण्ठा' ('अजन्ता' उच्चारण अशुद्ध है) नामक गुहा-समूह, जहाँ (बौद्धों के) योगाचार्य मत के संस्थापक आर्य असंग का प्रथम 'आश्रम' था। गुहाओं में भव्यचित्रकला का अङ्कन विहार के स्थविर 'अचल' के आदेश पर ५वीं–६ठी शती में सम्पन्न हुआ था।

अचि(जि)रावती—अवध की राप्ती (रेवती) नदी, जिस पर कभी श्रावस्ती नगर बसा हुआ था। २. इरावती (रावी)। (वराह०)

* संकेतों के विवरण के लिए ग्रन्थारम्भ में संकेत-सूची देखिए।

अच्छोद—काश्मीर का एक सरोवर (आधु० अच्छावत), जिसके तट पर कभी 'सिद्धाश्रम' अवस्थित था। (कादम्बरी)

अनन्तनाग—जेहलम के दक्षिण-तट पर स्थित (काश्मीर की) प्राचीन राजधानी। (आधु० इस्लामाबाद)

अनन्तशयन—त्रावनकोर का **पद्मनाभपुर,** जहाँ एक मन्दिर में विष्णु की शेषनाग पर प्रसुप्त मुद्रा में अंकित मूर्ति सुरक्षित है। (पद्म० उत्तर०)

अनहिलपत्तन—वलभी-साम्राज्य के विध्वंस पर 'वनराज' द्वारा गुजरात (उत्तर-बड़ोदा) में (७४६ ई०) प्रतिष्ठापित एक (आधु० अनिहिलवाड़) नगर।

अनुराधपुर—**सिंहल** (सीलोन) की पुरानी राजधानी, जहाँ महिन्द तथा संघमित्रा द्वारा रोपित बोधिवृक्ष की शाखा से विकसित 'अश्वत्थ' आज भी विद्यमान है। (महावंश)

अनूप—दक्षिण मालव देश, **हैहय, महिष** (माहिषक)। (हरिवंश०)

अन्तर्वेद—गंगा तथा यमुना के अन्तर्गत दोआब। (भविष्य०)

अपग—अफ़ग़ानिस्तान। (ब्रह्माण्ड०)

अपरान्त (क)—कोंकण तथा मालावार; पश्चिमी घाट। (रघु०, ब्रह्म०)

अभिसारा (रि)—पेशावर डिविज़न में एक ज़िला, **उरशा** (आधु० हज़ारा), जिसे अर्जुन ने (सभापर्व०, पद्म०) अपनी उत्तर-दिग्विजय में जीता था।

अमरकण्टक—गोंडवाना में **मेकल** पर्वतमाला का एक भाग, जो नर्मदा तथा शोण का उद्गमस्थल है; **आम्रकूट (?)** (पद्म०, स्कन्द०, मेघदूत)।

अमरावती—आन्ध्र में कृष्णा के तट पर, बेजवाड़ा के प्रायः २० मील पश्चिम की ओर स्थित प्रसिद्ध बौद्धस्तूप (का भव्य स्थान) जिसे चतुर्थ शती के अन्त में आन्ध्रों ने निर्मित किया था।

अम्बर—जयपुर (के समीप प्राचीन नगर आमेर)। इसकी मूल-प्रतिष्ठा मान्धाता के पुत्र अम्बरीष ने की थी तथा 'वर्तमान' रूपान्तर मानसिंह ने अकबर के दिनों में किया था। (भविष्य०)

अयोध्या—'राम-राज्य का पुनीत धर्मक्षेत्र', **अवध**। बौद्धयुग में सरयू नदी अयोध्या को उत्तरकोसल तथा दक्षिणकोसल में विभक्त करती थी। अयोध्या के ध्वस्त तीर्थों का पुनरुद्धार ५वीं शती में किसी गुप्त 'विक्रमादित्य' ने किया था।

अरण्य—सैन्धव, दण्डक, नैमिष, कुरुजंगल, अपरावृत, जम्बुमार्ग, पुष्कर, हिमालय तथा अरण्य का नौ तीर्थ-वनों में परिगणन होता है। (देवी०)

अरुणाचल—कैलास के पश्चिम में एक पर्वतमाला। २. दक्षिण भारत में सुरक्षित 'अष्टमूर्त्ति' (शिवजी महाराज) की पाँच 'भौतिक' मूर्त्तियों में एक—'अग्नि-प्रतिमा' जहाँ प्रतिष्ठित है। (ब्रह्माण्ड०)

अरुणोद—गढ़वाल। (स्कन्द०)

अर्धगंगा—कावेरी। (हरिवंश०)

अर्बुद—(राजपूताना की) सिरोही रियासत में अरवली पर्वतमाला की 'आबू' शाखा, जहाँ से वशिष्ठ ने विश्वामित्र के विरुद्ध युद्ध करने के लिए 'परमार' जैसे वीर को एक 'अग्निकुण्ड' से उत्पन्न किया था। (महाभा०, पद्म०)

अलका—यक्षपति कुबेर की राजधानी, जिसका नामकरण, संभवतः, गढ़वाल में बहती **अलकनन्दा (अपरनन्दा, वसुधारा)** नामक नदी के अनुकरण पर हुआ था। (स्कन्द०)

अवन्ती—मालव राज्य की 'राजधानी' उज्जयिनी (उज्जैन), जिसे ७-८वीं सदी से मालवा कहते आते हैं। कभी यह संवत्प्रवर्तक विक्रमादित्य की 'राजधानी' थी। २. सिप्रा (नदी का एक नाम), जिस पर प्राचीन उज्जैन स्थित था।

अविमुक्त—काशी, वाराणसी (बनारस)। (शिव०, मत्स्य०)।

अश्मक—(दशकुमारचरित में) विदर्भ के अधीन एक राज्य, जो अर्थशास्त्र के टीकाकार भट्टस्वामी के अनुसार, **महाराष्ट्र** है—और कभी अवन्ती-साम्राज्य के उत्तर-पश्चिम में था। (कूर्म० हर्ष०, जातक०) **वक्षु (अश्मन्वती आमू)** की सभ्यता का देश—ऑक्सियाना, 'पाताल'।

अश्मन्वती—वक्षु (आक्सस), इक्षु, यक्षु, आमू दरिया। (रघु०)

असिक्नी—चनाब की एक धारा।

अहिच्छत्र—रोहीलखण्ड में बरेली से २० मील पश्चिम की ओर, आधुनिक रामनगर; **अहिक्षेत्र, छत्रवती**। (महा०)

आदर्शावली—अरवली पर्वतमाला। (दे० आर्यावर्त)

आनर्त्त—गुजरात (तथा मालवदेश का कुछ अंश), जिसकी राजधानी कभी **कुशस्थली (द्वारिका)** थी। उत्तर गुजरात की राजधानी का नाम भी कभी **आनर्त्तपुर (आनन्दपुर,** आधु० वालनगर) रहा था। (भागवत०)

आन्ध्र—गोदावरी तथा कृष्णा नदियों का 'मध्यदेश', राज० **अमरावती**। सदियों यहाँ वेङ्गी के पल्लवों तथा कल्याणपुर के चोळों का उत्थान-पतन होता रहा। स्वयं आन्ध्रों का राजवंश, इतिहास में, सातवाहन अथवा सातकर्णि के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। (गरुड०, अनर्घराघव)

आपगा—(पश्चिमी पंजाब की) रावी के पश्चिम में एक सरिता। २. कुरुक्षेत्र में चितांग नदी की एक सहायिका, जिसे **ओघवती** तथा 'आपगा' भी कहते हैं। (वामन०)

आभीर—नर्मदा के मुहाने के गिर्द, गुजरात का दक्षिणपूर्वीय भाग। (ब्रह्माण्ड०, महाभा०)

आम्रकूट—**अमरकण्टक**।

आर्जिकीया—व्यास (**विपाशा**) की एक धारा।

आर्यावर्त्त—(मनु के अनुसार) हिमाद्रि तथा विन्ध्य के मध्य में स्थित देश, **उत्तरापथ**। पतञ्जलि के समय में आर्यावर्त्त की चार 'पार्वती' मर्यादाएँ थीं—१. उत्तर में हिमालय, २. दक्षिण में **पारियात्र**, ३. पश्चिम में **आदर्शावली**, तथा ४. पूर्व में कालकवन। राजशेखर के बाल-रामायण के अनुसार दक्षिणभारत तथा उत्तरभारत की स्वाभाविक विभाजन-रेखा है—**नर्मदा**।

आशापल्ली—अलबेरूनी का येस्साबल अथवा आसावल, आजकल का अहमदाबाद।

इन्द्रपुर—इन्दौर। (स्कन्दगुप्त के अभिलेख; शंकरविजय)

इन्द्रप्रस्थ—पुरानी दिल्ली, **बृहत्स्थल; खाण्डवप्रस्थ** (महाभा०)। कहते हैं पुराने किले का निर्माण (कलियुग ६५३ में ?) युधिष्ठिर ने किया था, लोकभाषा में उसे आज भी 'इन्द्रपत' कहते हैं। महाभारतकाल में यह युधिष्ठिर की राजधानी थी; किले का पुनर्निर्माण हुमायूँ का किया बतलाते हैं।

इ (ऐ) रावती—रावी (पंजाब) २. (अवध की) राप्ती (**अचिरावती**)। (गरुड़०)

इसिपत्तन—**ऋषिपत्तन**, सारनाथ।

उदण्ड(न्त)पुर—पटना जिले का 'बिहार' शहर, जो कभी बंगाल के पाल राजाओं की राजधानी था। यहाँ बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर की चन्दनमयी मूर्त्ति से सुशोभित एक प्रसिद्ध बौद्ध विहार भी है। (द्वाविंश अवदान)

उग्र—केरल (देवीपु०)। बिहार में **महास्थान** (पद्म०)।

उच्च—वरण, बुलन्दशहर, जहाँ जनमेजय ने 'नागसत्र' (अर्थात् पुराणों के प्रवचन) का प्रचलन किया था।

उज्जयिनी—प्राचीन **मालवदेश** (अर्थात् अवन्ती) की राजधानी। तीसरी सदी ई० पू० में बिन्दुसार के शासनकाल में अशोक यहाँ राज्यपाल थे। विक्रमादित्य संवत्प्रवर्तक ने शकों को

(५७ ई० पू०) पराजित कर इसे अपनी राजधानी बनाया था। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (द्वि०) ने सुराष्ट्र-मालव देश के शकों को भारत से निर्वासित कर उज्जैन की प्राचीन परम्पराओं को अन्ततः समाप्त कर दिया। गाथाओं में उदयन की प्रेम-लीलाओं का भी इधर से ही सम्बन्ध रहा है। शहर के मध्य में कभी यहाँ कालप्रियनाथ भगवान् का एक मन्दिर था, जहाँ शिव-पुराण के प्रसिद्ध १२ ज्योतिर्लिङ्गों में एक की प्रतिष्ठा थी।

उ(ओ)ड्र—उड़ीसा, **उत्कल** (उत्-कलिंग, अर्थात् **कलिंग** का उत्तर भाग)। इसकी दक्षिणी सीमा पर जगन्नाथ (**पुरी**) का प्रख्यात मन्दिर था। पुराणों के युग में उत्कल तथा कलिंग का विभाजन हो चुका था।

उत्तरकुरु—गढ़वाल तथा **हूणदेश** का उत्तरीय भाग, जो हिमालय के परतर प्रदेशों का एक पुंज था—और जिसे अर्जुन ने अपनी दिग्विजय में युधिष्ठिर के साम्राज्य का अङ्ग बना लिया था।

उत्तरापथ—काश्मीर तथा काबुल का 'एक राज्य'। २. उत्तर भारत (भारतवर्ष)।

उत्तरमद्र—फ़ारस में 'मद' प्रान्त, जिसमें अवस्ता का 'आर्यानन वाजों' (आर्य-अपवर्ग) भी सम्मिलित था।

उत्तरविदेह—नेपाल का दक्षिण भाग, जिसकी राजधानी **गन्धवती** थी। (स्वयंम्भू पुराण)

उत्पलारण्य—कानपुर से १४ मील दूर (आधु० 'बिठूर'), **'वाल्मीकि-आश्रम'**, जहाँ सीता ने प्रवास में लव तथा कुश को जन्म दिया था। यहीं पर, सरस्वती तथा दृषद्वती के 'मध्यदेश' (ब्रह्मावर्त्त) में ध्रुव के पिता उत्तानपाद ने **'प्रतिष्ठान'** की स्थापना की थी।

उदयगिरि—उड़ीसा में भुवनेश्वर के पाँच मील पूर्व एक पर्वत, जिसकी प्रसिद्ध गुहाओं में ई० ५०० पू०—५०० ई० के सहस्र वर्षों में भारतीय कलाकार अपना सर्वस्व उँडेलते रहे।

उदीच्य (भूमि)—सरस्वती के उत्तर-पश्चिम का प्रदेश। (अमरकोश)

उरग (पुर)—काश्मीर के पश्चिम में, जेहलम तथा सिन्ध नदियों के बीच का प्रदेश (हजारा); **उरशा, अभिसारा** (मत्स्य०)। २. त्रिचनापल्ली = उरैपुर, जो छठी शती में पाण्डवों की राजधानी थी; **नागपत्तन (?)**। (रघु०) ११वीं शती में चोळों का सम्पूर्ण तमिल देश पर प्रभुत्व जम चुका था। 'पवनदूत' का कवि इसे, **ताम्रपर्णी** पर प्रतिष्ठित करता हुआ, **भुजंगपुर** नाम से स्मरण करता है।

उरविल्व (ल्ल)—'गया' के ६ मील दक्षिण में, **'बुद्धगया'**, जहाँ छठी शती ई० पू० में भगवान् बुद्ध ने बोध प्राप्त किया था। यहीं से बोधिवृक्ष की शाखाओं का देश-विदेश में प्रतिरोपण हुआ था। आज यहाँ एक महान् विहार भी है, जिसकी स्थापना छठी शती ई० पू० में अमरदेव ने की थी।

ऋक्षपर्वत—विन्ध्य की पूर्व शाखा जो **शोण, शुक्तिमती, नर्मदा, महानदी** आदि का उद्गम है।

ऋषिपत्तन—(काशी में) **इसिपत्तन**; सारनाथ। (ललितविस्तर)

ऋष्यमूक—किष्किन्धा में (तुङ्गभद्रा पर) **पम्पा** का उद्गमस्रोत।

(ऋष्य) शृंगगिरि—मैसूर में वैलूर के उत्तर में एक पर्वतशृङ्ग, जहाँ स्वामी शंकराचार्य ने वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए (चार मठों में, दक्षिण में) 'शृङ्गेरी' का प्रसिद्ध मठ स्थापित किया था। (शंकरविजय)

एल(ा)पुर—एलोरा।

एरण्डपल्ल—खानदेश। (हरिषेणप्रशस्ति)

एरिकिण—एरण।

औदुम्बर—जि० गुरदासपुर।

कण्वाश्रम—सहारनपुर तथा गढ़वाल में से गुजरती **मालिनी** ('चुका') नदी के किनारे ऋषि कण्व का आश्रम था, जहाँ शकुन्तला का भरण-पोषण हुआ था। (कोटद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर)। (शतपथ०)

कनक—त्रावनकोर। (पद्म०)

कनिष्कपुर—श्रीनगर से दस मील दक्षिण की ओर कनिष्क की बसाई नगरी, जहाँ ७८ ई० में अन्तिम 'बौद्धसंगीति' का अधिवेशन तथा 'शक संवत्' का प्रवर्तन हुआ था।

कन्या(कुमारी)—'केप कौमोरिन' (सु)कुमारी।

कपिलवास्तु—शाक्यों की राजधानी, भगवान् बुद्ध की जन्मभूमि—जो आज फैज़ाबाद से २५ मील उत्तरपूर्व में, 'भुइला' के नाम से विदित है।

कपिलाश्रम—बंगाल में 'सागर-संगम' तीर्थ, जहाँ महाराज सगर के अश्वमेधीय अश्व का इन्द्र ने अपहरण किया था।

कपिशा—कुभा (काबुल) नदी के नाम पर उसका 'उत्तरप्रदेश' भी 'कपिशा' कहलाने लगा; कभी कपिशा नगरी 'गान्धार' साम्राज्य की राजधानी थी। २. रघुवंश में उड़ीसा की **'स्वर्णरेखा'** (नदी) को कवि ने 'कपिशा' (**पलाशिनी**) कहा है।

कम्बोज—(पूर्वी) अफ़गानिस्तान। अपग। (राजत०, मार्कण्डेय०) यास्क के अनुसार 'ग़लचा' भाषावर्ग का प्रदेश, जहाँ आज भी (!) √शु (गतौ) का क्रियात्मक प्रयोग (मात्र 'शव = प्रेत' नहीं) होता है; और जिसे अर्जुन ने अपनी दिग्विजय में युधिष्ठिर के साम्राज्य में जोड़ा था। (महा०)

करतोया—रंगपुर, दीनाजपुर, बोगरा में से गुजरती हुई एक तीर्थ नदी सदानीरा, जो कभी बंगाल तथा कामरूप (आसाम) की विभाजक रेखा थी। (स्कन्द०)

कर्णसुवर्ण—(बंगाल में) मुर्शिदाबाद जिले में, रंगामाटी (कानसोना), जो की आदिशूर की राजधानी थी।

कर्णाट—कुन्तलदेश, राज० **कल्याणपुर**।

कर्त्तृपुर—कुमाऊँ, गढ़वाल, अल्मोड़ा, कांगड़ा का पर्वतीय राज्य—जिसे समुद्रगुप्त ने विजित कर गुप्त-साम्राज्य का अंग कर लिया था। (हरिषेण०)

कलकुण्ड—(हैदराबाद में हीरों की खानों के लिए प्रसिद्ध) गोलकुण्डा; 'सर्वदर्शनसंग्रह'-कार माधवाचार्य की जन्मभूमि।

कलडि(टि)—(केरल में) शंकराचार्य की जन्मभूमि।

कलिंग—'उत्तरी सरकार' का इलाका, जिसको 'युद्धविजय' से खिन्न हुए अशोक में 'धर्मविजय' की प्रेरणा जगी थी। 'कलिंगविजय', भारत ही की नहीं, विश्व-भर की आत्मा में एक नवल चेतना-स्पर्श का मुहूर्त्त है। (एच० जी० वेल्स)

कलिंगनगर—(उड़ीसा में) **भुवनेश्वर (पुरी)**। (दशकुमार०)

कल्याणपुर—(निज़ाम साम्राज्य में) बीदर के ६ मील पश्चिम में, चालुक्यों (के **कुन्तलदेश**) की राजधानी।

काञ्ची (पुर)—कांजिवेरम्, जो शंकराचार्य द्वारा स्थापित 'विष्णुकाञ्ची' मन्दिर के लिए तथा 'नालन्दा विश्वविद्यालय' के लिए प्रसिद्ध है। अष्टमूर्त्ति शिव की 'भौतिक' मूर्त्तियों में 'आकाश-तत्त्व' की प्रतीक मूर्त्ति (**चिदम्बरम्**) इधर दक्षिण में हो क्यों मिलती है? (दे० **अरुणाचल**)

कान्यकुब्ज—विश्वामित्र की जन्मभूमि (रामायण), तथा (बौद्धयुग) में दक्षिण-पाञ्चालों की राजधानी—कन्नौज। हर्षवर्धन से पूर्व यह कुछ समय तक मौखरियों की राजधानी भी रहा। इसी के ('त्रिकोण' दुर्ग के) दक्षिण-पश्चिम में स्थित 'रंग-महल' से ही पृथ्वीराज ने संयोगिता का हरण किया था। (भविष्य०)

कामरूप—असम (अहोम, उच्चारण 'आसाम' नहीं) जिसकी राजधानी थी—**प्राग्ज्योतिष**। कुछ विद्वान् प्राग्ज्योतिष का **कामाख्या** अपिवा गोहाटी से एकीकरण करते हैं। (मेघदूत,

कालिका पु०) कुछ हो, 'कामदहन' का सारा का सारा वातावरण (तीर्थों तथा लोकवाङ्मय की साक्षी पर) इधर ही अधिक उचित उतरता है। (मेघदूत)

काम्पिल्य—दक्षिण पंचाल (द्रुपददेश) की राजधानी।

कार्तिकेयपुर—(कुमाऊँ में) बैजनाथ (वैद्यनाथ) तीर्थ। (देवी पु०)

कालीघाट—सती से सम्बद्ध इसी 'पीठ' के आधार पर 'कलकत्ता' का नामकरण हुआ प्रतीत होता है।

काश्यपपुर—उपनिषदों के 'चरैवेति' युग में ऋषि कश्यप द्वारा संस्थापित (उपनिवेशित) नगरों, प्रदेशों का 'सर्वनाम', यथा—**काश्मीर**, मुलतान।

काश्यपीगंगा—गुजरात की साबरमती (नदी)। (पद्म०)

किम्पुरुष (देश)—नेपाल।

किरात (देश)—नेपाल के सुदूरपूर्व की ओर किरातों की बस्ती—(**त्रिपुरा**) तिपारा, जहाँ 'त्रिपुरेश्वरी' का तीर्थमन्दिर है। (ब्रह्म०)

किष्किन्धा—तुङ्गभद्रा के दक्षिण तट पर धारवाड़ में आज भी इसे उसी पुराने नाम से लोग जानते हैं। लोकगाथा के अनुसार, यहीं (राक्षस) बाली का ध्वंस हुआ था। अयोध्या से किष्किन्धा तथा किष्किन्धा से लंका—कुल दो सौ मील की दूरी थी। 'लंका'—सिंहल (सीलोन) नहीं है।

कुण्डग्राम—**वैशाली** का एक और नाम, जो महावीर की जन्मभूमि था और आधुनिक मुज़फ़्फ़रपुर (तिरहुत) में अवस्थित था। (जैनसूत्र)

कुण्डिनपुर—विदर्भ की प्राचीन राजधानी, बीदर (?)। (मालतीमाधव)

कुन्तल (देश)—नर्मदा, तुङ्गभद्रा, पश्चिमसागर और गोदावरी से सीमित इस प्राचीन देश ने चालुक्यों तथा मराठों के हाथ कई उत्थान-पतन देखे, कई राजधानियाँ (कल्याण, नासिक) बदलीं। (दशकुमार०, तारातन्त्र)

(कुन्ती) भोज—मालवदेश का एक पुराना नगर, जहाँ पाण्डवों की माता का बाल्यकाल, 'कुन्तीभोज' की छत्रछाया में बीता था।

कुभा (कुहु)—काबुल (नदी)।

कुमारवन—कुमाऊँ, कूर्माचल। (विराटपर्व)

कुम्भघोण—तंजोर ज़िले में चोलों की राजधानी तथा विद्यापीठ रहा है। (चैतन्यचरित०)

कुरुक्षेत्र—'महा'भारतों का धर्मक्षेत्र भी, युद्धक्षेत्र भी—थानेसर।

कुरुजांगल—हस्तिनापुर के दक्षिण पश्चिम का 'आरण्यक' प्रदेश।

कुलिन्द (देश)—कभी सतलज तथा गंगा के बीच का सारा प्रदेश 'कुलिंद' कहलाता था, आज गढ़वाल के साथ (उत्तर) दिल्ली तथा सहारनपुर उसमें शामिल करने होंगे। (महा०)

कुलूत—कुल्लू; कभी कुलिन्द का ही एकांश था। (बृहत्संहिता)

कुश(भवन)पुर—अवध में **गोमती** के तट पर, सुलतानपुर। इक्ष्वाकुओं की पुरानी राजधानी अयोध्या को छोड़कर, कुश इधर आ बसा था। (रघु०)

कुशाग्रपुर—मगध की प्राचीन राजधानी, **राजगृह, गिरिव्रज।**

कुशस्थली—द्वारिका। इतिहास में **आनर्तों** की राजधानी भी रही है। प्रसिद्ध विद्वान् कीथ ने इसे (मुन्शीजी की 'हिस्टरी आव गुजरात' पर संमति देते हुए) श्रीकृष्ण, दयानन्द तथा गांधी की जन्मभूमि होने का श्रेय दिया है।

कुशीनगर—जहाँ भगवान् बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था, गोरखपुर के निकट आधु० 'कसिया' गाँव (विल्सन)।

कुसुमपुर—पाटलिपुत्र (पटना)। (मुद्राराक्षस)

कूर्माचल—कुमाऊँ। **कुमारवन**।

केकय—व्यास तथा सतलज के बीच का प्रदेश, जिसकी एक राजकुमारी (कैकेयी) की ईर्ष्या से राम को वनवास मिला था।

कोसल—अयोध्या। जब कोसल साम्राज्य की (उत्तर, दक्षिण) दो भागों में विभक्त कर दिया गया, उनकी राजधानियाँ भी क्रमशः **कुशावती** तथा **श्रावस्ती** बन गईं। भगवान् बुद्ध के समय में कोसल एक बलशाली साम्राज्य था, कपिलवस्तु तथा बनारस उसके अन्तर्गत थे। किन्तु, ३०० ई० पू० में इसका मगध में समावेश हो गया और इसकी राजधानी भी तब श्रावस्ती न रहकर पाटलिपुत्र हो गई। कहीं-कहीं दक्षिण-कोसल की प्रतिष्ठा 'महाकोसल' नाम से भी मिलती है।

कौशाम्बी—इलाहाबाद के प्रायः ३० मील पश्चिम की ओर 'कोसम' जो कभी **वत्सदेश** की राजधानी थी। (बृहत्कथा, भास)

क्रोड़ (देश)—कुर्ग। (कावेरीमाहात्म्य)

क्रौञ्च (-रन्ध्र,-पर्वत)—'तिब्बत तथा भारत' में (कुमाऊँ की घाटी में) प्रवेशद्वार, जिसका 'उद्घाटन' परशुराम ने किया था। कुछ विद्वानों के अनुसार यह 'बर्मा–आसाम' की पूर्वीय पर्वतमाला का द्योतक है। रामायण के अनुसार क्रौंचपर्वत कैलास का वह भाग है जहाँ मानसरोवर झील शोभायमान है। तो क्या 'कैलास' शिव-पार्वती के दस क्रीड़ा शैलों का एक सामान्य नाम है और तथैव क्या मानसरोवर का भी ?

खष(स)—किष्टवाल तथा **वितस्ता** के बीच का इलाका, जिस पर कभी खसों का 'साम्राज्य' था। कुछ विद्वानों के अनुसार इन पार्वतीय खसों को परास्त करके ही चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' बने थे, किन्तु अधिक सम्भव यही है कि शकाधिपति किदार को वक्षु तक खदेड़ कर चन्द्रगुप्त ने शकों का नामशेष तो किया ही था, साथ ही गुप्तों की डूब चुकी प्रतिष्ठा का उद्धार करके वे वराह–अवतार भी कहलाये। (देवीचन्द्रगुप्त, हर्षचरित, रघुवंश १३)

गजसाह्वय—हस्तिनापुर। (भागवत०)

गजेन्द्रमोक्ष—गंगा तथा गण्डकी के संगम पर प्रसिद्ध तीर्थ (भागवत०)। **शोणपुर**।

गन्धमादन—कैलास की दक्षिणी शाखा, जहाँ कभी हनुमान् का आवास था—**बदरिकाश्रम** भी यहीं स्थित है। (कालिका०, विक्रमो०)

गाधिपुर—कान्यकुब्ज (कन्नौज) जिसे विश्वामित्र के पिता ने बसाया था।

गान्धार, गन्धर्वदेश—काबुल नदी के साथ-साथ बसा हुआ कुनार तथा सिन्ध नदियों का 'मध्यदेश', जिसमें कभी पेशावर तथा रावलपिण्डी समाविष्ट होते थे। **पुरुषपुर** (पेशावर) तथा **तक्षशिला** इसकी दो राजधानियाँ थीं।

गिरिकर्णिका—(गुजरात में) साबरमती।

गिरिनगर—गिरिनार–जूनागढ़ में एक पर्वतमाला, जहाँ नेमिनाथ तथा पार्श्वनाथ के प्रसिद्ध जैन-मन्दिर हैं। कभी ऋषि दत्तात्रेय का आवास था। अशोक के कुछ शिलालेख यहाँ भी अभिलिखित हुए थे। **सुदर्शन** झील का तथा उसके उद्धारक रुद्रदामन् का नाम भी इससे सम्बद्ध है। (स्कन्द०, बृहत्सं०)

गिरिव्रज—(बिहार में) मगध की प्राचीन राजधानी—**राजगृह**—'वसु' के द्वारा संस्थापित होने से इसे **वसुमती** भी कहा जाता है (रामायण)। 'बुद्धयुग' में इसे **कुसुमपुर** भी कहने लगे थे। प्रसिद्ध विश्वविद्यालय 'विक्रमशिला (विहार)' यहीं स्थित था। (महावग्ग)

गृध्रकूट—'गिरिनगर' के दक्षिण की ओर रत्नगिरि शृङ्खला का एक भाग, जहाँ तपोमग्न बुद्ध पर

देवदत्त ने शिला फेंकी थी। यहीं, जीवक-वन में, अजातशत्रु तथा उसके प्रधानमन्त्री वर्षकार ने स्वयं भगवान् की सेवा में उपस्थित हो, 'पाटलिपुत्र' की स्थापना-योजना बनाई थी। (चुल्लवग्ग)

गुप्तकाशी—(उड़ीसा में) भुवनेश्वर। (कुमाऊँ में) शोणितपुर (हरिवंश)।

गोकर्ण—(उत्तर गो०) गंगोत्तरी से ८ मील दूर, भगीरथ का 'तपोवन'। (दक्षिण गो०) करवाल में गेंडिया तीर्थ।

गोकुल—कृष्ण के बाल्यकाल की क्रीड़ाभूमि—व्रज-गोकुल मथुरा से ६ मील पर है।

गो(गौ)तमी—गोदावरी। (शिव०)

गोनर्द(न्द)—पंजाब, क्योंकि काश्मीर के राजा गोनर्द ने इसे जीत लिया था। एक 'गोनर्द' अवध में भी है, (गोंडा), जहाँ महाभाष्यकार पतंजलि ने जन्म ग्रहण किया था।

गोपकवन—आधु० गोआ। (विक्रमांकदेवचरित)।

गोपाद्रि—१. रोहतास (पर्वत)। २. काश्मीर में 'तख्ते-सुलेमान', जिसे शास्त्रों में 'शङ्कराचार्य' पर्वत भी कहा गया है। ३. ग्वालियर। (राजतरंगिणी)

गोवर्धन—वृन्दावन से १८ मील दूर, वही पर्वत जिसे ('पैथो' ग्राम में) बाल कृष्ण ने अपनी उंगली पर उठा लिया था।

गौड़—(मगध-साम्राज्य से मुक्त हुए) बंगाल की प्रतिष्ठा (७वीं सदी में) इस नाम से हुई थी। यह अंग देश के दक्षिण में था। (हर्ष०)

गोमती, चर्मण्वती (दे० 'रन्तिपुर')। गोमल।

घर्घरा—घग्गर नदी, जो कुमाऊँ से निकल कर सरयू में आ मिलती है। (पद्म०)

चक्षु—वक्षु (इक्षु) और आमू नामक नदी जो महाभारत, रघुवंश तथा चन्द्र के महरौली अभिलेख के अनुसार 'शाकद्वीप' में बहती थी।

चन्दनगिरि, मलयगिरि—मालाबार घाट। (त्रिकाण्ड०)

चन्दना—साबरमती।

चन्द्रभागा—चनाब (चन्द्रिका), जिसकी एक शाखा असिक्नी थी।

चम्पा—श्यामाद्वीप (ह्यून्त्सांग)। २. अंग तथा मगध के बीच रहनेवाली चम्पा नदी (पद्म०)। ३. चम्ब। रियासत (राजतरंगिणी)। ४. अंग देश की राजधानी (जिसका पुराना नाम 'मालिनी' था)।

चम्पारण्य—(मध्य भारत में) राजिम के पाँच मील उत्तर में, जैनों का एक तीर्थ (जैमिनि-भारत)। २. पटना डिवीज़न में 'चम्पारन'। (शक्तिसंग्रह-तन्त्र)

चरणाद्रि—(मिर्ज़ापुर में) चुनार का प्रसिद्ध अजेय दुर्ग, जिसे बंगाल के पाल राजाओं ने ८–१२वीं सदियों में बनवाया था।

चरित्रपुर—(उड़ीसा में) पुरी का तीर्थ, तीर्थपुरी।

चर्मवती—'रन्तिपुर' गोमती नदी।

चिताभूमि—सन्थाल परगना में, वैद्यनाथ अथवा देवघर, जहाँ १२ ज्योतिर्लिंगों में एक (रावण द्वारा स्थापित) है।

चित्रकूट—बुन्देलखण्ड में पयस्विनी मन्दाकिनी के तट पर वह पर्वत-तीर्थ, जहाँ भगवान् रामचन्द्र ने अपने प्रवास की कुछ आद्यावधि बिताई थी।

चिदम्बरम्, चित्तम्बलम्—दक्षिण में शिव की पाँच भौतिक मूर्तियों में 'आकाश-तत्त्व' का प्रतिष्ठा-स्थान। (देवी भाग०)।

चेदि—'काली-सिन्धु' तथा तोंस के मध्यगत, बुन्देलखण्ड तथा मध्यप्रान्त का कुछ भाग, जो कभी 'शिशुपाल' की राजधानी था।

चैत्यगिरि—भीलसा से तीन मील उत्तर की ओर, बेस्ननगर—जहाँ अशोक का ससुराल था। (कपिलवस्तु में लुम्बिनी, सारनाथ में बोधगया, काशी में मृगदाव, श्रावस्ती में जेतवन, मगध में राजगृह वैशाली, कुशीनगर आदि बौद्धों के ८ तीर्थ 'चैत्य' कहाते हैं।) कुछ विद्वानों ने इसकी स्थिति-समता सांची तथा विदिशा से भी की है। (महावंश)

चोल—पिनाकिनी (पेन्नार) तथा कुर्ग नदियों के बीच में कोरोमण्डोल घाट जिसकी राजधानी, कावेरी पर अवस्थित, 'उदैपुर' थी।

च्यवन—(बंगाल के शाहाबाद जिले में) च्यवन ऋषि का आश्रम।

जन(क)स्थान—गोदावरी तथा कृष्णा के बीच का प्रदेश (जनकपुर-विदेह) तथा औरंगाबाद जो 'पहले' दण्डकारण्य का एक भाग था—दण्डकारण्य में पंचवटी (नासिक) भी शामिल थी। (भवभूति)

जमदग्नि—गाज़ीपुर में ('ज़मानिया' नाम से प्रसिद्ध) ऋषि परशुराम का आश्रम।

जाबालिपुर—जबलपुर। (प्रबन्धचिन्तामणि)

जयपुर—प्राचीन मत्स्यदेश, विराटनगर।

जाह्नवी—गंगा। किन्तु, जह्नु का आश्रम आजकल, सुलतानगंज (भागलपुर) के संमुख गंगा से निकल रही एक चट्टान पर था, ऐसा बताते हैं।

जीर्णनगर—पूना ज़िले का जुनेर—जो कभी क्षत्रप राजा नहपान की राजधानी था।

जूर्णनगर—यवननगर, जूनागढ़।

जेतवन (विहार)—श्रावस्ती से १ मील दक्षिण की ओर 'जोगिनीभरिया' नाम का टीला, जहाँ कभी उपवन के अन्दर श्रावस्ती के श्रेष्ठी दानवीर 'अनाथ-पिण्डक' सुदत्त ने एक 'विहार' स्थापित किया था। (चुल्लवग्ग)

ज्वालामुखी—कांगड़ा में एक 'पीठ', जहाँ 'सती' की जिह्वा गिरी थी। ज्वालामुखी पर्वत की ऊँचाई ३२८४' है, जहाँ १८८२' पर महेश्वरी की एक 'मूर्ति' स्थापित है।

झाळखण्ड—छोटा नागपुर, जिसको राजा मधुसिंह की पराजय के अनन्तर अकबर ने १५८५ ई० में मुग़ल-साम्राज्य में मिला लिया था।

टक्क—व्यास तथा सिन्धु के मध्य का प्रदेश, पंजाब। (मृच्छकटिक)

तक्षशिला—जिला रावलपिण्डी का एक प्राचीन नगर, जहाँ बौद्धयुग में एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। पाणिनि तक्षशिलाविद्यापीठ में 'आचार्य' थे। 'दिव्यावदान' में अंकित है कि बुद्ध किसी पूर्वजन्म में 'भद्रशिला' के राजा थे, जहाँ एक ब्राह्मण भिक्षु ने उनका सिर काट डाला था। तब से भद्रशिला को लोग 'तक्षशिला' कहने लगे। बौद्धयुग में यहाँ पाणिनि के 'संस्कृत व्याकरण' का अध्यक्ष नियुक्त होना (तथा धनुर्वेद का पाठ्यक्रम में समावेश) हमारी बौद्ध 'पाली' तथा अहिंसा-विषयक धारणाओं को एकदम निर्मूल सिद्ध कर देता है।

तपनी—ताप्ती; तापती। (मेघदूत)

तमसा—(अवध में) तोंस नदी, जिसके तट पर वाल्मीकि का 'आदि' जीवन बीता था।

तालवन—कावेरी पर चोळ राजाओं की पुरानी राजधानी, 'तळकाळ'। तीसरी सदी से यहाँ गंगवंश का राज्य रहा था, जिसे ११वीं सदी में चोळों ने तमिळ देश से उखाड़ फेंका।

ताम्रपर्णी—(बौद्ध वाङ्मय में) सिंहल द्वीप। २. दक्षिण में अगस्त्यकूट पर्वत से उद्भूत ताम्रपर्णी नदी। (रघुवंश)

ताम्रलिप्ती—प्राचीन सुह्म देश की एक नदी एवं राजधानी; मौर्यकाल से लेकर गुप्तों के पतन तक (एक सहस्र वर्ष !) इसका यथावत् ऐतिहासिक महत्त्व रहा। (महा०, रघु०)

तीरभुक्ति—तिरहुत। (देवीभाग०)

तुंगभद्रा—मैसूर के दक्षिण-पश्चिमी सीमान्त पर कृष्णा की सहायक नदी।

तुण्डीरमण्डल—द्रविड़ देश का एक भाग, '**तोण्डमण्डल**' (कोरोमण्डल ?) जिसकी राजधानी काञ्चीपुर थी। (मल्लिकामारुत)

तुरुष्क—पूर्वी तुर्किस्तान। (गरुड़०)

तुषार—यूनानी लेखकों का 'वेक्ट्रिया' तथा अरबी लेखकों का 'तुखारिस्तान', जिसमें बलख़ तथा बदख़शां शामिल थे।

तृष्णा—तिस्तानदी। शाल्मलि द्वीप (क ल्दिआ) में '**टाइग्रिस नदी**'।

त्रिककुद्, त्रिविष्टप—(तिब्बत)। २. त्रिकूट (सिंहल में भी ?)। ३. जुनर।

त्रि(क)लिंग—तेलंगाना।

त्रिगर्त—जालन्धर—'रावी–व्यास–सतलज' का 'ति–आब'।

त्रिपदी(ति)—तिरुपति, वेङ्कटगिरि। रामानुज ने यहाँ विश्वनाथ की मूर्ति स्थापित की थी, 'रस-गंगाधर' के रचयिता पण्डितराज जगन्नाथ की जन्मभूमि।

त्रिपुरा—**किरात देश**, तिपारा—जो कामरूप के अन्तर्गत था।

त्रिपुरी—जबलपुर से सात मील पश्चिम में, नर्मदा तट पर, 'तिओर' जहाँ महादेव ने त्रिपुरासुर का वध किया था (लिङ्ग०)। २. कळचुरियों की राजधानी—**चेदिनगर**। ३. **शोणितपुर**।

त्रिवेणी—(प्रयाग में) गंगा-यमुना-सरस्वती का, तथा पूर्व की ओर गण्डकी-देविका-ब्रह्मपुत्र का 'संगम-तीर्थ'। (बंगाल में 'मुक्त' त्रिवेणी, इलाहाबाद में 'युक्त'-त्रिवेणी)!

त्रिशिरपल्ली—'त्रिचनापल्ली', जहाँ रावण का सेनापति रहा करता था।

त्र्यम्बक—नासिक से २० मील पर, प्रसिद्ध गोदावरी-तीर्थ।

दक्षिण-गंगा—गोदावरी अथवा कावेरी अथवा नर्मदा अथवा तुङ्गभद्रा।

दक्षिणगिरि—**दशार्ण** (कालिदास), जिसकी राजधानी 'चैतिय' थी, भूपाल राज्य।

दक्षिण-मथुरा—मदुरा अथवा **मीनाक्षी**, पाण्ड्यों की प्राचीन राजधानी।

दक्षिणापथ—दाक्षिणात्य जनपद, अर्थात् 'विन्ध्य के दक्षिण का भारत'।

दण्डकारण्य—विन्ध्य तथा शिवालय के मध्य का '**महाकान्तार**' अथवा '**महाराष्ट्र**', जो जनस्थान के पश्चिम में था। (भवभूति)

दर्दुर—(मद्रास में) नीलगिरि पर्वतमाला।

दर्भवती—(गुजरात में) दभोई।

दशपुर—(मालवा में) मन्दसोर (मन्ददशपुर) अर्थात् दासोर।

दशार्ण—'पूर्वी मालव' देश। (दक्षिणगिरि) जिसकी राजधानी (अशोक के समय में) '**चैत्यगिरि**' थी।

दाशेरक—मालवा। (त्रिकाण्ड०)

दुर्जयलिंग—दार्जिलिंग।

दुर्वासाश्रम—भागलपुर से १५ मील की दूरी पर; 'कलहग्राम' के निकट, 'खड़ी पहाड़' पर दुर्वासा ऋषि का आश्रम।

दृषद्वती—अम्बाला और सरहिन्द के मध्य की नदी, घग्गर।

देवगिरि—निज़ाम राज्य में, दौलताबाद। २. महाराष्ट्र (**देवराष्ट्र ?**) में। **शिवालय**। ३. अर-वळी की एक शाखा। (मेघदूत)

देवपत्तन—**प्रभास = सारनाथ**।

देवपुर—मध्यभारत में, महानदी तथा पैड़ी के संगम पर, राजिम।

देवराष्ट्र, महाराष्ट्र (?)—समुद्रगुप्त की दक्षिण-विजय के समय इसका राजा कुबेर था।

देवीकोट—कुमाऊँ में स्थित शोणितपुर।

द्रमिळ—पूर्वी घाट पर पल्लवों का देश; जिसके नाम-भ्रंश द्रविड़, तामिल आदि हैं।

द्रोणाद्रि—कूर्माचल (कुमाऊँ) पर द्रोणाचार्य का तपोवन।

द्वारावती—द्वारिका, कुशस्थली।

द्वैतवन—(उत्तर प्रदेश में) 'देवबन्द' तपोवन, जहाँ जुए में हारे पाण्डव वनवासी थे। (किराता०)

(बहु)धनक-बहुधान्यक=रोहितक; आधु० रोहतक।

धन(न)कटक—(मद्रास में) आन्ध्रभृत्यों, सातकर्णियों (सातवाहनों) की राजधानी, धारणिकोट, धान्यवतीपुर।

धर्मारण्य—गया से ५ मील की दूरी पर, बौद्धों का प्रसिद्ध तीर्थस्थान, जहाँ आज धर्मेश्वर को अर्पित एक मन्दिर है। मिर्जापुर के मोहरपुर को भी कुछ विद्वान् 'धर्मारण्य' समझते हैं। जहाँ अहल्यापति गौतम द्वारा अभिशप्त इन्द्र ने तप किया था।

धवलगिरि—उड़ीसा की 'धौली' पर्वतमाला, जहाँ अशोक के कुछ अभिलेख उपलब्ध हुए हैं।

धारा (नगर)—मालवा में राजा भोज की प्राचीन राजधानी 'धार'।

नगरकोट—कांगड़ा। (तीर्थ)

नगरहार—जलालाबाद के ५ मील पश्चिम की ओर, सक्खर तथा काबुल से संगम पर अवस्थित, ऐतिहासिक नगर।

नन्दिकुण्ड—साभ्रमती (साबरमती) का उद्गम स्रोत।

नन्दिग्राम—(अवध में) 'नन्दगाँव', जहाँ भरत ने राम के बिछोह में १४ वर्ष काटे थे। इसका एक और नाम 'भादरासा' (भ्रातृदर्शन) भी है।

नलपुर—ग्वालियर से ४० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर काली-सिन्धु पर, राजा नल की राजधानी, 'नरनाव'।

नलिनी—ब्रह्मपुत्र नदी। (रत्ना० पद्म०)

नवद्वीप—(बंगाल में) चैतन्य महाप्रभु की जन्मभूमि 'नदिया', कभी यहाँ विश्वविख्यात 'नवद्वीप' विद्यापीठ था।

नवराष्ट्र—बम्बई के भड़ोच जिले में, नौसारी।

नागनदी—अचिरावती, राप्ती।

नाट(क)—लाट। (गुजरात)

नारायणी—गण्डक नदी।

नालन्दा—पटना में, राजगृह के दक्षिण-पश्चिम की ओर अवस्थित, प्राचीन बौद्ध विश्वविद्यालय।

नासिक्य—पञ्चवटी। (नासिक)

निच्छवी—लिच्छवि (तिरहुत), तीरभुक्ति।

निर्विन्ध्य (ा)—चम्बल की एक धारा, 'नेवुज'। (मेघदूत)

निवृत्ति—पुण्ड्रदेश का पूर्वीय भाग, जिसकी राजधानी पुण्ड्रवर्धन थी; गौड़। (त्रिकाण्ड०)

निषध—राजा नल की राजधानी—मारवाड़ तथा जोधपुर का प्रदेश। २. नागों की 'निषाद-भूमि'। (ब्रह्माण्ड०)

नीच—भूपाल में, भीलसा के दक्षिण की ओर की गिरिश्रृङ्खला, नीचाक्ष। (मेघदूत, देवी०)

नीलगिरि—पुरी (उड़ीसा) की गिरिश्रृङ्खला, जहाँ जगन्नाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है। हरिद्वार की नील धारा पर छाये चण्डी पर्वत को भी 'नील'गिरि कहते हैं। किन्तु इन्द्रनील पर्वत, जहाँ अर्जुन ने पाशुपत अस्त्र की सिद्धि के लिये तप किया था, तो द्वैतवन के निकट ही कहीं होना चाहिए। (किराता०)

नि(नै)रंजना (रा)—फल्गु नदी (अश्वघोष), जिसके तट पर भगवान् बुद्ध को बोध प्राप्त हुआ था।

पंचकेदार—गढ़वाल की पर्वतमाला पर केदारनाथ, तुङ्गनाथ, रुद्रनाथ, मध्यमेश्वर, कल्पेश्वर नाम के (महादेव के अंगांग के द्योतक) पाँच शृङ्ग। (बदरीविशाल०)

पंचगौड़—बंगाल से प्राचीन विभाग—पुण्ड्र, राढ़, मगध, तीरभुक्ति, वारेन्द्र। (राजत०)

पंचग्राम—दे० पाणिप्रस्थ।

पंचतीर्थ—हरिद्वार की पश्चिमी घाटी में (सप्त-, सीता-, अमृत-, राम-, सूर्य-) कुण्ड। (स्कन्द०)

पंचद्रविड़—द्राविड़, कर्णाट, गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्र—दक्षिण के जिस विभाग का आधार, भूगोल नहीं, ब्राह्मणों का 'अन्तर्जातीय भेद' है।

पंचनद—पंजाब। कुरुक्षेत्र में एक तीर्थस्थान। कृष्णा, वेन, तुङ्ग, भद्रा, कोन (नदियों का) 'दाक्षिणी' पंचाल।

पंचप्रयाग—विभिन्न संगमों पर अवस्थित देव, कर्ण, रुद्र, नन्द तथा विष्णु—'प्रयाग' तीर्थ।

पंचबदरी—बदरीनाथ, वृद्धबदरी, भविष्यबदरी, आदिबदरी, पाण्डुकेश्वर आदि।

पंचवटी—नासिक्य (नासिक), जहाँ रावण ने सीता का अपहरण किया था। यहीं शूर्पणखा तथा मारीच के काण्ड हुए थे।

पंचाल—रोहिलखण्ड, जो पहले गंगा की धारा द्वारा दक्षिण तथा उत्तर पंचालों में विभक्त था। उत्तर पंचाल की राजधानी अहिच्छत्रा थी, दक्षिण (जहाँ की द्रौपदी थी) की कांपिल्य।

पद्मक्षेत्र—उड़ीसा में, 'कोणार्क' नाम से प्रसिद्ध सूर्य-मन्दिर।

पद्मपुर, पद्मावती—भवभूति की जन्म तथा दीक्षाभूमि, आधु० पद्मपवाया (विजयनगर = विद्यानगर)। (उत्तरचरित)

पम्पा—किष्किन्धा में, तुङ्गभद्रा की एक धारा। यहाँ पर, ऋष्यमूक के चरणों में 'पम्पा' सरोवर भी है।

पयस्विनी—त्रावनकोर में, पापनाशिनी नदी।

परुष्णी—इरावती (पंजाब की रावी) नदी।

पर्णाशा—राजपूताना में, चम्बल की एक धारा, बनास।

पलक्क-ड़—पालघाट, दशनपुर।

पलाशिनी—कपिशा, सुवर्णरेखा।

पल्लव—दक्षिण में, कोरोमण्डल से सीमित देश—राज० काञ्ची।

पवमान—पारियात्र की, एवं हिन्दूकुश की, एक पर्वतमाला।

पशुपतिनाथ—(नेपाल) मृगस्थली में, महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर।

पश्चिम सागर—अरब सागर।

(अ?) पह्ल(न)व—प्राचीन पार्थ (फारस) राज्य का 'मद' प्रदेश। यहीं की 'पह्लवी' लिपि में जेन्द 'अवस्ता' को सर्वप्रथम लेखबद्ध किया गया था। पह्लव देश कभी (अरबी?) घोड़ों के लिए भी विख्यात था।

पाटलिपुत्र—पटना, जिसका मूल निर्माण अजातशत्रु (४८० ई० पू०) ने किया था। मगध की प्राचीन राजधानी गिरिव्रज (राजगृह) का त्याग कर, पाटलिपुत्र को नयी राजधानी उदयाश्व ने बनाया था।

पाठेय्य—बुद्ध-युग में 'पश्चिमी' भारत—जिसमें कुरु, पंचाल, अवन्ती, गान्धार, कम्बोज, शूरसेन आदि सम्मिलित थे। (महावग्ग)

प्राणिप्रस्थ—पानीपत। पाणि, शोण, इन्द्र, तिल, भाग—ये पाँच 'प्रस्थ' (ग्राम) लेकर भी

युधिष्ठिर सन्तुष्ट था, किन्तु दुर्योधन न माना। इन 'पाँच ग्रामों' के नाम महाभारत में तथा वेणीसंहार में कुछ भिन्न हैं।

पाण्डू (पाण्ड्य)—दक्षिण के आधु० तिन्नेवेल्ली तथा मदुरा डिवीजन—जो समय-समय पर अपनी राजधानी—उरैपुर>मदुरा>कोल्कई—बदलते रहे। यहाँ के राजा पुरु ने २६ ई० पू० में अपने दूत रोम भेजे थे।

पाताल—(रामायण में) अश्मन्वती (आमू) के उत्तर में और बलख़ के द० पू० अश्मक = 'औक्सियाना' देश।

पापनाशिनी—पयस्विनी।

पारसमुद्र—सिंहल। (अर्थशास्त्र)

पारसीक, पारस्य—फ़ारस। (रघु०, विष्णु०)

पारस्कर—सिन्ध में 'थल-पारकर'। (पाणिनि)

पारिया(पा)त्र—विन्ध्य की पश्चिमी शाखा, जो कभी आर्यावर्त्त की दक्षिणी सीमा थी। (महाभाष्य)

पावनी—(कुरुक्षेत्र में घघंरा = दृषद्वती) घागर नदी, जो पंजाब के हिन्दी-पंजाबी जनपदों की प्राकृतिक 'सीमा' है।

पिनाकिनी—(मद्रास में) नन्दिदुर्ग से उद्गत, 'पेन्नार' नदी।

पिष्टपुर—गोदावरी जि० में, 'पिठापुर'। (हरिषेणप्रशस्ति)

पुण्ड्रवर्धन—पंचगौड़ (बंगाल) में, गंगा तथा हेमाद्रिकूट का 'मध्यदेश'।

पुण्यपत्तन—पुणे, पूना, पुनक।

पुरुषपुर—गान्धार देश की (एक) राजधानी, पेशावर। (विप० स्त्रीराज्य)

पुरुषोत्तमक्षेत्र—(बिहार में) पुरी।

पुलिन्द—भारत की पूर्वीय (कामरूप) तथा पश्चिमीय (बुन्देलखण्ड, सागर) सीमाओं पर कभी पुलिन्दों तथा शबरों के घर थे।

पुष्कर—अजमेर से ६ मील दूर, झील 'पोखड़ा'। महाभारत के समय में यहाँ उत्सवसंकेतों की सात (म्लेच्छ ?) जातियाँ रहा करती थीं।

पुष्करद्वीप—मध्य-एशिया में, 'बोख़ारा'।

पुष्करावती—प्राचीन गान्धार की राजधानी—जिसे भरत ने अपने पुत्र के नाम से बसाया था और जिस (अष्टनगर) पर सिकन्दर का पहला आक्रमण हुआ था।

पुष्करावती नगर—रंगून। (दीपवंश)

पुष्पपुर—कुसुमपुर, पटना।

पूर्वगंगा—नर्मदा।

पृथूदक—करनाल में, सरस्वती नदी पर, 'पेहोवा'—जहाँ प्रसिद्ध 'ब्रह्मयोनितीर्थ' अवस्थित है।

पृष्ठचम्पा—बिहार।

पौरव—जेहलम के पूर्व में, पौरवों का राज्य—जहाँ सिकन्दर पुरु की 'अग्निपरीक्षा' पर चकित रह गया था।

प्रतिष्ठान—उत्पलारण्य (बिठूर), जहाँ के (राजा उत्तानपाद के पुत्र) ध्रुव ने मथुरा में घोर तपस्या की थी। पालिग्रन्थों में गोदावरी के तट पर अश्व(श्म)ल (महाराष्ट्र) की (राजधानी) का उल्लेख 'ब्रह्मपुरी' प्रतिष्ठान नाम से हुआ है। इलाहाबाद के संमुख गंगा-पार झूँसी को आज भी 'प्रतिष्ठानपुर' कहते हैं। ज़िला गुरदासपुर (औदुम्बर) की राजधानी पठानकोट का भी पुराना नाम 'प्रतिष्ठान (कोट ?)' ही था।

प्रत्यग्रह—अहिच्छत्र।

प्रभास—काठियावाड़ (जूनागढ़) में सोमनाथ का प्रसिद्ध तीर्थ, प्राचीन नाम देवपत्तन। यहीं भगवान् कृष्ण का प्राणोत्सर्ग हुआ था।

प्रयाग—प्राचीन कोसल का वह भाग, जिसकी राजधानी प्रतिष्ठान (झूँसी) थी। इतिहास में पुरूरवा (दुष्यन्त), नहुष, ययाति, पुरु, भरत का सम्पर्क इधर से ही अधिक रहा है, आधुनिक इलाहाबाद।

प्रवरपुर—प्रवरसेन द्वितीय द्वारा प्रतिष्ठापित (काश्मीर की राजधानी) श्रीनगर।

प्रस्थल—फ़िरोज़पुर-पटियाला-सिरसा के अन्तर्गत प्रदेश। (मार्क०)

प्रस्रवण—गोदावरी के तट पर, जनस्थान में शोभायमान (औरंगाबाद) की पहाड़ियाँ, जिन्हें रामायण में माल्यवान् (गिरि) भी कहा गया है।

प्रह्लादपुरी—मुलतान।

प्राग्ज्योतिष—प्राचीन 'कामरूप' की राजधानी—कामाख्या, गोहाटी।

प्राच्य—(सरस्वती के) दक्षिण-पूर्व का भारतवर्ष।

फल्गु—निरंजना नदी—भगवान् बुद्ध के नव जन्म एवं बोध की भूमि। (अश्वमेध)

बंग—'बंगाल', किन्तु दे० पंचगौड़।

बदरी—बदरिकाश्रम, बदरीनाथ। दे० पंचबदरी।

बालुकेश्वर—(बम्बई के निकट) 'मालाबार हिल'।

बालोक्ष—बलोचिस्तान। (अवदानकल्पलता)

बिन्दुसर—गंगोत्तरी के दो मील दक्षिण की ओर, 'रुद्र हिमालय' पर प्रसिद्ध सरोवर, जो भगीरथ की तपोभूमि था।

बेस्सनगर—वैश्यनगर (?) भूपाल में, साँची के निकट, भीलसा से तीन मील पर, चैत्यनगर, जो प्राचीन दशार्ण की राजधानी था। दे० चैत्यगिरि।

ब्रह्मकुण्ड—ब्रह्मपुत्र का उद्गम-स्रोत।

ब्रह्मदेश—बर्मा।

ब्रह्मनाल—काशी में, 'मणिकर्णिका' कुण्ड।

ब्रह्मर्षिदेश—ब्रह्मावर्त तथा यमुना के अन्तर्गत देश—जिसमें कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पंचाल तथा शूरसेन समाविष्ट थे। (मनुसं०)

ब्रह्मसर—रामहृद।

ब्रह्मावर्त्त—सरस्वती तथा दृषद्वती का 'मध्यप्रदेश', जो आर्यों का प्रथम 'उपनिवेश' था।

भद्रा—यारकंद, तथा यारकंद की ज़रफ़शां नदी।

भरु (भृगु) कच्छ ?—भड़ोच, जहाँ वामन ने राजा बली का अभिमान भंग किया था।

भारतवर्ष—भरत के नाम से 'भारतवर्ष' कहलाने से पूर्व हमारे देश का नाम 'हिमाह्व' अपिवा 'हैमवत' था। अर्थात् मूल अर्थों में भारतवर्ष 'उत्तर भारत' का नाम था। मार्कण्डेय तथा विष्णु-पुराण के अनुसार भारतवर्ष की सीमाएँ थीं—उत्तर में हिमालय, दक्षिण में समुद्र, पश्चिम में यवन तथा पूर्व में किरात। दक्षिणापथ में प्रथम प्रवेश अगस्त्य ने, पश्चात् अशोक के धर्म ने तथा समुद्रगुप्त की बाहुओं ने किया था।

भार्गव—पश्चिमी आसाम। (ब्रह्माण्ड०)

भास्करक्षेत्र—प्रयाग। (प्रायश्चित्ततत्त्व)

भीम(ा)—विदर्भ (देश एवं नदी)।

भोज (पाल)—मध्यभारत में, राजा भोज के बनाये (झीलों के) पालों (बाँधों) के नाम पर 'भूपाल' (देश)।

भोटांग—काश्मीर-कामरूप के अन्तर्गत देश, भूटान, तिब्बत। (तारातन्त्र)।

भ्रातृदर्शन—(अवध में) नन्दिग्राम, भ्रादरसा—जहाँ भरत ने राम के वियोग में १४ वर्ष काटे थे। (अर्चावतार)

मगध—दक्षिण बिहार, जिसकी राजधानी गिरिव्रज थी। अजातशत्रु ने वैशाली के वृज्जियों की उन्नति पर रोक रखने के लिए 'पाटलिग्राम' को नई राजधानी में परिणत कर दिया था। यहीं पर भीम ने जरासन्ध का वध किया था।

मणिकर्णिका—कुल्लू की घाटी में व्यास की एक धारा, जिसके निकट कुण्डों के गरम पानी में सब्जियाँ आग के बिना उबाली जा सकती हैं।

मणितट—(आसाम में) मणिपुर। (मेघ०)

मत्स्य—जयपुर का प्राचीन क्षेत्र, जिसमें आधु० अलवर तथा भरतपुर शामिल थे। पाण्डवों का अज्ञातवास इधर ही विराट के महलों में गुजरा था।

मद्र—रावी-चनाब का मध्यदेश, जिसकी राजधानी शाकल (स्यालकोट) थी। शल्य तथा अश्वपति (सावित्री का पिता) यहाँ के राजा रहे। 'माद्री' कन्याएँ अपने रूप-लावण्य के लिए प्रसिद्ध थीं।

मधुपुरी—मधुरा (मथुरा)। इसे शत्रुघ्न ने बसाया था। मधु (राक्षस) की नगरी संभवतः आजकल की 'महोली' है (जहाँ 'मधुवन' तीर्थ भी है)।

मध्यदेश—हिमगिरि, विन्ध्य, सरस्वती और प्रयाग के अन्तर्गत देश (जिसमें अन्तर्वेद सम्मिलित था), बौद्ध ग्रन्थों का 'मज्झिमदेश'। इसमें कुरु, पंचाल, मत्स्य, यौधेय, कुन्ती, शूरसेन आदि का समावेश होता था। (मनु०)

मध्यमराष्ट्र—दक्षिणकोसल, महाकोसल। (अर्थशास्त्र)

मन्दाकिनी—गढ़वाल में, केदारपति से उद्गत, कालीगंगा। (मन्दागिन)

मन्दारगिरि—भागलपुर की एक पहाड़ी, जो 'समुद्रमन्थन' में मंथन-दण्ड के रूप में प्रयुक्त हुई थी।

मरु(-धन्व,-स्थल)—राजपूताना, मारवाड़।

मरुद्वृधा—मरुवर्दवां, असिक्नी (चनाब की एक धारा, 'आंस') के पश्चिम में।

मयूर—हरिद्वार के निकट, मायापुरी।

मलयागिरि—पश्चिमी घाट का दक्षिण भाग, 'त्रावनकोर हिल्ज़'।

मलयालम्—मल्लार, मालाबार—जिसके अन्तर्गत कोचीन-त्रावनकोर का सारा प्रदेश था। (राजावली)।

मल्लदेश—मालव-देश, मुलतान।

मल्लराष्ट्र—महाराष्ट्र।

महती, महिता—(मालवा में) मांही नदी।

महाकोसल—दक्षिणकोसल।

महाकौशिक—नेपाल में सात 'कोसियों' से निर्मित एक और 'सप्तसिन्धु' देश, जहाँ 'तामोर-अरुण-सुन' की 'त्रि-वेणी' भी है।

महाराष्ट्र—कृष्णा-गोदावरी के इस 'मध्यदेश' को पहले 'दक्खिन' भी कहा करते थे, अश्मक भी। अशोक ने यहाँ महाधर्मरक्षित को भेजा था। 'आन्ध्रभृत्य, क्षत्रप, राष्ट्रकूट, चालुक्य—कितने-ही राजवंशों के उत्थान-पतन के अनन्तर, इतिहास में, मराठों का युग आता है।

महावन—व्रज, गोकुल।

महिष(मण्डल)—अनूपदेश अथवा हैहय राज्य (आधु० मैसूर से कुछ अधिक), राज० माहिष्मती। यहीं शंकर तथा मण्डन मिश्र का प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था। (दीपवंश)

महेन्द्र—उड़ीसा से मदुरा तक व्यापक पर्वतशृङ्खला।

महोत्सव—बुन्देलखण्ड का 'महोबा', जिसके नाम पर कभी-कभी सारे-के-सारे बुन्देलखण्ड को भी 'महोत्सव' कह देते थे। (प्रबोधचन्द्रोदय)

महोदधि—बंगाल की खाड़ी। (रघु०)

महोदय—कान्यकुब्ज, गाधिपुर।

मातंग—कामरूप में, दक्षिण-पूर्व की ओर, हीरों की खानों के लिए प्रसिद्ध एक 'पट्टी'।

मानस—पश्चिमी तिब्बत (हूणदेश) में कैलास के चरणों में प्रसिद्ध पुण्य स्रोत।

मायापुरी—मयूर। हरिद्वार-कनखल-मायापुरी की त्रिपुरी।

मारकण्ड—समरकन्द।

मारव—मारवाड़, मरुस्थल।

मार्तिकावत—अलवर (शाल्व)।

माल(र)—(विदेह के पूर्व तथा मगध के उत्तर-पश्चिम में) एक 'श्यामल' देश।

मालिनी—हस्तिनापुर के निकट की 'मन्दाकिनी', जिस पर कण्व ऋषि का आश्रम था।

माल्यवत्—तुङ्गभद्रा पर प्रस्रवण गिरि।

मित्रवन—मुलतान।

मिथिला—जनकपुर, विदेह। 'नवद्वीप' विश्वविद्यालय की स्थापना ने मिथिला एवं विक्रमशिला को स्मृतिशेष कर दिया था।

मीनाक्षी—मदुरा।

मुक्तवेणी—इलाहाबाद की 'युक्तवेणी' के विपरीत, हुगली पर त्रिवेणी का 'विप्रलम्भ' संगम।

मुण्डा—छोटा नागपुर में, जि० राँची।

मुद्ग(ल)गिरि—(विहार में) मुंगेर, जहाँ कभी मुद्गल ऋषि का आश्रम था और जहाँ बुद्ध के महान् शिष्य मोग्गलायन ने 'श्रुतविंशकोटि' श्रेष्ठी को धर्म में दीक्षित किया था। (भारतब्राह्मण)

मुरला—भीमा की एक धारा। नर्मदा। केरल = मालाबार।

मू(मौ)जवत्—काश्मीर में एक पर्वत, जिस पर सोम बहुत था।

मूलस्थान—मालवस्थान (?), मुलतान। प्रसिद्ध ऐतिहासिक फूशे ने नाम-'व्युत्पत्ति' के आधार पर इसे 'सृष्टि का उद्गम' माना है? पौराणिक गाथाओं के अनुसार यहीं नृसिंह से द्वारा हिरण्यकशिपु का वध हुआ था, सो, इसका एक नाम **प्रह्लादपुरी** (अर्थात् 'होली' का मूल-स्थान) भी है। हर्षचरित के अनुसार **मालवदेश**, रामायण के अनुसार **मल्लदेश** भी। यूनानियों ने इसी को **हिरण्यपुरी** (हिरण्यकशिपु की पुरी, होला = हिरण्य = Aura ?) कहा है।

मूषिक—सिन्ध का ऊपर का भाग, राज० 'अलोर'।

मृ(मि)गदाव—सारनाथ, 'धम्मचक्कपवत्तन' का 'खुला विहार'।

मृत्तिकावती—पर्णाशा (बनास) पर भोज-राजाओं का एक देश, मार्त्त = मारवाड़।

मेकल—विन्ध्य का एकांश, अमरकण्टक शृङ्खला, 'मेकलकन्यका' (नर्मदा) का उद्भव।

मेघना (द)—पू० बङ्गाल की एक नदी। आसाम में, 'समुद्रोन्मुख' ब्रह्मपुत्र।

मेदपात—मेवाड़।

मेहत्नु—क्रुमु (काबुल) की एक धारा।

मैनाक—'शिवालिक'-शृङ्खला।

मोक्षदा—हरिद्वार, मथुरा, काशी, काञ्ची आदि (सात) 'मोक्ष-दा' पुरी मानी गई हैं।

मौलि—'रोहतास हिल्स'।

मौलिस्ना(स्था ?)न—मालव-, मल्ल-, मूल-स्थान, मुलतान।

यज्ञपुर—उड़ीसा में वैतरणी नदी पर, **ययातिपुर**—जो छठी–दसवीं सदियों में केसरी राजवंश की राजधानी था।

यव—'जावा' द्वीप, जिसे गुजरात के एक राजकुमार ने सातवीं सदी के आरम्भ में बसाया था। (ब्रह्माण्ड०)

यवननगर, जूर्णनगर—गुजरात का जूनागढ़। वंक्षु नदी का क्षेत्र, **अश्मक** 'आक्सियाना', जहाँ (५वीं सदी ई० में) हूणों की एक उपजाति 'ज्वाँ–ज्वाँ' (यवनी) रहा करती थी। (रघु०)

युक्तवेणी—बंगाल की 'विप्रलब्धा' **मुक्तवेणी** के विपरीत, **प्रयाग** की 'सम्भोगिनी' **त्रि-वेणी**।

यौधेय—बहावलपुर का जोहियावाड़, जो महाभारत तथा गुप्तयुग में यौधेयों का सीमान्त था। बाइबिल में इन्हें 'हुद' तथा १६वीं सदी के यात्रावृत्तों में 'आयुध' कहा गया है।

रत्नद्वीप—सिंहल।

रत्नपुर—बिलासपुर के १५ मील उत्तर, (मयूरध्वज हैहयों की) दक्षिणकोसल की राजधानी।

रथस्था—अवध की राप्ती (**रेवती**) नदी।

रन्तिपुर—गोमती-तट पर, 'रिन्ताम्बूर'। **गोमती** (**चर्मण्वती**) के तट पर रन्तिदेव का दैनिक 'गोसहस्र-साव' (यज्ञ) होता था।

रसा—अवस्ता की 'रन्हा' नदी, अथवा यूनानियों की 'जक्सार्टिस'—जो शकों-नागों-हूणों का मूल-आवास थी।

रसातल—कैस्पियन सागर के उत्तर की ओर, **हूण-राज्य**, पश्चिमी तार्तार। हूणों की विभिन्न जातियों के आधार पर रसातल के सात लोक थे—अतल, नितल, वितल, तलातल, महातल, सुतल, पाताल (?)।

राजारह—मगध की प्राचीन राजधानी, जिसे (**गिरिव्रज** के उत्तर में) बिम्बिसार ने बसाया था।

राजपुरी—(काश्मीर में) पुंछ के द० पू०, 'राजौरी'।

राढ़—'**पंचगौड़**' का पश्चिमी प्रदेश।

रामगिरि—कालिदास के यक्ष की तथा रामायण के शम्बूक की तपोभूमि—मध्यभारत में, 'रामटेक' पर्वतशृङ्खला।

रामणीयक—आर्मीनिया। (महा०)

रामदासपुर—अमृतसर—गुरु नानक का, रामदास द्वारा प्रस्तुत, 'शान्तिनिकेतन'।

रामह्रद—(कुरुक्षेत्र में) '**ब्रह्मसर**' तीर्थ, जो राजा कुरु की तपोभूमि, पुरूरवा-उर्वशी की संकेत-भूमि तथा वृत्र की मृत्युभूमि था। यहीं 'प्रतिज्ञा'-भंग कर कृष्ण ने भीष्म के विरुद्ध 'सुदर्शन चक्र' उठाया था—**चक्रतीर्थ**।

रामेश्वरम्—सिंहल तथा भारत के मध्य, **सेतुबन्ध**।

रावणह्रद—कैलास के निकट, 'अनवतप्त' सरोवर, रावण की तपोभूमि।

रेवती—**अचिरावती** (राप्ती)।

रेवा—नर्मदा—

रैवत(तक)—जैन सन्त नेमिनाथ की जन्मभूमि, गुजरात का गिरिनार पर्वत।

रोह (हि)—अफगानिस्तान।

रोहितक—बंगाल के शाहाबाद जिले में विन्ध्य की एक शाखा, **रोहिताश्म(श्व)**। पंजाब के 'रोहतक' का संस्थापक रोहिताश्व (हरिश्चन्द्र का पुत्र) नहीं था—अपितु यह नाम ही स्वयं '**बहु-धान्यक**' का पर्याय एवं अपभ्रंश है।

लंका—**विन्ध्याचल**, जो कि भारत की रीढ़ (तु० पंजाबी में 'लक') है। रावण की 'लङ्का' (गोंडवाना ?) कहीं विन्ध्य-शिखर पर थी—जहाँ के गोंड आजकल भी अपने को रावण के वंशज बताते हैं, जहाँ के ओरांवा आज भी अपने को वानरों के वंशज बतलाते हैं, जहाँ हर टीले (शृङ्ग) को 'लंका' तथा हर नदी को 'गोदा' कहते हैं। स्वयं रामायण के अनुसार अयोध्या-

५०

किष्किन्ध्या-लंका २०० मील का अन्तर था। वराहमिहिर के अनुसार उज्जयिनी और लंका एक ही अक्षांश पर स्थित थीं, पुराणों के अनुसार भी लंका तथा सिंहल दो भिन्न-भिन्न द्वीप हैं। सादृश्य का प्रथम 'आरोप', संभवतः, धर्मकीर्त्ति में मिलता है; और आज तो 'सेतुबन्ध' आदि कितने ही 'तीर्थों' ने इतिहास की स्पष्टता एवं परम्परा को सर्वथा धूमिल कर दिया है।

ल(न)वपुर—लवकोट, लोभपुर, लौहोर (राजत०), लाहौर।

ला(ना)ट (देश)—दक्षिण गुजरात (माही-ताप्ती का दोआब)।

ली(नी) लांजल (न)—बुद्ध तथा सुजाता की तपोभूमि-पुनर्भवभूमि—**निरंजना(रा)**, फल्गु। (अश्वघोष)

लुम्बि(म्बि)नी—नेपाल की तराई में, 'रुम्मेनदेई'—भगवान् बुद्ध का जन्म-तपोवन, जिसका स्थान बौद्धों के ८ चैत्यों में प्रथम है।

लोध्रकानन—कुमाऊँ में, गर्ग ऋषि का आश्रम, 'लोधमूना'। (रघु०)

लौहित्य—ब्रह्मपुत्र नदी, जहाँ परशुराम ने मातृहत्या के पाप को धोया था; कालिदास के दिनों में **प्राग्ज्योतिष** की सीमा।

वंक्षु—वक्षु, इक्षु, चक्षु—औक्सस् अर्थात् आमू दरिया।

वंश—वत्स (देश)।

वटपद्रपुर—गायकवाड़ की राजधानी, बड़ोदा।

वत्स—इलाहाबाद के पश्चिम में उदयन का राज्य; राज० **कौशाम्बी**।

वन—ब्रजमण्डल के १२ वनों—वृन्दा, मधु, कुमुद आदि—का सर्वनाम; वामनपुराण के अनुसार कुरुक्षेत्र के ७ वनों का।

वरदा—मध्यभारत में 'वर्धा' नदी।

वराहक्षेत्र—काश्मीर में, जेहलम के तट पर, 'बारामूला'।

वर्धमान (कोटि)—काशी तथा प्रयाग का मध्यवर्ती, **अस्थिक (ग्राम)**, जहाँ महावीर ने 'कैवल्य' 'सिद्धि पाकर प्रथम 'वर्षा' बिताई थी।

वर्प—वराहपुराण में वर्णित—नील, निषध, श्वेत, हेम, हिमवत, श्रृङ्गवत—६ पर्वत।

वलभि—वलभि-युग में सुराष्ट्र की राजधानी।

वशिष्ठाश्रम—अवध में **अर्बुद** (आबू) पर्वत पर, तथैव कामरूप में, वशिष्ठ का तपोवन।

वसुधारा—अलकनन्दा।

वाकाटक—हैदराबाद-दक्खिन में, कैलकिल यवनों का—तथा अनन्तर (वाकाटक) विन्ध्य-शक्ति द्वारा संस्थापित गुप्तकालीन—राज्य।

वातापिपुर—बीजापुर में, 'बादामी'—जो छठी सदी में महाराष्ट्र-राज पुलकेशी की राजधानी थी।

वामनस्थली—जूनागढ़ के निकट, बनथाली। राजस्थान की 'बनस्थली' (?)।

वाराणसी—'वरुणा' तथा 'अस्सी' के संगम पर अवस्थित होने से, **काशी** का यथार्थ नाम।

वाल्मीकि-आश्रम—कानपुर से १४ मील दूर, बिठूर (**उत्पलारण्य**)—जहाँ भगवान् राम के यज्ञिय अश्व को लव-कुश ने बाँध लिया था।

वाशिष्ठी—गोमती नदी; **चर्मण्वती** (?)।

वाहीक—व्यास तथा सतलज का दोआब (केकय के उत्तर में), पंजाब।

वाह्लीक—श(शा)कद्वीप, बैक्ट्रिया की राजधानी, बलख़। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने, शकाधिपति को बलख़ तक खदेड़ कर, मानो वराह-अवतार द्वारा पृथ्वी का उद्धार करते हुए ध्रुवस्वामिनी तथा गुप्तसाम्राज्य की 'लाज रक्खी' थी। (मेहरौली अभिलेख, मुद्राराक्षस, रघुवंश)

विक्रमपुर—ढाका में, **'बल्लालपुरी'**—आदिशूर की तथा सेन राजाओं की राजधानी।

विक्रमशिला—आठवीं सदी के राजा धर्मपाल द्वारा स्थापित बौद्ध विहार, जिसका महत्त्व, आखिर, 'नवद्वीप विद्यापीठ' की स्थापना के अनन्तर ही कुछ घटा था।

विजयनगर—बंगाल के राजशाही डिवीजन में, सेन राजाओं की राजधानी। **विद्यानगर**।

वितस्ता—वि-तमसा (?), जेहलम (नदी)।

विदिशा—मालवा में बेतवा (**वेत्रवती**) नदी पर भीलसा, जो प्राचीन **दशार्ण** की राजधानी थी; विशाला। (मेघ०)

विदेहट—दरभंगा में जनकपुरी, तीरभुक्ति (तिरहुत), मिथिला, जनस्थान।

विद्यासागर—तुङ्गभद्रा पर विजयनगर के ब्राह्मण राजाओं की राजधानी, **विजयनगर**।

विनशन—कुरुक्षेत्र (सरहिन्द, पटियाला) में जहाँ सरस्वती लुप्त हो जाती हैं, वह तीर्थ।

विनाशिनी—गुजरात में बनास नदी।

विनीतपुर—उड़ीसा में, कटक।

विन्ध्यपाद—ताप्ती आदि का उद्गम, 'सतपुड़ा' पर्वतश्रेणी।

विपाशा—व्यास नदी।

विराटनगर—मत्स्यदेश, जयपुर—पाण्डवों का अज्ञातवासगृह।

विशाला—अवन्ती की राजधानी, उज्जैन (उज्जयिनी)। बौद्ध युग में वैशाली की राजधानी, बसाढ़।

विशाखा (पत्तन)—विजगापट्टम्।

विश्वामित्राश्रम—जहाँ ताटका का वध हुआ था, बिहार के शाहाबाद जिले में बक्सर, **वेदगर्भपुरी**।

वीतभयपत्तन—प्राचीन **'वीचिग्राम'**, अलाहाबाद से ११ मील दक्षिण-पश्चिम, 'विठा'—जहाँ कई ऐतिहासिक मुद्राएँ मिली हैं।

वृद्धकाशी—मद्रास का तीर्थ, 'पुदुवेलिगोपुरम्'।

वेंकटगिरि—मद्रास में, तिरुपति के निकट, 'तिरुमलई' पर्वत।

वेंगी—गोदा-कृष्णा के अन्तर्गत, आन्ध्रों की राजधानी।

वेंणी—कृष्णा नदी।

वेत्रवती—बेतवा नदी।

वेदारण्य—तंजोर में, अगस्त्य का तपोवन।

वेदगर्भपुरी—बक्सर, 'जहाँ विश्वामित्र को 'गायत्री' ने आलोकित किया था।'

वेन—मध्यभारतीय गंगा, गोदावरी की एक धारा।

वैकुण्ठ—ताम्रलिप्ती पर एक तीर्थ।

वैतरणी—परशुराम के भगीरथ प्रयत्न से 'अवतारित', उड़ीसा की गंगा—जहाँ कभी **ययातिपुर** बसा था।

वैशाली—मगध-विदेह के मध्य का प्राचीन साम्राज्य, जो आजकल मुज़फ़्फ़रपुर जिले का दक्षिणी भाग ठहरता है। बौद्ध युग में यह वृज्जियों-लिच्छवियों की राजधानी थी।

व्याघ्रसरोवर—बक्सर, विश्वामित्राश्रम।

शंकरतीर्थ—नेपाल में, जहाँ शिव ने 'पार्वती-विजय' के लिए तप किया था।

शंकराचार्य—काश्मीर में, 'तख्ते-सुलेमान'; सन्धिमान गिरि।

शंकास्य—कान्यकुब्ज।

शकस्थान—सीस्तान, शकों का मूल देश जहाँ से वे मध्य-एशिया की ओर बढ़े।

शतद्रु—सतलज।

शम्बूकाश्रम—मध्यभारत में, रामगिरि (रामटेक) । (रामा०)
शर्यणावत्—**रामह्रद, ब्रह्मसरोवर ।**
शाकंभरि—पश्चिमी राजपूताना में, 'सांभर'—जहाँ शर्मिष्ठा ने देवयानी को 'देओदानी' कूप में ढकेल दिया था ।
शाकद्वीप—मध्यएशिया में 'शक-भूमि', 'तारतरी'—बोखारा तथा समरकन्द के मध्यगत 'साइथिया' अथवा 'सोग्दियाना' ।
शाकल—मद्र देश की राजधानी, स्यालकोट ।

शान्ति—**साँची** । (महा०)
शार्ङ्गनाथ—**सारनाथ ।**
शालातुर—प्राचीन गान्धार में, पाणिनि की जन्मभूमि ।
शाल्मली (द्वीप)—कालदया । मैसोपोटामिया । सीरिया । (ब्रह्मांण्ड०)
शाल्व—कुरुक्षेत्र के निकट सत्यवान् के पिता द्युम्नसेन का राज्य, जिसमें जोधपुर, जयपुर, अलवर शामिल थे—**मार्तिकावत । शाल्वपुर = सौभनगर** (अलवर) उसकी राजधानी थी ।
शिवालय—एलोरा ।
शिरोवन—प्राचीन **चेर** (केरल) की राजधानी, तळवाळ' ।
शुक्तिमती—(उड़ीसा में) **सुवर्णरेखा** नदी ।
शूद्रक—सिन्ध तथा सतलज के मध्यगत देश, राज० **उच्च ।**
शूरसेन—कृष्ण के बाबा के नाम से विख्यात राज्य, राज० **मथुरा ।**
शूर्पारक—**सुपारग, सूरत** ।
श्रृङ्गगिरि—श्रृङ्गेरी, दक्षिण में जहाँ वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए शंकराचार्य ने अपने चार मठों में एक स्थापित किया था ।
शेषाद्रि—**त्रिपदी,** तिरुपति, निरुमलई ।
शैवाल—**शिवालय,** एलोरा । रामटेक । **(रामगिरि)**
शोण—गोंडवाना में **अमरकण्टक** से उद्गत नदी, जो मगध की पश्चिमी (प्राकृतिक) सीमा थी ।
शोणप्रस्थ—सोनीपत ।
शोणितपुर—कुमाऊँ में, केदारगंगा **(मन्दाकिनी)** के तट पर, एक नगर । आसाम में, आधु० तेजपुर' ।
शौरिपुर—नेमिनाथ की जन्मभूमि, **मथुरा** । मध्यदेश की 'शौरसेनी' हमारी (वर्तमान) 'राष्ट्र-भाषा' की जननी थी ।
श्रवणाश्रम—अवध में, जहाँ दशरथ ने शिकार करते हुए अन्धे माता-पिता के इकलौते बेटे श्रवण को भूल से मार डाला था ।
श्रावस्ती—अवध में, गोंडा जिले में, राप्ती नदी के तट पर, आधु० 'सहेत महेत' । बुद्ध-युग में श्रावस्ती गौरव के शिखर पर थी ।
श्रीपथ—जयपुर से ९० मील उत्तर में, 'विआना'—'पथयमपुरी' ।
श्रीप(ा)द—सिंहल का 'एडम्ज़ ब्रिज' ।
श्रीकण्ठ, कुरुजांगल, महाकान्तार—जिसकी राजधानी विलासपुर थी ।
श्रीक्षेत्र—उड़ीसा में, पुरी ।
श्रीनगर—काश्मीर की राजधानी, जिसकी स्थापना ५वीं सदी में प्रवरसेन द्वितीय ने की थी ।
श्रीरंगपट्टन—(मैसूर में) आधु० 'सेरिंगपटम्' ।
श्रीशैल—कृष्णा के दक्षिण में एक तीर्थ पर्वत ।
श्रीस्थानक—(बम्बई में) 'थाना', जो कभी उत्तरी कोङ्कण की राजधानी था ।
श्रीहट्ट—सिल्हेत । (योगिनी०)

श्लेष्मातक—नेपाल में, पशुपतिनाथ के उत्तर-पूर्व, उत्तर-गोकर्ण।

षष्ठी—बम्बई से १० मील उत्तर की ओर, साल्सेत द्वीप।

संगम (तीर्थ)—रामेश्वरम्।

संध्या—मालवा में, यमुना की धारा, सिन्धु।

सदानीरा—प्राचीन पुण्ड्र की एक नदी, जो 'पार्वती-परिणय' के क्षण में शिव के हाथ से छूटे पसीने से जनमी थी—**करतोया**। गण्डकी। राप्ती।

सपादलक्ष—शाकम्भरि।

सप्तकुलाचल—महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, गन्धमादन, विन्ध्य, पारियात्र।

सप्तगंगा—गंगा, कावेरी, गोदावरी, ताम्रपर्णी, सिन्धु, सरयू, नर्मदा।

सप्तगंडकी—गंडकी के 'सप्तमुख'।

सप्तगोदावरी—गोदावरी के 'सप्तमुख'।

सप्तद्वीप—जम्बु, प्लक्ष, शाल्मली, कुश, क्रौञ्च, काक, पुष्कर।

सप्तमोक्षदापुरी—दे० **मोक्षदा**।

सप्तर्ष—महाराष्ट्र में सतारा।

सप्तसागर—जम्बुद्वीप (भारत) की 'समुद्रीय' सीमाएँ—लवण, क्षीर, सुरा, घृत, इक्षु, दधि, स्वादु।

सप्तसिन्धु—पंजाब, प्राचीन भारतवर्ष। **(उत्तरापथ)**

समतट—बंग अर्थात् पूर्वी बंगाल।

समन्तपंचक—कुरुक्षेत्र।

सरयू—(अवध में) घागरा नदी।

सरोवर—ब्रह्माण्डपुराण के **मानस** आदि १२ तीर्थसर, विशे० नारायणसर।

सह्याद्रि—कावेरी के उत्तर में, पश्चिमी घाट की उत्तरी शृंखला (मलयादि)। **कावेरी** का एक नाम **सह्याद्रि-जा** भी है।

सांची—भीलसा के द० पू० में, प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ, शान्ति।

साकेत—**अवध, अयोध्या**।

सागरसंगम—'गंगामुख' पर **कपिलाश्रम**, जहाँ सगर के सहस्र पुत्र 'भस्म' हुए थे।

साभ्रमती—साबरमती।

साम्बपुर—मुलतान।

सारस्वत—अजमेर में, **पुष्कर** सरोवर।

सिंहल—सीलोन। **लंका** कुछ और थी—'विन्ध्यपाद' में।

सिद्धपुर—कपिल ऋषि की जन्मभूमि, भगीरथ की तपोभूमि—**बिन्दुसर**।

सिद्धाश्रम—शाहाबाद में, बक्सर—जहाँ विष्णु ने वामनावतार ग्रहण किया था।

सिप्रा—मालवा में, 'क्षिप्रा' नदी—जिस पर उज्जैन बसा था।

सुगन्धा—गोदावरी पर, नासिक।

सुदर्शन—जम्बू द्वीप। काठियावाड़ की प्रसिद्ध ऐतिहासिक झील, जिसका मौर्यकाल में निर्माण तथा, गुप्त युग तक, कितनी ही बार 'उद्धार' हुआ था।

सुदाम(ा)पुरी—गांधी तथा कृष्ण की 'जन्मभूमि', पोरबन्दर। (कीथ)

सुपारग—**शूर्पारक**, सूरत।

सुब्रह्मण्य—मद्रास में, **कुमारस्वामी** (तीर्थ)।

सुभद्रा—इरावती नदी ।

(सु)मागधी—पटना की शोण नदी, जिस पर कभी राजगृह बसा हुआ था ।

सुमनकूट—श्रीप(ा)द ।

सुमेरु—गढ़वाल में, बदरीनाथ के निकट, पंचपर्वत (रुद्र हिमा०)—स्वर्णगिरि अथवा हेमकूट नहीं ।

सुरथ (अद्रि)—नर्मदा आदि का स्रोत, अमरकण्टक ।

सु(सौ)राष्ट्र—सूर्यपुर, सुपारग (सूरत), काठियावाड़ तथा गुजरात का कुछ अंश ।

सुवास्तु—गन्धर्वदेश की नदी, स्वात ।

सुवर्णभूमि—ब्रह्मदेश (बर्मा)

सुवर्णगिरि—(मैसूर में) मास्की । अशोक के समय में चार 'राज्यपाल' क्षेत्र थे—तक्षशिला, उज्जैन, तोसाली तथा सुवर्णगिरि ।

सुवर्णग्राम—(ढाका में) सोनारगाँव ।

सुवर्णरेखा—गिरिनार की पलाशिनी । उड़ीसा की कपिशा ।

सुह्म—बंग तथा कलिंग के अन्तर्गत देश, राढ़, दे० पंचगौड़ ।

सूर्यनगर—श्रीनगर ।

सूर्यपुर—सूरत । यहीं शंकराचार्य ने अपनी 'वेदान्त-टीका' रची थी ।

सेतुबन्ध—भारत तथा सिंहल के बीच में, श्रीप(ा)द ।

सोम पर्वत—अमरकण्टक ।

सौमनगर—शाल्वपुर (अलवर) ।

सौवीर—सिन्ध तथा मद्र का अन्तर्देश (यौधेय ?) ।

स्त्रीराज्य—कुमाऊँ अथवा गढ़वाल का पुराना नाम । महाभारत-युग में यहाँ स्त्रियों का अनुशासन होता था—प्रमीला ने इधर ही अर्जुन से लोहा लिया था । (विप० पुरुषपुर)

स्थाने(ण्वी)श्वर—थानेसर (कुरुक्षेत्र), स्थाणुतीर्थ ।

स्रुघ्न—जौनसर जिले में, कालसी ।

हंसद्वार—क्रौञ्चद्वार ।

हत्याहरण—अवध में, हरदोई से २८ मील उत्तर-पूर्व, एक तीर्थ—जहाँ भगवान् राम ने (रावण की) ब्रह्महत्या का पाप-प्रक्षालन किया था ।

हरकेल—बंग ; दे० 'पंचगौड़' ।

हरक्षेत्र—भुवनेश्वर ।

हरिवर्ष—उत्तर-कुरु, जिसमें तिब्बत का पश्चिमी भाग शामिल था ।

हस्तिनापुर—कुरुओं की प्राचीन राजधानी, गजसाह्वय; किन्तु जनमेजय के दो पीढ़ी बाद, नयी राजधानी कौशाम्बी हो गई थी ।

हिरण्यपर्वत—मुद्ग(ल)गिरि, मुंगेर ।

हिरण्यबाहु—शोण नदी ।

हृषीकेश—बदरीनाथ तथा हरिद्वार के मध्यस्थित प्रसिद्ध तीर्थ, 'ऋषिकेश' ।

हेमकूट—कैलास ।

हैमवत—भारतवर्ष ।

हैमवती—गंजम के निकट, महेन्द्र से उद्गत ऋषिकुल्या नदी । इरावती । शतद्रु (सतलुज), जो वशिष्ठ के दृष्टिपात से सौ-सौ धाराओं में फूट गई ।

हैहय—अनूपदेश अथवा 'माहिष्मती राज्य' अथवा मालवदेश ।

ह्लादिनी—ब्रह्मपुत्र नदी ।

सहायक ग्रन्थों की सूची

हिंदी-ग्रन्थ

१. हिन्दी शब्दसागर—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
२. भाषा शब्दकोश—डा. रमाशंकर शुक्ल।
३. हिन्दुस्तानी कोश—श्री रामनरेश त्रिपाठी।
४. प्रामाणिक हिन्दी कोश—श्री रामचन्द्र वर्मा।
५. हिन्दी पर्यायवाची कोश।
६. पारिभाषिक शब्दकोश—श्री मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव।
७. भारत भूमि और उसके निवासी—श्री जयचन्द्र विद्यालंकार।
८. भारत के इतिहास की रूपरेखा— " "
९. इतिहास-प्रवेश— " "
१०. इतिहास-मीमांसा— " "
११. पाणिनिकालीन भारतवर्ष— डा. वासुदेवशरण अग्रवाल।
१२. हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन— " "
१३. भारत ब्राह्मण (बँगला)— घोषाल
१४. केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद की शब्द-सूचियाँ।
१५. बृहत हिन्दी कोश—कालिका प्रसाद।

संस्कृत-ग्रन्थ

१. पद्मचन्द्रकोश।
२. संस्कृत-हिन्दी कोश—आप्टे।
३. वाचस्पत्य कोश।
४. शब्दकल्पद्रुम।
५. शब्दार्थचिन्तामणि।
६. अमरसिंह, हेमचन्द्र, केशव, हलायुध आदि कोश।
७. सिद्धान्तकौमुदी।
८. सुभाषितरत्नभांडागार।
९. सुभाषितरत्नाकर।

अँग्रेजी ग्रन्थ

1. Sanskrit-English Dictionary—Monier Williams.
2. English-Sanskrit Dictionary—Monier Williams.
3. Handy English-Sanskrit Dictionary—B. D. Mulguokar.
4. Practical Sanskrit-English Dictionary—V. S. Apte.
5. English-Sanskrit Dictionary—V. S. Apte.
6. Twentieth Century English-Hindi Dictionary—Sukh Sampatti Ray.
7. Hindustani Proverbs—Fallow—(1886).
8. New Hindustani English Dictionary—(1879).
9. Technical Terms in Hindi (Social Sciences)—Government of India.
10. Glossary of Equivalents for Constitutional Terms.
11. A Dictionary of Geographical Names of Ancient & Mediaeval India. (1927) Nandu Lal Dey.
12. J. R. A. S.
13. Indian Historical Quarterly.
14. Concise Oxford Dictionary—H. W. Fowler.
15. Standard Illustrated Dictionary—R. C. Pathak.